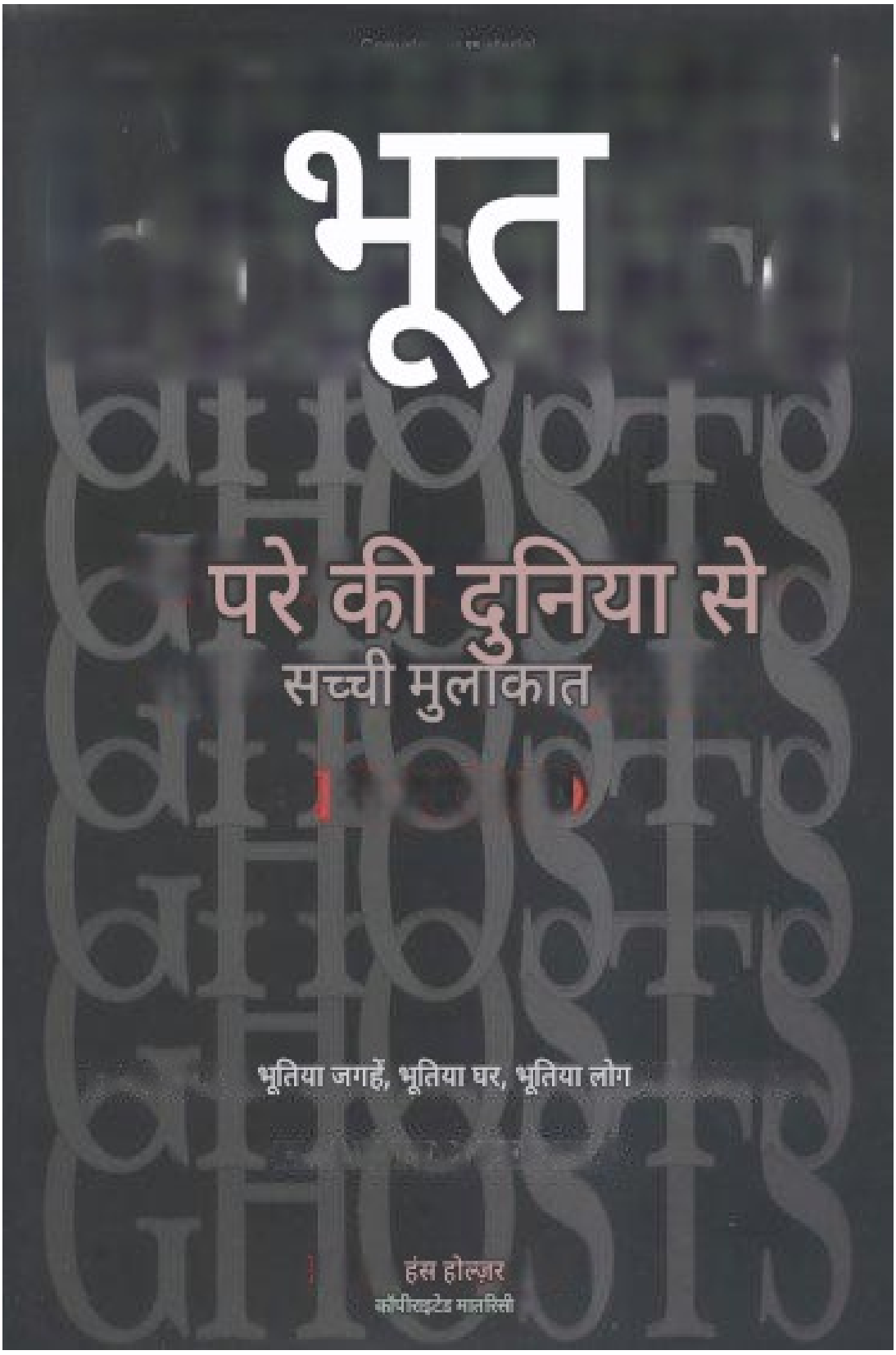
भूत
परे की दुनिया से
सच्ची मुलाकात
भूतिया जगहें, भूतिया घर, भूतिया लोग
हंस होल्ज़र
कॉपीराइटेड मालरिसी

विषयसूची

कवर पृष्ठ
शीर्षक पेज
कॉपीराइट पृष्ठ
अंतर्वस्तु
प्रस्तावना
परिचय
अध्याय एक: जीवन और मृत्यु का स्वरूप
अध्याय दो: भूत-प्रेत खोजने की चाह रखने वाले हर व्यक्ति को क्या जानना चाहिए
अध्याय तीन: भूत और जीवितों की दुनिया
अध्याय चार: भूत वास्तव में क्या होता है?
अध्याय पाँच प्रसिद्ध भूत
अध्याय छह: यह घर भूतिया है
अध्याय सात: प्रेतवाधित स्थान
अध्याय आठ: प्रेतवाधित लोग
अध्याय नौ पीछे छूटे हुए लोग
अध्याय दस: भूत-प्रेत
अध्याय ग्यारह: भूत जो भूत नहीं हैं
अध्याय बारह: मानसिक फोटोग्राफी—दृश्य प्रमाण
हंस होल्ज़र द्वारा पूर्व में प्रकाशित पुस्तकें
फुटनोट
अध्याय 5

भूत
परे की दुनिया के साथ सच्ची
मुलाकातें
हंस होल्ज़र

भूत

दुनिया से परे सच्चे अनुभव

भूत
दुनिया से परे सच्चे अनुभव
हंस होल्ज़र
विचेस और हैंस होल्ज़र की ट्रैवल गाइड टू हॉन्टेड हाउसेस के लेखक द्वारा लिखित

कॉपीराइट © 1997 एस्पेरा एड एस्ट्रा इंक.

पहला पेपरबैक संस्करण 2004

सर्वाधिकार सुरक्षित। प्रकाशक की लिखित अनुमति के बिना इस पुस्तक का कोई भी भाग किसी भी रूप में, इलेक्ट्रॉनिक या यांत्रिक माध्यमों से, जिसमें सूचना संग्रहण और पुनर्प्राप्ति प्रणाली भी शामिल है, पुनरुत्पादित नहीं किया जा सकता है।

ब्लैक डॉग एंड लेवेंथल पब्लिशर्स, इंक. द्वारा प्रकाशित, 151 वेस्ट 19 वीं स्ट्रीट, न्यूयॉर्क, एनवाई 10011

वर्कमेन पब्लिशिंग कंपनी द्वारा वितरित, 708 ब्रॉडवे, न्यूयॉर्क, एनवाई 10003

डिजाइन: मार्टिन लुबिन ग्राफिक डिजाइन, टाइपसेटिंग: क्रायोन ग्राफिक्स, भारत

संयुक्त राज्य अमेरिका में निर्मित

ISBN:1-57912-401-1

h g f e d c b a

होलज़र, हैंस, 1920–

भूत/हंस होल्ज़र द्वारा।

पृष्ठ सेमी।

ग्रंथसूची संदर्भ शामिल हैं।

ISBN 1-57912-401-1

1. भूत। 2. अलौकिक। I. शीर्षक।

अंतर्वस्तु

परिचय

अध्याय एक: जीवन और मृत्यु का स्वरूप

अध्याय दो: भूत-प्रेत खोजने की चाह रखने वाले हर व्यक्ति को क्या जानना चाहिए

अध्याय तीन: भूत और जीवितों की दुनिया

अध्याय चार: भूत वास्तव में क्या होता है?

अध्याय पाँच: प्रसिद्ध भूत

1. सम्मेलन भवन का भूत

2 दरवाजे पर अजनबी

3. अलेक्जेंडर हैमिल्टन के भूत से मुलाकात

4. फिफ्थ एवेन्यू का भूत

5. हत्या किए गए फाइनेंसर का मामला

6. रॉकलैंड काउंटी का भूत

7 एक क्रांतिकारी परिणाम: पैट्रिक हेनरी, नाथन हेल, आदि।

8. आरोन बर्र का बचाव

9. राष्ट्रपति की हत्या: लिंकन, बूथ और भीतर के गद्दार

10 वुडरो विल्सन के साथ एक मुलाकात

11 व्हाइट हाउस के चारों ओर का घेरा

12 दुर्भाग्यपूर्ण कैनेडी परिवार: सपनों से भूतों तक

13 मिची टैवर्न, जेफरसन, और लड़के

14 उत्साही जेफरसन के साथ एक मुलाकात

15 मेजर आंद्रे और वफादारी का प्रश्न

16 बेनेडिक्ट अर्नोल्ड का मित्र
17. हैवरस्ट्रॉ फेरी मामला
18 “नियति का जहाज”: यू.एस.एफ. कॉन्स्टेलेशन
19 कैमलॉट के बारे में सच्चाई
20 उसका नाम मुसीबत था: नेल ग्विन का गुप्त साहसिक कार्य
21 वियना के आसपास के भूत
22 मेयरलिंग का रहस्य
23 राजशाही और भूत
24 रॉबर्ट लुई स्टीवेन्सन के साथ एक मुलाकात
25 ब्लडी मैरी का भूत
26 प्रेतवाधित मैरी, स्कॉटलैंड की रानी
27 रेनविले
28 क्या यह आप हैं, जीन हार्लो?
29 क्या बैरीमोर परिवार अभी भी यहीं रहता है?
30 स्वर्गीय क्लिफ्टन वेब के नवीनतम कारनामे
31 ऐश लॉन में भूतिया रॉकिंग चेयर
32 कैरोल लोम्बार्ड के भूत से मुलाकात
33 फोर्ट मैकनेयर में श्रीमती सुरैट का भूत

अध्याय छह: यह घर भूतिया है

34 बैंक स्ट्रीट का भूत
35 सीटी बजाने वाला भूत
36 मेटुचेन भूत
37 ग्रीनविच विलेज का एक भूत
38 सेवन ओक्स में भूत-प्रेत

39 सेंट्रल पार्क वेस्ट का भूत

40 सेंट मार्क के भूत

41 क्लिंटन कोर्ट के भूत

42 हंग्री लूसी

43 बर्गेनविले का घर का भूत

44 द रिवरसाइड घोस्ट

45 सागर में जन्मी मैरी

46 स्टैमफोर्ड हिल के भूत

47 न्यू जर्सी के "स्पाई हाउस" के भूत

48 औपनिवेशिक सैनिक का विचित्र मामला

49 प्लांट एवेन्यू पर स्थित मकान

50 व्हेली हाउस के भूत

51 वेदी पर भूत

52 एक भूत का अंतिम आश्रय

53 अष्टभुज भूत

54 अष्टभुज का पुनः अवलोकन

55 एकीकरण भूत

56 आर्डमोर बुलेवार्ड के भूत

57 वह भूत जिसने जाने से इनकार कर दिया

58 भूतिया मोटरसाइकिल कार्यशाला

59 प्रेतवाधित भिक्षुओं से सामना

60 समरसेट सेंट (पेंसिल्वेनिया)

61 बुराई का घर (न्यूयॉर्क)

62 गलियारे में प्रेत (लॉन्ग आइलैंड)

63 बेबेरी परफ्यूम घोस्ट (फिलाडेल्फिया)

64 सिरविहीन दादा (जॉर्जिया)

65 पुराने व्यापारी के घर का भूत (न्यूयॉर्क शहर)

66 फिफ्थ स्ट्रीट पर स्थित मकान (न्यू जर्सी)

67 मॉर्गन हॉल (लॉन्ग आइलैंड)

68 एडोब का संरक्षक (कैलिफोर्निया)

69 मैना पक्षी (कनाडा)

70 खेत पर आतंक (कनेक्टिकट)

71 कैलिफ़ोर्निया की एक भूतिया कहानी

72 मिनियापोलिस का भूतिया द्वारपाल

73 उत्तरी कैरोलिना के एक परिवार के भूतिया कारनामे

74 रीबा का भूत

75 ब्रुकलिन से हेनी

76 लॉन्गलीट के भूत

77 ब्लैंचर्ड के भूत

78 एडिनबर्ग के भूत

79 मॉन्कटन का प्रेतवाधित भिक्षु

80 स्कॉटिश ग्रामीण भूत

81 केरी तट पर भूत

82 भूतिया किल्केआ कैसल, किल्डारे

83 स्काईरीन कैसल के भूत

काउंटी मेयो में भूत-प्रेत की खोज के 84 तरीके

85. ला टूर मालाकॉफ, पेरिस में भूत

86. भूतिया वुल्फसेग किला, बवेरिया

87 ज्यूरिख में एक भूतिया पूर्व अस्पताल
88 लॉन्ग आइलैंड की महिला
89 ओलंपिया थिएटर का भूत
90 प्रेतवाधित रेक्टरी
91 प्रेतवाधित सेमिनरी
92 अल्मेडा का भूतिया नाविक
93 भूत घड़ी
94 गे स्ट्रीट का भूत
95 द शिप चैंडलर का भूत
96 रिंगवुड मनोर में भूत-सेवक की समस्या
97 फैंटम एडमिरल
98 तहखाने में भूत
99 मिस बॉयड ऑफ चार्ल्स स्ट्रीट, मैनहट्टन
100 न्यूबरी पार्क, कैलिफोर्निया में स्थित हॉन्टेड रेंच
101 नैरोसबर्ग भूत
102 गुलाबी बेडरूम में भूत
103 पॉफकीप्सी रेक्टरी का भूत
104 वेस्ट प्वाइंट पर भूत
105 द स्टेंटन हाउस, सिनसिनाटी
106 द घोस्ट एट एल सेंट्रो
107 भूतिया स्टेजकोच सराय
108 श्रीमती डिकी के भूतिया साथी
109 दूसरी मंजिल की सीढ़ियों पर "उपस्थिति"
110 द ओकटन हॉन्ट

111 समुद्री कप्तान का बेचैन भूत
112 ट्रेलर पार्क का भ्रमित भूत
113 वह भूत जो जाने को तैयार नहीं था
114 पोर्ट क्लाइड में भूत
115 ए प्लायमाउथ घोस्ट
116 मॉरिस-जुमेल हवेली में भूत

अध्याय सात: प्रेतवाधित स्थान

117 खोए हुए सिर का मामला
118 ट्रेन में बैठी महिला (स्विट्जरलैंड)
119 द लेडी ऑफ द गार्डन (कैलिफोर्निया)
120 द घोस्ट कार (कैनसस)
121 एटना स्प्रिंग्स के प्रेतवाधित भिक्षु
122 अमेरिका में सबसे पहले कौन उतरा?
123 येल में भूतिया ऑर्गन
124 टेलीविजन पर भूत
125 पावलेज़ द्वीप (दक्षिण कैरोलिना) का धूसर आदमी
126 भूतिया वेस्टओवर (वर्जीनिया)
127 आई.आर.ए. भूतों का मामला
128 आखिरी सवारी
129 सैन फ्रांसिस्को की भूत दुल्हन

अध्याय आठ प्रेतवाधित लोग

130 वैलेरी के. की रहस्यमय मृत्यु
131 चेतावनी भूत
132 जैकलीन

133 वर्मब्रांड अभिशाप
134 डिक टर्पिन, मेरा प्यार
135 बेचैन मृत
136 देहधारी शैतान (कैनसस)
137 दबे हुए खनिकों का मामला
138 भूतिया प्रेमी
139 द वाइनलैंड घोस्ट
140 एमिटीविले, अमेरिका का सबसे प्रसिद्ध भूतिया घर

अध्याय नौ: पीछे रह गए लोग

141 जब मृत आत्माएं वहीं रहती हैं
142 अलाबामा स्टे-बिहाइंड
143 अर्कांसस स्टे-बिहाइंड
144 जॉर्जिया स्टे-बिहाइंड
145 एक टकर भूत
146 हॉवर्ड हवेली का भूत
147 पीछे रह गए लोग: जाने के लिए तैयार नहीं
148 रोज़ हॉल, जमैका की "सफेद चुड़ैल" का घर
149 स्कॉटिश भूत जैसा कुछ नहीं है
150 श्रीमती सी के दिवंगत लेकिन जीवंत पति का विचित्र मामला
151 छोटे सफेद फूल का भूत
152 रेन्हम हॉल
153 पेंसिल्वेनिया नाविक का भूत

अध्याय दस: भूत-प्रेत

154 टेक्सास में शैतान

155 एक भूत की डायरी
156 मिलब्रे पोल्टरजिस्ट मामला
157 बारबेरी लेन के भूत
158 गैरिक हेड इन, बाथ

अध्याय ग्यारह: वे भूत जो भूत नहीं हैं

आत्माओं द्वारा संपर्क और मुलाकातें
जब मृत लोग जीवितों से संपर्क साधते हैं
अधूरा काम
जब मृत लोग जीवितों की मदद करते हैं
159 विवियन ली की मृत्यु के बाद ली गई तस्वीर
160 मृत शिक्षक ने कैसे अलविदा कहा
द्विआवास या किसी जीवित व्यक्ति का ईथरीय प्रतिरूप
एस्ट्रल प्रोजेक्शन या शरीर से बाहर के अनुभव
अतीत की मानसिक छापें
161 विनचेस्टर कैथेड्रल के भिक्षु
162 बैलिंगुइल का रहस्य

अध्याय बारह: मानसिक फोटोग्राफी—दृश्य प्रमाण

फोटोग्राफी के माध्यम से परे से संचार: ट्रैक रिकॉर्ड और परीक्षण की शर्तें
जॉन मायर्स की माध्यमता
आत्माओं से संपर्क करने के दौरान ली गई प्रामाणिक "आध्यात्मिक तस्वीरें"
एक कैंप में स्पिरिट फोटोग्राफी
कुछ अप्रत्याशित आत्माओं के चेहरे
भौतिकीकरणों की फोटोग्राफी
चिकित्सक, कैथरीन द ग्रेट और पोलरॉइड स्पिरिट फोटोग्राफी

मे बुरो की भूतिया पारिवारिक तस्वीर

आकाश में एक रहस्यमय आकृति

पैरिश हाउस के भूत

हंस होल्ज़र द्वारा पहले प्रकाशित पुस्तकें

हंस होल्ज़र 119 पुस्तकों के लेखक हैं, जिनमें लाइफ बियॉन्ड, द डायरेक्टरी ऑफ साइकिक्स, अमेरिकाज मिस्टीरियस प्लेसेस, विंडोज टू द पास्ट और विचेस शामिल हैं।

उन्होंने कई टेलीविजन कार्यक्रमों का लेखन, निर्माण और संचालन किया है, जिनमें प्रमुख हैं "घोस्ट इन द हाउस", "बियॉन्ड द फाइव सेंसेस" और एनबीसी श्रृंखला "इन सर्च ऑफ..."। वे कई राष्ट्रीय टेलीविजन कार्यक्रमों में दिखाई दिए हैं और व्यापक स्तर पर व्याख्यान दिए हैं। उन्होंने मैडमोइसेल, पेंटहाउस, लॉन्जेविटी जैसी राष्ट्रीय पत्रिकाओं के लिए लिखा है और राष्ट्रीय साप्ताहिक पत्रिकाओं में कॉलम भी प्रकाशित किए हैं।

हंस होल्ज़र ने ऑस्ट्रिया के वियना विश्वविद्यालय और न्यूयॉर्क के कोलंबिया विश्वविद्यालय से शिक्षा प्राप्त की है। उन्होंने लंदन कॉलेज ऑफ एप्लाइड साइंस से पीएचडी की उपाधि प्राप्त की है। प्रोफेसर होल्ज़र ने न्यूयॉर्क इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी में आठ वर्षों तक परा मनोविज्ञान पढ़ाया है और वे ऑथर्स गिल्ड, राइटर्स गिल्ड ऑफ अमेरिका, ड्रामैटिस्ट्स गिल्ड, न्यूयॉर्क एकेडमी ऑफ साइंस और आर्कियोलॉजिकल इंस्टीट्यूट ऑफ अमेरिका के सदस्य हैं। उनका नाम हूज़ हू इन अमेरिका में शामिल है और वे न्यूयॉर्क शहर में रहते हैं।

परिचय

जैसे-जैसे हम नए सहस्राब्दी में अधिक मजबूती से प्रवेश कर रहे हैं, ब्रह्मांडीय विषयों में लोगों की रुचि बढ़ती जा रही है। यहां तक कि आम लोग भी, जो सामान्यतः ज्योतिष संबंधी लेख पढ़ना कभी नहीं चाहते, अचानक यह सोचने लगे हैं कि दूसरी सहस्राब्दी उनके और इस दुनिया के लिए क्या मायने रखेगी।

सबसे पहले तो, सहस्राब्दी का युग एक दशक से भी अधिक समय पहले बीत चुका है। यीशु का जन्म शून्य वर्ष में नहीं, बल्कि ठीक 7 ईसा पूर्व में, 9 अक्टूबर को हुआ था, जैसा कि मैंने पंद्रह वर्षों के पुरातात्विक शोध के बाद काफी समय पहले सिद्ध किया था। सहस्राब्दी का यह सारा मामला महज़ एक प्रचार था, एक ऐसा प्रचार जो लोगों को यह सोचने पर मजबूर करने के लिए रचा गया था कि वर्ष 2000 में कुछ बहुत ही खास होने वाला है। हालाँकि, इस "सहस्राब्दी" के मनोवैज्ञानिक प्रभाव हम पर पहले से ही पड़ रहे हैं—उदाहरण के लिए, अलौकिक चीजों में नए सिरे से बढ़ती रुचि के रूप में।

मानसिक घटनाओं और मानव चेतना की सीमाओं की खोज से संबंधित कई नए टीवी टॉक शो और वृत्तचित्र सामने आए हैं, जो टेलीविजन स्क्रीन को सनसनीखेज खबरों से भर देते हैं जिनमें अक्सर गहराई और पुख्ता शोध का अभाव होता है। काल्पनिक दुनियाओं की खोज भी आजकल फिल्मों, टेलीविजन, किताबों और यहां तक कि वेबसाइटों में भी बेहद सफल हो रही है।

मानसिक घटनाओं के बारे में प्रामाणिक जानकारी प्रदान करने वाले के रूप में, मैं भौतिक जगत से परे की दुनियाओं में जिज्ञासा के इस पुनरुत्थान का स्वागत करता हूं क्योंकि इन

मामलों पर विचार करने से लोग अपने बारे में, अपने अंतिम भाग्य के बारे में और स्वयं मानव जाति के स्वभाव के बारे में सोचने लगते हैं।

जब मृत्यु के बाद जीवन के ठोस प्रमाणों से निपटने की बात आती है, तो लोगों के तीन वर्ग होते हैं - और यह स्थिति लंबे समय तक बनी रह सकती है, यह देखते हुए कि मनुष्य मौलिक रूप से नई या भिन्न अवधारणाओं को अपनाने के लिए कितने प्रतिरोधी हैं।

कुछ लोग मृत्यु के बाद की दुनिया के विचार का मज़ाक उड़ाते हैं। इस श्रेणी में कट्टरपंथी वैज्ञानिकों से लेकर वे लोग भी शामिल हैं जो केवल परिचित, भौतिक दुनिया में ही संतुष्ट हैं और वास्तव में ऐसे किसी भी प्रमाण की जाँच नहीं करना चाहते जो उनके विचारों को बदल सके। अविश्वास की इच्छा, विश्वास की इच्छा से कहीं अधिक प्रबल होती है—हालाँकि दोनों ही प्रमाण या ठोस सबूत तक नहीं पहुँचते।

फिर वे लोग हैं जिन्होंने शारीरिक मृत्यु के बाद भी अस्तित्व के बने रहने के प्रमाण को स्वीकार कर लिया है, जिनमें वे लोग भी शामिल हैं जो ठोस प्रमाणों की जांच के बाद इस निष्कर्ष पर पहुंचे हैं, चाहे वे प्रमाण व्यक्तिगत हों या वैज्ञानिक रूप से मान्य स्रोत हों। मैं इस समूह का सबसे अधिक सम्मान करता हूं, क्योंकि वे अंधविश्वासी नहीं हैं। वे प्रमाणों पर सवाल उठाते हैं, लेकिन जब वे मान्य होते हैं तो उन्हें स्वीकार करने में उन्हें कोई आपत्ति नहीं होती। इस समूह में धार्मिक-आध्यात्मिक लोग भी शामिल हैं, हालांकि उन्हें अपने विश्वासों को प्रमाणित करने के लिए किसी ठोस प्रमाण की आवश्यकता नहीं होती, क्योंकि उनके विश्वास एक ऐसी प्रणाली से उत्पन्न होते हैं जिसमें इस दुनिया से परे एक दुनिया शामिल है।

तीसरे समूह को अक्सर आध्यात्मिक विचारधारा के समर्थकों द्वारा सत्य की खोज में गुमराह कर दिया जाता है। इससे उनके लिए मानसिक शक्तियों के बारे में सही निष्कर्ष पर पहुंचना और भी कठिन हो जाता है। इस तीसरे समूह के लिए सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि वे अपने सिद्धांतों पर अडिग रहें और अंधविश्वासी न बनें।

अधिकांश लोग तीसरे समूह में आते हैं। वे मानसिक घटनाओं के अस्तित्व और उनके प्रमाणों से अवगत हैं, जिनमें केस स्टडी और खुले विचारों वाले व्यक्तियों द्वारा किए गए वैज्ञानिक शोध शामिल हैं। लेकिन वे संशयवादी हो सकते हैं। वे दूसरे समूह में शामिल होने से इसलिए हिचकिचाते हैं क्योंकि जीवन और मृत्यु के प्रति उनके दार्शनिक दृष्टिकोण में इस तरह के

मूलभूत परिवर्तनों के प्रति उनका आंतरिक प्रतिरोध होता है। इसलिए, उनके लिए प्रमाण या केस स्टडी प्रस्तुत करते समय विशिष्ट होना और उनका पूरी तरह से सत्यापन योग्य होना सर्वोपरि है, साथ ही उनके घटित होने का एक स्वीकार्य स्पष्टीकरण भी आवश्यक है।

यह आशा की जाती है कि दूसरे समूह के लोग अंतिम समूह की स्थिति को स्वीकार करेंगे: कि संभावनाओं के आसपास कोई सीमा नहीं है, बशर्ते कि सबूत इसकी पुष्टि करते हों।

प्रोफेसर हंस होल्ज़र, पीएच.डी.

अध्याय एक: जीवन और मृत्यु का स्वरूप

मनुष्य क्या है? मनुष्य क्यों है? मनुष्य कैसा है?

भूतों के अस्तित्व को पूरी तरह समझने के लिए, जीवन और मृत्यु की प्रकृति को गहराई से समझना आवश्यक है। भूत, प्रेत-दर्शन, परलोक से संदेश और किसी प्रियजन या दिवंगत मित्र से जुड़े मानसिक अनुभव, ये सभी इस बात पर आधारित हैं कि अनुभव करने वाला व्यक्ति उस परलोक की वास्तविकता को स्वीकार करता है जिसमें हम सभी कभी न कभी प्रवेश करते हैं। भौतिक वास्तविकता के प्रति कट्टर आस्था रखने वाला व्यक्ति, यहाँ तक कि नास्तिक भी, इस पुस्तक के विषय से सहज महसूस नहीं करेगा। लेकिन भूतों का विषय कभी समाप्त नहीं होगा। वे हमेशा से हमारे साथ रहे हैं, अलग-अलग नामों से, समय, संस्कृति या धार्मिक मान्यताओं के अनुसार, जिनके साथ ये अनुभव हुए हैं।

यह निश्चित रूप से सामान्य त्रि-आयामी वास्तविकता के अलावा किसी अन्य वास्तविकता में विश्वास का मामला नहीं है। इसके विपरीत, यह एक जागरूकता है कि हम सभी के भीतर एक और घटक मौजूद है जो अधिकांश मामलों में पूर्णतः अक्षुण्ण रहता है, और कुछ मामलों में कुछ हद तक विचलित होकर जीवन के अगले चरण में प्रवेश करता है। संशयवादी को छोड़कर, सभी के लिए इसके प्रमाण प्रबल हैं। संशयवादी के लिए, विश्वास के कितने भी ठोस आधार क्यों न हों, यह सब हमेशा अस्वीकार्य रहेगा। सबसे बढ़कर, जीवन और मृत्यु की प्रकृति के लिए मनुष्य की प्रकृति की पूर्ण समझ आवश्यक है। इस तक निष्पक्ष दृष्टिकोण से पहुंचना चाहिए, जीवन और मृत्यु के प्रति अपने दृष्टिकोण में समायोजन करने के दार्शनिक परिणामों से भयभीत हुए बिना।

हालांकि मनुष्य चंद्रमा पर कदम रख चुका है और जल्द ही तारों तक भी पहुंचेगा, फिर भी हम यह नहीं जान पाए हैं कि हम वास्तव में क्या हैं। इस ग्रह पर लाखों वर्षों के अस्तित्व के बाद भी, हम सबसे महत्वपूर्ण प्रश्न का उत्तर देने में असमर्थ हैं: मनुष्य क्या है? मनुष्य क्यों है? मनुष्य कैसा है?

मनुष्य की समस्या को सर्वशक्तिमान सृष्टिकर्ता की इच्छा मानकर धर्म के पाँव में डाल देना, केवल प्रश्न को ही घुमाना है। यदि हम बिना सोचे-समझे किसी सर्वोच्च शक्ति द्वारा तात्कालिक सृष्टि की धारणा को स्वीकार भी कर लें, तो भी ऐसे में वे प्रश्न अनुत्तरित रह जाएँगे जो इस धारणा से तुरंत उत्पन्न होते हैं: सृष्टिकर्ता की सृष्टि किसने की?

दूसरे छोर पर जाकर, हमारे अस्तित्व को प्राकृतिक विकास की एक धीमी प्रक्रिया से जोड़ना, जिसमें पदार्थ के कण—रसायनिक कण—कुछ विशेष तरीकों से मिलकर पदार्थ के बड़े टुकड़े बने और अंततः उस अवस्था तक पहुँचे जहाँ जीवन की शुरुआत हुई, हमारे अस्तित्व की पहेली को सुलझाने का एक अधिक तर्कसंगत दृष्टिकोण लगता है। लेकिन केवल ऊपरी तौर पर। क्योंकि यदि हम विकास के सिद्धांत को स्वीकार कर लें—और इसके पर्याप्त प्रमाण मौजूद हैं—तो भी हमें उसी समस्या का सामना करना पड़ेगा जो धर्म हमें देता है: किसने चीजों को इस तरह व्यवस्थित किया कि पदार्थ के अत्यंत सूक्ष्म कण मिलकर जीवन का निर्माण करें और विकास के एक स्पष्ट रूप से व्यवस्थित क्रम का पालन करें?

चाहे हम आस्तिक हों या नास्तिक, भौतिकवादी हों या आदर्शवादी, मेरी राय में अंततः परिणाम एक ही द्वार की ओर ले जाता है। लेकिन वह द्वार बंद है। उसके पीछे वह एक बड़ा उत्तर छिपा है जिसकी खोज मनुष्य ने सजग या अचेतन रूप से सृष्टि के आरंभ से की है।

क्या मनुष्य एक जानवर है, जो प्राइमेट्स से उत्पन्न हुआ है, जैसा कि डॉ. डेसमंड मॉरिस ने अपनी पुस्तक 'द नेकेड एप' में दावा किया है? क्या वह महज एक आकस्मिक विकास है, जिसके तहत किसी समय एक बड़ा बंदर आदिम मनुष्य में बदल गया?

आज भी, यह परिकल्पना आबादी के बड़े हिस्से को स्वीकार्य नहीं है। इस परिकल्पना के प्रति घृणा का मुख्य कारण किसी प्रबुद्ध समझ से नहीं, बल्कि गहरी जड़ें जमा चुकी कट्टरपंथी धार्मिक भावनाएँ हैं, जो डार्विन से कहीं अधिक ज्ञान रखती हैं। जब धर्म विज्ञान के विरुद्ध जाता है, चाहे वह अपूर्ण विज्ञान ही क्यों न हो, तो उसकी हार निश्चित है।

दूसरी ओर, वैज्ञानिकों, डॉक्टरों और बुद्धिजीवियों द्वारा मनुष्य की उत्पत्ति के सिद्धांत का कम हिंसक लेकिन कहीं अधिक प्रभावी विरोध आज इतना व्यापक है कि इसने चर्च में आने वाले लोगों की संख्या में भारी कमी ला दी है और धार्मिक संस्थाओं को आबादी के बड़े हिस्से को वापस अपने धर्म में लाने या कम से कम उन्हें चर्च के गैर-धार्मिक पहलुओं में रुचि जगाने के

लिए नए तरीके सोचने पर मजबूर कर दिया है। लेकिन पारंपरिक विचारों को अस्वीकार करने में पेशेवर और बुद्धिजीवी अकेले नहीं हैं। कॉलेज और हाई स्कूल दोनों स्तरों पर छात्रों का एक बड़ा हिस्सा नास्तिक या घोर निराशावादी है। वे हमेशा इस स्थिति को पसंद नहीं करते, लेकिन उन्हें कोई विकल्प नहीं मिला है। कम से कम तब तक नहीं जब तक ईएसपी (अतिरिक्त संवेदी बोध) ने उन्हें एक प्रकार की अनैतिकता की झलक नहीं दिखाई जिसे उनका वैज्ञानिक प्रशिक्षण स्वीकार करने की अनुमति दे सकता था।

आम आदमी के लिए, मनुष्य क्या है, यह सवाल आज भी अनसुलझा और उतना ही पेचीदा बना हुआ है। लेकिन यह बात किसी मानसिक या रहस्यवादी व्यक्ति पर लागू नहीं होती।

विश्वभर में अधिकाधिक लोगों ने कभी न कभी मनुष्य की अमरता का प्रत्यक्ष प्रमाण देखा है। उनके लिए, उनके अपने अनुभव ही यह आश्वस्त करने के लिए पर्याप्त हैं कि हम एक वृहत्तर व्यवस्था का हिस्सा हैं, जिसमें सभी के कल्याण के लिए एक सर्वोच्च नियम कार्यरत है। वे इस सर्वोच्च शक्ति के स्वरूप पर सर्वसम्मत नहीं हैं, और वे सामान्यतः व्यक्तिगत ईश्वर की पारंपरिक अवधारणाओं को अस्वीकार करते हैं, परन्तु वे एक सुव्यवस्थित व्यवस्था के अस्तित्व और मृत्यु एवं समय की सीमाओं से परे जीवन की निरंतरता को स्वीकार करते हैं।

मृत्यु के बाद जीवन की आध्यात्मिक अवधारणाओं को अलग-अलग स्तर पर स्वीकार करने वाले कई लोग बिना सोचे-समझे ऐसा करते हैं। वे व्यक्तिगत, भावनात्मक दृष्टिकोण से विश्वास करते हैं। वे औपचारिक धर्म को अनौपचारिक धर्म से बदल देते हैं। वे एक ऐसे सिद्धांत को, जिसे वे अप्रचलित और तथ्यों के आधार पर असत्य पाते हैं, एक लचीली, प्रतीत होने वाली तर्कसंगत प्रणाली से बदल देते हैं, जिससे वे उत्साहपूर्वक जुड़ सकते हैं।

मुझे लगता है कि इन रूढ़िवादी और अपरंपरागत तत्वों के बीच कहीं न कहीं समस्या का समाधान छिपा है। यदि हम कभी मानवीय समाधान खोजना चाहते हैं और यह जानना चाहते हैं कि मनुष्य क्या है, क्यों है और कैसे है, तो हमें सभी तत्वों को ध्यान में रखना होगा, उनकी त्रुटियों को दूर करना होगा और मूल तथ्यों को बनाए रखना होगा। तथ्यों को आपस में जोड़कर, हम एक ऐसी विचार संरचना का निर्माण कर सकते हैं जो समस्या का समाधान कर सके और हमें वे अंतिम उत्तर दे सके जिनकी हम तलाश कर रहे हैं।

जीवन क्या है? जन्म से ही जीवन क्रमिक विकास की एक प्रक्रिया है, जो प्रत्येक मनुष्य में अलग-अलग चरणों में विभाजित होती है। भौतिकवादी विज्ञान इन अनूठी प्रवृत्तियों का श्रेय केवल पर्यावरण और पैतृक गुणों को देना पसंद करता है। ज्योतिष, जो उचित उपयोग किए जाने पर एक अत्यंत सम्मानित विद्या है, का दावा है कि ग्रहों, सूर्य और चंद्रमा से निकलने वाला विकिरण नवजात शिशु के शरीर को जन्म से ही प्रभावित करता है, या कुछ ज्योतिषीय मतों के अनुसार, गर्भाधान के क्षण से ही। ज्योतिषीय सिद्धांत को सिरे से खारिज नहीं किया जाना चाहिए। आखिरकार, मानव निर्मित परमाणु बमों के विकिरण ने हिरोशिमा के बच्चों को प्रभावित किया था, और ब्रह्मांड से निकलने वाला विकिरण कहीं अधिक व्यापक और दीर्घकालिक है। विकिरण के प्रभावों के बारे में हमें अभी तक बहुत कम जानकारी है।

यह बात अब चिकित्सा विज्ञान भी नकार नहीं सकता कि मनुष्य मूलतः एक दोहरा प्राणी है। यदि मनुष्य के मन की मान्यता न होती, भले ही मन अदृश्य हो, तो मनोचिकित्सा का अस्तित्व ही संभव नहीं होता। गूढ़ शिक्षाएँ इससे भी आगे जाती हैं: मनुष्य में आत्मा होती है, और यह जन्म के समय नवजात शिशु के शरीर में प्रवेश करती है। अब यदि आत्मा जन्म के समय या उससे ठीक पहले शरीर में प्रवेश करती है, तो इस मत के अनुसार भ्रूण का कोई व्यक्तित्व नहीं होता, और गर्भपात "पाप" नहीं है। कुछ रूढ़िवादी धर्म इस मत को नहीं मानते और अजन्मे बच्चे को भी पूर्ण व्यक्ति मानते हैं। इन दोनों कथनों को वस्तुनिष्ठ रूप से सिद्ध करना काफी कठिन है, लेकिन वैज्ञानिक और तर्कसंगत रूप से यह सिद्ध करना असंभव नहीं है कि जन्म के बाद मनुष्य में एक गैर-भौतिक घटक होता है, जिसे आत्मा, मानस, साई या व्यक्तित्व कहा जाता है।

तो फिर मृत्यु क्या है? किसी बीमारी या महत्वपूर्ण अंग की खराबी के कारण शरीर के कार्यों का रुक जाना, जन्म के समय घटी प्रक्रिया को उलट देता है। अब मनुष्य के दो घटक फिर से अलग हो जाते हैं और अलग-अलग दिशाओं में चले जाते हैं। अपनी कार्यशक्ति से वंचित शरीर, मात्र एक खोल रह जाता है और पदार्थ पर लागू होने वाले सामान्य नियमों के अधीन होता है। वातावरण के प्रभाव से यह तेजी से विघटित हो जाता है और इसलिए सभी संस्कृतियों में इसका शीघ्र निपटान कर दिया जाता है। यह विभिन्न रूपों में पृथ्वी में लौट जाता है और अपने मूलभूत रसायनों को मिट्टी या जल में मिला देता है।

दूसरी ओर, आत्मा अपनी यात्रा जारी रखते हुए उस दुनिया में प्रवेश करती है जिसे ड्यूक विश्वविद्यालय के दिवंगत डॉ. जोसेफ राइन ने "मन की दुनिया" कहा था। यानी, जो लोग आत्मा में विश्वास रखते हैं, उनके लिए यह मन की दुनिया में प्रवेश करती है; जो लोग आत्मा के अस्तित्व को ही नकारते हैं, उनके लिए सड़ता हुआ शरीर मृत्यु के बाद मनुष्य के अवशेषों का प्रतीक है। यही धारणा मृत्यु के भय को जन्म देती है, जीवन के प्रति निराशावादी दृष्टिकोण को बढ़ावा देती है और "मृत्यु अंत है," "कब्रिस्तान से डरो," और "अंत्येष्टि एक गंभीर अवसर है" जैसे भावों को बल देती है।

विभिन्न संस्कृतियों में मृत्यु के अलग-अलग अर्थ होते हैं। आदिम मनुष्य के लिए यह एक प्रतिशोधी देवता थी जो प्रियजनों को तब छीन लेती थी जब उनकी अभी भी आवश्यकता होती थी।

मध्य युग के धर्मनिष्ठ ईसाई के लिए, मृत्यु वह दंड था जिससे व्यक्ति को जीवन भर डरना पड़ता था, क्योंकि मृत्यु के बाद ही हिसाब-किताब होता था।

पश्चिम अफ्रीकी और उनके दूर के रिश्तेदार, हाईटियन, "पापा नेबो" नामक एक पंथ में मृत्यु की पूजा करते हैं।

स्पेनिश और आयरिश कैथोलिक मृत्यु के अवसरों को विस्तृत उत्सवों के साथ मनाते हैं, क्योंकि वे चाहते हैं कि दिवंगत आत्मा को परलोक में अच्छा स्वागत मिले।

केवल पूर्व में ही मृत्यु को सौम्य माना जाता है। चीनियों, भारतीयों और प्राचीन मिस्रियों की आध्यात्मिक रूप से उन्नत मान्यताओं में, मृत्यु अंत नहीं बल्कि आरंभ थी। मृत्यु उच्च चेतना का द्वार थी, और इसी दर्शन के कारण पश्चिम में प्रचलित अंत्येष्टि के नीरस पहलू पूर्वी रीति-रिवाजों में पूरी तरह से अनुपस्थित हैं। वे भी अंत्येष्टि करते हैं, लेकिन उस अंतिम विदाई और उदासी के भाव के साथ नहीं जो पश्चिमी अवधारणा में व्याप्त है। शायद इस सौम्यता का संबंध पूर्व के लोगों के परलोक में दृढ़ विश्वास से है, जबकि पश्चिमी जगत, कुछ कट्टरपंथियों को छोड़कर, जिनके लिए बाइबिल ने सब कुछ स्पष्ट कर दिया है, परलोक में विश्वास तो रखता है, लेकिन उसके अस्तित्व में कोई वास्तविक दृढ़ विश्वास नहीं रखता।

शायद ही कोई ऐसा धर्म हो जो किसी न किसी रूप में मृत्यु के बाद जीवन की निरंतरता को स्वीकार न करता हो। कुछ "सुधारवादी" यहूदी धर्म और कुछ अत्यंत उदार ईसाई संप्रदाय

आत्मा और मृत्यु के बाद उसके अस्तित्व में विश्वास के बजाय अपने धर्मों के नैतिक पहलुओं पर ज़ोर देते हैं, जबकि स्वर्ग या नरक की परिभाषा अस्पष्ट है। अपने शुद्ध मार्क्सवादी रूप में साम्यवाद, जो कि एक प्रकार का धर्म ही है, आत्मा की अवधारणा की घोर निंदा करता है।

कोई भी धार्मिक आस्था अमरता के अपने सिद्धांतों को वैज्ञानिक रूप से मान्य साबित करने का प्रयास नहीं करती। रूढ़िवादी कैथोलिक धर्म इस तरह की खोज को अवांछित मानता है या कम से कम इसे केवल चर्च के पेशेवर पदानुक्रम के भीतर के लोगों के लिए ही उचित समझता है। कुछ प्रोटेस्टेंट संप्रदाय, विशेषकर कट्टरपंथी, बाइबिल के उन अंशों में सांत्वना पाते हैं जिनकी वे व्याख्या मृत्यु से संबंधित किसी भी प्रकार के संबंध या मानसिक घटनाओं से जुड़े किसी भी विषय की खोज के विरुद्ध मानते हैं। हालांकि, अधिकांश धर्म इस बात के वस्तुनिष्ठ प्रमाण की खोज को न तो प्रोत्साहित करते हैं और न ही मना करते हैं कि चर्च द्वारा विश्वास के आधार पर प्रचारित बातों का वस्तुनिष्ठ तथ्यों में कोई आधार हो सकता है।

यह स्पष्ट है कि एक कदम दूसरे कदम को जन्म देता है। यदि हम आत्मा की वास्तविकता को स्वीकार करते हैं, तो हमें स्वयं से यह प्रश्न भी पूछना चाहिए कि मृत्यु के बाद आत्मा कहाँ जाती है? इस प्रकार, मनुष्य के स्वभाव के प्रति रुचि सहज रूप से उस संसार के बारे में जिज्ञासा में परिणत होती है जिसमें आत्मा अपने पूर्व निवास को छोड़ने के बाद निवास करती है।

एक बार फिर, धर्म ने हमें परलोक के बारे में ढेरों विवरण दिए हैं, जिनमें से कई मानवीय शैली में गढ़े गए हैं और उनमें मानव निर्मित न्याय के तत्व शामिल हैं, लेकिन उनमें तथ्यात्मकता बहुत कम है।

जिज्ञासु व्यक्तियों को तब तक प्रतीक्षा करनी होगी जब तक वे स्वयं गैर-भौतिक जगत में न पहुंच जाएं, या उन्हें यह पता लगाने के लिए कई माध्यमों में से किसी एक का उपयोग करना होगा कि गैर-भौतिक जगत कैसा है।

जब अनुभव प्रत्यक्ष होता है, तो व्यक्ति को केवल अपनी स्थिति या अस्तित्व की अवस्था पर ही विचार करना होता है; परलोक के बारे में जानने के लिए अंतिम कदम की प्रतीक्षा करना या उसे उठाना निश्चित रूप से एक सीधा दृष्टिकोण है।

मृतकों से संवाद करने की इच्छा उतनी ही पुरानी है जितनी कि मानवता। आदिम मनुष्य को जैसे ही यह अहसास हुआ कि मृत्यु उसे किसी प्रियजन से अलग कर सकती है और वह उस

व्यक्ति के जाने को रोक नहीं सकता, उसने दूसरे सबसे अच्छे विकल्प के बारे में सोचा: एक बार चले जाने के बाद, वह मृत व्यक्ति से कैसे संवाद कर सकता है? क्या वह उसे वापस ला सकता है? क्या वह अंततः उससे मिल पाएगा?

ये वे मूल तत्व हैं, साथ ही प्रकृति में देखी गई कुछ शक्तियां भी हैं, जिन्होंने प्रारंभिक धर्मों की संरचना में योगदान दिया है।

लेकिन आदिम मनुष्य को अपने आसपास की प्रकृति की बहुत कम या बिल्कुल भी समझ नहीं थी, इसलिए उसने उन सभी शक्तियों को मानवीकृत कर दिया जिन्हें वह समझ या अनुकरण नहीं कर सकता था। मृत्यु एक महान और भयावह शक्ति का प्रतीक बन गई जो कहीं दूर अंधकार के राज्य में शासन करती थी। किसी बिछड़े हुए प्रियजन से संवाद करने के लिए, किसी को मृत्यु की अनुमति लेनी पड़ती थी या उसे मात देनी पड़ती थी। किसी प्रियजन से मिलने के लिए मृत्यु की अनुमति प्राप्त करना दुर्लभ था (उदाहरण के लिए, ओर्फियस और यूरीडाइस की कहानी)।

मृत्यु को मात देना और भी कठिन था। आम आदमी कभी सफल नहीं हुआ, न ही वह धनी फ़ारसी व्यापारी जो समारा भाग गया, जहाँ उसे मृत्यु का इंतज़ार मिला। इन उदाहरणों में मृत्यु स्वयं मनुष्य का इंतज़ार कर रही थी, और यह सवाल मृत्यु को पार करके उसके राज्य में जाकर मृतक से मिलने का नहीं था। लेकिन इससे पता चलता है कि आदिम और प्राचीन मनुष्य की साक्षात मृत्यु कितनी सर्वज्ञ थी।

पश्चिम अफ़्रीकी युग में मृतकों से संपर्क करने का जो तरीका प्रचलित है, जिसे हैती के लोग आज भी अपनाते हैं, वह है पानी के माध्यम से संवाद करना; इसमें भी या तो जादू-टोने के देवताओं से बचना होता है या उन्हें प्रसन्न करना। आदिम समाज में मृतकों से संवाद करना कभी आसान नहीं होता।

पूर्व में, जहाँ पूर्वजों की पूजा धार्मिक नैतिकता का अभिन्न अंग है, पुरोहित के स्थापित माध्यम से संवाद संभव है, लेकिन इसके लिए विशेष अवसर होना आवश्यक है। यहाँ भी पूर्वजों द्वारा जीवित लोगों को दिए गए आदेशों का सम्मानपूर्वक पालन किया जाता है। पूर्वी मूल की धार्मिक अवधारणाओं में गहराई से जाने पर, हम जीवित और मृत के बीच ऐसा निरंतर अंतर्संबंध पाते हैं कि समझ में आता है कि कुछ एशियाई लोग मृत्यु से क्यों नहीं डरते या

पश्चिमी लोगों की तरह समान परिस्थितियों में सावधानी क्यों नहीं बरतते। उनके लिए मृत्यु कोई अजनबी, दंड या शारीरिक रूप से किए गए पापों का भय उत्पन्न करने वाला प्रतिशोध नहीं है।

आधुनिक युग में, केवल अध्यात्मवाद ने ही मृतकों के विषय को कुछ हद तक तर्कसंगत दृष्टिकोण से देखा है, हालांकि इसकी विश्वसनीयता की नींव कभी-कभी बहुत कमजोर होती है। मानव व्यक्तित्व के अस्तित्व के प्रमाण निश्चित रूप से मौजूद हैं, फिर भी अध्यात्मवाद मनुष्य के उन तत्वों की अनदेखी करता है जो नश्वर तो हैं लेकिन भौतिक नहीं हैं, और पांचों इंद्रियों से परे हर चीज का श्रेय मृतकों को देता है। लेकिन आंतरिक संवेदना (ईएसपी) पर हुए शोध से पता चला है कि इनमें से कुछ अनुभव आत्मा के हस्तक्षेप के कारण नहीं होते, हालांकि इन्हें पारंपरिक विज्ञान के आधार पर स्पष्ट नहीं किया जा सकता। हम अपने देहधारी रूप में ईएसपी का अनुभव करते हैं और अपने मन की अद्भुत क्षमताओं का पूरी तरह से उपयोग बहुत कम ही करते हैं।

फिर भी, अधिकांश अध्यात्मवादी मान्यताओं की पुष्टि की जा सकती है। मैंने कुछ बेहतरीन अध्यात्मवादी माध्यमों के साथ काम करके "परलोक" से संपर्क स्थापित करने के बारे में जाना है। क्योंकि अध्यात्मवादी मान्यताओं का मूल आधार मृतकों से संवाद करना है। यदि यह संभव है, तो स्पष्ट रूप से अध्यात्मवाद एक उत्कृष्ट धर्म होने का प्रबल दावा करता है, बल्कि इससे भी कहीं अधिक। यदि यह दावा निराधार है, तो अध्यात्मवाद अब तक के सबसे क्रूर धोखों में से एक होगा, जो मनुष्य की गहरी भावनाओं को छलित करता है।

यह मानते हुए कि मृत आत्माएं हमारे भौतिक संसार से परे एक अन्य संसार में विद्यमान हैं और जीवित हैं, उस परलोक की प्रकृति और उसे नियंत्रित करने वाले नियमों को जानना अत्यंत रुचिकर होगा। मध्ययुगीन रहस्यवादियों द्वारा वर्णित "मृत्यु की कला" को समझना और मृत्यु नामक इस संक्रमण की प्रकृति को बेहतर ढंग से समझना महत्वपूर्ण होगा।

मृतकों से आबाद एक गैर-भौतिक दुनिया के अस्तित्व को स्वीकार करने के बाद, हमें आगे इन दोनों दुनियाओं के बीच निरंतर संपर्कों और इन संचारों की दो-तरफ़ा प्रकृति की जांच करनी चाहिए: वे संपर्क जो जीवितों द्वारा शुरू किए जाते हैं, और वे जो मृतकों द्वारा किए जाते हैं।

तथाकथित स्वतःस्फूर्त घटनाओं का अवलोकन उतना ही महत्वपूर्ण होगा जितना कि कृत्रिम प्रयोग या संपर्क स्थापित करने के प्रयास। इन सबमें हमें छल, गलत व्याख्या या आत्म-भ्रम से सावधान रहना होगा। जब तक इस अन्वेषण में मानवीय क्षमता शामिल है, हमें अपनी कमजोरियों और सीमाओं को स्वीकार करना होगा। सुरक्षा उपायों को अपनाकर हम उन आश्चर्यजनक तथ्यों के प्रति अपना मन बंद नहीं कर लेते जो प्रकट हो सकते हैं, सिर्फ इसलिए कि वे तथ्य वर्तमान सोच के विपरीत प्रतीत होते हैं। यदि हम सावधानी से आगे बढ़ते हैं, तो हम कुछ ऐसा योगदान दे सकते हैं जो संकटग्रस्त मानवता को नई आशा, नए मूल्य और नई दिशाएँ प्रदान करेगा।

मृत्यु से वापसी

उन लोगों की गवाही से अधिक विश्वसनीय कुछ भी नहीं हो सकता जो वास्तव में उस परलोक में जा चुके हैं और "कहानी सुनाने" के लिए वापस आ गए हैं। यह सामग्री उन कई घटनाओं की पुष्टि करती है जो व्यक्तिगत अनुभवों के माध्यम से और साथ ही कुशल मानसिक विशेषज्ञों और माध्यमों की सहायता से कई लोगों को ज्ञात हुई हैं।

हालांकि मृतकों से संवाद के प्रमाण उस परलोक की स्थितियों और नियमों का समर्थन करने वाली अधिकांश सामग्री प्रदान करेंगे, हमारे पास उन लोगों की भी कई गवाहियाँ हैं जो परलोक में गए तो थे लेकिन वहाँ नहीं रुके। इन मामलों में ऐसे लोग शामिल हैं जो अस्थायी रूप से अपने भौतिक अस्तित्व से अलग हो गए थे—हालांकि, वे स्थायी रूप से उससे अलग नहीं हुए थे—और उस अवस्था में पहुँच गए जिसे हम मृत्यु कहते हैं। ये मुख्य रूप से दुर्घटना के शिकार लोग हैं जो ठीक हो गए और वे लोग हैं जिनकी सर्जरी हुई और बेहोशी की अवस्था के दौरान वे अपने भौतिक शरीर से अलग हो गए और एक नए दृष्टिकोण से अपने साथ हो रही घटनाओं को देख पाए। इसके अलावा, कुछ लोग एक प्रकार की स्वप्न अवस्था में परलोक गए

और वहाँ की स्थितियों को देखा जिन्हें वे पूरी तरह से जागृत अवस्था में लौटने पर याद रख पाए।

मैं इन मामलों को सपने कहना उचित नहीं समझता, क्योंकि जैसा कि मैंने सपनों के मानसिक पहलू पर लिखे अपने एक अन्य लेख में पहले ही बताया है, स्वप्न अवस्था में अनेक स्थितियाँ शामिल होती हैं, जिनमें से कुछ वास्तव में सपने नहीं होतीं, बल्कि सीमित चेतना और बाहरी जानकारी ग्रहण करने की अवस्थाएँ होती हैं। शरीर से बाहर के अनुभव, जिन्हें पहले सूक्ष्म यात्रा के नाम से जाना जाता था, उन्हें भी अक्सर सपनों की श्रेणी में रखा जाता है, जबकि वास्तव में वे एक प्रकार की यात्रा है जिसमें व्यक्ति भौतिक शरीर से बाहर निकलता है।

मैं जिस मामले को प्रस्तुत करने जा रहा हूँ, वह मेरी जानकारी के अनुसार, सामान्य व्यक्तियों के सच्चे अनुभव हैं। मैंने हमेशा मनोरोग उपचार करा रहे किसी भी व्यक्ति से सामग्री स्वीकार करने से परहेज किया है, इसलिए नहीं कि मैं ऐसी गवाही को पूरी तरह से नकारता हूँ, बल्कि इसलिए कि मेरे कुछ पाठक ऐसा कर सकते हैं।

जैसा कि डॉ. रेमंड मूडी ने अपने काम में उल्लेख किया है, इन बाल-बाल बचने के अनुभवों में एक निश्चित पैटर्न होता है, यानी उन लोगों के अनुभव जो परलोक गए और फिर लौट आए। वे "जीवन के दूसरे पक्ष" की स्थितियों के बारे में जो बताते हैं, वह अक्सर अन्य लोगों द्वारा बताई गई बातों से मिलता-जुलता होता है, फिर भी गवाहों को एक-दूसरे के अनुभवों के बारे में कोई जानकारी नहीं होती, वे कभी मिले नहीं होते, और उन्होंने कोई ऐसा साझा स्रोत नहीं पढ़ा होता जिससे वे जांचकर्ता को गुमराह करने की कोशिश में ऐसी सामग्री प्राप्त कर सकें, जो निश्चित रूप से वे नहीं करते। वास्तव में, इनमें से कई गवाहियाँ अनिच्छा से दी जाती हैं, उपहास के डर से या शायद इसलिए कि व्यक्ति स्वयं यह नहीं जानते कि इसका क्या अर्थ निकाला जाए। किसी धार्मिक उपदेशक के कट्टर उत्साह से दूर, जिन लोगों के मामले मेरे ध्यान में लाए गए हैं, वे किसी को कुछ भी समझाने की इच्छा नहीं रखते, बल्कि केवल अपने जीवन में घटी घटनाओं को बताना चाहते हैं। इन रिपोर्टों को प्रकाशित करके, मैं यह जानकारी उन लोगों के लिए उपलब्ध करा रहा हूँ जिन्होंने शायद इसी तरह के अनुभव किए हों और उनके बारे में सोचा हो।

मैं इस बात पर ज़ोर देना चाहता हूँ कि जिन मामलों का वर्णन मैं आगे के पन्नों में कर रहा हूँ, वे उन मामलों की श्रेणी में नहीं आते जिन्हें कई चिकित्सक मतिभ्रम, मानसिक विकार या कल्पना कहते हैं। इन अनुभवों की स्पष्टता, बाद में उनका पूर्ण स्मरण, विभिन्न क्षेत्रों में रहने वाले लोगों द्वारा बताए गए अनुभवों में कई समानताएँ, और अंत में, अनुभव के समय अनुभवकर्ताओं की शारीरिक स्थिति, ये सभी कारक इस बात को पूरी तरह से नकारते हैं कि ऐसे अनुभव मतिभ्रम से उत्पन्न होते हैं।

पश्चिमी राज्यों में से एक की निवासी श्रीमती वर्जीनिया एस. ने अतीत में प्रबंधन और व्यवसाय में विभिन्न जिम्मेदार पदों पर कार्य किया था। 13 मार्च, 1960 को, जैसा कि उन्होंने बताया, उनकी मांसपेशियों की मरम्मत के लिए उनका ऑपरेशन हुआ। ऑपरेशन के दौरान, उनका इतना खून बह गया कि उन्हें चिकित्सकीय रूप से मृत घोषित कर दिया गया। फिर भी, सर्जनों ने उन्हें होश में लाने के लिए जी-तोड़ मेहनत की और वे ठीक हो गईं। श्रीमती एस. ने उस दौरान जो अनुभव किया, जब चिकित्सा दल उनमें जीवन का कोई संकेत नहीं देख पा रहा था, वह इस प्रकार है:

“मैं एक चट्टान पर चढ़ रही थी और हवा में सीधी खड़ी थी। उसके आसपास कुछ भी नहीं था; वह बिल्कुल सपाट लग रही थी। उस दीवार के शीर्ष पर लगभग दो फुट ऊंची एक और पत्थर की रेलिंग थी। मैंने दीवार के ऊपर से खुद को खींचने के लिए किनारे को पकड़ा, और तभी मेरे पिता, जो अब इस दुनिया में नहीं हैं, प्रकट हुए और मुझे नीचे देखा। उन्होंने कहा, ‘तुम अभी ऊपर नहीं आ सकती; वापस जाओ, तुम्हें अभी कुछ काम करना बाकी है।’ मैंने नीचे देखा और नीचे जाने लगी और अगली ही पल मैंने ये शब्द सुने, ‘वह वापस आ रही है।’”

ब्रिटिश कोलंबिया में रहने वाली लगभग पैंतीस वर्ष की श्रीमती जे. एल. एच. को अपने सौतेले पिता जॉर्ज एच. के अंतिम संस्कार से लौटते समय एक चौंकाने वाला अनुभव हुआ। वह अपने एक मित्र क्लेरेंस जी. के साथ गाड़ी चला रही थीं और तभी एक भीषण दुर्घटना हो गई। क्लेरेंस की मौके पर ही मृत्यु हो गई और श्रीमती एच. गंभीर रूप से घायल हो गईं। श्रीमती एच. ने बताया, “मुझे कुछ याद नहीं है सिवाय इसके कि मुझे अपनी ओर आती हुई गाड़ियों की बत्तियाँ दिखाई दीं, क्योंकि मैं सो रही थी। मुझे सबसे पहले याद है कि मेरे सौतेले पिता जॉर्ज को धुंध में से आगे बढ़े और मेरे बाएं कंधे पर हाथ रखा। उन्होंने कहा, ‘जून, वापस जाओ,

अभी समय नहीं हुआ है।' मैं उनके हाथ का भार अपने कंधे पर महसूस करते हुए जाग उठी।"

इस मामले की विचित्र बात यह है कि दो लोग एक ही दुर्घटना का शिकार हुए, फिर भी उनमें से एक की जान खतरे में थी जबकि दूसरे की नहीं। श्रीमती एच. अपनी चोटों से उबरकर घर लौटीं, तो एक रात उनकी नींद खुली और उन्होंने अपने बिस्तर के छोर पर एक आकृति को देखा जो उनकी ओर हाथ बढ़ाए खड़ी थी, मानो उन्हें अपने साथ चलने के लिए कह रही हो। जब उन्होंने बत्ती जलाई, तो वह आकृति गायब हो गई, लेकिन बत्ती बंद करते ही वह फिर से प्रकट हो जाती थी। बाद में जब वह आकृति प्रकट हुई, तो उसने श्रीमती एच. को बिस्तर से उठाने की कोशिश की, उनके ऊपर से सारे कंबल हटा दिए, और फिर उन्हें बत्ती जलाकर सोने के लिए मजबूर किया। ऐसा लगता है कि क्लेरेंस यह नहीं समझ पा रहा था कि वह अपने दोस्त के बिना इस दुनिया से चला गया है।

कनाडा की रहने वाली श्रीमती फिलिस जी. को मार्च 1949 में एक बेहद असाधारण अनुभव हुआ। उन्होंने अपने घर पर जुड़वां बेटों को जन्म दिया था और प्रसव प्रक्रिया सामान्य और स्वाभाविक लग रही थी। लेकिन शाम होते-होते उन्हें तेज सिरदर्द होने लगा। सुबह तक वे बेहोश हो गईं और मस्तिष्क रक्तस्राव के कारण उन्हें अस्पताल ले जाया गया। वे तीन दिनों तक बेहोश रहीं, इस दौरान डॉक्टरों ने उनकी जान बचाने की पूरी कोशिश की। इसी दौरान उन्हें एक बेहद असाधारण अनुभव हुआ।

"मेरे पति की दादी का पिछले अगस्त में निधन हो गया था, लेकिन जब मैं बेहोश थी, तब वे मेरे पास आईं। उन्होंने एकदम सफेद वस्त्र पहना हुआ था और उनके चारों ओर प्रकाश चमक रहा था। मुझे ऐसा लगा जैसे वे किसी सुंदर, शांत घास के मैदान में हों। उन्होंने अपनी बाहें मेरी ओर फैलाईं और मेरा नाम पुकारा। 'फिलिस, मेरे साथ आओ।' मैंने उनसे कहा कि यह संभव नहीं है क्योंकि मुझे अपने बच्चों की देखभाल करनी है। उन्होंने फिर कहा, 'फिलिस, मेरे साथ आओ, तुम्हें यहाँ बहुत अच्छा लगेगा।' मैंने एक बार फिर उनसे कहा कि यह संभव नहीं है, मैंने कहा, 'दादी, मैं नहीं आ सकती। मुझे अपने बच्चों की देखभाल करनी है।' इस पर उन्होंने कहा, 'मुझे किसी को ले जाना होगा। मैं जेफरी को ले जाऊंगी।' मुझे इस पर कोई आपत्ति नहीं थी, और दादी धीरे-धीरे इस दुनिया से विदा हो गईं।" श्रीमती जी. होश में आ गईं, और उनके

बेटे जेफरी, जो दो जुड़वा बच्चों में से पहला था, को भी नहीं ले जाया गया और अट्ठाईस साल की उम्र में वह बिल्कुल ठीक था। हालांकि, उनकी मां के मन में एक चिंता बनी रहती थी कि शायद उनका जीवन उतना लंबा न हो जितना होना चाहिए। जब उनकी दादी प्रकट हुईं, उस समय श्रीमती जी को चिकित्सकीय रूप से मृत मान लिया गया था।

ऐसे कई मामले दर्ज हैं जिनमें व्यक्ति ठीक होने की उम्मीद होने के बावजूद, चेतना और शरीर के बीच के संबंध कमजोर होने लगते हैं, और इस दौरान वह एक अलग ही आयाम का हिस्सा बनने लगता है। कैलिफोर्निया की श्रीमती जे. पी. ने मुझे एक दिलचस्प मामला बताया। जब श्रीमती पी. किशोरी थीं, तब उन्हें फ्लू हो गया था और वे धीरे-धीरे ठीक होने लगी थीं, तभी उन्हें एक बेहद असामान्य अनुभव हुआ।

एक सुबह उसके माता-पिता यह देखने के लिए उसके शयनकक्ष में आए कि वह कैसी है। “कुछ मिनट बाद मैंने उनसे पूछा कि क्या उन्हें वह मधुर संगीत सुनाई दे रहा है। मुझे आज भी याद है कि मेरे पिता ने मेरी माँ की ओर देखा और कहा, ‘वह बेहोश है।’ मैंने इस बात से साफ इनकार कर दिया। जल्द ही वे चले गए। जब मैंने अपने दूसरी मंजिल के शयनकक्ष की खिड़की से उन हरे-भरे पहाड़ों की ओर देखा जिनसे मुझे बेहद प्यार है, तो मुझे एक ऐसा दृश्य दिखाई दिया जिसने सचमुच मेरी सांसें रोक दीं। वहाँ, पेड़ों के ऊपर, एक खूबसूरत गिरजाघर जैसी इमारत थी जिससे वह मधुर संगीत निकल रहा था। फिर मुझे ऐसा लगा जैसे मैं ऊपर से लोगों को देख रही हूँ। हर कोई गा रहा था, लेकिन पृष्ठभूमि संगीत ने मेरी आत्मा को रोमांचित कर दिया। सफेद वस्त्र पहने कोई व्यक्ति गायन का नेतृत्व कर रहा था। गिरजाघर का भीतरी भाग मुझे अजीब सा लगा। बाद के वर्षों में, जब मैंने एक एपिस्कोपल चर्च और एक कैथोलिक चर्च में प्रार्थना सभाओं में भाग लिया, तब मुझे एहसास हुआ कि मैंने जो गिरजाघर का सामने का हिस्सा देखा था, वह खूबसूरत वेदी के साथ कैथोलिक शैली का था। वह दृश्य धुंधला पड़ गया। दो साल बाद, जब मैं फिर से बीमार पड़ी, तो वह दृश्य और संगीत फिर से याद आ गया।”

5 जनवरी, 1964 को, पिट्सबर्ग, पेनसिल्वेनिया के श्री आर. जे. आई. को रक्तस्रावी अल्सर के साथ अस्पताल ले जाया गया। भर्ती होते ही उन्हें एक इंजेक्शन लगाया गया और वे बेहोश हो

गए। रक्तस्राव रोकने के लिए तुरंत प्रयास किए गए और अंततः उनका ऑपरेशन किया गया। ऑपरेशन के दौरान, श्री आई. का 15 पाइंट खून बह गया, उन्हें दौरे पड़े और उनका तापमान 106 डिग्री था। वे मृत्यु के बेहद करीब थे और उनके चर्च के अनुसार उन्हें अंतिम संस्कार दिया गया। हालांकि, बेहोशी की अवस्था के दौरान उन्हें एक अद्भुत अनुभव हुआ। "जिस दिन मेरे डॉक्टर ने मेरी पत्नी को बताया कि मेरे पास जीने के लिए केवल एक घंटा बचा है, उसी दिन बेहोशी की हालत में मैंने देखा कि काले बालों और सोने की बेल्ट वाले सफेद वस्त्र पहने एक व्यक्ति वेदी के पीछे से आया, मेरी ओर देखा और अपना सिर हिलाया। मुझे एक लंबे हॉल में ले जाया गया और मेरे लिए बैंगनी वस्त्र बिछाए गए। उस हॉल में कई मोमबत्तियां जलाई गई थीं।"

इस तरह के कई मामले तब होते हैं जब किसी व्यक्ति को सर्जरी के लिए तैयार किया जा रहा होता है या सर्जरी हो रही होती है; कभी-कभी एनेस्थेटिक के प्रभाव से वियोग की प्रक्रिया आसान हो जाती है। इसका यह अर्थ नहीं है कि एनेस्थेटिक दवाओं के प्रभाव में या रक्त की कमी के कारण या किसी अन्य शारीरिक कारण से लोगों को मतिभ्रम होना ही चाहिए। यदि मृत्यु भौतिक शरीर और सूक्ष्म शरीर के बीच के संबंध का टूटना है, तो यह तर्कसंगत है कि इस संबंध के किसी भी तरह से कमजोर होने से सूक्ष्म शरीर अपने भौतिक शरीर से अलग हो सकता है, हालांकि यह अभी भी किसी अदृश्य चांदी की डोरी या किसी ऐसे अदृश्य बंधन से जुड़ा रहता है जिसे हम अभी तक पूरी तरह से नहीं समझते हैं। अन्यथा, परलोक से लौटने वाले लोग ऐसा नहीं करते।

कनाडा की निवासी श्रीमती जे. एम. अक्टूबर 1956 में अपने चौथे बच्चे की उम्मीद कर रही थीं।

"कुछ गड़बड़ हो गई, और जब मुझे प्रसव पीड़ा हुई तो मैं बेहोश हो गई। मेरे डॉक्टर को बुलाया गया, और मुझे याद है कि उन्होंने मुझसे कहा कि वे कोई एनेस्थेटिक नहीं दे सकते क्योंकि उन्हें ऑपरेशन करना पड़ सकता है। फिर मैं बेहोश हो गई, लेकिन मैं उन्हें बोलते हुए और खुद को उनसे बात करते हुए सुन सकती थी। फिर मैं उन्हें और नहीं सुन पाई, और मैंने खुद को एक नदी के किनारे पाया, जिसके दूसरी तरफ हरी घास और सफेद इमारतें थीं। मुझे पता था कि अगर मैं नदी पार कर जाऊं तो मैं फिर कभी नहीं थकूंगी, लेकिन वहां कोई पुल

नहीं था और पानी बहुत उबड़-खाबड़ था। मैंने पीछे मुड़कर देखा और खुद को वहीं अस्पताल में लेटा हुआ पाया, मेरे चारों ओर नर्स और डॉक्टर थे, और डॉ. एम. ने मेरी गर्दन के पीछे हाथ रखा हुआ था और वे मुझे बुला रहे थे, और वे इतने चिंतित दिख रहे थे कि मैं समझ गई कि मुझे वापस जाना होगा। मैंने बच्चे को जन्म दिया, और फिर मैं कमरे में वापस आ गई और डॉक्टर ने मेरे पति को बताया कि क्या हुआ था। मैंने उनसे पूछा कि उन्होंने मेरी गर्दन पर हाथ क्यों रखा हुआ है, और उन्होंने जवाब दिया कि मेरे शरीर में यही एक जगह थी जहां उन्हें नब्ज महसूस हो रही थी और एक मिनट से अधिक समय तक उन्हें वहां नब्ज महसूस नहीं हुई। क्या यह वही समय था जब मैं नदी किनारे खड़ा था?

डेबोरा बी. कैलिफोर्निया में रहने वाली एक युवती हैं, जिन्हें मानसिक अनुभवों का लंबा इतिहास रहा है। कई बार, जब वह किसी भावनात्मक स्थिति में गहराई से डूबी होती हैं, तो उन्हें वह अवस्था अनुभव होती है जिसे हम परा मनोवैज्ञानिक व्यक्तित्व विच्छेद कहते हैं। एक क्षण के लिए, वह एक दूसरे आयाम में झाँक सकती हैं, ऐसे दिव्य अनुभव प्राप्त कर सकती हैं जो उनके आसपास के अन्य लोगों को दिखाई या महसूस नहीं होते। ऐसी ही एक घटना डेबोरा के साथ स्कूल में नाट्य कला की कक्षा के दौरान घटी। उन्होंने अपनी स्क्रिप्ट से नज़रें उठाकर देखा और पाया कि "एक व्यक्ति बहते हुए सफेद वस्त्र में वहाँ खड़ा था, मेरी ओर घूर रहा था, उसके सुनहरे या सुनहरे बाल कंधों तक लंबे थे; उसके चारों ओर एक धुंध छाई हुई थी। मैं उसका चेहरा ठीक से नहीं देख पाई, लेकिन मुझे पता था कि वह मुझे घूर रहा है। उस दौरान मुझे बहुत शांति और सुरक्षा का अहसास हुआ। फिर वह ओझल हो गया।"

उसी वर्ष बाद में, देबोरा और उसकी माँ के बीच एक भावनात्मक विवाद के बाद, एक और दिव्य अनुभव हुआ। “मैंने एक महिला को देखा जो लंबे, नीले रंग के लबादे में थी, उसके सिर पर सफेद शॉल या घूंघट था, वह गुलाबी रंग के वस्त्र और सफेद घूंघट पहने तीन या चार महिलाओं के समूह को इशारा कर रही थी। नीले रंग की पोशाक वाली महिला एक गिरजाघर या मंदिर की सीढ़ियों पर खड़ी थी, जिसके खंभे बहुत बड़े थे। फिर वह दृश्य धुंधला गया।”

कुछ लोग यह तर्क दे सकते हैं कि देबोरा की कल्पना ही उसके भीतर दिव्य दृश्य बुन रही थी, लेकिन यह तथ्य अलग है कि जो कुछ उसने वर्णित किया है, वह दूसरों द्वारा भी वर्णित किया गया है, विशेषकर उन लोगों द्वारा जो मृत्यु के कगार पर पहुँचकर वापस लौटे हैं। बहते हुए

वस्त्र में उस आह्वान करने वाली आकृति का वर्णन कई लोगों ने किया है, कभी उसे यीशु के रूप में पहचाना जाता है, तो कभी केवल गुरु के रूप में। आकृति की पहचान निश्चित रूप से व्यक्ति के धार्मिक या आध्यात्मिक दृष्टिकोण पर निर्भर करती है, लेकिन उसके प्रकट होने से उत्पन्न भावना लगभग एक जैसी ही होती है: शांति और पूर्ण संतोष का भाव।

कनेक्टिकट की श्रीमती सी. बी. को 25 वर्षों से अधिक समय से हृदय रोग है। जब तक वे अपने चिकित्सक द्वारा निर्धारित गोलियां लेती हैं, तब तक उनकी स्थिति नियंत्रण में रहती है। जब भी उनका रक्तचाप 200 से ऊपर जाता है, वे दवा लेती हैं। जब दवा लेने के बाद भी उनकी नाड़ी की गति में कोई सुधार नहीं होता, तो वे आगे के इलाज के लिए अस्पताल जाने का अनुरोध करती हैं। वहां उन्हें नसों में इंजेक्शन लगाए जाते हैं, जो एक कष्टदायक प्रक्रिया है और जिससे वे हर कीमत पर बचने की कोशिश करती हैं। लेकिन वे लंबे समय से इस बीमारी के साथ जी रही हैं और जानती हैं कि जीवित रहने के लिए उन्हें क्या करना होगा। एक बार वे बिस्तर पर बैठकर पढ़ रही थीं और सुबह लगभग पांच बजे तक जाग रही थीं। उनका दिल लगभग एक घंटे से अनियमित रूप से धड़क रहा था। उन्होंने अपनी नाड़ी की गति को धीमा करने की उम्मीद में, अपने ज्ञात विभिन्न दबाव बिंदुओं पर दबाव भी डाला, लेकिन कोई लाभ नहीं हुआ। चूंकि वे अपने पति को जगाना नहीं चाहती थीं, इसलिए वे यह देखने के लिए इंतजार कर रही थीं कि क्या स्थिति अपने आप ठीक हो जाएगी। उसी क्षण श्रीमती बी. को एक अत्यंत अद्भुत अनुभव हुआ।

मेरी खिड़की से एक स्त्री उड़ती हुई या सरकती हुई आई। वह विशालकाय, सुंदर और बहुरंगी वस्त्र पहने हुए थी, जिसके बगल में या तो भुजाएँ थीं या पंख। वह मेरे बिस्तर के दाहिनी ओर पैरों के पास रुकी और वहीं ठहर गई। मैं बहुत हैरान था, फिर भी मुझे पता था कि मैं उसे एक साकार रूप में देख रहा हूँ। वह न तो दाहिनी ओर मुड़ी और न ही बाईं ओर, बल्कि एकदम पत्थर के समान भाव से खड़ी रही और एक शब्द भी नहीं बोली। तभी मुझे ऐसा लगा जैसे चार देवदूत उसके आस-पास और सामने खेल रहे हों। फिर भी मुझे किसी तरह यह एहसास हुआ कि ये मैंने अपनी कल्पना से देखे हैं, न कि अपनी आँखों से। मैं नहीं जानता कि मैंने जो कहा या किया, उसे किसी तर्कसंगत दृष्टिकोण से कैसे समझाऊँ; मुझे बस इतना पता था कि क्या हुआ। मैंने सोचा, 'यह मृत्यु का दूत है। मेरा समय आ गया है।' मैंने ज़ोर से कहा, 'यदि तुम

ईश्वर की ओर से हो, तो मैं तुम्हारे साथ चलूँगा।' जैसे ही मैंने उसकी ओर हाथ बढ़ाया, वह हवा में ही गायब हो गई। कहने की ज़रूरत नहीं है, देवदूत भी गायब हो गए। मैं स्तब्ध था, लेकिन मेरे दिल की धड़कन सामान्य हो गई थी। सामान्य।"

जुलाई 1968 में, मिशिगन की श्रीमती एल. एल. ने सपना देखा कि एक कार दुर्घटना में उनकी और उनके पति की मृत्यु हो गई है। उसी वर्ष नवंबर में, मृत्यु का भय उनके चारों ओर मंडराता हुआ प्रतीत होने लगा। महीने के मध्य में, यह भय इतना प्रबल हो गया कि उन्होंने अपने पति को, जो उस समय शिकार पर गए हुए थे, फोन किया और उन्हें अपने मृत्यु भय के बारे में बताया। उन्होंने अपनी आशंकाओं के बारे में एक पड़ोसी से भी बात की, लेकिन उनकी बेचैनी कम नहीं हुई। 17 दिसंबर को, श्रीमती एल. ने एक और सपना देखा, फिर से मृत्यु के बारे में। इस सपने में उन्हें पता था कि उनके पति की मृत्यु हो जाएगी और वे चाहे कुछ भी कर लें, उन्हें बचा नहीं पाएंगी। दो दिन बाद, श्रीमती एल. और उनके पति वास्तव में एक कार दुर्घटना का शिकार हो गए। उनके पति की मृत्यु हो गई और श्रीमती एल. लगभग मर ही गईं। चिकित्सक डॉ. एस. के अनुसार, उनकी चोटों को देखते हुए, उन्हें मर जाना चाहिए था। लेकिन अस्पताल में भर्ती रहने के दौरान, जब उन्हें सौंप दिया गया और उनकी बहन उनसे मिलने आई, तो उन्होंने उस स्थान के बारे में खुलकर बात की जो उन्हें दिखाई दे रहा था और उन मृत रिश्तेदारों के बारे में भी बताया जिनसे वे उस समय संपर्क में थीं। हालांकि वह बेहोश थी, उसे पता था कि उसके पति की मृत्यु हो चुकी है, लेकिन वह यह भी जानती थी कि उसका समय अभी नहीं आया है, कि जीवन में उसका एक उद्देश्य है और इसलिए वह उस "स्तर" पर नहीं रह सकती जिस पर वह अस्थायी रूप से थी। बहन, जिसे इनमें से कुछ भी समझ नहीं आया, ने पूछा कि क्या श्रीमती एल. ने ईश्वर को देखा है और क्या वह स्वर्ग गई हैं। बेहोश श्रीमती एल. ने उत्तर दिया कि उन्होंने न तो ईश्वर को देखा है और न ही वह स्वर्ग में हैं, बल्कि अस्तित्व के एक निश्चित स्तर पर हैं। बहन ने सोचा कि यह सब बकवास है और उसकी मरणासन्न बहन भ्रम में है, और वह चली गई।

श्रीमती एल. को स्वयं अच्छी तरह याद है कि दूसरे लोक की यात्रा के बाद उन्हें जीवन कैसे वापस मिला। “मुझे ऐसा लगा जैसे मेरे शरीर में, पैरों की उंगलियों से लेकर सिर तक, जीवन लौट आया हो। मुझे पता था कि मैं मर नहीं सकती। मेरे शरीर में कुछ वापस आ गया था; मुझे

लगता है कि वह मेरी आत्मा थी। मैं हर बात को लेकर पूरी तरह शांत थी और अपने पति की मृत्यु पर शोक नहीं कर सकती थी। मुझे उस आदमी के लिए पूर्ण क्षमा थी जिसने हमें टक्कर मारी थी; मेरे मन में उसके प्रति जरा भी कड़वाहट नहीं थी।"

क्या कुछ लोगों को अपनी मृत्यु का पूर्वाभास हो जाता है? भविष्यसूचक या प्रतीत होने वाले कुछ सपनों को चिंता के कारण उत्पन्न हुआ मानकर खारिज करना आसान होगा, शायद सपने देखने वाले की कल्पनाओं के कारण। हालांकि, इनमें से कई सपने एक-दूसरे से मिलते-जुलते हैं और सामान्य चिंता वाले सपनों से अपनी तीव्रता और इस तथ्य में भिन्न होते हैं कि जागने पर वे बहुत स्पष्ट रूप से याद रहते हैं।

इसका एक अच्छा उदाहरण न्यूयॉर्क के उपनगर में रहने वाली श्रीमती पेगी सी. द्वारा मुझे बताया गया एक स्पष्ट सपना है। उन्होंने मुझसे संपर्क इसलिए किया क्योंकि उन्हें हृदय रोग हो गया था और वे सोच रही थीं कि क्या बीस साल पहले देखा गया उनका सपना उनके जीवन के अंत का संकेत था। उस सपने में, जिसने उन्हें वर्षों से परेशान कर रखा था, वे एक थिएटर के पास से गुजर रही थीं जहाँ उनकी मुलाकात अपने मृत बहनोई से हुई। मैंने उससे कहा, 'हाय चार्ली, तुम यहाँ क्या कर रहे हो?' वह बस मुस्कुराया, और फिर मेरे सपने में मुझे एहसास हुआ कि मरे हुए लोग जीवितों के लिए आते हैं। मैंने उससे कहा, 'क्या तुम मेरे लिए आए हो?' उसने कहा, 'हाँ।' मैंने उससे कहा, 'क्या मैं मर गया?' उसने कहा, 'हाँ।' मैंने कहा, 'मैं बीमार नहीं था। क्या मेरे दिल की बीमारी थी?' उसने सिर हिलाया, और मैंने कहा, 'मैं डरा हुआ हूँ।' उसने कहा, 'डरने की कोई बात नहीं है, बस मुझे थाम लो।' मैंने अपनी बाहों में उसे भर लिया, और हम अंधेरे में उड़ने लगे। यह कोई डरावना एहसास नहीं था, बल्कि एक सुखद अनुभूति थी। मैं अपने नीचे की इमारतें देख सकता था। फिर हम एक कमरे में पहुँचे जहाँ एक महिला डेस्क पर बैठी थी। कमरे में मेरे जीजा, एक बूढ़ी औरत और एक डाकिया थे। उसने मुझे अपने डेस्क पर बुलाया। मैंने कहा, 'क्या हमें भी यहाँ काम करना होगा?' उसने कहा, 'हम सभी को काम सौंपे गए हैं। तुम्हारा नाम क्या है?' मेरा नामकरण हुआ। बर्नाडाइन, लेकिन मेरी माँ ने कभी इस नाम का इस्तेमाल नहीं किया। मुझे पैगी कहकर पुकारा जाता था। मैंने उन्हें 'पैगी' कहा। उन्होंने कहा, 'नहीं, तुम्हारा नाम बर्नाडाइन है।' फिर, मेरे देवर ने मुझे बांहों से पकड़ा और हम ऊपर जा रहे थे कि मैं जाग उठी। मैंने अपने पति को अपने ऊपर आँखें फाड़कर

खड़े देखा, लेकिन मैं हिल नहीं पा रही थी। मैं मन ही मन सोच रही थी, 'कृपया मुझे हिलाओ, मैं जीवित हूँ,' लेकिन मैं हिल या बोल नहीं पा रही थी। कुछ मिनटों बाद, मेरा शरीर बिस्तर पर झटका, और मैंने अपनी आँखें खोलीं और रोने लगी। सवाल यह है कि क्या श्रीमती सी. को मृत्यु के निकट का अनुभव हुआ और वे उससे वापस लौटीं, या उनका सपना सचमुच भविष्यसूचक था, शायद आने वाली घटनाओं का संकेत?

डॉक्टर कार्लिस ओसिस ने मृत्युशय्या पर हुए कई अनुभवों से संबंधित अपने निष्कर्ष प्रकाशित किए, जिनमें मरने वाले व्यक्ति अपने मृत रिश्तेदारों को कमरे में पहचानते हैं, जो मानो उन्हें परलोक में प्रवेश कराने आए हों। दक्षिण कैरोलिना की एक महिला, श्रीमती एम. सी. ने मुझे एक विशेष रूप से रोचक मामला बताया। उनमें स्वयं भी माध्यम बनने की अच्छी क्षमता है, जो इस मामले में एक महत्वपूर्ण कारक है। लगभग सत्तर वर्ष की आयु में जब मेरी माँ अंतिम साँसें ले रही थीं, तब मैं उनके पीछे खड़ा था। उन्हें मस्तिष्क आघात लगा था और वे बोल नहीं पा रही थीं। उनके परिचारकों ने बताया कि एक सप्ताह से अधिक समय से उनका उनसे कोई संपर्क नहीं हो पाया था। जब मैंने अपने मन को उनके भावों में लीन किया, तो उन्होंने स्पष्ट और त्रुटिहीन ढंग से कहा, 'काश तुम देख पाते कि यह सब कितना सुंदर और परिपूर्ण है,' फिर उन्होंने अपने दिवंगत पिता को पुकारा, 'पापा, पापा।' तब मैंने सीधे उनसे बात की और पूछा, क्या उन्हें पापा दिखाई दे रहे हैं? उन्होंने ऐसे उत्तर दिया मानो वे घर लौट आई हों। 'हाँ, मुझे पापा दिखाई दे रहे हैं।' कुछ ही दिनों में, कुछ ही समय में, उनका देहांत हो गया। ऐसा लगा मानो उनके पिता सचमुच उनके पीछे आए हों, मानो हमने उन्हें देखा हो, और उन्होंने लकवाग्रस्त मुँह और गले की मांसपेशियों के साथ भी मुझसे स्पष्ट रूप से बात की।

कभी-कभी मृत आत्माएं जीवित लोगों को यह बताना चाहती हैं कि उनका नया संसार कितना अद्भुत है। चाहे यह सांसारिक जीवन में अज्ञानता की भरपाई करने की आवश्यकता हो, जहां ऐसा ज्ञान या तो उनकी समझ से परे था या उन्होंने उसे अनदेखा किया, या फिर जीवित रिश्तेदार को भविष्य के बारे में जानकारी देने के लिए हो, परलोक में इस तरह की यात्राओं से जुड़े मामले उन लोगों के मृत्यु के निकट के अनुभवों की पुष्टि करते हैं जो दुर्घटनाओं या चेतना की असामान्य अवस्थाओं के कारण स्वयं ही परलोक में चले गए हैं। इस प्रकार की सबसे

उल्लेखनीय रिपोर्टों में से एक मुझे इंग्लैंड में रहने वाली दो बहनों की कृपा से प्राप्त हुई। श्रीमती डोरेन बी., एक वरिष्ठ नर्सिंग प्रशासक, ने कई बार मृत्यु देखी थी। यह उनकी रिपोर्ट है।

मई 1968 में मेरी प्यारी माँ का देहांत हो गया। मैंने घर पर ही उनकी देखभाल की थी, इस दौरान हम एक-दूसरे के बेहद करीब आ गए थे। मेरी माँ एक शांत, शर्मीली महिला थीं जो हमेशा लाइमलाइट से दूर रहना पसंद करती थीं। उनके अंतिम सप्ताह पीड़ा से भरे थे; उन्हें लाइलाज कैंसर था और उनके शरीर के कई हिस्सों में ट्यूमर हो गए थे। जीवन के अंत में मुझे उन्हें दर्द से राहत दिलाने के लिए भारी मात्रा में दवा देनी पड़ी, और 7 मई की सुबह अपनी बेटी को अलविदा कहने के बाद, वह अर्धचेतना में चली गईं और अंततः 8 मई 1968 को लगभग 2:15 बजे कोमा में उनका निधन हो गया। उनकी मृत्यु के कुछ रातों बाद मुझे धीरे से जगाया गया। मैंने अपनी आँखें खोलीं और माँ को देखा।

इससे पहले कि मैं पूरी घटना बताऊं, मैं यह कहना चाहूंगी कि मुझे हर रात स्पष्ट सपने आते हैं, और इसी वजह से मुझे यह एहसास हुआ कि मैं सपना नहीं देख रही थी। मैंने कोई शराब या नशा नहीं किया था, हालांकि ज़ाहिर है मेरा मन और भावनाएं मेरी माँ के इर्द-गिर्द घूम रही थीं। माँ के जगाने के बाद, मैं बिस्तर से उठी; मेरा हाथ अपने आप ही मेरे ड्रेसिंग गाउन की ओर बढ़ा, लेकिन मुझे याद नहीं कि मैंने उसे पहना था या नहीं। माँ ने कहा कि वह मुझे अपने पास ले जाएंगी। मैंने कहा कि मैं गाड़ी निकाल लूंगी, लेकिन उन्होंने कहा कि मुझे उसकी ज़रूरत नहीं है। हम तेज़ी से आगे बढ़े, मुझे नहीं पता कैसे, लेकिन मुझे इस बात का एहसास था कि हम डर्किंग लेदरहेड इलाके में थे और एक अलग ही दुनिया में प्रवेश कर रहे थे।

“सबसे पहले मैंने एक बड़ा मेहराब देखा। मुझे पता था कि मैंने इसे पहले भी देखा है, हालाँकि अब इसका मेरे लिए कोई महत्व नहीं है। प्रवेश द्वार के अंदर एक सुंदर दृश्य मेरी आँखों के सामने आया। वहाँ एक शानदार पार्क था, जिसमें झाड़ियाँ और कई रंगों के फूल थे। हम पार्क से होते हुए एक छोटी सी सफेद इमारत के पास पहुँचे। यह किसी वृद्धाश्रम जैसी लग रही थी। वहाँ एक बरामदा था, लेकिन खिड़कियाँ या दरवाजे नहीं थे जैसे हम आमतौर पर देखते हैं। अंदर सब कुछ सफेद था, और माँ ने मुझे एक बिस्तर दिखाया जो उन्होंने कहा कि उनका है। मुझे अन्य लोगों का आभास हुआ, लेकिन वे केवल धुंधली सफेद आकृतियाँ थीं। माँ उनमें से

कुछ के बारे में बहुत चिंतित थीं और उन्होंने मुझे बताया कि उन्हें नहीं पता कि वे मर चुके हैं। हालाँकि, मुझे पता था कि तीन लोगों के समूह में से एक पुरुष था।

माँ हमेशा से ही बहुत कम कपड़े पहनती थीं, शायद अपने बचपन के कष्टों के कारण। इसलिए उनकी अलमारी छोटी लेकिन साफ-सुथरी थी, और अगर कपड़ों की मरम्मत या बदलाव हो सकता था तो वे उन पर बहुत कम खर्च करती थीं। इसी वजह से मुझे आश्चर्य हुआ जब उन्होंने कहा कि काश उनके पास और कपड़े होते। जीवन में माँ सबसे दयालु महिला थीं, कभी किसी के बारे में बुरा नहीं कहती थीं और न ही सोचती थीं। इसलिए मुझे समझ नहीं आया कि उन्हें उस महिला से इतनी नाराज़गी क्यों थी जो बगीचे में बने पुल पर एक लंबे, लहराते हुए वस्त्र में दिखाई दी। पुल सुंदर लग रहा था, लेकिन माँ मुझे कभी उसके पास नहीं ले गईं। अब मुझे वापस लौटना था, लेकिन मेरे सवाल, 'क्या आप खुश हैं?' पर मुझे यह जानकर बहुत दुख हुआ कि वह अपने परिवार को छोड़कर नहीं जाना चाहती थीं। माँ ने मुझे छोड़ने से पहले धीरे से कहा, 'अलविदा प्यारे।' यह एक शांत अंतिम स्वर में कहा गया था, और मैं समझ गया कि मैं उन्हें फिर कभी नहीं देख पाऊंगा।

“बाद में जब मैंने यह बात अपनी बहन को बताई, तब मुझे एहसास हुआ कि माँ अपनी मृत्यु के समय से कहीं अधिक युवा थीं और उनकी पीठ, जो जीवन में झुकी हुई थी, सीधी थी। मुझे यह भी एहसास हुआ कि हमने होठों से नहीं, बल्कि मानो मन ही मन बात की थी, सिवाय उस समय के जब उन्होंने कहा, ‘अलविदा, प्रिय।’ इस घटना को अब साढ़े तीन साल हो चुके हैं और मुझे इसके बाद ऐसा कोई अनुभव नहीं हुआ। अब मुझे समझ में आता है कि मैंने माँ को उनके अंतिम समय में देखा होगा, जब वे अभी भी पृथ्वी से बंधी हुई थीं, शायद उन दवाओं के प्रभाव से जो मैंने चिकित्सकीय देखरेख में दी थीं, और जब उनका अपने परिवार, विशेषकर अपने पोते/पोती से, रिश्ता अभी भी बहुत मजबूत था।”

वाशिंगटन राज्य के रिचलैंड में रहने वाले पेशेवर ज्योतिषी डॉन मैक्ल को मानसिक घटनाओं में कोई विशेष रुचि नहीं है। उनकी उम्र सत्तर वर्ष के आसपास है और उन्होंने अपना अधिकांश जीवन सुरक्षा गश्ती दल में बिताया है। उनकी अंतिम नौकरी वाशिंगटन राज्य के एक परमाणु संयंत्र में थी। सेवानिवृत्ति के बाद, उन्होंने ज्योतिष को पूर्णकालिक रूप से अपना

लिया। फिर भी, उन्हें एक ऐसा अद्भुत अनुभव हुआ जिसने उन्हें परलोक के अस्तित्व की वास्तविकता के प्रति आश्वस्त कर दिया।

15 नवंबर, 1971 को, सुबह लगभग 6:30 बजे, मैं नींद से जागने लगा था कि मुझे अपने चचेरे भाई का चेहरा अपने बिस्तर के पास, पैरों के करीब साफ दिखाई दिया। उसने कहा, 'डॉन, मैं मर गया हूँ।' फिर उसका चेहरा गायब हो गया, लेकिन आवाज़ निश्चित रूप से उसकी अपनी विशिष्ट आवाज़ थी। उस समय तक मुझे यही पता था कि वह जीवित और स्वस्थ था। अपनी पत्नी को यह बात बताने का ख्याल मुझे असहज कर रहा था, इसलिए मैंने उसे इस घटना के बारे में नहीं बताया। सुबह 11:00 बजे, मेरे इस मानसिक अनुभव के लगभग साढ़े चार घंटे बाद, डाक आई। उसमें मेरे चचेरे भाई की विधवा का एक पत्र था, जिसमें हमें बताया गया था कि उन्हें दिल का दौरा पड़ा था और अस्पताल पहुँचने पर उन्हें मृत घोषित कर दिया गया था। उन्होंने बताया कि उनकी मृत्यु 8 नवंबर, 1971 को रात 9:30 बजे वेंचुरा, कैलिफ़ोर्निया में हुई थी। मेरा घर, जहाँ मुझे यह मानसिक अनुभव हुआ, वेंचुरा, कैलिफ़ोर्निया से कम से कम एक हज़ार मील दूर है। यह घटना मेरे जीवन का एकमात्र मानसिक अनुभव है। था।"

विलियम डब्ल्यू. वाशिंगटन, डी.सी. में रहते और काम करते हैं। अपने जीवन में कुछ असाधारण मानसिक घटनाओं के कारण, वे मानव व्यक्तित्व के अस्तित्व के बारे में सोचने लगे। एक शाम उन्होंने एक सपना देखा जिसमें उन्होंने खुद को सीढ़ियों पर चढ़ते हुए देखा, जहाँ उनकी मुलाकात एक महिला से हुई जिसे उन्होंने तुरंत अपनी बुजुर्ग परदादी के रूप में पहचान लिया। उनकी मृत्यु 1936 में हो गई थी। “हालाँकि उन्होंने बीसवीं सदी के अंत के समय की एक लंबी ग्रे रंग की पोशाक पहनी हुई थी, उनके बाल काले थे और वे बेहद युवा दिख रही थीं। मैंने सपने में उनसे पूछा कि बाकी लोग कहाँ हैं, और उन्होंने मुझे सीढ़ियों के ऊपर एक बड़े कमरे में जाने का इशारा किया। आसपास का माहौल अपरिचित था। मैं कमरे में दाखिल हुआ और यह देखकर चकित रह गया कि वहाँ लगभग पंद्रह लोग अलग-अलग तरह के कपड़े पहने हुए थे, पुरुष और महिलाएँ दोनों, और सभी परिपक्व वयस्क लग रहे थे, कुछ लगभग तीस वर्ष के थे। मैं लगभग सभी लोगों को पहचान सका, हालाँकि उनमें से अधिकांश को मैंने तब देखा था जब वे काफी बूढ़े थे। सभी हंसमुख और खुश दिख रहे थे। मैं इस एहसास के साथ सपने से जागा कि कोई मुझे कुछ बताने की कोशिश कर रहा था।”

ऐसी कई रिपोर्टें सामने आई हैं जिनमें बताया गया है कि मृत आत्माएं अपने सबसे अच्छे वर्षों में लौट आती हैं, जो ज्यादातर मामलों में लगभग तीस वर्ष की आयु होती है, क्योंकि वे अपनी इच्छा अनुसार स्वयं का एक काल्पनिक स्वरूप प्रकट कर सकती हैं। दूसरी ओर, जहां मृत आत्माओं के दर्शन किसी व्यक्ति के जीवित रहने का प्रमाण देने के उद्देश्य से किए जाते हैं, वहां वे आमतौर पर मृत्यु से पहले जैसे दिखते थे वैसे ही प्रकट होते हैं, और अक्सर वे वही कपड़े पहने होते हैं जो उन्होंने अपनी मृत्यु के समय पहने थे।

शरीर और सूक्ष्म आत्मा के हर अस्थायी अलगाव में परलोक की यात्रा शामिल नहीं होती। कभी-कभी मुक्त आत्मा केवल शरीर के साथ हो रही क्रियाओं को देखने के लिए वहीं मंडराती रहती है। वाशिंगटन राज्य की श्रीमती एलेन एल. ने सोलह वर्ष की आयु में अपने साथ घटी एक घटना का वर्णन किया। “मुझे कई दिनों से पीछे के दांत में संक्रमण था और मेरा चेहरा बुरी तरह सूजा हुआ था, इसलिए हमारे दंत चिकित्सक ने सूजन कम होने तक दांत निकालने से इनकार कर दिया। जब सूजन कम हुई और नोवोकेन का इंजेक्शन लगने के कुछ ही समय बाद, मैंने खुद को एक खुली खिड़की के पास तैरते हुए पाया। मैंने अपने शरीर को दंत चिकित्सक की कुर्सी पर और दंत चिकित्सक को तेज़ी से काम करते हुए देखा। हमारी मकान मालकिन, श्रीमती ई., जो मुझे दंत चिकित्सक के पास लाई थीं, पास ही खड़ी थीं, मुझे हिला रही थीं और पूरी तरह से अचंभित और अविश्वासी लग रही थीं। उस समय मुझे पूर्ण शांति और स्वतंत्रता का अनुभव हो रहा था। न कोई दर्द था, न कोई चिंता, यहाँ तक कि कुर्सी के पास जो कुछ हो रहा था उसमें भी कोई रुचि नहीं थी।”

"जल्द ही मुझे फिर से दर्द होने लगा और मुझे याद है कि जब मैं क्लिनिक से निकला तो मुझे थोड़ी नाराजगी महसूस हुई। अगले कुछ दिनों तक दंत चिकित्सक ने बार-बार फोन करके यह सुनिश्चित किया कि मैं ठीक हूँ।"

एक रिपोर्ट के अनुसार, एक ट्रैपिस्ट भिक्षु, जिन्हें दस मिनट के लिए दिल का दौरा पड़ा था, ने एक ऐसी दुनिया का अनुभव किया जो उनके धर्म द्वारा सिखाई गई दुनिया से बिल्कुल अलग थी। ब्रदर जी ने बताया कि उन्होंने मुलायम सफेद बादल देखे और अपार आनंद का अनुभव किया। अपने इस अद्भुत अनुभव के फलस्वरूप, अब वह भिक्षु स्थानीय अस्पताल में अंतिम

चरण में भर्ती मरीजों को मृत्यु का सामना करने में मदद करते हैं। वह उन्हें बता सकते हैं कि डरने की कोई बात नहीं है।

न्यू जर्सी के एक चिकित्सक, डॉ. जोसेफ जी. ने सार्वजनिक रूप से स्वीकार किया कि 1934 में निमोनिया के गंभीर दौरे के बाद वे "मर चुके" थे और वास्तव में खुद को मृत्युशय्या पर लेटे हुए देख सकते थे। उस समय, अपनी माँ के दुख को लेकर चिंतित, उन्होंने एक आवाज़ सुनी जिसने उनसे कहा कि भौतिक जगत में रहना या परलोक जाना पूरी तरह से उन पर निर्भर है। अपने इस अनुभव के कारण, डॉ. जी. ने बाद में ऐसे कई रोगियों के अनुभवों पर गंभीरता से ध्यान दिया, जिन्हें इसी तरह के अनुभव हुए थे।

मृत्यु के निकट के अनुभवों से जुड़े मामलों की संख्या काफी अधिक है—ऐसे लोगों की रिपोर्टें जो चिकित्सकीय रूप से अलग-अलग समय तक मृत रहे और फिर होश में आकर अपने अचेतन अवस्था के अनुभवों को याद कर पाए। यदि हम यह मान लें कि सार्वभौमिक नियम सभी परिस्थितियों पर लागू होता है, तो इसमें कोई अपवाद नहीं होना चाहिए। फिर कुछ लोगों को उस समय उस आयाम में प्रवेश किए बिना ही अगले आयाम में उनके लिए क्या है, इसकी झलक क्यों मिल जाती है? ऐसे कई मामलों की जांच करने के बाद, मैं केवल यही अनुमान लगा सकता हूँ कि इसके दो कारण हैं। पहला, इसमें आत्मनिर्णय का एक अंश अवश्य शामिल होता है, जो व्यक्ति को अगले आयाम में जाने या शरीर में लौटने की अनुमति देता है। वास्तव में, कई मामलों में, हालांकि सभी में नहीं, व्यक्ति को यह विकल्प दिया जाता है और वह पृथ्वी पर लौटने का चुनाव करता है। दूसरा, भौतिक जगत में इन गवाहों की रिपोर्टों के प्रसार से, ज्ञान हमारे लिए, या बल्कि उन लोगों के लिए उपलब्ध हो जाता है जो सुनना चाहते हैं। यह कुछ हद तक कांग्रेसी लीक जैसा है—आधिकारिक घोषणा से कम, लेकिन महज़ अफवाह से कहीं अधिक। अंततः, जो लोग जीवन की प्रकृति को समझने के लिए तैयार हैं, उन्हें इस जानकारी से लाभ मिलेगा, और जो लोग तैयार नहीं हैं, उन्हें लाभ नहीं मिलेगा।

अध्याय दो: हर भावी भूत शिकारी को क्या जानना चाहिए

सन् 1965 में जब मैंने अपनी पहली किताब, जिसका शीर्षक 'घोस्ट हंटर' था, लिखी, तब से यह उपनाम मुझसे चिपक गया है, यहाँ तक कि तब भी जब यह स्पष्ट रूप से राजनीतिक दृष्टि से अनुचित था, जैसे कि जब मैंने न्यूयॉर्क इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी में पैरासाइकोलॉजी पढ़ाना शुरू किया और प्रोफेसरशिप प्राप्त की। जैसे-जैसे मेरी सच्ची भूत कहानियाँ मेरी किताबों में प्रकाशित होती गईं, एक नया चलन - शौकिया भूत-प्रेत की खोज - पनप उठा। इनमें से कुछ भूत-प्रेत की खोज करने वाले वास्तव में शोध में रुचि रखते थे, लेकिन कई लोग केवल रोमांच या जिज्ञासा के लिए ही ऐसा कर रहे थे। हर चलन के साथ कुछ मूर्खतापूर्ण धारणाएँ और खतरे जुड़े होते हैं। अक्सर भूत-प्रेत की खोज के पहलुओं, इन घटनाओं के अर्थ की समझ की कमी हानिरहित होती है; लेकिन अधिक गंभीर पक्ष पर, ज्ञान की यह कमी कभी-कभी समस्याएँ पैदा कर सकती है, खासकर जब किसी ऐसे नकारात्मक व्यक्ति से संपर्क होने की संभावना हो जिसके लिए मृत्यु का कोई खास प्रभाव न पड़ा हो।

हालांकि, इन पृष्ठों को पढ़ते समय पाठकों को भूतों के बारे में प्रचलित एक धारणा को भूल जाना चाहिए: कि वे हमेशा खतरनाक, डरावने और नुकसान पहुंचाने वाले होते हैं। सच्चाई इससे कोसों दूर है। न ही भूत कल्पना की उपज हैं, न ही फिल्म लेखकों की मनगढ़ंत कहानी। भूतिया अनुभव न तो अलौकिक हैं और न ही अप्राकृतिक; वे हमारे ब्रह्मांड के सामान्य स्वरूप में समाहित हैं, हालांकि अधिकांश पारंपरिक वैज्ञानिक अभी तक यह नहीं समझ पाए हैं कि भूत वास्तव में क्या हैं। हालांकि, कुछ लोग समझते हैं—जिन्होंने परा मनोविज्ञान का अध्ययन किया है, वे यह समझ चुके हैं कि मानव जीवन मृत्यु के बाद भी जारी रहता है। कभी-कभी, मृत्यु के आसपास असाधारण परिस्थितियां होती हैं, और ये असाधारण परिस्थितियां ही भूतों और प्रेतवाधित घरों का निर्माण करती हैं।

मानव सभ्यता के उदय से ही लोग भूतों पर विश्वास करते आए हैं। अज्ञात का भय, यह निश्चित विश्वास कि कहीं न कहीं कुछ ऐसा है जो जीवन से भी बड़ा है, उसकी सीमा से परे है और

पृथ्वी पर चलने वाली किसी भी चीज़ से अधिक शक्तिशाली है, युगों से बना हुआ है और इसकी उत्पत्ति आदिम मनुष्य के चिंतन में निहित है। उसके अनुसार, प्रकृति में अच्छाई और बुराई की शक्तियाँ कार्यरत थीं, जिन पर अलौकिक शक्तियों का शासन था और जो कुछ हद तक मनुष्यों के मनोभावों और प्रार्थनाओं से प्रभावित हो सकती थीं। मृत्यु का भय, निःसंदेह, मनुष्य की सबसे प्रबल भावनाओं में से एक था। यह आज भी है। यद्यपि शारीरिक मृत्यु के बाद जीवन में कुछ विश्वास आरंभ से ही मौजूद रहा है, फिर भी किसी ने भी इस पृथ्वी को छोड़ने की धारणा को कभी संजोकर नहीं रखा।

तो भूत क्या हैं—अगर वाकई ऐसी कोई चीज़ होती है? भौतिकवादी और पेशेवर संशयवादी—यानी वे लोग जो यह नहीं चाहते कि उनकी यह मान्यता टूटे कि मृत्यु ही जीवन का अंत है—के लिए भूतों का विचार अस्वीकार्य है। चाहे इस घटना की वास्तविकता को साबित करने के लिए कितने ही सबूत पेश किए जाएं, ये लोग इसका खंडन करेंगे और इसे कई "प्राकृतिक" कारणों में से किसी एक से जोड़ देंगे। वे इसे भ्रम या मतिभ्रम, या शायद मृगतृष्णा, या फिर सरासर छल-कपट ही कहेंगे। भ्रम पैदा करने वाले पूरे पेशेवर समूहों ने किसी भी ऐसी चीज़ को, जिसे वे छल या हेरफेर से कृत्रिम रूप से उत्पन्न करने में असमर्थ हों, झूठा या अस्तित्वहीन करार देने का जिम्मा उठा लिया है। खासकर फोटोग्राफरों और जादूगरों के बीच, भूतों के अस्तित्व का विचार कभी लोकप्रिय नहीं रहा है। लेकिन भूतों से संबंधित मानसिक घटनाओं की प्रामाणिक रिपोर्टें प्रतिष्ठित रिपोर्ट केंद्रों, जैसे कि मानसिक अनुसंधान समितियों, या मेरे जैसे परा मनोविज्ञानियों के पास आती रहती हैं।

यह सच है कि आत्म-भ्रम या अन्य तथ्यात्मक त्रुटियों के कारण इनमें से कुछ रिपोर्टें गलत हो सकती हैं। फिर भी, ऐसे मामलों की एक बड़ी संख्या है जिनकी व्याख्या अलौकिक अनुभूति के अलावा किसी अन्य तरीके से नहीं की जा सकती।

मनोवैज्ञानिक शोध के अनुसार, भूत किसी ऐसे व्यक्ति की जीवित भावनात्मक स्मृति प्रतीत होता है जिसकी मृत्यु दर्दनाक, और आमतौर पर दुखद, हुई हो, लेकिन वह अपनी मृत्यु से अनभिज्ञ हो। कुछ भूत यह जानते हैं कि वे मर चुके हैं, लेकिन वे इस बात को लेकर भ्रमित हो सकते हैं कि वे कहाँ हैं, या उन्हें पहले जैसा महसूस क्यों नहीं हो रहा है। जब मृत्यु अप्रत्याशित या अस्वीकार्य रूप से होती है, या जब कोई व्यक्ति किसी स्थान पर लंबे समय तक रहा हो,

कुछ नियमित आदतें बना ली हों और उस स्थान से बहुत लगाव हो गया हो, तो अचानक, अप्रत्याशित मृत्यु एक आघात के रूप में आ सकती है। भौतिक दुनिया से अलग होने की अनिच्छा के कारण, ऐसे व्यक्ति उसी स्थान पर बने रहते हैं जहाँ उनकी त्रासदी या उनका भावनात्मक लगाव शारीरिक मृत्यु से पहले मौजूद था।

भूत यात्रा नहीं करते; वे लोगों का पीछा करके उनके घर तक नहीं जाते; न ही वे एक से अधिक स्थानों पर प्रकट होते हैं। फिर भी, मृतकों की आत्माओं के प्रकट होने और विभिन्न स्थानों पर कई लोगों को दिखाई देने की विश्वसनीय रिपोर्टें हैं। हालांकि, ये उस अर्थ में भूत नहीं हैं जिस अर्थ में मैं इस शब्द को समझता हूँ। ये स्वतंत्र आत्माएँ, या निराकार सत्ताएँ हैं, जो ड्यूक विश्वविद्यालय के डॉ. जोसेफ बी. राइन द्वारा वर्णित "मन की दुनिया" में निवास करती हैं। वे किसी क्षण भावनात्मक कारणों से किसी स्थान पर आकर्षित हो सकती हैं ताकि पृथ्वी पर किसी से संवाद कर सकें। लेकिन एक सच्चा भूत इस तरह की यात्राएँ स्वतंत्र रूप से नहीं कर सकता। भूत स्वभाव से ही शारीरिक मनोरोगियों से भिन्न नहीं होते; वे अपनी दुर्दशा को पूरी तरह से समझने में असमर्थ होते हैं। वे समय और स्थान दोनों में, उस स्थान से अपने भावनात्मक बंधनों द्वारा बंधे रहते हैं। जब तक वे अपने मन में अपनी दुखद मृत्यु की ओर ले जाने वाली घटनाओं को बार-बार दोहराते रहते हैं, तब तक कोई भी उन्हें उस स्थान से मुक्त नहीं कर सकता।

कभी-कभी भूत के लिए यह मुश्किल होता है, क्योंकि वह अपराधबोध या बदले की भावनाओं से इतना गहराई से जुड़ा होता है कि वह "मुक्त" नहीं हो पाता। लेकिन अंततः परा मनोविज्ञान विशेषज्ञ की जानकारीपूर्ण टिप्पणियों और मृतक के परिवार से संपर्क करने के सुझावों के संयोजन से वह मुक्त हो जाता है और आत्माओं की मुक्त दुनिया में चला जाता है।

भूतों ने कभी किसी को नुकसान नहीं पहुँचाया है, सिवाय उस डर के जो देखने वाले के मन में खुद पैदा होता है और भूतों के बारे में उसकी अज्ञानता के कारण होता है। कुछ ही ऐसे मामले हैं जहाँ भूतों ने इंसानों पर हमला किया है, जैसे कि ट्रॉनहेम के भूतिया मठाधीश का मामला, जो कि पहचान की गलतफहमी का मामला है, जहाँ मृत्यु के समय हुई अत्यधिक हिंसा ने भूत के मन में एक गहरी स्मृति छोड़ दी है। कुल मिलाकर, भूत शिकारी बनना या इस तरह की घटनाओं का साक्षी बनना पूरी तरह से सुरक्षित है।

अपनी पुस्तक 'मैन, मिथ, एंड मैजिक' के भूत-प्रेत संबंधी अध्याय में, डगलस हिल एक-एक करके वैकल्पिक परिकल्पनाएँ प्रस्तुत करते हैं और उनकी जाँच करते हैं। ऐसा करने के बाद, वे कहते हैं, "इनमें से कोई भी व्याख्या पूरी तरह से संतोषजनक नहीं है, क्योंकि कोई भी भूत-प्रेत से जुड़ी कहानियों के पूरे दायरे पर लागू नहीं होती।" मनुष्य चाहे कितनी भी कोशिश कर ले, भूतों को न तो समझाया जा सकता है और न ही वे गायब होते हैं। वे दुनिया भर में, युवा और वृद्ध, अमीर और गरीब, पुराने और नए घरों में, हवाई अड्डों और सड़कों पर, और जहाँ भी मनुष्य पर कोई त्रासदी आती है, वहाँ लगातार प्रकट होते रहते हैं। दरअसल, भूत कुछ और नहीं बल्कि एक ऐसा मनुष्य है जो विशेष परिस्थितियों के कारण इस दुनिया में फंसा हुआ है, जबकि वह पहले से ही परलोक का हिस्सा है। या दूसरे शब्दों में, एक ऐसा मनुष्य जिसकी आत्मा अधूरे कार्यों या भावनात्मक उलझनों के कारण इस सांसारिक परिवेश को छोड़ने में असमर्थ है।

भूत-प्रेत की घटनाओं के लोकप्रिय चित्रणों से प्रभावित न होना महत्वपूर्ण है। यह बात अधिकांश फिल्मों पर लागू होती है, सिवाय हाल ही में आई फिल्म 'घोस्ट' के, जो काफी हद तक सटीक थी। टेलीविजन, जहां विकृतियां और सरासर मनगढ़ंत कहानियां भरी पड़ी हैं, विशेष रूप से चिंताजनक है। तथाकथित "रियलिटी" शो जैसे "साइटिंग्स" और इसके कुछ नकलची भूतों के जितने हो सके उतने दृश्य प्रमाण प्रस्तुत करने की कोशिश करते हैं—वह भी सात मिनट के भीतर, जो ऐसे कार्यक्रमों में कहानी की अनिवार्य अवधि होती है।

उत्सुक दर्शकों का ध्यान आकर्षित करने के लिए, ये शो कथित तौर पर प्रसिद्ध परा मनोविज्ञानियों को "विशेषज्ञ" के रूप में प्रस्तुत करते हैं जो गीगर काउंटर से लेकर ऑसिलोस्कोप और साधारण टॉर्च तक, तरह-तरह के तकनीकी उपकरणों का इस्तेमाल करके कथित भूतों का पीछा करते हैं। अकादमिक प्रशिक्षण प्राप्त कोई भी पेशेवर अन्वेषक इनमें से किसी भी उपकरण का उपयोग नहीं करता है, लेकिन कार्यक्रमों को इसकी परवाह नहीं है।

भूतों की खोज का एक और मुश्किल पहलू यह है कि जो कुछ भी इस श्रेणी में फिट बैठता हुआ प्रतीत होता है, वह वास्तव में इसी श्रेणी में नहीं आता है।

घटनाएं, मुठभेड़ें और अनुभव या तो दृश्य, श्रव्य या गंधीय होते हैं—वे दृष्टि, ध्वनि या गंध के माध्यम से उत्पन्न होते हैं। इसके अतिरिक्त, भूत-प्रेत की घटनाएं भी होती हैं, जो किसी प्रेतवाधित घटना की उस अवस्था का परिणाम मात्र हैं जब प्रेत वस्तु की गति जैसे भौतिक प्रभाव उत्पन्न करने में सक्षम होता है।

यहां तक कि एक अनुभवी अन्वेषक भी हमेशा यह नहीं बता सकता कि कोई घटना किस प्रकार की घटना श्रेणी में आती है - लंबे समय तक गहन जांच के बाद ही इसका स्पष्टीकरण मिल पाता है।

भूत-प्रेतों को छोड़कर, इन तीनों प्रकार की घटनाओं के कारण निम्नलिखित हो सकते हैं:

1. एक वास्तविक भूत—अर्थात्, एक ऐसा व्यक्ति जो भौतिक शरीर से विदा हो चुका है, लेकिन भावनात्मक बंधनों या आघात के कारण मृत्यु के स्थान पर या उसके आस-पास सूक्ष्म शरीर (आभा, आत्मा) में विद्यमान रहता है। ऐसे लोग संकट में होते हैं, जो अपनी दुर्दशा को समझने का प्रयास कर रहे होते हैं और आमतौर पर अपनी मृत्यु से अनभिज्ञ होते हैं।

भूत के "वास्तविक" होने का प्रमाण घटनाओं के व्यवहार में निहित है। यदि अलग-अलग गवाहों ने अलग-अलग चीजें देखी या सुनी हैं, या दिन के अलग-अलग समय पर देखी या सुनी हैं, तो हम भूत के बारे में बात कर रहे हैं।

आम तौर पर देखने वाले के लिए भूत और आत्मा एक ही चीज़ होते हैं। लेकिन प्रशिक्षित परा-मनोवैज्ञानिक के लिए ऐसा नहीं है: भूत मनोविक्षिप्त मनुष्यों के समान होते हैं, जो अपने लिए तर्क करने या कोई कार्रवाई करने में असमर्थ होते हैं। दूसरी ओर, आत्माएं हम सभी के जीवित व्यक्तित्व होते हैं जो अपेक्षाकृत सामान्य तरीके से मृत्यु के द्वार से गुजरते हैं। एक आत्मा अगले आयाम में पूर्ण अस्तित्व बनाए रखने में सक्षम होती है, और सोच सकती है, तर्क कर सकती है, महसूस कर सकती है और कार्य कर सकती है, जबकि उसका दुर्भाग्यशाली साथी, भूत, इनमें से कुछ भी नहीं कर सकता। वह केवल अपनी मृत्यु के अंतिम क्षणों को, अपने अधूरे काम को, बार-बार दोहराता रहता है जब तक कि यह एक जुनून न बन जाए। इस अंधकारमय अवस्था में, भूत कुछ भी करने में असमर्थ होते हैं और इसलिए लगभग हमेशा हानिरहित होते हैं। उन कुछ मामलों में जहां भूतों ने लोगों को पीड़ा पहुंचाई है, व्यक्ति और भूत के बीच कोई संबंध मौजूद था। कोई व्यक्ति ऐसे बिस्तर पर सोया जिसमें किसी दूसरे

व्यक्ति की हत्या हुई थी और हत्यारे ने उसे गलती से वही व्यक्ति समझ लिया, या हत्यारा अपने अपराध स्थल पर लौटा और उसी व्यक्ति ने उस पर हमला कर दिया जिसकी उसने हत्या की थी। लेकिन आम तौर पर, भूत लोगों पर हमला नहीं करते हैं, और यदि कोई उन्हें देख पाए या उनसे संपर्क कर पाए तो इसमें कोई खतरा नहीं है।

अधिकांश प्रेत-दर्शन जीवित व्यक्तियों की ऊर्जा का उपयोग करके हमारे त्रि-आयामी संसार में प्रवेश करते हैं। अन्य प्रेत-दर्शन व्यक्तिपरक होते हैं, विशेषकर जब प्रेत-दर्शन प्राप्त करने वाला व्यक्ति मानसिक रूप से संवेदनशील हो। ऐसे में, प्रेत-दर्शन प्राप्त व्यक्ति केवल अपने मन में ही मृत व्यक्ति को सुन या देख पाता है, जबकि अन्य लोग प्रेत को इस प्रकार नहीं देख पाते।

जब कोई प्रत्यक्ष घटना घटित होती है और वहाँ मौजूद सभी लोग उसे सुन या देख सकते हैं, तो जीवित प्राणियों से ऊर्जा खींचकर वह सत्ता कुछ खास घटनाओं को घटित करती है, जैसे कि प्रेत का दिखना, आवाज सुनाई देना, वस्तुओं का हिलना-डुलना, कदमों की आहट, या दरवाजों का अपने आप खुलना, और उपस्थिति के अन्य संकेत। जब ये घटनाएँ भौतिक रूप ले लेती हैं और कई व्यक्तियों द्वारा देखी जा सकती हैं या मशीनों द्वारा रिकॉर्ड की जा सकती हैं, तो इन्हें भूतिया घटनाएँ या शोरगुल वाली घटनाएँ कहा जाता है। हर भूतिया घटना इस स्तर तक नहीं पहुँचती, लेकिन कई पहुँच जाती हैं। अक्सर, घर में छोटे बच्चों या मानसिक रूप से विकलांग बुजुर्गों की उपस्थिति इस तरह की भौतिक घटनाओं को जन्म देती है, क्योंकि उनकी अप्रयुक्त या अनछुई यौन ऊर्जा इस उद्देश्य के लिए उपयोग की जा सकती है।

भूत—अर्थात् वे व्यक्ति जो अपनी मृत्यु से अनभिज्ञ होते हैं या अधूरे कार्यों के कारण इस परिवर्तन को स्वीकार करने में असमर्थ होते हैं—कभी-कभी जीवित लोगों को अपने दर्शन कराते हैं। यह निश्चित रूप से जानना असंभव है कि कुछ व्यक्ति मृत्यु के बाद कब और क्यों प्रकट होते हैं और अन्य क्यों नहीं। ऐसा प्रतीत होता है कि यह मृत्यु के समय उनके भीतर मौजूद भावनाओं की तीव्रता, अनसुलझे मुद्दों के अवशेष पर निर्भर करता है। इसलिए, हिंसक मृत्यु मरने वाला हर व्यक्ति भूत नहीं बन जाता; बल्कि इसके विपरीत है। यदि ऐसा होता, तो हमारे युद्धक्षेत्र और यातना शिविरों या जेलों जैसे भयावह स्थान भूतों से भरे होते, लेकिन ऐसा नहीं है। यह मृत्यु के समय व्यक्ति के दृष्टिकोण पर निर्भर करता है कि वह मृत्यु को स्वीकार

करता है और अस्तित्व के अगले चरण में प्रवेश करता है, या वह इस परिवर्तन को समझने में असमर्थ होता है और परिणामस्वरूप परिचित भौतिक वातावरण, पृथ्वी से चिपका रहता है।

भूतों के बारे में एक आम गलत धारणा यह है कि वे केवल आधी रात को, या कम से कम केवल रात में ही दिखाई देते हैं; या समय बीतने के साथ-साथ वे धीरे-धीरे गायब हो जाते हैं। दरअसल, भूत व्यक्तित्व के ही अलग हुए हिस्से होते हैं और दिन-रात के अंतर को समझने में असमर्थ होते हैं। वे एक तरह से हमेशा मौजूद रहते हैं और उचित उपकरणों से लैस माध्यमों द्वारा किसी भी समय उनसे संपर्क किया जा सकता है। वातावरण के अनुसार, वे दिन या रात के कुछ निश्चित समयों पर ही प्रकट हो सकते हैं; क्योंकि भौतिक हलचल जितनी कम होगी, उनके लिए बाहरी दुनिया से संवाद करना उतना ही आसान होगा। उन्हें इस बात का हल्का-फुल्का एहसास होता है कि बाहर कुछ ऐसा है जो उनसे भिन्न है, लेकिन उनकी सीमित वास्तविकता उन्हें स्थिति को पूरी तरह समझने की अनुमति नहीं देती। इसलिए, शांत क्षण, जो दिन की तुलना में रात में मिलने की अधिक संभावना होती है, वह समय होता है जब अधिकांश भूत देखे जाने की घटनाएं दर्ज की जाती हैं।

कुछ भूतों की अभिव्यक्तियाँ ठीक बरसी के क्षण में ही प्रकट होती हैं, क्योंकि उस समय उस दुखद घटना की स्मृति सबसे प्रबल होती है। लेकिन इसका यह अर्थ नहीं है कि भूत अन्य समयों में अनुपस्थित होते हैं—बल्कि उनका प्रकट होना कम संभव होता है। भूत न केवल भौतिक वातावरण में छोड़े गए मानव व्यक्तित्व की अभिव्यक्तियाँ हैं, बल्कि भौतिक विज्ञान के संदर्भ में, वे विद्युत चुम्बकीय क्षेत्र हैं जो दिवंगत व्यक्ति के व्यक्तित्व और स्मृतियों से विशिष्ट रूप से प्रभावित होते हैं। इसलिए वे वातावरण में एक विशेष ऊर्जा छाप छोड़ते हैं और इस प्रकार वे यूँ ही लुप्त नहीं हो सकते। अल्बर्ट आइंस्टीन ने सिद्ध किया कि ऊर्जा कभी नष्ट नहीं होती, वह केवल अन्य रूपों में रूपांतरित होती है। इस प्रकार भूत सदियों में लुप्त नहीं होते; वे वास्तव में अनंत काल तक विद्यमान रहते हैं, जब तक कि कोई व्यक्ति किसी समाधि माध्यम से उनसे संपर्क स्थापित करके उन्हें वास्तविकता से अवगत न करा दे, जिससे वे अपनी दुर्दशा को समझ सकें और इस प्रकार स्वयं द्वारा निर्मित बंधन से मुक्त हो सकें। जिस क्षण किसी भूत के सामने सत्य का दर्पण रखा जाता है, और उसे यह अहसास होता है कि जो समस्याएँ अघुलनशील प्रतीत होती हैं, वे अब महत्वपूर्ण नहीं हैं, वह जा सकता है।

अक्सर, बचाव दल को यह समझाना पड़ता है कि भूत के जाने का एकमात्र तरीका यह है कि वह अपने जीवन में किसी करीबी को पुकारे—कोई प्रियजन या मित्र जो आकर उसे अपने साथ अस्तित्व के अगले चरण में ले जाए, जहाँ उसे बहुत पहले ही पहुँच जाना चाहिए था। इसे बचाव चक्र कहा जाता है और यह एक काफी नाजुक प्रक्रिया है जिसके लिए एक प्रशिक्षित मानसिक शोधकर्ता और एक कुशल ट्रान्स माध्यम की सेवाओं की आवश्यकता होती है। नौसिखियों को चेतावनी दी जाती है कि वे इसे करने का प्रयास न करें, खासकर अकेले।

2. भूत-प्रेत देखने या अन्य घटनाओं में से केवल 10-15% ही वास्तविक भूत होते हैं। अधिकांश दृश्य या ध्वनि संबंधी घटनाएं अतीत की किसी भावनात्मक घटना के पुनरावर्तन के कारण होती हैं, जो किसी न किसी तरह से पीछे छूट गई हो और उस स्थान या घर के वातावरण में अंकित हो गई हो। कोई भी संवेदनशील व्यक्ति—और इसका अर्थ है आबादी का एक बड़ा हिस्सा—ऐसी घटनाओं को अलग-अलग स्तर पर पुनः अनुभव कर सकता है। उनके लिए ये पुनरावर्तन वास्तविक भूतिया घटनाओं से भिन्न नहीं प्रतीत हो सकते हैं, सिवाय इसके कि ये ठीक उसी स्थान पर और दिन के उसी समय उन सभी लोगों के साथ घटित होते हैं जो इन्हें देखते हैं।

इन घटनाओं को मानसिक छाप कहा जाता है, और ये एक तरह से अतीत की घटनाओं की तस्वीरों की तरह होती हैं, आमतौर पर वे घटनाएं जिनमें उच्च भावनात्मक अर्थ होते हैं।

3. ऐसे मामले भी हैं जिनमें इस प्रकार के दृश्य या ध्वनियाँ दूर स्थित जीवित प्राणियों द्वारा उत्पन्न होती हैं, जो समय के हिसाब से नहीं बल्कि भौगोलिक रूप से दूर होते हैं। इस घटना को "जीवितों के प्रेत" नाम दिया गया है, जो मूलतः टेलीपैथिक होती है। आमतौर पर ये दृश्य या ध्वनियाँ तब उत्पन्न होती हैं जब किसी व्यक्ति को दूर स्थित किसी व्यक्ति से संपर्क करना अत्यंत आवश्यक होता है, जैसे पारिवारिक संकट, आपात स्थिति या कभी-कभी प्रेमियों या प्रेम संबंधों में बंधे लोगों के बीच।

शरीर के भीतर होने वाले ये प्रक्षेपण अनैच्छिक होते हैं और इन्हें नियंत्रित नहीं किया जा सकता। हालांकि, इन घटनाओं का एक प्रकार जानबूझकर किए गए प्रक्षेपण हैं, जो तब होते हैं जब कोई व्यक्ति दूर स्थित किसी व्यक्ति तक पहुंचने के लिए अपनी पूरी भावनात्मक शक्ति लगा देता है। हालांकि, ऐसे उदाहरण काफी दुर्लभ हैं।

4. अंत में, हमें यह ध्यान रखना चाहिए कि यद्यपि प्रेत-दर्शन एक जैसे प्रतीत हो सकते हैं, चाहे वे भूत कहलाने वाली पृथ्वी से बंधी आत्माएं हों, या सभी मानसिक और भावनात्मक क्षमताओं और स्मृतियों से परिपूर्ण स्वतंत्र आत्माएं हों - जो संदेश देने के लिए आती हैं - भूत और आत्माएं एक समान नहीं हैं।

किसी प्रेत-दर्शन या आत्मा के आगमन की तुलना एक कीमती पत्थर से करें: हीरा और ज़िरकॉन देखने में लगभग एक जैसे लगते हैं, लेकिन उनका मूल्य बिल्कुल अलग होता है। आत्माएँ आप और मेरे जैसे ही लोग हैं जो बिना किसी कठिनाई या परेशानी के परलोक चले गए हैं; वे भौतिक संसार में छोड़ी गई किसी भी चीज़ से बंधे नहीं होते। हालाँकि, उनके अपने परिवार या मित्रों से भावनात्मक संबंध होते हैं, और वे इस दुनिया के लोगों को यह बताना चाहते होंगे कि वे "वहाँ" ठीक हैं, या जीवित दुनिया में उनका कोई काम हो सकता है जिसे व्यवस्थित तरीके से निपटाने की आवश्यकता हो। भूतों के भी कुछ अधूरे काम हो सकते हैं, लेकिन वे आम तौर पर अपनी इच्छाओं को स्पष्ट रूप से व्यक्त करने में असमर्थ होते हैं।

आत्माएं, वे लोग जो मर चुके हैं और अपने प्रतिरूप "आंतरिक शरीर," ईथर शरीर या आभा में रह रहे हैं, कुछ सीमाओं और समय तत्व के संबंध में भौतिक जीवित लोगों से भिन्न हैं, लेकिन आत्माएं बस वे लोग हैं जो अपनी यादों और रुचियों को बरकरार रखते हुए अगले लोक में चले गए हैं।

इन चारों प्रकार की घटनाओं में एकमात्र समानता उनकी सघनता है: वे अधिकतर समय (हालांकि हमेशा नहीं) त्रि-आयामी और काफी ठोस प्रतीत होती हैं, लेकिन उनमें से किसी एक को छूने की कोशिश करें, और आपका हाथ उसके आर-पार चला जाएगा।

केवल भौतिक रूप से प्रकट होने वाली चीजें ही वास्तव में त्रि-आयामी और भौतिक होती हैं, और वे तभी घटित होती हैं जब ईथर शरीर को एल्ब्यूमिन नामक पदार्थ से "ढकने" के लिए पर्याप्त ऊर्जा मौजूद होती है, जिसे एक्टोप्लाज्म या टेलीप्लाज्म कहा जाता है, जो एक सेन्स के दौरान माध्यम और/या सहायकों (जिन्हें सिटर के रूप में जाना जाता है) की ग्रंथियों से निकाला जाता है, और कभी-कभी तो उस स्थान पर अनायास ही घटित हो जाता है जहां अतीत में कोई बहुत ही शक्तिशाली आघातपूर्ण घटना घटी हो।

इस प्रकार की भौतिक संरचनाएं दिखने और महसूस करने में भौतिक शरीरों जैसी लगती हैं, लेकिन इन्हें छूने से ये घुल सकती हैं या इनके मूल माध्यम को नुकसान पहुँच सकता है, जैसा कि तेज रोशनी से होता है। किसी भी स्थिति में, सदमे और बीमारी से बचने के लिए इस एक्टोप्लाज्म को वहीं लौटा देना चाहिए जहाँ से यह आया था।

सबसे दुर्लभ मानसिक घटना, पूर्ण भौतिकीकरण, को दोहराने का प्रलोभन हमेशा मौजूद रहता है, लेकिन इसे पहचानना भी आसान है। जब मैंने पेंसिल्वेनिया में एक अध्यात्मवादी शिविर की जांच के दौरान ऐसे ही कुछ धोखेबाजों का पर्दाफाश किया, तो मैंने माइक वालेस के साथ एक कार्यक्रम में टेलीविजन पर सबूत पेश किए, जिसे बनाने में मैंने भी मदद की थी और जिसमें मैं खुद भी शामिल था। वालेस ने टिप्पणी की, "क्या आपका मतलब है कि ये सिर्फ भूतिया अभिनेता हैं?" जिस पर मैंने तुरंत जवाब दिया, "नहीं, बल्कि बेहद भयानक अभिनेता हैं, क्योंकि मैंने उन्हें रंगे हाथों पकड़ा है।"

आत्माओं से संपर्क करने के लिए आयोजित होने वाले अनुष्ठान, जो कि कुछ लोगों का एक समूह होता है और इस उम्मीद में एक बैठक करते हैं कि किसी दिवंगत आत्मा से उसके मुख्य माध्यम या बैठक में शामिल किसी व्यक्ति के माध्यम से संवाद हो सके, आजकल कम प्रचलित हैं। लेकिन अगर कोई आपको किसी अनुष्ठान में बुलाता है और वादा करता है कि दूसरी दुनिया के किसी व्यक्ति से संपर्क कराया जाएगा, तो सावधान रहें। दूसरी दुनिया के लोग ही हमसे संपर्क करने का निर्णय लेते हैं, न कि हम उनसे।

ओइजा बोर्ड, क्रिस्टल बॉल और टैरो कार्ड जैसी चीज़ें किसी मानसिक क्षमता वाले व्यक्ति को अपनी प्राकृतिक प्रतिभा पर ध्यान केंद्रित करने में मदद करती हैं, लेकिन इनमें स्वयं कोई शक्ति नहीं होती। यदि ओइजा बोर्ड का उपयोग करने वाले व्यक्ति गहरे समाधि में जाने की क्षमता रखते हैं, तो यह परेशानी का कारण बन सकता है, क्योंकि दूसरी तरफ बैठा कोई बेईमान व्यक्ति आकर खिलाड़ियों पर कब्ज़ा करना चाह सकता है, जिसके परिणामस्वरूप उन पर प्रेतबाधा आ सकती है।

भूतों या आत्माओं से संवाद कभी-कभी संभव हो पाता है, जब ओइजा बोर्ड चलाने वाले व्यक्तियों में से कोई एक इतना मानसिक रूप से सक्षम हो कि संवाद के लिए आवश्यक ऊर्जा

प्रदान कर सके। लेकिन ओइजा बोर्ड से जो कुछ भी प्राप्त होता है, उसका अधिकांश भाग बैठने वाले व्यक्ति के अवचेतन मन की बातें होती हैं, और अक्सर यह निरर्थक ही होता है।

भूतों या बिछड़े प्रियजनों के सपनों के बारे में कुछ बातें। हम या तो जाग रहे होते हैं या सो रहे होते हैं। मेरे विचार से, यदि हम सो रहे हैं तो हम "सपना देख रहे" होते हैं, क्योंकि हम हर समय सपने देखते हैं, भले ही हमें वे हमेशा याद न रहें या हम उनके बारे में जागरूक न हों।

कुछ मानसिक अनुभव, जिनमें भूत-प्रेत शामिल होते हैं, नींद के दौरान अर्ध-स्वप्नों के रूप में घटित होते हैं। ये वास्तव में सच्चे सपने नहीं होते। बात सिर्फ इतनी है कि नींद-स्वप्न की अवस्था में, जब हमारा चेतन मन शांत होता है, तो संदेशवाहक के लिए हम तक पहुंचना आसान हो जाता है, बजाय इसके कि जब हम पूरी तरह से जागृत होते हैं और हमारा चेतन मन और तर्कसंगत दृष्टिकोण संदेशवाहक के संदेशों को हमारी चेतना में प्रवेश करने में मुश्किल पैदा करते हैं।

जिन लोगों को इस तरह के स्वप्न अनुभव हुए हैं, उनमें से कई सोचते हैं कि उन्होंने यह सब "सिर्फ़ सपना" देखा था, और चिकित्सा जगत भी आमतौर पर इस बात को बढ़ावा देता है, ऐसी घटनाओं को अर्ध-काल्पनिक या बुरे सपने के रूप में वर्गीकृत करता है। लेकिन वास्तविकता में, ऐसा कुछ भी नहीं है। ये सपने उतने ही वास्तविक और अर्थपूर्ण होते हैं जितने कि जागते हुए भूत-प्रेतों से सामना होना, चाहे रात हो या दिन का उजाला।

स्वप्न अवस्था में, आगंतुक जागृत अवस्था की तरह वस्तुनिष्ठ परछाईं नहीं बनाते, बल्कि वे वास्तविक व्यक्ति होते हैं, जो सूक्ष्म शरीरों में विद्यमान होते हैं और हमारे सूक्ष्म शरीरों से संपर्क स्थापित करते हैं। इस अवस्था में, यदि कोई संदेश होता है, तो वह सामान्य स्वप्नों की तुलना में कहीं अधिक स्पष्ट होता है।

हमें अपने पड़ोस की दुनिया से होने वाले ऐसे अतिक्रमणों और उसमें रहने वाले लोगों पर ध्यान देना चाहिए, चाहे यह घटना जागते या सोते समय घटित हो। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि भूतों या आत्माओं से मत डरो। वे आपको नुकसान नहीं पहुँचाएँगे—केवल आपका डर ही ऐसा कर सकता है। और डर तो केवल जानकारी की कमी है। इन पंक्तियों को पढ़कर आप भूतों और आत्माओं के वास्तविक स्वरूप को समझने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम उठा रहे हैं।

इस पुस्तक में वर्णित मामले मेरी फाइलों से लिए गए हैं, जो जीवन के हर क्षेत्र से और दुनिया के कोने-कोने से आए आम लोगों के रोचक अनुभवों से भरी पड़ी हैं। अधिकांश गवाह भूतों के बारे में कुछ नहीं जानते थे, न ही उन्होंने ऐसी घटनाओं की खोज की थी। जब उन्होंने इन पृष्ठों में वर्णित घटनाओं का अनुभव किया, तो वे आश्चर्यचकित रह गए; कभी सदमे में, कभी चिंतित। वे मुझसे सलाह लेने आए क्योंकि उन्हें मनोवैज्ञानिकों, मनोचिकित्सकों या पादरियों जैसे सामान्य स्रोतों से संतोषजनक सलाह नहीं मिल पाई थी।

इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं है, क्योंकि ऐसे पेशेवर लोग परा मनोविज्ञान से जुड़ी घटनाओं से निपटने में शायद ही सक्षम होते हैं। हो सकता है आने वाले वर्षों में वे ऐसा कर सकें, लेकिन अभी नहीं। सभी मामलों में, मैंने व्यक्तियों को सलाह दी कि वे अपनी उपस्थिति में होने वाली किसी भी घटना से भयभीत न हों, बल्कि उस घटना को मानवीय अस्तित्व का हिस्सा मानें और उससे मैत्रीपूर्ण और शांत तरीके से निपटें। भूत की उपस्थिति में घबरा जाना सबसे बुरी प्रतिक्रिया है, क्योंकि इससे भूत को कोई मदद नहीं मिलेगी और देखने वाले को अनावश्यक चिंता होगी। यह कभी न भूलें कि जो लोग अस्तित्व के दो चरणों के बीच "अटके" हुए हैं, वे स्वयं परेशानी में हैं, न कि परेशानी पैदा करने वाले, और उनके प्रति सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार उनकी चिंताओं को दूर कर सकता है।

इन पन्नों में जिन लोगों के मामलों का मैं वर्णन कर रहा हूँ, वे न तो प्रसिद्धि चाहते हैं और न ही नाम कमाना चाहते हैं; उन्होंने उन प्रेतवाधित घटनाओं को स्वीकार कर लिया है जिनके वे साक्षी रहे हैं। कुछ मामलों में, प्रेतवाधित घटनाओं ने व्यक्ति के जीवन के प्रति दृष्टिकोण को बदल दिया है, क्योंकि इसने उन्हें पड़ोस में मौजूद एक दूसरी दुनिया की वास्तविकता से परिचित कराया है। अन्य मामलों में, जो कभी भय था, वह अब मानव स्वभाव की बेहतर समझ में बदल गया है; वहीं कुछ अन्य उदाहरणों ने इन घटनाओं के साक्षी को बिछड़े हुए प्रियजनों की स्थिति को बेहतर ढंग से समझने और इस आश्वस्त करने वाले एहसास को प्राप्त करने में सक्षम बनाया है कि वे कुछ ही समय में परलोक में फिर मिलेंगे।

याद रखें कि यहां वर्णित कोई भी घटना आपके साथ घटित हो सकती थी, इसमें कुछ भी अलौकिक नहीं है, और आने वाले वर्षों में आप प्रेत-दर्शन को सामान्य घटनाओं के रूप में देखेंगे, जो मानवीय अनुभव का अभिन्न अंग हैं।

अंत में, मैं अपने पाठकों से यह कहना चाहूंगा कि वे भूतों और प्रेतवाधित घरों के अस्तित्व या गैर-अस्तित्व के बारे में बहस में न पड़ें। हर किसी को अपने अनुभवों के लिए खुद ही स्पष्टीकरण ढूंढना चाहिए, और इसमें आस्था का कोई लेना-देना नहीं है।

वास्तव में, आज की दुनिया का सबसे चिंताजनक पहलू विश्वासों का यह मुद्दा है। विश्वासों की शक्ति भयावह होती है। लोग अक्सर ऐसी बातों और घटनाओं पर विश्वास करते हैं, चाहे वे वास्तव में घटित हुई हों या नहीं। विश्वासों के कारण ही हत्याएं होती हैं, युद्ध लड़े जाते हैं, अपराध होते हैं। अविश्वास भी त्रासदियों में अपना योगदान देता है।

विश्वास और अविश्वास दोनों ही स्वभावतः भावनात्मक होते हैं, तर्कसंगत नहीं। कुछ विश्वासों के पीछे का तर्क तर्कसंगत प्रतीत हो सकता है, लेकिन वह पूरी तरह असत्य, अतिरंजित, संदर्भ से हटकर या विकृत हो सकता है।

जब किसी एक व्यक्ति का विश्वास या अविश्वास सार्वजनिक हो जाता है और बड़ी संख्या में लोगों तक फैल जाता है, तो कुछ बहुत गंभीर समस्याएं उत्पन्न होती हैं: प्रेम और करुणा धराशायी हो जाते हैं, और भावनात्मक रूप से रंगे विश्वास (या अविश्वास) हावी हो जाते हैं, जो अनिवार्य रूप से कार्रवाई की ओर ले जाते हैं, और आमतौर पर किसी न किसी प्रकार की हिंसा - शारीरिक, भौतिक, भावनात्मक या नैतिक - की ओर ले जाते हैं।

आध्यात्मिक अनिश्चितता से भरी इस दुनिया में, सभी उम्र और पृष्ठभूमि के लोगों का एक बढ़ता हुआ समूह एक बेहतर, सुरक्षित दुनिया चाहता है जो कट्टरता से मुक्त हो, एक ऐसी दुनिया जहां हिंसक टकराव की जगह चर्चा और आपसी सहिष्णुता ले ले।

यह दुखद है, पर सत्य है कि धर्म विनाशकारी भावनाओं को शांत करने के बजाय अक्सर उन्हें बढ़ावा देता है, और कभी-कभी तो समस्या की जड़ में ही पाया जाता है। आज धर्म आध्यात्मिकता से इतना दूर हो गया है कि यह उस ईश्वर से जुड़ाव का प्रतिनिधित्व नहीं करता, जिसके लिए यह मूल रूप से तब खड़ा था जब दुनिया युवा और छोटी थी।

जब लोग ईश्वर तक पहुँचने के अपने कथित भिन्न-भिन्न मार्गों के कारण एक-दूसरे की हत्या कर देते हैं, तो उन्हें एक ऐसे मार्गदर्शक की आवश्यकता हो सकती है जो यह बताए कि खोई हुई चीज़ को पुनः प्राप्त करने के लिए उन्हें कहाँ मुड़ना चाहिए। मेरा मानना है कि यह मार्गदर्शक मानव जाति के शारीरिक मृत्यु से परे अस्तित्व का प्रमाण है, जैसा कि इन पृष्ठों में

दर्शाया गया है, जीवन के अगले चरण में प्रवेश कर चुके लोगों और कम से कम अस्थायी रूप से पीछे छूट गए लोगों के बीच का शाश्वत संबंध।

विश्वास किसी ऐसी चीज़ को बिना सोचे-समझे स्वीकार करना है जिसे आप किसी भी तरह से साबित नहीं कर सकते। लेकिन भूतों और प्रेतवाधित घटनाओं के प्रमाण इतने प्रबल, इतने व्यापक और इतने सुस्थापित हैं कि इन प्रमाणों के अस्तित्व पर बहस करना वास्तव में मूर्खतापूर्ण होगा।

यह अटकलों का विषय नहीं है और न ही इसे और अधिक प्रमाणों की आवश्यकता है: जो लोग परलोक के प्रमाण की तलाश करते हैं, वे इसे आसानी से पा सकते हैं, न केवल इन पृष्ठों में बल्कि कई अन्य कृतियों में और वैज्ञानिक अनुसंधान के माध्यम से मानसिक घटनाओं की जांच करने वाले समूहों के अभिलेखों में भी।

जब हमें यह समझ आ जाता है कि यह "प्रणाली" कैसे काम करती है, और हम जीवन के एक नए चरण में प्रवेश करते हैं, तो जीवन के प्रति हमारा दृष्टिकोण अवश्य बदल जाता है। मैं इसे अपने कार्य और मिशन का हिस्सा मानता हूँ कि इस दिशा में ज्ञान का योगदान दूं, आज लोगों में व्याप्त भ्रम, शंकाओं और नकारात्मकता को दूर करूं, और इन दुर्भाग्यपूर्ण दृष्टिकोणों को एक व्यापक आशा से बदल दूं कि जीवन निरंतर चलता रहेगा, जहाँ एक जीवनकाल में किया गया हर कार्य अगले चरण में योगदान देगा, और भौतिक जगत में अगले जीवनकाल में वापसी का मार्ग प्रशस्त करेगा।

जो लोग भौतिक, बाहरी शरीर के विघटन के बाद भी अस्तित्व के बने रहने के प्रमाण से डरते हैं और इसके बारे में जानना नहीं चाहते, वे अपना ही नुकसान कर रहे हैं, क्योंकि निश्चित रूप से अंततः उन्हें इस स्थिति के बारे में सच्चाई का प्रत्यक्ष अनुभव हो ही जाएगा।

भूतिया घरों में लोगों को जो अनुभव होते हैं, उनके कई स्पष्टीकरण हो सकते हैं, लेकिन कोई भी स्पष्टीकरण उन अनुभवों को पूरी तरह से नकार नहीं सकता। यदि आप उन अनेक लोगों में से एक हैं जो किसी भूतिया घर में प्रवेश करते हैं और वहाँ एक वास्तविक अनुभव प्राप्त करते हैं, तो निश्चिंत रहें कि आप एक बिल्कुल सामान्य मनुष्य हैं, जो एक ऐसी प्राकृतिक प्रतिभा का उपयोग कर रहे हैं जो न तो हानिकारक है और न ही खतरनाक, और अंततः ज्ञानवर्धक और उपयोगी भी हो सकती है।

अध्याय तीन
भूत और जीवितों की दुनिया

मैं यह कहने में जल्दबाजी करता हूं कि जो लोग अगले आयाम में हैं, आत्मा के संसार में हैं, वे वास्तव में "जीवित" हैं - कुछ मायनों में हमसे कहीं अधिक, जो सीमाओं और समस्याओं के साथ त्रि-आयामी, भौतिक दुनिया में निवास करते हैं।

यह पुस्तक भूतों के हमारे साथ संबंधों के बारे में है, क्योंकि इस दुनिया में जीवित लोग ही मृतकों के संपर्क में आते हैं। भूत जरूरी नहीं कि हमें खोजते हों, भूत तो बस अपनी मृत्यु की परिस्थितियों के कारण अस्तित्व में आते हैं।

भूत को देखने या सुनने की क्षमता के लिए मानसिक क्षमता या ईएसपी (अतिरिक्त संवेदी बोध) नामक एक विशेष वरदान की आवश्यकता होती है। ड्यूक विश्वविद्यालय के प्रोफेसर जोसेफ बैंक्स राइन ईएसपी को एक अतिरिक्त इंद्रिय मानते हैं। कुछ लोग इसे "छठी इंद्रिय" भी कहते हैं, हालांकि मेरा मानना है कि ईएसपी का वरदान सामान्य इंद्रियों की सीमाओं से परे उनका विस्तार मात्र है।

अगर आपके पास ईएसपी (अंतर्दृष्टि संवेदनशीलता) नहीं है, तो संभावना है कि आप किसी भूत से न मिलें या किसी प्रियजन की आत्मा से संपर्क न कर पाएं। लेकिन निराश न हों: ईएसपी बहुत आम है, अलग-अलग स्तरों पर, और लगभग आधे लोग इससे सक्षम हैं। मेरे विचार से, यह एक सामान्य प्रतिभा है जिसे कई मामलों में विभिन्न कारणों से, मुख्य रूप से अज्ञानता या भय के कारण, उपेक्षित या दबा दिया गया है।

आज विश्व भर में कई व्यावहारिक अनुप्रयोगों में मानसिक क्षमताओं को मान्यता दी जा रही है और उनका उपयोग किया जा रहा है। वैज्ञानिक अनुसंधान, व्यवसाय और आपराधिक जांच में सामान्य अनुसंधान के दायरे को बढ़ाने के लिए इस माध्यम का उपयोग किया गया है।

इस अतिरिक्त क्षमता को स्वीकार करने में कई समस्याएं हैं। उन्नीसवीं सदी से पहले, रहस्यवाद से जुड़ी किसी भी बात को धार्मिक विधर्म माना जाता था और उसे दबा दिया जाता

था या कम से कम गुप्त रखा जाता था। उन्नीसवीं सदी में, सामाजिक और आर्थिक क्रांति के साथ भौतिक चीजों पर अत्यधिक जोर दिया जाने लगा और विज्ञान को नया देवता बना दिया गया। मूर्त प्रमाणों का यह देवता नई तकनीकी खोजों और सुधारों से प्रेरित होकर हमारी वर्तमान सदी में प्रवेश कर चुका है। इन सब के केंद्र में यह विश्वास है कि केवल वही वास्तविक है जो सामान्य पांच इंद्रियों द्वारा अनुभव किया जा सकता है, और बाकी सब कुछ न केवल संदिग्ध है बल्कि सरासर कल्पना है। कल्पना स्वयं इस दुनिया में ज्यादा समय तक नहीं टिक पाएगी, क्योंकि कंप्यूटर और कंप्यूटरीकृत मनुष्यों के क्षेत्र में इसका कोई उपयोगी उद्देश्य नहीं रह गया है।

इन कठिन परिस्थितियों में परिश्रम करते हुए, डॉ. राइन ने लगभग तीस वर्ष पूर्व छठी इंद्रिय की घटना के लिए एक नया वैज्ञानिक दृष्टिकोण विकसित किया, जब उन्होंने ड्यूक विश्वविद्यालय में अपनी प्रयोगशाला में कई बिखरे हुए शोध दृष्टिकोणों को समेकित और व्यवस्थित किया। लेकिन विशुद्ध भौतिकवाद आसानी से नहीं मरता—वास्तव में, बिल्कुल नहीं मरता। यहाँ तक कि जब राइन मानव व्यक्तित्व में "साई कारक"—छठी इंद्रिय के लिए इस्तेमाल होने वाला एक जटिल शब्द—के प्रमाण प्रस्तुत कर रहे थे, तब भी भौतिक विज्ञान के विशेषज्ञों ने उन पर स्वप्नद्रष्टा या इससे भी बदतर होने का आरोप लगाया। फिर भी, राइन ने अपना काम जारी रखा और अन्य लोग उनकी सहायता के लिए आगे आए, और अलौकिक बोध की कार्यप्रणाली की जांच और, यदि संभव हो, तो व्याख्या करने के लिए नए संगठन अस्तित्व में आए।

अतिरिक्त इंद्रिय को परिभाषित करना काफी सरल है। जब किसी घटना या तथ्य का ज्ञान सामान्य पांच इंद्रियों—दृष्टि, श्रवण, गंध, स्पर्श और स्वाद—के बिना प्राप्त किया जाता है, या जब यह ज्ञान समय और स्थान की सीमाओं की स्पष्ट अवहेलना करते हुए प्राप्त किया जाता है, तो हम इसे अतिरिक्त संवेदी बोध कहते हैं।

यह आवश्यक है कि छठी इंद्रिय की घटना का अनुभव करने वाले व्यक्ति को तथ्यों या घटनाओं के बारे में सचेत या अचेत रूप से कोई ज्ञान न हो, और बाद में उसकी धारणाओं की पुष्टि गवाहों द्वारा की जाए या सटीक विज्ञान की सामान्य विधियों द्वारा सही साबित की जाए।

प्रायोगिक दृष्टिकोण से यह वांछनीय है कि भविष्य में घटित होने वाली घटनाओं से अलौकिक रूप से प्रभावित होने वाला व्यक्ति इस अनुभूति को तुरंत निष्पक्ष गवाहों को बता दे, ताकि घटना के घटित होने पर इसकी पुष्टि की जा सके। हालांकि, ऐसा संभव नहीं होता, क्योंकि छठी इंद्रिय की प्रकृति ही ऐसी है: इसे इच्छा अनुसार सक्रिय नहीं किया जा सकता, बल्कि यह आपात स्थितियों में, जब इसकी वास्तविक आवश्यकता होती है, तब सर्वोत्तम कार्य करती है। जब सामान्य संचार विफल हो जाता है, तो मनुष्य और स्त्री के भीतर कुछ ऐसा होता है जो समय और स्थान की बाधाओं को दूर करके पांच इंद्रियों से परे संचार को संभव बनाता है।

मुझे इसमें कोई संदेह नहीं है कि अलौकिक घटनाएं भावनात्मक आवेगों द्वारा नियंत्रित होती हैं और इसलिए भौतिक विज्ञानों की समस्याओं से बिल्कुल अलग समस्याएं प्रस्तुत करती हैं। ड्यूक विश्वविद्यालय की परा मनोविज्ञान प्रयोगशाला में वर्षों से कार्ड और पासे के साथ किए गए सफल प्रयोगों के बावजूद, ईएसपी अनुभव को इच्छा अनुसार हूबहू दोहराया नहीं जा सकता।

परा मनोविज्ञान, यानी इस प्रकार की घटनाओं का अध्ययन करने वाला विज्ञान, अक्सर इन्हीं आधारों पर आलोचनाओं का शिकार होता रहा है। फिर भी, सामान्य मनोविज्ञान, जो मानवीय भावनाओं का अध्ययन करता है, प्रयोगशाला परिस्थितियों में घटनाओं की सटीक प्रतिकृति की मांग नहीं करता। बेशक, मनोविज्ञान और मनोचिकित्सा स्वयं अतीत में आलोचनाओं का शिकार हुए हैं, और हाल ही में इन्हें सम्मानजनक स्थान मिला है। हर नई और क्रांतिकारी चीज़ पर हमला करना मानवीय स्वभाव है, क्योंकि मनुष्य अपने पुराने सिद्धांतों से चिपके रहने की प्रवृत्ति रखता है। पचास साल बाद, परा मनोविज्ञान निस्संदेह पुराने विज्ञानों में से एक होगा, और इसलिए इसे स्वीकार किया जाएगा।

प्राकृतिक घटनाओं से डेटा एकत्र करना, यानी वास्तविक परिस्थितियों में डेटा एकत्र करना, उतना ही वैज्ञानिक है जितना कि प्रयोगशाला में उन्हें उत्पन्न करना। वास्तव में, कुछ प्राकृतिक विज्ञान तो प्रत्यक्ष अवलोकन के बिना संभव ही नहीं होते। ज़रा सोचिए, प्रयोगशाला में भूकंप, आकाशगंगाओं की टक्कर या समुद्र में किसी नए द्वीप के निर्माण जैसी घटनाओं का पुनर्निर्माण करके देखिए।

असल मुद्दा सक्षम पर्यवेक्षकों की मौजूदगी और समान, लेकिन असंबंधित, घटनाओं की बार-बार होने वाली घटनाएँ हैं। उदाहरण के लिए, यदि किसी भूत-प्रेत या शोर मचाने वाली घटना से जुड़े सौ मामले दूर-दूर के इलाकों में दर्ज किए जाते हैं, जिनमें ऐसे गवाह शामिल हैं जो एक-दूसरे को जानते ही नहीं हों, आपस में बातचीत न की हो, या घटना के बारे में एक ही जानकारी तक उनकी पहुँच न हो, तो इन रिपोर्टों को प्रामाणिक मानना और उनसे कुछ निष्कर्ष निकालना उचित वैज्ञानिक प्रक्रिया है।

अलौकिक बोध अनुसंधान पूरी तरह से क्षेत्र में होने वाली स्वतःस्फूर्त घटनाओं पर निर्भर नहीं करता, लेकिन उनके बिना यह निरर्थक होगा। प्रयोगशाला प्रयोग एक महत्वपूर्ण सहायक तत्व हैं, विशेष रूप से जब हम ईएसपी के कम जटिल तत्वों, जैसे कि टेलीपैथी, संयोग से परे अंतर्ज्ञान और मानसिक एकाग्रता से निपटते हैं - लेकिन वे वास्तविक पूर्वज्ञान (घटनाओं के घटित होने से पहले उन्हें देखने की क्षमता) और मानव अनुभव में अन्य एक बार होने वाली घटनाओं के जबरदस्त प्रभाव का स्थान नहीं ले सकते।

ईएसपी (अंतर्दृष्टि) की प्रकृति सहज और अप्रत्याशित होती है। आपको नहीं पता कि आपको कब ऐसा अनुभव होगा, आप इसे घटित नहीं करा सकते, और आप यह भविष्यवाणी भी नहीं कर सकते कि यह कब और कैसे घटित होगा। आपके ज्ञान से परे की परिस्थितियाँ ही इस अनुभव को संभव बनाती हैं, और इस पर आपका कोई नियंत्रण नहीं होता। एकमात्र अपवाद उचित चिंतन की कला है—अपनी ईएसपी शक्तियों के व्यापक उपयोग के लिए प्रशिक्षण—जिस पर हम बाद में चर्चा करेंगे।

ईएसपी का अनुभव एक अंतर्ज्ञान, एक अजीब सी अनुभूति, या एक सहज धारणा के रूप में हो सकता है। या यह अधिक मजबूत और स्पष्ट भी हो सकता है, जैसे कि एक चमक, एक छवि या श्रव्य संकेत, एक चेतावनी भरी आवाज, या एक दृष्टि, यह इस बात पर निर्भर करता है कि आप कौन हैं और एक ग्रहणकर्ता के रूप में आपकी जन्मजात प्रतिभाएं क्या हैं।

प्रशिक्षित और जानकार लोगों को छोड़कर, बाकी सभी लोगों की पहली प्रतिक्रिया "संदेश" को दबाने या उसे टालने की होती है, कभी-कभी वे अलौकिक अनुभव की संभावना को स्वीकार करने से बचने के लिए अजीबोगरीब रास्ते भी अपना लेते हैं। अक्सर, मानव व्यक्तित्व के इस स्वाभाविक हिस्से के प्रति इस तरह का नकारात्मक रवैया त्रासदी या कम से कम

झुंझलाहट का कारण बन सकता है; क्योंकि अलौकिक अनुभव की अनुभूति कभी व्यर्थ नहीं जाती। यह किसी आपदा की चेतावनी हो सकती है या आगे आने वाले अच्छे अवसरों के लिए एक अग्रिम सूचना मात्र, लेकिन इसका हमेशा महत्व होता है, भले ही आप इसका अर्थ न समझ पाएं या इसके विषयवस्तु को अनदेखा करना चाहें। मैं अलौकिक अनुभव संदेश के इस सार को बोध कहता हूं, क्योंकि यह तार्किक कारकों या इसे प्राप्त करने में लगे समय और प्रयास को दर्शाने वाले घटकों के बिना तात्कालिक ज्ञान का प्रतिनिधित्व करता है।

ईएसपी की विचित्र बात यह है कि यह वास्तव में अन्य पांच इंद्रियों के बराबर एक अतिरिक्त, छठी इंद्रिय से कहीं अधिक है। यह वास्तव में एक अति-इंद्रिय है जो अपने संदेशों को संप्रेषित करने के लिए अन्य पांच इंद्रियों के माध्यम से कार्य करती है।

इस प्रकार, छठी इंद्रिय का अनुभव कई लोगों को दृष्टि के माध्यम से एक दृश्य, एक झलक या एक छाप के रूप में; श्रवण के माध्यम से किसी घटना का अनुकरण करने वाली आवाज या ध्वनि प्रभाव के रूप में; गंध के माध्यम से वर्तमान जलवायु के अलावा अन्य जलवायु का संकेत देने वाली अजीब गंधों या कुछ लोगों या स्थानों से जुड़ी गंधों के रूप में; स्पर्श के माध्यम से - कंधे पर हाथ, चोरी-छिपे चुंबन या अदृश्य हाथों द्वारा उंगलियों का स्पर्श; और स्वाद के माध्यम से - वास्तविक भोजन या पेय के कारण नहीं होने वाली तालू की उत्तेजना के रूप में प्राप्त हो सकता है।

इनमें से, गंध और स्वाद की इंद्रियों का उपयोग ईएसपी संचार के लिए शायद ही कभी किया जाता है, जबकि अधिकांश मामलों में दृष्टि या श्रवण या दोनों का उपयोग होता है। ऐसा इसलिए होना चाहिए क्योंकि इन दोनों इंद्रियों का मुख्य कार्य हमारे चेतन मन को हमारे आसपास की दुनिया की जानकारी देना है।

लगभग बीस वर्षों तक अलौकिक घटनाओं का अध्ययन करने के बाद, मुझे यह बात सबसे अधिक प्रभावित करती है कि हम वास्तव में किसी अतिरिक्त आयाम, स्पर्श या गंध जैसी किसी अतिरिक्त इंद्रिय से नहीं, बल्कि एक ऐसी इंद्रिय से निपट रहे हैं जो भौतिक नहीं है—मानसिक इंद्रिय, जिसे स्वयं को प्रकट करने के लिए भौतिक इंद्रियों के माध्यम से ही प्रकट होना पड़ता है। यह कोई अतिरिक्त इंद्रिय नहीं है, बल्कि वास्तव में यह सामान्य पाँच इंद्रियों का ही विस्तार है, एक ऐसे क्षेत्र में जहाँ तार्किक सोच अनुपस्थित है और अन्य नियम लागू होते

हैं। हम इसकी तुलना स्पेक्ट्रम के उस भाग से कर सकते हैं जो नग्न आँखों से दिखाई नहीं देता। हम अवरक्त और पराबैंगनी किरणों का पूर्ण उपयोग करते हैं और कोई भी इन "रंगों" के अस्तित्व पर संदेह नहीं करता, जो कि सामान्य लाल और बैंगनी रंगों के ही विस्तार मात्र हैं।

अलौकिक अनुभूति के मामले में भी यही स्थिति है, फिर भी हम भौतिक विज्ञानों से परस्पर विरोधी हैं, जो चाहते हैं कि हम केवल वही स्वीकार करें जो पांचों इंद्रियों द्वारा आसानी से सुलभ हो, अधिमानतः प्रयोगशालाओं में। रेडियो तरंगों की खोज से पहले, आधुनिक विज्ञान के अनुसार ऐसा विचार काल्पनिक माना जाता था, फिर भी आज हम दूरस्थ खगोलीय पिंडों से संपर्क करने के लिए रेडियो का उपयोग करते हैं।

इन सब बातों का सार यही है: हमारी सामान्य मानवीय धारणा, उपकरणों द्वारा थोड़ी बहुत विस्तारित होने के बावजूद, अपूर्ण है। यह कहना कि हमारे आसपास उतना ही है जितना हम माप सकते हैं, कतई बेतुका है। यह खतरनाक भी है, क्योंकि इस सिद्धांत को अपने बच्चों को सिखाकर हम उनकी मानसिक क्षमताओं को निर्बाध रूप से विकसित होने से रोकते हैं। एक ऐसे क्षेत्र में जहाँ विचार एक शक्तिशाली शक्ति है, गलत सोच विनाशकारी हो सकती है।

कभी-कभी कोई नेक इरादे वाला, लेकिन इस विषय से अपरिचित पत्रकार मुझसे पूछता है, "विज्ञान ईएसपी (इलेक्ट्रॉनिक स्पेस स्पॉन्सरशिप) के बारे में क्या सोचता है?" यह कुछ ऐसा ही है जैसे गणित के शिक्षकों से अल्बर्ट आइंस्टीन के बारे में पूछा जाए। ईएसपी विज्ञान का ही एक हिस्सा है। अन्य क्षेत्रों के कुछ वैज्ञानिकों को इसकी वैधता या संभावनाओं पर संदेह हो सकता है, ठीक वैसे ही जैसे एक क्षेत्र के वैज्ञानिक अक्सर दूसरे क्षेत्रों के वैज्ञानिकों पर संदेह करते हैं। उदाहरण के लिए, कुछ रसायनज्ञ कुछ दवाओं की प्रभावशीलता के बारे में चिकित्सा विज्ञान के कथनों पर संदेह करते हैं, या कुछ जलमग्न खोजकर्ता अंतरिक्ष खोजकर्ताओं के विचारों से असहमत होते हैं, और कुछ चिकित्सकों की मान्यताएँ अन्य चिकित्सकों की मान्यताओं से बहुत भिन्न होती हैं। विज्ञान की परिभाषा समझना आवश्यक है। कुछ लोगों की सोच के विपरीत, विज्ञान ज्ञान नहीं है, और न ही ज्ञान की अवधारणा के समान है; विज्ञान केवल विश्वसनीय और मान्यता प्राप्त साधनों द्वारा ज्ञान एकत्रित करने की प्रक्रिया है। हालाँकि, ये साधन समय के साथ बदल सकते हैं, और जो साधन अतीत में विश्वसनीय माने जाते थे, वे भविष्य में विफल हो सकते हैं, जबकि इसके विपरीत, अतीत में उपयोग न किए गए नए तरीके

प्रमुखता प्राप्त कर सकते हैं और उपयोगी साबित हो सकते हैं। विज्ञान के ढांचे को एक अचल वस्तु, एक ऐसी दीवार मानना जिस पर विश्वास के साथ टिका जा सके कि जानने लायक लगभग सब कुछ पहले से ही ज्ञात है, एक अत्यंत अवास्तविक अवधारणा है। जिस प्रकार एक जीवित प्राणी दिन-प्रतिदिन बदलता है, उसी प्रकार विज्ञान और वैज्ञानिक प्रमाणों का आधार भी बदलता रहता है।

* * *

हालांकि, विज्ञान के भीतर कुछ ऐसी ताकतें भी हैं जो रूढ़िवादी या स्थापित दृष्टिकोण का प्रतिनिधित्व करती हैं। ये ताकतें कुछ शक्तिशाली व्यक्तियों में निहित हैं, जो विवादास्पद घटनाओं की वास्तविकता और वैज्ञानिक प्रक्रिया में इन घटनाओं को शामिल करने की उपयुक्तता के बारे में आश्वस्त तो नहीं हैं, लेकिन विज्ञान की अपनी स्थापित अवधारणा को बदलने के लिए अनिच्छुक हैं। संक्षेप में, वे नए और चौंकाने वाले तथ्यों को सीखने के लिए तैयार नहीं हैं, जिनमें से कई उनके अतीत में सीखे गए ज्ञान से मेल नहीं खाते, जो उनके वैज्ञानिक विश्वासों का आधार और नींव है। विज्ञान शब्द scire से लिया गया है, जिसका अर्थ है "जानना"। Scientia, लैटिन संज्ञा जिस पर हमारा अंग्रेजी शब्द "विज्ञान" आधारित है, का सबसे अच्छा अनुवाद "जानने की क्षमता" या शायद "समझ" के रूप में किया जा सकता है। निरपेक्ष ज्ञान एक अलग विषय है। मुझे इस बात पर बहुत संदेह है कि निरपेक्ष ज्ञान मानवीय समझ की सीमाओं के भीतर भी संभव है। विज्ञान में हम जिस चीज़ से निपट रहे हैं, वह ज्ञान की ओर बढ़ने की एक विधि है, न कि उसे प्राप्त करने की। अंततः, रहस्य का पर्दा हमें परम सत्य से छिपाए रखेगा, संभवतः इसलिए क्योंकि हम अपर्याप्त आध्यात्मिक जागरूकता के कारण इसे समझने में असमर्थ हैं। यह अपर्याप्तता, अन्य बातों के अलावा, भौतिकवादी अवधारणाओं से व्युत्पन्न शब्दावली और संदर्भों पर दृढ़तापूर्वक निर्भरता के रूप में प्रकट होती है, जिनका सूचना के उच्च स्तरों से कोई संबंध नहीं है। अनुसंधान के प्रत्येक रूप के लिए अपने उपकरणों और मानदंडों की आवश्यकता होती है। साक्ष्य की विशुद्ध भौतिकवादी अनुभवजन्य अवधारणाओं को अभौतिक क्षेत्रों पर लागू करने से संतोषजनक परिणाम मिलने की संभावना नहीं है। इससे पहले कि हम अपने आस-पास मौजूद उन अभौतिक अवधारणाओं और शक्तियों के महत्व को समझ सकें, जो समय की शुरुआत से हमारे साथ हैं,

हमें पहले मानदंडों का एक बिल्कुल अलग समूह स्थापित करना होगा। ये हमारे भीतर भी हैं और हमारे बाहर भी। ये मानव चेतना की सबसे भीतरी परत के साथ-साथ विद्यमान ब्रह्मांड की बाहरी सीमाओं का भी निर्माण करते हैं।

* * *

सामान्यतः, जो वैज्ञानिक ईएसपी और पैरासाइकोलॉजी के क्षेत्र से सीधे तौर पर संबंधित नहीं होते, वे इसके पक्ष या विपक्ष में कोई राय नहीं रखते। वे आमतौर पर अपने ही क्षेत्र और उसमें पाई जाने वाली कमियों में ही अधिक व्यस्त रहते हैं। कभी-कभी, ईएसपी और पैरासाइकोलॉजी से असंबंधित क्षेत्रों के लोग भी इसमें रुचि लेने लगते हैं, आंशिक रूप से इसलिए क्योंकि वे इससे आकर्षित होते हैं और उन क्षेत्रों के अध्ययन में बढ़ते महत्व को महसूस करते हैं जिन्हें अधिकांश वैज्ञानिकों ने लंबे समय से उपेक्षित किया है, और आंशिक रूप से इसलिए क्योंकि उन्हें लगता है कि पैरासाइकोलॉजी के निष्कर्षों पर हमला करके वे किसी मनोवैज्ञानिक रूप से समझ में आने वाले तरीके से अपनी असफलताओं को सही ठहरा रहे हैं। जब प्रोफेसर जोसेफ बी. राइन ने पहली बार मनुष्य में जिसे उन्होंने "साई" कारक कहा, उसे मापना शुरू किया, तो आलोचकों ने कृत्रिम परिस्थितियों और आंकड़ों पर अत्यधिक निर्भर प्रणाली के खतरों की ओर तुरंत ध्यान दिलाया। प्रोफेसर राइन महत्वपूर्ण आंकड़ों के रूप में जो कुछ भी सिद्ध कर पाए, वह आलोचनाओं से काफी हद तक दब गया है, जिनमें से कुछ वैध हैं और कुछ नहीं, और निश्चित रूप से क्षेत्र में होने वाली सहज घटनाओं का अवलोकन करने के कहीं अधिक महत्व के कारण भी। शुरुआत में, प्रोफेसर राइन ने वैज्ञानिक चिंतन में एक मील का पत्थर स्थापित किया। यह पहली बार था कि इस क्षेत्र का, जो पहले केवल रहस्यवादियों के लिए ही सीमित था, आधुनिक अर्थों में प्रशिक्षित वैज्ञानिक द्वारा अध्ययन किया गया था। तब भी, परा मनोविज्ञान के क्षेत्र को गंभीरता से नहीं लिया जाता था; राइन और उनके सबसे करीबी सहयोगी, डॉ. हॉर्नेल हार्ट, को समाजशास्त्र विभाग का हिस्सा माना जाता था, क्योंकि उस समय तक परा मनोविज्ञान का कोई अलग विभाग या इस नए विज्ञान में कोई डिग्री नहीं थी। आज भी इसमें कोई डॉक्टरेट नहीं है, और इस क्षेत्र में काम करने वालों के पास आमतौर पर अन्य योग्यताएं भी होनी चाहिए। लेकिन अब स्थिति बदल रही है। कुछ साल पहले, डेनवर स्थित कोलोराडो विश्वविद्यालय के डॉ. जूल्स आइज़ेनबड ने

शिकागो के एक बेलहॉप, टेड सेरियोस की विलक्षण प्रतिभाओं का खुलासा करके दुनिया को चौंका दिया, जो मानसिक फोटोग्राफी की प्रतिभा से संपन्न था। यह व्यक्ति कैमरे या टेलीविजन ट्यूब में छवियां प्रक्षेपित कर सकता था, जिनमें से कुछ तथाकथित भविष्य से थीं। अन्य उन दूरस्थ स्थानों से थीं जहां श्री सेरियोस कभी नहीं गए थे। ये प्रयोग अत्यंत कठोर परीक्षण स्थितियों के अंतर्गत किए गए थे। इन्हें दोहराया गया, जिस पर परा मनोविज्ञान के क्षेत्र में अनुभवी वैज्ञानिकों ने बार-बार ज़ोर दिया था। सार्वजनिक ध्यान के केंद्र में और अत्यंत सख्त वैज्ञानिक परीक्षण स्थितियों के तहत प्रचुर मात्रा में साक्ष्य प्रस्तुत किए जाने के बावजूद, कोलोराडो विश्वविद्यालय में डॉ. आइज़ेनबड के कुछ सहकर्मी उनसे मुंह मोड़ लेते थे जब भी वे उन्हें अपने प्रयोगों को देखने के लिए आमंत्रित करते थे। आइज़ेनबड और उनके सहयोगियों द्वारा खोजी गई किसी भी ऐसी चीज़ के प्रति इतना अधिक पूर्वाग्रह था जो मौजूदा अवधारणाओं का खंडन कर सकती थी कि वैज्ञानिक स्वयं इसका पता लगाने से कतराते थे। उन्हें डर था कि उन्हें बहुत कुछ भूलना पड़ेगा। आज, रूढ़िवादी वैज्ञानिक भी पहले की तुलना में अधिक सुनने को तैयार हैं। वैज्ञानिक जगत के अधिकांश लोगों में साक्ष्यों का निष्पक्ष और बिना किसी पूर्वाग्रह के मूल्यांकन करने की अधिक तत्परता है। फिर भी, यह किसी भी मौजूदा सुविधाओं से स्वतंत्र, परा मनोविज्ञान का एक वास्तविक संस्थान स्थापित करने से बहुत दूर है - जिसकी वकालत मैं कई वर्षों से कर रहा हूं।

न्यूर्क कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग में मैनेजमेंट इंजीनियरिंग के एसोसिएट प्रोफेसर जॉन मिहालस्की के अनुसार, अधिकांश बड़े कॉर्पोरेट निर्णय अतार्किक रूप से लिए जाते हैं। प्रोफेसर का तर्क है कि तार्किक लोग एक अतार्किक प्रक्रिया की वैज्ञानिक व्याख्या को समझ सकते हैं। "प्रोफेसर मिहालस्की द्वारा किए गए प्रयोगों से पता चलता है कि उत्कृष्ट प्रबंधन क्षमता और एक कार्यकारी की अलौकिक बोध क्षमता (ईएसपी) के बीच संबंध है।" 31 अगस्त, 1969 के द न्यूयॉर्क टाइम्स के अनुसार, "प्रबंधकीय प्रतिभा और ईएसपी के बीच संबंध का पता लगाने के लिए 1962 से कॉलेज में ईएसपी पर शोध किया जा रहा था। अलौकिक बोध और पूर्वज्ञान (घटनाओं के घटित होने से पहले ही उनका पूर्वानुमान लगाने की क्षमता) के लिए परीक्षण उपलब्ध हैं। यही पूर्वज्ञान परीक्षण उत्कृष्ट रचनात्मक क्षमता वाले व्यक्ति के चयन में भी उपयोगी हो सकते हैं।"

लेकिन शोध जगत का व्यावसायिक पक्ष ही ईएसपी की वैधता और महत्व को पहचानने में अकेला नहीं था। 30 अगस्त, 1970 को लॉस एंजिल्स टाइम्स में प्रकाशित एक साक्षात्कार के अनुसार, मैरीलैंड के बाल्टीमोर के मनोचिकित्सक डॉ. जॉर्ज सोजलुंड ने निष्कर्ष निकाला, "सभी प्रमाण यह संकेत देते हैं कि ईएसपी का अस्तित्व है।" डॉ. सोजलुंड उन लोगों के साथ काम करते हैं जिन पर ईएसपी प्रतिभा होने का संदेह होता है और उन्हें विशेष रूप से निर्मित प्रयोगशालाओं में विभिन्न परीक्षणों से गुजारते हैं। ईएसपी के अस्तित्व का परीक्षण करने के लिए डिज़ाइन किए गए वैज्ञानिक प्रयोग दुर्लभ हैं। डॉ. सोजलुंड को संयुक्त राज्य अमेरिका में इस तरह के केवल एक अन्य प्रयोग की जानकारी है - सिएटल में। सोजलुंड सप्ताह में केवल एक दिन ईएसपी पर काम करते हैं। उनका मुख्य काम स्प्रिंग ग्रोव स्टेट हॉस्पिटल में अनुसंधान के कार्यवाहक निदेशक का है।

* * *

लॉस एंजिल्स टाइम्स की स्टाफ राइटर एवलिन डी वोल्फ के अनुसार, "ईएसपी की घटना अभी भी अनिश्चित, क्षणभंगुर और रहस्यमय बनी हुई है, लेकिन विज्ञान के क्षेत्र में पहली बार कोई भी यह कहने में शर्म महसूस नहीं करता कि वे मानते हैं कि ऐसी कोई चीज मौजूद है।" लेखिका यूसीएलए स्कूल ऑफ मेडिसिन में मेडिकल साइकोलॉजी की सहायक प्रोफेसर डॉ. थेल्मा एस. मॉस से बात कर रही थीं, जो कई वर्षों से पैरासाइकोलॉजी पर प्रयोग कर रही थीं। 12 जून, 1969 की एक रिपोर्ट में, वोल्फ यह भी कहती हैं, "ईएसपी पर आयोजित एक सप्ताहांत संगोष्ठी में, छह सौ से अधिक श्रोताओं ने जाना कि विज्ञान भूतिया घरों, अंतर्ज्ञान, टेलीपैथी और मनोगतिकी के विषय पर गंभीरता से काम कर रहा है और अवचेतन मन को नियंत्रित करने का प्रयास कर रहा है।"

* * *

यह आश्चर्य की बात नहीं है कि कुछ अधिक उदारवादी और प्रबुद्ध वैज्ञानिक भी यह मानने लगे हैं कि ईएसपी में वास्तव में कुछ सच्चाई है। सन् 1957 में, लाइफ पत्रिका ने "विज्ञान में संकट" शीर्षक से एक संपादकीय प्रकाशित किया था।

भौतिकी में नए रहस्य तत्वमीमांसा की खोजों को पुनर्जीवित करते हैं। विज्ञान के वैचारिक जगत की वर्तमान अव्यवस्था से आम आदमी को दो तथ्य महत्वपूर्ण लग सकते हैं। पहला यह कि पुराना भौतिकवाद अब और भी पुराना हो चुका है। इसकी मूल धारणा—कि एकमात्र 'वास्तविकता' वही है जो स्थान घेरती है और जिसका द्रव्यमान होता है—उस युग के लिए अप्रासंगिक है जिसने यह सिद्ध कर दिया है कि पदार्थ और ऊर्जा विनिमेय हैं। दूसरा निष्कर्ष यह है कि पुराना तत्वमीमांसा, विज्ञान के युग के लिए अप्रासंगिक होने के बजाय, जीवन के पूर्ण परिप्रेक्ष्य के लिए विज्ञान का अपरिहार्य पूरक है।

भौतिक विज्ञानी भी इस बात को मानते हैं; मार्टिन के एक हालिया विज्ञापन में कहा गया है कि उनके रॉकेट विशेषज्ञों की बातचीत में 'उनके काम का भौतिकी (और तत्वमीमांसा)' भी शामिल है। तत्वमीमांसा संबंधी चिंतन एक बार फिर प्रचलन में आ रहा है। भौतिकवाद से मुक्त होकर, तत्वमीमांसा अगली शताब्दी में मनुष्य की प्रमुख रुचि बन सकती है और जीवन और ब्रह्मांड की प्रकृति पर विश्वव्यापी सहमति भी स्थापित कर सकती है।

* * *

1971 तक, लाइफ पत्रिका के इस दूरदर्शी दृष्टिकोण ने वास्तविकता के नए आयाम ले लिए। 11 फरवरी, 1971 के लॉस एंजिल्स टाइम्स के अनुसार, अपोलो 14 के अंतरिक्ष यात्री एडगर डी. मिशेल ने शिकागो के एक इंजीनियर को मानसिक संदेश भेजने का प्रयास किया, जिसका शौक अलौकिक बोध था। ईएसपी कार्ड का उपयोग करते हुए, जिन्हें वह अपने साथ शिकागो के मानसिक विशेषज्ञ ओलाफ ओल्सन को संदेश भेजने के लिए ले गए थे, मिशेल ने यह साबित कर दिया कि अंतरिक्ष की दूरियों से भी टेलीपैथी काम करती है। मिशेल-ओल्सन प्रयोग तब से परा मनोविज्ञान के इतिहास का हिस्सा बन गया है। इसने न केवल टेलीपैथी के वास्तविक कामकाज के ज्ञान में महत्वपूर्ण योगदान दिया, बल्कि इसने अंतरिक्ष यात्री मिशेल के जीवन में भी बदलाव ला दिया। 27 सितंबर, 1971 के यूपीआई के एक संदेश के अनुसार, मिशेल को विश्वास हो गया कि पृथ्वी से दूर और संभवतः हमारी अपनी आकाशगंगा में भी जीवन मौजूद है। लेकिन उन्हें संदेह था कि भौतिक अंतरिक्ष यात्रा से सभी सवालों के जवाब मिल सकते हैं। "यदि एस्ट्रल प्रोजेक्शन की घटना में कोई वैधता है, तो अंतर-आकाशगंगा यात्रा में इसका उपयोग करना पूरी तरह से वैध हो सकता है।" मिशेल ने संकेत दिया कि वे

भविष्य में उपयोग के लिए ईएसपी पर अतिरिक्त ध्यान दे रहे हैं। तब से, ज़ाहिर है, श्री मिशेल ईएसपी के क्षेत्र में एक सक्रिय प्रयोगकर्ता बन गए हैं।

* * *

कुछ साल पहले मैं ब्रिजपोर्ट विश्वविद्यालय (कनेक्टिकट) में गया था। मैं भूतों के अस्तित्व के वैज्ञानिक प्रमाणों पर व्याख्यान दे रहा था। मेरे व्याख्यान में परीक्षण स्थितियों में ली गई कुछ स्लाइडें शामिल थीं और लगभग 1,200 छात्रों और संकाय सदस्यों ने इसे सुना। इस विशेष प्रदर्शन के परिणामस्वरूप, मेरी मुलाकात विश्वविद्यालय में मैकेनिकल इंजीनियरिंग के प्रोफेसर और पैरासाइकोलॉजी के प्रति गहरी रुचि रखने वाले रॉबर्ट जेफ्रीज़ से हुई। हमारी दोस्ती के वर्षों के दौरान, प्रोफेसर जेफ्रीज़ और मैंने पैरासाइकोलॉजी के लिए एक स्वतंत्र संस्थान स्थापित करने का भरसक प्रयास किया। हमने सोचा था कि बॉब जेफ्रीज़, जो कभी अपनी डेटा-प्रोसेसिंग कंपनी के अध्यक्ष रह चुके थे, व्यावसायिक समुदाय के लिए विशेष रूप से स्वीकार्य होंगे। लेकिन जिन अधिकारियों से उनकी मुलाकात हुई, वे इस परियोजना में किसी भी प्रकार का पैसा लगाने में जरा भी दिलचस्पी नहीं रखते थे। वे ईएसपी (प्रारंभिक स्थानिक प्रेक्षण) के अध्ययन के व्यावहारिक निहितार्थों को समझने में विफल रहे। शायद वे व्यावसायिक अधिकारियों के बीच भी प्रचलित चलन से अवगत नहीं थे।

23 अक्टूबर, 1969 को प्रकाशित वॉल स्ट्रीट जर्नल के एक लेख का शीर्षक था, "अजीबोगरीब घटनाएँ। अमेरिकी चुड़ैलों और अन्य तांत्रिक विषयों में बढ़ती दिलचस्पी दिखा रहे हैं।" तांत्रिक जगत का सर्वेक्षण बताते हुए स्टीफन जे. सैन्सवीट द्वारा लिखित इस लेख में हमेशा की तरह मिली-जुली जानकारी और गलत सूचनाओं का संग्रह है, जिसमें चुड़ैलों और वेयरवुल्फ को परा मनोविज्ञानियों और शोधकर्ताओं के साथ जोड़ दिया गया है। उन्होंने न्यूयॉर्क सिटी यूनिवर्सिटी के मनोविज्ञान प्रोफेसर मॉर्टिमर आर. फेनबर्ग के हवाले से कहा है, "हम जितना नियंत्रित और पूरी तरह से पूर्वानुमानित समाज की ओर बढ़ते हैं, उतना ही मनुष्य इसके परिणामों से भयभीत होता जाता है।" सैन्सवीट आगे कहते हैं कि तांत्रिक सामग्री, किताबें और यहाँ तक कि आभूषण जैसी छोटी-मोटी चीजें भी उत्सुक जनता द्वारा तेजी से खरीदी जा रही हैं, जो इस बात का पक्का संकेत है कि तांत्रिक विद्या का चलन बढ़ रहा है। हालांकि यह "सर्वेक्षण" किसी संडे सप्लीमेंट के लेख के स्तर का है और वास्तव में काफी बेकार है, फिर भी

यह इस बात का संकेत देता है कि व्यावसायिक समुदाय गुप्त विद्या के क्षेत्र को कितनी गंभीरता से लेता है, क्योंकि यह द वॉल स्ट्रीट जर्नल के पहले पृष्ठ पर प्रकाशित हुआ था।
अप्रैल 1971 में नेशन्स बिजनेस पत्रिका में प्रकाशित एक लेख, जिसका शीर्षक है "क्या छठी इंद्रिय से धन का प्रवाह होता है? क्या व्यावसायिक सफलता और अलौकिक बोध के बीच कोई संबंध है?", अधिक यथार्थवादी और सम्मानजनक है।

हमारा मानना है कि बिक्री पूर्वानुमान में पूर्वज्ञान की भूमिका पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। जानबूझकर या अनजाने में, इसका उपयोग संभवतः पहले से ही वहां किया जा रहा है। अधिकारियों के बीच पूर्वज्ञान की उपस्थिति और उपयोग पर और अधिक शोध की आवश्यकता है, लेकिन हमारे द्वारा प्राप्त साक्ष्य बताते हैं कि ऐसा शोध अत्यंत सार्थक होगा।

सन् 1955 में मैसाचुसेट्स के ब्रुकलाइन स्थित एंडरसन लैबोरेटरीज भविष्य की भविष्यवाणी करने का काम कर रही थी। इसके अध्यक्ष फ्रैंक एंडरसन ने कहा, "एंडरसन लैबोरेटरीज साप्ताहिक चार्ट उपलब्ध करा सकती है, जिससे पता चलता है कि आने वाले प्रत्येक सप्ताह शेयर बाजार का संभावित प्रदर्शन कैसा रहेगा।" एंडरसन की अवधारणा, जिसे वे एंडरसन नियम कहते हैं, में कई चीजों के अध्ययन पर आधारित भविष्यवाणियां शामिल हैं, जैसे कि चंद्रमा की ज्वार-भाटे से लेकर मानव व्यवहार और परा मनोविज्ञान के तत्व। प्रयोगशाला स्थापित करने से पहले वे कम से कम पच्चीस वर्षों से इस प्रकार का काम कर रहे थे। उनकी अधिकांश भविष्यवाणियां परिकलित रुझानों पर आधारित हैं और वित्त एवं राजनीति से संबंधित हैं। एंडरसन का दावा था कि हवाई जहाज दुर्घटनाओं के मामले में उनकी सटीकता दर 86 प्रतिशत थी क्योंकि दुर्घटनाएं चक्रीय होती हैं, बड़ी आग की घटनाओं में 92.6 प्रतिशत और ऑटोमोबाइल दुर्घटनाओं में 84 प्रतिशत थी। उनका यह भी कहना था कि उनके आकलन का उपयोग विज्ञापन अभियानों से लेकर कार्यकारी परिवर्तनों, नए उत्पादों के शुभारंभ और यहां तक कि मनोरंजन की योजना बनाने जैसे कई व्यावसायिक उद्देश्यों के लिए किया जा सकता है। राजनीति में, एंडरसन ने राजनीतिक अभियानों के संभावित परिणामों का पूर्व-निर्धारित खाका तैयार करने में मदद करने का प्रस्ताव रखा। उन्होंने शिकार और मछली पकड़ने के पूर्वानुमानों का भी काम किया, और चूंकि ये दोनों व्यवसाय व्यावसायिक समुदाय

के लिए विशेष रूप से महत्वपूर्ण हैं, ऐसा प्रतीत होता है कि एंडरसन ने इन दोनों क्षेत्रों में महारत हासिल कर ली थी।

* * *

पेंसिल्वेनिया के पिट्सबर्ग विश्वविद्यालय के जैवभौतिकी और सूक्ष्मजीवविज्ञान विभाग के प्रोफेसर आर. ए. मैककोनेल ने मई 1968 में अमेरिकन साइकोलॉजिस्ट में प्रकाशित एक लेख में लिखा कि मनोविज्ञान के छात्रों के समक्ष ईएसपी (प्रारंभिक स्व-दर्शन) पर चर्चा करते समय, जनता की भोली-भाली प्रवृत्ति का जिक्र करना असामान्य नहीं था। हालांकि, उन्होंने ईएसपी के समर्थकों और विरोधियों सहित वैज्ञानिकों की विश्वसनीयता की जांच करना अधिक आवश्यक समझा। 1955 में साइंस पत्रिका में प्रकाशित ब्रिटिश शोधकर्ता जी. आर. प्राइस के ईएसपी पर एक लेख का हवाला देते हुए, प्रोफेसर मैककोनेल ने प्राइस के इस तर्क की ओर इशारा किया कि ईएसपी का प्रमाण तभी निर्णायक होता है जब प्रयोगकर्ताओं की ईमानदारी और मानसिक स्वास्थ्य को स्वीकार किया जाए, लेकिन यदि यह मान लिया जाए कि प्रयोगकर्ताओं ने अपने गवाहों के सहयोग से जानबूझकर परिणामों में हेरफेर किया है, तो ईएसपी को आसानी से नकारा जा सकता है। मैककोनेल आगे बताते हैं कि पेशे से रसायनज्ञ प्राइस द्वारा लगाए गए धोखाधड़ी के इस निराधार आरोप को अमेरिका की सबसे प्रभावशाली वैज्ञानिक पत्रिका के पहले पृष्ठ पर प्रकाशित किया जा रहा था।

1955 से अब तक काफी समय बीत चुका है: अमेरिकन एसोसिएशन फॉर द एडवांसमेंट ऑफ साइंस ने हाल ही में पैरासाइकोलॉजी एसोसिएशन को सदस्य के रूप में चुना है। पैरासाइकोलॉजी के क्षेत्र में वैज्ञानिक शोधकर्ताओं के कई संगठनों में से एक, पैरासाइकोलॉजी एसोसिएशन ने कई वर्षों तक एसोसिएशन में प्रवेश पाने की कोशिश की थी, लेकिन कथित तौर पर प्रभावशाली लोगों के पूर्वाग्रहों के कारण उसे रोका गया था। विडंबना यह है कि पैरासाइकोलॉजी एसोसिएशन ने भी इन्हीं कारणों से कुछ प्रतिष्ठित शोधकर्ताओं को अपने सदस्यों में शामिल होने से रोक दिया था। लेकिन अब स्थिति बदल गई है और पैरासाइकोलॉजी अमेरिकन एसोसिएशन फॉर द एडवांसमेंट ऑफ साइंस में एक स्वीकृत विषय बन गया है। शोधकर्ताओं को भी शामिल होने के लिए आमंत्रित किया गया। पैरासाइकोलॉजी फाउंडेशन, इंक. की अध्यक्ष एलीन गैरेट के संरक्षण में 1962 में स्थापित

मेरी अपनी न्यूयॉर्क कमेटी फॉर द इन्वेस्टिगेशन ऑफ पैरानॉर्मल ऑकरेंसेज भी अमेरिकन एसोसिएशन फॉर द एडवांसमेंट ऑफ साइंस की सदस्य है।

अपने लेख में, प्रोफेसर मैककोनेल ने वैज्ञानिक ज्ञान के गढ़ माने जाने वाले कुछ पाठ्यपुस्तकों की त्रुटियों की ओर इशारा किया है। वे अपने पाठकों को याद दिलाते हैं कि सन् 1800 तक सर्वोच्च वैज्ञानिक विद्वानों का मानना था कि उल्कापिंड जैसी कोई चीज नहीं होती। फिर विज्ञान के अग्रणी विद्वानों ने पाया कि उल्कापिंड अंतरिक्ष से आते हैं, और पाठ्यपुस्तकों को तदनुसार पुनर्लिखित किया गया। प्रोफेसर मैककोनेल को इस बात से चिंता है कि संशोधित पाठ्यपुस्तकों में इस विषय पर हुए विवाद का उल्लेख नहीं किया गया। वे आश्चर्य व्यक्त करते हैं कि विज्ञान में अभी भी कितने विवाद चल रहे हैं और अध्ययन के लिए उपयोग की जाने वाली पाठ्यपुस्तकों में कितनी गंभीर गलतियाँ हैं। उनके विचार में, हमें जीव विज्ञान की पुस्तकों में व्यक्त विचारों के केवल आधे हिस्से पर ही विश्वास करना चाहिए, हालांकि वे निश्चित नहीं हैं कि कौन सा आधा हिस्सा। उनके अनुसार, ईएसपी मनोविज्ञान के अंतर्गत आता है, जो जीव विज्ञान का ही एक भाग है। उनका मानना है कि ईएसपी के मामले में तथाकथित विद्वान गलत हैं। मैककोनेल बताते हैं कि अधिकांश मनोविज्ञान की पाठ्यपुस्तकें इस विषय को गंभीरता से विचार करने योग्य न मानकर पूरी तरह से छोड़ देती हैं। लेकिन उनके विचार में, ये पुस्तकें गलत हैं, क्योंकि ईएसपी एक वास्तविक मनोवैज्ञानिक घटना है। वह यह भी दर्शाता है कि ईएसपी में गंभीर शोध करने वालों में से अधिकांश मनोवैज्ञानिक नहीं हैं, और इससे तथा इस विषय पर पाठ्यपुस्तकों में दी जाने वाली सामान्य जानकारी के साथ-साथ अपने स्वयं के स्रोतों से यह निष्कर्ष निकालता है कि मनोवैज्ञानिकों को ईएसपी में कोई रुचि नहीं है।

* * *

एल. सी. क्लिंग, एम.डी., फ्रांस के स्ट्रासबर्ग में रहने वाले एक मनोचिकित्सक हैं। वे जर्मन भाषा में लिखते हैं और अपने पेशे से संबंधित सामयिक लेख प्रकाशित करते रहे हैं। सिगमंड फ्रायड के निष्कर्षों पर आधारित अधिकांश मनोचिकित्सक और मनोविश्लेषक इस विचार को मानने से कतराते हैं कि डॉ. फ्रायड को मानसिक घटनाओं या अलौकिक शक्तियों की उपस्थिति (ईएसपी) में कोई रुचि थी। लेकिन सच्चाई यह है—और डॉ. क्लिंग ने 1966 में प्रकाशित एक लेख में इस बात को स्पष्ट किया है—कि फ्रायड का अलौकिक घटनाओं से कई

बार सामना हुआ था। जब वे पैंसठ वर्ष के थे, तब उन्होंने अमेरिकी शोधकर्ता हेरेवुड कैरिंगटन को लिखा था: "अगर मुझे अपना जीवन फिर से शुरू करना पड़े, तो मैं मनोविश्लेषक बनने के बजाय एक परामनोवैज्ञानिक बनना पसंद करूंगा।" और अपने जीवन के अंत में उन्होंने अपने जीवनीकार ई. जोन्स से स्वीकार किया कि वे एक अलोकप्रिय दृष्टिकोण का समर्थन करने के लिए पेशेवर जगत की शत्रुता को भी आमंत्रित करने से नहीं हिचकिचाएंगे। उन्हें ऐसा कहने के लिए प्रेरित करने वाला एक विशेष रूप से विश्वसनीय टेलीपैथी का मामला था जिसका उन्होंने सामना किया था।

* * *

जून 1966 में, जर्मन भौतिक विज्ञानी डॉ. वर्नर शिबेलर ने परा मनोविज्ञान पर लागू होने वाली भौतिक अनुसंधान विधियों के विषय पर अपने निष्कर्षों पर व्याख्यान दिया। यह व्याख्यान जर्मनी के कॉन्स्टेंस शहर में आयोजित परा मनोविज्ञान सम्मेलन के दौरान दिया गया था। परमाणु भौतिकी और परा मनोविज्ञान दोनों में पारंगत डॉ. शिबेलर ने सुझाव दिया कि मृत आत्माओं की स्मृतियों को भौतिक मस्तिष्क पदार्थ से स्वतंत्र रूप से स्थापित किया जा सकता है। “यदि प्रेतात्माओं से संपर्क के दौरान ऐसी आत्माएं, प्रेत या मृत आत्माओं का प्रकटीकरण होता है जिनकी पहचान निर्विवाद रूप से उन्हीं व्यक्तियों के रूप में की गई है, तो उन्हें केवल मृत व्यक्तियों की छवियों से कहीं अधिक माना जाना चाहिए। अन्यथा, हमें भौतिक जीवन में उन लोगों को, जिन्हें हमने कुछ समय से नहीं देखा है और आज फिर से सामना किया है, केवल एक पूर्व अस्तित्व की प्रतियाँ मानना होगा।” डॉ. शिबेलर आगे कहते हैं कि उनके विचार में परा मनोविज्ञान ने भौतिक मृत्यु के बाद जीवन की निरंतरता का निश्चित प्रमाण प्रस्तुत किया है।

यह विस्तृत और अत्यंत महत्वपूर्ण शोधपत्र जर्मनी के फ्रीबर्ग विश्वविद्यालय में बॉर्डरलाइन साइंसेज संस्थान के प्रमुख, प्रख्यात जर्मन परा मनोविज्ञानी डॉ. हंस बेंडर को लिखित रूप में प्रस्तुत किया गया था। चूंकि इसमें उत्तरजीवितावादी प्रकृति के पुख्ता प्रमाण थे, और डॉ. बेंडर ने स्वयं को मृत्यु के बाद व्यक्तिगत उत्तरजीविता की अवधारणा का स्पष्ट रूप से विरोधी घोषित किया है, इसलिए शोधपत्र अनुत्तरित रहा, और डॉ. शिबेलर संस्थान से कोई प्रतिक्रिया प्राप्त करने में असमर्थ रहे।

* * *

हालांकि कई प्रमुख विश्वविद्यालय ईएसपी (आत्माओं से संपर्क) पर चौबीसों घंटे शोध कर रहे हैं, फिर भी कुछ लोग ऐसे हैं जो इसे सच नहीं मानते। डॉ. वाल्टर अल्वारेज़ ने 23 जनवरी, 1972 को लॉस एंजिल्स टाइम्स में लिखा, "चिकित्सा पत्रिका एम.डी. के हालिया अंक में एक दिलचस्प लेख था, जो कई चिकित्सकों और रोगियों के लिए रुचिकर विषय है। क्या माध्यम वास्तव में आत्माओं से संपर्क करते हैं?" इसके बाद वे प्रसिद्ध फॉक्स बहनों पर लगे धोखाधड़ी के आरोप का उल्लेख करते हैं, जिन्होंने 1848 में पहली बार आत्माओं से संपर्क करने की बात को सार्वजनिक किया था। डॉ. अल्वारेज़ बताते हैं, "आश्चर्यजनक रूप से, कई सक्षम व्यक्तियों ने अध्यात्मवाद की वास्तविकता को स्वीकार किया है और कुछ लोग आत्माओं से संपर्क करने की बैठकों में होने वाली गतिविधियों में बहुत रुचि रखते हैं।" वह बड़ी सावधानी से विश्व प्रसिद्ध माध्यमों, जैसे कि यूसेपिया पल्लाडिनो, के बीच कथित धोखाधड़ी के कुछ गिने-चुने और अधिक प्रसिद्ध मामलों की ओर इशारा करते हैं, इस तथ्य को नजरअंदाज करते हुए कि इतालवी माध्यम अंत तक अत्यंत प्रामाणिक थीं और उनके मामले में कभी भी धोखाधड़ी निर्णायक रूप से साबित नहीं हुई थी। इस लेख में प्रोफेसर राइन या परा मनोविज्ञान के क्षेत्र में किसी भी शोध का एक शब्द भी नहीं है।

शायद उसी स्तर पर नहीं, लेकिन निश्चित रूप से कहीं अधिक लोकप्रिय, 5 नवंबर, 1969 को उसी लॉस एंजिल्स टाइम्स में छपा "डियर एबी" का जवाब है, जिसमें एक पाठक ने अपने मृत पति से संपर्क करने में मदद करने के लिए एक विश्वसनीय माध्यम खोजने के बारे में पूछा था। इस पर "डियर एबी" ने जवाब दिया, "कई लोगों ने दावा किया है कि वे मृतकों से बात कर सकते हैं, लेकिन अब तक कोई भी इसे साबित नहीं कर पाया है।"

* * *

अगर हम हाल ही में इस क्षेत्र में बढ़ रही कुछ कम वांछनीय प्रथाओं पर गौर करें, तो शायद ऐसे अनभिज्ञ लोगों के मानसिक घटनाओं के प्रति नकारात्मक रवैये को माफ किया जा सकता है। उदाहरण के लिए, पेंटहाउस पत्रिका के प्रकाशक को ही लें, जो हमारे अपने प्लेबॉय की अंग्रेजी प्रतिद्वंदी है। परीक्षण स्थितियों के तहत असाधारण घटनाएँ साबित करने वाले किसी

भी व्यक्ति को 25,000 पाउंड का पुरस्कार दिया जाना था। सर जॉर्ज जॉय, सोसाइटी फॉर साइकिकल रिसर्च, प्रोफेसर एच. एच. प्राइस, कैनन जॉन पियर्स-हिगिंस और प्रमुख मानसिक शोधकर्ता श्रीमती कैथलीन गोल्डनी की एक समिति ने पत्रिका के पन्नों को ध्यान से देखने पर विरोध में इस्तीफा दे दिया, क्योंकि उन्होंने पाया कि यह आत्माओं की तुलना में शरीरों पर अधिक ध्यान केंद्रित करती है।

फीनिक्स, एरिज़ोना स्थित साइकिक रजिस्टर इंटरनेशनल ने इस क्षेत्र के सभी विशेषज्ञों की सूची तैयार करने की इच्छा जताई है ताकि वे दुनिया के सामने मानसिक जगत के प्रमुख व्यक्तियों की सूची प्रस्तुत कर सकें। सेंट पीटर्सबर्ग, फ्लोरिडा स्थित एक पैरासाइकोलॉजी मार्गदर्शन संस्थान ने मुझे बताया कि वह पैरासाइकोलॉजी के क्षेत्र में तकनीकी पुस्तकों की एक ग्रंथ सूची तैयार कर रहा है। पार्कर्सबर्ग, वेस्ट वर्जीनिया स्थित इंस्टीट्यूट ऑफ साइकिक स्टडीज ने दावा किया कि "संयुक्त राज्य अमेरिका में पहली बार पैरासाइकोलॉजी को समर्पित एक कॉलेज खोला जा रहा है जो मानसिक विज्ञान में डॉक्टरेट की उपाधि प्रदान करने वाला दो वर्षीय पाठ्यक्रम उपलब्ध कराएगा और यह वेस्ट वर्जीनिया में स्थित होगा।" अध्ययन पाठ्यक्रमों की सूची बहुत प्रभावशाली लग रही थी और इसमें मस्तिष्क के अध्ययन (मस्तिष्क का अध्ययन) के लिए तीन क्रेडिट, पैरासाइकोलॉजी की पृष्ठभूमि (तीन क्रेडिट), और भाषण में जादू (तीन क्रेडिट), जादू से जुड़ी अंधविश्वासों की व्याख्या; और जादूगरी के रहस्य जैसी आकर्षक चीजें शामिल थीं। पाठ्यक्रमों की सूची व्याकरण संबंधी त्रुटियों और वर्तनी की गलतियों से भरी हुई थी। न्यूयॉर्क टाइम्स में 4 दिसंबर, 1970 को छपे एक लेख के अनुसार, न्यूयॉर्क शहर की साइकिक डाइमेंशन्स इनकॉर्पोरेटेड के पास "सब कुछ है", यहाँ "सब कुछ" का अर्थ है व्यक्तिगत ज्योतिषी, ग्राफोलॉजिस्ट, हस्तरेखा विशेषज्ञ, साइकोमेट्रिस्ट और टैरो कार्ड पढ़ने में माहिर लोग। लेखिका लिसा हैमेल के अनुसार, बुकिंग एजेंसी के संस्थापक विलियम जे. डैनियल के पास "लगभग 150 आध्यात्मिक व्यक्तित्व हैं और वे विभिन्न अवसरों के लिए बुकिंग करने को तैयार हैं।" इस उद्यम के स्वामी बताते हैं, "मुझे मनोरंजन का माहौल बनाना पड़ा क्योंकि लोग तथ्यों को नहीं सुनते।" श्री डैनियल ने मूल रूप से "ब्रेकफास्ट विद अ विच" नामक एक यादगार कार्यक्रम से शुरुआत की, जिसमें न्यू जर्सी की एक खूबसूरत युवा

वेट्रेस विच हेज़ल ने अभिनय किया था, जिसने कई सार्वजनिक अवसरों पर जादू-टोने का दावा किया था।

* * *

24 जनवरी, 1971 को न्यूयॉर्क डेली न्यूज़ ने बताया, "मानसिक टेलीपैथी, मानसिक अनुभवों और तत्वमीमांसा के छह प्रमुख विशेषज्ञ अलौकिक बोध पर एक पैनल चर्चा करेंगे।" यह बैठक परा मनोविज्ञान और तत्वमीमांसा अध्ययन समिति के तत्वावधान में आयोजित की जा रही थी। मानो यह नाम ही काफी प्रभावशाली न हो, इसमें एक उपविभाग भी है जिसका नाम है 'तत्वमीमांसा विज्ञान अध्ययन के लिए राष्ट्रीय समिति'। पता चला कि विशेषज्ञ वास्तव में अपने-अपने क्षेत्रों के विशेषज्ञ थे। इनमें न्यूयॉर्क के सिटी कॉलेज की डॉ. गर्ट्रूड श्मेडलर और प्रसिद्ध मानसिक विशेषज्ञ रॉन वार्मथ शामिल थे। मेरे एक सहकर्मी, हॉफस्ट्रा विश्वविद्यालय के रेमंड वैन ओवर भी इसमें शामिल थे। हालांकि मुझे परा मनोविज्ञान और तत्वमीमांसा अध्ययन समिति के बारे में और कुछ पता नहीं चला, लेकिन यह एक प्रतिष्ठित संगठन प्रतीत होता था, या यूं कहें कि एक प्रतिष्ठित संगठन बनाने का प्रयास था। तब तक ईएसपी के अध्ययन में रुचि रखने वाले अधिकांश व्यक्तियों के लिए एकमात्र प्रतिष्ठित संगठन, और आज भी, न्यूयॉर्क शहर के 5 वेस्ट सेवेंटी-थर्ड स्ट्रीट पर स्थित अमेरिकन सोसाइटी फॉर साइकिकल रिसर्च (ASPR) ही है। लेकिन डॉ. जे. हिसलोप द्वारा स्थापित यह संस्था अब काफी रूढ़िवादी हो गई है। यह अब शायद ही कभी कोई विवादास्पद निष्कर्ष प्रकाशित करती है। इसकी पत्रिका अत्यंत तकनीकी है और शुरुआती छात्रों को हतोत्साहित कर सकती है। सौभाग्य से, यह ASPR न्यूज़लेटर भी प्रकाशित करती है, जो कुछ हद तक अधिक लोकतांत्रिक और लोकप्रिय शैली में है। संस्था अभी भी उन परा मनोविज्ञानियों की उपेक्षा करती है जो उनके मानकों के अनुरूप नहीं हैं, विशेष रूप से मेरे जैसे लोगों की, जो अक्सर टेलीविजन पर दिखाई देते हैं और मानसिक मामलों पर ऐसे निश्चित बयान देते हैं जिन्हें संस्था संतुलित रखना चाहती है। अमेरिकन सोसाइटी फॉर साइकिकल रिसर्च को समर्थन देने वाली कई वसीयतें इस उम्मीद में दी गई थीं कि संस्था मृत्यु के बाद मानव व्यक्तित्व के अस्तित्व का कोई निश्चित प्रमाण स्थापित कर सकेगी और अन्य महत्वपूर्ण वैज्ञानिक प्रश्नों के उत्तर दे सकेगी। यदि मेरे जैसे शोधकर्ता इन मामलों को पहले से ही सिद्ध घोषित कर देते हैं, तो भविष्य में संस्था के लिए

सिद्ध करने के लिए बहुत कम बचेगा। लेकिन समाज के व्यक्तिगत नेता अपने विचारों को खुलकर व्यक्त करते हैं। समाज के लंबे समय तक अध्यक्ष रहे और पूर्व में मेनिंगर फाउंडेशन से जुड़े रहे डॉ. गार्डनर मर्फी ने कहा, "यदि विज्ञान के किसी अन्य क्षेत्र में परा मनोविज्ञान की तुलना में दसवां हिस्सा भी सबूत होता, तो उसे बिना किसी संदेह के स्वीकार कर लिया जाता।" लेखक और शोधकर्ता डॉ. लॉरेंस एल. ले शान, पीएच.डी., कहते हैं:

परा मनोविज्ञान पहली नज़र में जितना दिखता है, उससे कहीं अधिक व्यापक है। सबसे गहरे अर्थों में, यह मनुष्य के मूल स्वभाव का अध्ययन है... मनुष्य में, उसके और ब्रह्मांड के साथ उसके संबंध में, जितना हमने स्वीकार किया है, उससे कहीं अधिक गहराई है। इसके अलावा, यह 'अधिकता' उन पहलुओं से भिन्न प्रकार और क्रम की है जिनके बारे में हम जानते हैं। हमारे पास आंकड़े हैं और वे ठोस और स्पष्ट हैं, लेकिन यदि मनुष्य केवल वही होता जो हमने उसे माना है, तो ये आंकड़े संभव नहीं होते। यदि वह केवल मांस और हड्डियों का बना होता, यदि वह मशीन के समान सिद्धांतों पर काम करता, यदि वह वास्तव में अन्य मनुष्यों से उतना ही अलग होता जितना हमने सोचा है, तो उसके लिए वे कार्य करना असंभव होता जो हम जानते हैं कि वह कभी-कभी करता है। ईएसपी के 'असंभव तथ्य' हमें मनुष्य के उस हिस्से के बारे में बताते हैं जो लंबे समय से किंवदंतियों, कला, स्वप्न, मिथकों और रहस्यवाद के कोहरे में छिपा हुआ था, जिसे पिछले नब्बे वर्षों में हमारे वास्तविकता के अन्वेषकों ने वैज्ञानिक रूप से मान्य और वास्तविक सिद्ध किया है।

* * *

अमेरिका में ईएसपी (आध्यात्मिक आध्यात्मिकता) की वास्तविकता को स्वीकार करने वालों और इसे सिरे से नकारने वालों के बीच बहस जारी थी, उसी दौरान रूसियों ने एक चौंकाने वाला कदम उठाया: वे इस क्षेत्र में पूरी तरह से उतर गए। उस समय पूर्वी यूरोप के कम से कम आठ प्रमुख विश्वविद्यालयों में परा मनोविज्ञान के पूर्णकालिक और पूर्ण कर्मचारियों वाले अनुसंधान केंद्र थे। इतना ही नहीं, इस क्षेत्र में काम करने वालों पर कोई प्रतिबंध नहीं था और वे अपनी इच्छानुसार कुछ भी प्रकाशित करने के लिए स्वतंत्र थे। यह अमेरिकी वैज्ञानिक जगत के लिए एक बड़ा झटका था। शीला ओस्ट्रैंडर और लिन श्रोएडर की अद्भुत पुस्तक,

"साइचिक डिस्कवरीज़ बिहाइंड द आयरन कर्टन" की समीक्षा करते हुए डॉ. थेल्मा मॉस ने कहा, "यदि उनके कथनों की सत्यता सिद्ध हो जाती है, तो अमेरिकी वैज्ञानिक के सामने यह विडंबनापूर्ण स्थिति होगी कि 1970 में सोवियत भौतिकवादी विज्ञान ने गुप्त विद्या के क्षेत्र में वैसी ही सफलता हासिल कर ली है जैसी 1957 में स्पुतनिक ने अंतरिक्ष में की थी।"
ऐसा प्रतीत होता है कि रूसी लोग ईएसपी (प्रारंभिक दृष्टि) की तकनीकों को व्यावहारिक उपयोग में लाने में हमसे कई साल आगे हैं। कथित तौर पर, उन्होंने दूर से सम्मोहन करना सीख लिया है, उन्होंने हमें मनोगतिकी (साइकोकाइनेसिस) के प्रयोगों की तस्वीरें दिखाई हैं, जिसमें केवल मानसिक शक्तियों से वस्तुओं को गतिमान किया जाता है, और यहां तक कि किरिलियन फोटोग्राफी भी दिखाई है, जो जीवित चीजों के चारों ओर जीवन-शक्ति क्षेत्रों को दर्शाती है। लॉस एंजिल्स टाइम्स के लिए पुस्तक की समीक्षा करते हुए नैट फ्रीडलैंड ने कहा:

पूर्वी यूरोप के वैज्ञानिक वर्षों से असाधारण रूप से व्यापक परा मनोविज्ञान प्रयोगों में सफलता प्राप्त कर रहे हैं। रूस, चेकोस्लोवाकिया और यहां तक कि छोटे से देश बुल्गारिया ने नियंत्रित वैज्ञानिक मनोगतिकी (पीएसआई) प्रयोगों में जो उपलब्धियां हासिल की हैं, उनके सामने पश्चिमी देशों की ईएसपी (इलेक्ट्रोपैथिक परसेप्शन) तकनीकें फीकी लगती हैं। ड्यूक विश्वविद्यालय के डॉ. जे. बी. राइन की तरह ताश के पत्तों और पासों के साथ अंतहीन प्रयोग करने के बजाय, सोवियत वैज्ञानिकों ने एक टेलीपैथिक रूप से प्रतिभाशाली प्रयोगकर्ता को मॉस्को में और दूसरे को बारह सौ मील दूर साइबेरिया में तैनात किया।

कुछ ही समय बाद, अखबार रूसियों और उनके टेलीपैथ या प्रयोगकर्ताओं से संबंधित लेखों से भर गए। अफवाह थी कि रूस में एक महिला थी जिसके पास जैव-प्लाज्मिक ऊर्जा थी और जो मानसिक एकाग्रता से वस्तुओं को हिला सकती थी। इस महिला, नीना कुलागिना, की ऐसा करते हुए तस्वीर खींची गई थी। डेली न्यूज के विज्ञान लेखक विलियम राइस ने अपने पाठकों से पूछा, "क्या आपमें ईएसपी (अंतरात्मा की शक्ति से जुड़ी दृष्टि) है? इसे साबित करना मुश्किल है, लेकिन इनकार करना भी मुश्किल है।" यह लेख जानकारी और अटकलों का एक सामान्य मिश्रण है, लेकिन यह दर्शाता है कि संयुक्त राज्य अमेरिका में ईएसपी में कितनी रुचि बढ़ गई थी। बेशक, परा मनोविज्ञान के क्षेत्र का पता लगाने के लिए आयरन कर्टन के पार

जाकर, शीला ओस्ट्रैंडर और लिन श्रोएडर ने कोई अनछुआ क्षेत्र नहीं चुना था। संयुक्त राज्य अमेरिका में परा मनोविज्ञान के क्षेत्र में सक्रिय लोग प्रोफेसर एल. वासिलिव के कार्यों से लंबे समय से परिचित थे। रूसी वैज्ञानिक की पुस्तकें इस क्षेत्र में मानक मानी जाती हैं। रूसी वैज्ञानिकों के ईएसपी से संबंधित जांच आयोग के अध्यक्ष डॉ. आई. एम. कोगन के हवाले से कहा गया है कि उनका मानना है कि "कई लोगों में टेलीपैथिक जानकारी प्राप्त करने और प्रसारित करने की क्षमता है, लेकिन यह क्षमता अभी तक विकसित नहीं हुई है।"

* * *

और जब रूसी अपने पैरासाइकोलॉजी प्रयोगशालाओं और पर्यवेक्षकों की टीमों का विकास कर रहे थे, उस दौरान अमेरिकी पक्ष में क्या हो रहा था? मे वेस्ट ने हॉलीवुड स्थित अपने आलीशान घर में एक भव्य पार्टी दी, जिसमें उनके पसंदीदा मानसिक विशेषज्ञ, फीनिक्स के "डॉ." रिचर्ड आयरलैंड ने ऐसे चमत्कार दिखाए जिन्हें मेहमानों ने अद्भुत बताया। इसमें कोई संदेह नहीं है कि मे वेस्ट पैरासाइकोलॉजी में गंभीरता से रुचि रखती हैं। उन्होंने कुछ समय पहले एक विश्वविद्यालय में इस विषय पर व्याख्यान भी दिया था। लेकिन आमंत्रित मेहमानों के लिए भविष्य की भविष्यवाणी करना और साथ ही उन्हें मोहित करना, पैरासाइकोलॉजी के लिए एक गंभीर संस्थान स्थापित करने से बिलकुल अलग है, जहाँ इस विषय का निष्पक्ष रूप से और चौबीसों घंटे अध्ययन किया जा सके।

व्यावहारिक तौर पर, विवादित डच नागरिक पीटर हर्कॉस, जो कुछ साल पहले सीढ़ी से गिर गए थे और जिन्हें अपनी टेलीपैथिक क्षमताओं का पता चला था, को टेट हत्याकांड के सुर्खियों में आने के दौरान पुलिस की मदद के लिए बुलाया गया था। हर्कॉस ने हमलावरों में से एक को दाढ़ी वाला बताया और महसूस किया कि हमले में जादू-टोने की झलक थी। लगभग उसी समय, बिशप जेम्स पाइक ने सुर्खियां बटोरने वाली प्रेस कॉन्फ्रेंस में दुनिया को बताया कि उन्होंने विभिन्न माध्यमों से अपने मृत बेटे से बात की थी। बिशप पाइक के हवाले से कहा गया है, "इस बात की पुख्ता वैज्ञानिक पुष्टि करने के लिए पर्याप्त सबूत हैं कि मानव व्यक्तित्व मृत्यु के बाद भी जीवित रहता है। यह घटी घटना की सबसे विश्वसनीय व्याख्या है।"

ब्रिटेन में, रोज़मेरी ब्राउन को बीथोवेन, चोपिन, शुबर्ट और डेब्यूसी जैसे दिग्गज संगीतकारों सहित कई मृत संगीतकारों से संदेश मिल रहे थे। उनकी सिम्फनी, जिन्हें उनकी अलौकिक शक्ति (ईएसपी) क्षमताओं का परिणाम माना जाता है, रिकॉर्ड भी की जा चुकी हैं। जब मैंने पहली बार इस अद्भुत महिला, मिस ब्राउन के बारे में सुना, तो मुझे लगा कि अगर इस माध्यम से मृत संगीतकारों के निजी जीवन के बारे में कोई निजी, अभी तक अप्रकाशित जानकारी सामने नहीं आती, तो इस मामले को खारिज कर देना ही बेहतर होगा। जाहिर है, समय के साथ और निरंतर जांच-पड़ताल के बाद यही हुआ। मैं मिस ब्राउन से कभी नहीं मिला, लेकिन इस मामले की जांच के लिए ब्रिटेन भेजे गए जांचकर्ताओं में से एक स्टीवर्ट रॉब थे, जिन्हें मैं अच्छी तरह जानता था। वे एक पैरासाइकोलॉजिस्ट और संगीत विशेषज्ञ दोनों थे। उनका मानना है कि रोज़मेरी ब्राउन की घटना वास्तव में सच है, लेकिन मिस ब्राउन अकेली संगीत माध्यम नहीं हैं। नेशनल एनक्वायरर के अनुसार, ब्रिटिश माध्यम लेस्ली फ्लिंट ने अपने दो मित्रों, सिडनी वुड्स और श्रीमती बेट्टी ग्रीन के साथ मिलकर दावा किया कि उन्होंने फ्रेडरिक चोपिन और ऑस्कर वाइल्ड सहित दो सौ से अधिक प्रसिद्ध हस्तियों की आवाजों को टेप पर रिकॉर्ड किया है।

एक दरार उभरती है

हालांकि, धीरे-धीरे, मानसिक घटनाओं की जांच के लिए गूढ़ या रहस्यमय, भावनात्मक रूप से रंगे हुए तरीके और विशुद्ध वैज्ञानिक, नैदानिक रूप से उन्मुख तरीके के बीच का अंतर अधिक स्पष्ट हो जाता है। इसका यह अर्थ नहीं है कि दोनों विधियाँ अंततः सत्य की खोज में विलीन नहीं हो जाएँगी।

किसी समस्या के समाधान के लिए सभी संभावित तरीकों का उपयोग करना ही एकमात्र उपाय है। हालांकि, मुझे लगता है कि ऐसे समय में जब इतने सारे लोग तंत्र-मंत्र और परा मनोविज्ञान से परिचित हो रहे हैं, यह बहुत आवश्यक है कि एक सामान्य पाठक और परा मनोविज्ञान के प्रोफेसर के बीच, यानी उस व्यक्ति के बीच जिसने पच्चीस वर्षों तक मानसिक घटनाओं का अध्ययन किया है और जिसके पास सभी आवश्यक अकादमिक योग्यताएं हैं, और उस नौसिखिए के बीच जो अवसरवादिता का फायदा उठाकर अपना खुद का

"अनुसंधान" केंद्र या संस्था शुरू करने के लिए चुपके से निकल आया है, स्पष्ट अंतर किया जाए।

इस क्षेत्र में ईमानदारी से जानकारी चाहने वालों को उत्तर देने वालों की योग्यता पर संदेह करना चाहिए; जाने-माने नाम हमेशा उन नामों से बेहतर होते हैं जिन्हें आपने पहले कभी नहीं सुना हो। अकादमिक योग्यता या संबद्धता रखने वाले शोधकर्ताओं पर उन लोगों की तुलना में अधिक भरोसा किया जा सकता है जो केवल कागजी डॉक्टरेट की उपाधियाँ पेश करते हैं। अंत में, खुद को महान भविष्यवक्ता बताने वाले मानसिक पाठकों की विश्वसनीयता का परीक्षण उनके द्वारा प्रत्येक मामले में किए गए कार्यों के आधार पर किया जाना चाहिए, न कि उनकी स्व-घोषित प्रतिष्ठा के आधार पर। इन सभी बातों को ध्यान में रखते हुए और उचित सावधानी बरतते हुए, यह देखकर बहुत खुशी होती है कि इतने सारे ईमानदार और गंभीर लोग परा मनोविज्ञान के क्षेत्र में अधिकाधिक समर्पित हो रहे हैं और इस विषय में वैज्ञानिक अनुसंधान कर रहे हैं जो मुझे मानव प्रयास के सबसे आकर्षक क्षेत्रों में से एक लगता है। जब से स्वर्गीय सर ओलिवर लॉज ने घोषणा की थी, "मानसिक अनुसंधान आज दुनिया का सबसे महत्वपूर्ण क्षेत्र है, निस्संदेह सबसे महत्वपूर्ण," तब से मैं भी यही महसूस करता हूँ।

मानसिक फोटोग्राफी

मिसौरी के सेंट लुइस स्थित वाशिंगटन विश्वविद्यालय में, सीमित संसाधनों के साथ शोधकर्ताओं का एक समर्पित समूह मानसिक फोटोग्राफी के रहस्य को सुलझाने का प्रयास कर रहा है। कोलोराडो विश्वविद्यालय के डॉ. जूल्स आइज़ेनबड और मेरी पुस्तक "साइकिक फोटोग्राफी—थ्रेशहोल्ड ऑफ ए न्यू साइंस?" के पदचिन्हों पर चलते हुए, विश्वविद्यालय के भौतिकी विभाग के तत्वावधान में यह समूह "विभिन्न प्रकार की परिस्थितियों में नियमितता के साथ मानसिक तस्वीरें बनाने" का प्रयास कर रहा है। समूह का मानना है कि चूंकि टेड सेरियोस ने संयोगवश इस क्षेत्र में अपनी क्षमता का पता लगाया था, इसलिए अन्य लोगों में भी ऐसी ही क्षमताएं हो सकती हैं। वे बताते हैं, "जब हमें कोई उपयुक्त विषय मिल जाएगा, तभी मानसिक फोटोग्राफी की प्रकृति की जांच का वास्तविक कार्य शुरू हो सकेगा।" यह तथ्य कि एक प्रमुख अमेरिकी

विश्वविद्यालय के भौतिकी विभाग से जुड़े लोग भी मानसिक फोटोग्राफी की वैज्ञानिक रूप से जांच करने की बात कर रहे हैं, अपने आप में एक नई बात है, खासकर तब जब इस विषय पर वर्षों से अधिकांश स्थापित वैज्ञानिकों द्वारा लगाए गए आरोपों को देखते हुए, यह उम्मीद की जा सकती है कि निष्पक्ष विज्ञान का एक नया युग वास्तव में हमारे सामने आ रहा है।

मन पर नियंत्रण और अल्फा अवस्था

मैरीलैंड के स्टैनली कॉर्न ने भौतिकी में स्नातक की डिग्री प्राप्त की है और गणित, सांख्यिकी और मनोविज्ञान में स्नातकोत्तर की पढ़ाई की है। वे नौसेना में ऑपरेशन रिसर्च एनालिस्ट के रूप में कार्यरत हैं। अखबारों में विज्ञापन देखकर उन्हें सिल्वा माइंड कंट्रोल कोर्स के बारे में पता चला और उन्होंने इसे पूरा किया। इस कोर्स के माध्यम से वे सिल्वा के दृष्टिकोण से परिचित हुए, जिसमें मस्तिष्क तरंगों की अल्फा अवस्था की जागरूकता भी शामिल है, जो समस्या-समाधान की क्षमता में वृद्धि और स्वाभाविक रूप से, ईएसपी (अंतर्दृष्टि और संवेदनशीलता) से जुड़ी है। श्री कॉर्न ने बताया, "मुझे इस कोर्स में शामिल होने के लिए प्रेरित करने वाली बात व्याख्याता का यह आश्चर्यजनक दावा था कि कोर्स करने वाला हर व्यक्ति अपनी संतुष्टि के अनुसार मानसिक रूप से कार्य करने में सक्षम होगा या उसे अपने पैसे वापस मिल जाएंगे। यह मैं देखना चाहता था।" सिल्वा पद्धति का वर्णन करते हुए, जिसमें दिवंगत एडगर केसी द्वारा विकसित निदान के कुछ तत्व शामिल हैं, लेकिन इसे नई तकनीकों और जिसे हम यात्रा संबंधी दूरदर्शिता कहते हैं, के साथ जोड़ा गया है, श्री कॉर्न ने पाया कि मानसिक गतिविधियाँ केवल स्वास्थ्य संबंधी मामलों के निदान तक ही सीमित नहीं हैं, बल्कि इनका उपयोग मनोमापी, गुम हुई वस्तुओं और व्यक्तियों का पता लगाने, यहाँ तक कि ऑटोमोबाइल में खराबी का पता लगाने में भी किया जा सकता है। “साई के अस्तित्व के ठोस प्रमाण देखने और स्वयं इस घटना का अनुभव करने के बाद, मैं स्वाभाविक रूप से इसके संचालन को नियंत्रित करने वाले अंतर्निहित सिद्धांतों को जानना चाहता था। आज तक, मैं रेडियो तरंगों जैसी किसी भी ज्ञात ऊर्जा के माध्यम से सूचना के मानसिक संचरण की व्याख्या करने में असमर्थ रहा हूँ। इस घटना को इच्छानुसार प्रदर्शित किया जा सकता है, जिससे नियंत्रित प्रयोग संभव हो जाते हैं।”

उपकरण

लेकिन मनुष्य में ईएसपी शक्तियों की जागरूकता और पूर्ण उपयोग की खोज में मन-नियंत्रण दृष्टिकोण ही एकमात्र नई बात नहीं है। भौतिकी के क्षेत्र में काम करने वाले लोग उपकरणों, परीक्षण उपकरणों और भौतिक औजारों के आदी हैं। इनमें से कुछ लोगों ने परा मनोविज्ञान और ईएसपी अनुसंधान के सीमांत क्षेत्रों में रुचि दिखाई है और इस क्षेत्र में कुछ नए यांत्रिक उपकरण का योगदान करने की आशा रखते हैं। परचेजिंग वीक पत्रिका के अनुसार, अवरक्त प्रकाश का उपयोग करके किसी अदृश्य घुसपैठिए के शरीर से निकलने वाली गर्मी के माध्यम से उसके स्थान का सटीक पता लगाने वाले नए उपकरण विकसित किए गए हैं। 17 अगस्त, 1970 को टाइम पत्रिका ने अपने विज्ञान अनुभाग में "थर्मोग्राफी: गर्मी से रंगना" शीर्षक से खबर छापी। पत्रिका ने बताया कि

इन्फ्रारेड डिटेक्टर ऐसी अद्भुत छवियां प्रदान कर रहे हैं जो पहले नंगी आंखों से बिल्कुल अदृश्य थीं। इस नए माध्यम को कलर थर्मोग्राफी कहा जाता है, जो ऊष्मा किरणों को रंग में परिवर्तित करने की तकनीक है। साधारण रंगीन तस्वीरों के विपरीत, जो परावर्तित दृश्य प्रकाश पर निर्भर करती हैं, थर्मोग्राम या ऊष्मा चित्र केवल वस्तु के तापमान पर प्रतिक्रिया करते हैं। इस प्रकार थर्मोग्राफिक कैमरा अंधेरे या उजाले दोनों में समान रूप से काम कर सकता है। कैमरे की असाधारण क्षमता सभी वस्तुओं, चाहे सजीव हों या निर्जीव, की एक विशेषता पर आधारित है। क्योंकि उनके परमाणु निरंतर गतिमान रहते हैं, वे कुछ मात्रा में ऊष्मा या इन्फ्रारेड विकिरण उत्सर्जित करते हैं। यदि तापमान पर्याप्त रूप से बढ़ जाता है, तो विकिरण मानव आंख को दिखाई दे सकता है, जैसे कि भट्टी की लाल चमक में। सामान्यतः, ऊष्मा उत्सर्जन इन्फ्रारेड प्रकाश की अदृश्य सीमा में ही सीमित रहता है।

यह स्पष्ट है कि ऐसे उपकरण तथाकथित भूतिया घरों, मानसिक रूप से सक्रिय क्षेत्रों या मनोमापी वस्तुओं की जांच में बहुत सहायक हो सकते हैं; दूसरे शब्दों में, इनका उपयोग उन जगहों पर किया जा सकता है जहां नंगी आंखों से कुछ भी पता नहीं चलता, या जहां सामान्य फोटोग्राफी से कुछ भी असामान्य नहीं दिखता। अप्रैल 1970 के इलेक्ट्रॉनिक्स वर्ल्ड पत्रिका में

एल. जॉर्ज लॉरेंस द्वारा लिखित "इलेक्ट्रॉनिक्स और पैरासाइकोलॉजी" शीर्षक वाले एक लेख में कहा गया है,

इस क्षेत्र में उभरने वाली सबसे दिलचस्प चीजों में से एक है अब प्रसिद्ध बैक्स्टर प्रभाव। चूंकि जीवित पौधे अपने समग्र कल्याण से संबंधित विचारों पर जैवविद्युत रूप से प्रतिक्रिया करते प्रतीत होते हैं, इसलिए न्यू जर्सी के कोशिका विज्ञानी डॉ. एच. मिलर का मानना है कि यह घटना एक प्रकार की कोशिकीय चेतना पर आधारित है। ये और इनसे संबंधित विचार इस धारणा को जन्म देते हैं कि साई (बुद्धि) एक तथाकथित असाधारण मैट्रिक्स का ही एक हिस्सा है—एक अद्वितीय संचार तंत्र जो सभी जीवन को आपस में जोड़ता है। इसकी घटनाएं स्पष्ट रूप से बहु-इनपुट आधार पर काम करती हैं जो ज्ञात भौतिक नियमों से परे है।

फिलाडेल्फिया, पेनसिल्वेनिया की लैंस्टन मोनोटाइप कंपनी फोटोमैकेनिकल उपकरण बनाती है और इसने ईएसपी (परमाणु संवेदनशीलता) क्षेत्र में भी कुछ काम किया है। कंपनी ने परामानसिकविदों के लिए उपयोगी परीक्षण उपकरण विकसित करने का प्रयास किया। ब्रॉकटन, मैसाचुसेट्स की सुपीरियर वेंडिंग कंपनी ने अपने डिज़ाइन इंजीनियर आर. के. गोल्का के माध्यम से मुझे एक नए विकसित इमेज इंटेंसिफायर ट्यूब के बारे में जानकारी दी, जिसे एक पोर्टेबल टेलीविजन कैमरे में उपयोग के लिए विकसित किया गया था, जो प्रेतवाधित क्षेत्रों के वातावरण में छोड़े गए सूक्ष्म निशानों को पकड़ने में सक्षम था। इंजीनियर ने समझाया, "इस ट्यूब का मूल कार्य टेलीविजन कैमरे द्वारा कैप्चर की गई कमजोर छवियों को तीव्र करना और उन्हें कैप्चर करना है। ये ऐसी छवियां हैं जो अन्यथा दिखाई नहीं देंगी या जिन पर ध्यान नहीं दिया जाएगा।" दो साल बाद, श्री गोल्का, जिन्होंने तब तक अपनी इलेक्ट्रॉनिक सलाहकार कंपनी स्थापित कर ली थी, ने स्वतःस्फूर्त आयनीकरण के साथ प्रयोग करने का सुझाव दिया। “यदि वायुमंडल में डाली गई ऊर्जा को आसपास के माध्यम, यानी हवा के साथ ठीक से जोड़ा जा सके, तो भारी मात्रा में आयनीकरण हो सकता है। यदि आवृत्ति और तरंग दैर्ध्य का ऐसा संयोजन हो जो हमारे वायुमंडल के सामान्य तत्वों के कई इलेक्ट्रॉन कोशों को हटा दे, तो यह भी वैज्ञानिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण होगा। बेशक, इलेक्ट्रॉन बेतरतीब ढंग से वापस गिरेंगे, जिससे सफेद प्रकाश या प्रतिदीप्ति उत्पन्न करने वाले कोश बनेंगे। यह तथाकथित भूतिया घर

में लोगों द्वारा देखी जाने वाली प्रकाश की चमक के समान हो सकता है। किसी भी स्थिति में, यदि यह बहुत कम ऊर्जाओं के उत्पादन से किया जा सके, जैसे कि मानव मस्तिष्क से निकलने वाली माइक्रोवोल्ट और माइक्रोएम्पियर श्रेणी की ऊर्जाएं, तो यह काफी महत्वपूर्ण होगा।" श्री गोलका ने मेरे इस सुझाव का उत्तर दिया कि हवा का आयनीकरण कई मानसिक घटनाओं के साथ होता है, जिनमें दृश्य अभिव्यक्तियाँ देखी गई हैं। मेरा मानना है कि जब मानसिक ऊर्जाएं मौजूद होती हैं, तो वायुमंडल में परिवर्तन होता है, और इस परिवर्तन में आसपास की हवा या ईथर का आयनीकरण शामिल होता है। श्री गोल्का ने मुझे दिए अपने सुझावों में निष्कर्ष निकालते हुए कहा, "पिछले कुछ वर्षों में आपने जिन बातों का ज़िक्र किया है, उनमें से कुछ इस पहेली में फिट बैठती हैं। मुझे नहीं पता कि विज्ञान के पास अभी तक सभी टुकड़े हैं या नहीं, लेकिन मुझे लगता है कि हमारे पास काम करने के लिए पर्याप्त टुकड़े हैं।" तब से पौधों द्वारा बोध की खोज और पौधों की वृद्धि पर मानवीय भावनाओं के प्रभाव के अध्ययन में कुछ प्रगति हुई है। इन प्रयोगों पर वैज्ञानिक डेटा चाहने वाले लोग इंटरनेशनल जर्नल ऑफ पैरासाइकोलॉजी, वॉल्यूम X, 1968 में प्रकाशित क्लीव बैक्स्टर की रिपोर्ट "पौधों के जीवन में प्राथमिक बोध का प्रमाण" का अध्ययन कर सकते हैं। बैक्स्टर न्यूयॉर्क शहर में 165 वेस्ट फोर्टी-सिक्स्थ स्ट्रीट पर एक शोध केंद्र चलाते हैं।

* * *

डॉ. हैरी ई. स्टॉकमेन, मैसाचुसेट्स के आर्लिंगटन में स्थित सरकोलाब के प्रमुख हैं, जो भौतिकी, इलेक्ट्रॉनिक्स और चिकित्सा क्षेत्र में उपकरणों के निर्माण में विशेषज्ञता रखते हैं। कंपनी अपने विभिन्न उपकरणों की नियमित सूची प्रकाशित करती है, जिनमें साधारण कक्षा उपकरण से लेकर अत्याधुनिक अनुसंधान उपकरण तक शामिल हैं। यह कंपनी, जिसका पता पी.ओ. बॉक्स 78, आर्लिंगटन, मैसाचुसेट्स है, बीस वर्षों से अधिक समय से कार्यरत है। उनकी प्रयोगशाला के एक विवरणिका में कहा गया है:

मन-शक्ति-पर-पदार्थ संबंधी परा मनोविज्ञान के मनोगतिकी उपकरण के मामले में, हमारी गारंटी केवल इस बात तक सीमित है कि एक कुशल संवेदनशील व्यक्ति के हाथों में यह उपकरण बताए अनुसार कार्य करेगा। सरकोलाब अपनी वैज्ञानिक प्रतिष्ठा को दांव पर नहीं

लगाएगा, क्योंकि मन-शक्ति-पदार्थ एक सिद्ध वैज्ञानिक तथ्य है। यह आज जॉर्जिया स्टेट यूनिवर्सिटी की अद्भुत खोज के कारण संभव हुआ है; यह खोज केवल कुछ छात्रों द्वारा दूर से चुंबकीय सुई को गतिमान करने के आश्चर्यजनक प्रदर्शन तक सीमित नहीं है। यह खोज इससे कहीं अधिक महत्वपूर्ण है। इसमें जॉर्जिया स्टेट यूनिवर्सिटी द्वारा एक व्यवस्थित शिक्षण तकनीक विकसित करना शामिल है, जिससे कक्षा के कुछ छात्र मनोगतिकी बल द्वारा चुंबकीय सुई को संचालित करने में सक्षम हो जाते हैं।

स्पष्ट है कि विज्ञान और ईएसपी (इलेक्ट्रॉनिक स्पेसिफिक पर्सनैलिटी) का वर्तमान में महज अनौपचारिक संबंध है। परिवार के कई सदस्य अभी भी इस नए सदस्य को संदेह की नज़र से देख रहे हैं। वे चाहते हैं कि यह विषय बस चला जाए और उन्हें परेशान न करे। लेकिन ईएसपी का अध्ययन, पैरासाइकोलॉजी, अब अस्तित्व में है। ईएसपी अनुसंधान कई स्थापित वैज्ञानिक नियमों के विपरीत हो सकता है और इसकी कार्यप्रणाली प्रचलित प्रथाओं से काफी भिन्न है। लेकिन यह एक वैध शक्ति है; यह शब्द के हर अर्थ में मौजूद है; और आने वाले युग में विज्ञान को एक ईमानदार क्षेत्र बनाने के लिए इसका पूर्ण अध्ययन आवश्यक है। इससे कम कुछ भी वैज्ञानिक अनुसंधान को मध्ययुगीन सोच की ओर, पूर्वाग्रहों की संकीर्ण राहों और अध्ययन के अत्यंत सीमित क्षेत्रों की ओर वापस ले जाएगा। भविष्य में, ईएसपी पर वैज्ञानिक स्थिति की गहन पुनर्परीक्षा से ही इस विषय पर अधिक ज्ञान प्राप्त होगा।

जनसंख्या के एक बड़े हिस्से में आज भी यह धारणा बनी हुई है कि ईएसपी (इलेक्ट्रॉनिक स्पेस परसेप्शन) केवल कुछ खास लोगों के लिए ही उपयुक्त विषय है: जैसे कि सनकी लोग, कुछ विलक्षण वैज्ञानिक, या वे युवा जो तंत्र-मंत्र में रुचि रखते हैं। किसी भी परिस्थिति में यह ऐसा विषय नहीं है जिसमें सभ्य और सामान्य नागरिक रुचि लें। ईएसपी में रुचि रखने वाले व्यक्ति को संगीत, खेल या कला जैसी रुचियों के साथ नहीं रखा जा सकता। ईएसपी में रुचि रखने वाले किसी भी व्यक्ति को स्वतः ही सनकी मान लिया जाता है। यह रवैया न्यूयॉर्क जैसे विकसित शहरों की तुलना में छोटे कस्बों में अधिक स्पष्ट है, लेकिन कम से कम हाल तक, यह विचार कि ईएसपी आम लोगों के लिए भी एक विषय हो सकता है, आम जनता के लिए बिल्कुल नया था।

हालांकि, पिछले कुछ वर्षों में इस दृष्टिकोण में उल्लेखनीय बदलाव आया है। अब सामाजिक हलकों में अलौकिक बोध (ESP) के विषय पर चर्चा करने वाले लोगों का स्वागत असामान्य व्यक्तियों के रूप में किया जाता है; और वे आकर्षण का केंद्र बन जाते हैं। विशेष रूप से युवाओं के बीच, ESP का विषय उठाने से लगभग तुरंत दोस्त बन जाते हैं। यह सच है कि जब ESP को एक गंभीर विषय के रूप में उठाया जाता है, तो बड़े लोगों, विशेष रूप से व्यापारियों या सरकारी अधिकारियों के बीच, अभी भी संदेह पैदा होता है। कभी-कभी यह टिप्पणी भी सुनने को मिलती है, "क्या आप वास्तव में इन सब बातों पर विश्वास करते हैं?" कभी-कभी लोग यह साबित करने के लिए तर्क भी देते हैं कि यह सब एक धोखा है और "लंबे समय से निराधार साबित हो चुका है।" यह आश्चर्यजनक है कि कैसे कुछ उत्साही आलोचक "प्रामाणिक" स्रोतों का हवाला देते हैं, जिनका वे कभी नाम या स्थान नहीं बताते। यहां तक कि प्रोफेसर राइन को भी अक्सर एक ऐसे व्यक्ति के रूप में चित्रित किया जाता है जिसने ESP की वास्तविकता को साबित करने की कोशिश की और बुरी तरह असफल रहा।

बेशक, हमें यह समझना होगा कि लोग वही मानते हैं जो वे मानना चाहते हैं। अगर कोई व्यक्ति किसी अवधारणा से असहज है, तो अविश्वास के कारण ढूंढे ही जाएँगे, चाहे वे कितने भी बेतुके क्यों न हों। ईएसपी (आध्यात्मिक दृष्टि) के प्रमाणों को खारिज करने का एक जाना-माना तरीका यह है कि केवल उन्हीं स्रोतों का हवाला दिया जाए जो नकारात्मक दृष्टिकोण का समर्थन करते हैं। कई लेखक, जो "रहस्यवाद का खंडन करने वाली किताबें" लिखने में माहिर हैं (जो निस्संदेह रहस्यमय विषयों की वर्तमान लोकप्रियता का परिणाम है), जानबूझकर ऐसे स्रोत सामग्री की सूची चुनते हैं जिनमें केवल वही प्रमाण हों जो वे अपने पूर्वाग्रही उद्देश्य के अनुसार चाहते हैं। एक संतुलित संदर्भ सूची से निश्चित रूप से अलग परिणाम निकलेंगे और ईएसपी के विषय का खंडन करने के उनके प्रयास विफल हो जाएँगे। कभी-कभी आधिकारिक पदों पर बैठे लोग तथ्यात्मक सामग्री के अस्तित्व से ही इनकार कर देते हैं ताकि उन्हें प्रमाणों का सामना न करना पड़े, यदि वे प्रमाण उनकी इच्छित छवि से भिन्न सार्वजनिक छवि बनाते हैं।

इसका एक अच्छा उदाहरण शिकागो टेलीविजन पर प्रसारित एक घटना है, जिसका संचालन स्तंभकार इरविंग कुप्सिनेट कर रहे थे। मेरे साथ उपस्थित अतिथियों में नासा के कर्नल

"शॉर्टी" पॉवर्स भी थे। मैंने अभी-अभी टिप्पणी की थी कि अंतरिक्ष यात्रियों पर परीक्षण किए गए थे ताकि यह निर्धारित किया जा सके कि क्या वे अंतरिक्ष की दूरियों में प्रवेश करने के बाद टेलीपैथी में सक्षम हैं, यदि रेडियो संचार अपर्याप्त साबित हो। कर्नल पॉवर्स आक्रोश से उठ खड़े हुए और मेरे कथन को झूठा बताते हुए कहा कि अंतरिक्ष यात्रियों पर कोई परीक्षण नहीं किया गया था और इस तरह के कार्यक्रम का कोई आधार नहीं था। सौभाग्य से, मेरे पास नासा के आधिकारिक पत्रक पर डॉ. एम. कोनेसी द्वारा हस्ताक्षरित एक पत्र था, जो उस समय उसी परियोजना के प्रमुख थे।

* * *

ईएसपी में रुचि रखने वाले लोगों में कई विचित्र समूह शामिल हैं: एक ओर, वैज्ञानिकों की संख्या लगातार बढ़ रही है जो नए उपकरणों और विधियों के साथ इस क्षेत्र में गहन शोध कर रहे हैं; दूसरी ओर, विभिन्न क्षेत्रों के आम लोग हैं जिन्हें ईएसपी एक आकर्षक विषय लगता है और वे अपनी रुचि को स्वीकार करने में संकोच नहीं करते, न ही वे इस बात पर अपने विश्वास को छिपाते हैं कि यह काम करता है। वैज्ञानिकों को अपना अहंकार त्यागना पड़ा है और जीवन के बारे में कई पसंदीदा सिद्धांतों को छोड़ना पड़ा है। जो लोग ऐसा करने में सक्षम रहे हैं, उन्होंने वैज्ञानिक प्रमाण के निरंतर बदलते स्वरूप के अनुसार खुद को ढाल लिया है और ईएसपी में अपने अध्ययन को सबसे अधिक फलदायी पाया है। एस्क्वायर पत्रिका में प्रकाशित ईएसपी पर मोनरो फ्राई के एक लेख के अनुसार, दिवंगत हृदय रोग विशेषज्ञ डॉ. एलेक्सिस कैरेल ने मुर्गी के हृदय के एक टुकड़े में व्यक्तिगत कोशिकाओं की अमरता को स्थापित करने वाले अपने प्रसिद्ध प्रयोग के दौरान मानसिक घटनाओं में रुचि दिखाई।

कई वर्षों तक इस समस्या पर काम करने के बाद, किसी ने उनसे उनके निष्कर्षों के बारे में पूछा। उन्होंने कहा, “एक वैज्ञानिक का काम तथ्यों का अवलोकन करना है। मैंने जो अवलोकन किया है, वे विज्ञान के लिए चुनौतीपूर्ण तथ्य हैं। लेकिन वे तथ्य हैं।” विज्ञान अभी भी मानव मन के बारे में बहुत कम जानता है, लेकिन शोधकर्ताओं को अब पूरा विश्वास है कि मन उनकी सोच से कहीं अधिक शक्तिशाली और जटिल है।

* * *

लोग सिद्धांतों, दर्शनों या मान्यताओं को मुख्य रूप से इस आधार पर स्वीकार करते हैं कि उनका समर्थन कौन कर रहा है, न कि केवल तथ्यों के आधार पर। यदि कोई प्रतिष्ठित व्यक्ति किसी नई मान्यता का समर्थन करता है, तो लोग उसका अनुसरण करने की संभावना रखते हैं। इसलिए, उनके निधन के कई वर्षों बाद यह जानकर आश्चर्य हुआ कि फ्रैंकलिन डेलानो रूजवेल्ट अक्सर séances में भाग लेते थे, जिनमें उनकी दिवंगत माता, सारा डेलानो, उन्हें दर्शन देती थीं और राज्य के मामलों में सलाह देती थीं। यह निश्चित रूप से स्थापित हो चुका है कि इंग्लैंड के राजा जॉर्ज पंचम भी séances में भाग लेते थे। आज भी, अंग्रेजी शाही परिवार मानसिक अनुसंधान में रुचि रखता है, हालांकि इसका बहुत कम हिस्सा प्रकाशित होता है। कनाडा के दिवंगत प्रधानमंत्री विलियम मैकेंजी किंग का मामला कम गुप्त है। लाइफ पत्रिका के अनुसार, जिसने किंग को कई पृष्ठ समर्पित किए, वे "एक उत्साही अध्यात्मवादी थे जो अपने निजी जीवन में मार्गदर्शन के लिए माध्यमों, ओइजा बोर्ड और क्रिस्टल बॉल का उपयोग करते थे।" यह बहस का विषय है कि क्या यह किंग को एक अध्यात्मवादी के रूप में दर्शाता है या वे केवल अपनी सहज दृष्टि क्षमता और मानसिक अनुसंधान में रुचि का उपयोग कर रहे थे।

* * *

मुझे लगातार ऐसे प्रमाण मिलते रहते हैं कि ईएसपी (आध्यात्मिक संवेदनशीलता) उन लोगों के लिए भी एक आकर्षक विषय है जिन्होंने कुछ साल पहले तक इसके बारे में सोचा भी नहीं होगा। अमेरिकी नौसेना के सेवानिवृत्त रियर एडमिरल कार्लटन आर. एडम्स ने मेरी एक किताब पढ़कर पुनर्जन्म पर मेरे विचारों पर चर्चा करने के लिए मुझसे संपर्क किया। कनाडा के मॉन्ट्रियल स्थित सर जॉर्ज विलियम्स विश्वविद्यालय में भाषाविज्ञान के एसोसिएट प्रोफेसर जॉन डी. ग्रेसन ने कहा, "अगर मैं न्यूयॉर्क में रहता, तो मैं आपके पैरासाइकोलॉजी पर आठ व्याख्यानों के पाठ्यक्रम में दाखिला लेने से बेहतर कुछ नहीं चाहता।" जेराल्ड एस. ओ'मॉरो के पास शिक्षा में डॉक्टरेट की उपाधि है और वे इंडियाना स्टेट यूनिवर्सिटी में हैं: "मैं एक छोटे विकास समूह का सदस्य हूं जो साप्ताहिक रूप से मिलता है और पिछले दो वर्षों से ऐसा कर रहा है।" कैलिफोर्निया से एस. डी. नाम की एक महिला लिखती हैं, "मैं आठ वर्षों से गंभीरतापूर्वक ओइजा बोर्ड का उपयोग करने में सफल रही हूं और मैंने स्वचालित लेखन का

भी प्रयास किया है जिसमें मुझे थोड़ी लेकिन महत्वपूर्ण सफलता मिली है। मैं अपनी सुप्त शक्तियों को विकसित करने की प्रबल इच्छा रखती हूं, लेकिन अब तक मुझे नहीं पता था कि मैं किससे संपर्क कर सकती हूं जिस पर मैं भरोसा कर सकूं।" यह महिला स्थानीय पुलिस विभाग में पुलिस मैट्रन के पद पर कार्यरत है।

ए. पी. ने पिछले बीस वर्षों के अपने असाधारण ईएसपी अनुभवों का विस्तृत वर्णन किया है। उनकी प्रतिभाओं में दृश्य और श्रव्य दोनों प्रकार की घटनाएं शामिल हैं। अपने अनुभवों को मेरे साथ साझा करते हुए उन्होंने अपनी ईएसपी क्षमताओं का मूल्यांकन करने का अनुरोध किया। पेशे से ए. पी. चिकित्सक हैं और क्यूबा के मूल निवासी हैं।

एस. बी. बैरिस ने अपनी असाधारण आध्यात्मिक क्षमता (ईएसपी) के विकास का मूल्यांकन कराने के लिए मुझसे संपर्क किया। ऐसा उन्होंने कई घटनाओं के संदर्भ में किया, जिनमें उन्होंने दौड़ का परिणाम, ग्राहक द्वारा अपेक्षित सौदा पूरा होने या न होने की भविष्यवाणी करने की क्षमता और कई बार भविष्यवाणियां करने की क्षमता पाई थी। श्री बैरिस म्यूचुअल फंड के विक्रेता होने के साथ-साथ मेजर के पद पर संयुक्त राज्य अमेरिका की सेना रिजर्व के सक्रिय सदस्य भी हैं।

फ्लोरिडा विश्वविद्यालय में मनोचिकित्सा के नैदानिक प्रोफेसर, डॉ. स्टेनली आर. डीन, अमेरिकन साइकियाट्रिक एसोसिएशन के ट्रांसकल्चरल साइकियाट्री पर टास्क फोर्स के सदस्य हैं और हाल ही में एक संगोष्ठी के समन्वयक थे जिसमें कई पैरासाइकोलॉजिस्ट ने भाषण दिए थे।

आश्चर्य की बात यह है कि ईएसपी (आध्यात्मिक दृष्टि) के अस्तित्व को स्वीकार करने वाले लोगों की संख्या आत्माओं के अस्तित्व या गुप्त विद्या के उन्नत रूपों में विश्वास करने वालों की संख्या से कहीं अधिक है। ईएसपी में वैज्ञानिकता का भाव निहित है, जबकि आम लोगों के लिए, आत्माओं का अस्तित्व, भूत-प्रेत, पुनर्जन्म आदि विषय विशुद्ध वैज्ञानिक पहलुओं के अलावा मानवीय स्वीकृति के अन्य पहलुओं की भी आवश्यकता प्रतीत होते हैं। कम से कम, यह एक व्यापक रूप से प्रचलित धारणा है। इस अंतर का मूल कारण यह निर्विवाद तथ्य है कि ईएसपी और गुप्त विद्या के उन्नत वैज्ञानिक विश्वासों में स्पष्ट अंतर है। ईएसपी के काम करने के लिए, शारीरिक मृत्यु के बाद मानव व्यक्तित्व के अस्तित्व को स्वीकार करना

आवश्यक नहीं है। जीवितों के बीच ईएसपी उतना ही मान्य है जितना जीवित और तथाकथित मृतकों के बीच। टेलीपैथी तब भी काम करती है जब एक साथी परलोक में हो या न हो। वास्तव में, दूरदर्शिता से संबंधित रिपोर्ट की गई घटनाओं के एक बड़े हिस्से को संभवतः साधारण ईएसपी के आधार पर समझाया जा सकता है और इसमें आत्माओं के हस्तक्षेप की कोई आवश्यकता नहीं है। यह हमेशा से बहस का विषय रहा है कि क्या कोई माध्यम अपने ग्राहक के बारे में जानकारी किसी आध्यात्मिक स्रोत से प्राप्त करता है जो पर्दे के पीछे मौजूद होता है, या क्या वह यह जानकारी अपने अवचेतन मन से प्राप्त करता है, जिसमें छिपी असाधारण शक्तियों का उपयोग करता है। चूंकि ग्राहक के लिए परिणाम ही मुख्य चिंता का विषय होते हैं, इसलिए जानकारी का स्रोत आमतौर पर कम ही मायने रखता है। यह सोचना सुकून देता है कि ईएसपी (आध्यात्मिक संवेदनशीलता) हमारी पांचों इंद्रियों का ही विस्तार है और इसे जीवन के व्यापक दर्शन में बदलाव किए बिना स्वीकार किया जा सकता है। लेकिन आत्माओं से संवाद, पुनर्जन्म और अन्य रहस्यमय घटनाओं को स्वीकार करने के बारे में ऐसा नहीं कहा जा सकता। इन्हें वास्तविकता के रूप में स्वीकार करने के लिए आम लोगों के जीवन को देखने के तरीके में गहरा परिवर्तन आवश्यक है। ईएसपी के मामले में, वैज्ञानिक सोच वाले व्यक्ति को केवल विश्वास की सीमा को थोड़ा बढ़ाना होता है, ईएसपी क्षमता की तुलना रेडियो तरंगों से और स्वयं को एक ग्रहण करने वाले यंत्र से करना होता है।

ईएसपी अनुसंधान में लोगों की रुचि इतनी व्यापक है और इसके सत्य को दर्शाने वाले प्रकाशित मामलों की संख्या इतनी अधिक है कि पिछले कुछ वर्षों में ईएसपी का पूरी तरह खंडन करने वालों की संख्या में काफी कमी आई है। कुछ वर्ष पूर्व, रसायनज्ञ एच. एच. पियर्स ने डॉ. जोसेफ राइन के निष्कर्षों को इस आधार पर चुनौती दी थी कि उनके आँकड़े झूठे थे, या कहें तो धोखाधड़ी वाले थे, और सामग्री से कुछ भी सिद्ध नहीं हुआ था। हाल के वर्षों में ईएसपी की स्वीकृति को चुनौती देने के लिए समान स्तर का कोई वैज्ञानिक सामने नहीं आया है; इसके विपरीत, अधिक से अधिक विश्वविद्यालय ईएसपी के क्षेत्र में अनुसंधान के लिए पूरे विभाग या विशेष परियोजनाएँ समर्पित कर रहे हैं। जो थोड़ा-बहुत खंडन अभी भी चल रहा है, वह अनुभवहीन शौकिया लोगों द्वारा किया जा रहा है जो वर्तमान रहस्यवादी चलन का लाभ उठाने की कोशिश कर रहे हैं।

यह मानना स्वाभाविक है कि अपराध का पता लगाने में अलौकिक बोध का बहुत महत्व है। हालांकि कुछ कानून प्रवर्तन एजेंसियों ने इसका उपयोग किया है और इसका उपयोग लगातार बढ़ रहा है, लेकिन इसका यह मतलब नहीं है कि अदालतें मानसिक शक्तियों से प्राप्त साक्ष्यों को खुले तौर पर स्वीकार करेंगी। हालांकि, एक मानसिक शक्ति वाला व्यक्ति अधिकारियों को अपराधी या लापता व्यक्ति तक पहुंचाकर अपराध सुलझाने में मदद कर सकता है। इसके बाद पुलिस या अन्य एजेंसी का काम होता है कि वे पारंपरिक तरीकों से ऐसे तथ्य स्थापित करें जो अदालत में मान्य हों। हालांकि, मानसिक शक्ति वाले व्यक्ति के मार्गदर्शन के बिना, अधिकारी अभी भी अंधेरे में ही रह सकते हैं।

पुलिस और एफबीआई की मदद करने वाली सबसे प्रसिद्ध मानसिक शक्तियों वाली व्यक्तियों में से एक थीं स्वर्गीय फ्लोरेंस स्टर्नफेल्स, जो एक महान मनोमापी थीं। हालांकि, उनकी दूसरी प्रतिभा पुलिस का काम थी। वे लापता व्यक्ति से संबंधित किसी वस्तु जैसे मामूली सुरागों से भी मामले की तह तक पहुंच जाती थीं, या फिर सिर्फ यह पूछे जाने पर कि फलां व्यक्ति का क्या हुआ। बेशक, उनके पास मामले से संबंधित कोई जानकारी नहीं होती थी, और न ही उन्हें बाद में कभी बताया जाता था कि मामला कैसे सुलझा। पुलिस मदद के लिए मानसिक शक्तियों वाले व्यक्तियों के पास जाना पसंद करती है, लेकिन एक बार जब उन्हें अपना उद्देश्य पूरा हो जाता है, तो वे जानकारी मिलने के कारण उन्हें मामले की प्रगति के बारे में सूचित करने में आनाकानी करते हैं। वे यह स्वीकार करने में और भी ज्यादा आनाकानी करते हैं कि किसी मानसिक शक्ति वाले व्यक्ति ने उनकी मदद की है। यह स्थिति हास्यास्पद रूप ले सकती है।

डच मानसिक चिकित्सक पीटर हकॉंस, जिनकी मदद बोस्टन पुलिस ने बोस्टन स्ट्रैंगलर के मामले में मांगी थी, वास्तव में हत्यारे के रूप-रंग का बहुत विस्तार से वर्णन करने में सक्षम थे।

हुरकोस बोस्टन में अधिकारियों की मदद करने आए थे, लेकिन जल्द ही खुद को बोस्टन पुलिस और मैसाचुसेट्स के अटॉर्नी जनरल के बीच सत्ता संघर्ष के केंद्र में पाया। पुलिस के बोस्टन की डेमोक्रेटिक पार्टी से घनिष्ठ संबंध थे, और अटॉर्नी जनरल रिपब्लिकन थे। इससे भी बुरी बात यह थी कि हुरकोस एक विदेशी थे।

जब अखबारों ने हत्यारे का पता लगाने में ज्योतिषी की सफलता की खबर को पहले पन्ने पर प्रमुखता से छापा, तो पुलिस विभाग में कुछ हलचल मच गई। हकॉंस, जिसे पूरा यकीन था कि

उसने सही संदिग्ध को चुना है, अपना काम पूरा करके न्यूयॉर्क लौट आया। अगली सुबह उसे कुछ महीने पहले एफबीआई एजेंट होने का नाटक करने के आरोप में गिरफ्तार कर लिया गया। उसने कथित तौर पर एक पेट्रोल पंप कर्मचारी से ऐसा कहा था और उसे कुछ पहचान पत्र दिखाए थे। यह घटना तब हुई जब पेट्रोल पंप कर्मचारी ने हकाँस की कार में कुछ राइफलें देखीं। ये "पहचान पत्र" मानद पुलिस कार्ड थे जो कई आभारी पुलिस प्रमुखों ने उसकी मदद के लिए उसे दिए थे। हकाँस, जिसकी अंग्रेजी टूटी-फूटी थी—वैसे, उसकी डच भी शायद अच्छी नहीं थी, क्योंकि ज्योतिषी बनने से पहले वह सिर्फ एक घर पेंटर था—ने कुछ ऐसा कहा कि वह एफबीआई के साथ काम करता है, जो बिल्कुल सच था। एक विदेशी के लिए, ऐसे बयान और एफबीआई एजेंट होने के दावे के बीच का अंतर नगण्य और शायद महत्वहीन भी है।

जानकारों को समझ आ गया था कि हुरकोस को फंसाया जा रहा है, और कुछ अखबारों ने तो तुरंत ही यह बात छाप दी। फिर अटॉर्नी जनरल के कार्यालय ने एक और संदिग्ध को पकड़ा, जो शक्ल-सूरत, वजन और कद में पहले वाले से लगभग मिलता-जुलता था। आखिर हत्या किसने की थी? लेकिन हुरकोस ने अपना काम बखूबी किया था। उसने पीड़ितों के शव मिलने की जगहें बताई थीं और कातिल का हुलिया भी बताया था। और इस सब के बदले उसे 1,000 डॉलर की मामूली फीस के अलावा क्या मिला? सिर्फ मुसीबत और शर्मिंदगी।

फ्लोरेंस स्टर्नफेल्स को पुलिस से अच्छे संपर्क रखने का सौभाग्य प्राप्त था। उनके सबसे सफल मामलों में से एक एफबीआई से संबंधित है। द्वितीय विश्व युद्ध के शुरुआती दौर में, उन्हें दृढ़ आशंका थी कि आयोना द्वीप पर स्थित बारूद डिपो को तोड़फोड़ करने वालों द्वारा उड़ा दिया जाएगा। बेशक, उन्हें सही व्यक्ति तक पहुंचने में कठिनाई हुई, लेकिन अंततः वे सफल रहीं और विस्फोट को ठीक समय पर टाल दिया गया। दस वर्षों तक, जब मैं उन्हें जानता था और कभी-कभी उनके साथ काम करता था, स्टर्नफेल्स से दर्जनों रहस्यमय गुमशुदगी और लापता व्यक्तियों के मामलों में सलाह ली गई। एक बार, उन्हें कोलोराडो भेजा गया ताकि वे स्थानीय कानून अधिकारियों को एक हत्यारे का पता लगाने में मदद कर सकें। कभी न डरने वाली, उन्होंने एक-दो दिन बाद पकड़े गए व्यक्ति से मुलाकात की। संयोग से, उन्होंने अधिकारियों के साथ इस काम के लिए एक पैसा भी नहीं लिया।

प्रसिद्ध डच भविष्यवक्ता जेरार्ड क्रोइसेट ने हॉलैंड में हत्या या गुमशुदगी के कई मामलों में पुलिस के साथ काम किया है। संयुक्त राज्य अमेरिका में, क्रोइसेट ने अपने जीवनीकार जैक हैरिसन पोलैक की मदद से जज क्रेटर की लगभग पौराणिक गुमशुदगी को सुलझाने का प्रयास किया। हालांकि क्रोइसेट नई जानकारी जुटाने में सफल रहे, लेकिन पोलैक वास्तव में उस स्थान पर हड्डियां नहीं ढूंढ पाए जहां क्रोइसेट ने भविष्यवाणियों के माध्यम से हड्डियां बताई थीं। हालांकि, तीन मारे गए नागरिक अधिकार कार्यकर्ताओं के मामले में क्रोइसेट ने काफी मदद की। उन्होंने, जैक पोलैक के माध्यम से, कई सुराग और जानकारी प्रदान की कि शव कहां मिलेंगे, हत्यारे कौन थे और अपराध कैसे किया गया था, उस समय जब यह सवाल भी अनसुलझा था कि वे वास्तव में मरे थे या नहीं!

क्रॉइसेट शब्दों या वाक्यों के बजाय चित्रों के माध्यम से देखता है। उसे किसी अपराध स्थल पर उपस्थित होने की आवश्यकता नहीं होती, बल्कि उस व्यक्ति से संबंधित किसी वस्तु को अपने हाथों में लेने से उसे अनुभव प्राप्त करने में मदद मिलती है, जिसके भाग्य का उसे पता लगाना है।

पुलिस इस तरह की मदद के बारे में क्या सोचती है?

आधिकारिक तौर पर, वे यह स्वीकार नहीं करते कि वे इसका इस्तेमाल करते हैं, लेकिन अनौपचारिक रूप से, यह एक अलग बात है। जब मैंने फाइनेंसर सर्ज रुबिनस्टीन की हत्या के एक साल बाद इस मामले पर काम किया—जब यह मामला उतना ही रहस्यमय था जितना कि आज, कम से कम आधिकारिक तौर पर—तो मैंने स्वाभाविक रूप से न्यूयॉर्क पुलिस को हर वह जानकारी सौंप दी जो मुझे मिली थी। इस मामले में माध्यम श्रीमती एथेल मेयर्स थीं, और सबूत वाकई उल्लेखनीय थे। रुबिनस्टीन की माँ समाधि सत्र के दौरान मौजूद थीं, और उन्होंने समाधि में बैठी महिला के होठों से आ रही आवाज़ को तुरंत अपने मृत बेटे की आवाज़ के रूप में पहचान लिया। इसके अलावा, भाषा के कुछ विशेष लहजे का इस्तेमाल किया गया था जो मृतक की विशेषता थी। उस समय न तो माध्यम को और न ही मुझे इस बारे में कोई जानकारी थी।

जिस स्थान पर वह दुखद घटना घटी थी, ठीक उसी जगह पर बैठे हुए, सर्ज रुबिनस्टीन की बेचैन आत्मा ने स्वाभाविक रूप से बदला लेने की गुहार लगाई और अपनी मृत्यु के कारणों और परिस्थितियों का ब्योरा दिया। बाद की बैठकों में, अतिरिक्त जानकारी दी गई, तिजोरियों के नंबर बताए गए और हर तरह की विस्तृत जानकारी प्राप्त की गई; लेकिन, अज्ञात कारणों से, पुलिस ने इस पर कोई कार्रवाई नहीं की, शायद इसलिए कि यह अदालत में टिकने लायक नहीं थी। दोषी लोग अच्छी तरह से ज्ञात थे, कुछ सामान्य पुलिस कार्रवाई के परिणामस्वरूप, और कुछ हमारे मेमो और प्रतिलेखों से, लेकिन आरोप को साबित करना मुश्किल साबित होता। फिर, रुबिनस्टीन की माँ की मृत्यु के बाद, मामला भूले-बिसरे, अनसुलझे अपराधों की धुंधली दुनिया में खो गया।

* * *

कुछ पुलिस अधिकारी, कम से कम, खुलकर बोलने में संकोच नहीं करते और अपने काम में ईएसपी (इमोशनल स्पेसिफिक स्पॉन्सरशिप) के महत्व को स्वीकार करते हैं। 9 अक्टूबर, 1964 को, लेफ्टिनेंट जॉन जे. क्रोनिन ने न्यूयॉर्क जर्नल-अमेरिकन के विलियम मैकफैडेन को एक साक्षात्कार दिया, जिसमें उन्होंने ईएसपी के साथ अपने अनुभवों को साझा किया। रिपोर्टर ने जो लिखा वह इस प्रकार है:

न्यूयॉर्क पुलिस के लेफ्टिनेंट जॉन जे. क्रोनिन ने आज कहा कि निकट भविष्य में, देश के प्रत्येक पुलिस विभाग में अतिरिक्त संवेदी बोध सलाहकार होंगे, संभवतः अतिरिक्त संवेदी बोध ब्यूरो भी होंगे।

उन्होंने 18 वर्षों तक - विभाग के इतिहास में किसी भी अन्य व्यक्ति की तुलना में अधिक समय तक - लापता व्यक्तियों के ब्यूरो का नेतृत्व किया।

उन्होंने कहा, "सेवानिवृत्ति के बाद, मैं ईएसपी (इलेक्ट्रॉनिक स्पीड स्पॉन्सरशिप) पर एक किताब लिख सकता हूं। इसने पुलिस मामलों के बारे में बहुत सी सटीक जानकारी प्रदान की है।"

उन्होंने जिन असाधारण मामलों का जिक्र किया, उनमें से एक मामला बाल्टीमोर की 10 वर्षीय लड़की का था जो पिछले जुलाई में लापता हो गई थी।

बाल्टीमोर के एक पुलिस सार्जेंट ने न्यू जर्सी के एजवाटर की रहने वाली श्रीमती फ्लोरेंस स्टर्नफेल्स से मुलाकात की, जो खुद को मनोचिकित्सक कहती हैं। उनकी सलाह पर, बाल्टीमोर लौटने पर उन्होंने एक पड़ोसी के तहखाने की खुदाई की। लड़की का शव मिट्टी के फर्श के दो फीट नीचे मिला।

लेफ्टिनेंट क्रोनिन ने यह भी उल्लेख किया कि डच भविष्यवक्ता गेरार्ड क्रोइसेट को 400 लापता बच्चों को खोजने का श्रेय दिया जाता है।

"फिलहाल, ईएसपी एक अनिश्चित अवधारणा है। यह प्रारंभिक अवस्था में है, उसी अवस्था में जब बिजली थी जब बेन फ्रैंकलिन ने पतंग उड़ाई थी," लेफ्टिनेंट क्रोनिन ने कहा।

“लेकिन यह मौजूद है। यह एक प्रकार की छठी इंद्री है जो आदिम मनुष्य के पास थी लेकिन युगों के साथ लुप्त हो गई है। ध्यान रहे, यह अलौकिक नहीं है। और यह भविष्य की पद्धति होगी।”

"एक बार जब इसे वैज्ञानिक रूप दे दिया जाएगा, तो यह कानून प्रवर्तन एजेंसियों को उन कुछ अपराधों को सुलझाने में मदद करेगा जो उन्हें अब तक परेशान कर रहे हैं।"

उन्होंने इस बात पर जोर देते हुए कहा कि पुलिस में ईएसपी का उपयोग बढ़ेगा:

“यूरोप में ईएसपी के कुछ लोगों को अदालत में गवाही देने के लिए योग्य घोषित किया गया है। यह योग्यता यहाँ भी लागू होगी।”

अपराधों को सुलझाने में मानसिक शक्तियों वाले व्यक्तियों द्वारा उपयोग की जाने वाली विधियों का अधिक विशिष्ट और उदाहरण प्रस्तुत करने वाला लेख वाशिंगटन राज्य के एक मामले पर आधारित है, जिसे माइकल मैकडॉगल ने 3 मई, 1964 को लॉन्ग आइलैंड प्रेस में प्रकाशित किया था। इसमें उन्होंने सुझाव दिया है कि कठिन अपराधों को सुलझाने में सहायता के लिए प्रत्येक पुलिस विभाग के स्टाफ में एक ऐसे व्यक्ति को होना चाहिए जिसके पास ईएसपी (अंतरराष्ट्रीय दृष्टि से संवेदनशील शक्ति) हो। मैकडॉगल ने एक महीने पहले घटी एक घटना पर अपनी रिपोर्ट में अपने इस विश्वास के लिए बहुत मजबूत तर्क प्रस्तुत किए हैं।

एसोसिएटेड एग्जीक्यूटिव्स क्लब्स के लिए दौरे पर निकले मशहूर मेंटलिस्ट डीमिल, शुक्रवार, 3 अप्रैल को दोपहर 2 बजे वाशिंगटन के याकिमा स्थित चिनूक होटल में पहुंचे। वे थके हुए थे

और शाम के व्याख्यान से पहले नहाकर सोना चाहते थे। लेकिन जैसे ही उन्होंने ताले में चाबी घुमाई, फोन की घंटी बज उठी।

एक महिला का फोन था। “मेरी सहेली का बटुआ चोरी हो गया है,” महिला की आवाज़ सुनाई दी। “उसमें कई कीमती चीज़ें थीं जिन्हें वह वापस पाना चाहती है। क्या आप उसे ढूंढने में मदद कर सकते हैं?”

“शायद,” डीमिल ने कहा। “मैं पूरी कोशिश करूंगा। लेकिन आपको मेरे भाषण के बाद तक इंतजार करना होगा। मुझे लगभग साढ़े दस बजे फोन करना।”

डीमिल ने फोन काट दिया और बिस्तर पर लेट गया। लेकिन उसे नींद नहीं आई। चोरी हुए बटुए का ख्याल बार-बार उसके दिमाग में घूम रहा था। फिर, बेहोशी की कगार पर, जब इंसान न तो सो रहा होता है और न ही जाग रहा होता है, तब उसने अपराध की कल्पना की।

लाल स्वेटर पहने दो किशोर लड़के एक महिला खरीदार के पीछे से चुपके से आए। एक लड़का आगे खड़ा हो गया, जिससे महिला का ध्यान भटक गया, जबकि उसके साथी ने चुपके से उसका हैंडबैग खोला, बटुआ निकाला और कोने की ओर भाग गया, जहां उसका साथी भी थोड़ी देर बाद आकर उसके साथ शामिल हो गया।

डीमिल ने और भी कुछ देखा। लड़के एक खस्ताहाल फोर्ड कार में बैठे। वे चले गए और एक पुरानी कारों के शोरूम के सामने थोड़ी देर के लिए रुके। बटुआ खोलकर उन्होंने नोटों का एक बंडल निकाला, जो बराबर भागों में बंटा हुआ था। डीमिल को नोटों की सही संख्या तो नहीं पता थी, लेकिन उन्हें लगा कि उसमें 46 डॉलर होंगे। फिर लड़कों ने एक चेकबुक देखी। डीमिल ने उसमें 2798301 नंबर और फर्स्ट नेशनल बैंक ऑफ वाशिंगटन लिखा हुआ देखा। उन्हें यह भी आभास हुआ कि यह किसी तरह की मांस-पैकिंग कंपनी है।

पूरी तरह जागने के बाद, डीमिल ने नाइफ एंड फोर्क क्लब के सचिव के. गॉर्डन स्मिथ को फोन किया, जिस संगठन के लिए डीमिल उस रात भाषण देने वाले थे। सचिव डीमिल के कमरे में आए, पूरी बात सुनी और पुलिस को बुलाने की सलाह दी।

जल्द ही डीमिल के पास कई लोगों के फोन आने लगे। एक ने अपना परिचय फ्रैंक गेमन के रूप में दिया, जो याकिमा हेराल्ड के रिपोर्टर थे। दूसरे याकिमा पुलिस के सार्जेंट वॉल्ट डचर

थे। डीमिल ने फिर से अपनी कहानी सुनाई। गेमन को संदेह था, लेकिन वह यकीन करने को तैयार थे। सार्जेंट को बिल्कुल भी विश्वास नहीं हुआ और उन्होंने खुलकर विरोध जताया।

डीमिल ने सुझाव दिया कि वे फर्स्ट नेशनल बैंक को फोन करके पता लगाएं कि क्या किसी मांस-पैकिंग कंपनी का खाता संख्या 2798301 है। फिर कंपनी को फोन करके यह पता लगाना आसान होगा कि क्या किसी महिला कर्मचारी के साथ लूटपाट हुई है या नहीं।

रिपोर्ट नकारात्मक थी। खाता संख्या 2798301 मांस-निर्वाह कंपनी नहीं थी। वास्तव में, बैंक के पास मांस-निर्वाह करने वाली कोई भी कंपनी ग्राहक नहीं थी। फल-निर्वाह करने वाली कंपनियां थीं; मांस-निर्वाह करने वाली कंपनियां नहीं।

सार्जेंट डचर ने डेमिल को झूठी अपराध रिपोर्ट देने के आरोप में गिरफ्तारी की धमकी देने के बाद कमरे से बाहर निकल गए। फ्रैंक गेमन, जो अब भी आश्वस्त होने को तैयार थे, वहीं रुके रहे। फोन फिर बजा। यह गेमन के लिए था; बैंक का फोन था।

क्लब स्काउट पैक #3 के पास खाता संख्या 2798001 था। क्या यह वही खाता हो सकता है? तुरंत ही, डेमिल को पता चल गया कि यह वही खाता है।

नाइफ एंड फोर्क क्लब के अध्यक्ष कार्ल स्टाइनहिल्ब ने शहर में डीमिल को घुमाने के लिए स्वेच्छा से गाड़ी चलाने की पेशकश की। मानसिक विज्ञानी के निर्देशों का पालन करते हुए, स्टाइनहिल्ब एक बाहरी इलाके में गए और एक पुरानी कारों के शोरूम के सामने गाड़ी खड़ी कर दी। और वाकई, पास के एक घर के सामने झाड़ियों में उन्हें फेंका हुआ बटुआ मिला।

उस घटना के बाद याकिमा पुलिस विभाग पहले जैसा नहीं रहा।

समय बीतने के साथ-साथ मानसिक शक्तियों वाले व्यक्तियों या मानसिक शोधकर्ताओं और पुलिस विभागों के बीच सहयोग के मामले बढ़ते जा रहे हैं और कानून प्रवर्तन में ऐसे व्यक्तियों के उपयोग के प्रति पूर्वाग्रह कम होता जा रहा है।

जुलाई 1965 में, ऑस्टिन, टेक्सास पुलिस ने टेक्सास विश्वविद्यालय की दो लापता छात्राओं के मामले में डलास की एक ज्योतिषी की सेवाएं लीं, जिन्हें बहुत बाद में मृत पाया गया। परामर्श के समय, यानी छात्राओं के लापता होने के एक सप्ताह बाद, उन्होंने भविष्यवाणी की थी कि छात्राओं को चौबीस घंटे के भीतर ढूंढ लिया जाएगा (जो कि नहीं हुआ), और यह भी कि इसमें तीन पुरुष शामिल थे, जो कि सच साबित हुआ।

लेकिन भविष्यवाणियों में समय का तत्व अक्सर जोखिम भरा होता है। समय उन आयामों में से एक है जिसे कई मानसिक शक्तियों द्वारा सही ढंग से पढ़ना सबसे मुश्किल होता है। इसका कारण यह हो सकता है कि समय एक मनमाना और शायद कृत्रिम तत्व है जिसे मनुष्य ने जीवन को अधिक सुगम बनाने के लिए बनाया है; भौतिक जगत में इसका कोई अस्तित्व नहीं है। इसलिए जब कोई मानसिक शक्ति वाला व्यक्ति मन की दुनिया में झांकता है और फिर उन परिस्थितियों की व्याख्या करने का प्रयास करता है जिनसे वह प्रभावित होता है, तो समय का तत्व अक्सर गलत साबित होता है। यह मुख्य रूप से उस व्यक्ति की अपनी व्याख्या पर आधारित होता है, न कि किसी ठोस छवि पर, जैसा कि तथ्यों, नामों और स्थानों के मामले में होता है जिनका वह वर्णन करता है।

पुलिस अधिकारियों के साथ सहयोग करने वाले और दैवीय शक्तियों से संबंधित अध्ययन में विशेषज्ञता रखने वाले शिक्षण संस्थानों में से एक नीदरलैंड्स का उट्रेक्ट विश्वविद्यालय है, जहाँ डॉ. डब्ल्यू. एच. सी. टेनहैफ परा मनोविज्ञान संस्थान के प्रमुख हैं। लेखक-शोधकर्ता जैक हैरिसन पोलैक के अनुसार, जिन्होंने 1960 में संस्थान का दौरा किया और इसकी गतिविधियों पर एक प्रशंसनीय रिपोर्ट लिखी, अकेले 1950 और 1960 के बीच संस्थान ने 26 पुरुषों और 21 महिलाओं सहित 40 से अधिक दैवीय शक्तियों से पीड़ित व्यक्तियों का अध्ययन किया।

पोलैक ने क्रोइसेट के बारे में एक लोकप्रिय पुस्तक लिखी, जो संस्थान के स्टार मानसिक चिकित्सक थे और जिन्होंने एक साधारण किराना व्यापारी के रूप में शुरुआत की थी, जब तक कि उन्होंने अपनी असाधारण प्रतिभा की खोज नहीं की और इसे पेशेवर उपयोग में नहीं लाया, खासकर 1964 में डॉ. टेनहैफ से मिलने के बाद।

लेकिन क्रोइसेट उन लोगों में से एक हैं जिनका परीक्षण डच अनुसंधान केंद्र में किया गया था। अन्य लोगों में वार्नर थोलेन शामिल हैं, जिनकी विशेषज्ञता लापता वस्तुओं का पता लगाने में है, और पियरे वैन डेलजेन, जो ग्लोब पर हाथ रखकर दुनिया के उस हिस्से की स्थितियों का पूर्वानुमान लगा सकते हैं।

इस मामले में उट्रेक्ट विश्वविद्यालय अन्य शिक्षण संस्थानों से कहीं आगे है। संयुक्त राज्य अमेरिका में, डॉ. जोसेफ बी. राइन ने एक शानदार प्रारंभिक प्रयास किया है, लेकिन आज ड्यूक विश्वविद्यालय की परा मनोविज्ञान प्रयोगशाला, ईएसपी (आध्यात्मिक संवेदनशीलता) के

क्षेत्र में अनुसंधान को आगे बढ़ाने के लिए दोहराव वाले प्रयोगों और मनुष्य के स्वभाव पर सावधानीपूर्वक, अत्यंत सावधानीपूर्वक, सैद्धांतिकरण से परे कुछ खास नहीं कर रही है। प्रयोगशाला के बाहर व्यावहारिक रूप से कोई क्षेत्र कार्य नहीं हो रहा है, और कोई भी अमेरिकी विश्वविद्यालय, वित्तीय रूप से या कर्मचारियों के मामले में, हॉलैंड में डॉ. टेनहैफ की तरह प्रतिभाशाली मानसिक क्षमताओं वाले व्यक्तियों के साथ काम करने की स्थिति में नहीं है।

जिस देश में प्रति व्यक्ति अपराध दर अन्य किसी भी देश से अधिक है, वहां पुलिस से यह उम्मीद की जाएगी कि वह हर संभव मदद का स्वागत करेगी।

अगले पन्नों में आप भूत-प्रेतों के वास्तविक अनुभवों, आत्माओं से मुठभेड़ों और आत्माओं के प्रकट होने के बारे में पढ़ेंगे, जिनका दस्तावेजीकरण किया गया है और जिन्हें जिम्मेदार लोगों ने देखा है। इन घटनाओं का अनुभव करने के लिए आपको एक सच्चा "माध्यम" होने की आवश्यकता नहीं है, हालांकि केवल पूर्व-दृष्टिकोण (ईएसपी) और पूर्ण माध्यमता (मीडियम) के बीच की रेखा, जिसमें दृष्टि (चीजों को देखना), श्रवण (चीजों को सुनना) और/या संवेदनशीलता (चीजों को सूंघना या महसूस करना) शामिल है, कभी-कभी अस्पष्ट होती है। यह सब स्तर पर निर्भर करता है, और कुछ लोगों में एक से अधिक प्रकार की मानसिक क्षमताएं होती हैं। आपकी स्थिति में जो भी संवेदनशीलता लागू होती है, वे स्वाभाविक हैं और उनसे डरने की आवश्यकता नहीं है।

अध्याय चार

भूत वास्तव में क्या है?

संकीर्ण सोच वाले संशयवादियों से लेकर अनभिज्ञ संभावित विश्वासियों तक, हॉलीवुड की हॉरर फिल्मों से लेकर कैस्पर द घोस्ट तक, भूतों के बारे में और निश्चित रूप से, क्या वे वास्तव में मौजूद हैं, इस बारे में बहुत सारी गलत जानकारी और मूर्खतापूर्ण कल्पनाएं फैली हुई हैं।

विज्ञान ही नहीं, खोजी पत्रकारिता में भी अनुभव रखने वाले पहले लोगों में से मैं एक था, जिन्होंने किताबों और मीडिया के माध्यम से आम जनता से कहा, "हाँ, भूत सचमुच मौजूद हैं।" किसी ने मेरा मज़ाक नहीं उड़ाया, क्योंकि मैंने सबूतों और परीक्षण परिस्थितियों में ली गई प्रामाणिक तस्वीरों के साथ अपनी बात साबित की।

भूत आखिर होता क्या है? क्या ये कोई ऐसी चीज़ है जिसे लोग नशे में या बीमार बिस्तर पर बैठकर देखते हैं? या फिर कोई ऐसी चीज़ जिसके बारे में आप बच्चों की कहानियों में पढ़ते हैं? बिलकुल नहीं। भूत—मरे हुए लोगों की परछाइयाँ या अदृश्य इंसानों से जुड़ी आवाज़ें—उन लोगों की बची हुई भावनात्मक यादें हैं जो अपने भौतिक शरीर से आत्मा की दुनिया में प्रवेश नहीं कर पाए हैं—या जैसा कि ड्यूक विश्वविद्यालय के डॉ. जोसेफ राइन ने इसे कहा है, मन की दुनिया में। उनकी यह अवस्था अचानक मृत्यु या घोर पीड़ा से उत्पन्न भावनात्मक आघात की होती है, और इसी कारण वे समझ नहीं पाते कि उनके साथ क्या हो रहा है। वे अपने तात्कालिक परिवेश या समस्या से परे कुछ देख नहीं पाते, और इसलिए वे पीड़ा के उन अंतिम क्षणों को बार-बार जीने के लिए मजबूर होते हैं जब तक कि कोई आकर उन्हें सब कुछ समझा नहीं देता। इस लिहाज़ से वे मनोविश्लेषक द्वारा सहायता प्राप्त मनोरोगी की तरह हैं, सिवाय इसके कि रोगी सोफे पर नहीं, बल्कि नियति के वातावरण में होता है। मनुष्य की विद्युत चुम्बकीय प्रकृति इसे पूरी तरह से संभव बनाती है; यानी, चूंकि हमारा व्यक्तिगत व्यक्तित्व वास्तव में भौतिक शरीर नामक एक सघन बाहरी परत में घिरा हुआ एक व्यक्तिगत ऊर्जा क्षेत्र मात्र है, इसलिए व्यक्तित्व भावनात्मक उत्तेजनाओं और यादों को बिना ज्यादा धुंधलाए

अनिश्चित काल तक संग्रहीत कर सकता है, ठीक उसी तरह जैसे एक टेप रिकॉर्डिंग जिसे स्पष्टता या ध्वनि खोए बिना बार-बार चलाया जा सकता है।

जो लोग सामान्य परिस्थितियों में, सामंजस्य स्थापित करते हुए मरते हैं, उन्हें इस पीड़ा से नहीं गुजरना पड़ता, और वे चेतना की उस अगली अवस्था में शीघ्र ही प्रवेश कर जाते हैं जो उनकी मृत्यु के समय की मानसिक स्थिति के अनुसार "स्वर्ग" या "नरक" हो सकती है। दोनों ही अवस्थाएँ वस्तुनिष्ठ नहीं हैं, बल्कि व्यक्तिपरक हैं। हालाँकि, समान अवस्थाओं का योग एक अर्ध-वस्तुनिष्ठ अवस्था का निर्माण कर सकता है जो अधिक रूढ़िवादी धार्मिक मान्यताओं के अनुसार किसी स्थिति या "स्थान" के निकट होती है। पृथ्वी के दायरे से विदा न हो पाने वाले भ्रमित व्यक्तियों, जिन्हें आमतौर पर "भूत" या पृथ्वी से बंधी आत्माएँ कहा जाता है, से मेरा संपर्क एक समाधि माध्यम के माध्यम से होता है जो अस्थायी रूप से अपना भौतिक शरीर इन संकटग्रस्त आत्माओं को प्रदान करती है ताकि वे माध्यम के माध्यम से बोल सकें और अपनी समस्याओं, निराशाओं या अधूरे कार्यों का विवरण दे सकें। यहाँ फिर से, मनोविश्लेषण के साथ समानता स्पष्ट हो जाती है: अपनी दुख भरी कहानियाँ सुनाकर, बेचैन आत्माएँ अपने दबावों और चिंताओं से मुक्त हो जाती हैं और इस प्रकार अपने बंधनों से मुक्त हो सकती हैं। अगर डर जानकारी की कमी है, जैसा कि मैं हमेशा से मानता आया हूँ, तो ज्ञान वास्तव में समझ की उपस्थिति है। या आप चाहें तो इसे दूसरे तरीके से भी देख सकते हैं। मेरी किताबों की वजह से, लोग अक्सर मुझसे इस तरह की समस्याओं को समझने में मदद मांगते हैं। जब भी किसी ने भूत देखा हो या ऐसी मानवीय आवाज़ें सुनी हों जो शरीर से मेल नहीं खाती हों, और उन्हें लगता है कि मुझे इस मामले की जांच करनी चाहिए, तो मैं आमतौर पर करता हूँ।

सच कहूँ तो, मुझे हमेशा भूत नहीं मिलते। लेकिन अक्सर मिलते हैं, और उससे भी बढ़कर, मैंने पाया है कि जिन लोगों को ऐसे अलौकिक अनुभव हुए हैं, उनमें से कई स्वयं माध्यम होते हैं, और इसलिए वे आत्माओं के लिए संचार का माध्यम बन सकते हैं। भूत आम लोगों की सोच से कहीं अधिक प्रचलित हैं, और वास्तव में काफी स्वाभाविक और हानिरहित हैं। हालांकि, कभी-कभी वे दुखद और चौंकाने वाले होते हैं, जैसे कि सभी मानवीय पीड़ाएँ होती हैं, क्योंकि मनुष्य स्वयं अपना सबसे बड़ा शत्रु है, चाहे वह शरीर में हो या शरीर के बाहर। लेकिन

अलौकिक दृष्टि की शक्ति या भूतिया घटनाओं का अनुभव करने की क्षमता में कुछ भी रहस्यमय नहीं है।

कुछ लोग भूत-प्रेत से जुड़ी हर घटना को यह कहकर खारिज कर देते हैं कि गवाहों की असलियत उनके ही दायरे में आती है। वे कहते हैं कि गवाह शायद मानसिक रूप से अस्थिर हैं, या बीमार हैं जिन्हें अक्सर मतिभ्रम होता है, या उस दिन थके हुए थे, या यह किसी रोशनी के स्रोत से आई परावर्तन का असर रहा होगा, या अंत में, हताशा में वे कह देते हैं कि हां, उनके साथ कुछ हुआ तो था, लेकिन कहानी सुनाते-सुनाते उन्होंने सब कुछ इतना बढ़ा-चढ़ाकर बता दिया कि अब यकीन करना मुश्किल है कि असल में क्या हुआ था।

मुझे उन लोगों का तरीका बहुत पसंद है जो भूतों के अस्तित्व की संभावना को स्वीकार नहीं कर पाते और अजनबियों के साथ हुई घटनाओं के बारे में अपनी राय देते हैं। वे कहते हैं, "शायद ऐसा या वैसा हुआ होगा," और उनके लिए "शायद" से "निश्चित रूप से" तक पहुंचना बहुत आसान हो जाता है। मानव मन कल्पना करने में उतना ही माहिर है जितना कि मतिभ्रम पैदा करने में। मेरे जैसे वैज्ञानिक रूप से प्रशिक्षित पत्रकार होने का फायदा यह है कि मैं लोगों की व्याख्याओं को खारिज करके तथ्यों का पता लगा सकता हूँ। मैंने कुछ साल पहले इसी शीर्षक वाली एक किताब में "जिन भूतों से मैं मिला हूँ" का जिक्र किया था। इससे भी ज्यादा दिलचस्प वे लोग हैं जिनसे मैं मिला हूँ और जिन्होंने भूतों का सामना किया है। क्या वे बीमार, असंतुलित, सनकी या अन्य अवास्तविक व्यक्ति हैं जिनकी गवाही बेकार है?

जो लोग इस श्रेणी में आते हैं, वे मुझ तक कभी पहुँच ही नहीं पाते। मेरी कसौटी पर वे खरे नहीं उतरते। सनकी लोगों, सावधान! मैं सच को सच कहता हूँ, जैसा कि मैंने कुछ साल पहले नकली अध्यात्मवादी शिविरों की प्रथाओं का पर्दाफाश करके साबित किया था।

जिन लोगों को भूतिया दृश्य दिखाई देते हैं, वे आप जैसे ही लोग हैं।

उदाहरण के तौर पर, स्प्रिंगफील्ड, इलिनोइस के एक दंपत्ति को लीजिए। उनके नाम गर्ट्रूड और रसेल मेयर्स हैं और उनकी शादी 1935 में हुई थी। रसेल स्थानीय अखबार में स्टीरियोटाइपर के रूप में काम करते थे और गर्ट्रूड एक हाई स्कूल शिक्षिका थीं। दोनों की उम्र लगभग तीस के आसपास थी और भूतों जैसी चीजों में उनकी कोई दिलचस्पी नहीं थी।

अपनी शादी के समय, उन्होंने एक पांच कमरों वाला कॉटेज किराए पर लिया था जो कुछ समय से खाली पड़ा था। उसमें कोई खास विशेषता नहीं थी, बस किराया मामूली था, और वह ब्लूमिंगटन में स्थित था जहाँ उस समय मेयर्स परिवार रहता था।

गर्ट्रूड मेयर्स एक किसान परिवार से थीं और उन्होंने इलिनोइस वेस्लेयन और शिकागो विश्वविद्यालय से शिक्षा प्राप्त की थी। कुछ समय तक उन्होंने डेट्रॉइट में अखबार में काम किया, बाद में पढ़ाया और शौक के तौर पर कई बच्चों की किताबें लिखीं। उनके पति रसेल भी किसान परिवार से थे, उन्होंने इलिनोइस के नॉर्मल में स्थित इलिनोइस स्टेट नॉर्मल यूनिवर्सिटी में पढ़ाई की और बाद में ब्लूमिंगटन पैंटोग्राफ में प्रशिक्षण प्राप्त किया।

ब्लूमिंगटन में उन्होंने जो घर किराए पर लिया था, वह बिलकुल बगल वाले घर जैसा ही था; मौजूदा मालिकों ने पहले के एक बड़े घर को दो अलग-अलग इकाइयों में बदल दिया था और उनके बीच एक ड्राइववे बना दिया था।

गर्मियों में, अपने घर में बसने के बाद, वे अपनी दिनचर्या में ढलने में जुट गए। चूंकि उनके पति अखबार में रात्रिकालीन शिफ्ट में काम करते थे, इसलिए श्रीमती मेयर्स अक्सर घर में अकेली रह जाती थीं। शुरू में तो उन्हें इससे कोई परेशानी नहीं हुई। सड़क की आवाज़ें घर के अंदर आती थीं और उन्हें आसपास लोगों की मौजूदगी का एहसास दिलाती थीं। लेकिन जब शरद ऋतु की ठंड शुरू हुई और ठंड से बचने के लिए खिड़कियाँ बंद करनी पड़ीं, तो उन्हें धीरे-धीरे यह एहसास होने लगा कि वे वास्तव में अकेली नहीं हैं।

घर में रहने के शुरुआती दिनों में एक रात, वह अपने शयनकक्ष का दरवाजा थोड़ा खुला छोड़कर सो गई थी। रात के 10:30 बज रहे थे और वह सोने ही वाली थी कि तभी उसे घर के मुख्य द्वार से शुरू होकर, घर के अंदर से होते हुए, बैठक कक्ष, भोजन कक्ष से गुजरते हुए, अंत में गलियारे से होते हुए उसके शयनकक्ष के दरवाजे तक तेज़ और दृढ़ कदमों की आहट सुनाई दी।

वह बिस्तर से उछलकर उठी और दरवाजा बंद कर लिया। फिर वह वापस बिस्तर पर चली गई और डर के मारे वहीं बैठ गई, यह सोचकर कि घुसपैठिया क्या करेगा। लेकिन कोई नहीं आया।

खुद को शांत करने के लिए, न कि इसलिए कि वह वास्तव में ऐसा मानती थी, श्रीमती मेयर्स ने खुद को यह विश्वास दिलाया कि उन कदमों की आहट के बारे में उनसे कोई गलती हुई होगी। शायद सड़क पर कोई राहगीर था। इस तसल्ली भरे विचार के साथ, वह सो गई।

अगली सुबह उसने अपने नए पति को रात की घटना के बारे में नहीं बताया। आखिर वह नहीं चाहती थी कि वह सोचे कि उसने किसी अनजान औरत से शादी कर ली है!

लेकिन कदमों की आहट रात-दर-रात लौट आती थी, हमेशा एक ही समय पर और हमेशा अचानक उसके बेडरूम के दरवाजे पर आकर रुक जाती थी, जिसे वह, कहने की जरूरत नहीं है, हमेशा बंद रखती थी।

अपने पति पर भूतिया घर किराए पर लेने का आरोप लगाने के बजाय, उसने साहसपूर्वक घुसपैठिए का सामना करने और यह पता लगाने का फैसला किया कि आखिर मामला क्या है। एक रात उसने जानबूझकर उन जानी-पहचानी तेज़ कदमों की आहट का इंतज़ार किया। घड़ी में 10:00 बजे, फिर 10:30 बजे। रात की खामोशी में, वह अपने सीने में अपने दिल की धड़कन सुन सकती थी।

फिर कदमों की आहट सुनाई दी, धीरे-धीरे करीब आती गई, जब तक कि वह उसके बेडरूम के दरवाजे तक नहीं पहुंच गई। उसी क्षण, श्रीमती मेयर्स बिस्तर से कूदकर उठीं, लाइट जलाई और दरवाजा पूरी तरह खोल दिया।

वहां कोई नहीं था, और पीछे हटते कदमों की कोई आहट सुनाई नहीं दी।

उसने बार-बार कोशिश की, लेकिन दरवाजा खुलने के बाद अदृश्य घुसपैठिया कभी प्रकट नहीं हुआ।

सर्दी बहुत भीषण थी, और रसेल को रात के 3:30 बजे काम से घर लौटने पर तहखाने में भट्टी में आग जलाने की आदत थी। श्रीमती मेयर्स हमेशा उसे अंदर आते हुए सुन लेती थीं, लेकिन उठती नहीं थीं। एक रात वह तहखाने से निकलकर बेडरूम में आया और बोला, "आधी रात को इस ठंडे घर में क्यों घूम रही हो?"

ज़ाहिर है, वह पूरी रात बिस्तर से नहीं उठी थी, और उसने उसे यही बताया। फिर उन्हें पता चला कि उसने भी कदमों की आहट सुनी थी, लेकिन उसे लगा था कि उसकी पत्नी घर में

बेचैनी से इधर-उधर घूम रही है। मेयर्स को ये कदमों की आहट तब सुनाई देती थी जब वह तहखाने में भट्टी ठीक कर रहा होता था, लेकिन जब तक वह ऊपर पहुँचता, तब तक ये आहट बंद हो जाती थी।

जब श्रीमती मेयर्स को अपनी कक्षाओं में जाने के लिए सुबह जल्दी उठना पड़ता था, तो उनके पति घर में देर तक सोते रहते थे। कई बार उन्हें घर में किसी के चलने की आवाज सुनाई देती और वे जाँच करने जाते, लेकिन उन्हें घर में बिल्कुल अकेला पाते।

वह आधी रात को यह सोचकर जाग जाता कि उसकी पत्नी उठ गई है, लेकिन तुरंत ही उसे तसल्ली हो जाती कि वह उसके बगल में शांति से सो रही है। फिर भी, उस खाली घर में कोई तो था!

चूंकि घर में हर तरफ ताला लगा हुआ था और भूत को पकड़ने के अनगिनत प्रयास विफल हो चुके थे, इसलिए मेयर्स परिवार ने इस बात को गंभीरता से लिया और अपने इस अजीबोगरीब मेहमान के साथ जीना सीख लिया। धीरे-धीरे सीढ़ियों की आवाज पुराने घर के माहौल का हिस्सा बन गई और रात के अंधेरे में डर धीरे-धीरे गायब होने लगा।

अगले वर्ष मई में, उन्होंने बगीचे में काम करने का फैसला किया और ऐसा करते समय, उनकी पहली बार अपने पड़ोसियों से मुलाकात हुई। चूंकि वे एक जैसे घरों में रहते थे, इसलिए उनमें कुछ समानता थी, और उनके और पड़ोसियों - एक पच्चीस वर्षीय युवक और उसकी दादी - के बीच बातचीत शुरू हो गई।

अंततः, चर्चा कदमों की आहट पर आ गई। ऐसा प्रतीत हुआ कि वे भी उन्हें लगातार सुन रहे थे। अपने अनुभवों पर चर्चा करने के बाद, मेयर्स दंपति ने और प्रश्न पूछे। उन्हें बताया गया कि घर के बंटवारे से पहले, यह एक ही मालिक का था जिसने घर में आत्महत्या कर ली थी। इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि उसे अपने घर के दोनों हिस्सों में घूमना पसंद था!

* * *

आप शायद कभी इंडियाना के कोकोमो को भूतिया जगह न मानें, लेकिन मेरी जानकारी में सबसे मार्मिक मामलों में से एक कुछ समय पहले वहीं घटी थी। मैरी एलिजाबेथ हैमिल्टन नाम

की एक युवती अपनी गर्मियों की छुट्टियां अक्सर अपनी दादी के घर में बिताती थी। यह घर 1834 का है और एक खूबसूरत जगह है, जिसे बहुत ही अच्छे से रखा गया है।

मिस हैमिल्टन को अलौकिक चीज़ों में ज़रा भी दिलचस्पी नहीं थी, और उस गर्मी में, जब उन्होंने चार सप्ताह उस घर में बिताए, जो घटनाएँ घटीं, वे उनके लिए पूरी तरह से आश्चर्यजनक थीं। एक शाम जब वह सामने की सीढ़ियों से नीचे उतर रही थीं, तभी उनकी मुलाकात एक सुंदर युवती से हुई जो सीढ़ियों से ऊपर आ रही थी। मिस हैमिल्टन ने देखा कि उसने एक बेहद खूबसूरत शाम का गाउन पहना हुआ था। उस महिला में भूतियापन का कोई अंश नहीं था, और वह मिस हैमिल्टन के बहुत करीब से गुजरी, वास्तव में इतनी करीब कि अगर वह चाहतीं तो उन्हें छू सकती थीं।

लेकिन उसने गौर किया कि गाउन हल्के गुलाबी रंग के कपड़े का था, और उसके बाल और आँखें गहरे भूरे रंग की थीं, और आँखें आँसुओं से भरी हुई थीं। जब दोनों महिलाएँ मिलीं, तो शाम के गाउन में सजी लड़की ने मिस हैमिल्टन को देखकर मुस्कुराया और आगे बढ़ गई।

चूंकि मिस हैमिल्टन जानती थीं कि घर में कोई और आगंतुक नहीं है, और इस समय किसी के आने की उम्मीद भी नहीं थी, इसलिए वह हैरान थीं। उन्होंने अपना सिर घुमाकर सीढ़ियों पर उनका पीछा किया। गुलाबी पोशाक वाली महिला सीढ़ियों के शीर्ष पर पहुंची और हवा में गायब हो गई।

जैसे ही उसे मौका मिला, उसने अपनी दादी को इस बारे में बताया। दादी ने सिर हिलाकर उसकी बात पर विश्वास नहीं किया। उन्होंने इस बारे में कोई चर्चा भी नहीं की, इसलिए मिस हैमिल्टन ने दादी के सम्मान में इस मामले को वहीं छोड़ दिया। लेकिन पोशाक का डिज़ाइन इतना अनोखा था कि उसने पुस्तकालय में जाकर इसकी जाँच करने का फैसला किया। वहाँ जाकर उसे आश्चर्य हुआ कि गुलाबी पोशाक वाली महिला ने 1840 के दशक के अंत की पोशाक पहनी थी।

अगले वर्ष सितंबर में, उनकी दादी ने घर को फिर से सजाने का फैसला किया। इस प्रयास में उन्होंने फर्नीचर के कई पुराने टुकड़ों का इस्तेमाल किया, जिनमें से कुछ घर के अटारी से लाए गए थे। जब मिस हैमिल्टन पहुंचीं और बदलाव देखे, तो वे अचानक हॉल में टंगी एक तस्वीर को देखकर स्तब्ध रह गईं।

यह उनकी पत्नी का चित्र था। इस तस्वीर में उन्होंने गुलाबी गाउन नहीं पहना था, लेकिन इसके अलावा वह वही महिला थीं।

मिस हैमिल्टन की जिज्ञासा एक बार फिर जागृत हो गई और चूंकि उन्हें अपनी दादी से कोई सहयोग नहीं मिला, इसलिए उन्होंने अपनी परदादी से मदद मांगी। यह विशेष रूप से सौभाग्यपूर्ण था क्योंकि परदादी पारिवारिक वंशावली की विशेषज्ञ थीं।

अंततः सीढ़ियों पर रहने वाली महिला की पहचान हो गई। वह मिस हैमिल्टन की दूर की चचेरी बहन निकलीं और एक समय उसी घर में रह चुकी थीं।

उसे एक निकम्मे आदमी से प्यार हो गया था, और जब एक झगड़े में उसकी मौत हो गई, तो उसने खुद को सीढ़ियों से नीचे फेंककर आत्महत्या कर ली।

मिस हैमिल्टन ने सोचा कि परिवार के भूत ने उसे ही अपने सामने प्रकट होने के लिए क्यों चुना था?

फिर उसे एहसास हुआ कि उसका चेहरा भूत से काफी मिलता-जुलता है। इतना ही नहीं, उनके नाम भी लगभग एक जैसे थे—मैरी एलिजाबेथ मिस हैमिल्टन का नाम था, और एलिजाबेथ मैरी, गुलाबी महिला का नाम। दोनों महिलाओं का उपनाम भी एक ही था, लिब्बी।

शायद भूतनी अपने परिवार से थोड़ी सी पहचान पाने की उम्मीद कर रही थी और दादी से कोई पहचान न मिलने पर उसने किसी अधिक अनुकूल रिश्तेदार के सामने प्रकट होने का अवसर तलाश लिया?

मिस हैमिल्टन इस बात से खुश हैं कि उन्हें उस दुर्भाग्यशाली लड़की के चेहरे पर उदास मुस्कान देखने को मिली, क्योंकि उनके लिए यह इस बात का प्रमाण है कि वर्षों के दौरान उनके बीच संवाद, भले ही मौन रूप से, हुआ था।

* * *

श्रीमती जेन एडसन मिनियापोलिस के उपनगरीय इलाके में रहने वाली एक गृहिणी हैं। उनकी उम्र मध्यम है और उनके पाँच बच्चों की उम्र नौ से बीस वर्ष के बीच है। उनके पति बिल सप्ताह में चार दिन यात्रा करते हैं। वे एक 28 साल पुराने ईंटों से बने कॉटेजनुमा घर में रहते हैं और पिछले आठ वर्षों से वहीं रह रहे हैं।

एडसन परिवार को अपने साधारण से दिखने वाले घर में कुछ अजीब होने का एहसास तब हुआ जब वे कुछ ही समय से घर में रह रहे थे। श्रीमती एडसन तहखाने में सिलाई कर रही थीं, तभी अचानक उन्हें लगा कि वे अकेली नहीं हैं और उन्हें ऊपर भागने का मन हुआ। उन्होंने अपनी इस तीव्र इच्छा को दबा लिया, लेकिन उन्हें बहुत असहज महसूस हुआ। एक और शाम, उनके पति नीचे भाषण का अभ्यास कर रहे थे, तभी उन्हें भी किसी और की उपस्थिति का एहसास हुआ। उनका संयम श्रीमती एडसन जितना मजबूत नहीं था, और वे ऊपर आ गए। अपने पड़ोसी से अपनी इस अजीब अनुभूति के बारे में बात करते हुए, उन्हें पता चला कि पिछले किराएदार ने भी तहखाने के बारे में शिकायत की थी। उनकी बेटी, रीटा, कभी भी अकेले तहखाने में नहीं जाना चाहती थी और जब उससे कारण पूछा गया, तो उसने आखिरकार मान लिया कि वहाँ एक आदमी था। उसने बताया कि वह काले बालों वाला था और उसने चेकदार शर्ट पहनी हुई थी।

कभी-कभी वह रात में उसके बिस्तर के पास खड़ा हो जाता था और वह डर जाती थी, लेकिन जैसे ही वह अपनी माँ को बुलाने के बारे में सोचती, वह दृश्य गायब हो जाता था। एक और जगह जहाँ उसे उसकी उपस्थिति का एहसास होता था, वह उनके आँगन के दूसरे छोर पर बना छोटा सा खेलघर था।

अगली वसंत ऋतु में, श्रीमती एडसन ने सीढ़ियों के शीर्ष पर एक चमकती हुई रोशनी देखी जब वह ऊपर के एक कमरे में सोने जा रही थीं, जिसमें वह सर्जरी से ठीक होने के दौरान रह रही थीं।

प्रकाश मानो अपने आप ही उसके कमरे तक उसका पीछा करता हुआ गया!

जब वह अपने कमरे में दाखिल हुई तो बत्ती बुझ गई, लेकिन कमरा एकदम ठंडा लग रहा था। उसे थोड़ी बेचैनी हुई, लेकिन फिर भी वह बिस्तर पर चली गई और जल्द ही नींद आने लगी और वह सब कुछ भूल गई। अचानक, आधी रात को, वह जाग उठी और बिस्तर पर बैठ गई।

किसी चीज़ ने उसे जगा दिया था। अपने बिस्तर के पास उसने एक आदमी को देखा जो उसके अनुसार "हल्के भूरे रंग का" था। जैसे ही उसने उस आकृति को देखा, वह गायब हो गई, और कमरा फिर से बहुत ठंडा हो गया।

लगभग उसी समय, एडसन परिवार ने गौर किया कि उनके बिजली के उपकरण अजीब व्यवहार कर रहे हैं। एक बार सुबह 5 बजे उनकी वाशिंग मशीन अपने आप चालू हो गई, और तहखाने में रखा टेलीविजन भी, जिसे दीवार के सॉकेट में प्लग लगाकर ही चालू किया जा सकता था। जब वे सोने गए, तो टेलीविजन बंद था और उसे प्लग लगाने के लिए आसपास कोई नहीं था।

कौन था जिसे बिजली के उपकरणों का इतना शौक था कि वह उन्हें सुबह-सुबह चालू कर देता था?

आखिरकार श्रीमती एडसन को पता चल गया। मई 1949 में, सेना से सेवानिवृत्त एक युवक उस घर में रहने लगा था। ऐसा लगता है कि उसे बिजली के तारों का काम करना पसंद था, क्योंकि उसने तहखाने से लेकर आंगन तक, ज़मीन के नीचे से होते हुए संपत्ति के दूसरे छोर तक भारी तारों का एक गुच्छा बिछा रखा था। जब उसने बिजली कंपनी के बिजली के खंभे से तारों को जोड़ने की कोशिश की, तो उसकी तुरंत मौत हो गई। यह घटना उस जगह के पास घटी जहाँ श्रीमती एडसन की बेटी ने प्रेत देखा था। चूंकि तार अभी भी उनके बगीचे में हैं, इसलिए श्रीमती एडसन को इस बात पर ज़रा भी आश्चर्य नहीं है कि मृत व्यक्ति वहाँ मंडराता रहता है।

और किसी इलेक्ट्रॉनिक्स प्रेमी के लिए भूत के रूप में प्रकट होने का इससे बेहतर तरीका क्या हो सकता है कि वह एक चमकदार, झिलमिलाती रोशनी के रूप में प्रकट हो? इस समय तक, मृत इलेक्ट्रीशियन अभी भी एडसन के घर में शरारतें कर रहा है, और श्रीमती एडसन एक नए घर की तलाश में हैं - जो उनके वर्तमान घर से थोड़ा कम असामान्य हो।

* * *

एलीन कोर्टिस सैंतालीस वर्ष की हैं, मूल रूप से लंदन की रहने वाली हैं और एक संतुलित व्यक्तित्व की धनी हैं। वे वर्तमान में पश्चिमी तट पर रहती हैं, लेकिन इससे पहले न्यूयॉर्क शहर में रह चुकी हैं। हालांकि उन्होंने कभी कॉलेज की पढ़ाई नहीं की, फिर भी उन्हें चीजों की अच्छी समझ है, उनका दिमाग विश्लेषणात्मक है और वे आसानी से भावुक नहीं होतीं।

चौंतीस वर्ष की आयु में जब वे न्यूयॉर्क पहुंचीं, तो उन्होंने एक शांत होटल में ठहरने और फिर नौकरी की तलाश करने का फैसला किया।

यह नौकरी एक औसत दर्जे की ऑफिस की नौकरी निकली, और उसने मार्था वाशिंगटन होटल चुना, जो उन्नीसवीं स्ट्रीट पर स्थित केवल महिलाओं के लिए एक होटल था। एलीन स्वभाव से शर्मीली और एकांतप्रिय थी, जो धीरे-धीरे ही दोस्त बनाती थी।

उन्हें बारहवीं मंजिल पर एक कमरा दिया गया और दहलीज पार करते ही उन्हें कमरे से आती दुर्गंध का अनुभव हुआ। उनकी पहली इच्छा दूसरा कमरा मांगने की थी, लेकिन वे कोई हंगामा करने के मूड में नहीं थीं, इसलिए वे वहीं रुक गईं।

“एक-दो रात तो बर्दाश्त कर सकती हूँ,” उसने सोचा, लेकिन सामान नहीं खोला। पता चला कि वह उस कमरे में पूरे छह महीने रही, और फिर भी उसने कभी सामान खोला ही नहीं।

एलीन को जीवन भर अलौकिक अनुभूतियों का अनुभव होता रहा था, और अपने नए "घर" को देखकर उसकी पहली धारणा यही थी कि इसमें किसी की मृत्यु हुई है। उसने दीवारों को एक-एक इंच करके जांचा। आसपास की दीवार के रंग को देखकर ऐसा लग रहा था कि एक जगह पर लंबे समय तक क्रूस लटका रहा होगा। जाहिर है, जब कोई हमेशा के लिए यहाँ से चला गया, तो उसे हटा दिया गया था।

उस पहली रात, जब वह बिस्तर पर गई, तो अखबार का पन्ना पलटने जैसी आवाज़ से उसकी नींद टूट गई। आवाज़ बिल्कुल वैसी ही थी जैसे कोई उसके बिस्तर के नीचे वाली कुर्सी पर बैठकर अखबार पढ़ रहा हो। उसने झट से लाइट जलाई और ज़ाहिर है, वह बिल्कुल अकेली थी। क्या ये उसका डर था? ये एक अनजान शहर था, एक अनजान कमरा। उसने दोबारा सोने का फैसला किया। तभी, सरसराहट फिर से शुरू हो गई, और फिर कोई कुर्सी से उठकर दरवाजे की ओर चलने लगा।

एलीन ने कमरे की सारी बत्तियाँ जला दीं, लेकिन आवाज़ बंद हो गई। थकी हुई होने के कारण वह फिर से सो गई। अगली सुबह उसने कमरे का ध्यान से निरीक्षण किया। शायद चूहों की वजह से ही वह अजीब सी सरसराहट हो रही थी। वह अजीब सी गंध अभी भी आ रही थी, इसलिए उसने कमरे में धुआं करने का अनुरोध किया। मैनेजर ने व्यंग्य भरी मुस्कान दी, और

कोई भी उसके कमरे में धुआं करने नहीं आया। सरसराहट की आवाज़ रात-दर-रात जारी रही, और एलीन अगले तीन हफ्तों तक बत्तियाँ जलाकर सोई।

किसी तरह उसकी आंतरिक शक्ति ने उसे बताया कि यह उपस्थिति एक दृढ़ इच्छाशक्ति वाली, क्रूर बूढ़ी औरत की थी, जिसे इस बात से चिढ़ थी कि कोई और उस कमरे में रह रहा है जिसे वह अब भी "अपना" कमरा मानती थी। एलीन ने उससे लड़ने का फैसला किया। रात दर रात, वह अंधेरे में हिम्मत करके बाहर निकलती, लेकिन सुबह खुद को पूरी तरह से थका हुआ पाती। दफ्तर में उसके दिखने से चर्चा शुरू हो गई। लेकिन वह किसी भूत के आगे हार मानने वाली नहीं थी। अब जीवित और मृत आत्माएं एक ही कमरे में साथ-साथ रह रही थीं, लेकिन उसे साझा नहीं कर रही थीं।

फिर एक रात, किसी चीज ने उसे सोने नहीं दिया। वह चुपचाप बिस्तर पर लेटी रही, इंतजार करती रही।

अचानक उसे अपने सिर के ऊपर फैली हुई दो पतली लेकिन बहुत मजबूत भुजाओं का आभास हुआ, जो एक बड़ा मुलायम तकिया इस तरह पकड़े हुए थीं मानो उसे दम घोंटकर मार डालना चाहती हों!

अपने चेहरे से तकिया हटाने के लिए उसे अपनी पूरी ताकत लगानी पड़ी।

अगली सुबह, उसने इसे मतिभ्रम बताकर टालने की कोशिश की। लेकिन क्या सच में यह मतिभ्रम था? उसे पूरा यकीन था कि वह सोई नहीं थी।

लेकिन फिर भी वह घर से बाहर नहीं निकली, और एक शाम जब वह एक दोस्त के साथ दफ्तर से घर लौटी, तो उसे अपनी पीठ में अचानक तेज दर्द महसूस हुआ, मानो किसी ने उसे चाकू मार दिया हो। रात में, वह जाग उठी तो खुद को पूरी तरह लकवाग्रस्त पाया। वह अपने हाथ-पैर और सिर हिला नहीं पा रही थी। आखिरकार, काफी देर बाद, वह किसी तरह फोन के रिसीवर तक पहुंची और डॉक्टर को बुलाया। कोई नहीं आया। लेकिन धीरे-धीरे उसका होश वापस आने लगा और उसने अपनी दोस्त को फोन किया, जो तुरंत वहां पहुंची और एलीन को सदमे की हालत में पाया।

अगले कुछ दिनों में कंपनी के चिकित्सक ने उनकी पूरी जांच की, जिसमें एक्स-रे भी शामिल थे, ताकि यह पता लगाया जा सके कि क्या उनके शरीर में कोई ऐसी समस्या तो नहीं है

जिसके कारण यह स्थिति उत्पन्न हुई हो। उन्हें पूरी तरह से स्वस्थ घोषित कर दिया गया और तब तक उनकी शारीरिक शक्ति भी लौट चुकी थी, इसलिए उन्होंने बेहतर स्थिति में नौकरी छोड़ने का फैसला किया।

वह लंबे समय तक आराम करने के लिए फ्लोरिडा गई, लेकिन अंततः न्यूयॉर्क और होटल लौट आई। इस बार उसे एक और कमरा दिया गया, जहाँ वह एक वर्ष से अधिक समय तक बहुत खुशी से और बिना किसी घटना के रही।

एक दिन, बारहवीं मंजिल पर जिस कमरे में वह रहती थी, उस समय से उसे जानने वाली एक पड़ोसी ने उसे लॉबी में देखा और उससे मिलने की ज़िद की। सामाजिक मेलजोल पसंद न होने के कारण, आइलीन अनिच्छा से मान गई। बातचीत कई विषयों पर हुई, तभी अचानक पड़ोसी ने कहा, "वह समय जब तुम सामने वाले उस भूतिया कमरे में रहती थी।"

चूंकि एलीन ने वहां के अपने भयानक अनुभवों के बारे में कभी किसी को नहीं बताया था, इसलिए वह हैरान थी। पड़ोसी ने स्वीकार किया कि जब वह उस कमरे में रह रही थी, तब वह उसे चेतावनी देना चाहती थी, लेकिन किसी तरह हिम्मत नहीं जुटा पाई। "मुझे किस बात की चेतावनी?" एलीन ने पूछा।

पड़ोसी ने रुक-रुक कर समझाते हुए कहा, "आपके आने से ठीक पहले जो महिला इस कमरे में रहती थी, वह कुर्सी पर मृत पाई गई थी, और उससे पहले जो महिला इस कमरे में रहती थी, वह भी बाथटब में मृत पाई गई थी।"

एलीन ने जल्दी से घूंट भरा और चली गई। अचानक उसे एहसास हुआ कि तकिए का आवरण कोई भ्रम नहीं था।

* * *

बुक्सहोवेडेन परिवार यूरोप के सबसे पुराने कुलीन परिवारों में से एक है, जिसका संबंध कई शाही घरानों से रहा है और अठारहवीं शताब्दी से, जब एक काउंट ने रूस की कैथरीन द ग्रेट की बेटी से शादी की, तब से रूसी शाही परिवार से भी इसका संबंध है। परिवार का मुख्य निवास एस्टोनिया के तट पर स्थित ईसेल द्वीप पर लोड कैसल था। यह किला, जो आज भी खड़ा है, एक बहुत ही प्राचीन इमारत है जिसमें मुख्य भवन से कुछ दूरी पर एक गोलाकार

मीनार बनी हुई है। सोवियत काल में इस पर कब्जा करने वालों ने इसे एक संग्रहालय में बदल दिया था।

बुक्सहोवेडेन परिवार को यह संपत्ति तब मिली जब फ्रेडरिक विलियम बुक्सहोवेडेन ने रूस की नताली से शादी की; यह उनकी सास कैथरीन की ओर से एक उपहार था।

इस प्रकार यह संपत्ति एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को विरासत में मिलती रही, जब तक कि यह अंततः काउंट अनाटोल बुक्सहोवेडेन के हाथों में नहीं आ गई। यह इस शताब्दी की शुरुआत का समय था, और दुनिया में सब कुछ ठीक चल रहा था।

एस्टोनिया रूस का एक प्रांत था, इसलिए रूसी रेजिमेंटों द्वारा उस क्षेत्र में युद्ध अभ्यास करना कोई असामान्य बात नहीं थी। एक बार, जब अभ्यास पूरे ज़ोरों पर था, रेजिमेंटल कमांडर ने अपने अधिकारियों को किले में ठहराने का अनुरोध किया। सैनिक पास के कस्बे में थे, लेकिन पाँच स्टाफ अधिकारी लोडे किले में रहने आए। दादा बुक्सहोवेडेन एक आदर्श मेज़बान थे, लेकिन इस बात से नाखुश थे कि वे सभी पाँचों को मुख्य घर में नहीं ठहरा सकते थे। पाँचवें व्यक्ति को मीनार में बने कमरे से ही संतोष करना पड़ा। चूंकि तब तक मीनार के भूतिया होने की अफवाह फैल चुकी थी, इसलिए उन्होंने उस कमरे में रहने के लिए एक स्वयंसेवक की तलाश की।

भूतिया कमरे को लेकर काफी मजाक-मस्ती हुई, जिसके बाद सबसे कम उम्र के अधिकारी ने स्वेच्छा से आगे आकर अपने क्वार्टर की ओर प्रस्थान किया।

कमरा काफी आरामदायक लग रहा था, और युवा अधिकारी ने दिन भर के कठिन अभ्यास के बाद रात बिताने के लिए इतनी शांत और सुखद जगह चुनने के लिए खुद को बधाई दी।

वह थका हुआ था और तुरंत बिस्तर पर लेट गया। लेकिन वह इतना थका हुआ था कि जल्दी सो नहीं पाया, इसलिए उसने दीवार पर लगी अलमारियों में से एक किताब उठाई, अपनी नाइट टेबल पर मोमबत्ती जलाई और पढ़ना शुरू कर दिया।

ऐसा करते ही, उसे अचानक कमरे के दूसरी ओर एक हरी रोशनी दिखाई दी। जब उसने हैरानी से उस रोशनी की ओर देखा, तो वह उसकी आँखों के सामने एक स्त्री के रूप में बदल गई। वह ठोस लग रही थी। उसके डर के मारे, वह उसके बिस्तर के पास आई, उसका हाथ पकड़ा और उसे अपने पीछे आने को कहा। किसी तरह वह उसके आदेशों का विरोध नहीं

कर सका, हालाँकि उसने एक भी शब्द नहीं बोला था। वह उसके पीछे सीढ़ियों से नीचे महल के पुस्तकालय में चला गया। वहाँ उसने इशारे किए कि उसे कालीन हटाना है। बिना कुछ पूछे, उसने कालीन हटा दिया। फिर उसने कालीन के नीचे एक गुप्त दरवाजे की ओर इशारा किया। उसने दरवाजा खोला और उस आकृति के पीछे सीढ़ियों से नीचे उतरा, जब तक कि वे एक बड़े लोहे के दरवाजे तक नहीं पहुँच गए, जिसने उनका रास्ता रोक दिया था। उस आकृति ने फर्श के एक कोने की ओर इशारा किया, और उसने उसमें खोदा। वहाँ उसे एक चाबी मिली, शायद दस इंच लंबी, और उससे उसने लोहे का दरवाजा खोल दिया। अब वह खुद को एक लंबे गलियारे में पाया जो एक गोलाकार कमरे की ओर जाता था। वहाँ से एक और गलियारा आगे बढ़ता था और वह फिर से उत्सुकता से उस गलियारे में चला गया, यह सोचकर कि आखिर यह सब क्या हो रहा है।

यह गलियारा अचानक एक और गोलाकार कमरे में खुल गया जो उसे जाना-पहचाना सा लगा —वह अपने ही कमरे में वापस आ गया था। वह प्रेत गायब हो गया था।

इसका क्या मतलब था? वह यह समझने की कोशिश में उठ बैठा, और जब उसे आखिरकार नींद आई तो भोर हो चुकी थी। नतीजतन, वह देर तक सोता रहा और नाश्ते के लिए सबसे आखिर में नीचे आया। उसकी उत्तेजना ने तुरंत काउंट और उसके साथी अधिकारियों का ध्यान आकर्षित किया। "आप विश्वास नहीं करेंगे," उसने कहना शुरू किया और उन्हें बताया कि उसके साथ क्या हुआ था।

वह सही था। किसी ने उसकी बात पर विश्वास नहीं किया।

लेकिन उसके सच बोलने पर उसका जोर इतना विश्वसनीय था कि अंततः काउंट, उस पर विश्वास करने के बजाय उसे खुश करने के लिए, उस युवा अधिकारी के साथ पुस्तकालय में कथित गुप्त दरवाजे की तलाश करने के लिए सहमत हो गया।

“लेकिन,” उन्होंने आगे कहा, “मुझे आपको यह बताना होगा कि उस कालीन के ऊपर किताबों से भरी कुछ भारी अलमारियां हैं जिन्हें सौ साल से भी अधिक समय से न तो हिलाया गया है और न ही छुआ गया है। किसी एक व्यक्ति के लिए उस कालीन को पलटना बिलकुल असंभव है।”

वे पुस्तकालय गए, और जैसा कि काउंट ने कहा था, कालीन हिलाया नहीं जा सका। लेकिन दादा बक्स-होवेडेन ने फिर भी आगे बढ़ने का फैसला किया और अपने कुछ आदमियों को बुलाया। दस आदमियों ने मिलकर अलमारियों को हटाया और कालीन को वापस अपनी जगह पर रख दिया। कालीन के नीचे एक इंच मोटी धूल की परत थी, लेकिन इससे उस साहसी युवा अधिकारी को गुप्त द्वार की घंटी ढूंढने से नहीं रोका। काफी खोजबीन के बाद, आखिरकार उसे वह मिल गई। जैसे ही उसने गुप्त द्वार खोला, पूरे समूह में सन्नाटा छा गया। वहाँ गुप्त मार्ग और लोहे का फाटक था। और उसके बगल में, एक जंग लगी लोहे की चाबी पड़ी थी। चाबी ताले में लग गई। फाटक, जो शायद सदियों से नहीं हिला था, धीरे-धीरे और मुश्किल से खुला, और छोटा समूह उन दुर्गंधयुक्त रास्तों की खोज में आगे बढ़ गया। अधिकारी के नेतृत्व में, आदमी गलियारों से होते हुए टावर के कमरे में पहुँचे, ठीक वैसे ही जैसे अधिकारी ने रात में किया था।

लेकिन इसका मतलब क्या था? सभी जानते थे कि वहां गुप्त रास्ते थे - कई पुराने किलों में युद्ध के समय सुरक्षा के लिए ऐसे रास्ते बनाए जाते थे।

यह मामला धीरे-धीरे लोगों की यादों से मिट गया और लोड में जीवन चलता रहा। हालांकि, लोहे की चाबी को संभाल कर रखा गया और कुछ वर्षों तक वह बुक्सहोवेडेन परिवार के पास ही रही, जब तक कि वह काउंट अलेक्जेंडर के पेरिस स्थित अपार्टमेंट से चोरी नहीं हो गई।

दस साल बीत गए, फिर महल में एक छोटी सी आग लगने के बाद, काउंट बक्सहोवेडेन ने आवश्यक मरम्मत के साथ-साथ सेंट्रल हीटिंग लगवाने का फैसला किया, जो पुराने महलों के लिए हमेशा ज़रूरी होता है। काम करने वाले ठेकेदार ने बीस आदमी बुलाए जिन्होंने लोडे में साज-सज्जा को बहाल करने और बेहतर बनाने के लिए कड़ी मेहनत की। फिर एक दिन, सारा दल भूतों की तरह गायब हो गया। काउंट बक्सहोवेडेन ने इसकी सूचना पुलिस को दी, जो पहले से ही गायब हुए आदमियों की पत्नियों और परिवारों से घिरी हुई थी।

उस दौर के अखबारों ने लापता कामगारों के मामले को खूब उछाला, लेकिन प्रचार से उन्हें वापस लाने में कोई मदद नहीं मिली और रहस्य बना रहा।

फिर क्रांति हुई और बुक्सहोवेडेन परिवार ने अपना पैतृक घर खो दिया। काउंट अलेक्जेंडर और वर्तमान काउंट अनाटोल, मेरे बहनोई, स्विट्जरलैंड में रहने चले गए। यह वर्ष 1923 था।

एक दिन दोनों व्यक्ति लॉज़ेन की एक सड़क पर चल रहे थे, तभी एक अजनबी उनके पास आया और काउंट अलेक्जेंडर को उनके नाम से पुकारा।

“मैं आपके महल के मुख्य प्रबंधक का भाई हूँ,” उस व्यक्ति ने समझाया। “आग लगने के बाद महल की मरम्मत के काम में मैं एक प्लंबर था।”

इतना समय बीत चुका था और इतनी सारी राजनीतिक घटनाओं ने यूरोप का नक्शा बदल दिया था कि आखिरकार वह व्यक्ति लापता कामगारों के मामले से गोपनीयता का पर्दा उठाने के लिए तैयार हो गया था।

यह कहानी उन्होंने सुनाई: जब मजदूर केंद्रीय ताप प्रणाली के लिए खाइयाँ खोद रहे थे, तो उन्हें गलती से लोहे की एक केतली मिली, जो मध्य युग में किले को घेरने वाले दुश्मनों पर उबलता तेल या पानी डालने के लिए इस्तेमाल होती थी। लेकिन यह केतली पानी से नहीं, बल्कि सोने से भरी थी। उन्हें सदियों से गुमशुदा बक्सहोवेडेन खजाना मिल गया था, एक ऐसा खजाना जिसके बारे में कहा जाता था कि वह सदियों से मौजूद था, लेकिन कभी नहीं मिला था। अब, इस सौभाग्य से, मजदूर लुटेरे बन गए। उन्होंने इस खजाने को आपस में बाँटने का फैसला किया, भले ही इसका मतलब था कि उन्हें सब कुछ पीछे छोड़ना पड़े—अपने परिवार, अपने घर, अपना काम—और कहीं और नई शुरुआत करनी पड़े। लेकिन खजाना इतना बड़ा था कि यह उनके लिए परेशानी की बजाय खुशी की बात बन गई, और ऐसा लगता है कि उन्हें अपनी पत्नियों की कमी महसूस नहीं हुई, क्योंकि पश्चिमी यूरोप के शांत वातावरण में उन्हें कई पत्नियाँ मिल गईं, जहाँ उनमें से अधिकांश नकली नामों से रहने चले गए।

अंततः उस युवा अधिकारी को दिखाई देने वाली आकृति का अर्थ समझ में आया: वह एक पूर्वज थी जो अपने वंशजों को यह बताना चाहती थी कि परिवार का सोना कहाँ छिपाया गया है। एक प्रेत के लिए यह कितना निराशाजनक था कि उसके प्रयास व्यर्थ हो गए, और उससे भी बुरा यह कि चोरों ने सारा खजाना लुटा दिया जबकि कानूनी वारिसों को निर्वासन में जाना पड़ा। कौन जानता है कि अगर बुक्सहोएवेडेन परिवार समय पर खजाने तक पहुँच जाता तो उनके लिए परिस्थितियाँ कैसी होतीं।

बहरहाल, इस कहानी में एक सकारात्मक पहलू भी है: चूंकि लोड कैसल में अब और कुछ नहीं बचा है, इसलिए भूत को उस नए शासन के तहत प्रकट होने की ज़रूरत नहीं है। लेकिन

रूसी अभिजात वर्ग और अंग्रेज जागीरदारों का ही अलौकिक घटनाओं पर एकाधिकार नहीं है। न ही मैंने जिन भूतिया जगहों का सामना किया है, वे सभी रोमांटिक या डरावनी हैं। निश्चित रूप से अमेरिकी मध्यपश्चिम और दक्षिण में दुनिया के किसी भी अन्य हिस्से की तुलना में अधिक वास्तविक भूतिया घटनाएं होती हैं। इसका कारण यह हो सकता है कि उन्नीसवीं और बीसवीं शताब्दी के आरंभिक वर्षों में वहां काफी हिंसा हुई थी। साथ ही, ऐसी घटनाओं के प्रति अमेरिकी जनता का दृष्टिकोण यूरोपीय लोगों से अलग है। यूरोप में, लोग वास्तविक भूतों की कहानियाँ केवल उन्हीं लोगों को सुनाना पसंद करते हैं जिन पर वे भरोसा कर सकते हैं। उपहास का पात्र बनना अधिकांश यूरोपीय लोगों को पसंद नहीं होता।

इसके विपरीत, अमेरिकी अधिक स्वतंत्र हैं। उन्हें इस बात की परवाह नहीं होती कि अंततः दूसरे उनके बारे में क्या सोचते हैं, जब तक कि उनके अपने लोग उन पर विश्वास करते हैं। मैंने कई मामलों में लोगों से वैज्ञानिक जांच और उनकी कहानियों के प्रति सम्मान का आश्वासन देते हुए संपर्क किया है। मैं संशयवादी नहीं हूँ। मैं सत्य की खोज करने वाला हूँ, चाहे वह सत्य कैसा भी दिखे या सुनाई दे।

कुछ समय पहले, एक जाने-माने टीवी व्यक्तित्व ने भूत-प्रेतों के अस्तित्व के बारे में मेरी धारणा पर आपत्ति जताई थी। चूंकि उन्हें इस विषय की पर्याप्त जानकारी नहीं थी, इसलिए उन्हें उस क्षेत्र में दखल नहीं देना चाहिए था जिसके बारे में मुझे इतनी अच्छी जानकारी है। उन्होंने खुद को संशयवादी घोषित करने में गर्व दिखाया।

चिढ़कर मैंने आखिरकार उससे पूछा कि क्या वह जानता है कि संशयवादी होने का क्या मतलब होता है। उसने सिर हिलाकर मना कर दिया।

मैंने धैर्यपूर्वक उसे समझाया, “संशयवादी शब्द ग्रीक शब्द स्केप्सिस से लिया गया है, जो प्राचीन काल में एशिया माइनर के एक छोटे से शहर का नाम था। यह शहर ज्ञान की कमी के लिए जाना जाता था, और स्केप्सिस के लोगों को संशयवादी कहा जाता था।”

टीवी पर्सनैलिटी को यह बिल्कुल पसंद नहीं आया, लेकिन अगली बार जब हम कैमरे के सामने मिले, तो वह काफी ज्यादा मानवीय थे और आखिरकार उनकी मानवीयता झलकने लगी।

* * *

मुझे एक बार शिकागो, इलिनोइस में रहने वाली श्रीमती स्टीवर्ट का एक अजीबोगरीब पत्र मिला, जिसमें उन्होंने बताया कि वह एक भूत के साथ रह रही हैं और उन्हें इससे कोई आपत्ति नहीं है, सिवाय इसके कि उन्होंने जन्म के समय अपने दो बच्चों को खो दिया था और यह भूत न केवल उनका बल्कि उनकी छोटी बच्ची का भी पीछा कर रहा था। उन्हें यह बात पसंद नहीं थी, इसलिए क्या मैं आकर इस मामले की जांच कर सकता हूँ?

मैं ऐसा कर सकता था और मैंने किया भी। 4 जुलाई को, मैंने शिकागो के साउथ साइड में एक फंसी हुई महिला भूत को मुक्त करने की कोशिश करके स्वतंत्रता दिवस मनाया। घर पुराना था, जो 1800 के दशक के अंत में बना था, और वास्तुकला की दृष्टि से कोई बहुत सुंदर इमारत नहीं थी। लेकिन इसकी मज़बूती इसके वर्तमान उद्देश्य के लिए उपयुक्त थी—कई युवा जोड़ों और उनके बच्चों को रहने की जगह देना, ऐसे लोग जिन्हें यह घर सुविधाजनक और किफायती लगता था।

अपने सुनहरे दिनों में, यह एक आलीशान घर हुआ करता था, जिसमें नौकर-चाकर और उनके आने-जाने के लिए सीढ़ियाँ भी थीं। तीनों मंजिलें आज भी एक जटिल बजर सिस्टम से जुड़ी हुई हैं, जो कई सालों से काम नहीं कर रहा है।

मैं श्रीमती स्टीवर्ट से घर में हो रही घटनाओं के बारे में तब तक बात नहीं करना चाहता था जब तक कि मेरे साथ आई सिबिल लीक को स्थिति का जायज़ा लेने का मौका न मिल जाए। मेरे अच्छे दोस्त कार्ल सुबाक, जो एक स्टाम्प व्यापारी हैं, यह देखने आए थे कि मैं कैसे काम करता हूँ। हम दोनों तीस साल पहले छात्र थे और इसी वजह से उन्होंने अपने—अह—संदेह को दूर करके मेरे साथ आने का फैसला किया था। पहुँचते ही सिबिल दूसरी मंज़िल की सीढ़ियाँ ऐसे चढ़ गईं जैसे उन्हें पता हो कि कहाँ जाना है! बेशक उन्हें पता नहीं था; मैंने इस बारे में उनसे कोई बात नहीं की थी। लेकिन इस आशाजनक शुरुआत के बावजूद, जब हम ऊपर वाले अपार्टमेंट में पहुँचे तो उन्हें कुछ भी महसूस नहीं हुआ। "मुझे बिल्कुल कुछ भी महसूस नहीं हो रहा है," उन्होंने धीरे से कहा और संदेह भरी नज़रों से मेरी ओर देखा। क्या मुझसे कोई गलती हो गई थी? ऐसा लग रहा था जैसे वह पूछ रही हों। जुलाई की इस गर्म दोपहर में, क्या हम शिकागो के साउथ साइड तक एक बेबुनियाद भूतिया खोज में आ गए थे?

हम एक शयनकक्ष में एकत्रित हुए, जिसमें एक आरामदायक कुर्सी थी और दोनों ओर खिड़कियाँ थीं जिनसे एक पुराने ज़माने का बगीचा दिखाई देता था; एक तरफ बरामदा था और दूसरी तरफ सड़क। मालिकों की साधारण आर्थिक स्थिति के अनुरूप, फर्नीचर पुराना और जर्जर था, लेकिन वह उपयोगी था और वहाँ रहने वालों को इससे कोई आपत्ति नहीं थी।

पल भर में सिबिल लीक समाधि की अवस्था में चली गई। लेकिन किसी भूत की आवाज के बजाय, अगली आवाज जो हमने सुनी वह सिबिल की अपनी थी, हालांकि वह अजीब लग रही थी। सिबिल अपने शरीर से बाहर थी, लेकिन समाधि की अवस्था में भी वह उस जगह का अवलोकन करने और हमें जानकारी देने में सक्षम थी।

सबसे पहले उसने नक्शे देखे, जो एक बड़ी गोल इमारत में रखे थे और किसी तरह उस घर से जुड़े हुए थे जिसमें हम ठहरे हुए थे।

मैंने पूछा, "क्या यहाँ कोई है?"

“हां,” सिबिल ने स्वर में कहा, “जेम्स डुगन।”

वह यहाँ क्या करता है?

"जीने के लिए वापस आओ।"

"वह कब था?"

“1912.”

क्या उसके साथ कोई है?

“एक और आदमी है। मैकक्लाउड।”

"किसी और को?"

"बहुत से लोग।"

क्या वे इस घर में रहते हैं?

“तीन-चार लोग...मैक्लाउड...नक्शे...”

“क्या सभी पुरुष?”

"नहीं...लड़की...जूडिथ...नौकरानी..."

क्या यहाँ किसी अप्रिय शक्ति का वास है?

“जुडिथ... उसका यहाँ कोई नहीं था, कोई परिवार नहीं था... वह आदमी चला गया... डुगन चला गया...”

“उसका इस डुगन से क्या संबंध है?”

"क्या आप उससे प्यार करती थीं?"

“क्या उनकी शादी हुई थी?”

नहीं। प्रेमी।

क्या उनके कोई बच्चे थे?

कुछ क्षणों के लिए सन्नाटा छा गया, फिर सिबिल ने नीरस और एकरस स्वर में बोलना जारी रखा।

“बच्चे की मौत हो गई है।”

क्या उसे पता है कि बच्चा मर चुका है?

“वह रोती है...बच्चा रोता है...जुडिथ द्वारा उपेक्षित...दोषी...”

क्या जूडिथ को यह बात पता है?

"हाँ।"

"बच्चे की मृत्यु के समय उसकी उम्र कितनी थी?"

कुछ सप्ताह पुराना।

मुझे यह अजीब लगा कि श्रीमती स्टीवर्ट को इस स्रोत से अपने बच्चे के लिए डर था। उन्होंने भी कम उम्र में अपने बच्चों को खोया था।

“बच्चे को क्या हुआ?”

उसने उसे सीढ़ियों से नीचे रख दिया।

“फिर शव का क्या हुआ?”

"मुझें नहीं पता।"

“क्या जूडिथ अभी भी यहीं है?”

वह यहाँ है।

"कहाँ?"

“यह कमरा...और सीढ़ियों पर ऊपर-नीचे। उसे अपने बच्चे के लिए दुख हो रहा है।”

क्या आप उससे बात कर सकते हैं?

“नहीं। जब तक वह डुगन को ढूंढ नहीं लेती, तब तक वह यहाँ से नहीं जा सकती—देखो, अगर वह डुगन को ढूंढ सकती है तो—”

“डुगन कहाँ है?”

"मानचित्रों के साथ।"

“डुगन का काम क्या है?”

"इसका संबंध सड़कों से है।"

"क्या वह मर गया है?"

“हां। वह चाहती है कि वह यहां रहे, लेकिन वह यहां नहीं है।”

"वह महीला कैसे मरी?"

“वह पानी की ओर भागी...पानी के किनारे मर गई...लेकिन यहीं है जहाँ वह रहती थी...बच्चा सीढ़ियों पर मर गया...नीचे...”

"वह यहां क्या कर रही है, मेरा मतलब है कि वह लोगों को कैसे बताती है कि वह आसपास है?"

वह चीजें खींचती है... वह रोती है...

और उसका ईसाई नाम?

“मुझे लगता है, जूडिथ विंसेंट। इक्कीस साल की। सांवली, गोरी नहीं। किसी द्वीप से है।”

और वो आदमी? क्या वो गोरा है?

"हाँ।"

"आप उसे देख सकते हैं?"

"हाँ।"

"उससे बात करो?"

वह ऐसा नहीं करना चाहती, लेकिन शायद...

"उसे क्या लगता है कि यह कौन सा साल है?"

“1913.”

"उसे बताओ कि यह वर्ष 1965 है।"

सिबिल ने धीमी आवाज में आत्मा को बताया कि यह 1965 है और उसे अब यहां और रहने की जरूरत नहीं है, डुगन भी मर चुका है।

"उसे उसे ढूंढना होगा," सिबिल ने समझाया और मैंने उसे यह समझाने के लिए कहा कि उसे बस अपने प्रेमी को पुकारना है और वह "वहाँ" उससे फिर से मिल जाएगी।

“वह चली गई...” सिबिल ने आखिरकार कहा और गहरी सांस ली।

कुछ देर बाद वह जाग उठी और उस अजीब कमरे को देखकर आश्चर्यचकित रह गई, क्योंकि वह पूरी तरह से भूल चुकी थी कि हम यहां कैसे आए थे या हम कहां थे।

अब स्पष्टीकरण देने का समय नहीं था, क्योंकि मैं अभी भी कुछ चीज़ों की जाँच करना चाहता था। सबसे पहले मेरे साथ फ्लैट की मालकिन, श्रीमती एलेक्जेंड्रा स्टीवर्ट बैठीं। आयोवा विश्वविद्यालय से स्नातक, पच्चीस वर्षीय एलेक्जेंड्रा स्टीवर्ट एक कार्मिक निदेशक के रूप में काम करती हैं। उन्होंने समाधि सत्र देखा था और वे काफी घबराई हुई लग रही थीं। इसका एक ठोस कारण था। दरअसल, श्रीमती स्टीवर्ट उस भूत से मिली थीं जिसका वर्णन सिबिल ने किया था।

स्टीवर्ट परिवार 1964 की सर्दियों में दूसरी मंजिल के अपार्टमेंट में रहने आया था। जिस कमरे में हम अभी बैठे हैं, वह उनका ही था। उनके आने के कुछ ही समय बाद, श्रीमती स्टीवर्ट की नज़र फ्रेंच दरवाज़ों की ओर पड़ी, तभी उन्होंने एक महिला को अपनी ओर घूरते हुए देखा। वह महिला लगभग पाँच फुट तीन या चार इंच लंबी थी और उसने नीले-भूरे रंग की पोशाक पहनी हुई थी, साथ में शॉल और सिर पर एक हुड भी था, जिससे श्री स्टीवर्ट महिला के चेहरे के हाव-भाव ठीक से नहीं देख पा रहे थे। महिला का सिर अजीब तरह से झुका हुआ लग रहा था, मानो वह प्रायश्चित कर रही हो।

मैंने सिबिल द्वारा जूडिथ के वर्णन के आधार पर श्रीमती स्टीवर्ट से उस महिला के रंग के बारे में पूछा। लेकिन श्रीमती स्टीवर्ट निश्चित नहीं थीं; वह महिला गोरी या काली हो सकती थी। उस समय, श्रीमती स्टीवर्ट ने इसे दर्पण का प्रतिबिंब समझा था, लेकिन जब उन्होंने दर्पण में देखा, तो उन्हें उसमें कोई आकृति नहीं दिखी।

जब उन्होंने दोबारा उस आकृति पर ध्यान दिया, तो वह गायब हो चुकी थी। शाम का समय था और श्रीमती स्टीवर्ट थोड़ी थकी हुई थीं, फिर भी वह आकृति उन्हें बिल्कुल वास्तविक लग रही थी। लगभग एक महीने बाद जब भूत फिर से दिखाई दिया, तो उनके सारे संदेह दूर हो गए। इस बीच उन्होंने उस ड्रेसर को, जो पहले दृष्टि रेखा के सामने था, थोड़ा आगे खिसका दिया था, ताकि परछाई की व्याख्या बेमानी हो जाए। फिर से वह आकृति फ्रेंच दरवाजों पर दिखाई दी। श्रीमती स्टीवर्ट को वह बहुत दुखी लग रही थी, और वह उस महिला की ओर अजीब तरह से आकर्षित हो रही थीं, मानो उन्हें किसी अज्ञात तरीके से उनकी मदद करनी हो।

लेकिन ये दृश्य ही स्टीवर्ट परिवार को परेशान करने वाली एकमात्र चीज़ नहीं थे। जल्द ही उन्हें अजीबोगरीब आवाज़ें भी सुनाई देने लगीं। सबसे तेज़ आवाज़ एक बच्चे के रोने की थी, जो दूसरी मंज़िल के पीछे वाले बेडरूम से आती हुई प्रतीत हो रही थी। रसोई में भी यह आवाज़ सुनाई दे रही थी, हालाँकि वहाँ यह कम तेज़ थी और दीवारों से आती हुई लग रही थी। कई लोगों ने इसे सुना था और इसका कोई प्राकृतिक कारण समझ में नहीं आ रहा था। फिर कदमों की आहट सुनाई दी। ऐसा लग रहा था जैसे कोई पीछे की सीढ़ियों से, नौकरों की सीढ़ियों से, धीरे-धीरे, कदम-दर-कदम नीचे उतर रहा हो और फिर वापस न लौटकर धीरे-धीरे गायब हो रहा हो!

बेहतर नाम न मिलने के कारण उन्होंने अपने उस रहस्यमय मेहमान का नाम "एलिज़ाबेथ" रख दिया। श्रीमती स्टीवर्ट खुद को मानसिक शक्तियों वाली नहीं मानती थीं, न ही उन्हें ऐसी बातों में कोई दिलचस्पी थी। लेकिन कभी-कभी उनके साथ ऐसी घटनाएं घटित हो जाती थीं जिनकी कोई स्वाभाविक व्याख्या नहीं होती थी, जैसे कि एक बार जब उन्होंने अपना बच्चा खो दिया था। गहरी नींद से जागते ही उन्हें अपने कमरे में किसी की मौजूदगी का एहसास हुआ। उन्होंने ऊपर देखा और कमरे के दूसरी ओर रखी झूला कुर्सी पर उन्हें एक महिला दिखाई दी, जो अब मृत थीं और जिन्होंने बचपन में उनकी देखभाल की थी। कुर्सी पर धीरे-धीरे झूलते हुए,

मानो उन्हें दिलासा दे रही हों, दाई ने श्रीमती स्टीवर्ट के बच्चे को अपनी बाहों में लिया हुआ था। पल भर में वह दृश्य गायब हो गया, लेकिन इसने एलेक्जेंड्रा स्टीवर्ट को शांति का अनुभव कराया। उन्हें पता था कि उनके छोटे बच्चे की अच्छी तरह देखभाल हो रही है।

यह सिलसिला जारी रहा और जल्द ही यह ऊपरी मंजिल तक ही सीमित नहीं रहा। पहली मंजिल पर, बैठक कक्ष में, श्रीमती स्टीवर्ट ने अपने पास किसी के सांस लेने की आवाज़ सुनी। यह घटना कुछ ही देर पहले हुई थी, और उस समय उनके पति और एक मित्र भी मौजूद थे। उन्होंने उनसे एक पल के लिए सांस रोकने को कहा, लेकिन फिर भी उन्हें पहले की तरह ही वह अजीब सी सांस लेने की आवाज़ सुनाई देती रही। दोनों पुरुषों ने कहा कि उन्हें वह आवाज़ सुनाई नहीं दी। लेकिन अगले दिन वह अतिथि एक और व्यक्ति के साथ वापस आया। वह यह स्वीकार करने से पहले अपने अवलोकन की पुष्टि करना चाहता था कि उसने भी अपने पास किसी अदृश्य व्यक्ति के सांस लेने की आवाज़ सुनी थी।

बैठक के उस कोने में जहाँ साँस लेने की आवाज़ सुनाई देती थी, वहाँ अजीबोगरीब खटखटाहट भी सुनाई देती थी, जिसे खराब पाइपों से समझाना मुश्किल था। एक बार उन्हें कांच टूटने की आवाज़ सुनाई दी, लेकिन कांच टूटने का कोई सबूत नहीं था। उन्हें ऐसा लगता था कि कभी-कभी उनके बैठक कक्ष में दिखाई देने वाले लोगों के अलावा कोई और भी मौजूद होता है, जिससे वे थोड़ा घबरा जाते थे, हालाँकि उन्हें अपनी "एलिज़ाबेथ" से डर नहीं लगता था।

एलेक्जेंड्रा के युवा पति का बचपन निर्माण व्यवसाय में बीता था और अब वे फोटोग्राफर के रूप में काम करते हैं। उन्होंने भी कई बार कदमों की आहट सुनी है और वे कदमों की आहट और घर के बैठने या लकड़ी के चरमराने की आवाज़ में फर्क जानते हैं। ये निश्चित रूप से इंसानी आवाजें थीं।

श्रीमती मार्था वॉन एक लेखापाल थीं और दो साल से इस इमारत में रह रही थीं। उनका अपार्टमेंट दूसरी मंजिल के पिछले हिस्से में था, जिसमें एक पिछला बरामदा भी शामिल था। 1964 की क्रिसमस के आसपास उन्होंने बरामदे में एक बच्चे के रोने की आवाज़ सुनी। वह रात बहुत ठंडी थी, इसलिए वह तुरंत देखने गईं। आवाज़ अजीब और रहस्यमयी थी—उन्हें लगा कि वह बरामदे के बिल्कुल पास से आ रही है, लेकिन वहाँ कोई नहीं था। आंगन सुनसान

था। उन्हें वह आवाज़ एक छोटे बच्चे के रोने की सुनाई दी, शिशु नहीं, बल्कि शायद एक से तीन साल की उम्र के बच्चे की। श्रीमती स्टीवर्ट के शब्दों में, नीचे का बैठक कक्ष कई परिवारों द्वारा "किबुत्ज़ की तरह" साझा किया जाता था, इसलिए नीचे के क्षेत्र में कई लोगों का होना कोई असामान्य बात नहीं थी। एक बार श्रीमती वॉन ने अदृश्य कांच के टूटने की आवाज़ भी सुनी।

रिचर्ड वॉन एक प्रयोगशाला तकनीशियन हैं। उन्होंने भी बच्चे के रोने की आवाज़ और अदृश्य कांच के टूटने की आहट सुनी है; उन्होंने भी दूसरों की तरह दीवार पर ज़ोर से खटखटाने की आवाज़ सुनी है। पहले तो उन्हें शक हुआ और उन्होंने इन आवाज़ों का कारण घर को गर्म करने वाली भाप की पाइपों को मानने की कोशिश की। लेकिन जब उन्होंने पाइपों की आवाज़ सुनी, तो उन्हें तुरंत एहसास हुआ कि पहले सुनी गई आवाज़ें बिल्कुल अलग थीं।

मैंने पूछा, "क्या डुगन नाम के किसी व्यक्ति के बारे में? या मानचित्रों से संबंधित किसी व्यक्ति के बारे में?"

“खैर,” वॉन ने कहा और फिर सोचने लगा, “मुझे यहाँ उन लोगों के लिए चिट्ठियाँ मिलती थीं जो कभी यहाँ रहते थे, और ज़ाहिर है मैं उन सबको डाकघर वापस भेज देता था। लेकिन मुझे डुगन नाम याद नहीं है। मुझे वाशिंगटन ब्यूरो से आई कुछ चिट्ठियाँ ज़रूर याद हैं। दरअसल, यह घर शिकागो विश्वविद्यालय का है और यहाँ कई प्रोफ़ेसर रहते थे।”

“प्रोफेसर?” मैंने नए सिरे से रुचि दिखाते हुए कहा।

क्या डुगन उनमें से एक था?

उस घर में रहने वाले कई अन्य लोगों ने भी अजीबोगरीब घटनाओं का अनुभव किया। बारबरा मैडोना, जो सप्ताह में तीन दिन सचिव के रूप में काम करती थीं, भी पहले वहीं रहती थीं। लेकिन उसी साल मई में वह वहां से चली गईं। वह पिछले साल नवंबर में उस घर में रहने आई थीं। जब वे पहली बार घर में आए थे, तब उन्हें और उनके पति को पिछला बरामदा बहुत पसंद आया था और वे गर्म शामों में वहां बैठकर बीयर पीने का सपना देखते थे। लेकिन जल्द ही उनकी उम्मीदें उस अजीबोगरीब एहसास से टूट गईं कि वे अकेले नहीं हैं, कि उनके अपार्टमेंट में, और खासकर बरामदे में, किसी और की मौजूदगी है। जल्द ही, बरामदे का इस्तेमाल करने के बजाय, वे उससे पूरी तरह बचने लगे, चाहे इसका मतलब पोछा झाड़ने के

लिए नीचे जाना ही क्यों न हो। उनका अपार्टमेंट तीसरी मंजिल पर था, जो स्टीवर्ट अपार्टमेंट के ठीक ऊपर था।

लोलिता क्रोल नाम की एक लड़की ने भी बच्चे के रोने की आवाज सुनी थी। वह कुछ समय तक उसी इमारत में रही और बरामदे में आने वाली अजीब आवाजों के बारे में लगातार शिकायत करती रही।

डगलस मैककॉनर एक पत्रिका संपादक हैं, और वह और उनकी पत्नी नवंबर में उसी इमारत में रहने आए, जिस साल बारबरा मैडोना वहां से चली गई थीं। वे पहले दूसरी मंजिल पर और बाद में तीसरी मंजिल पर रहने लगे। शुरुआत से ही, जब मैककॉनर अकेले थे—उनकी पत्नी शादी के कुछ समय बाद उनके साथ फ्लैट में रहने आईं—उन्हें उस जगह पर बहुत असहजता महसूस होती थी। दरवाजे और खिड़कियां बिना तेज हवा के भी अपने आप खुल जाते थे।

जब वह ऊपर की मंजिल पर चले गए, तो वहाँ काफी शांति थी, सिवाय रविवार की रातों के, जब आधी रात के आसपास शोरगुल बहुत बढ़ जाता था। कदमों की आहट, लोगों के इधर-उधर भागने की आवाज़ें और दरवाज़े खुलने-बंद होने की आवाज़ें श्री मैककॉनर की नींद में खलल डालती थीं। सीढ़ियाँ विशेष रूप से शोरगुल वाली थीं। लेकिन जब उन्होंने जाँच की, तो पाया कि सभी लोग मौजूद थे और किसी जीवित व्यक्ति ने शोरगुल नहीं मचाया था।

हालात इतने खराब हो गए कि उसे रविवार की रातें नापसंद होने लगीं।

मैंने सिबिल की समाधि की घटना के बारे में श्री मैककोनर को बताया और यह भी बताया कि जूडिथ नाम की एक महिला उस घटना की केंद्रीय पात्र थी।

“अजीब बात है,” उन्होंने कहा, “लेकिन यह कहानी मेरी पूर्व पत्नी की कहानी से भी मिलती-जुलती है, जिसने अपने बच्चों को छोड़ दिया था। वह अभी बिल्कुल जीवित है। उसका नाम जूडिथ है।”

क्या सिबिल ने एक मृत नौकरानी की छवि को एक अयोग्य माँ की छाप के साथ मिला दिया था? या क्या वहाँ दो जूडिथ थीं? खैर, स्टीवर्ट परिवार ने अजीब आवाज़ों के बारे में आगे कोई शिकायत नहीं की, और नीले-भूरे रंग की पोशाक वाली लड़की फिर कभी वापस नहीं आई।

जब कार्ल सुबाक हवाई अड्डे की ओर गाड़ी चला रहे थे, तो वे असामान्य रूप से चुप लग रहे थे। ऐसा प्रतीत होता था कि उन्होंने जो कुछ देखा था, उसका उन पर और उनके जीवन दर्शन पर गहरा प्रभाव पड़ा था।

अंत में उन्होंने कहा, "मुझे सबसे ज्यादा परेशान करने वाली बात यह है कि सिबिल एक महिला और एक मृत शिशु के बारे में बात कर रही है—और बाद में घर के लोगों ने भी इस बात की पुष्टि की। लेकिन सिबिल को इस बारे में पता नहीं था। उसे पता हो ही नहीं सकता था।"

नहीं, वह ऐसा नहीं कर सकती थी।

तीन साल बाद, सितंबर में, एक स्थानीय टेलीविजन रिपोर्टर, एक भावी मानसिक छात्र और कई अन्य भविष्यवक्ताओं का एक समूह, कुछ तांत्रिक रोमांच की तलाश में उस इमारत में पहुंचा। लेकिन उन्हें सिर्फ अपने कैमरों में तकनीकी खराबी ही मिली। भूत तो कब के जा चुके थे।

* * *

भूत-प्रेत केवल रोमांच चाहने वालों के लिए ही नहीं होते, न ही ये मानसिक रूप से विक्षिप्त लोगों का भ्रम होते हैं। भूत को देखना या उसकी आवाज़ सुनना एक सर्वव्यापी घटना है, क्योंकि यह हर समय, लगभग हर तरह के व्यक्ति के साथ घटित होती है। न तो उम्र, न जाति, न ही धर्म इन प्रेत आत्माओं को उनके निर्धारित स्थानों पर रोक पाते हैं।

स्वाभाविक रूप से मैं प्रत्येक मामले को व्यक्तिगत रूप से देखता हूँ। कुछ मामलों को मैं रिपोर्ट के आधार पर ही खारिज कर देता हूँ, और अन्य मामलों को लंबी और सावधानीपूर्वक जाँच के बाद ही स्वीकार करता हूँ। लेकिन कुछ रिपोर्टों में सच्चाई झलकती है और वे विश्वास करने योग्य होती हैं, भले ही कभी-कभी गवाहों की मृत्यु हो जाने या स्थल नष्ट हो जाने के कारण उनकी पुष्टि संभव न हो।

इसका एक अच्छा उदाहरण ओहियो के कैंटन निवासी श्रीमती एडवर्ड नीड्स जूनियर द्वारा हाल ही में मुझे बताई गई घटना है। होमवर्थ नामक एक छोटे से कस्बे में, राजमार्ग के पास ज़मीन का एक टुकड़ा है जो आज एक उपेक्षित खेत के अलावा कुछ नहीं है, जिस पर एक

पुराना खलिहान अभी भी खड़ा है, जिसकी दीवारें बंद पड़ी हैं। यह जगह वास्तव में एक कच्ची सड़क पर है, और निकटतम घर आधा मील दूर है, जिसके बीच में जंगल है। यह महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह जगह सुनसान है और मदद पहुँचने से पहले ही किसी व्यक्ति की मृत्यु हो सकती है। बरसात के दिनों में, कच्ची सड़क पर चलना असंभव हो जाता है। श्रीमती नीड्स कई बार उस जगह से गुज़री हैं, लेकिन उन्हें वहाँ जाने की कोई खास इच्छा नहीं है। किसी न किसी तरह उन्हें हमेशा वहाँ एक बेचैनी महसूस होती है। एक बार, बरसात के दिन नीड्स की कार कीचड़ में फंस गई, और उन्हें बाहर निकलने के लिए खुले खेतों से होकर जाना पड़ा।

उस रोमांचक सफर के दौरान ही श्री नीड्स ने पहली बार बताया कि उस जगह पर उनके साथ पहले क्या-क्या घटित हुआ था। एडवर्ड नीड्स और उनका एक दोस्त रात में मौज-मस्ती के लिए निकले थे। उस समय नीड्स की शादी उनकी वर्तमान पत्नी से नहीं हुई थी, और दोनों ने थोड़ी-बहुत शराब पी रखी थी, लेकिन वे नशे में चूर नहीं थे। तभी उन्होंने पहली बार उस कच्ची सड़क को देखा।

अचानक ही उन्होंने उस राह का अनुसरण किया। कुछ ही देर में वे पुराने खलिहान के पास पहुँच गए। लेकिन जैसे ही वे उसके करीब पहुँच रहे थे, अचानक एक आदमी उनके सामने कूद पड़ा। इससे भी अधिक भयावह बात उस आदमी की हालत थी: वह सिर से पैर तक आग की लपटों में घिरा हुआ था!

जल्दी से नीड्स ने बेहतर देखने के लिए अपनी तेज हेडलाइट्स उस जगह पर डालीं। तभी वह आदमी सड़क के पार जंगल में भाग गया और गायब हो गया।

दो आदमी इतनी जल्दी होश में आ गए। वे मुड़े और तेज़ी से मुख्य राजमार्ग की ओर वापस चले गए। लेकिन जैसे ही उन्हें मौका मिला, वे दो गाड़ियों में और साथियों को भरकर लौट आए। उनके पास तेज़ बत्तियाँ, बंदूकें थीं और ज़रा भी शराब नहीं थी। जब पहली गाड़ी उस जगह से 20 फीट की दूरी पर पहुँची जहाँ नीड्स ने वह प्रेत देखा था, तो उन सभी ने एक ही चीज़ देखी: उनके सामने एक भयानक दृश्य था - एक इंसान ऊपर से नीचे तक जल रहा था, और ज़ाहिर तौर पर अपनी मौत से भागने की कोशिश में बुरी तरह तड़प रहा था। नीड्स ने उस आकृति पर अपनी बंदूक की सारी गोलियाँ चला दीं: वह न तो हिली और न ही उसने

गोलियों के लगने का कोई संकेत दिया। कुछ ही सेकंड बाद, वह आकृति जंगल में भाग गई - ठीक वैसे ही जैसे नीड्स ने उसे पहली बार देखा था।

अब भूतों का दल खलिहान में घुस गया, जो उन्हें वीरान मिला, हालांकि उसकी हालत बहुत खराब नहीं थी। अजीब बात सिर्फ आग के निशानों का एक समूह था: जाहिर है, खलिहान के अंदर किसी ने या किसी चीज ने आग लगाई थी, लेकिन पूरे खलिहान में आग नहीं लगी थी। या फिर क्या आग लगाने वाला आदमी अपने खलिहान को आग से बचाने के लिए बाहर भागा था?

* * *

बेट्टी एन टाइलास्का कनेक्टिकट के एक बंदरगाह शहर में रहती हैं। उनका परिवार औपनिवेशिक काल से ही एक प्रतिष्ठित परिवार है, और वे आज भी उस घर में रहते हैं जिसे उनके परदादा ने अपनी बेटी और उसके पति के लिए 1807 में बनवाया था।

श्रीमती टाइलास्का और उनके पति, जो नौसेना अधिकारी थे, उस प्राचीन जीर्ण-शीर्ण घर को उसकी पुरानी शान में वापस लाने के काम में लगे हुए थे। उन दोनों को अलौकिक चीजों में ज़रा भी दिलचस्पी नहीं थी, और उनके लिए भूत-प्रेत जैसी चीजें बच्चों की कहानियों के अलावा कहीं और मौजूद ही नहीं थीं।

श्रीमती टाइलास्का ने पहली बार कुछ असामान्य तब देखा जब वह एक रात रसोई में बर्तन धो रही थीं।

अचानक उसे ऐसा महसूस हुआ कि कोई उसे देख रहा है। उसने पीछे मुड़कर देखा तो घर के निचले हिस्से में रसोई और बैठक के बीच के दरवाज़े पर एक आदमी खड़ा नज़र आया। उसने उसे बस एक पल के लिए देखा, लेकिन इतनी देर में ही सही, उसने उसका गहरा नीला सूट और चांदी के बटन देख लिए। पहली नज़र में उसे लगा कि वह उसका पति होगा, जो हमेशा नेवी ब्लू वर्दी पहनता था। लेकिन जाँच करने पर उसने पाया कि वह ऊपर था और उसने बिल्कुल अलग कपड़े पहने हुए थे।

उसने थकान के कारण भ्रम समझकर इस बात को नज़रअंदाज़ कर दिया, लेकिन नीले कपड़ों वाला आदमी बार-बार लौटता रहा। कई बार उसे ऐसा अजीब सा एहसास हुआ कि

कोई उसे देख रहा है, और जब उसने पीछे मुड़कर देखा, तो उसे गहरे नीले रंग का सूट पहने वही आदमी दिखाई दिया।

उसे तब राहत मिली जब उसकी माँ ने कबूल किया कि उसने भी उस प्रेतवाधित आगंतुक को देखा था—जो हमेशा बैठक कक्ष और रसोई के बीच एक ही जगह पर होता था। आखिरकार उसने अपने पति को बताया, और उसे आश्चर्य हुआ कि वह उस पर हँसा नहीं। बल्कि उसने सुझाव दिया कि अगर वह भूत था, तो शायद उसके पूर्वजों में से कोई उन पर नज़र रख रहा था।

शायद वह यह सुनिश्चित करना चाहता था कि घर का जीर्णोद्धार ठीक से हो जाए और कोई अवांछित बदलाव न हो। घर के जीर्णोद्धार के दौरान वे काफी पेंटिंग कर रहे थे, और जो भी पेंट बचता था, उसे वे घर के पीछे की एक पुरानी पत्थर की दीवार पर गिरा देते थे।

धीरे-धीरे पुराने पत्थरों को विभिन्न रंगों के पेंट से ढक दिया गया।

एक दिन श्री टायलास्का इन पत्थरों के सामने आ गए। उस समय उनके पास करने के लिए कुछ और न होने के कारण, उन्होंने इनका अध्ययन करना शुरू कर दिया। उन्हें आश्चर्य हुआ जब उन्होंने पाया कि एक पत्थर बाकी पत्थरों से अलग था: वह लंबा और चपटा था। उन्होंने अपनी पत्नी को बुलाया और उन्होंने उस अजीब पत्थर की जाँच की; दीवार से उसे अलग करने पर, वे यह देखकर भयभीत हो गए कि वह एक कब्र का पत्थर था—ठीक कहें तो, उनकी पत्नी के परदादा के परदादा का मकबरा।

स्थानीय गिरजाघर में पूछताछ करने पर पता चला कि कब्र का पत्थर कब्रिस्तान से बाहर कैसे निकला। ऐसा लगता है कि परिवार के सभी सदस्यों को पास के एक छोटे कब्रिस्तान में दफनाया गया था। लेकिन जब वह भर गया, तो एक बड़ा कब्रिस्तान बनाया गया। शवों को नए कब्रिस्तान में ले जाया गया और परदादा के परदादा की कब्र पर एक बड़ा स्मारक बनाया गया। चूंकि मूल पत्थर अब किसी काम का नहीं था, इसलिए उसे वहीं छोड़ दिया गया। किसी तरह उस पत्थर का इस्तेमाल पुरानी दीवार बनाते समय हो गया। लेकिन जाहिर तौर पर परदादा के परदादा को यह बात पसंद नहीं आई। क्या यही उनके बार-बार आने का कारण था? आखिर, अपनी कीमती कब्र पर रंग छिड़कवाना किसे अच्छा लगता है? मैं आपसे पूछता हूँ।

टाइलास्का परिवार ने इस बारे में फैसला करने के लिए बैठक की। दादाजी की कब्र पर दो पत्थर लगाना तो संभव नहीं था। बाकी पूर्वज क्या सोचते? तब तो हर कोई दो पत्थर लगवाना चाहता; और भले ही यह पत्थर तराशने वाले के लिए अच्छी खबर होती, लेकिन व्यावहारिक न्यू इंग्लैंड में ऐसा करना संभव नहीं था।

इसलिए उन्होंने पुराने मकबरे को अपने घर के पिछवाड़े में सीधा खड़ा कर दिया। इस तरह दादाजी का साथ होना अच्छा लगता था, और अगर उनका मन करता तो उन्हें कोई आपत्ति नहीं थी।

जिस क्षण उन्होंने समाधि-पत्थर को सम्मान का स्थान दिया, उस गहरे नीले सूट और चांदी के बटनों वाले सज्जन फिर कभी नहीं लौटे। लेकिन श्रीमती टाइलास्का को इससे कोई खास फर्क नहीं पड़ता। वैसे भी, घर में दो नौसैनिकों का होना शायद ज्यादा ही ध्यान भटकाने वाला होता।

* * *

भूतों को उनका हक दो, और वे खुश हो जाएँगे। खुश भूत एक जगह नहीं रुकते: असल में, वे सामान्य आत्माओं में बदल जाते हैं, जो अपनी इच्छा से आ-जा सकते हैं (ज़्यादातर चले ही जाते हैं)। लेकिन जब तक लोग यह नहीं समझ लेते कि दूसरी दुनिया के निवासी आप और मेरे जैसे ही असली इंसान हैं, न कि अज्ञानी शैतान या किसी राजनीतिक चर्च के फायदे के लिए बनाए गए नरक में फँसी हुई आत्माएँ, तब तक लोग उनसे बेवजह डरते रहेंगे। कभी-कभी तो बेहद बुद्धिमान लोग भी अलौकिक चीज़ों का सामना करने पर काँप उठते हैं।

उदाहरण के तौर पर, मेरे प्रिय मित्र, ब्रिटिश टीवी स्टार माइकल बेंटाइन के बेटे, युवा श्री बेंटाइन को ही ले लीजिए। अपने पिता की तरह, उन्हें भी मानसिक शक्तियों में बहुत रुचि है। लेकिन युवा बेंटाइन ने कभी प्रत्यक्ष अनुभवों की कल्पना भी नहीं की थी।

यह घटना एक वसंत ऋतु में हैरो स्कूल में घटी, जो ब्रिटेन के बेहतरीन सरकारी स्कूलों में से एक था (अमेरिका में इन्हें निजी स्कूल कहा जाता है)। युवा बेंटाइन द नोल नामक छात्रावास में रहता था। एक रात लगभग 2 बजे, वह गहरी नींद से जागा। रात की खामोशी प्रधानाध्यापक के कमरे से आती कदमों की आहट से टूट गई। कदमों की आहट कमरे से पास के बाथरूम

तक गई और फिर अचानक रुक गई। बेंटाइन ने इस पर ध्यान नहीं दिया, लेकिन आखिर उस आहट ने उसे क्यों जगाया? शायद वह पढ़ाई में बहुत व्यस्त था और घबराहट के कारण ऐसा हुआ हो। खैर, उसने उन अजीब कदमों पर ध्यान न देने का फैसला किया। आखिर, अगर प्रधानाध्यापक उस समय टहलना चाहते थे, तो यह उनका निजी मामला और अधिकार था।

लेकिन अगली रात भी वही हुआ। फिर से, रात के 2 बजे, वह अशुभ कदमों की आहट से जाग उठा। फिर से वे कदम बाथरूम तक पहुँचते ही अचानक रुक गए। क्या यह महज़ संयोग था? सतर्क होकर, युवा बेंटाइन ने कुछ पूछताछ की। क्या प्रधानाध्यापक रात में टहलने के शौकीन थे? नहीं, वे नहीं थे।

तीसरी रात, बेंटाइन ने फैसला किया कि अगर ऐसा दोबारा हुआ तो वह हिम्मत जुटाकर इसकी जांच करेगा। उसने थोड़ी चाय पीकर खुद को तरोताज़ा किया और फिर सोने चला गया। नींद आना आसान नहीं था, लेकिन आखिरकार थकान हावी हो गई और हमारा युवक अपने कमरे में सो गया।

ठीक 2 बजे, वह फिर से जाग गया। और "गलियारे के उस पार भूत" कहने से पहले ही, परिचित कदमों की आहट सुनाई दी!

झट से, हमारा साहसी दोस्त उठा और अपने दरवाजे से अपना सिर बाहर निकाला, जो गलियारे के ठीक सामने प्रधानाध्यापक के कमरे और बाथरूम की ओर था।

कदमों की आवाज अब बहुत तेज और स्पष्ट सुनाई दे रही थी। हालांकि उसने किसी को देखा नहीं, लेकिन उसे गलियारे में किसी के चलने की आवाज सुनाई दी।

वह बुरी तरह डर गया था। जैसे ही बाथरूम के दरवाजे के सामने कदमों की आहट हमेशा की तरह अचानक रुकी, वह चुपके से अपने कमरे और बिस्तर में वापस चला गया। लेकिन नींद तो नामुमकिन थी। घंटे महीनों जैसे लग रहे थे, आखिरकार सुबह हुई और बहुत थका हुआ बेंटाइन नाश्ता करने नीचे गया, इस बात से खुश था कि रात का कष्टदायक दौर खत्म हो गया था।

उसे हर हाल में यह सब जानना ही था, चाहे परिणाम कुछ भी हो। वैसी एक और रात गुजारना उसके लिए नामुमकिन था।

उसने उस कमरे के बारे में कुछ सावधानीपूर्वक पूछताछ की। चौदह साल पहले उस कमरे में एक प्रधानाध्यापक की मृत्यु हुई थी। उसने आत्महत्या की थी और बाथरूम में फांसी लगा ली थी। यह कहानी सुनकर बेंटाइन का चेहरा भूत की तरह सफेद पड़ गया। उसने तुरंत अपना कमरा बदलवाने की कोशिश की। लेकिन यह उतनी जल्दी नहीं हो सका जितनी उसने उम्मीद की थी, इसलिए ढाई सप्ताह बाद ही वह उस भूतिया प्रधानाध्यापक के कदमों की यादों को अपने दिमाग से निकाल पाया।

उसके पिता ने उसे मेरी किताब 'घोस्ट हंटर' की एक प्रति उधार दी थी और वह परीक्षाएँ थोड़ी कम होने पर उसे पढ़ने के लिए उत्सुक था। लेकिन अब, भले ही वह एक ऐसे कमरे में था जहाँ भूत का कोई नामोनिशान नहीं था, फिर भी वह मेरी किताब को छूने की हिम्मत नहीं कर पा रहा था। इसके बजाय, वह हास्य पढ़ने में मग्न था।

दुर्भाग्य से किसी ने भी उस प्रेतवाधित प्रधानाध्यापक के बारे में कुछ नहीं किया, इसलिए ऐसा प्रतीत होता है कि वह बार-बार उसी गलियारे से अपने पुराने कमरे में लौटता है, और वहां उसे अपना शरीर अभी भी शॉवर में लटका हुआ मिलता है।

आप शायद पूछेंगे, "अगर मुझे लगे कि मेरे घर में भूत है तो मुझे क्या करना चाहिए? क्या मुझे भाग जाना चाहिए? क्या मुझे वहीं रहना चाहिए? क्या मुझे उससे बात करनी चाहिए या उसे अनदेखा करना चाहिए? क्या भूतों से परेशान लोगों के लिए कोई नियम-कानून हैं?" मुझे मिलने वाले कुछ सवाल इसी तरह के होते हैं। कुछ लोग सिर्फ इसलिए अपनी समस्या बताना चाहते हैं क्योंकि उन्हें लगता है कि शायद मुझे इसमें दिलचस्पी हो। कुछ लोग मदद चाहते हैं: भूत से छुटकारा पाना और भूत से मुक्ति पाना।

लेकिन इतने सारे लोगों के मन में भूत-प्रेत का डर होता है—लगभग उतने ही लोगों के मन में दीमक का डर होता है, हालांकि इन दोनों में कोई सीधा संबंध नहीं है—कि मेरे लिए व्यक्तिगत रूप से डाक, टेलीफोन, ईमेल या टेलीविजन के माध्यम से मेरे ध्यान में लाए गए हर एक मामले की जांच करना संभव नहीं है।

अत्यंत अत्यावश्यक मामलों में, मैं आकर प्रभावित लोगों की मदद करने की कोशिश करता हूँ। आमतौर पर मैं यह किसी टीवी शो या स्थानीय विश्वविद्यालय में व्याख्यान के सिलसिले में करता हूँ, क्योंकि मेरे खर्चों का भुगतान तो किसी को करना ही होता है। एयरलाइंस और

होटल मालिक फर्जी पैसे स्वीकार नहीं करते। और अब तक आर्थिक रूप से मैं पूरी तरह आत्मनिर्भर रहा हूँ, कोई संस्थान या शोध संस्था मेरी मदद करने के लिए मौजूद नहीं है। विनाश और बमों के लिए तो हमेशा पैसा मिल जाता है, लेकिन मानसिक रोगों से जुड़े शोध के लिए शायद ही कभी।

मान लीजिए, मैं हर साल भूतिया घरों की समस्या से जूझ रहे कई लोगों से मिल सकता हूँ, लेकिन जब मैं खुद उनसे नहीं मिल पाता तो बाकी लोग क्या करते हैं? क्या मैं उन्हें किसी स्थानीय भूत-प्रेत खोजकर्ता के पास भेज सकता हूँ, जैसे कोई डॉक्टर अपने मरीज़ों को किसी सहकर्मी के पास भेजता है अगर वह उनका इलाज नहीं कर सकता या नहीं करना चाहता?

अगर मैं कर भी सकता, तो भी मैं ऐसा नहीं करता। जब वे मुझसे मदद मांगते हैं, तो वे अपनी खास समस्याओं के लिए मेरा दृष्टिकोण चाहते हैं, न कि किसी और का। इस क्षेत्र में हर शोधकर्ता का नजरिया दूसरे से थोड़ा अलग होता है। शायद मैं अकेला पैरासाइकोलॉजिस्ट हूं जो बिना किसी झिझक के भूतों का समर्थक है। कुछ लोग मानते हैं कि भूत होते हैं, लेकिन अगर वे गवाहों को गलत साबित नहीं कर पाते, तो वे "वैकल्पिक" स्पष्टीकरण खोजने में बहुत समय बिताते हैं।

मुझे लंबे समय से, और ठोस वैज्ञानिक कारणों से, इस बात का पक्का यकीन है कि भूत होते हैं। भूत, भूत ही होते हैं। ज़रूरी नहीं कि वे मतिभ्रम हों, और न ही वे आम लोगों की गलतियाँ। इस व्यावहारिक आधार पर, मैं मामलों की जांच करते समय स्थिति और समस्याओं पर ध्यान केंद्रित करता हूँ, न कि कुछ शोधकर्ताओं की तरह, मुझे बताई गई बुनियादी कहानियों को बदलने की कोशिश करता हूँ। मैं अपने गवाहों पर दबाव नहीं डालता; मैं उनकी मदद करने आया हूँ। उन्हें प्रशिक्षित परा मनोविज्ञान विशेषज्ञ के जटिल उपकरणों से हिलाने की कोशिश करना न केवल अनुचित है, बल्कि मूर्खतापूर्ण भी है। मूल रिपोर्टें आम लोगों की सीधी-सादी रिपोर्टें होती हैं जो अपने परिवेश में घटी घटनाओं का वर्णन करती हैं। यदि आप उनकी गवाही को हिलाने की कोशिश करेंगे, तो आपको एक अलग कहानी मिल सकती है—लेकिन ज़रूरी नहीं कि वह सच हो। आप गवाहों को जितना भ्रमित करेंगे, उन्हें प्रत्यक्ष जानकारी उतनी ही कम याद रहेगी।

गवाहों द्वारा अपनी कहानी सुनाने के बाद मेरा काम शुरू होता है।

मैंने जितने भी मामले संभाले हैं, उनमें से अधिकतर में मुझे भूतिया "शिकायत" का कोई न कोई आधार मिला है। कभी-कभार, कोई व्यक्ति किसी चीज़ को अलौकिक समझ लेता है जबकि वह वास्तव में अलौकिक नहीं होती, और कभी-कभार ही मुझे ऐसे मानसिक रूप से असंतुलित लोग मिले हैं जो अपनी ही काल्पनिक दुनिया में जी रहे होते हैं। लेकिन ऐसे सनकी लोग बहुत कम हैं जो मेरी मदद चाहते हैं: जाहिर है, भले ही मैं भूतिया घटनाओं की सत्यता के प्रति आश्वस्त हूं, फिर भी मेरी वैज्ञानिक पद्धति वह जांच नहीं है जिसे वे अपनी अजीबोगरीब कहानियों पर करवाना चाहते हैं।

भूत-प्रेत पकड़ने वाले के आने तक क्या करें? हो सके तो आराम करें। भले ही आप बहुत डरे हुए हों, फिर भी ध्यान से देखें। और याद रखें—भूत भी इंसान होते हैं।

ईश्वर की कृपा से ही, आप जैसा कोई वहां मौजूद है।

अध्याय पाँच

प्रसिद्ध भूत

यहां हम उन मशहूर हस्तियों की आत्माओं के बारे में बात करेंगे, जिनके नाम लगभग हर कोई जानता होगा। इस श्रेणी में ऐतिहासिक हस्तियां, राष्ट्रीय व्यक्तित्व, नायक, नेता और साथ ही हॉलीवुड, थिएटर जगत की हस्तियां, वे लोग जिन्होंने कभी सुर्खियां बटोरी थीं, और वे लोग शामिल हैं जिन्हें कुछ हद तक प्रसिद्धि मिली थी, जो कि एंडी वारहोल के अनुसार, हर किसी को मिलने वाले पंद्रह मिनट के नाम से कहीं अधिक होती है।

कई ऐसे घर या स्थान हैं जहाँ प्रसिद्ध भूत देखे जाने का इतिहास रहा है और जो आम जनता के लिए खुले हैं। इनमें राष्ट्रीय स्मारक, स्थानीय संग्रहालय, ऐतिहासिक घर और हवेली शामिल हैं। लेकिन क्या जब आप वहाँ जाएँ तो वे प्रसिद्ध भूत अभी भी मौजूद हों? खैर, यह इस बात पर निर्भर करता है: जैसा कि मैंने बताया है, कई भूतिया अनुभव अतीत की छाप होते हैं, और आप एक तरह से उन घटनाओं को फिर से जी रहे होते हैं जिनमें वे भूत शामिल थे। यह पता लगाना थोड़ा मुश्किल है कि कौन सा भूत वास्तव में उस पुराने परिसर में मौजूद है और कौन सा अतीत का दृश्य है। लेकिन अगर आप ही खोजबीन करने वाले हैं, यानी भूत शिकारी हैं, तो यह आपको खुद अनुभव करके तय करना होगा। शुभकामनाएँ!

काल्पनिक कहानियों में भूत

भूत, प्रेत और आत्माएं हमेशा से उपन्यासकारों और नाटककारों के लिए विषयवस्तु रही हैं। रहस्यमय और चिंताजनक भूत मानव अनुभव का हिस्सा होते हुए भी उस दुनिया की मुख्यधारा से बाहर हैं। भूतों के बारे में लोगों की कई गलत धारणाएं काल्पनिक कहानियों से उत्पन्न होती हैं। केवल काल्पनिक भूत कहानियों में ही भूत धमकी देते हैं या नुकसान पहुंचाते हैं: वास्तविक परलोक में, वे भौतिक दुनिया में रहने वालों की चिंता करने के बजाय अपनी स्थिति को समझने में ही व्यस्त रहते हैं।

चौसर के कैंटरविले के भूत से लेकर, जिसकी जंजीर खड़खड़ाती थी, और शेक्सपियर के हैमलेट के पिता के भूत तक, जो अनसुलझे मामलों (जैसे कि उनकी हत्या) के कारण अपने महल की प्राचीरों पर बेचैनी से घूमता रहता था, साहित्य में भूत डरावने और अवांछनीय प्रतीत होते हैं। लेकिन वहां कोई कैस्पर्स जैसा भूत नहीं है।

ई. टी. ए. हॉफमैन से लेकर एडगर एलन पो तक, भयावह साहित्य के उस्तादों ने अपने भूतों को दुखी, दुर्भाग्यशाली प्राणियों के रूप में प्रस्तुत किया है जिनसे बचना ही सबसे अच्छा है।

फ्लाइंग डचमैन एक ऐसा व्यक्ति है, जिसे ईश्वर ने उसके पापों के लिए दंडित किया है (हालांकि उन पापों का पूरी तरह से स्पष्टीकरण नहीं दिया गया है), और जब तक उसे सच्चा प्यार नहीं मिल जाता, तब तक वह भूत बना रहता है। हालांकि, वास्तविक प्रेम में ऐसा होना संभव नहीं है।

* * *

एडिथ व्हार्टन के उपन्यासों में हमें कहीं अधिक यथार्थवादी भूत देखने को मिलते हैं, शायद इसलिए कि वह हमारे समय के करीब थीं और इन मामलों में मनोवैज्ञानिक अनुसंधान से अवगत थीं।

रुडयार्ड किपलिंग की भारतीय कहानियों में से एक में एक रहस्यमयी नाचते हुए पैरों का वर्णन है, जो बचपन में मुझे रातों की नींद उड़ा देता था। आज, वे मुझे केवल इसलिए दिलचस्प लगते हैं क्योंकि मैं नर्तकी के पूरे शरीर को भी देखना चाहता हूँ।

आर्थर कॉनन डॉयल ने अपनी रचना "द लॉ ऑफ़ द घोस्ट" में एक रंगीन लेकिन बेहद विश्वसनीय भूतिया कहानी प्रस्तुत की है। अंत में, डिकेंस की रचना "ए क्रिसमस कैरल" के भूत वास्तव में भूत नहीं हैं, बल्कि परलोक से आए संदेशवाहक हैं, जो प्रतीकात्मक मात्र हैं।

कृपया डेनमार्क के एल्सीनोर महल में उस दुर्भाग्यशाली राजा की तलाश में न दौड़ें, जिसकी हत्या उसके भाई ने कर दी थी, क्योंकि अफसोस की बात है कि हत्या किया गया राजा और उसका भाई क्लॉडियस, दोनों ही शेक्सपियर की कल्पना की उपज हैं, ठीक वैसे ही जैसे उदास डेनिश व्यक्ति, हैमलेट, स्वयं।

टेलीविजन पर दिखाए जाने वाले भूत आमतौर पर डरावने नहीं होते, बल्कि सुखद होते हैं। रेक्स हैरिसन अभिनीत फिल्म "द घोस्ट एंड मिसेज मुइर" में भूत व्यंग्यात्मक और लगभग मनमोहक थे। बैंकर टॉपर को जिन भूतों से निपटना पड़ा, वे कम से कम शरारती और ज़्यादा से ज़्यादा मददगार थे।

और उन्होंने वो सब कुछ किया जो असली भूत नहीं करते, लेकिन स्पेशल इफेक्ट्स अपना कमाल दिखाएंगे।

* 1

सम्मेलन भवन भूत

हलचल भरे मैनहट्टन से फेरी नाव द्वारा लगभग एक घंटे की दूरी पर स्टेटन द्वीप का एकांत आकर्षण स्थित है, जहां न्यूयॉर्क शहर की सीमाओं के भीतर कई पुराने घर और यहां तक कि खेत भी अपने मूल स्वरूप में मौजूद हैं।

इन पुराने भवनों में से एक, जो एक प्रमुख दर्शनीय स्थल है, तथाकथित "सम्मेलन भवन" है, जहाँ ब्रिटिश कमांडर लॉर्ड होवे ने 11 सितंबर, 1776 को बेंजामिन फ्रैंकलिन, जॉन एडम्स और एडवर्ड रटलेज सहित अमेरिकी सम्मेलन प्रतिनिधिमंडल का स्वागत किया था। बैठक का उद्देश्य अमेरिकियों को यह विश्वास दिलाना था कि इंग्लैंड और उपनिवेशों के बीच की कठिनाइयों का शांतिपूर्ण समाधान निकाला जाना चाहिए। यह बैठक स्पष्ट रूप से असफल रही और इसके परिणामस्वरूप क्रांतिकारी युद्ध छिड़ गया।

यह घर एक मजबूत सफेद दो मंजिला इमारत है, जिसे 1688 में विशिष्ट अंग्रेजी हवेली शैली में बनाया गया था। यह उस स्थान पर स्थित था जिसे तब बेंटली मैनर के नाम से जाना जाता था और जो आज टोटेनविले में है। भूतल पर दो बड़े कमरे हैं और एक सीढ़ी ऊपरी मंजिल तक जाती है, जो भी दो कमरों में विभाजित है; तहखाने में रसोईघर और एक तहखाना है। इस घर के मूल मालिक ब्रिटिश नौसेना के कैप्टन बिलॉप थे और उनके वंशज क्रांतिकारी काल के अंत तक इस घर में रहे।

स्थानीय लोककथाओं के अनुसार, यह घर कई वर्षों से "भूतिया" माना जाता रहा है। कहानी यह है कि कठोर स्वभाव के बिलॉप ने अपनी मंगेतर को धोखा दिया था और इसी घर में दिल

टूटने से उसकी मृत्यु हो गई थी। कई पीढ़ियों से यहाँ से अजीब आवाज़ें, फुसफुसाहटें, आहें, कराहें और विनतियाँ सुनाई देती रही हैं और स्थानीय समाचार पत्र, स्टेटन आइलैंड ट्रांसक्रिप्ट, ने भी वर्षों से इन विचित्र घटनाओं का उल्लेख किया है। जब शहर द्वारा संग्रहालय के रूप में अधिग्रहित किए जाने के बाद घर का पुनर्निर्माण किया जा रहा था, तब कहा जाता है कि श्रमिकों ने भी ये अजीब आवाज़ें सुनी थीं।

इसी पृष्ठभूमि में मैंने श्रीमती मेयर्स के साथ घर की जांच करने का फैसला किया, जो हमारी संवेदनशील प्रतिनिधि बनने वाली थीं, और दो दोस्तों, रोज डी सिमोन और पर्ल विंडर के साथ, जो "सिटर" या माध्यम की सहायक बनने वाली थीं।

स्टेटन द्वीप पहुँचने के बाद, जब हम घर से लगभग आधे घंटे की ड्राइव पर थे, श्रीमती मेयर्स ने उस घर के बारे में अपने विचार बताने शुरू किए जिसे उन्होंने अभी तक देखा नहीं था! उन्होंने बताया कि घर सफेद रंग का है, भूतल दो कमरों में बंटा हुआ है, पूर्वी कमरे में एक भूरी मेज और आठ कुर्सियाँ हैं; घर के पश्चिमी हिस्से वाला कमरा बड़ा है और दूसरे कमरे की तुलना में हल्के रंग का है, और बाईं ओर वाले कमरे में कुछ चांदी के बर्तन प्रदर्शित हैं।

घर पहुँचने पर मैंने इन कथनों की जाँच की; वे सही थे, सिवाय इसके कि कुर्सियों की संख्या अब आठ नहीं बल्कि केवल सात थी, और चांदी का प्रदर्शन आठ साल पहले अपने स्थान से हटा दिया गया था!

श्रीमती मेयर्स की पहली छाप "बटलर" नाम थी; बाद में मुझे पता चला कि बगल वाली संपत्ति बटलर परिवार की थी, जिसके बारे में माध्यम को, ज़ाहिर है, जानकारी नहीं थी।

हम सीढ़ियाँ चढ़े; श्रीमती मेयर्स बाईं ओर दूसरी मंजिल के कमरे के फर्श पर बैठ गईं। उन्होंने जेन नाम की एक महिला का वर्णन किया, जो हष्ट-पुष्ट, सफेद बालों वाली थी, गहरे हरे रंग की पोशाक और झालरदार शॉल पहने हुए थी, फिर उन्होंने होवे नाम का उल्लेख किया। यह समझना आवश्यक है कि लॉर्ड होवे का इस घर से क्या संबंध था, यह हम सभी को कॉन्फ्रेंस हाउस के इतिहास की जाँच करने के बाद ही पता चला।

इसके बाद श्रीमती मेयर्स ने एक ऐसे व्यक्ति का वर्णन किया जिसके बाल सफेद थे, या शायद उसने विग लगा रखी थी, उसने गले पर कढ़ाई वाला गहरा कोट, हल्के भूरे रंग की पैंट और

गहरे रंग के जूते पहन रखे थे, उसका चेहरा चौड़ा और चौकोर था, नाक मोटी थी और वह देखने में "डच" लग रहा था। उन्होंने आगे कहा, "उस व्यक्ति की मृत्यु इसी कमरे में हुई थी।"

फिर उन्होंने लगभग छह साल के एक छोटे लड़के की उपस्थिति का जिक्र किया, जिसने पैंट पहनी हुई थी और उसके बाल आगे की ओर कटे हुए थे। श्रीमती मेयर्स को लगा कि इस कमरे में जन्मे बच्चे को बाद में विशेष सम्मान दिया गया था। यह बात शायद क्रिस्टोफर बिलॉप पर लागू होती है, जिनका जन्म 1737 में इसी घर में हुआ था और जो बाद में औपनिवेशिक सभा में रिचमंड काउंटी के प्रतिनिधि बने। श्रीमती मेयर्स ने एक बड़े, मोटे आदमी की उपस्थिति भी महसूस की, जिसने फर की टोपी पहनी हुई थी, चमड़े का कोट और ऊंचे जूते, पीतल की बकल वाली बेल्ट और काली पतलून पहनी हुई थी; उनके चारों ओर उन्हें नावें, जाल और पाल वाली नावें दिखाई दीं, और उन्होंने एक विदेशी, भारी लहजा सुना, साथ ही उन्हें एक चौकोर रिगर प्रकार के चार मस्तूल वाले जहाज में भी देखा। उनका नाम T अक्षर से शुरू होता था। बाद में मुझे पता चला कि बिलॉप परिवार क्रांति से पहले और उसके दौरान प्रमुख टोरी नेता थे।

श्रीमती मेयर्स को लगा कि इस आदमी की आवाज़ बुलंद थी, उसका माथा चौड़ा था, गाल की हड्डियाँ उभरी हुई थीं, वह हट्टा-कट्टा, लंबा-चौड़ा, घने बालों वाला था और शायद डच मूल का था। उन्होंने सोचा कि उसका नाम वैन बी. था। उन्हें नहीं पता था कि बिलॉप (या वैन बिलॉप) इस घर का निर्माता था।

"मुझे ऐसा लग रहा है जैसे भारतीय मुझे घसीटते हुए कहीं ले जा रहे हैं," श्रीमती मेयर्स ने अचानक कहा। "वहाँ हिंसा हो रही है, लकड़ी के ढेर पर किसी की मौत हो रही है, दो आदमी, एक गोरा, एक भारतीय; और पास ही दो डंडों पर उनकी खोपड़ियाँ पड़ी हैं।"

बाद में मुझे पता चला कि सत्रहवीं और अठारहवीं शताब्दियों के दौरान यहाँ भारतीय हमले अक्सर होते थे और वास्तव में, शत्रुतापूर्ण भारतीय घेराबंदी की स्थिति में पास के तट तक भागने के लिए एक सुरंग हुआ करती थी। घर के आसपास से बड़ी संख्या में तीर के नोक बरामद किए गए हैं।

तहखाने में, श्रीमती मेयर्स को पूरा यकीन था कि क्रांतिकारी युद्ध के दौरान सामने की दीवार के पास छह लोगों को दफनाया गया था, सभी ब्रिटिश सैनिक थे; उन्हें लगता था कि आठ और लोगों को ज़मीन पर कहीं और दफनाया गया था और उन्हें महसूस होता था कि तहखाना घायलों से भरा हुआ है, "जैसे कोई अस्पताल हो।" जाँच करने पर, मुझे पता चला कि बिलॉप के परिवार के कुछ सदस्यों को वास्तव में सड़क के पास ज़मीन पर दफनाया गया था; जहाँ तक ब्रिटिश सैनिकों की बात है, पास के न्यू जर्सी तट से घुसपैठ करने वाले अमेरिकियों और ब्रिटिशों के बीच घर के आसपास अक्सर झड़पें होती रहती थीं, जिन्होंने 4 जुलाई, 1776 से स्टेटन द्वीप पर कब्ज़ा कर रखा था। एक बार, ब्रिटिश नागरिक कैप्टन बिलॉप को उनके ही घर में सशस्त्र डाकुओं ने अगवा कर लिया था और अमेरिकियों के कैदी के रूप में न्यू जर्सी ले जाया गया था!

हम एक बार फिर घर के ऊपरी हिस्से में लौट आए। अचानक, श्रीमती मेयर्स का ध्यान घुमावदार सीढ़ियों की ओर गया। मैं भी बढ़ते उत्साह के साथ उनके पीछे-पीछे चलने लगा।

सीढ़ियाँ उतरते हुए, हमारी माध्यम अचानक रुक गई और दूसरी मंजिल के पास एक जगह की ओर इशारा करते हुए बोली, “यहाँ किसी को टेढ़े चाकू से मार डाला गया था, एक औरत को!” उसके चेहरे पर खौफ था, मानो वह उस हत्या को फिर से जी रही हो। चौकीदार, श्रीमती अर्ली से पूछताछ करने पर मुझे पता चला कि कैप्टन बिलॉप ने गुस्से में आकर सचमुच उसी जगह पर एक महिला गुलाम की हत्या कर दी थी!

* 2

दरवाजे पर अजनबी

मैंने पाया है कि भूत हर तरह की जगहों पर होते हैं, प्राचीन किलों में, आधुनिक अपार्टमेंट में, खेतों में और जहाजों में—लेकिन यह जानकर थोड़ा झटका लगता है कि आप कुछ सालों से एक घर में रह रहे हैं और आपको पता भी नहीं था कि वह भूतिया है। लेकिन मेरे साथ बिल्कुल यही हुआ।

तीन साल तक मैं रिवरसाइड ड्राइव पर स्थित एक खूबसूरत उनतीस मंजिला अपार्टमेंट इमारत में रहा। मैं उन्नीसवीं मंजिल पर रहता था और नीचे क्या हो रहा है, इसकी मुझे शायद

ही कभी चिंता होती थी। लेकिन मुझे इमारत के भूतल पर स्थित एक थिएटर और एक संग्रहालय के बारे में जानकारी थी। साथ ही, इमारत के गलियारों को सुशोभित करने वाली कई प्रेरणादायक पेंटिंग्स, जिनमें से कुछ तिब्बती और कुछ पश्चिमी थीं, के बारे में भी मुझे गहरी जानकारी थी। यह संग्रहालय आजकल रिवरसाइड संग्रहालय के नाम से जाना जाता है, और ये पेंटिंग्स मुख्य रूप से महान चित्रकार रोहराच की रचनाएँ थीं, जिन्होंने तिब्बत के रहस्यवाद से प्रेरणा ली, जहाँ उन्होंने कई साल बिताए थे। पूर्व से लौटने पर, उनके कई प्रशंसकों ने कुछ मिलियन डॉलर इकट्ठा करके उनके नाम के योग्य एक स्मारक बनाने का फैसला किया। इस प्रकार, 1930 में, रोहराच भवन का निर्माण हुआ, जो उस समय फल-फूल रहे पूर्वी रहस्यवाद के केंद्र के रूप में स्थापित हुआ, जिसके रोहराच प्रमुख पुरोहित थे। उनकी मृत्यु के बाद, उनके अनुयायियों में फूट पड़ गई और वे बड़ी संख्या में पलायन कर गए। सीना फॉस्डिक द्वारा एक नया "रोहराच संग्रहालय" स्थापित किया गया था, जो आज भी उसी नाम से जानी जाने वाली भव्य उनतीस मंजिला इमारत से कुछ ही ब्लॉक दूर मौजूद है। इसके बाद, जिस इमारत में मैं रहता था, उसका नाम बदलकर मास्टर इंस्टीट्यूट कर दिया गया, जो एक अपार्टमेंट, स्कूल और कला दीर्घा का मिश्रण है।

फरवरी 1960 की बात है, जब एक चाय पार्टी में मेरी मुलाकात युवा अभिनेत्री और निर्माता श्रीमती रोलैंड से हुई—जी हाँ, आजकल ऐसी पार्टियाँ भी होती हैं—जिन्होंने कुछ साल पहले "मेरी" इमारत में एक रोचक घटना का अनुभव किया था। उन्हें ठीक से याद नहीं था कि यह 1952 की बात है या 1953 की, लेकिन उन्हें पूरा यकीन था कि यह घटना ठीक उसी तरह घटी थी जैसा उन्होंने मुझे उस सर्दी की दोपहर में प्रसिद्ध लेखिका क्लाउडिया डी लिस के अपार्टमेंट में बताया था।

पूर्वी दर्शन पर एक व्याख्यान-सभा ने उन्हें रोहराच भवन की ओर आकर्षित किया था। प्रख्यात दार्शनिक राल्फ हस्टन इस सभा के अध्यक्ष थे और सभा में काफी लोग उपस्थित थे। जब वक्ता श्रोताओं का ध्यान अपनी ओर खींच रहे थे, श्रीमती रोलैंड की नज़र कमरे के पिछले हिस्से की ओर चली गई। दरवाज़े के पास खड़े एक लंबे अजनबी ने उनका ध्यान खींचा, जो चुपचाप और एकाग्रता से सुन रहा था। श्रीमती रोलैंड सक्रिय सदस्यों में से ज़्यादातर को नहीं जानती थीं, और उस अजनबी ने, जिसे उन्होंने पहले कभी नहीं देखा था, उन्हें मोहित कर

लिया। एक तो उसका पहनावा बेहद अनोखा था। उसने ऊँची गर्दन वाले कॉलर वाला धूसर सूती चोगा पहना था, जैसा कि पूर्वी चित्रों में देखने को मिलता है, और सिर पर एक गोल काली टोपी थी। वह अपेक्षाकृत युवा प्रतीत हो रहा था, निश्चित रूप से जीवन के यौवन काल में, और उसकी गहरी काली आँखें विशेष रूप से उन्हें आकर्षित कर रही थीं।

एक क्षण के लिए उसने अपना ध्यान वक्ता की ओर लगाया; जब वह दरवाजे पर लौटी, तो वह युवक जा चुका था।

“अजीब बात है,” उसने सोचा; “वह लेक्चर के बीच में ही क्यों चला गया? वह तो पूरे लेक्चर में बहुत दिलचस्पी ले रहा था।”

जैसे ही रहस्यवाद के अनुयायी धीरे-धीरे कमरे से बाहर निकलने लगे, अभिनेत्री श्रीमती फॉस्डिक के पास चली गईं, जिन्हें वह समूह की "बॉस लेडी" के रूप में जानती थीं।

उसने पूछा, "मुझे बताओ, दरवाजे पर खड़ा वह सुंदर, काली आंखों वाला युवक कौन था?"

श्रीमती फॉस्डिक असमंजस में थीं। उन्हें ऐसे किसी व्यक्ति की याद नहीं आ रही थी। फिर अभिनेत्री ने उस अजनबी का विस्तृत वर्णन किया। वर्णन समाप्त होने पर श्रीमती फॉस्डिक का चेहरा थोड़ा पीला पड़ गया था।

लेकिन यह एक गूढ़ मंच था, इसलिए उन्होंने श्रीमती रोलैंड को यह बताने में संकोच नहीं किया कि उन्होंने एक प्रेत देखा था। इतना ही नहीं, यह वर्णन महान रोहराच से हूबहू मेल खाता था —उनके प्रारंभिक वर्षों में। श्रीमती रोलैंड ने रोहराच को कभी साक्षात नहीं देखा था।

इस मौके पर श्रीमती रोलैंड ने स्वीकार किया कि उनमें मानसिक शक्तियां हैं और उन्हें अक्सर अंतर्ज्ञान होता है। इस पर काफी सिर हिलाने का सिलसिला चला, फिर कुछ लोगों ने हाथ भी हिलाए और उसके बाद बात वहीं खत्म हो गई।

मुझे तो स्वाभाविक रूप से इसमें दिलचस्पी थी, क्योंकि घर में भूत होने से बेहतर और क्या हो सकता है?

अगली सुबह मैंने श्रीमती फॉस्डिक से संपर्क किया। दुर्भाग्यवश, यह उन मौकों में से एक था जब सच्चाई की जीत नहीं हुई। जब मैंने उन्हें वह सब बता दिया जिसकी मुझे पुष्टि चाहिए थी, तो उनका रवैया और भी तनावपूर्ण हो गया, खासकर तब जब उन्हें पता चला कि मैं एक तरह

से "दुश्मन के खेमे" में रह रहा था। श्रीमती फॉस्डिक ने घटना से साफ इनकार किया, लेकिन श्रीमती रोलैंड को जानने की बात स्वीकार की।

इसके बाद मैं अपने मुखबिर के पास लौटा, जिसने पूरी बात की पुष्टि की। मैंने एक बार फिर श्रीमती फॉस्डिक से उस साहस के साथ संपर्क किया, जैसे कोई अवांछित प्रेमी अपनी प्रेमिका के महल पर धावा बोलता है, और मुझे खाई में छिपे हुए खतरों का पूरा एहसास था।

जब मैंने उसे घटना को याद रखने के अपने वैज्ञानिक कारण बताए, तो उसने "मूल" रोहराच समूह से अपने अलग होने के बारे में एक तीखी टिप्पणी शुरू कर दी, जो दिलचस्प तो थी, लेकिन मेरे लिए नहीं।

मुझे श्रीमती रोलैंड के बयान पर संदेह करने का कोई कारण नहीं है, खासकर इसलिए क्योंकि मैंने उन्हें बेहद शांत, संतुलित और वास्तव में, मानसिक रूप से सक्षम पाया।

मुझे बस यही आश्चर्य हो रहा था कि क्या श्री रोहराच कभी मुझसे मिलने आएंगे, या मैं उनसे मिलने आऊं, अब जबकि हम पड़ोसी बन चुके थे?

* 3

अलेक्जेंडर हैमिल्टन के भूत से मुलाकात

न्यूयॉर्क के सुरम्य कलाकार-बहुल इलाके ग्रीनविच विलेज में, जेन स्ट्रीट के नंबर 27 पर, एक लकड़ी का बना मकान खड़ा है, जो क्रांति-पूर्व काल का है। इसी मकान में अलेक्जेंडर हैमिल्टन का उनके अंतिम क्षणों में इलाज किया गया था। वास्तव में, उनकी मृत्यु कुछ मकान दूर, जेन स्ट्रीट के नंबर 80 पर हुई थी, लेकिन नंबर 27 उनके डॉक्टर जॉन फ्रांसिस का घर था, जिन्होंने आरोन बर्र के साथ घातक द्वंद्वयुद्ध के बाद उनका इलाज किया था।

हालांकि, हैमिल्टन का घर अब मौजूद नहीं है, और विध्वंसकारी अब उनके डॉक्टर के घर को गिराने की फिराक में हैं, जिसमें अब एक लेखिका और कलाकार, जीन कार्सविना रहती हैं, जो 1939 से वहां रह रही हैं।

हैमिल्टन की असामयिक मृत्यु के तथ्य सर्वविदित हैं; डी. एस. अलेक्जेंडर (अपनी पुस्तक 'पॉलिटिकल हिस्ट्री ऑफ द स्टेट ऑफ न्यूयॉर्क' में) लिखते हैं कि राजनीतिक शत्रुता के

कारण, "बर्र ने जानबूझकर उनकी हत्या करने का निश्चय किया था।" हैमिल्टन द्वारा बर्र को "घृणित" और "सरकार की बागडोर संभालने के योग्य नहीं" बताते हुए लिखा गया एक पत्र प्रेस में प्रकाशित हो गया, जिसके बाद बर्र ने स्पष्टीकरण मांगा। हैमिल्टन ने इनकार कर दिया, और 11 जून, 1804 को न्यू जर्सी के वीहॉकेन में, बर्र ने सावधानीपूर्वक निशाना साधा और उनकी पहली गोली से हैमिल्टन गंभीर रूप से घायल हो गए। शहर लौटते समय नाव में हैमिल्टन को होश आया, लेकिन वे जानते थे कि उनका अंत निकट है। उन्हें डॉ. फ्रांसिस के घर ले जाया गया और उनका इलाज किया गया, लेकिन कुछ ही दिनों में सड़क के उस पार स्थित अपने घर में उनकी मृत्यु हो गई।

27 जेन स्ट्रीट में रहने के बाद से, मिस कार्सविना को कदमों की आहट, सीढ़ियों की चरमराहट, दरवाजों के खुलने-बंद होने की आवाजें सुनाई देती रही हैं; यहाँ तक कि शौचालय के अपने आप फ्लश होने की आवाज भी। एक बार तो उन्होंने देखा कि शौचालय की चेन अभी भी हिल रही थी, जबकि आसपास कोई नहीं था! जून 1957 में एक संक्षिप्त समाचार पत्र में उनके हवाले से कहा गया है, "मुझे लगता है कि अठारहवीं सदी के किसी व्यक्ति के लिए फ्लश करने वाला शौचालय एक अनोखी चीज होगी।"*

उसने एक धुंधली सी "आकृति" भी देखी है, लेकिन वह उस दृश्य का विस्तृत वर्णन नहीं दे पा रही है; हालांकि, उसके ऊपर वाले कमरे में रहने वाली किरायेदार का कहना है कि कुछ समय पहले एक रात, "अठारहवीं सदी के कपड़े पहने, चोटी में बंधे बालों वाला एक आदमी" उसके कमरे में आया, उसे देखा और फिर बाहर चला गया।

मिस कार्सविना एक पढ़ी-लिखी और आकर्षक महिला निकलीं, जिन्होंने एक ही छत के नीचे भूत के साथ रहने की संभावना को स्वीकार कर लिया था। श्रीमती मेयर्स और मैं मार्च 1960 में उनसे मिलने गए। उस माध्यम को इस बात का बिल्कुल भी अंदाजा नहीं था कि हम कहाँ जा रहे हैं।

पहले तो, श्रीमती मेयर्स, जो अभी भी होश में थीं, ने एक बूढ़े आदमी की "परछाई" देखी, जिसका चेहरा चौड़ा और नाक उभरी हुई थी; एक महिला जिसने काला शॉल ओढ़ा हुआ था, जिसका नाम उन्होंने देबोरा समझा, और उन्हें लगा कि "किसी का कोई मामला है"; फिर उन्होंने सफेद लिली की एक वेदी, एक दूल्हा-दुल्हन और फूलों से ढका एक छोटा ताबूत

देखा; फिर एक बहुत बूढ़ी महिला एक भव्य रूप से सजे हुए ताबूत में थी, जिसके साथ उसके रिश्तेदार, जिनमें एक छोटा लड़का और लड़की भी शामिल थे, खुले ताबूत में देख रहे थे। उन्होंने महिला का नाम श्रीमती पैटरसन और लड़की का नाम मिस लूसी बताया। उसी जगह के एक और "दृश्य" में, श्रीमती मेयर्स ने "एक खाली ताबूत, रोते-बिलखते, बातें करते, इधर-उधर घूमते लोग और ताबूत के ऊपर अमेरिकी झंडा; ताबूत में एक आदमी की टोपी, चांदी के बकल वाले जूते, सोने के एपॉलेट्स..." का वर्णन किया। फिर वह उस आदमी के पास गईं और उन्हें लगा कि उसके फेफड़ों में तरल पदार्थ भर रहा है और उसकी पसली में दर्द के साथ उसकी मृत्यु हो गई।

इस बिंदु पर अर्ध-सम्मोहन की अवस्था में पहुँचकर, श्रीमती मेयर्स ने पानी पर एक छोटी नाव में बैठे पुरुषों के एक समूह का वर्णन किया, फिर एक ऐसे व्यक्ति का वर्णन किया जिसने सफेद पतलून और नीले रंग का कोट पहना हुआ था जिस पर खून के धब्बे लगे थे। उन्होंने आगे कहा, "दो नावें शामिल थीं, और यह शाम का समय था।"

ऐसा लग रहा था मानो वह किसी दूसरे दौर में जा रही हों, श्रीमती मेयर्स को लगा कि "तहखाने में कुछ चल रहा है, वे नीचे हो रही घटनाओं से ध्यान हटाने की कोशिश कर रहे हैं; यहाँ एक महिला है, जिसे वर्दी पहने दो आदमी रोक रहे हैं, जिनके पास छोटी जैकेट और चौड़ी किनारी वाली गोल टोपी है, और पिस्तौलें भी हैं। चीखने की आवाज़ आती है, महिला को ज़बरदस्ती पीछे धकेला जाता है, आदमी आगे बढ़ रहे हैं, यहाँ पनाह दिए गए किसी व्यक्ति को सौंपना पड़ रहा है, नाइटशर्ट और लाल मोज़े पहने एक बूढ़े आदमी को घर से बाहर बर्फ में घसीटा जा रहा है।"

एक और घटना के संदर्भ में, श्रीमती मेयर्स को ऐसा लगा जैसे वे घर के पिछले हिस्से की ओर खिंची चली जा रही हों, जहाँ "प्रसव के दौरान किसी की मृत्यु हो गई थी"; वास्तव में, इस घर में इस प्रकार की मृत्यु "कई बार" हुई थी। पुलिस भी इसमें शामिल थी, लेकिन उन्हें लगा कि यह घटना या घटनाओं का सिलसिला शुरुआती धारणाओं से बाद के समय का है। उनके मन में हेनरी ओलिवर या ओलिवर हेनरी का नाम आया।

पूरी तरह होश में आने के बाद, श्रीमती मेयर्स ने कहा कि नीचे के कमरे के बीचोंबीच एक ठंडी जगह है। हाँ, है; मुझे भी ऐसा ही महसूस हो रहा है। श्रीमती मेयर्स को एक दुबले-पतले,

सुगठित शरीर वाले, औसत से अधिक कद के व्यक्ति की आकृति दिखाई देती है, जिसने सफेद पतलून, काले जूते, गहरे नीले रंग का कोट और टेलकोट पहना है, जिसके आगे सफेद फीते लगे हैं; वह व्यक्ति जॉर्ज वाशिंगटन और लाफायेट से जुड़ा हुआ लगता है, और उनके चेहरे भी उन्हें दिखाई देते हैं; उन्हें लगता है कि वाशिंगटन शायद इस घर में रहे होंगे। वह व्यक्ति जिसे वह "देखती" हैं, एक जनरल है, वह उसके कंधे पर लगे बैज देख सकती हैं। पहले दिखाई देने वाली बूढ़ी औरत और बच्चे भी किसी न किसी तरह इससे जुड़े हुए हैं। उनकी कम उम्र में ही मृत्यु हो गई थी, और वे "एक नाव में लड़ रहे थे।" अब श्रीमती मेयर्स को "डब्ल्यू. लॉरेंस" नाम याद आता है। उन्हें घर के मालिक के प्रति स्नेह का भाव है; उन्होंने कई लोगों को, जैसे शरणार्थियों को, अपने यहाँ पनाह दी थी।

यहां "जनरल मिल्स" नाम से सामान रखा हुआ था—जूते, कोट, लगभग एक सैन्य चौकी की तरह; खाना बांटा जा रहा था। ब्रैडली नाम बताया गया। फिर श्रीमती मेयर्स एक बूढ़े आदमी को कॉर्नेट बजाते हुए देखती हैं; सफेद पतलून पहने दो आदमी एक लंबी मेज पर कागजों पर झुके बैठे दिखाई देते हैं, जिसके ऊपर एक क्रिस्टल का झूमर लगा हुआ है।

आत्माओं से संपर्क करने के बाद, मिस कार्सविना ने पुष्टि की कि यह घर हैमिल्टन के चिकित्सक का था, और 1825 तक यह एक डॉक्टर के स्वामित्व में था, जो संयोगवश मेट्रोपॉलिटन ओपेरा हाउस के डॉक्टर थे। कॉर्नेट बजाने वाला व्यक्ति शायद उनका ही कोई मरीज रहा होगा।

क्रांति-पूर्व के दिनों में, लगभग 1730 के आसपास, इस घर का उपयोग "अंडरग्राउंड रेलरोड" के मुख्यालय के रूप में किया गया होगा, जब पुलिस ने तथाकथित "दास षड्यंत्र" के कथित साजिशकर्ताओं को पकड़ने की कोशिश की थी, जो स्पष्ट रूप से यहां शरण लिए हुए थे।

“लॉरेंस” नाम से संभवतः लॉरेंस द्वारा बनाए गए वाशिंगटन के उस चित्र का संदर्भ है जो घर में चिमनी के ऊपर टंगा रहता था। दूसरी ओर, मुझे इलियट की न्यूयॉर्क के लिए उन्नत निर्देशिका (1812) में 146 ग्रीनविच स्ट्रीट पर एक टी. लॉरेंस, एम.डी., का पता चला; और लॉन्गवर्थ (1803) द्वारा 177 विलियम स्ट्रीट पर एक “विधवा पैटरसन” का उल्लेख है; 80 जॉन स्ट्रीट पर एक विलियम लॉरेंस, दवा विक्रेता, का भी उल्लेख है। चार्ल्स बर टॉड की न्यूयॉर्क की कहानी के अनुसार, हैमिल्टन के शव को कंधा देने वालों में से दो ओलिवर वोलकॉट और जॉन

एल. लॉरेंस थे। उल्लेखित अन्य नामों का पता नहीं चल सका। सफेद पतलून पहने व्यक्ति का वर्णन निश्चित रूप से हैमिल्टन की सटीक छवि है, और घर में कई ताबूतों और प्रसव के दौरान महिलाओं की मृत्यु जैसी घटनाएं एक डॉक्टर के निवास के लिए स्वाभाविक रूप से समझ में आती हैं।

यह आश्चर्य की बात नहीं है कि अलेक्जेंडर हैमिल्टन की आत्मा उस व्यक्ति के घर में घूमना चाहे जिसने व्यर्थ ही उसकी जान बचाने की कोशिश की थी।

* 4

द फिफ्थ एवेन्यू घोस्ट

कुछ भूतिया घरों के मामलों में जानकारी और सबूत जुटाने के लिए सिर्फ एक ही बार जाना पड़ता है, जबकि कुछ मामलों में दो या तीन बार। लेकिन मानसिक अनुसंधान के इतिहास में बहुत कम मामले ऐसे हैं जो उस मामले के बराबर या उससे भी बेहतर हों जिसे मैं 'फिफ्थ एवेन्यू भूत' कहूँगा। इस बेहद अनोखे मामले को सुलझाने के लिए सत्रह सत्रों की ज़रूरत पड़ी, जो पाँच महीनों तक चले। मैं इसे यहाँ उसी रूप में प्रस्तुत कर रहा हूँ जैसे यह हमारे सामने घटित हुआ। मैं प्रत्येक सत्र के दौरान लिए गए हमारे रिकॉर्ड और प्रतिलेखों से उद्धरण दे रहा हूँ; और क्योंकि इस मामले में इतने सारे सबूत मिले जो केवल उसी व्यक्ति से प्राप्त किए जा सकते थे जिसके साथ ये घटनाएँ वास्तव में घटी थीं, इसलिए मेरे विचार से यह भूत-प्रेत की प्रकृति के बारे में सच्चाई का एक बहुत मजबूत प्रमाण है।

* * *

ऐसा बहुत कम ही होता है कि किसी भूतिया अपार्टमेंट का जिक्र प्रमुख शाम के अखबार में मिले।

कभी-कभी, एक उद्यमी रियल एस्टेट एजेंट बड़े शहर के रोमांटिक लोगों को आकर्षित करने के लिए ग्रामीण इलाकों में स्थित एक कॉटेज को "भूतिया दिखता है" विशेषण दे देता है।

लेकिन जुलाई 1953 में एक दिन न्यूयॉर्क डेली न्यूज़ में जिस भूतिया अपार्टमेंट का ज़िक्र मिला, वह सचमुच का था। ब्रॉडवे के दिवंगत स्तंभकार डेंटन वॉकर ने इसके बारे में लिखा था—

एक अनोखी घटना: एक खोजकर्ता, फिफ्थ एवेन्यू स्थित अपने स्टूडियो को किराए पर देने के लिए विज्ञापन देते हुए, आकर्षणों में 'भूतों से भरा अटारी का कमरा' भी शामिल करता है।

अपने अपार्टमेंट को किराए पर देने का विज्ञापन देने वाले उद्यमी सज्जन कैप्टन डेविस निकले, जो एक प्रसिद्ध खोजकर्ता और कई पुस्तकों के लेखक थे, जिनमें कहीं-कहीं भूत-प्रेतों से संबंधित लेख भी शामिल थे। कैप्टन डेविस संशयवादी नहीं थे। इसके विपरीत, मैंने उन्हें गंभीर और मानसिक अनुसंधान के अस्तित्व से भलीभांति परिचित पाया। कुछ ही घंटों में, मैंने इस मामले पर उस अध्ययन समूह के साथ चर्चा की, जो एडगर केसी फाउंडेशन, एसोसिएशन फॉर रिसर्च एंड एनलाइटमेंट के मुख्यालय में साप्ताहिक रूप से मिलता था। एक टीम का गठन किया गया, जिसमें बर्नार्ड एक्सलरोड, नेल्सन वेल्श, स्टेनली गोल्डबर्ग और मैं शामिल थे, और निश्चित रूप से, श्रीमती मेयर्स माध्यम के रूप में थीं। बर्नार्ड एक्सलरोड और मैं जानते थे कि फिफ्थ एवेन्यू के पते पर किसी प्रकार का "भूत" था, लेकिन इससे अधिक जानकारी नहीं थी। माध्यम को इस बारे में कुछ भी पता नहीं था। पहले सत्र के दो दिन बाद, न्यूयॉर्क टाइम्स (13 जुलाई, 1953) में स्वर्गीय मेयर बर्गर द्वारा एक काल्पनिक लेख प्रकाशित हुआ, जिन्होंने स्पष्ट रूप से मेजबान का साक्षात्कार लिया था, लेकिन भूत का नहीं। श्री बर्गर ने कैप्टन डेविस के हवाले से कहा कि एक हरा भूत था जिसने स्टूडियो गैलरी से खुद को फांसी लगा ली थी, और कथित तौर पर वह कभी-कभी अटारी की खिड़की से अपना हरा हाथ बाहर निकालता है।

कैप्टन डेविस को भूत के बारे में कोई जानकारी नहीं थी। यह बात फिर से दोहराना आवश्यक है कि यह रचना फिफ्थ एवेन्यू स्थित घर में प्रारंभिक बैठक के दो दिन बाद सामने आई थी, और उस समय इसमें निहित विषयवस्तु के बारे में सभी को कोई जानकारी नहीं थी।

* * *

कैप्टन से हाथ मिलाने के लिए हमें फिफ्थ एवेन्यू के 226 नंबर की इमारत की सबसे ऊपरी मंजिल तक छह सीढ़ियाँ चढ़नी पड़ीं। यह इमारत मध्य विक्टोरियन युग में लोकप्रिय बड़े पुराने टाउन हाउसों में से एक है, जो गंभीर, मजबूत और अपनी मोटी पत्थर की दीवारों के पीछे अपने गहरे रहस्यों को छुपाए रखने में सक्षम है। कैप्टन डेविस ने बताया कि पहले यहाँ

रिचर्ड हार्डिंग डेविस, अभिनेता रिचर्ड मैन्सफील्ड और एक महिला पत्रिका संपादक रह चुके हैं। उनमें से केवल महिला ही जीवित थीं और जब उनसे पूछताछ की गई तो पता चला कि उन्हें भूत-प्रेत की परंपरा के बारे में बिल्कुल भी जानकारी नहीं थी और न ही उन्हें कभी कोई भूत परेशान किया था। कैप्टन डेविस ने यह भी बताया कि घर में आए मेहमानों ने कई बार भूत देखा था, हालांकि उन्होंने खुद कभी नहीं देखा था। उनका घर उन शानदार और रंगीन अपार्टमेंटों में से एक है जो केवल एक खोजकर्ता या संग्रहकर्ता के पास ही हो सकते हैं—एक आरामदायक स्टूडियो और संग्रहालय का मिश्रण, उत्साह और व्यक्तित्व से भरपूर, और अदृश्यता का आभास कराता है। दो जंगली बिल्लियों ने वातावरण को पूरा किया, जिसे मेजबान के फर्श पर रखे टेप रिकॉर्डर ने कुछ हद तक फीका कर दिया। यह अपार्टमेंट एक तरह का डुप्लेक्स था, जिसमें मुख्य कमरे में एक गैलरी या बालकनी निकली हुई थी। इस बालकनी के बीच में वही खिड़की थी जिसका जिक्र टाइम्स के इंटरव्यू में किया गया था। वहां मेजबान, कैप्टन डेविस, श्री और श्रीमती बर्ट्राम लॉन्ग, काउंटेस डी सेल्स, मेजबान के सभी मित्र और पहले उल्लेखित शोधकर्ताओं का समूह उपस्थित थे—कुल आठ लोग, और अगर आप चाहें तो दो बिल्लियाँ भी। अधिकांश बैठकों की तरह, कार्यवाही की शुरुआत से अंत तक टेप रिकॉर्डिंग की गई, इसके अलावा लिखित नोट्स भी लिए गए।

एक भूत से मुलाकात

किसी सुनियोजित टीवी थ्रिलर की तरह, चौक के पार स्थित टावर में लगी बड़ी घड़ी में नौ बज गए और एक मध्यम रोशनी वाले बिजली के लैंप को छोड़कर बाकी सभी बत्तियाँ बुझा दी गईं। हालाँकि, यह रोशनी अधिकांश लोगों की आकृतियों, और विशेष रूप से कमरे के मध्य भाग में मध्यम आकार के लैंप के आसपास के दृश्य को स्पष्ट रूप से देखने के लिए पर्याप्त थी।

गैलरी के नीचे एक आरामदायक कुर्सी रखी गई थी, जिस पर माध्यम बैठी; उसके चारों ओर, एक घेरा बनाकर, बाकी लोग बैठे थे, और मेज़बान रिकॉर्डर चला रहा था और माध्यम की ओर देख रहा था। वहाँ एकदम सन्नाटा था और वातावरण तनावपूर्ण लग रहा था। माध्यम ने कुर्सी को छुआ भी नहीं था कि उसने अपने गले को इस तरह पकड़ा जैसे कोई दम घुटकर मर

रहा हो, और घबराकर बताया कि उसे "गले से तब तक लटकाया गया जब तक उसकी मृत्यु नहीं हो गई।" फिर वह कुर्सी पर बैठी रही और अनुभवी सम्मोहनकर्ता बर्नार्ड एक्सलरोड ने उसे उसकी सामान्य समाधि अवस्था में पहुँचाया, जो कुछ ही मिनटों में पूरी हो गई।

हम बेसब्री से उस शख्स के आने का इंतज़ार कर रहे थे, जो भी वह "भूत" हो। हमें किसी हिंसा की आशंका थी और जैसा कि आगे पता चलेगा, वही हुआ। ऐसे मामलों में, खासकर पहली मुलाकात में, यह बिल्कुल सामान्य है। ऐसा लगता है कि एक "अशांत आत्मा" लगातार अपनी "मृत्यु की स्थिति" या मृत्यु के कारण को फिर से जीती है, और यही अंतिम पीड़ा अक्सर भूतों के आने को डरावना बना देती है। यदि भावनात्मक चिंता मृत्यु का कारण है, या मृत्यु के समय मौजूद थी, तो वह "अशांत आत्मा" या सत्ता उस अंतिम पीड़ा को बार-बार जीती रहेगी, ठीक वैसे ही जैसे रिकॉर्ड के आखिरी खांचे में अटकी हुई फोनोग्राफ की सुई। लेकिन पहली बार जो हुआ, वह देखिए।

11 जुलाई, 1953 को 226 फिफ्थ एवेन्यू में हुई बैठक

अब एक अज्ञात सत्ता के वश में आ चुकी वह माध्यम बोलने में कठिनाई महसूस कर रही है। वह सत्ता घृणा से भरी पागलों जैसी हंसी हंसने लगती है।

इकाई:...घोड़े को चराओ...वे आ रहे हैं...घोड़े को चराओ! मिग्नॉन कहाँ है? वह कहाँ है?

प्रश्न: हम आपकी सहायता करना चाहते हैं। मिग्नॉन कौन हैं?

इकाई: उसे यहाँ होना चाहिए... वह कहाँ है... वह तुम्हारे पास है! वह कहाँ है? बच्चा कहाँ है?

प्रश्न: कौन सा बच्चा?

इकाई: उन्होंने उसके साथ क्या किया?

प्रश्न: हम आपके दोस्त हैं।

वह व्यक्ति: (आँसू बहाते हुए) ओह, एक दुश्मन...एक दुश्मन...

प्रश्न: आपका नाम क्या है?

इकाई: गुइचोन...गुइचोन...(गर्दन में दर्द व्यक्त करता है; हाथ इधर-उधर टटोलते हुए एक महिला का शव पाकर अचंभित प्रतीत होते हैं)

प्रश्न: आप किसी और के शरीर का उपयोग कर रहे हैं। (प्राणी अपना गला पकड़ लेता है।) क्या आपको वहाँ दर्द हो रहा है?

सत्ता: अब और नहीं...यह फिर से पूरा हो गया है...मैं देख नहीं सकता...सब कुछ बहुत अलग है, सब कुछ बहुत अजीब है...कुछ भी पहले जैसा नहीं है।

मैंने उनसे पूछा कि उनकी मृत्यु कैसे हुई। यह सुनकर वे तुरंत उत्साहित हो गए।

इकाई: (बेहोशी की हालत में) मैंने ऐसा नहीं किया... मैं तुम्हें बता रही हूँ, मैंने ऐसा नहीं किया, नहीं... मिग्नॉन, मिग्नॉन... वो कहाँ है? वे बच्चे को ले गए... उसने मुझे कहीं छिपा दिया... वे उसे भी ले गए... (उसने तुम्हें क्यों छिपाया?) ताकि कोई मुझे ढूंढ न सके (कहाँ?) मैं हमेशा वहीं रहती हूँ (मतलब ऊपर वाले कमरे में)।

न्यूयॉर्क के फिफ्थ एवेन्यू का भूतिया घर

इस बिंदु पर, टेप बदल दिए गए। जब उस व्यक्ति से पूछा गया कि वह कहाँ से आया है, तो उसने चार्ल्सटन का नाम लिया और बताया कि वह एक सफेद घर में रहता है।

प्रश्न: क्या आपको इस शरीर का उपयोग करने में कठिनाई होती है?

इकाई: क्या?? क्या?? मैं यहाँ हूँ...मैं यहाँ हूँ...यह मेरा घर है...तुम यहाँ क्या कर रहे हो?

प्रश्न: ऊपर वाले छोटे कमरे के बारे में मुझे बताइए।

इकाई: (रोते हुए) क्या मैं कमरे से बाहर जा सकती हूँ?
इसी समय, वह सत्ता चली गई, और माध्यम के नियंत्रण में आए अल्बर्ट ने उसके शरीर पर कब्जा कर लिया।

अल्बर्ट: यहाँ बहुत मजबूत सेना है, और स्थिति थोड़ी मुश्किल रही है। इस व्यक्ति पर कई लोगों ने हिंसा की। वह एक कॉन्फेडरेट था और उसे यहाँ छिपाकर रखा गया था, जबकि वे भाग निकले।

प्रश्न: उनका पद क्या था?

अल्बर्ट: मेरा मानना है कि उनका कोई पद तो था। लेकिन यह कहना थोड़ा मुश्किल है कि उनका पद क्या था।

प्रश्न: उसका नाम क्या था?

अल्बर्ट: बात वो नहीं है जो वो कहता है। ये उसका नकली नाम है, जिसे वो इस्तेमाल करना पसंद करता है। वो अभी पूरी जानकारी देने को तैयार नहीं है। मौका मिलते ही उसका दिल हिंसक हो जाता है, लेकिन उसने अभी तक किसी को नुकसान नहीं पहुँचाया है, और हम संभव हो तो इस तरफ से उसके साथ काम करेंगे।

प्रश्न: मिग्नॉन और बच्चे का क्या होगा?

अल्बर्ट: खैर, वे बेशक काफी समय से इस दुनिया में हैं, लेकिन उसे कभी पता नहीं चला कि उनका क्या हुआ। उन्हें बेरहमी से अलग कर दिया गया था। उसने उसके साथ कुछ नहीं किया था।

प्रश्न: उन्होंने इस दुनिया को कैसे छोड़ा?

अल्बर्ट: हिंसा द्वारा। (क्या उसे फांसी दी गई थी?) हाँ। (उस छोटे से कमरे में?) हाँ। (क्या यह आत्महत्या थी या हत्या?) वह कहता है कि यह हत्या थी।

* * *

इसके बाद नियंत्रक समाधि अवस्था समाप्त करने और "खुली" ध्यान अवस्था में परिणाम प्राप्त करने का सुझाव देता है। हम धीरे-धीरे माध्यम को जगाते हैं।

जब माध्यम आराम कर रहा था, तब स्टेनली गोल्डबर्ग ने टिप्पणी की कि उन्हें ऐसा आभास हुआ कि गाइचोन के पिता स्कॉटलैंड से आए थे।

कैप्टन डेविस ने गौर किया कि माध्यम में "आवृत्ति परिवर्तन" के ठीक उसी क्षण, यानी जब गायचोन ने पद छोड़ा और अल्बर्ट ने कार्यभार संभाला, तो रिकॉर्डिंग उपकरण की नियंत्रण बत्ती अचानक अपने आप तेज हो गई, और उसे उन्हें धीमा करना पड़ा।

फिर वहां मौजूद सभी लोगों ने हाथ पकड़कर कमरे के बीचोंबीच खड़े होकर एक घेरा बनाया। थोड़ी देर में वह माध्यम एक लटके हुए शरीर की तरह आगे-पीछे झूलने लगी। उसने कहा कि उसे बहुत अकड़न महसूस हो रही है, "लटकने से और यह देखकर आश्चर्य हो रहा है कि मैं पूरी तरह ठीक हूँ, बीच से काटे जाने के बावजूद।"

एक्सलरोड और मैंने दोनों ने ही माध्यम को एक चमकदार सफेद और हरे रंग की आभा से ढका हुआ देखा, जिससे एक अधेड़ उम्र के व्यक्ति की छवि बन रही थी, जिसके बाल नहीं थे, गाल की हड्डियाँ उभरी हुई थीं और बाँहें पतली थीं। यह उस समय की बात है जब गाइचोन माध्यम के ज़रिए बोल रहे थे।

यह सत्र 12:30 बजे समाप्त हुआ। माध्यम ने बताया कि वह थका हुआ महसूस कर रहा था और उसके गले और पेट में लगातार तकलीफ बनी हुई थी।

जांच जारी है

दुर्भाग्यवश, कैप्टन डेविस उसी सप्ताह एक विश्व यात्रा पर चले गए, और नया किरायेदार असहयोगी था। मुझे लगा कि हमें जांच जारी रखनी चाहिए। एक बार जब आप किसी "भूत" को उसकी दुखद यादों के स्थान से मुक्त कर देते हैं, तो कभी-कभी उससे कहीं और संपर्क किया जा सकता है।

इस प्रकार, अध्ययन समूह के मुख्यालय, वेस्ट 16 वीं स्ट्रीट पर दूसरी बैठक हुई। यह एक छोटा, सामान्य सा कमरा था जिसमें कोई विशेष वातावरण नहीं था, और इस बैठक और इसके बाद की सभी बैठकों में मंद प्रकाश का प्रयोग किया गया, जो चेहरे के सभी भावों को स्पष्ट रूप से देखने के लिए पर्याप्त था। धूम्रपान और कभी-कभार धीमी आवाज़ में बातचीत

होती थी, लेकिन इनमें से किसी ने भी काम में बाधा नहीं डाली। दूसरी बैठक से पहले, श्रीमती मेयर्स ने बताया कि गाइचोन फिफ्थ एवेन्यू स्थित घर से उनका पीछा करते हुए आया था, और रात में दो बार उन्हें एक प्रकार के "सफेद प्रभामंडल" में दिखाई दिया, जिसकी आँखों में बेचैनी भरी अपील थी। बैठक तक धैर्य रखने की उनकी सलाह पर, वह आकृति गायब हो गई।

14 जुलाई, 1953 को 125 वेस्ट 16 वीं स्ट्रीट पर हुई बैठक

प्रश्न: क्या आपको पता है कि यह कौन सा वर्ष है?

गाइचोन: 1873.

प्रश्न: नहीं, यह 1953 है। अस्सी साल बीत चुके हैं। आप अब जीवित नहीं हैं। क्या आप समझते हैं?

गाइचोन: अस्सी साल? अस्सी साल? मैं एक सौ दस साल का तो नहीं हूँ?

प्रश्न: नहीं, आप नहीं हैं। आप हमेशा जवान रहेंगे। मिग्नॉन भी आपके साथ है। हम आपको खुद को समझने में मदद करने आए हैं। 1873 में क्या हुआ था?

गाइचोन: किसी का कोई लेना-देना नहीं... मेरा... मेरा!

प्रश्न: ठीक है, तो अपना राज़ अपने पास रखो, लेकिन क्या तुम मिग्नॉन से मिलना नहीं चाहते? क्या तुम न्याय नहीं चाहते? (पागलपन भरी, कड़वी हंसी) क्या तुम भगवान पर विश्वास नहीं करते? (और हंसी) तुम्हारा यहाँ होना और बोल पाना, क्या यह साबित नहीं करता कि तुम्हारे लिए उम्मीद बाकी है? 1873 में क्या हुआ था? फिफ्थ एवेन्यू वाला घर याद है, ऊपर वाला कमरा, और वो घोड़ा जिसकी मालिश होनी थी?

गाइचोन: सवारी कर रहे हैं, सवारी कर रहे हैं... उसे ढूंढो... वे उसे ले गए हैं।

प्रश्न: उसे कौन ले गया?

गाइचोन: तुम! (पूछताछकर्ता को मारने की धमकी देता है)

प्रश्न: नहीं, हम आपके दोस्त हैं। हमें आपकी सेना सेवा का रिकॉर्ड कहाँ मिल सकता है? क्या यह सच है कि आप किसी खतरनाक मिशन पर थे?

गाइचोन: हाँ।

प्रश्न: किस पद पर?

गुइचोन: यह मेरा निजी मामला है! मैं अपने रहस्य उजागर नहीं करता। मैं एक सज्जन व्यक्ति हूँ, और मेरे रहस्य मेरे साथ ही समाप्त हो जाते हैं।

प्रश्न: अपनी रैंक बताइए।

गाइचोन: मैं एक कर्नल था।

प्रश्न: किस रेजिमेंट में?

गुयचोन: दो सौ छठा।

प्रश्न: आप पैदल सेना में थे या घुड़सवार सेना में?

गाइचोन: घुड़सवार सेना।

प्रश्न: गृह युद्ध में?

गाइचोन: हाँ।

प्रश्न: न्यूयॉर्क आने से पहले आप कहाँ रहते थे?

गाइचोन: चार्ल्सटन...एल्म स्ट्रीट।

प्रश्न: कर्नल जी, आपका पारिवारिक नाम क्या है?

गाइचोन: (रोते हुए) एक सज्जन व्यक्ति होने के नाते, मैं अभी आपको वह जानकारी देने के लिए तैयार नहीं हूँ... इसका कोई फायदा नहीं है, मैं इसका नाम नहीं लूंगा।

प्रश्न: आप हमारे लिए मुश्किल खड़ी कर रहे हैं, लेकिन हम आपकी इच्छाओं का पालन करेंगे।

गाइचोन: (राहत भरी सांस लेते हुए) मैं आपका बहुत आभारी हूं... मुझे यह जानकारी देने के लिए कि यह अस्सी साल है। अस्सी साल!
मैंने फिफ्थ एवेन्यू स्थित घर के बारे में बताया, और यह भी कि गाइचोन की "मौजूदगी" समय-समय पर महसूस होती रही थी। मैंने फिर से उनका नाम पूछा।

(ऐसा प्रतीत होता है कि वह कागज ढूंढ रहा है, उसे कागज और फाउंटेन पेन दिया जाता है; पेन पहले तो उसे थोड़ा उलझन में डालता है, लेकिन फिर वह मध्य-विक्टोरियन युग की कलात्मक, शैलीबद्ध शैली में लिखता है—"एडौर्ड गाइचोन।")

प्रश्न: क्या आपका परिवार फ्रांसीसी मूल का है?

गाइचोन: हाँ।

प्रश्न: क्या आप स्वयं फ्रांसीसी हैं या आपका जन्म इसी देश में हुआ था?

गाइचोन: इस देश में...चार्ल्सटन।

प्रश्न: क्या आप फ्रेंच बोलते हैं?

गाइचोन: नहीं।

प्रश्न: क्या आप हमसे कुछ करवाना चाहते हैं? क्या आपका कोई काम अधूरा रह गया है?

गाइचोन: अस्सी साल में बहुत फर्क आ जाता है...मैं टूट चुका हूँ...भगवान आपका भला करे... मिग्नोन...यहाँ बहुत अंधेरा है, बहुत अंधेरा...

मैं उसे यह समझाता हूँ कि वह अस्थायी रूप से एक महिला के शरीर में क्यों आ गया, और कैसे उसकी नफरत उसे "दूसरी दुनिया" में जाने के बजाय फिफ्थ एवेन्यू स्थित उस घर में वापस ले आई।

गाइचोन: (शांत होकर) क्या सच में ईश्वर है?

मैंने पूछा कि उनका जन्म कब हुआ था।

गाइचोन: (अस्पष्ट) 1840...42 वर्ष की आयु...

यह सत्र सबसे नाटकीय था। लिखित विवरण उस तनावपूर्ण स्थिति को पूरी तरह से व्यक्त नहीं कर सकता जो एक हिंसक, घृणा से भरे और ईश्वर को नकारने वाले व्यक्ति के बीच थी, जो चिरस्थायी अंधकार की खाई से अभी-अभी निकला था, और एक पूछताछकर्ता जो शांत भाव से उसके व्याकुल मन में प्रकाश लाने का प्रयास कर रहा था। सत्र के अंत में, गाइचोन को ईश्वर के बारे में समझ आ गई, और उसे एहसास होने लगा कि उसके साथ घटी व्यक्तिगत त्रासदी के बाद काफी समय बीत चुका है। वास्तव में, किसी भूत को "मुक्त" करने की विधि,

किसी मनोचिकित्सक द्वारा किसी व्यक्ति को जुनून या अन्य व्यक्तित्व विकारों से मुक्त करने की विधि से भिन्न नहीं है। दोनों ही मन से संबंधित हैं।

मुझे यह स्पष्ट हो गया कि इस मामले को सुलझाने के लिए अभी और कई सत्रों की आवश्यकता होगी, क्योंकि वह आत्मा सब कुछ बताने को तैयार नहीं थी। अधिकांश "भूतों" के साथ ऐसा नहीं होता, जो आम तौर पर वर्षों के व्यक्तिगत कष्टों से दबी भावनाओं को व्यक्त करने का अवसर पाकर खुश होते हैं। लेकिन यहाँ, तर्कशक्ति के लौटने से तर्क करने और जानकारी का मूल्यांकन करने की क्षमता भी वापस आ गई। हमने गाइचोन की आत्मा को मुक्त करना शुरू कर दिया था, लेकिन हम अभी तक उसकी अंतरात्मा तक नहीं पहुँच पाए थे। बहुत सारी घृणा, भय और अहंकार अभी भी मौजूद थे, जिन्हें दूर करना आवश्यक था, तभी उसका वास्तविक व्यक्तित्व उभर सकता था।

21 जुलाई, 1953 का सत्र

माध्यम के नियंत्रक अल्बर्ट ने सबसे पहले बात की।

प्रश्न: क्या आपको उनकी पत्नी और बच्चे के बारे में कोई जानकारी मिली है?

अल्बर्ट: आप समझते हैं कि यह हमारी नैतिक संहिता है, कि जो कुछ व्यक्ति के भीतर से स्वेच्छा से प्रकट होता है, वही उसका पवित्र विकास है। जो कुछ वह प्रकट करना चाहता है, वही उसकी आत्मा को अंततः वह रूप देता है जो उसे होना चाहिए।

मैंने उनसे गुइचोन की शक्ल-सूरत का वर्णन करने के लिए कहा।

अल्बर्ट: इस समय, मृत्यु के समय से उसका शरीर थोड़ा ही विकसित हुआ है। वह अभी भी अपने जीवन के अंतिम क्षणों जैसा ही दिखता है। उसका शरीर दुबला-पतला, लंबा था...लगभग पाँच फुट नौ इंच या दस इंच...उसका चेहरा गोल, ठुड्डी पर संकरा, गालों की हड्डियाँ उभरी हुई, नाक थोड़ी उभरी हुई, मुँह थोड़ा चौड़ा...माथा ऊँचा, मृत्यु के समय और उससे कई वर्षों पहले तक उसके माथे पर बहुत कम बाल थे। आँखें नाक के पास स्थित थीं।

प्रश्न: क्या आपको उसका असली नाम पता चला?

अल्बर्ट: अभी तो उसकी यही इच्छा नहीं है। वो तुम्हें बताएगा, वो अपने इकबालिया बयान के ज़रिए अपने आत्म-विकास को समझेगा। ये रहा वो!

गाइचोन: (पहले दर्द से कराहते हुए) आना अच्छा है, लेकिन यह तो नरक है... मैंने रोशनी देख ली है। यहाँ तो बहुत अंधेरा था।

प्रश्न: आपका नाम क्या है, महोदय?

गाइचोन: मैं एक सज्जन व्यक्ति था... मेरा नाम कलंकित हो गया। मैं इसे देख नहीं सकता, सुन नहीं सकता, मुझे इसे स्वीकार करने दो, जब यह सही होगा तब मैं इसे स्वीकार करूँगा। मुझे इसकी कीमत चुकानी पड़ी है; उसने भी अपनी कीमत चुका दी है। मैं बहुत खुश था। मैं आगे बढ़ा। मैंने गलतियों को सुधारना सीख लिया। मुझे सच्चाई का ज्ञान हो गया है।

प्रश्न: अब मैं आपकी आँखें खोल रहा हूँ। अपने सामने रखे कैलेंडर को देखिए और बताइए कि उस पर कौन सी तारीख है? (कैलेंडर रखते हुए)

गाइचोन: 1953.... (चलते हुए टेप रिकॉर्डर की ओर इशारा करते हुए) वैगन के पहिए!

प्रश्न: युद्ध में आपके साथ सेवा करने वाले किसी एक अधिकारी का नाम बताइए। नाम लिखिए।

गाइचोन: मैं एक बेचारा हूँ... (लिखता है: मिग्नॉन मेरी पत्नी... गाइचोन) ओह, मेरे पैर, ओह मेरे पैर... अब मुझे बहुत दर्द हो रहा है... खून बह रहा है... मुझे हमेशा पीछे की ओर, पीछे की ओर जाना पड़ता है। मैं अपने पैरों का क्या करूँ? उनके पास जूते नहीं थे... हम जलती हुई घास पर चले... उन्होंने घास जला दी... (कौन?) डैम्यैंकी... मैं जागता हूँ, मुझे जलती हुई घास दिखाई देती है... (कहाँ? कब?) मुझे हाथ बढ़ाना है, मुझे बहुत कुछ पाना है, मुझ पर धैर्य रखो, मैं बस इतना ही कर सकता हूँ—मैं भूल जाऊँगा। मैं तुम्हें सब कुछ बताऊँगा... (कहाँ?) जॉर्जिया! जॉर्जिया! (क्या तुमने जनरल ली के अधीन लड़ाई लड़ी?) मैं उनके अधीन मारा गया। (क्या तुम उनके अधीन मरे?) नहीं, नहीं।

प्रश्न: रेजिमेंट में आपके साथ कौन-कौन थे?

गाइचोन: जॉनी ग्रीनली...यह एक अलग ही दुनिया है...जेरोम हार्वे। (सर्जन कौन थे?) मैंने उन्हें नहीं देखा। घोड़े के डॉक्टर। (आपका सहायक कौन था?) वाल्टर...मेरा बेटा...मैं सच नहीं बता सकता, और मैं बहुत कोशिश करता हूँ...जब सच सामने आएगा, मैं बता दूँगा, आप जानते हैं कि जलती हुई घास मेरे पास आई...मैं बताने के लिए कुछ और अच्छी बातें सोचूँगा... मैं आपको चार्ल्सटन में एल्म स्ट्रीट पर स्थित घर के बारे में बताना चाहता हूँ। मुझे लगता है कि यह 320 नंबर का घर है, मेरा जन्म इसी घर में हुआ था।

प्रश्न: क्या परिवार में कोई और सदस्य हैं?

गाइचोन: दो भाई। उनकी मृत्यु हो गई। वे मेरे साथ युद्ध में थे। मैं सबसे बड़ा था। विलियम और पॉल। (और आप एडवर्ड हैं?) हाँ। (आपकी माँ?) मैरी। (आपके पिता?) फ्रेडरिक। (उनका जन्म कहाँ हुआ था?) चार्ल्सटन। (आपकी माँ का मायके का नाम?) आह...! (आपने कहाँ से कॉलेज की पढ़ाई की?) विलियम...विलियम और...हरे घास वाला एक सफेद घर। (आपने कब स्नातक की उपाधि प्राप्त की?) तिरपन...एक सौ साल...। उन कोनों में जाना मुश्किल है जहाँ मैं और सोच नहीं सकता।

श्रीमती मेयर्स ने बाद में कहा, “इससे पहले मैंने कभी भी समाधि की अवस्था में अपनी आँखें नहीं खोली थीं। मैं आपको देख पा रही थी और आप बिल्कुल वैसे ही दिख रहे थे जैसे आप हैं, लेकिन ऐसा लग रहा था जैसे मैं आपके आर-पार देख रही हूँ। ऐसा पहले कभी नहीं हुआ था। मैं केवल वही देख पा रही थी जिस पर मैं ध्यान केंद्रित कर रही थी। यह मशीन... ऐसा लग रहा था जैसे इसके पहिए अब की तुलना में बहुत तेज़ी से घूम रहे थे।”

* * *

25 जुलाई, 1953 को, श्रीमती मेयर्स के घर पर एक "प्लैंचेट" सत्र आयोजित किया गया था, जिसमें वह स्वयं और दिवंगत श्रीमती ज़ो ब्रिटन उपस्थित थीं, जिसके दौरान गाइचोन ने खुद को प्रकट किया और कहा कि उनका एक जीवित पुत्र है, जो 89 वर्ष का है, और अब वेस्ट वर्जीनिया के सेयमोर नामक स्थान पर रहता है।

साक्ष्य सामग्री का संचय शुरू हो जाता है

अब तक हम जान चुके थे कि यह एक असामान्य मामला है। मैंने इस कालखंड से संबंधित सभी उपलब्ध सामग्रियों (और ऐसी सामग्री बहुत सारी है) की छानबीन की, लेकिन मुझे गाइचोन नाम का कोई व्यक्ति नहीं मिला।

ये बेहद गर्म दोपहरें थीं, लेकिन खोज जारी रही। शायद ही किसी मानसिक शोधकर्ता ने मानसिक साक्ष्य खोजने के लिए इतनी लंबी परियोजना शुरू की हो।

28 जुलाई, 1953 की बैठक

मेरे गले में सेंट माइकल का पदक देखकर, गाइचोन कहते हैं कि यह उन्हें सेंट ऐनी के पदक की याद दिलाता है, जो उनकी "ह्यूगनॉट मां", मैरी गाइचोन ने उन्हें दिया था।

प्रश्न: क्या आपको अपने कॉलेज का नाम याद है?

गाइचोन: दो कॉलेज। चार्ल्सटन, साउथ कैरोलिना में सेंट ऐनीज़... बस एक ही बात मेरे दिमाग में घूमती रहती थी—घोड़ों की देखभाल करना। क्यों? अब मुझे पता चल गया है। मुझे याद आ गया है। मैं कहना चाहता हूँ कि मेरी माँ यहाँ हैं, मैंने उन्हें देखा, उन्होंने कहा, भगवान आपका भला करे। अब मैं और अच्छे से समझ गया हूँ। धन्यवाद। मेरे लिए प्रार्थना कीजिए।

4 अगस्त, 1953 का सत्र

इस बैठक में पहले बताई गई जानकारी दोहराई गई और गाइचोन और मेरे बीच लुका-छिपी का खेल चलता रहा। हालांकि, अंत में गाइचोन ने अपने बेटे ग्रेगरी के बारे में बात करना शुरू किया और पहली बार उसका नाम लिया। उन्होंने हमसे उसे ढूंढने के लिए कहा। हमने पूछा, "ग्रेगरी किस नाम से पुकारा जाता है?" गाइचोन ने सहजता से जवाब दिया: "मुझे नहीं पता... गाइचोन... शायद मैकगोवन..." मैकगोवन नाम बहुत धीरे से बोला गया, लेकिन इतना स्पष्ट था कि वहां मौजूद सभी लोग सुन सकें। उस समय हम बहुत उत्साहित नहीं हुए। जब खोजबीन से नतीजे निकलने शुरू हुए, तब हमें एहसास हुआ कि आखिरकार यही उनका असली नाम था। लेकिन मैं रेजिमेंट की सूचियों में मैकगोवन को तुरंत ढूंढने में सफल नहीं हुआ, बल्कि बहुत दूर तक! उनके घुड़सवार सेना में सेवा करने के बयान से मैं भ्रमित हो गया था और स्वाभाविक रूप से मैंने घुड़सवार सेना की सूचियों पर विशेष ध्यान दिया, लेकिन उनका नाम उनमें नहीं था। अगस्त के अंत में मैंने वेस्ट वर्जीनिया के चार्ल्सटन शहर के रिकॉर्ड खंगाले,

गाइचोन परिवार को ढूंढने की व्यर्थ कोशिश की, यह मानते हुए कि वे अब भी उनके ससुराल वाले थे। यहां मुझे "मैकगोवन ब्रिगेड" का उल्लेख मिला।

18 अगस्त, 1953 की बैठक

प्रश्न: कृपया अपना परिचय दीजिए, कर्नल जी।

मैकगोवन: हाँ...एडवर्ड...क्या मैं रुक सकता हूँ? क्या मैं रुक सकता हूँ?

प्रश्न: आप यहाँ इतना क्यों रहना चाहते हैं? क्या आप जहाँ हैं वहाँ खुश नहीं हैं?

मैकगोवन: ओह हाँ। लेकिन मुझे इस बारे में बात करना बहुत पसंद है... कि मैं कितनी खुश हूँ।

प्रश्न: आपकी माताजी का नाम क्या था?

मैकगोवन: मैरी गाइचोन।

प्रश्न: आपका नाम क्या है?

मैकगोवन: गाइचोन।

प्रश्न: जी हाँ; आपने यही नाम इस्तेमाल किया था, लेकिन आप वास्तव में कौन हैं...?

मैकगोवन: एडवर्ड मैक...मैक...घोड़ों की देखभाल करो! (उत्साहित होकर, मेरे शांत करने पर) हाँ, मैं समझ गया...मैक...मैकगोवन! मुझे अब और भी याद आ रहा है, लेकिन मैं उतना ही बता सकता हूँ जितना मुझे पता है...यह एक दीवार की तरह है...मुझे एक अँधेरी रात याद है, मैं पागल हो गया था...एक तरफ युद्ध, लड़ाई, गोलियाँ...और फिर, भागना, पीछा करना, पीछा करना...

प्रश्न: आप किस रेजिमेंट में थे?

मैकगोवन: छह...दो...कभी-कभी घोड़ा...ओह, उस आग में...

प्रश्न: आपका कमांडिंग जनरल कौन था?

मैकगोवन: लेकिन—बटलर।

इसके बाद वह दो रेजिमेंटों में अपनी सेवा के बारे में बात करता है, जिनमें से एक छठी दक्षिण कैरोलिना रेजिमेंट थी, और वह एक पहाड़ी पर हुए संघर्ष का जिक्र करता है, जो नरक के समान था, क्योंकि चारों ओर डैम्यंकी लोग थे। वह कहता है कि यह घटना चैटनूगा में हुई थी।

* * *

प्रश्न: न्यूयॉर्क के फिफ्थ एवेन्यू पर स्थित वह घर... क्या आपको अपने मकान मालिक का नाम याद है?

मैकगोवन: एक महिला...एल्सी (या एल.सी.)...मोटी...

दरअसल, वह कहता है, एक आदमी किराया वसूलता था, जिसे चुकाने में उसे कभी-कभी दिक्कत होती थी। वह न्यूयॉर्क में पैट डफी नाम के एक आदमी को जानता था। वही आदमी उसकी मकान मालकिन के लिए काम करता था, किराया वसूलने के लिए उसके दरवाजे पर आता था।

अपने मकान मालिक के बारे में पूछताछ के दौरान, मैकगोवन अचानक अपने युद्ध के अनुभवों की ओर लौट जाता है। "एक ग्रिफिन था," वह कहता है, एक अधिकारी का जिक्र करते हुए जिसे वह जानता था।

25 अगस्त, 1953 का सत्र

अब हम उन्हें "कर्नल" कहकर पुकारते थे, और उनकी बातें बहुत स्पष्ट थीं। उन्होंने अपना असली नाम बताकर अपना परिचय दिया। न्यूयॉर्क की मकान मालकिन के बारे में दोबारा पूछे जाने पर, उन्होंने बताया कि वह विधवा थीं। फिर से, उन्होंने "ग्रिफ...ग्रिफ..." का जिक्र किया। जब उनसे पूछा गया कि वे किस स्कूल में पढ़े, तो उन्होंने कहा, "दक्षिण कैरोलिना के चार्ल्सटन में सेंट ऐनी कॉलेज और वर्जीनिया में विलियम एंड मैरी कॉलेज, बाद वाले में 1850, 51, 52, 53, 54 में।" उनका जन्मदिन क्या था? उन्होंने कहा, "10 फरवरी, 1830।" क्या उन्होंने युद्ध के दौरान कोई आधिकारिक पत्र लिखे थे? उन्होंने कहा, "मैंने जनरल रॉबर्ट ई. ली को लिखा था।" किस बारे में? कब? "जनवरी, 1864। अटलांटा... मुझे घोड़ों की ज़रूरत थी, घोड़ों की, और उन चीज़ों को चलाने के लिए पहियों की।" क्या आपको वे मिले? "नहीं।" उस

समय वे किस रेजिमेंट में थे? "दक्षिण कैरोलिना की छठी रेजिमेंट।" लेकिन क्या वे वेस्ट वर्जीनिया से नहीं थे? आश्चर्यचकित होकर, मैकगोवन ने कहा, "नहीं, दक्षिण कैरोलिना से।"

फिर मैंने न्यूयॉर्क में उनके परिवार के बारे में पूछताछ की।

मैकगोवन ने बताया कि उनकी मां उनके साथ वहीं रहती थीं और वहीं उनकी मृत्यु हुई, लेकिन उनकी मृत्यु के बाद उनकी भाभी गर्ट्रूड और भाई विलियम समेत "वे" चले गए। उन्होंने फिर से अनुरोध किया कि हम उनके बेटे ग्रेगरी को बताएं कि "उसके पिता ने आत्महत्या नहीं की थी।"

मैंने पूछा, "आपकी असली तस्वीर कहाँ है?" मैकगोवन ने जवाब दिया, "एक तस्वीर चार्ल्सटन, साउथ कैरोलिना के कोर्टहाउस में है।" किस तरह की तस्वीर?

"नक्काशीदार...नक्काशीदार...टिनटाइप!"

इन सभी मुलाकातों के दौरान यह स्पष्ट था कि मैकगोवन की याददाश्त तब सबसे अच्छी होती थी जब उनसे "चित्रों" या दृश्यों के बारे में पूछा जाता था, और सबसे खराब तब होती थी जब उनसे सटीक नाम या तारीखें पूछी जाती थीं। जब वे कोई आंकड़ा बताते थे तो उन्हें कभी भी यकीन नहीं होता था, लेकिन जब वे स्थितियों या रिश्तों के बारे में बात करते थे तो उन्हें अपने तथ्यों पर पूरा भरोसा होता था। इस प्रकार, उन्होंने अपने जन्मदिन की अलग-अलग तारीखें बताईं, जिससे यह स्पष्ट हो गया कि उन्हें जन्मदिन के बारे में ठीक से याद नहीं था, और उन्हें इस बात का भी एहसास नहीं था कि उन्होंने थोड़े समय के भीतर ही गलत जानकारी दे दी है।

लेकिन अगर किसी जीवित व्यक्ति को गहरा सदमा लगता है, तो क्या उसे अपने नाम या पते जैसी जानी-पहचानी बातें भी ठीक से याद नहीं रहतीं? फिर भी, सदमे से पीड़ित अधिकांश लोग अपने घर या अपने प्रियजनों का वर्णन कर सकते हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि तनाव की स्थिति में, मानवीय स्मृति, नामों और आंकड़ों जैसी तथ्यात्मक जानकारी की तुलना में, संदर्भों के मामले में अधिक विश्वसनीय होती है।

अब तक शोध पूरी रफ्तार से चल रहा था, और यह सौभाग्य की बात है कि मैकगोवन के असली नाम के खुलासे से पहले ही पर्याप्त प्राथमिक प्रमाण प्राप्त हो गए थे। इसलिए, कुछ सूचनाओं के लिए "मानसिक टेलीपैथी" को जिम्मेदार ठहराने वाला पुराना और कुछ हद तक

उबाऊ तर्क, यदि लागू भी हो, तो केवल कुछ ही बैठकों पर लागू होता है। कोई भी व्यक्ति किसी के मन में प्रवेश करने से पहले उसके मन की बातें नहीं पढ़ सकता!

बैठकें साप्ताहिक सत्रों में जारी रहीं, और कर्नल मैकगोवन तेजी से हमारे "स्टार" अतिथि बन गए।

1 सितंबर, 1953 का सत्र

प्रश्न: युद्ध समाप्त होने के समय आपका पद क्या था?

मैकगोवन: वह कागज़ पर था... सेवा के लिए बनाया गया था।

प्रश्न: क्या आप जनरल बने?

मैकगोवन: नहीं...सम्मान...मैं खोखले सम्मान स्वीकार करता हूँ...

प्रश्न: जब आप स्कूल जाते थे, तो आप क्या पढ़ते थे?

मैकगोवन: देश का कानून।

प्रश्न: मनसास में क्या हुआ था?

मैकगोवन: ओह...हार। हार।

प्रश्न: मनसास में आपके साथ व्यक्तिगत रूप से क्या हुआ?

मैकगोवन: आह, कट, कट। संगीनें। आह। खून, खून।

प्रश्न: मालवर्न हिल पर क्या हुआ था?

मैकगोवन: सफलता। हमने घर पर कब्ज़ा कर लिया। ईंटों से बनी एक छोटी सी इमारत। हम इंतज़ार करते रहे। वे आए और हमने खुद को तोप के ठीक मुँह में देखा। 1864। उन्होंने हमारे चारों ओर घर को जला दिया। लेकिन हम हिले नहीं।

प्रश्न: उस समय आपके अधीन क्या था?

मैकगोवन: दो डिवीजन।

प्रश्न: कितनी रेजिमेंट हैं?

मैकगोवन: चार...चालीस...(चार?) टीन!

प्रश्न: आपने क्या आदेश दिया?

मैकगोवन: मेरे कमांडर को गोली मार दी गई, मैं कमान संभालता हूँ। (किसकी जगह?) जॉन...मेजर...

प्रश्न: सुनिए, कर्नल जी, आपका नाम एडवर्ड नहीं है। क्या आपने कोई और पहला या मध्य नाम इस्तेमाल किया है? (चुपचाप) क्या दक्षिण कैरोलिना से कोई उच्च पदस्थ अधिकारी सेवा में रहा है? (मेरा भाई विलियम) कोई और? (पॉल)

मैकगोवन: क्या आपको चार्ल्स मैकगोवन याद हैं? उनका मुझसे कोई संबंध नहीं था। वे बंदरगाह पर रहते थे। वे... निर्यातक थे।

प्रश्न: क्या आप गेटिसबर्ग में थे, कर्नल? (हाँ।) उस समय आपके अधीन कौन-कौन सी रेजिमेंट थीं?

मैकगोवन: मुझे गेटिसबर्ग में चोट लगी थी। मैं बहुत दुविधा में था। (आपको चोट कहाँ लगी थी?) अटलांटा...पद में बदलाव। खोखले सम्मान। (अपने बेटे ग्रेगरी के बारे में) सीमोर...कई साल लोवेल, मैसाचुसेट्स में रहे, और फिर वह वापस दक्षिण की ओर चले गए, सीमोर, दक्षिण कैरोलिना, और कभी-कभी वेस्ट वर्जीनिया...वह एक दुकान में थे, उन्होंने दुकान छोड़ दी और फिर उन्हें संपत्ति मिली, माँ के पास भी संपत्ति थी, वेस्ट वर्जीनिया में चार्ल्सटन के पास...वहीं हैं, हाँ।

प्रश्न: आपने कहा कि आपके पिता फ्रेडरिक थे? (हाँ।) विलियम कौन थे? (मेरे भाई।) सैमुअल कौन थे? (लंबी चुप्पी, स्तब्ध, फिर: मैंने ही तो यह नाम लिखा था!) आपने हमें क्यों नहीं बताया? (रोते हुए: मैं बताना नहीं चाहती थी...) हमें अपना सही पद भी बताइए। (मुझे परवाह नहीं कि वह क्या था)। कृपया हमसे टालमटोल न करें। आपका पद क्या था? (ब्रिगेडियर...जनरल)। तो आप जनरल सैमुअल मैकगोवन हैं?

मैकगोवन: तुमने मुझे बहुत दुखी कर दिया... ऐसा नाम (रोते हुए)... खून, खोखले सम्मान...

प्रश्न: जेम्स जॉनसन कौन थे? (मेरे कमांडर।) उनके साथ क्या हुआ? (उन्होंने बताया कि उन्हें गोली लगी थी।) जॉनसन के बाद किसने कमान संभाली? (मैंने।) वह कौन सी रेजिमेंट थी?

मैकगोवन: मुझे आंकड़े नहीं पता... मुझे नहीं पता।

प्रश्न: न्यूयॉर्क में रहने वाले आपके रिश्तेदार का नाम क्या था?

मैकगोवन: पीटर पॉल।

प्रश्न: उनका पेशा क्या था?

मैकगोवन: एक डॉक्टर। (क्या कोई खास तरह का डॉक्टर?) चोटें। (किस तरह की?) (मैकगोवन चेहरे की ओर इशारा करते हैं।) (नाक का डॉक्टर?) (मैकगोवन मुंह की ओर इशारा करते हुए सिर हिलाते हैं।) (मुंह का डॉक्टर?) (मैकगोवन गुस्से से अपने दांत पकड़ते हैं और उन्हें हिलाते हैं।) (ओह, दांत? एक दंत चिकित्सक।) (मैकगोवन सहमति में सिर हिलाते हैं।)

प्रश्न: मैं कुछ रेजिमेंटों के नाम लूंगा, बताइए कि क्या इनमें से कोई आपके लिए कुछ मायने रखती है। 10 वीं... 34 वीं... 14 वीं... (मैकगोवन की प्रतिक्रिया?) 14 वीं? क्या यह आपके लिए कुछ मायने रखती है?

मैकगोवन: मुझे नहीं पता, इस तरफ आंकड़ों का कोई मतलब नहीं है...

शोध से सामने आए कुछ रोचक तथ्य

18 अगस्त की बैठक में, मैकगोवन ने बताया कि उनकी मकान मालकिन एक महिला थीं और उनका नाम "एल्सी" या एल.सी. था। न्यूयॉर्क शहर के अभिलेखों के हॉल में 226 फिफ्थ एवेन्यू की मालकिन का नाम "इसाबेला एस. क्लार्क" दर्ज है, जो 1853 से (कम से कम) 1 मार्च, 1871 तक मकान मालकिन थीं। उसी बैठक में, मैकगोवन ने बताया कि पैट डफी वह व्यक्ति था जो वास्तव में किराया वसूलने आता था और मकान मालकिन के लिए काम करता था। इस जानकारी के स्वेच्छा से संबंधित संस्था से प्राप्त होने के कई दिनों बाद, मुझे ट्रो की 1869/70 की न्यूयॉर्क निर्देशिका में यह जानकारी मिली:

आज का घर

पृष्ठ 195: “क्लार्क, इसाबेला, विधवा। कॉन्स्टेंटाइन एच. (घर) 45 चेरी।”

पृष्ठ 309: “डफी, पैट्रिक, मजदूर, 45 चेरी।”

यह बात केवल वही व्यक्ति जान सकता था जो वास्तव में 80 साल पहले इन लोगों को जानता था; इससे साबित हुआ कि हमारा भूत 1873 में वहां मौजूद था!

1 सितंबर को हुई बैठक भी फलदायी साबित हुई।

ट्रो की न्यूयॉर्क सिटी डायरेक्टरी 1870/71 में "पीटर मैकगोवन, दंत चिकित्सक, 253 डब्ल्यू. 13 स्ट्रीट" का उल्लेख मिलता है।

जे. एफ. जे. कैल्डवेल ने अपनी पुस्तक "हिस्ट्री ऑफ ए ब्रिगेड ऑफ साउथ कैरोलिनियंस नोन फर्स्ट एज ग्रेग्स, एंड सैटरडेसेवर्ड एज मैकगोवन्स ब्रिगेड" (फिलाडेल्फिया, 1866) में लिखा है:

पृष्ठ 10: “दक्षिण कैरोलिना स्वयंसेवकों की 14 वीं रेजिमेंट ने फील्ड अधिकारियों के लिए चयन किया... कर्नल जेम्स जोन्स, लेफ्टिनेंट कर्नल सैमुअल मैकगोवन...(1861)।”

पृष्ठ 12: “कर्नल सैमुअल मैकगोवन 14 वीं रेजिमेंट की कमान संभालते हैं।”

पृष्ठ 18: "मैकगोवन चिकाहोमिनी नदी से (ली के नेतृत्व में) आता है।"

पृष्ठ 24: "माल्वर्न हिल की लड़ाई में असाधारण वीरता।"

पृष्ठ 37: "...हमारी ब्रिगेड के 11 फील्ड अधिकारियों में से सात घायल हो गए थे: कर्नल मैकगोवन, आदि (मनासस की दूसरी लड़ाई में)।"

पृष्ठ 53: "14 वीं रेजिमेंट के कर्नल सैमुअल मैकगोवन (फ्रेडरिक्सबर्ग में)।"

पृष्ठ 60: "मैकगोवन के नेतृत्व में 13 वीं और 14 वीं रेजिमेंट...।"

पृष्ठ 61: "जनरल ग्रेग की मृत्यु 14 दिसंबर, 1862 को हुई। मैकगोवन ने कमान संभाली।"

पृष्ठ 66: "जीवनी: जन्म लॉरेन्स जिला, दक्षिण कैरोलिना, 1820। 1841 में दक्षिण कैरोलिना कॉलेज से कानून में स्नातक; मैक्सिकन युद्ध में भाग लिया, फिर एब्बेविले, दक्षिण कैरोलिना में वकील के रूप में बस गए। 20 जनवरी, 1863 को ब्रिगेडियर जनरल बने, अप्रैल 1861 में फोर्ट सुमटर पर कब्जा करने में सहायता की; लेकिन राज्य मिलिशिया में जनरल के रूप में अपना कमीशन समाप्त होने के कारण, वे कॉन्फेडरेट सेना में लेफ्टिनेंट कर्नल बने, जनरल बोनहम के नेतृत्व में बुल रन, मनासस मैदान में भाग लिया। फिर दक्षिण कैरोलिना के 14 वें रेजिमेंट के लेफ्टिनेंट कर्नल चुने गए; वसंत 1862 में, कर्नल जोन्स की मृत्यु के बाद पूर्ण कर्नल बने। मनासस की लड़ाई में मैकगोवन घायल हो गए।" जीवनीकार कैल्डवेल, जो लेफ्टिनेंट के रूप में मैकगोवन के सहायक थे, (1866 में) कहते हैं, "वे अभी भी जीवित हैं।"

पृष्ठ 79: "29 अप्रैल, 1863 को मैकगोवन ब्रिगेड को मार्च के लिए तैयार रहने का आदेश मिलता है। जनरल मैकगोवन ब्रिगेड की कमान संभालते हैं।"

पृष्ठ 80: "फिर से घायल (फ्रेडरिक्सबर्ग)।"

पृष्ठ 89: "जनरल ली मैकगोवन की ब्रिगेड सहित सैनिकों का निरीक्षण करते हैं। ब्रिगेड में अब प्रथम, 12 वीं, 13 वीं, 14 वीं रेजिमेंट और ऑर राइफल्स शामिल हैं। इन्हें 'मैकगोवन शार्पशूटर' के नाम से भी जाना जाता है।"

पृष्ठ 91: "मैकगोवन ने चांसलर्सविले की लड़ाई में भाग लिया।"

पृष्ठ 96: "गेटीसबर्ग की लड़ाई: मैकगोवन 13 वीं, 12 वीं, 14 वीं और पहली बटालियन की कमान संभालते हैं।"

पृष्ठ 110: "कुलपेपर कोर्टहाउस के पास मैकगोवन।"

पृष्ठ 122: “जनरल मैकगोवन फरवरी (1864) में हमारे पास लौट आए। चांसलर्सविले में लगी चोट से वे पूरी तरह से उबर नहीं पाए थे और ठीक से चल नहीं पा रहे थे, लेकिन वे हमारे साथ रहे और अपने पद के सभी कर्तव्यों का निर्वहन किया।”

पृष्ठ 125: बटलर के बारे में: "बटलर पूर्वी तट से (मैकगोवन के विरुद्ध) एक टुकड़ी का नेतृत्व करेंगे।" एक अन्य बटलर (कर्नल) ने कॉन्फेडरेट प्रथम रेजिमेंट की कमान संभाली थी (चिकमौगा की लड़ाई)।

पृष्ठ 126 वर्ग: "स्पॉटसिल्वेनिया की लड़ाई, मई 1864।"

पृष्ठ 133: “जनरल ली और जनरल हिल वहां मौजूद थे (हार के समय)।”

पृष्ठ 142: "मैकगोवन दाहिनी बांह में 'मिनी बॉल' लगने से घायल हो गए, मैदान छोड़ दिया।"

लेकिन अपनी बैठकों को जारी रखने के लिए, और मैकगोवन की व्यक्तिगत यादों के साथ—

8 सितंबर, 1953 का सत्र

मैकगोवन: (उनकी मृत्यु के बारे में फिर से बोलते हुए) यह चालीस के दशक की बात है... उन्होंने मुझे सबसे ऊपरी मंजिल पर मार डाला। वे मुझे घसीटकर ऊपर ले गए, उस 'अश्वेत व्यक्ति' वाल्टर को। वह एक विशालकाय आदमी था। वह एक नेक महिला थी, मैं आपको बता दूं, वह थी। लेकिन वे इस बात पर विश्वास नहीं करेंगे।

मैं अभिलेखों में मिले एक नाम पर उनकी प्रतिक्रिया जानना चाहता था, इसलिए मैंने पूछा, "क्या आप कभी किसी मैकविलियम्स से मिले हैं?"

मैकगोवन: तुम्हारे पास शैतान का ज्ञान है। उसका पारिवारिक नाम।

प्रश्न: क्या आप अपनी मृत्यु तक न्यूयॉर्क में ही रहे?

मैकगोवन: 1869, 1873. आना-जाना। मैंने ली, जैक्सन, जेम्स और ब्यूफोर्ट को लिखा है। 1862-63, मार्च।

प्रश्न: युद्ध समाप्त होने पर आपने क्या किया?

मैकगोवन: हमेशा भागदौड़ में, इधर-उधर भटकता रहता था। सारी संपत्ति नष्ट हो गई, बर्बाद हो गई। बागान जल गए। मैंने काम नहीं किया। मैं कर ही नहीं सकता था। तीन-चार साल

बहुत बुरे गुज़रे। मैंने काम छोड़ दिया। मेरी बुद्धि, मेरी बुद्धि। मेरे चाचा। चार्ल्सटन में घर जल गया था। कभी कोलंबिया में। (फिर, अपनी पत्नी मिग्नन के बारे में कहते हैं) उनकी मृत्यु 1892 में हुई... फ्रांकोइस गुइचोन... वे छोटे लड़कों के लिए बहुत अच्छे थे, वे चार्ल्सटन की खाड़ी में सैर कराते थे—हम नावों में सैर करते थे। वे मेरे चाचा थे।

15 सितंबर, 1953 का सत्र

मैंने पूछा, अपने यौवन काल में वह कैसा दिखता था?

मैकगोवन: मैं देखने में बुरा नहीं था, मेरी भौंहें बहुत अच्छी थीं, चेहरा लंबा था, और एक समय मैं मूंछें रखता था... ज्यादा लंबी नहीं, ठुड्डी के लिए... औपनिवेशिक शैली की... मुझे अपनी ठुड्डी काफी हद तक दिखना पसंद था, कभी-कभी मैं उन्हें ढक लेता था (मूंछों की ओर इशारा करते हुए)...

प्रश्न: आप हमें एबेविल स्थित कब्रिस्तान के बारे में क्या बता सकते हैं?

मैकगोवन: वहाँ एक स्मारक है, पारिवारिक कब्रिस्तान... किसी ने परवाह नहीं की... मेरे पिता का जन्म 5 जनवरी को हुआ था... (आपकी समाधि पर क्या लिखा था?) सैमुअल एडवर्ड मैकगोवन, जन्म... 32?... मृत्यु 1883? 1873? 1-8-7 पढ़ना मुश्किल है, बहुत गंदा है... उम्र 40... 41... भूरे-भूरे तारे... क्षतिग्रस्त... मैं झाड़ियों के बीच से जाता हूँ, मैं स्मारक को देखता हूँ, वह विकृत है...

प्रश्न: आपके परिवार ने आपकी मृत्यु की खबर क्या दी?

मैकगोवन: कुछ गड़बड़ हुई है। (शरीर का क्या हुआ?) मुझे लगता है कि दाह संस्कार किया गया होगा, शायद इसी शहर में। अवशेष नष्ट कर दिए गए: कब्र में नहीं, बल्कि एक स्मृति स्मारक के रूप में... (उन्होंने जनता को क्या बताया?) हमेशा के लिए खो गया... मैं समुद्र में हो सकता था... घर आग से नष्ट हो गया... (क्या आपका मतलब है कि आपकी मृत्यु का कोई आधिकारिक रिकॉर्ड नहीं है?) नहीं। मृत्यु के समान नहीं है, उन्होंने कभी भी सही महीना या दिन नहीं बताया... मैं समझ गया... 1879... बहुत धुंधला... 4 सितंबर...

प्रश्न: क्या आप कभी किसी बहस में घायल हुए हैं?

मैकगोवन: सिर पर चोट लगने की वजह से मुझे काफी समय तक बिस्तर पर लेटना पड़ा... (कोई झगड़ा?) हाँ। (किससे?) एक आदमी से। आमने-सामने की लड़ाई। तलवार... ग्लेन, ग्लेन... आर्डमोर।

22 सितंबर, 1953 का सत्र

“मदर” मैरी गुइचोन ने फ्रेंच में संक्षेप में बात की और उनके बाद मैकगोवन ने भी अपनी बात रखी। उन्होंने कहा कि वे एक समय कोलंबिया शहर में “एसोसिएट जस्टिस” थे।

मैं यहाँ एक बार फिर इस जाँच के इस भाग से संबंधित कुछ और शोध जानकारी प्रस्तुत करना चाहता हूँ। इवांस ने अपनी पुस्तक 'कॉन्फेडरेट मिलिट्री हिस्ट्री, 1899*' में जनरल की एक तस्वीर प्रकाशित की है, जो हमें 22 सितंबर की बैठक के बाद प्राप्त हुई। उनकी जीवनी के पृष्ठ 414 पर उल्लेख है कि "वे (राज्य) सर्वोच्च न्यायालय के एसोसिएट जस्टिस थे।" हैरानी की बात यह है कि लेखक ने यह भी कहा है कि मैकगोवन की मृत्यु "दिसंबर 1893" में हुई थी। उस समय के दो प्रमुख न्यूयॉर्क दैनिक समाचार पत्रों (पोस्ट और टाइम्स) की सावधानीपूर्वक जाँच करने पर पता चला कि 'कॉन्फेडरेट मिलिट्री हिस्ट्री' के लेखक से एक गलती हुई थी, हालाँकि यह एक समझ में आने वाली गलती थी। एक 80 वर्षीय कुख्यात व्यक्ति, नेड मैकगोवन, की मृत्यु 9 दिसंबर 1893 को सैन फ्रांसिस्को में हुई थी। यह व्यक्ति भी एक कॉन्फेडरेट नायक था। (द न्यूयॉर्क टाइम्स, XII/9)। हालांकि, उसी स्रोत (द न्यूयॉर्क टाइम्स, 13 अगस्त, 1897) के अनुसार जनरल मैकगोवन की मृत्यु 9 अगस्त, 1897 को हुई थी। मृत्युलेख में पहले उद्धृत जीवनी में उल्लिखित तथ्यों के अलावा एक रोचक अतिरिक्त विवरण भी शामिल है, कि मैकगोवन को द्वंद्वयुद्ध में खोपड़ी पर एक गहरा घाव लगा था।

एक अन्य विश्वसनीय स्रोत, द डिक्शनरी ऑफ अमेरिकन बायोग्राफी, हमारे विषय के बारे में कहता है: “मैकगोवन, सैमुअल। विलियम और जेनी मैकगोवन के पुत्र, विलियम एच. पार्कर के कानूनी साझेदार। 9 अगस्त, 1897 को एब्बेविले में निधन। एब्बेविले के लॉन्ग केन कब्रिस्तान में दफनाया गया। जन्म 9 अक्टूबर, 1819 को लॉरेन्स जिले के क्रॉसहिल सेक्शन, दक्षिण कैरोलिना में हुआ था। माता का नाम मैकविलियम्स था। एब्बेविले में पेरिन के कानूनी

साझेदार। दक्षिण कैरोलिना राज्य विधानसभा में प्रतिनिधि। कांग्रेस के लिए निर्वाचित, लेकिन पद ग्रहण नहीं कर सके।"

वरिना ब्राउन द्वारा अपने दिवंगत पति कर्नल ब्राउन के बारे में लिखित पुस्तक "ए कर्नल एट गेटिसबर्ग" में निम्नलिखित वर्णन है: "जेरिको मिल्स की लड़ाई में, फेडरल सेना के 'ग्रिफिन डिवीजन' ने मैकगोवन ब्रिगेड के खिलाफ भारी तबाही मचाई।"

एब्बेविल निवासी श्रीमती विलियम गेन्स के साथ 1 अक्टूबर, 1953 को हुए पत्राचार से पता चला कि—"वृद्ध जनरल मानसिक रूप से कमजोर हो रहे थे, लेकिन उनकी मृत्यु तक उनका इलाज चलता रहा। उनकी देखभाल उनके चचेरे भाई डॉ. एफ. ई. हैरिसन ने की थी।"

ब्रेंट और फुलर द्वारा लिखित "दक्षिण कैरोलिना के प्रख्यात और प्रतिनिधि पुरुष" (मैडिसन, विस्कॉन्सिन, 1892) इस चित्र को प्रस्तुत करता है:

सैमुअल मैकगोवन का जन्म 9 अक्टूबर, 1819 को साउथ कैरोलिना के लॉरेन्स काउंटी में स्कॉटिश-आयरिश माता-पिता के घर हुआ था। उन्होंने 1841 में साउथ कैरोलिना कॉलेज से विशिष्टता के साथ स्नातक की उपाधि प्राप्त की। उन्होंने एब्बेविले में टी.सी. पेरिन के साथ कानून की पढ़ाई की, जिन्होंने उन्हें साझेदारी का प्रस्ताव दिया। उन्होंने एक सिपाही के रूप में सेना में प्रवेश किया और पाल्मेटो रेजिमेंट के साथ मैक्सिको गए। उन्हें जनरल क्वार्टरमास्टर के स्टाफ में कैप्टन के पद पर नियुक्त किया गया। युद्ध के बाद वे एब्बेविले लौट आए और टी.सी. पेरिन के साथ वकालत का काम फिर से शुरू किया। उन्होंने जज डेविड लुईस वार्डलॉ की सबसे बड़ी बेटी सुसान कैरोलिन से शादी की और वे 1897 में जनरल मैकगोवन की मृत्यु के कुछ वर्षों बाद तक एब्बेविले में रहे। जनरल मैकगोवन का घर आज भी एब्बेविले में मौजूद है और कुछ समय पहले इसे बैपटिस्ट चर्च को 50,000 डॉलर में बेच दिया गया था। युद्ध के बाद उन्होंने एब्बेविले में विलियम एच. पार्कर (1869/1879) के साथ वकालत शुरू की। उन्होंने राजनीतिक मामलों में रुचि ली... सितंबर 1865 में कोलंबिया में आयोजित सम्मेलन के सदस्य थे। कांग्रेस के लिए निर्वाचित हुए लेकिन उन्हें अपना पद ग्रहण करने की अनुमति नहीं दी गई। दो साल बाद हुए दूसरे चुनाव में उन्हें बाहर कर दिया गया। 1878 में वे राज्य विधानमंडल के सदस्य थे और 1879 में वे राज्य सर्वोच्च न्यायालय के एसोसिएट जस्टिस चुने गए।

जनरल मैकगोवन ने एबेविल में एक लंबा और सम्मानजनक जीवन व्यतीत किया। वे ट्रिनिटी एपिस्कोपल चर्च के एक सक्रिय सदस्य थे और जीवन के बाद के वर्षों में इसके सदस्य बने। उनकी मृत्यु के समय, जनरल आर. आर. हेमफिल द्वारा संपादित एबेविल मीडियम में निम्नलिखित लेख प्रकाशित हुआ, जिन्होंने मैकगोवन की ब्रिगेड में सेवा की थी। जनरल सैमुअल मैकगोवन का निधन पिछले सोमवार, 8 अगस्त की सुबह 8:35 बजे इसी शहर स्थित उनके घर पर हुआ। दीर्घायु और सम्मानों से परिपूर्ण, उन्होंने अपने परिवार और मित्रों से घिरे हुए अंतिम सांस ली। वे कुछ समय से अस्वस्थ थे और असहनीय पीड़ा से पीड़ित थे, हालांकि उनकी अंतिम पीड़ा कुछ ही दिनों की थी और अंत में उन्हें शांति प्राप्त हुई। मंगलवार दोपहर चार बजे ट्रिनिटी चर्च में एक भव्य प्रार्थना सभा आयोजित की गई, जिसकी शुरुआत उनके निवास स्थान से हुई। चर्च में, डॉ. विलियम एम. ग्रियर और बिशप एलिसन कैपर्स ने जुलूस का नेतृत्व किया, जिन्होंने गंभीर प्रार्थना पढ़ी। ताबूत के ठीक पीछे, उनके द्वारा अच्छी तरह से सेवा किए गए एक अश्वेत व्यक्ति, वृद्ध डैडी विलिस मार्शल, लॉरेल की माला लिए हुए थे। जनरल मैकगोवन को लॉन्ग लेन कब्रिस्तान में दफनाया गया और उनकी कब्र पर एक सुंदर पत्थर का स्मारक बना हुआ है।

श्रीमती विलियम गेन्स आगे रिपोर्ट करती हैं:

जनरल मैकगोवन को अपशब्दों का प्रयोग करने की अच्छी आदत थी और वे दरबार में अक्सर इनका इस्तेमाल करते थे। एक बार उनका कर्नल जॉन कनिंघम के साथ द्वंद्वयुद्ध हुआ, जिसमें उनके एक कान के पीछे चोट लगी और वे लगभग बेहोश हो गए थे। कर्नल कनिंघम ने कर्नल पेरिन को चुनौती दी थी, जिन्होंने द्वंद्वयुद्ध को अनुचित बताते हुए चुनौती स्वीकार कर ली थी। जनरल मैकगोवन ने चुनौती स्वीकार की और ऑगस्टा के पास सैंड बार फेरी में द्वंद्वयुद्ध हुआ, जिसमें मैकगोवन घायल हो गए।

जहां तक मुझे पता है, श्रीमती मैकगोवन और बूढ़े जनरल के बीच कभी कोई मतभेद नहीं था। उनके ससुर, जज वार्डलॉ ने सारा रेबेका एलन से शादी की थी, और उनकी माता मैरी लूसिया गार्वे थीं।

दूसरे शब्दों में कहें तो, जज वार्डलॉ ने सारा गार्वे से शादी कर ली।

श्रीमती गेन्स आगे कहती हैं: “मैंने उन्हें अक्सर उनके लॉ ऑफिस जाते हुए देखा है, क्योंकि उन्हें हमारे ऑफिस के ठीक सामने से गुजरना पड़ता था। अगर वे कभी लंबे समय के लिए शहर से बाहर जाते थे, तो एब्बेविल को इसकी जानकारी नहीं होती थी।”

लॉन्ग केन कब्रिस्तान में सैमुअल मैकगोवन की समाधि पर निम्नलिखित शिलालेख अंकित है:

“सैमुएल मैकगोवन, जन्म लॉरेन्स काउंटी, 9 अक्टूबर 1819। निधन एब्बेविले, 9 अगस्त 1897। हे सिपाही, अपने गौरवशाली विश्राम की ओर बढ़ो, अपने विश्वास और सम्मान को वीरता के साथ धारण करो। बहादुर सबसे कोमल होते हैं, प्रेम करने वाले साहसी होते हैं।”

पृष्ठ 2: “साधारण जन्म से वे नागरिक और सैन्य जीवन में सर्वोच्च सम्मान तक पहुँचे। एक देशभक्त और जननेता। शांति के समय उनके देश ने उन्हें पुकारा, युद्ध के समय उन्होंने देश की पुकार का इंतजार नहीं किया। उनमें पुरुष का बल, स्त्री की कोमलता और बच्चे की सरलता थी, और प्रेम के नियम का पालन करते हुए उनका हृदय दानशील था। उन्होंने अपने जीवन के सभी दिनों में भलाई की, बुराई नहीं, और जीवन के अंत में उनका देश, उनके बच्चे और उनके बच्चों के बच्चे उठ खड़े हुए और उन्हें धन्य कहा। मैक्सिकन युद्ध 1846-1848 में, वे संयुक्त राज्य अमेरिका की सेना में कप्तान थे। कॉन्फेडरेट युद्ध 1861-1865 में, वे ब्रिगेडियर जनरल सी.एस.ए. थे। विधानमंडल के सदस्य 1848-1850 तक रहे। कांग्रेस के लिए 1866 में निर्वाचित हुए। दक्षिण कैरोलिना के सर्वोच्च न्यायालय के एसोसिएट जस्टिस 1878-1894 तक रहे। दो युद्धों में वीर। सात बार घायल हुए। बार में एक नेता, एक बुद्धिमान कानून निर्माता, एक न्यायप्रिय न्यायाधीश। वे अपने परिश्रम से विश्राम कर रहे हैं और उनके कर्म उनका पीछा करते हैं।

मैकगोवन साप्ताहिक बैठकों के नियमित सदस्य बन गए हैं।

जनरल मैकगोवन अब तक हमारी बैठकों में एक अधीर साप्ताहिक "अतिथि" बन चुके थे और उन्हें जाना बिल्कुल पसंद नहीं था। जब भी यह सुझाव दिया जाता कि समय कम बचा है, मैकगोवन अचानक बहुत अधिक बातूनी होकर अपना ठहराव बढ़ाने की कोशिश करते थे।

29 सितंबर, 1953 का सत्र

आठ नामों की एक तैयार सूची, जिनमें से एक को छोड़कर बाकी सभी काल्पनिक हैं (छठा नाम सुसान वार्डलॉ का है, जो मैकगोवन की पत्नी थीं), उन्हें कई बार पढ़कर सुनाई जाती है।

मैकगोवन दो काल्पनिक नामों पर प्रतिक्रिया देते हैं, लेकिन अपनी पत्नी के नाम पर नहीं। काल्पनिक नामों में से एक जॉन डी. सम्टर है, जिस पर मैकगोवन बुदबुदाते हुए कहते हैं, "कर्नल।" दरअसल, कॉन्फेडरेट सेना में कर्नल सम्टर नाम का एक व्यक्ति था!

मैकगोवन ने उस फार्म का भी विस्तार से वर्णन किया जहाँ उनका बेटा ग्रेगरी अब रहता है। गाइचोन नाम के बारे में पूछे जाने पर, उन्होंने बताया कि यह लुइसियाना से आया है; उनकी माँ की तरफ से मिग्नन का भी यही नाम था। उन्होंने अपने गृहनगर के अखबारों को "स्टार-प्रेस" बताया। ("स्टार-प्रेस, अखबार, तस्वीर, जज, कोलंबिया, अखबार में तस्वीर...")

प्रश्न: डॉ. हैरिसन कौन थे?

मैकगोवन: पारिवारिक डॉक्टर।

प्रश्न: क्या एब्बेविल में आपका घर अभी भी मौजूद है?

मैकगोवन: यह अब वैसा नहीं रहा जैसा पहले था। अजीबोगरीब तस्वीरें और चीजें। (क्या कोई इसमें रहता है?) नहीं। अजीबोगरीब चीजें, बंदूकें और तोपें।

14 अक्टूबर, 1953 का सत्र

मैकगोवन कहते हैं कि उनकी दो बेटियाँ थीं। अपनी समाधि पर लिखे शिलालेख को दोबारा पढ़ने की कोशिश करते हुए वे कहते हैं, "1887, या 97?" अपने जन्म वर्ष के बारे में वे पढ़ते हैं, "1821...31?"

20 अक्टूबर, 1953 का सत्र

जब नियंत्रक मैकगोवन का परिचय कराता है, तो माध्यम द्वारा पहने गए धातु के हार के कारण कुछ क्षणों के लिए तीव्र घबराहट और भय का माहौल छा जाता है। जब मैकगोवन को आश्वस्त किया जाता है कि अब उसके गले में कोई "रस्सी" नहीं है, तो वह शांत हो जाता है और अपने प्रतिगामी व्यवहार के लिए क्षमा मांगता है।

प्रश्न: पिछली बार आपने जिस सुसान का जिक्र किया था, वह कौन थी?

मैकगोवन: मेरे बच्चों की माँ।

प्रश्न: उसका दूसरा नाम क्या था?

मैकगोवन: कॉर्नेलिया।

प्रश्न: क्या आप कांग्रेस के लिए निर्वाचित हुए थे?

मैकगोवन: किस तरह की कांग्रेस? (अमेरिकी कांग्रेस।) मैं हार गया। ये कैसा धंधा है, हर कोई हड़पता है, हर कोई चोरी करता है... कोई न कोई हमेशा वोट खरीद लेता है और ये सब बहुत गड़बड़ है।

प्रश्न: क्या मिग्नॉन और सुसान एक ही व्यक्ति हैं या नहीं?

मैकगोवन: मैं कोई प्रतिबद्धता नहीं जताना चाहता। (मैं दृढ़ता से कहता हूँ।) वे नहीं हैं!

प्रश्न: चलिए सुसान के बारे में बात करते हैं। आपके ससुर का पेशा क्या था?

मैकगोवन: कानून के क्षेत्र में एक बड़ा आदमी...

प्रश्न: आपकी सास का पहला नाम क्या था?

मैकगोवन: सारा।

प्रश्न: क्या उसका कोई दूसरा नाम भी था?

मैकगोवन: गार्फे...

प्रश्न: कॉफी? इसकी स्पेलिंग बताइए।

मैकगोवन: कॉफी नहीं। गार्वे!

28 अक्टूबर, 1953 को श्रीमती मेयर्स के घर पर हुई एक बैठक में, मैकगोवन के कथित पोते, बिली ने स्वयं को इस प्रकार प्रकट किया:
“मेरा नाम विलियम है, मेरा निधन 1949 में चार्ल्सटन में हुआ था। मैं जनरल मैकगोवन का पोता हूँ। मेरा जन्म 2 जनवरी, 1894 को एब्बेविल में हुआ था। ग्रेगरी मेरा सौतेला भाई है, उस फ्रांसीसी कुतिया का बेटा। वह (मैकगोवन) उससे शादी करना चाहता था, लेकिन उसका एक बॉस, दादा, था, जिसके हाथ में सारे पैसे थे। सुसान के पिता डच मूल के थे, जिद्दी स्वभाव के।”

29 अक्टूबर, 1953 का सत्र

मैकगोवन: आपको ग्रेगरी को ढूंढना होगा। वह अपने पिता के बारे में जानकर शायद हैरान हो, लेकिन मुझे उसे बताना होगा कि मैं उसके लिए क्या चाहता था, और उन्होंने सब कुछ छीन लिया... सब कुछ। और उन्होंने उसे कुछ नहीं दिया। कुछ भी नहीं! मैंने दूसरी योजनाएँ बनाई थीं। (क्या कोई वसीयत थी?) थी... लेकिन मेरे परिवार में एक न्यायाधीश था जिसने दूसरी योजनाएँ बनाईं... वे मेरी नहीं थीं! आपको ग्रेगरी को बताना होगा कि मैंने व्यवस्था की थी... मैं आपको केवल सच बता रहा हूँ क्योंकि मैं एक ईमानदार आदमी था... मैंने अपने परिवार के लिए, अपने लोगों के लिए, जिन्हें मैं अपने देशवासी मानता था, उनके लिए, जिन्हें आप अब आने वाली पीढ़ियाँ कहते हैं, सबसे अच्छा किया... मैं अपने पापों का फल भुगत रहा हूँ... आपके लिए शायद इसका कोई मतलब न हो, मेरे लिए, जो मुझे याद करते हैं, उन पर दया करो... वे अब सच्चाई से अवगत हैं, केवल मेरा बेटा ही सच्चाई से अनजान है। महोदय, आप मेरे सबसे अच्छे दोस्त हैं। और मैं आपके लिए नरक में भी जा सकता हूँ। मैं आपको हमेशा सच बताता हूँ, महोदय, लेकिन कुछ बातें ऐसी हैं जिनका आपसे या किसी और से कोई लेना-देना नहीं है। लेकिन मैं आपको उन नामों के बारे में अभी बताऊंगा!

प्रश्न: मैं एक बार फिर मैकगोवन के ससुर का नाम जानना चाहता हूँ।

मैकगोवन: विडा...वाइडर।

“भूत” मुक्त हो गया

“बचाव चक्र” के कार्यों में से एक यह सुनिश्चित करना है कि व्यथित व्यक्ति अपने दुख के स्थान पर वापस न लौटे। यह मिशन यहाँ पूरा किया गया।

3 नवंबर, 1953 का सत्र

मैकगोवन: मुझे वो घर याद आ रहा है जहाँ मैं रहता था, जहाँ आपने मुझे पाया था। मैं अब भी वहाँ जाता हूँ, पर अब मुझे कोई परेशानी नहीं होती। मुझे मेरी माँ और मेरे पिता मिल गए। वे मुझे छू भी नहीं सकते थे, पर अब हम हाथ मिलाते हैं। मैं अपने जीवन को फिर से जी रहा हूँ, कई बातों को याद कर रहा हूँ। हरमन! वो एक नेक इंसान था, उसने अटलांटा में मेरी मदद की थी। उसने मेरे पैर धोए थे, मेरे पैर जल गए थे, और वो मेरे प्रति बहुत दयालु था, और वो

अब यहाँ है। मैं उसका शुक्रिया अदा करता हूँ। मैंने तब भी उसका शुक्रिया अदा किया था, पर मैं खुद को बड़ा समझता था, और वो कुछ भी नहीं था, पर अब मुझे लगता है कि वो एक नेक इंसान है, उसने मेरे जूते पॉलिश किए, मेरी वर्दी ठीक की।

6 नवंबर, 1953 का सत्र

मैं श्रीमती मेयर्स के घर पर उनके साथ अकेली थी, जब मुझे मैकगोवन से उनकी कथित हत्या और उससे संबंधित "चुप्पी की साजिश" के बारे में पूछताछ करने का मौका मिला।

मैकगोवन: जज ने उन्हें बचाया, मेरी मौत की सूचना नहीं दी। उन्होंने अपहरण की साजिश रची थी। मेरी हत्या नीचे हुई, अपहरणकर्ता वाल्टर ने गला घोंटकर मार डाला। वह मिग्नन को बोस्टन तक ले गया। मैंने (युद्ध के दौरान) डैम्यैंकी की वर्दी पहनी थी, हर रात घोड़े पर सवार होकर बोस्टन जाता था... नहीं, मुझसे गलती हो गई। मैं न्यूयॉर्क में अपने चाचा पीटर पॉल के पास आया, मेरे पास मैरी गाइचोन का एक पत्र था, वह न्यूयॉर्क में थी। उसने मुझसे मिग्नन और ग्रेगरी को ढूंढने की गुहार लगाई। मैं न्यूयॉर्क आया। मैं उसे नहीं ढूंढ पाया, वह तब बोस्टन में थी, लेकिन मुझे यह बाद में पता चला। मैरी गाइचोन मेरे चाचा के साथ ही रही, और मैंने खोज छोड़ दी, और एक चोर की तरह रेंगते हुए कॉन्फेडरेट क्षेत्र में वापस आ गया। यह 1863 की बात है। युद्ध के बाद, संघर्ष हुआ, संपत्ति बेकार हो गई, आखिरकार यूनियन ने हमें अपनी संपत्ति वापस लेने की अनुमति दी, और इसके साथ ही मैं न्यूयॉर्क आ गया। मेरे माता-पिता भी आ गए, जब तक कि उनके लौटने के लिए पर्याप्त पुनर्वास नहीं हो गया।

मैं अपनी पत्नी सुसान और बच्चों के साथ रहता रहा और मुझे मिग्नन मिल गई। वह भाग निकली थी और न्यूयॉर्क में अपनी माँ के पास आ गई थी। मैंने उनके लिए अपने चाचा के घर में रहने का इंतजाम किया और जब मेरी पत्नी अपने पिता (जज) के पास रहने के लिए लौटी, तो मिग्नन मेरे साथ थी, लेकिन वह गर्भवती थी और उसे इस बात का पता नहीं था, और एक अश्वेत बच्चा था—हमारे बीच अनबन थी, मुझे नहीं पता था कि वह मेरा बच्चा था या मिग्नन अश्वेत थी, लेकिन ऐसा नहीं था, वह उसका (वाल्टर का) बच्चा था, और वह उस बच्चे और मिग्नन के लिए आया, उसने मिग्नन का पीछा करते हुए मेरे घर (फिफ्थ एवेन्यू पर) तक पहुँच गया; मेरे ससुर (जज) मुखबिर थे, और उन्होंने (वाल्टर ने) मेरा गला घोंट दिया, वह एक बड़ा आदमी था।

और जब मैं मरा नहीं था, तब उसने मुझे घसीटते हुए सीढ़ियों से ऊपर ले गया। मिन्नन वहाँ मौजूद नहीं थी, वह दोषी नहीं थी। मुझे लगता है... यह जनवरी 1874 की बात है। लेकिन समय के बारे में मेरी जानकारी गलत भी हो सकती है। ग्रेगरी के दो बेटे थे, विलियम और एडवर्ड। विलियम की 1918 में इंग्लिश चैनल में एक नाव दुर्घटना में मृत्यु हो गई। ग्रेगरी ने फोगार्टी नाम का इस्तेमाल किया, मैकगोवन का नहीं। लोग कहते हैं कि वह छोटा काला लड़का मर गया। उसके लिए यही अच्छा हुआ।

इसके बाद मैकगोवन शांतिपूर्वक चले गए और उन्होंने वादा किया कि वे अपनी बताई तारीख और आधिकारिक रूप से दर्ज तारीख के बीच के अंतर के बारे में और जानकारी देंगे। मैंने उन्हें बताया कि यह अंतर "लगभग बीस साल" का था। पहली बार मैकगोवन ने अपनी कहानी तर्कसंगत ढंग से बताई थी, हालांकि इसके कुछ विवरणों की पुष्टि करना मुश्किल होगा। उस समय के अखबारों में इस मामले से मिलती-जुलती कोई हत्या या आत्महत्या की खबर नहीं छपी थी। लेकिन ज़ाहिर है, इस तरह के अपराध की योजना बनाने वाला कोई भी व्यक्ति इसे जनता की नज़रों से दूर रखने में सफल हो सकता था। हमने अपनी बैठकें जारी रखने का फैसला किया।

10 नवंबर, 1953 का सत्र

मैकगोवन ने उस द्वंद्वयुद्ध के बारे में बताया जिसमें उनके सिर के बाईं ओर, पीठ और ऊपरी हिस्से पर घाव हो गया था और उनके सारे बाल झड़ गए थे। यह द्वंद्वयुद्ध एक महिला के लिए और कर्नल सी. नाम के एक व्यक्ति के खिलाफ था, जिसका नाम कुछ-कुछ "कॉलिन्स" जैसा था, लेकिन थोड़ा लंबा था। उन्होंने कहा कि पेरी या पेरिन ने इस तरह डटकर मुकाबला किया मानो किसी को इस पर शक हो!

और भी सबूत सामने आए!

निजी विषयों से हटकर, पूछताछ अब न्यूयॉर्क के बारे में आम लोगों की दिलचस्पी के विषयों की ओर बढ़ी, उस समय जब मैकगोवन यहाँ रह रहे थे। इस तरह की पूछताछ का फायदा यह है कि शोध के लिहाज़ से इसका कोई विशेष महत्व नहीं है; और चूंकि 17 नवंबर की बैठकों के बाद ही कोई शोध शुरू किया गया था, इसलिए मानसिक टेलीपैथी को एक वैकल्पिक स्पष्टीकरण के रूप में खारिज किया जा सकता है!

17 नवंबर, 1953 का सत्र

मैकगोवन: तुम्हारी दाढ़ी नहीं है। मेरे ज़माने में तो दाढ़ीविहीन लड़कों को डरपोक कहते थे!

प्रश्न: जो व्यक्ति अच्छे कपड़े पहनता था और महिलाओं को पसंद करता था, उसे क्या कहते थे?

मैकगोवन: एक ब्यू ब्रुमेल।

प्रश्न: उस सज्जन को क्या कहते थे जो बहुत ही शानदार और दिखावटी ढंग से कपड़े पहनता था?

मैकगोवन: एक दिखावटी व्यक्ति।

प्रश्न: आपका पसंदीदा खेल कौन सा था?

मैकगोवन: बिलियर्ड्स (वह बताते हैं कि वह इसमें अच्छे थे, और गेंदें कपड़े की बनी होती थीं।)

प्रश्न: आज आपको कौन सा खेल सबसे ज्यादा पसंद आया?

मैकगोवन: उन्होंने क्रिकेट जैसा खेल खेला...

प्रश्न: न्यूयॉर्क के मेयर कौन थे?

मैकगोवन: ओह...ग्रेस। ग्रेस...एडमंड...ग्रेस...कुछ ऐसा ही।

विलियम आर. ग्रेस 1881-1882 तक न्यूयॉर्क के मेयर थे, और उनके बाद फ्रैंकलिन एडसन (एडमंड नहीं) 1883-1884 तक मेयर रहे। साथ ही, आज हम जिस तरह की प्लास्टिक की बिलियर्ड गेंदों को जानते हैं, वे अपेक्षाकृत हाल ही की खोज हैं, और विक्टोरियन युग में बिलियर्ड गेंदें वास्तव में कपड़े की बनी होती थीं। क्रिकेट जैसा खेल बेसबॉल ही होगा। ब्यू ब्रुमेल, फॉप, मिल्कसॉप ये सभी प्रामाणिक विक्टोरियन मुहावरे हैं।

26 नवंबर, 1953 का सत्र

मैंने जनरल से उनके समय में न्यूयॉर्क में चलने वाली ट्रेनों के बारे में पूछा।

मैकगोवन: वे चिमनियां थीं, आसमान में धुआं उगलती थीं, धुआं आंखों में घुस जाता था, वे सिटी हॉल के पास ग्लोब बिल्डिंग तक जाती थीं। ग्लोब बिल्डिंग ब्रॉडवे और नासाऊ के पास थी। ट्रेन हार्लेम तक जाती थी। वह एक अच्छा इलाका था। मैंने पार्क में कई बार सैर की।

प्रश्न: होटल वाल्डोर्फ-एस्टोरिया कहाँ स्थित था?

मैकगोवन: फिफ्थ एवेन्यू और 33 वीं स्ट्रीट के पास, मेरे घर के पास...और होटल प्रिंस जॉर्ज। रेस्टोरेंट पुराने दक्षिणी स्टाइल के थे, होटल ब्रेवोर्ट। मेरा दिमाग खराब कर रहे हो, तुम तो जेल के उस बॉस, मिस्टर टैमनी और मिस्टर ट्वीड से भी बदतर हो। (मैंने उनके घर के बारे में बात की, और उन्होंने बताया कि वे किसी के साथ व्यापार करते थे—) कोस्टी नाम के किसी व्यक्ति के साथ...मैं पूरे घर के लिए हर महीने 128.50 डॉलर देता था। एक सूट की कीमत 100 डॉलर थी।

प्रश्न: आपके पड़ोस में कौन रहता था?

मैकगोवन: हरमन...गाड़ी बनाने का काम करता था। उसका एक व्यवसाय था जिसमें वह गाड़ियाँ बनाता था। वह बगल में ही रहता था, लेकिन उसकी दुकान वहाँ नहीं थी, बल्कि थर्ड एवेन्यू, थर्ड स्ट्रीट पर नदी के पास थी।

प्रश्न: क्या आपके कोई अन्य पड़ोसी हैं?

मैकगोवन: कॉरिगन ब्राउन, एक वकील... तीन घर छोड़कर रहते थे। ग्लोब अखबार के संपादक व्हाइट... स्टोन... व्हाइट... थे। ग्लोब के संपादक की जेल में बंद आदमी से अच्छी दोस्ती नहीं थी। जब वह फिफ्थ एवेन्यू पर रहते थे, तब उनका घर तोड़ दिया गया था। वह पड़ोसी थे। हरमन गाड़ी बनाने वाला अच्छी गाड़ियाँ बनाता था। मैंने झालरों वाली और दो सीटों वाली एक गाड़ी खरीदी थी, एक कैब्रियो...

प्रश्न: क्या आपके यहाँ सफाईकर्मी था?

मैकगोवन: टेड नाम का एक अश्वेत लड़का था, ज़्यादातर नौकर अश्वेत थे। हमारे पास पैट्रिक नाम का एक श्वेत माली था। वह किराया वसूलता था और चेरी स्ट्रीट पर ओल्ड क्रो के साथ रहता था। हरमन बगल वाले घर में रहता था। उसकी लंबी मूंछें और चौकोर दाढ़ी थी। वह

फ्रॉक कोट, हीरे की टाई पिन और चश्मा पहनता था। मैंने उसे कभी हरमन नहीं कहा... (उसका असली नाम याद करने की कोशिश करते हुए)...ग्रे...मैंने उसे कभी हरमन नहीं कहा। उसकी पत्नी का नाम बर्डी था। उसकी पत्नी की एक बहन थी जिसका नाम फिनी था और वह भी वहीं रहती थी...श्रीमती फिनी...वह दो बच्चों वाली एक युवा विधवा थी...वह मेरी सुसान की अच्छी दोस्त थी।

इसके बाद मैकगोवन अनिच्छापूर्वक अनुरोध के अनुसार अपने नाम पर हस्ताक्षर कर देते हैं।

* * *

बैठक के बाद किए गए शोध में भी मानसिक टेलीपैथी की संभावना को खारिज कर दिया गया। तथ्य इस प्रकार के थे कि अभिलेखों में उनके मिलने की संभावना नहीं थी, जब तक कि कोई विशेष रूप से उनकी खोज न कर रहा हो!

न्यूयॉर्क ग्लोब की इमारत, जिसे मैकगोवन "ब्रॉडवे और नासाऊ के पास" याद करते हैं, तब (1873) 7 स्क्वायर स्ट्रीट पर थी और जाहिर तौर पर 162 नासाऊ स्ट्रीट पर भी थी।* ग्लोब स्प्रूस पर है, और ग्लोब और इवनिंग प्रेस नासाऊ पर, कोने के आसपास स्थित हैं।

मैकगोवन ने उस भाप से चलने वाली एलिवेटेड रेलगाड़ी का वर्णन किया है जो सिटी हॉल से हार्लेम तक जाती थी। न्यूयॉर्क हिस्टोरिकल सोसाइटी के अनुसार, भाप से चलने वाली रेलगाड़ियों का संचालन 1867 में शुरू हुआ और 1906 तक चला। उनकी व्याख्या के अनुसार दो लाइनें थीं: "हार्लेम, पार्क रो से...ई. 86 वीं स्ट्रीट तक" और "थर्ड एवेन्यू, एन स्ट्रीट से पार्क रो होते हुए...हार्लेम ब्रिज तक।" मैकगोवन ने अपने समय में हार्लेम को एक सुंदर इलाका बताया था, जो बिल्कुल सही था।

मैकगोवन ने तुरंत स्वीकार किया कि वह वाल्डोर्फ-एस्टोरिया गए थे, और उन्होंने फिफ्थ एवेन्यू और 33 वीं स्ट्रीट पर स्थित उसकी सही स्थिति बताई। वाल्डोर्फ-एस्टोरिया 14 मार्च, 1893 को अस्तित्व में आया था। इसलिए, मैकगोवन उस समय जीवित थे, और स्पष्ट रूप से मानसिक रूप से स्वस्थ थे, तभी वे वाल्डोर्फ, ब्रेवोर्ट और अन्य स्थानों पर जा सकते थे।

मैकगोवन ने एक (बाद के) मकान मालिक का नाम कोस्टी बताया है। 1895 में, जॉर्ज और जॉन कोस्टर नाम की एक रियल एस्टेट फर्म 173 फिफ्थ एवेन्यू में स्थित थी, जो मैकगोवन के घर से कुछ ही दूरी पर थी।

हरमन नामक गाड़ी बनाने वाले कारीगर की बात करें, जिसे कुछ समय बाद हरमन ग्रे के नाम से जाना जाने लगा, तो विलियम एच. ग्रे नाम का एक गाड़ी बनाने वाला कारीगर 1872 या उससे पहले से मौजूद था, और सदी के अंत तक भी सक्रिय रहा। उसकी दुकान पहले 20 वूस्टर स्ट्रीट पर थी, और वह कम से कम 1882 तक 258 वेस्ट फोर्थ स्ट्रीट पर रहता था। 1895 में उसका पता 275 वेस्ट 94 वीं स्ट्रीट दर्ज है। बीच के सभी ट्रॉय वॉल्यूम उपलब्ध नहीं हैं, इसलिए मैकगोवन के पड़ोस में उसके निवास की पुष्टि या खंडन नहीं किया जा सकता। एक समय ग्रे की दुकानें वेस्ट ब्रॉडवे पर थीं। पड़ोसी वकील कोरिगन ब्राउन की बात करें, तो मैकगोवन द्वारा नामों के गलत उच्चारण ने मुझे लगभग भ्रमित कर दिया था। ऐसा कोई वकील था ही नहीं। हालांकि, एडमंड कोंगर ब्राउन नाम का एक वकील था, जिसका नाम पहली बार 1886 में दर्ज किया गया था, और उससे पहले वह केवल एक क्लर्क था। दुर्भाग्यवश, उनके अंतिम वर्षों के लिए कोई घर सूचीबद्ध नहीं है। मैकगोवन ने कहा कि ग्लोब के संपादक का नाम व्हाइट-एंड-समथिंग था, और वह फिफ्थ एवेन्यू पर उनके (मैकगोवन के) घर के पास रहते थे।

खैर, होरेस पी. व्हिटनी, संपादक, व्यवसाय, पता 128 फुल्टन स्ट्रीट, घर 287 फिफ्थ एवेन्यू, का नाम ट्रो* में दर्ज है। और 128 फुल्टन स्ट्रीट ग्लोब के प्रतिद्वंद्वी, न्यूयॉर्क मर्करी का पता है, जिसे कॉल्डवेल और व्हिटनी द्वारा प्रकाशित किया जाता था।

* * *

उपरोक्त जानकारी से यह सिद्ध होता है कि मैकगोवन की मृत्यु 1873 में नहीं हुई थी, यह मुझे निश्चित लगता है। लेकिन अगर उनकी मृत्यु 1873 में नहीं हुई थी, तो उस समय उनके साथ

कुछ बहुत ही भयानक घटना घटी होगी। या शायद हत्या, यदि वह हत्या थी, तो 1897 में हुई हो?

यह पूरी तरह संभव है कि जनरल मैकगोवन इस परम रहस्य को अपने साथ उस महान भूमि में ले जाएंगे जहां वे अब हमेशा के लिए सुरक्षित रूप से निवास करते हैं।

* 5

मारे गए फाइनेंसर का मामला

मुझे वो रात याद है जब हम उस घर को देखने गए थे जहाँ फाइनेंसर सर्ज रुबिनस्टीन की हत्या हुई थी। उनकी मृत्यु के एक साल बाद की बात थी, लेकिन समूह में केवल मुझे ही बरसी की सही तारीख पता थी। मेरे असमय बिछड़ गए मित्र जॉन लैटोच और मैंने श्रीमती मेयर्स को उनके वेस्टसाइड स्थित घर से लिया और टैक्सी से फिफ्थ एवेन्यू और 60 वीं स्ट्रीट तक गए। एहतियात के तौर पर, ताकि हम जिस पते पर जा रहे थे उसका खुलासा न हो, हमने रुबिनस्टीन के घर से दो ब्लॉक दक्षिण में टैक्सी छोड़ दी।

हमारे दिमाग पूरी तरह से खाली थे, और बातचीत संगीत के बारे में थी। लेकिन हम अपने माध्यम को धोखा नहीं दे सके। "पियानोवादक यहाँ क्या कर रहे हैं?" उसने पूछा। कौन सा पियानोवादक, मैंने पलटकर पूछा। "रुबिनस्टीन," उसने कहा। क्योंकि हमारे माध्यम, जो एक पेशेवर गायन शिक्षिका थीं, के लिए यह नाम केवल महान पियानोवादक का ही प्रतीक हो सकता था। इससे पता चलता था कि हमारा माध्यम, एक तरह से, पूरी तरह से उस रहस्यमय वातावरण के "कंपन" या विद्युत आवेशित माहौल में प्रवेश कर रहा था।

लैटोश और मैंने हैरानी से एक-दूसरे को देखा। श्रीमती मेयर्स हमारी अचानक उत्तेजना से चकित थीं। बिना देर किए, हमने पत्थर के बने उस आलीशान घर की घंटी बजाई, इस उम्मीद में कि दरवाजा जल्दी खुल जाएगा ताकि हम उन जिज्ञासु लोगों से बच सकें जो उस घर के आसपास मंडरा रहे थे, जहां ठीक एक साल पहले उसी समय एक बेहद चर्चित हत्या हुई थी।

अब लगभग आधी रात हो चुकी थी, और मेरा इरादा दिवंगत आत्मा से संपर्क करने का था। उनकी मृत्यु के तरीके से मुझे लगा कि सर्ज रुबिनस्टीन शायद अभी भी अपने घर के आसपास ही हों, और मैंने उनकी मां से संपर्क करने की अनुमति ले ली थी।

दरवाजे पर खड़े कुछ सेकंड घंटों जैसे लग रहे थे, क्योंकि श्रीमती मेयर्स मुझसे आज रात के "मामले" के बारे में सवाल कर रही थीं। मैंने उनसे धैर्य रखने को कहा, लेकिन जब बटलर आया और आखिरकार भारी गेट खोला, तो श्रीमती मेयर्स को अचानक एहसास हुआ कि हम कहाँ हैं। "तो फिर यह पियानोवादक नहीं है!" वह कुछ स्तब्ध होकर बुदबुदाईं। "यह दूसरा रुबिनस्टीन है!" इन शब्दों के साथ हम उस भयावह दिखने वाली इमारत में दाखिल हुए, जहाँ एक भयानक और अशुभ तनाव भरी शाम हमारा इंतजार कर रही थी।

यह हत्या आज भी आधिकारिक तौर पर अनसुलझी है, और दुनिया के लिए उतनी ही रहस्यमय बनी हुई है जितनी 1955 की उस ठंडी सर्दियों की रात को थी, जब अखबारों की सुर्खियों में "बदमाश" फाइनेंसर सर्ज रुबिनस्टीन की असमय मौत की खबर छाई हुई थी। उस रात, व्यापारिक सम्मेलनों और एक खूबसूरत महिला के साथ शहर में रात बिताने के बाद, रुबिनस्टीन के घर कुछ अनपेक्षित मेहमान आए। यहां तक कि जिला अटॉर्नी भी उनके नाम निश्चित रूप से नहीं बता सके, लेकिन कई संदिग्ध थे, और जांच में संभावनाओं की कमी कभी नहीं हुई।

जाहिर तौर पर सर्ज का एस्टेल गार्डनर से झगड़ा हो गया था और उसने सोचा कि शाम अभी बाकी है, इसलिए उसने कलाकारों में बदलाव करके इसे जारी रखने का फैसला किया। एक अन्य महिला, पैट व्रे ने बाद में गवाही दी कि एस्टेल के जाने के बाद रुबिनस्टीन ने उसे फोन करके अपने साथ शामिल होने के लिए कहा था, लेकिन उसने इनकार कर दिया था।

अगली सुबह, नौकर विलियम मोर्टर ने रुबिनस्टीन को तीसरी मंजिल के उनके शयनकक्ष में मृत पाया। उन्होंने पायजामा पहना हुआ था, और स्पष्ट रूप से उन्हें किसी प्रकार की यातना दी गई थी—क्योंकि उनके हाथ-पैर बंधे हुए थे, और उनका मुंह और गला चिपकने वाली टेप से बुरी तरह ढका हुआ था। चिकित्सा परीक्षक ने निर्ममता से मृत्यु का कारण गला घोंटना बताया।

पुलिस के सामने एक बेहद जटिल पहेली खड़ी हो गई। कई लोग रुबिनस्टीन को मारना चाहते थे, कई लोगों ने सार्वजनिक रूप से अनजाने में ऐसा कहा भी था—लेकिन असल में किसने ऐसा किया? उस फाइनेंसर की प्रतिष्ठा बहुत अच्छी नहीं थी, हालांकि यह कहना गलत नहीं होगा कि उसने कई अन्य लोगों से न तो कम और न ही ज्यादा कुछ किया था; लेकिन उसकी

चालाकियाँ न तो शालीन थीं और न ही शांत, और परिणामस्वरूप, प्रचार और खुलासे की चकाचौंध ने एक ऐसे राक्षस की छवि बना दी जो वास्तव में नेपोलियन जैसे दिखने वाले पेरिस के उस नौजवान से मेल नहीं खाती थी।

रुबिनस्टीन एक अधिकार जताने वाला और ईर्ष्यालु व्यक्ति था। उसने पैट व्रे के अपार्टमेंट में एक छोटा माइक्रोफ़ोन लगाया था, जिसकी आवाज़ इमारत के बाहर खड़ी एक कार में छिपे टेप रिकॉर्डर में जाती थी। इस तरह रुबिनस्टीन उसके हर शब्द पर नज़र रख पाता था!

स्पष्ट है कि उनके लेन-देन वैश्विक स्तर पर थे, और उनकी निजी फाइलों में लगभग 2,000 नाम थे।

हमारे प्रेतात्माओं से संपर्क करने के सत्र से एक सप्ताह पहले समाचार पत्रों में हमेशा की तरह सनसनीखेज खबरें छपी थीं, लेकिन उनमें से किसी में भी कोई नई या निश्चित जानकारी नहीं थी। श्रीमती मेयर्स को इस मामले की उतनी ही सटीक जानकारी थी जितनी किसी आम अखबार पढ़ने वाले को होती है।

* * *

हमारा स्वागत सर्ज की 79 वर्षीय मां, स्टेला रुबिनस्टीन; उनकी बहन, यूजेनिया फॉरेस्टर; रुबिनस्टीन परिवार के वकील, एनिस; एक महिला सचिव; वाल्टर नाम के एक गार्ड और एक श्वेत रूसी अखबार के संवाददाता, जैक ज़्वीबैक ने किया। नीचे दूसरी मंजिल पर, जहां उस आलीशान हवेली का पुस्तकालय स्थित था, कुछ देर शिष्टाचारवश बातचीत करने के बाद, मैंने अपराध स्थल पर चलने का सुझाव दिया।

हम सब उठ खड़े हुए, तभी श्रीमती मेयर्स अचानक रुक गईं। उन्होंने कहा, "मुझे लग रहा है किसी ने मेरी बांह पकड़ रखी है।"

हम बिना किसी और घटना के ऊपर चले गए।

मृत वित्तपोषक का शयनकक्ष घर के पिछले हिस्से में स्थित एक मध्यम आकार का कमरा था, जो एक बड़े स्नानघर के माध्यम से सामने के बैठक कक्ष से जुड़ा हुआ था। हम कमरे के बीचोंबीच स्थित बिस्तर के चारों ओर घेरा बनाकर बैठ गए। रोशनी कम थी, लेकिन कमरा

बिल्कुल भी अंधेरा नहीं था। श्रीमती मेयर्स ने बिस्तर के पास वाली कुर्सी पर बैठने की ज़िद की और कहा कि उन्हें "वहाँ बैठने का निर्देश दिया गया था।"

धीरे-धीरे उसका शरीर शिथिल हो गया, उसकी आँखें बंद हो गईं, और कमरे की खामोशी में समाधि की अवस्था में प्रवेश करने वाली भारी, लयबद्ध साँसें सुनाई देने लगीं, जो आने वाली घटनाओं के भय और आशंका से बुरी तरह तनावपूर्ण थी।

कई बार, माध्यम ने अपना हाथ अपने चेहरे के सामने रख लिया, मानो हमलों को रोक रही हो; घुटन के लक्षणों ने उसके चेहरे को विकृत कर दिया और ऐसा प्रतीत हुआ जैसे हमारी आँखों के सामने ही कोई संघर्ष चल रहा हो!

कुछ ही मिनटों में यह सब समाप्त हो गया, और माध्यम के होठों से एक नई, अजीब सी आवाज़ निकली। "मैं बोल सकता हूँ... उधर, वे आ रहे हैं!" हाथ ने बाथरूम की ओर इशारा किया।

मैंने पूछा कि वे कौन थे।

“वे मेरे दोस्त नहीं हैं...जो, स्टेन...सस्ती लड़की...दरवाजे पर, वे—” हाथ गले पर चला गया, जिससे घुटन का संकेत मिला।

फिर अचानक, माध्यम के प्रभारी व्यक्ति ने कहा: “उस महिला को छोड़ देना चाहिए। वहाँ सीरियल नंबरों वाला एक कैलेंडर था... बॉक्स नंबर थे, लेकिन वे उसे प्राप्त नहीं कर सकते! फ्रेडी भी यहाँ था!”

“डिब्बे में क्या था?”

“चौदह पत्र। जनता के लिए कुछ भी नहीं।”

मुझे और जानकारी दीजिए।

“बेबी-फेस...मैं ज्यादा बात नहीं करना चाहता...वे सारा इल्जाम जो पर लगा देंगे।”

“वहाँ कितने लोग थे?”

“जो, स्टेन और फ्रेडी... चमचे। उसके मालिकों के चमचे! लंदन... मुझे जाने दो, मुझे जाने दो... मैं यहाँ बहुत बेचैन हूँ... यहाँ नहीं... मैं फिर आऊँगी।”

अचानक झटके से वह माध्यम अपनी समाधि से जाग उठी। कमरा ठंडा होने के बावजूद उसके माथे पर पसीना आ रहा था। कमरे में मौजूद लोगों में से किसी ने भी एक शब्द नहीं कहा। श्रीमती मेयर्स पीछे झुक गईं और कुछ देर सोचने लगीं।

“मुझे यहाँ एक छोटा, गठीला आदमी दिखाई दे रहा है, विकृत मानसिकता वाले लोग, और पूरे कमरे में लड़ाई चल रही है। वह बाथरूम के दरवाजे से चौंक गया है। वे बगल वाले कमरे में छिपे हुए थे, इस खिड़की और आग से बचने वाली सीढ़ी से अंदर आए।”

हम वापस पुस्तकालय में उतरे, जहाँ हम सब पहले एकत्रित हुए थे। बातचीत शांतिपूर्वक चलती रही, तभी अचानक श्रीमती मेयर्स फिर से तेजी से समाधि की अवस्था में चली गईं।

“तीन आदमी, एक दुबला-पतला और लंबा, एक छोटा और गठीला, और एक लंबा और तगड़ा —छोटा वाला मुखिया है। फिर है बेबी-फेस... उसका चेहरा मोना लिसा जैसा है। स्टैन सुरक्षित है। मेरे पास उनके बारे में सारी जानकारी थी... माँ सही कह रही है, गर्मी बढ़ती जा रही है...।”

“हमें नाम बताओ!” मैंने लगभग चिल्लाकर कहा। हम सब तनाव में थे।

माध्यम को एक अपरिचित ध्वनि से परेशानी हुई। “कापोइच...?” फिर उसने कहा, “यहाँ लड़की... भावहीन चेहरा।”

लेकिन उसका नाम क्या है?

“हा हा...तानाशाह।”

जब श्रीमती मेयर्स समाधि से बाहर आईं, तो मैंने रुबिनस्टीन की माँ से उस प्रेतात्माओं से संपर्क करने के बारे में पूछा। उन्होंने तुरंत सहमति जताई कि आवाज़ वास्तव में उनके दिवंगत बेटे की आवाज़ जैसी ही थी। इसके अलावा, एक लड़की थी - जिसका नाम जाँच में आया था - जिसका चेहरा मासूम था। वह कभी कोई भावना नहीं दिखाती थी, और वास्तव में हर समय भावहीन रहती थी। उसका नाम क्या था?

"मेरा बेटा अक्सर उसे अपनी तानाशाह कहता था," मां ने कहा, जो स्पष्ट रूप से सदमे में थी।

“बाकी नामों के बारे में क्या?”

“मेरा बेटा अक्सर किराए की लिमोसिन का इस्तेमाल करता था। ड्राइवर हट्टा-कट्टा आदमी था, और उसका नाम जो या जॉय था। स्टैन? मैंने व्यापारिक बातचीत में यह नाम कई बार सुना है।” जांच में शामिल लोगों में से एक का नाम कुबिश्शेक था। क्या मृतक ने उस नाम का उच्चारण करने की कोशिश की थी?

कुछ मिनट पहले ही श्रीमती मेयर्स को सर्ज का बटुआ सौंपा गया था ताकि वे मृतक से संपर्क बनाए रख सकें। अचानक, बिना किसी चेतावनी के, बटुआ उनके हाथों से छूटकर पुस्तकालय की ऊंची छत से ज़ोर से टकराया।

श्रीमती मेयर्स की आवाज फिर से अजीब सी लग रही थी, जैसे दिवंगत फाइनेंसर गुस्से में उनके माध्यम से बोल रहे हों। "क्या आप जानती हैं कि किसी आदमी को धोखा देने में कितना खर्च आता है?"

किसी ने जवाब देने की जहमत नहीं उठाई। हम सभी के लिए एक शाम काफी हो चुकी थी!

हम सब अलग-अलग दिशाओं में चले गए, और मैंने पुलिस को सेन्स की प्रतिलिपि भेज दी, ऐसा मैंने हर सेन्स के बाद भी किया है। श्रीमती मेयर्स और मैं ही अकेले नहीं थे जिन्हें समाधि की अवस्था में हुई बातों की जानकारी थी। पुलिस को भी पता था, और अगर उन्होंने किसी को गिरफ्तार नहीं किया, तो यह उनका निजी मामला था।

हमें पूरा यकीन था कि हमारे प्रेतात्माओं से संपर्क करने के अनुष्ठान ने किसी का ध्यान आकर्षित नहीं किया था, और श्रीमती रुबिनस्टीन स्वयं और उनके लोग निश्चित रूप से हत्या की बरसी पर फिफ्थ एवेन्यू हवेली में हो रही असामान्य घटनाओं के बारे में किसी को नहीं बताएंगे।

लेकिन 1 फरवरी को, चॉली निकरबॉकर ने शीर्षक दिया—“सर्ज की माँ ने आत्माओं को बुलाने का अनुष्ठान किया”!

अपने विवरण में पूरी तरह सटीक न होते हुए भी—उनका स्रोत एक गार्ड निकला—श्री कैसिनी ने फिर भी सीधे मुद्दे पर आते हुए कहा: “वहाँ मौजूद सभी लोगों के आश्चर्य के बीच, माध्यम ने कम से कम चार लोगों के नाम लिए। अगर इससे हत्यारों को डर नहीं लगता, तो हमें तो ज़रूर लगता है।”

हमें लगा कि हमने इस रहस्यमय हत्या को सुलझाने में अपना योगदान दे दिया है, और हम उस शाम के रोमांच को भूलने के लिए पूरी तरह तैयार थे। दुर्भाग्य से, रुबिनस्टीन का भूत हमें यहीं चैन से नहीं बैठने दिया।

वेस्ट 70 वीं स्ट्रीट स्थित मेरे घर पर आयोजित एक नियमित प्रेतात्मा अनुष्ठान के दौरान, उन्होंने प्रेतात्मा का रूप धारण कर लिया और अपने कथनों को विस्तार से बताया। उन्होंने लंदन और पेरिस में अपने कार्यालयों, अपने कर्मचारियों और अपने शत्रुओं के बारे में बात की। रुबिनस्टीन ने दावा किया कि उनके वकीलों में से एक को उससे कहीं अधिक जानकारी थी जितना वह प्रकट करने की हिम्मत करता था!

मैंने श्रीमती रुबिनस्टीन को फोन किया और फिफ्थ एवेन्यू स्थित घर में एक और, कम भीड़ वाली बैठक का आयोजन किया। इस बार हम चारों ही उपस्थित थे, दो बुजुर्ग महिलाएं, श्रीमती मेयर्स और मैं। रुबिनस्टीन की आवाज को उनकी मां ने फिर से पहचान लिया।

“ठीक 2:45 बजे थे। 2:45!” उन्होंने अपनी मृत्यु के समय के बारे में बताते हुए कहा। “पिताजी ने मेरा हाथ पकड़ा, ज्यादा दर्द नहीं हुआ। मैं यहाँ मौजूद उस नन्ही परी को बताना चाहता हूँ कि मैं हमेशा एक बेटे की तरह उनकी बात नहीं सुनता—वह हमेशा मुझसे कहती थीं, ‘तुम हद से ज्यादा आगे बढ़ जाते हो, जोखिम मत लो!’”

फिर उसकी आवाज गुस्से से तीखी हो गई। “न्याय जरूर होगा। मैंने इसकी कीमत चुका दी है।”

मैंने पूछा, जिस जोई का जिक्र उन्होंने पहली बार किया था, वह क्या काम करता था?

“लिमोसिन गाड़ियाँ। उन्हें आने का तरीका पता था। वे उन्हें यहाँ लाए, उन्हें आमंत्रित नहीं किया गया था।”

फिर उसने ह्यूस्टन, टेक्सास के बारे में कुछ कहा और जोर देकर कहा कि उस शहर का एक आदमी इसमें शामिल है। उसे पूरा यकीन था कि "वह लड़की" आखिरकार सच बताएगी और मामले को सुलझा देगी।

मेरे घर पर कई अन्य बैठकें भी हुईं, जहाँ स्वर्गीय सर्ज ने अपनी उपस्थिति दर्ज कराई। धीरे-धीरे, उनकी घृणा और प्रतिशोध की प्यास उनकी असामयिक मृत्यु की शांत स्वीकृति में तब्दील हो गई। वह हमें "पोकर फेस" की हर हरकत की जानकारी देते रहते थे—जब भी

"लड़की" हिलती, सर्ज हमें बताने के लिए मौजूद होते थे। कभी-कभी उनकी भाषा कठोर होती थी, कभी-कभी वह अपनी भावनाओं को दबा लेते थे।

“वे मोना लिसा को ढूंढ निकालेंगे,” उन्होंने 30 मार्च, 1956 को मुझे आश्वस्त किया। मैंने ईमानदारी से हमारी séances के रिकॉर्ड पुलिस को सौंप दिए। उन्होंने हमेशा उन्हें स्वीकार किया, लेकिन एक मानसिक शोधकर्ता जैसे इतने अजीब स्रोत से मिली इस मदद के बारे में बात करने के लिए उत्सुक नहीं थे!

रुबिनस्टीन लंदन में क्राउन स्ट्रीट स्थित मुख्यालय के बारे में लगातार बात करते रहे, लेकिन हम कभी भी उस पते का पता नहीं लगा पाए। एक बार तो उन्होंने लगभग ज़िद ही कर दी कि वे अपने माध्यम को अपने साथ सड़क पर ले जाकर अपने हत्यारों को ढूँढ़ेंगे! उस बेचैन व्यक्ति को शांत करने के लिए मुझे काफी मशक्कत करनी पड़ी, क्योंकि मैं श्रीमती मेयर्स को चिमनी के पास रखी उस बड़ी आरामदायक कुर्सी की सुरक्षा छोड़कर बाहर नहीं जाने देना चाहती थी, जिस पर वे आमतौर पर हमारी séances में बैठती थीं।

उन्होंने 13 अप्रैल को टिप्पणी की, "स्टैन अब इस तरफ है।"

मैं कभी यह समझ नहीं पाया कि स्टैन उसका दोस्त था या दुश्मन, या शायद अलग-अलग समय पर दोनों ही था। फिफ्थ एवेन्यू हवेली में हमारे पहले प्रेतवादन के कुछ ही समय बाद फाइनेंसर स्टेनली की मृत्यु हो गई।

तिजोरियों का जिक्र किया गया था और उनके नंबर भी दिए गए थे, लेकिन किसी तरह श्रीमती रुबिनस्टीन उन्हें कभी ढूंढ नहीं पाईं।

26 अप्रैल को हमने मेरे घर पर एक और बैठक की। इस बार मारे गए फाइनेंसर की आत्मा विशेष रूप से बेचैन थी।

वोरोव्स्की,” उसने बुदबुदाते हुए कहा, “पीली टैक्सी वाला, उसे घर से भागने में मदद करने के लिए अच्छी खासी रकम दी गई थी। डग ने उसे पैसे दिए थे, वह चार्ली का दोस्त है। माँ से कहो कि एक निजी जासूस को काम पर रख लें।”

मैंने उसे शांत करने की कोशिश की। वह मुझ पर भड़क उठा। "तुम किससे बात कर रहे हो? पोप से?"

अगले दिन, मैंने इन नामों की पुष्टि उनकी माँ से की। श्रीमती रुबिनस्टीन ने मुझे यह भी बताया कि "आप मुझे क्या समझते हैं—पोप?" यह वाक्य उनके जीवन के सबसे पसंदीदा वाक्यों में से एक था!

"टेक्सास की तरफ नाक घुमाकर देखो, तुम्हें लंदन और पेरिस जाने वाली लंबी कतारें मिलेंगी," उन्होंने 10 मई को हमें सलाह दी।

इसी बीच, श्रीमती रुबिनस्टीन ने हत्यारे को पकड़ने के लिए इनाम की राशि बढ़ाकर 50,000 डॉलर कर दी। फिर भी, किसी को गिरफ्तार नहीं किया गया, और जिन लोगों से पुलिस ने पहले पूछताछ की थी, उन सभी को छोड़ दिया गया। हैरानी की बात यह थी कि संपत्ति अनुमान से कहीं कम थी। क्या बहुत सारा पैसा अभी भी छिपा हुआ था, शायद किसी अज्ञात तिजोरी में? हम कभी नहीं जान पाएंगे। रुबिनस्टीन की मां भी अब इस दुनिया से विदा हो चुकी हैं।

इस मामले से मेरा आखिरी संपर्क नवंबर 1961 में हुआ था, जब स्तंभकार हाय गार्डनर ने मुझे अपने टेलीविजन कार्यक्रम में आमंत्रित किया था। हमने रुबिनस्टीन के प्रेतात्माओं से संपर्क करने के अनुष्ठानों के बारे में बात की, और उन्होंने एक बार फिर वह रहस्यमय फिल्म दिखाई जिसे उन्होंने "एक संग्रहणीय वस्तु" कहा था - रुबिनस्टीन का एकमात्र मौजूदा टेलीविजन साक्षात्कार, जो 1955 में उनकी मृत्यु से कुछ समय पहले लिया गया था।

जिज्ञासु पत्रकार के सवालों को अंततः धूर्त रुबिनस्टीन ने अधीरता से टाल दिया—"अरे, यह तो किसी से उसकी अपनी मृत्यु के बारे में पूछने जैसा है!" क्या ऐसा हो सकता है कि सर्ज रुबिनस्टीन, अपनी अन्य सभी "प्रतिभाओं" के अलावा, भविष्यवाणी करने की क्षमता भी रखते थे?

* 6

रॉकलैंड काउंटी का भूत*

नवंबर 1951 में लेखक ने पहली बार न्यूयॉर्क स्थित उस घर के भूतिया होने के बारे में सुना, जो जाने-माने पत्रकार डेंटन वॉकर का था।

मैनहट्टन के एक रेस्तरां में खाने की मेज पर, रॉकलैंड काउंटी के घर में घटित हो रही अजीबोगरीब घटनाओं पर पहली बार मुझसे चर्चा हुई, हालांकि हमारी मुलाकात से पहले के दस वर्षों में इन घटनाओं को देखा जा चुका था। ये घटनाएं इस हद तक बढ़ गई थीं कि श्री वॉकर को अपना घर भूत के हवाले करने और अपनी संपत्ति के दूसरे छोर पर एक स्टूडियो बनाने के लिए मजबूर होना पड़ा, जहां वे बिना किसी बाधा के रह सके।

श्रीमती गैरेट, जो एक माध्यम थीं, से मुलाकात का जल्द ही इंतजाम किया गया, लेकिन उनकी अस्वस्थता के कारण इसे स्थगित करना पड़ा। अपनी बीमारी के बावजूद, श्रीमती गैरेट ने एक प्रकार की "यात्राशील दूरदर्शिता" के माध्यम से उस सत्ता का दिव्य आभास प्राप्त किया। उसका नाम "एंड्रियास" था, और उन्होंने महसूस किया कि वह घर के वर्तमान मालिक से काफी जुड़ा हुआ है। श्रीमती गैरेट ने ये निष्कर्ष श्री वॉकर को बताए, लेकिन 1952 की शरद ऋतु तक इस मामले में आगे कोई कार्रवाई नहीं की गई। अंततः 22 नवंबर, 1952 को एक "बचाव चक्र" अभियान आयोजित किया गया, और इस तरह मामले का सफलतापूर्वक समापन हुआ, जिससे विक्षिप्त आत्मा को शांति मिली और श्री वॉकर बिना किसी और डर के मुख्य घर लौट सके।

घर में देखी गई विचित्र घटनाओं पर ध्यान देने से पहले, इस घर का थोड़ा वर्णन करना आवश्यक होगा, क्योंकि इमारत की प्रकृति का ही इन घटनाओं से बहुत कुछ संबंध है।

श्री वॉकर का घर औपनिवेशिक वास्तुकला का एक उत्कृष्ट उदाहरण है, जो अठारहवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में ग्रामीण क्षेत्रों में निर्मित इमारतों की श्रेणी में आता है। हालांकि वॉकर को केवल 1813 में जारी संपत्ति के पहले दस्तावेज़ का ही पता था, जिसमें क्रांति-पूर्व काल के ग्रामीण क्षेत्र के अब्राम्स परिवार का नाम दर्ज था, लेकिन घर निस्संदेह इससे कहीं अधिक पुराना है।

जब श्री वॉकर ने 1942 की वसंत ऋतु में यह घर खरीदा था, तब यह आसपास के रामपो पहाड़ों में स्थित कुछ घरों की तरह ही दयनीय हालत में था। नए मालिक को घर को उसके पुराने स्वरूप में पुनर्निर्मित करने और उस समय के फर्नीचर, पीतल के बर्तनों और अन्य सामानों से इसे सुसज्जित करने में कई साल और बहुत सारा पैसा खर्च करना पड़ा। मैं इस बात का उल्लेख इसलिए कर रहा हूँ क्योंकि अपनी वर्तमान स्थिति में यह घर पूरी तरह से

रहने योग्य और प्रामाणिक औपनिवेशिक इमारत है, जो अठारहवीं शताब्दी के अंत में रहने वाले किसी व्यक्ति के लिए आज इसमें कदम रखने पर एक परिचित और सुखद दृश्य प्रस्तुत करती।

यह मकान एक पहाड़ी पर बना है जो कभी एक खेत का हिस्सा हुआ करती थी। स्वतंत्रता संग्राम के दौरान, यह स्थान औपनिवेशिक सेना का मुख्यालय था। दरअसल, "मैड" एंथोनी वेन का मुख्यालय भी इसी स्थान के पास स्थित था, और स्टोनी प्वाइंट की लड़ाई (1779) कुछ मील दूर ही लड़ी गई थी। संभवतः, श्री वॉकर द्वारा पुनर्स्थापित यह इमारत उस समय एक किलेबंद ढाबे के रूप में उपयोग में थी, जिसका उपयोग हथियारों, गोला-बारूद और खाद्य सामग्री के भंडारण के साथ-साथ कैदियों के अस्थायी आवास के लिए भी किया जाता था।

पिछली शताब्दी के आरंभिक भाग में जब यह घर अब्राम्स परिवार के हाथों से निकल गया, तो डिक्सन नामक एक बैंकर ने खेत और पहाड़ी का जीर्णोद्धार किया, लेकिन घर पर उन्होंने नगण्य ध्यान दिया। धीरे-धीरे, घर समय और मौसम की मार झेलते हुए जर्जर हो गया। शताब्दी के अंत के आसपास कई पर्वतीय निवासियों ने इसे अपना निवास स्थान बनाया, लेकिन इसकी दयनीय स्थिति को सुधारने के लिए उन्होंने कुछ नहीं किया। जब श्री वॉकर ने इसका कार्यभार संभाला, तो केवल रसोईघर और उससे लगा एक छोटा कमरा ही उपयोग में था; बाकी घर बेकार पड़े फर्नीचर और अन्य वस्तुओं से भरा हुआ था। ऊपरी मंजिल तीन छोटे कमरों और एक छोटी अटारी में विभाजित थी, जिसमें टोपियाँ, घेरेदार स्कर्ट और लगभग गृहयुद्ध काल के लकड़ी के जूतों के सांचे और खिलौने रखे हुए थे।

घर के पुनर्निर्माण के दौरान, श्री वॉकर को रातें पास के एक सराय में बितानी पड़ती थीं, लेकिन वे अक्सर दिन में ऊपर की मंजिल पर बने सेना के पलंग पर झपकी लेते थे। इन मौकों पर उन्हें स्पष्ट रूप से ऐसा आभास होता था कि कमरे में "एक क्रांतिकारी सैनिक" मौजूद है।

सन् 1942 की वसंत ऋतु में श्री वॉकर के आने से गाँव में आम तौर पर होने वाली गपशप शुरू हो गई, जिनमें से कुछ बातें बाद में उनके कानों तक भी पहुँचीं। ऐसा लगता था कि घर में भूत-प्रेत का साया है। उस घर में रह चुकी एक महिला ने बताया कि एक "बूढ़ा आदमी" बच्चों को डराता था, सामने के दरवाजे पर रहस्यमयी दस्तकें होती थीं और कुछ अन्य रहस्यमयी

घटनाएँ घटित होती थीं। लेकिन इनमें से किसी भी बात की पुष्टि नहीं हो सकी। व्यावहारिक रूप से, हम कह सकते हैं कि ये घटनाएँ श्री वॉकर के आने के साथ ही शुरू हुईं।

हालांकि श्री वॉकर ने कार्यभार संभालने के समय से ही उस स्थान के वातावरण के प्रति गहरी संवेदनशीलता दिखाई, लेकिन 1944 तक इन घटनाओं का प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष प्रभाव देखने और सुनने को नहीं मिला। उसी वर्ष, एक दोपहर जब वे नीचे के मुख्य कमरे में आराम कर रहे थे, तभी उन्हें मुख्य द्वार पर ज़ोरदार दस्तक से नींद से जागना पड़ा, जिस पर लोहे का भारी दरवाज़ा खटखटाने वाला यंत्र लगा था। जब कोई मेहमान आने की उम्मीद नहीं थी, तब इस तरह के व्यवधान से चिढ़कर उन्होंने "अंदर आ जाओ!" कहा, फिर वे मुख्य द्वार पर गए और वहाँ किसी को नहीं पाया।

इसी समय के आसपास, मिस्टर वॉकर के बटलर जॉनी ने अपने मालिक से कहा कि घर रहने के लिए अच्छी जगह है, "अगर वे आपको अकेला छोड़ दें।" पूछताछ से पता चला कि जॉनी, जो उस रात घर में अकेला था, रात में तीन बार नीचे गया था ताकि सामने के दरवाजे पर दस्तक का जवाब दे सके। पिएत्रो नाम के एक इतालवी कारीगर, जिसने घर में कुछ मरम्मत का काम किया था, ने बताया कि दोपहर के समय किसी के भारी जूतों के साथ सीढ़ियों पर चढ़ने की आवाज़ सुनाई दी, जबकि उस समय घर में कोई और नहीं था। मालिक के दो मेहमान भी, जो कभी-कभार आते थे, बैठक कक्ष में पढ़ते समय ऊपर से भारी कदमों की आवाज़ से परेशान हुए।

1950 में श्री वॉकर और उनकी सचिव रसोई में खाना खा रहे थे, जो मुख्य द्वार के काफी करीब थी। तभी दरवाजे पर ज़ोर से दस्तक हुई। सचिव ने दरवाजा खोला तो वहाँ कोई नहीं था। 1952 की गर्मियों में, जब नीचे मेहमान थे लेकिन ऊपर कोई नहीं था, तो ऊपर से ज़ोर-ज़ोर से धमाकों की आवाज़ें सुनाई दीं, मानो कोई बुरी तरह गिर गया हो।

हालांकि श्री वॉकर, उनके बटलर और उनके मेहमानों ने कभी कोई भूतिया आकृति नहीं देखी या उन्हें देखने का भ्रम भी नहीं हुआ, लेकिन ये घटनाएं केवल सुनाई देने वाली घटनाओं तक ही सीमित नहीं थीं। पीतल के बर्तनों में समय-समय पर अजीबोगरीब निशान दिखाई देते थे। घर के मुख्य दरवाजे के एक शीशे में दरार आ गई थी, लेकिन वह कई वर्षों तक मजबूती से

अपनी जगह पर टिका रहा। एक दिन वह गायब हो गया और न तो हॉल में मिला और न ही बरामदे में। एक हफ्ते बाद, चार फुट लंबा वह शीशा रसोई के फर्श से आठ फुट ऊपर एक रेलिंग पर पड़ा हुआ मिला। वह वहां कैसे पहुंचा, यह आज भी उतना ही रहस्य है जितना उस समय था।

एक बार जब जॉनी बेडरूम की सीढ़ियाँ साफ़ कर रहा था, तो सीढ़ियों के ऊपर कम से कम दो साल से टंगी एक तस्वीर नीचे गिर गई और बाल-बाल उसे लग गई। एक महिला मेहमान, जिसने रात लिविंग रूम में सोफे पर बिताई थी, अगली सुबह बिस्तर लगाते समय बिस्तर के पीछे टंगी किताबों की अलमारी से गिरे एक भारी पीतल के जग से बाल-बाल बच गई (जैसे मानो उस पर फेंका गया हो)। इन घटनाओं का कारण बताने के लिए घर में कोई असामान्य कंपन नहीं था।

रसोई की सफेद दीवार पर गहरे अर्धवृत्ताकार काले निशान हैं, जहाँ चाबियाँ रखने के लिए इस्तेमाल होने वाले पीतल के नमक के डिब्बे को ज़ोर से इधर-उधर पटका गया था। एक बड़ा पीतल का जग, जो घर में बिल्कुल सही हालत में आया था, अब उस पर पाँच गहरे निशान हैं, चार एक तरफ और एक दूसरी तरफ। असामान्य रूप से बड़े हाथों वाले एक वेस्ट पॉइंटर कुत्ते ने अपनी चार उंगलियाँ और अंगूठा उन निशानों में डाल दिए!

अन्य घटनाओं में श्री वॉकर और उनके संवेदनशील मेहमानों द्वारा समय-समय पर महसूस की जाने वाली कंपकंपी शामिल थी। ये कंपकंपी, जिसे हवा के झोंकों से भ्रमित नहीं किया जाना चाहिए, श्री वॉकर को घर के सभी हिस्सों में तब भी महसूस होती थी जब वे अकेले होते थे। यह अचानक लकवाग्रस्त ठंड के रूप में सामने आती थी, जो ऐंठन की तरह स्पष्ट होती थी। एक बार ऐसी ही कंपकंपी उन्हें तब लगी जब वे बीमार थे और जल्दी सो गए थे। इस घटना से परेशान होकर, उन्होंने बिना सोचे समझे जोर से कहा, "हे भगवान, मुझे अकेला छोड़ दो!" कंपकंपी अचानक रुक गई।

लेकिन शायद सबसे चौंकाने वाली घटना नवंबर 1952 में घटी, बचाव दल के घर पर मिलने से कुछ ही दिन पहले।

श्री वॉकर के दो मित्र, जो ज़मीनी सोच वाले और तथाकथित अलौकिक चीज़ों में विश्वास न रखने वाले व्यक्ति थे, सप्ताहांत में उनके घर मेहमान बनकर आए थे। हालाँकि वॉकर ने

सुझाव दिया कि वे दोनों मुख्य घर से लगभग तीन सौ फीट दूर स्थित विशाल स्टूडियो में रात बिताएँ, लेकिन उनमें से एक ने ऊपर स्थित "भूतिया" कमरे में रहने की ज़िद की। वॉकर ने उन्हें कमरे की बत्तियाँ जलाए रखने के लिए मना लिया।

एक घंटे बाद, पायजामा पहने वह आदमी स्टूडियो में दौड़ता हुआ आया और मिस्टर वॉकर से अपनी शरारतें बंद करने की मांग करने लगा। उसके बिस्तर के बगल वाली बत्ती बार-बार जल-बुझ रही थी। घर की बाकी सभी बत्तियाँ लगातार जल रही थीं!

यह सोचकर कि बिजली की अनियमित आपूर्ति के कारण ऐसा हुआ होगा और किसी ने कोई शरारत नहीं की है, मेहमान मुख्य घर लौट गया। लेकिन लगभग एक घंटे बाद, वह स्टूडियो में वापस आया और पूरी रात वहीं बिताई। सुबह उसने कुछ शर्मिंदा होकर बताया कि गहरी नींद से उसकी नींद तब टूटी जब उसे लगा जैसे किसी ने उसके चेहरे पर ज़ोर से थप्पड़ मारा हो। बिस्तर पर एकदम सीधा बैठते हुए उसने देखा कि उसने जो कमीज़ कुर्सी के पीछे टांगी थी, वह "हवा" से हिल रही थी। हालाँकि उसने माना कि यह सब शायद उसकी कल्पना ही थी, लेकिन उसे कुर्सी भी धीरे-धीरे हिलती हुई महसूस हुई। चूंकि ऊपर की सभी खिड़कियाँ बंद थीं, इसलिए कोई "हवा" तो थी ही नहीं।

श्री वॉकर ने टिप्पणी की, "मेरे अतिथि द्वारा वर्णित अनुभूति ने मुझे एडिथ व्हार्टन की भूत कहानियों में से एक उद्धरण की याद दिला दी। यहाँ वह सटीक उद्धरण है:

“‘मेडफोर्ड एक अनोखे झटके के साथ बिस्तर से उठ बैठा। उसके कमरे में कोई था। उसे इस बात का एहसास न तो देखने से हुआ और न ही सुनने से... बल्कि हमारे चारों ओर मौजूद अदृश्य धाराओं की एक अजीब सी हल्की हलचल से हुआ।’

“वास्तविक जीवन में कई लोगों ने इस अनुभूति का अनुभव किया है। मैंने खुद चार साल से मुख्य घर में अकेले रात नहीं बिताई थी। हालत इतनी खराब हो गई थी कि मैं इसे बर्दाश्त नहीं कर पा रहा था। दरअसल, मैंने स्टूडियो खास तौर पर वहाँ रहने से बचने के लिए ही बनवाया था। जब लोग मेरे ‘भूतिया घर’ को लेकर मेरा मज़ाक उड़ाते हैं, तो मेरा जवाब होता है, अगर कोई ठोस कारण न होता, तो क्या मैं घर की मरम्मत में इतना समय और पैसा खर्च करता, और फिर रात बिताने के लिए दूसरा घर बनवाता?”

इससे पहले कई बार श्री वॉकर ने कहा था कि उन्हें ऐसा महसूस होता है कि कोई घर में घुसने की "बेहद कोशिश" कर रहा है, मानो शरण लेने के लिए। पिछले किराएदार के बच्चों ने घर के कोने पर स्थित "लिलीकल झाड़ी के पास" कुछ हलचल का जिक्र किया था। सड़क से घर तक का मूल कच्चा रास्ता, जो सपाट देशी पत्थरों से बना था, इस लिली झाड़ी के पास से गुजरता हुआ कुएं तक जाता था, जिसके बारे में स्थानीय किंवदंती है कि क्रांतिकारी काल में सैनिकों द्वारा इसका इस्तेमाल किया जाता था।

श्री वॉकर ने कहा, “जब मैंने पहली बार इस जगह का कार्यभार संभाला था, तब मैं दिन में बीस बार रसोई की खिड़की से बाहर देखता था कि कुएँ पर कौन है। पुराने रास्ते की जगह अब पत्थर का रास्ता और ड्राइववे बन गया है, इसलिए अब कोई भी कम से कम पैंसठ फीट की दूरी से दिखाई दिए बिना अंदर नहीं आ सकता। पुनर्निर्माण के बाद, सड़क को अवरुद्ध करने वाली पत्थर की दीवार को ठीक उसी जगह से कई बार तोड़ा गया जहाँ मूल रास्ता सड़क से मिलता था।”

बचाव दल के प्रयासों को जन्म देने वाली तमाम गड़बड़ियों में मुझे एक बात समान दिखी। कोई घर में घुसने की कोशिश कर रहा था और किसी बात पर ध्यान आकर्षित करना चाहता था। शरारतें करना, लोगों को उलझन में डालना या उन्हें डराना भूत का उद्देश्य नहीं था; ये तो बस ध्यान आकर्षित करने के उसके बेताब प्रयास थे, उस बात पर ध्यान आकर्षित करने के लिए जो वह बहुत गहराई से कहना चाहता था।

नवंबर 1952 के एक उदास और अशुभ दिन, बचाव दल के छोटे समूह ने बैठक के लिए ग्रामीण इलाके में प्रस्थान किया। उनके साथ पार्क एवेन्यू के एक प्रख्यात मनोचिकित्सक और मनोविश्लेषक डॉ. एल. और संपत्ति के मालिक श्री वॉकर भी थे।

इस शोध का प्रायोजन न्यूयॉर्क शहर स्थित पैरासाइकोलॉजी फाउंडेशन, इंक. ने किया था। इसमें श्रीमती एलीन जे. गैरेट, डॉ. एल. (जिनका मनोचिकित्सा और विश्लेषण के क्षेत्र में कार्य सुप्रसिद्ध है), श्रीमती गैरेट की सहायक सुश्री लेनोर डेविडसन (जिन्होंने अधिकांश नोट्स तैयार किए), पैरासाइकोलॉजी फाउंडेशन के तत्कालीन महासचिव डॉ. माइकल पोबर्स और मैं स्वयं शामिल थे।

रॉकलैंड काउंटी में श्री वॉकर के घर तक पहुंचने में एक घंटे से थोड़ा अधिक समय लगा। घर एक चौड़ी पहाड़ी की चोटी पर स्थित है, जो अगले आबाद घर से थोड़ी दूरी पर है, लेकिन उनके अपने "केबिन" और श्री वॉकर की संपत्ति से संबंधित दो अन्य छोटे घरों से बहुत दूर नहीं है। मुख्य घर, छोटा और सुगठित, औपनिवेशिक अमेरिकी वास्तुकला का एक आदर्श उदाहरण है।

प्रवेश द्वार पर लगी एक पट्टिका इस ऐतिहासिक तथ्य की ओर ध्यान दिलाती है कि 1779 में स्टोनी पॉइंट की लड़ाई के समय जनरल वेन का मुख्यालय ठीक इसी स्थान पर स्थित था। श्री वॉकर का घर संभवतः पहाड़ी की रक्षा करने वाली किलेबंदी प्रणाली का हिस्सा था, और निस्संदेह 1779 के युद्ध और इससे पहले इस क्षेत्र में लड़े गए युद्धों और अभियानों में एक मजबूत गढ़ के रूप में कार्य करता था। ऐसा प्रतीत होता है मानो कई पीढ़ियों का इतिहास इस स्थान से जुड़ा हुआ है।

हम ऊपर के बेडरूम में अपनी-अपनी जगह पर बैठ गए, श्रीमती गैरेट के चारों ओर एक अपूर्ण घेरा बनाने के लिए खुद को इस तरह से व्यवस्थित किया, जो दीवार की ओर पीठ करके और हमारी ओर चेहरा करके एक भारी, ठोस लकड़ी की कुर्सी पर बैठी थीं।

दोपहर के 2:45 बज रहे थे और खिड़कियों से आने वाली भरपूर धूप से कमरा पूरी तरह रोशन था।

कुछ क्षण बाद, श्रीमती गैरेट ने आत्मसम्मोहन के माध्यम से पूर्णतः समाधि की अवस्था प्राप्त कर ली। अचानक ही उनका अपना व्यक्तित्व गायब हो गया, और वह माध्यम अपनी कुर्सी पर पूरी तरह बेजान होकर गिर पड़ीं, ठीक वैसे ही जैसे कोई वस्त्र अपने मालिक द्वारा कुछ समय के लिए त्याग दिया गया हो। लेकिन यह स्थिति क्षणिक थी। कुछ ही सेकंड बाद, एक अन्य व्यक्तित्व ने माध्यम के शरीर में प्रवेश कर लिया, ठीक उसी प्रकार जैसे कोई कमीज़ या कोट पहनता है। यह उवानी थे, श्रीमती गैरेट के दो आध्यात्मिक मार्गदर्शकों में से एक, जो उनके सभी प्रयोगों में नियंत्रक व्यक्तित्व के रूप में कार्य करते हैं। उवानी अपने जीवनकाल में एक ज्ञानी और प्रतिष्ठित पूर्वी भारतीय थे, और अब वे हमारे समक्ष उसी रूप में प्रकट हुए।

जैसे ही वह व्यक्ति उठा—अब मैं उस व्यक्ति को “वह” या “उसे” कहकर संबोधित करूँगा जो “माध्यम” (माध्यम का शरीर) का उपयोग कर रहा था—यह स्पष्ट हो गया कि हमारे सामने

भारत से आए एक सज्जन थे। चेहरे के हाव-भाव, आँखें, त्वचा का रंग, चाल-ढाल, मुड़ी हुई भुजाएँ और उंगलियों की हरकतें, जो उनके शब्दों के साथ होती थीं, सब कुछ एक भारतीय मूल निवासी के लक्षण थे। जब उवानी ने हमसे बात की, तो उन्होंने बिल्कुल सही अंग्रेज़ी बोली, सिवाय कभी-कभार किसी शब्द के अटकने या मुहावरे के गलत इस्तेमाल के, लेकिन उनका उच्चारण विशिष्ट था।

इस समय, टेप रिकॉर्डर ने बोले गए हर शब्द को सटीक रूप से रिकॉर्ड कर लिया। यहाँ दी गई प्रतिलिपि पूर्ण मानी जाती है, और निश्चित रूप से उवानी के मामले में तो यह पूर्ण ही है, क्योंकि वह स्पष्ट और धीमी गति से बोल रही थी। भूत के मामले में, भूत की दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति के कारण उसका अधिकांश भाषण अस्पष्ट था; कुछ वाक्यांश कई बार दोहराए गए थे, और कुछ शब्द इतने खराब तरीके से उच्चारित किए गए थे कि हममें से कोई भी उन्हें समझ नहीं पाया। केवल सत्यापित साक्ष्य प्रस्तुत करने के लिए, मैंने ऐसे सभी शब्दों को हटा दिया है और यहाँ केवल वही लिखा है जो पूरी तरह से समझने योग्य और स्पष्ट नहीं था। लेकिन भूत द्वारा बोले गए कम से कम 70% शब्द, और निश्चित रूप से उवानी के सभी शब्द, रिकॉर्ड में हैं। टेप रिकॉर्डिंग को मिस डेविडसन की सटीक प्रतिलिपि द्वारा पूरक किया गया है, और अंतिम क्षणों में उनके नोट्स इसे पूरी तरह से प्रतिस्थापित कर देते हैं।

उवानी: मैं उवानी हूँ। आप सभी मित्रों को नमस्कार। आप सभी को शांति मिले, आपके जीवन में शांति बनी रहे और इस घर में भी शांति बनी रहे!

डॉ. एल.: और आपको भी हमारी शुभकामनाएं, उवानी। हम आपका स्वागत करते हैं।

उवानी: मेरे प्रिय मित्र, आपसे बात करके मुझे बहुत खुशी हुई। (डॉ. एल. को प्रणाम करते हुए) आप अपने सहज परिवेश से बाहर हैं।

डॉ. एल.: बिलकुल। हमने इससे पहले कभी इस माहौल में बात नहीं की है...

उवानी: आज आप मुझसे क्या चाहते हैं, कृपया बताइए?

डॉ. एल.: हम श्री वॉकर के मित्र के रूप में यहाँ एकत्रित हुए हैं, जिनके घर में यह स्थित है। हम इस घर में समय-समय पर घटित होने वाली विचित्र घटनाओं की जाँच करने आए हैं, जिनसे हमें यह आभास होता है कि वे हमारे रुचि के क्षेत्र से संबंधित हैं। उवानी, कृपया हमें आज

दोपहर की कार्यवाही के लिए मार्गदर्शन दें। हमारी मित्र और सहायक (श्रीमती गैरेट) का मानना है कि इस घर से एक विशिष्ट व्यक्तित्व का संबंध था, जिसका प्रभाव आज भी यहाँ महसूस किया जा सकता है।

उवानी: हाँ, मुझे ऐसा ही लगता है। मैं खुद एक बेचैन स्वभाव वाले व्यक्ति से रूबरू हुई हूँ। दरअसल, एक बेहद विचित्र व्यक्तित्व, और ऐसा व्यक्तित्व जो अपने जीवन में शायद पूरी तरह से सही मानसिक स्थिति में नहीं है—मुझे लगता है आप इसे यही कहेंगे।
मुझे बहुत बेचैनी हो रही है। मैं आपको इस व्यक्तित्व के बारे में बताना चाहता हूँ, और साथ ही साथ उस अद्भुत वातावरण की ओर आपका ध्यान आकर्षित करना चाहता हूँ जो वह हमारे परिवेश में पैदा कर देता है। आप, जो मेरे मित्र हैं और मेरे साथ बहुत काम कर चुके हैं, जानते हैं कि जब मैं नियंत्रण में होता हूँ, तो हम बहुत शांत रहते हैं—है ना? फिर भी, जैसा कि आप देख रहे हैं, नियंत्रण बनाए रखना मेरे लिए बहुत मुश्किल है—क्योंकि इस व्यक्तित्व द्वारा बनाया गया वातावरण ऐसा है कि आप देखेंगे कि मुझे अपने आप को नियंत्रित करने में कितनी कठिनाई हो रही है। (माध्यम का हाथ तेज़ी से कांपने लगता है। उवानी की आवाज़ कांपती है।) यह व्यक्ति, मेरे बावजूद, हमारे साथ होने के कारण हमारे कार्यक्षेत्र में एक विशिष्ट प्रकार का कांपन पैदा कर देता है। क्या आप इसे देख पा रहे हैं?

डॉ. एल.: हाँ, मैं करता हूँ।

उवानी: यही उसकी हालत थी, और इसीलिए शायद मुझे (इस समय माहौल में ज़बरदस्त हलचल मची हुई है) आपसे यह कहना ज़रूरी हो गया है कि आप इस व्यक्ति से खुद निपटें, जबकि मैं कुछ देर के लिए अलग हो जाऊं ताकि वाद्य यंत्र के आसपास थोड़ी शांति बनी रहे। जैसा कि आप देख रहे हैं, हमारा वातावरण तनावपूर्ण है... कृपया जो भी हो, उससे परेशान न हों। अगर हो सके तो आप इससे बात करें और अंत में वाद्य यंत्र मुझे सौंप दें।

डॉ. एल.: मैं करूँगा।

उवानी: कृपया याद रखें कि आप एक ऐसे व्यक्ति से निपट रहे हैं जो बहुत युवा, थका हुआ, जीवन में बहुत दुख झेल चुका है, और जो अपनी मृत्यु से कई साल पहले तक—जैसा कि आप

कहते हैं—स्वयं सोचने में असमर्थ था। अब कृपया कार्यभार संभालें, ताकि मैं पूर्ण नियंत्रण की अनुमति दे सकूँ...

इस समय उवानी ने माध्यम के शरीर को छोड़ दिया। एक क्षण के लिए, ऐसा लगा जैसे उसमें से सारी जान निकल गई हो, क्योंकि वह कुर्सी पर स्थिर पड़ा था। फिर अचानक, एक और व्यक्तित्व ने उसमें प्रवेश कर लिया। धीरे-धीरे, नया व्यक्तित्व उठ बैठा, उसके हाथ कांप रहे थे, चेहरा अत्यधिक दर्द से विकृत था, आँखें झपक रही थीं, घूर रही थीं, पहले तो कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा था, हम सभी को बिना किसी पहचान के सीधे देख रही थीं। इन सबके साथ-साथ उसकी चीखें भी बढ़ती जा रही थीं, जो बाद में रुक-रुक कर, गहरे भावुक रोने में बदल गईं।

लगभग दस सेकंड तक, वह नया व्यक्तित्व कुर्सी पर स्थिर रहा, लेकिन जैसे ही हाथों की हरकतें तेज़ हुईं, वह अचानक झुक गया और ज़मीन पर गिर पड़ा, पास ही रखे एक लकड़ी के बक्से से बाल-बाल बचा। हमारे सामने ज़मीन पर पड़ा हुआ, वह शायद एक या दो मिनट तक अस्पष्ट आवाज़ें निकालता रहा, और व्यर्थ ही ज़मीन से उठने की कोशिश करता रहा।

डॉ. एल. की एक बैसाखी, जिसका इस्तेमाल वे चलने-फिरने के लिए करते थे, उनकी कुर्सी के बगल में ज़मीन पर पड़ी थी। उस प्राणी ने बैसाखी को उठाया और उसके सहारे उठने की कोशिश की, लेकिन सफल नहीं हुआ। अगले कुछ सेकंड तक उसने बैसाखी का इस्तेमाल करने की फिर से कोशिश की, लेकिन हर बार वह ज़मीन पर गिर पड़ा। उसका बायां पैर लकवे के लक्षणों की तरह तेज़ी से ऐंठन कर रहा था। यह साफ़ दिख रहा था कि पैर बुरी तरह से क्षतिग्रस्त हो गया था। वह बार-बार अपना बायां हाथ अपने सिर पर रखता और उसे छूता, मानो यह जता रहा हो कि उसके सिर में भी दर्द है।

डॉ. एल.: हम दोस्त हैं, और आप हमसे बात कर सकते हैं। हम आपकी हर संभव मदद करेंगे। हम दोस्त हैं।

आवाज: मम्ह—मम्ह—मम्ह—(सिसकने और दर्द की अस्पष्ट आवाजें)।

डॉ. एल.: हमसे बात कीजिए। हमसे बात कीजिए। क्या हम आपकी मदद कर सकते हैं? (प्राणी के रोने की आवाज़ तेज़ हो जाती है) आप हमसे बात कर पाएंगे। अब आप शांत हैं।

आप हमसे बात कर पाएंगे। (प्राणी रेंगते हुए मिस्टर वॉकर के पास जाता है, ऐसा लगता है जैसे उसकी निगाहें सिर्फ़ उन पर टिकी हों, और पूछताछ के दौरान वह वॉकर के घुटनों के पास ही बैठा रहता है। रोना धीरे-धीरे कम हो जाता है।) क्या आप अंग्रेज़ी समझते हैं?

व्यक्ति: दोस्त...दोस्त। दया...दया...दया... (अंग्रेज़ी लहजे में पोलिश लहजा स्पष्ट है, आवाज़ कर्कश, असभ्य, शेखी बघारने वाली और भावुक है।) मुझे पता है...मुझे पता है...मुझे पता है... (श्री वॉकर की ओर इशारा करते हुए)

डॉ. एल.: आप उन्हें पहले कब से जानते थे?

सत्ता: पत्थर...पत्थर... मुझे ले जाने मत दो!

डॉ. एल.: नहीं, हम उन्हें आपको ले जाने नहीं देंगे।

इकाई: (और रोते हुए) बात करो...

श्री वॉकर: आप मुझसे बात करना चाहते हैं? हाँ, मैं आपसे बात करूँगा।

इकाई: बोल नहीं सकती...

श्री वॉकर: क्या आप बोल नहीं सकते? क्या आपको बोलने में कठिनाई होती है?

इकाई: (सिर हिलाते हुए) हाँ।

डॉ. एल.: आपको पानी चाहिए? खाना चाहिए? पानी चाहिए?

इकाई: (सिर हिलाते हुए) बोलो! बोलो! (श्री वॉकर से) दोस्त? तुम?

श्री वॉकर: जी हाँ, दोस्त। हम सब दोस्त हैं।

वह व्यक्ति: (अपने सिर की ओर, फिर अपनी जीभ की ओर इशारा करते हुए) पत्थर...नहीं?

डॉ. एल.: कोई पत्थर नहीं। आप पर पत्थर नहीं फेंके जाएंगे।

इकाई: पिटाई नहीं?

डॉ. एल.: नहीं, आप पर पत्थर नहीं फेंके जाएंगे, आपकी पिटाई नहीं की जाएगी।

संस्था: मत जाओ!

श्री वॉकर: नहीं, हम यहीं रुकेंगे।

इकाई: बोल नहीं सकती...

श्री वॉकर: आप बात कर सकते हैं। हम सब दोस्त हैं।

डॉ. एल.: आपकी इस बीमारी के कारण थोड़ी परेशानी तो है, लेकिन आप बात कर सकते हैं। आपके मित्र श्री वॉकर हैं। आपका नाम क्या है?

व्यक्ति: वह मुझे बुला रहा है। मुझे निकलना होगा। मैं और आगे नहीं जा सकता। भगवान के नाम पर, मैं और आगे नहीं जा सकता। (श्री वॉकर को छूते हुए)

श्री वॉकर: मैं तुम्हारी रक्षा करूँगा। ("रक्षा" शब्द सुनते ही वह प्राणी गहरी हैरानी से उठ बैठता है।) तुम्हें किस बात का डर है?

इकाई: पत्थर...

श्री वॉकर: क्या आप पर पत्थर फेंके गए?

डॉ. एल.: ऐसा दोबारा नहीं होगा।

इकाई: दोस्तों! जंगली लोग... तुम्हें पता है ना...

श्री वॉकर: भारतीय?

इकाई: क्रमांक

डॉ. एल.: श्वेत व्यक्ति?

व्यक्ति: हम्म...दांत चले गए—(चित्र में दिखाता है कि उसके दांत कैसे टूट गए थे)

श्री वॉकर: दांत गायब हो गए।

डॉ. एल.: क्या उन्होंने तुम्हारे दांत तोड़ दिए?

इकाई: देखा? मैं नहीं कर सकता... मेरी रक्षा करो!

श्री वॉकर: जी हाँ, जी हाँ। हम आपकी रक्षा करेंगे। अब और मार-पीट नहीं, अब और पत्थरबाजी नहीं।

डॉ. एल.: आप यहाँ रहते हैं? यह आपका घर है?

इकाई: (हिंसक हावभाव, तेज आवाज) नहीं, ओह नहीं! मैं यहाँ छिप जाता हूँ।

श्री वॉकर: जंगल में?

इकाई: यहां से नहीं जा सकते।

डॉ. एल.: आप किससे छिप रहे हैं?

इकाई: विशाल, विशाल, शक्तिशाली... विशाल, विशाल, शक्तिशाली...

डॉ. एल.: क्या वही है जिसने तुम्हें पीटा था?

इकाई: (चिल्लाते हुए) सब...मुझे पता है...मुझे पता है...मुझे पता है...

डॉ. एल.: क्या आप नाम जानते हैं?

(मिस्टर वॉकर के कंधों पर हाथ रखते हुए) योजनाओं के बारे में जान लो...

डॉ. एल.: उन्होंने योजनाएँ ढूँढ़ने की कोशिश की, ताकि आप सच बता दें, लेकिन आपने नहीं बताया? और आपके सिर में दर्द हो रहा है?

इकाई: (बस सिर हिलाकर सहमति जताते हुए) आह...आह...

डॉ. एल.: और तुम्हें लात मारी गई है, पीटा गया है और पत्थर मारे गए हैं। (वह प्राणी हिंसक रूप से सिर हिलाता है।)

श्री वॉकर: योजनाएँ कहाँ हैं?

इकाई: मैंने उन्हें छिपा दिया... बहुत दूर...

श्री वॉकर: आपने योजनाएँ कहाँ छिपाईं? हम दोस्त हैं, आप हमें बता सकते हैं।

इकाई: मुझे नक्शा दीजिए।

(उस व्यक्ति को नोटपैड और कलम दी जाती है, जिसका उपयोग वह कलम की तरह अकड़कर करता है। उसके हाथ में एक चित्र है, जिसमें लकवाग्रस्त व्यक्ति की अस्थिर और डगमगाती रेखाएं दिखाई गई हैं।)

इकाई: आपके माप में...एंड्रियास हिड... (चित्र)

श्री वॉकर: वैगन हाउस कहाँ स्थित है?

इकाई: एक घर...घर के अंदर नहीं...लकड़ी का घर...लॉग...

श्री वॉकर: लकड़ी का घर?

इकाई: (सिर हिलाते हुए) योजनाएँ...लकड़ी का घर...नीचे...नीचे...पत्थर...पंद्रह...लकड़ी... पंद्रह पत्थर...दरवाजा...पूरे स्थानांतरण की योजनाएँ...

श्री वॉकर: गोला-बारूद के बारे में?

इकाई: नहीं...आदमी और गोला-बारूद...फ्रांस के लिए मेरी योजनाएँ हैं... मेरे पास फ्रांस के लिए योजनाएँ हैं... मुझे लकड़ी के घर तक योजनाएँ पहुँचानी हैं... ठीक वहीं जहाँ सूरज खिड़की पर पड़ता है...

डॉ. एल.: दरवाजे से पंद्रह पत्थर दूर?

इकाई: जहाँ सूरज खिड़की पर पड़ता है... पंद्रह पत्थर... नीचे... लकड़ी के घर में... वहाँ मैंने योजनाएँ रख दी हैं... (घबराकर) फिर कभी नहीं!

श्री वॉकर: नहीं, नहीं, हम उन्हें आपको दोबारा ले जाने नहीं देंगे। हम अंग्रेजों से आपकी रक्षा करेंगे।

इकाई: (स्पष्ट रूप से आहत) कोई कभी मत कहना—कोई कभी मत कहना—मैं तुम्हारी रक्षा करूँगा...

श्री वॉकर: जी हाँ, हम आपकी रक्षा करेंगे। अब आप हमेशा के लिए सुरक्षित हैं।

इकाई: मुझे मत भेजो, ठीक है?

डॉ. एल.: नहीं, हम आपको वापस नहीं भेजेंगे।

संस्था: रक्षा करो...रक्षा करो...रक्षा करो...

डॉ. एल.: आपका जन्म इस देश में नहीं हुआ था?

इकाई: क्रमांक

डॉ. एल.: आप विदेशी हैं?

प्राणी: (दुखी और क्रोधित होकर चिल्लाता है) हाँ...कुत्ता! वे मुझे कुत्ता कहते हैं। दरिंदे!

डॉ. एल.: क्या आप जर्मन हैं? (वह व्यक्ति तिरस्कारपूर्ण नकारात्मक इशारा करता है।) पोलिश?

इकाई: हाँ।

डॉ. एल.: आप यहाँ तब आए थे जब आप छोटे थे?

(अपने देशवासी से मिलने की खुशी से उसकी आवाज़ बुलंद और दमदार हो जाती है।) दास...दास...दास! हाँ...भाई? दोस्त? पोल? पोल्स्की, हाँ?

श्री वॉकर: जी हाँ, जी हाँ।

इकाई: (वॉकर को गले लगाते हुए) मैं सुनता हूँ...मैं देखता हूँ... जैसे...भाई जैसे...भाई जैसे... जिलित्ज़े...जिलित्ज़े...

श्री वॉकर: आपका नाम क्या है?

इकाई: गोस्पोडिन! गोस्पोडिन! (पोलिश में "मास्टर")

श्री वॉकर: नाम क्या है? (पोलिश में) Zo dje lat?

इकाई: (बोलते समय श्री वॉकर के चेहरे और हाथों को छूते हुए) हैंस? भाई... हैंस जैसा... हैंस जैसा... मैं आंद्रे—तुम हैंस।

मिस्टर वॉकर: मैं हैंस हूँ?

इकाई: मेरा भाई... उसने भी हत्या की... मैं मरता हूँ... मैं मरता हूँ... मरता हूँ... मरता हूँ...

श्री वॉकर: कहाँ? टैप्पन में? स्टोनी पॉइंट पर?

इकाई: बड़ा मैदान, लड़ाई। शोर, शोर। बड़ा मैदान। हैंस, बिल्कुल तुम्हारे जैसा।

श्री वॉकर: यह लड़ाई कितने समय पहले हुई थी?

इकाई: कल की तरह...कल की तरह...मैं यहाँ अँधेरी रात में लेटा हूँ...खून बह रहा है...हंस को बुलाओ...हंस को बुलाओ...पोल्स्की?

श्री वॉकर: क्या आपकी मृत्यु यहीं हुई थी?

इकाई: यहाँ बाहर... (नीचे की ओर इशारा करते हुए) फिर से कहो... रक्षा करो, दोस्त... (खुद की ओर इशारा करते हुए) मैं, मैं... तुम... एंड्रियास? तुम्हें हैंस पसंद है... दोस्त, भाई... तुम... एंड्रियास?

डॉ. एल.: क्या आपको खजूरों के बारे में कुछ पता है?

इकाई: कल की तरह। हर जगह अंग्रेज़ी। नहीं कर सकता...वे बहुत ही खराब हैं... (अपना सिर पीटता है)

डॉ. एल.: आप अमेरिकियों के साथ थे?

इकाई: नहीं, नहीं।

डॉ. एल.: यांकीज़?

इकाई: नहीं, नहीं। बड़ा शब्द... गणतंत्र... गणतंत्र... गणतंत्र... (दर्द से चीखते हुए ज़मीन पर गिर जाता है)

डॉ. एल.: आप अभी भी दोस्तों के साथ हैं। आप आराम कर रहे हैं। आप सुरक्षित हैं।

संस्था: सुरक्षा...सुरक्षा...झंडे में तारे...झंडे में तारे...गणतंत्र...वे गाते हैं...

डॉ. एल.: आप इस घर में कब से छिपे हुए हैं?

व्यक्ति: मैं बाद में भाई से बात करने जाता हूँ... बड़े आदमी ने कहा, तुम जाओ, वह अभी बात करेगा... मैं थोड़ी देर के लिए चला गया, वह रुका रहा... उसने बात की... वह कुछ समय के लिए यहाँ था...

“बड़े आदमी” से उस सत्ता का तात्पर्य अपने मार्गदर्शक उवानी से था। वह सत्ता चुपचाप ज़मीन पर पड़ी रही और धीरे-धीरे निर्जीव होती चली गई। कुछ ही देर में ऐसा लगा मानो उस माध्यम के शरीर से सारी जान निकल गई हो। फिर उवानी वापस आया, उसने नियंत्रण

संभाला, उठ बैठा, बिना किसी परेशानी के कुर्सी पर वापस बैठ गया और पहले की तरह ही अपने विद्वतापूर्ण और शांत लहजे में हमसे बात करने लगा।

उवानी: (हाथ झुकाकर प्रणाम करते हुए) आप मुझे अनुमति देंगे। मैं अक्सर ऐसे माहौल में नहीं होती। क्षमा करें। अब मैं आपको वह थोड़ा सा बताती हूँ जो मैं समझ पाई हूँ। यहाँ स्पष्ट रूप से एक बेचारा व्यक्ति है जो शायद कई दिनों, हफ्तों या वर्षों की उलझन भरी यादों में बुरी तरह फंसा हुआ है। मैं उसे नियंत्रण लेने देती हूँ ताकि वह अपनी कल्पनाओं को जी सके... अपने डर, अपनी कठिनाइयों को जी सके... इस तरह मैं उसे आराम दे पाती हूँ। अब मैं आपको इस कहानी के बारे में जो समझ पाई हूँ, वह बताऊँगी।

ज़ाहिर तौर पर उसे एक भाड़े की सेना का कैदी बनाकर रखा गया था। यूरोप से अलग-अलग तरह के सैनिकों को इस देश में लाया गया था। वह मुझे बताता है कि वह इस देश के अन्य हिस्सों में फ्रांसीसी सैनिकों के साथ रहा था, लेकिन वे मित्रवत थे। वह कुछ समय के लिए एक ऐसे व्यक्ति का मित्र था जो न केवल आपके अपने लोगों का, बल्कि क्रांतिकारी सैनिकों का भी मित्र था। इसलिए, वह एक भाड़े का सैनिक प्रतीत होता है।

वह हर तरह के योद्धाओं के लिए एक बलि का बकरा बन गया, एक अच्छा सेवक। वह कभी यहाँ होता है, कभी वहाँ।

उसे समझ नहीं आ रहा कि वह किसके लिए काम करता है। वह आंद्रे का ज़िक्र करता है, जिससे उसका कुछ समय से संपर्क है, और वह इस आंद्रे को नाम से बहुत पसंद करता है... क्योंकि उसका नाम आंद्रे(w)स्की है। आंद्रे से यह समानता है। इसलिए, जहाँ तक मैं समझ सकता हूँ, इस व्यक्ति को बचाने के लिए उसका इस्तेमाल किया गया है। यहीं से उलझन शुरू होती है।

वह अपनी शक्ल-सूरत की वजह से दो-तीन बार अलग-अलग लोगों के हाथों पकड़ा जाता है —वह हूबहू उसके हमशक्ल जैसा दिखता है। उसका दोस्त आंद्रे गायब हो जाता है, और वह भटक जाता है। वह इधर-उधर भटकता रहता है और जैसे-तैसे काम चलाता है, और आखिरकार वह ब्रिटिश सैनिकों के हाथ लग जाता है। उसके पास कुछ पत्र और योजनाएँ होने की जानकारी है, और वह चाहता है कि मैं आपको बताऊँ कि उसने इन्हें उस जगह से ठीक पूर्व में छिपा रखा था जहाँ आप अभी हैं। वह कहता है कि ये एक अस्थायी इमारत थी जिसमें

अलग-अलग तोपखाने रखे जाते थे। इसमें पहरेदारों के लिए एक विश्रामगृह भी था। इसी तरह की रसोई में... वह योजनाओं का खुलासा नहीं करता और उसे बेरहमी से पीटा जाता है। उसके हाथ-पैर टूट जाते हैं और वह बेहोश हो जाता है, उसकी मानसिक स्थिति ठीक नहीं रहती, लेकिन शरीर के एक तरफ एक अजीब सी हड्डी टूट जाती है और उसका पैर घायल हो जाता है।

ऐसा लगता है कि वह कभी-कभी कोमा में चले जाते हैं—जागते हैं, सपने देखते हैं और फिर से खो जाते हैं, और उनकी कहानी से मुझे लगता है कि उन्हें हमेशा लोगों का एहसास नहीं होता। कभी-कभी वह कहते हैं कि यह एक लंबा सपना था। तो क्या इसका मतलब यह हो सकता है कि ये कल्पनाएँ अनियमित हैं? क्या वह कभी होश में आते हैं और कभी बेहोश हो जाते हैं? आपको एक अजीब सी बेचैनी महसूस होती है—"क्या मैं सपना देख रहा हूँ? यह क्या है? ऐसा लगता है जैसे मेरे अंदर एक तूफान चल रहा है..." इसलिए मुझे लगता है कि वह खुद को शक करते हुए इन अवस्थाओं में चले जाते हैं। यह उनकी अपनी मूर्खता है... दो अवस्थाओं के बीच खो जाना।

(लंबे कद और नीली आंखों वाले श्री वॉकर को)

साहब, उन्हें यह बहुत प्रबल अनुभूति है कि आप उनके भाई के समान हैं। शायद इसी कारण वे आपके निकट रहना चाहते हैं। वे मुझसे कहते हैं, “मेरा एक भाई था, जो बहुत छोटा, लंबा और नीली आँखों वाला था, और मैं उसे इस देश के युद्धक्षेत्र में बहुत याद करता हूँ।”

अब मैं आपकी प्रार्थनाओं और सहायता से उसके भाई को ढूंढने का प्रयास करता हूँ। और मैं उससे कहता हूँ, “मैंने आपकी सुरक्षा के लिए प्रार्थना की है, जहाँ आपको बहिष्कृत, अपमानित या नीचा नहीं किया जाएगा, जहाँ आप स्वतंत्रता से आ-जा सकेंगे। यहाँ आपके मित्र जो कहें, वही करें। उस ईश्वर और उस धर्म के नाम पर, जिसमें आपका पालन-पोषण हुआ है, अपनी बेचैनी के लिए मुक्ति और दया की प्रार्थना करें। शांति से जाइए। एक सुखद सपने की ओर जाइए। उस स्थान पर जाइए जहाँ एक बेहतर जीवन है। हमारे साथ आइए—आप अपने जैसे लोगों के साथ नहीं हैं। दया से, आइए हम हाथ में हाथ डालकर चलें।”

अब वह मेरी ओर देखकर पूछता है, “यदि मैं लौट आऊँ, तो क्या वह मेरे भाई की तरह मेरा स्वागत करेगा?” मुझे नहीं लगता कि वह लौटेगा, लेकिन यदि आपको उसमें या उसके अतीत

के उग्र स्वभाव का आभास हो, तो मैं आपसे कहूँगा, साहब, उससे वैसे ही बात कीजिए जैसे हमने यहाँ की है। उससे कहिए, “तुमने अपने बचपन के ईश्वर को पा लिया है, तुम्हें लौटने की आवश्यकता नहीं है।” उसे अपना प्रेम दीजिए और प्रार्थना के साथ उसे विदा कीजिए।

इस घर में कभी कोई बीमारी, कलह या दुःख न हो, क्योंकि एक समय वह इसे ही अपना एकमात्र विश्राम स्थल मानता था। आपके हृदयों में शांति बनी रहे और यहाँ-वहाँ आपसी समझ बनी रहे। यह रास्ता भले ही दूर लगे, लेकिन छोटा सा ही है। इसलिए, आइए हम अपने दैनिक जीवन में इस दुखद अनुभव की प्रतीक्षा न करें, बल्कि जीवन के हर क्षण में एक-दूसरे की सहायता करें।

श्री वॉकर धीरे-धीरे समापन प्रार्थना दोहरा रहे थे। उवानी ने नियंत्रण छोड़ते हुए कहा, "आप पर शांति हो...जब तक हम दोबारा न मिलें।" वह माध्यम कुर्सी पर पीछे गिर पड़ी, कुछ क्षणों के लिए बेहोश हो गई। फिर उसका व्यक्तित्व वापस आ गया।

श्रीमती गैरेट कुर्सी से उठीं, पलकें झपकाईं और ऐसा लगा जैसे उनके आसपास घटी उन बेहद नाटकीय और रोमांचक घटनाओं का उन पर कोई असर नहीं हुआ हो—हालांकि उन्हें इनमें से किसी भी घटना की जानकारी नहीं थी। बाद में श्रीमती गैरेट को जो कुछ भी हुआ था, उसका हर विवरण बताना पड़ा, क्योंकि वे पूरी तरह से बेहोश हो चुकी थीं और उन्हें कुछ भी याद नहीं था।

दोपहर 2:45 बजे श्रीमती गैरेट समाधि की अवस्था में चली गईं और शाम 4 बजे प्रक्रिया समाप्त हुई। पिछले सवा घंटे की घटनाओं पर कुछ चर्चा के बाद, मुख्य रूप से प्रतिभागियों द्वारा प्राप्त विभिन्न धारणाओं को दूर करने के लिए, हम श्री वॉकर के घर से निकले और न्यूयॉर्क वापस चले गए।

2 दिसंबर, 1952 को श्री वॉकर ने मुझे बताया कि "यहाँ का वातावरण काफी शांत प्रतीत होता है।" यह मानना उचित लगता है कि बेचैन आत्मा को अंततः वह "मधुर सपना" मिल गया है जिसका जिक्र उवानी ने किया था।

इस तरह के मामलों में, जहाँ ऐतिहासिक नाम और तथ्य कार्यवाही का हिस्सा होते हैं, उपलब्ध संदर्भ ग्रंथों में शोध द्वारा उनकी पुष्टि करना अत्यंत वांछनीय होता है। "द घोस्ट ऑफ ऐश मैनर" (टुमॉरो, शरद ऋतु 1952) के मामले में यह अपेक्षाकृत आसान था, क्योंकि हम एक

ऐसे व्यक्ति से निपट रहे थे जो अपने जीवनकाल में उच्च पद और महत्व का था। हालाँकि, इस मामले में, हम एक गुमनाम आप्रवासी नौकर से निपट रहे थे, जिसका नाम उस वर्ष और स्थान के लिए उपलब्ध किसी भी रेजिमेंटल रिकॉर्ड में मिलने की संभावना नहीं है। वास्तव में, ऐसे अभिलेखों की गहन जाँच से ऐसा कोई व्यक्ति नहीं मिला जो हमारा व्यक्ति हो सकता है। एंड्रियास नाम के कई सैनिक थे जो हमारी जाँच के लिए सही वर्ष और सही रेजिमेंट में सेवारत थे, लेकिन उनमें से कोई भी मेल नहीं खाता।

और ऐसा क्यों होना चाहिए? आखिरकार, हमारा एंड्रूस्की एक बहुत ही युवा, साधारण व्यक्ति था, जिसने औपनिवेशिक सैनिकों की एक श्रृंखला के लिए एक साधारण सिपाही के रूप में काम किया, जैसा कि उवानी और उसने खुद बताया था। एंड्रियास के भाई हंस की खोज भी लगभग उतनी ही निराशाजनक रही। इस आशंका के आधार पर कि पूछताछ के दौरान भूत द्वारा की गई स्लाविक उद्गार "जिलित्ज़े...जिलित्ज़े..." शायद "उलिका...उलिका..." रही हो, मुझे पता चला कि जोहान्स यूलिक (हंस यूलिक को इस तरह लिखा जा सकता है) ने वास्तव में 1779 में द्वितीय ट्रायोन काउंटी रेजिमेंट में सेवा की थी।

भूत ने जिन "पूर्व की ओर पंद्रह पत्थरों" का ज़िक्र किया था, जहाँ उसने योजनाएँ छिपाई थीं, वे शायद घर से सड़क के उस पार लकड़ी के मकान तक जाने वाला रास्ता ही रहे होंगे। इनमें से कुछ पत्थर की सीढ़ियाँ आज भी मौजूद हैं। योजनाओं का क्या हुआ, यह हम कभी नहीं जान पाएंगे। शायद वे समय और मौसम की मार से नष्ट हो गईं, या बाद में किसी अज्ञात व्यक्ति के हाथों में चली गईं। जो भी हो—अब इससे किसी को कोई लेना-देना नहीं है।

* 7

एक क्रांतिकारी उपप्रमेय: पैट्रिक हेनरी, नाथन हेल, आदि।

जैसा कि हर स्कूली बच्चा जानता है, नाथन हेल एक अमेरिकी जासूस था जिसे अंग्रेजों ने फांसी दे दी थी। उसे हंटिंगटन बीच पर पकड़ा गया और मुकदमे के लिए ब्रुकलिन ले जाया गया। उसे कैसे पकड़ा गया, यह लॉन्ग आइलैंड के हंटिंगटन शहर के लोगों के लिए चिंता का विषय है। यह शहर मूल रूप से कनेक्टिकट के उपनिवेशवादियों द्वारा बसाया गया था जो उस उपनिवेश की स्थिति से नाखुश थे। हंटिंगटन की शुरुआती बस्ती में पांच प्रमुख परिवार थे,

और आज भी उनके वंशज इस क्षेत्र के सबसे प्रमुख परिवार हैं। ये परिवार थे सैम्स, डाउनिंग्स, बुशेस, पॉल्डिंग्स और कुक्स। क्रांतिकारी युद्ध के दौरान, शहरवासियों की भावनाएँ लगभग बराबर भागों में बंटी हुई थीं: कुछ क्रांतिकारी थे और कुछ टोरी समर्थक बने रहे। इतिहासकारों का मत है कि इन पांच प्रमुख परिवारों के सदस्य, जो सभी टोरी समर्थक थे, नाथन हेल को अंग्रेजों के हवाले करने के लिए जिम्मेदार थे।

हंटिंगटन की श्रीमती गेराल्डिन पी. ने मुझे इन सब बातों की जानकारी दी। श्रीमती पी. हंटिंगटन के जिस घर में पली-बढ़ी हैं, उसे वे सबसे पुराना घर मानती हैं, हालांकि हंटिंगटन हिस्टोरिकल सोसाइटी का दावा है कि उनका घर उससे भी पुराना है। खैर, यह घर उस समय मौजूद था जब क्रांतिकारी युद्ध शुरू हुआ था। स्थानीय किंवदंती के अनुसार, उस गली के कोने पर हिंसा की एक घटना घटी थी, जो उस समय ग्रामीण क्षेत्र के बीचोंबीच एक चौराहा था। श्रीमती पी. जिस घर में पली-बढ़ी हैं, वह उसी गली में स्थित है। श्रीमती पी. को संदेह है कि क्रांतिकारी एजेंट की गिरफ्तारी—या कम से कम, विश्वासघात—उसी चौराहे पर हुई थी। जब उन्होंने अपने घर के इतिहास की छानबीन करने की कोशिश की, तो उन्हें स्थानीय ऐतिहासिक सोसाइटी से बहुत कम सहयोग मिला। उनके अनुसार, यह चुप्पी की साजिश थी, मानो कुछ लोग अतीत की किसी घटना को छुपाना चाहते हों।

श्रीमती पी. के अनुसार, इस घर का अपने सभी पूर्व निवासियों पर एक अजीब और निराशाजनक प्रभाव रहा था। उनके पिता, जिन्होंने कई वर्षों तक ज्योतिष और सफेद जादू का अध्ययन किया था, ने घर में घटी एक घटना का वर्णन किया। आधी रात को मुख्य शयनकक्ष में उन्हें असामान्य रूप से ठंड लगने के कारण नींद से जाग उठे। उन्हें कमरे में "कुछ" के बेतहाशा और तेजी से घूमने का आभास हुआ। अपने दृष्टिकोण और प्रशिक्षण के कारण, उन्होंने कहा, "क्या मैं आपकी मदद कर सकता हूँ?" लेकिन वह भागदौड़ और भी तेज हो गई। फिर उन्होंने पूछा कि क्या हुआ है और क्या किया जा सकता है। लेकिन कोई संवाद संभव नहीं हो पाया। जब उन्होंने देखा कि वे उस सत्ता से संवाद नहीं कर पा रहे हैं, तो श्रीमती पी. के पिता ने अंततः कहा, "अगर मैं तुम्हारी मदद नहीं कर सकता, तो तुम चले जाओ।" एक चटकने की आवाज आई, और कमरा अचानक शांत और गर्म हो गया, और वे वापस सो गए। उस घर में ऐसी कोई अन्य घटना दर्ज नहीं की गई है। लेकिन श्रीमती पी.

सोचती हैं कि क्या कोई दोषी आत्मा प्रकट होना चाहती है, जरूरी नहीं कि नाथन हेल ही हो, बल्कि शायद कोई ऐसा व्यक्ति जो उसके विश्वासघात से जुड़ा हो।

मैनहट्टन में 43 वीं स्ट्रीट और वैंडरबिल्ट एवेन्यू के कोने पर, जो न्यूयॉर्क शहर के सबसे व्यस्त और शोरगुल वाले स्थानों में से एक है, एक छोटी सी स्मारक पट्टिका लगी है जिस पर लिखा है कि क्रांतिकारी जासूस नाथन हेल को अंग्रेजों ने उसी स्थान पर फांसी दी थी। मुझे संदेह है कि बहुत से न्यूयॉर्कवासी इस बात से अवगत होंगे, या त्रासदी के सटीक स्थान का पता लगा पाएंगे। किसी विदेशी के लिए इसके बारे में जानना और भी मुश्किल है। जब मैंने अपनी अच्छी दोस्त सिबिल लीक को एक प्रयोग के लिए मेरे साथ एक महत्वपूर्ण स्थान पर चलने का सुझाव दिया, तो वह तुरंत सहमत हो गई। शोर और भारी यातायात के बावजूद, ग्रैंड सेंट्रल स्टेशन के ठीक सामने स्थित उस स्थान पर, सिबिल ने साहसपूर्वक मेरे साथ सड़क के कोने पर खड़े होकर किसी प्रकार का मानसिक अनुभव प्राप्त करने का प्रयास किया।

“मुझे खाने-पीने की जगह का आभास हो रहा है,” सिबिल ने कहा। मैंने बताया कि इस इलाके में तो कई रेस्टोरेंट हैं, लेकिन सिबिल ने सिर हिला दिया। “नहीं, मैं खाने-पीने की जगह के बारे में सोच रही थी, और मेरा मतलब अभी की बात नहीं है। यह एक सराय जैसी है, एक आने-जाने की जगह, और इसका नदी से कुछ संबंध है। शायद कोई मिलन स्थल, किसी तरह की सराय। बेशक, इस शोर और इन सभी नई इमारतों के बीच यह बहुत मुश्किल है।”

"अगर हम इन इमारतों को गिरा दें, तो हमें क्या देखने को मिलेगा?"

“मुझे लगता है कि हमें एक खेत और पानी दिखाई देगा। मुझे प्रबल अनुभूति है कि पानी और सराय के बीच कोई संबंध है। लोग आ-जा रहे हैं—मुझे एक महिला की आभा महसूस हो रही है, लेकिन मुझे नहीं लगता कि वह महत्वपूर्ण है। मैं निश्चित नहीं हूँ...जब तक कि इसका मतलब विदेशी न हो। मुझे कोई विदेशी भाषा सुनाई दे रही है। शायद Verchenen* जैसी कोई भाषा। मैं इसे पूरी तरह समझ नहीं पा रहा हूँ। यह जर्मन नहीं है।”

"क्या आपको इस जगह के बारे में कुछ महसूस होता है?"

“यही जगह, हाँ। मुझे लगता है कि मैं कम से कम दो सौ साल पीछे जाना चाहता हूँ, यह बहुत स्पष्ट नहीं है, 1769 या 1796। यही वह समय है। पानी के साथ इसका संबंध मुझे उलझन में डालता है।”

"क्या आपको यहां कभी कोई महत्वपूर्ण घटना महसूस होती है?"

"हां। यह मुझ पर पूरी तरह से असर डालने के लिए काफी मजबूत नहीं है, लेकिन इतना गंभीर जरूर है कि मुझे थोड़ा घबरा देता है।"

"यह किस तरह से कठोर है?"

“दुखद, हिंसक। इस हिंसा में कई लोग शामिल हैं। पानी से जुड़ी कोई बात, पानी से जुड़े कागजात, ये सब इस समस्या का हिस्सा हैं।”

फिर सिबिल ने सुझाव दिया कि हम दाईं ओर जाकर देखें कि क्या कुछ दूरी पर प्रभाव अधिक तीव्र होता है। हम कोने से मुड़े और मैं रुक गया। क्या प्रभाव कुछ अधिक तीव्र हुआ?

“नहीं, धारणा वही है। कागज़, हिंसा। नाम के लिए, मुझे पी.टी. पीटर के अक्षर याद आ रहे हैं। मुझे लगता है कि आधी रात को यहाँ आना मददगार होगा। काश, मैं शहर के बीचोंबीच पानी के साथ इसके संबंध को समझ पाता।”

"क्या यहां किसी की मौत हुई है?"

सिबिल ने अपनी आँखें बंद कीं और कुछ पल के लिए इस पर विचार किया। “हाँ, लेकिन उस समय इस व्यक्ति की मृत्यु महत्वपूर्ण थी और वास्तव में आवश्यक भी थी। लेकिन बात सिर्फ उस व्यक्ति की मृत्यु तक ही सीमित नहीं है। इस गड़बड़ी में कई अन्य चीजें, कई अन्य लोग शामिल हैं। वास्तव में, दो अलग-अलग नस्लें शामिल थीं, क्योंकि मुझे समझ की कमी महसूस हो रही है। मुझे लगता है कि यह एक राजनीतिक मामला था, और दस्तावेज़ महत्वपूर्ण थे।”

"क्या आप यहां महसूस की जा रही इस हिंसा की प्रकृति के बारे में कुछ और जानकारी दे सकते हैं?"

“बस एक बेचैनी, एक उथल-पुथल, एक सामान्य अशांति। मुझे खेद है कि मैं और कुछ नहीं बता सकता। शायद अगर हम रात में यहाँ आते, जब माहौल शांत होता है।”

मैंने पास के किसी रेस्तरां में चाय पीने का सुझाव दिया। चाय पीते हुए हमने अपने छोटे से प्रयोग पर चर्चा की और सिबिल को अचानक होटल बिल्टमोर में पहले हुए अपने एक अजीब अनुभव की याद आ गई। (जिस पट्टिका की बात हो रही है, वह होटल की दीवार पर लगी है।) सिबिल ने बताया, "मुझे न्यूयॉर्क के इस खास इलाके में जाने के कई निमंत्रण मिलते हैं, और जब भी मैं जाती हूँ, मुझे हमेशा इतनी घृणा महसूस होती है कि मैं वापस आते समय किसी टेलीफोन बूथ में जाकर संबंधित लोगों को फोन करके कह देती हूँ, 'नहीं, मैं आपसे कहीं और मिलूँगी।' मुझे यह इलाका बिल्कुल पसंद नहीं है; यह मुझे बहुत निराशाजनक लगता है। मुझे ऐसा लगता है जैसे मैं फँस गई हूँ।"

* * *

मैं रिचमंड, वर्जीनिया के आर. एम. सैंडविच का आभारी हूँ, जिन्होंने पैट्रिक हेनरी से जुड़े अपने एक असाधारण आध्यात्मिक अनुभव का रोचक विवरण दिया है। श्री सैंडविच ने बताया कि उन्हें केवल एक ही बार ऐसा अनुभव हुआ है और यह पैट्रिक हेनरी के शुरुआती जागीर घरों में से एक में हुआ था। उन्होंने स्वीकार किया कि इस अनुभव ने असाधारण आध्यात्मिक अनुभव के प्रति उनके पहले के नकारात्मक दृष्टिकोण को बदल दिया। जागीर के वर्तमान मालिक ने बताया है कि श्री सैंडविच उस घर में विचित्र चीजों का अनुभव करने वाले अकेले व्यक्ति नहीं हैं।

जिस हवेली में यह घटना घटी, उसका नाम पाइन फ्लैश है और वर्तमान में यह श्री सैंडविच के निजी मित्र ई. ई. वर्दोन के स्वामित्व में है। यह हनोवर काउंटी में रिचमंड से लगभग पंद्रह मील दूर स्थित है। यह घर पैट्रिक हेनरी को उनके ससुर ने उपहार में दिया था। हेनरी के इसमें कुछ वर्षों तक रहने के बाद, यह जलकर राख हो गया और पंद्रह वर्षों तक इसका पुनर्निर्माण नहीं हुआ। इस दौरान हेनरी मुख्य घर के ठीक पीछे स्थित पुरानी कुटिया में रहे और मुख्य घर के पुनर्निर्माण तक वहीं रहे। इस कुटिया को अक्सर इलाके में युवा पैट्रिक हेनरी की हनीमून कुटिया के रूप में जाना जाता है। नया घर आग लगने से पहले जैसा था, ठीक वैसा ही बनाया गया है। कुटिया, जो अभी भी उत्कृष्ट स्थिति में है, वर्जीनिया की सबसे पुरानी लकड़ी की फ्रेम वाली हवेली मानी जाती है। संभवतः यह पैट्रिक हेनरी के रहने से पहले से ही वहाँ मौजूद थी।

जुलाई 4, 1968 को सैंडविच दंपति को श्री वर्दन की ज़मीन पर बने एक तालाब में मछली पकड़ने के लिए आमंत्रित किया गया था। चूंकि वे सुबह काफी जल्दी पहुँचने वाले थे, इसलिए उन्हें बताया गया कि तालाब में इस्तेमाल होने वाली नाव के चप्पू पुरानी कुटिया के अंदर मिलेंगे। वे सुबह लगभग 6 बजे पाइन फ्लैश पहुँचे। श्रीमती सैंडविच ने अपने मछली पकड़ने के उपकरण और खाने-पीने का सामान खोलना शुरू किया, जबकि श्री सैंडविच ने कुटिया का निरीक्षण करने का फैसला किया। हालाँकि वे पहले भी कई बार उस जगह पर जा चुके थे, लेकिन वे कभी भी कुटिया के अंदर नहीं गए थे।

तो ये रही श्री सैंडविच की रिपोर्ट।

मैंने दरवाजा खोला, अंदर कदम रखा और अपने पीछे दरवाजा कसकर बंद कर लिया। दरवाजा बंद करने के एक पल के भीतर ही मुझ पर एक अजीब सी अनुभूति छा गई। यह वैसी अनुभूति थी जैसी किसी बेहद ठंडे, नम कमरे में प्रवेश करने पर होती है। मुझे याद है कि सब कुछ कितना शांत था, और फिर मुझे अटारी में ऊपर से कदमों की आहट साफ सुनाई दी। मैंने सोचा कि शायद ऊपर कोई हो, इसलिए मैंने आवाज लगाई। किसी ने जवाब नहीं दिया, कुछ भी नहीं। उस समय मैं एक पुरानी चिमनी के ठीक सामने खड़ा था। मैं मानता हूँ कि मैं बुरी तरह डर गया था। कदमों की आवाज अब तेज हो गई थी और ऐसा लग रहा था कि वे पतली सीढ़ियों से मेरी तरफ आ रहे हैं। जैसे ही वे मेरे पास से गुजरे, मुझे एक ठंडी, अजीब सी ठंडक महसूस हुई। मैं चारों ओर कुछ ढूंढने लगा, कुछ भी जो इस सब का कारण हो सकता था। इसी दौरान मैंने देखा कि बंद दरवाजा बहुत धीरे-धीरे खुल रहा है। दरवाजा आधा खुलने पर रुक गया, मानो मुझे जाने का इशारा कर रहा हो, और मैं बड़ी तेजी से निकल गया! जैसे ही मैं उस खुले दरवाजे से बाहर निकला, मुझे वही ठंडी हवा का झोंका महसूस हुआ जो मैंने पहले महसूस किया था। बाहर खड़े होकर, मैं मैंने देखा कि दरवाजा अपने आप जोर से बंद हो गया, लगभग मेरे चेहरे पर! मेरी पत्नी अभी भी कार से सामान उतार रही थी और उसका कहना है कि उसने न तो कुछ देखा और न ही कुछ सुना।

* * *

क्रांतिकारी व्यक्तित्वों में जीवन में पसंद की जाने वाली जगहों से जुड़े रहने की एक खास शैली होती है। इंडियाना की कैंडी बॉसेलमैन का मानसिक अनुभवों का एक लंबा इतिहास रहा है। वह एक उभरती हुई ट्रान्स मीडियम हैं और अपनी प्रतिभाओं से बिल्कुल भी शर्मिंदा नहीं हैं। 1964 में, संयोगवश वह केंटकी के लेक्सिंगटन में हेनरी क्ले के घर, ऐशलैंड, घूमने गई थीं। वह पहले कभी ऐशलैंड नहीं गई थीं, इसलिए उन्होंने इसे देखने का फैसला किया। उन्हें और अन्य आगंतुकों को एक पेशेवर गाइड, एक बुजुर्ग व्यक्ति ने घर दिखाया, और कैंडी उनकी ऐतिहासिक बातों को सुनकर थोड़ी बेचैन हो गईं। जैसे ही समूह पुस्तकालय में पहुँचा और गाइड ने आसपास के पेड़ों से ली गई खूबसूरत राख की लकड़ी की पैनलिंग (जिसके नाम पर घर का नाम रखा गया है) के बारे में बताया, वह और भी बेचैन हो गईं। वह अच्छी तरह जानती थीं कि यह एक तरह की मानसिक घटना का संकेत था। जब वह दो मोमबत्तियों से घिरी एक चिमनी की ओर देख रही थीं, तो अचानक उन्होंने एक लंबे, सफेद बालों वाले व्यक्ति को एक लंबे काले फ्रॉक कोट में उसके बगल में खड़े देखा। उसकी एक कोहनी मेंटलपीस पर टिकी हुई थी और उसका सिर उसके हाथ में था, मानो वह किसी बहुत महत्वपूर्ण बात पर विचार कर रहा हो।

मिस बॉसेलमैन का घर से ज़रा भी भावनात्मक लगाव नहीं था। वास्तव में, निर्देशित भ्रमण उन्हें उबाऊ लग रहा था, और घोड़ों में उनकी गहरी रुचि होने के कारण वे अस्तबल में बाहर रहना ज़्यादा पसंद करतीं। उनकी कल्पना ने उस दृश्य को साकार नहीं किया था: उन्हें पल भर में एहसास हो गया कि वे हेनरी क्ले की आत्मा की छाप देख रही हैं।

1969 में वह फिर से एशलैंड गईं, और इस बार वह जानबूझकर पुस्तकालय में गईं। उनके साथ एक ऐसी दोस्त थी जो बिल्कुल भी मानसिक शक्तियों से ग्रस्त नहीं थी। एक बार फिर, वही बेचैनी उन पर हावी हो गई। लेकिन जब वह समाधि की अवस्था में जाने ही वाली थीं, तो उन्होंने जल्दी से कमरे से बाहर निकलने का फैसला किया।

* * *

रॉक फोर्ड, जनरल एडवर्ड हैंड का निवास स्थान, पेंसिल्वेनिया के लैंकेस्टर से चार मील दक्षिण में स्थित है और यहाँ से कोनेस्टोगा नदी का मनमोहक दृश्य दिखाई देता है। यह घर पुनर्निर्मित

नहीं है, बल्कि अठारहवीं शताब्दी की एक अच्छी तरह से संरक्षित हवेली है, जिसमें इसके मूल फर्श, रेलिंग, शटर, दरवाजे, अलमारियाँ, पैनलिंग और खिड़की के शीशे अभी भी मौजूद हैं। यहाँ तक कि मूल दीवार चित्रकारी भी देखी जा सकती है। यह जॉर्जियाई शैली में निर्मित चार मंजिला ईंटों की हवेली है, जिसके कमरे अठारहवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में प्रचलित डिजाइन के अनुसार एक केंद्रीय हॉल के चारों ओर बने हैं। जनरल हैंड की संपत्ति की सूची मिलने के बाद स्थानीय ऐतिहासिक सोसायटी को दैनिक उपयोग की प्रामाणिक वस्तुएँ उपलब्ध कराने में मदद मिली, जहाँ भी मूल वस्तुएँ घर से गायब हो गई थीं, उसी के अनुरूप कमरों को उस काल की प्राचीन वस्तुओं से सुसज्जित किया गया है।

शायद जनरल एडवर्ड हैंड अमेरिकी क्रांति के नायकों में अन्य नायकों की तरह प्रसिद्ध नहीं हैं, लेकिन पेनसिल्वेनिया डच क्षेत्र के लोगों के लिए वे एक महत्वपूर्ण व्यक्ति हैं, भले ही वे जर्मन के बजाय आयरिश मूल के थे। डबलिन के ट्रिनिटी कॉलेज में डॉक्टर की उपाधि प्राप्त करने के बाद, वे 1767 में अठारहवीं रॉयल आयरिश रेजिमेंट ऑफ फुट के साथ अमेरिका आए। हालांकि, उन्होंने 1774 में ब्रिटिश सेवा से इस्तीफा दे दिया और चिकित्सा एवं शल्य चिकित्सा का अभ्यास करने के लिए लैंकेस्टर आ गए। स्वतंत्रता के प्रति प्रबल प्रेम के कारण, जो कई आयरिश लोगों में पाया जाता है, डॉ. हैंड जुलाई 1775 में क्रांतिकारियों में शामिल हो गए और पेनसिल्वेनिया राइफल बटालियन में लेफ्टिनेंट कर्नल बन गए। उन्होंने 1800 तक सेना में सेवा की, जब उन्हें मेजर जनरल के पद से मुक्त किया गया। डॉ. हैंड ट्रेंटन की लड़ाई, लॉन्ग आइलैंड की लड़ाई, व्हाइट प्लेन्स की लड़ाई, प्रिंसटन की लड़ाई, इरोक्वाइस के खिलाफ अभियान और यॉर्कटाउन में कॉर्नवॉलिस के आत्मसमर्पण में उपस्थित थे। उन्होंने उस न्यायाधिकरण में भी अपनी सेवाएं दीं जिसने ब्रिटिश जासूस मेजर जॉन आंद्रे को दोषी ठहराया था, और बाद में वे सेना के एडजुटेंट जनरल बने। जॉर्ज वाशिंगटन उनका बहुत सम्मान करते थे और युद्ध के अंत में उनसे मिलने उनके घर गए थे। शांति स्थापित होने पर, हैंड महाद्वीपीय कांग्रेस के सदस्य बने और अपने क्षेत्र के प्रतिनिधि के रूप में पेंसिल्वेनिया विधानसभा में अपनी सेवाएं दीं। 1793 में रॉक फोर्ड के निर्माण के बाद वे वहां रहने लगे और सितंबर 1802 में वहीं उनका निधन हो गया।

आज, स्थानीय ऐतिहासिक संस्था की होस्टेसें रॉक फोर्ड आने वाले पर्यटकों के लिए गाइड का काम करती हैं, जिनकी संख्या लगातार बढ़ रही है। आगंतुकों को निचली मंजिल और तहखाने में ले जाया जाता है और उन्हें जनरल हैंड के कृषि प्रयोगों, उनके चिकित्सा अध्ययनों और जॉर्ज वाशिंगटन के साथ उनके संबंधों के बारे में बताया जाता है। लेकिन जब तक आप विशेष रूप से नहीं पूछेंगे, तब तक आपको शायद ही पता चलेगा कि जनरल हैंड की मृत्यु के बाद घर का क्या हुआ। सबसे पहले, जनरल के बेटे ने घर में आत्महत्या कर ली। कुछ ही समय में परिवार बिखर गया, और अंततः घर एक संग्रहालय बन गया क्योंकि कोई भी इसमें लंबे समय तक रहना नहीं चाहता था। एक समय था जब बंदरगाहों पर प्रवासियों से संपर्क किया जाता था और उन्हें हवेली में रहने के बदले मुफ्त आवास की पेशकश की जाती थी। लेकिन कोई भी नहीं रुका। घर में कुछ ऐसा था जो ठीक नहीं था, कुछ ऐसा जिसने लोगों को इससे डरने और इसे जल्द से जल्द छोड़ने पर मजबूर कर दिया।

श्रीमती रूथ एस. न्यूयॉर्क के उत्तरी हिस्से में रहती हैं। 1967 में एक दोस्त ने उन्हें रॉक फोर्ड के बारे में एक ब्रोशर दिखाया और वह घर उन्हें बहुत दिलचस्प लगा। चूंकि वह उसी दिशा में यात्रा कर रही थीं, इसलिए उन्होंने रॉक फोर्ड जाने का फैसला किया। अपने परिवार के साथ, वह घर तक गाड़ी चलाकर गईं और पीछे की तरफ पार्क कर दी। उसी क्षण उन्हें एक अजीब सी अनुभूति हुई कि कुछ गड़बड़ है। गौरतलब है कि श्रीमती एस. पहले कभी उस घर में नहीं गई थीं, उन्हें उसके बारे में कोई जानकारी नहीं थी और न ही उन्हें इस बात का कोई संकेत मिला था कि वहां कुछ असामान्य हुआ है। आगंतुकों का समूह काफी छोटा था। उनके और उनके परिवार के अलावा, दो युवा कॉलेज के लड़के और एक अन्य दंपति भी थे। धूप वाला दिन होने के बावजूद, श्रीमती एस. को कड़ाके की ठंड लग रही थी।

“घर में प्रवेश करने से पहले और गाइड से कहानी सुनने से पहले ही मुझे किसी की उपस्थिति का अहसास हुआ,” उन्होंने बताया। “अगर मैं वहाँ की मेज़बान होती, तो मैं वहाँ लगातार दो मिनट भी अकेले नहीं रुकती।” श्रीमती एस. पहले भी कई पुराने घरों और जीर्णोद्धार स्थलों पर जा चुकी थीं, लेकिन रॉक फोर्ड में उन्हें जैसा अनुभव हुआ, वैसा पहले कभी नहीं हुआ था।

* * *

जॉर्ज वाशिंगटन के बारे में कई दैवीय कथाएँ प्रचलित होना कोई आश्चर्य की बात नहीं है। शायद सबसे प्रसिद्ध (और अक्सर गलत समझी जाने वाली) कहानी जनरल वाशिंगटन के उस दिव्य दर्शन से संबंधित है जो उन्हें वैली फोर्ज शिविर के दौरान हुआ था, जब युद्ध का रुख अंग्रेजों के पक्ष में पूरी तरह से बदल चुका था और अमेरिकी सेना, जर्जर और कुपोषित, लगभग बिखरने की कगार पर थी। अगर कभी दैवीय मार्गदर्शन की आवश्यकता थी, तो वह वैली फोर्ज में ही थी। वाशिंगटन को कभी-कभी जंगल में ध्यान करने और एकांत में प्रार्थना करने की आदत थी। ऐसे ही एक अवसर पर वे अपने कमरे में सामान्य से अधिक चिंतित होकर लौटे। जब वे अपने कागजातों में व्यस्त थे, तो उन्हें कमरे में किसी की उपस्थिति का आभास हुआ। ऊपर देखने पर उन्होंने अपने सामने एक अत्यंत सुंदर महिला को देखा। चूंकि उन्होंने आदेश दिया था कि उन्हें परेशान न किया जाए, इसलिए वे समझ नहीं पाए कि वह कमरे में कैसे आई। हालांकि उन्होंने उससे कई बार पूछा, लेकिन आगंतुक ने कोई जवाब नहीं दिया। जैसे ही उसने उस प्रेत को देखा (वास्तव में वह एक प्रेत ही था), जनरल उस पर और भी मोहित होता चला गया, और हिलने-डुलने में असमर्थ हो गया। कुछ क्षण के लिए उसे लगा कि वह मर रहा है, क्योंकि उसने कल्पना की कि उस समय वह जिस अलौकिक प्राणी को देख रहा था, वह उसके अंतिम समय का प्रतीक होना चाहिए।

अंत में, उन्होंने एक आवाज़ सुनी, "गणतंत्र के पुत्र, देखो और सीखो।" उसी समय, उस आगंतुक ने अपना हाथ पूर्व की ओर बढ़ाया, और वाशिंगटन को कुछ दूरी पर सफेद भाप जैसी कोई चीज़ दिखाई दी। जैसे ही भाप छंट गई, उन्होंने दुनिया के विभिन्न देशों और उन्हें अलग करने वाले महासागरों को देखा। फिर उन्होंने यूरोप और अमेरिका के बीच खड़े एक काले, धुंधले देवदूत को देखा, जो समुद्र से पानी लेकर एक हाथ से अमेरिका पर और दूसरे हाथ से यूरोप पर छिड़क रहा था। ऐसा करने पर, छिड़के गए देशों से एक बादल उठा, और वह बादल पश्चिम की ओर बढ़ता गया जब तक कि उसने अमेरिका को घेर नहीं लिया। बादल में रुक-रुक कर बिजली की तेज चमक दिखाई देने लगी। उसी समय, वाशिंगटन को लगा कि उन्होंने बादल के नीचे अमेरिकी लोगों की पीड़ा भरी चीखें सुनीं। इसके बाद, उस रहस्यमयी आगंतुक ने उन्हें भविष्य में अमेरिका कैसा दिखेगा, इसका एक दृश्य दिखाया, और उन्होंने

देखा कि गाँव और कस्बे एक तट से दूसरे तट तक उग रहे हैं, जब तक कि पूरी भूमि उनसे ढक नहीं गई।
“गणतंत्र के पुत्र, सदी का अंत निकट है, देखो और सीखो,” आगंतुक ने कहा। वाशिंगटन को फिर से अमेरिका की ओर बढ़ता हुआ एक काला बादल दिखाया गया, और उन्होंने अमेरिकी लोगों को आपस में लड़ते हुए देखा। तभी एक तेजस्वी देवदूत प्रकट हुआ, जिसके सिर पर एक मुकुट था जिस पर ‘संघ’ शब्द लिखा था। इस देवदूत ने अमेरिकी ध्वज धारण किया और उसे विभाजित राष्ट्र के बीच रखते हुए कहा, “याद रखो, तुम भाई-भाई हो।” उसी क्षण, निवासियों ने अपने हथियार फेंक दिए और फिर से मित्र बन गए।

एक बार फिर रहस्यमयी आवाज़ सुनाई दी। “गणतंत्र के पुत्र, देखो और सीखो।” अब उस काले फ़रिश्ते ने अपने मुँह पर तुरही रखी और तीन अलग-अलग आवाज़ें निकालीं। फिर उसने समुद्र से पानी लिया और उसे यूरोप, एशिया और अफ़्रीका पर छिड़का। ऐसा करते ही, वाशिंगटन ने उन देशों से काले बादल उठते देखे जहाँ उसने पानी छिड़का था। काले बादलों के बीच से वाशिंगटन को लाल रोशनी और हथियारों से लैस सैनिकों की भीड़ दिखाई दी, जो ज़मीन से और समुद्र से होते हुए अमेरिका की ओर बढ़ रहे थे। उसने इन सेनाओं को पूरे देश को तबाह करते, गाँवों, कस्बों और शहरों को जलाते हुए देखा। तोपों की गड़गड़ाहट सुनते हुए, वाशिंगटन ने फिर से उस रहस्यमयी आवाज़ को सुना, “गणतंत्र के पुत्र, देखो और सीखो।”
एक बार फिर उस काले फ़रिश्ते ने तुरही अपने मुँह से लगाई और एक लंबी और भयानक ध्वनि उत्पन्न की। ऐसा करते ही, उसके ऊपर से हज़ारों सूर्यों के समान प्रकाश चमका और अमेरिका को घेरे हुए काले बादल को चीर दिया। उसी समय, अपने सिर पर 'संघ' शब्द धारण किए हुए फ़रिश्ता स्वर्ग से नीचे उतरा, उसके पीछे श्वेत आत्माओं की सेनाएँ थीं। अमेरिका के निवासियों के साथ, वाशिंगटन ने उन्हें युद्ध फिर से शुरू करते देखा और उस रहस्यमयी आवाज़ को सुना जो उसे एक बार फिर कह रही थी, "गणतंत्र के पुत्र, देखो और सीखो।"
अंतिम बार, उस काले देवदूत ने समुद्र से पानी लिया और उसे अमेरिका पर छिड़का; काला बादल छंट गया और अमेरिका के निवासी विजयी होकर लौट आए। लेकिन यह दृश्य जारी रहा। वाशिंगटन ने एक बार फिर गांवों, कस्बों और शहरों को उभरते हुए देखा, और उन्होंने

उस चमकीले देवदूत को यह कहते हुए सुना, "जब तक तारे रहेंगे और आकाश से ओस पृथ्वी पर बरसती रहेगी, तब तक संघ कायम रहेगा।" इसके साथ ही, दृश्य लुप्त हो गया, और वाशिंगटन ने एक बार फिर अपने सामने उस रहस्यमयी आगंतुक को देखा। मानो उसने उनके प्रश्न का अनुमान लगा लिया हो, उस प्रेत ने तब कहा:

“गणतंत्र के पुत्र, तुमने जो देखा है उसका अर्थ यह है: गणतंत्र पर तीन बड़े संकट आएंगे। इनमें सबसे भयानक तीसरा संकट है, जिसके दौरान पूरा विश्व एकजुट होकर भी गणतंत्र का सामना नहीं कर पाएगा। गणतंत्र के प्रत्येक बच्चे को अपने ईश्वर, अपनी भूमि और अपने संघ के लिए जीना सीखना चाहिए।” इतना कहकर वह दृश्य गायब हो गया, और वाशिंगटन अपने अनुभव पर चिंतन करने लगे।

इस कहानी की कई तरह से व्याख्या की जा सकती है। अगर यह सचमुच घटी थी, और इसके कई वृत्तांत मौजूद हैं जिनसे मुझे लगता है कि इसमें कुछ सच्चाई है, तो हम जनरल वाशिंगटन की भविष्यवाणी की बात कर रहे हैं। यह एक विवादास्पद प्रश्न है कि क्या तीसरा संकट द्वितीय विश्व युद्ध के रूप में हम पर आ चुका है, या अभी आना बाकी है। परमाणु युद्ध के इस युग में, कई सूर्यों से भी अधिक शक्तिशाली इस प्रकाश का अशुभ अर्थ हो सकता है।

कहा जाता है कि गृहयुद्ध की शुरुआत में स्वयं वाशिंगटन दक्षिण कैरोलिना के सीनेटर कैलहौन के सामने प्रकट हुए थे। उस समय, अलगाव का मुद्दा पूरी तरह से तय नहीं हुआ था, और सरकार के सबसे शक्तिशाली राजनेताओं में से एक कैलहौन को इस बात का यकीन नहीं था कि वे अपने राज्य को संघ से अलग करने का समर्थन कर सकते हैं या नहीं। यह सवाल उनके मन में गहरा बैठा था जब वे दक्षिण कैरोलिना के चार्ल्सटन में एक गर्म रात को सोने गए। रात के दौरान, उन्हें लगा कि वे जाग गए हैं और उन्होंने अपने बिस्तर के पास जनरल जॉर्ज वाशिंगटन की आकृति देखी। जनरल ने राष्ट्रपति का वस्त्र पहना हुआ था और ऐसा लग रहा था जैसे वे एक चमकदार आकृति से घिरे हुए हों, मानो उनके पीछे प्रकाश का कोई शक्तिशाली स्रोत चमक रहा हो। सीनेटर की मेज पर अलगाव की घोषणा पड़ी थी, जिस पर उन्होंने अभी तक हस्ताक्षर नहीं किए थे। कैलहौन और दक्षिण कैरोलिना के समर्थन से, संघ एकजुट होकर अपने रास्ते पर तेजी से आगे बढ़ रहा होता। जॉर्ज वाशिंगटन की आत्मा ने सीनेटर कैलहौन से विनती की कि वे घोषणा पर हस्ताक्षर न करें। उन्होंने उन्हें एक विभाजित

राष्ट्र के रूप में अमेरिका पर आने वाले आसन्न खतरों के प्रति आगाह किया; उन्होंने उनसे अपने निर्णय पर पुनर्विचार करने और संघ के संरक्षण के लिए काम करने का आग्रह किया। लेकिन कैल्हौन ने जोर देकर कहा कि दक्षिण को अपना अलग रास्ता अपनाना होगा। जब वाशिंगटन की आत्मा ने देखा कि सीनेटर कैल्हौन को कोई भी बात प्रभावित नहीं कर सकती, तो उन्होंने उन्हें चेतावनी दी कि उनके हस्ताक्षर ही संयुक्त राज्य अमेरिका के संविधान पर एक काला धब्बा होंगे। इसके साथ ही, कहा जाता है कि उनका यह सपना टूट गया।

इस घटना को आसानी से स्वप्न समझा जा सकता है, क्योंकि यह उस समय घटी जब सीनेटर कैलहौन अपने कार्यों के परिणामों को लेकर बेहद परेशान थे। दूसरी ओर, एक और बात पर भी विचार करना आवश्यक है: कैलहौन द्वारा दक्षिण कैरोलिना को परिसंघ में शामिल करने वाले दस्तावेज़ पर हस्ताक्षर करने के कुछ ही समय बाद, उनके हाथ पर एक काला धब्बा दिखाई दिया, जो न मिटने वाला था और जिसके लिए चिकित्सा अधिकारियों के पास कोई संतोषजनक स्पष्टीकरण नहीं था।

* * *

फ्लोरिडा के ऑरलैंडो की श्रीमती मार्गरिट स्मिथ का मानसिक अनुभवों का लंबा इतिहास रहा है। उन्होंने स्वयं इंग्लैंड के बोलियू के प्रेतवाधित भिक्षुओं को देखा है; उन्होंने उत्तरी कैरोलिना के विलमिंगटन के प्रसिद्ध सिरविहीन भूत जो बाल्डविन की असली लालटेन देखी है; और वे अपने "अलौकिक" अनुभवों को उसी सहजता से लेती हैं जैसे अन्य लोग अपनी संगीत प्रतिभा या शौक को लेकर लेते हैं। जब वे छोटी बच्ची थीं, तब उनकी दादी उन्हें न्यू जर्सी के हैकेंसैक में वॉन स्टुबेन के घर ले गईं थीं। (जनरल एफ. डब्ल्यू. ए. वॉन स्टुबेन अमेरिकी क्रांति के एक जर्मन समर्थक थे जिन्होंने दमन के कारण यूरोप से आए स्वयंसेवकों के साथ जनरल वाशिंगटन की सहायता की थी, जो नई दुनिया में अधिक स्वतंत्रता की उम्मीद कर रहे थे।) घर पुराना और धूल भरा था, फर्श की लकड़ियाँ चरमरा रही थीं, और वहाँ एक रहस्यमय वातावरण था। घर को एक ऐतिहासिक संग्रहालय में बदल दिया गया था, और आगंतुकों को घुमाने के लिए वहाँ महिलाएँ मौजूद थीं।

जब उसकी दादी नीचे गाइड से बातें कर रही थीं, तो छोटी लड़की अकेले ही सीढ़ियों से ऊपर चली गई। ऊपर के एक कमरे में उसने कोने में एक कुर्सी पर एक आदमी को बैठे देखा। उसने सोचा कि वह भी कोई गाइड होगा। जब वह कमरे के बारे में उससे कुछ पूछने के लिए मुड़ी, तो वह जा चुका था। चूंकि उसने उसे जाते हुए नहीं सुना था, इसलिए उसे यह थोड़ा अजीब लगा, खासकर इसलिए क्योंकि हर कदम पर फर्श की लकड़ियों से चरमराहट की आवाज़ आ रही थी। लेकिन छोटी होने के कारण उसने इस अजीब बात पर ज़्यादा ध्यान नहीं दिया। हालांकि, कुछ ही देर बाद वह फिर से दिखाई दिया। उसे देखते ही उसने अपने मन में उठ रहा सवाल पूछ लिया। इस बार वह गायब नहीं हुआ, बल्कि उसने धीमी, सधी हुई आवाज़ में जवाब दिया, जो मानो दूर से आ रही हो। जब उसने कमरे के बारे में उसकी जिज्ञासा शांत कर दी, तो उसने उससे उसके बारे में कुछ सवाल पूछे, और आखिर में वह सवाल पूछा जो कई सालों तक उसके मन में बसा रहा—"जनरल वाशिंगटन अब अंग्रेजों के बारे में क्या कर रहे हैं?"

मार्गरिट इस सवाल को सुनकर स्तब्ध रह गई। वह युवा थी, लेकिन उसे अच्छी तरह पता था कि वाशिंगटन की मृत्यु को कई साल हो चुके हैं। उसने चतुराई से उसे यह बात बताई और साथ ही यह भी कहा कि अब हैरी ट्रूमैन राष्ट्रपति हैं और वर्ष 1951 है। यह जानकारी सुनकर वह व्यक्ति स्तब्ध रह गया और कुर्सी पर वापस बैठ गया। मार्गरिट उसे विस्मय और भय से देखती रही और वह धीरे-धीरे गायब हो गया।

* 8

एरोन बर्र का बचाव

बहुत कम ऐतिहासिक हस्तियों को उनके शत्रुओं से उतना कष्ट सहना पड़ा हो या उन्हें उतना गलत समझा गया हो और लगातार गलत तरीके से प्रस्तुत किया गया हो जितना कि संयुक्त राज्य अमेरिका के पूर्व उपराष्ट्रपति, आरोन बर्र को, जिनके अमेरिकी स्वतंत्रता में योगदान को अक्सर भुला दिया जाता है जबकि उनकी बाद की परेशानियों को उनके व्यक्तित्व का प्रतीक बना दिया जाता है।

बर्र एक वकील और राजनीतिज्ञ थे, जिन्होंने क्रांतिकारी सेनाओं में सेवा की थी और बाद में 1796 और 1800 के चुनावों में डेमोक्रेटिक-रिपब्लिकन पार्टी के उम्मीदवार के रूप में न्यूयॉर्क में अपनी पहचान बनाई। वे 1796 में निर्वाचित नहीं हुए, लेकिन 1800 में उन्हें थॉमस जेफरसन के बराबर ही चुनावी वोट मिले। जब प्रतिनिधि सभा ने जेफरसन के पक्ष में टाई का फैसला सुनाया, तो बर्र उपराष्ट्रपति बने।

बर्र को जल्द ही एहसास हो गया कि जेफरसन उनके कट्टर दुश्मन थे। उन्होंने खुद को उन सभी लाभों से वंचित पाया, जैसे कि राजनीतिक संरक्षण, जो आमतौर पर उनके पद पर बैठे व्यक्ति को मिलते हैं, और अपने कार्यकाल के अंत में उनका कोई राजनीतिक भविष्य नहीं बचा था। सैमुअल एंगल बर्र, जो एरॉन की पहली पत्नी थियोडोसिया बार्स्टो बर्र के वंशज और एरॉन बर्र के बारे में सर्वोत्कृष्ट जानकार हैं, उन्हें "अमेरिकी फीनिक्स" कहते हैं, और वास्तव में वे एक ऐसे व्यक्ति थे जो अक्सर अपने टूटे हुए करियर की राख से उठ खड़े हुए।

अपने करियर के स्पष्ट अंत से निराश होने के बजाय, बर्र ने न्यूयॉर्क के गवर्नर पद के लिए एक स्वतंत्र उम्मीदवार बनकर अपना करियर फिर से शुरू किया। हालाँकि, उन्हें एक दुष्प्रचार अभियान में हार का सामना करना पड़ा, जिसमें उनके दोनों विरोधियों, फेडरलिस्टों और नियमित डेमोक्रेटिक-रिपब्लिकन पार्टी ने भाग लिया था।

प्रोफेसर बर्र ने अपने नाम पर लिखी जीवनी में लिखा है, "इस चुनावी प्रचार सामग्री में निहित कुछ झूठ और अप्रत्यक्ष संकेत वर्षों से तथ्यों के रूप में दोहराए जाते रहे हैं। ये काफी हद तक उस समय से उन पर लगाए गए अनुचित दुर्व्यवहार के लिए जिम्मेदार रहे हैं।"

जेफरसन के अलावा, उनके सबसे बड़े दुश्मन हैमिल्टन-शुइलर परिवार के सदस्य थे, क्योंकि 1791 में बर्र ने अलेक्जेंडर हैमिल्टन के ससुर, जनरल फिलिप शुइलर को न्यूयॉर्क के सीनेटर के रूप में प्रतिस्थापित कर दिया था। हैमिल्टन स्वयं क्रांतिकारी युद्ध के दिनों से ही बर्र के प्रतिद्वंद्वी थे, लेकिन 1804 में बर्र को हराने में सहायक राजनीतिक अपमान और बयान, जिनका आरोप हैमिल्टन पर लगाया गया था, अंततः उस प्रसिद्ध द्वंद्वयुद्ध का कारण बने।

बर्र की चुनौती स्वीकार करते हुए, हैमिल्टन ने द्वंद्वयुद्ध की प्रथा की गैरकानूनीता को स्वीकार किया। उन्होंने इससे पहले भी कई लोगों के साथ द्वंद्वयुद्ध किया था, जैसे कि 1795 में न्यूयॉर्क के राजनेता कमोडोर निकोलसन के साथ। उनके अपने बेटे, फिलिप हैमिल्टन की 1801 में

न्यूयॉर्क के वकील जॉर्ज ईकर के साथ द्वंद्वयुद्ध में मृत्यु हो गई थी। इसलिए, 1804 की उस ठंडी जुलाई की सुबह, न्यू जर्सी के वेहॉकेन में, दोनों में से कोई भी पक्ष द्वंद्वयुद्ध के नियमों से पूरी तरह अनजान नहीं था।

घटना के बारे में कई अलग-अलग मत प्रकाशित हुए हैं, लेकिन आज तक सच्चाई स्पष्ट नहीं है। दोनों व्यक्तियों ने गोली चलाई और बर्र की गोली निशाने पर लगी। घाव घातक था या नहीं, इसका आकलन करना आज कठिन है। नाव से लंबी वापसी यात्रा और 1804 में चिकित्सा की आदिम स्थिति हैमिल्टन की मृत्यु के कारण हो सकती है।

कुछ साल पहले जब मैंने न्यूयॉर्क शहर में उस घर की छानबीन की, जहाँ उन्होंने द्वंद्वयुद्ध के बाद अपने अंतिम क्षण बिताए थे, तब मुझे यह साबित हो गया कि अलेक्जेंडर हैमिल्टन की आत्मा को शांति नहीं मिली थी। वह घर उनके चिकित्सक का था, लेकिन अब उसे तोड़कर वहाँ एक आधुनिक अपार्टमेंट बनाया जा रहा है। कई किरायेदारों ने दिवंगत अलेक्जेंडर हैमिल्टन की एक झलक घर में देखी है और वे जल्दी से आँखों से ओझल हो जाते हैं, मानो कहीं जल्दी पहुँचने की कोशिश कर रहे हों। मुझे आश्चर्य होता है कि क्या वे सच्चाई सामने लाने की कोशिश कर रहे हैं, उस सच्चाई को जिसके चलते उनके प्रतिद्वंद्वी बर्र पर न्यू जर्सी राज्य द्वारा हत्या का आरोप लगाया गया था।

बर्र द्वंद्वयुद्ध की व्यापक निंदा को दूर नहीं कर सके; हैमिल्टन अचानक शहीद बन गए और वे खलनायक। उन्होंने कुछ समय के लिए न्यूयॉर्क छोड़ने का फैसला किया और पूर्वी फ्लोरिडा चले गए, जहाँ उन्हें स्पेनिश औपनिवेशिक प्रणाली का ज्ञान हुआ, जो उनके बाद के वर्षों में उनकी रुचि का विषय बना रहा। अंततः वे वाशिंगटन लौट आए और संयुक्त राज्य अमेरिका के उपराष्ट्रपति के रूप में अपना कार्यभार फिर से संभाल लिया।

1805 में उन्हें नव अधिग्रहीत लुइसियाना क्षेत्र की संभावनाओं में रुचि हुई और उन्होंने जेफरसन को ओआचिटा नदी के आसपास के क्षेत्र को विकसित करने में रुचि जगाने की कोशिश की ताकि वहां एक और नया राज्य स्थापित किया जा सके।

जेफरसन ने उनके प्रस्ताव को ठुकरा दिया, और अंततः बर्र ने अपना खुद का अभियान संगठित किया। पश्चिम में जहाँ भी वे गए, उनका हार्दिक स्वागत किया गया। स्पेन के साथ युद्ध की आशंका थी, और बर्र का मानना था कि संयुक्त राज्य अमेरिका को इसके लिए तैयार

रहना चाहिए और उचित समय आने पर अपनी सीमाओं का पश्चिम की ओर विस्तार करना चाहिए।

सरकार द्वारा उपेक्षा किए जाने के कारण, बर्र ने लुइसियाना क्षेत्र में एक नया राज्य स्थापित करने के लिए साहसी उपनिवेशवादियों के एक समूह को भर्ती करने का फैसला किया और उस युद्ध के शुरू होने की प्रतीक्षा करने का निर्णय लिया, जिसके बारे में उसे यकीन था कि वह जल्द ही शुरू होगा। उसने स्पेनिश-अमेरिकी सीमा के निकट चार लाख एकड़ जमीन खरीदी और वहां अपने सपनों का राज्य स्थापित करने की योजना बनाई, जिसका नाम बर्सिल्वेनिया रखा जाना था।

अपनी योजनाओं के दौरान, बर्र ने जनरल जेम्स विल्किंसन के साथ काम किया था, जो उस समय लुइसियाना क्षेत्र के नागरिक गवर्नर थे और जिनसे बर्र क्रांतिकारी युद्ध के समय से परिचित थे। दुर्भाग्य से बर्र को यह नहीं पता था कि विल्किंसन वास्तव में एक दोहरा एजेंट था, जो वाशिंगटन और स्पेनिश सरकार दोनों के लिए काम कर रहा था।

जेफरसन सरकार में अपनी स्थिति मजबूत करने के लिए, विल्किंसन ने राष्ट्रपति को सुझाव दिया कि बर्र की गतिविधियों को राजद्रोह माना जा सकता है। विल्किंसन ने तुरंत बर्र के एक गुप्त पत्र में इस प्रकार बदलाव किया कि बर्र के कथन का उपयोग उसके विरुद्ध किया जा सके। उसने जुलाई 1806 में यह दस्तावेज़ और अपनी एक चिंताजनक रिपोर्ट जेफरसन को भेज दी।

इसी बीच, अपने अभियान के विरुद्ध रची गई साजिश से अनभिज्ञ, बर्र के उपनिवेशी नैचेज़ के आसपास के क्षेत्र में पहुँचे, जहाँ जेफरसन द्वारा जारी एक राष्ट्रपति घोषणा में उन पर राजद्रोह का आरोप लगाया गया। मिसिसिपी की प्रादेशिक सरकार द्वारा बरी किए जाने के बावजूद, वाशिंगटन ने उन्हें गिरफ्तार करने के आदेश भेजे।

बर्र का विद्रोही बनने का कोई इरादा नहीं था, इसलिए उन्होंने अपने उपनिवेशवादियों के बचे हुए समूह को तितर-बितर कर दिया और पूर्व की ओर लौट गए। रास्ते में उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया और मुकदमे के लिए रिचमंड ले जाया गया। राजद्रोह के मुकदमे में झूठे गवाहों की भरमार थी, और यहां तक कि विल्किंसन ने भी उस पत्र को जाली बनाने की बात स्वीकार की, जो सरकार के मुकदमे का आधार बना था। फैसला "दोषी नहीं" था, लेकिन सर्वशक्तिशाली

जेफरसन राजनीतिक मशीन द्वारा उनके खिलाफ भड़काई गई जनता ने एरॉन बर्र की निंदा करना जारी रखा।

इन परिस्थितियों में, बर्र ने यूरोप जाने का फैसला किया। उन्होंने 1808 से 1812 तक चार साल विदेश यात्रा में बिताए और अंततः न्यूयॉर्क लौट आए, जहाँ उन्होंने अपने वकालत के पेशे को फिर से शुरू किया और शानदार परिणाम प्राप्त किए।

अगले वर्ष समुद्र में उनकी इकलौती बेटी थियोडोसिया के लापता हो जाने से वे पूरी तरह टूट गए; उनकी राजनीतिक महत्वाकांक्षाएं समाप्त हो गईं और उन्होंने अपना शेष जीवन एक सफल वकालत में व्यतीत किया। 1833 में उन्होंने दूसरी शादी की - उनकी पहली पत्नी, थियोडोसिया की मां, जिनका नाम भी थियोडोसिया था, का 1794 में निधन हो गया था। दुल्हन स्टीफन जुमेल नामक एक फ्रांसीसी शराब व्यापारी की विधवा थीं, जिन्होंने बेट्सी जुमेल को काफी धनवान बना दिया था। यह एक तूफानी वैवाहिक जीवन था और अंततः श्रीमती बर्र ने तलाक के लिए मुकदमा दायर किया। 14 सितंबर 1836 को, जिस दिन आरोन बर्र का निधन हुआ, उसी दिन उन्हें तलाक मिल गया। बेट्सी ने खुद को पूर्व उपराष्ट्रपति की विधवा के अलावा कुछ और नहीं समझा और उन्होंने सभी दस्तावेजों पर एलिजा बी. बर्र के नाम से ही हस्ताक्षर करना जारी रखा।

बर्र ने अपने अंतिम वर्ष स्टेटन द्वीप के पोर्ट रिचमंड स्थित एक अपार्टमेंट में बिताए, जहाँ से न्यूयॉर्क हार्बर का नज़ारा दिखता था। उनके पार्थिव शरीर को प्रिंसटन विश्वविद्यालय में दफनाया गया, जिसके अध्यक्ष कई वर्षों तक बर्र के दिवंगत पिता, रेवरेंड आरोन बर्र रहे थे।

जून 1967 की रोमांचक घटनाओं के बाद ही मुझे इन सब बातों की जानकारी हुई, जब मैं मानसिक माध्यमों से आरोन बर्र से संपर्क करने में सक्षम हुआ।

एरोन बर्र नाम से मेरा पहला परिचय दिसंबर 1961 में हुआ था। उस समय मैं पैरासाइकोलॉजी फाउंडेशन द्वारा दिए गए अध्ययन अनुदान के तहत न्यूयॉर्क शहर और उसके आसपास के विभिन्न भूतिया घरों की सक्रिय रूप से जांच कर रहा था। बाद में मेरी रिपोर्टें 'घोस्ट हंटर' नामक एक लोकप्रिय पुस्तक में प्रकाशित हुईं।

एक दिन रिचर्ड मार्डस नाम के एक प्रचारक ने मेरा ध्यान वेस्ट थर्ड स्ट्रीट पर स्थित कैफे बिज़ारे नामक एक नाइटक्लब की ओर दिलाया। श्री मार्डस ग्रीनविच विलेज के इतिहास और

उससे जुड़ी कहानियों के विशेषज्ञ थे और आज भी हैं। उन्होंने मुझे बताया कि यह क्लब वास्तव में पुनर्निर्मित अस्तबलों में बनाया गया था, जो कभी न्यूयॉर्क शहर में एरॉन बर्र की संपत्ति रिचमंड हिल का हिस्सा थे। बर्र के निवास के समय यह खेत हुआ करता था और न्यूयॉर्क शहर के हिसाब से काफी ऊपरी इलाके में स्थित था।

लेकिन मार्डस ने मुझे केवल ऐतिहासिक जानकारी देने के लिए फोन नहीं किया था: बर्र अस्तबल में सचमुच कुछ अलौकिक घटनाएँ देखी गई थीं, और उन्होंने मुझसे इस मामले की जाँच करने को कहा। मैं इमारत को देखने गया। यह न्यूयॉर्क के नाइटक्लब बेल्ट की एक व्यस्त गली में स्थित है, जहाँ रात ढलने के बाद जिज्ञासु लोग और पर्यटक अनौपचारिक मौज-मस्ती भरी शाम बिताने के लिए इकट्ठा होते हैं। दिन के समय, गली बदसूरत और साधारण दिखती है, लेकिन रात ढलने के बाद यह अपने आप में एक अलग ही रोमांच से जगमगा उठती है।

कैफे बिज़ारे अपनी भड़कीली सजावट और प्रवेश द्वार के बाहर लगे पोस्टरों से अलग दिखता था, लेकिन जिस पुरानी इमारत में यह स्थित था, जो तीन मंजिला थी, वह उन्नीसवीं सदी की एक विशिष्ट पत्थर की इमारत थी, जो अच्छी तरह से संरक्षित थी और मूल सामग्रियों के प्रतिस्थापन का कोई संकेत नहीं दिखाती थी।

अंदर, जगह को अजीबोगरीब और डरावनी चीज़ों से सजाया गया था, जिनमें दुकान से लाए गए नकली हाथों से लेकर शैतान के मुखौटे तक शामिल थे, और ऊंची छत से लटकी इन अजीबोगरीब वस्तुओं पर रंग-बिरंगी रोशनी पड़ रही थी। लंबे कमरे के पिछले हिस्से में एक मंच था, जिसके बाईं ओर एक सीढ़ी ऊपर मचान की ओर जाती थी; मंच के पीछे एक और सीढ़ी थी, क्योंकि इमारत के पिछले हिस्से में भूसे का गोदाम था। फर्श पर लकड़ी का बुरादा फैला हुआ था, और कमरे में लगभग तीन दर्जन तरह-तरह की मेजें रखी हुई थीं।

शाम ढल रही थी और जगह का माहौल ठंडा और सुनसान था, फिर भी कुछ अजीब सा एहसास हो रहा था—किसी तरह का रहस्यमय। मेरी मुलाकात एक खूबसूरत, काले बालों वाली युवती से हुई, जो बाद में मालिक की पत्नी, श्रीमती रेनी ऑलमेन निकलीं। उन्होंने कैफे बिज़ारे में मेरा स्वागत किया और बताया कि उनके पति, रिक, मानसिक शक्तियों जैसी चीजों

में पूरी तरह विश्वास नहीं करते, लेकिन उन्हें खुद यहां कुछ अनोखे अनुभव हुए थे। मेरे अनुरोध पर, उन्होंने मुझे अपने अनुभवों के बारे में लिखित बयान दिया।

27 जुलाई, 1961 की सुबह तड़के 2:20 बजे, वह और उनके पति रात के लिए कैफे बंद कर रहे थे। वे अपनी कार की ओर जा रहे थे तभी श्रीमती ऑलमेन को याद आया कि वह अंदर एक पैकेट भूल गई हैं। जल्दी से कैफे लौटकर, उन्होंने दरवाज़े फिर से खोले और सुनसान इमारत में प्रवेश किया। उन्होंने लाइटें जलाईं और रसोई की ओर चलीं, जो कैफे के पिछले हिस्से के लगभग एक तिहाई भाग में स्थित थी। कैफे बिल्कुल खाली था, फिर भी उन्हें एक अजीब सी अनुभूति हुई कि वह अकेली नहीं हैं। उन्होंने जल्दी से अपना पैकेट उठाया और फिर से सामने के दरवाजे की ओर चल पड़ीं। कैफे के अंधेरे कोनों में पीछे मुड़कर देखते हुए, उन्होंने एक आदमी की आकृति देखी, जो अपनी तीखी काली आँखों से उन्हें घूर रहा था। उसने एक पुरानी झालरदार कमीज़ पहनी हुई थी और जब उन्होंने उसे पुकारा, "कौन है?", तो वह मुस्कुराता हुआ प्रतीत हुआ।

लेकिन वह आकृति न तो हिली और न ही उसने कोई प्रतिक्रिया दी।

"तुम यहाँ क्या कर रहे हो?" रेनी ने उस प्रेत को लगातार देखते हुए पूछा।

कोई जवाब नहीं मिला, और अचानक रेनी का साहस टूट गया। दौड़कर वापस सामने के दरवाजे पर आकर उसने कार से अपने पति को बुलाया और दोनों साथ में कैफे लौट आए। दरवाज़ा फिर से खोलने पर, जिसे रेनी ने भूत से भागते समय बंद कर दिया था, उन्होंने पाया कि जगह बिल्कुल खाली थी। पति की आदत के अनुसार, मिस्टर ऑलमेन ने इसे घबराहट या थकी हुई आँखों का मामला बताकर टालने की कोशिश की, लेकिन उनकी पत्नी ने उनकी बात नहीं मानी। वह जानती थी कि उसने क्या देखा था, और यह बात आने वाले कई सालों तक उसे सताती रही।

दरअसल, सफेद झालरदार कमीज पहने और तीखी काली आंखों वाले उस सज्जन को देखने वाली वह पहली महिला नहीं थी। उनके एक वेटर ने भी उस भूत को देखा था और तुरंत नौकरी छोड़ दी थी। गांव वैसे भी अलौकिक घटनाओं के बिना भी काफी जीवंत था, और एक भूत टिप के तौर पर कितना देता है?

मैंने मंच और पुरानी सीढ़ियों के पास बाईं ओर के क्षेत्र पर नज़र डाली, यह देखने के लिए कि क्या कोई परावर्तक सतह उस प्रेतवाधित दृश्य का कारण हो सकती है। वहाँ ऐसा कुछ भी नहीं था, प्रकाश को परावर्तित करने वाली कोई चीज़ नहीं थी। इसके अलावा, पीछे के हिस्से की बत्तियाँ बंद थीं, और आगे की बत्तियाँ इतनी नीचे थीं कि दरवाजे के ठीक आसपास के क्षेत्र को छोड़कर कहीं और दिखाई नहीं दे रही थीं।

इन परिस्थितियों में मैंने इस मामले की और गहराई से जांच करने के लिए मानसिक चिकित्सक एथेल जॉनसन मेयर्स से मुलाकात का इंतजाम करने का फैसला किया। यह मुलाकात 8 जनवरी, 1962 को हुई और प्रेस के कई प्रतिनिधि भी उपस्थित थे।

श्रीमती मेयर्स ने समाधि की अवस्था में सबसे पहले यही कहा कि उन्हें उस स्थान पर तीन लोग दिखाई दिए। विशेष रूप से, उन्हें एक अधेड़ उम्र का व्यक्ति, जिसकी गहरी काली आँखें थीं, बहुत प्रभावित किया, जो उस घर का मालिक था। उन्हें लगा कि वह वर्ष 1804 था। इसके अलावा, उन्होंने सैमुअल बॉटम्सली नामक एक पूर्व मालिक का वर्णन किया और उस व्यक्ति के जीवनकाल में कथित तौर पर झेली गई पारिवारिक परेशानियों के बारे में बताया। उन्होंने यह भी बताया कि जब सड़क आज की तुलना में अधिक दूर थी, तब यह घर सड़क से थोड़ा पीछे बना हुआ था। मैंने पाया कि यह बात सही है।

श्रीमती मेयर्स के माध्यम से बोलने वाली आत्मा ने गरजते हुए कहा, "मैं एक अंग्रेज हूँ और यहाँ मेरे अधिकार हैं," और हम सब मंत्रमुग्ध होकर बैठे रहे। बाद में मुझे पता चला कि बर्र के हाथों में जाने से पहले यह संपत्ति एक अंग्रेज की थी।

माध्यम के रुक-रुक कर बोलने से जो नाटकीय घटनाक्रम सामने आया, वह आरोन बर्र से संबंधित नहीं था, बल्कि पहले बसे हुए लोगों से संबंधित था। सैमुअल के बेटे एलन और कैथरीन नाम की एक लड़की से जुड़े पारिवारिक झगड़े और इमारत का अस्तबल के रूप में वर्णन, जहाँ साज-सामान रखा जाता था, एथेल के मुख से निकलता रहा। इमारत को देखकर वह सचेत रूप से यह नहीं जान सकती थी कि यह कभी अस्तबल हुआ करता था।

यह अवधि 1775 से 1804 तक फैली हुई थी, जब एक अन्य व्यक्ति ने सत्ता संभाली और खुद को जॉन बॉटम्सली के रूप में पहचाना। एक विलेख के बारे में कुछ चर्चा हुई, और मुझे पता

चला कि सब कुछ ठीक नहीं था। ऐसा प्रतीत हुआ कि वह जगह बेच दी गई थी, लेकिन सैमुअल बॉटम्सली के वंशज इसे आसानी से स्वीकार नहीं कर रहे थे।

इन सब बातों के चलते A.B. अक्षरों को उस स्थान से प्रमुख रूप से जुड़ा हुआ माना गया।

मैंने बाद में तथ्यों की जाँच की; आरोन बर्र की रिचमंड हिल एस्टेट में 1797 से ही ये अस्तबल शामिल थे। उससे पहले यह क्षेत्र विभिन्न ब्रिटिश उपनिवेशवादियों के स्वामित्व में था।

जब मैंने 1963 में अपनी किताब 'घोस्ट हंटर' में इस प्रेतात्माओं से संपर्क करने के अनुष्ठान का वर्णन लिखा था, तब मुझे लगा था कि मैंने इसके बारे में लिखना बंद कर दिया है। और मैंने सच में लिख दिया था, सिवाय इसके कि जब भी मैं उस जगह से गुजरता था, तो कभी-कभार उस पर एक नज़र डाल लेता था और सोचता था कि क्या गहरी, भेदक आँखों वाला वह आदमी सचमुच आरोन बर्र था।

1964 में बर्र का नाम मेरे ध्यान में फिर से आया, जब मैंने वाशिंगटन हाइट्स स्थित मॉरिस-जुमेल हवेली में हो रही अजीबोगरीब मानसिक घटनाओं की जांच की, जहां बर्र ने अपने जीवन के अंतिम वर्षों में श्रीमती बेट्सी जुमेल के दूसरे पति के रूप में निवास किया था। लेकिन क्रांतिकारी हवेली में दिखाई देने वाली प्रेतात्माएं स्वयं श्रीमती जुमेल और उनके दिवंगत पहले पति की बेचैन आत्माएं निकलीं, जो अपनी पत्नी पर उनकी हत्या का आरोप लगा रही थीं।

* * *

जनवरी 1967 में एक दिन मुझे ऐलिस मैकडरमॉट नाम की एक युवती का पत्र मिला। उसमें कैफे बिज़ारे में उनके कुछ विचित्र अनुभवों का जिक्र था—ऐसे अनुभव जिनकी उम्मीद इतनी विचित्र सजावट वाली जगह पर भी नहीं की जा सकती। सुश्री मैकडरमॉट ने साक्षात्कार का अनुरोध किया और उसी वर्ष 4 फरवरी को मैंने एक मित्र की उपस्थिति में उनसे बात की।

वह अपने सामाजिक जीवन के एक हिस्से के रूप में कई वर्षों से "गांव" जाया करती रही थी - अब वह बीस साल की थी - और 1964 में पहली बार बिज़ारे का दौरा किया। उसे कुछ अजीब सा महसूस हुआ, लेकिन वह अपनी आशंका को ठीक से बता नहीं पाई।

मुझे ऐसा लग रहा था कि वहाँ कुछ है, लेकिन मैंने इसे नज़रअंदाज़ कर दिया, यह सोचकर कि यह मेरी कल्पना होगी। लेकिन मंच के ऊपर बालकनी पर कुछ ऐसा था जो मानो मुझे घूर रहा हो—मेरा मतलब है कि छत से सजावट के तौर पर लटकी हुई पुतली के अलावा कुछ और भी था।

उस समय, जब ऐलिस सोलह वर्ष की थी, उसने मेरे या मेरी किताबों के बारे में नहीं सुना था, लेकिन उसे पूर्वाभास और मानसिक प्रकृति की झलकियों से जुड़े कुछ ईएसपी अनुभव हुए थे।

* * *

एलिस, जो अपने माता-पिता की इकलौती संतान है, मैनहट्टन में एक सचिव के रूप में काम करती है। उसके पिता एक जलयान अधिकारी हैं और माँ लेखाकार हैं। वह बेहद खूबसूरत, सुनहरे बालों वाली, तेज बुद्धि और दृढ़ निश्चय वाली महिला है। भिक्षुणी बनने के लिए प्रेरित होकर उसने लॉन्ग आइलैंड के एक मठ में तीन महीने बिताए, लेकिन उसे पता चला कि धार्मिक जीवन उसके लिए नहीं है। इसके बाद वह न्यूयॉर्क लौट आई और एक बड़ी व्यावसायिक कंपनी में सचिव की नौकरी करने लगी।

कॉन्वेंट छोड़ने के बाद भी उन्होंने अपनी पढ़ाई जारी रखी, खासकर फ्रेंच। उन्होंने वाशिंगटन स्क्वायर में एक शिक्षक से पढ़ाई की और अक्सर रास्ते में कैफे बिज़ारे के पास से गुज़रती थीं। हर बार जब वह वहाँ से गुज़रतीं, तो उनके भीतर एक अजीब सी बेचैनी फिर से जाग उठती थी। वह अंदर नहीं जाती थीं, बल्कि जल्दी से आगे बढ़ जाती थीं।

लेकिन एक बार वह रुक गई, और उसके भीतर से एक आवाज़ आई, "अंदर जो भी हो, तुम ज़रूर अकेले होगे!" अंदर किसी के उससे मिलने की प्रबल अनुभूति होने के बावजूद वह अंदर नहीं गई। लेकिन उसी रात, उसे एक जीवंत सपना आया। एक आदमी मंच पर खड़ा था, और वह उसे साफ़ देख पा रही थी। वह मध्यम कद का था, और उसने बेज रंग की पैंट और काले घुड़सवारी के जूते पहने थे। पीटर पैन कॉलर वाली उसकी सफेद कमीज़ ने उसे आकर्षित किया क्योंकि वह आजकल पुरुषों द्वारा पहनी जाने वाली कमीज़ों जैसी नहीं थी। उसकी आस्तीनें फूली हुई थीं। उस आदमी की छोटी दाढ़ी और मूंछें भी थीं।

“तो क्या वह आज के फैशन के हिसाब से कपड़े पहने हुए नहीं दिख रहा था?”

“बिल्कुल नहीं, जब तक कि वह कोई नया रॉक एंड रोल स्टार न हो।” लेकिन इस आदमी की सबसे खास बात उसकी गहरी, भेदक आँखें थीं, उसने बताया। वह बस कमर पर हाथ रखे वहीं खड़ा था और एलिस को देख रहा था। जब वह आदमी उसे लगातार देखता रहा तो एलिस डर गई और बाहर चली गई।

इस स्वप्न का यहीं अंत हो गया, लेकिन मुझसे बात करने से एक रात पहले वह फिर से सपने में प्रकट हुआ। इस बार वह उससे फ्रेंच में बात कर रही थी, और साथ ही उसके साथ मौजूद एक महिला से भी। उस महिला ने चश्मा पहना हुआ था, उसकी नाक नुकीली थी, और उसने अपने चारों ओर एक शॉल लपेटा हुआ था—और हाँ, उसकी उंगली में एक सादी सोने की अंगूठी भी थी।

एलिस ने बताया कि उस महिला ने डच शैली की सफेद टोपी भी पहन रखी थी। मैं बहुत उत्सुक थी, क्योंकि उसने बेट्सी जुमेल के बुढ़ापे का वर्णन किया था—लेकिन जुमेल हवेली की भूतिया मालकिन को अपने कैफे बिज़ारे के अनुभव से कैसे जोड़ सकती थी? उसे इस संबंध का पता नहीं हो सकता था, फिर भी यह बिल्कुल सटीक बैठता था। बर्र और बेट्सी जुमेल दोनों ही फ्रेंच भाषा धाराप्रवाह बोलते थे और अक्सर उस भाषा का प्रयोग करते थे।

मैंने पूछा, "अगर मैं आपको उसकी तस्वीर दिखाऊं तो क्या आप उसे पहचान पाएंगे?"

“अगर वो होती तो,” एलिस ने हिचकिचाते हुए जवाब दिया।

मैंने जुमेल मेंशन में टंगी एक पेंटिंग की तस्वीर निकाली, जिसमें श्रीमती जुमेल को वृद्धावस्था में दिखाया गया है।

मैंने उसका नाम लेकर उसकी पहचान नहीं बताई, बस इतना समझाया कि यह लोगों के एक समूह की पेंटिंग है जिसे मैं चाहता था कि वह देखे।

“यही वह महिला है,” ऐलिस ने दृढ़ता से कहा, “लेकिन तस्वीर में वह मेरी पहली मुलाकात की तुलना में अधिक युवा दिख रही है।”

वह बातचीत किस बारे में थी? मैं जानना चाहता था।

ऐसा प्रतीत हुआ कि श्रीमती जुमेल की आत्मा बर्र की ओर से, जो वहीं खड़े होकर यह सब देख रहे थे, उनसे मुझसे संपर्क करने की विनती कर रही थीं! मैंने एलिस से, जो व्यावसायिक कलाकार बनना चाहती हैं, उस दृश्य का चित्र बनाने को कहा। बाद में, मैंने उस चित्र की तुलना आरोन बर्र के ज्ञात चित्रों से की। आँखें, भौहें और माथा वास्तव में बर्र के चित्रों से मिलते-जुलते थे। लेकिन दाढ़ी का चित्र ज्ञात नहीं था।

एलिस मैकडरमॉट से मेरी पहली मुलाकात के बाद, उन्होंने मुझे फिर से पत्र लिखा। उनके सपनों में बर्र का दिखना और भी ज़्यादा स्पष्ट होता जा रहा था, और वह इस जानकारी को दर्ज कराना चाहती थीं। उनके अनुसार, आरोन ने उस युवती के सामने अपने दिल की सारी बातें कह दीं, हालाँकि यह बात पहली नज़र में अविश्वसनीय लग रही थी।

संदेश का सार यह था कि "देश में स्थित व्हाइट हाउस" में जाकर एक धातु के बक्से में रखे कुछ कागजात ढूंढें। "ये मेरी निर्दोषता साबित करेंगे। मैं राजद्रोह का दोषी नहीं हूँ। लिखित प्रमाण मौजूद है। 18 अक्टूबर, 1802 या 1803 को लिखा गया।" संदेश काफी स्पष्ट था, लेकिन वे कागजात तो कब के गायब हो चुके थे।

देश में स्थित सफेद घर जुमेल मेंशन होगा।

मैंने एलिस को धन्यवाद दिया और कैफे बिज़ारे के स्थल पर एक और जांच करने का फैसला किया, क्योंकि ऐसा प्रतीत होता था कि संयुक्त राज्य अमेरिका के दिवंगत उपराष्ट्रपति की बेचैन आत्मा ने एक बार फिर अपनी बात कहने का फैसला कर लिया था।

उसी समय मेट्रोमीडिया टेलीविजन के मेल बेली ने मुझसे न्यूयॉर्क के भूतिया घरों के बारे में एक वृत्तचित्र बनाने के लिए संपर्क किया, और मैंने इन प्रयासों को मिलाकर टेलीविजन कैमरों की पूरी चकाचौंध में बर्र अस्तबल की जांच करने का फैसला किया।

12 जून, 1967 को मैं सिबिल लीक को बिज़ारे लेकर आया, उन्हें दो दिन पहले कैलिफ़ोर्निया से हवाई जहाज़ से लाया गया था। श्रीमती लीक को इस बात का कोई अंदाज़ा नहीं था कि उनसे क्या अपेक्षा की जा रही है या उन्हें कहाँ ले जाया जाएगा। फिर भी, 1 जून को ही, जब मैं उनसे हॉलीवुड में मिला, तो उन्होंने सहज रूप से मुझसे कहा कि उन्हें वह जगह "पता" है जहाँ मैं उन्हें हमारे अगले अभियान पर ले जाऊँगा—जो उस समय केवल एक संभावना थी—

और उन्होंने उसका विस्तृत वर्णन किया। 9 जून को, न्यूयॉर्क पहुँचने के बाद, उन्होंने फ़ोन किया और फिर से मुझे अपने विचार बताए।

“मुझे संगीत, हंसी और ढोल की थाप सुनाई दे रही है,” उसने कहना शुरू किया, और कैफे बिज़ारे के इन रातों के माहौल को इससे बेहतर ढंग से क्या बयान किया जा सकता है? “यह तीन मंजिला इमारत है, घर नहीं बल्कि कुछ बेचने की जगह; दो दरवाजे खुलते हैं, कमरे के दाहिनी ओर जाइए और फर्श से कुछ उठा हुआ दिखाई देता है, जहां ढोल की थाप सुनाई दे रही है।”

बिलकुल सही; दोनों दरवाजे एक लंबे कमरे में खुलते हैं, जिसके अंत में एक ऊंचा मंच बना हुआ है।

“तीन लोग... उनमें से एक की दाढ़ी सलीके से संवारी हुई है, नाक बाज जैसी है, वह फर्श के ऊंचे हिस्से पर बैठा है; उसकी आंखों के आसपास गहरा काला रंग है, वह एक आकर्षक, दुबला-पतला आदमी है, और उसके पास दो अन्य लोग हैं, जिनमें से एक का नाम 'थ' से शुरू होता है...।”

पीछे मुड़कर देखने पर वर्णन की सटीकता पर आश्चर्य होता है, क्योंकि निश्चित रूप से सिबिल लीक को न तो उस स्थान की जानकारी थी, न ही बर्र के साथ उसके संबंध की, और न ही अन्य गवाहों द्वारा वहां देखे गए व्यक्ति के बारे में दिए गए विवरण की।

यह टेलीफोन पर मुझे दिए गए उनके पहले अनुभवों का संक्षिप्त विवरण था। अगले दिन मुझे श्रीमती लीक से उनके रात्रिकालीन अनुभवों का लिखित विवरण प्राप्त हुआ। यह उनके परिसर में कदम रखने से दो दिन पहले की बात थी!

अपने बयान में श्रीमती लीक ने बताया कि उस रात उन्हें देर से नींद नहीं आई और वे अर्धचेतना की अवस्था में चली गईं, उनके बिस्तर के पास एक छोटी सी बत्ती जल रही थी। धीरे-धीरे उन्हें आग की गंध, या कहें कि बंदूक चलने के तुरंत बाद आने वाली अजीब सी गंध का एहसास हुआ। उसी समय उन्हें पीठ के बाईं ओर तेज दर्द महसूस हुआ, मानो उन्हें कोई चोट लगी हो।

उस आशंका को मन से निकालने की कोशिश करते हुए, श्रीमती लीक ने अपने टाइपराइटर पर कुछ काम करना शुरू किया, लेकिन वह उपस्थिति बनी रही। उन्हें ऐसा लगा जैसे कोई

आवाज़ उन तक पहुँचने की कोशिश कर रही हो, एक ऐसी आवाज़ जो विदेशी भाषा बोल रही हो और थियो नाम पुकार रही हो।

मैंने श्रीमती लीक से उस विदेशी भाषा के बारे में सवाल किया जो उन्होंने दिव्य दृष्टि से सुनी थी।

उन्होंने कहा, "मुझे पहले से ही अंदाजा था कि यह फ्रेंच है।"

अंततः वह गहरी नींद में सो गई। लेकिन शनिवार दोपहर तक बेचैनी का एहसास फिर लौट आया। इस बार उसे ऐसा लगा जैसे कोई उसे नदी के किनारे बुला रहा हो, उस इलाके में नहीं जहाँ मैं रहती हूँ (शहर के ऊपरी हिस्से में), बल्कि "काफी दूर दूसरी तरफ", जहाँ बर्र के अस्तबल स्थित थे।

* * *

आखिरकार वो बड़ा पल आ ही गया। 12 जून का दिन था, और टेलीविजन क्रू सुबह से ही कैफे बिज़ारे के अंदर और आसपास कैमरे और साउंड उपकरण लगाने में जुटे हुए थे ताकि जांच बिना किसी रुकावट के रिकॉर्ड की जा सके। हमने दो कैमरों को बारी-बारी से इस्तेमाल किया, ताकि रीलोड करने की ज़रूरत न पड़े। "भूतिया मंच" के नीचे का केंद्रीय क्षेत्र हमारी शूटिंग के लिए चुना गया था, और वह जगह ठीक-ठाक रोशनी से जगमगा रही थी, निश्चित रूप से रात में ग्राहकों के होने के समय की तुलना में कहीं अधिक रोशन थी।

सब कुछ बड़ी सावधानी से तैयार किया गया था। मेरी पत्नी कैथरीन को सिबिल के साथ हमारी सफेद सिट्रोएन कार चलाकर बिज़ार तक जाना था। ठीक 3 बजे कार पहुंची, सिबिल लीक बाहर निकलीं और मैंने बाहरी दरवाजे पर उनका स्वागत किया, जबकि हमारे निर्देशक, आर्ट फॉरेस्ट ने कैमरे चालू करने का संकेत दिया। "कैफे बिज़ार में आपका स्वागत है," मैंने कहा और अपनी उस सहेली को अर्ध-अंधेरे में अंदर ले गया। केवल बीच का हिस्सा ही रोशन था।

मैंने उससे कहा कि वह उस जगह का भ्रमण करे और अपनी इच्छानुसार अनुभव एकत्र करे।

"मैं वहाँ रखे उन ड्रमों के पास जा रही हूँ," सिबिल ने दृढ़ता से कहा और मंच के पीछे की ओर ऐसे चल पड़ी जैसे उसे रास्ता पता हो।

“हाँ—यही वह हिस्सा है। मुझे ठंड लग रही है। हालाँकि मैं शारीरिक रूप से यहाँ नहीं आया हूँ, फिर भी मैं इस जगह को जानता हूँ।”

मैंने पूछा, "आपको क्या लगता है, हमें यहाँ क्या करना चाहिए?"

मुझे लगता है कि हमें किसी न किसी को इस पद से मुक्त करना होगा, किसी ऐसे व्यक्ति को जिसने लंबे समय तक इंतजार किया है।

"यह भावना सबसे प्रबल कहाँ है?"

"पीछे की तरफ, जहां यह अतिरिक्त हिस्सा लगाया गया प्रतीत होता है।"

सिबिल को इस बात का पता नहीं था, लेकिन मूल इमारत के निर्माण के वर्षों बाद उसमें एक और हिस्सा जोड़ा गया था, और हम ठीक उसी हिस्से में खड़े थे।

उन्होंने समझाया कि इसमें एक से अधिक लोग शामिल थे, लेकिन उनमें से एक विशेष रूप से हावी था; कि यह अतीत की कोई घटना थी, जो किसी और सदी की थी। फिर मैंने उनसे कुर्सी पर बैठने को कहा, और श्रीमती रेनी ऑलमेन और मेरी पत्नी कैथरीन एक छोटी मेज के चारों ओर हमारे साथ बैठ गईं।

यह एक प्रेतात्माओं से संपर्क करने का सत्र होने वाला था, और सिबिल शायद पांच मिनट के भीतर ही गहरी समाधि में चली गई, क्योंकि हम दोनों एक-दूसरे के साथ अच्छी तरह से तालमेल में थे, और उसे "बाहर निकलने" की अनुमति देने के लिए मेरी ओर से केवल एक संकेत की आवश्यकता थी।

पहले तो सिर हिलने लगा, जैसे नींद ठीक से न आने पर व्यक्ति हिलता-डुलता है।

धीरे-धीरे, चेहरे के भाव एक पुरुष के भाव में बदल गए, एक गंभीर चेहरा, शायद संदेह से भरा चेहरा भी। उसके कसकर बंद होठों से निकलती फुफकार की आवाज़ धीरे-धीरे लगभग सुनाई देने लायक हो गई, लेकिन मैं फिर भी उसे समझ नहीं पाया।

धैर्यपूर्वक, जैसे-जैसे कैमरे कीमती रंगीन फिल्म को घिसते जा रहे थे, मैंने "जो कोई भी हो" से ज़ोर से बोलने और श्रीमती लीक के माध्यम से संवाद करने का अनुरोध किया।

“थियो!” अब आवाज सुनाई दी। यह आवाज सिबिल की अपनी आवाज से बिल्कुल अलग थी।

“थियो...मैं रास्ता भटक गया हूँ...मैं कहाँ हूँ?” मैंने समझाया कि यह किसी और व्यक्ति का शरीर है और हम न्यूयॉर्क शहर के एक घर में हैं।

“थियो कहाँ है?” आवाज ने और भी अधिक उत्सुकता से पूछा। “तुम कौन हो?”

मैंने एक मित्र के रूप में अपनी भूमिका समझाई, श्रीमती लीक की मानसिक सेवाओं के माध्यम से संपर्क स्थापित करने की उम्मीद में, फिर मैंने पूछा कि संदेशवाहक कौन था। चूंकि उसने थियो को पुकारा था, इसलिए वह थियो नहीं था, जैसा कि मैंने पहले सोचा था।

“बर्ट्राम डेलमार। मुझे थियो चाहिए,” जवाब आया।

"तुम थियो को क्यों चाहते हो?"

"खो गया।"

व्यापक शोध के बावजूद मैं यह साबित नहीं कर सका कि बर्ट्राम डेलमार नाम का कभी कोई व्यक्ति अस्तित्व में था या यह आरोन बर्र द्वारा इस्तेमाल किए गए गुप्त नामों में से एक था; लेकिन यह संभव है कि वह अस्तित्व में रहा हो, क्योंकि बर्र अपने राजनीतिक करियर के दौरान और संवेदनशील पत्राचार में गुप्त नामों का इस्तेमाल करता था।

कैफे बिज़ारे—जो कभी आरोन बर्र का अस्तबल हुआ करता था

इससे कहीं अधिक महत्वपूर्ण था थियो के लिए तत्काल पुकार और यह घोषणा कि वह "लापता" हो गई है। थियोडोसिया बर्र, बर्र की इकलौती बेटी और उनकी आँखों का तारा थी। जब 1813 में उनसे मिलने आते समय वह समुद्र में लापता हो गई, तो बर्र पूरी तरह टूट गए। अमेरिकी फीनिक्स के उतार-चढ़ाव भरे जीवन में थियो के खोने से बड़ा कोई आघात नहीं था।

संयोगवश, थियोडोसिया के पूरे नाम के बजाय "थियो" शब्द का प्रयोग किया गया था, जिसका प्रमाण थियोडोसिया और उनके पति, दक्षिण कैरोलिना के गवर्नर जोसेफ एल्स्टन के बीच हुए निजी पत्राचार में मिलता है। एक दुर्लभ आशंका के क्षण में, उन्होंने संकेत दिया था कि उनकी मृत्यु शीघ्र ही हो सकती है। यह पत्र समुद्र में आए तूफान में उनके लापता होने से छह महीने पहले लिखा गया था और इस पर "आपकी पत्नी, आपकी प्रिय पत्नी, थियो" के हस्ताक्षर थे।

आत्माओं से संपर्क करने के बाद, मैंने डॉ. सैमुअल एंगल बर्र से पूछा कि क्या इस बात की कोई संभावना है कि थियो नाम किसी अन्य महिला पर लागू हो सकता है।

डॉ. बर्र ने बताया कि थियोडोसिया नाम आधुनिक काल में केवल बर्र परिवार में ही प्रचलित हुआ। यह नाम थियोडोसियस बार्टो से लिया गया था, जो आरोन बर्र की पहली पत्नी के पिता थे और समुद्र में खोई हुई लड़की की माँ थीं। माँ का नाम उनके पिता के नाम पर थियोडोसिया द एल्डर था, और बर्र परिवार ने अपनी इकलौती बेटी को भी यही अनोखा नाम दिया था।

1794 में अपनी माँ के देहांत के बाद, बेटी अपने पिता की आधिकारिक मेज़बान बन गई और सचमुच "घर की मुखिया" बन गई। इससे भी बढ़कर, वह उनकी विश्वासपात्र थी और अन्य कई बेटियों की तुलना में उनके विचारों को कहीं अधिक साझा करती थी। एल्सटन से शादी और उसके बाद दक्षिण कैरोलिना चले जाने के बाद भी, वे संपर्क में रहे, और उनका परिवार ही वास्तव में उनका एकमात्र परिवार था। इस प्रकार उनका रिश्ता सचमुच बहुत घनिष्ठ था, और यह आश्चर्य की बात नहीं है कि उनके "मृत्यु के मुंह से लौटने" के बाद, उनका पहला विचार अपने थियो के लिए रोना ही था!

मुझे उनके "बर्ट्राम डेलमार" के रूप में दिए गए पहचान से संतुष्टि नहीं हुई और मैंने उनका असली नाम जानने पर जोर दिया। लेकिन संचारक ने मेरी बात अनसुनी कर दी और इसके बजाय किसी और बात पर चर्चा करने लगा।

बंदूक कहाँ है?

“कौन सी बंदूक?”

मुझे सिबिल की वह बात याद आ गई जिसमें उसने गोली चलने के तुरंत बाद की गंध के बारे में बताया था। मुझे इसके बारे में और जानना था।

"आप यहां पर क्या कर रहे हैं?"

"छिपना।"

आप किससे छिप रहे हैं?

"आप।"

क्या वह मुझे किसी और के लिए गलत समझ रहा था?

मैंने समझाने की कोशिश की, "मैं एक दोस्त हूँ," लेकिन उस आवाज ने मुझे बीच में ही कठोरता से रोक दिया।

तुम एक सैनिक हो।

पीछे मुड़कर देखने पर ऐसा लगता है कि भावनात्मक रूप से विक्षिप्त व्यक्ति अपनी गिरफ्तारी से पहले अमेरिकी सैनिकों द्वारा पीछा किए जाने की पीड़ा को फिर से जी रहा था, शायद अपने दिमाग में इसे एक और अप्रिय घटना के साथ मिला रहा था जब उसका पीछा किया जा रहा था, अर्थात्, हैमिल्टन को गोली मारने के बाद!

मैंने उसकी पहचान को और अधिक मजबूती से स्थापित करने के लिए उसके निजी जीवन में और गहराई से छानबीन करने का फैसला किया।

“थियो कौन है? वह तुम्हारे लिए क्या मायने रखती है?”

मुझे उसे ढूंढना होगा, उसे अपने साथ ले जाना होगा... यह खतरनाक है, फ्रांसीसी मुझे ढूंढ रहे हैं।

मैंने सचमुच हैरानी से पूछा, "फ्रांसीसी तुम्हें क्यों ढूंढ रहे होंगे?" उस समय न तो मुझे और न ही श्रीमती लीक को इस फ्रांसीसी संबंध के बारे में कोई जानकारी थी।

“सैनिक देख रहे हैं...।”

बाद में हुए शोध से मुझे पता चला कि बर्र वास्तव में 1808 से 1812 तक कई वर्षों तक फ्रांस में रहे थे। शुरुआत में, स्पेनिश-अमेरिकी उपनिवेशों को मुक्त कराने की उनकी इच्छा को तत्कालीन क्रांतिकारी बोनापार्ट सरकार का समर्थन प्राप्त था। लेकिन जब नेपोलियन के भाई जोसेफ नेपोलियन को स्पेन का राजा बनाया गया, और इस प्रकार वे विदेशी क्षेत्रों के शासक भी बन गए, तो मामला एक अलग ही राजनीतिक रंग में रंग गया; अब बर्र फ्रांसीसी स्वामित्व वाली सरकार को उखाड़ फेंकने की वकालत कर रहे थे, और इसे अब बर्दाश्त नहीं किया जा सकता था।

इन परिस्थितियों में, बर्र को फ्रांस में रुकने का कोई औचित्य नहीं दिखा और उन्होंने न्यूयॉर्क वापस जाने की व्यवस्था कर ली। लेकिन जल्द ही उन्हें पता चला कि फ्रांसीसी सरकार उन्हें इतनी आसानी से जाने नहीं देगी। डॉ. सैमुअल एंगल बर्र लिखते हैं, "उनके रास्ते में हर तरह की तकनीकी अड़चनें डाली गईं। फ्रांसीसी और अमेरिकी अधिकारी दोनों इस बात पर सहमत थे कि पूर्व उपराष्ट्रपति के लिए सबसे अच्छी जगह फ्रांस साम्राज्य के भीतर ही थी।" अंततः, नेपोलियन के बहुत करीबी एक मित्रवत रईस ने बर्र को बाहर निकालने में कामयाबी

हासिल की। लेकिन यह स्पष्ट है कि बर्र उस पूरे समय निगरानी में थे और शायद इस बात से भली-भांति अवगत भी थे!

मैंने सम्मोहित सिबिल लीक के माध्यम से बोलने वाली उस सत्ता से पूछताछ जारी रखी, वह सत्ता जिसने बड़ी चतुराई से खुद को बर्ट्राम डेलमार बताया था, लेकिन जो इतनी सारी बातें जानती थी जो केवल आरोन बर्र ही जान सकता था।

मैंने पूछा, यह कौन सा वर्ष था?

“अठारह दस।”

1810 में, बर्र अभी-अभी फ्रांस पहुंचे थे। यह तारीख उन सैनिकों की कहानी से बिल्कुल मेल खाती है जो उन्हें देख रहे थे।

मैंने पूछा, "तुम क्यों डरे हुए हो?"

“सैनिक, सैनिक....”

क्या आपने कुछ गलत किया है?

"आप कौन हैं?"

मैं तुम्हारा दोस्त हूँ, तुम्हारी मदद के लिए भेजा गया हूँ!

“गद्दार! तुमने... तुमने मुझे धोखा दिया...।”

"मुझे बताओ कि तुम क्या कर रहे हो, तुम यहाँ क्या स्थापित करने की कोशिश कर रहे हो?"

“गद्दार!”

बाद में, जब मैंने बर्र के इतिहास का विस्तार से अध्ययन किया, तो मुझे लगा कि एक क्रोधित आत्मा और एक शांत पूछताछकर्ता के बीच यह संवाद जनरल जेम्स विल्किंसन के प्रति बर्र के क्रोध को दर्शाता है, जिसने वास्तव में मित्र होने का दिखावा किया और फिर बर्र को धोखा दिया। यह वह "मित्र" नहीं था जिसने बर्र को उसकी पश्चिमी बस्ती स्थापित करने में मदद की थी, बल्कि वह गद्दार था जिसने बाद में सैनिकों को उसे गिरफ्तार करने के लिए भेजा था। यह स्थिति के अनुरूप था। यह समझना आवश्यक है कि एक नव संपर्कित आत्मा अक्सर जिस भ्रमित मानसिक स्थिति में होती है, उसमें उसके जीवन की घटनाएँ अव्यवस्थित और खंडित प्रतीत होती हैं, जो अक्सर उसके आंतरिक मानसिक स्क्रीन पर उसके जीवन की भावनात्मक

रील से कई असंबद्ध छवियों की तरह कौंधती हैं। ऐसे में, इन सभी को सुलझाना मानसिक शोधकर्ता का काम होता है।

* * *

मैंने संचारक से "अपने बारे में सब कुछ बताने" के लिए कहा, इस उम्मीद में कि मुझे कोई और बहाना मिल जाएगा जिससे वह स्वीकार कर ले कि वह आरोन बर्र है।

मैं फ्रांसीसियों से बच निकला...

“फ्रांसीसी लोग कहाँ हैं?”

"यहाँ।"

ऐसा प्रतीत होता है कि फ्रांस में रहने के दौरान यह विशेष "दृश्य" उनके दिमाग में बार-बार दोहराया जा रहा था।

मैंने पूछा, "क्या आप किसी खास फ्रांसीसी व्यक्ति से बचकर निकले थे?"

“जैक्स...डे ला ब्यू...”

वर्तनी मेरी है। यह अलग हो सकती थी, लेकिन यह "डी ला ब्यू" जैसी लग रही थी।

"जैक्स डे ला ब्यू कौन है?"

दांत भींचे हुए, फुफकारती आवाज में—“मैं...तुम्हें...नहीं...बताऊँगा। चाहे...तुम...मुझे...मार ही क्यों न दो।”

मैंने समझाया कि मैं उसे मुक्त कराने आया हूं, और मैं उसके लिए क्या कर सकता हूं?

“थियो को यहाँ से ले जाओ...मुझे छोड़ दो...मैं मर जाऊँगी...।”

मैंने उससे फिर उसकी पहचान के बारे में सवाल किया। अब उसने अपना बयान बदल दिया और ज़ोर देकर कहा कि वह फ्रांसीसी है और बोर्डो के पास दासनी नामक स्थान पर पैदा हुआ है। हालाँकि यह जानकारी उस माध्यम के मुँह से आ रही थी, मुझे पूरा यकीन था कि यह मुझे उसकी असली पहचान से भटकाने का एक तरीका था। कुछ मामलों में यह असामान्य नहीं है। कुछ साल पहले जब मैंने जनरल सैमुअल एडवर्ड मैकगोवन के भूत की जाँच की थी, तो कई हफ़्तों तक समाधि सत्रों में जाने के बाद ही उसने अपना नकली नाम छोड़ा और अपनी

ऐसी पहचान स्वीकार की जिसे बाद में साबित किया जा सका। यहाँ तक कि आत्माओं में भी अपना स्वाभिमान और भावनात्मक परेशानियाँ होती हैं।

जैक्स डे ला ब्यू नाम ने मुझे उलझन में डाल दिया। प्रेतात्माओं से संपर्क करने के बाद, मैंने इस मामले की छानबीन की और पता चला कि जैक्स प्रेवोस्ट (उच्चारण प्री-वो) नाम का एक व्यक्ति, आरोन बर्र की पहली पत्नी थियोडोसिया का पहला पति था। बर्र ने वास्तव में उनके दो बेटों को अपने बेटों की तरह पाला था, और बाद के वर्षों में उनके और बर्र के बीच घनिष्ठ संबंध था। लेकिन अपने फ्रांसीसी नाम के बावजूद, प्रेवोस्ट ब्रिटिश सेना में कार्यरत था।

* * *

जब बर्र न्यूयॉर्क में रहते थे, तब उन्होंने एक फ्रांसीसी एडमिरल की बेटी को अपने घर में पनाह दी थी, जिनसे फ्रांसीसी क्रांति के परिणामस्वरूप उनका वियोग हो गया था। यह लड़की, नताली, बर्र की बेटी थियोडोसिया की घनिष्ठ मित्र बन गई और दोनों बहनें खुद को बहनें मानती थीं। नताली के पिता एडमिरल डी लागे डी वोलाडे थे। यह नाम भी "डी ला ब्यू" से मिलता-जुलता है, जिसे मैंने समझा था। यह "डी ला वोह" या इन दोनों ध्वनियों के बीच का कोई उच्चारण हो सकता है। क्या संदेश भेजने वाले के भ्रमित मन ने प्रेवोस्ट और डी लागे डी वोलाडे दोनों नामों का संदर्भ लिया होगा? बर्र के जीवन में दोनों नामों का महत्व था।

मैंने अब उनसे पूछा, "मुझे अपनी पत्नी के बारे में बताओ।"

नहीं। मुझे वह पसंद नहीं है।

मैंने जोर दिया, और वह भी उतना ही जिद्दी था, उसने इनकार कर दिया।

“क्या वह तुम्हारे साथ है?” मैंने आखिरकार कहा।

"उससे छुटकारा पा लिया," उसने लगभग खुशी भरी आवाज में कहा।

"क्यों?"

“मेरे लिए किसी काम का नहीं...मुझे धोखा दिया...शादी कर ली...।”

अब आवाज में सचमुच तिरस्कार और गुस्सा झलक रहा था।

स्पष्टतः, संदेशवाहक दूसरी श्रीमती बर्र की बात कर रहा था। उनकी पहली पत्नी का निधन उनके जीवन की प्रमुख घटनाओं से बहुत पहले हो चुका था। यह बिल्कुल सच है कि बर्र ने उनसे छुटकारा पा लिया (दो बार अलग होकर और एक बार तलाक लेकर), और उन्होंने उन्हें धोखा दिया, या यूँ कहें कि उनसे शादी करने के लिए उन्हें छल किया: बर्र को लगा कि वह वास्तव में जितनी धनी थीं, उससे कहीं अधिक धनी थीं, और उनकी मुख्य समस्याएँ पैसों को लेकर थीं। उन दिनों लोग हमेशा प्रेम के लिए विवाह नहीं करते थे, और धन के लिए किसी से विवाह करना, किसी को बड़ी संपत्ति का लालच देकर शादी के लिए राजी करने से कम अनैतिक माना जाता था, जबकि वास्तव में उनके पास कुछ नहीं होता था। शायद आज हम ऐसे मामलों में अलग और अधिक रोमांटिक तरीके से सोचते हैं; 1830 के दशक में, एक महिला की आर्थिक स्थिति बैंक खाते की तरह ही सौदेबाजी के योग्य थी।

* * *

जैसे-जैसे मैं और अधिक पूछताछ करता गया, संचारक और अधिक उत्साहित होता गया; जैसे-जैसे मैं पहचान पर जोर देता गया, सिबिल लीक के होठों से "थियो! थियो!" की चीखें और अधिक निकलती गईं।

जब मैंने पहली बार थियो के साथ उसके रिश्ते के बारे में उससे पूछा, तो उसने तुरंत कहा कि वह उसकी बहन है। मैंने यह बात दोबारा उठाई, और रोते हुए उसने स्वीकार किया कि यह सच नहीं है। लेकिन वह अभी मुझे पूरी बात बताने को तैयार नहीं था।

“मुझे जाने दो,” वह सिसकते हुए बोला।

मैंने ज़ोर देकर कहा, "जब तक तुम शांति से नहीं जा सकते, तब तक नहीं। मुझे अपने बारे में बताओ। तुम्हें खुद पर गर्व है, है ना?"

“हां,” भारी सिसकियों के बीच आवाज आई, “कितनी शर्मनाक बात है... कितनी शर्मनाक बात है...।”

मैं दुनिया को वही बताऊंगा जो आप मुझसे सुनना चाहते हैं। मैं यहां आपका प्रवक्ता हूं। इस मौके का फायदा उठाकर दुनिया को सच्चाई का अपना पक्ष बताएं!

एक पल की झिझक के बाद, आवाज पहले से ज्यादा कोमल होकर फिर से शुरू हुई।

“मैं...थियो से प्यार करती थी... मुझे...उसे ढूंढना होगा...।”

सबसे अहम बात तो जाहिर तौर पर उनकी बेटी के खोने का दुख था। यहां तक कि उनकी राजनीतिक महत्वाकांक्षाएं भी पितृ प्रेम के आगे फीकी पड़ गईं।

"क्या यह जगह, जहां हम हैं, आपकी संपत्ति का हिस्सा है?"

आवाज ने निराशा से कहा,

"मेरे पास नदी से लेकर यहाँ तक बहुत कुछ था।"

बाद में मैंने इस कथन की पुष्टि मॉरिस-जुमेल हवेली की क्यूरेटर और उस कालखंड की अच्छी जानकारी रखने वाली पेशेवर इतिहासकार श्रीमती लेरॉय कैंपबेल से की।

"जी हां, यह सच है," श्रीमती कैंपबेल ने पुष्टि की, "बर्र की संपत्ति नदी और वैरिक स्ट्रीट से पूर्व की ओर फैली हुई थी।"

मैंने संचारक से कहा, "लेकिन नदी से लेकर यहाँ तक का यह भूखंड बर्ट्राम डेलमार नाम के किसी व्यक्ति का नहीं है। आप मुझे ऐसे नामों से क्यों भ्रमित करना चाहते हैं जिनका कोई अस्तित्व ही नहीं है?"

मैंने इसे एक परीक्षण के तौर पर शुरू किया था। यह सफल रहा।

“वह मुझे बर्ट्राम कहकर बुलाती है,” संचारक ने अब स्वीकार किया। “मुझे अपने नाम पर शर्म नहीं है।”

मैंने सिर हिलाया। “मैं यहाँ आपकी पुरानी गलतियों को सुधारने में मदद करने आया हूँ, लेकिन इसके लिए आपको मेरी मदद करनी होगी। मैं इसे अकेले नहीं कर सकता।”

“मैंने उसकी हत्या नहीं की... उसे ठिकाने लगा दिया...”, उसने बात करने की इच्छा जताते हुए कहा।

"आपका मतलब आपकी पत्नी से है?"

"करना ही पड़ा।"

“क्या तुमने किसी को मारा है?” मैंने बातचीत को आगे बढ़ाते हुए पूछा।

“रक्षा के लिए मारा गया...यह गलत नहीं है!”

“तुमने हत्या कैसे की?”

"एक राइफल...।"

क्या वह क्रांतिकारी युद्ध में अपनी सेवा का जिक्र कर रहे थे? उन्होंने उस समय निश्चित रूप से कुछ गोलीबारी की थी।

लेकिन मैंने एक बार फिर "बर्ट्राम डेलमार" के कारोबार में लौटने का फैसला किया। लगातार दबाव से शायद नतीजे मिलें।

"सचमुच, क्या आप हमें बताएंगे कि आप कौन हैं?"

जानबूझकर, मानो वह कोई आधिकारिक विज्ञप्ति पढ़ रहा हो, आवाज ने उत्तर दिया, "मैं बर्ट्राम डेलमार हूं और मैं वह नाम नहीं लूंगा..."

“अगर आप थियो से दोबारा मिलना चाहते हैं, तो आपको ‘उस नाम’ का ज़िक्र करना होगा।” मैंने साफ़-साफ़ कह दिया था। या तो मेरे साथ सहयोग करो, वरना मैं तुम्हारी मदद नहीं करूँगा। कभी-कभी ज़िद्दी आत्मा को मनाने का यही एकमात्र तरीका होता है—जब यह सहयोग उसके कल्याण और मुक्ति के साथ-साथ विज्ञान में आवश्यक वस्तुनिष्ठ प्रमाण के लिए भी बेहद ज़रूरी होता है।

कुछ पल के लिए सन्नाटा छा गया। फिर, लगभग सुनाई न देने वाली आवाज़ में, संचारक बोला।

“कितना बुरा नाम है...आर्नोट।”

जांच के बाद मैंने जो कुछ बहुत धुंधला सुना था, उसकी पुष्टि करने के लिए मैंने साउंड टेप दोबारा चलाए। यह बिल्कुल स्पष्ट था। कम्युनिकेटर ने "आर्नोट" कहा था।

मेरी पहली प्रतिक्रिया यह थी कि शायद वह आरोन बर्र कहना चाह रहे हैं और आरोन का उच्चारण करते समय 'आह' शब्द को थोड़ा लंबा खींच रहे हैं। लेकिन श्रीमती कैंपबेल और डॉ. बर्र दोनों से इस बारे में पूछने पर मुझे पता चला कि ऐसा उच्चारण बिल्कुल असंभव था। séance के बाद वाली रात मैंने डॉ. बर्र को उनके वाशिंगटन स्थित घर पर फोन किया और उन्हें रिकॉर्डिंग के मुख्य बिंदु पढ़कर सुनाए।

जब मुझे संचारक द्वारा दिया गया वह अटपटा नाम दिखाई दिया, तो मैंने पूछा कि क्या आर्नोट का कोई अर्थ है, क्योंकि मुझे यह नाम बर्र की प्रकाशित जीवनियों में नहीं मिला। फोन के दूसरी ओर कुछ क्षण के लिए सन्नाटा छा गया, फिर डॉ. बर्र ने बोलना शुरू किया।

“बिल्कुल सही,” उन्होंने कहना शुरू किया। “यह बात आम तौर पर लोगों को पता नहीं है, लेकिन बर ने प्रचार से बचने के लिए फ्रांस से अमेरिका लौटते समय एक फ्रांसीसी छद्म नाम का इस्तेमाल किया था। वह नाम अर्नोट था।”

लेकिन वापस कैफे बिज़ारे और हमारी जांच पर आते हैं।

आर्नोट शब्द के महत्व को अभी तक न समझते हुए, मैंने उचित पहचान पर जोर देना जारी रखा।

मैंने उसे उकसाते हुए कहा, "तुम्हें अपने पुराने अपराध बोध से खुद को मुक्त करना होगा।"

“यह बहुत भयानक है...बहुत भयानक...।”

क्या थियो का आपसे कोई रिश्ता है?

"वह मेरी है।"

क्या आप उससे संबंधित हैं?

“प्यारी...छोटी सी...बेटी।”

अंततः, असली रिश्ता सामने आ गया।

“अगर थियो आपकी बेटी है, तो आप ‘बर्ट्राम’ नहीं हैं।”

“तुमने मुझे धोखा दिया... चले जाओ... वरना मैं तुम्हें मार डालूंगा!”

आवाज में फिर से गुस्सा झलक रहा था।

"अगर आपको अपने नाम पर शर्म नहीं है, तो मैं इसे आपके मुंह से सुनना चाहता हूं।"

फिर हिचकिचाते हुए आवाज ने कहा,

“आर्नोट।”

“कई साल बीत गए हैं। क्या आपको पता है कि हम अभी किस साल में हैं?”

"दस...।"

“यह 1810 नहीं है। डेढ़ सौ साल बीत चुके हैं।”

"तुम पागल हो।"

“आप हमसे बात करने के लिए एक मानसिक शक्ति वाले व्यक्ति के शरीर का उपयोग कर रहे हैं...।”

संचारकर्ता को ऐसे बेतुके दावों की कोई आवश्यकता नहीं थी।

मैं नहीं सुनने वाला...

लेकिन मैंने उसे अपनी बात मनवा ली। मैंने उससे कहा कि वह उस "शरीर" के बाल, चेहरा और कान छुए जिसे वह माध्यम के रूप में इस्तेमाल कर रहा था और देखे कि क्या उसे वाकई अजीब सा महसूस नहीं होता।

कुछ क्षण पहले बेहद तनावग्रस्त और क्रोधित दिख रही सिबिल की आकृति धीरे-धीरे शांत होने लगी। जब उसका हाथ ठुड्डी तक पहुंचा, तो उसके चेहरे पर एक पल के लिए हैरानी का भाव प्रकट हुआ:

"कोई दाढ़ी नहीं...।"

बाद में मुझे पता चला कि आरोन बर्र के समकालीन चित्रों में से एक भी चित्र में उन्हें ठुड्डी पर दाढ़ी के साथ नहीं दिखाया गया है। फिर भी, एलिस मैकडरमॉट ने उन्हें दाढ़ी के साथ देखा और चित्रित किया था, और अब कथित बर्र के नियंत्रण में सिबिल लीक को भी उस दाढ़ी की कमी खल रही थी जो अब उनके चेहरे पर नहीं थी।

क्या कभी दाढ़ी थी?

“जी हां,” डॉ. बर्र ने पुष्टि की, “ऐसा था, हालांकि यह बात भी मेरे जैसे विशेषज्ञों के अलावा लगभग अज्ञात है। 1812 में फ्रांस से लौटने पर बर्र ने फ्रांसीसी शैली में दाढ़ी रखी थी।”

* * *

अब तक मैं आखिरकार सिबिल लीक के माध्यम से बोलने वाले व्यक्ति को यह समझाने में कामयाब हो गया था कि वर्ष 1967 था, न कि 1810।

मेरे प्रति उसका प्रतिरोध टूट गया।

उन्होंने कहा, "तुम एक अजीब इंसान हो, मैं थका हुआ हूँ।"

आप काल्पनिक नाम के पीछे क्यों छिपते हैं?

लोग...बहुत ज्यादा...सवाल...पूछते हैं।

"क्या आप मुझे अपना नाम साफ़ करने में मदद करेंगे, बर्ट्रम का नहीं, बल्कि अपने असली नाम को?"

मुझे धोखा दिया गया।

“1810 में संयुक्त राज्य अमेरिका के राष्ट्रपति कौन थे?” मैंने पूछा और तुरंत ही मुझे अपने इस सवाल पर पछतावा हुआ। ज़ाहिर है, यह कोई प्रमाणिक उत्तर नहीं हो सकता था। लेकिन संचारक ने प्रतिद्वंद्वी के उस घृणित नाम का ज़िक्र तक नहीं किया।

मैंने पूछा, "और उपराष्ट्रपति कौन हैं?"

“राजनीति...बुरी है...यह आपको मार डालती है...मैं किसी के साथ विश्वासघात नहीं करूंगा... मेरे साथ अन्याय हुआ...राजनीति...बुरी है...।”

कितना सही!

मैंने पूछा, "क्या तुमने कभी किसी की हत्या की है?"

“मारना गलत नहीं है...संरक्षण के लिए... मैं अकेला हूँ।”

वह आगे बोलने में हिचकिचा रहा था।

“आपने क्या संरक्षित किया? आपको किसी दूसरे व्यक्ति को क्यों मारना पड़ा?”

“एक और...महत्वपूर्ण...मैं इस बारे में बात नहीं कर रहा हूँ!”

आपको बोलना ही होगा। यह आने वाली पीढ़ियों के लिए आवश्यक है।

“मैंने सर्वश्रेष्ठ बनने की कोशिश की... मैं गद्दार नहीं हूँ... सैनिक... ढोल बजाओ... फिर तुम मर जाओगे... राजनीति!!”

बाद में जब मैंने इस कथन को बार-बार सुना, तो मुझे इसका महत्व समझ में आया, क्योंकि यह एक ऐसे व्यक्ति से आया था जिसने अभी तक यह स्वीकार नहीं किया था कि वह आरोन बर्र है और एक ऐसे माध्यम से आया था जिसे उस समय यह भी नहीं पता था कि वह कहाँ है।

* * *

उसने अपनी प्रतिष्ठा बचाने के लिए हत्या की—1804 में न्यूयॉर्क के गवर्नर पद के चुनाव अभियान में उस पर लगे आरोप इतने गंभीर थे कि उन्हें अनदेखा नहीं किया जा सकता था। वास्तव में, एक अन्य व्यक्ति, अलेक्जेंडर हैमिल्टन, उसकी आलोचना कर रहा था और बर्र उसे नज़रअंदाज़ नहीं कर सकता था।

उन्होंने भी "पूरी कोशिश की" - संयुक्त राज्य अमेरिका के राष्ट्रपति बनने की कोशिश की, 1800 में आवश्यक संख्या में चुनावी वोट प्राप्त किए, लेकिन जेफरसन के सामने आत्मसमर्पण कर दिया, जिनके पास भी उतने ही वोट थे।

नहीं, वह देशद्रोही नहीं थे, भले ही कुछ इतिहास की किताबों में लगातार यह संकेत दिया जाता रहा हो कि वह देशद्रोही थे। 1807 के राजद्रोह मुकदमे ने न केवल पूर्व उपराष्ट्रपति को किसी भी गलत काम से बरी कर दिया, बल्कि उन लोगों पर भी कड़ी निंदा और निंदा की जिन्होंने उन पर मुकदमा चलाया था। अगर बर्र के दुश्मन जीत जाते, तो फांसी से पहले ढोल बजाने वाले सैनिकों की घटना सच हो सकती थी; पश्चिम से लौटने पर सैनिकों द्वारा उन्हें जिस राजद्रोह के आरोप में पकड़ा गया था, उसमें दोषी पाए जाने पर मृत्युदंड का प्रावधान था। उनके राजनीतिक दुश्मनों का यही इरादा था कि इस महत्वाकांक्षी व्यक्ति को राजनीतिक परिदृश्य से हमेशा के लिए हटा दिया जाए।

मैंने पूछा, "क्या तुम दुनिया को बताओगे कि तुम दोषी नहीं हो?"

मैंने उनसे कहा...मुकदमा चलेगा...मैं देशद्रोही या हत्यारा नहीं हूँ...।"

मुझे लगा कि अगर उसे इस धरती से बंधे होने की स्थिति से मुक्ति पानी है तो उसके लिए ऐसे विचारों से खुद को मुक्त करना महत्वपूर्ण है।

“मैं...मरना चाहता हूँ...” आवाज ने भारी साँस लेते हुए कहा।

"आइए, मैं आपको थियो को ढूंढने में मदद करूंगा," मैंने वादा निभाते हुए कहा।

लेकिन नाम का मामला अभी भी बाकी था। मुझे लगा कि अगर मैं उससे यह स्वीकार करवा लूं कि वह बर्र है, तो इससे "माहौल साफ" करने में मदद मिलेगी।

मुझे पहले ही काफी सामग्री मिल चुकी थी, और प्रेतात्माओं से संपर्क करने का अनुष्ठान कुछ ही क्षणों में समाप्त हो जाएगा। मैंने आखिरी एक-दो मिनट में जोखिम उठाने का फैसला किया

और इस प्रेत को चौंकाकर उससे यह कबूल करवाने की कोशिश की कि वह बर्र है या फिर नाम पर किसी तरह की प्रतिक्रिया दे।

मैंने उनसे वे शब्द बुलवाने में असफल रहा, जबकि उन्होंने हमें आरोन बर्र के जीवन की कई घटनाएँ सुनाई थीं। अब केवल एक ही तरीका बचा था और मैंने वही अपनाया। मैंने कहा, "सच बताओ, क्या तुम आरोन बर्र हो?"

ऐसा लगा जैसे मैंने उसके चेहरे पर गर्म लोहे की छड़ मार दी हो। वह महिला पीछे की ओर लड़खड़ा गई, जिससे उसकी कुर्सी लगभग गिर ही गई। घायल शेर की दहाड़ जैसी आवाज़ मुझ पर वापस आई।

“चले जाओ...चले जाओ!!...वरना मैं तुम्हें मार डालूंगा!”

मैंने शांत भाव से उत्तर दिया, “तुम मुझे नहीं मारोगे। तुम मुझे सच बताओगे।”

मैं अपनी इज्जत बचाने के लिए तुम्हें मार डालूंगा!

मैं आपकी इज्जत बचाने के लिए यहां हूं। मैं आपका दोस्त हूं।

उसकी आवाज बर्फ को काटने जैसी थी।

"तुमने यह बात पहले भी कही थी।"

"आप आरोन बर्र हैं, और यह आपकी जगह का हिस्सा है।"

मैं बर्ट्राम हूँ!

मैं इस बहस को जारी नहीं रखना चाहता था।

मैंने कहा, "ठीक है, तो दुनिया के लिए, अगर तुम यह स्वीकार करने को तैयार नहीं हो कि तुम बर्र हो, तो बर्ट्राम ही रहो।"

“मैं बर्ट्राम हूँ...” उस प्राणी ने अब फुसफुसाते हुए कहा।

“तो फिर इस जगह से जाओ और अपनी थियो से मिलो। उसके लिए बर्ट्रम बनो।”

“बर्ट्राम...तुम किसी को नहीं बताओगे?” आवाज में विनती थी।

“बहुत खूब।” मुझे लगा कि वह जल्द ही परदे के पार चले जाएंगे, और कुछ बातें थीं जिन्हें मैं पहले स्पष्ट करना चाहता था। मैंने समझाया कि इतने समय बाद वह जल्द ही अपनी बेटी के साथ होंगे, और मैंने उन्हें फिर से बताया कि उनकी मृत्यु के बाद कितना समय बीत चुका है।

“मैं रुका रहा...मैं रुका रहा...” उसने सोच-विचार करते हुए कहा।

मैंने पूछा, "तुम्हारा वह स्थान किस प्रकार का था?"

“वह एक बड़ी जगह थी...एक बड़ी मेज के साथ...एक मशहूर घर...।” लेकिन उन्हें उसका नाम याद नहीं आ रहा था।

बाद में, मैंने मॉरिस-जुमेल हवेली की क्यूरेटर श्रीमती कैंपबेल से इस बयान की पुष्टि की। उन्होंने समझाया, “बड़े घर में वह डेस्क यहीं हमारे बर्र के कमरे में है। यह मूल रूप से उनके विधि कार्यालय में थी।” लेकिन वह बेचैन व्यक्ति अब मुझसे बात करने में रुचि नहीं रखता था।

“मैं थियो से बात कर रहा हूँ...” उसने अब धीमी आवाज़ में कहा, “बगीचे में... मैं थियो के साथ टहलने जा रहा हूँ... तुम लोग चले जाओ।”

पल भर में, वह व्यक्तित्व जो पिछले एक घंटे से सिबिल लीक के माध्यम से बोल रहा था, गायब हो गया। इसके बजाय, श्रीमती लीक अपनी वास्तविक अवस्था में लौट आईं, उन्हें अपने सम्मोहित होठों से निकले शब्दों में से कुछ भी याद नहीं था।

"रोशनी बहुत तेज है," यह पहली बात थी जो उसने कही और उसने जल्दी से अपनी आंखें फिर से बंद कर लीं।

लेकिन कुछ ही देर बाद, वह पूरी तरह से जाग गई और उसने केवल यही शिकायत की कि उसे थोड़ी थकान महसूस हो रही है।

मुझे इस बात पर जरा भी हैरानी नहीं हुई कि उसने ऐसा किया।

* * *

घर लौटते ही मैंने तुरंत ही इसकी पुष्टि करना शुरू कर दिया। डॉ. सैमुअल एंगल बर्र से टेलीफोन पर सबसे महत्वपूर्ण बिंदुओं पर चर्चा करने के बाद, मैंने उनसे टिप्पणियों के लिए séance की पूरी प्रतिलिपि उन्हें भेजने की व्यवस्था की।

बर्र के व्यक्तित्व से इतनी समानता थी कि इस बात में शायद ही कोई संदेह रह गया था कि हमने बर्र से ही संपर्क किया था। "मैं गद्दार और हत्यारा नहीं हूँ," उस रहस्यमयी संदेशवाहक ने चिल्लाकर कहा था। प्रोफेसर बर्र के अनुसार, जैसा कि लैरी चैम्बलिन ने एलनटाउन कॉल-

क्रॉनिकल में उद्धृत किया है, उनके जीवनकाल में ही उनके दुश्मनों ने उन्हें "गद्दार और हत्यारा" कहकर पुकारा था।

हालांकि वे आरोन बर्र के प्रत्यक्ष वंशज नहीं हैं, लेकिन वाशिंगटन के इस शिक्षाविद का संबंध उपराष्ट्रपति की पहली पत्नी थियोडोसिया बार्स्टो बर्र से है। दोनों विश्व युद्धों में कई पदक जीत चुके प्रोफेसर बर्र एक प्रतिष्ठित शिक्षाविद और अपने नाम वाले प्रसिद्ध व्यक्ति के विषय में सर्वोत्कृष्ट विशेषज्ञ हैं। उनसे परामर्श करके मुझे सर्वोत्तम संभव जानकारी प्राप्त हुई।

प्रोफेसर बर्र ने बताया कि एरॉन बर्र की मेक्सिको में रुचि स्पेनिश शासन से मुक्ति दिलाने वाले एक व्यक्ति के रूप में थी, लेकिन अमेरिकी सरकार के खिलाफ कभी कोई साजिश नहीं रची गई थी। "यह आरोप ओहियो के एक द्वीप पर हुई एक छोटी सी घटना से उपजा था। उनके उपनिवेशवादियों में से एक मजदूर ने अभियान की जांच करने आए एक सरकारी अधिकारी पर राइफल तान दी थी।"

अचानक, राइफल के बारे में कही गई बातें और संचारक द्वारा इसके बारे में दिखाई गई चिंता मुझे स्पष्ट हो गई: इसने बर्र के लिए और भी गंभीर मुसीबत खड़ी कर दी थी।

राष्ट्रपति विल्सन भी उन लोगों से सहमत थे जो मानते थे कि ऐतिहासिक परंपरा के अनुसार आरोन बर्र के साथ अन्याय हुआ है। कई साल पहले वे प्रिंसटन में बर्र की कब्र पर खड़े होकर बोले थे, "कितना गलत समझा गया...कितना बदनाम किया गया!"

बर्र के दफन को अब 132 साल हो चुके हैं, और डॉ. सैमुअल एंगल बर्र की दो उत्कृष्ट पुस्तकों और वाशिंगटन के प्रोफेसर के नेतृत्व वाली आरोन बर्र एसोसिएशन के विवेकपूर्ण लेकिन साहसी प्रयासों के बावजूद, आरोन बर्र के बारे में झूठी बातें अभी भी प्रचलित हैं।

समाधि सत्र के अनेक साक्ष्यों को जोड़कर देखने पर मुझे स्पष्ट हो गया कि आरोन बर्र ने अंततः अपनी बात कह दी थी। अपने जीवनकाल में जिस नाम पर उन्हें गर्व था, उसे उन्होंने क्यों नहीं बताया? उन्होंने थियो को बार-बार पुकारने, उसे अपनी बेटी बताने, फ्रांस में अपनी परेशानियों और अपने राजनीतिक करियर के बारे में बात करने में कोई संकोच नहीं किया था —इतने सारे सबूतों के बावजूद कि वे वास्तव में आरोन बर्र ही थे, वे काल्पनिक बर्ट्राम डेलमार बनकर क्यों रहना चाहते थे?

अपने जीवन के अंतिम वर्षों में, बर्र को शत्रुता का सामना करना पड़ा था, और उन्होंने यह सीख लिया था कि मित्र चुनते समय और विश्वास करते समय सावधानी बरतनी चाहिए। धीरे-धीरे, यह कड़वाहट इतनी प्रबल हो गई कि अपने जीवन के अंतिम वर्षों में उन्होंने स्वयं को एक अकेला, परित्यक्त बूढ़ा महसूस किया, उनकी इकलौती बेटी हमेशा के लिए बिछड़ गई थी, और उनके जीवन के भारी बोझ को उठाने में उनका साथ देने वाला कोई नहीं था। ऐसी मानसिक स्थिति में जीवन के अभौतिक पक्ष में प्रवेश करते हुए, और भाग्य के उस विचित्र मोड़ के कारण जो कुछ लोगों को उनके पूर्व स्वरूप की धुंधली छवि बना देता है, उन्होंने अपने साथियों के विरुद्ध रक्षा की अपनी एकमात्र शेष पंक्ति को नहीं छोड़ा: उनकी गुमनामी।

वह मुझ जैसे एक अजनबी पर, जिससे वह पहले कभी नहीं मिला था, और जो उससे बेहद असामान्य परिस्थितियों में बात कर रहा था, ऐसी परिस्थितियाँ जिन्हें वह खुद न तो समझता था और न ही स्वीकार करता था, क्यों भरोसा करेगा? बर्र के बचे हुए व्यक्तित्व के लिए अपनी पहचान स्वीकार करने में सतर्क रहना लगभग स्वाभाविक ही प्रतीत होता था।

लेकिन थियो को ढूंढने की उनकी प्रबल इच्छा उनकी सावधानी से कहीं अधिक प्रबल थी; इसलिए हम उनके जीवन के इस पहलू पर कमोबेश खुलकर बातचीत कर सके। और जब तक उन्हें यह बताने की आवश्यकता नहीं थी कि वे बर्र हैं, तब तक उन्हें अपने करियर के बारे में भी बात करने में कोई हिचक नहीं थी, खासकर तब जब मेरे सवालों ने उन्हें क्रोधित कर दिया और इस प्रकार उन्होंने यह तय करने में अपनी आलोचनात्मक क्षमता को कम कर दिया कि उन्हें क्या कहना चाहिए और क्या नहीं।

भूत भी इंसान ही होते हैं, और वे भी उन्हीं भावनात्मक सीमाओं और नियमों के अधीन होते हैं जो हम सभी पर लागू होते हैं।

श्रीमती लीक के पास इस जांच के दौरान उनके द्वारा स्तब्ध होकर कही गई निजी और विशिष्ट जानकारी प्राप्त करने का कोई तरीका नहीं था; मुझे भी séance समाप्त होने तक इसके बारे में लगभग कुछ भी पता नहीं था, और इसलिए मैं अपने अवचेतन मन से उन्हें कोई भी जानकारी नहीं दे सका। और séance के दौरान उपस्थित अन्य लोग—मेरी पत्नी, श्रीमती ऑलमेन, और टेलीविजन के लोग—इस सब के बारे में और भी कम जानते थे।

न तो डॉ. बर्र और न ही श्रीमती कैंपबेल कैफे बिज़ारे में मौजूद थे, और यदि उनके दिमाग में बर्र से संबंधित कोई भी जानकारी होती, तो भी माध्यम द्वारा उस जानकारी को प्राप्त नहीं किया जा सकता था, यदि वास्तव में ऐसा संभव होता।

बुर के छद्म नाम अर्नोट, तारीख, दाढ़ी और श्रीमती लीक के माध्यम से बोलने वाले व्यक्ति के विशिष्ट चरित्र, तथा राजद्रोह और हत्या के आरोपों से अपना नाम साफ करने की उसकी चिंता जैसी दुर्लभ जानकारियों के लिए संयोग को जिम्मेदार नहीं ठहराया जा सकता।

मुझे इस बात में जरा भी संदेह नहीं है कि हमने वास्तव में एरॉन बर्र की बेचैन और स्वतंत्र आत्मा से उनके अस्तबल में संपर्क किया था, जो अब एकमात्र भौतिक इमारत है जो वास्तव में उनकी अपनी थी।

बचाव पक्ष की दलीलें यहीं समाप्त होती हैं, और उम्मीद है कि अब आरोन बर्र भी खुश होकर अपनी प्यारी बेटी थियोडोसिया के साथ हमेशा के लिए मिल गए हैं।

* 9

राष्ट्रपति की हत्या: लिंकन, बूथ और उनके भीतर के गद्दार

राष्ट्रपति जॉन एफ कैनेडी की हत्या के पांच साल बाद भी हम उनके हत्यारे या हत्यारों के बारे में निश्चित नहीं हैं, भले ही यह घटना एक सार्वजनिक जुलूस की चकाचौंध में, असंख्य पुलिसकर्मियों और सुरक्षा गार्डों की निगरानी में, और सड़कों पर मौजूद प्रशंसकों की मौजूदगी में घटी थी।

राष्ट्रपति कैनेडी की हत्या से संबंधित विभिन्न सिद्धांतों की वैधता पर बहस करते हुए, हम कभी-कभी यह भूल जाते हैं कि इसी तरह का एक पहले का अपराध भी अनसुलझा है। वास्तव में, दोनों घटनाओं में इतनी चौंकाने वाली समानताएं हैं कि आश्चर्य से परे कोई नहीं रह सकता।

हाल ही में इन पर विशेष रूप से प्रभावशाली ढंग से आश्चर्य व्यक्त करने वाले लोगों में से एक न्यूयॉर्क के मनोचिकित्सक स्टेनली क्रिपनर हैं, जो ब्रुकलिन के मैमोनाइड्स मेडिकल सेंटर से जुड़े हुए हैं और उन्होंने अपने निष्कर्षों को प्रतिष्ठित जर्नल ऑफ पैरासाइकोलॉजी में प्रकाशित किया है। डॉ. क्रिपनर द्वारा उजागर किए गए तथ्यों में राष्ट्रपति की मृत्यु का उल्लेखनीय "मृत्यु

चक्र" शामिल है: 1840 में निर्वाचित हैरिसन की मृत्यु 1841 में हुई; बीस साल बाद, 1860 में निर्वाचित लिंकन की मृत्यु 1865 में हुई; 1880 में निर्वाचित गारफील्ड की हत्या 1881 में हुई; 1900 में निर्वाचित मैककिनले की हत्या 1901 में हुई; उनके ठीक बीस साल बाद निर्वाचित हार्डिंग की मृत्यु 1923 में पद पर रहते हुए हुई; 1940 में पुनः निर्वाचित रूजवेल्ट की मृत्यु भी 1945 में इसी प्रकार हुई। और अंत में, 1960 में निर्वाचित हुए कैनेडी की 1963 में हत्या कर दी गई। 1840 के बाद से, शून्य पर समाप्त होने वाले वर्ष में निर्वाचित प्रत्येक राष्ट्रपति की पद पर रहते हुए मृत्यु हो गई या वे घायल हो गए।

डॉ. क्रिपनर का अनुमान है कि यह चक्र महज संयोग से इतना परे है कि इसके पीछे कोई और कारण अवश्य ही होगा। दिवंगत प्रोफेसर कार्ल जी. जंग द्वारा प्रतिपादित समकालिकता या सार्थक संयोग के सिद्धांत को लागू करते हुए, डॉ. क्रिपनर सोचते हैं कि शायद यही सिद्धांत इन चौंकाने वाले तथ्यों का उत्तर दे सकता है। लेकिन सबसे स्पष्ट और सरल व्याख्या की अपेक्षा किसी चिकित्सक से नहीं की जानी चाहिए: भाग्य। क्या कोई सर्वोपरि नियति है जो इन त्रासदियों को निश्चित समय पर घटित होने देती है, चाहे उनमें शामिल लोग उनसे बचने का प्रयास करें या न करें? और यदि ऐसा है, तो इस नियति का निर्देशक कौन है—संक्षेप में, इस सब का नियंत्रण किसके हाथ में है?

डॉ. क्रिपनर ने अमेरिकी राष्ट्रपतियों में सबसे चर्चित दो मौतों, कैनेडी और लिंकन की मौतों के बीच कुछ आश्चर्यजनक समानताओं की ओर भी ध्यान दिलाया है। दोनों नामों में सात-सात अक्षर हैं, दोनों की पत्नियों ने अपने पतियों के कार्यकाल के दौरान अपने बेटों को खोया, और दोनों राष्ट्रपतियों को शुक्रवार के दिन उनकी पत्नियों की उपस्थिति में पीछे से सिर में गोली मारी गई थी। इसके अलावा, लिंकन का हत्यारा जॉन विल्क्स बूथ था, जिसके नाम के सभी अक्षरों का योग पंद्रह होता है; इसी तरह ली हार्वे ओसवाल्ड के नाम में भी पंद्रह अक्षर थे। बूथ का जन्म वर्ष 1829 था; ओसवाल्ड का 1939। दोनों हत्यारों को उनके अपहरणकर्ताओं के सामने जानबूझकर गोली मारी गई थी, और दोनों की गोली लगने के दो घंटे बाद मृत्यु हो गई। लिंकन 1847 में कांग्रेस के लिए चुने गए और कैनेडी 1947 में; लिंकन 1860 में राष्ट्रपति बने और कैनेडी 1960 में। दोनों अफ्रीकी-अमेरिकियों के नागरिक अधिकारों के मुद्दे में शामिल थे। अंत में, लिंकन के सचिव, जिनका नाम कैनेडी था, ने उन्हें उस दुर्भाग्यपूर्ण दिन थिएटर न

जाने की सलाह दी, जिस दिन उन्हें गोली मारी गई थी, और कैनेडी के सचिव, जिनका नाम लिंकन था, ने उनसे डलास न जाने का आग्रह किया। लिंकन ने एक पूर्वसूचक स्वप्न देखा था जिसमें उन्होंने स्वयं को मरते हुए देखा था और कैनेडी की हत्या की भविष्यवाणी जीन डिक्सन ने 1952 में, अल मॉरिसन ने 1957 में और कई अन्य भविष्यवक्ताओं ने 1957 और 1960 में की थी, साथ ही राष्ट्रपति कैनेडी ने स्वयं भी आसन्न विनाश की आशंका व्यक्त की थी।

लेकिन मैं यह सुझाव देने से बहुत दूर हूँ कि दोनों राष्ट्रपतियों का आपस में व्यक्तिगत संबंध हो सकता है, शायद पुनर्जन्म के माध्यम से, यदि ऐसा सिद्ध हो सके। उनके समान भाग्य किसी उच्चतर व्यवस्था का परिणाम होना चाहिए जिसके बारे में हम अभी तक बहुत कम जानते हैं, सिवाय इसके कि वह अस्तित्व में है और प्रकृति के किसी भी अन्य नियम की तरह स्पष्ट और सुनियोजित रूप से कार्य करती है।

लेकिन अगर कोई लिंकन के पुनर्जन्म की ऐसी बात कहता भी है, तो उसे खारिज करने के पर्याप्त कारण हैं। सक्षम गवाहों ने व्हाइट हाउस में श्री लिंकन के भूत को देखा है।

न्यूयॉर्क टाइम्स के आर्थर क्रॉक के अनुसार, व्हाइट हाउस में सबसे पहले दिखाई देने वाली आत्मा लिंकन नहीं बल्कि डॉली मैडिसन थीं। राष्ट्रपति विल्सन के शासनकाल के दौरान, वह उन श्रमिकों के एक समूह के सामने प्रकट हुईं जो उनके बहुमूल्य गुलाब के बगीचे को स्थानांतरित करने वाले थे। जाहिर है, उन्होंने बगीचे को स्थानांतरित करने का इरादा बदल दिया, क्योंकि बगीचे को छुआ तक नहीं गया।

यह मानना स्वाभाविक है कि व्हाइट हाउस जैसी भावनाओं से भरी इमारत में उन लोगों के अवशेष मौजूद होंगे जिनका जीवन इस संरचना से गहराई से जुड़ा हुआ था। मैंने भूतों को उन लोगों की बची हुई भावनात्मक यादों के रूप में परिभाषित किया है जो मृत्यु नामक संक्रमण से अनभिज्ञ हैं और उसी विचार जगत में कार्य करते रहते हैं जैसा वे अपनी मृत्यु के समय या उससे पहले करते थे। एक तरह से, वे मनोविकारग्रस्त हैं जो उस अभौतिक दुनिया की वास्तविकताओं को स्वीकार करने में असमर्थ या अनिच्छुक हैं जिससे उनका वास्तविक संबंध है, लेकिन जो उन्हें मांस और रक्त के सघन, भौतिक जगत में "लगे रहने" की उनकी अप्राकृतिक स्थिति के कारण नहीं मिल पाती। मुझे यकीन है कि हम व्हाइट हाउस से जुड़े

सभी दुखी या विक्षिप्त व्यक्तियों को नहीं जानते हैं, और उनमें से कुछ जरूरी नहीं कि सुदूर अतीत के हों। लेकिन राष्ट्रपति टैफ्ट के प्रशासन के दौरान एबिगेल एडम्स को देखा और पहचाना गया था। उनकी परछाई को ईस्ट रूम के दरवाजों से गुजरते हुए देखा गया था, जिसने बाद में व्हाइट हाउस की सबसे प्रसिद्ध भूतिया कहानी में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

यह बात स्पष्ट है कि अब्राहम लिंकन के पास अपने पूर्व गतिविधि केंद्र के आसपास रहने का एक उत्कृष्ट कारण था, भले ही उनकी मृत्यु शहर के दूसरी ओर हुई थी: उनके पास बहुत सारे महत्वपूर्ण अधूरे काम थे।

इसके अलावा, लिंकन ने अपने जीवनकाल में ही मानसिक शक्तियों में असामान्य रुचि दिखाई थी। लिंकन परिवार ने बाद में इस बात से पूरी तरह इनकार किया कि उनके शासनकाल में व्हाइट हाउस में ऐसी कोई तांत्रिक सभाएँ हुईं। रॉबर्ट लिंकन ने संभवतः अपने पिता से संबंधित कुछ महत्वपूर्ण दस्तावेज़ जला दिए थे, जिनमें उनके पिता की हत्या की राजनीतिक साजिश से जुड़े दस्तावेज़ भी शामिल थे। रिकॉर्ड के अनुसार, उन्होंने निश्चित रूप से कई दस्तावेज़ नष्ट कर दिए थे, इससे पहले कि मिस्टर यंग ने उन्हें इस मूर्खतापूर्ण कार्य में बाधा डाली। यह घटना रॉबर्ट लिंकन की मृत्यु से कुछ समय पहले हुई थी और लिंकन के विशेषज्ञ इमानुएल हर्ट्ज़ ने अपनी पुस्तक 'द हिडन लिंकन' में इसकी पुष्टि की है।

आध्यात्मिक विचारक तो राष्ट्रपति को भी अपना मानने तक का दावा करते हैं। यह शायद तथ्यों को बढ़ा-चढ़ाकर पेश करना हो, लेकिन अब्राहम लिंकन निश्चित रूप से मानसिक शक्तियों से युक्त थे, और व्हाइट हाउस में अपने कार्यकाल के दौरान भी तंत्र-मंत्र में उनकी रुचि जगजाहिर थी। क्लीवलैंड प्लेन डीलर अखबार, लिंकन की इस विषय में रुचि के बारे में लिखने से पहले, राष्ट्रपति से अनुमति मांगी, या यदि वे चाहें तो लेख में उन्हें इन गतिविधियों से जोड़ने वाले बयानों का खंडन करने को कहा। खंडन करने के बजाय, लिंकन ने उत्तर दिया, "बयान में एकमात्र झूठ यह है कि इसका आधा हिस्सा भी नहीं बताया गया है। लेख में उन चीजों का जरा भी वर्णन नहीं है जिन्हें मैंने देखा है।"

व्हाइट हाउस में होने वाले प्रेतात्माओं से संपर्क के अनुष्ठानों की शुरुआत संभवतः तब हुई होगी जब लिंकन के छोटे बेटे विली की असमय मृत्यु हो गई, और श्रीमती लिंकन कुछ समय

के लिए मानसिक रूप से विक्षिप्त हो गईं। शायद अपनी भावनाओं को शांत करने के लिए, लिंकन ने व्हाइट हाउस में प्रेतात्माओं से संपर्क करने का निर्णय लिया। यह ज्ञात नहीं है कि परिणाम सकारात्मक थे या नहीं, लेकिन विली का भूत भी व्हाइट हाउस में देखा गया है। आर्थर क्रॉक के अनुसार, ग्रांट के शासनकाल के दौरान, एक लड़का, जिसे उन्होंने छोटे विली के भूत के रूप में पहचाना, उनके घर के कुछ सदस्यों के सामने प्रकट हुआ।

लिंकन सबसे ज़्यादा नेटी कोलबर्न मेनार्ड नाम की एक महिला से संपर्क करते थे, और कहा जाता है कि उनके ज़रिए डैनियल वेबस्टर की आत्मा ने उनसे बात की थी। उस अवसर पर, ऐसा कहा जाता है, उन्हें दासों की मुक्ति की घोषणा करने के लिए प्रेरित किया गया था। जैसा कि सर्वविदित है, वह घोषणा लिंकन की सबसे बड़ी राजनीतिक उपलब्धि बन गई। कम ज्ञात तथ्य यह है कि इसने उनके मंत्रिमंडल के सदस्यों के बीच बाद में मतभेद की नींव भी रखी और जैसा कि हम आगे देखेंगे, यह अप्रत्यक्ष रूप से उनकी असामयिक मृत्यु का कारण भी हो सकता है। हालाँकि, इस पर चर्चा करने से पहले, आइए यह स्पष्ट कर दें कि कुल मिलाकर लिंकन को किसी माध्यम की आवश्यकता नहीं थी, क्योंकि उनके पास स्वयं दूरदर्शिता की क्षमता थी, और यह प्रतिभा उनके जीवन भर उनके साथ रही। फिलिप वैन डोरेन स्टर्न ने अपनी पुस्तक "द मैन हू किल्ड लिंकन" में एक उल्लेखनीय पूर्वसूचक अनुभव का वर्णन किया है, और लिंकन से संबंधित अधिकांश अन्य स्रोतों में भी इसका उल्लेख मिलता है।

यह घटना 1860 में स्प्रिंगफील्ड में घटी, लिंकन के राष्ट्रपति चुने जाने के ठीक बाद। जब वे दर्पण में खुद को देख रहे थे, तो अचानक उन्हें अपनी दोहरी छवि दिखाई दी। एक, वास्तविक और सजीव, और दूसरी, धुंधली और अस्पष्ट। उन्हें यकीन हो गया कि इसका मतलब है कि वे अपना पहला कार्यकाल सुरक्षित रूप से पूरा कर लेंगे, लेकिन दूसरे कार्यकाल के अंत से पहले ही उनकी मृत्यु हो जाएगी। आज, मानसिक शोधकर्ता लिंकन के दर्पण अनुभव को कम काल्पनिक शब्दों में समझाएंगे। राष्ट्रपति ने जो देखा वह एक संक्षिप्त "शरीर से बाहर का अनुभव" या एस्ट्रल प्रोजेक्शन था, जो एक आम मानसिक अनुभव है। इसका सीधा सा मतलब है कि चेतन मन और अचेतन मन के बीच के बंधन अस्थायी रूप से ढीले हो जाते हैं और आंतरिक या सच्चा स्व क्षण भर के लिए बाहर निकल आता है। आमतौर पर, ये अनुभव स्वप्न अवस्था में होते हैं, लेकिन ऐसे मामले भी दर्ज हैं जिनमें यह घटना जागृत अवस्था में घटी है।

राष्ट्रपति द्वारा इस अनुभव की व्याख्या बेशक एक अलग मामला है; यहाँ एक दूसरी घटना भी सामने आती है, वह है भविष्यवाणी; अपने अनुभव की अपनी विशिष्ट व्याख्या में, उन्होंने कुछ हद तक पूर्वज्ञान दिखाया, और दुर्भाग्य से, भविष्य की घटनाओं ने उन्हें सही साबित कर दिया।

लिंकन के जीवन में दर्ज सपनों में से यह एकमात्र सपना नहीं था। वे सपनों को बहुत महत्व देते थे और अक्सर उनकी व्याख्या करना पसंद करते थे। लिंकन के एक समय के कानूनी सहयोगी और जीवनीकार विलियम हर्नडन ने उनके बारे में कहा कि वे हमेशा मानते थे कि उनका अंत दुखद होगा, और उन्होंने राष्ट्रपति के कई बार कहे गए शब्दों को उद्धृत किया है, "मुझे यकीन है कि मेरा अंत भयानक होगा।"

यह भी दिलचस्प है कि लिंकन के भाग्यवादी दृष्टिकोण ने उन्हें अक्सर ब्रूटस और सीज़र का जिक्र करने के लिए प्रेरित किया, और सीज़र की हत्या की घटनाओं को उन कानूनों के कारण हुई घटना बताया जिन पर दोनों का कोई नियंत्रण नहीं था; वर्षों बाद, लिंकन के हत्यारे, जॉन विल्क्स बूथ ने भी खुद को नया ब्रूटस माना, जिसने अमेरिकी सीज़र की हत्या की क्योंकि नियति ने उसे इस कृत्य के लिए चुना था!

अब्राहम लिंकन के सबसे चर्चित मानसिक अनुभवों में से एक उनकी मृत्यु से कुछ दिन पहले आया एक विचित्र सपना था। जब उनके असामान्य रूप से विचारशील हावभाव ने श्रीमती लिंकन को चिंतित कर दिया, तो उन्होंने अंततः स्वीकार किया कि वे एक असामान्य रूप से विस्तृत सपने से परेशान थे। रात के भोजन के दौरान, जब उनसे अपने सपने के बारे में बताने का आग्रह किया गया, तो उन्होंने अपने करीबी मित्र और सामाजिक सचिव होने के साथ-साथ एक प्रकार के अंगरक्षक वार्ड हिल लैमन की उपस्थिति में ऐसा किया। लैमन ने इसे तुरंत बाद लिख लिया, और यह लिंकन की जीवनी में शामिल है।

“लगभग दस दिन पहले,” राष्ट्रपति ने बोलना शुरू किया, “मैं बहुत देर से सोया। मैं मोर्चे से महत्वपूर्ण संदेशों की प्रतीक्षा में जागा हुआ था। बिस्तर पर लेटे हुए मुझे ज्यादा देर नहीं हुई होगी कि मुझे नींद आ गई, क्योंकि मैं थका हुआ था। जल्द ही मुझे सपने आने लगे। चारों ओर सन्नाटा पसरा हुआ था। फिर मैंने दबी हुई सिसकियाँ सुनीं, मानो कई लोग रो रहे हों। मुझे लगा कि मैं बिस्तर से उठकर नीचे चला गया हूँ। वहाँ भी वही दयनीय सिसकियाँ सुनाई दीं, लेकिन शोक मनाने वाले दिखाई नहीं दे रहे थे। मैं एक कमरे से दूसरे कमरे में गया; कोई भी जीवित

व्यक्ति नज़र नहीं आया, लेकिन जैसे-जैसे मैं आगे बढ़ता गया, मुझे वही शोकपूर्ण आवाज़ें सुनाई देती रहीं। सभी कमरों में उजाला था; हर वस्तु मुझे जानी-पहचानी लग रही थी; लेकिन वे सभी लोग कहाँ थे जो इतने दुखी थे मानो उनका दिल टूट जाएगा? मैं उलझन में था और चिंतित भी। आखिर इन सबका क्या मतलब हो सकता है? इतनी रहस्यमय और भयावह स्थिति का कारण जानने के लिए दृढ़ संकल्पित होकर, मैं तब तक चलता रहा जब तक कि मैं पूर्वी कक्ष में नहीं पहुँच गया, जिसमें मैं प्रवेश कर गया।"

"वहाँ मुझे एक भयावह आश्चर्य का सामना करना पड़ा। मेरे सामने एक शवपेटिका थी, जिस पर अंतिम संस्कार के वस्त्रों में लिपटा एक शव रखा था। उसके चारों ओर सैनिक पहरेदारी कर रहे थे; और लोगों की भीड़ थी, कुछ लोग शव को शोकपूर्वक देख रहे थे, जिसका चेहरा ढका हुआ था, जबकि अन्य लोग दयनीय रूप से रो रहे थे।

"'व्हाइट हाउस में किसकी मौत हुई है?' मैंने एक सैनिक से पूछा। उसका जवाब था, 'राष्ट्रपति की; उन्हें एक हत्यारे ने मार डाला!' तभी भीड़ से शोक की एक ज़ोरदार आवाज़ आई, जिससे मैं अपने सपने से जाग गया। उस रात मैं फिर कभी नहीं सो पाया...।"

लिंकन हमेशा जानते थे कि उन पर खतरा मंडरा रहा है, न केवल अपने मानसिक आभास के कारण, बल्कि वस्तुनिष्ठ रूप से भी, क्योंकि उन्होंने अपनी डेस्क में एक बड़ा लिफाफा रखा हुआ था जिसमें उन्हें मिले सभी धमकी भरे पत्र थे। उस लिफाफे पर केवल "हत्या" लिखा था, और इस बात से उन्हें कोई डर नहीं था। उनका तर्क था कि उनकी स्थिति में कोई भी व्यक्ति हमेशा खतरे में रहता है, हालांकि गृहयुद्ध और जीत के बाद दक्षिण के साथ क्या किया जाए, इस बड़े सवाल ने देश को दो गुटों में बांट दिया था, जिससे राष्ट्रपति की स्थिति और भी कमजोर हो गई थी। इसलिए लिंकन ने अपने विस्तृत स्वप्न चेतावनी को गंभीरता से नहीं लिया, या कम से कम उन्होंने ऐसा दिखावा किया। जब उनके दोस्तों ने उन्हें अतिरिक्त सावधानी बरतने के लिए कहा, तो उन्होंने उनकी चेतावनियों को हल्के-फुल्के अंदाज में यह कहकर टाल दिया, "अरे, उस ताबूत पर मैं नहीं था। कोई और आदमी था!"

लेकिन सपने में लाश का चेहरा ढका हुआ था और वह सचमुच अंधेरे में सीटी बजा रहा था।

क्या नियति इस त्रासदी को रोकना चाहती थी और उसे इससे बचने की चेतावनी देना चाहती थी?

क्या किसी उच्चतर शक्ति ने यह तय किया था कि वह उस चेतावनी को नजरअंदाज कर दे?

लिंकन को अक्सर एक खास सपना आता था जिसमें वे खुद को एक अनजान जहाज पर देखते थे, जो बहुत तेज़ी से किसी अनिश्चित किनारे की ओर बढ़ रहा होता था। यह सपना हमेशा किसी असामान्य घटना से पहले आता था। दरअसल, फोर्ट सुमटर की घटनाओं, बुल रन, एंटीएटम, गेटिसबर्ग, स्टोन रिवर, विक्सबर्ग और विलमिंगटन की लड़ाइयों से ठीक पहले उन्होंने ठीक यही सपना देखा था। अब अपनी मृत्यु की पूर्व संध्या पर उन्होंने फिर से यही सपना देखा था। यह 13 अप्रैल, 1865 का दिन था, और लिंकन ने अपने इस बार-बार आने वाले सपने के बारे में असामान्य रूप से आशावादी लहजे में बात की। उनके लिए यह आने वाली अच्छी खबर का संकेत था। उन्हें लगा कि यह खबर जनरल शेरमन की ओर से युद्धविराम की सूचना होगी। 14 अप्रैल को कैबिनेट की बैठक होनी थी और लिंकन को उम्मीद थी कि यह खबर समय पर आ जाएगी। उन्हें कभी यह ख्याल नहीं आया कि इस सपने में जिस महत्वपूर्ण खबर का संकेत दिया गया था, वह उसी शाम उनकी अपनी मृत्यु थी, और वह अजीब जहाज जो उन्हें दूर किनारे तक ले जा रहा था, वह कैरन की नाव थी जो उन्हें स्टिक्स नदी के पार परलोक में ले जा रही थी।

लेकिन क्या वह सचमुच पार हो गया था?

व्हाइट हाउस में एक प्रेतवाधित राष्ट्रपति की अफवाहें फैलती रहीं। उम्मीद के मुताबिक, सरकार ने तुरंत इन अफवाहों का खंडन किया। बेस फरमैन की पुस्तक 'व्हाइट हाउस प्रोफाइल' के अनुसार, राष्ट्रपति थियोडोर रूजवेल्ट अक्सर लिंकन की आत्मा को महसूस करते थे, और 1930 के दशक में फ्रैंकलिन डी. रूजवेल्ट के प्रशासन के दौरान, एक महिला सचिव ने अब्राहम लिंकन की आकृति को उनके पूर्व शयनकक्ष में देखा। भूत दोपहर के मध्य में बिस्तर पर बैठा था और अपने जूते पहन रहा था, मानो उसे कहीं जाने की जल्दी हो। एलेनोर रूजवेल्ट ने भी अक्सर लिंकन की उपस्थिति महसूस की थी और इस बात को खुलकर स्वीकार किया था।

प्रशासन की यह प्रथा थी कि महत्वपूर्ण आगंतुकों को उस कमरे में ठहराया जाता था जो पहले लिंकन का शयनकक्ष हुआ करता था। यह शरारत के इरादे से नहीं किया जाता था, बल्कि इसलिए किया जाता था क्योंकि लिंकन का कमरा व्हाइट हाउस के सबसे प्रभावशाली कमरों

में से एक था। हमारे पास उन सभी लोगों का कोई रिकॉर्ड नहीं है जो वहां सोए और जिन्हें अजीबोगरीब अनुभव हुए, क्योंकि लोग, विशेषकर राजनीतिक रूप से उच्च पदों पर आसीन लोग, भूतों जैसी चीजों के बारे में बात नहीं करते।

फिर भी, दिवंगत महारानी विल्हेल्मिना ने अपने दरवाजे पर लगातार होने वाली दस्तक और उसके बाद आने वाली कदमों की आहट का जिक्र किया था—लेकिन बाहर गलियारा बिल्कुल खाली मिलता था। और मार्गरिट ट्रूमैन, जो व्हाइट हाउस के उसी हिस्से में सोती थीं, अक्सर रात के 3 बजे अपने शयनकक्ष के दरवाजे पर दस्तक सुनती थीं। जब भी वह देखतीं, वहाँ कोई नहीं होता था। उनके पिता, राष्ट्रपति ट्रूमैन, जो एक संशयवादी थे, ने फैसला किया कि ये आवाजें फर्श के खतरनाक रूप से धंसने जैसे "प्राकृतिक" कारणों से ही होंगी। उन्होंने व्हाइट हाउस के पूर्ण पुनर्निर्माण का आदेश दिया, और शायद यह एक अच्छा कदम था: वास्तुकार, जनरल एडगर्टन के अनुसार, इसके बाद यह निश्चित रूप से जल्द ही ढह जाता। इस प्रकार, कम से कम, उन रहस्यमय दस्तकों के कारण ही इमारत का सर्वेक्षण और बाद में पुनर्निर्माण हुआ। या क्या यही दस्तक का कारण था? क्या लिंकन ने बाद में रहने वालों को चेतावनी देने की कोशिश की थी कि घर उनके सिर के ऊपर गिरने वाला है?

लिंकन का शयनकक्ष ही नहीं, बल्कि व्हाइट हाउस के अन्य पुराने हिस्से भी प्रेतवाधित माने जाते हैं। इनमें सबसे पहले प्रसिद्ध ईस्ट रूम है, जहाँ पार्थिव शरीर को अंतिम दर्शन के लिए रखा गया था। संयोगवश, राष्ट्रपति कैनेडी की हत्या के बाद उन्हें भी वहीं रखा गया था। लिंडा बर्ड जॉनसन का कमरा वही कमरा था जिसमें विली लिंकन का निधन हुआ था, और बाद में ट्रूमैन की माँ का भी। इसी कमरे में डॉक्टरों ने अब्राहम लिंकन का पोस्टमार्टम भी किया था। इसलिए यह आश्चर्य की बात नहीं है कि राष्ट्रपति जॉनसन की बेटी को उस कमरे में अच्छी नींद नहीं आती थी। उन्हें रात में कदमों की आहट सुनाई देती थी, और फोन बजता था लेकिन दूसरी तरफ कोई नहीं होता था। व्हाइट हाउस की एक परेशान टेलीफोन ऑपरेटर बार-बार फोन पर आकर कहती थी कि उन्होंने फोन नहीं किया था!

लेकिन अगर अब्राहम लिंकन का भूत अधूरे कामों की वजह से व्हाइट हाउस में घूमता है, तो जाहिर तौर पर वह एक ऐसा भूत है जो अन्य काम करने के लिए भी स्वतंत्र है, ऐसा कुछ जो

एक सामान्य प्रेत नहीं कर सकता, क्योंकि वह केवल अपनी असामयिक मृत्यु के स्थान से बंधा होता है।

श्रीमती लिंकन कई वर्षों तक जीवित रहीं, लेकिन अंततः वृद्धावस्था के कारण मानसिक रूप से विक्षिप्त हो गईं और अपनी बहन के घर पर उनकी मृत्यु हो गई। हालांकि, मानसिक रूप से विक्षिप्त होने से बहुत पहले, वे अपने दिवंगत पति की शारीरिक मृत्यु के बाद उनके जीवित रहने के प्रमाण की निरंतर खोज में बोस्टन गईं। यह 1880 का दशक था, और उन्हें यह सूचना मिली थी कि विलियम मुमलर नामक एक फोटोग्राफर सख्त परीक्षण स्थितियों के तहत अपनी फोटोग्राफिक प्लेटों पर मृत लोगों की तस्वीरें प्राप्त करने में सक्षम था। उन्होंने इस व्यक्ति से संपर्क करने का फैसला किया, यह जानते हुए भी कि यदि उनकी पहचान उजागर हो गई तो धोखाधड़ी का प्रयास किया जा सकता है। शोक वस्त्रों में लिपटी हुई, वे मुमलर के प्रायोगिक अध्ययन कक्ष में अन्य आगंतुकों के साथ बैठ गईं। उन्होंने अपना नाम श्रीमती टिंडल बताया; मुमलर को केवल घूंघट में लिपटी एक विधवा ही दिखाई दी। मुमलर ने फिर कमरे में मौजूद सभी लोगों की तस्वीरें खींचीं। जब उन्हें विकसित किया गया, तो उनमें से एक तस्वीर "श्रीमती टिंडल" की थी। उनके पीछे अब्राहम लिंकन की एक धुंधली सी आकृति दिखाई देती है, जिनके हाथ उनकी विधवा के कंधों पर टिके हैं और उनके चेहरे पर गहरी करुणा का भाव है। लिंकन के बगल में उनके बेटे विली की आकृति थी, जिनकी व्हाइट हाउस में ही कम उम्र में मृत्यु हो गई थी। मुमलर ने अपने प्रिंट्स उपस्थित लोगों को दिखाए, और इससे पहले कि श्रीमती लिंकन अपना प्रिंट दिखा पातीं, समूह की एक अन्य महिला ने कहा, "अरे, ये तो राष्ट्रपति लिंकन जैसे दिखते हैं!" तब श्रीमती लिंकन ने पहली बार अपनी पहचान बताई।

वैसे, ऐसी कोई तस्वीर मौजूद नहीं है जिसमें लिंकन अपने बेटे के साथ उस तरह से दिख रहे हों जैसे वे उस मानसिक तस्वीर में दिखाई दिए थे।

1937 में राष्ट्रपति लिंकन के सौवें जन्मदिन के उपलक्ष्य में किए गए एक प्रयोग में उनकी एक और तस्वीर प्राप्त की गई थी। यह प्रयोग फ्लोरिडा के कैसडागा में हुआ था, जिसमें होरेस हैम्बलिंग ने मानसिक मध्यस्थ की भूमिका निभाई थी, जिनकी उपस्थिति मात्र से ही ऐसी घटना संभव हो सकी।

साइचिक ऑब्जर्वर के संपादक राल्फ प्रेसिंग को इस्तेमाल होने वाली फिल्म की रील उपलब्ध कराने और उसकी सुरक्षा करने का ज़िम्मा सौंपा गया था, और तस्वीरें एक गुप्त कक्ष में मंद रोशनी में ली गईं। फिर फिल्म की रील को बिना कुछ बताए एक स्थानीय फोटोग्राफर को डेवलप करने के लिए सौंप दिया गया। ज़रा उस फोटोग्राफर के आश्चर्य की कल्पना कीजिए जब उसने देखा कि पूरी तरह से काली नेगेटिव शीट पर अब्राहम लिंकन का एक स्पष्ट चित्र, साथ ही चार अन्य छोटे चेहरे भी उकेरे गए थे।

मैं स्वयं सैन फ्रांसिस्को में एक प्रयोग में उपस्थित था, जब एंड्रयू वॉन साल्ज़ा नामक एक प्रतिष्ठित चिकित्सक ने पोलरॉइड कैमरे का उपयोग करके अपनी अद्भुत मानसिक फोटोग्राफी क्षमता का प्रदर्शन किया। यह 1966 की शरद ऋतु में हुआ था, और कई अन्य लोगों ने भी इस घटना को देखा था, जिसका वर्णन मैंने अपनी पुस्तक "साइकि फोटोग्राफी—थ्रेशहोल्ड ऑफ ए न्यू साइंस?" में किया है।

कैमरा, लेंस, फिल्म और परिसर की सावधानीपूर्वक जांच करने के बाद, डॉ. वॉन साल्ज़ा ने पोलरॉइड कैमरे से कई तस्वीरें लीं। उनमें से कई तस्वीरों में अलग-अलग "अतिरिक्त" चेहरे दिखाई दिए, यानी लोगों के चेहरे इस तरह से सुपरइम्पोज़ किए गए थे कि धोखाधड़ी या डबल एक्सपोज़र की संभावना बिल्कुल भी नहीं थी। इन सभी तस्वीरों में सबसे दिलचस्प तस्वीर राष्ट्रपति लिंकन के चेहरे की थी, जिनके बगल में राष्ट्रपति कैनेडी का चेहरा दिखाई दे रहा था! क्या इतने समान तरीकों से पीड़ित इन दोनों व्यक्तियों को अलौकिक जगत में एक बंधन मिल गया था? इस अद्भुत तस्वीर के बाद एक और तस्वीर सामने आई जिसमें राष्ट्रपति कैनेडी का चेहरा अकेले दिखाई दे रहा था, और उसके साथ सफेद रंग से "युद्ध" शब्द लिखा हुआ था। क्या यह उनका हमें "अपने तौर-तरीकों को सुधारने" की चेतावनी देने का तरीका था?

इसका जो भी अर्थ हो, मुझे एक बात का पूरा यकीन है: यह घटना, यह प्रयोग, बिल्कुल वास्तविक था और किसी भी तरह से छल, दुर्घटना, आत्म-भ्रम या मतिभ्रम का परिणाम नहीं था। मैंने दोनों तस्वीरें सभी के देखने के लिए प्रकाशित कर दी हैं।

अब्राहम लिंकन के शासनकाल और उनकी असामयिक मृत्यु की त्रासदी पर दर्जनों अच्छी किताबें लिखी गई हैं। फिर भी मुझे हमेशा लगता था कि कहानी पूरी तरह से नहीं बताई गई है। यह धारणा न केवल लिंकन के भूत के प्रकट होने की खबरों के कारण थी, जो उनकी

बेचैनी और अधूरे कामों का संकेत देती है, बल्कि मेरे वस्तुनिष्ठ ऐतिहासिक ज्ञान के कारण भी थी, जिसने मुझे कहानी के दिए गए समाधानों को अस्वीकार करने के लिए प्रेरित किया, ठीक उसी तरह जैसे आज कई गंभीर लोग राष्ट्रपति कैनेडी की मृत्यु के मामले में वॉरेन आयोग के निष्कर्षों को अंतिम रूप से स्वीकार करने से इनकार करते हैं। लेकिन शुरुआत कहाँ से की जाए?

अगर हाल के वर्षों में लिंकन को व्हाइट हाउस में देखा गया होता, तो वहीं से शुरुआत करना सबसे सही होता। यह सच है कि उन्हें फोर्ड थिएटर में गोली मारी गई थी और उनकी मृत्यु सड़क के दूसरी ओर स्थित पार्कर हाउस में हुई थी। लेकिन व्हाइट हाउस उनका घर था। भूत अक्सर उस स्थान पर दिखाई देते हैं जहाँ व्यक्ति का "भावनात्मक केंद्र" उसके शरीर में रहते हुए था, भले ही उसकी वास्तविक मृत्यु कहीं और हुई हो। इसका एक उदाहरण अलेक्जेंडर हैमिल्टन हैं, जिनकी आत्मा को उनके निजी चिकित्सक के घर में देखा गया है; उन्होंने अपना अंतिम दिन वहीं बिताया था, और जीवन से चिपके रहने के उनके असफल संघर्ष ने उस स्थान को उनका "भावनात्मक केंद्र" बना दिया, उस स्थान से कहीं अधिक जहाँ उन्हें न्यू जर्सी में घातक घाव लगा था।

जैसा कि हम बाद के एक अध्याय में देखेंगे, नेल ग्विन की आत्मा उस शांत घर में प्रकट होने के बजाय, जहाँ वास्तव में उनकी मृत्यु हुई थी, उनके युवावस्था के रोमांटिक अपार्टमेंट में प्रकट हुई।

भले ही फोर्ड थिएटर और पार्कर हाउस दोनों जगहों पर उस महान त्रासदी के निशान मौजूद हों, लेकिन मेरे अनुमान में लिंकन खुद वहां "घूमते-फिरते" नहीं होंगे!

व्हाइट हाउस में एक गोपनीय जांच के लिए मेरा अनुरोध 1963 का है, जब पियरे सैलिंगर प्रभारी थे और जॉन एफ. कैनेडी राष्ट्रपति थे। मुझे कभी कोई जवाब नहीं मिला, और मार्च 1965 में मैंने फिर से कोशिश की। इस बार, श्रीमती जॉनसन की सामाजिक सचिव बेस एबेल ने "सुरक्षा कारणों" से मेरा अनुरोध ठुकरा दिया। धैर्यपूर्वक, मैंने जवाब में लिखा कि मैं केवल एक ज्योतिषी, संभवतः श्रीमती लीक, के साथ दो कम इस्तेमाल होने वाले स्थानों: लिंकन के शयनकक्ष और ईस्ट रूम में लगभग आधा घंटा बिताना चाहता था। बेस एबेल ने राष्ट्रपति के निजी आवास में आगंतुकों को प्रवेश की अनुमति न देने की व्हाइट हाउस की नीति का हवाला

दिया था। मैंने बताया कि मेरी जानकारी के अनुसार, राष्ट्रपति लिंकन के शयनकक्ष में रातें नहीं बिताते थे, और न ही ईस्ट रूम औपचारिक या आधिकारिक सरकारी कमरों का हिस्सा था और इसे "निजी आवास" कहना गलत होगा, खासकर जब हर घंटे पर्यटकों को वहां से ले जाया जाता है। सुरक्षा की बात करें तो, मैं अपने अध्ययन के बारे में जो कुछ भी लिखूंगा, उसे उनकी स्वीकृति के लिए सहर्ष प्रस्तुत करूंगा।

बेस एबेल की ओर से एक और गंभीर पत्र आया। राष्ट्रपति और श्रीमती जॉनसन के "व्यस्त कार्यक्रम" के कारण मेरा दौरा संभव नहीं था।

मैंने बदले में यह पेशकश की कि जब भी जॉनसन परिवार शहर से बाहर हो, मैं दिन हो या रात, किसी भी समय आ सकता हूँ।

जवाब अब भी ना था, और मुझे यह सोचने पर मजबूर होना पड़ा कि क्या यह सिर्फ ईएसपी से कोई लेना-देना न रखने का मामला था?

लेकिन एक अच्छा शोधकर्ता कभी उम्मीद नहीं छोड़ता। मैंने बाद में सीनेटर जैकब जैविट्स से व्हाइट हाउस में प्रवेश दिलाने में मदद मांगी, लेकिन वे भी मुझे अंदर नहीं ले जा सके। एक स्थानीय मित्र के माध्यम से मेरी मुलाकात स्टेट रूम्स के क्यूरेटर जेम्स केर्चम से हुई। क्या वे मुझे एक निजी तौर पर निर्देशित दौरा करवा सकते हैं, बिल्कुल नियमित पर्यटक दौरे की तरह, बस फर्क इतना होगा कि इसमें पर्यटकों की मौजूदगी नहीं होगी जो हमारा ध्यान भटका सकें?

उत्तर नकारात्मक ही रहा।

6 मार्च, 1967 को, बेस एबेल ने मुझे फिर से बताया कि जिन दो कमरों को मैं देखना चाहता था, उनमें प्रवेश के लिए केवल राजकीय यात्राओं के लिए आमंत्रित व्यक्ति और करीबी निजी मित्र ही पात्र थे। दोनों ही मामलों में, हम प्रवेश के लिए अयोग्य थे।

मैंने एलिजाबेथ कारपेंटर से हस्तक्षेप करने का अनुरोध किया, जिनके बारे में मुझे पता था कि वे ईएसपी (प्रारंभिक संवेदनशीलता) के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण रखती हैं। श्रीमती जॉनसन की प्रेस सचिव होने के नाते, मुझे लगा कि कम से कम वे मुझे कोई कम बनावटी बहाना तो दे सकती हैं। उन्होंने समझाया, "अगर मुझे अंदर जाने दिया गया तो यह एक

असंभव मिसाल होगी।" मैंने पर्यटक यात्रा करने से इनकार कर दिया, क्योंकि यह मेरे समय की बर्बादी होती, और मैंने फिलहाल इस मामले को वहीं छोड़ दिया।

लेकिन इस मामले में मेरी दिलचस्पी कभी कम नहीं हुई। मेरे लिए, लिंकन के हत्यारे के बारे में आधिकारिक तौर पर ज्ञात जानकारी और साजिश की वास्तविक सीमा के बीच की गुमशुदा कड़ी को खोजना अमेरिकी इतिहास में एक महत्वपूर्ण योगदान होगा।

अमेरिकी इतिहास के उस काले दिन से ठीक पहले और बाद की घटनाएँ अधिकांश पाठकों को ज्ञात हैं, लेकिन शायद कुछ ऐसे विवरण भी हैं जिनसे केवल विशेषज्ञ ही परिचित होंगे और जो मेरी आगे की जाँच में महत्वपूर्ण साबित होंगे। इसलिए मुझे लगता है कि इन घटनाओं का यहाँ उल्लेख करना उपयोगी है, हालाँकि जब मैंने अपनी मानसिक जाँच शुरू की थी तब मुझे इनकी जानकारी नहीं थी। मैं अपने अवचेतन मन को हर तरह के ज्ञान से मुक्त रखने का प्रयास करता हूँ ताकि कोई भी मेरी मानसिक जाँच पर "मेरे मन को पढ़ने" का आरोप न लगाए या घटित घटनाओं के लिए इसी तरह के स्पष्टीकरण न दे। इस अद्भुत मामले के अंत में ही मैंने हत्या के समकालीन रिकॉर्ड का अध्ययन किया।

* * *

अमेरिकी राज्यों के बीच युद्ध चार वर्षों से चल रहा था, और अंततः दक्षिण हार रहा था। यह बात कट्टर कॉन्फेडरेट समर्थकों को भी स्पष्ट थी, और हर कोई बस यही चाहता था कि यह युद्ध जल्द से जल्द समाप्त हो जाए और एक बार फिर सामान्य जीवन शुरू हो सके।

हालांकि दक्षिण में व्यापक रूप से उदासीनता का माहौल था, फिर भी कुछ कट्टरपंथी ऐसे थे जो चमत्कारिक ढंग से घटनाक्रम को बदलने की उम्मीद रखते थे। उत्तर में, सवाल दासों को मुक्त करने और संघ को बहाल करने का था। दक्षिण में, यह न केवल उस आर्थिक व्यवस्था को बनाए रखने का सवाल था जिसे वे एकमात्र व्यवहार्य व्यवस्था मानते थे, बल्कि उस सामंती, मुख्य रूप से ग्रामीण व्यवस्था को बनाए रखने का भी सवाल था जिसे उनके पूर्वजों ने यूरोप में देखा था और जो अपने बुद्धिजीवियों, श्रमशक्ति और नए मूल्यों के साथ औद्योगीकृत उत्तर से खतरे में थी। दक्षिण को इस तरह के भाग्य से बचाना मुट्ठी भर कट्टरपंथियों के लिए एक नेक काम प्रतीत होता था, जिनमें जॉन विल्क्स बूथ भी शामिल थे, जिन्होंने एक महत्वपूर्ण भूमिका

निभाई। विडंबना यह है कि वे वास्तव में दक्षिणी नहीं थे, बल्कि दक्षिण के बाहरी इलाके मैरीलैंड में जन्मे थे, और उनका पूरा परिवार खुद को उत्तर का मानता था।

जॉन विल्क्स बूथ, बेशक, बूथ बंधुओं में कम प्रसिद्ध थे, जो अपने समय के रंगमंच में विख्यात परिवार के वंशज थे, और जब "अभिनेताओं के राजकुमार" एडविन बूथ को अपने छोटे भाई द्वारा किए गए भयानक अपराध के बारे में पता चला, तो वह वास्तव में स्तब्ध रह गए, और तुरंत अब्राहम लिंकन के एक लंबे समय के समर्थक के रूप में अपनी स्थिति स्पष्ट कर दी।

लेकिन जॉन विल्क्स बूथ को इस बात की परवाह नहीं थी कि उसके लोग उसके साथ हैं या नहीं। अभी बीस वर्ष की आयु में ही, वह न केवल राजनीतिक रूप से अपरिपक्व था, बल्कि प्रेम-भाव से भी प्रेरित था। वह उन आर्थिक परिवर्तनों को समझ नहीं पा रहा था जो निश्चित रूप से होने वाले थे और जिन्हें कोई गोली नहीं रोक सकती थी।

और इसलिए, जब राज्यों के बीच युद्ध समाप्त होने वाला था, बूथ ने अपने गोद लिए हुए डिक्सी का उद्धारकर्ता बनने का फैसला किया, और अपने चारों ओर सहायकों का एक छोटा और विविध समूह इकट्ठा किया, जो वाशिंगटन में श्रीमती मैरी सुरैट के बोर्डिंग हाउस में अपनी गुप्त बैठकें करते थे।

पहले तो वे राष्ट्रपति लिंकन का अपहरण करके उन्हें रिचमंड स्थित कॉन्फेडरेट राजधानी में उनके दुश्मनों के हवाले करने की योजना पर चर्चा कर रहे थे, लेकिन यह योजना कभी साकार नहीं हो सकी। रिचमंड पर यैंकीज़ का कब्ज़ा हो गया और कॉन्फेडरेसी के लिए समय समाप्त हो गया। जैसे-जैसे दिन बीतते गए और बूथ का अपने उद्देश्य के लिए "कुछ बड़ा करने" का जुनून बढ़ता गया, युवा अभिनेता उस व्यक्ति को मारने के बारे में सोचने लगा जिसे वह अपने देश की हार के लिए ज़िम्मेदार मानता था। बूथ के लिए, लिंकन उन सभी नफरतों का केंद्र थे जिनसे वह नफरत करता था, और उसका मानना था कि एक बार उस व्यक्ति को हटा दिया जाए तो सब कुछ ठीक हो जाएगा।

इस तरह की सोच तो निश्चित रूप से एक विक्षिप्त व्यक्ति की सोच है। अगर बूथ सचमुच एक चतुर राजनीतिज्ञ होता, तो उसे यह एहसास होता कि लिंकन अपने मंत्रिमंडल के कुछ सदस्यों की तुलना में कहीं अधिक उदार थे, और राष्ट्रपति वास्तव में, जैसा कि कुछ दक्षिणी नेताओं ने हत्या की खबर मिलने पर कहा था, "दक्षिण के सबसे अच्छे मित्र थे।"

यदि उन्होंने वाशिंगटन की स्थिति का सही आकलन किया होता, तो उन्हें यह अहसास हो जाता कि अब्राहम लिंकन की जगह लेने वाला कोई भी व्यक्ति दक्षिणी राज्यों की आकांक्षाओं के लिए लिंकन की तुलना में कहीं अधिक बुरा साबित होगा, जिन्होंने युद्ध और उसकी कठिनाइयों पर गहरा खेद व्यक्त किया था और जो अलग हुए राज्यों को यथासंभव कम से कम दंड के साथ संघ में वापस लाने के लिए उत्सुक थे।

लेकिन युद्ध समर्थक दल, विशेष रूप से युद्ध मंत्री स्टैंटन और विदेश मंत्री सेवर्ड, का दृष्टिकोण इससे भिन्न था। उनका दृष्टिकोण अधिक कठोर था, और इतिहास ने बाद में साबित किया कि वे ही विजयी हुए, लेकिन साथ ही उत्तर और दक्षिण के बीच वर्षों तक चले संघर्ष का कारण भी बने। यह संघर्ष और असंतोष टाला जा सकता था यदि लिंकन की सुलहकारी नीतियों को प्रभावी होने दिया जाता।

लिंकन के खिलाफ साजिश रचने वाले मुख्य साथियों में लुईस पेन नाम का एक पूर्व-कॉन्फेडरेट सैनिक, डेविड हेरोल्ड (एक दवा विक्रेता का क्लर्क जो नौकरी नहीं कर पाता था), जॉर्ज एट्ज़रोड्ट (जर्मन मूल का गाड़ी बनाने वाला), सैमुअल अर्नोल्ड (एक क्लर्क), माइकल ओ'लॉघलिन (एक अन्य क्लर्क), श्रीमती मैरी सुरैट (वाशिंगटन में एक बोर्डिंग हाउस की मालकिन, जिनके घर पर वे मिले थे), और अंत में, और सबसे महत्वपूर्ण, जॉन हैरिसन सुरैट (उनका बेटा), जो पेशे से कॉन्फेडरेट जासूस और संदेशवाहक था, शामिल थे। अंतिम साजिश के समय बूथ केवल छब्बीस वर्ष का, सुरैट इक्कीस वर्ष का और हेरोल्ड तेईस वर्ष का था, शायद यही कारण है कि उनके कार्य इतने मूर्खतापूर्ण थे।

बूथ के अलावा, नेतृत्व के गुण रखने वाला एकमात्र व्यक्ति युवा सुरैट था। उस समय उसका मुख्य काम वाशिंगटन और मॉन्ट्रियल के बीच गुप्त संदेशवाहक के रूप में यात्रा करना था, जहाँ वह परिसंघ के वाशिंगटन स्थित एजेंटों और विद्रोहियों के मॉन्ट्रियल, कनाडा स्थित मुख्यालय के बीच काम करता था। मूल रूप से एडम्स एक्सप्रेस कंपनी में क्लर्क रहे युवा सुरैट के संचार क्षेत्र में अच्छे संपर्क थे और वह वाशिंगटन सरकार के हलकों में अच्छी तरह से जाना जाता था, हालाँकि उसकी गुप्त गतिविधियाँ उतनी प्रसिद्ध नहीं थीं।

जब बूथ ने सुरैट को यह विश्वास दिला दिया कि परिसंघ की मदद करने का एकमात्र तरीका राष्ट्रपति की हत्या करना है, तो वे दोनों एक साथ मिल गए। सुरैट को इस रास्ते पर संदेह था,

और श्रीमती सुरैट तो हिंसा या हत्या में बिल्कुल भी शामिल नहीं होना चाहती थीं। लेकिन वे दोनों ही आगे घटी घटनाओं के प्रवाह में बह गए।

दुर्भाग्यवश, उन्होंने एच स्ट्रीट स्थित सुरैट बोर्डिंग हाउस में लुई वेइचमैन नामक एक युवा युद्ध विभाग के क्लर्क की उपस्थिति पर पर्याप्त ध्यान नहीं दिया था। मूल रूप से पादरी बनने की इच्छा रखने वाले युवा वेइचमैन षड्यंत्रकारियों के आने-जाने के कई मामलों के प्रत्यक्षदर्शी थे, और जॉन सुरैट के साथ अपनी मित्रता के बावजूद, जिसके कारण वे शुरू में सुरैट बोर्डिंग हाउस में आए थे, अंततः वे सुरैट परिवार के विरुद्ध हो गए। श्रीमती सुरैट के मुकदमे में उनकी गवाही ही अंततः उनकी फांसी का कारण बनी।

मूल रूप से, श्रीमती सुरैट वाशिंगटन से तेरह मील दक्षिण में स्थित एक छोटे से कस्बे में एक शराबखाना चलाती थीं, जिसका नाम पहले सुरैट्सविले था और बाद में, स्पष्ट कारणों से, इसका नाम बदलकर क्लिंटन, मैरीलैंड कर दिया गया। जब शराबखाने का कारोबार ठप हो गया, तो उन्होंने इसे जॉन लॉयड नामक एक सराय मालिक को किराए पर दे दिया और वाशिंगटन चली गईं, जहाँ उन्होंने छठी और सातवीं सड़कों के बीच एच स्ट्रीट पर एक गेस्ट हाउस खोला, जो आज भी मौजूद है।

लिंकन के अपहरण की योजना बनाते समय वह निश्चित रूप से मौजूद थीं, लेकिन उन्हें मारने की साजिश में उनका कोई हाथ नहीं था। यह साजिश मुख्य रूप से बूथ की थी, और उसके सभी साथी अलग-अलग स्तर पर उसका साथ देने को तैयार नहीं थे; फिर भी, लोगों को प्रभावित करने की उसकी क्षमता ऐसी थी कि अंततः वे उसकी बातों में आ गए। इसके अलावा, वे इस साजिश में इतनी गहराई से शामिल हो चुके थे कि अगर उनमें से एक भी पकड़ा जाता तो सभी को फांसी हो जाती। इसलिए यह बेहतर ही था कि वे इसे एक साथ अंजाम दें और जिंदा बच निकलने की संभावना बढ़ा लें।

बूथ को राष्ट्रपति को गोली मारनी थी। जब उसे पता चला कि 14 अप्रैल, 1865 की शाम को लिंकन दंपति वाशिंगटन के फोर्ड थिएटर के स्टेट बॉक्स में मौजूद होंगे, तो वहीं पर गोली मारने का फैसला किया गया। सुरैट को तार ठीक करने की कोशिश करनी थी ताकि हत्या के बाद टेलीग्राफ काम न करे। उसके पास सही संपर्क थे और वह जानता था कि वह ऐसा कर सकता है। इसके अलावा, उसे जनरल ग्रांट का पीछा उस ट्रेन में करना था जो जनरल और

उनकी पत्नी को न्यू जर्सी ले जा रही थी। उसी समय लुईस पेन को सेक्रेटरी सेवर्ड की हत्या करनी थी।

बूथ ने पहले से ही थिएटर का सावधानीपूर्वक जायज़ा लिया था, और इस बात का भरपूर फायदा उठाया कि एक अभिनेता के रूप में वह वहाँ जाने-माने और सम्मानित व्यक्ति थे। इससे उन्हें रणनीतिक क्षण को भलीभांति समझने में भी आसानी हुई। मंच पर चल रहा नाटक "आवर अमेरिकन कज़िन" था, जिसमें लौरा कीन मुख्य भूमिका में थीं। बूथ की योजनाओं को भाग्य के एक संयोग से और भी बल मिला—या यूँ कहें कि नियति से, राष्ट्रपति के बॉक्स की सुरक्षा के लिए तैनात व्यक्तियों में से एक क्षण भर के लिए अपने पद से अनुपस्थित था।

रात के 10 बजे के कुछ ही देर बाद बूथ तेजी से बॉक्स में घुसा, एक छोटी डेरिंगर पिस्तौल से लिंकन को मार डाला, दूसरे गार्ड से हाथापाई की और फिर, योजना के अनुसार, बॉक्स की रेलिंग के ऊपर से कूदकर नीचे मंच पर पहुंच गया।

लिंकन उस रात तो जीवित रहे लेकिन उन्हें होश नहीं आया। उनकी मृत्यु फोर्ड थिएटर के सामने स्थित पार्कर हाउस में हुई, जहाँ उन्हें लाया गया था। बूथ की एड़ी स्टेज बॉक्स पर लगे अमेरिकी झंडे से टकरा गई और वह गिर पड़े, जिससे उनकी टांग टूट गई। असहनीय दर्द के बावजूद, वह अफरा-तफरी में बच निकले और बाहर तैयार किए गए घोड़े पर सवार हो गए।

जब वह एनाकोस्टिया नदी पर बने नेवी यार्ड पुल पर पहुंचा, तो दक्षिण की ओर जाने वाली सड़क पर तैनात संतरी ने उसे रोक लिया। इतनी रात को वह सड़क पर क्या कर रहा था? युद्धकाल के वाशिंगटन में, शहर से बाहर निकलने वाले सभी महत्वपूर्ण रास्तों पर कड़ी निगरानी रखी जाती थी। लेकिन बूथ ने उस व्यक्ति को केवल अपना नाम बताया और कहा कि वह चार्ल्स काउंटी में रहता है। उसे जाने दिया गया, जबकि उस समय रात नौ बजे का कर्फ्यू सख्ती से लागू था। बाद के कई इतिहासकारों ने इस घटना को विचित्र माना है और एक साजिश की ओर इशारा किया है: यह संभव है कि सुरैट ने ही उसके लिए आसान रास्ता मुहैया कराया हो, क्योंकि उन्होंने एनाकोस्टिया नदी के पुल से होकर भागने की योजना पहले से ही बना रखी थी।

कुछ देर बाद, डेविड हेरोल्ड भी रास्ते में बूथ से मिल गए। दोनों साथ में सुरैट सराय की ओर निकले और आधी रात के आसपास वहाँ पहुँचे। उस समय उनके वहाँ जाने का उद्देश्य मुझे

बहुत बाद में समझ आया। श्रीमती सुरैट के वाशिंगटन में अपना सराय स्थानांतरित करने से पहले, यह सराय बूथ, सुरैट और अन्य लोगों के लिए मिलने की जगह हुआ करती थी। कुछ ही समय बाद, दोनों आगे बढ़े और अपनी यात्रा के अंतिम चरण में प्रवेश किया। ब्रायनटाउन में डॉ. मड के कार्यालय में कुछ समय रुकने (जहाँ बूथ ने अपने पैर का इलाज करवाया) और पोटोमैक नदी को पार करने के कई प्रयासों के बाद, दोनों एक भयानक पलायन के बाद वर्जीनिया के पोर्ट रॉयल के पास गैरेट के खेत में छिप गए। वहीं पर संघीय सेनाओं ने पागल कुत्तों की तरह उनका पीछा किया। लिंकन की हत्या के बारह दिन बाद, 26 अप्रैल, 1865 को, बूथ को गोली मार दी गई। यह दूसरा तथ्य भी निश्चित नहीं है: क्या उसने गैरेट के जलते हुए खलिहान से बाहर निकलने का कोई रास्ता न देखकर, चारों ओर सैनिकों की मौजूदगी में आत्महत्या कर ली थी? या फिर सार्जेंट बोस्टन कॉर्बेट की प्रतिशोधी गोली ने अपना निशाना साधा था, जैसा कि सैनिक ने दावा किया था?

यहां मेरा उद्देश्य भागने और पकड़े जाने की घटनाओं का विस्तृत वर्णन करना नहीं है, क्योंकि इन घटनाओं का वर्णन अन्यत्र पर्याप्त रूप से किया गया है। रहस्य बूथ के अपराध और उसकी सज़ा को लेकर नहीं है, जिस पर कोई संदेह नहीं है, बल्कि यह सवाल है कि लिंकन की हत्या की साजिश वास्तव में किसने रची थी। राजकीय अंतिम संस्कार अभी समाप्त ही हुआ था कि साजिश से संबंधित तरह-तरह की अफवाहें और किंवदंतियां फैलने लगीं।

श्रीमती सुरैट को तुरंत गिरफ्तार कर लिया गया और उन्हें, पेन, एट्ज़रोड्ट और हेरोल्ड के साथ, एक ऐसे मुकदमे के बाद फांसी दे दी गई जो पूर्वाग्रह और महत्वपूर्ण जानकारियों को छुपाने से चिह्नित था, जैसे कि बूथ की अपनी डायरी, जिसे युद्ध सचिव स्टैंटन ने जब्त करने का आदेश दिया था और जिसे मुकदमे में कभी भी सबूत के तौर पर पेश नहीं किया गया था। इसके साथ ही, यह तथ्य कि स्टैंटन राजनीतिक रूप से लिंकन से मतभेद रखते थे, ने स्टैंटन की साजिश में संलिप्तता के बारे में कई अटकलों को जन्म दिया। फिर, जॉन सुरैट की भूमिका का भी सवाल था, जिसका अधिकांश हिस्सा गोपनीयता में छिपा हुआ था, ठीक वैसे ही जैसे एक हिमखंड जिसका केवल एक छोटा सा हिस्सा सतह के ऊपर दिखाई देता है!

अमेरिका से भागकर यूरोप और फिर मिस्र जाने के बाद, अंततः उसे 1867 में गिरफ्तार कर मुकदमे के लिए प्रत्यर्पित कर दिया गया। लेकिन चार उत्तरी और आठ दक्षिणी सदस्यों वाली

जूरी किसी नतीजे पर नहीं पहुंच सकी, जिसके चलते उसे रिहा कर दिया गया। सुरैट बाल्टीमोर चले गए, जहां उन्होंने व्यापार शुरू किया और 1916 में उनकी मृत्यु हो गई। इन बुनियादी तथ्यों के अलावा उनकी गतिविधियों के बारे में बहुत कम जानकारी है। हत्यारे को भागने में मदद करने वाले छोटे-मोटे साजिशकर्ताओं को कड़ी सजा सुनाई गई।

बूथ के शव को लेकर भी काफी कुछ करना बाकी था। जीवित रहते हुए उसे जानने वाले कई लोगों द्वारा उसकी पहचान किए जाने के बाद, उसे वाशिंगटन की आर्सेनल जेल के पत्थर के फर्श के नीचे दफना दिया गया था, उसी जेल में जहां चार अन्य षड्यंत्रकारियों को फांसी दी गई थी। लेकिन 1867 में, जेल को ध्वस्त कर दिया गया और पांचों शवों को कब्र से निकाला गया। उनमें से एक, जिसे बूथ का माना जा रहा था, को बाल्टीमोर के ग्रीनमाउंट कब्रिस्तान में परिवार के प्लॉट में दफना दिया गया। फिर भी एक अफवाह उठी, और कभी खत्म नहीं हुई, कि वास्तव में बूथ की कब्र में कोई और दफन है और, हालांकि अधिकांश इतिहासकार इसे गंभीरता से लेने से इनकार करते हैं, फिलिप वैन डोरेन स्टर्न के अनुसार, "गैरेट फार्म में मरने वाला व्यक्ति जॉन विल्क्स बूथ था या नहीं, यह एक ऐसा प्रश्न है जिसका उत्तर निस्संदेह कभी नहीं मिलेगा।"

आज तक बूथ से संबंधित किसी भी प्रकार की मानसिक घटना की कोई रिपोर्ट नहीं मिली है, और बूथ का भूत फोर्ड थिएटर के गलियारों में उस तरह नहीं घूमता जिस तरह लिंकन का भूत व्हाइट हाउस में घूमता है। गैरेट के खेत की जगह अब वैसी नहीं रही, और पुराने खलिहान की जगह एक नई इमारत बन चुकी है।

अगर मुझे लिंकन की हत्या की साजिश के बारे में कोई नई जानकारी देनी हो या कोई नया सबूत उजागर करना हो, तो मुझे उस जगह जाना होगा जिसका इस घटना से भावनात्मक जुड़ाव हो। लेकिन व्हाइट हाउस द्वारा मुझे संक्षिप्त यात्रा की अनुमति देने से लगातार इनकार करने के कारण मेरे लिए ऐसा करना असंभव हो गया।

मेरे विचार से जिन सवालों के स्पष्टीकरण की आवश्यकता प्रतीत होती है, उनमें सबसे पहला जॉन एच. सुरैट की साजिश में निभाई गई विचित्र भूमिका से संबंधित है; दूसरा, क्या बूथ ही वास्तव में हत्या का सूत्रधार था, और क्या वह वास्तव में साजिश का सरगना था? इस मामले और राष्ट्रपति कैनेडी की हत्या के बीच घनिष्ठ समानता देखी जा सकती है।

जब मैंने यह जांच शुरू की, तो मुझे लगा कि युद्ध सचिव स्टैंटन की संलिप्तता साबित हो सकती है और संभवतः लिंकन की हत्या के लिए उत्तर की ओर से कोई साजिश रची गई थी, साथ ही दक्षिण की ओर से भी उन्हें हटाने की इच्छा थी। लेकिन यह मेरी कोरी अटकल थी, और मेरे दावे को साबित करने के लिए मेरे पास अभी तक कोई ठोस सबूत नहीं था। फिर अचानक ही किस्मत ने मेरे हाथ एक ऐसा पत्र लगा दिया, जिसने मुझे इस रोमांचक मामले को सुलझाने की नई उम्मीद दी।

फिलिस एमोस नाम की एक युवती, जो वाशिंगटन, पेनसिल्वेनिया की रहने वाली थी, ने मुझे 1967 की शरद ऋतु में एक टेलीविजन शो में देखा था। उसने मुझे पत्र लिखकर संपर्क किया, और परिणामस्वरूप मैंने सुरैट सराय की यात्रा का आयोजन किया, वही सराय जो श्रीमती मैरी सुरैट का घर हुआ करती थी और वाशिंगटन में एच स्ट्रीट में जाने से पहले लिंकन षड्यंत्र का केंद्र बिंदु थी।

फिलिस का इस पुराने शराबखाने से संबंध 1955 से है। उस समय यह श्रीमती एला कर्टेन और फिलिस के परिवार के कब्जे में था, जो इस बुजुर्ग महिला के साथ घर साझा करते थे। श्रीमती कर्टेन के भाई बी. के. मिलर, जो पास में ही एक समृद्ध सुपरमार्केट के मालिक थे, घर के वास्तविक मालिक थे, लेकिन उन्होंने अपनी बहन को वहां रहने दिया था। चूंकि यह एक बड़ा घर था, इसलिए उन्होंने इसे एमोस परिवार को किराए पर दे दिया, जिसमें उस समय श्रीमान और श्रीमती एमोस और उनकी दो बेटियां थीं, जिनकी उम्र में लगभग दो साल का अंतर था।

फिलिस, जो अब बीस वर्ष की हो चुकी थी, ऊपरी मंजिल पर एक कमरे में रहती थी; उसके कमरे के सामने संकरे गलियारे के पार एला कर्टन का कमरा था—वह कमरा जहाँ जॉन विल्क्स बूथ ने अपनी बंदूकें छिपाई थीं। फिलिस के शयनकक्ष के दाईं ओर और कुछ सीढ़ियाँ नीचे एक बड़ा कमरा था जहाँ षड्यंत्रकारी नियमित रूप से मिलते थे। यह कमरा जिज्ञासु लोगों से एक छोटे से प्रतीक्षालय द्वारा छिपा हुआ था, जिसके माध्यम से बैठक कक्ष तक पहुँचना पड़ता था। नीचे की मंजिल पर माता-पिता का कमरा और एक बड़ा स्वागत कक्ष था। घर लगभग सीधे सड़क पर स्थित था, जो गहरे हरे पेड़ों से घिरा हुआ था। पीछे की ओर एक सुनसान धातु का चिन्ह ही एकमात्र संकेत था कि इसे एक ऐतिहासिक स्थल माना जाता था:

यदि आपको चिन्ह के बारे में पता नहीं होता, तो आप इसे तब तक नहीं देख पाते जब तक कि आप बहुत धीमी गति से गाड़ी न चला रहे हों।

श्रीमती एमोस को घर में आने के पल से ही कभी सुकून महसूस नहीं हुआ, और आठ महीने रहने के बाद एमोस परिवार ने घर छोड़ दिया। लेकिन उन आठ महीनों के दौरान उन्होंने कुछ बेहद अजीबोगरीब चीज़ें अनुभव कीं। एक दिन वह घर में अकेली थीं, तभी अचानक उन्हें लगा कि कोई उन्हें घूर रहा है। डर के मारे वह अपने बेडरूम में भागीं और दरवाज़ा बंद कर लिया, और अपने पति के लौटने तक बाहर नहीं निकलीं। दोनों बेटियों में से छोटी बेटी अपनी माँ से बार-बार पूछती रही कि पीछे की सीढ़ियों पर बैठे वे अजनबी आदमी कौन थे। वह उन्हें ऊपर फुसफुसाते हुए बातें करते सुनती थी।

घर की दूसरी निवासी, श्रीमती कर्टेन, उन पर कोई सकारात्मक प्रभाव नहीं डाल रही थीं। एक बार उन्होंने एक महिला को सामने की सीढ़ियों से नीचे "तैरते" हुए देखा। उन्हें पूरा यकीन था कि वह महिला मैरी सुरैट थी। यह घर वास्तव में मैरी सुरैट का असली घर था, उनका एकमात्र सुरक्षित ठिकाना। वाशिंगटन में उनका जो घर बाद में था, वह महज़ एक अस्थायी और असुरक्षित ठिकाना था। क्या अन्यायपूर्ण फांसी के बाद न्याय की तलाश में, या कम से कम अपने परिचित परिवेश में रहने के लिए, वह वापस यहीं नहीं लौटी होंगी?

वह तैरती हुई स्त्री कई बार फिर लौटी, और अंततः युवा फिलिस को भी ऐसा ही अनुभव हुआ। यह अप्रैल 1955 की बात है, वह अपने कमरे में बिस्तर पर लेटी हुई थी, पूरी तरह जाग रही थी। उसका बिस्तर उस कमरे के समानांतर था जहाँ षड्यंत्रकारी मिलते थे, और उससे केवल एक पतली दीवार अलग थी, इसलिए यदि वह उस समय वहाँ मौजूद होती तो शायद उनकी बातें सुन पाती। अचानक, उसके चेहरे के एक तरफ कई जोरदार प्रहार हुए। वे इतने ज़ोरदार थे कि उसकी आँखों में आँसू आ गए। क्या षड्यंत्रकारियों के भूत उसे उनकी योजनाओं की जासूसी करने से रोकने की कोशिश कर रहे थे?

फिलिस और उसकी मां दोनों को ही जीवन भर ईएसपी (प्रारंभिक दृष्टिगत शक्ति) के अनुभव रहे हैं, जिनमें पूर्वाभास से लेकर सच्चे सपने और भविष्यवाणियों के अन्य रूप शामिल हैं।

मैंने वर्तमान मालिक से संपर्क करने और एक कुशल माध्यम के साथ जाने की अनुमति मांगने का फैसला किया। थॉमस मिलर, जिनके माता-पिता सुरैट टैवर्न के मालिक थे और जो अब

इसे सौ साल पहले की स्थिति में बहाल करने से पहले इसका प्रबंधन कर रहे थे, ने तुरंत सहमति दे दी। इस तरह नवंबर 1967 के एक बेहद ठंडे दिन, सिबिल लीक और मैं जॉन विल्क्स बूथ के आसपास के भूतों को देखने के लिए वाशिंगटन के लिए रवाना हुए: अगर मैं पीड़ित, लिंकन का साक्षात्कार नहीं कर सका, तो शायद मैं हत्यारे से बात करने की कोशिश कर सकता था?

मेरी एक दोस्त, काउंटेस गर्ट्रूड डी'एमेकोर्ट, हमें क्लिंटन तक छोड़ने के लिए तैयार हो गईं। मिलर्स ने जो दिशा-निर्देश दिए थे, वे ज़्यादा स्पष्ट नहीं थे, इसलिए हमें वहाँ पहुँचने में तय समय से दोगुना समय लग गया। मुझे लगता है कि हमने हाईवे से कम से कम छह बार गलत मोड़ लिया होगा और अंत में हम उन सभी मोड़ों से अच्छी तरह वाकिफ हो गए, फिर भी हम क्लिंटन के पास नहीं पहुँच पाए। आखिरकार हमें एक बूढ़ी औरत ने रोका जो हमारे साथ लिफ्ट लेना चाहती थी। चूंकि वह भी उसी दिशा में जा रही थी, हमने उसे अपने साथ आने दिया, और उसकी मदद से हम आखिरकार मिलर्स सुपरमार्केट पहुँच गए, योजना से लगभग दो घंटे बाद। लेकिन भूत जल्दी में नहीं होते, भले ही गर्ट्रूड को अपने रियल एस्टेट कार्यालय वापस जाना था, और कुछ ही मिनटों में हम पैदल ही पुराने सुरैट टैवर्न की ओर चल पड़े, जो सुपरमार्केट से कुछ ही ब्लॉक दूर था। फिलिस एमोस पेंसिल्वेनिया से हमारे साथ शामिल होने आई थी, और जैसे-जैसे हवा तेज होती गई और देर दोपहर की असामान्य ठंड में हमारे दांत और भी जोर से बजने लगे, हमने सराय का धूल भरा, ताला लगा हुआ दरवाजा धक्का देकर खोला, और अतीत में हमारा रोमांच शुरू हो गया।

इससे पहले कि मैं सिबिल लीक से अपने टेप रिकॉर्डिंग उपकरण को चालू करने तक रुकने के लिए कह पाता, वह तेज़ी से हमारे पास से गुज़री और सीढ़ियों पर चढ़ गई, मानो उसे पता हो कि वह कहाँ जा रही है। ज़ाहिर है, उसे पता नहीं था, क्योंकि उसे यह भी नहीं पता था कि उसे यहाँ क्यों लाया गया है या वह वास्तव में कहाँ है। हम सभी—मिलर्स, फिलिस, गर्ट्रूड डी'एमेकोर्ट और मैं—सिबिल के पीछे सीढ़ियों पर दौड़े। हमने उसे जॉन विल्क्स बूथ के पुराने शयनकक्ष में फर्श को घूरते हुए पाया। फर्श में उस छेद को घूरते हुए जहाँ बंदूकें छिपाई गई थीं, वह कुछ बुदबुदा रही थी कि वहाँ कुछ छिपाया गया है... और अपनी जगह से हिल नहीं

रही थी। थॉमस मिलर, जिसने अब तक पूरी जांच के बारे में एक संशयपूर्ण, संदेहपूर्ण रवैया बनाए रखा था, ने अपना सिर हिलाया और बुदबुदाया, "लेकिन उसे कैसे पता चलेगा?"

अब काफी अंधेरा हो चुका था और घर में बिजली नहीं थी। बदबू भी बहुत भयानक थी, क्योंकि घर सालों से खाली पड़ा था और मोहल्ले के बदमाश और शराबी इसे "पार्टी" करने या नशे में धुत होकर सोने के लिए इस्तेमाल करते थे। उन पुराने घरों में अक्सर पीछे की कोई न कोई खिड़की टूटी होती है, और वे किसी न किसी तरह अंदर घुस जाते हैं।

हम सब सिबिल के चारों ओर जमा हो गए थे और एक साथ कांप रहे थे। सिबिल ने समझाया, "यह जगह घर के बाकी हिस्सों से अलग है, ठंडी, उदास वातावरण... यहीं कुछ घटित हुआ है।"

आपको क्या लगता है कि यहाँ किस तरह की घटना घटी होगी?

"एक पीछा।"

वह कितनी सही थी! वास्तव में वे दोनों लोग वाशिंगटन से भाग रहे थे और दक्षिण की ओर जाने की कोशिश कर रहे थे। लेकिन सिबिल को इस बात का होश नहीं था।

"यहीं पर कोई व्यक्ति कई दिनों तक भगोड़ा रहा था, लेकिन वह इस घर को छोड़कर जंगल में चला गया।"

सराय से आगे निकलने के बाद बूथ कई दिनों तक जंगल में छिपा रहा!

“वह आदमी कौन है?” मैंने पूछा, क्योंकि मुझे बिल्कुल भी यकीन नहीं था कि वह किसके बारे में बात कर रही थी। “पीछा करने” से जुड़े कई लोग थे, और जहाँ तक हमें पता था, वह कोई बिल्कुल अजनबी भी हो सकता था जिसका उस सराय से किसी तरह का संबंध हो। पुरानी सरायों से कई नाटकीय घटनाएँ जुड़ी होती थीं, जो हिल्टन होटलों से बिलकुल अलग थीं। उन दिनों में लोग मारे जाते थे या रास्ते में लूट लिए जाते थे, और सराय की आम तौर पर बदनामी होती थी। अच्छे लोग यात्रा करते समय एक-दूसरे के घर पर रुकते थे।

“विदेशी... नाम पता नहीं चल रहा... कई दिनों से यहाँ छिपा हुआ है... फिर... एक भाई है... यह बहुत ही उलझन भरा है।”

* * *

वह विदेशी शायद एट्ज़रोड्ट ही था, जो वास्तव में कई बार सराय में छिपा हुआ था। और उसका भाई?

* * *

“एक आदमी की अचानक, हिंसक मौत हो गई।” सिबिल ने अपने मन में उठ रहे विचारों को और गहराई से व्यक्त करना शुरू किया। हम अभी भी ऊपर वाले कमरे में, खिड़की के पास, फर्श में बने बड़े छेद के आसपास खड़े थे।

मैंने पूछा, "उसकी मृत्यु कैसे हुई?"

"जंगल में फंसा हुआ हूँ... सैनिकों से छिप रहा हूँ, मुझे लगता है।"

यह बात केवल बूथ पर ही लागू होती है। वह जंगल में फंस गया था और सैनिकों द्वारा मारा गया था।

"क्यों?"

“वे उसका पीछा कर रहे थे... उसने किसी की हत्या कर दी।”

उसने किसकी हत्या की?

“मुझे नहीं पता...जन्मदिन...छिपने के लिए भाग गया...मुझे एक कागज़ दिखाई देता है... निमंत्रण...हमें एक और जगह जाना है, एक बड़ी जगह...एक बड़ी इमारत जिसमें एक गैलरी है...”

क्या वह शायद फोर्ड थिएटर का वर्णन कर रही थी?

मैंने पूछा, "यह किसकी जगह है?"

सिबिल उस जगह के जादू में और भी अधिक लीन होती जा रही थी, और उसकी चेतना अब समाधि जैसी अवस्था के करीब पहुंच रही थी।

“लोगों को देखने के लिए यह किसी की जगह नहीं है... मैं असमंजस में हूँ... बहुत सारे लोग वहाँ जाते हैं... देखते हैं... एक सभा... संगीत के साथ... मैं वहाँ नहीं जा रहा!!”

* * *

“वहाँ कौन है?” मैंने बीच में टोकते हुए पूछा। वह ज़रूर थिएटर की बात कर रही होगी। ज़ाहिर है, सिबिल को यहाँ पूरी कहानी तो मिल रही थी, लेकिन उलझी हुई, जैसा कि अक्सर मानसिक धारणाएँ होती हैं, क्योंकि वे समय और स्थान के सामान्य नियमों का पालन नहीं करतीं।

“मैं और मेरा भाई,” उसने अब कहा। मैंने उसे धीरे से कमरे के दूसरे कोने की ओर ले गया जहाँ एक छोटी कुर्सी रखी थी, इस उम्मीद में कि वह उस पर बैठ जाएगी। लेकिन वह पहले से ही इतनी गहरी तल्लीन थी कि बैठ नहीं पाई, इसलिए मैंने उसे कुर्सी की ओर झुकने दिया और ध्यान से देखता रहा ताकि वह गिर न जाए।

“मेरा भाई पागल है...,” उसने अब कहा, और उसकी आवाज़ पहले जैसी नहीं रही, बल्कि कठोर और धातु जैसी हो गई थी। बाद में मैंने इस टिप्पणी पर विचार किया: क्या यह एडविन बूथ थे, जो अपने बागी भाई जॉन के बारे में बात कर रहे थे, जिसे उनके समकालीन कई लोग सचमुच पागल मानते थे? एडविन बूथ अक्सर फोर्ड थिएटर में प्रस्तुति देते थे, और जॉन विल्क्स बूथ भी।

“वह पागल क्यों है?” मैंने कहा। मैंने और जानकारी हासिल करने के लिए, इस तरह से सवाल पूछना जारी रखने का फैसला किया जैसे मैं उसकी (या उसके) हर बात से सहमत हूँ।

* * *

“परिवार में एक पागल आदमी...,” सिबिल ने अब कहा, “उसने एक दोस्त की हत्या कर दी...।”

उसने किसे मारा?

“नाम नहीं बताऊंगी... वो पागल था...।”

"क्या मैं उस व्यक्ति को जानता हूँ जिसे उसने मारा है?"

"सब जानते हैं...।"

"तुम्हारे भाई का नाम क्या है?"

“जॉन।”

"आपका क्या नाम है?"

“रोरी।”

पहले तो मुझे लगा कि शायद यह किसी ऐसे किरदार का नाम हो जिसे एडविन बूथ ने मंच पर निभाया हो और वह इसके पीछे छुप रहा हो, अगर वाकई एडविन बूथ ही सिबिल को यह जानकारी दे रहा था। लेकिन मुझे एडविन बूथ की जीवनियों में ऐसा कोई किरदार नहीं मिला। मैंने अपने मूल प्रश्न को दोहराकर और अधिक पूछताछ करने का फैसला किया।

जॉन ने किसे मारा?

एक अधीर, लगभग उद्दंड आवाज ने जवाब दिया, "मैं तुम्हें नहीं बताऊंगा। तुम पढ़ सकते हो!"

आप इस घर में क्या कर रहे हैं?

“जॉन को भागने में मदद करना...”

"अकेली हो?"

“नहीं...ट्रेवर....”

आपमें से कितने लोग यहां मौजूद हैं?

“चार।”

“बाकी लोग कौन हैं?”

“गद्दारों....”

लेकिन उनके नाम क्या हैं?

“ट्रेवर...माइकल...जॉन....”

बाद में इन नामों ने मुझे कुछ चिंता में डाल दिया: मैं माइकल को आसानी से पहचान गया, वह बूथ का स्कूल का दोस्त माइकल ओ'लॉघलिन था, जो अपने दोस्त के साथ जुड़ने से पहले बाल्टीमोर में एक अस्तबल में काम करता था। माइकल ओ'लॉघलिन उन षड्यंत्रकारियों में से एक था, जिसे अंततः आजीवन कारावास की सजा सुनाई गई। लेकिन स्टैंटन के आदेश पर उसे और अन्य तीन "छोटे" षड्यंत्रकारियों को फ्लोरिडा के पास स्थित ड्राई टोर्टुगास द्वीप समूह में भेज दिया गया, जो अमेरिका का शैतान द्वीप जैसा द्वीप माना जाता है, और वहीं 1868 में माइकल ओ'लॉघलिन की पीत ज्वर से मृत्यु हो गई।

* * *

जॉन? चूंकि संदेशवाहक ने अपने भाई का नाम जॉन बताया था, इसलिए मैं केवल यही अनुमान लगा सकता था कि इसका मतलब जॉन विल्क्स बूथ होगा। लेकिन ट्रेवर की पहचान मैं नहीं कर पाया। एकमात्र षड्यंत्रकारी जिसका मध्य नाम हमें नहीं पता था, वह सैमुअल अर्नोल्ड था, जो बूथ का पूर्व सहपाठी भी था। क्या ट्रेवर शायद वह परिचित नाम था जिससे षड्यंत्रकारी मैरीलैंड के इस खेत मजदूर और संघ के भगोड़े सैनिक को पुकारते थे?

मैंने सिबिल के सामने इस मुद्दे पर और जोर दिया।

घर में कौन है?

"दूर जाओ...।"

मैंने अपना उद्देश्य समझाया: उन सभी को मन की शांति, स्वतंत्रता और मुक्ति प्राप्त करने में मदद करना।

“मैं शहर जा रहा हूँ...”, संचारक ने कहा।

"कौन सा शहर?"

"बड़ा शहर।"

"क्यों?"

“उसे रोकने के लिए...वह पागल है...उसे दूर ले जाओ...गांव में आराम करने के लिए...उसकी मदद करने के लिए...उसे आराम दो...।”

क्या उसने कुछ गलत किया है?

“वह...वह मेरा भाई है!”

क्या उसने किसी की हत्या की?

“उस आदमी को मार डाला...।”

“उसने उसे क्यों मारा?”

मुझ पर चिल्लाते हुए, सम्मोहन में डूबी उस माध्यम ने कहा, "वह अन्यायपूर्ण था!"

“किसके प्रति?”

“उन्होंने आयरिश लोगों के साथ अन्याय किया।”

मैंने सोचा, ये अजीब शब्द हैं। साजिशकर्ताओं में से केवल माइकल ओ'लॉघलिन को ही "पेशेवर" आयरिश व्यक्ति माना जा सकता था, और लिंकन पर आयरिश लोगों के साथ दुर्व्यवहार करने का आरोप लगाना तो दूर की बात थी।

मैंने पूछा, "उसने क्या किया?"

“उसने कुछ नहीं किया...।”

“तो फिर उसने उसे क्यों मार डाला?”

वह पागल था।

क्या आप इससे सहमत हैं?

“हाँ!! वह उसे पसंद नहीं करता था क्योंकि वह अन्यायपूर्ण था... कानून गलत था... उसके कानून गलत थे... स्वतंत्र लोग... वह भ्रमित था...।”

अगर वाकई ये एडविन बूथ की आत्मा बोल रही होती, तो वो इस हत्या को बिल्कुल भी मंज़ूरी नहीं देता। आयरिश अल्पसंख्यक समुदाय के लिए ये आक्रोश सिर्फ़ माइकल ओ'लॉघलिन के मन में ही आ सकता था। लेकिन वो आत्मा बार-बार उसके भाई का ज़िक्र कर रही थी, और एडविन बूथ का ही एक भाई था जिसका नाम जॉन था और जिसका इस घर और इस कहानी से संबंध था! ये सम्मोहन सत्र और भी ज़्यादा उलझन भरा होता चला गया।

“इसमें और कौन-कौन शामिल था?” मैंने फिर से पूछना शुरू किया। शायद हमें इस साजिश के पीछे के लोगों के बारे में और जानकारी मिल सके। आखिर, हम असली हत्यारे और उसके साथियों को तो जानते ही थे।

“ट्रेवर...चार...।”

"क्या आपको किसी से ऐसा करने का आदेश मिला था?"

कुछ देर तक सन्नाटा छाया रहा, क्योंकि पूरी तरह से सम्मोहित वह मानसिक रोगी, आंखें बंद किए, उस जर्जर पुरानी कुर्सी के सामने थोड़ा-थोड़ा डगमगाता रहा।

मैंने दोबारा बताया कि मैं क्यों आया था, लेकिन इससे कोई फायदा नहीं हुआ। उस सत्ता ने बड़े गुस्से में कहा, "मुझे तुम पर विश्वास नहीं है, गद्दारों..."

मैंने कहा, "तुम्हें तो बहुत पहले ही माफ़ कर दिया गया है, लेकिन अब तुम्हें इस बारे में खुलकर बोलना होगा। उस आदमी का क्या हुआ जिसे उसने मारा था?"

मेरा भाई मशहूर हो गया...

इसके बाद तीखी हंसी गूंजी।

“तुम्हारा भाई किस तरह का काम करता था?”

लेखन...अभिनय...।”

“उसने कहाँ काम किया?”

“चले जाओ...मुझे मत ढूंढो...।”

"मेरी आपकी मदद करने की इच्छा है।"

“गद्दार...कुत्ते की तरह गोली मार दी गई...पागल आदमी...।”

सिबिल का चेहरा कांप रहा था और उसकी आंखों से आंसू लगातार बह रहे थे। जाहिर है, वह बूथ की पीड़ा के अंतिम क्षणों को फिर से जी रही थी। मैंने कम्युनिकेटर को शांत करने की कोशिश की।

“चले जाओ...” जवाब आया, “चले जाओ!”

लेकिन मैंने पूछताछ जारी रखी। क्या किसी ने उसे यह काम करने के लिए उकसाया था?

“वह पागल था,” उस सत्ता ने थोड़ा शांत होकर समझाया।

लेकिन दोषी कौन है?

"सेना।"

सेना में कौन?

“वह बहुत ही जोशीला था...लोगों से मिला...उन्होंने कहा कि वे सेना के लोग हैं...मेजर जनरल...अरे...मुझे अब जाना चाहिए!!”

बाद में जब मैंने इस बातचीत पर गौर किया तो कई बातें मेरे मन में आईं। सबसे पहले तो, बातचीत करने वाले को लगा कि उसने मेजर जनरल जी (या जी.) का नाम लेते ही बहुत कुछ कह दिया है और वह जाना चाहता था। क्यों? क्या यह कोई ऐसी बात थी जिसे उसे गुप्त रखना चाहिए था?

मेजर जनरल जी.? क्या यह ग्रांट का जिक्र हो सकता है? मार्च 1864 तक ग्रांट वास्तव में मेजर जनरल थे; उसके बाद लिंकन ने उन्हें लेफ्टिनेंट जनरल के पद पर पदोन्नत किया। यह सोचना पहली नज़र में ही भयावह लगता था कि ग्रांट किसी भी तरह से लिंकन के खिलाफ साजिश में शामिल हो सकते हैं। राजनीतिक रूप से, यह असंभव लगता था, क्योंकि ग्रांट और लिंकन दोनों ही कट्टरपंथियों के विपरीत, जो कठोर उपायों की मांग कर रहे थे, विजित दक्षिण के साथ उदार व्यवहार के पक्षधर थे। स्टैंटन एक प्रमुख कट्टरपंथी थे, और अगर किसी के पास लिंकन के खिलाफ साजिश रचने का कारण होता, तो वह स्टैंटन ही होते। फिर भी, सभी दृष्टियों से, उन्होंने लिंकन की वफादारी से और अच्छे से सेवा की। लेकिन ग्रांट की राजनीतिक महत्वाकांक्षाएं व्यक्तिगत प्रकृति की थीं, और जॉनसन के असफल प्रशासन के बाद उन्होंने लिंकन का स्थान लिया।

मैंने यह देखने के लिए अपने प्रश्नों की श्रृंखला को आगे बढ़ाने का निर्णय लिया कि यह कहाँ तक ले जा सकती है।

मैंने सिबिल की नियंत्रक शक्ति से उस सेनापति का नाम दोहराने को कहा। उसके मंत्रमुग्ध होठों से धीमी लेकिन स्पष्ट आवाज निकली:

“जी...जी-ई-ई-...मेजर जनरल रॉबर्ट जी।”

तब तो मैंने सोचा, यह ग्रांट नहीं था। लेकिन आखिर यह कौन था? अगर ऐसा कोई व्यक्ति मौजूद था तो मैं उसका रिकॉर्ड ढूंढ सकता था, लेकिन अगर यह सिर्फ एक छद्म नाम था तो क्या होगा?

क्या आपने खुद इस आदमी को देखा था?

"नहीं।"

“तो क्या तुम्हारे भाई ने तुम्हें उसके बारे में बताया था?”

"हाँ।"

वे कहाँ मिले थे?

हिचकिचाते हुए जवाब आया।

“शहर में। इसी शहर में। एक क्लब में...।”

मैंने अपना दृष्टिकोण बदलने का फैसला किया।

मैंने उससे पूछा, "यह कौन सा साल है?"

“उनतालीस।”

“आपके लिए उनतालीस का क्या अर्थ है?”

“उनतालीस का मतलब कुछ महत्वपूर्ण है...।”

"अब आप कितने साल के हैं?"

चौंतीस।

फिर उसने दावा किया कि उसका जन्म लोवेल, वर्जीनिया में हुआ था, और मैं हमेशा की तरह उलझन में पड़ गया: यह एडविन से मेल नहीं खाता था, जिसका जन्म 1833 में बेलेयर, मैरीलैंड में बूथ परिवार के घर पर हुआ था। उलझन पर उलझन!

मैंने आखिरकार पूछा, "क्या आप चारों के अलावा कोई और भी यहाँ आया था?"

“जी हाँ...मेजर...रॉबर्ट गी....”

वह क्या चाहता था?

“रिश्वतखोरी।”

उसने कितना भुगतान किया?

"मुझें नहीं पता।"

क्या उसने उसे कोई पैसा दिया?

"हाँ।"

उसे क्या करना चाहिए था?

“गड़बड़ी मचाओ। गैलरी में। फिर कानून को तोड़ने की योजनाएँ अमल में लाई जाएँगी।”

"क्या आपके भाई ने वह किया जो उसे करना चाहिए था?"

“वह पागल हो गया था... उसने उसे मार डाला।”

तो फिर दोषी कौन था?

“वाह....”

“जी को किसने भेजा? वह किसके लिए बोल रहा था?”

हम मामले की तह तक पहुँच रहे थे और बाकी लोग बेहतर ढंग से सुनने के लिए हमारे चारों ओर इकट्ठा हो रहे थे। बाहर काफी अंधेरा था और नवंबर की दोपहर की ठंड हमारी हड्डियों तक पहुँच रही थी, जिसके कारण हम गीलेपन और ठंड से कांपने लगे थे। लेकिन कोई हिला तक नहीं और न ही किसी ने अधीरता दिखाई। अमेरिकी इतिहास फिर से जीवंत हो रहा था, और इसकी तुलना में थोड़ी सी ठंड क्या मायने रखती थी?

उन्होंने सर्वेक्षण किया...

“उनके साथ किसने काम किया?”

सरकार।

"विशेष रूप से कौन?"

"मुझें नहीं पता।"

यह बात विश्वसनीय नहीं लग रही थी। क्या वह अब भी हमसे कुछ छुपा रहा था?

“क्या इसमें अन्य लोग भी शामिल थे? अन्य पुरुष? अन्य महिलाएं?”

एक व्यंग्यात्मक हंसी ने सन्नाटे को तोड़ दिया। "ईर्ष्या...ईर्ष्या...उसकी पत्नी..."

"किस की पत्नी?"

“जिसकी हत्या हुई...उसे गोली मारी गई।”

* * *

मुझे यह बात काफी रोचक लगी, क्योंकि यह एक ऐतिहासिक तथ्य है कि श्रीमती लिंकन बेहद ईर्ष्यालु थीं और कार्ल सैंडबर्ग, जो शायद लिंकन के सबसे प्रसिद्ध जीवनीकार हैं, के अनुसार, उन्होंने अपने पति को किसी भी महिला से अकेले मिलने की अनुमति कभी नहीं दी—चाहे कारण कुछ भी हो। इसी वजह से लिंकन दंपति के बीच अक्सर झगड़े होते थे, और ईर्ष्या राष्ट्रपति की पत्नी का एक प्रमुख गुण था।

मैंने पूछा, "हम इस कमरे में क्यों हैं?"

“मैं किस बात का इंतजार कर रहा हूँ...मैं किस बात का इंतजार कर रहा हूँ?” संचारक ने निराशा से भरी आवाज में कहा।

“मैं भी यही जानना चाहता हूँ,” मैंने सिर हिलाते हुए कहा। “क्या यहाँ आपके लिए कुछ दिलचस्प है?”

“हाँ...मुझे जॉन के वापस आने तक यहीं रुकना होगा। जॉन कहाँ है?”

और जब वह वापस आएगा तो तुम क्या करोगे?

“उसे लोवेल ले चलो...मेरे घर...।”

आप वहां किसके साथ रहते हैं?

“जूलिया...मेरी बच्ची...उसे वहाँ आराम करने के लिए ले जाओ।”

जॉन अब कहाँ है?

"जंगल में...छिपा हुआ।"

क्या उसके साथ कोई है?

“दो...वे जल्द ही वापस आ जाएंगे।”

फिर उस व्यक्ति ने मुझसे पूछा कि मैं ये सारे सवाल क्यों पूछ रहा हूँ, और मैंने फिर उसे आश्वस्त किया कि मैं उसका दोस्त हूँ। लेकिन मुझे उसकी मदद करने के लिए सब कुछ जानना ज़रूरी है। तो फिर ये मेजर जनरल जी कौन थे?

“वह नियंत्रण चाहता है,” आवाज ने कहा, “मुझे सेना की राजनीति समझ नहीं आती...वह सरकार में बदलाव कर रहा है...।”

“सरकार में बदलाव?” मैंने दोहराया, “वह किसके पक्ष में है?”

“विद्रोही पक्ष।”

क्या वह अमेरिकी सरकार में है?

“मेरा भाई उन्हें जानता है... उनके पास सरकार है।”

लेकिन वे कौन हैं? उनके नाम क्या हैं?

“उनके पास संख्याएँ थीं। उनतालीस। इसका मतलब है क्षेत्र। वह क्षेत्र जिसकी वे देखरेख करते हैं।”

क्या सरकार में कोई इन विद्रोहियों के साथ शामिल है?

“जॉन जानता है...जॉन मर चुका है...उसे बहुत कुछ पता था...नाम...वह पूरी तरह से ठीक नहीं था...वह पागल है!”

"उसे किसने मारा?"

"सैनिक।"

“उसने उसे क्यों मारा?” अब मैं जॉन विल्क्स बूथ और सार्जेंट बोस्टन कॉर्बेट द्वारा राष्ट्रपति के हत्यारे की हत्या का जिक्र कर रहा था, कथित तौर पर इसलिए क्योंकि “भगवान ने उसे ऐसा करने के लिए कहा था,” जैसा कि रिकॉर्ड में दर्ज है।

उसका पीछा किया।

लेकिन उसे मारने का आदेश किसने दिया?

सरकार।

“आप कहते हैं कि उसे बहुत कुछ पता था। उसे क्या पता था?”

मुझे नाम नहीं पता, मुझे बस इतना पता है कि मैं जॉन का इंतजार कर रही हूँ। जॉन को नाम पता हैं। वह चालाक था।

"क्या इस सरकार में कोई व्यक्ति इसमें शामिल था?"

“सेना के मुखिया गद्दार हैं... शेर... तुम्हें नहीं बताएगा, जॉन ने मना किया है कि कुछ मत बोलना...।”

“तुम्हें बोलना ही होगा!” मैंने लगभग चिल्लाते हुए आदेश दिया।

“शेरमैन...कर्नल...वह शेरमैन को जानता है... जॉन कहता है कि कुछ मत कहना...।”

"क्या शर्मन को इसके बारे में पता है?"

“मुझे नहीं पता...मैं अब आपको और कुछ नहीं बताऊंगा...” उसने आँसुओं से कांपते हुए कहा, “हर कोई सवाल पूछता है। आप मेरी मदद नहीं कर रहे हैं।”

मैंने वादा किया, "अगर तुम पीछे नहीं हटोगे तो मैं तुम्हारी मदद करने की कोशिश करूंगा। तुम्हारे भाई को किसने पैसे दिए?"

“कुछ नहीं...भागने का वादा किया...उसका ख्याल रखना...टिकट का वादा किया...।”

"आपके भाई ने इस अधिकारी को कितनी बार देखा था?"

“ज़्यादातर नहीं। यहाँ। जॉन ने मुझे कुछ बातें बताईं... जॉन ने कहा कि बात मत करो। वह हमेशा गुस्से में नहीं रहता।”

"उसके साथ यह महिला कौन है?" मैंने यह देखने की कोशिश की कि क्या इससे वह दूसरों के बारे में बात करने के लिए मजबूर हो जाएगा।

"वह मेरी दोस्त है," संचारक ने बिना किसी झिझक के कहा।

उसका नाम क्या है?

हैरियट।

"वह कहाँ रहती हैं?"

शहर में।

वह उसे कैसे जानता है?

“वह वहां खेलने गया था... उसे वह लड़की पसंद थी...।”

ज़ाहिर है, यह कोई मामूली किरदार था जिसका कहानी से कोई लेना-देना नहीं था। मैंने फिर से दिशा बदल दी। "अब आप यहाँ से जा सकते हैं, जॉन चाहता है कि आप जाएँ," मैंने धीरे से कहा। आख़िरकार, मैं इस बेचारे को, चाहे वह कोई भी हो, हमेशा के लिए यहाँ लटकाए नहीं रख सकता था!

"हम कहाँ हैं?" उसने हमेशा की तरह उलझन भरे लहजे में पूछा।

“एक घर...।”

“मेरा घर?...नहीं, मेल्विल का घर...।”

“मेल्विल कौन है?”

“जी का दोस्त है। उसने मुझे यहाँ आने और जॉन का इंतजार करने को कहा था।”

मैंने स्वर में कहा, "तुम जाने के लिए स्वतंत्र हो, बिल्कुल स्वतंत्र!"

“आज़ाद?” उसने धीरे से कहा। “आज़ाद देश?”

“सौ साल बीत गए। क्या आप मुझे समझ रहे हैं?”

"नहीं।"

आवाज धीरे-धीरे कमजोर होती गई, मानो वह आत्मा दूर जा रही हो। धीरे-धीरे सिबिल का शरीर गिरने लगा और मैं उसे गिरने से बचाने के लिए तैयार था। लेकिन कुछ देर बाद वह होश में आ गई। मानो बहुत देर तक सोई हो, जागते ही उसने अपने चारों ओर देखा, वह भी उस आत्मा की तरह ही पूरी तरह से भ्रमित थी। उसे भूत और मेरे बीच हुई बातचीत का कुछ भी याद नहीं था।

एक पल के लिए हममें से कोई चुप रहा। आखिरकार थॉमस मिलर ने चुप्पी तोड़ी, जो पूरी जांच से काफी प्रभावित लग रहे थे। उन्हें अच्छी तरह पता था कि फर्श में बने छेद के बारे में वे अक्सर घर आने वाले मेहमानों को बताते थे, और घर कई सालों से जर्जर हालत में था, इसलिए काफी समय से कोई मेहमान नहीं आया था। अंग्रेजी लहजे वाली यह अजनबी महिला, जिससे वे जीवन में पहले कभी नहीं मिले थे, या यूं कहें कि मैं, जिसे वे सिर्फ चिट्ठियों के जरिए जानते थे, इसके बारे में कैसे जान सकता था? और अंधेरे में, बिना रोशनी वाले घर में, वह सीधे उस जगह पर कैसे जा सकती थी? यही वह बात थी जिसने थॉमस मिलर को अभी-अभी देखी गई घटना को स्वीकार करने के लिए प्रेरित किया।

* * *

“ठंड लग रही है,” सिबिल ने धीरे से कहा और खुद को अपने काले शॉल में और कसकर लपेट लिया। लेकिन वह हमेशा से ही धैर्यवान रही है और उसने कोई शिकायत नहीं की। धैर्यपूर्वक, वह मुझसे आगे के निर्देशों की प्रतीक्षा करती रही। मैंने तय किया कि अब सभी का औपचारिक परिचय कराने का समय आ गया है, क्योंकि आगमन पर मैंने ऐसा इसलिए नहीं किया था ताकि सिबिल को कोई जानकारी या संकेत न मिल सके।

इसके बाद फिलिस एमोस ने हमें वह जगह दिखाई जहां उसे अदृश्य हाथों से मारा गया था, और उस क्षेत्र की ओर इशारा किया जहां उसकी छोटी बहन लिन, जो उस समय सात साल की थी और अब उन्नीस साल की है, ने पुरुषों के एक समूह की आवाजें सुनी थीं, जिन्हें उसने पीछे की सीढ़ियों पर एक साथ huddled देखा था।

"मुझे भी यहाँ कुछ आवाज़ें सुनाई दीं," फिलिस एमोस ने टिप्पणी की। "ऐसा लग रहा था जैसे कई आवाज़ों का शोर हो, लेकिन मैं उन्हें स्पष्ट रूप से समझ नहीं पाई।"

मैंने थॉमस मिलर की ओर देखा, जो अब फर्श में बने छेद की ओर झुक रहा था।

“यहीं पर जॉन विल्क्स बूथ ने अपनी बंदूकें छिपाई थीं,” उसने नीरस ढंग से कहा। “सराय के मालिक लॉयड ने उसे कुछ ब्रांडी भी दी, और फिर वह ब्रायनटाउन में डॉ. मड के घर की ओर चल पड़ा।”

मैंने कहा, “आपने मेरे मानसिक विशेषज्ञ मित्र श्री मिलर के माध्यम से हुई बातचीत सुनी। क्या आप कुछ नामों पर टिप्पणी करना चाहेंगे? उदाहरण के लिए, क्या जॉन विल्क्स बूथ का कोई भाई भी इसी तरह का था?”

मिलर ने कहा, "मेरे पिता ने यह संपत्ति जॉन विल्क्स के भाई से खरीदी थी, वही भाई जो जॉन विल्क्स की हत्या के बाद बाल्टीमोर में रहने चला गया था; बाद में वह इंग्लैंड चला गया।"

वह निश्चित रूप से एडविन बूथ होंगे, जिन्हें "अभिनेताओं का राजकुमार" कहा जाता था, जिन्होंने अपनी बहन एशिया की सलाह मानकर अंग्रेजी रंगमंच में अपनी किस्मत आजमाने का फैसला किया था।

* * *

मुझे यह काफी रोचक लगा। तो सुरैट का सराय कभी एडविन बूथ का था—किस्मत का खेल!

श्री मिलर ने एक और दिलचस्प बात की ओर मेरा ध्यान दिलाया। सिबिल के माध्यम से बात कर रहे संचारक से पूछताछ के दौरान टेप बदलते समय मुझसे एक-दो वाक्य छूट गए थे। मेरा सवाल हत्या के पीछे के लोगों के बारे में था।

“एस-टी-...” संदेशवाहक ने फुसफुसाते हुए कहा। क्या इसका मतलब स्टैंटन था?

"जॉन विल्क्स बूथ इस जगह से बहुत अच्छी तरह वाकिफ था, बिल्कुल," मिलर ने अपने मैरीलैंड लहजे में कहा। "यहीं पर साजिशकर्ता कई बार मिलते थे। मैरी सुरैट इस जगह को शराबखाने के रूप में चलाती थी। तब से इस घर में कुछ भी नहीं बदला है।"

* * *

थॉमस मिलर से मुझे यह भी पता चला कि काफी खर्चे पर घर का जीर्णोद्धार करने और उसे संग्रहालय में बदलने की योजनाएँ चल रही थीं।

* * *

हमने अपने मेज़बान को धन्यवाद दिया और कार में बैठ गए। अचानक मुझे याद आया कि मैं अपना ब्रीफ़केस घर के अंदर ही भूल गया था, इसलिए मैं दौड़कर वापस गया और उसे ले आया। घर अब और भी ठंडा और खाली था, और मुझे लगा कि कहीं मुझे कुछ असामान्य सुनाई न दे—लेकिन ऐसा कुछ नहीं हुआ। और ज़्यादा देर रुकने के बजाय, मैं कार में बाकी लोगों के साथ बैठ गया और हम वाशिंगटन वापस चल दिए।

मैंने काउंटेस डी'एमकोर्ट से एक बार फिर उस घर पर रुकने का अनुरोध किया, जिसके बारे में मुझे लगा कि उसका इस मामले से कुछ संबंध हो सकता है। ज़ाहिर है, सिबिल को इस बात का कोई अंदाज़ा नहीं था कि हम एच स्ट्रीट पर स्थित उस पुराने घर को देखने क्यों निकले। अब वह एक चीनी रेस्तरां है और उसके अतीत का कोई प्रत्यक्ष सुराग नहीं मिलता।

"मुझे यहाँ फौजी वर्दी और नीले रंग की याद आ रही है," सिबिल ने कहा, जबकि हम सब बाहर ठंडी हवा में कांप रहे थे। घर बंद था और खाली लग रहा था। घर में जाने की मेरी गुज़ारिश का कभी जवाब नहीं मिला था।

“कौन सा काल?”

“शायद सौ साल...यहाँ कुछ खास मजबूत नहीं है...प्रारंभिक अक्षर S...एक आदमी...काफी भ्रामक...निवास से ज्यादा एक बैठक स्थल...बहुत सम्मानजनक नहीं...सैनिकों के लिए बैठक घर...सेना...।”

"क्या इस घर और उस जगह के बीच कोई संबंध है जहां हम आज दोपहर पहले गए थे?"

“सेना किसी न किसी रूप में इस कड़ी का काम कर रही है...।”

* * *

काउंटेस डी'एमकोर्ट को उनकी मदद के लिए धन्यवाद देने के बाद, सिबिल और मैं वापस न्यूयॉर्क के लिए उड़ान भर गए।

कई दिनों तक मैं इस अभियान से उठे सवालों पर विचार करता रहा। क्या एच स्ट्रीट पर स्थित घर (जो मैरी सुरैट का वाशिंगटन स्थित बोर्डिंग हाउस था) को जोड़ने वाला "एस" वही व्यक्ति था जिसका नाम सिबिल ने मैरी सुरैट के पूर्व कंट्री हाउस में मेरे कान में फुसफुसाकर "एस-

टी-..." रखा था? क्या दोनों अक्षर सेक्रेटरी स्टैंटन को संदर्भित कर रहे थे और क्या अफवाहें सच थीं?

* * *

इस संदर्भ में इतिहास के तथ्य महत्वपूर्ण हैं। लिंकन के दूसरे कार्यकाल का कट्टरपंथी रिपब्लिकन ताकतों ने कड़ा विरोध किया था। उनका मानना था कि लिंकन विद्रोहियों के प्रति बहुत नरम थे और उन्हें डर था कि वे कॉन्फेडरेसी के साथ आसानी से शांति समझौता कर लेंगे। उनका यह अनुमान बिल्कुल सही था, और लिंकन के दूसरे कार्यकाल के दौरान उनका इरादा स्पष्ट था। इसीलिए, अब्राहम लिंकन की हत्या करके बूथ ने वास्तव में दक्षिण का घोर अपमान किया।

1864 की वसंत ऋतु में, जब दक्षिण की स्थिति बेहद नाजुक लग रही थी, वाशिंगटन में भी हालात ऐसे मोड़ पर आ गए थे कि जल्द ही फैसले लेने की जरूरत थी। समकालीन शब्द "हॉक्स" (युद्ध समर्थक) स्टैंटन (युद्ध सचिव) और विदेश सचिव सेवर्ड के साथ-साथ कई अन्य अधिकारियों और पदाधिकारियों की मदद पर भरोसा कर सकते थे। वहीं दूसरी ओर, "डोव्स" (शांति समर्थक) वे लोग थे जो वास्तव में कमान संभाल रहे थे—स्वयं लिंकन, ग्रांट और उपराष्ट्रपति जॉनसन, जो स्वयं दक्षिणी थे। तर्कसंगत रूप से, संकट का समय ठीक उसी क्षण आ जाता जब ग्रांट अपनी कमान में और दूसरे महान कमांडर शर्मन मोर्चे पर विजय प्राप्त कर लेते। संयोगवश, हत्या ठीक उसी समय घटी: ग्रांट और शर्मन दोनों को जबरदस्त सफलता मिली थी और शांति निकट थी।

* * *

जब भी जीवनीकारों ने लिंकन की हत्या में बूथ के मकसद का वर्णन किया है, तो इस बात पर जोर दिया गया है कि बूथ का पागलपन और दक्षिण से बदला लेने की उसकी कोशिश, दोनों ही इस अपराध के लिए जिम्मेदार थे। यह बात बिल्कुल सही है, लेकिन नरम शांति संधि के प्रमुख समर्थक को ठीक समय पर हटाकर, उत्तरी साजिश के संदर्भ में यह हत्या कहीं अधिक तर्कसंगत लगती है!

यह कोई मामूली बात नहीं थी। लिंकन ने गुलामों को आज़ाद करने से भी आगे बढ़कर, उनमें से अधिक बुद्धिमान लोगों को वोट देने का अधिकार देने का प्रस्ताव रखा था। लेकिन उन्होंने नव-मुक्त अश्वेतों और उनके पूर्व स्वामियों के बीच तत्काल और पूर्ण समानता की कल्पना नहीं की थी। हालांकि, कट्टरपंथियों के लिए यह और दक्षिणी क्षेत्रों की संपत्तियों पर पूर्ण कब्ज़ा करना अत्यंत आवश्यक था। लिंकन किसी भी दक्षिणी राज्य को संघ में वापस लेने के लिए पूरी तरह से तैयार थे, बशर्ते वह निष्ठा की शपथ ले, लेकिन कट्टरपंथी इस बात को मानने को तैयार नहीं थे। वे अलगाववादी राज्यों के लिए लंबे समय तक सैन्य शासन और कठोर दंड की आशंका जता रहे थे।

लिंकन अक्सर यह उम्मीद जताते थे कि जेफरसन डेविस और उनके प्रमुख सहयोगी देश छोड़कर चले जाएं ताकि उन्हें उन पर मुकदमा चलाने की शर्मिंदगी से बचाया जा सके। दूसरी ओर, स्टैंटन और उसका समूह खून का प्यासा था, और स्टैंटन के सीधे आदेश पर ही लिंकन की हत्या करने वाले दक्षिणी षड्यंत्रकारियों पर कोई रहम नहीं दिखाया गया; स्टैंटन ने ही एक महिला को फांसी देने के खिलाफ जनभावना के आगे झुकने से इनकार कर दिया था और इस बात पर जोर दिया था कि श्रीमती सुरैट को भी अन्य प्रमुख षड्यंत्रकारियों के समान ही अंजाम भुगतना पड़े।

लिंकन की मृत्यु पर स्टैंटन का रुख—उनका यह कहना कि "अब वे इतिहास के पात्र हो गए हैं" और हत्यारों के खिलाफ उनकी ज़ोरदार कार्रवाई—राष्ट्रपति की हत्या की साजिश में उनकी संभावित गुप्त संलिप्तता को किसी भी तरह से कम नहीं करती। स्टीफ़न लोरेंट के अनुसार, उन्होंने एक बार अपने कमांडर-इन-चीफ़ लिंकन को "असली गोरिल्ला" कहा था। जब उन्हें लिंकन के आदेश "बहुत नरम" लगते थे, तो वे अक्सर उन्हें मानने से इनकार कर देते थे। 11 अप्रैल को, हत्या से तीन दिन पहले, लिंकन ने विद्रोही वर्जीनिया विधानमंडल को राज्य सरकार के रूप में कार्य करने की अनुमति देकर न केवल स्टैंटन बल्कि पूरे मंत्रिमंडल को नाराज़ कर दिया था। कार्ल सैंडबर्ग लिखते हैं, "स्टैंटन और अन्य लोग बहुत गुस्से में थे," और हंगामा इतना ज़ोरदार था कि लिंकन अपने इरादे पर अमल नहीं कर पाए। लेकिन यह उदार राष्ट्रपति और उनकी कट्टरपंथी सरकार के बीच उनके अंतिम दिन की पूर्व संध्या पर मौजूद गहरे मतभेद को दर्शाता है!

* * *

फिर, वह मुकदमा भी जल्दबाजी में और ऐसी परिस्थितियों में चलाया गया जिसे आज का कोई भी वकील उचित या संवैधानिक भी नहीं कहेगा। सबूत आंशिक रूप से प्रस्तुत किए गए, महत्वपूर्ण दस्तावेज़—जैसे बूथ की अपनी डायरी—को सचिव स्टैंटन के आदेश पर मनमाने ढंग से दबा दिया गया और मुकदमे से बाहर रखा गया। स्टैंटन ने बूथ के निजी सामान और एच स्ट्रीट स्थित सुरैट के घर से जब्त किए गए सभी दस्तावेजों को भी जब्त कर लिया था, जिससे आरोपी के बचाव पक्ष के वकीलों, विशेष रूप से श्रीमती मैरी सुरैट को, अपने मुवक्किलों के लिए उचित बचाव करने का जरा भी अवसर नहीं मिला।

स्टैंटन के दृष्टिकोण से यही होना चाहिए था: षड्यंत्रकारियों को यथासंभव प्रतिकूल रूप में प्रस्तुत करके जनता के बीच घृणा को भड़काना, जल्द से जल्द दोषसिद्धि और फैसले पर अमल करवाना, ताकि आरोपियों के प्रति जनता में कोई सहानुभूति न रहे। श्रीमती सुरैट को फांसी दिए जाने का काफी विरोध हुआ और उनकी क्षमा की मांग करने वाली समितियां भी गठित की गईं। लेकिन जब तक ये समितियां ठीक से काम कर पातीं, तब तक श्रीमती सुरैट की मृत्यु हो चुकी थी; उन्हें केवल परिस्थितिजन्य साक्ष्यों के आधार पर दोषी ठहराया गया था: उनका घर षड्यंत्रकारियों का मिलन स्थल था, लेकिन यह कभी साबित नहीं हुआ कि वह षड्यंत्र का हिस्सा थीं। वास्तव में, दोषी के अनुसार, उन्होंने हत्या की साजिश का विरोध किया था, लेकिन सरकार ने इस बात को स्वीकार नहीं किया। उनके अपने बेटे जॉन एच. सुरैट, जो कनाडा में मुकदमे की कार्यवाही देख रहे थे, ने अपनी मां को बचाने के लिए कभी कोई प्रयास नहीं किया—शायद उन्हें लगा कि स्टैंटन उन्हें फांसी देने की हिम्मत नहीं करेंगे।

* * *

सुरैट सराय में आत्माओं से संवाद करने वाले व्यक्ति की पहचान को फिलहाल दरकिनार रखते हुए, मैंने इस नई सामग्री के कुछ पहलुओं की जांच की: निश्चित रूप से शर्मन स्वयं लिंकन-विरोधी षड्यंत्र का हिस्सा नहीं हो सकते थे, क्योंकि वे एक "शांतिप्रिय" व्यक्ति थे, यानी पूरी तरह से लिंकन के समर्थक थे। लेकिन उनके स्टाफ का कोई सदस्य—शायद वह रहस्यमय कर्नल—इसमें शामिल हो सकता था। सिबिल के संदेशवाहक ने कहा था कि बूथ

उन सभी सेना अधिकारियों के बारे में जानता था जो या तो उसका इस्तेमाल कर रहे थे या उसके साथ मिले हुए थे, जिससे वास्तव में यह हत्या दक्षिणी प्रतिशोधियों और उत्तरी कट्टरपंथियों की दोहरी साजिश बन जाती है। यदि बूथ इन नामों को जानता था, तो उसने यह जानकारी अपनी निजी डायरी में लिखी होगी। यह डायरी उसने अपनी लड़ाई के दौरान लिखी थी, जब वह मैरीलैंड और वर्जीनिया के दलदली जंगली इलाकों में अपने पीछा करने वालों से छिपा हुआ था।

षड्यंत्र के मुकदमे में डायरी का ज़िक्र तक नहीं हुआ, लेकिन दो साल बाद जॉन एच. सुरैट के मुकदमे में यह सामने आई। दरअसल, हत्या के समय गुप्त सेवा के प्रमुख लाफायेट बेकर ने इसके अस्तित्व का उल्लेख किया, और मुकदमे के लिए इसे तुरंत ज़ब्त कर लिया गया। लेकिन जब इसे अदालत में सबूत के तौर पर पेश किया गया, तो इसमें केवल दो पन्ने बचे थे—बाकी किसी अज्ञात व्यक्ति ने फाड़ दिए थे! अठारह पन्ने गायब थे। डायरी ज़ब्ती के समय से लेकर अब तक स्टैंटन के पास थी, और यह बहुत ही असंभव था कि बूथ ने खुद लिखने के तुरंत बाद अपनी डायरी को इस तरह से विकृत किया हो! इसके विपरीत, डायरी उसके समकालीनों और इतिहास के सामने खुद को सही ठहराने का उसका प्रयास था। यहाँ दोष का बोझ एक बार फिर सचिव स्टैंटन पर भारी पड़ता है।

यह महत्वपूर्ण है कि जिसने भी डायरी को विकृत किया, उसने किसी तरह 21 अप्रैल, 1865 की एक प्रविष्टि को बचा लिया:

"आज रात मैं एक बार फिर नदी पार करने की कोशिश करूंगा; हालांकि मेरी वाशिंगटन लौटने की कहीं अधिक इच्छा है और लगभग मन बना चुका हूं, ताकि मैं अपना नाम कुछ हद तक साफ कर सकूं, जो मुझे लगता है कि मैं कर सकता हूं।"

* * *

फिलिप वैन डोरेन स्टर्न, जिन्होंने 'द मैन हू किल्ड लिंकन' पुस्तक लिखी है, बिलकुल सही सवाल पूछते हैं कि एक कबूलनामा करने वाला हत्यारा अपना नाम कैसे साफ़ कर सकता है, जब तक कि उसे ऐसी कोई बात पता न हो जिसमें उसके और उसके साथियों के अलावा अन्य लोग भी शामिल हों? स्टर्न डेविड हेरोल्ड के कबूलनामे का भी हवाला देते हैं जिसमें उस युवक

ने बूथ के हवाले से कहा है कि वाशिंगटन में पैंतीस लोगों का एक समूह इस साजिश में शामिल था।

सिबिल का भ्रमित संचारक बार-बार कुछ संख्याएँ दोहरा रहा था, जैसे "उनचास" और "चौंतीस"। क्या यह स्टैंटन और चौंतीस सदस्यीय समिति के लिए सांकेतिक भाषा हो सकती है?

वे चाहे जो भी रहे हों, उत्तरी साजिशकर्ताओं में से किसी ने भी अपराध में अपनी भूमिका स्वीकार नहीं की, क्योंकि इस कृत्य पर जनता का आक्रोश इतना अधिक था।

जॉन एच. सुरैट को मुकदमे की जूरी के फैसले पर सहमत न हो पाने के कारण रिहा कर दिया गया। इसके बाद उन्होंने हत्या के विषय पर व्याख्यान देने का प्रयास किया। उन्होंने केवल एक ही व्याख्यान दिया, जो पूरी तरह असफल रहा। किसी को भी इसमें रुचि नहीं थी। लेकिन सौभाग्य से सुरैट द्वारा उस व्याख्यान में दिया गया एक बयान आज भी हमारे पास मौजूद है। उन्होंने स्वीकार किया कि साजिशकर्ताओं का एक अन्य समूह स्वतंत्र रूप से और एक साथ लिंकन पर हमला करने की योजना बना रहा था।

सुरैट का ऐसा बयान देना तथ्यों से बिल्कुल मेल खाता है। वह कॉन्फेडरेसी के लिए एक संदेशवाहक और गुप्तचर था, जिसके वाशिंगटन में बेहतरीन संपर्क थे। हत्या के दौरान टेलीग्राफ को खराब करने और बूथ को नेवी यार्ड पुल पर तैनात संतरी को आसानी से पार कराने का प्रबंध उसी ने किया था। लेकिन क्या श्रीमती लीक के माध्यम से संदेश भेजने वाला व्यक्ति पहले जानकारी छिपा नहीं रहा था, और अंत में यह स्वीकार कर रहा था कि जॉन विल्क्स को उन अन्य लोगों के नाम पता थे?

यह फिलिप वैन डोरेन स्टर्न के विवरण से भिन्न है, जिसमें बूथ अपने "अज्ञात" सहयोगियों की पहचान को लेकर असमंजस में था। लेकिन स्टर्न ने भी सुरैट टैवर्न में कोई ट्रान्स सत्र आयोजित नहीं किया था। नवंबर 1967 में हमारी यात्रा तक, यह प्रश्न अनसुलझा ही रहा।

सुरैट ने बूथ को भरोसा दिलाया था कि "उसके सूत्र" यह सुनिश्चित करेंगे कि वे सभी सुरक्षित निकल जाएं। दूसरे शब्दों में, बूथ और उसके साथी वाशिंगटन के बुद्धिजीवियों के लिए गुप्त काम कर रहे थे, और जॉन सुरैट दोनों पक्षों की सेवा कर रहा था और एक तरह से उन्हें एक ही उद्देश्य के लिए आपस में जोड़ रहा था—हालांकि उनके कारण पूरी तरह से विपरीत थे।

दिलचस्प बात यह है कि मंत्रमुग्ध सिबिल ने एक कर्नल का ज़िक्र किया जो शेरमन को जानता था और उसकी देखभाल करेगा... वह टिकट मुहैया कराएगा...! वह टिकट शायद मेक्सिको से यूरोप जाने वाले किसी विदेशी जहाज़ का स्टीमर टिकट हो सकता था, जहाँ बूथ सुरक्षित रह सकता था। लेकिन वह रहस्यमय मेजर जनरल गी कौन था? चूंकि बूथ का समूह ग्रांट को भी मारने की योजना बना रहा था, तो क्या वह उत्तरी छोर पर चल रही साज़िश में शामिल हो सकता था?

लिंकन ने ग्रांट और श्रीमती ग्रांट को उस दुर्भाग्यपूर्ण शाम को फोर्ड थिएटर में अपने साथ आने के लिए आमंत्रित किया था; ग्रांट ने यह कहते हुए मना कर दिया कि वे इसके बजाय न्यू जर्सी में अपने परिवार के साथ समय बिताना चाहते हैं। शायद राष्ट्रपति के निमंत्रण को ठुकराने का यह एक स्वाभाविक बहाना था, लेकिन इसे दूसरे तरीके से भी समझा जा सकता है: क्या उन्हें साजिश के बारे में पता था और क्या वे अपने राष्ट्रपति को गोली मारते हुए नहीं देखना चाहते थे?

योजना में बदलाव की जानकारी मिलते ही बूथ ने ग्रांट को खत्म करने के लिए जॉन सुरैट को चुना था। सुरैट को उस ट्रेन में सवार होना था जो ग्रांट को न्यू जर्सी ले जा रही थी। लेकिन ग्रांट पर हमला नहीं हुआ; इस बात का कोई सबूत नहीं है कि सुरैट ने कभी ट्रेन पकड़ी थी, और खुद उन्होंने भी कहा कि उन्होंने नहीं पकड़ी थी। सुरैट, जो साजिशकर्ताओं के दोनों गुटों के बीच मध्यस्थ थे, आसानी से ग्रांट को चेतावनी दे सकते थे: बूथ गुट लिंकन और उनके प्रमुख सहयोगियों को मारकर उत्तर को शक्तिहीन करना चाहता था; लेकिन उत्तरी साजिशकर्ता केवल लिंकन को हटाना चाहते थे, अपने किसी भी आदमी को नहीं। भले ही ग्रांट लिंकन के कमांडर-इन-चीफ रहते राष्ट्रपति की "नरम" शांति योजनाओं को लागू करने वाले थे, वे आदेशों का पालन करने वाले सैनिक थे और लिंकन के उत्तराधिकारी की कठोर नीतियों का भी उतनी ही निष्ठा से पालन करते! यहाँ सब कुछ इस ओर इशारा करता है कि सुरैट वास्तव में एक दोहरा एजेंट था।

लेकिन क्या जनरल ग्रांट की संलिप्तता का विचार वास्तव में इतना अविश्वसनीय था?

एंड्रयू जॉनसन के पत्रों के हाल ही में प्रकाशित खंड की आलोचनात्मक समीक्षा के लेखक विल्सन सुलिवन ने ग्रांट के बारे में यह कहा है, जैसा कि सैटरडे रिव्यू ऑफ लिटरेचर, 16 मार्च, 1968 में प्रकाशित हुआ था:

"जनरल ग्रांट द्वारा दक्षिणी श्वेत लोगों के साथ सुलह की लिंकन की नीति को स्वीकार करने के बावजूद, राष्ट्रपति ग्रांट ने 1871 में कुख्यात कू क्लक्स अधिनियम का जोरदार समर्थन किया और उसे लागू किया।"

यह एक ऐसा कानून था जिसने व्यावहारिक रूप से दक्षिणी लोगों को मताधिकार से वंचित कर दिया और उन्हें स्थानीय और राज्य अधिकारियों के बजाय सीधे संघीय अदालतों के अधीन कर दिया।

यह ग्रांट ही थे जिन्होंने कट्टरपंथी रिपब्लिकन कांग्रेस की दमनकारी नीतियों को लागू किया और राजनीतिक पदभार संभालने के बाद स्टैंटन गुट की कठोर नीतियों पर लौट आए, और अपने पूर्ववर्ती की हत्या के बाद राष्ट्रपति जॉनसन द्वारा लागू किए गए सभी उदार उपायों को पूरी तरह से रद्द कर दिया।

लेकिन ग्रांट के राष्ट्रपति बनने से पहले भी सत्ता उन्हीं के हाथ में थी। गृहयुद्ध की समाप्ति के बाद से, जीते हुए दक्षिणी राज्यों में नागरिक प्रशासन का शासन था। मार्च 1867 में, पाँच सैन्य जिलों में सैन्य सरकारों ने इन्हें प्रतिस्थापित कर दिया। इन जिलों के कमांडर सीधे जनरल ग्रांट के प्रति जवाबदेह थे और राष्ट्रपति जॉनसन के किसी भी आदेश की अवहेलना करते थे। नागरिक अधिकारों और राज्य कानूनों की व्यापक रूप से अनदेखी की गई। लिंकन की नीतियों के इस विकृत रूप के पीछे न केवल परिसंघ से बदला लेने की भावना थी, बल्कि राजनीतिक कारण भी थे: दक्षिणी राज्यों के लोगों के मतदान अधिकारों में देरी करके, रिपब्लिकन कांग्रेस अपने कार्यकाल को और अधिक समय तक बनाए रख सकती थी। सुलिवन का मानना है कि यह रवैया काफी हद तक दक्षिणी राज्यों में कू क्लक्स क्लान और अन्य नस्लवादी संगठनों के उदय के लिए जिम्मेदार था।

यदि लिंकन अपना कार्यकाल पूरा करते, तो वे निस्संदेह तेजी से सुलह की नीति लागू करते, दक्षिण को उसके राजनीतिक विशेषाधिकार शीघ्र ही वापस मिल जाते, और कट्टरपंथी रिपब्लिकन पार्टी अगला चुनाव हार सकती थी।

उस दल का नेतृत्व सचिव स्टैंटन और जनरल ग्रांट ने किया था!

सही समय पर दक्षिणी साजिश का होना कितना सुविधाजनक था! बस इतना करना था कि साजिश में शामिल हो जाओ और उसे अंजाम तक पहुंचाओ—फिर सारा दोष दक्षिण पर डाल दो, इस तरह दोहरा काम कर दो, पराजित परिसंघ पर और अधिक दोष मढ़ दो और देश को उस एकमात्र व्यक्ति से छुटकारा दिला दो जो स्टैंटन-ग्रांट समूह की सत्ता में बने रहने की संभावना को खत्म कर सकता था!

यह संभावना बिल्कुल भी असंभव नहीं है कि स्टैंटन उत्तरी षड्यंत्र का असली नेता रहा हो। वह हालात की मांग पर विद्रोह करने के लिए हमेशा तैयार रहता था। राष्ट्रपति एंड्रयू जॉनसन ने एक विरोधी कांग्रेस और यहां तक कि कट्टरपंथियों से भरे मंत्रिमंडल के बावजूद लिंकन की नीतियों को जारी रखने की कोशिश की थी। 1868 की शुरुआत में, जॉनसन ने सचिव स्टैंटन को अपने मंत्रिमंडल से हटाने का प्रयास किया क्योंकि उन्हें एहसास हो गया था कि स्टैंटन उनकी नीतियों के साथ विश्वासघात कर रहा है। लेकिन स्टैंटन ने अपने प्रमुख की बात नहीं मानी और युद्ध विभाग में खुद को बंद कर लिया। इस असहनीय स्थिति के कारण जॉनसन ने महाभियोग की कार्यवाही शुरू की, जो एक वोट से विफल हो गई।

इन अनसुलझे रहस्यों से जुड़ी घटनाओं में एक और दुखद शख्सियत थी: श्रीमती मैरी सुरैट, जो एक कॉन्फेडरेट जासूस की विधवा और एक अन्य जासूस की माँ थीं। 14 अप्रैल, 1865 को उन्होंने अपने बेटे के दोस्त और अपने एक किराएदार लुई वेइचमैन को अपने पुराने देहाती घर, जो अब सुरैट्सविले में एक सराय था, में एक काम से साथ चलने के लिए आमंत्रित किया। वेइचमैन ने खुशी-खुशी श्रीमती सुरैट का साथ दिया और एक बग्गी किराए पर लेने चले गए। सराय में, श्रीमती सुरैट एक पैकेट लेकर बाहर आईं, जिसे उन्होंने वेइचमैन को बताया कि वह बूथ का है। उन्होंने यह पैकेट बूथ के लिए घर के अंदर सराय के मालिक जॉन लॉयड को सुरक्षित रखने के लिए सौंप दिया। इसमें वे बंदूकें थीं जिन्हें हत्या के बाद भगोड़े अपने साथ ले गए थे।

इस कार्य के संबंध में वेइचमैन की गवाही और एच स्ट्रीट स्थित घर में हुई बैठकों का उनका विवरण, श्रीमती सुरैट की फांसी के लिए काफी हद तक जिम्मेदार था, हालांकि यह कभी साबित नहीं हुआ कि हत्या की साजिश में उनका कोई हाथ था। वेइचमैन की गवाही जीवन

भर उनका पीछा करती रही, क्योंकि श्रीमती सुरैट का "भूत", जैसा कि लॉयड लुईस ने अपनी पुस्तक 'मिथ्स आफ्टर लिंकन' में लिखा है, 1868 में तब "उठकर चलने लगा" जब उनके "प्रतिशोधियों" ने उनकी फांसी का राजनीतिक लाभ उठाते हुए एंड्रयू जॉनसन पर उन्हें जबरन मौत के घाट उतारने का आरोप लगाया।

श्रीमती सुरैट की गिरफ्तारी 17 अप्रैल, 1865 को रात 11:15 बजे हुई, जो उनके लिए एक बड़ा झटका था, हालांकि उन्हें लंबे समय से अपने बेटे के बूथ और अन्य साजिशकर्ताओं के साथ संलिप्त होने को लेकर आशंकाएं थीं। घर पर पहले ही छापा पड़ने के बाद लुईस पेन का अचानक वहाँ पहुँचना भी उनकी किस्मत तय करने में सहायक रहा। इसके बाद चले मुकदमे में, किसी भी आरोपी को बोलने की अनुमति नहीं दी गई, और उनके न्यायाधीश साजिश को संघवादी सरकार से जोड़ने के लिए हर संभव प्रयास कर रहे थे, यहाँ तक कि झूठे गवाहों को पेश करने तक, जिन्होंने बाद में अपने बयान से मुकर गए।

अगर सजा पाए लोगों में से किसी में भूत बनने के गुण थे, तो वह मैरी सुरैट ही थीं।

उसकी फांसी और दफनाने के तुरंत बाद, एच स्ट्रीट स्थित घर में उसके भूत के होने की खबरें आने लगीं। फांसी दिए गए चारों कैदियों के शव जेल की दीवारों के भीतर रखे गए थे और उनके परिवारों को उन्हें दफनाने का अधिकार नहीं दिया गया था।

जब एनी सुरैट को अपनी माँ का शव नहीं मिला, तो उन्होंने लॉजिंग हाउस बेच दिया और उस घर से दूर चली गईं जिसने इतनी त्रासदी देखी थी। हालाँकि, घर के पहले खरीदार की किस्मत अच्छी नहीं रही। छह हफ्ते बाद ही उन्होंने इसे दोबारा बेच दिया, जबकि उन्होंने इसे बहुत सस्ते में खरीदा था। अन्य किराएदार जल्दी-जल्दी आते-जाते रहे, और बोस्टन पोस्ट के अनुसार, जिसने घर के भाग्य का ब्यौरा दिया, ऐसा इसलिए हुआ क्योंकि उन्होंने श्रीमती सुरैट का भूत अपने फांसी के वस्त्रों में अपने घर के गलियारों में घूमते हुए देखा था! यह 1860 और 1870 के दशक की बात है। क्या मैरी सुरैट को तब से शांति मिल गई थी? उनका शव अब माउंट ओलिवेट कब्रिस्तान में एक साधारण समाधि के नीचे दफन है।

604 एच स्ट्रीट, एन.डब्ल्यू. स्थित वह घर आज भी खड़ा है। 1900 के दशक की शुरुआत में, वाशिंगटन की एक महिला ने उस घर में भोजन किया। भोजन के दौरान, उसने एक युवा लड़की की आकृति को प्रकट होते और सीढ़ियों पर चढ़ते हुए देखा। जॉन मैककेल्वे ने

वाशिंगटन स्टार में बताया कि उसने उस व्याकुल लड़की को एनी सुरैट की आत्मा के रूप में पहचाना। वर्तमान में उस घर में चल रहे चीनी रेस्तरां को मां या बेटी, दोनों भूतों से कोई आपत्ति नहीं है। और प्राचीन अपशगुन को तोड़ने के लिए फोर्ड थिएटर को हाल ही में एक वैध थिएटर के रूप में बहाल किया गया है।

स्टर्न और इमानुएल हर्ट्ज़ दोनों रॉबर्ट लिंकन के जीवन की एक घटना का उल्लेख करते हैं, जिसमें श्री यंग ने उन्हें अपने पिता के कई निजी कागजात नष्ट करते हुए पाया था। जब उन्होंने लिंकन से इस बारे में आपत्ति जताई, तो बेटे ने जवाब दिया कि "जिन कागजातों को वह नष्ट कर रहा था, उनमें लिंकन के मंत्रिमंडल के एक सदस्य के राजद्रोह के दस्तावेजी सबूत थे, और उसने सभी के हित में यही समझा कि ऐसे सबूतों को नष्ट कर दिया जाए।"

श्री यंग ने रॉबर्ट लिंकन को इस विनाश को जारी रखने से रोकने के लिए निकोलस मरे बटलर (जो बाद में न्यूयॉर्क के कोलंबिया विश्वविद्यालय के प्रमुख बने) की मदद ली। शेष दस्तावेजों को बाद में कांग्रेस पुस्तकालय में जमा कर दिया गया, लेकिन हमें यह नहीं पता कि रॉबर्ट लिंकन ने रोके जाने से पहले कितने दस्तावेज़ नष्ट कर दिए थे।

नवंबर 1967 में सुरैट टैवर्न में हमारे संचारक की पहचान को लेकर अब केवल एक जिज्ञासु प्रश्न ही शेष रह गया है।

"कुत्ते की तरह मार गिराया गया," उस आवाज ने मानसिक चिकित्सक के माध्यम से शिकायत की थी।

बूथ ने अपनी डायरी में खुद लिखा था, "कुत्ते की तरह पीछा किया गया।" एडविन बूथ, जिसने अपने भाई के कृत्य को सार्वजनिक रूप से नकारने के लिए हर संभव प्रयास किया था, और जिसने दावा किया था कि हत्या से पहले के वर्षों में जॉन विल्क्स से उसका कोई सीधा संपर्क नहीं था—वह उस घर का मालिक क्यों बनना चाहेगा जो इस त्रासदी और जॉन विल्क्स बूथ से इतनी गहराई से जुड़ा हुआ था? कौन सोच सकता है कि "कलाकारों का राजकुमार", जिसका लिंकन की हत्या की साजिश में किसी भी तरह की संलिप्तता का कोई रिकॉर्ड नहीं था, अपराधबोध की भावना से प्रेरित होकर उस घर की ओर वापस खिंचा चला जाएगा जो उसके भाई जॉन विल्क्स से इतनी गहराई से जुड़ा हुआ था?

लेकिन वह उसका मालिक था, और उसने उसे थॉमस मिलर के पिता बी. के. मिलर को बेच दिया!

मुझे अपने नक्शों पर वर्जीनिया का कोई लोवेल शहर नहीं मिला, लेकिन मैरीलैंड का एक लॉरेल शहर सुरैट्सविले या आज के क्लिंटन शहर से ज्यादा दूर नहीं है।

संवाद का अधिकांश भाग घर के मालिक एडविन बूथ से मेल खाता है। कुछ भाग मेल नहीं खाता, और कुछ जानबूझकर छिपाने का प्रयास हो सकता है।

ध्यान दें, यह कोई भूत नहीं है, क्योंकि किसी ने भी एडविन बूथ को इस घर में प्रकट होते नहीं देखा। श्रीमती सुरैट ने शायद ऐसा किया हो, यहाँ भी और अपने टाउन हाउस में भी, लेकिन इस दिलचस्प कहानी के मुख्य पात्र में स्पष्ट रूप से वह आंतरिक पीड़ा नहीं थी जो समय और स्थान से परे भूतिया अभिव्यक्तियों का आधार होती है। बिल्कुल सही, क्योंकि जॉन विल्क्स बूथ के लिए यह कार्य एक राष्ट्रीय नायक का काम था, जिस पर उन्हें बिल्कुल भी शर्म नहीं आनी चाहिए। बल्कि, कृतघ्न परिसंघ को उनका आभारी होना चाहिए था।

नहीं, मैंने तय किया, जॉन विल्क्स बूथ एक विश्वसनीय भूत नहीं बन सकता। लेकिन एडविन? क्या जॉन विल्क्स के साथ उसके रिश्ते में मौजूदा प्रकाशित रिकॉर्ड से कहीं अधिक कुछ था? "अरे, असली बात तो यही है..." अभिनेताओं के राजकुमार ने अपनी एक बेहतरीन भूमिका में यही कहा था।

फिर, जॉन सुरैट की स्थिति का रहस्य भी अनसुलझा है। हत्या से कुछ सप्ताह पहले ही उन्होंने जॉन विल्क्स बूथ से नाता तोड़ लिया था, उन्होंने 1867 में अपने मुकदमे में स्पष्ट रूप से यह बात कही थी। हाँ, वह लिंकन के अपहरण की पिछली साजिश का हिस्सा थे, लेकिन हत्या, नहीं। यह उनका काम नहीं था।

* * *

इसलिए मेरा यह तर्क था कि उपलब्ध साक्ष्यों के आधार पर, चाहे वह वस्तुनिष्ठ शोध से प्राप्त हुए हों या मानसिक संपर्कों से, जॉन सुरैट की दोहरी भूमिका निभाने की संभावना अत्यधिक थी। हम शायद शेरमन के कर्मचारियों में मौजूद उस रहस्यमय कर्नल को कभी न खोज पाएं, और न ही मेजर जनरल "जी" की निश्चित रूप से पहचान कर पाएं। लेकिन युद्ध सचिव स्टैंटन

की भूमिका इस षड्यंत्र की सर्वमान्य कहानी के पीछे भयावह और निंदनीय रूप से छिपी हुई है।

* * *

अगर एडविन बूथ ने सिबिल लीक के ज़रिए हमें अपने भाई के लिंकन की मौत में शामिल होने के बारे में जानकारी दी, तो शायद उन्होंने ऐसा इसलिए किया क्योंकि जॉन विल्क्स कभी खुद अपना नाम साफ़ करने की कोशिश नहीं कर पाए। स्टैंटन ने शायद यह काम किया होगा, और गायब हुई डायरी और मुकदमे की बेवजह की जल्दबाजी, ये सब बातें अपनी-अपनी जगह पर सही बैठती हैं।

* * *

इस घटना को सौ साल से भी अधिक समय बीत चुका है। क्या हमें किसी अन्य राष्ट्रपति की हत्या के बारे में पूरी सच्चाई जानने के लिए इतना ही लंबा इंतजार करना पड़ेगा?

* 10

वुड्रो विल्सन के साथ एक मुलाकात

वॉशिंगटन पोस्ट ने भले ही पिछले कुछ सालों में इक्का-दुक्का भूत-प्रेत की कहानियां प्रकाशित की हों, लेकिन भूत-प्रेत की कहानियां बहुत कम। इसलिए 4 मई, 1969 की उस जोशीली अखबार की एक प्रति को मैंने कुछ संदेह के साथ उठाया। यह प्रति मुझे वॉशिंगटन में रहने वाले एक नेक दोस्त और प्रशंसक ने भेजी थी। श्रीमती चार्ल्स मारविक, जो स्वयं एक लेखिका हैं और एक चिकित्सा लेखक से विवाहित हैं, स्कॉटिश मूल की हैं और भूत-प्रेत की कहानियां पढ़ने की शौकीन हैं।

जिस लेख की बात हो रही है, वह पत्रकारिता के सामान्य तौर-तरीकों से थोड़ा हटकर होने के कारण उनका ध्यान आकर्षित कर रहा था। आम तौर पर, मेरे अख़बार के सहकर्मी किसी भी मानसिक घटना से जुड़ी रिपोर्ट को हल्के में लेना पसंद करते हैं, और अगर गवाह सम्मानित हों, या कम से कम ऊपरी तौर पर तर्कसंगत लगें, तो वे घटनाओं की रिपोर्ट तो करते हैं,

लेकिन साथ ही कुछ मज़ेदार पंक्तियाँ भी जोड़ देते हैं ताकि कोई भी अलौकिक चीज़ों के प्रति उनके अपने नज़रिए को ज़्यादा गंभीरता से न ले ले।

इसलिए, जब मैंने "भूतों की मेजबानी करना?" शीर्षक देखा, तो मैं चौंक गया। मुझे लगा कि यह किसी मनोवैज्ञानिक विद्या के प्रति हल्के-फुल्के, बचकाने दृष्टिकोण जैसा लग रहा था। लेकिन जब मैंने फिल केसी की रिपोर्ट पढ़ना शुरू किया, तो मुझे एहसास हुआ कि रिपोर्टर अपने संपादक और भूतों दोनों के प्रति निष्पक्ष रहने की कोशिश कर रहा था।

2340 एस स्ट्रीट एनडब्ल्यू स्थित वुडरो विल्सन हाउस ज्यादातर समय एक शांत और निर्मल जगह है, जहां प्रति सप्ताह लगभग 150 ही आगंतुक आते हैं, लेकिन कभी-कभी रात में इतना शोर होता है कि घर के रखवाले जोस वास्केज़ उसे सहन नहीं कर पाते।

वासक्वेज़ पिछले चार वर्षों से साल में दो बार रात में अजीबोगरीब और कभी-कभी तेज आवाजें सुनता रहा है, लेकिन शनिवार, 5 अप्रैल की आधी रात तक ये आवाजें उसे ज्यादा परेशान नहीं करती थीं।

उन्होंने कहा, "यह निराशाजनक था। अगर मैं घबराने वाला व्यक्ति होता, तो यह बहुत बुरा होता।"

32 वर्षीय वास्केज़ पेरू के रहने वाले हैं, चार भाषाएँ बोलते हैं, पियानो बजाते हैं और डी.सी. टीचर्स कॉलेज में मनोविज्ञान में स्नातक की पढ़ाई कर रहे हैं। वे भूतों में विश्वास नहीं करते, लेकिन उस घर में जिस तरह की घटनाएँ घट रही हैं, उसे देखते हुए उनका यह विश्वास कायम रखना मुश्किल होता जा रहा है।

उन्होंने बताया कि उस रात वह नीचे पियानो बजा रहे थे और वह बिल्कुल अकेले थे (उनकी पत्नी, जो एक नर्स हैं, राष्ट्रीय स्वास्थ्य संस्थान में काम पर थीं)।

उन्होंने कहा, “मुझे ऐसा लगा जैसे कोई मेरे पीछे खड़ा होकर मुझे देख रहा हो। मेरी गर्दन में अजीब सा एहसास हो रहा था। समझे? लेकिन वहां कोई नहीं था। मैंने देखा।”

बाद में, वास्केज़ अपने चौथे तल के अपार्टमेंट की ओर जा रहे थे, तभी उन्होंने अपने पीछे तीसरे तल पर, प्रथम विश्व युद्ध के राष्ट्रपति और उनकी पत्नी के शयनकक्षों के पास कुछ आवाज़ सुनी।

उन्होंने कहा, "कदमों की आवाज तेज थी, और भारी भी, जैसे कोई आदमी चल रहा हो।"

कदमों की आहट श्रीमती विल्सन के शयनकक्ष में गई, और वास्केज़ भी अंदर चला गया। उसे कमरे में कदमों की आहट लगातार सुनाई दे रही थी, और वह लगभग पूरी तरह से दुखी था।

“मैं इस कोने पर गया,” उसने कोने की ओर जाते हुए कहा, “और मैं यहाँ खड़ा होकर इंतज़ार करने लगा। मैंने बहुत देर तक इंतज़ार किया और फिर मुझे कदमों की आहट सुनाई दी, जो हॉल में और मिस्टर विल्सन के बेडरूम की ओर जा रही थी। मैं उनके पीछे गया।”

उसी समय, राष्ट्रपति के चौपाया पलंग के पास भारी कदमों की आहट सुनकर, वास्केज़ ने जल्दी से ऊपर जाने का फैसला किया।

“और जब मैं ऐसा करता हूँ, तो वे मेरे पीछे दौड़ते हुए आते हैं,” उन्होंने कहा, “और वे धड़ाम-धड़ाम करके सीढ़ियों पर मेरा पीछा करते हैं। मैं बहुत घबरा जाता हूँ।”

वासक्केज़ ने कहा कि पीछे की सीढ़ियाँ लोहे की हैं और शोरगुल करती हैं, जिससे कोई मदद नहीं मिली, लेकिन वह अपने अपार्टमेंट में चले गए।

और फिर उसे कदमों की आहट सुनाई नहीं दी और उसे इस बात की खुशी हुई।

कुछ समय पहले की बात है, वास्केज़ अपने बाथटब में नहा रहे थे तभी उन्हें बाथटब पर खटखटाहट की आवाजें सुनाई दीं।

“मैं इस तरह से जोर से खटखटाता हूँ,” उसने टब पर थपथपाते हुए कहा, “और शोर बंद हो जाता है।”

उनकी पत्नी ने कभी कदमों की आहट या टब के खटखटाने की आवाज नहीं सुनी, लेकिन उन्हें कभी-कभार कोई आवाज सुनाई देती है और कभी-कभी रात में उन्हें ऐसा लगता है कि कोई बिस्तर के पास खड़ा है, जिससे उनकी नींद खुल जाती है। उन्हें कभी कोई दिखाई नहीं देता।

मैंने श्री वास्केज़ से बात की, और वे एक बहुत ही भले और समझदार व्यक्ति लगे। पोस्ट में छपी खबर में उनके पास जोड़ने के लिए कुछ नहीं था, लेकिन उन्होंने मुझे विल्सन हाउस के क्यूरेटर से मिलने और वहां जाने की अनुमति लेने के लिए कहा।

मैंने रूथ डिलन से संपर्क किया और धैर्यपूर्वक अपनी जांच का उद्देश्य समझाया। मैंने भले ही इसके ऐतिहासिक पहलुओं पर जोर देने की कोशिश की, लेकिन मेरे नाम से ही उन्हें पता चल गया था कि मैं क्या खोज रहा हूँ, और मुझे आश्चर्य हुआ कि उन्होंने कोई आपत्ति नहीं जताई; जब तक मैं कोई असत्य बात प्रकाशित नहीं करता, तब तक उन्हें परिसर में मौजूद किसी भी प्रेत, चाहे वह प्रसिद्ध हो या नहीं, के बारे में बात करने में कोई आपत्ति नहीं थी।

मैं खुद दिवंगत वुडरो विल्सन के बारे में बहुत कम जानता था, सिवाय इसके कि आम तौर पर किसी भी अमेरिकी राष्ट्रपति के बारे में क्या जाना जाता है, और मैंने उनके बारे में पढ़ने से परहेज किया। इसके बजाय मैंने अपनी अच्छी दोस्त और कई बार मेरी माध्यम रही एथेल जॉनसन मेयर्स को फोन किया और उनसे जल्द ही वाशिंगटन आने का इंतजाम किया। श्रीमती मेयर्स के व्यस्त कार्यक्रम में अचानक बदलाव के कारण, हम 6 मई, 1969 की तारीख तय कर पाए, जो पत्रकार द्वारा अपना लेख लिखने के तीन दिन बाद थी। मेरी एक अच्छी दोस्त, श्रीमती निकोल जैक्सन ने हमें घुमाने की पेशकश की क्योंकि मैं कार नहीं चलाता, और हम तीनों तय समय पर वुडरो विल्सन हाउस पहुँच गए।

वह समय सुबह 11 बजे का था, 6 मई का दिन धूप से भरा और बेहद गर्म था। घर बाहर से ही भव्य दिख रहा था। वह किसी राष्ट्रपति भवन का साक्षात रूप था। आज भी मुझे वह वैसा ही लगता है, हालांकि मुझे पता चला है कि जिस समय यह घर बना था, उस समय ऐसे घरों को दिखावटी नहीं बल्कि साधारण, सुरुचिपूर्ण टाउन हाउस माना जाता था, जो आर्थिक रूप से सक्षम लोगों के लिए होते थे।

अब नेशनल ट्रस्ट की संपत्ति बन चुके इस घर को संग्रहालय में बदल दिया गया है और आगंतुकों को दिन के कुछ निश्चित समयों पर ही प्रवेश दिया जाता है। चार मंजिला इस घर में पीछे की ओर एक भव्य बगीचा भी है और यह एक ग्रामीण संपत्ति की निजता के साथ-साथ एक शहरी घर की सुविधाएँ भी प्रदान करता है। इस इमारत की शैली का सटीक वर्णन करना कठिन है। 1915 में हेनरी पार्कर फेयरबैंक्स के लिए निर्मित, लाल ईंटों से बना यह जॉर्जियाई शैली का घर वास्तुकार वैडी बी. वुड द्वारा डिजाइन किया गया था। 1920 के अंत में, जब राष्ट्रपति विल्सन का दूसरा कार्यकाल समाप्त होने वाला था, श्रीमती विल्सन एक उपयुक्त निवास की तलाश में थीं। संयोग से वह एस स्ट्रीट पर स्थित इस घर के पास से गुजर रही थीं,

जिसे बाद में उन्होंने "एक सरल, आरामदायक, गरिमापूर्ण घर, एक सज्जन व्यक्ति की जरूरतों के अनुरूप" बताया। उसी वर्ष 14 दिसंबर को, वुडरो विल्सन हाउस के बारे में नेशनल ट्रस्ट द्वारा प्रकाशित ब्रोशर के अनुसार, श्री विल्सन ने अपनी पत्नी से एक संगीत कार्यक्रम में जाने का आग्रह किया और जब वह लौटीं, तो उन्होंने उन्हें संपत्ति का विलेख सौंप दिया। अगले दिन वे उस घर में गए, जहाँ श्री विल्सन ने उन्हें जमीन का प्रतीक एक घास का टुकड़ा और घर का प्रतीक एक दरवाजे की चाबी दी - और उन्हें बताया कि यह एक पुरानी स्कॉटिश प्रथा है।

विल्सन परिवार ने कुछ बदलाव किए, जैसे लिफ्ट लगवाना और बिलियर्ड रूम बनवाना। उन्होंने ईंटों का गैराज भी बनवाया और ड्राइववे के प्रवेश द्वार पर लोहे के गेट लगवाए। कुछ कमरों में भी बदलाव किए गए और श्री विल्सन की आठ हजार किताबों को रखने के लिए एक विशाल पुस्तकालय का निर्माण किया गया। आज इस पुस्तकालय में राष्ट्रपति विल्सन और उनके समकालीनों से संबंधित वस्तुओं का एक बड़ा संग्रह है। ये मुख्य रूप से भेंट की गई पुस्तकों और दस्तावेजों की प्रतियां हैं।

राष्ट्रपति विल्सन अपनी दूसरी पत्नी, एडिथ बोलिंग विल्सन के साथ इसी घर में रहते थे। अपने अंतिम वर्षों में वह उनकी समर्पित साथी रहीं, शांति सम्मेलनों में भाग लेने के लिए उनके साथ यूरोप गईं और आम तौर पर राष्ट्रपति के साथ यात्रा करती थीं। उन्हें राष्ट्रपति को पढ़कर सुनाना अच्छा लगता था और उन्हें भी उन्हें पढ़कर सुनाना अच्छा लगता था, और कुल मिलाकर वे एक बहुत ही करीबी और समर्पित दंपत्ति थे।

अपने दूसरे कार्यकाल के अंत में वे इस घर में सेवानिवृत्त हुए और तीन साल बाद 3 फरवरी, 1924 को यहीं उनका निधन हो गया। श्रीमती विल्सन, जिन्होंने बाद में इस घर को नेशनल ट्रस्ट की देखरेख में अमेरिकी जनता को सौंप दिया, भी यहीं रहीं और 28 दिसंबर, 1961 को यहीं उनका निधन हुआ, जो संयोगवश राष्ट्रपति विल्सन के जन्म की 105 वीं वर्षगांठ थी।

कुल मिलाकर, कमरों को उनके रहने के दौरान की तरह ही रखा गया है, केवल कुछ चीज़ें जैसे फर्नीचर, प्राचीन वस्तुएँ और विल्सन परिवार के करियर और जीवन से संबंधित दस्तावेज़ ही जोड़े गए हैं। अगर यह घर एक संग्रहालय है, तो यह वैसा दिखता नहीं है। यह एक तीर्थस्थल जैसा है—लेकिन दिखावटी नहीं—जिसे कई लोग एक महान अमेरिकी मानते हैं।

मेरी आदत के अनुसार, मैंने एथेल मेयर्स को—जिन्हें पता नहीं था कि वे विल्सन हाउस में हैं—जांच के दायरे में आने वाले परिसर में अपनी मर्जी से घूमने दिया, ताकि वे वहां की स्थिति को समझ सकें। वे इधर-उधर घूमती रहीं, कभी उलझन में, कभी किसी बात को लेकर आश्वस्त, बिना कुछ बोले। मैं जितना हो सके उनके पीछे-पीछे चला। अंत में, वे सीढ़ियों से ऊपर गईं और जल्दी से नीचे उतर आईं, ऊपरी मंजिलों की ओर इशारा करते हुए।

मैंने एथेल से पूछा, "यह क्या है?"

"ऊपर कोई है," उसने धीरे से कहा और मेरी तरफ देखा।

“चलिए अंदर चलते हैं,” मैंने सुझाव दिया, क्योंकि कुछ आगंतुक सामने के दरवाजे से अंदर आ रहे थे। मैं अपनी जांच से सनसनी पैदा नहीं करना चाहता था, क्योंकि मैंने वादा किया था कि मैं यह सब चुपचाप और बिना किसी को पता चले करूंगा।

हम मुख्य प्रवेश द्वार के एक तरफ बने एक बैठक कक्ष में गए। वहाँ मैंने एथेल से एक पुरानी कुर्सी पर बैठने और ऊपर उसने जो कुछ अनुभव किया था, उसके बारे में अपने विचार बताने को कहा।

इस बिंदु पर, माध्यम के नियंत्रक व्यक्तित्व, अल्बर्ट ने नियंत्रण अपने हाथ में ले लिया।

“कई अलग-अलग चीजें सामने आ रही हैं। मुझे यहाँ एक व्यक्ति की उपस्थिति का अहसास हो रहा है। ऐसा लगता है कि मुझे पहले कभी ऐसा अनुभव नहीं हुआ। कृपया उस प्रकाश को ध्यान से सुनें जो हम अभी आप पर डाल रहे हैं। यह एक भजन है—‘हे कृपालु प्रकाश, हमारा मार्गदर्शन करो।’”

क्या इस घर में ऐसी कोई चीज है जिससे अशांति पैदा हो रही है?

“उन लोगों में बेचैनी है जो कुछ चीजों को याद रखते हैं। वे उपजाऊ खेतों की तरह हैं, एक ऐसे अतीत पर रचना करने के लिए जिसे समझा नहीं जा सकता।”

"आपके विचार से संचारक कौन है?"

अल्बर्ट ने जवाब दिया: "मुझे लगता है कि यह स्वयं अल्बर्ट ही हैं, जिनकी तस्वीर मेंटलपीस पर तस्वीर लगी है।"

वह आपसे क्या करवाना या कहलवाना चाहता है?

मैंने उन्हें स्पष्ट रूप से यह कहते सुना कि पारिवारिक झगड़ों को सार्वजनिक नहीं किया जाना चाहिए। ये घर के भीतर के विचार हैं। कभी-कभी गुस्से की आवाजें उठती हैं। इसके अलावा, कुछ अन्य लोग भी हैं जिन्हें अपनी बात कहनी है।

“झगड़ा क्या है?”

उन्हें खुद बोलने दो।

"वह क्या करना चाहता है—क्या ऐसा कुछ खास है जो वह हमें बताना चाहता है?"

“मुझे लगता है कि आगे की दुनिया अब पहले से कहीं अधिक सुखद है, क्योंकि सच्ची बातें सामने आ रही हैं जिससे मनुष्य का अपने पड़ोसियों से समुद्र पार हाथ मिलाने का दायरा व्यापक हो रहा है। अब वे बातें सामने आ रही हैं, पहले नहीं; वे तो मानो आपके घर के पिछवाड़े में, दूसरे पेड़ों की छाँव में छिपी हुई थीं।”

वह "निवासी आत्मा" अब सीधे हमसे बात कर रही थी।

“मैं कहना चाहता हूँ, यदि आप मुझे यहाँ रहते हुए सुनने का समय देंगे, तो यह मेरा सुखद क्षण है, जब मैं पर्दा हटाकर आपको यह दिखाना चाहता हूँ कि निकट शत्रु जल्द ही महान मित्र बन जाएगा। मेरा बीते कल का छोटा सा सपना धीरे-धीरे साकार हो रहा है—मानव बंधुत्व। और यह अगली शताब्दी के करीब आते ही और स्पष्ट हो जाता है। यह हमारे लिए यहीं है, हमारे पक्ष में। मैं इसे यहाँ से और अधिक स्पष्ट रूप से देख सकता हूँ। मुझे उस निर्धारित समय का पक्का पता नहीं है। लेकिन यह मानव बंधुत्व है, जब धार्मिक समस्या का समाधान हो जाएगा और सत्य प्रकट होगा, और सभी मनुष्य एक दूसरे के बराबर होंगे, चाहे पड़ोसी हों या शत्रु।”

आप किसकी बात कर रहे हैं?

मैं फिर से तुम्हें यह बताने आया हूँ कि विशाल सागर को पार करने वाले हाथ जल्द ही एक दूसरे को थाम लेंगे! हाथ उन्हें थामने के लिए आगे बढ़ रहे हैं। मेरा छोटा सा सपना, मेरा छोटा सा आदर्श, आकार ले रहा है, और मैं उसे देखता हूँ और उस सपने का एक छोटा सा हिस्सा होते हुए भी अभिन्न अंग होने पर गर्व महसूस करता हूँ। यह खिल उठेगा, गर्भधारण की अवधि लगभग समाप्त हो चुकी है, जब यह साकार होगा। और मैं अपने भीतर के उस भाव का बहुत

आभारी हूँ कि मुझे इस संपूर्ण स्वरूप में इतना छोटा सा योगदान मिला है। मैं तुमसे कहता हूँ कि यह सब भोर से पहले की गर्भधारण अवधि का ही एक हिस्सा है।

भोर कब होगी?

सदी के मोड़ से ठीक पहले। अस्सी-आठ, नौ।

और तब तक?

“गर्भधारण की प्रक्रिया में कई कठिनाइयाँ आती हैं। लेकिन यह अवश्य ही प्रकट होगा, और केवल इस धरती पर ही नहीं। यह इस शहर पर भी प्रकट होगा, और यह उस विश्व-राज्य का अधिक अभिन्न अंग होगा जैसा मैंने दुनिया के अपने अत्यंत निकट अवलोकन में देखा है। मुझे यह सपना दिखाया गया था, और मैंने इसी के अनुसार जीवन व्यतीत किया है।”

“क्या आप चाहते हैं कि हम आपके परिवार या आपके दोस्तों के बारे में कुछ करें? क्या आप उन्हें कुछ खास बताना चाहते हैं?”

"मेरी आत्मा जीवित है, और जब मैं सदी का अंत देखूंगा तो वह वापस लौटेगी, और मैं उस चीज का सामना कर सकूंगा जिसे मैंने देखा था; जो मेरी चेतना के भीतर पैदा हुई थी।"

हमें यह संदेश किसे देना चाहिए?

"मेरे परिवार का एकमात्र जीवित सदस्य।"

“इस सदस्य का नाम क्या है?”

“एलिस।”

"और कुछ?"

“अनेक नश्वर प्राणियों के जीवन के साधारण क्षण महत्वहीन हैं। आने वाली पीढ़ियों को इनकी कोई आवश्यकता नहीं है। उन्हें केवल उस चीज़ की आवश्यकता है जो आ रही है—एक उज्ज्वल नई सुबह। हम आपको यह बताने के लिए जीवित हैं। ईश्वर मनुष्य की आत्मा को शांति दे; वह विजयी होगी। विज्ञान विजयी होगा। मनुष्य की आत्मा अपने महत्व को जानने के लिए स्वतंत्र होगी। मैंने भविष्य को भुला दिया है; मैं यहाँ सब कुछ अपने संसार के अभिन्न अंग के रूप में देखता हूँ।”

“फिर हम जाकर आपके घर को देखेंगे। आपने जो बताया उसके लिए धन्यवाद।”

"ईश्वर आपको आशीर्वाद दें—अर्थात्, वह ईश्वर जो आपका सच्चा ईश्वर है।"

"धन्यवाद।"

“हैलो—अल्बर्ट।”

“अल्बर्ट—क्या सब ठीक है?”

“वह ठीक है। मैं उसे रिहा कर दूंगा।”

"धन्यवाद।"

मुझे लगता है कि आप जानते हैं कि आप किससे बात कर रहे थे।

"हाँ।"

"उनके लिए पदभार संभालना मुश्किल था।"

अब एथेल समाधि से बाहर आ गई, और उस पर कोई बुरा असर नहीं पड़ा था। मैंने उससे उस कमरे के बारे में पूछा जिसमें हम थे।

"इस कमरे में सौदे हुए हैं।"

“किस तरह के सौदे?”

“राजनीतिक सौदे। यहाँ एक भारी-भरकम आदमी है जिसकी दाढ़ी बढ़ी हुई है।”

क्या वह कोई महत्वपूर्ण व्यक्ति है?

“मुझे तो ऐसा ही लगता है। उसके सिर पर ज्यादा बाल नहीं हैं। दाढ़ी हो सकती है।”

वह यहाँ क्या कर रहा होगा?

"ऐसा लगता है कि वह कमरे पर कब्जा कर लेता है। किसी तरह का सौदा करने के लिए।"

“किस तरह का सौदा?”

मुझे नहीं लगता कि वह अमेरिकी है।

"अगर आप उसे देखें तो क्या आप उसे पहचान पाएंगे?"

"मुझे लगता है, मैं ऐसा करूंगा, हाँ।"

मैं एथेल को चिमनी वाले विशाल कमरे में ले गया और चिमनी के ऊपर सजी हुई विभिन्न तस्वीरों की ओर इशारा करते हुए पूछा, "क्या यह वही आदमी हो सकता है?"

"ओह, ये तो जॉर्ज है ना?"

“नहीं। क्या यह वही आदमी हो सकता है?”

"तो फिर वो रिचर्ड है।"

"नहीं, यह रिचर्ड नहीं है और यह जॉर्ज भी नहीं है, लेकिन क्या यह वही आदमी है जिसे आपने देखा था?"

“यहाँ उनके बाल पहले से थोड़े ज़्यादा सफ़ेद हो गए हैं—अगर ये वही व्यक्ति हैं तो। लेकिन हो सकता है, हाँ।” उन्होंने अभी-अभी प्रथम विश्व युद्ध के समय के एक विश्व प्रसिद्ध राजनेता की पहचान की थी।

अब हम तीसरी मंजिल पर पहुँच चुके थे। एक गाइड हमें घुमाने ले गया और उसने लिफ्ट और लोहे की सीढ़ियाँ दिखाईं। हम फिर नीचे उतरे और भव्य पियानो के पास रुक गए।

मैंने एथेल से पूछा, "क्या तुम्हें लगता है कि इस पियानो का हाल ही में इस्तेमाल किया गया है?"

“मैं कहूंगा कि ऐसा हुआ है। रहस्यमय भी। मुझे लगता है कि यह एक भंवर है। मुझे नहीं पता कि विल्सन एक अच्छा पियानोवादक था या नहीं, लेकिन उसने इसे छुआ जरूर है।”

"क्या आपको लगता है कि वही व्यक्ति घर में है?"

"मुझे नहीं लगता कि वह वहां भूत बनकर घूम रहा है, लेकिन वह वहां मौजूद जरूर है।"

* * *

मैंने घर के इतिहास की सावधानीपूर्वक जाँच की, यह देखने के लिए कि क्या किसी त्रासदी या अन्य असामान्य घटना के कारण सचमुच कोई भूत मौजूद था। घर के इतिहास में ऐसा कुछ भी नहीं मिला जिससे यह संकेत मिले कि ऐसी कोई घटना कभी घटी थी। तो फिर कदमों की आहट का क्या अर्थ था? श्री वास्केज़ ने जिस उपस्थिति का अनुभव किया था, उसका क्या? चूंकि अधिकांश घटनाएं ऊपरी मंजिल पर घटी थीं, इसलिए यह अनुमान लगाया जा सकता है कि वे शायद घर के नौकरों या उस मंजिल पर रहने वाले किसी व्यक्ति से संबंधित हों। जब विल्सन परिवार के पास यह घर था, तब ऊपरी मंजिल का उपयोग निश्चित रूप से नौकरों के क्वार्टर के रूप में किया जाता था। लेकिन विल्सन परिवार का अपना शयनकक्ष और रहने का

कमरा भी ऊपरी मंजिल पर ही था, और कदमों की आहट और किसी उपस्थिति का अहसास केवल सबसे ऊपरी मंजिल तक ही सीमित नहीं था, ऐसा प्रतीत होता है।

फिर भी, समाधि में लीन माध्यम द्वारा प्रयुक्त भाव-भंगिमाएँ एक साधारण सेवक से भिन्न व्यक्ति की ओर संकेत करती हैं। एथेल जॉनसन मेयर्स के समाधि में रहने के दौरान और बाद में जब उन्होंने मुझसे दिव्य दृष्टि से बात की, तब रिकॉर्ड किए गए टेप की प्रतिलिपि में कई रोचक संदर्भ हैं। सबसे पहले, भजन "लीड, काइंडली लाइट" का संदर्भ राष्ट्रपति विल्सन के स्वभाव के अनुरूप ही है। वे एक प्रेस्बिटेरियन पादरी के पुत्र थे और निश्चित रूप से धर्म और भाव-भंगिमाओं के मामले में अपने पिता के प्रभाव में पले-बढ़े थे। यदि एथेल जॉनसन मेयर्स को पता होता कि वे विल्सन हाउस में हैं, तो "समुद्र पार हाथ" का संदर्भ महत्वहीन होता। हालाँकि, जब उन्होंने यह कथन दिया, तब उन्होंने घर को राष्ट्रपति विल्सन से नहीं जोड़ा था। विश्व को एकजुट करने का "तुच्छ सपना" निश्चित रूप से राष्ट्रपति विल्सन का सर्वोपरि विचार और इच्छा थी। शायद भविष्य की इतिहास की पुस्तकों में वुडरो विल्सन को "शांति राष्ट्रपति" के रूप में जाना जाएगा - भले ही वे एक युद्ध के दौरान पद पर थे, लेकिन वे सभी युद्धों को समाप्त करने की सच्ची और गंभीर इच्छा के साथ उस युद्ध में गए थे। “दुनिया को लोकतंत्र के लिए सुरक्षित बनाना” उनका सबसे प्रसिद्ध नारा था। इसलिए, इस माध्यम द्वारा व्यक्त की गई अभिव्यक्तियाँ मुझे उस भावना के बिल्कुल अनुरूप लगती हैं।

यह सच है कि माध्यम से बोलने वाली हस्ती ने स्वयं सामने आकर यह नहीं कहा, "मैं वुडरो विल्सन हूँ।" मुझे इसकी उम्मीद भी नहीं थी। ऐसा करना आडंबरपूर्ण होता और शांत, मृदुभाषी विल्सन के स्वभाव के बिल्कुल विपरीत होता।

* * *

क्या वुडरो विल्सन हाउस में भूत-प्रेत का साया है? क्या "शांतिप्रिय राष्ट्रपति" की बेचैन आत्मा वाशिंगटन में घट रही घटनाओं के कारण एक बार फिर विचलित हो रही है? क्या वह अपने ही देश में, विदेशों की तो बात ही छोड़िए, शांति के अभाव से परेशान है? वास्तव में, एक बेचैन आत्मा को अशांत रखने के लिए सभी परिस्थितियाँ मौजूद हैं।

वह इस समय भौतिक जगत से संपर्क करने की कोशिश क्यों कर रहा है? वाशिंगटन पोस्ट को अपने अनुभवों की जानकारी देने वाला व्यक्ति स्पष्ट रूप से एक माध्यम है। इस समय घर में बहुत कम लोग रात भर रुकते हैं। संभवतः राष्ट्रपति विल्सन की बेचैन आत्मा—यदि वास्तव में यह उनकी आत्मा है—ने इस व्यक्ति से संपर्क करना सुविधाजनक समझा होगा, भले ही उसका पद अपेक्षाकृत कम महत्वपूर्ण हो। लेकिन क्योंकि वह मानसिक रूप से सक्षम था, उसने एक ऐसा माध्यम प्रदान किया जिसके द्वारा राष्ट्रपति—यदि वास्तव में वह वही थे—स्वयं को अभिव्यक्त कर बाहरी दुनिया तक पहुँच सके, वह दुनिया जिसे आज शांति की सख्त जरूरत है।

एक तरह से वे अपने प्रयासों में सफल रहे हैं। श्री वास्केज़ के अनुभवों के कारण ही मुझे विल्सन हाउस में होने वाली भूतिया घटनाओं के बारे में पता चला। मेरी यात्रा और एथेल जॉनसन मेयर्स को जिस समाधि जैसी अवस्था में मैंने पहुँचाया, उसके परिणामस्वरूप एक संपर्क स्थापित हुआ। यह मानने के पर्याप्त कारण हैं कि यह संपर्क स्वयं राष्ट्रपति से ही हुआ था।

घर से निकलते समय मैंने श्रीमती मेयर्स से उस व्यक्ति के बारे में एक बार फिर पूछा जिसे उन्होंने दिव्य दृष्टि से घर में घूमते हुए देखा था। बिना सोचे-समझे उन्होंने वुडरो विल्सन के लंबे, गरिमामय व्यक्तित्व का वर्णन किया। बेशक, परा मनोविज्ञान के लिहाज़ से यह कोई पुख्ता सबूत नहीं है, लेकिन मुझे ऐसा महसूस होता है कि हमने सचमुच वुडरो विल्सन की बेचैन और बेहद परेशान आत्मा से संपर्क किया था, और यह आत्मा किसी न किसी तरह चाहती है कि मैं दुनिया को बताऊं कि वह इस देश की मौजूदा स्थिति को लेकर कितना चिंतित है।

* 11

व्हाइट हाउस के चारों ओर रिंग

मुझे नहीं लगता कि किसी को व्हाइट हाउस में किसी खास मकसद से घुसने में मुझसे ज़्यादा परेशानी हुई होगी, सिवाय शायद थॉमस ई. ड्यूई जैसे कुछ राष्ट्रपति पद के उम्मीदवारों के। वैसे भी, श्री ड्यूई का मकसद समझाना मेरे मुकाबले कहीं ज़्यादा आसान था। आप राष्ट्रपति भवन के किसी अधिकारी को कैसे बताएंगे कि आप लिंकन बेडरूम में जाकर देखना चाहते

हैं कि क्या लिंकन का भूत अब भी वहां मौजूद है? आप यह कैसे स्पष्ट करेंगे कि आप सनसनी फैलाने के लिए नहीं आए हैं, न ही आप अपने साथ अखबार वालों का पूरा दल लेकर आए हैं, क्योंकि इन सब से व्हाइट हाउस में रहने वालों (चाहे वे उस समय कोई भी हों) के लिए सिर्फ़ बदनामी ही होगी?

स्वाभाविक रूप से, यह वही बेहद कठिन कार्य था जिसे मैंने कई साल पहले अपने हाथ में लिया था। शुरुआत में, जब मैं 'विंडो टू द पास्ट' के लिए सामग्री जुटा रहा था, तब मैंने व्हाइट हाउस के लिंकन बेडरूम और संभवतः ईस्ट रूम में जाने की कल्पना की थी, ताकि उन क्षेत्रों में कई लोगों को दिखाई देने वाले अलौकिक अनुभवों की पुष्टि और प्रमाणिकता कर सकूँ। लेकिन एक प्रतिष्ठित ज्योतिषी के साथ व्हाइट हाउस जाने की अनुमति के लिए मेरे बार-बार किए गए सभी अनुरोध ठुकरा दिए गए। यहाँ तक कि जब मैंने प्रकाशन से पहले अपने निष्कर्षों और उन निष्कर्षों पर आधारित लेखों को व्हाइट हाउस की जाँच के लिए प्रस्तुत करने का वादा किया, तब भी मुझे बताया गया कि मेरा अनुरोध स्वीकार नहीं किया जा सकता।

पहला कारण यह बताया गया कि राष्ट्रपति और उनका परिवार वहाँ मौजूद था, इसलिए यह सुविधाजनक नहीं था। फिर यह कहा गया कि वे बाहर जा रहे होंगे, इसलिए यह सुविधाजनक नहीं था। एक बार तो मुझे इसलिए मना कर दिया गया क्योंकि सुरक्षा विभाग से मेरी यात्रा के लिए पर्याप्त मंजूरी नहीं मिल पाई थी, और वैसे भी, व्हाइट हाउस का वह हिस्सा जहाँ मैं जाना चाहता था, निजी था।

मैंने कभी हार नहीं मानी। मेरे मन में यह बात गहराई से बसी हुई थी कि व्हाइट हाउस जनता का है, कोई ऐसी संपत्ति नहीं जिस पर राष्ट्रपति परिवार भी "अतिक्रमण निषेध" का बोर्ड लगा दे। मैं आज भी यही सोचता हूँ। हालाँकि, जब तक जॉनसन परिवार व्हाइट हाउस में था, मेरी कोई तरक्की नहीं हुई।

मैंने बार-बार कोशिश की। व्हाइट हाउस में तैनात एक कर्नल, जिनसे मेरी मुलाकात हमारी एक साझा मित्र काउंटेस गर्ट्रूड डी'एमकोर्ट के माध्यम से हुई थी, ने मुझे आकर जांच करने की अनुमति दिलाने की बहुत कोशिश की। लेकिन वे भी असफल रहे।

इसके बाद, मुझे अप्रत्याशित रूप से विस्कॉन्सिन के नियाग्रा निवासी रेवरेंड थॉमस डब्ल्यू. डेटमैन का एक पत्र मिला। वे संघीय सरकार के कई प्रमुख व्यक्तियों को जानते थे और उन्होंने मुझे आवश्यक अनुमति दिलाने की पेशकश की। उन्होंने बताया कि इन व्यक्तियों ने पहले भी उनके लिए सरकारी जांचों का संचालन किया था और उन्हें पूरा विश्वास था कि यदि वे उनसे सहायता मांगेंगे तो वे सहर्ष सहायता करेंगे। उन्हें यह भी पूरा भरोसा था कि राष्ट्रपति पर उनका काफी प्रभाव होगा। उन्होंने दावा किया कि वे राष्ट्रपति को अच्छी तरह जानते हैं। श्री डेटमैन विस्कॉन्सिन निक्सन फॉर प्रेसिडेंट कमेटी से जुड़े थे और उन्होंने हर संभव तरीके से सहायता करने की पेशकश की।

श्री डेटमैन के प्रस्ताव के लिए धन्यवाद देने के बाद, कुछ समय तक मुझे उनसे कोई सूचना नहीं मिली। फिर उन्होंने मुझे दोबारा लिखा और बताया कि वे अभी तक मुझे लिंकन बेडरूम में प्रवेश नहीं दिला पाए हैं, लेकिन इस पर काम जारी है। उन्होंने इस मामले में विस्कॉन्सिन के प्रतिनिधि जॉन बायर्न्स की मदद ली है, और मुझे इसके बारे में आगे जानकारी मिलेगी। फिर श्री डेटमैन ने मुझे बताया कि उन्होंने मेरे लिए व्हाइट हाउस का "विशेष दौरा" आयोजित करवा दिया है, और उनकी जानकारी के अनुसार, इसमें ईस्ट रूम भी शामिल है। इसके बाद उन्होंने मुझसे कहा कि मैं विस्तृत जानकारी के लिए राष्ट्रपति के सहायक विलियम ई. टिम्मन्स से संपर्क करूं।

मैं तो सचमुच बहुत खुश था। सोचिए, व्हाइट हाउस का विशेष दौरा! इससे बेहतर और क्या हो सकता है?

अपने पत्र के साथ, श्री डेटमैन ने विस्कॉन्सिन के सीनेटर विलियम प्रॉक्समायर का एक पत्र भी शामिल किया था, जिसमें सीनेटर ने उल्लेख किया था कि मैं लिंकन बेडरूम में शोध करने में सक्षम नहीं होऊंगा, लेकिन मुझे व्हाइट हाउस का विशेष दौरा कराया जाएगा।

मैंने जल्दी से श्री डेटमैन को धन्यवाद पत्र लिखा और वाशिंगटन में अपने साथ एक माध्यम लाने की योजना बनाने लगी। कुछ दिनों बाद श्री डेटमैन ने मुझे फिर से पत्र लिखा।

उन्हें व्हाइट हाउस से दौरे के संबंध में एक कॉल आया था। उन्होंने स्पष्ट किया कि वे किसी भी तरह से यह गारंटी नहीं दे सकते कि मुझे किस प्रकार का दौरा कराया जाएगा या मैं क्या देख

पाऊंगा। उन्होंने मेरी मदद करने के लिए हर संभव प्रयास किया था और आशा व्यक्त की कि मुझे निराशा नहीं होगी।
चाहे मेरी छठी इंद्री सही काम कर रही हो या नहीं, मुझे अचानक लगा कि मुझे उस "विशेष दौरे" की प्रकृति की स्वयं जाँच करनी चाहिए। मैंने पत्र लिखकर पूछा कि क्या मुझे ईस्ट रूम में आधा घंटा बिताने की अनुमति दी जाएगी, क्योंकि मुझे लिंकन बेडरूम में जाने की अनुमति नहीं दी गई थी। 14 मई, 1970 को व्हाइट हाउस के लेटरहेड पर जॉन एस. डेविस, राष्ट्रपति के विशेष सहायक, व्हाइट हाउस आगंतुक कार्यालय द्वारा हस्ताक्षरित एक पत्र वापस आया।

सीनेटर प्रॉक्समायर द्वारा श्री विलियम टिम्मन्स को व्हाइट हाउस आने के आपके हालिया अनुरोध के संबंध में लिखे गए पत्र को मुझे भेजा गया है, क्योंकि व्हाइट हाउस आने वाले आगंतुकों के लिए यह कार्यालय जिम्मेदार है। दुर्भाग्यवश, जैसा कि हमने पहले भी बताया है, हम आपके लिए लिंकन बेडरूम के दर्शन की व्यवस्था नहीं कर सकते, क्योंकि यह कमरा राष्ट्रपति के निजी निवास क्षेत्र में है, जो आगंतुकों के लिए खुला नहीं है। यदि आप सुबह-सुबह विशेष भ्रमण की व्यवस्था करना चाहते हैं, तो मेरा सुझाव है कि आप सीनेटर प्रॉक्समायर के कार्यालय से संपर्क करें। आप नियमित दर्शन समय के दौरान किसी भी समय व्हाइट हाउस आ सकते हैं।

मेरी तय यात्रा का दिन नज़दीक आ रहा था, इसलिए मैंने श्री डेविस को फ़ोन करने का फ़ैसला किया। तभी मुझे उस मशहूर "विशेष यात्रा" का असली मतलब समझ आया। इसका मतलब यह था कि मुझे और व्हाइट हाउस के गेट पर उस समय मौजूद अन्य लोगों को व्हाइट हाउस के उस हिस्से में जाने की अनुमति दी जाएगी जो सभी आगंतुकों के लिए खुला रहता है। मैं टेप रिकॉर्डर नहीं ले जा सकता था। मैं रास्ते में कहीं बैठ या रुक नहीं सकता था। मुझे समूह के साथ चलना था, जो भी दिलचस्प लगे उस पर नज़र डालनी थी और एक अच्छे नागरिक की तरह आगे बढ़ जाना था। तो फिर उस यात्रा में ऐसा क्या खास था, मैंने पूछा? मुझे बताया गया, "असल में कुछ खास नहीं, लेकिन इसे यही कहा जाता है। इसे विशेष यात्रा इसलिए कहते हैं क्योंकि इसके लिए आपको अपने गृह राज्य के किसी सीनेटर या प्रतिनिधि से अनुमति लेनी पड़ती है।"

मैंने अपनी यात्रा रद्द कर दी और उस माध्यम को नकार दिया। लेकिन मेरे पाठकों की संख्या बहुत अधिक है, और मुझे मदद के लिए अन्य प्रस्ताव भी मिले।

डेबी फिट्ज़ एक किशोरी कॉलेज छात्रा है जो चाहती थी कि मैं उसके स्कूल में व्याख्यान दूं। बदले में, उसने मुझे व्हाइट हाउस में प्रवेश दिलाने का प्रस्ताव दिया, या कम से कम कोशिश करने का। मैंने उसकी हिम्मत पर मुस्कुराया, लेकिन उससे कहा कि वह बेझिझक कोशिश करे। उसने मिस निक्सन को एक पत्र लिखा, जिसे वह सोचती थी कि समान आयु वर्ग की होने के कारण वह उसके अनुरोध के प्रति अनुकूल होगी। ईएसपी अनुसंधान में अपनी रुचि और युवाओं के लिए इस क्षेत्र के महत्व को समझाने के बाद, उसने बताया कि मैं कौन हूं और मुझे पहले व्हाइट हाउस के उन क्षेत्रों में प्रवेश से मना कर दिया गया था जहां मैं शोध करना चाहता था। उसने लिखा:

उनका बस इतना ही इरादा है कि वे एक मानसिक माध्यम को कमरे में ले जाएं और वहां मौजूद किसी भी घटना को वैज्ञानिक रूप से दर्ज करें। इसमें रात भर रुकना शामिल नहीं होगा; यह दिन के दौरान आपकी सुविधानुसार किया जा सकता है। सभी जांच वैज्ञानिक तरीके से की जाती हैं और उनका पूरा दस्तावेजीकरण किया जाता है। यह सर्वविदित है कि स्वयं लिंकन मानसिक रूप से सक्षम थे और व्हाइट हाउस में आत्माओं से संपर्क करते थे। व्हाइट हाउस के इतिहास के छात्र और युवा, खुले विचारों वाली पीढ़ी के सदस्य के रूप में, क्या आप यह जानना नहीं चाहेंगे कि क्या यह कमरा वास्तव में प्रेतवाधित है? यह उन युवाओं को भी अवसर प्रदान करेगा जो दंगों और प्रदर्शनों के अलावा अन्य चीजों में रुचि रखते हैं, ताकि वे श्री होल्ज़र के प्रयासों से बौद्धिक रूप से लाभान्वित हो सकें।

डेबी फिट्ज़ को कभी कोई जवाब या सूचना नहीं मिली। ज़ाहिर है, मुझे भी इस मामले के बारे में फिर कभी कोई जानकारी नहीं मिली।

मेरी तमाम कोशिशों के बावजूद, मुझे निराशा ही हाथ लगी। फिर भी, देश के कार्यकारी भवन के भूतिया पहलुओं में लोगों की दिलचस्पी अभी भी काफी अधिक है। वाशिंगटन के कई अखबारों में व्हाइट हाउस के अंदर घटी कुछ अलौकिक घटनाओं पर खबरें छपीं, और जब भी मैं वाशिंगटन टेलीविजन पर आता, मुझसे हमेशा व्हाइट हाउस के भूतों के बारे में पूछा

जाता था। शायद 1600 पेनसिल्वेनिया एवेन्यू में मौजूद अलौकिक घटनाओं का सबसे सटीक वर्णन वाशिंगटन पोस्ट की पत्रकार जैकलिन लॉरेंस ने किया था।

“1600 पेनसिल्वेनिया एवेन्यू की सबसे परेशान आत्मा अब्राहम लिंकन हैं, जिन्होंने अपने जीवनकाल में दावा किया था कि उनके दो मृत पुत्र, पैट और विली, उनसे नियमित रूप से मिलने आते थे।” ईस्ट रूम में ताबूत में खुद को मृत देखने वाले लिंकन के प्रसिद्ध पूर्वसूचक सपने का वर्णन करने के बाद, मिस लॉरेंस आगे बताती हैं कि श्रीमती फ्रैंकलिन डेलानो रूजवेल्ट की नौकरानी, मैरी इवान ने उत्तर-पश्चिम शयनकक्ष में बिस्तर पर लिंकन को अपने जूते पहनते हुए देखा था। “अन्य नौकरों ने कहा कि उन्होंने उन्हें चुपचाप अपने बिस्तर पर लेटे हुए देखा था, और कुछ अन्य ने कसम खाकर कहा कि वे समय-समय पर व्हाइट हाउस के मुख्य द्वार के ऊपर अंडाकार खिड़की पर खड़े होते थे। श्रीमती रूजवेल्ट ने स्वयं लिंकन को कभी नहीं देखा, लेकिन उन्होंने स्वीकार किया कि देर रात काम करते समय उन्हें अक्सर एक प्रेत जैसी उपस्थिति का एहसास होता था।”

व्हाइट हाउस आने वाले आगंतुकों में से एक नीदरलैंड की दिवंगत महारानी विल्हेल्मिना भी थीं, जिन्होंने अलौकिक अनुभव किए थे। महारानी के शयनकक्ष में सो रही थीं, तभी उन्होंने अपने दरवाजे पर किसी के दस्तक देने की आवाज सुनी, उठीं, दरवाजा खोला और देखा कि राष्ट्रपति लिंकन का भूत वहाँ खड़ा उन्हें घूर रहा है। वे बेहोश हो गईं और जब तक उन्हें होश आया, तब तक वह जा चुके थे।

किंवदंती के अनुसार, युद्ध जैसी राष्ट्रीय आपदाओं की पूर्व संध्या पर लिंकन की आत्मा विशेष रूप से व्याकुल और बेचैन हो जाती है। ऐसे में, इन दिनों और रातों में राष्ट्रपति लिंकन की आत्मा के चौबीसों घंटे उपस्थित रहने की उम्मीद की जा सकती है।

* * *

लेकिन व्हाइट हाउस में लिंकन ही इकलौते भूत नहीं हैं। राष्ट्रपति टैफ्ट के परिवार के सदस्यों ने एबिगेल एडम्स के भूत को ईस्ट रूम के बंद दरवाजों से बाहें फैलाए चलते हुए देखा है। और कौन जाने इन प्राचीन और रहस्यमयी दीवारों में और कौन-कौन से प्रेत निवास करते हैं?

व्हाइट हाउस के बारे में अभी भी बहुत कुछ अज्ञात है, यह बात 25 नवंबर, 1969 को न्यूयॉर्क डेली न्यूज में प्रकाशित एक खबर से स्पष्ट होती है, जिसमें व्हाइट हाउस में खोजे गए दो नए कमरों के बारे में बताया गया है। खबर में लिखा है, "व्हाइट हाउस में राष्ट्रपति के स्विमिंग पूल से कुछ ही गज की दूरी पर दो ऐसे कमरे मिले हैं जिनके बारे में पहले पता नहीं था और माना जाता है कि वे थॉमस जेफरसन के समय के हैं। यह खोज व्हाइट हाउस प्रेस कोर के बड़े कार्यक्षेत्र में खुदाई के दौरान हुई। व्हाइट हाउस के क्यूरेटर जेम्स केचम ने इन भूमिगत कमरों को भंडारण कक्ष या कोयले के डिब्बे बताया है और माना जाता है कि ये व्हाइट हाउस में सबसे पहले बने कमरों में से थे। मिट्टी से भरे इन कमरों में टूटी हुई कलाकृतियाँ मिलीं जिनके बारे में माना जाता है कि वे राष्ट्रपति लिंकन के शासनकाल की हैं।"

जब मैंने वाशिंगटन के प्रमुख लोगों से व्हाइट हाउस जांच की अनुमति प्राप्त करने में आ रही कठिनाइयों पर चर्चा की, तो मुझे सुझाव दिया गया कि मैं फोर्ड थिएटर या पार्कर हाउस पर ध्यान दूं—ये दोनों स्थान राष्ट्रपति लिंकन की मृत्यु से जुड़े हुए हैं। मैंने ऐसा नहीं किया, इसका सीधा सा कारण यह है कि मेरी राय में लिंकन की आत्मा केवल वहीं पाई जाती है जहां वह उनके लिए मायने रखती थी: व्हाइट हाउस में। यदि फोर्ड थिएटर, जहां उन्हें गोली मारी गई थी, या पार्कर हाउस, जहां कुछ घंटों बाद उनकी मृत्यु हुई थी, में कोई क्षणिक छाप बची भी है, तो वह केवल अतीत की एक छाप होगी। मुझे यकीन है कि राष्ट्रपति लिंकन का व्यक्तित्व कुछ हद तक व्हाइट हाउस से जुड़ा हुआ है, क्योंकि कुछ काम अधूरे रह गए हैं। मुझे नहीं लगता कि यह केवल उनके समय का अधूरा काम है। इसका बहुत सारा हिस्सा आज तक अधूरा है, और न ही वर्तमान प्रशासन इसे किसी भी तरह से पूरा कर रहा है। बल्कि इसके विपरीत। यदि लिंकन के लिए कभी भी विचलित होने का कोई कारण था, तो वह अब है। मुक्ति घोषणापत्र, जिसके लिए उन्होंने संघर्ष किया और जो एक तरह से हमारे देश का पुनर्जन्म था, आज भी आंशिक रूप से ही वास्तविकता है। लिंकन की शांति की इच्छा इन अशांत समयों में पूरी नहीं हो पा रही है। मुझे यकीन है कि व्हाइट हाउस में अशांति कभी खत्म नहीं हुई है। कुछ साल पहले ही, जॉनसन की बेटियों में से एक, लिंडा ने अपने दरवाजे पर किसी के दस्तक देने की आवाज सुनी, दरवाजा खोला तो बाहर कोई नहीं था। राष्ट्रपति परिवार के सदस्यों को

फोन किया गया, लेकिन दूसरी तरफ कोई नहीं था। इसके अलावा, जांच करने पर पता चला कि व्हाइट हाउस के ऑपरेटरों ने विशेष एक्सटेंशन टेलीफोन नहीं बजाए थे।

ऐसी घटनाओं को कल्पना, संयोग या "पुराने घर के धंसने" जैसी बातों से खारिज करना बहुत मुश्किल है। मूर्ख को छोड़कर हर कोई जानता है कि जूते या चप्पल पहने पैरों से निकलने वाली मानवीय पदचाप और पुराने घर के धीरे-धीरे अपनी नींव पर धंसने से उत्पन्न होने वाली सामान्य आवाज़ों में क्या अंतर होता है।

* 12

दुर्भाग्यपूर्ण कैनेडी परिवार: सपनों से भूतों तक

“आप कब डलास जाकर राष्ट्रपति कैनेडी के बारे में जानकारी जुटाएंगे?” उस विनम्र आगंतुक ने पूछा। वह एक स्कूल शिक्षक थे जो अपने क्षेत्र में परा मनोविज्ञान का पाठ्यक्रम शुरू करने के बारे में सलाह लेने मेरे पास आए थे।

राष्ट्रपति कैनेडी के बारे में सवाल कोई नया नहीं था। जॉन एफ. कैनेडी की हत्या के बाद से ही मुझसे यही सवाल अलग-अलग रूपों में पूछा जाता रहा था, मानो मेरा और मेरे तांत्रिक सहायकों का यह फर्ज हो कि हम अपनी संयुक्त प्रतिभा का इस्तेमाल करके पता लगाएं कि डलास के स्कूल बुक डिपो में असल में क्या हुआ था। मेरा मानना है कि अब्राहम लिंकन की मृत्यु के बाद भी कुछ ऐसी ही स्थिति रही होगी। लोगों की जिज्ञासा जागृत हो गई थी, और इतनी सारी अपुष्ट अफवाहों के बीच राष्ट्रपति की अचानक मृत्यु का मामला चर्चा और पूछताछ का एक प्रमुख विषय बन जाता है।

जब लिंकन को गोली मारी गई थी तब मैं वहां नहीं था; राष्ट्रपति कैनेडी की हत्या के समय मैं वहीं मौजूद था। इसलिए मैं शुरू से ही इस हत्या के प्रति जनता की रुचि का पता लगाने की अच्छी स्थिति में हूं।

मैंने अपने आगंतुक को आश्वस्त किया कि अभी तक मेरी डलास जाकर किसी माध्यम के साथ यह पता लगाने की कोई योजना नहीं है कि वास्तव में क्या हुआ था। मैंने टेलीविजन पर भी कई बार यही बात कही है। जब मुझे याद दिलाया गया कि अब्राहम लिंकन की हत्या में भी कुछ अनुत्तरित प्रश्न रह गए थे और मैंने वास्तव में इसकी जांच की थी और अपनी पुस्तक

'विंडो टू द पास्ट' में चौंकाने वाले नए निष्कर्ष निकाले थे, तो मैंने जवाब दिया कि कैनेडी की मृत्यु और राष्ट्रपति लिंकन की हत्या में एक बुनियादी अंतर है: व्हाइट हाउस में विश्वसनीय गवाहों द्वारा लिंकन का भूत बार-बार देखा गया है; अभी तक मुझे दिवंगत राष्ट्रपति कैनेडी से संबंधित भूतिया दृश्यों की कोई विश्वसनीय रिपोर्ट नहीं मिली है। मेरे विचार में, इसका अर्थ यह है कि जिस बेचैनी के कारण लिंकन अपने कार्यक्षेत्र में ही रहे, उसने जॉन एफ. कैनेडी को ऐसा करने के लिए प्रेरित नहीं किया।

लेकिन अब मुझे शत प्रतिशत यकीन नहीं है। वाशिंगटन में ऐसे मामलों की जानकारी प्राप्त करना या व्हाइट हाउस में एक सामान्य पर्यटक के अलावा किसी अन्य रूप में प्रवेश पाना कितना मुश्किल है—या फिर आधिकारिक काम से—यह जानने के बाद, मुझे यह भी विश्वास हो गया है कि जिन लोगों को ऐसे अनुभव हुए हैं, वे शायद बहुत कुछ दबा देते हैं या जानबूझकर अनदेखा कर देते हैं, क्योंकि हम ऐसे समय में जी रहे हैं जब मानसिक घटनाएं अभी भी उन लोगों को शर्मिंदा कर सकती हैं जिन्हें वे घटित होती हैं, खासकर यदि वे किसी महत्वपूर्ण पद पर हों।

लेकिन भले ही जॉन फिट्ज़गेराल्ड कैनेडी रात में व्हाइट हाउस के गलियारों में न घूम रहे हों, अपनी असामयिक मृत्यु पर शोक न मना रहे हों या अपने जाने के बाद से इस देश में हुए कई अन्यायों को सुधारने की कोशिश न कर रहे हों, फिर भी वे कुछ बेहतर कर रहे हैं। वे विशेष परिस्थितियों में और विशेष लोगों के साथ संवाद करते हैं। अगर मैं उन लोगों की बात मानूँ जिन्हें ये अनुभव प्राप्त हुए हैं, तो वे "मृत और विदा" होने से बहुत दूर हैं। स्वाभाविक रूप से, कल्पना और वास्तविकता के बीच अंतर करना आवश्यक है—खासकर जब हम किसी प्रसिद्ध व्यक्ति की बात कर रहे हों। मैंने ऐसा किया है, और मैंने उन लोगों के रिकॉर्ड का बहुत बारीकी से अध्ययन किया है जिन्होंने मुझे कैनेडी परिवार से संबंधित मानसिक अनुभवों के बारे में बताया है। मैंने ऐसी कई रिपोर्टों को इसलिए खारिज कर दिया क्योंकि मैं पूरी तरह से आश्वस्त नहीं हो सका कि रिपोर्ट करने वाला व्यक्ति पूरी तरह से संतुलित था। मैंने कई अन्य रिपोर्टों को भी खारिज कर दिया, इसलिए नहीं कि मुझे रिपोर्ट करने वालों की भावनात्मक स्थिरता पर संदेह था, बल्कि इसलिए कि रिपोर्टें बहुत सामान्य और अस्पष्ट थीं, जो व्यापक

अर्थों में भी प्रमाणिक नहीं थीं। गवाहों द्वारा समर्थित न होने वाली सामग्री, या घटना घटने के बाद प्रस्तुत की गई सामग्री को निश्चित रूप से नजरअंदाज कर दिया गया।

इन सब बातों को ध्यान में रखते हुए, मैं इस निष्कर्ष पर पहुंचा हूं कि कैनेडी का भाग्य ऐसा था जिसे टाला नहीं जा सकता था, चाहे कोई पुरानी आयरिश कैनेडी अभिशाप को सच माने या न माने।

आज के समय में, कैनेडी परिवार के भूत भी अमेरिकी जीवन का अभिन्न अंग बन चुके हैं। उन्हें इतना कष्ट क्यों सहना पड़ता है, यह मैं समझ नहीं पाता। लेकिन यह सच है कि अमेरिकी कैनेडी परिवार के आयरिश पूर्वजों की भी वर्षों से हिंसक मृत्यु दर असामान्य रूप से अधिक रही है, खासकर परिवार के पुरुष सदस्यों की। एक परंपरा यह भी है कि मध्य युग में किसी कैनेडी को उसके किसी निजी स्थानीय शत्रु के क्रोध का पात्र बनने पर शाप दिया गया था। इस शाप के फलस्वरूप, उसे और उसके सभी पुरुष वंशजों को एक-एक करके हिंसक मौत मरना था। शापों को कोरी कल्पना या केवल भय के कारण होने वाली घटना मानकर खारिज करना सही नहीं होगा। मुझे शापों की प्रभावशीलता पर तब तक संदेह था जब तक कि मुझे ऐसे कई मामले नहीं मिले जिनसे कोई और स्पष्टीकरण संभव नहीं हो पाया। विशेष रूप से, मैं वर्मब्रांड शाप के मामले का जिक्र करना चाहता हूं, जिसका जिक्र मैंने अपनी पुस्तक 'घोस्ट्स ऑफ द गोल्डन वेस्ट' में किया है। उस मामले में, एक प्रतिष्ठित परिवार के अंतिम पुरुष वंशज की रहस्यमय परिस्थितियों में, अस्पताल में डॉक्टरों की देखरेख में रहते हुए भी, अप्रत्याशित रूप से मृत्यु हो गई। इसलिए, अगर कैनेडी का अभिशाप अपना असर दिखा रहा है, तो इसके बारे में ज्यादा कुछ नहीं किया जा सकता है।

शायद मुझे यहाँ भूतों और आत्माओं के बीच का अंतर संक्षेप में समझाना चाहिए, क्योंकि कैनेडी से संबंधित अधिकांश सामग्री भूतों की तुलना में भूतों से संबंधित है। भूत आमतौर पर उन घरों या निश्चित स्थानों से जुड़े होते हैं जहाँ उनके भौतिक शरीर की दुखद मृत्यु हुई थी, या कम से कम दुखद स्थिति में हुई थी। वे उस स्थान को छोड़ नहीं सकते, और केवल अपने अंतिम क्षणों को दोहरा सकते हैं, और व्यावहारिक रूप से अपनी वास्तविक स्थिति से पूरी तरह अवगत नहीं होते हैं। उनकी तुलना शारीरिक अवस्था में मनोविक्षिप्त लोगों से की जा सकती है, और उन्हें पहले अपने द्वारा निर्मित भ्रमों से मुक्त होना पड़ता है ताकि वे उत्तर दे

सकें, यदि संभव हो तो किसी समाधि माध्यम के माध्यम से, या ड्यूक विश्वविद्यालय के डॉ. जोसेफ राइन द्वारा "मन की दुनिया" कहे जाने वाले स्थान पर मुक्त आत्मा बन सकें, जिसे मैं आमतौर पर गैर-भौतिक दुनिया कहता हूँ।

दूसरी ओर, आत्माएँ वास्तव में आप और मेरे जैसे ही लोग हैं, जिन्होंने भौतिक शरीर को त्याग दिया है, लेकिन एक सूक्ष्म, सूक्ष्म शरीर में वे पूरी तरह से जीवित हैं, जिसमें वे भौतिक शरीर की तरह ही कार्य करने में सक्षम हैं, सिवाय इसके कि अब वे भौतिक वस्तुओं, दूरियों, समय और स्थान के बोझ से मुक्त हैं। मरने वालों में से अधिकांश मुक्त आत्माएँ बन जाते हैं, और केवल एक छोटा सा अंश ही भावनात्मक कठिनाइयों के कारण अगले चरण में जाने में असमर्थ होता है और पीछे रह जाता है। जो लोग आगे बढ़ गए हैं, वे हमेशा के लिए नहीं चले गए हैं, बल्कि इसके विपरीत वे पृथ्वी पर अधूरे छोड़े गए कार्यों में अपना योगदान देने में सक्षम और अक्सर उत्सुक रहते हैं। हिंसा या दुखद परिस्थितियों में मृत्यु होने से भूत का जन्म होना आवश्यक नहीं है। कुछ ऐसी परिस्थितियाँ भूत सिंड्रोम को जन्म दे सकती हैं, लेकिन कई अन्य नहीं। मेरा मानना है कि राष्ट्रपति कैनेडी बाद वाले समूह में आते हैं - अर्थात्, एक मुक्त आत्मा जो अपने पीछे छोड़ी गई दुनिया में रुचि बनाए रखने में सक्षम है। ऐसा क्यों है, यह मैं अगले पृष्ठों में बताऊंगा।

* * *

आर. लंबर कंपनी लकड़ी के निर्माण और थोक व्यापार में विशेषज्ञता रखने वाली एक समृद्ध कंपनी है। यह जॉर्जिया में स्थित है और इसके मालिक, श्री और श्रीमती बर्नार्ड आर., अपने समुदाय में सम्मानित नागरिक हैं। अप्रैल 1970 में श्रीमती आर. ने मुझसे संपर्क किया। उन्होंने बताया, “मैंने अभी-अभी आपकी पुस्तक, 'लाइफ आफ्टर डेथ', पढ़ी है और आपके निमंत्रण को ठुकरा नहीं सकी, जिसके तहत मैं अपना एक विचित्र अनुभव आपके साथ साझा करना चाहती हूँ। मुझे उम्मीद है कि आप इसकी प्रामाणिकता के बारे में अपनी राय दे सकेंगे।”

“मुझे इस घटना के बारे में किसी ऐसे व्यक्ति से बात करने का मौका नहीं मिला जो किसी भी तरह से भविष्य देख सकता हो या भविष्यवाणी कर सकता हो। मैंने इस बारे में कैनेडी परिवार के किसी करीबी से संपर्क करने की कोशिश भी नहीं की, क्योंकि मुझे पता है कि उन्हें हजारों

पत्र मिले होंगे। कई बार मुझे थोड़ा अपराधबोध होता है कि मैंने श्रीमती कैनेडी और बच्चों से संपर्क करने की कोशिश तक नहीं की, अगर वाकई यह राष्ट्रपति का अंतिम संदेश हो सकता था। मुझे यह बात अजीब लगती है कि हमें यह संदेश मिला होगा या हमने ऐसा सोचा होगा कि हमें मिला है। हम कभी कैनेडी परिवार के प्रशंसक नहीं थे, और हालांकि हम अपने राष्ट्रपति के निधन पर सहानुभूति रखते थे, लेकिन हम उतने भावुक नहीं थे जितने हमारे कई दोस्त थे जो उनके कट्टर प्रशंसक थे।"

"मैं किसी भी तरह से मानसिक शक्तियों से ग्रस्त नहीं हूं, और न ही मुझे पहले कभी कोई अलौकिक अनुभव हुआ है। मैं एक युवा गृहिणी और व्यवसायी महिला हूं, और जो कुछ हुआ उसके लिए मैं कोई संभावित स्पष्टीकरण नहीं दे सकती।"

"रविवार की रात, 24 नवंबर, 1963 को, जॉन एफ. कैनेडी की हत्या के बाद, मैं और मेरा परिवार घर पर थे और टेलीविजन पर कैपिटल हिल से गुजर रहे जुलूस को देख रहे थे, जिसमें लोग उन्हें अंतिम श्रद्धांजलि दे रहे थे। मैं बहुत उदास थी, खासकर इसलिए क्योंकि उसी दोपहर ली ओसवाल्ड की भी हत्या कर दी गई थी और मुझे लग रहा था कि हम हत्या की पूरी कहानी कभी नहीं जान पाएंगे। किसी अजीब कारण से, अचानक मुझे ओइजा बोर्ड का ख्याल आया, हालांकि मैंने कभी भी इसके जवाबों को गंभीरता से नहीं लिया था और निश्चित रूप से इससे पहले कभी भी किसी महत्वपूर्ण बात के बारे में इससे सलाह नहीं ली थी। मैंने अपनी किशोर बेटी से मेरे साथ बोर्ड चलाने को कहा और हम दूसरे कमरे में चले गए। मैंने कभी भी 'मृतकों से बात करने' की कोशिश नहीं की थी। मुझे नहीं पता कि उस रात मैंने जो सवाल पूछे, उन्हें पूछने की हिम्मत मुझमें कहाँ से आई, लेकिन किसी तरह, मुझे आगे बढ़ने की प्रेरणा मिली।"

प्रश्न: क्या कैनेडी के बिना हमारा देश खतरे में पड़ जाएगा?

उत्तर: कैनेडी के साथ मजबूत, कैनेडी के बिना कमजोर, साजिश—बंद करो।

प्रश्न: क्या रूबी बताएगी कि राष्ट्रपति की हत्या क्यों की गई?

उत्तर: रूबी को नहीं पता, केवल ओसवाल्ड और मुझे पता है। क्षमा करें।

सवाल: क्या हम कभी जान पाएंगे कि कैनेडी की हत्या क्यों की गई थी?

उत्तर: अंडरग्राउंड और ओसवाल्ड को पता है, रूबी को नहीं पता, गिरोह का सरगना साजिश में पकड़ा गया है।

प्रश्न: गिरोह का सरगना कौन है?

उत्तर: अभी नहीं बता सकते।

प्रश्न: ओसवाल्ड राष्ट्रपति से नफरत क्यों करता था?

उत्तर: अश्वेतों के लिए नागरिक अधिकार विधेयक।

प्रश्न: क्या ओसवाल्ड और कैनेडी की आत्माएं मिली हैं?

उत्तर: हाँ। स्वर्ग में कोई दुर्भावना नहीं होती।

प्रश्न: क्या आप कैनेडी के संपर्क में हैं?

उत्तर: हाँ।

प्रश्न: क्या कैनेडी के पास कोई संदेश है जिसे वह हमारे माध्यम से भेजना चाहते हैं?

उत्तर: जी हां, जी हां, जे., सी. और जे.जे. को इसके बारे में बता दीजिए। धन्यवाद, जेएफके।

प्रश्न: क्या कैनेडी हमें इसकी पुष्टि के लिए कोई उपनाम बता सकते हैं?

उत्तर: केवल उपनाम 'जॉन जॉन'।

प्रश्न: क्या आप वाकई चाहते हैं कि हम किसी से संपर्क करें?

उत्तर: हां, लेकिन मेरे अंतिम संस्कार के बाद तक प्रतीक्षा करें।

प्रश्न: हम यह कैसे सुनिश्चित कर सकते हैं कि जैकी हमारा पत्र देखेगी?

उत्तर: व्यक्तिगत बातें लिखें, सहानुभूति जताने वाले व्यावसायिक लेख न लिखें।

प्रश्न: क्या आप हमें इस संदेश की पुष्टि करने के लिए कोई व्यक्तिगत जानकारी दे सकते हैं?

उत्तर: जिज्ञासु जनता सब कुछ जानती है।

प्रश्न: क्या आप हमें कोई एक उपनाम दे सकते हैं?

उत्तर: जे.जे. (जॉन जॉन) को तैरना बहुत पसंद था, उसे 'पापा का छोटा तैराक' कहा जाता था। क्या इससे मदद मिली? जेएफके।

प्रश्न: और कुछ?

उत्तर: जे.जे. को गुप्त खेल और खरगोश के साथ खेलना पसंद है।

प्रश्न: आपका नौसेना सीरियल नंबर क्या था?

उत्तर: 109 पी.टी. (जेजी) स्किपर—5905. [भ्रमित प्रतीत हुआ]

प्रश्न: क्या हम आपसे दोबारा संपर्क कर सकते हैं?

उत्तर: आप, जेएफके, न कि जेएफके आप।

प्रश्न: कृपया हमें अपने नए घर का पता बताएं।

उत्तर: स्नेक माउंटेन रोड।

प्रश्न: क्या श्रीमती कैनेडी इस पर विश्वास करेंगी, क्या वह अलौकिक शक्तियों में विश्वास करती हैं?

उत्तर: थोड़ा-बहुत—थका हुआ—बस आज रात के लिए इतना ही।

"इस बिंदु पर प्लानचेट 'गुड-बाय' लिखे बोर्ड के निचले हिस्से से फिसल गया और हमने उस रात आगे कोई प्रश्न पूछने का प्रयास नहीं किया।"

"बोर्ड ने हमेशा हमारे सवालों का जवाब तुरंत और सोच-समझकर, बिना किसी झिझक के दिया। दरअसल, काम इतनी तेज़ी से हो रहा था कि मेरी बेटी और मैं संदेश को समझ ही नहीं पा रहे थे। हम अपनी ग्यारह साल की बेटी को अक्षर बोलकर सुनाते थे, जिसे वह लिख लेती थी, और पूरा संदेश मिलने के बाद हमें शब्दों को जोड़कर समझना पड़ा। हमारा राष्ट्रपति कैनेडी से सीधे संपर्क करने का कोई इरादा नहीं था। मैं आपको बता नहीं सकती कि मैं कितनी डर गई थी जब मैंने पूछा कि क्या उनका कोई संदेश है और संदेश पर 'जेएफके' के हस्ताक्षर थे।"

"कई दिनों तक मुझे विश्वास नहीं हुआ कि संदेश असली था। मैंने श्रीमती कैनेडी को कई पत्र लिखकर घटना को समझाने की कोशिश की, लेकिन उन्हें भेजने का साहस कभी नहीं जुटा पाई।"

“मिले हुए जवाबों में से कोई भी सनसनीखेज नहीं है, अधिकतर ऐसी बातें हैं जो हम पहले से जान सकते थे या अनुमान लगा सकते थे। ‘जॉन जॉन’, ‘गुप्त खेल’ और ‘खरगोश’ के बारे में दिए गए जवाब एक पत्रिका में थे जिसे मेरे बच्चों ने पढ़ा था और मैंने नहीं। हालाँकि, जॉन जॉन को ‘डैडी का छोटा तैराक लड़का’ कहे जाने वाला जवाब हममें से किसी ने भी कभी नहीं सुना या पढ़ा। मैंने पिछले दो वर्षों में कैनेडी परिवार के बारे में लिखे गए कई लेखों का अध्ययन किया है और मुझे इसका कोई संदर्भ नहीं मिला। मैं कई दिनों तक अपनी बेटी को दोबारा बोर्ड छूने के लिए राजी नहीं कर पाई। हमने दिसंबर 1963 में कई बार कोशिश की, लेकिन असफल रहे। एक रात, क्रिसमस से ठीक पहले, मेरी एक सहेली ने मेरी बेटी को उसके साथ बोर्ड चलाने के लिए राजी किया। शायद सबसे आश्चर्यजनक संदेश इसी समय आया, और यह हमें मिला आखिरी संदेश भी था। हम सभी प्रोटेस्टेंट हैं और यह संदेश हमारी धार्मिक मान्यताओं के विपरीत था। जब उन्होंने पूछा कि क्या राष्ट्रपति कैनेडी का कोई संदेश है, तो प्लानचेट ने तुरंत लिखा, “जब मैं नरक में था तब आपकी प्रार्थनाओं के लिए धन्यवाद, जेएफके।”

* * *

मैंने प्रिंट मीडिया और टेलीविजन पर कई बार कहा है कि मैं आम तौर पर ओइजा बोर्ड को लेकर संदेह रखता हूँ। इस उपकरण के उपयोग से प्राप्त अधिकांश सामग्री केवल एक या दोनों व्यक्तियों के अवचेतन मन को दर्शाती है। हालाँकि, कभी-कभी ओइजा बोर्ड किसी व्यक्ति के मानसिक स्तर को छूकर उसी तरह की प्रामाणिक जानकारी दे सकते हैं, जैसी कोई भविष्यवक्ता दे सकता है। इसलिए, श्रीमती आर. के अनुभवों को केवल इसलिए खारिज कर देना उचित नहीं होगा क्योंकि यह जानकारी ओइजा बोर्ड के माध्यम से प्राप्त हुई थी। परिस्थितियों, ओइजा बोर्ड चलाने वालों की पृष्ठभूमि और संचार के ऐसे माध्यमों का उपयोग करने की उनकी अनिच्छा को ध्यान में रखते हुए, मैं इस घटना के पीछे प्रचार या व्यर्थ की जिज्ञासा जैसे किसी भी छिपे हुए उद्देश्य को कारण नहीं मान सकता। दूसरी ओर, राष्ट्रपति

कैनेडी के निधन से संबंधित एक टेलीविजन कार्यक्रम देखने के बाद, सुझाव का प्रभाव भी हो सकता है। यदि ओइजा बोर्ड के माध्यम से प्राप्त जानकारी अधिक विशिष्ट होती, तो शायद मुझे इसे एक वास्तविक अनुभव मानने में संकोच नहीं होता। रिपोर्ट में ऐसा कुछ भी नहीं है जो धोखाधड़ी—चाहे जानबूझकर की गई हो या अनजाने में—का संकेत देता हो, लेकिन दी गई जानकारी में कुछ भी चौंकाने वाला नहीं है। निश्चित रूप से, यदि संदेश कैनेडी की ओर से आया होता, या यदि कैनेडी स्वयं उस मानसिक संपर्क के दूसरे छोर पर होते, तो कुछ ऐसी जानकारियाँ होतीं जो केवल उन्हें ही पता होतीं और जिनकी जाँच सुलभ तरीके से की जा सकती थी। निश्चित रूप से, कैनेडी को यह एहसास होता कि एक साधारण गृहिणी के लिए उनकी पत्नी से संपर्क करना कितना मुश्किल हो सकता है। इसलिए, मुझे लगता है कि पहचान के प्रमाण के रूप में कोई अन्य तरीका प्रस्तुत किया गया होता। हालाँकि, यह केवल एक अनुमान है। घटना की रिपोर्ट करने वालों की ईमानदारी के बावजूद, मुझे लगता है कि संचार की प्रामाणिकता पर संदेह करने का उचित कारण है।

* * *

राष्ट्रपति कैनेडी से संबंधित अधिकांश संदेश उनकी मृत्यु से जुड़े हैं और घटना से पहले या उसके दौरान मिली पूर्वसूचनाओं, सपनों, दृष्टियों और अन्य चेतावनियों के रूप में हैं। ऐसे अनुभवों की संख्या से संकेत मिलता है कि घटना घटित होने से पहले ही उसका आभास हो गया होगा, जिससे यह संकेत मिलता है कि कोई ऐसा नियम लागू था जिसे बदला नहीं जा सकता था, भले ही राष्ट्रपति कैनेडी को चेतावनी दी गई होती। वास्तव में, मुझे पूरा विश्वास है कि उन्हें कई चेतावनियाँ दी गई थीं, लेकिन उन्होंने उन्हें अनसुना करना चुना। मुझे नहीं लगता कि वे ऐसा क्यों करते—क्योंकि वे राष्ट्रपति थे और कैनेडी परिवार के स्वभाव में निहित नियति की गहरी समझ के कारण भी। निश्चित रूप से जीन डिक्सन हत्या से पहले कई बार राष्ट्रपति को चेतावनी देने की स्थिति में थीं। वाशिंगटन में कम प्रभावशाली अन्य लोगों ने शायद पत्र लिखे होंगे जो राष्ट्रपति तक कभी नहीं पहुँचे। निश्चित रूप से इन बातों को केवल यह कहकर टाला नहीं जा सकता कि एक सार्वजनिक व्यक्ति हमेशा हत्या के खतरे में रहता है, या कैनेडी ने देश और विदेश में कई लोगों के क्रोध को आमंत्रित किया था। यह तथ्यों से बिल्कुल मेल

नहीं खाता। पूर्वाभास अक्सर बेहद सटीक रहे हैं, जिनमें हत्या के तरीके, समय और स्वरूप का विस्तृत वर्णन किया गया है। यदि यह केवल राष्ट्रपति की अचानक मृत्यु की अस्पष्ट भविष्यवाणी होती, तो निश्चित रूप से यह कहा जा सकता था कि यह स्थिति के अध्ययन या वर्तमान समय की सामान्य समझ पर आधारित है। लेकिन ऐसा नहीं है। कई चौंकाने वाली भविष्यवाणियाँ कोई भी व्यक्ति नहीं कर सकता था, जब तक कि वह स्वयं हत्या की योजना में शामिल न हो।

श्रीमती रोज़ लापोर्टा ओहियो के क्लीवलैंड उपनगर में रहती हैं। वर्षों से उन्होंने अपनी अलौकिक दृष्टि (ईएसपी) क्षमताओं को विकसित किया है—कुछ स्वप्न अवस्था में और कुछ जागृत अवस्था में। उनके कुछ पूर्वाभासी अनुभव इतने विस्तृत हैं कि उन्हें संयोग के आधार पर, या किसी अन्य तर्कसंगत आधार पर समझाया नहीं जा सकता (यदि ऐसा कुछ होता भी है)। उदाहरण के लिए, 10 मई, 1963 को उन्होंने स्वप्न देखा कि उन्होंने कांच के टुकड़े वाली कोई चीज़ खाई है। उन्हें अपने मुंह में उसका एहसास भी हुआ, इतना स्पष्ट रूप से कि वे उसे थूकने लगीं और जाग गईं। उसी वर्ष 4 अक्टूबर को, उस विचित्र स्वप्न को भूल जाने के बाद, वे संयोगवश एक कुकी खा रही थीं। उसमें कांच के टुकड़े थे, और उनका स्वप्न अक्षरशः सच हो गया। सौभाग्य से, उन्होंने अपने मूल स्वप्न के बारे में कई गवाहों को बताया था, इसलिए वे इसे स्वयं के लिए लिखित रूप में सिद्ध कर सकीं।

श्रीमती लापोर्टा के कार्यस्थल पर स्मिथ नाम का एक अधीक्षक है, जिसका कार्यालय दूसरे शहर में है। उस व्यक्ति से उनका कभी कोई करीबी संपर्क नहीं था, इसलिए जब उन्हें नींद में एक आवाज सुनाई दी, "श्री स्मिथ का सोमवार को घर पर निधन हो गया," तो श्रीमती लापोर्टा को बहुत आश्चर्य हुआ। इस संदेश से स्तब्ध होकर उन्होंने अपने सहकर्मियों से इस बारे में बात की। यह घटना 18 मई, 1968 को घटी। उसी वर्ष 8 अक्टूबर को कंपनी में यह घोषणा की गई कि "श्री स्मिथ का सोमवार, 7 अक्टूबर को घर पर निधन हो गया।"

श्रीमती लापोर्टा की भविष्य की घटनाओं को भांपने की क्षमता 17 नवंबर, 1963 को राष्ट्रीय स्तर पर चर्चा का विषय बन गई। उन्होंने सपने में खुद को वाशिंगटन स्थित व्हाइट हाउस में एक अंधेरे, बरसाती दिन में देखा। हर बरामदे में बिस्तर लगे हुए थे। सपने में वह खुद को बारिश से बचने के लिए एक बिस्तर से दूसरे बिस्तर पर जाती हुई पाईं। वहां बहुत अफरा-

तफरी मची हुई थी और कई लोग इधर-उधर भाग रहे थे। ऐसा लग रहा था कि उनके हाथों और जेबों में बंदूकें हैं। अंत में, श्रीमती लापोर्टा ने सपने में किसी से पूछा कि क्या हो रहा है, और उन्होंने बताया कि वे सीक्रेट सर्विस के लोग हैं। सपने से जागने पर वह भयानक अफरा-तफरी और त्रासदी के माहौल से बहुत प्रभावित हुईं। यह घटना 22 नवंबर, 1963 को हुई हत्या से पांच दिन पहले की थी। यह सपना कुछ हद तक अब्राहम लिंकन के प्रसिद्ध सपने की याद दिलाता है, जिसमें उन्होंने खुद ईस्ट रूम में ताबूत पर अपना शव देखा था और पूछा था कि व्हाइट हाउस में कौन मरा है। मैंने उस सपने के बारे में अपनी किताब 'विंडो टू द पास्ट' में लिखा था।

* * *

मैरी होवे मैरीलैंड की रहने वाली 52 वर्षीय गृहिणी हैं, जिनमें थोड़ी-बहुत मानसिक शक्तियां हैं। हत्या से एक रात पहले उन्होंने एक सपना देखा जिसमें उन्होंने दो दुल्हनें देखीं जिनके चेहरे पुरुषों जैसे थे। जागने पर उन्होंने अपने पति और बच्चों को अपने सपने के बारे में बताया और उसका अर्थ समझाया कि बहुत जल्द किसी की मृत्यु होने वाली है। उन्हें लगा कि दो लोगों की मृत्यु एक साथ होगी। अगले दिन, कैनेडी और ओसवाल्ड उन्हीं "मृत्यु की दुल्हनों" में परिवर्तित हो गए जिन्हें उन्होंने अपने सपने में देखा था।

* * *

बर्था ज़ेल्किन लॉस एंजिल्स में रहती हैं। हत्या वाले दिन सुबह अचानक उन्होंने खुद से कहा, "अगर राष्ट्रपति कैनेडी की मृत्यु हो जाए तो हम क्या करेंगे?" उसी दोपहर यह घटना घटित हुई।

* * *

शिकागो की मूल निवासी, इकतालीस वर्षीय गृहिणी मैरियन कॉन्फालोनिएरी ने सचिव के रूप में काम किया है और अपने पति, जो एक ड्राफ्ट्समैन हैं, और दो बेटियों के साथ कैलिफोर्निया के एक आरामदायक घर में रहती हैं। वर्षों से उन्हें अनेक मानसिक अनुभव हुए हैं, जिनमें déjà vu की अनुभूति से लेकर मानसिक स्वप्न तक शामिल हैं। शुक्रवार, 22 नवंबर को हत्या

हुई और उसी दिन ओसवाल्ड को पकड़ लिया गया। अगली रात, शनिवार, 23 नवंबर को, श्रीमती कॉन्फालोनिएरी सारी हलचल से थकी हुई और रोती हुई बिस्तर पर गईं। रात के किसी समय उन्होंने स्वप्न देखा कि उन्होंने पुरुषों का एक समूह देखा, शायद एक दर्जन, सूट पहने हुए और कुछ ने टोपी लगा रखी थी। उन्हें ऐसा लग रहा था जैसे वह उनसे थोड़ा ऊपर तैर रही हों, नीचे के दृश्य को देख रही हों, और उन्होंने देखा कि वे बहुत पास-पास खड़े थे। फिर उन्होंने एक आवाज सुनी, "रूबी ने किया।" अगली सुबह उन्होंने उस स्वप्न पर कोई विशेष ध्यान नहीं दिया। रूबी नाम का उनके लिए, और उस समय देश में किसी और के लिए भी, कोई अर्थ नहीं था। जब उसने अपना रेडियो चालू किया और यह घोषणा सुनी कि ओसवाल्ड को रूबी नाम के एक व्यक्ति ने गोली मार दी है, तब उसे एहसास हुआ कि घटना घटने से कई घंटे पहले ही उसे आने वाली घटनाओं की झलक मिल गई थी।

* * *

एक और शख्स जिसने वास्तविकता से थोड़ा आगे भविष्य को भांप लिया था, वे थे प्रसिद्ध ब्रिटिश लेखक पेंड्रैगन, जिनका असली नाम एल. टी. एकरमैन था। अक्टूबर 1963 में उन्होंने लिखा, "अगर मैं अचानक पकड़ा गया तो हत्या के प्रयास या इससे भी बदतर स्थिति की संभावना से इनकार नहीं कर सकता।" उन्होंने राष्ट्रपति कैनेडी को पत्र लिखकर आग्रह किया कि वे अपनी सुरक्षा को और मजबूत करें, खासकर सार्वजनिक रूप से उपस्थित होने पर।

* * *

डॉ. रॉबर्ट जी. एक दंत चिकित्सक हैं जो रोड आइलैंड में रहते हैं। उन्हें जीवन भर मानसिक अनुभव होते रहे हैं, जिनमें से कुछ का वर्णन मैंने अन्यत्र किया है। जब ओसवाल्ड को अधिकारियों ने पकड़ा, तो डॉक्टर की पत्नी ने ज़ोर से पूछा कि उस आदमी का क्या होगा। बिना सोचे-समझे डॉ. जी. ने जवाब दिया, "उसे पुलिस स्टेशन में गोली मार दी जाएगी।" ये शब्द उनके मुँह से अचानक निकल गए। ऐसी किसी भी घटना की दूर-दूर तक कोई संभावना नहीं थी।

उन्हें यह पूर्वाभास भी था कि रॉबर्ट कैनेडी को गोली मार दी जाएगी, लेकिन उनका मानना था कि सीनेटर की मानसिक स्थिति कमजोर होकर भी जीवित रह सकती है। हम जानते हैं कि सीनेटर कैनेडी की मृत्यु हो गई। फिर भी, जैसा कि हममें से अधिकांश को याद होगा, गोलीबारी की घोषणा के बाद कुछ समय तक यह उम्मीद बनी रही कि सीनेटर की मानसिक स्थिति कमजोर होकर भी जीवित रह सकती है। न केवल डॉक्टरों को ऐसा लग रहा था, बल्कि इस संबंध में घोषणाएँ भी की गई थीं। इसलिए, यह पूरी तरह संभव है कि डॉ. जी ने न केवल घटना को, बल्कि उससे जुड़े विचारों और घटनाक्रमों को भी ध्यान में रखा हो।

पूर्वाभास की कार्यप्रणाली के बारे में अभी तक हमें बहुत कम जानकारी है, और यह पूरी तरह संभव है कि कुछ मानसिक शक्तियों वाले लोग भविष्य की सामान्य जानकारी प्राप्त करने से परे अपनी आंतरिक क्षमताओं को सटीक रूप से समायोजित न कर सकें। ऐसा लगता है कि यह अधिकांश माध्यमों की भविष्यवाणियों में सटीक समय निर्धारित करने में असमर्थता से संबंधित है।

* * *

सेसिलिया फॉन निकोल्स एक लेखिका हैं जो कैलिफोर्निया के ट्वेंटी-नाइन पाम्स में रहती हैं। जीवन भर उन्हें कई बार पूर्वाभास हुए हैं जो सच साबित हुए हैं और उन्होंने इस मानसिक शक्ति को अपने जीवन का एक स्वाभाविक हिस्सा मान लिया है। वह जॉन एफ. कैनेडी के राष्ट्रपति चुने जाने की प्रबल समर्थक थीं क्योंकि उन्हें लगता था कि उनके कैथोलिक धर्म ने उन्हें एक तरह से कमजोर बना दिया था। जब अंततः उन्हें राष्ट्रपति पद के लिए चुना गया, तो मिस निकोल्स बिल्कुल भी खुश नहीं थीं। मानो कोई बुरी आशंका उनके मन पर हावी हो रही हो, उन्होंने उनकी जीत की खबर को उदास और विपत्ति की भावना से ग्रहण किया। उस समय वह खुद को समझा नहीं पाईं कि ऐसा क्यों हुआ, लेकिन उनके मन में यह विचार आया कि जिस युवा को अभी-अभी चुना गया है, उसे मृत्युदंड दिया जा रहा है। उन्होंने समझाया, "जब भी मेरे मन में कोई अनपेक्षित बात आती है, तो मैं जानती हूं कि मैं उसकी उम्मीद कर सकती हूं।" “मुझे आमतौर पर ठीक से पता नहीं होता कि कैसे, कब और क्या होगा। इस मामले में मुझे लगा कि कोई मूर्ख उसके धर्म के कारण उसकी हत्या करने वाला है। मुझे हत्या

की आशंका बहुत पहले ही थी। शायद घरेलू समस्याओं के कारण, जब यह घटना हुई तो मुझे इसकी उम्मीद नहीं थी।"

रविवार, 24 नवंबर की सुबह, वह नाश्ता बना रही थी। उसका टेलीविजन चैनल 2 पर चल रहा था, लेकिन उसने चैनल 7 पर स्विच करने का फैसला किया क्योंकि उस चैनल पर डलास से सीधा प्रसारण हो रहा था। उद्घोषक कह रहा था कि किसी भी क्षण ओसवाल्ड को जेल से निकालकर डलास ले जाया जाएगा। कैमरे पर भीड़ के गंभीर चेहरे दिखाई दे रहे थे। मिस निकोल्स ने एक नज़र उस दृश्य पर डाली और अपनी माँ की ओर मुड़ी। "माँ, लिविंग रूम में आ जाओ। कुछ ही मिनटों में ओसवाल्ड को मार दिया जाएगा, और मैं यह दृश्य देखना नहीं भूलना चाहती।"

ऐसा कोई संकेत नहीं था जिससे इस तरह की कार्रवाई का संकेत मिले, लेकिन शब्द उसके मुंह से ऐसे निकले मानो किसी बाहरी शक्ति द्वारा प्रेरित हों। एक पल बाद, जिस घटना का डर था, वह घटित हो गई। गोली चलने की आवाज़ के साथ ही, उसने कुछ ऐसे शब्द स्पष्ट रूप से सुने जो उसने टीवी पर प्रसारित घटना के किसी भी पुन: प्रसारण में फिर कभी नहीं सुने। रूबी ने गोली चलाने के लिए अपना हाथ उठाते ही ये शब्द कहे। जैसे ही उसने ट्रिगर दबाना शुरू किया, शब्द और गोली की आवाज़ एक साथ सुनाई दी। बाद में मिस निकोल्स ने कई पुन: प्रसारण ध्यान से सुने, लेकिन उन्हें वे शब्द फिर कभी सुनाई नहीं दिए। किसी भी कमेंटेटर ने उनका ज़िक्र नहीं किया। हत्या के किसी भी विवरण में उनका उल्लेख नहीं है। फिर भी, मिस निकोल्स ने स्पष्ट रूप से रूबी को ओसवाल्ड को गोली मारते समय भी कुछ कहते हुए सुना था।

रूबी के बोले गए शब्दों को केवल उन्होंने ही सुना था, इस बात से मिस निकोल्स परेशान थीं। 1968 में, वह अपने कुछ दोस्तों के साथ ओसवाल्ड हत्याकांड पर चर्चा कर रही थीं, और उन्होंने फिर से वही बात बताई जो उन्होंने उस समय टेलीविजन पर सुनी थी। उस समूह में एक महिला थी जिसने सिर हिलाकर उनकी बात से सहमति जताई। उसने भी वही शब्द सुने थे। मिस निकोल्स को यह जानकर बहुत राहत मिली कि उनकी सोच में वह अकेली नहीं थीं। ओसवाल्ड को गोली मारते समय रूबी ने जो शब्द कहे थे, वे गुस्से से भरे थे: "यह लो, कमीने!"

इस प्रकार का मानसिक अनुभव, घटनाओं के घटित होने के दौरान या उनके आकार लेने के ठीक पहले, उनके साथ सच्चाई से जुड़ने के कहीं अधिक करीब है, बजाय इसके कि घटनाओं के घटित होने के बाद उनकी कुछ अधिक जटिल व्याख्याएँ की जाएँ।

* * *

सिनसिनाटी की दो शौकिया तांत्रिक, डोरोथी बैरेट और वर्जीनिया हिल, जो समय-समय पर अखबारों में भविष्यवाणियां प्रकाशित करती रही हैं, ने कैनेडी हत्याकांड के संबंध में भी कुछ घोषणाएं की थीं। मेरी मुलाकात सिनसिनाटी में जॉन स्ट्रैडर के घर पर हुई थी, जहां वे एडगर केसी की तरह भविष्यवाणियां करती हुई प्रतीत हुईं, क्योंकि वे शरीर के कुछ विशेष अंगों की ओर इशारा कर रही थीं जो बीमारी से प्रभावित हो सकते थे। हाल ही में मेरी मुलाकात वर्जीनिया हिल से हुई और मुझे एडगर केसी की शख्सियत का सामना करना पड़ा, जिसे वह वर्जीनिया बीच के प्रसिद्ध भविष्यवक्ता मानती हैं। उनके माध्यम से बोलते हुए, मैंने कथित एडगर केसी से प्रश्न पूछे और नोट्स बनाए, जिन्हें मैंने बाद में केसी के बेटे, ह्यूग लिन केसी से सत्यता की जांच करने के लिए कहा। अफसोस की बात है कि अधिकांश उत्तर गलत साबित हुए, जिससे एडगर केसी की पहचान की संभावना बहुत कम हो जाती है। फिर भी, वर्जीनिया हिल में मानसिक क्षमता है और उनकी कुछ भविष्यवाणियां सच हुई हैं।

4 दिसंबर 1967 को, सिनसिनाटी इन्क्वायरर ने अगले वर्ष के लिए उनकी कई भविष्यवाणियाँ प्रकाशित कीं। इनमें से एक चौंकाने वाला बयान यह था कि वर्जीनिया की आध्यात्मिक मार्गदर्शक के अनुसार, कैनेडी हत्याकांड में सोलह लोग शामिल थे और उनकी नेता एक महिला थी। दावा किया गया कि ओसवाल्ड ने राष्ट्रपति की हत्या नहीं की, बल्कि एक पुलिसकर्मी (जो अब मृत है) ने की थी।

इस संदर्भ में यह उल्लेखनीय है कि शोधकर्ता शेरमन स्कोल्निक ने अप्रैल 1970 में राष्ट्रीय अभिलेखागार एवं अभिलेख सेवा के समक्ष कैनेडी हत्याकांड से संबंधित कुछ दस्तावेजों को जारी करने के लिए मुकदमा दायर किया था। विशेष रूप से, स्कोल्निक ने दावा किया था कि इससे पहले शिकागो में एक हत्या की साजिश रची गई थी जिसमें ओसवाल्ड, थॉमस आर्थर वैली नामक एक साथी और तीन-चार अन्य लोग शामिल थे। राष्ट्रपति की हत्या की उनकी

योजना को तब छोड़ना पड़ा जब खेल से एक दिन पहले वैली को एक मामूली यातायात उल्लंघन के आरोप में पकड़ा गया। टाइम पत्रिका के 20 अप्रैल, 1970 के लेख के अनुसार, स्कोल्निक का दृढ़ विश्वास था कि ओसवाल्ड, वैली और कई अन्य लोग हत्या की साजिश में एक साथ शामिल थे।

* * *

सीनेटर रॉबर्ट कैनेडी की हत्या के मामले में स्थिति कुछ अलग है। सबसे पहले तो, बहुत कम लोगों को लगा था कि रॉबर्ट कैनेडी को जान का खतरा है, जबकि राष्ट्रपति जॉन एफ. कैनेडी हमेशा राजनीतिक आक्रोश के शिकार होते थे—जैसा कि सभी राष्ट्रपतियों के साथ होता है। सीनेटर की स्थिति उतनी शक्तिशाली नहीं थी। यह सच है कि उनके भी दुश्मन थे, जैसे सभी राजनेताओं के होते हैं। लेकिन सिरहान सिरहान द्वारा की गई हत्या उनके भाई की हत्या से कहीं अधिक चौंकाने वाली थी। इसलिए यह आश्चर्य की बात है कि रॉबर्ट कैनेडी के बारे में भी इतनी सारी पूर्वसूचना देने वाली सामग्री मौजूद है। एक तरह से, यह सामग्री और भी अधिक प्रमाणिक है क्योंकि ऐसी घटना घटित होने की संभावना बहुत कम थी।

श्रीमती एलेन जोन्स सैन फ्रांसिस्को में रहती हैं। उनके पति एक सेवानिवृत्त व्यवसायी हैं; उनके बहनोई हार्पर एंड रो प्रकाशन फर्म के प्रमुख थे; उन्हें मतिभ्रम नहीं होता। मैंने उनके कुछ मानसिक अनुभवों का वर्णन अन्यत्र किया है। रॉबर्ट कैनेडी की हत्या से कुछ समय पहले उन्हें व्हाइट हाउस के अग्रभाग का एक दृश्य दिखाई दिया। पहले तो उन्होंने उसे उसी रूप में देखा जैसा वह था और अभी भी है, और फिर अचानक पूरा अग्रभाग उनकी आँखों के सामने ढहता हुआ प्रतीत हुआ। उनके लिए इसका अर्थ था व्हाइट हाउस से जुड़े किसी व्यक्ति की मृत्यु। कुछ समय बाद ही सीनेटर की हत्या हो गई।

* * *

घटना से कुछ महीने पहले, वाशिंगटन की प्रसिद्ध भविष्यवक्ता जीन डिक्सन लॉस एंजिल्स के होटल एम्बेसडर में भाषण दे रही थीं। उन्होंने कहा था कि रॉबर्ट कैनेडी "इसी होटल में एक त्रासदी का शिकार होंगे।" आठ महीने बाद सीनेटर की हत्या वहीं कर दी गई।

* * *

लोरेन कैसवेल नाम की एक युवा कैलिफोर्नियाई महिला ने सीनेटर कैनेडी की हत्या से एक रात पहले एक सपना देखा। सपने में उसने वास्तविक हत्या को देखा, जैसा कि बाद में घटित हुआ। अगली सुबह, उसने अपने रूममेट को अपने बुरे सपने के बारे में बताया, जो पहले भी कई बार ऐसी घटनाओं की गवाह रह चुकी थी जिनमें उसे मानसिक रूप से पूर्वाभास हुआ था।

* * *

एलेन रॉबर्ट्स एक सचिव के रूप में काम करती हैं और जिन राजनीतिक कार्यों का वे समर्थन करती हैं, उनके लिए अंशकालिक स्वयंसेवक के रूप में भी सेवाएं देती हैं। सीनेटर रॉबर्ट कैनेडी के चुनाव अभियान के दौरान उन्होंने मुख्यालय में कुछ समय स्वेच्छा से अपनी सेवाएं दीं। सुश्री रॉबर्ट्स रेवरेंड ज़ेनोर के हॉलीवुड स्पिरिचुअलिस्ट टेम्पल की सदस्य हैं। रेवरेंड ज़ेनोर समाधि की अवस्था में अगाशा की वाणी में बोलते हैं, जो एक उच्च गुरु हैं और भविष्य की घटनाओं की भविष्यवाणी भी कर सकते हैं। एक बार, जॉन एफ. कैनेडी की हत्या से बहुत पहले, अगाशा ने रेवरेंड ज़ेनोर के माध्यम से कहा था, “एक नहीं, बल्कि दो हत्याएं होंगी। वह काफी युवा होंगे। जीत लगभग उनकी मुट्ठी में होगी, लेकिन अगर इसे रोका नहीं जा सका, तो पदभार ग्रहण करने से ठीक पहले उनकी मृत्यु हो जाएगी।”

हत्या वाली रात एलेन रॉबर्ट्स जल्दी सो गईं। जब उनकी नींद खुली तो उन्होंने देखा कि रॉबर्ट कैनेडी और राष्ट्रपति कैनेडी आपस में बात कर रहे हैं। जॉन एफ. कैनेडी ने अपने भाई के कंधों पर हाथ रखा हुआ था और उन्होंने सुना कि वे कह रहे थे, "बॉबी, तुमने कर दिखाया—मुश्किल से।" एक उदास मुस्कान के साथ वे चले गए। मिस रॉबर्ट्स ने इसका मतलब यह निकाला कि उम्मीदवार रॉबर्ट कैनेडी को चुनाव प्रचार के दौरान कितनी तकलीफें झेलनी पड़ी थीं—पत्थर फेंके गए, अपमान किया गया, गालियां दी गईं और उन्हें खींचते समय उनके हाथ सचमुच सूज गए थे। उन्होंने इसे कभी भी किसी और बुरी बात के रूप में नहीं देखा। अगले दिन उन्हें अपने सपने का असली मतलब समझ आया।

* * *

श्रीमती लुईस एच. मैकिबेल के साथ एक अजीब घटना घटी। 4 जून, 1968 की शाम को वह और उनकी दस वर्षीय पोती टेलीविजन देख रही थीं। अचानक छोटी बच्ची उछल पड़ी, अपने हाथों को अपनी छाती पर रखा और सदमे में बोली, “रॉबर्ट कैनेडी को गोली मार दी गई है। गोली लग गई है, माँ।” उसकी बहनों और माँ ने उसे चिढ़ाते हुए कहा कि अगर यह सच होता तो खबरों में इसका जिक्र जरूर होता। कुछ देर बाद बात वहीं खत्म हो गई। अगली सुबह, 5 जून को, जब परिवार का रेडियो चालू किया गया, तो गोलीबारी की खबर आई। चौंककर परिवार ने छोटी बच्ची की ओर देखा, जो केवल सिर हिलाकर बोली, “हाँ, मुझे पता है। मुझे कल रात ही पता चल गया था।”

* * *

श्रीमती डॉन चोर्ली मध्य ओहियो में रहती हैं। मूल रूप से इंग्लैंड की रहने वाली, उन्होंने अपने पति के साथ दक्षिण अफ्रीका में कई वर्ष बिताए हैं, और अपने जीवन में कई बार उन्हें मानसिक अनुभव हुए हैं। 1968 के चुनाव अभियान के दौरान वह और उनके पति, कॉलिन चोर्ली, यूजीन मैकार्थी के लिए काम कर रहे थे, लेकिन जब रॉबर्ट कैनेडी ने न्यू हैम्पशायर में प्राथमिक चुनाव जीता तो उन्हें इससे भी बहुत खुशी हुई। चुनाव की रात, वह देर तक जागती रहीं। वह बहुत उत्साहित थीं और उन्हें लगा कि उत्तेजना के कारण उन्हें नींद नहीं आएगी, लेकिन उनकी उम्मीदों के विपरीत, आधी रात के आसपास उन्हें तुरंत गहरी नींद आ गई। उस रात उन्होंने एक विचित्र सपना देखा।

मैं अपने घर के निचले तल के बीच वाले कमरे में खड़ी थी। मुझे अपने चारों ओर एक अजीब सा माहौल महसूस हो रहा था और मैं बहुत अकेली थी। अचानक मेरे सिर के बाईं ओर, पीछे की तरफ, दर्द हुआ। मेरे मुंह के अंदर का हिस्सा टूटने लगा और मुंह से खून बहने लगा। मैंने टेलीफोन तक पहुंचने की कोशिश की, लेकिन मेरे हाथ-पैर मेरी इच्छा का जवाब नहीं दे रहे थे; सब कुछ बेसुध था। किसी तरह मैं टेलीफोन तक पहुंची और रिसीवर उठाया। बड़ी मुश्किल से मैंने ऑपरेटर का नंबर डायल किया, और मुझे एक आवाज सुनाई दी जो पूछ रही थी कि क्या मुझे मदद चाहिए। मैंने 'डॉक्टर को बुलाओ' कहने की कोशिश की, लेकिन शब्द बुरी तरह लड़खड़ाते हुए निकले। फिर मुझे एहसास हुआ कि मैं मर रही हूं और मैंने कहा, 'हे भगवान, मैं मर रही हूं,' और बेहोश हो गई। मैं इतनी जोर से चिल्ला रही थी कि मेरे पति, जो

गहरी नींद में सोते हैं, जाग गए। सपने से बाहर आने के बाद भी, मैं बहुत उदास महसूस कर रही थी। मेरे पति, कॉलिन ने समय देखा। समय के बदलाव को ध्यान में रखते हुए, यह ठीक वही मिनट था जब रॉबर्ट कैनेडी का निधन हुआ था। गोली मारना।"

* * *

कैलिफ़ोर्निया के नॉर्थ हॉलीवुड की जिल टैगार्ट कई सालों से मेरे साथ एक उभरती हुई माध्यम के रूप में काम कर रही हैं। पेशे से लेखिका और मॉडल, वह अपनी सबसे बड़ी आलोचक रही हैं और अपनी रिपोर्ट में ऐसी किसी भी बात का ज़िक्र नहीं करतीं जिसका कोई पुख्ता सबूत न हो। 14 मई, 1968 को, वह कैलिफ़ोर्निया के वैन नुय्स में सीनेटर रॉबर्ट कैनेडी के सम्मान में आयोजित एक रैली में जाना चाहती थीं। चूंकि रैली उनके घर से सिर्फ़ तीन ब्लॉक दूर थी, इसलिए उनके लिए पैदल जाना आसान था। लेकिन शाम होते-होते उन्होंने न जाने का फ़ैसला कर लिया। पहली बात तो यह थी कि वह सीनेटर को पसंद नहीं करती थीं और उन्हें बड़ी भीड़ से नफ़रत थी, लेकिन सबसे ज़्यादा उन्हें यह आशंका थी कि कार में बैठे-बैठे सीनेटर के साथ कुछ हो सकता है। उस शाम समाचार में उन्होंने सुना कि किसी उड़ती हुई चीज़ से सीनेटर के सिर पर चोट लगी है और वह कार में घुटनों के बल गिर पड़े हैं। समाचार में यह भी बताया गया कि वह ठीक हैं। हालांकि, जिल को लगा कि चोट बताई गई चोट से कहीं ज़्यादा गंभीर है और सीनेटर की सोचने-समझने की क्षमता पर इसका असर पड़ेगा। “हो सकता है इससे उनकी जान को खतरा हो,” उन्होंने बताया। “मैं जानती हूँ कि मंदिर बहुत ही पेचीदा जगहें होती हैं।” जब मैंने उनसे और जानकारी लेने की कोशिश की, तो उन्होंने बताया कि उन्हें रॉबर्ट कैनेडी के लिए बहुत दुख हुआ था, लेकिन उनके तार्किक दिमाग ने उम्मीदवार को लगी मामूली चोट पर ज़्यादा ध्यान नहीं दिया। कुछ ही समय बाद, ज़ाहिर है, सीनेटर की मौत हो गई—पत्थर फेंके जाने से नहीं, बल्कि एक हत्यारे की गोली से। जिल टैगार्ट ने किसी तरह दोनों घटनाओं को एक साथ महसूस किया था।

* * *

सत्रह वर्षीय डेबी गौरले, जो एक हाई स्कूल की छात्रा होने के साथ-साथ घोड़ों को प्रशिक्षण देने का काम भी करती हैं, कई वर्षों से अलौकिक अंतर्दृष्टि (ESP) का अनुभव कर रही हैं।

रॉबर्ट कैनेडी की हत्या से दो दिन पहले उन्होंने डेबी कोर्सो नाम की एक सहेली से कहा था कि सीनेटर को बहुत जल्द गोली मार दी जाएगी। उस समय सीनेटर की जान पर हमले की आशंका जताने का कोई तार्किक कारण नहीं था।

* * *

जॉन लोंड्रेन एक मशीन फिटर हैं, जिनकी उम्र अट्ठाईस वर्ष है और वे अपने परिवार के साथ हार्टफोर्ड, कनेक्टिकट में रहते हैं। उन्हें अक्सर ऐसे सपने आते हैं जिनमें ऐसी घटनाएँ दिखाई देती हैं जो बाद में सच हो जाती हैं। मार्च 1968 में उन्हें एक ऐसा सपना आया जिसमें उन्होंने सीनेटर रॉबर्ट कैनेडी को उद्घाटन भाषण देते समय गोली मारते हुए देखा। उन्होंने तुरंत अपनी पत्नी और पिता को सपने के बारे में बताया और अप्रैल में सीनेटर को एक पत्र भी लिखा, लेकिन चुनाव के बाद तक उसे न भेजने का फैसला किया। उनके सपने में हत्यारे और वहाँ मौजूद दो लोगों के नाम भी स्पष्ट रूप से दिखाई दिए। लेकिन श्री लोंड्रेन ने सपने को नज़रअंदाज़ कर दिया क्योंकि वे जानते थे कि रूजवेल्ट ग्रियर और राफे जॉनसन खेल जगत की हस्तियाँ थीं। उन्हें लगा कि एक राजनीतिक उम्मीदवार की हत्या से जुड़े नाटक में उनका कोई स्थान नहीं होगा। फिर भी, वास्तव में उन्हीं दो लोगों ने हत्यारे को काबू किया।

इसके बाद एक सपने में उन्होंने न्यूयॉर्क के सेंट पैट्रिक कैथेड्रल को सीनेटर कैनेडी के अंतिम संस्कार के दौरान देखा। लोग दहशत में इधर-उधर भाग रहे थे और उन्हें लगा कि कोई बम धमाका या गोलीबारी हुई है। श्री लोंड्रेन अपने दूसरे सपने से इतने परेशान थे कि उन्होंने अपने पिता से, जिनका वाशिंगटन में एक मित्र था, कुछ पूछताछ करने को कहा। अंततः यह जानकारी एक गुप्त सेवा अधिकारी को दी गई जो अलौकिक शक्तियों पर विश्वास करता था। न्यूयॉर्क शहर के बम निरोधक दस्ते को बुलाया गया और कैथेड्रल के आसपास सुरक्षा दोगुनी कर दी गई। राष्ट्रपति के अंतिम संस्कार के लिए कैथेड्रल पहुंचने से पंद्रह मिनट पहले एक खाली बंदूक वाले व्यक्ति को पकड़ा गया। इस प्रकार श्री लोंड्रेन का दूसरा सपना न केवल प्रमाणिक साबित हुआ बल्कि एक और अपराध को रोकने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

* * *

एक और शौकिया भविष्यवक्ता एलेन मॉर्गनेली थीं, जो लॉस एंजिल्स की एक गृहिणी थीं। मई 1967 में उन्होंने लिखित रूप में भविष्यवाणी की कि राष्ट्रपति जॉनसन की हत्या 4 जून को होगी और यह भविष्यवाणी अन्य भविष्यवाणियों के साथ अपने भाई लुईस ओलसन को भेज दी। वास्तव में उन्होंने जो सुना था वह था "राष्ट्रपति की हत्या 4 जून"। खैर, राष्ट्रपति जॉनसन की हत्या तो नहीं हुई, लेकिन 5 जून 1968 को राष्ट्रपति पद के उम्मीदवार रॉबर्ट कैनेडी की गोली मारकर हत्या कर दी गई।

सन् 1963 के अंत में टेनेसी के सोलह वर्षीय किशोर जॉन हम्फ्रीज़ को एक दिव्य दर्शन हुआ। यह घटना तब घटी जब वह बिस्तर पर लेटा हुआ था, लेकिन पूरी तरह सोया नहीं था। जब उसने अपने कमरे के फर्श की ओर देखा, तो उसे कई कटे हुए सिर दिखाई दिए। उनमें से एक सिर राष्ट्रपति कैनेडी का था, जिनकी अभी-अभी हत्या हुई थी। बाकी दो सिरों को वह उस समय पहचान नहीं पाया। बाद में उसे पता चला कि वे किसके थे। एक सिर रॉबर्ट कैनेडी का था; दूसरा मार्टिन लूथर किंग का। दर्शन के समय उसे ऐसा महसूस हुआ कि तीनों पुरुषों को सिर में गोली मार दी जाएगी। उसे दो अन्य सिर भी याद थे—एक फ्रांसीसी का और एक बहुत बड़े अंग्रेज का—लेकिन उनके नाम याद नहीं थे।

* * *

16 अप्रैल, 1968 को, श्रीमती जोन होल्ट नाम की एक कनाडाई महिला ने पीटर फेयरली द्वारा संचालित ईवनिंग स्टैंडर्ड के पूर्वाभास ब्यूरो को लिखा, जो उनके विज्ञान संपादक थे, "रॉबर्ट कैनेडी अपने भाई के नक्शेकदम पर चलेंगे और इसी तरह के खतरे का सामना करेंगे।"

"बहुत जल्द कैनेडी परिवार में एक दुखद घटना घटने वाली है," ब्रिटिश माध्यम मिनी ब्रिजेस ने मई 1968 के अंतिम सप्ताह में एक सार्वजनिक बैठक में कहा।

* * *

मुझे तो यह स्पष्ट लगता है कि सीनेटर कैनेडी की मृत्यु भी एक पूर्वनियोजित योजना का हिस्सा थी, चाहे हम इसे मानें या न मानें। अक्सर, जो लोग इस दुनिया से जा चुके होते हैं, वे जानते हैं कि इस धरती पर क्या होने वाला है, और यदि वे इसे रोक नहीं पाते, तो कम से कम वे आने

वाले लोगों को परिस्थितियों के अनुसार यथासंभव सहज रूप से इस परिवर्तन से गुजरने में मदद करने के लिए तैयार रहते हैं।

आयरलैंड के कई लोगों के लिए, कैनेडी परिवार महान नायक हैं। रॉबर्ट कैनेडी की मृत्यु से संबंधित एक और मानसिक अनुभव की रिपोर्ट करते समय इन दोनों विचारों को ध्यान में रखा जाना चाहिए।

* * *

शिकागो, इलिनोइस की रहने वाली 53 वर्षीय सचिव मार्गरिट एम. स्मिथ, रॉबर्ट कैनेडी का अंतिम संस्कार टेलीविजन पर देख रही थीं। जब उनके ताबूत को चर्च से शव वाहन में ले जाया जा रहा था, तो उन्होंने देखा कि ताबूत के दोनों ओर कुछ पुरुष खड़े थे, जिनकी पीठ ताबूत की ओर थी। उन्होंने सादे भूरे रंग के बिजनेस सूट पहने थे और भूरे रंग की टोपी लगा रखी थी। ये पुरुष बहुत गंभीर दिख रहे थे और उनकी निगाहें झुकी हुई थीं। उन्हें वे आयरलैंड के मूल निवासी लग रहे थे। दरअसल, उनके सूट देसी लग रहे थे। जब ताबूत आगे बढ़ा, तो कतार में खड़े एक व्यक्ति ने अपना सिर घुमाकर ताबूत की ओर देखा। मिस स्मिथ को लगा कि सम्मान गार्ड में खड़े किसी व्यक्ति को ऐसा नहीं करना चाहिए, क्योंकि उन्होंने भूरे रंग के सूट वाले व्यक्ति को सम्मान गार्ड का हिस्सा समझा था। तभी उन्हें याद आया कि पुरुषों की दोनों कतारें थोड़ी धुंधली, हल्के भूरे रंग की दिख रही थीं। लेकिन उन्होंने इसे टेलीविजन की वजह माना, हालांकि बाकी आकृतियाँ बिल्कुल स्पष्ट थीं। बाद में उन्होंने दूसरे शहर में रहने वाली अपनी एक सहेली से अंतिम संस्कार के बारे में बात की, जिसने भी वही प्रसारण देखा था। उसने अपनी सहेली से पूछा कि क्या वह जानती है कि भूरे रंग के कपड़े पहने हुए लोग कौन थे। उसकी सहेली ने भूरे रंग के कपड़े पहने हुए लोगों को नहीं देखा था, और न ही उन लोगों में से किसी ने देखा था जिनसे उसने बाद में उनके बारे में पूछा। जल्द ही मिस स्मिथ को यह स्पष्ट हो गया कि केवल उसने ही उन आत्माओं को देखा था जिन्हें वह कैनेडी परिवार के आयरिश पूर्वज मानती है, जो उचित तरीके से अंतिम श्रद्धांजलि देने आए थे।

* * *

इंडियाना के एक शौकिया भविष्यवक्ता, जिनके पास भविष्यवाणियों का लंबा इतिहास है, जिनमें से कुछ सच हो चुकी हैं जबकि कुछ भविष्य में होनी बाकी हैं, ने भी कैनेडी परिवार के बारे में जानकारी देने में योगदान दिया है। 7 अगस्त, 1968 को डी. मैक्लिंटिक ने कहा था कि जैकी कैनेडी की शादी होगी। उस समय ऐसी कोई घटना होने की संभावना नहीं थी। 21 सितंबर, 1968 को श्री मैक्लिंटिक ने कहा कि कैनेडी के बेटों में से एक का अपहरण करने का प्रयास होगा। उसी समय उन्होंने यह भी भविष्यवाणी की कि एफबीआई और सैन्य भर्ती विभाग के प्रमुखों को जल्द ही बदल दिया जाएगा। "जे. ई. हूवर का कार्यकाल समाप्त होने वाला है। साथ ही सैन्य भर्ती विभाग के निदेशक, हर्शे, भी पद छोड़ने वाले हैं।"

* * *

डी. मैक्लिंटिक ने 18 जनवरी, 1969 को भविष्यवाणी की थी कि एडवर्ड कैनेडी 1972 में राष्ट्रपति पद के लिए चुनाव नहीं लड़ेंगे क्योंकि संभवतः उन्हें अभी भी अपने भतीजों की चिंता है। श्री मैक्लिंटिक ने यह स्पष्ट नहीं किया कि सीनेटर कैनेडी को अपने भतीजों की चिंता क्यों होनी चाहिए।

* * *

हालांकि, एक अन्य शौकिया ज्योतिषी, रॉबर्ट ई. ने ऐसा किया। 10 मार्च, 1970 को, उस ज्योतिषी शिक्षक ने कहा, "मैंने पहले भी बताया था कि ईस्टर के आसपास एक और कैनेडी, सीनेटर रॉबर्ट कैनेडी के बेटों में से एक, वर्जीनिया के तट पर एक नौका दुर्घटना में डूब जाएगा, और उसका शव 1 अप्रैल से 5 अप्रैल के बीच एक कीचड़ भरे उथले स्थान पर मिलेगा, जिसके नाम में 'मील' शब्द आता है। हालांकि, लगभग एक महीने के भीतर यह बात सामने आ जाएगी कि सीनेटर टेड कैनेडी ने अपने भतीजे को बचाने की कोशिश की थी, जो वास्तव में चैपाक्विडिक द्वीप पर लड़की के साथ कार में था। सीनेटर का इसमें कोई हाथ नहीं था, और जब यह सबूत सामने आएगा तो कैनेडी की लोकप्रियता आसमान छू जाएगी।" स्वाभाविक रूप से, दोनों ज्योतिषी एक-दूसरे को नहीं जानते थे, और न ही उनका कभी एक-दूसरे से कोई संपर्क हुआ था।

श्री मैक्लिंटिक को हल्के में नहीं लिया जा सकता, जब हम इस बात पर विचार करते हैं कि 18 जनवरी, 1969 को उन्होंने भविष्यवाणी की थी कि इंग्लैंड में अगले चुनाव में लेबर पार्टी सत्ता से बाहर हो जाएगी; जोसेफ कैनेडी की मृत्यु हो जाएगी—जो कुछ ही समय बाद हुई भी; वियतनाम में युद्ध जारी रहेगा और कुछ अमेरिकी सैनिकों को वापस बुला लिया जाएगा, लेकिन बहुत अधिक नहीं; यात्रियों को ले जा रहे इजरायली विमानों पर और हमले होंगे; और जॉर्डन का सिंहासन फिर से डगमगाएगा।

* * *

फ्रेडरिक स्टोसेल एक अलग तरह के भविष्यवक्ता हैं। कॉलेज से स्नातक और नौसेना के पूर्व लड़ाकू अधिकारी, वे न्यूयॉर्क में अपनी खुद की व्यावसायिक फर्म चलाते हैं, जो बाजार विश्लेषण और वित्तपोषण में विशेषज्ञता रखती है। श्री स्टोसेल क्रिश्चियन साइंस के छात्र हैं और जीवन भर उन्हें मानसिक अनुभव होते रहे हैं। मैंने उनकी विश्व के भविष्य से संबंधित भविष्यवाणियों के बारे में 'द प्रोफेट्स स्पीक' नामक पुस्तक में लिखा है। हालांकि, कैनेडी परिवार, विशेष रूप से टेड कैनेडी के भविष्य से उनका जुड़ाव, अन्य घटनाओं से संबंधित उनकी भविष्यवाणियों की तुलना में कहीं अधिक विस्तृत है। मई 1967 में उन्होंने "राष्ट्रपति कैनेडी को गोली क्यों मारी गई?" शीर्षक से एक लेख लिखा था। श्री स्टोसेल के अनुसार, इसमें एक कम्युनिस्ट साजिश शामिल थी। श्री स्टोसेल अपने विचारों को तार्किक निष्कर्ष, मौजूदा राजनीतिक वास्तविकताओं के मूल्यांकन और अंतर्ज्ञान और व्यक्तिगत अंतर्दृष्टि के मिश्रण पर आधारित करते हैं, जो छठी इंद्रिय और मानसिक छापों तक फैली हुई है।

“कुछ बढ़ते सबूतों से संकेत मिलता है कि सीनेटर टेड कैनेडी को इस घटना के लिए फंसाया गया हो सकता है। किसने फंसाया यह निश्चित नहीं है, लेकिन हमें संगठित अपराध का हाथ होने का संदेह है।” फ्रेडरिक स्टोसेल ने फरवरी 1970 में यह बात कही थी। मैंने उसी वर्ष 3 अप्रैल को अपने घर पर उनसे इस विषय पर चर्चा की। उन्होंने जो कुछ बताया, उसमें से कुछ बातें रिकॉर्ड पर न रखने योग्य हैं और मुझे उनके अनुरोध का सम्मान करना होगा। अन्य विवरण यहां बताए जा सकते हैं। फ्रेडरिक स्टोसेल की पृष्ठभूमि और चैप्पाक्विडिक घटना के समय महत्वपूर्ण बयान देते समय उनके बेहद सतर्क रवैये को देखते हुए, मुझे लगा कि शायद वे कुछ ऐसे पहलू बता सकते हैं जिन पर पहले किसी ने चर्चा न की हो।

“तो कैनेडी और उस लड़की के बारे में आपकी अंतरात्मा क्या कहती है? क्या यह एक संयोग था?” मैंने पूछा। मैंने “मानसिक” शब्द के बजाय “अंतर्ज्ञान” शब्द का प्रयोग करना उचित समझा, हालाँकि मेरा असली मतलब वही था।

श्री स्टोसेल ने एक पल के लिए इस पर विचार किया। "मुझे नहीं लगता कि यह एक दुर्घटना थी। मुझे लगता है कि यह एक सोची-समझी साजिश थी, ऐसा कह सकते हैं।"

“आखिर होना क्या था?”

"इसका मकसद टेडी कैनेडी को राजनीतिक रूप से शर्मिंदा करना था। वे बस उन्हें एक राजनीतिक हस्ती के रूप में खत्म करने की कोशिश कर रहे थे।"

"क्या आपको लगता है कि उसे इस बात की जानकारी थी कि क्या हुआ था—कि लड़की डूब गई थी?"

“नहीं, मैं ऐसा नहीं मानता। मुझे लगता है कि जब उसने कहा कि वह सदमे की स्थिति में था, तो वह सच कह रहा था।”

“उन्होंने इस दुर्घटना को किस प्रकार अंजाम दिया?”

“मेरा अनुमान है कि उसने शराब पी रखी होगी, लेकिन सच कहूँ तो यह सिर्फ एक अनुमान है। मुझे लगता है कि वे सही मौका मिलने तक इंतजार करते। मुझे यकीन है कि ऐसे आदमी पर बहुत कड़ी नजर रखी जाती होगी।”

"क्या कैनेडी के भविष्य के बारे में आपकी कोई राय है?"

मुझे लगता है कि टेड कैनेडी 1972 में राष्ट्रपति पद के लिए बहुत मजबूत दावेदारी पेश करेंगे। मुझे नहीं लगता कि वे चुने जाएंगे।

"क्या आपको उस पर होने वाले किसी भी हमले के बारे में कोई सहज आशंका है?"

मुझे सहज रूप से यह आभास हो रहा था कि नागरिक अधिकार कार्यकर्ताओं द्वारा टेड कैनेडी पर हमला किया जाएगा। दूसरे शब्दों में, मुझे लगता है कि उन पर हमला इसलिए किया जाएगा ताकि नागरिक अधिकारों को लेकर हंगामा खड़ा हो सके। निःसंदेह टेड कैनेडी ही नागरिक अधिकारों के समर्थक उम्मीदवार होंगे।

"जब आप 'हमला' कहते हैं, तो क्या आप और अधिक स्पष्ट बता सकते हैं?"

मुझे लगता है कि यह हत्या का प्रयास होगा; जानबूझकर गोली मारकर हत्या की जाएगी।

“सफल रहा या नहीं?”

“नहीं, असफल। यह सहज प्रवृत्ति है।”

"यह घटना भविष्य में कितने समय बाद घटित होगी?"

"मुझे लगता है कि यह 1972 तक हो जाएगा। मुझे ठीक-ठीक समय का तो पता नहीं है, लेकिन मुझे लगता है कि जब उन्हें उम्मीदवार के रूप में तैयार किया जा रहा होगा तब ऐसा होगा।"

"जहां तक अन्य कैनेडी परिवार के सदस्यों का सवाल है, क्या आपको कभी राष्ट्रपति या बॉबी कैनेडी के बारे में कोई दर्शन, धारणा, सपने या अन्य भावनाएं आईं?"

"दरअसल, मुझे यह बहुत प्रबल अनुभूति थी—वास्तव में मैंने कई लोगों को लिखा था—कि 1964 में वह चुनाव में उम्मीदवार नहीं होंगे। मुझे यह दृढ़ आभास था कि किसी न किसी कारण से जॉन एफ. कैनेडी जीवित नहीं रहेंगे।"

“आपने इसे कब लिखा था?”

"यह पत्र 1962 में न्यू हैम्पशायर के कांग्रेसी सदस्य पर्किन्स बास को लिखा गया था।"

"क्या जॉन एफ कैनेडी के असली हत्यारे और पूरी साजिश के बारे में आपकी कोई राय है, यदि कोई हो तो?"

“हत्या होते ही, उन तीन दिनों में जब हम सब टीवी से चिपके हुए थे, मुझे अंदर ही अंदर यह यकीन हो गया था कि ओसवाल्ड ने उसे नहीं मारा। मेरा यह अनुमान तुरंत और पुख्ता हो गया, क्योंकि ओसवाल्ड ने जॉन एब्ट नाम के एक वकील की मांग की थी, जो कम्युनिस्ट पार्टी का वकील था। मेरी सहज भावना यही थी कि इसमें कास्त्रो का बहुत बड़ा हाथ था।”

"रॉबर्ट कैनेडी की हत्या से पहले, क्या आपको जरा भी अंदाजा था कि ऐसा होने वाला है?"

“मेरी पत्नी ने मुझे याद दिलाया कि मैंने हमेशा कहा था कि बॉबी की हत्या कर दी जाएगी। जॉन की मृत्यु के बाद कई महीनों तक मैंने यही बात कही थी।”

"क्या आपको लगता है कि कैनेडी का कोई अभिशाप काम कर रहा है?"

“हां। मुझे लगता है कि कैनेडी परिवार के आसपास ऐसी ताकतें मौजूद हैं जो उनमें से लगभग हर एक के लिए त्रासदी लाएंगी।”

क्या हमें एक और कैनेडी राष्ट्रपति मिलेंगे?

मुझे ऐसा नहीं लगता। हालांकि मुझे लगता है कि अगली बार टेडी इसके लिए जोरदार दावेदारी पेश करेगा।

* * *

अगर कैनेडी परिवार के किसी सदस्य से सीधा संपर्क स्थापित हो जाए—यानी जो इस दुनिया से विदा हो चुके हैं—तो और भी रोचक जानकारी मिल सकती है। लेकिन इस तरह का संपर्क स्थापित करने के लिए दो बहुत ही ज़रूरी चीज़ें हैं: एक, संचार का एक माध्यम—यानी, एक ऐसा माध्यम जिसकी पेशेवर और नैतिक प्रतिष्ठा सर्वोच्च हो—और दो, ऐसे प्रश्न जो कम से कम संदेह के दायरे तक यह साबित कर सकें कि जांचकर्ता और मृतक के बीच वास्तव में संवाद हुआ था।

* 13

मिची टैवर्न, जेफरसन और लड़के

“क्रांति-पूर्व काल का यह विशिष्ट सराय यात्रियों का पसंदीदा पड़ाव हुआ करता था,” चार्लोट्सविले की आधिकारिक गाइड में लिखा है। “अपने औपनिवेशिक फर्नीचर और चीनी मिट्टी के बर्तनों, बीम और पैनल वाली छतों के साथ, यह काफी हद तक वैसा ही दिखता है जैसा जेफरसन और मोनरो के आने के दिनों में दिखता था। मोनरो ने लाफायेट को यहाँ रात्रिभोज में अतिथि के रूप में आमंत्रित करने के बारे में लिखा है, और न्यू ऑरलियन्स में अपनी जीत के बाद जनरल एंड्रयू जैक्सन वाशिंगटन जाते समय यहाँ रुके थे।”

गाइड में इस बात का ज़िक्र नहीं है कि सराय को उसके मूल स्थान से काफ़ी दूर एक ऐसे स्थान पर ले जाया गया था जहाँ पहुँचना आसान था और जहाँ पर्यटन को इससे ज़्यादा फ़ायदा हो सकता था। हालाँकि यह बदलाव हाल ही में हुआ है, फिर भी सराय बिल्कुल वैसी ही है जैसी पहले थी, अंदर की हर चीज़, यहाँ तक कि उसके भूत भी, वैसे ही बरकरार हैं। मूल स्थान

पर, यह पेड़ों से घिरी हुई थी जो इसे एक सुंदर घेरा देते थे और कभी-कभी तो इससे भी ऊँचे उठते थे। नए स्थान पर, सड़क की ओर मुख किए हुए, यह वर्जीनिया के ग्रामीण इलाकों की ओर लगभग एक हवेली की तरह दिखती है। लकड़ी की संरचना तक पहुँचने के लिए कई सीढ़ियाँ चढ़नी पड़ती हैं और बाईं ओर पुरानी सराय में प्रवेश किया जा सकता है या, यदि चाहें तो, दाईं ओर पब में, जो आजकल एक कॉफ़ी शॉप है। अठारहवीं और उन्नीसवीं सदी के आरंभिक वर्षों में सराय केवल बार या सराय नहीं थीं; वे ऐसे मिलन स्थल थे जहाँ लोग खुलकर बातें कर सकते थे, कभी-कभी राजनीतिक विषयों पर भी। इनका उपयोग क्रांतिकारी आंदोलनों या आक्रमणकारी सैन्य बलों के मुख्यालय के रूप में किया जाता था। अधिकांश बड़ी सराय में बॉलरूम होते थे जहाँ क्षेत्र के सामाजिक समारोह आयोजित किए जा सकते थे। केवल कुछ ही निजी व्यक्ति इतने धनी थे कि वे अपने हवेलीनुमा घरों में अपने स्वयं के भोज कक्ष बनवा सकें।

मिची टैवर्न की सबसे अच्छी बात यह है कि यहाँ सब कुछ लगभग वैसा ही है जैसा अठारहवीं शताब्दी में था, और जो भी जीर्णोद्धार किया गया है वह पूरी तरह से प्रामाणिक है। फर्नीचर और खाना पकाने के बर्तन, सराय मालिक के औजार, चीनी मिट्टी के बर्तन, धातु की वस्तुएँ, सब कुछ उसी काल का है, चाहे वे पहले घर में रहे हों या नहीं। ऐतिहासिक जीर्णोद्धार या संरक्षण में जो प्रथा है, उसके अनुसार घर में जो कुछ भी गायब है, उसे गहन ऐतिहासिक शोध द्वारा पूरा किया जाता है, और उसी काल और उसी क्षेत्र की वस्तुओं को उन वस्तुओं के स्थान पर रखा जाता है जो संभवतः बीच के समय में खो गई हों।

सराय में तीन मंजिलें और कई कमरे थे, इसलिए हमें घूमने के लिए निर्धारित दो घंटे का समय चाहिए था। सराय के निचले हिस्से को देखने के बाद, जिसमें एक "साझा" रसोईघर और एक बहुत लंबी लकड़ी की मेज थी जहाँ दो दर्जन लोगों को खाना खिलाया जा सकता था, हम दूसरी मंजिल पर जाने के लिए सीढ़ियाँ चढ़ गए।

माध्यम इंग्रीड अलग-अलग कमरों में झाँकती रही, मानो वहाँ मौजूद अलौकिक शक्तियों को सूंघ रही हो, और मैं उसके पीछे-पीछे चलता रहा। होरेस बर्र और वर्जीनिया क्लाउड एक उचित दूरी बनाए हुए थे, मानो भूतों को डराना नहीं चाहते हों। मुझे इससे कोई आपत्ति नहीं

थी, क्योंकि मैं नहीं चाहता था कि इंग्रीड इन दोनों ज्ञानी व्यक्तियों के अवचेतन मन को प्रभावित करे।

आखिरकार हम पुराने सराय के तीसरी मंजिल पर बने भोज कक्ष में पहुँच गए। मैंने इंग्रीड से पूछा कि नीचे के अलग-अलग कमरों में उसे कैसा महसूस हुआ। उसने कहा, "दूसरी मंजिल पर गुलाबी कमरे में मुझे किसी तरह की बहस या झगड़ा महसूस हुआ, लेकिन बाकी कमरों में कुछ खास नहीं।"

"इस बड़े बॉलरूम के बारे में क्या ख्याल है?"

“मुझे यहाँ आस-पास बहुत सारे लोग दिख रहे हैं। यहाँ समलैंगिक माहौल है, और मुझे लगता है कि यहाँ महत्वपूर्ण लोग आते थे; यह कमरा काफी खास है। मुझे लगता है कि इसका इस्तेमाल सिर्फ खास मौकों पर ही किया जाता था।”

अब तक मैंने होरेस और वर्जीनिया को पास आने का इशारा कर दिया था, क्योंकि मुझे स्पष्ट हो गया था कि वे इंग्रीड की बातें सुनने के लिए बहुत उत्सुक थे। संभवतः कोई नई जानकारी सामने आ जाए, जो इन दोनों इतिहासकारों को ज्ञात न हो, ऐसी स्थिति में वे बाद में इसकी पुष्टि कर सकते हैं या मौके पर ही इस पर टिप्पणी कर सकते हैं।

इंग्रिड ने आगे कहा, "यहां एक महिला को लेकर हो रही बहस से मैं प्रभावित हूं। इसका संबंध एक प्रतिष्ठित व्यक्ति से है, और यह उनकी पत्नियों में से एक के बारे में है।"

“यह बहस कैसे समाप्त होती है?”

"मुझे लगता है कि उनके बीच उसकी बेवफाई को लेकर बस यूं ही एक छोटी सी बहस हुई थी।"

“इसमें कौन-कौन लोग शामिल हैं?”

मुझे लगता है हैमिल्टन। मुझे उस महिला का नाम नहीं पता।

“दूसरा आदमी कौन है?”

मुझे लगता है जेफरसन यहाँ थे।

"जितना हो सके, तर्क को समझने की कोशिश करें।"

इंग्रिड ने अपनी आँखें बंद कर लीं, एक ऐसी कुर्सी पर बैठ गई जहाँ आम तौर पर आगंतुकों का जाना मना होता है, और अतीत पर ध्यान केंद्रित करने की कोशिश की। "मुझे यह बहस एक बड़ी शर्मिंदगी के रूप में समझ आती है," उसने कहना शुरू किया। "वह महिला कमज़ोर है, उसने गले के पास ऊपर की ओर लेस वाली लंबी पोशाक पहनी हुई है, उसके बाल हल्के भूरे रंग के हैं।"

क्या वह बहस में हिस्सा लेती है?

"हां, उसे अपने पति का ही साथ देना होगा।"

"उसके पति का वर्णन कीजिए।"

“मैं उसका चेहरा नहीं देख पा रहा हूँ, लेकिन उसने ब्रोकेड जैकेट पहनी हुई है जिसके आगे बटन लगे हैं और साथ में ब्रीचेस भी हैं। यह बहुत ही शानदार पोशाक है।”

“आखिर इसका अंत कैसे होगा?”

“बस, और कुछ नहीं कहा गया। यह तो बेहद शर्मनाक बात है।”

“क्या यह कोई विशेष अवसर है? क्या यहां और भी लोग हैं?”

“जी हाँ, बिल्कुल। यह किसी वर्षगांठ या इसी तरह का कोई आयोजन है। शायद किसी तरह की राजनीतिक वर्षगांठ। इसमें संगीत, नृत्य और मोमबत्तियाँ जल रही हैं।”

जब इंग्रीड लगभग सुनाई न देने वाली आवाज़ में बोल रही थी, होरेस और वर्जीनिया उसकी बात सुनने की पूरी कोशिश कर रहे थे, लेकिन उन्हें सफलता नहीं मिल रही थी। तभी होरेस ने मुझे इशारा किया और मैं दबे पांव उसके पास गई। उसने मेरे कान में फुसफुसाते हुए कहा, "उससे कहो कि फुल स्टॉप थोड़ा पास कर ले।"

मिची टैवर्न—चार्लोट्सविले, वर्जीनिया

मैं इंग्रीड के पास वापस गया और उससे यह सवाल पूछा। उसने कहा, "मुझे लगता है कि यह युद्ध के अंत के करीब था, बिल्कुल अंत के करीब। कुछ समय से 1781 का आंकड़ा मेरे दिमाग में बसा हुआ है।"

चूंकि इस समय इंग्रीड की ओर से और कुछ भी पता नहीं चल रहा था, इसलिए मैंने उनसे आराम करने और वर्तमान में वापस आने के लिए कहा, ताकि हम उनके विचारों पर खुलकर चर्चा कर सकें।

“इस संदर्भ में हैमिल्टन नाम का कोई संबंध नहीं है,” होरेस बर्र ने कहना शुरू किया। लेकिन मैंने तुरंत बीच में टोकते हुए कहा कि अठारहवीं सदी के उत्तरार्ध और उन्नीसवीं सदी के आरंभिक वर्षों में हैमिल्टन नाम काफी प्रचलित था और इंग्रीड का मतलब अलेक्जेंडर हैमिल्टन ही नहीं रहा होगा। “जेफरसन कई बार यहाँ आए थे, और हो सकता है कि वे इसमें शामिल रहे हों,” बर्र ने आगे कहा। “मुझे लगता है कि मैं जानता हूँ कि दूसरा व्यक्ति कौन हो सकता है। लेकिन क्या हम, कम से कम एक बार, विशिष्ट मुद्दों पर माध्यम से सवाल करने की कोशिश कर सकते हैं?”

न तो इंग्रीड और न ही मैंने कोई आपत्ति जताई, और होरेस ने इंग्रीड से उस जोड़े की पहचान करने को कहा जिसे उसने बॉलरूम में महसूस किया था। इंग्रीड ने एक पल के लिए अपना सिर पीछे झुकाया, अपनी आँखें बंद कीं और फिर जवाब दिया, "वह आदमी राजनीति में बहुत प्रमुख है, उस समय के तीन-चार बड़े नेताओं में से एक, और मेरी समझ से यह सब इतना शर्मनाक इसलिए है क्योंकि दूसरा आदमी बहुत कम दर्जे का है। वह बड़े नेताओं में से नहीं है; वह शायद कोई अधिकारी या ऐसा ही कुछ होगा।"

जब इंग्रीड धीरे-धीरे बोल रही थी, तो मुझे फिर से अतीत में जाने का एक अजीब सा एहसास हुआ, जैसे मैं समय में पीछे जा रहा हूँ। यह एहसास मुझे हाल ही में बार-बार होने लगा था, हमेशा अनचाहा और आमतौर पर क्षणिक। मैंने कहा, "जहाँ तक मुझे याद है, इंग्रीड के बोलते समय मुझे एक धुंधला सा आभास भी होता है कि इन सब का संबंध दो बहनों से है। यह दो बहनों के बीच की प्रतिद्वंद्विता से संबंधित है।"

“उस आदमी का पहनावा,” इंग्रीड ने अपनी कहानी जारी रखते हुए कहा, “सोने और सफेद ब्रोकेड जैसा था और बहुत ही शानदार था। वह पति था। मुझे दूसरा आदमी दिखाई नहीं दे रहा है।”

होरेस इस पर असामान्य रूप से परेशान लग रहा था। "मुझे बताओ, क्या यह जोड़ा इसी इलाके में रहता था या वे किसी विशेष वर्षगांठ पर दूर से आए थे?"

वे आसपास ही रहते थे और शाम को ही मिलने आते थे।

“तो होरेस?” मैंने कहा, मेरी जिज्ञासा बढ़ती जा रही थी, क्योंकि वह जाहिर तौर पर एक खास दिशा में गाड़ी चला रहा था। “यह सब क्या था?”

पहली बार होरेस को आकर्षण का केंद्र बनने में मज़ा आया। “खैर, यह वाकई एक गरमागरम और उत्तेजक स्थिति थी। वह जोड़ा श्रीमान और श्रीमती जॉन वॉकर थे—वह कैसल हिल के डॉ. वॉकर के बेटे थे। और वह व्यक्ति, जो यहाँ मौजूद नहीं थे, स्वयं जेफरसन थे। इंग्रीड का यह कहना सही है कि वे आसपास ही रहते थे—कैसल हिल यहाँ से ज़्यादा दूर नहीं है।”

लेकिन उस विशेष उत्सव का क्या हुआ जिसने उन सभी को यहां एक साथ लाया?

होरेस को ठीक से पता नहीं था कि यह क्या हो सकता है, लेकिन वर्जीनिया ने बड़े उत्साह से बीच में ही कहा, "इसी कमरे में अमेरिका में पहली बार वाल्ट्ज़ नृत्य किया गया था। एक युवक फ्रांस से बहुत ही सजे-धजे कपड़ों में आया था। उसके साथ नृत्य करने वाली महिला शार्लट्सविले की एक बेहद सजग लड़की थी, जिसकी देखरेख हमेशा की जाती थी। वह बहुत छोटी थी, और उसने उस युवक के साथ वाल्ट्ज़ नृत्य किया, और शार्लट्सविले में हर कोई हैरान रह गया। पूरे शहर में यह खबर फैल गई कि उस युवती ने एक ऐसे व्यक्ति के साथ नृत्य किया है जिसने उसे पकड़ रखा था, और उस समय यह बहुत ही भयानक बात थी। शायद यही वह घटना थी। मिची टैवर्न स्टेजकोचों का पड़ाव था, और जेफरसन और स्थानीय लोग यहाँ समाचार प्राप्त करने के लिए मिलते थे। नीचे बैठक कक्ष था, लेकिन ऊपर इस बॉलरूम में वाल्ट्ज़ की शुरुआत जैसे अधिक विशेष कार्यक्रम होते थे।"

मैंने होरेस बर्र की ओर मुड़कर पूछा, "यह शराबखाना अब अपनी मूल जगह पर क्यों नहीं है? मुझे पता चला है कि पर्यटकों की सुविधा के लिए इसे यहाँ स्थानांतरित किया गया था।"

"जी हां," होरेस ने जवाब दिया। "यह इमारत पहले हवाई अड्डे के पास थी। दरअसल, वर्तमान हवाई अड्डा उस पुरानी जागीर के एक हिस्से पर बना है जो पैट्रिक हेनरी के पिता कर्नल जॉन हेनरी की थी। युवा पैट्रिक ने अपना बचपन वहीं बिताया था। बाद में, कर्नल हेनरी ने वह ज़मीन मिची परिवार को बेच दी। तब यह घर उनका मुख्य घर था। यह पुराने राजमार्ग पर स्थित था। उन्होंने बदले में एक भव्य हवेली बनवाई जो आज भी खड़ी है और इस घर को एक सराय में बदल दिया। जिन घटनाओं पर हम चर्चा कर रहे हैं, वे सभी इसी इमारत के पुराने स्थान पर रहते हुए घटी थीं। 1926 में इसे यहां स्थानांतरित किया गया था। मूल रूप से, मुझे लगता है कि जिस भोज कक्ष में हम अभी खड़े हैं, वह पुराने हेनरी घर का केवल एक मचान था। उन्होंने छत के एक हिस्से को ऊंचा करके उसे भोज कक्ष बना दिया क्योंकि सराय में उनके पास कोई बैठक कक्ष नहीं था।"

मुख्य शराबखाने के दाईं ओर स्थित आकर्षक ढंग से सजे कॉफी शॉप में, प्रबंधक श्रीमती जुआनिटा गॉडफ्रे ने हमें गरमागरम काली कॉफी परोसी और हमसे बातचीत करने के लिए बैठ गईं। मैंने पूछा, क्या कभी किसी ने शराबखाने में असामान्य आवाज़ों या अन्य अस्पष्ट घटनाओं के बारे में शिकायत की थी?

श्रीमती गॉडफ्रे ने जवाब दिया, "यहां रात में काम करने वाले कुछ कर्मचारियों को कुछ ऐसी आवाजें सुनाई देती हैं जिनका उन्हें कोई कारण समझ नहीं आता। उन्हें कुछ आवाज सुनाई देती है, वे जाकर देखते हैं, लेकिन वहां कुछ नहीं होता।"

"भवन के किस हिस्से में?"

“हर जगह, यहां तक कि इस इलाके में भी। यह गुलामों के रहने की जगह का एक हिस्सा है, और यह बहुत पुराना है।”

मुझे लगा कि श्रीमती गॉडफ्रे को मानसिक अनुभवों में कोई खास दिलचस्पी नहीं थी। उनकी जानकारी के अनुसार, सराय में किसी को भी कोई असामान्य अनुभव नहीं हुआ था। "उस महिला के बारे में क्या जिसने एक रात यहाँ रात बिताई थी?" मैंने पूछा।

“आपका मतलब श्रीमती मिल्टन से है—हाँ, वह एक रात यहाँ रुकी थीं।” लेकिन श्रीमती गॉडफ्रे को श्रीमती मिल्टन के अनुभवों के बारे में कुछ भी पता नहीं था।

हालांकि, वर्जीनिया उस महिला से मिली थी, जो समुदाय के ऐतिहासिक संरक्षण प्रयासों से जुड़ी हुई थी। वर्जीनिया ने बताया, "एक रात जब श्रीमती मिल्टन शहर से बाहर थीं, मैं उनके कमरे में सोई। उस समय उन्होंने मुझसे स्वीकार किया कि उन्हें अक्सर कदमों की आहट सुनाई देती थी, खासकर नीचे जाने वाली सीढ़ियों पर।"

मोंटीसेलो—थॉमस जेफरसन का घर

"हाँ, वह उसी जगह सोई थी," श्रीमती गॉडफ्रे ने पुष्टि की। "वह पहली मंजिल पर महिलाओं के बैठक कक्ष में सोई थी।"

"वर्जीनिया, तुम्हारा क्या हाल है? क्या तुमने कुछ सुना?"

“मुझे कुछ आवाज़ें सुनाई दीं, लेकिन लकड़ी कभी-कभी बहुत अजीब व्यवहार करती है। हालांकि, उसने कहा कि वे निश्चित रूप से कदमों की आहट थीं। यह 1961 की बात है।”

इंग्रीड ने मिची टैवर्न के बॉलरूम में क्या खोजा था? क्या यह महज़ अमेरिका के पहले वाल्ट्ज़ की बची-खुची छाप थी, जो शुरुआती अमेरिकियों के लिए शर्मनाक थी लेकिन आज के नज़रिए से निर्दोष लगती है? या फिर यह कुछ और था—श्रीमती वॉकर और विख्यात थॉमस जेफरसन के बीच कोई संबंध? महान अमेरिकी के बारे में मेरी छवि हमेशा से एक ऐसे व्यक्ति की रही थी जो मानवीय कमज़ोरियों से परे था। लेकिन जेफरसन के घर मोंटीसेलो की एक बेहद दिलचस्प यात्रा पर मेरी आँखें और भी खुल गईं।

* 14

उत्साही जेफरसन के साथ एक मुलाकात

"1776 के व्यक्तित्वों के संबंध में आप जो परा मनोवैज्ञानिक अनुसंधान कर रहे हैं, उसे जारी रखने के लिए आपका मोंटीसेलो आने का स्वागत है," थॉमस जेफरसन मेमोरियल फाउंडेशन के जेम्स ए. बेयर जूनियर ने लिखा, और उन्होंने हमारे लिए नियमित समय के बाद इस लोकप्रिय पर्यटक स्थल पर जाने की व्यवस्था की, ताकि इंग्रीड को अतीत से बची हुई बहुत ही नाजुक तरंगों को महसूस करने के लिए आवश्यक शांति और सुकून मिल सके।

जेफरसन, बेंजामिन फ्रैंकलिन के साथ, एक बेहद लोकप्रिय ऐतिहासिक व्यक्तित्व हैं: एक नाटक, एक संगीतमय नाटक और एक संगीतमय फिल्म ने उन्हें जीवंत कर दिया है, उन्हें स्वतंत्रता की घोषणा के शर्मीले, समर्पित और बुद्धिमान रचनाकार के रूप में दर्शाया गया है। जेफरसन, वर्जीनिया के सौम्य किसान, वह व्यक्ति जो दासों को मुक्त करना चाहता था लेकिन अन्य दक्षिणी लोगों द्वारा उसके प्रयासों में बाधा डाली गई; जेफरसन, अपनी पत्नी के प्रति भावुक लेकिन संकोची प्रेमी; जेफरसन, सद्गुण और अमेरिकी देशभक्ति का आदर्श—ये वे छवियां हैं जो मनोरंजन मीडिया, अनगिनत पुस्तकों और पर्यटन अधिकारियों द्वारा प्रस्तुत की

जाती हैं जो पर्यटकों को शार्लोट्सविले आने और जेफरसन के घर, मोंटीसेलो का दौरा करने के लिए आकर्षित करने का प्रयास करते हैं।

जर्मन पर्यटन सेवा ने भी जेफरसन के प्रभाव का भरपूर फायदा उठाया। राइन नदी की यात्रा के दौरान थॉमस जेफरसन ने कहा था, "यह मेरे लिए दूसरी मातृभूमि के समान है। हमारे देश में जो कुछ भी अंग्रेजी नहीं है, वह यहीं से आया है।" जेफरसन ने जर्मन राइनलैंड की तुलना मैरीलैंड और पेंसिल्वेनिया के कुछ हिस्सों से की और बताया कि उस समय अमेरिका में दूसरा सबसे बड़ा जातीय समूह जर्मन थे। जर्मन भाषा के साप्ताहिक 'औफबाउ' में एक लेख में जेफरसन को राइनलैंड का पहला प्रमुख अमेरिकी पर्यटक बताया गया है। उनकी यात्रा अप्रैल 1788 में हुई थी। उस समय जेफरसन पेरिस में राजदूत थे और राइन की यात्रा ने उन्हें राइन के दोनों किनारों पर कृषि, रीति-रिवाजों और स्थितियों का अध्ययन करने का अवसर दिया। निःसंदेह, जेफरसन, वाशिंगटन, फ्रैंकलिन और लिंकन के साथ, अमेरिकी वास्तुकला के स्तंभों में से एक हैं।

वर्जीनिया क्लाउड, जो अपने क्षेत्र की एक उत्साही इतिहासकार थीं, बताती हैं कि जेफरसन और जॉन एडम्स न केवल मित्र और समकालीन राजनीतिक विचारकों के रूप में घनिष्ठ संबंध रखते थे, बल्कि उनके जीवन में कुछ विचित्र संयोग भी थे। उदाहरण के लिए, जेफरसन और एडम्स की मृत्यु कुछ ही घंटों के अंतराल में हुई थी। जेफरसन की मृत्यु वर्जीनिया में और एडम्स की मैसाचुसेट्स में 4 जुलाई, 1826 को हुई थी—ठीक उसी दिन जब दोनों ने स्वतंत्रता की घोषणा पर हस्ताक्षर किए थे, यानी पचास वर्ष बाद। एडम्स के अंतिम शब्द थे, "लेकिन जेफरसन अभी भी जीवित हैं।" उस समय यह बात सच नहीं रह गई थी, क्योंकि जेफरसन की मृत्यु उसी दिन पहले हो चुकी थी।

जेफरसन की छाप शार्लोट्सविले में हर जगह दिखाई देती है। इस प्रतिभाशाली "बहुमुखी प्रतिभा के धनी" ने न केवल अपना घर, मोंटीसेलो, खुद डिजाइन किया, बल्कि उन्होंने वर्जीनिया विश्वविद्यालय के केंद्रबिंदु, रोटुंडा का भी डिजाइन तैयार किया। जेफरसन, मैडिसन और मोनरो विश्वविद्यालय के पहले शासी मंडल के सदस्य थे, जो अब अपने चिकित्सा विभाग के लिए प्रसिद्ध है - और संयोगवश, यह परा मनोविज्ञान के अध्ययन में अग्रणी विश्वविद्यालय है, क्योंकि डॉ. इयान स्टीवेन्सन वहां पढ़ाते हैं।

मोंटीसेलो जाते समय हमने पुराने स्वान टैवर्न को देखने का फैसला किया, जिसका जेफरसन से कुछ महत्वपूर्ण संबंध था। यह टैवर्न अब एक निजी क्लब के रूप में इस्तेमाल होता है, लेकिन निदेशकों ने हमें अंदर आने की अनुमति दे दी, यहाँ तक कि महिलाओं को भी, जिन्हें आमतौर पर प्रवेश नहीं दिया जाता। इस जगह की साज-सज्जा में पुराने टैवर्न की कोई झलक नहीं दिखती, क्योंकि निजी क्लब की आवश्यकताओं के अनुरूप इसका व्यापक रूप से नवीनीकरण किया गया है। पहले हमने नीचे का हिस्सा देखा और कई बुजुर्ग सज्जनों को देखकर मुस्कुराए, जिन्हें इस बात का ज़रा भी अंदाज़ा नहीं था कि हम वहाँ क्यों आए हैं। फिर हम ऊपर की मंजिल पर गए और अंत में इमारत के पीछे एक कमरे में जाकर बैठ गए। जैसे ही इंग्रीड एक कोने में आरामदायक कुर्सी पर बैठी, मैंने दरवाजा बंद कर दिया और उससे पूछा कि उसे इस जगह के बारे में क्या लगता है, जिसके बारे में उसे कोई जानकारी नहीं थी।

"मुझे लगता है कि लोग यहां हल्के-फुल्के माहौल में, शायद कुछ ड्रिंक्स के साथ, बातचीत करने आए थे।"

"क्या इन लोगों में से कोई ऐसा व्यक्ति था जो विशेष रूप से उत्कृष्ट था?"

"मैं जेफरसन के बारे में सोचता रहता हूं, और मुझे बड़े-बड़े मग दिखाई देते हैं; ज्यादातर पुरुषों के सामने बड़े-बड़े मग रखे होते हैं।"

यह देखते हुए कि इंग्रीड को इस इमारत के सराय के रूप में इतिहास के बारे में जानकारी नहीं थी, यह काफी स्पष्ट प्रमाण था। मैंने उससे जेफरसन के बारे में पूछा।

"मुझे लगता है कि वह नाममात्र का मुखिया था। यह मामला उसे बहुत चिंतित करता था, लेकिन मुझे नहीं लगता कि इसका उसकी अपनी संपत्ति या ऐसी किसी चीज से कोई लेना-देना था।"

"जब यह घटना घटी, क्या उस समय कोई युद्ध जैसी कार्रवाई चल रही थी?"

"हां, मुझे लगता है कि यह शहर के बाहरी इलाके में था। मुझे ऐसा लग रहा है कि कोई इस जगह तक पहुंचने की कोशिश कर रहा था और किसी का इंतजार कर रहा था, लेकिन वास्तव में उसे उस व्यक्ति की उम्मीद नहीं थी।"

होरेस बर्र और वर्जीनिया क्लाउड दोनों इस बात से बेहद उत्साहित थे कि इंग्रीड ने सही बात पकड़ ली थी। वर्जीनिया उस व्यक्ति का समर्थन कर रही थीं जिसके बारे में इंग्रीड ने अभी-

अभी बात की थी। वर्जीनिया ने कुछ तीखे लहजे में कहा, "वर्जीनिया के लोग पॉल रेवरे के बारे में सुनकर हमेशा चिढ़ जाते हैं, जबकि असल में वह एक बूढ़ा आदमी था जिसके पास एक थका हुआ घोड़ा था और जिसने रेवरे को पैदल घर लौटने के लिए छोड़ दिया था। वहीं जैक जौएट ने कहीं अधिक काम किया - उन्होंने थॉमस जेफरसन और उनके विधायकों की जान बचाई। फिर भी, वर्जीनिया के बाहर बहुत कम लोगों ने उनके बारे में सुना है।"

“शायद जोएट के पास उतना अच्छा प्रेस एजेंट नहीं था जितना पॉल रेवरे के पास लॉन्गफेलो के रूप में था, जैसा कि तुम हमेशा कहती हो, वर्जीनिया,” बर्र ने टिप्पणी की। मैंने वर्जीनिया से उस घटना का सारांश बताने को कहा जिसका जिक्र इंग्रीड ने मानसिक रूप से किया था।

“जैक जौएट अल्बेमर्ले काउंटी के मूल निवासी थे और फ्रांसीसी ह्यूगनॉट वंश के थे। उनके पिता, कैप्टन जॉन जौएट, इस सराय के मालिक थे।”

"हमें लगता है कि इस बात की संभावना है कि वह यहां से चालीस मील दूर लुइसा में स्थित कुकू टैवर्न के भी मालिक थे," बर्र ने बीच में कहा।

जोएट का एक बेटा था जिसका नाम जैक था, जिसकी लंबाई छह फीट चार इंच और वजन दो सौ पाउंड से अधिक था। वह एक कुशल घुड़सवार था और उन नागरिकों में से एक था जिन्होंने 1779 में वर्जीनिया राष्ट्रमंडल के प्रति निष्ठा की शपथ पर हस्ताक्षर किए थे।

3 जून, 1781 का दिन था, और ब्रिटिश सेना के बढ़ते दबाव से बचने के लिए सरकार शार्लोट्सविले भाग गई थी। वर्जीनिया का अधिकांश भाग ब्रिटिश नियंत्रण में था, और जनरल कॉर्नवॉलिस क्रांति के नेताओं, विशेष रूप से थॉमस जेफरसन, जिन्होंने स्वतंत्रता की घोषणा लिखी थी, और पैट्रिक हेनरी, जिनका नारा, 'मुझे स्वतंत्रता दो या मुझे मृत्यु दो,' क्रांति की सफलता में बहुत बड़ा योगदान था, को पकड़ना चाहते थे। ढाई सौ घुड़सवारों की कमान सर बैनस्ट्रे टार्लेटन के हाथ में थी। उनका मिशन विद्रोह के नेताओं को पकड़ने के लिए जल्द से जल्द शार्लोट्सविले पहुंचना था। टार्लेटन ने कॉर्नवॉलिस के मुख्यालय और शार्लोट्सविले के बीच सत्तर मील की दूरी को चौबीस घंटे के भीतर तय करने का दृढ़ निश्चय किया था, ताकि अमेरिकी स्वतंत्रता आंदोलन के नेताओं को आश्चर्यचकित किया जा सके।

शार्लेटविले से चालीस मील दूर लुइसा कस्बे में, वह और उसके साथी कुछ देर आराम करने के लिए कुकू टैवर्न में रुके। संयोगवश, जैक जौएट उसी समय टैवर्न में अपने पिता का

कारोबार संभाल रहा था। जून का महीना था और बहुत गर्मी थी, और सभी को प्यास लगी थी। टार्लेटन के मना करने के बावजूद, उनकी ज़ुबान खुल गई और जैक जौएट ने उनकी मंज़िल सुन ली। जैक ने उनसे आगे निकलकर शार्लेटविले को चेतावनी देने का फैसला किया। रात के लगभग 10 बजे, वह अपने सबसे अच्छे घोड़े पर सवार हुआ, और उसने ठान लिया कि वह शॉर्टकट और साइड रोड से जाएगा, जबकि अंग्रेजों को मुख्य सड़क पर ही रहना पड़ेगा। सौभाग्य से, वह चांदनी रात थी; वरना वह ऊबड़-खाबड़ पहाड़ी इलाके में शायद कामयाब न हो पाता।

“इसी बीच ब्रिटिश सेना भी आगे बढ़ रही थी और लगभग 11 बजे वे लुइसा के पास एक बागान में रुक गए। रात 2 बजे तक उन्होंने फिर से आगे बढ़ना शुरू कर दिया। कुछ घंटों बाद वे फिर रुके और दक्षिण कैरोलिना में महाद्वीपीय सैनिकों के लिए हथियारों और कपड़ों से लदे बारह वैगनों के एक काफिले को जब्त करके जला दिया। जब शार्लोट्सविले में भोर हुई, तब तक जुएट ब्रिटिश सेना को बहुत पीछे छोड़ चुके थे। मोंटीसेलो पहुँचकर वे जेफरसन को जगाने के लिए मुख्य द्वार की ओर दौड़े; हालाँकि, गवर्नर जेफरसन, जो जल्दी उठने वाले थे, ने घुड़सवार को अपने रास्ते पर दौड़ते हुए देख लिया था और दरवाजे पर ही उनसे मिले। हमेशा की तरह सज्जनता दिखाते हुए, जेफरसन ने थके हुए संदेशवाहक को एक गिलास शराब दी और फिर उन्हें दो मील आगे शार्लोट्सविले जाने की अनुमति दी। वहाँ उन्होंने सरकार के अन्य सदस्यों को जगाया, जबकि जेफरसन ने अपने परिवार को जगाया। दो घंटे बाद, जब टार्लेटन गरजते हुए शार्लोट्सविले में आए, तब तक वर्जीनिया की सरकार गायब हो चुकी थी।”

मैंने कहा, "यह तो वाकई एक दिलचस्प कहानी है, वर्जीनिया।"

“बेशक,” बर्र ने आगे कहा, “अगर टारलेटन और उसके आदमी कैसल हिल पर न रुके होते, तो वे यहाँ और भी जल्दी पहुँच सकते थे। डॉ. और श्रीमती वॉकर ने उनका भव्य स्वागत किया और उन्हें स्वादिष्ट नाश्ता परोसा। नाश्ता न केवल शानदार था, बल्कि उसमें कुछ देर और रुकने का भी मौका था। डॉ. वॉकर ने एक आदर्श मेज़बान की भूमिका बखूबी निभाई। ब्रिटिश कमांडर की बेसब्री के बावजूद, उन्होंने टारलेटन को पूरे इलाके का भ्रमण कराया, यहाँ तक कि लिविंग रूम के दरवाज़े पर टारलेटन के अर्दली की लंबाई भी नापी। यह सिपाही ब्रिटिश

सेना का सबसे लंबा आदमी था और उसकी लंबाई 6’9 ¼” निकली। इन और अन्य टालमटोल की युक्तियों के कारण, वॉकर दंपति ने जैक जौएट की यात्रा को पूरी तरह सफल बना दिया। उस समय डॉ. वॉकर से मिलने आए विधानमंडल के कई सदस्य पकड़े गए, लेकिन जेफरसन और विधानमंडल के अधिकांश सदस्य, जिनकी बैठक उसी सुबह शुरू हुई थी, बच निकले।”

थॉमस जेफरसन के श्री कोल के घर में शरण लेने के बाद, जहाँ उनके मिलने की संभावना कम थी, जौएट अपने पिता के सराय में अपने कमरे में चले गए, ठीक उसी घर में जहाँ हम ठहरे हुए थे। उन्हें आराम की सख्त ज़रूरत थी। ब्रिटिश गिरफ्तारी से बचने के लिए छिपने वालों में पैट्रिक हेनरी भी थे। वे एक फार्महाउस पहुँचे और अपना परिचय देते हुए कहा, "मैं पैट्रिक हेनरी हूँ।" लेकिन किसान की पत्नी ने जवाब दिया, "अरे, आप हो ही नहीं सकते, क्योंकि मेरे पति वहाँ युद्ध लड़ रहे हैं, और पैट्रिक हेनरी भी वहीं होंगे।" हेनरी ने किसान की पत्नी को यह विश्वास दिला दिया कि उनके घर में छिपना ही उनकी जान की बाजी है, और अंततः वह समझ गईं। लेकिन यह क्रांतिकारी युद्ध का अंतिम समय था और ब्रिटिश अच्छी तरह जानते थे कि वे लगभग पूरी तरह से हार चुके हैं। परिणामस्वरूप, कुछ ही समय बाद, कॉर्नवॉलिस ने वर्जीनिया के विधायकों को सुझाव दिया कि वे अपने कार्यालय फिर से शुरू करने के लिए शार्लोट्सविले लौट जाएँ।

मोंटीसेलो जाने का समय हो गया था; दोपहर का सूरज ढल रहा था, और हम आखिरी पर्यटकों के जाने के ठीक बाद पहुँचेंगे। मोंटीसेलो, जिसे हर बच्चा अमेरिकी पाँच सेंट के सिक्के पर इसकी तस्वीर से जानता है, शायद अमेरिकी वास्तुकला के बेहतरीन नमूनों में से एक है, जिसे स्वयं जेफरसन ने डिज़ाइन किया था, जिनकी कब्र वहीं पारिवारिक कब्रिस्तान में है। यह एक पहाड़ी पर स्थित है जहाँ से शार्लोट्सविले की घाटी दिखाई देती है। घर के चारों ओर सावधानीपूर्वक बनाए गए बगीचे हैं। अंदर, घर को शास्त्रीय अनुपात में बनाया गया है। प्रवेश कक्ष में जेफरसन द्वारा डिज़ाइन की गई प्रसिद्ध घड़ी लगी है, और वहाँ से एक बड़े, गोल कमरे में प्रवेश करते हैं, जो घर का केंद्र है। इस केंद्रीय क्षेत्र के दोनों ओर आयताकार कमरे हैं। बाईं ओर एक कोने का कमरा है, जिसका उपयोग अध्ययन कक्ष और पुस्तकालय के रूप में किया जाता था, जहाँ से जेफरसन अक्सर सुबह, बाकी लोगों के उठने से पहले, वर्जीनिया

की पहाड़ियों को देखा करते थे। इसके बगल में एक बहुत छोटा शयनकक्ष है, लगभग एक चारपाई जितना। इस प्रकार, इमारत का पूरा पश्चिमी भाग एक आत्मनिर्भर अपार्टमेंट है जिसमें जेफरसन अपने परिवार के बाकी सदस्यों को परेशान किए बिना सक्रिय रह सकते थे। केंद्रीय गोलाकार कमरे के दूसरी ओर एक विशाल भोजन कक्ष है जो एक छत की ओर खुलता है, और वह छत आगे एक खुले रास्ते में जाकर मिलती है जहाँ से पहाड़ी का शानदार दृश्य दिखाई देता है। फर्नीचर, चांदी और चीनी मिट्टी के बर्तन जेफरसन के अपने हैं, जिनमें से कुछ को क्षेत्र के इतिहास-प्रेमी नागरिकों ने मोंटीसेलो को लौटा दिया था, जिन्होंने पहले इन्हें खरीदा था।

सबसे पहले हम जेफरसन के शयनकक्ष में गए। लगभग विस्मय से भरी इंग्रीड ने उस चादर को छुआ जो कभी जेफरसन का पलंग हुआ करती थी, फिर उनकी मेज और उन किताबों को जिन्हें उन्होंने छुआ था। उन्होंने कहा, "मुझे यहाँ उनकी उपस्थिति महसूस होती है, और मुझे लगता है कि उन्होंने इस कमरे में बहुत काम किया, बहुत सारी योजनाएँ बनाईं और देर रात तक चीजों को सुलझाया।" मुझे नहीं लगता कि इंग्रीड को पता था कि जेफरसन को इस खास कमरे में ऐसा करने की आदत थी।

मैंने इंग्रीड को जेफरसन की कुर्सियों में से एक पर बैठने और अतीत से जो कुछ भी उसे मिल सके उसे समझने की कोशिश करने का इशारा किया। "मुझे बहुत सारी कड़ी मेहनत, रातों की नींद हराम और उथल-पुथल दिखाई दे रही है। इसके अलावा, कुछ नहीं।"

हम अध्ययन कक्ष के बगल में स्थित पुस्तकालय में गए। “मुझे नहीं लगता कि उन्होंने यहाँ ज़्यादा समय बिताया होगा, बस संदर्भ के लिए ही।” फिर हम केंद्रीय कमरे के दाईं ओर स्थित भोजन कक्ष में गए। “मुझे लगता है कि यह उनका पसंदीदा कमरा था, और उन्हें यहाँ लोगों से मिलना-जुलना बहुत पसंद था।” फिर उन्होंने आगे कहा, “मुझे ‘प्लम पुडिंग’ और ‘हॉट लिकर’ जैसे शब्द सुनाई देते हैं।”

“खैर,” बर्र ने टिप्पणी की, “उन्हें जीवन की हल्की-फुल्की चीजें बहुत पसंद थीं। वे अमेरिका में आइसक्रीम लेकर आए और गाय से सीधे दूध निकालकर उसे एक गिलास में डालते थे ताकि उसमें झाग बन जाए। उनका स्वाद फ्रांसीसी था। उन्हें वो मिठाई पसंद थी जिसे हम पहले 'फ्लोटिंग आइलैंड' कहते थे, एक बहुत ही शानदार मिठाई।”

“मुझे बहुत सारे लोग दिख रहे हैं। ये एक दोस्ताना माहौल है, जगमगाते गिलासों और मोमबत्तियों की रोशनी में।” इंग्रिड ने कहा। “ये लोग शालीन हैं, लेकिन इन्होंने ओवरकोट नहीं पहने हैं। मुझे इनकी सफेद रेशमी कमीजें दिख रही हैं। मैं इन्हें हंसते और आपस में चीजें बांटते हुए देख रही हूं। जेफरसन मेज पर बैठे हैं, उनके सफेद बाल पीछे बंधे हैं, वो झुककर हंस रहे हैं।”

सूरज डूब रहा था, क्योंकि अब साढ़े छह बजने वाले थे, और हम फ्रेंच कांच के दरवाजों से निकलकर छत पर चलने लगे। वहाँ से एक खुला रास्ता एक तीखे मोड़ से होते हुए एक छोटी सी इमारत तक जाता था, जो शायद बीस या पच्चीस गज की दूरी पर थी। मोंटीसेलो की ही तरह शास्त्रीय अमेरिकी शैली में बनी इस इमारत में दो मंजिलों पर दो ठीक-ठाक आकार के कमरे थे। रास्ता ऊपरी मंजिल के प्रवेश द्वार तक जाता था, जिसे पर्यटकों को अंदर आने से रोकने के लिए लोहे की जाली से बंद किया गया था। इसकी वजह से हम कमरे में थोड़ा ही अंदर जा पाए, लेकिन इतना काफी था कि इंग्रीड को अंदर का नजारा समझ आ जाए। बाहर, शाम होते-होते तापमान तेजी से गिरने लगा। हवा चलने लगी थी, इसलिए छोटे से घर की सुरक्षित दीवारों के अंदर रहना सुखद था।

मैंने पूछा, "होरेस, हम अब कहाँ हैं?"

“हम उस हनीमून कॉटेज में हैं जहाँ थॉमस जेफरसन अपनी दुल्हन को लेकर आए थे और उस समय रहते थे जब उनके सैनिक मोंटीसेलो का निर्माण कर रहे थे। जेफरसन और उनका परिवार शुरुआत में यहीं रहते थे, इसलिए आप कह सकते हैं कि यहाँ जो भी निशान हैं, वे जेफरसन के जीवन के क्रांति-पूर्व भाग से संबंधित हैं।”

मैंने इंग्रीड की ओर मुड़कर उससे उसके विचार पूछे। उसने कहा, “मुझे यहाँ सब कुछ बहुत व्यक्तिगत और सहज लगता है, और मुझे मोंटीसेलो भवन में जो अत्यधिक योजनाबद्धता महसूस हुई थी, वह यहाँ नहीं दिखती। आँखें बंद करते ही मुझे फूलों के गुलदस्ते का एक अजीब सा एहसास होता है, कुछ बहुत ही आकर्षक और अनोखे विदेशी फूल। वे या तो गुलाबी हैं या हल्के लाल, और उनका एक अजीब सा नाम है। मुझे ऐसा लगता है कि इस दृश्य में शामिल एक महिला को एक खास तरह का फूल बहुत पसंद है। वह उसके लिए उन फूलों को लाने के लिए बहुत मेहनत करता है। मुझे एक खास तरह के चीनी मिट्टी के बर्तनों के प्रति

भी लगाव महसूस होता है। कोई व्यक्ति संग्रहकर्ता है और कुछ खास चीजें खरीदना चाहता है, एक पारखी होने के नाते, और वह अपने घर में छोटी-छोटी सजावटी चीजें रखना चाहता है। मुझे नहीं पता कि इन सब बातों का कोई मतलब है या नहीं, लेकिन मुझे ऐसा ही लगता है।"

"बिल्कुल सही बात है," होरेस बर्र ने जवाब दिया। "जेफरसन ने यहाँ के किसी भी व्यक्ति से ज़्यादा दुर्लभ पेड़ और दुर्लभ फूलों वाली झाड़ियाँ आयात कीं। दरअसल, जब वे फ्रांस में रह रहे थे, तब उन्होंने वहाँ से इनकी खेप मंगवाई और बताया कि ये इतनी दुर्लभ हैं कि अगर इन्हें एक ही जगह लगाया जाए तो शायद ये उग न पाएँ। इसलिए उन्होंने इनमें से एक तिहाई मोंटीसेलो में, एक तिहाई वर्जीनिया गार्डन लॉन में (जो उनके एक मित्र की पुरानी जागीर है) और एक तिहाई वर्जीनिया में कहीं और लगाईं। तीन जगहों पर इन्हें लगाने का विचार उन्हीं का था, ताकि वे देख सकें कि क्या ये वर्जीनिया में पनप पाएँगी।"

"मुझे रूसो का नाम याद आ रहा है। क्या वह उस नाम के किसी व्यक्ति को जानते थे?" इंग्रिड ने पूछा।

"निःसंदेह, वह रूसो से बहुत प्रभावित थे।"

"मुझे ऐसा भी लगता है जैसे कोई लौ टिमटिमा रही हो, सुबह देर तक जागने की आदत हो। और क्या इस आदत को लेकर उनकी पत्नी और उनके बीच किसी बहस का कोई ऐतिहासिक रिकॉर्ड है, जिसमें किसी और ने सुलह कराने की कोशिश की हो?"

होरेस ने कहा, "मुझे यकीन है कि उनके बीच झगड़ा हुआ होगा, लेकिन मुझे शक है कि कभी सुलह की कोई कोशिश हुई होगी। दरअसल, उनका वैवाहिक जीवन सुखमय नहीं था; वह बहुत धनी थीं और उन्होंने उनकी सारी संपत्ति उड़ा दी, ठीक वैसे ही जैसे उन्होंने डैबनी कैर और जॉर्ज शॉर्ट की पूरी संपत्ति उड़ा दी थी। उन्होंने एक के बाद एक कई संपत्तियां हथिया लीं, जिनमें उनकी अपनी भी शामिल थी। डैबनी कैर उनके चचेरे भाई थे और उन्होंने जेफरसन की बहन मार्था से शादी की थी। वह बहुत धनी थे, लेकिन कैर की मृत्यु के बाद जेफरसन अपनी बहन और बच्चों को यहाँ ले आए। फिर उन्होंने श्री कैर के सभी बागानों और संपत्तियों पर अपना अधिकार जमा लिया।"

"जेफरसन चीजों के संग्रहकर्ता थे। उन्होंने अपने संग्रह की तीन सूचियाँ लिखीं, और जब उनकी मृत्यु हुई, तब तक यह अमेरिका का सबसे बड़ा संग्रह बन चुका था। चीनी मिट्टी के

बर्तनों के बारे में आपकी बात बिल्कुल सही है, क्योंकि उस समय चीनी मिट्टी के बर्तनों की जानकारी रखना बेहद उच्च कोटि का शौक माना जाता था। जहाज़ों के व्यापार से ये दुर्लभ वस्तुएँ आती थीं, और उन्हें इन्हें इकट्ठा करना पसंद था।"

चूंकि इंग्रीड ने अब तक बहुत अच्छा प्रदर्शन किया था, इसलिए मैंने उससे पूछा कि क्या उसे इस छोटे से घर से जुड़ी कोई विशेष भावनात्मक घटना महसूस होती है।

"खैर, मुझे लगता है कि पत्नी अपने स्तर और मानकों के अनुरूप जीवन नहीं जी रही थी, और वह नाखुश थी। यह वैसा नहीं था जैसा उसे आदत थी। यह उतना शानदार नहीं था। मुझे लगता है कि उसे अपने पति और उसकी योजनाओं पर संदेह था।"

"किस तरीके से?"

मुझे लगता है कि उसे इस बात पर संदेह था कि आगे क्या होगा। उसे चिंता थी कि वह बहुत ज्यादा दखल दे रहा है, और उसे उसकी राजनीतिक संबद्धताएँ भी कुछ खास पसंद नहीं थीं।

मैंने होरेस से राय मांगी। मुझे आश्चर्य हुआ जब होरेस ने मुझसे टेप रिकॉर्डर बंद करने को कहा क्योंकि जानकारी अत्यंत गोपनीय थी। हालांकि, उन्होंने बताया कि यह सामग्री अमेरिकन हेरिटेज में मिल सकती है, और मैं अपनी बात अपने शब्दों में कहने के लिए स्वतंत्र हूं।

ऐसा लगता है कि जेफरसन और उनकी पत्नी के बीच अन्य महिलाओं को लेकर हमेशा से ही समस्या रही थी। उनके कई तरह के संबंध थे। शायद सबसे लंबे समय तक चलने वाला संबंध एक खूबसूरत युवा अश्वेत महिला से था, जिसकी उम्र लगभग उनकी पत्नी के बराबर थी। वह स्थानीय सज्जन डब्ल्यू. स्केल्टन की नाजायज संतान थी और श्रीमती जेफरसन की निजी नौकरानी के रूप में काम करती थी। अंततः, जेफरसन के इस महिला से कई बच्चे हुए। वह उसे पेरिस भी ले गए। वह उसे बुलवाते रहते थे। यह सिलसिला कई वर्षों तक चला और अंततः इस महिला के मोहभंग का कारण बना। उसकी मृत्यु ऊपर के एक छोटे से कमरे में हुई, और वे किसी तरह ताबूत को ऊपर ले गए, लेकिन जब उन्होंने उसे ताबूत में रखा, तो वह नीचे नहीं आया। उन्हें सभी खिड़कियां तोड़नी पड़ीं और रस्सी से उसे नीचे उतारा। और आखिर वह ऊपर कमरे में थी क्या? इन सब बातों से श्रीमती जेफरसन की खुशी में कोई कमी नहीं आई। दुखद बात यह है कि जेफरसन की मृत्यु के बाद, उनके दो मिश्रित नस्ल के बच्चों

को न्यू ऑरलियन्स भेज दिया गया और उनके कर्ज चुकाने के लिए उन्हें वेश्यावृत्ति में बेच दिया गया। कहा जाता है कि उस रिश्ते से कुछ वंशज आज भी जीवित हैं, लेकिन आपको अमेरिकी पाठ्यपुस्तकों में इसका कोई उल्लेख नहीं मिलेगा।

छोटे कस्बों और ग्रामीण इलाकों में गपशप और किंवदंतियाँ आपस में घुलमिल जाती हैं। यह बात तब और भी सच हो जाती है जब महत्वपूर्ण ऐतिहासिक हस्तियों की बात आती है। ऐसा कहा जाता है कि जेफरसन की मृत्यु स्वाभाविक नहीं थी। कथित तौर पर उन्होंने अपना गला काटकर आत्महत्या कर ली थी। जेफरसन के जीवन के अंतिम समय में, उनके और लुईस परिवार के बीच कड़वी दुश्मनी थी। कहा जाता है कि दोनों के बीच आरोप-प्रत्यारोप का सिलसिला चलता रहा। जेफरसन पर मैरीवेदर लुईस की हत्या करवाने का आरोप है और उससे पहले उन्होंने मिस्टर लुईस पर कई ऐसे झूठे आरोप लगाए थे। लेकिन इन किंवदंतियों और अफवाहों को न्यायिक प्रक्रिया के माध्यम से साबित नहीं किया जा सकता; अमेरिकी क्रांति के देशभक्ति नायकों की बात करें तो, सच्चाई और कल्पना के बीच की रेखा हमेशा धुंधली ही रहती है।

* 15

मेजर आंद्रे और वफादारी का प्रश्न

“मेजर जॉन आंद्रे की जनरल सर हेनरी क्लिंटन के मुख्यालय नंबर 1 ब्रॉडवे से टैप्पन की पहाड़ी पर स्थित फांसी के तख्ते तक की दुर्भाग्यपूर्ण यात्रा अठारहवीं सदी के एक सप्ताह से भी कम समय में घटित हुई, ठीक एक सौ सत्तर वर्ष पहले। यह अविश्वसनीय लगता है कि इस यात्रा ने उन सड़कों को, उन घरों को जिनमें वे गए, उन सड़क किनारे के कुओं को जहाँ वे प्यास बुझाने के लिए रुके, और उन शब्दों को यादगार बना दिया जो उन्होंने कहे। लेकिन ऐसा हुआ।” हैरी हैनसेन का यह मार्मिक कथन क्रांतिकारी युद्ध के दौरान एक ब्रिटिश एजेंट के भाग्य और गिरफ्तारी जैसी क्षणिक घटना के सापेक्ष महत्व को स्पष्ट रूप से दर्शाता है।

वेस्टचेस्टर काउंटी के टैरीटाउन्स में, आंद्रे से जुड़े स्थान प्रमुख पर्यटक आकर्षण माने जाते हैं। दुर्भाग्य से इस आखिरी यात्रा के सबसे छोटे विवरण की खोज में इतना शोध किया गया है जितना कि अन्य जगहों पर कुछ कहीं अधिक महत्वपूर्ण (लेकिन कम रोमांटिक) ऐतिहासिक

परियोजनाओं में नहीं किया गया। इस घटना पर कई अच्छी किताबें लिखी गई हैं, हर स्कूली बच्चा इसके बारे में जानता है, और जॉन आंद्रे अमेरिकी क्रांति युद्ध के एक सज्जन लेकिन हारे हुए नायक के रूप में इतिहास में दर्ज हैं। लेकिन स्कूली बच्चों और आम वयस्कों को इतिहास प्रस्तुत करते समय, अधिकांश अमेरिकी पाठ्यपुस्तकें उस समय की मूलभूत स्थिति को नजरअंदाज कर देती हैं।

शुरुआत में, अमेरिकी क्रांति युद्ध दो राष्ट्रों के बीच युद्ध से कहीं अधिक एक गृहयुद्ध था। स्वतंत्रता सभी अमेरिकियों की इच्छा नहीं थी; वास्तव में, स्वतंत्रता की घोषणा को महाद्वीपीय कांग्रेस से पारित कराने में कठिनाई हुई और यह पर्दे के पीछे बहुत बातचीत और कई अनुच्छेदों को हटाने के बाद ही पारित हो पाई, जैसे कि दासता से संबंधित अनुच्छेद, जिन्हें दक्षिणी लोग अस्वीकार्य मानते थे। जब स्वतंत्रता की घोषणा देश का कानून बन गई—कम से कम इसके समर्थकों के अनुसार—तब भी ऐसे लोग थे जिन्होंने शुरू में इसका समर्थन नहीं किया था और खुद को एक अजीब स्थिति में पाते थे - या तो अपने नए देश के प्रति बेवफा होने या उस देश के प्रति बेवफा होने के बीच, जिसके प्रति उन्हें वफादार होना चाहिए था। जो लोग ग्रेट ब्रिटेन के साथ संबंध बनाए रखना चाहते थे, उन्हें टोरी कहा जाता था, और उनमें आम तौर पर उपनिवेशों के अधिक प्रभावशाली और धनी वर्ग शामिल थे। बेशक, कुछ अपवाद थे, लेकिन कुल मिलाकर रूढ़िवादियों ने किसी भी तरह से क्रांति के उद्देश्य का समर्थन नहीं किया। यह धारणा कि देश क्रूर अंग्रेजों से लड़ने के लिए एक होकर उभरा, पूरी तरह से राजनीतिक मनगढ़ंत कहानी है। समस्याएँ गहरी और बहुआयामी थीं, लेकिन अंततः बातचीत के माध्यम से उनका समाधान संभव हो सकता था। यह कहना मुश्किल है कि अगर इंग्लैंड और संयुक्त उपनिवेश दोनों बेहतर संबंधों के लिए बातचीत जारी रखते तो क्या होता। स्पेन में हाल ही में हुआ गृहयुद्ध अमेरिकी क्रांति युद्ध की तुलना में दो अलग-अलग गुटों के बीच का युद्ध कहीं अधिक था। अमेरिकी क्रांति युद्ध में, कई क्षेत्रों में मित्र और शत्रु साथ-साथ रहते थे, सीमाएँ अस्पष्ट थीं, और एक ही परिवार के सदस्य किसी एक पक्ष का समर्थन कर सकते थे। मुद्दा आक्रमणकारी शत्रु ब्रिटेन और आक्रमणकारी अमेरिका के बीच नहीं था; बल्कि, यह मातृभूमि से सभी संबंधों को त्यागने और किसी न किसी रूप में संबंध बनाए रखने के बीच का था। इस प्रकार, यह विशुद्ध रूप से देशभक्ति या राष्ट्रीय मुद्दे से कहीं अधिक एक राजनीतिक

मुद्दा बन गया था। आखिरकार, दोनों पक्षों में एक ही राष्ट्रीय पृष्ठभूमि के लोग थे, और लगभग सभी के रिश्तेदार इंग्लैंड में थे।

इन परिस्थितियों में, वफादारी का सही अर्थ क्या था, यह सवाल पेचीदा था। अंग्रेजों के लिए, उपनिवेश विद्रोह में थे और इसलिए राजा के प्रति बेवफा थे। अमेरिकियों के लिए, स्वतंत्रता की घोषणा के बाद ब्रिटिश सरकार का समर्थन करने वाला कोई भी व्यक्ति बेवफा माना जाता था। लेकिन युद्ध के दौरान स्वतंत्रता का समर्थन न करने वालों का प्रतिशत बहुत अधिक था, जो कुछ छिटपुट व्यक्तियों से कहीं अधिक था। इनमें से कुछ टोरी निजी या व्यावसायिक कारणों से ब्रिटेन का समर्थन करते रहे, जबकि अन्य ने सच्ची राजनीतिक आस्था के कारण ऐसा किया। उनके लिए, एक ब्रिटिश सैनिक की मदद करना राजद्रोह नहीं था, बल्कि इसके विपरीत, उनका सामान्य कर्तव्य था। इस दुविधा में यह तथ्य भी जुड़ गया कि दोनों पक्षों में ऐसे कई मामले थे जिनमें व्यक्तियों ने स्थानीय व्यापारिक कारणों से, मोर्चे के पीछे फंसी महिलाओं और बच्चों को निकालने के लिए, या सैन्य मामलों पर बातचीत करने के लिए, जैसे कि अपनी रेजिमेंट में फिर से शामिल होने में असमर्थ छोटी टुकड़ियों के आत्मसमर्पण, या घायल सैनिकों के लिए सहायता प्राप्त करने के लिए सीमा रेखा पार की। क्रांतिकारी युद्ध बर्बरता से नहीं लड़ा गया था; आखिरकार, यह सज्जनों के बीच का युद्ध था। वहां न तो कोई अत्याचार हुए, न ही कोई यातना शिविर बने और न ही निर्दोषों का नरसंहार हुआ।

सन् 1780 की शरद ऋतु में स्थिति लगभग गतिरोध जैसी हो गई थी, हालांकि इससे अमेरिकी सेनाओं को नुकसान हुआ। ब्रिटिश सेना ने पूरे दक्षिण पर कब्ज़ा कर लिया था और न्यूयॉर्क पर उनका पूरा नियंत्रण था। ब्रिटिश जहाज़ वल्चर क्रोटन प्वाइंट के सामने हडसन नदी के मध्य में लंगर डाले खड़ा था। इस स्थिति में, यह अमेरिकी रक्षा प्रणाली के उस दुर्जेय गढ़, वेस्ट प्वाइंट से ज़्यादा दूर नहीं था। केवल वेस्ट प्वाइंट और उसके कई किले ही अमेरिकी सेनाओं की पूर्ण पराजय के मार्ग में बाधा बन रहे थे।

ज़रा न्यूयॉर्क और उसके आसपास के हालात की कल्पना कीजिए। ब्रिटिश सेना का शहर, यानी मैनहट्टन पर पूरी तरह से कब्ज़ा था, और ब्रिटिश सेना की सीमाएँ वेस्टचेस्टर काउंटी से होकर गुज़र रही थीं। अमेरिकी सेना न्यू जर्सी के तट पर और हडसन नदी के दोनों किनारों पर वेस्टचेस्टर काउंटी से ऊपर की ओर मोर्चाबंदी किए हुए थी। अमेरिकी पक्ष में सबसे पहले

जनरल वाशिंगटन के नेतृत्व में नियमित कॉन्टिनेंटल सेना थी, और साथ ही स्थानीय मिलिशिया की कई इकाइयाँ भी थीं। मिलिशिया के जवानों की वर्दी अर्धसैनिक से लेकर आम नागरिकों तक, हर तरह की थी, और उनका प्रशिक्षण और पृष्ठभूमि भी बेहद अनियमित थी। कई बार तो क्रांतिकारी सेना के सैनिक और आम नागरिक में अंतर करना मुश्किल हो जाता था।

ब्रिटिशों ने अपने कब्जे वाले क्षेत्रों के नागरिकों से कोई विशेष सेवा नहीं मांगी, लेकिन इस विचित्र युद्ध की प्रकृति ऐसी थी कि कई लोगों ने स्वेच्छा से दोनों पक्षों की मदद की। कब्जे वाले क्षेत्रों की नागरिक आबादी में जो स्थिति थी, वही स्थिति क्रांति के सफल होने पर भी बनी रही। टोरी परिवार ब्रिटिशों को समर्थन देते रहे, और जब इसका पता चला तो उन पर राजद्रोह का आरोप लगाया गया। फिर भी, उन्होंने सहायता देना जारी रखा। इसके अलावा, ब्रिटिश और अमेरिकी सेनाओं के बीच सीमा रेखा हमेशा स्पष्ट नहीं थी। यह हर दिन बदलती रहती थी, और उदाहरण के लिए, यदि कोई वेस्टचेस्टर के उत्तर से न्यू जर्सी में जाना चाहता था, तो यदि उसे रास्ते की जानकारी नहीं थी या उसने नवीनतम जानकारी नहीं ली थी, तो वह देश के गलत हिस्से में पहुँच सकता था। स्थिति को और भी जटिल बनाने के लिए, सर हेनरी क्लिंटन न्यूयॉर्क शहर में ब्रिटिश सैनिकों के प्रभारी थे, जबकि गवर्नर क्लिंटन अल्बानी से तेरह उपनिवेशों में से एक, न्यूयॉर्क राज्य पर शासन करते थे।

सन् 1779 की वसंत ऋतु में सर हेनरी क्लिंटन को एक अज्ञात व्यक्ति से पत्र मिले, जिसने अपने हस्ताक्षर केवल "गुस्तावस" के रूप में किए थे। इन पत्रों की सामग्री से ब्रिटिश कमांडर तुरंत समझ गए कि वे एक उच्च पदस्थ अमेरिकी अधिकारी से बात कर रहे हैं। अमेरिकी पक्ष का कोई व्यक्ति ब्रिटिश हित के लिए उनसे संपर्क करना चाहता था। क्लिंटन ने यह मामला अपने सक्षम सहायक जनरल, मेजर जॉन आंद्रे को सौंप दिया। आंद्रे, जिनकी विशेषज्ञता आज के समय में खुफिया जानकारी जुटाने में थी, ने जॉन एंडरसन के छद्म नाम से पत्रों का जवाब दिया।

आंद्रे मूल रूप से व्यापार जगत में सक्रिय थे, लेकिन 1771 में उन्होंने ब्रिटिश सेना में द्वितीय लेफ्टिनेंट के पद पर भर्ती हो गए। वे 1774 में अमेरिका पहुंचे और फिलाडेल्फिया क्षेत्र में सेवा की। अंततः उन्होंने कई अभियानों में भाग लिया और 1777 तक उन्हें कप्तान के पद पर पदोन्नत कर दिया गया। फिलाडेल्फिया पर ब्रिटिश कब्जे के दौरान जिन धनी टोरी परिवारों से

उनकी मित्रता हुई, उनमें शिपेन परिवार भी शामिल था। उस परिवार की एक बेटी ने बाद में जनरल बेनेडिक्ट अर्नोल्ड से विवाह किया।

आंद्रे का पहला महत्वपूर्ण खुफिया कार्य चेसापीक खाड़ी के पास रहने वाले राजभक्तों के एक गुप्त समूह से संपर्क स्थापित करना था। इस समूह ने सैन्य सुरक्षा मिलने की शर्त पर अमेरिकियों के खिलाफ विद्रोह करने पर सहमति जताई थी। दरअसल, आंद्रे एक स्टाफ अधिकारी थे, जिन्हें जमीनी काम का ज्यादा अनुभव नहीं था, इसलिए दुर्गम इलाकों की चुनौतियों का सामना करने पर उन्हें अक्सर मुश्किलों का सामना करना पड़ता था। जैसे-जैसे पत्राचार आगे बढ़ा, क्लिंटन और आंद्रे दोनों को संदेह होने लगा कि पत्र लिखने वाला वफादार जनरल बेनेडिक्ट अर्नोल्ड ही है, और अंततः अर्नोल्ड ने यह बात स्वीकार कर ली।

कई असफल प्रयासों के बाद, 21 सितंबर, 1780 की रात को हडसन नदी के किनारे स्थित हैवरस्ट्रॉ में वेस्ट प्वाइंट के कमांडर मेजर जनरल बेनेडिक्ट अर्नोल्ड और मेजर जॉन आंद्रे के बीच एक बैठक हुई। उस समय, अर्नोल्ड ने कर्नल बेवर्ली रॉबिन्सन के घर को अपना मुख्यालय बनाया हुआ था, जो वेस्ट प्वाइंट के पास ही स्थित था।

यह यात्रा आंद्रे के आग्रह पर की गई थी, जो उनके वरिष्ठ अधिकारी सर हेनरी क्लिंटन की इच्छा के बिल्कुल विपरीत थी। आंद्रे के प्रस्थान के समय, क्लिंटन ने उन्हें याद दिलाया कि किसी भी परिस्थिति में उन्हें अपनी वर्दी नहीं बदलनी है और न ही कोई कागजात अपने साथ ले जाना है। जनरल अर्नोल्ड से विचारों का आदान-प्रदान करना और फिर ब्रिटिश मोर्चे की सुरक्षा में लौट आना ही पर्याप्त था।

दुर्भाग्यवश, आंद्रे ने इन आदेशों का पालन नहीं किया। जनरल अर्नोल्ड के पास छह कागज़ थे, जिन्हें उन्होंने आंद्रे को अपने मोज़ों और पैरों के बीच रखने के लिए मना लिया। इन छह कागज़ों में वेस्ट पॉइंट के किलेबंदी के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी थी, जो अंग्रेजों को अर्नोल्ड की मदद से उस गढ़ पर कब्ज़ा करने के लिए पर्याप्त थी। ओटो हुफेलैंड अपनी पुस्तक "वेस्टचेस्टर काउंटी ड्यूरिंग द अमेरिकन रिवोल्यूशन" में लिखते हैं, "वे छह कागज़ जिन्हें अर्नोल्ड ने आंद्रे को अपने मोज़ों और पैरों के बीच रखने के लिए मना लिया था, उनमें ऐसी कोई महत्वपूर्ण जानकारी नहीं थी जिसे आंद्रे की स्मृति पर भरोसा न किया जा सके, या ज़्यादा से ज़्यादा कुछ ऐसी गुप्त पंक्तियों में लिखा हो जिसे कोई और समझ न सके।" लेकिन ऐसा

माना जाता है कि आंद्रे को अभी भी जनरल अर्नोल्ड पर भरोसा नहीं था और वह उनकी लिखावट में कुछ ऐसा चाहता था जिससे किसी भी धोखे की स्थिति में उसे दोषी ठहराया जा सके।

जब दोनों व्यक्ति अलग हुए तब तक सुबह हो चुकी थी। जनरल अर्नोल्ड नाव से अपने मुख्यालय लौट गए और आंद्रे को जोशुआ स्मिथ के साथ छोड़ गए, जिन्हें उनकी सुरक्षित वापसी सुनिश्चित करनी थी। आंद्रे की मूल योजना वल्चर नामक नावें तक पहुँचने और उस मार्ग से न्यूयॉर्क लौटने की थी। लेकिन किसी तरह जोशुआ स्मिथ ने उन्हें ज़मीन के रास्ते जाने के लिए मना लिया। उन्होंने आंद्रे को एक आम नागरिक का कोट पहनने के लिए भी राजी कर लिया, जो उन्होंने उन्हें उपलब्ध कराया। जनरल अर्नोल्ड ने उन्हें सीमा रेखा पार करने के लिए पास दे दिए थे, इसलिए सूर्यास्त के समय आंद्रे, स्मिथ और एक नौकर किंग्स फेरी की ओर चल पड़े, स्टोनी पॉइंट से वर्प्लैंक पॉइंट तक नदी पार करते हुए वेस्टचेस्टर काउंटी में प्रवेश किया।

कई संकरी और कम इस्तेमाल होने वाली पगडंडियों से गुज़रते हुए, जिससे सफ़र काफ़ी लंबा हो गया, आंद्रे आखिरकार फिलिप्स कैसल से कुछ ही दूरी पर एक जगह पर पहुँचा। वहाँ उसकी मुलाक़ात तीन मिलिशिया सैनिकों से हुई: जॉन पॉल्डिंग, इसहाक वैन वार्ट और डेविड विलियम्स। वे लगभग बीस वर्ष के अशिक्षित युवक थे और उन्हें किसी संदिग्ध जासूस से पूछताछ करने का कोई अनुभव नहीं था। हालाँकि, वे तीनों जासूसों की तलाश नहीं कर रहे थे, बल्कि मवेशी चोरों की तलाश कर रहे थे, जो उस समय इलाके में आतंक मचा रहे थे। वे अल्बानी पोस्ट रोड के पास निगरानी कर रहे थे, तभी वैन वार्ट ने आंद्रे को घोड़े पर सवार होकर जाते देखा। उन्होंने उसे रोका और यहीं आंद्रे ने अपनी पहली गलती की। पॉल्डिंग के हेसियन कोट (जो उसने चार दिन पहले न्यूयॉर्क की जेल से भागते समय हासिल किया था) को गलत समझकर और यह सोचकर कि वह ब्रिटिश वफ़ादारों में से है, उसने तुरंत खुद को एक ब्रिटिश अधिकारी बताया और उनसे उसे हिरासत में न लेने का अनुरोध किया। लेकिन तीनों मिलिशिया सैनिकों ने उसे घोड़े से उतरने और कपड़े उतारने के लिए मजबूर किया, और फिर दस्तावेज़ मिल गए। कहा जाता है कि उन्हें आंद्रे पर ज़रा भी शक नहीं था, लेकिन उन दिनों बेहद कीमती माने जाने वाले उसके शानदार बूटों ने उन्हें आकर्षित किया और वे

आंद्रे के कपड़ों में ज़्यादा दिलचस्पी रखते थे, बजाय इसके कि उसने क्या पहना हुआ है। वजह चाहे जो भी हो, आंद्रे को कर्नल जेम्सन के मुख्यालय सैंड्स मिल ले जाया गया, जिसे आज आर्मोंक कहा जाता है।

जेमसन ने कैदी को जनरल अर्नोल्ड के पास भेज दिया, यह एक अजीब फैसला था जो किसी निजी मकसद की ओर इशारा करता है। हालांकि, कागजात उन्होंने सीधे जनरल वाशिंगटन को भेजे, जो उस समय हार्टफोर्ड में थे। उनके अगले कमांडर, मेजर टॉलमैज के लौटने पर ही असलियत सामने आई। टॉलमैज के आग्रह पर, आंद्रे को जनरल अर्नोल्ड के पास ले जा रहे दल को वापस बुला लिया गया और सैंड्स मिल्स में लाया गया। लेकिन आंद्रे की गिरफ्तारी की सूचना जनरल अर्नोल्ड को देने वाले पत्र को वेस्ट प्वाइंट तक जाने की अनुमति दे दी गई!

अगली सुबह नाश्ते के समय बेनेडिक्ट अर्नोल्ड को पत्र मिला। जनरल मेज से उठे, घोषणा की कि उन्हें तुरंत नदी पार करके वेस्ट प्वाइंट जाना है, और बड़ी घबराहट में अपने कमरे में चले गए। उनकी पत्नी उनके पीछे गईं और उन्होंने उन्हें बताया कि उन्हें तुरंत जाना होगा, शायद हमेशा के लिए। फिर वे अपने घोड़े पर सवार हुए और नदी किनारे की ओर दौड़ पड़े। अपनी नाव में कूदकर उन्होंने अपने आदमियों को आदेश दिया कि वे उन्हें लगभग सत्रह मील नीचे स्थित वल्चर नामक जहाज तक ले जाएं। उन्होंने अपने आदमियों को समझाया कि वे शांति का झंडा लेकर आए हैं और वादा किया कि अगर वे जल्दी पहुँच गए तो उन्हें रम का अतिरिक्त राशन मिलेगा। जब नाव ब्रिटिश जहाज पर पहुँची, तो वे उस पर कूद पड़े और यहाँ तक कि नाविकों को बंदी बनाने की धमकी देकर उन्हें राजा की सेवा में शामिल होने के लिए मजबूर करने की कोशिश की। आदमियों ने इनकार कर दिया, और वल्चर न्यूयॉर्क शहर के लिए रवाना हो गया। वहाँ पहुँचने पर, जनरल क्लिंटन ने नाविकों को रिहा कर दिया, जो उन दिनों में वीरता का एक असाधारण कार्य था।

इसी बीच आंद्रे पर जासूसी का मुकदमा चल रहा था। टैप्पन में कोर्ट-मार्शल द्वारा दोषी पाए जाने पर, उन्हें 2 अक्टूबर, 1780 को फांसी दे दी गई। तीन मिलिशिया सैनिकों, जिन्होंने इस प्रकार नए गणतंत्र के अस्तित्व को बचाया था, को कांग्रेस द्वारा विशेष पदक प्रदान किए गए।

* * *

टैप्पन और टैरीटाउन के आसपास का पूरा इलाका "आंद्रे" का गढ़ है। फिलिप्स कैसल में सीढ़ियों के नीचे एक छोटी सी कोठरी में आंद्रे से जुड़ी यादगार वस्तुओं की एक विशेष प्रदर्शनी लगी है। यह अफवाह लगातार फैली हुई है कि आंद्रे अपने अपहरणकर्ताओं से भागने की कोशिश कर रहा था। पीकस्किल में वैन कोर्टलैंड हाउस में रहने वाली श्रीमती कॉर्नेलिया बीकमैन के अनुसार, उनके घर में एक सूटकेस था जिसमें अमेरिकी सेना की वर्दी और काफी नकदी थी। वह सूटकेस आंद्रे का लिखित संदेश लाने वाले किसी भी व्यक्ति को सौंप दिया जाना था। जोशुआ हेट स्मिथ, जिसने अर्नोल्ड से मुलाकात के बाद आंद्रे को भागने में मदद की थी, ने बाद में सूटकेस मांगा; हालांकि, स्मिथ के पास लिखित में कुछ भी नहीं था, इसलिए बीकमैन ने उसे सूटकेस देने से इनकार कर दिया। हालांकि, यह कहानी क्रांति के कई वर्षों बाद ही सामने आई, शायद इसलिए कि श्रीमती बीकमैन को राजद्रोह के मुकदमे में फंसने का डर था या शायद इस मामले में उनकी अपनी कुछ भावनाएं थीं।

हमारा अगला पड़ाव वैन कोर्टलैंड हवेली था, जो कार से पंद्रह मिनट से ज़्यादा दूर नहीं थी। ज़ाहिर है, पैट स्मिथ आज सुबह अच्छे मूड में थीं। अपनी छोटी सी विदेशी कार में वह हमसे आगे इतनी तेज़ चल रही थीं कि हमें उनके साथ चलना मुश्किल हो रहा था। यह देखना अद्भुत था कि वह महिला लगभग सांप की तरह फुर्ती से ट्रैफिक के बीच से कैसे निकल रही थीं, जिससे हमें आश्चर्य हो रहा था कि वह कब तक ऐसा कर पाएंगी। हिम्मत करके उनका पीछा करते हुए, हम स्लीपी हॉलो कब्रिस्तान से गुज़रे और कुछ देर उसके बारे में सोचा। नहीं, हमें वहाँ दफ़न सभी मशहूर डच अमेरिकियों की, न ही वाशिंगटन इरविंग और पास के सनसाइड की ज़्यादा चिंता थी; हम सच कहें तो सिर्फ़ अपनी चिंता कर रहे थे। क्या हम भी स्लीपी हॉलो कब्रिस्तान पहुँचेंगे, या वैन कोर्टलैंड हवेली तक सही-सलामत पहुँच पाएँगे...?

यह हवेली अपने आप में एक खूबसूरत दो मंजिला इमारत है, जिसे बड़ी सावधानी से पुनर्स्थापित किया गया है और अठारहवीं सदी के फर्नीचर और कलाकृतियों से सजाया गया है, जिनमें से कुछ मूल घर से ही ली गई हैं। फिलिप्सबर्ग मनोर की देखरेख करने वाले उसी फाउंडेशन द्वारा इसे एक पर्यटक आकर्षण में परिवर्तित किया गया है। एक पहाड़ी पर स्थित यह घर, एक खुले संग्रहालय को चलाने का एक आदर्श उदाहरण है। हालांकि, हवेली तक पहाड़ी पर चढ़ने से पहले, हमने पहाड़ी की तलहटी में स्थित फेरीबोट हाउस का दौरा किया।

अठारहवीं सदी और उन्नीसवीं सदी के शुरुआती दौर में, नदी घर के करीब आती थी, और वैन कोर्टलैंड्स के लिए माल लाने वाले जहाजों के लिए अपना माल उतारने के लिए काफी दूर तक अंतर्देशीय आना संभव था। फेरीबोट इन उस स्थान पर फेरी होने का एक स्वाभाविक परिणाम प्रतीत होता था: फेरी हडसन नदी की एक शाखा को पार करती थी, जो बहुत चौड़ी नहीं थी, लेकिन इतनी चौड़ी थी कि पैदल या छोटी नाव से पार न की जा सके। चूंकि इन इमारतों का काफी हिस्सा पुनर्स्थापित किया गया था, मुझे आश्चर्य हुआ कि क्या इंग्रीड अतीत से कुछ खोज पाएगी।

वह सराय एक छोटा सा प्यारा सा घर निकला। नीचे हमें एक कमरा मिला जो शायद सार्वजनिक कक्ष रहा होगा, एक रसोईघर और एक और कमरा, जिसके ऊपर घुमावदार सीढ़ियाँ थीं। सच कहूँ तो, मुझे इससे बहुत कम उम्मीद थी, लेकिन मैं पैट स्मिथ को नाराज़ नहीं करना चाहता था, जिन्होंने यहाँ आने का सुझाव दिया था।

इंग्रिड ने कहा, "अजीब बात है, जब मैं दरवाजे से अंदर दाखिल हुई, तो मुझे ऐसा लगा जैसे मुझे भीड़ में से अपना रास्ता जबरदस्ती बनाना पड़ रहा हो।"

क्यूरेटर इस बात पर हैरान दिखीं, क्योंकि उन्हें भी इस खास दौरे से कोई उम्मीद नहीं थी। उन्होंने उदास स्वर में कहा, "मुझे यह समझ नहीं आ रहा है। यह हमारी सबसे दोस्ताना इमारतों में से एक है।"

मैंने कहा, "खैर, पुराने जमाने में नौका-नावों पर बने सराय हिल्टन जैसे तो बिल्कुल नहीं होते थे।"

इंग्रिड ने कहा, "मुझे यहां बहुत हलचल महसूस हो रही है। यहां कुछ हुआ है, फांसी तो नहीं हुई, लेकिन उससे जुड़ा हुआ है।"

हम ऊपर गए, जहाँ मैंने इंग्रीड को एक ताक के सामने रोक दिया, जिसमें आंद्रे की फाँसी की समकालीन तस्वीर लगी हुई थी। अभी तक हमने मेजर आंद्रे या उस इलाके से उनके संबंध के बारे में बात नहीं की थी, और मुझे पूरा यकीन है कि इंग्रीड को इस संबंध का एहसास भी नहीं था। मैंने पूछा, "इसे देखकर क्या आपको कोई अंदाज़ा है कि यह कौन है?"

इंग्रीड, जिसकी दृष्टि बहुत कमजोर है, ने दूर से तस्वीर को देखा और कहा, "मुझे लगता है कि वह कभी इस जगह से गुजरा होगा।" और शायद वह गुजरा भी हो।

जैसे ही हम वैन कोर्टलैंड हवेली की ओर पहाड़ी पर चढ़े, पर्यटकों के जाने का समय बिल्कुल अनुकूल था, इसलिए मैंने पैट स्मिथ से हवेली के बारे में सवाल किया।

“मेरी माँ उस परिवार को जानती थीं जो इस घर के मालिक हैं,” पैट स्मिथ ने बात शुरू की। “वैन कोर्टलैंड परिवार के आखिरी वंशजों में श्रीमती जीन ब्राउन और श्रीमती मेसन थीं। यह 1930 के दशक के अंत या 1940 के दशक की बात है, जब मैं न्यू कैनान में रहती थी। ऐसा लगता है कि घर में कुछ ऐसी अजीब घटनाएं होती थीं कि उन दोनों महिलाओं ने मदद के लिए न्यूयॉर्क के आर्कबिशप को बुलाया। उन्होंने शिकायत की कि एक आत्मा ‘अजीबोगरीब हरकतें’ कर रही है, एक ऐसी गाड़ी की आवाज़ आती है जिसे कोई देख नहीं सकता और भूत-प्रेतों से जुड़ी दूसरी अजीबोगरीब आवाज़ें आती हैं।”

उन्होंने इस बारे में क्या किया?

“शामिल होने की अनिच्छा के बावजूद, आर्कबिशप उस हवेली में गए, जिसका एक कारण परिवार का रुतबा भी था। उन्होंने अपने पूरे धार्मिक वस्त्र पहने और भूत भगाने की रस्म अदा की। इससे कोई फायदा हुआ या नहीं, यह तो मैं नहीं जानता, लेकिन कुछ समय बाद एक मानसिक रूप से संवेदनशील व्यक्ति भी उस घर में गया और उसने कुछ आवाज़ें रिकॉर्ड कीं। जहाँ तक मुझे पता है, इनमें से कुछ भी कभी प्रकाशित नहीं हुआ, और हो सकता है कि वह प्रेत आज भी वहाँ मौजूद हो।”

हम हवेली पहुँच चुके थे और घर के निचले हिस्से में दाखिल हुए। औपनिवेशिक पोशाक पहने दो युवतियों ने हमारा स्वागत किया और हमें पारंपरिक तरीके से पके हुए कुछ भुट्टे के टुकड़े परोसे। हमने घर का ऊपर से नीचे और नीचे से ऊपर तक चक्कर लगाया, लेकिन इंग्रीड को कुछ भी असामान्य महसूस नहीं हुआ। हाँ, उसे घर में रहने वाले लोगों की मौजूदगी का एहसास ज़रूर हुआ, उनके आने-जाने का, लेकिन न कोई त्रासदी, न कोई गहरी छाप, और सबसे बढ़कर, कोई उपस्थिति नहीं। पैट स्मिथ थोड़ी निराश लग रही थीं। वह भूतों पर ज़्यादा विश्वास नहीं करती थीं, लेकिन सनसाइड में कुछ अलौकिक शक्ति अनुभव होने के कारण, वह पूरी तरह से आश्वस्त नहीं थीं। उसी क्षण उन्हें याद आया कि उन्होंने अपना शॉपिंग बैग फेरीबोट इन में छोड़ दिया था। बैग में इलाके के विभिन्न औपनिवेशिक घरों के बारे में बहुत सारी किताबें थीं, और वह हमें देना चाहती थीं। बहाना बनाकर, वह तेज़ी से पहाड़ी से नीचे

फेरीबोट इन की ओर भागीं। वह कुछ ही देर में वापस आ गई, उसकी सांस थोड़ी फूल रही थी, जिससे मुझे आश्चर्य हुआ कि क्या वह शाम के समय फेरीबोट इन में अपनी एकल यात्रा को यथासंभव संक्षिप्त रखना चाहती थी।

* * *

एक भव्य विक्टोरियन हवेली में, जिसके ऊपर एक केंद्रीय मीनार है, टैरीटाउन्स का ऐतिहासिक समाज एक अत्यंत सुव्यवस्थित स्थानीय संग्रहालय और अनुसंधान केंद्र के रूप में कार्य करता है। आम रुचि की ऐसी वस्तुओं को प्रदर्शित करने से बचते हुए, जो कहीं और अधिक मात्रा और बेहतर गुणवत्ता में मिल सकती हैं, ऐतिहासिक समाज आस-पास के क्षेत्र से संबंधित वस्तुओं और सूचनाओं पर ध्यान केंद्रित करता है। यह विशेष रूप से 1786 के बाद के क्षेत्र के पैम्फलेट, कागजात, नक्शे और अन्य साहित्य पर मजबूत पकड़ रखता है। समाज के संग्रहालय के प्रमुख कमरों में से एक को 'कैदियों का कमरा' कहा जाता है। इसमें मेजर आंद्रे की गिरफ्तारी से संबंधित सामग्री का एक बड़ा संग्रह प्रदर्शित है। इनमें लिथोग्राफ, उत्कीर्णन, दस्तावेजी सामग्री, पत्र और अन्य चीजों के अलावा एक कुर्सी शामिल है। यह वही कुर्सी है जिस पर आंद्रे तब बैठते थे जब वे यॉर्कटाउन हाइट्स के दक्षिण में अंडरहिल स्थित घर में एक स्वतंत्र व्यक्ति थे। जब हमने अपनी यात्रा का उद्देश्य बताया, तो क्यूरेटर श्रीमती एडिलेड स्मिथ ने हमारी असाधारण रूप से सहायता की। हमेशा की तरह, मैंने इंग्रीड को श्रीमती स्मिथ या मिस स्मिथ (जो साहित्य से भरा अपना शॉपिंग बैग वापस मिलने के बाद आई थीं) के साथ हुई मेरी बातचीत सुनने से रोक दिया। जैसे ही मुझे इंग्रीड के साथ कुछ पल अकेले बिताने का मौका मिला, मैंने उससे उस कुर्सी को छूने के लिए कहा।

“मुझे बस हल्का सा आभास हो रहा है,” उसने कुर्सी पर बैठते हुए और फिर उठते हुए कहा। “हो सकता है यहाँ किसी तरह की कोई बैठक हुई हो, या हो सकता है उसे इस कुर्सी के पास या इस पर बैठे हुए ही सजा सुनाई गई हो। मुझे लगता है कि इस कमरे में यह तय करने के लिए कोई बैठक हुई थी कि आगे क्या होगा।”

लेकिन उन्हें कुर्सी के बारे में कोई ठोस सबूत नहीं मिला। स्मृति चिन्हों को देखते हुए उन्होंने टिप्पणी की, “मुझे लगता है कि उसे पकड़े जाने से पहले काफी समय तक पीछा किया गया था। मुझे लगता है कि इस कमरे में रखी कुर्सी का उसकी सजा से कुछ संबंध है।”

क्या यह कुर्सी असली है?

"हां मुझे ऐसा लगता है।"

"अब इस कमरे के बारे में, यानी बंधकों के कमरे के बारे में, क्या आपको इसमें कुछ खास महसूस होता है?"

"हां, मुझे लगता है कि यहीं पर यह निर्णय लिया गया था, और मुझे लगता है कि यहां बहुत सारे पुरुष मौजूद थे, शहर के लोग और सरकार के लोग।"

अगर इंग्रीड मुझे खुश करने के लिए कोई मनगढ़ंत कहानी बनाना चाहती, तो वह इससे बुरा कुछ नहीं कर सकती थी। कमरे और इमारत की हर चीज़ उसे बता देती कि यह उन्नीसवीं सदी की है, और जो उसने अभी-अभी वर्णन किया है, वह ऐतिहासिक दृष्टि से बेमेल लगता है। लेकिन ये उसकी भावनाएँ थीं, और एक संवेदनशील व्यक्ति होने के नाते, उसने अपने मन में जो भी आया या जिस चीज़ से वह प्रभावित हुई, उसे कहने का दायित्व महसूस किया, न कि यह जाँचने का कि क्या यह उस स्थिति से मेल खाता है जिसमें वह खुद को पा रही थी। मैंने क्यूरेटर की ओर मुड़कर पूछा, "श्रीमती स्मिथ, इस कमरे का उपयोग किस लिए किया जाता था, और यह इमारत कितनी पुरानी है?"

“यह इमारत लगभग एक सौ पच्चीस साल पुरानी है; हमारे रिकॉर्ड बताते हैं कि इसका निर्माण 1848 और 1850 के बीच टैरीटाउन के पहले मेयर कैप्टन जैकब ओडेल द्वारा करवाया गया था। इसे एक ही मकान के रूप में बनाया गया था, और इसके निर्माण के बाद से दो परिवार यहाँ रह चुके हैं। पहले ओडेल परिवार रहता था, और बाद में श्री और श्रीमती ऑसी केस। श्रीमती केस अब सत्तासी वर्ष की हैं और सेवानिवृत्त हो चुकी हैं। इस मकान को सोसाइटी के मुख्यालय के रूप में खरीदा गया था। इसका उपयोग बीस वर्षों से अधिक समय से हमारे मुख्यालय के रूप में किया जा रहा है।”

"क्या इस घर के बनने से पहले इस जगह पर कुछ था?"

"मुझें नहीं पता।"

"क्या इस कमरे में कभी किसी पर मुकदमा चलाया गया है या किसी को सजा सुनाई गई है?"
"मुझें नहीं पता।"
यह महसूस करते हुए कि फर्नीचर का एक टुकड़ा अपने साथ उस वातावरण का एक हिस्सा ला सकता है जिसमें वह किसी विशेष रूप से भावनात्मक घटना के घटित होने के समय मौजूद था, मैंने श्रीमती स्मिथ से कुर्सी के इतिहास के बारे में पूछताछ की।
“यह कुर्सी, जो 1725 की है, हमें यॉर्कटाउन से भेंट की गई थी। यह वही कुर्सी है जिस पर मेजर आंद्रे अपनी गिरफ्तारी की सुबह बैठे थे, जब वह और जोशुआ स्मिथ नाश्ते के लिए इसहाक अंडरहिल के घर पर रुके थे।”
उस सुबह आंद्रे के मन में जो विचार चल रहे थे, जब उन्हें अपने मिशन की सफलता का लगभग पूरा भरोसा था, वे काफी सुखद रहे होंगे। वे जनरल अर्नोल्ड से कागजात हासिल करने में सफल हो गए थे; उनकी नींद अच्छी रही थी, उन्हें अच्छा नाश्ता मिला था, और अब वे संभवतः मैनहट्टन जा रहे थे, जहाँ उनकी मुलाकात अपने कमांडिंग जनरल सर हेनरी क्लिंटन से होनी थी। अगर इंग्रीड को उस कुर्सी के आसपास कुछ महसूस हुआ, तो शायद वह आंद्रे के कुर्सी पर थोड़े समय के लिए बैठने से परे, अंडरहिल घर के इतिहास से जुड़ी किसी बात को समझने की कोशिश कर रही थीं। फिर उन्होंने सजा और गिरफ्तारी की बात क्यों की, जबकि मेजर आंद्रे के मिशन के जाने-माने ऐतिहासिक वृत्तांत से उन्हें ये बातें पता ही होंगी? मुझे लगता है कि उस अपेक्षाकृत छोटे कमरे में रखे कई दस्तावेजों और यादगार वस्तुओं ने एक ऐसा माहौल बना दिया होगा जिसमें अतीत की घटनाओं के कुछ अंश और टुकड़े किसी न किसी रूप में फिर से जीवंत हो गए होंगे। शायद इंग्रीड इस सतही लेकिन फिर भी मौजूद मानसिक परत को महसूस कर पाई हों।
मेजर आंद्रे अपने समय में एक तरह से मशहूर हस्ती बन गए थे। ब्रिटिश जासूसी के उस्ताद के रूप में उनकी प्रतिष्ठा को क्रांतिकारी युद्ध के दौरान भी बहुत बढ़ा-चढ़ाकर पेश किया गया था। यह समझना आसान है जब हम यह समझते हैं कि अमेरिकी स्वतंत्रता का संघर्ष पूर्ण हार के कितने करीब आ गया था। अगर आंद्रे ने मेजर जनरल अर्नोल्ड द्वारा सौंपे गए दस्तावेज़ अंग्रेजों को दे दिए होते, तो वेस्ट प्वाइंट पर कब्ज़ा नहीं रह पाता। उस प्वाइंट पर बनी जटिल किलेबंदी के ढहने के साथ ही, पूरा उत्तरी भाग जल्द ही अंग्रेजों के कब्ज़े में आ जाता।

निस्संदेह, मेजर आंद्रे की गिरफ्तारी युद्ध में एक निर्णायक मोड़ था, जो उस समय गतिरोध की स्थिति में पहुँच गया था, हालाँकि यह गतिरोध अंग्रेजों के पक्ष में था। वे इंतज़ार कर सकते थे और निष्क्रिय रह सकते थे जबकि महाद्वीपीय सेना भूख से मर रही थी, और एक और सर्दी का सामना करने में असमर्थ थी।

जनरल अर्नोल्ड का विश्वासघात कोई अचानक लिया गया फैसला नहीं था; युद्ध के प्रति उनके विचार इस घटना से कुछ समय पहले ही बदल चुके थे। इसके कारण उनकी पृष्ठभूमि, उनकी प्रबल टोरी विचारधारा और क्रांतिकारी सेना की कमान के प्रति उनके मन में निहित असंतोष में निहित हैं। उन्हें लगा कि उनकी तरक्की उतनी तेज़ी से नहीं हुई जितनी होनी चाहिए थी; आंद्रे की गिरफ्तारी से मात्र तीन महीने पहले ही उन्हें वेस्ट प्वाइंट की कमान सौंपी गई थी। महाद्वीपीय कमान द्वारा उनकी प्रतिभा को देर से मिली मान्यता के लिए आभारी होने के बजाय, अर्नोल्ड ने इसे अपने नापाक इरादे को पूरा करने का वरदान समझा। कई महीनों तक उनका न्यूयॉर्क स्थित सर हेनरी क्लिंटन के साथ पत्राचार चलता रहा, और स्वतंत्रता के उद्देश्य के साथ विश्वासघात करने का उनका निर्णय वेस्ट प्वाइंट का कमांडर बनने से बहुत पहले ही हो चुका था।

लेकिन आंद्रे उतना माहिर जासूस नहीं था जितना बाद के विवरणों में उसे बताया गया है: तीन मिलिशिया सैनिकों द्वारा पकड़े जाने पर उसकी अटपटी प्रतिक्रिया से पता चलता है कि उसे ऐसे मामलों का बिल्कुल भी अनुभव नहीं था। चूंकि उसके पास जनरल अर्नोल्ड द्वारा हस्ताक्षरित एक डिस्चार्ज सर्टिफिकेट था, इसलिए उसे केवल यह दस्तावेज़ दिखाना था और सैनिक उसे छोड़ देते। इसके बजाय, उसने स्वेच्छा से यह जानकारी दी कि वह एक ब्रिटिश अधिकारी है। यह सब इसलिए हुआ क्योंकि एक मिलिशिया सैनिक ने हेसियन कोट पहना हुआ था। आंद्रे को कभी यह ख्याल ही नहीं आया कि कोट चोरी का हो सकता है या युद्ध के मैदान से उठाया गया हो सकता है! लेकिन आंद्रे के चरित्र में एक कमजोरी थी, एक घमंड था, और तीन साधारण मिलिशिया सैनिकों से मिलने पर खुद को एक महत्वपूर्ण काम पर आए ब्रिटिश अधिकारी के रूप में पेश करने का मौका वह गंवाना नहीं चाहता था। शायद उसके व्यक्तिगत घमंड ने इस घातक निर्णय में भूमिका निभाई; शायद वह वास्तव में खुद को अपनी

ही तरफ के सैनिकों के बीच मानता था। उसके इस अजीब व्यवहार का कारण जो भी हो, उसे इसकी कीमत अपनी जान देकर चुकानी पड़ी। मेजर आंद्रे को फांसी दिए जाने के कुछ ही हफ्तों बाद, पूरी कॉन्टिनेंटल सेना को इस घटना की जानकारी हो गई, ब्रिटिश कमान को भी इसकी सूचना मिल गई, और एक विस्तृत दस्तावेज़ में सर हेनरी क्लिंटन ने बताया कि अगर अर्नोल्ड वेस्ट प्वाइंट और उसकी चौकी को अंग्रेजों के हवाले करने में कामयाब हो जाता, तो उनके मन में क्या योजना थी। इस प्रकार, आंद्रे का नाम दोनों पक्षों के सैनिकों के बीच आम हो गया।

* * *

1951 में मैंने न्यूयॉर्क न्यूज़ के दिवंगत स्तंभकार डेंटन वॉकर के औपनिवेशिक शैली के घर में हुई एक भूतिया घटना की जांच की। यह मामला सबसे पहले "द रॉकलैंड काउंटी घोस्ट" शीर्षक से टुमॉरो पत्रिका में और बाद में घोस्ट हंटर में प्रकाशित हुआ था। 1941 से 1951 के बीच घर में कई तरह की गड़बड़ियां हुई थीं, जिनके कारण श्री वॉकर को विश्वास हो गया था कि उनके घर में कोई प्रेत रहता है। दिवंगत एलीन गैरेट ने जांच में माध्यम बनने की पेशकश की और प्रख्यात मनोचिकित्सक डॉ. रॉबर्ट लेडलॉ मुझसे और जांच की निगरानी के लिए घर पर मिलने वाले थे। श्रीमती गैरेट के घर में कदम रखने से पहले ही, उन्होंने हमें अपनी एक यात्रा के दौरान देखी गई एक प्रेतात्मा की शक्ति के बारे में बताया, जिसमें उन्होंने घर में एक प्रेतात्मा को देखा था। उन्होंने हमें बताया कि उसका नाम एंड्रियास था और उन्हें लगता था कि वह घर के तत्कालीन मालिक से जुड़ा हुआ था।

उस घर का दौरा मेरे द्वारा अब तक किए गए भूतिया घरों से संबंधित सबसे नाटकीय और शायद सबसे भयावह मानसिक जांचों में से एक था। श्री वॉकर की मृत्यु के बाद से इस घर का स्वामित्व बदल गया है। यह घर एक पहाड़ी पर स्थित है जो कभी एक बड़े खेत का हिस्सा हुआ करती थी। क्रांतिकारी युद्ध के दौरान, यह घर क्रांतिकारी पक्ष की एक टुकड़ी के मुख्यालय के रूप में कार्य करता था। जनरल एंथोनी वेन, जिन्हें "पागल" एंथोनी के नाम से जाना जाता था, का मुख्यालय इस स्थान के बहुत पास था, और 1779 में स्टोनी प्वाइंट की लड़ाई कुछ ही मील दूर लड़ी गई थी। यह इमारत एक किलेबंद आश्रय स्थल के रूप में

हथियारों, गोला-बारूद, भोजन के भंडारण और कभी-कभी कैदियों की सुरक्षा के लिए उपयोग की जाती थी।

जब डेंटन वॉकर ने घर खरीदा था, तब वह बहुत जर्जर हालत में था, लेकिन धैर्य और काफी धन खर्च करके उन्होंने उसे उसके पुराने स्वरूप में बहाल कर दिया। घर के पुनर्निर्माण के दौरान, वॉकर पास के एक सराय में ठहरे, लेकिन कभी-कभी अपने घर के ऊपरी हिस्से में बने एक सैन्य पलंग पर दोपहर की झपकी लेते थे। इन पलों में उन्हें ऐसा स्पष्ट आभास होता था कि उनके साथ उसी कमरे में एक क्रांतिकारी सैनिक मौजूद है। दिवंगत न्यूज़ स्तंभकार के लिए ये मानसिक आभास कोई नई बात नहीं थी; उन्होंने जीवन भर इनका अनुभव किया था। किराए पर रहने के पहले दो वर्षों में, वॉकर ने कुछ और नहीं देखा, लेकिन 1944 तक श्रव्य और दृश्य दोनों तरह की घटनाएं होने लगी थीं।

एक दोपहर, जब वह नीचे वाले कमरे में आराम कर रहा था, तो उसने सामने के दरवाजे पर ज़ोरदार दस्तक सुनी, जो किसी के भारी लोहे के नॉकर को हिलाने के कारण हुई थी। लेकिन उसे दरवाजे पर कोई नहीं मिला। वॉकर के नौकर जॉनी समेत कई अन्य लोग भी कई बार दरवाजे पर दस्तक देने से जाग उठे, लेकिन वहाँ कोई नहीं मिला। घर की मरम्मत में लगे एक मजदूर ने शिकायत की कि दोपहर के समय, जब वह घर में अकेला होता था, तो उसे भारी बूट पहने किसी के सीढ़ियों पर चढ़ने की आवाज़ सुनाई देती थी। बूट पहने किसी व्यक्ति, संभवतः पुरुष, के भारी कदमों की आवाज़ बार-बार आती रहती थी। 1952 की गर्मियों में, जब वॉकर के नीचे वाले कमरे में मेहमान थे, तो सभी ने किसी के सीढ़ियों से गिरने की ज़ोरदार आवाज़ सुनी। अन्य, अधिक प्रत्यक्ष घटनाओं ने उस जगह के रहस्यमय वातावरण को और बढ़ा दिया: सत्रहवीं शताब्दी के एक मोटे पीतल के जार पर एक भारी आदमी के अंगूठे का स्पष्ट निशान, जिसकी किसी भी आधार पर व्याख्या नहीं की जा सकती थी; रसोई के फर्श से आठ फीट ऊपर एक प्लेट रेल पर सामने के दरवाजे की खिड़की में लगे कांच के एक टुकड़े का रहस्यमय ढंग से प्रकट होना; दालान में अपनी जगह से चित्रों का गिरना; और बिस्तर के पीछे किताबों की अलमारी से एक महिला मेहमान पर पीतल का एक जग फेंका जाना।

एक शाम, डेंटन वॉकर के ब्रॉडवे के दो दोस्त, जो दोनों ही तंत्र-मंत्र में रुचि रखते थे लेकिन उन पर पूरी तरह विश्वास नहीं करते थे, सप्ताहांत के लिए उनके घर आए। उनमें से एक, एल., जो एक प्रसिद्ध ब्रॉडवे लेखक थे, ने ऊपर के भूतिया बेडरूम में रात बिताने की ज़िद की। एक घंटे बाद, पायजामा पहने मेहमान नीचे आ गए और वॉकर के छोटे से स्टूडियो में पहुँचे, जो उस समय घर के दूसरे छोर पर था और जहाँ वॉकर गड़बड़ी के कारण सो रहे थे। उन्होंने उन "मूर्खतापूर्ण मज़ाकों" को रोकने की मांग की जो उन्हें लग रहा था कि कोई उनके साथ कर रहा है। उन्होंने बताया कि उनके बिस्तर के बगल वाली बत्ती बार-बार जल-बुझ रही थी, जबकि घर की बाकी सभी बत्तियाँ लगातार जल रही थीं। वॉकर ने उन्हें गाँव में बिजली की अनियमित आपूर्ति का बहाना बनाकर वापस बिस्तर पर भेज दिया। एक घंटे से कुछ ज़्यादा समय बाद, एल. दौड़ते हुए वापस वॉकर के पास आए और उनसे बाकी रात वॉकर के स्टूडियो में बिताने की अनुमति मांगी।

सुबह उसने अपने अजीब व्यवहार का कारण बताया: गहरी नींद से उसकी नींद तब टूटी जब उसे लगा जैसे किसी ने उसके चेहरे पर ज़ोर से थप्पड़ मारा हो। बिस्तर पर एकदम सीधा बैठते हुए उसने देखा कि उसने जो कमीज़ कुर्सी के पीछे रखी थी, हवा से हिल रही थी। कुर्सी बहुत धीरे-धीरे हिल रही थी। तभी एल. को ख्याल आया कि कमरे में हवा तो हो ही नहीं सकती, क्योंकि सारी खिड़कियाँ बंद थीं!

कई बार वॉकर को ऐसा लगता था कि कोई घर में घुसने की बेताब कोशिश कर रहा है, मानो शरण लेने के लिए। उन्हें याद आया कि पिछले किराएदार के बच्चों ने घर के कोने पर लगे एक बकाइन के पौधे के पास कुछ गड़बड़ी की बात कही थी। सड़क से घर तक जाने वाला कच्चा पत्थर का रास्ता इसी बकाइन के पौधे के पास से गुजरता था और कुएं तक जाता था, जिसके बारे में स्थानीय परंपरा के अनुसार, क्रांतिकारी सैनिकों ने इसका इस्तेमाल किया था।

जांचकर्ताओं का हमारा दल 22 नवंबर, 1952 को उस घर पर पहुंचा, जो एक बेहद भयावह दिन था, मानो यह सब पहले से ही तय किया गया हो। दोपहर करीब 3 बजे, हम ऊपर के शयनकक्ष में आत्माओं से संपर्क करने के लिए बैठ गए। कुछ ही सेकंडों में, एलीन गैरेट मानो अपने शरीर से गायब हो गईं, और उनकी जगह एक और व्यक्ति प्रकट हुआ। सीधे बैठे और

भारतीय लहजे में रुक-रुक कर बोलते हुए, श्रीमती गैरेट के आध्यात्मिक मार्गदर्शकों में से एक, उवानी ने हमें संबोधित किया और हमें उस व्यक्तित्व के लिए तैयार किया जो उनके बाद प्रकट होने वाला था।

“मेरा सामना एक बेहद बेचैन, एक बहुत ही विचित्र व्यक्तित्व से हो रहा है, जो अपने जीवन में शायद पूरी तरह से मानसिक रूप से ठीक नहीं है,” उन्होंने हमें समझाया। नियंत्रक व्यक्तित्व ने आगे कहा कि उस सत्ता द्वारा घर में मचाई जा रही अत्यधिक अशांति के कारण उन्हें शांत वातावरण बनाए रखने में कठिनाई हो रही है। नियंत्रक के बोलते ही, माध्यम के हाथ-पैर कांपने लगे। उन्होंने बताया कि वह उस सत्ता की शारीरिक स्थिति का अनुभव कर रही हैं जो जल्द ही हमसे बात करने वाली है, एक बीमारी जिसे क्लासिकल पाल्सी के नाम से जाना जाता है। डॉ. लेडलॉ ने सिर हिलाया और सत्ता को आगे बोलने के लिए कहा।

कुछ ही क्षणों में, एलीन गैरेट के शरीर में एक बिल्कुल नई शख्सियत ने प्रवेश कर लिया। असहनीय पीड़ा में बेकाबू होकर कांपते हुए, वह शख्स कुर्सी पर उठने की कोशिश करने लगा, लेकिन संतुलन बनाए रखने में असमर्थ रहा और अंततः फर्श पर गिर पड़ा। वहाँ, उसका एक पैर लगातार ज़ोर से कांपता रहा, जो पक्षाघात का एक लक्षण है, एक ऐसी बीमारी जिसमें मांसपेशियों पर नियंत्रण खो जाता है। दो मिनट या उससे अधिक समय तक, सम्मोहित शख्स के होठों से केवल अस्पष्ट ध्वनियाँ ही निकलती रहीं। अंततः हम उस शख्सियत को हमसे बात करने के लिए प्रेरित करने में सफल रहे। पहले तो केवल रुक-रुक कर आवाजें आ रही थीं, मानो वह शख्सियत असहनीय पीड़ा में हो। समय-समय पर वह शख्सियत अपने पैर और फिर अपने सिर को छूता रहा, जिससे संकेत मिलता था कि उसे उन हिस्सों में दर्द हो रहा है। डॉ. लेडलॉ ने हमारे सामने मौजूद शख्सियत को आश्वस्त किया कि हम मित्र बनकर आए हैं और वह हमसे खुलकर और बिना किसी भय के बात कर सकता है। हमारी बात समझकर, वह शख्सियत फूट-फूट कर रोने लगा, बेहद उत्तेजित हो गया, और साथ ही डॉ. लेडलॉ के पास आने की कोशिश करने लगा।

अंततः हम अधिकांश शब्दों को समझ पाए। वह व्यक्ति अंग्रेज़ी बोलता था, लेकिन उसमें पोलिश लहजा स्पष्ट था। आवाज़ कर्कश, असभ्य और एलीन गैरेट की अपनी आवाज़ से बिलकुल अलग थी।

“दोस्त...दोस्त...दया करो। मुझे पता है...मुझे पता है...,” और उसने डेंटन वॉकर की ओर इशारा किया। जैसे-जैसे हम धीरे-धीरे और धैर्यपूर्वक उससे और जानकारी निकालने लगे, हमारे सामने ज़मीन पर लेटे उस प्राणी से और जानकारी मिली। “पत्थर, पत्थर... मुझे ले जाने मत दो। मैं बोल नहीं सकता।” इतना कहकर उसने अपने सिर की ओर, फिर अपनी जीभ की ओर इशारा किया।

“पत्थर नहीं मारे जाएंगे। तुम पर पत्थर नहीं मारे जाएंगे,” डॉ. लेडलॉ ने उन्हें आश्वासन दिया।

“मारपीट नहीं?”

लेडलॉ ने उस संस्था को आश्वस्त किया कि वह बात कर सकता है और हम दोस्त हैं। फिर उसने पूछा कि उस संस्था का नाम क्या हो सकता है।

“वह मुझे बुलाता है। मुझे निकलना होगा। मैं और आगे नहीं जा सकता। भगवान के नाम पर, मैं और आगे नहीं जा सकता।”

इसके साथ ही उस सत्ता ने डेंटन वॉकर के हाथों को छुआ। वॉकर स्पष्ट रूप से भावुक हो गए। उन्होंने बस इतना कहा, "मैं तुम्हारी रक्षा करूंगा।"

वह प्राणी बार-बार "पत्थरों" की बात कर रहा था, और हमने मान लिया कि वह अपने ऊपर फेंके गए पत्थरों की बात कर रहा है। असल में, वह उन पत्थरों की बात कर रहा था जिनके नीचे उसने कुछ दस्तावेज़ छिपा रखे थे। लेकिन यह बात बाद में पता चली। इसी बीच उसने अपने मुँह की ओर इशारा करते हुए कहा, "दांत टूट गए हैं," और उसने बड़े ही सजीव तरीके से दिखाया कि कैसे लात मारकर उन्हें तोड़ दिया गया था। "मेरी रक्षा करो," वह प्राणी वॉकर के और करीब आते हुए बोला। डॉ. लेडलॉ ने पूछा कि क्या वह यहीं रहता है। जवाब में उसने हिंसक इशारा किया। "नहीं, बिलकुल नहीं। मैं यहीं छिपा हुआ हूँ। यहाँ से जा नहीं सकता।"

ऐसा प्रतीत हुआ कि वह किसी दूसरे व्यक्ति से छिप रहा था और उसे योजनाओं की जानकारी थी, जिन्हें उसने किसी दूरदराज स्थान पर छिपा रखा था। "आपने योजनाएँ कहाँ छिपाईं?" वॉकर ने पूछा।

“मुझे नक्शा दो,” उस प्राणी ने उत्तर दिया, और जब वॉकर ने उसे एक लिखने का पैड और कलम दी, तो उस प्राणी ने, श्रीमती गैरेट की उंगलियों का इस्तेमाल करते हुए, उसे ऐसे उठाया जैसे वह कोई कलम चला रहा हो। लकवे के कारण रेखाएँ भले ही अस्थिर और कांपती हुई

थीं, फिर भी वह नक्शा उस जगह का सटीक चित्रण था जहाँ उस प्राणी ने कागज़ात छिपाए थे। “आपके माप के अनुसार, एंड्रियास ने छिपाया...घर में नहीं...लकड़ी के घर में, लट्ठों के घर में...पंद्रह पत्थरों के नीचे...पंद्रह पत्थरों के नीचे...मेरे पास फ्रांसीसियों के लिए आदमियों और गोला-बारूद को स्थानांतरित करने की पूरी योजना है। मुझे ये योजनाएँ लट्ठों के घर में पहुँचानी हैं, ठीक वहीं जहाँ सूरज खिड़की पर पड़ता है। जहाँ सूरज खिड़की पर पड़ता है... लट्ठों के घर में पंद्रह पत्थरों के नीचे...वहाँ मैंने योजनाएँ रखी हैं।”

इसके बाद भय का एक और प्रकोप हुआ, जिसके दौरान उस प्राणी ने हमसे विनती की कि उसे दोबारा न ले जाने दें। बहुत पूछताछ के बाद, उस प्राणी ने हमें बताया कि उसे सुरक्षा की आवश्यकता है, वह पोलिश है और युवावस्था में इस देश में आया था। उसने वॉकर को गले लगा लिया और कहा कि वह उसके लिए भाई जैसा है। "गोस्पोडिन, गोस्पोडिन," उस प्राणी ने कहा, अपने भाई को फिर से पाकर अपनी खुशी जाहिर करते हुए। "मैं आंद्रे, तुम हैंस," उसने कहा। वॉकर हैंस होने के विचार से कुछ हद तक अचंभित था। "मेरा भाई," उस प्राणी ने कहा, "उसने भी हत्याएं कीं... मैं मर रहा हूँ... बड़ा मैदान, युद्ध। कल की तरह, कल की तरह... मैं यहाँ पड़ा हूँ... चारों ओर अंग्रेज। वे भयानक हैं।"

“क्या आप अमेरिकियों के साथ थे?” डॉ. लेडलॉ ने पूछा।

जाहिर तौर पर उस शब्द का उनके लिए कोई मतलब नहीं था। “नहीं, नहीं। बड़ा शब्द। गणतंत्र संरक्षण। झंडे में तारे, झंडे में तारे। गणतंत्र... वे गाते हैं।”

“तुम कब से इस घर में छिपे हुए हो?”

मैं थोड़ी देर के लिए बाहर जाती हूँ, वह यहीं रहता है, बातें करता है, वह कुछ समय के लिए यहाँ रहता है।

इस समय उवानी वापस लौटी और एंड्रियास को एलीन के शरीर से बाहर निकालते हुए बताया कि वह पोलिश युवक कैदी था। जाहिर तौर पर, वह फ्रांसीसी सैनिकों के साथ देश के अन्य हिस्सों में था। क्रांतिकारी सेना में उसके कई लोगों से अच्छे संबंध थे, वह हर तरह के लोगों के लिए एक वफादार नौकर की तरह काम करता था। लेकिन उसे यह समझ नहीं आया था कि वह किसके लिए काम कर रहा है। "वह आंद्रे नाम के किसी व्यक्ति की बात कर रहा है।" उवानी ने आगे कहा, “वह कुछ समय से आंद्रे के संपर्क में है, और उसे यह आंद्रे नाम के

मिलते-जुलते होने के कारण बहुत पसंद है...क्योंकि वह एंड्रूस्की है। आंद्रे से उसकी शक्ल मिलती-जुलती है। इसलिए, जहाँ तक मैं देख सकता हूँ, उसे इस आदमी को बचाने के लिए इस्तेमाल किया गया है। यहीं से उलझन शुरू होती है। उसकी शक्ल-सूरत के कारण उसे दो-तीन बार अलग-अलग लोगों ने पकड़ा; वह हूबहू आंद्रे जैसा दिखता है। उसका दोस्त आंद्रे गायब हो जाता है, और वह खो जाता है और इधर-उधर भटकता है और आखिरकार ब्रिटिश सैनिकों के हाथों पकड़ा जाता है। उसके पास पत्र और योजनाएँ होने की जानकारी है, और वह चाहता है कि मैं आपको बताऊँ कि उसने इन्हें उस जगह से ठीक पूर्व में छिपाया था जहाँ आप अभी हैं, एक अस्थायी इमारत में, जिसमें अलग-अलग तोपखाने रखे जाते थे। इसमें पहरेदारों के लिए एक विश्रामगृह भी था। इस तरह की रसोई में वह योजनाओं का खुलासा नहीं करता और उसे बेरहमी से पीटा जाता है। उसके हाथ-पैर टूट जाते हैं और वह बेहोश हो जाता है, उसकी मानसिक स्थिति ठीक नहीं रहती।" लेकिन उसके शरीर के एक तरफ एक अजीब सी चोट है और उसका पैर क्षतिग्रस्त है। ऐसा लगता है कि वह समय-समय पर कोमा में चले जाते हैं—जागते हैं, सपने देखते हैं और फिर से होश खो बैठते हैं, और कहानी से मुझे यह समझ में आता है कि वह हमेशा लोगों के प्रति सचेत नहीं रहते हैं।

उवानी ने जब हमें कहानी सुनाई तो हम सब सन्नाटे में बैठे रहे। फिर हमने उस दुर्भाग्यशाली व्यक्ति की मुक्ति के लिए प्रार्थना की। जहाँ तक मुझे पता है, तब से उस घर में कोई और गड़बड़ी नहीं हुई है। कागज़ात, ज़ाहिर है, अब अपने गुप्त स्थान पर नहीं थे। रोशाम्बो और लाफायेट के नेतृत्व में फ्रांसीसी सहायक सैनिक पूरे क्षेत्र में फैले हुए थे, और कागज़ात फ्रांसीसी टुकड़ियों और उनके अमेरिकी सहयोगियों के बीच आते-जाते रहे होंगे। इनमें से कुछ कागज़ात कम महत्वपूर्ण रहे होंगे और एंड्रियास जैसे साधारण व्यक्ति को भी सौंपे जा सकते थे।

साल बीतते गए, डेंटन वॉकर का देहांत हो गया, और घर का मालिकाना हक भी बदल गया, लेकिन वह पीतल का घड़ा जिसे डेंटन ने मेरी देखरेख में सौंपा था, अब भी मेरे पास ही था। जॉनी, जिसने इतने सालों तक दिवंगत स्तंभकार की इतनी अच्छी सेवा की थी, ने उसे लेने से इनकार कर दिया। उसके लिए, इसका मतलब था कि अब भूत उससे जुड़ सकता है। इन परिस्थितियों में, मैंने घड़ा अपने पास रखा और उसे अपने घर के एक शोकेस में कई अन्य

प्राचीन वस्तुओं के साथ रख दिया और इस बारे में ज्यादा नहीं सोचा। लेकिन रॉकलैंड काउंटी के उस घर की मूल यात्रा की लगभग बीसवीं वर्षगांठ पर, मैंने अपने साथ काम करने वाले दो कुशल माध्यमों की परीक्षा लेने का फैसला किया, यह देखने के लिए कि क्या पीतल से जुड़े अतीत के कुछ रहस्यों का पर्दाफाश हो सकता है।

25 सितंबर, 1972 को मैंने शॉन रॉबिन्स को एक भूरे रंग का कागज़ का थैला दिया जिसमें पीतल का जार रखा हुआ था। लेकिन शॉन उसे छू नहीं पा रही थी, इसलिए मैंने उसे निकालकर सीधे उसके हाथों में रख दिया। उसने कहना शुरू किया, “मुझे तीन अक्षर और एक प्रतीक चिन्ह दिखाई दिए। सबसे पहले मुझे ये अक्षर, किसी का नाम, जैसे B.A.R., दिखाई दिए; फिर मुझे दाढ़ी वाला एक आदमी दिखाई दिया, और वह शायद बहुत महत्वपूर्ण व्यक्ति रहा होगा। एक और आदमी भी था, जो मुझे ज़्यादा पसंद आया। वे मुझे नॉर्डिक जैसे लगे, क्योंकि उन्होंने अजीब से हेलमेट पहन रखे थे।”

"यहाँ जिस व्यक्ति की आपको अनुभूति हो रही है—क्या वह नागरिक है या सैनिक?"

“मैं ‘मुकुट’ शब्द के बारे में सोच रहा हूँ। यहाँ कोई है जिसने मुकुट पहना हुआ है; यह काल 1700 के दशक का है, शायद 1600 के दशक का। राजा मुकुट और एक सफेद, ऊँची गर्दन वाला, झालरदार कॉलर जैसा वस्त्र पहनता था, और फिर कवच भी। यह उन कई पहलुओं में से एक है जो मुझे इस वस्तु से मिलते हैं।”

मुझे यह बात समझ में आ गई कि अमेरिकी क्रांति के समय यह वस्तु पहले से ही पुरानी थी। डेंटन वॉकर ने इसे अपने संग्रह के दौरान हासिल किया था, और इसका घर से कोई सीधा संबंध नहीं था।

मुझे ऐसा लगा कि शॉन वस्तु का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण काफी सटीक ढंग से कर रहा था, वह उसके मूल स्वरूप तक पहुँच गया था, जब उसे पहली बार बनाया गया था। सत्रहवीं शताब्दी के एक अंग्रेज राजा का वर्णन वास्तव में काफी सही था। "कवच का रंग खुरदुरा है, लेकिन वह पूरा एक ही टुकड़ा है और उसे किसी और चीज़ के ऊपर पहना गया है, शायद मखमल के ऊपर। उसके सिर पर मुकुट है, और फिर भी मुझे लगता है कि उसने टोपी भी पहनी हुई है।" मुझे राजा चार्ल्स द्वितीय के पहनावे का इससे बेहतर वर्णन नहीं सूझा, और यह पीतल का घड़ा उनके शासनकाल में ही बना था।

मैंने पूछा, "इसमें और कौन-कौन सी परतें होती हैं?"

“यहाँ एक आदमी है जो देखने में ऐसा लगता है जैसे उसकी गर्दन टूट गई हो या उसे फाँसी दी गई हो। इस वस्तु के संबंध में मुझे सबसे अधिक प्रभाव इसी आदमी का महसूस होता है। उसकी दाढ़ी है और सामने से वह थोड़ा गंजा है।”

"तो फिर उसके साथ रहो और यह पता लगाने की कोशिश करो कि वह कौन था।"

शॉन ने उस वस्तु की एक बार फिर गहन जांच की, उसे अपने हाथों से छूकर देखा और फिर बताया, “वह इस मायने में महत्वपूर्ण है कि उस वस्तु में उसकी आत्मा समाई हुई है। उसकी हत्या एक ऐसे व्यक्ति ने की थी जिसके हाथ में एक ऐसी वस्तु थी जो मुझे राजदंड जैसी लगती है, लेकिन मैं नहीं जानती कि वह क्या है। उसके पीछे खड़े व्यक्ति ने उसकी हत्या की: उसने उसकी गर्दन के पिछले हिस्से में वार किया। हत्यारा एक प्रभावशाली व्यक्ति है।”

"पीड़ित के बारे में क्या? उसकी स्थिति क्या थी?"

"मुझे जो संक्षिप्त नाम समझ में आते हैं, वे पोंट या शायद बोएफ जैसे होते हैं।"

हालांकि यह एंड्रियास से मेल नहीं खाता था, लेकिन मुझे यह दिलचस्प लगा कि उसने दो फ्रांसीसी नाम चुने। मुझे याद आया कि बदकिस्मत पोलिश बूट ने फ्रांसीसी सहायक बलों में सेवा की थी। "क्या आप मूल देश का पता लगा सकते हैं?"

"यह कहना मुश्किल है, लेकिन जिस व्यक्ति की हत्या हुई उसका इंग्लैंड से कुछ संबंध था। शायद जिसने उसकी हत्या की उसका भी इंग्लैंड से संबंध था।"

फिर मैंने शॉन को निर्देश दिया कि वह अपना अंगूठा घड़े की दीवार में बने उस गड्ढे में डाले जहाँ एंड्रियास के भूतिया हाथ का निशान था। एक बार फिर, शॉन ने बोएफ़ नाम बताया। चूंकि मुझे यकीन नहीं था कि वह पीतल के घड़े के असली मालिक का नाम बता रही है या शायद उसके कई मालिकों में से किसी एक का, इसलिए मैंने उससे कहा कि वह आखिरी मालिक और उस समय पर ध्यान केंद्रित करे जब तक वह वस्तु उसके घर में थी।

उन्होंने कहा, "यहां अक्षर V एक महत्वपूर्ण प्रारंभिक अक्षर है, और मुझे आभास हो रहा है कि कोई नाव आ रही है।"

मुझे वल्चर नामक उस छोटी नाव की याद आ गई, जिसे मेजर आंद्रे भागने के लिए इस्तेमाल करना चाहते थे लेकिन नहीं कर पाए, और जिसने जनरल अर्नोल्ड की जान बचाई थी। मैंने पूछा, "क्या आपको इस वस्तु से कोई पीड़ा महसूस होती है?"

“हाँ,” शॉन ने जवाब दिया। “एक आदमी की हत्या कर दी गई है, और इसमें एक महिला शामिल है: एक महिला, एक बुजुर्ग व्यक्ति, और हत्यारा; यह सोची-समझी हत्या थी। पीड़ित एक सुंदर आदमी है, ज़्यादा उम्र का नहीं, मूंछ या दाढ़ी वाला, और ऐसा लगता है जैसे उससे कुछ ऐसा छीना जा रहा है जो उसका हिस्सा है, कुछ ऐसा जो उसका अपना था।”

"क्या यह कोई ऐसी चीज थी जो उसके पास मौजूद थी?"

"जब उसकी हत्या हुई, तब वह उसके पास नहीं था, और वह अभी भी कहीं दफन है," शॉन ने जवाब दिया।

शॉन को इस बात का बिल्कुल भी अंदाजा नहीं था कि जिस वस्तु का वह मनोविश्लेषण कर रही थी, उसका रॉकलैंड काउंटी के भूत से कोई संबंध है, जिसके बारे में मैंने 1960 के दशक में लिखा था। "क्या छिपा है?" मैंने पूछा, जैसे-जैसे समय बीतता गया, उसकी गवाही ने मेरी जिज्ञासा और बढ़ा दी।

"उसके पास कुछ ऐसा है जो कहीं दबा हुआ है, और मुझे लगता है कि यह किसी महल या घर से जुड़ा है। यह अंदर नहीं बल्कि बाहर दबा हुआ है। यह एक कब्र के पास दबा हुआ है, और जिसने भी इसे दबाया है वह बहुत चालाक था।"

मैंने पूछा, "उसे क्यों मारा गया?"

“मैंने उसे देखा, और फिर एक और आदमी को भी, जो इसमें शामिल था। उसकी हत्या इसलिए की गई क्योंकि वह इस आदमी और उसके मकसद का दोस्त था। उन्होंने अपने सिर पर कुछ अजीब सा पहन रखा था। उनमें से एक ने अपने दोनों हाथ ऊपर उठा रखे थे, जिन पर एक चेहरे वाली वस्तु थी, जो बहुत ही विचित्र थी।”

"क्या आप मुझे बता सकते हैं कि उसने जो वस्तु दफनाई है वह कहाँ स्थित है?"

“जब तक मैं इसे बना नहीं सकता, तब तक मैं इसका वर्णन नहीं कर सकता। मुझे एक पेंसिल दीजिए। यहाँ अक्षर ‘A’ लिखा है।”

“यह ‘ए’ कौन है?”

“‘K’ एक और महत्वपूर्ण अक्षर होगा। ये वही टोपी है जो उन्होंने पहनी हुई है।” शॉन ने फिर एक फर से बुनी टोपी की मोटी रूपरेखा बनाई, जो अठारहवीं सदी के उत्तरार्ध में सैनिक सर्दियों में पहना करते थे। अक्षर “A” ने मुझे चौंका दिया, क्योंकि यह एंड्रियास की टोपी हो सकती थी। मुझे लगा कि “K” कोसिउज़्को को संदर्भित करता है, जो क्रांतिकारी युद्ध के दौरान अमेरिका में पोलिश सहायक बलों के नेता थे और फर की टोपियाँ पहनते थे। “टोपी आंशिक रूप से धातु की है, लेकिन इस पर एक लाल पंख है, वास्तव में लाल और हरा,” उसने कहा। ये रंग उस समय के लिए बिल्कुल सही थे।

“यह आदमी एक अधेड़ उम्र की महिला से प्यार करता है; वह बहुत ही आकर्षक है। मुझे तो वह ऐसा ही दिखता है।” शॉन ने अठारहवीं सदी के सज्जन की तरह विग और छोटी टाई पहने एक आदमी का मोटा-मोटा चित्र बनाया। फिर उसने महिला का भी चित्र बनाया और बताया कि उसने फूल या किसी तरह का प्रतीक चिन्ह पहना हुआ है। यह उसे किसी फूल या प्रतीक चिन्ह की याद दिलाता था और महत्वपूर्ण था। “यह कुछ कहने का एक भद्दा तरीका है, और इसमें V.A.R. अक्षर भी शामिल हैं। एक प्रतीक चिन्ह जिस पर V.A.R. लिखा हुआ है,” शॉन ने कहा।*

मैंने उसे थोड़ा अलग दिशा में मोड़ते हुए कहा, "शॉन, मुझे बताओ, क्या इस वस्तु से जुड़ी कोई मानसिक अभिव्यक्ति कभी हुई है?"

"ऐसा लगता है जैसे किसी के भारी कदमों की आहट हो। घर में चीजें अपने आप हिलने लगती थीं।"

क्या इस वस्तु से कोई इकाई जुड़ी हुई है?

“मैं विक्टर का नाम लेना चाहती हूँ।” क्या वह वॉकर नाम ले रही थी?

जैसे-जैसे मैंने शॉन से उस वस्तु के बारे में और सवाल किए, यह स्पष्ट होता गया कि वह उस समय की बात कर रही थी जब इसे पहली बार बनाया गया था। उसने उन लोगों की वर्दी के रंगों और विशेष डिज़ाइनों का सजीव वर्णन किया जो उस वस्तु से जुड़े थे। यह सब सत्रहवीं शताब्दी के मध्य या अंत के अनुरूप था, लेकिन स्पष्ट रूप से इसका क्रांतिकारी युद्ध से कोई

संबंध नहीं था। मुझे आश्चर्य नहीं हुआ, क्योंकि मैंने पहले ही अनुमान लगा लिया था कि कोई पुरानी परत काफी मजबूत होगी। लेकिन फिर उसने एक नाव का जिक्र किया और कहा कि वह नदी में ऊपर की ओर जा रही है। शॉन ने कुछ निराश होकर कहा, "मुझे लगता है मैं गलत हूँ, क्योंकि मुझे तो एक पवनचक्की दिखाई दे रही है।"

मामला फिर दिलचस्प हो गया। मैंने उससे पूछा कि "ए" का क्या हुआ। शॉन ने कहा, "नाव में तीन-चार आदमी हैं। वे किसी को ले जा रहे हैं, और मुझे लगता है कि वह 'ए' है जिसे फांसी के लिए ले जाया जा रहा है।"

"उसने क्या किया?"

"उसने कुछ नहीं किया—यही सबसे दुखद बात है। वह महज़ परिस्थितियों का शिकार था। वह एक निर्दोष पीड़ित है।"

"उसे पकड़ने वालों को क्या लगता था कि वह कौन है?"

एक महत्वपूर्ण व्यक्ति।

"क्या इस महत्वपूर्ण व्यक्ति ने कोई अपराध किया था या उसके पास कुछ ऐसा था जो वे चाहते थे?"

उसके पास कुछ भी नहीं था, लेकिन K.A.E.A. अक्षर यहाँ महत्वपूर्ण हैं। यह एक महत्वपूर्ण नाम है। लेकिन उन्होंने गलत आदमी को पकड़ा है। फिर भी वे उसे मार देते हैं। उसके लबादे पर एक डिज़ाइन है, जो मुझे ज्योतिषीय कर्क राशि के प्रतीक, केकड़े जैसा लगता है।

आगे क्या होगा?

"वे अब पवनचक्की छोड़ रहे हैं। लेकिन उनके उस तरफ जाने से कुछ न कुछ तो होगा। इस वजह से और भी लोग मरेंगे। बहुत सारे।" बिना मेरे कहे ही शॉन ने उस वस्तु को फिर से छुआ। "मुझे मैरी एंटोनेट के समय का एहसास हो रहा है। मुझे ऐसा लग रहा है कि वे उसी दिशा में जा रहे हैं। वे फ्रांस जा रहे हैं। यहाँ एक जनरल है, और मुझे उसके नाम के शुरुआती अक्षर L.A.M.* सुनाई दे रहे हैं। वह भी युद्ध में मारा गया था।"

लेकिन 'ए' को इस जनरल के पास क्यों लाया गया है?

“खैर, मुझे लगता है कि ‘ए’ ने कपड़े बदल लिए हैं, और अब उसने काले रंग की वर्दी पहनी है जिसमें थोड़ा सा सफेद रंग है। वे स्पष्ट रूप से किसी बात पर चर्चा कर रहे हैं। ‘ए’ किसी और से बात कर रहा है। वह किसी सैनिक जैसा नहीं दिखता, और उसका वर्णन करना मुश्किल है, लेकिन मैंने पहले कभी ऐसी वर्दी नहीं देखी। उसने एक बेरेट और एक पदक पहना हुआ है।”

“‘ए’ के बारे में क्या? क्या वह नागरिक है या अधिकारी?”

सच कहूँ तो, वह सचमुच एक अधिकारी है। मुझे लगता है कि सारा मामला इसी के इर्द-गिर्द घूमता है। मुझे लगता है कि उन्होंने किसी बहुत महत्वपूर्ण व्यक्ति को पकड़ा है। शायद वह भेस बदलकर आया हुआ अधिकारी था, जिसने सही रंग के कपड़े नहीं पहने थे। यह राजद्रोह है, और क्या? क्या उसने अखबार बेचे होंगे, मतलब राज़ लीक किए होंगे?

शॉन को अब लग रहा था कि उसने उस वस्तु से जितना हो सकता था उतना प्राप्त कर लिया है। मुझे उसकी गवाही बेहद दिलचस्प लगी। उसमें आंद्रे की कहानी के अंश थे, और एंड्रियास के जीवन के भी कुछ अंश थे। मुझे ऐसा लगा जैसे यह उतना ही उलझन भरा था जितना कि गलत पहचान की समस्याएँ, जिनके कारण एंड्रियास का पतन हुआ था। इतने समय तक शॉन को इस बात का ज़रा भी अंदाज़ा नहीं था कि मेजर आंद्रे मेरी जाँच में शामिल हैं, न ही उसे इस प्रयोग के बारे में कोई जानकारी थी। जहाँ तक उसकी बात थी, उसे बस एक पुराने पीतल के जार का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण करने के लिए कहा गया था, और कुछ नहीं।

3 अक्टूबर, 1972 को मैंने एथेल जॉनसन मेयर्स के साथ प्रयोग दोहराया। फिर से, घड़ा भूरे कागज़ के थैले में था। फिर से, माध्यम ने उसे सीधे अपने हाथों में पकड़ने का अनुरोध किया। उसने तुरंत कहना शुरू किया, “मुझे तीन महिलाएं और एक भारी चेहरे वाला पुरुष दिखाई दे रहा है। कुछ हो रहा है, लेकिन भाषा अंग्रेजी जैसी नहीं लग रही है। अब यहाँ एक आदमी है जो घायल है, उसकी बाईं आंख से खून बह रहा है।”

उसे चोट कैसे लगी?

“यहाँ बहुत तेज़ कंपन हो रही है। मुझे ज़ोर-ज़ोर से बातें सुनाई दे रही हैं, और ऐसा लग रहा है जैसे उसे किसी ने घड़े से मारा हो। उसने भूरे रंग की वेस्टकोट या जैकेट पहनी हुई है, शायद मखमली या मखमली कपड़े की, और उसका कॉलर चौड़ा है। काली मोज़े और बैंगनी जूते।

उसकी निकर यहाँ तक लंबी है, और उसी कपड़े की बनी है जिस कपड़े की उसने जैकेट पहनी है।”

"क्या आप अवधि को सटीक रूप से बता सकते हैं?"

“मेरा अनुमान है कि यह नेपोलियन के समय का होगा,” एथेल ने कहा, हालांकि वह पूरी तरह से आश्वस्त नहीं थी। यह भी दिलचस्प था क्योंकि वह स्पष्ट रूप से जार (जो नेपोलियन काल से कहीं अधिक पुराना था) को उसके बाहरी रूप से नहीं आंक रही थी। मेजर आंद्रे की घटना के बारे में उसका अनुमान लगभग बीस साल गलत था। “मुझे जर्मन भाषा सुनाई दे रही है,” एथेल ने आगे कहा। “मुझे लगता है कि इस वस्तु ने मृत्यु और भयावहता देखी है, और मुझे हिंसा और चीखें सुनाई दे रही हैं। हत्या का आभास हो रहा है, और इसमें एक महिला शामिल है। मुझे एक कराह सुनाई दे रही है, और अब और खून बह रहा है। मुझे गर्दन पर एक गहरा घाव भी महसूस हो रहा है। कभी-कभी, मुझे एक अजीब लहजे में बोला गया अंग्रेजी शब्द सुनाई देता है। मुझे मैरी नाम सुनाई दे रहा है, और मुझे लगता है कि यह कम से कम सत्रहवीं शताब्दी का है।”

मुझे एहसास हुआ कि वह वस्तु के प्रारंभिक इतिहास के बारे में बात कर रही थी, और मैंने उसे बाद के कुछ कंपनों पर ध्यान देने के लिए कहा। मैंने सीधे पूछा, "क्या यह वस्तु कभी किसी हत्या के समय मौजूद रही है?"

“इस आदमी का यह हाल उसके लिए अनुचित है। वह बहुत दूर से एक ऐसे क्षेत्र में आया है जहाँ बहुत से लोग उसे नहीं चाहते, और वह उस सुरक्षा के योग्य नहीं है जो उसे मिली है। वह इसके लायक नहीं है; उसकी कोई राजनीतिक विचारधारा नहीं है; उसने जानबूझकर किसी को ठेस नहीं पहुँचाई है। उसकी उपस्थिति अवांछित है। स्वर्ग में ईश्वर यह जानता है।”

यह धीरे-धीरे उस अंदाज़ में सुनाई देने लगा जैसे एंड्रियास तब बोलता था जब एलीन गैरेट उसका सहारा होती थी। सुरक्षा! यही वह शब्द था जिसे वह बार-बार दोहराता था, किसी भी अन्य शब्द से ज़्यादा, उन लोगों से सुरक्षा जो उसके साथ अन्याय करेंगे और उसे चोट पहुँचाएँगे।

“उसकी राष्ट्रीयता क्या है?”

"यह इतालवी जैसा लगता है।"

वह तुम्हें क्या नाम देता है?

“रे...रे.....मनुष्य ने धोखा दिया।” एथेल अब अर्ध-सम्मोहन की अवस्था में डूब रही थी, और मैंने उसके चेहरे पर कुछ अजीबोगरीब बदलाव देखे; ऐसा लग रहा था मानो कोई सत्ता उसके उत्तरों को निर्देशित कर रही हो।

“किसने धोखा दिया?” मैंने झुककर हर शब्द ध्यान से सुनते हुए पूछा।

"वे चीजें जो मुझे सुरक्षित महसूस कराती हैं।"

"कौन हैं वे?"

“खूनी अंग्रेज।”

"आपके मित्र कौन हैं?"

मैं अंग्रेजी से दूर जा रहा हूँ।

क्या इस व्यक्ति के पास कुछ ऐसा है जो किसी और को चाहिए?

"हां, बात यही है।"

“यह कौन व्यक्ति है जिसके साथ ये सभी भयानक चीजें घटित हो रही हैं?”

“आ रहा है। बलि का बकरा।”

एक बार फिर, एथेल ने पहले की परत और क्रांतिकारी काल से जुड़ाव, दोनों को छूने में कामयाबी हासिल की, लेकिन इतने उलझे हुए और आपस में गुंथे हुए तरीके से कि मेरे लिए उसकी बातों को समझना मुश्किल हो गया। फिर भी, कुछ बातें बिल्कुल सच थीं जिनके बारे में वह नहीं जान सकती थी, क्योंकि शॉन की तरह उसे भी नहीं पता था कि वह वस्तु क्या थी या मैं उससे उसका मनोविश्लेषण करने के लिए क्यों कह रहा था। मुझे यह स्पष्ट था कि उस वस्तु से कोई प्रेतात्मा नहीं जुड़ी थी, और उन दोनों माध्यमों ने जो कुछ भी महसूस किया था वह अतीत की बात थी। मन में थोड़ी राहत महसूस करते हुए, मैंने उस वस्तु को अपने शोकेस में वापस रख दिया, इस उम्मीद में कि समय के साथ वह आसपास की वस्तुओं से कुछ कम तीव्र कंपन ग्रहण कर लेगी।

एंड्रियास और आंद्रे की बात करें तो, एक को मनोवैज्ञानिक शोध के कारण थोड़े समय के लिए प्रसिद्धि मिली, जबकि दूसरा अमेरिकी और ब्रिटिश इतिहास में आज भी एक महत्वपूर्ण व्यक्ति है। 2 अक्टूबर, 1780 को टैप्पन में फांसी दिए जाने के बाद, आंद्रे को फांसी के तख्ते के नीचे दफनाया गया था। 1821 में उनके शव को कब्र से निकाला गया और इंग्लैंड ले जाकर वेस्टमिंस्टर एबे में फिर से दफनाया गया। 1880 तक तनाव काफी हद तक शांत हो चुका था और ब्रिटिश-अमेरिकी मित्रता इतनी मजबूत हो गई थी कि उस स्थान पर एक स्मारक का निर्माण संभव हो सका जहां तीनों सैनिकों की मुलाकात मेजर आंद्रे से हुई थी। वास्तव में, स्मारक का निर्माण 1853 में हुआ था, लेकिन आंद्रे की गिरफ्तारी की शताब्दी के अवसर पर, एक प्रतिमा और कांस्य पट्टिका जोड़ी गई और स्मारक के चारों ओर एक सुरक्षात्मक धातु की बाड़ लगाई गई। यह एक प्रमुख सड़क के पास स्थित है और कार से गुजरते समय आसानी से देखा जा सकता है। यह एक सुंदर स्मारक है, जो इस अवसर के लिए उपयुक्त है। इसमें बस एक ही छोटी सी खामी है: यह गलत जगह पर बना है। मेरे अच्छे मित्र, प्रख्यात संपादक और विद्वान इलियट श्राइवर ने पूर्व दिशा में कुछ दूरी पर स्थित सही जगह बताई।

हैरी हैनसेन की इस क्षेत्र पर लिखी किताब का अध्ययन करने पर मुझे ऐसा लगा कि वे भी यही विचार रखते हैं। खुद इसका परीक्षण करने के लिए हम उस स्मारक के पास रुके और मैंने इंग्रीड से पूछा कि उसे कैसा महसूस हुआ। मैंने जानबूझकर उससे कहा था कि उस जगह का हमारे उस दिन के किसी भी काम से कोई सीधा संबंध नहीं है, इसलिए वह हमारे इस संक्षिप्त ठहराव का अर्थ सचेत रूप से नहीं समझ पाई। स्मारक के चारों ओर दो-तीन बार घूमकर, उसे छूकर और वहां के वातावरण को मानसिक रूप से महसूस करते हुए, वह अंत में मेरे पास आई, अपना सिर हिलाया और बोली, "मुझे माफ करना, हैंस, यहां बिल्कुल कुछ भी नहीं है। बिलकुल कुछ भी नहीं।"

लेकिन क्यों नहीं? अगर क्रांतिकारी शराबखानों को पर्यटकों के लिए सुलभ बनाने के लिए काफी दूर ले जाया जा सकता है, तो एक स्मारक ऐसी जगह क्यों न बनाया जाए जहाँ हर कोई उसे देख सके, बजाय इसके कि उसे किसी घनी झाड़ी में बनाया जाए जहाँ कोई संभावित पर्यटक उसे ढूंढते-ढूंढते अपना पैर तोड़ ले? किसी को परवाह नहीं, मेजर आंद्रे को तो बिल्कुल भी नहीं।

* 16

बेनेडिक्ट अर्नोल्ड का दोस्त

न्यूयॉर्क के क्लैवरैक निवासी गुस्ताव जे. क्रेमर के एक पत्र में लिखा था, "आपकी हाल ही में प्रकाशित पुस्तक ने मुझे पूरी तरह से मंत्रमुग्ध कर दिया।" पता चला कि श्री क्रेमर हडसन शहर के चैंबर ऑफ कॉमर्स के प्रमुख व्यक्तियों में से एक थे और साथ ही हडसन रजिस्टर-स्टार के लिए एक कॉलम भी लिखते थे। उन्होंने बताया, "पिछले तीन वर्षों से मैं अपने कॉलम के लिए तथाकथित भूत-प्रेत की कहानियाँ लिखने में विशेषज्ञता हासिल कर रहा हूँ। हडसन घाटी के इस ऐतिहासिक क्षेत्र में कई प्रेतवाधित घर हैं। राष्ट्रपति मार्टिन वान ब्यूरन का घर पास ही है और सचमुच में वहाँ कुछ बेहद डरावनी घटनाओं का ताना-बाना बुना जाता है। अलेक्जेंडर हैमिल्टन के हत्यारे आरोन बर्र ने इस संपत्ति के एक गुप्त कमरे में छुपकर शरण ली थी और विश्वसनीय रूप से यह बताया गया है कि उसे कई बार ऊपरी हॉल में घूमते हुए देखा गया है।"

यह सन् 1963 की बात है, और उस समय मैंने लोअर मैनहट्टन में आरोन बर्र के अस्तबल में घटी घटनाओं की जांच नहीं की थी। शायद घर में लोगों ने जो देखा वह बर्र के विचारों की छाप थी।

इस शुरुआती पत्र से हमारे बीच एक जीवंत पत्राचार का सिलसिला शुरू हुआ, और लगभग दो वर्षों तक मैंने हडसन घाटी आने और कुछ जांच करने का वादा किया, बशर्ते कि श्री क्रेमर सुनी-सुनाई बातों से अधिक ठोस सबूत पेश करें।

जुलाई 1965 तक उन्हें वह घर नहीं सूझा जिसे वे "वह घर" मानते थे। उन्होंने बताया कि उसमें एक ठंडी जगह थी और उसकी मालकिन, श्रीमती डोरोथिया कॉनैकर, जो पेशे से एक शिक्षिका थीं, एक शांत और संयमी महिला थीं, जिन्हें वास्तव में इस बहुत पुराने घर के अटारी में एक दृश्य अनुभव हुआ था।

मेरे बहनोई की असमय और अप्रत्याशित मृत्यु ने हमारी यात्रा को एक बार फिर स्थगित कर दिया, इसलिए हम—अर्थात् एथेल जॉनसन मेयर्स, जो एक माध्यम थीं, मेरी पत्नी कैथरीन और मैं—फरवरी 1966 की शुरुआत तक न्यूयॉर्क के कोलंबिया काउंटी जाने के लिए तैयार नहीं

थे। गस क्रेमर ने अपने कॉलम में शीर्षक दिया, "भूत शिकारी हडसन पहुंचे।" उन्होंने टैकोनिक पार्कवे से बाहर निकलते समय हमसे मुलाकात की और आगे बढ़ने से पहले हमें दोपहर के भोजन पर ले गए।

दोपहर के कुछ ही समय बाद हम श्रीमती कोनाचर के घर पहुँचे, जो कुछ ही मिनटों की दूरी पर एक कच्ची सड़क पर स्थित था। यह घर एक बड़े भूखंड पर बना था और ऊँचे-ऊँचे पुराने पेड़ों से घिरा हुआ था। इसकी एकांतता के कारण, ऐसा प्रतीत होता था मानो हम किसी दूरदराज के ग्रामीण इलाके में आ गए हों, जबकि वास्तव में न्यूयॉर्क को अल्बानी से जोड़ने वाला राजमार्ग मात्र दस मिनट की दूरी पर ही स्थित था। समय के साथ घर का रंग फीका पड़ गया था, इसलिए वह लगभग सफेद ही चमक रहा था। श्रीमान और श्रीमती कोनाचर ने इसे हमारी यात्रा से बीस वर्ष पहले खरीदा था, लेकिन श्रीमान कोनाचर के तलाक के बाद, श्रीमती कोनाचर इसकी उचित देखभाल नहीं कर पाईं और धीरे-धीरे इसका भीतरी भाग, विशेष रूप से, जर्जर अवस्था में पहुँच गया। बाहरी भाग में अभी भी इसकी भव्यता झलकती थी, जिसमें औपनिवेशिक हवेली की विशिष्ट विशेषताएँ थीं, जैसे स्तंभों वाला प्रवेश द्वार, छत के निर्माण में ग्रीक शैली का प्रभाव और सुंदर औपनिवेशिक शैली के शटर।

सर्दियों के मौसम में न्यूयॉर्क राज्य वाकई बेहद ठंडा होता है। जैसे ही हम कच्ची सड़क के मोड़ पर मुड़े और एक छोटी सी पगडंडी के अंत में बने आलीशान घर को देखा, हमें आश्चर्य हुआ कि घर की मालकिन उसे गर्म कैसे रखती होंगी। अंदर जाने के बाद हमें एहसास हुआ कि उन्हें इस मामले में काफी दिक्कतें आती होंगी।

फिलहाल, मैं घर से कुछ गज की दूरी पर रुका और इस आकर्षक पुराने घर की कुछ तस्वीरें लीं। एथेल जॉनसन मेयर्स को घर के बारे में या हमारे वहां आने के कारण के बारे में कुछ भी पता नहीं था। दरअसल, हमारी यात्रा का एक उद्देश्य रहने के लिए एक ग्रामीण घर खोजना था। एथेल को लगा कि हम उन्हें घर खरीदने में सलाहकार के तौर पर साथ ले जा रहे हैं, क्योंकि उनके पास खुद एक ग्रामीण घर है और उन्हें घरों के बारे में काफी जानकारी है। बेशक, उन्हें पता था कि रास्ते में कुछ दिलचस्प जगहें हैं, लेकिन उन्होंने इसे स्वाभाविक ही मान लिया था, क्योंकि उन्होंने मेरे साथ कई वर्षों तक काम किया था। जब हम आखिरी मोड़

पर पहुंचे और घर हमें दिखाई देने लगा, तब भी एथेल को घर के बारे में अपनी पहली प्रतिक्रिया आने लगी। मैंने उनसे कार में ही बैठे रहने और घर के बारे में बताने को कहा।

“मुझे दो लोग दिखाई दे रहे हैं, शायद एक तीसरा भी। तीसरा व्यक्ति युवा है, एक महिला जिसकी नाक छोटी और थोड़ी उठी हुई है और आँखें बड़ी हैं, लेकिन वह पुरुषों की तुलना में कम बुद्धिमान प्रतीत होती है। पुरुष बहुत बलवान हैं। उनमें से एक की नाक भी वैसी ही उठी हुई है और त्वचा सांवली है। उसने सफेद विग पहन रखी है। एक बूढ़ी औरत भी है। वह मुझे ऐसे देख रही है मानो कहना चाहती हो, ‘तुम मुझे इस तरह क्यों घूर रही हो?’” एथेल ने आत्मा को गंभीर स्वर में समझाया कि वह घर क्यों आई है, उसका इरादा किसी को नुकसान पहुँचाने का नहीं है और वह एक मित्र के रूप में आई है, और अगर वह उनके लिए कुछ कर सकती है, तो उन्हें उसे बताना चाहिए।

जब यह एकतरफा बातचीत चल रही थी, तब कैथरीन और मैं कार में बैठे इसके खत्म होने का इंतजार कर रहे थे। गस क्रेमर श्रीमती कोनाचर को हमारे आने की सूचना देने के लिए आगे जा चुके थे।

मैंने पूछा, "वह महिला किस तरह के कपड़े पहने हुए है—मेरा मतलब है वह बुजुर्ग महिला?"

“उसने किसी तरह की सफेद टोपी पहन रखी है,” एथेल ने जवाब दिया, “और उसके बाल बाहर निकले हुए हैं।”

"क्या आप बता सकते हैं कि ये किस काल के हैं?"

“उसने विग पहन रखी है, और उसने एक रुमाल जैसा कुछ बांध रखा है, जो कंधों पर चौड़ा और पीछे से नुकीला है। उसकी पोशाक का ब्लाउज़ एकदम फिट है। जहाँ तक मेरी नज़र जाती है, पोशाक ज़मीन तक जाती है। पोशाक के निचले हिस्से में झालरें लगी हैं। मुझे लगता है कि वह साठ साल की महिला है, शायद उससे भी ज़्यादा।”

“उस आदमी के बारे में क्या?”

"मुझे लगता है कि उन महिलाओं में से एक उसकी बेटी हो सकती है, क्योंकि उनकी नाकें एक जैसी हैं, कुछ-कुछ चपटी नाकें जैसी।"

"क्या आपको कोई नाम या शुरुआती अक्षर मिलते हैं?"

अक्षर 'बी' महत्वपूर्ण है।

क्या आपको कोई और लोग मिलते हैं?

"एक महिला है जिसके बाल बीच से बँटे हुए हैं और गहरे रंग के हैं, और एक आदमी है जिसके सिर पर एक अजीब सी टोपी है। फिर एक और आदमी है जिसके सिर पर उससे भी अजीब टोपी है, अष्टकोणीय आकार की और बहुत ऊँची। मैंने ऐसी टोपी पहले कभी नहीं देखी। कुछ तो गड़बड़ है, जैसे 'बी.ए.'। कला स्नातक? अब मुझे बेन नाम याद आया। मुझे माफ़ करना, लेकिन मुझे नहीं लगता कि मैं अब और बाहर कुछ कर सकता हूँ।"

"तो फिर," मैंने कहा, "चलिए घर के अंदर चलते हैं।" लेकिन मैंने एथेल से कहा कि वह कार में ही इंतज़ार करे, जबकि मैं घर के मालिक का इंटरव्यू ले लूँ। उसके बाद, उसे अंदर आकर ट्रान्स की कोशिश करनी थी।

श्रीमती डोरोथिया कॉनैकर अपने जीवन के अंतिम वर्षों में कद में छोटी थीं, और जिस कमरे में हम दाखिल हुए, वह पहली नज़र में एक छोटी, रोमांटिक सी अव्यवस्थित दुकान जैसा लग रहा था। पुरावशेष, पुराना फर्नीचर, एक छोटा सा नया चूल्हा जो आजकल बहुत ज़रूरी है, दीवारों पर लगी तस्वीरें, अलमारियों पर रखी किताबें, और ये सब कुछ कुछ हद तक अव्यवस्थित था। इससे साफ था कि श्रीमती कॉनैकर आधुनिक युग के साथ तालमेल नहीं बिठा पा रही थीं, या यूं कहें कि घर की देखभाल एक व्यक्ति के बस की बात नहीं थी। श्रीमती कॉनैकर फिलहाल अपने छत्तीस वर्षीय बेटे रिचमंड के साथ वहां रहती थीं। उनके पति उनके घर में आने के तीन साल बाद ही उन्हें छोड़कर चले गए थे। मैंने उनसे उनके किसी भी मानसिक अनुभव के बारे में पूछा।

"मैं और मेरे पति दोनों स्वतंत्र कलाकार हैं," उन्होंने बात शुरू करते हुए कहा, "मेरे पति हफ्ते में तीन दिन काम के लिए न्यूयॉर्क जाते थे और बाकी समय घर पर काम करते थे। एक दिन, घर में आने के कुछ ही समय बाद, मैं घर में अकेली थी। उस रात मैंने सपना देखा कि मेरे पति मुझे छोड़कर चले जाएंगे। उस समय मैं इतनी खुश थी कि मुझे समझ ही नहीं आ रहा था कि ऐसा कैसे हो सकता है।"

कुछ समय बाद वह सपना सच हो गया। श्रीमती कॉनैकर को केवल यही एक भविष्यसूचक सपना नहीं आया था। इससे पहले भी उन्हें मृत रिश्तेदारों से संबंधित सपने और कई तरह के टेलीपैथिक अनुभव हो चुके थे।

“घर का क्या हुआ? यह सब यहाँ कब से शुरू हुआ?”

“हम लगभग पाँच महीने तक उस घर में रहे। हमें बताया गया था कि पिछले मालिकों का सारा सामान घर से बाहर ले जाया गया था—एक नीलामी हुई थी और ये सब चीजें बेच दी गई थीं। हमें बताया गया था कि अटारी में वास्तव में कुछ भी नहीं था। मेरे पति और मैं कुछ बार ऊपर जाकर उसे देखने गए थे। हम अठारहवीं सदी के लकड़ी के खूंटों वाले पुराने बीमों को देखकर मंत्रमुग्ध हो गए थे। वहाँ कुछ पुराने फोटो फ्रेम और एक बड़ा संदूक के अलावा कुछ भी नहीं था। वह अभी भी वहीं ऊपर है।”

“खैर, आखिरकार हमें जिज्ञासा हुई और हमने उसे खोला, और उसमें बहुत सी चीजें थीं। ऐसा लग रहा था जैसे कपड़े के छोटे-छोटे टुकड़े बंडलों में बंधे हुए हों। लेकिन हमने ज्यादा ध्यान से नहीं देखा; मैंने तय किया कि मैं किसी दिन वहाँ जाकर अकेले जाँच-पड़ताल करूँगी। मेरे पति ने कहा कि वे अभी बहुत व्यस्त हैं और नीचे जाना चाहते हैं।”

कुछ दिनों बाद, जब मैं घर पर अकेली थी, तो मैंने फिर से ऊपर जाकर संदूक में देखने का फैसला किया। अटारी काफी बड़ी है, और कोने में केवल दो बहुत छोटी खिड़कियाँ हैं। मैंने संदूक खोला, उसमें हाथ डाला और कपड़े के ये छोटे-छोटे टुकड़े निकाले, लेकिन बेहतर देखने के लिए मैंने उन्हें खिड़कियों के पास ले गई। जब मैं संदूक के सबसे नीचे पहुँची, तो मुझे एक छोटी सी जैकेट, एक टोपी और एक खास तरह की बोनट मिली, जो 1800 से पहले पहनी जाती थी। मैंने सोचा, इसे पहनने वाला कितना छोटा व्यक्ति रहा होगा! पहले तो मुझे लगा कि यह किसी बच्चे के लिए होगी; लेकिन नहीं, यह एक वयस्क के लिए बनी थी, हालाँकि वह बहुत छोटा व्यक्ति था।

श्रीमती कोनाचर वहाँ खड़ी उस वस्तु को देखकर मंत्रमुग्ध थीं, तभी उनकी नज़र कोने में एक छोटे से प्रकाश बिंदु पर पड़ी। उनका पहला विचार था, मुझे जिम को बताना चाहिए कि छत में एक छेद है जहाँ से यह प्रकाश आ रहा है। लेकिन वह देखती रहीं और संदूक में रखी वस्तु में मग्न होने के कारण उन्होंने प्रकाश पर ध्यान नहीं दिया। तभी किसी चीज़ ने उन्हें ऊपर देखने

के लिए मजबूर किया और उन्होंने देखा कि प्रकाश अब काफी बड़ा हो गया था। साथ ही, वह पास आता जा रहा था और लगातार अपनी स्थिति बदल रहा था। यह घटना उन्हें आकर्षित करने लगी। वह भूतों या किसी भी तरह की अलौकिक घटना के बारे में नहीं सोच रही थीं, बस यह जानने की उत्सुकता थी कि आखिर यह सब क्या है। जैसे-जैसे प्रकाश पास आता गया, उन्हें अचानक ख्याल आया, अरे, यह तो किसी इंसान की आकृति जैसा लग रहा है!

अंततः, वह आकृति ट्रंक के पास आकर रुक गई, और श्रीमती कॉनैकर को एहसास हुआ कि वह एक मानव आकृति थी, एक बुजुर्ग महिला की आकृति। वह असामान्य रूप से छोटी और नाजुक थी और उसने वही टोपी पहन रखी थी जो श्रीमती कॉनैकर को ट्रंक के नीचे मिली थी! महिला के कपड़े भूरे रंग के लग रहे थे, और श्रीमती कॉनैकर ने महिला के एप्रन पर ध्यान दिया। जब वह उस प्रेत जैसी आकृति को विस्मय और भय से देख रही थीं, तो उस छोटी महिला ने अपने एप्रन का इस्तेमाल उस तरह से किया जैसे आमतौर पर ग्रामीण इलाकों में मुर्गियों को भगाने के लिए किया जाता है। हालांकि, यह हरकत उन्हीं की ओर निर्देशित थी, मानो वह प्रेत उन्हें "उनके" ट्रंक से दूर भगाना चाहता हो!

"मैं डर गई थी। मैंने बोनट और एप्रन देखा और वह महिला मुझे भगा रही थी, और वह बिल्कुल स्थिर लग रही थी," श्रीमती कोनाचर ने कहा।

"आपने क्या किया?"

“मैंने यह देखने के लिए कार के ट्रंक के पीछे चक्कर लगाया कि क्या वह अभी भी वहीं है। वह वहीं थी। मैंने कहा, ठीक है, ठीक है। लेकिन मैं उसे देखना नहीं चाहता था। मेरे रोंगटे खड़े हो गए और मैंने नीचे जाने का फैसला किया। मुझे डर था कि कहीं मैं सीढ़ियों से गिर न जाऊं, लेकिन मैं सुरक्षित पहुँच गया।”

क्या आपने उसे फिर कभी देखा?

“नहीं। लेकिन तरह-तरह की अजीब आवाज़ें आती थीं। एक बार जब मैं और मेरे पति सोने ही वाले थे, तभी ऐसा लगा जैसे किसी ने बेसबॉल बैट से हमारे सिर के ठीक ऊपर दीवार पर मारा हो। यह ऊपर वाले बेडरूम में हुआ था। वह जगह अटारी से ज़्यादा दूर नहीं है, सीढ़ियों के बगल में ही है।”

"क्या अन्य लोगों को भी यहां ऐसे अनुभव हुए हैं?"

“मेरी बहन क्लेयर ने यहाँ आने से पहले ही घर के बारे में सपना देखा था। जब वह पहली बार यहाँ आई तो उसने कहा कि वह अटारी देखना चाहती है। मैं हैरान रह गई, क्योंकि मैंने उसे बताया तक नहीं था कि यहाँ अटारी भी है। वह तुरंत ऊपर भागी, लेकिन जब उसने अटारी देखी तो वह पीछे मुड़ गई और उसका चेहरा पीला पड़ गया; यह बिल्कुल वैसा ही था जैसा उसने सपने में देखा था। फिर एक बढ़ई था जो मेरे लिए अटारी की मरम्मत और घर के दूसरे काम करता था। अटारी से नीचे आने के बाद वह चला गया और तब से वापस नहीं आया है। मैं उसे कितनी ही बार काम करने के लिए बुलाती हूँ, वह कभी नहीं आता।”

मैंने कहा, "शायद उस बूढ़ी औरत ने भी उसे भगा दिया हो। गस जिन ठंडी जगहों के बारे में मुझे बता रहा था, उनका क्या हुआ?"

“मेरे पास बस एक चिमनी और यह छोटा सा हीटर है। कभी-कभी तो कमरा गर्म ही नहीं हो पाता। लेकिन घर में कुछ ऐसी जगहें हैं जो हमेशा ठंडी रहती हैं। गर्मियों में भी लोग पूछते हैं कि क्या हमारे घर में एयर कंडीशनिंग है।”

“यह घर कब बना था?”

"एक हिस्से में नीचे की मंजिल पर पत्थर पर 1837 की तारीख खुदी हुई है। दूसरा पुराना हिस्सा दो सौ साल पुराना है।"

"क्या पिछले मालिकों में से किसी ने भूत के बारे में कुछ कहा था?"

“नहीं। हमसे पहले टर्नर परिवार था, और उनसे पहले लिंक परिवार लंबे समय तक इसका मालिक था। लेकिन हमने कभी ऐसी बातों पर चर्चा नहीं की।”

फिर मैंने गस क्रेमर से घर और श्रीमती कोनाचर के साथ उनकी शुरुआती बातचीत के बारे में पूछताछ की। किसी घटना का वर्णन करते समय गवाह की याददाश्त अक्सर बाद में, बार-बार सुनाए जाने के बाद की तुलना में बेहतर होती है। कभी-कभी इसमें मनगढ़ंत बातें जोड़ दी जाती हैं, लेकिन कभी-कभी इसका कुछ विवरण खो जाता है क्योंकि कहानी सुनाने वाले को अब परवाह नहीं रहती या वह घटना के तात्कालिक प्रभाव में कही गई बातों को भूल जाता है।

"जब वह प्रेत प्रकट हुआ, उस समय श्रीमती कोनाचर के हाथ में एक पुरानी, बदबूदार महिला की ब्लाउज थी," गस ने कहा। "उस समय उन्हें लगा कि उनके हाथ में उस कपड़े का होना और उस प्रेत के प्रकट होने के बीच कोई संबंध है।"

"क्या आपने खुद कभी कोनाचर हाउस में कुछ अनुभव किया है?"

“खैर, पिछली बार जब मैं यहाँ आया था, हम धुंधले, अस्त-व्यस्त बैठक कक्ष में बैठे थे, तभी मैंने देखा कि कुत्ता अपनी आँखों से किसी काल्पनिक चीज़ का पीछा कर रहा था, एक शयनकक्ष के दरवाजे से लेकर अटारी की ओर जाने वाले दरवाजे तक, जहाँ श्रीमती कोनाचर के साथ वह घटना घटी थी। फिर वह अपने पंजों के बीच सिर रखकर लेट गया और उसकी नज़रें अटारी के दरवाजे पर टिकी हुई थीं। मुझे पता चला है कि वह ऐसा अक्सर करता है और जब श्रीमती कोनाचर अपनी पसंदीदा आरामकुर्सी पर बैठी होती हैं, तो वह अक्सर उसके पीछे किसी 'चीज़' पर अपनी नज़रें गड़ा देता है। मैं आपको यकीन दिलाता हूँ, उस कुत्ते को देखते हुए मेरे रोंगटे खड़े हो गए थे।”

मैंने एथेल को कार से बाहर निकालने का फैसला किया, जो अब तक शायद खुद ही एक ठंडी जगह बन चुकी थी। मैंने कहा, "एथेल, तुम इस घर के बैठक कक्ष में खड़ी हो। इसके ऊपर एक और मंजिल है और एक अटारी भी है। मैं चाहता हूँ कि तुम मुझे बताओ कि क्या इस घर में किसी की उपस्थिति है और यदि हाँ, तो तुम्हें कौन सा क्षेत्र सबसे अधिक प्रभावित लगता है।"

“सबसे ऊपर,” एथेल ने बिना एक पल भी हिचकिचाए जवाब दिया।

क्या वहां किसी की उपस्थिति है?

“हाँ,” एथेल ने दृढ़ता से कहा। हम अगले कमरे में चले गए, जहाँ एक बड़ी, आरामदायक कुर्सी थी। मैंने एथेल को उस पर बैठने के लिए कहा, लेकिन वह हिचकिचाई। “नहीं, मैं कहीं जाना चाहती हूँ।” मुझे स्पष्ट रूप से महसूस हुआ कि वह धीरे-धीरे समाधि की अवस्था में जा रही थी, और मैं चाहता था कि समाधि की अवस्था में पहुँचने पर वह एक सुरक्षित कुर्सी पर बैठी हो। समाधि की अवस्था में एथेल को एक अनियंत्रित भूत द्वारा नियंत्रित किए जाने की यादें मेरे दिमाग में इतनी ताज़ा थीं कि मैं ऐसा जोखिम लेने की हिम्मत नहीं कर सकता था। मैं उसे किसी तरह कुर्सी पर वापस बिठाने में कामयाब रहा। एक क्षण बाद, एक मित्रवत आवाज़ सुनाई दी, “अल्बर्ट, अल्बर्ट,” और मुझे एहसास हुआ कि एथेल ने खुद पर नियंत्रण पा लिया है। लेकिन यह बहुत ही संक्षिप्त मुलाकात थी। एक क्षण बाद, समाधि की अवस्था में बैठी माध्यम के होठों से एक बिल्कुल अलग आवाज़ आई। पहले तो मैं शब्दों को समझ नहीं पाया। दीवार

जैसी कोई आवाज़ सुनाई दी। फिर एक हंसमुख आवाज़ सुनाई दी। “तुम कौन हो, और तुम यहाँ क्या कर रहे हो?”

जब आप एक मनोवैज्ञानिक अन्वेषक होते हैं, तो कभी-कभी आप एक प्रश्न का उत्तर दूसरे प्रश्न से देते हैं। इस मामले में, मैंने यह जानने की मांग की कि कौन बोल रहा है। "वफादार, वफादार," अजनबी ने उत्तर दिया। मैंने "उसे" आश्वस्त किया कि हम मित्र बनकर आए हैं और वह—क्योंकि उसकी आवाज़ एक पुरुष जैसी लग रही थी—हमसे निश्चिंत होकर बातचीत कर सकता है। "तो क्या आप मुझसे बात करेंगे?" उसने पूछा।

मैंने जवाब दिया, "क्या मैं आपकी मदद कर सकता हूँ?"

"ठीक है, मैं दूसरों की मदद करूंगा; उन्हें मदद की जरूरत है।"

“क्या यह आपका घर है? आप कौन हैं?” लेकिन अजनबी ने अभी तक अपनी पहचान नहीं बताई। “आपको यहाँ क्यों लाया गया? आपको यहाँ कौन लाया?”

“मेरा घर, हाँ। मेरा घर, मेरा घर।”

“आपका नाम क्या है?” मैंने हमेशा की तरह पूछा। तुरंत ही मुझे प्रतिरोध का सामना करना पड़ा।

"इससे आपको क्या लेना-देना है, महोदय?"

मैंने समझाया कि मैं अपना परिचय ठीक से देना चाहता हूं।

“मैं वफादार हूँ, वफादार,” उस आवाज ने मुझे आश्वस्त किया।

"मैं पूछना चाहूंगा, किसके प्रति वफादार?"

"महामहिम, महोदय; क्या आप जॉर्ज को जानते हैं?"

मैंने पूछा कि यह संस्था महामहिम की किस हैसियत से सेवा कर रही है। “आप कौन हैं? आप मदद मांग रहे हैं। किस लिए मदद?”

मुझे ऐसा लग रहा था कि हम कहीं नहीं पहुँच रहे हैं। लेकिन इन चीजों में समय लगता है, और मुझमें बहुत धैर्य है।

"क्या आप मुझे बता सकते हैं कि आप कौन हैं?"

इसके बजाय, अजनबी की बेचैनी और बढ़ गई। “वह कब आ रहा है? वह कब आ रहा है? वह मेरी मदद करने कब आ रहा है?”

“आप किसका इंतज़ार कर रहे हैं?” मैंने पूछा। मैंने उन्हें आश्वस्त करने की कोशिश की कि जिसका भी वे इंतज़ार कर रहे हैं, वह जल्द ही आ जाएगा, साथ ही यह जानने की कोशिश भी की कि वे किसके बारे में बात कर रहे हैं। इससे ज़ाहिर तौर पर वे सतर्क हो गए।

मैं अब और कुछ नहीं कहता।

मैंने उनसे फिर से अपनी पहचान बताने के लिए कहा ताकि मैं उन्हें उनके उचित नाम और पद से संबोधित कर सकूं।

“तुम वफादार नहीं हो, तुम, तुम जो मेरे घर में हो?”

"खैर, मुझे बताया गया था कि आपको मदद की जरूरत है।"

लेकिन उस संस्था ने अपना नाम बताने से इनकार कर दिया। "मुझे डर है।"

“डरने की कोई जरूरत नहीं है। मैं दोस्त हूँ। तुम मेरे लिए बहुत मुश्किल खड़ी कर रहे हो। मुझे डर है कि अगर तुम नहीं करोगे तो मैं यहाँ नहीं रह पाऊँगा—” मैंने इशारे से कहा।

“वह कब आएगा? वह कब आएगा?”

"आप किस का इंतजार कर रहे हैं?"

“होरेशियो। होरेशियो गेट्स। वह कहाँ है? मुझे बताओ, मैं एक वफादार प्रजा हूँ। वह कहाँ है? मुझे बताओ।”

"ठीक है, अगर आप वफादार हैं, तो आप अपनी पहचान बताएंगे। आपको अपनी पहचान बतानी होगी, तभी मैं आपकी कोई मदद कर पाऊंगा।"

इसके बजाय, वह प्राणी कड़वी हंसी हंस पड़ा। "मेरा नाम, हा हा हा। जाल! जाल!"

मैंने उसे यकीन दिलाया कि यह कोई जाल नहीं है। "तुम मुझे जानते हो, जानते हो ना," उसने कहा। मैंने उसे यकीन दिलाया कि मैं नहीं जानता। "अगर तुम यहाँ आए हो तो मुझे जान ही जाओगे, हा हा हा।"

मैंने एक अलग तरीका आजमाने का फैसला किया। "हम किस वर्ष में हैं?"

यह बात भी उन्हें पसंद नहीं आई। “पागल, पागल। साला, साला। तुम इस घर के नहीं हो। जाओ।”

मैंने कहा, “देखिए, हम आपसे बात करने के लिए इतनी दूर से आए हैं। अगर हम आपकी मदद करना चाहते हैं, तो आपको सहयोग करना होगा।” लेकिन अजनबी अड़ा रहा और उसने वही सवाल दोहराया: वह कब आएगा? मैंने समझाना शुरू किया कि वह बिल्कुल नहीं आएगा, बहुत समय बीत चुका है और वह सत्ता “सो रही” है।

अब उस सत्ता की बारी थी मुझसे पूछने की कि मैं कौन हूँ। लेकिन इससे पहले कि मैं उसे दोबारा बता पाता, वह चिल्लाया, “बेन, तुम कहाँ हो?” मैं जानना चाहता था कि बेन कौन है, साथ ही साथ उसे आश्वस्त भी करना चाहता था कि काफी समय बीत चुका है और घर का मालिकाना हक बदल चुका है। लेकिन उस पर इसका कोई असर नहीं हुआ। “वह कहाँ है? क्या तुम वही हो? क्या तुम हो? मुझसे बात करो!”

मैंने कुछ और जानकारी हासिल करने के लिए उसकी बात मान ली। लेकिन उसे तुरंत एहसास हो गया कि मैं वो नहीं हूँ जिसकी उसे उम्मीद थी। “तुम वो तो नहीं हो, है ना? मैं अपने गले से फांसी नहीं लगा सकता। मैं अपने गले से फांसी नहीं लगाऊंगा। नहीं, नहीं, नहीं।”

“आपको कोई धमकी नहीं दे रहा है। क्या आपने ऐसा कुछ किया है जिससे आपको डर लगता है?”

“मेरे प्रभु परमेश्वर जानते हैं कि मैं निर्दोष हूँ। अगर मुझे मौका मिले तो। क्यों, क्यों, क्यों?”

“तुम्हें कौन धमका रहा है? मुझे बताओ। मैं तुम्हारे साथ हूँ।”

लेकिन तुम मुझे पा लोगे।

“मैं आपकी मदद करने आया हूँ। यह आपका घर है, है ना? आपका नाम क्या है? आपको अपना परिचय देना होगा ताकि मुझे पता चले कि मुझसे कोई गलती तो नहीं हुई है,” मैंने उनसे विनती करते हुए कहा। इस पूरे समय गस क्रेमर, श्रीमती कॉनैकर और मेरी पत्नी मंत्रमुग्ध होकर चुपचाप देखते रहे। एथेल अब एक बूढ़े आदमी जैसी लग रही थीं, बिल्कुल भी अपनी जैसी नहीं। एक पल का विराम, एक खामोशी। फिर आवाज दोबारा आई, इस बार, मुझे लगा, नरम लहजे में।

मुझे एंथनी कहलाने दीजिए।

“एंथोनी क्या?”

“वह कहाँ है? मैं इंतज़ार कर रहा हूँ। मुझे उसे मारना ही होगा।” मैंने समझाया कि कैसे वह हमारे समय में हमसे बात कर सकता है। लेकिन उस पर इसका कोई असर नहीं हुआ। “वह यहाँ था। वह यहाँ था। मुझे पता है।”

मैंने पूछा, "यहां कौन था?" और मैंने फिर से दोहराया कि उसे अपनी पहचान बतानी होगी।

"लेकिन मैं जा सकता हूँ?" उनकी आवाज़ में एक तरह की जल्दबाजी थी।

क्या आप इस घर से बाहर जाना चाहेंगे?

“मेरा घर, मेरा घर क्यों? यहाँ लटकाने के लिए। मेरी बेटी, वह शायद तुम्हारे साथ जाएगी।”

"आपकी बेटी का नाम क्या है?"

“तुम जहाँ ले जाओगे, मैं वहीं जाऊँगी,” वह कहती है। “लेकिन अगर मैं नहीं गई तो वह भी यहीं लटकी रहेगी। वह भी। हे भगवान, मुझे ले जाओ, तुम ही मुझे ले जाओगे।”

मैंने उन्हें आश्वस्त किया कि वे सुरक्षित रूप से घर छोड़ सकते हैं और उन्हें वापस आने की आवश्यकता नहीं है। “आप सुरक्षित रहेंगे। आप अपनी बेटी से फिर मिलेंगे। लेकिन आपको यह समझना होगा कि अब कोई युद्ध नहीं है। कोई हत्या नहीं है।”

“मेरी प्यारी बेटी, उसकी मृत्यु यहीं हुई थी, उसकी मृत्यु यहीं हुई थी।”

उसके बाद आपके साथ क्या हुआ?

मैं यहाँ बैठा हूँ; तुम मुझे देख रहे हो। मैं यहाँ बैठा हूँ। मैं चला जाऊँगा।

"आपकी आयु कितनी है?"

मैं इतना बूढ़ा नहीं हूँ कि यहाँ से जा न सकूँ, जहाँ खेत उपजाऊ हैं, और ओह! खून-खराबा भी नहीं है।

आप यहां से कहां जाना चाहेंगे?

“बहुत दूर। प्यारी जेनी मर गई। मुझे यहाँ से ले चलो। वह नहीं आएगा।”

मैं तुम्हें ले जाने का वादा करता हूँ। बस शांत रहो।

“ओह, होरेशियो, होरेशियो, तुमने वादा किया था। होरेशियो, तुम्हारी जगह वह क्यों आया?”

"क्या आपने होराटियो गेट्स के अधीन काम किया था?"

“अर्नोल्ड, क्या तुम वही हो? नहीं।”

"अगर आप अर्नोल्ड को ढूंढ रहे हैं, तो वह मर चुका है।"

"आप झूठ बोलते हैं।"

मैंने एक बार फिर बड़ी चतुराई से समय बीतने के बारे में समझाया। लेकिन उसने मेरी एक भी बात नहीं सुनी।

“तुम मुझसे झूठ बोल रहे हो। वह आएगा। तुम झूठ बोल रहे हो।”

“नहीं,” मैंने जवाब दिया। “यह सच है। अर्नोल्ड मर चुका है।”

“क्यों? क्यों, क्यों, क्यों? वह चला गया, है ना?”

“क्या आपका नाम एंथोनी है?”

उसने उत्सुकता से उत्तर दिया: “ओह, हाँ, ऐसा ही है। वे मुझे यहाँ से जाने नहीं देना चाहते, लेकिन मुझे जाना ही होगा, वे मुझे फाँसी दे देंगे। उन्हें मुझे फाँसी न देने देना।” मैंने उसे आश्वासन दिया कि मैं ऐसा नहीं होने दूँगी। “मेरी बेटी, मेरी प्यारी बच्ची। ओह क्यों, क्योंकि हमने वफ़ादारी की शपथ ली थी... अब मैं यहाँ लटकी हुई हूँ। वे मुझे लेने आएँगे; वे आएँगे। वह कहाँ है? उसने मुझे छोड़ दिया है।”

बहुत समय बीत चुका है। आप इस दुनिया से चले गए हैं।

“नहीं। पागलपन। जॉन, जॉन, मेरी मदद करो। जल्दी आओ।”

मैंने उस सत्ता को बताया कि वह एक स्त्री के माध्यम से बोल रहा है, और उसे अपने उस सत्ता के बालों को छूने को कहा। इस तरह, उसे यकीन हो जाएगा कि वह इस समय अपने शरीर में नहीं है।

“जॉन, जॉन, तुम कहाँ हो? मैं सपना देख रहा हूँ।”

मैंने उसे आश्वस्त किया कि वह सपना नहीं देख रहा था, और मैं सच बोल रहा था।

मैं पागल हूँ, मैं पागल हूँ।

मैंने उसे आश्वस्त किया कि वह मानसिक रूप से स्वस्थ है।

“वे मुझे थामे हुए हैं। हे भगवान!”

मैंने हमेशा की तरह बचाव की प्रक्रिया शुरू की, यह समझाते हुए कि अपनी बेटी के साथ रहने की इच्छा से, जो उससे पहले इस दुनिया से चली गई थी, वह इस घर को छोड़ सकता है जहाँ इस त्रासदी ने उसे कैद कर रखा था। “इस घर से चले जाओ। तुम अपनी बेटी से मिलने के लिए स्वतंत्र हो। शांति से जाओ; हम तुम्हारे लिए प्रार्थना करेंगे। डरने की कोई बात नहीं है।” एक क्षण बाद, वह आत्मा गायब हो गई और अल्बर्ट एथेल मेयर्स के शरीर में लौट आया।

आम तौर पर, मैं अल्बर्ट, जो नियंत्रण करने वाला व्यक्तित्व है, से एथेल मेयर्स के माध्यम से बोलने की अनुमति प्राप्त किसी भी व्यक्ति के बारे में पूछताछ करता हूँ। कभी-कभी इन चर्चाओं से अतिरिक्त जानकारी या पिछली जानकारी अधिक विस्तृत और स्पष्ट रूप में सामने आती है। लेकिन अल्बर्ट ने बताया कि वह मुझे उस व्यक्ति का नाम नहीं बता सकता। “वह झूठे नाम बताता है। जहाँ तक हम यहाँ समझ सकते हैं, उसका मानना है कि उसे फाँसी दी गई थी। वह एक वफादार था, जिसने अमेरिकियों के पास शरण लेने से इनकार कर दिया था। उसने अंत तक क्रांतिकारी होने का दिखावा नहीं किया, जब तक कि उसे लगा कि उसे बचाया जा सकता है।” अल्बर्ट ने बताया कि यह घटना क्रांतिकारी युद्ध के दौरान इसी घर में घटी थी।

“उसे ऐसा क्यों लगता है कि उसे फांसी दी गई थी? क्या सच में उसे फांसी दी गई थी?”

मुझे नहीं लगता कि ऐसा इस घर में हो सकता है। मेरा मानना है कि उसे यहीं से ले जाया गया था, हाँ।

"इस घर में मौजूद अन्य संस्थाओं के बारे में क्या?"

“यहाँ कुछ लोगों को गुप्त रूप से बंद रखा गया है, जिनके यहाँ होने का कोई कारण था। वे सभी अभी भी यहीं हैं। एक महिला की मृत्यु हो गई है, जो पहले घर के इस हिस्से और उससे ऊपर की मंजिल तक रहती थी। ऊपर, मुझे लगता है कि मैं उन अन्य लोगों की आवाज़ें सुन रहा हूँ जो घायल हुए हैं और जिन्हें यहाँ छिपाकर रखा गया है।”

मैंने अल्बर्ट से पूछा कि क्या वह घर में देखी गई महिला के बारे में हमें कुछ और बता सकते हैं। “मुझे याद है कि मैंने इसे पहले अपने उपकरण को दिखाया था। उसने सफेद रंग की, फ्रांसीसी शैली की, लेस और छोटे काले रिबन वाली रुमाल टोपी पहन रखी थी। वहाँ दो महिलाएँ हैं, लेकिन उनमें से एक इस व्यक्ति की माँ है। मैं बड़ी उम्र की महिला की बात कर रहा हूँ।”

वह धरती से क्यों बंधी हुई है?

“क्योंकि वह यहाँ से गुज़री और यहीं रुकी रही, सिर्फ इसलिए कि वह अपने पति को अपमान और बदनामी से बचाने के लिए किए जा रहे संघर्षों को देखना चाहती थी। उसका पति ही आपसे बात कर रहा था।”

"क्या आप परिवार के बारे में कुछ जानकारी जुटा सकते हैं?"

"वे कुछ समय से इस देश में हैं, और वे लॉयलिस्ट हैं।"

"वह महिला ऊपर अटारी में क्यों है, नीचे घर के बाकी हिस्से में क्यों नहीं है?"

वह नीचे आती है, लेकिन ऊपर ही रहती है, क्योंकि वह वहां से गुजर चुकी है।

क्या आपको उसका नाम पता है?

“एल्सा, या एल्वा।”

क्या वह हमसे बात करने को तैयार है?

“मैं कोशिश कर सकती हूँ, लेकिन वह बहुत झगड़ालू स्वभाव की है। दरअसल, वह अपने जीवन के आखिरी दिनों को बार-बार याद करती रहती है, और फिर अपने ही घर में होने वाले भूतिया अनुभवों को, जब उसके पति और बेटी यहीं रहते थे। कभी-कभी ये दोनों बातें आपस में टकराती हैं।”

“उस दूसरी महिला के बारे में क्या? क्या आप उसके बारे में कुछ पता लगा सकते हैं?”

मैं उसका वर्णन तो कर सकता हूँ, लेकिन उसे बुलवा नहीं सकता। उसके बाल गहरे रंग के हैं और बीच से बँटे हुए हैं, उसका चेहरा अंडाकार है, और उसने गहरे रंग की ऊँची गर्दन वाली पोशाक पहनी है। मुझे लगता है कि वह काले रंग की लंबी आस्तीन वाली पोशाक है। हालाँकि, मुझे लगता है कि वह बाद के काल की है।

वह घर में ही क्यों फंसी हुई है?

“जब वह यहाँ रहती थी, तब वह बहुत ही मानसिक रूप से संवेदनशील थी, और उसे उन भूतों से परेशानी होती थी जो उससे पहले यहाँ रह चुके थे। उसका नाम डू था। शायद एंड्रयू, हालाँकि मुझे लगता है कि डू उसका पारिवारिक नाम था। उसकी मृत्यु इसी घर में हुई। उससे पहले एक पुरुष यहाँ आया था। उससे पहले यहाँ रहने वाली एक महिला ने उस पर श्राप दिया

था। उन दोनों महिलाओं के बीच भूतों का झगड़ा चल रहा था। एक महिला इस बात से नाराज़ थी कि वह यहाँ क्यों है, और दूसरी इसलिए नाराज़ थी क्योंकि वह घर की मालकिन थी और उसे लगा कि उन अवांछित 'मेहमानों' ने, जैसा कि वह उन्हें कहती थी, उस पर कब्ज़ा कर लिया है।"

मैंने अल्बर्ट से कहा कि वह सुनिश्चित करे कि घर अब "साफ़" है और एथेल को होश में लाए। उसने समझाया, "मुझे औरत का हाथ पकड़ने की ज़रूरत नहीं पड़ेगी। वह अपने पति के साथ चली जाएगी, क्योंकि उसने फांसी के डर से घर छोड़ने का फैसला कर लिया है।" इतना कहकर मैंने अल्बर्ट को उसकी मदद के लिए धन्यवाद दिया, और कुछ ही क्षणों बाद एथेल होश में आ गई। उसे कुछ भी याद नहीं था, जैसा कि गहरी समाधि की अवस्था में उसके साथ अक्सर होता है।

हम अभी तक घर के ऊपरी हिस्से में नहीं गए थे। वैसे तो एथेल आमतौर पर समाधि सत्र के बाद काफी थक जाती थी, फिर भी मैंने दूसरी मंजिल और अटारी पर एक नज़र डालने का फैसला किया। एथेल ने घर के ऊपरी हिस्से में कई लोगों को देखा, जिनमें भूत-प्रेत और अतीत की मनोवैज्ञानिक छापें दोनों शामिल थीं। मुझे लगभग यकीन था कि वह परेशान सज्जन, जिसने खुद को एंथोनी बताया था, घर से जा चुका था, और उसकी बेटी भी। अब सवाल बना हुआ था उस दूसरी महिला का, उस बुजुर्ग महिला का जिसने श्रीमती कॉनैकर को डरा दिया था। अटारी में खड़े-खड़े एथेल अचानक बोली, "मुझे एक छोटा लड़का जैसा कुछ दिख रहा है। मुझे लगता है कि वह एक महिला है, एक छोटी कद की महिला।"

"कृपया उसका वर्णन करें।"

"ऐसा लगता है कि उसने एक अजीब सी सफेद टोपी पहन रखी है। उसका पहनावा गुलाबी-भूरा है, और उसके कंधों पर एक सफेद रुमाल है जो उसकी कमरबंद तक जाता है। वह देखने में लड़की जैसी लगती है और बहुत छोटी है, लेकिन फिर भी वह एक बुजुर्ग महिला है।"

न्यूयॉर्क के हडसन में एक और घर जाते समय, मैंने गस क्रेमर से इस बारे में टिप्पणी करने को कहा। क्रेमर ने बताया, "साराटोगा की लड़ाई के बाद बेनेडिक्ट अर्नोल्ड को एक-दो रात आराम करने के लिए इस इलाके में लाया गया था।" मुझे याद आया कि जनरल अर्नोल्ड, अमेरिकी पक्ष से गद्दारी करने से बहुत पहले, क्रांति की तरफ से एक बहुत ही सफल फील्ड

कमांडर और प्रशासनिक अधिकारी थे। गस ने आगे बताया, "उन्होंने किंडरहुक इलाके में रात बिताई थी। घर का स्थान निश्चित रूप से ज्ञात नहीं है, लेकिन यह ज्ञात है कि उन्होंने यहाँ रात बिताई थी। साराटोगा की लड़ाई में अमेरिकी नेता होराटियो गेट्स ने भी आस-पास के इलाके में कई रातें बिताई थीं। यह असंभव नहीं है कि उस समय यह जगह, जो एक हवेली हुआ करती थी, इन लोगों के ठहरने का स्थान रही हो।"

"फांसी के बारे में क्या?"

“क्रांतिकारी युद्ध के दौरान इस क्षेत्र में सात टोरी लोगों को फांसी दी गई थी। कुछ सबसे भीषण लड़ाइयाँ यहीं लड़ी गईं, और यह पूरी तरह से संभव है कि इस पुराने महल में कुछ घटित हुआ हो। एक बार फिर, यह श्रीमती मेयर्स द्वारा समाधि की अवस्था में कही गई बातों की पूरी तरह से पुष्टि करता है।”

मैंने गस से वह समय बताने को कहा। "यह सन् 1777 में अक्टूबर और नवंबर के आसपास का समय रहा होगा।"

"घर में उस ठंडी जगह का क्या होगा?"

“मालिक के अलावा,” गस ने जवाब दिया, “स्टेनली बेट नाम का एक कलाकार था, जो घर आया था और उसने एक असामान्य रूप से ठंडी जगह के बारे में शिकायत की थी। एक खास कमरा था जिसे बीमारों का कमरा कहा जाता था; बाद में हुई जांच से पता चला कि यह ऊपर के कमरों में से एक था। इसका इस्तेमाल गंभीर रूप से बीमार लोगों के लिए किया जाता था, जब वे इतने बीमार हो जाते थे कि उन्हें इस कमरे में लाना पड़ता था, और आखिरकार उनमें से कई लोगों की इसी कमरे में मृत्यु हो गई। आज आपको इसका पता नहीं चलेगा, क्योंकि पूरा घर इतना ठंडा है, लेकिन हमने उस कमरे और घर के आसपास के हिस्से के तापमान में कम से कम पच्चीस से तीस डिग्री का अंतर देखा है। यह हवा के झोंकों या खुली खिड़कियों के कारण नहीं हो सकता।”

"क्या आपके कलाकार मित्र ने, जो उस घर में घूमने आए थे, उस ठंडी जगह के अलावा कुछ और भी अनुभव किया?"

"हां, उसे बहुत स्पष्ट रूप से ऐसा महसूस हुआ था कि कोई कई बार उस पर झपटा था। उसकी कमीज़ की आस्तीन को ज़ोर से खींचा गया था। यह लगभग दो साल पहले की बात है,

और हालांकि वह जानता था कि घर में भूत-प्रेत का वास है, उसने श्रीमती कॉनैकर द्वारा देखे गए प्रेत के बारे में नहीं सुना था।"

मुझे ऐसा लगा कि एंथनी, या उसका जो भी नाम रहा हो, क्रांतिकारी युद्ध के दोनों पक्षों में उसके अच्छे संबंध थे। वह मुसीबत में था, यह स्पष्ट था। अपनी इस मुश्किल में उसने बेनेडिक्ट अर्नोल्ड और जनरल होराटियो गेट्स, दोनों अमेरिकी नेताओं से मदद मांगी। उसने जॉन से भी गुहार लगाई कि वह उसकी मदद करे, और मैं यह सोचे बिना नहीं रह सकता कि, हालांकि यह नाम आम है, क्या वह मेजर जॉन आंद्रे को भी जानता होगा?

* 17

हैवरस्ट्रॉ फेरी मामला

हैवरस्ट्रॉ न्यूयॉर्क शहर से लगभग एक घंटे की दूरी पर स्थित एक शांत छोटा सा कस्बा है, जो हडसन नदी के पश्चिमी किनारे पर ऊँचाई पर बसा हुआ है। जैसा कि इसके नाम से ही स्पष्ट है, यहाँ मूल रूप से डचों ने बस्ती बसाई थी। नदी के दूसरी ओर, कुछ ही दूरी पर, कर्नल बेवर्ली रॉबिन्सन का घर था, जहाँ बेनेडिक्ट अर्नोल्ड ने अपना मुख्यालय बनाया था। यह घर कुछ साल पहले जलकर राख हो गया था, और आज इसके कुछ जले हुए अवशेष ही दिखाई देते हैं। हैवरस्ट्रॉ में जोशुआ स्मिथ का भी घर था, जिन्होंने मेजर जॉन आंद्रे को भागने में मदद की थी, जिन्हें उनके मित्र बेनेडिक्ट अर्नोल्ड ने ब्रिटिश जासूस की सुरक्षा का जिम्मा सौंपा था। हैवरस्ट्रॉ में हडसन नदी को पार करने वाली प्रमुख नौकाओं में से एक भी थी, क्योंकि क्रांतिकारी काल के दौरान नदी के एक छोर से दूसरे छोर तक जाने के लिए कोई पुल नहीं थे। मैंने हैवरस्ट्रॉ के बारे में कभी खास सोचा नहीं था, हालांकि मैं उत्तर की ओर जाते समय कई बार वहां से गुजरा था। अगस्त 1966 में मुझे जोनाथन डेविस नाम के एक सज्जन का पत्र मिला, जिन्होंने मेरी कुछ किताबें पढ़ी थीं और एक दिलचस्प मामले के बारे में मुझे बताना चाहते थे, जिसे वे जांच के लायक समझते थे। वह घर सीधे नदी के किनारे पर बना है, हडसन नदी के सामने और, जैसा कि उन्होंने बताया, हाई टॉर की छाया में है। तहखाने सहित कुल चार मंजिलें हैं। लेकिन मुझे जानकारी किसी और से लेने के बजाय, उन्होंने घर की मालकिन,

जो उनकी एक दोस्त थीं, से कहा कि वे मुझसे सीधे संपर्क करें। पता चला कि मालकिन लॉरेट ब्राउन थीं, जो न्यूयॉर्क शहर में एक राष्ट्रीय महिला पत्रिका की संपादक थीं।

“मुझे लगता है कि मेरे घर में एक या शायद दो भूत रहते हैं: एक खूबसूरत तीस साल की महिला और उसकी दो साल की बेटी,” उन्होंने बताया। मिस ब्राउन अक्टूबर 1965 से एक और कामकाजी महिला, केय एस. के साथ इस घर में रह रही थीं। केय, एक प्रतिष्ठित परिवार से थीं और सुनहरे बालों वाली एक प्यारी महिला थीं। वह बेहद बुद्धिमान और रचनात्मक थीं। उन्हें नदी के किनारे स्थित वह घर बहुत प्यारा था, जिसे उन दोनों महिलाओं ने उनके कहने पर खरीदा था। हालांकि, अजीब बात यह थी कि केय अक्सर कहती थीं कि वह फिर कभी जिंदा घर नहीं छोड़ेंगी। कुछ समय बाद, कथित तौर पर एक असफल प्रेम प्रसंग के कारण, वह अपनी कार से न्यूबर्ग गईं, एग्जॉस्ट पाइप में कुछ जुगाड़ किया और अपने दूसरे पति से हुई बच्ची के साथ आत्महत्या कर ली।

“उसकी मृत्यु के बाद, जब मैं यहाँ अकेली रहने लगी, तो मुझे एक आत्मा का तीव्र आभास होने लगा जो मुझसे संवाद करने की कोशिश कर रही थी,” मिस ब्राउन ने बताया। “एक उपस्थिति थी, दरवाज़ों के ज़ोर-ज़ोर से बंद होने की आवाज़ें और रहस्यमयी शोर सुनाई देते थे, लेकिन मैंने उन्हें नज़रअंदाज़ कर दिया। उस समय, मैं तथाकथित अलौकिक चीज़ों में विश्वास नहीं करती थी।” तब से, मिस ब्राउन इस मामले पर दोबारा सोचने लगीं, खासकर जब ये घटनाएँ जारी रहीं। उन्हें यह सोचने लगीं कि क्या वह बेचैन आत्मा उनसे कुछ चाहती है, क्या वह उस आत्मा के लिए कुछ कर सकती हैं। एक दिन, उनके मित्र जोनाथन डेविस उनसे मिलने आए और उन्होंने कहा कि उन्हें वह लाल कालीन बहुत चाहिए जिस पर वे उस समय खड़े थे और जो काय का था। मिस ब्राउन के जवाब देने से पहले ही, डेविस को एक भयानक आभा का अहसास हुआ और उन्हें लगा कि कोई आत्मा उनसे कह रही है, “नहीं, तुम मेरा कालीन नहीं ले सकते।”

“तब से मुझे कदमों की आहट और बच्चे के रोने की आवाज भी सुनाई देती है। आजकल, मैं आधी रात या 2 बजे के आसपास गहरी नींद से जाग जाता हूँ, और मुझे ऐसा लगता है कि कोई मुझसे संपर्क करने की कोशिश कर रहा है। ऐसा पहले कभी नहीं हुआ।”

इसके बाद मिस ब्राउन ने मुझे मामले की जांच करने के लिए बुलाया। मैंने जोनाथन डेविस से बात की और उनसे उस दिन साथ आने को कहा जब मैं और मेरा माध्यम उनके घर जाएंगे। डेविस ने अतिरिक्त जानकारी दी। उनके अनुसार, 6 अगस्त, 1966 की रात को, जब मिस ब्राउन गहरी नींद से विशेष रूप से परेशान विचारों के साथ उठीं, तो वे हडसन नदी की ओर देखने वाली बालकनी में चली गईं। उसी समय, उन्होंने अपनी घबराहट को शांत करने के लिए एक कड़क पेय बनाया। जब वे हाथ में पेय लिए बालकनी में खड़ी थीं, तो उन्हें अचानक अपने साथ किसी और की उपस्थिति का अहसास हुआ, और उन्हें उसी क्षण पता चल गया कि अगर उन्होंने दाईं ओर देखा होता, तो उन्हें एक व्यक्ति दिखाई देता। उन्होंने जल्दी से अपना पेय पी लिया और वापस सो गईं। जैसा कि श्री डेविस ने बताया, उन्हें याद था कि उनकी पूर्व सहायिका उनके शराब पीने की सख्त विरोधी थीं।

मिस ब्राउन ने कहा, “आपको यह जानकर शायद दिलचस्पी होगी कि हाई टोर माउंटेन के आसपास की पहाड़ियाँ, जो हमारे घर के बहुत करीब हैं, बौनों की एक जाति के निवास स्थान के रूप में जानी जाती हैं। ये बौने रात में पहाड़ों से नीचे आते हैं और सड़क के संकेतों को हिलाकर तरह-तरह की शरारतें करते हैं। काय को हमेशा लगता था कि इस पूरे इलाके में एक खास तरह का आकर्षण और जादू है, और मेरा मानना है कि अगर आत्माएँ धरती पर विचरण कर सकती हैं, तो उनकी आत्मा यहीं उस घर में है जिसे वह बहुत प्यार करती थीं।”

कहानी काफी दिलचस्प लग रही थी, हालांकि मैंने मिस ब्राउन की गवाही पर आँख बंद करके भरोसा नहीं किया। जैसा कि हमेशा होता है जब किसी गवाह के मन में किसी मानसिक विकार के कारण के बारे में पहले से ही कुछ धारणाएँ होती हैं, मैं मामले की खुद जाँच किए बिना कुछ भी नहीं मानता। मिस ब्राउन ने घर के बारे में कुछ नहीं बताया था। उस इलाके की जानकारी के आधार पर, मुझे पता था कि नदी के किनारे अभी भी कई पुराने घर खड़े हैं।

एथेल जॉनसन मेयर्स मेरी माध्यम थीं, और मेरी पत्नी कैथरीन ने, कई अन्य अवसरों की तरह, गाड़ी चलाई। मेरी पत्नी, जो तब तक इस विषय में बेहद रुचि लेने लगी थीं, ने टेप रिकॉर्डिंग उपकरण और फोटोग्राफी में मेरी मदद की। रिवरसाइड एवेन्यू नदी के किनारे-किनारे चलती है, लेकिन अगर आप हैवरस्ट्रॉ के रास्तों से परिचित नहीं हैं तो इसे ढूंढना थोड़ा मुश्किल है। मध्यम आकार का वह घर काफी आकर्षक निकला, जो सीधे पानी के किनारे पर बना हुआ

था। अब उस तक पहुँचने का रास्ता सड़क की तरफ से था, हालाँकि मुझे पूरा यकीन था कि मुख्य द्वार या तो कोने से था या सीधे पानी की तरफ से। घर को देखकर मुझे तुरंत समझ आ गया कि हम क्रांति-पूर्व काल की इमारत की बात कर रहे हैं।

मिस ब्राउन हमें घर के बगल में बने एक लंबे बरामदे में ले गईं, जहाँ से पानी का सुंदर दृश्य दिखाई देता था। उसके पास ही बैठक कक्ष था, जो कलात्मक ढंग से सजा हुआ था और प्राचीन वस्तुओं, कालीनों और तकियों से भरा हुआ था। श्री डेविस शहर में किसी अप्रत्याशित काम के कारण नहीं आ सके।

एथेल मेयर्स बैठक कक्ष के कोने में एक आरामदायक कुर्सी पर बैठ गईं, और उस महिला की नज़र से घर की सजावट का जायज़ा लेने लगीं जिसने कुछ समय पहले ही अपना घर सजाया था। उन्हें इस मामले या हमारे यहाँ के काम के बारे में कुछ भी पता नहीं था।

“मुझे तीन पुरुष और एक महिला दिखाई दे रही हैं,” उसने कहना शुरू किया। “महिला की नाक बड़ी है और वह उम्रदराज लग रही है; पुरुषों में से एक का माथा ऊंचा है; और फिर एक पुरुष है जिसकी नाक छोटी है, चेहरा गोल है और बाल लंबे हैं। हालांकि, यह सब काफी समय पहले की बात है।”

क्या आपको इस घर में किसी की वास्तविक उपस्थिति महसूस होती है?

“मुझे ऐसा लग रहा है जैसे कोई मुझे पीछे से देख रहा हो,” एथेल ने जवाब दिया। “हो सकता है कोई औरत हो। मुझे बेचैनी हो रही है। मुझे ऐसा लग रहा है जैसे मैं भाग जाना चाहती हूँ—मैं अब ऐसे बोल रही हूँ जैसे मैं वही हूँ, आप समझ रहे हैं ना—मैं भागने, दूर चले जाने के मौके की तलाश में हूँ।”

एथेल ने गहरी सांस ली और बरामदे की ओर, और उसके पार हडसन नदी के उस पार देखा। “यहाँ कोई रहता है जो खिड़की से बाहर देखता रहता है कि कोई आ तो नहीं रहा। मुझे खिड़की मिल ही नहीं रही। घबराहट हो रही है। ऐसा लग रहा है जैसे मुझे किसी के आने का डर सता रहा हो। एक औरत और दो आदमी इसमें शामिल हैं। मुझे किसी की रक्षा करने का मन कर रहा है।”

"तो फिर, एथेल, व्यक्ति को ही कमान संभालने दो," मैंने सुझाव दिया, इस उम्मीद में कि समाधि की अवस्था हमें और सुराग देगी।

लेकिन एथेल इसके लिए पूरी तरह तैयार नहीं थी। उसने कहा, "मुझे वह अवसर ढूंढना ही होगा।" "वह उस अवसर को ढूंढने के लिए दृढ़ संकल्पित है।"

"उसके लिए खिड़की इतनी महत्वपूर्ण क्यों है?"

वह जानना चाहती है कि कोई आ रहा है या नहीं। उसे खिड़की से बाहर देखना होगा।

मैंने एथेल को निर्देश दिया कि वह आत्मा से कहे कि हम खिड़की की तलाश करेंगे और शांत रहे। लेकिन इसके विपरीत, एथेल और भी ज़्यादा बेचैन होती जा रही थी। “खिड़की तक जाना है...खिड़की...खिड़की। खिड़की अब यहाँ नहीं है, लेकिन मुझे उसे ढूंढना ही होगा। किसने उसे हटा दिया... नहीं, वह यहाँ नहीं है। वह इस तरफ नहीं है। वह उस तरफ है।” अब तक एथेल धीरे-धीरे समाधि की अवस्था में जा रही थी, हालाँकि पूरी तरह से नहीं। कुछ क्षणों में वह अभी भी अपनी आवाज़ में बोल रही थी, हमें अपने दिव्य आभास दे रही थी, जबकि अन्य क्षणों में कोई अलौकिक शक्ति सीधे उसके माध्यम से बोल रही थी।

“मैं बहुत बीमार हूँ, बहुत बीमार,” उसने कहा, और उसके शब्दों के बाद गहरी कराहें सुनाई दीं। कई मिनट तक मैंने उस आत्मा से सीधे बात की, उसे समझाया कि वह अभी जो कुछ भी अनुभव कर रहा है, वह केवल क्षणिक लक्षण हैं जो उसे याद हैं और वर्तमान में उनका कोई महत्व नहीं है।

लेकिन कराहने की आवाज़ कुछ देर तक जारी रही। मैंने उस प्राणी को आश्वस्त किया कि वह मुझसे सीधे बात कर सकता है, और डरने की कोई बात नहीं है, क्योंकि हम दोस्त बनकर आए हैं।

धीरे-धीरे कराहने की आवाज़ धीमी होती गई और कुछ शब्द समझ में आने लगे। “किसलिए? किसलिए? दूसरा घर...” इसके तुरंत बाद लगातार कराहें सुनाई दीं। मैंने अपनी आदत के अनुसार पूछा कि वह व्यक्ति कौन है और यहाँ क्यों आया है। “आप उसे यहाँ क्यों ला रहे हैं?” सम्मोहित माध्यम ने कहा। “वह आदमी, वह आदमी, आप उसे यहाँ क्यों ला रहे हैं? क्यों? क्यों?” इसके बाद ज़ोर-ज़ोर से रोने की आवाज़ आई।

जैसे ही मैं माध्यम को फिर से शांत कर सका, बातचीत जारी रही। “आपको क्या परेशान कर रहा है? आपकी समस्या क्या है? मैं आपकी मदद करना चाहता हूँ,” मैंने कहा।

“बातें, बातें, बातें...बहुत ज्यादा...बहुत ज्यादा।”

कृपया शांत रहें।

“नहीं! इसे ले जाओ! मैं नहीं बता सकती। वे चले गए हैं। मुझे मत छुओ! इसे ले जाओ! मुझे इतना दुख क्यों दे रहे हो?”

“अब सब ठीक है; तब से बहुत कुछ हो चुका है,” मैंने कहना शुरू किया।

उसकी प्रतिक्रिया फूट-फूटकर रोने की थी। “वे चले गए। मुझे परेशान मत करो! वे चले गए हैं। मुझे मत छुओ! उसे ले जाओ! उन्हें मेरी गर्दन से हटाओ!”

मैंने जितना हो सके शांत स्वर में फिर कहा, “सब ठीक है। आप आज़ाद हैं। आपको चिंता करने या किसी बात से डरने की ज़रूरत नहीं है।”

एथेल की आवाज अब धीमी और अस्पष्ट हो गई थी। "बात नहीं कर सकती... बहुत थक गई हूँ... चले जाओ।"

आप अपने बारे में खुलकर बात कर सकते हैं।

मैं तुम्हें उनके जाने के बाद बताऊँगा। मैंने मदद नहीं की... मैंने मदद नहीं की... मुझे पता ही नहीं था।

आप किन लोगों की बात कर रहे हैं?

मुझे नहीं पता। उन्होंने इसे अपने कब्जे में ले लिया है।

"क्या हुआ जवाब दो।"

“वे पानी के ऊपर से चले गए। कृपया इसे हटा दें ताकि मैं बेहतर तरीके से बात कर सकूं।”

ज़ाहिर है, उस प्राणी को लगा कि उसका मुंह अभी भी बंद है या किसी और वजह से वह ठीक से बोल नहीं पा रहा है। उसकी बात मानकर मैंने उससे कहा कि मैं वो चीज़ हटा रहा हूँ जो उसे परेशान कर रही है, और अब वो खुलकर और साफ़-साफ़ बोल सकता है। तुरंत ही एक हल्की सी आह निकली, दर्द से ज़्यादा राहत की आह। लेकिन उस प्राणी को यकीन नहीं हुआ कि मैंने वो चीज़ हटा दी है और उसने मुझे झूठा कहा। मैंने समझाने की कोशिश की कि उसे अतीत की कोई याद सता रही है, लेकिन वो समझ नहीं पाया। आख़िरकार वो मान गया।

मैंने पूछा, “आपका नाम क्या है?”

“आप जानते हैं, आप जानते हैं।” जाहिर है उसने मुझे किसी और के लिए समझ लिया था। मैंने उसे यकीन दिलाया कि मैं उसका नाम नहीं जानता।

“तुम तो बड़े ही अमीर आदमी हो, बस यही हो तुम,” उसने बेरुखी से कहा। फिर उसे याद आया कि किस वजह से वह बोल नहीं पा रहा था, और गला पकड़कर रोते हुए बोला, “मैं बोल नहीं पा रहा... गले में दर्द है...” तभी अचानक उसे एहसास हुआ कि अब कोई दर्द नहीं है और वह काफी शांत हो गया। “आखिरकार मुझे कोई परेशानी थी ही नहीं,” उसने कहा।

“बिल्कुल सही। इसीलिए तो हम आपकी मदद करने आए हैं।”

“काफी परेशानी हो गई... मैंने उन्हें आते देखा, लेकिन वे चले गए।”

मुझे तो हमेशा से यही लग रहा था कि हम किसी पुरुष से बात कर रहे हैं। चूंकि वह प्राणी एथेल की आवाज़ का इस्तेमाल कर रहा था, इसलिए उसमें कुछ स्त्रीत्व के अंश तो थे ही, लेकिन किसी तरह वह आवाज़ किसी महिला की आवाज़ से ज़्यादा पुरुष की लग रही थी। लेकिन तभी मुझे एहसास हुआ कि मेरे पास इसका कोई सबूत नहीं है।

“आपका नाम क्या है? आप सज्जन हैं या...”

“निहत्थी औरत। निहत्थी। मैंने किसी को नहीं अगवा किया। लेकिन तुम मेरी बात पर यकीन नहीं करोगे।”

मैंने उसे आश्वासन दिया कि मैं ऐसा करूंगा।

“तुम्हें यकीन नहीं होगा... अंधेरा था। यहाँ बहुत अंधेरा था... मैंने उससे कहा, मेरा ख्याल रखना।”

क्या यह आपका घर है?

"हाँ।"

"आपका क्या नाम है?"

"मेरा नाम जेनी है।"

"तुम यहां क्यों हो?"

“मेरी खिड़की कहाँ है? वह कहाँ है?”

मैंने उस टिप्पणी की गंभीरता को नजरअंदाज करते हुए अपने सवाल जारी रखे। "आपका पारिवारिक नाम क्या है?"

“स्मिथ...स्मिथ।”

आपका जन्म कहाँ और कब हुआ था?

कोई जवाब नहीं था।

मैंने पूछा, “आज कौन सा दिन है?”

"जुलाई।"

हम किस वर्ष में हैं?

“‘80.”

“इस घर में क्या हुआ? मुझे इसके बारे में बताओ।”

“वे उसे यहाँ लाए। वे यहाँ आए।” जाहिर है, वह महिला मुझे जो बताने वाली थी, उससे वह ज्यादा खुश नहीं थी।

यह किसका घर है?

“जोशुआ। जोशुआ स्मिथ।”

“उनका आपसे क्या रिश्ता है?”

“पति। वे उसे लेकर आए... मैंने उनसे कहा, उन्हें बताओ! नहीं... कोई नहीं आ रहा था। मैंने बस इतना ही कहा था। मुझे नहीं पता उन्होंने मुझे क्यों चोट पहुंचाई।”

"तुम्हारा मतलब है, उन्हें लगा कि तुम्हें कुछ पता है?"

“हाँ...मेरे दोस्तों। इतना शोर। ये लोग चुप क्यों नहीं होते? हे भगवान, मुझे दर्द हो रहा है। वे भाग गए। मैंने तुमसे कहा था कि वे भाग गए।”

“आप किन लोगों से डरते हैं?”

“बंदूकें—मुझे खिड़की से देखना होगा। वे आ रहे हैं। सब ठीक है...चलने का समय आ गया है...वे भाग गए...वे भाग गए...देखो, वे भाग गए। अंधेरा है। वे पानी के पास हैं। मुझे इसके पैसे मिल जाएंगे।”

“यह पैसा किसलिए है?”

“मदद करने के लिए।”

उस समय मुझे वक्ता की पहचान का पूरी तरह से पता नहीं था। इसलिए मैंने उससे और अधिक सबूत जुटाने की उम्मीद में पूछताछ जारी रखी। "इस देश का मुखिया कौन है?"

“जॉर्ज...जॉर्ज...कोई नहीं...हर कोई लड़ रहा है।”

"आपका जन्म कहां हुआ था?"

"यहाँ।"

आपके पति का जन्म कहाँ हुआ था?

सवाल का जवाब देने के बजाय, ऐसा लगा जैसे वह धीमी, लेकिन स्पष्ट आवाज़ में कह रही हो, "आंद्रे।"

“एंड्रे कौन है?”

“वह बच निकला। भगवान उनकी कृपा बनाए रखें। वह बच निकला।”

“तुम्हें इस घर से शांतिपूर्वक जाना चाहिए,” मैंने कहना शुरू किया, यह महसूस करते हुए कि आत्मा को उसके बंधन से मुक्त करने का समय आ गया है। “शांतिपूर्वक जाओ और फिर कभी यहाँ मत लौटना, क्योंकि बहुत समय बीत चुका है और अब सब कुछ शांत है। तुम्हें वापस नहीं आना चाहिए। तुम्हें वापस नहीं आना चाहिए।”

वे वापस आएंगे।

“कोई नहीं आएगा। यह सब बहुत पहले हुआ था। यहाँ से चले जाओ।”

“जॉनी...जॉनी।”

“तुम आज़ाद हो, तुम आज़ाद हो। तुम इस घर से जा सकते हो।”

“बेवकूफ...कमीने बेवकूफ...वे आ रहे हैं, वे अभी आ रहे हैं। मैं उन्हें देख सकता हूँ। मैं उन्हें देख सकता हूँ! भगवान की कृपा बनी रहे। वे भाग निकले, वे भाग निकले!”

यह स्पष्ट था कि जेनी अपने जीवन के सबसे नाटकीय क्षण को फिर से जी रही थी। एथेल, पूरी तरह से मंत्रमुग्ध होकर, कुर्सी पर बैठ गई, उसकी आँखें बेजान सी थीं, वह दूर कहीं टकटकी लगाए देख रही थी, मानो वह उन लोगों की गतिविधियों का अनुसरण कर रही हो जिन्हें हम देख नहीं सकते थे!

“घोड़ा वहीं है,” आत्मा ने आगे कहा। “जल्दी करो, घोड़े को पकड़ो! मैं एक वफादार नागरिक हूँ। राजशाही के प्रति वफादार हूँ। वे भाग गए। मेरी खिड़की कहाँ है?” अचानक, उस आत्मा को एहसास हुआ कि सब कुछ ठीक नहीं है। एथेल के चेहरे पर घोर भ्रम छा गया। “मैं कहाँ हूँ, मैं कहाँ हूँ?”

मैंने समझाया, "आप जिस घर में हैं, वह अब किसी और का है।"

“वो खिड़की कहाँ है? मुझे नहीं पता मैं कहाँ हूँ।”

मैं उसे घर से दूर जाने का निर्देश देता रहा, यह सुझाव देते हुए कि वह शांति से चली जाए और हमारी शुभकामनाएँ लेकर जाए। लेकिन वह शक्ति अभी इसके लिए तैयार नहीं थी। वह खिड़की से बाहर भी नहीं निकली। "वहाँ सैनिक हैं।"

मैंने उसे आश्वस्त करते हुए कहा, "सिर्फ तुम्हारी यादों में," लेकिन वह बहुत परेशान बनी रही।

“गायब हो गई... एक रस्सी... मेरा नाम जेनी है... मुझे बचाओ, मुझे बचाओ!”

इस मौके पर मैंने अल्बर्ट से उस सत्ता को मुक्त करने में मदद मांगी, जो स्पष्ट रूप से अपनी भावनात्मक यादों में बुरी तरह उलझी हुई थी। मेरी अपील कारगर रही। कुछ ही देर बाद, अल्बर्ट की स्पष्ट और सीधी-सादी आवाज़ सुनाई दी। उन्होंने कहा, "हमने उस सत्ता को पकड़ लिया है जो अंतरिक्ष और समय में खो गई थी।"

अगर कभी इस बात का सबूत मिला हो कि एक कुशल ट्रान्स मीडियम अपने साथ मौजूद लोगों के अवचेतन मन का सहारा नहीं लेती, तो यही वह सबूत था। हालांकि एथेल के भावविभोर होठों से कई नाम निकले, लेकिन मुझे यह स्वीकार करना होगा कि उनमें से कोई भी नाम मुझे याद नहीं आया। यह और भी आश्चर्यजनक है क्योंकि मैं एक इतिहासकार हूं और मुझे जोशुआ स्मिथ नाम पहचान लेना चाहिए था। लेकिन सच तो यह है कि जांच के उत्साह में मैं ऐसा नहीं कर पाया और बेहतर पहचान और पृष्ठभूमि जानने के लिए लगातार पूछता रहा। वास्तव में, मैंने जॉन को आंद्रे से जोड़ा तक नहीं और पूछता रहा कि जॉन कौन था। अगर हम इस जानकारी के साथ घर आए होते कि यहां क्रांतिकारी पलायन हुआ था, तो शायद मीडियम के अद्भुत प्रदर्शन का श्रेय उस जगह पर घटी घटनाओं के अवचेतन या सचेत ज्ञान को दिया जा सकता था। लेकिन असल में, हम कुछ साल पहले बने एक संदिग्ध भूत के कारण आए थे - एक ऐसा भूत जिसका क्रांति-पूर्व अमेरिका से कोई संबंध नहीं था। घर के मालिक समेत किसी

ने भी घर के किसी ऐतिहासिक महत्व के बारे में कुछ नहीं कहा था। फिर भी, आत्महत्या करने वाली संदिग्ध बेचैन लड़की की कहानी गढ़ने के बजाय, श्रीमती मेयर्स अठारहवीं शताब्दी में वापस गईं और हमें प्रामाणिक जानकारी दी - ऐसी जानकारी जो मुझे यकीन है कि उस समय उनके पास नहीं थी, क्योंकि वह न तो क्रांति-पूर्व अमेरिकी इतिहास में विशेषज्ञता रखने वाली विद्वान हैं और न ही उस इलाके या स्थानीय इतिहास से परिचित हैं।

जब अल्बर्ट ने उस यंत्र का नियंत्रण संभाला, तब भी मुझे इस महिला और स्मिथ तथा आंद्रे के बीच के संबंधों के बारे में कोई जानकारी नहीं थी। इसलिए मैंने कुछ जिज्ञासावश पूछा, "अल्बर्ट, यह कौन है?"

“यहाँ तीन लोग हैं,” अल्बर्ट ने कहना शुरू किया। “एक घोड़े पर सवार होकर चला गया है, और एक सीमा पार कर गया है। वे यहाँ इसलिए आए क्योंकि वे घिरे हुए थे। उनमें से एक मेजर आंद्रे थे।”

“क्या ये वही ऐतिहासिक मेजर आंद्रे हैं?” मैंने अविश्वास से पूछा।

“हां,” अल्बर्ट ने उत्तर दिया। “उन्होंने यहाँ तब तक शरण ली जब तक खतरा टल नहीं गया, लेकिन जैसा कि आप जानते ही होंगे, आंद्रे ज्यादा दूर नहीं जा सका और अर्नोल्ड पानी के रास्ते भाग निकला।”

“उस महिला के बारे में क्या? क्या उसका असली नाम स्मिथ है?”

"हां, लेकिन उसका जोशुआ स्मिथ से कोई संबंध नहीं है। वह यहां रहने वाली एक महिला है जो संपत्तियों की देखरेख करती है।"

वह अपना नाम जेनी स्मिथ क्यों रखती है?

“वह अपने बारे में कम और अपने मालिक के बारे में ज्यादा सोच रही थी। वह जोशुआ स्मिथ के लिए काम करती थी, और उसका नाम जेनिफर था।”

मैंने बात को सुलझाने की कोशिश करते हुए कहा, "ठीक है। क्या आप उसकी मदद कर पाए हैं?"

"हां, आपकी वजह से अब वह एकांत से बाहर आ गई है। हमें निश्चित रूप से उस पर तब तक नज़र रखनी होगी जब तक वह यह तय नहीं कर लेती कि यह 1780 का दशक नहीं है।"

मैंने पूछा, "क्या घर में कोई और भी है?"

“और भी लोग हैं। टोरी पार्टी के लोग हमेशा इस इलाके में सुरक्षित रहते थे, और जब भी कोई भागने की कोशिश करता था, तो आमतौर पर यहीं से होकर गुजरता था।”

"क्या इस घर में होने वाली सभी गड़बड़ियां उसी काल से चली आ रही हैं?"

"नहीं, यहां पुरानी अशांतियों के ठीक ऊपर बाद में भी अशांतियां उत्पन्न हुई हैं।"

इस घर में हाल ही में क्या गड़बड़ी हुई है?

एक महिला और एक बच्चा।

तुरंत ही यह बात समझ में आ गई। यह अजीब होता अगर उस माध्यम ने भी इस घर में घटी हाल की भावनात्मक घटना, जिसमें एक महिला और एक बच्चा शामिल थे, को महसूस न किया होता। जोनाथन डेविस के अनुसार, श्रीमती ब्राउन ने एक ऐसे कमरे में बच्चे की आवाज सुनी थी जो कभी बच्चों की देखभाल के लिए इस्तेमाल होता था। उनकी पांच साल की छोटी बेटी ने भी उन आवाजों को सुना था और उनसे डर गई थी। लेकिन उस महिला का क्या हुआ?

“आपने अभी जिस शक्ति को मुक्त किया है, उसकी वजह से वह महिला बहुत परेशान हो गई थी,” अल्बर्ट ने जवाब दिया। “दरअसल, उस पर किसी आत्मा का कब्ज़ा हो गया था। यह कुछ समय पहले की बात है।”

“उसके साथ क्या हुआ?”

"वह पहली महिला, जेनिफर, के वश में हो गई और परिणामस्वरूप बहुत दुखी महसूस करने लगी।"

"क्या मेरा यह अनुमान सही है कि औपनिवेशिक महिला जेनिफर को फांसी दी गई थी?"

"यह सही है।"

और क्या मेरा यह अनुमान भी सही है कि हाल ही में सामने आई महिला में दुर्भाग्यपूर्ण जेनिफर के लक्षण दिखाई दिए?

“यह भी सही है।”

मुझे पता चला है कि जेनिफर की मौत इसी घर में हुई थी। कैसे?

"गला घोंटना।"

“हाल ही के मामले के बारे में क्या? उसकी मौत कैसे हुई?”

“उसका आंतरिक मन पीड़ा से भरा हुआ था। उसकी सांसें रुक गई थीं। घर में मौजूद पहली आत्मा के प्रभाव से उत्पन्न उसकी असामान्य स्थिति को न समझने वाले पुरुषों ने उसके साथ बुरा बर्ताव किया। इसलिए उसने आत्महत्या कर ली। यह जहर या गला घोंटना या दोनों हो सकते हैं, मुझे पक्का पता नहीं है।”

"क्या आपको अब भी घर में उसकी मौजूदगी का एहसास होता है?"

“हाँ। वह हमेशा लोगों के पीछे-पीछे घूमती रहती है। वह यहीं है, लेकिन हमने उसे यंत्र का इस्तेमाल नहीं करने दिया, क्योंकि वह वहीं अटक सकती थी। खैर, वह अब हमारे नियंत्रण में है। वह अब पूरी तरह से पागल हो चुकी है। जिस समय उसने आत्महत्या की, उस समय उस पर इस औरत का साया था, लेकिन हम उसे बोलने नहीं दे सकते क्योंकि वह यंत्र पर कब्ज़ा कर लेगी। एक पल रुकिए। ठीक है, धन्यवाद, वे उसे ले गए हैं।” ज़ाहिर है, अल्बर्ट को दूसरी दुनिया में मौजूद उसके सहायकों से ताज़ा खबर मिल गई थी। ऐसा लग रहा था कि आखिरकार काय सुरक्षित हाथों में है।

मैंने पूछा, "क्या इस महिला और घर में रहने वाले वर्तमान लोगों के बीच कोई संबंध है?"

“हाँ, लेकिन इससे कोई नुकसान नहीं होगा। जब उसकी मृत्यु हुई तब वह मानसिक रूप से ठीक नहीं थी, और उसे अभी तक शांति नहीं मिली है। मुझे यकीन है कि वह यह स्पष्ट करना चाहेगी कि उस पर किसी प्रेतबाधा का साया था और उसने अपने सामान्य स्वभाव के अनुसार कार्य नहीं किया। उसकी आत्महत्या उसकी अपनी इच्छा से नहीं थी। मैं वही शब्द दोहरा रहा हूँ जो मुझे बताए जा रहे हैं: यह उसकी अपनी इच्छा से नहीं थी। प्रेतबाधा के कारण उसे बहुत कष्ट सहना पड़ा, क्योंकि औपनिवेशिक महिला को सैनिकों द्वारा पीटा गया था और गला घोंटकर मार डाला गया था।”

"अल्बर्ट, आपके जाने से पहले, क्या हम इस बात को लेकर आश्वस्त हो सकते हैं कि अब से घर में शांति रहेगी?"

“जी हां। हम अपनी पूरी कोशिश करेंगे।”

इतना कहकर अल्बर्ट चला गया, और एथेल अपनी पुरानी स्थिति में लौट आई। पहले तो वह थोड़ी उलझन में दिखी कि वह कहाँ है, उसने अपनी आँखें मलीं, दो-तीन बार जम्हाई ली, फिर

आरामदेह कुर्सी पर वापस बैठ गई और मेरे किसी भी सवाल का इंतज़ार करने लगी। लेकिन फिलहाल मेरे सवाल सिर्फ घर के मालिक से थे। "यह घर कितना पुराना है, और इसके बनने से पहले यहाँ क्या था?"

"यह कम से कम सौ साल पुराना है, और मुझे याद है किसी ने मुझे बताया था कि इस जगह पर कुछ ऐतिहासिक घटना घटी थी, जैसे कोई पलायन। क्रांतिकारी युद्ध के दौरान यहाँ सैनिक थे, लेकिन मुझे ठीक से नहीं पता कि क्या हुआ था।"

यह बताना ज़रूरी है कि मिस ब्राउन, जो उस इलाके में कुछ समय से रह रही थीं, उन्हें भी अपने घर के पूरे इतिहास की जानकारी नहीं थी। दरअसल, वह घर सौ साल से भी ज़्यादा पुराना था। सितंबर 1780 में भी वह घर मौजूद था, जब मेजर जॉन आंद्रे ने वहाँ का दौरा किया था। उस समय घर के नीचे एक नौका थी जो दूसरे किनारे से जुड़ती थी, और वह घर जनरल बेनेडिक्ट अर्नोल्ड के अच्छे दोस्त जोशुआ स्मिथ का था। अर्नोल्ड ने मेजर आंद्रे के भागने का ज़िम्मा जोशुआ स्मिथ को सौंपा था। एथेल ने जो कुछ भी कहा था, वह बिलकुल सच था। तीन लोगों ने भागने की कोशिश की थी: आंद्रे, एक नौकर और, ज़ाहिर है, जनरल अर्नोल्ड, जो भागने में कामयाब रहे। स्मिथ एक वफ़ादार व्यक्ति थे और अपनी मदद को अपना कर्तव्य मानते थे। अमेरिकी सेना के लिए वह गद्दार थे। हालाँकि आंद्रे को बाद में पकड़ लिया गया, लेकिन क्रांतिकारी सेनाओं ने स्मिथ और उनकी संपत्ति पर ज़बरदस्त धावा बोल दिया। जानकारी निकलवाने के लिए लोगों को पीट-पीटकर मार डालना अठारहवीं शताब्दी में ब्रिटिश और अमेरिकी दोनों सेनाओं द्वारा इस्तेमाल किया जाने वाला एक लोकप्रिय तरीका था। निःसंदेह, जेनिफर क्रांतिकारी सैनिकों की शिकार थी, और काय, जो शायद स्वयं एक मानसिक रूप से सक्षम थी, जेनिफर की शिकार थी।

एथेल मेयर्स ने एक बार फिर साबित कर दिया कि वह कितनी बेहतरीन माध्यम हैं। लेकिन अभी भी कुछ बातें स्पष्ट करनी बाकी थीं।

“मिस ब्राउन, आप इस घर में कब से रह रही हैं?” मैंने पूछा।

“डेढ़ साल बीत चुका था। यहाँ आए हुए हमें दो महीने ही हुए थे कि काय ने आत्महत्या कर ली। हमने मिलकर घर खरीदा था। वह बहुत परेशान थी क्योंकि उसके पति ने उसे आर्थिक सहायता देना बंद कर दिया था। साथ ही, उसने आने की घोषणा भी कर दी थी, और वह

उससे मिलना नहीं चाहती थी। इसलिए वह रविवार को अपने बच्चे के साथ निकल गई और न्यूबर्ग में उसने बच्चे के साथ आत्महत्या कर ली। गुरुवार तक उसका शव नहीं मिला।"

"उनकी मृत्यु के बाद, आपको घर में किन असामान्य चीजों का अनुभव हुआ?"

"मुझे हमेशा ऐसा लगता था कि कोई मुझसे बात करने की कोशिश कर रहा है, और मैं डर के मारे उससे भागती रहती थी। मुझे अभी भी यहाँ उसकी मौजूदगी महसूस होती है, लेकिन अब मैं चाहती हूँ कि वह हमेशा यहीं रहे। वह हमेशा कहती थी कि वह यहीं रहना चाहती है, उसे यह नदी का किनारा बहुत प्यारा था। हम दोनों इस बात पर सहमत थे कि वह हमेशा यहीं रहेगी। उसकी मृत्यु के बाद जब मैंने तरह-तरह की अजीब आवाज़ें सुनीं, जैसे दरवाज़ों का अपने आप बंद होना और ऐसी जगहों पर कदमों की आहट जहाँ कोई दिखाई नहीं देता था, तो मैं इतनी डर गई कि शराब के नशे में चूर हो गई और नींद की गोलियाँ खाने लगी। उस समय, मैं बस किसी से बात नहीं करना चाहती थी।"

"इन घटनाओं से पहले, क्या आपको कोई मानसिक अनुभव हुए थे?"

"मुझे कई बार अंतर्ज्ञान से जुड़ी घटनाएं अनुभव हुई हैं, जैसे कि घटनाओं के घटित होने से पहले ही उनका पता चल जाना। किसी की मृत्यु का संदेश मिलने से पहले ही मुझे पता चल जाता था; उदाहरण के लिए, आपके आने से पहले, मुझे लगभग हर रात कुछ आवाज़ें सुनाई देती थीं और लोगों की उपस्थिति का अहसास होता था। मेरी छोटी बेटी कहती है कि ऊपर एक छोटी सुसान रहती है, और कभी-कभी मुझे भी उसके रोने की आवाज़ सुनाई देती है। मैं उसकी पुकार और सीढ़ियों पर उसके चलने-फिरने की आवाज़ सुन सकती हूँ।"

"क्या आपने कभी सोचा था कि इसमें से कुछ चीजें पहले के समय से संबंधित हो सकती हैं?"

नहीं, मैंने इसके बारे में कभी नहीं सोचा था।

"क्या काय उस तरह की इंसान थी जो आत्महत्या कर सकती थी?"

"बिल्कुल नहीं। यह तो उनके स्वभाव के बिल्कुल विपरीत होता। वह कहती थीं कि चाहे कोई भी समस्या हो, चाहे कितनी भी परेशानी हो, हमेशा कोई न कोई रास्ता निकल आता है। वह बहुत आशावादी, भरोसेमंद और साधन संपन्न थीं। और वह चुनौतियों और समस्याओं को ऐसी चीजें मानती थीं जिन पर विजय प्राप्त करनी ही पड़ती है। उनकी मृत्यु के बाद, मैंने उनके सभी पत्रों और सामानों की छानबीन की। मेरा पहला विचार यही था कि उनकी हत्या की गई

है, क्योंकि यह उनके स्वभाव के बिल्कुल विपरीत था। मैंने इस बारे में पुलिस से भी बात की। मेरी राय में उनकी जांच पूरी तरह से नहीं हुई। उन्होंने इस बात की जांच नहीं की कि रविवार से गुरुवार के बीच, उनके मिलने से पहले, उन्होंने चार दिन और चार रातें कहां बिताई थीं। लेकिन मैं खुद इतना दुखी था कि मैं खुद कोई जांच करने में सक्षम नहीं था। कुछ समय के लिए तो मुझे उनके पति पर ही उनकी हत्या का शक भी हुआ था।"

"लेकिन अब हमें पता चल गया है, है ना?" मैंने कहा।

हैवरस्ट्रॉ में फेरी सेवा बहुत लंबे समय से बंद है। रिवरसाइड एवेन्यू पर स्थित वह घर आज भी खड़ा है, पहले से कहीं अधिक शांत है, और अब अपने रहस्यों को पूरी तरह से छुपाए हुए है। अंग्रेज और अमेरिकी लंबे समय से घनिष्ठ मित्र रहे हैं, और 1780 के दशक की घटनाएं इतिहास का हिस्सा बन चुकी हैं।

* 18

"नियति का जहाज": यू.एस.एफ. कॉन्स्टेलेशन

अंधेरी ब्यूक कार तूफानी रात में तेज़ी से दौड़ रही थी, मोड़ लेते समय वह सामान्य से कहीं ज़्यादा तेज़ी से मुड़ रही थी: लेकिन हमारा अभियान एक घंटा लेट हो गया था, और कुछ महत्वपूर्ण लोग हमारे आने का इंतज़ार कर रहे थे। शाम के 9 बज रहे थे, और उस समय बाल्टीमोर में काफ़ी शांति रहती है: यातायात लगभग न के बराबर हो गया था, और अक्टूबर की ठंडी हवा के कारण शायद कई पैदल यात्री अपने घरों के अंदर ही थे, इसलिए हम तेज़ी से शहर पार करने में कामयाब रहे।

जिम लायंस हमें होटल से लेने कुछ मिनट पहले ही आ गए थे, और तट पर हमारा इंतज़ार कर रहे समिति के तीनों सदस्य सुबह 8 बजे से ही वहाँ मौजूद थे। लेकिन मैं वाशिंगटन से देर से पहुँचा था, और सिबिल लीक अभी-अभी हमारे साथ शामिल हुई थीं: वह न्यूयॉर्क से आई थीं और उन्हें ज़रा भी अंदाज़ा नहीं था कि मैंने उन्हें क्यों बुलाया था। मेरी इस सहेली के लिए यह सब एक तरह का मनोरंजन था, और जिन अंधेरी गलियों को हम पीछे छोड़कर खुले मैदान में आ रहे थे, उनके लिए ये कोई मायने नहीं रखती थीं। वह जानती थीं कि यह बाल्टीमोर है, और एक पल बाद उन्हें एहसास हुआ कि हम पानी के पास हैं: शहर की मुख्य सड़कों की रोशनी

से हल्की-हल्की जगमगाती रोशनी में, अर्ध-अंधेरे आसमान के सामने जहाजों की आकृतियाँ साफ़ दिखाई दे रही थीं, जिन्हें पहचानना मुश्किल नहीं था।

घाट के अंत में गाड़ी अचानक ज़ोर से रुक गई। हीटर की गर्मी के बावजूद, हम बाहर खुली हवा में जाने के लिए बेताब थे। रोमांच का उत्साह हम पर हावी हो रहा था।

जैसे ही हम जिम लायंस की कार से उतरे, हमने देखा कि तीन कांपते हुए आदमी एक विशाल, गहरे रंग की आकृति के सामने खड़े थे। करीब से देखने पर पता चला कि वह आकृति एक बड़े समुद्री जहाज का ढांचा थी। फिलहाल, हमने एक-दूसरे को नमस्कार किया और देरी का कारण बताया: उन लोगों को इससे कोई खास राहत नहीं मिली जो पूरे एक घंटे से ठंड में ठिठुर रहे थे!

समिति के तीन सदस्य थे गॉर्डन स्टिक, जो कॉन्स्टेलेशन बहाली समिति के अध्यक्ष थे, जीन हॉफमिस्टर, जो बाल्टीमोर के लंबे, दुबले-पतले हार्बरमास्टर थे, और डोनाल्ड स्टीवर्ट, जो प्राचीन जहाज के क्यूरेटर और एक पेशेवर इतिहासकार थे।

हालाँकि सिबिल को एहसास था कि वह एक विशाल जहाज के सामने है, लेकिन उसे इस बात का कोई अंदाजा नहीं था कि वह किस प्रकार का जहाज था; केवल जहाज के अंदर लगा एक हल्का सा बल्ब ही दृश्य पर थोड़ी रोशनी डाल रहा था, और किसी ने भी जहाज या हमारी यात्रा के उद्देश्य के बारे में कुछ नहीं बताया था।

ऊपर का ढांचा दिखाई नहीं दे रहा था, न ही मस्तूल, और अचानक मुझे याद आया कि जिम लायंस ने मुझे हल्के-फुल्के अंदाज़ में चेतावनी दी थी—पुराना जहाज़ "मरम्मत के दौर से गुज़र रहा था" और अभी तक अपने असली रूप में नहीं था। यह बात कितनी सटीक थी, इसका एहसास मुझे कुछ देर बाद होने लगा जब हम जहाज़ पर चढ़ने लगे। मैं अंदर जाने के लिए सीढ़ी या तख्ता ढूंढ रहा था।

बंदरगाह प्रमुख ने एक समझदारी भरी मुस्कान के साथ अपना सिर हिलाया।

“मुझे डर है कि आपको थोड़ी मुश्किलों का सामना करना पड़ेगा, मिस्टर होल्ज़र,” उन्होंने कहा।

फिर उसने अपनी खनिक वाली लालटेन काले जहाज़ के ढांचे पर चमकाई। डेक से बाहर निकले एक तख्ते से एक रस्सी की सीढ़ी लटकी हुई थी। तख्ते के आगे एक गहरा, खुला हुआ

छेद दिखाई दिया, जिसके बारे में उसने मुझे यकीन दिलाया कि वह सीधे जहाज़ के अंदरूनी हिस्से में जाता है। ज़ाहिर है, असली चुनौती उसे चूकना नहीं था। अगर कोई चूक जाता, तो नीचे बहुत सारा पानी था। जहाज़ घाट से लगभग दो गज की दूरी पर था, डूबने के लिए काफ़ी जगह थी, अगर कोई इतना अनाड़ी हो कि सीढ़ी से गिर जाए या तख्ते को चूक जाए। मैंने अक्टूबर की ठंडी हवा में हिलती हुई रस्सी की सीढ़ी को देखा, अपनी पीठ पर भारी टेप रिकॉर्डर का खिंचाव और गले में लटके कैमरे को महसूस किया, और मन ही मन कहा, "हंस, तुम तो नहाने जा रहे हो। मैं इस सब से कैसे बचूँ?"

* * *

वैसे तो मैं डरपोक नहीं हूँ, लेकिन मुझे जोखिम लेना पसंद नहीं है। इस समय मैं कहीं और होना चाहता था। बाल्टीमोर के इस ठंडे घाट को छोड़कर कहीं भी। जब मैं खुद को इस मुसीबत से निकालने के लिए सही शब्द ढूंढने में लगा हुआ था, तभी मैंने सिबिल लीक को देखा, जो दुबली-पतली नहीं थीं, वह मुर्गी की तरह फुर्ती से रस्सी की सीढ़ी पर चढ़ गईं, मानो मुर्गी रात के खाने के लिए अपने दड़बे की ओर दौड़ रही हो। पल भर में वह जहाज के भीतर गायब हो गईं। मैंने बड़ी मुश्किल से अपनी सांस रोकी और मन ही मन कहा, अगर सिबिल कर सकती है, तो मैं भी कर सकता हूँ। हिम्मत जुटाकर मैंने सीढ़ी पकड़ी और खुद को ऊपर खींच लिया, और लगातार अपने प्रियजनों को संदेश भेजता रहा, कहीं ऐसा न हो कि मैं न पहुँच पाऊँ। कदम-दर-कदम, मैं ज़मीन से दूर होता चला गया। मैंने पीछे मुड़कर देखने की हिम्मत नहीं की, क्योंकि अगर मैंने देखा होता तो मुझे यकीन है कि अब तक बाकी लोग मुझे बौने लगने लगे होते। आखिरकार मैंने जहाज के ढांचे से बाहर निकला लकड़ी का तख्ता देखा, और एक समुद्री डाकू द्वारा सजा पाए नाविक की तरह, मैं उस पर सिर झुकाए, टेप रिकॉर्डर मेरी पसलियों से टकरा रहा था, कैमरा मेरी आंखों में चुभ रहा था, खड़े होने की हिम्मत नहीं हो रही थी, कहीं मैं बीम से न टकरा जाऊं—जब तक कि मैं छेद तक नहीं पहुंच गया; फिर, घुटनों के बल बैठकर, मैं आधा रेंगते हुए जहाज के ढांचे में घुस गया, जहां मैंने सिबिल को खुद से सीटी बजाते हुए पाया, शायद कोई नाविकों का गीत। कम से कम मैं अंदर तो आ गया था। मैं आखिरकार वापस बाहर कैसे निकलूंगा, यह उस समय सोचने के लिए बहुत ही भयानक विषय था। हो सकता है कि मुझे तब तक जहाज पर ही रहना पड़े जब तक कि एक गैंगप्लैंक

न लगा दिया जाए, लेकिन फिलहाल कम से कम मैं सुरक्षित था और फिर से इंसान जैसा महसूस करने लगा था। बाकी लोग भी अब सीढ़ी से हमारे पीछे आ गए थे, और सभी रोमांच शुरू करने के लिए तैयार थे।

इतनी ही रोशनी थी कि प्राचीन बीम, लकड़ी के गलियारे, बंक, बल्कहेड और बाकी सब कुछ दिखाई दे रहा था: हमारे सामने एक बहुत पुराना लकड़ी का जहाज पड़ा था, पूरी तरह से जर्जर हालत में, जिसके अंदरूनी हिस्से फटे हुए थे और किनारे खुले हुए थे, लेकिन फिर भी पानी पर तैर रहा था और मूल रूप से मजबूत था। जहाज पर कोई लेबल नहीं था, न ही उसका नाम पता चल रहा था, न ही कोई तारीख या अन्य विवरण थे क्योंकि मरम्मत का काम अभी पूरी तरह से शुरू नहीं हुआ था और केवल बाहरी ढाँचे को ही पहले चरण के रूप में सुरक्षित किया गया था। सिबिल को जहाज के बारे में कुछ भी पता नहीं था, सिवाय इसके कि उसकी सामान्य बुद्धि ने उसे बताया था - एक बहुत पुराना लकड़ी का जहाज। इसी कारण मैंने बाल्टीमोर में अपने इस साहसिक कार्य के लिए रात का अंधेरा चुना था, और मैंने अपने साथियों से वादा लिया था कि जब तक हम अपनी जाँच पूरी नहीं कर लेते, तब तक वे किसी को कुछ नहीं बताएंगे।

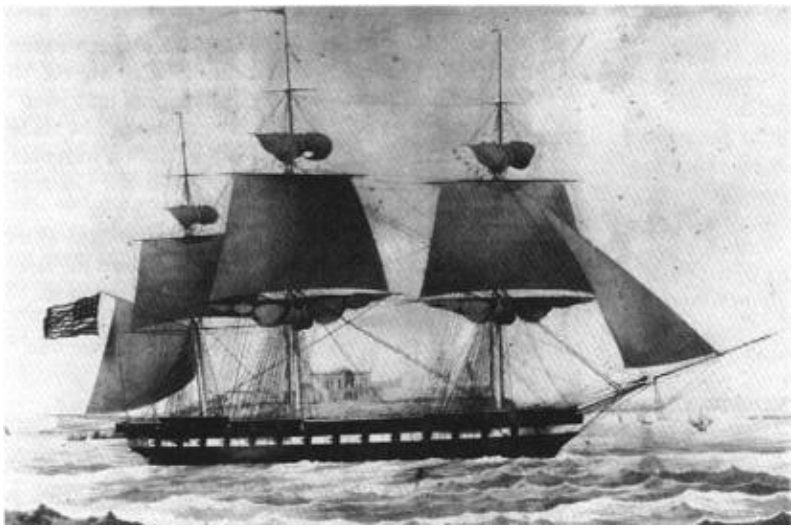

यूएस एफ. कॉन्स्टेलेशन, जैसा कि वह पहले दिखती थी

* * *

मुझे इस अद्भुत जहाज, फ्रिगेट कॉन्स्टेलेशन के बारे में पहली बार तब पता चला जब बाल्टीमोर के एक टीवी पर्सनैलिटी जिम लियोन्स ने मुझे पत्र लिखकर इस ऐतिहासिक जहाज का जायजा लेने का अनुरोध किया। जहाज पर अजीबोगरीब घटनाओं की खबरें थीं और इससे जुड़े कई अनसुलझे ऐतिहासिक सवाल थे। क्या मैं आकर उन प्राचीन रहस्यों को सुलझाने की कोशिश कर सकता हूँ? यह फ्रिगेट 1797 में बना था और संयुक्त राज्य अमेरिका का पहला युद्धपोत था। द्वितीय विश्व युद्ध तक यह सेवा में बना रहा—ऐसा किसी और पुराने जहाज ने कभी नहीं किया था। जब भी कांग्रेस इस पुराने जहाज को सेवामुक्त करने का विधेयक पारित करती, कुछ न कुछ ऐसा हो जाता जिससे यह रुक जाता: देशभक्ति समितियाँ बन जातीं और चंदा इकट्ठा करतीं, या वाशिंगटन के लोग अचानक मदद के लिए आगे आ जाते, और यह जर्जर जहाज कबाड़खाने में जाने से बच जाता। ऐसा लगता था मानो कोई शक्ति या कोई व्यक्ति इस जहाज को मरने से रोकने के लिए काम कर रहा हो। शायद इस रहस्यमयी प्रभाव का कुछ अंश राष्ट्रपति फ्रैंकलिन रूजवेल्ट पर भी पड़ा, जो अपनी माँ सारा डेलानो रूजवेल्ट की तरह ही मानसिक अनुसंधान में रुचि रखते थे। खैर, जब कॉन्स्टेलेशन जहाज रोड आइलैंड के न्यूपोर्ट में उपेक्षित पड़ा था और उसे नष्ट करने की मांग पहले से कहीं अधिक बुलंद हो गई थी, तब रूजवेल्ट ने ऐसी प्रतिक्रिया दी मानो जहाज पर मौजूद रहस्यमयी शक्ति ने किसी तरह उन तक अपना संदेश पहुँचाया हो: 1940 में, द्वितीय विश्व युद्ध के चरम पर, उन्होंने आदेश दिया कि कॉन्स्टेलेशन जहाज अमेरिकी अटलांटिक बेड़े का प्रमुख जहाज होना चाहिए!

* * *

अक्टूबर की तूफानी रात में बाल्टीमोर की हमारी यादगार यात्रा के काफी समय बाद, मुझे उस अद्भुत जहाज के बारे में और भी बेहतर जानकारी मिली। उस समय, मैं अपने अवचेतन मन को उसके इतिहास के विस्तृत ज्ञान से भरना नहीं चाहता था, ताकि सिबिल लीक पर उससे जानकारी प्राप्त करने का आरोप न लगाया जा सके।

वर्ष 1782 था। संयुक्त राज्य अमेरिका ने स्वतंत्रता संग्राम में विजय प्राप्त कर ली थी और नया राष्ट्र अपनी सशस्त्र सेनाओं को भंग करने में सक्षम था। विदेशी देशों के साथ व्यापार फलता-फूलता रहा और अमेरिकी व्यापारी जहाज़ों की संख्या समुद्र में बढ़ती जा रही थी। लेकिन

कोई भी राष्ट्र तब भी और अब भी उतना ही शक्तिशाली होता है जितनी उसकी शत्रु हमलों से रक्षा करने की क्षमता होती है। जल्द ही उत्तरी अफ्रीका और कैरिबियाई सागर के लुटेरे अमेरिकी जहाज़ों के लिए असुरक्षित हो गए और कई नाविक समुद्री डाकुओं के चंगुल में आ गए। अंततः, 1794 में, कांग्रेस ने इस स्थिति से निपटने का निर्णय लिया और विदेशों में अमेरिकी जहाज़ों की सुरक्षा के लिए छह युद्धपोतों या फ्रिगेट के निर्माण को अधिकृत किया। विधेयक पर जॉर्ज वाशिंगटन ने विधिवत हस्ताक्षर किए और जहाज़ों पर काम तुरंत शुरू हो गया। हालांकि, इनमें से केवल तीन जहाज़, जो एक-दूसरे के पूरक थे, तत्काल कार्रवाई के लिए समय पर निर्मित हो सके। पहला फ्रिगेट, और इस प्रकार अमेरिकी नौसेना का सबसे पुराना जहाज़, यू.एस.एफ. कॉन्स्टेलेशन था, जिसके बाद कॉन्स्टिट्यूशन और यूनाइटेड स्टेट्स आए। कॉन्स्टेलेशन में तीन मुख्य मस्तूल, लकड़ी का ढांचा और छत्तीस तोपें थीं, जबकि अन्य दो जहाजों में चौवालीस तोपें थीं। लेकिन बाल्टीमोर के डेविड स्टॉडर, जो कॉन्स्टेलेशन के निर्माता थे, ने इसे अपनी पेटेंट की हुई नुकीली धनुषाकार रेखाएं दीं, जो बाद में बाल्टीमोर क्लिपर्स के साथ प्रसिद्ध हुईं। इस डिजाइन ने जहाजों को अधिक गति प्रदान की और लॉन्च होने के बाद कॉन्स्टेलेशन को "यांकी रेस हॉर्स" उपनाम मिला।

* * *

26 जून, 1798 को, एकदम नया फ्रिगेट बाल्टीमोर से समुद्र में रवाना हुआ, जो उस समय एक महत्वपूर्ण अमेरिकी बंदरगाह था, और कैरिबियन सागर की ओर बढ़ गया। इसका नेतृत्व थॉमस ट्रक्सटन नामक एक अनुभवी अमेरिकी क्रांतिकारी युद्ध के अधिकारी कर रहे थे, जो अपनी कार्यकुशलता और अनुशासन के मामलों में सख्त रवैये के लिए जाने जाते थे। अमेरिकी जहाजों की सुरक्षा के लिए इस क्षेत्र में पहुंचने के एक महीने बाद, इसने पहली बार युद्ध में भाग लिया। हालांकि बारबरी सरदारों के साथ हुई संधि के बाद उत्तरी अफ्रीका का खतरा कुछ समय के लिए कम हो गया था, लेकिन कैरिबियन में फ्रांसीसी खतरा पहले की तरह ही गंभीर बना हुआ था।

परिणामस्वरूप, 1799 में फरवरी के एक सुहावने दिन नेविस द्वीप के पास से गुजर रहे प्रसिद्ध फ्रांसीसी फ्रिगेट एल'इंसर्जेंटे को देखकर कॉन्स्टेलेशन के चालक दल ने बड़ी उत्सुकता दिखाई। पहले हमले के एक घंटे के भीतर ही फ्रांसीसी युद्धपोत पूरी तरह से नष्ट हो

गया। संयुक्त राज्य अमेरिका की इस पहली नौसैनिक विजय ने युवा राष्ट्र को गौरव और सम्मान का एहसास दिलाया, जो एक साल बाद और भी अधिक स्पष्ट हो गया जब कॉन्स्टेलेशन का सामना फ्रांसीसी फ्रिगेट ला वेंजेंस से हुआ। यद्यपि अमेरिकी जहाज ने अपनी तोपों की संख्या दो बढ़ाकर कुल अड़तीस कर दी थी, फिर भी वह बावन तोपों से लैस फ्रांसीसी हमलावर जहाज के सामने कमजोर साबित हुआ। दोनों नौसैनिक दिग्गजों के बीच वेस्ट इंडीज में पांच घंटे तक भीषण युद्ध चला। फिर बुरी तरह क्षतिग्रस्त फ्रांसीसी जहाज रात के अंधेरे में भाग निकला।

अमेरिका अब आत्मविश्वास से भरा हुआ था; हालांकि केवल कुछ ही देशों ने नए गणराज्य के साथ घनिष्ठ संबंध स्थापित किए थे, और ब्रिटेन से हाल ही में मिली स्वतंत्रता अभी भी पूरी तरह सुरक्षित नहीं थी, फिर भी कांग्रेस को लगा कि वह ब्लैकमेल और लूटपाट की रणनीति के आगे झुकने के बजाय लड़ना पसंद करेगी।

हालाँकि कैप्टन ट्रक्सटन ने 1801 के अंत में कॉन्स्टेलेशन छोड़ दिया था, लेकिन उनकी अभ्यास पुस्तिका और सामरिक विधियाँ बाद में अमेरिकी नौसेना की सभी प्रक्रियाओं का आधार बनीं। कॉन्स्टेलेशन की कमान संभालने वाले अगले व्यक्ति अलेक्जेंडर मरे थे, जिनका पहला मिशन 1802 में भूमध्य सागर के लिए रवाना होना था ताकि बारबरी समुद्री डाकुओं को दबाने में मदद की जा सके, जिन्होंने एक बार फिर अमेरिकी जहाजों को परेशान करना शुरू कर दिया था। त्रिपोली की घेराबंदी के दौरान, कॉन्स्टेलेशन ने कई महत्वपूर्ण कार्रवाइयों में भाग लिया, दो अरब जहाजों को डुबो दिया और अंततः 1805 के अंत में अरब समुद्री डाकुओं के साथ शांति संधि संपन्न होने के बाद अपने बंदरगाह पर लौट आई।

* * *

सात वर्षों तक शांति बनी रही और भव्य जहाज वाशिंगटन बंदरगाह पर खड़ा रहा। फिर 1812 में, जब ब्रिटेन के साथ युद्ध फिर से छिड़ गया, तो उसे वर्जीनिया के हैम्पटन रोड्स भेजा गया, ताकि फोर्ट क्रेनी में अमेरिकी सैन्य प्रतिष्ठानों की रक्षा में सहायता की जा सके। लेकिन जैसे ही पूर्व उपनिवेशों और पूर्व मातृभूमि के बीच शांति लौटी, बारबरी समुद्री लुटेरों ने फिर से सक्रियता दिखाई और उनके खिलाफ एक बार फिर युद्ध करना आवश्यक समझा गया।

इस बार कॉन्स्टेलेशन विमान स्टीफन डेकाटूर के स्क्वाड्रन का हिस्सा था, और अल्जीरिया के साथ नई शांति संधि को लागू करने के लिए 1817 तक उत्तरी अफ्रीकी जलक्षेत्र में रहा।

अमेरिका लगातार प्रगति कर रहा था, न केवल ज़मीनी विस्तार कर अपने पश्चिमी क्षेत्र पर विजय प्राप्त कर रहा था, बल्कि विदेशों में नए व्यापार मार्ग भी खोल रहा था। अपने बढ़ते व्यापारिक बेड़े के साथ तालमेल बनाए रखने के लिए उसके पास एक मजबूत, हालांकि छोटा, नौसैनिक बेड़ा था। एक बार फिर, कॉन्स्टेलेशन ने 1819 से 1821 के बीच दक्षिण अमेरिका के तट पर अमेरिकी जहाजों की रक्षा की, फिर केप के चारों ओर से होते हुए महाद्वीप के प्रशांत तट की ओर रवाना हुई, और अंततः 1826 में कैरिबियाई समुद्री डाकुओं का सफाया किया। बाद में वह फ्लोरिडा में सेमिनोल भारतीय विद्रोह के दमन में शामिल थी, और एडमिरल डलास के प्रमुख जहाज के रूप में कार्य किया। 1840 में उसे कमोडोर लॉरेंस केर्नी की कमान में बोस्टन से रियो डी जनेरियो तक एक व्यापक यात्रा पर भेजा गया। वहां से उसने अमेरिकी व्यापार के लिए चीन के द्वार खोलने के लिए प्रशांत महासागर को पार किया; हवाई के रास्ते घर लौटते समय, केर्नी ने ठीक समय पर द्वीपों पर कब्जा करने की ब्रिटिश साजिश को विफल कर दिया।

ब्रिटिश युद्धपोत एच.एम.एस. कैरीफुट होनोलूलू में लंगर डाले खड़ा था जब कॉन्स्टेलेशन जहाज वहां पहुंचा। जल्दबाजी में, अंग्रेजों ने राजा कामे-हामेहा तृतीय द्वारा जहाज के कप्तान को शासन की बागडोर सौंपने के वादे को रद्द कर दिया, और मूल निवासियों का शासन बहाल हो गया।

कुछ वर्षों तक, यह प्रसिद्ध पुराना जहाज वर्जीनिया के नॉरफ़ॉक में अपने घाट पर विश्राम करता रहा। उसने अपनी अस्थायी सेवानिवृत्ति का हकदार था, क्योंकि उसने अकेले अपनी आखिरी यात्रा में लगभग 58,000 मील की दूरी तय की थी, और वह भी केवल पाल की शक्ति से। 1853 में, इसकी मरम्मत करने का निर्णय लिया गया। आखिरकार, नौसेना का सबसे पुराना जहाज अब पचपन वर्ष पुराना हो चुका था और उसमें कुछ तनाव और टूट-फूट के लक्षण दिखाई दे रहे थे। पुनर्निर्माण में इसकी लंबाई में बारह फीट की वृद्धि और इसे बाईस तोपों वाले युद्धपोत के रूप में पुनः वर्गीकृत करना शामिल था। इसकी अधिकांश मूल लकड़ी को संरक्षित रखा गया, केवल घिसे-पिटे हिस्सों की मरम्मत और प्रतिस्थापन किया गया। एक

बार फिर, यह अनुभवी जहाज भूमध्य सागर के लिए रवाना हुआ, लेकिन भविष्य का संकेत पहले से ही स्पष्ट था: 1858 में, इसे सेवामुक्त कर दिया गया।

यहां एक बार फिर वह रहस्यमयी शक्ति सक्रिय हो उठी जिसने जहाज को नष्ट होने से रोकने से इनकार कर दिया था।

जब उत्तर और दक्षिण के बीच गृहयुद्ध अपरिहार्य प्रतीत होने लगा, तो 1859 में कॉन्स्टेलेशन को अफ्रीकी स्क्वाड्रन के प्रमुख जहाज के रूप में पुनः सेवा में लाया गया। उसका काम संयुक्त राज्य अमेरिका की ओर जाने वाले दास जहाजों को रोकना था, और वह एक हजार दासों को उनके मूल अफ्रीका वापस भेजने में सफल रही।

युद्ध छिड़ने के कारण वह 1861 में वापस घर लौट आई, और भूमध्य सागर में अमेरिकी जहाजों को कॉन्फेडरेट हमलावरों से बचाने के एक और कार्यकाल के बाद, वह वर्जीनिया के हैम्पटन रोड्स में एक प्राप्तकर्ता और प्रशिक्षण जहाज बन गई।

पाल वाली नौकाओं का ज़माना बीत चुका था, और ऐसा लग रहा था कि अंत निकट है: कई लकड़ी की पाल वाली नौकाओं की तरह, इसका भी अंत कबाड़ में जाने से ही तय था। लेकिन एक बार फिर वह इस नियति से बच गई। 1871 में नौसेना ने उसे एनापोलिस नौसेना अकादमी में प्रशिक्षण पोत के रूप में पुनः सक्रिय सेवा में शामिल कर लिया। प्रशिक्षण अवधि के दौरान बीच-बीच में कई समुद्री अभियान भी चलाए गए, जैसे कि 1880 के अकाल के दौरान आयरलैंड में राहत कार्य। धीरे-धीरे, यह पुरानी नौका अमेरिकी नौसेना परंपरा का प्रतीक बन गई और पूरी दुनिया में प्रसिद्ध हो गई। 1894 में, लगभग सौ वर्ष पुरानी यह युद्धपोत, जो अब भी समुद्र में चलने योग्य थी, एक और प्रशिक्षण अभियान के लिए न्यूपोर्ट लौट आई। 1914 तक, उसके गृह बंदरगाह बाल्टीमोर ने शताब्दी समारोह के लिए इस अनुभवी नौका को अपने यहाँ बुला लिया, और द्वितीय विश्व युद्ध न होता तो वह अमेरिकी नौसेना के एक सक्रिय समुद्री पोत के रूप में अपना गौरवशाली करियर हमेशा के लिए जारी रखती। लेकिन न्यूपोर्ट बंदरगाह पर उपेक्षित पड़ी कॉन्स्टेलेशन के कल्याण से अधिक महत्वपूर्ण मामलों को प्राथमिकता दी गई। धीरे-धीरे उसकी हालत बिगड़ती गई और अंततः वह समुद्र में जाने में असमर्थ हो गई।

जब इस प्राचीन जहाज की दुर्दशा राष्ट्रपति रूजवेल्ट के ध्यान में आई, तो उन्होंने इसे एक बार फिर अमेरिकी अटलांटिक बेड़े का प्रमुख जहाज बनाकर सम्मानित किया। लेकिन इस सम्मान के साथ जहाज को उसकी पुरानी शान में वापस लाने के लिए धन की व्यवस्था नहीं हुई। युद्ध के बाद इसे बोस्टन में खड़ा किया गया, जहाँ आगंतुकों को जहाज पर आने की अनुमति देकर धन जुटाने के प्रयास किए गए। 1953 तक जहाज की हालत इतनी खराब हो चुकी थी कि उसका पूरी तरह नष्ट होना लगभग तय लग रहा था।

इसी क्षण, बाल्टीमोर के देशभक्त नागरिकों की एक समिति ने इस चुनौती को स्वीकार करने का निर्णय लिया। पहले कदम के रूप में, समूह ने अमेरिकी नौसेना से इस धरोहर का स्वामित्व प्राप्त किया। इसके बाद, जहाज को बाल्टीमोर वापस लाया गया, मानो कोई वरिष्ठ नागरिक अपने जन्मस्थान पर लौट आया हो। उस पर भावनात्मक लगाव के साथ पूरा स्नेह बरसाया गया, और स्वयंसेवकों की मदद से, जीर्णोद्धार समिति ने कॉन्स्टेलेशन को अंदर और बाहर से उसके मूल स्वरूप में बहाल करने के लिए आवश्यक धनराशि जुटाने में सफलता प्राप्त की। हमारी रात्रि यात्रा के समय, जीर्णोद्धार का केवल पहला चरण ही पूरा हुआ था: उसके पतवार को समुद्र में चलने योग्य बनाना ताकि वह अपने बर्थ पर सुरक्षित रूप से तैरती रह सके। 1968 की गर्मियों में, शेष कार्य शुरू किया जाना था, लेकिन हमारी यात्रा के समय, भीतरी भाग अभी भी लकड़ी के बीमों और खराब ढंग से लगे दरवाजों का एक कच्चा संग्रह था, उसका ऊपरी ढांचा एक मस्तूल रहित सपाट डेक में सिमट गया था और मूल गलियारे और रास्ते अपनी गंदगी से ढके हुए थे। अंततः इन सब चीजों के फलस्वरूप एक बिल्कुल नया और साफ-सुथरा जहाज तैयार हुआ, जो 1968 में भी अमेरिका का उतना ही गौरव था जितना कि 1797 में जब इसे लॉन्च किया गया था।

लेकिन भाग्य जिस विचित्र तरीके से बार-बार इस गौरवशाली जहाज को विनाश से बचाता रहा, उसके अलावा कुछ अन्य घटनाओं ने कॉन्स्टेलेशन को एक प्रेतवाधित जहाज के रूप में ख्याति दिला दी थी। यह ख्याति निश्चित रूप से जीर्णोद्धार समिति को पसंद नहीं आई और इसे कभी बढ़ावा भी नहीं दिया गया, लेकिन रिकॉर्ड के लिए उन्होंने जहाज पर घटी कुछ विचित्र घटनाओं को स्वीकार किया और उनका दस्तावेजीकरण किया। डोनाल्ड स्टीवर्ट के रूप में

समिति को एक प्रशिक्षित इतिहासकार की सेवाएं मिलीं और उन्होंने तुरंत उन्हें अपने तैरते संग्रहालय का क्यूरेटर नियुक्त कर दिया।

* * *

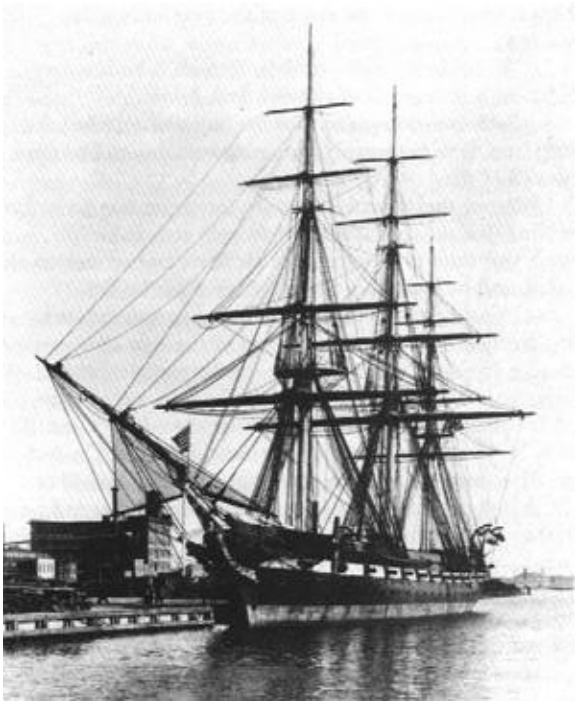

आज का अमेरिकी तारामंडल

समिति द्वारा कॉन्स्टेलेशन के अधिग्रहण से पहले उस पर कोई अलौकिक घटना घटी थी या नहीं, यह ज्ञात नहीं है, लेकिन बाल्टीमोर समूह द्वारा उसे बाल्टीमोर ड्राईडॉक में लाने के कुछ ही समय बाद एक विचित्र घटना घटी। 26 जुलाई, 1959 को एक रोमन कैथोलिक पादरी जहाज पर सवार हुए, जो उस समय जनता के लिए खुला था, हालांकि उसकी हालत बहुत अच्छी नहीं थी। पादरी ने उस प्रसिद्ध जहाज के बारे में पढ़ा था और क्यूरेटर डोनाल्ड स्टीवर्ट से पूछा कि क्या वे सुबह 10 बजे आगंतुकों के लिए खुलने के समय से पहले ही जहाज पर आ सकते हैं। उन्हें ग्यारह बजे वाशिंगटन के लिए ट्रेन पकड़नी थी और इतने प्रसिद्ध जहाज को देखे बिना वे डेट्रॉइट में अपने अनुयायियों से कभी नहीं मिल सकते थे। क्यूरेटर ने सहर्ष नियमों में ढील दी और पादरी को जहाज पर चढ़ने दिया गया। हालांकि, चूंकि श्री स्टीवर्ट

सामान की सूची बना रहे थे और उनके पास उन्हें जहाज घुमाने का समय नहीं था, इसलिए उन्होंने सुझाव दिया कि पादरी स्वयं ही घूम लें।

10:25 बजे, पादरी डेक के नीचे से लौटे, वे बहुत खुश दिख रहे थे। क्यूरेटर ने उन्हें घुमाने न ले जाने के लिए फिर से माफी मांगी।

“कोई बात नहीं,” पादरी ने जवाब दिया, “उस बुजुर्ग सज्जन ने मुझे आसपास का इलाका दिखा दिया।”

“कौन से बुजुर्ग?” क्यूरेटर ने पूछा। “आपके और मेरे अलावा जहाज पर कोई और नहीं है।”

पुजारी ने विरोध किया। उन्होंने बताया कि उनकी मुलाकात नौसैनिक वर्दी पहने एक बूढ़े व्यक्ति से हुई थी, और उस व्यक्ति ने उन्हें नीचे का पूरा इलाका दिखाया था। वह व्यक्ति अपने जहाज को अच्छी तरह जानता था, क्योंकि वह कुछ साजो-सामान और युद्ध चौकियों की ओर इशारा करने में सक्षम था।

“बेतुका है,” श्री स्टीवर्ट, जो एक बेहद व्यावहारिक स्कॉटिश व्यक्ति हैं, ने गरजते हुए कहा। “चलिए नीचे देखते हैं।”

दोनों व्यक्ति जहाज के निचले हिस्से में उतरे और आगे से पीछे तक जहाज की तलाशी ली। उनके अलावा वहां कोई भी जीवित प्राणी नहीं मिला।

जब वे ऊपर लौटे, तो पादरी के चेहरे पर मुस्कान गायब थी। इसके बजाय, वह जल्दी से, पीला पड़ा हुआ और सहमा हुआ, वाशिंगटन जाने वाली ट्रेन पकड़ने के लिए निकल गया। वह जानता था कि उसकी मुलाकात एक बूढ़े नाविक से हुई थी, और वह यह भी जानता था कि जब उसकी मुलाकात हुई तो वह पूरी तरह होश में था।

डोनाल्ड स्टीवर्ट की जिज्ञासा जागी और उन्होंने जहाज के इतिहास की और गहराई से छानबीन की। तब उन्हें पता चला कि इसी तरह की घटनाएं नौसेना कर्मियों के साथ तब भी हुई थीं जब जहाज न्यूपोर्ट, रोड आइलैंड में था, और कॉन्स्टेलेशन पर तैनात पहरेदारों के साथ भी। हालांकि, कोई भी उनके बारे में बात करना पसंद नहीं करता था। एक बार गर्मियों के दौरान, जहाज के बंद होने के बाद, जब कोई भी आगंतुक जहाज पर नहीं आ सकता था, तो तोप डेक पर एक आकृति देखी गई। चोर या घुसपैठिए को पकड़ने के लिए पुलिस को बुलाया गया और वे अपने साथ एक पुलिस कुत्ता, एक खूंखार दिखने वाला जर्मन शेफर्ड लाए, जिसे

तुरंत घुसपैठिए को भगाने के लिए डेक के नीचे भेजा गया। लेकिन हमेशा की तरह आदेशों का पालन करने के बजाय, कुत्ता वहीं जम गया, डर से कांप रहा था, उसकी गर्दन के बाल खड़े हो गए थे, और उसने हिलने या नीचे जाने से इनकार कर दिया। यह बताने की आवश्यकता नहीं है कि उस समय कोई भी घुसपैठिया नहीं मिला।

एक बार सी स्काउट्स का एक समूह जहाज पर बैठक कर रहा था। मकसद बैठक को असली समुद्री माहौल देना था। जहाज मजबूती से बंधा हुआ था और हिल नहीं सकता था, लेकिन इससे असली समुद्री जहाज पर होने का एहसास कम नहीं हुआ। अचानक, मानो किसी अदृश्य शक्ति ने उसे हिला दिया हो, पहिया तेजी से बाईं ओर से दाईं ओर घूमने लगा। समूह में सभी ने इसे देखा और चारों ओर अफरा-तफरी मच गई। जहाज के हिलने का कोई कारण हवा नहीं थी। इतना ही नहीं, पहिये का स्पूल पतवार से जुड़ा भी नहीं था!

कॉन्स्टेलेशन अगस्त 1955 में बाल्टीमोर लौट आया था। नौसेना के अधिकार क्षेत्र में रहते हुए ही, पहली असामान्य घटना घटी। उस समय यह पोत नौसेना प्रशिक्षण केंद्र में यू.एस.एस. पाइक के बगल में खड़ा था। रात में पोत पर कोई नहीं होता था। घाट की कड़ी सुरक्षा थी और कोई भी अजनबी बिना पूछताछ के पास नहीं आ सकता था। फिर भी, एक नौसेना कमांडर और उसके साथियों ने बताया कि उन्होंने रात में क्वार्टरडेक पर "किसी को वर्दी में" घूमते हुए देखा था। इस मामले की जांच बाल्टीमोर सन अखबार ने की, जिसने नौसेना कर्मियों के बयान भी प्रकाशित किए। हालांकि, जब अखबार ने कॉन्स्टेलेशन पर एक फोटोग्राफर भेजा, तो नौसेना अधिकारियों ने बिना किसी और स्पष्टीकरण के उसकी सभी तस्वीरें तुरंत जब्त कर लीं।

बाल्टीमोर के एक लंबे समय से निवासी जिम लायंस ने क्यूरेटर द्वारा दर्ज की गई बाद की रहस्यमय घटनाओं में एक और विवरण जोड़ा। सी स्काउट्स की हैलोवीन मीटिंग के दौरान, जिसके बाद नृत्य कार्यक्रम हुआ, उपस्थित लड़कियों में से एक को एक असामान्य अनुभव हुआ। दीवार पर लगी बेंच पर बैठी, वह अपने साथी से बात करने के लिए मुड़ी, लेकिन उसकी नज़र सीधे एक बूढ़े नाविक के चेहरे पर पड़ी, जिसने उसे देखकर मुस्कुराया और फिर गायब हो गया! चूंकि उसने जहाज पर किसी भी कथित भूतिया घटना के बारे में कभी नहीं सुना था, इसलिए उसके मन में ऐसी किसी बात पर कोई विश्वास नहीं हुआ। उसने उस

दृश्य का वर्णन ठीक उसी तरह किया जैसे पुजारी ने डेक के नीचे अपने भूतिया मार्गदर्शक का वर्णन किया था। बहुत संभव है कि जहाज पर आने वाले अन्य यात्रियों को भी इस तरह के अजीब अनुभव हुए हों, लेकिन उन्होंने उनकी रिपोर्ट न की हो, क्योंकि लोग अक्सर उन चीजों को नजरअंदाज या दबा देते हैं जो आसानी से उनकी स्वीकार्य श्रेणियों में नहीं आतीं।

इन रिपोर्टों से स्पष्ट था कि पुराने जहाज पर कोई अशांत शक्ति अभी भी सक्रिय थी, और वह चाहती थी कि कॉन्स्टेलेशन बिना किसी नुकसान के, अपने सुनहरे दिनों की तरह ही चलती रहे। लेकिन उस प्रेतवाधित नाविक ने प्रकट होने और इस जहाज से चिपके रहने के लिए इतना प्रयास क्यों किया? इस "भाग्य के जहाज" के डेक के नीचे कौन सा रहस्य छिपा था?

* * *

हम जहाज के मुख्य डेक पर एक छोटे समूह में खड़े थे, तभी सिबिल ने जल्दी से कहा, "मुझे नीचे जाना होगा," और इससे पहले कि हम उससे पूछ पाते कि क्यों, वह संकरी सीढ़ी से नीचे वाले तल पर उतर गई। वहाँ पहुँचकर वह कुशलता से जहाज के पिछले डेक पर गई, जहाँ वह अचानक रुक गई और बोली, "यहाँ बहुत बुराई है!"

हम सबके जहाज पर चढ़ने से पहले, वह लगभग पूरे अंधेरे में जहाज पर इधर-उधर घूम रही थी। क्यूरेटर ने बाद में कहा, "मैं खुद ग्यारह साल से इस जहाज पर हूँ, और मैं बिना रोशनी के ऐसा कारनामा करने की कोशिश नहीं करूँगा, हालाँकि मैं जहाज को अच्छी तरह जानता हूँ।"

इससे पहले, जब हम बंदरगाह की ओर जा रहे थे, सिबिल ने अचानक बिना किसी संदर्भ के एक तारीख बुदबुदाई। वह तारीख 1802 थी। जब मैंने उससे इसके बारे में पूछा, तो उसने बस इतना कहा कि जिस जगह हम जा रहे थे, उसके लिए इसका कुछ महत्व है। बाद में मुझे पता चला कि कॉन्स्टेलेशन के पहले कप्तान ने 1801 के अंत में फ्रिगेट छोड़ दिया था, और 1802 जहाज के इतिहास में एक नए और महत्वपूर्ण अध्याय का प्रतीक था।

उस समय हम बाल्टीमोर की रात के समय की आधुनिक सड़कों से गाड़ी चला रहे थे, और सिबिल ने यह निष्कर्ष कैसे निकाला?

और अब हम आखिरकार जहाज पर सवार हो चुके थे, आगे की घटनाओं का इंतजार कर रहे थे। ये घटनाएँ जल्द ही घटित होने लगीं। जैसे ही सिबिल जहाज के निचले हिस्से में उतरी, हम

भी उसके पीछे-पीछे गए। मानो उसे पता हो कि उसे कहाँ जाना है, उसने अपने कदम पिछले डेक पर सीढ़ी वाले क्षेत्र की ओर बढ़ा दिए।

“मुझे डर लग रहा है,” उसने कहा और कांप उठी। सिबिल जैसी किसी व्यक्ति का डरना बहुत ही असामान्य था। उसने मुझे अपनी बाहें दिखाईं, जिन पर रोंगटे खड़े हो गए थे। जहाज के निचले हिस्से में ज़्यादा ठंड नहीं थी, और हममें से किसी को भी ऐसे कोई लक्षण नहीं दिखे।

“इस इलाके में एक अलग ही माहौल है...बहुत ही भयावह। और मुझे किसी बच्चे के रोने जैसी आवाज़ सुनाई दी। भला इस तरह के जहाज पर कोई बच्चा क्यों रोएगा?”

क्यों भला?

“एक विचित्र मौत...एक लड़का...एक बंदूक...बड़ी बंदूक...एक बुरा काम...”

क्या इस लड़के का जहाज से कोई संबंध है?

जवाब देने के बजाय, वह माहौल को समझने की कोशिश करती हुई प्रतीत हुई। हमसे और वर्तमान से खुद को और अधिक अलग करते हुए, उसने बुदबुदाते हुए कहा, "सत्रह सौ पैंसठ।"

इस तारीख का जहाज के लिए कोई महत्व नहीं था, लेकिन शायद इसके पहले कप्तान के लिए इसका महत्व था, जो उस समय भी ब्रिटिश सेवा में था।

“फ्रांसीसी बंदूकें....”

इसका तात्पर्य 1799 और 1800 में फ्रांसीसी बेड़े के साथ हुए दो महान युद्धों से होगा।

मैंने उस लड़के के पास वापस जाने की कोशिश की।

“वह इस नाव के आसपास बहुत घूमता था,” सिबिल ने कहा। “उसके साथ कुछ हुआ है। बंदूक ढूंढनी होगी। उसे बंदूकें पसंद नहीं हैं। वह डरा हुआ है। यहीं किसी ने उसे मार डाला। दो आदमी... लड़के को डरा रहे थे। बारूद... बारूद वाला लड़का। ग्यारह साल का।”

“वे दोनों आदमी कौन थे?”

“बहत्तर...छियासठ...उनकी नाव यहाँ नहीं है...।”

"क्या इस नाव पर इस समय कोई प्राणी मौजूद है?"

“तीन लोग। लड़का और दो आदमी।”

“ये दोनों आदमी कौन हैं?”

सिबिल ने भारी साँस लेते हुए और हाँफते हुए उत्तर दिया।

“थ्रैक्सटन...कैप्टन...थॉमस...टी-एच-आर...मुझे बीच का हिस्सा समझ नहीं आ रहा...1802...दूसरा आदमी...बंदूक की ओर....”

जब सिबिल के आधे सम्मोहित होठों से ये शब्द निकले, तो मेरे आस-पास मौजूद छोटा समूह स्तब्ध रह गया। मैंने उनमें से एक की सिसकी सुनी और समझ गया कि सिबिल ने ज़रूर कोई महत्वपूर्ण बात कह दी है। बाद में मुझे पता चला कि कैप्टन थॉमस ट्रक्सटन जहाज के पहले कप्तान थे, और 1802 की शुरुआत में उनकी जगह किसी और को नियुक्त किया गया था। अगर वह यहाँ मौजूद प्रेत आत्माओं में से एक थे, तो निश्चित रूप से उनके पास उस जहाज के साथ रहने का कोई कारण था जिसे उन्होंने महान बनाया था और जिसका नाम नौसेना के इतिहास में हमेशा के लिए उनके नाम से जुड़ गया था।

सिबिल कुछ पल के लिए अपनी अर्ध-बेहोशी की अवस्था से बाहर आई और शिकायत करने लगी कि उसकी आवाज़ ठीक से सुनाई नहीं दे रही है। "नाम के अंत में 'सन' आता है," उसने अब कहा। "हर्सन... ठीक से सुनाई नहीं दे रहा। मुझे गोलियों की बहुत आवाज़ सुनाई दे रही है। हमला। बहत्तर। चौंसठ। फ्रेंच। मुझे समझ नहीं आ रहा कि लड़के का क्या हुआ। वह वापस नहीं आया। लेकिन वह अभी यहीं है। मुझे समझ नहीं आ रहा। गोली चलाओ!"

मैंने पूछा, "क्या आप उस लड़के के साथ मौजूद दोनों आदमियों के बारे में और जानकारी जुटा सकते हैं?"

“एक महत्वपूर्ण है, दूसरा...एक...शस्त्रागार...बंदूकें...बंदूकों की देखभाल करता है...वह अभी भी यहाँ है...उसे माफ़ कर देना चाहिए...उसके कारनामों के लिए...वह कायर था...वह छिप गया...उसे इस नाव पर सवार लोगों ने मारा, दुश्मन ने नहीं...उसे उड़ा दिया...उसके दोस्तों ने ऐसा किया क्योंकि वह कायर था...युद्ध में...।”

"उसका क्या नाम था?"

“हर्सन...लार्सन...मुझे नहीं पता...वह एक कवच निर्माता था...।”

"वह कहां से था?"

स्वीडन।

इस समय, जब हम सिबिल की गवाही का हर शब्द ध्यान से सुनने के लिए झुके हुए थे, मेरा टेप रिकॉर्डर खराब हो गया। मैंने उसे कितना भी हिलाया, वह फिर से चालू नहीं हुआ। मैंने तुरंत एक कागज फाड़ा और उस पर नोट्स लिखे, जिन्हें बाद में मैंने क्यूरेटर डॉन स्टीवर्ट के नोट्स से मिलाया।

जब मैंने अपनी मानसिक क्षमता वाली मित्र और उसके संचारकों से अधिक जानकारी के लिए दबाव डाला, तो उसने रुक-रुक कर, कठिन वाक्यों में जवाब दिया।

उसने समझाया कि इस आदमी के साथ अन्याय हुआ था, क्योंकि वह कायर नहीं था। अमेरिकी कैप्टन थॉमस "थ्रटन" ने आदेश दिया था और तोप के गोले से टुकड़े-टुकड़े होकर उसकी मौत हो गई। अंत में, उसने पहले जिन बहत्तर छियासठ आंकड़ों का जिक्र किया था, वे स्पष्ट हो गए। उसने बताया कि हत्या का स्थान समुद्र में ही था। दूसरे शब्दों में, वह स्थान।

“बंदूकें बुरा असर डालती हैं,” वह बुदबुदाई, “अगर तीसरी बंदूक हटा दी जाए तो बेहतर होगा... यहाँ बुरा असर पड़ता है, लोगों को डराता है... तीसरी बंदूक। यह जहाज किसी दूसरे जहाज के साथ होना चाहिए... संविधान... और संघ... कुछ ऐसा ही... समुद्र में होना चाहिए... बहन जहाज नहीं, बल्कि एक ही प्रकार का, नाम की वर्तनी मिलती-जुलती हो, भले ही यह जहाज थोड़ा पुराना हो, लेकिन ये दोनों एक साथ ही रहने चाहिए!”

* * *

यह बात बिल्कुल सच थी, लेकिन लगभग अंधेरे में खड़े होने के कारण वह इसे जान नहीं सकती थी। कॉन्स्टेलेशन, कॉन्स्टिट्यूशन से कुछ ही समय पहले अस्तित्व में आई थी।

"इस नाव के लिए 1795 महत्वपूर्ण है।"

उसी साल उस पर काम शुरू हुआ था।

धीरे-धीरे, मैं जहाज के पाताल लोक के विभिन्न निवासियों को समझने में सक्षम हो गया।

ग्यारह वर्षीय लड़के का किसी न किसी तरह 16 अगस्त, 1822 की तारीख से संबंध था। श्रीमती लीक ने बताया कि वह ऑरलॉप डेक के कॉकपिट में दो चालक दल के सदस्यों द्वारा हत्या का शिकार हुआ था। श्री स्टीवर्ट ने बाद में पुष्टि की कि पुराने जहाजों पर बहुत छोटे

लड़कों को नौसेना के सर्जनों के नौकर या सेवा के लिए रखा जाता था। तांत्रिक के अनुसार, जिस क्षेत्र में वह प्रेतवाधित लड़का सबसे अधिक सक्रिय था, वह ठीक वही जगह थी जहाँ सर्जन का कमरा हुआ करता था!

जिस व्यक्ति को फ्रांसीसियों के खिलाफ कार्रवाई के दौरान कायर के रूप में मार डाला गया था, जैसा कि माध्यम ने कहा था, वह साकार नहीं हो सका क्योंकि वह टुकड़ों में बिखर गया था और इस प्रकार उसने "स्वयं" को इस भयावह रूप में याद किया।

उसे दोषी ठहराने वाला व्यक्ति कैप्टन थॉमस ट्रक्सटन था, और उसका नाम हार्सन जैसा कुछ था। लेकिन यहीं भ्रम पैदा हो गया। क्योंकि उसे लार्सन नाम के एक व्यक्ति का भी प्रभाव महसूस हुआ—जो उसे लगा कि स्वीडिश था—और उसने पहले बताए गए आंकड़ों के समान दो आंकड़े दिए, 73 और 66, और हम उसे इन्हीं अंकों से पहचान लेंगे!

अब मुझे यह बात स्पष्ट हो गई कि श्रीमती लीक एक ही समय में कई परतों से छापें प्राप्त कर रही थीं और सामग्री का किसी भी प्रकार का तर्कसंगत मूल्यांकन करने के लिए मुझे उन्हें अलग करना होगा।

मैंने उसे अर्ध-बेहोशी की अवस्था से बाहर निकाला और हम उसके द्वारा कही गई बातों पर चर्चा करने लगे, तभी अचानक सीढ़ी के नीचे लगभग दस फीट दूर स्थित बड़े दरवाजे अपने आप धीरे-धीरे खुल गए। क्यूरेटर ने यह देखा और बताया कि इसके बाद ठंडी हवा का झोंका आया। उन्होंने अक्सर गौर किया था कि जहाज के पिछले हिस्से में स्थित सीढ़ी वाले क्षेत्र और बाकी जहाज के तापमान में लगभग पाँच डिग्री का अंतर होता था, जिसका कोई संतोषजनक स्पष्टीकरण नहीं था।

जब हम जहाज से उतरे तब दस बज रहे थे, और हम एक-एक करके उस खतरनाक सीढ़ी से नीचे उतरने लगे। मेरे लिए यह आसान नहीं था, जब तक कि मैंने अपना सामान कुछ देर के लिए पीछे नहीं छोड़ दिया और अंधेरे में हिम्मत करके रस्सी की सीढ़ी पकड़ ली। यह तथ्य कि मैं यह सब लिख रहा हूँ, इस बात का सबूत है कि मैं ठंडे बाल्टीमोर हार्बर में नहीं गिरा, लेकिन मैं अमेरिका के सारे भूतों की कसम खाकर भी दोबारा ऐसा करने की हिम्मत नहीं करूँगा!

* * *

हम बंदरगाह के एक सराय में गए और मैंने श्रीमती लीक से मिली जानकारी के बारे में श्री स्टीवर्ट से पूछताछ शुरू की। वहीं मुझे पहली बार कैप्टन ट्रक्सटन और जहाज से उनके संबंध के बारे में पता चला। यह ध्यान देने योग्य है कि अधिकांश समय मैं ही श्रीमती लीक के निकट था—बाकी लोग एक निश्चित दूरी बनाए हुए थे। इसलिए, इस नाम को जानने वाले अन्य लोगों के मन की बात जानना संभव नहीं है, और मुझे भी उस समय तक इस बात की जानकारी नहीं थी।

लेकिन बात यहीं खत्म नहीं हुई। ऐसा प्रतीत होता है कि श्रीमती लीक के कथनानुसार, 1799 में फ्रांसीसियों के विरुद्ध हुई कार्रवाई के दौरान वास्तव में एक व्यक्ति को कायरता के आरोप में फाँसी दी गई थी। यह घटना एल'इंसर्जेंटे के साथ हुई लड़ाई के दौरान घटी थी। नील हार्वे नामक एक नाविक ने बंदरगाह पर स्थित तोप संख्या 7 पर अपनी चौकी छोड़ दी। प्रचलित वृत्तांत के अनुसार, लेफ्टिनेंट स्टार्रेट ने उसे ढूँढा और तुरंत ही उसे गोली मार दी।

क्या सिबिल के "हारसेन" का हार्वे से कोई संबंध था? उसने कहा था कि तोप का नंबर 3 था, 7 नहीं, लेकिन जाँच करने पर पता चला कि बाद में - हत्या के बाद - जहाज के पुनर्निर्माण के समय तोपों की संख्या बदल दी गई थी, इसलिए जो आज तोप 7 है वह वास्तव में 1799 में तोप 3 थी!

ब्रिटिश (और शुरुआती अमेरिकी) नौसेनाओं में देशद्रोहियों को तोपों के मुँह पर बाँधकर टुकड़े-टुकड़े कर देने की प्रथा थी। अगर लेफ्टिनेंट स्टार्रेट ने गुस्से में आकर नाविक को तोप से छेद दिया होता—और हमें नहीं पता कि उसकी मौत हुई थी या नहीं—तो संभव है कि कप्तान को जब इस घटना की जानकारी मिली, तो उसने घायल या मृत व्यक्ति को उस बेहद अपमानजनक मौत की सजा देने का आदेश दिया हो: शव न मिलने पर समुद्र में दफ़नाया न जाए। ये जानकारियाँ क्यूरेटर श्री स्टीवर्ट को वाशिंगटन स्थित नौसेना विभाग में संरक्षित मूल जहाज के लॉगबुक में मिलीं।

ऐसा प्रतीत होता है कि नील हार्वे एक रात्रि चौकीदार होने के साथ-साथ तोपची भी थे। संभवतः इसी से इस परंपरा का एक और संस्करण उत्पन्न हुआ, जिसकी खोज जिम लियोन्स ने मेरे लिए की थी। इस संस्करण के अनुसार, हार्वे को उस समय गहरी नींद में सोते हुए पाया गया जब उन्हें पहरा देना चाहिए था, और जब स्वयं कप्तान ट्रक्सटन ने उन्हें देखा, तो उनके स्वामी

ने उन्हें हमेशा के लिए अपने जहाज के डेक पर भटकने का श्राप दिया, जिसके बाद कप्तान ने स्वयं अपनी तलवार से उन्हें मार डाला।

हालाँकि, अभिलेखों में लेफ्टिनेंट स्टार्रेट द्वारा हत्या का उल्लेख है और नाविक के विरुद्ध न्यायालय-मार्शल की कार्यवाही का भी जिक्र है। लॉगबुक के अनुसार, उसे अपने पद से भागने का दोषी ठहराया गया था और जहाज पर ही गोली मारकर उसकी हत्या कर दी गई थी। इससे मेरी यह धारणा पुष्ट होती है कि लेफ्टिनेंट स्टार्रेट की तलवार ने उस दुर्भाग्यपूर्ण व्यक्ति को पूरी तरह से नहीं मारा था।

मैंने लड़के, कप्तान और नील हार्वे नाम के उस बदकिस्मत नाविक का हिसाब लगा लिया था, जो तोप के गोले से टुकड़े-टुकड़े हो गया था। लेकिन पहेली का एक हिस्सा अभी भी अनसुलझा था: सिबिल को जिस "स्वीडिश" की मौजूदगी का एहसास हो रहा था। नील हार्वे को किसी भी तरह से स्कैंडिनेवियाई नहीं कहा जा सकता था। साथ ही, उसे लगता था कि उस आदमी ने "अपने जीवन के सबसे सुखद दिन जहाज पर एक कर्मचारी के रूप में बिताए थे।"

अठारहवीं सदी के नाविक को कर्मचारी कहना मुश्किल है, और हार्वे ने जहाज पर कोई सुखद दिन नहीं बिताए; निश्चित रूप से, कम से कम, अचानक मृत्यु के समय उनकी यही स्मृति नहीं होगी।

लेकिन क्यूरेटर ने मुझे बताया कि एक अन्य चौकीदार ने, हैरानी की बात है, जहाज पर ताश खेलते समय हार्वे का भूत, या कहें कि एक बूढ़े नाविक जैसा दिखने वाला कोई व्यक्ति, देखा था। उसने लापरवाही से खेल से नज़रें उठाईं और सामने की दीवार से एक पारदर्शी आकृति को गुजरते हुए देखा। उसने 1963 में अपनी नौकरी छोड़ दी, जब जहाज पर बिजली से चलने वाला चोरी-रोधी अलार्म सिस्टम लगाया गया था। मूल रूप से रॉयल नेवी में रसोइया रहे इस व्यक्ति का नाम कार्ल हैनसेन था और वह स्वीडन से नहीं बल्कि डेनमार्क से आया था। तब मुझे यह बात समझ में आई कि सिबिल दो अलग-अलग व्यक्तियों - हार्वे और हैनसेन - को लेकर भ्रमित हो गई थी, दोनों ही चौकीदार थे, हालांकि अलग-अलग समय के।

कॉन्स्टेलेशन जहाज पर अपनी नौकरी से सेवानिवृत्त होने के बाद, हैनसेन को अपने पुराने घर की बहुत याद आती थी—वे 1958 से 1963 तक जहाज पर ही रहे थे। उन्होंने कॉन्स्टेलेशन जीर्णोद्धार समिति को सैकड़ों पत्र लिखकर उनसे विनती की कि उन्हें उनका पुराना पद

वापस दे दिया जाए, हालांकि उन्होंने खेती-बाड़ी करके सेवानिवृत्त होने की योजना बनाई थी। उन्हें उनका पद वापस देना संभव नहीं था, लेकिन बुजुर्ग व्यक्ति कई बार जहाज पर जाते रहे और उससे अपना गहरा भावनात्मक जुड़ाव बनाए रखा। उनका निधन 1966 में तिहत्तर वर्ष की आयु में हुआ।

यहां भी उन्हीं अजीब समानताओं में से एक ने सिबिल को उलझन में डाल दिया था। एक बार उसने बहत्तर और छियासठ अंकों का उल्लेख समुद्र में किसी पद के संदर्भ में किया था, जबकि बाद में उसने कहा कि स्वीडन के उस व्यक्ति को 73 और 66 अंकों से पहचाना जा सकता है। क्यूरेटर को लगा कि वह अपनी सही पहचान के लिए ही अपनी उम्र और मृत्यु का वर्ष बता रहा था!

तो फिर, जहाज पर मौजूद इन प्रभावों में से कौन उस पुराने जहाज के निरंतर पुनरुत्थान के लिए जिम्मेदार था? कौन चाहता था कि वह जहाज, यदि संभव हो तो, हमेशा के लिए पानी पर तैरता रहे?

लेकिन उस ग्यारह वर्षीय लड़के के लिए नहीं, जिसके लिए जहाज का मतलब केवल आतंक और मृत्यु था।

लेकिन शायद अंततः उन तीनों को कुछ साझा मिल ही गया था: यूएस एफ. कॉन्स्टेलेशन के प्रति उनका प्रेम।

कैप्टन ट्रक्सटन निश्चित रूप से अपने पुराने जहाज से बंधा हुआ महसूस करेंगे, वह जहाज जिसने उनकी उपलब्धियों में उनका साथ दिया था।

नील हार्वे न्याय पाना और अपना नाम साफ़ करना चाहते होंगे। जब तक वह जहाज मौजूद था, तब तक इस बात की संभावना थी कि रिकॉर्ड उनके पक्ष में गवाही देंगे।

और अंत में, बीसवीं सदी का चौकीदार हैनसेन, जो उसके प्रति अपने प्रेम और किसी अन्य वास्तविक केंद्र बिंदु के अभाव के कारण जहाज के भाग्य से अटूट रूप से जुड़ा हुआ था, संभवतः मृत्यु के बाद वहीं "फंस गया" होगा।

मैं केवल इतना ही यकीन से कह सकता हूँ कि कॉन्स्टेलेशन के समुद्र से गायब होने की संभावना नहीं है, चाहे वह खुले समुद्र में हो या बाल्टीमोर के अपने डॉक पर सुरक्षित खड़ी हो। अब उसकी देखभाल के लिए तीन अच्छे लोग मौजूद हैं।

* 19

कैमलोट के बारे में सच्चाई

क्या कैमलॉट नाम का कोई स्थान था?

क्या राजा आर्थर मध्ययुगीन वैभव और वीरता के बीच, गोल मेज और उसके प्रसिद्ध शूरवीरों की अध्यक्षता करते हुए, इसके भव्य हॉल में विराजमान थे?

संगीतमय हास्य नाटक के लेखक लर्नर और लोवे ने ब्रॉडवे संगीतमय नाटक कैमलॉट की रचना करते समय यही सोचा था। मूल रूप से, यह संस्करण आर्थर को भ्रष्टाचार और हिंसा से भरी दुनिया में न्याय के रक्षक के रूप में प्रस्तुत करता है। वह और उनके चुने हुए राउंड टेबल के शूरवीर अपने आसपास की बुरी शक्तियों को चुनौती देते हैं—और आमतौर पर जीत हासिल करते हैं। धार्मिक तत्व दबे हुए हैं, और आर्थर एक अच्छे इंसान के रूप में उभरते हैं, जिन्हें अंततः उनके सबसे करीबी दोस्त से तब चोट पहुँचती है जब लैंसलॉट रानी गुइनवेरे को लेकर भाग जाता है। इस विश्वासघात से आर्थर की दुनिया बिखर जाती है। यहाँ मुख्य संदेश यह है कि विश्वासघात केवल विनाश की ओर ले जा सकता है।

* * *

मैं कई वर्षों से किंग आर्थर की परंपरा से मोहित रहा हूँ, यह जानने की उत्सुकता से कि क्या कभी कैमलॉट नाम की कोई जगह थी—क्या सचमुच कभी कोई किंग आर्थर था भी? इतिहासकारों ने वर्षों से इस विषय पर गहन शोध किया है, और अभी अंतिम निष्कर्ष नहीं निकला है, क्योंकि खुदाई का काम अभी भी जारी है और भूले-बिसरे या खोए हुए ग्रंथों में नए-नए प्रमाण मिलते रहते हैं। साथ ही, अस्पष्ट अंशों की पुनर्व्याख्या से प्राचीन रहस्यों पर नई रोशनी पड़ती है।

सन् 1965 में मैं इंग्लैंड के पश्चिम में स्थित ग्लास्टनबरी के खंडहर हो चुके मठ के भीतरी हिस्से में खड़ा था। मेरे पास ही गीली मिट्टी में बड़े करीने से गड़ी एक कांसे की पट्टिका थी। उस पर लिखा था, "राजा आर्थर की समाधि," और थोड़ा आगे मुझे रानी गुइनवेरे की समाधि मिली। हालाँकि, मैं इन समाधियों को खोजने नहीं आया था, बल्कि स्वयं इस "पूरे ब्रिटेन के सबसे

पवित्र स्थान" के अवशेषों को देखने आया था, जिसकी खोज पुरातत्व कौशल और मानसिक शक्तियों के मेल से हुई थी। ब्लिघ बॉन्ड नामक एक पेशेवर पुरातत्वविद् ने पाया कि उनमें भी मानसिक शक्तियाँ हैं। अविश्वास करने के बजाय, उन्होंने इस वरदान को नकारा नहीं, बल्कि इसका एक लंबा और कठिन परीक्षण किया। इस परीक्षण के परिणामस्वरूप, उन्हें एक भिक्षु से कथित संदेश प्राप्त हुए, जिसने दावा किया था कि वह मध्य युग की शुरुआत में ग्लास्टनबरी में रहता था। ये संदेश बॉन्ड को स्वचालित लेखन के माध्यम से प्राप्त हुए, उनके हाथ भिक्षु के अदृश्य व्यक्तित्व द्वारा निर्देशित थे। यह बात बेशक अविश्वसनीय लगती है, और बॉन्ड पर इसलिए हमला किया गया क्योंकि वह ऐसी कल्पना में खो गया था जिसे उसके साथी पेशेवर लोग कोरी कल्पना मानते थे।

उस समय ग्लास्टनबरी एबे का स्थान अज्ञात था, फिर भी बॉन्ड के संदेशवाहक ने दावा किया कि यह वर्तमान ग्लास्टनबरी शहर के पास घास के टीले के नीचे स्थित है। उसने बॉन्ड को इसकी दीवारों, बनावट और रास्तों का सटीक विवरण भी दिया। अंततः, बॉन्ड खुदाई शुरू करवाने में सफल रहे, और एबे ठीक उसी तरह सामने आया जैसा उस रहस्यमय भिक्षु ने भविष्यवाणी की थी।

जैसा कि मैंने पहले कहा था, मैं राजा आर्थर की कब्र का अध्ययन करने नहीं, बल्कि ग्लास्टनबरी एबे को देखने आया था। फिर भी, रास्ता कैमलॉट की ओर ही जाता हुआ प्रतीत हुआ। ग्लास्टनबरी उस क्षेत्र से 12½ मील उत्तर-पश्चिम में स्थित है, जिसके बारे में मुझे बाद में पता चला कि वह कैमलॉट का स्थल था। मूल रूप से एक सेल्टिक (या ब्रिटिश) बस्ती, यह आर्थर की कहानियों का एवलॉन है।

किंग आर्थर और कैमलॉट के विषय में मेरी रुचि कुछ समय के लिए तब टल गई जब अधिक जरूरी परियोजनाओं ने मेरा समय ले लिया, लेकिन 1967 में अचानक यह रुचि फिर से इस विषय में लौट आई जब पॉल जॉनस्टोन नामक एक व्यक्ति ने मुझसे संपर्क किया, जिसने मेरी पिछली पुस्तकों में से एक पढ़ी थी।

जॉनस्टोन एक विद्वान हैं जो ऐतिहासिक शोध में विशेषज्ञता रखते हैं और स्वतंत्र लेखक भी हैं। ब्रिटिश इतिहास पर उनके लेख 'एंटीक्विटी' और 'नोट्स एंड क्वेरीज़' में प्रकाशित हुए हैं, जबकि उनकी कथाएँ 'ब्लू बुक' और अन्य पत्रिकाओं में छपी हैं। उनका लेखन मध्यकालीन

ऐतिहासिक विषयों की ओर झुका हुआ है, और पच्चीस वर्षों के शोध के बाद, 1963 में उन्होंने 'द रियल किंग आर्थर' नामक पुस्तक पूरी की। उसी वर्ष उनकी माताजी का देहांत हो गया, और उन्हें लगा कि उनकी आत्मा उनसे संवाद करना चाहती है। हालाँकि पॉल जॉनस्टोन एक तर्कसंगत व्यक्ति हैं, उन्होंने इस तरह के संवाद की संभावना को कभी खारिज नहीं किया, विशेष रूप से इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए कि बचपन में उन्हें कुछ अलौकिक शक्ति अनुभव हुए थे। अपने मनोरंजन के लिए खरीदी गई एक "भविष्यवाणी बोर्ड" के माध्यम से, वे अपनी दिवंगत माताजी से संवाद करने में सक्षम हुए, और यद्यपि उन्होंने पहले तो उनसे केवल सबसे सामान्य प्रश्न पूछे, अंततः उन्होंने उन्हें बताया कि आर्टोरियस उनसे बात करना चाहता है।

दरअसल, पौराणिक राजा आर्थर और उनका कैमलॉट प्राचीन गाथाओं, मुख्यतः फ्रांसीसी गाथाओं का काल्पनिक रूपांतरण मात्र थे, जिन्हें सर थॉमस मैलोरी ने पंद्रहवीं शताब्दी में 'ला मोर्टे डी'आर्टुर' में संकलित किया था। ये गाथाएँ भी प्राचीन वेल्श कहानियों का ही रूपांतरण थीं, जो सटीक तो नहीं थीं, लेकिन फिर भी सच्चाई के काफी करीब थीं। गॉडफ्रे टर्टन ने अपनी पुस्तक 'द एम्परर आर्थर' में लिखा है कि मध्ययुगीन साज-सज्जा "ऐतिहासिक आर्थर के लिए पूरी तरह अनुपयुक्त है, जो मैलोरी के जन्म से लगभग एक हजार वर्ष पहले जीवित थे।"

पांचवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में आर्थर के समय का एकमात्र समकालीन स्रोत गिल्डास नामक पुस्तक है, जिसका शीर्षक है 'डी एक्सीडियो ब्रिटानिया'। गिल्डास एक भिक्षु थे जो बाद में मठाधीश बने। इस कृति में आर्थर का स्वयं कोई उल्लेख नहीं है, लेकिन 'द लाइफ ऑफ गिल्डास' के अनुसार, गिल्डास और आर्थर के बीच दुश्मनी थी क्योंकि आर्थर ने भिक्षु के भाई को समुद्री डकैती के आरोप में मृत्युदंड दे दिया था।

नौवीं शताब्दी में नेनियस नामक एक व्यक्ति ने आर्थर के शासनकाल और विजयों का विस्तृत वर्णन किया। यह आर्थर एक उत्तर-रोमन सरदार और एक प्रांतीय सेनापति थे, जिनकी सैन्य नेतृत्व क्षमता और सूझबूझ के कारण उन्हें ब्रिटिश सरदार एम्ब्रोसियस के उत्तराधिकारी के रूप में रोमन-बाद के ब्रिटेन के प्रमुख और रक्षक के रूप में चुना गया था। इतिहास के इस काल में, सैक्सनों ने ब्रिटेन पर पूरी तरह से कब्जा नहीं किया था और विशेष रूप से पश्चिमी भाग अभी भी उनके क्रूर शासन से मुक्त था। यद्यपि रोमनों का अब ब्रिटेन पर कोई अधिकार

नहीं था, फिर भी सदियों के कब्जे ने अपनी छाप छोड़ी थी, और आर्टोरियस अपने इतालवी साथियों की तरह ही एक कुशल रोमन सेनापति थे।

जॉनस्टोन ने राजा आर्थर के जीवन और काल पर शोध करने में पच्चीस वर्ष समर्पित किए थे, जिसके कारण स्पष्ट रूप से राजा की आत्मा का ध्यान उन पर गया था। अब राजा की आत्मा उन्हें पुरस्कृत करना चाहती थी और उनसे सीधे संवाद करके उनके शोध में हुई किसी भी त्रुटि को दूर करना चाहती थी। जॉनस्टोन की माँ के अनुसार, आर्थर ने वर्षों से जॉनस्टोन को सीधे अपनी कहानी बताने का प्रयास किया था, हालांकि जॉनस्टोन को इसकी जानकारी नहीं थी। लेकिन अब, उनके दूसरी दुनिया में आने से, आर्थर और जॉनस्टोन के बीच की एक कड़ी जुड़ गई थी और वे सीधे संवाद स्थापित कर सकते थे।

मैंने इन बातचीत के प्रतिलेखों का अध्ययन किया है, और चूंकि जॉनस्टोन स्वयं आर्थर और अन्य जैसे संचारकों के साथ अपने अनुभवों पर एक पुस्तक लिख रहे हैं, इसलिए इतना कहना ही पर्याप्त होगा कि ये बातचीत अद्भुत और विस्तृत हैं। स्वाभाविक रूप से, यह प्रश्न तुरंत उठता है: क्या वास्तव में ब्रितानियों के राजा आर्थर बोल रहे हैं, या यह जॉनस्टोन की कल्पना की उपज है, जो इस विषय में उनकी गहरी रुचि और उनके चेतन और अचेतन मन में संचित ज्ञान से उत्पन्न हुई है? यह स्पष्ट है कि जॉनस्टोन के मन में भी यह विचार आया और उन्होंने कथित आर्टोरियस से कई ऐसे प्रश्न पूछकर बातचीत शुरू की, जिनका पहले संतोषजनक उत्तर नहीं दिया गया था, जैसे कि युद्ध स्थलों और अभिलेखों में उल्लिखित लेकिन अभी तक अनदेखे स्थानों के सटीक स्थान। उत्तर बोर्ड के माध्यम से वेल्श, लैटिन और आधुनिक अंग्रेजी के मिश्रण में प्राप्त हुए। दिए गए कई नाम जॉनस्टोन के लिए अज्ञात थे, लेकिन उन्होंने उनकी खोज की और पाया कि वे मेल खाते हैं।

पॉल जॉनस्टोन ने स्वयं को आर्टोरियस बताने वाले संदेशवाहक से उसके जीवन की प्रमुख घटनाओं के बारे में विस्तार से पूछताछ की, और इस प्रकार वे उस काल के बारे में अपने कुछ पूर्व विचारों को संशोधित या पुष्ट करने में सक्षम हुए—ये विचार विशुद्ध रूप से पुरातात्विक और शोध के माध्यम से प्राप्त हुए थे, न कि मानसिक रूप से। इस प्रकार हमें आर्थर के जन्म की तिथि 459 ई. और बैडॉन हिल की लड़ाई की तिथि 503 ई. मिलती है, जहाँ आर्थर ने

सैक्सन और उनके सहयोगियों के गठबंधन को निर्णायक रूप से हराया और बीस शांतिपूर्ण वर्षों तक अपने राज्य को दृढ़ता से स्थापित किया।

मेरे लिए तो यह बात मायने ही नहीं रखती थी कि आर्थर ने जॉनस्टोन के माध्यम से बात की या जॉनस्टोन, जो एक मानसिक शक्ति वाला व्यक्ति था, ने ऐसी तथ्यात्मक जानकारी प्राप्त की जो पहले ज्ञात या पुष्ट नहीं थी। ज्ञान किसी न किसी तरह अलौकिक साधनों से ही प्राप्त हुआ था। जब मैंने इस संवेदनशील मुद्दे को उठाया, तो जॉनस्टोन ने कई ऐसे उदाहरणों का जिक्र किया जहाँ उसका अपना ज्ञान और राय आर्थर से प्राप्त मानसिक जानकारी से बिल्कुल अलग थी। उदाहरण के लिए, जब उसने पूछा कि कैसल गिनियन क्या है, तो उसे बताया गया कि यह पिक्ट्स का शरणस्थल था। जबकि उसकी अपनी राय यह थी कि यह अंग्रेजों का गढ़ था, जिस पर पिक्ट्स ने हमला किया था।

* * *

यह सारा पत्राचार अचानक उस समय चरम पर पहुंच गया जब जॉनस्टोन ने मुझे सूचित किया कि कैमलॉट के वास्तविक स्थल के रूप में संभावित या संभावित रूप से अनुपयुक्त स्थान पर नई खुदाई चल रही है।

* * *

अब सवाल यह उठता है कि आर्थर का प्रसिद्ध किला कहाँ स्थित था—अगर सचमुच कोई कैमलॉट था—तो यह सवाल सदियों से शोधकर्ताओं को उलझाए हुए है। पर्यटन बोर्ड का कहना है कि यह कॉर्नवाल में टिंटेजेल कैसल है। श्री जॉनस्टोन के अनुसार, आर्थर ने अपना बचपन वहीं बिताया था और उस स्थान पर एक मठ भी था, लेकिन किला आर्थर के जन्म के कई सदियों बाद बना। इलचेस्टर के पश्चिम में स्थित कैडबरी हिल को इस सम्मान के लिए अधिक तार्किक विकल्प माना जाता था। समरसेट में स्थित यह पहाड़ी किला ग्लास्टनबरी तक फैले मैदानों को देखता है, जिसे इसकी प्राचीरों से स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। जॉनस्टोन ने 1963 में अपनी पुस्तक लिखते समय इसे वास्तविक कैमलॉट का स्थान बताया था। उनकी राय पुरातात्विक साक्ष्यों पर आधारित थी, लेकिन उस समय विशेषज्ञों के "प्रतिष्ठान" ने इस संभावना को खारिज कर दिया था। कैडबरी हिल के खंडहरों को रोमन-पूर्व माना गया और

आर्थर के पांचवीं शताब्दी के ब्रिटेन से इसके किसी भी संबंध से इनकार किया गया। वेल्स विश्वविद्यालय के लेस्ली एल्कोक, जो कैडबरी में खुदाई करने वाले लोगों में से एक थे, का मानना था कि आर्थर के समय में युद्ध में इतने बड़े किलेबंद स्थानों का उपयोग नहीं किया जाता था। लेकिन 1966 की गर्मियों में उस स्थान की खुदाई करने के बाद, उन्होंने मार्च 1967 में 'एंटीक्विटी' पत्रिका में एक अलग विचार व्यक्त किया: आर्थर के समय में कैडबरी एक महत्वपूर्ण गढ़ था।

जॉनस्टोन ने मुझे बस इतना सुझाव दिया: क्यों न हम किसी अच्छे माध्यम को कैडबरी ले जाएं और देखें कि वह क्या जानकारी जुटा सकती है? उन्होंने पूछा, आइए पता लगाएं कि क्या कैडबरी हिल ही कैमलॉट है। वे स्वयं हमारे साथ नहीं आए, ताकि कोई मेरे माध्यम पर यह आरोप न लगाए कि वह अपने मन या अवचेतन में मौजूद ज्ञान से प्रभावित है। लेकिन वे मुझे उस स्थान तक पहुंचने के सटीक निर्देश देने के लिए तैयार थे, और आर्थर-कैमलॉट की कहानियों से जुड़े कुछ अन्य स्थानों के बारे में भी जानकारी देने के लिए तैयार थे, और बाद में मुझे वहां से प्राप्त सामग्री का मूल्यांकन करने में मदद करने के लिए भी तैयार थे।

मैंने उत्साहपूर्वक इस बात पर सहमति जताई और 1967 की शरद ऋतु की शुरुआत में ब्रिटेन जाने की व्यवस्था की, जिसमें सिबिल लीक मेरी मार्गदर्शक के रूप में काम करेंगी।

हमारी योजनाएँ इस प्रकार बनाई जाती थीं कि सिबिल को हमारे उद्देश्य या हमारे गंतव्य का अंदाज़ा न लग सके, और मैं उन सभी संकेतों से बचने का पूरा प्रयास करता था जिनसे हमारे गंतव्य का पता चल सके। इसलिए मैं ड्राइवर से तब बात करता था जब सिबिल नज़र से ओझल होती थी, और हमारी बातचीत को मौसम जैसे सरल विषयों तक ही सीमित रखता था, जो अनिश्चित ब्रिटेन में हमेशा ही अच्छा मौसम होता था।

पॉल जॉनस्टोन ने मुझे खोजबीन के लिए दो स्थान बताए थे: कैडबरी हिल, जिसे कथित तौर पर असली कैमलॉट कहा जाता है, और हैम्पशायर में एक जगह जहाँ उनके अनुसार इंग्लैंड की स्थापना हुई थी। यदि उनकी गणना सही थी, तो बाद वाला स्थान कार्डिक के मकबरे या कब्र का वास्तविक स्थल होगा, वह स्थान जहाँ आधुनिक इंग्लैंड के पूर्वज, वेसेक्स के पहले राजा को दफनाया गया था।

उन्होंने लिखा, “यह हैम्पशायर के हर्स्टबोर्न प्रायर्स में है, विनचेस्टर और सैलिसबरी के बीच में, लेकिन एंडोवर के करीब। लेकिन इसमें एक कमी है। किसी को भी इसकी सटीक जगह का पता नहीं है।”

चूंकि कार्डिक उन स्थानीय शासकों में से एक था जिनसे आर्थर ने बैडन हिल में लड़ाई लड़ी थी, इसलिए मुझे लगा कि हमें वहां की यात्रा को शामिल करना चाहिए, खासकर इसलिए क्योंकि यह कैमलॉट जाने के हमारे रास्ते से अलग नहीं था।

हालांकि, जॉनस्टोन मुझे एक और सुराग देने में सक्षम था, यह सुराग पुरातात्विक नहीं बल्कि मानसिक था:

1950 में उन्हें कार्डिक की कब्र के बारे में एक विचित्र सपना आया था। उन्होंने देखा कि उस स्थान पर, उस पहाड़ी पर जहाँ कार्डिक का टीला था, उन्नीसवीं सदी का एक गिरजाघर बना दिया गया था। कार्डिक की कब्र, जिसे मूल भाषा में सियार्डिसेस्बर्ग कहा जाता था, पुरातत्वविदों में सबसे प्रसिद्ध प्रोफेसर ओ. जी. एस. क्रॉफर्ड, जो पुरातनता के संस्थापक थे और जिनका यह गृह क्षेत्र था, क्योंकि वे पास के साउथेम्प्टन में रहते थे, की भी नज़र से बच गई थी।

इस प्रकार, एक मामूली सुराग और एक विचित्र सपने की कहानी के सहारे, हम 22 सितंबर, 1967 को लंदन से रवाना हुए। सिबिल लीक को एंडोवर रेलवे स्टेशन पर हमसे मिलना था।

मेरे पास उस इलाके का एक नक्शा था ताकि छोटे से छोटे भूभाग का भी जल्दी से पता लगाया जा सके। हमारे ड्राइवर को बहुत पहले ही समझ आ गया था कि हम कोई साधारण पर्यटक नहीं हैं (यहाँ "हम" से मेरा मतलब कैथरीन और मैं, और अब श्रीमती लीक भी हैं)।

हम एंडोवर से निकले और तीन मील उत्तर-पूर्व दिशा में हर्सटबोर्न प्रायर्स नाम के छोटे से गाँव की ओर बढ़े। दरअसल, हम कई बार गाँव से होकर गुज़रे, तब जाकर हमें एहसास हुआ कि हम बहुत तेज़ गति से जा रहे हैं। जब हमने गाड़ी को एक बार फिर घुमाया, तो मुझे बाईं ओर एक संकरी ग्रामीण सड़क दिखाई दी, जो विशाल पुराने पेड़ों की छाया से ढकी हुई थी। और सड़क के अंत में, एक चर्च था—हमारा चर्च। हमने उसे पा लिया था, ठीक वैसे ही जैसा पॉल जॉनस्टोन ने 1950 में सपना देखा था!

जॉनस्टोन ने कभी यूरोप की यात्रा नहीं की थी, और न ही उन्हें इस बात की जानकारी थी कि इस ग्रामीण सड़क के अंत में उन्नीसवीं सदी के आरंभिक शैली का एक गिरजाघर मौजूद होगा। लेकिन वह गिरजाघर वहीं था, और हम सब गाड़ी से उतर गए।

पारंपरिक चर्च ऑफ इंग्लैंड की नव-गॉथिक शैली में निर्मित, इस गिरजाघर की शुरुआत तो पहले हुई थी, लेकिन इसका मूल स्वरूप वास्तव में उन्नीसवीं सदी के आरंभ का था। यह प्राचीन कब्रों से भरे एक रमणीय कब्रिस्तान के बीचोंबीच स्थित था, जिनमें से कुछ अभी भी सीधी खड़ी थीं, लेकिन अधिकांश उम्र के कारण अलग-अलग दिशाओं में झुकी हुई थीं। कुछ दूर पर कई विशाल पेड़ थे। अचानक, जिस व्यस्त ग्रामीण सड़क को हम अभी-अभी पीछे छोड़ आए थे, वह अब हमारे बीच नहीं थी, और हम समय के उस भंवर में खो गए जहाँ सब कुछ वैसा ही था जैसा हमेशा से रहा होगा। अब दोपहर होने वाली थी, और आसपास कोई भी जीवित प्राणी नहीं था।

हम छोटे से गिरजाघर में दाखिल हुए और पाया कि यह एक आदर्श ग्रामीण गिरजाघर का नमूना था।

ड्राइवर गाड़ी के पास ही बाहर खड़ा रहा जबकि हम नरम हरी जमीन पर घूमने लगे।

"यहाँ चर्च महत्वपूर्ण नहीं है, महत्वपूर्ण तो ज़मीन है," सिबिल ने तुरंत कहा।

अब हम सबसे बड़े पेड़ के पास खड़े थे।

उन्होंने कहा, "हमें एक पहाड़ी पर होना चाहिए, एक छोटी पहाड़ी पर, जमीन में एक ऐसी ऊँचाई पर जिसका उपयोग किसी व्यावहारिक उद्देश्य के लिए किया गया हो।"

मुझे दिलचस्पी हुई और मैं और करीब चला गया। पुराने जमाने के अंत्येष्टि स्थल बस वही थे।

"इसका किसी बीमारी से कुछ संबंध है... लोग किसी बीमारी के कारण यहां एकत्रित हो रहे हैं... मुझे उम्मीद थी कि मुझे यह पहाड़ी यहीं मिलेगी।"

पंद्रह शताब्दियों के दौरान संभव परिवर्तनों को देखते हुए, मुझे इस बात पर बिल्कुल भी आश्चर्य नहीं हुआ कि वह पहाड़ी अब मौजूद नहीं थी, या कम से कम अब वह उतनी प्रमुख नहीं थी, क्योंकि कब्रिस्तान के पीछे एक उभार था।

मैंने पूछा, "यह पहाड़ी महत्वपूर्ण क्यों है?"

बहुत समय पहले... धुंधली-धुंधली हलचलें आती हैं, लेकिन मुझे पहाड़ी साफ़ दिखाई दे रही है। यहाँ पुरुषों का वर्चस्व है। यह कोई स्थानीय बात नहीं है। मुझे उसके पैर ठीक से दिखाई नहीं दे रहे। हालाँकि वहाँ दूसरे लोग भी हैं, फिर भी वह हावी है। उसके हाथ में एक लंबी छड़ी है। छड़ी पर एक पक्षी है। यह झंडा तो नहीं है, लेकिन झंडे जैसा दिखता है। पहाड़ी उसके लिए महत्वपूर्ण है... J... अक्षर J। इसका संबंध झंडे वाली बात से है। मुझे उसका चेहरा और सिर दिखाई दे रहा है।

क्या उसके सिर पर कुछ है?

“हाँ, है एक टोपी—यह उस चीज़ से संबंधित है जिसे वह पकड़े हुए है। मैं इसे ठीक से नहीं देख पा रहा हूँ। पक्षी भी उसकी टोपी पर बैठा है, जो उससे उड़कर ऊपर आ गया है। एक ताकतवर बाहरी व्यक्ति। वह एक सैनिक है। बहुत समय पहले की बात है।”

आज कैमलॉट में केवल भू-निर्माण के अवशेष ही बचे हैं।

“उसके साथ हम किस दौर में हैं, आप क्या कहेंगे?” मैंने धीरे से पूछा। उस जगह की बनावट में सैनिक से जुड़ी कोई बात नहीं थी। सिबिल को सही संकेत मिल रहे थे, और मैं इससे बहुत प्रभावित था।

"इतनी दूर की बात है, मैं निश्चित रूप से नहीं कह सकता।"

क्या वह एक महत्वपूर्ण व्यक्ति है?

“हाँ। मैं पत्रों को देख रहा हूँ। सी-कैयस...सी-ए-आई-एस... कैयस। वह बहुत महत्वपूर्ण है। पहाड़ी उससे जुड़ी हुई है, फिर भी वह पराया है। लेकिन उसे पहाड़ी की ज़रूरत है। उसका मुख पश्चिम की ओर है। पश्चिम ही वह रास्ता है जिस पर उसे जाना है...पूर्व से पश्चिम की ओर की यात्रा...”

“उसने क्या किया है?”

“उसके हाथ में जो चीज है, वह उसकी स्थिति से संबंधित है। सिक्के...व्यापार...एक ही जगह पर बहुत सारे लोग हैं लेकिन वह हावी है...।”

इस समय सिबिल को लगा कि अतीत से आ रही धुंधली तरंगों को बेहतर ढंग से ग्रहण करने के लिए हमें और पीछे हट जाना चाहिए। उसने गिरजाघर के अंतिम छोर पर स्थित दो सबसे पुराने पेड़ों की ओर इशारा करते हुए कहा कि सबसे प्रबल प्रभाव वहीं दिखाई देगा।

“हत्या...उन दो पेड़ों के बीच किसी की हत्या हुई थी,” उसने अब ज़ोर देकर कहा, “उसका पीछा किया गया था, इस कब्रिस्तान के नीचे एक पुरानी सड़क है। उसे इसी रास्ते से जाना पड़ा होगा, रास्ता बनाते हुए जाना पड़ा होगा। यूँ ही चलकर नहीं आ सकता था। लगभग इसी जगह पर, मुझे ऐसा लगता है जैसे किसी की अचानक मौत हो गई हो। हिंसक मौत। फिर भी यह युद्ध नहीं था। यह किसी हमले या घात जैसा था। पश्चिम से इसका गहरा संबंध है। वह यही करना चाहता था, पश्चिम जाना। यह आदमी बहुत दबंग था।”

अब हम पुराने कब्रिस्तान के एक कोने में थे। ऊपर से कभी-कभार गुजरने वाले जेट विमानों की आवाज के अलावा, सन्नाटा छाया हुआ था। पास ही में एक हवाई अड्डा स्थित है।

“यहाँ एक खुला मैदान होना चाहिए जहाँ से पहाड़ी दिखाई दे,” सिबिल ने ज़ोर देकर कहा। “ये आदमी इन पेड़ों के आने से पहले यहाँ था। ये पेड़ कम से कम एक हज़ार साल पुराने हैं।”

मैंने जल्दी से कुछ गणना की। इससे हम लगभग नौवीं शताब्दी में पहुँच जाते हैं। सिबिल ने दावा किया कि यह उससे भी पहले की बात है।

इतना कहकर वह मुड़ी और धीरे-धीरे कार की ओर वापस चलने लगी। आज हमें अभी बहुत दूरी तय करनी थी, इसलिए मैंने सोचा कि यहाँ अपना समय बढ़ाना उचित नहीं होगा, खासकर तब जब हमें पहले ही कुछ दिलचस्प सामग्री मिल चुकी थी।

अगले साल फरवरी में जब मेरी मुलाकात पॉल जॉनस्टोन से सेंट लुइस में हुई, तो मैंने उन्हें हमारी जांच की रिकॉर्डिंग सुनाई। उन्होंने आंखें आधी बंद करके सुना, फिर सिर हिलाया। "बिल्कुल, आपने इसे ढूंढ लिया है। ठीक वैसे ही जैसे मैंने इसे अपने सपने में देखा था।"

आपने वास्तव में क्या सपना देखा?

"मैं वहाँ था...मैं पहाड़ी को देख रहा था...पहाड़ी पर एक गिरजाघर था, कोई बहुत पुराना नहीं, और उसमें एक ब्रिटिश सैनिक की कांस्य प्रतिमा थी...फिर मैं एक किताब देख रहा था, एक ऐसी किताब जो अब मौजूद नहीं है, लेकिन उसमें वेसेक्स के कार्डिक के बारे में लिखा था, और यह कि उन्हें इसी पहाड़ी पर दफनाया गया था जहाँ उन्नीसवीं सदी का यह गिरजाघर था। गिरजाघर ने उनकी कब्र के निशान मिटा दिए थे, इसीलिए वह नहीं मिली थी। मैंने बस इस सपने को लिख लिया, लेकिन आपके आने तक इस पर कुछ नहीं किया।"

जॉनस्टोन ने बताया कि कार्डिक की कब्र का जिक्र दसवीं शताब्दी से मिलता है। मैंने उनसे CAIUS नाम के बारे में पूछा, जिसे सिबिल ने हमें बताने की कोशिश की थी।

"अपने समय में, कार्डिक अपना नाम C-a-r-a-t-i-c-u-s लिखते होंगे...। श्रीमती लीक ने नाम के मुख्य अक्षर तो सही लिखे हैं। पक्षी वाली लंबी छड़ी भी बहुत दिलचस्प है। क्योंकि सटन हू में प्राचीन ब्रिटिश अवशेषों की खोज में एक लंबा कांस्य भाला मिला था जिसके ऊपर एक हिरण बना हुआ था। यह एक मानक था, और कार्डिक के पास भी संभवतः पक्षी वाला ऐसा ही एक भाला रहा होगा। वेसेक्स के इस संस्थापक को निस्संदेह एक "प्रभावशाली व्यक्तित्व" कहा जा सकता है, जैसा कि सिबिल ने कहा था—और फिर कुछ दिलचस्प बातें सामने आती हैं। कार्डिक के पिता जूट जनजाति के थे, जैसे कि उनके अधिकांश लोग थे—याद है वह अक्षर, J, जिसका इस्तेमाल सिबिल ने उनका और उनकी जाति का वर्णन करने के लिए किया था?"

इसके बाद जॉनस्टोन ने इतिहास में कार्डिक की भूमिका को समझाया। मैं पहले यह जानकारी नहीं रखना चाहता था, ताकि सिबिल इसे मेरे दिमाग या अवचेतन मन से न जान सके।

कार्डिक और आर्टोरियस दोनों ब्रिटिश राजा एम्ब्रोस के अधिकारी थे, और जब 485 ईस्वी में एम्ब्रोस की मृत्यु हुई, तो कार्डिक सैक्सन शत्रुओं के पक्ष में चला गया। 495 में उसने अपने जूट्स के साथ हैम्पशायर पर आक्रमण किया और एक स्थानीय सरदार के रूप में देश पर शासन किया। 503 में, जब आर्थर ने सैक्सन और उनके सहयोगियों के खिलाफ बैडन हिल की लड़ाई लड़ी, तो कार्डिक के लोग उन सहयोगियों में शामिल थे। जॉनस्टोन के अनुसार, वह थोड़ा देर से पहुँचा और बच निकला, और 516 तक जीवित रहा, उस समय संभवतः टीले वाली जगह पर उस पर घात लगाकर हमला किया गया और उसे वहीं सम्मानपूर्वक दफनाया गया। यह स्थान उसकी पश्चिमी सीमा के बहुत करीब था, और घात लगाने वाले एम्ब्रोस के पुराने राज्य, सैलिसबरी में स्थित ब्रितानी रहे होंगे, न कि दूर कैमलॉट के लोग। जॉनस्टोन को नहीं लगता कि आर्थर ने कार्डिक की हत्या का आदेश दिया होगा: वे वर्षों से मित्र थे, और यद्यपि उनके राज्य एक-दूसरे के निकट थे, फिर भी 503 और 516 के बीच उनके बीच कोई युद्ध नहीं हुआ, जो उन दिनों में शांति का एक काफी लंबा समय था। आर्थर कार्डिक के राज्य को कुचल सकता था, जो अब विनचेस्टर में स्थित है, फिर भी उसने किसी कारणवश ऐसा नहीं किया। लेकिन एम्ब्रोस के उत्तराधिकारी अपने पड़ोसी के प्रति इतने उदार नहीं रहे होंगे, और यहीं हमें कार्डिक के हत्यारों की तलाश करनी होगी।

जॉनस्टोन ने यह भी सुझाव दिया कि ऊपर चील वाली लंबी छड़ी और हेलमेट संभवतः रोमन ही रहे होंगे, क्योंकि उस क्षेत्र में रोमन संस्कृति अभी भी बहुत प्रभावशाली थी और कार्डिक ने निश्चित रूप से उस परंपरा में एक अधिकारी के रूप में प्रशिक्षण प्राप्त किया था।

कार्डिक नाम स्वयं वेल्श है, और जॉनस्टोन ने सुझाव दिया कि कार्डिक के पिता, एलेसा, एंग्लो-जूट मूल के थे, उनकी माँ वेल्श थीं, और वह स्वयं ब्रिटेन के मूल निवासी थे, शायद यही कारण था कि उन अशांत समयों में उनकी निष्ठाएँ विभाजित थीं।

मैंने अपने विशेषज्ञ से श्रीमती लीक द्वारा की गई उस टिप्पणी के बारे में सवाल किया कि वह व्यक्ति पश्चिम जाना चाहता था और पूर्व से आया था।

"एक सैक्सन कमांडर होने के नाते, वह स्वाभाविक रूप से पूर्व से आया था और पश्चिम की ओर अपनी शक्ति का विस्तार करना चाहता था, लेकिन उसे रोक दिया गया," जॉनस्टोन ने उत्तर दिया।

मुझे लगा कि आर्थर के प्रतिद्वंद्वी और कभी उनके मित्र रहे व्यक्ति के अंतिम विश्राम स्थल पर जाना उचित होगा, इससे पहले कि मैं आर्थर के निवास स्थान, कैमलॉट की ओर आगे बढ़ूं, जो दक्षिण-पश्चिम में लगभग दो घंटे की ड्राइव की दूरी पर स्थित है।

कैडबरी हिल को ढूंढना कार्डिक के कुंज को खोजने जितना ही मुश्किल साबित हुआ। हम दक्षिण कैडबरी से दो बार गुज़रे, और किसी को भी यह नहीं पता था कि खुदाई कहाँ होगी। ज़ाहिर है, कैडबरी हिल की प्रसिद्धि उसके आस-पास के क्षेत्र से आगे नहीं फैली थी। दोपहर ढलने ही वाली थी जब हम आखिरकार उस विशाल, भव्य पहाड़ी पर पहुँचे, जहाँ इतिहास के आरंभ से ही कई किलेबंद शिविर रहे थे—शायद उनमें से एक प्रसिद्ध कैमलॉट भी था।

घुमावदार सड़क पहाड़ी की ओर जा रही थी, और हमने कार वहीं छोड़ देने का फैसला किया। एक जंगली इलाके को पार करने और पुराने पत्थर के किलेबंदी के अवशेषों को देखने के बाद, हम आखिरकार पठार पर पहुँच गए। वहाँ का नज़ारा वाकई अद्भुत था। हवा से भरा और सर्द, ढलान वाला पठार हमारे सामने था: चारों ओर मिट्टी की दीवारें थीं, और जगह-जगह पत्थर की दीवारों के अवशेष अभी भी दिखाई दे रहे थे। इलाके का मध्य भाग बाकी हिस्सों से थोड़ा ऊँचा था, और वहीं स्वयंसेवी पुरातत्वविदों की एक टीम खुदाई कर रही थी। उनके प्रयासों का एकमात्र सबूत उथली खाइयों का एक जाल और स्थानीय संग्रहालय में रखी कुछ दिलचस्प कलाकृतियाँ थीं, जिनमें से अधिकांश रोमन या पूर्व-रोमन काल की थीं, जिससे यह अनुमान लगाया गया था कि यह रोमनों द्वारा कब्जा किया गया एक मूल सेल्टिक किला मात्र था। क्या यह कैमलॉट का भव्य महल था, जिसमें शानदार हॉल और प्रसिद्ध गोल मेज थी?

* * *

उस समय, गायों का एक झुंड ज़मीन पर चर रहा था और हम ही वहाँ अकेले थे। गायों को हम बेहद दिलचस्प लगे और वे हमें गौर से देखने के लिए पास आने लगीं। जब तक हमें यकीन नहीं हो गया कि वे गायें ही हैं और उनमें कोई बैल नहीं है, तब तक यह एक तरह का डरावना

अनुभव था। इसके अलावा, सिबिल की बातों की मेरी टेप रिकॉर्डिंग बार-बार गायों के गोबर की भयानक और स्पष्ट आवाज़ से बाधित हो रही थी, जिनमें से कुछ आवाज़ें बहुत ही नज़दीक से आ रही थीं। लेकिन मेरे साहसी खोजकर्ता स्वभाव ने मेरा साथ दिया: मैंने इस कठिन परीक्षा को उतनी ही हिम्मत से पार किया जितनी हिम्मत से आर्थर के पुराने ज़माने के योद्धा युद्ध की कठिन परीक्षा को पार करते थे। हम वहाँ थे, कैथरीन वाइन रेड पैंट सूट में, ड्राइवर कहीं अकेला गाँव की ओर देख रहा था, और सिबिल और मैं अतीत में खो जाने की कोशिश कर रहे थे।

अगर यह सचमुच कैमलॉट था, तो मुझे लगा कि श्रीमती लीक को इससे जुड़ी कोई न कोई चीज़ ज़रूर मिलनी चाहिए। उन्हें ज़रा भी अंदाज़ा नहीं था कि हम कहाँ थे या मैंने उन्हें दोपहर ढलते समय इतनी ऊँची पहाड़ी पर क्यों चढ़ाया था, जो साफ़ तौर पर गायों के चरने के लिए इस्तेमाल होती थी। लेकिन उन्होंने खाइयाँ और खुदाई देखीं और शायद उन्हें लगा कि हम किसी प्राचीन रोमन स्थल को देख रहे हैं। इसके अलावा, मुझे सच में नहीं लगता कि उन्हें पता था या उन्हें इस बात की परवाह थी कि हम यहाँ क्यों थे: उन्होंने हमेशा मुझ पर भरोसा किया है और यही माना है कि इसके पीछे कोई अच्छा कारण होगा।

कुछ देर इधर-उधर घूमने के बाद, मैंने उसे खुदाई स्थल के पास घेर लिया और उससे पूछताछ शुरू कर दी।

मैंने पूछा, "तुम्हें क्या लगता है यह जगह क्या है?"

“मुझे लगता है कि यह एक अभयारण्य है,” एक अजीब सा जवाब आया, “एक विश्राम स्थल। एक आध्यात्मिक विश्राम स्थल।”

"क्या आप कल्पना कर सकते हैं कि यहाँ पहले क्या था?"

“पहाड़ी पर चढ़ते समय मुझे मठ का आभास हुआ, लेकिन मैं इसे विशुद्ध धर्म के रूप में नहीं देख रहा हूँ—बल्कि एक ऐसी जगह के रूप में देख रहा हूँ जहाँ लोग चिंतन करने आते हैं, एक आध्यात्मिक अनुभूति के लिए। मुझे इमारतों की बजाय उस युग का अंत अधिक दिखाई देता है।”

इसका अंत कैसे हुआ?

“एक कबीले का टूटना...कई लोग, जो परिवार के सदस्य नहीं थे, लेकिन दोस्ती के बंधन से जुड़े हुए थे...।”

“कितना समय पहले?”

“मैं कुछ चिट्ठियाँ लाने की कोशिश करूँगी....” उसने अपनी आँखें बंद कर लीं और तेज़ हवा में थोड़ा झूलने लगी, जबकि मैं इंतज़ार कर रहा था। “ग-वे-ए-आई-एन-ई-एल-ओ-डी....”

हे भगवान! मैंने सोचा, क्या वह "कैमलोट" कहना चाह रही है?

“यह एक मिलन स्थल है,” सिबिल ने धीरे-धीरे समाधि की अवस्था में जाते हुए कहा, “यह युद्ध स्थल नहीं, बल्कि एक अच्छा स्थल है, मित्रता का स्थल... इस स्थल का कई वर्षों से एक धार्मिक संबंध रहा है। एक बहुत ही खास संबंध।”

मैंने पूछा, "क्या कोई नेता है?"

“एबॉट एर्लाइल...जरूरी नहीं कि एक ही अवधि में।”

“ये लोग यहाँ कब से हैं?”

“बहुत-बहुत समय पहले की बात है। इसमें कोई खास ताकत नहीं थी, बहुत बिखरा हुआ सा था। मैं इसे कभी-कभार ही पकड़ पाता हूँ। ग्वाइन के बहुत सारे पत्र हैं, उनमें से बहुत सारे।”

"आपका मतलब उन लोगों से है जिनके नाम ऐसे लगते हैं या जो ग्वाइन से शुरू होते हैं?"

"हाँ।"

“क्या वे पुरुष हैं?”

“सभी पुरुष नहीं। लेकिन उनकी दोस्ती पुरुषों की है। समुद्र से ऊपर आते हुए। यह उनका आश्रय स्थल था।”

“ये लोग कौन थे?”

"ग्वेन उनमें से एक है।"

उन पर शासन किसने किया?

“यह बहुत ही मिश्रित मामला है...पकड़ना आसान नहीं है...तेरह लोग...जो दोस्ती के बंधन से जुड़े हुए हैं...।”

क्या समूह के रूप में उनका कोई नाम है?

“टेम्पलर्स।”

बाद में, जब मैंने सबूतों की जांच की, तो मुझे यह स्पष्ट हो गया कि जब सिबिल ने इन ऐतिहासिक चट्टानों पर छोड़े गए पदचिह्नों के संपर्क में आई, तो उसे इतिहास की एक से अधिक परतें प्राप्त हुईं।

मेरे आर्थरियन साहित्य के विशेषज्ञ मित्र पॉल जॉनस्टोन ने बाद में मुझे आश्वस्त किया कि कैमलॉट शब्द वेल्श शब्द कैमाल्ट से लिया गया है, जिसका अर्थ है टेढ़ी ढलान, जो उस स्थान का काफी अच्छा वर्णन है।

ऐतिहासिक आर्थर के साथ अपने मानसिक संपर्क में, जॉनस्टोन ने अपने डॉविंग बोर्ड का उपयोग करते हुए, नाम कैम्बाल्टा के रूप में स्थापित किया, जो आधुनिक वेल्श रूप के काफी करीब है। लेकिन इससे पहले, फिर से बोर्ड का उपयोग करते हुए, जॉनस्टोन ने अपने संचारक (जैसा कि उन्होंने मार्च 1968 में सर्च पत्रिका में "न्यूज़ फ्रॉम कैमलॉट" नामक लेख में वर्णित किया था) से साउथ कैडबरी की पहाड़ी के प्राचीन नाम के बारे में पूछा था। इस बार उत्तर अलग था।

जॉनस्टोन अपने सूचनादाता के हवाले से कहते हैं, "दिनास कटुई," और बताते हैं कि इसका अर्थ है काडो का किला। लेकिन वे एक वैकल्पिक नाम भी देते हैं: कैंटिमाइलोक। इस प्रकार, ऐसा लगता है कि खुद स्रोत को भी हमेशा यह पक्का पता नहीं था कि नाम क्या था। जब तक कि, निश्चित रूप से, एक से अधिक नाम न रहे हों। ठीक यही मेरा भी मानना है। जैसे-जैसे इसके मालिक बदलते गए, वैसे-वैसे नाम भी बदलता गया होगा: जब काडो राजा थे, शायद यह दिनास कटुई था, जो लैटिन के बाद का रूप होगा, या कैंटिमाइलोक, जो स्थानीय वेल्श रूप था। फिर जब आर्थर ने अपने पूर्व सहयोगी का स्थान लिया, तो नाम से राजा काडो का संदर्भ हट गया होगा और यह कैम्बाल्टा बन गया होगा, जो आर्थर के नाम को शामिल करने के बजाय उस स्थान की भौगोलिक विशेषता को दर्शाता है, जो ऐतिहासिक आर्टोरियस के चरित्र के अनुरूप एक विनम्रता थी। लेकिन जब ग्वाइन इस क्षेत्र में प्रमुख हो गए, तो शायद उनके विचार आर्थर की तरह विनम्र नहीं रहे होंगे, और इस प्रकार किलेबंद पहाड़ी को ग्वाइन की ढलान या ग्वाइनलॉट के नाम से जाना जाने लगा होगा।

श्रीमती लीक, जो एक ही समय में और अलग-अलग तीव्रता से अपने अनुभव प्राप्त कर रही थीं, उस स्थान से जुड़ी विभिन्न परतों के बीच अंतर नहीं कर पा रही थीं। निश्चित रूप से, मैंने जो सुना, उसके अनुसार कम से कम छठी शताब्दी की दो परतें थीं - स्वयं आर्टोरियस की और ग्वाइन की, और एक तीसरी परत जो समय या संबंध के लिहाज से पहले दो परतों से सीधे तौर पर जुड़ी नहीं थी, लेकिन किसी न किसी तरह उस स्थल के समग्र पहलुओं से संबंधित थी। मैंने तुरंत सोचा कि इस विचित्र विसंगति को सुलझाने की आवश्यकता होगी, लेकिन निश्चित रूप से कोई न कोई संबंध तो होना ही चाहिए। मैं श्रीमती लीक के काम से इतना परिचित था कि मैं किसी भी बात को हल्के में नहीं लेता था और उनसे प्राप्त किसी भी जानकारी को महत्वहीन नहीं मानता था।

वापस लौटने के बाद, मैंने टेपों को बहुत ध्यान से सुना ताकि जो कुछ भी सामने आया था उसे समझने की कोशिश कर सकूँ। सबसे पहले तो, अभयारण्य, मठाधीश एर्लाइल और टेम्प्लर्स निश्चित रूप से उन तेरह लोगों की तुलना में बहुत बाद के होंगे जो मित्रता के बंधन में बंधे थे, और उस व्यक्ति की तुलना में जिसे वह ग्वाइन कहती थी, फिर भी उनके बीच एक मजबूत संबंध हो सकता था।

ग्वाइनलोड—क्या यह कैमलॉट का समकालीन नाम था? ग्वाइन स्वयं एक उत्तरी सरदार का पुत्र था जिसे आर्थर ने अपने संरक्षण में लिया था। कभी-कभी गावैन के नाम से भी जाना जाने वाला, वेल्श नाम वाला यह ऐतिहासिक योद्धा वास्तव में छठी शताब्दी के आरंभ में रहता था, और मध्ययुगीन आर्थर कथा में एक काल्पनिक नायक के रूप में भी दिखाई देता है, जहाँ उसे सर गावैन कहा जाता है। ग्वाइन से शुरू होने वाले नामों वाले कई लोगों का जिक्र माध्यम ने किया था, जिनमें संभवतः रानी ग्वाइनवेरे भी शामिल थीं, जिन्हें आर्थर की पहली पत्नी, गुइनवेरे के नाम से जाना जाता था। जॉनस्टोन के अनुसार, मध्ययुगीन गुइनवेरे द्वारा किए जाने वाले अधिकांश कार्य इस रानी ने नहीं किए थे, जिनकी थोड़े समय बाद मृत्यु हो गई थी, बल्कि उनकी उत्तराधिकारी, आर्थर की दूसरी रानी क्रेरवी ने किए थे।

नाइट्स टेम्प्लर्स का संबंध बहुत बाद के काल, यानी धर्मयुद्धों के समय से है। हैरानी की बात यह है कि होली ग्रेल की कथा भी इसी बाद के समय में घटित हुई है, जिसमें आर्थर की परंपराओं का गहरा समावेश है। क्या रोमन काल के बाद के किसी स्थानीय शासक और

ईसाई धर्म के किसी रहस्यवादी समर्थक के बीच कोई संबंध था? क्या सैक्सन काल में आर्थर के भतीजे मोर्ड्रेड द्वारा कैमलॉट के पतन और विनाश के बहुत समय बाद, भिक्षुओं के एक समूह ने वहाँ एक अभयारण्य स्थापित करके उसे पुनः बसाया था, जिससे आर्थर की परंपराएँ उनके प्रारंभिक मध्ययुगीन ईसाई धर्म से जुड़ गईं? दूसरे शब्दों में, क्या प्रारंभिक धर्मयुद्धों के दौरान भिक्षुओं के एक समूह ने कैडबरी की पहाड़ी पर कब्जा कर लिया था और आर्थर के अभयारण्य और महल के खंडहरों पर पास के ग्लास्टनबरी में होली ग्रेल में पुनर्जीवित विश्वास को समर्पित एक नया अभयारण्य स्थापित किया था?

ये सभी विचार मुझे बहुत बाद में आए, जब मैंने न्यूयॉर्क में वापस आकर सामग्री की छानबीन की।

इस समय हम कैडबरी हिल की चोटी पर खड़े थे, और जैसे-जैसे सूरज क्षितिज के पीछे छिपने लगा, हवा ठंडी होती जा रही थी।

"समुद्र से कुछ संबंध था, लेकिन उनका सब कुछ खत्म हो गया था, उन्हें अचानक ही जाना पड़ा... वे यहाँ शरण लेने आए और उसी मिलन स्थल को फिर से बनाने की कोशिश की... वही भावना..."

“उस जगह का नाम क्या था?” मैंने उत्सुकता से पूछा। “ब्र-र-वाई-एन-डब्ल्यू-टी-ओ-आर-,” सिबिल ने जवाब दिया।

“ब्रिनव टॉर?” मैंने दोहराया। लगभग ग्लैस्टनबरी का ख्याल आया। टॉर एक ऊँची, चट्टानी पहाड़ी होती है जिस पर इंग्लैंड में आमतौर पर एक मंदिर होता है।

“यहाँ वास्तव में क्या था?” मैंने ज़मीन की ओर इशारा किया।

“यह घर... का है। मुझे एक चेहरा लेटा हुआ दिखाई देता है... जिसके आसपास धूसर रंग की चीजें लटक रही हैं... जंजीरें। यह एक नेक इंसान है, जंजीरों में जकड़ा हुआ। आजादी छिन जाने से पीड़ा जरूर होती होगी... यहाँ बंधा हुआ है।”

बाद में मुझे आश्चर्य हुआ कि वह कैदी कौन हो सकता है जिसके बारे में वह सोच रही थी। मुझे पता चला कि राजा एम्ब्रोस की मृत्यु के बाद, आर्थर को उनके एक पुत्र ने जेल में डाल दिया था। आर्थर एम्ब्रोस के पुत्रों और उत्तराधिकारियों के बीच हुए झगड़े में उलझ गए थे। अंततः

आर्थर को उनके आदमियों ने रिहा कर दिया था। क्या सिबिल अतीत की उस घटना की इस मानसिक छवि को महसूस कर रही है?

मैंने फिर पूछा कि यहाँ का नेता कौन है, और सिबिल ने जवाब दिया कि उसे नहीं पता। कई महीनों बाद जब मैं सेंट लुइस में पॉल जॉनस्टोन से मिला, तो उसने मुझे बताया कि उसने अपने मानसिक बोर्ड के माध्यम से आर्थर से संपर्क किया था। आर्थर ने उसे बताया था कि जब मैं कैमलॉट की खोज में आया था, तब वह वहाँ मौजूद नहीं था, हालाँकि मैं सही जगह पर आया था।

मैंने जोर देकर पूछा, "क्या तुम्हें यहाँ किसी नेता की झलक दिख रही है?" और मैंने सिबिल की ओर देखा।

“दो नेता। दो आदमी।”

मुझे बाद में पता चला कि यह भी दिलचस्प था। जब आर्थर पहली बार कैमलॉट आए थे, तब उन्होंने राजा कैडो के साथ मिलकर शासन किया था। बाद में, आर्थर अकेले शासक बन गए। कैडो को आज कैमलॉट के स्थान कैडबरी के नाम से याद किया जाता है।

“वह जगह कैसी दिखती है?” मैंने अपना सवाल जारी रखा।

“एक वृत्त है... वृत्त महत्वपूर्ण है... भवन निर्माण भी, लेकिन एक वृत्त होना ही चाहिए... शूरवीर... बहादुर पुरुष... वेल्श नाम... मॉन्सेरी...।”

मैं जो कर रहे थे उसके महत्व से अभिभूत था और धीमी आवाज में बोला, हालांकि मैं चिल्ला सकता था और गायों के अलावा मुझे कोई नहीं सुन पाता।

मैंने पूछा, "क्या हम यहाँ आ गए हैं...? क्या यह मॉन्सेरी है?"

"जगह तो यहाँ है, लेकिन गुहा यहाँ नहीं है।"

"गुहा कहाँ है?"

पश्चिम...सूर्य की ओर...।”

"उस गुहा में क्या है?"

“जंजीरें।”

“यहां क्या रखा गया है?”

“किसी को पता नहीं चलना चाहिए। तैयार नहीं हैं। ज्ञान के लिए तैयार नहीं हैं।”

"वृत्त से पहले..."

"वृत्त के शीर्ष पर कौन है?"

“वह मर चुका है। अभी आपको उसे नहीं देखना चाहिए।”

"यहाँ कौन सा रहस्य छिपा है?"

मैं नाम नहीं बताऊंगा।

मुझे ऐसा लग रहा था कि बातचीत धीरे-धीरे रहस्यवाद की ओर बढ़ रही है। सिबिल ने जो बातें बताई थीं, वे समझ में आ रही थीं, हालाँकि मैं न्यूयॉर्क लौटने पर ही उन्हें पूरी तरह समझ पाऊँगा। वृत्त का संबंध गोल मेज से हो सकता है, वेल्श नामों वाले शूरवीर निश्चित रूप से आर्थर के सैनिक थे, लेकिन मॉन्सेरी (या मॉन्टसेराट) का संबंध पवित्र ग्रेल की कथा से था। एक बार फिर, सिबिल कई सदियों के अंतराल को समेटते हुए दो कालखंडों को एक कहानी में पिरो रही थी।

जंजीरों वाली गुहा ने भी मुझे उत्सुक कर दिया। क्या वह किसी अवशेष की बात कर रही थी, जो शायद ग्लैस्टनबरी में रखा गया था? क्या प्याले और अरिमथिया के यूसुफ द्वारा फिलिस्तीन से लाई गई टहनी के अलावा भी कुछ था? क्या ये जंजीरें बाद में बनी थीं? मुझे इन कथनों का कोई ठोस प्रमाण मिलने की संभावना तो नहीं थी, फिर भी यह तस्वीर, भले ही उलझी हुई थी, दिलचस्प थी, खासकर इसलिए क्योंकि सिबिल के पास उस हवादार पहाड़ी को, जिस पर हम खड़े थे, न तो राजा आर्थर से और न ही पवित्र ग्रेल से जोड़ने का कोई तरीका था!

“संचारकर्ता कौन है?” मैंने पूछा। मुझे लगा कि यह आर्टोरियस नहीं था, और अब यह सिबिल भी नहीं थी, और मेरी जिज्ञासा जाग उठी: आखिर यह कौन था?

“संचारक मत कहो...संचारक कहो!”

"अच्छा, तो फिर उस व्यक्ति का नाम क्या है?"

“राजा।”

मैं आश्चर्यचकित और अचंभित रह गया।

मुझे सबूत चाहिए।

“नाम अभी तय नहीं है... जितना आप जान सकते हैं उससे अधिक जानने की कोशिश करना गलत है... मैं इस रहस्य को जादू से सुरक्षित रखना चाहता हूँ।”

"आपका क्या नाम है?"

“वह मुझे जानती है....” उसने माध्यम की ओर इशारा करते हुए कहा, और अचानक मुझे भी पता चल गया कि मेरा मुखबिर कौन था, हालांकि उस क्षण यह अविश्वसनीय लग रहा था!

मैंने खुद को कहते सुना, "मैं तुम्हें भी जानता हूँ, और मैं तुम्हारा दोस्त हूँ, तुम्हें मुझसे डरने की जरूरत नहीं है।"

"मैं एक पक्षी हूँ," सिबिल के मंत्रमुग्ध होठों से निकली आवाज ने थोड़ा व्यंग्यपूर्ण लहजे में कहा।

मर्लिन! बिल्कुल... मर्लिन का अर्थ है "छोटा बाज"। आर्थर के बुद्धिमान सलाहकार के लिए यह नाम कितना उपयुक्त है!

क्या मर्लिन नाम का कोई व्यक्ति था?

पॉल जॉनस्टोन ने मुझे आश्वस्त किया कि एक नहीं, बल्कि दो थे, और उनमें से एक ने आर्टोरियस के सलाहकार के रूप में कार्य किया था। वह जादूगर था या नहीं, यह एक विवादास्पद प्रश्न है। लेकिन मर्लिन (या मेडविन) निश्चित रूप से एक ऐतिहासिक व्यक्तित्व था।

“समुद्र और यहाँ के बीच का संबंध... अजनबी... अवश्य आएगा... वह कब होगा? जब बाज़... जब पक्षी मेरी तरह आकाश में उड़ेंगे... मनुष्य आकाश में उड़ेगा... यह संबंध बुरा है...।”

मैंने पूछा, "और वह अजनबी कौन होगा?"

“एर्फिनो...एक पक्षी...।”

वह कहाँ से आएगा?

“धरती से?”

“धरती के अंदर?” मैंने अविश्वास से पूछा।

“धरती से...पुनः उदय होगा।”

आप पहेलियों में बात करते हैं।

मुझे जवाब पता हैं!

"मुझे अभी क्यों नहीं दे देते?"

“तुम एक पुरुष हो... बारह और होने चाहिए... पक्षी ही रहस्य है...।”

मुझे इस भविष्यवाणी के निहितार्थ समझ में आने लगे, और कुछ समय के लिए यहाँ आने के अपने उद्देश्य को भूलकर मैंने केवल इतना कहा, "क्या मैं कुछ नहीं कर सकता?"

लेकिन मर्लिन जा चुका था।

सिबिल वापस आ गई थी।

चेहरे के भाव और व्यक्तित्व में आया बदलाव अविश्वसनीय था: एक पल पहले, उसका चेहरा एक शाश्वत ज्ञानी व्यक्ति के शांत और गंभीर चेहरे जैसा था, और अब वह सिबिल लीक थी, एक वाचाल लेखिका और स्वैच्छिक माध्यम, जो बस एक अनजान पहाड़ी पर खड़ी थी, और अंधेरा और ठंड बढ़ रही थी।

हम तेजी से खड़ी पहाड़ी से नीचे उतरे और कार में बैठ गए, ड्राइवर ने हीटर चालू किया और हम लंदन वापस जाने के लिए चल पड़े।

लेकिन जो अनुभव हमने अभी-अभी झेला था, उसे आसानी से आत्मसात नहीं किया जा सकता था। अगर वाकई आर्थर के सलाहकार मर्लिन राजा की ओर से बोल रहे थे—और मैं चाहकर भी इसे कैसे गलत साबित कर सकता था?—तो सिबिल ने इतिहास के सही पहलू को छुआ था। मर्लिन की भविष्यवाणी के निहितार्थ भी स्पष्ट हो गए: क्या वह भविष्य में होने वाले किसी ऐसे युद्ध की बात कर रहे थे जो अभी आना बाकी था और जो मानव जाति को भूमिगत होने पर मजबूर कर देगा, और उन्हें तभी बाहर आने देगा जब ऐसा करना सुरक्षित होगा, और फिर से अभयारण्य का निर्माण करेगा?

* * *

बारह सदस्यों की परिषद का विचार रोसिक्रुशियन से लेकर व्हाइट ब्रदरहुड तक, अधिकांश गुप्त सिद्धांतों में अंतर्निहित है, और यहां तक कि बारह प्रेरितों और गूढ़ ज्योतिषियों के बारह ग्रहों (जिनमें से हम वर्तमान में केवल नौ के बारे में जानते हैं) में भी इस संख्या को महत्वपूर्ण माना जाता है।

पक्षियों (हवाई जहाजों) की भविष्यवाणी, जिन्हें वह बाज (युद्धप्रिय) कहता है और जो एक बुरे संबंध का प्रतिनिधित्व करते हैं, मुझे लगता है कि इसके लिए किसी स्पष्टीकरण की आवश्यकता नहीं है, और इसके बाद होने वाला विनाश जिसने मनुष्य को गुफाओं में रहने के लिए मजबूर किया, एच. जी. वेल्स की विचित्र रूप से भविष्यसूचक रचना 'द शेप ऑफ थिंग्स टू कम' की याद दिलाता है।

लेकिन एर्फाइन नाम के पक्षी का क्या अर्थ था, या शायद इरफाइन, या इसी तरह की कोई और वर्तनी, क्योंकि मैंने केवल यह शब्द सुना था और इसे लिखा हुआ नहीं देखा था?

जब मैंने फरवरी 1968 में सेंट लुइस में उनके मित्र डॉ. सॉसेल के कार्यालय में पॉल जॉनस्टोन का सामना किया, तो मैंने उनसे कैमलॉट सामग्री के बारे में पूछताछ की।

उन्होंने बात शुरू करते हुए कहा, "मुझे लगता है कि सिबिल ने वहां कई दौरों का जिक्र किया है। 1200 के दशक में इंग्लैंड में टेम्प्लर्स का दबदबा था, लेकिन यह आर्थर के सात सौ साल बाद की बात है।"

"क्या आर्थर ने पहाड़ी की चोटी पर एक अभयारण्य बनाया था?"

“मेरी जानकारी के अनुसार नहीं। उसने एक किला बनवाया और पहाड़ी की चोटी पर एक घर में रहने लगा। लगभग 200 ईसा पूर्व कुछ आक्रमणकारी सेल्टिक जनजातियों ने वहाँ पहाड़ी पर एक किला बनाया था। फिर रोमन आए और इन लोगों को भगा दिया। पहाड़ी काफी समय तक लगभग वीरान रही। फिर काडो ने वहाँ अपना निवास स्थान पुनः स्थापित किया। काडो आर्थर का रिश्तेदार था, और लगभग 510 ईस्वी में, बैडन हिल की विजयी लड़ाई के बाद, उसने आर्थर को अपने राज्य में भागीदार बनने के लिए आमंत्रित किया, जिसे आर्थर ने स्वीकार कर लिया।”

“क्या आपके पास कोई और टिप्पणी है?”

"नहीं, सिवाय इसके कि सिबिल लीक को कुछ असली चीज़ मिल रही थी।"

“इस प्रकार, असली कैमलॉट अब टिंटेजेल, वेल्स या स्कॉटिश सीमा पर नहीं खोजा जा सकता: बल्कि इलचेस्टर के पास कैडबरी की हवादार पहाड़ी की चोटी पर ही मिलेगा। समरसेट और डेवोन में कई अन्य कैडबरी हैं, लेकिन वह जो कभी राजा आर्थर का था, वह अधिकांश मानचित्रों पर कैडबरी कैसल के रूप में चिह्नित स्थान पर स्थित है। यदि आपके पास एक

मानचित्र है, तो आप इसे आसानी से पहचान सकते हैं, और यदि आपके पास मानचित्र नहीं भी है, तो सिबिल लीक को अपने साथ रखें!"

लेकिन मेरे विचार से सिबिल ने कैमलॉट की वास्तविकता और कैडबरी में आर्थर की उपस्थिति को केवल मनोमापन के माध्यम से स्थापित करने से कहीं अधिक किया था। इस स्थान पर छठी शताब्दी के आर्थर और बारहवीं शताब्दी की ग्रेल परंपरा का रहस्यमय दोहरा प्रभाव मुझे एक ऐसी दिशा की ओर इशारा करता प्रतीत हुआ जिस पर किसी अन्य लेखक ने कभी कदम नहीं रखा। क्या यह संभव है कि ईसाई वीरता काल का रोमांटिक, लगभग काल्पनिक आर्थर, प्राचीन कथाओं के निरंतर पुनर्लेखन और विकृति का मात्र परिणाम न हो? क्या आर्टोरियस को ग्रेल की कहानी से जोड़ने में कोई सच्चाई थी?

मेरी मानसिक शक्ति से जुड़ी मित्र सिबिल लीक के अनुसार, वह पवित्र भूमि जहाँ आर्थर ने ब्रिटेन को उस समय आक्रमण कर रहे बर्बरों से बचाने का प्रयास किया था, बाद में नाइट्स टेम्प्लर्स द्वारा एक अन्य अभयारण्य में परिवर्तित कर दी गई थी। हम जानते हैं कि ग्रेल की कथा उसी काल में प्रचलित हुई, जब ग्लास्टनबरी के भिक्षुओं ने इसका प्रचार करना शुरू किया।

दुनिया के इस हिस्से का बहुत बड़ा भाग अभी भी ज़मीन के नीचे दबा हुआ है, पुरातत्वविदों के फावड़े की प्रतीक्षा कर रहा है। शायद निकट भविष्य में, और अधिक खुदाई से उन ठोस सबूतों का पता चलेगा जो अभी मुख्य रूप से जानकारी और अनुमान पर आधारित हैं, न कि केवल कल्पना या मनगढ़ंत बातें।

आर्थर के नेतृत्व में प्रारंभिक ईसाई धर्म को देखते हुए, टेम्प्लर्स ने संभवतः एक ऐसा उदाहरण चुना होगा जिसका अनुसरण करते हुए उन्होंने आर्थर के समय की तरह ही उथल-पुथल भरे दौर में अपना एक पवित्र स्थान स्थापित करने का प्रयास किया। समय के साथ, ये दोनों संघर्ष आपस में इस कदर जुड़ गए होंगे कि उनमें अंतर करना असंभव हो गया होगा। तेरहवीं और चौदहवीं शताब्दी के लेखकों ने सुनी-सुनाई बातों को बिना सोचे-समझे ही अपने शब्दों में और भी विस्तार दे दिया।

इस उलझी हुई कहानी को सुलझाना आसान काम नहीं है, लेकिन सिबिल लीक जैसी प्रतिभाशाली मनोवैज्ञानिक की बदौलत हम कम से कम एक बिल्कुल नए और स्वतंत्र

दृष्टिकोण का भरोसा कर सकते हैं। इसमें कोई शक नहीं कि श्रीमती लीक ने कैडबरी में बीते समय की घटनाओं से जानकारी ली थी, न कि मेरे विचारों से, क्योंकि हमारी यात्रा के दौरान मुझे उनके द्वारा प्राप्त अधिकांश जानकारी अज्ञात थी।

इस शानदार फिल्म के निर्माताओं को शायद इस बात से कोई खास फर्क नहीं पड़ता कि असली कैमलॉट उनकी फिल्म में दिखाए गए कैमलॉट से कहीं कम भव्य दिखता है; खैर, आर्थर को तो यही पसंद आता। मुझे लगभग पूरा यकीन है।

*20

उसका नाम मुसीबत था: नेल ग्विन का गुप्त साहसिक कार्य

ज़रा कल्पना कीजिए: पूरा इंग्लैंड खुशी मना रहा है, लंबा और खूनी गृहयुद्ध आखिरकार समाप्त हो गया है। हज़ारों मृत घुड़सवार और उनके जैसे ही हज़ारों सैनिक फिर कभी उजाड़ नहीं होंगे, जले हुए घरों, गिरजाघरों और जागीरों के धुएँ से भरे खंडहर आखिरकार शांत हो गए हैं, और इंग्लैंड फिर से विश्व समाज का हिस्सा बन गया है। प्यूरिटन मूर्खता का अंत हो चुका है: राजा चार्ल्स द्वितीय अपने पिता के सिंहासन पर विराजमान हो गए हैं, और व्हाइटहॉल पैलेस एक बार फिर मधुर बातचीत और संगीत से गूंज रहा है।

वर्ष 1660 है। किसी को यह जानकर आश्चर्य नहीं होगा कि मात्र ग्यारह वर्ष पूर्व, राजा के पिता को ओलिवर क्रॉमवेल की संसदीय सरकार द्वारा फाँसी दे दी गई थी। पुत्र अब बदला नहीं लेना चाहता। बहुत हो चुका है। लेकिन पुनर्स्थापना का अर्थ पुराने तौर-तरीकों की ओर लौटना भी नहीं है। भ्रष्ट दरबार की बुराइयाँ दोहराई नहीं जानी चाहिए, अन्यथा एक और क्रॉमवेल सत्ता में आ जाएगा। चार्ल्स द्वितीय एक युवा है, जो दृढ़ निश्चयी और कूटनीति में कुशल है। उसे अपना राज्याभिषेक पसंद है, और वह सोचता है कि संयम और धैर्य से स्टुअर्ट वंश आने वाली कई शताब्दियों तक अंग्रेजी सिंहासन पर सुरक्षित रहेगा। यद्यपि प्यूरिटन अब देश का शासन नहीं चला रहे हैं, फिर भी उनका अस्तित्व पूरी तरह समाप्त नहीं हुआ है। राजा उनकी नैतिक भावनाओं को ठेस नहीं पहुँचाना चाहता। वह अपनी मौज-मस्ती तो करेगा ही, लेकिन उनके सामने इसका प्रदर्शन क्यों करे?

पुनर्स्थापना के साथ ही उच्च वर्गों ने राहत की सांस ली कि सब कुछ फिर से ठीक हो गया है और वे मौज-मस्ती कर सकते हैं, लेकिन जल्द ही स्थिति विपरीत दिशा में बदलने लगी: नैतिक पतन, अतिवाद और संशयवाद पुनर्स्थापना की भावना के प्रतीक बन गए। हालाँकि, चार्ल्स द्वितीय इसमें शामिल नहीं होना चाहते थे। अभिजात वर्ग चाहे जो भी करे, वे जनता के राजा की भूमिका निभाते रहेंगे, चुपचाप, लोगों की नजरों से दूर रहकर अपनी मनमर्जी करेंगे।

युवा राजा के जीवन के सबसे सुखद दृश्यों में से एक नेल ग्विन नाम की एक अभिनेत्री थी। वह और उसकी माँ गाँव से लंदन आई थीं, राजा से मिलने में कामयाब रहीं और राजा की नज़रों में बस गईं। वह गोरी त्वचा वाली, लाल बालों वाली, चंचल और व्यक्तित्व से भरपूर महिला थीं, और ज़ाहिर है कि उनमें वो आकर्षण था जो राजा को पसंद आया। राजाओं की हमेशा रखैलें होती हैं, और प्यूरिटन भी इससे अलग की उम्मीद नहीं करते थे। लेकिन चार्ल्स द्वितीय अपने दोस्तों और दरबारियों को लेकर भी चिंतित थे: वह उस लड़की को अपने लिए चाहते थे, वह जानते थे कि वह खुद आकर्षक नहीं थे, और भले ही वह राजा थे, नेल जैसी महिला के लिए शायद इतना ही काफी होता।

सबसे आसान उपाय यही था कि एक-दो दिन के लिए उसे चुपके से व्हाइटहॉल के पिछले दरवाज़ों से अंदर-बाहर न किया जाए, ताकि रानी से आमना-सामना न हो और बर्फीली निगाहों का सामना न करना पड़े। थोड़ी सी निजता बहुत काम आती, और चार्ल्स के मन में यही बात थी। नेल उसकी इकलौती प्रेमिका तो नहीं थी—पर वह इकलौती थी जिससे वह प्यार करता था। जब वह उस लड़की की नीली आँखों में देखता या उसके ब्रिटिश लाल बालों में हाथ फेरता, तो उसे एक झकझोर देने वाला एहसास होता और उसे शांति मिलती। जैसे-जैसे उसके शासनकाल के वर्ष बीतते गए, शांति उसके लिए अनमोल होती गई। धार्मिक समस्या अभी पूरी तरह से हल नहीं हुई थी; यहाँ तक कि स्टुअर्ट वंश भी प्रोटेस्टेंट और कैथोलिकों में बँटा हुआ था। स्पेनवासी परेशानी पैदा कर रहे थे, और "नास्तिक" तुर्कों के साथ लुई XIV का गठबंधन अच्छा पड़ोसी साबित नहीं हो रहा था। हाँ, चार्ली को देश में एक ऐसी जगह चाहिए थी जहाँ व्हाइटहॉल का दबाव न हो।

* * *

उनकी नज़र सेंट एल्बंस के पास स्थित एक जर्जर पुराने हवेलीनुमा घर पर पड़ी, जो आज की तेज़ सड़क से लंदन से लगभग डेढ़ घंटे की दूरी पर है। यह हवेली हर्फोर्डशायर के विशाल भूभाग पर स्थित एक पुराने रोमन किले के निकट है। पास ही रोमन साम्राज्य के मज़बूत शहर वेरुलैमियम का स्थान था, और सैक्सन काल से ही यह एक किलेबंद हवेलीनुमा घर बना हुआ था। यह कभी अर्ल ऑफ वारविक, जिन्हें "किंग मेकर" के नाम से जाना जाता था, की संपत्ति थी, और 1471 में, एक पूर्व गृहयुद्ध काल, गुलाबों के युद्ध के दौरान, यह हवेली बार्नेट की लड़ाई के केंद्र में थी। आज भी, मालिक खाई या मैदान में पंद्रहवीं शताब्दी की जंग लगी तलवारें और सैनिकों के अवशेष पाते हैं।

हालांकि, सोलहवीं शताब्दी के मध्य तक, सैलिसबरी हॉल के नाम से जाना जाने वाला यह जागीर घर धीरे-धीरे जीर्ण-शीर्ण अवस्था में पहुँच गया था, जिसका आंशिक कारण जीर्णता और आंशिक कारण गृहयुद्ध था, जो दो शताब्दियों बाद हुए गृहयुद्ध से कम क्रूर नहीं था, जिसके परिणामस्वरूप चार्ल्स द्वितीय सिंहासन पर आसीन हुए।

उस समय जॉन कट नाम के एक जमींदार ने यह संपत्ति खरीदी थी, और उन्हें यह इतनी पसंद आई कि उन्होंने हवेली का जीर्णोद्धार करने का फैसला किया। उन्होंने पुनर्निर्माण का सारा ध्यान मुख्य रूप से केंद्रीय हॉल पर केंद्रित किया और सोलहवीं शताब्दी के उस समय के हिसाब से उपलब्ध सारी संपत्ति उस पर खर्च कर दी। बाद में इमारत के पंख खंडहर में तब्दील हो गए और अब पूरी तरह से गायब हो चुके हैं। केवल एक पुरानी प्राचीर, संपत्ति के चारों ओर बनी खाई, या कभी-कभार कोई गलियारा जो अचानक उस दीवार पर समाप्त हो जाता है जहाँ कभी हवेली का एक और पंख हुआ करता था, ही इसके शुरुआती दौर की याद दिलाते हैं।

एक दिन चार्ल्स और नेल उस जगह से गुज़र रहे थे और दोनों को वह जगह देखते ही मोहित हो गई। चार्ल्स ने चुपके से पता किया कि क्या वह घर बिक रहा है, और संयोग से वह बिक रहा था। इसका कारण सिर्फ़ राजा होना ही नहीं था, बल्कि आर्थिक कारण भी था: हाल के राजनीतिक घटनाक्रमों के कारण घर के मालिकों को भारी नुकसान हुआ था और वे घर बेचने के लिए तैयार थे। घर एक बार फिर लगभग खंडहर हो चुका था, लेकिन चार्ल्स ने उसे अपने समय की शैली में पुनर्स्थापित करवाया। यह एक महंगा काम था, और एक राजा के लिए भी

यह एक समस्या थी। वह अपनी प्रेमिका के लिए एक आलीशान घर बनवाने के लिए संसद से धन नहीं मांग सकते थे। हाल ही में हुए युद्ध के कारण उनका निजी खजाना अभी भी खाली था। इसके अलावा कोई चारा नहीं था, और चार्ल्स द्वितीय ने ज़रा भी संकोच नहीं किया: उन्होंने गुप्त स्रोतों से धन उधार लिया और जल्द ही अपनी प्रेमिका को सैलिसबरी हॉल में ठहरा दिया।

नेल ग्विन का पुराना घर बाद में रॉयल सैडलरी बन गया। आज यह एक नाइट क्लब है।

समय बीतने के साथ-साथ राजा की स्थिति मजबूत होती गई और इंग्लैंड की आर्थिक शक्ति फिर से लौट आई। साथ ही, पुनर्स्थापना के बाद के शुरुआती कुछ वर्षों में जिस तरह की अत्यधिक सावधानी बरती जाती थी, उसकी अब कोई आवश्यकता नहीं रह गई थी। राजा नेल ग्विन को ग्रामीण इलाके में दूर दफनाना नहीं चाहते थे, खासकर इसलिए कि उन्हें साल के ठंडे महीनों में वहां जाना पसंद नहीं था। इसलिए उन्होंने डीनरी के पास, लंदन के सोहो नामक उपनगर में, रॉयल सैडलरी के ऊपर बने एक घर में उनके लिए एक निजी अपार्टमेंट की व्यवस्था की।

सत्रहवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में, सोहो व्हाइटहॉल से काफी दूर, ऊपरी इलाके में स्थित था, और इसके जंगलों में आने-जाने वाले युवा अभी भी चार पैरों वाले जानवर हुआ करते थे।

आज, ज़ाहिर है, सोहो लंदन के वेस्ट एंड का मौज-मस्ती से भरा नाइटक्लब इलाका है। 1632 में बनी पुरानी इमारत आज भी खड़ी है, लेकिन तब से इसमें कई बदलाव हो चुके हैं। इसके बगल में रॉयल्टी थिएटर था, जहाँ नेल ग्विन कभी महत्वाकांक्षी युवा अभिनेत्रियों में से एक थीं —लेकिन ज़्यादा समय तक नहीं। अस्तबल के बगल में थिएटर होना अजीब लगता है, लेकिन सोहो एक शिकारगाह वाला इलाका था और उस समय सभी विभिन्न खेल आयोजनों और सुविधाओं का एक साथ होना तर्कसंगत लगता था। इसके अलावा, नेल को कोई आपत्ति नहीं थी; जब वह किसी और काम में व्यस्त नहीं होती थी, तो उसे रॉयल्टी थिएटर में झाँकना अच्छा लगता था। दुर्भाग्य से, थिएटर अब मौजूद नहीं है; द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान एक नाज़ी बम ने इसे नष्ट कर दिया था। लेकिन सैडलरी को कोई नुकसान नहीं हुआ और यह अच्छी बात है, क्योंकि आज इसमें एक बहुत ही दिलचस्प एम्पोरियम है। गार्गोयल नाम का नाइटक्लब चार मंजिला इमारत के एक हिस्से में स्थित था, शेष भाग में अब नेल ग्विन थिएटर, विभिन्न कार्यालय और ड्रेसिंग रूम हैं। 1920 के दशक में, नोएल कॉवर्ड इस क्लब के संस्थापक सदस्यों में से एक थे, और हेनरी मैटिस ने इसके एक कमरे को डिज़ाइन किया था। उस समय यह बेहद प्रतिष्ठित और निजी जगह थी, और 1920 और 1930 के दशक के कई प्रमुख कलाकार देर रात की पार्टियों के लिए इसे अपना अड्डा बनाते थे। जैसे-जैसे सोहो एक नाइटक्लब क्षेत्र बनता गया, गार्गोयल इससे अछूता नहीं रह सका: यह लंदन का सबसे प्रसिद्ध स्ट्रिप-टीज़ क्लब बन गया। गार्गोयल में होने वाले कार्यक्रम कभी भी अश्लील नहीं होते। यह आपकी कुंवारी चाची को ले जाने की जगह नहीं है, लेकिन आप अपनी पत्नी को ले जा सकते हैं। पिछली बार जब मैं जिमी जैकब्स और उनके क्लब गया था, तो मैं ऊपरी मंजिल के क्लब के बार के पीछे अचानक प्रकट होने वाली पूरी तरह से नग्न महिला बारटेंडरों को देखकर थोड़ा चौंक गया था; यह सोचना थोड़ा अटपटा लगता है कि ये लड़कियाँ काम पर जाने के लिए कपड़े पहनती हैं, फिर काम के लिए उतारती हैं और घर जाने के लिए फिर से कपड़े पहनती हैं। लेकिन मुझे लगता है कि नेल ग्विन इसे समझ जातीं। आखिर, एक लड़की को अपना पेट पालना ही तो है। अंदर की सजावट भड़कीली है और 1920 के दशक की शैली में है, क्योंकि जिमी जैकब्स ने इसमें कोई बदलाव नहीं किया है।

इस "टाउन हाउस" में नेल ग्विन कई वर्षों तक रहीं। लेकिन वास्तव में उनकी मृत्यु मॉल में स्थित एक अन्य घर में स्ट्रोक से हुई, जो राजा ने उन्हें उन दिनों दिया था जब वे एक-दूसरे के बहुत करीब थे। बर्नेट की पुस्तक 'ओन टाइम', खंड 1, पृष्ठ 369 के अनुसार, राजा की प्रेमिका न रहने के बाद भी कई वर्षों तक नेल ग्विन राजा की कृपा का पात्र बनी रहीं, और यह सच है कि राजा ने अपनी मृत्युशय्या पर उनके लिए चिंता व्यक्त करते हुए कहा था: "बेचारी नेली को भूखा न मरने देना," उन्होंने अपने भाई और अंग्रेजी सिंहासन के उत्तराधिकारी जेम्स द्वितीय से विनती की थी।

यह पश्चाताप की अभिव्यक्ति होने के साथ-साथ चिंता का संकेत भी हो सकता था। जब उनके शाही संरक्षक का निधन हुआ, तो नेल निश्चित रूप से भारी कर्ज में डूब गई थीं, और अन्य चीजों के अलावा उन्हें अपनी निजी चांदी भी बेचनी पड़ी। उनके अंतिम वर्षों में घटी इन घटनाओं के लिए 'डिक्शनरी ऑफ नेशनल बायोग्राफीज' हमारा संदर्भ स्रोत है। वह चार्ल्स द्वितीय के बाद केवल दो वर्ष ही जीवित रहीं और 13 नवंबर, 1687 को 37 वर्ष की आयु में इस दुनिया को अलविदा कह गईं, जो उस समय के हिसाब से मध्यम आयु मानी जाती थी, खासकर एक महिला के लिए!

लेकिन ऐसे भी दौर आए जब नेल का अपने राजा से मतभेद रहा, ऐसे दौर भी आए जब उसने उसकी देखभाल करने से इनकार कर दिया। नेल बेशक शर्मीली और संकोची नहीं थी: एक बार जब कुछ पर्यटक उसके घर को घूर रहे थे, तो उसने खिड़की से अपना सिर बाहर निकाला और कहा, "मैं एक प्रोटेस्टेंट वेश्या हूँ!" हालाँकि उसका पेशा अभिनेत्री के रूप में दर्ज था, लेकिन उसने खुद को लेकर कभी कोई झिझक नहीं दिखाई।

उन कठिन वर्षों में उसने दरबार से पैसों की गुहार लगाई, और भावुक राजा ने उसे कभी-कभार पैसे भेज दिए। उनके रिश्ते में उतार-चढ़ाव आते रहे, और ऐसे भी दौर आए जब नेल आर्थिक संकट में थी और राजा ने उसकी मदद नहीं की। उसने जो भी मदद की, शायद वह उनकी संतान के कारण ही थी। सबसे बड़ा बच्चा बाद में सेंट एल्बंस का ड्यूक बना, यह उपाधि उसे चार्ल्स की उन रोमांटिक यादों से मिली जो सेंट एल्बंस के पास सैलिसबरी हॉल में नेल के साथ बिताए शुरुआती दिनों (और रातों) से जुड़ी थीं। इस बच्चे की संतानें आज भी फल-फूल रही हैं, और वर्तमान ड्यूक इस उपाधि को धारण करने वाले तेरहवें व्यक्ति हैं। धीरे-

धीरे राजा की रुचि भटकने लगी, लेकिन नेल के प्रति उसका अधिकार भाव नहीं बदला। हालांकि वह दूसरों की ओर प्रशंसा भरी नजर डालने का आनंद लेता था, लेकिन वह किसी और को अपनी नेल के प्रति ऐसा करते देखना पसंद नहीं करता था।

प्रचलित कहानियों के अनुसार नेल की मृत्यु गरीबी और अकेलेपन में हुई थी, लेकिन सच्चाई यह है कि यद्यपि उनके जीवन के कुछ वर्ष वास्तव में गरीब और दुखी रहे, फिर भी अंत में उन्हें कुछ हद तक सुकून मिला, संभवतः उन निजी सामानों के कारण जो उन्होंने बचाकर रखे थे और जिन्हें बाद में उन्होंने बेच दिया। मॉल स्थित घर अभी भी उनका ही था, और वहीं उनका निधन हुआ। अंतिम विदाई के रूप में, नेल ने घर चर्च को दान कर दिया और उन्हें सेंट मार्टिन इन द फील्ड्स के तहखाने में विधिवत दफनाया गया।

उसके जीवन के अंतिम वर्षों के बारे में हमें बहुत कम जानकारी है, सिवाय उसके अस्तित्व और राजा के साथ उसके निरंतर संबंध के बुनियादी तथ्यों के। लेकिन यह जानकारी मानवीय भावनाओं के सार के बिना अधूरी है। ऐतिहासिक दृष्टि से यह कहानी मुझे हमेशा से ही आकर्षित करती रही है, लेकिन 1964 में ही मुझे इसमें एक मानसिक घटना के रूप में रुचि पैदा हुई।

अंग्रेजी अभिनेत्री सबरीना, जिनके साथ मैं ऐसे मामलों में रुचि साझा करती थी, ने लंदन पहुंचने से कुछ समय पहले घटी एक घटना की ओर मेरा ध्यान आकर्षित किया।

शो में शामिल लड़कियों में से एक गलती से अंदर बंद हो गई। रात काफी हो चुकी थी और वह इमारत में अकेली बची थी। कम से कम उसे ऐसा ही लग रहा था। जब वह बाहर निकलने का रास्ता ढूंढ रही थी, तभी उसे कदमों की आहट और कुछ आवाज़ें सुनाई देने लगीं। उत्तेजित लहजे में बोलती इंसानी आवाज़ों ने उसका डर और बढ़ा दिया, क्योंकि उसे कोई दिखाई नहीं दे रहा था। कोई प्रशिक्षित मानसिक शोधकर्ता न होने के कारण, उसने आम लोगों की तरह ही प्रतिक्रिया दी: वह डर से कांप उठी और मदद के लिए चिल्लाई। इमारत की दीवारें इतनी मजबूत थीं कि कोई उसकी आवाज़ नहीं सुन पाया। इसके अलावा, वह सबसे ऊपरी मंजिल पर बंद थी और नीचे सोहो की सड़कों के शोर ने उसकी मदद की गुहार को दबा दिया। जिन लोगों ने उसकी आवाज़ सुनी, उन्होंने उसे शराबी समझ लिया, क्योंकि रात के उस समय सोहो

में ऐसे लोगों की भरमार होती है। खैर, वह और भी घबरा गई और खिड़की से कूदने की कोशिश की। तभी फायर ब्रिगेड पहुंची और उसे बाहर निकाला।

जिमी जैकब्स उसकी कहानी से इतने प्रभावित हुए कि उन्होंने साइकिक न्यूज़ के संपादक से एक जांच कराने का अनुरोध किया, जिससे दो सुराग मिले: पहला यह कि रॉयल स्टेबल्स कभी उस इमारत में स्थित थे, और दूसरा यह कि जिमी जैकब्स स्वयं बहुत ही मानसिक शक्तियों से युक्त थे। पहले तथ्य की पुष्टि वे वस्तुनिष्ठ रूप से कर पाए, और दूसरा तथ्य भी उनके लिए कोई आश्चर्य की बात नहीं थी। जब से उन्होंने क्लब का कार्यभार संभाला था, तब से उन्हें एक मानसिक उपस्थिति का अहसास था।

“जब मैंने 1956 में यह जगह खरीदी थी, तो मैंने भूत होने की कल्पना भी नहीं की थी,” जिमी जैकब्स ने मुझे समझाया, खासकर इसलिए क्योंकि ईएसपी (आध्यात्मिक संवेदनशीलता) का विषय उन्हें हमेशा से आकर्षित करता रहा था और मानसिक संकेतों से भरा एक बरलेस्क शो चलाना उनके मन में नहीं था। लेकिन वह पुरानी इमारत में अपने कर्मचारियों के साथ हो रहे अजीब अनुभवों को नज़रअंदाज़ नहीं कर सकते थे, भले ही उन्होंने अपने कर्मचारियों को स्पष्ट निर्देश दिए थे कि वे किसी भी नए डांसर को इमारत के मानसिक संकेतों के बारे में कुछ भी न बताएं। उन्होंने तय किया था कि अगर उन्हें इनके बारे में पता भी चलेगा, तो वे अपने अनुभवों से ही जानेंगे, न कि गपशप या सुनी-सुनाई बातों से।

सन् 1962 की एक रात, जिमी सबसे ऊपरी मंजिल पर रिसेप्शन रूम में खड़ा था। सुबह के 3 बज रहे थे, क्लब बंद हो चुका था और वह इमारत में अकेला ही था। वह सोने ही वाला था कि तभी उसने लिफ्ट को अपनी मंजिल पर आते सुना। उसका पहला ख्याल यही आया कि शायद कोई कर्मचारी या ग्राहक कुछ भूल गया होगा और उसे लेने वापस आ रहा होगा। लिफ्ट की आवाज़ बंद हुई, लिफ्ट रुक गई और जिमी ने उत्सुकता से ऊपर देखा कि कौन है। लेकिन दरवाजे नहीं खुले। लिफ्ट से कोई बाहर नहीं आया। उसकी जिज्ञासा और बढ़ गई, जिमी आगे बढ़ा और उसने छोटी लिफ्ट के बाहरी लोहे के गेट खोले, फिर अंदरूनी लकड़ी के गेट खोले, जिसमें एक बार में सिर्फ तीन लोग ही जा सकते थे। लिफ्ट खाली थी।

जिमी ने गहरी सांस ली। वह इस लिफ्ट के काम करने के तरीके से भली-भांति परिचित था। लिफ्ट को ऊपर लाने के लिए, या तो किसी को इसके अंदर जाकर बटन दबाना पड़ता था, या

फिर किसी को वहीं होना पड़ता था जहाँ वह था, ताकि लिफ्ट को बुलाया जा सके। उसने लिफ्ट को नहीं बुलाया था। लिफ्ट के अंदर कोई नहीं था। लिफ्ट ऊपर कैसे आ गई?

घटना के कई दिनों बाद तक उन्होंने इस पर प्रयोग करके कोई दूसरा तरीका खोजने की कोशिश की। लेकिन कोई दूसरा तरीका था ही नहीं, और तंत्र पूरी तरह से सही ढंग से काम कर रहा था।

जिमी अविश्वास से लिफ्ट की ओर देखता रहा। तभी अचानक, उसे कमरे के दूसरी ओर, उससे लगभग पाँच गज की दूरी पर एक धुंधली, धूसर आकृति दिखाई दी। उस आकृति ने ऊँची कमर वाली पुराने ज़माने की पोशाक पहनी हुई थी; उसने एक बड़ी टोपी पहन रखी थी और उसका चेहरा उससे दूसरी ओर मुड़ा हुआ था—मानो वह पहचानी न जाना चाहती हो। जिमी ने बाद में इसे इस बात का संकेत समझा कि वह लड़की नेल ग्विन बनकर आई एक धोखेबाज़ थी और पहचानी नहीं जाना चाहती थी। उसका यह निष्कर्ष गलत था, यह मुझे बाद में पता चला।

कुछ पल के लिए जिमी उस धुंधली सी लड़की को घूरता रहा, जो आम इंसानों की तरह नहीं चल रही थी, बल्कि ज़मीन से थोड़ा ऊपर उसकी ओर सरकती हुई आ रही थी। जैसे-जैसे वह उसके करीब आती गई, जिमी उसकी टोपी की बारीकियों को पहचान पाया, जो फूलों वाले कपड़े से बनी थी। उसी समय, उसकी नाक में गार्डेनिया की तेज़ खुशबू भर गई। कई दिनों तक वह उस खुशबू को अपनी यादों से मिटा नहीं पाया।

वह आकृति उसके पास से गुजरी और फिर लिफ्ट के शाफ्ट में गायब हो गई! जिमी उस समय उस आकृति से केवल एक गज की दूरी पर था, इसलिए यह स्पष्ट था कि वह कोई साधारण इंसान नहीं थी जो लिफ्ट से नीचे जा रही थी। लिफ्ट हिली नहीं, लेकिन वह आकृति गायब हो चुकी थी।

अगली सुबह जब जिमी अपने क्लब लौटा, तो उसने सभी मानसिक घटनाओं की जानकारी को व्यवस्थित करना शुरू किया, ताकि शायद कोई—भले ही वह खुद न हो—उनका मतलब समझ सके। स्पष्ट था कि कोई अलौकिक शक्ति किसी अधूरे काम के लिए वहाँ मौजूद थी। लेकिन कौन, और क्यों?

सबसे दिलचस्प बात यह थी कि मानसिक प्रकृति की अधिकांश गड़बड़ियाँ 1962 और 1964 के बीच हुईं, यानी नेल ग्विन के स्वर्णिम युग के ठीक दो सौ साल बाद। ऐसा लग रहा था मानो किसी वर्षगांठ का जश्न मनाया जा रहा हो!

चेरी फीनिक्स नाम की एक विदेशी नर्तकी, जो एक सीधी-सादी देहाती महिला थी, शोहरत और दौलत कमाने के लिए लंदन आई थी, लेकिन अंत में गार्गाँयल में काम करने लगी, जहाँ उसे रात में दो बार, बहुत अश्लील प्रदर्शन न करने के बदले में ठीक-ठाक तनख्वाह मिल रही थी। उसे देखने आने वाले पुरुष (और कुछ महिलाएं भी) उन्हीं कस्बों और गांवों से थे जहाँ से वह आई थी, इसलिए उसे वहाँ सहज महसूस करना चाहिए था। लेकिन ऐसा न होने का एक कारण यह भी था कि वहाँ उसके असली ग्राहकों के अलावा कुछ और भी मौजूद था।

अपने शुरुआती महीनों में वह अपने प्रदर्शन की बारीकियों को सीखने और जटिल संकेतों व बिजली के उपकरणों से परिचित होने में इतनी व्यस्त थी कि उसके साधारण प्रदर्शन में गहराई का संचार होता था, कि उसके मन में किसी भी असामान्य बात का ख्याल ही नहीं आया। लेकिन जैसे-जैसे वह सहज होती गई और अपना काम बेहतर ढंग से समझने लगी, उसे एहसास होने लगा कि ऊपर स्थित अपने ड्रेसिंग रूम में वह अक्सर अकेली नहीं होती। एक रात वह पंद्रह मिनट पहले आ गई थी, और छत तक जाने वाली सीढ़ियाँ अभी भी पूरी तरह अंधेरी थीं। लेकिन उसे रास्ता पता था, इसलिए वह लड़खड़ाने से बचने के लिए अपने हाथों का सहारा लेते हुए घुमावदार पुरानी सीढ़ियों पर चढ़ गई। उसका ड्रेसिंग रूम सीढ़ियों के ऊपर स्थित एक छोटा सा कमरा था, जो इमारत की सपाट छत की ओर खुलने वाले एक भारी, कुंडी लगे दरवाजे के पास था। उसके कमरे के नीचे, मंच के पीछे, और भी ड्रेसिंग रूम थे, लेकिन उसे यही जगह मिली थी और उसे पहले कभी इससे कोई आपत्ति नहीं थी। सबसे ऊपरी मंजिल पर थोड़ा अकेलापन था, और अगर उसे कुछ हो भी जाता, तो शायद ही कोई उसकी चीखें सुन पाता, लेकिन वह एक आत्मनिर्भर युवती थी और आसानी से भावुक नहीं हो जाती थी।

उस शाम, जैसे ही वह सीढ़ियों के ऊपर पहुँची, उसे एक अजीब सी सरसराहट सुनाई दी। अँधेरे में अपने ड्रेसिंग रूम में प्रवेश करते हुए, वह कमरे के दाहिनी ओर स्थित परिचित ड्रेसिंग टेबल की ओर बढ़ी। अब आवाज़ और भी तेज़ हो गई थी। उसे ऐसा लगा जैसे कोई

किताब के पन्ने पलट रहा हो, एक ऐसी आवाज़ जिसका कोई तर्कसंगत कारण नहीं था। इसके अलावा, उसे अचानक अपने चारों ओर एक चिपचिपी, ठंडी अनुभूति हुई। चूंकि शाम गर्म थी, इसलिए यह भी उसे आश्चर्यचकित कर गया। "मेरे पूरे शरीर में सिहरन दौड़ गई," लड़की ने अपने देहाती लहजे में मुझसे कहा।

अंधेरे में, उसे यकीन नहीं था कि ड्रेसिंग रूम में कोई और तो नहीं है। इसलिए उसने कमरे में उसके साथ रहने वाली दो अन्य लड़कियों, बारबरा और इसाबेल के नाम पुकारे। कोई जवाब नहीं आया। चेरी फीनिक्स लगभग पंद्रह मिनट तक बिना हिले-डुले वहीं खड़ी रही। आखिरकार, उसने किसी के सीढ़ियों से ऊपर आने की आवाज़ सुनी। कदम पास आते गए, लेकिन वह उसकी ड्रेसिंग रूममेट में से एक थी। इसके साथ ही जादू टूट गया और आवाज़ बंद हो गई। दूसरी लड़की ने लापरवाही से लाइट जला दी। तभी चेरी ने अपने अनुभव के बारे में बताया। उसे दूसरी लड़की से बहुत कम सहानुभूति मिली, क्योंकि उसने खुद भी कई बार ऐसी अजीब आवाज़ सुनी थी। पहली बार चेरी को पता चला कि "नेल" का भूत इन सभी गड़बड़ियों के लिए ज़िम्मेदार था, और उसे कहा गया कि वह इसके बारे में चिंता न करे।

इससे डरी हुई लड़की को ज़रा भी राहत नहीं मिली। अन्य रहस्यमयी घटनाओं ने उसकी चिंताएँ और बढ़ा दीं। छत का दरवाज़ा हमेशा एक भारी लोहे की कुंडी से बंद रहता था। उसे बाहर से खोलना नामुमकिन था, और सोहो में भी लड़कियाँ इस लिहाज़ से सुरक्षित थीं। लेकिन अगर अंदर से कोई व्यक्ति उसे खोलना चाहे, तो वह उसे खोल सकता था, बशर्ते वह शारीरिक रूप से बहुत ताकतवर हो। कुंडी को शायद ही कभी खोला जाता था क्योंकि यह केवल आपातकालीन निकास था, और यह बहुत सख्त और हिलाने में मुश्किल थी। फिर भी, कई बार, जब लड़कियों को पता होता था कि ऊपर कोई और नहीं है, तो उन्होंने कुंडी खुली हुई और छत का दरवाज़ा खुला पाया था। दरअसल, जल्द ही यह स्पष्ट हो गया कि छत और वह दरवाज़ा ही उस रहस्यमय भूतिया घटना का केंद्र थे।

चेरी को आखिरी बार छत का दरवाजा 1964 में खुला मिला था, और 1965 में शो छोड़ने के बाद भी, यह ड्रेसिंग रूम में आने वाले नए लोगों की हैरानी के बीच अक्सर "अपने आप खुल जाता" रहा।

एक रात, जब चेरी जाने की तैयारी कर रही थी—लगभग उसी समय जब जिमी जैकब्स का सामना उस धूसर महिला से हुआ—उसे एक खड़खड़ाहट की आवाज़ सुनाई दी, मानो कोई पिंजरे से बाहर निकलना चाहता हो! उस समय उस इलाके में दमन और हिंसा का ऐसा माहौल था कि वह ड्रेसिंग रूम से निकलकर सीढ़ियों से नीचे उतरने में ज़रा भी देर नहीं कर सकी।

जब मैंने सितंबर 1966 में उस भूतिया सीढ़ी पर जाकर देखा, तो मैंने खुद उन भयानक आवाज़ों को साफ़-साफ़ सुना। वे दूर से आती हुई लग रही थीं, मानो किसी खोखली सुरंग से मेरे कानों तक पहुँच रही हों, लेकिन मुझे धातु पर धातु के टकराने की आवाज़ सुनाई दे रही थी... जैसे युद्ध में एक तलवार दूसरी तलवार से टकरा रही हो। क्या यह वही खड़खड़ाहट की आवाज़ थी जो चेरी फीनिक्स ने पहले सुनी थी? उस समय जब मैंने ये धातु की आवाज़ें सुनीं, मैं सीढ़ियों पर बिल्कुल अकेला था, अपने दो दोस्तों को जिमी जैकब्स के साथ थिएटर में छोड़कर। जब वे कुछ देर बाद बाहर सीढ़ियों पर मेरे पास आए, तो आवाज़ें बंद हो चुकी थीं, लेकिन पूरा इलाका सचमुच बर्फीला था।

चेरी फीनिक्स ने उस धूसर महिला को कभी उस तरह नहीं देखा था जिस तरह उसके बॉस ने देखा था। लेकिन ट्रेसी यॉर्क नाम की एक और लड़की, जो सबसे ऊपरी मंजिल से नीचे वाली मंजिल पर गार्गाँयल के रसोईघर में थी, जब उसने एक हल्के बैंगनी रंग की पोशाक में एक महिला की आकृति को देखकर भयभीत हो गई। वह चीखती हुई रसोई से बाहर भागी और कोरियोग्राफर टेरी ब्रेंट की बाहों में जा गिरी, जिन्होंने उसे शांत किया। ट्रेसी यॉर्क ने रुक-रुक कर अपने अनुभव के बारे में बताया और कहा कि वह उस अजीब आवाज के बारे में बात करना चाहती थी जो उसे लगातार सुनाई दे रही थी—एक आवाज जो उसका नाम पुकार रही थी! वह आवाज एक महिला की थी और मिस यॉर्क को लगा कि उसके किसी सहकर्मी ने उसे बुलाया है। उस समय वह आमतौर पर सबसे ऊपरी मंजिल के ड्रेसिंग रूम में होती थी और उसने सोचा कि आवाज उसे नीचे वाली मंजिल से बुला रही है। जब वह नीचे भागी, तो उसने पाया कि वहाँ भी कोई नहीं था। टेरी ब्रेंट को धूसर महिला वाली घटना अच्छी तरह याद थी। "ट्रेसी ने कहा कि आकृति धुंधली सी थी और उसने पुराने जमाने की पोशाक पहनी हुई थी। वह अचानक प्रकट हुई और वहाँ खड़ी हो गई।"

जब ब्रेंट ने गार्गॉयल में काम करना शुरू किया, तब वह अलौकिक चीज़ों में विश्वास नहीं करता था। कई लड़कियों की बढ़ती गवाही—आवाज़ें, प्रेत-दर्शन, धातु की खड़खड़ाहट, ठंडी जगहें—भी उसे प्रभावित नहीं कर पाई। वह इन सब बातों को ऊपरी मंज़िल के ड्रेसिंग रूम में आने वाले हर व्यक्ति द्वारा बताई और बढ़ाई जा रही पुरानी अफवाहों का नतीजा मानता था। लेकिन एक रात वह थिएटर से होते हुए काम पर आया। अभी सुबह का समय था, लेकिन उस शाम उसे कुछ शुरुआती काम करना था। अचानक उसने अपने सिर के ऊपर से एक महिला के हंसने की आवाज़ सुनी, जो ऊपरी मंज़िल के ड्रेसिंग रूम की तरफ से आ रही थी। उसने स्वाभाविक रूप से सोचा कि कोई लड़की भी जल्दी आ गई होगी। वह ऊपर गया और ड्रेसिंग रूम में इसाबेल एपलटन को अकेला पाया। वह हंसी उसकी नहीं थी, न ही आवाज़ उसकी जैसी लग रही थी। लड़की डर से पीली पड़ गई थी। उसने भी एक अदृश्य महिला की ज़ोरदार हंसी सुनी थी!

जब मैंने पहली बार गार्गोयल और सैलिसबरी हॉल की छानबीन की थी, तब मुझे आश्चर्य हुआ था कि क्या नेल ग्विन की बेचैन आत्मा इन दोनों घरों में से किसी एक में मौजूद हो सकती है। मेरे सिद्धांत के अनुसार, वह दोनों में एक साथ नहीं हो सकती थी, जब तक कि वह एक "स्वतंत्र आत्मा" न हो, न कि कोई परेशान, धरती से बंधी हुई प्रेत। क्या सैलिसबरी हॉल में, जो कभी नेल ग्विन का ग्रामीण विश्राम स्थल था, उसकी उपस्थिति का कोई प्रमाण मिला था?

कुछ साल पहले, सर विंस्टन चर्चिल के सौतेले पिता, कॉर्नवॉलिस-वेस्ट को सैलिसबरी हॉल में एक अनुभव हुआ। एक गार्ड अधिकारी, जिन्हें मानसिक घटनाओं में ज़रा भी दिलचस्पी नहीं थी, श्री कॉर्नवॉलिस-वेस्ट नीचे मुख्य हॉल में बैठे थे, तभी उन्हें नीली आँखों और लाल बालों वाली एक सुंदर लड़की सीढ़ियों से नीचे उनकी ओर आती हुई दिखाई दी। उसकी असाधारण सुंदरता से मोहित होकर, उन्होंने देखा कि उसने नीले शिफॉन के साथ हल्के क्रीम रंग की पोशाक पहनी हुई थी, और उन्हें रेशम की सरसराहट स्पष्ट रूप से सुनाई दी। उसी समय उन्हें इत्र की तेज़ खुशबू का एहसास हुआ, एक ऐसी असामान्य खुशबू जिसका कोई तार्किक स्पष्टीकरण नहीं था, जैसे कि फूल या किसी महिला की उपस्थिति। वह आकृति चिमनी के पास भारी ओक के दरवाजे तक पहुँची और उसमें से गायब हो गई। कॉर्नवॉलिस-वेस्ट अब तक उसके अलौकिक स्वरूप से अवगत हो चुके थे, और समझ गए कि यह एक भूत है।

हालाँकि, उनका पहला विचार यह था कि शायद उनकी बूढ़ी आया के साथ कुछ भयानक हुआ होगा, क्योंकि वह लड़की उन्हें उसकी याद दिला रही थी। उन्होंने तुरंत अपनी बहन को फोन किया और पूछा कि क्या वह महिला ठीक है। उन्हें यकीन हो गया कि वह वही थीं। तभी उन्हें एहसास हुआ कि उन्होंने नेल ग्विन का ही रूप देखा है, क्योंकि उस आया को हमेशा से ही उस मशहूर दरबारी महिला की हूबहू हमशक्ल माना जाता था। उन्होंने नेल ग्विन के कई समकालीन चित्रों को देखकर अपने संदेह को और पुख्ता कर लिया और पाया कि उन्होंने वाकई सैलिसबरी हॉल की पूर्व मालकिन को ही देखा था!

एक कोरस गायिका उस दरवाजे को दिखा रही थी जो रहस्यमय तरीके से बार-बार खुलता रहता था।

पिछले वर्षों में हॉल में रहने वाले अन्य लोग भी सुंदर नेल से मिल चुके थे। एक महिला, जिसकी कई बेटियाँ थीं, लगभग 1890 के आसपास सैलिसबरी हॉल में रहती थी। कई मौकों में से एक बार, उसकी मुलाकात एक खूबसूरत युवती से हुई, जिसकी उम्र शायद किशोरावस्था के अंत में थी, जिसके कंधों पर नीली शॉल थी और उसने पुराने ज़माने की विचित्र पोशाक पहनी हुई थी। महिला ने सोचा कि उसकी कोई बेटी मनोरंजन के लिए भेस बदलकर आई है, और वह

उस रहस्यमयी लड़की के पीछे सीढ़ियों से ऊपर चली गई। रात का समय था और घर में सन्नाटा था। जब नीली शॉल वाली लड़की सीढ़ियों के सबसे ऊपरी तल पर पहुँची, तो वह अचानक गायब हो गई!

अपने परिवार के सभी सदस्यों की जाँच करने पर, उसने पाया कि वे सभी अपने-अपने कमरों में सुरक्षित रूप से सो रहे थे। किसी के पास भी उस लड़की के कपड़ों जैसा कोई पहनावा नहीं था जिसे उसने लापता होते देखा था।

लेकिन ये घटनाएँ केवल सुंदर नेल की आत्मा तक ही सीमित नहीं रहीं। हॉल के वर्तमान मालिक श्री और श्रीमती वाल्टर गोल्डस्मिथ के युवा पुत्र क्रिस्टोफर ने एक ऐसा अनुभव बताया जिसे वह कभी नहीं भूल पाएंगे। एक रात जब वह अपने भाई रॉबिन के ऊपर वाले कमरे में था, केवल उस एक रात के लिए, उसे एक भयानक सपना आया, या शायद एक प्रकार का दर्शन: दो आदमी तलवारों से लड़ रहे थे—दो आदमी एक-दूसरे से जानलेवा लड़ाई कर रहे थे, और किसी न किसी तरह इस घर से जुड़े हुए थे।

अपने चरम पर नेल ग्विन

क्रिस्टोफर अकेला ऐसा व्यक्ति नहीं था जिसने उस कमरे में इस तरह की लड़ाई का अनुभव किया था। कुछ साल पहले एक लड़की ने भी शिकायत की थी कि जब भी वह उस कमरे का इस्तेमाल करती थी, जो उस समय अतिथि कक्ष था, तो उसकी नींद खराब हो जाती थी। दो आदमी दीवार से "अचानक" बाहर निकल आते और आमने-सामने की लड़ाई में उलझ जाते। हॉल में एक और प्रेत का अस्तित्व प्रमाणित है, जो क्रॉमवेल काल से जुड़ा है। यह एक ऐसे घुड़सवार का दुखी भूत है जो बाहर से ही गुंडों द्वारा हॉल में फँस गया था, और जिसके पास महत्वपूर्ण दस्तावेज़ और जानकारी थी, उसने पकड़े जाने और यातना सहने के बजाय आत्महत्या करना बेहतर समझा। संभवतः उन दो लड़ाकों का संबंध इसी कहानी से हो सकता है, लेकिन यह भी संभव है कि वे नेल की कहानी का हिस्सा हों—जैसा कि मुझे बहुत बाद में पता चला।

* * *

नेल ग्विन का रहस्य बना रहा: मुझे पता था कि उनकी मृत्यु लगभग भुला दी गई थी, फिर भी कई वर्षों तक वह राजा की प्रिय थीं। भले ही बढ़ती उम्र के साथ उनकी सुंदरता कम हो गई हो, राजा ने उन पर से अपना स्नेह तभी हटाया होगा जब कोई और कारण हो। क्या चार्ल्स द्वितीय और नेल के बीच उस गहरे प्रेम को तोड़ने वाली कोई घटना घटी थी? उनके अंतिम वर्षों के बारे में इतिहास अस्पष्ट है। उनकी हत्या नहीं हुई थी और न ही उन्होंने आत्महत्या की थी, इसलिए हम उनके घरों में उनकी निरंतर उपस्थिति को किसी हिंसात्मक मृत्यु का कारण नहीं मान सकते। नेल ग्विन दुनिया से और कौन सा रहस्य छिपा रही थीं?

* * *

सितंबर 1966 में, आखिरकार मैं दोबारा उन सुरागों का सहारा लेकर 69 डीन स्ट्रीट स्थित घर जाने में कामयाब हो गया। इस बार मैं अपने साथ रोनाल्ड हर्न नाम के एक ज्योतिषी को ले गया था, जिसकी सिफारिश मुझे कॉलेज ऑफ साइकिक साइंस के अधिकारियों ने की थी, जिसका मैं सदस्य हूँ। मैं श्री हर्न से कभी नहीं मिला था, न ही वे मुझसे, और जब मैंने उन्हें फोन किया तो ऐसा लगा कि वे मेरा नाम भी नहीं पहचानते। खैर, मैंने उन्हें बस इतना बताया कि

हमें लंदन में लगभग एक घंटे के लिए उनकी सेवाओं की आवश्यकता होगी, और वे मेरे होटल, रॉयल गार्डन में आ जाएँ, जहाँ से हम अपनी यात्रा शुरू करेंगे।

ठीक रात 9 बजे श्री हर्न उपस्थित हुए। वे तीस वर्ष की आयु के आसपास के काले बालों वाले, मृदुभाषी युवक थे और उन्होंने कोई प्रश्न नहीं पूछा। मेरे साथ दो न्यूयॉर्कवासी थे, जो मेरे साथ एक वृत्तचित्र फिल्म बनाने में रुचि के कारण आए थे। दोनों व्यक्ति संशयवादी थे और मुझे लगता है कि वे इस मामले या सोहो स्थित 69 डीन स्ट्रीट पर हमारी यात्रा के कारणों के बारे में लगभग कुछ भी नहीं जानते थे।

दस बजने में बस कुछ ही मिनट बाकी थे जब हम गार्गॉयल क्लब से एक ब्लॉक दूर एक कोने पर टैक्सी से उतरे। हम नहीं चाहते थे कि मिस्टर हर्न को प्रवेश द्वार का साइनबोर्ड दिखे, और वे सड़क पर लगे ढेरों साइनबोर्ड और नाइटक्लब की भीड़ में इतने मग्न थे कि उन्होंने उस अंधेरी गली पर ध्यान ही नहीं दिया जिसमें मैंने उन्हें जल्दी से ले गया। इससे पहले कि उन्हें आसपास देखने का मौका मिलता, मैं उन्हें खींचकर गार्गॉयल के प्रवेश द्वार के अंदर ले गया। उन्हें बस नग्न लड़कियों की तस्वीरें ही दिखाई दीं, लेकिन वैसे भी पूरा इलाका ऐसी तस्वीरों से भरा पड़ा है। इन तस्वीरों में ऐसा कुछ भी नहीं था जिससे उस इमारत के ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का पता चल सके जिसमें हम अभी-अभी दाखिल हुए थे।

मैंने तुरंत हर्न को पीछे की सीढ़ियों से ड्रेसिंग रूम की ओर ले जाकर यह जानने की कोशिश की कि क्या इसका उसके लिए कोई मतलब है। और हाँ, इसका मतलब था।

“मुझे एक भयानक एहसास हो रहा है,” उसने अचानक कहा। “मैं सीढ़ियों से ऊपर नहीं आना चाहता...लगभग ऐसा लग रहा है जैसे मुझे ऊपर आने और यहाँ से बाहर निकलने से डर लग रहा हो...।”

हम अब छत पर खड़े थे। जिमी जैकब्स भी हमारे साथ आ गया था और उत्सुकता से उस माध्यम को देख रहा था। वह भी यह जानने के लिए बेताब था कि उसके घर में कौन भूत बनकर घूम रहा है।

“मेरे पैर भारी लग रहे हैं, जैसे कोई मुझे इस छत पर आने से रोक रहा हो,” हर्न ने बताया। “मुझे बहुत चक्कर आ रहे हैं। मैं आना नहीं चाहती थी, लेकिन कोई चीज़ मुझे ज़बरदस्ती खींच रही थी; मुझे ऊपर आना ही होगा!”

मैंने उनसे पूछा कि क्या उन्हें इस क्षेत्र में किसी "जीवित" उपस्थिति का अहसास होता है। हर्न ने गहरी सोच में डूबे हुए अपना सिर हिलाया।

“एक से ज़्यादा लोग हैं,” उसने आखिरकार कहा। “लड़ाई चल रही है... कोई एक आदमी को पकड़ने की कोशिश कर रहा है, लेकिन दूसरा उसे पकड़ने नहीं दे रहा... दो लोग आपस में लड़ रहे हैं... मुझे चक्कर आ रहा है... सीढ़ियों पर और भी बहुत कुछ है...।”

हम ठंडी छत से नीचे उतरे और सीढ़ियों की ओर बढ़े, पीछे से "भूतिया दरवाज़ा" सावधानी से बंद कर दिया। अब हम दरवाज़े के ठीक अंदर, ड्रेसिंग रूम के प्रवेश द्वार पर खड़े थे, जहाँ चेरी फीनिक्स ने पहले वर्णित विभिन्न घटनाओं का अनुभव किया था। दुर्भाग्य से, नीचे चल रहे शो का संगीत लगातार खलल डाल रहा था, और हर्न के लिए खुद को संभालना मुश्किल हो रहा था। मैंने शो खत्म होने तक इंतजार करने का फैसला किया। हम एक सीढ़ी नीचे उतरे और जिमी जैकब्स के कार्यालय में बैठ गए।

हर्न ने इस अवसर का लाभ उठाते हुए उस दोपहर उनके साथ घटी एक विचित्र घटना की रिपोर्ट की।

“मुझे बिल्कुल भी पता नहीं था कि मैं आज रात कहाँ जा रहा हूँ,” उन्होंने बताया, “लेकिन आज शाम को मैं कुछ दोस्तों के साथ था और अचानक मैंने खुद को यह कहते हुए सुना, ‘मुझे नहीं पता कि मैं आज रात कहाँ जा रहा हूँ, लेकिन जहाँ भी जाऊँगा, उसका संबंध नेल ग्विन से होगा।’ मेरे दोस्त का नाम कारपेंटर है और वह 13, लिंटन रोड, किलबर्न, एन.डब्ल्यू. 6 में रहता है। उसका टेलीफोन नंबर मैडा वेले 1871 है। यह घटना शाम 7:30 बजे घटी।”

न्यूयॉर्क में रहने वाले मेरे संशयवादी मित्र ने तुरंत फोन उठाया और नंबर डायल किया। फोन उठाने वाले व्यक्ति ने हर्न द्वारा बताई गई हर बात की पुष्टि की। क्या यह सब एक सोची-समझी साजिश थी? मुझे नहीं लगता। खासकर आगे जो हुआ उसके बाद तो बिल्कुल नहीं।

हम तीसरी मंज़िल पर बने थिएटर में गए, जो अब पूरी तरह अंधेरा और खाली था। वातावरण में छाई बासी धुएँ की वजह से ऐसा लग रहा था मानो वहाँ हमेशा कोई न कोई मौजूद हो। रात में दो शो, हफ्ते में छह दिन, और कुछ खास नहीं बदलता, हालांकि औरतें कभी-कभार बदल जाती हैं। गर्म रोशनी में कपड़े उतारकर इधर-उधर नाचने का यह सब कुछ कलात्मक

कुशलता से किया जाता है, लेकिन जब आप इसका सार निकालेंगे तो बात एक ही निकलेगी: ताक-झांक। फिर भी, सड़क पर मौजूद छोटे-छोटे थिएटरों की तुलना में जिमी जैकब्स का थिएटर वाकई उच्च कोटि का था।

हम मंच के दाहिनी ओर एक मेज पर बैठ गए, जहाँ मंच पर लगी तेज रोशनी ही एकमात्र प्रकाश का स्रोत थी। इस पृष्ठभूमि में रोनाल्ड का तीक्ष्ण चेहरा रहस्यमय ढंग से उभर कर सामने आ रहा था। हम सब मंद रोशनी में उसे देख रहे थे, और यह जानने के लिए उत्सुक थे कि आगे क्या होगा।

“अजीब बात है,” उस ज्योतिषी ने कहा और अर्धअंधेरे में खड़े मालिक जिमी जैकब्स के गोल-मटोल शरीर की ओर इशारा करते हुए कहा, “लेकिन मुझे उसके चारों ओर एक अजीब सी मानसिक शक्ति महसूस हो रही है, कुछ अनोखा, कुछ ऐसा जो मैंने पहले कभी नहीं देखा। आपमें कुछ तो खास है, महोदय।”

जिमी हँस पड़ा।

“आप कह सकते हैं कि ऐसा है,” उन्होंने सहमति जताते हुए कहा, “देखिए, मैं खुद एक मानसिक शक्ति वाला व्यक्ति हूं।”

इसके बाद दोनों ज्योतिषियों ने अपनी भावनाओं की तुलना करना शुरू कर दिया।

"मुझे रीढ़ की हड्डी में बहुत ठंड लग रही है," जिमी ने कहा, और उसकी हमेशा वाली हंसमुखता गायब हो गई थी।

उन्होंने आगे कहा कि उन्हें आशंका महसूस हो रही थी, बल्कि वे दुखी भी थे, और उनकी आंखें गर्म महसूस हो रही थीं।

“मैं हंसना चाहती हूँ,” हर्न ने धीरे से कहा, “लेकिन ये खुशी वाली हंसी नहीं है। ये बनावटी हंसी है। कुछ छुपाने की कोशिश। सच में, मुझे यहाँ से निकलना है। मुझे ऐसा लग रहा है जैसे यहाँ आकर मैं फँस गई हूँ। इसी कमरे में। कोई यहाँ इन भावनाओं के साथ बैठा करता था, मुझे यहाँ लाया गया है, लेकिन मैं फँसी हुई हूँ, मैं बाहर निकलना चाहती हूँ! वो एक औरत है। आकर्षक। बाल लाल हैं। लंबे और घुंघराले लाल बाल।”

हम सब चुपचाप मंत्रमुग्ध होकर बैठे रहे। हर्न ने नेल ग्विन की हूबहू छवि का वर्णन किया था। लेकिन वह यह बात सचेत रूप से कैसे जान सकता था? आखिर वह तो बस एक और नाइटक्लब ही तो था।

“अद्भुत महिला... उनमें कुछ ऐसा है जिससे कोई प्यार कर सकता है, या नफरत कर सकता है... उनके गाल पर एक तिल है... बहुत भरे हुए होंठ हैं, और उनका स्वभाव कितना तीव्र है...।”

हर्न को अब सांस लेने में कठिनाई हो रही थी, मानो वह किसी समाधि में जा रहा हो। जिमी वहीं बेसुध बैठा रहा, और उसकी आवाज मानो धीमी पड़ गई।

“क्या तुम्हें पता है कि सैडलरी कहाँ है?” जिमी ने मुझे रोकने से पहले ही धीरे से कहा। मैं एक बार में एक ही माध्यम चाहता था।

"यहाँ से नीचे," हर्न ने तुरंत उत्तर दिया, "दो मंजिल नीचे।"

“घोड़ों की दुकान में कौन होगा?” जिमी ने पूछा। मैंने उसे इसमें दखल न देने का इशारा किया, लेकिन वह मुझे देख नहीं सका।

“जॉन,” हर्न ने धीरे से कहा।

“उसका पद क्या है?” जिमी जानना चाहता था। यह कहना मुश्किल था कि जिमी जैकब्स, जो एक माध्यम था, या जिमी जैकब्स, जो गार्गॉयल क्लब का जिज्ञासु मालिक था, यह सवाल पूछ रहा था।

“कैप्टन,” हर्न ने उत्तर दिया। वह अब पूरी तरह से मंत्रमुग्ध हो चुका था।

“यह कैप्टन जॉन कौन था?”

“राजा का मित्र।”

उन्होंने किस पद पर सेवा की?

हर्न के होठों से निकली आवाज ने जवाब दिया, "घुड़सवार सेना।"

जिमी ने सहमति में सिर हिलाया। जाहिर है उसे भी वही संदेश मिल रहा था।

“कौन सा कर्तव्य?” उसने अब पूछा।

"पहरेदार का प्रभारी।"

हर्न का व्यक्तित्व अब पूरी तरह से गायब हो चुका था, और मैंने उसके करीब जाने का फैसला किया।

मैंने उसे बुदबुदाते हुए सुना, "यहाँ लाया गया है।"

मैंने पूछा, "यहाँ किसे लाया गया था?"

“उन्होंने मुझे राजा से छिपने के लिए मजबूर किया...क्योंकि वह ईर्ष्यालु था...।”

“किस कारण से?” सांसें भारी और मुश्किल से चल रही थीं।

"हमें बताएं कि आप कौन हैं!"

“हे भगवान! ये तो कार...चार्ल्स... है।” आवाज इतनी उत्तेजित थी कि उसे समझना मुश्किल था।

मैंने पूछा, "यह किसका घर है?"

“मैं....” संचारकर्ता का गला भर आया।

"आपका क्या नाम है?"

लेकिन हर्न के माध्यम से बोलने वाली संस्था ने इसका खुलासा नहीं किया।

कुछ देर बाद, वह माध्यम दर्द से कराहते हुए जाग उठा। उसने अपना बायां हाथ ऐसे पकड़ रखा था मानो उसमें चोट लगी हो।

"इसे हिलाना लगभग नामुमकिन है," उसने अपनी सामान्य आवाज में कहा।

मुझे अक्सर समाधि की अवस्था समाप्त होने के तुरंत बाद एक ज्योतिषी से अतिरिक्त जानकारी मिलती है।

"वह प्राणी स्त्री थी या पुरुष?"

"महिला।"

"क्या इसका इस घर से कोई संबंध है?"

“हां, हां। वह कम से कम कुछ समय के लिए तो यहां जरूर रही होगी।”

क्या वह अभी भी यहीं है?

"हाँ।"

"उससे क्या चाहिए?"

“वह जा नहीं सकती। क्योंकि उसे इस बात का पछतावा है कि उसकी वजह से कुछ हुआ। उसे लगता है कि किसी की मौत के लिए वह जिम्मेदार है।”

“किसकी मौत?”

“यह उसका प्रेमी था। किसी की हत्या हुई है। इसका संबंध सीढ़ियों से है।”

क्या वह यहाँ अकेली है?

“नहीं, मुझे लगता है कि यहाँ कोई और भी है। सीढ़ियों पर लड़ाई हुई थी। दो आदमी थे।”

“वह दूसरा आदमी कौन था?”

“उसे भेजा गया...बहुत बुरा, मेरा मन कर रहा है कि मैं अपना सिर जोर से पटक दूं...।”

स्पष्टतः हर्न अब अर्ध-सम्मोहन की अवस्था में थे, पूरी तरह से बेहोश नहीं थे, और पूरी तरह से होश में भी नहीं थे, बल्कि कहीं बीच में थे।

“हम अभी किस दौर में हैं?” मैंने सवाल जारी रखा।

“लंबे घुंघराले बाल और सफेद टोपियाँ...बड़ी टोपियाँ...चार्ल्स प्रथम...।”

“जिस दूसरे व्यक्ति की हत्या हुई वह कौन था?”

मुझे पक्का पता नहीं है...

कमरे की घुटन भरी, ठंडी खामोशी अचानक फूट पड़ी और कड़वी हंसी की एक जोरदार आवाज सुनाई दी। हर्न को हंसी का दौरा पड़ रहा था, लेकिन यह बिल्कुल भी मजेदार नहीं था। मुझे एहसास हुआ कि वह फिर से हंसी के वश में आ गया है। मैंने उससे पूछा कि वह इतनी जोर से क्यों हंस रहा है।

"मैं क्यों न करूँ?" जवाब आया, और मैंने फिर से नाम जानने के लिए जोर दिया।

क्या आपको अपने नाम पर शर्म आती है?

“हां,” जवाब आया, “मुसीबत...मेरा नाम मुसीबत था...हमेशा मुसीबत...मैंने बहुत प्यार किया...।”

"तुम यहां क्यों हो?"

मैं यहाँ क्यों न रहूँ? यह मेरा घर है।

“यह आपको किसने दिया?”

“चार्ल्स।”

आप क्या खोज रहे हैं?

मेरी प्रतिक्रिया थी बेतहाशा हंसी। लेकिन मैं धीरे-धीरे और चुपचाप आगे बढ़ती रही।

“ओह, नहीं...तुम भुगतान कर सकती हो, प्रिय...लेकिन राजा को यह पसंद नहीं आएगा...।”

आवाज में कड़वाहट और बनावटी हंसी भरी हुई थी।

मैंने पूछा, "क्या आप यहां अकेले हैं?"

"नहीं...।"

"आपके साथ कौन है?"

“वह...मेरा प्रेमी...जॉन है।”

"इसका नाम क्या है?"

“उसके कई नाम हैं...कई...।”

जाहिर है, वह संचारक मुझसे थोड़ा मज़ाक कर रही थी। "उसके साथ क्या हुआ?"

उसकी हत्या कर दी गई।

"किसके द्वारा?"

“राजा के आदमी।”

“राजा के आदमियों में से कौन?”

“फोर्टेस्क्यू।”

“उसका पद क्या है?”

“लेफ्टिनेंट।”

“रेजिमेंट?”

“रक्षक।”

“उसे किसने भेजा?”

“राजा।”

उसे कैसे पता चला?

कभी-कभी...बातचीत से परे...।”

क्या तुमने राजा के साथ विश्वासघात किया?

“हां, कई बार।” अब आवाज में बड़ी संतुष्टि झलक रही थी।

"क्या उसने तुम्हें यह घर दिया?"

“उसने किया।”

तो फिर तुमने धोखा क्यों दिया?

“क्योंकि वह संतोषजनक नहीं था...” यह बात इतने तिरस्कारपूर्ण लहजे में कही गई कि मैं लगभग कांप गया। यह आवाज़ संभवतः 1660 या 1670 के दशक की थी, और अभी भी पुराने जुनून और भावनात्मक विस्फोटों से भरी हुई थी।

“तब से कितने साल बीत गए?” मैंने कहा। शायद अब इस सत्ता को सच्चाई समझाने का समय आ गया था।

“हे भगवान...समय क्या होता है? समय क्या होता है?! बहुत ज्यादा समय...।”

"क्या तुम खुश हो?"

“नहीं!!” आवाज चिल्लाई, “नहीं! उसने मेरे प्रेमी की हत्या कर दी!”

“लेकिन तुम्हारा प्रेमी मर चुका है और उसे अब तुम्हारे साथ होना चाहिए। क्या इससे तुम्हें खुशी नहीं मिलेगी?” मैंने पूछा।

“नहीं,” उस सत्ता ने जवाब दिया, “क्योंकि मेरा प्रेमी भी वैसा ही धोखेबाज था। धोखेबाज! हे भगवान... इन पुरुषों को बस इसी बात की परवाह रहती है... कुछ खास बदला नहीं है, है ना? हा हा हा...।”

जाहिर है, उस रहस्यमयी संदेशवाहक का इशारा उसके पुराने घर के मौजूदा उपयोग की ओर था। मुझे यह तर्कसंगत लगा कि नेल ग्विन जैसी (या कम) सामाजिक स्थिति वाली महिला को स्वाभाविक रूप से एक बरलेस्क थिएटर के आसपास घूमना और पुरुषों को महिलाओं के लिए व्याकुल देखना अच्छा लगेगा।

"पहले जैसा था, उससे ज्यादा फर्क नहीं है।"

“पहले कैसा होता था?”

“बिल्कुल वैसा ही। उन्हें मनोरंजन चाहिए था, और उन्हें मिल गया।” अगर यह सचमुच नेल ग्विन थीं और वर्तमान में घटित घटनाओं को देख पा रही थीं, तो वह एक “स्वतंत्र आत्मा” थीं, जो अपने परिवेश से आंशिक रूप से ही बंधी हुई थीं। तब, भावनात्मक यादें जब भी उन्हें खींच लातीं, वह यहाँ और अपने गाँव के घर, दोनों जगह प्रकट हो सकती थीं।

मैंने अब पूछा, "क्या यही आपका इकलौता घर है?"

“नहीं...चीप्साइड...मैं वहाँ ज़्यादा नहीं रहता...स्मिथफील्ड...हे भगवान, ये सब सवाल क्यों?” आवाज़ भड़क उठी।

मैंने पलटकर पूछा, "हमें कैसे पता चलेगा कि आप वही व्यक्ति हैं जो होने का दावा कर रहे हैं? इसे साबित कीजिए।"

"हे भगवान," उस आवाज ने जवाब दिया, मानो उसकी बात मानना उसकी गरिमा के विरुद्ध हो।

मुझे जिमी जैकब्स का यह विचार याद आया कि वह भूत नेल ग्विन के रूप में भेस बदलकर आया एक धोखेबाज था।

क्या तुम धोखेबाज हो?

“नहीं...” आवाज ने दृढ़तापूर्वक और थोड़ा आश्चर्य के साथ जवाब दिया।

"आपका जन्म कहां हुआ था?"

आप यह क्यों जानना चाहते हैं?... इससे क्या फर्क पड़ता है?...

"आपको सम्मान देने के लिए।"

“इज्जत? हा हा हा... महोदय, आप इज्जत की बात कर रहे हैं?”

"आपका क्या नाम है?"

“मेरा एक नाम हुआ करता था... अब इससे क्या फर्क पड़ता है?”

उसने इनकार कर दिया और मैंने जोर दिया, धमकाया, फुसलाया।

अंततः, कड़वाहट की तीव्रता कम हो गई।

उसने कहा, "यह हर जगह लिखा है...नेल...नेल... हे भगवान!!!"

कुछ पल का सन्नाटा छा गया, और मैंने धीमी आवाज़ में बोलना जारी रखा। क्या वह इस घर में खुश थी? कभी-कभी। क्या उसे पता था कि कई साल बीत चुके हैं? हाँ। क्या उसे इस बात का एहसास था कि वह अब वैसी नहीं रही जैसी पहले थी?

“मैं पहले क्या थी?” उसने दोहराया, “क्या तुम जानते हो मैं पहले क्या थी? एक वेश्या। एक वेश्या!!”

मैंने धीमी आवाज़ में कहा, "और अब तुम क्या हो? अब तुम एक भूत हो।"

“एक भूत,” उसने संशय से दोहराते हुए कहा, उस भयावह शब्द से खेलते हुए, जब मैं उसे उसकी स्थिति के बारे में समझाना जारी रख रहा था। “उन्हें लड़ना क्यों पड़ा?” उसने पूछा।

क्या आपको पता था कि वह आ रहा है?

"हाँ।"

आपने उसे चेतावनी क्यों नहीं दी?

मैं क्या कर सकता था? या तो अपनी जान या उसकी!

मुझे समझ नहीं आया—क्या आपका मतलब है कि वह आपको मार डालता?

“राजा एक ईर्ष्यालु व्यक्ति था,” उसने उत्तर दिया, “हमेशा झगड़ा करता रहता था... वह गंजा था... गंजा... हाहाहा... अपनी विग के साथ...।”

“आप इमारत के इस हिस्से में क्यों हैं? यहाँ आपके लिए क्या है?”

क्या मुझे कोई अधिकार नहीं है?

मैंने समझाया कि यह घर किसी और का है। "क्या मैं उन्हें परेशान करूँ?"

"आप यहाँ क्या देख रहे है?"

मैं किसी चीज की तलाश में नहीं हूँ...।”

फिर से, फ़ोर्टेस्क्यू नाम उस देहधारी माध्यम के होठों से निकला। मैंने पूछा, "फ़ोर्टेस्क्यू ने ये हत्याएँ कहाँ की थीं?" आवाज़ ने जवाब दिया, मानो हर शब्द दर्द से भरा हो।

नेल ग्विन, शाही अभिनेत्री

“सीढ़ियों पर...ऊपर की ओर...।”

“उस समय क्या समय हुआ था?”

“हे भगवान! समय! पतझड़ का मौसम था...।”

क्या उसके साथ कोई था?

"बाहर।"

“तुम्हारा निधन कहाँ हुआ?” मैंने यथासंभव कोमल स्वर में कहा। कुछ क्षणों के लिए सन्नाटा छा गया, मानो उसे प्रश्न समझ ही न आया हो। “क्या तुम्हें पता है कि तुम्हारा निधन हो चुका है?” मैंने कहा।

"नहीं।"

“तुम्हें याद नहीं है?”

“याद रखने लायक क्या है, किसी को परवाह नहीं। ये लोग इस घर का इस्तेमाल क्यों करते हैं?” उसने अब जानना चाहा। मैंने समझाया कि यह एक थिएटर है।

"क्या आप कहीं और भी जाते हैं, या आप हमेशा यहीं रहते हैं?"

"मुझे भी ऐसा ही लगता है...।"

“ये शोर किस लिए हैं? तुम क्या चाहते हो?”

“क्या आप चाहते हैं कि मैं लड़ाई रोक दूं? क्या आपको सीढ़ियों पर उनकी लड़ाई की आवाज सुनाई दे रही है?...”

जॉन का पूरा नाम क्या था?

“मोलिनॉक्स।”

“क्या वह लेफ्टिनेंट था?”

“कैप्टन...गार्ड्स में।”

और फोर्टेस्क्यू कौन था?

“लेफ्टिनेंट...राजा के अंगरक्षक। उन्हें राजा द्वारा भेजा गया था।”

“आदेश क्या था?”

“उसे मार डालो...मैं बहुत डरी हुई थी...तलवारों से लड़ो...मैं नीचे थी...सैलून में...।”

"मैं आपको शांति पाने में कैसे मदद कर सकता हूँ?"

शांति क्या है?

मैंने यह देखने का फैसला किया कि प्रतिक्रिया क्या होगी, "क्या आप सैलिसबरी हॉल को जानते हैं?"

“तुम जानना चाहते हो कि मैं उसकी रखैल थी... मैं वहाँ थी... कभी-कभी...”

मैंने उसकी पहचान के और सबूत मांगे, लेकिन उस दूर देश से आए आगंतुक ने मना कर दिया।

मुझे जाने दो... तुम यहाँ क्यों आए हो?

जिमी जैकब्स के सुझाव पर, मैंने फिर से उस पर नेल ग्विन का रूप धारण करने वाली अभिनेत्री होने का आरोप लगाया। लेकिन वह टस से मस नहीं हुई। उसने कहा कि वह नेल ग्विन ही है और अपने परिवार के बारे में कुछ भी बताने से इनकार कर दिया।

अब पीछे मुड़कर देखने पर मुझे पूरा यकीन है कि वह सच ही बोल रही थी।

कुछ देर बाद रोनाल्ड हर्न की नींद खुली। वे थके हुए और कमजोर लग रहे थे, लेकिन पिछले एक घंटे में उनके साथ जो कुछ भी हुआ था, उन्हें कुछ भी याद नहीं था। कम से कम उन्होंने यही कहा कि उन्हें कुछ याद नहीं है, और हालांकि मैं किसी माध्यम के वास्तविक स्वरूप की इस कमी को वस्तुनिष्ठ रूप से साबित नहीं कर सकता, लेकिन मुझे उनके कथनों पर संदेह करने का भी कोई कारण नहीं है। हम वहां से चले गए, और हर्न को उपनगर में स्थित उनके घर वापस ले जाया गया।

24 सितंबर को मैं ट्रिक्सी एलिंगहैम के साथ गार्गाँयल क्लब वापस आई। यह एक बहुत लंबे दिन का अंत था जो हमने बाथ के मार्क्विस की पैतृक संपत्ति लॉन्गलीट में बिताया था, और मुझे ट्रिक्सी से बहुत ज्यादा उम्मीद नहीं थी, क्योंकि माध्यम भी थक जाते हैं।

लेकिन समय कम था और हमें अपने अवसरों का सर्वोत्तम उपयोग करना था, इसलिए मैं उसे जल्दी से ऊपर उसी जगह ले गया जहाँ हम रोनाल्ड हर्न को लाए थे, क्लब रूम के पीछे एक मेज पर।

नेल ग्विन का समकालीन चित्र

ट्रिक्सी ने उस पुरानी जगह के कुछ हद तक जर्जर माहौल को हैरानी से देखा। यह साफ़ था कि वह पहले कभी ऐसी किसी जगह पर नहीं गई थी। आख़िरकार, वह पहले एक नर्स थी, जिसने बाद में अपनी असाधारण क्षमता का पता चलने पर पेशेवर ज्योतिषी का काम शुरू

कर दिया था। यह उसकी पसंद की जगह नहीं थी, लेकिन वह मेरी हर इच्छा पूरी करने के लिए तैयार थी। शाम ढल रही थी, क्लब के खुलने से पहले ही काफ़ी अंधेरा हो चुका था। उसे ठीक से पता नहीं था कि वह कहाँ है, बस इतना पता था कि यह सोहो का कोई नाइटक्लब है, और वह जितनी जल्दी हो सके वहाँ से निकलना चाहती थी!

* * *

जब हम खाली क्लब में बैठे, तो हमारे चारों ओर एक अजीब तरह का निराशाजनक माहौल था, हम पिछली रात के धुएं से मिली बासी हवा में सांस ले रहे थे।

“एक पुरुष और एक महिला चिंतित हैं,” उसने तुरंत कहा, “एक त्रासदी हुई है...जिससे वह प्यार करती है, उसकी हत्या कर दी गई है।” फिर उसने आगे कहा, “वह लंबी, काफी सुंदर, काली आंखों वाली और गोरे चेहरे वाली महिला है।”

मैं जानना चाहता था कि उसकी मौत कैसे हुई, लेकिन ट्रिक्सी को सीधे सवाल पसंद नहीं हैं क्योंकि इससे उसका ध्यान भटक जाता है। इसलिए मैंने उसे खुद ही उस जगह के माहौल में ढलने देने का फैसला किया, और हम उसे ध्यान से देखते रहे।

“मुझे एक वार का एहसास हो रहा है... एक चाकू मेरे शरीर में घुस गया है... यहाँ गार्टर से जुड़ी कोई मामूली बात है।” इंग्लैंड के राजा, ज़ाहिर है, ऑर्डर ऑफ़ द गार्टर के प्रमुख थे, जिसे एक शाही प्रतीक माना जाता है। ट्रिक्सी की मनोविश्लेषण क्षमता ठीक काम कर रही थी।

“यहाँ त्रिकोण से कुछ लेना-देना है,” उसने आगे कहा, “पैसे से भी कुछ लेना-देना है... अक्षर R से शुरू होता है... कुछ लोग ज़मीन पर पड़ी लाश को देख रहे हैं... चाकू से गोदी हुई... वो अब बहुत दुखी है, उसकी आँखों से आँसू बह रहे हैं। मुझे लगता है उसने ‘शादी’ कहा था... आखिर मुझे भालू क्यों दिख रहा है?!”

जब ट्रिक्सी उस भालू की खाल के बारे में सोच रही थी, तभी मेरे साथियों में से एक, अमेरिकी लेखक विक्टर वुल्फसन ने टिप्पणी की कि शाही रक्षक भालू की खाल पहनते हैं। मुझे जांच के दौरान कोई भी जानकारी सार्वजनिक करना पसंद नहीं है, लेकिन मैंने उन्हें धन्यवाद दिया और उनसे अनुरोध किया कि वे बाद में ही इस बारे में कुछ कहें।

इसी बीच मैंने ट्रिक्सी से कहा कि वह महिला भूत से उसकी पहचान का कुछ सबूत और आगे की व्यक्तिगत जानकारी हासिल करने के लिए दबाव डाले।

“महल से कोई असाधारण संबंध... क्या यह सब पागलपन लगता है?” ट्रिक्सी ने हिचकिचाते हुए कहा, क्योंकि उसका तार्किक दिमाग सोहो के एक स्ट्रिपटीज़ क्लब और व्हाइटहॉल के बीच किसी भी संबंध की कल्पना नहीं कर पा रहा था। मैंने उसे आश्वस्त किया और उसे बोलने दिया। “मुझे यही समझ आ रहा है... फ्रेंच में कुछ... मेरी फ्रेंच बहुत खराब है, तुमने क्या कहा, प्रिय? कोई उसकी रक्षा करने वाला है... मैं इस तस्वीर के लिए समय में पीछे जा रही हूँ... दो आदमी उसकी रक्षा करने वाले हैं... सांवले रंग के आदमी, उन्होंने यूरोपीय पोशाक पहनी हुई है, यहाँ रेशम की पट्टी है...।” उसने कमर की ओर इशारा किया। “मैं उन्हें ठीक से नहीं देख पा रही हूँ... पगड़ी... M... राजपरिवार से संबंध... अभिनय और राजपरिवार... और दिल का दर्द... उस समय उससे जुड़ा कोई व्यक्ति बीमार था... हैरी... गुप्त मुलाकातें... सच्चा प्यार... विश्वासघात... दो आदमी लड़ रहे हैं... महल इन सब से जुड़ा है... मुझे ये शब्द सुनाई दे रहे हैं, ‘दुनिया के लिए बचाओ... जुनून... मुझे बचाओ और मुक्ति दो!’”

हम सब बहुत चुपचाप सुन रहे थे क्योंकि नाटक एक बार फिर से शुरू हो रहा था।

“रात का समय था,” ट्रिक्सी रुक-रुक कर बोलती रही, मानो वह याद उसके लिए दर्दनाक हो। “बाहर घना कोहरा था... चार्ल्स... अब मुझे एक पादरी उस दरवाजे से कमरे में आते हुए दिखाई दे रहे हैं और वे कह रहे हैं, ‘अब इसका समाधान करने का समय आ गया है! मैंने तुम्हें यहाँ बुलाया है।’... अब मुझे एक नन्हा सा बच्चा उसे ले जाते हुए दिखाई दे रहा है और मैं पादरी को कहते हुए सुन रही हूँ, ‘शांति से जाओ, तुमने अपना काम कर दिया है।’” ट्रिक्सी ने अपना सिर अपनी बाहों में रख लिया और आह भरी। “मैं तुम्हें बस इतना ही बता सकती हूँ। मुझे बहुत बुरा लग रहा है।”

चूंकि उनकी गवाही का अधिकांश भाग रोनाल्ड हर्न की गवाही से मेल खाता था, और यह स्पष्ट था कि उनकी मानसिक शक्तियां अब लगभग समाप्त हो चुकी थीं, इसलिए मैंने सोचा कि हर्न द्वारा प्राप्त सामग्री के आधार पर उनसे कुछ प्रतिक्रिया प्राप्त करने का प्रयास करना उचित होगा, इस उम्मीद में कि दूसरी माध्यम इस पर और अधिक जानकारी देंगी। मैंने सहज भाव से पूछा, "क्या फोर्टेस्क्यू नाम का आपके लिए कोई अर्थ है?" उनके चेहरे के भाव

अपरिवर्तित रहे। उनके लिए इसका कोई अर्थ नहीं था। लेकिन फिर उन्होंने कहा, "यदि इसका संबंध किसी प्राचीन घराने से है, तो यह सही है। यह सब प्राचीन वंश से जुड़ा है।"

बाद में जाँच करने पर मुझे पता चला कि फोर्टेस्क्यू परिवार वास्तव में इंग्लैंड के सबसे पुराने परिवारों में से एक था, हालाँकि यह नाम आज बिल्कुल भी आम या प्रसिद्ध नहीं है।

ट्रिक्सी ने बताया कि वह लड़की अब जा चुकी है, लेकिन पूर्व प्रेमिका अभी भी आसपास है और वह मानसिक रूप से उससे पूछताछ कर सकती है।

मैंने सैलिसबरी के बारे में पूछा। बस एक शब्द, यह बताए बिना कि मैं किसी व्यक्ति या स्थान की बात कर रहा था।

ट्रिक्सी ने टिप्पणी की, "एक लंबा और कुछ हद तक भयावह दिखने वाला स्थान, एकांत, ठंडा और धूसर...उदास...।"

यह विवरण वास्तव में उस समय के सैलिसबरी हॉल पर लागू होता था जब चार्ल्स द्वितीय ने इसे खरीदा था।

मैंने उनसे पूछा कि वह लड़की कौन थी।

“यहाँ राजघराने से कुछ संबंध है।” कुछ क्षण बाद, संभवतः अदृश्य पुजारी से परामर्श करने के बाद, ट्रिक्सी ने उत्तर दिया, “वह आई और चली गई...कुछ अस्पष्ट...इस राजघराने से जुड़ी हुई...वह उठी...फिर कुछ हुआ...उसे त्याग दिया गया...जिससे यह त्रासदी हुई...सुंदर स्त्री, सांवली, मेरा मतलब बिल्कुल काली नहीं, बल्कि गोरी की तुलना में सांवली, और उसके बाल... कंधे तक लंबे...एन...नेल...यह नेल ग्विन है!”

हम सब खड़े हो गए और खुशी से चिल्लाए। ट्रिक्सी ने जो कुछ भी कहा था, वह सब समझ में आ गया था।

अपना धनुष चलाने के बाद, ट्रिक्सी लगभग गिर पड़ी और बुदबुदाई, "मुझे माफ करना, मैं बस इतना ही कर सकती हूँ। मैं थक गई हूँ।"

कई मायनों में उसकी आत्मा उसे छोड़ चुकी थी, लेकिन अब यह मायने नहीं रखता था। हमने उसे धीरे से नीचे उतारा, और हममें से एक उसे उपनगर में उसके घर ले गया जहाँ वह एक सम्मानजनक और शांत जीवन व्यतीत करती है।

टेपों की जांच करने पर मुझे तुरंत यह बात समझ में आ गई कि दोनों माध्यमों ने कहानी के कई समान विवरणों पर ध्यान दिया। चूंकि दोनों में से किसी को भी उस स्थान के बारे में पहले से कोई जानकारी नहीं थी जहां हम जाने वाले थे, न ही पहुंचने पर उन्हें इस बात का कोई अंदाजा था कि हम वहां क्यों थे, और न ही वे एक-दूसरे को जानते थे, इसलिए यह मानना ही पड़ेगा कि दोनों तांत्रिक एक ही अतीत से जुड़ रहे थे।

इसमें कई असाधारण विवरण थे जिन पर परंपरागत इतिहास में आमतौर पर जोर नहीं दिया जाता है।

दोनों माध्यमों ने एक त्रिकोण का वर्णन किया, जिसमें दो पुरुष छत पर लड़ रहे थे—जहाँ सभी प्रेतवाधित घटनाएँ देखी गई थीं—और एक पुरुष की मृत्यु हो गई। राजा चार्ल्स, जिनका नाम भी लिया गया, ने उनमें से एक को भेजा था, क्योंकि किसी ने उन्हें बताया था कि उनकी प्रेमिका नेल उन्हें धोखा दे रही है।

हर्न ने उन दो आदमियों का वर्णन इस प्रकार किया था: घुड़सवार सेना या रॉयल गार्ड्स (जो घुड़सवार रक्षक थे) के कैप्टन जॉन मोलिनॉक्स और गार्ड्स के ही लेफ्टिनेंट फोर्टेस्क्यू। कैप्टन जॉन, घुड़सवारी कारखाने में नीचे रहने वाला उसका प्रेमी था, जिसका काम राजा के लिए उसकी रक्षा करना था। लेकिन, उसे उससे प्यार हो गया था। लेफ्टिनेंट फोर्टेस्क्यू (कभी-कभी नाम फोर्टेस्क्यू भी लिखा जाता है) को राजा ने बदला लेने और अपनी प्रेमिका के घर पर उस बेवफा अधिकारी को मारने के लिए भेजा था। माध्यम हर्न ने फोर्टेस्क्यू का पहला नाम नहीं दिया है, लेकिन माध्यम एलिंगम ने R अक्षर का उल्लेख किया है। ट्रिक्सी ने बताया था कि इसमें पैसे का लेन-देन शामिल था, और मैंने अनुमान लगाया कि हत्यारे को इनाम का वादा किया गया था, जो इस तथ्य को देखते हुए स्वाभाविक लगता है कि यह हत्या ऐसी चीज नहीं थी जिसे कानून की अदालत माफ करती, भले ही राजा को धोखा दिया गया हो। इसलिए, चार्ल्स के गंदे काम करने वाले उस युवा अधिकारी को प्रलोभन देने की आवश्यकता थी!

स्पष्टतः, नेल और जॉन ने भागकर शादी करने की योजना बनाई थी, लेकिन किसी ने राजा को उनकी सूचना दे दी। राजा ने पुराने रिवाज़ के अनुसार प्रतिद्वंद्वी की हत्या करवाकर और पूर्व प्रेमिका को अपमानित करके बदला लिया। अभिलेखों से हमें यह जानकारी मिलती है कि अपने सुनहरे दिनों में नेल राजा की नज़रों से गिर गई थी और उसकी मृत्यु साधारण

परिस्थितियों में हुई। अब मुझे पूरी कहानी स्पष्ट हो गई। राजा की प्रेमिका के रूप में कई वर्षों के बाद, नेल ने अपने प्रिय पुरुष के साथ एक सम्मानजनक जीवन जीने का अवसर देखा था। उस अवसर को बेरहमी से कुचल दिया गया और अपराध को दबा दिया गया—इतनी कुशलता से कि उस काल के किसी भी आधिकारिक या प्रतिष्ठित ग्रंथ में इसका विशेष रूप से उल्लेख नहीं है।

लेकिन भला किसे पता होता? रात के अंधेरे में, घुड़सवारों का एक दल उपनगरों में स्थित घर पर पहुँचता है; फोर्टेस्क्यू जल्दी और चुपचाप अंदर घुस जाता है, शायद उस नौकर की मदद से जिसने महल को सूचना दी थी। वह संकरी सीढ़ियों से होते हुए नेल के कमरों तक पहुँचता है, वहाँ उसे जॉन मोलिनॉक्स मिलता है और फिर दोनों के बीच एक घातक द्वंद्व युद्ध शुरू हो जाता है, जो सीढ़ियों से होते हुए छत तक जाता है। कप्तान अपनी पत्नी के चरणों में गिरकर मर जाता है, जिससे उसे तीन शताब्दियों तक गहरा सदमा लगता है। हत्यारा जल्दी से अपने दुश्मन की पहचान कर लेता है, शायद हत्या का सबूत देने के लिए कोई वस्तु अपने साथ ले जाता है, और इनाम की रकम लेने के लिए निकल जाता है।

उसके पीछे शोक से व्याकुल एक महिला अपने भाग्य की प्रतीक्षा कर रही है। उसका भाग्य जल्द ही आ पड़ता है। शाही संरक्षण से अर्जित अपनी सारी संपत्ति से वंचित होकर, उसे डीनरी के पास स्थित घर छोड़ने और एक साधारण से आवास में रहने के लिए विवश होना पड़ता है। स्वास्थ्य और शाही सहायता दोनों छिन जाने के बाद, वह गुमनामी में खो जाती है और उसके बाद के जीवन के बारे में हमें बहुत कम जानकारी है।

* * *

लेकिन मुझे इस बात का पुख्ता सबूत चाहिए था कि नेल ग्विन सचमुच उस घर में रहती थी और उससे भी ज़्यादा ज़रूरी, कि ये दोनों आदमी मौजूद थे। अगर वे पुलिस अधिकारी थे, तो उनके बारे में कुछ न कुछ रिकॉर्ड तो ज़रूर होंगे।

ब्रिटिश संग्रहालय में पूछताछ से पता चला कि नेल मीर्ड स्ट्रीट और डीनरी के जंक्शन पर स्थित एक घर में रहती थी। यही वह स्थान है जहाँ गार्गॉयल क्लब स्थित है। फोर्टेस्क्यू और मोलिनॉक्स के बारे में मुझे पता चला कि दोनों नाम प्रतिष्ठित राजभक्त परिवारों से संबंधित थे।

एडवर्ड पीकॉक की पुस्तक "द आर्मी लिस्ट्स ऑफ द राउंडहेड्स एंड कैवेलियर्स" से मुझे यह भी पता चला कि ये दोनों परिवार रॉयल कैवेलरी से जुड़े थे, जिसे उस समय ड्रैगून कहा जाता था। 1642 में राजा के पिता, चार्ल्स प्रथम के नेतृत्व में आयरलैंड के विरुद्ध राजभक्त अभियान के दौरान, तीसरी घुड़सवार टुकड़ी, या कैवेलरी रेजिमेंट की कमान सर फेथफुल फोर्टेस्क्यू के पास थी। उनके साथ परिवार का एक युवा सदस्य थॉमस फोर्टेस्क्यू भी सेवा में था, जो उस समय कॉर्नेट था, लेकिन बाद में संभवतः लेफ्टिनेंट के पद तक पदोन्नत हुआ। मुझे रेजिमेंट के रिकॉर्ड में कोई "आर" फोर्टेस्क्यू नहीं मिला। लेकिन मैंने ट्रिक्सी एलिंगम की उस व्यक्ति के बारे में की गई टिप्पणी को दोबारा पढ़ा और पाया कि उसने ज़िक्र किया था कि आर एक मृत व्यक्ति के शव की पहचान करने के लिए मौजूद है! बहुत संभव है कि हत्यारा, फोर्टेस्क्यू, मोलिनेक्स की पहचान को लेकर कोई संदेह न रहने देना चाहता था ताकि वह अपना इनाम हासिल कर सके। साथ ही, मोलिनेक्स भी उसी तरह के प्रतिष्ठित परिवार से था, और वह मृत अधिकारी के शव को लावारिस नहीं छोड़ना चाहता था। नहीं, सही तरीका यह होता कि मोलिनेक्स के परिवार के किसी सदस्य को बुलाया जाता, ताकि पहचान और अंतिम संस्कार दोनों हो सकें!

क्या वहां आर मोलिनेक्स नाम का कोई व्यक्ति था?

मैंने रिकॉर्ड्स की दोबारा जाँच की, और सी. टी. एटकिंसन की 'हिस्ट्री ऑफ द रॉयल ड्रैगून्स' में मुझे पता चला कि रिचर्ड मोलिनॉक्स, जो उस समय परिवार के मुखिया थे, ने चार्ल्स द्वितीय के लिए दो रेजिमेंट खड़ी की थीं। मुझे यह भी पता चला कि मोलिनॉक्स परिवार में जॉन नाम का अक्सर इस्तेमाल होता था, हालाँकि मुझे उस समय रॉयल गार्ड्स में सेवारत कोई जॉन मोलिनॉक्स नहीं मिला। क्या हत्या के बाद उनका नाम रिकॉर्ड से हटा दिया गया था? राजा इस तरह का कठोर आदेश आधिकारिक रिकॉर्ड से हटा सकते थे, बिल्कुल।

* * *

इस बिंदु पर मुझे इस बात पर जोर देना चाहिए कि मोलिनेक्स और फोर्टेस्क्यू के पारिवारिक नामों को चार्ल्स द्वितीय और उनके समय से जोड़ना इतिहास का अत्यधिक विशिष्ट ज्ञान है,

और यह ऐसी चीज नहीं है जो स्कूलों में पढ़ाई जाती है या उस कालखंड के बारे में प्रसिद्ध पुस्तकों में पाई जाती है।

इस प्रकार हमें पता चल गया कि गार्गॉयल क्लब में वह रहस्यमयी महिला कौन थी और उसे शांति क्यों नहीं मिल पा रही थी। हमें त्रासदी का कारण पता चल गया और हमने कुख्यात राजा चार्ल्स के जीवन के एक अनसुलझे अध्याय का पता लगा लिया।

इस जांच की प्रक्रिया में, एक शाही वेश्या एक ऐसी महिला में बदल गई जिसने प्यार बहुत देर से पाया और मौत बहुत जल्दी।

इसी तरह की जांचों और उनमें इस्तेमाल की गई तकनीकों को देखते हुए, मैं विश्वासपूर्वक कह सकता हूं कि नेल और उसका जॉन अंततः एक ऐसी दुनिया में एकजुट हो गए हैं जहां रॉयल गार्ड्स की कोई शक्ति नहीं है और यहां तक कि राजा चार्ल्स भी चाहें तो बिना विग के घूम सकते हैं।

*21

वियना के आसपास के भूत

भूत क्या होते हैं, यह तो आप जानते ही होंगे, और मेरे जिन पाठकों को gemütlichkeit शब्द से परिचित नहीं हैं, उन्हें बता दें कि यह एक जर्मन शब्द है जिसका अर्थ है "सुखद, आरामदेह जीवन शैली"। जब हम हैम्बर्ग पहुंचे, तो हमें gemütlichkeit की उम्मीद नहीं थी, जो कि वैसे भी ज्यादातर स्विट्जरलैंड और ऑस्ट्रिया जैसे दक्षिणी देशों में ही पाई जाती है। लेकिन हमने रेडियो और टेलीविजन जगत के लोगों में मानसिक विषयों में सच्ची रुचि देखी, हालांकि जर्मनों का एक बड़ा हिस्सा इस बात से अनजान है कि एंग्लो-सैक्सन दुनिया में छठी इंद्रिय के अनुभवों का कितनी गंभीरता से अध्ययन किया जाता है। बेशक, एक छोटा, बेहद बुद्धिमान अल्पसंख्यक समूह सम्मानजनक आधार पर शोध स्थापित करने का प्रयास कर रहा है। हालांकि, हैंस बेंडर और उनकी फ्रीबर्ग स्थित पैरासाइकोलॉजिकल प्रयोगशाला अद्वितीय हैं। हैम्बर्ग में, हम एरिक मारिया कोर्नर से मिले, जो अलौकिक बोध पर पुस्तकों के लेखक और अनुवादक हैं, और मिलो रेनेल्ट से भी मिले, जो एक माध्यम हैं और जिन्हें "हैम्बर्ग का द्रष्टा"

कहा जाता है। लेकिन, लोगों के बात करने में हिचकिचाहट के कारण, हमें भूतिया घरों के बारे में कोई सुराग नहीं मिल सका, जबकि ऐसे घर निश्चित रूप से बहुत सारे होंगे।

ऑस्ट्रिया के वियना पहुँचने पर, हम ऑस्ट्रियाई मानसिक अनुसंधान समाज की अध्यक्ष काउंटेस ज़ो वासिलको-सेरेकी से मिलने गए। उन्होंने हमें ऑस्ट्रिया की स्थिति से अवगत कराया, जहाँ प्रेस परा मनोविज्ञान संबंधी अध्ययनों की रिपोर्टिंग के किसी भी गंभीर प्रयास के प्रति खुले तौर पर शत्रुतापूर्ण और उपहासपूर्ण रवैया अपना रहा था। मैं स्वयं ऑस्ट्रियाई मूल का एक अमेरिकी हूँ, इसलिए अगले दिन जब मैंने टेलीविजन और रेडियो वालों से बात की तो मुझे स्थानीय भाषा का उपयोग बहुत मददगार लगा। मुझे जल्दी ही पता चल गया कि रेडियो मुझसे कोई वास्ता नहीं रखना चाहता था, क्योंकि एक स्थानीय जादूगर ने जिम्मेदार निर्माताओं को यह विश्वास दिला दिया था कि सभी मानसिक अनुभव बकवास हैं और वह उन्हें अपनी इच्छा से दोहरा सकता है। ऑस्ट्रियाई टीवी के नवगठित मुख्यालय में मुझे कुछ हद तक खुलापन देखने को मिला, जो हमारे टीवी से लगभग दस साल पीछे है, लेकिन सद्भावना से भरा हुआ है और कम बजट और दबावों जैसी बड़ी बाधाओं के बावजूद काम कर रहा है। अंत में, कैसर नाम का एक रिपोर्टर कैथरीन और मेरे साथ भूत-प्रेत की खोज में जाने और बिना किसी पूर्वाग्रह या तोड़-मरोड़ के निष्पक्ष रिपोर्टिंग करने के लिए सहमत हो गया। मुझे कहना होगा कि उसने अपना वादा निभाया।

हम गाड़ी से इंपीरियल कैसल गए, जो वियना के बिल्कुल मध्य में स्थित इमारतों का एक विशाल समूह है। वहाँ हम पैदल चलकर महल के सबसे पुराने हिस्से, जिसे अमालिएनबर्ग के नाम से जाना जाता है, में गए। मेरे पास बस इतनी ही जानकारी थी कि उस इलाके में एक भूत देखा गया था।

कैसर ने तुरंत ही गेट पर खड़े पुलिस अधिकारी की ओर मुड़कर उससे पूछा कि क्या वह किसी भूत के बारे में जानता है।

“भूत?” अधिकारी ने कुछ हैरानी से पूछा और अपना सिर खुजाया। “मुझे तो किसी भूत का पता नहीं।” उन्होंने सुझाव दिया कि हम बर्गहॉप्टमैन, यानी गवर्नर से मिलने चलें।

गवर्नर लगभग चालीस वर्ष के एक सज्जन थे जिनका नाम न्युंटेफेल था, जिसका अर्थ है नौ शैतान। नरक के समान बिल्कुल नहीं, उन्होंने हमें अपने कार्यालय में आमंत्रित किया और

सम्मानपूर्वक सुना, जब कैसर ने मेरे बारे में उन्हें बताया। यह देखते हुए कि हम कट्टर कैथोलिक वियना में, एक उच्च सरकारी अधिकारी के कार्यालय में थे, मैंने उनके साहस की प्रशंसा की। लेकिन फिर कैसर ने मुझसे निजी तौर पर स्वीकार किया था कि उन्होंने टेलीपैथी की एक ऐसी घटना का अनुभव किया था जिसे वे नकार नहीं सकते थे। उनकी खुले विचारों वाली सोच दिखावटी नहीं बल्कि सच्ची थी।

अंत में राज्यपाल ने कहा, "मुझे खेद है, लेकिन मैं इस पद पर केवल पाँच वर्षों से हूँ। मुझे भूतों के बारे में कुछ भी नहीं पता। लेकिन यहाँ एक पुराना कर्मचारी है जो शायद आपकी मदद कर सके।"

मेरा दिल घबराने लगा था और मैंने खुद को टेलीविजन पर उपहास का पात्र बनते देखा। "प्लीज, लड़कों," मैंने ऊपर बैठे अपने दोस्तों से धीमी आवाज़ में कहा, "हमारी थोड़ी मदद करो।"

श्री न्यूंटेफेल ने फोन किया और श्री संडे से बात करने को कहा। थोड़ी देर का विराम हुआ। फिर उन्होंने कहा, "ओह, मैं समझ गया। आपका मतलब है कि श्री संडे शुक्रवार को नहीं होंगे?" मैंने सोचा, काला शुक्रवार! लेकिन तभी राज्यपाल का चेहरा खिल उठा। श्री संडे एक पल में आ जाएंगे।

बाद के वर्षों में वह व्यक्ति शांत और मृदुभाषी क्लर्क निकला। उसने लगभग अपना पूरा वयस्क जीवन यहीं काम किया था। "जी हाँ," उसने सिर हिलाया। "यहाँ सचमुच एक भूत है; लेकिन अमालिएनबर्ग में नहीं। आइए, मैं आपको दिखाता हूँ कहाँ है।"

जब उन्होंने बोलना शुरू किया, तब सन्नाटा छा गया था, मानो कोई भूत चल रहा हो। कैसर ने मुझे प्रशंसा और हैरानी भरी नज़रों से देखा। वह और उनका कैमरामैन पहले ही खड़े हो चुके थे।

गवर्नर के साथ, हम संडे के पीछे-पीछे कई सीढ़ियों से ऊपर-नीचे गए, गलियारों से गुजरे, दुर्गंधयुक्त हॉल से होते हुए, और फिर एक सीढ़ी से ऊपर चढ़कर महल के पिछले हिस्से में पहुंचे।

चलते हुए राज्यपाल ने मुझसे माफी मांगते हुए कहा, "मैं खुद कभी यहां नहीं आया।" उन्होंने आगे कहा, "दरअसल, मुझे तो पता भी नहीं था कि यह हिस्सा मौजूद है।"

ये क्या हो रहा है! मैंने सोचा। ये तो बहुत बड़ा घर है।

अब हम एक मार्टरल के सामने खड़े थे, जो दीवार में निर्मित और धातु की जाली से सुरक्षित, एक विशिष्ट ऑस्ट्रियाई शैली की पवित्र कुंवारी कन्या की वेदी थी। बाईं ओर वे सीढ़ियाँ थीं जिनसे हम ऊपर आए थे, और दाईं ओर एक और छोटी सीढ़ी थी, जो एक लकड़ी के दरवाजे से बंद थी।

“हम कहाँ हैं?” कैसर ने पूछा।

"यह बैरोनेस वेसेरा का निजी अपार्टमेंट है," संडे ने कहा।

बैरोनेस वेसेरा युवराज रुडोल्फ की प्रेमिका थीं। वे प्रसिद्ध मेयरलिंग त्रासदी के मुख्य पात्र थे, जिसके परिणामस्वरूप 1880 के दशक के ऑस्ट्रिया में एक बड़ा राष्ट्रीय घोटाला हुआ था।

संडे ने बताया, “युवराज ने यह फ्लैट इसलिए किराए पर लिया था ताकि वे अपनी प्रेमिका से एकांत में मिल सकें। इमारत के नक्शे में इन सीढ़ियों का कोई निशान नहीं है।”

“इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं!” राज्यपाल ने राहत की सांस ली।

गणतंत्र द्वारा राजशाही को उखाड़ फेंकने के बाद से, हाल के वर्षों में महल का एक हिस्सा स्पष्ट रूप से निजी नागरिकों को किराए पर दिया गया था, और महल के अधिकारियों ने तब से उस हिस्से पर बहुत कम ध्यान दिया था।

मैंने पूछा, "क्या यहाँ किसी ने भूत देखा है?"

संडे ने सिर हिलाया। “एक जैगर ने कुछ साल पहले, साम्राज्य के शासनकाल में, यहाँ एक श्वेत महिला को देखने की सूचना दी थी।” जैगर टायरोलियन या अन्य अल्पाइन रेजिमेंट का सैनिक होता है। संडे ने आगे कहा, “फिर गार्ड बेरान है, जिसने इस श्वेत महिला को यहीं, वर्जिन मैरी की वेदी के पास देखा था। वास्तव में, कई नौकरों ने भी उसे देखा है।”

मैंने पूछा, "यह सब कब से शुरू हुआ—मेरा मतलब है, उसे कब से देखा जा रहा है?"

"ज्यादा समय पहले की बात नहीं है," संडे ने जवाब दिया, "लगभग अस्सी साल पहले की बात है।"

रुडोल्फ और वेसेरा की मृत्यु के बाद, मैंने सोचा। बिल्कुल! यही उनका घर था, एकमात्र ऐसी जगह जहाँ वे छुपकर मिल सकते थे। इतिहासकारों में यह आवाज़ें तेज़ हो रही हैं कि मेयरलिंग की आत्महत्या आत्महत्या नहीं, बल्कि एक तरह की हत्या थी।

क्या बैरोनेस वेसेरा की बेचैन आत्मा संतुष्टि की मांग कर रही थी या क्या उसकी पश्चातापी आकृति का प्रेत मंदिर में प्रार्थना कर रहा था, उस त्रासदी के लिए क्षमा मांग रहा था जो उसने की थी?

रविवार को हम संकरे गलियारे से आगे बढ़ते हुए महल के सबसे पुराने हिस्से में पहुँचे। मोटी दीवारें और छोटी-छोटी खिड़कियाँ किसी किले की याद दिलाती थीं, न कि हैब्सबर्ग साम्राज्य के किसी दर्शनीय स्थल की।

उन्होंने कहा, "कुछ समय पहले, डॉ. शेफर के एक मरीज ने, जिनका क्लिनिक यहीं था, एक कैपुचिन भिक्षु को गलियारे से गुजरते हुए देखा।"

मैंने पूछा, "एक भिक्षु यहाँ क्या कर रहा होगा?"

“प्रारंभिक दिनों में, सम्राट अपनी निजी जरूरतों के लिए यहाँ कुछ भिक्षुओं को रखते थे। इसी स्थान पर किले में एक कैपुचिन मठ बनाया गया था।”

हमने कुछ देर इंतजार किया, लेकिन कोई कैपुचिन नहीं आया। शायद वे सभी शाही तहखाने में व्यस्त थे, जहाँ कैपुचिन पादरी पचास सेंट प्रति व्यक्ति के हिसाब से पर्यटकों को भव्य शाही ताबूत दिखाने का अच्छा-खासा कारोबार करते हैं।

मैंने कैसर की ओर देखा, और उसके चेहरे पर विचारशील भाव थे।

हम टीवी स्टूडियो लौट आए और कुछ फुटेज फिल्माए, जिसमें मुझे भूतिया घरों की तस्वीरों के साथ दिखाया गया। फिर एक रिपोर्टर ने मेरे संवाद लिख लिए, और अगले दिन, जैसा कि उनकी प्रथा है, दैनिक समाचार रील कमेंटेटर ने हमारी भूतिया खोज की कहानी लगभग सात मिलियन ऑस्ट्रियाई लोगों को पढ़कर सुनाई, जिन्हें इससे पहले कभी भी मानसिक अनुसंधान के बारे में नहीं बताया गया था।

घटनाओं की श्रृंखला कभी-कभी कई कड़ियों से मिलकर बनी होती है। न्यूयॉर्क में एक दोस्त के दोस्त ने मुझे हर्टा फिशर से मिलवाया, जो एक माध्यम और रहस्यवाद की छात्रा थीं, जिन्होंने बदले में मुझे सुझाव दिया कि जब मैं वियना में होऊं तो एडिथ रीडल से संपर्क करूं।

श्रीमती रीडल ने हमें दक्षिणी ऑस्ट्रिया के उन दो भूतिया किलों में ले जाने की पेशकश की, जहाँ मैं जाना चाहता था। दरअसल, वियना पहुँचने से पहले ही उन्होंने मेरी मदद कर दी थी। स्थानीय समाचार पत्र 'वोक्सब्लाट' ने हमारे आगमन से दो सप्ताह पहले मेरी गतिविधियों के बारे में एक बेहद तोड़-मरोड़ कर पेश की गई रिपोर्ट प्रकाशित की थी। श्रीमती रीडल ने मुझे वह रिपोर्ट भेजी ताकि मैं उचित कार्रवाई कर सकूँ।

मैंने फोन उठाया और वोल्क्सब्लाट को डायल किया।

मैंने जर्मन में कहा, "कृपया 'जिम्मेदार संपादक' से बात कीजिए।" ऑस्ट्रियाई अखबारों में "जिम्मेदार संपादक" नियुक्त होते हैं, जो आमतौर पर छोटे-मोटे क्लर्क होते हैं, और जब भी अखबार में कोई मानहानिकारक लेख प्रकाशित होता है, तो उन्हें ही दोष लेना पड़ता है।

"हैलो," फोन के दूसरी तरफ से एक मधुर और कोमल आवाज सुनाई दी।

मैंने जवाब दिया, "हेलो, आप भी! क्या आपने हाल ही में हैंस होल्ज़र, द घोस्ट हंटर के बारे में कोई लेख प्रकाशित नहीं किया था?"

“हां, हां,” आवाज ने कहा। “हमने कर दिखाया।”

मैंने मधुर स्वर में कहा, "ठीक है, मैं ही वह व्यक्ति हूँ, और मैं आप पर पाँच मिलियन शिलिंग का मुकदमा कर रहा हूँ।"

दूसरी तरफ से एक गहरी सांस लेने की आवाज आई। “रुको!” आवाज ने विनती की। “चलिए, हम इस बारे में बात कर लेते हैं।”

अगले दिन दोपहर को तुरहान बे हमें अखबार के संपादकीय कार्यालय तक ले गए और पास के एक कैफे में हमारे लौटने का इंतज़ार करने लगे। प्रकाशक से मेरी 3 बजे की मुलाकात थी। 3:15 बजे मैंने रिसेप्शनिस्ट को याद दिलाया कि समय बहुत महत्वपूर्ण है। पाँच मिनट बाद भी कोई बात नहीं हुई, तो मैंने अपना कार्ड एक नोट के साथ अंदर भेज दिया: "माफ़ कीजिए, मैं इंतज़ार नहीं कर सकता—मैं अपने वकील के पास जा रहा हूँ, जिनसे आपको आगे की जानकारी मिलेगी।"

“एस.ओ.बी.” कहने से पहले ही प्रकाशक दौड़ता हुआ आ गया। मैं उसके दफ्तर पहुँचा, जहाँ उसके संपादक और हैनेस वाल्टर नाम का एक पत्रकार भी मेरे साथ आ गया।

इस बात पर सहमति बनी कि मैं मानहानि का मुकदमा कर सकता हूं।

लेकिन वे एक और लेख छापने को तैयार थे, जो कहीं अधिक विस्तृत था और जिसमें मानहानिकारक सामग्री का कोई अंश नहीं था। क्या मैं इससे सहमत होता?

मैं हमेशा अपराधियों को दूसरा मौका देने में विश्वास रखता हूँ। कुछ हफ़्ते बाद जब मैंने वह लेख पढ़ा, तो मुझे एहसास हुआ कि मुझे मुकदमा करना चाहिए था। मुख्य रूप से श्री वाल्टर की सोच का नतीजा होने के बावजूद, उसमें कई इशारे थे, हालाँकि उसमें मेरी गतिविधियों का कुछ हद तक सटीक वर्णन था। ऑस्ट्रियाई टीवी केवल दस साल पुराना है और उसका प्रेस कई सौ साल पुराना है—फिर भी सार्वजनिक रूप से मुझे जो एकमात्र उचित व्यवहार मिला, वह घरों की स्क्रीन पर ही था। जैसा कि कई देशों में होता है, पत्रकार अक्सर अपने पाठकों की बुद्धिमत्ता को कम आंकते हैं। यही कारण है कि इतने सारे टीवी सेट बिकते हैं।

श्रीमती रीडल पचास के दशक के उत्तरार्ध या साठ के दशक के आरंभिक वर्ष की एक सुसंस्कृत महिला थीं, जो कई भाषाएँ बोल सकती थीं और बौद्धिक जिज्ञासा से परिपूर्ण थीं। कुलीन हंगेरियन वंश की होने के कारण, उनका विवाह मैनर्स चॉकलेट फैक्ट्री के मालिकों में से एक से हुआ है और वे डोर्नबाख के उपनगर में एक विशाल विला में रहती हैं।

पहले तो वह हमें अपनी कार में बर्गनलैंड प्रांत ले जाने वाली थीं, लेकिन जब तुरहान बे ने साथ आने की पेशकश की, तो हमने उनकी बड़ी कार ले ली। हम चारों ने मिलकर एक शानदार

टीम बनाई और कई क्षेत्रों में आपसी संबंध खोजे। मैं एडिथ रीडल की माध्यमता के बारे में और अधिक जानना चाहता था, इसलिए मैंने उनसे अपने बारे में सब कुछ बताने को कहा।

हम दक्षिण की ओर बढ़ रहे थे, ऑस्ट्रिया का वह हिस्सा जिसे 1919 में मिला लिया गया था और जो कई सदियों तक हंगरी का प्रांत रहा था, हालांकि इस क्षेत्र के लोग हमेशा से जर्मन और हंगेरियन दोनों भाषाएँ बोलते थे। जल्द ही हमने वियना के विशाल महानगर को पीछे छोड़ दिया और दक्षिणी राजमार्ग पर विएनर न्यूस्टाड के आसपास के पहाड़ों की ओर तेज़ी से बढ़ने लगे, जो एक महत्वपूर्ण औद्योगिक शहर था। यहाँ से हम एक कम इस्तेमाल होने वाली सड़क पर मुड़ गए और बुर्गेनलैंड, या महलों की भूमि में उतरने लगे।

मैंने पूछा, "श्रीमती रीडल, मुझे बताइए, आपने अपने बारे में पहली बार कुछ असामान्य कब महसूस किया—मेरा मतलब है, मानसिक शक्तियों का होना?"

अच्छी अंग्रेज़ी में बोलते हुए, बीच-बीच में कुछ जर्मन या फ्रेंच शब्द भी बोलती हुई, वह चंचल छोटी बच्ची बेझिझक अपने बारे में बातें करने लगी। उसने जवाब दिया, “जब मैं सिर्फ़ तीन साल की थी, तब मुझे अपना पहला अनुभव हुआ। मैं अपने कमरे में थी, तभी मैंने अपनी खिड़की के बाहर धुआँ उठता देखा, मानो आग लगी हो। यह तो बस मेरा भ्रम था—असल में कोई धुआँ नहीं था।”

“‘युद्ध छिड़ जाएगा!’ मैं चिल्लाई और अपनी माँ के पास दौड़ पड़ी। सोचिए एक छोटा बच्चा युद्ध के बारे में बात कर रहा हो। मुझे यकीनन उस शब्द का अर्थ नहीं पता था जिसका मैं इस्तेमाल कर रही थी!”

“अद्भुत,” तुरहान बे ने कहा, और मैं उनसे सहमत थी। मैंने इससे पहले कभी इतनी कम उम्र में मानसिक अनुभवों के बारे में नहीं सुना था।

"तीस साल बाद, उस घर पर बम गिरा, और सचमुच उसी जगह से धुआं उठा जहां मैंने उसे बचपन में देखा था, और घर जलकर राख हो गया।"

मैंने पूछा, "आखिरी बार आपको मानसिक दृष्टि से कोई असामान्य अनुभव कब हुआ था?"

ग्रामीण इलाका धीरे-धीरे और अधिक देहाती होता जा रहा था और अब हमें कम ही कारें दिखाई दे रही थीं।

“मैं सत्रह साल का था। मेरा एक चचेरा भाई हंगेरियन हुसार रेजिमेंट में सेवारत था, और हमारी शादी तय हो चुकी थी। पहला विश्व युद्ध पहले ही शुरू हो चुका था, लेकिन उसने मोर्चे पर सेवा नहीं की। वह देश के अंदरूनी हिस्से में, हाइडेनशाफ्ट के पास तैनात था।”

“‘मुझे मोर्चे पर लड़ने में कोई आपत्ति नहीं है,’ वह अक्सर मुझसे कहता था। ‘मैं दुश्मन से नहीं डरता। मुझे बस किसी तरह कोहरे से डर लगता है।’”

“कोहरा?” मैंने कहा। “हंगरी में एक हुसार अधिकारी के लिए कोहरे की चिंता करना अजीब बात है। यहाँ तो ज़्यादा कोहरा नहीं होता, है ना?”

“नहीं, मुझे समझ नहीं आया कि कोहरे से उसे डरने की क्या ज़रूरत है। खैर, क्रिसमस आया और मैंने उसे एक कार्ड भेजा, जिस पर एक देवदूत बना हुआ था। बिना ज़्यादा सोचे-समझे, मैंने देवदूत के प्रभामंडल में ‘शांति’ शब्द लिख दिया और कार्ड अपने मंगेतर को भेज दिया।”

बाद में मुझे इस बात का पछतावा हुआ—आखिरकार, एक सैनिक के लिए जीत की कामना करनी चाहिए, शांति की नहीं—मैं कार्ड वापस चाहता था, क्योंकि यह पूरा विचार मुझे परेशान कर रहा था। मुझे कार्ड वापस मिल गया—लेकिन उस पर किसी अनजान व्यक्ति के हाथ से लिखा हुआ था, 'सेवा के दौरान शहीद, 22 दिसंबर।'

“मुझे समझ नहीं आ रहा था कि हाइडेनशाफ्ट में युद्ध के दौरान उसकी मृत्यु कैसे हो सकती है, जहाँ सैकड़ों मील के दायरे में कोई दुश्मन नहीं था। मुझे बहुत बुरा लगा। मैं भी मरना चाहती थी। मैं अपने कमरे में गई और बत्तियाँ बुझा दीं; मैं जल्दी सोना चाहती थी। मैं अभी सोई नहीं थी—असल में, पूरी तरह जाग रही थी—तभी मुझे अपने पास एक तरह की रोशनी दिखाई दी, और उस चमकदार गोले के भीतर मैंने एक चट्टान, एक पेड़ और पेड़ के नीचे किसी चीज़ का चूर्ण-चूर्ण देखा, जिसे करीब से देखने की हिम्मत मुझमें नहीं थी। उस पल मुझे पता चला कि या तो मैं उसके साथ मृत्यु को प्राप्त हो जाऊँ, या जीवित रहूँ। बहुत कम उम्र होने के कारण, मेरी जीवन शक्ति प्रबल हुई। जैसे ही मैंने जीवितों की दुनिया में रहने का फैसला किया, वह दृश्य धीरे-धीरे धुंधला पड़ गया और गायब हो गया। लेकिन मैं अब भी सोच रही थी कि वह जहाँ तैनात था, वहाँ उसकी मृत्यु कैसे हो सकती है। वह दृश्य तुरंत वापस आ गया, लेकिन मेरी देखने की शक्ति कमजोर हो रही थी; शायद उत्तेजना मुझ पर हावी हो गई थी। खैर, मैं उसे स्पष्ट रूप से नहीं देख पा रही थी।”

अगली सुबह मैंने अपने माता-पिता को घटना के बारे में बताया। माँ और पिताजी ने एक-दूसरे को देखा। माँ ने कहा, 'उसे बता देना ही बेहतर है,' लेकिन पिताजी ने सिर हिला दिया। एक साल बीत गया, लेकिन मैं अपने मंगेतर को कभी नहीं भूली।

एक दिन मैंने अपने पिता के अध्ययन कक्ष में कुछ कागजात व्यवस्थित करने में उनकी मदद की। जब मैं उनकी मेज पर रखे कागजात छांट रही थी, तभी मेरी नज़र काले बॉर्डर वाले एक पत्र पर पड़ी। मुझे लगा कि यह मेरे मंगेतर फ्रांसिस से संबंधित है। मैंने अपने पिता से पूछा कि क्या मैं इसे ले जा सकती हूँ, और अपने कामों में व्यस्त होने के कारण उन्होंने सहमति में सिर हिलाया।

“मैं तुरंत अपने कमरे में गई और काले बॉर्डर वाला पत्र खोला। यह फ्रांसिस के एक दोस्त का पत्र था, और उसने परिवार को बताया कि मेरे मंगेतर की मृत्यु कैसे हुई। वह इतालवी मोर्चे की ओर एक टोही मिशन पर एक छोटा विमान उड़ा रहा था, लेकिन अचानक घने कोहरे के कारण उसे रुकना पड़ा। घने कोहरे में, उसने अपनी ऊंचाई का गलत अनुमान लगाया और एक चट्टान से टकरा गया। विमान के टुकड़े-टुकड़े हो गए और बाद में उसका शव एक पेड़ के नीचे मिला। बिल्कुल वैसा ही जैसा मैंने अपने सपने में देखा था!”

मैंने कहा, "मुझे लगता है कि आपने मुझे पूर्वाभास से जुड़े कुछ चौंकाने वाले अनुभवों के बारे में बताया था - आने वाली आपदा की चेतावनी देने की आपकी क्षमता के बारे में।"

“ऐसा अक्सर होता है,” श्रीमती रीडल ने जवाब दिया। “उदाहरण के लिए, पिछले युद्ध के दौरान, एक बार जब मेरे बच्चे ला ऑन थेयर में स्कूल में पढ़ रहे थे, तो मैं कई बच्चों और कुछ माताओं के साथ स्कूल बस से उनसे मिलने गई। मैं ड्राइवर के पीछे बैठी थी, तभी अचानक हमारे इलाके में होने वाले तूफ़ान में से एक आ गया। अचानक, मैंने ड्राइवर से चिल्लाकर कहा, ‘रुको, तुरंत रुको!’”

“वह रुका और पीछे मुड़ा। ‘क्या तुम्हारा दिमाग खराब हो गया है? क्या बात है?’ उसने पूछा। उसके बोलने से पहले ही एक विशाल पेड़ सड़क पर गिर गया और उस जगह पर जा गिरा जहाँ अगर मैंने बस को न रोका होता तो वह होती।”

“एक और अवसर पर, पिछले युद्ध के बाद, मेरी बेटी और मुझे ग्रामीण इलाके में स्थित मिस्टेलबाख में एक शादी में आमंत्रित किया गया था। उस समय अपनी कार का उपयोग करना संभव नहीं था, ट्रेनें अभी तक नहीं चल रही थीं, और परिवहन काफी आदिम था।

“दो समूह थे: एक हमारी शादी का दल था, दूसरा एक अंतिम संस्कार का दल था जो उसी दिशा में जा रहा था। परिवहन बस से हो रहा था। हमारे नंबर पुकारे गए, और हम बस में चढ़ने ही वाले थे, तभी मैंने अपनी बेटी को पुकार कर कहा, ‘वापस आ जाओ, यह हमारी बस नहीं है।’”

"हमारा पूरा समूह वापस मुड़ गया और मुझसे पूछा गया कि मैंने उन्हें वापस क्यों बुलाया, जबकि स्पष्ट रूप से हमारे नंबर बुलाए जा चुके थे।"

“मैं उन्हें बता नहीं सका। मुझे कभी पता नहीं चलता कि मैं ये सब क्यों करता हूँ। मुझे बस इतना पता है कि मुझे ये करना ही है।”

“इसी बीच, दूसरे पक्ष के लोग, जो उस अंतिम संस्कार में जा रहे थे, हमारी जगह बस में चढ़ गए। मैंने कहा, ‘बस को अगली बार हमें लेने के लिए वापस आना है।’”

“क्या सच में?” मैंने पूछा।

“बस को आधे घंटे में वापस आना था। तीन घंटे बीत गए और बस नहीं आई। फिर खबर आई —एक दुर्घटना हो गई थी। मेरी चेतावनी से हम बच गए, लेकिन अंतिम संस्कार में शामिल लोग बुरी तरह घायल हो गए।”

"आपको ये चेतावनी देने वाली चमक कितनी बार दिखाई दी हैं?"

"पिछले पांच वर्षों में शायद बीस बार।"

"आपमें यह महसूस करने की क्षमता भी है कि वस्तुएं और लोग कहां सुरक्षित हो सकते हैं, क्या यह सही नहीं है?"

“जी हां,” श्रीमती रीडल ने सिर हिलाया। “जैसा कि आप जानती हैं, मेरे पति के पास दुर्लभ पुस्तकों का एक अनमोल संग्रह है। जब युद्ध छिड़ा, तो उन्होंने सबसे कीमती पुस्तकों को देश के किसी सुरक्षित स्थान पर भेजने का फैसला किया। लेकिन जैसे ही पुस्तकें वहां उतारी गईं, मुझे ड्राइवर को उन्हें वापस लाने का आदेश देना पड़ा। मुझे वह जगह बिल्कुल भी सुरक्षित

नहीं लगी। हम एक गिरजाघर गए और उन्हें वहां छिपाने की कोशिश की, लेकिन फिर भी मेरे मन में एक चेतावनी सी आई। आखिरकार, हमने दूसरी गिरजाघर में पुस्तकें उतार दीं। पादरी को पहले ही वियना के एक पुस्तक विक्रेता की कुछ पुस्तकें मिल चुकी थीं और उन्होंने मुझे भी अपनी पुस्तकें उस ढेर में रखने के लिए आमंत्रित किया। लेकिन मैंने विनम्रता से मना कर दिया। इसके बजाय, मैं तब तक इधर-उधर खोजती रही जब तक मुझे वह जगह नहीं मिल गई जिसे मेरी अंतरात्मा ने मुझे एकमात्र सुरक्षित स्थान बताया: शौचालय!"

"पुजारी ने इस पर कैसी प्रतिक्रिया दी?"

"खैर, उन्हें यह पसंद नहीं आया। उन्होंने मुझसे विरोध किया, लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ। आखिरकार, घर आग में जलकर राख हो गया, सिवाय शौचालय के, और युद्ध के अंत में हमारी किताबें सुरक्षित थीं!"

"क्या आपने अपने इस उपहार को अपने व्यक्तित्व के एक हिस्से के रूप में स्वीकार कर लिया है?"

"बिल्कुल। ज़रा सोचिए कि इससे मुझे अब तक कितना फायदा हो चुका है।"

अब हम उस सीमावर्ती क्षेत्र में पहुँच चुके थे जहाँ हंगरी और ऑस्ट्रिया मिलते हैं, और हमें सावधान रहना था कि कहीं हम गलती से गलत रास्ते पर चलकर लौह पर्दे को पार न कर लें। ज़मीन हरी-भरी और उपजाऊ थी और सड़क सुंदर पहाड़ियों के बीच से गुज़रती थी, जिन पर कभी-कभी प्राचीन महल या किले बने होते थे, जो इस बात का स्पष्ट प्रमाण थे कि इस देश को अपना नाम - किलों की भूमि - कैसे मिला।

हमारा गंतव्य फोरचेंस्टाइन था, जो एक विशाल पहाड़ी की चोटी पर स्थित भव्य इमारतों का एक पीले रंग का परिसर था, जो आसपास के परिदृश्य से सीधा ऊपर उठता हुआ प्रतीत होता था। जैसे-जैसे हम पहाड़ी पर चढ़ते गए, हमें उसकी मीनारें अपनी ओर बुलाती हुई दिखाई देने लगीं।

कुछ ही देर बाद, हम भव्य किले के पास पहुँचे और तुरहान ने कार पार्क कर दी। यह एस्टरहाज़ी परिवार के सबसे बड़े किलों में से एक है, और ऐसे कई किले हैं। यह परिवार कई शताब्दियों तक हंगरी और दक्षिण-पूर्वी ऑस्ट्रिया में धनी और शक्तिशाली रहा है। हालाँकि कम्युनिस्टों ने हंगरी में एस्टरहाज़ी की ज़मीनें छीन ली हैं, फिर भी यह परिवार ऑस्ट्रिया में

विशाल जागीरों पर अपना नियंत्रण बनाए हुए है और संभवतः आगे भी बनाए रखेगा। आज, फोरचेंस्टीन को एक संग्रहालय के रूप में चलाया जाता है। इसकी किलेबंदी, लंबी, मेहराबदार दीर्घाएँ और कमरे, चित्रों का शानदार संग्रह, और एक छोटी सेना को सुसज्जित करने के लिए पर्याप्त मध्यकालीन और सत्रहवीं शताब्दी के हथियार इसे मध्य यूरोप के इस हिस्से में एक प्रमुख पर्यटक आकर्षण बनाते हैं। हालाँकि इसकी शुरुआत चौदहवीं शताब्दी में हुई थी, लेकिन इसे वास्तव में तुर्की युद्धों के समय ही महत्व मिला, जब तुर्की की सेनाएँ सचमुच बहुत करीब थीं।

उस दौरान पूरे राज्य के लिए न्याय न्यायालय भी यहीं लगता था और प्रांगण में ही फांसी की सजाएं दी जाती थीं।

हम सामने की खाई को पार करके, एक लकड़ी के पुल से होते हुए बाहरी आंगन में पहुंचे।

"इस महल में तरह-तरह की आवाजें और तरह-तरह की हलचलें होती रहती हैं," श्रीमती रीडल ने समझाया।

“यहाँ एक कुआँ है, जो चार सौ बीस फीट गहरा है, जिसे तुर्की के युद्धबंदियों ने खुदवाया था। कुआँ बनकर तैयार हो जाने पर, युद्धबंदियों को उसमें फेंक दिया गया था। मुझे यकीन है कि उनमें से कुछ अभी भी जीवित हैं।”

"आपको कैसे मालूम?"

"कुएं के आसपास कई लोगों ने आहें भरने की आवाज सुनी है।"

तुरहान बे, जो आधे तुर्की और आधे ऑस्ट्रियाई हैं, मुस्कुराए। उन्होंने कहा, "मैं यहां शांति के राजदूत के रूप में आया हूं।"

"साथ ही जंजीरों के खड़कने की आवाज भी आ रही थी," श्रीमती रीडल ने आगे कहा।

"क्या आपको यहां कभी कुछ असामान्य महसूस हुआ?"

श्रीमती रीडल ने जवाब दिया, “मैं पहले भी एक बार यहाँ आ चुकी हूँ, और जब भी मुझे अकेले रहने का मौका मिलता था, समूह के बाकी लोगों से दूर, जिन्हें घुमाया जा रहा था, तो मुझे किसी की मौजूदगी का एहसास होता था। कोई मुझसे कुछ कहना चाहता था, शायद मुझसे मदद

की गुहार लगाना चाहता था। लेकिन गाइड हमें आगे ले गया, और मैं पता नहीं लगा पाई कि वह कौन था।"

अगर कोई एक चीज़ है जो मुझे बेहद नापसंद है, तो वो है किसी भी तरह के गाइडेड टूर। मैं स्थानीय गाइड के पास गया और उससे प्राइवेट टूर के लिए कहा। उसने ज़ोर देकर कहा कि मैं एक दर्जन टिकट खरीदूँ, जो कि सबसे कम संख्या थी जितने लोगों को वो घुमा सकता था। हम सब एक साथ निकल पड़े, चार इंसान और आठ भूत। कम से कम मैंने आठ भूतों के लिए पैसे तो दे दिए।

अब हम भीतरी आंगन में चले गए, जहां प्रवेश द्वार के मेहराब के नीचे एक भरा हुआ मगरमच्छ लटका हुआ था, जिसने हमें उन दिनों की याद दिला दी जब एस्टरहाज़ी परिवार के लोग दुनिया भर में शिकारी हुआ करते थे।

"माना जाता है कि इससे बुरी आत्माएं भाग जाती हैं," श्रीमती रीडल ने टिप्पणी की।

"मुझे लगता है कि उनका अंतरात्मा उन्हें कचोट रहा होगा," मैंने गंभीर स्वर में कहा। उन दिनों हंगरीवासी क्रूरता में तुर्कों के बराबर ही थे।

हम पॉल एस्टरहाज़ी के स्मारक के पास से गुज़रे, जिस पर जंजीरों में जकड़े तुर्की युद्धबंदियों को दर्शाने वाली नक्काशी बनी हुई थी, और फिर किले में प्रवेश किया। हमारे गाइड ने हमें सीढ़ियों से छत पर ले गए, जो अब झाड़ियों और घास से ढकी हुई है।

अचानक, श्रीमती रीडल ने मेरा हाथ पकड़ लिया। "वहाँ, मुझे ऐसा लग रहा है कि मैं उस जगह की ओर खिंची चली जा रही हूँ। यहाँ किसी ने बहुत कष्ट सहा है।"

हम वापस उसी रास्ते पर लौटे और उसके बताए हुए दिशा-निर्देश का अनुसरण किया। यहाँ ज़मीन खुदी हुई थी और एक छोटा सा रास्ता दिखाई दे रहा था, जो किले की ओर नीचे जाता था।

मैंने अपने गाइड से पूछा, "इसके नीचे क्या है?"

"कालकोठरी," उसने जवाब दिया। वह भूतों पर विश्वास नहीं करता था। उसे सिर्फ पर्यटकों पर विश्वास था।

हम जल्दी से टावर में नीचे उतरे। गहरे तहखाने में जाने वाले द्वार पर पहुँचकर हम रुक गए। श्रीमती रीडल अब गहरी भावनाओं से कांप रही थीं।

"ऊपर किसी ने मेरी स्कर्ट पकड़ ली," उसने कहा और उस छत की ओर इशारा किया जिसे हम अभी-अभी छोड़कर आए थे, "जैसे कि वह खुद पर ध्यान आकर्षित करने की कोशिश कर रही हो।"

मैंने धुंधली रोशनी वाले तहखाने में नीचे देखा। हम सभी को एक अजीब सी सिहरन महसूस हुई। यहीं पर महल का मालिक अपने दुश्मनों को भूख से मरने के लिए फेंक देता था। एक बार वह महल से बाहर गया था और उसका प्रशासन अपनी पत्नी रोज़ाली को सौंप दिया था। उसने उसके कुछ मेहमानों के साथ दुर्व्यवहार किया और उसके लौटने पर उसने उसे भी इसी तहखाने में मरने के लिए फेंक दिया।

ऐसा कहा जाता है कि उसका भूत महल में भटकता है, हालांकि उसके पति ने, पश्चाताप या भूत के भय से ग्रस्त होकर, पास की एक पहाड़ी पर रोसैली को समर्पित एक चैपल का निर्माण करवाया।

मैंने श्रीमती रीडल से पूछा, "आपको यहां कैसा महसूस हो रहा है?"

“एक महिला बहुत ऊँची जगह से यहाँ नीचे गिर गई। मुझे उसका बहुत गहरा एहसास हो रहा है।”

"उससे क्या चाहिए?"

श्रीमती रीडल एक पल के लिए चुप रहीं, फिर कांपती हुई आवाज में बोलीं, "मुझे लगता है कि वह चाहती हैं कि हम उनके लिए प्रार्थना करें।"

गाइड के बताए रास्ते पर चलते हुए, हम सीढ़ियों की एक और सीढ़ी चढ़कर एस्टरहाज़ी परिवार के निजी चैपल में पहुँचे। बारह टिकट लिए हुए व्यक्ति के लिए वहाँ कोई भी दरवाजा बंद नहीं था।

श्रीमती रीडल ने झटपट गैलरी की रेलिंग पकड़ ली और पूरी श्रद्धा से प्रार्थना करने लगीं। नीचे, चैपल में, कई मोमबत्तियों की रोशनी टिमटिमा रही थी।

कुछ क्षणों के बाद, एडिथ रीडल सीधी खड़ी हो गईं। उन्होंने कहा, "मुझे लगता है कि अब उन्हें राहत महसूस हो रही है।"

हमने इमारत का निरीक्षण जारी रखा। गाइड ने सहज भाव से कहा, "यह फांसी कक्ष है," और फांसी की कुर्सी और तलवार की ओर इशारा किया। फिर गाइड, जिसका नाम लेटनर था, हमें कैदियों के कुएं के पास ले गया और उसमें जलती हुई मशाल डालकर उसकी अपार गहराई दिखाई। मशाल को तल तक पहुंचने में कई सेकंड लगे। उसने कहा, "इसे तेरह वर्षों में पांच हजार तुर्कों ने बनाया था।"

श्रीमती रीडल कुएं के मुहाने के पास गईं, फिर पीछे हट गईं। "भयानक," उन्होंने बुदबुदाते हुए कहा। "मैं इसके पास नहीं जा सकती।"

मुझे आश्चर्य हुआ कि मारे गए तुर्कों में से कितने लोग अभी भी इस गहरी खाई में फंसे हुए हैं।

* * *

बाहर धूप खिली हुई थी और दक्षिणी ऑस्ट्रिया की मशहूर सुहावनी गर्मियों की दोपहरों में से एक थी।

हम रोसैली को समर्पित चैपल के पास से गुज़रे, लेकिन मन ही मन हम जानते थे कि इससे कोई खास लाभ नहीं हुआ। संभवतः हमारी यात्रा ने प्राचीन बर्गफ्राउ की व्यथित आत्मा को पहाड़ी की चोटी पर बने उस आत्मप्रशंसा से कहीं अधिक शांति प्रदान की थी।

हमने नक्शे देखे, क्योंकि हमारा अगला गंतव्य, बर्नस्टीन, पश्चिम की ओर लगभग तीस मील या उससे अधिक दूर था। हम घने जंगलों से होते हुए, शांत छोटे-छोटे गांवों से गुज़रे जहाँ दूर-दूर तक कोई टीवी एंटीना नज़र नहीं आ रहा था, और रेल की पटरियाँ ऐसी थीं जिन पर सालों से कोई ट्रेन नहीं चली थी। मौसम ठंडा और अंधेरा होता जा रहा था, और बर्नस्टीन का अभी भी कोई अता-पता नहीं था!

मुझे यह सोचने लगा कि कहीं हमने गलत मोड़ तो नहीं ले लिया, तभी अचानक सड़क के मोड़ के पीछे से हमें महल उभरता हुआ दिखाई दिया।

फ़ोर्चेंस्टाइन जितना भव्य न होते हुए भी, बर्नस्टीन अपने छोटे लेकिन सुसंस्कृत पार्क में मौजूद अपनी शालीनता और पुनर्जागरणकालीन स्वरूप से प्रभावित करता है। पास ही में स्मारागड

नामक अर्ध-कीमती पत्थरों की एक खान है, और नीचे की मंजिल पर एक दुकान है जहाँ ये पत्थर प्रदर्शित हैं। यह एक प्रकार का जंगली पन्ना है, बेशक असली पन्ने जितना कीमती नहीं, लेकिन अपने गहरे हरे रंग और बारीकियों के कारण बेहद खूबसूरत है।

बर्नस्टीन महल तेरहवीं शताब्दी का है और ऑस्ट्रियाई और हंगेरियन रईसों के बीच लगातार स्वामित्व बदलता रहा है। 1892 से यह हंगरी के कुलीन वर्ग के अल्मासी काउंट्स के स्वामित्व में है।

हम बिल्कुल ही अनुचित समय पर पहुँचे। काउंट के पास कई मेहमान थे जिनसे घर के रखरखाव का खर्च चलता था, और खाना खाने का समय भी करीब था। फिर भी, हम उन्हें अपनी बातों से मनाकर उस भूतिया गलियारे में ले जाने में कामयाब रहे।

11 नवंबर, 1937 को, साठ वर्ष से अधिक आयु के लंबे-चौड़े कद के काउंट अल्मासी अपनी लाइब्रेरी में बैठे थे, तभी उनके एक मेहमान ने उनसे एक विशेष पुस्तक मांगी। लाइब्रेरी तक पहुंचने के लिए इमारत के सामने वाले हिस्से से जुड़ने वाले एक संकरे, लंबे गलियारे से होकर गुजरना पड़ता है।

“मैं पुस्तकालय से निकला, टॉर्च लेकर गलियारे में चला—मुझे रात में मुख्य बत्तियाँ जलाना पसंद नहीं है—खैर, जब मैं इस गलियारे में पहुँचा, तो मैंने अपनी टॉर्च की रोशनी में एक महिला को उस स्थान पर स्थापित लकड़ी की मैडोना की मूर्ति के सामने घुटने टेकते हुए देखा। इसे 1914 में मेरी माँ ने वहाँ स्थापित किया था, जब मेरे दोनों भाई और मैं युद्ध में गए हुए थे। मैंने अक्सर 'बर्नस्टीन की श्वेत महिला' के बारे में सुना था, इसलिए मुझे तुरंत समझ आ गया कि मैं एक भूत देख रहा हूँ। मेरी पहली धारणा यह थी कि वह प्लास्टर ऑफ पेरिस से बनी एक कठोर रेखाओं वाली मूर्ति जैसी दिखती थी। उसने पंद्रहवीं शताब्दी की हंगेरियन कुलीन महिला की पोशाक पहनी हुई थी, सिर पर एक महिला का मुकुट था और माथे पर एक बड़ा पन्ना-हरा पत्थर था जो उसके चारों ओर एक धुंधली, हरी रोशनी बिखेर रहा था। उसने अपने हाथ अपने बाएँ गाल के नीचे मोड़ रखे थे।”

मैंने पूछा, "उसे देखकर तुमने क्या किया?"

“मुझे गलियारे की बत्ती जलाने का समय मिल गया था,” काउंट ने उत्तर दिया, “ताकि वह दो रोशनी के बीच रहे, एक मेरी टॉर्च की और दूसरी ऊपर लगी बिजली की बत्ती की। गलती की कोई गुंजाइश नहीं थी, मैंने उसे साफ-साफ देखा। फिर अचानक ही वह गायब हो गई।”

मैंने पूछा, "काउंट अल्मासी नाम के इस भूत के बारे में क्या परंपरा है?"

“खैर, वह एक इतालवी महिला, कैथरीन फ्रेशोबाल्डी थीं—जो फ्लोरेंस के एक ऐसे परिवार से थीं जो आज भी मौजूद है—जिसका ज़िक्र दांते के इन्फर्नो में मिलता है। उन्होंने एक हंगरी के रईस, काउंट उजलॉकी से शादी की, जो एक बहुत पुराने हंगरी परिवार से थे। उनके पति बोस्निया के आखिरी राजा थे। वह परिवार विलुप्त हो गया। वह बिना किसी कारण के बहुत ईर्ष्यालु थे, और इसलिए उन्होंने उन्हें मार डाला; एक मत के अनुसार, चाकू मारकर; दूसरे मत के अनुसार, दीवार में चुनवाकर। यही कहानी है।”

"क्या किसी और ने बर्नस्टीन की श्वेत महिला को देखा है?"

“कई लोगों ने। जब मैं छोटा था, मुझे याद है कि हर साल कोई न कोई उसे देखता था। जब मैं सेना में था, 1910 से 1913 के बीच, उसे कई बार देखा गया। 1921 में उसे फिर से देखा गया जब उस साल के अल्पकालिक ऑस्ट्रो-हंगेरियन अभियान के दौरान बर्नस्टीन में हंगेरियन कब्ज़ा करने वाली सेना तैनात थी—और उस प्रेत जैसी महिला ने उन्हें भगा दिया! फिर, ज़ाहिर है, 1937 में, जैसा कि मैंने आपको बताया, और वह आखिरी बार था जब मैंने उसे देखा था।”

“मुझे यह भी लगता है कि आपके एक दोस्त ने उसे अफ्रीका के कैमरून में देखा था? इसका इससे क्या संबंध है?”

काउंट अल्मासी हँसे। “खैर, वो तो एक अलग कहानी है। मेरा एक सेना का दोस्त—मैं उसे ज़्यादा अच्छी तरह से नहीं जानता था, मेरी मुलाकात उससे 1916 में हुई थी, और उसने 1937 में ऑस्ट्रिया छोड़ दिया और कैमरून में एक खेत खरीद लिया। वह एक अमीर आदमी बन गया। 1946 में उसके साथ एक अजीब घटना घटी।”

"एक प्रेत जो बर्नस्टीन की श्वेत महिला से बहुत मिलता-जुलता था (हालांकि वह हमारे भूत के बारे में बिल्कुल भी कुछ नहीं जानता था) उसे दिखाई दिया और उससे इतालवी में बात की।"

"1954 में वह मुझसे उस भूत की कहानी की पुष्टि करने आया था जो उसने उसे सुनाई थी। भूत ने दावा किया कि वह प्रसिद्ध श्वेत महिला है और उसने यह देखने के लिए ऑस्ट्रिया आने का फैसला किया कि क्या वास्तव में ऐसा कोई भूत मौजूद है।"

“अद्भुत,” मैंने कहा। “मैं केवल यही अनुमान लगा सकता हूँ कि कैमरून में दिखाई देने वाला वह प्रेत एक विचार प्रक्षेपण था, जब तक कि, निश्चित रूप से, आपका भूत अब इस महल से बंधा हुआ न हो।”

काउंट ने एक पल सोचा। अंत में उन्होंने कहा, "मुझे उम्मीद है ऐसा ही हो। यह एक हवादार पुराना किला है और अफ्रीका इससे कहीं ज्यादा गर्म है।"

* 22

मेयरलिंग का रहस्य

नाटकीय कथाओं और भावुक प्रेम कहानियों से भरी दुनिया में, जहां चुनने के लिए सदियों का इतिहास मौजूद है, कई देशों के फिल्म निर्माता बार-बार मेयरलिंग और ऑस्ट्रिया के युवराज रुडोल्फ की दुखद मृत्यु को एक ऐसे विषय के रूप में चुनते रहे हैं जो जाहिर तौर पर कभी पुराना नहीं होता।

ऐसा शायद इसलिए है क्योंकि मेयेरलिंग की रोमांटिक कहानी एक पारंपरिक भावुक कहानी की सभी आवश्यकताओं को पूरा करती है: एक सुंदर, गलत समझा जाने वाला राजकुमार जो अपने कठोर पिता, सम्राट के साथ अच्छे संबंध नहीं रख पाता; एक प्यार करने वाली लेकिन बहुत ज्यादा भावुक न होने वाली पत्नी जिसे राजकुमार नजरअंदाज करता है; एक निर्भीक युवती जिसका एकमात्र अपराध राजकुमार से प्यार करना है—ये कहानी के पात्र हैं जिन्हें हॉलीवुड के नजरिए से देखा गया है।

यह सुनिश्चित करने के लिए कि कोई भी इसे अनैतिक न माने, दोनों प्रेमियों को एक-दूसरे से सच्चा प्यार करते हुए दिखाया गया है—लेकिन चूंकि राजकुमार पहले से ही विवाहित है, इसलिए यह प्रेम संभव नहीं है और इसलिए उसे मरना होगा। युवराज्ञी को उसका पति वापस मिल जाता है, भले ही वह मृत हो। फिल्म संस्करण में पिता और पुत्र के बीच राजनीतिक मतभेदों को पूरी तरह से नजरअंदाज कर दिया गया है, और युवा बैरोनेस वेटसेरा

के कुछ कमियों को भी इस आदर्श, सुखद प्रेम कहानी में दखल देने की अनुमति नहीं दी गई है।

राजकुमार वियना के प्रेटर पार्क जाते हैं, वहाँ एक युवती को देखते हैं और उससे प्रेम करने लगते हैं। गुप्त मुलाकातें तय होती हैं और प्रेम परवान चढ़ने लगता है। लेकिन फिर हिसाब चुकाना पड़ता है। पिता फ्रांज जोसेफ नाराज़ हो जाते हैं, राजकीय हित का ध्यान रखना पड़ता है, और आम लोग (राजकुमार के लिए एक साधारण बैरोनेस तो आम नागरिक के समान ही होती है!) राजगद्दी के उत्तराधिकारी से विवाह नहीं कर सकते। वे भाग सकते थे और सब कुछ त्याग सकते थे—लेकिन वे ऐसा नहीं करते। शायद इसी मामले में, फिल्मी रूपांतरण सच्चाई के ज़्यादा करीब पहुँचते हैं जितना उन्हें लगता है: रुडोल्फ कभी भाग नहीं सकता था, और वेटसेरा उससे इतना प्रेम करती थी कि उसकी इच्छा के विरुद्ध कुछ भी नहीं कर सकती थी।

सम्राट की राजनीतिक ईर्ष्या या युवराज और उसके पिता द्वारा उस पर थोपी गई पत्नी के बीच प्रेम की पूर्ण कमी को नकारा गया है। फिल्म में, वह पीड़ित महिला है, जो इस कृति को देखने के लिए भुगतान करने वाले लाखों विवाहित दर्शकों के लिए नैतिक चिंता का प्रतीक है।

एक दुखी, उदास राजकुमार की कहानी, जो एक ऐसी युवती से प्यार करता है जो उसके लिए और उसके साथ मरने को तैयार है, में एक अटूट आकर्षण है। शायद जीवन देने वाले प्रेम और जीवन छीन लेने वाली मृत्यु के इतने निकट संयोग का रोमांच ही इस शक्तिशाली संदेश का रहस्य है, या शायद यह राजसी षड्यंत्रों और दिलकश रोमांस का सदियों पुराना आकर्षण है जो पीढ़ी दर पीढ़ी दर्शकों को मंत्रमुग्ध रखता है।

लेकिन क्या यह मेयरलिंग में शाही शिकारगाह पर घटी त्रासदी की सच्ची कहानी बताता है, या मेयरलिंग के असली रहस्य कुछ और ही थे?

उन दुर्भाग्यपूर्ण और भयावह तथ्यों को समझने के लिए, जिनसे पटकथा लेखकों ने अपने रोमांटिक संस्करण बुने हैं, हमें सबसे पहले 1880 के दशक के ऑस्ट्रियाई साम्राज्य के राजनीतिक जीवन की गुप्त अंतर्धाराओं पर एक नजर डालनी होगी।

दशकों से, महान साम्राज्य की सैन्य शक्ति कमजोर होती जा रही थी, जबकि जर्मनी का सितारा लगातार बुलंद होता जा रहा था। ऑस्ट्रिया पर हावी प्रतिक्रियावादी राजनीतिक व्यवस्था शेष यूरोप से अलग-थलग प्रतीत हो रही थी। कठोर राजशाही और उसकी सरकार

द्वारा साम्राज्य की आबादी में मौजूद अनेक विदेशी तत्वों को किसी भी हद तक आत्मनिर्णय देने की अनिच्छा स्पष्ट रूप से संकट की ओर ले जा रही थी।

विशेषकर, गर्वित हंगरीवासियों के साथ समस्याएँ पनप रही थीं। अपने राज्य को ऑस्ट्रियाई साम्राज्य में शामिल किए जाने से कभी सहमत न होने वाले मग्यारों ने 1848 में खुलेआम विद्रोह कर दिया था और इतनी ताकत से किया था कि ऑस्ट्रियाई लोगों को रूसी सैनिकों की मदद लेनी पड़ी थी।

1849 में विद्रोह को कुचल दिया गया और हंगरी पहले से कहीं अधिक गुलाम बन गया। लेकिन युद्ध के मैदान में हारी हुई लड़ाई संसद और शाही महल के गलियारों में जारी रही। हंगरी ने अपनी राष्ट्रीय पहचान के लिए तब तक दबाव बनाए रखा जब तक कि 1867 में सरकार ने हार नहीं मान ली: तथाकथित औस्गलाइच, या सुलह, ने एक हंगेरियन राष्ट्र के अस्तित्व को स्वीकार किया, और साम्राज्य एक दोहरी राजशाही में बदल गया, जिसमें अलग-अलग ऑस्ट्रियाई और हंगेरियन संसदें, मंत्री और निश्चित रूप से भाषाएँ थीं, और ये सब हैब्सबर्ग सम्राट के शासन के अधीन थे।

अब ऑस्ट्रो-हंगरी एक कमजोर, लेकिन कम अशांत विशाल राष्ट्र बन चुका था, जो केवल अपने शासक, वृद्ध सम्राट फ्रांज जोसेफ के नेतृत्व में एकजुट था। फिर भी, हंगेरियन सामंतों ने अलगाववादी नीति अपनाई और धीरे-धीरे डेन्यूब राजशाही के दोनों हिस्सों के बीच दरार पैदा कर दी, जबकि जर्मनिक ऑस्ट्रियाई शासक वर्ग ने हंगरीवासियों को नियंत्रित करने और अपना वर्चस्व बनाए रखने के लिए हर संभव प्रयास किया।

1880 के दशक तक सशस्त्र विद्रोह की कोई संभावना नहीं थी। हंगरीवासी जानते थे कि यह असफल होगा, और वे सकारात्मक परिणामों के प्रति आश्वस्त हुए बिना कोई जोखिम नहीं उठाना चाहते थे। लेकिन उन्हें लगा कि इससे हंगरी के मामलों पर अधिक ध्यान आकर्षित होगा, राज्य परिषदों और व्यापारिक मामलों में हंगरीवासियों का प्रभाव बढ़ेगा। मग्यार एक बार फिर आगे बढ़ रहे थे, लेकिन बिना किसी नेता के।

फिर उन्हें सबसे अप्रत्याशित स्थान से सहानुभूति मिली: युवराज रुडोल्फ, जो अपने प्रतिष्ठित पिता की छाया में पले-बढ़े थे, लेकिन जो अपने पिता की राजनीतिक उपलब्धियों के बहुत आलोचक भी थे, क्योंकि वे अपने पिता के रूढ़िवादी विचारों से सहमत नहीं थे।

रुडोल्फ का जन्म 1858 में हुआ था और 1888 में उनकी आयु ठीक तीस वर्ष थी। यद्यपि वे उत्तराधिकारी थे और एक दिन सरकार की बागडोर संभालने वाले थे, फिर भी उन्हें औपचारिक कर्तव्यों से अधिक कुछ भी करने की अनुमति नहीं थी। इस स्थिति के लिए वे स्वयं भी कुछ हद तक जिम्मेदार थे, क्योंकि वे मुखर थे और साम्राज्य के कमजोर तबकों के प्रति अपनी सहानुभूति को उन्होंने स्पष्ट रूप से प्रकट किया था। वे मित्रों के बीच भी अपनी बात कहने से नहीं हिचकिचाते थे और जल्द ही उनके राजनीतिक विचारों की खबर राजमहल तक पहुँच गई। भले ही उनके पिता इन विचारों को अनदेखा करना चाहते हों, लेकिन प्रधानमंत्री, काउंट एडुआर्ड वॉन टैफे, ऐसा नहीं कर सके। उनके लिए, जो एक कट्टर रूढ़िवादी थे, रुडोल्फ स्पष्ट रूप से "उनके पक्ष में" नहीं थे और इसलिए उन पर नजर रखना आवश्यक था।

रुडोल्फ को राजनीतिक गतिविधियों के केंद्र से दूर रखने की उम्मीद में, काउंट वॉन टैफे ने युवराज और राजकुमारी को हंगरी भेजने का प्रबंध किया, लेकिन अंततः यह एक गलती साबित हुई। बुडापेस्ट में रहते हुए, रुडोल्फ ने हंगेरियन समर्थकों का दिल जीत लिया, और यदि उनके मन में उनके उद्देश्य की न्यायसंगतता के बारे में कोई संदेह था, तो वियना लौटने पर वह पूरी तरह दूर हो गया।

हंगरी में अपने प्रवास के दौरान, रुडोल्फ ने सतर्क रहना सीख लिया था, और एक गंभीर और दृढ़ निश्चयी व्यक्ति ही शाही महल के आलीशान कमरों में दोबारा दाखिल हुआ। महल के मध्य भाग में दूसरी मंजिल पर स्थित और सम्राट के कमरों से कुछ ही दूरी पर होने के कारण, इन कमरों पर दीवारों के अंदर और बाहर दोनों तरफ से आसानी से नज़र रखी जा सकती थी, और काउंट वॉन टैफे की यही इच्छा थी।

हाल ही में प्रकाशित मेयरलिंग की पुस्तकों में शायद सबसे दिलचस्प पुस्तक हैब्सबर्ग साम्राज्य और वियना की मुस्कुराहटों के पीछे छिपी उसकी तानाशाही की तीखी निंदा है। यह पुस्तक हंगेरियन काउंट कार्ल लोन्याय द्वारा अंग्रेजी में लिखी गई थी, जिनके चाचा ने विधवा पूर्व राजकुमारी स्टेफ़नी से विवाह किया था। लोन्याय को स्टेफ़नी की मृत्यु के बाद उनके निजी दस्तावेज़ विरासत में मिले, और उनके साथ ही अब तक गुप्त रही कई जानकारियाँ भी। उन्होंने इस पुस्तक में केवल दस्तावेजी सामग्री का उपयोग करने का बड़ा परिश्रम किया है, उन स्रोतों का हवाला दिया है जो अभी भी मौजूद हैं और जिनकी जाँच की जा सकती है, और

किसी भी संदिग्ध या अनुपलब्ध जानकारी को छोड़ दिया है, क्योंकि त्रासदी के तुरंत बाद फ्रांज जोसेफ के आदेश पर रूडोल्फ के अंतिम दिनों से संबंधित कुछ बहुत महत्वपूर्ण दस्तावेजों को नष्ट कर दिया गया था।

“रुडॉल्फ वस्तुतः एक कैदी की तरह था। उस पर कड़ी निगरानी रखी जाती थी। कोई भी बिना देखे उससे मिलने नहीं जा सकता था। उसके पत्रों पर सेंसरशिप लगी हुई थी।” इस प्रकार लोन्या रुडॉल्फ और स्टेफ़नी के पुराने शाही महल में लौटने के बाद की स्थिति का वर्णन करते हैं।

इन परिस्थितियों में, युवराज अपने प्रचुर खाली समय को बिताने के लिए महिलाओं के साथ समय बिताने लगे। यहाँ तक कि वे एक डायरी भी रखते थे जिसमें प्रत्येक नई प्रेमिका को उनकी प्रतिष्ठा और आकर्षण के आधार पर रेटिंग दी जाती थी। यद्यपि रुडोल्फ के कई प्रेम प्रसंग रहे, फिर भी उन दिनों उनकी एकमात्र सच्ची मित्र अभिनेत्री मिज़ी कास्पर थीं, जिनसे वे बैरोनेस वेटसेरा से मिलने के बाद भी मिलते रहे।

मिज़ी भावनात्मक रूप से विक्षिप्त राजकुमार की प्रेमिका से कहीं अधिक उनकी विश्वासपात्र और मार्गदर्शक थीं। हैब्सबर्ग परिवार में मनोदशा का स्वभाव आम था, और मानसिक बीमारी के कारण उनकी मां के चचेरे भाई, बवेरिया के लुई द्वितीय की मृत्यु हुई थी। इस प्रकार, रूडोल्फ की विरासत किसी भी मायने में स्वस्थ नहीं थी, और इन तथ्यों की जानकारी ने संभवतः उनके भय और चिंतनशील स्वभाव में योगदान दिया होगा, क्योंकि यह सच है कि अप्रिय मामलों का भय केवल उनके आगमन को शीघ्र कर देता है और घटित होने पर उन्हें और भी बदतर बना देता है, जबकि ऐसे विचारों को अस्वीकार करना और सकारात्मक दृष्टिकोण अपनाना उनके प्रभाव को कम करने में सहायक होता है।

इस बात का लगातार संकेत मिलता है कि रुडोल्फ की बीमारी केवल मानसिक ही नहीं थी, बल्कि प्रेम के रास्तों पर चलते हुए उन्हें किसी न किसी तरह यौन रोग भी हो गया था। अपने जीवन के अंतिम वर्षों में उन्हें अक्सर उपनगरों के शराबखानों में आम लोगों की संगति पसंद आती थी और उन्हें टैक्सी चालकों और लोक गायकों के बीच सुकून मिलता था।

जैसे-जैसे रुडोल्फ की हताशा बढ़ती गई और वह राजनीतिक गतिविधियों की मुख्यधारा से दूर होता चला गया, उसने अक्सर आत्महत्या करने की इच्छा का संकेत दिया। अजीब बात

यह थी कि उसे मृत्यु से अपनी सारी समस्याओं के अंत की उम्मीद नहीं थी: वह भौतिकवादी नहीं था, लेकिन परलोक में उसकी रहस्यमय आस्था थी और इस बात को लेकर गहरी जिज्ञासा थी कि मृत्यु के बाद उसे क्या मिलेगा।

शायद उनके विचारों की यह दिशा कुछ साल पहले प्राग में उनके निवास के दौरान हुई एक घटना से शुरू हुई। उस समय, एक यहूदी गायक की बेटी ने उन्हें आते-जाते देखा और तुरंत राजकुमार से प्रेम करने लगी। उसके माता-पिता ने उसे प्राग से दूर भेज दिया, लेकिन वह वापस आने में कामयाब रही और रात उनकी खिड़की के नीचे बैठकर बिताई। अगली सुबह उसे निमोनिया हो गया और कुछ ही समय में उसकी मृत्यु हो गई। यह खबर युवराज तक पहुंची और वे इससे इतने आहत हुए कि उन्होंने आदेश दिया कि उनकी कब्र पर प्रतिदिन फूल चढ़ाए जाएं। हालांकि उन्होंने कई महिलाओं को जीता और तुरंत उन्हें भुला दिया, लेकिन जिस लड़की से वे कभी मिले भी नहीं थे, उसके प्रति लगाव किसी तरह उनके मन में प्रेम में बदल गया। मैरी वेटसेरा से मिलने तक, यही उनके जीवन का एकमात्र सच्चा प्रेम था, जो उनकी महत्वाकांक्षाओं की तरह ही अधूरा रह गया, और उनके निराशावादी दृष्टिकोण के अनुरूप था।

मेयरलिंग का रहस्य: शिकारगाह, जो अब एक कार्मलाइट मठ है

अब, जीवन के अंतिम वर्ष में, वह लोगों से अपने साथ आत्महत्या करने का आग्रह करता रहा ताकि उसे नए संसार में अकेले प्रवेश न करना पड़े। "क्या तुम्हें मृत्यु से डर लगता है?" वह हर किसी से पूछता, यहाँ तक कि अपने कोचवानों से भी। एक शास्त्रीय ऑस्ट्रियाई उत्तर, जो उसे अपनी मृत्यु से एक दिन पहले उसके किराए के टैक्सी चालक, ब्राटफिश ने दिया था:

“जब मैं सेना में था, तब मुझे मौत से डर नहीं लगता था। मुझे डरने की इजाज़त नहीं थी। लेकिन अब? हाँ।”

इससे रुडोल्फ का मन शांत नहीं हुआ। लेकिन जो लोग पहले से ही आत्महत्या करने की घोषणा कर देते हैं, वे शायद ही कभी अपनी धमकी को अंजाम देते हैं।

“रुडोल्फ ने कई लोगों को मौखिक और लिखित रूप से आत्महत्या करने के अपने निर्णय की सूचना दी। इनमें से, यहां तक कि उसके पिता, उसकी पत्नी, उसके चचेरे भाई या उसके स्टाफ के दो अधिकारियों ने भी उसे अपनी योजना को अंजाम देने से रोकने का कोई गंभीर प्रयास नहीं किया, हालांकि यह सभी के लिए स्पष्ट था कि रुडोल्फ की मानसिक स्थिति गंभीर चिंता का विषय थी,” लोन्याय रिपोर्ट करते हैं।

लेकिन मृत्यु की इस तीव्र इच्छा के बावजूद, रुडोल्फ ने एक जीवंत जीवन जीना जारी रखा। 5 नवंबर, 1888 को उन्होंने मैरी वेटसेरा को पहली बार फ्रायडेनाउ में देखा, जो विशाल प्रेटर पार्क का एक हिस्सा था और अपनी घुड़दौड़ के लिए प्रसिद्ध था। वह अभी अठारह वर्ष की भी नहीं हुई थीं, लेकिन उनका जीवन किसी भी तरह से संरक्षित नहीं था। विधवा बैरोनेस हेलेन वेटसेरा की बेटी का सोलह वर्ष की आयु में ही काहिरा में एक ब्रिटिश अधिकारी के साथ प्रेम संबंध था, और वह अपनी उम्र से कहीं अधिक परिपक्व थीं। उनकी मां का परिवार, बाल्टाज़ी, "लेवेंटाइन" मूल का था, जिसका उन दिनों अर्थ हंगरी की पूर्वी सीमाओं के पार का कोई भी क्षेत्र होता था। लोन्या उन्हें यूनानी कहते हैं, लेकिन लर्नेट-होलेनिया उन्हें यहूदी या आंशिक-यहूदी बताते हैं। उनकी प्रसिद्धि का मुख्य कारण घोड़ों के प्रजनन में उनकी रुचि और ज्ञान था, और चूंकि वियना घोड़ों का शहर था, इसलिए इस प्रतिभा ने उनके लिए कई ऐसे द्वार खोल दिए जो अन्यथा बंद ही रहते। हेलेन के पति, विक्टर वॉन वेटसेरा, कॉन्स्टेंटिनोपल में ऑस्ट्रियाई दूतावास में दुभाषिया थे, और बाद में इसी वजह से हेलेन अपनी बेटी मैरी के साथ वियना में बसने में सक्षम हुईं।

रुडोल्फ को लड़की को देखते ही सबसे पहले जो बात चौंकाई, वह थी उसकी प्राग में उसके लिए जान देने वाले गायक की बेटी से समानता। हालाँकि उन्होंने कभी बात नहीं की थी, लेकिन उसने एक बार उसे देखा था और उसका चेहरा उसे याद था। मैरी में अपने आप में बहुत कुछ था: वह कड़ाई से कहें तो सुंदर नहीं थी, लेकिन वह देखने में वैसी थी जिसे आज हम "बेहद आकर्षक" कहते हैं।

फ्रायडेनाउ में पहली अनौपचारिक मुलाकात के बाद, मैरी ने स्वयं राजकुमार को एक पत्र लिखकर दोबारा मिलने की इच्छा व्यक्त की। रूडोल्फ स्वाभाविक रूप से इच्छुक थे और उन्होंने अपनी चचेरी बहन, काउंटेस वॉन लारिश से गुप्त रूप से मुलाकात की व्यवस्था करने को कहा। मैरी लारिश ने खुशी-खुशी अपनी चचेरी बहन की बात मान ली और दोनों बाद में या तो प्रेटर पार्क में या विभिन्न सामाजिक समारोहों में मिले। अब तक उनके बीच कोई अंतरंग संबंध नहीं था। यह रिश्ता पूरी तरह से प्रेमपूर्ण था क्योंकि रूडोल्फ उस युवती की ओर इस तरह आकर्षित हुए थे जैसा उनकी किसी अन्य प्रेमिका ने उन्हें कभी आकर्षित नहीं किया था। 13 जनवरी, 1889 को ग्रैंड होटल में काउंटेस लारिश के अपार्टमेंट में दोनों प्रेमी बन गए।

अंततः, मैरी की माँ को इन मुलाकातों के बारे में पता चल गया, और उन्हें ये मुलाकातें पसंद नहीं आईं। उनकी बेटी किसी भी कीमत पर युवराज की रखैल नहीं बनना चाहती थी, और रूडोल्फ को उनकी मुलाकातों में बहुत सावधानी बरतने की आवश्यकता का एहसास हो गया। कुछ समय बाद, उन्होंने काउंटेस लारिश से मैरी को शाही महल में लाने का अनुरोध किया। यह एक साहसिक विचार था और मैरी लारिश को यह बिल्कुल भी पसंद नहीं आया। फिर भी, उन्होंने अपने चचेरे भाई की बात मान ली। परिणामस्वरूप, उन्होंने और मैरी ने शेर की मांद में मुलाकात की योजना बनाई।

काउंटेस लारिश के संस्मरणों के अनुसार, "एक चुस्त-दुरुस्त जैतून के हरे रंग की पोशाक" पहने मैरी को महल की दीवार में बने एक छोटे लोहे के द्वार तक ले जाया गया, जो पहले से ही खुला हुआ था। वहाँ उनका स्वागत रुडोल्फ के सेवक लोशेक ने किया, जो दोनों महिलाओं को एक अंधेरी, खड़ी सीढ़ी से ऊपर ले गया, फिर एक दरवाजा खोला और रुक गया। वे खुद को महल की सपाट छत पर पाईं! अब उसने उन्हें आगे बढ़ने का इशारा किया, और एक खिड़की से वे नीचे गलियारे में उतर गईं। इस गलियारे के अंत में, वे एक शस्त्रागार कक्ष में

पहुँचीं जो ट्राफियों और शिकार के उपकरणों से भरा हुआ था। वहाँ से, उन्होंने महल के पिछले गलियारों से होते हुए रुडोल्फ के अपार्टमेंट की ओर अपनी यात्रा जारी रखी।

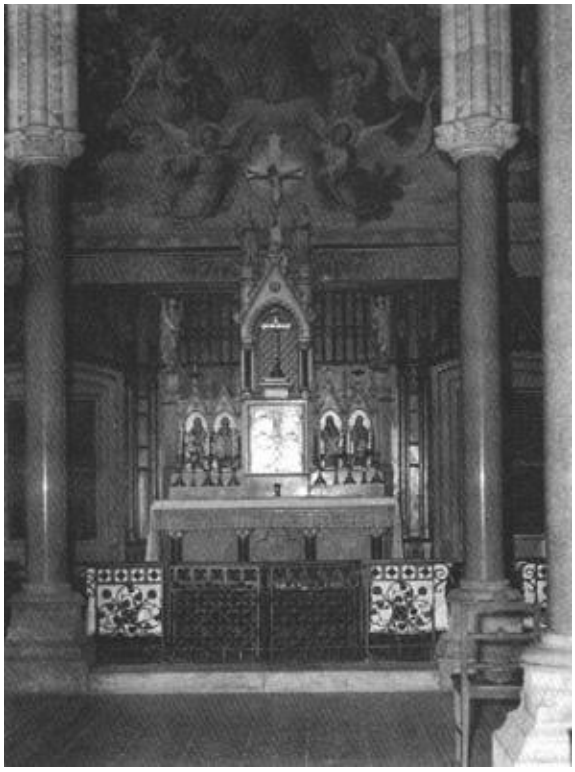

वह वेदी—वह स्थान जहाँ शयनकक्ष था और जहाँ 1889 में हत्या हुई थी।

रुडॉल्फ उनका अभिवादन करने आया और अचानक मैरी वेटसेरा को अपने साथ अगले कमरे में ले गया, अपनी चचेरी बहन को प्रवेश द्वार पर विचार करने के लिए वहीं छोड़ दिया। कुछ देर बाद, रुडॉल्फ लौटा और काउंटेस लारिश के संस्मरण के अनुसार, उसने मैरी को कुछ दिनों के लिए अपने पास रखने की बात कही। ताकि मैरी की माँ को यह एहसास हो जाए कि उससे हल्के में नहीं लिया जा सकता। काउंटेस लारिश को यह रिपोर्ट करना था कि खरीदारी के दौरान जब वह एक दुकान के अंदर थी, तब मैरी अपनी टैक्सी से गायब हो गई थी।

मैरी लारिश ने इस योजना का विरोध किया, लेकिन रुडोल्फ ने ज़िद की और यहाँ तक कि उसे बंदूक दिखाकर धमकाया। फिर उसने कोचवान को रिश्वत देने के लिए उसके हाथ में पाँच सौ फ्लोरिन थमा दिए और उसे अपने कमरे से बाहर निकाल दिया।

* * *

जाहिर है, मैरी वेटसेरा बेहद खुश थी, क्योंकि अगले दो सप्ताह उसने ज्यादातर रूडोल्फ के साथ ही बिताए। वह घर तो लौट आई थी, लेकिन अपनी माँ को यह यकीन दिलाने में कामयाब रही कि युवराज से उसका प्यार सच्चा है। बैरोनेस हेलेन को अंजाम का पूरा अंदाजा था। वह जानती थी कि रूडोल्फ अपनी बेटी से ऊब जाने के बाद उसकी शादी किसी अमीर आदमी से करवा देगा। फिर भी, उसने उनकी बात मान ली, और इस तरह मैरी गुप्त सीढ़ियों और रास्तों से महल आती रही।

पलंग के पास स्थित मैडोना की मूर्ति

शाही महल कई शताब्दियों में निर्मित इमारतों का एक विशाल परिसर है। इसमें बिना पहरेदारों या महल में रहने वाले अन्य लोगों की नज़र में आए प्रवेश करना मुश्किल नहीं था, और पिछला दरवाज़ा काफ़ी सुरक्षित था। हालाँकि ऐसी अफवाहें थीं कि रुडोल्फ अपनी प्रेमिका से महल के भीतर मिले थे, लेकिन उन्हें कभी पकड़ा नहीं गया, और संभावना है कि मेयरलिंग की त्रासदी ने उनके जीवन को असमय समाप्त न किया होता तो उनका रिश्ता कुछ समय तक इसी तरह चलता रहता।

जैसे-जैसे हम इस महान ऐतिहासिक पहेली के महत्वपूर्ण दिनों के करीब पहुँच रहे हैं, हमें यह बात दृढ़ता से ध्यान में रखनी चाहिए कि इसके बारे में ज्ञात अधिकांश कहानियाँ अनुमान मात्र हैं, और कुछ सबसे महत्वपूर्ण विवरण अज्ञात हैं क्योंकि रुडोल्फ के दस्तावेज़ तुरंत नष्ट हो गए थे - यानी वे दस्तावेज़ जो उसने उचित सुरक्षा के बिना पीछे छोड़ दिए थे।

लोन्याय और इतिहासकार एवं कवि अलेक्जेंडर लर्नेट-होलेनिया द्वारा दिए गए विवरण एक जैसे नहीं हैं, लेकिन कुल मिलाकर लोन्याय के विवरण में अधिक ऐतिहासिक जानकारी है और उन पर विश्वास किया जाना चाहिए। उनके विवरण के अनुसार, 27 जनवरी, 1889 को जर्मन सम्राट विलियम द्वितीय के जन्मदिन के अवसर पर आयोजित एक स्वागत समारोह में, फ्रांज जोसेफ ने अपने अलग हो चुके पुत्र का हाथ थामकर उससे हाथ मिलाया—यह एक दिखावटी संकेत था, जो निश्चित रूप से जर्मन मेज़बानों को प्रसन्न करने के लिए किया गया था, जिनके साथ उन्होंने हाल ही में एक दूरगामी सैन्य गठबंधन किया था। यह संकेत शायद ऑस्ट्रिया की एकता के प्रति जर्मन सहयोगियों को आश्वस्त करने के लिए आवश्यक था। रुडोल्फ ने बढ़ाया हुआ हाथ थामकर प्रणाम किया। सम्राट और उनके इकलौते पुत्र की यह अंतिम मुलाकात थी।

* * *

अगले दिन दोपहर को, रुडोल्फ ने एक हल्की गाड़ी, जिसे गिग कहते थे, को वियना से लगभग एक घंटे की दूरी पर स्थित अपने शिकारगाह मेयरलिंग जाने के लिए बुलाया। उसने अपने भरोसेमंद ड्राइवर ब्राल्फिश से तीसरे जिले में स्थित मैरी वेटसेरा के घर से उसे लेने और उसे एक वैकल्पिक, लंबे रास्ते से मेयरलिंग लाने की व्यवस्था की थी। मैरी, जिसने केवल अपनी

नाइटी के ऊपर एक लबादा ओढ़ा हुआ था, अपनी माँ की नज़रों से बचकर निकल गई और ब्रात्फिश उसे वियना और मेयरलिंग के बीच में स्थित ब्रेइटेनसी गाँव तक ले गया। वहाँ वह अपने प्रेमी से मिली, जिसने अपनी गिग को छोड़ दिया और मैरी के साथ ब्रात्फिश की टैक्सी में आगे की यात्रा जारी रखी।

लर्नेट-होलेनिया के अनुसार, इसी समय मैरी के चाचा हेनरी बाल्टाज़ी, एक डॉक्टर और दो सहायकों के एक समूह ने रथ को रोक दिया। ये लोग युवराज को द्वंद्वयुद्ध के लिए चुनौती देने आए थे। हाथापाई में हेनरी अपनी ही बंदूक से घायल हो गए। यह घटना वैसे तो ज्यादा महत्वपूर्ण नहीं है, लेकिन इससे बाल्टाज़ी परिवार को रूडोल्फ से बदला लेने का एक कारण मिल जाता है—हेनरी मैरी को अपने लिए चाहते थे, भले ही वह उनकी भतीजी थी।

लर्नेट-होलेनिया के अनुसार, जैसे ही दोनों मेयरलिंग महल की सुरक्षित दीवारों के भीतर पहुँचे, काउंटेस लारिश बड़ी जल्दी में वहाँ पहुँचीं और मांग की कि वह लड़की को बदनामी से बचने के लिए वियना वापस भेज दें। माँ ने पुलिस प्रमुख के पास जाकर अपनी बेटी के लापता होने की सूचना दी थी। लोन्याय को स्पष्ट रूप से इस मुलाकात पर विश्वास नहीं था, क्योंकि उन्होंने उस दुर्भाग्यपूर्ण दिन मेयरलिंग में हुई घटनाओं के अपने विवरण में इसका उल्लेख नहीं किया है। न ही उन्होंने इस तथ्य का उल्लेख किया है कि रुडोल्फ ने अपनी प्रिय चचेरी बहन, काउंटेस को अपने लिए एक तिजोरी सुरक्षित रखने के लिए दी थी।

“सम्राट किसी भी क्षण मेरे कमरों की तलाशी का आदेश दे सकते हैं,” काउंटेस ने अपने संस्मरणों में उनके हवाले से लिखा है। तिजोरी केवल उसी व्यक्ति को सौंपी जानी थी जो गुप्त कोड अक्षर R.I.U.O. प्रस्तुत करता हो।

इस त्रासदी के बाद, इस तिजोरी को आर्चड्यूक जॉन साल्वाटर ने उठा लिया, जो रूडोल्फ के घनिष्ठ मित्र थे। यह रोचक तथ्य है कि हेनरी डब्ल्यू. लैनियर ने 1937 में प्रकाशित अपनी पुस्तक "ही डिड नॉट डाई एट मेयरलिंग" में दावा किया है कि रूडोल्फ के शव के स्थान पर किसी अन्य शव को रखे जाने के बाद रूडोल्फ और जॉन साल्वाटर एक साथ अमेरिका भाग गए थे। लैनियर के अनुसार, दोनों आर्चड्यूक फ्रांज जोसेफ को सत्ता से हटाने की एक असफल साजिश में शामिल थे, लेकिन यह साजिश सम्राट के ध्यान में आ गई थी।

हालांकि यह सिद्धांत कितना भी रोचक क्यों न हो, लेखक कोई ठोस सबूत पेश नहीं करता है, जिससे हमें काउंटेस लारिश के रुडोल्फ के साथ कहे गए अंतिम शब्दों के बारे में लेर्ने-होलेनिया के विवरण पर वापस जाना पड़ता है।

वह मेयरलिंग से चली गई, हालाँकि राजकुमार के इस ज़िद से वह बहुत परेशान थी कि वह और मैरी आत्महत्या करने वाले हैं। लेकिन अगर हम लर्नेट-होलेनिया के विवरण पर विश्वास करें, तो इस मामले में गोपनीयता का कोई प्रावधान नहीं था। लर्नेट-होलेनिया के अनुसार, काउंटेस की गाड़ी सड़क के मोड़ से ओझल होते ही, रूडोल्फ को हंगरी के एक प्रतिनिधिमंडल से मिलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ, जिसका नेतृत्व प्रधानमंत्री काउंट स्टीफन कारोली कर रहे थे। मेयरलिंग में कारोली की उपस्थिति अत्यंत असंभावित है, क्योंकि यह बात गुप्त पुलिस की नज़र में तुरंत आ जाती, जिससे रूडोल्फ की स्थिति और भी खराब हो जाती। दूसरी ओर, लोन्याय ने हंगरी के नेता से रूडोल्फ को मिले कई टेलीग्रामों का उल्लेख किया है, जो अधिक तर्कसंगत है।

इस निर्णायक दिन हंगरीवासियों और रुडोल्फ के बीच संपर्क इतना महत्वपूर्ण क्यों हो गया, इसकी शुरुआत वास्तव में रुडोल्फ के हंगरी स्थित लॉज, गुर्गेनी में एक शिकार पार्टी के दौरान हुई। शराब या नशीले पदार्थों या दोनों के प्रभाव में, रुडोल्फ ने अपने हंगेरियन मित्रों से राजशाही के दोनों हिस्सों के विभाजन का सक्रिय रूप से समर्थन करने और यह सुनिश्चित करने का वादा किया था कि मिलिशिया के स्थान पर एक स्वतंत्र हंगेरियन सेना की स्थापना की जाए, जो उस समय हंगरी के एक अलग राज्य होने का एकमात्र प्रमाण था।

इस समय ऑस्ट्रिया को जर्मन सहयोगियों के प्रति अपनी प्रतिबद्धताओं के अनुरूप अपनी सेना को मजबूत करने के लिए हंगेरियन संसद के समर्थन की आवश्यकता थी। लेकिन कारोली ने भर्ती बढ़ाने के सरकारी रक्षा विधेयक का विरोध किया और इसके बजाय 25 जनवरी को घोषणा की कि रूडोल्फ ने उन्हें आश्वासन दिया है कि एक अलग हंगेरियन सेना का गठन किया जाएगा। इससे युवराज, ऑस्ट्रिया के प्रधानमंत्री और रक्षा विधेयक के जनक काउंट वॉन टैफे की नज़र में देशद्रोही बन गए, और रूडोल्फ को इसकी जानकारी अवश्य रही होगी। खैर, चाहे हंगेरियन प्रतिनिधिमंडल व्यक्तिगत रूप से आया हो या कारोली ने टेलीग्राम भेजे हों, उद्देश्य एक ही था। रूडोल्फ से अब या तो बात मानने या चुप रहने को कहा

जा रहा था। इस दुविधा के सामने उन्होंने पीछे हटना ही बेहतर समझा। ये टेलीग्राम अब मौजूद नहीं हैं, लेकिन यह आश्चर्य की बात नहीं है, क्योंकि "नंबर 25 - हंगरी की संसद में रक्षा विधेयक के संबंध में क्राउन प्रिंस आर्चड्यूक रूडोल्फ के पास काउंट पिस्ता कारोली की यात्रा" नामक फाइल मई 1889 में राज्य अभिलेखागार से हटा दी गई थी और तब से गायब है। इसलिए हम निश्चित रूप से नहीं कह सकते कि कारोली जनवरी में इसी दिन मेयरलिंग गए थे या नहीं।

लेकिन सभी मौजूदा स्रोत इस बात पर सहमत प्रतीत होते हैं कि 29 जनवरी को दो लोगों ने रुडोल्फ को देखा था: उनके बहनोई, फिलिप वॉन कोबर्ग, और उनके शिकार साथी, काउंट जोसेफ होयोस। रुडोल्फ ने शिकार में शामिल होने से मना कर दिया, और बाकी दोनों अकेले चले गए; बाद में फिलिप शाही परिवार के रात्रिभोज में शामिल होने के लिए वियना लौट गए, जबकि रुडोल्फ ने गंभीर सर्दी होने का बहाना बनाकर अपनी अनुपस्थिति दर्ज कराई।

अगली सुबह, 30 जनवरी को, फिलिप वॉन कोबर्ग को मेयरलिंग लौटना था और होयोस के साथ, जो लॉज के नौकरों के कमरे में रात बिता चुका था, अपना शिकार जारी रखना था। आगे का अधिकांश विवरण काउंट होयोस का है, जिसे रुडोल्फ के नौकर लोशेक ने समर्थन दिया है।

वियना स्थित शाही महल। युवराज और मैरी इसी प्रवेश द्वार से होकर अपने कमरों में गए थे।

होयोस और कोबर्ग को सुबह 8 बजे लॉज में रूडोल्फ के साथ नाश्ता करना था। लेकिन आठ बजने से कुछ मिनट पहले ही होयोस को नौकर लोशेक ने रूडोल्फ के कमरे में बुलाया। वैसे तो लॉज कोई बड़ा महल नहीं था। प्रवेश द्वार से अंदर जाने पर एक रिसेप्शन रूम और एक बिलियर्ड्स रूम था। रिसेप्शन एरिया के ऊपर रूडोल्फ के निजी कमरे थे। भूतल से एक संकरी, घुमावदार सीढ़ी सीधे उनके कमरों तक जाती थी।

आंगन पार करते हुए, लोशेक ने जल्दी से होयोस को बताया कि उसने उसे क्यों बुलाया था। सुबह 6:30 बजे युवराज उस कमरे में आए जहाँ लोशेक सो रहा था, और उसे आदेश दिया कि वह उसे 7:30 बजे फिर से जगा दे। उस समय उन्हें नाश्ता भी चाहिए था और टैक्सी चालक ब्राटफिश को भी तैयार रखना था। लोशेक ने बताया कि युवराज पूरी तरह से तैयार थे और खुद ही सीटी बजाते हुए अपने कमरे में लौट गए थे।

एक घंटे बाद जब लोशेक ने राजकुमार को जगाने के लिए दरवाजा खटखटाया, तो कोई जवाब नहीं मिला। जब उसने देखा कि वह राजकुमार को—या बैरोनेस वेटसेरा को, जो उसके

अनुसार राजकुमार के साथ थीं—नहीं जगा पा रहा है, तो उसे यकीन हो गया कि कुछ गड़बड़ है और उसने काउंट होयोस को बुलाया ताकि जरूरत पड़ने पर दरवाजा तोड़ा जा सके। होयोस के राजकुमार के दरवाजे पर पहुंचते ही, जो कि अपार्टमेंट के बाकी सभी दरवाजों की तरह बंद था, फिलिप वॉन कोबर्ग गाड़ी लेकर आ गया। दोनों ने मिलकर कुल्हाड़ी से ताला तोड़कर दरवाजा खोला। फिर लोशेक को आगे भेजा गया ताकि वह जीवन के किसी भी संकेत की तलाश कर सके। हालांकि, दोनों ही मृत पाए गए। बिस्तरों पर दोनों प्रेमियों के शव पड़े थे, रूडोल्फ का सिर का एक हिस्सा किसी करीबी विस्फोट से उड़ गया था और मैरी वेटसेरा की भी गोली लगने से मौत हो गई थी।

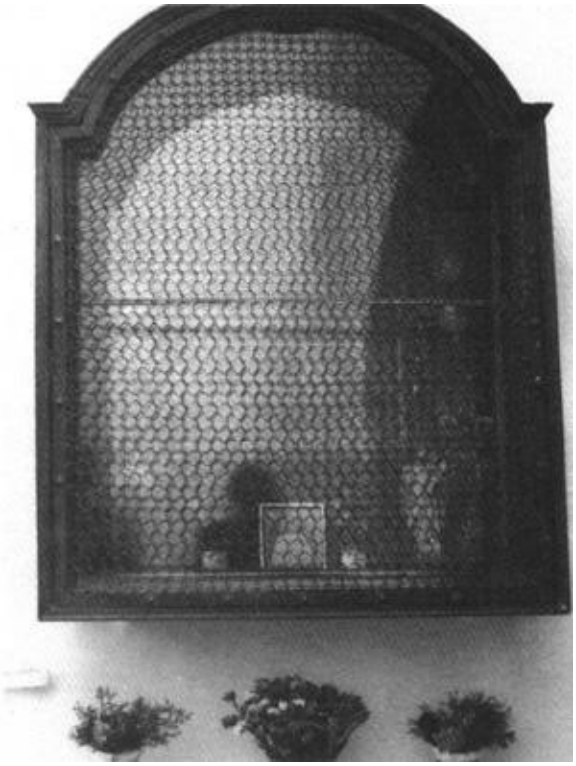

उस स्थान के पास एक वेदी जहाँ मरियम का भूत देखा गया था

होयोस ने शाही चिकित्सक डॉ. विडरहोफर को तुरंत आने के लिए तार भेजा, लेकिन उन्हें कारण बताए बिना, और फिर ब्राटफिश की टैक्सी में बैठकर वियना वापस चले गए।

शाही महल में, शाही दंपत्ति को इस दुखद घटना की सूचना देने के लिए प्राथमिकता के प्रोटोकॉल को दरकिनार करना काफी मुश्किल था। फ्रांज जोसेफ ने अपने दुख को, चाहे वह कितना भी था, हैब्सबर्ग की छवि को बचाने की आवश्यकता के तहत दबा दिया, और शुरुआती घोषणाओं में राजकुमार की हृदयाघात से मृत्यु की बात कही गई। हालांकि, कुछ दिनों बाद, इस बात को खारिज करना पड़ा और आत्महत्या की बात स्वीकार करनी पड़ी। फिर भी, मैरी वेटसेरा की लॉज में उपस्थिति की खबर को पूरी तरह से दबा दिया गया।

रुडॉल्फ के हाथ में अभी भी रिवॉल्वर थी, लेकिन चूंकि उस समय तक आपराधिक जांच प्रक्रिया में उंगलियों के निशान शामिल नहीं थे, इसलिए हम नहीं जानते कि रिवॉल्वर किसकी थी और क्या उसने वास्तव में इसका इस्तेमाल किया था। वैसे भी इस मामले में किसी तरह की जांच नहीं होने वाली थी। मैरी के शव को तुरंत कमरे से निकालकर एक लकड़ी के शेड में छिपा दिया गया, जहां वह दो दिनों तक बिना किसी देखरेख के पड़ा रहा। आखिरकार, 31 तारीख को सम्राट ने रुडॉल्फ के निजी चिकित्सक, डॉ. औचेन्थेलर को मेयरलिंग जाकर यह प्रमाणित करने का आदेश दिया कि मैरी वेटसेरा ने आत्महत्या कर ली है। उसी समय, मैरी के दो चाचाओं, अलेक्जेंडर बाल्टाज़ी और काउंट स्टॉकौ को शव की देखभाल करने का निर्देश दिया गया। बिना किसी बहस के, दोनों ने शव की पहचान की और फिर जल्दबाजी में तैयार किए गए फर्जी आत्महत्या दस्तावेज पर हस्ताक्षर कर दिए। फिर उन्होंने मैरी के कोट को नग्न शरीर पर लपेट दिया और उसे एक गाड़ी में सीधा बिठा दिया, उसके चेहरे पर टोपी रख दी ताकि गोली का घाव छिप जाए। रात के सर्द मौसम में, ठीक आधी रात को, उस भयानक यात्री को ले जा रही गाड़ी बर्फीली सड़कों पर तेज़ी से हेइलिगेनक्रूज़ मठ की ओर बढ़ी, जहाँ सम्राट ने मैरी को दफनाने का फैसला किया था। जब शव गिरने की कगार पर था, तो लोगों ने उसे सीधा रखने के लिए उसकी पीठ पर एक छड़ी रख दी। इस भयावह यात्रा के दौरान एक शब्द भी नहीं बोला गया। सिस्टर्सियन मठ में, पहले तो मठाधीश से कुछ कठिनाई हुई, जिसने स्पष्ट आत्महत्या करने वाले को दफनाने से इनकार कर दिया, लेकिन सम्राट की शक्ति इतनी अधिक थी कि अंततः वह मान गया।

और इस तरह मैरी वेटसेरा को आधी रात के अंधेरे में ऐसी जमी हुई मिट्टी में दफनाया गया कि ताबूत को उसमें ठीक से नीचे उतारना केवल बड़ी मुश्किल से ही संभव हो पाया।

आज तो यह कब्र सम्मानजनक है, जिस पर उनका नाम और पूरी जन्म-मृत्यु की तारीखें लिखी हुई हैं, लेकिन त्रासदी के बाद कई वर्षों तक यह एक अचिह्नित कब्र थी, ताकि जिज्ञासु लोग इसे न ढूंढ सकें।

दूसरी ओर, होली सी की आपत्तियों के बावजूद, रुडोल्फ को राजकीय अंतिम संस्कार दिया गया। गोली से हुए व्यापक नुकसान को ढकने के लिए उनके सिर पर पट्टी बांधी गई और फिर उन्हें अन्य सभी हैब्सबर्ग सदस्यों के साथ कैपुचिन के मकबरे में रखा गया।

हालांकि, मेयरलिंग से दोनों शवों को निकाले जाने से पहले ही, फ्रांज जोसेफ ने रूडोल्फ के सभी उपलब्ध पत्रों को जब्त कर लिया था, जिनमें दंपति द्वारा विभिन्न लोगों को लिखे गए विदाई पत्र भी शामिल थे। हालांकि उनमें से अधिकांश पत्र फिर कभी नहीं मिले, लेकिन रूडोल्फ के चैंबरलेन, काउंट बॉम्बेल्स को लिखे एक पत्र में युवराज ने मैरी वेटसेरा के साथ दफन किए जाने का दृढ़ अनुरोध किया था। हैरानी की बात यह है कि काउंट रूडोल्फ के निर्देशों का पालन करने में असमर्थ रहे, भले ही उन्होंने ऐसा करने का साहस किया होता, क्योंकि उनकी स्वयं कुछ ही महीनों बाद मृत्यु हो गई। जैसे ही उनकी मृत्यु की खबर फैली, सम्राट ने उनके सभी कागजात जब्त करने और उनकी मेज को सील करने का आदेश दिया।

अपने पूर्व प्रेमी, ड्यूक ऑफ ब्रागांज़ा को लिखे एक पत्र में, मैरी ने कथित तौर पर कहा था, "हम यह जानने के लिए बेहद उत्सुक हैं कि अगला लोक कैसा होगा," और एक अन्य पत्र में, जो उसने अपनी माँ को लिखा था, उसने मरने की अपनी इच्छा की पुष्टि की और अपनी माँ से क्षमा मांगी। चूंकि ड्यूक ऑफ ब्रागांज़ा को लिखे पत्र पर रूडोल्फ के हस्ताक्षर भी थे, इससे ऐसा प्रतीत होता है कि रूडोल्फ और मैरी ने एक साथ आत्महत्या की योजना बनाई थी। लेकिन, लोन्याय के अनुसार, रूडोल्फ द्वारा अपनी माँ को लिखे पत्र का एक अंश किसी तरह सामने आ गया, और इस विदाई पत्र में, रूडोल्फ ने स्वीकार किया कि उसने मैरी वेटसेरा की हत्या की थी और इसलिए उसे जीने का कोई अधिकार नहीं था। इस प्रकार, जाहिर तौर पर, रूडोल्फ ने पहले लड़की को गोली मारी थी, लेकिन अगली सुबह तक खुद को मारने का साहस नहीं जुटा पाया था। कई वर्षों बाद, जब सम्राट सच्चाई को सामने आने से नहीं रोक सका, तो दो चिकित्सकों, केर्ज़ल और औचेन्थेलर ने रिपोर्ट दी, जिससे इस बात की पुष्टि हुई कि मैरी की मृत्यु रूडोल्फ से लगभग दस घंटे पहले हुई थी।

अपनी मां को लिखे पत्र में मैरी ने अनुरोध किया था कि उन्हें रुडोल्फ के साथ दफनाया जाए, लेकिन आज तक उनकी यह इच्छा पूरी नहीं हुई है: उनके अवशेष अभी भी हीलिगेनक्रूज़ कब्रिस्तान में हैं, और उनके अवशेष वियना के तहखाने में हैं।

इन मौतों के बाद, मैरी वेटसेरा की मां को कठोर शब्दों में ऑस्ट्रिया छोड़ने के लिए कहा गया; बेटी का सामान पुलिस ने जब्त कर लिया और उच्च आदेशों पर उसे जला दिया गया।

तब से, इस दोहरे "आत्महत्या" के कारणों को लेकर दुनिया भर में अटकलें लगाई जा रही थीं। ऑस्ट्रिया में, इस तरह की अटकलों को आधिकारिक तौर पर हतोत्साहित किया गया था, लेकिन इसे रोकना मुश्किल था। लोन्याय आत्महत्या के लिए अक्सर दिए जाने वाले विभिन्न कारणों को खारिज करते हैं: कि फ्रांज जोसेफ ने अपने बेटे को तलाक देने से इनकार कर दिया था ताकि वह मैरी वेटसेरा से शादी कर सके; कि रुडोल्फ और वेटसेरा के बीच प्रेम का समझौता हुआ था; या कि उनकी राजनीतिक गलती ने रुडोल्फ को गोली मारने के अलावा कोई विकल्प नहीं छोड़ा था। लोन्याय बिल्कुल सही कहते हैं कि हालात बिगड़ने से बहुत पहले ही रुडोल्फ के मन में आत्महत्या की योजना थी। वह लड़की के प्रति रुडोल्फ के गहरे प्रेम को भी नकारते हैं, यह संकेत देते हुए कि युवराज बस अकेले मरना नहीं चाहते थे, और उन्होंने उसके प्रति अपनी निष्ठा का फायदा उठाकर उसे अपने साथ ले जाने का फैसला किया। इस प्रकार यह प्रतीत होता है कि मैरी वेटसेरा, दोषी होने के बजाय, वास्तव में शिकार थीं - रुडोल्फ की गोलियों और उनके इरादों दोनों की। अगर रूडोल्फ ने ऐसा किया होता और उसने मैरी को भी अपने साथ शामिल होने के लिए कहा होता, तो मैरी के आत्महत्या करने के इरादे पर किसी को संदेह नहीं होता।

लेकिन क्या आत्महत्या करने का इरादा रखना और वास्तव में आत्महत्या करना एक ही बात है?

उन दिनों के संयमित इतिहासकारों को भी संतुष्ट करने के लिए बहुत सारी अनसुलझी पहेलियाँ और अधूरी बातें रह गई थीं, आज के भावहीन, स्वतंत्र शोधकर्ता की तो बात ही छोड़ दें, जो केवल यह पता लगाने पर तुला है कि वास्तव में क्या हुआ था।

दोनों मौतों से संबंधित आधिकारिक रिपोर्ट पर अंततः 4 फरवरी, 1889 को हस्ताक्षर किए गए और इसे दरबारी अभिलेखागार में जमा करने के लिए प्रधानमंत्री को सौंप दिया गया। लेकिन,

काउंट वॉन टैफे इसे "सुरक्षित रखने" के लिए अपने साथ बोहेमिया स्थित अपने निजी घर ले गए। तब से यह गायब है।

बेशक, लोशेक, नौकर, अभी भी मौजूद था। वह इस बात को लेकर हैरान था कि युवराज की मृत्यु के बाद, और खासकर रिपोर्ट दाखिल होने के बाद, जब पूरा मामला आधिकारिक तौर पर समाप्त हो गया, तो प्रधानमंत्री इतने प्रसन्न क्यों थे। जहाँ आम वियनावासी अपने राजकुमार के लिए शोक मना रहे थे, वहीं वॉन टैफे अपने और अपने दल के लिए एक गंभीर खतरे के टलने पर बेहद खुश दिख रहे थे। और इसी बीच, फ्रांज जोसेफ का कहना था कि उनके और रुडोल्फ के बीच हमेशा से अच्छे संबंध थे और आत्महत्या एक रहस्य थी।

डॉ. हंस होल्ज़र महल के उस कर्मचारी का साक्षात्कार ले रहे हैं जिसने मैरी वेटसेरा के दर्शन देखे थे।

हेलेन वेटसेरा ने परिवार की कहानी बताते हुए एक पुस्तिका लिखी, लेकिन उसे पुलिस ने जब्त कर लिया, और इस तरह साल बीतते गए और धीरे-धीरे मेयरलिंग की घटनाएँ किंवदंती बन गईं।

1918 में ऑस्ट्रो-हंगेरियन राजशाही का पतन हो गया, जैसा कि रुडोल्फ ने भविष्यवाणी की थी, और हैब्सबर्ग वंश का पवित्र दर्जा समाप्त हो गया, लेकिन फिर भी मेयरलिंग का रहस्य

कभी पूरी तरह से सुलझा नहीं पाया और न ही उन घटनाओं में सबसे अधिक पीड़ित महिला की बेचैन आत्मा को शांति मिली।

यह सच है कि त्रासदी के तुरंत बाद सम्राट ने शिकारगाह को एक कठोर मठ में बदल दिया था: जहाँ कभी शयनकक्ष हुआ करता था, वहाँ अब एक वेदी है, और मौन व्रत धारण करने वाली ननें उन गलियारों में विचरण करती हैं जहाँ कभी सौहार्द और हंसी का माहौल रहता था। वियना में भी, शाही महल के गलियारे में, जहाँ कभी रुडोल्फ के अपार्टमेंट तक सीढ़ियाँ जाती थीं, वहाँ वर्जिन मैरी की तस्वीर वाली एक विशिष्ट ऑस्ट्रियाई आले, जिसे मार्टेरल कहा जाता है, स्थापित किया गया है।

लेकिन क्या धार्मिकता की इन औपचारिक अभिव्यक्तियों से मैरी वेटसेरा का मन शांत हुआ? बिलकुल नहीं। और न ही स्थिति उतनी शांत थी जितनी दरबारी सत्ता चाहती थी।

इंग्लैंड के प्रधानमंत्री लॉर्ड सैलिसबरी को त्रासदी के आधिकारिक विवरण पर कुछ संदेह था। वेल्स के राजकुमार एडवर्ड ने अपनी माता महारानी विक्टोरिया को लिखे एक पत्र में पाया:

"सैलिसबरी को पूरा यकीन है कि बेचारे रुडोल्फ और उस अभागी युवती की हत्या की गई थी।"

लेकिन शायद सबसे दिलचस्प विवरण पोस्टमार्टम रिपोर्ट से मिले, जो कई साल बाद उपलब्ध हुई:

“राजकुमार के शरीर पर गोली का घाव दाहिनी ओर से बाईं ओर नहीं था, जैसा कि आधिकारिक तौर पर घोषित किया गया है और आत्महत्या के मामले में स्वाभाविक होता है, बल्कि यह बाईं ओर से कान के पीछे से सिर के ऊपरी हिस्से की ओर था, जहाँ से गोली फिर बाहर निकल गई। शरीर पर अन्य घाव भी पाए गए। बिस्तर के पास मिली रिवॉल्वर युवराज की नहीं थी; सभी छह गोलियां चलाई गई थीं।”

"जैसा दावा किया गया है, युवती के शरीर पर गोली का घाव कनपटी पर नहीं, बल्कि सिर के ऊपरी हिस्से पर पाया गया। बताया जाता है कि उसके शरीर पर अन्य घाव भी थे।"

क्या काउंट वॉन टैफे ने सुनियोजित आत्महत्या को सिर्फ आत्महत्या दिखाने के लिए सही समय का फायदा उठाया था, जबकि वास्तव में उसने हिचकिचाते हुए मुख्य किरदारों की हत्या कर दी थी?

हमारे पास इस बात का कोई रिकॉर्ड नहीं है कि उस दिन गुप्त एजेंट मेयरलिंग आए थे, लेकिन हम यह भी निश्चित रूप से नहीं कह सकते कि वे नहीं आए थे। यह अपेक्षाकृत हाल की कहानी इतनी उलझी हुई है कि हम किसी भी बात पर पूरी तरह से यकीन नहीं कर सकते। निश्चित रूप से रुडोल्फ को खत्म करने का कोई मकसद रहा होगा। वॉन टैफे को कैरोली के साथ उसके सभी संबंधों की जानकारी थी, और वह इस बात को लेकर आश्वस्त नहीं हो सकता था कि रुडोल्फ हंगरी का ताज स्वीकार नहीं करेगा। रुडोल्फ को रोकने या जेल भेजने की मांग करना छवि के प्रति सजग सम्राट को रास नहीं आता। फिर भी, रुडोल्फ को खत्म करना, चाहे वह वास्तव में गद्दार हो या वॉन टैफे की विचारधाराओं के लिए भविष्य में संभावित खतरा, उस समय निश्चित रूप से एक अत्यावश्यक मामला था।

जिस तरह वॉन टैफे हंगरी की गतिविधियों से अवगत थे और कैरोली के टेलीग्राम पढ़ चुके थे, उसी तरह उन्हें रूडोल्फ की आत्महत्या की बात भी पता थी। क्या कैरोली की चाल ने उन्हें तुरंत कार्रवाई करने के लिए प्रेरित किया था, और क्या युवराज को मैरी वेटसेरा के साथ मेयरलिंग जाते देख उन्हें मेयरलिंग में होने वाली संभावित घटना का फायदा उठाने का विचार आया था... लेकिन क्या वे यह सुनिश्चित करना चाहते थे कि ऐसा हो? रूडोल्फ की कायरता जगजाहिर थी। वॉन टैफे को यकीन नहीं था कि युवराज सचमुच आत्महत्या कर लेंगे। अगर रूडोल्फ मेयरलिंग से जिंदा लौट भी आते, तो बहुत देर हो चुकी होती। हंगरी के रक्षा विधेयक पर तुरंत अमल करना जरूरी था। विद्रोह की आशंका मंडरा रही थी।

शायद वॉन टैफे को मेयरलिंग के पास कोई एजेंट भेजने की ज़रूरत ही नहीं पड़ी। शायद उनका कोई एजेंट पहले से ही वहाँ मौजूद था। क्या युवराज के आसपास कोई व्यक्ति वॉन टैफे के यहाँ काम करता था?

अगस्त 1964 में जब मैं अपनी पत्नी कैथरीन के साथ शाही महल के पुराने हिस्से में गया, तो ये और ऐसे ही कई दिलचस्प सवाल मेरे मन में उठे। मैं एक धूसर सुराग का पीछा कर रहा था: अमालिएनबर्ग विंग में एक प्रेत जैसी सफेद महिला को देखा गया था। हमारा वहाँ पहुँचना लगभग हास्यास्पद था: भूतों के बारे में किसी को कुछ पता नहीं था और किसी को परवाह भी नहीं थी। अंत में, इस अमेरिकी लेखक की जिज्ञासा को शांत करने के लिए, महल के बर्घौप्टमैन या गवर्नर ने अपने सबसे पुराने कर्मचारियों में से एक को बुलाया, जो इतिहास के ज्ञान के लिए

प्रसिद्ध था। गवर्नर का नाम न्युंटेफेल था, जिसका अर्थ है "नौ शैतान", और वास्तव में उसे उस व्यक्ति को ढूंढने में बहुत मशक्कत करनी पड़ी जिसका ईसाई नाम सोनटाग था, जिसका अर्थ है "रविवार"।

"क्या हेर सोनटैग अंदर है?" उसने इंटरकॉम पर मांग की।

जाहिर है, जवाब निराशाजनक था, क्योंकि उन्होंने कहा,

"ओह, श्रीमान, रविवार शुक्रवार को नहीं आता?"

सौभाग्यवश, वह व्यक्ति अंदर ही था और उसने हमें उस क्षेत्र में ले गया जहाँ यह घटना देखी गई थी।

मेयरलिंग त्रासदी के तुरंत बाद, ऐसा प्रतीत हुआ कि बेरान नाम का एक गार्ड दिवंगत युवराज के कक्ष की ओर जाने वाली सीढ़ियों के पास ड्यूटी पर था। यह वही मार्ग था जो मैरी वेटसेरा के लिए बहुत प्रिय था, क्योंकि वह अपने प्रेमी के कमरे में जाने के लिए इसी रास्ते से आती थी। अचानक, गार्ड ने सीढ़ियों से अपनी ओर आती हुई एक सफेद आकृति देखी। वह स्पष्ट रूप से एक महिला थी, लेकिन वह उसके चेहरे के हाव-भाव नहीं पहचान सका। जैसे ही वह मार्टल (राजमार्ग) पर पहुँची, वह गायब हो गई। बेरान अकेला नहीं था जिसने ऐसा भयावह अनुभव किया। महल में तैनात एक अल्पाइन रेजिमेंट के सदस्य, जैगर ने भी एक दोपहर उस आकृति को देखा। और जल्द ही नौकर इसके बारे में बातें करने लगे। उनमें से कई ने मैरी वेटसेरा द्वारा इस्तेमाल किए जाने वाले गलियारे में उस "सफेद महिला" को देखा था, जैसा कि वे उसे कहते थे।

मैंने लोहे की जाली से सुरक्षित मार्टल (छात्रावास) को देखा। उसके बगल में दीवार से सटाकर एक बड़ा लकड़ी का संदूक रखा था। और संदूक के पीछे मुझे एक लकड़ी का दरवाजा दिखाई दिया।

मैंने पूछा, "यह दरवाजा कहाँ जाता है?"

"कोई जगह नहीं," सोंटाग ने कंधे उचकाते हुए कहा, "लेकिन यह बाहर और रूडोल्फ के सुइट के बीच एक गुप्त मार्ग हुआ करता था।"

आह! मैंने सोचा। तो इसीलिए यहाँ भूत है। लेकिन उस समय मैं यह पता लगाने के लिए और कुछ नहीं कर सका कि भूत कौन था।

20 सितंबर, 1961 को मैं वियना लौटा। इस बार मैं अपने साथ एक वियना की महिला को लाया था जो एक माध्यम थी। बेशक, वह जानती थी कि हम कहाँ हैं—आखिरकार, वियना में हर कोई शाही महल को जानता है। लेकिन उसे इस बात का कोई अंदाजा नहीं था कि मैं उसे उस विशाल इमारत के सबसे पुराने, सबसे कम आकर्षक हिस्से में क्यों ले गया, और सीढ़ियों से ऊपर क्यों ले गया, और अंत में उस गलियारे के मुहाने पर अचानक रुक गया जो उस प्रेतवाधित मार्ग की ओर जाता था।

अब यह जानने का समय था कि मेरी मित्र श्रीमती एडिथ रीडल वातावरण में क्या कुछ महसूस कर सकती हैं। हम बिल्कुल अकेले थे, क्योंकि यहाँ के कमरों को लंबे समय से छोटे फ्लैटों में बदल दिया गया है और विभिन्न लोगों को किराए पर दिया गया है, मुख्य रूप से उन लोगों को जिन्होंने सरकारी सेवा की है और एक अच्छे, कम किराए वाले अपार्टमेंट के हकदार हैं।

हमारे साथ दो अमेरिकी सज्जन भी आए थे जो दर्शक बनकर आए थे, क्योंकि मेरे काम पर आधारित एक फिल्म बनाने की चर्चा चल रही थी। यह उनके लिए इसे अपने मूल रूप में देखने का मौका था!

“वेटसेरा सीढ़ियाँ....” श्रीमती रीडल अचानक बुदबुदाईं। वह काफी अच्छी अंग्रेजी बोलती हैं, हालांकि बीच-बीच में वह जर्मन या फ्रेंच शब्द भी इस्तेमाल कर लेती हैं। हंगरी के कुलीन परिवार में जन्मीं, उनकी शादी एक प्रमुख ऑस्ट्रियाई निर्माता से हुई है और वह डोएब्लिंग के उपनगर में एक आलीशान घर में रहती हैं।

“वह अक्सर इस जगह पर रुकती थी,” उसने आगे कहा, “फोन आने तक इंतजार करती रहती थी...।”

मैंने पूछा, "फोन कहां से आया था?"

"नीचे की ओर से।"

श्रीमती रीडल को इस बात की जानकारी नहीं थी कि मैरी वेटसेरा इसी रास्ते से आई थीं और इसी सीढ़ी से उतरकर रुडोल्फ के कमरों में गई थीं।

“मैडोना तब यहाँ नहीं थीं...लेकिन उन्होंने यहाँ प्रार्थना की थी।”

वह धीरे-धीरे चलती रही, मानो किसी अदृश्य रास्ते का अनुसरण करने की कोशिश कर रही हो। अब वह रुकी और बंद रास्ते की ओर इशारा किया।

"सीढ़ियाँ...वही रास्ते से वह रूडोल्फ के पास नीचे जाती थी...छत के ऊपर से...वे यहाँ ऊपर मिले जहाँ अब मैडोना की मूर्ति है...और कभी-कभी वह सीढ़ियों से ऊपर जाते समय उससे मिलता था।"

इस समय हममें से किसी को भी सीढ़ियाँ दिखाई नहीं दे रही थीं, लेकिन श्रीमती रीडल ने जोर देकर कहा कि वे दरवाजे के पीछे थीं।

“महल में कहीं उसका एक निजी कमरा था,” उसने जोर देकर कहा। आधिकारिक तौर पर, मुझे पता चला कि मैरी वेटसेरा के नाम से ऐसे किसी कमरे का कोई रिकॉर्ड नहीं है।

श्रीमती रीडल ने और भी ज़्यादा उत्तेजित होते हुए कहा, “वे दो कमरों का इस्तेमाल करती थीं, एक नीचे और दूसरा ऊपर। आप जानते हैं, वे अपनी नौकरानी के साथ कमरे बदलती रहती थीं। ऐसा इसलिए ताकि कोई उन्हें देख न ले। आख़िरकार, यहाँ उनका रहना सुरक्षित नहीं रहा, तभी उन्होंने मेयरलिंग जाने का फ़ैसला किया। बस, यहीं सब कुछ खत्म हो गया।”

मैंने किले के भीतर गुप्त बैठकों के केंद्र का पता लगाने की कोशिश की।

“रुडॉल्फ का जैगर....” श्रीमती रीडल ने उत्तर दिया, “ब्रैटफिश...वह संदेश लेकर आया और नौकरानी को सौंप दिया...और नौकरानी यहीं खड़ी थी और उसने उसे बताया...वे उसके कमरों में नहीं जा सकते थे क्योंकि उसकी पत्नी वहाँ थी, इसलिए उनके पास रहने के लिए कोई अलग जगह रही होगी....”

हम उस जगह से चले गए और श्रीमती रीडल के पीछे-पीछे चलने लगे, जो महल के इस सबसे पुराने हिस्से में फैले हुए गलियारों के भूलभुलैया में और आगे बढ़ रही थीं। आखिरकार, वह एक ऐसे गलियारे में रुक गईं जो लगभग उसी जगह के सामने था जहाँ हम पहले थे, लेकिन सपाट छत के दूसरी तरफ।

मैंने पूछा, "क्या तुम्हें यहाँ कुछ महसूस हो रहा है?"

“हां, मुझे पता है,” उसने जवाब दिया, “यह दरवाजा...नंबर 77... 79...बेचारा बच्चा...।”

गलियारे में कई फ्लैट थे, हर फ्लैट के दरवाजे पर एक नंबर लिखा था, और हर फ्लैट किसी न किसी को किराए पर दिया गया था, और अगर हम अंदर जाना चाहते तो हमें उनसे अनुमति लेनी पड़ती। श्रीमती रीडल की उत्तेजना लगातार बढ़ती जा रही थी। ऐसा लग रहा था मानो उस दिवंगत लड़की की आत्मा धीरे-धीरे लेकिन निश्चित रूप से उनके व्यक्तित्व पर हावी हो रही हो और उन्हें अपने पुराने दर्द को फिर से जीने पर मजबूर कर रही हो।

“पहले उसकी उम्र 77 थी, बाद में उसने बदलकर 79 कर ली... ये दोनों अपार्टमेंट आपस में जुड़े होने चाहिए...।”

अब श्रीमती रीडल बाईं ओर मुड़ीं और भीतरी आंगन की ओर खुलने वाली एक खिड़की को छुआ। खिड़की के बाहर वही सपाट छत थी जिसका जिक्र काउंटेस लारिश ने अपने संस्मरणों में किया था!

वियना स्थित इंपीरियल कैसल का सबसे पुराना हिस्सा, जहाँ युवराज का अपार्टमेंट स्थित था।

"वह गलियारे से ऊपर गई और इस खिड़की से बाहर निकल गई," माध्यम ने अब समझाया, "उसका कुछ अंश हमेशा यहाँ वापस आ जाता है, क्योंकि उन दिनों वह यहीं सबसे खुश रहती थी।"

“उसकी मौत कैसे हुई?” मैंने उस पर गोली चलाई।

“वह मरी नहीं। उसकी हत्या की गई।”

"किसके द्वारा?"

"रुडोल्फ नहीं।"

"उसे किसने मारा?"

“यह एक राजनीतिक साजिश थी। वह हंगरी का राजा बनना चाहता था। अपने पिता के खिलाफ। उसके पिता को यह बात अच्छी तरह पता थी। वह उसे अपने साथ मेयरलिंग ले गया क्योंकि उसे अकेले जाने से डर लगता था; उसे लगा कि उसके साथ जाने से शायद उसकी जान न जाए।”

“उन्हें असल में किसने मारा?”

“दो अधिकारी।”

क्या वह उन्हें जानता था?

“वह उन्हें जानती थी, लेकिन वह नहीं जानता था। वह गवाह थी। इसीलिए उसे मरना पड़ा।”

क्या इसमें फ्रांज जोसेफ का कोई हाथ था?

“उसे पता था, लेकिन उसने उन्हें नहीं भेजा... दास कान इच निष्ट सागेन!” उसने अचानक जर्मन में कहा, “मैं यह नहीं कह सकती!”

वह क्या नहीं कह सकती थी?

“मैं सम्राट को जिम्मेदार नहीं ठहरा सकता...कृपया मुझसे यह मत पूछिए...।”

श्रीमती रीडल काफी परेशान लग रही थीं, इसलिए मैंने विषय बदल दिया। क्या मैरी वेटसेरा की आत्मा वहां मौजूद थी, और यदि हां, तो क्या हम माध्यम के जरिए उनसे बात कर सकते थे?

युवराज के अपार्टमेंट तक जाने वाली सीढ़ी

“वह चाहती है कि हम नीचे उस जगह पर प्रार्थना करें...” उसने रोते हुए जवाब दिया। “किसी को उसकी कब्र पर जाना चाहिए...”

मैंने उसे आश्वस्त किया कि हम अभी-अभी वहीं से आए हैं।

श्रीमती रीडल ने कहा, "वह उम्मीद करती थी कि रुडोल्फ अपनी पत्नी को तलाक देकर उसे रानी बना देगा, बेचारी बच्ची। वह बार-बार उन सीढ़ियों से ऊपर आती है, अपनी जिंदगी को फिर से जीने की कोशिश करती है, लेकिन उसे बेहतर बनाने की कोशिश करती है..."

अब हम 79 नंबर के सामने रुक गए। दरवाजे पर "मार्सचिट्ज़" लिखा हुआ था।

श्रीमती रीडल ने धीमी आवाज़ में कहा, "वह यहाँ जाया करती थी। यह एक छिपा हुआ दरवाज़ा था। उसकी नौकरानी सामने वाले कमरे में रहती थी। यही उसका अपार्टमेंट था।"

खिड़की के पास हम एक बार फिर रुक गए।

“यहां बहुत कुछ बदल गया है,” माध्यम ने कहा।

वह पहले कभी यहाँ नहीं आई थी, फिर भी वह जानती थी।

बाद में मुझे पता चला कि उस क्षेत्र में वास्तव में बदलाव कर दिया गया था, सपाट छत पर से गुजरना असंभव हो गया था।

“इन दोनों के बीच कुछ तो है,” उसने जोर देकर कहा।

शायद कोई दीवार? नहीं, दीवार नहीं। वह लगभग दौड़कर वापस मैडोना की मूर्ति के पास चली गई। उसने कहा कि वहाँ उसका प्रभाव अभी भी सबसे प्रबल था।

श्रीमती रीडल ने आगे कहा, “उसका एकमात्र पाप प्रेम में न होना नहीं, बल्कि अहंकार था। वह चाहती है कि काश वह कुछ बदल पाती... वह अपने प्रेम का फायदा उठाना चाहती थी, और यह गलत था।”

अचानक, उसने दरवाजे को देखा, मानो उसने उसे पहले कभी देखा ही न हो।

“आह, वो दरवाज़ा,” उसने नए उत्साह से कहा। “ये वही दरवाज़ा है जिसे मैंने फर्श के दूसरी तरफ से महसूस किया था। ज़रूर कोई संबंध होगा... कोई गुप्त रास्ता ताकि उसे कोई देख न सके... यहाँ आगे बढ़ने के संकेत का इंतज़ार कर रही होगी... बड़े दरवाज़े का इस्तेमाल करने की ज़रूरत नहीं... वह अब वर्जिन मैरी की वजह से यहाँ वापस आ गई है... उसका नाम भी मैरी था... वह यहाँ प्रार्थना कर सकती है...।”

मैंने श्रीमती रीडल से उस भटकती आत्मा से संपर्क करने की कोशिश करने के लिए कहा।

“वह हमें देख रही है,” मेरी माध्यम ने कुछ देर रुककर, आँखें बंद करके गहरी साँस लेते हुए जवाब दिया। “वह हम पर मुस्कुरा रही है और मैं उसकी आँखें और चेहरा देख सकती हूँ। मुझे यह दरवाजा खुला हुआ दिख रहा है और वह दरवाजे पर खड़ी है। आइए हम उसकी मुक्ति के लिए प्रार्थना करें।”

श्रीमती रीडल के आग्रह पर, हम सबने एक घेरा बनाया और उस स्थान के चारों ओर हाथ मिला लिए। उसी क्षण मुझे लगा कि हमारे ठीक सामने एक पतली, सफेद आकृति दिखाई दी। क्या यह संकेत का प्रभाव था? "वह रो रही है," श्रीमती रीडल ने कहा।

फिर हमने घेरा तोड़ा और वहां से चले गए। मेरे अमेरिकी दोस्त जो कुछ उन्होंने देखा उससे काफी स्तब्ध थे, हालांकि मेरे लिए यह लगभग एक सामान्य घटना थी।

अगले दिन, हम महल में वापस गए। इस बार हमें गवर्नर से गुप्त द्वार खोलने और उस मार्ग को खोजने की अनुमति मिल गई थी जिसके बारे में श्रीमती रीडल ने बताया था। पहले तो द्वार नहीं खुला, हालांकि महल के दो हट्टे-कट्टे कामगारों ने भारी औजारों से उसे खोलने की पूरी कोशिश की। आखिरकार, वह खुल गया। यह स्पष्ट था कि इसे कई वर्षों से हिलाया नहीं गया था, क्योंकि इसकी हर इंच पर भारी धूल जमी हुई थी। जल्दी से, हम सब उस अंधेरे, खुले छेद

के चारों ओर जमा हो गए जो अब हमारे सामने था। सीलन भरी, नम हवा ने हमारी नाक को जकड़ लिया। एक कामगार ने टॉर्च उठाई, और उसकी रोशनी में हम मार्ग के अंदर देख सके। यह लगभग एक गज चौड़ा था, एक व्यक्ति के गुजरने के लिए काफी चौड़ा, और बाहरी दीवार के समानांतर था। एक समय हमारे दरवाजे से नीचे की मंजिल तक एक सीढ़ी हुआ करती थी—सीधे युवराज रूडोल्फ के अपार्टमेंट में। लेकिन उसे हटा दिया गया था, केवल उसके निशान ही बचे थे। इसी प्रकार, विपरीत दिशा से भी एक समान सीढ़ी उस ओर जाती थी जहाँ वह कभी उस गलियारे से जुड़ी हुई होगी जिसमें हम पहले थे - वह खिड़की जिसके बारे में श्रीमती रीडल ने जोर देकर कहा था कि वह इस सब में महत्वपूर्ण है।

* * *

किले के गवर्नर ने सिर हिलाया। गुप्त मार्ग उनके लिए बिल्कुल नया था। वैसे भी, किले में कई रहस्य छिपे थे, जिनमें से कुछ गलियारे और कमरे उनके "आधिकारिक" नक्शों में भी नहीं दिखाए गए थे। शाही किले के कुछ हिस्से तेरहवीं शताब्दी के हैं; जबकि अन्य, जैसे कि यह वाला, निश्चित रूप से सम्राट फ्रेडरिक तृतीय के समय के हैं, लगभग 1470 के आसपास के। इसकी दीवारें बहुत मोटी हैं और इनमें खोखले हिस्से आसानी से छिपे रह सकते हैं।

* * *

मैंने श्रीमती रीडल की उपस्थिति में उस क्षेत्र की कई तस्वीरें ली थीं। उनमें से एक तस्वीर में मानसिक रूप से सक्रिय क्षेत्रों में महत्वपूर्ण "प्रतिबिंब" दिखाई दे रहे थे। यहाँ हमारी पहली यात्रा के दिन, हम ऑस्ट्रियाई सरकारी प्रेस सेवा की डॉ. बीट्रिक्स केम्फ की मदद से मेयरलिंग तक गए थे, जिन्होंने हमारी यात्रा को सुगम बनाने के लिए हर संभव प्रयास किया। भूत हों या न हों, पर्यटक और फिल्म निर्माता ऑस्ट्रिया के लिए अच्छा व्यवसाय हैं।

मेयरलिंग में, हम उस जगह पर खड़े थे जहाँ 1889 की उस ठंडी जनवरी की सुबह दो शव मिले थे। मैंने उस जगह की कई तस्वीरें लीं, जहाँ अब वेदी और उसके ऊपर एक क्रॉस लटका हुआ है। मुझे आश्चर्य हुआ कि रंगीन तस्वीरों में से एक में वेदी की रेलिंग के अधिकांश हिस्से को ढके हुए एक सफेद रंग का पिंड दिखाई दे रहा है, और दाहिने कोने में एक धुंधली लेकिन स्पष्ट रूप से पुरुष आकृति खड़ी है। जब मैंने यह तस्वीर ली थी, तब वहाँ कोई नहीं था। क्या

यह सच हो सकता है? मेरा कैमरा डबल एक्सपोज़र से सुरक्षित है और मैंने कभी-कभी ऐसी तस्वीरें भी ली हैं जिनमें जादुई दृश्य दिखाई देते हैं।

अगर मेयरलिंग में किसी की मौजूदगी है, तो वह निश्चित रूप से रूडोल्फ ही होगा, क्योंकि मैरी वेटसेरा का उस ठंडे शिकारगाह से कोई भावनात्मक लगाव नहीं है, जहाँ उसे केवल दुख ही सहना पड़ा था। अगर कहीं होती भी, तो वह वियना महल के गुप्त गलियारे में होती, अपने रूडोल्फ से मिलने के संकेत का इंतज़ार कर रही होती, वही एकमात्र जगह जहाँ उसका युवा हृदय वास्तव में बसता था।

मुझे यह बताना चाहिए कि मेरे मेयरलिंग शोध में मेरे द्वारा उपयोग किए गए स्रोत हमारी जांच के बहुत बाद पढ़े गए थे, और ये सभी दुर्लभ पुस्तकें हैं जो लंबे समय से मुद्रित नहीं हैं।

सभी वियनावासियों की तरह, श्रीमती रीडल को भी मेयरलिंग त्रासदी के बारे में सामान्य जानकारी अवश्य थी। लेकिन महल की हमारी यात्रा के समय, और उससे ठीक पहले भी, इस विषय पर कोई पुस्तक प्रचलन में नहीं थी; काउंटेस मारिया लारिश के व्यक्तिगत संस्मरण, जो 1913 में प्रकाशित हुए थे और जिनमें सपाट छत पर चलने और खिड़की से प्रवेश करने का उल्लेख है, केवल शोध पुस्तकालयों में ही उपलब्ध हैं। श्रीमती रीडल को यह नहीं बताया गया था कि 1966 की उस गर्म सितंबर की दोपहर को हमारा गंतव्य या इरादा क्या होगा। परिणामस्वरूप, यदि वह चाहती भी तो उनके पास किसी भी शोध सामग्री का अध्ययन करने का समय नहीं होता—लेकिन किसी भी प्रकार की धोखाधड़ी की आशंका इस व्यस्त और समृद्ध सामाजिक महिला के स्वभाव के बिल्कुल विपरीत है।

जब तक मैंने सारी कड़ियों को नहीं जोड़ा, तब तक किसी ने भी महल के पुराने अमालिएनबर्ग विंग में भूत की मामूली खबरों को मैरी वेटसेरा की दुखद मौत से जोड़ने के बारे में नहीं सोचा था। गवर्नर के स्टाफ के अमतस्रात जोसेफ कोरज़र, जिन्होंने गुप्त मार्ग के रहस्य को सुलझाने में हमारी बहुत मदद की थी, केवल अपना सिर हिला सके: तो महल में भी कुछ भूत थे। कम से कम इसने वियनावासियों को उन सभी अंग्रेजी भूतिया जगहों से कुछ प्रतिस्पर्धा तो दी!

सवाल अनुत्तरित ही रह गया: अगर यह हत्या थी, तो उन दोनों को किसने मारा? माध्यम ने दो अधिकारियों का नाम लिया था। क्या वे युवराज के परिचित होने के कारण अपना काम अंजाम

देने में सफल रहे? क्या काउंट वॉन टैफे ने रूडोल्फ के दो करीबी दोस्तों को अपने मकसद के लिए इस्तेमाल कर लिया था?

यदि ऐसा है, तो हमें यह मान लेना चाहिए कि होयोस की रिपोर्ट एक सुनियोजित बहाने से ज्यादा कुछ नहीं है।

अपने जीवन के अंतिम दिन, रुडोल्फ का अपने बहनोई फिलिप वॉन कोबर्ग से झगड़ा हो गया। झगड़ा उस रात हैब्सबर्ग परिवार के रात्रिभोज को लेकर था। रात्रिभोज में न आकर, रुडोल्फ वास्तव में अपने चचेरे भाइयों की सावधानीपूर्वक बनाई गई योजनाओं से पीछे हट रहे थे। युवा आर्कड्यूक और उनके ससुराल वालों का इरादा बूढ़े सम्राट पर सरकार में सुधार करने का दबाव डालना था, क्योंकि उनमें से अधिकांश का मानना था कि केवल सुधार ही राजशाही को विनाश से बचा सकता है। इस महल क्रांति में सबसे महत्वपूर्ण कड़ी रुडोल्फ थे। क्या इस आंदोलन में शामिल होने से इनकार करके, वे वास्तव में सम्राट का पक्ष नहीं ले रहे थे?

यदि रुडोल्फ की हत्या हुई थी, तो क्या उनकी हत्या हंगरी समर्थक झुकाव के कारण हुई थी, या इसलिए कि उन्होंने पारिवारिक महल क्रांति का समर्थन नहीं किया था? और यदि यह वास्तव में उनकी आत्महत्या थी, तो क्या ऐसी मृत्यु, जो उनके नियंत्रण से परे परिस्थितियों के असहनीय दबाव के कारण हुई हो, को स्वैच्छिक मृत्यु कहा जा सकता है? क्या यह भी हत्या नहीं है, भले ही इसमें स्वयं राजकुमार ही हत्यारा हो?

इन तीन वैकल्पिक घटनाओं में से कौन सी घटी, इस बारे में कुछ अटकलें हो सकती हैं। लेकिन मैरी वेटसेरा की मृत्यु के बारे में अब कोई संदेह नहीं है। उन्होंने आत्महत्या नहीं की थी। उनकी बेरहमी से हत्या की गई थी, उन्हें एक ऐसे उद्देश्य के लिए बलिदान कर दिया गया था जो उनका अपना नहीं था। इसके अलावा, उनके जीवन में कई ऐसे अधूरे काम हैं जो उन्हें परेशान करते हैं और उन्हें एक बेचैन आत्मा बना देते हैं, जैसा कि हमने उन्हें पाया: उनकी अंतिम इच्छा पूरी नहीं हुई - उन्हें रुडोल्फ के साथ दफनाया नहीं गया, जैसा कि दोनों चाहते थे; उनकी निजी वस्तुएं जला दी गईं; उनके परिवार के साथ दुर्व्यवहार किया गया; और उनके शत्रु विजयी हुए।

पोस्टमार्टम रिपोर्ट के अनुसार, रूडोल्फ ने मैरी वेटसेरा की हत्या की हो सकती है, लेकिन उसने आत्महत्या नहीं की होगी। उसके हाथ में मिली बंदूक किसकी थी? अंतिम संस्कार के समय, रूडोल्फ के दाहिने हाथ को ढकना पड़ा क्योंकि उसकी उंगलियां अभी भी बंदूक के ट्रिगर पर मुड़ी हुई थीं। क्या रूडोल्फ की मृत्यु के बाद किसी ने उंगलियों को जबरदस्ती मोड़ा था ताकि ऐसा लगे कि उसने ट्रिगर दबाया था? हाथ की स्थिति से ऐसा ही लगता है। ज़ाहिर है, सामान्य आपराधिक जांच की अनुमति नहीं दी गई थी; इसलिए हम अब ऐसे महत्वपूर्ण सवालों के जवाब नहीं दे सकते। अब एक सदी बीत चुकी है और रहस्य अभी भी बना हुआ है। मेयरलिंग के शिकारगाह में किसी अज्ञात व्यक्ति या व्यक्तियों की पहुंच का कोई सुराग नहीं मिला है, न ही वह तिजोरी मिली है जिसके बारे में आर्चड्यूक जॉन साल्वाटर ने दावा किया था। लेकिन फिर, जॉन साल्वाटर खुद कुछ समय बाद "समुद्र में तूफान में" खो गए, या अगर हेनरी लैनियर की कहानी सच है, तो दक्षिण अमेरिका में एक किसान के रूप में नया जीवन शुरू किया।

रुडोल्फ की मृत्यु के बारे में शायद हमें कभी पूरी सच्चाई पता न चले। लेकिन हम अंततः यह जान चुके हैं कि मैरी वेटसेरा ने आत्महत्या नहीं की थी। सुनियोजित आत्महत्या से इस मामले में देखी गई रहस्यमयी घटनाएं कभी नहीं होतीं। केवल घबराहट में की गई मृत्यु, या हत्या, जिससे अनसुलझे सवाल रह गए हों, ही महल में उसकी उपस्थिति का कारण हो सकती है। दुर्भाग्य से, पीड़ित के लिए एक सदी कुछ भी नहीं है। इस त्रासदी का हिस्सा रहे अन्य सभी लोग भी मर चुके हैं, इसलिए शायद हम कभी न जान पाएं कि क्या काउंट वॉन टैफे ने रुडोल्फ की हत्या का आदेश दिया था, या शाही परिवार ने, या क्या उसने स्वयं यह कृत्य किया था।

सबसे अहम दस्तावेज़ों का रहस्यमय ढंग से गायब होना और जिस तरह से मामले को दबाया गया, उससे मुझे व्यक्तिगत रूप से यह विश्वास होता है कि माध्यम के पास सही समाधान था: हंगरी की साज़िश ही रूडोल्फ के पतन का कारण थी। जब वे दोनों मेयरलिंग में थे, तब न तो आत्महत्या हुई थी और न ही आत्महत्या की कोई योजना बनाई गई थी। पहले आत्महत्या का इरादा ज़रूर था, लेकिन उन पत्रों का इस्तेमाल असली तथ्यों को छिपाने के लिए एक बहाने के

तौर पर किया गया था। और कुछ सम्मानित लोगों पर आरोप लगाए बिना, मैं रूडोल्फ के हत्यारों पर उंगली कैसे उठा सकता हूँ?
इस मामले को यहीं समाप्त होने दें।

* * *

लेकिन बात यहीं खत्म नहीं हुई। 1970 के दशक के अंत में, इस मामले से संबंधित दस्तावेज संयोगवश मिले - जाहिर तौर पर दिवंगत आर्चड्यूक जॉन साल्वाटर के लंबे समय से खोए हुए बक्से में, जो रहस्यमय तरीके से "गायब" हो गए थे।
इन दस्तावेजों से यह स्पष्ट हो गया कि मेयरलिंग की हत्या आत्महत्या नहीं, बल्कि निर्मम हत्या थी।

*23

राजशाही और भूत

18 अप्रैल, 1964 के जर्मन समाचार पत्र 'न्यूज़ ज़ाइटल्टर' के अनुसार, महारानी एलिजाबेथ द्वितीय को कई मानसिक अनुभव हुए हैं। वे आत्माओं के अस्तित्व की वास्तविकता को स्वीकार करती हैं और रहस्यवाद में उनकी गहरी रुचि है। इस मामले में वे विंडसर परिवार की परंपरा का अनुसरण करती हैं, जिसकी हमेशा से ही मानसिक घटनाओं में रुचि रही है। उदाहरण के लिए, राजा जॉर्ज पंचम ने séances में भाग लिया था और अपनी मृत्यु के बाद, उन्होंने कई माध्यमों के माध्यम से प्रख्यात शोधकर्ताओं से संवाद किया, जिनमें दिवंगत गेराल्डिन कमिंस भी शामिल थीं। यह वही मिस कमिंस थीं, जिन्होंने दिवंगत राष्ट्रपति फ्रैंकलिन डी. रूजवेल्ट से कुछ अत्यंत महत्वपूर्ण संदेश प्राप्त करवाए थे। यह आश्चर्य की बात नहीं है, क्योंकि मिस कमिंस एक अनुशासित माध्यम थीं, जो जटिल और विस्तृत संदेशों को ग्रहण करने के लिए अच्छी तरह से प्रशिक्षित थीं।
बकिंघम पैलेस में जब भी आध्यात्मिक सत्रों की खबरें फैलती हैं, प्रेस, खासकर ब्रिटिश प्रेस, इस मुद्दे को खूब उछालती है। ब्रिटिश प्रेस, कुछ अपवादों को छोड़कर, मानसिक घटनाओं की वास्तविकता के प्रति बेहद अनादरपूर्ण रवैया अपनाती है। ऐसे में, महल द्वारा इन

अफवाहों का पूरी तरह से खंडन करने के लिए उसे दोषी नहीं ठहराया जा सकता, भले ही वे तथ्यों पर आधारित हों।

लेकिन फ्रांस्वा वेरन नाम के एक फ्रांसीसी व्यक्ति ने दावा किया कि उनके पास विश्वसनीय जानकारी है कि बकिंघम पैलेस में आध्यात्मिक सत्र आयोजित किए जा रहे थे और महारानी एलिजाबेथ द्वितीय ने अपने दोस्तों से कहा था कि उनके दिवंगत पिता, राजा जॉर्ज VI, उनकी मृत्यु के बाद कम से कम छह बार उनके दर्शन कर चुके थे। पिता और पुत्री के बीच विशेष रूप से घनिष्ठ संबंध था, और अपनी मृत्यु से पहले राजा जॉर्ज VI ने अपनी पुत्री को आश्वासन दिया था कि वे आवश्यकता के समय में, यहां तक कि परलोक से भी, हमेशा उनके साथ रहेंगे। महारानी की बहन, राजकुमारी मार्गरिट, मानसिक अनुसंधान में रुचि रखती हैं, और शाही पति, प्रिंस फिलिप ने महान चिकित्सा अग्रणी डॉ. डगलस बेकर, जो एक परा मनोवैज्ञानिक और कॉलेज ऑफ सर्जन्स के सदस्य हैं, के अनुसंधान प्रयासों के संरक्षक के रूप में अपना नाम दिया है। ब्रिटिश शाही परिवार के सदस्यों की यह सतर्क भागीदारी कोई हालिया प्रवृत्ति नहीं है, क्योंकि महारानी विक्टोरिया ने अपने समय के भविष्यवक्ताओं के साथ एक घनिष्ठ और निरंतर संबंध बनाए रखा था, विशेष रूप से जॉन ब्राउन के साथ, जिन्होंने जाहिर तौर पर रानी के सहायक या अर्दली के रूप में काम किया, लेकिन जिनका वास्तविक आकर्षण उनकी असाधारण मानसिक क्षमता में निहित था, जिसे उन्होंने अपनी रानी के लिए उपलब्ध कराया।

ब्रिटेन के लगभग सभी शाही आवासों में भूत-प्रेत का वास है। सैंड्रिंघम महल, जहाँ महारानी एलिजाबेथ द्वितीय का जन्म हुआ था, के नौकरों के क्वार्टर में एक गलियारा है जहाँ नौकरों ने अक्सर पुराने ज़माने के एक नौकर का भूत देखा है। लंदन के पास विंडसर कैसल है, जहाँ प्रत्यक्षदर्शियों को जॉर्ज तृतीय का चेहरा दिखाई दिया है, और लंदन का खूनी टावर है, जो अपनी भयानक यादों और कम से कम दो रानियों के भूतों के साथ मौजूद है। टावर में और भी भूत हो सकते हैं, क्योंकि अभी तक किसी को भी किसी कुशल माध्यम के साथ अंदर जाकर सभी मानसिक अवशेषों को खोजने का मौका नहीं मिला है। ब्रिटिश अधिकारी, इसके विपरीत प्रतिष्ठा के बावजूद, ऐसे प्रयासों को गंभीरता से नहीं लेते हैं, और मुझे व्यक्तिगत रूप से उनसे बहुत सहयोग प्राप्त करना मुश्किल लगा है। सहयोग मिले या न मिले, भूत तो हैं ही।

ब्रिटिश राजपरिवार की सबसे चर्चित आत्माओं में से एक अभागी रानी ऐनी बोलेन की आत्मा है, जो हेनरी अष्टम की दूसरी पत्नी थीं और जिनका अंत फांसी के तख्ते पर हुआ था। सोलहवीं शताब्दी में राजद्रोह माने जाने वाले व्यभिचार के आरोप में, निर्दोषता के दावों के बावजूद उनका सिर कलम कर दिया गया था। बाद में इतिहासकारों ने यह साबित कर दिया कि वह सच बोल रही थीं। लेकिन उनके मुकदमे के समय, उन्हें सत्ता से हटाना एक राजनीतिक मुद्दा था, और यहां तक कि उनके चाचा, जो मुकदमे के न्यायाधीश के रूप में बैठे थे, भी उन्हें बचाने के इच्छुक नहीं थे।

ऐनी बोलेन के भूत को उनके जीवनकाल से जुड़े कई स्थानों पर देखे जाने की खबरें हैं। सबसे पहले, हैम्पटन कोर्ट में उनका भूत देखा गया था, जिसकी पुष्टि कई वर्षों में कई गवाहों ने की है, और यहां तक कि विंडसर कैसल में भी, जहां कहा जाता है कि उन्हें पूर्वी प्राचीर पर चलते हुए देखा गया था। लंदन टावर के परिसर में स्थित तथाकथित साल्ट टावर में, एक गार्ड ने उनके भूत को बिना सिर के चलते हुए देखा और वह तुरंत बेहोश हो गया। यह मामला रिकॉर्ड में दर्ज है, और उस व्यक्ति ने बार-बार जोर देकर कहा कि उसने शराब नहीं पी थी।

शायद उन्हें रॉयल गार्ड के एक सदस्य, लेफ्टिनेंट ग्लिन से काफी सहानुभूति मिली होती, जिन्होंने रिकॉर्ड के लिए यह भी कहा है, "मैंने महान महारानी एलिजाबेथ को देखा है और उन्हें उनकी सांवली त्वचा, उनके आग जैसे लाल बालों और उनके बदसूरत काले दांतों से पहचाना है। इसमें मुझे कोई संदेह नहीं है।" हालांकि एलिजाबेथ की मृत्यु एक परिपक्व वृद्धावस्था में स्वाभाविक रूप से हुई, भूतों का स्वभाव होता है कि अपराध के शिकार और अपराधी दोनों ही शरीर छोड़ने के बाद बेचैन हो जाते हैं। अच्छी महारानी बेस के मामले में, पश्चाताप करने के लिए बहुत कुछ था। हालांकि अधिकांश पर्यवेक्षक मानते हैं कि महारानी एलिजाबेथ मैरी क्वीन ऑफ स्कॉट्स के साथ जो किया उसके कारण "चलती" हैं, मैं इससे असहमत हूं। मैरी ने एलिजाबेथ के खिलाफ साजिश रची थी, और उनकी फांसी उस समय और परिस्थितियों के अनुसार कानूनी थी। यदि महारानी एलिजाबेथ प्रथम को बेचैन रखने वाली कोई बात है, तो वह उन कई छोटे-मोटे लोगों में मिल सकती है जिनकी मृत्यु उनके क्रोध या ठंडे दिमाग से की गई थी, जिनमें उनके कई पूर्व प्रेमी भी शामिल हैं।

ठीक उसी तरह जैसे लोकप्रिय अंग्रेज़ी गाथागीत में वर्णित है, ऐनी बोलेन को न केवल लंदन टावर में, बल्कि केंट के हेवर कैसल में भी "अपना सिर छिपाए" देखा गया था, जहाँ राजा हेनरी अष्टम उनसे प्रेम निवेदन करते थे। बात को और भी पेचीदा बनाने के लिए, उनकी फांसी की सालगिरह पर, कथित तौर पर वह नॉरफ़ॉक के ब्लिकलिंग हॉल के मुख्य द्वार तक एक ऐसे रथ में पहुँचती हैं जिसे एक बिना सिर वाला कोचवान चला रहा था और जिसे चार बिना सिर वाले घोड़े खींच रहे थे, और वह स्वयं अपनी गोद में सिर रखे बैठी थीं। हालाँकि, इस पर विश्वास करने से पहले मुझे इसे देखना होगा।

कई लोगों ने दावा किया है कि वे कम से कम पिछले जन्म में दुर्भाग्यशाली ऐनी बोलेन से परिचित थे, भले ही वे स्वयं ऐनी बोलेन न हों। स्वाभाविक रूप से, वास्तविक स्थिति और किसी भावुक व्यक्ति की कल्पनाओं के बीच अंतर करना आवश्यक है, जो संभवतः उस काल से संबंधित कुछ पुस्तकें पढ़ने या कोई फिल्म देखने के बाद किसी दूसरे युग में वापस जाने का भ्रम पाल लेता है। ऐनी से जुड़ी परिस्थितियाँ सर्वविदित हैं; उनका इतिहास देश-विदेश में प्रकाशित हो चुका है, और जब तक दावा करने वाला व्यक्ति रानी के जीवन का कोई अनसुना पहलू या कम से कम कोई ऐसा विवरण प्रस्तुत नहीं करता जो आम तौर पर ज्ञात न हो या मौजूदा साहित्य में आसानी से उपलब्ध न हो, तब तक प्रथम दृष्टया दावा स्थापित नहीं किया जा सकता।

चूंकि मैं पुनर्जन्म की वास्तविकता में दृढ़ विश्वास रखता हूं और इस विषय पर दो पुस्तकें प्रकाशित कर चुका हूं, इसलिए शायद मैं यह तय करने की स्थिति में हूं कि कौन सी पुनर्जन्म की स्मृति वास्तविक है और कौन सी नहीं। इसलिए, जब बोस्टन की श्रीमती शार्लोट टुटन ने 1972 की शुरुआत में मुझसे सम्मोहन चिकित्सा के माध्यम से प्रतिगमन कराने का अनुरोध किया, तो मैं उनके दृष्टिकोण और पिछले अनुभव से प्रभावित हुआ। सबसे पहले, श्रीमती टुटन अपने समुदाय के एक प्रतिष्ठित पेशेवर व्यक्ति की पत्नी हैं, और उनका दृष्टिकोण शुरू से ही दृढ़ विश्वास के बजाय सतर्क अवलोकन का रहा है। उन्होंने मुझे समझाया, "मैं ऐनी बोलेन के व्यक्तित्व से बहुत गहराई से जुड़ाव महसूस करती हूं, और यह जुड़ाव लगभग ग्यारह या बारह वर्ष की आयु से है। मेरे जीवन और परिस्थितियों की कई विशेषताएं मुझे यह मानने पर मजबूर करती हैं कि या तो मैं वही थी या उनसे बहुत करीब से जुड़ी हुई थी।"

श्रीमती टुटन को हाल ही में इन सभी तथाकथित सुरागों को एक साथ जोड़ने का विचार आया, हालांकि उन्होंने इन्हें जीवन भर अपने जीवन भर महसूस किया है। पुनर्जन्म के विषय में उनकी रुचि इस क्षेत्र के साहित्य, विशेष रूप से रूथ मोंटगोमरी की रचनाओं से जागृत हुई। अंततः उन्होंने मेरी पुस्तक 'बॉर्न अगेन' पढ़ी और मुझसे संपर्क किया। "ग्यारह वर्ष की आयु में मैंने मार्गरिट कैंपबेल की 'ब्रीफ गॉडी आवर' नामक पुस्तक पढ़ी। यह ऐनी बोलिन के जीवन और इंग्लैंड की रानी के रूप में उनके संक्षिप्त कार्यकाल के बारे में थी। विचित्र बात यह है कि हालांकि मैंने बचपन और किशोरावस्था के दौरान दर्जनों ऐतिहासिक उपन्यास और सैकड़ों अन्य पुस्तकें पढ़ीं, और अंततः वेलेस्ली में फ्रेंच साहित्य में स्नातक की उपाधि प्राप्त की, फिर भी मुझे ऐनी बोलिन के संक्षिप्त जीवन को पढ़ते हुए जो अनुभूति हुई, उसकी तुलना में कोई और अनुभूति—गहरा ज्ञान—कभी नहीं हुआ।"

श्रीमती टुटन को बचपन से ही चाकू और नुकीली धातु की वस्तुओं से लगभग एक मनोरोग संबंधी भय था, जबकि अन्य हथियारों का उन पर जरा भी असर नहीं होता था। ब्लेड का नाम सुनते ही उनके रोंगटे खड़े हो जाते थे और वे कांपने लगती थीं। "मुझे अक्सर गर्दन के पिछले हिस्से में किसी बड़ी नस के कटने जैसा तेज दर्द महसूस होता है, यह शारीरिक अनुभूति इतनी तीव्र होती है कि मैंने इसके बारे में लाहे क्लिनिक के एक न्यूरोसर्जन से सलाह ली थी। इस अनुभूति का कोई ज्ञात शारीरिक कारण नहीं मिल सका, फिर भी यह समय-समय पर होती रहती है।"

श्रीमती टुटन ने मुझे यह भी बताया कि उनके दिए गए नाम शार्लोट और ऐनी थे, लेकिन बचपन से ही उन्होंने अपनी माँ से कहा था कि शार्लोट नाम उनके लिए उपयुक्त नहीं है और उन्हें केवल ऐनी के नाम से ही जाना जाना चाहिए। उनकी माँ ने उनका नाम अपने नाम पर शार्लोट रखा था, लेकिन ऐनी नाम एक अज्ञात रिश्तेदार से लिया था। उन्होंने अपने बच्चे के लिए दूसरा नाम चुनने में बहुत सोच-विचार किया था और अंत में एक ऐसा नाम चुना था जो उन्हें बिल्कुल सही लगा।

श्रीमती टुटन ने अपनी बात जारी रखते हुए कहा, "मेरे जीवन में एक और विषय लगातार चलता रहा है, जिसके दो पहलू हैं। एक तो यह एहसास कि मैंने उच्च पदों पर, उन लोगों के बीच जीवन जीने का तरीका खो दिया है जिनके फैसलों ने इतिहास की दिशा को हर मोड़ पर

प्रभावित किया, और दूसरा यह एहसास कि मुझ पर किसी ऐसे काम का गलत आरोप लगाया गया है जो मैंने नहीं किया, या किसी ऐसे विचार का जो मैंने नहीं अपनाया। इनमें से किसी भी भावना को मेरे वर्तमान जीवन से किसी भी तरह से समझाया नहीं जा सकता।"

* * *

दक्षिण कैरोलिना की श्रीमती बेट्टी थिगपेन ने अपना बचपन और किशोरावस्था एक ऐसे माहौल में बिताई जिसे वे "सामान्य मध्यमवर्गीय परिवेश" बताती हैं। उन्होंने कुछ समय तक एक स्थानीय कपड़ा व्यापारी के निजी सचिव के रूप में काम किया। बाद में वे एक प्रसिद्ध अमेरिकी सीनेटर की निजी सचिव बनीं और अंततः उनके दक्षिण कैरोलिना कार्यालय का प्रबंधन संभाला। एक बैंकिंग अधिकारी से विवाह के बाद, वे सेवानिवृत्त हो गईं और अपना पूरा जीवन अपने बच्चों को समर्पित कर दिया। श्रीमती थिगपेन की पुनर्जन्म में रुचि अपेक्षाकृत हाल ही में विकसित हुई है और उनके अपने जीवन की कुछ घटनाओं से प्रेरित है।

"बचपन से ही मेरा ऐनी बोलेन के व्यक्तित्व से गहरा जुड़ाव रहा है। जब से मैं पढ़ने लायक हुई हूँ, तब से ही मुझे सोलहवीं शताब्दी का अंग्रेज़ी इतिहास बेहद दिलचस्प लगता है," श्रीमती थिगपेन ने बताया। "मैं कभी इंग्लैंड नहीं गई, लेकिन उस देश के साथ-साथ फ्रांस से भी मेरा गहरा लगाव है। जब मैंने 'ऐनी ऑफ द थाउजेंड डेज़' फिल्म देखी, तो लगभग सम्मोहित होकर बैठी रही, मुझे ऐसा लगा जैसे यह सब पहले भी हो चुका है, बस मेरे साथ। एक रानी के साथ आध्यात्मिक जुड़ाव की भावना को स्वीकार करने में मुझे थोड़ी शर्म आती है, इसलिए मैं खुद को समझाती रहती हूँ कि अगर कोई जुड़ाव है भी, तो शायद सिर्फ इसलिए कि मैं उन्हें जानती थी, शायद रसोई की नौकरानी या दासी के रूप में, लेकिन फिर भी, ऐनी बोलेन और इतिहास के उस दौर से मेरा ऐसा जुड़ाव है जो मैंने किसी और के साथ या किसी और चीज़ के साथ कभी महसूस नहीं किया।"

मैं यह बताना चाहूंगा कि मैंने बोस्टन की श्रीमती टुटन और दक्षिण कैरोलिना की श्रीमती थिगपेन दोनों को सम्मोहित करने का प्रयास किया, लेकिन मुझे इसमें ज़्यादा सफलता नहीं मिली। दोनों महिलाएं इतनी तनावग्रस्त लग रही थीं कि वे सम्मोहन के तीसरे चरण में जाने के लिए पर्याप्त रूप से शांत नहीं हो पाईं, जहां उनके संभावित पिछले जीवन में जाने का प्रयास

किया जा सकता है। इन परिस्थितियों में, महिलाओं के कथनों के प्रमाणिक महत्व का आकलन करना कठिन है, लेकिन अगर यह केवल किसी वांछनीय व्यक्ति से खुद को जोड़ने का प्रश्न होता, तो कहीं अधिक आकर्षक और भाग्यशाली रानियां थीं जिनसे जुड़ाव महसूस किया जा सकता था। संभवतः, समय बीतने के साथ, ये महिलाएं कुछ ऐतिहासिक विवरण याद कर लेंगी जो उन्हें अन्यथा पता नहीं होते, और इस तरह यह प्रश्न हल हो सकता है कि वे कौन थीं, यदि वास्तव में वे रानी ऐनी बोलेन के समय में थीं।

* * *

अगर ऐनी बोलिन को अपनी अचानक मृत्यु से असंतुष्ट होने का उचित कारण था, तो उनकी एक रिश्तेदार, जो सिंहासन तक पहुंचीं, उन पर लगे आरोपों से पूरी तरह मुक्त नहीं थीं। मैं बात कर रहा हूं कैथरीन हॉवर्ड की, जिनसे हेनरी अष्टम ने तब शादी की थी जब वे काफी उम्रदराज थे और कैथरीन उनसे काफी छोटी थीं। कैथरीन के एक-दो प्रेमी थे और दुर्भाग्य से इस दौरान उनका भेद खुल गया और उन पर राजद्रोह का आरोप लगा। उनका भी सिर कलम कर दिया गया। कंट्री लाइफ पत्रिका के अनुसार, हैम्पटन कोर्ट वह जगह है जहां वह भटकती हैं और परिणामस्वरूप तरह-तरह की गड़बड़ियां पैदा करती हैं। एडवर्ड पेरी कहते हैं, "एक प्रेत के डर से कई सालों तक वह प्रेतवाधित गैलरी बंद रही। नौकर उसके दरवाजों से जल्दी से निकल जाते थे; उसके बाहर का रास्ता रात में शायद ही कभी इस्तेमाल होता है। और अब भी रहस्यमय चीखें सुनाई देती हैं।"

* * *

क्लियोपेट्रा को छोड़कर, मैरी क्वीन ऑफ स्कॉट्स जितनी लोकप्रियता किसी अन्य ऐतिहासिक व्यक्ति को नहीं मिली है। यह आश्चर्य की बात नहीं है, क्योंकि मैरी अपने समय में एक बेहद विवादास्पद व्यक्तित्व थीं। उन पर कई नाटक और पुस्तकें लिखी गई हैं, जिनमें से सर्वश्रेष्ठ, मेरे विचार से, एलिजाबेथ बर्ड की 'इम्मॉर्टल क्वीन' है। उनकी विवादास्पद स्थिति का कारण उनकी चचेरी बहन, महारानी एलिजाबेथ प्रथम के आदेश पर जल्लाद द्वारा उनकी असमय मृत्यु नहीं है, बल्कि वे कारण हैं जिनकी वजह से उन्हें मृत्युदंड दिया गया। लगभग सभी नाटकों और पुस्तकों में महारानी एलिजाबेथ की अपनी चचेरी बहन के प्रति घृणा और ईर्ष्या

पर बहुत जोर दिया गया है, और इस तथ्य को बहुत कम महत्व दिया गया है कि मैरी अंग्रेजी सिंहासन की अगली उत्तराधिकारी थीं और उन्होंने इसे हासिल करने की साजिश रची थी। हालांकि एलिजाबेथ द्वारा मैरी को कैद करना न्यायसंगत हो सकता है और इसे ईर्ष्या और घृणा का कार्य माना जा सकता है, लेकिन इतने वर्षों तक एक आलीशान महल में "शानदार" कारावास के बाद मैरी को फांसी देना, एलिजाबेथ को सिंहासन से हटाने के लिए मैरी द्वारा किए गए प्रत्यक्ष प्रयासों से सीधे तौर पर जुड़ा हुआ है। इन परिस्थितियों में, और अपने समय के कड़े नियमों का पालन करते हुए, एलिजाबेथ कम से कम कानूनी रूप से मैरी को फांसी देने का आदेश देने में उचित थी।

साहित्य में महारानी मैरी की चार दासियों का भी बहुत ज़िक्र मिलता है, जिनका पहला नाम भी मैरी ही था। उन्होंने एडिनबर्ग के होलीरूड कैसल में उनके विजयोत्सव के दिन देखे और इंग्लैंड में उनके निर्वासन में भी उनका साथ दिया। इतिहास के छात्रों के बीच "चार मैरी" नाम काफी प्रचलित है, हालांकि ये विवरण संयुक्त राज्य अमेरिका में हाई स्कूल या औसत कॉलेज स्तर पर नहीं पढ़ाए जाते हैं। मुझे लगता है कि जो मैं बताने जा रहा हूँ, उसकी पृष्ठभूमि को जानना ज़रूरी है ताकि इसके सच होने की संभावना का आकलन किया जा सके।

जुलाई 1972 में, सेंट लुइस, मिसौरी की एक युवा गृहिणी मैरिलिन स्मिथ ने मुझसे संपर्क किया, जिनके पास पुनर्जन्म से जुड़ी कई मज़बूत यादें थीं और वे उनका और अधिक अध्ययन करना चाहती थीं। पुनर्जन्म से जुड़ी उनकी कम से कम दो यादें, या पिछले जन्म, स्कॉटलैंड से संबंधित नहीं थीं, लेकिन श्रीमती स्मिथ ने अगली वसंत ऋतु में सेंट लुइस में हमारी मुलाकात के दौरान जो विवरण दिए, उनसे वे काफी प्रासंगिक प्रतीत हुईं। पुनर्जन्म से संबंधित जानकारी होने के बावजूद, श्रीमती स्मिथ के पास पूर्व-दृष्टिकोण (ईएसपी) का कोई मज़बूत इतिहास नहीं है, जो मेरे इस विचार से मेल खाता है कि सच्ची पुनर्जन्म की यादें माध्यम बनने की क्षमता को नकारती हैं। स्कॉटिश इतिहास से उनका जुड़ाव मुझसे मिलने से अठारह वर्ष पहले, 1954 में शुरू हुआ था।

“जब मैं सत्रह साल की थी, तब मैं कुर्सी पर दुबककर पढ़ रही थी और आधा-अधूरा टीवी देख रही थी, जिस पर मैरी क्वीन ऑफ स्कॉट्स का लाइव प्रदर्शन चल रहा था। एक खास दृश्य ने मेरा ध्यान खींचा। उसमें, रानी मैरी इंग्लैंड की एक दुर्भाग्यपूर्ण यात्रा के लिए नाव पर चढ़ने को

तैयार थीं। एक महिला मैरी से लिपटी हुई थी और उनसे इंग्लैंड न जाने की विनती कर रही थी। अचानक मैंने खुद से कहा, 'वह महिला, जो विनती कर रही है, वह मैं ही हूँ,' लेकिन तुरंत ही मैंने इस विचार को मन से निकाल दिया। जब रानी नाव पर चढ़ीं, तो मुझे एक भयानक, कायरतापूर्ण अपराधबोध महसूस हुआ।"

श्रीमती स्मिथ में स्कॉटिश वंश का कोई अंश नहीं है, वह कभी स्कॉटलैंड या इंग्लैंड नहीं गई हैं, और उन्होंने इसके बारे में ज्यादा पढ़ा भी नहीं है। कुछ महीनों बाद उन्हें एक दिव्य दृष्टि प्राप्त हुई। "मैं उस समय गाँव में रहता था, और क्योंकि वह गर्मी की एक गर्म रात थी, मैंने अपना तकिया और कंबल लिया और सोने के लिए भूसे से लदी एक बड़ी गाड़ी पर लेट गया। मैं वहाँ लेटा हुआ सुंदर तारों भरे आकाश को देख रहा था, सोच रहा था कि मैंने पहले इसकी सुंदरता की सराहना क्यों नहीं की। तभी मुझे एक चुंबकीय शक्ति ने घेर लिया, और मैं अपने लिए भविष्य की भविष्यवाणी करने लगा। 'एक दिन तारे मेरे जीवन में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे और मैं उनके कारण बहुत अमीर और प्रसिद्ध बनूंगा।' तभी मैंने एक बहुत ही सुंदर सुनहरे बालों वाली महिला का चेहरा देखा, और किसी तरह मुझे पता चल गया कि वह मेरे भविष्य में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी। 'हम लगभग बहनों जैसी थीं,' मैंने खुद से कहा। लेकिन फिर मैंने खुद को रोका। हम बहनों जैसी कैसे हो सकती थीं जब मैं उससे अभी तक मिला भी नहीं था? इस क्षण मुझे अचानक वह टेलीविजन कार्यक्रम याद आया जिसे मैंने इतने अजीब भावों के साथ देखा था, और मैरी शब्द उस चेहरे से जुड़ा हुआ प्रतीत हुआ। साथ ही, मैरी बीटन या मैरी सीटोन के बारे में भी कुछ याद आया, लेकिन मैं उसे समझ नहीं पाया।"

अगले कुछ वर्षों में, ऐसा प्रतीत हुआ मानो पिछले जन्म की कुछ यादें सतह पर आना चाहती हों, लेकिन श्रीमती स्मिथ ने उन्हें दबा दिया। वर्ष बीतते गए और श्रीमती स्मिथ को तंत्र-मंत्र, पुनर्जन्म और विशेष रूप से ज्योतिष में रुचि हो गई। उन्होंने ज्योतिष का अध्ययन शुरू किया और अब वे पेशेवर रूप से कुंडली बनाने का काम करती हैं।

श्रीमती स्मिथ ने बताया, "ज्योतिष की अपनी पहली ही कक्षा में मेरी मुलाकात पैट वेबबे नाम की एक छात्रा से हुई, जो बेहद आकर्षक गोरी महिला थीं। हमारे बीच तुरंत ही एक गहरा जुड़ाव हो गया। उनका चेहरा वही था जो मैंने कई साल पहले अपने दिव्य दर्शन में देखा था, और मैंने उन्हें इसके बारे में बताने का फैसला किया। हालांकि, मैंने उन्हें यह नहीं बताया कि

उनके चेहरे के साथ 'मैरी' नाम भी जुड़ा हुआ था, क्योंकि मुझे लगा कि यह नाम पवित्र कुंवारी मरियम को संदर्भित करता है, जिनके प्रति मैं हमेशा से बहुत श्रद्धा रखती थी।"

मैरिलिन स्मिथ से मिलने से लगभग एक साल पहले, पैट वेबबे ने एक अजीब सपना देखा था। सपने में वह कई सदियों पुराने जमाने की पोशाक पहने हुए थी। वह किसी महल जैसी जगह पर थी और वहां से भागने का इंतजार कर रही थी।

"वह एक विशाल किला था और बहुत ठंड थी। मुझे याद है कि मैं एक कमरे में गई, और वहाँ लंबे भाले लिए कुछ आदमी एक-दूसरे पर वार कर रहे थे। मैंने दो टोपी कुचली हुई देखीं, और फिर मैं दूसरे कमरे में वापस आ गई और किले के सामने हर जगह आग लगी हुई थी। मैंने खुद को एक नौकर से यह कहते हुए सुना कि जल्दी करो और बच्चों को ले आओ और यह सुनिश्चित करो कि उन्होंने कोट पहने हों, क्योंकि हमें बर्फ में बाहर जाना है। मैं देख सकती थी कि जहाँ से नौकर बच्चों को ला रहा था, वहाँ से रोशनी आ रही थी, और हम एक छोटे से गुप्त दरवाजे से बाहर निकले और वहाँ एक बड़ा कुत्ता था, लेकिन किसी कारण से मुझे उस कुत्ते से डर नहीं लगा, हालाँकि वर्तमान जीवन में मुझे कुत्तों से बहुत डर लगता है। सपना खत्म हो गया, लेकिन मुझे अंत में यह एहसास हुआ कि मेरी सबसे बड़ी बेटी वहाँ नहीं है।"

मैंने पूछा, "क्या तुमने सपने में खुद को देखा?"

"हां, लेकिन वह वास्तव में सिर्फ एक आकृति थी; मैं उसमें चेहरा या कुछ और नहीं पहचान सका।"

"आपको और कौन-कौन सी बातें याद हैं?"

मुझे उस दौर की पोशाकें और घेरेदार कपड़े याद हैं, लेकिन बर्फ और आग को छोड़कर सब कुछ कुछ-कुछ धूसर सा था, बर्फ और आग लाल रंग की थी, और तलवारें काली थीं। मैंने गरज सुनी, लेकिन मैं उसे समझा नहीं सकती। लेकिन बचपन से ही मुझे एक सपना बार-बार आता है। मेरी माँ और मैं एक नाव में थे, और ऐसा लग रहा था जैसे हम उस नाव में होने से खुश थे, भाग रहे थे।

श्रीमती वेबबे को अपने अतीत के जीवन का कोई प्रबल अहसास नहीं है। वह कभी यूरोप नहीं गई हैं, और उन्हें स्कॉटलैंड या इंग्लैंड जाने की कोई विशेष इच्छा नहीं है, हालांकि उन्हें फ्रांस जाने की इच्छा जरूर है।

मैंने पूछा, "जब आप पहली बार मर्लिन स्मिथ से मिले, तो क्या आपके मन में उनके बारे में कोई अजीब सी भावना आई, जैसे कि आप उन्हें पहले से जानते हों?"

“नहीं, लेकिन हम तुरंत एक-दूसरे के करीब आ गए। छह महीने के भीतर ही हम बहनों की तरह हो गए, मानो हम जीवन भर से दोस्त रहे हों।”

मैरिलिन स्मिथ से मिलने के कुछ समय बाद, पैट को एक और अजीब सपना आया। उसमें उसने खुद को बिस्तर पर देखा, और एक महिला को देखा जिसे उसकी देखभाल करनी थी। किसी तरह श्रीमती वेबबे को मेरिक नाम पता चला।

“मुझे याद है कि उसे जाना पड़ा, लेकिन मैं नहीं चाहती थी कि वह जाए। मैंने उससे रुकने की विनती की, लेकिन उसे जाना ही था। मुझे याद है कि मैं एक छोटे से पियानो पर बैठी थी और उसे खूबसूरती से बजा रही थी। मुझे एक विशाल दरवाजा दिखाई दिया, और एक आदमी पुराने जमाने की पोशाक पहने अंदर आया। वह पोशाक ग्रे रंग की थी और उस पर किसी तरह की चेन वाली बेल्ट बंधी थी; उसके बाल सुनहरे थे, और मुझे याद है कि मैंने खुद को उसके पैरों में गिरा दिया और कहा, 'उसकी मदद करो, उसकी मदद करो,' और आगे कहा, 'वह नाव से जा रही है, उसकी मदद करो,' लेकिन उसने गाली दी और 'धिक्कार है इन विद्रोहियों' के बारे में कुछ कहा, और यहीं सपने का अंत हो गया।”

“पैट और मैं अक्सर एक-दूसरे से अपने सपनों के बारे में बात करते थे,” मैरिलिन स्मिथ ने कहा। “एक दिन उसने मुझे बहुत उत्साह से फोन किया और मुझे अपने एक सपने के बारे में बताया जो उसने अभी-अभी देखा था।”

“खैर, मुझे तो यह कुछ अजीब लगा,” श्रीमती वेबबे ने बताया, “लेकिन सपने में मैं और मेरे पति किसी दावत में थे और हम एक लंबे गलियारे से गुज़र रहे थे जो फ्रांसीसी शैली में बहुत ही भव्य ढंग से सजा हुआ था। एक कोने में एक सोफा था जिस पर दो तलवारें रखी थीं। एक बहुत बड़ी और अलंकृत थी, दूसरी छोटी और चांदी की बनी थी, और मैंने छोटी तलवार अपने पति को दे दी। जैसे ही मैंने उन्हें तलवार दी, मेरी उंगली में कांटा चुभ गया, और मैं अपने हाथ से खून साफ करने के लिए एक छोटे से कमरे में गई, और खून गायब हो गया। जब मैंने उस कमरे में दर्पण में देखा, तो मैंने खुद को एक फ्रांसीसी लड़के के रूप में देखा। फिर मैंने खुद से कहा, ‘मैं मैरी क्वीन ऑफ स्कॉट्स हूं,’ और मैं वापस दूसरे कमरे में भागी और अपने पति

को बताया, 'मैं मैरी क्वीन ऑफ स्कॉट्स हूं।' कुछ ही देर बाद मैं अपने सपने से जाग गई, और 'मैं मैरी क्वीन ऑफ स्कॉट्स हूं!' बोलों वाला एक गीत गा रही थी।"

दोनों महिलाओं को यह पक्का यकीन हो गया था कि वे पिछले जन्म में स्कॉटलैंड में साथ थीं; सटीक कहें तो, मैरी क्वीन ऑफ स्कॉट्स और मैरी बीटन या सीटोन के रूप में, जो उनकी चार दासियों में से एक थीं। शुरुआत में, पैट के लिए स्कॉटिश रानी होने की बात स्वीकार करना मुश्किल था, और उन्होंने संशय का भाव बनाए रखा, जबकि इस सिद्धांत का अधिक उत्साहपूर्वक समर्थन करने का काम उनकी सहेली मर्लिन ने किया। फिर भी, दोनों महिलाओं ने इस विषय पर समझदारी से चर्चा की और यहां तक कि कुंडली की तुलना भी की, क्योंकि दोनों को अब ज्योतिष में बहुत रुचि हो गई थी। कई ऐसी घटनाएं थीं जिनमें उन्होंने कुछ महत्व देखा, ऐसी घटनाएं जो मुझे व्यक्तिगत रूप से तो अर्थहीन लगती हैं, लेकिन इस विशेष स्थिति के संदर्भ में एक साथ देखने पर कम से कम दिलचस्प तो हैं ही। इनमें ऐसी घटनाएं शामिल हैं जैसे मर्लिन स्मिथ का छुट्टियों के दौरान अर्कांसस के एक लोक थिएटर में जाना और वहां पहुंचते ही एक लोक गायक को "द बैलाड ऑफ मैरी क्वीन ऑफ स्कॉट्स" गाते हुए सुनना। इसी तरह, एक बार पैट वेबबे लास वेगास में एक फ्लोर शो में शामिल हुई थीं, जहां मुख्य कलाकारों में से एक मैरी क्वीन ऑफ स्कॉट्स की नकल कर रही थी।

"मुझे यह भी अजीब लगता था कि मुझे मैरी नाम कभी पसंद नहीं आया," पैट वेबबे ने आगे कहा। "मेरी पाँच बेटियाँ हैं, और मेरे पति हमारी पहली बेटी का नाम मैरी रखना चाहते थे, लेकिन मुझे यह नाम मंजूर नहीं था। मैं कुछ अलग नाम चाहती थी, लेकिन किसी न किसी तरह मुझे अपनी हर बेटी के नाम में कहीं न कहीं मैरी जोड़ना पड़ा, मेरे पति के सुझाव पर नहीं, बल्कि किसी अज्ञात कारण से। इसलिए मेरी हर बेटी के नाम में मैरी शब्द शामिल है।"

चूंकि दोनों महिलाएं, जो अब पेशेवर ज्योतिषी बन चुकी थीं, ने अपने पुनर्जन्म को मैरी क्वीन ऑफ स्कॉट्स और उनकी दासी की कुंडली से जोड़ने का प्रयास किया, इसलिए उन्होंने मुझसे मैरी बीटन और मैरी सीटोन की जन्मतिथि पता करने का अनुरोध किया, यदि संभव हो तो। मेरी मित्र एलिजाबेथ बर्ड की सहायता से, मैं यह स्थापित करने में सक्षम हुआ कि मैरी क्वीन ऑफ स्कॉट्स का जन्म 8 दिसंबर, 1542 को हुआ था, लेकिन रॉयल रजिस्टर हाउस में पूछताछ से केवल अस्पष्ट जानकारी मिली कि मैरी सीटोन का जन्म लगभग 1541 में हुआ था,

और मैरी बीटन के जन्म का कोई उल्लेख नहीं था। मर्लिन स्मिथ को यह महत्वपूर्ण लगा कि रानी की लग्न राशि 29° वृषभ थी, और पैट वेबबे, जिन्हें रानी का पुनर्जन्म माना जाता है, की जन्म कुंडली में चंद्रमा 29° वृषभ में था। उनका मानना है कि ज्योतिष पुनर्जन्म की पहचान के बारे में सटीक जानकारी प्रदान कर सकता है।

वाशिंगटन डी.सी. के पास अपने माता-पिता के साथ रहने वाली एलिजाबेथ पेज किडर सात साल की उम्र में संयोगवश स्कॉटलैंड में थीं।

“हम हवाई अड्डे से एडिनबर्ग जाने वाली बस में थे। अचानक मेरे पिता ने कहा, ‘पहाड़ी की ओर देखो; वहीं मैरी क्वीन ऑफ स्कॉट्स रहती थीं।’ यह सुनकर मैं गहरी नींद में सो गई।” पता नहीं कैसे, उनके पिता के मैरी क्वीन ऑफ स्कॉट्स के ज़िक्र ने उनकी दबी हुई याद को ताज़ा कर दिया। स्कॉटलैंड की राजधानी पहुँचने के दो दिन बाद किडर परिवार खरीदारी करने गया। जब वे किल्ट्स देख रहे थे, तो एलिज़ाबेथ ने बाकी सभी को छोड़कर स्टुअर्ट प्लेड लेने की ज़िद की। अंत में, उन्होंने मैकडॉनल्ड प्लेड को चुना, जो उनके पारिवारिक पृष्ठभूमि से मेल खाता था। कुछ समय बाद, परिवार लंदन में मैडम तुसाद वैक्स म्यूज़ियम देखने गया। जब एलिज़ाबेथ ने मैरी क्वीन ऑफ स्कॉट्स के सिर कलम किए जाने की प्रतिमा को ध्यान से देखा, तो वह स्तब्ध रह गईं। हालाँकि सात साल की उस बच्ची ने रानी के बारे में पहले कभी नहीं सुना था, फिर भी उन्होंने ज़ोर देकर कहा कि यह फाँसी अन्यायपूर्ण थी और इस बारे में वह बहुत उग्र हो गईं। संग्रहालय में प्रदर्शित अन्य किसी भी वस्तु का उस पर जरा भी प्रभाव नहीं पड़ा। जब परिवार वेस्टमिंस्टर एब्बे घूमने गया, तो एलिजाबेथ सीधे मैरी की कब्र पर गई और उसके लिए प्रार्थना करने लगी। अब अठारह वर्ष की एलिजाबेथ किडर ने मैरी क्वीन ऑफ स्कॉट्स से संबंधित कई पुस्तकें पढ़ी हैं, और विशेष रूप से मैरी सीटोन के संदर्भों ने उसे आकर्षित किया है।

एडिनबर्ग और लंदन में अपनी बेटी के अजीब व्यवहार ने श्रीमती किडर को पुनर्जन्म और ऐसी घटनाओं की सत्यता के बारे में सोचने पर मजबूर कर दिया। कई वर्षों बाद, जब उन्होंने लॉस एंजिल्स में एडगर केसी के कार्यों की तर्ज पर जीवन अध्ययन में विशेषज्ञता रखने वाले 'द फेलोशिप ऑफ यूनिवर्सल गाइडेंस' नामक एक संगठन के बारे में सुना, तो उन्होंने अपनी बेटी के बारे में जानकारी प्राप्त करने के लिए आवश्यक डेटा उन्हें सौंप दिया। वह जानना

चाहती थीं कि क्या उनकी बेटी का मैरी क्वीन ऑफ स्कॉट्स से कोई संबंध था। जवाब आया कि वह उनकी दासी थीं। श्रीमती किडर ने इस तथाकथित जीवन अध्ययन को सच मानकर अपनी बेटी को सम्मोहन में डालना शुरू कर दिया, क्योंकि उन्हें वह एक उपयुक्त विषय लगीं। सम्मोहन के तहत एलिजाबेथ ने मैरी क्वीन ऑफ स्कॉट्स की दासी के रूप में अपने जीवन के बारे में और अधिक जानकारी दी और दावा किया कि उनकी स्कूल की दोस्त कैरल वास्तव में मैरी क्वीन ऑफ स्कॉट्स का पुनर्जन्म थीं। कैरल ब्रायन विलियम, जो मुझसे मिलने न्यूयॉर्क आई थीं, अक्सर सपने में देखती थीं कि वह शाही नीले रंग के पर्दों वाले एक अलंकृत नक्काशीदार कमरे में खड़ी एक भव्य पोशाक पहने महिला हैं। इन आश्चर्यजनक दावों की सच्चाई साबित करने के लिए दृढ़ संकल्पित श्रीमती किडर ने रूथ मोंटगोमरी से संपर्क किया और उनके अपने शब्दों में, "उनके माध्यम से यह सत्यापित करने में सक्षम हुईं कि उनकी बेटी एलिजाबेथ मैरी सीटोन थीं और उनकी दोस्त कैरोल मैरी क्वीन ऑफ स्कॉट्स थीं।"

कैरल, जो एलिज़ाबेथ से थोड़ी बड़ी है, ने बताया कि जब वह छोटी थी तो हमेशा सोचती थी कि वह इंग्लैंड से है। उसके पिता अंग्रेज़ मूल के हैं, लेकिन चूंकि वह गोद ली हुई बच्ची है, इसलिए इस मामले में इसका कोई खास महत्व नहीं है। उसे अक्सर महल और उसके एक खास कमरे के साथ-साथ ऐसे ग्रामीण इलाकों के सपने आते हैं जिन्हें वह अंग्रेज़ी इलाका मानती है।

मैंने पहले एलिजाबेथ को सम्मोहन में डाला था, लेकिन कोई खास नतीजा नहीं निकला। फिर मैंने कैरोल पर कोशिश की। वह बेहतर विषय साबित हुई और आसानी से तीसरे स्तर तक पहुँच गई। मैंने उससे पूछा कि वह इस समय कहाँ है।

“मुझे लगता है कि यह सोलहवीं शताब्दी है। मुझे बहुत सारे शहरवासी दिखाई दे रहे हैं। उन्होंने बोरी के ढीले-ढाले कपड़े पहने हैं, जिन्हें कमर के चारों ओर रस्सी से बांधा गया है। मुझे खुद वहां खड़ा दिखाई देता है, लेकिन वह मैं नहीं हूं। मैं एक लड़का हूं। वह छोटा है, उसके बाल सुनहरे हैं और वह थोड़ा मैला है।”

और पूछताछ करने पर पता चला कि लड़के का नाम जॉन था, उसकी माँ दर्जी थी और उसके पिता राजा के यहाँ बढ़ई का काम करते थे। राजा का नाम जेम्स था। उसके बाल काले थे, दाढ़ी थी और वह लंबा-चौड़ा था।

मैंने पूछा, "क्या आप शहर में किसी और को जानते हैं?"

“मैं एक महिला को जानता हूँ। लोग उसे ज्यादा पसंद नहीं करते क्योंकि वह कैथोलिक नहीं है। वह एपिस्कोपल है।”

"आप क्या?"

“कैथोलिक।”

"क्या आपके कस्बे में सभी लोग कैथोलिक हैं?"

“कुछ लोग ऐसा नहीं करते, लेकिन अगर आप ऐसा नहीं करते हैं, तो आप मुसीबत में पड़ जाएंगे। यही कानून है।”

“वह कौन सा व्यक्ति है जो गैर-कैथोलिक लोगों का नेतृत्व करता है?”

हेनरी अष्टम।

क्या उन्हें किंग जेम्स पसंद हैं?

"मुझे ऐसा नहीं लगता।"

“किंग जेम्स का क्या हुआ?”

“उसकी हत्या कर दी गई है। उसकी मौत हिंसक तरीके से हुई है।”

क्या हेनरी अष्टम का इससे कोई संबंध था?

"धर्मों को लेकर मतभेद था। हेनरी अष्टम कैथोलिक नहीं बनना चाहते थे, और कैथोलिक शासन को समाप्त करने का एकमात्र तरीका जेम्स को हटाना था।"

कौन जीतेगा?

मुझे लगता है कि हेनरी अष्टम ऐसा करते हैं, लेकिन ऐसा भी है और नहीं भी। हर कोई हेनरी अष्टम का अनुसरण नहीं करता। अभी भी ऐसे लोग हैं जो कैथोलिक धर्म के प्रति निष्ठावान हैं।

कैरोल को होश में लाने के बाद, मैंने उससे उसकी पढ़ाई के बारे में पूछा। पता चला कि वह कॉलेज में अंग्रेजी का कोर्स कर रही थी और अब तक एक साल अंग्रेजी इतिहास पढ़ चुकी थी। उसे स्कॉटिश इतिहास में कोई खास दिलचस्पी नहीं थी, लेकिन कैथोलिक धर्म के विषय से उसका लगाव कुछ ज़्यादा ही था। उसे समझ नहीं आ रहा था कि ऐसा क्यों है, क्योंकि वह एपिस्कोपलियन है।

श्रीमती किडर इस बात से बिल्कुल भी खुश नहीं थीं कि उनकी शिष्या, कैरोल, को सोलहवीं शताब्दी के इंग्लैंड में एक लड़के के रूप में बिताए गए समय की ही याद थी, न कि प्रतिष्ठित मैरी क्वीन ऑफ स्कॉट्स की। लेकिन फिर सेंट लुइस के पैट वेबबे का क्या होता? खैर, सब ठीक ही था।

* * *

लिंडा वाइज़ मध्यपश्चिम में रहने वाली एक युवती हैं, जिनके पूर्वज मेफ्लावर जहाज से आए थे। वह आंशिक रूप से स्कॉटिश, आंशिक रूप से अंग्रेज़ और आंशिक रूप से जर्मन हैं, और स्कॉटलैंड से उनका एकमात्र संबंध उनकी दादी के परिवार की एक किंवदंती है, जिसके अनुसार परिवार के कई सदस्यों को 1700 के दशक में बहुत कम समय में स्कॉटलैंड छोड़ने के लिए मजबूर होना पड़ा था। इन चचेरे भाइयों का नाम, यदि वे चचेरे भाई थे, तो इविंग था, लेकिन सुश्री वाइज़ ने इस बारे में और अधिक शोध नहीं किया है। उन्हें स्कॉटलैंड या ग्रेट ब्रिटेन में कभी कोई विशेष रुचि नहीं रही है, उन्होंने ब्रिटिश द्वीपों का इतिहास नहीं पढ़ा है, और मध्यपश्चिम में रहने के कारण अंग्रेज़ या स्कॉटिश लोगों से उनका बहुत कम संपर्क है। फिर भी, उन्हें समय-समय पर स्कॉटलैंड वापस जाने की इच्छा होती रही है, मानो वे पहले भी वहाँ जा चुकी हों। 1971 में उनकी मुलाकात एक स्कॉटिश दंपति से हुई और वे पत्र-व्यवहार करने लगे। परिणामस्वरूप, वह अगस्त 1972 में उनसे मिलने गईं। स्कॉटलैंड पहुँचते ही उन्हें एक विचित्र अनुभव हुआ।

“जब मैं पहली बार वहाँ पहुँचा, तो हमने एबरडीन से एल्गिन के लिए बस ली, जहाँ मेरे दोस्त रहते हैं। मुझे एक खास इलाके में पहाड़ दिखाई दिए और अचानक मेरे रोंगटे खड़े हो गए। मुझे ऐसा लगा जैसे मैं घर आ गया हूँ, जैसे मैं उस इलाके को पहले से जानता हूँ।”

बाद में वह इंग्लैंड घूमने गई, लेकिन इंग्लैंड में रहने के दौरान वह बेहद बेचैन महसूस करती रही और जल्द से जल्द स्कॉटलैंड लौटना चाहती थी। "पता नहीं क्यों, मुझे तब कहीं ज्यादा सुरक्षित महसूस हुआ जब ट्रेन बेरविक-ऑन-ट्वीड में सीमा पार कर गई।"

लेकिन उनकी यात्रा का सबसे मार्मिक अनुभव कुलोडन के युद्धक्षेत्र में हुआ, जहाँ 1745 के विद्रोह में बोनी प्रिंस चार्ली ने राजा जॉर्ज के विरुद्ध स्कॉटिश कबीलों का नेतृत्व किया था।

इनवरनेस से कुछ मील पूर्व में स्थित यह युद्धक्षेत्र अब एक ऐतिहासिक स्थल है। मिस वाइज को अस्पष्ट रूप से पता था कि कुलोडन में एक महत्वपूर्ण युद्ध हुआ था, और वह अत्यंत रक्तपातपूर्ण था। कुलोडन के जंगल में कई कब्रें हैं, और लोग वहाँ दर्शन करने और कभी-कभी प्रार्थना करने जाते हैं।

“अचानक मुझे ऐसा लगा जैसे मुझे दो दिशाओं में खींचा जा रहा हो—आगे बढ़ना और फिर भी जितनी जल्दी हो सके मुख्य सड़क पर वापस लौटना,” लिंडा वाइज ने मुझे समझाया। “एक समय ऐसा आया जब मैं इसे और सहन नहीं कर सकी, इसलिए मैं अपने साथ आए दोस्तों के पास वापस जाने के लिए निकल पड़ी। उन्होंने भी अपने साथ हो रही अजीबोगरीब अनुभूतियों का जिक्र किया।”

"कुलोडन में आपको वास्तव में कैसा महसूस हुआ?"

“मुझे ऐसा लगा कि कोई मेरा पीछा कर रहा है, मैं अकेली नहीं थी,” मिस वाइज़ ने बताया। “मुझे सच में ऐसा महसूस नहीं हुआ कि मैं अकेली हूँ।” जब मिस वाइज़ अपने दोस्तों से मिलीं, तो वे अपने साथ उस इलाके से कुछ छोटे पत्थर ले गईं। मिडवेस्ट लौटने पर, उन्होंने कुलोडन से एक छोटा पत्थर अपनी माँ को दिया ताकि वे उसका इस्तेमाल मनोमापन के प्रयास में कर सकें। तुरंत ही श्रीमती वाइज़ को लाल और पीले रंग की वर्दी पहने पुरुषों के एक समूह का आभास हुआ, जो एक पहाड़ी से नीचे आ रहे थे। यह प्रयोग मानसिक अनुसंधान में रुचि रखने वाले लोगों के बीच एक गृह विकास समूह द्वारा आयोजित नियमित सत्र का हिस्सा था।

“हमने मेरी माँ से उस वर्दी का वर्णन करने को कहा जिससे वह प्रभावित हुई थीं,” मिस वाइज़ ने आगे बताया। “उन्होंने कहा कि वह स्कॉटिश वर्दी थी; हालाँकि, उन्हें उसमें कोई स्कर्ट या सीधी टांगों वाली पैंट नहीं दिखी। उन्हें शारीरिक रूप से ऐसा महसूस हुआ जैसे उनकी आँखें बहुत भारी हो रही हों, मानो उन्हें अंदर की ओर धकेला जा रहा हो। चूंकि मेरी माँ जानती थीं कि उनकी आँखों में कोई खराबी नहीं है, इसलिए उन्होंने मन ही मन पूछा कि इसका कारण क्या है और उनकी कल्पना में एक आकृति, या यूँ कहें कि एक विशालकाय व्यक्ति की अलौकिक छवि दिखाई दी, जिसने कहा कि वह अपनी आँखें वापस चाहता है! उसने समझाया कि वह इसी कारण से लंबे समय से यहाँ भटक रहा था और उसे समझ नहीं आ रहा था कि क्या करे।”

"आपका मतलब है, उसकी आंखें चली गई थीं?"

“हां,” लिंडा ने पुष्टि की। “मेरी मां को एहसास हुआ कि यह एक भावनात्मक स्थिति है, इसलिए उन्होंने उसके डर को शांत किया और उससे कहा कि उसकी आंखें फिर से ठीक हो गई हैं और उसे आगे बढ़ने के लिए कहा, साथ ही उसे प्यार, ऊर्जा और आश्वासन भी भेजा।”

अमेरिका लौटने के कुछ समय बाद, मिस वाइज़ ने एक रिकॉर्ड खरीदा जिस पर प्रसिद्ध ब्लैक वॉच रेजिमेंट का संगीत बज रहा था। इससे वह बहुत प्रभावित हुईं, लेकिन जब वह मध्य-पश्चिमी क्षेत्र के एक उत्सव में गईं जहाँ विभिन्न जातीय समूहों ने भाग लिया, तो उनकी भावनात्मक भागीदारी और भी प्रबल हो गई। “स्कॉटलैंड जाने के बाद यह पहला पाइप बैंड था जिसे मैंने देखा था, और मेरी आँखों में आँसू आ गए और मुझे ऐसा लगा जैसे मैं वापस स्कॉटलैंड में हूँ।”

कुलोडन की लड़ाई और बोनी प्रिंस चार्ली (जो कभी स्कॉटलैंड और इंग्लैंड के राजा चार्ल्स तृतीय थे) के भाग्य ने मेरे जीवन को भी कई वर्षों तक प्रभावित किया है, क्योंकि उस समय के कुछ धुंधले से स्मरण मेरे मन में बसे हैं। लोगों ने मुझे कुलोडन की या प्रिंस चार्ल्स से संबंधित वस्तुएँ भेंट की हैं; कई बार तो बहुत ही दुर्लभ स्रोतों से आई किताबें भी मेरे हाथों में पहुँची हैं। इसके अलावा, मेरे पास चार्ल्स तृतीय के नाम वाला एक चांदी का स्पर्श चिह्न है, जो पदकों की दृष्टि से एक दुर्लभ वस्तु है और जिसे मैंने विचित्र परिस्थितियों में प्राप्त किया था। जिस समय मैंने इसे लंदन के एक प्रसिद्ध कला विक्रेता की सूची में देखा, वह सूची समुद्री डाक द्वारा भेजी गई थी और कुछ समय से मेरे पास पहुँचने वाली थी। फिर भी, मैंने हिम्मत नहीं हारी और उस चिह्न के लिए आवेदन किया, लेकिन मुझे बहुत कम उम्मीद थी कि वह मामूली कीमत वाला स्पर्श चिह्न अभी भी वहाँ होगा। कल्पना कीजिए मेरी हैरानी की जब मैं उसे प्राप्त करने में सफल रहा। स्कॉटलैंड के कई संग्राहकों ने इस अत्यंत वांछनीय पदक को क्यों अनदेखा कर दिया, ताकि यह मेरे पत्र की प्रतीक्षा कर सके, यह मुझे महज़ संयोग या तर्क से परे लगता है। ऐसा लग रहा था मानो यह पदक मेरे लिए ही बना था।

*24

रॉबर्ट लुई स्टीवेन्सन के साथ एक मुलाकात

हेलेन लिली मारविक एक पत्रकार और लेखिका हैं, जो अपने विज्ञान-लेखक पति चार्ल्स के साथ वाशिंगटन, डी.सी. के जॉर्जटाउन में एक खूबसूरत पुराने घर में रहती हैं। उन्हीं के आग्रह पर मैंने एडिनबर्ग के हेरियट रो में स्थित उस घर का दौरा करने का फैसला किया, जो कभी रॉबर्ट लुई स्टीवेन्सन का था।

हेलेन ने लिखा, "एक प्यारी आयरिश लड़की, श्रीमती जॉन मैकफी ने रॉबर्ट लुई स्टीवेन्सन का पुराना घर खरीदा है और उनका कहना है कि स्वयं आर.एल.एस. का दोस्ताना भूत वहां मौजूद रहा है, और वह उसे अपने पास रखने की उम्मीद करती हैं।"

एडिनबर्ग में अपने प्रवास के दौरान मैंने एक यात्रा का आयोजन किया, और 4 मई, 1973 को मैं स्टीवेन्सन हाउस में चाय के समय से ठीक पहले पहुँचा। हमें 5 बजे आने के लिए कहा गया था, लेकिन ग्रामीण इलाकों में घूमने-फिरने के कारण हमें एक घंटा देर हो गई थी। ग्रामीण इलाकों की वजह से नहीं, बल्कि उस भारी बारिश की वजह से जो इस भूतिया खोज के दौरान हुई थी, और हालाँकि इसने माहौल को एक अलग ही रंग दिया था, इसने हमारे कार्यक्रम को पूरी तरह से बिगाड़ दिया था। लेकिन कैथलीन मैकफी ने हमसे ऐसे हाथ मिलाया जैसे हम पुराने दोस्त हों और हमें एक मंजिल ऊपर ऊँची छत वाले ड्राइंग रूम में ले गईं। बड़ी-बड़ी फ्रेंच खिड़कियों से हमें एडिनबर्ग की सबसे खूबसूरत सड़कों में से एक का नज़ारा दिखाई दिया, और मैंने एक नज़र में ही समझ लिया कि श्रीमती मैकफी ने स्टीवेन्सन हाउस का इस तरह से जीर्णोद्धार किया था कि स्टीवेन्सन को वहाँ घर जैसा महसूस होता: विक्टोरियन और उससे पहले के फर्नीचर के टुकड़ों का सौम्य मिश्रण और कलाकृतियों का सहज प्रदर्शन, किसी संग्रहालय की बजाय एक घर के अंदाज़ में। घर की मालकिन होने के नाते, उनकी प्रबल ऊर्जा ने पूरे स्थान को एक ऐसी रोमांचक अनुभूति से भर दिया था जो आध्यात्मिक अनुभवों के लिए अत्यंत अनुकूल थी। हमारी मेज़बान की नीली आँखें, लाल बाल थे और भूतों सहित हर चीज़ के प्रति उनका सीधा और व्यावहारिक दृष्टिकोण था। शेरी का एक गिलास पीने के बाद, उन्होंने हमें घर का विस्तृत भ्रमण कराया। यह घर 1857 से 1880 तक रॉबर्ट लुई स्टीवेन्सन का निवास स्थान था।

“यह श्रीमती स्टीवेन्सन का इलाका था,” हमारी मेज़बान ने बताया। शानदार ढंग से सजा हुआ ड्राइंग रूम लगभग वैसा ही था जैसा स्टीवेन्सन के ज़माने में रहा होगा, बस उसमें बिजली की रोशनी और मैकफी परिवार की कुछ निजी चीज़ें रखी थीं। खास तौर पर, खिड़की के पास एक कुर्सी थी जिस पर स्टीवेन्सन काम से आराम करते समय बैठते थे। जैसे ही हम अंदर गए, मुझे अपनी पीठ में एक अजीब सी ठंडक महसूस हुई, और मैं जानती थी कि यह मौसम की वजह से नहीं थी। यह किसी तरह का स्पर्श था। मैंने अलाना से पूछा कि क्या उसे भी कुछ महसूस हुआ। उसने पुष्टि की कि उसे भी अदृश्य हाथों ने छुआ था, एक बहुत ही कोमल स्पर्श। “मुझे किसी की मौजूदगी का एहसास हो रहा है। यहाँ हमारे अलावा कोई और ज़रूर है।” मैं श्रीमती मैकफी की ओर मुड़ी। “जब से आप इस घर में आई हैं, आपको ठीक-ठीक क्या महसूस हुआ है?”

“जब मैं घर में अकेला होता हूँ तो मुझे एक अजीब सी अनुभूति होती है, लेकिन शायद यह सही नहीं है, क्योंकि मुझे यहाँ कभी अकेलापन महसूस नहीं होता। यहाँ हमेशा कोई न कोई मौजूद रहता है, एक अपनापन सा लगता है। असल में, यहाँ दो लोग हैं। पहले तो मुझे लगा, शायद रॉबर्ट लुई स्टीवेन्सन के बारे में जो मैंने पढ़ा था, उसकी वजह से मैं कल्पना कर रहा था। लेकिन फिर आयरिश लेखक जेम्स पोप हेनेसी हमारे साथ रहने आए। श्री हेनेसी समोआ के वेलिना गए थे, जहाँ रॉबर्ट लुई स्टीवेन्सन रहते थे और उन्होंने अपने जीवन के अंतिम दिन बिताए थे। वहाँ, दक्षिण सागर में, उन्होंने स्टीवेन्सन की एक छवि देखी थी, और इस घर में भी उन्होंने उसे देखा। यह उनके अपने कमरे में हुआ था क्योंकि वे वहीं सोते थे, जिसे हम मुख्य शयनकक्ष कहते थे।”

"क्या आपने कुछ देखा है?"

नहीं, लेकिन मुझे हर समय ऐसा महसूस होता है। ऐसा लगता है जैसे मैं इधर-उधर देखूँ और मेरे पीछे कोई हो। कभी-कभी, जब मैं सुबह जल्दी उठती हूँ, खासकर सर्दियों में, तो मुझे ऐसा लगता है जैसे कोई इधर-उधर घूम रहा हो। इसके बारे में बात करना बहुत मुश्किल है। देखिए, मेरे पति तो बिलकुल ही संशयवादी हैं। उन्हें लगता है कि यह सेंट्रल हीटिंग की वजह से है। यहाँ तक कि मेरा छोटा बेटा भी कहता है, 'अरे, माँ की बात मत सुनो। उन्हें तो हर जगह भूत दिखते हैं।' देखिए, परिवार वाले मेरा बिल्कुल भी साथ नहीं देते।

कैथलीन मैकफी ने स्वीकार किया कि जिन अन्य घरों में वह रह चुकी हैं, वहां भी उन्हें इसी तरह की "भावनाएं" महसूस हुई हैं। हमारी बातचीत से अठारह महीने पहले जब वह स्टीवेन्सन हाउस पहुंचीं, तो उन्हें जल्द ही एहसास हुआ कि वही भावनाएँ फिर से उनके साथ घट रही हैं।

“जब सामान लाने वाले लोग सामान अंदर ला रहे थे, तब मैंने अपने आस-पास की आवाज़ों और महसूस की गई बातों पर ध्यान नहीं दिया। मुझे लगा कि ये बस सामान लाने वालों का शोर है। लेकिन फिर एक एहसास हुआ: आप जानते हैं, जब आप किसी खास दिशा में देखते हैं तो आपकी दृष्टि और भावनाएँ एक अलग ही स्तर पर होती हैं; आपको किसी चीज़ को सीधे देखने की ज़रूरत नहीं होती। आप जानते हैं कि वह वहाँ है। लेकिन यह एक सुकून देने वाला, अद्भुत एहसास होता है।”

कवि की कुछ निजी वस्तुएँ अभी भी घर में मौजूद थीं, जो मैकफी परिवार द्वारा घर खरीदते समय सावधानीपूर्वक चुनी गई पुरानी चीज़ों के साथ मिली हुई थीं। श्रीमती मैकफी ने टिप्पणी की, “एक निमंत्रण पत्र है जो उन्होंने अपने पिता के अंतिम संस्कार में भेजा था, जिस पर उनके स्वयं के हस्ताक्षर हैं। लेकिन जब उनके पिता का निधन हुआ, तो उनकी माँ लगभग सारा फर्नीचर यहाँ से ले गईं और अपने बेटे के साथ समोआ में रहने चली गईं। जब स्टीवेन्सन का निधन हुआ, तो माँ एडिनबर्ग वापस आकर अपनी बहन के साथ रहने लगीं, लेकिन रॉबर्ट लुई स्टीवेन्सन की विधवा सारा फर्नीचर सेंट हेलेना, कैलिफ़ोर्निया वापस ले गईं, जहाँ उन्होंने अपने अंतिम दिन बिताए। वैसे, यह उनके माता-पिता का कमरा है। उनका अपना कमरा एक मंजिल ऊपर है। मूल रूप से सबसे ऊपरी मंजिल केवल आधी मंजिल थी और नौकरों के लिए थी, लेकिन स्टीवेन्सन के माता-पिता चाहते थे कि उन्हें ऊपर उचित आवास मिले, ताकि वे अध्ययन और काम कर सकें। यह घर 1790 और 1810 के बीच बनाया गया था। स्टीवेन्सन परिवार ने इसे मूल निर्माताओं से खरीदा था, क्योंकि वे सूखी ज़मीन पर घर चाहते थे।”

श्रीमती मैकफी ने बताया कि वह घर के एक हिस्से को निजी संग्रहालय में बदलने की प्रक्रिया में हैं, ताकि लोग उस स्थान को श्रद्धांजलि दे सकें जहां रॉबर्ट लुई स्टीवेन्सन रहते थे और उन्होंने अपना अधिकांश काम किया था।

हम दूसरी मंजिल पर गए, जहाँ स्टीवेन्सन का निजी अध्ययन कक्ष था। कमरा किताबों की अलमारियों से भरा हुआ था, और उसके बगल में एक शयनकक्ष था, जिसे श्री मैकफी ड्रेसिंग रूम के रूप में इस्तेमाल करते हैं। आजकल अध्ययन कक्ष में एक बिस्तर है, लेकिन स्टीवेन्सन के समय में वहाँ कोई बिस्तर नहीं था; बस एक बड़ी मेज, कोयले की बाल्टी और ढेर सारी किताबें थीं। मैंने अलाना की ओर मुड़कर पूछा कि क्या उसे उस कमरे से कोई छाप मिली। उसने सिर हिलाकर सहमति जताई।

"अग्निगृह के पास मुझे उनकी उपस्थिति का आभास होता है। जब मैं दरवाजे से अंदर आया तो ऐसा लगा जैसे कोई वहां दरवाजे के बगल में खड़ा हो।"

जब वह बोल रही थी, मुझे ऐसा लगा मानो मुझे भी कोई धुंधला सा दृश्य दिखाया जा रहा हो, कुछ ऐसा जो अचानक मेरे मन में आया हो और निश्चित रूप से मेरे अवचेतन मन से नहीं। इसे दबाने या रॉबर्ट लुई स्टीवेन्सन पर हुई हमारी चर्चा से जोड़ने के बजाय, जिनके बारे में मुझे उस समय बहुत कम जानकारी थी, मैंने अपने मन की सारी भावनाएं व्यक्त करने का फैसला किया और यह देखने की कोशिश की कि क्या इसे किसी अर्थ में ढाला जा सकता है।

क्या इस घर से जुड़ा कोई व्यक्ति है जिसने गहरे रंग का कोट और हल्के या सफेद रंग की कमीज पहनी है, साथ में छोटी सी टाई भी? उसकी आंखें गहरी हैं और बाल कंघी से संवारे हुए हैं। उसकी भौहें घनी हैं और वह पीला और परेशान सा लग रहा है, और इस समय वह एक पत्र फाड़ रहा है।

मिस मैकफी हैरान रह गईं। “जी हां, बिल्कुल वही हैं। उनकी डेस्क यहीं हुआ करती थी जहां आप खड़ी हैं, और यहीं उनकी मां उनके लिए बाहर एक छोटी सी चौकी पर खाना रखा करती थीं। वह घंटों बाद लौटतीं और खाना वहीं रखा होता था।”

मैंने कहा, "मुझे चौंतीस साल की उम्र के आसपास कुछ महसूस होता है।"

“खैर, उनकी शादी तो हो चुकी थी। दरअसल, 9 मई 1880 को।” यह 4 मई का दिन था, लगभग शादी की सालगिरह जैसा।

हम बगल वाले कमरे में गए, जो कभी स्टीवेन्सन का शयनकक्ष हुआ करता था। मैंने अलाना से पूछा कि क्या उसे कुछ खास महसूस हो रहा है। उसने कहा, "यहाँ उपस्थिति दूसरे कमरे की

तुलना में कहीं अधिक प्रबल है।" उसके बोलते समय भी, मुझे फिर से किसी ऐसी बात पर बोलने की अजीब सी इच्छा हुई जिसके बारे में मुझे कुछ भी पता नहीं था।

मुझे ऐसा प्रतीत होता है जैसे कोई व्यक्ति तेज बुखार से बुरी तरह बीमार है, बहुत अकेला है और मृत्यु के करीब है। वह किसी को पत्र लिख रहा है। उसे मृत्यु की आशंका है, लेकिन फिर भी वह बच जाता है।

दोनों महिलाओं ने एक साथ सिर हिलाया। "किशोरावस्था के दौरान, वह हमेशा बहुत बीमार रहता था और उसके बचने की कोई उम्मीद नहीं थी," अलाना ने टिप्पणी की। "उसे तपेदिक था, जिसे आज एम्फीसेमा कहा जाता है, जो फेफड़ों की सूजन होती है।"

अलाना नाइट रॉबर्ट लुई स्टीवेन्सन से भली-भांति परिचित थीं, क्योंकि वह उन पर आधारित एक नाटक पर काम कर रही थीं। महान लेखक के बारे में मेरा ज्ञान केवल उनके नाम और उनकी रचनाओं तक ही सीमित था, लेकिन जब मैं घर में दाखिल हुई तो मुझे स्टीवेन्सन के निजी जीवन के बारे में कुछ भी पता नहीं था। इसलिए मैंने अपनी निजी धारणाओं को ही प्राथमिकता दी, हालांकि अलाना घर के मनोवैज्ञानिक पहलुओं को गहराई से समझने में कहीं अधिक सक्षम थीं।

“क्या किसी प्रकार का धार्मिक संघर्ष था, किसी एक पक्ष का निर्णय लेने की इच्छा थी? क्या उस भावना का कोई स्पष्टीकरण है जो मुझे उसके क्रूस को पकड़ने और फिर उसे नीचे रखने, हताश होने, किसी से सलाह लेने जाने, वापस आने और यह न जानने की स्थिति में हुई कि किस ओर मुड़ना है?” मैंने पूछा।

श्रीमती मैकफी ने पुष्टि करते हुए कहा, "यह बिल्कुल सही है, क्योंकि उन्हें उस धर्म से घोर घृणा थी जिसमें उनका पालन-पोषण हुआ था, और इसी वजह से उनके पिता के साथ उनके संबंध खराब थे। वे प्रेस्बिटेरियन थे, लेकिन वे नास्तिकता और प्रारंभिक जर्मन दार्शनिकों के सिद्धांतों में रुचि रखते थे। इन सब बातों ने उनके पिता के बीच भयंकर आक्रोश पैदा कर दिया था।"

"एक और बात अभी मेरे दिमाग में आई: क्या उसे कभी डॉक्टर बनने में दिलचस्पी थी, या क्या परिवार में कोई डॉक्टर था?"

श्रीमती मैकफी ने जवाब दिया, “उन्होंने बड़ी अनिच्छा से वकील की पढ़ाई की थी; उनके पिता चाहते थे कि वे इंजीनियर बनें। लेकिन खराब स्वास्थ्य के कारण उन्होंने कभी वकालत नहीं की। उनके चाचा, डॉ. लुई बालफोर ने स्वास्थ्य के लिए उन्हें एडिनबर्ग छोड़ने पर जोर दिया। उनकी पत्नी, फैनी ओसबोर्न, चिकित्सा में बहुत रुचि रखती थीं; उन्होंने उन्हें जीवित रखने में मदद की।”

अलाना को इस समय जो कुछ "प्राप्त" हुआ, उससे वह थोड़ी हैरान लग रही थी। "क्या कोई बहुत खास नस्ल का कुत्ता था, बहुत ही सुंदर कुत्ता? जब उसकी मृत्यु हुई, तो क्या उसके कारण बहुत बड़ा हंगामा हुआ था? मुझे लगता है कि उस कुत्ते से उनका बहुत गहरा लगाव था।" श्रीमती मैकफी यह सुनकर मुस्कुरा उठीं। "एक वेस्ट हाईलैंड टेरियर था जिसे उन्होंने अपने साथ रखा था। कुत्ते का नाम रोग था और उन्हें उससे बहुत लगाव था।"

हमने मेज़बान को धन्यवाद दिया और घर से निकलने की तैयारी की। लगभग रात के खाने का समय हो गया था और बाहर बारिश रुक गई थी। जैसे ही हमने हेरियट रो में बाहर निकलने के लिए भारी दरवाज़ा खोला, मैंने पीछे मुड़कर कैथलीन मैकफी को देखा, जो पहली मंज़िल की सीढ़ियों पर खड़ी हमें देखकर मुस्कुरा रही थीं। उनके पति अभी-अभी लौटे थे और शिष्टाचारवश परिचय देने के बाद अपने कमरे में जाने के लिए ऊपर चले गए—जो पहले रॉबर्ट लुई स्टीवेन्सन का अध्ययन कक्ष और शयनकक्ष था। उनके और पहली मंज़िल की सीढ़ियों पर खड़ी श्रीमती मैकफी के अलावा, इस समय घर खाली था। या था? मैंने गलियारे में पीछे मुड़कर देखा और मुझे स्पष्ट रूप से एक गहरे रंग की आँखों वाला आदमी वहाँ खड़ा दिखाई दिया, जो जिज्ञासा से हमें देख रहा था, यह तय नहीं कर पा रहा था कि उसे आगे आना चाहिए या अंधेरे में ही रहना चाहिए। लेकिन शायद यह केवल मेरी कल्पना थी।

*25

ब्लडी मैरी का भूत

सॉस्टन हॉल इंग्लैंड के मशहूर विश्वविद्यालय शहर कैम्ब्रिज से कुछ मील दक्षिण में स्थित है और लंदन से यहाँ पहुँचने में लगभग ढाई घंटे लगते हैं। जब मुझे पता चला कि विश्वसनीय गवाहों ने इस पुराने हवेलीनुमा घर में भूत देखा है, तो मैंने मालिक, कैप्टन हडलस्टन से मिलने

के लिए संपर्क किया। कैप्टन के भतीजे, मेजर ए. सी. आयर ने जवाब में लिखा कि वे हमें पाकर बहुत प्रसन्न होंगे। कई ब्रिटिश हवेलीनुमा घरों की तरह, सॉस्टन हॉल भी कुछ निश्चित समय पर जनता के लिए खुला रहता है और ज़ाहिर है, मैं उस दिन जाने से बचना चाहता था जब पर्यटकों की भीड़ हमारी खोज में बाधा डालती। हालाँकि मैं आमतौर पर भूत-प्रेत से जुड़ी जानकारियों से बचता हूँ और जब भी किसी भूतिया घर में जाता हूँ तो उससे सीधे बात करना पसंद करता हूँ, फिर भी मैं वहाँ जाने से पहले उसके बारे में थोड़ी जानकारी लेना चाहता हूँ। इससे मुझे यह बेहतर ढंग से समझ आ जाता है कि वहाँ का माहौल, यादगार चीज़ें और ऐसी ही अन्य चीज़ें कैसी होंगी। एक प्रशिक्षित इतिहासकार होने के नाते, मुझे अंग्रेज़ी इतिहास को समझने में कोई परेशानी नहीं होती। मैंने मेजर द्वारा आगंतुकों के लिए तैयार की गई छोटी पुस्तिकाओं में से एक को उठाया, ताकि मैं सॉस्टन हॉल के इतिहास से परिचित हो सकूं, जबकि शांत स्वभाव वाले श्री ब्राउन द्वारा चलाई जा रही कार सुरम्य ग्रामीण इलाकों से चुपचाप गुजर रही थी।

पुस्तिका में लिखा था:

सॉस्टन हॉल 400 वर्षों से अधिक समय से हडलस्टन परिवार का निवास स्थान रहा है और कैम्ब्रिजशायर के उन कुछ पुराने जागीर घरों में से एक होने के लिए उल्लेखनीय है जो पत्थर से बने हैं। 1553 में एडवर्ड VI बीमार थे और महत्वाकांक्षी ड्यूक ऑफ नॉर्थम्बरलैंड के पूर्ण प्रभुत्व में थे। राजा की मृत्यु हो चुकी थी जब उनकी सौतेली बहन, राजकुमारी मैरी, जो बाद में रानी मैरी ट्यूडर बनीं, जो नॉरफ़ॉक में रह रही थीं, को उनके नाम से एक संदेश मिला, जिसमें उनसे आने का अनुरोध किया गया था। मैरी तुरंत लंदन के लिए रवाना हुईं और होडेसडन में उन्हें पता चला कि यह संदेश एक जाल था। वापस लौटते समय, उन्होंने सॉस्टन के तत्कालीन जागीरदार जॉन हडलस्टन के आतिथ्य को स्वीकार किया और हॉल में रात बिताई। हालांकि, रात के दौरान, कैम्ब्रिज से ड्यूक के समर्थकों को जब पता चला कि वह वहां हैं, तो उन्होंने उन्हें पकड़ने का प्रयास किया। जॉन हडलस्टन ने उन्हें एक दूधवाली के वेश में सुरक्षित स्थान पर पहुँचा दिया।

जब हम सॉस्टन हॉल पहुँचे, तब तक चार बज चुके थे, चाय के लिए थोड़ा देर हो चुकी थी, लेकिन हमारे मेहमाननवाज मेज़बान, हडलस्टन परिवार ने हमारे आने तक इंतज़ार किया। अब तक रोशनी उतनी तेज़ नहीं थी जितनी मुझे अपने कैमरे के लिए चाहिए थी। लेकिन मैं

कभी कृत्रिम रोशनी का इस्तेमाल नहीं करता, केवल उपलब्ध रोशनी का ही उपयोग करता हूँ।

हम सीढ़ियों से ऊपर चढ़ने लगे और श्रीमती हडलस्टन ने हमें घर के खजानों के बारे में बताया। हमने उनकी प्रशंसा की, लेकिन भव्य ग्रेट हॉल से जल्दी से गुजर गए, जिसमें महारानी मैरी ट्यूडर का शानदार चित्र लगा था, ड्राइंग रूम में एक पूर्ण रूप से बजने योग्य हार्पसीकोर्ड था, मानो महारानी मैरी अभी उसे बजाने वाली हों, और लिटिल गैलरी और पैनल वाले बेडरूम से आगे बढ़कर टेपेस्ट्री बेडरूम में पहुँच गए, जिसे यह नाम इसलिए दिया गया है क्योंकि इसकी दीवारों पर राजा सोलोमन के जीवन को दर्शाने वाली फ्लेमिश टेपेस्ट्री लगी हुई हैं। इस कमरे में एक चारपाई वाला पलंग है, जिस पर कहा जाता है कि महारानी मैरी 1553 के उन अंधकारमय दिनों में सोई थीं, जब वह अपनी जान बचाने के लिए भाग रही थीं। पलंग के दाईं ओर एक छोटी संगमरमर की चिमनी है और दीवार के नीचे एक ओक का दरवाजा है जो एक गलियारे में खुलता है जो अंततः पुजारी के छिपने की जगह तक जाता है। मुझे लगता है कि ये संबंध कुछ महत्व रखते हैं यदि भूत महारानी मैरी का है, जो कैथोलिक थीं।

जब मैंने अपनी परीक्षा शुरू की तो हम चार खंभों वाले तंबू के सामने खड़े थे।

"श्रीमती हडलस्टन, मुझे बताइए, यहाँ होने वाली भूतिया घटनाओं के बारे में तथ्य क्या हैं?"

श्रीमती हडलस्टन, जो मध्यम आयु वर्ग की एक मृदुभाषी और सुव्यवस्थित महिला थीं, ने दोस्ताना मुस्कान बिखेरी। “ऐसा लगता है कि जिस कमरे में हम खड़े हैं, उसमें हमेशा कुछ न कुछ घटित होता रहता है। प्रचलित कहानी यह है कि आधी रात को अचानक दरवाजे पर तीन धीमी दस्तकें सुनाई देती हैं, और दरवाजा धीरे से खुलता है और एक भूरे रंग के वस्त्र पहने महिला धीरे-धीरे कमरे में आती है और उस पर्दे में गायब हो जाती है। बहुत से लोग इस कमरे में सो चुके हैं और उनके साथ घटी विभिन्न घटनाओं की कई अलग-अलग कहानियां प्रचलित हैं।”

“किस तरह की चीजें?”

"एक लड़की रात में बहुत डरकर जाग गई, क्योंकि उसने अपने बगल में बिस्तर पर किसी के बहुत जोर से सांस लेने की आवाज सुनी।"

“उसने क्या किया, चीखी?”

नहीं, वह बस बिस्तर के नीचे रेंगकर चली गई और उस सब के बारे में भूलने की कोशिश करने लगी।

"मैं इन परिस्थितियों में उसे दोष नहीं दे सकती। क्या इस बिस्तर पर किसी और को भी परेशानी हुई थी?"

“खैर, इस कमरे में एक युवक सो रहा था, और जब वह सोने गया तो उसकी तबीयत कुछ ठीक नहीं थी। अगली सुबह जब वह नाश्ते के लिए नीचे आया, तो उसने कहा, ‘आपको पता है कि मैं कल रात बिल्कुल ठीक था, आपको मुझसे मिलने आने की ज़रूरत नहीं थी।’ तो मैंने कहा, ‘लेकिन मैं नहीं आया।’ उसने ज़िद की, ‘अरे नहीं, आप आए थे; आपने तीन बार दरवाज़ा खटखटाया, और कुंडी भी खड़खड़ाई, और मैं बहुत डर गया, और बार-बार कहता रहा, “अंदर आओ, अंदर आओ,” लेकिन कुछ नहीं हुआ, और अचानक मुझे बहुत ज़्यादा डर लगने लगा, इसलिए मैं बिस्तर के नीचे रेंगकर चला गया और सब कुछ भूलने की कोशिश की।”

मैंने कहा, "लगता है ये आदत बन जाती है, वो बिस्तर के तलवे पर सोने की आदत। वैसे भी, ये बहुत बड़ा बिस्तर है।"

“खैर, उसने जोर देकर कहा, ‘यह तुम ही रही होगी; तुम मुझसे मिलने आई होगी,’ लेकिन मैंने उससे कहा, ‘नहीं, मुझे माफ करना। मैं तुम्हारे पास कभी नहीं आई; तुम इतने बीमार नहीं थे।’ बात यहीं खत्म हो गई।”

“यह घटना कितने समय पहले घटी थी?”

"चार वर्ष पहले।"

क्या आपने कभी खुद कुछ असामान्य सुना या देखा है?

“जब मेरी शादी हुई और मैं दुल्हन बनकर यहाँ आई, तो मुझे एक बहुत ही मधुर संगीत सुनाई दिया, जो स्पिनेट या वर्जिनल वाद्य यंत्र जैसा था। मैंने अपने पति से पूछा कि यह कौन है, तो उन्होंने कहा कि उन्हें कुछ सुनाई नहीं दिया और यह सब बकवास है। हालाँकि, अगली रात और फिर थोड़ी देर बाद मुझे वह संगीत फिर से सुनाई दिया। वह मुझे बार-बार यही कहते रहे कि यह सब बकवास है, इसलिए मुझे बहुत खुशी हुई जब लगभग एक महीने बाद एक मेहमान नाश्ते के लिए आया और बोला, ‘मुझे बताइए, यह कौन सा संगीत है जो मुझे बार-बार सुनाई दे रहा है?’”

आपको क्या लगता है कि यह वाद्य यंत्र कौन बजा रहा है?

"आम राय यही है कि यह स्वयं महारानी मैरी ट्यूडर हैं।"

"तुम्हारा मतलब उसकी आत्मा से है?"

“जी हाँ। बेशक, आप जानते हैं कि वह इसी बिस्तर पर सोती थी और इस घर से उसे बहुत लगाव था। लेकिन मुझे लगता है कि यह वही है, क्योंकि वह वर्जिनल नृत्य में बहुत अच्छी थी, वास्तव में वह इतनी अच्छी थी कि उसके पिता, हेनरी अष्टम, ने उसे बचपन में ही नर्सरी से बुलवाकर फ्लेमिश राजदूतों के लिए नृत्य करवाया था जब वे यहाँ आए थे।”

और आपको यकीन है कि आपने संगीत सुना?

“बिल्कुल। यह बिल्कुल स्पष्ट था।”

"क्या इस कमरे में किसी और को भी मानसिक अनुभव हुए हैं?"

“हाँ, बिल्कुल; सच में काफी सारे,” श्रीमती हडलस्टन ने अपने विशिष्ट अंग्रेज़ अंदाज़ में कहा। उनके लिए, भूत होना परिवार में किसी मशहूर अभिनेता या राजनेता से कमतर नहीं था। इंग्लैंड में, भूतों पर विश्वास करने वाले को तिरछी नज़रों से देखने की ज़रूरत नहीं है। यह काफी सम्मानजनक बात है।

“एक दिन मैं घर के चारों ओर एक बड़े समूह को घुमा रही थी, और जब हम इस कमरे में थे, अचानक एक बूढ़ी औरत आगे बढ़ी और बोली, ‘आप जानते हैं, मैं इस घर को आपसे बहुत पहले से जानती हूँ! दरअसल, मैं यहाँ एक युवा लड़की के रूप में काम करती थी, एक घरेलू नौकरानी के रूप में। एक बार मैं आग की देखभाल करते हुए घुटनों के बल बैठी थी, और अचानक मुझे बहुत ठंड लगी, मैंने ऊपर देखा, और मैंने देखा कि दरवाजा धीरे-धीरे खुल रहा है और एक धूसर आकृति कमरे में तेजी से गुजरी और वहाँ लगे पर्दे में गायब हो गई। मैं इतनी डर गई कि मैंने खुद को कमरे से बाहर फेंक दिया और सीढ़ियों के ऊपर से नीचे तक सिर के बल गिर गई और मुझे इतनी बुरी तरह चोट लगी कि मैंने आज तक इस घर में वापस आने की हिम्मत नहीं की है।’”

मैंने कहा, "यह तो काफी दिलचस्प कहानी है। क्या आपने इसकी जाँच की?"

“हाँ। देखिए, जब आप ऊपर होते हैं तो सीढ़ियों का निचला हिस्सा दिखाई नहीं देता, इसलिए उसने जिस तरह से चीजों को याद किया होगा वह बिल्कुल सही रहा होगा, क्योंकि जब हमने चक्कर पूरा कर लिया और सीढ़ियों के निचले हिस्से में पहुँच गए, तो वह अचानक चिल्लाई, ‘ओह, यही वह जगह है, मुझे याद है, यहीं मैं गिरी थी!’”

“और क्या ऐसी कोई जगह थी?”

“हां, था।”

"क्या हाल ही में यहां कोई घटना घटी है?"

कुछ समय पहले, प्रसिद्ध मानसिक चिकित्सक टॉम कॉर्बेट इसी पलंग पर सोए थे। उन्होंने बताया कि रात भर हर घंटे कोई प्रेत उनके ऊपर झुका रहता था। उनकी अलार्म घड़ी, जिसे उन्होंने 7 बजे के लिए सेट किया था, एक, दो, तीन, चार, पांच और छह बजे बजी। हर बार जब अलार्म बजता था, तो वह प्रेत उनके ऊपर झुका रहता था। श्री कॉर्बेट को ऐसा लगा जैसे वह भूत एक आंख वाले रात्रि चौकीदार का था, और उसका नाम उन्हें कटलैस या कट्रेस जैसा लगा।

ब्लडी मैरी का प्रेतवाधित बिस्तर

"क्या यह बात आपको समझ में आई?"

“खैर, मुझे लगा कि इसका सीधा सा मतलब है कि वह अपने साथ एक कटार लिए हुए है, लेकिन टॉम कॉर्बेट ने जोर देकर कहा कि यह एक नाम है। श्री कॉर्बेट के जाने के बाद मैंने पूछताछ की, और मुझे आश्चर्य हुआ कि गाँव में कट्रेस नाम का एक आदमी रहता था। मैंने उसके बारे में कभी नहीं सुना था। लेकिन जिन लोगों ने मेरे लिए शोध किया, उन्होंने कहा, 'इसका रात के चौकीदार से कोई संबंध नहीं हो सकता, क्योंकि वह अभी-अभी लंदन से आया है।'

लगभग एक महीने बाद, यहाँ का बटलर स्थानीय पब में एक अजनबी के बगल में खड़ा था और उसने पूछा, ‘आपका नाम क्या है?’ अजनबी ने जवाब दिया, ‘ओह, मेरा नाम कट्रेस है, और मैं अभी कुछ समय पहले ही यहाँ आया हूँ।’ बटलर को आश्चर्य हुआ कि वह इस सुनसान जगह पर क्यों आया है। ‘ओह,’ उस आदमी ने जवाब दिया, ‘मेरा परिवार पीढ़ियों से सॉस्टन में रहता आया है। मैं अपने पुराने पारिवारिक घर में वापस आना चाहता था।’

“टॉम कॉर्बेट ने इस मामले में बिलकुल सही बात कही,” मैंने स्वीकार किया। “क्या अलौकिक घटनाओं के कोई और दिलचस्प गवाह हैं?”

“मैं एक बुजुर्ग महिला को घुमाने ले जा रहा था, और दिन का उजाला था। मैं उन्हें टेपेस्ट्री दिखा रहा था, और उसमें इतना मग्न था कि मैंने उनके चेहरे पर आए बदलाव पर ध्यान ही नहीं दिया। जब मैंने उनकी तरफ देखा, तो वे बेहद दयनीय लग रही थीं, मानो बेहोश होने वाली हों। मैंने उनसे पूछा कि क्या मुझे डॉक्टर को बुलाना चाहिए, लेकिन उन्होंने मुझे आश्वासन दिया कि वे ठीक हो जाएंगी।”

“असल में यही कमरा है,” उसने समझाया। “इसी कमरे में भूत रहते हैं।”

हम उस प्रेतवाधित शयनकक्ष से निकलकर लंबी गैलरी से होते हुए पुजारी के छिपने के स्थान पर गए, जो दीवार की मोटाई में चतुराई से छिपा हुआ था, मुश्किल से इतना बड़ा था कि उसमें एक आदमी बैठ सके, और बाहरी दुनिया से केवल एक छोटे से गुप्त दरवाजे के माध्यम से ही पहुँचा जा सकता था जिसे छापे के दौरान आसानी से ढका जा सकता था।

मुझे आश्चर्य हुआ कि क्या उस छिपने की जगह के संबंध में किसी भूतिया घटना को देखा गया था, क्योंकि उसके आसपास के वातावरण में इतनी त्रासदी और भावनात्मक उथल-पुथल व्याप्त थी।

"सीधे उस छेद के पास नहीं, बल्कि पास में एक कमरा है जहाँ पिछले कुछ वर्षों में कुछ भूतिया अनुभव हुए हैं। वह कमरा सीढ़ियों के ठीक ऊपर है। हमारे एक मित्र, जो एक जाने-माने जेसुइट पादरी हैं, उस कमरे में सो रहे थे, और रात भर उन्हें इतनी बेचैनी हुई, दरवाजे पर दस्तक हुई और बाहर से इतनी आवाजें आईं कि वे कई बार उठकर देखने लगे कि क्या हो रहा है।"

"क्या उसे कुछ मिला या कोई मिला?"

“नहीं, बिलकुल नहीं। वे ऐसा कभी नहीं करते।”

"क्या उस सीढ़ी के आसपास किसी और ने भी कुछ असामान्य अनुभव किया?"

दक्षिण अफ्रीका से एक महिला पहली बार यहाँ आई थीं। वे अचानक आ गईं, इसलिए हमने उन्हें भूतिया कमरे में रखा, लेकिन अगली सुबह उन्होंने बताया कि उनकी रात अच्छी गुज़री और उन्हें ज़रा भी परेशानी नहीं हुई। शायद भूत चला गया था? ‘खैर,’ उन्होंने शेखी बघारते हुए कहा, ‘मुझे हमेशा पता चल जाता है जब आसपास कोई भूत होता है, क्योंकि मुझे बहुत ठंड लगती है और मेरे हाथों पर रोंगटे खड़े हो जाते हैं।’ तो हम भूत की बात भूल गए और उन्हें घर दिखाने लगे। लेकिन जब वे उसी बड़ी सीढ़ी पर पहुँचीं, जो उस कमरे की ओर जाती है जिसके बारे में मैंने अभी बात की है, तो वे अचानक थोड़ा चीख पड़ीं और बोलीं, ‘ओह, इसमें कोई शक नहीं, भूत यहीं है!’ मैंने जल्दी से उनके हाथों को देखा, और सचमुच उनके हाथों पर रोंगटे खड़े थे।

"टॉम कॉर्बेट भी इन्हीं सीढ़ियों से ऊपर गए और उन्हें स्पष्ट रूप से महसूस हुआ कि कोई उनके पीछे आ रहा है, इतना अधिक कि वे उससे बात करने के लिए पीछे मुड़े, लेकिन वहां कोई नहीं था।"

बस, यही बात थी।

भूतिया शयनकक्ष और भूतिया सीढ़ियों के ऊपर मंडराती हुई धूसर महिला।

धार्मिक उत्पीड़न के वर्षों के दौरान, सॉस्टन हॉल कैथोलिक धर्म के अनुयायियों, जिनमें कई पादरी और भिक्षु शामिल थे, के लिए प्रमुख शरणस्थल था। उन दिनों सुधारवादी धर्म के नाम पर अनेक अत्याचार किए गए, और सॉस्टन हॉल का वातावरण उन शहीदों की त्रासदी और पीड़ा से ओतप्रोत है।

फिर भी, यह समझना आवश्यक है कि मैरी ट्यूडर, जिसे बाद में ब्लडी मैरी के नाम से जाना गया, ने उस पुराने हवेलीनुमा घर में शरण पाई थी जब हडलस्टन परिवार ने उसे छिपाकर उसकी जान बचाई थी। हो सकता है कि उसकी आत्मा वहाँ वापस खिंची चली आए, भले ही उसकी मृत्यु वहाँ नहीं हुई हो। मुझे नहीं लगता कि ग्रे लेडी केवल व्यक्तित्वहीन एक अलौकिक छाप है; उसका व्यवहार एक वास्तविक भूत जैसा है।

*26

स्पेक्ट्रल मैरी, स्कॉटलैंड की रानी

एडिनबर्ग में होलीरूड पैलेस के पीछे, जो स्कॉटलैंड की रानी मैरी और अन्य स्कॉटिश सम्राटों का निवास स्थान था, एक छोटा सा साधारण सा घर है जिसका अनोखा नाम क्रॉफ्ट-एन-रीघ है। यह घर कभी मैरी के सौतेले भाई और उनकी अनुपस्थिति में स्कॉटलैंड के रीजेंट रहे जेम्स, अर्ल ऑफ मोरे की संपत्ति था। आज, यह घर तीन अपार्टमेंट में विभाजित है, जिनमें से एक श्रीमती क्लाइन का है। लेकिन कई साल पहले यह होलीरूड पैलेस के वार्डन का आधिकारिक निवास था। वार्डन मुख्य मार्गदर्शक होता है जो सभी पर्यटक यातायात का प्रभारी होता है। पूर्व वार्डन डेविड ग्राहम अब पास के पोर्टोबेलो में अपने घर में सेवानिवृत्त हो चुके हैं, लेकिन चौदह साल पहले इस छोटे से घर में उनका एक बेहद अनोखा अनुभव रहा था।

उन्होंने कहा, "मुझे याद है, हम बारह लोग एक प्रेतात्माओं से संपर्क करने के लिए इकट्ठा हुए थे, और हमारे साथ हेलेन डंकन थीं, जो अब जीवित नहीं हैं, और वे हमारी माध्यम थीं। हम क्रॉफ्ट-एन-रीघ की सबसे ऊपरी मंजिल पर चुपचाप बैठे थे, और आगे की घटनाओं का इंतजार कर रहे थे।"

उन्हें ज़्यादा देर इंतज़ार नहीं करना पड़ा। उनकी अचंभित आँखों के सामने एक आकृति प्रकट हुई और तुरंत पहचान ली गई: स्वयं मैरी क्वीन ऑफ स्कॉट्स, जो भावनात्मक उथल-पुथल के क्षणों में कई बार इस घर में आ चुकी थीं। पल भर में ही वह वहाँ से चली गईं।

श्री ग्राहम याद करते हैं कि कई मौकों पर उन्होंने सोलहवीं सदी के कपड़े पहने एक छोटे कद के आदमी का भूत देखा था। वह आदमी बार-बार कहता था, "मैं फ्रांसीसी हूँ।" ग्राहम ने इस पर तब तक ध्यान नहीं दिया जब तक कि उन्हें गलती से पता नहीं चला कि यह घर एक ऐसे वास्तुकार द्वारा बनाया गया था जिसका नाम भी फ्रेंच था!

*27

रेनविले

आयरलैंड के ग्रामीण इलाकों में जब भी भूतों के बारे में बात होती, कोई न कोई रेनविले के भूत का ज़िक्र ज़रूर कर देता। आख़िरकार, मुझे भी इसके बारे में जानने की उत्सुकता होने लगी। डबलिन में मैंने रेनविले के बारे में जानकारी जुटाई और पता चला कि यह आयरलैंड के पश्चिम में स्थित एक जगह है। अब एक आलीशान होटल बन चुका, कोनेमारा में स्थित रेनविले का पुराना महल, मैंने सोचा, एक बार ज़रूर देखने लायक जगह है। संयोग से, डबलिन के शेल्बोर्न होटल के वर्तमान प्रबंधक ने कभी वहाँ काम किया था।

मैंने तुरंत इओइन डिलन से साक्षात्कार का अनुरोध किया, और उसी दोपहर मुझे होटल की दूसरी मंजिल के सुइट्स के पीछे स्थित प्रबंधक के कार्यालय में ले जाया गया।

श्री डिलन बेहद मिलनसार और व्यावहारिक व्यक्ति साबित हुए, जो अपनी शुरुआती अधेड़ उम्र में थे और होटल के अधिकारियों की आदत के अनुसार त्रुटिहीन रूप से कपड़े पहने हुए थे।

उन्होंने बताया, “मैं 1952 में रेनविले होटल में मैनेजर के तौर पर गया था। यह होटल मूल रूप से गोगार्टी परिवार की संपत्ति था, और सेंट जॉन गोगार्टी, ज़ाहिर है, एक प्रसिद्ध साहित्यिक हस्ती थे। उन्होंने कई किताबें लिखी थीं; वे जॉयस की यूलिसिस में मूल बक मुलिगन भी थे, और वे अपने समय के हर महान साहित्यिक व्यक्ति के निजी मित्र थे।”

"यह घर सर एडवर्ड लचिन्स द्वारा लगभग 1932 में बनाया गया था, लेकिन यह मूल गोगार्टी हाउस के स्थान पर बना था, जो अशांत समय के दौरान जल गया था, कुछ लोग महत्वपूर्ण तथ्यों का कोई हवाला दिए बिना ऐसा कहते हैं।"

श्री डिलन का मतलब यह था कि आई.आर.ए. को इस हवेली को जलाने का कोई अधिकार नहीं था। दस शताब्दियों के युद्धों में जितने बड़े-बड़े घर आयरिश विद्रोहियों द्वारा जलाए गए, वे आगजनी के लायक कारणों से कहीं अधिक थे। किसी अंग्रेज का मालिकाना हक, या किसी अनुपस्थित जमींदार का कथित मालिकाना हक, विद्रोहियों के लिए संपत्ति को नष्ट करने के लिए काफी था। इससे मुझे यूरोप में हुए तीस वर्षीय युद्ध की याद आ गई, जब मालिक द्वारा कैथोलिक या प्रोटेस्टेंट धर्म का पालन करना मात्र ही विरोधियों द्वारा घर को नष्ट करने के लिए काफी था।

मैंने पूछा, "आग लगने के बाद क्या हुआ?"

"यह जगह आयरलैंड की सबसे खूबसूरत जगहों में से एक है, जो झील और समुद्र के बीच स्थित है, और यहीं पर होटल का निर्माण हुआ था। यह 1922 की बात है। घर के पुनर्निर्माण के बाद, गोगार्टी, जो इसे एक साहित्यिक शैली के होटल के रूप में चलाते थे, ने यहाँ कई दिलचस्प लोगों को आमंत्रित किया, जिनमें कवि और नोबेल पुरस्कार विजेता डब्ल्यू. बी. येट्स भी शामिल थे, जिनकी जन्म शताब्दी हम इस वर्ष मना रहे हैं। येट्स को विभिन्न प्रकार की मानसिक घटनाओं में गहरी रुचि थी और उन्होंने इस विषय पर कई नाटक और कहानियाँ लिखी हैं। वे आत्माओं से संपर्क करने के लिए भी सत्र आयोजित करते थे। हमें बताया गया कि रेनविले में आयोजित कुछ सत्र बहुत सफल रहे थे।"

“अब मेरे पास जो जानकारी है, उसके संदर्भ में बताऊं तो, मेरे आने से पहले के वर्षों में यह बात सामने आई थी कि इस होटल के एक खास कमरे में काफी परेशानी हो रही थी। एक-दो बार लोग आकर कहते थे कि कमरे में कोई है, और एक बार तो एक महिला, जिसे मैं समझदार और विवेकशील मानती थी, ने शिकायत की कि जब वह शीशे में मेकअप कर रही थी, तो एक आदमी उसकी पीठ पीछे से देख रहा था। इससे काफी हंगामा मच गया था।”

मैंने कहा, "मैं कल्पना कर सकता हूँ—किसी महिला को अपना 'चेहरा' बनाते हुए देखना निश्चित रूप से निजता का उल्लंघन है—भले ही वह भूत ही क्यों न हो।"

श्री डिलन ने आगे कहा, “जब मैं वहां गया तो होटल लगभग डेढ़ साल से खाली पड़ा था। इसे एक नई कंपनी ने अपने कब्जे में ले लिया था और मैंने उस नई कंपनी के लिए इसे खोला था। वहां रहते हुए मुझे और मेरी पत्नी को कुछ बहुत ही अप्रिय अनुभव हुए।”

"आपने क्या किया?"

"अंततः, हमने स्थानीय पादरी को इस मामले में कुछ करने के लिए राजी कर लिया।"

“क्या इससे मदद मिली?”

“पूरे घर में एक अलग ही माहौल था। हमने वहीं प्रार्थना सभा की, जिसके दौरान भयंकर आंधी-तूफान आया। हमें किसी तरह लगा कि स्थिति नियंत्रण में है। उसी साल अगस्त के आसपास, मेरी पत्नी बीमार थी और मेरे पिता उस समय होटल में ठहरे हुए थे। मैं उसी कमरे में चला गया जहाँ से मुसीबत आई थी। यह इमारत के बीचोंबीच एक आंगन की ओर खुलता है। घर वास्तव में तीन तरफ से आंगन से घिरा हुआ है। यह एक मंजिल ऊपर है। यह तेरह साल पहले की बात है, अगस्त 1952 की।”

“मिस्टर डिलन, उस भूतिया कमरे में आपके साथ क्या हुआ था?” मैंने पूछा।

“मैं इसी कमरे में सोने गया था,” उसने जवाब दिया, “और मेरे पिताजी ने भी इसी कमरे में सोने का फैसला किया। उन्हें गहरी नींद आती है, इसलिए उन्हें कोई परेशानी नहीं होती। लेकिन मैं काफी थका हुआ था और उस दिन मैंने बहुत मेहनत की थी, और जब मैं बिस्तर पर लेटा था, अचानक मुझे अपने कानों के ठीक बगल में एक तेज़, चटकने जैसी आवाज़ सुनाई दी, मानो कोई मुझे जगाना चाहता हो! मैं जाने से मना कर दिया—मैं बहुत थका हुआ था—तो मैंने कहा, ‘कृपया चले जाओ, तुम जो भी हो?’—और मैंने अपने सिर पर कंबल ओढ़ लिया और सो गया।”

मैंने कहा, "आप इसके बारे में क्या सोचते हैं?"

"ऐसी प्रबल परंपरा है कि यह वही कमरा है जिसमें येट्स ने ये séances आयोजित किए थे, और इसी कारण से वहां एक विरासत के रूप में किसी प्रकार का एक ऐसा प्राणी रह गया है जिसे निश्चित रूप से सामान्य मानकों द्वारा समझाया नहीं जा सकता है।"

"क्या वहां किसी और को भी ऐसे अनुभव हुए हैं?"

“उंगलियां चटकाने की आवाज़ नहीं। मुझे लगता है कि यह मेरा ध्यान खींचने के लिए किया गया था। लेकिन शहर में एक संगीतकार की पत्नी, जिन्हें मैं अच्छी तरह जानती हूँ, मौली फ्लिन —उनके पति ईमोन ओ'गैल्कोभैर हैं, जो एक जाने-माने आयरिश संगीतकार हैं—ने एक आदमी को अपने कंधे के ऊपर से झाँकते हुए देखा। वह लंबा था और उसने गहरे रंग के कपड़े पहने हुए थे।”

"क्या इस कमरे में और भी लोग सोए हैं और उन्हें ऐसे अनुभव हुए हैं?"

"कर्मचारियों के अनुसार, पिछले कुछ वर्षों में लगभग दस अलग-अलग लोगों को यह अनुभव हुआ है। संयोगवश, उनमें से किसी को भी इस बात की जानकारी नहीं थी कि घर भूतिया होने के लिए बदनाम है।"

घर में घुसपैठिए की रिपोर्टें केवल येट्स के घर में रहने के समय से ही सामने आईं, लेकिन निश्चित रूप से कुछ न कुछ गुप्त रूप से मौजूद रहा होगा, शायद पहले की संरचना से "अवशेष" रहा हो, और केवल आत्माओं से संपर्क करने के अनुष्ठानों द्वारा जागृत हुआ हो।

अगली गर्मियों तक रेनविले हाउस जाने की हमारी उम्मीदें पूरी नहीं हो पाईं। हमने अपने दोस्त डिलन से इस मशहूर रिसॉर्ट होटल में कमरे बुक कराने को कहा था ताकि हम रिसर्च के साथ-साथ धूप में थोड़ा आराम भी कर सकें। लेकिन किस्मत को कुछ और ही मंजूर था, जब तक हम एमराल्ड आइल जाने की तारीख तय करने वाले थे, रेनविले हाउस के सारे कमरे बुक हो चुके थे। इसके अलावा, हम अपने हमेशा मौजूद रहने वाले देशवासियों को भी दोष नहीं दे सकते थे, क्योंकि मुझे बताया गया है कि अमेरिकी पर्यटक बुकिंग कराने में बहुत देर कर देते हैं। दूसरी ओर, ब्रिटिश लोगों को लगातार अविश्वसनीय सरकारों से सावधानी और दूरदर्शिता का सबक मिला है, इसलिए वे सीज़न की शुरुआत में ही कमरे बुक करना पसंद करते हैं, और नतीजतन हमने पाया कि कॉनेमारा एक बार फिर ब्रिटिशों के कब्जे में था - कम से कम गर्मियों के लिए तो था ही।

हमें पास के लीनाने में ठहरने का विकल्प दिया गया, जहाँ लॉर्ड फ्रेंच एक आधुनिक होटल के प्रबंधक हैं। यह होटल कई मील गहरी एक झील के किनारे, पथरीली कोनेमारा भूमि पर बना हुआ है। नॉर्वे में इन्हें फ़्योर्ड कहा जाता है। ये झीलें हिमयुग के अवशेष हैं और इनमें तैरने की

सलाह नहीं दी जाती, लेकिन मछली पकड़ने के लिए ये बेहतरीन हैं, क्योंकि कोनेमारा की मछलियों को ठंड से कोई फर्क नहीं पड़ता।

इस बिंदु पर मुझे यह स्पष्ट कर देना चाहिए कि कॉनेमारा आयरलैंड के सबसे पश्चिमी भाग में स्थित एक प्राचीन राज्य का नाम है, जिसने अंग्रेजी रीति-रिवाजों और भाषा को सबसे बाद में और सबसे कम अपनाया। इसीलिए झीलों के किनारे बसे इन छोटे-छोटे घरों और शानदार कॉनेमारा समुद्र तट पर आज भी प्राचीन आयरिश लोगों की मधुर बोली स्वाभाविक अभिव्यक्ति का माध्यम बनी हुई है। उनकी लयबद्ध बोली और वाक्यों की विचित्र संरचना जलडमरूमध्य के उस पार बोली जाने वाली बोली से दिन-रात की तरह भिन्न है। बेशक, कुछ साहित्यिक और उच्चवर्गीय आयरिश लोग, विशेषकर डबलिन में, ऐसे भी हैं जिनकी अंग्रेजी इतनी उत्तम है कि वह एल्बियन में बोली जाने वाली अंग्रेजी को भी मात देती है, और यह भी अंग्रेजों पर एक प्रकार की नैतिक विजय है।

लेकिन हमने लॉर्ड फ्रेंच को होटल लीनाने में अपने आने का इंतज़ार करने के लिए छोड़ दिया था, और वे हमारा इंतज़ार कर रहे थे। वे एक आकर्षक, लगभग पैंतीस साल के व्यक्ति थे, जिन्हें मछली पकड़ने का बहुत शौक था और वे इस बात से भली-भांति परिचित थे कि यह इलाका पर्यटकों को कितना आकर्षित करता है। लीनाने होटल सुखद था और हवा ताज़ी और साफ़ थी, तापमान लगभग 65 डिग्री था, जबकि न्यूयॉर्क में उस समय छाया में भी आरामदायक 98 डिग्री तापमान था। होटल के बारे में मेरी एकमात्र शिकायत दीवारों को लेकर थी, जो वॉलपेपर जितनी पतली थीं।

जुलाई 1966 का यह महीना मौसम असाधारण रूप से सुहावना था और कई हफ्तों से ऐसा ही बना हुआ था। दोपहर के भोजन के बाद जब हम रेनविले के लिए निकले, तो तेज़ धूप हमारे सिर पर पड़ रही थी। मैनेजर पॉल ह्यूजेस ने हमें अपनी कार से लेने आने की पेशकश की थी, और वह (कार नहीं, बल्कि मैनेजर) मेरी उम्मीद से कहीं ज़्यादा जवान निकले। 27 साल की उम्र में, वह एक बड़ा होटल चला रहे थे और उसे बखूबी संभाल रहे थे। घुमावदार सड़कों से होते हुए, जो हर जगह मौजूद कॉनेमारा चट्टानों के बीच से गुज़रती थीं, तटीय क्षेत्र तक पहुँचने में हमें लगभग पौने घंटे का समय लगा। रेनविले हाउस एक ऐसी जगह पर स्थित है जो अटलांटिक महासागर को छोड़कर, अमेरिका के लगभग सबसे करीब है। समुद्र उस ज़मीन

के किनारों को छू रहा था जिस पर वह सफेद दो मंजिला घर खड़ा था, और उसके चारों ओर गायें और गधे हर जगह थे, जिससे पूरा दृश्य देहाती सा लग रहा था। श्री ह्यूजेस हमें कुछ देर के लिए लगभग उष्णकटिबंधीय बगीचे में धूप सेंकने के लिए अकेला छोड़ गए। दोपहर के भोजन के बाद, मैं किसी तरह बार में उनसे मिलने में कामयाब हो गया। सिबिल लीक की मौजूदगी में हुई बातचीत में भूतों का कोई ज़िक्र नहीं हुआ था, ज़ाहिर है। लेकिन अब सिबिल बाहर थी, स्मारिका दुकान पर नज़र रख रही थी, और ह्यूज़ और मैं मुद्दे की तह तक जा सकते थे।

श्री ह्यूजेस ने बताया कि होटल का पुनर्निर्माण 1930 में एक पुराने मकान के ऊपर किया गया था, जो मूल रूप से गैलवे जनजातियों में से एक, ब्लेक्स परिवार के स्वामित्व में था, जिन्होंने अंततः इसे ओलिवर सेंट जॉन गोगार्टी को बेच दिया था। मैंने विनम्रतापूर्वक सिर हिलाया, क्योंकि श्री डिलन ने पिछली गर्मियों में ही मेरे लिए इस मकान का इतिहास खोज निकाला था।

ह्यूजेस ने बताया, "वह डबलिन में एक डॉक्टर थे, और वह सप्ताहांत में यहां आते थे और जॉयस, येट्स और ऑगस्टस जॉन जैसे लोगों का मनोरंजन करते थे।"

मैंने सोचा, शुक्र है कि कोन्नेमारा में ऑटोग्राफ मांगने वाले लोग नहीं थे!

उन्होंने बताया कि श्री ह्यूजेस तीन साल से प्रबंधक थे।

मैंने उत्सुकतावश पूछा, "क्या आपने कभी किसी कमरे में कुछ असामान्य देखा है?"

“नहीं, मैंने तो नहीं देखा, हालाँकि कई कर्मचारियों ने अजीबोगरीब घटनाओं की सूचना दी है। ऐसा लगता है कि नौकरानियों में से एक, रोज़ कोइन ने ऊपर के गलियारों में से एक में एक आदमी को देखा था - एक ऐसा आदमी जो अचानक गायब हो गया।”

पता चला कि मिस कोइन अधेड़ उम्र की और काफी शर्मीली थीं। यह उनका छुट्टी का सप्ताह था, और हालांकि हमने बाद में उनके अपने कॉटेज में उनसे उनके अनुभवों के बारे में बात करने के लिए मनाने की कोशिश की, लेकिन उन्होंने मना कर दिया।

श्री ह्यूजेस ने आगे कहा, "उसे इसका कुछ बार अनुभव हुआ है। हालांकि, मुझे नहीं पता कि कितनी बार।"

"क्या होटल में कहीं और किसी को कोई असामान्य अनुभूति हुई है?"

"उनका कहना है कि होटल के पुनर्निर्माण के बाद से यह पहले जितना मजबूत नहीं रहा।"

लेकिन क्या मिस कोइन को आग लगने के बाद ऐसा अनुभव नहीं हुआ था?

“हां,” मैनेजर ने स्वीकार किया, “पिछले साल।”

मैंने भूतिया कमरा, कमरा नंबर 27, देखने का फैसला किया। यह वही कमरा था जिसका जिक्र इओइन डिलन ने किया था और जिसमें उन्होंने भूतिया अनुभव किए थे। हम लकड़ी की सीढ़ियों से ऊपर चढ़े, सिबिल भी हमारे साथ थी—मैं, मेरी पत्नी और मिस्टर ह्यूजेस, जिन्हें यह सुनिश्चित करना था कि कमरा नंबर 27 के मेहमान फिलहाल बाहर ही रहें। दूसरी मंजिल पर जिस कमरे में हम दाखिल हुए, वह एक आम छुट्टी के समय के होटल के कमरे जैसा था, सजावट में काफी आधुनिक और सादा, सिवाय बाईं दीवार के बीच में बनी लाल चिमनी के। बाद में मुझे पता चला कि अब 27 और 18 नंबर वाले ये दो कमरे असल में एक बड़ा कमरा थे। मैंने कुछ तस्वीरें लीं और सिबिल को वहां के नज़ारे देखने दिए। ह्यूजेस ने जल्दी से बाहर का दरवाजा बंद कर दिया ताकि कोई हमें परेशान न करे। सिबिल चिमनी के सामने कुर्सी पर बैठ गई। खिड़कियाँ आंगन की ओर खुलती थीं।

“मुझे ऐसा लग रहा है जैसे समय में कुछ चीज़ें एक-दूसरे से मेल खा रही हों,” सिबिल लीक ने कहना शुरू किया। बेशक, उन्हें “दो रेनविले” और पहले वाले घर के पुनर्निर्माण के बारे में कोई जानकारी नहीं थी।

"मुझे अपनी गर्दन के आसपास एक अजीब सी अनुभूति हो रही है," उसने आगे कहा, "दर्दनाक अनुभूति, जिसका इस विशेष कमरे से कुछ संबंध है, क्योंकि मुझे कुछ देर पहले नीचे ऐसा महसूस नहीं हुआ था।"

मैंने सीधे पूछा, "क्या आपको यहां किसी की उपस्थिति महसूस हो रही है?"

“हां,” सिबिल ने तुरंत जवाब दिया, “कुछ...दर्द से जुड़ा हुआ। मुझे ऐसा लग रहा है जैसे मेरी गर्दन टूट गई हो।”

मैंने कुछ और तस्वीरें लीं; तभी मैंने सिबिल को धीरे से "1928" कहते सुना। मैंने तुरंत उससे इस तारीख के महत्व के बारे में पूछा। उसे लगा कि उस समय जिस कमरे में हम थे, उसमें किसी ने कष्ट सहा था। साथ ही, तब से कमरे का आकार भी बदल गया है।

“इस इलाके में किसी की मौजूदगी है,” उसने अंत में दृढ़ निश्चय के साथ कहा। “एक शोरगुल भरी मौजूदगी। यह व्यक्ति खतरनाक है।”

सिबिल द्वारा यह कहने के बाद कि चिमनी को जलाना मुश्किल हो सकता है, हम बगल वाले कमरे में यह देखने के लिए गए कि क्या वहां के प्रभाव अधिक तीव्र हो सकते हैं।

मैंने पूछा, "आपको यहाँ क्या महसूस हो रहा है?" उसने कहा, "डर।"

"क्या यह संवाद कर सकता है?"

"यह हमारे यहां होने वाली सामान्य समस्या नहीं है... बस दर्द है, तेज दर्द।"

"क्या यहाँ किसी की मृत्यु हुई थी?"

"हां, लेकिन पूरी तरह से खत्म नहीं हुआ।"

"क्या वह व्यक्ति अभी यहाँ है?"

"व्यक्ति नहीं, बल्कि उसकी छाप।"

“कितना समय पहले?”

मुझे केवल 1928 तक की जानकारी ही मिल पाती है।

मैंने पॉल ह्यूजेस से पूछताछ की। वह वास्तव में येट्स के प्रेतात्माओं से संपर्क करने के अनुष्ठानों का समय था।

"इस कमरे में आप किस तरह के लोगों से जुड़ाव महसूस करते हैं?"

“यह एक अतिव्यापी अवधि है...1928 मुझे बहुत जीवंत लगता है, लेकिन उसके बाद हम परतों में नीचे जाते हैं...यात्री लोग, यहाँ आते हैं, यहाँ नहीं रहते...क्या ‘बाहरी’ शब्द का कोई अर्थ है?”

मुझे ऐसा नहीं लगा।

“हम अब 1928 में हैं। लंबे वस्त्र पहने पुरुष... धार्मिक, शायद... लंबे कपड़े पहने पुरुष? पुरुषों का एक समूह, कोई महिला नहीं। शायद दस पुरुष। लंबे कोट। एक बड़ी आग के सामने बैठे हुए।”

"जिस व्यक्ति को आप यहां के वातावरण में फंसा हुआ महसूस करते हैं—क्या वह उसी काल का है?"

“नहीं,” सिबिल ने उत्तर दिया, “यह बाद के काल का है।”

वह यहाँ कैसे पहुँचा?

"यह कोई ऐसा व्यक्ति है जो यहाँ रहता था...इसी कमरे में उसकी मृत्यु हुई...आग लगने से...लंबे वस्त्र पहने हुए लोग पुराने हैं, यह नहीं बता सकते कि वे पुरुष हैं या महिलाएँ, भिक्षु भी हो सकते हैं...लेकिन जिसकी उपस्थिति मुझे इस कमरे के वातावरण में महसूस होती है, वह 1928 का है।"

हम कमरे से बाहर निकले और गलियारे में चले गए, वही गलियारा जो उस क्षेत्र को जोड़ता था जहाँ हम अभी-अभी थे, होटल के पिछले हिस्से में स्थित नंबर 2 से। मुझे बाद में पता चला कि यहीं पर नौकरानी ने भूत को देखा था। सिबिल ने बताया कि वहाँ लंबे कपड़े पहने दस लोग थे, लेकिन वह इससे अधिक जानकारी नहीं जुटा सकी।

"बिल्कुल एक तस्वीर की तरह," उसने जोर देकर कहा।

हम खूबसूरत पुस्तकालय की ओर बढ़े, जो लकड़ी की पैनलिंग और संत ब्रिगिड और पैट्रिक की दो बड़ी-बड़ी पेंटिंग्स से सजा हुआ था। मैंने देखा कि संत ब्रिगिड ने प्राचीन गेलिक महिलाओं की तरह लंबा, चोगा जैसा परिधान पहना हुआ था, एक ऐसा परिधान जिसकी नकल आयरलैंड के उन्नीसवीं सदी के कुछ कवियों ने रोमांटिक कारणों से की थी। इससे सिबिल को ऊपर वाले कमरे में महसूस हुई भावना की याद आ गई।

उसे अपने ज्ञान के आधार पर याद आया कि विलियम बटलर येट्स की एक महिला मित्र थी जिसे इस तरह के प्राचीन वस्त्र पहनने का शौक था! यह बात भले ही अटपटी लगे, लेकिन याद करने पर मुझे इतना यकीन नहीं है। हम घर से निकले और पॉल ह्यूजेस हमें पहाड़ी रास्ते से उस कुटिया तक ले गया जहाँ भूत देखने वाली नौकरानी रहती थी।

ह्यूज़ पहले अंदर जाकर उसे मुझसे बात करने के लिए मनाने की कोशिश करता। अगर वह नाकाम रहता, तो वह उससे दोबारा कहानी सुनता और हमें फिर से सुनाता। हम उसकी कार में करीब पंद्रह मिनट तक इंतज़ार करते रहे, जबकि मैनेजर ने डरी हुई नौकरानी पर अपना स्वाभाविक आकर्षण आजमाया। वह बाहर आया और उसने सिर हिलाया। लेकिन कम से कम वह उसे अपने अनुभव दोबारा बताने के लिए राजी करने में कामयाब हो गया था।

ह्यूजेस ने बात शुरू करते हुए कहा, "लगभग एक साल पहले, भूतल के गलियारे में, जो कमरा नंबर 2 की ओर जाता था, श्रीमती कोइन ने एक आदमी को कांच के दरवाजे से अंदर आते और कमरा नंबर 2 में जाते देखा।"

मैंने बीच में ही टोकते हुए पूछा, "उसने क्या किया?"

“अचानक मिस कोइन को याद आया कि उस समय कमरा नंबर 2 में कोई नहीं रुका हुआ था। इसलिए वह कमरा नंबर 2 में गईं, लेकिन वहां कोई नहीं दिखा! उन्हें अचानक कमजोरी महसूस होने लगी और हाउसकीपर यह सोचकर उनके पास आ रही थी कि उन्हें क्या हुआ है। लेकिन उन्होंने पहले तो इस बारे में किसी से बात नहीं की क्योंकि उन्हें लगा कि इससे होटल के कारोबार पर बुरा असर पड़ेगा।”

मैंने कहा, "बेतुका है। अमेरिकी पर्यटक भूतों को बहुत पसंद करते हैं।"

ह्यूज़ ने आगे कहा, "इसी साल की शुरुआत में—1966 में—कमरा नंबर 2 में एक महिला ठहरी हुई थी। उसकी बेटी कमरा नंबर 38 में थी। दो रातों के बाद, उसने कमरा नंबर 2 छोड़ने पर जोर दिया और खुशी-खुशी एक बहुत ही घटिया कमरा स्वीकार कर लिया। उसके इस बदलाव के बाद कोई शिकायत नहीं हुई।"

मुझे पता चला कि कमरा नंबर 2 और 27 होटल के दूर-दराज के हिस्सों में थे, लगभग उतनी ही दूर जितनी दूर वे हो सकते थे।

कार में बैठे हुए कुछ पल के लिए सन्नाटा छा गया और मैंने इस सब पर विचार किया।

"क्या उसने बताया कि उसने जिस आदमी को देखा वह कैसा दिखता था?" मैंने अंत में मिस कोइन के भूत का जिक्र करते हुए पूछा।

“हां,” ह्यूजेस ने जवाब दिया और शांति से सिर हिलाया। “एक लंबा आदमी, बहुत लंबा आदमी।”

"और क्या एक जीता-जागता इंसान किसी और तरीके से कमरे से बाहर नहीं निकल सकता था?"

“असंभव। उस समय तक नई खिड़कियाँ लगाई ही नहीं गई थीं और एक छोटी सी पंखे वाली खिड़की को छोड़कर बाकी खिड़कियाँ काम नहीं कर रही थीं। यह घटना रविवार को दोपहर के भोजन के समय, प्रार्थना सभा के बाद, 1965 में घटी थी।”

और उस महिला का अजीब व्यवहार?

“ईस्टर और व्हिटसन के बीच, इस वर्ष, 1966 में।”

हम वापस होटल की मुख्य लॉबी में आ गए। वहाँ, अन्य यादगार वस्तुओं के बीच, रेनविले हाउस से जुड़े महान आयरिश विद्वानों की फ़्रेमयुक्त तस्वीरें रखी हुई थीं।

उनमें से एक, निश्चित रूप से, विलियम बटलर येट्स भी हैं।

मैंने उसे बहुत देर तक और ध्यान से देखा। येट्स एक लंबा आदमी था, बहुत लंबा आदमी...

* * *

1952-1953 की सर्दियों में, ओलिवर सेंट जॉन गोगार्टी ने टुमॉरो पत्रिका के लिए "यीट्स और रेनविले कैसल का भूत" शीर्षक से एक संक्षिप्त लेख लिखा था।

शुरुआत में, 'महल' शब्द का प्रयोग 'टुमॉरो' के संपादकों द्वारा किया गया था, क्योंकि गोगार्टी रेनविले हाउस को महल कहना उचित नहीं समझते थे। वास्तव में एक रेनविले महल है और वह आज भी होटल से लगभग दो मील दक्षिण में स्थित है, मध्ययुगीन पत्थर से बनी एक जली हुई इमारत, जो कभी प्रसिद्ध आयरिश समुद्री डाकू रानी ग्रानिया ओ'मैली की संपत्ति थी।

गोगार्टी की रिपोर्ट उस घर से संबंधित है जो आग लगने से पहले वहाँ मौजूद था। हमारी यात्रा उस नए घर की थी, जो उसके खंडहरों पर बनाया गया था। रेनविले हाउस में आयोजित होने वाले प्रेतवादन अनुष्ठानों की लोकप्रिय कहानी संभवतः पहले वाले भवन से संबंधित है, क्योंकि जहाँ तक मुझे पता है, वर्तमान भवन में ऐसा कोई अनुष्ठान नहीं हुआ था।

गोगार्टी की रिपोर्ट में येट्स और उनकी तंत्र-मंत्र में रुचि का वर्णन है; एक विशेष घटना का जिक्र है जब श्रीमती येट्स, जो एक माध्यम थीं, ने अपनी खिड़की पर एक प्रेत जैसा चेहरा देखा था; ऊपरी मंजिल के एक कमरे में आयोजित एक प्रेत-संवेदना सत्र का भी जिक्र है जिसमें एक युवा लड़के की बेचैन आत्मा प्रकट हुई थी जिसने वहीं आत्महत्या कर ली थी। मॉर्गन

इवान, एक वेल्श निवासी जो जाहिर तौर पर एक ट्रान्स माध्यम थे, उस समय मेहमानों में से एक थे, और उनका भी उस भूत से सामना हुआ जिसने उन्हें भयभीत और कमजोर कर दिया।

मुझे एक अजीब सी अनुभूति हुई। ऐसा लगा जैसे मैं किसी बुरे सपने की तरह तनाव में हूँ, और उस भयानक डर से जकड़ा हुआ हूँ जो बुरे सपनों में होता है। तभी मैंने एक लड़के को देखा, जो एकदम सीधा खड़ा था, भूरे मखमली कपड़े पहने हुए, जिसकी कमर पर एक कमीज़ दिख रही थी। वह लगभग बारह साल का था। कुर्सी के पीछे वह खड़ा था, उसका चेहरा पीला पड़ गया था, मानो ज़मीन को छू रहा हो। ऐसा लग रहा था कि अगर वह मेरे पास आया तो मेरे साथ कोई भयानक विपत्ति आ जाएगी। मैं भी उसकी तरह ही तनाव में था—बुरे सपने के डर, हवा में सिहरन; लेकिन जो बात इसे और भी भयानक बना रही थी, वह थी मेरा पूरी तरह से जाग जाना। भूरे मखमली कपड़े पहने उस आकृति ने सिर्फ मुझे देखा, लेकिन कमरे का वातावरण काँप उठा। मुझे नहीं पता कि आगे क्या हुआ। मैंने उसकी बड़ी-बड़ी आँखें देखीं, मैंने उसकी कलाई पर लगे झालर देखे। वह काँप रहा था। उसकी चमकती आँखें फटकार रही थीं। उसने मेरी आँखों में गहराई से देखा।

“उस प्रेत ने अपने हाथ गर्दन तक उठाए और फिर अचानक, जैसे किसी अदृश्य शैतान ने उसके शरीर को हिंसक रूप से जकड़ लिया हो, और हवा में ही उसे भयानक रूप से मरोड़ दिया। वह पागल हो गया था! एक पल के लिए मुझे उसके पागलपन पर दया आई और मैं तुरंत नरक के विद्युतीय तनाव में आ गया। आत्महत्या! आत्महत्या! हे भगवान, उसने इसी घर में आत्महत्या कर ली।”

जैसा कि बाद में पता चला, भूत ने स्वतःस्फूर्त लेखन के माध्यम से येट्स से संवाद किया था। उसने अपने घर में अजनबियों की उपस्थिति पर आपत्ति जताई। लेकिन येट्स ने उसकी आपत्ति का जवाब अपनी मांगों की एक ऐसी सूची के साथ दिया, जिसकी भूत ने शायद ही कल्पना की होगी। सबसे पहले, उसे बच्चों को उनकी शुरुआती नींद में डराना बंद करना होगा। उसे चिमनियों के बारे में विलाप करना बंद करना होगा। उसे घर में घूमना बंद करना होगा। उसे फर्नीचर नहीं हिलाना होगा और न ही आस-पास सो रहे लोगों को डराना होगा।

और अंत में, उसे येट्स को अपना नाम बताने का आदेश दिया गया। और उसने ऐसा ही किया।

येत्स, जो वहाँ एक आगंतुक थे, यह कैसे जान सकते थे कि बच्चे कभी-कभी अपने शयनकक्ष से रोते हुए नीचे भाग आते थे? न ही वे यह अनुमान लगा सकते थे कि ब्लेक परिवार में अपने बेटों का नाम सप्तक के नाम पर रखने की प्रथा थी। फिर भी उन्होंने भूत का विशिष्ट नाम पता लगा लिया। एक ऐसा नाम जो गोगार्टी को स्थानीय लोगों से कभी पता नहीं चला था, जबकि वे वर्षों तक उनके बीच रहे थे।

उस व्याकुल आत्मा ने श्रीमती येट्स से वादा किया था कि वह भूतिया कमरे में उसी तरह प्रकट होगा, जैसे वह साठ साल पहले पागल होने से पहले प्रकट होता था।

कुछ देर बाद, श्रीमती येट्स एक जलती हुई मोमबत्ती लेकर आईं। उन्होंने मोमबत्ती बुझाई और अपने पति को सिर हिलाकर इशारा किया, "हाँ, यह बिल्कुल वैसा ही है जैसा आपने कहा था।"

मेरी पत्नी ने उत्तरी कमरे के बीच में लगभग चौदह वर्ष के एक पीले चेहरे वाले, लाल बालों वाले लड़के को खड़े देखा। जब वह पहली बार दिखाई दिया, तब वह चिमनी के पास थी। उसके चेहरे पर एक ऐसी उदासी छाई हुई थी जिसे एक बच्चा सहन नहीं कर सकता था। वह अपने पूर्वजों के घर में अजनबियों की उपस्थिति से नाराज़ था। वह है हेरोल्ड ब्लेक।

और अब मुझे समझ में आ गया कि सिबिल लीक ने क्या महसूस किया था! ऊपर, उसी कमरे में, जहाँ पुराने घर में वह प्रेतवाधित लड़का प्रकट हुआ था, उसे अचानक अपनी गर्दन में भयानक बेचैनी महसूस हुई—ठीक वैसे ही जैसे उस मानसिक शक्ति वाले वेल्शमैन को कई साल पहले हुई थी! क्या वह उस त्रासदी को फिर से जी रही थी या वह पीला लड़का अभी भी आसपास मौजूद था?

लेकिन नौकरानी ने एक लंबे अजनबी को देखा था, कोई छोटा लड़का नहीं, और न ही उस भूतिया कमरे में, बल्कि उससे बहुत दूर। येट्स को इस घर से बहुत लगाव था, और एक जिज्ञासु स्वभाव के व्यक्ति होने के नाते, वे मृत्यु के बाद भी यहीं रहना पसंद करते। कम से कम परलोक में उस उदास लड़के से बात करने के लिए!

*28

क्या यह आप हैं, जीन हार्लो?

अगर किसी फिल्म अभिनेत्री को "वैम्प" का नाम दिया जा सकता था, तो वह निश्चित रूप से जीन हार्लो थीं। सुनहरे बालों वाली यह अभिनेत्री 1930 के दशक के आदर्श का साक्षात रूप थीं—पतली और मोहक, उत्तेजक अंदाज में अपने शरीर को हिलाती-डुलाती, फिर भी उस दौर की सुरुचिपूर्ण और सहज शैली में कपड़े पहनती थीं। स्लिम-फिट ड्रेस, स्वेटर और रंगीन एक्सेसरीज़ ने जीन हार्लो को अमेरिकी सिनेमा की सबसे ग्लैमरस अभिनेत्रियों में से एक बना दिया। जनता को उनके निजी रहस्यों या उनकी व्यक्तिगत त्रासदियों के बारे में कभी पता नहीं चला। उनकी जीवन कहानी को इस तरह से संपादित किया गया कि उनके व्यक्तित्व के केवल वही पहलू प्रस्तुत किए गए जो एक ग्लैमरस फिल्म स्टार के बारे में पहले से बनी धारणा के अनुरूप थे। एक तरह से, जीन हार्लो बाद में आने वाली सभी सुनहरे बालों वाली ग्लैमरस अभिनेत्रियों का प्रोटोटाइप थीं, जिनका चरम मर्लिन मोनरो के साथ हुआ। इन सुनहरे बालों वाली फिल्म अभिनेत्रियों के दुखद जीवन और कभी-कभी अंत में भी एक उल्लेखनीय समानता है। संभवतः पर्दे पर उन्होंने जो छवि प्रस्तुत की, या प्रस्तुत करने के लिए मजबूर हुए, वह उनकी अपनी निजी उपलब्धियों से भिन्न थी और उनके दुखद पतन का मार्ग प्रशस्त करने में सहायक रही।

मेरे लिए, जीन हार्लो हमेशा रेड डस्ट जैसी फिल्मों की ग्लैमरस देवी के रूप में याद रहेंगी, जिसे मैंने बचपन में देखा था। यह विचार कि मृत्यु के बाद उनका कोई सांसारिक जीवन हो सकता था, उस छवि से बहुत दूर लगता है जो अभिनेत्री ने अपने जीवनकाल में प्रस्तुत की थी। इसलिए, मुझे कुछ संदेह था जब मैंने एक अंग्रेजी अखबार द्वारा दी गई जानकारी का अनुसरण किया, जिसमें कहा गया था कि फिल्म स्टार का पूर्व घर भूतिया था।

जिस मकान की बात हो रही है, वह वेस्टवुड में एक शांत रिहायशी सड़क से थोड़ा हटकर बना एक खूबसूरत सफेद प्लास्टर वाला एक परिवार का मकान है। वेस्टवुड लॉस एंजिल्स का वह इलाका है जो विश्वविद्यालय के पास स्थित है और आमतौर पर शांत और उच्च मध्यम वर्गीय माना जाता है। मकान एक पेशेवर व्यक्ति और उसकी पत्नी का था, जो अपनी दो बेटियों और दो पूडल कुत्तों के साथ उसमें रहते थे। यह दो मंजिला इमारत है, जिसमें भूतल के

पीछे से ऊपरी मंजिल तक एक सुंदर घुमावदार सीढ़ी बनी हुई है। नीचे के हिस्से में एक बड़ा आयताकार बैठक कक्ष है, जो भोजन कक्ष में खुलता है। इसके बगल में एक रसोई और स्नानघर है, और ऊपरी मंजिल तक जाने वाली एक सीढ़ी है। ऊपर दो शयनकक्ष और एक स्नानघर है।

जीन हार्लो का पूर्व लिविंग रूम—बेवर्ली हिल्स

जब मैंने पहली बार घर की वर्तमान मालकिन श्रीमती एच. से फोन पर बात करके मिलने की अनुमति मांगी, तो उन्होंने काफी सौहार्दपूर्ण जवाब दिया। कुछ देर बाद मैंने उनसे मिलने का समय तय करने के लिए दोबारा फोन किया और पाया कि उनके पति मेरे आने से बिल्कुल भी खुश नहीं थे। हालांकि उन्होंने खुद भी घर में कुछ असामान्य घटनाओं का अनुभव किया था, लेकिन एक पेशेवर होने के नाते, और शायद एक पुरुष होने के नाते भी, उन्हें चिंता थी कि प्रचार से उनके करियर को नुकसान पहुंच सकता है। मैंने उन्हें आश्वस्त किया कि मुझे उनका नाम या पता बताने में कोई दिलचस्पी नहीं है, और इस आश्वासन के साथ ही मेरा फिर से स्वागत किया गया। वह एक धूप भरा दोपहर था जब मैंने अपना टेप रिकॉर्डर और कैमरा उठाया, वेस्टवुड में सफेद घर के सामने अपनी टैक्सी खड़ी की और घंटी बजाई।

श्रीमती एच. पहले से ही मेरा इंतज़ार कर रही थीं। वह लगभग तीस साल की, कद-काठी में छोटी, गहरे सुनहरे बालों वाली महिला थीं, जो बातचीत में बहुत रुचि रखती थीं और तंत्र-मंत्र में उनकी काफी दिलचस्पी थी। दरअसल, उन्होंने मेरी एक पुरानी किताब पढ़ी थी। उनके साथ उनकी एक सहेली भी थीं; मुझे नहीं पता कि उन्होंने उस सहेली को जिज्ञासावश बुलाया था या सुरक्षा के लिए। खैर, हम तीनों बैठक में बैठ गए और मैंने श्रीमती एच. से वैसे ही सवाल पूछने शुरू किए जैसे मैं किसी कथित भूतिया घर में जाने पर हमेशा पूछता हूँ।

"श्रीमती एच., आप इस घर में कितने समय से रह रही हैं?"

लगभग चार साल।

"जब आपने इसे खरीदा था, तो क्या आपने पिछले मालिक के बारे में कोई पूछताछ की थी?"

“मैंने ऐसा नहीं किया। मुझे सच में कोई परवाह नहीं थी। मैं घर में दाखिल हुआ और मुझे वह पसंद आया, बस बात खत्म।”

क्या तुमने अभी-अभी अपने पति को इसे खरीदने के लिए कहा?

“हां। मैंने उनसे कहा, ‘यह हमारा घर है।’ मैंने रियल एस्टेट एजेंट से कहा कि वह घर देखने से पहले ही कागजात तैयार कर लें क्योंकि मुझे पता था कि उन्हें भी वैसा ही महसूस होगा जैसा मुझे हुआ था।”

"इससे पहले आप कहां रहते थे?"

“ब्रेंटवुड, वेस्ट लॉस एंजिल्स, बेवर्ली हिल्स, हर जगह। मेरा जन्म कनाडा में हुआ था।”

आपकी शादी को कितने साल हो गए हैं?

"सत्रह।"

"आपके बच्चे है?"

मेरी दो बेटियां हैं, एक नौ साल की और दूसरी बारह साल की।

"क्या रियल एस्टेट एजेंट ने आपको घर के बारे में कुछ बताया?"

"उसने नहीं किया।"

"जब आप वहां रहने लगे और व्यवस्थित हो गए, तो क्या आपने उसमें कुछ बदलाव किए?"

“हां; इसकी हालत काफी खराब थी। इसे प्यार करने वाले किसी व्यक्ति की जरूरत थी।”

"क्या आपने कोई संरचनात्मक बदलाव किए?"

“नहीं। जब हमें घर का इतिहास पता चला तो हमने फैसला किया कि हम इसे वैसे ही छोड़ देंगे जैसा यह था।”

"तो जब आप यहाँ रहने आए थे, तभी आपने इसे ठीक कर दिया था?"

"हाँ।"

"आपको घर के बारे में पहली बार कोई असामान्य भावना कब महसूस हुई?"

"घर में आने से एक दिन पहले मैं कालीन बिछाने वाले लोगों को निर्देश देने आया था। मैं ऊपर गया और उसी समय मुझे एक अनुभव हुआ।"

"क्या हुआ?"

“मेरे दोनों कुत्ते भौंकते और गुर्राते हुए ऊपर के कमरों में भाग गए; मैं ऊपर गया, और मुझे लगा जैसे मेरे कान में किसी ने फुसफुसाया हो। इससे मैं डर गया।”

“क्या वह ऊपर के कमरों में से एक में था?”

“नहीं, मास्टर बेडरूम से ठीक पहले वाले गलियारे में। कुत्ते भौंकते और गुर्राते हुए अंदर भागे, मानो वे किसी को पकड़ने जा रहे हों, और फिर जब वे अंदर पहुंचे तो उन्होंने चारों ओर देखा और वहां कोई नहीं था।”

आपने क्या सुना?

"मुझे पक्का यकीन है कि मैंने किसी को कहते सुना, 'कृपया मेरी मदद करें!' यह एक धीमी फुसफुसाहट थी, मानो दबी हुई आवाज हो।"

"आपने क्या किया?"

“मैंने कुछ मिनटों तक खुद से बात की ताकि मैं स्थिति को समझ सकूं। मैंने पहले कभी ऐसा अनुभव नहीं किया था, और मैंने सोचा, 'ठीक है, अगर ऐसा है तो कोई बात नहीं।' मुझे पहले भी ईएसपी के अनुभव हो चुके हैं, इसलिए मैं अपने काम में लग गया।”

“आपके वे अन्य अनुभव—क्या वे इस घर में आने से पहले के थे?”

“हां। मैंने अपना नाम पुकारा जाते सुना है।”

“इस घर में या किसी और घर में?”

“दूसरे घरों में।”

"क्या आप इनमें से किसी को पहचान सकते हैं?"

नहीं, सिर्फ महिलाओं की आवाजें।

क्या आपने कभी कुछ असामान्य देखा?

“मैंने जो देखा, वह शायद अलौकिक द्रव्य था...। यह सिगरेट के धुएं जैसा था। यह हिल रहा था, और मेरे कुत्ते रोने लगे, अपनी पूंछ पैरों के बीच दबाकर कमरे से भाग गए।”

जीन हार्लो का पुराना बिस्तर ऊपर वाले कमरे में

"क्या तुमने अपने पति को उस कानाफूसी के बारे में बताया?"

“मैंने नहीं बताया। मेरे पति को संदेह है। मुझे उन्हें बताने का कोई कारण नहीं दिखा।”

"आपको अगली बार यहां किसी की उपस्थिति का अहसास कब हुआ था?"

“जिस रात हम यहाँ रहने आए, मैं और मेरे पति बिस्तर पर लेटे हुए थे। अचानक, ऐसा लगा जैसे बिस्तर पर किसी भारी वस्तु से तीन बार प्रहार किया गया हो। मेरे पति ने कहा, ‘हे भगवान, मैं यहाँ से जा रहा हूँ। यह जगह भूतिया है।’ मैंने जवाब दिया, ‘अरे, चुप रहो। अगर कोई बात करने की कोशिश कर रहा है तो कोई बात नहीं। इससे कोई नुकसान नहीं होगा।’ और भूत से मैंने कहा, ‘आपका स्वागत है—आप कैसे हैं; लेकिन हमें सोना है—हम बहुत थके हुए हैं—इसलिए कृपया हमें अकेला छोड़ दें।’”

और क्या इससे मदद मिली?

"हाँ।"

“शांति कितने समय तक कायम रही?”

“खैर, बिस्तर के अचानक हिलने की समस्या फिर कभी नहीं हुई। लेकिन कुछ और चीजें हुईं। रसोई में मेरे ओवन पर एक लाइट स्विच है। हमारे यहाँ आने के काफी समय बाद तक, वह स्विच अपने आप ही कभी-कभी चालू हो जाता था।”

"क्या रोशनी जलाने के लिए किसी को शारीरिक रूप से इसे घुमाना पड़ेगा?"

"हां, आपको इसे ऊपर की ओर पलटना होगा।"

"क्या घर में कोई और था जो ऐसा कर सकता था?"

“नहीं, क्योंकि मैं यहाँ बैठा होता था और मुझे क्लिक की आवाज़ सुनाई देती थी, मैं वहाँ जाता था और वह चालू होता था। ऐसा दस-पंद्रह बार हुआ है, लेकिन हाल ही में यह बंद हो गया है।”

“कोई अन्य घटनाएँ?”

“एक बार शाम ढलते समय कुछ नया हुआ। मैं एक कमरे से दूसरे कमरे में जा रहा था। मैं भोजन कक्ष से गुजर रहा था, और किसी कारणवश मैंने छत की ओर देखा। वहाँ वह रोशनी थी—”

क्या इसका कोई विशेष आकार था?

“नहीं। यह किनारों पर हिल रहा था, लेकिन वास्तव में इसका कोई निश्चित आकार नहीं था। यह कोई ठोस पिंड नहीं था, बल्कि एक रूपरेखा जैसा था। यह मेरे ऊपर तैर रहा था।”

क्या आपने कुछ सुना?

“उस समय तो नहीं। एक बार ऐसा हुआ था। मैं ठीक उसी कुर्सी पर बैठी थी जिस पर मैं अभी बैठी हूँ। मेरी चाची मैरी भी उसी कुर्सी पर बैठी थीं, और हम दोनों ने सिसकियाँ सुनीं। डाकपेटी के पास वाले कोने से भयानक, दुख भरी, दिल दहला देने वाली सिसकियाँ आ रही थीं। सच कहूँ तो, यह बहुत ही दुखद था।”

"क्या ये किसी महिला के सिसकने की आवाज थी?"

"निश्चित रूप से।"

"क्या आपने उस समय कुछ देखा था?"

“नहीं। मुझे बस बहुत दुख हुआ और मेरे रोंगटे खड़े हो गए। साथ ही, इस घर में कभी-कभी हवा चलती है, जब कोई खिड़की खुली नहीं होती।”

क्या कोई ऐसे अनसुलझे मुद्दे हैं जिनकी तर्कसंगत रूप से व्याख्या नहीं की जा सकती?

"अक्सर। नीचे, आमतौर पर यहीं या ऊपर के बेडरूम में, कभी-कभी रसोई में भी।"

"जब आपकी चाची मैरी यहां बैठी थीं और आपने सिसकियां सुनीं, तो क्या उन्होंने भी उन्हें सुना?"

"ओह, उसने ऐसा किया, और मुझे उसे कुछ पीने को देना पड़ा।"

क्या आपने कोई और आवाज सुनी है?

“पैरों की आहट। सीढ़ियों पर ऊपर-नीचे आने-जाने की आहट, जबकि उस समय कोई ऊपर या नीचे नहीं जा रहा था।”

“पुरुष या महिला?”

"मैं कहूंगी कि वे महिलाएं हैं, क्योंकि उनका रंग हल्का होता है। मैंने अपने चेहरे के पास से कुछ चीजों को छूते हुए, अपने गाल को छूते हुए भी महसूस किया है।"

"जब से आप इस घर में आए हैं, क्या आपको कोई असामान्य सपने आए हैं?"

“बिल्कुल। एक बहुत ही महत्वपूर्ण घटना। मैं बिस्तर पर लेटी हुई थी और बस ऊंघ रही थी, तभी मुझे एक दृश्य दिखाई दिया। मैंने ऊपर वाले बाथरूम का एक बहुत ही स्पष्ट दृश्य देखा। मैंने देखा कि पानी से भरे बाथटब से एक हाथ बाहर निकलकर लाइट स्विच की ओर बढ़ रहा है, उस सॉकेट की ओर जहाँ से बिजली चालू और बंद की जाती है। फिर वह तारों के एक दृश्य में बदल गया, और अचानक बिजली का तेज़ झटका उस हाथ पर लगा; हाथ सूखकर मर गया। इससे मैं बहुत परेशान हो गई। अगली सुबह मेरे पति ने कहा, ‘जानती हो, मुझे कल रात एक बहुत ही अजीब सपना आया।’ उन्हें भी ठीक वैसा ही सपना आया था!”

"समान?"

“सचमुच। उसके हिसाब से, हाथ सूखा नहीं, लेकिन उसने उसमें से चिंगारियां निकलते देखीं। मैं बाथरूम में गई और एक इलेक्ट्रीशियन को बुलाने का फैसला किया। उसने पुराना स्विच निकाल दिया। उसने कहा, ‘क्या आपको पता है कि यह गैरकानूनी है? अगर कोई टब में होता

और ऊपर हाथ बढ़ाकर स्विच को छू लेता, तो उसे बिजली का झटका लग जाता!' हमने स्विच को इस तरह से लगाया है कि अब आप उसे बाथरूम में जाने से पहले ही चालू कर सकते हैं। अब आप टब से स्विच तक नहीं पहुंच सकते। जिसने भी मेरी इसमें मदद की, मैं उसकी बहुत आभारी हूं।"

"क्या इस तरह की कोई और बात है जो आप मुझे बताना चाहेंगे?"

"ऊपर वाले कमरे में बच्चों के बेडरूम से मुझे इत्र की बहुत तेज़ खुशबू आ रही है। मैं कमरे में गई। मेरी छोटी बेटी जो वहाँ सोती है, वह इत्र नहीं लगाती। मुझे यह खुशबू सिर्फ मेरी बेटी के बेडरूम में ही आ रही है।"

"क्या कभी कोई आगंतुक इन घटनाओं के बारे में जानकारी के बिना इस घर में आया है और उसने किसी असामान्य बात की शिकायत की है?"

"बेटी नाम की एक दोस्त रसोई में बैठी थी और बोली, 'हे भगवान, काश तुम खिड़कियाँ बंद कर देतीं। यहाँ से बहुत ठंडी हवा आ रही है।' लेकिन सब कुछ कसकर बंद था।"

"क्या आपके पति ने सपने के अलावा कुछ और असामान्य देखा है?"

"एक शाम बेडरूम में उन्होंने कहा, 'अरे, यहाँ तो ठंडी हवा आ रही है!' मैंने कहा, ऐसा हो ही नहीं सकता। सारी खिड़कियाँ बंद थीं।"

"बच्चों का क्या होगा?"

मेरी सबसे छोटी बेटी जेनी ने शिकायत की है कि उसे अपने ऊपर वाले कमरे की कोठरी में पार्टी की आवाजें सुनाई देती हैं। वह कहती है कि लोग उसमें पार्टी कर रहे हैं। वह उनकी आवाजें सुन सकती है।

"यह घर कब बना था?"

मुझे 1929 पर भरोसा है।

"क्या इसे किसी के लिए विशेष रूप से बनवाया गया था?"

"नहीं। इसे इस इलाके के कई घरों की तरह ही बनाया गया था, और फिर बिक्री के लिए रख दिया गया।"

"यहां का पहला किरायेदार कौन था?"

“यह महामंदी का दौर था। इसमें कई किरायेदार बारी-बारी से आते-जाते रहे।”

"जीन हार्लो का इस घर से क्या संबंध था?"

“वह एक छोटे से घर में रहती थी, लेकिन स्टूडियो ने उसे बताया कि उसे बेहतर इलाके में रहना चाहिए। उसने 1930 के दशक की शुरुआत में यह घर किराए पर लिया और अपने माता-पिता के साथ इसमें रहने लगी।”

वह यहां कितने समय तक रही?

लगभग चार साल। हालांकि, उसने इससे भी अधिक समय तक किराया दिया, क्योंकि शादी के बाद उसके माता-पिता इसी घर में रहने लगे। मेरा मानना है कि उसने अपने एजेंट से शादी कर ली थी।

"वह महीला कैसे मरी?"

मुझे पता चला है कि उसकी मौत उसके पति द्वारा की गई पिटाई के कारण हुई, जिससे उसकी किडनी खराब हो गई थी। कहानी यह है कि हनीमून के बाद दूसरी रात को उसके पति ने उसे पीटा। वह घर लौटी, अपनी माँ को बाथरूम में ले गई और उन्हें दिखाया कि उसके पति ने उसके साथ क्या किया था। उसका पूरा शरीर चोट के निशानों से भरा था। उसने उससे सुलह करने की कोशिश की, लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ। जिस रात उसके पति ने आत्महत्या की, वह इसी घर में थी। अफवाह थी कि उसका पति नपुंसक था या छुपकर समलैंगिक था। उसने खुद को गोली मार ली। जब उसे यह खबर मिली, तो वह अपने ऊपर वाले कमरे में थी। उसने आत्महत्या करने की कोशिश की, क्योंकि उसे लगा कि वह खुद इसकी वजह है। उसने नींद की गोलियों का ओवरडोज ले लिया।

“क्या वह सफल हुई?”

“उसने ऐसा नहीं किया। उसके माता-पिता ने उस पर इस घर से बाहर निकलने का दबाव डाला। उसने एक और घर बनवाया और बाद में गुर्दे की बीमारी से उसकी मृत्यु हो गई।”

"मारपीट के तुरंत बाद नहीं?"

“नहीं—कुछ साल बाद। उसके माता-पिता क्रिश्चियन साइंटिस्ट थे, और उस समय उसे सामान्य चिकित्सा सहायता नहीं मिली।”

“तो भावनात्मक रूप से इस घर में क्या घटित हुआ? पॉल बर्न से शादी, उनकी आत्महत्या की खबर, और ऊपर के कमरे में खुद आत्महत्या करने का उनका प्रयास। इनमें से कौन से कमरे विशेष रूप से इन घटनाओं से जुड़े थे?”

“लिविंग रूम। उसकी शादी वहीं हुई थी। और ऊपर वाला बाथरूम। मैंने उसे वैसे ही छोड़ दिया।”

"क्या इस बारे में आपकी कोई राय है?"

मुझे बाथरूम के बारे में कुछ महसूस हो रहा है। मुझे पता है कि वह उस बाथरूम में कई बार गई है। मुझे नहीं पता कि उसने बाथरूम में आत्महत्या करने की कोशिश की या उसने बेडरूम में गोलियां खाईं।

“वास्तव में पिटाई कहाँ हुई थी?”

"उनका कहना है कि यह नीचे वाले बाथरूम में था।"

"आपको यह अजीब सी अनुभूति किस बाथरूम में हो रही है, नीचे वाले में या ऊपर वाले में?"

नीचे।

"घर के सामने या बाहर से संबंधित कोई भी चीज़?"

"जब हमारे घर के सामने कोई नहीं होता, तब भी लोग दस्तक देते हैं; आगंतुक कहते हैं, 'आपके दरवाजे पर कोई है,' जबकि वास्तव में कोई नहीं होता... ऐसा अक्सर होता रहता है।"

"क्या आपको यकीन है कि दूसरे लोग भी दस्तक की आवाज सुन रहे हैं?"

"हाँ।"

"क्या कोई ऐसा कर सकता था और जल्दी में भाग सकता था?"

“नहीं: यह एक अजीब तरह की दस्तक है। थोड़ी कोमल। यह ‘मुझे अंदर आने दो’ वाली दस्तक नहीं है। कोई भी इंसान इस तरह से दरवाजे पर दस्तक नहीं देगा।”

"इस घर में आपको आखिरी बार किसी की मौजूदगी का अहसास कब हुआ था?"

"शायद दो या तीन महीने पहले।"

"क्या आपको लगता है कि वह अभी भी आसपास है?"

“हां। साथ ही, मुझे लगता है कि जिस तरह से उन्हें एक चरित्रहीन और चरित्रहीन महिला के रूप में चित्रित किया गया था, उससे वे बहुत आहत थीं। उनकी जीवनी उन्हें एक ऐसे रूप में प्रस्तुत करती है जो वे वास्तव में नहीं थीं।”

"क्या आपको लगता है कि वह आपके माध्यम से खुद को व्यक्त करने की कोशिश कर रही है?"

नहीं, लेकिन मुझे लगता है कि उन्होंने उसकी प्रतिष्ठा के साथ जो किया है वह बहुत बुरा है। उन्हें ऐसा करने का कोई अधिकार नहीं था।

"क्या आपको लगता है कि वह सच्चाई सामने लाने की कोशिश कर रही है?"

“मैं ऐसा सोच सकती हूँ। मैं खुद को उसकी जगह रखकर ही समझ सकती हूँ। अगर मुझे उन परिस्थितियों में दूसरी दुनिया में जाना पड़ता, तो मैं बहुत दुखी होती। मुझे उम्मीद है कि किसी दिन कोई हार्लो के बारे में एक और किताब लिखेगा और सनसनीखेज तरीके से पैसा कमाने के बजाय संवेदनशील और प्रेमपूर्ण दृष्टिकोण अपनाएगा।”

मैंने श्रीमती एच. को धन्यवाद दिया और उस घर से निकलने की तैयारी की जो कभी जीन हार्लो का घर हुआ करता था। शायद घर की मालकिन दिवंगत फिल्म स्टार के जीवन के भावनात्मक पहलुओं को फिर से जी रही थीं, ठीक वैसे ही जैसे कोई पुरानी फिल्म टीवी पर समय-समय पर दिखाई जाती है। क्या वह मनोमापन के माध्यम से अतीत की इन भावनाओं को महसूस कर रही थीं? या शायद इस घर के वातावरण में जीन हार्लो का कुछ अंश अभी भी मौजूद था? जैसे ही मैं सामने के दरवाजे से बाहर निकलकर उस हल्की गर्म दोपहर में पहुंचा, मैंने श्रीमती एच. की ओर देखा, जो दरवाजे पर खड़ी मुझे अलविदा कह रही थीं। उनके सुनहरे बाल दरवाजे की छाया में बिखरे हुए थे। एक पल के लिए, दिवंगत जीन हार्लो की सुनहरी चमक उनके चेहरे पर झलकती हुई प्रतीत हुई। शायद यह केवल मेरी कल्पना थी, लेकिन अचानक मुझे लगा कि जीन हार्लो ने वास्तव में वह घर नहीं छोड़ा है जहां उनके भावनात्मक जीवन का इतना बड़ा हिस्सा बीता था।

*29

क्या बैरीमोर परिवार अभी भी यहाँ रहता है?

पाउला डेविडसन क्लीवलैंड, ओहियो की एक आकर्षक और अंतर्मुखी महिला हैं, जिन्होंने मनोरंजन जगत में करियर बनाने के लिए लॉस एंजिल्स जाने का फैसला किया। 1969 में वे बेवर्ली हिल्स पहुंचीं और एक प्रमुख विज्ञापन एजेंसी में नौकरी कर ली। नौकरी तो ठीक थी, लेकिन जिस घर में वे रहने आई थीं, उसमें कुछ अजीब बात थी। पहली बात तो यह थी कि वह घर एक परिवार के रहने लायक बहुत बड़ा था, और फिर भी उन्हें बताया गया था कि यह कभी एक ही परिवार का था - लियोनेल बैरीमोर का परिवार। हॉलीवुड की पहाड़ियों पर स्थित यह घर सड़क से देखने पर भ्रामक लगता है। सड़क की तरफ से देखने पर यह केवल दो मंजिला दिखता है, लेकिन घर के पीछे एक गहरी खाई है, जो शायद पांच या छह मंजिला गहरी हो सकती है। यहां तक कि एक निजी केबल कार भी है, जो अब उपयोग में नहीं है। कभी खूबसूरत रहे बगीचे अब जीर्ण-शीर्ण अवस्था में हैं और उपेक्षा का एक दयनीय चित्र प्रस्तुत करते हैं।

कुल मिलाकर, यह घर एक आलीशान हवेली जैसा था और है, जिसमें बैरीमोर जैसी हस्ती सहज महसूस करती। हालांकि बगीचों की वर्षों से उपेक्षा की गई है, लेकिन घर अभी भी चमकीला है, क्योंकि हाल ही में इसकी रंगाई की गई है, और इसकी स्पेनिश सजावट इसके रहस्यमय परिवेश को और भी बढ़ाती है। जब पाउला डेविडसन ने यहाँ रहना शुरू किया, तो घर के मालिक को घर को अपने पास रखने के लिए उसका कुछ हिस्सा किराए पर देना पड़ा था। नौकरों के पूर्व क्वार्टर के एक कमरे को हाइडी को किराए पर दिया गया था, जो फिल्मों के लिए संगीत तैयार करती थीं। उन्हें पहली मंजिल पर स्थित संगीत कक्ष में संगीत का अभ्यास करने की आदत थी। चूंकि दिन के समय घर में सन्नाटा रहता था, क्योंकि सभी लोग काम पर चले जाते थे, इसलिए हाइडी को उस समय अभ्यास करना अच्छा लगता था। खाली घर की खामोशी में उन्हें अक्सर कदमों की आहट सुनाई देती थी, मानो कोई अदृश्य व्यक्ति उनके संगीत को सुन रहा हो। एक बार तो उन्होंने साफ-साफ एक बच्चे के रोने की आवाज सुनी, जबकि घर में कोई बच्चा नहीं था।

मैंने पाउला से इस मामले की जांच करने का वादा किया, और 31 मई, 1969 को वह मुझे कॉन्टिनेंटल होटल से लेने आई ताकि मुझे बैरीमोर हवेली ले जा सके। हमारे साथ एक और दोस्त जिल टैगार्ट भी थी। जिल ने पहले भी मेरे साथ काम किया था। एक लेखिका और अंशकालिक मॉडल, जिल ने कम उम्र में ही ईएसपी प्रतिभाएं प्रदर्शित की थीं और अंतर्ज्ञान और मनोमापन में अद्भुत क्षमताएं दिखाई थीं। मुझे लगा कि उसे ऐसी जगह ले जाना जिसके बारे में उसे कुछ भी पता नहीं था, और निश्चित रूप से उसे यह बताए बिना कि हम कहाँ जा रहे हैं और क्यों, कुछ दिलचस्प परिणाम दे सकता है। इसलिए मैंने अपनी यात्रा के उद्देश्य से संबंधित किसी भी बात पर चर्चा करने से परहेज किया।

जब हम हवेली पहुँचे, तो घर के मालिक ने हमारा हार्दिक स्वागत किया। पाउला, हाइडी, घर की मालकिन और मैं जिल के पीछे-पीछे घर में घूमने लगे, क्योंकि मेरी दोस्त, जो एक मानसिक शक्ति वाली महिला थी, घर को समझने की कोशिश कर रही थी। दुर्भाग्य से, हमने ऐसी शाम चुनी थी जब घर के कुछ अन्य किराएदार पार्टी कर रहे थे। हमारे पहुँचने पर हमें हॉलीवुड हिल्स की शांत रात का माहौल नहीं मिला, बल्कि तहखाने के एक कमरे में ज्यूकबॉक्स की तेज़ आवाज़ और कई लोगों के पैरों की धमक सुनाई दी।

मैंने इससे बदतर हालात में कभी काम नहीं किया। हालाँकि, इन परिस्थितियों में हमारे पास जो कुछ भी मिल सकता था, उसे पाने की कोशिश करने के अलावा कोई चारा नहीं था। घर में प्रवेश करने से पहले ही जिल ने कहा कि उसे दो लोग, एक पुरुष और एक महिला, वातावरण में लटके हुए महसूस हो रहे हैं, और उसे ऐसा लग रहा था कि कोई हमें देख रहा है। फिर उसने कहा, "उसकी मृत्यु उसके बहुत समय बाद हुई।" मैंने उससे उन आत्माओं के बारे में और पूछा जिन्हें वह महसूस कर रही थी। "वह बूढ़ी है; वह जवान है। वह तीस के आसपास रहा होगा; वह उससे काफी बड़ी है। मुझे उसकी याद आती है। शायद केवल उसकी ही याद, लेकिन जो भी आत्मा यहाँ है, वह इस समय बहुत गुस्से में है।" नीचे बज रहे संगीत के शोर के कारण मैं भूत को गुस्से में होने के लिए दोष नहीं दे सकता था। फिर जिल ने घर के एक कोने की ओर इशारा करते हुए कहा, "मुझे ऊपर वाला घर का कोना बार-बार दिखाई देता है।"

बाद में मुझे पता चला कि ऊपर वाला कमरा एक तरह का बॉलरूम था जिसमें एक बालकनी भी थी। उसमें हाइडी को अक्सर टेलीफोन की घंटी सुनाई देती थी, लेकिन घर का वह हिस्सा

अकेला नहीं था जहाँ एक अदृश्य टेलीफोन बजता रहता था। हाइडी ने बताया, “मैं नीचे वाले कमरे में, ठीक उस जगह के बगल में जहाँ अब शोर होता है, संगीत का अभ्यास करती थी, लेकिन मुझे बार-बार रुकना पड़ता था, यह सोचकर कि टेलीफोन की घंटी बज रही है। बेशक वहाँ कोई टेलीफोन नहीं था।” मैंने हाइडी को एक तरफ ले जाकर उसकी बातें जिल को सुनाई नहीं दीं। वैसे भी जिल को इसमें कोई दिलचस्पी नहीं होती, क्योंकि वह अब घर के अध्ययन में मग्न थी, सीढ़ियों पर ऊपर-नीचे चल रही थी, और जिज्ञासु भाव से कमरों में झाँक रही थी।

मैंने हेइडी से पूछा, "मुझे बताओ, इस घर में तुमने और क्या-क्या अनुभव किया?"

"अक्सर जब मैं उस कमरे में पियानो बजा रहा होता था, तो मुझे सीढ़ियों पर लोगों के चलने की आवाज सुनाई देती थी; यह दिन के किसी भी समय होता था, और ऊपर कभी कोई नहीं होता था।"

जिल अब हमारे पास से गुज़र रही थी। उसने कहा, “मुझे एक नाम याद आया। ग्रेस—और फिर कुछ ऐसा है जो ह्यूजेन जैसा लगता है।” मैंने घर के मालिक की तरफ देखा। जिल फिर से दूर जा चुकी थी। मालिक ने कंधे उचकाते हुए कहा, “हमसे पहले इस घर में रहने वाले लोग आर्टी एरिन थे।”

मैंने पूछा, "क्या इस घर में कभी किसी की हिंसा से मौत हुई है?"

मैंने कुछ अफवाहें सुनी हैं, जिनका संबंध केबल कार से है, लेकिन मुझे पक्का पता नहीं है।

हम सब जंग और गंदगी से ढकी, लंबे समय से बंद पड़ी केबल कार के पास गए। जिल ने उस पर हाथ रखकर यह जानने की कोशिश की कि क्या उसे उससे कोई मनोवैज्ञानिक प्रतिक्रिया मिलती है। "मुझे कहना चाहिए कि इस केबल कार को बहुत प्यार मिला है और इसका खूब आनंद लिया गया है।" फिर उसके चेहरे के भाव एकदम भयभीत हो गए। उसने झट से अपने हाथ केबल कार से हटा लिए।

“क्या बात है, जिल?” मैंने पूछा।

"कोई व्यक्ति केबल कार से पहाड़ी से तेज़ी से नीचे आया। बाद में वह पुली के पास यहाँ पहुँच गया।"

हम खाई के तल तक गए, जहाँ एक शानदार स्विमिंग पूल था। पूल अभी भी चालू हालत में था, और उसके दूसरी तरफ एक पूल हाउस बना हुआ था। यहाँ संगीत की आवाज़ काफी कम हो गई थी, और आवाज़ साफ़ सुनाई दे रही थी। जिल पर अब इस जगह का गहरा प्रभाव पड़ चुका था, और मैंने उससे पूछा कि उसे यह जगह कैसी लगी।

“मुझे लगता है कि यहाँ कभी एक बहुत ही क्रूर आदमी रहता था, लेकिन मुझे नहीं लगता कि उसका मेरे पहले वाले नाम ग्रेस से कोई संबंध है। यह शायद किसी और समय की बात हो। हाँ, उसके पास कुछ कुत्ते थे, जैसे मास्टिफ़ नस्ल के। मुझे लगता है कि दो या शायद तीन थे। वे खूंखार कुत्ते थे, जिन्हें खूंखार होने के लिए प्रशिक्षित किया गया था।”

“इस आदमी ने क्या किया?”

“मैं उन्हें एक खिलाड़ी के रूप में देखता हूँ, जो बोलने में माहिर हैं। इस व्यक्ति से जुड़े दो युवा भी थे, एक लड़का और एक लड़की। मैं उन्हें हँसते-खेलते और किशोरवस्था में यहाँ खूब मज़े करते देखता हूँ। ऐसा लगता है कि उन्हें यह सब पसंद नहीं है, लेकिन वे इसे बर्दाश्त कर रहे हैं। लेकिन कुत्तों ने उनके जीवन में बहुत बड़ी भूमिका निभाई है। उन कुत्तों की वजह से कोई भी उनकी अनुमति के बिना उनकी संपत्ति में प्रवेश करने की हिम्मत नहीं करता था। मुझे लगता है कि अनुमति शायद ही कभी दी जाती थी, सिवाय किसी खास मकसद के। इस घर पर उनका सबसे गहरा प्रभाव रहा है, लेकिन मुझे नहीं लगता कि वे इसके पहले मालिक थे।”

"क्या आपको लगता है कि इस घर से किसी जाने-माने व्यक्ति का संबंध था?"

“हां। वास्तव में एक से अधिक जाने-माने व्यक्ति।” मैंने जिल से उस व्यक्तित्व का वर्णन करने के लिए कहा जो उसे घर के वातावरण में सबसे अधिक प्रभावशाली लगा।

“मैं एक ऐसे व्यक्ति को देखता हूँ जिसकी छोटी मूंछें हैं, काले, कम होते बाल हैं, वह बेहद घमंडी है और उसकी नाक बाज जैसी है। उसकी भूरी आँखें हैं; उनके नीचे काले घेरे हैं। वह शराब या भोजन के अधिक सेवन से क्षीण नहीं दिखता, बल्कि अपनी ही अतिशयताओं से क्षीण दिखता है। यानी, अपने ही मन की अतिशयताओं से। वह खुद को बाज जैसी तेज नज़र वाला मानता है और इसलिए बाज जैसी नज़रें दिखाता है। मुझे यह भी संदेह है कि उसे निकट दृष्टि दोष है। मैं उसे अक्सर स्मोकिंग जैकेट पहने देखता हूँ। खासकर एक गहरे लाल रंग की जैकेट।”

यह वर्णन और भी अधिक दिलचस्प होता जा रहा था। उसे क्या लगता था कि वह आदमी कौन सा पेशा करता होगा?

“मैंने उसे हाथ में माइक्रोफोन, सिगरेट और गिलास लिए देखा। वह एक अभिनेता हो सकता है या निर्देशक भी हो सकता है।”

मैंने जिल से पूछा कि क्या यह आदमी घर का मालिक है या सिर्फ एक आगंतुक है।

यह सवाल उसे उलझन में डालता हुआ प्रतीत हुआ। “वह शायद आगंतुक हो, लेकिन मैं उसे यहाँ इतनी बार देखती हूँ कि लगता है वह यहीं रह रहा है। जिन युवकों का मैंने पहले वर्णन किया था, वे शायद घर के मालिक के हों।”

मुझे आश्चर्य हुआ कि क्या मैरून जैकेट पहने वह आदमी घर में मौजूद परेशान करने वाली शक्तियों में से एक था।

जिल ने सिर हिलाया। “मुझे लगता है कि यह आदमी अब भी उतना ही सचेत है जितना कि जीवित रहते हुए था। मुझे लगता है कि वह अभी भी यहीं है।”

क्या आपको उसका नाम पता है?

"मुझे 'एस' अक्षर समझ में आता है, लेकिन ऐसा इसलिए है क्योंकि वह मुझे सल्वाडोर डाली की बहुत याद दिलाता है।"

"और कुछ?"

“हाँ, उससे एक L जुड़ा हुआ है। L का मतलब Lay, Lee या Leigh जैसा कोई नाम हो सकता है। और हाँ, एक और बात है। एक रॉयल टाइपराइटर उसके लिए महत्वपूर्ण है। मुझे नहीं पता कि यह उसके लिए इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि वह पत्र लिखता है या किसी और वजह से, लेकिन रॉयल उसके लिए महत्वपूर्ण है।”

मैं घर के मालिक की ओर मुड़ने ही वाला था कि जिल ने अचानक हाथ उठाकर बालकनी की ओर इशारा किया। “ऊपर बैठी वो औरत—बिल्कुल घर की मालकिन की तरह बर्ताव कर रही है। मुझे लगता है वो ग्रेस है।” चूंकि हममें से कोई भी उस औरत को देख नहीं पा रहा था, इसलिए मैंने जिल से पूछा कि उसने क्या देखा।

“वह साठ वर्ष की एक महिला हैं, जिनके बाल भूरे या सफेद हैं। और वे बहुत करीने से संवारे हुए हैं। वह बेहद आकर्षक हैं—पतली और लंबी—और उन्होंने एक लंबी, बहने वाली पोशाक पहनी है जिसमें जगह-जगह सिलवटें हैं। ऐसा लगता है कि वह हमेशा अपना हाथ उठाती रहती हैं, बहुत नाटकीय ढंग से, जैसे कोई अभिनेत्री हो।”

मैंने जिल को उसके काम के लिए धन्यवाद दिया और घर की मालकिन मैरी की ओर मुड़ी। यह सारी जानकारी उसके घर के इतिहास के बारे में उसकी जानकारी से कितनी मेल खाती है—उदाहरण के लिए, जब घर में कोई टेलीफोन नहीं था तब भी लगातार बजते टेलीफोनों का झंझट?

“एक समय यह घर जुआरियों के एक समूह के स्वामित्व में था। उनके पास पूरे घर में ढेर सारे टेलीफोन थे। यह बात कई साल पुरानी है।”

“इस ग्रेस के बारे में क्या?”

"यह नाम मुझे जाना-पहचाना सा लग रहा है, लेकिन मुझे याद नहीं आ रहा कि यह किसका नाम है।"

और वो बच्ची हाइडी की आवाजें लगातार सुनाई दे रही हैं?

"जी हां, यह घर पहले अभिनेता लियोनेल बैरीमोर का था। उनके और उनकी पत्नी के दो बच्चे थे जिनकी आग में मौत हो गई थी, हालांकि आग इस घर में नहीं लगी थी।"

ऐसा लगता है कि यह घर लियोनेल बैरीमोर के स्वामित्व में था, जबकि उनके भाई जॉन पास ही टॉवर रोड पर रहते थे। इस प्रकार जॉन अक्सर इस घर में आ-जा सकते थे। जिल ने एक ऐसे व्यक्ति के बारे में बताया था जिसे उसने दिव्य दृष्टि से देखा था और जो उसे सल्वाडोर डाली की याद दिलाता था। हम सभी इस बात से सहमत थे कि यह स्वर्गीय जॉन बैरीमोर का काफी सटीक वर्णन था। जिल ने ली या लेह या इसी तरह के किसी नाम का भी जिक्र किया था। शायद वह लियोनेल की ओर इशारा कर रही थी।

मुझे 'शाही' शब्द का ज़िक्र विशेष रूप से दिलचस्प लगा। एक ओर, बैरीमोर परिवार को अक्सर रंगमंच का शाही परिवार कहा जाता था। दूसरी ओर, अगर टाइपराइटर की बात हो रही है, तो यह ध्यान रखना ज़रूरी है कि जॉन बैरीमोर अपने जीवन के अंतिम वर्षों में अपनी आत्मकथा पर काम कर रहे थे, हालाँकि वे इसे कभी पूरा नहीं कर पाए। फिर भी, इसे पूरा

करने का विचार उनके मन में हमेशा बना रहता था। जहाँ तक जिल को घर के आसपास मौजूद किशोरों की बात है, तो उनके दोनों बच्चे, डायना और जॉन जूनियर, किशोरावस्था में अक्सर घर आते-जाते रहते थे। हालाँकि, जॉन बैरीमोर को बच्चे बिल्कुल पसंद नहीं थे; वे बस उन्हें बर्दाश्त करते थे।

मैंने मैरी से पूछा (जो हमारे आने से एक साल पहले से यहां रह रही थी) कि क्या उसने कभी कुछ अजीबोगरीब देखा या सुना है।

नहीं, लेकिन मुझे किसी की उपस्थिति का अहसास हो रहा है।

इस घर में कुल बारह कमरे हैं, लेकिन स्थानीय परंपरा के अनुसार, नीचे के तीन कमरे कुछ समय बाद जोड़े गए थे। "क्या आपकी जानकारी में इस घर में कभी कोई दुखद घटना घटी है?"

“एक आदमी उन सीढ़ियों से सिर के बल गिर गया और उसकी मौत हो गई। लेकिन यह एक दुर्घटना थी।”

स्पष्टतः, बैरीमोर परिवार के रहने से पहले और बाद में भी कई वर्षों तक इस घर में लोग रहते रहे थे। यह स्वाभाविक ही था कि अन्य भावनात्मक घटनाओं ने भी इस पुराने घर के वातावरण पर अपनी छाप छोड़ी होगी। इन सबके बावजूद, जिल जॉन और लियोनेल बैरीमोर दोनों के व्यक्तित्व को पहचान पाईं और शायद बहन एथेल को भी, यदि वह ग्रे रंग के वस्त्र वाली महिला थीं। हमने आगे की पुष्टि के लिए अभिलेख कक्ष में छानबीन करने का पक्का वादा करके घर छोड़ा।

दो सप्ताह बाद मुझे पाउला डेविडसन का पत्र मिला। वह अपने एक मित्र, निर्देशक विलियम ब्यूडाइन सीनियर के साथ दोपहर का भोजन कर रही थीं, जो जॉन और लियोनेल बैरीमोर दोनों से अच्छी तरह परिचित थे। पाउला ने जिल और मेरे साथ उस घर में हुए अपने अनुभव और जिल द्वारा घर में महसूस की गई किसी अलौकिक शक्ति के वर्णन का जिक्र किया। जब उन्होंने खूंखार कुत्तों का जिक्र किया, तो श्री ब्यूडाइन ने कहा कि उन्हें अच्छी तरह याद है कि जॉन ने कुछ ग्रेट डेन नस्ल के कुत्ते पाल रखे थे। हो सकता है कि वे वही खूंखार कुत्ते हों जिनका वर्णन जिल ने किया था।

तब से पाउला डेविडसन समिट रिज स्थित घर से चली गई हैं। दूसरे लोग वहां रहने आ गए हैं, लेकिन घर में चल रही गतिविधियों के बारे में मुझे कोई और जानकारी नहीं मिली है। अगर हमारी यात्रा के दौरान हमने जो शोरगुल वाली पार्टी देखी, उससे घर के मौजूदा माहौल का अंदाजा लगाया जाए, तो बैरीमोर परिवार का वहां आना लगभग नामुमकिन है। क्योंकि थिएटर जगत के इस शाही परिवार को अगर कोई चीज नापसंद थी, तो वो थी शोरगुल वाली प्रतिस्पर्धा।

*30

दिवंगत क्लिफ्टन वेब के नवीनतम कारनामे

जब मैं बीस साल का था, तब क्लिफ्टन वेब पर्दे पर सबसे मज़ेदार अभिनेताओं में से एक थे। कम से कम मेरे लिए, वे अंग्रेज़ी शिष्टता और हास्य-विनोद की मिसाल थे। बाद में मुझे पता चला कि मिस्टर वेब मिडवेस्ट से थे और उनका अंग्रेज़ी लहजा और व्यवहार पूरी तरह से मंच पर ही विकसित हुआ था। इस देश में शायद ही कोई ऐसा हो जो मिस्टर बेल्वेडेरे, एक गंभीर चेहरे वाले बेबीसिटर के रूप में उनकी हरकतों को या उनकी अन्य कई भूमिकाओं को न जानता हो, जिनमें उन्होंने एक शांत लेकिन कभी-कभी विस्फोटक चरित्र को चित्रित किया था, जिसमें क्लिफ्टन वेब का व्यक्तित्व समाहित था। मैंने उन्हें न्यूयॉर्क के मंच पर नोएल कॉवर्ड के एक नाटक में देखा था, और असल में उन्होंने ठीक वैसे ही अभिनय किया जैसे उन्होंने पर्दे पर किया था: शांत, गंभीर चेहरे वाले, और तीखे व्यंग्यात्मक हास्य के साथ।

अपनी फिल्म 'मिस्टर बेल्वेडेरे' और उस पर आधारित कई फिल्मों की सफलता के साथ, वेब को आर्थिक रूप से काफी स्थिरता मिली और परिणामस्वरूप उन्होंने फिल्म उद्योग में अपनी हैसियत के अनुरूप घर की तलाश शुरू की। उनकी नज़र बेवर्ली हिल्स के एक शांत इलाके में स्थित एक सफेद प्लास्टर वाली इमारत पर पड़ी। व्यस्त सनसेट बुलेवार्ड से कुछ ही दूरी पर एक गली से थोड़ा हटकर बने इस घर में सड़क के समानांतर एक स्पेनिश शैली का हिस्सा था, जिससे घर के पिछले हिस्से की ओर एक छोटा हिस्सा जुड़ा हुआ था, जिससे एक बंद आंगन बन गया था - यह भी स्पेनिश शैली में ही था। यह घर पहले भी और आज भी इसी तरह की इमारतों से घिरा हुआ है, जो सभी बेवर्ली हिल्स के धनी लोगों की हैं। इसके कई प्रतिष्ठित

मालिक रह चुके हैं। गायिका ग्रेस मूर ने अपने जीवन के कुछ सबसे सुखद वर्ष यहीं बिताए। बाद में, अभिनेता जीन लॉकहार्ट भी यहीं रहे, और उनकी बेटी जून, जो काफी मानसिक रूप से संवेदनशील हैं, ने उस समय यहां कई अलौकिक अनुभव किए। स्वयं क्लिफ्टन वेब का भी अलौकिक दुनिया से गहरा संबंध था। उन्होंने पेशेवर ज्योतिषी केनी किंग्सले से दोस्ती की और कई बार उन्हें बताया कि उन्होंने अपने घर में ग्रेस मूर की आत्मा देखी है। जाहिर है, दिवंगत गायिका की बेचैन आत्मा क्लिफ्टन वेब और उनकी मां मेबेल के घर में रहने के दौरान भी वहीं मौजूद रही। क्योंकि मुझे लगता है कि "नाचती हुई महिला की आकृति", जिसे घर की वर्तमान मालकिन ने कथित तौर पर देखा है, क्लिफ्टन वेब के समय से नहीं बल्कि ग्रेस मूर के समय से जुड़ी है।

क्लिफ्टन वेब इस घर में बेहद खुश थे। अपने फिल्मी करियर के चरम पर, दोस्तों से घिरे हुए, उन्होंने अपने युवावस्था के उन कठिन वर्षों की भरपाई कर ली थी जब उन्हें जीवनयापन के लिए संघर्ष करना पड़ा था। 1959 में उनकी माँ का देहांत हो गया, जिससे उनके बीच का घनिष्ठ और कभी-कभी बेहद गहरा रिश्ता समाप्त हो गया। वेब ने कभी शादी नहीं की थी, और न ही वे ऐसा करना चाहते थे। उनके विचार कभी भी दुनिया से छिपे नहीं थे, और वे परिस्थितियों को यथावत बनाए रखने में पूरी तरह संतुष्ट थे। अपनी माँ की मृत्यु के बाद, वेब और भी अधिक एकांतप्रिय हो गए। अर्ध-सेवानिवृत्ति में, वे अधिकांश समय अपने घर में ही रहते थे, और जैसे-जैसे वर्ष बीतते गए, उनके दोस्तों से मिलना कम होता गया। अक्टूबर 1966 के मध्य में, अपनी माँ की मृत्यु के लगभग आठ साल बाद, उनका भी देहांत हो गया। उन आठ वर्षों के दौरान, संभवतः उनका मेबेल के साथ संबंध बना रहा, क्योंकि क्लिफ्टन वेब में भविष्य देखने की क्षमता थी और वे मृत्यु के बाद जीवन में विश्वास करते थे। मेबेल के कपड़े और सामान क्लिफ्टन की मृत्यु तक घर के एक बंद कमरे में ही रखे रहे।

इस घर में बीस साल रहने के दौरान, वेब ने इसमें कुछ बदलाव किए और एक कमरा बनवाया जिसे उन्होंने 'ग्रीक रूम' नाम दिया। उन्होंने इसे अपनी पसंद के अनुसार सजाया-संवारा था, इस बात का खास ध्यान रखते हुए कि सब कुछ ठीक वैसा ही हो जैसा वे चाहते थे। जनवरी 1967 के मध्य तक यह घर बिक्री के लिए बाजार में आ गया। इस घर की उपलब्धता की खबर हॉलीवुड के एक बड़े फिल्म स्टूडियो के एक निर्माता तक पहुंची। वह और उनकी

लेखिका पत्नी ठीक ऐसे ही घर की तलाश में थे। कुछ ही दिनों में उन्होंने इसे खरीद लिया और रहने की तैयारी करने लगे। घर की सजावट और कुछ बदलाव करने की जरूरत के कारण, सी. दंपति मई तक इसमें नहीं जा पाए। अपने रहने से दो दिन पहले, वे एक दोस्त को घर दिखा रहे थे। जब वे घर के दूसरे हिस्से में व्यस्त थे, तो वह सज्जन खुद को ग्रीक रूम में अकेला पाया। उन्होंने कॉन्टैक्ट लेंस पहने हुए थे और उस समय उन्हें अपने लेंस साफ करने की जरूरत महसूस हुई। ग्रीक रूम से लगा हुआ एक बाथरूम है, जो ग्रे रंग से सजा हुआ है। वह बाथरूम में गया, कॉन्टैक्ट लेंस को शेल्फ पर रखा और पानी का नल चालू कर दिया। जब उसने सिंक से अपना सिर उठाया तो लेंस वहाँ नहीं थे। उसने हर जगह खोजा लेकिन उन्हें नहीं पाया, और वे कभी नहीं मिले।

घर के नए मालिकों ने इस बात पर ध्यान नहीं दिया, लेकिन कुछ ही समय बाद एक ऐसी घटना घटी जिसने उनके भरोसे को हिला दिया। घर में रहने की पहली रात, श्री सी. की माँ संयोगवश ग्रीक कमरे में ठहरी हुई थीं। बाथरूम से अपरिचित होने के कारण, उन्हें न तो टूथब्रश रखने की जगह मिली और न ही गिलास। इसलिए उन्होंने अपना टूथब्रश सिंक पर ही छोड़ दिया। अगली सुबह जब वह बाथरूम में गईं तो उन्होंने देखा कि दीवार पर लगा टूथब्रश रखने का डिब्बा खुला हुआ था और उनका टूथब्रश उसमें मजबूती से रखा हुआ था। चूंकि रात भर कमरे में उनके अलावा कोई नहीं था, इसलिए वह डर गईं और कमरे से भागने की कोशिश की। उन्हें आश्चर्य हुआ कि दरवाजा बंद था और खुल नहीं रहा था। घबराहट में, वह खिड़की से बाहर भाग गईं। बाद में, शांत होने पर, वह कमरे में लौट आईं।

अगली सुबह जब वह बिस्तर पर उठी तो उसने देखा कि उसकी सिगरेटें आधी टूटी हुई थीं, तंबाकू पूरे बिस्तर पर बिखरा हुआ था और पैकेट कुचला हुआ था। तब श्रीमान और श्रीमती सी. को याद आया कि स्वर्गीय क्लिफ्टन वेब अपने अंतिम वर्षों में धूम्रपान के घोर विरोधी थे।

उस रात कुछ देर पहले श्रीमान और श्रीमती सी. तथा श्रीमान सी. की माताजी आंगन में बने पूल के पास खड़े थे। तीनों मुख्य शयनकक्ष से होते हुए घर की ओर देख रहे थे, जो उस समय श्रीमती सी. का स्नानघर था। अचानक उन्हें एक प्रेत जैसी हिलती-डुलती आकृति दिखाई दी, जो कुछ-कुछ पौराणिक अलौकिक भूत जैसी लग रही थी। उन्होंने अपनी आँखें मलकर दोबारा देखा, लेकिन वह आकृति गायब हो चुकी थी।

अगले कुछ हफ्तों में, सी.एस. द्वारा कई और प्रेत देखे गए। घर के सामने वाले आंगन में उन्हें हमेशा वही लंबे, धूसर, धुंधले, लेकिन कुछ ठोस आकार दिखाई देते थे। उनके मन में कोई संदेह नहीं था कि वे मानव आकृतियाँ देख रहे थे।

जुलाई के अंत में, श्रीमती सी. एक रात लगभग आधी रात को घर लौट रही थीं। आंगन में कदम रखते ही उन्होंने बैठक में सोफे के बाईं ओर एक रेतघड़ी जैसी आकृति देखी (इस बार बिल्कुल स्थिर)। आखिरकार उन्होंने हिम्मत जुटाकर पास जाने का फैसला किया; जैसे ही वह पास गईं, वह आकृति तब तक स्थिर रही जब तक कि वह धीरे-धीरे गायब नहीं हो गई।

शुरुआती कुछ हफ्तों के दौरान घर के जानवर अजीबोगरीब व्यवहार कर रहे थे। सी.एस. के पास कई बिल्लियाँ और कुत्ते थे, और जब भी वे घर के कुछ खास हिस्सों में जाते, तो वे डर के मारे चीखते और भाग जाते। एक कुत्ता तो कितना भी मनाने पर भी ग्रीक कमरे में नहीं जाता था। इसके बजाय वह उस कमरे पर भौंकता और उसके बाल खड़े हो जाते थे।

यहां तक कि मुख्य शयनकक्ष भी विचित्र घटनाओं से अछूता नहीं था। अक्सर सी.एस. आधी रात को पर्दों की सरसराहट की आवाज से जाग जाते और कमरे के कोने में किसी आकृति को खड़े होकर उन्हें देखते हुए पाते।

शुरुआत में निर्माता और उनकी पत्नी को लगा कि कहीं उनकी कल्पना और घर के इतिहास की जानकारी ही उनके मन में भ्रम पैदा तो नहीं कर रही है। लेकिन जब उन्होंने एक डिनर पार्टी दी और कई मेहमानों को घर दिखाया, तो उनके संदेह दूर हो गए। उनका एक दोस्त, जो खुद भी निर्माता था और सी.एस. के साथ रह रहा था, मास्टर बेडरूम से हॉलवे की ओर चलते हुए अचानक रुक गया। उस हॉलवे का इस्तेमाल उस समय मिस्टर सी. के स्टडी रूम के रूप में किया जा रहा था। उसने दावा किया कि उसे किसी ठंडी चीज ने घेर लिया है। चूंकि वह मतिभ्रम का शिकार नहीं था और तंत्र-मंत्र में उसकी कोई दिलचस्पी नहीं थी, इसलिए सी.एस. ने उसकी बात को गंभीरता से लिया। उस समय निर्माता के पास दो नौकर थे, एक मैक्सिकन नौकरानी और एक बटलर जो घर के पीछे बने एक कॉटेज में सोते थे। नौकरानी ने कई बार दावा किया कि किसी ठंडी शक्ति ने उस पर हमला किया है और बत्तियाँ बिना किसी कारण के अपने आप जलती-बुझती रहती हैं। इससे वह बहुत डर गई थी और जानना चाहती थी कि

आखिर क्या हो रहा है। निर्माता केवल अपना सिर हिलाकर बोला कि काश उसे खुद पता होता।

ग्रीक कमरा गतिविधियों का केंद्र प्रतीत होता था। खासकर ग्रीक कमरे में ठहरने वाली महिलाओं की निजी वस्तुएँ अक्सर इधर-उधर हो जाती थीं। श्री सी. की बहन, जो एक बड़ी संशयवादी थीं, उनसे मिलने आईं और उन्हें उसी कमरे में ठहराया गया। अपने ठहरने की तीसरी रात, भोर होते-होते वह जाग उठीं और उन्हें अपने पीछे से एक गर्म, आलिंगन का आलिंगन महसूस हुआ। वह चीख पड़ीं, बिस्तर से कूद गईं और बत्ती जला दी। कमरे में कोई नहीं था। उस कमरे से सटे बाथरूम में भी कई अजीबोगरीब घटनाएँ घटीं। उसमें रखा टॉयलेट पेपर कई बार अपने आप खुल जाता था। इससे भी अधिक आश्चर्यजनक बात यह थी कि रात के दौरान कई बार अज्ञात लोगों ने टॉयलेट का इस्तेमाल किया था और उसे फ्लश नहीं किया था, जबकि बाथरूम में कोई इंसान मौजूद नहीं था।

सितंबर में श्रीमती सी. ने लेखिका के रूप में अतिरिक्त जिम्मेदारियाँ संभालीं और एक सचिव और सहायक को काम पर रखा जो उनके साथ घर में काम करते थे। लेकिन ऐसा प्रतीत हुआ जैसे "कोई" इन व्यवस्थाओं से खुश नहीं था। पूरी सर्दी भर, उनके कार्यालय से चीजें गायब होती रहीं या इधर-उधर होती रहीं। उनकी सगाई की तारीख का कैलेंडर ग्रीक रूम में मिलता था, और उनके कार्यालय में अलमारियों में रखी कुछ फाइलें गायब हो जाती थीं और घर के अन्य हिस्सों में मिलती थीं, जबकि उन्हें वहाँ किसी ने नहीं रखा था। ऐसा प्रतीत हुआ कि कोई उनके पेशेवर जीवन में गड़बड़ी कर रहा था, शायद उन्हें हतोत्साहित करने के लिए या शायद सिर्फ एक शरारत करने के लिए ताकि घर के नए मालिकों को यह पता चल जाए कि पिछला निवासी पूरी तरह से घर छोड़कर नहीं गया था।

सबसे बुरा तो अभी आना बाकी था। अक्टूबर में एक ऐसी घटना घटी जिसे सी. परिवार कभी नहीं भूल पाएगा। उस पूरी शाम कुत्ता घर में बेतहाशा भौंकता और इधर-उधर भागता रहा, मानो किसी भयानक घटना का आभास कर रहा हो। कुछ ऐसी आवाजें सुनाई दे रही थीं जिनका कोई स्वाभाविक कारण समझ में नहीं आ रहा था। फिर, आधी रात को, श्रीमान और श्रीमती सी. दोनों को कुछ अजीब आवाजें सुनाई दीं, जिससे उनकी नींद खुल गई। उनके

शयनकक्ष में कोई कराह रहा था, और जब उन्होंने ऊपर देखा तो कमरे के कोने में एक धूसर आकृति बनती हुई दिखाई दी।

अगली सुबह उन्हें एहसास हुआ कि वे ठीक उसी रात से गुज़रे थे जिस रात क्लिफ्टन वेब की मृत्यु हुई थी, ठीक एक साल पहले उसी दिन। उन्होंने जो सुना वह उस भयानक क्षण का पुनर्मंचन था। उसके बाद से कराहने की आवाज़ कम होती हुई प्रतीत हुई।

हालाँकि श्रीमान और श्रीमती सी. दोनों ही तंत्र-मंत्र में पूरी तरह विश्वास नहीं करते थे, फिर भी वे इतने खुले विचारों वाले थे कि उन्हें यह एहसास हो गया था कि उनके घर में कुछ तो गड़बड़ है। अब तक वे जान चुके थे कि पिछले मालिक, संभवतः क्लिफ्टन वेब, उनके घर में रहने से नाखुश थे। हालाँकि, उन्हें इसका कारण समझ नहीं आ रहा था। यह सच था कि उन्होंने घर में कुछ बदलाव किए थे; उन्होंने फर्नीचर को फिर से व्यवस्थित किया था और ग्रीक कमरे को अतिथि कक्ष के रूप में इस्तेमाल किया था। उन्होंने बगीचे और आंगन में भी कुछ बदलाव किए थे, खासकर गुलाब की झाड़ियों के आसपास, जो श्रीमान वेब को बहुत पसंद थीं। लेकिन क्या श्रीमान वेब के लिए उन्हें घर से बाहर निकालने का यह पर्याप्त कारण था?

जनवरी 1968 में, अचानक एक रियल एस्टेट एजेंट ने उनसे संपर्क किया। वह एक ऐसे दंपति की ओर से था जो उस घर के पास से एक बार गुजरे थे और उसे खरीदने में तुरंत दिलचस्पी दिखाने लगे थे। सी. दंपति का घर बेचने का कोई इरादा नहीं था, इसलिए उन्होंने बहुत ऊंची कीमत लगा दी, यह सोचकर कि इससे मामला खत्म हो जाएगा। लेकिन उन्हें आश्चर्य हुआ कि दंपति फिर भी घर खरीदना चाहते थे। तब सी. दंपति ने पुनर्विचार किया और दूसरा घर ढूंढने का फैसला किया। लेकिन उन्हें पता चला कि वैसे ही घरों की कीमतें इतनी बढ़ गई थीं कि उनके लिए वहीं रहना बेहतर होता, और कुछ बातचीत के बाद उन्होंने प्रस्ताव ठुकरा दिया।

उसी रात श्रीमती सी. सुबह 3:30 बजे मुख्य शयनकक्ष के पर्दों में सरसराहट की आवाज़ से जाग उठीं। उन्होंने शोर की ओर देखा तो उन्हें कमरे में एक अलौकिक आकृति आती-जाती दिखाई दी। जब वह अविश्वास से उसे घूर रही थीं, तभी उन्हें एक आवाज़ सुनाई दी जो बार-बार कह रही थी, "वाह, वाह!" यह एक मंद गूंज की तरह थी और धीरे-धीरे उस आकृति के साथ गायब हो गई। कई दिनों तक श्रीमती सी. ने उसी आकृति को देखा और उस आवाज़ को मजे लेते हुए सुना, "वाह, वाह, वाह, वाह!" उसी समय, उन्हें यह आभास हुआ कि भूत अब

उनके प्रति शत्रुतापूर्ण नहीं है और वह उन्हें और उनके पति को यह बताना चाहता है कि उन्हें उनके घर में रहने से कोई आपत्ति नहीं है।

अब तक श्रीमती सी. को पूरा यकीन हो चुका था कि वह भूत क्लिफ्टन वेब ही था। उन्होंने एक अन्य निर्माता, एफ. एम. से संपर्क किया, जो अभिनेताओं के घनिष्ठ मित्र थे, ताकि उनसे वेब के बारे में कुछ निजी सवाल पूछ सकें। जब उन्होंने बताया कि भूत बार-बार "वाह, वाह, वाह, वाह" कह रहा था, तो श्री एम. ने टिप्पणी की कि वेब को अक्सर "वाह, वाह" कहने की आदत थी, कभी-कभी बिना किसी स्पष्ट कारण के भी। इससे श्रीमती सी. को लगा कि भूत की पहचान पक्की हो गई है।

उस रात वह फिर से इस एहसास से जाग उठी कि वह अकेली नहीं है। उसने ऊपर देखा और एक आदमी की परछाई देखी। इस बार वह साफ़ तौर पर क्लिफ्टन वेब थे। वह आँगन में, बेडरूम की खिड़की के ठीक बाहर खड़े थे। जैसे ही उसने उस आकृति को देखा, उसे लगा कि वह अपनी फ़िल्मी भूमिकाओं से ज़्यादा लंबे लग रहे थे। उसे लगा जैसे कई मिनट बीत गए हों, लेकिन शायद कुछ ही सेकंड रहे हों, वह अभिनेता की धुंधली परछाई को घर के अंदर सीधे उसकी ओर देखते हुए देख पाई। थोड़ी देर बाद वह परछाई हवा में गायब हो गई। उस आकृति की लंबी कद-काठी ने उसे थोड़ा हैरान कर दिया, इसलिए उसने इसके बारे में पता लगाया। उसे यह जानकर आश्चर्य हुआ कि वेब वास्तव में छह फ़ीट लंबे थे।

कुछ दिनों बाद उनकी मुलाकात मिस्टर वेब से दोबारा हुई। उनका ध्यान अपनी बिल्लियों के अजीब व्यवहार पर गया, जो आंगन से दौड़कर उनके दफ्तर में आ गई थीं। वह अक्सर आंगन से तिरछे होकर दफ्तर से रसोई तक शॉर्टकट लेती थीं। इस बार भी ऐसा ही करते हुए उन्होंने बैठक में मिस्टर वेब की लंबी, सीधी खड़ी आकृति देखी। ऐसा लग रहा था मानो वह किसी चीज की तलाश में धीरे-धीरे बैठक में चल रहे हों।

श्रीमान और श्रीमती सी. को यह स्पष्ट हो गया था कि वेब मौजूदा हालात से पूरी तरह संतुष्ट नहीं था, हालांकि वह उनके प्रति कुछ अधिक दोस्ताना व्यवहार दिखा रहा था। इसलिए उन्होंने मुझे एक प्रतिष्ठित ज्योतिषी की मदद से स्थिति की जांच करने के लिए अपने घर बुलाया। मैंने बदले में सिबिल लीक से मेरे साथ आने का अनुरोध किया।

अक्टूबर 1968 में एक गुरुवार की रात, हममें से कुछ लोग घर पर मिले। सिबिल और मेरे अलावा, मेरी पत्नी कैथरीन, सिबिल का बेटा जूलियन और कई ऐसे लोग थे जो क्लिफ्टन वेब को बहुत करीब से जानते थे। उन्हें जिज्ञासावश नहीं, बल्कि सिबिल के समाधि की अवस्था में प्रकट होने वाली किसी भी साक्ष्यिक सामग्री की पहचान करने में मदद के लिए बुलाया गया था। इनमें प्रख्यात नाटककार गार्सन कानिन, उनकी अभिनेत्री पत्नी, स्वर्गीय रूथ गॉर्डन, रूपर्ट एलन, एक जनसंपर्क अधिकारी जिन्होंने वेब के लिए कई वर्षों तक काम किया था, और दो-तीन अन्य लोग शामिल थे जो उन्हें जानते थे।

सिबिल को इस मामले की परिस्थितियों के बारे में कुछ भी पता नहीं था, न ही उसे यह पता था कि उसे इस घर में क्यों लाया गया था। रात के खाने के दौरान मैंने बातचीत को तंत्र-मंत्र से दूर रखने का पूरा ध्यान रखा, और सिबिल और मैं ग्रीक कमरे से बाहर ही रहे। लेकिन घर जाते समय सिबिल को पहले ही एक अलौकिक अनुभूति हो चुकी थी। उसने एक लंबे, पतले और "लिंगहीन" व्यक्ति का वर्णन किया, जिसका जन्म कैलिफ़ोर्निया में नहीं हुआ था। उसने यह भी बताया कि उसे घर में मौजूद किसी व्यक्ति से जुड़ा हुआ V अक्षर या उससे मिलता-जुलता कोई अक्षर महसूस हुआ।

ग्रीक कक्ष में सिबिल के चारों ओर इकट्ठा होने के बाद, मैंने अपनी प्रथा के अनुसार, माध्यम से अंतर्दृष्टि मांगने से कार्यवाही शुरू की। मेरी आशा थी कि श्री वेब हमसे मिलने आएंगे, या कम से कम सिबिल को बताएंगे कि वे क्या चाहते हैं या किस बात ने उन्हें अपने पुराने घर से इतने दृढ़तापूर्वक और शारीरिक रूप से बांधे रखा है।

मैंने कहा, "सिबिल, क्या तुम्हें कमरे के बारे में कोई आभास होता है?"

“मुझे यह कमरा पसंद नहीं है,” सिबिल ने सख्ती से कहा। “मैं इसमें रहना नहीं चाहूँगी। खिड़की की तरफ दाहिनी ओर मुझे एक अजीब सी अनुभूति हो रही है। ऐसा लगता है जैसे यहाँ किसी की अचानक मृत्यु हो गई हो। साथ ही, कुछ समय से मेरे मन में V अक्षर और 'मीडोज़' शब्द बार-बार आ रहे हैं। मैं कहूँगी कि यह घर का सबसे कम पसंद आने वाला कमरा है। अजीब बात यह है कि मुझे यहाँ किसी पुरुष या स्त्री की उपस्थिति महसूस नहीं हो रही; मुझे कुछ ऐसा महसूस हो रहा है जिसमें कोई लिंग नहीं है।”

“यह किस तरह का व्यक्ति है?”

मुझे निराशा का माहौल महसूस हो रहा है, मैं कुछ भी करने में असमर्थ महसूस कर रहा हूं।
"यह व्यक्तित्व इतना निराश क्यों है?"
“खराब रिश्ते।”
मैंने समाधि की अवस्था में जाने का निश्चय किया। कुछ संक्षिप्त सुझावों के बाद सिबिल तुरंत और पूरी तरह समाधि में चली गई। अब मैंने वातावरण में मौजूद अदृश्य शक्तियों से बात की।
“इस कमरे में जो भी उपस्थित हों, कृपया शांतिपूर्वक और मित्रवत भाव से आगे आएं, ताकि हम आपसे बात कर सकें। हम यहां मित्रों के रूप में एकत्रित हुए हैं। हम इस घर में आपको शांति और सुख दिलाने में मदद करने आए हैं। इस माध्यम का उपयोग करें; शांतिपूर्वक आएं और हमसे बात करें ताकि हम आपकी हर समस्या में आपकी सहायता कर सकें।”
कुछ देर बाद सिबिल करवटें बदलने लगी, आँखें बंद कर लीं और ज़ोर-ज़ोर से साँस लेने लगी। "नहीं कर सकती, नहीं करूँगी। नहीं, मैं नहीं करूँगी," वह बुदबुदाई।
मैंने उससे कहा कि जो भी उसके माध्यम से बोल रहा है, वह थोड़ा ज़ोर से बोले क्योंकि मुझे शब्द समझने में कठिनाई हो रही थी। सिबिल के चेहरे पर अब एक व्यंग्यात्मक मुस्कान आ गई, जो उसके सामान्य भाव से बिल्कुल अलग थी। "मुझे प्यास लगी है, मुझे कुछ पीना है, मुझे कुछ पिलाओ।"
मैंने उस शख्स को थोड़ी देर बाद एक ड्रिंक पिलाने का वादा किया, लेकिन पहले मैं यह जानना चाहता था कि हमसे बात करने कौन आया है। तभी सिबिल ने आह भरते हुए कहा, "यहाँ बहुत ठंड है, एकदम ठंड। मैं गाना चाहती हूँ, बस गाती रहूँ। गाऊँ, गाऊँ, गाऊँ, ला, ला, ला, खूब मज़ा आए।"
मैंने मजाक में शामिल होते हुए पूछा, "आप किस तरह का गाना गाना चाहते हैं?"
"मरते हुए लोग झूठ नहीं बोलते।"
क्या आप हमसे बात करना और अपने बारे में बताना चाहेंगे?
मैं गाना चाहती हूँ।
"आप यहां पर क्या कर रहे हैं?"
"लिखना, गाना लिखना।"

क्या आप लेखक हैं?

मैं बहुत सारे काम करता हूँ।

"इसके अलावा आप क्या कर सकते हैं?"

"कुछ भी, कुछ भी।"

"बताओ ना, इसके बारे में बताओ।"

"नहीं।"

मैंने चिढ़ाने वाले अंदाज़ में कहा, "मुझे कैसे पता चलेगा कि तुम ये सब कर सकते हो? तुमने तो मुझे अपना नाम तक नहीं बताया।"

सिबिल के होंठों से एक हल्की सी हंसी निकली। "षड्यंत्रों का जाल।"

आपने क्या कहा? क्या आप इसे दोहरा सकते हैं?

“वेब, वेब, डब्ल्यू-ई-बी-बी।”

"क्या यह आपका नाम है?"

“वेब, वेब, वेब।”

"तुम यहां क्यों हो?"

मुझे दोस्तों की जरूरत है।

"ठीक है, आपको वे मिल गए हैं।"

मुझे दोस्तों की जरूरत है। मैं अकेला हूँ। मुझे गाना है।

"आप एक गायक हैं?"

मैं संगीत गाता हूँ; संगीत अच्छा है।

आप इस खास घर में क्यों हैं?

मुझे यहां रहने का अधिकार है।

“हमें बताइए क्यों। आपके लिए इसका क्या मतलब है?”

"पैसा, दोस्ती।"

“किसकी दोस्ती?”

“वेड कहाँ है? वेड, जिसके साथ मैं शराब पी सकूँ। लोग मुझे पागल कर देते हैं।”

मैंने यथासंभव धीमी आवाज़ में पूछा, "तुम्हें क्या बात परेशान कर रही है?"

मैं किसी को नहीं बताऊंगी। किसी से कोई मदद नहीं मिलेगी। कोई मदद नहीं है।

"मुझ पर भरोसा करें।"

मैं एक और गिलास पीऊंगा।

मैं आपकी मदद करने के लिए न्यूयॉर्क से इतनी दूर आया हूँ।

"न्यूयॉर्क—मैं न्यूयॉर्क जाऊंगा और वहां के लोगों, शो और गायन को देखूंगा।"

"अकेली हो?"

“हां। मेरे जैसे लोगों को कोई नहीं चाहता।”

“यह सच नहीं है, क्योंकि अगर हमारे मन में आपके प्रति मित्रता की भावना न होती तो मैं यहाँ न होता। आपको क्या लगता है कि हम यहाँ क्यों आए हैं?”

जिज्ञासा। हर चीज़ के पीछे कोई न कोई कारण होता है। तुम कौन हो?

मैंने उन्हें अपना परिचय दिया और बताया कि मैं उन्हें समझने और संभव हो तो उनके सांसारिक बंधनों से मुक्त करने आया हूँ। उन्हें मेरी बात समझने में कठिनाई हो रही थी।

"मेरी आपकी मदद करने की इच्छा है।"

"देर।"

कृपया मुझे आपकी मदद करने दीजिए।

“वेब।”

“हां, मैंने नाम सुना था,” मैंने स्वीकार किया।

इसका कोई मतलब नहीं है।

मुझे लगता है कि उस नाम का एक अभिनेता था।

सिबिल अब रोने लगी। "पूरी जिंदगी अभिनय ही अभिनय किया है।"

“इस घर के बारे में क्या? आप यहाँ क्यों हैं?”

"मुझे यह पसंद है।"

"आपके लिए इसका क्या मतलब है?"

“मेरे लिए इसका क्या मतलब है? यहाँ बहुत सारा पैसा है। दोस्त हैं। ऐसे दोस्त हैं जो मेरा ख्याल रखते हैं।”

क्या मैं उन्हें जानता हूँ?

“एक पत्रकार; मुझे पत्रकारों से नफरत है। ताक-झांक करने वाले कमीने। चलो एक ड्रिंक लेते हैं। क्यों न कुछ संगीत सुनें?”

आप यहाँ दिन भर क्या करते हैं?

मैं यहाँ पीने और एक-दो दोस्त बनाने आया हूँ। मैं कुछ लोगों से जान-पहचान बनाना चाहता हूँ। कुछ काम भी पाना चाहता हूँ।

"काम किस तरह का है?"

“अनुबंध। अनुबंधों को किसी न किसी तरह पूरा किया जाना चाहिए।”

“किसके साथ अनुबंध?”

“एक आदमी है जिसका नाम मीडोज है। हैरी मीडोज।”

क्या आपका उनके साथ कोई अनुबंध है?

"अच्छा नहीं है।"

आपको क्या करना चाहिए था?

"घर को अपने नाम कर लो।"

वह किस तरह का व्यवसाय करता है?

मुझे नहीं पता कि मैं आपको क्या बताऊं।

“आप उनसे कहाँ मिले थे?”

“वह यहाँ आया था। चौंसठ वर्ष का।”

मैंने गंभीरता से कहा, "मैं आपको शांति पाने में मदद करना चाहूंगा, श्रीमान वेब।"

उस प्राणी ने कुछ कड़वाहट भरी हंसी हंसते हुए कहा, "श्रीमान वेब।"

"आप मुझे और किस नाम से पुकारना चाहेंगे?"

“श्रीमान वेब—यह काम पूरा हो गया है।”

"शायद मैं आपकी मदद कर सकता हूँ।"

"कैथी, किसे परवाह है?"

“कैथी कौन है?”

मैं कहाँ हूँ, मैं खो गया हूँ।

मैंने उस शख्स को आश्वस्त किया कि वह खोया नहीं है, बल्कि किसी दूसरे व्यक्ति के माध्यम से बोल रहा है। वेब को जाहिर तौर पर इस बात का कोई अंदाजा नहीं था कि समाधि में किसी के माध्यम से बात करना भी संभव है। वह स्वाभाविक रूप से सिबिल लीक के शरीर में खुद को पाकर काफी हैरान था, भले ही यह क्षणिक ही क्यों न हो। मैंने उसे शांत किया और फिर से मदद की पेशकश की। आखिर उसे सबसे ज्यादा परेशान करने वाली बात क्या थी?

मैं अब कुछ नहीं कर सकता। मैं नशे में हूँ, मैं गाना चाहता हूँ।

मैंने धैर्यपूर्वक उसे उसकी वास्तविक स्थिति समझाई। वह जो अनुभव कर रहा था, वे उसके अतीत की यादें थीं; भविष्य बिल्कुल अलग था।

मैं बहुत कुछ कहना चाहता हूं, लेकिन कोई सुनता नहीं है।

"मैं सुन रहा हूँ।"

मैं मुसीबत में हूँ। पैसा, शराब, हेलेन।

“हेलेन के बारे में क्या?”

मैं अनोखा हूँ।

“यह आपका निजी मामला है, और कोई भी आपके अजीब होने के लिए आपकी आलोचना नहीं कर रहा है। साथ ही, आप बहुत प्रतिभाशाली हैं।”

“हाँ।” यह स्पष्ट था कि उन्हें अपनी मृत्यु के बाद भी प्रशंसा पाने का विचार पसंद था।

अब मुझे हेलेन के बारे में बताइए। क्या उसका नाम आपकी किसी वसीयत में है?

“वो मर चुकी है, बेवकूफ। मैं किसी मरी हुई औरत के लिए कुछ नहीं छोड़ूंगा। उसे मेरे पैसे चाहिए थे।”

हेलेन का पूरा नाम क्या था?

“हेलेन टी. मीडोज।”

"आपका पिछला जन्मदिन कितने साल का था?"

"हम यहां जन्मदिन नहीं मनाते हैं।"

“अहा,” मैंने कहा, “लेकिन फिर तो आपको पता है कि आप कहाँ हैं और आप क्या हैं।”

“हाँ,” उस प्राणी ने कहा, और ‘ऊ’ ध्वनि को अनोखे हास्यपूर्ण अंदाज़ में लंबा खींच दिया। जिसने भी क्लिफ्टन वेब को स्क्रीन या स्टेज पर बोलते सुना होगा, वह इस आवाज़ को पहचान गया होगा।

“तो फिर तुम्हें पता चल जाएगा कि तुम वहाँ हो। अच्छा है। फिर कम से कम हमें एक-दूसरे के सामने यह दिखावा नहीं करना पड़ेगा कि मुझे नहीं पता और तुम्हें नहीं पता।”

"मैं थक गया हूं।"

"क्या कोई और व्यक्ति था जो आपको और हेलेन को जानता था?"

"कैथी, कैथी एक छोटी सी बच्ची थी जो इधर-उधर आती रहती थी।"

"क्या आपका कोई पुरुष मित्र था जिसका नाम आपको याद हो?"

जब उस प्राणी ने जवाब दिया तो सिबिल की आवाज में अविश्वास था। "तुम एक पत्रकार हो।"

“मैं यहाँ पत्रकार के तौर पर नहीं, बल्कि मुख्य रूप से आपकी मदद करने आया हूँ। क्या कॉनरैड नाम आपके लिए कुछ मायने रखता है?” मुझे दिवंगत क्लिफ्टन वेब के दोस्तों ने यह सवाल पूछने के लिए कहा था। मुझे खुद भी नहीं पता था कि यह कॉनरैड कौन था या है।

“हम्म,” उस प्राणी ने प्रश्न को स्वीकार करते हुए उत्तर दिया। “प्रारंभिक अक्षर V, V का अर्थ है विजय।” उसी समय, सिबिल ने अपनी कमरबंद के रूप में इस्तेमाल की जाने वाली जंजीर को पकड़ा और एक ऐसा इशारा किया मानो वह किसी का गला घोंटने ही वाली हो।

“कॉनराड कौन था? क्या आप मुझे कुछ दिखाने की कोशिश कर रहे हैं?”

अचानक सिबिल फिर फूट-फूटकर रोने लगी। "तुम्हें धिक्कार है, मुझे अकेला छोड़ दो।"

सिसकियाँ और तेज़ होती गईं। मैंने उस आत्मा को मुक्त करने का निश्चय किया। “शांति से जाओ; शांति से जाओ और कभी भी उस घर में वापस मत आना जहाँ तुमने इतने दुखद अनुभव झेले हैं। जाओ और जीवन के दूसरे छोर पर तुम्हारा इंतज़ार कर रहे प्रियजनों से

मिलो। अलविदा, श्रीमान वेब। शांति से जाओ। अब इस शरीर को छोड़ दो और उसे अपने शरीर में वापस लौटने दो, बिना इस बात की कोई याद रखे कि उसके सम्मोहित होठों से क्या निकला है।”

कुछ देर बाद सिबिल चौंककर उठी, अपनी आँखें मलते हुए और यह समझने की कोशिश करते हुए कि वह कहाँ है। "मुझे थोड़ा अजीब लग रहा है," सिबिल ने थोड़ी घबराहट के साथ कहा। "शायद मैं एक गिलास वाइन पी लूँ।"

सिबिल के समाधि प्रदर्शन पर छाए तनावपूर्ण ध्यान से सब लोग जब संभल गए, तो मैंने अभी-अभी घटी घटनाओं पर चर्चा शुरू की। क्लिफ्टन वेब को व्यक्तिगत रूप से जानने वालों ने बताया कि कभी-कभी सिबिल का चेहरा वेब के चेहरे से मिलता-जुलता था, कम से कम उस हद तक जितना एक महिला का चेहरा पुरुष के चेहरे से मिलता-जुलता हो सकता है। उनकी आवाज़ भी उन्हें अभिनेता की आवाज़ की याद दिलाती थी—खासकर समाधि सत्र के बीच में जब वह सबसे गहरी अवस्था में थीं। नामों के बारे में, रूपर्ट एलन ने बताया कि सिबिल द्वारा नामित "कैथी" एक सचिव थीं जिन्हें वेब ने केवल एक सप्ताह के लिए काम पर रखा था। साथ ही, हेलेन मीडोज का उल्लेख संभवतः हेलेन मैथ्यूज थीं, जो दिवंगत अभिनेता की लंबे समय से सचिव और सहायक थीं। एक वसीयत को लेकर काफी चर्चा हुई थी जिसमें सहायक का ज़िक्र था। संभवतः वेब और मिस मैथ्यूज के बीच उनके जीवन के अंतिम समय में मतभेद रहे थे। जहां तक उनके गाने की इच्छा का सवाल है, रूपर्ट एलन ने हमें याद दिलाया कि क्लिफ्टन वेब के मशहूर अभिनेता बनने से बहुत पहले, वे ब्रॉडवे के शीर्ष गायक-नृत्य कलाकारों में से एक थे, कई संगीत नाटकों और संगीत समीक्षाओं में अभिनय कर चुके थे और हमेशा से संगीत रंगमंच से प्यार करते थे। श्री एलन ने पुष्टि की कि उनके हाव-भाव और कुछ मुहावरे क्लिफ्टन वेब की शैली से काफी मिलते-जुलते थे, साथ ही एक पत्रकार की उपस्थिति के विचार पर उनकी नकारात्मक प्रतिक्रिया भी।

वेब की मृत्यु के समय उनके कोई निकट संबंधी जीवित नहीं थे। इन परिस्थितियों में, घर सहित सारी संपत्ति उसी को मिलती जिसे उन्होंने अपनी वसीयत में चुना होता। क्या कोई दूसरी वसीयत थी जो कभी नहीं मिली? क्या दुनिया को यह दिखाने की यही ज़रूरत थी कि एक दूसरी वसीयत भी मौजूद थी, जिसने क्लिफ्टन वेब को उनके पुराने घर से बांधे रखा?

सिबिल लीक के साथ यादगार séance के बाद, मैं समय-समय पर घर के मालिकों से पूछता रहता था कि सब कुछ शांत है या नहीं। कुछ समय तक तो शांति रही। लेकिन फिर मुझे मिस्टर वेब के दोबारा प्रकट होने की खबरें मिलीं। मुझे एहसास हुआ कि निर्माता की पत्नी, जो काफी हद तक मानसिक शक्तियों से ग्रस्त थीं, वेब को इस तरह प्रकट होने के लिए आवश्यक ऊर्जा प्रदान कर रही थीं। लेकिन मुझे यह भी पूरा यकीन था कि उन्होंने ऐसा जानबूझकर नहीं किया था। बल्कि, वह एक शांत घर चाहती थीं। लेकिन वेब और शायद ग्रेस मूर (अगर वाकई बगीचे में वही थीं) के प्रकट होने से श्रीमती सी. को मानसिक घटनाओं की वास्तविकता का यकीन हो गया। अब उन्हें सार्वजनिक रूप से अपने अनुभवों पर चर्चा करने में कोई डर नहीं लगता था। पहले तो उनके दोस्त उन्हें शक की नजर से देखते थे, लेकिन धीरे-धीरे उन्होंने उनकी गवाही की सच्चाई और निष्पक्षता को स्वीकार कर लिया। अन्य लोग जिन्होंने पहले कभी किसी असामान्य अनुभव का जिक्र नहीं किया था, उन्होंने भी स्वीकार किया कि घर के विभिन्न हिस्सों में आने-जाने के दौरान उन्हें सिहरन और अजीबोगरीब एहसास हुए थे।

क्लिफ्टन वेब का घर पर दबदबा कायम है, चाहे अच्छा हो या बुरा। शायद उन्हें लोगों का ध्यान आकर्षित करना पसंद है, या शायद वे बस दूसरी वसीयत की तलाश में हैं। खैर, अब उन्हें घर के मौजूदा मालिकों को चौंकाने में कोई खुशी नहीं मिलती। आखिर, वे जानते हैं कि वह कौन हैं और क्या कर रहे हैं। मिस्टर वेब हमेशा से ही शानदार एंट्री की अहमियत जानते थे। मुझे यकीन है कि समय आने पर वे शानदार तरीके से घर से निकलना भी सीख जाएंगे।

*31

ऐश लॉन में भूतिया रॉकिंग चेयर

सिर्फ़ घर ही भूतिया नहीं होते, फर्नीचर पर भी भूतों का साया पड़ सकता है। वर्जीनिया के कैसल हिल से ज़्यादा दूर नहीं, अमेरिका की सबसे महत्वपूर्ण ऐतिहासिक इमारतों में से एक है जेम्स मोनरो का घर, जहाँ वे और थॉमस जेफरसन अक्सर बातचीत करते थे और शायद अपने समय के कुछ बड़े राजनीतिक फैसले भी लिए थे। आज यह एक बड़े हवेलीनुमा घर के बजाय एक साधारण सी कुटिया जैसा दिखता है और इसकी अच्छी तरह देखभाल की जाती है। इसे एक ऐतिहासिक तीर्थस्थल माना जाता है, इसलिए पर्यटक कुछ निश्चित समय पर यहाँ आ

सकते हैं। अगर मेरे पाठकों में से कोई इस इलाके में हो और ऐश लॉन घूमने का मन बनाए, तो मैं उनसे गुज़ारिश करूँगा कि वे गाइड या रखवालों से भूतों के बारे में खुलकर बात न करें।

दरअसल, भूतिया घटनाएं मुख्य कमरे में रखी एक लकड़ी की झूला कुर्सी के इर्द-गिर्द घूमती हैं। इसे बिना किसी के हाथ लगाए अपने आप हिलते हुए देखा गया है। मुझे नहीं पता कि कितने लोगों ने कुर्सी को हिलते हुए देखा है, लेकिन श्रीमती जे. मैसी, जो कई वर्षों तक उस इलाके में रहीं, ने मुझसे उस जगह की मेरी यात्रा के दौरान कहा, "मैं किसी को भी बताऊंगी और मुझे इस बात से कोई आपत्ति नहीं है कि यह बात सबको पता चले, कि मैंने एक बार नहीं बल्कि बार-बार उस कुर्सी को ऐसे हिलते हुए देखा है जैसे उस पर कोई बैठा हो। मेरे भाई जॉन ने भी इसे देखा है। जब भी हम उसे छूते थे, वह हिलना बंद कर देती थी।"

यह घर, हालांकि छोटा और आरामदायक था, फिर भी जेम्स मोनरो का पसंदीदा घर बना रहा, यहां तक कि बाद में अपने बड़े घर में जाने के बाद भी, जो बाद में उनका आलीशान निवास बन गया। ऐश लॉन में वे अपने राजकीय मामलों से दूर, सार्वजनिक ध्यान से हटकर, अपने मित्र थॉमस जेफरसन से महत्वपूर्ण विषयों पर चर्चा कर सकते थे, जो केवल दो मील दूर मोंटीसेलो में रहते थे।

झूला कुर्सी पर बैठा भूत कौन है? शायद यह केवल एक आत्मा है, कोई सांसारिक भूत नहीं, एक ऐसी आत्मा जो अपने पुराने घर और राजकीय मामलों से दूर अपने आश्रय से इतनी जुड़ गई है कि वह अभी भी कभी-कभी अपनी ही झूला कुर्सी पर बैठकर चीजों पर विचार करना पसंद करती है।

ऐश लॉन—वर्जीनिया में मोनरो की कुटिया

ऐश लॉन में भूतिया कुर्सी

*32

कैरोल लोम्बार्ड के भूत से मुलाकात

1967 में मैंने पहली बार एक भूतिया घर के बारे में सुना, जहाँ दिवंगत कैरोल लोम्बार्ड रहती थीं। एड्रियाना एस. पेशे से कवयित्री और लेखिका थीं, लेकिन वे अपना जीवन यापन कई तरह से करती थीं, आमतौर पर गृहणी के रूप में। चालीस के दशक के उत्तरार्ध में उन्हें एक प्रसिद्ध फिल्म निर्माता ने गृहणी के रूप में काम पर रखा था। वे कर्मचारियों की देखरेख करती थीं, और एक कुशल आयोजक होने के नाते उन्होंने यह काम बखूबी निभाया। नौकरी स्वीकार करने से पहले उन्होंने घर का अच्छी तरह निरीक्षण किया और पाया कि यह हॉलीवुड के सबसे अच्छे इलाके में स्थित उन शांत और सुंदर घरों में से एक था, जहाँ केवल अच्छी बातें ही हो सकती थीं। एड्रियाना ने आत्मविश्वास के साथ नौकरी स्वीकार कर ली।

उसके आने के एक-दो दिन बाद, जब वह अपने कमरे में गहरी नींद में सो रही थी, तो आधी रात को किसी के हिलाने से उसकी नींद खुल गई। पूरी तरह जागने पर उसने महसूस किया कि उसे कंधे से हिलाया जा रहा है। वह बिस्तर पर बैठ गई, लेकिन वहाँ कोई दिखाई नहीं दिया। हालाँकि उसकी सामान्य दृष्टि से कमरे में कोई इंसान नज़र नहीं आ रहा था, लेकिन उसकी मानसिक शक्ति ने उसे तुरंत बता दिया कि उसके बिस्तर के पास कोई खड़ा है। एक पल के लिए आराम करते हुए और आँखें बंद करके, एड्रियाना ने उस अदृश्य शक्ति से जुड़ने की कोशिश की। तुरंत ही उसने अपने बिस्तर के पास एक लंबी, पतली महिला को खड़े देखा, जिसके सुनहरे बाल कंधों तक लंबे थे। एड्रियाना के लिए इस दृश्य या मानसिक अनुभूति को और भी परेशान करने वाली बात यह थी कि वह महिला खून से लथपथ थी और स्पष्ट रूप से पीड़ा में थी।

एड्रियाना को एहसास हुआ कि किसी प्रेतात्मा ने उससे संपर्क किया है, लेकिन वह इस घटना की वास्तविकता को स्वीकार नहीं कर पा रही थी और उसने इसे पेट खराब होने या नए परिवेश और अभी-अभी रहने के तनाव का नतीजा मान लिया। साथ ही, उसने बेचैन आत्मा के लिए प्रार्थना की। लेकिन छह-सात दिन बाद वही घटना फिर से घटी। इस बार एड्रियाना भूत को और भी स्पष्ट रूप से देख पाई। वह उस महिला की अपार सुंदरता से प्रभावित हुई और उसने सुबह अपने मालिकों से अपने अनुभव के बारे में बात करने का फैसला किया। निर्माता की पत्नी ने प्रेतात्मा के वर्णन को बहुत शांति से सुना और फिर सिर हिलाया। जब एड्रियाना ने बताया कि प्रेतात्मा ने खून से सना हुआ हल्का सूट पहना हुआ था, तो घर की मालकिन आश्चर्य

से पीछे हट गई। तभी एड्रियाना को पता चला कि यह घर कभी कैरोल लोम्बार्ड का था और दिवंगत फिल्म स्टार क्लार्क गेबल के साथ इसमें बहुत खुशी से रहती थीं। द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान एक विमान दुर्घटना में कैरोल लोम्बार्ड की दुखद मृत्यु हो गई थी। उनका विमान, जो पूर्वी अमेरिका में कुछ यूएसओ शो करने जा रहा था, तूफान के दौरान एक पहाड़ से टकरा गया था। उस समय उन्होंने हल्के रंग का सूट पहना हुआ था।

कई साल बाद मैंने एक बेहद संवेदनशील अभिनेत्री के साथ उस घर की छानबीन की। संयोग से वह घर अब उनकी डॉक्टर, डोरिस ए. नाम की एक महिला का था। समाधि की अवस्था में, मेरी अभिनेत्री मित्र कैरोल लोम्बार्ड की आत्मा से संपर्क स्थापित करने में सक्षम थीं। जिस घर में वह कभी रहती थीं, वहां बार-बार आने का कारण क्लार्क गेबल को छोड़ने का पछतावा और साथ ही उनकी मृत्यु से ठीक पहले गेबल के साथ हुआ झगड़ा था। सौभाग्य से, हम उस बेचैन आत्मा को शांत करने में सफल रहे, और संभवतः अब वह घर शांत है।

*33

फोर्ट मैकनेयर में श्रीमती सुरैट का भूत

फोर्ट मैकनैयर संयुक्त राज्य अमेरिका के सबसे पुराने सैन्य ठिकानों में से एक है और इसके कई अन्य नाम भी रहे हैं। पहले इसे शस्त्रागार के नाम से जाना जाता था, फिर वाशिंगटन शस्त्रागार कहा जाने लगा, और 1826 में इसके परिसर में एक कारागार बनाया गया, जो वास्तव में एक भयावह जगह थी। बीमारी के कारण, राष्ट्रपति लिंकन ने 1862 में कारागार को बंद करने का आदेश दिया, लेकिन लिंकन की हत्या होते ही, कारागार फिर से चालू हो गया।

राष्ट्रपति लिंकन की हत्या के आरोपी षड्यंत्रकारियों में एकमात्र निर्दोष महिला श्रीमती मैरी सुरैट थीं, जिनका एकमात्र अपराध यह था कि वह एक बोर्डिंग हाउस चलाती थीं जहाँ उनके बेटे की मुलाकात कुछ षड्यंत्रकारियों से हुई थी। लेकिन जैसा कि मैंने मैरीलैंड के क्लिफ्टन स्थित उस बोर्डिंग हाउस की एक अलग जांच में दिखाया है, उनका बेटा जॉन सुरैट वास्तव में एक दोहरा एजेंट था, इसलिए विडंबना और भी गहरी हो जाती है। वह संयुक्त राज्य अमेरिका में फांसी पर चढ़ाई जाने वाली पहली महिला थीं, और आज इतिहासकार पूरी तरह से आश्वस्त हैं कि वह पूरी तरह से निर्दोष थीं। मुकदमा अत्यंत अलोकतांत्रिक तरीके से चलाया गया था,

और यह स्पष्ट है कि षड्यंत्रकारियों को कभी कोई मौका नहीं मिला। लेकिन लिंकन की हत्या के पीछे असली ताकत, जो संभवतः उनके ही राजनीतिक सहयोगियों में से एक थी, यह सुनिश्चित करना चाहती थी कि साजिश के बारे में कुछ भी जानने वाला कोई भी व्यक्ति न बचे, और इसलिए मैरी सुरैट को बलि का बकरा बनाया गया।

फोर्ट मैकनैयर में बिल्डिंग 21 नाम की एक छोटी, साधारण सी दिखने वाली इमारत है, जो अब एक सुंदर टेनिस कोर्ट से कुछ ही दूरी पर है। इसी इमारत में मैरी सुरैट को कैद किया गया था और आज भी इस इमारत में रह रहे कई लोगों के सुबह-सुबह रोने की आवाजें सुनाई देती हैं। जेलखाना अब मौजूद नहीं है और वह जमीन अब टेनिस कोर्ट का हिस्सा है। बिल्डिंग 21 के बगल में एक और भी छोटा घर है, जो कई अधिकारियों के आवास के रूप में इस्तेमाल होता है। जब मैंने कुछ साल पहले इस चौकी का दौरा किया था, तो डिप्टी पोस्ट कमांडर यहीं ठहरे हुए थे। बिल्डिंग 20 में पांच अपार्टमेंट हैं, जिनका कुछ साल पहले नवीनीकरण किया गया था। छतों को नीचा कर दिया गया है और मूल लकड़ी के फर्श को एस्बेस्टस टाइलों से बदल दिया गया है। 1960 के दशक में यहाँ रहस्यमय आग लगने की घटनाएँ हुईं थीं। श्रीमती मैरी सुरैट सहित साजिशकर्ताओं को फांसी बिल्डिंग 21 से कुछ ही गज की दूरी पर दी गई थी। फांसी पर लटकाए गए षड्यंत्रकारियों की कब्रें उस स्थान पर थीं जो अब टेनिस कोर्ट है, लेकिन मुकदमे के कुछ साल बाद ताबूतों को हटा दिया गया था और अब वहां जमीन में कोई शव नहीं है।

कैप्टन एक्स—और स्पष्ट कारणों से उनका नाम गुप्त रखा जाना चाहिए—मेरे साक्षात्कार से पहले कई वर्षों तक अपार्टमेंट नंबर 5 में रहे थे। उन्होंने मैरी सुरैट के रोने की आवाज़ तो नहीं सुनी, लेकिन उन्हें एक अजीब सी आवाज़ सुनाई दी, जैसे तेज़ हवा चल रही हो।

हालांकि, कैप्टन और श्रीमती सी. 1972 तक कई वर्षों तक बिल्डिंग 20 की तीसरी मंजिल पर रहते रहे। संयोगवश, यह इमारत पूर्व कारागार का एकमात्र हिस्सा है जो अभी भी खड़ा है। सी. का अपार्टमेंट पूरी तीसरी मंजिल पर फैला हुआ था और इसी मंजिल पर जॉन विल्क्स बूथ सहित साजिशकर्ताओं पर मुकदमा चलाया गया था, जिनकी मृत्यु हो चुकी थी, और उन्हें फांसी की सजा सुनाई गई थी। मैरी सुरैट की कोठरी भी इमारत की तीसरी मंजिल पर स्थित थी। श्रीमती सी. को पहले भी ईएसपी (आध्यात्मिक संवेदनशीलता) के अनुभव हुए थे, लेकिन

फोर्ट मैकनेयर में पदभार संभालने के बाद उनके साथ जो हुआ उसके लिए वे पूरी तरह से तैयार नहीं थीं।

"फोर्ट मैकनेयर स्थित हमारे अपार्टमेंट में मेरा अनुभव मेरे अब तक के सभी अनुभवों से बिल्कुल अलग था।"

“कई बार, देर रात को, ऊपर किसी के चलने की आवाज़ सुनाई देती थी, जबकि हम सबसे ऊपरी मंज़िल पर थे।” एक रात चलने की आवाज़ बहुत तेज़ हो गई, और श्रीमती सुरैट की कोठरी वाले कमरे की खिड़की लगातार खड़खड़ा रही थी, मानो कोई अंदर या बाहर आने की कोशिश कर रहा हो, और घर में किसी की मौजूदगी का एहसास हो रहा था। यह घटना अप्रैल में घटी, और इसी दौरान षड्यंत्रकारियों का मुकदमा भी शुरू हुआ।

फोर्ट मैकनेयर की वह भूतिया जेल जहाँ श्रीमती सुरैट को रखा गया था

मुझे संदेह है कि किसी ऐतिहासिक जांच जैसे आधिकारिक कारणों के अलावा किसी अन्य कारण से फोर्ट मैकनेयर जाना आसान होगा। लेकिन चाहे अच्छा हो या बुरा, यह इमारत टेनिस कोर्ट के उत्तर-पूर्वी कोने पर स्थित है और फोर्ट मैकनेयर स्वयं वाशिंगटन, डी.सी. में फोर्थ और पी स्ट्रीट के कोने पर है और शहर के केंद्र से आसानी से पहुँचा जा सकता है।

अध्याय छह

यह घर भूतिया है

शायद ही किसी और शब्द-चित्र ने लोगों की कल्पना पर इतना गहरा प्रभाव डाला हो जितना कि किसी भूतिया घर के विचार ने। आखिर, भूतिया घर वैसा घर नहीं होता जैसा लोग घर को समझते हैं। किसी मृत व्यक्ति के साथ उसमें रहना, घर के वास्तविक निवासियों और उसमें फंसे भूत, दोनों के लिए बहुत कष्टदायक हो सकता है।

अधिकांश लोग भूतिया घर को अशुभ, डरावना और पूरी तरह से अवांछनीय मानते हैं। आयरलैंड में, किसी के घर को भूतिया कहना मानहानि का एक बड़ा मुकदमा खड़ा कर सकता है—यानी घर की छवि को धूमिल करने का। दूसरी ओर, अमेरिका में, ऐसी प्रतिष्ठा, चाहे वह सही हो या गलत, आमतौर पर संपत्ति का मूल्य बढ़ा देती है।

भूतिया घर आखिर होता क्या है?

यह एक घर, अपार्टमेंट या किसी भी प्रकार का निवास स्थान हो सकता है जहाँ लोग रहते, खाते और सोते हैं। भूतिया घर को अन्य सभी घरों से अलग करने वाली बात यह है कि इसके पूर्व किरायेदारों या मालिकों में से एक (या अधिक) ने अभी तक परिसर को पूरी तरह से नहीं छोड़ा है, और खुद को पूरी तरह से वहीं का निवासी मानते हैं।

ये न तो दूर से आए परग्रही हैं और न ही राक्षस, बल्कि ये आप जैसे ही आम लोग हैं जो कभी यहाँ रहते थे, मर गए और किसी तरह ऐसी जगह फंस गए जहाँ से वे बेहतर जगहों पर नहीं जा पा रहे—जीवन के दूसरे पहलू पर, या जिसे धर्म स्वर्ग कहता है, हालाँकि वास्तव में धर्म द्वारा वर्णित ऐसी कोई जगह नहीं है। परा मनोविज्ञान में तो शैतान को भी महत्व नहीं दिया जाता। लेकिन दूसरा आयाम, एक ऐसी दुनिया जो इस दुनिया जितनी ही वास्तविक है, मौजूद है और उसमें लोग रहते हैं। ये वे लोग हैं जो बिना किसी परेशानी के इस दुनिया से चले गए। जिन लोगों को किसी न किसी तरह की परेशानी हुई और वे इस दुनिया से नहीं जा पाए, उन्हें हम पृथ्वी पर अटकी आत्माएँ या भूत कहते हैं।

भूतिया घरों के मामले में, जोर घर पर होता है, और इसी से भावनात्मक जुड़ाव भी घर पर ही होता है, न कि उसमें रहने वाले लोगों पर। घर में सुखद यादें हो सकती हैं या फिर, अक्सर, दर्दनाक यादें, जिन्होंने शारीरिक मृत्यु के समय आत्मा के पारगमन को रोक दिया था।

भूत किसी भी ऐसी जगह पर प्रकट हो सकते हैं या अपनी उपस्थिति दर्ज करा सकते हैं जो उनके जीवित रहते समय, और विशेष रूप से उनकी मृत्यु के समय, उनके लिए महत्वपूर्ण रही हो। इसलिए, भूत को प्रकट होने के लिए किसी घर की आवश्यकता नहीं होती। लेकिन वास्तव में प्रेतवाधित घर को भूत कहलाने के लिए एक या अधिक भूतों का होना आवश्यक है, जब तक कि हम केवल अतीत की मानसिक छापों की बात न कर रहे हों। इस बारे में आगे विस्तार से चर्चा करेंगे।

* * *

फिल्मों और टेलीविजन की बदौलत, भूतिया घरों को अक्सर डरावनी, जर्जर जगहों, हवेली, महलों के रूप में दिखाया जाता है—पार्क एवेन्यू के किसी साफ-सुथरे, आधुनिक अपार्टमेंट से बिल्कुल अलग। सच्चाई यह है कि भूतिया घटना होने के लिए घर की बनावट, उम्र या प्रकृति का कोई महत्व नहीं है। इसलिए, दुनिया भर में हर उम्र के, प्राचीन महलों से लेकर हाल ही में बनी गगनचुंबी इमारतों तक, ग्रामीण इलाकों के एकांत स्थानों से लेकर आधुनिक नाइट क्लबों तक, हर जगह असली भूतिया घर मौजूद हैं।

इन सभी में एक बात समान है, वह है एक देहधारी आत्मा, एक भूत की उपस्थिति, जो अपने शारीरिक निधन के भावनात्मक उथल-पुथल से मुक्त होने में असमर्थ है।

आमतौर पर भूत-प्रेत के साथ कुछ विशेष घटनाएं जुड़ी होती हैं, जैसे ठंडी जगहें या किसी मानव की उपस्थिति का आभास, हालांकि उपस्थिति दिखाई नहीं देती। ये घटनाएं भूत द्वारा उत्पन्न नहीं होतीं, बल्कि उसकी उपस्थिति के स्वाभाविक परिणाम होती हैं और इनका प्रभाव पूरी तरह से ईथर शरीर या आभा में मानव की उपस्थिति के कारण होने वाली विद्युतचुंबकीय प्रतिक्रियाओं से उत्पन्न होता है, जो कि स्वयं एक शक्तिशाली विद्युतचुंबकीय क्षेत्र है।

अंततः, क्या आपको भूतों से डरना चाहिए?

नहीं, बच्चों को भी नहीं। हिंसा और नशीली दवाओं का प्रचार करने वाले टेलीविजन कार्यक्रमों से सावधान रहें।

भूत अपनी ही उलझन और दुख में इतने डूबे रहते हैं कि वे आपको नुकसान नहीं पहुँचा सकते। उनका मकसद लोगों को डराना भी नहीं होता। लेकिन, कुछ दर्ज मामलों में, घर में

रहने वाले भूत ने नए किरायेदारों को घर से निकालने के इरादे से दर्शन दिए हैं या अजीबोगरीब घटनाएं घटित की हैं।

जैसे कुछ लोग घर से अवांछित जीवों को भगाने के लिए "भूत शिकारी" को बुलाते हैं, वैसे ही भूत भी नए किरायेदारों को असहज महसूस कराकर पलटवार करते हैं। आखिर, वे तो पहले से ही वहां मौजूद थे।

दुर्भाग्य से, मकान मालिक, किराएदार और भूत, दोनों के लिए ही, इस बात की जानकारी का घोर अभाव है कि एक सच्चे अलौकिक अन्वेषक के पास क्या योग्यताएँ होनी चाहिए। धोखेबाजों की भरमार है, जो जिज्ञासा का दिखावा करते हुए विशेषज्ञता का दावा करते हैं; वे गीगर काउंटर और ऑसिलोस्कोप जैसे इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों से प्रेतवाधित परिसर की "जाँच" करते हैं और केवल इसलिए भूतों की उपस्थिति का दावा करते हैं क्योंकि उनके उपकरण उतार-चढ़ाव दिखाते हैं। वास्तविक, अकादमिक रूप से प्रशिक्षित परा मनोविज्ञानी ऐसा नहीं करते; वे प्रशिक्षित, प्रतिष्ठित और अच्छे ट्रैक रिकॉर्ड वाले संवेदनशील मानसिक विशेषज्ञों के साथ काम करते हैं। टेलीविजन कार्यक्रम ऐसे नकली अन्वेषकों को "प्रसिद्ध परा मनोविज्ञानी" के रूप में पेश करते हैं, जबकि वे वास्तव में ऐसे नहीं होते। वास्तव में, वे वेटर और क्लर्क के रूप में दिन की नौकरियां करते हैं। एक विशेष रूप से घृणित "अन्वेषक" अपनी मानसिक-पाठक पत्नी, एक पूर्व पादरी और एक पूर्व पुलिस अधिकारी के साथ घूमता है—उन प्रेतवाधित घरों में राक्षसों और शैतान के पदचिह्नों की तलाश में, जिन्हें हल करने के लिए केवल एक प्रशिक्षित मानसिक शोधकर्ता, शायद एक अच्छे ट्रान्स माध्यम के साथ, की आवश्यकता होती।

किसी अनचाहे प्रेतवाद से निपटने के लिए न तो "भूत-प्रेत विद्या विशेषज्ञों" की ज़रूरत है और न ही "पिशाच विद्या विशेषज्ञों" की। जब आप यह समझ जाएंगे कि आप केवल एक अतीत की घटना और उस समय संकट में फंसे एक व्यक्ति—एक इंसान—का सामना कर रहे हैं, तो सामान्य ज्ञान ही काम आएगा।

जब लोग अपने साथ होने वाले प्रेतवाधित अनुभवों की प्रकृति को नहीं समझ पाते थे, तो वे मुझसे सलाह और सहायता लेने आते थे। अक्सर मैं उनसे मिलने जाता था, अक्सर एक कुशल मानसिक विशेषज्ञ के साथ, और कई सवालों के जवाब देने में सक्षम होता था।

भय सूचना के अभाव का परिणाम है।

भूतिया घर समय, स्थान या दूरी की कोई सीमा नहीं जानते। इनमें से कुछ को कम से कम बाहर से तो देखा जा सकता है, क्योंकि सड़क कभी भी (या शायद ही कभी) निजी नहीं होती। हालांकि, कई घर निजी होते हैं, और मालिक को अंदर आने के लिए मनाना बहुत मुश्किल होता है। कुछ स्थल, जैसे क्वीन मैरी या भूतिया बगीचे, जैसे वर्साय और ट्रायनॉन, पर्यटक आकर्षण होने के कारण मामूली प्रवेश शुल्क लेते हैं, न कि इसलिए कि वहां भूत रहते हैं। कुछ मामलों में, भूत तो चला गया है, लेकिन उसकी छाप बाकी है, और आप शायद उसका कुछ अंश महसूस कर सकें। अन्य मामलों में, भूत कभी गया ही नहीं।

*34

बैंक स्ट्रीट का भूत

26 जून, 1957 को, मैंने न्यूयॉर्क टाइम्स की एक प्रति उठाई, जो कि सभी समाचार पत्रों में सबसे कम भूतिया माना जाता है, और जल्द ही मैं मेयर बर्गर का कॉलम, "न्यूयॉर्क के बारे में" पढ़ने लगा। उस दिन वह कॉलम घरों या लोगों के बारे में नहीं था। वह भूतों के बारे में था।

विशेष रूप से, श्री बर्गर ने ग्रीनविच विलेज के 11 बैंक स्ट्रीट स्थित एक घर का सजीव वर्णन किया, जहाँ एक "काफी मिलनसार" भूत ने घर के वास्तविक निवासियों के साथ रहना शुरू कर दिया था। ये निवासी इंजीनियर डॉ. हार्वे स्लेटिन और उनकी पत्नी येफे किम्बल थीं, जो ओसेज इंडियन मूल की थीं और एक प्रसिद्ध चित्रकार थीं।

जिस घर में वे रहते थे, वह उस समय 125 साल पुराना था, लाल ईंटों से बना था और अभी भी उत्कृष्ट स्थिति में था।

अपने घर के इतिहास की छानबीन करते हुए, स्लैटिन परिवार को पता चला कि श्रीमती मैकारियो ने इसे उन्हें बेचने से पहले कई वर्षों तक उन्नीस कमरों वाले बोर्डिंग हाउस के रूप में चलाया था। हालांकि, पूछताछ करने पर श्रीमती मैकारियो ने कोई खास मदद नहीं की। उन्हें अपने पूर्ववर्तियों के बारे में कुछ भी पता नहीं था।

स्लैटिन परिवार द्वारा घर खरीदने और अन्य किरायेदारों के चले जाने के बाद, उन्होंने घर का नवीनीकरण किया। निचला तल एक लंबा बैठक कक्ष बन गया, जो आगे से पीछे तक फैला हुआ था और एक चिमनी तथा कई सुंदर चित्रों और मिट्टी के बर्तनों से सुशोभित था। इस कमरे के पिछले हिस्से में, स्लैटिन परिवार ने एक भारी लकड़ी की मेज रखी। पिछला दरवाजा एक छोटे से बगीचे की ओर खुलता था, और एक संकरी सीढ़ी दूसरी मंजिल तक जाती थी।

स्लैटिन परिवार मूलतः "उच्च वर्ग" के लोग थे, जो बोहेमियन विचारों या धारणाओं से पूरी तरह दूर थे। ग्रीनविच विलेज की जो बात उन्हें आकर्षित करती थी, वह थी इसकी शांत सुंदरता और कलात्मक वातावरण। उन्होंने अपने जैसे विचारों वाले दोस्तों को अपने आसपास इकट्ठा किया और कई शामें घर के शांत वातावरण का आनंद लेते हुए "बस यूं ही बैठे-बैठे" बिताईं।

इन शांत पलों के दौरान, उन्हें अक्सर सीढ़ियों पर किसी महिला के कदमों की आहट सुनाई देती थी, कभी ऊपरी मंजिलों पर, कभी हल्की हथौड़ी जैसी आवाज़। हैरानी की बात यह थी कि ये आवाज़ें रात की तुलना में दिन में ज़्यादा सुनाई देती थीं, जो किसी भूतिया जगह के लिए बिल्कुल भी ठीक नहीं था। स्लेटिन परिवार इससे कभी डरा नहीं। वे बस यह पता लगाने गए कि इन आवाज़ों का कारण क्या हो सकता है, लेकिन उन्हें कोई प्रत्यक्ष प्रमाण नहीं मिला। इन आवाज़ों का कोई तर्कसंगत स्पष्टीकरण भी नहीं था। जनवरी 1957 के एक रविवार को, उन्होंने इन आवाज़ों का समय नोट करने का फैसला किया और पाया कि ये भूतिया गतिविधियाँ पूरे दिन चलती रहती थीं; इन घंटों के दौरान, वे घुसपैठिए को पकड़ने के लिए ऊपर की मंजिल पर दौड़ते थे—लेकिन उन्हें खाली कमरे और गलियारे ही मिलते थे। अदृश्य शक्ति को पुकारने पर भी कोई जवाब नहीं मिलता था। आर्थर ब्रॉडी नाम का एक अंग्रेज बढ़ई, स्लेटिन परिवार की तरह ही वास्तविकता से अच्छी तरह वाकिफ था, लेकिन उसने भी कदमों की आहट सुनी थी। उसका यह स्पष्टीकरण कि "पुराने घरों में हर तरह की आवाज़ें सुनाई देती हैं" से भी कोई मदद नहीं मिली। नौकरानी सैडी ने भी उन आवाजों को सुना और शुरू में घबराहट के बाद, वह उनसे इस तरह अभ्यस्त हो गई जैसे कि वे घर की दिनचर्या का हिस्सा हों - जो वास्तव में थीं भी!

फरवरी की एक सुबह, आर्थर ब्रॉडी सबसे ऊपरी मंजिल के एक कमरे में छत पर हथौड़ा चला रहे थे। वे एक सीढ़ी पर खड़े थे जिससे वे लगभग छत को छू पा रहे थे। अचानक, प्लास्टर और

धूल उनके सिर पर गिरी, और कोई भारी चीज़ नीचे फर्श पर गिरी। पहली मंजिल पर अपने शयनकक्ष में बैठी श्रीमती स्लेटिन ने ज़ोर की आवाज़ सुनी। इससे पहले कि वे तेज़ आवाज़ का पता लगा पातीं, ब्रॉडी उनके दरवाजे पर आ गए और बोले: “मैं हूँ, महोदया, ब्रॉडी। मैं काम छोड़ रहा हूँ! मुझे शव मिल गया है!” लेकिन वे मज़ाक कर रहे थे। असल में उन्हें एक काले रंग का धातु का डिब्बा मिला जो कॉफी के डिब्बे से लगभग दोगुना बड़ा था। उस पर एक धुंधला सा लेबल लगा था, जिस पर लिखा था: “एलिज़ाबेथ बुलॉक के अंतिम अवशेष, दिवंगत। 21 जनवरी, 1931 को अंतिम संस्कार किया गया।” लेबल पर यूनाइटेड स्टेट्स क्रेमेटरी कंपनी लिमिटेड, मिडिल विलेज, बरो ऑफ क्वींस, न्यूयॉर्क का निशान भी था, और डिब्बे के ऊपर 37251 नंबर अंकित था। यह डिब्बा आज भी स्लेटिन परिवार के घर में मौजूद है।

श्रीमती स्लेटिन, जिनके भारतीय पूर्वजों ने उन्हें अलौकिक चीजों को बिना किसी अत्यधिक भय या आश्चर्य के स्वीकार करने की प्रेरणा दी थी, ने चुपचाप उस वस्तु को उठाया और अपने पति को उनके कार्यालय में फोन किया। डॉ. स्लेटिन ने ब्रॉडी के साथ मिलकर छत के छेद की तलाशी ली, लेकिन उन्हें केवल धूल से सनी हुई लकड़ियाँ ही मिलीं।

हैरानी की बात यह है कि जिस छत के नीचे वह डिब्बा छिपा था, वह कम से कम 1880 की थी, जो एलिजाबेथ बुलॉक की मृत्यु से बहुत पहले का समय था। एक दिन, कमज़ोर सी दिखने वाली वह महिला स्लेटिन के घर से कुछ ही दूरी पर हडसन स्ट्रीट पार कर रही थी। तेज़ रफ़्तार से आ रहे एक वाहन चालक ने उसे बहुत देर से देखा और वह गाड़ी से कुचल गई। कुछ मददगार लोगों ने उसे पास की एक दवा की दुकान तक पहुँचाया, जबकि आस-पास खड़े लोगों ने एम्बुलेंस को बुलाया। लेकिन श्रीमती बुलॉक के लिए मदद बहुत देर से पहुँची। चिकित्सा सहायता पहुँचने से पहले ही उनकी दवा की दुकान पर ही मृत्यु हो गई। लेकिन हैरानी की बात यह है कि जब डॉ. स्लेटिन ने रिकॉर्ड खंगाले, तो उन्हें पता चला कि श्रीमती बुलॉक कभी भी 11 बैंक स्ट्रीट पर रही ही नहीं थीं!

फिर भी, श्रीमती बुलॉक की अस्थियां उसी घर में मिलीं। इसका क्या स्पष्टीकरण हो? श्मशानगृह के रिकॉर्ड में उनका पता 113 पेरी स्ट्रीट दर्ज था। डॉ. स्लेटिन ने इस मामले में अंतिम संस्कार करने वाले चार्ल्स डोमिनिक से संपर्क किया। उनका व्यवसाय स्थल वेस्ट

11 वीं स्ट्रीट पर था, जो बैंक स्ट्रीट से कुछ ही दूरी पर था। दुर्भाग्यवश, श्री डोमिनिक का निधन हो चुका था।

स्लैटिन दंपति ने फिर उस महिला के रिश्तेदारों का पता लगाने की कोशिश की, यदि कोई थे तो। लेकिन कोई सुराग नहीं मिला। ऐसा लग रहा था मानो मृतक की आत्मा अपना रहस्य छुपाना चाहती हो। जब खोज निराशाजनक लगने लगी, तो स्लैटिन दंपति ने श्रीमती बुलॉक की राख वाला पात्र बड़े से बैठक कक्ष में रखे पियानो पर रख दिया। उन्हें शायद लगा कि श्रीमती बुलॉक की आत्मा को अटारी में बंद रहने की बजाय यह सम्मानजनक स्थान अधिक पसंद आएगा। उन्हें इसकी इतनी आदत हो गई थी कि नौकरानी सैडी को भी बाकी फर्नीचर और सजावटी सामान के साथ इसे साफ करने में कोई असामान्य बात नहीं लगी।

बैंक स्ट्रीट पर स्थित "छोटी बूढ़ी औरत" भूत का घर

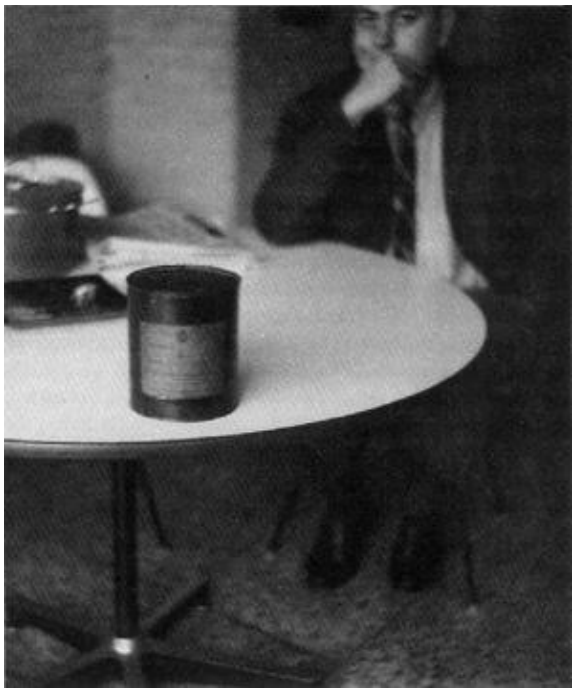

अटारी में उनकी अस्थियां मिलने के बाद

फिर भी, स्लैटिन परिवार को उम्मीद थी कि देर-सवेर कोई न कोई राख पर अपना दावा जरूर करेगा। इस बीच, वे खुद को श्रीमती बुलॉक के अंतिम अवशेषों का संरक्षक मानते थे। और जाहिर तौर पर उन्होंने एलिजाबेथ के साथ सही किया था, क्योंकि जब डिब्बा मिला और उसे बैठक कक्ष में पियानो पर रखा गया, तो कदमों की आहट और परेशान करने वाली आवाजें अचानक बंद हो गईं।

एक और विचित्र घटना येफे किम्बल ने स्वर्गीय मेयर बर्गर को बताई थी। ऐसा लगता है कि श्रीमती बुलॉक की अस्थियां मिलने से कुछ सप्ताह पहले, किसी ने दरवाज़े की घंटी बजाई और कमरों के बारे में पूछताछ की। श्रीमती स्लेटिन को याद है कि वह एक सलीके से कपड़े पहने युवक था, और उन्होंने उसे बताया कि कमरे अभी तैयार नहीं होंगे, लेकिन वह उसका नाम लिख लेंगी ताकि तैयार होने पर उसे सूचित कर सकें। युवक एक कार्ड छोड़ गया, और श्रीमती स्लेटिन को उस पर लिखा नाम आज भी स्पष्ट रूप से याद है। वह नाम ई. सी. बुलॉक का था। संयोगवश, वह युवक फिर कभी नहीं लौटा।

यह अजीब लगता है कि श्रीमती स्लेटिन डिब्बे और कार्ड पर बुलॉक नाम के अजीब संयोग से इतनी विचलित नहीं हुईं, लेकिन जैसा कि मैंने पहले ही कहा है, श्रीमती स्लेटिन परलोक से होने वाले उन हस्तक्षेपों से भलीभांति परिचित हैं जो हममें से अधिकांश लोगों की सोच से कहीं अधिक आम हैं। उनके लिए, यह कुछ अजीब था, लेकिन साथ ही ऐसा भी था जो निस्संदेह अपने आप सुलझ जाएगा। श्रीमती बुलॉक की राख की उनके बैठक कक्ष में निरंतर उपस्थिति से वह न तो विचलित हुईं और न ही प्रसन्न हुईं। श्रीमती स्लेटिन में मानसिक क्षमताएं हैं, इसलिए वह अदृश्य से भयभीत नहीं होतीं। वह अदृश्य आगंतुकों को भी उतनी ही सहजता से लेती हैं जितनी कि वास्तविक व्यक्तियों को, और शायद यही इस विषय को देखने का स्वाभाविक तरीका है।

ग्रीनविच विलेज में इतने सारे भूतिया या कथित तौर पर भूतिया घर हैं कि स्लेटिन परिवार जैसे मामले स्थानीय लोगों का ज्यादा ध्यान आकर्षित नहीं करते। मेयर बर्गर का साक्षात्कार टाइम्स में प्रकाशित होने तक, स्लेटिन परिवार के करीबी दोस्तों के अलावा बहुत कम लोगों को इस स्थिति के बारे में पता था।

श्री बर्गर, जो मैनहट्टन की लोककथाओं के विशेषज्ञ थे, स्लेटिन परिवार को जानते थे और भूतों के बारे में भी उन्हें अच्छी जानकारी थी। उन्होंने सहानुभूतिपूर्वक इस विषय पर बात की और स्लेटिन परिवार प्रसन्न हुआ। वे अपने भूतिया घर में आराम से रहने लगे थे और चूंकि आवाजें बंद हो गई थीं, इसलिए उन्होंने इस मामले पर आगे कोई विचार नहीं किया।

मुझे जून 1957 में टाइम्स अखबार में यह कहानी मिली और मैंने तुरंत इस पर आगे शोध करने का फैसला किया। मुझे नहीं पता कि मेरी मित्र और माध्यम, श्रीमती एथेल मेयर्स ने भी वह लेख पढ़ा था या नहीं; संभव है कि उन्होंने पढ़ा हो। खैर, मैंने उन्हें बस इतना ही बताया कि विलेज में एक भूतिया घर है और वह मेरे साथ इसकी जांच करने के लिए तैयार हो गईं। फिर मैंने स्लैटिन परिवार को फोन किया और कुछ देरी के बाद, 17 जुलाई 1957 को रात 9:30 बजे एक प्रेतात्माओं से संपर्क करने का कार्यक्रम आयोजित करने में सफल रहा। कार्यक्रम में स्लैटिन परिवार के दो मित्र, श्री और श्रीमती एंडरसन, मेयर बर्गर, स्लैटिन परिवार, श्रीमती मेयर्स और मैं उपस्थित थे।

घर में प्रवेश करते ही और हमारे चारों ओर एकत्रित होकर मेज पर बैठते ही श्रीमती मेयर्स समाधि की अवस्था में चली गईं। जैसे ही वे समाधि की अवस्था में पहुँचीं और उस सीमावर्ती अवस्था में थीं जहाँ अंतर्ज्ञान पूर्ण समाधि को छूता है, उन्होंने एक छोटी महिला की उपस्थिति का वर्णन किया जो धीरे-धीरे चलती थी, एक तरफ से लकवाग्रस्त थी और हृदय रोग से पीड़ित थी। "वह बेट्टी है," श्रीमती मेयर्स ने समाधि की अवस्था में जाते हुए धीरे से कहा। अब बेट्टी का व्यक्तित्व माध्यम की मुखरता का प्रयोग करने लगा।

हमारी माध्यम ने समाधि की अवस्था में ही अपनी बात जारी रखी: “वह मुझे पारिवारिक कब्रिस्तान में नहीं दफनाना चाहता था—मेरा भाई—उनकी नज़र में तो मेरी शादी भी नहीं हुई थी...लेकिन ईश्वर के सामने मेरी शादी हुई थी...एडवर्ड बुलॉक...मैं क्रूस की छाया में ईसाई रीति से दफनाया जाना चाहती हूँ—जहाँ भी क्रूस हो—लेकिन उनके साथ नहीं!” यह सब उसने इतनी घृणा और भावनाओं से कहा कि मैंने दिवंगत बेट्टी को समझाने की कोशिश की कि वह ऐसा करना बंद कर दे, या कम से कम कब्रिस्तान में अपने परिवार के साथ दफन न होने की अपनी इच्छा का कारण बताए।

“मैंने धार्मिक रीति-रिवाजों के अनुसार विवाह नहीं किया,” उन्होंने कहा और बताया कि उनके भाई का नाम एडी था, वे न्यूयॉर्क के प्लेज़ेंटविले से आए थे और उनकी माँ का मायके का नाम एलिज़ाबेथ मैककुलर था। “अब मुझे शांति मिल गई है,” उन्होंने शांत स्वर में कहा।

जिस घर में वह कभी रही ही नहीं, उसके अटारी में उसकी अस्थियां कैसे मिलीं? “मैं एडी के साथ गई थी,” बेट्टी ने जवाब दिया। “परिवार में झगड़ा हुआ था... मेरा पति एडी के साथ गया... अस्थियां चुराने के लिए... अंतिम संस्कार न करवाने के लिए पैसे देने के लिए... वह वापस आया और एडी से अस्थियां ले लीं... अस्थियां छिपा दीं... चार्ल्स को पता था... घर के ऊपर छत बनवा दी... अस्थियां छत से नीचे आ गईं... इसलिए एडी उन्हें ढूंढ नहीं पाया...”

मैंने पूछा, क्या यहाँ कोई बच्चे हैं?

“एडी और ग्रेसी। ग्रेसी की बचपन में ही मृत्यु हो गई थी, और एडी अब कैलिफोर्निया में रहता है। चार्ली मेरी रक्षा करता है!” उसने अपने पति का जिक्र करते हुए कहा।

इस बिंदु पर मैंने दिवंगत आत्मा से पूछा कि अब इस घर में रहने का क्या अर्थ है? क्यों न वह उस महान संसार में चली जाए जहाँ उसका वास्तविक स्थान है? लेकिन जाहिर तौर पर आत्मा

को ऐसा बिल्कुल भी नहीं लगा! "मुझे अपने सिर पर एक क्रॉस चाहिए... अब मुझे दो जीवन जीने हैं... और मुझे आपके साथ रहना अच्छा लगता है!" उसने श्रीमती स्लेटिन की ओर झुकते हुए कहा। श्रीमती स्लेटिन मुस्कुराईं। उन्हें एक भूत के घर में रहने से कोई आपत्ति नहीं थी। "आपके पारिवारिक कब्रिस्तान में दफनाने के बारे में क्या ख्याल है?" मैंने सुझाव दिया कि यह सबसे अच्छा रहेगा। आत्मा उग्र हो गई।

“माँ ने मुझे कभी माफ़ नहीं किया। मैं कभी उनके साथ जाकर चैन से नहीं रह सकती। मुझे ज़्यादा परवाह नहीं। जब वो मुझे माफ़ कर देंगी, शायद सब ठीक हो जाएगा... बस जहाँ हरे-भरे पेड़ का क्रॉस हो—और जहाँ हड्डियों को लेकर कोई लड़ाई न हो... मैं बस आज़ाद होना चाहती हूँ, और शांति हो... मेरा उनसे कोई लेना-देना नहीं था... सिर्फ़ इसलिए कि मैंने एक ऐसे आदमी से प्यार किया जो धर्म का नहीं था, और इसलिए उन्होंने मेरी हड्डियाँ ले लीं और उनके लिए लड़ाई की, और फिर उन्हें इस जगह पर रख दिया, और उन्हें वहाँ सुलगने दिया, ताकि कोई उन्हें छू न सके... मैं कितनी मूर्ख थी! जब वे पोप राज्य से जुड़े हुए हैं....”

क्या उसके पति ने राख को अकेले ही छिपाया था?

“वहाँ एक पीबॉडी भी था। उसने उसकी मदद की।”

उसका अंतिम संस्कार किसने किया?

“यह चार्ल्स की इच्छा थी, एडी की नहीं, इसलिए उनमें झगड़ा हुआ। चार्ली एक प्रेस्बिटेरियन थे...और वे मुझे अपने चर्च में शामिल करना चाहते थे, लेकिन मैं उन सभी को नाराज़ नहीं कर सकता था। उन्होंने इसे छत के रास्ते मेरी पहुँच से दूर रख दिया; यह अभी भी गर्म था...उन्होंने इसे श्मशान से चुरा लिया।”

मैंने पूछा, इससे पहले आपका घर कहाँ था?

“मैं यहीं पास में रहती थी,” उसने जवाब दिया, और मानो अपनी पहचान पर फिर से ज़ोर देने के लिए, उसने आगे कहा—“बुलॉक!”

पूरी प्रक्रिया के दौरान, भूत ने आयरिश लहजे में बात की। माध्यम का आयरिश मूल नहीं है, और भाषा की प्रामाणिकता को पहचानने की मेरी अच्छी समझ है, शायद इसलिए कि मैं सात भाषाएँ बोलता हूँ और कई अन्य को पहचान सकता हूँ। यह उस तरह का लहजा नहीं था जैसा कोई चतुर अभिनेता बनावटी तरीके से बोलता है। यह असली लहजा था।

जब सम्मोहित माध्यम श्रीमती बुलॉक के लिए काम कर रही थी, तब मुझे वह समय याद आया जब मैंने पहली बार ब्रिडी मर्फी के नाम से मशहूर हुई आवाज़ की टेप रिकॉर्डिंग सुनी थी। मुझे वह शाम याद है जब 'द सर्च फॉर ब्रिडी मर्फी' के लेखक मोरे बर्नस्टीन ने मुझे और कुछ साथी शोधकर्ताओं को एक रोमांचक मामले के बारे में बताया जिस पर वह हाल ही में काम कर रहे थे। टेप पर आवाज़ में भी असली आयरिश लहजा था, और ऐसा लहजा जिसे कोई भी अभिनेता, चाहे वह कितना भी प्रतिभाशाली क्यों न हो, पूरी तरह से नकल नहीं कर सकता था!

अब माध्यम बेजान सा प्रतीत हुआ—जैसे ही एलिजाबेथ बुलॉक का भूत गायब हो गया। कुछ क्षण बाद, श्रीमती मेयर्स जाग उठीं, दो दुनियाओं के बीच कड़ी बनने के बावजूद उन्हें कोई नुकसान नहीं हुआ था।

आत्माओं से संपर्क करने के बाद, मैंने श्रीमती स्लेटिन को सुझाव दिया कि राख वाले डिब्बे को उनके बगीचे में, उस पेड़ के नीचे दफना दिया जाए जिसे मैंने पीछे की खिड़की से देखा था। लेकिन श्रीमती स्लेटिन आश्वस्त नहीं थीं। उन्हें लगा कि उनकी आत्मा पियानो पर ही रहकर उतनी ही खुश है।

फिर मैंने श्रीमती स्लेटिन की ओर ध्यान दिया, क्योंकि उन्होंने स्वयं को मानसिक शक्तियों से ग्रस्त होने की बात स्वीकार की थी। एक प्रतिभाशाली चित्रकार, येफे किम्बल जानती थीं कि श्रीमती मेयर्स ने सही व्यक्ति से संपर्क किया था जब उन्होंने सत्र की शुरुआत में लंगड़ाकर चलने वाली छोटी महिला का वर्णन सुना; उन्होंने स्वयं भी अक्सर अपनी "मानसिक दृष्टि" से उस भूत को "देखा" था और उससे मित्रता विकसित कर ली थी। उनका तर्क था कि वह कोई दुखी भूत नहीं था, और विशेष रूप से अब जब उसका रहस्य उजागर हो चुका था - एलिजाबेथ बुलॉक को "उसके परिवार" से क्यों वंचित किया जाए? वास्तव में क्यों?

बैंक स्ट्रीट पर वह घर आज भी मौजूद है, और राख का डिब्बा आज भी पियानो की शोभा बढ़ा रहा है। 1957 में स्लेटिन परिवार से मिलने आए ई. सी. बुलॉक वही एडी थे या नहीं, जिसे भूत ने अपना बेटा बताया था, यह मैं नहीं कह सकता। कैलिफ़ोर्निया में उन्हें ढूंढने के मेरे प्रयास उतने ही व्यर्थ साबित हुए जितने कि पहले उनके किसी रिश्तेदार को ढूंढने के प्रयास।

तो स्लैटिन परिवार गांव में अपने प्यारे, शांत घर में खुशी से रह रहा है, और एलिजाबेथ बुलॉक उनकी सबसे खास किराएदार हैं। हालांकि मुझे शक है कि जनगणना अधिकारी उन्हें दर्ज करना चाहेंगे।

*35

सीटी बजाने वाला भूत

मेरी प्रिय मित्रों में से एक हैं न्यू जर्सी के एजवाटर की प्रसिद्ध भविष्यवक्ता फ्लोरेंस स्टर्नफेल्स, जिन्होंने कई पुलिस विभागों को अपराधियों या गुमशुदा व्यक्तियों को पकड़ने में सहायता की है। हालांकि, उनकी असली महत्वाकांक्षा गंभीर वैज्ञानिकों को यह पता लगाने में मदद करना था कि उन्हें क्या "अलग" बनाता है, वह शक्ति - जिसे वे "शक्तियाँ" कहती हैं - कहाँ से आती है। अतीत में कई बार उन्होंने जांचकर्ताओं के साथ बैठने के लिए स्वेच्छा से अपना समय दिया है, ऐसा कुछ ही पेशेवर माध्यम करते हैं।

फ्लोरेंस से मेरी मुलाकात एक साल से भी ज्यादा समय से नहीं हुई थी, तभी एक दिन फोन की घंटी बजी और उसकी थोड़ी कर्कश आवाज ने मुझे खुशी से नमस्कार कहा। ऐसा लग रहा था कि न्यूयॉर्क के क्रोटन में रहने वाले एक बेहद सम्मानित मनोचिकित्सक ने फ्लोरेंस की मानसिक शक्तियों पर प्रयोग करने का फैसला किया था। क्या मैं उनके साथ चल सकता हूँ? वह चाहती थीं कि मैं वहाँ मौजूद रहूँ ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि सब कुछ ठीक-ठाक है। मैं आने के लिए तैयार हो गया, और अगले दिन डॉ. खान ने खुद मुझे फोन किया, और हेंडरसन नाम के एक युवा जोड़े ने मुझे अपनी कार में क्रोटन ले जाने की व्यवस्था की।

जब हम हडसन नदी के पास स्थित आलीशान खान हाउस पहुंचे, तो वहां लगभग तीस लोग पहले से ही मौजूद थे, जिनमें ज्यादातर डॉक्टर के पड़ोसी और मित्र थे। जाहिर है, फ्लोरेंस उनमें से किसी को भी नहीं जानती थी, और उनमें से कुछ ही लोग उसकी यात्रा के उद्देश्य के बारे में जानते थे। लेकिन डॉक्टर इतने प्रसिद्ध सामुदायिक नेता और शिक्षक थे कि वे सभी बड़ी उम्मीदों के साथ आए थे।

यह घर एक पुराने घर का पुनर्निर्मित रूप था, जिसमें एक ऊपरी मंजिल और एक बड़ा बगीचा था जो नदी तक फैला हुआ था।

फ्लोरेंस ने डॉक्टर को निराश नहीं किया। मेरे बगल में, एक अंडाकार मेज के शीर्ष पर बैठी, उसने कमरे में मौजूद लोगों, उनके रिश्तेदारों और दोस्तों, चाहे वे जीवित हों या मृत, के बारे में तेज़ी से जानकारी और नाम बताए और उसे तुरंत प्रतिक्रिया और स्वीकृति मिली। चौंकाने वाली जानकारी, जैसे "एक पाँच साल के बच्चे की मृत्यु हो गई है, और उसकी माँ, जिसके पैर लकवाग्रस्त हैं, यहाँ मौजूद है।" वह निश्चित रूप से मौजूद थी। "क्या यहाँ किसी का कॉली कुत्ता खो गया है?" हाँ, किसी का खो गया था, तीन हफ्ते पहले। फ्लोरेंस एक बड़ी सफल डॉक्टर साबित हुई।

जब सब कुछ समाप्त हो गया, तो भीड़ छंट गई और मुझे हमारी मेज़बान, डॉक्टर की युवा पत्नी से बात करने का मौका मिला। वह अपने पति की तरह ही मानसिक मामलों में गहरी रुचि रखती थीं; लेकिन जहाँ डॉ. खान के लिए यह विशुद्ध रूप से वैज्ञानिक जिज्ञासा थी, वहीं उनकी पत्नी सहज ज्ञान वाली और स्वयं भी "आभास" करने वाली प्रतीत होती थीं। "आप जानते हैं, मुझे लगता है कि यहाँ एक भूत है," उन्होंने मेरी ओर ऐसे देखा जैसे उन्होंने अभी-अभी दुनिया की सबसे साधारण बात कही हो।

हम एक शांत कोने में चले गए, और मैंने उनसे पूछा कि एक प्रख्यात मनोचिकित्सक की पत्नी के लिए इस असाधारण बयान के पीछे उनके क्या कारण थे। उन्होंने मुझे आश्वस्त किया कि यह कोई मतिभ्रम नहीं था।

“वह एक सीटी बजाने वाला भूत है,” उसने बताया, “हमेशा एक ही गाना सीटी बजाता रहता है, लगभग चार बार—एक खुशनुमा धुन। मुझे लगता है कि वह एक खुशमिजाज भूत होगा!”

मैंने पूछा, "यह सब कब शुरू हुआ?"

श्रीमती खान ने जवाब दिया, "पिछले पांच वर्षों में मैंने उन्हें लगभग बीस बार सुना है। हमेशा एक ही धुन।"

और क्या आपके पति को भी यह सुनाई देता है?

उसने अपना सिर हिलाया।

“लेकिन उसे खटखटाहट सुनाई देती है। आमतौर पर हमारे बेडरूम में, और देर रात को। ये हमेशा तीन बार होती हैं। मेरे पति इसे सुनते हैं, उठते हैं और पूछते हैं कि कौन है, लेकिन ज़ाहिर है वहाँ कोई नहीं होता, इसलिए उन्हें कोई जवाब नहीं मिलता।”

“पिछली सर्दियों में, लगभग तीन बजे, हमें सामने के दरवाजे पर ज़ोर से दस्तक की आवाज़ से नींद से जगाया गया। जब हम दरवाजे पर पहुँचे और उसे खोला, तो वहाँ कोई नहीं था। सड़क की ओर जाने वाला रास्ता भी खाली था, और यकीन मानिए, कोई भी उस रास्ते से नीचे आया हो और हमारे दरवाजे तक पहुँचने तक दिखाई न दे, ऐसा हो ही नहीं सकता था!”

और वो सीटी की आवाज़—आप उसे आमतौर पर कहाँ सुनते हैं?

"हमेशा लिविंग रूम में—यहाँ," श्रीमती खान ने बगीचे की ओर खुलने वाली कांच की दीवार वाले ऊँची छत वाले, लकड़ी के पैनल से सजे कमरे की ओर इशारा करते हुए उत्तर दिया।

“देखिए, यह बैठक कक्ष कभी एक मंच हुआ करता था... यह घर कभी ग्रीष्मकालीन रंगमंच हुआ करता था, और हमने मंच वाले हिस्से को इस कमरे में बदल दिया। अब याद आया, मुझे वह सीटी की आवाज़ उस शयनकक्ष में भी सुनाई दी थी जिसका इस्तेमाल घर के पूर्व मालिक, यानी उस व्यक्ति ने किया था जिसने रंगमंच और घर दोनों का निर्माण किया था।”

“इस आदमी के बारे में क्या? वह कौन था?”

“क्लिफर्ड हारमोन। द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान जब वे फ्रांस में फंस गए थे, तब नाजियों ने उनकी हत्या कर दी थी। घर काफी पुराना है, उसमें कई गुप्त रास्ते हैं—दरअसल, तीन हफ्ते पहले ही मैंने सपना देखा था कि मैं उनमें से एक रास्ते में प्रवेश कर रहा हूँ!”

“तुमने यह सपना देखा था?” मैंने कहा। “लेकिन क्या इसका कोई नतीजा निकला?”

श्रीमती खान ने सिर हिलाया। “अगली सुबह, मैंने वही करने का फैसला किया जो मैंने रात में अपने सपने में किया था। मैं उस गलियारे में दाखिल हुई जिसमें मैंने खुद को सपने में प्रवेश करते देखा था, और फिर मुझे कुछ पुरानी, धूल से सनी तस्वीरें मिलीं।”

मैंने तस्वीरें देखीं। उनमें पुरुष और महिला दोनों ही, पुराने ज़माने के परिधानों में नज़र आ रहे थे। कौन जाने, इन तस्वीरों में दिख रहे लोगों ने इसी कमरे में किस तरह की निजी त्रासदी या खुशी का अनुभव किया होगा? मैंने तस्वीरों का गट्ठा श्रीमती खान को लौटा दिया।

मैंने श्रीमती खान से पूछा, "क्या आप माध्यम हैं?" मुझे ऐसा लग रहा था कि इस घर में वही सब कुछ नियंत्रित कर रही थीं।

“हाँ, शायद थोड़ा-बहुत। मैं भविष्य देख सकता हूँ। कुछ समय पहले मैंने मियामी में अपने माता-पिता को पत्र लिखा था, और किसी अज्ञात कारण से मैंने पत्र पर 3251 साउथ 23rd लेन का पता लिख दिया था। जहाँ तक मुझे पता था, ऐसा कोई पता था ही नहीं, और पत्र कुछ दिनों में मुझे वापस मिल गया। बाद में, मेरे माता-पिता ने मुझे पत्र लिखकर बताया कि उन्होंने अभी-अभी 3251 साउथ 23rd लेन में एक घर खरीदा है।”

इसी दौरान डॉक्टर भी बातचीत में शामिल हो गए और हमने हारमोन के बारे में बात की।

डॉक्टर ने कहा, "मुझे यकीन है कि उसने यहां बहुत से अधूरे काम छोड़ दिए हैं। उसके पास अपनी संपत्ति के निर्माण और सुधार के लिए बड़ी-बड़ी योजनाएं थीं, और निश्चित रूप से, कई लड़कियां थीं जिनमें उसकी दिलचस्पी थी।"

मैंने काफी कुछ सुन लिया था। भूतिया घर की सारी जानी-पहचानी बातें मौजूद थीं। भूत, अधूरा काम, और मालिक जो अपनी इच्छा से काम करते हैं। मैंने "सीटी बजाने वाले भूत" से संपर्क करने के लिए एक "बचाव सभा" जैसी प्रार्थना सभा आयोजित करने का प्रस्ताव रखा।

हमने 3 अगस्त, 1960 को आत्माओं से संपर्क करने का अनुष्ठान करने का निर्णय लिया, और यह भी तय किया कि मैं श्रीमती मेयर्स को साथ लाऊँगी, क्योंकि इसके लिए एक ट्रान्स मीडियम की आवश्यकता थी। वहीं, फ्लोरेंस, जो मुझे मूल रूप से इस घर में लाई थीं, एक क्लायरवॉयंट और साइकोमेट्रिस्ट थीं। एक साइकोमेट्रिस्ट किसी विशेष व्यक्ति से संबंधित वस्तुओं को छूकर "अंतर्दर्शन" प्राप्त करता है।

एक बार फिर, परिवहन की व्यवस्था श्रीमती हेंडरसन ने की, जिनके पति इस बार साथ नहीं आ सके। इस बार जब हम पहुँचे तो बड़े से बैठक कक्ष में कोई उत्सुक भीड़ नहीं थी। केवल खान परिवार के मेहमान, जिनमें श्री और श्रीमती बोवर और उनकी बेटी शामिल थे, उस घेरे में शामिल हो गए जो हमने डॉक्टर के देर से आने के तुरंत बाद बनाया था। हमेशा की तरह, समाधि में जाने से पहले, श्रीमती मेयर्स ने हमें अपने मानसिक आभास दिए; पूर्ण समाधि में जाने से पहले वांछित संपर्क स्थापित करना आवश्यक है।

श्रीमती मेयर्स ने कहा, "कुछ नाम, एक रॉबर्ट, एक डेलिया, एक हेरोल्ड, और बैंक्स नाम... ओह... और फिर एक हार्ट।" उन्हें सही वर्तनी के बारे में संदेह था।

ठीक उसी क्षण, श्रीमती खान और मैंने दोनों ने भारी साँसों की आवाज़ स्पष्ट रूप से सुनी। ऐसा लग रहा था कि यह आवाज़ बैठे हुए लोगों के ऊपर और पीछे से आ रही है। "मेलिश और गोल्डफ़ार्ब!" श्रीमती मेयर्स धीरे-धीरे बड़बड़ाने लगीं, और उनकी नींद और भी गहरी होती जा रही थी। "यह अजीब है!" डॉ. खान ने बीच में कहा। "लगभग पंद्रह साल पहले यहाँ एलिश नाम का एक आदमी था...और हाल ही में मिस्टर गोल्डवैग भी आए थे!"

“मैरी...कुछ—ऐन,” माध्यम ने अब कहा। बाद में, séance के बाद, डॉ. खान ने मुझे बताया कि हारमोन की निजी सचिव, जो उस विशाल संपत्ति की पूरी जिम्मेदारी संभालती थीं, एक महिला थीं जिनका नाम—मैरी ब्रास्नाहन था...

अब श्रीमती मेयर्स ने चौड़े कंधों वाले, लोहे जैसे भूरे बालों वाले एक व्यक्ति का वर्णन किया, जिनके बाल बहुत कम उम्र में ही सफेद हो गए थे। उन्होंने कहा, “उन्होंने गहरे नीले रंग का डबल-ब्रेस्टेड कोट पहना हुआ है और उनकी छोटी सी मूंछें हैं। उनके नाम के पहले अक्षर आर. एच. हैं।” फिर उन्होंने आगे कहा, “मुझे लिखावट...कागज़...हस्ताक्षर...दिखाई दे रहे हैं...और एक और युवा, कद में छोटा, हल्के भूरे बालों वाला व्यक्ति है—और वह कुछ कागज़ों को देख रहा है जो फाइलों में रखे जाने हैं। उसके नाम के पहले अक्षर जे. बी. हैं। मुझे लगता है कि पहला व्यक्ति बॉस है, और यह क्लर्क है।” फिर उन्होंने अचानक कहा, “डेबोरा!”

इस बिंदु पर श्रीमती मेयर्स खुद पीछे हट गईं और बोलीं: “मुझे अपनी बांह में एक झनझनाहट महसूस हो रही है; जाहिर है यह प्रकाशन के लिए नहीं है!” लेकिन उन्होंने आगे बढ़ते हुए घर के आसपास मौजूद अन्य लोगों का वर्णन किया जिन्हें उन्होंने “महसूस” किया; उदाहरण के लिए, गर्ट्रूड और एक गंजे सिर वाला, लाल रंग का, मोटा-ताज़ा आदमी, जिसे उन्होंने बी. बी. कहा। “उसका संबंध देबोरा और अन्य लड़कियों पर हुए समझौतों से है।”

श्रीमती मेयर्स को हारमोन की महिलाओं के प्रति आकर्षण रखने वाले व्यक्ति के रूप में कथित प्रतिष्ठा के बारे में बिल्कुल भी जानकारी नहीं थी।

"यह तो मजेदार है," उसने अचानक टिप्पणी की, "मुझे दो महिलाएं बहुत पुराने जमाने के कपड़े पहने हुए दिख रही हैं, जो उनके अपने समय से बहुत पहले के हैं।"

मैंने श्रीमती मेयर्स को इस बात का ज़रा भी ज़िक्र नहीं किया था कि इस घर का इस्तेमाल पहले नाट्य प्रदर्शन के लिए किया जाता था। ज़ाहिर है, उन्हें दो अभिनेत्रियों की छाप मिली।

“बॉब...उसे एक महिला फोन कर रही है।”

इस क्षण, पूर्ण समाधि की अवस्था में प्रवेश हुआ, और माध्यम का अपना व्यक्तित्व गायब हो गया ताकि भूत, यदि वह चाहे तो, हमसे सीधे बात कर सके। कुछ क्षण बाद, माध्यम का नियंत्रक अल्बर्ट आया और घोषणा की कि भूत हमसे बात करेगा। फिर वह चला गया, और कुछ ही सेकंड में श्रीमती मेयर के चेहरे के सामान्य सौम्य भाव की जगह एक अजीब सा चेहरा आ गया। यह एक चतुर, फिर भी गरिमापूर्ण व्यक्ति था। उसकी आवाज़, पहले धीमी थी, लेकिन जैसे-जैसे सेकंड बीतते गए, वह तीव्र होती गई।

“तो... ऐसा ही चलता है... सिक्सपेंस का एक गीत गाओ... अब सब खत्म हो गया है....”

श्रीमती खान ने उत्साह से मेरा हाथ पकड़ा और मेरे कान में फुसफुसाते हुए कहा: "यह उस गाने का नाम है जिसे वह हमेशा सीटी बजाकर गाता था... मुझे पहले याद नहीं आ रहा था।" मेरे मन में उस पुरानी बाल कविता के बोल गूंजने लगे—

छह पेंस का गीत गाओ, राई से भरी एक जेब, चौबीस काले पक्षी, एक पाई में पके हुए। जब पाई खोली गई, तो पक्षी गाने लगे। क्या यह राजा के सामने परोसने के लिए एक स्वादिष्ट व्यंजन नहीं है?

जैसे युद्धकालीन पासवर्ड होता है, वैसे ही हमारे भूत ने माध्यम के जरिए अपनी पहचान बताई थी।

हारमोन ने इस गीत को अपनी धुन के रूप में क्यों चुना? शायद इसकी मधुर लय, इससे जुड़ी बेफिक्री, या शायद कोई भावनात्मक कारण। श्रीमती खान उत्साह से चमक रही थीं।

इसके बाद संचारक ने बोलना जारी रखा: "ठीक है, वह अब नहीं आएगा। वह यहाँ नहीं है...जब आप मर जाते हैं, तब भी आप जीवित रहते हैं।"

मैंने सोचा कि अब मुझे भी कुछ सवाल पूछने चाहिए। "आप यहाँ क्यों हैं?"

सुखद और दुखद यादें। मेरे अपने विचार मुझे...खुश रखते हैं, मैंने उसे प्यार किया। एक खुशी —वह रास्ते में खड़ा है। उसे वह नहीं मिला जो उसका था। जिमी शायद उसे वह दिला दे। वह रास्ते में खड़ा है!

आप इस घर में क्यों आते हैं?

“उससे मिलने के लिए। वह हमारी आमने-सामने की मुलाकात की जगह थी। हम अब भी आध्यात्मिक रूप से जुड़े हुए हैं, हालांकि वह अब भी तुम्हारे साथ है और मैं लौट आया हूँ। हम मिल सकते हैं। यह मेरा घर है। मेरी कल्पनाओं की संतान।”

मुझे लगा कि वह यह कहना चाह रहा था कि स्वप्न अवस्था में उसका उससे संपर्क होता है। भूत के लिए भी यह बहुत ही असामान्य बात है! मैं सोचने लगा कि आखिर वह कौन है। कोशिश करने में कोई हर्ज नहीं था।

“क्या उसका नाम देबोरा है?” मैंने पूछा। लेकिन प्रतिक्रिया इतनी तीव्र थी कि हमारा भूत गायब हो गया। अल्बर्ट ने माध्यम का कार्यभार संभाला और अनुरोध किया कि भूत से अब और कोई व्यक्तिगत प्रश्न न पूछे जाएँ। उन्होंने यह भी समझाया कि हमारा मित्र वास्तव में घर का मालिक था, माध्यम द्वारा देखा गया दूसरा व्यक्ति उसका सचिव था, लेकिन डॉक्टर ने जो खटखटाहट सुनी थी वह किसी और व्यक्ति द्वारा की गई थी, वह व्यक्ति जो मालिक की प्रेमिका के पीछे पड़ा है।

कुछ देर बाद भूत वापस आया और उसने इस बात की पुष्टि की।

मैं उसे बुलाने के लिए सीटी बजाता हूँ। वह चोरी करने के लिए दरवाज़े खटखटाता है...

"क्या कोई ऐसा अधूरा काम है जिसके बारे में आप हमें बताना चाहते हैं?" मैंने सोचा कि यह बहुत व्यक्तिगत नहीं होना चाहिए।

"वापस लौटने लायक कुछ नहीं, सिर्फ प्यार।"

मैंने सोचा, “क्या घर के नीचे कुछ है?”

“एक छोटी सुरंग थी, लेकिन अब वह सूख चुकी है।” यह सुनकर मैंने डॉक्टर की ओर उत्सुकता से देखा, जिन्होंने सिर हिलाया और बाद में मुझे बताया कि वास्तव में ऐसी सुरंग मौजूद थी।

"आपका क्या नाम है?"

“बॉब। मैं तो सिर्फ खुशी के लिए सीटी बजाता और गाता हूँ।”

इससे पहले कि मैं उनसे और कुछ पूछ पाता, वह सज्जन फिर से चुपके से निकल गए, और एक बार फिर अल्बर्ट, यानी नियंत्रण की कमान, ने संभाल ली:

उन्होंने टिप्पणी की, “इस व्यक्ति की गोलीबारी में बेरहमी से मौत हो गई, उस जगह के पास जिसे वह ऑस्टरलिट्ज़ समझता है... लेकिन निश्चित नहीं है। संपत्ति की बात करें तो, दूसरी महिला को बड़ा हिस्सा मिला।”

उसके बाद और कुछ नहीं हुआ, इसलिए मैंने अनुरोध किया कि प्रेतात्माओं से संपर्क करने का सत्र समाप्त कर दिया जाए।

जब वह माध्यम अपने शरीर में वापस आ गई, तो हमने उस अनुभव पर चर्चा की, और डॉ. खान ने टिप्पणी की कि उन्हें उस नाम के बारे में पक्का पता नहीं था जो हारमोन अपने दोस्तों के बीच इस्तेमाल करता था। यह सोचना बेतुका लग रहा था कि क्लिफोर्ड, जो उसका आधिकारिक पहला नाम था, उसके बाद कोई अधिक परिचित नाम—जैसे, उदाहरण के लिए, बॉब—नहीं लगाया जाता होगा। लेकिन इस बारे में कोई निश्चितता नहीं थी।

“क्या नाज़ियों ने सचमुच उसे मार डाला?” मैंने पूछा। उस बड़े कमरे में एकदम सन्नाटा छा गया। इतनी शांति थी कि पिन गिरने की आवाज़ भी सुनाई दे सकती थी, और बॉवर्स, जो इससे पहले कभी किसी प्रेतात्माओं से संपर्क करने के अनुष्ठान में नहीं गए थे, बस अपनी ठुड्डी पर हाथ रखे, आँखें फाड़कर और उत्साह से भरे बैठे रहे। अल्बर्ट ने अपने “माध्यम” के ज़रिए, जैसा कि वह अपने माध्यम को कहते थे, मुझे जवाब देने में समय लिया।

“मुझे लगता है ऐसा ही है। लेकिन मुझे नहीं लगता कि उसे गोली मारकर मारा गया है। उसे पीट-पीटकर मार डाला गया है!” मैंने डॉक्टर खान की ओर भयभीत होकर देखा, उनसे पुष्टि पाने की कोशिश की, लेकिन उन्होंने केवल अपने कंधे उचका दिए।

दरअसल, हारमोन की मौत कैसे हुई, यह कोई ठीक से नहीं जानता, उन्होंने बाद में खुलासा किया। सच तो यह है कि नाजियों ने युद्ध के दौरान उनकी हत्या कर दी थी। क्या उनका मतलब ऑस्टरलिट्ज़ के बजाय ऑशविट्ज़ था?

मुझे इस विषय पर और चर्चा करने का मन नहीं था। अल्बर्ट की सहायता से, हमने séance समाप्त किया और माध्यम को यथाशीघ्र उसकी समाधि अवस्था से बाहर निकाला।

बैठक के दौरान जो बत्तियाँ धीमी कर दी गई थीं, उन्हें अब दोबारा चालू करने की अनुमति दे दी गई। श्रीमती मेयर्स को उस दौरान घटी घटनाओं में से बहुत कम याद थीं, मुख्यतः उनकी

समाधि की शुरुआत और अंत में हुई घटनाएँ और वाक्य, लेकिन मध्य भाग में हुई घटनाओं का उन्हें कुछ भी याद नहीं था, जब उनकी समाधि सबसे गहरी थी।

अब आधी रात हो चुकी थी और न्यूयॉर्क लौटने का समय हो गया था। मैंने अपने माध्यम मित्र को शुभ रात्रि कहते हुए आशा व्यक्त की कि क्रोटन में अब सब कुछ शांत होगा।

यह तो कोरी कल्पना थी।

अगली सुबह, श्रीमती खान ने मुझे लंबी दूरी से फोन किया। शांति होने के बजाय, घर के आसपास की घटनाएं और भी बढ़ गई थीं।

“आखिर हुआ क्या?” मैंने पूछा। श्रीमती खान उत्साह से भर उठीं।

“आपके जाने के कुछ ही देर बाद हम सो गए,” उसने जवाब दिया, “और सब कुछ बहुत शांत लग रहा था। फिर, सुबह 3 बजे, अचानक बेडरूम की बत्तियाँ अपने आप जल गईं। वहाँ सिर्फ़ एक ही स्विच है। न तो मेरे पति और न ही मैं बिस्तर से उठे थे उस स्विच को चालू करने के लिए। फिर भी, जब मैंने स्विच पर नज़र डाली, तो वह बंद था, मानो किसी ने उसे बंद किया हो!”

“अद्भुत,” मैंने स्वीकार किया।

“लेकिन बात यहीं खत्म नहीं होती,” उसने आगे कहा। “ठीक एक घंटे बाद, चार बजे, वही घटना फिर से घटी। वैसे, क्या आपको बेडरूम की दीवार पर लगे पर्दे याद हैं? आस-पास कोई दरवाजा या खिड़की नहीं है। और तो और, वे सब बंद थे। हवा का कोई झोंका उन पर्दों को हिला ही नहीं सकता था। फिर भी, मैंने पर्दों को अपने आप हिलते हुए साफ-साफ देखा।”

“मुझे लगता है कि वह आपको बताना चाहता है कि वह अभी भी यहीं है!” मैंने बड़ी विनम्रता से कहा। भूत कभी-कभी बहुत जिद्दी होते हैं। लेकिन श्रीमती खान को मुझे और भी कुछ बताना था।

“हमारी मेहमान, श्रीमती बोवर, उस कमरे में रहती हैं जो पहले हारमोन का शयनकक्ष हुआ करता था। आज सुबह वह बड़ी अलमारी के सामने कपड़े पहन रही थीं। अचानक उन्होंने देखा कि कमरे का दरवाजा धीरे-धीरे खुला और फिर ज़बरदस्त ताकत से उन्हें अलमारी में धकेल दिया गया! ज़ाहिर है, कमरे के बाहर कोई नहीं था।”

“और कुछ?” मैंने धीमी आवाज़ में पूछा।

“नहीं, ऐसा नहीं है। बस, मुझे कल रात एक सपना आया। उसमें एक आदमी नीले सूट में था। आपको याद होगा, श्रीमती मेयर्स ने भी एक आदमी को नीले सूट में देखा था। बस मेरे साथ उन्होंने कहा, ‘मिलर’। उन्होंने कई बार कहा, ताकि मुझे ठीक से समझ आ जाए। मैंने एक औरत का भी सपना देखा, जिसने नीली पोशाक पहनी थी और उसके साथ दो छोटे बच्चे थे, जो किसी तरह खतरे में थी। लेकिन मिलर का सपना सबसे ज़्यादा यादगार रहा।”

मैंने श्रीमती खान को उनकी रिपोर्ट के लिए धन्यवाद दिया और उनसे वादा लिया कि आगे कोई भी गड़बड़ी होने पर वे तुरंत मुझे फोन करेंगी।

अगली सुबह जब मैं उठा तो मुझे पूरा यकीन था कि फोन की घंटी बजेगी और श्रीमती खान मुझे कुछ और बताएंगी। लेकिन मैं गलत था। सब कुछ शांत रहा। अगली सुबह भी सब कुछ शांत ही रहा। चार दिन बाद ही श्रीमती खान ने दोबारा फोन किया।

मैंने भूत की कुछ और शरारतों के लिए खुद को तैयार कर लिया था। लेकिन, मेरी राहत के लिए, श्रीमती खान ने फोन करके बताया कि आगे कोई और घटना नहीं हुई है। हालांकि, उन्होंने थोड़ी छानबीन की थी। चूंकि "मिलर" नाम उनके और डॉक्टर दोनों के लिए बिल्कुल अनजान था, इसलिए उन्होंने आस-पड़ोस में पूछताछ की। आखिरकार, पड़ोसियों में से एक को मिलर नाम का एक व्यक्ति याद आया। वह हारमोन के निजी चिकित्सक थे।

“एक बात मैं आपको यहाँ बताना भूल गई थी,” उसने आगे कहा। “हार्मोन का बिस्तर कई सालों से रखा हुआ था। एक दिन मैंने उसे दोबारा इस्तेमाल करने का फैसला किया। एक रात मेरे पति को तकिए के नीचे कालीन की कीलों जैसी कुछ कीलें मिलीं। हम बहुत हैरान हुए—लेकिन कोई स्पष्टीकरण न होने के कारण हम उस घटना को भूल गए। एक बार फिर मुझे बिस्तर में पिसे हुए कांच जैसी कोई चीज मिली, और फिर से, हालांकि बहुत हैरान थी—मैं उस घटना को भूल गई। मुझे नहीं पता कि ये रहस्यमयी घटनाएं कोई मायने रखती हैं या नहीं।”

क्या ऐसा हो सकता है कि हारमोन को किसी और के द्वारा उसके बिस्तर का उपयोग करने पर आपत्ति हो? भूत अपनी सांसारिक वस्तुओं के प्रति काफी अधिकार जताते हैं और "घुसपैठियों" से नाराज़ रहते हैं।

काह्न परिवार में सब कुछ शांत लग रहा था, जब तक कि अक्टूबर के आखिरी दिनों में मुझे श्रीमती काह्न का एक और फोन नहीं आया।

सीटी बजाने वाला भूत वापस आ गया था।

भूत-प्रेत खोजकर्ता के रूप में मेरी प्रतिष्ठा को इससे काफी ठेस पहुंची, लेकिन दूसरी ओर, हारमोन की आत्मा जाहिर तौर पर प्रसन्न थी और धरती पर रहना पसंद करती थी। एक प्रसिद्ध कहावत को थोड़ा बदलकर कहें तो, आप किसी भूत को आत्माओं की दुनिया में ले जा सकते हैं, लेकिन अगर वह खुद न चाहे तो उसे वहां रोक नहीं सकते। अगली सुबह श्रीमती खान की ओर से एक पत्र आया।

जैसा कि मैंने आज शाम फोन पर आपको बताया था, कल रात करीब 1 बजे हमें फिर से सीटी की आवाज़ सुनाई दी, और यह अब तक की सबसे तेज़ आवाज़ थी। मुझे इसे सुनने के लिए ज़्यादा ध्यान देने की ज़रूरत नहीं पड़ी। मेरे पति ने भी इसे सुना, लेकिन उन्हें लगा कि यह चिमनी में हवा की आवाज़ है। फिर, जब आवाज़ लगातार आती रही, तो वे भी मान गए कि यह किसी तरह की घटना है। मैं बिस्तर से उठी और सीटी की आवाज़ की तरफ गई। मैं स्टडी रूम में पहुँची, जहाँ से मैं लिविंग रूम में देख सकती थी। मेरे पीछे वाली खिड़की से रोशनी आ रही थी और लिविंग रूम की छत पर पड़ रही थी... मैंने लिविंग रूम में मेज के सामने एक छोटा सा सफेद धुंध जैसा कुछ देखा, जो तैर रहा था, लेकिन हिल नहीं रहा था। मैंने अपने पति को आवाज़ दी। उन्होंने देखा, लेकिन उन्हें कुछ नहीं दिखा। उन्होंने कहा कि वे लाइट जला देंगे और मैंने उन्हें धुंध के बीच से जाते हुए देखा—उन्होंने लैंप जलाया और सब कुछ सामान्य हो गया।

मैंने कई महीनों से खान परिवार से बात नहीं की है।

क्या सीटी बजाने वाला भूत अभी भी आसपास है? अगर है भी, तो किसी को कोई आपत्ति नहीं है। खुशमिजाज भूतों के साथ कभी-कभी ऐसा ही होता है। वे परिवार के सदस्य बन जाते हैं।

* 36

मेटुचेन भूत

पिछली वसंत ऋतु में एक दिन, जब जमीन पर अभी भी बर्फ थी और हवा में ठंडक थी, मेरे अच्छे दोस्त बर्नार्ड एक्सलरोड, जिनके साथ मैंने कई भूतिया अनुभव साझा किए हैं, ने फोन करके कहा कि वह न्यू जर्सी में एक प्रेतवाधित घर के बारे में जानते हैं, और क्या मुझे अभी भी इसमें दिलचस्पी है।

मैं वहीं था, और बर्नार्ड ने बताया कि मेटुचेन नामक छोटे से कस्बे में औपनिवेशिक काल की कई इमारतें मौजूद हैं। बर्नार्ड ने समझाया कि जिस आधुनिक, समकालीन ईंटों से बने भवन में वह और उसका परिवार रहते हैं, उससे कुछ ही गलियों की दूरी पर एक लकड़ी का घर है जिसके बारे में कहा जाता है कि वह भूतिया है। इसके अलावा उसे और कोई जानकारी नहीं थी। रॉकलैंड काउंटी में स्वर्गीय डेंटन वॉकर के औपनिवेशिक घर में भूत की घटना ने मुझे जॉर्ज वाशिंगटन के समय के भूतों से परिचित कराया था, तब से मैं इस ज्ञान को और बढ़ाना चाहता था। इसलिए बड़ी उत्सुकता के साथ मैंने मेटुचेन के उस घर में भूत का वास देखने के लिए कुछ लोगों को इकट्ठा किया। बर्नार्ड, जो बहुत ही प्रभावशाली व्यक्ति है, ने घर के मालिक, विज्ञापन कार्यकारी श्री केन से अनुमति प्राप्त कर ली। मेरे समूह में श्रीमती मेयर्स, एक माध्यम के रूप में, और उनकी दो सहयोगी, रोज़मेरी डी सिमोन और पर्ल विंडर शामिल थीं, जो टेप रिकॉर्डर चलाकर नोट्स लेंगी। मिस डी सिमोन एक शिक्षिका हैं और श्रीमती विंडर एक दंत चिकित्सक की पत्नी हैं।

6 मार्च, 1960 की दोपहर का समय था, जब हम मेटुचेन के शांत कस्बे में पहुँचे। बर्नार्ड एक्सलरोड हमारा इंतज़ार कर रहे थे, और वे हमें कस्बे के उस पार उस औपनिवेशिक घर तक ले गए जिसका हमें निरीक्षण करना था।

घर के इतिहास या पृष्ठभूमि का ज़िक्र रास्ते भर जानबूझकर टाला गया। घर के मालिक, श्रीमान और श्रीमती केन, के यहाँ एक मेहमान, श्रीमान डेविड, आए हुए थे और हम आठ लोग खूबसूरती से संरक्षित पुराने घर के निचले तल के बैठक कक्ष में एक घेरे में बैठ गए। यह एक शानदार औपनिवेशिक शैली का देहाती घर है, जिसमें एक ऊपरी मंज़िल, एक सीढ़ी और बहुत कम संरचनात्मक बदलाव हैं। इसमें कोई शक नहीं कि केन दंपति का स्वाद बहुत

अच्छा था और उनके घर में यह झलकता था। सारा फर्नीचर उस दौर की शैली का था, जो मुझे अठारहवीं सदी के आरंभिक काल का, शायद उससे भी पहले का लगा। कई बिल्लियाँ इधर-उधर घूम रही थीं, जिससे मुझे बहुत सुकून मिला, क्योंकि मेरा हमेशा से मानना रहा है कि जिस घर में बिल्लियाँ होती हैं, वह घर कभी बुरा नहीं होता, और इसके विपरीत, जहाँ कई बिल्लियाँ होती हैं, वह घर और भी मनमोहक हो जाता है। हालाँकि, उस अवसर पर, सभी बिल्लियों को रसोई में, उनकी पहुँच से दूर रखा गया और जैसे ही हम चिमनी के चारों ओर अर्धवृत्त में बैठे, टेप रिकॉर्डर चालू कर दिया गया। हल्की रोशनी थी, जैसे सर्दियों की दोपहर की धुंधली रोशनी, और सन्नाटा था, जैसे किसी हलचल भरे शहर से दूर किसी देहाती घर का। भूत के लिए अपनी बात कहने के लिए यह एक आदर्श वातावरण था।

जैसे ही श्रीमती मेयर्स अपनी आरामदायक कुर्सी पर बैठीं, उन्होंने टिप्पणी की कि घर में कदम रखते ही उन्हें कुछ अलौकिक आभास हुए थे।

“ऊपर मुझे एक स्त्री से मुलाकात हुई—मतलब, आत्मा के रूप में—लंबे चेहरे वाली, गोल-मटोल गालों वाली, शायद चालीस साल या उससे अधिक उम्र की, राख जैसे भूरे बालों वाली जो कभी सुनहरे रहे होंगे। किसी तरह मुझे उसका नाम मथिल्डा याद आया। उसने घुटनों तक धारीदार कपड़े की पोशाक पहनी हुई थी, फिर टखनों तक चौड़े सादे कपड़े की। उसने हाथ आगे बढ़ाया, और मैंने उसकी उंगली पर एक भारी शादी की अंगूठी देखी, लेकिन उसमें एक कट लगा हुआ था, और वह बार-बार मेरा ध्यान उस कट की ओर दिला रही थी। फिर कमरे के पीछे एक आदमी खड़ा था, उभरी हुई नाक वाला, भूरे रंग का कोट और काली पतलून पहने हुए, ऐसा लग रहा था जैसे उसे किसी बात का पछतावा हो... उसकी आँखें बहुत तीखी थीं... मुझे लगता है कि वह कुछ खोया हुआ ढूंढना चाहती है, और वह इसके लिए उसे दोषी ठहरा रहा है।”

हम ध्यान से सुन रहे थे। किसी ने कुछ नहीं बोला, क्योंकि इससे श्रीमती मेयर्स को अनजाने में ही कोई सुराग मिल सकता था, जो एक अच्छा शोधकर्ता टालना चाहेगा।

“यह तो बहुत दिलचस्प लग रहा है,” मैंने बर्नार्ड को उनके हमेशा के टालमटोल भरे अंदाज में कहते सुना। “क्या आपको कुछ और दिख रहा है?”

“ओह, हाँ,” श्रीमती मेयर्स ने सिर हिलाते हुए कहा, “काफी हद तक—एक तो यहाँ कुछ ऐसे लोग भी हैं जिनका उनसे कोई लेना-देना नहीं है...वे इस जगह के साथ ही आए हैं, लेकिन एक अलग दौर में...मजेदार बात यह है कि ऊपर और नीचे के बीच में, मुझे एक-दो लोग लटके हुए दिखाई देते हैं।”

इस टिप्पणी पर केन दंपति ने एक-दूसरे की ओर त्वरित नज़रें डालीं। स्पष्टतः मेरे माध्यम को सफलता मिल गई थी। बाद में, श्री केन ने हमें बताया कि लगभग 1850 या 1860 के आसपास इस घर में एक व्यक्ति ने आत्महत्या कर ली थी। उन्होंने यह भी पुष्टि की कि दो मंजिलों के बीच कभी एक और मंजिल हुआ करती थी, लेकिन घर को उसके मूल औपनिवेशिक स्वरूप में पुनर्स्थापित करते समय इस अतिरिक्त भाग को हटा दिया गया था।

1740 में निर्मित, इस घर ने एक पुरानी संरचना का स्थान लिया था, क्योंकि यहां से "1738" अंकित वस्तुएं प्राप्त हुई हैं।

“कहा जाता है कि इस घर में एक क्रांतिकारी सैनिक का भूत रहता है,” श्री केन ने आत्माओं से संपर्क करने के बाद बताया। “पिछले मालिकों ने हमें बताया कि उन्हें समय-समय पर अजीबोगरीब आवाजें सुनाई देती थीं, और उनसे पहले वाले मालिक ने भी उन्हें ऐसी घटनाओं के बारे में बताया था। शायद यह कहानी एक मालिक से दूसरे मालिक तक चली आ रही है, लेकिन हमारी पीढ़ी में हमने कभी किसी ऐसे व्यक्ति से बात नहीं की जिसने इस जगह के बारे में कुछ भी असामान्य सुना या देखा हो।”

मैंने पूछा, "आप और आपकी पत्नी का क्या हाल है?"

“ओह, हम थोड़े भाग्यशाली थे—या कहें कि थोड़े बदकिस्मत—यह इस बात पर निर्भर करता है कि आप इसे किस नजरिए से देखते हैं। सन् 1956 में एक दिन, सामने के दरवाजे की कुंडी बहुत जोर से बजी। मेरी पत्नी, जो उस समय घर में अकेली थी, यह देखने गई कि कौन है। वहाँ कोई नहीं था। सर्दी का मौसम था, और घर के चारों ओर गहरी बर्फ जमी हुई थी। बर्फ में किसी के पैरों के निशान नहीं थे।”

“कितना दिलचस्प है,” बर्नार्ड ने कहा। परिवार के साथ दोस्ती होने के बावजूद, यह सब उनके लिए भी नया था।

श्री केन ने धीरे से एक पाइप जलाया, कमरे की नीची छत की ओर धुआं उड़ाया और अपना काम जारी रखा।

“पिछले मालिकों के पास एक कुत्ता था। बड़ा, तगड़ा सा। हमेशा की तरह, वह कभी-कभी कुछ अजीब आवाज़ें सुनता और बुरी तरह घबरा जाता। आधी रात को वह डर के मारे पागल होकर उनके साथ बिस्तर पर कूद पड़ता। लेकिन सिर्फ़ कुत्ता ही नहीं, उन्हें भी आवाज़ें सुनाई देती थीं—किसी के कदमों की आहट दूसरी मंज़िल पर और घर के दक्षिणी हिस्से में स्थित उनके बेडरूम में सुनाई देती थी—दिन के उन समयों पर जब उन्हें पक्का पता होता था कि वहाँ कोई नहीं है।”

“और आपके यहाँ आने के बाद, क्या आपने सचमुच कुछ देखा?” मैंने पूछा। क्या उन्हें भूत के दिखने के बारे में कोई जानकारी थी?

“जी हां,” श्री केन ने कहा। “लगभग एक साल पहले, श्रीमती केन ऊपर ग्रीन रूम में सो रही थीं। लगातार तीन रातों तक, उन्हें आधी रात को एक ही समय पर किसी की मौजूदगी का एहसास हुआ और उनकी नींद खुल गई। ऊपर देखने पर उन्होंने अपने बिस्तर के बगल में एक सफेद आकृति को खड़ा देखा। पहले तो उन्हें लगा कि वह मैं हूं, इसलिए वह डरी नहीं। लेकिन जब उन्होंने उससे बात की, तो वह हवा में गायब हो गई। उन्हें यकीन है कि वह एक पुरुष था।”

हालांकि उसके बाद कुछ भी असामान्य नहीं हुआ था, फिर भी वह अजीब सा एहसास बना रहा। जब बर्नार्ड एक्सलरोड ने भूतों में अपनी रुचि का जिक्र किया और मुझे एक योग्य माध्यम के साथ घर आने का प्रस्ताव दिया, तो मैंने सहर्ष स्वीकार कर लिया। फिर हम वहां थे, श्रीमती मेयर्स धीरे-धीरे समाधि की अवस्था में जा रही थीं। धीरे-धीरे, जो कुछ उन्होंने देखा या सुना, उसका वर्णन उन आत्माओं के व्यक्तित्व में घुलमिल गया, और उनका अपना व्यक्तित्व क्षण भर के लिए गायब हो गया। यह एक बहुत ही धीमी और नियंत्रित प्रक्रिया थी।

“उस पर उसका आरोप लग रहा है,” श्रीमती मेयर्स ने बुदबुदाते हुए कहा। “अब मुझे एक मेज दिखाई दे रही है, उसने चार मग लिए, चार बड़े मग और एक छोटा। क्या उसका मतलब है, चार बूढ़े लोग और एक छोटा आदमी? मुझे एक नाम सुनाई दे रहा है, जेक, जॉन, नहीं,

जोनाथन! फिर चार भारतीय हैं, और वे सुलह करना चाहते हैं। उन्होंने कुछ ऐसा किया है जो उन्हें नहीं करना चाहिए था, और वे सुलह करना चाहते हैं।" उनके ये दृश्य जारी रहे।

"अब मेज पर रखे चार मगों की जगह उनकी पूरी कतार लगी है, कुल पंद्रह, लेकिन मुझे छोटा मग अब नहीं दिख रहा है। मेज के चारों ओर कई लोग खड़े हैं, जिनकी पीठ मेरी तरफ है—तभी कोई पुकारता और चिल्लाता है, और कोई कहता है 'घुटनों के ऊपर से उतारो'।"

बाद में मैंने शोध के माध्यम से यह स्थापित किया कि क्रांतिकारी युद्ध के दौरान यह घर कई छोटी-मोटी झड़पों के ठीक बीच में स्थित था; संभवतः घायलों को इलाज के लिए यहीं लाया गया होगा।

श्रीमती मेयर्स ने अपनी आवाज में बढ़ते उत्साह के साथ अपनी कहानी जारी रखी।

"अब वहाँ कुछ और आदमी खड़े हैं, सभी लंबी पूंछ वाले कोट और सफेद मोजे पहने हुए, और बातें कर रहे हैं। कोई कहता है 'डैन डेरिज' या 'बैनब्रिज', मैं ठीक से समझ नहीं पा रहा हूँ; वह एक तीन कोनों वाली टोपी पहने हुए है, सफेद विग लगाए हुए है, काले बाल बंधे हुए हैं, बहुत पतला आदमी है, छोटी और ऊँची नाक वाला, बहुत जवान नहीं, रोएँदार कॉलर और बड़ी आँखों वाला। यहाँ कुछ हुआ था जिसमें वह शामिल था। वह उन पंद्रह मगों के साथ खड़े आदमियों में से एक है। रात हो चुकी है, और मेज के दोनों ओर दो मोमबत्तियाँ जल रही हैं, मेज पर खाना रखा है—चिकन जैसी खुशबू आ रही है—और फिर लाल मुहरों और सुनहरे रिबन वाला एक कागज है। लेकिन इसमें कुछ गड़बड़ हो जाती है, और अब मेज पर केवल चार मग बचे हैं...मुझे लगता है इसका मतलब है, केवल चार आदमी वापस लौटे हैं। छोटा वाला नहीं। यह आदमी उन चार में से एक है, और किसी तरह छोटा मग एक तरफ धकेल दिया जाता है, मैं उसे शेल्फ पर रखा हुआ देखता हूँ। अब मैं एक छोटे लड़के को देखता हूँ, वह गायब हो गया है, वह चला गया है...लेकिन हमेशा वापस आने की कोशिश करता रहता है।" एलन नाम का एक व्यक्ति... उसने उस आदमी का पीछा किया, लेकिन भारतीयों ने उसे पकड़ लिया और वह कभी वापस नहीं आया। वे उसकी तलाश कर रहे हैं, उसे ढूंढने की कोशिश कर रहे हैं..."

श्रीमती मेयर्स अब पूरी तरह से सम्मोहित लग रही थीं। उनके चेहरे पर गहरी मानसिक पीड़ा के भाव झलक रहे थे, और उनकी आवाज़ कांप रही थी; शब्द रुक-रुक कर निकल रहे थे

और मुझे बार-बार उन्हें समझाने की ज़रूरत पड़ रही थी। व्यावहारिक रूप से देखा जाए तो, अब उस माध्यम पर किसी व्याकुल आत्मा का साया पड़ चुका था। हम चुपचाप सुनते रहे, जैसे-जैसे कहानी आगे बढ़ती गई।

“एलन एक दिन वापस आएगा... उसे वापस बुलाओ... मेरे बेटे, क्या तुम उसे सुन रहे हो? उन्होंने उन भारतीयों को पेड़ पर रख दिया है, क्या तुम उनकी कराह सुन रहे हो?”

मैंने नरमी से पूछा, "तुम्हारे बेटे को कौन ले गया?"

“वे गए... वह उनके साथ गया, उन आदमियों के साथ। अपने पिता जॉन के साथ।”

“उसे किन भारतीयों ने पकड़ा?”

“वहाँ पेड़ पर देखो। उन्होंने ऐसा नहीं किया। मुझे पता है कि उन्होंने ऐसा नहीं किया।”

"जहां वे गए थे?"

“नदी की ओर। मेरे बेटे, क्या तुमने उसे सुना?”

श्रीमती मेयर्स को यह पता होना असंभव था कि घर से कुछ ही दूरी पर एक नदी है। मैं हमेशा की तरह ऐसी घटनाओं में कहानी के समय को निर्धारित करना चाहता था, इसलिए मैंने कहानी को बीच में रोककर पूछा कि आज कौन सा दिन है। कुछ पल का विराम आया, मानो वह अपने विचारों को समेट रही हों। फिर लड़खड़ाती हुई आवाज़ दोबारा सुनाई दी।

“दिसंबर की पहली तारीख....”

दिसंबर की पहली तारीख! दिसंबर की पहली तारीख कहने का यह पुराना तरीका है।

मैंने पूछा, “यह कौन सा साल है?”

इस बार आवाज को यह जानकर हैरानी हुई कि मैं इतना स्पष्ट सवाल क्यों पूछ रहा हूँ, लेकिन उसने मेरी बात मान ली।

“सत्रह...सत्तर...छह।”

"तुम्हारा पति क्या करता है?"

“जोनाथन...?”

क्या उसके पास कोई संपत्ति है?

"फील्ड...."

लेकिन तभी उसे अपने बेटे की याद लौट आई। “एलन, मेरा बेटा एलन। वो मुझे बुला रहा है....”

"उनका जन्म कहाँ हुआ था?"

"यहाँ।"

इस कस्बे का नाम क्या है?

“बेयरिज।”

बाद में मुझे पता चला कि मेटुचेन का वह हिस्सा, जिसमें हम थे, औपनिवेशिक काल में वुडब्रिज के नाम से जाना जाता था, हालांकि यह असंभव नहीं है कि वहां एक बेयरिज भी रहा हो।

अब वह महिला अपने दिल की बात खुलकर कहना चाहती थी। उसने आगे कहा, “देखो, उन्होंने ऐसा नहीं किया, वे पेड़ पर हैं... वे भारतीय, मरे हुए लोग। उन्होंने ऐसा नहीं किया, मैं उनकी आत्माएं देख सकती हूँ और वे निर्दोष थे... चेरी के पेड़ पर।”

अचानक उसने अपनी बात रोकते हुए कहा—“मैं कहाँ हूँ? मैं इतनी दुखी क्यों हूँ?”

किसी नए मुक्त या नए संपर्क में आए भूत के लिए अपनी स्थिति को लेकर भ्रमित होना असामान्य नहीं है। केवल भावनात्मक रूप से विक्षिप्त व्यक्तित्व ही पृथ्वी पर रहने वाला भूत बनता है।

मैंने पूछताछ जारी रखी।

अपने बेटे एलन के लिए सिसकते और रोते हुए, उसने अनजाने में "मैरी डुगन" नाम अपने होठों से, या यूं कहें कि उस सम्मोहित माध्यम के होठों से, जो अब पूरी तरह से उस दुखी महिला के वश में थी, ले लिया।

मैंने तुरंत बीच में टोकते हुए पूछा, "मैरी डुगन कौन है?"

“उसने उससे शादी कर ली, जोनाथन।”

“दूसरी पत्नी?”

“हां...मैं पेड़ के नीचे हूं।”

“आपका जन्म कहाँ हुआ था? आपका विवाह से पहले का नाम क्या था?”

“बेयरिज...स्विफ्ट...मेरा दिल बहुत दुखी है, बहुत ठंडा है, बहुत ठंडा है।”

क्या आपके कोई और बच्चे हैं?

“एलन...मैरी ऐन...जॉर्जिया। वे मुझे बुला रहे हैं, क्या तुम उन्हें सुन रही हो? एलन, वह जानता है कि मैं यहाँ अकेली इंतज़ार कर रही हूँ। उसने खुद को मर्द समझा था!”

मैंने पूछा, "उस समय आपका बेटा कितने साल का था?" उसके मन में सबसे पहले उसके बेटे के लापता होने की ही बात थी।

“मेरा बेटा...ग्यारह साल का...1 दिसंबर, 1776 को उसका जन्मदिन था। ठीक है, यही उसका जन्मदिन था।”

मैंने उनसे पूछा कि क्या एलन का कोई दूसरा नाम भी है, तो उन्होंने कहा, पीटर। उनका अपना मायके का नाम? उन्हें याद नहीं था।

मुझे क्यों नहीं पता? उन्होंने मुझे घर से निकाल दिया... घर पर मैरी का कब्जा था।

“आपके पति ने क्या किया?”

“वह कुम्हार था। उसे साज-सामान के लिए भी भुगतान मिलता था। उसकी दुकान...दक्षिण की ओर जाने वाली सड़क पर थी। बेयरिज। पेड़ों के बाग में, जो हमने दो पड़ोसियों से लिया था।”

यह इलाका मिट्टी के भंडारों और कुम्हारों के लिए जाना जाता है, लेकिन यह बात उस माध्यम के लिए भी उतनी ही अज्ञात थी जितनी मेरे लिए, जब तक कि séance के बाद बर्नार्ड ने हमें इसके बारे में नहीं बताया।

डॉ. डेविड मार्शल की दुर्लभ कृति 'बॉयहुड डेज़ इन ओल्ड मेटुचेन' में वे कहते हैं: "मेटुचेन के ठीक दक्षिण में मिट्टी के विस्तृत टीले हैं।"

लेकिन हमारी आगंतुक पूछताछ से तंग आ चुकी थी। उसका दुख लौट आया और अचानक वह फूट-फूटकर रोने लगी, बिल्कुल एक माध्यम के आँसू, रोते हुए बोली—“मुझे एलन चाहिए! मैं उसे क्यों ढूंढ रही हूँ? मुझे उसकी पुकार सुनाई दे रही है, मुझे उसके कदमों की आहट सुनाई दे रही है... मुझे पता है वह यहीं है... मैं उसे क्यों खोज रही हूँ?”

फिर मैंने समझाया कि एलन भी "पर्दे के उस पार" थी, कि वह केवल "स्थिर खड़े रहकर" और उसे खुद को ढूंढने देकर अपने बेटे से फिर से मिल जाएगी; उसकी बेचैनी भरी हरकतों के

कारण ही उनका मिलन असंभव हो पाया था, लेकिन अगर वह खुद को शांत कर ले तो सब ठीक हो जाएगा।

कुछ क्षण शांत मन से सोचने के बाद, उसकी सिसकियाँ धीमी पड़ गईं और उसकी आवाज़ अधिक दृढ़ हो गई।

"क्या अब आप अपने बेटे को देख सकते हैं?"

“हां, मैं उसे देख रही हूं।” और इतना कहकर वह चुपचाप वहां से चली गई।

कुछ क्षण बाद, मानो वह माध्यम अपने शरीर में वापस लौट आई और अपनी नींद से भरी आँखों को मलने लगी। कुछ क्षण बाद पूरी तरह जागने पर, उसे समाधि की अवस्था का कुछ भी याद नहीं था। अब पहली बार हमने उस घर और उसके प्रेतवाधित आगंतुकों के बारे में बात की।

मैंने अधीरता से पूछा, "इसमें से कितना साबित किया जा सकता है?"

श्री केन ने एक और पाइप जलाया और फिर धीरे-धीरे मुझे जवाब दिया।

“खैर, यहाँ तो बहुत कुछ है,” उसने अंत में कहा। “एक बात तो यह है कि क्रांतिकारी दिनों में यह घर एक शराबखाना हुआ करता था, जिसे एलन हाउस के नाम से जाना जाता था!”

कुछ सप्ताह बाद, बर्नार्ड एक्सलरोड को मेटुचेन शहर का 1870 का इतिहास मिला। उसमें उस घर के बारे में एक टिप्पणी थी, जिसे एक पुराने नक्शे में 1799 में उसके वर्तमान स्थान पर दिखाया गया था:

“उस घर में... श्रीमती एलन रहती थीं, और उस पर एक बोर्ड लगा था, ‘एलेंटाउन केक और बीयर यहाँ मिलती है।’ न्यू इंग्लैंड की परंपरा के अनुसार, सुबह और दोपहर में आधे घंटे या एक घंटे के अंतराल के साथ होने वाली लंबी प्रार्थना सभाओं के बीच, युवाओं के लिए इस प्रसिद्ध रेस्तरां में जिंजर केक और एक गिलास बीयर लेना कोई असामान्य बात नहीं थी...”

मैंने श्री केन से पूछा, "उसने जिन भारतीयों का जिक्र किया था, उनका क्या हुआ?"

उन्होंने पुष्टि करते हुए कहा, "इस क्षेत्र में भारतीय जरूर थे।"

“घर के पीछे तालाब के पास ही भारतीय तीर के नोक मिले हैं। यहाँ आसपास कई भारतीय युद्ध लड़े गए थे, और संयोग से, स्वतंत्रता संग्राम के दौरान, दोनों पक्ष शाम को इस घर में

आकर साथ में बीयर पीते थे। यह अमेरिकियों और अंग्रेजों के बीच एक तरह का निर्जन क्षेत्र था। दिन में वे एक-दूसरे को मार डालते थे, लेकिन रात में श्रीमती एलन के शराबखाने में बीयर पीते हुए एक-दूसरे को नजरअंदाज कर देते थे!"

मैंने श्री केन से पूछा, "आपको यह जानकारी कैसे मिली?"

"एक स्थानीय इतिहासकार थे, श्री वेल्श, जो लगभग तीस वर्षों तक इस घर के मालिक रहे। उन्होंने एक क्रांतिकारी सैनिक के बारे में भी बताया, जिसका भूत घर में ज़मीन से लगभग एक फुट ऊपर 'चलते' हुए स्पष्ट रूप से देखा गया था।"

मैंने कई बार किसी प्रेतवाधित आकृति का वर्णन ठीक इसी तरह से सुना है। ऐसा लगता है कि चलने-फिरने की गति वास्तव में अनावश्यक है, क्योंकि आत्मा का रूप इधर-उधर रेंगता रहता है।

स्थानीय पुस्तकालय में मेटुचेन शहर के बारे में दुर्लभ पुरानी किताबों में दिलचस्प विवरण मिलते हैं। इन कहानियों में अंग्रेजों और अमेरिकियों के बीच हुए युद्धों का जिक्र है, और "26 जून, 1777 को ओक ट्री के आसपास ब्रिटिश सैनिकों और कॉन्टिनेंटल सैनिकों के बीच हुए युद्ध के बाद, लाशों से लदी गाड़ियों" का भी उल्लेख है।

इसमें कोई संदेह नहीं है कि एलन हाउस में घायल और मरणासन्न लोगों के साथ-साथ उनमें से कई को लाया गया था।

मुझे विशेष रूप से जोनाथन एलन के अस्तित्व के प्रमाण और उनके जीवन के विवरण खोजने में रुचि थी।

अभी तक मुझे सिर्फ इतना पता चला था कि श्रीमती एलन नाम की कोई महिला है। उनका पति मेरा अगला लक्ष्य था।

बहुत मेहनत करने और पुरानी वसीयतों और भूमि दस्तावेजों की छानबीन करने के बाद, मुझे इस क्षेत्र में कई एलन नाम के लोग मिले। मुझे उनके पिता हेनरी की वसीयत मिली, जिसमें उन्होंने 4 अप्रैल, 1783 को अपने बेटे जोनाथन को वह जमीन दी थी जिस पर वह रहता है।

1799 के एक नक्शे में "एलन की भूमि" के रूप में चिह्नित भूमि का एक बड़ा हिस्सा दिखाया गया है, और जोनाथन एलन का नाम उस अवधि के कई दस्तावेजों में भूमि के गवाह या विक्रेता के रूप में मिलता है।

मुझे जिस जोनाथन एलन की तलाश थी, वह मिडलसेक्स काउंटी का ही होना चाहिए था, जिसमें मेटुचेन स्थित था। मुझे याद आया कि वह एक तंदुरुस्त व्यक्ति था, और इसलिए उसने ज़रूर कुछ सेवा की होगी। और सच में, क्रांतिकारी युद्ध में न्यू जर्सी के अधिकारियों और सैनिकों के आधिकारिक रजिस्टर में मुझे वह व्यक्ति मिल गया—"एलन, जोनाथन—मिडलसेक्स।"

यह जानकर अच्छा लगा कि श्रीमती एलन की व्याकुल आत्मा अब अपने बेटे के पास शांति से रह सकती है; और शायद दूसरे बेचैन व्यक्ति, उनके पति पर अब लड़के की मृत्यु में लापरवाही का आरोप नहीं लगेगा।

* 37

ग्रीनविच विलेज का एक भूत

सन् 1953 में, जब मैं अपना अधिकांश समय सामान्य विषयों पर लेखन और संपादन में व्यतीत करता था, और हमेशा ही दिलचस्प घटनाओं की तलाश में रहता था, तभी मुझे 'पार्क ईस्ट' पत्रिका की एक प्रति मिली और मुझे आश्चर्य हुआ कि उसमें मेरी कल्पनाओं को जगाने वाली कुछ बेहतरीन सामग्री थी। एलिजाबेथ आर्चर द्वारा लिखित "द घोस्ट ऑफ टेन्थ स्ट्रीट" उस प्रसिद्ध ग्रीनविच विलेज की गली में घटित भूतिया घटनाओं का विस्तृत वर्णन था, जहाँ कलाकार अपना मुख्यालय बनाते हैं और कई इमारतें अठारहवीं शताब्दी की हैं। मेरी सलाह पर, मिस आर्चर की यह कहानी बाद में 'टुमॉरो' पत्रिका में पुनः प्रकाशित हुई। 'पार्क ईस्ट' में पाठ के साथ कुछ बेहतरीन चित्र भी हैं, जिनके लिए 'टुमॉरो' में जगह नहीं थी।

1956 तक, 51 वेस्ट टेन्थ स्ट्रीट पर स्थित प्राचीन स्टूडियो भवन पुराने न्यूयॉर्क के कई पारखियों के लिए एक प्रसिद्ध स्थल था, लेकिन इसे उन साधारण, आधुनिक अपार्टमेंट भवनों में से एक के लिए जगह बनाने के लिए ध्वस्त कर दिया गया था।

आखिरी समय तक, कथित तौर पर 1910 में दिवंगत कलाकार जॉन ला फ़ार्गे के भूत के प्रकट होने की खबरें आती रहीं। सड़क पर कुछ ही घरों के बाद चर्च ऑफ़ द असेंशन है; वेदी पर लगी पेंटिंग, "द असेंशन," जॉन ला फ़ार्गे की कृति है। दरअसल, कलाकार ने इस विशाल पेंटिंग पर काम अपने स्टूडियो, नंबर 22, 51 वेस्ट टेन्थ स्ट्रीट में किया था। हालांकि, उन्होंने इसे चर्च में ही पूरा किया था। सुदूर पूर्व से लौटने के बाद, ला फ़ार्गे ने पेंट की कई परतों का उपयोग करने की एक नई तकनीक का प्रयोग किया, जिससे पेंटिंग अपेक्षा से अधिक भारी हो गई। पेंटिंग को टांगा गया, लेकिन उसका ढांचा गिर गया; ला फ़ार्गे ने एक मजबूत ढांचा बनाया और इस बार पेंटिंग अपनी जगह पर टिकी रही। कई साल बीत गए। महान उपन्यासकार और चित्रकार के पोते ओलिवर ला फ़ार्गे ने अपनी युवावस्था का अधिकांश समय अपने प्रसिद्ध दादा के साथ बिताया था। एक दिन, सड़क के उस पार काम करते समय, उन्हें बताया गया कि पेंटिंग फिर से गिर गई है। सड़क पार करते हुए उसने देखा कि पेंटिंग सचमुच गिर गई थी, और उसके दादाजी की उसी क्षण मृत्यु हो गई थी!

भारी पेंटिंग का गिरना ला फ़ार्गे के लिए कोई मामूली बात नहीं थी, जो एक चित्रकार होने के साथ-साथ एक प्रसिद्ध वास्तुकार भी थे। न्यूयॉर्क में कई इमारतें, जिनके नक्शे उन्होंने पचहत्तर साल पहले बनाए थे, आज भी खड़ी हैं। लेकिन वेदी पर बनी पेंटिंग के ढांचे में शायद कोई खामी रह गई थी। और ऐसा लगता है कि यही ला फ़ार्गे के भूतिया दर्शन का कारण है। 51 नंबर के कलाकार हमेशा यही कहते थे कि ला फ़ार्गे को तब तक चैन नहीं मिलेगा जब तक वे अपनी गणनाओं को ठीक नहीं कर लेते और गड़बड़ी का पता लगाने के लिए ढांचे के मूल नक्शे नहीं खोज लेते। एक कलाकार और शिल्पकार के रूप में खुद को साबित करने की ज़िद ही ला फ़ार्गे के भूत के बार-बार अपने पुराने ठिकानों पर लौटने का मूल कारण हो सकती है।

इस तरह की पहली घटना 1944 में सामने आई, जब फ्योडोर रिम्स्की नाम का एक चित्रकार और उसकी पत्नी मकान नंबर 22 में रहते थे। एक शाम वे ओपेरा से लौटे। अपने स्टूडियो के पास पहुँचते ही उन्होंने देखा कि एक बत्ती जल रही थी और दरवाजा खुला था, जबकि उन्हें अच्छी तरह याद था कि उन्होंने दरवाजा बंद रखा था। रिम्स्की स्टूडियो में दाखिल हुए, प्रवेश द्वार पर लगे भारी पर्दों को हटाया और आश्चर्य से रुक गए। कमरे के बीचोंबीच, एक लैंप की

रोशनी में, रिम्स्की के अनुसार, अपनी लाइब्रेरी के कोने में रखी बड़ी कुर्सी के पीछे एक अजनबी दिखाई दिया; उस आदमी ने एक लंबी काली टोपी और एक गहरा, लहराता हुआ मखमली कोट पहना हुआ था। रिम्स्की ने जल्दी से अपनी पत्नी को रुकने के लिए कहा और उस घुसपैठिए को करीब से देखने के लिए कमरे के उस पार दौड़ पड़े। लेकिन जैसे ही चित्रकार कुर्सी के पास पहुँचे, वह आदमी गायब हो गया।

बाद में, रिम्स्की ने अपने अनुभव के बारे में इमारत के एक पूर्व मालिक को बताया, जो संयोगवश एक शौकिया इतिहासकार थे। उन्होंने रिम्स्की को अपनी इमारत के पूर्व किरायेदारों की कुछ तस्वीरें दिखाईं। उनमें से दो तस्वीरों में, रिम्स्की ने अपने आगंतुक को आसानी से पहचान लिया, जिसने ठीक वैसे ही कपड़े पहने थे जैसे रिम्स्की ने उसे पहने देखा था। यूरोप से हाल ही में लौटे रिम्स्की ला फ़ार्गे के बारे में कुछ नहीं जानते थे और उन्होंने कभी उनकी तस्वीर नहीं देखी थी। भूत द्वारा पहनी गई बॉल ड्रेस सदी के मोड़ पर आम नहीं थी, लेकिन ला फ़ार्गे इस तरह के अजीबोगरीब कपड़े पहनने के लिए जाने जाते थे।

तीन साल बाद, रिम्स्की दंपति अपने स्टूडियो में कुछ मेहमानों का मनोरंजन कर रहे थे, जिनमें विलियम वेबर नाम का एक विज्ञापन व्यवसायी भी शामिल था, जिसके बारे में कहा जाता था कि उसे अतीत में मानसिक अनुभव हुए थे। लेकिन वेबर उपहास के डर से अपनी इस "विशेष प्रतिभा" के बारे में कभी बात नहीं करना चाहता था। वेबर, श्रीमती वेबर और दो अन्य मेहमानों के बीच बातचीत चल रही थी, तभी विज्ञापन व्यवसायी की पत्नी ने देखा कि उसके पति की निगाहें अचानक कमरे के दूसरी तरफ रखी एक अलमारी पर टिक गईं, जहाँ चित्र रखे थे। उसे कुछ दिखाई नहीं दिया, लेकिन वेबर ने उत्तेजित स्वर में उससे पूछा—"क्या तुम्हें वह आदमी दिखाई दे रहा है जिसने चोगा और टोपी पहनी है?"

वेबर को स्टूडियो की भूतिया परंपरा या जॉन ला फ़ार्गे के बारे में कुछ भी पता नहीं था; कोई भी अजनबी बिना ध्यान दिए दरवाजे से अंदर नहीं जा सकता था, और इस समय किसी के आने की उम्मीद भी नहीं थी। स्टूडियो अंदर से बंद था।

उसके बाद, नंबर 51 में रहने वाले कई किरायेदारों ने जॉन ला फार्ज के भूत की आवाज कई बार सुनी, वह खिड़कियां खोलता था या पर्दे हटाता था, लेकिन 1948 तक उसे फिर से नहीं देखा गया।

स्टूडियो 22 से सीढ़ियों की एक उड़ान ऊपर, लेकिन उससे जुड़ा हुआ—कलाकार एक-दूसरे के स्टूडियो में आना पसंद करते हैं—चित्रकार जॉन एलन मैक्सवेल का स्टूडियो था। पुरानी इमारत में हुए कई संरचनात्मक परिवर्तनों के कारण ला फ़ार्गे द्वारा इस्तेमाल की जाने वाली सीढ़ियाँ और एक "गुप्त विश्राम कक्ष" लंबे समय से दीवार से बंद कर दिए गए थे। बाहर से केवल बंद कमरे की खिड़की ही दिखाई देती थी। रिम्स्की को लगता था कि जॉन ला फ़ार्गे की बेचैन आत्मा इसी जगह पर फंसी हुई है। जैसा कि मिस आर्चर अपने वर्णन में कहती हैं, "गोलेम की तरह दीवार में बंद, दिन भर सोता रहता है और रात भर घूमने के लिए परिसर के पास ही रहता है।"

रिम्स्की के स्टूडियो में कई असफल खोजों के बाद, ऐसा प्रतीत होता है कि भूत ने मैक्सवेल के स्टूडियो में तलाश शुरू कर दी। 1948 की वसंत ऋतु में, ला फ़ार्गे के भूत ने चित्रकार के स्टूडियो में अपनी पहली उपस्थिति दर्ज की।

वह एक गर्म रात थी, और मैक्सवेल नग्न अवस्था में ही चादर ओढ़कर सो गया था। अचानक उसकी नींद खुल गई। रोशनदान से आ रही रोशनी से उसने अनुमान लगाया कि सुबह के एक या दो बज रहे होंगे। उसे अजीब सा एहसास हुआ कि वह कमरे में अकेला नहीं है। जैसे ही उसकी आँखें अंधेरे में अभ्यस्त हुईं, उसने एक लंबी महिला की आकृति को स्पष्ट रूप से देखा, जो उसके बिस्तर पर झुकी हुई थी और कई बार चादर को उठाकर सीधा कर रही थी। उसके पीछे एक आदमी सोफे के नीचे रखी लकड़ी की अलमारी को घूर रहा था। फिर उसने एक दराज खोली, उसमें देखा और फिर बंद कर दिया। खुद को संभालते हुए मैक्सवेल ने देखा कि महिला ने पिछली सदी में पहनी जाने वाली हल्के लाल रंग की पोशाक पहनी हुई थी, और आदमी ने उसी समय की सफेद कमीज और गहरे रंग की टाई पहनी हुई थी। चित्रकार के मन में कभी यह ख्याल नहीं आया कि वे लोग नहीं बल्कि कुछ और हो सकते हैं; शायद, उसने सोचा, वे इमारत में काम करने वाले कलाकारों में से किसी एक के लिए वेशभूषा में मॉडल थे।

फिर वह महिला अपने साथी की ओर मुड़ी, मानो कुछ कहना चाहती हो, लेकिन कुछ नहीं बोली और स्टूडियो के दूसरे छोर पर स्थित अंधेरे कमरे की ओर चली गई। फिर वह आदमी अलमारी के पास वापस गया और उस पर सिर रखकर झुक गया। अब तक मैक्सवेल को

होश आ गया था और उसने सोचा कि घुसपैठिए चोर ही होंगे, हालांकि उसे समझ नहीं आ रहा था कि वे उसके घर में कैसे घुसे, क्योंकि उसने सोने से पहले दरवाजा अंदर से बंद कर दिया था! मुट्ठी बांधकर उसने अजनबी पर हमला किया और चिल्लाया, "हाथ ऊपर करो!"

खाली गलियारों में उसकी आवाज़ साफ़ सुनाई दे रही थी। लेकिन उसकी मुट्ठी उस आदमी को भेदते हुए फ़ाइलिंग कैबिनेट में जा लगी। अपनी घायल कलाई को सहलाते हुए उसने महसूस किया कि उसके आगंतुक हवा में गायब हो गए थे। अंधेरे कमरे में कोई नहीं था। दरवाज़ा अभी भी मज़बूती से बंद था। ज़मीन से 150 फीट ऊपर बनी रोशनदान किसी भी इंसान के लिए भागने का रास्ता नहीं हो सकता था। अब तक मैक्सवेल समझ चुका था कि ला फ़ार्गे और उसकी पत्नी उससे मिलने आए थे।

51 नंबर के अन्य आगंतुकों ने ला फ़ार्गे के चारदीवारी वाले कमरे से गुज़रते समय अजीब हवाओं और अचानक ठंड लगने की शिकायत की। एक रात, मैक्सवेल की एक महिला मेहमान उनके स्टूडियो से निकलने के कुछ ही समय बाद बहुत घबराई हुई अवस्था में लौटी और चिल्लाने लगी, "वह आदमी! वह आदमी!" इमारत का भीतरी प्रांगण कांच से घिरा हुआ था, जिससे इमारत के दूसरी ओर के गलियारे साफ़ दिखाई देते थे। मैक्सवेल और उनके बाकी मेहमानों को वहाँ कुछ भी दिखाई नहीं दिया।

लेकिन उस महिला ने जोर देकर कहा कि उसने इमारत में लगे पुराने गैसलाइटों में से एक के नीचे एक अजीब आदमी को देखा; वह गलियारे की दीवार से टिका हुआ प्रतीत हुआ, पुराने जमाने के कपड़े पहने हुए था और उसका चेहरा इतना कंकालनुमा और मौत के मुखौटे जैसा था कि उसे देखकर वह चीख पड़ी!

भूत का चेहरा पहली बार किसी ने स्पष्ट रूप से देखा था। यह दृश्य उसे इतना डरा गया कि वह भागकर मैक्सवेल के स्टूडियो में वापस चली गई। कांच से घिरे गलियारों से कोई भी बिना देखे बाहर नहीं निकल सकता था और उस शाम इमारत में किसी ने भी किसी अजनबी को नहीं देखा था। हमेशा की तरह, वह हवा में गायब हो गया था।

मिस आर्चर के ला फ़ार्गे भूत के वर्णन के बारे में बस इतना ही। उनकी कहानी से प्रेरित होकर मैंने खुद भी जांच शुरू की और लॉन्ग आइलैंड स्थित उनके घर पर फोन करके उन्हें

आमंत्रित किया कि अगर हम कभी 51 नंबर पर आत्माओं से संपर्क करने का सत्र आयोजित करें तो वे भी आएं।

उस समय मैं पैरासाइकोलॉजी के छात्रों के एक समूह के साथ काम कर रहा था, जो वेस्ट सिक्सटींथ स्ट्रीट पर स्थित एसोसिएशन फॉर रिसर्च एंड एनलाइटनमेंट (केसी फाउंडेशन) के कमरों में मिलते थे। इस समूह के निदेशक डेली न्यूज के एक फोटो टेक्नीशियन बर्नार्ड एक्सलरोड थे, जो समूह में एकमात्र ऐसे व्यक्ति थे जिन्हें बैठक का उद्देश्य पता था; बाकी सभी, विशेष रूप से माध्यम श्रीमती मेयर्स, हमारी योजनाओं से पूरी तरह अनजान थे।

हम 23 फरवरी, 1954 की उस ठंडी शाम को बिगेलो की दवा की दुकान के सामने मिले और 51 वेस्ट टेन्थ स्ट्रीट की ओर बढ़े, जहाँ ला फ़ार्गे स्टूडियो के वर्तमान मालिक, लियोन स्मिथ नामक एक कलाकार ने हमारा स्वागत किया। इसके अलावा, वहाँ दिवंगत न्यूज़ स्तंभकार डेंटन वॉकर, हेनरी बेल्क, प्रसिद्ध नाटककार बर्नेज़, मार्गरिट हेम्स और दो-तीन अन्य लोग भी मौजूद थे जिन्हें मानसिक घटनाओं का अध्येता माना जाता था। दुर्भाग्य से, श्रीमती बेल्क अपने पालतू चिहुआहुआ कुत्ते को भी साथ लाई थीं, जो कुछ हद तक परेशानी का कारण बना।

कुल मिलाकर, ऊँची छत वाले, ठंडे स्टूडियो में पंद्रह लोग मौजूद थे। आंगन की ओर खुलने वाली लंबी खिड़कियों से हल्की रोशनी अंदर आ रही थी, और मन कर रहा था कि पीछे की दीवार के बीचोंबीच स्थित चिमनी काम कर रही होती तो अच्छा होता।

हमने उसके चारों ओर एक घेरा बनाया, जिसमें माध्यम उसके ठीक सामने एक आरामदायक कुर्सी पर बैठा था, और बाकी लोग घेरे के दोनों ओर बैठे थे; मेरी कुर्सी माध्यम की कुर्सी के बगल में थी।

कृत्रिम रोशनी धीमी कर दी गई। श्रीमती मेयर्स लगभग तुरंत ही समाधि की अवस्था में प्रवेश करने लगीं और कुछ देर तक कमरे के पिछले हिस्से में रखी घड़ी की तेज़ टिक-टिक की आवाज़ ही सुनाई देती रही, क्योंकि उनकी साँसें तेज़ होती जा रही थीं। समाधि की अवस्था में प्रवेश करने की दहलीज पर, माध्यम ने अचानक कहा—

किसी ने बहुत स्पष्ट रूप से कहा, "एक और कदम बढ़ाओ और मैं इस खिड़की से बाहर गिर जाऊँगा!" एक महिला का शरीर... चुस्त टोपी और पंख... चुस्त चोली और मोटी स्कर्ट... सीधे चेहरे पर गिरा... मैंने एक आदमी को देखा, काले घुंघराले बाल, टेढ़ी नाक, एक अजीब, क्रूर

चेहरा... ठुड्डी में दरार... हल्के भूरे रंग का कोट, हल्के रंग की पैंट, बूट, हाथ में चाबुक, निर्दयी, नीच...

जब उसने उस चेहरे का वर्णन किया जिसे मैंने ला फार्ज के चेहरे के रूप में पहचाना, तो सन्नाटा छा गया।

कुछ देर बाद उसने आगे कहा, “मुझे पता है कि अब उस चेहरे को नहीं देखना चाहिए। यह भयानक है। मुझे दर्द होना चाहिए था, लेकिन मुझे याद नहीं रहा। ज्यादा देर नहीं हुई। मैं बस चीखना चाहती हूँ, चीखती ही जा रही हूँ।”

खिड़की से बाहर जाने वाली महिला की शक्ति बहुत प्रबल थी। श्रीमती मेयर्स ने कहा, "मुझे एक अजीब सी अनुभूति हो रही है। अगर मैं समाधि में चली जाऊं, तो मुझे उस खिड़की से बाहर जाना होगा।" चिंतित चेहरे के साथ, उन्होंने मेरी ओर मुड़कर पूछा, "अगर मैं खड़ी होकर हिलने लगूं, तो मुझे पकड़ लेना।" मैंने आश्वासन में सिर हिलाया और séance जारी रहा। उनके होठों से एक गुनगुनाहट भरी आवाज़ निकली, जो धीरे-धीरे मानवीय आवाज़ में तब्दील होती गई।

अगली शख्सियत जो प्रकट हुई, वह एक बेहद डरी हुई महिला की थी। “वे आंगन में हैं... वो आ रहा है... वे मुझे ढूंढ लेंगे और फिर से कोड़े मारेंगे। मैं पहले मर जाऊंगी। मुझे जाने दो। मुझे इतनी जोर से नहीं बोलना चाहिए। मार्गरिट! कृपया उसे आने मत दो। बच्चे को देखो। मेरा बच्चा। बारबरा। ओह, सीढ़ियाँ, मैं नहीं चढ़ सकती। बॉबी को ले जाओ, उसे संभालो, मैं नहीं सह सकती। वो आ रहा है... मुझे जाने दो! मैं आज़ाद हूँ!”

इसके साथ ही, माध्यम समाधि से बाहर आ गया और उसने चेहरे की अकड़न के साथ-साथ कंधे में दर्द की शिकायत की।

क्या वह व्याकुल महिला नंबर 22 के किसी पूर्व निवासी द्वारा दुर्व्यवहार का शिकार हुई थी? क्या वह एक भागी हुई गुलाम थी, जिनमें से कई ने गांव के पुराने घरों और गलियों में शरण ली थी?

मैंने मीडिया के “नियंत्रण” से अनुरोध किया कि स्टूडियो से जुड़े सबसे प्रमुख व्यक्ति को हमसे बात करने की अनुमति दी जाए। लेकिन नियंत्रण करने वाले अल्बर्ट ने मुझे आश्वासन दिया कि

वह महिला, जिसे वह एलिजाबेथ कहते थे, उस व्यक्ति से जुड़ी हुई थी। “वह तभी आएंगे जब उनका मन होगा। वह कुछ देर पहले कमरे में आए थे।”

मैंने अल्बर्ट से इस आदमी का वर्णन करने को कहा।

"मुझे जो दिख रहा है, उससे तो चेहरे की बनावट तीखी है। आप उसके सबसे करीब हैं। कपड़े... नब्बे के दशक के हैं, 1900 के शुरुआती दौर के।"

कुछ देर बाद, उस माध्यम के होंठ हिलने लगे और एक कर्कश आवाज सुनाई दी: "निकल जाओ... मेरे घर से निकल जाओ।"

इस अभिवादन से थोड़ा अचंभित होकर, मैंने अपने आगंतुक को यह समझाना शुरू किया कि हम उनके मित्र हैं और उनकी मदद करने के लिए यहाँ आए हैं। लेकिन उनका रवैया नरम नहीं पड़ा।

“मैं नहीं जानता कि तुम कौन हो... यहां सब कौन हैं। मेरे कोई दोस्त नहीं हैं।”

मैंने कहा, "मैं आपकी मदद करने आया हूँ," और भूत के संदेह को शांत करने की कोशिश की। लेकिन हमारे आगंतुक पर इसका कोई असर नहीं हुआ।

मुझे मदद चाहिए, लेकिन आपसे नहीं...मैं खुद ढूंढ लूंगा!

वह हमें यह नहीं बता रहा था कि वह क्या खोज रहा है। उसने हमें अपने घर से बाहर निकलने के लिए बार-बार कहा। अंत में, भूत ने माध्यम की बांह चूल्हे की ओर इशारा करते हुए कहा —"मैंने इसे वहीं रखा है!" अचानक मेरे मन में एक विचार आया और मैंने हल्के स्वर में कहा —"हमें यह मिल चुका है।"

भूत पर पल भर में क्रोध हावी हो गया। "तुमने इसे ले लिया... तुमने मुझे धोखा दिया... यह मेरा है... मैं एक अच्छा इंसान था।"

मैंने उससे उसका पूरा नाम जानने की व्यर्थ कोशिश की।

वह कराह उठा। “मैं पूरी तरह बीमार हो गया हूँ। चिंता, चिंता, चिंता। मुझे दे दो।”

मैंने उससे वादा किया कि अगर वह हमारे साथ सहयोग करेगा तो मैं उसे लौटा दूंगा।

उन्होंने नरम स्वर में कहा, "मैं इसे इतना सुंदर बनाना चाहता था। यह हिलेगा नहीं।"

मुझे याद आया कि ला फ़ार्गे अपनी खूबसूरत वेदी की पेंटिंग को लेकर कितने चिंतित थे, और उन्हें डर था कि कहीं वह दोबारा न गिर जाए। मुझे आश्चर्य हुआ कि क्या उन्हें पता था कि कितना समय बीत चुका है।

मैंने पूछा, "अभी अमेरिका के राष्ट्रपति कौन हैं?"

हमारा दोस्त चिड़चिड़ा हो गया। “मुझे नहीं पता। मैं बीमार हूँ। विलियम मैकिन्ले।” लेकिन फिर उसने खुद ही कहा—“मैं उन्हें जानता था। उनसे मिला था। बोस्टन में। पिछले साल। कई साल पहले। आप कौन हैं? मेरे कोई दोस्त नहीं हैं। मैं अपने घर में हूँ।”

"आपका पूरा नाम क्या है?"

“यह इतना मुश्किल क्यों है? मैं विलियम को जानता हूँ और मुझे अपना नाम भी नहीं पता।”

मैंने ऐसा पहले भी होते देखा है। कभी-कभी व्याकुल आत्मा को अपना नाम या पता याद नहीं रहता।

क्या आपको पता है कि आप इस दुनिया से चले गए हैं?

“मैं यहीं रहता हूँ,” उसने अब शांत स्वर में कहा। “समय बदल गया है। मैं जानता हूँ कि मैं अब वैसा नहीं रहा जैसा पहले था। यह बात साफ़ दिखती है!”

जब मैंने उससे पूछा कि वह क्या ढूंढ रहा है, तो उसने बर्था के बारे में बताए बिना ही बात का विषय बदल दिया।

लेकिन जब उन्होंने "उसे" ढूंढने पर जोर दिया, तो मैंने आखिरकार कहा, "आप उठकर उसे ढूंढ सकते हैं।"

मैं इस कुर्सी से बंधा हुआ हूं और हिल नहीं सकता।

"तो फिर हमें यह बताएं कि इसे कहाँ ढूँढना है।"

कुछ पल हिचकिचाने के बाद, उसने कहा, “चिमनी पर, पीछे की तरफ... वो वहीं था। मैं उसे ढूंढ लूंगा, लेकिन अभी मैं हिल नहीं सकता... मुझसे गलती हो गई... मैं इस हालत में बात नहीं कर सकता।”

और अचानक वह चला गया।

लगभग साढ़े दस बजने वाले थे कि माध्यम जागृत हो गई। फिर मेहमानों के बीच बातचीत इस बात पर केंद्रित हो गई कि उन्हें प्रेतात्माओं से संपर्क करने के दौरान कैसा महसूस हुआ। मिस आर्चर से इमारत के बारे में पूछा गया।

“इसे 1856 में बनाया गया था,” उसने जवाब दिया, “और यह पेरिस में इसी तरह की एक स्टूडियो इमारत की नकल है।”

मैंने पूछा, "क्या इस स्टूडियो में कभी कोई हत्या होने का कोई रिकॉर्ड है?"

"हां...1870 और 1900 के बीच, एक युवती इन्हीं खिड़कियों में से एक से गुजरी थी। लेकिन मैंने अपने लेख में इसका जिक्र नहीं किया, क्योंकि जाहिर तौर पर इसका ला फार्ज की कहानी से कोई संबंध नहीं था।"

“एलिजाबेथ का क्या हुआ? और मार्गरिट का?”

"माध्यम का यह अद्भुत उपयोग था," मिस आर्चर ने सिर हिलाते हुए कहा। "देखिए, एलिजाबेथ ला फ़ार्गे की पत्नी थीं... और मार्गरिट, वह भी उनकी कहानी में फिट बैठती हैं।"

पहली बार, ला फ़ार्गे नाम का ज़िक्र उस माध्यम की उपस्थिति में हुआ था। लेकिन होश में रहते हुए उसके लिए इसका कोई अर्थ नहीं था।

दुर्भाग्यवश, भूत को यह विश्वास नहीं दिलाया जा सका कि योजनाओं की उसकी खोज अनावश्यक थी, क्योंकि एक वास्तुकार और चित्रकार के रूप में ला फ़ार्गे की प्रतिभा बहुत पहले ही समय की गुलाम हो चुकी है।

इस प्रेतात्माओं से संपर्क करने के कुछ हफ़्तों बाद, मेरी बात डगलस बेकर नाम के एक विज्ञापनकर्मी से हुई। मुझे यह जानकर आश्चर्य हुआ कि वह भी कभी स्टूडियो 22 में रह चुके थे। इमारत से जुड़ी कहानियों से अवगत होने के बावजूद, उन्होंने भूत की बात को सिरे से खारिज कर दिया था। लेकिन एक रात, किसी के दराज खोलने और बंद करने की आवाज़ से उनकी गहरी नींद टूट गई। बिस्तर पर बैठते ही उन्होंने अपने कमरे में विक्टोरियन ओपेरा शैली के कपड़े पहने एक व्यक्ति को देखा, जो रोशनदान और खिड़कियों से हल्की रोशनी से जगमगा रहा था। घुसपैठिए को रोकने के लिए बिस्तर से उठते ही उन्होंने खुद को अकेला पाया, ठीक वैसे ही जैसे उनसे पहले कई लोगों ने पाया था।

अब वह उपहास करने वाला नहीं रहा, उसने इमारत में मौजूद अन्य लोगों से बात की और ला फ़ार्गे मामले में एक और अध्याय जोड़ दिया। ऐसा लगता है कि एक महिला एक उदास दोपहर को इमारत संख्या 51 से गुज़र रही थी जब उसने इमारत के सामने ओपेरा के कपड़े पहने एक अजीब से दिखने वाले सज्जन को खड़े देखा। बिना किसी कारण के, महिला ने कहा, "अरे, आप तो बड़े अजीब दिखते हैं!"

ओपेरा का चोला पहने सज्जन ने गुस्से से उसकी ओर देखा। "महोदया—आपकी हिम्मत कैसे हुई!"

और इसी के साथ, वह सीधे इमारत के आर-पार चला गया—मतलब इमारत की दीवार के आर-पार!

राहगीरों ने महिला को होश में लाया।

* * *

अब 51 वेस्ट टेन्थ स्ट्रीट पर एक आधुनिक अपार्टमेंट इमारत है। क्या जॉन ला फ़ार्गे अभी भी इसके बदसूरत आधुनिक गलियारों में घूम रहे हैं? कल रात, मैं चर्च ऑफ़ द असेंशन में गया, वेदी पर बने अद्भुत चित्र को निहारा और मन ही मन प्रार्थना की कि उन्हें ऐसा न करना पड़े।

* 38

सेवन ओक्स में भूत-प्रेत

एलेनोर स्मॉल चालीस वर्ष की आयु के आसपास की एक आकर्षक महिला हैं, जो रियल एस्टेट और व्यापार में हाथ आजमाती हैं। उनका परिवार एक उच्च वर्ग का है, जिसके पास कभी काफी धन-दौलत थी, और जिसे आज के समय में सामाजिक रूप से संपन्न माना जाता है। उन पर किसी को भी अलौकिक चीजों में रुचि होने का संदेह नहीं होता था।

एक शाम, जब हम अन्य विषयों पर चर्चा कर रहे थे, तो बात भूतों पर आ गई। मुझे आश्चर्य हुआ कि एलेनोर इस विषय से बहुत प्रभावित थी; इतनी अधिक कि मैंने उससे पूछे बिना नहीं रह सका कि क्या वह किसी ऐसे भूतिया घर के बारे में जानती है जहाँ मैं छानबीन कर सकूँ!

“जी हाँ,” जवाब मिला, और इस तरह मुझे सेवन ओक्स के बारे में पहली बार पता चला। न्यूयॉर्क के मैमरनेक में, पॉश वेस्टचेस्टर काउंटी में, कुछ समय पहले तक सेवन ओक्स नाम की एक शानदार औपनिवेशिक हवेली खड़ी थी। लॉन्ग आइलैंड साउंड के किनारे स्थित, यह पूर्वी क्षेत्र के प्रमुख आकर्षणों में से एक थी। कई अन्य खूबसूरत पुरानी हवेलियों की तरह, इस हवेली को भी एक "विकास" के लिए रास्ता देना पड़ा, और अब इस विशाल संपत्ति के मैदान में कई छोटे, महत्वहीन, बदसूरत आधुनिक घर बिखरे पड़े हैं।

क्रांतिकारी युद्ध की सबसे खूनी लड़ाइयों में से एक, ओरिएंट प्वाइंट की लड़ाई के दौरान, यह हवेली अंग्रेजों के कब्जे में थी, और अमेरिकी सैनिकों, विशेष रूप से घायलों को, अक्सर हवेली से गुजरने वाली एक "भूमिगत रेलवे" के माध्यम से लॉन्ग आइलैंड साउंड तक तस्करी करके ले जाया जाता था।

“जब मैं छोटी लड़की थी,” एलेनोर ने कहा, “मैंने कई साल अपनी माँ और सौतेले पिता के साथ सेवन ओक्स में बिताए, जो उस समय हमारी मिल्कियत थी। मैं हमेशा से घर में फैले कई गुप्त रास्तों से मोहित रहती थी।”

प्रवेश द्वार पुस्तकालय से था; कुछ किताबें पीछे खिसक जाती थीं, और एक पतली लकड़ी की सीढ़ी दिखाई देती थी। इन पुराने रास्तों को रोशन करने के लिए उन्नीसवीं शताब्दी में गैसलाइट जेट लगाए गए थे। एलेनोर के माता-पिता के यहाँ काम करने वाला एक बटलर संयोग से इन पर आ गिरा।

मैंने पूछा, "आपने भूतों के बारे में पहली बार कब सुना था?"

“हम जून 1932 के आसपास उस घर में रहने आए। तुरंत ही, मेबल मर्कर नाम की एक पड़ोसी ने हमें बताया कि वह जगह भूतिया है। बेशक, हमने उसकी बात पर कोई ध्यान नहीं दिया।”

“बिल्कुल।” मैंने व्यंग्यपूर्वक सिर हिलाया।

लेकिन कुछ ही समय बाद मां ने अपना विचार बदल लिया।

"तुम्हारा मतलब है कि उसने भूत देखा?"

एलेनोर ने सिर हिलाया। "लगभग हर रात।" एलेनोर की माँ ने उसका वर्णन लगभग पैंतालीस वर्ष की महिला के रूप में किया था, जिसके लंबे सुनहरे बाल और चेहरे पर मधुर भाव थे। इन प्रेत-दर्शनों में से एक में हास्य का पुट भी था।

“माँ का अपना निजी बाथरूम था, जो सीधे उनके शयनकक्ष से जुड़ा हुआ था। एक रात, जब सभी दरवाजे बंद कर दिए गए और माँ को पता चल गया कि अब कोई आसपास नहीं है, तो वह सोने चली गईं। अपने शयनकक्ष से बाथरूम में प्रवेश करते समय, उन्होंने जोड़ने वाला दरवाजा खुला छोड़ दिया, यह जानते हुए कि उनकी निजता में कोई दखल नहीं दे सकता! अचानक, ऊपर देखते ही, उन्होंने अपने कमरे में भूत को खड़ा देखा, जो बाथरूम में उन्हें इशारा कर रहा था, मानो वह उन्हें कोई अत्यंत महत्वपूर्ण बात बताना चाहता हो। भूत के चेहरे पर उदासी और हताशा का ऐसा भाव था कि माँ उसे कभी नहीं भूल सकीं।”

“लेकिन उसने क्या किया?” मैंने पूछा।

"वह उस प्रेत के पास पहुंची, लेकिन जब वह कमरे के आधे रास्ते तक पहुंची, तो भूत अचानक हवा में गायब हो गया।"

"और यह अच्छी रोशनी में था, और वह आकृति धुंधली या धुएँ जैसी नहीं थी?"

"अरे नहीं, वह बिल्कुल हाड़-मांस के किसी इंसान जैसी दिख रही थी—जब तक कि वह आखिरी क्षण में माँ की आँखों के सामने विलीन नहीं हो गई।"

"क्या आपकी मां बहुत परेशान थीं?"

“शुरू में तो ऐसा ही लगा। बाद में उसे भूत के होने की आदत पड़ गई। एक बार उसने उसे दूसरी मंजिल पर, मुख्य शयनकक्ष में देखा। वह वहाँ दो पलंगों के सामने खड़ी थी। माँ सोचने लगी कि वह उसकी मदद के लिए क्या कर सकती है, लेकिन भूत फिर गायब हो गया।”

मैंने पूछा, "क्या उसने कभी उसे बोलते या किसी तरह की आवाज करते सुना था?"

“बातें नहीं, बल्कि शोर—दरअसल, जब माँ उस घर में रहने आई थीं, तब पिछली मालकिन, श्रीमती वॉरेन, ने घर की एक अलमारी में अपनी कुछ चीज़ें रखी हुई थीं, और वह कभी-कभी वहाँ जाकर उनमें से कुछ चीज़ें एक-एक करके उठा लेती थीं। एक शाम माँ ने कुछ कदमों की आहट सुनी, लेकिन उन्हें लगा कि वे श्रीमती वॉरेन की हैं।”

"हालांकि, अगले दिन उसे पता चला कि घर में कोई नहीं आया था। हमारा पालतू कुत्ता अक्सर चिमनी के सामने जोर-जोर से भौंकता था, किसी ऐसी चीज या व्यक्ति पर जिसे हम देख नहीं सकते थे, लेकिन जाहिर तौर पर वह उसे देख सकता था।"

क्या किसी और ने भी भूत देखा?

“नौकर लगातार शिकायत करते थे कि नौकरों के क्वार्टर में उन्हें अदृश्य हाथों से उनके बिस्तरों से खींच लिया जाता था। ऐसा लगता था मानो कोई उनका ध्यान आकर्षित करना चाहता हो, लेकिन जब बत्तियाँ जलाई जाती थीं तो वहाँ कभी कोई नहीं होता था।”

“शायद वह किसी से बात करना चाहती थी, जैसा कि भूत अक्सर करते हैं!” मैंने कहा। संवाद करने में असमर्थता और इंसानों द्वारा सुना या देखा न जा सकना ही प्रेतात्माओं की मुख्य पीड़ा होती है।

“ऐसा ही होना चाहिए,” एलेनोर ने सिर हिलाते हुए कहा, “क्योंकि कुछ साल बाद एक और घटना घटी जिससे यह बात पुष्ट होती प्रतीत होती है। मेरे सौतेले पिता का बेटा और उसकी सत्रह वर्षीय दुल्हन सेवन ओक्स में रहने आए। वह लड़की आधी भारतीय थी और बेहद संवेदनशील थी। उन्हें उस पुराने हवेली की सबसे ऊपरी मंजिल पर एक कमरा दिया गया, जिसके बीच में एक डबल बेड था।”

“एक रात वे जल्दी सो गए, और बेटा पहले ही बिस्तर पर जा चुका था, जबकि उसकी पत्नी पास ही कमरे में खड़ी थी। अचानक, जब वह भयभीत होकर देख रही थी, तो उसने देखा कि उसके पति को किसी अदृश्य हाथों ने जबरदस्ती बिस्तर से खींच लिया। उसका संघर्ष व्यर्थ था।”

"अगली सुबह, वह युवा जोड़ा सेवन ओक्स से चला गया और फिर कभी वापस नहीं लौटा।"

* 39

सेंट्रल पार्क वेस्ट का भूत

श्रीमती एम. डेली हॉपकिंस एक बेहद सुरुचिपूर्ण महिला थीं, और उनके तथा उनके पति के लिए सुरुचिपूर्ण परिवेश का विशेष महत्व था। इसलिए, जब उन्होंने एक नया अपार्टमेंट

खोजने का फैसला किया, तो उन्होंने सेंट्रल पार्क वेस्ट की ओर रुख किया, जो तीस के दशक में न्यूयॉर्क के सबसे पसंदीदा आवासीय क्षेत्रों में से एक बन गया था।

पेड़ों से घिरी सड़क पर चलते हुए उन्होंने देखा कि काम करने वाले ओवरऑल पहने एक आदमी एक इमारत पर "किराए के लिए अपार्टमेंट" का बोर्ड लगा रहा था। पता चला कि वह आदमी 107 वीं स्ट्रीट और सेंट्रल पार्क वेस्ट के कोने पर स्थित तीन एक जैसी पांच मंजिला ग्रे रंग की इमारतों में से एक का अधीक्षक था।

श्रीमती हॉपकिंस, जिन्होंने अपने विचित्र अनुभवों को "एक भूत के साथ दस साल" नामक कहानी में वर्णित किया था, अत्यंत प्रसन्न थीं। स्थान एकदम सही था; अब बस अपार्टमेंट भी उनके अनुकूल होना चाहिए था! दिल की धड़कन थोड़ी तेज़ होते हुए, हॉपकिंस दंपति इमारत की ओर बढ़े।

किराए पर उपलब्ध अपार्टमेंट सबसे ऊपरी मंजिल पर था, यानी इमारत की पांचवीं मंजिल के दक्षिण-पूर्वी कोने में स्थित था, और इसमें कुल आठ कमरे थे। यह हॉपकिंस परिवार के लिए आदर्श प्रतीत हुआ, जिन्हें अपने, अपने छोटे बेटे और उसकी नर्स के लिए पर्याप्त जगह की आवश्यकता थी।

ऐसा लग रहा था कि पुराने किराएदार कई सालों तक अपार्टमेंट में रहने के बाद अभी-अभी वहां से निकले थे। सुपरिंटेंडेंट ने बताया कि इमारत में रहने वाले ज्यादातर लोग लंबे समय से वहीं रह रहे थे। उसी साल नवंबर तक, हॉपकिंस परिवार नए अपार्टमेंट में बस गया था।

उनके ठहरने के पहले कुछ हफ्तों के दौरान कुछ भी असामान्य नहीं हुआ, सिवाय इसके कि कई मौकों पर श्रीमती हॉपकिंस ने अपनी हाउसकीपर को चीखते हुए सुना, मानो वह किसी से या किसी चीज से चौंक गई हो!

अंत में, अधेड़ उम्र की महिला श्रीमती हॉपकिंस के पास आई और बोली: "इस जगह में कुछ अजीब है। मुझे अक्सर ऐसा लगता है कि कोई मेरे पीछे खड़ा है, लेकिन जब मैं मुड़कर देखती हूँ, तो वहाँ कोई नहीं होता!"

श्रीमती हॉपकिंस ने स्वाभाविक रूप से एनी को समझाने की कोशिश की, लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ। दो साल तक नौकरानी एनी ने उस "अदृश्य आगंतुक" को बर्दाश्त किया।

फिर उसने नौकरी छोड़ दी। उसने बताया कि वह इस तरह और नहीं रह सकती थी। "कोई मेरे दरवाजे का हैंडल घुमाता रहता है। मैं अंधविश्वासी नहीं हूँ, लेकिन मुझे लगता है कि यहाँ भूत है।"

श्रीमती हॉपकिंस को आश्चर्य हुआ कि अपार्टमेंट में किसी और ने कुछ भी असामान्य क्यों नहीं देखा। एनी के जाने के बाद, जोसेफिन को काम पर रख लिया गया और वह अपार्टमेंट में सोने लगी। कुछ ही समय बाद, जोसेफिन भी एनी की तरह आश्चर्य से चीखने लगी।

अंततः, जोसेफिन श्रीमती हॉपकिंस से मिलने आई और उनसे बात करने की अनुमति मांगी। श्रीमती हॉपकिंस उनकी बात सुनने के लिए बैठ गईं।

“इस अपार्टमेंट में भूत-प्रेत का वास है,” जोसेफिन ने कहा।

श्रीमती हॉपकिंस को आश्चर्य नहीं हुआ। उन्होंने अब खुलकर स्वीकार किया कि अपार्टमेंट में एक "अदृश्य मेहमान" है, लेकिन उन्हें अपार्टमेंट इतना प्यारा था कि वे इसे छोड़ना नहीं चाहती थीं। "हमें उस भूत के साथ ही रहना होगा!" उन्होंने जवाब दिया। जोसेफिन हंस पड़ी और कहा कि उसे भी कोई आपत्ति नहीं है।

उसे लगा कि वह भूतनी है, और उस दिन से लेकर साढ़े सात साल तक, जोसेफिन कई मौकों पर उस भूत से ज़ोर-ज़ोर से बातें करती रही, हमेशा उसे "मिस फ्लॉसी" कहकर पुकारती और उस बेचैन आत्मा से पूछती कि उसे इतनी तकलीफ क्यों हो रही है। आखिरकार, एक सुबह, जोसेफिन श्रीमती हॉपकिंस के कमरे में आई और उन्हें बताया कि वह जानती है कि "मिस फ्लॉसी" को शांति क्यों नहीं मिल पा रही है।

“मिस फ्लॉसी ने आत्महत्या कर ली, मैडम,” उसने धीमी आवाज़ में कहा।

जोसेफिन ने भूत को कभी देखा नहीं, क्योंकि "मैं चाहे जितनी जल्दी मुड़ जाऊं, भूत उससे भी जल्दी गायब हो जाता है।" लेकिन जैसा कि अक्सर बच्चों के साथ होता है, हॉपकिंस के छोटे बेटे ने उसे देखा था। उस समय वह लड़का सिर्फ चार साल का था।

उस रात वह कई घंटों से सो रहा था, तभी श्रीमती हॉपकिंस ने उसे पुकारते हुए सुना। चूंकि नानी शाम को बाहर गई हुई थीं, इसलिए श्रीमती हॉपकिंस तुरंत उसके पास दौड़ीं। लड़के ने कहा, "एक महिला मेहमान ने मुझे चूमकर जगाया।" श्रीमती हॉपकिंस ने जोर देकर कहा कि

घर में सिर्फ वह और उनके पति ही थे। लड़के ने जोर देकर कहा कि उसने उस महिला को देखा था और वह "छोटी बच्चियों के खेलने वाली गुड़ियों जैसी" दिखती थी।

श्रीमती हॉपकिंस ने अपने बेटे को शांत किया, और उसके सो जाने के बाद, वह अपने पति के पास गईं और उन्हें भूत-प्रेत की पूरी कहानी सुनाई। उन्हें यह बिल्कुल पसंद नहीं आया। लेकिन किसी तरह घर का माहौल फिर से सामान्य हो गया, और कई साल बीत गए जब तक कि कोई और भूत-प्रेत की घटना नहीं हुई, या कम से कम किसी ने उस पर ध्यान नहीं दिया।

एक रात, जब उनका बेटा बोर्डिंग स्कूल में था और उनके पति व्यापारिक सिलसिले में शहर से बाहर गए हुए थे, श्रीमती हॉपकिंस अपने अपार्टमेंट में बिल्कुल अकेली थीं। उनकी नानी इंग्लैंड लौट गई थीं। वह एक शांत, बरसाती रात थी, और श्रीमती हॉपकिंस को कोई खास घबराहट महसूस नहीं हुई, खासकर इसलिए क्योंकि उनकी नानी काफी समय से सक्रिय नहीं थीं।

सोने के कुछ देर बाद, श्रीमती हॉपकिंस किसी के नाम पुकारने से जाग उठीं। “श्रीमती हॉपकिंस! श्रीमती हॉपकिंस!” आवाज़ में घबराहट थी, जो किसी आस-पास के व्यक्ति की आवाज़ से मिलती-जुलती थी। श्रीमती हॉपकिंस ने तुरंत जवाब दिया, “जी हाँ, क्या बात है?” पूरी तरह जाग चुकी श्रीमती ने घड़ी में देखा कि रात के 1 बज रहे थे। अचानक उन्हें एक बिल्कुल अलग आवाज़ सुनाई दी। ऊपर छत पर कदमों की आहट थी, और उन्हें किसी तरह पता चल गया कि कोई चोर है। बिस्तर से कूदकर श्रीमती हॉपकिंस ने हॉल के दरवाजे की जाँच की। तीनों ताले खुले हुए थे। उन्होंने अधीक्षक को फोन करने की कोशिश की, लेकिन पता चला कि लाइन कटी हुई थी! बिना एक पल भी सोचे, वह वापस अपने बेडरूम में गईं और खुद को कमरे में बंद कर लिया।

अगली सुबह, अधीक्षक ने श्रीमती हॉपकिंस को बताया कि उस ब्लॉक के बाकी दो घरों की ऊपरी मंज़िल के अपार्टमेंट में रात भर चोरी हो गई थी, लेकिन उनका अपार्टमेंट किसी तरह बच गया! श्रीमती हॉपकिंस ने उदास मुस्कान दी। वह कैसे समझातीं कि उस रात किसी भूत ने उनकी जान बचाई थी?

एक शाम श्रीमती हॉपकिंस और उनके पति थिएटर से लौटे तो उन्होंने घर के सामने वाले दरवाजे पर एक छोटी काली बिल्ली का बच्चा रोता हुआ पाया। उन्हें बिल्ली के बच्चे पर दया

आ गई और वे उसे अपने अपार्टमेंट में ले आईं और रात भर के लिए नौकरानी के कमरे में बंद कर दिया। पहले तो उन्हें लगा कि यह किसी पड़ोसी की बिल्ली है, लेकिन कोई भी उस पर दावा करने नहीं आया, और अंत में उन्होंने उसे अपने पास रख लिया।

बिल्ली का व्यवहार शुरू से ही अजीब था। बिखरे बालों के साथ वह पूरे अपार्टमेंट में इधर-उधर भाग रही थी और किसी चीज़ से डरी हुई लग रही थी। जोसेफिन ने श्रीमती हॉपकिंस को आश्वासन दिया कि भूत उस बिल्ली के बच्चे से नफरत करता है और जल्द ही उसे मार डालेगा।

एक सप्ताह बाद, श्रीमती हॉपकिंस एक आरामदायक कुर्सी पर अकेली बैठी पढ़ रही थीं। शाम का समय था और बिल्ली का बच्चा पास ही में आराम से सो रहा था। अचानक बिल्ली ने हॉल में जाने वाले दरवाजे की ओर देखा। उठकर, उसे लगा जैसे कोई कमरे में दाखिल हुआ हो, श्रीमती हॉपकिंस के सामने से गुजरा हो और अंत में उनके ठीक पीछे खड़ा हो गया हो। बिल्ली डरी हुई लग रही थी। अंत में, श्रीमती हॉपकिंस ने कहा, "बिल्ली, मिस फ्लॉसी से मत डरो।" बिल्ली शांत हो गई, लेकिन श्रीमती हॉपकिंस नहीं, जिन्हें कड़ाके की ठंड लग रही थी।

जब उसका पति लौटा, तो उसने अपार्टमेंट छोड़ने पर ज़ोर दिया। भूत का साया उसके लिए असहनीय हो गया था। कहते ही देखते, दो हफ्ते बाद वे शहर के दूसरे छोर पर रहने लगे।

एक रात खाने के समय, श्री हॉपकिंस ने बताया कि उन्हें अपने पुराने अपार्टमेंट के बारे में एक पुराने किरायेदार से अचानक मुलाकात हुई थी और उससे उन्हें कुछ और जानकारी मिली थी। जब उन्होंने वह जगह किराए पर ली थी, तब सुपरिंटेंडेंट ने उन्हें बताया था कि पिछले किरायेदार "दस मिनट पहले" ही वहां से चले गए थे। लेकिन उसने उन्हें यह नहीं बताया था कि कैसे। हॉपकिंस दंपति अंतिम संस्कार के दस मिनट बाद वहां पहुंचे थे। पिछले किरायेदार की पत्नी ने बैठक कक्ष में आत्महत्या कर ली थी। श्रीमती हॉपकिंस की जिज्ञासा जाग उठी। वह श्रीमती फोरान से मिलने गईं, जो उनके अपार्टमेंट के ठीक नीचे वाले पुराने घर में रहती थीं।

“यहाँ मरने वाली यह महिला किस तरह की औरत थी?” उसने उससे पूछा।

दरअसल, ऐसा प्रतीत होता है कि शादी से पहले यह जोड़ा किसी और जगह रह रहा था और उन्होंने धार्मिक सहायता नहीं ली थी। शादी के बाद, उन्होंने नए सिरे से शुरुआत करने के लिए इस जगह पर रहने का फैसला किया।

लेकिन पत्नी अब भी नाखुश थी। तीन साल के अपने किराये के दौरान, उसे लगता था कि पड़ोसी उसके बारे में कानाफूसी कर रहे हैं। असल में, पड़ोसियों को उनके अतीत के बारे में कुछ भी पता नहीं था, और उन्हें इसकी परवाह भी नहीं थी। "लेकिन," श्रीमती फोरान ने बाद में सोचते हुए कहा, "वह यहाँ की नहीं थी।"

"क्यों नहीं?" श्रीमती हॉपकिंस ने आश्चर्य व्यक्त किया।

"क्योंकि उसके बाल ब्लीच किए हुए थे, इसलिए!" श्रीमती फोरान ने उत्तर दिया।

मिसेज हॉपकिंस मुस्कुराए बिना नहीं रह सकीं, क्योंकि उन्हें एहसास हुआ कि जोसेफिन ने उस भूत को "मिस फ्लॉसी" कहकर कितना सही किया था।

जुलाई 1960 में, मैंने "मिस फ्लॉसी" से मिलने का फैसला किया। सबसे पहले मैंने श्रीमती हॉपकिंस को कनाडा के न्यूमार्केट में पाया। मेरी जानकारी के अनुरोध का उत्तर श्रीमती हॉपकिंस की बहन हेलेना डेली ने दिया।

उन्होंने लिखा, "चूंकि मेरी बहन स्ट्रोक के बाद बहुत विकलांग हो गई है, इसलिए मुझे आपको वह जानकारी देने में खुशी होगी जो आप चाहते हैं, क्योंकि मैं कुछ समय के लिए उनके साथ वहां रही थी, लेकिन मुझे भूत से मुलाकात नहीं हुई।"

"यह स्थान 471 सेंट्रल पार्क वेस्ट में, 106 वीं स्ट्रीट के उत्तर-पश्चिम कोने पर स्थित है, यह एक सबसे ऊपरी मंजिल का अपार्टमेंट है जिसकी खिड़कियां दक्षिण और पूर्व दोनों ओर हैं, जिससे सेंट्रल पार्क का नजारा दिखता है।"

“आपकी सफलता की कामना करती हूं, आपकी सच्ची दोस्त, हेलेना एम. डेली।”

मैंने घर ढूंढ लिया, हालांकि वह 107 वीं स्ट्रीट पर था। सबसे ऊपरी मंजिल का अपार्टमेंट बंद था। मुझे भूतल पर रहने वाला एक किरायेदार मिला जो उस परिवार का नाम जानता था जो अब उस अपार्टमेंट में रह रहा था। नाम हर्नांडेज़ था, लेकिन इससे मुझे अपार्टमेंट में जाने की कोई उम्मीद नहीं जगी। तीन पत्रों का कोई जवाब नहीं मिला। किराया वसूलने वाले ने मुझे सुपरिंटेंडेंट का नाम दिया। उसके पास भी चाबी नहीं थी। हॉपकिंस परिवार के वहां रहने के बाद से पूरे इलाके का स्वरूप बहुत बदल गया था। पूरा क्षेत्र, और निश्चित रूप से 471 सेंट्रल पार्क वेस्ट स्थित इमारत, अब स्पेनिश भाषी प्यूर्टो रिकानों से आबाद थी।

कई सप्ताह बीत गए। हर्नांडेज़ परिवार से संपर्क करने के मेरे सभी प्रयास व्यर्थ साबित हुए। उनके घर में टेलीफोन नहीं था, और जब भी मैं फोन करता, वे कभी घर पर नहीं होते थे। अंततः, मैंने एक पत्र भेजने का फैसला किया जिसमें मैंने तीन दिन बाद दोपहर 1:30 बजे अपनी आगामी यात्रा की सूचना दी और उनसे अनुरोध किया कि वे कृपया घर पर रहें, क्योंकि मुझे उनके मकान मालिक से उनसे मिलने की अनुमति मिल गई थी।

मैंने ठान लिया था कि ज़रूरत पड़ने पर मैं उनके घर के ठीक बाहर ही आत्माओं से संपर्क करने का अनुष्ठान करूँगा, इस उम्मीद में कि मेरी संवेदनशील श्रीमती मेयर्स किसी तरह उस स्थान के कंपन और वातावरण का कुछ अंश महसूस कर सकेंगी। मैंने अखबार के लेखक श्री लॉरेंस को भी गवाह के तौर पर साथ आने का निमंत्रण दिया था।

मुझे आश्चर्य हुआ कि दरवाजे पर होने वाला तांत्रिक अनुष्ठान अनावश्यक था। जब हम तीनों गर्मी के दिनों में चार सीढ़ियाँ चढ़ने के बाद हाँफते हुए अपार्टमेंट पहुँचे, तो तुरंत ही एक सलीके से कपड़े पहने युवक ने दरवाजा खोला और अपना परिचय फ्लैट के मालिक श्री हर्नांडेज़ के रूप में दिया। वह हमें बड़े से अपार्टमेंट से होते हुए इमारत के कोने में स्थित बैठक कक्ष में ले गया, वही कमरा जिसमें मेरी सबसे अधिक रुचि थी।

श्री हर्नांडेज़ बहुत अच्छी अंग्रेज़ी बोलते थे। उन्होंने बताया कि वे एक बड़े होटल में फ़र्नीचर की मरम्मत का काम करते हैं और अपने परिवार के साथ (हमने उनकी युवा पत्नी और बच्चे को देखा) उस अपार्टमेंट में रहते हैं। उन्होंने कभी कुछ असामान्य देखा या सुना नहीं था। वे "कंपन" या अलौकिक चीज़ों में विश्वास नहीं करते थे, लेकिन हमें बैठकर जो भी अनुभव हो सके, उसे जानने में उन्हें कोई आपत्ति नहीं थी। मैंने अपने पत्रों में हमेशा यही लिखा था कि "एक प्रसिद्ध साहित्यकार" कभी उनके अपार्टमेंट में रहते थे और हम इसी कारण से उन कमरों को देखना चाहते थे, क्योंकि मैं उस व्यक्ति पर एक लेख लिख रहा था। जिस व्यक्ति के अपार्टमेंट में आप जाना चाहते हैं, उसे यह बताना ठीक नहीं होता कि आप उसके भूत को ढूंढने आए हैं।

श्रीमती मेयर्स खिड़की के पास आरामदायक सोफे पर बैठ गईं, और हम बाकी लोग उनके चारों ओर बैठ गए। कमरे के बारे में उनकी पहली प्रतिक्रिया तुरंत ही झलक गई।

“मुझे एक औरत की आवाज़ सुनाई दे रही है जो जेमी या जैनी को पुकार रही है... एक बूढ़ी औरत है, दुबली-पतली, सफ़ेद बालों वाली, लंबी नाक, चौड़ी आँखें, घनी भौहें। फिर एक काली बिल्ली है। कोई बात जेमी को परेशान कर रही है। एक चरमराती हुई झूलती कुर्सी है, एक भारी-भरकम आदमी है जिसकी आवाज़ बुलंद है, वह कुछ पंक्तियाँ दोहरा रहा है, मोटा-ताज़ा, उसने एक कटा हुआ कोट पहना है... आदमी बीच से मोटा है, उसकी मूंछें हैं, पंखों वाला स्टैंडअप कॉलर है, गहरे रंग की टाई है... उसकी उंगली में कुछ गड़बड़ है... शादी की अंगूठी? शादी की अंगूठी के बारे में कोई टिप्पणी?”

श्रीमती मेयर्स ने करीने से सजे, बेदाग साफ कमरे का चारों ओर जायजा लिया और आगे बोलीं, “एक छोटा लड़का, लगभग बारह साल का। यहाँ कोई बहुत लंबे समय तक मृतकों के साथ रहता था, उनके साथ ऐसा व्यवहार करता था जैसे वे जीवित हों। बस यहीं रहो, कभी बाहर मत जाओ, अगर मैं बाहर गई तो वह वापस नहीं आएगा, इसलिए मैं यहीं रहूंगी! मैं खिड़की से देखती हूँ और उसे गाड़ी से उतरते हुए देखती हूँ। हम हर रात साथ में खाना खाते हैं।” अचानक, श्रीमती मेयर्स ने तेजी से साँस लेना शुरू कर दिया और उनके चेहरे पर भय के भाव उभर आए।

“गैस—हमेशा एक बर्नर रखो—गैस! कोई अभी भी जेमी को लेकर परेशान है। मुझे एम.बी. या बी.एम. के अक्षर मिलते हैं। मुझे आसपास बहुत से लोग महसूस होते हैं। अदालत में कुछ हंगामा चल रहा है। अब कोई बाहर घूम रहा है जिसे देखा नहीं जा सकता। खिड़की से अंदर आना चाहता है।”

“यह किसी बुरे सपने जैसा है, बहुत अंधेरा है, खिड़की से बाहर नहीं देख सकती। मैं बुरी तरह घबराई हुई हूँ, और अगर मैंने हाथ छोड़ दिया तो गिर जाऊँगी। इस कमरे में एक शव ताबूत में रखा है, लेकिन फूल बहुत कम हैं; चांदी की पट्टिका पर स्टीवंस या स्टीवेन्सन लिखा है; पर्दे लगे हैं, बहुत अंधेरा है, मोमबत्तियाँ जल रही हैं और ताबूत में एक शव है।”

मैंने श्रीमती मेयर्स से पूछा कि क्या उन्हें अब भी उस जगह पर किसी अशांत आत्मा का आभास होता है। उन्होंने उत्तर दिया, "अशांति कम हो रही है। पहले तो थी, लेकिन अब बहुत कम हो गई है, क्योंकि यहाँ एक धार्मिक व्यक्ति रहता है।"

क्या उसे कोई और जानकारी मिली? "पुलिस का यहाँ कुछ काम था, उन्होंने लंबे कोट पहने हुए थे, ताबूत में काले कपड़े पहने एक व्यक्ति था।"

अपार्टमेंट से निकलने के बाद, मैंने श्रीमती मेयर्स के विचारों की तुलना 1954 की कहानी में दी गई जानकारी से की, जिसे मैंने उन्हें कभी दिखाया या बताया नहीं था। उनका एक छोटा बेटा था, और "बुजुर्ग महिला" का वर्णन श्रीमती हॉपकिंस से मिलता-जुलता था, साथ ही काली बिल्ली का भी। श्रीमती मेयर्स का यह कथन कि "उसकी उंगली में कुछ गड़बड़ थी... शादी की अंगूठी!" इस तथ्य की याद दिलाता है कि दंपति वर्षों से बिना शादी किए पति-पत्नी की तरह साथ रह रहे थे, और क्या इस तथ्य ने भूत को इतना परेशान नहीं किया था?

गैस विस्फोट और मिस फ्लॉसी की आत्महत्या के बाद का अंतिम संस्कार वास्तविक घटनाएँ थीं। एम. श्रीमती हॉपकिंस का पहला अक्षर है और एम. बी. संभवतः एम. डी. रहा होगा, जो श्रीमती हॉपकिंस का मायके का नाम एम. डेली है। "बाहर कोई चल रहा है" का तात्पर्य चोर वाली घटना से है। आत्महत्या के मामले में पुलिस और ताबूत का ज़िक्र स्वाभाविक है।

हमारी प्रेतात्माओं से संपर्क करने की रस्म के कुछ ही समय बाद, मुझे खबर मिली कि श्रीमती हॉपकिंस का निधन हो गया है। अब शायद वह और "मिस फ्लॉसी" एक-दूसरे को बेहतर तरीके से जान सकेंगी।

* 40

सेंट मार्क के भूत

हालांकि अधिकांश धार्मिक आस्थाएं और उनके धर्मगुरु भूत-प्रेतों को लेकर नकारात्मक दृष्टिकोण रखते हैं, फिर भी चर्चों और कब्रिस्तानों में अलौकिक घटनाओं के कई दर्ज मामले हैं। ऐसा ही एक पूजा स्थल न्यूयॉर्क का प्रसिद्ध पुराना सेंट मार्क-इन-द-बोवेरी चर्च है, जो सेकंड एवेन्यू और टेन्थ स्ट्रीट के कोने पर स्थित है।

मूल रूप से यह वह स्थान था जहाँ पीटर स्टुवेसेंट ने 1660 में न्यू एम्स्टर्डम के डच बसने वालों के लिए एक चैपल बनवाया था, जो 1672 में गवर्नर का कब्रिस्तान बन गया। स्टुवेसेंट परिवार के अंतिम सदस्य की मृत्यु के बाद, 1953 में स्टुवेसेंट मकबरे को स्थायी रूप से सील कर

दिया गया। गवर्नर की मृत्यु के एक शताब्दी बाद, परिवार ने एपिस्कोपलियन धर्म अपना लिया, और उनके एक पोते, जिनका नाम भी पीटर स्टुवेसेंट था, ने उसी स्थान पर सेंट मार्क के वर्तमान चर्च के निर्माण के लिए भूमि और कुछ नकद राशि दान की। इसका निर्माण 1799 में पूरा हुआ और तब से यह निरंतर सेवा में है। भवन में कोई बड़ी मरम्मत, विस्तार या परिवर्तन नहीं किया गया है।

आस-पास का इलाका न्यूयॉर्क के सबसे खराब इलाकों में से एक बन गया, हालांकि एक समय यह बेहद सम्मानित इलाका हुआ करता था। लेकिन बोवेरी के भीतर भी यह किंवदंती प्रचलित है कि सेंट मार्क का चर्च भूतिया है।

मैंने सेंट जॉन के आर्चडीकन, रेवरेंड रिचर्ड ई. मैकएवॉय से बात की, जो कई वर्षों तक सेंट मार्क के रेक्टर भी रहे थे, और उनसे पूछा कि क्या उन्होंने या किसी और ने चर्च में कोई प्रेत-दर्शन देखा है। किंवदंती के अनुसार, बूढ़े पीटर स्टुवेसेंट कभी-कभी इधर-उधर भटकते रहते हैं। रेवरेंड एक पैनी नज़र रखने वाले व्यक्ति साबित हुए, और भूतों के मामले में बिल्कुल तटस्थ थे। उन्होंने खुद कुछ भी असामान्य नहीं देखा था। लेकिन एक व्यक्ति था, जो नियमित रूप से चर्च आता था, जिसे वे कई वर्षों से जानते थे। यह व्यक्ति हमेशा चर्च के दाहिनी ओर एक विशेष बेंच पर बैठता था।

जब पादरी ने उस व्यक्ति से उस सीट पर बैठने की उसकी ज़िद के बारे में पूछा, तो उसने बेझिझक स्वीकार किया कि ऐसा इसलिए था क्योंकि वहाँ से वह "उसे" देख सकता था—वह "उसे" एक स्त्री प्रेत थी जो प्रवचन सुनने के लिए चर्च में प्रकट होती थी और फिर गायब हो जाती थी। उसने जो जगह चुनी थी, वहाँ वह हमेशा उसके पास रह सकता था! मैंने पादरी से उसके व्यक्तिगत अनुभवों के बारे में पूछा। अंत में उन्होंने बताया कि उन्होंने एक आँख के कोने से सफेद कपड़ों में एक आकृति देखी थी, जो गुजरी और तुरंत गायब हो गई। यह दस साल पहले की बात है।

सेंट मार्क-इन-द-बोवेरी, न्यूयॉर्क

रेक्टर की सिफारिश पर, मैंने फोरमैन कोल से बात की, जो नियमित अंतराल पर घड़ी में चाबी भरने आते हैं और पिछले छब्बीस वर्षों से सेंट मार्क चर्च के आसपास ही रहे हैं।

श्री कोल एक कुशल वक्ता साबित हुए। कुछ साल पहले, कोल ने अपने मित्र रे बोर से, जो पास के एक रोमन कैथोलिक चर्च में ऑर्गन वादक थे, चर्च के ऑर्गन को देखने के लिए कहा। उस समय चर्च लगभग खाली था, यानी रात के 1 बजे थे।

फिर भी, कोल ने बालकनी में "किसी" को देखा।

लगभग पंद्रह साल पहले, कोल को एक और असामान्य अनुभव हुआ। सर्दी का मौसम था और शाम के 5 बज चुके थे, इसलिए चर्च आम जनता के लिए बंद था। उस शाम जल्दी ही अंधेरा हो गया, लेकिन कोल के अंदर जाने के समय तक कुछ रोशनी बाकी थी। कोल को अच्छी तरह पता था कि उस समय चर्च में किसी को नहीं होना चाहिए था, क्योंकि वह पादरी के समय से परिचित था।

फिर भी, उसे आश्चर्य हुआ जब उसने चर्च के पिछले हिस्से में, प्रवेश द्वार के पास, बीच के गलियारे में एक महिला को स्पष्ट रूप से खड़ा देखा। यह सोचकर कि वह कोई देर से आई हुई महिला है जो गलती से अंदर बंद हो गई है, और इस डर से कि वह अर्ध-अंधेरे में ठोकर न

खा जाए, उसने उसे पुकारा, "रुको, महोदया, जब तक मैं बत्ती न जला दूं, तब तक हिलना मत।"

प्रेतवाधित गलियारा

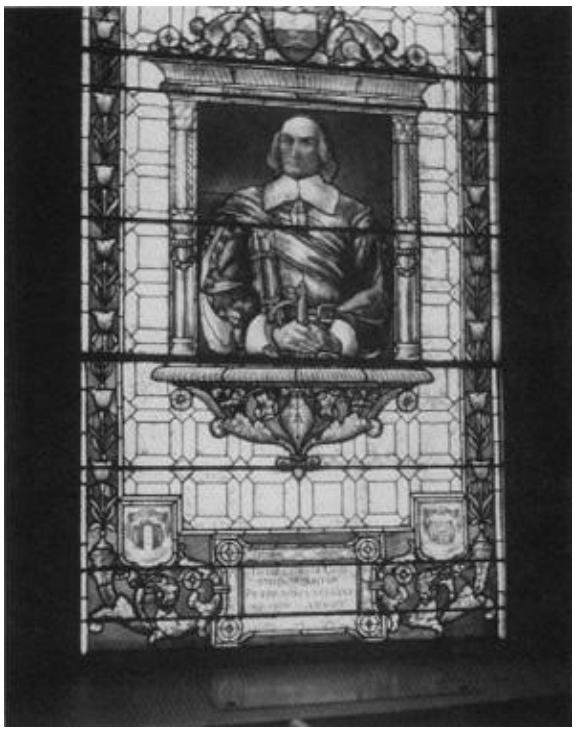

गवर्नर पीटर स्टुवेसेंट को तहखाने में दफनाया गया है।

प्रेतवाधित गलियारे की एक मानसिक तस्वीर

उसने एक पल के लिए उससे अपनी नज़र हटाई और झटपट बत्ती जला दी। लेकिन उसने खुद को अकेला पाया; वह गिरजाघर के मुख्य हॉल में अपनी जगह से गायब हो गई थी।

घबराकर कोल प्रवेश द्वार की ओर भागा और पाया कि वह मजबूती से बंद था। फिर उसने सभी खिड़कियों की जाँच की और पाया कि वे भी उतनी ही अच्छी तरह से बंद थीं।

मैंने कोल से पूछा कि क्या उस महिला के हावभाव में कुछ अजीब था? उसने एक पल सोचा, फिर कहा, "हाँ, था। वह मुझे अनदेखा कर रही थी, मेरी ओर घूर रही थी और मेरी बातों का कोई जवाब नहीं दे रही थी।"

छह सप्ताह बाद, उन्हें एक और अलौकिक अनुभव हुआ। फिर से चर्च में अकेले, सभी दरवाजे बंद थे, तभी उन्होंने एक ऐसे व्यक्ति को देखा जो उन्हें बाहर बोवेरी के बेघर लोगों में से एक जैसा लगा। उसने फटे-पुराने कपड़े पहने थे और वह यहाँ का नहीं लग रहा था। कोल ने तुरंत लाइट जलाकर उस आगंतुक को देखने की कोशिश की। लेकिन वह गायब हो गया था, ठीक उसी तरह जैसे वह महिला पहले गायब हुई थी।

तब से कोल को कोई प्रेत-दर्शन नहीं हुआ है, लेकिन कुछ बेहद अजीब आवाजें उसके कानों तक ज़रूर पहुँची हैं। एक तो, चर्च में अक्सर ज़ोर-ज़ोर से आवाज़ें आती रहती हैं, और पुराने चर्च के कुछ हिस्सों में अजीबोगरीब एहसास और सिहरन होती है। एक बार कोल ने साफ़ तौर पर किसी को गाना गाने की जगह की ओर जाने वाली सीढ़ियों से ऊपर आते सुना। उसे लगा कि वह चर्च का रखवाला होगा, इसलिए उसने उसे डराने का फैसला किया और सीढ़ियों के अंत में उस आदमी का इंतज़ार करने के लिए छिप गया। लेकिन कोई नहीं आया। वे कदम किसी अनदेखे आदमी के थे!

कोल को इस बात का कोई अंदाजा नहीं है कि वे भूत कौन हो सकते हैं। वह अब भी घड़ी की देखभाल करता है और आम लोगों से अपने अनुभवों के बारे में बात करने से कतराता है, कहीं वे उसे पागल न समझ लें। इकतालीस साल का कोल काफी स्वस्थ और यथार्थवादी है और उसे अपनी यादों पर पूरा भरोसा है।

कुछ दिनों बाद, मैंने गायिका और प्रतिभाशाली मानसिक क्षमता वाली मैरी आर. एम. से कहा कि वह मेरे साथ चर्च चलें और देखें कि क्या उन्हें कोई "आभास" होता है। पता चला कि मेरी दोस्त पिछले नवंबर में एक बार चर्च जा चुकी थी, जब वह पास में ही अभ्यास कर रही थी। उस समय, उसे पूरा यकीन था कि वह जगह भूतिया है। हम दाहिनी ओर की एक बेंच पर बैठ गए और इंतज़ार करने लगे। चर्च में हम बिल्कुल अकेले थे; दोपहर के तीन बज रहे थे और एकदम सन्नाटा था। एक मिनट के भीतर ही, मैरी ने मुझे बताया कि उसे "हमारे पीछे बीच वाली गली में एक छड़ी लिए हुए आदमी के चलने का आभास हुआ।" पीटर स्टुवेसेंट, जिन्हें यहीं दफनाया गया है, छड़ी लेकर चलते थे।

फिर मेरी सहेली ने पीछे की ओर इशारा करते हुए बताया कि उसने चर्च के पिछले दरवाजे के पास चौड़ी स्कर्ट पहने एक महिला को खड़े देखा। उसने आगे कहा, "मुझे पीछे उस संगमरमर की पटिया से एक सफेद आकृति तैरती हुई दिखाई दे रही है!"

इसलिए अगर आप कभी सेंट मार्क चर्च में किसी को अचानक गायब होते हुए देखें तो घबराइएगा मत। वह सिर्फ एक भूत है!

* 41

क्लिंटन कोर्ट के भूत

टुमॉरो पत्रिका के पन्ने पलटते हुए, जो मनोवैज्ञानिक शोध को समर्पित एक पत्रिका है और जिसमें कभी-कभी मेरा लेख भी छपता है, मेरी नज़र वेनराइट इवांस के एक छोटे से लेख पर पड़ी, जिसका शीर्षक था "क्रिनोलिन में भूत"। 1959 की वसंत ऋतु में लिखे गए इस लेख में न्यूयॉर्क शहर के 422½ वेस्ट फोर्टी-सिक्स्थ स्ट्रीट में रहने वाले एक प्रेतवाधित प्राणी का वर्णन था। ऐसा प्रतीत होता था कि रूथ शॉ, एक कलाकार जो वर्षों से उस पुरानी इमारत के पिछले हिस्से में रहती थीं, जिसे उन्होंने अपना स्टूडियो बना लिया था, ने श्री इवांस से अपने अनुभवों के बारे में बात की थी। वे उनसे क्लिंटन कोर्ट में मिलने आए थे, जैसा कि उस इमारत का नाम था। वहाँ एक आकर्षक लोहे का गेट था, जिसके माध्यम से मुख्य घर से होते हुए एक आंगन में प्रवेश किया जाता था। आंगन के आगे एक मेहराबदार पिछला हिस्सा था, जो तीन मंजिला था और जिसमें ऊपर तक जाने के लिए एक बाहरी सीढ़ी थी। यह हिस्सा 1809 का है, या शायद उससे भी पहले का, और एक समय में गवर्नर डेविट क्लिंटन के कोच हाउस के रूप में इस्तेमाल किया जाता था।

मिस शॉ ने इवांस को उस जगह से जुड़ी किंवदंतियों के बारे में बताया और बड़ी सावधानी से पड़ोस के दवा विक्रेता, नब्बे वर्षीय श्री ओट्स के साथ हुई अपनी बातचीत के बारे में बताया। एक अंग्रेज़ कोचवान, जिसकी पत्नी डेनिश थी, अस्तबल के ऊपर वाले कमरों में रहता था। क्लिंटन कोर्ट में देखा गया पहला भूत "ओल्ड मूर" का था, जो बैटरी में विद्रोह के आरोप में फांसी पर लटकाए गए एक नाविक का था और उसे पॉटर फील्ड में दफनाया गया था, जो घर से बस कुछ ही दूरी पर था। आज, यह कब्रिस्तान मध्य वेस्टसाइड के घनी आबादी वाले मकानों के नीचे दब गया है, जो हेल्स किचन के बाहरी इलाके हैं। लेकिन "ओल्ड मूर" को किसी को डराने के लिए ज़्यादा दूर नहीं जाना पड़ा। क्लिंटन कोर्ट उसके रास्ते में आने वाला पहला बड़ा घर था। कोचवान की पत्नी ने उस भूत को देखा और "ओल्ड मूर" से भागते समय सीढ़ियों से गिर गई। यह और भी दुर्भाग्यपूर्ण था क्योंकि वह उस समय गर्भवती थी। गिरने से उसकी मृत्यु हो गई, लेकिन बच्चा बच गया।

विडंबना यह थी कि जल्द ही दरबार के आसपास मां का भूत भी दिखाई देने लगा, जो अक्सर बच्चे के आसपास मंडराता रहता था। इस प्रकार, भूत नंबर 2 राज्यपाल के पुराने घर में भूतों के समूह में शामिल हो गया।

क्लिंटन परिवार के पोते-पोतियों में से एक, जिन्हें ये कहानियां सुनाई गई थीं, आजकल के बच्चों की तरह "भूत" का खेल खेला करती थीं। मार्गरिट नाम की यह बच्ची पुराने ज़माने के कपड़े पहनकर बड़ी सीढ़ियों पर ऊपर-नीचे दौड़ती थी। एक दिन, वह ठोकर खाकर सीढ़ियों से गिर गई और खेल एक भयानक हकीकत में बदल गया। कई लोगों ने उस पीली-सी दिखने वाली बच्ची को देखा था; मिस शॉ भी उनमें से एक थीं। उन्होंने बताया कि बच्ची ने सफेद रंग का फुल स्लीव ब्लाउज और क्रिनोलिन पहना हुआ था। एक बार उन्होंने उस बच्ची को दिन के उजाले में सीढ़ियों से कूदते हुए देखा—कूदना ही सही शब्द है, क्योंकि भूत को असल में "चलने" की ज़रूरत नहीं होती, बल्कि वह अक्सर ज़मीन से थोड़ा ऊपर तैरता है, ज़मीन को छूता भी नहीं।

मैंने सोचा कि मिस शॉ को फोन करना अच्छा रहेगा, लेकिन पता चला कि उस पते पर कोई टेलीफोन नहीं था। मिस शॉ कहीं और चली गई थीं और स्थानीय पुलिस सार्जेंट भी मुझे घर का पता नहीं बता पाए। पुलिस ने मुझे आश्वासन दिया कि 422½ वेस्ट फोर्टी-सिक्स्थ स्ट्रीट नाम का कोई पता नहीं है। सौभाग्य से, मुझे पुलिस की जानकारी पर ज्यादा भरोसा नहीं था, इसलिए मेरी खोज जारी रही। शायद एक दर्जन बार मैं 424 और 420 वेस्ट फोर्टी-सिक्स्थ स्ट्रीट के पास से गुजरा, तब जाकर मुझे 420 नंबर पर वह अजीब सा मेहराब दिखाई दिया। मैं उसमें से गुजरा, मानो अंदर से मुझे लग रहा था कि मैं सही रास्ते पर हूँ। और मैं सही रास्ते पर था, क्योंकि मेरे सामने क्लिंटन कोर्ट खुल गया। यह 420 के पीछे छिपा हुआ था और नए मालिकों ने 422½ नंबर को कहीं भी दिखाई देने वाली जगह पर नहीं लगाया था। अब यह एक महंगा, पुनर्निर्मित अपार्टमेंट भवन था, जिसकी मूल दीवारें और साज-सज्जा अभी भी बरकरार थी।

कोर्ट की ओर वाली दीवार पर, नंबर 420 पर गर्व से एक कांस्य पट्टिका लगी थी जिस पर लिखा था, “क्लिंटन कोर्ट—लगभग 1840—अमेरिकन सोसाइटी फॉर प्रिजर्वेशन ऑफ फ्यूचर एंटीक्विटीज द्वारा पुनर्स्थापित”! पीछे वाली इमारत, जहाँ मिस शॉ का स्टूडियो हुआ

करता था, अब खाली थी। जाहिर तौर पर बढ़ईयों ने फर्श की मरम्मत पूरी कर ली थी और अपार्टमेंट किराए पर उपलब्ध था। मुझे यह सौभाग्यपूर्ण लगा, क्योंकि इसका मतलब था कि हम किराएदार की चिंता किए बिना उस जगह में प्रवेश कर सकते थे। लेकिन अभी भी मकान मालिक का पता लगाना और अनुमति प्राप्त करना बाकी था। मुझे कई सप्ताह और बहुत सारी बातचीत करनी पड़ी, तब जाकर आखिरकार अगस्त 1960 की एक सुहावनी शाम को मुझे उस जगह में प्रवेश करने की अनुमति मिली।

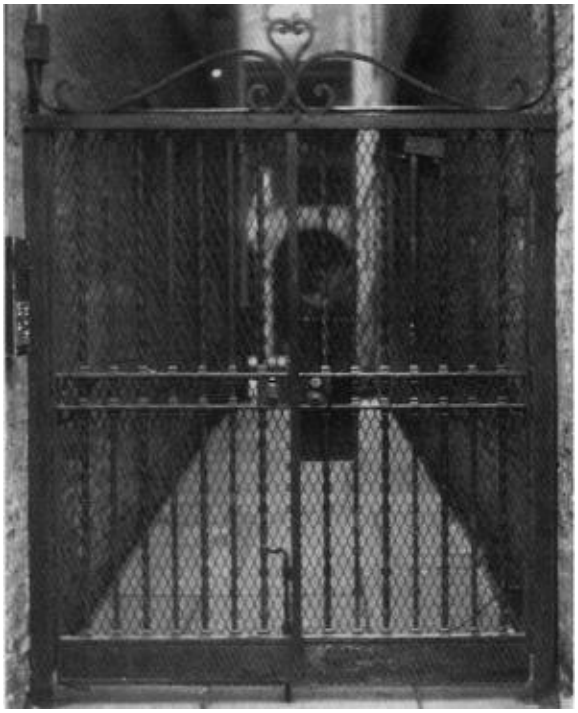

क्लिंटन कोर्ट—पुराने घोड़ागाड़ी घर का बाहरी द्वार

क्लिंटन कोर्ट—भूतिया आंगन

इसी बीच मुझे अधीक्षक ने बताया कि श्रीमती बुट्रम नाम की एक पुरानी दोस्त बगल वाले घर, नंबर 424 में रहती हैं, और शायद उन्हें कुछ दिलचस्प जानकारी हो। मुझे श्रीमती बुट्रम आसानी से मिल गईं। मुझे पहले ही चेतावनी दी गई थी कि उनके पास बहुत सारे पालतू जानवर हैं, इसलिए मेरी नाक मुझे उनके दरवाजे तक ले गई। उन्होंने मुझे बताया कि वह पच्चीस साल से यहीं रह रही हैं और उन्होंने बगल वाले घर में भूत के बारे में कई कहानियां सुनी हैं। उन्होंने खुद कभी कुछ नहीं देखा था, लेकिन जब मैंने उनसे और जानकारी मांगी, तो उन्होंने आखिरकार कहा—

“खैर, लोग कहते हैं कि वह करीब सोलह साल की एक युवती थी... वहाँ रखे घोड़ों में से एक घोड़ा अचानक छूट गया और उसे डरा दिया। वह सीढ़ियों से नीचे भागी और गिरकर मर गई। यही तो लोग कहते हैं!”

मैंने श्रीमती बुट्राम को धन्यवाद दिया और घर चली गई। मैंने अपनी अच्छी दोस्त श्रीमती मेयर्स को फोन किया और उनसे कहा कि क्या वह मेरे साथ एक भूतिया घर में चलेंगी, बस इतना ही बताया।

मुझे आश्चर्य हुआ जब श्रीमती मेयर्स ने फोन पर मुझसे कहा कि उन्हें ऐसा लग रहा था कि वह उसी क्षण उस जगह को दिव्य दृष्टि से देख सकती हैं।

"घर के बाहर सीढ़ियों का एक जोड़ा है, और एक सफेद कपड़े पहने महिला एक तरह के पिछवाड़े में खड़ी है।"

यह बातचीत 9 अगस्त को हुई थी, श्रीमती मेयर्स को हमारे "मामले" के स्थान या प्रकृति के बारे में कुछ भी पता चलने से एक सप्ताह पहले।

लगभग एक सप्ताह बाद, हम सब एक साथ क्लिंटन कोर्ट पहुँचे और तुरंत पूर्व कोच हाउस के भूतल पर स्थित स्टूडियो अपार्टमेंट में चले गए। हल्की रोशनी में, हम जर्जर और घिसे-पिटे फर्नीचर पर चुपचाप बैठ गए।

“चलिए, मैं आस-पास देख लेती हूँ कि मुझे क्या मिलता है,” श्रीमती मेयर्स ने कहा और उठ खड़ी हुईं। धीरे-धीरे मैं उनके पीछे-पीछे अपार्टमेंट में घूमी, जो एकदम सन्नाटे में डूबा हुआ था। आँगन के उस पार, सामने वाले हिस्से की खिड़कियाँ रोशनी से जगमगा रही थीं और पूरा आँगन फ्लडलाइट्स से रोशन था। लेकिन रात एकदम शांत थी। हेलस किचन की आवाज़ें हमारे वातावरण में खलल नहीं डाल रही थीं, मानो कोई हमें थोड़ी देर के लिए निजता देने के इरादे से उन्हें दबा रहा हो।

मुझे सिर में अजीब सा लग रहा है, फूला हुआ सा...आप समझ सकते हैं कि मैं अब वही हूँ...जगह के बाहर दाईं ओर से लकड़ी की सीढ़ियाँ हैं—"

श्रीमती मेयर्स ने दीवार की ओर इशारा करते हुए कहा, "वहाँ, जहाँ अब दीवार है; मुझे यकीन है कि उन्होंने उन्हें गिरा दिया होगा।" ध्यान से देखने पर, मुझे वहाँ किसी सीढ़ी के निशान दिखाई दिए।

“सफेद कपड़े पहनी एक युवती, युवा किशोरी, वह दुल्हन है, वह अपनी शादी की रात उन सीढ़ियों से गिर गई है, उसका सिर बुरी तरह से घायल है—”

श्रीमती मेयर्स के चेहरे पर भय के भाव छा गए। फिर उन्होंने आगे कहा, “ठंड है, पोशाक बहुत हल्की और बहने वाली है; वह निराश है, क्योंकि किसी ने उसे निराश किया है।”

गहरी सोच में डूबी श्रीमती मेयर्स, बड़े, धंसे हुए बैठक कक्ष से सटे एक छोटे से कमरे में रखी कुर्सियों में से एक पर बैठ गईं। यह बैठक कक्ष अब स्टूडियो अपार्टमेंट का मुख्य हिस्सा बन गया था, क्योंकि नए मालिकों ने दो अपार्टमेंटों को मिलाकर एक बड़ा अपार्टमेंट बना दिया था।

“उसके बाल काले हैं, आँखें नीली हैं, रंग गोरा है, मुझे लगता है वो अपनी किशोरावस्था के मध्य में होगी और उसने एक सुंदर पोशाक पहनी है, लगभग नाइटगाउन जैसी, वैसी जैसी पचहत्तर या सौ साल पहले हुआ करती थीं। लेकिन अब मैं उसे ऊँची गर्दन और लंबी आस्तीन वाली गिंघम या चेक वाली पोशाक में, सफेद टोपी पहने हुए देखती हूँ, वो यात्रा के लिए तैयार है, लेकिन कोई आता नहीं है। रोना-धोना, निराशा। फिर वहाँ एक नाविक भी है, नीली टोपी पहने, चमकदार विज़र और नीले कोट में। वो भारी-भरकम आदमी है।”

मुझे "ओल्ड मूर" की याद आ गई। श्रीमती मेयर्स को एक ही समय में कई बातें समझ में आ रही थीं। बेशक, उन्हें न तो उस युवा लड़की के भूत के बारे में पता था और न ही उस नाविक के बारे में।

अब माध्यम ने एक युवा लड़की की दिलचस्प कहानी सुनाई जो एक युवक से शादी करने के लिए तैयार थी, लेकिन एक दूसरे, अधेड़ उम्र के व्यक्ति द्वारा उसका पीछा किया जा रहा था। "मैं उसकी चीख सुन सकती हूँ!" उसने अपना गला पकड़ लिया और ज़ोर से चीखने की कोशिश की, ऐसी चीख जो हमारे séance में अवांछित दर्शकों को आमंत्रित कर सकती थी!

उस आदमी से बचते हुए, वह सीढ़ियों पर तेज़ी से चढ़ती है। क्रिसमस के आसपास का दिन फिसलन भरा और सर्द है। वह कुछ भारी सामान ले जा रही है, शायद लकड़ी और कोयला। उसकी शादी की पूर्व संध्या है, लेकिन उसे छत से धक्का दे दिया जाता है। वहाँ दो औरतें थीं, जिनमें से सबसे उम्रदराज लड़की को डांट रही थी, और उसने उसे बाड़ के पास धकेल दिया, और वह नीचे गिर गई। ठंड और फिसलन थी, और इसमें किसी की गलती नहीं थी। लेकिन शादी की जगह, मातम छा गया।

माध्यम अब पूरी तरह समाधि की अवस्था में थी। एक बार फिर, चीख दब गई, फिर आवाज बदल गई और श्रीमती मेयर्स के माध्यम से एक अन्य व्यक्तित्व ने बोलना शुरू किया। "आप

कौन हैं?" मैंने कहा, जैसा कि मैं ऐसे अवसरों पर हमेशा करता हूँ। भूतों से संवाद करते समय पहचान आवश्यक है।

इसके बजाय, अजनबी ने घबराकर कहा—“मैथ्यू!”

मैंने कहा, "मैथ्यू कौन है?"

“वह क्यों नहीं आ रहा, वह कहाँ है? क्यों?”

"आप कौन हैं?"

“बर्निस।”

"आपकी आयु कितनी है?"

"सत्रह।"

यह कौन सा वर्ष है?

"अस्सी।"

लेकिन फिर से पीड़ा उभर कर सामने आ गई।

“वो कहाँ है? उसके पास अंगूठी है... मेरा सिर... मैथ्यू, मैथ्यू... उसने मुझे धक्का दिया, वो नरक में है। मैं जाने के लिए तैयार हूँ, मैंने कपड़े पहन लिए हैं, हम पिताजी के पास जा रहे हैं। मैंने कपड़े पहन लिए हैं....”

जैसे-जैसे वह अपनी विनती दोहराती रही, आवाज़ धीरे-धीरे मंद होती गई। फिर, ठीक उसी तरह अचानक जैसे उसने अजनबी के सामने आत्मसमर्पण किया था, श्रीमती मेयर्स का अपना व्यक्तित्व वापस लौट आया।

जैसे ही हम उस उदास से स्टूडियो अपार्टमेंट से बाहर निकले, मैं श्रीमती मेयर्स के मुंह से निकली कहानी के बारे में सोचने लगा। मैंने सोचा, शायद नौकरानियों ने सुनाई होगी, और उनका पता लगाना नामुमकिन होगा। फिर भी, उन्हें उस छोटी लड़की, सीढ़ियों से उसके गिरने, खुद सीढ़ियों और उस भूतिया नाविक के बारे में पता चल गया। क्लिंटन कोर्ट आज भी वाकई भूतिया है!

मैंने आंगन के चारों ओर रोशनी से जगमगाते आधुनिक अपार्टमेंटों की ओर देखा और सोचा कि क्या भूतों को इस अंतर का पता है। अगर आप कभी हेलस किचन में हों, तो 420 वेस्ट

फोर्टी-सिक्स्थ स्ट्रीट पर बने मेहराब से आंगन में प्रवेश करें, और अगर आप बिल्कुल शांत रहें, और थोड़े भाग्यशाली भी हों, तो शायद आपको सफेद पोशाक या क्रिनोलिन पहने किशोरी भूतनी मिल जाए—लेकिन "ओल्ड मूर" और उसकी भाषा से सावधान रहें—आप जानते ही हैं कि नाविक कैसे होते हैं!

* 42

हंग्री लूसी

“जून हैवोक के टाउनहाउस में भूत है,” गेल बेनेडिक्ट ने फोन पर खुशी से कहा। गेल जनसंपर्क में काम करती थी और भूतों की खोज में तब से जुटी हुई थी जब मैंने पिछले साल उसकी बहन के अपार्टमेंट से भूत भगाने में कामयाबी हासिल की थी।

जिस मकान की बात हो रही है, वह 104 साल पुराना था और न्यूयॉर्कवासियों द्वारा "हेल्स किचन" कहे जाने वाले इलाके में स्थित था, जो 1940 के दशक का वह पुराना इलाका है जो नौवीं और दसवीं एवेन्यू के बीच, थिएटर जिले के पास है। 44 वीं स्ट्रीट और नौवीं एवेन्यू के कोने पर बना यह मकान रोडेनबर्ग परिवार के कब्जे में था, जब तक कि इसे मिस्टर पायने ने खरीद नहीं लिया। उन्होंने पुराने डिज़ाइन का पूरा सम्मान करते हुए इसका सावधानीपूर्वक जीर्णोद्धार किया। उन्होंने इसके अंदर और बाहर, इसके आकर्षक विक्टोरियन स्वरूप में कोई बदलाव नहीं किया।

लगभग तीन साल बाद, मशहूर स्टेज और टेलीविजन स्टार जून हैवोक ने वह घर खरीद लिया और ऊपरी मंज़िलों को अलग-अलग किराएदारों को दे दिया। वह खुद नीचे वाले अपार्टमेंट में रहने लगीं, क्योंकि कोई और उसे लेना नहीं चाहता था। उस समय उन्हें यह बात अजीब नहीं लगी कि उस नीचे वाले अपार्टमेंट का किराया किसी ने भी रिन्यू नहीं कराया था, लेकिन अब उन्हें इसका कारण पता है। यह सब 'हंग्री लूसी' की वजह से हुआ था।

गेल के फोन के अगले दिन सुबह जून हैवक ने मुझे फोन किया और उसी सप्ताह शुक्रवार को एक प्रेतात्मा से संपर्क करने का कार्यक्रम तय किया गया। मैंने तुरंत ब्रिटिश माध्यम सिबिल लीक से संपर्क किया, लेकिन मैंने उन्हें कोई जानकारी नहीं दी। मैंने बस उनसे एक शोर

मचाने वाले भूत से छुटकारा पाने में मदद करने का अनुरोध किया। जून हैवक को शोर की ही शिकायत थी।

“लगातार कई आवाज़ें आ रही हैं,” उन्होंने कहा। “पहले तो ये आवाज़ें धीमी थीं। तीन साल पहले तक तो मैंने इन पर ध्यान ही नहीं दिया था। फिर मैंने उस आर्किटेक्ट को बुलाया जिसने पीछे वाली बालकनी बनाई थी और उनसे इन आवाज़ों की जांच करने को कहा। उन्होंने कहा कि घर में कोई खराबी नहीं है। फिर मैंने प्लंबर को बुलाया, क्योंकि मुझे लगा कि ये भाप के पाइपों की आवाज़ है। उन्होंने भी कहा कि ऐसा नहीं है। फिर मैंने बढ़ई को बुलाया, क्योंकि घर बहुत पुराना है, लेकिन उन्हें भी कोई ढांचागत खराबी नहीं मिली।”

"ये खटखटाहट की आवाजें आपको कब सुनाई देती हैं?"

“हर समय। आजकल तो वे ज़्यादा ज़िद करने लगे हैं। ज़्यादा माँग करने लगे हैं। हम इसे ‘टैप डांस’ कहते हैं, क्योंकि सुनने में बिल्कुल ऐसा ही लगता है।”

लकड़ी के फर्श इतनी अच्छी हालत में थे कि मिस हैवोक ने उन पर कालीन नहीं बिछाए। फर्श के लिए इस्तेमाल की गई पीली चीड़ की लकड़ी आज बदली नहीं जा सकती।

जून हैवोक की नौकरानी ने मिस हैवोक की अनुपस्थिति में जोर-जोर से खटखटाने की आवाज सुनी थी, और उनके कई अभिनेता मित्रों ने इस पर टिप्पणी की थी।

जून हैवोक ने बताया, “यह हमेशा इसी जगह पर होता है और ऐसा लगता है कि यह रसोई के फर्श के नीचे से आ रहा है। इस कमरे में चैन से सोना नामुमकिन हो गया है।”

रसोईघर सीधे अपार्टमेंट के पिछले हिस्से में खुलता है, जहाँ एक कमरा बेडरूम के रूप में इस्तेमाल होता है। नतीजतन, किसी भी तरह की आवाज़ उसकी नींद में खलल डालती थी।

मिस हैवोक के अपार्टमेंट के नीचे एक और रास्ता था, लेकिन वहाँ रहने वाले किरायेदारों ने कभी कोई असामान्य बात नहीं बताई थी, न ही ऊपरी मंजिलों पर रहने वालों ने। केवल मिस हैवोक का अपार्टमेंट ही शोरगुल वाला था।

अब हम अपार्टमेंट के सामने वाले हिस्से से पीछे वाले हिस्से की ओर चले। अचानक फर्श के नीचे से एक ज़ोरदार खटखटाहट की आवाज़ आई, मानो किसी ने मशीन गन से गोलियां चलाई हों। कैथरीन और मैं बाकियों से पहले ही वहाँ पहुँच गए थे, और हम तीनों ही थे।

“देखो तो सही,” जून हैवोक ने कहा। भूत ने बड़े ही शानदार तरीके से हमारा स्वागत किया था।

मैं तुरंत आगे बढ़ा।

मैंने पूछा, “तुम क्या चाहते हो?”

तुरंत ही शोर बंद हो गया।

जब हम जांच में शामिल अन्य प्रतिभागियों के आने का इंतजार कर रहे थे, तब जून हैवोक ने पीछे की दीवार की ओर इशारा किया।

“इसे बाहर की ओर फैला दिया गया है,” उसने समझाया। “कहने का मतलब है, दीवार के सामने एक और दीवार बना दी गई थी, जिससे कमरा छोटा हो गया था। ऐसा क्यों हुआ, यह कोई नहीं जानता।”

कुछ ही देर में न्यूयॉर्क पोस्ट के स्तंभकार अर्ल विल्सन और श्रीमती विल्सन, गेल बेनेडिक्ट और रॉबर्ट विंटर-बर्गर, जो एक प्रचारक भी थे, लाइफ पत्रिका की एक महिला के साथ हाथ में नोटबुक लिए वहाँ पहुँचे। थोड़ी देर बाद सिबिल लीक भी कमरे में आ गईं। थोड़ी अनौपचारिक बातचीत हुई, जिसमें भूत के बारे में कुछ भी नहीं कहा गया, और फिर हम अपार्टमेंट के पिछले हिस्से में बैठ गए। सिबिल उस कुर्सी पर बैठ गईं जहाँ से हमेशा आवाज़ें आती थीं। जून हैवक उनके दाहिनी ओर और मैं उनके बाईं ओर बैठी। रोशनी बहुत तेज़ थी क्योंकि हम मिस हैवक के टेलीविजन शो के लिए पूरे दृश्य की शूटिंग कर रहे थे।

कुछ ही समय में, सिबिल की हालत बिगड़ने लगी।

“भूख लगी है,” सिबिल ने धीमी आवाज़ में कहा।

मैंने पूछा, "तुम्हें भूख क्यों लगी है?"

“खाना नहीं है,” आवाज ने कहा।

सिबिल लीक की आमतौर पर शांत रहने वाली आवाज अब हताशा से कांप रही थी।

“मुझे खाना चाहिए, खाना चाहिए!” वह चिल्लाई।

जून हैवोक का पूर्व टाउनहाउस—एक औपनिवेशिक सैनिक की महिला मित्र की आत्मा से प्रेतवाधित।

मैंने उसकी मदद करने का वादा किया और उसका नाम पूछा।

“रोओ मत। मैं तुम्हारी मदद करूंगा,” मैंने वादा किया।

“खाना...मुझे खाना चाहिए...”, आवाज सिसकते हुए बोली।

"आप कौन हैं?"

“लूसी रयान।”

क्या आप इसी घर में रहते हैं?

यहां कोई घर नहीं है।

"आप यहाँ पर कितने समय से हैं?"

"एक लंबे समय।"

यह कौन सा वर्ष है?

“सत्रह सौ बानवे।”

आप इस घर में क्या करते हैं?

“न घर...न लोग...न खेत....”

“तो फिर आप यहाँ क्यों हैं? यहाँ आपके लिए क्या है?”

भूत ने घुरघुराहट की आवाज निकाली।

“हम्म... पुरुष।”

“आपको यहां कौन लाया?”

“आए...लोगों ने हमें भगा दिया...सैनिकों ने...उनका पीछा किया...उन्होंने मुझे भगा दिया....”

“कौन सी सेना? कौन सी रेजिमेंट?”

“नेपियर।”

मिस हैवोक के लिविंग रूम का प्रेतवाधित क्षेत्र

"आपकी आयु कितनी है?"

"बीस।"

"आपका जन्म कहां हुआ था?"

"हॉथोर्न...यहाँ से ज्यादा दूर नहीं है।"

मुझे यकीन नहीं था कि उसने "हॉथोर्न" कहा था या "हॉगटन," या इसी तरह का कोई नाम।

आपके पिता का नाम क्या है?

मौन।

“आपकी माँ का नाम क्या है?”

मौन।

“क्या आपका बपतिस्मा हुआ था?”

“बपतिस्मा लिया?”

उसे वह बात भी याद नहीं थी।

मैंने बताया कि उनका निधन हो चुका है। इससे कोई फर्क नहीं पड़ा।

“यहीं रुको...जब तक मुझे कुछ खाना न मिल जाए...मांस...मांस और मक्का...”

क्या आपने इस घर में किसी से संपर्क करने की कोशिश की है?

कोई सुनता ही नहीं।

आप उन्हें अपनी बात सुनने के लिए कैसे मनाने की कोशिश कर रहे हैं?

मैं शोर इसलिए मचाता हूँ क्योंकि मुझे खाना चाहिए।

“आप एक ही जगह पर क्यों रहते हैं? आप स्वतंत्र रूप से क्यों नहीं घूमते?”

“नहीं जा सकते। कहीं नहीं जा सकते। बहुत सारे लोग हैं। सैनिक हैं।”

"जहां अपने माता - पिता हैं?"

"मृत।"

आपकी मां का नाम क्या है?

“मे।”

“उनका मायके का नाम?”

"पता नहीं।"

“आपके पिता का पहला नाम क्या है?”

“टेरी।”

क्या आपके परिवार का कोई सदस्य सेना में था?

उसके अगले शब्दों के बीच व्यंग्यात्मक हंसी सुनाई दी।

"केवल मैं।"

"सेना में जिन अधिकारियों को आप जानते थे, उनमें से कुछ के नाम मुझे बताइए।"

“अल्फ्रेड... रुको।”

"कोई भी रैंक?"

"कोई पद नहीं।"

“आप किस रेजिमेंट में शामिल थे?”

“बस इतना ही...अल्फ्रेड।”

“और उसने तुम्हें छोड़ दिया?”

“हां। मैं किसी दूसरे आदमी के साथ गई थी, फिर मुझे भूख लगी और मैं यहां आ गई।”

"यहां क्यों?"

मुझे यहाँ भेजा गया था।

"किसके द्वारा?"

“वे मुझे यहाँ लाए। मुझे उठाया। एक आदमी मुझे यहाँ लाया। मुझे ज़मीन पर लिटा दिया।”

"क्या तुम्हारी मौत इसी जगह हुई थी?"

“मरना, मरना? मैं मरा नहीं हूँ। मुझे भूख लगी है।”

फिर मैंने उससे कहा कि वह अपने माता-पिता, अपने प्रियजनों के पास जाए और इस जगह को छोड़ दे। उसने मना कर दिया। उसने कहा कि वह नदी के किनारे टहलना चाहती है। मैंने उसे समझाया कि उसे खाना नहीं मिल रहा है और वह जा सकती है। थोड़ी देर बाद, भूत शांति से विदा हो गया और सिबिल लीक अपने शरीर में लौट आई, जिसे अस्थायी रूप से खाली कर दिया गया था ताकि लूसी उसके माध्यम से बोल सके। हमेशा की तरह, सिबिल को गहरी समाधि की अवस्था में हुई किसी भी बात की कोई याद नहीं थी। वह रो रही थी, लेकिन उसे लगा कि उसके मस्कारा की वजह से ऐसा हो रहा है।

अचानक, भूत लौट आया। फर्श की लकड़ियाँ गुस्से में किए गए थपथपाहट की तेज़, कठोर और मांग भरी आवाज़ से गूंज रही थीं।

मैंने दोबारा पूछा, "तुम क्या चाहती हो?" हालांकि अब मुझे पता था कि वह क्या चाहती है।

सिबिल ने भी मदद का हाथ बढ़ाया। लेकिन आवाज़ जितनी अचानक शुरू हुई थी, उतनी ही अचानक बंद भी हो गई।

कुछ देर बाद हम फिर बैठ गए। सिबिल ने बताया कि उसे दो लोगों की मौजूदगी महसूस हो रही है।

“एक लड़की है, दूसरा एक आदमी है। एक आदमी जिसके हाथ में लाठी है। या बंदूक। लड़की ज़्यादा ताकतवर है। उसे कुछ चाहिए।”

अचानक, सिबिल ने रसोई की ओर इशारा किया।

“कोने में क्या हुआ?”

किसी ने भी सिबिल को उस क्षेत्र के बारे में नहीं बताया था जहां हमेशा से अशांति होती रही थी।

“मुझे अब वह अपने पीछे महसूस हो रही है। एक जवान लड़की, जिसने बहुत अच्छे कपड़े नहीं पहने हैं, जॉर्जियाई काल की। मैं उस आदमी को ठीक से नहीं पहचान पा रहा हूँ।”

इसी समय, हम कमरे में एक छोटी विक्टोरियन लकड़ी की मेज ले आए, जो गेल बेनेडिक्ट का उपहार थी।

सिबिल, जून हैवोक और मैंने जैसे ही उस पर हल्के से हाथ रखे, उसके कुछ ही सेकंड बाद वह हिलने लगा, मानो अपनी मर्जी से!

तेजी से, इसने एक शब्द टाइप करना शुरू कर दिया, मानो मोर्स कोड का इस्तेमाल कर रहा हो। अर्ल विल्सन नोट्स ले रहे थे, और हमने टेबल को इधर-उधर उछलने दिया, जिससे एक संदेश टाइप होता रहा।

यहां हर रात तड़के 3 बजे फर्श पर जोर-जोर से खटखटाने की आवाज सुनाई देती थी।

दिवंगत माध्यम सिबिल लीक संपर्क स्थापित कर रही हैं। ध्यान दें कि मानसिक ऊर्जा फर्श को ढक रही है और उसे दर्पण की तरह बना रही है।

हममें से किसी ने भी मेज को हल्के से छुआ था। मेज को हिलाने-डुलाने का तो सवाल ही नहीं था। रोशनी बहुत तेज थी और हमारे हाथ लगभग एक-दूसरे को छू रहे थे, इसलिए अगर हममें से किसी एक का भी हाथ थोड़ा सा भी छूता तो बाकी दोनों को तुरंत पता चल जाता। इस तरह का संवाद धीमा होता है, क्योंकि मेज पूरी वर्णमाला को दोहराती है जब तक कि वांछित अक्षर तक नहीं पहुंच जाती, फिर अगले अक्षर तक, और इसी तरह पूरा शब्द बन जाता है।

संचारकर्ता ने कहा, "चले जाओ," उसका मूड बिल्कुल भी दोस्ताना नहीं था।

जाहिर है, वह उस जगह को अपने लिए ही रखना चाहती थी और सोचती थी कि हम घुसपैठिए हैं।

मैंने उसके बारे में और जानकारी हासिल करने की कोशिश की। लेकिन व्यवस्थित ढंग से एक और शब्द टाइप करने के बजाय, मेज बहुत उत्तेजित हो गई—अगर भावनात्मक मेजों के लिए यह शब्द सही है—और मानो हमारे हाथों के नीचे से उछल पड़ी। हमें उससे संपर्क बनाए रखने के लिए उसका पीछा करना पड़ा, क्योंकि वह कमरे में बेतहाशा इधर-उधर भाग रही थी। जब मैं बोल रहा था, वह मेरी ओर बढ़ी और लगभग मेरी गोद में आ बैठी। जब मैं नहीं बोल रहा था, वह कमरे में किसी और के पास भाग गई। आखिरकार, वह इतनी बेकाबू हो गई, कभी-कभी तो पूरी तरह से ज़मीन से ऊपर उठ गई, कि हमारे हल्के स्पर्श से भी फिसल गई और बिजली जाने के कारण तुरंत एक कोने में लुढ़क गई—बस एक और मेज, जिसका अपना कोई अस्तित्व नहीं था।

हम घर के पीछे स्थित लोहे की सीढ़ी से कुछ कदम नीचे उतरकर बगीचे में चले गए।

मैंने पूछा, "सिबिल, तुम्हें यहाँ नीचे कैसा लग रहा है?"

“मुझे यहाँ आने की बहुत तीव्र इच्छा थी। मुझे पता ही नहीं था कि यहाँ एक बगीचा है। मेरे पैरों के नीचे की ज़मीन ही इस हलचल का कारण है।”

हम तहखाने की दीवार से सटे एक स्थान पर खड़े थे और उस खटखटाहट की आवाज के केंद्र के करीब थे जिसे हमने सुना था।

“यहाँ शायद किसी को दफनाया गया है,” सिबिल ने हमारे पैरों के नीचे मिट्टी के ढेर की ओर इशारा करते हुए कहा। “यह एक लड़की है।”

जून हैवोक ने कहा, "क्या आपको अपने पीछे का इलाका तार से ढका हुआ दिख रहा है? मैंने वहां बीज बोने की कोशिश की थी, और तार उन्हें बचाने के लिए था—लेकिन पता नहीं क्यों, वहां कुछ भी नहीं उग रहा है।"

“इस टीले पर कुछ लगा दो,” सिबिल ने सुझाव दिया। “शायद इससे वह शांत हो जाए।”

हम ऊपर वाले अपार्टमेंट में लौट आए, और थोड़ी देर बाद ही हमने उस "भूत-प्रेत खोज दल" को भंग कर दिया, जैसा कि स्तंभकार शीला ग्राहम ने बाद में इसे नाम दिया था।

अगली सुबह मैंने जून हैवोक को फोन करके पूछा कि सब कैसा चल रहा है। मुझे अपने अनुभव से पता था कि भूत या तो पूरी तरह से गायब हो गया होगा, या पूरी तरह से पागल हो गया होगा, लेकिन पहले जैसा नहीं।

मुझे बताया गया था कि लूसी काफी पागल थी। पहले से दुगनी शोर मचाने वाली, वह अब भी अपना बदला लेने की ज़िद कर रही थी। मैंने जून हैवोक से वादा किया कि हम तब तक लौटते रहेंगे जब तक भूत पूरी तरह से गायब नहीं हो जाता।

कुछ दिन बीत गए। माहौल थोड़ा शांत हो गया, मानो लूसी हिचकिचा रही हो। फिर अगली रात कुछ अजीब हुआ। अपनी आदत के अनुसार कोने से खटखटाने के बजाय, लूसी वहाँ से हटकर जून के बिस्तर के ऊपर से खटखटाने लगी। उसे उस जगह से पहले कभी नहीं सुना गया था।

दाईं ओर की काली आकृति आंखों से दिखाई नहीं दे रही थी।

बैठक कक्ष सामान्य स्थिति में है।

मैंने लूसी से दोबारा बात करने का फैसला किया। इसी बीच, हमें मिली जानकारी की पुष्टि जल्दी ही हो गई। हमारे पहले सेन्स के अगले दिन सुबह बॉब विंटर-बर्गर ने फोन किया। वह न्यूयॉर्क पब्लिक लाइब्रेरी गए थे और नेपियर के बारे में पता किया था, जिसे माध्यम ने सैनिक की रेजिमेंट का प्रभारी बताया था।

राष्ट्रीय जीवनी शब्दकोश में इसका उत्तर मिल गया। कर्नल जॉर्ज नेपियर, एक ब्रिटिश अधिकारी, गवर्नर सर हेनरी क्लिंटन के स्टाफ में कार्यरत थे। कितना रोमांचक! मैंने सोचा। क्लिंटन हवेली कभी उसी ज़मीन पर बनी थी जहाँ हम आत्माओं से संपर्क करने का प्रयास कर रहे थे। दरअसल, मैंने घोस्ट हंटर और घोस्ट्स आई हैव मेट में उत्तर की ओर दो छोटे ब्लॉक दूर स्थित क्लिंटन कोर्ट में एक भूत के बारे में लिखा था। जहाँ तक मुझे पता था, वह जगह अभी भी पूरी तरह से रहस्यमय घटनाओं से मुक्त नहीं थी, क्योंकि मुझे अजीबोगरीब कदमों और दरवाजों के अपने आप खुलने की खबरें मिलती रहती थीं।

हालांकि वह हवेली अब मौजूद नहीं है, लेकिन पीछे का घोड़ाघर अब वेस्ट फोर्टी-सिक्स्थ स्ट्रीट पर स्थित पुनर्निर्मित अपार्टमेंट हाउस क्लिंटन कोर्ट का हिस्सा था। इंग्लैंड से हाल ही में आई सिबिल लीक को इन सब बातों की जानकारी कैसे हो सकती थी?

नेपियर वास्तव में इसी स्थान पर एक रेजिमेंट के प्रभारी थे, और वर्ष 1781-82 को वह समय बताया जाता है जब नेपियर के परिवार को भयानक पीत ज्वर हो गया और उनकी मृत्यु हो गई। सर हेनरी क्लिंटन ने अपने सहायक को उनसे संपर्क करने से मना कर दिया, और कर्नल को स्वयं अधमरा अवस्था में इंग्लैंड भेज दिया गया, जबकि उनकी पत्नी और परिवार उसी स्थान पर चल बसे जो बाद में पॉटर फील्ड के नाम से जाना गया।

उन वर्षों में कई आयरिश अप्रवासी नई दुनिया में आए। शायद रायन नाम की लड़की भी उनमें से एक थी, या उसके माता-पिता। दुर्भाग्य से, इतिहास में ऐसे लोगों के बारे में ज्यादा जानकारी नहीं मिलती जो उनके साथ आए थे।

15 जनवरी, 1965 को, ठीक आधी रात को, मैंने रिवरसाइड ड्राइव स्थित अपने अपार्टमेंट में सिबिल लीक को गहरी समाधि की अवस्था में पहुँचा दिया। अतीत में, हमने भूतिया घर में प्रारंभिक séance के माध्यम से भूतों से संपर्क स्थापित करने में सफलता प्राप्त की थी। मुझे पूरी उम्मीद थी कि लूसी संवाद करेगी और मैं निराश नहीं हुआ।

"टिक, टॉक, टिकेटी-टॉक, जून की घड़ी रुक जाती है, जून की घड़ी रुक जाती है," सम्मोहित माध्यम ने लगभग सुनाई न देने वाली धीमी आवाज़ में बुदबुदाया।

“टिक-टॉक, जून की घड़ी रुक जाती है, टिक-टॉक...”

मैंने पूछा, "तुम कौन हो?"

“लूसी।”

"लूसी, इसका क्या मतलब है?"

"जून की घड़ी रुक जाती है, जून की घड़ी रुक जाती है, डरी हुई जून, डरी हुई जून," वह एक बच्चे की तरह कविता सुनाते हुए दोहराती रही।

"तुम जून को क्यों डराना चाहते हो?"

"दूर जाओ।"

"तुम उसे क्यों भगाना चाहते हो?"

“वहाँ लोग... बहुत बड़ा घर... बहुत सारी जून... बहुत सारी घड़ियाँ... वो गाती है, नाचती है, बहुत शोर मचाती है... मुझे भूख लगी है, मुझे हमेशा भूख लगती है। तुम इसके बारे में कुछ नहीं करते....”

सिबिल लीक समाधि की अवस्था में हैं जबकि जून हैवोक और हैंस होल्ज़र उन्हें देख रहे हैं।

"अगर मैं तुम्हें कुछ खाना ला दूं तो क्या तुम चले जाओगे? क्या हम किसी समझौते पर पहुँच सकते हैं?"

"क्यों?"

"क्योंकि मैं तुम्हारी मदद करना चाहता हूं, जून की मदद करना चाहता हूं।"

"अरे, वही पुरानी कहानी।"

“आप खुश नहीं हैं। क्या आप अल्फ्रेड से दोबारा मिलना चाहेंगे?”

“हां...वह चला गया है।”

“ज्यादा दूर नहीं।”

अगर आप घर से बाहर निकलेंगी तो मैं आपको अल्फ्रेड से मिलवा दूंगा।

मैं कहाँ जाऊँगा?

"अल्फ्रेड के पास तुम्हारे लिए अपना एक घर है।"

"कहाँ?"

"ज्यादा दूर नहीं।"

जाने से डर लगता है...पता नहीं कहाँ जाऊँ... कोई मुझे पसंद नहीं करता। वो शोर मचाती है, मैं शोर मचाता हूँ। मुझे वो घड़ी पसंद नहीं है।

"लूसी, तुम्हारा जन्म कहाँ हुआ था?"

"समुद्र के किनारे लार्च के पेड़... लार्चमोंट... समुद्र के किनारे... लोग मुझे परेशान करते हैं।"

मैंने उससे फिर कहा कि वह अपने अल्फ्रेड के पास जाए, फिर से खुशियाँ पाए। मैंने उसे नाम लेकर पुकारने का सुझाव दिया, जो उसने पहले तो हिचकिचाते हुए, लेकिन बाद में और भी बेताबी से किया।

नहीं...मैं यहाँ से नहीं जा सकता। उसने कहा था कि वह आएगा। उसने कहा था रुको। यहीं रुको...रुको। अल्फ्रेड, तुम क्यों नहीं आते? बहुत सारी घड़ियाँ हैं। समय, समय, समय...शोर मचाने वाला जीव। समय, समय...3 बज गए।

मैंने पूछा, “तीन बजे क्या हुआ था?”

“उसने कहा था कि वह आएगा,” भूत ने जवाब दिया। “मैंने उसका इंतजार किया।”

"आधी रात को 3 बजे क्यों?"

“तुम्हें क्या लगता है क्यों? बाहर नहीं निकल सका। अंदर बंद है। रात में बाहर निकलने की इजाजत नहीं है। मैं इंतजार करूंगा। वह आएगा।”

क्या आप उसके किसी दोस्त से मिले?

“ज्यादा लोग नहीं...मैं क्या कहूँ?”

“अल्फ्रेड का नाम क्या था?”

“बेली...अल्फ्रेड ने कहा, ‘रुको, रुको...मैं चला जाता हूँ,’ उसने कहा। ‘वे मुझे कभी नहीं ढूंढ पाएंगे।’”

"मेरी मोहब्बत लेकर उसके पास जाओ," मैंने शांत भाव से उस सूत्र को बार-बार दोहराया जिसका इस्तेमाल बचाव अभियान में धरती पर अटके भूत को दहलीज पार भेजने के लिए किया जाता है।

जब मैं बोल रहा था, लूसी हमसे दूर चली गई, वैसे हिंसक तरीके से नहीं जैसे वह आई थी, बल्कि लगभग हार मानकर।

मैंने जून हैवोक को फोन करके पूछा कि उस रात आधी रात से 12:30 बजे के बीच क्या हुआ था। उसने ठीक उसी समय लूसी के खटखटाने की आवाज़ सुनी थी, लेकिन रात बीतने के साथ-साथ कुछ और नहीं सुना - एक सुखद रात थी।

क्या लूसी अपने अल्फ्रेड के पास जा रही थी?

हमें जल्द ही पता चल जाएगा।

अगले कुछ हफ्तों में, मैंने जून हैवोक से समय-समय पर पूछताछ की। क्या भूत अब भी मौजूद था? मिस हैवोक हमेशा अपने टाउनहाउस में नहीं रहती थीं, उन्हें अपने कनेक्टिकट स्थित आलीशान घर का शांत माहौल ज़्यादा पसंद था। लेकिन जिन रातों में वह फोर्टी-फोर्थ स्ट्रीट वाले घर में सोती थीं, उन्होंने गौर किया कि लूसी रयान के व्यक्तित्व में काफ़ी बदलाव आ गया था—भूत मुक्त तो हो गया था, लेकिन घर से पूरी तरह भगाया नहीं गया था। संयोगवश, अब वह भयानक आवाज़ पूरे घर में गूंज रही थी, हालांकि पहले से कम और कम ज़ोरदार—जैसे मानो वह कुछ सोच-विचार कर रही हो।

मैंने तय किया कि हमें इस काम को यथासंभव अच्छे से पूरा करना होगा और मार्च 1965 के अंत में एक और प्रेतात्माओं से संपर्क करने का आयोजन किया गया। हमारी मेज़बान और सबसे बड़ी पीड़ित के अलावा, मेरी पत्नी कैथरीन और मैं, क्यू पत्रिका के संपादक एमोरी लुईस, डब्ल्यूओआर के कमेंटेटर बैरी फारबर और जून हैवोक के दो दोस्त उपस्थित थे। इस बार हम सब सामने वाले कमरे में एक मेज के चारों ओर बैठ गए। यह जल्द ही एक गलती साबित हुई। न तो लूसी रयान दिखीं, न ही कोई भूत। हम दूसरे कमरे में गए जहाँ पहली बार भूतिया घटनाएँ घटी थीं, और इस बार हमें बेहतर किस्मत मिली।

सिबिल ने सम्मोहन की अवस्था में हमें बताया कि लड़की चली गई है, लेकिन अल्फ्रेड का जाने का कोई इरादा नहीं है। वह अब उसका इंतज़ार कर रहा है। मैंने उसके कमांडिंग

ऑफिसर का नाम पूछा तो मुझे बताया गया कि वह नेपियर है। यह तो हम पहले से ही जानते थे। लेकिन उसके बाद रैंक में अगला कौन था?

“लेफ्टिनेंट विलियम वाटकिंस।”

“कमांडर जनरल के बारे में क्या?”

उसे पता नहीं था।

उसने सिबिल को बताया कि उसका जन्म भी लूसी की तरह हॉथोर्न में हुआ था। मैं इस हॉथोर्न का पता लगाने में कामयाब रहा, जो वेस्टचेस्टर काउंटी में पास ही एक जगह पर स्थित है।

सिबिल ने समाधि की अवस्था में कहा, "हर तरफ लोग थे, और वे गिर रहे थे। वे बीमार थे।"

मैंने आदेश दिया, "अल्फ्रेड को उसकी लूसी के पास भेजो," और सिबिल ने धीमी आवाज में उस जिद्दी भूत को जाने के लिए कहा।

कुछ देर तक मेज पलटने की घटना के बाद, जिसमें परलोक के कई पात्रों ने अपनी श्रव्य उपस्थिति दर्ज कराई, वह फिर से समाधि में चली गई। समाधि की अवस्था में सिबिल फिर से नदी के किनारे, बीमारों के बीच थी।

लेकिन लूसी रयान नहीं। लूसी चली गई, उसने कहा।

"इस गंध से मुझे उल्टी आने लगती है," सिबिल ने कहा, और उसके संवेदनशील चेहरे पर घोर भय स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहा था।

"गंदे लोग, फटे-पुराने कपड़े, वर्दी पहने लोग भी, गंदी पतलून पहने हुए। नदी के उस पार एक बड़ा घर है।"

"ये किसका घर है?"

“श्री डॉसन का। डॉक्टर डॉसन। डॉ. जेम्स डॉसन...ली पॉइंट। मुझे वहाँ जाना होगा। तबीयत खराब लग रही है। चट्टानें और पेड़, बस नदी के उस पार एक घर है।”

यह कौन सा वर्ष है?

"बानबे।"

फिर उन्होंने डॉ. डॉसन के घर का वर्णन करते हुए बताया कि उसमें बाईं ओर तीन खिड़कियाँ, दाईं ओर दो और ऊपर की ओर पाँच खिड़कियाँ थीं, और कहा कि उसका नाम ली पॉइंट-हॉथोर्न था। मुझे यह कुछ-कुछ हॉगटन जैसा लगा, लेकिन मैं निश्चित नहीं कह सकती।

नदी के उस पार, उसने कहा। उसने घर के सामने एक खंभे पर टंगी एक गोल चीज़ का वर्णन किया, जो सीप जैसी दिखती थी। उसे लगा कि यह संदेशों के लिए थी।

मैंने पूछा, "हम जिस देश में हैं उसका नाम क्या है?"

“वाइनलैंड्स। वाइनलैंड्स।”

मैंने विषय बदलकर फिर से हंग्री लूसी पर बात करने का फैसला किया। वह बीमार कैसे पड़ी?

"उसे खाने को कुछ नहीं मिला, और फिर नदी के किनारे उसे ठंड लग गई।"

“...वहाँ किसी ने उनकी मदद नहीं की। उन्हें मरने दिया। उन्हें एक गड्ढे में दफना दिया।”

नदी का नाम क्या है?

“मो...मो-कुछ।”

"क्या आपको यहां कोई और दिखाई दे रहा है?"

"काले चेहरों और काले आकार वाले बहुत से लोग।"

मैंने सोचा, महामारी, और उन दिनों डॉक्टर इसे रोकने के लिए कितना कम कर सकते थे।

मैंने प्रभारी व्यक्ति के बारे में पूछा तो उसने कहा "नेपियर"। मुझे आश्चर्य हुआ कि नेपियर के जाने के बाद कमान किसके हाथ में रहेगी, और इस बार जवाब था, "क्लिंटन... बूढ़ा मूर्ख। जॉर्जी।"

हेनरी क्लिंटन और जॉर्ज क्लिंटन नाम के दो व्यक्ति थे, जो लगभग एक ही समय के थे।

उसके बाद क्या हुआ?

“नेपियर की मृत्यु हो गई।”

"क्या यहाँ कोई और अधिकारी मौजूद हैं?"

“लिटिल बॉय रिचर्डसन...लेफ्टिनेंट।”

“कौन सी रेजिमेंट?”

“बर्गोइन।”

सिबिल मंत्रमुग्ध होकर फुफकारने और सीटी बजाने लगी। "संकेत," उसने बुदबुदाया। "जैसे ही पुरुष चले जाते हैं, वे सीटी बजाते हैं।"

मैंने फैसला किया कि सिबिल को समाधि से बाहर लाने का समय आ गया है। उसे कोई फर्क नहीं पड़ा और उसने कुछ पीने के लिए मांगा। लूसी की तरह, उसे भूख नहीं थी।

हमने अभी-अभी प्राप्त जानकारी का मूल्यांकन करना शुरू किया। डॉ. जेम्स डॉसन शायद जीवित रहे होंगे। एएमए की सदस्यता निर्देशिकाएँ इतनी पुरानी नहीं हैं। मुझे ली प्वाइंट और हॉथोर्न का उल्लेख रोचक लगा, क्योंकि ये दोनों स्थान काफी नज़दीक हैं। ली, ज़ाहिर है, फोर्ट ली होगा, और उस स्थान पर नदी में एक "बिंदु" या प्रायद्वीप है।

न्यू जर्सी में वाइनलैंड्स नाम का एक कस्बा मौजूद है, लेकिन "मो-" से शुरू होने वाली नदी संभवतः मोहॉक नदी है। यह सर्वविदित है कि क्रांति के दौरान बर्गोइन ब्रिटिश सेना में एक जनरल थे।

तो बात ये है। सिबिल लीक को न्यू जर्सी और वेस्टचेस्टर के ग्रामीण इलाकों के बारे में बहुत कम, या शायद बिल्कुल भी जानकारी नहीं है, क्योंकि वो हाल ही में अमेरिका आई हैं। यहाँ तक कि मैंने भी, जो उस समय 27 सालों से न्यूयॉर्क में रह रहा था, हॉथोर्न के बारे में पहले कभी नहीं सुना था। फिर भी, ये न्यूयॉर्क के प्लेज़ेंटविले जाने के रास्ते में ही पड़ता है।

हालांकि, भूतिया घटना का असली सबूत रेजिमेंटल रोस्टर नहीं, बल्कि जून हैवोक के घर की स्थिति थी।

बाद में आई एक रिपोर्ट में कहा गया कि लूसी, अल्फ्रेड, या जो भी इसके लिए जिम्मेदार था, वह काफी हद तक शांत हो गया था।

वे हार गए थे, लेकिन अभी पूरी तरह से पराजित नहीं हुए थे।

मैंने जून हैवोक को बड़ी चतुराई से समझाया कि भूखे भूत के लिए दया भाव रखना एक परामनोवैज्ञानिक के लिए मुश्किल पैदा करता है। चाहे वास्तविक लगाव कितना भी अचेतन क्यों न हो, उससे उत्पन्न भावनात्मक खिंचाव भूत के लंबे समय तक बने रहने के लिए आवश्यक ऊर्जा प्रदान कर सकता है।

धीरे-धीरे, जून हैवोक - जो विशेष रूप से सुबह 3 बजे एक शांत घर चाहती थी - ने भावुकता पर व्यावहारिकता को हावी होने दिया, और हंग्री लूसी और उसके सिपाही-लड़के की परछाइयाँ दूर अतीत में विलीन हो गईं, जहाँ से वे आई थीं।

* 43

बर्गेनविले का घर का भूत

लगभग एक साल पहले, श्रीमती एथेल मेयर्स, जो अक्सर मेरे साथ भूत-प्रेत की खोज यात्राओं पर जाती रही हैं, ने न्यू जर्सी के बर्गेन काउंटी में रहने वाले अपने दोस्तों से उनके बहुत पुराने घर में कुछ असामान्य घटनाओं के बारे में सुना। वे रंगमंच जगत में काफी ख्यातिप्राप्त और व्यस्त लोग हैं, लेकिन आखिरकार "भूत-प्रेत की खोज" का आयोजन किया गया, और घर के मालिक श्री बी. हमें अपनी कार में लेने आए और हमें बर्गेन काउंटी ले गए। पता चला कि वह घर क्रांति-पूर्व काल का एक खूबसूरती से संरक्षित घर था, जो ऊंचे पेड़ों और लॉन से घिरे एक परिसर में स्थित था।

मुझे बाद में पता चला कि इमारत का निर्माण 1704 में शुरू हुआ था, और इसका सबसे पुराना हिस्सा दाहिना विंग था; मध्य भाग अठारहवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में जोड़ा गया था, और अंतिम, सामने का हिस्सा लगभग पचास साल पहले पुरानी सामग्रियों से बनाया गया था, जिसमें घर की मूल शैली को सावधानीपूर्वक संरक्षित किया गया था। वर्तमान मालिकों ने इसे लगभग एक साल पहले एक ऐसे परिवार से खरीदा था जो कई पीढ़ियों से इसके मालिक थे। उस समय घर खाली था, और बी.एस. ने इसे उस समय की प्राचीन वस्तुओं से सुसज्जित करते हुए बेहतरीन ढंग से पूरी तरह से पुनर्निर्मित किया।

घर में आने के बाद, वे कुछ दिनों तक घर के पश्चिमी हिस्से से सटे हुए बंद बरामदे में गद्दे पर सोए। उनका फर्नीचर अभी तक नहीं आया था, और उन्हें कुछ समय के लिए इस तरह की असुविधा से कोई परेशानी नहीं थी। गर्मी का मौसम था, और ज़्यादा ठंड भी नहीं थी।

आधी रात को, श्रीमती बी. अचानक एक अजीब से अहसास के साथ जाग उठीं कि घर में उनके पति और उनके अलावा कोई और भी है। वह उठीं और घर के पीछे बने बंद बरामदे के गलियारे जैसे विस्तार की ओर चलीं। वहाँ उन्होंने एक आदमी की आकृति को स्पष्ट रूप से देखा, जो देखने में गोरा लग रहा था, दाढ़ी वाला था और उसने कुछ ऐसा पहना हुआ था जिसे उन्होंने "कुछ झालरदार सफेद" बताया। उन्हें अजीब सा एहसास हुआ कि यह आदमी वर्तमान समय से बहुत पहले के समय का है। लगभग पाँच मिनट तक रोशनी इतनी अच्छी थी कि वह आदमी को स्पष्ट रूप से देख सकीं, इस दौरान वह घुसपैठिए के डर और जिज्ञासा के

बीच फंसी रहीं। आखिरकार, वह उसके पास गईं और उसे अपनी आँखों के सामने गायब होते हुए देखा! उसी समय, उन्हें अजीब सा अहसास हुआ कि वह अजनबी उन्हें देखने आया था, यह सोचकर कि वे उसके घर में क्या कर रहे हैं! श्रीमती बी., एक प्रसिद्ध अभिनेत्री और कोरियोग्राफर हैं, वह न तो आसानी से भूतों की बातों में आ जाती हैं और न ही उनका उन पर आसानी से विश्वास हो जाता है। उनके लिए भूत एक ऐसा विषय है जिस पर समझदारी से चर्चा की जा सकती है। चूंकि उनके पति भी यही मानते थे, इसलिए उन्होंने पिछले मालिक से किसी भी संभावित भूतिया घटना के बारे में पूछताछ की।

श्री एस. ने उनसे कहा, “मैंने न तो कभी इसके बारे में सुना है और न ही देखा है, लेकिन मेरी बहू घर के सबसे पुराने हिस्से में कभी सो नहीं पाती। उसका कहना है कि वहाँ बहुत कुछ होता रहता है। साथ ही, पड़ोसियों में से एक का दावा है कि उसने वहाँ कुछ देखा था।”

श्री एस. भूत-प्रेत की कहानियों से अपने हालिया संपत्ति सौदे को खतरे में नहीं डालना चाहते थे। बी. दंपति ने उन्हें धन्यवाद दिया और अपने औपनिवेशिक शैली के घर में सामान्य जीवन में रम गए।

लेकिन जल्द ही उन्हें पता चल गया कि उनकी जगह वाकई बहुत व्यस्त थी। दोनों ही कलात्मक और सहज ज्ञान वाले थे, और जल्द ही उन्हें अदृश्य शक्तियों की उपस्थिति का एहसास हो गया।

एक रात श्रीमती बी. घर पर अकेली थीं और शाम घर की ऊपरी मंजिल पर बिता रही थीं। नीचे कोई नहीं था। अचानक उन्होंने नीचे के मुख्य दरवाजे के खुलने और बंद होने की आवाज़ सुनी। उस पुराने ताले के खुलने की विशिष्ट और जटिल आवाज़ को पहचानना आसान था! फिर उन्होंने कदमों की आहट सुनी और राहत की सांस ली। जाहिरा तौर पर उनके पति उम्मीद से बहुत पहले लौट आए थे। जल्दी से वह उनका स्वागत करने के लिए सीढ़ियों से नीचे दौड़ीं। वहाँ कोई नहीं था। दरवाजे के सामने भी कोई नहीं था। उन्हें बस एक बिल्ली अजीब तरह से उत्तेजित अवस्था में मिली!

कुछ समय बाद श्री बी. घर लौटे। उनकी पत्नी के लिए ये प्रतीक्षा के चिंता भरे घंटे थे। उन्होंने पूरी घटना को लेकर संशय होने के बावजूद उन्हें यथासंभव शांत किया। जल्द ही ये संशय पूरी तरह से दूर हो गए।

इस बार श्रीमती बी घर से बाहर थीं और श्री बी घर के निचले हिस्से में अकेले थे। नौकरानी अपने कमरे में सो रही थी, और बी परिवार का बच्चा ऊपर गहरी नींद में सो रहा था। शाम शांत थी, और श्री बी ने कुछ हल्का नाश्ता करने का फैसला किया। वे रसोई में थे, जो घर के निचले हिस्से के पश्चिमी छोर पर स्थित है, तभी अचानक उन्हें एक कार के आने की आवाज़ सुनाई दी। इसके बाद, सामने का दरवाज़ा खुलने और फिर बंद होने की स्पष्ट आवाज़ें आईं। जैसे ही वे दरवाज़े की ओर दौड़े, उन्हें कुत्ते के ज़ोर से भौंकने की आवाज़ सुनाई दी। लेकिन फिर से, घर के अंदर या बाहर कोई नहीं था!

श्री बी., जो एक स्टार और निर्देशक थे, और बेहद समझदार व्यक्ति थे, सोचने लगे कि कहीं उन्होंने ये सब कल्पना तो नहीं की थी। लेकिन उन्हें पता था कि ऐसा नहीं था। उन्होंने जो सुना था, वह स्पष्ट रूप से किसी के आने की आहट थी। जब वे अभी भी इन सब बातों का अर्थ समझने की कोशिश कर ही रहे थे, तभी एक और अजीब घटना घटी।

कुछ शामों बाद, वह नीचे के बैठक कक्ष में अकेले थे, तभी उन्हें बाहर गाड़ी के पहियों के रुकने की आवाज़ सुनाई दी। उन्होंने दरवाज़े की ओर सिर घुमाया, यह सोचते हुए कि इस समय कौन हो सकता है। रोशनी कम थी, लेकिन पढ़ने के लिए पर्याप्त थी। उन्हें ज़्यादा देर इंतज़ार नहीं करना पड़ा। एक छोटा, हट्टा-कट्टा आदमी बंद दरवाज़े से कमरे में दाखिल हुआ; फिर, मिस्टर बी. पर ध्यान दिए बिना, मुड़ा और घर के सबसे पुराने हिस्से में, फिर से एक बंद दरवाज़े से बाहर चला गया!

मैंने पूछा, "वह तुम्हें कैसा दिखता था?"

"वह धब्बेदार लग रहा था, मानो मोटे, ठोस बिंदुओं से बना हो, और उसने एक लंबा कोट पहना हुआ था, जैसा कि लोग 1800 के आसपास पहनते थे। संभवतः वह वही व्यक्ति था जिससे मेरी पत्नी मिली थी।"

"क्या आपको लगता है कि उसका संबंध घर के सबसे पुराने हिस्से से है?"

“हां, मुझे ऐसा लगता है। लगभग एक साल पहले मैंने वहां अठारहवीं शताब्दी में प्रचलित बहुत पुराने ल्यूट संगीत को बजाया था—और कमरे के वातावरण में कुछ बदलाव आया। मानो कोई चुपचाप और शांति से सुन रहा हो।”

लेकिन वहां हमेशा इतनी शांति नहीं रहती थी। हमारे आने से एक दिन पहले, श्रीमती बी आराम करने की कोशिश में लेटी थीं। लेकिन वह उस पुराने कमरे में नहीं रह सकीं। उन्होंने सीधे-सादे शब्दों में कहा, "वहां कोई था।"

भूतों को देखने और सुनने वाले केवल बी. परिवार ही नहीं थे। पिछली गर्मियों में, बी. परिवार के दो दोस्त उनसे मिलने आए थे, और सभी लोग बैठक कक्ष में बैठे थे, तभी सबके सामने बरामदे का जालीदार दरवाजा अपने आप खुला और फिर बंद हो गया! कहने की जरूरत नहीं है कि दोस्त ज्यादा देर नहीं रुके।

हमारे आने से ठीक एक दिन पहले, एक अन्य मित्र ने घर के सबसे पुराने हिस्से में स्थित छोटे से शौचालय का उपयोग करने की कोशिश की थी। अचानक, उसे ठंड लगने लगी और वह कमरे से बाहर भागा और श्रीमती बी. को बताया कि "कोई उसे घूर रहा है।"

इस समय तक खाना तैयार हो चुका था, और वह बेहद स्वादिष्ट था। इसके बाद हम बी. परिवार के साथ उनके घर के सबसे पुराने हिस्से में गए, जो 1704 में बना एक कम छत वाला कमरा था। वहाँ केवल दो मोमबत्तियों की रोशनी थी। श्रीमती मेयर्स एक आरामदायक कुर्सी पर बैठ गईं और धीरे-धीरे समाधि जैसी अवस्था में चली गईं।

“मैरी...कैथरीन...कौन बुला रहा है?” उसने बुदबुदाते हुए कहा।

मैंने पूछा, "यह कौन है?"

“पॉप...शांति से जियो...प्यार करो....”

मैं जानना चाहता था, “आपका नाम क्या है?”

“अचाब्रुन....”

मुझे उस समय इसका एहसास नहीं था, लेकिन एकेनबाख नाम के एक जर्मन परिवार ने इस घर का निर्माण किया था और कई पीढ़ियों से यह उनके स्वामित्व में था। बहुत बाद में मुझे पता चला कि घर के निर्माता की एक संतान का नाम मारियन था।

मैंने अपनी पूछताछ जारी रखी।

इस देश पर किसका शासन है?

“द एंग्लिश। जॉर्ज।”

यह कौन सा वर्ष है?

“छप्पन। सत्रह सौ छप्पन।”

आप यहां कब रुके थे?

“हमेशा। पापा। मेरा घर। आप मेरे साथ रहिए।”

फिर भूत ने रुक-रुक कर अपने परिवार, अपने बच्चों के बारे में बात की, जिनमें से उसके नौ बच्चे थे, जिनमें से तीन जा चुके थे।

मैंने यह जानने की उम्मीद में कहा, "हम आपके लिए क्या कर सकते हैं?" कि इन तमाम गड़बड़ियों का कारण क्या है।

"उस पहाड़ी के उस पार, एक छोटी पहाड़ी है, वहाँ तीन दबे हुए फूल हैं...।"

मैंने कहा, "क्या आपका मतलब यह है कि हमें इन कब्रों पर फूल चढ़ाने चाहिए?"

माध्यम उत्साहित प्रतीत हो रहा था।

“हे भगवान, हाँ, अपना ख्याल रखना।” इतना कहकर माध्यम ने क्रॉस का निशान बनाया।

मैंने दोबारा पूछा, “आपका नाम क्या है?”

“ओटेरिच...ओब्लिच....” माध्यम हिचकिचा रहा था, मानो भूत अपना नाम याद करने की कोशिश कर रहा हो। बाद में मुझे पता चला कि दिया गया नाम बगल में ही एक घर में रहने वाले दूसरे परिवार के नाम से काफी मिलता-जुलता था।

भूत बोलता रहा।

“वह महिला...मैं अच्छी नहीं हूँ। मेरा दिल बहुत मजबूत है, मैं नेक दिल महिला का सम्मान करती हूँ, मैं उसे अच्छा बनाती हूँ...कैथ्रिश, पवित्र महिला, मैं उस महिला की पूजा करती हूँ...वे भी पहाड़ी पर तीन के साथ विश्राम करती हैं....”

प्रेतात्माओं से संपर्क करने के बाद, मुझे उत्तरी न्यू जर्सी और न्यूयॉर्क में क्रांति-पूर्व डच घरों पर एक किताब मिली। यहीं पर मुझे उस परंपरा के बारे में पता चला कि सैक्सोनी के एक गरीब चरवाहे ने अपने से ऊंचे दर्जे की महिला से शादी की और यही घर बनवाया। वर्ष 1756 बिल्कुल सही था।

लेकिन वापस मेरे सवाल पर आते हैं। "आप छोटी पहाड़ी पर आराम क्यों नहीं करते?"

मैं चार पहाड़ियों की देखभाल करता हूँ... पेट्रिश, लाडियन, अन्निया, कैथ्रिश...

फिर, मानो हमारी ओर ध्यान देते हुए, उन्होंने कहा—"तुम्हारी देखभाल करना, बस यही मेरी इच्छा है।"

श्रीमती बी ने सिर हिलाया और धीरे से कहा, "आपका यहाँ हमेशा स्वागत है।"

बाद में मुझे पता चला कि घर के उस पार पहाड़ी पर वाकई कुछ कब्रें थीं। तांत्रिक ने घर के पिछले हिस्से की ओर इशारा करते हुए कहा, “द्वार...हम घुसपैठियों को वहाँ रखते हैं, वो अब कभी नहीं उठ पाएगा। ग्रे फॉक्स ने गड़बड़ की थी, एक भारतीय आदमी था, मैंने उसे वहीं रखा है।”

क्या इसमें कोई अंश हैं?

“हाँ। जाकर खोजो। जब भारतीय आएंगे, तो उन्हें कुछ नहीं मिलेगा।”

"कहाँ?"

"उत्तरी पहाड़ी, वहाँ अभी भी पत्थर का फर्श है, जो यहाँ समाप्त होता है।"

श्री बी से मुझे पता चला कि इस घर और सड़क के उस पार स्थित तथाकथित "गुलामों के घर" के बीच भूमिगत मार्ग मौजूद हैं।

फिर भूत ने खुलासा किया कि उसकी पत्नी के पिता, जो एक अंग्रेज थे, ने वह मार्ग बनवाया था, और उसमें भारतीय हड्डियों के साथ-साथ सामान भी रखा जाता था।

मैंने पूछा, “आपका जन्म कहाँ हुआ था?”

“यहाँ। बर्गेनविले।”

बर्गनविले ही उस कस्बे का पुराना नाम निकला।

फिर मैंने बड़ी विनम्रता से उन्हें बताया कि यह 1960 का दशक था। वे कम से कम हैरान तो जरूर दिखे।

“1756 में मेरी उम्र पैंसठ वर्ष थी। क्या मैं अब 204 वर्ष अधिक उम्र का नहीं हूँ?”

इस समय, भूत ने उस महिला के कपड़ों को पहचान लिया जो माध्यम ने पहन रखे थे, और उन्हें फाड़ने लगा। मैंने समझाया कि हम उससे कैसे "बात" कर पा रहे थे। वह शांत प्रतीत हुआ।

“तुम मेरा मक्का, मेरी शराब, मेरी व्हिस्की स्वीकार करोगे....”

मुझे पता चला कि उस समय इस क्षेत्र में मक्का और शराब मुख्य खाद्य पदार्थ थे। मुझे यह भी पता चला कि 1700 के दशक के मध्य में इस क्षेत्र में छोटे पैमाने पर भारतीय युद्ध आम बात थे। इसके अलावा, भूत ने "द्वार" का जिक्र घर के पीछे के हिस्से के रूप में किया था। यह बात सही साबित हुई, क्योंकि जो अब घर का पिछला हिस्सा है, वह उस समय सड़क की ओर खुलने वाला उसका अगला हिस्सा था।

अचानक भूत चला गया और कुछ क्षण बाद एक अन्य व्यक्ति, एक महिला, ने माध्यम की भूमिका संभाली। उसने बड़े दुख के साथ शिकायत की कि भारतीयों ने उसके एक बच्चे को अगवा कर लिया है, जिसके नाम वह बार-बार दोहराती रही। फिर वह भी चली गई, और श्रीमती मेयर्स अपने शरीर में लौट आईं, अपने अनुभवों से उन्हें कोई नुकसान नहीं हुआ था, संयोगवश, उन्हें इनमें से कुछ भी याद नहीं था।

कुछ ही समय बाद, हम न्यूयॉर्क लौट आए। ऐसा लगा जैसे हम किसी दूसरी दुनिया से आए हों। चिनार के पेड़ों से घिरी सड़क को पीछे छोड़ते हुए, हम धीरे-धीरे पेट्रोल और धूल से भरी आधुनिक शहर की दुनिया में फिर से प्रवेश कर गए।

बर्गन काउंटी के उस घर से अब तक कोई खबर नहीं मिली है, लेकिन मुझे यकीन है कि वह भूत, जिसे श्रीमती बी. ने अपनी इच्छा अनुसार जितनी देर चाहे रहने के लिए कहा था, अभी भी वहीं है। अब तो दरवाजे पीटने या उसकी अकेलेपन की ओर ध्यान दिलाने की कोई जरूरत नहीं है। वे जानते हैं कि वह उनके साथ ही है।

* 44

द रिवरसाइड घोस्ट

“कृपया मुझे यह पता लगाने में मदद करें कि यह सब क्या है,” फोन पर अजनबी ने विनती की। “मुझ पर एक भूत हमला कर रहा है!” फोन करने वाला पेरिस का एक युवा जौहरी एडवर्ड करालानियन निकला, जो अब रिवरसाइड ड्राइव पर एक पुरानी अपार्टमेंट इमारत में रहता है।

पिछले दो सालों से वह अपनी माँ के साथ वहीं रह रहा था; कभी-कभी उसे ऐसी जगहों पर कदमों की आहट सुनाई देती थी जहाँ कोई चल नहीं सकता था। पाँच-छह बार वह आधी रात को जाग जाता और अपने कमरे में कई अजनबियों को पाता। उसे लगता कि वे लोग आपस में बातचीत कर रहे हैं, और जैसे ही वह पूरी तरह जागकर उनसे कुछ पूछता, वे गायब हो जाते।

एक बार उसने एक आदमी को अपनी ओर आते देखा और उस पर तकिया फेंक दिया। उसे यह देखकर बहुत आश्चर्य हुआ कि तकिया उस प्रेत के आर-पार नहीं गया, बल्कि उससे फिसलकर ज़मीन पर गिर गया और वह भूत गायब हो गया!

वह आदमी स्पष्ट रूप से उस पर हमला करना चाहता था; उसकी आँखों में हत्या की भावना थी—और श्री करालानियन यह सब देखकर भयभीत हो गए। हालाँकि उनकी माँ कुछ देख नहीं पा रही थीं, फिर भी वे घुसपैठिए का वर्णन इस प्रकार कर पाए कि वह रसोइए जैसी सफेद वर्दी पहने हुए था, रसोइए जैसी टोपी लगाए हुए था, और उसका चेहरा क्रूर और निर्दयी था।

9 मार्च को, मैंने अपार्टमेंट में एक प्रेतात्माओं से संपर्क करने का सत्र आयोजित किया, जिसमें एडेलफी कॉलेज के एक शिक्षक, श्री डेर्सार्किसियन और तीन युवतियां भी उपस्थित थीं; श्रीमती एथेल मेयर्स माध्यम थीं।

हालांकि श्रीमती मेयर्स को इस मामले के बारे में कुछ भी पता नहीं था, फिर भी उन्होंने तुरंत अपार्टमेंट में एक पुरुष और एक महिला के बीच बहस का वर्णन किया और कहा कि वहां संरचनात्मक बदलाव हुए हैं, जिसकी पुष्टि श्री करालानियन ने की।

“किसी का गला घोंटा जा रहा है... आदमी भाग जाता है... फिर एक महिला गिरती है और उसका सिर कुचल जाता है... वे परिवार से कुछ छिपाना चाहते हैं।” श्रीमती मेयर्स ने आगे बताया कि गला घोंटने के बाद कोई बारहवीं मंजिल की खिड़की से बाहर निकल गया था और यह घटना लगभग सन् 1910 की थी।

बेहोशी की हालत में, मृत शरीर वाली पीड़िता लिज़ी ने अपनी आवाज़ वापस ले ली और मदद के लिए दयनीय ढंग से रोने लगी। श्रीमती मेयर्स के नियंत्रण में मौजूद अल्बर्ट ने बताया कि यह एक नौकरानी थी जिसे पत्नी के आदेश पर एक किराए के आदमी ने मार डाला था। जाहिर तौर पर, लड़की का हेनरी नाम के पति के साथ प्रेम संबंध था। हत्यारा मैगियो नाम का एक

कसाईखाने में काम करने वाला मजदूर था। परिवार का नाम ब्रैडी या ओ'ब्रैडी था; पत्नी का नाम ऐनी था।

प्रेतात्माओं से संपर्क करने के बाद, मैंने इन आंकड़ों की जांच की और यह देखकर आश्चर्यचकित रह गया कि 1912 की सिटी डायरेक्टरी में "ए. मैगियो, पोल्ट्री" और ऐनी ब्रैडी तथा ऐनी ओ'ग्राडी दोनों के नाम दर्ज थे। पहली नाम वाली महिला का निवास स्थान घर से मात्र एक ब्लॉक दूर दर्ज था! और हाँ—श्री करालानियन को पता चला कि चोरी के आरोप में एक युवती ने उसी कमरे से कूदकर आत्महत्या कर ली थी!

* 45

"महासागर में जन्मी" मैरी

संयुक्त राज्य अमेरिका की रहस्यमयी कहानियों में से, "समुद्र में जन्मी" मैरी और न्यू हैम्पशायर के हेनिकर में स्थित उनके आकर्षक घर की कहानी शायद सबसे प्रसिद्ध है। मैरी वालेस की इस रंगीन कहानी के बारे में सुनने वाले औसत पढ़े-लिखे व्यक्ति के लिए, या न्यू इंग्लैंड के उस निवासी के लिए जो "डाउन ईस्ट" में रहता है और इसके बारे में जानता है, यह निश्चित रूप से एक किंवदंती है - जिसे गंभीरता से नहीं लिया जाना चाहिए।

मुझे इसके बारे में कुछ अस्पष्ट जानकारी थी, तभी मुझे कोरिन रसेल नाम की एक महिला का पत्र मिला, जिसने अपने पति डेविड के साथ मिलकर हेनिकर हाउस खरीदा था और वह चाहती थी कि मुझे पता चले कि वह घर अभी भी भूतिया है।

यह अक्टूबर 1963 की बात है। संयोग से, हैलोवीन वह पारंपरिक तारीख है जिस दिन छह फुट लंबी मैरी वालेस का भूत छह घोड़ों द्वारा खींची जाने वाली गाड़ी में अपने घर "लौटता" है। कई हैलोवीन के दिनों में, हेनिकर के आसपास के बच्चे आकर मैदान में बैठ जाते थे और मैरी के आने का इंतजार करते थे। स्थानीय प्रेस ने भी हैलोवीन पर भूत-प्रेत खोजने का काम खूब किया था, इतना कि रसेल परिवार उस तारीख से डरने लगा था और उसे साल के सबसे ज्यादा परेशानी वाले दिनों में से एक मानता था।

“समुद्र में जन्मी” मैरी का घर—हेनिकर, न्यू हैम्पशायर

आखिरकार, हैलोवीन पर आने वाले लोग घर देखने के लिए सामान्य शुल्क तो नहीं देते, लेकिन वे कभी-कभी तोड़फोड़ और गंदगी जरूर फैला देते हैं। कहने की जरूरत नहीं है कि मैरी को हैलोवीन पर अपनी गाड़ी में सवारी करते हुए आज तक किसी ने नहीं देखा। भला उसे सवारी करने की जरूरत क्यों पड़ेगी, जब वह तो साल भर वहीं रहती है?

इस आखिरी कथन को समझाने के लिए, मुझे आपको सन् 1720 में ले जाना होगा, जब स्कॉटलैंड और आयरलैंड से आए प्रवासियों का एक समूह आयरलैंड के लंदनडेरी से 'वुल्फ' नामक जहाज पर सवार होकर नई दुनिया की ओर बढ़ रहा था। जहाज के कप्तान विल्सन हाल ही में एक बेटी के पिता बने थे, जिसका जन्म वास्तव में समुद्र में हुआ था। तट के नज़दीक पहुँचते ही, डॉन पेड्रो नामक एक समुद्री लुटेरे के नेतृत्व में लुटेरों ने जहाज पर धावा बोल दिया। लुटेरों ने जहाज से सभी कीमती सामान लूट लिए, जिसके बाद डॉन पेड्रो कप्तान के केबिन में नीचे गए। सोने के बजाय, उन्हें वहाँ श्रीमती विल्सन और उनकी नवजात बच्ची मिलीं।

“उसका नाम क्या है?” उसने पूछा।

मां ने निडर होकर जवाब दिया कि बच्चे का अभी तक बपतिस्मा नहीं हुआ है, क्योंकि उसका जन्म हाल ही में हुआ है।

“अगर तुम उसका नाम मेरी माँ के नाम पर रखोगे, मैरी,” समुद्री डाकू ने कहा, एक ऐसी भावना से अभिभूत होकर जिसे शायद ही कोई समुद्री डाकू अपने जीवन में आने देता है, “तो मैं इस जहाज पर सवार सभी को बख्श दूंगा।”

माँ ने खुशी-खुशी सौदा मान लिया और "समुद्र में जन्मी" मैरी को उसका नाम मिल गया। डॉन पेड्रो ने अपने आदमियों को आदेश दिया कि वे कैदियों से जो कुछ भी ले चुके हैं, उसे वापस कर दें, उन्हें रिहा कर दें और कब्ज़ा किए गए जहाज़ को छोड़ दें। क्रूर दिखने वाले चालक दल ने बड़बड़ाते हुए अपने जहाज़ की ओर वापसी की।

कुछ ही मिनटों बाद, डॉन पेड्रो अकेले लौट आए। उन्होंने श्रीमती विल्सन को रेशम का एक बंडल दिया।

“मैरी के शादी के गाउन के लिए,” उसने बस इतना कहा और फिर चला गया।

समुद्री डाकुओं का जहाज नजरों से ओझल होते ही, वुल्फ ने बोस्टन के लिए अपनी यात्रा जारी रखी। वहां से कप्तान और श्रीमती विल्सन लंदनडेरी, न्यू हैम्पशायर में अपने नए घर चले गए, जहां वे बस गए और जहां मैरी पली-बढ़ी।

अठारह वर्ष की आयु में उनका विवाह वालेस नामक व्यक्ति से हुआ और वर्षों बाद उनके चार पुत्र हुए। हालाँकि, चौथे पुत्र के जन्म के कुछ ही समय बाद उनके पति का निधन हो गया और मैरी विधवा हो गईं।

इसी बीच, डॉन पेड्रो—कहा जाता है कि वह एक अंग्रेज था जो अपनी कुलीन वंश को छिपाने के लिए स्पेनिश समुद्री डाकू का नाम इस्तेमाल कर रहा था—विल्सन परिवार के संपर्क में था। समुद्री डाकू जीवन के खतरों के बावजूद, वह वृद्धावस्था तक जीवित रहा, जब उसके मन में सेवानिवृत्ति के विचार आने लगे। किसी तरह उसने समुद्र से दूर, न्यू हैम्पशायर के हेनिकर नामक स्थान पर 6,000 एकड़ भूमि का अनुदान प्राप्त कर लिया। इस भूमि पर पेड्रो ने अपने लिए एक आलीशान घर बनवाया। उसने अपने जहाज के बढ़ईयों को काम पर लगाया, जैसा कि बीमों को जोड़ने के तरीके से देखा जा सकता है। जहाज के बढ़ईयों की निर्माण शैली

विशेष होती है, और "समुद्र में जन्मी" मैरी का घर, जैसा कि बाद में इसे जाना गया, इसका एक उदाहरण है।

घर का निर्माण अभी मुश्किल से ही पूरा हुआ था कि बूढ़े समुद्री डाकू को मैरी वालेस के पति की मृत्यु की खबर मिली और उसने मैरी और उसके बच्चों को अपने साथ रहने के लिए आमंत्रित किया। मैरी ने उसका निमंत्रण स्वीकार कर लिया और जल्द ही उसकी गृहणी बन गई।

वह घर उस समय न्यू इंग्लैंड के एक अपेक्षाकृत एकांत इलाके में था, और सर्दियों की कई ठंडी रातों की लंबी खामोशी को भंग करने के लिए शायद ही कोई आता था। मैरी ने चित्रकारी शुरू की और अपने हाथों से उस चील की आकृति बनाई जो आज भी उस घर की शोभा बढ़ाती हुई देखी जा सकती है।

कई साल शांति से बीतते रहे, फिर एक रात किसी ने डॉन पेड्रो पर हमला कर उनकी हत्या कर दी। क्या उनके आदमियों में से कोई समुद्री लुटेरों के सरदार को लूट के माल के हिस्से के लिए चुनौती देने आया था, या एक सेवानिवृत्त समुद्री लुटेरे की प्रतिष्ठा ने किसी स्थानीय चोर के मन में खजाने का विचार डाल दिया था, यह हम शायद कभी नहीं जान पाएंगे। हम इतना जानते हैं कि जब तक मैरी वालेस घर के पीछे वाले बाग में पहुंचीं, डॉन पेड्रो अपनी छाती में समुद्री लुटेरों की तलवार धंसे होने के कारण मरणासन्न अवस्था में थे। उन्होंने मैरी से कहा कि उन्हें रसोई में चूल्हे के नीचे दफना दिया जाए, जो घर के पीछे स्थित है।

मैरी को स्वयं यह घर और उससे जुड़ी हर चीज़, खजाना, दफन समुद्री डाकू का शव, सब कुछ विरासत में मिला। उनका निधन 1814 में हुआ, और तब से यह घर कई बार बिक चुका है।

दुर्भाग्यवश, हम घर के पूर्व मालिकों का साक्षात्कार नहीं ले सकते, लेकिन 1930 के दशक में यह घर लुई रॉय नामक एक सेवानिवृत्त और विकलांग व्यक्ति का था, जो अपने पुराने घर में स्थायी अतिथि के रूप में रहते थे। उन्होंने 1960 के दशक की शुरुआत में यह घर रसेल परिवार को बेच दिया था।

1938 के भयंकर तूफान के दौरान, रॉय का दावा है कि मैरी वालेस के भूत ने उनकी जान 19 बार बचाई। गिरते पेड़ों के कारण घर के बाहर फंसे होने के बावजूद, वे किसी तरह घर में

वापस पहुँचने में कामयाब रहे। उनकी अत्यंत संवेदनशील माँ, श्रीमती रॉय ने उन्हें बताया कि उन्होंने वास्तव में "समुद्र में जन्मी" मैरी की लंबी, भव्य आकृति को उनके पीछे चलते हुए देखा था, मानो उन्हें रास्ता दिखाने के लिए ही चल रही हो। 1950 के दशक में, लाइफ पत्रिका ने अमेरिका के प्रसिद्ध भूतिया घरों पर एक सचित्र लेख में इस कहानी को प्रकाशित किया। श्रीमती रॉय ने दावा किया कि उन्होंने मैरी के भूत को बार-बार देखा था, लेकिन 1948 में उनके निधन के बाद, मैं उनसे कोई और जानकारी प्राप्त नहीं कर सका।

फिर दो राज्य पुलिसकर्मी थे जिन्होंने भूत को देखा, लेकिन मैं उनसे भी साक्षात्कार नहीं कर सका, क्योंकि वे भी दूसरी दुनिया में थे।

कई आगंतुकों ने दावा किया कि उन्होंने चूल्हे के पत्थर को छूते समय "अजीब कंपन" महसूस किया, जहां कथित तौर पर डॉन पेड्रो को दफनाया गया था। उदाहरण के लिए, लंदनडेरी की श्रीमती जेम्स निसुला, जिन्होंने कई बार घर का दौरा किया, ने कहा कि उन्होंने और उनके भूत-प्रेत प्रेमियों के समूह ने रसोई के आसपास "कंपन" महसूस किया था। श्रीमती डेविड रसेल, जिन्होंने मुझसे संपर्क किया, घर की मालकिन थीं, ने कुछ भी महसूस नहीं किया।

मैंने वादा किया था कि मौका मिलते ही मैं "समुद्र में जन्मी" मैरी की कहानी की पड़ताल करूंगा। हैलोवीन या उसके आसपास का समय मेरे लिए ठीक रहेगा, और मैं किसी भी कोच का इंतज़ार नहीं करूंगा!

जब मैंने अपने साथ एक तांत्रिक को लाने की बात कही, तो श्रीमती रसेल ने कहा, "एक महिला तांत्रिक हैं जिनके बारे में आपको जानना चाहिए। उन्होंने मैरी को पहली बार यहां आते ही देख लिया था।"

मेरी जिज्ञासा जागी और मैंने उस महिला से संपर्क किया। उन्होंने मुझसे अनुरोध किया कि मैं उनके विवाहित नाम का उपयोग न करूँ, हालाँकि घर पर हमारी मुलाक़ात के कुछ महीनों बाद, जब उन्होंने बोस्टन के एक अख़बार के स्तंभकार को दो भागों में साक्षात्कार दिया, तो वे इतनी संकोची नहीं रहीं। (यह कहने की आवश्यकता नहीं है कि साक्षात्कार मेरी अनुमति के बिना दिया गया था, क्योंकि मैं अपने साथ काम करने वाले माध्यमों को कभी भी अपने मामलों के बारे में प्रकाशन के लिए बात करने की अनुमति नहीं देता। इसलिए लॉरी का पारिवारिक

नाम नहीं बताया जाएगा और जो कोई भी इस माध्यम से संपर्क करना चाहेगा, उसे मेरी सहायता के बिना ही ऐसा करना होगा।)

लॉरी ने मुझे लिखा कि वह सत्य की सेवा करने में प्रसन्न होगी, और मैं उस पर भरोसा कर सकता हूँ। बदले में उसे कुछ भी नहीं चाहिए था।

हम उस हैलोवीन पर न्यू हैम्पशायर नहीं जा पाए। श्री रसेल का ऑपरेशन होना था, श्री रॉय के कमरे को छोड़कर घर में सर्दियों में हीटिंग की व्यवस्था नहीं थी, और न्यू इंग्लैंड की सर्दियाँ इतनी ठंडी होती हैं कि किसी भी भूत को जमा सकती हैं।

हालांकि उस समय घर और ऊपर के कमरे में रहने वाले मिस्टर रॉय की देखभाल के लिए एक केयरटेकर मौजूद था, लेकिन रसेल परिवार सर्दियों में घर में नहीं रहता था, बल्कि पास के चेम्सफोर्ड, मैसाचुसेट्स में अपना घर बनाता था।

मैंने श्रीमती रसेल को पत्र लिखकर जांच को वसंत ऋतु तक स्थगित कर दिया। श्रीमती रसेल ने मेरी बात को थोड़ी निराशा के साथ स्वीकार किया, लेकिन वह इंतजार करने को तैयार थीं। आखिर, "समुद्र में जन्मी" मैरी के घर का भूत कोई दुष्ट आत्मा तो नहीं है। मैरी वालेस तो 1814 में अपनी मृत्यु के बाद से ही वहाँ रहती थीं, और जो महिला अपनी चीजों को सहेज कर रखना पसंद करती है, उसे आप घुसपैठिया नहीं कह सकते।

श्रीमती रसेल ने मुझसे बार-बार कहा, "हम उसे यहाँ से भगाना नहीं चाहते। आखिर यह उसका घर है!"

बहुत कम भूतिया घरों के मालिक इस तरह के बयान देते हैं।

लेकिन हमारी पिछली बातचीत के बाद से घर में कुछ घटना घटी थी।

“हमारे केयरटेकर ने ‘ओशन-बॉर्न’ मैरी हाउस की सीढ़ियों से एक हीटर नीचे गिरा दिया। नीचे पहुँचते ही केरोसिन और आग की लपटें सीढ़ियों को जलाने लगीं और दीवार पर चढ़ने लगीं। घर में पानी नहीं था, इसलिए मेरे पति बर्फ लाने बाहर गए। मैं वहाँ खड़ी आग को देखती रही और कुछ भी करने में असमर्थ थी, तभी मेरी आँखों के सामने आग अपने आप बुझ गई; जब मेरे पति बर्फ लेकर वापस आए, तब तक आग पूरी तरह बुझ चुकी थी। ऐसा लगा जैसे किसी ने उसे कंबल से ढक दिया हो।”

यह दिसंबर 1963 की बात है। मैंने जल्द से जल्द एक नई तारीख तय करने की कोशिश की, और 22 फरवरी संभव लग रही थी। इस बार मैं अपने साथ बोस्टन के डब्ल्यूबीजेड के बॉब कैनेडी और "कॉन्टैक्ट" के निर्माता स्कायर रशनेल को अपनी जांच को रिकॉर्ड करने के लिए लाऊंगा।

लॉरी तैयार थी, बस उसकी यही गुजारिश थी कि उसका नाम न लिया जाए।

“मैं नहीं चाहती कि किसी को पता चले कि मैं उनसे अलग हूँ,” उसने समझाया। “जब मैं छोटी थी, तो मेरा परिवार मुझ पर जासूसी का आरोप लगाता था क्योंकि मैं वस्तुओं को छूकर जो तस्वीरें देखती थी, उनसे मुझे कुछ बातें पता चल जाती थीं।”

मैंने समझाया कि मनोमापन (साइकोमेट्री) मानसिक क्षमताओं वाले लोगों में बहुत आम है, और इसमें शर्मिंदा होने जैसी कोई बात नहीं है।

मुझे लगा कि अब लॉरी के उस भूतिया घर में हुए अनुभवों के बारे में और अधिक जानने का समय आ गया है।

“मैंने पहली बार उस घर को सितंबर 1961 में देखा था,” उसने कहना शुरू किया। “वह एक धुंध भरा, उमस वाला दिन था, और खेतों पर धुंध छाई हुई थी।”

मुझे अजीब लगा, मुझे हमेशा सबसे अच्छे मानसिक परिणाम तब मिलते हैं जब वातावरण नम होता है।

चालीस वर्ष की लॉरी, वर्मोंट में जन्मी और पली-बढ़ी थी; वह विवाहित थी और उसकी एक बेटी थी, पॉलीन। वह लंबी, लाल बालों वाली, चमकीली आँखों वाली महिला थी, और अगर सोचा जाए तो, वह रहस्यमयी मैरी वालेस की प्रचलित छवि से मिलती-जुलती थी। क्या यह संयोग था?

लॉरी की एक सहेली ने उस रहस्यमयी घर को देखा था और उसे भी जाकर देखने का सुझाव दिया था। लॉरी को बस इतना ही पता था, और उसे सच में किसी अजीबोगरीब घटना की उम्मीद नहीं थी। मिस्टर रॉय ने लॉरी और उसकी बेटी को घर दिखाया और कुछ भी चौंकाने वाला नहीं हुआ। वे बाहर निकले और प्रवेश द्वार की सीढ़ियों से नीचे उतरने लगे, घर के सामने वाले बगीचे को पार करते हुए, और जब वे गेट पर पहुँचे तो पॉलीन ने अपनी माँ का हाथ पकड़ लिया और कहा:

“मम्मी, ये क्या है?”

लॉरी ने घर की ओर मुड़कर देखा। ऊपर की खिड़की में एक महिला खड़ी होकर उन्हें देख रही थी। लॉरी का पति पारिवारिक कार में व्यस्त था। आखिरकार, उसने उसे आवाज़ दी, लेकिन जैसे ही उसने मुड़कर देखा, वह आकृति गायब हो चुकी थी।

उसने इसके बारे में दोबारा नहीं सोचा और कई सप्ताह बीत गए। लेकिन वह घर उसके विचारों में बार-बार आता रहा। आखिरकार वह खुद को और रोक नहीं पाई और उस घर में लौट गई—भले ही वह मैसाचुसेट्स के वेमाउथ में उसके घर से 120 मील दूर था।

उसने अपने असाधारण अनुभव के बारे में घर के मालिक को बताया, और उन्होंने मिलकर घर की ऊपर से नीचे तक पूरी तरह से छानबीन की। अंत में वह घर लौट आई।

उसने रॉय से वादा किया कि वह हैलोवीन की पूर्व संध्या पर वापस आएगी और देखेगी कि मैरी वालेस की कहानी में कोई सच्चाई है या नहीं। दुर्भाग्य से, उसकी मंशा की खबर फैल गई, और जब वह आखिरकार घर पहुंची, तो उसे बाहर सनसनीखेज खबरें छापने वाले पत्रकारों से बचने के लिए पीछे के दरवाजे से चुपके से अंदर जाना पड़ा। अपनी दूसरी यात्रा और हैलोवीन के बीच के दिनों में, हेनिकर जाने की इच्छा और भी प्रबल होती गई, मानो कोई उस पर हावी हो गया हो।

उस समय तक रसेल परिवार घर खरीदने के लिए बातचीत कर रहा था, और लॉरी भी उनके साथ आ गई। उस हैलोवीन की रात उसके साथ कुछ नहीं हुआ। शायद वह डर और उस प्रभाव से लड़ने की इच्छा के बीच फंसी हुई थी, जिसकी वजह से वह शुरू में हेनिकर आई थी।

सफल होने के लिए, माध्यमों को शांत रहना सीखना चाहिए और अपने विचारों को खुद पर हावी नहीं होने देना चाहिए। अगली पूरी सर्दी और गर्मी के दौरान, लॉरी ने "महासागर में जन्मी" मैरी के घर लौटने की इच्छा से संघर्ष किया। लेकिन व्यर्थ। वह बार-बार लौटती रही, कभी अकेले तो कभी किसी दोस्त के साथ।

एक गर्मी की रात जब वह घर पर अकेली थी, तब हालात बेकाबू हो गए।

पिछली मुलाकात से थकी हुई - ऐसी मुलाकातें हमेशा उसे भावनात्मक रूप से तोड़ देती थीं - वह रात करीब 9:30 बजे सोने चली गई।

“उस रात क्या हुआ था?” मैंने बीच में ही टोकते हुए पूछा। वह अब भी सहमी हुई लग रही थी।

“रात 11 बजे, श्रीमान होल्ज़र,” लॉरी ने जवाब दिया, “मैंने खुद को एक्सप्रेसवे पर गाड़ी चलाते हुए पाया, मैंने पजामा और बाथरोब पहना हुआ था, मेरे पास जूते, चप्पल, पैसे या रुमाल भी नहीं थे। मैं अपने घर से दस मील दूर थी और हेनिकर जा रही थी। डर के मारे मैं वापस मुड़ी और घर लौट आई, तो देखा कि मेरा घर रोशनी से जगमगा रहा था, दरवाजे वैसे ही खुले थे जैसे मैंने छोड़े थे, और गैराज की बत्तियाँ जल रही थीं। मैं बहुत जल्दबाजी में निकली होगी।”

"क्या आपको पता चला कि आपको उस घर की ओर बार-बार क्यों खींचा जा रहा है?"

उसने अपना सिर हिलाया।

मुझे कोई अंदाजा नहीं है। लेकिन उसके बाद भी मैं दो बार वापस जा चुका हूँ। मैं उस घर से दूर नहीं रह पाता।

मैंने उसे समझाया कि शायद उस घर में कोई काम करना बाकी है, और भूत चाहता है कि वह उसे करे।

खराब मौसम के कारण हम फरवरी में हेनिकर नहीं जा सके। हमने मई 1964 में जाने की कोशिश की। लेकिन डब्ल्यूबीजेड के लोगों ने फैसला किया कि हेनिकर बोस्टन से बहुत दूर है और उन्होंने योजना से अपना नाम वापस ले लिया।

ग्रीष्म ऋतु का मौसम आया और मैं हेनिकर जाने के बजाय यूरोप चला गया। हालाँकि, शरद ऋतु में वहाँ जाने की संभावना मेरे मन में प्रबल रूप से बनी हुई थी।

ऐसा लग रहा था मानो कोई मुझे घर से दूर रख रहा हो, ठीक उसी तरह जैसे कोई लॉरी को घर की ओर खींच रहा हो!

अक्टूबर आते-आते, हम आखिरकार सही रास्ते पर आगे बढ़ रहे थे।

ओवेन लेक, जो जनसंपर्क विशेषज्ञ हैं और मानसिक शक्तियों में भी रुचि रखते हैं, ने अपना परिचय मेरे "मित्र" के रूप में दिया और लॉरी को बताया कि वह भी साथ चलेंगे। मैं उनसे पहले कभी नहीं मिला था, लेकिन अंत में वे आ नहीं सके। इसलिए हम चार लोग - मेरी पत्नी कैथरीन और मैं, लॉरी और उनके शांत स्वभाव वाले पति, जिन्होंने हमें न्यू हैम्पशायर तक ले जाने की ज़िम्मेदारी ली थी - बोस्टन से रवाना हुए। हैलोवीन का समय नज़दीक था, बस दो दिन

पहले। अगर मैरी वालेस अपनी गाड़ी में ग्रामीण इलाकों में घूम रही होतीं, तो शायद हम उनसे मिल जाते। यह गाड़ी पुरानी आयरिश लोककथाओं से है; यह आयरलैंड की कई भूतिया कहानियों में दिखाई देती है। मुझे यकीन है कि मैरी और उसके समुद्री डाकू की कहानी को बार-बार सुनाते समय, गाड़ी का ज़िक्र ज़रूर जुड़ गया होगा।

न्यू इंग्लैंड में पतझड़ के मौसम में ग्रामीण इलाका बेहद खूबसूरत होता है। जैसे ही हम न्यू हैम्पशायर राज्य की सीमा की ओर बढ़े, मैंने लॉरी से कुछ और सवाल पूछे।

मैंने कहा, "लॉरी, जब तुमने पहली बार घर की खिड़की पर 'महासागर में जन्मी' मैरी का भूत देखा था, तो वह कैसी दिखती थी?"

“तीस वर्ष की आयु की एक सुंदर महिला, भूरे बालों वाली, बहुत ही गहन और विचारशील मुस्कान लिए खड़ी थी। वह शायद तीन मिनट तक वहीं रुकी रही, और फिर अचानक, वह वहाँ से ओझल हो गई।”

“उसकी पोशाक के बारे में क्या?”

“वह एक सफेद पोशाक थी।”

लॉरी ने फिर कभी मैरी का कोई प्रेत नहीं देखा, लेकिन जब भी वह हेनिकर के घर में किसी भी चीज को छूती थी, तो उसे इस बात का आभास होता था कि मैरी के समय में घर कैसा था, और उसने कई बार बड़ी चिमनी के पास मैरी की उपस्थिति महसूस की थी।

क्या उसे कभी इस बात का अंदाजा हुआ कि मैरी क्या चाहती थी?

“वह बहुत गुस्सैल स्वभाव की महिला थीं; मुझे यह बात बहुत अच्छे से महसूस हुई,” लॉरी ने जवाब दिया। “मैं उनके घर कुल मिलाकर शायद बीस बार गई हूँ, और फिर भी मुझे समझ नहीं आता कि क्यों। वह मुझे बार-बार वहाँ खींच लाती हैं।”

लॉरी को इन मुलाकातों के दौरान हमेशा भूत की मौजूदगी का एहसास होता था।

“एक दिन मैं घर के पीछे झाड़ियों के बीच टहल रही थी। मैंने शॉर्ट्स पहने हुए थे, लेकिन मेरे पैरों पर एक खरोंच भी नहीं आई, क्योंकि मुझे लगातार ऐसा लग रहा था जैसे कोई भारी स्कर्ट मेरे पैरों को ढके हुए हो। मुझे ऐसा महसूस हो रहा था जैसे कंटीली झाड़ियाँ मेरे ऊपर पहनी

हुई उस अदृश्य स्कर्ट को खींच रही हों। मुझे ऐसा लग रहा था जैसे मैं किसी चीज़ या किसी व्यक्ति से घिरी हुई हूँ।"

लॉरी ने बताया कि पूर्व मालिक की मां, श्रीमती रॉय ने कई बार उस प्रेत को देखने की बात कही थी।

"दरअसल, मैंने घर में उसकी आत्मा को भी महसूस किया है, लेकिन यह मैरी की तरह कोई मित्रवत प्रेत नहीं है।"

क्या उसका कभी इस दूसरे भूत से सामना हुआ था?

“हां, एक बार किसी दुष्ट आत्मा ने मेरा हाथ पकड़ लिया था,” लॉरी ने जोर देकर कहा। “यह दो साल पहले की बात है, मैं उस कमरे में खड़ी थी जो अब लिविंग रूम है, और किसी ने मेरी कोहनी पकड़कर मेरा हाथ खींचा था।”

मैंने अपना हाथ पीछे खींच लिया, क्योंकि मुझे लगा कि वह दोस्ताना व्यवहार नहीं कर रही थी।

"उस समय आप ऐसा क्या कर रहे थे जिस पर उसे आपत्ति हो सकती थी?"

मुझे सच में नहीं पता।

क्या वह किसी ऐसे व्यक्ति को जानती थी जिसने उस घर में कोई अजीबोगरीब अनुभव किया हो?

“श्रीमती रॉय के साथ एक अजीब घटना घटी,” लॉरी ने कहा। “एक महिला घर आई और उनसे बोली, ‘आपका क्या मतलब है, घर का बाकी हिस्सा?’ महिला ने जवाब दिया, ‘मैं कल यहाँ आई थी, और एक लंबी महिला ने मुझे अंदर आने दिया और मुझे घर का आधा हिस्सा दिखाया।’ लेकिन, ज़ाहिर है, उस दिन घर में कोई नहीं था।”

उन दो राज्य पुलिसकर्मियों के बारे में क्या? क्या वह उनके अनुभव के बारे में विस्तार से बता सकती हैं?

“वे उसे घर की ओर जाने वाली सड़क पर चलते हुए मिले। उसने औपनिवेशिक शैली की पोशाक पहनी हुई थी, और उन्हें यह अजीब लगा। बाद में उन्हें एहसास हुआ कि उन्होंने एक

भूत देखा था, खासकर इसलिए क्योंकि उस समय उस घर में उसके हुलिए का कोई भी व्यक्ति नहीं रहता था।”

लॉरी के पति रूडी डी. एक अस्पताल तकनीशियन थे। जब लॉरी दो-तीन बार घर आई थीं, तब वे उनके साथ थे। क्या उन्हें कभी कोई खास एहसास हुआ?

उन्होंने कहा, "घर में मुझे जो एकमात्र असामान्य चीज महसूस हुई, वह यह थी कि मैं वहां से जल्द से जल्द निकलना चाहता था।"

लॉरी ने आगे कहा, “जब हम पहली बार ऊपर गए, तो कुछ ऐसा था जो मुझे बार-बार उसकी ओर खींच रहा था, लेकिन मेरे पति ने वापस जाने पर जोर दिया। यात्रा जारी रखने को लेकर बहस हुई, तभी अचानक कार का दरवाजा अपने आप खुल गया। किसी तरह हमने घर की ओर आगे बढ़ने का फैसला किया।”

समुद्री डाकू डॉन पेड्रो द्वारा निर्मित घर: "महासागर में जन्मी" मैरी का घर

एक घंटे बाद, हम घनी झाड़ियों से ढकी एक पहाड़ी पर चढ़े और एक घुमावदार सड़क पर आगे बढ़े, जिसके अंत में "महासागर-जन्मी" मैरी का घर एकांत में भव्यता के साथ खड़ा था, जो भूरे पत्थर और भूरे रंग की सजावट से बनी एक आयताकार इमारत थी, जिसे बहुत अच्छी तरह से संरक्षित किया गया था।

हमने कार खड़ी की और घर के पीछे बने बगीचे से होते हुए सड़क से काफी दूर चले गए। चारों ओर शांति और पतझड़ का सुहावना वातावरण था। कोरीन रसेल, उनके पति डेविड और उनके साथ आए दो रिश्तेदारों ने हमारा स्वागत किया। एक भव्य प्राचीन अमेरिकी चील की आकृति वाले मुख्य द्वार से अंदर प्रवेश करते हुए, हमने ऊपर जाने वाली सुंदर लकड़ी की सीढ़ियों की प्रशंसा की—वही सीढ़ियाँ जिन पर रहस्यमय आग लगी थी—और फिर उसके बाईं ओर के कमरे में गए, जहाँ परिवार एक पुराने न्यू इंग्लैंड शैली के चूल्हे के चारों ओर इकट्ठा था।

तीन साल तक रसेल परिवार उस घर में रहा, इस दौरान श्रीमती रसेल के साथ आग लगने की घटना को छोड़कर कुछ भी असामान्य नहीं हुआ था। डेविड रसेल, जो एक चतुर न्यू इंग्लैंड यांकी की तरह हर शब्द को सोच-समझकर बोलने वाले व्यक्ति थे, अपने अनुभवों के बारे में मुझे बताने के लिए उत्सुक थे।

"जिस पहली रात मैं ऊपर वाले कमरे में सोया, जिसे हम लाफायेट रूम कहते हैं, उस रात बहुत तेज बारिश हो रही थी, और मैं और मेरा कुत्ता ऊपर थे। मैं हमेशा अपने कुत्ते को अपने साथ रखता हूँ, क्योंकि लड़के घर में आकर नुकसान पहुँचाने की कोशिश करते हैं।"

“जैसे ही मैं बिस्तर पर लेटी, मुझे बहुत भारी कदमों की आहट सुनाई दी। मुझे लगा कि वे उसी मंजिल पर स्थित उन दो कमरों में आ रहे हैं जिन्हें हमने अभी-अभी मरम्मत करवाया था। मैं बहुत परेशान और लगभग डर गई थी, और मैं कमरों में गई, लेकिन वहाँ न तो कोई था और न ही घर में कहीं और।”

“दिलचस्प,” मैंने कहा। “क्या और भी कुछ था?”

“यह घटना बीते ही गर्मियों में घटी। कुछ हफ़्ते बाद, जब मैं उसी कमरे में था, कपड़े उतार रहा था कि अचानक मुझे अपने दरवाजे पर किसी के ज़ोर से दस्तक देने की आवाज़ सुनाई दी। मैंने मन ही मन सोचा, “अरे, घर में कुछ हलचल हो रही होगी,” और मैं बिस्तर पर लेट गया। कुछ मिनट बाद, दरवाजे का हैंडल आगे-पीछे घूमने लगा। मैं बिस्तर से उछलकर उठा, दरवाजा खोला, और वहाँ बिल्कुल कोई नहीं था। उस समय घर में केवल दो ही लोग थे: बीमार श्री रॉय, जो अपने कमरे में बंद थे, और मेरी पत्नी जो नीचे थीं।”

दृश्य अनुभवों के बारे में क्या?

नहीं, लेकिन कुछ समय पहले मैं अपने कुत्ते के साथ तहखाने में गई थी, लगभग चार बजे, या यूँ कहूँ कि जाने की कोशिश की थी—यह कुत्ता मुझे कभी नहीं छोड़ता, लेकिन उस खास मौके पर, कुछ ऐसा हुआ कि वह मेरे साथ तहखाने में नहीं गई। उसके रोंगटे खड़े हो गए और वह टस से मस नहीं हुई।

लाफायेट कमरा, वैसे तो वही कमरा है जिसमें समुद्री डाकू डॉन पेड्रो के रहने की बात कही जाती है। रसेल परिवार ने घर की संरचना में कोई बदलाव नहीं किया, बल्कि उसे उसके मूल स्वरूप में ही बहाल किया और सामान्य रूप से साफ-सफाई की।

अब मैंने रसेल परिवार की एक बुजुर्ग पड़ोसी फ्लोरेंस हारमोन से बात की, जिन्हें उस घर के बारे में कुछ यादें थीं। श्रीमती हारमोन को वह घर तब याद है जब वह खुद बहुत छोटी थीं, रसेल परिवार के वहां रहने आने से बहुत पहले।

"कई वर्षों बाद, मैं उस घर में वापस लौटा और श्रीमती रॉय ने मुझसे पूछा कि क्या मैं 'खजाने' का पता लगाने में उनकी मदद कर सकता हूँ, क्योंकि मैं मानसिक शक्तियों से संपन्न होने के लिए प्रसिद्ध था।"

क्या सचमुच कोई खजाना था?

“अगर कुछ था, तो मुझे लगता है कि वह मिल गया होगा,” श्रीमती हारमोन ने कहा। “जब श्रीमती रॉय ने मुझसे बात की थी, तब उन्होंने यह भी बताया था कि ज़मीन पर दो एल्म के पेड़ थे—आस-पास के केवल दो ही एल्म के पेड़। उन्हें वे किसी तरह के निशान जैसे लगे थे। लेकिन रॉय परिवार के इस घर में आने से पहले, श्रीमती मॉरो यहाँ रहती थीं। मुझे यह बात अपने चाचा से पता चली, जो एक पत्थर मिस्त्री थे और जिन्होंने उनके लिए एक मकबरा बनाया था।”

मुझे नहीं लगा कि श्रीमती हारमोन ने खजाने के बारे में मेरी जानकारी में कोई खास इजाफा किया है, इसलिए मैंने उन्हें धन्यवाद दिया और सीढ़ियों के दाहिनी ओर स्थित दूसरे बड़े कमरे की ओर ध्यान दिया। उस कमरे में पुराने जमाने के फर्नीचर थे, साथ ही सोफे से घिरी एक चिमनी और कोने में एक आयताकार पियानो था। ऊंची खिड़कियों पर पर्दे लगे थे और उनके माध्यम से न्यू इंग्लैंड का मनोरम दृश्य दिखाई देता था।

हम सब अंगीठी के चारों ओर बैठ गए और आशा की कि मैरी हमसे मिलने आएगी। इससे पहले मैंने पूरे घर का मुआयना किया था, उस चूल्हे का पत्थर जिसके नीचे कथित तौर पर डॉन पेड्रो को दफनाया गया था, और ऊपर के छोटे-छोटे शयनकक्षों का भी जहाँ डेविड रसेल ने कदमों की आहट सुनी थी। हममें से हर कोई ऊपर गलियारे की खिड़की पर खड़ा होकर बाहर देख रहा था, ठीक उसी तरह जैसे लॉरी और उसकी बेटी द्वारा देखे जाने पर भूत ने किया होगा।

और अब मैरी की बारी थी।

“यह उसका कमरा था,” लॉरी ने समझाया, “और मुझे उसकी उपस्थिति महसूस हो रही है।” लेकिन वह समाधि में जाने से इनकार कर रही थी, क्योंकि उसे “खुद को छोड़ देने” से डर लग रहा था। संवाद केवल अंतर्ज्ञान के माध्यम से ही संभव था, जिसमें लॉरी दुभाषिया की भूमिका निभा रही थी। यह वह नहीं था जिसकी मैंने उम्मीद की थी। फिर भी, हम जो भी सामग्री प्राप्त कर सकते थे, उसका मूल्यांकन करने का प्रयास करेंगे।

“कागज़ और कलम,” लॉरी ने कहा, और उसे एक कागज़ और एक पेंसिल थमा दी गई। उसे अपनी गोद में पकड़े हुए, लॉरी लिखने के लिए तैयार थी, अगर मैरी लिखना चाहती थी तो। अचानक पेंसिल लॉरी के हाथ से ज़ोर से उछल पड़ी।

“सही कलम चाहिए,” भूत ने मांग की।

मैंने आजकल कलमों के आकार के बारे में बताया और लॉरी को अपनी पेंसिल दे दी।

“देखो, महिला,” लॉरी ने भूत को समझाया। “मैं तुम्हें दिखाती हूँ कि यह कैसे लिखता है। मैं अपना नाम लिखती हूँ।”

और उसने अपनी छोटी, गोल लिखावट में लिखा, "लॉरी।"

कुछ पल सन्नाटा छा गया। ज़ाहिर है, भूत सोच रहा था। फिर लॉरी के हाथ ने, मानो उसके अपने नियंत्रण में न होते हुए, बड़े ही सलीके से "मैरी वालेस" लिखा। "एम" और "डब्ल्यू" में अठारहवीं सदी की सुलेख शैली के अनुसार घुमावदार रेखाएँ और अलंकरण थे। यह लॉरी की अपनी लिखावट से बिलकुल अलग था।

“उसे और लिखने को कहो। कलम चल रही है,” मैंने आदेश दिया।

लॉरी भूत द्वारा कही गई किसी बात से परेशान लग रही थी।

“नहीं,” उसने कहा। “मैं ऐसा नहीं कर सकती। नहीं।”

मैंने पूछा, "वह क्या चाहती है?"

वह चाहती है कि मैं सो जाऊं, लेकिन मैं नहीं सोऊंगा।

मैंने सोचा, समाधि की अवस्था—भूत भी यही चाहता है। लॉरी के सम्मोहित होठों के माध्यम से मैरी का सीधे हमसे बात करना कितना रोचक होता। आप किसी माध्यम को भूत तक तो ले जा सकते हैं, लेकिन अगर वह डरी हुई हो तो आप उसे सम्मोहन में नहीं डाल सकते।

लॉरी ने भूत से कहा कि वह उससे बात करे या उसके माध्यम से लिखे। लेकिन सम्मोहन नहीं, धन्यवाद। जाहिर है, भूत को यह पसंद नहीं था कि उसे बताया जाए कि कैसे संवाद करना है। हम इंतजार करते रहे। फिर मैंने सुझाव दिया कि लॉरी पूरी तरह से आराम करे और यह "नींद की तरह" होगा ताकि भूत हमसे सीधे बात कर सके।

“वह बिल्कुल मेरे जैसी दिखती है, बस उतनी सजी-धजी नहीं है,” भूत ने लॉरी के बारे में कहा। मैंने सोचा, क्या उसने शारीरिक समानता के कारण ही उसे अपना संदेश पहुंचाने के लिए चुना था?

“वह यंग जॉन का इंतज़ार कर रही है,” लॉरी ने अब कहा। यंग जॉन नहीं। यंग पर ज़ोर था। शायद एक ही नाम का मतलब था—यंग-जॉन।

“यह घटना उत्तरी चरागाह में घटी,” मैरी ने लॉरी के माध्यम से कहा। “उसने वॉरेन लैंगरफोर्ड की हत्या कर दी। फ्रेज़ियर लड़कों को आखिरी हड्डी मिली।”

मैंने उससे पूछा कि उसे इससे क्या लेना-देना है? क्या वह इसमें शामिल थी? लेकिन कोई जवाब नहीं मिला।

फिर मैरी के भूत ने उसके बगल में खड़े किसी और व्यक्ति का परिचय कराया।

“श्रीमती रॉय उसके साथ हैं, क्योंकि उन्होंने अपनी बेटी की हत्या की है,” लॉरी ने हिचकिचाते हुए कहा और फिर खुद से कहा, “लेकिन मुझे विश्वास नहीं है कि उन्होंने ऐसा किया है।” बाद में हमें पता चला कि भूत शायद झूठ नहीं बोल रहा था, लेकिन ज़ाहिर है, किसी के पास ऐसे अपराध का कोई सबूत नहीं था—अगर यह वाकई कोई अपराध था भी।

मैंने पूछा, "तुम इस घर में क्यों रह रहे हो?"

“यह घर मेरा घर है, घर!” “समुद्र में जन्मी” मैरी ने मुझे याद दिलाया।

“क्या तुम्हें एहसास है कि तुम वही हो जिसे आम तौर पर मृत कहा जाता है?” मैंने पूछा। भूतों के साथ अक्सर ऐसा ही होता है, इस सवाल ने वास्तविकता का सामना करने से इनकार करने को उकसाया। मैरी अपमानित महसूस करते हुए पीछे हट गई।

मैंने भूतनी से खुलकर बात की, उसकी मदद करने की पेशकश की और साथ ही उसे उसकी वर्तमान स्थिति भी समझाई। यही उसके लिए अपनी बात कहने का मौका था।

“वह बहुत ही मनमौजी है,” लॉरी ने कहा। “जब आपने कहा कि आप उसे शांति दिलाएंगे, तो वह हंसने लगी।”

लेकिन मैरी जा चुकी थी, कम से कम फिलहाल के लिए।

हमने इंतजार किया और थोड़ी देर बाद फिर कोशिश की। इस बार लॉरी ने कहा कि उसे एक आवाज सुनाई दी जो उसे आज रात वापस आने के लिए कह रही थी।

मैंने फैसला किया, "हम ऐसा नहीं कर सकते। अगर उसे मदद चाहिए, तो अभी ही करनी होगी।"

फिलिप बैब, जो उस समुद्री डाकू का असली नाम था (जैसा कि मुझे बाद में पता चला), ने कथित तौर पर घर के नीचे एक गुप्त रास्ता बनाया था। रसेल परिवार अभी भी उसे ढूंढ रहा था। दीवारों की मोटाई में वाकई कुछ अंतर थे, और कई गुप्त छेद थे जो कहीं नहीं जाते थे। लेकिन कोई रास्ता नहीं मिला। क्या समुद्री डाकू अपने रहस्य अपने साथ कब्र में ले गया था?

हेनिकर में हमारा अनुभव बेहद निराशाजनक रहा क्योंकि भूतनी की ओर से कोई ठोस सबूत नहीं मिला था। बेशक, दोबारा जाना पड़ेगा, पर मुझे इससे कोई आपत्ति नहीं थी। "समुद्र में जन्मी" मैरी का घर एक ऐसी जगह थी जहाँ बार-बार जाया जा सकता था। उस जगह का ग्रामीण आकर्षण और पुराने घर का शाश्वत वातावरण उसे एक बेहतरीन पर्यटन स्थल बनाता था। हर साल हजारों लोग उस घर में आते थे।

हम न्यूयॉर्क लौट आए और मैंने इसके बारे में और नहीं सोचा, जब तक कि मुझे जेम्स कैरन का एक पत्र नहीं मिला, जिसने बोस्टन में "कॉन्टैक्ट" कार्यक्रम में मुझे उस घर के बारे में बात

करते हुए सुना था। वह समुद्री डाकुओं के बारे में जानकारी की खोज में उस घर में गया था और उसे वह घर भूतिया लगा।

जेम्स कैरन मैसाचुसेट्स के ब्रिजवाटर में गैराज का व्यवसाय करते थे। उन्होंने हाई स्कूल और ट्रेड स्कूल की शिक्षा प्राप्त की थी और वे विवाहित थे, उनके दो बच्चे थे। दफन खजाने और समुद्री डाकुओं की कहानियों की खोज करना उनका शौक था, और वे कभी-कभी इस विषय पर व्याख्यान भी देते थे। उनकी मुलाकात गस रॉय से लगभग छह साल पहले हुई थी। रॉय ने शिकायत की कि उनकी दिवंगत मां किसी कारण से उनसे संपर्क करने की कोशिश कर रही थीं। उनकी तस्वीर दीवार से बार-बार गिर जाती थी, और उन्हें लगातार "किसी की उपस्थिति" का अहसास होता था। क्या श्री कैरन किसी अच्छे माध्यम के बारे में जानते थे?

अगस्त 1959 में, जेम्स कैरन पॉल एम्सडेंट नामक एक आध्यात्मिक गुरु को "महासागर-जन्मी" मैरी के घर ले आए। उस समय हुई séance में हेरोल्ड पीटर्स (एक फर्नीचर विक्रेता), ह्यू ब्लैंचर्ड (एक वकील), अर्नेस्ट वालबोर्न (एक अग्निशामक और कैरन के बहनोई), गस रॉय और स्वयं श्री कैरन उपस्थित थे। séance की रिकॉर्डिंग करते समय कैरन को अपने उपकरण में कुछ समस्या आ रही थी। अजीबोगरीब आवाजें बार-बार आ रही थीं। दुर्भाग्य से, उपस्थित लोगों में एक ऐसा व्यक्ति भी था जो तांत्रिक क्रियाओं के प्रति शत्रुता रखता था, और गस रॉय की माँ प्रकट नहीं हुईं। हालाँकि, कुछ और भी हुआ।

माध्यम एम्सडेंट ने कहा, "ऐसा प्रतीत होता है कि घर के आसपास या घर के अंदर कहीं लोगों को दफनाया गया है, जो किसी प्रकार की पत्थर की दीवार से घिरा हुआ है।"

मुझे चूल्हे के पत्थर और श्रीमती हारमोन की कब्र की याद आई। क्या यह संयोग था?

मिस्टर कैरन ने गस रॉय को यह समझाने के लिए पूरे घर में मेटल डिटेक्टरों का इस्तेमाल किया कि घर में या उसके आस-पास कोई "समुद्री डाकुओं का खजाना" दबा हुआ नहीं है।

कुछ देर बाद, जेम्स कैरन फिर से उस घर में आए। इस बार उनके साथ श्रीमती कैरन और श्रीमान एवं श्रीमती वालबोर्न भी थे। दोनों महिलाएं घर में किसी के न होने और हवा का प्रवाह न होने के बावजूद एक भारी दरवाजे के खुलने और बंद होने की आवाज सुनकर भयभीत हो गईं।

श्रीमती कैरन को अटारी में जाने की तीव्र इच्छा हुई, लेकिन श्री कैरन ने उन्हें रोक दिया। संशयवादी अर्नेस्ट वालबोर्न ऊपर के तथाकथित "मृत्यु" कक्ष में अकेले थे और एक कोने में रखी कुछ तस्वीरों को देख रहे थे। अचानक, उन्होंने एक महिला की स्पष्ट आवाज़ सुनी जो उन्हें घर से बाहर निकलने के लिए कह रही थी। उन्होंने चारों ओर देखा, लेकिन ऊपर कोई नहीं था। भयभीत होकर वे तुरंत घर से निकल गए और बाद में उन्हें तंत्रिका संबंधी विकार के लिए दवा की आवश्यकता पड़ी!

एक बार फिर, "महासागर में जन्मी" मैरी के मामले में चीजें शांत हो गईं, जब तक कि मैंने बोस्टन रिकॉर्ड-अमेरिकन में एक लंबी कहानी - वास्तव में दो भागों में - नहीं देखी, जिसमें मेरी पूर्व माध्यम लॉरी ने स्तंभकार हेरोल्ड बैंक्स के सामने अपने सारे राज़ खोल दिए थे।

ऐसा प्रतीत हुआ कि लॉरी हेनिकर को भूल नहीं पाई थी। प्रचारक ओवेन लेक के साथ, वह नवंबर 1964 में घर लौटी और अपने साथ विंटर-ग्रीन का तेल लेकर आई, जिसके बारे में उसने दावा किया कि मैरी वालेस ने उसे लाने के लिए कहा था।

रिपोर्ट में आगे बताया गया कि दो सप्ताह बाद, लॉरी को बोस्टन के पास वेमाउथ स्थित अपने घर में मैरी वालेस की उपस्थिति का अहसास हुआ। लॉरी को डर था कि मैरी वालेस "मेरे शरीर में प्रवेश कर सकती है और इसका इस्तेमाल अपनी इच्छानुसार किसी भी उद्देश्य के लिए कर सकती है। हो सकता है कि मैं किसी दिन जागूं और खुद मैरी वालेस बन जाऊं।"

उचित सुरक्षा उपायों के बिना माध्यम होने का यही खतरा है। वे अक्सर उस व्यक्तित्व से जुड़ जाते हैं जो उनके माध्यम से प्रकट हुआ हो। खासकर तब जब वे उनके बारे में छपी हर बात पढ़ लेते हैं।

मैंने फैसला किया कि मैं उस घर में किसी ऐसे व्यक्ति को ले जाऊँगा जिसे इसके बारे में कुछ भी पता नहीं होगा, कोई ऐसा व्यक्ति जो शौकिया "ईएसपी विशेषज्ञों," जिज्ञासु स्तंभकारों और ऐसे ही लोगों के छल में आने की संभावना नहीं रखता हो, कोई ऐसा व्यक्ति जो ठीक वही करेगा जो मैं उससे चाहता हूँ: सिबिल लीक, प्रसिद्ध ब्रिटिश मानसिक विशेषज्ञ।

बसंत ऋतु के अंत में एक शानदार दिन था जब हम "महासागर में जन्मी" मैरी के घर एक फॉक्सवैगन स्टेशन वैगन में पहुँचे, जिसे वर्मोंट के गोडार्ड कॉलेज के दो होशियार युवा छात्र चला रहे थे: जेरी वीनर और जे लॉरेंस। वे हमें लेने और अपने कैंपस तक ले जाने के लिए

बोस्टन आए थे, जहाँ मुझे छात्रों और शिक्षकों को संबोधित करना था। मैंने उन्हें हेनिकर होते हुए ले जाने का प्रस्ताव दिया, और परा मनोविज्ञान के उन दोनों युवा छात्रों ने उत्साहपूर्वक सहमति व्यक्त की। यह उनका पहला वास्तविक प्रेतात्माओं से संपर्क करने का अनुभव था और वे अपने साथ जिज्ञासा की एक जीवंत भावना लेकर आए थे।

सिबिल लीक अपने साथ एक और चीज़ लाई थीं: "श्री साशा," एक स्वस्थ चार फुट लंबा बोआ कंस्ट्रिक्टर, जो किसी ने उन्हें पालतू जानवर के रूप में दिया था। पहले तो मुझे लगा कि वह मज़ाक कर रही हैं, जब उन्होंने अपने सांप के बारे में बड़े प्यार से बात की, जो अपनी छोटी टोकरी में शांति से कुंडली मारकर बैठा था। लेकिन व्यावहारिक सिबिल, जो लगभग नौ किताबों की लेखिका हैं, ने "साशा के साथ जीवन" में एक और संभावना देखी और इसी कारण उन्होंने सांप को अपने साथ रखा। हेनिकर जाते समय, कार का टायर पंचर हो गया और हमने इस अवसर का लाभ उठाकर साशा से जान-पहचान की, क्योंकि सिबिल ने उसे न्यू हैम्पशायर के ग्रामीण इलाकों में घुमाया।

हालांकि मुझे सरीसृपों, सांपों, सर्पों और अन्य रेंगने वाले जीवों से हमेशा से ही गहरी नफरत रही है, चाहे वे ज़मीन पर हों या समुद्र में, मुझे यह स्वीकार करना होगा कि यह जीव मुझे उतना घृणित नहीं लगा जितना मैंने सोचा था। खैर, "श्री साशा" को एक बार फिर से उठाया गया और सावधानीपूर्वक उसकी टोकरी में वापस रख दिया गया और हेनिकर की यात्रा जारी रही, जहाँ रसेल परिवार बड़ी उत्सुकता से हमारा इंतजार कर रहा था।

स्वादिष्ट बुफे लंच के बाद—“श्री साशा” ने अपना लंच एक सप्ताह पहले ही कर लिया था, क्योंकि सांप धीरे-धीरे पचते हैं—हम प्रवेश द्वार के दाहिनी ओर स्थित ऊपर के बड़े कमरे में गए, जिसे आमतौर पर लाफायेट कक्ष कहा जाता था, और सिबिल चिमनी के पास वाली कुर्सी पर बैठ गई। हम बाकी लोग—रसेल परिवार, उनका एक पादरी मित्र, दो पड़ोसी, मेरी पत्नी कैथरीन और मैं, और हमारे दो छात्र मित्र—उसके चारों ओर एक घेरे में बैठ गए।

दोपहर का समय था। सूरज चमक रहा था और आसमान साफ था। भूतों के लिए यह अच्छा दिन नहीं लग रहा था। फिर भी, हम मायावी मैरी वालेस से उनके अपने इलाके में बात करने आए थे, और अगर मैं सिबिल को जानती थी, तो वह हमें निराश नहीं करेंगी। सिबिल एक बहुत ही शक्तिशाली माध्यम हैं, और उनके साथ हमेशा कुछ न कुछ होता ही है।

मैंने मेजबानों को समाधि सत्र से पहले सिबिल से घर के बारे में चर्चा न करने के लिए कहा था, इसलिए उन्हें घर के बारे में कुछ भी पता नहीं था। मैंने उससे पूछा कि क्या उसे घर के बारे में कोई अंतर्ज्ञान संबंधी आभास है।

“मेरी सबसे अहम छाप बाहर की थी,” सिबिल ने जवाब दिया, “जहाँ आइरिस के फूल खिले हैं, उसके पास। मैं उस जगह की ओर खिंची चली गई और मुझे बहुत अजीब सा महसूस हुआ। इस घर के बाहर कुछ ऐसा है जो अंदर की चीजों से कहीं ज्यादा मायने रखता है!”

“घर के अंदर कैसा लगता है? आपको यहां कैसा महसूस होता है?”

"मेरे ख्याल से सबसे प्रभावशाली कमरा करघे वाला कमरा है," सिबिल ने कहा, और मैंने सोचा, वही जगह है जहाँ अर्नेस्ट वालबोर्न ने उसे बाहर निकलने के लिए कहने वाली आवाज सुनी थी, उस क्षेत्र में जिसे "मृत्यु" कक्ष भी कहा जाता है।

“वे हमें यहाँ नहीं चाहते...दो लोगों के बीच संघर्ष है...कोई ऐसी चीज चाहता है जो उसे नहीं मिल सकती...”

इस समय सिबिल समाधि की अवस्था में थी। कुछ क्षणों के लिए सन्नाटा छा गया, मैं बेसब्री से मैरी वालेस की आत्मा के सिबिल के माध्यम से प्रकट होने का इंतजार कर रहा था। समाधि की अवस्था में मौजूद उस माध्यम के मुख से निकले पहले शब्द लगभग अस्पष्ट थे।

धीरे-धीरे आवाज साफ होती गई और मैंने उससे शब्दों को तब तक दोहराने को कहा जब तक मुझे यकीन न हो जाए कि वे सही हैं।

“सैमन, शेर के सिर के पास जाओ,” उसने अब कहा। “शेर के सिर के पास। सावधान रहना।”

मुझे सावधान क्यों रहना चाहिए?

"अगर वो तुम्हें पकड़ ले तो।"

"आप कौन हैं?"

“मैरी डेगन।”

"आप यहां पर क्या कर रहे हैं?"

“इंतजार कर रहा हूँ। कोई मुझे बुलाओ।”

उसने "वाइटिंग" शब्द को कॉकनी लहजे में कहा, और अचानक मुझे एहसास हुआ कि "से-मोन" शायद एक नाविक था।

मैंने पूछा, "यह किसका घर है?"

“डेनियल बर्न्स।” (शायद यह “बर्च” था।)

यह कौन सा वर्ष है?

“1798.”

“यह घर किसने बनवाया?”

"जलाना..."

"तुम यहाँ कैसे मिला?"

“हर समय, आते-जाते रहते हैं...छिपने के लिए...मुझे इंतजार करना पड़ता है। उसे पैसे चाहिए। जला दो। डैनियल बर्न।”

मुझे यह जानने की उत्सुकता होने लगी कि मैरी वालेस का क्या हुआ था। भूतों के इस समूह में यह नया सदस्य कौन था? सिबिल को इस घर से जुड़े किसी समुद्री डाकू या खजाने के बारे में कुछ भी पता नहीं था। फिर भी, उसकी पहली ही समाधि अवस्था में कही गई बातें एक नाविक और पैसों से संबंधित थीं।

मैंने इशारा किया, क्या मैरी डेगन के साथ कोई और भी था? शायद यह सिर्फ पहला अंक था और घर की मालकिन दूसरे अंक में आने से पहले शरमा रही थी।

लेकिन भूत ने जोर देकर कहा कि वह मैरी डेगन है और वह यहां "उस बूढ़े मूर्ख के साथ" रहती है।

मैंने पूछा, "वह बूढ़ा बेवकूफ कौन था?"

“मैरी,” डेगन की लड़की ने जवाब दिया।

मैरी का पारिवारिक उपनाम क्या है?

"बर्च," उसने बिना किसी झिझक के जवाब दिया।

मैंने श्रीमती रसेल की ओर देखा, जिन्होंने अपना सिर हिलाया।

मैरी वालेस को किसी और नाम से कोई नहीं जानता था। क्या उनका कोई और पति था जिसके बारे में हमें पता नहीं था?

मैंने पूछा, क्या उसके साथ कोई और भी था?

“मैरी बिर्च, डैनियल और जोनाथन,” उसने जवाब दिया।

“जोनाथन कौन है?”

"जोनाथन हैरिसन फ्लड," उस प्रेत जैसी महिला ने कहा।

लगभग एक सप्ताह बाद, मैंने अपने अच्छे मित्र रॉबर्ट नेस्मिथ से इस बारे में पूछा, जो समुद्री डाकुओं के इतिहास के विशेषज्ञ हैं। क्या उस नाम का कोई समुद्री डाकू था? हाँ, था, लेकिन उसकी तारीख 1610 बताई जाती है, जो हमारे उस व्यक्ति के लिए बहुत पहले की है। लेकिन फ्लड एक बहुत ही आम नाम था। साथ ही, यह भी संभव है कि इस फ्लड ने अपने समुद्री डाकू उपनाम के रूप में किसी और नाम का इस्तेमाल किया हो और फ्लड उसका असली, नागरिक नाम रहा हो।

मैंने पूछा, “ये लोग इस घर में क्या कर रहे हैं?”

“वे अपना पैसा ढूंढने आए हैं,” सिबिल ने सम्मोहन की अवस्था में जवाब दिया। “उस बूढ़े मूर्ख ने ले लिया।”

“वह किस तरह की रकम थी?”

जवाब आया, "डच मुद्रा। बहुत समय पहले की बात है।"

“इस घर में पैसा कौन लाया?”

“मैरी। मैं नहीं।”

“यह पैसा किसका था?”

जॉनी का।

“उसे यह कैसे मिला?”

"बहुत मजेदार... उसने खुद ही ले लिया... इसलिए हमने भी ले लिया।"

उनका पेशा क्या था?

“समुद्र किनारे गया था। खूब हंगामा मचाया। फिर पकड़ा गया, पता नहीं क्यों। तो उन्होंने उसे मार डाला।”

“उसे किसने मारा?”

“दौड़ने वाले। खाड़ी में।”

“वह कौन सा वर्ष था?”

“निन्यानवे।”

उसके बाद उस पैसे का क्या हुआ?

उसने उसे छिपा दिया। बाहर। शेर के सिर के पास।

शेर का सिर कहाँ है?

"आप छोटी-छोटी चट्टानों के पास से नीचे जाते हैं, चट्टानों के बीच में, कुछ-कुछ शेर के सिर जैसा दिखता है।"

अगर मैं घर के मुख्य द्वार से बाहर निकलूं, तो मुझे किस तरफ मुड़ना चाहिए?

“दाईं ओर, दाईं ओर छोटी सी चट्टान के पास से नीचे। पेड़ों के बीच से, नीचे की ओर...”

"घर से कितनी दूर है?"

"तीन मिनट।"

क्या यह किसी चट्टान के नीचे है?

शेर का सिर।

“कितनी गहराई नीचे?”

"लड़के जितना बड़ा।"

मुझे वहां क्या मिलेगा?

“सोना। डच सोना।”

"और कुछ?"

"नहीं, जब तक कि उसने इसे वहां न रखा हो।"

“उसने इसे वहाँ क्यों रखा?”

"क्योंकि वह इसके लिए वापस आया था।"

उसने क्या किया?

“उसने कहा कि यह उसका है। फिर वह चला गया। फिर उन्होंने उसे पकड़ लिया, और यह अच्छा ही हुआ। वह कभी वापस नहीं आया और वह भी चली गई।”

“वह यहाँ से कब गई?”

“अठारह तीन।”

वह कैसी थी? उसका वर्णन कीजिए।

"गोल-मटोल, मुझसे छोटी, मोटी-सी, उसे लगता था कि सब कुछ उसी का है।"

“जोनाथन का डैनियल से क्या रिश्ता था?”

"जॉनी के जाने के बाद डैनियल यहीं रुका रहा और फिर वे पैसे आपस में बांट लेते, लेकिन मैरी की वजह से उन्होंने ऐसा नहीं किया। उसने पैसे ले लिए।"

क्या तुमने पैसे देखे?

मुझे कुछ पैसे मिले हैं। सोना। इस पर 1747 लिखा है।

क्या इस जमीन में किसी को दफनाया गया है?

"कभी-कभी जब वे नदी किनारे मारे जाते थे, तो उन्हें वापस यहाँ लाया जाता था।"

"घर में किसे दफनाया गया है?"

मुझे लगता है जॉनी।

मैंने मैरी डेगन से कहा कि वह घर की मालकिन, दूसरी मैरी को मेरे पास लाए। लेकिन लड़की ने आनाकानी की। दूसरी मैरी अजनबियों से बात करना पसंद नहीं करती थी।

मैंने पूछा, "तुम कैसी दिखती हो?" मुझे अब भी यकीन नहीं था कि मैरी वालेस हमें बेवकूफ बनाने के लिए अपनी नौकरानी का रूप धारण तो नहीं कर रही थी।

दुबला-पतला और लंबा।

"तुम्हारा परिधान क्या है?"

एक ग्रे रंग की पोशाक।

इस घर में आपकी सबसे पसंदीदा जगह कौन सी है?

“छोटा सा करघे का कमरा। शांत।”

क्या तुम हमेशा वहीं रहते हो?

“नहीं।” अब आवाज़ में गर्व झलक रहा था। “मैं जहाँ चाहूँ वहाँ जाता हूँ।”

“यह किसका घर है?” अगर वह वाकई मैरी वालेस होती तो शायद मैं उसे फंसा सकता था।

“मैरी बिर्च।”

क्या उसका पति है?

“वे आते-जाते रहते हैं। यहाँ हमेशा कोई न कोई रहता है—इसीलिए मैं करघे वाले कमरे में जाता हूँ।”

मैंने उसे भेजने की कोशिश की, लेकिन वह नहीं गई।

“मुझसे कोई बात नहीं करता,” उसने शिकायत की।

“जॉनी... वो उसे मुझसे बात नहीं करने देती। कोई मुझे यहाँ से नहीं भगा सकता।”

मैंने पूछा, "क्या इस घर में कोई समुद्री कप्तान है?"

उसने लगभग चिल्लाते हुए जवाब दिया, "जॉनी!"

"वह कहां से है?"

जॉनी द्वीप से है।

फिर उसने बताया कि जॉनी और मैरी की समस्या समुद्र को लेकर थी। खासकर कप्तान के पास मौजूद पैसों को लेकर।

मैंने पूछा, "क्या पैसा मिल जाएगा?"

"जब तक मैं अनुमति न दूं, तब तक नहीं।"

मैंने मैरी डेगन से मैरी वॉलेस को ढूंढने के लिए कहा। कोई फायदा नहीं हुआ। वह महिला मनाने को तैयार नहीं थी। मैंने पूछा, क्या उसे कुछ उपहार चाहिए? इस सवाल ने उसे खुश कर दिया।

“ब्रैंडी...कुछ कपड़े,” उसने कहा। “उसे कुछ बालों की ज़रूरत है...उसके पास ज़्यादा बाल नहीं हैं।”

मैंने एक प्रायोगिक प्रस्ताव रखते हुए कहा, "उससे पूछो कि क्या उसे विंटर-ग्रीन के तेल की जरूरत है।"

"उसकी पीठ में दर्द है," भूत ने कहा, और श्रीमती रसेल के चेहरे पर आश्चर्यचकित भाव देखकर मैं समझ गया कि मैरी वालेस की पीठ में वाकई दर्द था।

“वह किसी तरह गुज़ारा कर लेती है...लोग उसके लिए चीज़ें लाते हैं...उसकी पीठ सहलाते हैं...कमर में दर्द है इसलिए वह तुम्हें पैसे नहीं लेने देगी...अभी नहीं...शायद वह बगीचे में एक और घर बनाना चाहे...अगर उसे ज़रूरत पड़े तो...इसे बेच दो...वह जानती है कि कमर दर्द की वजह से वह अब पहले जैसी नहीं रही...वह कभी नहीं जाएगी। अभी नहीं।”

मैंने उसे आश्वस्त किया कि रसेल परिवार चाहता है कि वह जब तक चाहे तब तक यहाँ रहे। आखिरकार, यह उसका भी घर था।

मैंने अब पूछा, "जॉनी का शव कहाँ दफनाया गया है?"

“जॉनी का शव,” उसने धीमी आवाज़ में कहा, “चिमनी के नीचे है।”

किसी ने भी सिबिल को उन लगातार फैल रही अफवाहों के बारे में नहीं बताया था कि बूढ़ा समुद्री डाकू चूल्हे के नीचे दफन है।

“किसी को मत बताना,” उसने फुसफुसाते हुए कहा।

“कितनी गहराई?”

"गहराई में होना ही था।"

“उसे वहां किसने रखा?”

मैं तुम्हें नहीं बताऊंगा।

"क्या तुमने उसके साथ कुछ दफनाया था?"

मैं नहीं बताऊँगी। अब उससे कोई परेशानी नहीं है। बेचारा जॉनी।

जॉनी और मैरी की मुलाकात कैसे हुई?

मुझे लगता है कि वे एक जहाज पर मिले थे।

“समुद्र में जन्मी” मैरी, मैंने सोचा। सिबिल को तो घर का नाम तक नहीं पता था, उस घर का नाम कैसे पड़ा, यह कहानी तो दूर की बात है।

“ठीक है,” मैंने कहा। “क्या मैरी के कोई बच्चे थे?”

“चार...बगीचे में। उसके बारे में कुछ कहा नहीं जा सकता।”

"क्या इस घर में कभी किसी ने किसी की हत्या की है?"

“जॉनी मारा गया था, तुम्हें पता है। पैसों के पास ही। तस्करों ने उसका पीछा किया और वह बहुत बीमार हो गया था, हमें लगा कि वह मर गया है, और फिर वह यहाँ आया। मुझे लगता है कि जब उसके पैर में चोट लगी तो उसने उसे धक्का दिया। हम दोनों उसे वापस लाए और उसे चिमनी के नीचे रख दिया। मुझे नहीं लगा था कि वह मर गया है।”

“लेकिन फिर भी तुमने उसे दफना दिया?” मैंने कहा।

“हाँ,” भूत नौकर ने जवाब दिया। “उसने कहा, ‘अच्छा हुआ कि वह चला गया। वह सिर्फ पैसों के लिए वापस आया है।’”

तो क्या मैरी और जॉनी के बीच कोई खास दोस्ती नहीं थी?

वे कभी थे।

“किस चीज़ ने हालात बदल दिए?”

“पैसा। उसने उसका पैसा ले लिया। वह पैसा जिसके लिए उसने लड़ाई लड़ी थी। लड़ाई का पैसा।”

अचानक नौकरानी की आवाज का लहजा बदल गया।

“मैं बाहर जाना चाहती हूँ,” उसने गिड़गिड़ाते हुए कहा। “वह मुझे देखती रहती है। मैं बाहर जा सकती हूँ क्योंकि आज उसकी पीठ में दर्द है। उठ नहीं सकती, आप जानते हैं। इसलिए मैं बाहर जा सकती हूँ।”

मैंने उसकी मदद करने का वादा किया था।

उसने संदेह भरी निगाहों से पूछा, "तुम क्या चाहते हो?"

मैंने स्वर में कहा, “बाहर जाओ। तुम जाने के लिए स्वतंत्र हो।”

“चट्टानों पर बैठ जाओ,” आवाज ने कहा। “अगर वह चिल्लाई तो? वह बहुत गुस्सा हो सकती है।”

मैंने वादा किया, "मैं तुम्हारी रक्षा करूंगा।"

"वह कहती है कि फर्श के नीचे और भी जगहें हैं...", लड़की भूत ने अचानक कहा।

मैंने पूछा, "क्या यहाँ कोई गुप्त मार्ग हैं?"

“हाँ। पुराने नर्सरी के पास। पहली मंज़िल। सीढ़ियों से ऊपर, करघे वाला कमरा, दाहिनी दीवार। आप धूम्रपान कक्ष से बाहर निकल सकते हैं!”

श्री रसेल ने मुझे बताया था कि उन्हें संदेह है कि संरचनात्मक साक्ष्यों के आधार पर ही धूम्रपान कक्ष के पीछे एक गुप्त मार्ग है। सिबिल को यह कैसे पता होगा? किसी ने भी उससे इस बारे में बात नहीं की थी और न ही उसे वह जगह दिखाई थी।

मैंने और इंतजार किया। लेकिन उसे घर के पिछले हिस्से की ओर जाने वाले एक रास्ते के अलावा किसी और रास्ते के बारे में पता नहीं था।

“कुएं का क्या हुआ?”

"उसे यह भी पसंद नहीं आया, क्योंकि उसे लगा कि उसने अपना पैसा वहां रखा है।"

“क्या उसने ऐसा किया?”

“शायद उसने रखा होगा। वो एक जगह पैसे रखती थी, वो दूसरी जगह, और मुझे लगता है उसने कुछ पैसे स्मोकिंग रूम में भी रखे थे। वो हमेशा वहीं आसपास रहता था। हमेशा एक-दूसरे पर नज़र रखते थे। मुझ पर भी। घर के पीछे का हिस्सा उसकी छिपने की जगह हुआ करती थी। लोग हमेशा जॉनी को ढूंढते रहते थे। छुपकर उसका पीछा करते थे।”

“मिस्टर बिर्च कौन थे?”

"जॉनी को अपने घर के कामों में काफी समय देना पड़ता था, लेकिन वह अक्सर घर से बाहर रहता था, इसलिए उसकी अनुपस्थिति में हमेशा कोई न कोई आदमी घर पर मौजूद रहता था।"

"घर के लिए मूल रूप से किसने भुगतान किया था?"

मुझे लगता है जॉनी।

“उसे यह घर क्यों चाहिए था?”

“जब उसके पास पर्याप्त धन आ जाता था, तो वह यहाँ आकर हमेशा के लिए बस जाता था। वह कभी भी लंबे समय तक नहीं रुक पाता था, वापस समुद्र में चला जाता था, और फिर वह आ जाती थी।”

मैंने एक और तरीका आजमाया।

“डॉन पेड्रो कौन था?” लोकप्रिय कथा में उस समुद्री डाकू को यही नाम दिया गया था।

उसने यह नाम सुना तो था, लेकिन उसे याद नहीं आ रहा था। "मैरी वालेस के बारे में क्या?"

“मैरी वालेस का असली नाम मैरी बिर्च था,” भूत ने मुझे सुधारते हुए कहा। “उसके कई नाम थे।”

"क्यों?"

क्योंकि उसके कई पति थे।

अगर सच है तो यह काफी तर्कसंगत है।

उन्होंने आगे कहा, "मुझे लगता है कि वॉलेस कुछ समय के लिए यहां रहे थे।"

"पहले कौन था, वालेस या बिर्च?"

“बर्च। मैरी वालेस, मैरी बर्च, इतना ही काफी है।”

क्या फिलिप बैब नाम का उसके लिए कोई महत्व था? कहा जाता है कि समुद्री डाकू का असली नाम यही था।

“उसका एक छोटा बेटा था जिसका नाम फिलिप था,” भूत ने कहा, और मैंने सोचा, क्यों नहीं? आखिर, उन्होंने मैरी का नाम समुद्री डाकू की माँ के नाम पर रखा था, तो क्यों न बदले में उसके बेटे का नाम उस बूढ़े आदमी के नाम पर रख दिया जाए? खासकर जब आसपास इतना सारा लूटा हुआ माल हो।

“अगर मैं अभी नहीं गई तो वह जाग जाएगी,” लड़की ने कहा।

“फिलिप बैब, फिलिप बैब, वह कहीं पीछे वाले कमरे में था। वही उसका कमरा था। मुझे वह याद है।”

फिलिप और जॉनी के बीच कैसा रिश्ता था? मैं जानना चाहता था कि वे दोनों एक ही व्यक्ति थे या नहीं।

“इतना अच्छा नहीं,” भूत ने कहा। “तुम्हें पता है, जॉनी को यहाँ के पुरुष पसंद नहीं थे।”

मैंने मैरी का ध्यान रखने का वादा किया और लड़की को उसके रास्ते पर भेज दिया।

फिर मैंने सिबिल को उसकी समाधि से बाहर निकाला।

कुछ देर बाद, हमने मैरी डेगन द्वारा दिए गए निर्देशों का पालन करते हुए बगीचे में खजाने की खोज शुरू करने का फैसला किया।

सिबिल को बस इतना ही कहा गया था कि वह बाहर जाए और अपनी अंतरात्मा की आवाज सुनकर उस जगह की ओर बढ़े जिसे वह महत्वपूर्ण समझे। हम बाकी लोग नेशनल ओपन गोल्फ टूर्नामेंट में दर्शकों की तरह उसके पीछे-पीछे चले।

हमें ज़्यादा दूर नहीं चलना पड़ा। घर से लगभग बीस गज की दूरी पर, खिले हुए कुछ खूबसूरत आइरिस फूलों के पास, हमें वे तीन पत्थर मिल गए। बीच वाला पत्थर दूर से देखने पर सचमुच शेर के सिर जैसा लग रहा था। मैंने समूह के बाकी लोगों से उसे देखने को कहा। इसमें कोई शक नहीं था। अगर उस जगह पर शेर का सिर था, तो यही था। इसके नीचे क्या छिपा था? घर के चूल्हे के पत्थर के नीचे आखिर क्या था?

रसेल परिवार ने वादा किया कि वे संबंधित क्षेत्रों की जाँच के लिए एक माइन डिटेक्टर लाएँगे। अगर ज़मीन में धातु होती, तो वह उपकरण उसे दिखा देता। इस बीच, "समुद्र में जन्मी" मैरी के बारे में प्रचलित कहानियों में नौकरानी मैरी डेगन की परलोक में मौजूदगी और दो समुद्री डाकुओं - जॉनी और फिलिप बैब - की रहस्यमयी तस्वीर ने और भी रहस्य जोड़ दिया था। इनमें से अधिकांश तथ्यों का पता लगाना बहुत मुश्किल है। लेकिन सच्चाई यह है कि सिबिल लीक, जो हेनिकर में एक अजनबी के रूप में आई थी, समाधि की अवस्था में एक समुद्री व्यक्ति, एक मैरी, एक समुद्री डाकू का खजाना, गुप्त रास्ते, फिलिप नाम का एक बच्चा, मैरी के चार बच्चे और ऊपर के बुनाई कक्ष में एक भूत की मौजूदगी के बारे में बता सकी। इन सभी बातों की जाँच हो चुकी थी।

बाकी बातें भी सच क्यों न हों? शायद, इसमें वह रहस्यमय खजाना भी शामिल हो?

केवल समय बताएगा।

* 46

स्टैमफोर्ड हिल के भूत

फोन पर आवाज ने प्रसन्नता से कहा, "श्रीमान होल्ज़र, मैंने आपकी किताब पढ़ी है और इसीलिए मैं आपको फोन कर रहा हूँ। हमारे घर में एक भूत है।"

आश्चर्यचकित होने के बजाय, मैंने कागज और पेंसिल ली और, ठीक उसी तरह जैसे कोई किराने की दुकान का क्लर्क टेलीफोन पर ऑर्डर लिखता है, रिपोर्ट का विवरण लिखना शुरू कर दिया।

रॉबर्ट कोवान एक ऐसे सज्जन हैं जिनका जीवन के प्रति बहुत संतुलित दृष्टिकोण है। वे एक कलाकार हैं और न्यूयॉर्क शहर की एक प्रमुख विज्ञापन एजेंसी में काम करते हैं। उनकी रुचियां कला से लेकर संगीत, रंगमंच, इतिहास और अन्य कई क्षेत्रों तक फैली हुई हैं। लेकिन भूतों में उनकी कोई दिलचस्पी नहीं थी, कम से कम तब तक तो नहीं जब तक वे और उनकी अभिनेत्री पत्नी डोरोथी स्टैमफोर्ड हिल स्थित 1780 हाउस में रहने नहीं चले गए। इस घर का नाम इस प्रकार इसलिए रखा गया है क्योंकि इसका निर्माण उसी वर्ष हुआ था।

श्री कोवान ने बताया कि उन्हें लगा कि मुझे उनका घर देखना अच्छा लगेगा, हालाँकि कोवान परिवार अपने घर में बिना किराया दिए मेहमान की मौजूदगी को लेकर ज़्यादा चिंतित नहीं था। कभी-कभी यह थोड़ा परेशान करने वाला था, लेकिन उससे भी ज़्यादा, भूत क्या चाहता है और वह कौन है, इस जिज्ञासा ने बॉब कोवान को भूत खोजकर्ता की मदद लेने के लिए प्रेरित किया था।

मैंने कहा, "श्रीमान कोवान, क्या आप अपने अनुभवों को लिखकर रख सकते हैं, ताकि मैं उन्हें अपनी फाइलों में रख सकूँ?"

मुझे लिखित रिपोर्ट रखना पसंद है (यदि संभव हो तो प्रथम पुरुष में), ताकि बाद में समान मामले सामने आने पर मैं उनका संदर्भ ले सकूं, जैसा कि अक्सर होता है।

“बिल्कुल नहीं,” बॉब कोवान ने कहा, “मुझे आपके लिए इसे लिख देने में खुशी होगी।”

अगली सुबह मुझे उनकी रिपोर्ट मिली, साथ ही 1780 के मकान का संक्षिप्त इतिहास भी मिला।

पिछले साढ़े नौ वर्षों में इस घर में रहते हुए मेरी पत्नी और मुझे जो अनुभव हुए हैं, उनका संक्षिप्त विवरण यहाँ दिया गया है। मैं अपने अनुभवों से शुरुआत करूँगा क्योंकि मेरे अनुभव काफी सरल हैं।

यहां रहने के दौरान, लगभग हर हफ्ते (लगभग एक बार) मुझे दिन हो या रात, कभी-कभी कुछ ऐसी हलचलें दिखाई देती हैं जिन्हें मैं पहचान नहीं पाता। अक्सर ऐसा तब होता है जब मैं अपने बैठक कक्ष में बैठा होता हूँ और मुझे जो भी हिलता हुआ दिखाई देता है, वह लिविंग रूम में ही होता है। कभी-कभी, और वह भी देर रात को जब मैं अकेला जाग रहा होता हूँ, मुझे एक सुंदर लेकिन अनजाना संगीत सुनाई देता है, मानो कोई पूरा ऑर्केस्ट्रा बजा रहा हो, और ऐसा लगता है जैसे घर के किसी दूसरे हिस्से में रेडियो चल रहा हो।

मुझे याद है कि मैंने इसे सिर्फ ऊपर वाले कमरे में सुना था, और वो भी तब जब मैं सोने चला गया था। जब मैं उठा, तो मैंने कमरे का दरवाजा खोलकर देखा कि कहीं गलती से रेडियो चालू तो नहीं रह गया था, लेकिन ऐसा नहीं था।

अंत में, अक्सर मुझे घर की संरचना में बिना किसी तार्किक कारण के तरह-तरह की खटखटाहट और धमाकों की आवाजें सुनाई देती हैं। दो हफ्ते पहले एक बहुत ज़ोरदार धमाका हुआ था। ऐसा लगा जैसे ऊपर का कोई दरवाज़ा अपने कब्ज़े से निकल गया हो, लेकिन हमेशा की तरह, वहाँ कुछ भी गड़बड़ नहीं था।

मेरी पत्नी डोरोथी को लगभग पाँच साल पहले दो बेहद सजीव अनुभव हुए। एक घटना रसोई में, या यूँ कहें कि रसोई की खिड़की के बाहर घटी। वह शाम को सिंक के पास खड़ी थी और अचानक खिड़की से बाहर देखा तो उसे एक चेहरा घूरता हुआ दिखाई दिया। वह एक सांवला चेहरा था, लेकिन किसी अश्वेत का नहीं, शायद किसी भारतीय का; वह चेहरा बेहद घृणास्पद और क्रूर था।

स्टैमफोर्ड हिल का घर—बेचैन सीढ़ियाँ

पहले तो उसे लगा कि शीशे में कोई धुंधली परछाई है, लेकिन गौर से देखने पर पता चला कि एक चेहरा सीधे उसकी ओर घूर रहा है। उसे बस एक चेहरा ही दिखाई दिया और जैसा उसे याद है, वह पारदर्शी सा लग रहा था। चेहरा गायब नहीं हुआ, बल्कि वह खुद गायब हो गई!

गर्मी की एक दोपहर, मेरी पत्नी पीछे के कमरे में झपकी ले रही थी और नींद और जागने के बीच की अवस्था में थी जब उसने खिड़की के ठीक बाहर पुरुषों की आवाज़ें और बगीचे में काम करने की आवाज़ें सुनीं—रेत और औजारों की आवाज़। उसने यह देखने के लिए जागने की कोशिश की कि वे कौन हो सकते हैं, लेकिन वह उठ नहीं सकी।

उस समय तक, हमने लॉन और फूलों की क्यारियों की देखभाल के लिए केवल एक ही आदमी को काम पर रखा था। लगभग एक साल बाद ही हमने एक दल को काम पर रखा जो सप्ताह में एक बार आकर काम करता था, और हम अक्सर सोचते हैं कि क्या यह पूर्वाभास का अनुभव था। मेरी पत्नी को हमेशा घर के पिछले हिस्से के बाहर एक अजीब सी बेचैनी महसूस होती रही है और आज भी कभी-कभी उसे बाहर पुरुषों की आवाज़ें सुनाई देती हैं और वह सभी खिड़कियों से बाहर देखती है लेकिन किसी को नहीं देखती।

उसने भी मेरी तरह ही आंखों के कोने से कुछ अजीबोगरीब चीजें देखने और रात में मधुर संगीत सुनने का अनुभव किया है। उसने घर की आवाज़ों पर ध्यान नहीं दिया क्योंकि बहुत

समय पहले मैंने उससे कहा था कि "सभी पुराने घरों में अजीबोगरीब संरचनात्मक आवाज़ें होती हैं"...जो कि काफी हद तक सच भी है।

हमारे यहाँ रहने से पहले, इस घर में लगभग 25 वर्षों तक क्लेटन रिच परिवार रहता था, जिसमें पाँच सदस्य थे। श्री रिच का निधन उनके यहाँ रहने के अंतिम समय में हुआ। जब हमने इसे खरीदा, तब तक उनके तीनों बच्चे शादी करके कहीं और चले गए थे।

उससे लगभग एक साल पहले तक श्रीमती डेविड काउल्स यहाँ रहती थीं। श्री फ्रेडरिक किन्बल के साथ मिलकर उन्होंने ही अधिकांश जीर्णोद्धार कार्य करवाया था।

1927 या 1928 तक, यह घर 1780 से वीड परिवार के पास था। इस वंश की आखिरी सदस्य दो बहनें थीं जो एक-दूसरे से नफरत करती थीं और केवल एक बहन के पति के माध्यम से ही आपस में बात करती थीं। उन्होंने घर को दो हिस्सों में बांट लिया था और दो अलग-अलग दरवाजों का इस्तेमाल करती थीं, एक मुख्य सामने वाले दरवाजे से सीढ़ियों वाले हॉल में जाती थी और दूसरी "कॉफ़िन डोर" से बैठक कक्ष में जाती थी।

श्री कोवान ने आगे कहा कि वे घर बेच रहे हैं - भूतों की वजह से नहीं, बल्कि इसलिए कि वे फिर से शहर में बसना चाहते हैं। मैंने उन्हें भरोसा दिलाया कि हम जल्द से जल्द आ जाएँगे।

इससे पहले कि हम ऐसा करने की व्यवस्था कर पाते, मुझे कोवान परिवार से एक और संदेश मिला। 9 फरवरी, 1964 को बॉब कोवान ने लिखा कि उन्होंने नीचे से गाने की आवाज़ बहुत स्पष्ट रूप से सुनी, और फिर से संगीत सुनाई दिया।

हालांकि, मेरी पत्नी और मैं अगले सप्ताह ही स्टैमफोर्ड हिल गए। कोवान परिवार ने उस रविवार शाम को हमारे लिए खाना तैयार रखने और हमें स्टेशन से लेने की पेशकश की, क्योंकि रात में रास्ता न जानने वाला कोई भी व्यक्ति घर नहीं ढूंढ पाता था।

शाम के लगभग छह बजे हमारी न्यू हेवन ट्रेन वहाँ पहुँची। बॉब कोवान ने वही स्कॉटिश बेरेट पहनी हुई थी जो उन्होंने हमें तुरंत पहचानने के लिए पहनने को कहा था। घर एक घुमावदार सड़क के अंत में था जो लगभग दस मिनट तक जंगल और छायादार गलियों से होकर गुजरती थी। दरवाजे के ऊपर बना अमेरिकी चील का निशान और 1780 की तारीख, ज़मीन पर छाने वाली शाम के बावजूद, साफ़ दिखाई दे रही थी। घर तीन मंज़िला था, और कोवान परिवार

रसोई के बगल वाले बड़े कमरे को अपने भोजन कक्ष के रूप में इस्तेमाल करता था, जिसे तहखाना या भूतल कहा जा सकता है।

उन्होंने इसे अठारहवीं शताब्दी की अमेरिकी प्राचीन वस्तुओं से बेहद आकर्षक ढंग से सजाया था, और चिमनी ने कमरे में ऐसी गर्माहट भर दी थी जो हलचल भरे न्यूयॉर्क से मीलों दूर प्रतीत होती थी।

अगली मंजिल पर लिविंग रूम और उसके बगल में एक छोटा सा बैठक कक्ष था। इन दोनों कमरों में बनी चिमनी एक-दूसरे से जुड़ी हुई थी। गलियारे के आगे मास्टर बेडरूम और बॉब का रंगीन सा कमरा था। ऊपर की मंजिल पर दो अतिथि कक्ष थे, और एक छोटी सी अटारी थी जहाँ छत में बने एक छेद और सीढ़ी के ज़रिए ही पहुँचा जा सकता था। अमेरिकी क्रांति के दौरान बना यह घर एक जंगल से घिरी ढलान पर स्थित है, जिसके कारण इसका मूल नाम वुडपेकर रिज फार्म था।

कई साल पहले, घर का जीर्णोद्धार पूरा होने के बाद, अंग्रेजी फर्नीचर और बागवानी विशेषज्ञ हेरोल्ड डोनाल्डसन एबरलिन ने इसके बारे में लिखा था:

चट्टानी चोटियों, पत्थरों से भरे चारागाहों और हवा से उबड़-खाबड़ समुद्र की सतह जैसी तीखी टूटी-फूटी ढलानों के साथ, इस क्षेत्र की स्थलाकृतिक स्थितियों ने स्वाभाविक रूप से घरेलू वास्तुकला को प्रभावित किया है। केवल दो उदाहरणों के तौर पर, इस क्षेत्र के घरों को कई अचानक ढलान वाली पहाड़ियों और सर्वव्यापी ग्रेनाइट पत्थरों के उपयोग के अनुरूप ढलना पड़ा है। वुडपेकर रिज फार्म स्थित घर की विशिष्टता का एक हिस्सा इस बात में निहित है कि यह एक विशिष्ट घर बने बिना इन सभी स्थितियों को पूरा करता है।

सामुदायिक अस्तित्व से पहले, आसपास के पूरे क्षेत्र का नाम वुडपेकर रिज था, जो सुनने में काफी सुहावना लगता था। इसी नाम की स्मृति को जीवित रखने के लिए वुडपेकर रिज फार्म का नाम भी इसी प्रकार रखा गया। परंपरा के अनुसार, वुडपेकर रिज फार्म की सीमा में आने वाली भूमि कभी पुराने भारतीय सरदार पोनस के निजी शिकारगाह का हिस्सा हुआ करती थी।

पुराने पोनस शायद थोड़े रहस्यमय और अस्पष्ट प्रतीत होते हों, जैसा कि ऐसे बीते समय के सरदारों के साथ अक्सर होता है। हालाँकि, ऑगस्टस वीड, जिन्होंने 1780 में इस घर का

निर्माण कराया था, बहुत ही ठोस और वास्तविक व्यक्ति थे। और उक्त ऑगस्टस एक प्रतिष्ठित व्यक्तित्व थे।

जब उन्होंने नींव रखी और इमारत का ढांचा तैयार करवाया, तब भी देश पर युद्ध के बादल छाए हुए थे। फिर भी, आत्मविश्वास से भरे और दूरदर्शी होकर, उन्होंने न केवल ग्रामीण परिवेश की भावना को दर्शाने वाला एक मजबूत और सुव्यवस्थित घर बनाया, बल्कि ऐसा लगता है कि उन्होंने उसमें अपने सशक्त और स्वतंत्र व्यक्तित्व की झलक भी डाली।

ऐसा कहा जाता है कि ऑगस्टस एक इतने प्रसिद्ध किसान थे और अपने खेतों की स्थिति पर इतना उचित गर्व करते थे कि वे अपने भूसे में पाए जाने वाले प्रत्येक डेज़ी फूल के लिए एक डॉलर का इनाम देने की खुली घोषणा करने से भी नहीं डरते थे।

लगभग सन् 1825 में, उस समय प्रचलित धारणाओं के अनुरूप घर का कुछ हद तक पुनर्निर्माण किया गया। कोई बहुत व्यापक या भव्य पुनर्निर्माण नहीं किया गया, लेकिन उस समय किए गए कार्य के स्पष्ट निशान नव-ग्रीक शैली की बारीकियों में आज भी दिखाई देते हैं, जो घर के बाहर और अंदर दोनों जगह मौजूद हैं।

यह संभव है कि अटारी की "पेट के बल लेटने वाली" खिड़कियाँ इसी काल की हों और मूल छत की ऊँचाई बढ़ाने या उसकी ढलान में किसी बदलाव का संकेत देती हों। ये "पेट के बल लेटने वाली" खिड़कियाँ—जिन्हें यह नाम इसलिए दिया गया था क्योंकि ये दीवार में काफी नीचे थीं और इनके चौखट फर्श के स्तर के बहुत करीब थे, जिससे बाहर देखने के लिए लगभग पेट के बल लेटना पड़ता था—नव-ग्रीक काल में अटारी के कमरों को रोशन करने का एक लोकप्रिय तरीका थीं। और यह वाकई आश्चर्यजनक है कि इनसे कितनी रोशनी आती है, और वह रोशनी कितनी सुखद होती है।

हाल ही में हुए नवीनीकरण से वुडपेकर फार्महाउस को जो सुंदरता और आराम का वर्तमान स्वरूप मिला है, उससे इस स्थान की उस अनूठी विशेषता पर कोई असर नहीं पड़ा है जो पीढ़ियों से चली आ रही है, जब से मेहनती ऑगस्टस वीड ने पहली बार यहाँ अपना निवास स्थान बनाया था। संरचना पर शुरुआत से ही मौजूद अठारहवीं शताब्दी की विशेषताओं को पहचानने के लिए गहन जांच की आवश्यकता नहीं है—ढांचे की मजबूत लकड़ियाँ, टिकाऊ

बीम और जोड़, चौड़े फर्श के तख्ते और विशाल चिमनियां। 1825 में हुए जीर्णोद्धार के निशानों को देखने के लिए भी बारीकी से जांच की आवश्यकता नहीं है।

स्तंभों, खंभों, आवरणों और अन्य विशेषताओं की शैलियाँ स्पष्ट रूप से उनकी उत्पत्ति का वर्णन करती हैं।

बगीचे का स्वरूप भी पर्यावरण के प्रति उसी सहानुभूतिपूर्ण समझ को दर्शाता है, जो उस प्रकार के घर के लिए विशेष रूप से उपयुक्त है जिसके लिए यह प्राकृतिक परिवेश प्रदान करता है। प्राचीन कुएँ का आवरण, बकाइन की झाड़ियाँ, स्वीटब्रियर, अगस्त लिली और पुराने फार्महाउस के प्रांगण के अन्य निवासी अपने लंबे समय से अभ्यस्त स्थानों पर बने रहने दिए गए हैं।

अपने इस अधिकार की मान्यता के बदले में, वे उस आत्मसंतुष्टता और सौम्य संतोष के माहौल में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं जो पूरे स्थान पर व्याप्त है।

नीचे एक बेहद सुखद रात्रिभोज के बाद, कैथरीन और मैं ऊपर के बड़े से बैठक कक्ष में कोवान परिवार के साथ शामिल हुए। हम चुपचाप बैठ गए और आशा करने लगे कि हमें कुछ संगीतमय सुनने को मिलेगा।

जैसे-जैसे ग्रामीण परिवेश की शांति धीरे-धीरे हम पर छाने लगी, मुझे दूर से आती धुंधली संगीतमय ध्वनियाँ सुनाई देने लगीं, मानो कोई पानी के अंदर या बहुत दूर से रेडियो चला रहा हो। जाँच करने पर पता चला कि आस-पास कोई घर या खड़ी कार नहीं थी जिसका रेडियो इस ध्वनि का कारण हो सकता था।

कुछ देर बाद हम उठे और कमरे का जायज़ा लिया। हम चुपचाप खड़े होकर फर्नीचर की तारीफ़ कर रहे थे, तभी मेरी पत्नी और मैंने, और ज़ाहिर है कोवान परिवार ने भी, ऊपर से कदमों की आहट सुनी।

वे आवाज़ें दृढ़ और मजबूत थीं और उन्हें किसी और चीज़ से भ्रमित नहीं किया जा सकता था, जैसे कि अटारी में बैठी गिलहरी या कोई अन्य सामान्य शोर। न ही यह किसी पुराने घर के धंसने की आवाज़ थी।

“क्या तुमने वो सुना?” मैंने लगभग अनावश्यक रूप से कहा।

“हम सबने इसे सुना,” मेरी पत्नी ने कहा और मेरी तरफ देखा।

“मैं किस बात का इंतज़ार कर रहा हूँ?” मैंने जवाब दिया, और जितनी तेज़ी से आप घोस्ट हंटर कह सकते हैं, मैं सीढ़ियों से ऊपर चढ़कर उस कमरे में पहुँच गया जहाँ कदमों की आवाज़ सुनाई दी थी। कमरा पूरी तरह अंधेरा था। मैंने स्विच ऑन किया। वहाँ कोई नहीं था। उस समय घर में कोई और नहीं था, और सभी खिड़कियाँ बंद थीं। हमने ऊपर उस छोटे कमरे में इकट्ठा होने का फैसला किया जो उस कमरे के बगल में था जहाँ मैंने कदमों की आवाज़ सुनी थी। कारण यह था कि श्रीमती कोवान ने उस कमरे में एक बहुत ही असामान्य घटना का अनुभव किया था।

"यह बिजली की तरह था," उसने कहा, "एक तेज रोशनी अचानक आई और चली गई।"

मैंने कमरे का ध्यानपूर्वक निरीक्षण किया। खिड़कियाँ इस प्रकार व्यवस्थित थीं कि गुजरती कारों की रोशनी से परावर्तन की कोई संभावना नहीं थी। दोनों खिड़कियाँ, जो एक-दूसरे से काफी दूर और अलग-अलग दीवारों पर थीं, एकमात्र सड़क से दूर, अंधेरे ग्रामीण इलाके में खुलती थीं।

कैथरीन और मैं सोफे पर बैठ गए, और कोवान परिवार कुर्सियों पर बैठ गया। हम लगभग बीस मिनट तक चुपचाप बैठे रहे, सीढ़ियों से छनकर आ रही थोड़ी सी रोशनी के अलावा कोई और रोशनी नहीं थी। बहुत अंधेरा था, सोने के लिए तो पर्याप्त अंधेरा था, लेकिन लिखने के लिए पर्याप्त रोशनी नहीं थी।

जब मैं उस छोटे से कमरे की पिछली दीवार की ओर देख रहा था और उन कदमों की आहट के बारे में सोच रहा था जो मैंने अभी-अभी इतनी स्पष्ट रूप से सुनी थी, तभी मुझे अपने सामने वाले कोने में एक तेज़ सफ़ेद रोशनी दिखाई दी। वह चमकी और बहुत तेज़ी से गायब हो गई, इतनी तेज़ी से कि मेरी पत्नी, जिसका सिर उस समय दूसरी ओर मुड़ा हुआ था, उसे देख नहीं पाई। लेकिन डोरोथी कोवान ने उसे देखा और कहा, "देखो, फिर से वही है। बिल्कुल वैसा ही जैसा मैंने देखा था।"

संक्षिप्तता के बावजूद, मैं यह देख पाया कि प्रकाश ने सामने वाली दीवार पर छाया डाली, इसलिए यह मतिभ्रम तो नहीं हो सकता था।

मैंने श्रीमती मेयर्स को घर लाना ही बेहतर समझा, और हम जल्द ही न्यूयॉर्क वापस चले गए। जब हम श्रीमती मेयर्स को माध्यम बनाकर अपनी वापसी की तैयारी कर रहे थे, तभी मुझे बॉब कोवान का एक ज़रूरी फोन आया।

"जब से आप और कैथी हमारे घर आए हैं, तब से कुछ और घटनाएँ घटी हैं जिनमें आपको दिलचस्पी होगी। डॉटी और मैंने दोनों ने घर में खटखटाहट सुनी है, लेकिन हमारे पूछे गए सवालों का कोई सीधा जवाब नहीं मिला। शनिवार, 29 फरवरी को, मैं अपने स्टूडियो में झपकी ले रहा था, तभी ऊपर वाले कमरे में कदमों की आहट से मेरी नींद खुल गई... वही कमरा जिसमें हम सब पिछले रविवार को बैठे थे।"

“सबसे दिलचस्प घटना गुरुवार, 27 फरवरी की शाम को हुई। मैं रेलवे स्टेशन से अकेले घर लौट रहा था। डॉटी अभी भी न्यूयॉर्क में थी। जैसे ही मैं घर के पास पहुँचा, मैंने देखा कि मुख्य मंजिल के बेडरूम में और ऊपर की मंजिल पर स्थित सिलाई कक्ष में भी बत्ती जल रही थी, जिस कमरे का इस्तेमाल डॉटी अभ्यास के लिए भी करती है। मुझे लगा कि डॉटी ने बत्तियाँ जलती छोड़ दी होंगी। मैं घर के आगे से होते हुए गैरेज तक गया, गाड़ी खड़ी की और फिर वापस घर आया तो देखा कि ऊपर की मंजिल की बत्ती बंद थी।

“मैं घर में दाखिल हुआ और देखा कि कुत्ते शांत थे (मुझे देखकर थोड़े उत्तेजित तो हुए थे, लेकिन इससे यह बिल्कुल भी नहीं लग रहा था कि घर में कोई और भी है)। मैं ऊपर गया और पाया कि बेडरूम की बत्ती भी बंद थी। मैंने पूरे घर की तलाशी ली और मुझे इस बात का कोई संकेत नहीं मिला कि कोई अभी-अभी यहाँ आया था... और मुझे पूरा यकीन है कि कोई आया ही नहीं था।”

* * *

रविवार, 15 मार्च को, हम फिर से शाम ढलते समय 1780 हाउस पहुंचे। नीचे के कमरे में हमारा स्वादिष्ट भोजन इंतजार कर रहा था, फिर हम घर के ऊपरी हिस्से में चले गए।

हम उस बड़े से बैठक कक्ष में बैठ गए जहाँ से संगीत सुनाई दे रहा था, और जहाँ हम उस समय खड़े थे जब हमने ऊपर से अजीबोगरीब कदमों की आहट सुनी थी।

“मुझे सफेद पोशाक में एक महिला का आभास हो रहा है,” एथेल ने अचानक कहा। “उसके बाल काले हैं और माथा ऊंचा है। वह कद में छोटी है।”

बॉब कोवान ने सोच-समझकर कहा, "मैं थोड़ी देर पहले अटारी में देख रहा था, और देखो मुझे क्या मिला - एक जैकेट जो एक छोटी कद की महिला या लड़की को फिट आएगी।"

उसने हमें जो कपड़ा दिखाया, वह काफी बदबूदार लग रहा था। अटारी में कई ऐसी चीजें थीं जो घर के किसी पुराने मालिक की रही होंगी—काफी पहले की।

कुछ ही क्षण बाद, एथेल मेयर्स में समाधि की अवस्था में जाने के विशिष्ट लक्षण दिखाई देने लगे। हमने सारी बत्तियाँ बुझा दीं, केवल एक ही रोशनी जल रही थी।

पहले तो माध्यम के होठों से केवल अस्पष्ट ध्वनियाँ निकलीं। मैंने उसे प्रोत्साहित करने के लिए कहा, "तुम बोल सकती हो, तुम दोस्तों के बीच हो।" फिर वे ध्वनियाँ रोने में बदल गईं।

मैंने हमेशा की तरह ऐसे मौकों पर पूछा, "आपका नाम क्या है?" हंसी गूंजी—यह हंसी बच्ची जैसी थी या पागलपन भरी, यह कहना मुश्किल था।

अचानक, वह तीखी आवाज में गाने लगी।

“तुम बोल सकती हो, तुम बोल सकती हो,” मैं उस सत्ता को बार-बार आश्वस्त करता रहा। अंततः ऐसा लगा कि उसने माध्यम पर कुछ हद तक नियंत्रण पा लिया है।

"आपसे बात करके खुशी हुई," उसने धीमी आवाज़ में कहा।

"आपका क्या नाम है?"

मुझे जवाब स्पष्ट रूप से समझने से पहले कई बार पूछना पड़ा।

“लूसी।”

"मुझे बताओ, लूसी, क्या तुम यहाँ रहती हो?"

"भगवान आपके साथ हो।"

क्या आप इसी घर में रहते हैं?

"मेरा घ।"

यह कौन सा वर्ष है?

वह प्राणी एक पल के लिए झिझका, फिर डोरोथी की ओर मुड़ा और बोला, "मैं तुम्हें पसंद करता हूँ।"

मैंने उससे सवाल करना जारी रखा।

"आपकी आयु कितनी है?"

"बूढ़ी औरत।"

“कितनी उम्र है?”

"भगवान आपके साथ हो।"

बातचीत सौहार्दपूर्ण थी, लेकिन जब मैंने उससे पूछा, "आपके पति का नाम क्या है?" तो भूतनी ऐसे पीछे हट गई मानो मैंने कोई भयानक शब्द बोल दिया हो।

“तुमने क्या कहा?” वह लगभग चिल्लाई, उसकी आवाज़ भावनाओं से कांप रही थी। “मेरा कोई पति नहीं है—भगवान तुम्हारा भला करे—तुम क्या कह रही थी?” उसने दोहराया, फिर रोने लगी। “पति, पति,” वह बार-बार यही कहती रही मानो यह कोई असहनीय विचार हो।

तो फिर आपका कोई पति नहीं था?

"हाँ मैंने किया।"

“आपका नाम फिर से?”

“लूसी...हे भगवान...वह कहाँ है? वह सुंदर दिन...वह प्यारा सा, उसने मुझसे कहा था कि तालाब में देखो और तुम्हें मेरा चेहरा दिखाई देगा।”

“वह कौन है?” मैंने दोहराया।

लेकिन उस भूत ने मेरी तरफ कोई ध्यान नहीं दिया। जाहिर तौर पर वह अपनी ही यादों में खोई हुई थी।

“मैंने एक आवाज सुनी, लूसी, लूसी—सुंदर—हाय—वे उसे बाहर ले गए—उन्होंने उसे जमीन में ठंडा करके लिटा दिया....”

मैं जानना चाहता था, “वह कौन सा साल था?”

“साल, साल?” उसने दोहराया। “अभी, अभी!”

“इस देश पर अब किसका शासन है?”

"क्यों, जिसने इसे जब्त किया।"

बैठक कक्ष में लगी मानसिक शक्ति वाली तस्वीर

“शासन कौन करता है?”

“वे उन्हें बाहर ले गए... हमारे देश के उद्धारकर्ता। जनरल वाशिंगटन।”

“उनकी मृत्यु कब हुई?”

"बस अब।"

मैंने उससे और सवाल पूछने की कोशिश की, लेकिन वह फिर से अपने पति के बारे में सोचने लगी।

“मैं यहीं रहना चाहती हूँ—मैं पूल के पास इंतज़ार करती हूँ—देखो, वह वहाँ है!” वह फिर से उत्साहित हो रही थी।

मैं अब यहीं रहना चाहती हूँ, हमेशा के लिए, सदा के लिए—शांति से विश्राम करो—वह हमेशा मेरे साथ है।

मैंने लगभग सहज भाव से पूछा, "आपकी मृत्यु को कितना समय हो गया है?" प्रतिक्रिया कुछ हद तक शत्रुतापूर्ण थी।

मैं मरा नहीं हूँ—कभी नहीं—ऑल सेंट्स!

मैंने उससे विनती की कि वह अपने प्रियजन को पुकार कर उनसे मिल जाए और इस तरह इस घर से मुक्त हो जाए। लेकिन भूत ने मेरी बात नहीं मानी।

“मेरी कही हुई बातों का खंडन करो—”

मैंने अब पूछा, "आप इस घर में कैसे आए?"

“पिताजी—मैं यहीं पैदा हुआ हूँ।”

क्या यह तुम्हारे पिता का घर था?

"हाँ।"

“उसका नाम क्या था?” मैंने पूछा, लेकिन लूसी की बेचैन आत्मा अब शांत हो रही थी, और अल्बर्ट, जो माध्यम का नियंत्रण था, ने कमान संभाल ली। उसकी स्पष्ट और सटीक आवाज़ ने हमें बताया कि एथेल को मुक्त करने का समय आ गया है।

“लूसी नाम की इस महिला के बारे में क्या?” मैंने पूछा। कभी-कभी नियंत्रण अतिरिक्त जानकारी भी दे देता है।

“वह उसका पति नहीं था... उसकी शादी से पहले ही उसकी हत्या कर दी गई थी,” अल्बर्ट ने कहा।

इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि पति के बारे में मेरे सवाल ने लूसी को भावनाओं के उथल-पुथल में डाल दिया।

कुछ ही देर में एथेल मेयर्स अपने पुराने रूप में लौट आई, और हमेशा की तरह, उसे कुछ भी याद नहीं था कि उसके सम्मोहित होंठों से क्या निकला था।

* * *

इसके कुछ समय बाद ही मैं और मेरी पत्नी यूरोप चले गए।

वापस आते ही मैंने बॉब कोवान को फोन किया। स्टैमफोर्ड हिल में सब कैसा चल रहा है? शांति है? बिल्कुल नहीं।

“पिछले जून में,” बॉब ने याद करते हुए बताया, “डॉटी और मैं एक दोस्त, एक महिला हेयर ड्रेसर, जो संयोग से मानसिक शक्तियों से ग्रस्त है, के साथ घर पर थे। हम ओइजा बोर्ड से खेल

रहे थे, मज़ाक में, गंभीरता से नहीं। अचानक, रविवार की दोपहर की शांति घर के बाहर सीढ़ियों पर भारी कदमों की आहट से भंग हो गई। हमने जल्दी से ओइजा बोर्ड को छिपा दिया, क्योंकि हम नहीं चाहते थे कि घर का कोई संभावित खरीदार हमें इस अजीबोगरीब काम में देख ले। हमें यकीन था कि कोई घर देखने आ रहा है। लेकिन कदम अचानक सामने के दरवाजे पर आकर रुक गए। मैंने दरवाजा खोला, और बाहर कोई नहीं था।"

मैंने टिप्पणी की, "इस तरह से घर बेचना मुश्किल है। और कुछ?"

"हाँ, जुलाई में हमारे घर एक मेहमान आई थीं, बहुत ही संतुलित स्वभाव की, बेवजह की बातें सोचने वाली नहीं। ऊपर अचानक ज़ोरदार आवाज़ हुई, और जब मैं सिलाई वाले कमरे में भागी, तो कोने में रखा कपड़ा कमरे के बीचोंबीच पड़ा था, मानो किसी ने उसे वहाँ फेंक दिया हो! हमारी मेहमान मार्गरिट ने भी बाथरूम में किसी के गुनगुनाने की आवाज़ सुनी, हालाँकि उस समय वहाँ कोई नहीं था। फिर नवंबर में, जब घर में सिर्फ़ हम दोनों ही थे, तो नीचे किसी ने दरवाज़ा खटखटाया। हमने फिर देखा, लेकिन बाहर कोई नहीं था। एक शाम जब मैं जहाज़ वाले कमरे में थी और डॉटी बेडरूम में, तो हमें सीढ़ियों से नीचे आते कदमों की आहट सुनाई दी।"

"चूंकि हम दोनों में से कोई भी इन चीजों का कारण नहीं था और दरवाजा बंद था, इसलिए केवल एक भूत ही उन सीढ़ियों से नीचे उतर सकता था।"

"लेकिन सबसे डरावना अनुभव," डोरोथी कोवान ने बीच में ही कहा, "तब हुआ जब मैं नीचे सो रही थी और जागने पर बिना लाइट जलाए बाथरूम जाना चाहती थी, ताकि बॉब न जाग जाए। टटोलते हुए वापस बिस्तर पर जाते समय, अचानक मैंने खुद को ऊपर की मंजिल पर नीले कमरे में पाया, जहाँ अंधेरे में चलना काफी मुश्किल था। मुझे ऐसा लगा जैसे कोई मुझे जबरदस्ती उस कमरे में ले जा रहा हो।"

मैंने काफी कुछ सुन लिया था, और 15 दिसंबर को हम एथेल जॉनसन मेयर्स को घर ले गए ताकि उसके भीतर मौजूद बेचैन आत्माओं से एक बार फिर बातचीत कर सकें। जल्द ही हम सभी पहली मंजिल पर बने जहाज के आकार के कमरे में बैठ गए, और एथेल समाधि की अवस्था में जाने लगी।

"यहाँ एक बच्चे का ताबूत है," उसने धीरे से कहा। "बिल्कुल नवजात शिशु के ताबूत जैसा।"

हमारे पीछे लगी पुरानी घड़ी लगातार जोर-जोर से टिक-टिक कर रही थी।

“मुझे किसी के मैगी को पुकारने की आवाज़ सुनाई दे रही है,” एथेल ने कहा, “मार्गरिट।”

क्या आपको कोई दिखाई दे रहा है?

“एक महिला, लगभग पाँच फुट दो इंच लंबी, लंबी पोशाक पहने हुए, जिसके पीछे बड़ा सा घेरा है। बाल खुले हुए हैं, बीच से मांग निकाली हुई है और दोनों तरफ गुंथे हुए हैं। वहाँ एक और युवती है... लॉरी... बहुत सुंदर चेहरा है, लेकिन बहुत उदास है... वह तुम्हें देख रही है, हैंस....”

मैंने धीमी आवाज़ में पूछा, "वह क्या चाहती है?"

“भूरे घुंघराले बालों वाला एक युवक, जिसने कलाई पर कसी हुई सफेद शर्ट पहनी हुई थी, और उसके ऊपर हल्के भूरे रंग की जैकेट थी, लेकिन उसके ऊपर कोई कोट नहीं था...”

मैंने उससे पूछा कि वह क्या चाहता है और यहाँ क्यों आया है। इससे वह माध्यम थोड़ा विचलित हो गया।

“कुएं की तलहटी,” वह बुदबुदाई, “कुएं की तलहटी में पत्थर।”

बॉब कोवान अपनी जगह से हटकर ताबूत के दरवाजे से दूर कमरे के दूसरी तरफ चले गए। उन्होंने शिकायत की कि उन्हें पहले वाली जगह पर ठंड लग रही थी, हालांकि वहां न तो कोई दरवाजा खुला था और न ही कोई खिड़की, जिससे उन्हें ऐसा महसूस होता।

“किसी ने उसके कंधे पर एक छड़ी रखी हुई थी,” माध्यम ने अब कहा, “एक बूढ़ा आदमी गहरे रंग की पतलून और भारी मोजे पहने हुए था। उसके बाल भूरे और थोड़े लंबे थे; उसके पास वह छड़ी थी।”

मैंने उससे कारण पता लगाने को कहा। “उसे ले जाओ,” एथेल ने जवाब दिया। “वह कहता है, ‘उसे ले जाओ!’”

लेकिन वह निर्दोष था, वह कुएँ पर गया था। कुएँ में कौन है? जिसे मैंने कुएँ में धकेला था, उसे... जिसे मैंने गलती से कुएँ में धकेल दिया था...

एथेल अब पूरी तरह से सम्मोहित हो चुकी थी और ऐसा लग रहा था मानो वह बूढ़ा व्यक्ति उसके माध्यम से बोल रहा हो।

मैंने पूछा, “तुम्हारा नाम क्या है?” आवाज़ ने जवाब दिया, “वह दुखी थी, वह दुखी थी कि मैंने ऐसा किया।”

"आपका क्या नाम है?"

"इससे तुम्हारा कोई लेना-देना नहीं है।"

"मैं आपकी कैसे मदद कर सकता हूँ?"

“वे सब यहाँ हैं... मुझ पर आरोप लगा रहे हैं... मैं उसे हमेशा कुएँ के पास देखती हूँ।”

“क्या इस कुएं में किसी की मौत हुई थी?” बाहर, लगभग बीस गज की दूरी पर, कुआँ था, जो अब रात की ठंडी हवा में शांत और स्थिर था।

“जिसको मैंने गलत समझा था। मुझे शांति मिलती है, मुझे वह मिल जाता है, मैं उसे फिर से जोड़ देता हूँ।”

“वह कौन सा वर्ष था?”

"अब इससे तुम्हें कोई फर्क नहीं पड़ता...मैं खुद को माफ नहीं कर सकता...मैंने गलती की, मैंने गलती की...मुझे हमेशा उसका चेहरा मेरी ओर देखता हुआ दिखाई देता है।"

मैंने पूछा, "क्या आप अभी इसी घर में हैं?"

“मैं और कहाँ हो सकता हूँ और तुमसे बात कर सकता हूँ?” भूत ने पलटकर पूछा।

मैंने धीमी आवाज़ में कहा, "यह अब तुम्हारा घर नहीं है।"

“हाँ, बिल्कुल,” भूत ने दृढ़ता से उत्तर दिया। “यह युवक यहाँ केवल मुझे देखने और मेरा उपहास करने के लिए रुका है। यह मेरा ही होगा। मुझे केवल उस मांस की परवाह है जिसे मैं फिर से हड्डी पर चढ़ा सकूँ और मैं उसे जीवन की उमंग और उस स्त्री के भरपूर प्रेम से परिपूर्ण करूँगा जिसने मेरे दुराचार के कारण पीड़ा सहन की।”

मैंने विषय बदलने के लिए पूछा, "क्या आपकी बेटी यहीं दफ़न है?" धीमी आवाज़ में, उस रहस्यमयी आवाज़ ने कहा, "हाँ।"

लेकिन उन्होंने यह बताने से इनकार कर दिया कि उन्हें अंतिम विश्राम के लिए कहाँ दफनाया गया था - या शायद उतना अंतिम नहीं।

इस समय भूत को एहसास हुआ कि वह अपने शरीर में नहीं है, और जैसे-जैसे मैंने उसे प्रक्रिया समझाई, वह धीरे-धीरे शांत होता गया। पहले तो उसे लगा कि वह अपने शरीर में है और इसका इस्तेमाल करके वह जिसे मारा था उसे फिर से जीवित कर सकता है। मैं उससे बार-बार पूछता रहा कि वह कौन है। अंत में, धीमी फुसफुसाहट में उसने जवाब दिया, "सैमुअल।"

और लॉरी?

“मेरी बेटी... ओह, वह यहाँ है, वह आदमी जिसके साथ मैंने अन्याय किया... मार्गरिट, मार्गरिट!” अब वह भय से बहुत घबराया हुआ लग रहा था।

बड़ी घड़ी बजने लगी। भूत को किसी तरह लगा कि यह उसके लिए संकेत है।

“फैसला, फैसला...लॉरी...वे मुझ पर मुस्कुरा रहे हैं। मैंने हत्या की है। उसने मेरा हाथ पकड़ लिया है! जिसे मैंने चोट पहुंचाई है।”

लेकिन सैमुअल के लिए यह उत्साह असहनीय साबित हुआ। अचानक, वह गायब हो गया, और कुछ ही समय बाद, एथेल के शरीर में एक बिल्कुल अलग व्यक्तित्व ने प्रवेश कर लिया। वह लॉरी था।

“कृपया उसे माफ कर दीजिए,” उसने विनती की, “मैंने उसे माफ कर दिया है।”

आवाज मीठी और लड़की जैसी थी।

“सैमुअल कौन है?”

"मेरे दादा।"

"आपका सरनेम क्या है?"

“लॉरी हो-हो-...काश मुझे वह नाम मिल जाता।”

लेकिन वह ऐसा नहीं कर सकी।

वह मुझे अपने प्रियतम का नाम भी नहीं बता सकीं, जिसकी हत्या उसके दादा ने की थी। उन्होंने बताया कि घर में उस नाम का जिक्र करना मना था, इसलिए अब उन्हें वह नाम याद रखने में कठिनाई होती है।

मैंने पूछा, “तुम्हारी माँ का नाम क्या है?” उसने कहा, “मार्गरिट।”

"आपका जन्म किस वर्ष में हुआ था?"

हिचकिचाते हुए आवाज ने कहा, "सत्रह सौ छप्पन।"

“यह कौन सा वर्ष है?”

“सत्रह सौ चौहत्तर में। हमने उन्हें सत्रह सौ चौहत्तर में दफनाया।”

"चर्च में?"

“नहीं, दादाजी इसे सहन नहीं कर सके। हमने उन्हें उत्तर की पहाड़ी पर दफनाया। हमने पूरी रात अपनी उंगलियों से खुदाई की।”

"दादाजी को मत बताना कि हमने इसे कहाँ रखा है।"

“यह यहाँ से कितनी दूर है?”

“लार्क पक्षी की सीधी उड़ान से ज्यादा कुछ नहीं। क्या कब्र पर कोई निशान है?”

"अरे नहीं।"

“तुम्हारे पिता को क्या हुआ?”

“अब घर पर नहीं, चला गया।”

मैंने लॉरी को समझाया कि घर जल्द ही बिकने वाला है, और उसे इसमें दखल नहीं देना चाहिए। कोवान परिवार को ऐसा लग रहा था कि उनके भूत किसी तरह सभी खरीदारों को दूर रख रहे हैं, भले ही पहली नज़र में यह बात अविश्वसनीय लगे। लेकिन वैसे भी, सभी मानसिक शोध काफी असामान्य होते हैं और कौन कह सकता है कि क्या असंभव है?

लॉरी ने वादा किया कि वह दखल नहीं देगी और "उनके" घर के नए मालिक को स्वीकार कर लेगी। वह चली गई और फिर से अपने दादाजी के पापों की क्षमा मांग ली।

फिर मैंने एथेल के नियंत्रक अल्बर्ट से माध्यम का नियंत्रण अपने हाथ में लेने को कहा। इसके बाद मैंने उससे इस पूरे मामले के बारे में पूछताछ की।

उन्होंने कहा, “पिताजी को यहाँ से बहुत दूर दफनाया गया है, लेकिन बाकी सभी को यहीं आसपास दफनाया गया है। सन् 1777 के दौरान... दादाजी को क्षमा मिलने के बाद ही यहाँ लाया गया। शव को यहाँ से ले जाकर ईसाई रीति-रिवाजों के अनुसार दफनाया गया।”

मैंने पूछा, "कब्र का पत्थर कहाँ है?"

“एक सफेद इमारत के पश्चिम में,” अल्बर्ट ने अपने सटीक, थोड़े लहजे वाले लहजे में उत्तर दिया, “इसी ज़मीन पर। कब्र का पत्थर टूटकर ज़मीन के पास पड़ा है। ऊपर का हिस्सा बदमाशों ने तोड़-फोड़ दिया है। बूढ़ा आदमी जा चुका है, युवक उसे हाथ पकड़कर ले गया है।”

उस युवक का नाम क्या था?

उसने उसे बेंजामिन कहकर पुकारा।

“क्या उसकी मौत कुएं में हुई थी?”

“यह सही है। पहाड़ी पर स्थित कब्र के अलावा उनकी कोई और कब्र नहीं है।”

क्या इस घर में अशांति फैलाने वाला व्यक्ति बूढ़ा ही है?

"वही मुख्य व्यक्ति है जो अपने गुंडों को लेकर उस युवक की तलाश में आता है।"

"लूसी कौन है?" मैंने पूछा, मेरा इशारा उस लड़की की ओर था जिसने पिछली वसंत ऋतु में हुए प्रेतात्माओं से संपर्क के सत्र में हमसे बात की थी।

“लॉरी, तुम इसी लड़की की बात कर रहे थे। उसका असली नाम लूसी है। दोनों एक ही व्यक्ति हैं।”

"क्या वास्तव में उसकी शादी उस युवक से नहीं हुई थी?"

“अपने तरीके से, वह ऐसी ही थी। लेकिन वे इसे स्वीकार नहीं करते थे। धार्मिक विचारों में मतभेद थे... लेकिन फिलहाल बेहतर होगा कि हम इस माध्यम को छोड़ दें।”

मैंने सिर हिलाया, और एक-दो क्षणों के भीतर एथेल वापस सामान्य हो गई, और वह इस बात से काफी हैरान थी कि जब वह समाधि की अवस्था में थी तब क्या हुआ था।

मैंने बॉब कोवान से पूछा, "आप इन तारीखों को उस परंपरा से कैसे मिलाते हैं जिसके अनुसार यह घर 1780 में बनाया गया था?"

उन्होंने सिर हिलाया। “यह महज़ एक परंपरा है। हमारे पास वास्तविक तिथि का कोई प्रमाण नहीं है।”

हम ऊपर स्थित सिलाई कक्ष में गए जहाँ हाल ही में ये घटनाएँ घटी थीं, और हम सब भारी लकड़ी की मेज के चारों ओर बैठ गए। एथेल लगभग तुरंत ही फिर से समाधि में चली गई। वह एक ही बार में दो बार समाधि में जाना बहुत कम ही जानती है।

अब लगभग अंधेरे में गूंज रही आवाज स्पष्ट रूप से एक पुरुष की थी, और वह बहुत ही प्रभावशाली आवाज थी।

मैंने पूछा, “तुम कौन हो?”

“सार्जेंट-मेजर....” इसके बाद कोई नाम नहीं बताया गया। मैंने पूछा कि वह इस घर में क्यों हैं।

"कुछ सुखद यादें हैं।"

"आपका नाम?"

“सार्जेंट-मेजर हार्म।”

"पहला नाम?"

इसे देने के बजाय, उन्होंने समझाया कि वह कभी इस घर के मालिक थे और "मित्र थे, शत्रु नहीं।" मैंने बॉब कोवान की ओर देखा, जो पुराने रिकॉर्ड में संपत्ति के सभी मालिकों को जानते थे, और बॉब ने अपना सिर हिलाया। कोई नुकसान नहीं।

“मैं जब चाहूँ तब आती हूँ। मैं जानबूझकर परेशान नहीं करती। लेकिन मैं जाऊँगी,” नए आगंतुक ने कहा, “मैं उसे अपने साथ ले जाऊँगी; आप उसे फिर कभी नहीं देखेंगे। अब मैं उससे संतुष्ट हूँ। वह भी मुझसे संतुष्ट है।”

मैंने पूछा, "तुम इस दुनिया से कैसे गुजरे?"

“युद्ध के मैदान पर। पोटोमैक नदी के तट पर...1776।”

मैंने पूछा, “तुम किस रेजिमेंट में थे?” उसने जवाब दिया, “यॉर्क...आठवीं रेजिमेंट...मैं पैदल सैनिक था...18 वीं रेजिमेंट में...”

“कौन सी सेना?”

“वेन...वेन...”

“आपका कमांडिंग जनरल कौन था?”

“ब्रोडेरिक।”

“आपकी रेजिमेंट का कर्नल कौन था?”

“वेन, वेन।”

“आप सार्जेंट-मेजर थे?”

“सार्जेंट-मेजर, 18 वीं रेजिमेंट, पैदल सेना।”

“आपकी तैनाती कहाँ थी?”

“न्यूयॉर्क।”

“न्यूयॉर्क में कहाँ?”

“चैम्प्लेन।”

"क्या आप फिर से अपने रेजिमेंट कमांडर से बात कर रहे हैं?"

“ब्रॉडेरिक।” फिर उन्होंने भावुक होकर कहा, “पोटोमैक की पहली लड़ाई में गोलीबारी के दौरान मेरी मृत्यु हो गई।”

“तुम्हें कहाँ दफनाया गया है?”

फोर्ट टिकोंडेरोगा, न्यूयॉर्क।

मुझे आश्चर्य हुआ कि पोटोमैक नदी के किनारे लड़ रहे एक सैनिक को न्यूयॉर्क के उत्तरी हिस्से में कैसे दफनाया जा सकता है। लेकिन मुझे यह स्वीकार करना होगा कि "पोटोमैक" शब्द मेरे मुंह से इतनी धीमी आवाज़ में निकला था कि शायद मैं गलत था।

“आपकी मृत्यु की तिथि क्या है?”

“1776.”

फिर, जैसे-जैसे आवाज़ अस्पष्ट होती गई, उसने कहा, "मैं अब जा रहा हूँ, लेकिन मैं तुम्हें उन लोगों से बचाऊँगा जो...जो भूखे हैं..." आवाज़ धीरे-धीरे शांत हो गई।

कुछ क्षण बाद, एथेल हल्के सिरदर्द के साथ समाधि से बाहर निकली, लेकिन अन्यथा वह पहले जैसी ही थी।

* * *

हम कुछ समय बाद ही न्यूयॉर्क लौट आए, इस उम्मीद के साथ कि कोवान परिवार में सब कुछ शांत रहेगा, और इससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि 1780 हाउस में जल्द ही एक नया जागीरदार नियुक्त हो जाएगा।

मुझे भी वह रहस्यमयी संगीत सुनाई दिया, हालांकि मुझे यकीन है कि इसका उन औपनिवेशिक भूतों से कोई संबंध नहीं है जिन्हें हम जगाने में कामयाब रहे। मैंने जो संगीत सुना वह दूर से आती रेडियो की आवाज़ जैसा लग रहा था, जबकि ऐसा नहीं था, क्योंकि आस-पास कोई घर नहीं है जहाँ से वह सुनाई दे सके। बैठक में कुछ क्षणों के लिए जो आवाज़ मैंने सुनी, वह ऐसा लग रहा था जैसे कोई पूरा सिम्फनी ऑर्केस्ट्रा इस सदी के अंत के आसपास लोकप्रिय संगीत बजा रहा हो।

लोगों की भावनाओं की कई परतों से ओतप्रोत पुराने घर अक्सर वातावरण के हिस्से के रूप में संगीत और अन्य ध्वनियों को भी आत्मसात कर लेते हैं।

सार्जेंट-मेजर के बारे में क्या?

मैंने रेजिमेंट के रिकॉर्ड जाँचे। हार्म नाम का कोई सैनिक नहीं मिला, लेकिन हारमोन नाम के कई अधिकारी (और सैनिक) ज़रूर मिले। मैंने अपने टेप दोबारा जाँचे। भूत ने बहुत धीरे से "हार्म" नाम बोला था। वह हारमोन भी बोल सकता था। या शायद वह अपनी पहचान छिपा रहा था, जैसा कि वे कभी-कभी करते हैं।

लेकिन फिर मुझे एक बेहद दिलचस्प बात पता चली। कनेक्टिकट राज्य के दस्तावेज़ों में बेंजामिन हारमोन जूनियर लेफ्टिनेंट का ज़िक्र है, जो 1776 में एक स्थानीय रेजिमेंट में थे। मारे गए युवक की पहचान "बेंजामिन" के रूप में हुई थी। अचानक हमें हारम या हारमोन नाम का एक और भूत नज़र आता है, जो स्पष्ट रूप से एक वृद्ध व्यक्तित्व है। क्या वह मारे गए युवक का पिता था?

1780 का मकान, बेशक, केवल 1780 का ही दर्ज है। लेकिन क्या उस जगह पर कोई और इमारत नहीं हो सकती थी? क्या 1780 का मकान किसी छोटे मकान का ही रूपांतरण था जिसका कोई लिखित रिकॉर्ड नहीं है?

हम इसे न तो साबित कर सकते हैं और न ही खंडन कर सकते हैं।

हालांकि, यह सच है कि चर्चाधीन समय में जनरल "मैड" एंथोनी वेन न्यूयॉर्क क्षेत्र में क्रांतिकारी सैनिकों के प्रभारी थे।

बहरहाल, यह सब ज्ञान आमतौर पर एक महिला आवाज प्रशिक्षक के पास नहीं होता है, और एथेल मेयर्स एक माध्यम होने के अलावा एक महिला आवाज प्रशिक्षक भी हैं।

* 47

न्यू जर्सी के "स्पाई हाउस" के भूत

जून 1696 में, पेशे से बागान मालिक 26 वर्षीय डैनियल सीब्रुक ने अपने सौतेले पिता थॉमस व्हिटलॉक से विरासत में मिली 80 पाउंड स्टर्लिंग की राशि से 202 एकड़ जमीन खरीदी। 250 वर्षों तक यह बागान सीब्रुक परिवार के हाथों में रहा, जिन्होंने जमीन पर खेती की और बंदरगाह से अपने जहाज चलाए। "स्पाई हाउस" संभवतः पूर्वी संयुक्त राज्य अमेरिका में देखने लायक औपनिवेशिक वास्तुकला के बेहतरीन नमूनों में से एक है, जिसे वर्षों से सावधानीपूर्वक पुनर्स्थापित किया गया है।

यह घर पुराने तरीके से बना है, जिसे लकड़ी के खूंटों से जोड़ा गया है। इसमें हाथ से बनी ईंटें हैं, जिनमें मिट्टी का गारा भरा गया है। घर दो मंजिला है और सफेद रंग से रंगा हुआ है। हर कमरे में एक चिमनी है, क्योंकि औपनिवेशिक काल में घरों को गर्म करने का यही एकमात्र तरीका था।

न्यू जर्सी के मिडिलटाउन के पास स्थित यह घर न्यूयॉर्क शहर से आसानी से पहुँचा जा सकता है। क्यूरेटर गर्ट्रूड नीडलिंगर के नेतृत्व में एक समूह द्वारा इसकी देखरेख की जाती है, जिसमें उनके इतिहासकार भाई ट्रैविस नीडलिंगर भी उनकी सहायता करते हैं। एक संग्रहालय के रूप में, यह न केवल औपनिवेशिक काल के फर्नीचर को प्रदर्शित करता है, बल्कि उन्नीसवीं शताब्दी तक इस क्षेत्र में सक्रिय व्हेल शिकारियों के कुछ औजारों को भी प्रदर्शित करता है। एक ऐतिहासिक आकर्षण के रूप में, यह किसी भी भूतिया संबंध को छोड़ दें तो भी, एक ऐसी जगह है जिसे किसी को भी नहीं छोड़ना चाहिए।

घर के कमरों में से एक कमरा मोनमाउथ की लड़ाई के काल को समर्पित है। इस कमरे को, जिसे अंग्रेजों ने जासूसी कक्ष कहा था (जैसा कि हम आगे देखेंगे), में वाशिंगटन, डी.सी. में

कांग्रेस पुस्तकालय में जनरल वाशिंगटन के निजी दस्तावेजों के बीच रखे गए दस्तावेजों की प्रतियां हैं।

1778 में, अंग्रेज मिडिलटाउन से गुज़र रहे थे और गाँव को लूट रहे थे और जला रहे थे। तटरेखा के किनारे, मोनमाउथ मिलिशिया और व्हेल पकड़ने वाली नावों पर काम करने वाले लोग अंग्रेज़ों के जहाज़ों को रोकने के लिए इकट्ठा हुए। जनरल वाशिंगटन ने शोअल हार्बर से एक देशभक्त को बुलाया, जो उस जागीर का नाम था जहाँ जासूसी घर स्थित है, ताकि अमेरिकी पक्ष को अंग्रेजों से लड़ने में मदद मिल सके। स्वयंसेवक कॉर्पोरल जॉन स्टिलवेल थे, जिन्हें एक दूरबीन दी गई और निर्देश दिए गए कि वे पास ही स्थित गैरेट हिल नामक पहाड़ी से अंग्रेजों की जासूसी करें, जो उस क्षेत्र का सबसे ऊँचा स्थान था।

क्रांतिकारी साजिशों के केंद्र में स्थित न्यू जर्सी स्पाई हाउस।

ब्रिटिश और अमेरिकियों के बीच की सीमाएँ आपस में गुंथी हुई थीं और अक्सर एक-दूसरे को काटती थीं, जिससे व्यक्तियों के लिए कभी-कभी उन्हें पार करने से बचना मुश्किल हो जाता था। कॉर्पोरल स्टिलवेल को सौंपा गया कार्य आसान नहीं था, खासकर इसलिए कि उनके कुछ रिश्तेदार युद्ध के दूसरे पक्ष का समर्थन करते थे। फिर भी, वह मिलिशिया को विशिष्ट संदेश भेजने में सक्षम रहे, जिन्होंने इन संदेशों को ब्रिटिश बेड़े पर हमलों में परिवर्तित कर दिया।

उस समय, स्टिलवेल ने देखा कि न्यू जर्सी तटरेखा के पास बेड़े में 1,037 जहाज थे, जबकि अमेरिकी सेना के पास नौसेना का कोई बेड़ा नहीं था। लेकिन क्रांतिकारी युद्ध के इस चरण में मछुआरों और तट पर मौजूद उनके सहायकों ने अच्छा प्रदर्शन किया। जॉन स्टिलवेल के 17 वर्षीय बेटे, ओबदिया स्टिलवेल ने अपने पिता के अवलोकन बिंदु से देशभक्तों तक संदेशवाहक के रूप में कार्य किया।

मोनमाउथ की लड़ाई के बाद बंदरगाह में तेईस नौसैनिक युद्ध लड़े गए। व्हेल-नाव अभियान की सफलता ब्रिटिश बेड़े के लिए एक करारा झटका और भारी शर्मिंदगी साबित हुई। दिनदहाड़े भी छापे इतने साहसी और सफल हो गए कि एक ही दिन में दो पायलट नौकाओं को पकड़ लिया गया, जिससे बंदरगाह के जहाजों में अफरा-तफरी मच गई।

अंततः, अंग्रेजों ने जासूस को ढूंढने और विद्रोही अभियान को समाप्त करने का आदेश दिया। खोज दल ने सीब्रुक के घर को जासूसी का अड्डा घोषित कर दिया, क्योंकि वे जानते थे कि इसका मालिक, मेजर सीब्रुक, एक देशभक्त था। उन्हें यह एहसास नहीं था कि असली जासूस जॉन स्टिलवेल था, जो गैरेट हिल से काम कर रहा था। फिर भी, उन्होंने जासूसी के अड्डे को जला दिया। बेशक, बाद में इसे फिर से बनाया गया। आज, जॉन स्टिलवेल के वंशज संग्रहालय के मित्र समाज में शामिल हैं और इसका समर्थन करते हैं।

गर्ट्रूड नीडलिंगर ने घर में महसूस होने वाले कई भूतों के बारे में मुझसे मदद मांगी। घर के इतिहास को देखते हुए, वहां भूतों का होना कोई आश्चर्य की बात नहीं है। खुद नीडलिंगर को भी घर में अकेले होने पर, खासकर रात में, प्रवेश कक्ष में किसी की मौजूदगी का एहसास होता था। एक सफेद कपड़े पहनी महिला भी है जो अटारी से नीचे आती है, गलियारे से होते हुए नीले और सफेद कमरे में जाती है और वहां पालने या बिस्तर की चादरें ठीक करती है। फिर वह मुड़कर आंखों से ओझल हो जाती है। नीडलिंगर को पक्का पता नहीं था कि वह कौन है, लेकिन उन्हें लगता था कि वह श्रीमती सीब्रुक की आत्मा हो सकती है, जिन्होंने क्रांतिकारी युद्ध के दौरान एक बेहद खतरनाक स्थिति में जीवन बिताया था, क्योंकि उनके रिश्तेदार राजनीतिक रूप से दोनों पक्षों में थे।

1976 में, मैं अपनी मानसिक शक्तियों वाली मित्र इंग्रीड बेकमैन को जासूसी घर ले गई, जो तकनीकी रूप से न्यू जर्सी के कीन्सबर्ग में मिडिलटाउन के पास स्थित है। घर का नंबर 119 है, लेकिन ज़ाहिर है, इलाके में हर कोई इसे जासूसी घर ही कहता है। जैसे ही इंग्रीड ने उस जगह का मुआयना किया, उसने तुरंत ही एक चौकी के रूप में इसके प्राचीन उपयोग की ओर इशारा किया। जब हम घर की छानबीन कर रहे थे, तो हम दोनों ने ऊपर से कदमों की आहट साफ सुनी, जबकि वहाँ कोई नहीं चल रहा था। ज़ाहिर है, भूतों को हमारे आने का पता चल गया था।

घर के इतिहास के बारे में कुछ भी जाने बिना, इंग्रीड ने टिप्पणी की, "यहाँ चिमनी के आसपास मुझे ऐसा लगता है कि लोग रणनीति बना रहे हैं, ब्रिटिश जहाजों को लेकर चिंतित हैं।" फिर उन्होंने आगे कहा, "यह मिनुटमेन जैसी किसी सेना को जुटाने के लिए था, ऐसे किसान जो लड़ने वाले थे। यह एक रणनीतिक बिंदु था क्योंकि यह न्यूयॉर्क में प्रवेश द्वार था।"

फिर मैंने इंग्रीड से पूछा कि क्या उसे घर में कोई भूत-प्रेत या अतीत के कोई अवशेष महसूस होते हैं।

जब हम ऊपर गए, तो इंग्रीड ने अचानक अतीत की बातें शुरू कर दीं। “यहाँ एक महिला है। उसका इस घर से और जासूसी से कुछ संबंध है, यहाँ किसी तरह की जासूसी होती थी।” फिर उसने आगे कहा, “किसी ने अमेरिकी सीमा के पीछे जासूसी की और जानकारी वापस लाई।”

ऊपर पहली मंजिल पर खिड़की के पास, इंग्रीड को महसूस हुआ कि कोई आदमी उसे देख रहा है, किसी के आने का इंतज़ार कर रहा है। इंग्रीड को लगा कि वहाँ एक ऐसा आदमी मौजूद है जिसने राजद्रोह किया था, जिसने अंग्रेजों को सूचना दी थी। उसका नाम सैमुअल्स था। उसे लगा कि इस आदमी को सरेआम फांसी दी गई थी। लोग उसे प्रवासी कहते हैं। इंग्रीड ने कहा, यही वह शख्स है जो पछतावे के मारे इस घर को नहीं छोड़ सकता।

इंग्रिड ने यह भी दावा किया कि यह घर पहले एक पब या सराय के रूप में इस्तेमाल होता था, जहाँ सभाएँ होती थीं। क्यूरेटर, मिस नीडलिंगर ने बाद में इसकी पुष्टि की। साथ ही, इंग्रिड को लगा कि इस इलाके में रहने वाले परिवारों में से अधिकांश सदस्य देशभक्त मिलिशिया में सेवा करते थे, लेकिन कभी-कभार जॉर्ज टेलर जैसे गद्दार भी होते थे। कर्नल जॉर्ज टेलर शायद वही व्यक्ति थे जिनका जिक्र इंग्रिड कर रही थीं। जहाँ तक फाँसी पर लटकाए गए व्यक्ति की बात है, वह कैप्टन हडी थे, और उन्हें फिलिप व्हाइट की हत्या का कारण बनने के लिए फाँसी दी गई थी। कैप्टन जोशुआ हडी पर देशभक्त फिलिप व्हाइट की हत्या का गलत आरोप लगाया गया था और निर्दोष होने के बावजूद, देशभक्तों ने उन्हें पीट-पीटकर मार डाला था। एक बार फिर, इंग्रिड ने इतिहास की एक बहुत ही वास्तविक घटना को छुआ था।

लेकिन जासूसी घर में भूतिया महिला, फांसी पर लटका हुआ आदमी और खिड़की से खाड़ी की ओर घूरता हुआ आदमी ही एकमात्र भूत नहीं हैं। 4 जुलाई, 1975 को, स्थानीय लड़कों का एक समूह ऊपर की मंजिल पर नीले और सफेद कमरे में था। अचानक, सिलाई मशीन का दरवाजा अपने आप खुल गया और बिना किसी के पैर के ही पैडल चलने लगे। लड़कों में से एक ने ऊपर देखा, और कमरे के दूसरी ओर अलमारी में लगे दर्पण में उसे लंबी दाढ़ी वाला एक चेहरा दिखाई दिया।

एक और लड़के ने गलियारे में देखा और वहाँ उसे एक आकृति दिखाई दी, जिसने एक लंबी काली टोपी और लंबी दाढ़ी रखी हुई थी और पुराने ज़माने के कपड़ों की तरह बहुत ढीली पतलून पहनी हुई थी। इतना देखकर ही वे घर से भाग निकले और फिर कभी वापस नहीं लौटे।

क्यूरेटर की सहायता करने वाली महिलाओं में से एक, एग्नेस लियोन्स, ऊपर के कमरे में टाइपिंग करने से मना कर देती हैं क्योंकि कागज़ स्थिर नहीं रहते। ऐसा लगता है जैसे हर समय हवा का झोंका आता रहता है और खिड़कियाँ बंद होने के बावजूद कागज़ ज़मीन पर गिर जाते हैं। श्रीमती लिलियन बोयर ने भी दाढ़ी वाले एक आदमी को सीढ़ियों के ऊपर खड़े देखा, जिसने काली टोपी पहन रखी थी और 1700 के दशक के उत्तरार्ध के कपड़े पहने हुए थे। उसकी आँखें बहुत बड़ी थीं और वह लगभग चालीस वर्ष का लग रहा था। वह बस वहीं खड़ा होकर उन्हें देखता रहा और ज़ाहिर है, वह उसके पास से नहीं गुज़रीं। फिर ऐसा लगा जैसे उसने किसी तरह की तेज़ रोशनी को इधर-उधर चमकाया हो, टॉर्च जैसी तेज़ रोशनी। और उसी समय पूरे घर में कदमों की आहट सुनाई दी। वह उस आदमी की साँसें भी सुन सकती थीं, लेकिन वह एक भूत था!

* 48

औपनिवेशिक सैनिक का विचित्र मामला

सोमरटन, पेंसिल्वेनिया, अब फिलाडेल्फिया का एक उपनगर है, हालांकि यह काफी दूर स्थित है। फिलाडेल्फिया के केंद्र से कार द्वारा यहाँ पहुँचने में केवल एक घंटा लगता है, लेकिन जब आप वहाँ पहुँचते हैं, तो यह यात्रा सार्थक हो जाती है, खासकर बायबेरी रोड। आधुनिक कंक्रीट की इमारतों के निर्माणकर्ताओं ने बड़े शहर के पास स्थित इस रमणीय ग्रामीण सड़क को कैसे अनदेखा कर दिया, यह मेरी समझ से परे है, लेकिन सच्चाई यह है कि यहाँ एक घुमावदार, ऊबड़-खाबड़ सड़क है, जिस पर एक बार में केवल एक ही कार चल सकती है, और यह कई मील तक बिना किसी ऊंची इमारत के फैली हुई है। इसके बजाय, इस पर उचित अंतराल पर पुराने घर बने हुए हैं, जिससे घरों के बीच थोड़ी हरियाली और खुली जगह भी दिखाई देती है।

इस घुमावदार सड़क पर दिखने वाले सबसे अनोखे नज़ारों में से एक है 1732 में बना एक सुंदर, लकड़ी का औपनिवेशिक शैली का मकान, जिसमें मामूली बदलावों को छोड़कर कोई परिवर्तन नहीं हुआ है। यह अपने आप में एक दुर्लभ घटना है, लेकिन क्रांतिकारी काल से यहाँ रहने वाले मालिक स्पष्ट रूप से अपने घर के प्रति बेहद सजग और देखभाल करने वाले लोग थे।

वर्तमान में डेविड और डोलोरेस रॉबिन्सन इस घर में रहते हैं, और उन्हें इस घर में रहने में ही सबसे अधिक आनंद आता है। वे इस बात का प्रचार नहीं करते कि उनके पास क्रांति-पूर्व काल का एक प्रामाणिक घर है, लेकिन वे इस बारे में बिल्कुल भी संकोच नहीं करते; उनके लिए, अपने पूर्वजों की तरह जीवन जीना एक रोमांच है, बिना किसी नई चमकदार चीज़ से चीजों को "बेहतर" बनाने की लगातार लालसा के, जो अक्सर काम नहीं करती, या अपने घर के किसी हिस्से को केवल इसलिए गिराने की लालसा के बिना, क्योंकि वह पुराना दिखता है या लंबे समय से इस्तेमाल किया गया है।

रॉबिन्सन दंपति अपने घर को लेकर बेहद सजग हैं और इस क्षेत्र में कोई औपचारिक शिक्षा न होने के बावजूद पुरातन वस्तुओं की अच्छी समझ रखते हैं। श्री रॉबिन्सन टेलीफोन कंपनी में काम करते हैं और उनकी पत्नी अपने भाई, जो एक फोटोग्राफर हैं, के यहाँ रिटचिंग आर्टिस्ट के रूप में काम करती हैं। दोनों की उम्र लगभग अधेड़ है और उनके तीन बच्चे हैं जो किशोरावस्था से पहले की उम्र के हैं।

उनका परिवार खुशहाल है, समस्याओं या परेशानियों से मुक्त है: वे थोड़ा और पैसा कमाना चाहते हैं, थोड़ी तेज़ी से तरक्की करना चाहते हैं, एक बेहतर कार खरीदना चाहते हैं—लेकिन यह तो एक आम अमेरिकी का सपना होता है। रॉबिन्सन परिवार के साथ मिस्टर रॉबिन्सन सीनियर रहते हैं, एक बुजुर्ग सज्जन जिनका मुख्य काम टीवी देखना लगता है।

मैंने रॉबिन्सन परिवार और उनके पैतृक घर के बारे में पहली बार तब सुना जब मैं उस इलाके के एक स्थानीय रेडियो कार्यक्रम में शामिल हुआ था। मैं उस घर की कल्पना से बहुत प्रभावित हुआ जो देखने में बिल्कुल अछूता था, लेकिन उसमें इतिहास की कई परतें छिपी थीं जिन्हें शायद कोई मानसिक शक्ति वाला व्यक्ति महसूस कर सकता था। मैंने उस घर को उन जगहों की सूची में शामिल कर लिया जहाँ मैं मनोमापन संबंधी प्रयोग करना चाहता था।

आखिरकार, अप्रैल 1967 में, वह अवसर मिला और मेरे एक मित्र, टॉम डेविस, हमें बायबेरी रोड तक ले गए। फिलाडेल्फिया की दूरियों में कुछ अजीब सा है; वे धीरे-धीरे आपको भाने लगती हैं, खासकर रात में। इसलिए काफी देरी से हम आखिरकार घर पहुंचे, लेकिन मालिकों ने हमारा गर्मजोशी से स्वागत किया।

रात के अंधेरे में भी यह घर आसानी से नज़र आ जाता था। यह इस इलाके में अपनी तरह का इकलौता घर है और सड़क से थोड़ा हटकर बना है। बरामदे की छत को सहारा देने वाले इसके सुंदर सफेद खंभे इसे आजकल या विक्टोरियन काल में बने किसी भी घर से बिल्कुल अलग बनाते हैं। बाहर से देखने पर यह अपने वास्तविक आकार से छोटा लगता है। इसमें तीन मंजिलें हैं और घर के सबसे पुराने हिस्से, यानी पिछले भाग के नीचे एक भंडारगृह है। हम सामने के दरवाजे से अंदर गए और खुद को एक खूबसूरती से सजाए गए बैठक कक्ष में पाया, जो बाईं ओर घर के पुराने हिस्से की ओर खुलता था। घर में औपनिवेशिक और विक्टोरियन शैली का फर्नीचर मिला-जुला था, जो आधुनिक दुनिया से दूर रहने के माहौल से मेल खाता था। नीचे के बैठक कक्ष से संकरे गलियारे के पार एक सीढ़ी अगली मंजिल की ओर जाती थी, जहाँ शयनकक्ष और अब तक देखे गए सबसे बड़े स्नानघरों में से एक था। औपनिवेशिक काल में अत्यधिक स्नान करने के प्रति अनिच्छा को देखते हुए, यह मुझे असंगत लगा, जब तक कि मुझे बाद में यह एहसास नहीं हुआ कि एक समय में इस घर का कुछ हद तक सार्वजनिक उपयोग भी होता था।

बैठक कक्ष से कुछ सीढ़ियाँ पीछे के हिस्से तक जाती थीं, जो घर का मूल भाग था। वहाँ एक विशाल चिमनी प्रमुख आकर्षण है। इसके बगल में एक सीढ़ी है जो ऊपरी मंजिलों तक जाती है, और नीची छत में मूल लकड़ी के बीम वैसे ही दिखाई देते हैं जैसे क्रांति-पूर्व काल में थे।

रॉबिन्सन दंपति भले ही आयरिश थे, लेकिन वे किसी तरह की मानसिक शक्तियों पर विशेष रूप से विश्वास नहीं करते थे। श्रीमती रॉबिन्सन मानती हैं कि उन्हें जीवन भर आंतरिक संवेदना (ईएसपी) का अनुभव होता रहा है। चाहे यह उनका आयरिश होना हो (जैसा कि वे कहती हैं, उनकी कल्पनाशीलता का अच्छा विकास) या सिर्फ एक स्वाभाविक क्षमता, यह उनके साथ है, चाहे अच्छा हो या बुरा। जब वे चौदह वर्ष की थीं, एक रात वे बिस्तर पर बैठकर पढ़ रही थीं, और काफी देर हो चुकी थी। यह नियमों के विरुद्ध था, इसलिए उन्होंने अपने

शयनकक्ष का दरवाजा बंद कर दिया था। अचानक, दरवाजा खुला और उनका भाई पॉल वहाँ खड़ा उन्हें तिरस्कार भरी निगाहों से देख रहा था। पॉल की मृत्यु को आठ साल हो चुके थे। डोलोरेस चीख पड़ी और चादर ओढ़ ली। उनकी माँ यह देखने के लिए ऊपर दौड़ीं कि क्या हुआ है। जब वे पहुँचीं, तो दरवाजा अभी भी खुला था! तब से, श्रीमती रॉबिन्सन को अक्सर घटनाओं के घटित होने से पहले ही पता चल जाता है—जैसे कि दरवाजा खोलने से पहले ही पता चल जाता है कि दरवाजे पर कौन होगा, या टेलीफोन की घंटी बजने से ठीक पहले पता चल जाता है कि कौन फोन कर रहा होगा। आज, यह उनके लिए सिर्फ एक खेल है, और न तो उनके पति और न ही वे इसे गंभीरता से लेते हैं। दोनों ने हाई स्कूल की पढ़ाई पूरी कर ली है, डोलोरेस ने कॉलेज की कुछ पढ़ाई की है, और उनके पति के पास इलेक्ट्रो-इंजीनियरिंग कौशल है जिसका वे पेशेवर रूप से उपयोग करते हैं; फिर भी वे इस संभावना को खारिज नहीं करते कि एक पुराने घर में उसके हिंसक अतीत के कुछ तत्व मौजूद हो सकते हैं।

जब वे 1960 में पहली बार इस घर में आए, तो श्रीमती रॉबिन्सन को इसमें इतना अपनापन महसूस हुआ, मानो वे हमेशा से यहीं रहती हों। शुरू से ही, उन्हें अंधेरे में भी सीढ़ियों पर चढ़ना-उतरना बहुत आसान लगता था, बिना किसी दुर्घटना या दिशा-निर्देश की आवश्यकता के। ऐसा लगता था मानो घर, या उसमें मौजूद कोई, उनके कदमों का मार्गदर्शन कर रहा हो।

* * *

लेकिन जल्द ही रॉबिन्सन दंपति को इस बात का एहसास हो गया कि घर में कुछ अजीब सा है: अजीबोगरीब आवाजें और लकड़ी के तख्तों की चरमराहट सुनाई दे रही थी, जिसे उन्होंने पुरानी इमारत के बैठने की वजह मान लिया। लेकिन पति-पत्नी दोनों को इंसानी कदमों की आहट भी सुनाई दी, और वे दरवाजे भी थे। खासकर वे दरवाजे उन्हें हैरान कर रहे थे। श्रीमती रॉबिन्सन ने अपने घर के दरवाजों में पहली बार कुछ असामान्य तब देखा जब वह अपने साथ लाए कुछ फोटोग्राफी असाइनमेंट पर देर रात तक काम कर रही थीं। उनके पति शाम को बाहर गए हुए थे और तीनों बच्चे ऊपर सो रहे थे। बच्चों के बेडरूम तीसरी मंजिल पर हैं, जबकि रॉबिन्सन दंपति दूसरी मंजिल पर सोते हैं। अचानक श्रीमती रॉबिन्सन ने अपने बेडरूम के ऊपर छत पर कदमों की आहट सुनी। फिर सीढ़ियों का दरवाजा खुला, कदमों की आवाज सीढ़ियों पर गूंजी, फिर दूसरी मंजिल का दरवाजा खुला और ठंडी हवा का एक

झोंका उन्हें लगा। काम से नजरें हटाए बिना, श्रीमती रॉबिन्सन ने कहा, "वापस बिस्तर पर जाओ!" यह सोचकर कि शायद उनके बच्चों में से कोई किसी वजह से उठ गया होगा। कोई जवाब नहीं आया।

उसने ऊपर देखा, और वहाँ कोई नहीं था। चिढ़कर वह उठी और अपने बच्चों के कमरे देखने के लिए सीढ़ियों से ऊपर गई। वे सचमुच गहरी नींद में सो रहे थे। संतुष्ट न होकर और यह सोचकर कि उनमें से कोई उसके साथ शरारत कर रहा होगा, उसने उन्हें एक-एक करके जगाया और उनसे पूछताछ की। लेकिन उन्हें उठने में परेशानी हुई, और श्रीमती रॉबिन्सन को स्पष्ट हो गया कि उनका प्रयास व्यर्थ था; उनके बच्चे उन सीढ़ियों से नीचे नहीं गए थे।

यह घर के दरवाजों से जुड़ी घटनाओं की एक लंबी श्रृंखला की शुरुआत थी। कभी-कभी, वह बड़े आश्चर्य से देखती थी जब कोई दरवाजा बिना किसी तार्किक कारण, जैसे हवा या झोंके के, अपने आप खुल जाता था; या जब वह दरवाज़े की मूठ पकड़ने ही वाली होती थी, तभी कोई दरवाजा उसके लिए खुल जाता था। कम से कम, उस पुराने घर में जो भी शक्ति थी, वह विनम्र तो थी: उसने एक महिला के लिए दरवाजा खोला! लेकिन इससे उसे तसल्ली नहीं मिलती थी, क्योंकि अदृश्य के साथ जीना भी कभी-कभी बहुत परेशान करने वाला हो सकता है। कई बार वह दरवाजा बंद करती, और एक पल बाद ही उसे फिर से खुला पाती, जबकि वह अच्छी तरह जानती थी कि वह अपने आप नहीं खुल सकता।

पेंसिल्वेनिया में एक भूतिया औपनिवेशिक घर

उन्हें शक होने लगा कि कहीं उनके पीछे वाले बैठक कक्ष के नीचे कोई गुप्त सुरंग तो नहीं है। अक्सर उन्हें नीचे फर्श से एक तेज़ आवाज़ सुनाई देती थी, जो नीचे वाले कोल्ड स्टोरेज रूम की तरफ से आती थी। अब तो उनके लिए दरवाजे अपने आप खुल जाते थे, यहाँ तक कि जब वे घर में अकेली होती थीं, और बच्चों को उन पर शरारतें करने के लिए दोष नहीं दिया जा सकता था। 1966 की गर्मियों में, कई रातें ऐसी थीं जब घर में हलचल इतनी बढ़ जाती थी कि मानो किसी बड़ी भीड़ का आना-जाना हो रहा हो। एक बार उनकी बेटी ली रात में सीढ़ियों से नीचे आई और सोचने लगी कि बैठक कक्ष में कौन है। उसे ऊपर की मंजिल तक आवाज़ें सुनाई दे रही थीं! उस रात श्रीमती रॉबिन्सन छह बार कदमों की आहट और दरवाजे बंद होने की आवाज़ से जाग उठीं।

लगभग उसी समय, उनके ससुर ने दूसरी मंजिल पर स्थित अपने कमरे में एक अजीब घटना का जिक्र किया। वे टीवी देख रहे थे जब देर रात उनके कमरे का दरवाजा खुला और एक महिला अंदर आई। वे इस अप्रत्याशित मेहमान को देखकर इतने चौंक गए और वह इतनी जल्दी गायब हो गई कि उन्होंने उसे ठीक से नहीं देखा, लेकिन उन्हें लगा कि उसके या तो लंबे काले बाल थे या उसने काला घूंघट ओढ़ा हुआ था। उस समय घर में उस तरह की कोई महिला मौजूद नहीं थी।

फिर ऐसे क्षण भी आते थे जब बैठक कक्ष में रखी एक अदृश्य झूला कुर्सी अपने आप ऐसे हिलने लगती थी मानो उसमें कोई बैठा हो।

हमारे आने से ठीक पहले, श्रीमती रॉबिन्सन का धैर्य टूट रहा था। यह 4 अप्रैल का सप्ताह था, और हमने लगभग एक सप्ताह बाद आने की घोषणा कर दी थी। श्रीमती रॉबिन्सन तहखाने की सीढ़ियों पर थीं जब उन्होंने एक खटखटाहट की आवाज़ सुनी और ऊपर देखा। एक रोटिसरी रैक उनकी ओर तेज़ी से आ रहा था! ऊपर देखने के कारण वे झुक गईं, और वह चीज़ उनके सिर पर गिरने के बजाय सीढ़ियों पर जा गिरी। लेकिन उन्हें यह बहुत बुरा लगा। दरवाज़े खोलना ठीक है, लेकिन रोटिसरी रैक? अब समय आ गया था कि हम उनसे मिलने नीचे आएं।

मैंने पूरे घर का सावधानीपूर्वक निरीक्षण किया, दीवारों, फर्शों और विशेष रूप से दरवाजों की जाँच की। अधिकांश दरवाजे भारी कब्ज़ों वाले थे, जो आसानी से सरकते नहीं थे बल्कि उन्हें खोलने के लिए ज़ोर से धक्का देना पड़ता था। हमने पीछे के कमरे में झाँका और बीमों की प्रशंसा की, और मुझे यह स्वीकार करना होगा कि घर के उस हिस्से में मुझे बहुत बेचैनी महसूस हुई। कैथरीन और मुझे दोनों को एक घुटन महसूस हो रही थी, मानो हम किसी अदृश्य, दुखद घटना के सामने हों, और हम वहाँ से जितनी जल्दी हो सके निकलना चाहते थे।

मैंने रॉबिन्सन परिवार से वादा किया कि मैं एक अच्छे मनोचिकित्सक के साथ वापस आऊंगा और शायद समाधि की अवस्था का भी प्रयास करूंगा, बशर्ते श्रीमती लीक अपनी अगली पूर्वी यात्रा पर मेरे साथ आ सकें। उनके घर को इतना जीवंत बनाने वाले रहस्य का पता लगाने और शायद उसके रंगीन अतीत के बारे में और अधिक जानने की उम्मीद ने रॉबिन्सन परिवार के लिए रहस्यमय आवाज़ों को कुछ हद तक सहनीय बना दिया, और उन्होंने वादा किया कि जब तक मैं आवश्यक व्यवस्था नहीं कर लेता, तब तक वे धैर्य रखेंगे और मेरा साथ देंगे।

जून 1967 तक यह अवसर नहीं मिला था, लेकिन अंततः श्रीमती लीक और मैं मरे बर्नेट के रेडियो कार्यक्रम में एक साथ भाग लेने की योजना बना रहे थे, और जब मैंने बताया कि हम उस क्षेत्र में और क्या करने की योजना बना रहे हैं, तो मरे की आँखें चमक उठीं और उन्होंने खुद को अभियान में शामिल करने और हमें लाने-ले जाने की पेशकश की।

वह चिमनी जहाँ सैनिक खुद को गर्म करना चाहता था

प्रस्ताव को सहर्ष स्वीकार कर लिया गया, और मरे के पसंदीदा रेस्तरां में रात के खाने के बाद —जिस दौरान रॉबिन्सन हाउस के बारे में एक शब्द भी नहीं कहा गया—हम उनकी कार में रोमांच की तलाश में निकल पड़े। एक्सप्रेसवे पर निकलते ही उन्होंने कहा, "अगर कोई एक चीज़ है जो मैं अच्छी तरह से करता हूँ, तो वह है कार चलाना।" और सचमुच, वह कार चलाने में माहिर थे। उन्होंने इतनी तेज़ी से और जोश के साथ गाड़ी चलाई कि हम सही एग्जिट से चूक गए, और जल्द ही हम खुद को किंग ऑफ प्रशिया नामक स्थान पर पाए, जहाँ एक प्रशियाई भी खो जाता।

हम सबने कंधे उचकाए और वापस मुड़ गए, अपने कदमों के निशान ढूंढने की कोशिश करते हुए। मुर्रे ने मुझे भरोसा दिलाया कि उसे रास्ता पता है और वह हमें पल भर में रॉबिन्सन के घर पहुंचा देगा। समय की कमी थी, क्योंकि हमें रात ग्यारह बजे तक स्टूडियो में वापस आना था ताकि हम उस रात रेडियो कार्यक्रम कर सकें। लेकिन शाम अभी बाकी थी और पेंसिल्वेनिया का ग्रामीण इलाका बेहद खूबसूरत था।

यह अच्छा ही हुआ, क्योंकि उस शाम हमें इसका काफी हिस्सा देखने को मिला। रूजवेल्ट बुलेवार्ड और रूजवेल्ट एवेन्यू के बीच कुछ भ्रम था, और जो दिशा-निर्देश मैंने सावधानीपूर्वक लिख रखे थे, उन्हें हम अब उसी तरह समझ रहे थे जैसे रोमेल के अफ़्रीका कोर के दो अधिकारी कारवां मार्गों का अध्ययन करते होंगे।

“हमें वहीं मुड़ जाना चाहिए था जहाँ हम नहीं मुड़े,” मैंने अंत में कहा, और मरे ने गंभीर भाव से सिर हिलाया। समय हमारे तय समय से लगभग एक घंटा आगे बढ़ चुका था। मुझे लगा कि रॉबिन्सन परिवार ज़रूर सोच रहा होगा कि हम रास्ता भटक गए हैं। कम से कम मैं यही उम्मीद कर रहा था कि वे यही सोचें, न कि यह कि हमने परियोजना छोड़ दी है।

अब यह इलाका कुछ जाना-पहचाना सा लग रहा था; इसमें कोई शक नहीं था। हम उसी शाम को कई बार यहाँ से गुज़र चुके थे। क्या रॉबिन्सन के घर पर बार-बार दरवाजे खोलने और बंद करने वाली "ताकतें" हमें आने से रोक रही थीं ताकि वे अपनी गुमनामी का आनंद ले सकें?

जब आप पेंसिल्वेनिया में खो जाते हैं, तो आप सचमुच खो जाते हैं। लेकिन अब मरे ने एक फैसला लिया। वह उत्तर की ओर मुड़ा और हम शहर के एक बिल्कुल अलग हिस्से में पहुँच

गए। यह उस दिशा से बिलकुल अलग था जहाँ हम जाना चाहते थे, लेकिन कम से कम यह शहर का एक रोशन इलाका था। मुझे मरे की रणनीति समझ में आने लगी: वह उम्मीद कर रहा था कि हमें कोई मिल जाएगा—नहीं, यह एक अशुभ शब्द है—कोई ऐसा मिल जाएगा जिसे शायद पता हो कि सोमरटन किस तरफ है। हमें कई ऐसे मोटर चालक मिले जिन्हें कोई नहीं जानता था और कई ऐसे भी थे जिन्हें लगता था कि वे जानते हैं लेकिन वास्तव में नहीं जानते थे, जैसा कि हमें तब पता चला जब हमने उनके बताए रास्ते पर चलने की कोशिश की।

अंततः, मुर्रे ने समझदारी भरा काम किया: उसने सबसे पहले दिखाई देने वाले पुलिसवाले को आवाज़ दी और गर्व के साथ अपना परिचय दिया। फिलाडेल्फिया में हर कोई उसके रेडियो शो को जानता था।

“हम रास्ता भटक गए हैं, अधिकारी,” उसने घोषणा की और हमारी समस्या बताई।

"बुध ग्रह वक्री हो रहा है," सिबिल ने पीछे की सीट से बुदबुदाते हुए कहा। भूतों की तलाश के दौरान वह लगातार यही कहती रही कि ज्योतिषीय दृष्टि से हमारा रास्ता भटक जाना बिलकुल भी आश्चर्यजनक नहीं था।

“माफ़ कीजिएगा?” अधिकारी ने कहा और अंदर की ओर देखा।

मुर्रे ने अधीरता से कहा, "मरकरी को छोड़ो, क्या तुम कृपया हमें रास्ता दिखाओगे?"

“मैं इससे भी बेहतर करूंगा, महोदय,” पुलिसकर्मी ने मुस्कुराते हुए जवाब दिया, “मैं स्वयं आपको एस्कॉर्ट करूंगा।”

भोजन कक्ष, जो कभी पूरी तरह शांत नहीं रहता

और इस तरह हुआ कि हम सायरन बजाती हुई एक गश्ती कार के पीछे-पीछे फिलाडेल्फिया के उपनगरीय इलाकों की घनी और संकरी गलियों से गुज़रे।

अचानक, हमारे आगे वाली कार रुक गई। मरे ने साबित कर दिया कि वह वाकई कितना कुशल ड्राइवर था। अचानक ब्रेक लगाने पर भी उसने किसी को टक्कर नहीं मारी। उसने बस हमें थोड़ा सा हिला दिया।

“कोई गड़बड़ है क्या, अधिकारी जी?” मुर्रे ने थोड़ी घबराहट के साथ पूछा। अब साढ़े नौ बज चुके थे।

“मेरी सीमा,” अधिकारी ने समझाया। “मैंने अपने सहयोगी को पहले ही फोन कर दिया है ताकि वह आपके खिलाफ आगे की कार्रवाई कर सके।”

हम दस मिनट और बैठे और इंतज़ार किया, फिर एक और पुलिस कार आई और हमें पलक झपकते ही हमारी मंज़िल तक पहुँचा दिया। जब रॉबिन्सन परिवार ने पुलिस कार को हमें अपने घर तक लाते देखा, तो वे सोचने लगे कि आखिर हम क्या कर रहे थे। लेकिन वे हमें देखकर खुश हुए और हम जल्दी से घर में दाखिल हो गए। सिबिल तब तक ज़ोर-ज़ोर से हंस रही थी, और अगर हमने रास्ते में कुछ पिया होता, तो यह पूरी यात्रा एक शानदार पार्टी बन सकती थी। लेकिन जैसे ही वह घर के निचले हिस्से में दाखिल हुई, उसका चेहरा जम गया।

मैंने उसके चेहरे के भाव बदलते देखे, लेकिन इससे पहले कि मैं उससे कुछ पूछ पाता, वह महिला के कमरे में चली गई। वहाँ से बाहर आकर उसने बताया कि उसके दिमाग में सबसे पहला शब्द जो छपा, वह एक नाम था—"रॉस"।

उसने बताया कि उसे घर के सबसे पुराने हिस्से में, चिमनी के दाहिनी ओर स्थित उस व्यक्ति का सबसे अधिक प्रभाव महसूस होता है, इसलिए मैंने फैसला किया कि हमें उस क्षेत्र में जाना चाहिए और देखना चाहिए कि उसे और क्या महसूस होता है।

हालांकि घर का निर्माण 1732 में शुरू हुआ था, लेकिन जिस विशेष हिस्से में हम थे, उसे स्थानीय इतिहासकारों ने निश्चित रूप से 1755 का बताया था, और उन सभी ने रॉबिन्सन हाउस को प्रारंभिक अमेरिकी घरों के एक उत्कृष्ट उदाहरण के रूप में सराहा था।

“मुझे 1746 मिलेंगे,” सिबिल ने टिप्पणी की। “सिबिल आपसे कम बोली लगा रही है,” मैंने श्रीमती रॉबिन्सन से कहा।

“यह किसी तरह का सभा स्थल है,” सिबिल ने कमरे का जायज़ा लेते हुए आगे कहा, “यहाँ बहुत से लोग आते हैं... 1744... और रॉस नाम। पूरे घर का माहौल अप्रिय नहीं, बल्कि जीवंत है।” मुझे लगा, ठीक वैसे ही जैसे श्रीमती रॉबिन्सन ने घर में पहली बार कदम रखते ही महसूस किया था। सभा स्थल के बारे में, मुझे बाद में पता चला कि 1740 के दशक और उसके बाद के वर्षों में इस घर का उपयोग क्केकर सभा स्थल के रूप में किया जाता था, और आज भी “बायबेरी फ्रेंड्स” सड़क के उस पार मिलते हैं! घर के पहले मालिक जॉन वर्थिंगटन 1752 में सभा स्थल के निरीक्षक थे।

"यहां कई तरह के प्रभाव हैं," सिबिल ने कमरे का और अधिक बारीकी से विश्लेषण करते हुए समझाया, "यहां कई लोग मिल रहे हैं, लेकिन यह सब एक प्रमुख पुरुष व्यक्ति, रॉस पर केंद्रित है।"

कुछ देर और इधर-उधर घूमने के बाद, उसने कहा, "ऐसा लगता है कि 1774 की तारीख बहुत महत्वपूर्ण है।"

उसने प्राचीन चिमनी के दाहिनी ओर स्थित एक "कोठरी" की ओर इशारा किया और बताया कि ऐसा लगता है कि इस व्यक्तित्व का सबसे मजबूत प्रभाव वहीं दिखाई देता है।

श्रीमती रॉबिन्सन ने कहा, "यह एक सीढ़ी है," और उन्होंने "अलमारी" का दरवाजा खोल दिया। उसके पीछे एक संकरी, घुमावदार लकड़ी की सीढ़ी ऊपरी मंजिलों की ओर जाती थी।

मैंने सिबिल को चिमनी के पास एक आरामदायक कुर्सी पर बैठने का इशारा किया, और हम सब उसके चारों ओर बैठ गए। फिलाडेल्फिया लौटने में शायद तीस मिनट बचे थे, लेकिन फिलहाल मुझे इसकी चिंता नहीं थी। मेरी मुख्य चिंता घर को लेकर थी: यह हमें अपने इतिहास के बारे में क्या बताएगा? यहाँ कौन-कौन सी दुखद घटनाएँ घटीं और इसकी पुरानी दीवारों में कौन-कौन सी मानवीय भावनाएँ समाई हुई थीं?

जल्द ही हमें पता चल सकता है। सिबिल कुछ ही मिनटों में गहरी समाधि में चली गई।

सिबिल के माध्यम से आती हुई आवाज अब धीमी होकर बोली, "रॉस, मैं रॉस हूँ। जॉन रॉस... शांति में सद्गुण..."

क्या यह आपका घर है?

"नहीं।"

तो फिर आप यहां क्या कर रहे हैं?

प्रार्थना कर रहे हैं। शांति की आशा है। बहुत खून-खराबा हुआ है। लोगों को शांति के लिए प्रार्थना करनी चाहिए।

क्या यहाँ युद्ध चल रहा है?

मैं कहता हूँ कि युद्ध चल रहा है... दुश्मन चले गए हैं....

क्या तुम सैनिक हो?

"कैप्टन—जॉन—रॉस," आवाज ने कहा, हर शब्द पर जोर देते हुए मानो उसे बोलने में बहुत तकलीफ हो रही हो।

मैंने पलटकर पूछा, "कौन सी रेजिमेंट?" मुझे अच्छी तरह पता था कि रेजिमेंटों की सूची मौजूद होती है और उनमें नामों की जाँच की जा सकती है।

"इक्कीसवीं।"

“घुड़सवार सेना या पैदल सेना?”

मैं शांति का समर्थक हूँ।

लेकिन आप सेना की किस शाखा में थे?

“घोड़े का इक्कीसवाँ।”

यह घुड़सवार सेना के लिए एक पुराना अंग्रेजी मुहावरा है।

मैंने पूछा, “आपका वरिष्ठ अधिकारी कौन है?” उसने जवाब दिया, “कर्नल मॉस बहुत बुरा है... उसे प्रार्थना करनी चाहिए...”

“आदेश कौन देता है?”

“अलब्राइट।”

आपने कहाँ-कहाँ सेवा की?

“लड़ाई...यहाँ....”

उसने दावा किया कि उसकी उम्र अड़तीस वर्ष है और उसका जन्म 1726 में हुआ था। इस हिसाब से 1764 में उसकी उम्र अड़तीस वर्ष रही होगी। उसका जन्मस्थान होल्स्टीन में वेर्रुक नामक एक छोटा सा स्थान था, और जब उसने यह कहा तो मुझे माध्यम की सम्मोहित आवाज में विदेशी लहजे का बहुत हल्का सा संकेत मिला।

“तो क्या आप जर्मन हैं?” मैंने पूछा।

“जर्मन?” उसने पूछा, क्योंकि उसे बात समझ नहीं आ रही थी।

"क्या आप अमरीकी हैं?"

“अमेरिकी अच्छा है,” उसने प्रशंसा भरे स्वर में कहा। स्पष्टतः हमारे सामने ब्रिटिश सेना का एक भाड़े का सैनिक था।

मैंने पूछा, "क्या आप ब्रिटिश हैं?"

“कभी नहीं!” उसने पलटकर फुफकारा।

आप किसकी सेवा करते हैं?

“तेरह लोग...प्रार्थना करते हैं....”

क्या वह तेरह उपनिवेशों का जिक्र कर रहे थे, वह नाम जिससे वास्तव में क्रांतिकारी युद्ध के दौरान युवा गणराज्य को जाना जाता था?

“यह अल्ब्रेक्ट... उसका पहला नाम क्या है?”

“डी-एन-नो... मुझे वो पसंद नहीं है... इस देश में शांति हो!!! यह शांति के लिए ही बना था।”

मुझे समझ नहीं आया कि 'डी-एन-नो' से उसका क्या मतलब था, या उससे मिलता-जुलता क्या था। फिर मैंने उससे पूछा कि क्या उसे दुख हुआ है।

“मैं उनके आने का इंतज़ार कर रहा हूँ,” उसने रुक-रुक कर समझाया, “बीमारी, मेरे लिए रास्ता बनाओ!”

“तुम इस घर में क्यों हो—यहाँ क्या है?”

“प्रार्थना करने का स्थान।”

आप किस धर्म को मानते हैं?

"शांति और मौन का धर्म।"

अचानक, माध्यम लगभग अनियंत्रित आहें भरने लगा और दर्द से चीखने लगा। सिबिल की बंद आँखों से आँसू बहने लगे। किसी भयानक घटना की याद अवश्य लौट आई होगी।

“मैं मर रहा हूँ... मेरे हाथों में दर्द हो रहा है... मेरा हाथ कहाँ है?”

आप लगभग कटा हुआ हाथ देख सकते थे, और नुकसान को महसूस करते हुए आवाज का टूटा हुआ स्वर इसे और भी तात्कालिक और नाटकीय बना रहा था।

मैं शांति का समर्थक हूँ...

“यहाँ किस तरह के लोग आते हैं?”

“शांत लोग। ध्यान करने के लिए।”

क्वेकर सभाघर का इससे बेहतर वर्णन और क्या हो सकता है?

उन्होंने हमसे विनती करते हुए कहा, "प्रार्थना करना बंद मत करो।"

हमने उसके लिए प्रार्थना करने का वादा किया था। लेकिन क्या वह इस घर में अपनी गतिविधियों के बारे में बताएगा?

"उस मित्र को बुलाओ...जो मरणासन्न है।"

मृत्यु के अंतिम पड़ाव पर पहुँचकर उन्हें आध्यात्मिक मार्गदर्शन की आवश्यकता थी। 'फ्रेंड' शब्द उस समुदाय का आधिकारिक नाम है जिसे हम अब क्वेकर कहते हैं।

क्या वह हमसे किसी को बुलवाने के लिए कह रहा था? "विलियम प्रॉसर...मेरा भाई...इंग्लैंड में।"

क्या आपका जन्म इंग्लैंड में हुआ था?

नहीं। विलियम।

“क्या वह तुम्हारा भाई है?”

सभी मनुष्य भाई हैं।

उन्हें बोलने में कुछ परेशानी हो रही थी। मैंने उन्हें अपने मिशन के बारे में समझाना शुरू किया और बताया कि हम उनकी मदद करना चाहते हैं ताकि उन्हें वह शांति मिल सके जिसकी उन्हें बहुत चाह थी।

फिर मैंने उनसे पूछा, "रेजिमेंट में अपने कुछ साथी अधिकारियों के नाम बताइए।"

“एरिक गेरहार्ड्ट,” आवाज ने कहा। “लेफ्टिनेंट गेरहार्ड्ट।”

“क्या वह घुड़सवार सेना में था? किस रेजिमेंट में?”

“मेरी—घुड़सवार सेना—इक्कीसवीं—”

“आप दोनों ने किस वर्ष एक साथ सेवा की थी? अभी हम किस वर्ष में हैं?”

चौहत्तर।

आपकी तैनाती कहाँ है?

सिबिल अब पूरी तरह अतीत में डूबी हुई थी, उसका चेहरा अब उसका नहीं था; इसके बजाय, हम एक ऐसे व्यक्ति को देख रहे थे जो गहरी पीड़ा में था, फिर से बोलने के लिए संघर्ष कर रहा था। मरे बर्नेट ने अपनी उंगलियां होठों पर रखी हुई थीं, उनकी निगाहें माध्यम पर टिकी हुई थीं। यह स्पष्ट था कि उन्होंने पहले कभी ऐसा कुछ नहीं देखा था, और उनके सामने का यह असाधारण दृश्य उन पर गहरा और स्थायी प्रभाव छोड़ने वाला था, और वास्तव में ऐसा ही हुआ।

लेकिन सवाल का जवाब नहीं मिला। इसके बजाय, सिबिल अचानक वापस आ गई, या कम से कम उसका एक हिस्सा तो आ ही गया। हालांकि, वह अजीब तरह से परेशान लग रही थी।

"हाथ सुन्न हो गए हैं," उसने धीरे से कहा, और मैंने उसे तुरंत वापस सम्मोहन की अवस्था में डाल दिया ताकि कैप्टन रॉस का व्यक्तित्व अपनी गवाही जारी रख सके।

“मुझे बाहर निकालो, मुझे बाहर निकालो,” सिबिल चीखने लगी, “मेरे हाथ... मेरे हाथ सुन्न हो गए हैं....”

मुझे एहसास हुआ कि औपनिवेशिक सैनिक के कटे हुए हाथ या हाथों ने गहरा प्रभाव छोड़ा था। मैंने तुरंत उसे समाधि में वापस जाने का सुझाव दिया। फिर मैंने उसे होश में लाया और साथ ही यह भी बताया कि समाधि की कोई भी स्मृति उसके चेतन मन में नहीं रहनी चाहिए।

आँखें खोलते ही सिबिल के माथे पर पसीने की बूँदें दिखाई दे रही थीं। लेकिन वह खतरे से बाहर थी। बीते एक घंटे की कोई भी बात उसे याद नहीं थी। कुछ पल की गहरी चुप्पी के बाद हम उठे। शहर लौटने का समय हो गया था, लेकिन मरे को इसकी परवाह नहीं थी। वह जानता था कि उसका निर्माता, टेड रेनहार्ट, ज़रूरत पड़ने पर टेप चलाकर समय बिता लेगा। रॉबिन्सन परिवार ने हमें जल्दी से एक कप कॉफ़ी दी, जिसका स्वाद उस समय की परिस्थितियों के हिसाब से कहीं ज़्यादा अच्छा था। सभी बहुत तनाव में थे और मैंने सोचा कि श्रीमती रॉबिन्सन ने बच्चों को उस séance से दूर रखकर कितना बुद्धिमानी भरा काम किया था।

जल्दी से हमने अपना सामान उठाया और स्टेशन वापस चले गए। वापस जाने में हमें आने में लगे समय का लगभग पाँचवाँ हिस्सा ही लगा। मुर्रे बर्नेट ने ड्राइविंग में अपनी कुशलता का परिचय दिया और एक्सप्रेसवे पर गाड़ी को तेज़ी से दौड़ाया। उस समय ट्रैफिक कम था और हम ठीक उसी समय वापस पहुँच गए जब उद्घोषक ने कहा, "और अब, देवियों और सज्जनों, मुर्रे बर्नेट और उनके मेहमान...."

जैसे कुछ हुआ ही न हो, हम शान से प्लेटफार्म पर चढ़े और पूरे एक घंटे तक हल्की-फुल्की हंसी-मजाक करते रहे। लेकिन जब हम फिलाडेल्फिया से न्यूयॉर्क लौटने के लिए निकले, तब तक सिबिल बहुत थक चुकी थी। जब हम न्यूयॉर्क में अपने कोच से लड़खड़ाते हुए उतरे, तब तक सुबह के एक बज चुके थे। रात की खामोशी शाम के शुरुआती अशांत माहौल से राहत देने वाली थी।

अगले दिन मैंने रॉबिन्सन के घर से प्राप्त सामग्री पर शोध करना शुरू किया।

सबसे पहले, रॉबिन्सन परिवार को पिछली ओनरशिप का पता केवल 1841 तक ही चल पाया, हालांकि स्थानीय ऐतिहासिक सोसायटी ने उन्हें आश्वासन दिया कि इसका निर्माण 1732 में हुआ था। शुरुआती रिकॉर्ड अक्सर अधूरे हैं या अब मौजूद नहीं हैं क्योंकि इस क्षेत्र के आसपास कई युद्ध लड़े गए हैं - विदेशी मूल के और भारतीय दोनों - आगजनी और लापरवाही के अलावा।

गृहयुद्ध काल के बाद से रॉबिन्सन परिवार इस जगह का नौवां मालिकाना हक रखने वाला परिवार था। उससे पहले, केवल इतना ही निश्चित रूप से ज्ञात था कि यह एक केकर सभा स्थल था और यह सिबिल द्वारा समाधि की अवस्था में किए गए उल्लेखों से मेल खाता था।

लेकिन रॉस का क्या?

उस सज्जन ने दावा किया था कि वह कैप्टन जॉन रॉस हैं, और हमारी बातचीत शुरू होने के समय वर्ष 1764 था।

डब्ल्यू. सी. फोर्ड की पुस्तक "ब्रिटिश ऑफिसर्स सर्विंग इन अमेरिका 1754-1774" के पृष्ठ 88 पर मुझे एक कैप्टन जॉन रॉस का ज़िक्र मिला, जिन्हें 8 नवंबर 1764 को नियुक्त किया गया था। यह व्यक्ति निश्चित रूप से एक टोरी था, यानी वह अंग्रेजों की तरफ से लड़ता। अमेरिकी क्रांति की शुरुआत तो अप्रैल 1775 में ही हुई थी, और इस व्यक्ति ने अंग्रेजों के प्रति नापसंदगी और तेरह अमेरिकी उपनिवेशों के प्रति प्रशंसा व्यक्त की थी। क्या उसने बीच के वर्षों में किसी तरह पाला बदल लिया था? यदि वह एक जर्मन भाड़े का सैनिक था, तो यह बिल्कुल भी आश्चर्यजनक नहीं होता। इनमें से कई लोग, जिन्हें अक्सर उनकी इच्छा के विरुद्ध यहाँ लाया गया था, या तो ब्रिटिश सेना छोड़ देते थे या पाला बदल लेते थे। बाद में उन्होंने 1774 की तारीख का ज़िक्र किया, और सिबिल ने कहा था कि यह महत्वपूर्ण है। उस समय युद्ध की शुरुआत हो चुकी थी, हालाँकि कोई प्रत्यक्ष कार्रवाई नहीं हुई थी। लेकिन इस क्षेत्र का माहौल तनावपूर्ण था। यह महाद्वीपीय कांग्रेस का केंद्र था, और टोरी और क्रांतिकारियों के बीच झड़पें आम बात थीं, हालांकि वे छोटे या व्यक्तिगत स्तर पर होती थीं। उस समय कैप्टन रॉस के साथ कौन सी दर्दनाक घटना घटी थी? क्या उन्होंने उस दौरान अपने हाथ खो दिए थे?

* * *

ज़ाहिर है, मुझे उसकी पहचान के लिए अतिरिक्त सबूत चाहिए थे। जॉन रॉस नाम काफी प्रचलित है। एक जॉन रॉस, बेट्सी रॉस का पति था। वह 1776 में एक रात फिलाडेल्फिया के तट पर गोला-बारूद की रखवाली कर रहा था, जब गोला-बारूद और रॉस दोनों में विस्फोट हो गया। एक और जॉन रॉस, कॉन्टिनेंटल आर्मी का खरीद एजेंट था, और उसने इस प्रक्रिया में अपनी काफी संपत्ति खर्च की थी। हालाँकि रॉबर्ट मॉरिस ने बाद में उसकी संपत्ति वापस दिलाने की कोशिश की, लेकिन वह वास्तव में ऐसा नहीं कर पाया, और केवल एक साल पहले उसके वंशजों ने इस पुराने सम्मान के कर्ज के भुगतान के लिए कांग्रेस में याचिका दायर की थी। मुझे लगा कि इनमें से कोई भी हमारा आदमी नहीं था, खासकर जब मुझे उसका जर्मन लहजा और यह दावा याद आया कि उसका जन्म होल्स्टीन के वेर्रुक नामक एक छोटे से स्थान पर हुआ था। उस स्थान के नाम ने मुझे सचमुच उलझन में डाल दिया था, लेकिन न्यूयॉर्क पब्लिक लाइब्रेरी के एक लाइब्रेरियन की मदद से मुझे कुछ जर्मन स्रोत पुस्तकें मिल गईं। होल्स्टीन के ओल्डस्लो के पास विएर्टब्रुक नाम का एक छोटा सा गाँव है। एक अंग्रेज़ी बोलने वाला व्यक्ति इसे "वर्टब्रुक" की तरह उच्चारित करेगा। हालांकि यह किसी सामान्य मानचित्र पर नहीं है, लेकिन इसका उल्लेख 1958 में वुप्पर्टल में प्रकाशित मुलर की पुस्तक 'ग्रॉसेस ड्यूशस वोर्टबुच' के पृष्ठ 1008 पर मिलता है।

उनके भाई का नाम प्रोसर था, जो एक जर्मन नाम है। उन्होंने अंग्रेज़ी नाम क्यों अपनाया? शायद उन्होंने कई साल इंग्लैंड में बिताए थे और उन्हें यह अधिक सुविधाजनक लगा। उन्होंने 21 वीं कैवलरी रेजिमेंट से संबंधित होने का भी उल्लेख किया। रिकॉर्ड में मिले कैप्टन जॉन रॉस ने 31 वीं रेजिमेंट में सेवा की थी, न कि 21 वीं में। दूसरी ओर, हैरानी की बात यह है कि एक और रॉस, जिनका पहला नाम डेविड था, 1774 की अवधि के लिए 21 वीं रेजिमेंट में दर्ज हैं।

मैं अलब्राइट या अल्ब्रेक्ट नाम के वरिष्ठ अधिकारी का पता नहीं लगा सका, क्योंकि मुझे नहीं पता था कि वह जर्मन था या अंग्रेज। चूंकि संचारक द्वारा दिया गया पहला नाम स्पष्ट नहीं था, इसलिए मैं यह भी निश्चित नहीं कह सकता कि एफ. बी. हीतमैन की पुस्तक "क्रांति युद्ध के दौरान महाद्वीपीय सेना का ऐतिहासिक रजिस्टर" के अनुसार, 1776-77 में पेनसिल्वेनिया राइफल्स में कप्तान रहे फिलिप अलब्राइट ही वह व्यक्ति हैं। यह फिलिप अलब्राइट विद्रोही

था, और यदि वह 1776 में केवल कप्तान था, तो वह 1774 में जॉन रॉस का कमांडिंग ऑफिसर नहीं हो सकता था, जब तक कि उसने पाला न बदल लिया हो।

वे सीढ़ियाँ जहाँ कदमों की आहट गूंजती रहती है

रॉस के दावे के अनुसार, मुझे अपने साथी अधिकारी लेफ्टिनेंट "गेरहार्ड्ट" के बारे में अधिक जानकारी मिली, जो "उसके" 21 वें रेजिमेंट में भी कार्यरत थे। उस दौर में नामों की वर्तनी में काफी छूट होती थी, और चूंकि मैंने केवल नाम सुने थे और सही वर्तनी का कोई संकेत नहीं था, इसलिए हमें नामों के अक्षरों में अंतर को ध्यान में रखना होगा। मैंने ड्रैगून नामक घुड़सवार रेजिमेंट के एक ब्रेवेट लेफ्टिनेंट जेरार्ड (पहला नाम नहीं दिया गया) का पता लगाया, जिन्होंने 3 सितंबर, 1778 से 1782 तक पुलस्की लीजन में सेवा की थी।

क्या यह वही व्यक्ति है? क्या उसने क्रांतिकारी युद्ध शुरू होने के बाद पाला बदल लिया था? वह 1774 और उससे पहले जॉन रॉस का रेजिमेंटल साथी हो सकता था। इस व्यक्ति के बारे में जानकारी एफ. बी. हीतमैन की 'हिस्टोरिकल रजिस्टर ऑफ द कॉन्टिनेंटल आर्मी', खंड 1775-83, पृष्ठ 189 से ली गई है। पुलस्की लीजन केवल उन पोलिश स्वयंसेवकों तक सीमित नहीं थी जिन्होंने नए गणराज्य के लिए लड़ाई लड़ी, बल्कि इसने किसी भी पक्ष से स्वैच्छिक

सहायता स्वीकार की, यहाँ तक कि पूर्व ब्रिटिश या भाड़े के सैनिकों से भी, बशर्ते वे एक स्वतंत्र अमेरिका के लिए लड़ना चाहते हों। कई जर्मनों ने भी उस लीजन में सेवा की थी।

* * *

जिस कर्नल मॉस को "बुरा" कहा गया, वह संभवतः कर्नल मोसेस एलन थे, जो एक टोरी थे और इसी क्षेत्र के रहने वाले थे और जिनकी मृत्यु 8 फरवरी, 1779 को हुई थी। उनका नाम सैफेल के क्रांतिकारी युद्ध के अभिलेखों में दर्ज है।

यह हमारे इतिहास का एक उथल-पुथल भरा दौर था, और समय की मांग के अनुसार लोगों ने अपने विचार और पक्ष बदले। क्या वह दुर्भाग्यशाली सैनिक, जो हमें इस पूर्व क्वेकर सभा भवन में फंसा मिला था, उन लोगों में से एक था जो इस स्थिति से बाहर निकलना चाहता था, पहले तो उन लोगों में शामिल होना चाहता था जिन्हें वह "अच्छे लोग" मानता था, और फिर लगातार हो रहे रक्तपात से विचलित होकर, क्या वह उनके युद्ध को भी स्वीकार नहीं कर सका? क्या वह अपने क्वेकर संपर्कों के माध्यम से धार्मिक रूप से जागरूक हुआ था और क्या उन्होंने उसे शांतिवादी बना दिया था? यदि 1774 के औपनिवेशिक सैनिक के शब्दों को आधार माना जाए तो इसकी बहुत संभावना है। शांति के लिए उसकी अपील लगभग ऐसी लगती है मानो आज भी कही जा सकती हो।

* * *

कैप्टन जॉन रॉस कोई महत्वपूर्ण ऐतिहासिक व्यक्ति नहीं थे, न ही वे संयुक्त राज्य अमेरिका के समग्र विकास में किसी महत्वपूर्ण घटना से जुड़े थे। लेकिन उनकी यही गुमनामी उन्हें हमारे मनोविश्लेषणात्मक प्रयोग के लिए एक उपयुक्त विषय बनाती है। सिबिल लीक को निश्चित रूप से कैप्टन रॉस, उनके साथियों और बायबेरी रोड स्थित उस पुराने घर के क्वेकर समुदाय से संबंध के बारे में जानकारी नहीं रही होगी। यह उनकी सहज बुद्धि ही थी जिसने इतिहास के निरंतर आगे बढ़ते रहने और बायबेरी रोड स्थित उस घर को मानवीय भावनाओं और संघर्षों की एक अमिट परत से ढक देने वाले निशानों की पड़ताल की।

* * *

मुझे पूरी उम्मीद है कि हमारे संपर्क के दौरान हम कैप्टन रॉस को "सेवामुक्त" करने में सफल रहे, ताकि उन्हें अंततः वह बहुप्रतीक्षित "शांति और मौन" मिल सके।

* 49

प्लांट एवेन्यू पर स्थित मकान

प्लांट एवेन्यू, सेंट लुइस के पास स्थित मिसौरी के वेबस्टर ग्रोव्स के एक बेहतरीन इलाके से गुजरने वाला एक आकर्षक उपनगरीय मार्ग है। वेबस्टर ग्रोव्स अपने आप में एक औसत दर्जे का छोटा शहर है। प्लांट एवेन्यू किसी खास चीज के लिए प्रसिद्ध नहीं है, सिवाय इसके कि यहाँ कुछ पेड़-पौधे हैं, जिनमें मुख्य रूप से बहुत पुराने पेड़ हैं, जो इसे अन्य सड़कों से अलग ठंडक प्रदान करते हैं, यहाँ तक कि गर्मियों की भीषण गर्मी में भी, जब देश का यह हिस्सा बेहद उमस भरा हो सकता है।

वेबस्टर ग्रोव्स भी कुछ खास मशहूर नहीं था, जब तक कि लाइफ पत्रिका ने इसके हाई स्कूल की गतिविधियों पर एक लेख प्रकाशित नहीं किया। लेख के बाद, इसे कुछ समय के लिए एक "आम" अमेरिकी उच्च-मध्यम वर्गीय कस्बे के रूप में जाना जाने लगा, जिसमें इसकी सभी अच्छाइयाँ और बुराइयाँ दोनों थीं। लेकिन अब यह कस्बा फिर से ऐसे ही कई कस्बों में से एक बनकर रह गया है और प्लांट एवेन्यू के निवासी राहत की सांस ले रहे हैं कि इसकी बदनामी कम हो गई है। ये लोग सुर्खियों में रहना पसंद नहीं करते और जितना कम ध्यान इन पर दिया जाता है, उतना ही ये खुश रहते हैं।

प्लांट एवेन्यू के तीन सौ ब्लॉक में मुख्य रूप से बड़े बंगले जैसे घर हैं जो चौड़े भूखंडों में बने हैं और झाड़ियों और पेड़ों से घिरे हैं। इनमें से एक घर दो मंजिला लकड़ी और ईंट से बना है, जिसकी शैली अनिश्चित है, लेकिन अपनी अनूठी शैली में निश्चित रूप से विशिष्ट दिखता है। छत पर पुराने अंग्रेजी प्रभाव की झलक मिलती है और नीचे की चौड़ी खिड़कियां शायद दक्षिणी शैली की हैं, लेकिन कुल मिलाकर ऐसा लगता है कि यह घर किसी ऐसे व्यक्ति ने बनवाया है जो इसे अपने तरीके से बनाना चाहता था। यह ब्लॉक के किसी भी अन्य घर जैसा नहीं दिखता, फिर भी पूरी तरह से मेल खाता है। घर थोड़ा पीछे की ओर बना है और इसके चारों ओर एक बगीचा है, जो इसे गोपनीयता प्रदान करता है। सड़क से प्रवेश करते ही सामने

के लॉन से होते हुए कुछ सीढ़ियाँ चढ़कर घर में प्रवेश किया जाता है। नीचे की मंजिल पर एक बड़ा बैठक कक्ष, एक दिन का कमरा और एक रसोईघर है जिसका पिछला निकास सीधे बगीचे में खुलता है। बैठक कक्ष से घुमावदार सीढ़ियाँ ऊपरी मंजिल तक जाती हैं जहाँ शयनकक्ष स्थित हैं।

यह घर पिछली शताब्दी के अंतिम वर्षों में एक विचित्र व्यक्तित्व वाले व्यक्ति द्वारा बनवाया गया था। पड़ोस के लोग श्री गेहम के बारे में बहुत कम जानते थे। उनका व्यवसाय सर्कस था और ऐसा लगता है कि वे विभिन्न सर्कस कलाकारों के साथ काम करते थे और किसी न किसी रूप में उनका प्रतिनिधित्व करते थे। वे मिलनसार नहीं थे और ज्यादातर अकेले रहना पसंद करते थे और अंततः उसी घर में उनकी मृत्यु हुई जो उन्होंने अपने लिए बनवाया था।

यह बात आस-पड़ोस में सबको पता थी, लेकिन सच कहें तो, जब तक आप लोगों को परेशान नहीं करते, उन्हें इस बात से कोई खास फर्क नहीं पड़ता कि आप क्या कर रहे हैं। श्री गेहम के निधन के बाद घर का काम संभालने वाले रियल एस्टेट एजेंट को श्री गेहम के असामान्य पेशे से ज़्यादा घर की वायरिंग और हालत की चिंता थी। घर में एक खास तरह की शान थी, शायद इसके निर्माता के जर्मन होने की वजह से, इसलिए इसे दोबारा बेचना अच्छा सौदा लग रहा था और ऐसा ही हुआ।

1956 में यह घर श्री और श्रीमती एस. एल. फरी के हाथों में चला गया, जिनकी उस समय शादी को बीस साल हो चुके थे और उनकी दो युवा बेटियां थीं, जिनकी अब शादी भी हो चुकी थी।

श्रीमती फरी का वंश मुख्य रूप से अंग्रेज था और उन्होंने सेंट लुइस में वाशिंगटन विश्वविद्यालय के मेडिकल स्कूल में काम किया, जहाँ उन्होंने कॉलेज में मनोविज्ञान में स्नातक की उपाधि प्राप्त की थी।

इसलिए जब उन्हें उस घर की कुछ अजीबोगरीब बातें पता चलीं, जिसमें वे रहने आए थे, तो वे बुरी तरह हिल गईं—जैसे कि हर रात ठीक 2 बजे अचानक नींद खुल जाना, ऐसा महसूस होना जैसे किसी ने उन्हें हिलाकर जगा दिया हो। एक बार उन्होंने साफ-साफ सुना कि किसी भारी हथौड़े से उनके बिस्तर के सिरहाने पर चोट लगी हो। उन्होंने लाइट जलाई तो देखा कि सब कुछ वैसा ही था, जबकि उन्हें यकीन था कि वहाँ लकड़ी के टुकड़े और एक गहरा गड्ढा

होगा। जल्द ही रात में खिड़कियों पर किसी चीज के टकराने की आवाज और तेज हो गई। "यह किसी भारी पक्षी की आवाज जैसी लग रही है," श्रीमती फरी ने सोचा और कांप उठीं। वहाँ ऐसा कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा था जिससे ये आवाजें आ रही हों।

एक सुबह उसने देखा कि नीचे वाले कमरे में लगी भारी दीवार की बत्ती फर्श पर पड़ी है। जबकि पिछली रात उसे दीवार पर मजबूती से लगाया गया था। जांच करने पर उसे समझ नहीं आया कि वह कैसे गिर गई होगी।

अब उसे समझ आ गया था कि जो कदमों की आहट वह लगातार सुन रही थी, वह महज़ थकान से होने वाली घबराहट या उसकी कल्पना मात्र नहीं थी। कदमों की आहट दिन-रात सीढ़ियों पर ऊपर-नीचे जाती रहती थी, मानो कोई कुछ ढूंढ रहा हो और उसे न मिल रहा हो। और हमेशा ऊपर की मंज़िल पर आकर रुकती थी।

पहले तो वह अपने पति से इन मामलों पर चर्चा नहीं करना चाहती थी क्योंकि वह जानती थी कि वह एक व्यावहारिक व्यक्ति है और उसकी बात पर विश्वास नहीं करेगा। और किसी तांत्रिक के बारे में बताने के मामले में एक महिला हमेशा ही असुरक्षित होती है। लेकिन आखिरकार उसने उसकी चिंता को भांप लिया और मामला खुलकर सामने आ गया। उसने तुरंत कहा कि उसे ऐसी कोई बात सुनाई नहीं दी जिससे उसकी नींद में खलल पड़े और अपनी पत्नी को सलाह दी कि वह इस बात को भूल जाए।

लेकिन कुछ ही देर बाद, नाश्ते की मेज पर उसने शर्मिंदा होकर स्वीकार किया कि उसने भी कुछ अजीब आवाजें सुनी थीं। “बेशक, इसका कोई तार्किक कारण होगा,” उसने झट से कहा। “यह शायद पुराने घर का सिकुड़ना और फैलना ही है। बहुत से पुराने घर ऐसा करते हैं।” वह इस स्पष्टीकरण से संतुष्ट लग रहा था, लेकिन श्रीमती फ़री संतुष्ट नहीं थीं। उन्हें अभी भी कदमों की आहट सुनाई दे रही थी और उन्हें ये आवाजें घर के सिकुड़ने जैसी नहीं लग रही थीं।

आखिरकार, श्री फरी ने अपनी व्याख्या पर ज़ोर नहीं दिया, क्योंकि उनके पास कोई बेहतर व्याख्या नहीं थी, इसलिए उन्होंने इस पूरे मामले को टालने का फैसला किया। एक रात, पत्नी के कमरे से सटे बेडरूम में उन्हें किसी अजीब चीज़ की वजह से नींद से जागना पड़ा: उन्होंने देखा कि एक धुंधली, सफेद आकृति दरवाजे से होकर हॉल में गई और उनकी छोटी बेटी के

कमरे में चली गई। वे बिस्तर से उछलकर कमरे में देखने गए, लेकिन उन्हें कुछ भी दिखाई नहीं दिया। उन्होंने सोचा, "शायद सड़क से आती गाड़ियों की रोशनी का प्रतिबिंब होगा।" लेकिन ऐसा फिर कभी नहीं हुआ, और गाड़ियाँ हर समय घर के सामने से गुजरती रहीं।

साल बीतते गए और फरी परिवार को अपने अजीब से घर की कुछ हद तक आदत हो गई। उन्होंने उसमें इतना पैसा और मेहनत लगाई थी, और प्यार भी, कि वे किसी भूत को उसे बेदखल करने देना नहीं चाहते थे। लेकिन वे तब घबरा गए जब उनके तीन साल के बच्चे ने नाश्ते के समय बार-बार पूछा, "रात को मेरे कमरे में आने वाली काली पोशाक वाली महिला कौन है?" चूंकि कोई भी काली पोशाक वाली महिला कभी भी घर में नहीं आई थी, इसलिए माता-पिता स्वाभाविक रूप से परेशान हो गए।

"कौन सी महिला?" श्रीमती फरी ने जानना चाहा।

तीन साल के बच्चे ने जोर देकर कहा, "वह महिला, उसने एक छोटे लड़के का हाथ पकड़ रखा है।"

कुछ समय बाद, बच्ची ने फिर से काले कपड़े पहनी महिला के बारे में शिकायत की। उसने कहा, “वह मुझे झाड़ू से मारती है, लेकिन दर्द नहीं होता।” श्रीमती फ़री को समझ नहीं आ रहा था कि क्या करें। ज़ाहिर है, घर में कुछ ऐसा था जिसके बारे में रियल एस्टेट वालों ने उन्हें नहीं बताया था। नौ साल बाद, उन्हें एक बेहतर घर मिला—जो उनकी ज़रूरतों के ज़्यादा अनुकूल था—और वे वहाँ चले गए। प्लांट एवेन्यू वाला घर फिर से बिकने के लिए था। कुछ ही समय में उस खूबसूरत घर के लिए एक नया किराएदार आ गया।

नवंबर 1965 के मध्य में, वॉल्श परिवार ने घर किराए पर लिया और अपने तीन बच्चों में से दो, दस वर्षीय वेंडी और बीस वर्षीय सैंडी के साथ उसमें रहने लगे। उन्हें पिछले मालिकों के अनुभवों के बारे में कुछ भी नहीं बताया गया था और उन्हें घर सुखद और शांत लगा, कम से कम शुरुआत में तो ऐसा ही था।

नए घर में आने के कुछ ही समय बाद, श्रीमती वाल्श रसोई में खाना बना रही थीं। उनके साथ उनका कुत्ता ही था। समय शाम 6:30 बजे का था। अचानक, उन्होंने देखा कि कुत्ता घोर भय से कांप रहा है। यह देखकर वे हैरान रह गईं और सोचने लगीं कि आखिर इसका कारण क्या है। ऊपर देखते ही उन्होंने एक सफेद बादल को देखा, जो लगभग एक इंसान के आकार और

ऊंचाई का था, और वह बैठक के खुले दरवाजे से अंदर आ रहा था। यह सब कुछ पल भर के लिए ही हुआ, लेकिन उन्होंने ऐसा पहले कभी नहीं देखा था।

“एक भूत!” उसने तुरंत सोचा, क्योंकि वह बिल्कुल भूत जैसा दिख रहा था। क्लेयर वॉल्श कोई साधारण सी अलौकिक शक्तियों पर विश्वास करने वाली नहीं हैं। उनके पास जैव रसायन में स्नातकोत्तर डिग्री है और उन्होंने पांच साल तक पेशेवर रूप से शोध किया है। लेकिन उन्होंने जो देखा, वह सचमुच एक भूत था! वह डरी नहीं थीं। बल्कि, उन्हें अच्छा लगा, क्योंकि उनका संदेह सही साबित हो गया था। जिस दिन उन्होंने पहली बार उस घर में कदम रखा था, जब उन्होंने अभी तक उस पर कब्जा नहीं किया था, उन्हें एक गहरी अनुभूति हुई थी कि वहां किसी की उपस्थिति है। उस समय उन्होंने इसे एक रोमांटिक विचार मानकर खारिज कर दिया था, लेकिन जाहिर है कि उनकी अंतर्ज्ञान सही थी। एक गहरी सांस लेते हुए श्रीमती वॉल्श ने अपनी मानसिक क्षमताओं को स्वीकार किया। यह पहली बार नहीं था जब उन्होंने खुद को प्रकट किया था।

जिस समय उनके पति के जहाज पर टारपीडो से हमला हुआ, उन्होंने सपने में पूरी घटना को विस्तार से देखा। जब वह बच्ची थीं, उनकी चाची का निधन हो गया था, और परिवार में किसी को भी उनके निधन की जानकारी होने से पहले ही उन्होंने उनकी आत्मा को देखा था। तब से उनमें टेलीपैथी की अच्छी-खासी क्षमता विकसित हो गई थी, खासकर अपनी बेटियों के साथ।

रसोई में देखे गए उस प्रेत को उन्होंने नकार दिया, खासकर इसलिए क्योंकि उसके बाद वैसी कोई घटना नहीं हुई। लेकिन रातें अजीब तरह से हलचल भरी लग रही थीं। रात में घर जीवंत हो उठता था। गलियारों और कमरों में मानवीय गतिविधियों की आवाज़ें गूंजती थीं और अंधेरे में श्रीमती वॉश को ऐसा लगता था जैसे कोई अदृश्य शक्तियाँ उनके घर में बेधड़क घूम रही हों। यह सुखद एहसास नहीं था, लेकिन उन्होंने हिम्मत जुटाकर इंतज़ार करने का फैसला किया कि कहीं कोई सुराग मिल जाए जिससे उन्हें अपने घर के इतिहास के बारे में और अधिक जानकारी मिल सके। फरवरी 1966 में, उनके पड़ोसियों ने उन्हें रात के खाने पर आमंत्रित किया।

रात के खाने के दौरान घर का मुद्दा उठा और श्रीमती वाल्श से अनौपचारिक रूप से पूछा गया कि घर कितना शांत है। इस पर उन्होंने अपनी चिंता व्यक्त की और जो कुछ देखा और सुना

था, उसका ब्योरा दिया। पड़ोसियों—कुरुस नाम के एक दंपत्ति—ने मौन सहमति जताते हुए एक-दूसरे को सिर हिलाकर अभिवादन किया।

श्रीमती वाल्श ने कहा, "ऐसा लगता है कि इन आवाज़ों में एक पैटर्न है, ये हमेशा सुबह 4 बजे और ऊपर की मंजिल से आती हैं।"

कुरु परिवार लगभग खुद ही वह घर खरीदने ही वाला था, लेकिन सामने वाली गली में रहने वाले एक पड़ोसी के अनुभवों ने उन्हें ऐसा करने से रोक दिया। वह व्यक्ति अक्सर उस घर में मेहमान बनकर आता था और वहाँ रहते हुए उसने कुछ ऐसी भूतिया घटनाएं देखी थीं जिनसे उसे यकीन हो गया था कि वह घर वाकई भूतिया है। इसके बाद कुरु परिवार ने बगल वाला घर खरीद लिया। जब श्रीमती वाल्श को सामने वाली गली में रहने वाले उस व्यक्ति का नाम पता चला, तो उन्होंने उसे फोन किया और पूछा कि वह उनके घर के बारे में क्या जानता है।

“मूल मालिक ने घर के कई हिस्सों में, कई जगहों पर, कोनों में कुछ कीमती सामान छिपा रखा है,” उस सज्जन ने समझाया, “और अब वह अपने खजाने की तलाश कर रहा है।”

उन गुप्त छिपने की जगहों में से एक नीचे की चिमनी थी। रिसीवर नीचे रखते ही श्रीमती वाल्श ने चिमनी की जाँच शुरू कर दी। एक जगह से अजीब सी खोखली आवाज़ आ रही थी, लेकिन जब तक वह औजारों से उसे खोल नहीं लेतीं, तब तक यह पता लगाना असंभव था कि वहाँ क्या छिपा है।

छिपे हुए खजाने के अस्पष्ट वादे से एक सुंदर चिमनी के स्वामित्व के गौरव पर काबू पाना संभव नहीं हो पाया, इसलिए उसने चिमनी को खोलने की कोशिश नहीं की, बल्कि सोने चली गई।

आधी रात के करीब कमरे में एक अजीब सी, बासी गंध से उसकी नींद खुल गई। वह उठी और कमरे में इधर-उधर घूमने लगी, लेकिन वह बासी गंध अभी भी बनी हुई थी। यह उसे मृत्यु की गंध की याद दिला रही थी।

अगली सुबह उसने अपने पति को इस बारे में बताया।

“बेतुका,” वह हँसे, लेकिन अगली सुबह वही गंध उनके बेडरूम में भी आ गई और उन्हें भी वह गंध महसूस हुई। चूंकि श्री वाल्श एक बड़ी रासायनिक कंपनी में काम करते हैं, इसलिए

गंधों से निपटना उनका निजी काम है। लेकिन अपने ही घर में आ रही उस अजीब गंध को वे समझ नहीं पा रहे थे।

उसके बाद, सुबह 4 बजे की उन आवाजों के अलावा और कुछ खास नहीं हुआ जो लगभग जर्मन शैली की तरह नियमित रूप से दोहराई जाती रहीं।

लेकिन श्रीमती वाल्श ने गौर किया कि अटारी का दरवाजा हमेशा खुला रहता था। दूसरी मंजिल से अटारी तक जाने वाली सीढ़ियों में एक पायदान ऊपर उठता है। सीढ़ियों के नीचे उन्हें एक खोखली जगह मिली! उन्होंने सोचा, शायद छिपे हुए खजाने की कहानियों में कुछ सच्चाई हो सकती है। वह गुप्त जगह कभी पूरी तरह बंद थी, लेकिन उसका ताला बहुत पहले गायब हो चुका था।

एक बार जब श्री वाल्श को फ्लू हो गया था, तो उन्होंने बगल वाले कमरे का इस्तेमाल किया। श्रीमती वाल्श आराम कर रही थीं, तभी उन्होंने अटारी का दरवाजा चार बार खुलते और बंद होते सुना और सोचा कि उनके पति बाथरूम गए हैं। लेकिन उस रात वे सिर्फ एक बार ही उठे थे। बाकी तीन बार कोई और व्यक्ति उठा था, जिसे वे देख नहीं सकते थे।

समय बीतने के साथ, श्रीमती वाल्श ने हर घटना का ब्यौरा लिखना शुरू कर दिया, डर से ज़्यादा एक शौक के तौर पर। उन्हें और उनके पति को, और जल्द ही बच्चों को भी, अटारी की ओर जाते कदमों की आहट सुनाई देती रही, जो अब खाली हो चुकी उस जगह पर रुक जाती थी। हर अगली सुबह, पिछली रात को मज़बूती से बंद किया गया अटारी का दरवाज़ा खुला मिलता था। यह इतना नियमित हो गया था कि उन्होंने असली अपराधियों की तलाश करना छोड़ दिया। वे अब जान चुके थे कि उन्हें कोई नहीं मिलेगा।

एक सुबह वह अटारी में गई और दरवाज़ा बंद कर लिया, फिर रसोई में नाश्ता बनाने का काम जारी रखा। अचानक उसे अटारी में वापस जाने की एक अजीब सी इच्छा हुई। मानो किसी बाहरी शक्ति द्वारा निर्देशित होकर, उसने रोटी काटने वाला चाकू गिरा दिया और सीढ़ियों से ऊपर चली गई। दरवाज़ा फिर से खुला था, और वह उससे होकर एक छोटे से कमरे में दाखिल हुई जिसका इस्तेमाल उन्होंने भंडारण के अलावा कभी नहीं किया था। वह कमरा फर्नीचर से भरा हुआ था, और सारा फर्नीचर मजबूती से बंद था।

जब वह छोटे से कमरे में दाखिल हुई तो उसे आश्चर्य हुआ कि सब कुछ अस्त-व्यस्त था। एक तरफ रखी भारी दराजों वाली अलमारी की एक दराज पूरी तरह खुली हुई थी। वह उसके पास गई और देखा कि वह योजनाओं के खाकों से भरी हुई थी। उसने उनमें से एक खाका उठाया, मानो किसी के कहने पर, और खाके के निचले भाग में "हेनरी गेहम" नाम लिखा हुआ देखा।

वह अटारी में एक छिपे हुए दरवाजे की तलाश कर रही थी, लेकिन उसे वह कभी नहीं मिला। क्या यह सब महज़ अफवाह थी और वास्तव में कोई छिपा हुआ दरवाजा था ही नहीं?

इस समय, घर के नक्शे उसके हाथों में थे, उसे लगा कि उसे अटारी में किसी खास जगह पर देखना चाहिए। जैसे ही उसने देखा, उसने पाया कि उस दीवार के पास रखा फर्नीचर हाल ही में हटाया गया था। ज़ाहिर है, सालों से कोई भी इंसान वहाँ नहीं गया था, और इस बात से उसे कोई तसल्ली नहीं मिली। लेकिन जब उसने गौर से देखा, तो उसे पता चला कि जहाँ पहले एक बड़ा सा फर्नीचर रखा था, वहाँ अब एक दरवाज़ा था!

फर्नीचर किसने हटाया था?

वहाँ खड़े-खड़े ही उसे अपनी पीठ में सिहरन सी महसूस हुई। यह पहली बार नहीं था जब उसे ठंड लगी थी। कई बार, मानो कहीं से भी अचानक ठंडी हवा का झोंका उसे बेडरूम या रसोई में घेर लेता था। अब जब वह इसके बारे में सोच रही थी, तो उसे आश्चर्य हुआ कि उसने उस हवा के स्रोत की जाँच क्यों नहीं की, बल्कि उसे अनदेखा कर दिया। शायद वह परिणाम जानना ही नहीं चाहती थी।

अटारी में घटी घटनाएँ 1 मार्च, 1966 को हुईं। अगले दिन, वह दालान में लगातार कदमों की आहट से काफी जल्दी जाग गई। कोई इधर-उधर चल रहा था, कोई ऐसा व्यक्ति जिसे वह देख नहीं पा रही थी।

वह उठी। उसी क्षण, उसे अपनी माँ के पुराने संगीत बॉक्स को बाहर निकालने का आदेश सुनकर बहुत आश्चर्य हुआ। बॉक्स कई वर्षों से नहीं बजा था और वास्तव में खराब हो चुका था। उसने बॉक्स खोला और वह बजने लगा। तब से वह ठीक से चल रहा है। इसे किसने ठीक किया था और क्या यह किसी के लिए इसके ब्लूप्रिंट देखने का इनाम था?

5 मार्च को, सुबह 4 बजे, यानी अंधेरी रात में, वह एक बार फिर गहरी नींद से जाग उठी, लेकिन घर में सन्नाटा पसरा हुआ था, अजीब तरह से। उसे समझ नहीं आ रहा था कि वह क्यों

जाग गई। फिर भी उसने नीचे जाकर देखने का फैसला किया। डाइनिंग रूम में, जो ब्रेकफ्रंट उसने पिछली रात बंद करके छोड़ा था, वह खुला हुआ था। एक दराज में रखी छोटी-छोटी चम्मचें किसी अनजान हाथ से इधर-उधर कर दी गई थीं! एक पौधे की एक टहनी टूटकर पास ही मेज पर पड़ी थी। चूंकि कुत्ता कमरे में नहीं था, इसलिए ऐसा करने वाला कोई नहीं था।

अगले दिन, सुबह चार बजे उनकी नींद फिर से टूट गई। इस बार उनके अंतर्वस्त्रों वाली दराज पूरी तरह से हिल गई थी। अचानक उन्हें एहसास हुआ कि उनकी दस वर्षीय बेटी ने शायद सच ही कहा था जब उसने बताया था कि उनकी मां के शयनकक्ष में "कोई" अलमारी खोल और बंद कर रहा था, जबकि श्रीमती वाल्श को पक्का पता था कि वह कमरे में नहीं थीं।

अब उसे समझ आ गया कि मामला क्या था। जिस शयनकक्ष में वह सो रही थी, वह हेनरी गेहम का कमरा था। अगर उसने उसमें कुछ छिपाया होता, तो शायद वह उसकी अलमारी को अपना समझकर अभी भी खोज रहा होता।

8 मार्च को श्रीमती वाल्श तहखाने में थीं और उनकी दस वर्षीय बेटी वेंडी बगीचे में खेल रही थी। घर बिल्कुल खाली था।

अचानक, उसे भोजन कक्ष और रसोई में एक बच्चे के बेतहाशा दौड़ने की आवाज़ सुनाई दी। उसने सोचा, ज़रूर सैंडी होगी, और उसे आवाज़ दी। कोई जवाब नहीं मिला। वह जाँच करने के लिए ऊपर गई और घर को खाली और शांत पाया। फिर भी, कदमों की आवाज़ एक बच्चे की थी, वैसी नहीं जैसी उसने अक्सर सीढ़ियों और अटारी में सुनी थी। तो अब वहाँ दो लोग थे, उसने काँपते हुए सोचा।

तभी उसे सोफे के नीचे मिले उस नन्हे बच्चे के बाल याद आए, जो उन्हें घर में आने के कुछ समय बाद ही मिले थे। उस समय उसने इसे मामूली समझकर नज़रअंदाज़ कर दिया था, जबकि घर में कोई भी सुनहरे बालों वाला व्यक्ति नहीं रहता था। बाल बहुत बारीक थे, साफ तौर पर सुनहरे थे और किसी बहुत छोटे बच्चे के बाल लग रहे थे।

“जैसे देवदूत के बाल,” उसने सोचा और आश्चर्य किया। पाँच दिन बाद मिस्टर वॉल्श को छोड़कर बाकी सब लोग चर्च गए हुए थे। वह अभी भी बिस्तर पर थे, लेकिन परिवार के चर्च जाने के बाद वह नीचे आए और रसोई में नाश्ता बनाने लगे। उसी क्षण, उन्हें लगा कि वेंडी ऊपर की ओर दौड़ रही है।

उन्हें लगा कि बच्चा शायद ठीक नहीं है और पीछे छूट गया है। चिंतित होकर वे यह देखने के लिए ऊपर गए कि क्या बात है। बच्चा वहाँ नहीं था। उन्होंने सिर हिलाया और नाश्ता करने लौट आए, अब उन्हें कम यकीन था कि घर में कुछ गड़बड़ तो नहीं है।

बाकी लोगों के लौटने पर उन्होंने इस पर चर्चा की और इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि घर में कम से कम दो, संभवतः तीन, आत्माओं का वास था। घर काफी बड़ा था, लेकिन जिन लोगों को देखा नहीं जा सकता उनके साथ घर साझा करना रहने का सबसे व्यावहारिक तरीका नहीं था।

कुछ दिनों बाद श्रीमती वाल्श फिर तहखाने में कपड़े धो रही थीं। तहखाने के दूसरी तरफ छत से लटका हुआ एक स्वेटर अचानक हैंगर समेत नीचे गिर गया और उनके सामने आ गिरा। खिड़कियाँ मज़बूती से बंद थीं और हवा भी नहीं चल रही थी। श्रीमती वाल्श को सबसे ज़्यादा आश्चर्य स्वेटर के गिरने के तरीके से हुआ। वह गुरुत्वाकर्षण के बल से सीधा नहीं गिरा, बल्कि किसी अदृश्य शक्ति द्वारा थामे हुए, मानो किसी नाव की तरह नीचे आया हो।

“श्रीमती गेहम,” उसने खुद को कहते हुए सुना। “आपने ऐसा क्यों किया?”

वहां वह एक भूत से बात कर रही थी।

वैसे, तुम्हारा पहला नाम क्या है? उसने खुद को सोचते हुए सुना।

अचानक उसके मन में एक विपरीत विचार कौंध गया। मेरा नाम मैरी है।

16 मार्च को वह सुबह जल्दी उठी और उसे पक्का एहसास हुआ कि वह अकेली नहीं है। हालाँकि उसे कोई दिखाई नहीं दिया, पर उसे पता था कि ऊपर कोई है। फिर भी उसने इस बार बिस्तर पर ही रहने का फैसला किया। सुबह सबसे पहले, जैसे ही उजाला हुआ, वह सीढ़ियों से ऊपर अटारी में गई। उस छोटे से कमरे में सारा फर्नीचर अस्त-व्यस्त था! फिर उसे याद आया कि रात में उसे एक धीमी सी आवाज़ सुनाई दी थी।

एक संदूक को कमरे के बीचोंबीच लाकर खोल दिया गया था; एक गुड़िया का घर एक शेल्फ से हटाकर काफी नीचे वाली शेल्फ पर रख दिया गया था, और एक औजारों का डिब्बा, जिसे उसने पहले कभी नहीं देखा था, अचानक कमरे में प्रकट हो गया था। कमरे की पुरानी धूल में नए निशान थे। वे किसी बच्चे की लिखावट जैसे लग रहे थे...

श्रीमती वाल्श ने उस टेढ़ी-मेढ़ी लिखावट को देखा। ऐसा लग रहा था मानो किसी ने धूल में नाम लिखने की बेतरतीब कोशिश की हो। उन्होंने उसे समझने की कोशिश की, लेकिन समझ नहीं पाईं। अगले दिन वह कमरे में वापस गईं। वहाँ कोई नहीं था। बच्चे अब ऊपर जाने से बहुत डरने लगे थे।

वह टेढ़ी-मेढ़ी लिखावट अभी भी वहीं थी, और उससे थोड़ी ही दूर धूल में किसी ने हाथ का निशान बनाया था। एक छोटे बच्चे का हाथ!

श्रीमती वाल्श जब बच्चे के हाथ के निशान को देख रही थीं, तो उन्हें याद आया कि एक महीने पहले उन्होंने घर में कहीं से बच्चे के रोने की आवाज़ सुनी थी। उन्हें पता था कि उनके बच्चों में से कोई भी रोने का कारण नहीं था, फिर भी रोना जारी रहा। फिर एक और मौके पर, बच्चों द्वारा की जाने वाली गुनगुनाने जैसी आवाज़ ने उनका ध्यान खींचा, लेकिन वह उसका कोई प्रत्यक्ष स्रोत नहीं ढूंढ पाईं।

दो दिन बाद, इन सब बातों से अभी भी हैरान, वह फिर से घर में अकेली थी। दोपहर का समय था, और उसे कई लोगों की दबी हुई आवाज़ें साफ़ सुनाई दे रही थीं। वह सीढ़ियों से दौड़कर अटारी में गई—क्योंकि उसे लग रहा था कि ज़्यादातर घटनाएँ यहीं से शुरू हो रही थीं—और वाकई अटारी का दरवाज़ा, जिसे उसने पहले बंद किया था, फिर से खुला हुआ था।

अगली सुबह तड़के श्रीमती वाल्श ने अटारी में किसी को बच्चे को पुकारते हुए सुना। ऊपर कौन था? उन्होंने यह सुनिश्चित किया कि वाल्श परिवार का कोई सदस्य तो नहीं था। धीरे-धीरे उन्हें एहसास हुआ कि अतीत का कोई परिवार समय के बीतने से अनभिज्ञ था और यह घर अब उनका नहीं था। लेकिन उन्हें यह बात कैसे बताई जाए?

परिवार भी काफी व्यस्त रहता था। एक सुबह 5 बजे टाइपराइटर पर काम चल रहा था। घर में इकलौता टाइपराइटर वेंडी के कमरे में था। क्या उसने इसका इस्तेमाल किया था? नहीं, लेकिन उस सुबह उसने देखा कि किसी ने उसके टाइपराइटर का इस्तेमाल किया था। उसका ढक्कन हमेशा की तरह नहीं लगा था। एक गुड़िया जो उसने पिछली रात मशीन के पास रखी थी, अब उसके ऊपर रखी थी।

उस रात, जब परिवार रसोई में खाना खा रहा था, अचानक किसी अदृश्य शक्ति ने बैठक की बत्तियाँ जला दीं। एक ट्रे से चमकीले रैपर वाली कैंडी के टुकड़े गायब हो गए और फिर कभी नहीं मिले।

घटनाओं के निरंतर बदलते क्रम के कारण कुत्ते में भी बदलाव आने लगे। वह तहखाने में सोने से इनकार करने लगी और उन जगहों के पास जाने से भी कतराने लगी जहाँ ज्यादातर मानसिक घटनाएं घटी थीं। सात साल की वह कुतिया, जो कभी एक शांत उपनगरीय कुत्ते का आदर्श उदाहरण थी, जल्द ही एक मनोरोगी, भयभीत और अपने पूर्व स्वरूप की परछाई में बदल गई।

वॉल्श परिवार के लिए यह सब कुछ हद से ज्यादा हो गया था।

श्री गेहम की आत्मा जिस खजाने में भटकती थी, वह निस्संदेह बहुत पहले किसी पूर्व किरायेदार या अजनबी द्वारा खोजकर ले जाया गया होगा। जहाँ तक घर की बात है, अगर भूत उसे चाहते तो ले जा सकते थे। वॉल्श परिवार ने शुरू से अपना नया घर बनाने का फैसला किया। अब उन्हें पुराने घरों में नहीं रहना था। इस तरह वे पिछले मालिकों के भूतों से बच जाते।

उन्होंने घर के मालिक को अपने स्थानांतरित होने के इरादे के बारे में सूचित किया और जैसे ही नया घर तैयार हुआ, वे वहां से चले गए।

आखिरी दिन भी सीढ़ियों पर तेजी से चढ़ते कदमों की आवाज सुनाई दे रही थी।

प्लांट एवेन्यू की गपशप गेहम परिवार की कहानी में एक और अध्याय जोड़ सकती है, लेकिन अटारी में बैठी उस उदास छोटी बच्ची के पास अब कोई खेलने वाला साथी नहीं होगा। भले ही वे उसे देख न सकें, लेकिन बच्चे जानते थे कि वह वहीं है।

और वास्तव में एक भूत के लिए बस यही एक उम्मीद हो सकती है।

* 50

व्हेली हाउस के भूत

सैन डिएगो के व्हेली हाउस में भूतों के बारे में मुझे पहली बार सन् 1963 में मर्ले गोल्ड के ज्योतिषीय समाचार पत्र कॉस्मिक स्टार में छपे एक लेख से पता चला। लेख में उन लोगों के बारे में ज़्यादा जानकारी नहीं थी जिन्होंने घर में कुछ असामान्य अनुभव किए थे, लेकिन उसमें रहस्यमय कदमों की आहट, ठंडी हवा के झोंके, किसी के कंधे पर ताक-झांक करने वाली अदृश्य शक्तियों और ऐसी जगह इत्र की खुशबू का ज़िक्र था जहाँ ऐसी कोई गंध नहीं हो सकती थी—संक्षेप में, कई तरह की रहस्यमय घटनाओं का वर्णन था। मेरी जिज्ञासा बढ़ गई। ज़ाहिर है, जब भूतिया घटनाएं शुरू हुईं, तब क्यूरेटर, श्री और श्रीमती जेम्स रेडिंग, इमारत में कुछ बदलाव कर रहे थे।

जब मैं उस इलाके में था, तो मैंने इस मामले को एक संभावना के रूप में चिह्नित किया और अन्य मामलों की ओर मुड़ गया। फिर किस्मत ने अपना खेल खेला और मुझे सैन डिएगो के करीब ले आया।

मैं रेगिस फिलबिन के नेटवर्क टेलीविजन शो में आया था और हमारे बीच गहरी दोस्ती हो गई थी। जब रेगिस सैन डिएगो चले गए और वहां अपना खुद का कार्यक्रम शुरू किया, तो उन्होंने मुझे अपने कार्यक्रम में अतिथि के रूप में आमंत्रित किया।

हमने पहले ही सैन डिएगो में एक घर के बारे में बात की थी जिसे वह जानता था और चाहता था कि मैं उसके साथ उसकी जाँच करूँ; पता चला कि वह वही व्हेली हाउस था। आखिरकार हमने 25 जून की रात को उस भूतिया घर में जाने और सिबिल लीक के साथ एक ट्रान्स सेशन फिल्माने का फैसला किया, और फिर अगले दिन रेगिस के शो में इस बारे में बात करने का तय किया।

सिबिल लीक कुछ साल पहले इंग्लैंड से आई थीं, टेलीविजन वृत्तचित्रों की निर्माता और लेखिका के रूप में एक सफल करियर के बाद और पशु जीवन और प्राचीन वस्तुओं पर कई पुस्तकों की लेखिका के रूप में। एक समय वह दक्षिणी इंग्लैंड के अपने प्रिय न्यू फॉरेस्ट क्षेत्र में एक प्राचीन वस्तुओं की दुकान चलाती थीं, लेकिन उनका नाम अमेरिकियों के ध्यान में मुख्य रूप से उनकी धार्मिक मान्यताओं के कारण आया: संयोग से वह एक चुड़ैल थीं। बेशक, हैलोवीन वाली चुड़ैल नहीं, बल्कि "पुराने धर्म" की अनुयायी, जो ईसाई धर्म से पहले का ड्रुइडिक संप्रदाय है जिसका अभ्यास अभी भी दुनिया के कई हिस्सों में किया जाता है। जादू-

टोने में उनकी व्यक्तिगत भागीदारी ने मुझे उनकी समाधि माध्यम के रूप में अद्भुत क्षमताओं से कम रुचिकर लगी। मैंने उनका परीक्षण किया और पाया कि वह "व्यक्तित्व से पूर्ण रूप से अलग होने" में सक्षम हैं, जो अच्छे समाधि कार्य के लिए आवश्यक है। वह मेरे प्रोत्साहन पर "अपने शरीर से बाहर" निकल सकती हैं, और उस वातावरण में मौजूद किसी भी व्यक्तित्व को अपना सकती हैं। इसके बाद, उसे कुछ भी याद नहीं रहेगा और वह सहजता से वहीं से बातचीत जारी रखेगी जहाँ हमने समाधि की अवस्था से पहले छोड़ा था—भले ही दो घंटे बीत चुके हों! सिबिल लीक अपनी असाधारण आध्यात्मिक शक्ति का उपयोग केवल मेरे शोध के लिए करती हैं और अपने "सामान्य" कार्यों को लेखन और व्यवसाय के क्षेत्र तक ही सीमित रखती हैं।

हम रेगिस फिलबिन से पहले धूप से भरे सैन डिएगो पहुँच गए और सैन डिएगो बंदरगाह में फैले एक प्रायद्वीप पर स्थित एक रोमांटिक और आलीशान मोटल, हाफ मून इन में पूरा दिन आराम से बिताया। रेगिस ने हमारे लिए इससे बेहतर जगह नहीं चुन सकते थे—ऐसा लग रहा था जैसे हम हवाई में हों। हमने स्थानीय कैलिफ़ोर्निया पैरासाइकोलॉजी फ़ाउंडेशन की अध्यक्ष और मुख्य संवेदनशील, के स्टर्नर के साथ भोजन किया। वह एक आकर्षक और जानकार महिला थीं, जो भूतिया व्हेली हाउस जा चुकी थीं, लेकिन ज़ाहिर है उन्होंने सिबिल की उपस्थिति के बारे में बात नहीं की। मेरी नीति का सम्मान करते हुए उन्होंने तब तक इंतज़ार किया जब तक सिबिल चली नहीं गईं। फिर उन्होंने मुझे व्हेली हाउस में अपने अनुभवों के बारे में बताया, जहाँ उन्होंने कई बार किसी आत्मा की उपस्थिति महसूस की थी। मैंने उन्हें धन्यवाद दिया और शुरू से अपनी खुद की जाँच करने का फैसला किया।

मेरा पहला कदम जून रीडिंग से संपर्क करना था, जो न केवल उस घर की निदेशक थीं बल्कि उसकी इतिहासकार भी थीं। उन्होंने मुझसे कहा कि मैं घर में दैवीय शक्तियों से जो भी जानकारी प्राप्त करूं, उसे गोपनीय रखूं। मैं इसका वादा तो नहीं कर सका, लेकिन मैंने सामग्री को सम्मानपूर्वक और अनावश्यक सनसनीखेज बनाए बिना प्रस्तुत करने का वादा किया, और मुझे उम्मीद है कि मैंने श्रीमती रीडिंग को ज्यादा निराश नहीं किया है। मेरे पाठकों को वे सभी तथ्य जानने का अधिकार है जो मुझे प्राप्त हुए हैं।

श्रीमती रीडिंग स्वयं इस ऐतिहासिक भवन के बारे में एक पुस्तिका की लेखिका हैं, और इसके विकास का संक्षिप्त विवरण आगंतुकों को दिए जाने वाले एक ब्रोशर में भी मिलता है, जो पूरे सप्ताह देश के हर हिस्से से आते रहते हैं। मैं ब्रोशर से उद्धृत कर रहा हूँ।

सैन डिएगो के ओल्ड टाउन के केंद्र में स्थित व्हेली हाउस—जिसे पुनर्स्थापित, पुनर्निर्मित और जनता के देखने के लिए खोला गया है—प्रारंभिक कैलिफोर्नियाई इमारतों के बेहतरीन मौजूदा उदाहरणों में से एक का प्रतिनिधित्व करता है।

दो मंजिला हवेली का मूल निर्माण 6 मई, 1856 को सैन डिएगो के अग्रणी थॉमस व्हेली द्वारा शुरू किया गया था। इमारत 10 मई, 1857 को बनकर तैयार हुई। संरचना में प्रयुक्त ईंटें एक मिट्टी के भट्ठे और भट्टी से आई थीं - जो सैन डिएगो का पहला ईंट कारखाना था - जिसे थॉमस व्हेली ने अपने प्रस्तावित घर के दक्षिण-पश्चिम में 300 गज की दूरी पर स्थापित किया था।

पुराने सैन डिएगो का अधिकांश सामाजिक जीवन इसी भव्य घर के इर्द-गिर्द केंद्रित था। बाद में इस घर का उपयोग एक यात्रा करने वाली मंडली, "द टैनर ट्रूप" के लिए थिएटर के रूप में किया गया और एक समय यह सैन डिएगो काउंटी कोर्ट हाउस के रूप में भी कार्य करता था।

व्हेली हाउस का निर्माण सैन डिएगो एवेन्यू और हार्नी स्ट्रीट के कोने पर, 150 फीट गुणा 217 फीट के भूखंड पर किया गया था, जो 25 सितंबर, 1855 को व्हेली द्वारा खरीदी गई 8.5 एकड़ भूमि का हिस्सा था। उत्तरी कमरा मूल रूप से बिना फर्श वाला अनाज भंडार था, लेकिन 12 अगस्त, 1869 को काउंटी कोर्ट हाउस बनने पर इसका पुनर्निर्माण किया गया था।

नीचे की मंजिल पर सुरुचिपूर्ण ढंग से सजा हुआ बैठक कक्ष, संगीत कक्ष, पुस्तकालय और संलग्न भवन है, जो पहले काउंटी कोर्ट हाउस के रूप में इस्तेमाल होता था। ऊपर की मंजिल पर चार शयनकक्ष हैं, जिनमें से दो को "द टैनर ट्रूप" को नाट्य प्रस्तुतियों के लिए किराए पर दिया गया था।

व्हेली हाउस से जुड़ी शायद सबसे महत्वपूर्ण ऐतिहासिक घटना 31 मार्च, 1871 की रात को काउंटी अदालत के अभिलेखों को चुपके से वहां से "न्यू टाउन" में स्थानांतरित करना था, जो वर्तमान में सैन डिएगो शहर का केंद्र है। अदालत भवन को "न्यू टाउन" में कानूनी रूप से स्थानांतरित करने से भी रोकने की धमकियों के बावजूद, तत्कालीन काउंटी क्लर्क और

रिकॉर्डर कर्नल चालमर्स स्कॉट और उनके साथियों ने अंधेरे की आड़ में काउंटी अभिलेखों को हटा दिया और उन्हें 6 वीं और जी सड़कों पर स्थित "न्यू टाउन" की एक इमारत में ले गए।

अगर सैन डिएगो के कुछ निवासियों ने 1956 में सैन डिएगो काउंटी के ऐतिहासिक तीर्थस्थल फाउंडेशन का गठन करके और जमीन और इमारत को खरीदकर इसके विध्वंस को नहीं रोका होता, तो व्हेली हाउस आज मौजूद नहीं होता।

बाद में, समूह ने सैन डिएगो काउंटी को इस बात के लिए राजी कर लिया कि घर को एक ऐतिहासिक संग्रहालय के रूप में संरक्षित किया जाना चाहिए और इसे इसके शुरुआती दिनों की भव्यता में बहाल किया जाना चाहिए। यह कार्य फाउंडेशन के सदस्यों सहित एक सलाहकार समिति की देखरेख और मार्गदर्शन में किया गया, जो आज व्हेली हाउस को एक ऐतिहासिक संग्रहालय के रूप में बनाए रखता है।

अधिकांश साज-सामान, जो व्हेली के समय में उपयोग में होने के रूप में प्रमाणित हैं, सैन डिएगो काउंटी के अन्य शुरुआती घरों से हैं और इच्छुक नागरिकों द्वारा दान किए गए थे।

इस घर में रहने वाली अंतिम व्हेली सदस्य कोरिन लिलियन व्हेली थीं, जो व्हेली के छह बच्चों में सबसे छोटी थीं। उनका निधन 89 वर्ष की आयु में 1953 में हुआ। व्हेली का निधन 14 दिसंबर, 1890 को 67 वर्ष की आयु में हुआ। उन्हें सैन डिएगो के माउंट होप कब्रिस्तान में दफनाया गया है, साथ ही उनकी पत्नी अन्ना को भी, जो 24 फरवरी, 1913 तक जीवित रहीं।

जब यह स्पष्ट हो गया कि भूत-प्रेत की घटना की गहन जांच की जाएगी, और सैन डिएगो के सभी लोग टेलीविजन और समाचार पत्रों के माध्यम से इसके बारे में जान सकेंगे, तो उत्साह चरम पर पहुंच गया।

श्रीमती रीडिंग, रेगिस फिलबिन और मेरे साथ लगातार संपर्क में रहीं, क्योंकि भूतों को अपने ऊपर होने वाले संभावित खतरे का आभास हो जाता है—और यह खतरा जल्द ही सामने आ गया। 24 मई को घर के अंदर की गतिविधियाँ काफी बढ़ चुकी थीं; ये गतिविधियाँ पहले सुनी गई आवाज़ों जैसी ही थीं।

क्या भूत बेचैन हो रहा था?

मैंने श्रीमती रीडिंग से घर के भीतर घटी सभी घटनाओं का, शुरू से लेकर अंत तक, सटीक विवरण तैयार करने और आगे की पूछताछ के लिए यथासंभव अधिक से अधिक गवाहों को इकट्ठा करने के लिए कहा था।

इनमें से ज़्यादातर लोग घर के जीर्णोद्धार के बाद से पिछले पाँच वर्षों में अंशकालिक गाइड के रूप में काम कर रहे थे। अब तक जो घटनाएँ घटी थीं, या कम से कम देखी गई थीं, वे मुख्य रूप से सुबह 10 बजे से शाम 5:30 बजे के बीच घटी थीं, जब घर आगंतुकों के लिए बंद हो जाता है। रात में वहाँ कोई नहीं होता, लेकिन एक प्रभावी चोर अलार्म सिस्टम चालू है ताकि असली घुसपैठिए चुपके से अंदर न घुस सकें। भूतों के मामले में यह सिस्टम अप्रभावी है, जैसा कि हमें जल्द ही पता चलने वाला था!

अब मैं निदेशक की स्वयं की रिपोर्ट उद्धृत करूंगा। यह गवाहों की सटीकता और योग्यता की पुष्टि करती है।

व्हेली हाउस—सैन डिएगो, कैलिफोर्निया

व्हेली हाउस में देखी गई घटनाएँ

आगंतुकों द्वारा

9 अक्टूबर, 1960—डॉ. और श्रीमती किर्बे, न्यू वेस्टमिंस्टर, ब्रिटिश कोलंबिया, कनाडा, दोपहर 1:30 से 2:30 बजे तक। (वे उस समय न्यू वेस्टमिंस्टर के मेडिकल एसोसिएशन के निदेशक थे।)

जब डॉ. किर्बी और उनकी पत्नी घर में थे, तो मेरी पत्नी को एक प्रदर्शनी में रखी चीज़ों में दिलचस्पी हो गई और उन्होंने पूछा कि क्या वह अकेले ही उसे देख सकती हैं, क्योंकि वह विक्टोरियन युग से परिचित थीं और उन्हें उस परिवेश में बहुत सहज महसूस हो रहा था। इसलिए, मैं डॉक्टर के साथ नीचे ही रुका रहा और हम दोनों ने प्रारंभिक चिकित्सकों और चिकित्सा पद्धतियों के बारे में चर्चा की।

जब श्रीमती किर्बी प्रदर्शन कक्ष में लौटीं, तो उन्होंने झिझकते हुए मुझसे पूछा कि क्या मैंने ऊपर के कमरे में कुछ असामान्य देखा है। मैंने उनसे पूछा कि उन्होंने क्या देखा था। उन्होंने बताया कि जब वह ऊपर जाने लगीं, तो उन्हें अपने सिर के ऊपर से हवा का झोंका महसूस हुआ, और हालाँकि उन्हें कुछ दिखाई नहीं दिया, लेकिन उन्हें अपने ऊपर एक दबाव महसूस हुआ, जिससे उन्हें ऊपर जाना मुश्किल लग रहा था। जब उन्होंने कमरों में देखा, तो उन्हें ऐसा लगा कि कोई उनके पीछे खड़ा है, वास्तव में इतना करीब कि उन्होंने देखने के लिए कई बार पीछे मुड़कर देखा। उन्होंने कहा कि उन्हें लगा कि कोई उनके कंधे पर थपथपाएगा। जब वह नीचे आकर हमारे साथ शामिल हुईं, तो हम सभी अदालत कक्ष की ओर चल पड़े। जैसे ही हम अंदर गए, श्रीमती किर्बी फिर से मेरी ओर मुड़ीं और पूछा कि क्या मुझे पता है कि अदालत कक्ष में कोई रहता है। उन्होंने बेलिफ की मेज की ओर इशारा करते हुए कहा, "ठीक वहीं।" मैंने उनसे पूछा कि क्या वह व्यक्ति इतना स्पष्ट था कि वह उसका वर्णन कर सकें, और उन्होंने कहा:

मुझे सांवले रंग की एक छोटी सी महिला दिखाई दे रही है। उसने फर्श तक पहुँचने वाली एक लंबी, घेरदार स्कर्ट पहनी हुई है। स्कर्ट कैलिको या गिंघम की लग रही है, जिस पर बारीक प्रिंट है। उसके सिर पर एक टोपी है, उसके बाल और आँखें गहरे रंग की हैं और उसने अपने छिदे हुए कानों में सोने की बालियाँ पहनी हुई हैं। ऐसा लगता है कि वह इसी कमरे में रहती है, यहीं पर उसका निवास है, और मुझे ऐसा महसूस हो रहा है कि हम उसकी निजता में दखल दे रहे हैं।

श्रीमती किर्बी ने अपना वर्णन समाप्त करते हुए मुझसे पूछा कि क्या व्हेली परिवार में कोई सांवला है, जिस पर मैंने उत्तर दिया, "नहीं।"

मेरी जानकारी के अनुसार, किसी आगंतुक द्वारा प्रेत के बारे में दिया गया यह एकमात्र विवरण था, और श्रीमती किर्बी ही एकमात्र ऐसी व्यक्ति थीं जिन्होंने अदालत के संदर्भ में इस तथ्य का उल्लेख किया। हालांकि, कई आगंतुकों ने इस कमरे के वातावरण पर टिप्पणी की है, और कमरे में काम करने की कोशिश कर रहे कुछ लोगों ने यहां ध्यान केंद्रित करने में होने वाली कठिनाई का जिक्र किया है।

आज एक भूतिया संग्रहालय के रूप में मशहूर व्हेली हाउस कई पर्यटकों को आकर्षित करता है।

व्हेली हाउस में कार्यरत व्यक्तियों द्वारा

अप्रैल, 1960, सुबह 10:00 बजे। मैं स्वयं, जून ए. रीडिंग, 3447 काइट स्ट्रीट। कदमों की आवाज—ऊपरी मंजिल में।

किसी के चलने की यह आवाज़ मैंने पहली बार सुबह सुनी, संग्रहालय के जनता के लिए खुलने से एक सप्ताह पहले। काउंटी के कर्मचारी अभी भी हॉल में कुछ अलमारियों को पेंट कर रहे थे, और इस सप्ताह के दौरान वे अक्सर मुझसे पहले आ जाते थे, इसलिए मेरे आने पर उन्हें पहले से ही काम करते हुए पाना कोई असामान्य बात नहीं थी।

आज सुबह, मैं नीचे के कमरों को सजाने की योजना बना रही थी, इसलिए जल्दी से अंदर गई और हॉल में जाकर पीछे का दरवाजा खोला, ताकि फर्नीचर से भरे ट्रकों का इंतज़ार कर सकूँ। दो आदमी मेरे पीछे-पीछे हॉल में आए; वे फर्नीचर लगाने में मेरी मदद करने वाले थे। जैसे ही मैंने पीछे का दरवाजा खोलने के लिए हाथ बढ़ाया, मुझे किसी के बेडरूम के फर्श पर चलने की आवाज़ सुनाई दी। मैंने ध्यान नहीं दिया, यह सोचकर कि कोई कामगार होगा। लेकिन उन आदमियों ने, जिन्होंने उसी समय आवाज़ सुनी, ज़ोर देकर कहा कि मैं ऊपर जाकर पता लगाऊँ कि घर में कौन है। तो, आवाज़ लगाते हुए, मैं सीढ़ियाँ चढ़ने लगी। आधे रास्ते में, मुझे कोई रोशनी नहीं दिखाई दी, और खिड़कियों के बाहरी शटर अभी भी बंद थे। मैंने अपने पीछे आए आदमियों से कुछ कहा, और सीढ़ियाँ उतरने के लिए मुड़ गई। उनमें से एक आदमी ने मुझसे भूतों के आने और सब कुछ देखने के बारे में मज़ाक किया, और हम तुरंत उस बात को भूल गए।

हालांकि, चलने की आवाज़ आती रही। और अगले छह महीनों तक मैं यह देखने के लिए बार-बार ऊपर जाया करता रहा कि कहीं कोई ऊपर है या नहीं। ऐसा दिन में होता था, कभी-कभी जब मेहमान घर के दूसरे हिस्सों में होते थे, तो कभी-कभी जब मैं अपने डेस्क पर चिट्ठियों या किताबों का काम निपटाने में व्यस्त होता था। कभी-कभी ऐसा लगता था जैसे कोई सीढ़ियों से नीचे उतर रहा हो, लेकिन पहली मंज़िल तक पहुँचने से पहले ही आवाज़ गायब हो जाती थी। सितंबर 1962 में, इस घर के बारे में सैन डिएगो इवनिंग ट्रिब्यून में एक समाचार लेख छपा था, और यही कहानी सितंबर 1962 के फेट पत्रिका के अंक में भी दोबारा छपी थी।

* * *

अक्टूबर और नवंबर 1962 में, घर के ऊपरी हिस्से की खिड़कियाँ बिना किसी कारण के खुलने लगीं। हमने सोचा कि इससे समस्या हल हो जाएगी, इसलिए हमने सामने वाले बेडरूम की तीन खिड़कियों पर क्षैतिज बोल्ट लगा दिए। हालाँकि, सबसे परेशान करने वाली बात तब हुई जब रात में हमारे घर का अलार्म बज उठा और पुलिस और सैन डिएगो बर्गलर अलार्म कंपनी ने हमें बुलाया ताकि वे आकर देखें कि घर में कोई सेंधमारी तो नहीं हुई है। आमतौर पर, हमें घर में कुछ भी गड़बड़ नहीं मिलता था। (इसका एक अपवाद तब था जब लगभग 1963 में बदमाशों ने घर में सेंधमारी की और रसोई के डिस्प्ले से सामान चोरी हो गया।)

सन् 1962 की शरद ऋतु में, अक्टूबर के आरंभिक वर्षों में, जब मैं कुछ स्कूली बच्चों (25 विद्यार्थियों की एक कक्षा) को व्याख्यान दे रहा था, तभी मुझे छत से किसी के चलने की आहट सुनाई दी। एक बच्चे ने बीच में ही टोकते हुए पूछा कि यह कैसी आवाज़ है। मैंने उनसे इजाज़त लेकर इमारत के बाहर, सड़क पर जाकर देखा कि क्या काउंटी के कर्मचारी छत की मरम्मत कर रहे हैं। जब मुझे तसल्ली हुई कि इमारत की छत पर कोई नहीं है, तो मैं अंदर गया और व्याख्यान जारी रखा।

ओल्ड टाउन के निवासी इस आवाज़ से परिचित हैं और उन्होंने मुझे बताया कि यह आवाज़ कई वर्षों से सुनाई देती रही है। मिस व्हेली, जो 85 वर्षों तक इस घर में रहीं, इस आवाज़ से वाकिफ थीं। उनका निधन 1953 में हुआ था।

श्रीमती ग्रेस बोर्किन, 2938 बीच स्ट्रीट, शनिवार, 14 दिसंबर, 1963, दोपहर - नीचे के हॉल में बैठकर दोपहर का भोजन कर रही थीं, तभी उन्होंने ऊपर से चलने की आवाज सुनी।

शनिवार, 10 जनवरी, 1964, दोपहर 1:30 बजे—वह गलियारे से गुज़री और सीढ़ियों की ओर देखा। ऊपरी मंज़िल पर उसे एक आकृति दिखाई दी—एक पुरुष की आकृति, फ्रॉक कोट और पैंट पहने हुए, जिसका चेहरा उससे दूर था, इसलिए वह उसे ठीक से देख नहीं पाई। अचानक वह आकृति गायब हो गई।

कर्मचारियों द्वारा पुनर्निर्मित शयनकक्षों में से एक की ली गई मानसिक छवि वाली तस्वीर

लॉरेंस रिवरॉल, जेफरसन स्ट्रीट, ओल्ड टाउन में रहते हैं। 5 जनवरी, 1963, दोपहर 12:30 बजे—वे घर में अकेले थे। उस समय कोई आगंतुक मौजूद नहीं था। सामने के हॉल में डेस्क पर बैठे हुए, उन्होंने संगीत और गायन की आवाज़ें सुनीं, जिन्हें एक महिला की आवाज़ के रूप में वर्णित किया गया। गीत "होम अगेन" था। यह लगभग 30 सेकंड तक चला।

7 जनवरी, 1963, दोपहर 1:30 बजे—ऊपरी मंजिल पर कुछ लोग आए हुए थे। नीचे, उन्हें ऑर्गन की धुन सुनाई दी, जो अदालत कक्ष से आती हुई प्रतीत हुई, जहाँ एक ऑर्गन रखा हुआ था। यह देखने के लिए वे कमरे में गए कि कहीं कोई उसे बजाने की कोशिश तो नहीं कर रहा है। ऑर्गन का ढक्कन बंद था। उन्हें कमरे में कोई नहीं दिखा।

19 जनवरी, 1963, शाम 5:15 बजे—संग्रहालय उस दिन बंद था। मैं नीचे के शटर बंद कर रहा था। तभी मुझे घर के ऊपरी हिस्से में, बताए गए इलाके में कदमों की आहट सुनाई दी। मैं ऊपर देखने गया, लेकिन कुछ नहीं मिला।

10-12 सितंबर, 1964—शाम को लगभग 5:15 बजे—एक अन्य कर्मचारी के साथ घर बंद करने में व्यस्त था। अंत में संगीत कक्ष में गया और पियानो बजाने लगा। अचानक उसे अपने हाथों पर एक अजीब सा दबाव महसूस हुआ, मानो किसी ने उसके हाथों को पकड़ रखा हो। उसने सामने वाले हॉल की ओर, मेज की दिशा में देखा, इस उम्मीद में कि वहाँ बैठे व्यक्ति का ध्यान उसकी ओर आकर्षित हो, तभी उसे घेरेदार स्कर्ट पहने एक दुबली-पतली महिला की आकृति दिखाई दी। धुंधली रोशनी में चेहरा साफ दिखाई नहीं दे रहा था। अचानक वह आकृति गायब हो गई।

जे. मिल्टन केलर, 4114 मिडलसेक्स ड्राइव, 22 सितंबर, 1964, दोपहर 2:00 बजे—वे बैठक कक्ष में आगंतुकों के साथ भ्रमण कर रहे थे, तभी अचानक उन्होंने और रेलिंग के पास जमा हुए लोगों ने देखा कि बैठक की मेज पर रखे दीपक से लटकती क्रिस्टल की बूंदें आगे-पीछे झूलने लगीं। यह केवल दीपक के एक तरफ हुआ। दूसरी बूंदें नहीं हिलीं। यह लगभग दो मिनट तक चलता रहा। 15 दिसंबर, 1964, शाम 5:15 बजे—वे अन्य लोगों के साथ घर बंद करने में लगे थे। शौचालय बंद करके लौटे, गलियारे में चले और चाबी लेकर मेरी ओर मुड़े, जबकि मैं सभी बत्तियाँ बंद करने वाले मुख्य स्विच तक पहुँचने के लिए गलियारे में आगे बढ़ा। मैंने स्विच खींचा और बाहर निकलने के लिए मुड़ने लगा, तभी उन्होंने कहा, "रुको, हिलना

मत, कुत्ते पर पैर रख दोगे!" उन्होंने मुझे स्थिर रहने का इशारा करते हुए अपने हाथ आगे बढ़ाए। इसी बीच, मैंने ठीक समय पर मुड़कर देखा तो हमारे बीच एक तेज़ रोशनी चमकी, और एक कुत्ते की पीठ जैसी कोई चीज़ गलियारे से भागती हुई डाइनिंग रूम में चली गई। मैंने अपना रवैया सामान्य रखने का फैसला किया और उसे थोड़ा चिढ़ाया कि वह मुझे डराने की कोशिश कर रहा था। उस समय सामने वाले हॉल में कुछ और लोग भी मौजूद थे, जो दरवाज़े पर हमारा इंतज़ार कर रहे थे, इसलिए उसने उनकी तरफ मुड़कर नाराज़गी भरे स्वर में कहा कि मैं उस पर विश्वास नहीं कर रही हूँ। तब मुझे एहसास हुआ कि उसने एक प्रेत देखा था, इसलिए मैंने उससे पूछा कि क्या वह उसका वर्णन कर सकता है। उसने बताया कि उसने एक चित्तीदार कुत्ता देखा, जो फॉक्स टेरियर जैसा था, जो अपने कान फड़फड़ाते हुए गलियारे से भागता हुआ डाइनिंग रूम में चला गया।

29 मई, 1965, दोपहर 2:30 बजे—मैं आगंतुकों को घर के ऊपरी तल पर ले जा रहा था। तभी उन्होंने मुझे ऊपर आने के लिए बुलाया। ऊपर जाने पर, उन्होंने, मैंने और सभी आगंतुकों ने एक काली झूला कुर्सी को आगे-पीछे हिलते हुए देखा, मानो उस पर कोई बैठा हो। वह अचानक से हिलने लगी थी और लगभग तीन मिनट तक हिलती रही। इससे आगंतुकों में काफी हलचल मच गई।

27 दिसंबर, 1964, शाम 5:00 बजे—देर दोपहर, दुकान बंद होने से पहले, हरे रंग की चेकदार गिंघम पोशाक पहने एक महिला का प्रेत देखा। उसके लंबे काले बाल थे, जो गर्दन के पास जूड़े में बंधे थे, और वह बेडरूम में सोफे पर बैठी थी।

फ़रवरी 1965, दोपहर 2:00 बजे—वे आगंतुकों को भ्रमण करा रहे थे, तभी दो बुजुर्ग महिलाओं ने उन्हें बुलाया और ऊपर आकर नर्सरी के दरवाजे के पास आने को कहा। इन महिलाओं ने, जो आगंतुक थीं, उनका ध्यान एक ऐसी आवाज़ की ओर दिलाया जो लगभग 16 महीने के बच्चे के रोने जैसी थी। तीनों ने उस आवाज़ की पुष्टि की।

व्हेली हाउस के कर्मचारियों द्वारा ली गई कुछ और मानसिक तस्वीरें

24 मार्च, 1965, दोपहर 1:00 बजे—वह श्रीमती बोर्किन और अपने माता-पिता, श्री और श्रीमती केलर के साथ आगंतुकों को घर दिखा रहे थे, तभी किसी कारणवश उनका ध्यान सीढ़ियों के निचले हिस्से की ओर गया। वे वापस सीढ़ियों की ओर गए और उन्हें घर के ऊपरी हिस्से में किसी के सीटी बजाने की आवाज़ सुनाई दी। उस समय ऊपरी मंजिल पर कोई नहीं था।

श्रीमती सुज़ैन पेरे, 106 अल्बाट्रॉस, एल काजोन। 8 अप्रैल, 1963, शाम 4:30 बजे—अदालत कक्ष में पांडुलिपि पर टाइपिंग कर रही थीं। अचानक उन्होंने मुझे आवाज़ दी और ऊपर से आ

रही किसी आवाज़ की ओर मेरा ध्यान दिलाया। हम दोनों ने काम रोक दिया और यह देखने के लिए साथ-साथ सीढ़ियों से ऊपर गए कि कहीं कोई वहाँ तो नहीं है। चूंकि कार्यालय बंद होने का समय नज़दीक था, हमने खिड़कियाँ बंद करने का फैसला किया। श्रीमती पेरे को अपने सिर के पीछे ठंडी हवा का झोंका महसूस हो रहा था, उन्हें स्पष्ट रूप से यह आभास हो रहा था कि कोई, भले ही अदृश्य हो, वहाँ मौजूद है और एक खिड़की से दूसरी खिड़की तक उनका पीछा कर रहा है।

14 अक्टूबर, 2021; 18 नवंबर, 1964—इन दिनों सुबह और दोपहर के समय, उन्होंने मेरा ध्यान सिगार के धुएं और इत्र या कोलोन की खुशबू की ओर दिलाया। यह गंध बैठक कक्ष, ऊपरी मंजिल के हॉल और शयनकक्ष में आई। एक अन्य शयनकक्ष में उन्होंने मेरा ध्यान किसी ऐसी चीज की ओर दिलाया जो धूल झाड़ने वाले पाउडर जैसी लग रही थी।

28 नवंबर, 1964, दोपहर 2:30 बजे—अध्ययन कक्ष में एक प्रेत दिखने की सूचना मिली। वहाँ पुरुषों का एक समूह था, सभी फ्रॉक कोट पहने हुए थे, कुछ ने सादी बनियान पहनी थी, अन्य ने डिज़ाइनदार कपड़े की। इस समूह के एक व्यक्ति ने बनियान पर सोने की एक बड़ी घड़ी की चेन पहनी हुई थी। ऐसा लग रहा था जैसे कोई बैठक हो रही हो; सभी लोग सजीव थे, कुछ इधर-उधर टहल रहे थे, कुछ बातें कर रहे थे; सभी गंभीर और उत्तेजित थे, लेकिन बाकी सब बातों से बेखबर थे। इस समूह में एक व्यक्ति किसी अधिकारी जैसा लग रहा था, जो अलग खड़ा था। वह मध्यम कद-काठी का था, उसके बाल हल्के भूरे रंग के थे और उसकी मूंछें घनी और लंबी थीं। उसकी नीली आँखें बहुत तीक्ष्ण थीं, उसकी निगाहें भेदक थीं। श्रीमती पेरे को लगा कि वह किसी प्रकार का अधिकारी है, कोई महत्वपूर्ण व्यक्ति। ऐसा लग रहा था जैसे वह कुछ बोलने ही वाला हो। श्रीमती पेरे इस दृश्य को देखकर काफी थकी हुई लग रही थीं, फिर भी उस तीक्ष्ण निगाह वाले व्यक्ति के बारे में जानने के लिए उत्सुक थीं। मुझे याद है कि उसने मुझसे पूछा था कि क्या मैं किसी ऐसे व्यक्ति को जानती हूँ जो इस विवरण से मेल खाता हो, क्योंकि यह बात उसके मन में कुछ समय तक बनी रही।

7 अक्टूबर, 1963, सुबह 10:30 बजे—रसोई से कुछ अजीबोगरीब आवाज़ें आने की सूचना मिली, जैसे कि वहाँ कोई काम कर रहा हो। उसी दिन, उसने कुछ पकने की गंध आने की भी सूचना दी।

27 नवंबर, 1964, सुबह 10:15 बजे—रसोईघर से एक तेज़ आवाज़ सुनाई दी, जैसे कोई चीज़ ज़मीन पर गिर गई हो। मैं उस समय वहीं मौजूद था। उसने मुझे आवाज़ दी और पूछा कि मैं वहाँ क्या कर रहा हूँ, उसे लगा कि मैं प्रदर्शनी की चीज़ें इधर-उधर कर रहा हूँ। उस समय मैं अदालत कक्ष में काम कर रहा था, दस्तावेज़ों को व्यवस्थित कर रहा था। हम दोनों रसोईघर पहुँचे तो देखा कि शेल्फ पर रखा एक बर्तन अपनी जगह से हटकर ज़मीन पर गिर गया था और ठीक नीचे रखे तांबे के बॉयलर से टकरा गया था। उस समय घर में कोई और नहीं था, और हम इस घटना का कारण समझ नहीं पा रहे थे।

श्रीमती टी.आर. एलन, 3447 काइट स्ट्रीट—7 जनवरी, 1963 को दोपहर 1:30 बजे उपस्थित थीं। उन्होंने अदालत कक्ष से ऑर्गन संगीत की आवाज सुनी, जब लॉरेंस रिवरॉल ने भी वही आवाज सुनी (उनका बयान देखें)।

मैं 10-12 सितंबर, 1964 की शाम को लॉरेंस रिवरॉल के साथ मौजूद था, जब उन्होंने एक प्रेत देखा। श्रीमती एलन खिड़कियों के शटर बंद करने के लिए ऊपर गईं और जैसे ही वह ऊपर चढ़ीं, उन्होंने एक ठंडी हवा का झोंका महसूस किया जो उनके सिर के ऊपर से गुज़रा। ऊपर जाकर, वह बेडरूम में गईं और खिड़कियों की ओर बढ़ीं। अचानक उन्हें अपने पीछे एक आवाज़ सुनाई दी, जैसे कुछ ज़मीन पर गिर गया हो। उन्होंने मुड़कर देखा, कुछ नहीं दिखा, लेकिन फिर से उन्हें ऐसा महसूस हुआ जैसे कोई अदृश्य व्यक्ति उनके पास मंडरा रहा हो। उन्हें डर लग रहा था। उन्होंने अपना काम जितनी जल्दी हो सके पूरा किया और जल्दी से ऊपर से चली गईं। मेरे लौटने पर, दोनों व्यक्ति घर छोड़ने के लिए बेचैन लग रहे थे।

मई 1965 (अंतिम शुक्रवार), दोपहर 1:30 बजे—वह नीचे के सामने वाले हॉल में बैठी थी, तभी उसने कदमों की आहट सुनी।

रेगिस फिलबिन स्वयं पहले भी उस घर में जा चुके थे। उस अवसर पर उनके साथ श्रीमती फिलबिन भी थीं, जो मानसिक तरंगों के प्रति अत्यधिक संवेदनशील थीं, और उनके एक शिक्षक-मित्र भी थे जिन्हें एक शौकिया माध्यम माना जाता था।

अपनी निगरानी के दौरान उन्होंने एक सफेद आकृति देखी, लेकिन जब रेगिस ने दुर्भाग्यवश अपनी टॉर्च से उसे चुनौती दी, तो वह तुरंत गायब हो गई। श्रीमती फिलबिन उस घटना से बेहद असहज महसूस कर रही थीं और घर लौटने की उनकी कोई इच्छा नहीं थी।

अब तक मुझे पता चल चुका था कि उस घर में तीन भूत थे - एक पुरुष, एक महिला, एक बच्चा - और एक चित्तीदार कुत्ता। एक कमरे में जो दृश्य मैंने देखा, वह मुझे किसी वास्तविक भूत से ज़्यादा अतीत की किसी घटना की मानसिक अनुभूति जैसा लगा।

बाद में मुझे पता चला कि उस घर में काम करने वाले एक और अंशकालिक गाइड, विलियम एच. रिचर्डसन, जो 470 सिल्वरी लेन, एल काजोन के निवासी थे, ने न केवल उस घर में कुछ असाधारण अनुभव किया था, बल्कि एक प्रकार के प्रेतात्माओं से संपर्क करने के अनुष्ठान में भी भाग लिया था जिसके रोचक परिणाम निकले थे। यह उनका बयान है, जो उन्होंने मुझे सितंबर 1965 में दिया था, हमारे स्वयं के प्रेतात्माओं से संपर्क करने के अनुष्ठान के कई महीनों बाद।

1963 की गर्मियों में मैंने व्हेली हाउस में गाइड के रूप में काम किया।

एक सुबह, घर के आम जनता के लिए खुलने से पहले, हम कर्मचारी नीचे संगीत कक्ष में बैठे थे, तभी हमें ऊपर से किसी के भारी बूटों के चलने की आवाज़ सुनाई दी। जब हम आवाज़ की जाँच करने गए, तो हमने पाया कि सभी खिड़कियाँ बंद थीं और ऊपर से बाहर जाने वाला एकमात्र दरवाज़ा भी बंद था। इसी घटना ने भूतों में मेरी रुचि जगाई।

मैंने निर्देशक जून रीडिंग से अनुरोध किया कि वे स्थानीय ग्रीष्मकालीन संगीत थिएटर, स्टारलाइट ओपेरा से मेरे कुछ दोस्तों को उस रात घर में रुकने की अनुमति दें।

शुक्रवार, 13 अगस्त की आधी रात को हम सब घर पर मिले। सैन डिएगो में पैरासाइकोलॉजी समूह की सदस्य और स्टारलाइट कोरस की सदस्य कैरोलिन व्हाइट ने इस बारे में एक परिचयात्मक भाषण दिया कि आगे क्या होने वाला है, और हम सब कुछ होने का इंतजार करने के लिए बैठक कक्ष में चले गए।

ऐसा महसूस हो रहा था मानो कमरे में ठंडी हवा बह रही हो, और हममें से कई लोगों ने इस एहसास को महसूस किया, हालांकि सभी दरवाजे और खिड़कियां बंद थीं।

इसके बाद जो हुआ वह यह था कि एक लड़के के सिर के ऊपर एक रोशनी दिखाई दी। यह रोशनी उसके सिर से दीवार के पार गई और फिर गायब हो गई। बाद में जांच करने पर पता चला कि यह रोशनी घर के मूल मालिक थॉमस व्हेली के चित्र के पास गायब हुई थी। ऊपर के कमरे में कई बार कदमों की आहट भी सुनाई दी।

इस बिंदु पर हम समूह बनाकर घर के अलग-अलग हिस्सों में चले गए। एक समूह बैठक कक्ष से सटे अध्ययन कक्ष में गया और वहाँ उन्होंने दीवार पर एक परछाई देखी जो एक धुंधली रोशनी से घिरी हुई थी और दीवार पर ऊपर-नीचे घूम रही थी तथा अपना आकार बदल रही थी। कमरे में प्रकाश का कोई स्रोत नहीं था और कोई भी उस परछाई के सामने से बिना उसे विचलित किए गुजर सकता था।

एक और समूह ऊपर की मंजिल पर था, तभी अचानक उनका ध्यान झूमर की ओर गया जो ऐसे झूलने लगा मानो कोई उसके निचले हिस्से को पकड़कर किनारों को मरोड़ रहा हो। वहीं बैठे एक लड़के के पैर पर किसी अदृश्य शक्ति ने कई बार थपथपाया।

इसी बीच, नीचे बैठक में, किनारों पर प्रिज्म लटके हुए एक पुराने जमाने के लैंप में अजीबोगरीब हरकतें शुरू हो गईं। हमारी नज़रों के सामने ही, कई प्रिज्म अपने आप हिलने लगे। कुछ रुक जाते और कुछ हिलने लगते, लेकिन वे कभी एक साथ नहीं हिले। कमरे में हवा भी नहीं चल रही थी।

इस समय हम सभी अदालत कक्ष में इकट्ठा हुए। फिर कैरोलिन ने सुझाव दिया कि हम कमरे में रखी बड़ी मेज को उठाने की कोशिश करें।

हम मेज के चारों ओर बैठ गए और अपनी उंगलियों को उस पर रखा। थोड़ी देर बाद उसमें से चरमराहट की आवाज आने लगी और फिर वह लगभग आठ इंच तक फर्श पर खिसक गई, और अंत में उस कोने से पूरी तरह उठ गई जहाँ मैं बैठा था।

बाद में हम संगीत कक्ष से एक छोटी मेज अदालत में ले आए और उसे झुकाने की कोशिश की, और वह झुक गई। सिर्फ अपनी उंगलियों के स्पर्श से ही वह झुक गई, लगभग एक इंच तक ज़मीन से ऊपर उठी, फिर गिर गई। हमने मेज को सीधा किया और फिर से अपनी उंगलियां उस पर रखीं, और लगभग तुरंत ही वह हिलने लगी। चूंकि हमें हां, ना और संदेह के सांकेतिक शब्द पता थे, इसलिए हमने मेज से बातचीत शुरू कर दी। संयोगवश, जब यह सब चल रहा था, अदालत के दरवाजे पर लगी जंजीर लगातार आगे-पीछे और ऊपर-नीचे झूल रही थी।

दरवाजा खटखटाने की विधि से हमें पता चला कि वह भूत एक सात वर्षीय बच्ची का था। उसने अपना नाम नहीं बताया, लेकिन इतना जरूर कहा कि उसके बाल लाल थे, चेहरे पर

झाइयां थीं और आंखें भूरी थीं। उसने यह भी बताया कि उसके अलावा घर में चार और भूत थे, जिनमें एक शिशु लड़के का भूत भी शामिल था। हमने लगभग एक घंटे तक उसकी आत्मा से बातचीत की।

एक समय मेज का हिलना बंद हो गया और वह अदालत कक्ष के फर्श पर खिसकती हुई भोजन कक्ष, पेंट्री से होते हुए रसोई में चली गई। इससे हमें लगा कि रसोई ही उसका नियमित ठिकाना था। फिर मेज रुक गई और दीवार पर टंगे कई प्राचीन रसोई के बर्तन तेज़ी से हिलने लगे। संयोगवश, वे बर्तन शाम भर अलग-अलग अंतराल पर हिलते रहे।

इसके बाद मेज वापस अदालत कक्ष में लौट आई और उसने और सवालों के जवाब दिए।

सुबह 5:00 बजे हमने सोने का फैसला किया—एक बेहद दिलचस्प रात। जब हम पहुंचे थे, तब हमारे 15 लोगों के समूह में कुछ सच्चे विश्वासी थे, कई आधे-अधूरे विश्वासी थे, और काफी लोग ऐसे थे जो बिल्कुल भी विश्वास नहीं करते थे। हमने जो अनुभव किया, उसके बाद हममें से कोई भी ऐसा नहीं बचा था जिसे मृत्यु के बाद के जीवन में किसी न किसी रूप में विश्वास पर जरा भी संदेह हो।

शुक्रवार की शाम थी, और भूतों से मिलने का समय आ गया था। सिबिल लीक को घर के बारे में कुछ भी पता नहीं था, और जब रेगिस फिलबिन हमें लेने आए तो बातचीत शालीन और भूतों से रहित रही।

जब हम घर पहुँचे, तो हमारे बारे में पहले से ही लोगों को पता चल चुका था, हालाँकि हमारी योजनाओं की सार्वजनिक रूप से घोषणा नहीं की गई थी; निश्चित रूप से यह विज्ञापन नहीं दिया गया था कि हम उस शाम आत्माओं से संपर्क करने का प्रयास करेंगे। फिर भी, घर पर काफी भीड़ जमा हो गई थी और केवल रेजिस के विनम्र आग्रह पर कि उनकी उपस्थिति हमारे संभावित परिणामों को नुकसान पहुँचा सकती है, वे वहाँ से चले गए।

अब काफी अंधेरा हो चुका था, और मैं सिबिल के पीछे-पीछे घर में चला गया, ताकि कैमरे चालू होने से पहले वह अपनी दिव्य दृष्टि से स्थिति का जायजा ले सके। मेरी पत्नी कैथरीन टेप उपकरण लिए मेरे ठीक पीछे चल रही थी। श्रीमती रीडिंग ने हमारा गर्मजोशी से स्वागत किया। गवाह इकट्ठा हो चुके थे, लेकिन फिलहाल वे पहुंच से बाहर थे, इसलिए सिबिल उनसे कोई भी संवेदी अनुभव प्राप्त नहीं कर सकीं। उन्होंने धैर्यपूर्वक हमारे दिव्य दृष्टि सत्र का

इंतजार किया। कुल मिलाकर, लगभग एक दर्जन लोग हमारा इंतजार कर रहे थे। घर पूरी तरह से रोशन था और वातावरण में व्याप्त उत्साह किसी भी भूत को जगाने के लिए काफी था!

और इस तरह 25 जून, 1965 को, भूत खोजकर्ता सैन डिएगो के व्हेली हाउस में भूतों के साथ आमने-सामने आ गया। जब सिबिल अकेले घर में घूम रही थी, मैं जल्दी से घर के अदालत वाले हिस्से में गया और गवाहों से उनके अनुभवों के बारे में बात की। हालाँकि मेरे पास पहले से ही उनके बयान थे, मैं यह सुनिश्चित करना चाहता था कि कोई भी बात मुझसे छूट न जाए।

उदाहरण के लिए, जून रीडिंग से मुझे पता चला कि इमारत का अदालत वाला हिस्सा, जो लगभग 1855 में बनाया गया था, मूल रूप से एक अनाज भंडार के रूप में इस्तेमाल होता था, बाद में यह नगर भवन और फिर अदालत भवन बन गया। उस समय यह पूरे क्षेत्र में एकमात्र दो मंजिला ईंट का मकान था।

श्रीमती रीडिंग को न केवल ऐसी आवाजें सुनाई दीं जो उन्हें मानवीय आवाजों जैसी लगीं, बल्कि एक बार जब वह इस कमरे में कुछ संगीत रिकॉर्ड कर रही थीं, तो टेप में कुछ मानवीय आवाजें भी थीं - ऐसी आवाजें जो उन्होंने संगीत बजाते समय खुद नहीं सुनी थीं!

मैंने श्रीमती रीडिंग से पूछा, "आपने आखिरी बार कोई असामान्य बात कब सुनी थी?"

“अभी एक हफ़्ते पहले ही,” चुटीले क्यूरेटर ने जवाब दिया, “दिन के समय मैंने किसी के सामने का दरवाज़ा खोलने की साफ़ आवाज़ सुनी। क्योंकि हाल ही में यहाँ कई आगंतुक आए हैं, इसलिए हम इस बात को लेकर काफ़ी सतर्क हैं। मैं संयोग से ऐतिहासिक सोसायटी के एक व्यक्ति के साथ अदालत कक्ष में था, जो व्हेली के दस्तावेज़ों पर शोध कर रहा था, और हम दोनों ने वह आवाज़ सुनी। मैं यह देखने गया कि कौन अंदर आया है, लेकिन वहाँ कोई नहीं था, न ही बाहर बरामदे पर किसी के कदमों की आहट थी। यहाँ काम करने वाली महिला ने भी वह आवाज़ सुनी और मेरी तरह ही वह भी हैरान थी।”

मुझे पता चला कि घर में हुए अलौकिक अनुभवों के बारे में क्यूरेटर की रिपोर्ट में जिन श्रीमती एलन का जिक्र था, वे वास्तव में लिलियन एलन थीं, जो उनकी अपनी मां थीं, एक जीवंत महिला जिन्हें अलौकिक अनुभवों की अपनी घटना बहुत ही स्पष्ट रूप से याद थी।

“मैंने ऊपर से आवाज़ें सुनी थीं,” उसने याद करते हुए कहा। “भारी बूट पहने कोई चलता हुआ लग रहा था, फिर सीढ़ियों से नीचे आने के लिए मुड़ा—और जब मैं पहली बार यहाँ आई थी,

तो लोग मुझे ये सब बातें बताते थे और मैं उन पर विश्वास नहीं करती थी—लेकिन एक रात मैं नीचे डेस्क पर बैठी थी, अपनी बेटी के पीछे का ताला लगाने का इंतज़ार कर रही थी। मैंने ऊपर से एक आवाज़ सुनी और मैं यह देखने के लिए दौड़ी कि कहीं हम किसी को घर में बंद तो नहीं कर रहे हैं, और जैसे ही मैं लगभग ऊपर पहुँची, मेरे सिर के ऊपर से हवा का एक तेज़ झोंका आया और मेरे बाल खड़े हो गए। मुझे लगा कि खिड़कियाँ खुल गई हैं, लेकिन मैंने चारों ओर देखा और सब कुछ सुरक्षित था।"

"यह हवा कैसी लगी?" मैंने पूछा। ठंडी हवाओं की कहानियाँ भूत-प्रेत की पारंपरिक कहानियों का हिस्सा हैं, लेकिन यहाँ हमारे पास गवाही देने के लिए एक प्रत्यक्षदर्शी मौजूद था।

"ठंड थी और मेरा पूरा शरीर कांप रहा था। और एक और बात, जब मैं रात को ऊपर के कमरे के शटर बंद करती हूँ, तो मुझे ऐसा लगता है जैसे कोई मेरी गर्दन के पीछे साँस ले रहा हो, जैसे कोई मुझे छूने वाला हो—कंधे पर—ऐसा अक्सर होता था। अरे, अभी एक महीने पहले ही तो हुआ था।"

अब श्रीमती फ्रेडरिक बेयर आगे आईं। श्रीमती रीडिंग की संक्षिप्त रिपोर्ट में मुझे उनका नाम नहीं मिला। जाहिर है, वह इस घर में घटी रहस्यमय घटनाओं की एक और गवाह थीं।

"एक शाम मैं यहाँ आई थी—शाम के 5 बज चुके थे; एक और महिला भी यहाँ थी—और जून रीडिंग सीढ़ियों से नीचे आ रही थी, और हम बातें कर रहे थे। मैंने ऊपर कुछ हिलने-डुलने की आवाज़ साफ़ सुनी, जैसे कोई मेज़ हिला रहा हो। वहाँ कोई नहीं था—हमने जाँच की। यह घटना एक महीने पहले ही घटी थी।"

ग्रेस बोर्किन, जो उस गृह में एक और स्वयंसेवी कार्यकर्ता थीं, का ज़िक्र श्रीमती रीडिंग की रिपोर्ट में किया गया था। उन्होंने ज़ोर देकर कहा कि आवाज़ें बूट पहने एक भारी-भरकम आदमी की थीं—इसमें कोई शक नहीं था। जब मैंने उनसे लगभग छह सप्ताह पहले फ्रॉक कोट पहने एक आदमी के भूत के बारे में पूछा, तो उन्होंने ज़ोर देकर कहा कि वह उन्हें एक असली इंसान जैसा लगा था, एक पल सीढ़ियों के ऊपर खड़ा था और अगले ही पल पूरी तरह गायब हो गया।

"वह हिला तक नहीं। मैंने उसे साफ-साफ देखा, फिर एक पल के लिए श्रीमती रीडिंग को पुकारने के लिए अपना सिर घुमाया, और जब मैंने दोबारा देखा, तो वह गायब हो चुका था।"

श्रीमती सुज़ैन पेरे के अनुभवों के वर्णन ने मुझे बहुत आकर्षित किया था, जिनसे ऐसा प्रतीत होता था कि उनमें माध्यम बनने की अपार क्षमता है। मैंने उनसे उन सभी बातों के बारे में पूछा जो उन्होंने अभी तक हमें नहीं बताई थीं। “एक बार जून रीडिंग और मैं पीछे वाले अध्ययन कक्ष में मेज पर काम कर रहे थे। हमने मेज पर हाथ रखकर यह देखने की कोशिश की कि क्या कोई प्रतिक्रिया मिलती है।”

"तुम्हारा मतलब है कि तुम मेज पलटने की कोशिश कर रहे थे।"

“हाँ। उस समय मुझे घर में कुछ महसूस हुआ था और इत्र की खुशबू आई थी। यह लगभग एक साल पहले की बात है, हम सैन डिएगो में भारतीय विद्रोह से संबंधित कुछ कागजातों पर काम कर रहे थे, और अचानक मेज ज़ोर से हिलने लगी! मेरे शरीर की सभी नसें फड़कने लगीं, और मेरी कल्पना में कमरा आदमियों से भरा हुआ था, सभी बेहद उत्तेजित थे, और हालाँकि मुझे कोई आवाज़ सुनाई नहीं दे रही थी, मुझे पता था कि वे बातें कर रहे थे, और एक सज्जन कमरे के बीचोंबीच इधर-उधर घूम रहे थे, सिगार का कश ले रहे थे, और मेरे वर्णन के आधार पर जून रीडिंग ने बाद में उनकी पहचान शेरिफ मैककॉय के रूप में की, जो 1850 के दशक में यहाँ थे। जब यह सब खत्म हुआ तो मैं कुछ मिनटों तक बोल नहीं सका। मैं उस पल के लिए पूरी तरह से विचलित हो गया था।”

मुझे पता चला कि मैककॉय, सैन डिएगो के ओल्ड टाउन और न्यू टाउन के बीच काउंटी सीट के लिए हुए "संघर्ष" के दौरान एक गुट का नेता था।

जाहिर है, श्रीमती बोर्किन ने उस भावनात्मक घटना को मानसिक रूप से फिर से जी लिया था जो वास्तव में उसी कमरे में घटी थी जहाँ उन्होंने इसे देखा था!

मैंने बीच में टोकते हुए पूछा, "क्या इस अदालत भवन का इस्तेमाल कभी किसी को फांसी देने के लिए किया गया था?"

श्रीमती रीडिंग को पक्का पता नहीं था; सारे रिकॉर्ड तो मौजूद थे, लेकिन कर्मचारियों की कमी के कारण ऐतिहासिक समिति ने अभी तक उनकी जाँच नहीं की थी। हालाँकि, अदालत इस भवन में दो साल तक चली थी और इसमें निश्चित रूप से फैसले सुनाए गए थे। जेल स्वयं सड़क पर थोड़ी दूर आगे थी।

लाल कोट पहने एक महिला ने मेरा ध्यान आकर्षित किया। उसने अपना नाम बर्नीस कैनेडी बताया।

“मैं यहाँ रविवार को गाइड का काम करती हूँ,” महिला ने बात शुरू की, “हाल ही में एक रविवार को, मैं घर में अकेली थी और डाइनिंग रूम में बैठकर पढ़ रही थी, तभी मुझे सामने का दरवाज़ा खुलने और बंद होने की आवाज़ सुनाई दी। वहाँ कोई नहीं था। मैं वापस जाकर पढ़ने लगी। फिर मुझे दूसरी बार वही आवाज़ सुनाई दी। मैंने दोबारा देखा, और वहाँ बिल्कुल कोई नहीं था। मुझे तीसरी बार वही आवाज़ सुनाई दी और इस बार मैंने अपनी किताब ली और बाहर डेस्क पर बैठ गई। उसके बाद से लोग आने-जाने लगे और मुझे कोई और अजीब अनुभव नहीं हुआ। लेकिन एक और रविवार को, ऊपर एक युवती अचानक बहुत पीली पड़कर नीचे आई और उसने कहा कि ऊपर वाली छोटी सी झूला कुर्सी हिल रही है। मैं उस आगंतुक के पीछे ऊपर गई और मुझे कुर्सी हिलती हुई नहीं दिखाई दी, लेकिन एक क्लिक की आवाज़ आई, बहुत लयबद्ध, और मैंने उसे पहले या बाद में कभी नहीं सुना।”

पता चला कि वह कुर्सी कभी व्हेली परिवार से संबंधित एक परिवार की थी।

"मैं चार्ल्स केलर हूं, मिल्टन केलर का पिता," मेरे पीछे से एक बुलंद आवाज आई, और अधेड़ उम्र का एक प्रभावशाली सज्जन आगे बढ़ा।

“मैंने एक बार व्हेली हाउस का दौरा कराया था। मैंने देखा कि एक महिला, जो पहले कभी यहाँ नहीं आई थी, ऐसा व्यवहार कर रही थी मानो उसे किसी शयनकक्ष से बाहर धकेला जा रहा हो!”

मैंने थोड़ा आश्चर्यचकित होते हुए कहा, "क्या तुमने इसे देखा?"

“हां,” श्री केलर ने सिर हिलाते हुए कहा, “मैंने उसे हिलते हुए देखा, मानो कोई उसे कमरे से बाहर धकेल रहा हो।”

"क्या आपने उससे इस बारे में पूछताछ की?"

“हां, मैंने देखा। यह घटना सिर्फ पहले बेडरूम में हुई, जहां से हमने टूर शुरू किया था। बाकी किसी कमरे में नहीं। हम उस कमरे में वापस गए और मैंने फिर से उसे कमरे से बाहर धकेलते हुए देखा!”

श्रीमती केलर ने मुझे उस बर्फीली ठंडी हवा के झोंके के बारे में बताया जो उन्हें महसूस हुआ था, और उससे ठीक पहले, पिछले दरवाजे पर तीन बार दस्तक हुई थी! उनके बेटे, जिसकी गवाही श्रीमती रीडिंग ने मेरे लिए पहले ही प्राप्त कर ली थी, ने पिछले दरवाजे पर जाकर देखा तो वहाँ कोई नहीं था जिसने दस्तक दी हो। यह घटना हमारी यात्रा से मात्र छह महीने पहले घटी थी।

फिर मैंने संग्रहालय और घर के रखरखाव के लिए जिम्मेदार एसोसिएशन के प्रमुख जेम्स रीडिंग की ओर रुख किया और उनसे भूतों के साथ उनके व्यक्तिगत अनुभवों के बारे में पूछा। श्री रीडिंग ने सतर्क स्वर में समझाया कि उन्हें भूतों में वास्तव में कोई खास विश्वास नहीं है, लेकिन—

“यह घर अप्रैल 1960 में आम जनता के लिए खोला गया था। उसी साल पतझड़ के मौसम में, अक्टूबर या नवंबर के आसपास, पुलिस ने मुझे सुबह 2 बजे फोन किया और मुझसे अनुरोध किया कि मैं नीचे जाकर चोर अलार्म बंद कर दूं, क्योंकि उन्हें लगातार शिकायतें मिल रही थीं और अलार्म की वजह से आस-पड़ोस के सभी लोग जाग रहे थे। मैं नीचे गया तो देखा कि दो पुलिस अधिकारी मेरा इंतजार कर रहे थे। मैंने अलार्म बंद कर दिया। इस बीच उन्होंने घर की जाँच कर ली थी और सभी दरवाजे और खिड़कियाँ अच्छी तरह बंद थीं।”

"तो फिर अलार्म अपने आप कैसे बज गया होगा?"

“मुझे नहीं पता। मैंने दरवाज़ा खोला और हमने पूरे घर की तलाशी ली। जब हम आखिरकार ऊपर पहुँचे, तो हमने देखा कि ऊपर के सामने वाले बेडरूम की एक खिड़की खुली हुई थी। हमने खिड़की बंद करके कुंडी लगा दी और नीचे आकर अलार्म की जाँच की। वह फिर से सही काम कर रहा था। कोई भी अंदर या बाहर नहीं जा सकता था। उस खिड़की के बाहर के शटर बंद थे और अंदर से जुड़े हुए थे। खिड़की खुलने से अलार्म बज गया था, लेकिन किसी के लिए भी उस खिड़की को खोलकर घर में अंदर या बाहर जाना नामुमकिन था। नामुमकिन। ऐसा चार बार हुआ। दूसरी बार, लगभग चार महीने बाद, फिर से सुबह दो बजे, वही खिड़की खुली हुई थी। बाकी दो बार भी वही खिड़की खुली हुई थी।”

आपने आखिरकार इसके बारे में क्या किया?

"चौथी घटना के बाद हमने पहले बोल्ट के समकोण पर एक दूसरा बोल्ट लगाया, और उससे मदद मिली। उसके बाद कोई और शिकायत नहीं आई।"

क्या भूत दो बोल्टों को धकेलते-धकेलते थक गया था?

इन सभी अतिरिक्त गवाहियों में मैं इतना खो गया था कि मेरा ध्यान मेरी पसंदीदा माध्यम, सिबिल लीक से हट गया था। लेकिन अब मैंने उसे ढूंढना शुरू किया और मुझे आश्चर्य हुआ कि वह नीचे, बैठक कक्ष के पीछे, रसोई में रखी पुरानी कुर्सियों में से एक पर बैठी थी। जब मैं कमरे में दाखिल हुआ तो वह गहरी सोच में डूबी हुई लग रही थी, हालांकि वह किसी भी तरह से समाधि में नहीं थी, फिर भी मुझे उसे यह समझाने में थोड़ा समय लगा कि हम कहाँ हैं।

क्या अदालत कक्ष में मेरे साक्षात्कार के दौरान कुछ असामान्य घटित हुआ था?

"मैं प्रवेश कक्ष में खड़ी होकर पोस्टकार्ड देख रही थी," सिबिल ने याद करते हुए कहा, "तभी मुझे लगा कि मुझे रसोई में जाना ही होगा, लेकिन मैं पहले तो वहां नहीं गई, बल्कि सीढ़ियों से आधी ऊपर चढ़ गई, और तभी एक बच्ची सीढ़ियों से नीचे उतरकर रसोई में आई और मैं उसके पीछे-पीछे गई।"

“एक बच्चा?” मैंने पूछा। मुझे पूरा यकीन था कि हमारे दल में कोई बच्चा नहीं था।

"मुझे लगा कि यह रेगिस की छोटी बच्ची है और अगली बात जो मुझे याद है वह यह है कि मैं रॉकिंग चेयर पर बैठी थी और आप मुझसे कुछ कह रहे थे।"

यह कहने की आवश्यकता नहीं है कि रेगिस फिलबिन्स की बेटी सीढ़ियों पर नहीं थी। मैंने बच्ची का विस्तृत विवरण मांगा।

“वो लंबे बालों वाली लड़की थी,” सिबिल ने कहा। “वो बहुत फुर्तीली थी, लंबी ड्रेस पहने हुए। वो इस कमरे में मेज के पास गई और मैं कुर्सी पर बैठ गई। मुझे बस इतना ही याद है।”

मैंने यह निर्णय लिया कि मैं सिबिल से घर में उसे मिलने वाली किसी भी मानसिक अनुभूति के बारे में पूछताछ जारी रखूँगी।

“इस घर में बहुत अव्यवस्था है,” उसने बात शुरू की। “इसमें से कुछ अव्यवस्था ऊपर के एक कमरे से जुड़ी है, जिसकी संरचना में बदलाव किया गया है। यहाँ गतिविधियों के दो केंद्र हैं।”

सिबिल को यह पता नहीं हो सकता था कि घर में दो अलग-अलग इकाइयाँ थीं।

"क्या घर में कोई भूत है?"

“कई,” सिबिल ने मुझे आश्वस्त किया। “कम से कम चार!”

क्या विलियम रिचर्डसन के समूह ने एक छोटी बच्ची के भूत से संपर्क नहीं किया था, जिसने दावा किया था कि वह घर में चार अन्य भूतों के बारे में जानती है? उस प्रेतात्माओं से संपर्क करने की सूचना मुझे सितंबर में मिली, हमारी यात्रा के कई महीनों बाद, इसलिए सिबिल के लिए इस बारे में हमारे मन की बात जानना संभव नहीं था, क्योंकि उस समय हमारे मन में ऐसी कोई जानकारी नहीं थी।

“जिस कमरे में आपने मुझे बैठे हुए पाया,” सिबिल ने आगे कहा, “मैं इस कमरे की ओर खिंची चली गई; यहाँ की यादें बहुत गहरी हैं। खासकर वह बच्ची—उसकी कम उम्र में ही मृत्यु हो गई थी।”

अब हम घर में इधर-उधर घूमकर और संपर्क तलाशने लगे।

"अब मुझे एक तारीख पता चल गई है," सिबिल ने अचानक कहा, "1872।"

रीडिंग दंपति ने एक-दूसरे को अर्थपूर्ण निगाहों से देखा। यह ओल्ड टाउन और न्यू टाउन के बीच संघर्ष की सबसे कटुता के ठीक बाद का समय था, जब व्हेली हाउस से अदालती अभिलेखों को जबरन हटाया गया था।

“घर के दो हिस्से हैं,” सिबिल ने आगे कहा। “एक हिस्सा मुझे पसंद है, लेकिन दूसरा नहीं।”

सिबिल को अपनी ऊर्जा भविष्यवाणियों में खर्च करने देने के बजाय, मुझे अदालत कक्ष में ही समाधि की अवस्था में जाने का प्रयास करना बेहतर लगा। इसकी व्यवस्था तुरंत कर ली गई, और बड़े कमरे के पिछले हिस्से में लगे मोशन पिक्चर कैमरों के लिए आवश्यक रोशनी को छोड़कर बाकी सभी बिजली की रोशनी की जगह मोमबत्तियों का इस्तेमाल किया गया।

रेगिस फिलबिन और मैं सिबिल के बगल में बैठे थे, जब वह एक कुर्सी पर आगे की ओर झुक गई, जिस पर शायद बीते वर्षों में कोई निर्दयी न्यायाधीश बैठा करता रहा होगा।

लेकिन सबसे पहले संदेश देने वाली न तो वह छोटी बच्ची थी और न ही फ्रॉक कोट पहने हुए आदमी। अचानक सिबिल के होठों से एक कमजोर, दर्द भरी आवाज सुनाई दी, जो उसकी अपनी आवाज से बिल्कुल अलग थी, एक ऐसी आवाज जो स्पष्ट रूप से प्यास से भरी हुई थी।

“बुखार...सबको बुखार था...”

यह कौन सा वर्ष है?

“छियालीस।”

मैंने सुझाव दिया कि बुखार उतर चुका है, और इससे उस व्यक्ति को शांत करने में मदद मिली जिसने मेरी पहचान बताने के अनुरोध पर कोई प्रतिक्रिया नहीं दी।

“मुझे थोड़ा पानी भेजो....” सिबिल अभी भी समाधि की अवस्था में थी, लेकिन अब वह होश में थी। तुरंत ही उसने चारों ओर फैली अव्यवस्था की शिकायत की।

“यह वह कमरा नहीं है जहाँ हमारी ज़रूरत है...बच्ची...वही है जिसकी ज़रूरत है....”

उसका नाम क्या है?

“अन्ना...बेल...तेरह साल की उम्र में अचानक उसकी मौत हो गई...सीने में चोट लगने से....”

क्या उसके माता-पिता भी यहाँ हैं?

“वे आते हैं...महिला आती है।”

इस घर का उपयोग किस लिए किया जाता है?

व्यापार...चीजों की बिक्री, खरीद और बिक्री।

"क्या इस घर में बच्चे के अलावा कोई और भी है?"

“बच्ची ही मुख्य है, क्योंकि उसे कुछ भी समझ नहीं आता। लेकिन एक और भी खतरनाक बात है। बच्ची किसी को नुकसान नहीं पहुंचाएगी। कोई और भी है। एक आदमी। वह इस घर के बारे में कुछ जानता है...लगभग बत्तीस साल का, अजीब नाम, सी...कैल्स्ट्रॉप...पांच फुट दस इंच लंबा, हरे रंग का कोट पहने, सांवला रंग, मूंछें और साइड विस्कर्स, वह बाईं ओर के बेडरूम में जाता है। उसका यहां कुछ काम है। उसका काम समुद्र से आने वाली चीजों से जुड़ा है। लेकिन उसे कागजों की चिंता सता रही है।”

मैंने पूछा, “कौन से कागजात?”

“कागजात...1872। घर के बारे में। घर का बंटवारा गलत था। दो मालिक थे, वह कहता है।”

"1872 में इस घर का उपयोग किस लिए किया जा रहा है?"

"दो जगहों पर रहना... मुझे उलझन होती है क्योंकि मैं एक जगह जाता हूं और फिर मुझे दूसरी जगह जाना पड़ता है।"

"क्या यह आदमी जिसे आप देख रहे हैं, यहीं मरा है?"

“उनकी मृत्यु यहीं हुई। जगह को लेकर दुखी थे... दूसरी जगह को लेकर। दो इमारतें थीं। कुछ लोगों का उस जगह को लेकर झगड़ा हुआ था। वह हंस रहे हैं। वह यह सारा घर अपने लिए चाहते हैं।”

“क्या उसे पता है कि वह मर चुका है?” मैंने यह सवाल पूछा, जो अक्सर उन लोगों से तथ्यों की मेरी खोज में बहुत प्रतिरोध पैदा करता है जो खुद को “भूत” के रूप में स्वीकार नहीं कर सकते।

सिबिल ने कुछ देर तक सुना।

अंत में उसने कहा, "वह इस घर में जो चाहे करता है क्योंकि वह यहीं रहने वाला है। यह उसका घर है।"

वह क्यों हंस रहा है?

सचमुच, एक हंसता हुआ भूत! "वह इसलिए हंसता है क्योंकि लोग इसे अपना घर समझकर यहाँ आते हैं! जबकि वह सच्चाई जानता है।"

मैंने दोबारा पूछा, “उसका नाम क्या है?”

"कैल...कैल्स्ट्रॉप...बहुत मुश्किल है क्योंकि वह साफ-साफ नहीं बोलता...वह लिखता ही रहता है...वह शोर मचाता है...उसका कहना है कि अगर तुम चले नहीं गए तो वह और भी शोर मचाएगा।"

मैंने उत्साहपूर्वक कहा, "उसे करने दो," और उम्मीद जताई कि मैं भूत के गुस्से भरे उद्गारों को टेप पर रिकॉर्ड कर सकूंगा।

मैंने सिबिल से कहा, "उसे बता दो कि उसका देहांत हो गया है और यह मामला अब महत्वपूर्ण नहीं है।"

वह ऊपर है।

मैंने उनसे ऊपर आने का अनुरोध किया ताकि हम सब उन्हें सुन सकें। उस समय ऊपर कोई नहीं था—सब लोग नीचे अदालत कक्ष में चल रही कार्यवाही देख रहे थे।

हम सांस रोककर कुछ प्रकट होने का इंतजार करते रहे, लेकिन हमारा भूत खेल में शामिल नहीं हुआ। मैंने अपने सवाल जारी रखे।

वह क्या चाहता है?

"वह बस इधर-उधर घूम रहा है, वह जो चाहे कर सकता है," सिबिल ने कहा। "उसे नई चीजें पसंद नहीं हैं... उसे शोर बिल्कुल पसंद नहीं है... सिवाय तब जब वह खुद शोर मचाता है..."

इस घर में ऑर्गन कौन बजाता है?

वह कहता है कि उसकी मां खेलती है।

उसका नाम क्या है?

"ऐन लैसी...यह गलत है, यह लैन है—वह बहुत खराब बोलता है...लैने...उसका गला खराब है या कुछ और...."

बाद में मुझे इस असामान्य नाम की सच्चाई पता चली। अन्ना लैने थॉमस व्हेली की पत्नी थीं!

लेकिन उस समय मुझे इस तथ्य की जानकारी नहीं थी और मैंने अपनी पूछताछ जारी रखी।

भूत की मृत्यु कैसे हुई? कितने समय पहले?

"'89...वह बोलना नहीं चाहता; वह बस इधर-उधर घूमना चाहता है...."

दरअसल, व्हेली की मृत्यु 1890 में हुई थी। क्या इतने लंबे अंतराल ने समय के प्रति उनकी समझ को भ्रमित कर दिया था? कई भूत सटीक तिथियां याद नहीं रख पाते, लेकिन परिस्थितियां और भावनात्मक अनुभव उन्हें अच्छी तरह याद रहते हैं।

"उसे घर की चिंता है...वह पूरा घर अपने लिए चाहता है...वह कहता है कि वह उन्हें छोड़ देगा...कागजात...कागजात छुपा दो...वह घर से जुड़े दूसरे कागजात चाहता है...वे यहाँ से चार मील दूर हैं...कई लोगों के पास ये कागजात हैं और आपको उन्हें वापस लाना होगा वरना वह कभी समझौता नहीं करेगा...कभी नहीं...और अगर उसे पूरा घर वापस नहीं मिला, तो उसकी हालत और भी खराब हो जाएगी...और फिर, पुलिस आएगी...वह बत्तियाँ जलाएगा और शोर मचाएगा...और घंटी बजाएगा...पुलिस को बुलाकर उसे, घर के मालिक को, देखने के लिए

मजबूर करेगा...वह ऊपर से घंटियों की आवाज सुनता है...उसे नहीं पता कि यह क्या है...वह ऊपर जाता है और खिड़कियाँ खोलता है, लकड़ी की खिड़कियाँ...और बाहर देखता है...और फिर वह खींचता है...नहीं, यह घंटी नहीं है...वह फिर से ऐसा करेगा...जब वह किसी को यह बताना चाहता है कि वह वास्तव में घर का मालिक है...आजकल लोग आकर कहते हैं कि वह नहीं है, लेकिन वह है!"

मुझे आश्चर्य हुआ। सिबिल को गड़बड़ी, खतरे की घंटी, कदमों की आहट, खुली खिड़की... इन सब बातों की कोई जानकारी नहीं थी... और फिर भी यह सब बिल्कुल सच था। निश्चित रूप से, उसका संचारक ही हमारा आदमी था!

मैंने पूछा, "उसने ऐसा आखिरी बार कब किया था?"

"इस साल...ज्यादा समय नहीं लगेगा...."

"क्या उसने इस घर में और कुछ किया है?"

उन्होंने कहा कि उन्होंने बैठक कक्ष में बत्तियाँ इधर-उधर कर दी थीं।

बाद में मुझे रिचर्डसन के séance और उनके द्वारा देखी गई रोशनी की याद आई, लेकिन जब हम खुद उस घर में थे तब मुझे इस बात का बिल्कुल भी अंदाजा नहीं था।

"सामने के दरवाजे के बारे में क्या?"

"अगर लोग आते हैं, तो वह बगीचे में चला जाता है...घूमता है क्योंकि...वह वहां अपनी मां से मिलता है।"

रसोई में क्या है?

"बच्चा रसोई में चला गया। मुझे उसे छोड़कर जाना पड़ा, और वह जाना नहीं चाहता था...यह अन्याय था, वैसे भी, मुझे यह पसंद नहीं आया...बच्चा बारह साल का है...सीने में तकलीफ है...रसोई से कुछ हुआ है...बुरी घटना है...."

"क्या इसमें किसी की गलती है?"

"हाँ। सीने से नहीं... अलमारी से कुछ निकाला... वह नमक जैसा एसिड था, और उसने उसे खा लिया... उसे पता नहीं था... इस बच्ची में कुछ अजीब है, किसी ने उसे वश में कर रखा था, आप देखिए, वह रास्ते में आ रही थी... परिवार... एक लड़की... वे लड़के अच्छे नहीं थे... जो दूसरे

लड़के नीचे आए... वह दो लोगों जैसी है... किसी ने उसे नियंत्रित किया... उससे अजीबोगरीब काम करवाए और फिर... क्या वह ऐसा कर सकती थी?"

क्या वह उस आदमी की बेटी थी?

"अजीब आदमी है, उसे लड़की से ज्यादा घर की चिंता है। वह मानसिक रूप से परेशान है।"

क्या इस घर में कोई महिला है?

"बिल्कुल। बगीचे में एक महिला है।"

"वह कॉन हे?"

"मां। लड़की की दादी।"

क्या उसे इस बात का एहसास है कि उसका कोई भौतिक शरीर नहीं है?

"नहीं।"

क्या वह यहां आने वाले सभी लोगों को नहीं देखता?

"उनसे लड़ना होगा, उन्हें भगाना होगा।"

"उसे बताओ कि अब सत्तर साल बीत चुके हैं।"

"उनका कहना है कि घर बनने के बाद से सत्तर साल बीत चुके हैं।"

मैंने जोर देकर कहा, "और सत्तर साल बीत गए हैं। घर में अब तुम्हारा सिर्फ एक अंश ही बचा है।"

"नहीं, घर का हिस्सा...आप गलती कर रहे हैं," उसने जवाब दिया।

मैंने उसे वास्तविक परिस्थितियों के बारे में समझाने की बहुत कोशिश की। अंततः, मैंने उसे आश्वस्त किया कि वास्तव में पूरा घर उसी का है।

क्या इससे मदद मिलेगी?

"वह बहुत क्रूर है," सिबिल समझाती है। "वह घर से अपना बदला जरूर लेगा।"

मैंने समझाया कि उसके सभी दुश्मन मर चुके थे।

"उनका कहना है कि यह अन्याय था, अदालत गलत थी और आपको सभी को बताना होगा कि यह उनका घर, जमीन और निवास स्थान है।"

मैंने ऐसा करने का वादा किया और उन लोगों को मुक्त करने के लिए सामान्य मंत्र का जाप किया जो इस दुनिया से चले गए हैं और जिन्हें इसका एहसास नहीं है। फिर मैंने सिबिल को उसकी चेतना में वापस लाया, और कुछ ही क्षणों में वह पूरी तरह से वश में आ गई।

फिर मैंने संग्रहालय की निदेशक श्रीमती रीडिंग की ओर रुख किया और उनसे अभी-अभी सुनी गई सामग्री की सत्यता पर उनकी टिप्पणी पूछी।

उन्होंने कहा, "मुकदमा चल रहा था।" “यह अन्याय संभवतः 1869 से 1871 तक काउंटी द्वारा घर के इस हिस्से पर कब्ज़े से संबंधित हो सकता है। व्हेली का अनुबंध, जो हमारे पास है, दर्शाता है कि घर का यह हिस्सा काउंटी को पट्टे पर दिया गया था, और उन्हें फर्नीचर उपलब्ध कराना था और इसे अदालत कक्ष के रूप में तैयार करना था। उन्होंने रोशनी के लिए दो खिड़कियाँ भी लगवाईं। यह एक वैध समझौता था। जब तक अदालत यहाँ काम करती रही, उन्होंने अनुबंध का पालन किया, लेकिन जब अलोंजो हॉर्टन आए और उन्होंने न्यू टाउन का विकास किया, तो काउंटी सीट पर कब्ज़े के लिए दोनों समुदायों के बीच ज़बरदस्त होड़ शुरू हो गई। जब रिकॉर्ड यहाँ से ज़बरदस्ती हटा दिए गए, तो व्हेली को लगा कि यह घोर अन्याय है, और हमारे पास उनके द्वारा पर्यवेक्षक मंडल को लिखे गए पत्र हैं, जिनमें उन्होंने अपने पट्टे के उल्लंघन का उल्लेख किया है। क्लर्क ने उन्हें सूचित किया कि उनके द्वारा घर को उनके उपयोग के लिए पुनर्निर्मित करने में किए गए सभी प्रयासों के बावजूद, अब वे इस घर के उपयोग के लिए ज़िम्मेदार नहीं हैं। वह समय-समय पर पर्यवेक्षक मंडल के समक्ष यह मामला उठाते रहे, लेकिन हर बार इसे टाल दिया गया।”

“दूसरे शब्दों में, क्या यही वह अन्याय है जिसका जिक्र भूत ने किया था?”

1872 में वह इस मामले को लेकर काउंटी से न्याय मांगने में बुरी तरह से जुटे हुए थे, जिससे वे कुछ हद तक परेशान थे क्योंकि उन्हें विश्वास नहीं था कि कोई सरकारी अधिकारी इस तरह से व्यवहार करेगा। हालांकि, यह मामला कभी सुलझा नहीं और अंत में व्हेली को ही सारी जिम्मेदारी उठानी पड़ी।

"क्या ऊपर वाले कमरे में कोई बच्चा था?"

“बच्चों की नर्सरी में? वहाँ कई बच्चे थे। एक बच्चे की यहीं मौत हो गई। लेकिन यह एक लड़का था।”

फिर, बाद में, मैंने देखा कि रिचर्डसन के प्रेतात्माओं से संपर्क करने के अनुष्ठान में घर में एक लड़के के भूत के बारे में बात की गई थी।

समाधि की शुरुआत में, सिबिल के मुख से निकले शब्दों को रिकॉर्ड करना शुरू करने से पहले, मैंने कुछ हस्तलिखित नोट्स लिए। अब मुझे वह व्यक्तित्व दिखाई दिया, जिसकी मृत्यु तेज बुखार से हुई थी। उसने अस्पष्ट रूप से फेडोर नाम बताया था और एक चक्की के बारे में बात की थी जहाँ वह काम करता था। क्या इसमें कोई अर्थ था?

"जी हां," श्रीमती रीडिंग ने पुष्टि की, "जिस कमरे में हम अभी हैं, वह एक समय में अनाज भंडार के रूप में इस्तेमाल होता था। लगभग 1855 से 1867 तक।"

क्या इस क्षेत्र में कभी कोई रूसी लोग थे?

"इस क्षेत्र पर अमेरिकी कब्जे से पहले यहां ऊदबिलाव का काफी व्यापार होता था। हमें इस बात के सबूत मिले हैं कि रूसियों ने इस क्षेत्र में कुएं खोदे थे। वे ऊदबिलाव का व्यापार करने के लिए इन जलक्षेत्रों में आते थे।"

“अद्भुत,” मैंने स्वीकार किया। सिबिल, अगर वह जानना भी चाहती, तो उसे इतनी अस्पष्ट जानकारी कैसे पता हो सकती थी?

श्रीमती रीडिंग ने आगे कहा, "यह 1800 के दशक की बात होगी। उससे पहले, ज़ाहिर है, यहाँ स्पेनिश लोग रहते थे।"

मैंने पूछा, "क्या आप उस समाधि सत्र के बारे में कुछ और कहना चाहेंगे जिसे आपने अभी-अभी देखा है?"

श्रीमती रीडिंग ने वही व्यक्त किया जो हम सभी महसूस कर रहे थे।

"ऊपर की खिड़कियों के खुलने और इन घंटियों के बजने के संदर्भ..."

सिबिल को यह सब कैसे पता चल सकता था? उसे किसी ने बताया ही नहीं था और उसे गड़बड़ी के विवरण से परिचित होने का मौका भी नहीं मिला था।

अब बस "दूसरे घर" के बारे में कुछ उलझाने वाले बयान ही बचे थे। उनका भी जल्द ही स्पष्टीकरण होने वाला था। हम अब बगीचे से गुज़र रहे थे और व्हेली हाउस के पिछले हिस्से

का निरीक्षण किया। उसके पीछे, हमें आश्चर्य हुआ कि बगीचे में एक और लकड़ी का घर खड़ा था। मैंने श्रीमती रीडिंग से इस दूसरे घर के बारे में पूछा।

"पेंडिंगटन हाउस को बचाने के लिए, उसे फ़्रीवे के रास्ते से हटाना पड़ा... यह कभी भी व्हेली परिवार की संपत्ति नहीं थी, हालाँकि थॉमस व्हेली ने एक बार इसे किराए पर लेने की कोशिश की थी। लेकिन यह हमेशा किसी और को किराए पर दिया जाता था।"

इसमें कोई हैरानी की बात नहीं कि भूत "दूसरे घर" को लेकर नाराज़ था। उसे उसकी ज़मीन पर उसकी सहमति के बिना ही रख दिया गया था!

कैल्ट्रॉप नाम अभी भी पूरी तरह से समझ में नहीं आ रहा था। यह व्हेली से बहुत दूर था, जबकि सिबिल के माध्यम से मिली बाकी सभी जानकारी थॉमस व्हेली से स्पष्ट रूप से मेल खाती थी। फिर श्रीमती रीडिंग के घर के विस्तृत ज्ञान के कारण धीरे-धीरे बात समझ में आने लगी।

“श्रीमती लीक को यह कहते हुए सुनना दिलचस्प था कि यहाँ कभी एक दुकान हुआ करती थी...”, उन्होंने समझाया। “यह सही है, यहाँ एक समय दुकान हुआ करती थी, लेकिन वह श्री व्हेली की दुकान नहीं थी।”

“यह किसका था?”

"यह वॉलैक नाम के एक आदमी का था...हैल वॉलैक का...यह सत्तर के दशक की बात है।"

सिबिल द्वारा घर से जुड़े एक नाम के उच्चारण के काफी करीब।

"उन्होंने इसे छह महीने के लिए वॉलैक को किराए पर दिया, फिर वॉलैक ने इसे बेच दिया," श्रीमती रीडिंग ने बताया।

श्रीमती रीडिंग से इस मामले पर चर्चा करते हुए मुझे यह भी पता चला कि गड़बड़ी वास्तव में दूसरे घर के परिसर में रखे जाने के बाद ही शुरू हुई थी। क्या यही वह आखिरी तिनका था जिसने भूत के धैर्य को तोड़ दिया?

बाद में, हम सिबिल के पीछे-पीछे बगीचे से सटी एक दीवार तक गए, एक ऐसी दीवार जहाँ कोई दरवाजा दिखाई नहीं दे रहा था। लेकिन सिबिल ने ज़ोर देकर कहा कि वहाँ एक फ्रेंच खिड़की थी, और वास्तव में एक समय वहाँ एक खिड़की थी। इस जगह से सीधे चलते हुए हम

एक विशाल पेड़ के पास पहुँचे। सिबिल ने बताया कि यहीं पर व्हेली और उसकी माँ अक्सर मिलते थे—या अभी भी मिलते हैं, जैसा भी मामला हो।

मुझे यकीन नहीं था कि मिस्टर व्हेली ने मेरी सलाह को गंभीरता से लिया होगा और अपना घर छोड़कर चले गए होंगे। आखिर उन्हें जाना क्यों चाहिए था? काउंटी ने तो एक पुराने अन्याय को सुधारने की जहमत ही नहीं उठाई थी।

हम अगली सुबह इस उम्मीद के साथ रवाना हुए कि कम से कम हमने उस बेचैन प्राणी को यह तो बता दिया होगा कि कोई उसकी परवाह करता है।

एक सप्ताह बाद रेजिस फिलबिन ने व्हेली हाउस के लोगों से संपर्क किया। सब कुछ जीवंत था—झूमर झूल रहे थे, कुर्सियाँ हिल रही थीं; और जून रीडिंग ने स्वयं 27 जुलाई, 1965 को मुझे घर में होने वाली गतिविधियों (वास्तविक लोगों के अलावा) के बारे में संक्षिप्त जानकारी दी।

ज़ाहिर है, उस बच्ची का भूत अभी भी मौजूद था, क्योंकि उस हफ्ते रसोई में बर्तन हिल रहे थे, खासकर एक छुरी जो अपने आप आगे-पीछे झूल रही थी। ज़रूर वह चंचल बच्ची ही होगी, क्योंकि थॉमस व्हेली जैसा महत्वपूर्ण व्यक्ति रसोई में क्या काम करेगा? वह तो अपने राज्य के बड़े मामलों, अपने साथ हुए पुराने अन्याय और वास्तविकता की दुनिया से होने वाली कई दखलअंदाज़ियों में ही उलझा हुआ होगा। व्हेली हाउस एक चहल-पहल वाली जगह है, भूत हों या न हों।

अपनी टेपों को दोबारा सुनने पर, मुझे अपने नोट्स में दर्ज एक भूत के शुरुआती वर्णन और एक ऐसे व्यक्ति के वर्णन में एक अजीब सा भ्रम दिखाई दिया, जिसने कहा था कि उसे तेज़ बुखार है। फर्क सिर्फ इतना था कि बुखार वाले व्यक्ति का लहजा विदेशी नहीं था, लेकिन मुझे "फेडोर" शब्द अजीब सा लगा।

क्या वे शायद दो अलग-अलग संस्थाएँ थीं?

लगभग एक साल बाद, 23 मई, 1966 को लिखे गए एक पत्र ने मेरी शंकाओं की पुष्टि कर दी। श्रीमती कैरोल डीजुहाज़ चाहती थीं कि मैं व्हेली हाउस में एक भूत के बारे में जानूँ... नहीं, थॉमस व्हेली या लंबे बालों वाली बारह साल की लड़की के बारे में नहीं। श्रीमती डीजुहाज़ अपनी एक सहेली द्वारा लिखे गए एक ऐतिहासिक नाटक को लेकर चिंतित थीं, जो 1800 के

दशक में बंदरगाह की नाव चुराने की कोशिश करने वाले और पकड़े गए एक व्यक्ति की अन्यायपूर्ण फांसी की कहानी पर आधारित था। इसमें कोई संदेह नहीं है कि व्हेली हाउस में किसी ने भी इस भूत को नहीं देखा था। श्रीमती डीजुहाज़ का मानना था कि उसे वहाँ होना चाहिए, क्योंकि उसे घर के पिछवाड़े में फांसी दी गई थी।

कई लोग मुझे उन दुखद स्थानों के बारे में बताते हैं जहाँ लोगों की दुखद मृत्यु हुई है, लेकिन ऐसे स्थानों पर मुझे शायद ही कभी भूत दिखाई देते हैं। इसलिए श्रीमती देजुहाज़ के भूत की संभावना के वर्णन में मेरी कोई खास दिलचस्पी नहीं थी। लेकिन उनका मानना था कि व्हेली हाउस में यांकी जिम रॉबिन्सन नाम के इस व्यक्ति का भूत अवश्य मौजूद होगा। पकड़े जाने पर उसने तलवारबाजी की लड़ाई लड़ी और सिर में गंभीर चोट लगी। जीवित रहते हुए भी वह बेहोश हो गया और बुखार से पीड़ित होने के कारण बिना वकील के ही उस पर मुकदमा चलाया गया। उसे मृत्युदंड दिया गया और बाद में कोर्ट हाउस के पीछे के प्रांगण में फांसी दे दी गई।

क्या यह वही रहस्यमयी आवाज़ थी जो सिबिल के माध्यम से बुखार की शिकायत करते हुए और फिर धीरे-धीरे गायब होते हुए सुनाई दी थी? एक बार फिर विलियम रिचर्डसन ही इस पहेली को सुलझाने में एक या एक से अधिक सुराग देने में सक्षम थे। दिसंबर 1966 में उन्होंने व्हेली हाउस में अपने कुछ और अनुभवों के बारे में बताने के लिए मुझसे दोबारा संपर्क किया।

“घटनाओं की यह श्रृंखला इसी साल मार्च में शुरू हुई। हमारा समूह एक ऐतिहासिक पुराने घर की मरम्मत में मदद कर रहा था, जिसे विनाश से बचाने के लिए व्हेली की संपत्ति पर लाया गया था। एक शनिवार को दोपहर के भोजन के ब्रेक के दौरान, हममें से कई लोग व्हेली हाउस में थे। मैं नीचे था जब समूह के एक सदस्य जिम स्टीन सीढ़ियों से नीचे दौड़कर आए और मुझे बताया कि नर्सरी में झूला अपने आप हिल रहा है। मैं जल्दी से ऊपर गया लेकिन वह नहीं हिल रहा था। मैं जिम को उसकी अति कल्पनाशीलता के लिए डांटने ही वाला था कि वह फिर से हिलने लगा और थोड़ी देर बाद रुक गया। झूला दरवाजे से कम से कम दस फीट दूर है, और पर्यटकों को कमरे में प्रवेश करने से रोकने के लिए उसके पार एक धातु की बाड़ लगी हुई है। चलने या कूदने का झूले पर कोई असर नहीं हुआ। जब वह हिल रहा था, मुझे याद आया कि उससे कोई आवाज नहीं आ रही थी। कमरे में जाकर मैंने झूले को हिलाया। मुझे

आश्चर्य हुआ कि उससे काफी आवाज आ रही थी। पुराने फर्श के तख्ते थोड़े असमान थे और झूले पर लगे लकड़ी के झूलों के साथ मिलकर यह आवाज पैदा कर रहा था। बहुत तेज आवाज।

"दरअसल, जब व्हेली परिवार घर के लिए कालीन लगवा रहा था, तो ऊपरी मंजिल के पूरे हिस्से में कालीन बिछाया गया था। शायद इसी वजह से शोर नहीं सुनाई दे रहा था।"

जून में, व्हेली हाउस एक ऐतिहासिक नाटक का मंच बना। यह नाटक यांकी जिम रॉबिन्सन नामक एक स्थानीय बदमाश के मुकदमे और फांसी से संबंधित था। इसे अदालत कक्ष और हवेली के मैदान में प्रस्तुत किया गया था। वास्तविक मुकदमा और फांसी अगस्त 1852 में हुई थी। यह व्हेली हाउस के निर्माण से पांच साल पहले की बात है, लेकिन फांसी उसी मैदान में हुई थी।

"यांकी जिम को उस मचान से फांसी दी गई थी जो लगभग वर्तमान संगीत कक्ष और सामने के बैठक कक्ष के बीच में स्थित था।"

“नाटक का पूर्वाभ्यास शुरू होने के कुछ ही समय बाद अजीबोगरीब घटनाएं होने लगीं। मैं एक अभिनेता के रूप में इस प्रोडक्शन से जुड़ा हुआ था, इसलिए मुझे जून और अगस्त के बीच घर में कई घंटे बिताने का मौका मिला। हमेशा की तरह कदमों की आहट सुनाई देती रही और कलाकारों में से लगभग सभी ने इसे कभी न कभी सुना। कलाकारों में से एक समूह ऐसा था जिसे इस घटना में विशेष रुचि थी: मैं, बैरी बंकर, जॉर्ज कैरोल और उनकी मंगेतर टोनी मनिस्टा। चूंकि हम सभी ज्यादातर समय पारंपरिक वेशभूषा में थे, इसलिए भूतों को घर जैसा महसूस होना चाहिए था। टोनी थॉमस व्हेली की पत्नी अन्ना का किरदार निभा रही थीं। उन्होंने कहा कि उन्हें अक्सर ऐसा लगता था जैसे कोई घर में उनका पीछा कर रहा हो (जैसा कि हम सभी को लगता था)।

एक रात मैं रसोई में दीवार की तरफ पीठ करके बैठी थी, तभी मुझे अपने बालों में किसी का हाथ महसूस हुआ। मैंने झट से पीछे मुड़कर देखा, पर वहाँ कुछ भी नहीं था। मुझे हमेशा से लगता है कि मुझे अन्ना व्हेली ने छुआ था। यह मेरा पहला ऐसा अनुभव था और मुझे गर्व महसूस हुआ कि उन्होंने मुझे छूने के लिए चुना। रसोई में एक कुर्सी है जो कच्चे चमड़े और लकड़ी से बनी है। उसकी सीट लकड़ी के फ्रेम पर पतले कच्चे चमड़े की पट्टियों को एक

दूसरे के ऊपर रखकर बनाई गई है। जब कोई उस पर बैठता है, तो उससे वैसी ही आवाज़ आती है जैसे किसी घोड़े की काठी से आती है। जिस रात मुझे छुआ गया, उसी रात कुर्सी से ऐसी आवाज़ें आईं जैसे कोई उस पर बैठा हो, एक बार नहीं बल्कि कई बार। जब भी कोई किसी के प्रवेश करता है, तो कमरे के तापमान में बदलाव सा महसूस होता है। रसोई भी इसका अपवाद नहीं है। वहाँ तो सच में बहुत ठंड हो गई थी!

शो के बाद के दौर में, अजीबोगरीब दृश्य दिखने लगे। कलाकारों ने थॉमस व्हेली की एक कुर्सी खरीदी और उसे सामने वाले कमरे में रख दिया। कुछ समय बाद, कुर्सी में या उसके आस-पास कभी-कभी धुंध दिखाई देने लगी। घर के अन्य हिस्सों में, खासकर ऊपरी मंजिल पर, रहस्यमय परछाइयाँ और धुंध दिखने लगीं। जॉर्ज कैरोल कसम खाकर कहता है कि उसने सीढ़ियों के ऊपर एक आदमी को खड़े देखा। वह सीढ़ियों से ऊपर गया और उस आदमी के बीच से गुजरा। जब जॉर्ज मुड़ा तो वह आदमी अभी भी वहीं था, लेकिन लगभग तुरंत ही गायब हो गया।

"गर्मियों के दौरान, जब हम सुबह घर खोलते थे या जब आसपास कोई नहीं होता था, तो हमें अक्सर सिगार के धुएं की गंध आती थी। व्हेली को सिगार बहुत पसंद थे और वह शायद ही कभी उनके बिना रहते थे।"

“पैरों की आहटें बदल गईं। उस आदमी के भारी कदमों की आवाज़ हमेशा की तरह आती रही, लेकिन बीच-बीच में ऊँची एड़ियों की खट-खट की आवाज़ सुनाई देती थी। एक बार, ऊपर के हॉल में एक छोटे बच्चे के दौड़ने की आवाज़ सुनाई दी। एक बार, मैं यांकी जिम के लिए टिकट बुकिंग करने वाली महिला के साथ अकेली थी। हमने दरवाज़े बंद कर लिए थे और निकलने से पहले ऊपर का कमरा देखने का फैसला किया। जैसे ही हम सीढ़ियाँ चढ़े, हम दोनों को नीचे हॉल में कदमों की आहट सुनाई दी। हमने एक पल के लिए सुना और फिर वापस नीचे सीढ़ियों से उतरकर देखा। कोई नहीं था। हमने पूरे घर में तलाशी ली, वैसे तो हमें किसी के मिलने की उम्मीद नहीं थी। और हमें कोई नहीं मिला। एक भी जीवित प्राणी नहीं।”

"खैर, इससे आपको हाल की सारी जानकारी मिल जाएगी। मैं सितंबर से कई बार वापस आ चुका हूं, लेकिन हमेशा की तरह कदमों की आहट, चरमराहट आदि के अलावा बताने लायक कुछ नहीं है।"

मुझे लगता है कि इस नाटक का गर्मियों की घटनाओं से गहरा संबंध था। व्हेली परिवार से परिचित वेशभूषा, पात्र और परिस्थितियाँ हर रात मंच पर दोहराई जाती थीं। यांकी जिम रॉबिन्सन के पास भूत बनकर रहने का पर्याप्त कारण है। बहुत से लोग, जिनमें मैं भी शामिल हूँ, सोचते हैं कि उसके साथ अन्याय हुआ। उसे बंदी बनाए जाने के दौरान चोट लगी थी और मुकदमे के अधिकांश समय वह बेहोश था। ऊपर से, न्यायाधीश शराबी था और जूरी तथा शहरवासी खून के प्यासे थे। जिम बस इतना बदनसीब था कि उसे उन सभी के मिले-जुले प्रकोप का सामना करना पड़ा।

उसका गुनाह क्या था? उसने एक नाव उधार ली थी। फांसी की सज़ा के लायक तो बिलकुल नहीं। उसे दोषी पाया गया और सज़ा सुनाई गई। वह मरने के लिए तैयार नहीं था और जब तक उसके नीचे से गाड़ी नहीं हटाई गई, तब तक उसे लगा कि यह एक मज़ाक है। फांसी का तख्ता काफी ऊंचा नहीं था और गिरने से उसकी गर्दन नहीं टूटी। इसके बजाय, मरने से पहले वह पंद्रह मिनट से अधिक समय तक धीरे-धीरे दम घुटता रहा। मुझे लगता है कि अगर मैं भी उन्हीं परिस्थितियों में होता तो शायद भूत बनकर रह जाता।

“दो अन्य बातें: एक अन्य गाइड ने गलियारे में चलते समय अपने ठीक सामने एक आवाज़ सुनी। आवाज़ थी, ‘हैलो, हैलो।’ उस समय घर में कोई और नहीं था। व्हेली परिवार के कुत्तों में से एक के हुलिए से मिलता-जुलता एक कुत्ता घर में घुसते हुए देखा गया था, लेकिन वह कभी नहीं मिला।”

आम तौर पर, अलग-अलग समय के भूत एक-दूसरे से नहीं मिलते, जब तक कि वे किसी साझा समस्या या त्रासदी से जुड़े न हों। फांसी पर चढ़ाया गया व्यक्ति, स्वाभिमानी मालिक, छोटी बच्ची, घर की मालकिन—व्हेली हाउस जैसे विशाल घर में भी ये भूतों की एक जीवंत आबादी बनाते हैं।

श्रीमती रीडिंग को कोई आपत्ति नहीं है। सिवाय इसके कि कभी-कभी थोड़ी उलझन हो जाती है जब आप किसी को घर में घूमते हुए देखते हैं और आपको यह पक्का नहीं पता होता कि उसने प्रवेश टिकट खरीदा है या नहीं।

यकीनन, थॉमस व्हेली कभी ऐसी नाव खरीदने का सपना भी नहीं देखेंगे। और जब तक इस पुराने अन्याय को सुधारने के लिए सार्वजनिक रूप से कोई कदम नहीं उठाया जाता, तब तक

उनके जाने की संभावना भी नहीं है। अगर काउंटी इस मामले को फिर से खोले और बहुत पहले हुई गलती को स्वीकार करे, तो मुझे यकीन है कि भूतिया मिस्टर व्हेली खुश होंगे और मामला शांत हो जाएगा। सिबिल लीक ने उस छोटी बच्ची के भूत को बता दिया है कि उसके साथ क्या हुआ है, और वह महिला वहीं जाती है जहाँ मिस्टर व्हेली जाते हैं। अब बात आती है जिम की, जिस पर नाव चोरी का फिर से मुकदमा चलाया जाना होगा और उसे निर्दोष साबित किया जाना होगा।

घर में वह शानदार अदालत कक्ष मौजूद है जहाँ यह सब किया जा सकता है। शायद भूत-प्रेतों के प्रति सजग कोई काउंटी प्रशासन इसे ही उचित समझे।

मुझे अभियुक्त के वकील के रूप में नि:शुल्क सेवा देने में खुशी होगी।

* 51

वेदी पर भूत

मैंने कुछ समय से पिट्सबर्ग के पास एक चर्च में एक भूतिया पादरी के बारे में अफवाहें सुनी थीं, और जब मैं 1963 की वसंत ऋतु में स्टेशन KDKA-TV पर जॉन रीड किंग शो में आया, तो प्रसारण के बाद क्रू के एक सदस्य ने मेरे पास आकर मुझे बताया कि उसे भूतों के बारे में सुनना कितना अच्छा लगता है।

“क्या आपने कभी एम—— में उस भूतिया चर्च का दौरा किया है?” उसने पूछा, और मेरी स्वाभाविक जिज्ञासा जागृत हो गई। पिट्सबर्ग में एक भूत, और मैं उससे नहीं मिला? ऐसा तो हो ही नहीं सकता। लेकिन मेरा प्रवास समाप्त हो चुका था और मुझे न्यूयॉर्क लौटना था।

फिर भी, एम— की रहस्यमय शख्सियत मेरे दिमाग में छाई हुई थी। जब मैं सितंबर 1963 में पिट्सबर्ग लौटा, तो मैंने उस मामले को सुलझाने का पक्का इरादा कर लिया था।

KDKA स्टेशन पर जिम सीगर और उनके रिपोर्टर जॉन स्टीवर्ट की मदद से, हमने एक कार, एक बेहतरीन पोर्टेबल टेप रिकॉर्डर और फोटोग्राफर जिम स्टार्क का इंतजाम किया। मेरे प्रसारण के तुरंत बाद, हम मिलवेल के लिए रवाना हो गए।

शायद किस्मत ने ही हमें नतीजे तक पहुँचाने की इच्छा जताई थी, क्योंकि जिस पहले पेट्रोल पंप पर हम रुके, वहाँ के कर्मचारी ने हमें भूतिया चर्च का रास्ता बता दिया। चर्च का नाम और उसके वर्तमान पादरी का नाम उनकी अपनी इच्छा से गुप्त रखा गया है, लेकिन कहानी सच है।

भूतिया चर्च एक भव्य रोमनस्क शैली की पत्थर की इमारत है, जिसका निर्माण शताब्दी के मोड़ पर पिट्सबर्ग नदी के किनारे एक ऊँची पहाड़ी पर किया गया था। यह एक स्कूल और पादरी के निवास से जुड़ा हुआ है और साफ-सुथरा और सुव्यवस्थित दिखता है; इसमें भूतिया या रहस्यमय जैसा कुछ भी नहीं है।

जब मैंने पादरी के निवास की घंटी बजाई, तो स्वेटर और पैंट पहने एक हट्टे-कट्टे, प्रभावशाली व्यक्ति ने दरवाजा खोला। मैंने उनसे चर्च के इतिहास के बारे में बात करने का अनुरोध किया। जाहिर है, उनमें असाधारण बुद्धिमत्ता थी, क्योंकि वे तुरंत समझ गए कि मैं क्या जानना चाहता हूँ।

“मैं पुजारी हूँ,” उन्होंने दृढ़ता से, स्लाविक लहजे में कहा। उनके साधारण कपड़ों को देखकर मैं थोड़ा चौंक गया, लेकिन उन्होंने समझाया कि पुजारियों को भी कभी-कभी आराम करने की अनुमति होती है। फादर एक्स, जैसा कि हम उन्हें बुलाएँगे, लगभग पैंतालीस या पचास वर्ष के सुशिक्षित और मृदुभाषी व्यक्ति थे, और उन्होंने सहजता से स्वीकार किया कि उन्होंने “आत्माओं” के बारे में अफवाहें सुनी थीं, लेकिन वास्तव में उनमें कोई सच्चाई नहीं थी। दरअसल, उन्होंने कहा, इस बारे में बात करने के लिए उनके वरिष्ठ, फादर एच से संपर्क करना चाहिए।

कुछ देर बाद, फादर एच. को बुलाया गया और मुझे इस विषय के "विशेषज्ञ" के रूप में उनसे मिलवाया गया। जब फादर एच. को पता चला कि मैं एक परामानसिक विज्ञानी हूँ और उनके भूत में रुचि रखता हूँ, तो वे उत्तेजित हो गए। उन्होंने ज़ोर देकर कहा, "मुझे कुछ नहीं कहना है," और विनम्रतापूर्वक हमें बाहर जाने का इशारा किया। मैंने उनकी बात अनसुनी कर दी।

इसके बजाय, मैंने उनके चर्च में भूत-प्रेत की अफवाहों की पुष्टि या खंडन करने का अनुरोध जारी रखा। जाहिर है, फादर एच. असामान्य चीजों से डरते थे। कई पादरी ऐसा नहीं करते और वे उन चीजों के बारे में खुलकर चर्चा करते हैं जिनके अस्तित्व के बारे में वे जानते हैं।

लेकिन फादर एच. एक बार एक अन्य लेखक, लुई एडमिक से मिले थे, और जाहिर तौर पर इस मुलाकात ने उन्हें मेरे जैसे अन्य सभी लेखकों से निराश कर दिया था।

ऐसा लगता है कि एडमिक, जो खुद भी एक क्रोएशियाई थे, ने अपनी एक किताब में वेदी पर भूत की कहानी का ज़िक्र किया था—और वो भी गंभीरता से—जो एडमिक जैसे नास्तिक के लिए वाकई एक बड़ी बात थी। फादर एच. ने प्रकाशन के लिए कुछ नहीं कहा।

“नहीं, नहीं, नहीं—कुछ नहीं। मैं आपको आशीर्वाद देता हूँ। अलविदा।” उन्होंने विधिपूर्वक झुककर हमारा प्रस्थान करने का इंतज़ार किया। लेकिन मैंने मुड़कर सहायक पादरी फादर एक्स को देखकर मुस्कुरा दिया।

“क्या हम चर्च देख सकते हैं?” मैंने कहा और इंतज़ार किया। वे मना तो कर ही नहीं सकते थे। फादर एच. समझ गए कि हम तुरंत नहीं जाएंगे और उन्होंने मान लिया कि उनके सहायक पादरी हमसे बात करेंगे।

“बहुत खूब। लेकिन मेरे बिना!” उसने आखिरकार कहा और चला गया। फादर एक्स को बस इतना ही चाहिए था। अब मैदान साफ था। धीरे से उसने एक सिगरेट जलाई और कहा, “जानते हो, मैंने खुद अपने गृह देश क्रोएशिया में दो साल तक पैरासाइकोलॉजी का अध्ययन किया है।”

उनके पहले आगमन के बाद, फादर एक्स के बारे में मुझे कुछ भी आश्चर्यजनक नहीं लगा। जब हम प्रांगण से होते हुए गिरजाघर की ओर चल रहे थे, तो हम मानसिक अनुसंधान के गुणों पर एक जीवंत चर्चा में मशगूल हो गए। फादर एक्स हमें वेदी के द्वार से अंदर ले गए, और हमने अर्ध-अंधेरे में चमकती हुई सफेद और सुनहरी वेदी को राफेल की पुनर्जागरणकालीन पेंटिंग में से किसी एक दृश्य की तरह उभरते हुए देखा।

इस गिरजाघर में कुछ बहुत ही अनोखी बात थी। एक तो यह एक विशिष्ट यूरोपीय, स्लाव शैली से प्रभावित इमारत थी और इसे देखकर ऐसा लगता था मानो आप अपने से अलग मूल के किसी जातीय समूह के बीच में हों। विशाल मुख्य हॉल एक बालकनी पर समाप्त होता था, जिस पर एक पुराने ज़माने का, यानी बिना बिजली या स्वचालित, ऑर्गन प्रमुख स्थान पर रखा हुआ था। इसमें कोई संदेह नहीं कि इस गिरजाघर में होने वाली प्रार्थना सभाएँ भव्य और भावनात्मक रूप से संतोषजनक अनुभव प्रदान करती थीं।

हम वेदी के और करीब गए, जिसके दोनों ओर एक विशाल, भारी मोमबत्ती जल रही थी, जिसे यूरोपीय लोग 'शाश्वत प्रकाश' कहते हैं। "इस चित्र को देखिए," फादर एक्स ने कहा और वेदी के पीछे, भीतरी गुंबद के पूरे हिस्से को ढकने वाले घुमावदार भित्तिचित्र की ओर इशारा किया। चित्र में क्रोएशिया के मूल निवासी अपनी पारंपरिक वेशभूषा में थे, और क्रोएशियाई लोगों का एक समूह अपने चर्च का मॉडल प्रस्तुत कर रहा था।

इन पारंपरिक दृश्यों को चटख रंगों और एक मनमोहक, आदिम शैली में चित्रित किया गया था जो कहीं और नहीं मिलती। मैंने चित्रकार के बारे में पूछा। पुजारी ने कहा, "मैक्सिम ह्वात्का," और मैंने तुरंत उस नाम को पहचान लिया, जो कुछ साल पहले दिवंगत हुए एक प्रसिद्ध युगोस्लाव कलाकार का नाम था। ये भित्तिचित्र शताब्दी के आरंभिक भाग में बनाए गए थे।

जब हम वेदी की सीढ़ियों पर खड़े होकर उसकी प्रशंसा कर रहे थे और वहां के अनुभवों को महसूस कर रहे थे, तो फादर एक्स ने शायद फिर से मेरे मन की बात जान ली, क्योंकि उन्होंने बिना किसी झिझक के कहा, "हाँ, यही वह स्थान है जहाँ 'आत्माओं को देखा गया था।'"

मुझे इस बात में कोई संदेह नहीं था कि हमारे सहायक पादरी इस घटना की सच्चाई के बारे में पूरी तरह से आश्वस्त थे।

पेंसिल्वेनिया के एम—— में स्थित भूतिया चर्च

मैंने पूछा, "आखिर हुआ क्या था?"

“कुछ समय पहले, फादर एच. और चित्रकार ह्वाटका, वे यहाँ वेदी के पास थे। ह्वाटका वेदी का चित्र बना रहा था और फादर एच. उसे देखने के लिए यहाँ थे। अचानक, ह्वाटका ने फादर का हाथ पकड़ा और बड़े उत्साह से बोला, ‘देखिए, फादर—यह व्यक्ति—चर्च में, वेदी के सामने कोई है!’”

“फादर एच. को पता था कि चर्च पूरी तरह से बंद है और इमारत में केवल वे और पेंटर ही मौजूद हैं। वहाँ कोई और व्यक्ति हो ही नहीं सकता। ‘कहाँ? कौन?’ उन्होंने कहा और गौर से देखा। उन्हें कुछ भी दिखाई नहीं दिया। ह्वाटका ने ज़ोर देकर कहा कि उसने अभी-अभी एक आदमी को वेदी के पास से गुज़रते हुए देखा और वह अचानक गायब हो गया। वे बाईं ओर जल रही रोशनी के पास पहुँचे और अचानक ठंड का अनुभव किया। इतना ही नहीं, रोशनी भी बुझी हुई थी।”

“इस रोशनी को बुझाने के लिए इसके ठीक ऊपर किसी शक्तिशाली ब्लोअर या पंखे के अलावा किसी और चीज़ का इस्तेमाल करना नामुमकिन है। कांच से घिरी और धातु से ढकी ये शक्तिशाली मोमबत्तियाँ हवा और सामान्य हवा के झोंकों या इंसानी साँसों का सामना करने के लिए बनी हैं। सज्जनों, केवल किसी असाधारण शक्ति का होना ही इस रोशनी को बुझा सकता था।”

फादर एक्स थोड़ी देर रुके। उनकी बताई कहानी से मैं बहुत प्रभावित हुआ, और मुझे तुरंत समझ आ गया कि फादर एच हमसे क्यों दूर रहना चाहते थे। बिना देखे वे भला किसी आत्मा की उपस्थिति का दावा कैसे कर सकते थे? नामुमकिन। हमने कुछ तस्वीरें लीं और धीरे-धीरे बाहर निकलने की ओर चल दिए।

अब फादर एक्स का मेरे प्रति रवैया नरम हो गया और उन्होंने अपने बचपन का एक अनुभव सुनाया। ऐसा लगता है कि जब वे अपने गृह नगर क्रोएशिया में धर्मशास्त्र का अध्ययन कर रहे थे, तब वे एक ऐसे समूह या शायद एक दर्जन युवा छात्रों के बीच रहते थे, जो उनके जैसी मानसिक विद्या के प्रति रुचि नहीं रखते थे—बल्कि, वे उनका उपहास करते थे।

लेकिन उनके रूममेट एक युवक ने इस विषय को गंभीरता से लिया, इतनी गंभीरता से कि उन्होंने एक समझौता कर लिया—जो भी पहले मरेगा, वह दूसरे को सूचित करेगा। कुछ समय बाद, फादर एक्स, एक गर्म दोपहर में सोते हुए अचानक जाग गए। उन्हें पता चल गया था कि उनके मित्र की उसी क्षण मृत्यु हो गई है, क्योंकि उन्होंने उसे अपने बिस्तर के पास एक कुर्सी पर बैठे, हंसते और उन्हें हाथ हिलाते हुए देखा था। यह महज़ एक सपना नहीं था, बल्कि एक जीवंत और प्रभावशाली अनुभव था। फादर एक्स उस समय सो नहीं रहे थे; उस अनुभव ने वास्तव में उन्हें जगा दिया था।

उसने अपनी घड़ी देखी; दोपहर के ठीक तीन बज रहे थे। उसने जल्दी से अपने दोस्त के बारे में जानकारी जुटाई। कुछ ही घंटों में उसे वही पता चल गया जिसका उसे पहले से ही शक था —उसके दोस्त की एक दुर्घटना में ठीक उसी समय मौत हो गई थी जब उसने उसे सेमिनरी में उसके कमरे में देखा था!

मैंने कहा, "तो फिर तुम भविष्य देख सकते हो।"

फादर एक्स ने कंधे उचकाते हुए कहा, "मैं कई मानसिक रूप से विक्षिप्त मामलों को जानता हूँ। इटली में एक नन थी, जिसने अपने वरिष्ठों को यह बताने के लिए कि वह अब नरक में है, चर्च के दरवाजे पर अपने हाथों के निशान छोड़ दिए थे।"

फादर एक्स ने शांत स्वर में और एक ऐसे व्यक्ति के आत्मविश्वास के साथ बात की जो अपने विषय का भली-भांति जानकार हो। “ये बातें तो हैं, लेकिन हम क्या कर सकते हैं? हम इन्हें आसानी से स्वीकार नहीं कर सकते।”

अचानक मेरे मन में एक विचार आया। क्या उसे इस बात का कोई अंदाजा था कि वेदी पर मौजूद भूत कौन था? फादर एक्स ने सिर हिलाया।

मैंने आगे कहा, "मुझे बताओ, क्या चर्च में किसी की हिंसक मौत हुई थी?"

फिर से, नकारात्मक उत्तर।

मैंने कहा, "यह अजीब बात है। क्या इस चर्च से पहले इस जगह पर कोई और इमारत थी?"

“नहीं,” फादर एक्स ने बेपरवाही से कहा।

मैंने जवाब दिया, "यह तो और भी अजीब है, क्योंकि मेरे शोध से पता चलता है कि उन्नीसवीं शताब्दी में यहां एक पुजारी थे, और उन्हीं का भूत देखा गया है।"

पिता एक्स ने बड़ी मुश्किल से अपनी बात कही।

“दरअसल,” उन्होंने अब कहा, “आप सही कह रहे हैं। इस जगह पर पहले एक लकड़ी का गिरजाघर था। वर्तमान पत्थर की इमारत लगभग 1901 की है। फादर रानजिंगर ने लकड़ी का गिरजाघर बनवाया था।”

मैंने पूछा, "क्या यह लगभग 1885 के आसपास की बात है?" मेरे नोट्स में तो यही लिखा था।

“शायद सही है,” पादरी ने कहा, और अब मेरी जानकारी पर उन्हें कोई आश्चर्य नहीं हुआ।

“फादर, उस लकड़ी के गिरजाघर का क्या हुआ?” मैंने पूछा, और यहाँ मुझे कोई जवाब नहीं मिला, क्योंकि मेरी खोजबीन से मुझे इसके बारे में और कुछ पता नहीं चला।

“ओह, वह तो जलकर राख हो गया। पूरी तरह से। नहीं, किसी को चोट नहीं आई, लेकिन चर्च पूरी तरह से नष्ट हो गया।”

ऐसा प्रतीत होता है कि फादर रानज़िंगर का प्रिय लकड़ी का गिरजाघर आग की लपटों में जल गया, और अपने अनुयायियों के साथ बिताए पंद्रह वर्षों ने उनके मन में गहरी भावनात्मक छाप और लगाव पैदा कर दिया होगा। क्या यह संभव नहीं है कि इमारत के प्रति फादर रानज़िंगर का लगाव पत्थर की इमारत के पूरा होते ही उस पर स्थानांतरित हो गया हो?

क्या वेदी के सामने उन दोनों आदमियों ने उसी का भूत देखा था? जब तक वह दोबारा प्रकट नहीं होता, तब तक हम नहीं जान पाएंगे, लेकिन भूत हो या न हो, पिट्सबर्ग का भूतिया चर्च विश्राम और प्रार्थना करने के लिए एक सुंदर स्थान है।

* 52

एक भूत का अंतिम आश्रय

वर्जीनिया के चार्लोट्सविले के पास, क्रांतिकारी दिनों के दौरान निर्मित एक फार्महाउस खड़ा है, जो अब मैरी डब्ल्यू के स्वामित्व में है, जो पचास वर्ष की आयु के आसपास की एक महिला हैं, जिन्होंने कुछ साल पहले ड्यूक विश्वविद्यालय में प्रोफेसर राइन के काम में क्षणिक रुचि दिखाई थी।

उनकी मानसिक क्षमताओं को स्वीकार किया जाता है, लेकिन वे जोर देकर कहती हैं कि उन्होंने हाल ही में कोई स्वचालित लेखन नहीं किया है और अब उनकी इसमें कोई खास रुचि नहीं रही। बाद में मुझे एहसास हुआ कि उनकी घटती रुचि का संबंध उस घर में घटी घटनाओं से अवश्य ही होगा जिसे हम विकहम कहेंगे, क्योंकि मालिक के अनुरोध का सम्मान करते हुए फिलहाल उसका असली नाम गुप्त रखना आवश्यक है।

वर्जीनिया क्लाउड मार्गदर्शक और भविष्यवक्ता के रूप में साथ आई थीं, और लेखक बूटन हर्नडन भी उस विषय को देखने के लिए साथ आए थे जिसे वे हमेशा से ही बेहद दिलचस्प मानते थे। इस प्रकार, मई की एक सुहावनी सुबह, दो कारों का काफिला विकहम की ओर रवाना हुआ, जब प्रकृति की भव्यता ने हमारे गंतव्य के गंभीर विषय को झुठला दिया।

वहाँ पहुँचने पर, मेरी पत्नी कैथरीन और मैं मैरी डब्ल्यू के साथ बैठ गए ताकि वह हमें उस प्रेतवाधित घर में अपने अनुभवों के बारे में बता सकें। उनके बताने के बाद ही वर्जीनिया क्लाउड घर में दाखिल हुईं।

घर का सबसे पुराना हिस्सा, जो बाकी हिस्सों से काफी कुशलता से जुड़ा हुआ है, एक हॉल या मुख्य कमरा और एक छोटा शयनकक्ष है, जहाँ एक संकरी घुमावदार सीढ़ी से पहुँचा जा सकता है।

सन् 1781 से अस्तित्व में आया यह हिस्सा, श्रीमती डब्ल्यू द्वारा सन् 1951 में घर और जमीन का अधिग्रहण करने के समय से ही कुछ रहस्यमय घटनाओं का स्थान रहा है। क्या इससे पहले के मालिकों को भी ऐसे कोई अनुभव हुए थे, इसका पता नहीं लगाया जा सका है।

उस समय भावनात्मक रूप से उत्तेजित श्रीमती डब्ल्यू याद करती हैं कि वह नीचे के एक छोटे से सटे कमरे में थीं, जिसे एक छोटे से होम बार में बदल दिया गया था, तभी उन्हें मुख्य कमरे में कदमों की आहट सुनाई दी, और घुड़सवारी के कपड़ों जैसी सरसराहट की आवाज आई; उन्होंने आवाज लगाई, लेकिन वह जानती थीं कि यह उनके पति नहीं थे; कदमों की आवाज जारी रही; कोई कमरे में इधर-उधर चल रहा था। श्रीमती डब्ल्यू ने खिड़की से बाहर देखा और अपने पूरे परिवार को खलिहान के पास, लगभग बीस गज की दूरी पर बाहर देखा।

इससे वह और भी ज्यादा घबरा गई और मुख्य कमरे में चली गई। वहां कोई नहीं था। लेकिन अजीब बात यह थी कि उसकी मौजूदगी में भी कदमों की आहट जारी रही, दरवाजे तक पहुंची और फिर कमरे के दूसरी ओर सीढ़ियों की तरफ वापस चली गई, जहां ऊपर पुराने कमरे की ओर जाने वाले चबूतरे पर अचानक रुक गई।

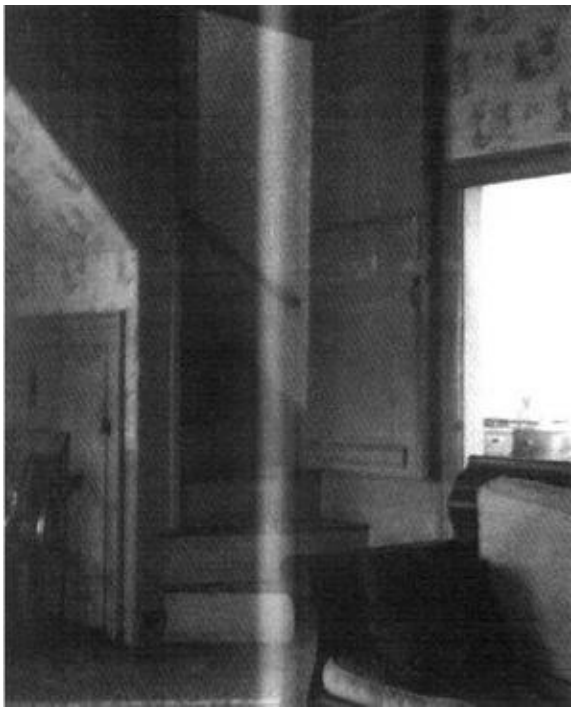

वह दरवाजा जो अपने आप खुलता रहता था

पिछले मालिक, जिनका नाम ड्यूवेल था, ने मैरी डब्ल्यू को बताया था कि जब घर में उनकी पूर्ववर्ती, श्रीमती अर्ली की मृत्यु हुई थी, तो एक अजीब सी आवाज आई थी जैसे कोई सीढ़ियों से गिर रहा हो।

दो साल बाद, 1953 में, श्रीमती डब्ल्यू की दो बेटियाँ, जिनकी उम्र उस समय बारह और नौ वर्ष थी, ऊपर के कमरे में खेल रही थीं, जबकि माता-पिता मुख्य घर से अलग पास की कुटिया में कुछ मेहमानों का मनोरंजन कर रहे थे। यह 10 बजे का समय था।

शाम ढलते ही लड़कियों ने नीचे खाली घर में किसी के चलने की आवाज़ सुनी। उन्होंने आवाज़ लगाई, लेकिन कोई जवाब नहीं मिला। उन्हें लगा कि उनके माता-पिता का कोई दोस्त होगा, लेकिन बाद में जाँच करने पर पता चला कि कोई भी पार्टी छोड़कर एक पल के लिए भी मुख्य घर नहीं लौटा था।

चिमनी—मानसिक घटनाओं का केंद्र

लगभग सन् 1960-61 में, श्रीमती डब्ल्यू ने उसी स्थान पर फिर से वही जानी-पहचानी पदचाप सुनी। पदचाप शुरू होती, फिर रुकती, फिर से शुरू हो जाती। हालाँकि श्रीमती डब्ल्यू ने कुछ मानसिक क्षमताओं को स्वीकार किया, लेकिन उनकी स्वचालित लेखन शैली से घर से जुड़े किसी भी व्यक्ति का पता नहीं चला, सिवाय शायद रेबेका नाम की एक दासी के, जिसने दावा किया था कि उसे भारतीयों ने पकड़ लिया था और उसकी जीभ काट दी थी; उसे अर्ली परिवार के बेटों ने पाया और तब से वह उनकी नौकरानी बन गई; श्रीमती डब्ल्यू ने रॉबर्ट नाम के एक मार्गदर्शक या नियंत्रक होने का भी दावा किया।

यह जगह कई वर्षों से विवाद में थी, और यहाँ तीन पारिवारिक कब्रिस्तान हैं। घर का निर्माण रिचर्ड ड्यूरेट ने 1781 में करवाया था। 1938 से पहले, श्रीमती डब्ल्यू के स्वामित्व में आने से पहले, जब चिमनी का पुनर्निर्माण किया गया था, तब एक शिलालेख मिला जिसमें बताया गया था कि पास की बैरक से हेसियन सैनिक कैदियों ने 1781 में चिमनी बनाने में मदद की थी। पास की बैरकों में तीन हजार कैदियों को रखा गया था। उनमें से कुछ बाद में वहीं रुक गए और स्थानीय लड़कियों से शादी कर ली।

इस बारे में वर्जीनिया क्लाउड की मौजूदगी में कोई चर्चा नहीं हुई, जो मैरी डब्ल्यू और मेरे सामने आते ही अर्ध-बेहोशी की हालत में चली गईं। उन्होंने एक अल्बर्ट या अल्फ्रेड को सफेद कमीज, बूट और पतलून पहने हुए, लेकिन वर्दी में नहीं, घर में घसीटते हुए देखा; शायद वह कोई घायल हेसियन था जो खाली घर में घुस रहा था, जिसे ब्रिटिश सैनिकों ने यहाँ तक खदेड़ दिया था। "ब्रिटिश सैनिक दूर हैं... यहाँ पास में कुछ जलाया गया था।" इस समय, मैरी डब्ल्यू और मुझे दोनों को धुएँ की गंध आई।

वर्जीनिया क्लाउड की गवाही से अलग, हम दोनों ने प्रवेश द्वार पर हल्की सी दस्तक सुनी, दो छोटी-छोटी खटखटाहट।

सीढ़ियों के पास अपनी कुर्सी पर बैठी वर्जीनिया कांपने लगी। “भूत अपनी माँ को याद करता है और उसे पुकारता है, लेकिन वह अब यहाँ नहीं है... बस एक स्मृति बनकर रह गई है; शायद उसकी मृत्यु यहीं हुई होगी, क्योंकि मैंने उसे फिर कभी जाते हुए नहीं देखा। उसकी बांह पर धातु से चोट के निशान हैं, शायद किसी गोले से।”

मैरी डब्ल्यू ने अपने जीवन में एक दुखद घटना झेली थी। उनके पति केनेथ ने उसी घर में आत्महत्या कर ली थी जहाँ हम गए थे। मुझे ऐसा लगा कि तंत्र-मंत्र में मैरी की रुचि इसी घटना से जुड़ी हुई थी, और शायद वह सोचती थीं कि वे प्रेतवाधित कदमों की आहट वास्तव में उनके दिवंगत पति की बेचैन हलचलें थीं, उसी कमरे में जिसे वह अपना घर कहते थे।

लेकिन ये शोर और गड़बड़ियाँ मैरी के घर में रहने के समय से भी कहीं पुरानी हैं। सोची-समझी आत्महत्या से भूत-प्रेत शायद ही कभी पैदा होते हैं। मुझे पूरा यकीन है कि विकहम में जो भूत है, वह मैरी का पति नहीं, बल्कि हेसियन सेना का वह भगोड़ा है जो पीछा कर रहे अंग्रेजों से बचने के लिए शरण लेना चाहता था।

* 53

अष्टभुज भूत

सन् 1800 में कर्नल जॉन टैलो ने अपना आलीशान घर बनवाया था, जो अपनी आकृति के कारण अब ऑक्टागन के नाम से जाना जाता है। यह वाशिंगटन के एक पॉश इलाके में स्थित

था, लेकिन अब इसमें अमेरिकन इंस्टीट्यूट ऑफ आर्किटेक्ट्स के कार्यालय और प्रदर्शनी स्थल हैं।

1800 के दशक के आरंभ में कर्नल की बेटी एक अजनबी के साथ भाग गई और बाद में घर लौटकर माफी मांगी। अपने कठोर पिता से उसे माफी नहीं मिली और हताशा में उसने हवेली की घुमावदार सीढ़ियों की तीसरी मंजिल से छलांग लगा दी। वह सीढ़ियों के आधार के पास एक जगह पर गिरी, और यहीं से हवेली में वर्षों से दर्ज की गई रहस्यमय घटनाओं की एक श्रृंखला शुरू हुई।

लाइफ पत्रिका ने 1962 में भूतिया हवेली पर एक लेख में बताया कि कुछ आगंतुकों का दावा है कि उन्होंने उस स्थान पर एक छाया देखी है जहां लड़की गिरी थी, जबकि अन्य अज्ञात कारणों से उस स्थान को पार करने से इनकार करते हैं; कुछ अन्य लोगों ने गिरने वाली लड़की की चीख सुनी है।

अमेरिकन इंस्टीट्यूट ऑफ आर्किटेक्ट्स जर्नल के जुलाई 1959 के अंक में कर्मचारी जेम्स साइप्रस के लंबे सेवाकाल का संक्षिप्त विवरण दिया गया है। हालांकि उन्होंने खुद कभी कोई भूत नहीं देखा, लेकिन वे बताते हैं कि एक बार जब उनकी पत्नी बीमार थीं, तो डॉक्टर ने डेढ़ सौ साल पुराने कपड़े पहने एक व्यक्ति को घुमावदार सीढ़ियों से नीचे आते देखा। जब डॉक्टर उस अजनबी को हैरानी से देख रहे थे, तभी वह व्यक्ति अचानक गायब हो गया।

संस्थान के निदेशक जे. डब्ल्यू. रैंकिन के साथ कुछ पत्राचार के बाद, मेरी पत्नी और मैं आखिरकार 17 मई, 1963 को वाशिंगटन के लिए रवाना हुए। वह एक सुहावना दिन था और राजधानी की व्यस्त सड़कों में से एक से कुछ दूरी पर स्थित खूबसूरत जॉर्जियाई हवेली एक अधिक शांत अतीत की यात्रा का वादा करती थी।

श्री रैंकिन ने हमारा बड़े चाव से स्वागत किया और हमें घर दिखाया, जो उस समय सौभाग्यवश पर्यटकों और अन्य आगंतुकों से खाली था। उन्होंने ही हमें अष्टभुज के बारे में कुछ पृष्ठभूमि जानकारी दी, जिसका उद्धरण मैं यहाँ दे रहा हूँ:

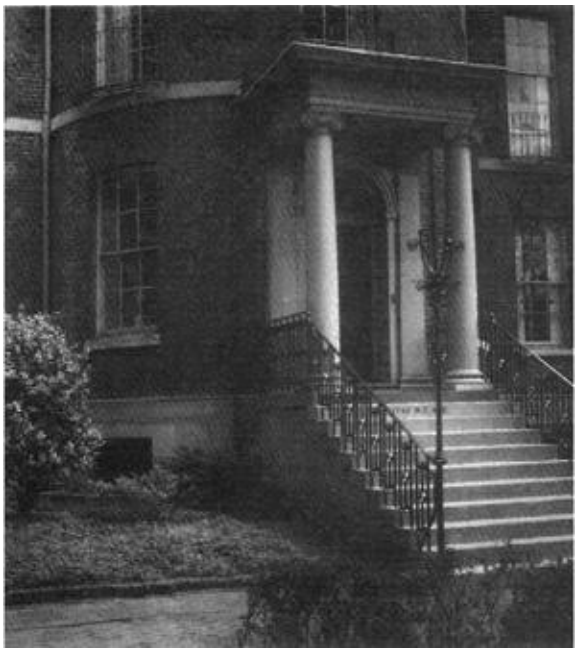

ऑक्टागन के भूत—वाशिंगटन, डी.सी.

व्हाइट हाउस और ऑक्टागन एक तरह से संबंधित हैं। दोनों का संबंध राष्ट्रीय राजधानी में सरकार की शुरुआत से है; व्हाइट हाउस का निर्माण पहले शुरू हुआ था लेकिन ऑक्टागन का निर्माण पहले पूरा हुआ। दोनों राष्ट्रपति के आधिकारिक निवास रहे हैं।

सन् 1797 की शुरुआत में, वर्जीनिया के माउंट एयरी के कर्नल जॉन टायलो को एक टाउन हाउस की आवश्यकता महसूस हुई। माउंट एयरी लगभग तीन हजार एकड़ का एक शानदार बागान था, जहाँ कर्नल कई गतिविधियों के साथ-साथ घोड़ों का पालन-पोषण और उनकी दौड़ भी करते थे, लेकिन उस शुरुआती दौर में ही शहर की पुकार महसूस होने लगी थी; कर्नल की पसंद फिलाडेल्फिया थी, लेकिन उनके मित्र जनरल वाशिंगटन ने नई राष्ट्रीय राजधानी के भविष्य का एक शानदार चित्रण प्रस्तुत किया और उन्हें उस समय के शहरी परिवेश से बहुत दूर स्थित ऑक्टागन का निर्माण करने के लिए राजी कर लिया।

कैपिटल भवन के लिए आयोजित प्रतियोगिता के विजेता डॉ. विलियम थॉर्नटन, कर्नल टायलो द्वारा स्वाभाविक रूप से चुने गए वास्तुकार थे।

19 अप्रैल, 1797 को कर्नल टायलो ने गुस्तावस डब्ल्यू. स्कॉट से 1,000 डॉलर में वाशिंगटन के नए भूखंड में स्क्वायर 170 का लॉट 8 खरीदा। गुस्तावस डब्ल्यू. स्कॉट उन पहले खरीदारों में से एक थे जिन्होंने 21 नवंबर, 1796 को सरकार से यह भूखंड खरीदा था। हालांकि, जैसा कि 1813 के रेखाचित्र से पता चलता है, यह स्थान देखने में सुनसान ग्रामीण इलाके में था, लेकिन शहर की सड़कों का नक्शा निश्चित रूप से बन चुका था, और न्यूयॉर्क एवेन्यू और अठारहवीं स्ट्रीट का कोना उसी स्थान पर था जहाँ वह आज है।

प्लॉट प्लान को देखकर स्पष्ट है कि कर्नल टायलो के घर का अनूठा आकार इन दोनों सड़कों के जंक्शन पर बने कोण से प्राप्त हुआ था। हालांकि इस हवेली को हमेशा से इसी नाम से जाना जाता रहा है, लेकिन डॉ. थॉर्नटन का इसे अष्टकोणीय बनाने का कोई इरादा नहीं रहा होगा; घर का आकार सड़क के अग्रभागों के अनुसार ही बना था।

इस इमारत का निर्माण कार्य 1798 में शुरू हुआ और जनरल वाशिंगटन के समय-समय पर निरीक्षण के तहत प्रगति हुई, जो 1800 में इसके पूरा होने से पहले ही इस दुनिया से चले गए। यह हवेली तुरंत ही आधिकारिक और अनौपचारिक सामाजिक गतिविधियों के केंद्र के रूप में स्थापित हो गई। इसके मेहमाननवाज प्रवेश द्वार से मैडिसन, जेफरसन, मोनरो, एडम्स, जैक्सन, डेकाटूर, पोर्टर, वेबस्टर, क्ले, लाफायेट, वॉन स्टुबेन, कैलहौन, रैंडोल्फ, वैन रेनसालेर और उनकी पत्नियां गुजरीं।

हालाँकि, 1812 के युद्ध के मंडराते ही सामाजिक गतिविधियाँ भुला दी गईं और अंततः इसने नए राष्ट्र की राजधानी को अपनी चपेट में ले लिया। 24 अगस्त, 1814 को, अंग्रेजों ने व्हाइट हाउस को आग से झुलसे खंडहर में बदल दिया। श्रीमती टायलो की दूरदर्शिता, जिसमें उन्होंने फ्रांसीसी मंत्री को उनके देश के ध्वज के साथ अतिथि के रूप में ठहराया था, ने संभवतः ऑक्टागन को इसी तरह के भाग्य से बचा लिया।

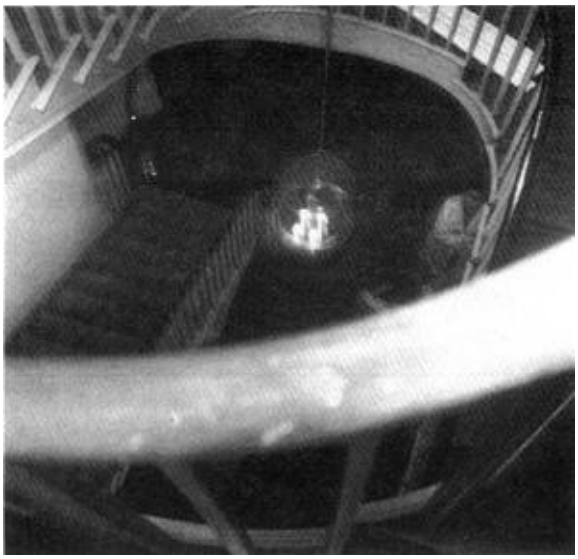

ऑक्टागन की घुमावदार सीढ़ियाँ और कभी-कभी हिलने वाला झूमर

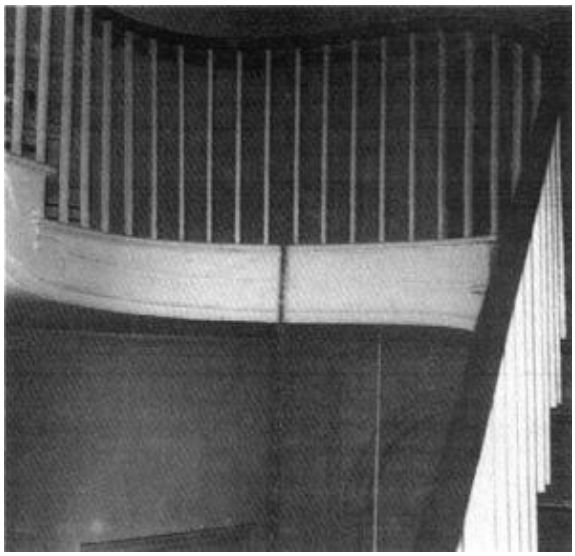

इसी जगह से कर्नल टेलर की बेटी ने कूदकर अपनी जान दे दी।

कहा जाता है कि कर्नल टायलो ने माउंट एयरी से एक दूत भेजा था, जिसमें राष्ट्रपति मैडिसन को हवेली का उपयोग करने की पेशकश की गई थी, और मैडिसन परिवार 8 सितंबर, 1814 को वहां रहने चला गया।

एक वर्ष से अधिक समय तक डॉली मैडिसन ने ऑक्टागन की मेज़बान के रूप में अपना दबदबा बनाए रखा। प्रवेश द्वार के ठीक ऊपर स्थित टावर कक्ष में राष्ट्रपति मैडिसन ने अपना अध्ययन कक्ष स्थापित किया और यहीं उन्होंने 17 फरवरी, 1815 को घेंट संधि पर हस्ताक्षर किए, जिससे ग्रेट ब्रिटेन के साथ शांति स्थापित हुई जो आज तक कायम है।

1855 में श्रीमती जॉन टायलो की मृत्यु के बाद, ऑक्टागन अब परिवार का टाउन हाउस नहीं रहा। वाशिंगटन के उस हिस्से ने कुछ समय के लिए अपना आवासीय स्वरूप खो दिया और भव्य पुरानी हवेली जीर्ण-शीर्ण होने लगी।

1865 में इसका उपयोग लड़कियों के स्कूल के रूप में किया जाता था। 1866 से 1879 तक सरकार ने इसे जलविज्ञान कार्यालय के उपयोग के लिए किराए पर लिया। कार्यालय के रूप में और बाद में स्टूडियो आवास के रूप में, ऑक्टागन ने लगभग 1885 तक सेवा की, जब इसे टायलो वारिसों द्वारा एक कार्यवाहक को सौंप दिया गया।

अमेरिकन इंस्टीट्यूट ऑफ आर्किटेक्ट्स के लंबे समय तक सचिव रहे ग्लेन ब्राउन ने 1889 में सुझाव दिया था कि यह घर इंस्टीट्यूट के लिए एक उपयुक्त मुख्यालय बन सकता है।

जब वास्तुकारों ने इमारत का जीर्णोद्धार शुरू किया, तब उसमें दस अश्वेत परिवार रह रहे थे। शानदार पुराने ड्राइंग रूम में चार फुट गहरा कूड़ा भरा हुआ था। पूरा अंदरूनी भाग मैला था, अंगीठियां बंद थीं, खिड़कियां टूटी हुई थीं, लेकिन एक सदी पहले बनी इस इमारत को टायलो परिवार के योग्य बनाने के लिए कोई कसर नहीं छोड़ी गई थी, और यह आज भी समय और उपेक्षा के बावजूद मजबूती से खड़ी है।

चमत्कारिक रूप से, प्रसिद्ध सीढ़ी के पतले बलस्टर आज भी अपनी जगह पर डटे हुए हैं, निस्संदेह इस तथ्य से कि प्रत्येक पाँचवाँ बलस्टर लोहे का है और रेलिंग और कैरिज से मजबूती से जुड़ा हुआ है। ड्राइंग रूम और डाइनिंग रूम में लगे कोएड स्टोन के मेंटलपीस, जिन पर गहरी नक्काशी की गई है, उन पर भी कोई खरोंच या निशान नहीं है। इन्हें 1799 में लंदन से लाया गया था और इन पर निर्माता का नाम और वही तारीख अंकित है।

1 जनवरी, 1899 को संस्थान ने पुनर्निर्मित हवेली, उसके अस्तबल, धुआंगृह और बगीचे का औपचारिक रूप से अधिकार प्राप्त कर लिया।

घर के बारे में बस इतना ही। मुझे कर्मचारियों का साक्षात्कार लेने की पूरी छूट दी गई थी, और मैंने ऐसा ही किया। मैंने कर्मचारियों द्वारा व्यक्तिगत रूप से दिए गए बयानों को सावधानीपूर्वक सारणीबद्ध किया, और विश्वसनीयता और संभावित खामियों के लिए प्रत्येक के रिकॉर्ड की जाँच की। कोई खामी नहीं मिली।

इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए कि कोई भी भूतों को देखने या सुनने के दावे के लिए उत्सुक नहीं था, और न ही कोई प्रचार या सार्वजनिक ध्यान आकर्षित करने की चाह रखता था, मैं इन वृत्तांतों को केवल संतुलित व्यक्तियों के सम्मानजनक अनुभवों के रूप में ही देख सकता हूं।

यह इमारत तब भी और आज भी अल्ब्रिक एच. क्ले की देखरेख में है, जो तीस वर्ष के आसपास के एक अधिकारी हैं और अधीक्षक के पद पर कार्यरत हैं। ऑक्टागन का संग्रहालय वाला हिस्सा, जो अमेरिकन इंस्टीट्यूट ऑफ आर्किटेक्ट्स के कार्यालयों के विशाल परिसर से अलग है, श्रीमती बेल्मा मे की देखरेख में है, जो इसकी क्यूरेटर हैं। उन्हें पोर्टर्स और मेड्स का एक स्टाफ सहायता प्रदान करता है, क्योंकि कभी-कभी ऑक्टागन के सबसे पुराने हिस्से में औपचारिक रात्रिभोज या पार्टियां आयोजित की जाती हैं।

श्रीमती मे मतिभ्रम या भूत-प्रेत की कहानियों में विश्वास नहीं करतीं, और उन्होंने बड़ी सहजता से मुझे इमारत में अपने अनुभवों के बारे में बताया। उनके अधिकांश वृत्तांत हाल ही के हैं।

भूतिया सीढ़ियाँ

जिस कालीन पर लड़की गिरी और उसकी मौत हुई, वह अदृश्य हाथों द्वारा लगातार इधर-उधर उछाला जा रहा है।

श्रीमती मे ने देखा कि लॉबी की सभी खिड़कियाँ कसकर बंद होने के बावजूद बड़ा झूमर अपने आप झूल रहा था; उन्होंने इस अजीब घटना का जिक्र एक सहकर्मी से किया। उन्हें कुछ अजीबोगरीब आवाजें भी सुनाई देती हैं, जिनका कोई कारण समझ में नहीं आता, और ये आवाजें ज्यादातर शनिवार को आती हैं। एक बार, श्रीमती मे, पोर्टर एलन और ब्रैडली के साथ, सबसे ऊपरी मंजिल पर, जहाँ लंबे समय से आम जनता का प्रवेश बंद था, धूल में इंसानी पैरों के निशान पाए। उन्हें वे निशान ऐसे लगे जैसे कोई पैर की उंगलियों पर खड़ा होकर फर्श पर दबे पांव चल रहा हो। कर्नल टायलो की बेटी ने वहीं से छलांग लगाई थी।

श्रीमती मे को अक्सर इमारत में खाना पकाने की गंध आती है, जबकि कोई पार्टी नहीं होती। उन्हें पहली मंजिल की सीढ़ियों पर ठंडक भी महसूस होती है।

केयरटेकर मैथ्यू बताते हैं कि जब वह सीढ़ियाँ चढ़ते हैं, तो उन्हें अक्सर ऐसा महसूस होता है जैसे कोई उनके पीछे चल रहा हो, खासकर दूसरी मंजिल पर। यह समस्या उन्हें अभी भी हो रही है।

पार्टियों में मदद करने वाली एथेल विल्सन ने क्लोकरूम में "ठंडक" महसूस होने की बात कही है।

सन् 1962 की वसंत ऋतु में पोर्टर एलन भूतल पर एक बैठक की तैयारी कर रहे थे, तभी उन्हें ऊपर से "भारी फर्नीचर को घसीटने जैसी" आवाजें सुनाई दीं। मार्च 1963 में, उन्होंने और उनके सहयोगी ने सीढ़ियों को "ऐसे हिलते हुए देखा जैसे कोई उन पर चल रहा हो, लेकिन वहां कोई नहीं था।" यह घटना सुबह 9:30 बजे घटी।

पोर्टर ब्रैडली ने कराहने की आवाज़ सुनी है, लेकिन आवाज़ की दिशा का पता लगाना मुश्किल है। कई बार उन्होंने कदमों की आहट भी सुनी है।

सन् 1962 की वसंत ऋतु में एक शाम, एलरिक एच. क्ले अपनी पत्नी और दो बच्चों के साथ गाड़ी से जा रहे थे, तभी उन्होंने देखा कि इमारत की बत्तियाँ जल रही थीं। परिवार को गाड़ी में छोड़कर, वे पीछे के दरवाजे से बंद इमारत में दाखिल हुए और पाया कि सब कुछ ठीक से बंद था। हालांकि, बत्तियाँ जलने के अलावा, उन्होंने यह भी देखा कि जिस जगह 1800 के दशक में लड़की की गिरकर मौत हुई थी, वहाँ कालीन का किनारा ऊपर उठा हुआ था।

क्ले भूतों पर विश्वास नहीं करता था, इसलिए वह ऊपर चला गया; वहाँ कोई नहीं था, इसलिए उसने लाइटें बंद कर दीं, कालीन को वापस अपनी जगह पर रख दिया और नीचे तहखाने में चला गया जहाँ लाइट के नियंत्रण हैं।

ठीक उसी क्षण, ऊपर की मुख्य मंजिल पर (जिसे वह अभी-अभी छोड़कर आया था) उसने किसी को ड्राइंग रूम से दरवाजे तक जाते और वापस आते हुए सुना। चूंकि उसने अभी-अभी सभी दरवाजे जांच लिए थे और जानता था कि वे मजबूती से बंद हैं, इसलिए वह इतना घबरा गया कि स्विच दबाते समय उसे लगभग बिजली का झटका लग गया। कदम भारी थे और निश्चित रूप से किसी पुरुष के थे।

फरवरी 1963 में इमारत में देर रात तक पार्टी चली। सबके चले जाने के बाद, क्ले इस बात से आश्वस्त होकर घर चला गया कि पीछे के दरवाजे की चाबी सिर्फ उसी के पास है। ऑक्टागन की बनावट ऐसी है कि कोई भी निरीक्षण से छिप नहीं सकता, इसलिए किसी मेहमान का शरारत करते हुए वहीं रुक जाना नामुमकिन है।

सुबह 3 बजे पुलिस ने क्ले को फोन करके बताया कि ऑक्टागन की सभी बत्तियाँ जल रही हैं और इमारत का ताला खुला हुआ है। नियंत्रक श्री वोवर्टन ने जाँच की और पुलिस के साथ इमारत में जाकर सभी बत्तियाँ फिर से बंद कर दीं। पुलिस अधिकारियों की उपस्थिति में सब कुछ दोबारा बंद कर दिया गया।

हालांकि, सुबह 7 बजे वे एक बार फिर ऑक्टागन में लौटे, लेकिन दरवाजा खुला हुआ था और बत्तियाँ फिर से जल रही थीं। लेकिन चाबी सिर्फ क्ले के पास थी!

मैंने कहा, "श्रीमान क्ले, इन सभी अजीब अनुभवों के बाद, क्या आप भूतों पर विश्वास करते हैं?"

“नहीं, मुझे ऐसा नहीं लगता,” क्ले ने कहा और थोड़ी असहजता से हँस पड़ा। वह उत्कृष्ट शैक्षणिक पृष्ठभूमि वाला व्यक्ति है और रहस्यमय बातों को स्वीकार करने का विचार उसे बिल्कुल भी अच्छा नहीं लगता था। लेकिन बात यही थी।

"तो फिर आप पिछले कुछ वर्षों की घटनाओं की व्याख्या कैसे करेंगे?"

“मुझे नहीं पता,” उसने कहा और कंधे उचका दिए। “मेरे पास उनके लिए कोई तर्कसंगत स्पष्टीकरण नहीं है। लेकिन वे निश्चित रूप से हुए थे।”

सुनी गई गवाहियों से मुझे यह विश्वास हो गया है कि ऑक्टागन में दो भूत हैं, जो चरमराते पुराने फर्श पर बेचैनी से चक्कर लगा रहे हैं, और बाहर की वास्तविक दुनिया का ध्यान आकर्षित करने के लिए एक-दूसरे से प्रतिस्पर्धा कर रहे हैं।

कर्नल टायलो की आत्महत्या करने वाली बेटी के कोमल कदमों की आहट है, जो उन सैरगाहों को फिर से पार कर रही है जिनका उसने आनंद लिया था लेकिन बहुत कम समय के लिए; और पिता के भारी, अपराधबोध से भरे कदम हैं, जो खुद को उन बंधनों से मुक्त नहीं कर पा रहे हैं जो उन्हें उनके घर और उस त्रासदी से बांधते हैं जिसने घर और उनके जीवन दोनों को अंधकारमय कर दिया था।

* 54

अष्टभुज का पुनरीक्षण

सन् 1965 में मैंने वाशिंगटन की सबसे प्रसिद्ध इमारतों में से एक में घटित भूतिया घटनाओं और रहस्यमयी रहस्यों का विस्तृत विवरण प्रकाशित किया था। इसे अक्सर "दूसरा व्हाइट हाउस" कहा जाता है क्योंकि इसने 1812 के युद्ध के दौरान राष्ट्रपति मैडिसन के व्हाइट हाउस के रूप में कार्य किया था। अष्टकोणीय भवन आज भी उन्नीसवीं सदी के आरंभिक अमेरिकी वास्तुकला का एक उत्कृष्ट स्मारक है। आजकल वाशिंगटन की चर्चा में लोग पेंटागन के बारे में ज्यादा सुनते हैं, अष्टकोणीय भवन के बारे में कम, लेकिन सच्चाई यह है कि अष्टकोणीय भवन आज भी एक प्रमुख पर्यटक आकर्षण है, हालांकि उन कारणों से नहीं जिनके कारण मैं पहली बार वहां गया था। दरअसल, इस इमारत के मालिक, अमेरिकन इंस्टीट्यूट ऑफ आर्किटेक्ट्स, अपने अनदेखे रहस्यों पर चर्चा करने से कतराते थे और आज भी कतराते हैं। विभिन्न अधिकारियों को यह स्वीकार करवाने में काफी मशक्कत और दृढ़ता दिखानी पड़ी कि इस पुरानी इमारत में कुछ गड़बड़ है।

1965 में बॉब्स-मेरिल द्वारा प्रकाशित पुस्तक 'घोस्ट्स आई हैव मेट' में मेरा पहला लेख छपने के बाद, मुझे वाशिंगटन के कई लोगों के फोन आए जो ऑक्टागन गए थे और उन्हें सिहरन से लेकर अजीबोगरीब अनुभूतियों तक का अनुभव हुआ था। मैंने यह भी पाया कि अमेरिकन इंस्टीट्यूट ऑफ आर्किटेक्ट्स के अधिकारी अब अपने प्रसिद्ध पुराने मुख्यालय की जांच करने वाले एक पैरासाइकोलॉजिस्ट के विचार के प्रति उतने शत्रुतापूर्ण नहीं थे। उन्होंने मेरा लेख पढ़ा था और उसमें घर के इतिहास और मानसिक घटनाओं से संबंधित केवल सत्य कथन पाए थे, और वास्तव में शिकायत करने लायक कुछ भी नहीं था। इस प्रकार, वर्षों तक अमेरिकन इंस्टीट्यूट ऑफ आर्किटेक्ट्स के प्रबंधन के साथ मेरे अच्छे संबंध बने रहे। मुझे इस रिश्ते को परखने के कई अवसर मिले क्योंकि कभी-कभी वाशिंगटन में, जिसमें ऑक्टागन भी शामिल होता, एक वृत्तचित्र फिल्म बनाने का मौका मिलता था। यह संभव नहीं हो सका, क्योंकि अमेरिकन इंस्टीट्यूट ऑफ आर्किटेक्ट्स से जुड़ी कठिनाइयों के कारण नहीं, बल्कि इस तरह की गंभीर फिल्म के लिए आवश्यक पूंजी जुटाने की व्यावहारिक कठिनाइयों के कारण ऐसा नहीं हो सका।

* * *

मुझे ऑक्टागन में संभावित भूतिया घटनाओं के बारे में पहली बार 1962 में लाइफ पत्रिका के एक लेख से पता चला। कथित तौर पर भूतिया घरों के एक सर्वेक्षण में, लाइफ ने दावा किया कि ऑक्टागन आने वाले कुछ आगंतुकों ने उस स्थान पर एक परछाई देखी थी जहाँ घर के निर्माता कर्नल टायलो की बेटी की गिरकर मृत्यु हो गई थी। जहाँ तक मुझे उस समय पता चला, वाशिंगटन में एक परंपरा थी कि ऑक्टागन के मूल मालिक कर्नल जॉन टायलो, एक ऐसी बेटी के दुखी पिता भी थे, जिसने शादी के मामले में गलती की थी। घर से भाग जाने के बाद, वह बाद में अपने नए पति के साथ लौटी और अपने सख्त पिता से माफी मांगी, लेकिन उन्हें कोई तवज्जो नहीं मिली। परंपरा के अनुसार, हताशा में उसने घुमावदार सीढ़ियों की तीसरी मंजिल की लैंडिंग से छलांग लगा दी, और सीढ़ियों के आधार के पास एक जगह पर गिरी। उसकी तुरंत मृत्यु हो गई। वैसे, वह जगह ऑक्टागन के सबसे भूतिया हिस्सों में से एक मानी जाती है।

वाशिंगटन पोस्ट द्वारा अक्टूबर 1969 में प्रकाशित वाशिंगटन के भूतिया अनुभवों के एक हालिया सर्वेक्षण में जैकलिन लॉरेंस द्वारा एक थोड़ा अलग विवरण दिया गया है। मिस लॉरेंस के अनुसार, कर्नल टायलो की एक से अधिक बेटियाँ थीं। उनकी एक और बेटी, जो सबसे बड़ी थी, एक अंग्रेज से प्यार कर बैठी थी। अपने पिता से झगड़े के बाद, जिन्हें वह लड़का पसंद नहीं था, लड़की सीढ़ियों पर दौड़ी और जब वह दूसरी मंजिल पर पहुँची, तो रेलिंग से गिर गई और दो मंजिल नीचे गिरकर उसकी मृत्यु हो गई। यह आत्महत्या नहीं बल्कि एक दुर्घटना थी। जहाँ तक दूसरी बेटी की बात है, जिसने परंपरा के अनुसार गलत लड़के को घर लाया था, मिस लॉरेंस बताती हैं कि उसने अंततः उस आदमी से शादी नहीं की। उसके पिता उस युवा वाशिंगटन के वकील को केवल अपनी बेटी के पैसे के पीछे भागने वाला व्यक्ति मानते थे और उसे स्वीकार करने से इनकार कर दिया। यह विशेष रूप से आवश्यक था क्योंकि उन्होंने स्वयं अपनी छोटी बेटी के लिए पहले ही एक धनी वर चुन लिया था। फिर से बहस हुई, जिसके दौरान उन्होंने लड़की को खुद से दूर धकेल दिया। वह उसी दुर्भाग्यपूर्ण रेलिंग से गिर गई और गिरने से उसकी गर्दन टूट गई। मिस लॉरेंस के अनुसार भी यह एक दुर्घटना थी, न कि आत्महत्या या हत्या।

इन दो दुर्भाग्यशाली लड़कियों के अलावा, वह यह भी बताती हैं कि उसी सीढ़ी पर एक दासी की मृत्यु हो गई थी। एक ब्रिटिश नौसेना अधिकारी द्वारा पीछा किए जाने पर, उसने उससे शादी करने के बजाय खुद को सीढ़ी से नीचे फेंक दिया। मिस लॉरेंस के अनुसार, वह युवक तुरंत उसके पीछे कूद गया और उसकी मृत्यु में उसका साथ दे दिया।

यह एक विवादास्पद प्रश्न है कि कोई कितनी आसानी से रेलिंग से गिर सकता है, और मुझे संदेह है कि कोई भी इसे प्रयोग के रूप में आजमाना चाहेगा। लेकिन मुझे आश्चर्य हुआ कि क्या समय के साथ उन दो लड़कियों की कहानी एक ही परंपरा में समाहित हो गई है। तीनों मौतें 1814 से पहले घटित होनी चाहिए थीं। उसी वर्ष वाशिंगटन पर अंग्रेजों ने कब्जा कर लिया था, और व्हाइट हाउस के जलने के बाद राष्ट्रपति मैडिसन और उनका परिवार अस्थायी रूप से ऑक्टागन में चले गए थे। वे वहां पूरे एक वर्ष तक रहे, जिसके दौरान ऑक्टागन वास्तव में आधिकारिक व्हाइट हाउस था।

राष्ट्रपति मैडिसन और उनके परिवार के ऑक्टागन छोड़ने के बाद ही वहाँ होने वाली अजीबोगरीब घटनाओं का पता चला। वाशिंगटन में लोग कानाफूसी करने लगे कि वह घर भूतिया है। कहा जाता था कि घंटियाँ तब भी सुनाई देती थीं जब उन्हें बजाने वाला कोई नहीं होता था। सफेद कपड़ों में एक लड़की की परछाई को सीढ़ियों से ऊपर जाते देखा गया था। भूतों से जुड़ी चीखें और कराहें भी जानकारों द्वारा बताई जाती थीं। मिस लॉरेंस के अनुसार, गृहयुद्ध के सात साल बाद, पाँच पुरुषों ने यह साबित करने के लिए रात के अंधेरे में उस घर में रुकने का फैसला किया कि भूतिया कहानियों में कोई सच्चाई नहीं है। उन्हें भी कदमों की आहट, तलवार की खड़खड़ाहट और अंत में, इंसानी चीखों से परेशानी हुई। दुर्भाग्य से, उनके नाम दर्ज नहीं हैं, लेकिन वे रात भर वहाँ नहीं रुके।

संस्थान के निदेशक जे. डब्ल्यू. रैंकिन के साथ कुछ पत्राचार के बाद, मेरी पत्नी कैथरीन और मैं आखिरकार 17 मई, 1963 को वाशिंगटन के लिए रवाना हुए। खूबसूरत जॉर्जियाई हवेली ने हमारा स्वागत ऐसे किया मानो वह हमारी प्रतीक्षा कर रही हो। उस समय हम किसी माध्यम के साथ नहीं आए थे। यह हमारी पहली यात्रा थी और मैं वहां के लोगों से मिलना चाहता था और उन लोगों का साक्षात्कार लेना चाहता था जिन्होंने वास्तव में अलौकिक अनुभवों का सामना किया था, चाहे वह दृश्य हो या श्रव्य। सबसे पहले मैंने श्री रैंकिन से घर के इतिहास के

बारे में संक्षिप्त लेकिन सटीक जानकारी देने का अनुरोध किया। शायद यहां मेरी 1965 की रिपोर्ट 'घोस्ट्स आई हैव मेट' का उद्धरण देना सबसे अच्छा होगा। (पृष्ठ 313 पर उद्धरण देखें।)

सन् 1963 में अपनी यात्रा से पहले, ऑक्टागन में हुई किसी असामान्य घटना का केवल एक ही विवरण मेरे ध्यान में आया था। अमेरिकन इंस्टीट्यूट ऑफ आर्किटेक्ट्स जर्नल के जुलाई 1959 के अंक में जेम्स साइप्रस नामक एक कर्मचारी के लंबे सेवाकाल का संक्षिप्त विवरण है। हालांकि श्री साइप्रस ने स्वयं कभी कोई भूत नहीं देखा था, लेकिन उन्होंने बताया कि एक बार जब उनकी पत्नी बीमार थीं और उन्हें डॉक्टर की आवश्यकता थी, तब एक असामान्य घटना घटी थी। डॉक्टर ने बताया कि उन्होंने लगभग डेढ़ सौ साल पुराने कपड़े पहने एक व्यक्ति को घुमावदार सीढ़ियों से नीचे आते देखा था। डॉक्टर ने उस अजनबी को कुछ हैरानी से देखा। उसी क्षण वह आकृति हवा में गायब हो गई, जिससे डॉक्टर और भी अधिक अचंभित रह गए। घोस्ट्स आई हैव मेट के प्रकाशन से कुछ समय पहले, एसोसिएटेड प्रेस की जॉय मिलर ने मुझे ऑक्टागन के भूतों के बारे में लिखा, और कहानी में कुछ और विवरण जोड़े।

ऐसा माना जाता है कि कुछ खास दिनों में, खासकर उस दुखद घटना की बरसी पर, सीढ़ियों के नीचे स्थित उस हॉल को कोई भी पार नहीं कर सकता जहां शव गिरा था, बिना अनजाने में वहां पड़ी किसी अदृश्य वस्तु के चारों ओर घूमे।

इस वृत्तांत में बिना किसी उचित कारण के बजने वाली घंटियों की कहानी को भी अलंकृत किया गया है।

एक बार, जैसा कि कहानी में कहा जाता है, एक संशयवादी उछल पड़ा और बजने वाले तारों को पकड़ लिया। वह ज़मीन से ऊपर उठ गया, लेकिन घंटियाँ बजती रहीं। अंधविश्वासी नौकरों को दूर रखने के लिए, घर की पूरी वायरिंग बदल दी गई, और ऐसा लगता है कि इससे समस्या हल हो गई।

बेशक, इस तरह के वृत्तांत आमतौर पर गुमनाम होते हैं, लेकिन एक परामनोवैज्ञानिक के रूप में मैं उन रिपोर्टों को स्वीकार नहीं करता, चाहे वे कितनी भी सच्ची या प्रामाणिक क्यों न लगें, जब तक कि मैं उस व्यक्ति से व्यक्तिगत रूप से बात न कर लूं जिसके साथ घटना घटी है।

जब मैंने इस पुस्तक के लिए सामग्री जुटाना शुरू किया, तो मुझे आश्चर्य हुआ कि 1963 के बाद से ऑक्टागन में क्या हुआ था। समय-समय पर मैं उन भूतिया घटनाओं के बारे में पढ़ता रहता था जो पहले हुआ करती थीं, लेकिन उनमें कुछ भी चौंकाने वाला या विशेष रूप से नया नहीं था। मुझे यह स्पष्ट हो गया कि इनमें से अधिकांश समाचार पत्रों के लेख वास्तव में पहले के लेखों पर आधारित थे और लेखकों ने अपना समय ऑक्टागन में बिताने के बजाय शोध पुस्तकालयों में बिताया था। अप्रैल 1969 में मैंने फिर से अमेरिकन इंस्टीट्यूट ऑफ आर्किटेक्ट्स से संपर्क किया और ऑक्टागन का दोबारा दौरा करने की अनुमति मांगी, चुपचाप और सावधानी से, लेकिन एक माध्यम के साथ। नए कार्यकारी निदेशक, विलियम एच. शाइक ने विनम्रतापूर्वक मना कर दिया: "ऑक्टागन का अभी पूर्ण नवीनीकरण हो रहा है और यह कार्य पूरा होने तक आगंतुकों के लिए बंद रहेगा। हमें उम्मीद है कि ऑक्टागन 1970 की शुरुआत में आगंतुकों के लिए तैयार हो जाएगा। मुझे खेद है कि जब आप वाशिंगटन में होंगे तो आप और आपके अतिथि इमारत को नहीं देख पाएंगे।"

लेकिन श्री शाइक ने एक पूर्व भूत-प्रेत खोजकर्ता की दृढ़ता और लचीलेपन का अनुमान नहीं लगाया था। मैंने उन्हें फोन किया और जब हमारी थोड़ी जान-पहचान हो गई, तो उन्होंने मुझे एक शोध कर्मचारी से बात करवाई, जिसने अनुरोध किया कि मैं उनका नाम गुप्त रखूँ। इसलिए, इस विवरण के लिए, मैं उन्हें केवल शोध सहायक के रूप में संदर्भित करूँगा। जब हम वाशिंगटन आने में कामयाब हुए, तो उन्होंने हमारे साथ ऑक्टागन के दौरे पर चलने की कृपा की, इस तथ्य के बावजूद कि इमारत मरम्मत की स्थिति में थी, या यूँ कहें कि जर्जर हालत में थी।

तारीख थी 6 मई, 1969; दिन गर्म और उमस भरा था, जैसा कि वाशिंगटन में मई के कई दिनों में होता है। मेरे साथ मेरी अच्छी दोस्त एथेल जॉनसन मेयर्स थीं, जिन्हें मैं कई घरों की जांच के उद्देश्य से वाशिंगटन लाया था, और श्रीमती निकोल जैक्सन, एक मित्र जिन्होंने कृपा करके हमें घुमाने की पेशकश की थी। मैं यह तो नहीं कह सकता कि श्रीमती मेयर्स ने ऑक्टागन की मेरी पिछली जांच का विवरण नहीं पढ़ा था। हमने इस बारे में कभी विस्तार से चर्चा नहीं की, और मुझे पूरा संदेह है कि उन्हें इस तरह के मामलों में कोई खास दिलचस्पी रही होगी, क्योंकि वह न्यूयॉर्क शहर में रहती हैं और शायद ही कभी वाशिंगटन आती हैं। लेकिन यह संभव है कि

उन्होंने मेरी पिछली किताब का वह अध्याय पढ़ा हो, भले ही वह संक्षिप्त ही क्यों न हो। जैसा कि हम अगले पन्नों में देखेंगे, वास्तव में इससे कोई फर्क नहीं पड़ता था कि उन्होंने पढ़ा था या नहीं। उनके लिए, पहली छाप हमेशा मायने रखती थी, और मुझे ऐसा कोई उदाहरण याद नहीं है जहां उन्होंने पहले किए गए किसी काम या पढ़ी हुई किसी चीज का जिक्र किया हो।

* * *

जब हम ऑक्टागन पहुँचे, तो सबसे पहले हमारी मुलाकात शोध सहायक से हुई। उन्होंने हमारा विनम्रतापूर्वक स्वागत किया और सबसे पहले हमें पुस्तकालय में स्थापित संग्रहालय दिखाया। फिर हम बगीचे से होते हुए ऑक्टागन भवन की ओर बढ़े, जो पुस्तकालय भवन से एक छोटे रास्ते से जुड़ा हुआ था। 1963 में जिस भव्य मुख्य द्वार से मैंने प्रवेश किया था, उसके बजाय पीछे के द्वार से प्रवेश करते ही हमें तुरंत पुराने भवन के अंदर चल रहे व्यापक कार्य का एहसास हुआ। कहने की आवश्यकता नहीं है, मुझे इसका अफसोस हुआ, लेकिन मुझे पुराने ढांचे की सुरक्षा की आवश्यकता भी समझ में आ गई। अज्ञात स्रोत से आ रही हथौड़े की आवाज और कामगारों की भागदौड़ किसी भी तरह के गहन चिंतन के लिए अनुकूल नहीं थी, लेकिन हमारे पास कोई विकल्प नहीं था। दोपहर 12 बजे से 1 बजे तक का समय हमारे लिए निर्धारित था, और मुझे आशा थी कि हम इस संक्षिप्त अवधि में कम से कम कुछ सीख सकेंगे। मैंने एथेल को हमेशा की तरह खुद ही रास्ता खोजने के लिए प्रोत्साहित किया, और हम तीनों उसके पीछे-पीछे चले, इस उम्मीद में कि वह अपनी दिव्य दृष्टि से या शायद समाधि की अवस्था में जो कुछ कहेगी, उसे हम सुन सकें।

इमारत के अंदर आते ही एथेल ने मुझे छुआ, और मैं उसके करीब जाकर उसके भावों को समझने की कोशिश करने लगी। वह बिल्कुल अपने आप में थी और मेरे भाव उसके मन में चल रही बातों का मात्र एक दिव्य वर्णन थे। हम सीढ़ियों के बाईं ओर वाले कमरे में खड़े थे जब मैंने "एलिस" नाम सुना।

मैंने पूछा, “एलिस के बारे में क्या? वह कौन है?”

मुझे नहीं पता। बस अचानक से मेरे दिमाग में यह बात आई।

"मैं आपको इससे ज्यादा कुछ नहीं बताऊंगा, बस इतना ही कहूंगा कि आप इस क्षेत्र में, जहां हम अभी हैं, अपना रास्ता खोजने की कोशिश करें, और ऊपर की ओर जितना चाहें उतना जा सकते हैं।"

"अरे हाँ, हे भगवान, यहाँ तो इतने सारे हैं कि ये ज़्यादा देर तक एक जगह स्थिर नहीं रह पाते। इनमें से एक का जबड़ा तो काफ़ी बड़ा है—मुझे अभी चेहरे का ऊपरी हिस्सा नहीं दिख रहा; बस एक लंबा जबड़ा दिख रहा है।"

“पुरुष या महिला?”

"आदमी।"

"क्या यह अतीत की छाप है या यह कोई व्यक्ति है?"

"अतीत से।"

"यहाँ इस रेलिंग के पास जाओ, और रेलिंग को छूकर देखो कि क्या इससे संपर्क स्थापित करने में मदद मिलती है।"

मुझे घोड़े का चेहरा दिखाई दे रहा है।

"क्या यह उसके चरित्र का हिस्सा है या कोई शारीरिक अक्षमता?"

शारीरिक अक्षमता।

“इस घर से उसका क्या संबंध है?”

“मैं उसे यहीं देख रही हूँ, मानो वो उस दरवाजे से बाहर जाने वाला हो। शायद उसने ऊँची टोपी भी पहनी हो। मुझे बार-बार ‘एलिस। एलिस।’ सुनाई दे रहा है, मानो कोई मुझे पुकार रहा हो।”

"तो क्या इस घर में कई परतें हैं?"

मैं कहूंगा कि इसमें कई परतें हैं।

"क्या इस जगह के बारे में कुछ ऐसा है जो आपको किसी भी तरह से दिलचस्प लगता हो?"

अब हम उस जानलेवा रेलिंग के सामने थे।

“खैर, यह कहीं अधिक सजीव है। यह डर है।”

अब वह काफी घबराई हुई लग रही थी, दोनों हाथों से रेलिंग को कसकर पकड़े हुए थी। मैंने धीरे से उसे छुड़ाया और कुछ सीढ़ियाँ ऊपर ले गया, फिर नीचे उतारा, उसकी हर हरकत पर नज़र रखते हुए, कहीं वह भी उन बेचारी टायलो लड़कियों में शामिल न हो जाए। सीढ़ियों के नीचे पहुँचकर वह अचानक रुक गई और सीढ़ियों के पास एक आदमी के बारे में बताने लगी, जिसे उसने महसूस किया था—यानी एक प्रेत पुरुष। एथेल ने बताया कि इस पुरुष भूत से एक और व्यक्ति भी जुड़ा हुआ था।

"बीमारी के बाद किसी को इन सीढ़ियों से नीचे लाकर यहां से बाहर ले जाया गया है। हालांकि, वह आदमी नहीं है। ऐसा लगता है कि वह एक महिला है।"

“किस तरह की बीमारी?”

“मुझे नहीं पता। मैं बस लोगों को उसे नीचे ले जाते हुए देख रहा हूँ—जैसे स्ट्रेचर पर, एक शरीर, एक बीमार व्यक्ति।”

"क्या इस व्यक्ति को नीचे ले जाते समय वह जीवित थी?"

"जीवित तो है, लेकिन उसकी हालत बहुत खराब है।"

वह कहाँ से आई है?

“मुझे लगता है कि यहाँ से, एथेल ने रेलिंग के नीचे की जगह की ओर इशारा करते हुए कहा, “यहाँ एक विल भी है, लेकिन मुझे नहीं लगता कि इस समय विल जीवित है, जब यह सब हो रहा है। मुझे वह उदास चेहरा वाला आदमी भी घूमता हुआ दिखाई देता है। मैं उसके आर-पार देख सकती हूँ।”

क्या उसका स्ट्रेचर पर लेटे हुए व्यक्ति से कोई संबंध है?

“मैं तो यही कहूंगी, क्योंकि वह इसका पालन करता है।” फिर उसने आगे कहा, “यहां कोई ऐसा व्यक्ति आता है जो उस दौर से अभी भी जीवित है। इधर-उधर घूमता रहा।”

“आपका मतलब किसी शख्स की मौजूदगी से है?” उसने सिर हिलाया। “घोड़े जैसे चेहरे वाले उस आदमी ने किस तरह के कपड़े पहने थे?”

“एक औपचारिक सूट और एक लंबा कोट। बीसवीं सदी के मोड़ का या बीसवीं सदी के मध्य का?”

“उन्नीस सौ बीस का दशक?”

"हाँ, यहीं कहीं।"

और स्ट्रेचर पर लेटी हुई वो महिला—क्या आप उसे देख पा रहे हैं?

“नहीं, उसने खुद को ढक रखा है। मुझे अभी भी वही महिला यहां दिखाई देती है।”

"आप उन सीढ़ियों से ऊपर क्यों नहीं जाते, लगभग पहली मंजिल तक।"

मुझे किसी न किसी कारण से इस बात का डर है।

"आप वो क्यों कल्पना करते हैं?"

मुझे यह पसंद नहीं है।

"क्या उस इलाके में कुछ हुआ था?"

मुझे नहीं पता। मुझे बस ऐसा लग रहा है जैसे मैं जाना नहीं चाहता। लेकिन मैं फिर भी जाऊंगा।

"देखो, ऐसा करने से तुम्हें और कितने इंप्रेशन मिलते हैं!"

मुझे सिर के पिछले हिस्से में भारीपन महसूस हो रहा है।

"क्या वहां किसी को चोट लगी थी?"

मैं कहूंगा। या फिर—दुखी।"

“इसका क्या संबंध है? बस एक या दो कदम बढ़ाएँ और देखें कि क्या आपको ऐसा करने से कुछ और महसूस होता है। अब आप पहली मंजिल तक सीढ़ियाँ चढ़ रहे हैं।”

ओह, मेरा सिर! उफ़!

"आपको लगता है-?"

"सुन्न।"

“हम पहली लैंडिंग से आगे नहीं जाएंगे। अगर यह बहुत मुश्किल है, तो इसे मत करो।”

“नहीं। मैं इसे जैसा है वैसा ही स्वीकार कर लूंगी।” अचानक, वह मुड़ी। “मुझे परेशान मत करो!”

"क्या कोई तुम्हें धक्का देने की कोशिश कर रहा है?"

"हाँ।"

मुझे इस मामले को आज़माने का मन नहीं था। "ठीक है, वापस यहाँ आओ। चलो पहले लैंडिंग के पीछे खड़े हो जाते हैं।"

“मुझे जॉर्ज भी मिलता है। और वुड भी, और कुछ और भी। मैं अपना सिर पकड़े हुए हूँ, बहुत दर्द हो रहा है।”

"क्या आप जानते हैं कि सिर में लगी यह चोट किससे संबंधित है?"

"यह जैक्स जैसा लगता है।"

क्या उनका इस सदन से किसी आधिकारिक पद पर कोई संबंध है?

“वाह, ये तो पक्का भूत है। ये मुझ पर हंस रहा है। मुझे ये बिल्कुल पसंद नहीं!”

"क्या आप इस व्यक्ति का कोई नाम बता सकते हैं?"

"मुझे फिर से जैक्स मिल गया।"

"क्या यहाँ कभी कोई दुखद घटना घटी है?"

“मैं ऐसा ही कहूंगा। मुझे यहां दो व्यक्ति दिखाई देते हैं—एक लंबे चेहरे वाला आदमी, और एक छोटे चेहरे वाला आदमी जो काफी छोटा है।”

क्या वे एक ही काल के हैं?

"नहीं।"

"स्ट्रेचर पर लेटी महिला की भूमिका कहाँ है?"

"बीच में, या उससे पहले।"

“यह दुखद घटना क्या है? यहाँ क्या हुआ?”

मुझे कुछ भी समझ नहीं आ रहा है। ऐसा लग रहा है जैसे मेरा दिमाग काम करना बंद कर चुका है।

“आपको क्या लगता है कि यह घटना कहाँ घटी? इमारत के किस हिस्से में?”

"बिल्कुल यहीं, यहीं।"

“क्या यहाँ किसी की मौत हुई? क्या कोई घायल हुआ?”

"मेरे दिमाग के हिसाब से, मुझे नहीं पता कि कोई इससे कैसे बच पाया होगा। यह बिल्कुल उड़ गया है। मुझे इसका बिल्कुल भी एहसास नहीं हो रहा है। इसे ढूंढने के लिए मुझे अपना हाथ ऊपर उठाना पड़ता है।"

"क्या उनकी उपस्थिति अभी भी यहाँ है?"

जवाब देने के बजाय, एथेल ने अपने हाथ ऊपर उठा लिए, मानो किसी अनदेखे हमले को रोक रही हो। "ओह, नहीं!"

“तुमने अचानक ऐसे क्यों हरकत की? क्या तुम्हें किसी की मौजूदगी का एहसास हुआ?”

“हाँ—जैसे कोई मुझसे संपर्क करने की कोशिश कर रहा हो, और मैं ऐसा नहीं चाहता। मुझे नहीं पता कि मैं इस मानसिक तनाव को कब तक झेल पाऊँगा...”

“ठीक है, हम नीचे चलते हैं। वहाँ जो भी मौजूद हों, उनसे कह देना कि अगर उन्हें कुछ कहना हो तो कह दें। उनके पास जो भी जानकारी हो, हम सुनने के लिए तैयार हैं। उन्हें जो भी समस्या हो, हम सुनेंगे।”

एथेल फिर से संघर्ष करती हुई प्रतीत हुई, मानो उस पर किसी प्रेतबाधा का साया हो।

"यहां कुछ अजीब सा है, और मुझे समझ नहीं आ रहा कि क्या कहा जा रहा है।"

“कोई विदेशी भाषा?”

"हाँ।"

यह कौन सी भाषा है?

मुझे पक्का नहीं पता; इसे सुनना मुश्किल है। यह किसी और भाषा से ज़्यादा लैटिन भाषा जैसा लगता है।

“लैटिन भाषा? क्या इस घर में ऐसा कुछ है जो इसे बाकी घरों से अलग बनाता है?”

इस पर विदेशी प्रभाव काफी अधिक है।

क्या इसका उपयोग आवास के अलावा किसी अन्य रूप में किया जाता था?

"इस जगह पर आत्माओं को बुलाने के अनुष्ठान होते थे।"

आपको क्या लगता है कि उन्हें किसने रखा था?

“मैरी।”

“यह मैरी कौन है?”

“उसने अपने बालों को बीच से बांटा। भारी-भरकम लड़की। मुझे अपना हाथ बार-बार अपने सिर पर रखना पड़ता है, इतना दर्द होता है।”

"क्या आपको इस भयानक दुर्घटना में शामिल लोगों के नाम पता चले, या जो भी आपने इस दर्दनाक घटना का वर्णन किया है?"

"सीढ़ियों से नीचे उतरने वाली मैरी ही होगी। मुझे लगता है कि यह वही है।"

“जिस त्रासदी की आप बात कर रहे हैं, जिस दर्द की आप बात कर रहे हैं...”

“ऐसा लगता है कि इसे यहीं होना चाहिए, लेकिन यह कहीं और भी हो सकता था। मुझे समझ नहीं आ रहा। यहाँ दो परतें हैं।”

"इसमें कई परतें हो सकती हैं।"

"यहां इतने सारे लोग हैं कि उन्हें अलग रखना बहुत मुश्किल है।"

क्या आपको लोगों के आने-जाने का आभास होता है? क्या इस घर में किसी भी तरह की कोई खास बात है?

“मैं कहूंगा कि हां, है। इस देश के सबसे ऊंचे ओहदे वाले लोग यहीं रह चुके हैं। मैं कई बातों को लेकर दुविधा में हूं। यहां एलिस नाम की किसी महिला ने शादी की थी। इसका मुखिया से कोई लेना-देना नहीं है।”

“एलिस एक और परत है?”

"यह सही है।"

“मैरी के सिर में चोट लगी है। एलिस की शादी बाद में होगी या पहले?”

“काफी समय बाद।” फिर उन्होंने आगे कहा, “यह घर मानो एक तरह से बेहद आध्यात्मिक है—ऐसा लगता है जैसे यहाँ जो कुछ भी हुआ है, उसके माध्यम से मैं बहुत से लोगों से मानसिक रूप से आसानी से जुड़ पाई हूँ। इस जगह के चारों ओर एक मानसिक घेरा है। अतीत से।”

"क्या आपको लगता है कि ये घटनाएं अभी भी जारी हैं?"

“हाँ, मुझे लगता है कि है। मुझे नहीं पता कि इस पुनर्निर्माण का इस पर क्या असर पड़ रहा है, खासकर जब पेंटिंग शुरू होगी। क्या लिंकन का इस घर से कोई संबंध था? मुझे ऐसा लगता है कि मैं उन्हें यहाँ देख रहा हूँ।”

"उसका घर से क्या संबंध होगा?"

"कुछ भी नहीं, लेकिन वह यहाँ आया था।"

वह यहाँ क्यों होगा?

मुझे उसकी छाप दिखाई देती है।

“एक आगंतुक के रूप में?”

“मैं कहूंगा, हां। कुछ अन्य प्रभावशाली लोग भी यहां आ चुके हैं।”

"क्या वह उतना ही ऊंचा है?"

"यह सही है।"

“उससे पहले या उसके बाद?”

"बाद में।"

“इससे पहले क्या हुआ था? क्या यहाँ कोई इतना नशे में था जितना वो था?”

“हाँ, मुझे भी ऐसा ही लगता है।” एथेल ने कुछ झिझकते हुए कहा। “लंबे चेहरे वाला आदमी, वो विल्सन जैसा दिखता है!”

यह सुनकर मेरी भौंहें तन गईं। राष्ट्रपति लिंकन और अब विल्सन का ज़िक्र शायद कुछ ज़्यादा ही हो रहा था। दूसरी ओर, मुझे तुरंत यह ख्याल आया कि इन दोनों गणमान्य व्यक्तियों ने अपने करियर में कभी न कभी ऑक्टागन का दौरा ज़रूर किया होगा। हालाँकि 1812 के विनाशकारी युद्ध के बाद ऑक्टागन को दूसरे व्हाइट हाउस के रूप में इस्तेमाल नहीं किया गया, लेकिन इसे अक्सर आधिकारिक या अर्ध-आधिकारिक समारोहों के लिए एक प्रमुख स्वागत कक्ष के रूप में इस्तेमाल किया जाता था। हमारे पास राष्ट्रपति लिंकन या विल्सन की उपस्थिति का कोई रिकॉर्ड नहीं है, लेकिन यह पूरी संभावना है कि इन दोनों ने ऑक्टागन का दौरा किया होगा और वहाँ समय बिताया होगा। यदि इन अवसरों में कुछ उत्सव शामिल थे, तो वातावरण में एक भावनात्मक छाप ज़रूर रह गई होगी और एथेल ने निश्चित रूप से उसे

महसूस किया होगा। इसलिए लिंकन और विल्सन का उनका ज़िक्र उतना अजीब नहीं था जितना मैंने पहले सोचा था।

* * *

पिछले कुछ मिनटों से मैंने शोध सहायक के चेहरे पर कुछ तिरस्कारपूर्ण मुस्कान देखी थी। मैंने एथेल से पूछताछ बंद करने का फैसला किया, खासकर इसलिए कि अब लगभग 1 बज चुका था और मुझे पता था कि सहायक दोपहर के भोजन के लिए जाना चाहती थी।

मुझे आश्चर्य हुआ कि क्या उपरोक्त बातों में से कुछ भी उसे समझ में आया होगा। सच कहूँ तो, मुझे इसकी बहुत कम उम्मीद थी, क्योंकि उसने मेरे काम के प्रति अपनी अविश्वास की भावना स्पष्ट रूप से व्यक्त कर दी थी। लेकिन वह आने के लिए बहुत दयालु था, इसलिए कम से कम मैं उसकी सेवाओं का उपयोग कर सकता था, चाहे वे कितनी भी उपयोगी क्यों न हों।

एलिस नाम का उनके लिए कोई महत्व नहीं था, लेकिन वे वाशिंगटन के सामान्य इतिहास की बजाय ऑक्टागन के इतिहास में अधिक रुचि रखते थे। बाद में, विल्सन हाउस में मुझे एहसास हुआ कि एथेल किसी अनोखे तरीके से अपनी मानसिक भविष्यवाणियों को और अधिक प्रभावी बना रही थीं। ऐसा प्रतीत हुआ कि राष्ट्रपति विल्सन के इतिहास में एलिस का विशेष महत्व था।

लिंकन के बारे में क्या? सहायक ने सिर हिलाया।

“परिवार ने लगभग 1854 में घर छोड़ दिया था, और मुझे लगता है कि उस समय लिंकन एक कांग्रेसी थे। वह यहाँ हो सकते थे, लेकिन...”

“आपको यकीन नहीं है?”

"मेरा मतलब है, यहां आने वाले लोगों की सूची में उनका नाम नहीं है। मुझे इसकी कोई जानकारी नहीं है।"

कर्नल टायलो की मृत्यु 1854 में हुई थी, और यह घर 1900 के बाद तक परिवार के स्वामित्व में रहा, जब संस्थान ने इसे खरीद लिया। लेकिन कर्नल की मृत्यु के बाद टायलो परिवार इस घर में नहीं रहा। मुझे आश्चर्य हुआ कि ऐसा क्यों था।

टायलो परिवार की बेटियों के नामों के बारे में भी शोध सहायक ज़्यादा मददगार नहीं था। उसके पास कुछ बेटियों के नाम तो थे, लेकिन उसे अभी याद नहीं आ रहे थे। उसे मैरी का नाम भी याद नहीं था। लेकिन, सोचने पर लगता है कि शायद मैरी रही हो।

मैंने एथेल की ओर देखा। मुझे स्पष्ट रूप से पता चल गया था कि दोपहर का भोजन करके लौट रहे कामगारों का शोर और उनकी बातचीत का लहजा उसे बिल्कुल भी शांत नहीं कर रहा था। मैंने सहायक को उसकी उपस्थिति के लिए धन्यवाद दिया और हम इमारत से बाहर निकल गए। लेकिन कुछ ही कदम चलने के बाद, एथेल अचानक रुक गई और मेरी ओर मुड़कर बोली, "यहाँ किसी की हत्या हुई है, या कम से कम बुरी तरह घायल हुई है।" उसे लगा कि वह स्ट्रेचर पर लेटी महिला ही थी। उसे पूरी तरह से यकीन नहीं था कि मौत हत्या के कारण हुई थी, लेकिन यह निश्चित रूप से हिंसक थी। मैंने दीवार पर लगे एक चित्र की ओर इशारा किया; वह कर्नल टायलो का चित्र था। मैंने पूछा, क्या एथेल चित्र में दिख रहे व्यक्ति को पहचानती है, बेशक मैंने यह नहीं बताया कि वह कौन था। शायद वह जानती हो। उसने तुरंत सिर हिलाया।

“यही वह आदमी है। मैंने उसे देखा था।”

वह उन आदमियों में से एक था जिन्हें उसने एक अजीब सी लंबी टोपी पहने घूमते देखा था। उसे पूरा यकीन था। चेहरा किसी तरह उसके दिमाग में बस गया था। फिर एथेल ने एक और तस्वीर की ओर इशारा किया। यह श्रीमती विल्सन की तस्वीर थी। वह भी ऑक्टागन में मौजूद थीं। एथेल ने उनकी उपस्थिति महसूस की।

"क्या यह 1958 होगा?" उसने कुछ अनिश्चितता से पूछा। तारीख संभव लग रही थी।

एथेल के प्रदर्शन का मूल्यांकन करते समय, मैंने इस बात का ध्यान रखा कि भूतिया घरों में आत्माओं की उपस्थिति का सटीक अनुमान लगाने में वह शायद ही कभी गलत हुई हो। इन परिस्थितियों में, ज़ाहिर है, एथेल के पूर्ण समाधि में जाने की कोई संभावना नहीं थी। आत्माओं के साथ उसका संपर्क ज़्यादा से ज़्यादा सतही ही था। फिर भी, अगर जैकलीन लॉरेंस द्वारा अपने लेख में वर्णित तीन महिला भूत मौजूद होतीं, तो एथेल ने निश्चित रूप से उन्हें महसूस किया होता, देखा होता या किसी अन्य तरीके से उनका संकेत दिया होता। मुझे पूरा यकीन है कि एथेल ने वाशिंगटन पोस्ट में वह लेख कभी नहीं देखा। मुझे यह भी पूरा यकीन है कि अगर

उसने उसे देखा भी होता, तो भी उसे कोई फर्क नहीं पड़ता, क्योंकि वह एक समर्पित और ईमानदार माध्यम है। इमारत में ही उसने मेरी मदद के बिना या मेरे मार्गदर्शन पर निर्भर हुए बिना, मानसिक "हॉट स्पॉट" तक अपना रास्ता खोज लिया। अगर वह पहले भी वहाँ गई होती, तो भी कोई फर्क नहीं पड़ता, क्योंकि नवीनीकरण ने नीचे के हिस्से की बनावट और स्वरूप को पूरी तरह से बदल दिया था। मुझे खुद भी रास्ता खोजने में मुश्किल हुई, हालाँकि मैं पहले दो बार ऑक्टागन जा चुका था।

इस प्रकार, एथेल जॉनसन मेयर्स ने 1965 में मेरे द्वारा प्रकाशित मूल कथन की पुष्टि की। एक लड़की भूत और एक पुरुष भूत, बेटी और पिता, इस समय अष्टकोण के तार्किक निवासी होंगे। हालांकि, यह एक विवादास्पद प्रश्न है कि क्या वे आत्माएं स्वयं अपनी दुर्दशा से अवगत हैं या नहीं।

लड़की की समस्या की असल वजह का पता लगाना भी उतना ही मुश्किल लगता है। क्या वह सिर्फ़ किसी ऐसे लड़के को घर ले आई थी जिसे उसके पिता पसंद नहीं करते थे, या उसकी शादी हो गई थी? अजीब बात है, लेकिन इस मामले में रिकॉर्ड साफ़ नहीं हैं। कम से कम मुझे तो यही लगता है कि उसकी मौत ऊपरी मंज़िल से गिरने से हुई थी। एथेल जॉनसन मेयर्स को "भूत-प्रेत की स्थिति" का एहसास तभी होता जब वह सचमुच उसे महसूस करतीं। इसके अलावा, ये आभास उस माध्यम ने ठीक उसी जगह पर महसूस किए जहाँ परंपरा के अनुसार लड़की गिरी थी। इस तरह, एथेल अपने पिता के घर में एक दुर्भाग्यशाली युवती की निरंतर उपस्थिति की पुष्टि कर सकीं। चूंकि जिन दो राष्ट्रपतियों को माध्यम ने किसी न किसी तरह से घर से जुड़ा हुआ महसूस किया, वे भूतिया किस्म के नहीं हैं, इसलिए यह संभव है कि कर्नल टायलो ही वह व्यक्ति हों जिनके पदचिह्नों की पहचान कई गवाहों ने की है।

* * *

अमेरिकी वास्तुकार संस्थान अब ऑक्टागन को नवीनीकरण से पहले वाले संग्रहालय के रूप में नहीं देखता। वह चाहता है कि इसे मुख्य रूप से अपने मुख्यालय के रूप में जाना जाए। साथ ही, यह भी संदेह है कि इसकी दीवारों के भीतर होने वाली नियमित पार्टियाँ और

सामाजिक समारोह अब पहले की तरह नियमित रूप से आयोजित हो पाएंगे या नहीं, यदि संस्थान वास्तव में उन्हें अनुमति देता है।

यदि आप देश की राजधानी में घूमने आए हैं और कुछ अनोखे नज़ारे देखना चाहते हैं, तो अपनी यात्रा में ऑक्टागन को ज़रूर शामिल करें। यकीनन, जीर्णोद्धार पूरा होने के बाद, किसी भी पर्यटक को अमेरिकन इंस्टीट्यूट ऑफ आर्किटेक्ट्स के दर्शन से वंचित रखने का कोई कारण नहीं होगा। और जब आप ऑक्टागन में घूमते हुए सीढ़ियों की ओर देखें और शायद यह सोचें कि क्या आप भाग्यशाली होंगे, या दुर्भाग्य से, कि आपको उन दो भूतों में से एक के दर्शन हो जाएं, तो याद रखें कि वे आपको बहुत कम ही जानते हैं, अगर जानते भी हैं तो। आप किसी भूत को प्रकट होने का आदेश नहीं दे सकते। यदि आप किसी तरह रात बिताने का निमंत्रण प्राप्त कर लेते हैं, तो शायद कुछ रहस्यमय घटित हो जाए - लेकिन फिर भी, ऐसा नहीं भी हो सकता है। हालांकि, आप इस बात को लेकर आश्वस्त हो सकते हैं कि मैंने ऑक्टागन को भूतों से मुक्त नहीं किया है, भले ही एक माध्यम, एथेल जॉनसन मेयर्स, कुछ समय के लिए इसके दो प्रमुख भूतों से लगभग बातचीत करने के करीब थीं।

यह देखना बाकी है, या सुना जाना बाकी है, कि भविष्य में ऑक्टागन में और भी मानसिक घटनाएं घटित होंगी या नहीं।

* 55

एकीकरण भूत

1964 के गर्म और उमस भरे जुलाई के दिनों में, जब हार्लेम और ब्रुकलिन में अश्वेत लोग दंगे कर रहे थे और दोनों पक्षों के आंदोलनकारियों द्वारा अश्वेत-श्वेत संघर्ष को चरम पर पहुंचाया जा रहा था, तब मुझे सौभाग्य से एक अश्वेत सज्जन को दो दुनियाओं के बीच उनकी दयनीय स्थिति से मुक्त कराने में मदद करने का अवसर मिला।

यह सब "टू टेल द ट्रुथ" नामक एक कार्यक्रम में मेरी उपस्थिति से शुरू हुआ, जो वास्तव में, अक्सर सच नहीं बोलता - जाहिर तौर पर, एक अच्छे शोमैनशिप के हित में।

जैसा कि अधिकांश अमेरिकी जानते हैं, इस कार्यक्रम में तीन तथाकथित हस्तियों का एक पैनल होता है, जो तीन मेहमानों से प्रश्न पूछते हैं और उनके उत्तरों के आधार पर यह निर्धारित करने का प्रयास करते हैं कि उनमें से असली कौन है और दो धोखेबाज कौन हैं।

मैं तीन कथित भूत-प्रेत खोजकर्ताओं में से एक के रूप में उपस्थित हुआ, जिनमें से दो धोखेबाज थे। संयोगवश, मेरे एक हमशक्ल का बाद में एक वास्तविक धोखाधड़ी में शामिल होने का पता चला, लेकिन उस समय मेरी आत्मा की शक्ति (ईएसपी) ठीक से काम नहीं कर रही थी, वरना मैं उसकी उपस्थिति का विरोध करता।

मैंने शांत रहने का नाटक किया, न तो बहुत जानकार दिखा और न ही बिल्कुल बेवकूफ। फिर भी, पैनल के अधिकांश सदस्यों को पता चल गया था कि हम में से भूत शिकारी कौन है और मेरा असली चेहरा सामने आ गया। पैनलिस्ट फिलिस न्यूमैन को लगा कि मेरा रंग इतना पीला है कि मैं खुद अपने भूतों में से एक हो सकता हूँ, और कॉमेडियन मिल्टन कामेन ने मेरे भूतों के प्रेम जीवन के बारे में सवाल किया, जिस पर मैंने व्यंग्य से कहा, "मैं अपने ग्राहकों की निजी जिंदगी में कभी दखल नहीं देता।"

आर्टी शॉ जानना चाहता था कि क्या मैंने कोई खास किताब पढ़ी है, लेकिन ज़ाहिर है मुझे उसे बताना पड़ा कि मैं आमतौर पर केवल घोस्ट हंटर ही पढ़ता हूँ, खासकर नेटवर्क टेलीविजन शो पर।

दरअसल, इस कार्यक्रम में मैं खुद लगभग एक भूत बन गया था, क्योंकि रोशनी ने मेरी आंखों को इतना चकाचौंध कर दिया था कि मैं शो की शुरुआत में तीन मेहमानों को प्रदर्शित करने के लिए इस्तेमाल किए गए ऊंचे मंच से लगभग गिर ही गया था।

10 अक्टूबर, 1963 को मुझे कार्यक्रम की रिसेप्शनिस्ट से एक नोट मिला, जिसने जाहिर तौर पर घोस्ट हंटर पढ़ी थी और मुझे बताने के लिए उसके पास कुछ विशेष रुचि की बात थी।

इंटीग्रेशन घोस्ट हाउस—थर्ड एवेन्यू, न्यूयॉर्क शहर

मुझे बाद में पता चला कि एलिस हिले काफी आकर्षक युवती हैं, जिनका परिवार मूल रूप से लुइसियाना से था, और जिन्हें हमेशा से भूत-प्रेत की कहानियों और इसी तरह की चीजों में रुचि रही है।

वह मुझे जिस अनुभव के बारे में बताने वाली थी, वह गुडसन-टोडमैन के एक कर्मचारी, फ्रैंक आर., से संबंधित था, जो एक टेलीविजन निर्माता थे और उतने ही समझदार व्यक्ति थे जितना आप पाना चाहेंगे।

यह वही व्यक्ति था जिसे यह विचित्र अनुभव हुआ था, लेकिन ऐलिस को लगा कि मुझे इसके बारे में पता होना चाहिए और यदि संभव हो तो उससे मिलना चाहिए। चूंकि वह स्वयं अफ्रीकी-अमेरिकी थी और एकीकरण के लिए एक बुद्धिमान दृष्टिकोण में रुचि रखती थी, इसलिए इस मामले की विशिष्टताओं ने उसे और भी अधिक आकर्षित किया। उसने मुझे लिखा:

ऐसा लगता है कि जॉन ग्रे नाम का एक अश्वेत व्यक्ति था। वह फ्रैंक का निजी मित्र था। श्री ग्रे ने अपनी जाति त्याग दी थी और श्वेत समाज में रहने लगे थे, वे उत्तम दर्जे के वस्त्र पहनते थे। लंबी

बीमारी के बाद कैंसर से उनकी मृत्यु हो गई और उनके परिवार ने उनका अंतिम संस्कार पारंपरिक दक्षिणी रीति-रिवाजों के अनुसार किया। श्री ग्रे को अपने अंतिम संस्कार के तरीके पर बहुत दुख होता, क्योंकि उन्होंने एक बार कहा था कि यदि उनकी मृत्यु हो जाए, तो वे चाहते हैं कि उनका दाह संस्कार किया जाए और उनकी राख मैनहट्टन के उन इलाकों में बिखेरी जाए जहाँ उन्हें अश्वेत कहलाने पर रहने की अनुमति नहीं होती।

इसके बाद एलिस ने मुझे फ्रैंक के उस विचित्र अनुभव के बारे में बताया और मुझे उस अपार्टमेंट का पता दिया जहां यह घटना घटी थी।

फ्रैंक आर. से संपर्क करने और उनसे सीधे पूरी कहानी जानने में मुझे तीन-चार महीने लग गए। आखिरकार, मैनहट्टन के शानदार शेरेटन-ईस्ट होटल में एक ड्रिंक के दौरान, मैं उनसे सारी जानकारी निकलवाने में कामयाब रहा।

फ्रैंक की मुलाकात जॉन ग्रे से उनके रूममेट बॉब ब्लैकबर्न के ज़रिए हुई थी। उस समय बॉब और फ्रैंक उस अपार्टमेंट से ज़्यादा दूर नहीं रहते थे, जिसे अब भूतिया अपार्टमेंट कहा जाता है। जब उन्हें पता चला कि जॉन ग्रे बीमार हैं, तो वे उनसे मिलने अस्पताल गए। यह वर्ष 1961 की बात है। मात्र तैंतीस वर्ष के ग्रे को पता था कि उनकी मृत्यु निश्चित है। अंत तक वे यही शिकायत करते रहे कि उनके मित्र उनसे मिलने अक्सर नहीं आते। वे कल्याण विभाग में कार्यरत थे और उनके काम के घंटे अनियमित थे, जिसके कारण वे अक्सर दोपहर के मध्य में अपने अपार्टमेंट लौटते थे।

जॉन ग्रे की मृत्यु के तीन महीने बाद, दोनों दोस्तों ने उनका खाली किया हुआ अपार्टमेंट ले लिया। कुछ ही समय बाद, फ्रैंक आर. दोपहर के समय बिस्तर पर अकेले लेटे हुए एक किताब पढ़ रहे थे।

अचानक, उसने सामने का दरवाजा खुलते और बंद होते हुए स्पष्ट रूप से सुना। इसके बाद, नंगे फर्श पर एक आदमी के कदमों की आहट साफ सुनाई दी।

“कौन है?” फ्रैंक ने उत्सुकता से पूछा। चाबी सिर्फ उसके रूममेट बॉब के पास थी, और वह उस समय तो आने वाला नहीं था। कोई जवाब नहीं आया। कदमों की आहट धीरे-धीरे बेडरूम के दरवाजे की ओर बढ़ती रही, जो छोटे से अपार्टमेंट के बड़े लिविंग रूम के दाहिनी ओर स्थित था।

उसने बेडरूम का दरवाजा खुलने और फिर बंद होने की जानी-पहचानी आवाज सुनी, और कदमों की आहट कमरे से होते हुए बिस्तर की ओर बढ़ती हुई सुनाई दी। वहाँ वे अचानक रुक गए।

फ्रैंक बेहद डरा हुआ था, क्योंकि उसे आसपास कोई इंसान दिखाई नहीं दे रहा था। दोपहर के 3 बज रहे थे और अपार्टमेंट में काफी रोशनी थी। वह चुपचाप लेटा रहा और इंतज़ार करता रहा, उसके माथे पर पसीना आने लगा।

कुछ क्षण बाद, उसे अनदेखे आगंतुक के कदमों की आहट सुनाई दी, जो मुड़कर धीरे-धीरे बाहर चला गया, और कुछ क्षण पहले की तरह ही दरवाजे के खुलने और बंद होने की आवाज फिर से सुनाई दी। लेकिन इतनी आवाज के बावजूद, दरवाजा वास्तव में खुला नहीं!

पहले तो फ्रैंक को लगा कि वह बीमार है, लेकिन जल्दी से जाँच करने पर पता चला कि उसे बुखार या कोई और असामान्य स्थिति नहीं थी। उसने इस पूरी घटना को भुलाने का फैसला किया और एक-दो दिन के भीतर ही उसने इसे अपनी अति कल्पना का परिणाम मान लिया। लेकिन आखिर इस काल्पनिक घटना का कारण क्या था, यह वह कभी नहीं बता पाया।

उन्होंने बॉब को इसके बारे में न बताने का फैसला किया, कहीं उसे अंधविश्वासी या इससे भी बुरा न कहा जाए। मामला लगभग छह सप्ताह तक ऐसे ही रहा, जब बॉब ब्लैकबर्न को भी वैसा ही अनुभव हुआ। बिस्तर पर अकेले लेटे हुए उन्होंने कदमों की आहट, दरवाजों के खुलने और बंद होने की आवाज सुनी, लेकिन वे घबराए नहीं। किसी तरह उनके भीतर की एक उभरती हुई मानसिक अनुभूति ने उन्हें मार्गदर्शन दिया, और वे समझ गए कि यह उनका दिवंगत मित्र जॉन ग्रे है, जो उनके पुराने घर आया है।

वातावरण में एक तनावपूर्ण, अवास्तविक रंग आ गया था, जो विद्युतीय रूप से आवेशित था और किसी तरह उस स्थिति से बिल्कुल अलग था जो कुछ क्षण पहले थी।

बिना सोचे समझे, बॉब ब्लैकबर्न बिस्तर पर आगे की ओर झुके और धीमी, लेकिन स्पष्ट आवाज में बोले, "जॉन, आपकी आत्मा को शांति मिले।"

इसके साथ ही, अदृश्य कदमों की आहट सुनाई दी और वे उसी रास्ते से चले गए जिससे आए थे। कुछ-कुछ इसके बाद दोनों रूममेट्स अपने मानसिक अनुभवों पर चर्चा करने लगे।

उन्होंने अपने अनुभवों की तुलना की और पाया कि जॉन ग्रे के भूत से उनकी मुलाकात बिल्कुल एक जैसी परिस्थितियों में हुई थी।

उन्होंने कई कारणों से अपार्टमेंट छोड़ दिया, और लगभग तीन साल बाद ही यह मामला फ्रैंक आर. के लिए फिर से दिलचस्प बन गया।

उसी इलाके में - न्यूयॉर्क के चौंतीसवें स्ट्रीट और थर्ड एवेन्यू में - एक पार्टी में, मेहमानों में से एक, माइनर नाम के एक चिली निवासी ने अपने दोस्त वर्न के बारे में बात की, जो अभी-अभी एक भूतिया अपार्टमेंट से बाहर निकला था क्योंकि वह अब वहां और नहीं रह सकता था।

फ्रैंक आर., जो विनम्रतापूर्वक सुन रहा था, अचानक उस विवरण से समझ गया कि माइनर जॉन ग्रे के पुराने अपार्टमेंट के बारे में बात कर रहा था।

वर्न के हवाले से कहा गया, "लोग इधर-उधर घूम रहे हैं," और वह पूरी तरह से घबराकर वहां से चले गए थे।

किराया काफी कम होने के बावजूद अपार्टमेंट कुछ समय तक खाली रहा। इमारत नीचे स्थित मछली रेस्तरां के मालिकों के हाथ में चली गई। पांच मंजिला इस इमारत में रहने वाले अधिकांश किरायेदार शांत स्वभाव के कलाकार या व्यवसायी हैं। इमारत की अच्छी तरह से देखभाल की जाती है और संकरी सीढ़ियों से कई छोटे, लेकिन आरामदायक फ्लैट दिखाई देते हैं, जिनकी मैनहट्टन में युवा कर्मचारियों और कलाकारों की जरूरतों को पूरा करने के लिए पर्याप्त संख्या में उपलब्धता नहीं है।

जॉन ग्रे इन परिवेशों में काफी सहज महसूस करते होंगे और थर्ड एवेन्यू स्थित अपार्टमेंट शायद उनके लिए उस प्रतिकूल दुनिया से एक सुरक्षित आश्रय और शरणस्थल रहा होगा जिसमें वे रहते थे।

“बहुत दिलचस्प,” मैंने फ्रैंक आर. को उनकी कहानी के लिए धन्यवाद देते हुए कहा। मैंने उनसे पूछा कि क्या उन्हें खुद भी ऐसे कोई मानसिक अनुभव हुए हैं।

“खैर, मैं आयरिश हूँ,” उसने मुस्कुराते हुए कहा, “और मैं अक्सर सहज ज्ञान से ही भविष्य देख लेता हूँ। जब मैं बहुत छोटा था, तो एक बार मैंने अपनी माँ को एक दिन समुद्र तट पर न जाने की चेतावनी दी थी, वरना वह डूब जाएँगी। उस समय मैं केवल चौदह वर्ष का था। माँ गईं और

उनका एक्सीडेंट हो गया। वह लगभग डूब ही गई थीं, लेकिन ठीक समय पर उन्हें बचा लिया गया।"

"अब समझ में आया," मैंने कहा। "पैरों की आहट सुनने के लिए तो आपको मानसिक रूप से सक्षम होना चाहिए। जिन लोगों को अलौकिक अनुभव होते हैं, वे जन्मजात माध्यम होते हैं, वरना वे अलौकिक चीजों को न तो सुन पाते और न ही देख पाते।"

फ्रैंक आर. ने सिर हिलाया। वह मेरी बात समझ गया था और इतना ही नहीं, अगर मैं उस भूतिया अपार्टमेंट में रहने वालों से बात कर पाता, तो वह मेरे द्वारा आयोजित किए जाने वाले एक प्रेतात्माओं से संपर्क करने के सत्र में शामिल होने को भी तैयार था। इसी बात पर हम अलग हो गए, और फ्रैंक ने मकान मालिक से यह पता लगाने का वादा किया कि क्या अपार्टमेंट अभी भी खाली है।

अपार्टमेंट 5 ए बिल्कुल भी खाली नहीं था। नोरेन नाम का एक युवा और आकर्षक जोड़ा पिछले छह महीनों से इसमें रह रहा था।

जब मैंने फोन करके अपना परिचय दिया, तो वे मेरे व्यवसाय की प्रकृति को लेकर असमंजस में थे।

मैंने मासूमियत से पूछा, "क्या आपको कभी ऐसी जगह कदमों की आहट सुनाई देती है जहां कोई चल नहीं रहा होता, या क्या आपको अपने अपार्टमेंट में कुछ असामान्य महसूस होता है?"

यह एक बम की तरह था। कुछ पल के लिए सन्नाटा छा गया, फिर श्रीमती नोरेन ने जवाब दिया, "जी हां, बिल्कुल। क्या आप हमारी मदद कर सकते हैं?"

अगले दिन मैं उनसे उस भूतिया अपार्टमेंट में मिलने गया। श्री नोरेन, जो एक नेटवर्क के लिए फिल्म एडिटर थे, को उस समय तक कोई असामान्य अनुभव नहीं हुआ था। लेकिन उनकी पत्नी को हुआ था। मेरे आने से दो-तीन महीने पहले, एक शाम जब वह नहा रही थीं, तो अचानक उन्हें लिविंग रूम में कदमों की आहट साफ सुनाई दी। उन्हें लगा कि उनके पति हैं और कुछ गड़बड़ है, इसलिए वह दौड़कर बाहर आईं, लेकिन उन्हें बेडरूम में गहरी नींद में सोते हुए पाया। उन्होंने तय किया कि यह वही होंगे, जो नींद में चल रहे होंगे!

लेकिन कुछ हफ्तों बाद, उसने फिर से कदमों की आहट सुनी। इस बार उसके मन में कोई संदेह नहीं था—वहाँ एक भूत था।

मैंने भूत से संपर्क करने के लिए 22 जुलाई, 1964 को एक प्रेतात्माओं से संपर्क करने का आयोजन किया।

मेरी माध्यम एथेल जॉनसन मेयर्स थीं, जो निश्चित रूप से हमारी यात्रा की कहानी या उद्देश्य से पूरी तरह अनजान थीं।

वहाँ मौजूद लोगों में नोरेन परिवार के तीन-चार दोस्त, फ्रैंक आर., बॉब ब्लैकबर्न, एलिस हिल, टाइम-लाइफ की एक संपादक, श्रीमती हैरिंगटन (मनोवैज्ञानिक विज्ञान की छात्रा), नोरेन परिवार, मेरी पत्नी कैथरीन, मैं और दो नन्हे काले बिल्ली के बच्चे थे, जिन्होंने पालतू जानवरों और आम तौर पर काली बिल्लियों के लिए तय सभी परंपराओं के विपरीत, भूत पर बिल्कुल ध्यान नहीं दिया। शायद उन्हें अभी तक यह नहीं सिखाया गया था कि उन्हें कैसा व्यवहार करना चाहिए।

एक संक्षिप्त क्षणिक दूरदर्शिता में, एथेल मेयर्स ने उस स्थान से जुड़े दो पुरुषों का वर्णन किया: एक सफेद बालों वाला सज्जन जिसे बॉब ब्लैकबर्न ने बाद में अपने दिवंगत पिता के रूप में स्वीकार किया, और एक "सांवले रंग का आदमी," न तो बूढ़ा, न ही बहुत जवान।

“वह तुम्हें और तुम्हें देख रहा है,” उसने कहा, क्योंकि वह उन दोनों आदमियों के नाम नहीं जानती थी। फ्रैंक और बॉब उत्सुकता से तनाव में आ गए। “वह तुम्हें एक आँख से देख रहा है,” उसने आगे कहा। फिर उसने सांस लेने में तकलीफ की शिकायत की और मुझे याद आया कि जॉन ग्रे ने अपने आखिरी पल ऑक्सीजन टेंट में बिताए थे।

अचानक, भूत का साया छा गया। चीखते हुए श्रीमती मेयर्स ज़मीन पर गिर पड़ीं और घुटनों के बल रेंगते हुए बॉब ब्लैकबर्न और फ्रैंक के पास पहुँचीं। मुझे लगा कि इतने सारे लोगों में से इन दोनों को पहचानना सटीकता का पक्का संकेत था। ज़ाहिर है, श्रीमती मेयर्स को भूत के मामले से उनके संबंध के बारे में कुछ भी पता नहीं था।

सिसकते हुए उसने बॉब ब्लैकबर्न का हाथ पकड़ लिया, और अब उसके गले से एक गहरी मर्दाना आवाज़ निकल रही थी, जिसमें दक्षिणी लहजे की झलक थी। "यह एक सपना है," उसने बुदबुदाते हुए कहा, फिर शिकायत करने लगा कि बॉब उससे मिलने नहीं आया!

बॉब ब्लैकबर्न और मेरे द्वारा कहे गए शांत शब्दों ने उत्तेजित मन को शांत कर दिया।

जब मैंने उसे यह बताने की कोशिश की कि वह "मर चुका है", तो उसने मेरे साथ हिंसक बहस की।

"वह पागल है," भूत ने कहा और अपने पुराने दोस्त से सांत्वना मांगी।

“नहीं, जॉन, वह सही कह रहा है,” बॉब ने कहा।

“तुम भी?” भूत ने जवाब दिया और हिचकिचाया।

यही वो पल था जिसकी मुझे उम्मीद थी। मैंने उसे सब कुछ विस्तार से बताया। धीरे-धीरे उसे समझ आ गया, लेकिन उसने जाने से इनकार कर दिया।

“मैं कहाँ जाऊँ?” उसने कहा। “यह मेरा घर है।”

मैंने उससे कहा कि वह अपने माता-पिता के बारे में सोचे और इस तरह उनसे जुड़ जाए।

“वे मर चुके हैं,” उसने जवाब दिया।

मैंने कहा, "तुम भी वैसे ही हो।"

अंततः मैंने एथेल के सहायक अल्बर्ट से सहायता का अनुरोध किया, जो आए और जॉन ग्रे की संघर्षरत आत्मा को धीरे से जीवन के "दूसरे पक्ष" में ले गए।

“उसका दिमाग ठीक नहीं है,” उसने कहा और जल्दी से उस महिला को वापस उसकी कुर्सी पर बिठा दिया। “मरने से पहले नशीली दवाओं के सेवन ने उसे कम समझदार बना दिया है।”

क्या कोई निजी मामला अनसुलझा था? मैं जानना चाहता था।

"निजी इच्छाएं, हां। लेकिन वे वैसी नहीं थीं जैसी होनी चाहिए थीं।"

अल्बर्ट ने बताया कि वह जॉन के माता-पिता को इसलिए लाया था ताकि वे उसका हाथ पकड़कर उसे उस अपार्टमेंट से दूर ले जा सकें, जो पृथ्वी पर उसके जीवन में एकमात्र ऐसा आश्रय स्थल था जहाँ वह वास्तव में "बेफिक्र" रह सकता था।

श्रीमती मेयर्स के समाधि की अवस्था में आने के एक घंटे बाद, वह अपने शरीर पर पूरी तरह से नियंत्रण में वापस आ गईं, उन्हें जॉन ग्रे के साथ हुए समाधि के अनुभव या फर्श पर गिरने के बारे में बिल्कुल कुछ भी याद नहीं था।

जुलाई की उमस भरी रात थी जब हम थर्ड एवेन्यू तक जाने वाली चार सीढ़ियाँ उतर रहे थे, लेकिन मुझे इस बात से बहुत खुशी हो रही थी कि जॉन ग्रे अब उस जगह पर नहीं घूमेगा जहाँ उसकी बिल्कुल भी जरूरत नहीं थी।

* 56

आर्डमोर बुलेवार्ड के भूत

आर्डमोर बुलेवार्ड लॉस एंजिल्स के एक बेहद प्रतिष्ठित और खूबसूरत इलाके में स्थित है। यह एक चौड़ी सड़क है, जो फूलों से भरपूर रूप से सजी हुई है, और इसके दोनों ओर उत्तर और दक्षिण दिशा में कई मील की दूरी तक भव्य मकान बने हुए हैं।

यहां रहने वाले लोग भूत-प्रेत की कहानियों पर विश्वास नहीं करते हैं, और अगर उनके साथ कुछ अजीबोगरीब घटना घटित होती है, तो वे चाहते हैं कि उनके नाम गुप्त रखे जाएं।

चूंकि यही एकमात्र शर्त थी जिसके तहत मुझे विचाराधीन घर में प्रवेश मिल सकता था, इसलिए मैंने अनिच्छा से सहमति दे दी, हालांकि इस मामले से जुड़े सभी लोगों के नाम और पते मुझे और अमेरिकन सोसाइटी फॉर साइकिक रिसर्च को ज्ञात हैं, जिसका प्रतिनिधित्व मेरे द्वारा की गई जांच में कैलिफोर्निया की प्रमुख श्रीमती जॉर्ज केर्न ने किया था।

यह सब मेरी जानकारी के बिना ही शुरू हुआ जब मैं दिसंबर 1963 में लॉस एंजिल्स के लिंडेन थिएटर से प्रसारित होने वाले एक टेलीविजन कार्यक्रम में पैनलिस्ट था।

कुछ समय बाद, मुझे हेलेन एल. नाम की एक महिला का पत्र मिला। उन्होंने लिखा:

मैं खुद को भाग्यशाली मानती हूँ कि मैंने वह शो देखा जिसमें आप दिखाई दिए थे। दरअसल, मैं एक भूतिया घर में रहती हूँ और मुझे मदद की सख्त जरूरत है।

आधी रात को जब मैं बाथरूम जाने के लिए उठा, तो मुझे भयानक हाथापाई और लड़ाई की आवाजें सुनाई दीं! पिछली रात मैं बिस्तर पर लेटा हुआ सिगरेट पी रहा था। लगभग 9:30 बज रहे थे और मैं अपनी किताब में पूरी तरह डूबा हुआ था। अचानक, मेरे दाहिनी ओर लगभग दो फीट की दूरी पर, शैम्पेन की बोतल का कॉर्क जोर से खुला और फिर मुझे शैम्पेन को गिलास

में डालते हुए सुनाई दिया! मैंने कुछ देखा नहीं, लेकिन सब कुछ सुना, और सबसे भयानक बात यह है कि यह सब मेरे ठीक बगल में हुआ।

जैसे ही मुझे हेलेन एल. का दूसरा पत्र मिला, मैंने तुरंत उसे फोन किया।

उसकी मदद करने के लिए लॉस एंजिल्स जाने की तत्काल कोई संभावना नहीं थी, लेकिन मैं व्यक्तिगत संपर्क स्थापित करना चाहता था और शायद इस प्रक्रिया में उसके व्यक्तित्व के बारे में बेहतर जानकारी प्राप्त करना चाहता था।

मुझे लगा कि मिस एल. की शैक्षणिक पृष्ठभूमि अच्छी है; उनकी आवाज़ में कोई अतिशयोक्ति नहीं थी और वह बिल्कुल भी भावुक नहीं थीं। वह इस पूरी बात से थोड़ी शर्मिंदा लग रही थीं और उन्होंने मुझसे अपना नाम और पता गुप्त रखने की विनती की। मैंने उन्हें समझाया कि दुर्भाग्यवश, लॉस एंजिल्स की यात्रा के लिए तुरंत धन उपलब्ध कराने वाला कोई संस्थान नहीं है, और न ही अभी तक कोई ऐसा टेलीविजन कार्यक्रम है जो अपने शोध के हिस्से के रूप में ऐसी यात्रा का खर्च उठा सके।

इसलिए, मुझे खुद ही धनराशि जुटानी पड़ी, और एक लेखक के पास पर्याप्त धनराशि कभी नहीं होती।

जैसे ही मौका मिलता, मैं तुरंत चला जाता—चाहे बोलने का कोई कार्यक्रम हो या घर की स्क्रीन पर आने का, जिससे मुझे समुद्र तट पर जाना पड़ता। इस बीच, क्या वह मुझे घर में होने वाली हर नई घटना के बारे में लिखती? साथ ही, क्या वह मुझे अपने घर में घटी अजीबोगरीब घटनाओं का सिलसिलेवार ब्यौरा दे सकती थी? 23 जनवरी को, उस महिला ने मेरी बात मान ली। इस बार उसका पत्र थोड़ा शांत लग रहा था; जाहिर है, मेरे उससे मिलने आने के वादे ने उसके मन को शांत करने में मदद की थी।

जैसे ही मैंने उससे पूछा, उसने शुरू से बोलना शुरू कर दिया:

मेरी माँ ने लगभग अड़तीस साल पहले हमारा घर खरीदा था। जब हम उसमें रहने आए, तब वह घर अभी-अभी बनकर तैयार हुआ था। मेरी माँ कुछ साल पहले विधवा हो गई थीं और वह मेरी दो बहनों और मुझे मध्य पश्चिम से कैलिफोर्निया ले आईं क्योंकि हम अपने पीछे छोड़ी गई भीषण सर्दियों के कारण हमेशा बीमार रहते थे।

हमारे यहाँ आने के लगभग दो साल बाद, दुर्भाग्यवश हमने अपना लगभग सब कुछ खो दिया। तब मेरी माँ ने हमारा घर फर्नीचर सहित किराए पर दे दिया और हम कहीं और रहने लगे। उन्होंने आठ या नौ साल की अवधि में पाँच अलग-अलग किरायेदारों को घर किराए पर दिया। एक तेल व्यापारी था जिसकी एक जवान पत्नी और बच्चा था। मेरी माँ उसे एक बड़े, क्रूर और चिड़चिड़े स्वभाव वाले व्यक्ति के रूप में वर्णित करती हैं।

जब ये लोग यहाँ रह रहे थे, तब हमारे पड़ोसियों ने मेरी माँ को फोन किया और बताया कि पिछली रात हमारे घर में बहुत भयंकर झगड़ा हुआ था और उसमें चार और लोग शामिल थे। उन्होंने बताया कि उन्हें फर्नीचर टूटने की आवाज़ें सुनाई दे रही थीं और वे लगभग पुलिस को फोन करने ही वाले थे।

फर्नीचर के टूटने की बात बिल्कुल सच थी—जैसा कि मेरी माँ को तब पता चला जब वे वहाँ से चले गए।

घर के पीछे दो शयनकक्ष और एक छोटा कमरा है जिसे हम अध्ययन कक्ष के रूप में उपयोग करते हैं। इन तीनों कमरों में फ्रेंच दरवाजे हैं और फिर जालीदार दरवाजे हैं जो एक अच्छे आकार के आँगन में खुलते हैं।

वापस आने के तुरंत बाद चीजें शुरू नहीं हुईं। कुछ समय तक शांति रही, लेकिन फिर सब कुछ शुरू हो गया।

मुझे सबसे पहले जो याद है, वह तब की बात है जब मैं लगभग उन्नीस या बीस साल की थी। सब लोग सो चुके थे, मेरी बहन बाहर गई हुई थी, और मैं अपने कमरे में चिट्ठी लिख रही थी। अचानक मेरे बंद फ्रेंच दरवाज़े ज़ोर से हिलने लगे, मानो कोई अंदर आने की बेताब कोशिश कर रहा हो। संयोग से, उसी दोपहर हमने अपने बाहरी आँगन के फर्श पर पेंट करवाया था। मैं अगली सुबह वहाँ जाकर पेंट पर पैरों के निशान देखने के लिए बेताब थी। वहाँ कोई निशान नहीं थे। एक खरोंच तक नहीं थी।

मैंने अपनी उंगली को नए रंगे हुए आँगन के फर्श पर छुआ और थोड़ा सा रंग मेरी उंगलियों पर चिपक गया।

हमें बीच-बीच में लाइट का स्विच दबाने की आवाज भी सुनाई देती थी, और कमरे में कोई नहीं होता था!

कभी-कभी सुबह मेरी माँ मुझसे पूछती थीं कि मैं रात को उनके शयनकक्ष के दरवाजे पर क्यों दस्तक दे रही थी। मैंने कभी उनके दरवाजे पर दस्तक नहीं दी थी और अब उन्हें यह बात पता है क्योंकि यह भी कभी-कभार होने वाली एक आम बात है। रात को देर से, शयनकक्ष के दरवाजे पर तीन बार दस्तक देना। मेरी शादी द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान हुई थी और युद्ध के बाद मैं और मेरे पति तीन साल तक यहाँ रहे। मेरा वैवाहिक जीवन बहुत दुखी रहा और अंततः हम अलग हो गए और मैंने तलाक ले लिया।

एक रात, जब मेरी शादी हो चुकी थी, मेरी माँ और बहन मध्य पश्चिम में रिश्तेदारों से मिलने गई थीं।

मैं घर में बिल्कुल अकेली थी, क्योंकि मेरे पति कुछ देर के लिए बाहर गए हुए थे। मैंने घर के पिछले हिस्से की ओर जाने वाले सभी दरवाज़े बंद कर दिए थे, जैसा कि मैं हमेशा अकेले होने पर करती थी। रात के लगभग 9 बज रहे थे। अचानक मैंने किसी को कपड़े धोने के कमरे से बैठक वाले कमरे की ओर जाने वाले दरवाज़े का हैंडल धीरे-धीरे घुमाते हुए सुना। फिर वह रुक जाता और कुछ मिनट बाद फिर से कोशिश करता, हैंडल को बार-बार घुमाता रहता!

मेरे पति एक घंटे से भी कम समय में घर आ गए और हम दोनों ने मिलकर पूरे घर की तलाशी ली। हर खिड़की पर कुंडी लगी थी, हर दरवाजा बंद था।

फिर बाद में, एक आदमी था जिसके साथ मेरा लंबे समय तक लगातार मेलजोल रहा। हम लगभग ग्यारह साल पहले मिले थे और मुझे अच्छी तरह याद है कि जब हम बाहर घूमने जाते थे और वह रात में मुझे मेरे घर के दरवाजे तक छोड़ने आता था, तो हम दोनों को घर के अंदर से कदमों की तेज आवाज सुनाई देती थी, मानो कोई हमसे मिलने के लिए दरवाजे की ओर दौड़ रहा हो!

फिर, कई बार हफ़्तों तक, हर रात जब मैं बिस्तर पर बैठकर पढ़ रही होती थी, तो मेरे फर्नीचर पर खटखटाहट शुरू हो जाती थी। "वह" घूम-घूम कर मेरे सारे फर्नीचर पर खटखटाता, आमतौर पर एक बार में दो या तीन बार। मैं इससे इतनी तंग आ जाती थी कि चिल्लाकर कहती, "निकल जाओ और मुझे अकेला छोड़ दो!" लेकिन इससे कोई फ़ायदा नहीं होता था क्योंकि "वह" हमेशा वापस आ जाता था।

जब मैं पांच साल पहले तक बिना बत्ती जलाए सोता था, तो तीन बार मेरा दम घुटकर मरने का खतरा मंडरा चुका था।

मैं हमेशा अपनी बाईं करवट सोता हूँ—लेकिन किसी अजीब कारण से मैं धीरे-धीरे जाग जाता था और पेट के बल लेटा हुआ साँस लेने के लिए बेताब रहता था।

ऐसा लग रहा था जैसे किसी चीज ने मुझे जकड़ लिया हो, जिससे मैं अपने शरीर का कोई भी हिस्सा हिला नहीं पा रही थी और अपना चेहरा तकिए में दबाती जा रही थी! मैं चीखने और उससे लड़ने की पूरी कोशिश करती, लेकिन मैं बिल्कुल बेबस थी। ठीक उसी समय जब मुझे लगा कि मैं अब और बर्दाश्त नहीं कर सकती और दम घुटकर मर रही हूँ—तभी मुझे धीरे-धीरे छुड़ाया जाता!

लेकिन हर बार ऐसा होने पर—यह मुझे थोड़ी देर और घुटन महसूस कराता था। मुझे लगता था कि मैं इसे दोबारा कभी नहीं झेल पाऊँगी, और इसलिए तब से मैं रात को बत्ती जलाकर ही सोती हूँ।

मेरी माँ के साथ भी एक बार ऐसा ही हुआ था जब वह मुझसे पहले उस कमरे में रहती थीं। हालाँकि, उन्होंने मुझे अपने अनुभव के बारे में कभी नहीं बताया, जब तक कि मैंने उन्हें अपने अनुभव के बारे में नहीं बताया।

मेरे ठीक बगल में, बिना किसी को दिखे, शैम्पेन की बोतल का कॉर्क खुलने और उसमें से तरल पदार्थ (यहां तक कि बुलबुले भी निकले) गिरने की घटना पिछले साल लगभग छह सप्ताह के अंतराल पर तीन बार हुई।

वह घटना भी मेरे बेडरूम में हुई थी; एक बार मेरी मां के बेडरूम में भी ऐसा ही हुआ था।

पिछले साल मार्च या अप्रैल में, एक शाम करीब 10 बजे जब मैं घर लौटी, तो मेरे दाहिने कान में एक तेज़ सीटी जैसी आवाज़ गूंजी। आवाज़ इतनी तेज़ थी कि मानो कोई धमाका हुआ हो। जैसे ही मैंने सामने का दरवाज़ा खोला और घर के अंधेरे में कदम रखा, मेरे दाहिने कान में सीटी की आवाज़ शुरू हो गई। मैं चीखी और रसोई की ओर भागी, और जब मैंने बत्ती जलाई तो आवाज़ बंद हो गई। सीटी की आवाज़ किसी सैन्य मार्च की शुरुआत जैसी लग रही थी, लेकिन उसमें बस कुछ ही सुर थे।

कभी-कभी रात में हमारे घर के बाहर सीटी की आवाज सुनाई देती है—लेकिन यह एक अलग धुन होती है और ऐसा लगता है जैसे यह हमें बुला रही हो।

मेरी मां ने ऐसी खबरें सुनी हैं कि जब वह रात को बिस्तर पर सो रही थीं, तब उनकी ड्रेसिंग टेबल को इधर-उधर खिसकाया गया था। पिछले साल ऐसा दो बार हुआ था।

रसोई में आने वाली आवाज़ें मुझे रात में जगा देती हैं। ऐसा लगता है जैसे कोई चीज़ इधर-उधर हिल रही हो, केतली को छुआ जा रहा हो और अलमारियां खोली जा रही हों।

लगभग तीन साल पहले एक रात, मैं आधी रात के करीब बाथरूम जाने के लिए उठा। जब मैं बाथरूम में था, तो मुझे लिविंग रूम में ज़ोर-ज़ोर से और साफ़-साफ़ एक भयानक लड़ाई सुनाई दी। यह बिना शब्दों वाली और हताश करने वाली लड़ाई थी!

मुझे नहीं पता कि मुझे लिविंग रूम का दरवाजा खोलने की हिम्मत कैसे मिली, लेकिन मैंने खोल दिया। अंदर घना अंधेरा था—मुझे कुछ भी दिखाई नहीं दिया और जैसे ही मैंने दरवाजा खोला, लड़ाई तुरंत रुक गई!

कुछ महीनों बाद, रात में मेरी माँ, बहन और मैं अपने बेडरूम के फ्रेंच दरवाज़े के ठीक बाहर हो रही एक भयानक लड़ाई की आवाज़ से जाग गए। ऐसा लग रहा था मानो हमारे आँगन के फर्नीचर की हर एक लकड़ी को दो लोग तोड़ रहे हों, जो एक-दूसरे से बेतहाशा लेकिन बिना कुछ बोले लड़ रहे थे। यह लड़ाई कुछ ही मिनटों तक चली।

हम बाहर नहीं गए, लेकिन अगली सुबह गए। आँगन में रखे हमारे किसी भी फर्नीचर को छुआ तक नहीं गया था, सब कुछ अपनी जगह पर था और हमेशा की तरह सुंदर दिख रहा था। फिर भी हम सब उस भयानक शोर से जाग गए थे—और ऐसा लग रहा था जैसे हमारे आँगन में सब कुछ पूरी तरह से नष्ट हो गया हो।

यह मनहूस भूत तो हमारे घर के पीछे वाले आंगन में, हमारे ड्राइववे और फुटपाथ पर भी घूमता रहता है।

कई बार जब हमारे रिश्तेदार कुछ दिनों के लिए हमारे घर पर रुके हैं, तो मेरी माँ और बहन हमारे डबल गैराज में आँगन में रखी कुर्सियों पर सोई हैं। वे हमेशा रात में गैराज के दरवाजे तक भारी कदमों की आहट से जाग जाती थीं और उसके बाद उन्हें कुछ सुनाई नहीं देता था। कभी भी ऐसी कोई आहट नहीं सुनाई देती थी जिससे लगे कि कोई "चीज़" दूर जा रही है! मैं

यह भी बताना चाहूँगा कि किसी घुसपैठिए के लिए हमारे पिछवाड़े में घुसना लगभग नामुमकिन है। चारों ओर ऊँची बाड़ और ड्राइववे के पार एक स्टील का गेट लगा हुआ है।

कई साल पहले जब मैं ड्राइंग रूम में सोफे पर टीवी देखते-देखते सो गया था, तो रात करीब 11 बजे मेरी नींद खुली और मैंने टीवी बंद कर दिया। फिर मैंने अंगड़ाई ली और अपने बेडरूम की ओर जा ही रहा था कि मुझे एक आवाज़ सुनाई दी जो बहुत स्पष्ट और ज़ोर से, लेकिन धीरे-धीरे कह रही थी—"अरे हाय—हाय—हाय—तुम्हें जाना होगा—जाना होगा—जाना होगा!"

पिछले महीने मुझे हर रात बैठक में कदमों की आहट सुनाई देती थी, यहां तक कि उस कमरे से निकलने के सिर्फ पांच मिनट बाद ही।

मैंने खाली घर के अंदर से कदमों की आहट के अनुभव की पुष्टि करने का फैसला किया। हेलेन ने जिस युवक, विलियम एच., का जिक्र किया था, वह एक रसायनज्ञ है और व्यावहारिक स्वभाव का है।

"कई बार जब मैं हेलेन के घर लौटकर घर में दाखिल हुई, तो मुझे ऐसा लगा जैसे कोई कदमों की आहट हमें स्वागत करने के लिए पास आ रही हो। मैंने जाँच की और हेलेन को भी यकीन दिलाया कि वहाँ कोई नहीं था। मैं इसका कारण तो नहीं बता सकती, लेकिन मैंने वो आवाजें जरूर सुनीं।"

मैंने हेलेन एल. को प्रोत्साहित किया था कि वह मुझे किसी भी तरह की रहस्यमय घटना के बारे में सूचित करे, और मुझे ज्यादा इंतजार नहीं करना पड़ा। 3 फरवरी, 1964 को उसने मुझे एक जरूरी पत्र लिखा:

28 जनवरी को रात करीब 11:30 बजे मैं पानी पीने के लिए बाथरूम गया। जैसे ही मैंने लाइट जलाई और बाथरूम का दरवाजा खोला, मुझे एक तेज़, कर्कश, जंग लगी आवाज़ सुनाई दी। ऐसा लग रहा था जैसे किसी हॉरर फिल्म में सुनाई देने वाले भारी ओक के दरवाजे की आवाज़ हो! मैंने दरवाजे के ऊपर और नीचे लगे बोल्ट्स को देखा, उनमें कोई खराबी नहीं थी; दरवाजा छूने में उतना ही हल्का था और हमेशा की तरह आसानी से खुल रहा था।

संयोगवश, जब दरवाजे से वो भयानक आवाजें आ रही थीं, तो मेरी माँ की नींद भी खुल गई। उन्होंने भी वो आवाजें सुनी थीं।

शुक्रवार की रात, 31 जनवरी को, मैं घर के पीछे वाले हिस्से में स्थित उस छोटे से कमरे में था जिसे हम स्टडी रूम कहते हैं।

अचानक मुझे बाहर कदमों की आहट सुनाई दी, कमरे की खिड़कियों के ठीक बगल में फुटपाथ पर चलने की आवाज बहुत स्पष्ट थी और फिर अचानक वे आवाजें हमेशा की तरह बंद हो गईं - बाहर!

ये निश्चित रूप से एक आदमी के कदमों की आहट है, और मैं कहूंगा कि ये उस आदमी के कदमों की आहट है जिसे ठीक-ठीक पता है कि वह कहाँ जा रहा है! हमेशा एक ही लयबद्ध गति से चलते हैं, और फिर अचानक रुक जाते हैं!

मैंने मिस एल. से पूछा कि क्या इस घर में कभी किसी की मृत्यु हुई है, चाहे हिंसा से हो या सामान्य कारणों से। उन्होंने उत्तर दिया, "जहाँ तक हमें पता है, आज तक किसी की मृत्यु नहीं हुई है।"

मैंने वादा किया कि मैं जल्द ही एक माध्यम के साथ घर जाने की व्यवस्था करूँगी। इस बीच, मिस एल चाहती थीं कि मैं उनकी माँ और बहन के बारे में सब कुछ जानूँ:

घर पर मेरी बहन जन्म के समय लगी चोट के कारण मानसिक रूप से मंदबुद्धि है। साथ ही, मेरी माँ 80 वर्ष की हैं, गठिया से पीड़ित हैं, उनके हाथ-पैर खराब हैं और उन्हें हृदय रोग जैसी जटिलता भी है।

कल रात, 2 फरवरी को, मैं बिस्तर पर लेटकर पढ़ रहा था। रात के लगभग 10:30 बज रहे थे। अचानक ऐसा लगा जैसे किसी ने मेरे बेडरूम के दरवाजे पर ज़ोर से टक्कर मारी हो।

चूंकि मुझे बहन की मानसिक मंदता के बारे में पहली बार पता चला था, इसलिए स्वाभाविक रूप से मैंने इन विचित्र घटनाओं को अंजाम देने में उसकी भूमिका पर सवाल उठाया। यह जानते हुए कि भूत-प्रेत की घटनाओं के संदर्भ में एक मंदबुद्धि व्यक्ति अक्सर यौवन से पहले के बच्चे जैसा ही व्यवहार करता है, मेरे मन में यह विचार आया कि शायद वह महिला ही उस प्रेतवाधित घर में कुछ रहस्यमय क्रियाओं को अंजाम देने के लिए आवश्यक शक्ति प्रदान कर रही हो।

मैंने बड़ी चतुराई से हेलेन एल. को इस संभावना का सुझाव दिया, लेकिन उन्होंने ऐसी किसी भी संभावना को खारिज कर दिया:

उसकी एकाग्रता शक्ति कमजोर है और उसका तंत्रिका तंत्र लगभग अव्यवस्थित है। आपको यह भी ध्यान रखना होगा कि इस घर में हर वह दरवाजा जो दूसरे कमरे में जाता है, बंद रहता है। केवल एक ही दरवाजा है जिसे हम बंद नहीं करते, और वह है रसोई से कपड़े धोने के कमरे की ओर जाने वाला दरवाजा।

वह उन घटनाओं को संभव ही नहीं कर सकती जो मेरे अन्य दोस्तों ने भी तब देखी हैं जब मेरी बहन मिनेसोटा में रिश्तेदारों से मिलने के लिए 3,000 मील से अधिक दूर गई हुई थी।

एक बात जो मैंने आपको नहीं बताई, वो ये है कि मुझे लगता है कि मुझे अपनी माँ की एक आदत विरासत में मिली है। हम दोनों सपने देखते हैं जो सच होते हैं—और ऐसा हमने अपनी पूरी ज़िंदगी किया है। इनमें से कई सपने मुझसे या मेरे करीबियों से बिल्कुल भी संबंधित नहीं होते, लेकिन वे हमेशा सच होते हैं।

एक रात मैंने सपना देखा कि मुझे एक भूत दिखाई दिया जो हमारे घर में मंडरा रहा है। मैं बिस्तर पर था और वह मेरी देवदार की पेटी पर बैठा मुझे घूर रहा था। उसने कुछ प्राचीन यूनानी शैली के कपड़े पहने हुए थे—उसके बाल घुंघराले थे—चेहरे पर एक भयानक शरारती भाव था और आँखें बहुत ही विचित्र थीं। उनकी आँखें किनारों से ऊपर की ओर झुकी हुई थीं, लेकिन वह पूर्वी नहीं था। उसकी आँखें गहरी और बहुत चमकदार थीं, लेकिन उसका चेहरा फूला हुआ लग रहा था—उसकी त्वचा अस्वस्थ और पीली सफेद थी—और वह बहुत मोटा था। वह एक लंबा-चौड़ा युवक था। वह बिल्कुल भी बुद्धिमान नहीं लग रहा था, वास्तव में उसके चेहरे के भाव तो बिल्कुल मूर्खतापूर्ण थे! अब—क्या आप इससे कुछ समझ सकते हैं?

लॉस एंजिल्स के आर्डमोर बुलेवार्ड स्थित घर में एक बेकाबू पार्टी में जान गंवाने वाली लड़की की मानसिक छवि से जुड़ी तस्वीर

मामला धीरे-धीरे साफ होने लगा। एक बात तो यह थी कि हेलेन एल. मेरी अपनी मंदबुद्धि बहन के बारे में की गई बातों को समझ नहीं पाई थीं। मैंने कभी भी जानबूझकर धोखाधड़ी का सुझाव नहीं दिया था, बेशक। हालांकि, जब हेलेन ने मुझे बताया कि लॉस एंजिल्स से उनकी अनुपस्थिति में भी वे घटनाएं बिना रुके जारी रहीं, तो भूत द्वारा उनकी ऊर्जा का उपयोग किए जाने की संभावना धूमिल होने लगी। भूत-प्रेत दूर से काम नहीं करते।

फिर भी, हेलेन के जीवन में पहले हुई दिव्य दृष्टि और पूर्वसूचक सपनों की घटनाओं ने मुझे इस बिंदु पर यह स्पष्ट कर दिया कि वह स्वयं ही माध्यम होनी चाहिए, या कम से कम उन माध्यमों में से एक होनी चाहिए, जो अभिव्यक्तियों के लिए आवश्यक शक्ति प्रदान करती है।

उसके उस अजीब सपने ने, जिसमें उसने कथित भूत को देखा था, मुझे असमंजस में डाल दिया। क्या वह कोई अभिनेता हो सकता है?

जैसे ही मैंने कैलिफोर्निया की अपनी आगामी यात्रा की तैयारी शुरू की, मैं उन अन्य गवाहों के बारे में सोच रहा था जिन्होंने उन अजीबोगरीब कदमों की आहट और अन्य आवाज़ों को सुना होगा। हेलेन एल. ने मुझे बताया था कि उनके कई दोस्तों ने इन चीजों का अनुभव किया था, लेकिन वे इस बारे में बात करने से हिचकिचा रहे थे:

मेरे जीवन में केवल एक ही बार ऐसा हुआ था जब मुझे खुशी हुई कि यहाँ का यह मनहूस भूत अपना साया दिखाने आया। मेरी एक करीबी सहेली थी जिसके साथ मैं कई सालों तक काम करती थी। कुछ साल बाद मैंने उससे अपने विश्वास में कहा कि हमारे घर में भूत-प्रेत का साया है। वह हँसी और बोली कि भूत जैसी कोई चीज नहीं होती, और मैं तो बस अपनी कल्पना का शिकार हूँ। मैंने उससे बहस नहीं की क्योंकि मुझे पता था कि इसका कोई फायदा नहीं।

लगभग एक महीने बाद, एक रविवार दोपहर को उसने मुझे फोन किया और पूछा कि क्या वह मुझसे मिलने आ सकती है। वह शाम करीब 4 बजे आई, और मैंने उसके लिए एक कप कॉफी बनाई और उसे अपने बेडरूम में ले गई। वह मेरे बेडरूम की कुर्सी पर बैठी बड़बड़ा रही थी और मैं अपने बिस्तर पर बैठकर कॉफी पी रही थी। अभी भी दिन का उजाला था। अचानक, एक भूत लिविंग रूम से मेरे बेडरूम के दरवाजे तक चलने और धमकने लगा और रुक गया। मार्गरिट ने मेरी तरफ चमकती हुई नज़रों से देखा और बोली, "हेलेन, मुझे लगा था कि तुमने कहा था कि तुम बिल्कुल अकेली हो - आखिर यह कौन हो सकता है?" मैंने कहा, "मार्गरिट, मैं यहाँ बिल्कुल अकेली हूँ - इस घर में तुम्हारे और मेरे अलावा कोई जीवित व्यक्ति नहीं है, और जो तुम सुन रही हो वह मेरी कल्पना है!"

वह इस घर से जितनी जल्दी हो सके बाहर निकलना चाहती थी, यहां तक कि लिविंग रूम से भी बाहर नहीं निकली, बल्कि मेरे फ्रेंच दरवाजों से बाहर निकल गई जो आंगन की ओर खुलते थे और उसके बाद मैंने उसे आखिरी बार देखा था।

23 फरवरी को हेलेन एल. ने फिर से लिखा। घर में कुछ और गड़बड़ियाँ हुई थीं, और वह उन्हें थोड़ा और शांत भाव से देख पा रही थीं, शायद इसलिए क्योंकि मैंने उन्हें आश्वासन दिया था कि मैं जल्द ही इस परेशानी को हमेशा के लिए दूर करने की कोशिश करूंगा।

दो-तीन हफ्ते पहले जब मैंने आपको आखिरी बार लिखा था, तब से लगभग पूरे एक हफ्ते तक मुझे अपने बेडरूम से सटे स्टडी रूम में किसी के चलने-फिरने की आवाज़ सुनाई देती रही; कभी-कभी तो स्टडी रूम से बाहर निकलकर दरवाज़ा बंद करके बिस्तर पर लेटकर पढ़ने के 5-10 मिनट के अंदर ही मुझे ये दबी-दबी आवाज़ें सुनाई देती रहती थीं। इस बार चलने की आवाज़ धीमी होती थी और वो फर्नीचर से टकराता रहता था; आजकल तो मुझे अक्सर किसी के ज़ोर से मेरे बेडरूम की ओर जाने वाले स्टडी रूम के दरवाज़े पर धक्का मारने से नींद खुल

जाती है। ऐसा कई बार ठीक रात 11:30 बजे हुआ है, लेकिन कभी-कभी रात 8:30 बजे भी हुआ है। मैं इसे बस इतना ही कह सकता हूँ कि कोई मुझसे उस दरवाज़े को बंद करने और ताला लगाने के लिए बहुत नाराज़ है और विरोध में हिंसक प्रतिक्रिया दे रहा है।

ऐसा लग रहा था मानो दरवाजा तोड़ दिया जाएगा। फिर "वह" बेडरूम की दीवारों पर ज़ोर-ज़ोर से दस्तक देने लगा, दो ज़ोरदार दस्तकें।

लॉस एंजिल्स पहुंचने से एक सप्ताह पहले, मुझे हेलेन का एक और संदेश मिला। 9 अप्रैल को उसने लिखा:

पिछले शनिवार की रात मैं लगभग आधी रात को घर लौटा और हमेशा की तरह अपनी किताब लेकर बिस्तर पर लेट गया। मैं बस सोने ही वाला था कि तभी मेरे सिर के ठीक ऊपर एक ज़ोरदार कोड़ा पड़ा! अगली रात जब मैं बिस्तर पर बैठकर पढ़ने की कोशिश कर रहा था, तभी किसी ने मेरे बिस्तर के तख्ते पर ज़ोर से मारा।

मैंने आपको बाहर भारी कदमों की आहट के बारे में बताया था, लेकिन जो बात मैं आपको बताना भूल गया, वह यह है कि मेरी माँ और बहन दोनों ही हर कुछ देर में सुबह 3 से 4 बजे के बीच एक महिला के तेज़ जूतों की आवाज़ से जाग जाती हैं, जो हमारे घर के रास्ते पर तेज़ी से आती है और घर के पीछे वाले गेट पर रुक जाती है! पिछली बार ऐसा दो हफ्ते से भी कम समय पहले हुआ था।

मुझे आश्चर्य होता है कि जब पड़ोसी उसे सुनते हैं तो वे क्या सोचते होंगे!

मैं 16 अप्रैल को लॉस एंजिल्स पहुंचा और तुरंत हेलेन एल. को फोन किया। हमने अगले दिन एक संक्षिप्त प्रारंभिक मुलाकात तय की। इस बीच मैं एक अच्छे माध्यम की तलाश करूंगा। सही व्यक्ति मिल जाने पर, मैं उसके साथ वापस आऊंगा और भूत भगाने की प्रक्रिया शुरू हो सकेगी।

लॉस एंजिल्स में अमेरिकन सोसाइटी फॉर साइकिक रिसर्च की शाखा में दिए गए मेरे व्याख्यान के बाद की संक्षिप्त मुलाकात काफी सार्थक रही, क्योंकि इससे मुझे हेलेन एल. को थोड़ा बेहतर तरीके से जानने का मौका मिला और मैं उनकी कुछ रिपोर्टों की दोबारा जांच कर सकी। आर्डमोर बुलेवार्ड स्थित घर उतना ही आरामदायक और सुंदर था जितना कि

उसके मालिक ने बताया था, और मैं कभी कल्पना भी नहीं कर सकती थी कि इसका एक भयावह इतिहास है।

भूतिया घरों के साथ कभी-कभी ऐसा ही होता है; वे देखने में भूतिया नहीं लगते!

डिक सिमोंटन, जो अलौकिक बोध के अध्ययन में गहरी रुचि रखने वाले एक कार्यकारी अधिकारी थे, मेरे साथ घर तक आए। वे भी कठिन परिस्थितियों में मिस एल के स्पष्ट रूप से शांत स्वभाव से प्रभावित हुए।

सौभाग्य से, मुझे एक उपयुक्त माध्यम या कम से कम एक भविष्यवक्ता की तलाश में ज्यादा दूर नहीं जाना पड़ा। कैलिफोर्निया की अपनी यात्रा से कई महीने पहले, मुझे श्रीमती मैक्सिन बेल का एक पत्र मिला था, जिन्होंने मुझे एक स्थानीय टेलीविजन शो में देखा था:

मैं एक निष्ठावान माध्यम हूँ और आपके शोध एवं प्रयोगों के लिए अपनी प्रतिभाएँ प्रदान करने के लिए तत्पर हूँ। पिछले 20 वर्षों से मैं गंभीर समस्याओं से जूझ रहे व्यक्तियों के लिए काम कर रहा हूँ। आज तक मेरा सामना किसी भूत-प्रेत जैसी घटना से नहीं हुआ है, क्योंकि मेरा कार्य आध्यात्मिक रूप से अधिक उन्मुख है। मुझे कार्य करने के लिए गहरी समाधि की भी आवश्यकता नहीं है, क्योंकि मैं अत्यंत संवेदनशील हूँ।

मैं लगभग 40 वर्ष की एक महिला हूँ, जिसे 1938 से ही भविष्य देखने की अद्भुत क्षमता प्राप्त है। मैंने प्रेतबाधा के सबसे गंभीर मामलों और कुछ भूतिया मकानों से जुड़े मामलों पर भी काम किया है। आपकी किसी भी प्रकार से सेवा करके मुझे अत्यंत प्रसन्नता होगी।

मैंने श्रीमती बेल को फोन किया और उनसे अगले दिन घर के सामने मिलने के लिए कहा। समय दोपहर 3 बजे का था और यह कैलिफोर्निया की उन खूबसूरत दोपहरों में से एक थी, जिन्हें भूत की मौजूदगी से जोड़ना मुश्किल था।

ज़ाहिर है, श्रीमती बेल को घर के इतिहास की छानबीन करने या वर्तमान मालिक को जानने का कोई मौका नहीं मिला। मैंने उनसे कोने पर मिलने को कहा, लेकिन न तो नाम बताया और न ही कोई अन्य जानकारी दी।

जल्द ही वह बैठक कक्ष में हेलेन एल., मेरे, अमेरिकन सोसाइटी फॉर साइकिक रिसर्च की श्रीमती जॉर्ज केर्न और उनके एक सहयोगी श्री जी. के सामने बैठ गईं, जो कुछ हद तक मानसिक क्षमताओं से ग्रस्त थे।

उस घर ने उन पर गहरा प्रभाव डाला। उन्होंने कहा, "इस घर में प्रवेश करते ही मुझे ठंडक महसूस हुई। यहां दो लोग हैं—मेरा मतलब भूतों से है—एक अधेड़ उम्र का पुरुष है और एक युवती जिसकी दम घुटने से मृत्यु हो गई।"

मुझे तुरंत हेलेन एल. की वह रिपोर्ट याद आ गई जिसमें उन्होंने बताया था कि कैसे अदृश्य हाथों ने उन्हें कई बार दम घोंटकर मारने की कोशिश की थी!

“ये दोनों एक-दूसरे को ढूंढ रहे हैं,” पेशे से इंजीनियर श्री जी ने आगे कहा। “यह बच्ची लगभग दस या बारह साल की है, या तो लड़की है या लड़का है जिसमें लड़कियों जैसे लक्षण हैं। यह बच्ची खोई हुई है और मदद मांग रही है। इसमें एक तरह की बेचैनी है, वह कुछ करना चाहती है, वह कहती है, ‘मैं चाहती हूँ...’” श्री जी अब ज़ोर-ज़ोर से सांस ले रहे थे, मानो वे उस नन्ही आत्मा का रूप धारण कर रहे हों।

“यह बच्ची शायद थोड़ी बड़ी है,” उसने अंत में कहा, “शायद पंद्रह साल तक। वह बहुत घबराई हुई है... अनकहे भावों के कारण रो रही है... यह बच्ची इसी घर में रहती थी, लेकिन यहाँ उसने दुख भरे दिन भी देखे थे, बहुत ज़्यादा अनुशासन था। मुझे लगता है कि दोनों लोगों की मृत्यु लगभग एक ही समय पर हुई थी। मेरा अनुमान है कि कम से कम पंद्रह से बीस साल पहले।”

मैंने इंजीनियर को धन्यवाद दिया और श्रीमती बेल की ओर मुड़ी, जो चुपचाप घर की "रीडिंग" देख रही थीं।

अंत में उन्होंने कहा, "मैं कभी भी दूसरे माध्यम की छाप में दखल नहीं देती, लेकिन अगर उन्होंने अपनी बात पूरी कर ली है, तो मैं अपनी छाप भी जोड़ना चाहूंगी।"

मैंने उसे आगे बढ़ने के लिए सिर हिलाकर इशारा किया।

“फिलिप स्टेंगल की मृत्यु यहाँ 1934 में हुई थी,” उसने कहना शुरू किया। मैंने हेलेन एल. की ओर देखा। नाम मुझे याद नहीं आया। लेकिन उसकी माँ को भी अपने सभी किरायेदारों के नाम याद नहीं थे। वैसे तो काफी सारे किरायेदार थे।

“दस साल पहले यहाँ एक व्यक्ति की हत्या हुई थी,” श्रीमती बेल ने आगे कहा। “नहीं—1948 में। वहाँ हिंसक झगड़े हुए थे। दो आदमी थे, जिनमें से एक का नाम हॉवर्ड था। बाहर ड्राइववे में झगड़ा हुआ था। पड़ोसियों ने भी सुना था। दो लोग यहाँ आए, उनके बीच हिंसक झगड़ा

हुआ और एक की हत्या कर दी गई। पेट में गोली लगी थी। शव को गाड़ी में डाला गया। उनमें से एक इस घर में रह रहा है, लेकिन घर में एक और व्यक्ति भी है। मुझे लगता है कि अचानक हिंसा हुई और पैसे का मामला था। एक महिला भाग गई। बहुत सारा पैसा दांव पर लगा था। यहाँ दो लोग थे, हालाँकि घर महिला के पास था। झगड़ा पैसे को लेकर हुई गलतफहमी के कारण हुआ था।"

मैं दंग रह गया। अगर श्रीमती बेल ने हेलेन एल. के पत्र मुझे पढ़कर नहीं सुनाए होते या यहाँ आने से पहले उनसे बात नहीं की होती, तो उन्हें इनमें से कई बातों की जानकारी नहीं हो सकती थी। झगड़े का वर्णन और पड़ोसियों का रवैया बिलकुल वैसा ही था जैसा हेलेन एल. ने मुझे बताया था।

मैंने घर की मालकिन की ओर देखा जो सुनी हुई बातों से कुछ स्तब्ध होकर बैठी थी।

"अच्छा," उसने आखिरकार मुझसे कहा, "दो तरह की कदमों की आवाजें हैं—घर के पीछे वाली आवाजें किसी पुरुष की लगती हैं, जबकि सामने वाली आवाजें निश्चित रूप से किसी बच्चे की तेज कदमों की आवाज जैसी हैं। सुबह तीन-चार बजे के आसपास जो कदमों की आवाजें सुनाई देती हैं, वे भी शायद किसी महिला की हैं। मुझे पूरा यकीन है कि सीटी बजाने वाले की आवाज किसी पुरुष की है।"

उस झगड़े से जुड़े तथ्य क्या थे?

मेरे आने के बाद से हेलेन एल. ने इस मामले की और अधिक जांच की थी।

"यहाँ झगड़ा हुआ था," उसने धीमी आवाज़ में कहा। "यहाँ एक तेल व्यापारी रहता था, उसकी शादी एक बहुत छोटी उम्र की महिला से हुई थी और उनका एक बच्चा था। वह कहीं चला गया और उसका एक दोस्त घर आया। यहाँ ज़बरदस्त झगड़ा हुआ।"

"आपने जो वे विचित्र शब्द सुने थे, उनके बारे में क्या?" मैंने मिस एल से पूछा।

"आपका मतलब है, 'हाय, हाय, हाय, तुम्हें जाना होगा, जाना होगा, जाना होगा!' - ये तो बिल्कुल ब्रिटिश लहजे में बोले गए थे।"

या फिर बनावटी ब्रिटिश लहजा?

"शायद।"

हम उस शयनकक्ष की ओर बढ़े जहाँ बहुत शोर-शराबा हुआ था। श्रीमती बेल बिस्तर के सामने खड़ी थीं और हम सब उनके चारों ओर घेरा बनाकर खड़े हो गए। मैंने उस आत्मा को जाने के लिए कहा, एक रस्म के रूप में जिसे बचाव घेरा कहते हैं, एक मौखिक भूत-प्रेत भगाने की विधि, जो आमतौर पर कारगर होती है। बेशक, कुछ अपवाद भी होते हैं।

फिर मैंने अपने सुपर आइकॉन्टा बी कैमरे से कुछ तस्वीरें खींचीं। यह कैमरा विशेष रूप से डिज़ाइन किए गए शटर और ट्रांसपोर्ट सिस्टम के कारण डबल-एक्सपोज़र से सुरक्षित है। मैंने एग्फा रिकॉर्ड फिल्म का इस्तेमाल किया और कृत्रिम रोशनी का प्रयोग नहीं किया। फ्रेंच खिड़कियों से पर्याप्त रोशनी आ रही थी। मुझे आश्चर्य हुआ कि दो तस्वीरों में ऐसी आकृतियाँ दिखाई दीं जो नंगी आँखों से नहीं दिखती थीं, कम से कम मेरी आँखों से तो नहीं। इनमें से एक तस्वीर में एक युवा और दुबली-पतली महिला खिड़की के पास खड़ी दिखाई दे रही है, जिसने पारदर्शी गाउन जैसा कुछ पहना हुआ है। जाहिर है, भूत हमें यह बताना चाहता था कि वह हमें देख रही है। मैंने बाद में इस तस्वीर को बड़ा करके टेलीविजन पर दिखाया।

इस आंकड़े के बारे में कोई संदेह नहीं है, और मैंने इसे वहां नहीं रखा है।

हम बैठक कक्ष में वापस आए और विदा ली। मुझे पूरा यकीन था कि वह बुरी शक्ति या तो दूर हो गई थी या कम से कम हिल गई थी। कभी-कभी काम पूरा करने के लिए एक और मुलाकात ज़रूरी होती है, लेकिन मैं और ज़्यादा देर नहीं रुक सकता था।

मैंने अभी न्यूयॉर्क की धरती पर कदम भी नहीं रखा था कि हेलेन एल. का एक पत्र आ गया:

मैंने आपको पहले इसलिए नहीं लिखा क्योंकि मैं यह सुनिश्चित करना चाहती थी कि वह चीज़ पूरी तरह से चली गई है, और मुझे लगता है कि वह पूरी तरह से नहीं गई है। मैं मन, शरीर और आत्मा की भयानक थकान से पीड़ित हूँ—और मेरा मन करता है कि मैं रोती रहूँ, रोती रहूँ और रुकूँ ही नहीं! जिस शनिवार की रात आप यहाँ थे, मैं रात लगभग 11:30 बजे उठी और रसोई में गई, तभी मुझे भोजन कक्ष से रसोई के झूलते हुए दरवाजे की ओर भारी कदमों की आहट सुनाई दी। कहने की ज़रूरत नहीं है, मैं वहाँ से तुरंत निकल गई।

17 मई को, हेलेन एल. ने आखिरकार मुझे कुछ ऐसे प्रमाण लिखकर भेजे जिनकी मैंने उनसे मांग की थी। मैं जानना चाहता था कि क्या मैक्सिन बेल द्वारा प्राप्त की गई किसी और सामग्री की जाँच की जा सकती है, और यदि हाँ, तो उसके क्या परिणाम होंगे:

जब मिस बेल यहाँ थीं, तो उन्होंने बताया कि उनके सामने एक दयालु, सफ़ेद बालों वाले व्यक्ति खड़े थे, जिनकी वर्षों पहले मेरे शयनकक्ष में दिल का दौरा पड़ने से अचानक मृत्यु हो गई थी। उन्हें मृत्यु की उम्मीद नहीं थी और उनके कई अधूरे काम थे। बाद में मेरी माँ से बात करने पर उन्हें लगा कि वह एक ऐसे व्यक्ति थे जो उनके यहाँ किराएदार थे और उनकी दूसरी शादी एक बहुत छोटी उम्र की महिला से हुई थी। उन्होंने बताया कि वह हृदय रोग से पीड़ित थे और एक से अधिक व्यवसायों के मालिक थे, जिनमें एक रेलवे भी शामिल था, और वह बेहद व्यस्त व्यक्ति थे। उनकी दूसरी पत्नी से एक छोटी बेटी थी और वह काफी हंसमुख और प्रसन्न थे—और उन्हें पूरा विश्वास था कि वह पहले हुए दिल के दौरे से उबर चुके हैं।

फिर भी उनकी मृत्यु अचानक हुई और मेरी माँ को हमेशा यही लगता था कि उनकी मृत्यु इसी घर में हुई थी, हालाँकि उनकी पत्नी ने इस बात से इनकार किया। इसके बावजूद, मेरी माँ ने उन्हें किराएदारी के समझौते से मुक्त कर दिया। वे सफ़ेद बालों वाले, बेहद प्रतिष्ठित दिखने वाले व्यक्ति थे।

अब उस हत्या के बारे में बात करते हैं जिसका जिक्र मिस बेल ने किया था और उस भयानक झगड़े के बारे में जिसकी सूचना हमारे पड़ोसियों ने मेरी मां को दी थी।

मिस बेल ने जो कहा था, वह सही था कि झगड़ा घर के पीछे ड्राइववे पर शुरू हुआ था। दरअसल, हमारा पड़ोसी बाहर आया और पूछा कि क्या हो रहा है। जिस आदमी से उसने पूछा, जिसे वह नहीं जानता था (शायद उस समय हमारे किराएदार का कोई मेहमान था), उसने कहा, "कुछ नहीं," और उसे अपना कार्ड दिया जिस पर इसी गली का पता लिखा था। फिर भी झगड़ा दोबारा शुरू हो गया और यह बहुत भयानक था—फर्नीचर टूट गया, वगैरह। पड़ोसियों ने पुलिस को नहीं बुलाया क्योंकि वे इसमें शामिल नहीं होना चाहते थे। मेरी माँ ने बताया कि वह किराएदार एक बड़ा, हट्टा-कट्टा दिखने वाला आदमी था, जिसकी एक जवान औरत से शादी हुई थी और उनकी एक छोटी बेटी भी थी।

पड़ोसियों के अनुसार, पत्नी और बच्चा यहाँ नहीं थे। वे सप्ताहांत में रिश्तेदारों से मिलने गए हुए थे।

मेरी मां ने मुझे यह भी बताया कि उनके घर बदलने के बाद उन्हें हमारे फर्श पर खून के धब्बे मिले थे।

कुछ समय तक मुझे आर्डमोर स्थित उस रहस्यमयी पते से कोई खबर नहीं मिली। फिर 4 जुलाई की तारीख वाला एक पत्र आया। यह कोई उत्साहवर्धक संदेश नहीं था, लेकिन इसमें दुखद खबर थी कि हेलेन एल. को एक बार फिर कदमों की आहट, धमक, हलचल और अन्य भूतिया घटनाओं का सामना करना पड़ रहा है।

मैंने समझाया कि मुझे लगता है कि उसकी अपनी माध्यम बनने की शक्तियों ने ही इन चमत्कारी घटनाओं को संभव बनाया है और इनसे उसका डर शायद उन चीजों को वापस ला सकता है जिन्हें दूर भगा दिया गया था। चिंता का स्वभाव ही ऐसा है कि यह रहस्यमयी दुनिया के द्वार खोल सकती है, जबकि मजबूत दिल वाले लोग इसे हमेशा के लिए बंद रख सकते हैं।

मैंने यह भी संकेत दिया कि उसकी अपनी भावनात्मक स्थिति अलौकिक घटनाओं के लिए अत्यंत अनुकूल थी। निराशाएँ, भले ही अवचेतन हों, ऐसी परिस्थितियाँ उत्पन्न कर सकती हैं जिनमें इस प्रकार की घटनाएँ पनपती हैं।

लेकिन हेलेन एल. इसे स्वीकार नहीं कर सकीं।

उन्होंने कहा, "चाहे यहां कोई भी रहे, वे हमेशा वापस आएंगे," और उन्होंने उस दिन का इंतजार किया जब वह घर बेच देंगी।

जिस चीज़ की ज़रूरत थी, वह बस एक छोटी सी बात थी—यह दृढ़ विश्वास कि "उन्हें" भगाया जा सकता है, और वे कभी वापस नहीं लौटेंगे। लेकिन, इस आशंका से कि क्या वह रहस्यमयी चीज़ सचमुच चली गई है, हेलेन एल. ने बंद दरवाजे को अपने लिए एक घूमने वाले दरवाजे में बदल दिया था।

* 57

वह भूत जिसने जाने से इनकार कर दिया

मैंने अपनी पुस्तक 'घोस्ट्स आई हैव मेट' में जिन सबसे सनसनीखेज मामलों की रिपोर्ट की थी, उनमें से एक लॉस एंजिल्स के आर्डमोर बुलेवार्ड स्थित एक घर में होने वाली भूतिया घटनाओं से संबंधित था।

खुद वह घर, जो मुश्किल से तीस साल पुराना था, रात में चल रही एक बेकाबू पार्टी के शोर से त्रस्त था, जिसके दौरान जाहिर तौर पर किसी की हत्या कर दी गई थी, उन कदमों की आहट सुनाई देती थी जहां कोई चलता हुआ नहीं दिखाई देता था और अन्य अजीबोगरीब आवाजें आती थीं, जिनमें अंधेरे में गूंजती आवाजें भी शामिल थीं, जो मौजूदा मालिकों को अपना घर खाली करने के लिए कह रही थीं!

मैं इस घर में कई बार जा चुका था और एक बार अपने साथ स्थानीय ज्योतिषी मैक्सिन बेल को भी ले गया था। वह यात्रा न केवल इसलिए यादगार साबित हुई क्योंकि मिस बेल ने अर्ध-सम्मोहन की अवस्था में कुछ जानकारी प्राप्त की थी, जो काफी हद तक सटीक साबित हुई, बल्कि इसलिए भी क्योंकि मैंने वहाँ तस्वीरें खींची थीं।

घर के सबसे भूतिया हिस्से में अकेले रह जाने पर, मैंने एक विशेष बेडरूम की कई ब्लैक एंड व्हाइट तस्वीरें बेतरतीब ढंग से लीं, जो निश्चित रूप से खाली था, कम से कम मेरी नजरों में।

दिन के उजाले में और एक ठोस सतह से ली गई तस्वीरों में से एक में, एक युवा लड़की नाइटगाउन पहने खिड़की के पास खड़ी दिखाई देती है। मेरा कैमरा डबल एक्सपोज़र प्रूफ है और फिल्म व डेवलपिंग दोनों में कोई खराबी नहीं है, इसलिए इस तस्वीर की कोई और तार्किक व्याख्या नहीं हो सकती। तब से मैंने कई अन्य रहस्यमयी तस्वीरें खींची हैं, लेकिन "खिड़की पर खड़ी लड़की" वाली तस्वीर हमेशा मेरी सबसे आश्चर्यजनक तस्वीरों में से एक रहेगी।

सीटी की आवाज़ें, रात के अंधेरे में शैम्पेन की बोतल का खुलना और उसके बाद हंसी की आवाज़, दरवाज़ों का अपने आप खुलना, और घर की मालकिन हेलेन एल. द्वारा लंबे समय से सहन की जा रही अन्य सभी मानसिक घटनाएं मेरे सामान्य तरीके से हल नहीं हो रही थीं: यानी सम्मोहन सत्र और भूत को चले जाने का आदेश देना। इसमें एक और जटिलता यह थी कि मिस एल. में स्वयं भी माध्यम बनने की क्षमता थी, हालांकि उन्होंने इसे न तो खोजा था और न ही विकसित किया था, और घर में एक मानसिक रूप से मंद बहन भी रहती थी, जो अक्सर उन ऊर्जाओं का स्रोत होती है जिनसे भूतिया घटनाएं संभव होती हैं।

फिर भी, जब हम आर्डमोर बुलेवार्ड स्थित घर से निकले, तो मुझे भविष्य में अधिक शांतिपूर्ण माहौल की उम्मीद थी। एक तो मैंने मिस एल. को सारी बातें समझा दीं, और दूसरा मैंने सुझाव

दिया कि उस हत्या पीड़ित के शव की तलाश में बगीचे की तलाशी ली जाए। हम पहले ही यह पुष्टि कर चुके थे कि कुछ साल पहले घर में झगड़ा हुआ था, जिसे पड़ोसियों ने देखा था। यह पूरी तरह संभव था कि पीड़ितों में से किसी एक का शव अभी भी घर के परिसर में ही हो।

जुलाई 1964 में शोरगुल फिर से शुरू हो गया, और उस दुर्भाग्यपूर्ण घर में गिरते शरीरों की धमक, कदमों की आहट और अन्य तरह की आवाजें फिर से सुनाई देने लगीं। हेलेन एल. ने बिल्कुल सही कहा कि मैं इस मामले को आगे बढ़ाऊं। लेकिन 1965 की वसंत ऋतु तक मैं इस मामले पर फिर से अपना पूरा ध्यान नहीं लगा सका।

इस बीच मैंने जो कुछ हासिल किया वह केवल इन घटनाओं को कुछ हद तक कम करना था, लेकिन उन्हें पूरी तरह से खत्म करना नहीं था।

14 मार्च, 1965 को हेलेन एल. ने मुझसे एक अत्यंत ज़रूरी मामले के बारे में बात की। पहली बार भूत देखा गया था! 13 मार्च की सुबह 3 बजे, उनकी माँ अजीब आवाज़ों से जाग उठीं और बिस्तर से ऊपर देखने पर उन्हें बिस्तर के बगल में एक आदमी की आकृति दिखाई दी। उन्हें आवाज़ ऐसी लगी जैसे कोई चादरें फाड़ रहा हो। डरी हुई बूढ़ी औरत ने अपने सिर पर चादर ओढ़ ली और वापस सो गईं। उसी रात हेलेन एल. ने पूरे घर में भारी कदमों की आवाज़ भी सुनी। कहने की ज़रूरत नहीं है कि उनके घर में कोई इंसान नहीं आया था।

“क्या आप अप्रैल में यहाँ होंगे? मदद करो!!” हेलेन एल. ने लिखा। मैंने जवाब दिया कि मैं ज़रूर आऊँगा और सिबिल लीक को भी साथ लाऊँगा ताकि इस भूत से एक और, और उम्मीद है, आखिरी बार सामना हो सके। लेकिन यह अप्रैल में नहीं, जून में ही हो पाएगा। मई के पहले सप्ताह में, रविवार की सुबह हेलेन की नींद खुली तो उसने अपने तकिए से कुछ ही इंच दूर एक आदमी की आवाज़ सुनी जो उसे चुप करा रही थी। उसके बाद वह हमारे आने का बेसब्री से इंतज़ार कर रही थी। आखिरकार, 28 जून को, मैं सिबिल के साथ उस छोटे से घर में पहुँचा यह देखने के लिए कि वह क्या पता लगाती है।

“मुझे पता है कि यहाँ कोई मौजूद है,” सिबिल ने तुरंत कहा जैसे ही हम उस छोटे से दफ्तर में बैठ गए जो उस शयनकक्ष के पीछे स्थित था जहाँ अधिकांश गड़बड़ियाँ हुई थीं। मैंने सिबिल को ध्यान केंद्रित करने, या यूँ कहें कि आराम करने का बेहतर मौका देने के लिए बत्ती बंद कर दी, और तुरंत ही उसे उस घुसपैठिए का आभास हो गया।

“यह ज्यादातर बेडरूम में होता है,” उसने आगे कहा। “वहाँ दो लोग होते हैं; पुरुष बेडरूम में हावी रहता है, और वहाँ एक महिला भी होती है, एक युवा लड़की।”

मैंने तय किया कि इस समय सिबिल को समाधि की अवस्था में जाने का प्रयास करना चाहिए, और मैंने भूत को प्रकट होने के लिए आमंत्रित किया। कुछ क्षणों बाद, सिबिल समाधि जैसी अवस्था में चली गई, लेकिन पूरी तरह से सचेत रही।

“मॉर्टन,” वह अब बुदबुदाई, “कुछ बेहद तीव्र है...कुछ तोड़ने की तीव्र इच्छा हो रही है...मॉर्टन उपनाम है।”

मैंने उनसे दोबारा आगे आकर अपनी कहानी बताने का निमंत्रण दोहराया।

“लड़की चली गई,” सिबिल ने धीमी आवाज़ में कहा, “और वह कहता है कि वह उसे ढूंढने वापस आया। पर वह यहाँ नहीं है। वह जश्न मनाने जा रहा था। उसे उसे ढूंढना ही होगा। शादी की पार्टी, जश्न... उस लड़की के लिए। वह यहाँ खुश नहीं थी; उसे जाना पड़ा। यह आदमी एक विदेशी है।”

“तुम सही कह रही हो।” कमरे के अंधेरे में हेलेन एल. की बुलंद आवाज़ सुनाई दी। ज़ाहिर है, सिबिल ने किसी ऐसे व्यक्ति का वर्णन किया था जिसे वह पहचानती थी।

“जेन मॉर्टन,” सिबिल ने अब सपाट स्वर में कहा, “निर्माण से कुछ लेना-देना था, शायद इस घर के निर्माण में उसका भी कुछ हाथ था... वो बूढ़ा आदमी है। जेन... जवान है... मैं पता लगाने की कोशिश कर रही हूँ कि जेन कहाँ है... वो यही जानना चाहता है... मैं उसे बता दूँगी कि पार्टी का कोई मतलब नहीं था... वो वैसे भी जाती... वो उस बूढ़े आदमी से नफरत करती थी... ये आदमी गिर गया... सिर में चोट लगी है... अस्तबल से टकराकर गिर गया...”

मैंने जोर देकर पूछा, "क्या उनकी मृत्यु यहीं हुई थी?"

“1837,” सिबिल ने कुछ असंगत ढंग से कहा, “1837। वापस आया...फिर बाहर गया, लोगों के साथ वापस आया, नशे में था, उसके सिर के बाईं ओर चोट लगी....”

मेरे बार-बार आग्रह करने के बावजूद, वह सत्ता समाधि की अवस्था में सिबिल के माध्यम से बोलने से इनकार कर रही थी। फिर भी मैंने उससे सवाल करना जारी रखा।

सिबिल ने बताया कि भूत का नाम हॉवेल मॉर्टन था, हालांकि मुझे पहले नाम की वर्तनी के बारे में यकीन नहीं था, जो हॉवेल के बजाय हावॉल हो सकता था।

“वह यहाँ कुछ निर्माण कार्य करने आया था, तभी गलती से किसी की मौत हो गई और उसे बगीचे में दफना दिया गया...”

“इस व्यक्ति को किसने दफनाया?”

“बॉयड जॉनसन...रेमंड मैकक्लर...डेल...पर्सिला...” आवाज अब लड़खड़ा रही थी और नाम साफ सुनाई नहीं दे रहे थे।

क्या वो लड़की भी मर गई है?

“लड़की जिंदा है....”

"क्या मॉर्टन के बाहर इस घर में कोई मृत व्यक्ति है?"

“मॉर्टन की मृत्यु यहीं हुई थी।”

"मैंने यहां जिस व्यक्ति की तस्वीर खींची है, वह कौन था?"

“जेन...वह उसे वापस यहाँ लाना चाहता है...लेकिन मुझे लगता है कि वह जीवित है...फिर भी उसकी कुछ बातें दबी हुई हैं...”

इस बिंदु पर सिबिल असमंजस में दिखीं।

“मेरी...मर्डिथ....” उसने कहा, या शायद कहा हो, “उससे शादी कर ली।” बात इतनी स्पष्ट नहीं थी कि पक्का कहा जा सके। सिबिल ने बताया कि मॉर्टन और उसके कुछ दोस्त घर में गड़बड़ी कर रहे थे। उसकी मौत पार्टी में हुई।

“बाहर हिंसा हुई थी,” सिबिल ने कहा और हेलेन एल. ने ज़ोर देकर सिर हिलाया। सचमुच हिंसा हुई थी।

“नशे में धुत...शाम को चार बजे...दुर्घटना में उसकी मौत हो गई...”

हेलेन एल. यह जानने के लिए बेहद उत्सुक थी कि उसे बगीचे में कहाँ दफनाया गया है।

“सीधे अगली इमारत के पास,” सिबिल ने जवाब दिया। “जब उनकी मृत्यु हुई तब वह इमारत पूरी तरह से नहीं बनी थी।”

बाद में हम सभी बगीचे में गए और उस इमारत की पहचान घर के पीछे स्थित गैरेज के रूप में की।

लेकिन हेलेन अभी खुदाई शुरू करने के लिए तैयार नहीं थी। अगर हमें कोई शव मिल गया तो पड़ोसी क्या सोचेंगे? या फिर, अगर हमें शव नहीं मिला तो वे क्या सोचेंगे? हमने यह सवाल वहीं छोड़ दिया, कि खुदाई करनी है या नहीं, इस पर उसे खुद विचार करना था।

मैं इस उम्मीद में न्यूयॉर्क लौट आया कि हेलेन एल. से मुझे आगे कोई खबर नहीं मिलेगी। लेकिन मैं गलत था। 5 जुलाई को मुझे आर्डमोर बुलेवार्ड वाली महिला से फिर से संपर्क हुआ। उनकी दूसरी बहन, अल्मा, जो हॉलीवुड में रहती हैं लेकिन कभी-कभी आर्डमोर स्थित उस घर में रुकती हैं, ने हमारी मुलाक़ात के अगले दिन सुबह फ़ोन किया। तब उन्होंने वह जानकारी दी जो वह हेलेन एल. से दो साल से छिपा रही थीं, क्योंकि उन्हें घर में हुई घटनाओं के कारण हेलेन एल. और ज़्यादा परेशान हो सकती थीं। लेकिन घर में उन्हें एक स्वप्न जैसा अनुभव हुआ था जिसमें उन्होंने एक अधेड़ उम्र के व्यक्ति को "देखा", जो गैराज से सटी एक झोंपड़ी में रहता था।

उन्हें पता था कि वह आदमी मर चुका है और उन्हें ऐसा लगा कि वह बहुत जिद्दी इंसान था, जिसे समझाना या मनाना बहुत मुश्किल था। मिस एल. ने सोचा कि इस सपने के अनुभव में जो बात हमें दिलचस्प लगी, वह यह थी कि उनकी बहन को सिबिल लीक के इस दावे के बारे में पता नहीं हो सकता था कि गैराज के ठीक बगल में एक आदमी दफन है! हेलेन एल. की जानकारी के अनुसार, वहाँ कभी कोई झोपड़ी नहीं थी, लेकिन हो सकता है कि वर्तमान घर बनने से पहले वहाँ कोई झोपड़ी रही हो।

इसके अलावा, हेलेन ने मुझे याद दिलाया कि जब भी उसकी माँ और बहन मुख्य घर में मेहमान आने पर गैराज में सोती थीं, तो दोनों ने गैराज की ओर आते हुए भारी कदमों की आहट सुनी थी, जो दीवार तक पहुँचते ही अचानक रुक जाती थी। हेलेन एल. की माँ वर्षों से यह कहती आ रही थीं कि "बगीचे में एक शव दफन है", लेकिन किसी ने भी उसे खोजने की कोशिश नहीं की थी।

8 मई, 1966 तक कुछ और नहीं हुआ, जब सिबिल लीक और मैं फिर से उस घर गए क्योंकि हेलेन एल. ने हमसे उसके लिए मामला पूरा करने की गुहार लगाई थी। अशांति रुक-रुक कर जारी थी।

इस बार हमारे साथ लाइब्रेरियन और मानसिक शोधकर्ता यूजीन लुंडहोम भी थे। हम जल्दी ही समाधि की अवस्था में पहुँच गए। शायद सिबिल पिछली बार की तुलना में अधिक शांत अवस्था में थीं, लेकिन कारण जो भी हो, इस बार माहौल अधिक सौहार्दपूर्ण लग रहा था।

“मैं गिर रही हूँ,” उसकी आवाज मुश्किल से सुनाई दे रही थी, फुसफुसाते हुए, “मुझे भूख लग रही है...”

क्या कोई पीड़ा के उन पलों को फिर से जी रहा था?

मैंने पूछा, “तुम कौन हो?” “सांस नहीं ले पा रहा हूँ....”

"आपका क्या नाम है?"

“हा...हैरोल्ड...”

उन्हें सांस लेने में बहुत तकलीफ हो रही थी और मैंने उन्हें आराम करने की सलाह दी।

“उसे मार डालो...” वह हांफते हुए बोला, “उसे मार डालो, उस औरत को मार डालो...”

क्या तुमने उसे मारा?

"नहीं!"

मैं तुम्हारी मदद करने आया हूँ। मैं तुम्हारा दोस्त हूँ।

“उसके जाने से पहले ही उसे मार डालो....”

"क्यों?"

“यहाँ कुछ ठीक नहीं है... वो उसे कहाँ ले गया है? वो कहाँ है?”

अब आवाज थोड़ी साफ सुनाई देने लगी। "उसका नाम क्या है?"

“वो कहाँ है...मैं उसे मार डालूँगा।”

उसके साथ कौन है?

"बोझ ढोनेवाला।"

क्या वह आपका दोस्त है?

"नहीं!"

"आप कौन हैं?"

“हैरोल्ड हॉवर्ड।”

क्या यह आपका घर है?

"मेरा घ।"

"क्या तुमने इसे बनाया है?"

"नहीं।"

"क्या तुमने इसे खरीदा?"

जाहिर है, मेरे सवालों से वह चिढ़ गया, क्योंकि उसने चिल्लाकर पूछा, "तुम कौन हो?" मैंने समझाया, लेकिन इससे कोई फायदा नहीं हुआ।

“यहां बहुत सारे लोग हैं...मैं इन्हें बाहर निकाल देता हूँ...इन लोगों को यहाँ से बाहर ले जाओ!”

आश्चर्य की बात यह थी कि वह आवाज़ बिल्कुल भी सिबिल की नहीं लग रही थी; उसमें ब्रिटिश लहजे का कोई नामोनिशान नहीं था और वह गुस्से से भरी हुई थी। जाहिर है, भूत अपने घर में आए उन लोगों के बारे में बात कर रहा था और उन्हें बाहर निकालना चाहता था।

उसके दोस्त...उन्हें ले जाओ...वह उन्हें लाई थी..."

“जब आप अनुपस्थित थे?” अब वह कुछ शांत था।

“हां,” उसने पुष्टि की। “तुम कहां थे?”

"कार्यरत।"

"आप क्या करते हैं?"

“खनिक।”

"आप कहां काम करते हैं?"

"पर्डी टाउन।" हो सकता है उसने परगोरी टाउन कहा हो, या कुछ ऐसा ही।

जब तुम घर आए तो क्या हुआ?

फिर से वह अपने घर के लोगों को लेकर परेशान हो गया और मैंने उससे उनमें से कुछ के नाम बताने को कहा।

“मार्गरिट...” उसने और भी उत्साहित होकर कहा। “मेरी... पच्चीस... मैं घर आया... वे यहाँ थे... बहुत सारे लोग... यहाँ पार्टी चल रही थी...”

क्या आपने किसी को चोट पहुंचाई?

“मैं उसे मार डालूंगा,” उसने जोर देकर कहा। जाहिर है उसने ऐसा नहीं किया था।

"क्यों?"

“उसकी वजह से।” ईर्ष्या, भूतों का सबसे बड़ा निर्माता। “वह कौन है?”

"बोझ ढोनेवाला।"

"कौन है ये?"

“उसने मेरी जगह ले ली। एरिक पोर्टर।”

यह कौन सा वर्ष है?

अब समय आ गया था कि हम जिस दौर में थे, उसे ठीक से समझें।

“अड़तालीस।”

उसके बाद आपके साथ क्या हुआ...?

“लोग चले गए...पोर्टर...बाहर...मैं अब जाना चाहता हूँ...”

मुझे यह स्पष्ट हो गया कि लड़की की हत्या कर दी गई होगी, लेकिन अपराध के समय सदमे की स्थिति के कारण वह व्यक्ति अपने किए का एहसास नहीं कर पाया, जिससे वह लड़की की तलाश जारी रखने के लिए मजबूर हो गया। मैंने उसे यह बात बताई और पाया कि वह अपने इस कृत्य पर आश्चर्यचकित था।

“उसने मेरा पीछा क्यों किया... उसने मेरा पीछा किया... फिर मैंने उसके पेट में घूंसा मारा...”

“फिर तुमने उसके साथ क्या किया?”

उसे जेल में डाल दो।

उसके बाद वह सतर्क हो गया, जाहिर तौर पर उसे लगा कि मैं कोई पुलिसवाला हूं जो उससे पूछताछ कर रहा है।

अंत में उसने कहा, "मैं उस पर नज़र रखता हूँ। मैं बगीचे में उसकी देखभाल करता हूँ। मैं उसे घर में नहीं आने देता।"

मैंने उससे उसके बारे में और भी सवाल पूछे, लेकिन वह उलझन में लग रहा था।

मैं कहाँ हूँ?

उसने मुझसे कहा कि मैं उस दूसरे आदमी को बगीचे में, ज़मीन में ही छोड़ दूं। वह कभी वहां से नहीं जाता था क्योंकि उसे उस दूसरे आदमी पर नज़र रखनी थी।

“मार्गरिट वापस आ गई,” उसने अब कहा। क्या वहाँ चार लोगों का समूह था या हम चेतना के एक से अधिक स्तरों से निपट रहे थे?

“उसे उससे दूर रखो,” भूत ने मुझे चेतावनी दी।

मैंने वादा किया, "मैं करूंगा," और मेरा इरादा भी यही था।

फिर मैंने उसे उसकी और बाकी लोगों की मौत के बारे में बताया, इस उम्मीद में कि मैं आखिरकार उन सभी से घर को मुक्त कर सकूंगा।

“वह वापस आएगी,” उसके एकतरफा विचार ने उसे कहने पर मजबूर कर दिया। “मैं उसके बिस्तर पर जाने का इंतजार करूंगा और फिर उसे मार डालूंगा।”

मैंने फिर से समझाया कि दूसरे आदमी को मारने से कोई फायदा नहीं होगा क्योंकि वह पहले ही मर चुका है।

“मेरा सिर दर्द कर रहा है,” भूत ने शिकायत की। “तुम इस घर में नहीं रह सकते,” मैंने दृढ़ता से कहा।

“मैं नहीं जा रहा,” उसने उतनी ही दृढ़ता से जवाब दिया। “मेरा घर!”

मैंने अपने प्रयास जारी रखे और समय बीतने के बारे में भी समझाना शुरू किया।

“अड़तालीस...” उन्होंने जोर देकर कहा, “मैं लड़ता हूँ...मैं लड़ता हूँ...”

मैंने कहा, "तुम्हें क्षमा कर दिया गया है," और फिर मैंने कुछ ऐसे शब्द कहे जो मानो भूत भगाने के समान थे। "अब तुम दोषी नहीं हो। तुम जा सकते हो।"

“उसे ले जाओ,” वह बुदबुदाया और उसकी आवाज थोड़ी कमजोर पड़ गई। “वह कहाँ है? सफाई कौन करेगा?”

फिर वह चुपके से चला गया।

मैंने सिबिल को जगाया। वह ठीक महसूस कर रही थी और उसे कुछ भी याद नहीं था। लेकिन मुझे बहुत कुछ याद था।

एक बात तो मेरे मन में आई कि भूत ने वर्ष '48 की बात तो की, लेकिन यह नहीं बताया कि यह 1948 था या 1848, और उसकी आवाज़ के लहजे में कुछ ऐसा था जिससे मुझे लगा कि शायद हम गलत सदी में हैं। निश्चित रूप से 1948 में लॉस एंजिल्स में कोई खनिक काम नहीं करता था, लेकिन 1848 में तो बहुत से लोग करते थे। यूजीन लुंडहोम ने मेरे लिए रिकॉर्ड की जाँच की।

चालीस के दशक में पूरे क्षेत्र में खदानें खुल गईं। 1842 में फ्रांसिस्को लोपेज़ ने सैन फर्नांडो मिशन के पास सोने की खोज की थी, और 1848 में सैक्रामेंटो के पास सोने का एक बहुत बड़ा भंडार मिला था।

1848 में ही सटर मिल में सोने की प्रसिद्ध खोज हुई थी। लेकिन 1840 के दशक में भी दक्षिणी कैलिफोर्निया में खनन कार्य होता था, हालांकि उससे कुछ खास लाभ नहीं हुआ।

न्यूयॉर्क लौटने के बाद, हेलेन एल. ने जुलाई 1966 के आखिरी सप्ताह में मुझसे दोबारा संपर्क किया।

उनकी मां ने अशांति के बावजूद घर छोड़ने से इनकार कर दिया। इसलिए इस समय बिक्री का कोई सवाल ही नहीं उठता, मिस एल ने समझाया।

कोई चीज़ या कोई व्यक्ति घर के बाहर और आँगन की छत पर पत्थर फेंक रहा था—लेकिन कोई जीवित व्यक्ति ऐसा करते हुए नहीं दिखाई दिया। ज़ाहिर है, यह भूत-प्रेत की घटनाओं का एक आम उदाहरण है। ध्यान खींचने का एक और तरीका। आँगन की छत पर ज़ोरदार आवाज़ें आती थीं और वहाँ कोई भी उन्हें करने वाला नहीं होता था। अब तो पड़ोसियों को भी

ये आवाज़ें सुनाई देने लगी थीं। हालात बिगड़ते जा रहे थे। मैंने उन्हें जवाब दिया और कहा कि अगर वह खुदाई करने को तैयार हों तो मैं उस भूतिया घर को दोबारा देख सकता हूँ। सबूत को यूँ ही छोड़ देने का कोई मतलब नहीं था।

लेकिन 18 सितंबर को मिस एल. ने मुझे कुछ और बताया। घर के पीछे ड्राइववे पर पत्थर गिरने की आवाज़ सुनकर पड़ोसी टॉर्च लेकर बड़ी संख्या में बाहर आ गए और "अपराधियों" की तलाश करने लगे। लेकिन वे न तो मिले और न ही पत्थर। ऐसा लगता था मानो वे अदृश्य पत्थर थे।

यह घटना शाम 6:15 से 7:30 बजे के बीच कई बार घटी और सिर्फ उसी समय। हद तो तब हो गई जब एक अधपका नींबू उनके नींबू के पेड़ से इतनी ज़ोर से गिरा कि घास पर गिरते ही फट गया। वह नींबू अपने आप नहीं गिर सकता था और पेड़ पर कोई भी उसे फेंकने वाला नहीं था।

मैंने वादा किया था कि अगर संभव हुआ तो अक्टूबर में दोबारा लॉस एंजिल्स आने पर मैं नींबू फेंकने वाले भूत को भगा दूंगा। लेकिन जब मैं आया, तो मिस एल की मां बीमार थीं और यात्रा रद्द करनी पड़ी।

मुझे इस जिद्दी भूत के बारे में और कुछ पता नहीं चला है। लेकिन यह इलाका 1848 में बसा हुआ था और हो सकता है कि वर्तमान घर बनने से पहले इस जगह पर कोई दूसरा घर या शिविर रहा हो। पास ही एक छोटी नदी बहती है। अभी तक न तो श्री मॉर्टन और न ही श्री हॉवर्ड का पता चला है और जेन और मार्गरिट तो बस भूतों की कहानियां बनकर रह गई हैं। जब मिस एल. का परिवार इस घर का मालिक नहीं था, तब बहुत से लोग यहाँ से गुज़रे थे, और ज़ाहिर है, इससे पहले जो घर था, उसके बारे में हमें कुछ भी पता नहीं है।

मुझे एक और नोट मिला जिससे यह धारणा दूर करने में मदद मिली कि आर्डमोर स्थित घर में अदृश्य चीजों से परेशान होने वाली अकेली हेलेन एल. ही थीं।

इस पर मार्गरिट एच. जोन्स के हस्ताक्षर थे और यह "जिनसे भी संबंधित हो" के नाम से संबोधित था। यह भूत के बारे में था।

कुछ साल पहले, जब मैं लॉस एंजिल्स के ___ आर्डमोर बुलेवार्ड स्थित मिस एल के घर में मेहमान थी, तो मुझे एक खाली कमरे में भारी कदमों की आहट सुनाई दी। उस समय मिस

एल मेरे साथ थीं और मैंने उन्हें इस आवाज के बारे में बताया। कदमों की आहट कभी आगे बढ़ती तो कभी पीछे हटती हुई लग रही थी, और यह सिलसिला कई मिनट तक चलता रहा। हमने छानबीन की, लेकिन हमें कोई नहीं मिला। वे जितनी अचानक शुरू हुई थीं, उतनी ही अचानक अचानक बंद भी हो गईं।

मुझे पूरी उम्मीद थी कि ये घटनाएं भी इसी तरह व्यवहार करेंगी। चुपचाप चली जाएंगी।

लेकिन 6 अक्टूबर, 1967 को हेलेन एल. ने मुझे न्यूयॉर्क में फोन किया। उसने एक रात का कुछ हिस्सा नींदहीन बिताया था।

सुबह 4 बजे तक वह चैन से सो रही थी। उसी समय उसकी बिल्ली ने उसे जगा दिया। बिल्ली को नीचे रखते ही उसने अपने आँगन में एक अजीब सी रोशनी देखी, जो उसके शयनकक्ष की खिड़कियों के बाहर स्थित है। उसने जल्दी से एक बाथरोब पहना और बाहर चली गई।

अपने घर के पिछले हिस्से में, बाईं ओर फूलों की क्यारी में, हेलेन एल. ने कुछ सफेद देखा। हालाँकि उसे वह घटना बिल्कुल पसंद नहीं थी जिसने लंबे समय से उसके घर में अशांति फैला रखी थी, फिर भी हेलेन एल. फूलों की क्यारी की ओर बढ़ी।

अब उसे सफेद कपड़ों में लिपटी एक महिला की आकृति साफ दिखाई दे रही थी। आकृति बहुत लंबी नहीं थी और किसी युवा लड़की की हो सकती थी। ऐसा लग रहा था जैसे वह उसे ध्यान से देख रही हो, और काल्पनिक भूतों में दिखने वाले सफेद चादर वाले भूत जैसी लग रही थी।

इस समय मिस एल. का साहस जवाब दे गया और वह दौड़कर अपने कमरे में वापस चली गईं।

अगली सुबह, थकान से लाल आँखों के साथ, उसने अपनी बूढ़ी माँ से अपने अनुभव के बारे में बात की। अब तक वह अपनी माँ को इन मामलों में शामिल करने से हिचकिचा रही थी, लेकिन घटना का प्रभाव इतना गहरा था कि उसे किसी को बताना ही पड़ा।

उसे आश्चर्य हुआ कि उसकी माँ ज़्यादा नाराज़ नहीं थी। बल्कि, उसने "सफेद महिला" के बारे में अपना विवरण भी दर्ज कर लिया। पिछली रात, वही आकृति माँ को सपने में दिखाई दी थी और उससे सामान पैक करने को कहा था, क्योंकि वह जल्द ही उसे अपने साथ ले जाएगी!

जब हेलेन एल. ने अपनी रिपोर्ट समाप्त कर ली, तो मैंने उसे यथासंभव शांत किया और उसे याद दिलाया कि कुछ सपने केवल अवचेतन भय की अभिव्यक्ति होते हैं। मैंने घर पर एक और बार जाने का वादा किया, हालाँकि मैं इस संभावना से सचमुच थक चुका हूँ: मैं अच्छी तरह जानता हूँ कि आप किसी भूत को तब तक नहीं भगा सकते जब तक कि बगीचे में फूलों की क्यारी में किसी भूत का शव दफन न हो, जो कभी उसी भूत की संपत्ति रहा हो।

आखिरकार, भूत के भी तो अधिकार होते हैं!

* 58

भूतिया मोटरसाइकिल कार्यशाला

जब हमने पहली बार लेइटन बज़र्ड का उच्चारण सुना, तो हमें लगा कि यह कोई अप्रिय पक्षी है। लेकिन यह एक अपेक्षाकृत सुंदर दिखने वाला अंग्रेजी कस्बा निकला, जिसका कोई विशेष महत्व या आकार नहीं था, सिवाय इसके कि यह एक भूतिया घटना का स्थल था जिसकी खबर हमारे इंग्लैंड पहुंचने से कुछ ही समय पहले स्थानीय समाचार पत्रों में छपी थी।

लेइटन बजार्ड ऑब्जर्वर ने सिड मुलार्नी की कार्यशाला में घटित हो रही विचित्र घटनाओं पर एक रिपोर्ट प्रकाशित की।

जब लेइटन के मोटरसाइकिल डीलर, श्री सिड मुलार्नी ने अपनी कार्यशाला का विस्तार करने के लिए एक विभाजन हटाने का फैसला किया, तो उन्होंने अपनी अपेक्षा से कहीं अधिक जोखिम उठा लिया। क्योंकि अब उन्हें यकीन है कि उन्होंने एक प्रेतात्मा को नाराज कर दिया है।

पड़ोसी रात में उन्हें जगाए रखने वाली अजीब आवाजों के लिए "मुलार्नी के भूत" को दोषी ठहरा रहे हैं, और श्री मुलार्नी, जो वास्तव में भूत की शरारतों को देखने का दावा करते हैं, निश्चित हैं कि लेक-स्ट्रीट, लेटन में स्थित इमारत प्रेतवाधित है।

लगभग दो हफ्ते पहले उन्होंने वर्कशॉप में लगी उस दीवार को हटाने का फैसला किया, जिसमें विश्व चैंपियन राइडर माइक हेलवुड द्वारा इस्तेमाल की जाने वाली रेसिंग मोटरसाइकिलें रखी जाती हैं।

श्री मुलार्नी ने बताया कि अगली सुबह वे दरवाजे पर गए, उसे खोला और फर्श पर तीन साइकिलें पड़ी पाईं। स्थानीय राइडर डेव विलियम्स द्वारा इस्तेमाल की जाने वाली इन साइकिलों के फेयरिंग चकनाचूर हो गए थे।

कुछ दिनों बाद श्री मुलार्नी एक रेसिंग गियर बॉक्स पर काम कर रहे थे, और जब उन्हें एहसास हुआ कि देर तक काम किए बिना वे इसे पूरा नहीं कर पाएंगे, तो उन्होंने वहीं रुकने का फैसला किया। और आखिरकार तीन बजे तक ही वे इसे पूरा कर पाए।

जब वह अपने हाथ पोंछ रहा था, तभी अजीबोगरीब चीजें होने लगीं।

“मुझे लगा जैसे कोई चीज मेरे पास से तेजी से गुजरी हो। मैंने पीछे मुड़कर देखा तो दीवार पर लगे हुकों से स्पैनर उड़ गए और एक साइकिल को ढकने वाला तिरपाल हवा में उड़ गया,” उन्होंने बताया।

“इसे देखकर ही आप यकीन करेंगे। मैं बुरी तरह डर गया था। मैंने एक हथौड़ा उठाया, जितनी जल्दी हो सके कमरे से बाहर निकला और सीधे घर की ओर भागा। मेरी पत्नी सो रही थी और मैंने उसे जगाकर इसके बारे में बताया।”

तब से अन्य विचित्र घटनाएं घटित हो रही हैं, और पड़ोसी रात में अजीब आवाजों की शिकायत कर रहे हैं।

लेक-स्ट्रीट में बगल में स्थित कोच एंड हॉर्सेस रेस्टोरेंट की मालकिन श्रीमती सिंथिया एलिस ने कहा कि उन्हें रात में कई बार "अजीबोगरीब धमाकों और खड़खड़ाहट" की आवाजों से नींद से जगाया गया था।

मैंने खिड़की से बाहर देखा, लेकिन वहां कभी कुछ नहीं था।

उन्होंने बताया कि उनका छोटा बेटा स्टीफन सबसे पहले जागा और उसने आवाजें सुनीं।

उन्होंने कहा, "हमने सोचा था कि यह सिर्फ एक बच्चे की कल्पना है, लेकिन जल्द ही हमने अपना विचार बदल दिया।"

"पिछले दो हफ्तों में यहां का माहौल बहुत तनावपूर्ण हो गया है। यह सब बहुत अजीब है," श्रीमती एलिस ने कहा।

अपने उस अजीब अनुभव के बाद से श्री मुलार्नी को कार्यशाला में कई विचित्र घटनाएँ देखने को मिली हैं। एक सुबह उन्होंने नट-बोल्ट का एक बड़ा बक्सा "इतना भारी कि मैं उसे उठा नहीं सकता था" फर्श पर बिखरा हुआ पाया। तब से उन्होंने पेट्रोल के टैंकों को इधर-उधर पाया है और यहाँ तक कि बड़े-बड़े बोल्ट भी गायब पाए हैं, जिनके बारे में उनका दावा है कि वे उन्हें कभी खो नहीं सकते थे।

मैंने ऑब्जर्वर के संपादक श्री मैक्रीथ से संपर्क किया, जिन्होंने इस सारी जानकारी की पुष्टि की और श्री मुलार्नी के चरित्र और सत्यनिष्ठा के बारे में अपना निजी आकलन दिया, जो कि सर्वोत्कृष्ट था। इसके बाद मैंने श्री मुलार्नी से अगले दिन दोपहर को उनके घर जाकर मामले की व्यक्तिगत रूप से जांच करने की व्यवस्था की।

एक व्यस्त मुख्य सड़क पर स्थित, मोटरसाइकिल वर्कशॉप एक बड़े से आंगन के सामने वाले हिस्से में फैली हुई है। इसका अधिकांश भाग पुराने लकड़ी के लट्ठों और ईंटों का उपयोग करके पुनर्निर्मित किया गया है। श्री मुलरनी, एक लंबे-चौड़े, हंसमुख व्यक्ति, जिनके लहजे में थोड़ी आयरिश झलक थी, ने हमारा गर्मजोशी से स्वागत किया और हमें उस भीड़भाड़ वाली वर्कशॉप का दौरा कराया। वहाँ तीन कमरे थे, जो रेलगाड़ी के फ्लैट की तरह एक दूसरे से जुड़े हुए थे, और यह सारा स्थान मोटरसाइकिलों और औजारों से भरा हुआ था।

“मिस्टर मुलार्नी, असल में हुआ क्या था?” मैंने बातचीत शुरू की।

"शाम को काम खत्म करने के बाद, मैं और मेरा साथी अपने हाथ धोते हैं और सारे औजार वापस बेंच पर रख देते हैं। तभी, कुछ अज्ञात कारणों से, स्पैनर (रिंच) बेंच पर लगे हुक से उछलकर मेरे सामने बेंच पर आ गिरे।"

"तुम्हारा मतलब है, रिंच अपने आप हुक से गिर गए?"

"हाँ।"

“क्या आपने इसे अपनी आँखों से देखा?”

“ओह, जी हाँ, बिल्कुल।”

"दुकान में पर्याप्त रोशनी थी?"

"हां, दुकान में रोशनी थी।"

“तुम्हें क्या लगा कि यह क्या था?”

“खैर, उस समय तो मैंने इस पर ज्यादा ध्यान नहीं दिया, लेकिन बाद में वर्कशॉप के पिछले हिस्से में एक आवाज आई, कुछ फर्श पर लुढ़का और मेरे पैर, अंगूठे और आंखों को छू गया, इसलिए मैंने इधर-उधर देखना शुरू किया; वर्कशॉप के दूसरी तरफ कुछ धातु के स्पॉकेट रखे हुए थे। वे एक धुरी बोल्ट पर घूमने लगे। बाद में, रबर फोम का एक बड़ा टुकड़ा दीवार से टूटकर कमरे के बीचोंबीच आ गिरा।”

“अपनी इच्छा से?”

"हाँ।"

"क्या आपको लगा कि यह कुछ असामान्य था?"

“मैंने तब किया था, हाँ। तब हमारे पास एक रेसिंग मोटरसाइकिल थी जो वाटरप्रूफ शीट से ढकी हुई थी, और यह पूरी तरह से ऊपर उठ गई थी—”

"आपका मतलब हवा में है?"

“हां, वह टिका रहा। तब तक मैं दुकान से निकलने के लिए तैयार था।”

"क्या आपको तब लगा कि कोई अलौकिक घटना घट रही थी?"

“मैंने किया। मैंने थोड़ी देर वैन में बैठकर इसके बारे में सोचा, फिर घर जाकर अपनी पत्नी को जगाया। मैंने उसे बताया कि मैंने क्या देखा था, और उसे लगा कि मैंने शराब पी रखी है।”

"उसके बाद और कुछ हुआ क्या?"

जी हां, स्वीडिश मोटरसाइकिल चैंपियन ने अपनी मोटरसाइकिल यहां मरम्मत के लिए छोड़ी थी। उन्होंने बेंच पर कुछ पुर्जे रखे और चाय पीने चले गए। जब वे वापस आए, तो वे पूरी तरह से गायब हो चुके थे और फिर कभी नहीं मिले। उस समय दुकान में कोई भी ऐसा व्यक्ति नहीं था जो उन्हें ले जा सकता था, और हमने दुकान को अच्छी तरह से बंद कर दिया था।

“मुझे भी ऐसा ही अनुभव हुआ,” सिड मुलार्नी ने आगे कहा। “हम दो लोग मिलकर एक साइकिल के पुर्जे अलग कर रहे थे। तभी एक बड़ा सा हिस्सा, जिसमें सब कुछ दिखाई दे रहा था, अचानक गायब हो गया।”

भूतिया मोटरसाइकिल कार्यशाला

"क्या आपने शरारती तत्वों की संभावना की जांच की है?"

“हाँ, बिल्कुल। लेकिन दुकान का इस्तेमाल सिर्फ़ हम दो लोग ही करते हैं। करीब पाँच हफ़्ते पहले, हम दोनों ने मिलकर एक और मोटरसाइकिल के पुर्ज़े अलग-अलग कर दिए थे। हमने कुछ नट-बोल्ट को धोने के लिए एक वाटरप्रूफ पैन में रख दिया था। हमने रात को दुकान बंद कर दी, लेकिन जब हम सुबह लौटे, तो सारे पुर्ज़े कमरे में बिखरे पड़े थे।”

कई शौकिया "भूत-प्रेत खोजकर्ताओं" ने श्री मुलार्नी को अपनी सेवाएं देने की पेशकश की थी, लेकिन उन्होंने उन सभी को ठुकरा दिया क्योंकि दुकान में कुछ बेहद कीमती मोटरसाइकिलें थीं और वे अपनी अलौकिक परेशानियों के अलावा प्राकृतिक तरीकों से चीजों के गायब होने की समस्या नहीं चाहते थे।

अब मुझे यह एहसास हो गया था कि एक शरारती आत्मा, एक भूत, सक्रिय थी, जो गतिविधियों में बाधा डालने और अपनी उपस्थिति की ओर ध्यान आकर्षित करने के लिए काम कर रही थी, जो इस तरह की गड़बड़ी का शास्त्रीय पैटर्न है।

"बताइए, मरम्मत की दुकान बनने से पहले इस जगह पर क्या था?"

“कई साल पहले यहाँ टोकरी बनाने का पुराना कारखाना हुआ करता था, और यहाँ लगभग चौदह लोग काम करते थे। उसके बाद, यह शेड पाँच-छह साल तक पूरी तरह खाली पड़ा रहा। जब हमने यहाँ दुकान खोली, तो यह पुरानी टोकरियों और अन्य सामानों से भरा हुआ था। हमने इसका पुनर्निर्माण किया और इसे कार्यशाला में बदल दिया।”

"मुझे लगता है कि यह घटना दीवार गिराने के बाद ही शुरू हुई?"

“हां, हमने शनिवार शाम को वह दीवार गिरा दी थी। हम रविवार सुबह वापस आए तो कोने में तीन मोटरसाइकिलें पड़ी थीं, मानो किसी ने उन्हें गुस्से में वहां फेंक दिया हो।”

मैंने पूछा, "श्री मुलार्नी, आपके कार्यभार संभालने से पहले क्या यहाँ कभी कोई नाटकीय घटना घटी थी?"

"सालों पहले जब यहां टोकरी बनाने का कारखाना था, तब किसी ने यहां फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली थी। हमें बस इतना ही पता है।"

मैं तीनों कमरों में से तीसरे कमरे में वापस गया और उस जगह का मुआयना किया जहाँ से दीवार हटाई गई थी। वहाँ बची हुई लकड़ी की कड़ियाँ अत्यंत प्राचीनता के संकेत दे रही थीं, निश्चित रूप से वर्तमान शताब्दी से भी कहीं अधिक पुरानी।

संभवतः, विभाजन दीवार हटाते समय, सिड मुलरनी ने उस भूत की स्मृति में दखल दिया था जो उस स्थान को छोड़ना नहीं चाहता था। हम तीनों कुछ देर चुप रहे, फिर मैंने उस भूत से विनती की कि वह इस जगह के वर्तमान मालिकों को परेशान करना बंद कर दे। मैंने श्री मुलरनी को अपना कार्ड दिया और उन्हें हिदायत दी कि अगर कोई और गड़बड़ी हो तो वे मुझे तुरंत फोन करें।

उसके बाद के हफ्तों में सब कुछ शांत रहा, इसलिए मैं यही मान सकता हूँ कि भूत ने जगह के नए रूप को स्वीकार कर लिया है। फिर, हो सकता है कि आजकल मोटरसाइकिल चलाने वाले ग्राहकों को देखकर उसे बुरा लगा हो। टोकरी बुनना एक सौम्य कला है, और सभ्य लोगों को "मॉड" और "रॉकर्स" से दूर रहना चाहिए। भूतों को भी नहीं।

*59

प्रेतवाधित भिक्षुओं से सामना

जब राजा हेनरी अष्टम ने तलाक न मिलने के कारण, और साथ ही कई अन्य गंभीर कारणों से, रोम से संबंध तोड़ लिए, तो इंग्लैंड में मठवासी जीवन अचानक रुक गया। मठों और मठों का "धर्मनिरपेक्षीकरण" कर दिया गया, यानी उन्हें सांसारिक घरों में बदल दिया गया, और भिक्षुओं को निकाल दिया गया। कभी-कभी लालच के लिए बदनाम मठाधीश को सार्वजनिक रूप से फांसी दे दी जाती थी। सोलहवीं शताब्दी का पहला आधा भाग त्रासदियों से भरा था और धार्मिक मामलों की नई उथल-पुथल में फंसे कई निर्दोष भिक्षुओं को मृत्यु का सामना करना पड़ा।

निष्कासित भिक्षु या भिक्षुणी और उनके पूर्व निवास के नए मालिकों के बीच का संघर्ष पूरे इंग्लैंड में व्याप्त है, और कई भूत-प्रेत इसी स्थिति से उत्पन्न हुए हैं।

“विघटन की प्रक्रिया” जिसने बेघर कैथोलिक पादरियों का एक नया समूह बनाया, उसने एक बिल्कुल नए प्रकार के प्रेतवादन को भी जन्म दिया। हमारा उद्देश्य धार्मिक विभाजन के परिणामस्वरूप उत्पन्न हुए कुछ कुख्यात भूतों की पड़ताल करना था।

मुझे यह बताते हुए खुशी होनी चाहिए थी कि जब हम सुबह-सुबह साउथेम्प्टन के लिए निकले, तो वह एक शानदार अंग्रेजी पतझड़ का दिन था। लेकिन ऐसा नहीं था। मूसलाधार बारिश हुई, जो कि इंग्लैंड की खासियत है। मुझे दोपहर में सदर्न टीवी पर आना था, और हम साउथेम्प्टन के आधे रास्ते में स्थित विनचेस्टर के प्रसिद्ध पुराने गिरजाघर को देखने का मौका चाहते थे। मेरी इस यात्रा का कारण चर्च में भिक्षुओं के भूतिया जुलूसों को देखने की लगातार मिल रही खबरें थीं, जहां सोलहवीं शताब्दी के बाद से कोई भिक्षु नहीं गया है। अगर कोई विशाल गिरजाघर के मुख्य हॉल में एक खास जगह पर खड़ा होता, तो उसे पारदर्शी भिक्षु गुजरते हुए दिखाई दे सकते थे। वे कभी आपकी ओर ध्यान नहीं देते; वे उस तरह के भूत नहीं थे। बल्कि, वे बीते युग की अलौकिक छाप जैसे लगते थे, और जिन लोगों ने उन्हें अपने अनुष्ठानिक जुलूसों, विशेष रूप से अपने लोगों के अंतिम संस्कार को दोहराते हुए देखा, वे मानसिक रूप से सक्षम लोग थे जो उस पर्दे को भेद सकते थे। इसके अलावा, मुझे विनचेस्टर में ली गई कुछ

तस्वीरों के बारे में एक उल्लेखनीय रिपोर्ट मिली थी। 9 सितंबर, 1958 के नेवार्क इवनिंग न्यूज में इस घटना का वर्णन किया गया है:

शौकिया फोटोग्राफर टी. एल. टेलर को लगा कि वह विनचेस्टर कैथेड्रल के अंदर खाली गायक-मंडली की सीटों की तस्वीरें ले रहे हैं, लेकिन तस्वीरों में सीटें लोगों के बैठने के साथ दिखाई दीं।

टेलर ने लगभग एक साल पहले गिरजाघर के अंदर दो तस्वीरें ली थीं। पहली तस्वीर में गायक-मंडली की सीटें खाली दिख रही हैं। दूसरी तस्वीर, जो कुछ ही क्षण बाद ली गई थी, उसमें सीटों पर 13 लोग बैठे हुए हैं, जिनमें से अधिकांश ने मध्ययुगीन पोशाक पहनी हुई है। टेलर का दावा है कि उन्होंने वहां किसी को नहीं देखा था।

टेलर की पत्नी, उनकी 16 वर्षीय बेटी वैलेरी और वैलेरी की एक सहेली ने बताया कि जब उसने तस्वीरें लीं तो वे उसके साथ थीं। उन्होंने शौचालयों में कुछ भी नहीं देखा। वैलेरी ने कहा, "मुझे इससे डर लगता है।"

टेलर, जो 42 वर्षीय इलेक्ट्रिकल इंजीनियर हैं और फोटोग्राफी को अपना शौक मानते हैं, इस बात से आश्वस्त हैं कि फिल्म में डबल एक्सपोज़र नहीं हुआ था। उन्होंने बताया कि उनके कैमरे में डबल एक्सपोज़र रोकने वाला उपकरण लगा है और फिल्म बनाने वाली कंपनी ने भी पुष्टि की है कि धुंधले धब्बे खराब फिल्म की वजह से नहीं आए थे।

जैसा कि मैंने घोस्ट हंटर में पहले ही बताया है, मैं साइकिक फोटोग्राफी को बहुत गंभीरता से लेता हूँ। न केवल जॉन मायर्स, बल्कि अन्य लोगों ने भी सबसे सख्त परीक्षण स्थितियों में इसकी प्रामाणिकता साबित की है, जिसमें किसी भी प्रकार की जालसाजी या धोखे की संभावना को खारिज कर दिया गया है। आखिर कैमरे में मानवीय कमजोरियाँ और भावनाएँ नहीं होतीं। वह जो देखता है, वही देखता है। यदि आकाश में प्रेतवाधित छापें प्रकृति में भावनात्मक रूप से उत्पन्न विद्युत आवेग हैं, तो यह संभव है कि कैमरे के अंदर की संवेदनशील फिल्म इसे रिकॉर्ड कर सकती है।

मेरा कैमरा ज़ीस-इकॉन सुपर आइकॉन्टा बी मॉडल है, जो पंद्रह साल पुराना है और इसमें एक ऐसा उपकरण लगा है जिससे डबल एक्सपोज़र असंभव है। मैं एगफा रिकॉर्ड फिल्म, साइज़ 120 का इस्तेमाल करता हूँ और फोटोग्राफी के लिए इस्तेमाल होने वाली जगहों पर

मौजूद रोशनी के अलावा किसी भी तरह की कृत्रिम रोशनी का उपयोग नहीं करता। मैं फ्लैश या फ्लडलाइट का इस्तेमाल नहीं करता और अपनी फिल्मों को व्यावसायिक डेवलप कंपनियों से ही डेवलप करवाता हूँ। अगर मुझे खुद डेवलप करना पड़े तो मुझे नहीं आता कि मैं कैसे करूँ।

जब हम विनचेस्टर पहुँचे, तो ज़ोरदार बारिश हो रही थी। मैं और मेरी पत्नी जल्दी से कार से उतरे और चर्च की ओर भागे। सुबह के 11 बज रहे थे और चर्च लगभग खाली था, सिवाय मुख्य हॉल के आखिरी छोर पर बैठे दो-तीन लोगों के। वेदी के चारों ओर बनी ऊँची खिड़कियों से रोशनी आ रही थी, लेकिन वहाँ किसी भी तरह की कृत्रिम रोशनी नहीं थी, बिजली नहीं थी, बस खिड़कियों और दूर स्थित प्रवेश द्वार से आती हल्की रोशनी थी। मुख्य हॉल के दोनों ओर गायक मंडली की ऊँची लकड़ी की कुर्सियाँ आमने-सामने थीं, और प्रत्येक तरफ तीन पंक्तियाँ थीं। प्रत्येक सीट के सामने डेस्क पर प्रार्थना पुस्तकें रखी थीं। पूरा क्षेत्र बारीक नक्काशीदार गोथिक लकड़ी के काम से घिरा हुआ था, जिसमें खुली मेहराबें थीं, जिनके माध्यम से मुख्य हॉल का शेष भाग देखा जा सकता था। उन कुर्सियों पर कोई भी व्यक्ति नहीं बैठा था।

उस जगह का सन्नाटा, बाहर हो रही बारिश और सुदूर अतीत का माहौल, इन सबने मिलकर हमें सचमुच दुनियादारी से दूर, एकांत का अहसास कराया। हम दोनों में से किसी को भी ज़रा भी डर नहीं लगा, क्योंकि भूत-प्रेत खोजने वाले डरते नहीं हैं।

मैंने अपना कैमरा एक कुर्सी की रेलिंग पर रखा, उसे सामने वाली पंक्ति में रखी गायक मंडली की कुर्सियों की ओर घुमाया और लगभग दो सेकंड के लिए कैमरा को उसके लकड़ी के सहारे पर स्थिर रखते हुए फोटो खींची। मैंने इस प्रक्रिया को अलग-अलग कोणों से छह बार दोहराया। फिर हम गिरजाघर से निकलकर इंतज़ार कर रही कार में बैठ गए। पूरे प्रयोग में पंद्रह मिनट से ज़्यादा समय नहीं लगा।

अगले दिन जब फ़िल्में प्रयोगशाला से वापस आईं, तो मैंने उन्हें ध्यान से देखा। ली गई छह में से चार में कुछ भी असामान्य नहीं दिखा, लेकिन दो में दिखा। उनमें से एक में स्पष्ट रूप से नकाबपोश भिक्षुओं का एक पारदर्शी समूह या यूँ कहें कि जुलूस दिखाई दे रहा था, जो पीछे से चर्च के फर्श के वर्तमान स्तर से थोड़ा नीचे चल रहे थे। मैंने जाँच की और पाया कि फर्श पहले

अपने वर्तमान स्तर से नीचे था, इसलिए वे प्रेतवाधित भिक्षु उस फर्श के स्तर पर चल रहे होंगे जिसे वे जानते थे, न कि हमारे स्तर पर।

मैं खुद को कोई माध्यम होने का दावा नहीं करता, न ही मेरा कैमरा अलौकिक है। फिर भी, विनचेस्टर के प्रेतवाधित भिक्षुओं ने मुझे अपनी तस्वीर खिंचवाने की अनुमति दी!

* * *

मेरे टीवी शो के बाद हम साउथेम्प्टन से निकले और सैलिसबरी की ओर चल पड़े। उस पुराने शहर के दक्षिण में, डाउनटन में, बेन्सन हर्बर्ट अपनी "परजीवी प्रयोगशाला" चलाते हैं, जहाँ वे अनोखे उपकरणों की मदद से विभिन्न व्यक्तियों की मानसिक क्षमताओं का परीक्षण करते हैं। उनकी एक "ऑपरेटर", ऐनी स्लो-ग्रोव नाम की एक सुंदर युवती, जादू-टोने में भी रुचि रखती है और उस इलाके में एक तरह की युवा जादूगरनी है। उसकी क्षमताओं में भविष्यवाणियाँ शामिल हैं और ऐसा लगता है कि वह इच्छाशक्ति से प्रकाश की टिमटिमाहट या घड़ी की आवाज़ को प्रभावित कर सकती है, उन्हें अपनी इच्छा से धीमा या तेज़ कर सकती है। समर्पित व्यक्ति बेन्सन हर्बर्ट से मेरा परिचय न्यू फॉरेस्ट की माध्यम और "श्वेत जादूगरनी" सिबिल लीक ने कराया था। हमने उनके एक प्रयोग को देखा, जिसके बाद हम उनकी कार के पीछे-पीछे लगभग दुर्गम ग्रामीण इलाके से होते हुए अपने अगले लक्ष्य, रिंगवुड के मोयल्स कोर्ट की ओर चल पड़े।

मोयल्स कोर्ट में होने वाली भूतिया घटनाओं के बारे में मुझे सिबिल लीक और फेट पत्रिका के सितंबर अंक में प्रकाशित एक लेख के माध्यम से पता चला था।

मूल मकान ग्यारहवीं शताब्दी का है और इसका एक हिस्सा निश्चित रूप से ट्यूडर काल का है; मुख्य मकान ज्यादातर सोलहवीं शताब्दी का है, और यह एक बड़े ग्रामीण जागीर का एक उत्कृष्ट उदाहरण है, जो इंग्लैंड के दक्षिण में न्यू फॉरेस्ट में अक्सर देखने को मिलता है।

'फेट' नामक लेख की लेखिका लिलियन चैपमैन ने 1962 में उस स्थान का दौरा किया था, इससे पहले कि उसे उस स्कूल को बेच दिया गया था जो अब उसमें स्थित है। चैपमैन परिवार ने घर को दयनीय हालत में पाया और वे सोच रहे थे कि क्या इसे पुनर्स्थापित किया जा सकता है, और यदि हाँ, तो इसकी लागत कितनी होगी।

श्रीमती चैपमैन इधर-उधर भटकती रहीं और अंततः दूसरी मंजिल की ओर जाने वाले रास्ते के पास खिड़की की चौखट पर बैठ गईं, जबकि बाकी लोग ऊपर की ओर चले गए। जब वह वहाँ अकेली बैठी आराम कर रही थीं, तो उन्हें अचानक भय और उदासी का अहसास हुआ:

जब मैंने संगीतकारों की गैलरी की ओर जाने वाले दरवाजों की ओर देखा, तो मैं एक धुंधली सी आकृति को पीले रंग के लबादे में अंदर आते देखकर दंग रह गया। ऐसा लग रहा था मानो आकृति से ज़्यादा लबादा हो। लबादे का छोटा सा टुकड़ा उसके हाथों को लगभग ढके हुए था, जो शायद दुख या प्रार्थना में जुड़े हुए थे। जैसे-जैसे वह आकृति मेरी ओर बढ़ती गई, उसके हाथ बार-बार खुलते और जुड़ते रहे। मुझे कोई डर नहीं लगा, बस एक गहरा दुख महसूस हुआ। और मैं कसम खाता हूँ कि जब वह आकृति मेरे पास से गुज़री और सीढ़ियों के अंत तक चली गई, तो मैंने एक हल्की सी आह सुनी। वहाँ से वह सीढ़ियों से नीचे उतर गई और चैपल की ओर वाली खिड़की से ओझल होती हुई प्रतीत हुई।

मैं भी उस जगह पर चुपचाप, आराम से बैठा हूँ। और मुझे ठंडक महसूस हुई और मन में एक अजीब सी उदासी छा गई जिसका कोई तार्किक कारण नहीं था।

चैपमैन परिवार ने घर नहीं खरीदा, बल्कि बाद में हुई नीलामी में मैनर हाउस स्कूल ने उसे खरीद लिया। उस समय श्रीमती चैपमैन को यह जानकारी नहीं थी कि मैनर हाउस की पूर्व मालकिन डेम लिस्ले पर 1685 में पास के विनचेस्टर में कुख्यात "फांसी देने वाले न्यायाधीश" जेफ्रीज़ द्वारा मुकदमा चलाया गया और उन्हें फांसी दे दी गई। उस बुजुर्ग महिला का एकमात्र अपराध यह था कि उन्होंने सेडगेमूर की लड़ाई से भागे दो लोगों को रात भर अपने यहाँ शरण दी थी। असल कारण तो उनका प्यूरिटन धर्म था। श्रीमती चैपमैन द्वारा विस्तार से वर्णित जानकारी के अनुसार, उन्होंने वास्तव में उसी दुर्भाग्यशाली महिला की आत्मा को देखा था।

मैंने विद्यालय की प्रधानाध्यापिका, मिस वी. डी. हंटर से यात्रा की अनुमति मांगी, जो उन्होंने इस शर्त पर दी कि इंग्लैंड में विद्यालय को कोई "प्रचार" नहीं मिलना चाहिए। मैंने अपनी यात्रा के बारे में किसी भी अंग्रेजी समाचार पत्र को न बताने पर सहमति जताई।

जहां बोलियू के भिक्षुओं की आवाज आज भी सुनी जा रही है

जब हम मोयल्स कोर्ट पहुंचे, तब तक पांच बज चुके थे, लेकिन मिस हंटर एक जरूरी काम से निकल चुकी थीं। उनकी जगह, शिक्षिका श्रीमती फिंच ने हमारा स्वागत किया।

मैंने पूछा, "यहां होने वाली भूतिया घटनाओं की पृष्ठभूमि क्या है?"

“डेम लिस्ले ने अपने दो दोस्तों को यहाँ तहखाने में छिपाया था,” उसने कहा, “जहाँ से सड़क तक एक सुरंग थी। जासूस इन लोगों पर नज़र रख रहे थे, उन्होंने उनका पता लगा लिया, और उसे पकड़ लिया गया और जज जेफ्रीज़ के सामने मुकदमा चलाया गया। उसका सिर कलम कर दिया गया, और तब से कहा जाता है कि उसकी आत्मा इस घर में भटकती रहती है।”

क्या किसी ने कभी भूत देखा है?

“हम कई ऐसे लोगों से मिले हैं जो सालों पहले यहाँ रहते थे और यहीं अपने परिवार का पालन-पोषण किया था। हम एक ऐसे व्यक्ति को जानते हैं जिसने घर के द्वार पर भूत को निश्चित रूप से देखा है—और मेरे पास उसकी बात पर अविश्वास करने का कोई कारण नहीं है। यह लगभग पच्चीस साल पहले की बात है, लेकिन हाल ही में एक महिला इस घर में तब आई थी जब हमने इसे अपने कब्जे में लेने से ठीक पहले इसे मकड़ी के जालों से ढका हुआ और बहुत

खराब हालत में पाया था। वह यहाँ गलियारे में बैठी और उसने कहा कि उसने भूत को वहाँ चलते हुए देखा था।"

"भूत का वर्णन कैसे किया गया था?"

उन्हें हमेशा भगवा वस्त्र धारण करने वाली महिला के रूप में वर्णित किया जाता रहा है।

क्या भूत कभी घर में किसी को परेशान करता है?

"नहीं, बिलकुल नहीं। इसके विपरीत, हमने हमेशा यही सुना है कि वह एक प्यारी इंसान थीं और उनसे डरने की कोई बात नहीं है। यहाँ टीवी वाले आए थे, लेकिन हम नहीं चाहते कि बच्चे घबराएँ और सच तो यह है कि बड़े बच्चे तो उस भूतिया महिला से मिलने के लिए उत्सुक हैं।"

मैंने श्रीमती फिंच को धन्यवाद दिया और जैसे ही सूरज ढलने लगा, हम एक बार फिर अपने रास्ते पर चल पड़े। हम अंधेरा होने से पहले बोलियू पहुँचने की उम्मीद कर रहे थे। जब हम लगभग खाली न्यू फ़ॉरेस्ट से गुज़रे—जहाँ लोगों की कमी थी, लेकिन जंगली घोड़ों और अन्य जानवरों की भरमार थी—तो हम आसानी से समझ गए कि इंग्लैंड की आज की चुड़ैलें इस प्राकृतिक अभयारण्य को अपना केंद्र क्यों चुनती हैं। यह एक रहस्यमय, बेहद शांत इलाका है जो बड़े शहरों की पेट्रोल से प्रदूषित दुनिया से बहुत दूर है।

हम लगभग छह बजे बोलियू पहुंचे, और हमारे मेजबान, गोर-ब्राउन परिवार, हमारे बारे में पहले से ही थोड़ा चिंतित थे।

बोलियू से मेरा संपर्क वहां पहुंचने से बहुत पहले ही शुरू हो गया था। 'इम्मॉर्टल क्वीन' और 'फ्लावर्स ऑफ द फॉरेस्ट' की लेखिका एलिजाबेथ बर्ड ने हमें गोर-ब्राउन परिवार से मिलवाया, जो इंग्लैंड में उनके प्रवास के दौरान उनके मेजबान रहे थे। मिस बर्ड हमारे आसपास के मानसिक तत्वों से भलीभांति परिचित हैं, और जब उन्हें पता चला कि हम बोलियू घूमने जा रहे हैं - जिसमें लॉर्ड मोंटेग्यू के स्वामित्व वाला हवेलीनुमा घर, जिसे 'पैलेस हाउस' के नाम से जाना जाता है; गोर-ब्राउन परिवार के स्वामित्व वाला एक छोटा घर "द वाइनयार्ड्स" और, निश्चित रूप से, कभी भव्य रहे एबे और बगीचों के खंडहर शामिल हैं - तो उन्होंने मुझसे एक विशेष कमरे से "द वाइनयार्ड्स" को देखने का आग्रह किया।

जब आप बोलियू जाएँ, तो कृपया मार्गरिट से कहें कि वह आपको 'लाल कमरे'—मेरे कमरे—में ले जाए और आपको वहाँ कुछ देर अकेला छोड़ दे। कमरा नहीं, बल्कि खिड़की से दिखने वाला नज़ारा अनोखा है। अगर मुझे भी ऐसा महसूस होता है, तो आपको भी समय के ठहर जाने का गहरा आभास होना चाहिए। मैंने उस खिड़की से साल के अलग-अलग मौसमों को, दिन के अलग-अलग समयों पर देखा है और हमेशा एक पूर्ण सन्नाटा महसूस किया है... मानो जीवन कहीं रुक गया हो। पेड़ किसी स्टेज सेट की तरह स्थिर हैं, झाड़ियाँ रंगी हुई। कुछ भी पूरी तरह से वास्तविक नहीं लगता। जैसा कि आप जानते हैं, मैं देर से उठता हूँ, लेकिन बोलियू में मैं हमेशा भोर में उठता था, जब वह नज़ारा मेरे लिए लगभग अविश्वसनीय था—सिर्फ़ कोहरा नहीं, कुछ और, जिसे मैं केवल स्थायी, कालातीत और अद्भुत रूप से शांत कह सकता हूँ। मुझे अंगूर के बागों की देखभाल करते भिक्षुओं को देखकर आश्चर्य (या भय) नहीं होता। यह बिल्कुल स्वाभाविक लगता। अगर कोई कभी समय के एक छोटे से हिस्से में प्रवेश कर सकता है, तो वह बोलियू ही होगा।

मठ की दीवारों के खंडहर

एलिज़ाबेथ बर्ड द्वारा दिए गए दृश्य का सजीव वर्णन बिल्कुल सटीक था। यद्यपि हमारे पहुँचने पर शाम हो चुकी थी, फिर भी मैं नज़ारा और एबे के खंडहरों की परछाईं को स्पष्ट रूप से देख पा रहा था। मेरी पत्नी लंबी यात्रा से काफी थकी हुई थी, इसलिए मैंने उसे आरामदायक

अंगीठी के पास बैठकर गर्माहट लेने के लिए छोड़ दिया, जबकि कर्नल गोर-ब्राउन मुझे एबे ले गए, जहाँ मुझे अपने एक मित्र, कैप्टन बी. से मिलना था, जो लंबे समय से बोलियू के निवासी थे। पैलेस हाउस, जो अपेक्षाकृत नया था, भूत-प्रेतों का प्रमुख केंद्र नहीं था।

इसके बगल में लॉर्ड मोंटेग्यू द्वारा एक आधुनिक मोटर संग्रहालय का निर्माण किया गया था, जो एक प्रमुख पर्यटक आकर्षण बन गया है। मुझे इससे कोई आपत्ति नहीं है, लेकिन मुझे एक प्राचीन चैपल में शौचालय का निर्माण और छत पर इसके उपयोग को दर्शाने वाला एक बड़ा बोर्ड लगा होना थोड़ा अजीब लगता है!

स्वयं एबे का व्यवसायीकरण नहीं हुआ था, बल्कि यह "द वाइनयार्ड्स" और "द स्प्लेंट" नामक जलधारा के बीच स्थित एक शांत भूभाग पर बसा हुआ था, जो हैम्पशायर तट को आइल ऑफ वाइट से अलग करती है। हम यहीं खड़े थे, जबकि कैप्टन अपनी चाबियाँ ढूंढ रहे थे ताकि हम एबे परिसर में प्रवेश कर सकें।

"कैप्टन, यहाँ भूत-प्रेत से जुड़ी घटनाएँ वास्तव में क्या थीं?" मैंने पूछा, जब हम खंडहर हो चुकी मठ की दीवारों के चारों ओर बने कब्रिस्तान में प्रवेश कर रहे थे।

“ब्यूलियू में रहने वाली एक युवती ‘पादरी के दुष्ट द्वार’ कहे जाने वाले छोटे से रास्ते से होते हुए उस जगह की ओर जा रही थी, तभी उसने भूरे रंग का वस्त्र पहने एक आकृति देखी, जिसे उसने आगंतुक समझा। वह ज़मीन पर नज़रें गड़ाए चल रही थी और जब वह उस जगह के पास पहुँची जहाँ उसे लगा कि वह आदमी होगा, तो उसने उससे टकराने से बचने के लिए अपनी नज़रें ऊपर उठाईं—लेकिन वह वहाँ था ही नहीं!”

अब हम मठ के खंडहर हो चुके "गार्थ" या बगीचे में खड़े थे। हमारे चारों ओर मेहराबदार दीवारें थीं जिनमें आले बने हुए थे; हमारे पीछे उस इमारत की मुख्य दीवार थी जो अब बोलियू चर्च है, लेकिन कभी भिक्षुओं का भोजन कक्ष हुआ करता था।

मैंने पूछा, "क्या यहाँ किसी ने कुछ देखा है?"

“दरअसल, डोमस कन्वर्सोरम में बने छोटे से फ्लैट में दो महिलाएं रहती थीं। उनमें से एक, जो एक सेवानिवृत्त प्रशिक्षित नर्स थीं और बहुत उच्च कोटि की थीं, ने मुझे बताया कि एक रविवार की सुबह वह अपने फ्लैट के बाहर बने छोटे से चबूतरे पर आईं और उन्होंने देखा कि पाँचवें कोने में एक भिक्षु बैठकर एक शोधपत्र पढ़ रहा था।”

उसने क्या किया?

“उसने एक-दो मिनट तक उसे देखा, फिर दुर्भाग्यवश उसे अपनी केतली के उबलने की आवाज सुनाई दी और उसे अंदर जाना पड़ा। जब वह वापस बाहर आई, तो ज़ाहिर है, वह जा चुका था।”

क्या उसे कभी यह ख्याल आया कि वह हाड़-मांस के अलावा कुछ और भी हो सकता है?

"हां, उसे पता था कि वह हाड़-मांस का इंसान नहीं हो सकता था।"

"क्योंकि बोलियू में कोई भिक्षु नहीं हैं।"

"हाँ।"

क्या वह डरी हुई थी?

"कम से कम नहीं।"

"क्या इस इलाके में भूतों से जुड़ी कोई और घटनाएं हैं?"

कप्तान ने अपना गला साफ किया। “जी हाँ, बूढ़े श्री पोल्स, जो 1886 से 1939 तक यहाँ के पादरी थे, चर्च में भिक्षुओं से मिलने और उन्हें देखने की बातें करते थे, जो पहले आम भिक्षुओं का भोजन कक्ष हुआ करता था और जो अब हमारे पीछे है। वे उन्हें रोज़ाना सुनते भी थे।”

हम वापस चर्च की ओर चले और उसके अंधेरे कक्षों में प्रवेश किया। इसका आंतरिक भाग आधुनिक डिजाइन का है, जो इसके प्राचीन स्वरूप से बिल्कुल मेल नहीं खाता, लेकिन यह सुरुचिपूर्ण है और वहां मौजूद रहस्यमय उपस्थिति का अहसास बरकरार रहता है।

यह वही स्थान था जहां पादरी की मुलाकात प्रेतवाधित भिक्षुओं से हुई थी।

कप्तान ने कहा, "उसने न केवल उन्हें गाते हुए सुना, बल्कि उन्हें देखा भी। वे वहां मौजूद थे।"

"क्या किसी और ने भी इस चर्च में भूतिया आकृतियाँ देखी हैं?"

“कुछ साल पहले,” कैप्टन ने अपनी शांत, सधी हुई आवाज़ में जवाब दिया, मानो वह किसी नए रंगरूट को नई बंदूक की कार्यप्रणाली समझा रहे हों, “मैं यहाँ काम करने वाले एक व्यक्ति के अंतिम संस्कार जुलूस का इंतज़ार कर रहा था, और दो महिलाएँ चर्च में आईं। हम थोड़ी देर बातें करने लगे, और उनमें से एक ने कहा, ‘जब मैं लगभग तीस साल पहले अपनी सहेली के साथ इस चर्च में आई थी, तो उसने इसे जैसा था वैसा ही देखा था।’”

मुझे उसकी बात ठीक से समझ नहीं आई और मैंने कहा, 'ओह, मुझे पता है, 1840 में चर्च में पूरी तरह से बदलाव किया गया था।'

"'ओह, नहीं,' उसने कहा, 'मेरा मतलब है—हम दोनों ने इसे देखा था—जैसा यह था, जब यह भिक्षुओं के पास था।'"

मैंने उससे इस बारे में पूछा।

"'हम अंदर आए,' उसने कहा, 'और हमने देखा कि चर्च को एक भोजन कक्ष की तरह सजाया गया था। हमें थोड़ा आश्चर्य हुआ, लेकिन हमने इस पर ज्यादा ध्यान नहीं दिया और फिर हम बाहर चले गए। लेकिन जब हम घर पहुंचे, तो हमने इस बारे में बात की और हम इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि इसमें कुछ असाधारण बात थी, क्योंकि हमने इसे किसी भी तरह से पैरिश चर्च के रूप में नहीं देखा था। फिर हमने पूछताछ की और, ज़ाहिर है, हमें एहसास हुआ कि हमने अतीत में झाँक लिया था।'"

ऐसा प्रतीत होता है कि महिलाएं समय में पीछे चली गई थीं और चार सौ साल पहले ब्यूलियू के भिक्षुओं को रात्रि भोजन करते हुए देख रही थीं!

मैं चर्च के मुख्य भाग के बीच में गया और धीमी आवाज़ में भिक्षुओं को प्रकट होने का निमंत्रण दिया। अंधेरे चर्च में पूरी तरह सन्नाटा छाया हुआ था, क्योंकि अब वह समय बीत चुका था जब आकाश में प्रकाश की एक किरण भी बाकी नहीं रहती थी।

जैसे-जैसे मैं धीरे-धीरे गलियारे से वापस वर्तमान में लौटी, मुझे लगा जैसे ऊपर कहीं से हल्की-हल्की ऑर्गन की आवाज़ सुनाई दी हो। लेकिन शायद यह मेरा वहम ही था। भला कौन कह सकता है? ऐसे माहौल में और अभी-अभी इस बारे में बात करने के बाद, किसी भी तरह के संकेत को नज़रअंदाज़ नहीं किया जा सकता।

कुछ लोगों ने बगीचे में प्रेतवाधित भिक्षुओं की आवाज़ें सुनी हैं, जो अपने ही लोगों को दफ़ना रहे थे। अंत्येष्टि संस्कार भिक्षुओं के लिए बहुत महत्वपूर्ण होते हैं, और राजा हेनरी ने उन्हें उचित तरीके से अंतिम संस्कार किए जाने के विशेषाधिकार से वंचित कर दिया था। मृत भिक्षु कहाँ जाते? मठ ही धरती पर एकमात्र ऐसी जगह थी जिसे वे जानते थे, और इसलिए वे परलोक के भय से वहीं टिके रहे।

यह भी संभव है कि प्रेत-प्रेत भिक्षु इस विचित्र तथ्य को स्वीकार न कर पा रहे हों कि उनका पवित्र कब्रिस्तान, उनकी समाधि, आज तक नहीं मिली! मठ के चारों ओर एक गिरजाघर का प्रांगण है, लेकिन वह बोलियू के लोगों का था और अभी भी है। भिक्षुओं का अपना एक अलग भूखंड था और कोई नहीं जानता कि वह कहाँ है। मुझे ऐसा लगता है कि बोलियू में प्रेत-प्रेत भिक्षु तब तक भटकते रहेंगे जब तक कोई उस प्राचीन कब्रिस्तान को खोजकर उसका विधिवत पुनर्पवित्रीकरण नहीं कर देता।

यह विशाल हवेली, जिसे पैलेस हाउस भी कहा जाता है, में मठाधीश का महल भी काफी हद तक समाहित है। यहाँ भिक्षुओं को अक्सर देखा गया है। जनवरी 1964 में जब मैं आर्ट लिंकलेटर के कार्यक्रम में शामिल हुआ, तो न्यूयॉर्क के ब्रोंक्स की रहने वाली श्रीमती नैन्सी सुलिवन ने मुझसे संपर्क किया, जो कभी पैलेस हाउस में रसोइया के रूप में कार्यरत थीं।

“पैलेस हाउस के चारों ओर एक खाई हुआ करती थी,” उसने बताया, “और ऊपर से नीचे तक एक घुमावदार सीढ़ी थी। ऐसा कहा जाता है कि मैरी क्वीन ऑफ स्कॉट्स उसी सीढ़ी से नीचे उतरी थी, और एक आदमी नाव में खाई में उसका इंतजार कर रहा था, जिससे वह भागने में सफल रही। कुछ लोग कहते हैं कि उसका भूत आज भी उन सीढ़ियों से नीचे उतरता है!”

“नौकरानियों के कमरे सबसे ऊपरी मंजिल पर थे; तब पाँच लड़कियाँ थीं, और हर रात हमें उन सीढ़ियों से किसी के चलने की आवाज़ सुनाई देती थी, हालाँकि हम जानते थे कि ऊपर और नीचे के दरवाजे पूरी तरह से बंद थे। हम बहुत डरे हुए थे, इतना कि हम सब एक ही कमरे में रहने लगे।”

यह कहना मुश्किल है कि क्या यह मैरी स्टुअर्ट का बोलियू से भागना था, या शायद किसी पुराने भूत का। दिलचस्प बात यह है कि कदमों की आवाजें वहां सुनाई दीं जहां किसी को चलते हुए नहीं देखा गया।

अलौकिक घटनाओं की खोज में टेलीविजन कैमरे बोलियू में छा गए हैं। जब सब कुछ शांत हो जाएगा, तो मैं वापस जाकर अपने साथ एक कुशल समाधि माध्यम को लाऊंगा। शायद तब हम सीधे पता लगा सकें कि भिक्षु क्या चाहते हैं।

*60

समरसेट सेंट (पेंसिल्वेनिया)

समरसेट पेंसिल्वेनिया के ग्रामीण इलाकों में पाए जाने वाले उन साधारण छोटे कस्बों में से एक है, जहाँ कुछ हज़ार घर, कुछ चर्च, एक-दो क्लब और बहुत से मेहनती लोग रहते हैं, जिनका जीवन साधारण और अक्सर नीरस परिस्थितियों में बीतता है। जो लोग यहाँ से चले जाते हैं, वे पूर्वी बड़े शहरों में बेहतर अवसरों की तलाश में जा सकते हैं, और जो यहीं रहते हैं, उन्हें अपने लोगों के बीच रहने और शांतिपूर्वक जीवन बिताने की तुलनात्मक सुरक्षा मिलती है। लेकिन कुछ लोग ऐसे भी होते हैं जो अपनी इच्छा से नहीं, बल्कि मजबूरीवश यहाँ से चले जाते हैं; ऐसी ताकतों से मजबूर होकर जिनका वे विरोध नहीं कर सकते।

मैनर दंपति मध्यम आयु वर्ग के हैं और उनके दो बच्चे हैं - एक चौदह वर्षीय बेटा और एक छह वर्षीय बेटी। पति एक टेलीविजन और रेडियो की दुकान चलाते थे जिससे उनकी औसत आय होती थी, जो एक छोटे शहर के मध्यमवर्गीय मानकों से न तो कम थी और न ही बहुत अधिक। हालांकि वे कैथोलिक थे, लेकिन वे खुद को विशेष रूप से धार्मिक नहीं मानते थे। श्रीमती मैनर के परिवार मूल रूप से ऑस्ट्रिया से आए थे, इसलिए परिवार में यूरोपीय पृष्ठभूमि का कुछ अंश उनके जीवन में थोड़ा सा महाद्वीपीय प्रभाव डालता था, लेकिन इसके अलावा, वे पेनसिल्वेनिया के आम लोग थे और आज भी हैं, जिन्हें मानसिक अनुसंधान जैसे जटिल विषयों में जरा भी रुचि या ज्ञान नहीं है।

बेशक, श्रीमती मैनर के लिए तंत्र-मंत्र कोई अनजान बात नहीं थी। उनकी आँखों पर जन्म से ही एक विशेष दृष्टि थी, जिसे कई लोग भविष्य देखने की क्षमता मानते हैं। घटनाओं के घटित होने से पहले ही उन्हें देख लेने की उनकी क्षमता उनके लिए "भविष्यवाणी" नहीं थी, बल्कि एक ऐसी विशेष प्रतिभा थी जिसे उन्होंने सहजता से स्वीकार किया। एक रात उन्होंने अपने बेटे के बारे में एक सजीव सपना देखा, जो उस समय सेना में मीलों दूर था। उन्होंने उसे बाथरोब पहने हुए एक गलियारे में चलते हुए देखा, उसके पैर से खून बह रहा था। अगले दिन जागने के कुछ ही समय बाद, उन्हें सूचना मिली कि उनके बेटे पर एक रैटलस्नेक ने हमला कर दिया है और जब उसे पाया गया तो वह मृत्यु के करीब था। एक रात वह जागीं तो उन्होंने अपनी बहन की

छवि अपने बिस्तर के पास खड़ी देखी। उस आकृति में कुछ भी डरावना नहीं था, लेकिन उसने काले कपड़े पहने हुए थे।

अगले दिन उस बहन की मृत्यु हो गई।

लेकिन इन घटनाओं से श्रीमती मैनर भयभीत नहीं हुईं; ये अनंत काल की झलकियाँ मात्र थीं, इससे अधिक कुछ नहीं।

जैसे-जैसे साल बीतते गए, मैनर परिवार ने इतना पैसा जमा कर लिया कि वे अपने मौजूदा घर से ज़्यादा आरामदायक घर की तलाश कर सकें। किस्मत से, 1966 में एक दिन उन्हें शहर के एक अच्छे इलाके में एक सुंदर, पुराना घर देखने का प्रस्ताव मिला। घर बेहतरीन हालत में लग रहा था; यह देखने में किसी विक्टोरियन घर जैसा था, जिसमें उस बीते युग की सारी प्यारी चीज़ें मौजूद थीं। यह घर दो साल से खाली पड़ा था, और क्योंकि यह एक संपत्ति का हिस्सा था, इसलिए वसीयत के अधिकारी इसे बेचने के लिए उत्सुक थे। मैनर परिवार ने अपने प्रस्तावित नए घर के बारे में कोई खास पूछताछ नहीं की, क्योंकि सब कुछ ठीक और सुखद लग रहा था। उन्हें बताया गया कि इसके पिछले मालिक अमीर लोग थे, जिन्होंने घर पर बहुत पैसा और प्यार लुटाया था।

जब उन्हें कीमत बताई गई, तो मैनर दंपति अविश्वास से एक-दूसरे को देखने लगे। इतने शानदार घर के लिए यह उनकी उम्मीद से कहीं कम थी। "हम इसे ले लेंगे," उन्होंने लगभग एक साथ कहा, और जल्द ही वह घर उनका हो गया।

“आपको क्या लगता है कि हमें यह इतनी कम कीमत में कैसे मिल गया?” श्री मैनर ने सोचा, लेकिन उनकी पत्नी ने केवल कंधे उचका दिए। उनके लिए यह बिल्कुल भी महत्वपूर्ण नहीं था। उनका मानना था कि मुफ्त में मिली चीज़ में कमी नहीं निकालनी चाहिए।

ग्रीष्म ऋतु के अंत में वे अंततः अपने नए खरीदे गए घर में चले गए। उनके घर में बसने के तुरंत बाद ही श्रीमती मैनर को एहसास हुआ कि उस जगह में कुछ गड़बड़ है।

शुरू से ही उसे इसमें असहजता महसूस हो रही थी, लेकिन समझदार होने के नाते उसने इसे एक नई और अपरिचित जगह पर होने का असर मान लिया। लेकिन जैसे-जैसे यह भावना बढ़ती गई, उसे एहसास हुआ कि कोई अदृश्य शक्ति दिन-रात उस पर नज़र रख रही है, और तनाव के कारण उसकी नसें तनने लगीं।

घर में बिताई पहली ही रात, ठीक सुबह 2 बजे, बिना किसी वजह के, उसे कामुकता का अनुभव हुआ। उसके हाथों के बाल खड़े हो गए और शरीर में सिहरन दौड़ गई। उसने फिर से इसका कारण नए घर को ठीक करने में की गई कड़ी मेहनत को माना।

लेकिन रात के 2 बजे का वह भयावह समय उसे बार-बार उसी अजीब सी अनुभूति के साथ जगा देता था कि कुछ गड़बड़ है, और सहज रूप से वह जानती थी कि न तो वह, न ही उसके परिवार का कोई सदस्य, मुसीबत में था, बल्कि नया घर ही मुसीबत में था।

दुगने जोश के साथ, उसने अपनी सारी ऊर्जा फर्नीचर चमकाने और कमरों को ठीक-ठाक करने में लगा दी। इस तरह वह बहुत थक गई और रात भर चैन से सोने की उम्मीद कर रही थी। लेकिन शारीरिक रूप से कितनी भी थकी हुई क्यों न हो, ठीक दो बजे एक अजीब सी अनुभूति ने उसे जगा दिया।

इस अजीबोगरीब एहसास के बावजूद पहला हफ्ता किसी तरह बीत गया और सोमवार फिर आ गया। गर्मी के ढलते सूरज की तेज रोशनी में घर कुछ ज्यादा ही खुशनुमा लगने लगा और रात का उसका डर गायब हो गया।

उस सोमवार की सुबह वह रसोई में अपने बच्चों के लिए नाश्ता बना रही थी। अपनी छोटी बेटी के लिए टोस्ट पर मक्खन लगाते समय, उसकी नज़र अचानक दरवाजे की ओर पड़ी। वहाँ, एकदम सलीके से कपड़े पहने एक आदमी खड़ा था। उसने देखा कि उस अजनबी ने चमकीले काले जूते, गहरे नीले रंग की पैंट और सफेद कमीज़ पहनी हुई थी। उसने उसकी टाई भी देखी, जो धारीदार थी, और फिर उसने उस आदमी के चेहरे को गौर से देखा। चेहरा इतना साफ़ था कि वह उस आदमी के बर्फीले सफेद बालों की कंघी भी देख पा रही थी।

उसकी पहली प्रतिक्रिया यह थी कि वह किसी तरह घर में घुस आया था और वह उसे नमस्कार करने ही वाली थी कि तभी उसे याद आया कि उसने न तो दरवाजा खुलने की आवाज सुनी और न ही कोई और आवाज - न कदमों की आहट, न ही कदमों की आवाज।

"देखो," उसने अपने बेटे से कहा, जिसकी पीठ उस प्रेत की ओर थी, लेकिन जब तक उसके बच्चे मुड़े, वह आदमी धुएं के गुबार की तरह गायब हो गया था।

श्रीमती मैनर ने जो कुछ देखा उससे वह ज़्यादा भयभीत नहीं हुईं, हालाँकि उन्हें यह एहसास था कि उनका आगंतुक कोई इंसान नहीं था। जब उन्होंने उस शाम अपने पति को इसके बारे में बताया, तो वह हँस पड़े।

सचमुच भूत!

मामला यहीं खत्म हो जाता अगर अगले ही दिन कुछ और न घट जाता। श्रीमती मैनर घर के पिछवाड़े से रसोई में जा रही थीं, तभी अचानक उन्होंने अपने फ्रिज के पास से एक महिला को गुजरते देखा। इस बार दृश्य उतना स्पष्ट नहीं था। शरीर का केवल आधा हिस्सा ही दिखाई दे रहा था, लेकिन उन्होंने उसके जूते, घुटनों तक की पोशाक और जल्दबाजी में होने का आभास देखा।

इससे भी उसे डर नहीं लगा, लेकिन वह सोचने लगी। वे सभी अजीबोगरीब एहसास अब समझ में आने लगे थे। इस घर को खरीदकर उन्होंने खुद को किस मुसीबत में डाल लिया था? इसमें कोई हैरानी की बात नहीं कि यह इतना सस्ता था। यह भूतिया था!

श्रीमती मैनर एक व्यावहारिक महिला थीं, भले ही उन्हें अजीबोगरीब अनुभव होते थे, या शायद उन्हीं अनुभवों की वजह से। उन्होंने घर के लिए अच्छी खासी रकम चुकाई थी और कोई भूत-प्रेत उन्हें वहां से हटाने वाले नहीं थे!

लेकिन लड़ाई तो अभी शुरू ही हुई थी। एक अजीब सा जाल उसे बार-बार घेरने लगा, मानो कोई अदृश्य शक्ति उसे गीले, ठंडे कंबल में लपेटने की कोशिश कर रही हो। जब वह उस "जाल" को छूती, तो कुछ भी दिखाई या महसूस नहीं होता, फिर भी वह चिपचिपी, ठंडी शक्ति उसके साथ बनी रहती। फूलों की एक अजीब सी खुशबू अचानक प्रकट हुई और कमरे-कमरे उसका पीछा करती रही। जल्द ही उसके पति को भी वह खुशबू महसूस हुई और उसकी हंसी रुक गई। वह भी चिंतित हो गया: कहीं उनके बच्चे घर में मौजूद किसी चीज से डर न जाएं।

जल्द ही दरवाज़ों को बंद रखना नामुमकिन हो गया। चाहे कितनी ही बार दरवाज़ा बंद किया जाए, कुछ ही देर बाद वो खुला ही मिलता था, मानो किसी अनदेखे हाथ ने ताले खोल दिए हों। पुरानी चीनी मिट्टी के बर्तनों की अलमारी में खास हलचल रहती थी, और उसके आसपास फूलों की खुशबू बहुत तेज़ रहती थी।

“अब हम इसका क्या करें?” श्रीमती मैनर ने एक रात अपने पति से पूछा। उन्होंने शुरुआत में घर के बारे में और जानने का फैसला किया। वे उपहास या मानसिक रूप से विक्षिप्त समझे जाने के डर से अपनी दुर्दशा के बारे में कुछ भी बताने से हिचकिचा रहे थे। छोटे शहर में लोग भूतों के बारे में बात करना पसंद नहीं करते।

श्रीमती मैनर ने सबसे पहले अपने पड़ोस में रहने वाली एक महिला से बात की, जो कई सालों से उसी गली में रहती थी। जब उन्होंने देखा कि घर में हो रही अजीबोगरीब घटनाओं का जिक्र करने पर पड़ोसी पीछे नहीं हटी, बल्कि इसके विपरीत, वह सचमुच दिलचस्पी दिखा रही थी, तो श्रीमती मैनर ने अपने दिल की बात बताई और जो कुछ उन्होंने देखा था, उसका वर्णन किया।

विशेषकर, उसने दोनों दर्शनों का विस्तृत वर्णन करने में बहुत मेहनत की। पड़ोसी ने गंभीरता से सिर हिलाया।

“हाँ, ये वही लोग हैं,” उसने कहा और श्रीमती मैनर को अपने घर के इतिहास के बारे में बताने लगी। श्रीमती मैनर ने पहली बार इस घर के बारे में सुना था और उन्होंने जिस आदमी को देखा था, उसका हुलिया घर के पिछले मालिक के हुलिए से पूरी तरह मेल खाता था।

पड़ोसी ने बताया, “उनकी मृत्यु यहीं हुई। उन्हें और उनकी पत्नी को अपना घर बहुत प्यारा था। बुजुर्ग महिला कभी भी घर छोड़ना या बेचना नहीं चाहती थीं।”

"लेकिन फूलों की इस अजीब सी खुशबू के बारे में आपका क्या विचार है?" श्रीमती मैनर ने पूछा।

“बुजुर्ग महिला को फूल बहुत पसंद थे, वह हर दिन घर में ताजे फूल रखती थी।”

यह सब क्या था यह जानकर राहत तो मिली, लेकिन भूतों के साथ अपना घर साझा करने की संभावना से वह बिल्कुल भी खुश नहीं थीं। इसके बाद श्रीमती मैनर ने अपने अवांछित "मेहमानों" से छुटकारा पाने का कोई तरीका खोजने की उम्मीद में पुलिस प्रमुख से मुलाकात की।

सरदार ने अपना सिर खुजाया। "भूत?" उसने कहा, और उसकी आवाज़ में मज़ाक का भाव बिलकुल नहीं था। "तुमने मुझे फंसा लिया। यह मेरा इलाका नहीं है।"

लेकिन उन्होंने वादा किया कि अगर ये सिर्फ पुराने जमाने के चोर हों तो अतिरिक्त गश्ती दल भेजा जाएगा।

श्रीमती मैनर ने उन्हें धन्यवाद दिया और चली गईं। उन्हें सच्चाई का पता था और उन्हें एहसास हो गया था कि पुलिस उनकी मदद नहीं कर पाएगी।

उसने फैसला किया कि उन्हें अपने भूतों के साथ जीना सीखना होगा, खासकर इसलिए क्योंकि वे भूत उनसे पहले इस घर में रह चुके थे। शायद अब सब कुछ इतना बुरा भी न हो, उसने सोचा, अब जब उन्हें पता चल गया है कि वह कौन है जो उन्हें छोड़कर नहीं जाना चाहता।

शायद कोई आपस में दोस्ती भी कर ले, एक बड़ा, खुशहाल परिवार बन जाए, जिसमें आधे इंसान और आधे भूत हों? लेकिन उसने तुरंत इस विचार को खारिज कर दिया। बच्चों का क्या होगा? अब तक तो उन्होंने उन्हें देखा नहीं था, लेकिन उन्हें उन दरवाजों के बारे में पता था जो बंद नहीं रहते थे और दूसरी अजीबोगरीब घटनाओं के बारे में भी।

सौभाग्यवश, श्रीमती मैनर भूत-प्रेतों की प्रकृति को नहीं समझ पाईं। यदि उन्हें यह पता होता कि उनके किशोर पुत्र की उपस्थिति ही इन घटनाओं के भौतिक स्वरूप के लिए आंशिक रूप से जिम्मेदार है, तो वे निस्संदेह उसे कहीं दूर भेज देतीं। लेकिन ये घटनाएँ दिन-रात बिना रुके जारी रहीं।

एक रात खाना खाते समय, जब सभी लोग मौजूद थे, अचानक एक ज़ोरदार धमाके से पूरा घर हिल गया। ऐसा लगा जैसे रसोई के फर्श पर एक टन कांच गिर गया हो। जब वे दौड़कर रसोई में गए, तो उन्होंने देखा कि सब कुछ व्यवस्थित था, कोई भी चीज़ अपनी जगह से हटी नहीं थी।

इस मोड़ पर, श्रीमती मैनर अपने प्रारंभिक धार्मिक संसार की ओर लौट गईं।

“शायद हमें पादरी को बुलाना चाहिए?” उसने सुझाव दिया, और कहते ही उसने ऐसा कर दिया। अगले दिन पादरी उनके घर आए। उनकी कहानी सुनकर उन्होंने चुपचाप सिर हिलाया और दुखी आत्माओं के लिए मन ही मन प्रार्थना की।

बाद में पता चला कि ऐसा करने के पीछे उनका एक खास कारण था। वे जीवित रहते हुए उनके चर्च के सदस्य थे। दरअसल, वे कई बार उनके घर डिनर पर जा चुके थे, और मौजूदा मालिकों द्वारा किए गए बदलावों के बावजूद वह घर उनके लिए जाना-पहचाना था।

अगर कोई ऐसा कर सकता है, तो निश्चित रूप से उनका अपना मंत्री ही उन भूतों को भगा सकता है।

एक लंबे शॉट के द्वारा नहीं।

या तो दंपति ने अपने पादरी की शक्तियों पर ज्यादा भरोसा नहीं किया, या फिर घर का आकर्षण अधिक प्रबल था, लेकिन घटनाएँ जारी रहीं। दरअसल, पादरी द्वारा भूतों को भगाने की कोशिश के बाद स्थिति और भी बिगड़ गई।

कई रातों को, जब बत्तियाँ अपने आप जलने-बुझने लगती थीं, तो मैनर परिवार दौड़कर गली में निकल जाता था। सौभाग्य से, बच्चे इस सब के बावजूद सोते रहते थे, लेकिन वे कब तक इससे अप्रभावित रह पाएंगे?

कई बार वातावरण इतना उमस भरा होता था कि श्रीमती मैनर रसोई में नाश्ते के कोने तक जाकर मेज साफ करने में भी असमर्थ हो जाती थीं। तेज कंपन से घिरी होने के कारण वे कांपने लगती थीं और दो बार बेहोश भी हो गईं, जिसके बाद उनके परिवार ने उन्हें पाया।

अब वे गंभीरता से घर बदलने और मूल "मालिकों" को घर वापस देने पर विचार कर रहे थे। उन्हें अब एहसास हुआ कि रियल एस्टेट एजेंट द्वारा बताए गए उन दो वर्षों में घर वास्तव में कभी "खाली" नहीं था।

रात के 2 बज रहे थे जब वे आखिरकार सोने गए। हालात पहले से भी बदतर लग रहे थे। श्रीमती मैनर को अब अपने साथ तीन लोगों की मौजूदगी का स्पष्ट अहसास हो रहा था और वे रोने लगीं।

“मैं यह घर छोड़ रही हूँ,” उसने कहा। “आप इसे वापस ले सकते हैं!” उसका पति उससे पहले ही सीढ़ियों से ऊपर जाकर लिनेन की अलमारी से बिस्तर का सामान ले आया था। वह भी उसके पीछे-पीछे चलने लगी और धीरे-धीरे सीढ़ियाँ चढ़ने लगी। जब वह लगभग आधी सीढ़ियाँ चढ़ चुकी थी, तभी अचानक किसी बात ने उसे पीछे मुड़कर देखने के लिए मजबूर कर दिया।

जो कुछ उसने देखा, वह तब से उसके मन में बसा हुआ है, घोर भय के साथ उसके दिमाग में गहरी छाप छोड़ गया है। नीचे सीढ़ियों पर, एक बड़ा, हट्टा-कट्टा आदमी था, जो सीढ़ियों पर चढ़ने की कोशिश कर रहा था।

उससे बात करने की कोशिश करते समय उसकी आंखें पीड़ा से लाल हो गई थीं।

ज़ाहिर तौर पर उसे चोट लगी थी, क्योंकि उसकी पतलून और कमीज़ कीचड़ से सनी हुई थी। या फिर वह सूखा खून था?

वह रेलिंग को पकड़ने की कोशिश कर रहा था और उसने अपने हाथ उसकी ओर बढ़ाए हुए थे।

“हे भगवान, यह सच नहीं हो सकता,” उसने सोचा और कुछ और सीढ़ियाँ चढ़ गई। फिर उसने हिम्मत करके दोबारा नीचे देखा।

वह आदमी अब भी उसका ध्यान आकर्षित करने के लिए बेताब होकर अपना हाथ आगे बढ़ाए हुए था। जब उसने कोई प्रतिक्रिया नहीं दी, तो उसने अधीरता और हताशा के भाव से अपना हाथ नीचे कर लिया।

एक तीखी चीख के साथ वह बेकाबू होकर रोते हुए सीढ़ियों से ऊपर अपने पति के पास भागी।

घर पूरी तरह से बंद था और कोई भी अंदर नहीं जा सकता था। ऐसा नहीं था कि वे उन प्रेतों को हाड़-मांस के इंसान समझते थे। अगली सुबह, सीढ़ियों पर उस रात की घटना का कोई निशान नहीं मिला। ऐसा लग रहा था मानो कुछ हुआ ही न हो।

लेकिन उस सुबह, मैनर परिवार ने सामान पैक करके तुरंत निकलने का फैसला किया। श्रीमती मैनर ने दृढ़ता से कहा, "मुझे अब और घर नहीं चाहिए," और इसलिए उन्होंने एक ट्रेलर खरीद लिया। फिलहाल, वे एक अपार्टमेंट में रह रहे थे।

लेकिन उनका फर्नीचर और सारा सामान अभी भी घर में ही था, और उन्हें उसे लेने के लिए कुछ और बार वापस जाना पड़ा। उन्होंने सोचा कि चूंकि उन्होंने संपत्ति का मालिकाना हक सौंप दिया था, इसलिए उनके लिए वापस जाना ठीक रहेगा। आखिरकार, वह घर अब उनका नहीं था।

श्रीमती मैनर सावधानी से सीढ़ियाँ चढ़ रही थीं, लेकिन डर से काँप रही थीं। किसी भी क्षण, वह प्रेत फिर से उनके सामने आ सकता था। लेकिन सब कुछ शांत लग रहा था। अचानक, फूलों

की खुशबू फिर से उनके पास आ गई और उन्हें एहसास हुआ कि भूत अभी भी वहीं मौजूद हैं।

मानो उसके संदेहों का जवाब देते हुए, उसी क्षण चीनी मिट्टी के बर्तनों की अलमारी के दरवाजे अचानक खुल गए।

हालांकि श्रीमती मैनर उस पुराने घर से कोई नाता रखना चाहती थीं, फिर भी उन्होंने कुछ और पूछताछ की। सीढ़ियों पर तड़पते हुए उस आदमी की भयावह तस्वीर उनके दिमाग से नहीं निकल रही थी। वह कौन था, और वह उसके लिए क्या कर सकती थीं?

फिर उसे पता चला कि संपत्ति का निपटारा अभी तक नहीं हुआ था, बच्चे अभी भी उस पर झगड़ रहे थे। क्या यही कारण था कि माता-पिता चैन से घर नहीं छोड़ पा रहे थे? क्या सीढ़ियों पर बैठा वह आदमी कोई ऐसा व्यक्ति था जिसे मदद की ज़रूरत थी, या कोई ऐसा व्यक्ति जिसे घर में चोट लगी थी?

“छोड़ो इसे,” पति ने कहा और उन्होंने अपना अधिकांश फर्नीचर रख दिया। नए ट्रेलर हाउस में कोई दुर्गंध नहीं होगी और जरूरत पड़ने पर वे जहाँ चाहें वहाँ जा सकेंगे।

ट्रेलर में रहने के बाद, उन्हें अफवाहें सुनने को मिलीं कि उनके घर के नए मालिकों को भी समस्याओं का सामना करना पड़ा था। लेकिन उन्होंने उन बातों पर ध्यान नहीं दिया और जानबूझकर घर से दूर रहे। उन्हें लगा कि इस तरह भूत भी उनसे दूर रहेंगे, क्योंकि अब वे अपने प्यारे घर में वापस आ गए थे!

लेकिन कुछ दिनों बाद, श्रीमती मैनर ने अपने बिल्कुल नए ट्रेलर में फूलों की एक अजीब सी खुशबू महसूस की। चूंकि उन्होंने न तो कोई फूल खरीदे थे और न ही इत्र की कोई बोतल खोली थी, इसलिए उन्हें यह बात समझ नहीं आई। फिर अचानक, मानो दिल दहला देने वाले झटके के साथ, उन्हें याद आया कि उन्होंने यह खुशबू पहले कहाँ और कब सूंघी थी। यह उस पुराने घर में रहने वाली प्रेतवाधित महिला की निजी खुशबू थी! क्या वह उसका पीछा करते हुए ट्रेलर तक आ गई थी?

उस रात जब उसने अपने पति से इस नई घटना के बारे में बात की, तो उन्होंने ट्रेलर में धुआं करने, उसे हवादार बनाने और संभव हो तो उस गंध को मिटाने का फैसला किया। उन्हें कहीं न कहीं लगा कि शायद वे गलत थे और यह महज़ एक संयोग था। लेकिन गंध बनी रही, स्पष्ट

और तीव्र, और उसके साथ आने वाली किसी उपस्थिति की अनुभूति ने जल्द ही उन्हें आश्वस्त कर दिया कि उन्होंने समरसेट के भूतों को अभी तक पूरी तरह से नहीं देखा है।

उन्होंने नया ट्रेलर बेच दिया और एक और घर खरीद लिया, जो पास के पेंसिल्वेनिया शहर स्टोयस्टाउन में एक 57 साल पुराना, सुंदर और फैला हुआ घर था, जो समरसेट से इतनी दूर था कि उन्हें यह उम्मीद थी कि अदृश्य लोग उनका पीछा करते हुए वहां तक नहीं पहुंच पाएंगे।

फर्नीचर अंदर रखने के बाद सब कुछ ठीक हो गया और कई महीनों में पहली बार मैनर परिवार चैन की सांस ले सका। स्टोयस्टाउन में बसने के लगभग दो महीने बाद फूलों की खुशबू फिर लौट आई। अब इसके साथ एक और गंध भी आने लगी, जो जली हुई माचिस की तीलियों जैसी थी।

मैनर परिवार भयभीत था। क्या इस रहस्यमयी घटना से बचने का कोई रास्ता नहीं था? कुछ दिनों बाद, श्रीमती मैनर ने घर में धुएँ के समान एक आकृति को उठते हुए देखा। किसी ने भी धूम्रपान नहीं किया था। वह आकृति धुंधली सी किसी इंसान की आकृति जैसी लग रही थी।

सौभाग्य से, उसके पति को भी उन गंधों का अनुभव हुआ, इसलिए वह इस विकट स्थिति में अकेली नहीं थी। लेकिन बच्चे, जो अभी-अभी अपने डर से उबरे थे, अब नए सिरे से भयभीत हो गए थे। वे भागते नहीं रह सकते थे, आखिर किससे भाग रहे थे?

उन्होंने अपने अधिकार में मौजूद हर संभव उपाय आजमाया। पवित्र जल, धूप, पादरी की प्रार्थना, उनकी अपनी प्रार्थनाएँ, शाप और अदृश्य शक्तियों को आदेश: लेकिन गंध बनी रही।

धीरे-धीरे, उन्होंने अपनी मानसिक समस्याओं के साथ जीना सीख लिया। बचपन से ही स्पष्ट माध्यम बनने की शक्ति रखने वाली माँ और घर में रहने वाला युवा वयस्क, उन बेचैन आत्माओं के लिए आसान शिकार होते हैं जो सांसारिक गतिविधियों में अपना जीवन जारी रखना चाहती हैं। इन जीवित लोगों से प्राप्त शारीरिक शक्तियों का उपयोग करके, वे एक ऐसी दुनिया में खेलते और अस्तित्व बनाए रखते हैं जिसका वे अब हिस्सा नहीं हैं।

जैसे-जैसे युवक बूढ़ा होता गया, उसकी उपलब्ध शक्ति कम होती गई और गंध का एहसास भी कम होता गया। लेकिन समरसेट स्थित घर की सीढ़ियों पर बैठा वह पीड़ित व्यक्ति अभी भी किसी अधिक इच्छुक माध्यम के आने का इंतजार करेगा ताकि उसे मुक्ति मिल सके।

*61

बुराई का घर (न्यूयॉर्क)

पार्कर कीगन एक व्यावहारिक व्यक्ति हैं, जो दिवास्वप्न देखने या अटकलबाजी करने में ज्यादा रुचि नहीं रखते। और ऐसा होना स्वाभाविक भी है। क्योंकि पार्कर अपनी आजीविका (यदि आप इसे आजीविका कह सकते हैं) न्यूयॉर्क के उत्तरी हिस्से में स्थित एक वेल्डिंग कंपनी के लिए एसिटिलीन, ऑक्सीजन, नाइट्रोजन और अन्य ज्वलनशील पदार्थों से भरे टैंकों वाले ट्रक को चलाकर कमाते हैं।

तो आप देख सकते हैं, अगर उसे बुढ़ापे तक जीना है तो उसे हर समय अपना ध्यान अपने काम पर ही रखना होगा।

उनकी पत्नी रेबेका ज़्यादा भावुक स्वभाव की हैं। और यह स्वाभाविक भी है। वह एक कलाकार हैं, स्वतंत्र रूप से काम करती हैं और कभी-कभार बिक्री का काम भी करती हैं। उनमें कुछ भारतीय वंश है और उन्हें कभी-कभार अलौकिक अनुभवों का सामना करना पड़ा है। लेकिन ये ज़्यादातर छोटी-मोटी बातें थीं, जैसे टेलीपैथी या स्वप्न संबंधी अनुभव, और ऐसी कोई बात नहीं जिससे उन्हें सच में चिंता हो। न तो उन्हें और न ही उनके पति को कभी यह एहसास था कि भूतिया घर जैसी चीज़ें सचमुच मौजूद होती हैं, सिवाय विक्टोरियन उपन्यासों के।

कीगन परिवार में पहले से ही एक बच्चा था और रेबेका दूसरे बच्चे की उम्मीद कर रही थी, इसलिए उन्होंने एक बड़े घर की तलाश करने का फैसला किया। मानो किस्मत का खेल हो, ठीक उसी समय उन्हें एक मौका मिल गया। रेबेका की किशोर चचेरी बहन जेन ने उसके माता-पिता के घर पर फोन करके उन्हें एक घर के बारे में बताया जिसे वे किराए पर ले सकते थे। बाद में पता चला कि उसने यह सिर्फ अपनी दयालुता के कारण नहीं किया था, बल्कि इसलिए भी किया था क्योंकि वह अपने पति के साथ जिस बड़े घर में रहती थी, उसमें रातें अकेले बिताना उसे अच्छा नहीं लगता था। उसके पति दूसरे शहर में रात भर काम करते थे।

"इस घर के दो हिस्से हैं," जेन ने समझाया, और उसने इसे इस तरह से आकर्षक बना दिया कि पार्कर और रेबेका ने उसी समय गाड़ी चलाकर वहां जाकर इसे देखने का फैसला कर लिया।

हालांकि वे अंधेरा होने के बाद वहाँ पहुँचे, फिर भी उन्होंने तुरंत देखा कि घर आकर्षक था, कम से कम बाहर से तो। गृहयुद्ध से पहले के दिनों में बना यह घर समय की कसौटी पर खरा उतरा था। पुराने घरों में अक्सर ऐसा होता है कि नौकरों के कमरे एक अलग इकाई में होते हैं और घर के मुख्य भाग के समानांतर होते हैं, लेकिन उसमें दखल नहीं देते। जेन और हैरी यहीं, और इसी पूर्व नौकरों के कमरों में ठहरे थे। चूंकि आगंतुकों ने मकान मालिक से अपनी रुचि के बारे में बात नहीं की थी, इसलिए वे अपने चचेरे भाई के अपार्टमेंट से इमारत के अप्रयुक्त हिस्से में दाखिल हुए। यह कभी मुख्य घर हुआ करता था और इसमें आठ कमरे थे, जो उनकी ज़रूरत के हिसाब से बिल्कुल सही थे।

भूतल पर एक बड़ा सामने का कमरा था जिसमें सड़क की ओर दो खिड़कियाँ और दूसरी ओर दो खिड़कियाँ थीं। इसके बगल में एक पुराने ज़माने का भोजन कक्ष था, और इससे जुड़ा हुआ एक संकरा रसोईघर और एक छोटा सा कपड़े धोने का कमरा था। धुंधली रोशनी में उन्हें एक सुंदर, तेल से पॉलिश की हुई रेलिंग वाली एक शानदार सीढ़ी दिखाई दी। यहीं पर घर के दो कमरे जुड़ते थे, और एक कमरे से दूसरे में प्रवेश किया जा सकता था। सामने की सीढ़ी के नीचे एक कोठरी और घर के दूसरी तरफ जाने वाला दरवाजा था, लेकिन उन्हें सामने की सीढ़ियों के ऊपर स्थित शयनकक्ष से भोजन कक्ष तक जाने वाली एक और बंद सीढ़ी मिली। इस बंद सीढ़ी के ठीक नीचे तहखाने में जाने वाली सीढ़ियाँ थीं। कुल तीन तहखाने थे, एक नौकरों के क्वार्टर के नीचे, एक सामने के कमरे के नीचे और एक भोजन कक्ष के नीचे।

जैसे ही रेबेका ने भोजन कक्ष के नीचे बने तहखाने में कदम रखा, जो जाहिर तौर पर फलों का गोदाम हुआ करता था, वह एक पल के लिए घबरा गई। उसने तुरंत अपनी घबराहट को एक उचित कारण से दूर कर दिया: उन्होंने पिछली रात थ्रिलर फिल्म "साइको" देखी थी और यह तहखाना उसे उस फिल्म की एक खौफनाक घटना की याद दिला रहा था। लेकिन बाद में उसे पता चला कि जब भी वह तहखाने के इस खास हिस्से में आती थी, तो घबराहट की यह भावना बनी रहती थी, यहां तक कि फिल्म की कहानी भूल जाने के काफी समय बाद भी।

फिलहाल, उन्होंने घर के बाकी हिस्से का निरीक्षण किया। ऊपरी मंजिल पर दो बड़े और दो छोटे शयनकक्ष थे। केवल बड़े कमरों में ही हीटिंग की व्यवस्था थी। एक अटारी भी थी, लेकिन घर में रहने के दौरान किसी ने भी उसकी जाँच नहीं की।

उन्होंने फैसला किया कि घर बिल्कुल वैसा ही है जैसा वे चाहते थे और अगली सुबह उन्होंने मालिक से संपर्क किया।

जॉर्ज जोन्स एक बेहद शालीन और कुछ हद तक कम बोलने वाले व्यक्ति निकले। उन्होंने पूछा कि वे लोग क्या काम करते हैं और फिर आगे कहा, "क्या आप लोग धार्मिक हैं?"

रेबेका को यह सवाल अजीब लगा, लेकिन चूंकि उसने उसे बताया था कि वह एक कलाकार है, इसलिए उसने मान लिया कि वह कलाकारों को कुछ हद तक अविश्वसनीय समझता होगा और यह सुनिश्चित करना चाहता होगा कि उसके किरायेदार ज़िम्मेदार और "ईश्वर से डरने वाले" हों। बहुत बाद में उसे एहसास हुआ कि जोन्स के कुछ और कारण भी हो सकते थे।

दिसंबर 1964 का वह दिन बहुत सर्द और उदास था जब कीगन परिवार अपने नए घर में रहने आया। वे एक खुशनुमा माहौल वाले घर में आकर बहुत खुश थे, क्योंकि रेबेका पुरातत्व की शौकीन थीं और प्राचीन वस्तुओं पर जो भी जानकारी उन्हें मिलती, वे सब पढ़ लेती थीं। साथ ही, वे अपनी चचेरी बहन के लिए एक अच्छा काम भी कर रही थीं, जब उनके पति काम पर बाहर होते थे, तो वे रात भर उनका साथ देती थीं। सब कुछ ठीक लग रहा था और रेबेका को घर बदलने में आने वाली मुश्किलों की भी परवाह नहीं थी। एक तो, वे पेशेवर सामान ढोने वालों का खर्च नहीं उठा सकते थे, इसलिए उन्होंने दोस्तों से मदद मांगी थी। दोस्तों ने एक ट्रक उधार लिया था जिसे शाम तक गैरेज में वापस करना था, इसलिए घर में धक्का-मुक्की और मनमुटाव का माहौल था। इसके अलावा, कड़ाके की ठंड और बर्फबारी ने हालात और भी खराब कर दिए थे, और रेबेका उस समय अपने दूसरे बच्चे के साथ गर्भवती होने के कारण कुछ खास मदद नहीं कर सकती थीं।

उस पहली रात देर से, वे आखिरकार सीढ़ियाँ चढ़कर बड़े शयनकक्ष में पहुँचे। वे दोनों दिनभर के काम से थके हुए थे और बिस्तर पर लेटते ही गहरी नींद में सो गए।

हालांकि वे बहुत थकी हुई थीं, रेबेका ने कुछ अजीब आवाज़ें सुनीं, चटकने की आवाज़ें जो उसके चचेरे भाई के घर की तरफ से आती हुई प्रतीत हो रही थीं। उसने सोचा कि ये भाप के पाइपों की आवाज़ें हैं और दीवार की ओर मुड़ गई।

जब रात-दर-रात वही आवाज़ें फिर से आने लगीं, तो रेबेका को उनके बारे में सोचने लगी। पार्कर भी अब रात की शिफ्ट में काम करता था और वह और जेन टीवी पर देर रात का शो खत्म होने तक, लगभग 1:30 बजे तक, साथ में जागती रहती थीं। उस पूरे समय, रात-दर-रात, उन्हें भाप के पाइपों के लगातार टकराने की आवाज़ सुनाई देती थी। घर में किसी को भी चैन की नींद नहीं आती थी और समय बीतने के साथ-साथ जेन की घबराहट बढ़ती जा रही थी। उसका मिजाज एक तरह की उदासी में बदल जाता था, जिसे रेबेका ने पहले कभी नहीं देखा था, लेकिन उसने इसे सर्दियों के मौसम के कारण मानकर नज़रअंदाज़ कर दिया और इसे कोई खास बात नहीं समझा।

फिर एक रात, जब रेबेका बिस्तर पर लेटी हुई जाग रही थी और हाल के दिनों की कुछ घटनाओं के बारे में सोच रही थी, तभी उसे सीढ़ियों से भारी कदमों की आहट सुनाई दी। ये एक हट्टे-कट्टे आदमी के कदम थे, और चूंकि उसने सामने के दरवाजे के ताले की आवाज नहीं सुनी थी, इसलिए वह जानती थी कि यह उसका पति नहीं हो सकता।

घबराकर और चोरों के ख्याल से वह बिस्तर से उठी और अपनी चचेरी बहन को आवाज़ दी। फिर वह सीढ़ियों के ऊपर गई और जेन भी बगल के दरवाजे से अंदर आकर उसके पास आ गई और सीढ़ियों के नीचे खड़ी हो गई। सीढ़ियों के दोनों छोरों से दोनों महिलाओं ने जो देखा वह बिल्कुल असामान्य था। कोई सीढ़ियों पर चढ़ रहा था और हर कदम पर सीढ़ियाँ झुक रही थीं, मानो कोई भारी व्यक्ति सचमुच उन पर कदम रख रहा हो!

वहाँ कोई नज़र नहीं आ रहा था। उन्होंने अदृश्य व्यक्ति के कदमों की आहट सीढ़ियों के ऊपर तक पहुँचने का इंतज़ार नहीं किया। रेबेका तेज़ी से अपने बेडरूम में घुस गई और दरवाज़ा ज़ोर से बंद कर लिया। ऐसा करने से ठीक पहले, उसे नीचे अपनी छोटी चचेरी बहन के चीखने की आवाज़ सुनाई दी, और वह भी अपने सुरक्षित बेडरूम में वापस भाग गई।

सीढ़ियों पर हुए उस अनुभव ने जेन को पहले से भी ज़्यादा चिड़चिड़ा बना दिया और कुछ ही समय बाद वह अपनी छोटी बच्ची को लेकर अपने पति को छोड़कर चली गई। कोई झगड़ा

नहीं हुआ था, उसके अचानक इस कदम का कोई स्पष्ट कारण भी नहीं था। वह एक सुंदर युवक था जिसने जेन के साथ अच्छा व्यवहार किया था और जेन उससे प्यार करती थी। फिर भी, बात यह थी कि वह अब उस घर में और नहीं रह सकती थी और उसने वही किया जो उसके घबराए हुए मन ने उसे करने को कहा।

अब रेबेका को रातें सीढ़ियों पर उस शोर मचाने वाले भूत के साथ अकेली बितानी पड़ती थीं और वह इसे बिल्कुल भी पसंद नहीं करती थी। घटना के कुछ ही समय बाद, जेन के परित्यक्त पति ने अपना सामान बेच दिया और कहीं और चले गए, जिससे नौकरों का पूर्व क्वार्टर एक बार फिर खाली हो गया।

तभी रेबेका को भारी कदमों की आहट के साथ-साथ घर के खाली हिस्से में किसी के रोने जैसी आवाज़ भी सुनाई देने लगी। जब पूरी तरह जागते हुए भी ये आवाज़ें लगातार आती रहीं, तो उसने खुद को यकीन दिलाया कि ये सिर्फ़ घबराहट नहीं है। उसका प्रसव का समय नज़दीक आ रहा था, और मातृत्व के करीब आने पर अक्सर ऐसा होता है, उसकी चिंता बढ़ती जा रही थी। उसकी हालत तब और बिगड़ गई जब उसने घर में अकेले होने पर डाइनिंग रूम में अलमारियों के ज़ोर से बंद होने की आवाज़ सुनी। उसके सोने के तुरंत बाद कोई अलमारी के दरवाज़े तेज़ी से खोल और बंद कर रहा था। ज़ाहिर है, वह जाँच करने के लिए नीचे नहीं भागी। भला कौन भागता?

सौभाग्य से, पार्कर उस रात थोड़ा जल्दी घर आ गया, क्योंकि जब वह पहुँचा तो उसने रेबेका को लगभग हिस्टीरिया की हालत में पाया। उसके डर को शांत करने के साथ-साथ खुद भी पता लगाने के लिए, वह तुरंत नीचे जाँच करने गया। वहाँ कोई नहीं था और कोई आवाज़ नहीं थी। अलौकिक चीज़ों में विश्वास न करने वाले व्यक्ति के आत्मविश्वास के साथ बिस्तर पर लेटते हुए, वह अपनी पत्नी को यह बताने ही वाला था कि उसने यह सब सपना देखा होगा, तभी उसने भी नीचे अलमारी के दरवाज़े खुलते और बंद होते हुए साफ़ सुना।

वह बिस्तर से कूदकर सीढ़ियों से नीचे भागा। जैसे-जैसे वह दो-दो सीढ़ियाँ चढ़ता गया, उसे भोजन कक्ष में दरवाजों के ज़ोर-ज़ोर से बंद होने की आवाज़ साफ़ सुनाई देने लगी। पार्कर की इस बात के लिए उसकी प्रशंसा की जानी चाहिए कि उसने ज़रा भी डर या चिंता नहीं दिखाई: वह बस यह जानना चाहता था कि आखिर हो क्या रहा है।

जब वह भोजन कक्ष के दरवाजे के सामने खड़ा हुआ, तो उसे लगा कि शोर क्रोध की चरम सीमा पर पहुँच गया है। उसने झटपट दरवाजा खोला और ठंडे, अंधेरे भोजन कक्ष में कदम रखा।

अचानक, वह आवाज़ ऐसे रुक गई मानो किसी ने चाकू से काट दी हो। अपना सिर हिलाते हुए और अपनी मानसिक स्थिति पर, या कम से कम अपनी अवलोकन क्षमता पर संदेह करते हुए, पार्कर एक बार फिर बिस्तर पर लेट गया और सोने की तैयारी करने लगा। रेबेका ने उसे चिंता से देखा, लेकिन उसने कुछ नहीं कहा। इससे पहले कि वह उससे कुछ पूछ पाती, नीचे से फिर से वही भयानक आवाज़ आने लगी।

एक बार फिर, मानो क्रोध से प्रेरित होकर, पार्कर बिस्तर से कूदकर सीढ़ियों से नीचे भागा। जैसे ही उसने भोजन कक्ष का दरवाजा खोला, शोर फिर से बंद हो गया।

वह धीरे-धीरे सीढ़ियों से ऊपर गया और बिस्तर पर लेट गया। अपने कानों पर कंबल ओढ़ते हुए उसने नीचे के भूतों को कोसा, लेकिन फैसला किया कि उसकी बेहद जरूरी नींद पहेली के जवाब से ज्यादा महत्वपूर्ण है।

कुछ समय बाद उनके बेटे का जन्म हुआ। जब वे अस्पताल से लौटे, तो उनका स्वागत विंटर्स नामक एक नए दंपति ने किया, जो इस बीच घर के दूसरे हिस्से में रहने आ गए थे। ऊपर से तो वे दोस्ताना लगते थे, लेकिन असल में वे सख्त और अडिग थे, और कीगन परिवार से उम्र में काफी बड़े होने के कारण दोनों परिवारों का आपस में ज्यादा मेलजोल नहीं होता था। श्रीमती विंटर्स एक सख्त और कुछ हद तक तीक्ष्ण स्वभाव की बूढ़ी महिला थीं और देखने में ऐसी नहीं लगती थीं कि उन्हें कोई चीज डरा सकती हो। उनके पति रात में चौकीदार का काम करते थे और उनके कोई बच्चे नहीं थे। कुछ ही समय बाद, श्रीमती विंटर्स डर के मारे रेबेका के दरवाजे पर दस्तक देने पहुंचीं।

“कोई घर में घुसने की कोशिश कर रहा है,” उसने फुसफुसाते हुए कहा और अंदर आने की गुहार लगाई। रेबेका को बेहतर पता था, लेकिन उसने कुछ नहीं कहा ताकि बूढ़ी औरत और ज्यादा न डर जाए।

ऐसा लग रहा था मानो सर्दी कभी वसंत में तब्दील नहीं होगी, और अगर आप कभी न्यूयॉर्क के उत्तरी हिस्से की ठंडी घाटियों में रहे हैं, तो आप जानते हैं कि ऐसी परिस्थितियों में जीवन कितना निराशाजनक हो सकता है।

माहौल को थोड़ा खुशनुमा बनाने के लिए, कीगन परिवार ने बच्चों के लिए और साथ ही चौकीदार के रूप में इस्तेमाल करने के लिए एक मादा जर्मन शेफर्ड कुत्ता खरीदा।

इतने समय तक रेबेका को पूरा यकीन था कि वह घर में कभी अकेली नहीं थी। कोई दिन-रात उस पर नज़र रख रहा था। उसका पति अब उसकी चिंताओं का मज़ाक नहीं उड़ाता था, लेकिन उन्हें दूर करने के लिए कुछ कर भी नहीं सकता था। दीवारों में अजीबोगरीब आवाज़ें आती-जाती रहती थीं और हालत ऐसी हो गई थी कि रेबेका को अब डर नहीं लगता था, यहाँ तक कि जब वह किसी खाली कमरे के दरवाज़े के हैंडल को अपने आप धीरे-धीरे घूमते हुए देखती थी तब भी। अब तक वह जान चुकी थी कि घर में भूत-प्रेत का साया है, लेकिन अभी तक उसे वहाँ रहने वाले रहस्यमय जीवों के बारे में पूरी जानकारी नहीं थी।

एक दिन उसने बच्चे को सीट बेल्ट से सुरक्षित रूप से बांधकर छोड़ दिया और अपनी छोटी बच्ची को पकड़ने के लिए दौड़ी जो सामने की सीढ़ियाँ चढ़ रही थी और गिरने के कगार पर थी। ठीक उसी क्षण, सीट बेल्ट टूट गई और बच्चा फर्श पर गिर गया, जिससे उसकी खोपड़ी में फ्रैक्चर हो गया।

घर में रहने के दौरान, कोई न कोई हमेशा किसी न किसी दुर्घटना का शिकार होता रहता था या अचानक बीमार पड़ जाता था। जैसे-जैसे उनके चिकित्सा खर्चे बढ़ते गए, उनका कर्ज भी बढ़ता गया, इसलिए यह तय किया गया कि रेबेका को काम पर जाना चाहिए और कुछ पैसे कमाने चाहिए। इसके अलावा, पार्कर ने भी अतिरिक्त शिफ्ट में काम करना शुरू कर दिया। लेकिन इससे स्थिति सुधरने के बजाय, मकान मालिक को और भी गुस्सा आ गया और उसने किराया बढ़ा दिया, इस सोच के साथ कि वे ज़्यादा कमा रहे हैं। उनके लिए मुश्किलें और भी बढ़ गईं क्योंकि रेबेका को काम पर जाने के दौरान बच्चों की देखभाल के लिए कोई उपयुक्त बेबीसिटर नहीं मिल पा रही थी। एक बार घर से परिचित हो जाने के बाद, कोई भी वहाँ ज़्यादा देर तक नहीं रुकता था।

उसने मदद के लिए अपनी माँ से संपर्क किया, और उसकी माँ कुछ समय बाद घर में और समय बिताने से इनकार कर दिया, लेकिन बच्चों को अपने घर ले जाने की पेशकश की। इसका कोई स्पष्टीकरण नहीं दिया गया, लेकिन रेबेका को यह अशुभ और स्पष्ट लगा। अंततः, उसकी किशोर बहन बच्चों की देखभाल करने के लिए तैयार हो गई। वह स्कूल के लिए पैसे का उपयोग कर सकती थी, लेकिन जल्द ही उसका उत्साह कम हो गया। उसने पुराने घर में घुटन महसूस करने की शिकायत करना शुरू कर दिया और निश्चित रूप से उसे भी सभी अजीब आवाजें सुनाई देती थीं। हर दिन, मैरी अधिकाधिक उदास और बीमार होती जा रही थी, जबकि वह पहले एक हंसमुख लड़की थी।

“आस-पास कुछ संदिग्ध घूम रहे हैं,” वह बार-बार कहती रही, और एक दिन वह घोर भयभीत होकर रेबेका के पास दौड़कर आई। एक अमावस्या की रात में, वह संयोगवश बैठक के कमरे की खिड़की से बाहर देख रही थी जब उसे कुछ ऐसा दिखाई दिया जो चेहरे जैसा लग रहा था। रेबेका ने उसे यह कहकर शांत किया कि उसने शायद कोई परछाई देखी थी, लेकिन कुत्ते का लगातार भौंकना, बिना किसी स्पष्ट कारण के, स्थिति को और बिगाड़ रहा था। इसके अलावा, ऐसी घटनाएं भी होने लगीं जिनमें दिन दहाड़े चीजें उनके हाथों से उड़कर दूर जा गिरती थीं। एक दिन जब वे सब सामने वाले कमरे में थे, तब स्थिति हद से ज़्यादा बिगड़ गई। दोपहर का समय था और मैरी के हाथ में एक कप था, वह उसमें चाय भरने ही वाली थी। उसी क्षण वह उसके हाथों से उड़कर पार्कर के पैरों के पास जाकर टूट गया। बिना कुछ कहे, वह लड़की सीढ़ियों से ऊपर अपने कमरे में चली गई। थोड़ी देर बाद, अपना सारा सामान पैक करके, वह अलविदा कहने के लिए नीचे आई।

एक बार फिर वे असहाय हो गए थे, तभी रेबेका की भाभी सुसान ने उनकी मदद की। एक सरल और काफी कल्पनाशील स्वभाव की महिला, सुसान ने सुनी-सुनाई बातों पर बिल्कुल भी विश्वास नहीं किया था और अपनी बात साबित करने के लिए पूरी तरह तैयार थी।

उसके आने के एक दिन के भीतर ही उसने अपना रुख बदल लिया।

“कोई मुझे देख रहा है,” उसने शिकायत की और घर में अकेले रहने से इनकार कर दिया। उसने यह भी शिकायत की कि चीजें मानो अपने आप ही अलमारियों से गिर जाती हैं और अलमारी के दरवाजे ऐसे खुलते-बंद होते हैं जैसे कोई दराजों में कुछ ढूंढ रहा हो।

सीढ़ियों पर कदमों की आहट लगातार सुनाई देती रही और सुसान ने इसे कई बार सुना। वह कुत्ते को अपने साथ घर के अंदर ले गई, लेकिन इसका कोई खास फायदा नहीं हुआ: कुत्ता वहां मौजूद सभी लोगों से कहीं ज्यादा डरा हुआ था।

कीगन परिवार के लिए यह अविश्वसनीय लग रहा था, लेकिन बुराई के घर में आए हुए उन्हें दो साल बीत चुके थे। उनका मानसिक संतुलन बरकरार रहना आश्चर्यजनक था, और उनका वहां से न निकलना तो और भी बड़ा चमत्कार था। लेकिन वे ऐसा कर नहीं सकते थे, और भौतिक दुनिया में ही हालात इतने कठिन थे कि अदृश्य शक्तियों को उनकी समस्याओं को और बढ़ाने की अनुमति देना ठीक नहीं था। इसलिए वे वहीं डटे रहे।

यह 1966 की क्रिसमस से एक रात पहले का समय था, और पूरे घर में एक अशुभ आशंका का माहौल छाया हुआ था। वे थोड़ा आराम करने के लिए टेलीविजन देख रहे थे। रेबेका ने अचानक अपनी नज़र के कोने से किसी की उपस्थिति देखी, कोई व्यक्ति सोफे के पीछे खिड़की के पास खड़ा था जहाँ उसकी भाभी बैठी थी। बिना आवाज़ ऊँची किए या अपनी नज़र उस जगह से हटाए, उसने कहा, "सुसान, राइफल लाओ!" कमरे के कोने में एक राइफल तैयार रखी थी।

तभी सुसान ने खिड़की से झांकते हुए चेहरे पर पैनी नज़र डाली। वह एक आदमी का चेहरा था, शायद भारतीय या नीग्रो, और इतना घिनौना कि उसे देखकर सुसान दंग रह गई। घृणा से घूरता हुआ वह चेहरा कुछ पल वहीं रुका रहा, तभी सुसान ने बंदूक उठा ली। लेकिन जब उसने बंदूक खिड़की की ओर तानी, तो वह चेहरा गायब हो गया।

वे तुरंत बाहर भागे। ज़मीन इतनी जमी हुई थी कि अगर कोई पदचिह्न होते भी तो दिखाई नहीं देते। लेकिन उन्हें न तो कोई दिखाई दिया और न ही किसी के भागने की आवाज़ सुनाई दी।

कुत्ते को ऐसी जगह पर जंजीर से बांधा गया था जहाँ से कोई घुसपैठिया उसे देख सकता था, लेकिन जाहिर तौर पर उसे कुछ भी महसूस नहीं हुआ। वह भौंकी भी नहीं। क्या वह किसी अजीब तरह से सम्मोहित हो गई थी?

क्रिसमस के कुछ ही समय बाद, सुसान को जाना पड़ा और कीगन परिवार के पास बेबीसिटर रखने के लिए पैसे नहीं बचे थे। रेबेका ने अपनी नौकरी छोड़ दी थी, और आर्थिक स्थिति फिर से खराब हो गई थी।

हालात सुधारने के लिए, उन्होंने एक छोटे बच्चे वाले युवा दंपत्ति को अपने साथ रहने और खर्चों में मदद करने के लिए आमंत्रित किया। पति अलौकिक चीज़ों में विश्वास नहीं करता था और पत्नी को जब उनकी "समस्याओं" के बारे में बताया गया, तो उसने खुले विचारों वाली, यहाँ तक कि रुचि भी दिखाई, हालाँकि वह संशय में थी।

जो व्यवस्था शुरू में समझदारी भरी लग रही थी, वह जल्द ही एक आपदा और पहले से ही बोझ से दबे परिवार पर अतिरिक्त बोझ बन गई। फार्मर्स घर के खर्च में कोई योगदान नहीं देने वाले थे, बल्कि अपनी कमाई शराब और घुड़दौड़ पर खर्च करने वाले थे। कीगन्स और फार्मर्स के बीच तनाव लगातार बढ़ता गया। लेकिन आर्थिक समस्याएँ ही एकमात्र कारण नहीं थीं। फार्मर्स ने भी घर में अजीब आवाज़ें और असहनीय, भारी माहौल महसूस किया और स्वाभाविक रूप से इसके लिए कीगन्स को दोषी ठहराया। फिर एक रजाई मिली जिस पर प्राचीन अमेरिकी चील और जहाज का चित्र छपा हुआ था। जल्द ही पत्नी ने देखा कि रात को सुरक्षित रखने के बाद किसी ने रजाई को पलट दिया था। सुबह, चित्र दूसरी दिशा में होता था। वे इसके लिए कीगन्स को दोषी नहीं ठहरा सकते थे, क्योंकि रजाई को सबकी पहुँच से दूर रखा गया था, और उन्हें धीरे-धीरे एहसास हुआ कि घर में भूत-प्रेत का साया है।

जैसे-जैसे तनाव बढ़ता गया, दोनों जोड़े एक-दूसरे से मुश्किल से ही बात करते थे, जबकि वे स्वाभाविक रूप से एक ही कमरे में रहते थे। रेबेका को यह एहसास होने लगा कि कोई व्यक्ति बाहर से कितना भी समलैंगिक क्यों न हो, एक बार जब वह 'बुराई के घर' में प्रवेश कर जाता है, तो उसके व्यक्तित्व और स्वभाव में बदलाव आ जाते हैं। अंधविश्वास से दूर रहते हुए भी, उसे यह विश्वास होने लगा कि वह घर ही खतरनाक है और उसमें लंबे समय तक रहना उसे और उसके प्रियजनों को नष्ट कर सकता है।

अप्रैल की शुरुआत में, एक रात रेबेका और पार्कर ऊपर के बेडरूम में थे, तभी उन्होंने देखा कि एक आकृति उनके टेलीफोन के पास से गुज़री, उनके बिस्तर के ऊपर से होते हुए सीढ़ियों से नीचे उतर गई। जैसे ही वह आकृति टेलीफोन के पास से गुज़री, फोन बज उठा। एक पल बाद, जैसे ही वह आकृति सीढ़ियों के नीचे पहुँची, नीचे का टेलीफोन भी बज उठा।

इससे किसान चीखते-चिल्लाते हुए बाहर आ गए और यह जानने की मांग करने लगे कि आखिर हो क्या रहा है?

पहली बार, घर में एकमतता छाई हुई थी क्योंकि चारों वयस्क लोग गंभीरता से नीचे इकट्ठा हुए थे ताकि वे जो कुछ भी देख चुके थे उस पर चर्चा कर सकें और अपने विचारों की तुलना कर सकें।

वे सब इस बात पर सहमत थे कि उस आकृति के चारों ओर नीली-सफेद रोशनी थी, इतनी तीव्र रोशनी कि आँखों में चुभ रही थी। जब वह आकृति उनके पास से गुजरी तो उन सबको एक बर्फीली ठंडक महसूस हुई। केवल पार्कर ने ही साहसपूर्वक कहा कि शायद वह बिजली थी। लेकिन किसी ने भी गरजने की आवाज नहीं सुनी थी।

किसानों के लिए, यह वह भूत था जिसने उनके धैर्य की सारी हदें पार कर दीं। वे तुरंत वहां से चले गए।

एक बार फिर अकेले रह जाने पर, रेबेका और उसके पति ने फैसला किया कि अब उनके लिए भी कहीं और तलाश करने का समय आ गया है।

रहस्यमय परिस्थितियों से लंबे संघर्ष से थककर, वे कुछ समय बाद ही वहां से चले गए।

नए घर में बसते ही उनकी जिंदगी में एक नया मोड़ आ गया: जहाँ पहले बुरी आशंकाओं ने उनके मन को उदास कर रखा था, वहीं अब चार साल बाद एक नई उमंग और जीवन के प्रति उत्साह का माहौल था। तब से परिवार में कोई बीमार नहीं पड़ा है और उन्हें बेबीसिटर ढूंढने और रखने में भी कोई परेशानी नहीं होती।

सुनसान रूट 14 पर 'हाउस ऑफ इविल' आज भी खड़ा है, और उसमें अब लोग रहते हैं। लेकिन जब भी पार्कर को अपनी कार से रूट 14 से गुजरने का मौका मिलता है, वह एक्सीलरेटर पर पैर रखता है और थोड़ी और तेज़ी से गाड़ी चलाता है। जोखिम लेने का कोई मतलब नहीं!

*62

गलियारे में प्रेत (लॉन्ग आइलैंड)

पोर्ट वाशिंगटन लॉन्ग आइलैंड पर बसा एक छोटा सा व्यस्त शहर है, जो न्यूयॉर्क शहर से लगभग पैंतालीस मिनट की दूरी पर है। यहाँ रहने वाले बहुत से लोग रोज़ाना डाउनटाउन या मिडटाउन में अपनी नौकरी के लिए आते-जाते हैं, और इस शहर का माहौल लॉन्ग आइलैंड

के अन्य दूरदराज के इलाकों की तुलना में शायद उतना देहाती नहीं है। फिर भी, यहाँ कुछ शांत सड़कें और गलियाँ हैं जो किसी भी छोटे शहर की तरह मुख्य सड़कों की भागदौड़ से दूर, एकदम शांत और एकांत हैं। ऐसी ही एक गली है कार्लटन, और तट से कुछ ही दूरी पर स्थित इस ब्लॉक के लगभग बीच में बना एक घर बिल्कुल देहाती घर जैसा है। यह लगभग पचास साल पुराना दो मंजिला लकड़ी का ढांचा है, जिसे अच्छी तरह से संरक्षित किया गया है और समय-समय पर इसकी सजावट भी की गई है। यह घर सड़क से थोड़ा हटकर एक भूखंड पर बना है, और कुल मिलाकर, अगर कोई इसे ढूंढ न रहा हो तो आसानी से इसे नज़रअंदाज़ कर सकता है। कार्लटन स्थित इस घर में कुछ भी असाधारण नहीं है, और आज भी पड़ोसी इसे केवल एक अच्छे, पुराने घर के रूप में ही देखते हैं, जो आमतौर पर अच्छे, सम्मानित लोगों के स्वामित्व में होता है, जिनका जीवन उनसे अलग नहीं होता है और जिनकी समस्याएं कभी भी ऐसी नहीं होती हैं जो सुर्खियों में आती हों।

लेकिन सुंदर, पुराने पेड़ों के पीछे स्थित यह घर हमेशा से इतना आकर्षक नहीं था। जब श्रीमान और श्रीमती एफ. ने इसे पहली बार देखा, तो यह अपनी पूर्व भव्यता का एक जर्जर ढांचा मात्र था, फिर भी इसमें एक विशेष गरिमा थी जिसने उनके मन में इस उम्मीद को जन्म दिया कि यदि कोई इस स्थान की देखभाल और उस पर पर्याप्त धन खर्च करे तो इसका जीर्णोद्धार संभव है। श्रीमान एफ. धनी नहीं थे, लेकिन उनका व्यवसाय अच्छा चल रहा था और वे एक अच्छे आकार का घर खरीद सकते थे।

श्रीमती एफ. के पिता कार्लटन स्थित उस घर के निर्माण में शामिल थे, हालांकि जब उन्होंने पहली बार उसे देखा तो उन्हें इस बात का एहसास नहीं हुआ। वे इसी कस्बे में निर्माण व्यवसाय में थे और श्रीमती एफ. यहीं पली-बढ़ी थीं। अब जब उनकी दोनों बेटियाँ स्कूल जाने की उम्र की हो गई थीं और उन्हें भविष्य के बारे में सोचना था, तो उनके लिए उस कस्बे में बसना स्वाभाविक ही लगा जिससे वे परिचित थीं। घर बिक्री के लिए था और जब वे उसमें घूमे तो उन्हें एहसास हुआ कि कुछ समय से उसकी देखभाल नहीं हुई थी। रियल एस्टेट एजेंट ने पिछले मालिकों के बारे में अस्पष्ट जानकारी दी और केवल इतना कहा कि इसे तिरपन साल पहले सम्मानित लोगों ने बनवाया था और वे इसे बहुत ही उचित कीमत पर खरीद सकते हैं। रियल एस्टेट एजेंट इतिहासकार नहीं होते, उन्हें वर्तमान की भी चिंता नहीं होती, उन्हें केवल

भविष्य की चिंता होती है: कल की बिक्री और कमीशन। अगर एफ. परिवार उस पुराने घर को नहीं खरीदना चाहता, तो देर-सवेर कोई और खरीद लेगा, या शायद उस घर को गिराकर यहाँ एक नया घर बनाया जा सकता है। ज़मीन की कीमत लगभग घर से भी ज़्यादा थी। उपनगरीय क्षेत्र लगातार फैलता जा रहा था और पोर्ट वाशिंगटन एक बहुत ही सुविधाजनक स्थान था।

लेकिन एफ परिवार ने 1961 में वह घर खरीद लिया और भले ही वह जर्जर हालत में था, फिर भी वे तुरंत उसमें रहने लगे और उसकी मरम्मत और सजावट का काम करते रहे। दो मंजिलों पर कुल बारह कमरे थे। दो लैंडिंग वाली एक चौड़ी सीढ़ी दूसरी मंजिल तक जाती थी। दूसरी लैंडिंग सीधे एक गलियारे में खुलती थी। बाईं ओर मुख्य शयनकक्ष था, और दाईं ओर दूसरा शयनकक्ष था जो उन्होंने अपनी तेरह और आठ साल की दो बेटियों को दे दिया था। शुरुआती कुछ दिन वाकई व्यस्तता भरे थे, क्योंकि परिवार अपरिचित परिवेश में बसने की कोशिश कर रहा था। श्री एफ शहर में काम करते थे, और बेटियाँ सुबह स्कूल जाती थीं, इसलिए श्रीमती एफ दिन का अधिकांश समय घर में अकेली रहती थीं। विशेष रूप से मुख्य शयनकक्ष उन्हें बिल्कुल पसंद नहीं था, वह अंधेरा और डरावना था, और उन्हें बेहद उदास कर देता था।

उन्होंने बेडरूम पर तुरंत काम शुरू करने का फैसला किया और उसे सफेद रंग से रंगवा दिया। इससे सुबह देर तक सोने में थोड़ी परेशानी होती थी, क्योंकि कमरे में सुबह की धूप आती थी और सफेद दीवारों से कमरा और भी रोशन हो जाता था। लेकिन रंग बदलने से कमरे में जो खुशनुमा माहौल बन गया, उसके आगे यह कभी-कभार होने वाली असुविधा कहीं कम पड़ गई। श्रीमती एफ. घर को लेकर आशावादी थीं और उन्हें पूरा यकीन था कि यह उनके लिए एक शानदार घर बनेगा।

उनके आने के कुछ ही दिनों बाद एक दिन, वह बेडरूम में पर्दे लगा रही थी। अचानक उसे पीछे से किसी की घृणा भरी निगाह महसूस हुई और उसने मुड़कर देखा कि कमरे में कौन आया है। वहाँ कोई नहीं था। फिर भी, उसे यकीन था कि कमरे में उसके बगल में कोई और भी है, एक ऐसा व्यक्ति जिसकी नफरत वह सचमुच महसूस कर सकती थी!

तुरंत ही, श्रीमती एफ. ने पर्दे गिरा दिए और घर से निकल गईं। कुछ घंटों के लिए वे शहर में खरीदारी करने गईं। घर लौटने का समय आते ही उन्होंने पूरी घटना को कल्पना बताकर टाल दिया। उन्हें तंत्र-मंत्र में कोई दिलचस्पी नहीं थी, हालांकि वर्षों से उनमें असाधारण आध्यात्मिक

शक्तियाँ दिखाई देती रही थीं। जब भी उनके किसी करीबी या यहाँ तक कि किसी परिचित के साथ कोई दुखद घटना घटती, तो उन्हें पहले से ही पता चल जाता था। अक्सर वे पहले ही अनुमान लगा लेती थीं कि कोई उनसे क्या कहने वाला है, लेकिन उन्होंने अपनी इस अनोखी प्रतिभा को छिपाना सीख लिया था, कहीं ऐसा न हो कि समुदाय के लोग उन्हें सनकी समझ लें। बल्कि, उन्हें "अलग" होना बिल्कुल पसंद नहीं था, और न ही वे अपने पति को उन विचारों के कारण परेशान करना चाहती थीं जो उनके मालिकों या उनके सामाजिक परिवेश को रास नहीं आते थे।

इस घटना के कुछ ही समय बाद, वह बिस्तर पर सो रही थी जब लगातार बजते टेलीफोन की घंटी से उसकी नींद खुली। टेलीफोन नीचे था, इसलिए वह उठी और फोन उठाने के लिए सीढ़ियों से नीचे जाने लगी। भला उस समय उन्हें कौन फोन करेगा? उनका नंबर तो अनलिस्टेड था।

सीढ़ियों तक पहुँचते-पहुँचते वह पूरी तरह जाग चुकी थी। फ़ोन अभी भी बज रहा था और उसका ध्यान अपनी ओर खींच रहा था। जैसे ही उसने एक पैर सबसे ऊपर वाली सीढ़ी पर रखा, उसे लगा जैसे किसी अदृश्य हाथ ने उसे धक्का दिया हो और वह पहली मंज़िल पर गिर पड़ी। गिरते ही फ़ोन की घंटी बजना बंद हो गई। इस "दुर्घटना" के परिणामस्वरूप, वह कई महीनों तक अपाहिज रही। उसके पति ने गिरने का कारण उसकी नींद को बताया, लेकिन वह बेहतर जानती थी। उसे पीठ पर ज़ोर का धक्का लगा था: वह सीढ़ियों पर फिसली नहीं थी। उन्होंने धैर्यपूर्वक उन सभी लोगों की सूची देखी जिनके फ़ोन नंबर लिस्ट में नहीं थे। किसी ने भी कॉल नहीं किया था।

* * *

इस क्षण से घर के प्रति उसका आशावादी दृष्टिकोण बदल गया। वह उस समय के लिए तरसने लगी जब वह घर से बाहर निकल सकेगी, जब चाहे घर से भाग सके। लेकिन उसके पैरों में अभी भी चोट के निशान थे और समय बहुत धीरे-धीरे बीत रहा था।

फिर एक शाम, जब उसका पति घर से बाहर गया हुआ था, वह नीचे वाले कमरे में चुपचाप बैठकर किताब पढ़ रही थी। अचानक, किसी अज्ञात कारण से, उसे लगा कि कोई उसे देख

रहा है। उसने किताब से नज़रें उठाईं, मुड़ी और सीढ़ियों की तरफ देखा। ठीक उसी जगह पर जहाँ वह गिरी थी, एक आदमी खड़ा था। उसका चेहरा छाया में था, लेकिन वह लंबा था और उसने काले कपड़े पहने हुए थे। वह कुछ पल तक हैरानी से उस आकृति को देखती रही। जब उसे पूरी तरह से होश आया, तो वह आकृति गायब हो गई, मानो वह सिर्फ उसे अपनी उपस्थिति का एहसास कराना चाहती हो।

इतनी भयभीत कि श्रीमती एफ. कुर्सी से हिल भी नहीं पाईं और अपने पति के लौटने तक वहीं बैठी रहीं। उन्हें पता था कि सीढ़ियों पर खड़ा आदमी उन्हें अपने पास बुलाना चाहता है, लेकिन वह ऐसा करने की हिम्मत नहीं जुटा पा रही थीं। न ही वह अपने पति को बता पा रही थीं कि क्या हुआ था।

बहुत समय बाद, जब उसने उससे अपने मन की बात कही, तो उसे पता चला कि वह उसे पागल नहीं समझता था, और उसकी सहानुभूति ने उनके बीच के गहरे स्नेह को और भी बढ़ा दिया।

बड़ी घटनाओं के साथ-साथ लगातार अजीबोगरीब आवाज़ें भी आ रही थीं, जैसे सीढ़ियों पर या मुख्य शयनकक्ष में चरमराहट की आवाज़ें। इनमें से ज़्यादातर आवाज़ें उसने नीचे लिविंग रूम में सुनी थीं, जो मुख्य शयनकक्ष के ठीक नीचे स्थित है। उसने मन ही मन सोचा कि पुराने घरों में ऐसी आवाज़ें आती ही हैं, शायद घर बस बैठ रहा है। लेकिन पक्का करने के लिए उसने दीमक विशेषज्ञों को बुलाने का फैसला किया। वे आए और घर के उस हिस्से में तहखाने की कुछ दीवारों से पैनलिंग हटाकर उस जगह की अच्छी तरह से जांच की। उसकी मौजूदगी में, उन्होंने बीम और घर की नींव का निरीक्षण किया। उन्हें कुछ नहीं मिला। विशेषज्ञों ने समझाया कि घर न तो बैठ रहा था और न ही खिसक रहा था, इस तरह श्रीमती एफ. द्वारा अजीब आवाज़ों के लिए दिए गए उनके सरल स्पष्टीकरण को खारिज कर दिया गया। अब जब उसे पता चल गया था कि इन गड़बड़ियों का कोई प्राकृतिक कारण नहीं है, तो वह क्या करती? उसे पछतावा हुआ कि उसने दीमक विशेषज्ञों को क्यों बुलाया।

अब तक न तो उनके पति और न ही उनके बच्चों ने कुछ अजीब महसूस किया था, या अगर किया भी था तो उन्होंने उनसे कुछ नहीं कहा था। श्रीमती एफ. को अपने बच्चों के साथ ऐसी बातों पर चर्चा करने का ख्याल ही डरावना लगता था। एक रात खाना खाने के बाद वह बैठक

में कुछ काम में व्यस्त थीं। उनके पति बाहर गए हुए थे और दोनों बेटियां संभवतः ऊपर अपने कमरे में थीं। अचानक मुख्य शयनकक्ष में ऊपर से ज़ोरदार धमाकों और खटखटाहट की आवाज़ आई।

“लड़कियाँ बिस्तर से उठ गई हैं,” उसने सोचा और उन्हें तुरंत बिस्तर पर वापस जाने के लिए ऊपर से आवाज़ दी। कोई जवाब नहीं आया। जब वह ऊपर देखने गई, तो उसने पाया कि दोनों लड़कियाँ अपने कमरे में गहरी नींद में सो रही थीं। वह बैठक में अपने काम करने के लिए वापस चली गई। तभी, ऊपर से फिर से आवाज़ें आने लगीं। उसे डर था कि वह ऊपर उसका इंतज़ार कर रहा है, फिर भी श्रीमती एफ. ऊपर गईं। उस गलियारे में सात दरवाजे खुलते हैं, फिर भी वह तुरंत समझ गईं कि वह किस दरवाजे के पीछे छिपा है: उनके शयनकक्ष का दरवाजा। वह मुड़ीं और सीढ़ियों की रेलिंग को मजबूती से पकड़ लिया। इस बार वह उन्हें फिर से नीचे नहीं धकेल पाएगा। धीरे-धीरे वह सीढ़ियों से नीचे उतरीं। उन्हें अपने दिल में पता था कि वह प्रेत उनका पीछा नहीं करेगा। उसका इलाका घर का ऊपरी हिस्सा था। उन्हें जल्द ही एहसास हुआ कि उस रहस्यमय मेहमान की चलने-फिरने की कुछ सीमाएँ थीं और इससे उन्हें एक अनपेक्षित शक्ति मिली: वह जानती थीं कि वह उनका पीछा बाहर या बैठक में भी नहीं कर सकता; वहाँ वह उससे सुरक्षित थीं। अक्सर, जब वह आंगन में होती, तो उसे महसूस होता कि वह उसे छुपकर देख रहा है, घूर रहा है, हमेशा धीमी जलती आँखों से देखता रहता है। जब वह बाज़ार जाती और दरवाज़ा बंद करती, तो खाली घर के अंदर से नफरत की एक लहर उसे घेर लेती। उसे अकेले रहना पसंद नहीं था। क्या उस प्रेत जैसी शक्ति को उससे लगाव हो गया था?

श्रीमती एफ. अपनी बातचीत में मानसिक भावनाओं के विषय से जानबूझकर बचती थीं, लेकिन जब उन्होंने गलती से अपनी समस्या का जिक्र अपनी मां से किया, तो उन्हें यह देखकर आश्चर्य हुआ कि उनकी मां ने उनकी बात को प्रश्नवाचक दृष्टि से नहीं बल्कि समझदारी से स्वीकार किया।

"मुझे भी हमेशा से ऐसा लगता रहा है कि घर में कोई है," उसकी मां ने स्वीकार किया, "लेकिन मुझे लगता है कि यह दोस्ताना है।"

श्रीमती एफ. ने सिर हिलाया। उन्हें बेहतर पता था। उनकी माँ ने सुझाव दिया कि "बुरी शक्तियों" को दूर रखने के लिए प्रवेश द्वार पर यीशु का चित्र लगाया जाए। श्रीमती एफ. धार्मिक नहीं थीं, लेकिन उस परिस्थिति में वे कुछ भी करने को तैयार थीं। इसलिए प्रवेश द्वार पर सीढ़ियों के पास यीशु का चित्र लगा दिया गया। इससे फर्क पड़ा, क्योंकि उस दिन से काले वस्त्र पहने उस व्यक्ति की उपस्थिति उस स्थान से गायब हो गई। हालांकि, शयनकक्ष में उसकी उपस्थिति पहले की तरह ही प्रबल थी।

एक रात, श्रीमती एफ. के अंतरंग संबंध में एक प्रेतवाधित उपस्थिति ने अचानक खलल डाल दिया, और इस सदमे से उबरने में उन्हें कई साल लग गए। वे कभी भी इस बात को लेकर आश्वस्त नहीं हो पाते थे कि वे सचमुच "अकेले" हैं, और यहां तक कि अगर वे दूसरे कमरे में भी चले जाते, तो श्रीमती एफ. को डर रहता था कि ईर्ष्यालु प्रेत उनका पीछा करते हुए वहां भी आ जाएगा।

दिन के दौरान, उसे लगातार बेडरूम में जाने की तीव्र इच्छा होती थी, लेकिन जब वह घर में अकेली होती थी तो कभी नहीं जाती थी। वह कमरा "उसका" क्षेत्र था और उसका अपना क्षेत्र घर के निचले हिस्से में था।

एक शाम, जब उसके पति नहा रहे थे, तो उसे हिम्मत मिली और वह अकेले ही बेडरूम में चली गई। उसके मन में ख्याल आया, "अरे, वो तो यहाँ हैं ही नहीं!" अभी उसका यह ख्याल खत्म ही हुआ था कि उसे अपने कान में एक आवाज़ सुनाई दी: "मैं यहाँ हूँ!" और मानो अपनी मौजूदगी का एहसास दिलाने के लिए, एक टाई अपने हुक से उठी और उसके कंधे पर आ गिरी!

श्रीमती एफ. ने ऐसा व्यवहार करने की कोशिश की मानो यह उनके जीवन का हर दिन होता हो। मानो खुद से बात कर रही हों, उन्होंने ज़ोर से कहा, "ओह, बेवकूफ टाई, ऐसे गिर रही है!" लेकिन वह जानती थीं कि वह उन्हें बेवकूफ नहीं बना रही हैं, वह जानते थे कि उन्होंने अपने इस प्रदर्शन से उन्हें बुरी तरह डरा दिया है।

उसी शाम, उसने और उसके पति ने घर के बारे में शांत भाव से चर्चा की। दोनों को वह घर बहुत पसंद था और उन्होंने उसे संवारने में काफी पैसा और समय लगाया था। चार साल बाद

वहाँ से जाना बहुत असुविधाजनक था। लेकिन वे क्या करते? क्या हमेशा के लिए एक भूत के साथ उस घर में रहना पड़ता?

उसे पता चला कि उसके पति को भी लंबे समय से घर में अजीब सा महसूस हो रहा था और वह इसे बेचने के बारे में सोच रहा था। हालाँकि उसे यह समझ नहीं आ रहा था कि कोई भूत उन्हें कैसे नुकसान पहुँचा सकता है—क्योंकि उसे ऐसा करने के कई मौके मिले थे और उसने सीढ़ियों पर हुई उस "दुर्घटना" के अलावा कभी ऐसा नहीं किया था—फिर भी वह अपने परिवार को किसी भी तरह के आतंक का शिकार नहीं बनाना चाहता था।

उन्होंने न्यूयॉर्क टाइम्स में एक विज्ञापन दिया और पहली बार अपना टेलीफोन नंबर उसमें दर्ज कराया। श्रीमती एफ. ने सोचा, कम से कम अब अगर फोन बजेगा तो घर के बारे में कोई पूछताछ करने वाला होगा, न कि कोई भूत जो उन्हें गहरी नींद से जगाने की कोशिश कर रहा हो।

लेकिन घर हमेशा रातों-रात नहीं बिकते, खासकर पुराने घर। वे बेचना तो चाहते थे, लेकिन नुकसान नहीं उठाना चाहते थे। फिर भी, आखिरकार घर बदलने का फैसला लेने से श्रीमती एफ के लिए चीजें आसान हो गईं। उन्हें अपने बिन बुलाए मेहमान के बारे में थोड़ी जिज्ञासा भी हुई और उन्होंने पड़ोसियों, खासकर इलाके को अच्छी तरह जानने वाले कुछ बुजुर्गों से पूछताछ की। हालांकि, कोई भी इस मामले पर कोई रोशनी नहीं डाल सका। बेशक, श्रीमती एफ ने घर में अपने अनुभवों के बारे में खुलकर नहीं बताया, लेकिन उन्होंने यह जरूर पूछा कि क्या कभी घर में कोई असामान्य घटना घटी थी या घर का इतिहास क्या था। फिर भी, नतीजा उत्साहजनक नहीं था और उन्हें एहसास हुआ कि वे घर को बिना यह जाने ही छोड़ देंगे कि आखिर किसकी वजह से उन्हें ऐसा करना पड़ा!

फिर श्रीमती एफ. को पता चला कि वह वास्तव में एक जन्मजात माध्यम थीं। वह बस अपनी कुर्सी पर आराम से बैठ जातीं और धीरे-धीरे उनकी इंद्रियां धुंधली होने लगतीं और कोई दूसरा व्यक्ति उनसे सीधे बात करने लगता। ऐसा लगता था मानो वह व्यक्ति उनके बहुत करीब हो और वह संदेश को उसी तरह समझ सकती थीं जैसे एक टेलीग्राफ ऑपरेटर शब्द-दर-शब्द लिखता है, और वह जितनी अधिक शांत होतीं और जितना कम डर दिखातीं, शब्द उतने ही स्पष्ट उनके लिए होते जाते।

पहले तो उसने इसका विरोध किया, लेकिन जब उसे एहसास हुआ कि इससे केवल और अधिक असुविधा होगी, तो वह शांत हो गई। फिर, उसे यह भी पता था कि वह प्रेत उसे नुकसान नहीं पहुंचाएगा—जब से उसने उसे सीढ़ियों से नीचे धक्का दिया था, तब से उनका रिश्ता किसी तरह बदल गया था। उसे उससे कोई डर नहीं था, केवल दया थी, और उसने महसूस किया कि उसे मदद की सख्त जरूरत है और वह उसकी मदद करने के लिए तैयार थी।

घर के खरीदार का इंतज़ार करते समय, वह अक्सर अर्धचेतना की अवस्था में चली जाती और अपने उत्पीड़क से बात करती, जो अब एक तरह से उसका दोस्त बन चुका था। धीरे-धीरे उसने उसकी कहानी को समझा और यह जानने लगी कि वह उसका ध्यान आकर्षित करने के लिए ऐसा क्यों कर रहा था। जैसे-जैसे वह भूत की बातें सुनती गई, उसका गुस्सा धीरे-धीरे सुने जाने और समझे जाने की उत्सुकता में बदल गया।

लगभग सत्रह साल का एक दुबला-पतला युवक, जिसके बाल हल्के रंग के थे, गाल की हड्डियाँ उभरी हुई थीं और आँखें धँसी हुई थीं। इतनी कम उम्र में ही वह कनाडाई नौसेना के सदस्य के रूप में समुद्र में लापता हो गया था। वह फ्रांसीसी-कनाडाई था और किसी को संदेश पहुँचाने के लिए वह महिला से गुहार लगा रहा था, लेकिन महिला न तो संदेश को स्पष्ट रूप से समझ पाई और न ही उस व्यक्ति का नाम। शायद इस प्रयास में भावनाओं का उमड़ना ही उसकी विफलता का कारण बना। लेकिन उसे उसके जहाज का नाम ज़रूर पता चल गया, जो उसे टैकोमा जैसा लगा। जब भी श्रीमती एफ. अपनी समाधि अवस्था से जागतीं, वह शब्द उनके मन में दृढ़ता से बसा रहता। अंततः उन्होंने संयुक्त राज्य नौसेना विभाग को पत्र लिखा। दुर्भाग्य से, उस नाम के चार जहाज थे! लेकिन उनकी अंतरात्मा ने उन्हें कनाडाई नौसेना से भी संपर्क करने के लिए कहा। वह लड़का द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान ड्यूटी पर रहते हुए लापता हो गया था, और हालाँकि उनके पास उसका नाम नहीं था, शायद जहाज का नाम पता लगाया जा सके। नहीं, कनाडाई नौसेना के पास टैकोमा नाम का कोई जहाज नहीं था, लेकिन उनके पास ट्रांसकोना नाम का एक माइन स्वीपर ज़रूर था, और उन्हें तुरंत लगा कि यही सही जहाज है। यह 1942 से 1945 तक युद्ध सेवा में रहा था।

जैसे-जैसे उसकी पूछताछ आगे बढ़ी, उसने घर के माहौल में बदलाव महसूस किया। अब वहाँ निराशा का माहौल नहीं था, लेकिन उसकी मौजूदगी अभी भी बनी हुई थी। उस महीने में दो बार बच्चों ने उसे देखा। तेरह साल की लड़की जानना चाहती थी कि "वह बड़ा लड़का कौन था जो पूरी रात दालान में इधर-उधर घूमता रहता था" और श्रीमती एफ. ने उसे बताया कि उसने यह सब सपना देखा था, क्योंकि उस रात दालान में कोई नहीं था।

इस स्पष्टीकरण पर सवाल उठाने में असमर्थ या अनिच्छुक होने के कारण, लड़की ने इसके बारे में और नहीं सोचा। हालाँकि, छोटी लड़की ने कुछ दिनों बाद एक और घटना बताई। उसे अपनी बड़ी बहन के अनुभव के बारे में कुछ भी पता नहीं था। जब वह नहा रही थी, एक युवक ने दरवाजा खोला और फिर मुड़कर उसकी बहन के कमरे में चला गया! श्रीमती एफ. को इसे समझाना मुश्किल हो रहा था, लेकिन अंततः वह छोटी लड़की को शांत करने में कामयाब रहीं।

* * *

लेकिन श्रीमती एफ. की इच्छा के बावजूद कि वह उनसे समाधि की अवस्था में बात कर सकें, वह युवक न तो अपना नाम बता सका और न ही उस व्यक्ति का नाम जिससे वह संपर्क करने की कोशिश कर रहा था। अचानक हुई मृत्यु से उसके मन में अभी भी गहरा आघात था और वह इस स्थिति से निपटने का तरीका नहीं जानता था।

उसी साल अक्टूबर में, छह महीने के इंतज़ार के बाद, उन्होंने घर बेच दिया। नया मालिक एक सेवानिवृत्त पुलिस अधिकारी था जिसे भूतों में ज़रा भी विश्वास नहीं था। वह और उसकी पत्नी दोनों ही कट्टर कैथोलिक थे और उस दुर्भाग्यपूर्ण आत्मा को मुक्ति दिलाने के लिए घर में होने वाली गड़बड़ियों की जाँच करने के किसी भी सुझाव को उन्होंने ठुकरा दिया। एफ. परिवार वहाँ से चला गया था लेकिन शहर में ही रहा, इसलिए उन्हें घर के बारे में होने वाली कुछ स्थानीय गपशपें सुनने को मिल जाती थीं।

अगर पुलिस अधिकारी को उस भूतिया नाविक से कोई परेशानी थी, तो उसने निश्चित रूप से किसी से इस बारे में बात नहीं की। लेकिन लोगों में यह बात फैली हुई थी कि नए मालिक अपने नए घर से निराश थे: यह उनके लिए उतना सुखद स्थान नहीं था जितना उन्होंने खरीदते

समय सोचा था। कई छोटी-छोटी चीजें बिना किसी स्पष्ट कारण के गड़बड़ हो रही थीं। उदाहरण के लिए, बेडरूम का दरवाजा कितनी भी बार खोला जाए, वह अपने आप बंद हो जाता था।

श्रीमती एफ. ने व्यंग्यात्मक मुस्कान दी, क्योंकि उन्हें याद था कि उस रहस्यमय नाविक को वह दरवाजा खुला रखना हमेशा अच्छा लगता था। उन्होंने भी निजता के लिए दरवाजा बंद कर दिया था, लेकिन हर बार किसी अनदेखे हाथ ने उसे खोल दिया था। अंततः, उन्हें समझ आया कि यह उसकी ओर से कोई जिज्ञासा या बुरे विचार नहीं थे, बल्कि केवल अकेलापन था, दुनिया से अलग-थलग न रहने की इच्छा थी, और उन्होंने दरवाजा खुला ही छोड़ दिया, जैसा वह चाहता था।

लेफ्टिनेंट को उस लड़के को समझने में कितना समय लगेगा? वह सोचती और आश्चर्य करती रही कि क्या अब वह अपनी मर्ज़ी से घर छोड़ सकता है, क्योंकि उसने उसे अपनी कहानी का कम से कम कुछ हिस्सा तो बता ही दिया था। कुछ समय बाद, एफ परिवार फ्लोरिडा चला गया। वे सोचने लगे कि क्या उन घटनाओं की शक्ति उनकी छोटी बेटियों से आई थी, जो उस समय भूत-प्रेत की उम्र की थीं। अगर ऐसा है, तो पुलिस लेफ्टिनेंट को भी यही समस्या होगी: उनके अपने छह बच्चे हैं।

*63

द बेबेरी परफ्यूम घोस्ट (फिलाडेल्फिया)

अगर उत्तरी फिलाडेल्फिया के किसी बैंकर से भी ज्यादा गंभीर कोई और हो तो मुझे पता नहीं। लेकिन बैंकर भी इंसान होते हैं और कभी-कभी उनमें भी कुछ अजीबोगरीब बातें झलकती हैं। विलियम डेवी के मामले में, इस तरह के विषय पर विचार करने का शायद ही कभी कोई मौका आया था, सिवाय एक पुरानी घटना के जब वह आठ साल के थे। उस समय वह अपने माता-पिता के साथ मैनचेस्टर, इंग्लैंड में रहते थे। एक सुबह, छोटे विलियम ने ज़िद की कि उसने घड़ी के सामने से एक आदमी की सफेद परछाई को गुजरते देखा। संयोग से, घड़ी में सुबह के 8:30 बज रहे थे। घड़ी की आवाज़ सुनकर उसकी माँ को याद आया और

उसने जल्दी से लड़के को स्कूल भेज दिया और उसे सफेद परछाइयों के बारे में अपनी ये बेवकूफी बंद करने को कहा।

जब लड़का घर लौटा, तब तक घर में यह खबर पहुँच चुकी थी कि उसके प्रिय दादाजी, जो इंग्लैंड के दूसरे छोर पर डेवोन में रहते थे, का निधन हो गया है। उनका निधन सुबह 8:30 बजे हुआ था। बाद में, श्री डेवी फिलाडेल्फिया चले गए, जहाँ वे एक स्थानीय बैंक में अधिकारी हैं, समुदाय में बहुत सम्मानित हैं और मानसिक मामलों में उनकी ज़रा भी रुचि नहीं है। उनके वृद्ध पिता, विलियम सीनियर, 1955 में खरीदे गए उनके और उनके परिवार के साथ रहने आ गए। यह घर विक्टोरियन वास्तुकला का एक शानदार उदाहरण है, जो तीन स्तरों पर एक भूखंड पर बना है, जो ऊँचे पेड़ों से घिरा हुआ है और अब उत्तरी फिलाडेल्फिया का हिस्सा है, लेकिन जिस समय यह घर बनाया गया था, उस समय यह एक अलग समुदाय था और मूल रूप से केवल कृषि भूमि थी।

भूतल पर एक तरफ एक बड़ा रसोईघर है, दूसरी तरफ एक बड़ा बैठक कक्ष है जिसमें चिमनी लगी है, और भोजन कक्ष से यह दोहरे स्लाइडिंग दरवाजे से अलग है। ऊपर की दो मंजिलों पर शयनकक्ष हैं, जबकि तीसरी मंजिल कभी नौकरों के रहने का स्थान हुआ करती थी, जैसा कि विक्टोरियन घरों में आम था। डेवी परिवार ने नीचे की मंजिल में कुछ बदलाव किए, लेकिन स्थानीय वकील ह्यूस्टन के अनुसार, जो ऐसे मामलों के विशेषज्ञ हैं, घर मूल रूप से वैसा ही है जैसा कि यह पहली बार 1880 के दशक के अंत में बनाया गया था। खैर, 1890 में यह पहले से ही उस स्थान पर खड़ा था जहाँ यह आज है।

विलियम सीनियर एक सच्चे अंग्रेज सज्जन थे, जिन्हें इतिहास के शोध में गहरी रुचि थी और भूत-प्रेत की कहानियों का शौक था। वे अक्सर अपने परिवार को ये कहानियां सुनाना पसंद करते थे। लेकिन जो विशुद्ध रूप से साहित्यिक गतिविधि के रूप में शुरू हुआ था, वह जल्द ही एक भयावह वास्तविकता में बदल गया। उनके आने के कुछ ही समय बाद, विलियम सीनियर ने घर में अजीबोगरीब आवाज़ें सुनने की शिकायत की। उनका कमरा तीसरी मंजिल पर था और उन्हें लगातार अजीब आवाज़ें और फर्श की लकड़ियों के चरमराने की आवाज़ें सुनाई देती थीं, मानो कोई उन पर चल रहा हो।

उनके बेटे ने इस पर हंसते हुए इसे अपने पिता की कल्पनाशीलता का नतीजा बताया, खासकर उनकी कई काल्पनिक भूत कहानियों के बाद, जिन्होंने इस तरह की बातों के लिए माहौल बना दिया था। लेकिन बड़े डेवी अपनी आखिरी सांस तक यही कहते रहे कि उन्हें किसी अदृश्य शक्ति से परेशानी हो रही है। फरवरी 1963 में उनके निधन के बाद, श्रीमान और श्रीमती डेवी ने इस मामले पर फिर कभी ध्यान नहीं दिया। घर उनके लिए एक शांतिपूर्ण ठिकाना था और उन्होंने जीवन का आनंद लिया।

* * *

कई महीनों बाद, श्री डेवी बैठक कक्ष में अकेले बैठकर पढ़ रहे थे। वे थके हुए थे और रात के 10 बज रहे थे। उन्होंने पढ़ने का काम समाप्त करने का फैसला किया और सोने के लिए उठ खड़े हुए। जैसे ही वे बैठक कक्ष और सीढ़ियों के बीच के गलियारे की ओर बढ़े, अचानक उनके मुंह से एक बहुत ही तीखी सुगंध निकली, जिसे उन्होंने तुरंत तेज बेरी की खुशबू के रूप में पहचान लिया। एक पल के लिए वे पूरी तरह से अचंभित रह गए, फिर धीरे-धीरे गलियारे में आगे बढ़े और सीढ़ियों से ऊपर चढ़ गए। सुगंध अभी भी उनके चारों ओर फैली हुई थी, मानो कोई अदृश्य व्यक्ति, इस तेज सुगंध को लगाए हुए, उनके साथ चल रहा हो!

पहली मंजिल पर पहुँचते ही वह शयनकक्ष में चला गया। उसी क्षण, इत्र की महक अचानक उससे गायब हो गई, ठीक उसी तरह जैसे अचानक आई थी।

“मैरी,” उसने अपनी पत्नी से पूछा, “क्या तुमने गलती से कोई इत्र गिरा दिया?” उसने ज़ोर से सिर हिलाया। उसके पास ऐसा कोई इत्र था ही नहीं, और उस दिन या उस शाम घर में कोई और नहीं था।

श्री डेवी असमंजस में थे लेकिन विशेष रूप से परेशान नहीं थे, उन्होंने इस मामले को वहीं छोड़ दिया और अगर एक अन्य घटना ने उन्हें चौंका न दिया होता तो वह इसे पूरी तरह से भूल ही गए होते।

कई महीनों बाद, वह फिर से बैठक कक्ष में बैठा था, समय लगभग रात के दस बजे का था। उसने अपनी किताब नीचे रखी और गलियारे की ओर बढ़ा। एक बार फिर, उसे उसी इत्र की तेज़ खुशबू का सामना करना पड़ा! वह खुशबू फिर से सीढ़ियों तक उसका पीछा करती रही।

जैसे-जैसे वह चढ़ता गया, उसे लगा कि कोई चीज़—या कोई व्यक्ति—उसके दाहिने पैर से छू गया है। सरसराहट की आवाज़ आई, लेकिन उसे कुछ भी दिखाई नहीं दिया जिससे ऐसा हुआ हो। जब वह लैंडिंग पर पहुँचा, तो वह रुक गया और मैरी को अपने पास आने के लिए कहा।

उनकी पत्नी को युवावस्था में खोपड़ी में फ्रैक्चर हो गया था और परिणामस्वरूप उनकी सूंघने की क्षमता लगभग 70% तक कम हो गई थी।

जब मैरी सीढ़ियों पर उसके पास आई, तो उसने उससे पूछा कि क्या उसे कोई अजीब सी गंध आ रही है। "अरे बाप रे!" उसने तुरंत कहा, "कितनी तेज़ खुशबू है!" वे दोनों असमंजस में एक-दूसरे को देखते रह गए। "आखिर ये क्या है?" मैरी ने आखिरकार पूछा। वह बस अपने कंधे उचका सका।

ठीक उसी क्षण, उन्हें जहाँ वे खड़े थे, वहाँ से तीसरी मंजिल तक सीढ़ियों से ऊपर जाते हुए कदमों की स्पष्ट आवाज सुनाई दी!

चूंकि उन दोनों में से किसी ने भी कदमों की आहट का कारण बनते हुए किसी व्यक्ति को नहीं देखा, इसलिए वे पूरी तरह से घबरा गए और जांच करने से इनकार कर दिया। वे कदमों की आहट का पीछा करते हुए तीसरी मंजिल तक नहीं गए। वे अच्छी तरह जानते थे कि इस समय वहां कोई भी जीवित प्राणी नहीं था।

एक शाम मैरी दूसरी मंजिल पर अपने बिस्तर पर बैठकर पढ़ रही थी, तभी उसे अपने चारों ओर वही तेजाब की खुशबू महसूस हुई। यह खुशबू कुछ सेकंड तक रही, फिर गायब हो गई। चूंकि वह घर में बिल्कुल अकेली थी और पूरी शाम से अकेली ही थी, इसलिए उसे इससे कोई खास तसल्ली नहीं मिली। लेकिन डेवी परिवार आसानी से घबराने वाला नहीं है, इसलिए उसने इसे एक ऐसी बात मानकर नज़रअंदाज़ कर दिया जिसे वह समझा नहीं सकती थी। एक और मौके पर, मिस्टर डेवी ने बैठक कक्ष में एक धुंधली, सफेद रोशनी को हिलते हुए देखा। उस छोटे बादल के आकार से वह ऊंचाई में या तो एक बड़े बच्चे या एक छोटे वयस्क जैसा लग रहा था, पुरुष की तुलना में महिला होने की संभावना अधिक थी। यह घटना रात के 3 बजे की थी, जब वह नीचे आए थे क्योंकि उन्हें उस रात नींद नहीं आ रही थी।

अप्रैल 1966 में डेवी परिवार विलियम्सबर्ग, वर्जीनिया घूमने गया था। लौटने पर, श्री डेवी ने अपना सामान सीधे ऊपर अपने बेडरूम में ले जाने का फैसला किया। तभी उन्हें बेर की

खुशबू का एक झोंका महसूस हुआ। मानो कोई अदृश्य शक्ति उनका स्वागत करना चाहती हो!

मैरी की पसंदीदा अंगूठियों में से एक, जिसे उसने अपने कमरे में छोड़ दिया था, गायब हो गई और बाद में बगीचे में मिली। वह वहाँ कैसे पहुँची, यह तब भी उतना ही रहस्य था जितना आज है, लेकिन उस अंगूठी को किसी इंसान ने नहीं हिलाया था। स्वाभाविक रूप से, डेवी परिवार ने अपने इस अनदेखे मेहमान के बारे में किसी से बात नहीं की। जब आप फिलाडेल्फिया के बैंकर होते हैं, तो आप भूतों के बारे में बात नहीं करते।

उसी वर्ष सितंबर में, उनकी भतीजी और उनके पति, श्रीमान और श्रीमती क्लेरेंस नोवाक, उनसे मिलने आए। श्रीमान नोवाक अमेरिकी सरकार में कार्यरत हैं और पेशे से रसायन अभियंता हैं। उनका अपना घर तैयार हो रहा था और जब तक वे उसमें रहने नहीं लगे, उन्होंने अपने चाचा और चाची के साथ दो सप्ताह बिताए। भतीजी दूसरी मंजिल पर ठहरी थीं, जबकि श्रीमान नोवाक को तीसरी मंजिल का वह कमरा दिया गया था जो अतीत में भूतिया गतिविधियों का केंद्र रहा था। सोने के बाद, श्रीमान नोवाक ने एक किताब पढ़ना शुरू किया। जब वे इससे ऊब गए, तो उन्होंने किताब नीचे रख दी, बत्ती बंद कर दी और सोने की तैयारी करने लगे।

ठीक उसी क्षण, उसे ऊपर आते कदमों की आहट साफ सुनाई दी और उसे पूरा यकीन था कि मैरी उसे शुभ रात्रि कहने आ रही है, इसलिए वह उठकर बैठ गया और इंतजार करने लगा। लेकिन उसके कमरे में कोई नहीं आया और कदमों की आहट जारी रही!

क्योंकि वह व्यावहारिक सोच वाला व्यक्ति था, इसलिए यह बात उसे उलझन में डाल गई और वह बिस्तर से उठकर चारों ओर देखने लगा। गलियारा बिल्कुल खाली था, फिर भी कदमों की आहट उसके ठीक सामने सुनाई दे रही थी। इतना ही नहीं, ऐसा लग रहा था जैसे वे कमरे में ही प्रवेश कर गए हों और कदमों की आवाज से कमरा भर गया, मानो सचमुच कोई अंदर चल रहा हो। समस्या का हल न निकाल पाने के कारण वह सो गया।

अगली रात भी वही हुआ। दो हफ़्तों तक, श्री नोवाक रात के ठीक दस बजे कदमों की आहट के साथ सो जाते थे। लेकिन उन्होंने इस पूरी बात को नज़रअंदाज़ करने का फैसला कर लिया था और कदमों की आहट हो या न हो, सो जाते थे।

“जब मैं बिस्तर पर था,” उसने अपनी चाची को कुछ शर्मिंदा होकर समझाया, “ऐसा लग रहा था जैसे कदमों की आहट सीढ़ियों से ऊपर आ रही हो, और जब मैं लेटा हुआ था तो ऐसा लग रहा था जैसे वे सचमुच कमरे में हों, लेकिन मैं उनकी सही जगह का पता नहीं लगा सका। जब मैंने पहली बार उन्हें सुना तो मुझे लगा कि वे मैरी के कदम हैं, इसलिए मुझे लगता है कि वे किसी महिला के कदम रहे होंगे।”

श्री नोवाक को मानसिक घटनाओं में कोई खास दिलचस्पी नहीं थी, लेकिन कई मौकों पर उनकी पत्नी, जिनका नाम भी मैरी था (उनकी चाची की तरह), का उनके साथ ऐसा संबंध स्थापित हुआ जो टेलीपैथिक संचार के करीब था। ये छोटी-मोटी बातें थीं, लेकिन महज संयोग की संभावना से कहीं अधिक थीं। इसलिए यह बहुत संभव है कि रसायनज्ञ की ईएसपी (अंतरात्मा की आवाज़ सुनने की क्षमता) की स्वाभाविक प्रवृत्ति ने कदमों की आहट सुनने की उनकी क्षमता में भूमिका निभाई हो, जैसा कि बैंकर श्री डेवी के मामले में निश्चित रूप से हुआ था, जिनके बचपन में इस तरह की कम से कम एक घटना अवश्य घटी थी।

लेकिन अगर उस प्रेतात्मा ने किसी एक को अपनी उपस्थिति से प्रभावित किया होता, तो ऐसा लगता है कि वह पुरुषों को प्राथमिकता देती थी। मैरी नोवाक दो सप्ताह तक बिना किसी व्यवधान या घटना के चैन से सोईं।

डेविस परिवार के एक अन्य भतीजे क्लिफोर्ड रिचर्डसन एक बार ओक्लाहोमा से नोवाक्स परिवार से मिलने आए और इस दौरान उन्होंने डेविस के घर पर एक रात रुकने का फैसला किया। श्री रिचर्डसन एक बीमा एजेंसी के मालिक हैं और तंत्र-मंत्र में उनकी ज़रा भी दिलचस्पी नहीं है। अगले दिन नोवाक्स परिवार के घर लौटने पर वे असामान्य रूप से उदास और गुमसुम लग रहे थे। आखिरकार, कॉफी पीते हुए उन्होंने अपने दिल की बात कही।

“देखो, मैरी,” उसने कहा, “तुम्हारा पति बकी कुछ समय के लिए अंकल नेड के घर रुका था। क्या उसे अच्छी नींद आई?”

“तुम्हारा क्या मतलब है?” मैरी ने अनजान होने का नाटक करते हुए पूछा।

क्या उसने कभी कोई आवाज सुनी थी?

मैरी समझ गई कि उसका क्या मतलब है और उसने स्वीकार किया कि उसके पति ने वास्तव में "आवाजें सुनी थीं"।

“भगवान का शुक्र है,” बीमा एजेंट ने राहत की सांस ली। “उन कदमों की आहट सुनकर मुझे लगा जैसे मैं पागल हो रहा हूँ।”

वह भी तीसरी मंजिल के शयनकक्ष में सोया था। आखिर उस छोटे से शयनकक्ष में इतने सालों से कौन सा भयानक रहस्य छिपा था?

यह कमरा अब सादे ढंग से, लेकिन पर्याप्त रूप से अतिथि कक्ष के रूप में सुसज्जित है। यह छोटा और संकरा है और निस्संदेह मूल रूप से नौकरानी का कमरा रहा होगा। इसमें एक छोटी खिड़की है जो नीचे पेड़ों से भरी सड़क की ओर खुलती है। यह मूल रूप से एकांत कमरा रहा होगा जहाँ किसी के द्वारा किसी भी कारण से मदद के लिए पुकारने पर उसकी आवाज़ सुनाई न दे।

डेवी परिवार ने अपने घर के इतिहास की छानबीन शुरू की। आसपास का इलाका राइट्स फार्म के नाम से जाना जाता था, और श्रीमती राइट ने 1880 के दशक के अंत में उस ज़मीन पर घर बनवाए थे। उनके खरीदने से पहले उस घर में चार अलग-अलग लोग रह चुके थे, और उनमें से कुछ जीवित लोगों से संपर्क करने की कोशिशों के बावजूद वे ऐसा करने में असफल रहे। उन्होंने अपनी "समस्या" के बारे में किसी से बात नहीं की, यहाँ तक कि मैरी की बूढ़ी माँ से भी नहीं, जो अब उनके साथ रह रही थीं। उस कमज़ोर बुज़ुर्ग महिला को डराने का कोई मतलब नहीं था। वैसे भी, डेवी परिवार वास्तव में डरा हुआ नहीं था, बस उत्सुक था। मैरी, एक गृहिणी होने के साथ-साथ, पास के टेम्पल विश्वविद्यालय में समूह गतिशीलता और शिक्षा की छात्रा भी थीं, और एक शोधकर्ता के दृष्टिकोण से इस घटनाक्रम में उनकी थोड़ी दिलचस्पी थी। विलियम डेवी के लिए, यह सब एक मज़ाक से ज़्यादा कुछ नहीं था, और निश्चित रूप से चिंता करने वाली बात तो बिल्कुल नहीं थी।

* * *

जब घर के इतिहास के बारे में उनकी पूछताछ में कोई चौंकाने वाली या सनसनीखेज जानकारी सामने नहीं आई, तो उन्होंने इसे विक्टोरियन युग की बची हुई चीज के रूप में स्वीकार कर लिया और इसके रहस्य ने उनके खूबसूरत पुराने घर में एक अतिरिक्त आयाम जोड़ दिया।

फिर एक दिन, तीसरी मंजिल पर स्थित छोटे से कमरे का ध्यानपूर्वक निरीक्षण करते हुए, श्री डेवी ने एक रोचक खोज की। कमर की ऊंचाई पर, कमरे के दरवाजे पर गहरे निशान थे, मानो किसी ने उसे तोड़ने की कोशिश की हो! इसमें कोई संदेह नहीं था कि ये निशान दरवाजे को जबरदस्ती खोलने के प्रयास का स्पष्ट प्रमाण थे।

क्या ऊपर किसी ने नौकरानी के साथ उसकी इच्छा के विरुद्ध दुर्व्यवहार किया था? क्या शयनकक्ष का दरवाजा घर के किसी सदस्य, शायद बेटे ने तोड़ दिया था, जिसे उस जमाने में नौकरानी के साथ संबंध रखने जैसे "मामूली" अपराध के लिए आम तौर पर कानूनी कार्रवाई से छूट प्राप्त थी?

तेज बेरी की गंध नौकर वर्ग के सदस्य होने का संकेत देती प्रतीत होती थी, क्योंकि तब भी और अब भी, तेज इत्र की अधिकता अच्छे संस्कार का संकेत नहीं मानी जाती थी।

* * *

हाल ही में कोई घटना नहीं हुई है, लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि भूत चला गया है। एक विक्टोरियन नौकरानी के लिए अपनी मर्जी से नीचे के कमरे में घूमना वाकई एक ऐसा सुख है जिसे आसानी से छोड़ा नहीं जा सकता—यहां तक कि परलोक की स्वतंत्रता के वादे के लिए भी नहीं!

*64

बिना सिर वाला दादा (जॉर्जिया)

ग्रोवर सी. उन रंगीन मिजाज वाले बुजुर्गों में से एक थे, जो आजकल शायद ही देखने को मिलते हैं, यहां तक कि सुदूर दक्षिण में भी नहीं। ऐसा नहीं था कि ग्रोवर के पास किसी विशेष क्षेत्र में कोई विशेष पृष्ठभूमि थी, बिलकुल भी नहीं; वे एक अशिक्षित व्यक्ति थे जिनकी सफलता का श्रेय पूरी तरह से उनकी दृढ़ इच्छाशक्ति और अदम्य जिज्ञासा को जाता था, जिसने उन्हें उन स्थानों तक पहुंचाया जहां उनकी शिक्षा—या शिक्षा की कमी—उन्हें कभी पहुंचने से रोक सकती थी।

* * *

उनका जन्म बीसवीं सदी के मोड़ से ठीक पहले उत्तरी कैरोलिना के ग्रामीण इलाके में हुआ था। उन्नीस साल की उम्र में उन्होंने पहली शादी की, लेकिन उनकी पत्नी फैनी और उनके बच्चे दोनों की मृत्यु उस समय के "प्रसव बुखार" या उचित चिकित्सा उपचार न मिलने के कारण हो गई। उन्होंने अभी तक अपने लिए कोई विशेष पेशा नहीं चुना था, बल्कि वे बस इधर-उधर काम करते रहे। एक साल बाद उन्होंने जॉर्जिया की एक महिला से दोबारा शादी की, जो अभी भी जीवित हैं। उनकी पहली बेटी के जन्म के बाद, वे जॉर्जिया के कोलंबस चले गए, और श्री सी. ने कुछ समय के लिए एक स्थानीय मिल में काम किया। हालाँकि, इससे उनकी इच्छा पूरी नहीं हुई, और कुछ समय बाद उन्होंने और उनके भाई रॉबर्ट ने एक किराने की दुकान खोली। दुकान "हूवर संकट" तक खूब चली, और फिर उन्होंने दुकान बेचकर हैरिस काउंटी में एक खेत खरीद लिया।

जीवन काफी शांत चल रहा था, लेकिन एक दुर्घटना में अपनी बेटी को खोने के बाद, श्री सी. कोलंबस लौट आए और एक बार फिर किराने के व्यवसाय में हाथ आजमाया। इसी दौरान, इस बेचैन स्वभाव वाले सज्जन की मुलाकात अलबामा की एक महिला से हुई, जिसके परिणामस्वरूप वे अपनी पत्नी और नौ बच्चों के परिवार के अलावा एक और "अतिरिक्त" बच्ची के पिता बन गए। अंततः उनके परिवार में उनकी पत्नी और नौ बच्चे शामिल हो गए, जिनमें से दो की मृत्यु हो चुकी है और बाकी जीवित हैं।

जब उनके दूसरे बच्चे की संक्रामक बीमारी से मृत्यु हो गई, तो श्री सी. को लंबे समय से प्रतीक्षित मानसिक आघात लगा और कई वर्षों तक वे अपने जीवन से तालमेल बिठाने में असमर्थ रहे। धीरे-धीरे स्वस्थ होने के उन कठिन वर्षों के दौरान, उनकी बेटी एग्नेस ने उनके लिए दुकान संभाली और परिवार का भरण-पोषण किया।

जैसे-जैसे उनका स्वास्थ्य सुधरने लगा और जीवन के प्रति उनका दृष्टिकोण अधिक खुशहाल और सकारात्मक होने लगा, वैसे-वैसे उनकी रुचि रियल एस्टेट में विकसित होने लगी। अपनी बचत से वे संपत्ति खरीदते-बेचते थे और जल्द ही उनका कारोबार इतना बढ़ गया कि उन्हें किराने की दुकान चलाने की जरूरत ही नहीं रही।

जल्द ही उन्होंने अपने रियल एस्टेट कारोबार के साथ-साथ निर्माण व्यवसाय भी शुरू कर दिया और अपने गृहनगर में एक संपन्न नागरिक माने जाने लगे। इस रुतबे ने स्वाभाविक रूप

से कई अविवाहित महिलाओं को आकर्षित किया, यहाँ तक कि कुछ विवाहित या अलग-अलग रिश्तों में रहने वाली महिलाओं को भी, और श्री सी. ने खूब मौज-मस्ती की। अन्य महिलाओं में उनकी रुचि की खबर उनकी पत्नी तक पहुँच गई और अंततः उनकी पत्नी ने उन्हें एक विकल्प दिया: या तो वह या वे दोनों।

उन्होंने उन्हें चुना, या यूँ कहें कि पड़ोस में रहने वाली एक महिला को, और तेरह साल तक वे उसके प्रति काफी हद तक वफादार रहे। आखिरकार, उस महिला को अपने पति के साथ रहना पसंद नहीं आया, खासकर तब जब वह पहले से ही किसी और से शादीशुदा था, भले ही उसने कोलंबस में उसके लिए एक प्यारा सा छोटा सा घर खरीद दिया था। मिस्टर सी. भी इस स्थिति से खुश नहीं थे, क्योंकि इन वर्षों के दौरान उन्हें शराब पीने की लत लग गई थी। उनके अलग होने के बाद, पड़ोस में रहने वाली महिला शहर छोड़कर चली गई और शादी कर ली।

अब जब उस "दूसरी औरत" ने उसे घर से निकाल दिया था, तो ग्रोवर अपने परिवार के पास लौटने के बजाय कहीं और देखने लगा और जो उसे मिला, उससे वह खुश था। अब वह साठ के दशक के उत्तरार्ध में था, लेकिन उसकी जोशीली शख्सियत बढ़ती उम्र जैसी मामूली वजह से धीमी पड़ने वाली नहीं थी!

* * *

लगभग सन् 1962 में उनकी मुलाकात मैडलीन नाम की एक नर्स से हुई, जो डॉक्टर की सलाह के बिल्कुल विपरीत निकली। एक तीखी बहस के बाद, उसने उनकी नाक पर लात मार दी। जब खून बहना बंद नहीं हुआ, तो वह घबरा गई और उन्हें अस्पताल ले गई। परिवार के लोग उनसे मिलने अस्पताल गए, हालांकि उनकी पत्नी ने उन्हें पूरी तरह से माफ नहीं किया था। लेकिन अब इस बात का कोई महत्व नहीं रह गया था। श्री सी. ने अपनी कमर में दर्द की भी शिकायत की और बच्चों को पूरा यकीन था कि नर्स ने ही उन्हें उस जगह पर लात मारी थी। चूंकि कुछ ही समय बाद उनकी मृत्यु हो गई, इसलिए यह सवाल बेमानी हो गया कि क्या नर्स ने ऐसा किया था क्योंकि श्रीमती सी. की मानसिक स्थिति अब उनकी प्रेम संबंधी अपेक्षाओं के अनुरूप नहीं थी। उस बुजुर्ग ने निश्चित रूप से इस बारे में अपने परिवार से कोई बात नहीं की। उनकी मृत्यु सत्तर वर्ष की आयु में हुई और मैडलीन मात्र साठ वर्ष की थीं। श्री सी. कई

बीमारियों से पीड़ित थे, इसके बावजूद उनकी मृत्यु कुछ हद तक अप्रत्याशित थी। अस्पताल में भर्ती होने के दौरान वे अपने कमरे में अकेले ही थे। पहले तो वह एक दूसरे बुजुर्ग व्यक्ति के साथ कमरा साझा करता था, लेकिन कुछ दिनों बाद एक युवक को उसके साथ रहने के लिए भेजा गया। युवक की शिकायत थी कि उसके गले में लॉलीपॉप की डंडी फंसी हुई है। चिकित्सा इतिहास में शायद ही ऐसे युवक हों जिन्हें इस तरह की समस्या का सामना करना पड़ा हो, और कोलंबस, जॉर्जिया में तो और भी कम। परिवार को यह बात बेहद अजीब लगी, खासकर इसलिए क्योंकि वह युवक मैडलीन का करीबी रिश्तेदार था, जो एक बहुत ही व्यावहारिक नर्स थी।

उन्होंने अस्पताल अधिकारियों से शिकायत की और उस युवक को दूसरी जगह ले जाया गया। यह तो पता नहीं कि लॉलीपॉप की डंडी उसके गले से निकाली गई थी या नहीं, लेकिन संभावना यही है कि निकाली गई होगी, वरना हमें इसके बारे में और भी जानकारी मिली होती। गले में लॉलीपॉप की डंडी फंसे हुए युवक या तो मर जाते हैं या सर्कस में तमाशा बन जाते हैं; रिकॉर्ड में इनमें से किसी का भी जिक्र नहीं है, इसलिए यही माना जा सकता है कि लॉलीपॉप की डंडी किसी तरह कहीं न कहीं निकल गई होगी। खैर, अब श्री सी. की हर रात उनके बच्चों में से कोई एक उनकी रखवाली करता था, बारी-बारी से बच्चे उनकी देखभाल करते थे।

उन्हें पूरा यकीन है कि नर्स ने अपने पूर्व संरक्षक को कुछ ज़हर दिया था और शायद गले में लॉलीपॉप की डंडी फंसी हुई उस लड़के ने ही नर्स के इशारे पर उस बूढ़े को ज़हर पिलाया हो। यह तर्क बेशक काफी पेचीदा है और इसे साबित करना मुश्किल है, खासकर इसलिए क्योंकि श्री सी का कभी पोस्टमार्टम नहीं हुआ। लेकिन यह मुमकिन है कि मैडलीन को अपने दोस्त के बारे में कुछ ऐसा पता चला हो जिससे प्रेरित होकर उसने उसकी मौत को और तेज़ करने का फैसला किया हो और इसके लिए उसने हर संभव कोशिश की हो। वह अस्पताल से अच्छी तरह वाकिफ थी और उसके कमरे तक उसकी आसानी से पहुंच थी। उसके दफ्तर तक भी उसकी उतनी ही आसानी से पहुंच थी और यहीं से एक अजीब कहानी शुरू होती है।

* * *

जब कभी-कभार ही श्री सी. घर पर सोते थे, तो उनकी अलग रह रही पत्नी बिस्तर लगा रही थीं। यह उनके निधन से पाँच महीने पहले की बात है। जैसे ही उन्होंने गद्दा उठाया, उन्हें उसके नीचे कागजों से भरा एक भारी लिफाफा मिला, जिसका आकार लगभग छह इंच गुणा दस इंच था। उन्होंने उसे देखा और उस पर श्री सी. के बड़े अक्षरों में ये शब्द लिखे हुए पाए:

“इसे मेरे मरने तक नहीं खोला जाना चाहिए। मेरा मतलब है, पूरी तरह से मर जाना, पिताजी।”

उसने लिफाफा अपनी बेटी एग्नेस को दिखाया, लेकिन उसे वापस रख दिया क्योंकि वह अपने पति के साथ किसी भी तरह के विवाद में नहीं पड़ना चाहती थी। जाहिर है, लिफाफा कुछ समय बाद उसके पति अपने दफ्तर ले गए होंगे, क्योंकि जब उसने उनके निधन से दो हफ्ते पहले, जब वे अभी भी चल-फिर रहे थे, उनका बिस्तर ठीक किया, तो लिफाफा गायब था। लेकिन वहाँ एक दूसरा, छोटा लिफाफा था, जिस पर कोई खास निशान या लिखावट नहीं थी। उसने उसे वहीं छोड़ दिया। कुछ समय बाद श्री सी. को अस्पताल ले जाया गया। जब श्रीमती सी. ने बिस्तर ठीक किया, तो उन्होंने पाया कि छोटा लिफाफा भी गायब था।

कोलंबस में सी. का घर कोई सार्वजनिक स्थान तो नहीं था, लेकिन वह कोई अभेद्य किला भी नहीं था। कोई भी व्यक्ति जब चाहे तब अंदर जाकर लिफाफा आसानी से निकाल सकता था। कार्यालय में प्रवेश करना तो और भी आसान था, और परिवार को पूरा यकीन था कि मैडेलीन ने दोनों लिफाफे अपने निजी कारणों से ही लिए होंगे, हालांकि वे इसका कोई सबूत नहीं दे सकते थे। उस बुजुर्ग सज्जन ने कभी भी अपनी मैडेलीन के बारे में कोई बुरी बात नहीं कही, कम से कम अपने बच्चों से तो नहीं, शायद वे अपने दुख अपने साथ परलोक ले जाना ही बेहतर समझते थे।

* * *

उनकी मृत्यु, जो काफी अचानक हुई, के बाद परिवार को एक उचित वसीयत मिली, लेकिन चूंकि श्री सी. ने अपने जीवनकाल में अपने अधिकांश बच्चों के लिए उदारतापूर्वक घर बनवाए थे, इसलिए 1950 के दशक में बैंक खातों में केवल मामूली मात्रा में नकदी थी, और किसी के लिए भी कोई बड़ी विरासत नहीं थी।

वसीयत में श्रीमती सी. को वसीयत का निष्पादक बनाया गया था, और चूंकि इस पर कोई आपत्ति नहीं थी, इसलिए इसे विधिवत प्रमाणित कर दिया गया। लेकिन परिवार ने कार्यालय और स्वर्गीय श्री सी. के घर में रखे सामान में उन दो लिफाफों की तलाश की जो अभी भी गायब थे। केवल उनकी पत्नी और बेटी एग्नेस को ही उनके बारे में पता था, हालांकि घर में हर किसी की पहुँच थी। नौकरों ने उन्हें नहीं लिया होगा, और तिजोरी खाली थी। चूंकि बुजुर्ग कभी-कभी अपने कार्यालय में सोफे पर सो जाते थे, इसलिए परिवार ने उनके कार्यालय में हर जगह खोज की, लेकिन कुछ नहीं मिला। वसीयत के अलावा जो एकमात्र चीज मिली, वह बाइबिल के उद्धरणों की एक पुस्तक की साफ-सुथरी टाइप की हुई पांडुलिपि थी। श्री सी. अपनी अशिक्षित स्थिति के बावजूद बाइबिल के एक गंभीर विद्वान थे, और विषय और स्रोत के अनुसार व्यवस्थित उद्धरणों को तैयार करने में हजारों घंटे का समय लगा था। जब उनकी बेटी मैरी ने उन्हें 1962 में इस परियोजना पर काम करते देखा, तो उसने सुझाव दिया कि वे अपने लिखे हुए नोट्स को टाइप करवा लें और उसने अपनी चाची कैथरीन को यह काम करने के लिए राजी किया, जिसे उन्होंने पूरा किया। कुछ उदास भाव से, मैरी ने पांडुलिपि उठाई और सोचने लगी कि क्या कोई इसे खरीदकर इस तरह से संपत्ति में थोड़ी सी धनराशि जमा कर सकता है।

गायब हुए लिफाफों का रहस्य कभी सुलझ नहीं पाया। उनके गायब होने की पहेली से भी बड़ा सवाल उनके अंदर लिखी सामग्री को लेकर था: उनमें ऐसा क्या महत्वपूर्ण था कि उस बुजुर्ग सज्जन को उन्हें गद्दे के नीचे छिपाना पड़ा? इतना महत्वपूर्ण कि किसी ने उन्हें चुपके से ले लिया और परिवार को सौंपने से रोक दिया, जबकि उन्हें सौंप दिया जाना चाहिए था?

हालांकि इस दावे का कोई सबूत नहीं है, लेकिन मैरी का मानना है कि ग्रोवर सी. के नाजायज बच्चे के लिए कुछ कीमती सामान छोड़ा गया होगा, जो कि उनके रोमांटिक जीवन के शुरुआती दौर में अलबामा की महिला से हुआ था।

बहरहाल, कई महीनों की व्यर्थ खोज के बाद, परिवार ने इस मामले को यहीं छोड़ दिया और अन्य कामों में लग गया। ग्रोवर सी. को उनके परिवार की नज़रों में उचित सम्मान प्राप्त हो जाता, अगर कुछ अनसुलझे अधूरे काम का मामला न होता।

ग्रोवर की मृत्यु के लगभग एक वर्ष बाद, मृतक के पुत्रों में से एक, लुईस सी., (जैसा कि पुलिस रिकॉर्ड में दर्ज है), कोलंबस स्थित अपने घर में ईंटों से एक फूलदान बना रहा था। यह उन घरों में से एक था जो उसके पिता ने अपने बच्चों के लिए बनवाए थे, और पुत्र श्री सी. इसमें बिना किसी परेशानी के सुखपूर्वक रह रहे थे। लुईस तीस वर्ष का था और उस समय उसके पिता के गायब हुए लिफाफों का रहस्य उसे ज्यादा परेशान नहीं कर रहा था। मार्च 1967 की एक सुहावनी दोपहर, चार बजे, वह अपने फूलदान पर काम कर रहा था। फ्रेड नाम का एक पेशेवर राजमिस्त्री, जिसके साथ उसने पहले भी काम किया था, उसे एक-एक ईंट थमाकर फूलदान बनाने में मदद कर रहा था। वे बैठक कक्ष में थे और लुईस पीछे के दरवाजे की ओर, फ्रेड सामने के दरवाजे की ओर मुंह करके बैठा था।

"एक ईंट, कृपया," लुईस ने पीछे मुड़े बिना कहा।

कोई ईंट नहीं आई। उसने दोबारा पूछा। फिर भी कोई ईंट नहीं आई। तब उसने अपने सहायक की ओर देखा और पाया कि वह वहीं जम गया है और सामने के दरवाजे को घूर रहा है।

“क्या बात है, फ्रेड?” उसने पूछा। उसने फ्रेड को इतना डरा हुआ पहले कभी नहीं देखा था।

अंत में, मानो किसी बुरे सपने से जागते हुए, फ्रेड बोला।

उन्होंने कहा, "मैंने अभी-अभी मिस्टर सी. को देखा है, बिलकुल जीवंत रूप में।"

“लेकिन श्री सी. की मृत्यु को एक साल हो गया है,” बेटे ने जवाब दिया।

फ्रेड ने ग्रोवर के लिए कई वर्षों तक काम किया था और वह उसे अच्छी तरह जानता था।

“वह कैसा दिखता था?” बेटे ने पूछा।

“सफेद...हल्का,” फ्रेड ने जवाब दिया और फिर दरवाजे पर सफेद पैंट पहने उस आकृति का वर्णन करने लगा जिसे उसने देखा था। हालाँकि वह केवल एक आदमी का निचला हिस्सा था, उसने तुरंत अपने दिवंगत मालिक को पहचान लिया। ग्रोवर के पैर टेढ़े थे और उसके सामने रखी सफेद पैंट भी ग्रोवर की तरह ही टेढ़ी थी। इसमें कोई संदेह नहीं था कि वह किसका निचला हिस्सा था जो प्रकट हुआ और फिर एक झटके में गायब हो गया।

लुईस ने सिर हिलाया और अपना काम जारी रखा। लेकिन कुछ ही समय बाद उसे फ्रेड के अनुभव का महत्व समझ में आने लगा। आधी रात को वह अचानक वातावरण में किसी चीज के कारण जाग गया—जिसे परिभाषित करना असंभव था, लेकिन फिर भी वह बहुत वास्तविक थी।

उसके बेडरूम की बत्तियाँ बंद थीं, लेकिन वह गलियारे में देख सकता था। और उसने जो देखा, वह एक आदमी था जिसने सफेद कमीज़ और गहरे रंग की पैंट पहनी हुई थी...और...उसका सिर नहीं था। बिना सिर वाला वह सज्जन दबे पांव गलियारे में उसकी ओर बढ़ रहा था।

लुईस उस प्रेत को बस देखता रह गया जिसे उसने देखते ही अपने दिवंगत पिता के रूप में पहचान लिया, चाहे उसका सिर हो या न हो। जब भूत ने देखा कि लुईस ने उसे पहचान लिया है, तो वह तीन छलांग पीछे की ओर लेकर हवा में गायब हो गया।

दुर्भाग्य से, लुईस की पत्नी कैथरीन को इस बात पर ज़रा भी विश्वास नहीं हुआ। कई महीनों तक पिता के सिर कटे भूत का ज़िक्र बातचीत में नहीं हो सका। फिर दिसंबर 1968 में, एक रात लुईस और कैथरीन सो रहे थे, तभी लगभग 2:30 बजे, दोनों को बेडरूम से लिविंग रूम की ओर आते भारी कदमों की आवाज़ से नींद से जागना पड़ा। वे उठ बैठे और बिना पलक झपकाए सुनने लगे। उन्हें साफ़ सुनाई दिया कि कैसे कदमों की आहट पहले नंगे फर्श पर पड़ी, फिर कालीन पर, और धीरे-धीरे कम होती गई। अंत में, रसोई के फर्श पर पहुँचते ही आवाज़ फिर से तेज़ हो गई। लुईस बिस्तर से कूद पड़े, क्योंकि उन्हें पूरा यकीन था कि कोई घुसपैठिया है। हालाँकि उन्होंने घर को ऊपर से नीचे तक छान मारा, लेकिन उन्हें चोर का कोई सुराग नहीं मिला, और सभी दरवाजे बंद थे।

* * *

बाद में उन्हें लगा कि शायद ग्रोवर उनसे मिलने आया था। पर क्यों? सच है, उसने ही तो उनके लिए घर बनाया था। सच है, उनके पास ग्रोवर का कुछ सामान था, खासकर उसका पुराना पजामा। लेकिन जहाँ वह था, वहाँ उसे अपने पुराने पजामे की क्या ज़रूरत थी? यकीनन उसे इस बात से कोई आपत्ति नहीं हो सकती थी कि उसका बेटा उन्हें पहने हुए था। तब उन्होंने

सोचा कि ग्रोवर शायद उन लिफाफों की वजह से उनका ध्यान खींचने की कोशिश कर रहा था जो अभी तक गायब थे या किसी और अधूरे काम की वजह से, लेकिन उन्हें यह बात अच्छी नहीं लगी, आखिर भला किसे अच्छा लगेगा कि उसका बिना सिर वाला बाप आधी रात को अचानक आ जाए?

* * *

लेकिन जाहिर तौर पर ग्रोवर अपने बेटे लुईस के घर पर ही रात में जाना सीमित नहीं रखते थे। उनकी पोती मैरी, जो अटलांटा में रहती हैं, 1968 की वसंत ऋतु में अपने दादा के घर उनसे मिलने आई थीं। घर में शहर का पानी नहीं आता था, बल्कि अपने कुएं से पानी लिया जाता था। इसलिए घर में बाहर से पानी लाना जरूरी था। एक बार जब वह ऐसा करके खाली बर्तन लेकर लौट रही थीं, तो मैरी का पैर पानी के एक पोखर जैसे दिखने वाली जगह पर पड़ा। उन्होंने पोखर को पोंछना शुरू किया तो पाया कि वह जगह बिल्कुल सूखी थी। इतना ही नहीं, पोखर का पानी बर्फ जैसा ठंडा था, जबकि उनका पानी का बर्तन अभी भी गर्म था। उन्हें यह बहुत अजीब लगा, लेकिन उन्होंने इसके बारे में किसी को नहीं बताया। कुछ ही घंटों के भीतर आठ साल के रैंडी ने बाथरूम में एक आदमी को काले रंग के सूट में देखा, जबकि बाथरूम साफ तौर पर खाली था।

ऐसा लगता है कि उस बुजुर्ग सज्जन को बच्चे बहुत पसंद थे, क्योंकि फरवरी 1969 में जब छोटा जोएल अटलांटा स्थित अपने घर में पियानो बजा रहा था, तभी उसे किसी के आने की आहट सुनाई दी। फिर गिलासों की खनक सुनाई दी और इस पूरे समय कोई भी दिखाई नहीं दिया। ग्रोवर को हमेशा से ही शराब और संगीत का शौक था।

कुछ समय बाद, जब घर में कोई भी कार्नेशन फूल नहीं लगा रहा था या इत्र का इस्तेमाल नहीं कर रहा था, तब भी मारी को अपने घर में कार्नेशन की खुशबू आने लगी। यह खुशबू कुछ पल के लिए रहती और फिर गायब हो जाती, मानो कोई इस खुशबू को लगाकर घर से गुज़रा हो।

1967 में, उनकी मौसी मैरी उनसे मिलने अटलांटा आईं और बातचीत उस रहस्यमयी गंध पर आ गई। मौसी ने कहा, "मुझे खुशी है कि आपने इसका ज़िक्र किया," और उन्होंने भी ऐसी ही समस्या बताई: उन्हें और उनके पति को अपने घर में बार-बार एक ही गंध आती थी, कभी-

कभी इतनी तेज़ कि उन्हें घर से बाहर ताज़ी हवा लेने जाना पड़ता था। लेकिन वह गंध उनका पीछा करती थी, और एक बार तो रविवार की सुबह चर्च जाते समय उनकी कार में भी उनके साथ "बैठी" रही!

उन्हें ठीक से पता नहीं था कि यह कार्नेशन जैसी गंध थी या महज़ अंतिम संस्कार की गंध, लेकिन यह निश्चित रूप से एक ऐसी गंध थी जिसका कोई तर्कसंगत स्पष्टीकरण नहीं था। फिर 1968 में, मैरी ने अपनी भतीजी को बताया कि अचानक उनके सामने आने वाली अजीबोगरीब चीजों की सूची में एक नया परफ्यूम जुड़ गया है: यह एक मसालेदार खुशबू थी, जैसे पुरुषों के आफ्टर-शेव लोशन की।

इस रिपोर्ट के कुछ ही समय बाद, मैरी को अटलांटा स्थित अपने घर के स्टडी रूम में वही तेज़, पुरुषों के परफ्यूम की गंध आई। यह बात उसे विशेष रूप से परेशान करने वाली थी, क्योंकि उन्होंने सर्दियों के लिए उस कमरे को बंद कर दिया था और महीनों से न तो कोई परफ्यूम लगाने वाला व्यक्ति उसमें गया था और न ही कोई उसे लगाकर आया था।

1969 में, उन्हें एक बार फिर कोलंबस में अपने दादा के घर जाने का मौका मिला। वे अपने दिवंगत दादा के पुराने बेडरूम में पहुँच गईं। वे उनकी अलमारी के पास रुकीं और दराज खोली। वहाँ उन्हें उनकी पसंदीदा खुशबू मिली: एवन हेयर लोशन की एक बोतल, जिसे उनके दादा इस्तेमाल करते थे। उनके पति के किसी भी इत्र की बोतल में ऐसी खुशबू नहीं थी। यही वह खुशबू थी। लेकिन यह अटलांटा तक कैसे पहुँची? या फिर, ग्रोवर ने इसे लगाया होगा।

मैरी एक तीस वर्षीय गृहिणी हैं, जिन्होंने कई वर्षों तक विभिन्न व्यावसायिक फर्मों में सचिव के रूप में काम किया है और उनकी शादी एक डाक क्लर्क से हुई है।

वह अपने दादाजी के अपने रिश्तेदारों से मिलने जाने की जिद से परेशान थी और कब्रिस्तान में नहीं रुकना चाहती थी, जैसा कि सभ्य लोगों को करना चाहिए, कम से कम मृतकों के प्रति पारंपरिक दृष्टिकोण के अनुसार।

जाहिर तौर पर ग्रोवर का इस जीवन से अंत अभी नहीं हुआ था, और इस दुख की घाटी से उनके अप्रत्याशित प्रस्थान से पहले उन्होंने जो जीवंत जीवन व्यतीत किया था, उससे यह स्पष्ट था कि उनमें अभी भी बहुत ऊर्जा शेष थी।

इसके साथ-साथ अधूरे कामों को लेकर उनकी सच्ची नाराजगी—खासकर गायब हुए दो लिफाफों को लेकर—ही उनके बार-बार आने-जाने का कारण रही होगी। मैरी ने अगले दौरे का इंतजार न करने का फैसला किया और कोलंबस में एक कार्ड रीडर से मिलने चली गई। कार्ड रीडर ने उसे सिर्फ इतना बताया कि उसके दादाजी थोड़े बेचैन हैं और उसकी भलाई चाहते हैं।

दुर्भाग्यवश, ग्रोवर की निरंतर उपस्थिति का कारण पता चल भी जाए, तो भी लापता लिफाफों को कानूनी रूप से वापस पाने का कोई तरीका नहीं था।

मैरी ने अपने दादाजी से संपर्क कराने के लिए एक स्थानीय ज्योतिषी से व्यर्थ ही प्रयास किया। अंततः, उसने बाइबल के उद्धरणों की पांडुलिपि पर ध्यान केंद्रित किया। शायद यही वह पुस्तक थी जिसे वह प्रकाशित करवाना चाहते थे।

जो भी हो, उसने सही ही किया होगा, या शायद सिर कटे दादाजी के बारे में हुई सारी बातों ने उस बूढ़े सज्जन के अहंकार को इतना संतुष्ट कर दिया कि वह धरती से उठ खड़ा हुआ। खैर, उसके बाद उसके प्रकट होने की कोई खबर नहीं मिली है और हो सकता है कि अब तक वह उन लिफाफों के बारे में भूल ही गया हो, क्योंकि उसकी नई दुनिया के आकर्षण ने उसका ध्यान अपनी ओर खींच लिया है।

हां, अगर वह सिर्फ आराम कर रहा हो और ताकत जुटा रहा हो तो बात अलग है!

*65

पुराने व्यापारी के घर का भूत (न्यूयॉर्क शहर)

जब न्यूयॉर्क अभी युवा और विकासशील था, तब जो इलाका अब खंडहरों और झुग्गी-झोपड़ियों से भरा हुआ है, वह घरों और बगीचों का एक सुंदर, शांत क्षेत्र हुआ करता था, और लगभग 1820 के आसपास युवा गणराज्य में दुनिया सही और शांतिपूर्ण थी।

धीरे-धीरे, हालांकि, "अमीर" लोग, जैसा कि हम उन्हें आजकल कहते हैं, शहर के ऊपरी हिस्से की ओर बढ़ने लगे, क्योंकि एक छोटे से द्वीप तक सीमित इस शहर की प्रकृति ही ऐसी है कि यह केवल ऊपर की ओर ही बढ़ सकता है, कभी नीचे या बाहर की ओर नहीं। ग्रीनविच विलेज अभी भी शहर के ऊपरी हिस्से में काफी दूर था, हालांकि शहर अपनी सीमाओं से आगे फैल चुका था और न्यूयॉर्क का केंद्र कहीं सिटी हॉल जिले के आसपास था, जिसे आजकल डाउनटाउन माना जाता है।

रियल एस्टेट डेवलपर्स ने फिफ्थ एवेन्यू के पूर्वी हिस्से को धनी लोगों के लिए आलीशान घर बनाने के लिए उपयुक्त स्थान के रूप में देखा। उस समय के सबसे प्रसिद्ध वास्तुकारों में से एक जॉन मैककॉम्ब थे, जिन्होंने लाफायेट स्ट्रीट से बोवेरी तक फैले घरों की एक पंक्ति बनाने की योजना बनाई थी, जिनकी पिछली खिड़कियाँ पास ही स्थित जॉन जैकब एस्टोर की संपत्ति की ओर खुलती थीं। श्री एस्टोर को उनके कुछ समकालीनों द्वारा सामाजिक रूप से कुछ असभ्य माना जाता था—एक बार उन्होंने एक महिला की बड़ी आस्तीन को खाने का नैपकिन समझ लिया था—लेकिन उनकी समृद्धि और व्यावसायिक जगत में उनकी स्थिति पर किसी को कोई संदेह नहीं था। इसलिए, बिल्डरों का मानना था कि ऐसे आकर्षक पड़ोस की ओर खुलने वाला कोई भी घर स्वाभाविक रूप से खरीदार को आकर्षित करेगा, और वे सही साबित हुए।

इन मकानों को इनके अग्रभागों में इस्तेमाल की गई गहरे रंग की ईंटों के कारण ब्राउनस्टोन कहा जाता था। ये मकान अच्छी तरह से बने हुए और मजबूत थे। उस क्षेत्र में अब केवल एक ही मकान बचा है, जबकि पुराने मकानों की जगह गैरेज, कारखाने और बदसूरत आधुनिक इमारतें बन चुकी हैं।

यह मकान 1830 में बनकर तैयार हुआ था और सीबरी ट्रेडवेल नामक एक व्यापारी की नजर इस पर पड़ी, जो शहर में अपनी बढ़ती आर्थिक स्थिति के अनुरूप एक उपयुक्त घर की तलाश में था। उसने इसे खरीद लिया और अपने परिवार के साथ इसमें रहने लगा।

श्री ट्रेडवेल का व्यवसाय हार्डवेयर का था और वे पास की ही डे स्ट्रीट पर स्थित किसम एंड ट्रेडवेल कंपनी के प्रमुख साझेदारों में से एक थे। पचास वर्ष के मोटे-ताज़े श्री ट्रेडवेल को आज के समय में रूढ़िवादी कहा जा सकता है। उनके एक प्रत्यक्ष पूर्वज न्यूयॉर्क के पहले प्रोटेस्टेंट एपिस्कोपल बिशप थे और यद्यपि वे एक व्यापारी थे, ट्रेडवेल उभरते हुए व्यापारिक अभिजात वर्ग के सभी बाहरी लक्षण प्रदर्शित करते थे। उन्होंने हाल ही में जो घर खरीदा था, वह देखने में बिल्कुल वैसा ही था: सात मंजिलों वाला, जिसमें तीन मंजिला इमारत, एक अटारी और दो तहखाने थे, फोर्थ स्ट्रीट की ओर खुलने वाली बड़ी-बड़ी, फेडरल शैली की खिड़कियाँ, घर के चारों ओर एक सुंदर बगीचा और एक भव्य स्तंभों वाला प्रवेश द्वार, जहाँ पहुँचने के लिए लोहे के गेट लैंटर्न से सजी छह संगमरमर की सीढ़ियाँ चढ़नी पड़ती थीं—कुल मिलाकर, एक व्यापारी राजकुमार के लिए अपने निवास स्थान के चुनाव में एक वास्तविक रईस के सबसे करीब का अनुभव।

अंदर भी साज-सज्जा भव्य थी और उस समय की परंपराओं के अनुरूप थी: डंकन फाइफ द्वारा निर्मित एक सुंदर सीढ़ी तीन ऊपरी मंजिलों तक जाती थी, और एक सुरुचिपूर्ण हॉल से शुरू होती थी जो किसी भी आगंतुक के लिए उपयुक्त था।

जैसे ही कोई इस हॉल में प्रवेश करता, सबसे पहले बाईं ओर एक विशाल, ऊँची छत वाला बैठक कक्ष दिखाई देता। इस बैठक कक्ष के अंत में महोगनी के दोहरे दरवाजे थे जो भोजन कक्ष को अलग करते थे, जो सामने वाले कमरे जितना ही विशाल और प्रभावशाली था। डंकन फाइफ की मेज पर हैविलैंड के चीनी मिट्टी के बर्तन और वॉटरफोर्ड के क्रिस्टल सजे थे, जो ट्रेडवेल परिवार की यूरोपीय विरासत को दर्शाते थे। प्रत्येक कमरे में एक बड़ी चिमनी और लंबे दर्पण थे जो दोनों कमरों को और भी विशाल बनाते थे। दोनों सिरों पर फर्श से छत तक फैली बड़ी खिड़कियाँ कमरों में रोशनी लाती थीं और जब महोगनी के दरवाजे खोले जाते थे, तो पूरा क्षेत्र यूरोप में श्री ट्रेडवेल के पूर्वजों के आलीशान घरों में से किसी एक के बॉलरूम जैसा दिखता था।

घर का सारा फर्नीचर—जो आज भी घर में मौजूद है—बहुत सोच-समझकर चुना गया था। बैठक के एक कोने में एक बड़ा, आयताकार पियानो रखा हुआ था। पियानो के बिना कोई भी विक्टोरियन ड्राइंग रूम अधूरा लगता था। पियानो बजाने में असमर्थ लेकिन संगीत की धुनों के शौकीन लोगों के मनोरंजन के लिए उस पर एक म्यूजिक बॉक्स रखा गया था। यह बॉक्स "होम स्वीट होम" धुन बजाता था, और सचमुच वह घर बहुत प्यारा था।

गलियारे में थोड़ा आगे बढ़ने पर एक छोटा सा "पारिवारिक कमरा" और एक अंधेरा, बदसूरत रसोईघर दिखाई देता था, जो लगभग एल-आकार का था और आजकल के हिसाब से देखा जाए तो उसमें न तो कोई आकर्षण था और न ही कोई व्यावहारिक व्यवस्था। लेकिन विक्टोरियन न्यूयॉर्क में, खाना पकाने के लिए यही एक उचित जगह थी। नौकरानियों और रसोइयों को खुश रखना ज़रूरी नहीं था, आखिर उनका काम तो खाना बनाना और परोसना था, न कि आनंद लेना।

पहली मंजिल पर—या कहें कि आजकल के हिसाब से दूसरी मंजिल पर—दो बड़े शयनकक्ष एक तरह के भंडारण क्षेत्र, या शायद ड्रेसिंग रूम से अलग किए गए हैं, जो दराजों और अलमारियों से भरा हुआ है। सामने वाले शयनकक्ष से लगा हुआ एक छोटा शयनकक्ष है जिसमें चार खंभों वाला बिस्तर लगभग पूरी जगह घेरे हुए है। यह बिस्तर श्रीमती ट्रेडवेल के पूर्वजों में से किसी एक के साथ इंग्लैंड से आया था।

तीसरी मंजिल की ओर जाने वाली सीढ़ियाँ संकरी हैं, इसलिए रेलिंग को कसकर पकड़ना ही बेहतर है, अन्यथा गिरने से गर्दन टूट सकती है। तीसरी मंजिल आजकल क्यूरेटर के अपार्टमेंट के रूप में उपयोग की जाती है, क्योंकि पुराने व्यापारी के घर को एक निजी संग्रहालय के रूप में संरक्षित रखा गया है और अब यह लालची विध्वंसकों के चंगुल में नहीं है।

लेकिन जब सीबरी ट्रेडवेल इस घर में रहते थे, तो नौकरों के कमरे तीसरी मंजिल पर थे। इसके अलावा, कम छत वाली अटारी में अतिरिक्त जगह थी, और तहखाने के एक हिस्से में एक और कमरा था, जो नौकरों के उपयोग के लिए उपयुक्त था।

लोअर मैनहट्टन में स्थित ओल्ड मर्चेंट्स हाउस के तीन दृश्य

कुल मिलाकर, यह एक ऐसा घर था जिसने इसके मालिक में आत्मविश्वास जगाया और श्री ट्रेडवेल ने न्यूयॉर्क के समाज में एक प्रभावशाली व्यक्ति के रूप में अपनी पहचान बनाई, क्योंकि यह उनके बढ़ते व्यवसाय के लिए भी अच्छा था।

इस खोज में उन्हें उनकी पत्नी एलिजा से बहुत मदद मिली, जिनसे उन्होंने अपने उत्थान के दौरान ही विवाह किया था। एलिजा ने उन्हें छह बेटियाँ दीं। इनमें से तीन बेटियों का विवाह अच्छे परिवारों में हुआ और वे पैतृक घर छोड़कर चली गईं और जाहिर तौर पर उनका जीवन

बहुत सुखमय रहा, क्योंकि उनके बारे में ज्यादा कुछ सुनने को नहीं मिला। शेष तीन बेटियों के बारे में बहुत कुछ दर्ज है, और बहुत कुछ ऐसा भी है जो दर्ज नहीं है, हालांकि यह निश्चित रूप से सच है।

तीनों अविवाहित लड़कियों के नाम फोएबे, सारा और गर्ट्रूड थे। फोएबे की सबसे ज़्यादा रुचि बैठक में रखे कार्ल फिशर पियानो में थी और वह अपनी बहन सारा के साथ अक्सर पियानो बजाती थीं। 1840 में जन्मी ट्रेडवेल परिवार की सबसे छोटी बेटी गर्ट्रूड बाकियों से अलग थी और अपनी एकांतप्रियता बनाए रखती थी। दो लड़के भी थे, लेकिन कहा जाता है कि उनका कोई खास महत्व नहीं था, क्योंकि बाद में जब सभी बच्चों में से केवल वे और गर्ट्रूड ही बचे, तो एक चचेरे भाई, जज सीबरी को जागीर के प्रबंधन की देखरेख का जिम्मा सौंपना आवश्यक हो गया। विशेष रूप से भाई होरेस को चायघर से दिखाई देने वाले चार मैगनोलिया के पेड़ों की देखभाल में कहीं अधिक रुचि थी।

आज तक, शयनकक्षों के पास एक गुप्त दरवाजे से पूर्वी नदी तक जाने वाले उस गुप्त मार्ग का असली कारण किसी को नहीं पता। चूहों को अंदर आने से रोकने के लिए हाल ही में उसे दीवार से घेर दिया गया है, लेकिन वह मार्ग अभी भी मौजूद है, और अपना रहस्य बरकरार रखे हुए है—यानी, उन लोगों के लिए जो इसे नहीं जानते।

ओल्ड मर्चेंट्स हाउस की मोटी दीवारों के पीछे घटी कुछ बातें शायद कभी सामने नहीं आतीं, अगर एक सदी बाद उन संवेदनशील लोगों ने इसकी गलियों में कदम न रखा होता, जिन्होंने धीरे-धीरे उस घर के शुरुआती दिनों की घटनाओं को समझने में मदद की। तभी जाकर पहेली के अलग-अलग टुकड़े धीरे-धीरे अपनी जगह पर बैठ पाए, वे टुकड़े जो अन्यथा शायद कभी एक साथ नहीं जुड़ पाते।

जब अंततः घर ने अपने गहरे रहस्यों को उजागर किया, तो उस पर एक अजीब सी शांति छा गई, मानो इतने वर्षों बाद कहानी कही जानी चाहती थी और उसे प्रकाश से और अधिक छिपने की आवश्यकता से मुक्त करना चाहती थी।

सीबरी ट्रेडवेल के कठोर विक्टोरियन तौर-तरीके उनके परिवार के सभी सदस्यों को रास नहीं आते थे। खासकर अविवाहित बेटियाँ अपने पिता से डरती भी थीं और उनका सम्मान भी करती थीं, और उनके कठोर मानकों पर खरा उतरना उनके लिए मुश्किल था। वे शादी

करना चाहती थीं, लेकिन कोई उपयुक्त व्यक्ति न मिलने पर वे इंतज़ार करने को तैयार थीं। हालाँकि, इस समर्पण के पीछे सारा का विद्रोही भाव पनप रहा था। गर्ट्रूड से पाँच साल बड़ी सारा, ऐसे युग में खुशी पाने के लिए इंतज़ार नहीं कर सकती थी, जहाँ इस शब्द का शायद ही कोई व्यक्तिगत अर्थ रह गया था।

ट्रेडवेल परिवार पर कठोर शासन करता था, और अपने आदेशों का अंधाधुंध पालन करवाता था। इसलिए, सारा ने बड़ी हिचकिचाहट के साथ उस युवक से दोस्ती को बढ़ावा दिया, जिसे उसके पिता न तो जानते थे और न ही उसके बारे में जानते थे, और जिससे उसकी मुलाकात एक चाय की दुकान पर संयोग से हुई थी। यही बात उसके पिता के लिए ऐसी दोस्ती को नामंजूर करने का पर्याप्त कारण होती। वह ऐसा व्यक्ति था जो मुर्गे के अंगों को टांग कहने वाले किसी भी व्यक्ति को अभद्र मानता था, एक ऐसा व्यक्ति जिसने अपनी कुर्सियों और मेजों के पैरों को ढकने का आदेश दिया था ताकि वे पुरुष आगंतुकों को अनुचित विचारों के लिए उकसा न सकें!

एक अजनबी आदमी से संबंध बनाने और पकड़े न जाने के लिए सारा को बड़ी चतुराई से काम लेना पड़ा। लेकिन उसकी माँ, शायद ट्रेडवेल के खिलाफ विद्रोह के कारण, या शायद अपनी उपेक्षित बेटी के प्रति दया के कारण, इस पर ध्यान नहीं देती थी, बल्कि इसे बढ़ावा देती थी। चतुर सारा को प्रेम की तलाश में एक और साथी मिल गया। एक अश्वेत नौकर था जो उसे जन्म से जानता और उसकी देखभाल करता था, और वह उसके और उस युवक के बीच मध्यस्थ का काम करता था। कुछ हफ्तों तक, सारा अपने प्रेमी से मिलने के लिए छुप-छुप कर जाती रही। संयोग से, उसे नदी तक जाने वाला गुप्त रास्ता मिल गया था, और उसने उसका बखूबी इस्तेमाल किया। दूसरी तरफ वह रास्ता उस समय काफी ऊबड़-खाबड़ ज़मीन और उससे भी ज़्यादा खतरनाक मोहल्ले में खुलता था, लेकिन वह युवक हमेशा एक गाड़ी के साथ वहाँ इंतज़ार करता रहता था और वह अपने पिता की कट्टर निगाहों के ठंडे आलिंगन से कहीं ज़्यादा उसके साथ सुरक्षित महसूस करती थी। हालाँकि ट्रेडवेल अपने दोस्तों के सामने शेखी बघारता था कि उसके घर में "सात सौ ताले और सात सौ चाबियाँ" हैं, लेकिन एक दरवाज़ा ऐसा था जिसके बारे में वह भूल गया था।

सन् 1830 में किसी वास्तुकार ने गुप्त मार्ग क्यों शामिल करने की इच्छा जताई, यह बात पहली नज़र में तो रहस्य लगती है, लेकिन उन वर्षों में न्यूयॉर्क में दंगे होते रहते थे और 1812 के ब्रिटिश आक्रमण की यादें शायद कुछ लोगों के मन में अभी भी ताज़ा थीं। किसी संभ्रांत अमेरिकी घर में गुप्त भागने का रास्ता होना उतना ही सामान्य था जितना इंग्लैंड के किसी कैथोलिक घर में पादरी से छिपने की जगह होना। कोई नहीं जानता था कि हालात कब बदल जाएंगे। दास विद्रोह की कई घटनाएं हो चुकी थीं और दक्षिण से दुर्भाग्यशाली भगोड़ों को लाने वाला "अंडरग्राउंड रेलरोड" उस समय न्यूयॉर्क में पूरी तरह से सक्रिय था।

उस युवक से एक मुलाकात, जिसका नाम यहाँ नहीं बताया जाएगा, दूसरी मुलाकात का कारण बनी और जल्द ही, प्रकृति ने अपना काम कर दिया। सारा निश्चित रूप से गर्भवती थी। क्या वह अपने पिता को यह बात बता सकती थी? बिलकुल नहीं। क्या उन्हें भागकर शादी कर लेनी चाहिए? यह करना तर्कसंगत लग रहा था, लेकिन सारा को अपने परिवार के कठोर नियंत्रण का डर था। जज सीबरी, उसके पिता के प्रतिष्ठित चचेरे भाई, उन्हें रोक सकते थे। फिर बदनामी का भी सवाल था। अपने परिवार पर बदनामी लाना एक खुशहाल वैवाहिक जीवन की शुरुआत करने का अच्छा तरीका नहीं था।

व्याकुल होकर सारा ने उस युवक से मिलना बंद कर दिया। रातों को वह घर के गलियारों में चिंता और पकड़े जाने के डर से भटकती रहती थी। अंततः, उसे किसी को बताना ही पड़ा, और वह कोई और नहीं बल्कि उसकी बहन गर्ट्रूड थी। हैरानी की बात यह थी कि गर्ट्रूड ने उसकी बात समझी और उसे यथासंभव सांत्वना दी। अब जब उन्होंने उसका रहस्य साझा कर लिया था, तो हालात थोड़े आसान हो गए थे। लेकिन दुर्भाग्य से, स्थिति में सुधार नहीं हुआ। कुछ ही समय बाद उसके पिता को उसकी हालत का पता चल गया और फिर सब कुछ तहस-नहस हो गया।

ट्रेडवेल ने अपने भारी भरकम शरीर के खौफ से सारा से सारी कहानी उगलवा ली, सिवाय उस युवक के नाम के। नाम छुपाना उसके लिए बेहद मुश्किल था, पर उसे लगा कि अपने प्रेमी को धोखा देने से उसका विवाह नहीं हो पाएगा। उसका यह डर बिल्कुल जायज था कि उसके पिता उसे मरवा देंगे या जेल भेज देंगे। जब बूढ़े व्यापारी को पता चला कि कोई बिचौलिए का काम कर रहा था, और वो भी उसके यहाँ काम करने वाला एक आदमी, तो बूढ़े

व्यापारी को खूब खरी-खोटी सुनाई गई। ट्रेडवेल ने उसे तुरंत नौकरी से नहीं निकाला, क्योंकि वो कई सालों से उनके साथ काम कर रहा था और उसका काम परिवार के लिए फायदेमंद था। लेकिन उसने बेचारे को खूब गालियाँ दीं और धमकाया, यहाँ तक कि मालिक के गुस्से के सदमे से उसका स्वभाव ही बदल गया: जहाँ वो पहले एक मिलनसार और मददगार नौकर था, वहीं अब वो एक निकम्मा, घबराया हुआ इंसान बन गया था, जो रोशनी और हर तरह के सवालों से बचने के लिए बेताब था।

कहा जाता है कि चिमनी की तस्वीर लेना असंभव है...

यह सिलसिला कुछ हफ़्तों या महीनों तक चलता रहा। फिर बच्चे के जन्म का समय आ गया और घर के मालिक को एक और सूझबूझ सूझी। उसने काले नौकर को बुलाया और उससे काफ़ी देर तक बात की। भारी दरवाजों के पीछे क्या हुआ, यह कोई नहीं सुन सका, लेकिन जब नौकर बाहर आया तो उसका चेहरा गंभीर था और आँखें भावहीन थीं। फिर भी, मालिक और नौकर के बीच पुराना रिश्ता फिर से जुड़ गया, क्योंकि इस मुलाक़ात के बाद ट्रेडवेल ने उस नौकर को गाली देना बंद कर दिया।

उसके बाद क्या हुआ, यह हम केवल एक मानसिक रूप से सक्षम व्यक्ति की तीक्ष्ण अंतर्दृष्टि से पुनर्जीवित स्मृति के टुकड़ों से ही जानते हैं: दुर्भाग्य से, कोई भी न्यायालय इन तथ्यों को कानून के अनुसार सत्य नहीं मानेगा, भले ही वे वास्तव में तथ्य हों। एक दिन ऊपर की मंजिल पर दो शयनकक्षों के बीच के गुप्त द्वार से सिसकने की आवाज सुनाई दी, जहाँ अब एक दराजों वाली अलमारी और नदी की ओर जाने वाला दीवार से घिरा हुआ मार्ग है। इससे पहले कि घर के अन्य नौकर रात में अजीब आवाजों की जाँच कर पाते, सब कुछ समाप्त हो गया और घर फिर से शांत हो गया। ट्रेडवेल स्वयं अपने कमरे से बाहर आया और उन्हें शांत किया।

गिट्टी द्वारा पहनी गई असली पोशाक, जिसका भूत कभी घर छोड़कर नहीं गया।
उन्होंने बुलंद स्वर में कहा, "कुछ नहीं, बस चिमनी में हवा चल रही है।"
किसी ने भी मालिक की बातों पर सवाल नहीं उठाया, इसलिए घर में जल्द ही फिर से सन्नाटा छा गया।

लेकिन नीचे, नदी की ओर जाने वाले नम, अंधेरे गलियारे में, एक सांवला आदमी एक नवजात शिशु के बेजान शरीर को ले जा रहा था जिसने अभी-अभी अपनी पहली और आखिरी सांस ली थी।

कुछ दिनों बाद, एक और टकराव हुआ। उस अपराधी को अपनी मज़दूरी चाहिए थी। उसे उस घिनौने काम के लिए एक निश्चित रकम देने का वादा किया गया था। मालिक ने कंधे उचका दिए। उस आदमी ने धमकी दी। मालिक ने उससे मुंह फेर लिया। भला कौन एक पूर्व गुलाम, एक भागे हुए गुलाम की बात मानेगा जो दक्षिण जाना चाहता था? सच में, उसे ऐसे व्यक्ति को कुछ भी देने की ज़रूरत नहीं थी। बुराई का भी अपना दंड होता है, और वह आदमी अपने छोटे से कमरे में लौट गया। लेकिन अपराध का निशान गुप्त द्वार के पास वाले छोटे से रास्ते पर रह गया और एक सदी बाद एक मानसिक शक्ति वाले व्यक्ति ने उसे खोज निकाला। किसी ने भी अपराध होते नहीं देखा। कोई भी यह दावा नहीं कर सकता कि मालिक और नौकर के बीच कभी कोई समझौता हुआ था। लेकिन घर सब जानता है और अपनी चुप्पी में, उन तथ्यों से कहीं ज़्यादा बोलता है जो अदालत में टिक पाएंगे।

कई दिनों बाद जब सारा बेहोशी से उठी और अपने नवजात शिशु को गायब पाया, तो वह बुरी तरह पागल हो गई। कुछ समय तक उसे काबू में रखना पड़ा। किसी तरह यह बात नीचे शहर की गलियों में फैल गई, लेकिन किसी ने भी सार्वजनिक रूप से कुछ कहने की हिम्मत नहीं की। सारा अपने दोस्तों से बस इतना कहती रही कि वह "बीमार" है। कई सप्ताह बीत गए और उसका दर्द कम हो गया। धीरे-धीरे उसके भीतर के खालीपन में एक तरह की राहत भर गई। उसने सब कुछ खो दिया था, लेकिन कम से कम उसका प्रेमी उसके पिता के चंगुल से सुरक्षित था। हालाँकि उसे कभी पक्का पता नहीं चला, लेकिन जब भी वह नौकर की तरफ देखती, तो पीछे हट जाती: उसकी आँखें उससे नज़रें नहीं मिलाती थीं और उसका दिल जम जाता था। किसी तरह, एक माँ के अतार्किक ज्ञान से, वह जानती थी। फिर, वह उस गुप्त द्वार के पास वाले रास्ते से भी बचती रही। कोई भी उसे उस रास्ते से गुज़रने के लिए मजबूर नहीं कर सकता था। लेकिन जैसे-जैसे उसका स्वास्थ्य सुधरता गया, घर छोड़ने का उसका दृढ़ संकल्प भी और मजबूत होता गया। वह उस घर में और नहीं रह सकती थी जहाँ इतना कुछ घटित हुआ था। एक दिन, वह किसी तरह दरवाजे से बाहर निकलने में कामयाब हो गई। वह

पतझड़ की तूफानी रात थी और उसने ठीक से कपड़े भी नहीं पहने थे। पीछा किए जाने के डर से वह लगभग पागल सी हो गई थी और घंटों सड़कों पर भटकती रही। अंधेरा और उसकी मानसिक स्थिति उस पर भारी पड़ रही थी। आखिरकार वह पानी के किनारे पहुँच गई। जब उसे ढूंढा गया, तो वह जीवित थी, लेकिन घर वापस लाए जाने से पहले ही उसकी मृत्यु हो गई।

उसकी आत्महत्या परिवार के लिए एक गहरा आघात थी। यह अफवाह फैली कि सारा की मृत्यु एक घोड़ागाड़ी दुर्घटना में हुई है। यह सुनने में कहीं अधिक शालीन लगता था, और हालांकि किसी को कभी पता नहीं चला कि वह कौन सी घोड़ागाड़ी थी, क्योंकि वह इतने लंबे समय से बिस्तर पर थी और उसने अभी-अभी घर में चलना-फिरना सीखा था, फिर भी इसे स्वीकार कर लिया गया क्योंकि विक्टोरियन युग में एक अलिखित नियम था: एक व्यक्ति की त्रासदी दूसरे की गपशप नहीं होती। इसके अलावा, आत्महत्या का प्रश्न उस युग में एक जटिल मुद्दा था जिसने अभी तक मानव व्यक्तित्व को शारीरिक रूप से भी मुक्त नहीं किया था: इसे एक दुर्घटना ही माना जाना था।

इस प्रकार सारा को उसके परिवार के अन्य सदस्यों के साथ लॉन्ग आइलैंड के मैनहैसेट में क्राइस्ट चर्चयार्ड में दफनाया गया, और एक महत्वपूर्ण नागरिक की बेटी होने के नाते, जिसके पूर्वज एक बिशप थे, उसे विधिवत रूप से पवित्र किया गया।

सारा के साथ जो कुछ हुआ था, उसका सबसे छोटी बेटी गर्ट्रूड पर गहरा और स्थायी प्रभाव पड़ा, जिसे वे बचपन में प्यार से गिट्टी कहते थे। बेशक, वह इसके बारे में बात न करने की कोशिश करती थी, लेकिन इससे उसके दैनिक व्यवहार में गंभीरता और गंभीरता बढ़ गई।

अब वह उस उम्र में पहुँच चुकी थी जहाँ प्यार आसानी से हो सकता है, फिर भी किसी ने भी उसका हाथ थामकर उसके रक्तचाप पर ज़रा सा भी असर नहीं डाला था। यह सच है कि उसके पिता ने कई चुनिंदा नौजवानों से उसका परिचय कराया था, जिनमें से कुछ ज़्यादा उम्र के भी थे, इस उम्मीद में कि वह उनमें से किसी एक को चुन लेगी। लेकिन गर्ट्रूड सिर्फ़ अपने पिता को खुश करने के लिए शादी नहीं करना चाहती थी, फिर भी वह उनकी इच्छा के विरुद्ध भी शादी नहीं करना चाहती थी। उसने सोचा कि कोई ऐसा होना चाहिए जिससे वह प्यार कर

सके और जिसे उसके पिता भी स्वीकार कर सकें, और वह उसके लिए इंतज़ार करने को तैयार थी।

जब वह समय के साथ खेल रही थी, तभी वसंत ऋतु फिर से लौट आई और हवा ने उसे बगीचे में टहलने के लिए बुलाया। वहाँ उसकी नज़र घर के पास से गुजर रहे एक युवक पर पड़ी। विक्टोरियन शिष्टाचार के बावजूद दोनों के बीच कुछ बातें हुईं और वह खुशी और उत्साह से भर उठी।

उसने निश्चय किया कि वह अपनी बहन की तरह छुपकर किसी युवक से मिलने की गलती नहीं करेगी। इसके बजाय, उसने लुई नाम के उस शर्मीले युवक को अपने पिता की जानकारी (भले ही अभी आशीर्वाद न मिला हो) के साथ खुलेआम अपने घर में प्रवेश करने के लिए प्रोत्साहित किया। उसने ऐसा किया, हालांकि इसमें उसे कई कठिनाइयों का सामना करना पड़ा, और सीबरी ट्रेडवेल ने तुरंत उसकी जांच करवाई। उसे पता चला कि वह युवक चिकित्सा का एक गरीब छात्र था।

"लेकिन वह एक दिन बहुत अच्छा डॉक्टर बनेगा," गर्ट्रूड ने अपने पिता से विनती की।

“एक दिन,” बूढ़े आदमी ने चिढ़कर कहा, “और तब तक वह किस पर गुजारा करेगा? मैं आपको बताता हूँ। मेरे पैसों पर।”

ट्रेडवेल का मानना था, और शायद यह धारणा निराधार नहीं थी, कि न्यूयॉर्क में हर कोई जानता था कि उसकी बेटियाँ उत्तराधिकारी थीं और उन्हें काफी दहेज भी मिलेगा। यह विचार उसके मन में इस कदर बैठ गया था कि वह हर आने वाले सज्जन को धन-दौलत का लालची समझता था।

उसने तर्क दिया कि वह युवक निश्चित रूप से उसकी बेटी के प्यार के पीछे नहीं था, बल्कि केवल उसके पैसे के पीछे था और यह कभी भी स्वीकार्य नहीं था।

गर्ट्रूड बेहद खूबसूरत तो नहीं थीं, लेकिन उनमें एक खास आकर्षण और आत्मनिर्भरता थी। वह कद में छोटी, पतली कमर वाली, नीली आंखों और काले बालों वाली थीं, और वह काफी हद तक ब्रिटेन की राजकुमारी मार्गरिट से मिलती-जुलती थीं, जब वह अपनी बीसियों में थीं।

ट्रेडवेल ने युवा मेडिकल छात्र को एक गंभीर जीवनसाथी के रूप में स्वीकार करने से इनकार कर दिया। न केवल वह युवक आर्थिक रूप से असमर्थ था, बल्कि उससे भी बुरा यह था कि

वह कैथोलिक था। ट्रेडवेल धर्म से इतर विवाहों को प्रोत्साहित करने में विश्वास नहीं करते थे और यदि लुई ने धर्म परिवर्तन का प्रस्ताव भी दिया होता, तो पिता का मन बदलना मुश्किल था। इन सब बातों में उन्होंने अपनी बेटी की भावनाओं या इच्छाओं पर बिल्कुल ध्यान नहीं दिया और विक्टोरियन युग की कठोरता के साथ, उसे उस युवक से आगे मिलने से मना कर दिया।

अंततः पिता और पुत्री के बीच आमना-सामना हुआ। ट्रेडवेल, जो अब उतने युवा नहीं रहे थे और बढ़ती उम्र के दर्द और तकलीफों से ग्रस्त थे, ने अपनी पुत्री से विनती की कि वह अपने अंतिम वर्षों में उन्हें निराश न करे। वह पुत्री के लिए एक अच्छा सहारा चाहते थे, और लुई इसके लिए उपयुक्त व्यक्ति नहीं थे। अपनी भावनाओं के बावजूद, गर्ट्रूड अंततः अपने पिता की विनती के आगे झुक गई और उस युवक को विदा कर दिया। जब दरवाजे उसके लिए हमेशा के लिए बंद हो गए, तो ऐसा लगा मानो गर्ट्रूड के हृदय के द्वार भी बाहरी दुनिया के लिए हमेशा के लिए बंद हो गए हों: इसलिए वह केवल अपने पिता और उनकी भलाई के लिए जीती रही और कोई भी युवक उसे फिर कभी नहीं देख पाया।

सीबरी ट्रेडवेल एक कठिन और कष्टदायी रोगी साबित हुए, क्योंकि उनकी बढ़ती बीमारी ने उन्हें हमेशा के लिए बिस्तर पर ला दिया। जब अंततः 1865 में उनका देहांत हुआ, तो उनकी दो बहनें, गर्ट्रूड और फोबे, घर में रहती रहीं। लेकिन घर का सारा कामकाज गर्ट्रूड के हाथ में था। वे केवल अंधेरा होने के बाद और वह भी केवल बहुत ज़रूरी होने पर ही बाहर जाती थीं, जैसे कि भोजन खरीदना। खिड़कियाँ हमेशा बंद रहती थीं और यहाँ तक कि छोटे-मोटे रिसावों को भी मखमल या किसी अन्य सामग्री से ढक दिया जाता था ताकि रोशनी और ठंड अंदर न आ सके।

जैसे ही दोनों बहनों ने खुद को बाहरी दुनिया से अलग कर लिया, उनके बारे में तरह-तरह की किंवदंतियाँ प्रचलित हो गईं। लेकिन जब फोबी की मृत्यु हो गई और गर्ट्रूड बड़े घर में अकेली रह गई, तो ये किंवदंतियाँ भी थम गईं और धीरे-धीरे घर और उसकी मालकिन निरंतर बदलते हुए मानवीय परिवेश की विस्मृति में विलीन हो गए।

एक गुप्त दरवाज़ा जो घर को ईस्ट रिवर से जोड़ने वाले मार्ग की ओर जाता है

अंततः, तिरानवे वर्ष की आयु में गर्ट्रूड का देहांत हो गया। वर्ष 1933 था, और अमेरिका के सामने न्यूयॉर्क के अंतिम प्रामाणिक ब्राउनस्टोन भवन के भविष्य से कहीं अधिक गंभीर समस्याएँ थीं। गर्ट्रूड के निधन तक उनके साथ घर में रहने वाले दो नौकर, जिन्होंने उन्हें शांतिपूर्वक सोते हुए पाया था, जल्द ही घर छोड़कर चले गए, और उसे या तो विध्वंसकारियों, नए मालिकों या उपेक्षा के हवाले छोड़ दिया। घर में न बिजली थी, न टेलीफोन, लेकिन मूल फर्नीचर और सीबरी ट्रेडवेल द्वारा घर में लगाई गई सभी उत्कृष्ट कलाकृतियाँ अभी भी मौजूद थीं। घर में गर्मी का एकमात्र स्रोत फायरप्लेस थे, जिनसे घर भरा हुआ था। बगीचा बहुत पहले ही गायब हो चुका था, और केवल घर ही बचा था, जो एक गैराज और एक साधारण सी आधुनिक इमारत के बीच फंसा हुआ था। जो भी भव्यता कभी थी, वह अब केवल घर के अंदर ही मौजूद थी, या शायद उसकी पूर्व की शान की आभा में ही सिमटी हुई थी।

आस-पड़ोस अब सुरक्षित नहीं था, और घर की भी तुरंत मरम्मत की आवश्यकता थी। अंततः, जिम्मेदार नगर अधिकारियों ने महसूस किया कि इस स्थान को संग्रहालय में परिवर्तित किया जाना चाहिए, क्योंकि यह अमेरिका के उन कुछ घरों में से एक था जिसमें फर्नीचर से लेकर व्यक्तिगत सामान और कपड़े तक सब कुछ वैसा ही बरकरार था जैसा उन्नीसवीं शताब्दी के

मध्य में लोगों के रहने के समय था। स्वामित्व के सत्यापन में कानूनी समस्याएं आईं, लेकिन अंततः यह प्रक्रिया पूरी हो गई और ओल्ड मर्चेंट्स हाउस एक संग्रहालय बन गया।

जब घर में पहली बार कोई देखभाल करने वाला रहने आया, तो पता चला कि चोर पहले ही घर में घुसकर शेफ़ील्ड कैंडल होल्डर का एक जोड़ा, शार्लोट ब्रोंटे की पहली प्रति और ट्रेडवेल परिवार की बाइबिल चुरा ले गए थे। लेकिन बाकी सामान सुरक्षित था और तुरंत ही काफी सफाई करनी पड़ी।

इस काम में मदद कर रही महिलाओं में से एक दोपहर खुद को घर में अकेली पाई। वह मिस गर्ट्रूड के कुछ कपड़े नीचे ले जा रही थी ताकि उन्हें विशेष कांच के बक्सों में ठीक से प्रदर्शित किया जा सके। जब उसने काम से थोड़ी देर आराम किया, तो उसने ऊपर देखा और पाया कि सीढ़ियों पर एक महिला उसे ध्यान से देख रही है। पहली नज़र में, वह बिल्कुल इंग्लैंड की राजकुमारी मार्गरिट जैसी लग रही थी, लेकिन फिर उसने उस महिला के अजीब पुराने ज़माने के कपड़ों पर ध्यान दिया और महसूस किया कि वह किसी और युग की है। उसकी चुस्त-दुरुस्त चोली में छोटे-छोटे बटनों की एक कतार थी और उसका लंबा, सीधा स्कर्ट ज़मीन तक पहुँच रहा था। जब स्वयंसेवक उस अजनबी को हैरानी से घूर रही थी, यह सोचकर कि वह कौन हो सकती है, तभी सीढ़ियों पर खड़ी लड़की गायब हो गई।

पहले तो महिला अपने अनुभव के बारे में बात नहीं करना चाहती थी, लेकिन जब यह कई बार हुआ, और हमेशा तब जब वह घर में अकेली होती थी, तो उसे शक होने लगा कि कहीं वह अपना मानसिक संतुलन तो नहीं खो रही है। लेकिन जल्द ही एक और स्वयंसेवक सामने आई, एक महिला लेखिका जो शोध कार्य के लिए पुस्तकालय जाते समय उस घर के पास से गुज़री थी। घर की भव्यता से आकर्षित होकर, उसने और गौर से देखा और जल्द ही उसे घर से प्यार हो गया।

रात ढलने के बाद घर में एक अजीब सी बेचैनी छा जाती थी, लेकिन वह इसका कारण अपनी कल्पना और आस-पड़ोस के अजीब माहौल को मानती थी। वह भूतों में विश्वास नहीं करती थी और न ही वह कल्पनाओं में खोई रहती थी, और शोरगुल भी उसे परेशान नहीं करता था।

उसने फैसला किया कि अगर संग्रहालय को अन्य दर्शनीय स्थलों के बीच अपना उचित स्थान दिलाना है तो बहुत काम करना बाकी है, और उसने पर्यटकों और अन्य आगंतुकों को उनके पैसे का पूरा मूल्य देने का फैसला किया - पूरे पचास सेंट का।

अगले कुछ सप्ताह निजी सामानों, कपड़ों, गाउन, जूतों, टोपियों के ढेर को समझने की कोशिश में बीत गए, क्योंकि ट्रेडवेल परिवार ने अपना सब कुछ वैसे ही पीछे छोड़ दिया था - मानो वे किसी दिन अपनी सांसारिक संपत्ति में वापस लौटने और जीवन को पहले की तरह फिर से शुरू करने का इरादा रखते हों।

कुछ भी न तो बेचा गया था और न ही नष्ट किया गया था, और श्रीमती आर., जो एक लेखिका थीं, ने तुरंत महसूस किया कि उस काल के भविष्य के शोध के लिए निवास की यह अक्षुण्ण स्थिति कितनी महत्वपूर्ण थी। उन्होंने तुरंत काम शुरू कर दिया और जैसे-जैसे वह काम में जुटती गईं, उन्हें घर का ऐसा अनुभव होने लगा मानो वह स्वयं कई वर्षों से उसमें रह रही हों।

उसने अपना काम दिवंगत गर्ट्रूड ट्रेडवेल के कपड़ों की सूची दोबारा बनाकर शुरू किया। इस बार काम ठीक से करना ज़रूरी था, क्योंकि संग्रहालय में आने वाले दर्शकों को उस समय के परिधानों का अच्छा प्रदर्शन देखने का अधिकार था। जैसे-जैसे वह गर्ट्रूड के विशाल वॉर्डरोब को एक-एक करके उठाती गई, उसे ऐसा अजीब सा एहसास होता रहा जैसे कोई उसका हर कदम पर पीछा कर रहा हो। घर झुग्गी-झोपड़ियों से घिरा हुआ था और चोरी का खतरा बहुत ज़्यादा था, लेकिन यह मामला अलग था: कोई असली घुसपैठिया उसके पीछे-पीछे नहीं आ रहा था, जब वह तीसरी मंज़िल से तहखाने तक और फिर वापस कपड़ों के लिए चक्कर लगा रही थी।

अक्सर जब वह गलियारों से गुजरती थी तो उसे ठंडक का एहसास होता था, लेकिन वह इसका कारण पुराने घर के नम वातावरण को मानती थी।

एक दिन जब वह हॉल के बेडरूम से सामने वाले बेडरूम में दाखिल हुई, जो पहले गर्ट्रूड का बेडरूम हुआ करता था, तो उसे अपने आस-पास किसी और की मौजूदगी का स्पष्ट आभास हुआ। कोई चीज़ उससे पहले ही उसके पास से गुज़रकर सामने वाले बेडरूम में खुलने वाले दूसरे दरवाज़े तक पहुँच गई!

कुछ समय बाद जब ऐसा दोबारा हुआ, तो उसे शक होने लगा कि पड़ोस में घर के भूतिया होने की जो कहानियां खूब प्रचलित थीं, उनमें शायद कुछ सच्चाई भी थी। बेशक, वहां किसी की मौजूदगी थी, और किसी दूसरे व्यक्ति के उसके पास से गुजरने की आवाज तो बिल्कुल साफ सुनाई दी।

जब वह अभी भी इस बात पर विचार कर रही थी कि उसे इस बारे में अपने किसी दोस्त से बात करनी चाहिए या नहीं, तभी एक ऐसी घटना घटी जिसने इस संदेह को और भी पुख्ता कर दिया कि वह घर में कभी भी पूरी तरह से अकेली नहीं थी।

उसके आने के कई महीनों बाद, एक सुबह वह रसोई में कुछ सामान लेकर आई, जिसे चिमनी के सामने वाली दीवार पर सजी अलमारियों में रखना था। उसकी नज़र तिरछी नज़र से एक छोटी, सुंदर महिला की आकृति पर पड़ी जो उस विशाल चिमनी के सामने खड़ी थी। श्रीमती आर. ने उसके भूरे रंग के टैफ़्टा गाउन को तो देख लिया, लेकिन उसका सिर दूसरी तरफ़ मुड़ा हुआ था, इसलिए वह उसके चेहरे के हाव-भाव नहीं देख पाईं। लेकिन उसके घने भूरे बाल थे। पूरी आकृति धुंधली सी थी, मानो अस्पष्ट न हो। हालाँकि, उसके हाथ, जिनमें एक कप और तश्तरी थी, बहुत सुंदर थे और उसके गहरे रंग के गाउन के विपरीत स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहे थे।

श्रीमती आर. स्तब्ध रह गईं, उन्हें डर लग रहा था कि कहीं वह अपना सिर घुमाकर सीधे उनकी ओर न देख सकें। लेकिन अचानक, बिना किसी सचेत इच्छा के, वह घूमीं और तेज़ी से कमरे से निकलकर हॉल में चली गईं। सीढ़ियों तक पहुँचते-पहुँचते वह ठंडे पसीने से तरबतर हो चुकी थीं और उनके हाथ इतनी बुरी तरह काँप रहे थे कि उन्हें अपने हाथ में पकड़ी हुई चीज़ें नीचे रखनी पड़ीं।

अब उसे पता था कि गर्ट्रूड ट्रेडवेल अभी भी जीवित है, लेकिन उस रूप में नहीं जैसी वह अपनी मृत्यु के समय दिखती थी। बल्कि, उसने अपनी यादों को उस दौर में वापस ले जाकर देखा था जब वह सबसे खुशमिजाज थी और उसके प्रेमी को उसके क्रूर और निर्दयी पिता ने उससे दूर नहीं भेजा था।

जब श्रीमती आर. को अपनी प्रेत-मित्र की पहचान का एहसास हुआ, तो उनका डर दूर हो गया। आख़िरकार, इस घर में रहने का अधिकार उस महिला से बेहतर किसे हो सकता था

जिसने अपना प्यार और जवानी इस घर और इसके मूल्यों के लिए कुर्बान कर दी थी, जो उसके पिता की नज़र में इसके लिए मायने रखते थे? उनके इस बदले हुए रवैये का असर शायद किसी अज्ञात माध्यम से उस प्रेत-महिला तक भी पहुँच गया होगा, जो सभी जीवित और मृत चीज़ों को जोड़ता है।

कुछ समय बाद, श्रीमती आर. सामने वाले बैठक कक्ष में मेज के लिए फूल सजा रही थीं। दालान का दरवाजा खुला था और वह घर में बिल्कुल अकेली थीं। श्रीमती आर. फूलों को सजाने में इतनी मग्न थीं कि उन्हें इस बात का एहसास ही नहीं हुआ कि अब वह अकेली नहीं हैं।

आखिरकार, एक अजीब सी आवाज़ ने उसका ध्यान खींचा और उसने मेज से नज़रें ऊपर उठाईं। आवाज़ किसी तेज़ी से सरसराते हुए टैफेटा गाउन की थी। जैसे ही उसकी नज़रें आवाज़ का पीछा करने लगीं, उसने एक महिला को सीढ़ियों से ऊपर जाते देखा। यह वही छोटी कद-काठी की महिला थी जिसे उसने कुछ देर पहले चिमनी के पास देखा था। उसने फिर से वही भूरे रंग का टैफेटा गाउन पहना हुआ था। जैसे ही वह सीढ़ियों से मुड़कर नज़रों से ओझल हुई, गाउन की आवाज़ कुछ क्षणों तक सुनाई देती रही, भले ही वह महिला पूरी तरह से नज़रों से ओझल हो गई थी।

इस बार श्रीमती आर. को न तो लकवा हुआ और न ही डर लगा। इसके बजाय, उनके और भूत के बीच मित्रता की एक गर्मजोशी भरी भावना जागृत हुई, और संतुष्टिपूर्वक, मानो कुछ हुआ ही न हो, उन्होंने फूलों की सजावट जारी रखी।

इस पूरे समय ओल्ड मर्चेंट्स हाउस की असली संरक्षक जेनेट हचिंसन नाम की एक पेशेवर पुरातत्वविद थीं, जो अपने दोस्त एमेलाइन पेज, जो पड़ोस के अखबार 'द विलेजर' की संपादक थीं, और श्रीमती हचिंसन के चौदह वर्षीय बेटे जेफरसन के साथ नियुक्तियाँ साझा करती थीं। इसके अलावा, वहाँ एलोइस नाम की एक बिल्ली भी थी, जो शायद अच्छे और उचित कारणों से सचमुच एक डरपोक बिल्ली साबित हुई।

हालांकि श्रीमती हचिंसन को अपने कार्यकाल के दौरान किसी भी भूतिया चीज का सामना नहीं करना पड़ा, लेकिन महिला संपादक को पीछे के बेडरूम में बहुत बेचैनी महसूस होती थी, जहां त्रासदी का अधिकांश हिस्सा घटित हुआ था।

एक और व्यक्ति जिसने उस स्थान के दमनकारी वातावरण को महसूस किया, हालांकि वह किसी ठोस कारण से इसे तर्कसंगत रूप से समझा नहीं पाई, वह थीं उपन्यासकार एलिजाबेथ बर्ड और उनकी मित्र, जिन्हें मुझे श्रीमती बी. कहना होगा, क्योंकि वह सार्वजनिक रूप से रहस्यमय चीजों से दूर रहती हैं। श्रीमती बी. 1964 में एक शाम उस घर में गईं। जब वह उस कमरे में खड़ी थीं जो कभी गर्ट्रूड का शयनकक्ष था, तो उन्होंने देखा कि गर्ट्रूड के बिस्तर की चादर धंसी हुई थी, मानो कोई अभी-अभी उससे उठा हो। शरीर की धुंधली आकृति स्पष्ट रूप से दिखाई दे रही थी।

जब वह अविश्वास से बिस्तर को घूर रही थी, तभी उसने हवा में एक अजीब सी खुशबू महसूस की। उसके साथ मौजूद लोगों ने भी उस खुशबू पर ध्यान दिया, लेकिन इससे पहले कि कोई उसका स्रोत खोज पाता, वह गायब हो गई। श्रीमती बी. के साथ मौजूद किसी भी महिला ने ऐसा कोई इत्र नहीं लगाया था और घर कई दिनों से एकदम शांत और निर्मल था।

तब से, किसी भी असामान्य घटना की कोई और रिपोर्ट सामने नहीं आई है। 1965 में एक बार, श्रीमती आर. ने जिस चिमनी के पास गर्ट्रूड ट्रेडवेल का भूत देखा था, उसकी तस्वीरें दो जाने-माने फोटोग्राफरों ने एक साथ लीं। उनके उपकरणों का पहले से ही परीक्षण किया जा चुका था। ऐसा उस प्रचलित मिथक की जांच करने के लिए किया गया था कि इस चिमनी की तस्वीर नहीं ली जा सकती और जब भी कोई ऐसा करने का प्रयास करता है, तो उसे खाली फिल्म मिलती है। शायद यह मिथक किसी खराब फोटोग्राफर ने शुरू किया हो, या यह सिर्फ एक मिथक ही था, क्योंकि दोनों सज्जनों ने अपने कैमरों से उस प्रसिद्ध चिमनी की लगभग एक जैसी तस्वीरें लीं। हालांकि, गर्ट्रूड ट्रेडवेल उसके सामने खड़ी नहीं थीं।

यह बिल्कुल सही है। श्रीमती आर., जो ऐतिहासिक धरोहर समाज की अथक शक्ति हैं और इस इमारत को विध्वंस से बचाए रखती हैं, उन्हें पूरा विश्वास है कि अब जब सब कुछ सुरक्षित है, तो गर्ट्रूड को दोबारा आने की कोई आवश्यकता नहीं है। और एक विक्टोरियन महिला के लिए, यह बहुत मायने रखता है।

*66

फिफ्थ स्ट्रीट पर स्थित घर (न्यू जर्सी)

न्यू जर्सी के कैमडेन शहर का नॉर्थ फिफ्थ स्ट्रीट एक ऐसा इलाका था जहाँ जाना ठीक नहीं था, खासकर रात के समय। लेकिन दिन के उजाले में भी यह इलाका आर्थिक बदहाली से बुरी तरह प्रभावित था और वहाँ की उदासी साफ झलकती थी। जर्जर दरवाजों के सहारे खड़े, बेकार और उदास चेहरे वाले लोग तरक्की से बिल्कुल अलग-थलग थे, ऐसे लोग जो काम नहीं करते या कर नहीं सकते और काम करने वालों से नफरत करते थे। आज भी यह इलाका कुछ ऐसा ही दिखता है, चारों ओर कैमडेन के औद्योगिक क्षेत्र की व्यस्त फैक्ट्रियाँ और बदबूदार इमारतें हैं, और बीच से गुजरता हुआ अति-आधुनिक एक्सप्रेसवे मानो सड़क के दोनों ओर के नजारे को देखने के लिए भी रुकना नहीं चाहता।

हालांकि, शहर का यह मैला-कुचैला हिस्सा हमेशा से झुग्गी-झोपड़ी वाला इलाका नहीं था। 1920 के दशक में, जब शराबबंदी का बोलबाला था, तब यहां कुछ काफी संपन्न लोग रहते थे और घर तब एकदम साफ-सुथरे दिखते थे।

नंबर 522, जिसने शहरव्यापी सुधार कार्यक्रम का हिस्सा बनकर प्रगति के खिलाफ अपना संघर्ष समाप्त कर दिया, उस समय एक प्रतिष्ठित निजी निवास था। एक छोटे से ब्लॉक के बीच में स्थित, यह एक तीन मंजिला, भूरे रंग की, पारंपरिक दिखने वाली पत्थर की इमारत थी जिसमें एक पिछवाड़ा भी था। कमरे रेल की पटरियों की तरह बने थे, यानी वे एक दूसरे से जुड़े हुए थे और यदि किसी को घर के पिछले हिस्से में जाना हो तो उसे सामने से प्रवेश करना पड़ता था और वहां तक पहुंचने के लिए कई कमरों से होकर गुजरना पड़ता था। घर बनाने का यह सबसे आकर्षक तरीका नहीं था, लेकिन उस समय के निम्न, या यहां तक कि उच्च मध्यम वर्ग के लिए भी, यह व्यावहारिक और बिल्कुल ठीक लगता था।

भूतल से—जिसमें सामने का बैठक कक्ष, फिर अन्य बैठक कक्ष और अंत में पिछवाड़े की ओर जाने वाला रसोईघर था—एक घुमावदार सीढ़ी ऊपर की ओर दो और मंजिलों तक जाती थी। यह सीढ़ी शायद घर का सबसे प्रभावशाली हिस्सा थी और किसी तरह बाकी लेआउट की सादगी को भी ढक लेती थी। एक सुंदर नक्काशीदार लकड़ी की रेलिंग पूरी सीढ़ी को घेरे हुए थी और यद्यपि उस समय के रिवाज के अनुसार घर को काफी अंधेरा रखा जाता था, लेकिन

वर्षों के उपयोग से रेलिंग में ऐसी चमक आ गई थी जो मंद रोशनी में भी दमकती थी। सीढ़ियों और फर्श पर भारी धूल जमी हुई थी और जो थोड़ा-बहुत फर्नीचर था वह तिरपाल से ढका हुआ था जो समय के साथ काला पड़ गया था। स्पष्ट रूप से, घर ने बेहतर दिन देखे थे लेकिन वे दिन बीत चुके थे, लोग जा चुके थे, और विश्राम के क्षण और कल के विनाश के बीच बस कुछ ही समय बचा था।

एडना मार्टिन कैमडेन के एक स्थानीय रेडियो स्टेशन में काम करने वाली एक होशियार युवती है, और भूत-प्रेत उसके लिए किसी भी मायने में उतने ही अकल्पनीय हैं जितना कि कोई और चीज़। जब उसके माता-पिता एक खाली पड़े घर में रहने आए, तो उसने उसकी डरावनी शक्ल देखकर थोड़ा हँसा, लेकिन उस समय काफी छोटी होने के कारण वह ज़रा भी डरी या प्रभावित नहीं हुई। उसकी माँ भी नहीं डरी, जो व्यावहारिक वास्तविकताओं में विश्वास रखने वाली महिला है। उसकी एक बहन है, जेनेट, और दोनों लड़कियों ने तय किया कि वे उस बड़े पुराने घर का भरपूर आनंद लेंगी, और उन्होंने वाकई में इसका भरपूर आनंद लिया।

धीरे-धीरे, एडना को अपने घर में कुछ अजीबोगरीब बातें नज़र आने लगीं: रेशम की सरसराहट की आवाज़, पास में किसी पोशाक के सरसराने की आवाज़ जबकि वहाँ कोई भी ऐसा व्यक्ति नहीं दिख रहा था जो इन आवाज़ों का कारण हो सकता था। एक बार, वह घर पर शांति से शाम बिता रही थी जब उसने किसी को सीढ़ियों से ऊपर आते और बीच वाले बेडरूम में प्रवेश करते सुना।

उसी क्षण, उसने किसी के गहरे दुख में आह भरने की आवाज़ सुनी। चूंकि उसे पूरा यकीन था कि ऊपर उसके अलावा कोई नहीं है, इसलिए वह इन बातों से हैरान थी और तुरंत बीच वाले शयनकक्ष में चली गई। उसने ऐसा डर से ज़्यादा जिज्ञासावश किया था, क्योंकि उसे पक्का पता नहीं था कि उसे वहाँ क्या मिलेगा, या कुछ मिलेगा भी या नहीं।

कमरे में प्रवेश करने से पहले, उसने पलंग के स्प्रिंग की चरमराहट सुनी, मानो कोई पलंग पर लेटा हो। उसने चादर को ध्यान से देखा—किसी के होने का कोई संकेत नहीं था। फिर, कपड़ों की सरसराहट ने उसे कमरे में किसी और की उपस्थिति का एहसास कराया। सोच-विचार करते हुए, वह अपने कमरे में वापस चली गई।

माता-पिता और उनकी विवाहित बेटियाँ, अपने पतियों और बच्चों के साथ, अंततः उस बड़े घर में रहने लगे, और इतने सारे लोगों के होने के कारण, बाहरी शोर को आसानी से अनदेखा किया जा सकता था या उसका कोई बहाना बनाया जा सकता था।

फिर भी, कुछ अशुभ संकेत थे कि उस घर में उनके अलावा और भी लोग रहते थे।

बीच वाले बेडरूम में हुई घटना के कुछ ही समय बाद, एक रात जेनेट की नींद खुली और उसकी सुनने की शक्ति बहुत तेज़ हो गई, ठीक वैसी ही जैसी रात के सन्नाटे में कभी-कभी आ जाती है। सीढ़ियों पर कोई बहुत हल्की सी आहट सुनाई दे रही थी, और ऐसा लग रहा था जैसे कोई बहुत हल्का-फुल्का व्यक्ति, जैसे कोई बच्चा, कदम रख रहा हो। कदम धीरे-धीरे पास आते गए। अब वे सीढ़ियों के ऊपर थे और फिर हॉल से होते हुए लड़की के कमरे में पहुँच गए। उसे हर फर्श की लकड़ी किसी अनदेखे व्यक्ति के भार से चरमराती सुनाई दे रही थी। डर से जम सी गई जेनेट की हिम्मत नहीं हुई कि वह हिले या बोले। अगर वह चाहती भी तो उसके होंठ नहीं हिलते। फिर, जब उसे लगा कि अब वह और बर्दाश्त नहीं कर सकती, तो उसके बिस्तर के पास अचानक कदम रुक गए। उसे साफ महसूस हुआ कि कोई उसके पास खड़ा उसे घूर रहा है!

किसी तरह उसे नींद आ गई, और उसके बाद कुछ हफ्तों तक कुछ नहीं हुआ। वह उस घटना को लगभग भूल चुकी थी, जब एक रात वह शहर में एक डेट से देर से घर लौटी।

बीच वाले कमरे में कपड़े उतारना उसकी आदत थी और वह अपने कपड़े खाली बिस्तर पर रख देती थी। वह दूसरों को जगाना नहीं चाहती थी, इसलिए उसने अंधेरे में जल्दी से कपड़े उतारे। जैसे ही उसने अपने कपड़े बिस्तर पर फेंके, बिस्तर में किसी ने आह भरी और करवट बदली, मानो गहरी नींद से आधा जागा हो। जेनेट ने सोचा कि उसकी भतीजी मिलने आई है और उसे कमरा दिया गया है। इसलिए उसने अपने कपड़े बिस्तर से उठाए और कुर्सी पर रख दिए, और इस बारे में और कुछ नहीं सोचा।

अगली सुबह, वह नाश्ता करने और साथ ही अपनी भतीजी मिकी से बात करने के लिए नीचे गई। लेकिन वह वहाँ नहीं थी। "मिकी कहाँ है, माँ?" उसने पूछा। उसकी माँ ने हैरानी से उसकी ओर देखा।

“मुझे ज़रा भी अंदाज़ा नहीं है,” उसने कंधे उचकाते हुए कहा। “वह हफ़्तों से यहाँ नहीं आई है।”

जेनेट अपनी जगह पर ही जम गई। खाली बिस्तर पर आह भरते हुए कौन करवट बदली थी?

दोनों लड़कियों की एक करीबी दोस्त थी, जोआन, जिसके साथ वे कई बातें साझा करती थीं, जिनमें घर में होने वाले वे भयानक अनुभव भी शामिल थे जो समय के साथ बढ़ते गए। एक शाम जोआन दूसरी मंजिल पर सामने वाले बेडरूम में टाइप कर रही थी जबकि जेनेट पेट के बल बिस्तर पर लेटी हुई थी।

उस समय जोआन की पीठ जेनेट की तरफ थी और दोनों लड़कियाँ अपनी-अपनी तरह शाम बिता रही थीं। अचानक, जेनेट को अपने जूते के तलवे पर एक अजीब सी सनसनी महसूस हुई। ऐसा लगा जैसे किसी ने उसे उस जगह पर मारा हो, और बहुत ज़ोर से मारा हो। आवाज़ इतनी तेज़ थी कि जोआन ने पीछे मुड़कर पूछा कि क्या हुआ। जेनेट, जो उछलकर खिड़की के पास चली गई थी, बस कंधे उचका सकी। क्या कोई इस अजीब तरीके से उससे बात करने की कोशिश कर रहा था?

फिर एक बार तीनों लड़कियाँ बिस्तर पर बैठी थीं और अचानक उनका ध्यान बिस्तर के निचले हिस्से की ओर गया। वहाँ, लगभग पाँच इंच ऊपर हवा में रेंगती हुई, एक हरे रंग की "चीज़" अचानक कहीं से प्रकट हो गई थी। चीखते हुए जेनेट उसे घूरने लगी। ज़ाहिर है, उसे देखने वाली वह अकेली थी। डर से काँपती आँखों से देखते हुए, उसे पास में ही एक छोटा सा सिर धुंधला सा दिखाई दिया। कुछ समय पहले एक बच्चे के लिए उसने जो भूतिया कदमों की आहट सुनी थी, उसकी यादें उसे सताने लगीं। क्या कोई संबंध नहीं था? फिर वह "चीज़" गायब हो गई।

लड़कियाँ इन बातों पर चर्चा नहीं करती थीं, क्योंकि अब तक वे जान चुकी थीं कि घर में कुछ बहुत ही अजीब बात है। लेकिन अभी तक वे भूतों जैसी बातों पर विश्वास करने को तैयार नहीं थीं। यह सब उन्हें बेहद अवास्तविक लगता था।

जब एडना की शादी नहीं हुई थी, तब उनके मंगेतर न्यू जर्सी के ट्रेंटन के पास एक सैन्य अड्डे पर तैनात थे। कैमडेन में उनसे मिलने के बाद, संयोगवश उनकी आधी रात की बस छूट गई, जिससे उन्हें वापस कैंप जाना पड़ा। अब उनके पास अगली बस का इंतज़ार करने के अलावा

कोई चारा नहीं था, जो सुबह 2:20 बजे थी। चूंकि एडना को अगले दिन जल्दी उठना था, इसलिए वह सोने की तैयारी के लिए ऊपर चली गईं। उन्होंने अपने मंगेतर को नीचे सोफे पर ही छोड़ दिया, जहाँ वह बस पकड़ने जाने से पहले आराम कर सकते थे। युवा सैन्यकर्मी सिगरेट पीते हुए आराम से लेट गए।

अचानक उसने सामने का दरवाज़ा खुलते सुना। दरवाज़ा बहुत भारी और पुराने ज़माने का था, जिस पर ऐसा ताला लगा था जिसे चाबी के बिना खोलना मुश्किल था। एयरमैन हैरान था क्योंकि उसने कुछ देर पहले ही एडना को ताला लगाते देखा था। इससे पहले कि वह कुछ समझ पाता, उसने वेस्टिब्यूल का दरवाज़ा खुलते सुना और अचानक कमरे में बर्फीली ठंडक छा गई। सच था कि सर्दी का मौसम था, लेकिन तब तक उसे ठंड नहीं लगी थी। उसने तुरंत सोचा कि कोई चोर घर में घुस आया है और उसका स्वागत करने के लिए उसने अपनी आस्तीनें ऊपर चढ़ा लीं।

लेकिन तभी उसे एक अजीब सी अनुभूति हुई, जो उसने पहले कभी महसूस नहीं की थी। उसके रोंगटे ऐसे खड़े हो गए जैसे उनमें बिजली दौड़ रही हो, फिर भी उसे ज़रा भी डर नहीं लगा। तभी एक घंटी बजने लगी। घंटी एक बंद डिब्बे के अंदर कोने में चुपचाप रखी थी। उसे अचानक एहसास हुआ कि घंटी तब तक नहीं बज सकती जब तक कोई उसे उठाए नहीं। जब उसे यह समझ आया और उसे कोई इंसान दिखाई नहीं दिया, तो उसने सोचा कि वह अपनी बस का इंतज़ार बाहर ही करेगा। उसने अगला एक घंटा एक हवादार कोने में बैठकर अपनी बस का इंतज़ार करते हुए बिताया। उसे वह जगह कहीं ज़्यादा आरामदायक लगी।

उसी रात, नीचे से आ रही गड़बड़ी की आवाज़ से एडना की नींद खुल गई। होश में आने पर उसने नीचे से पाइपों पर किसी के खटखटाने की आवाज़ सुनी। उसने तुरंत सोचा कि उसका मंगेतर उसके साथ कोई शरारत कर रहा है, क्योंकि वह शरारतों में माहिर था। उसने जल्दी से अपना बाथरोब पहना और नीचे गई। तुरंत ही शोर बंद हो गया। जब वह बरामदे में पहुँची, तो उसका मंगेतर वहाँ नहीं था।

जब उसने बाद में उसे इस बारे में बताया और उसने घंटी वाली घटना की जानकारी दी, तो उसे लगा कि अब वह घर में भूतों की वास्तविकता को स्वीकार करने के लिए पर्याप्त रूप से प्रभावित हो गया है। लेकिन युवा वायुसैनिक ने अपने अनुभव के बावजूद उन अलौकिक

घटनाओं को गंभीरता से नहीं लिया। उसे यह सब बेहद हास्यास्पद लगा और एक रात उसने भूतों से और अधिक काम करवाने का फैसला किया। तब तक उसकी और एडना की शादी हो चुकी थी। उस रात, उसने अपने शयनकक्ष के दरवाजे पर एक रस्सी बांधी, जो हॉल में खुलता था। रस्सी का दूसरा सिरा उसने छिपा दिया ताकि बिस्तर पर जाने के बाद वह उसे खींचकर दरवाजा खोल सके।

जैसे ही बत्तियाँ बुझ गईं, लेकिन खिड़कियों से पर्याप्त रोशनी आती रही, उसने अपनी पत्नी का ध्यान उस ओर आकर्षित करने के लिए दरवाजे की ओर घूरना शुरू कर दिया। जब वह देख रही थी, उसने दरवाजे की ओर इशारा करते हुए डरी हुई आवाज़ में कहा, "देखो, यह अपने आप खुल रहा है!"

और ऐसा ही हुआ। उसने यह चाल इतनी कुशलता से चली कि एडना को पता ही नहीं चला और घबराहट में उसने पूरे दरवाजे पर पवित्र जल छिड़क दिया। इससे वह हँस पड़ा और उसने अपना मज़ाक कबूल कर लिया।

“ऐसा कभी मत करना,” उसने उसे चेतावनी दी, जब उसे एहसास हुआ कि उसे मूर्ख बनाया गया है। लेकिन उसने कंधे उचका दिए। वह वापस बिस्तर पर चली गई और उसे हिदायत दी कि वह कभी भी अदृश्य शक्तियों को उकसाए नहीं, वरना वे उसे अपने ही तरीके से सबक सिखाएंगी।

उसने अभी अपनी बात पूरी भी नहीं की थी कि बीच वाले कमरे का दरवाज़ा धीरे-धीरे, अपने आप खुलने लगा। उसका पति हैरानी से, और फिर बढ़ते डर से देखता रहा, दरवाज़ा खुलता चला गया, यहाँ तक कि पीछे की दीवार तक पहुँचकर रुक गया। एक पल के लिए दोनों में से कोई भी नहीं हिला। और कुछ नहीं था, कम से कम उस पल तो नहीं, इसलिए वे बिस्तर से कूदकर उठे और एयरमैन ने दरवाज़ा खोलकर देखने की कोशिश की कि क्या वह "स्वाभाविक रूप से" उस घटना को समझा सकता है जो उनकी आँखों के सामने घटी थी। लेकिन वे दोनों जानते थे कि इस दरवाज़े को कुछ समय पहले कब्ज़ों से निकाल दिया गया था और बंद स्थिति में रखा गया था। इसके अलावा, इसे खोलने के लिए, इसे फर्श पर बिछी दो चटाइयों के ऊपर से उठाना पड़ता। कई घंटों तक उन्होंने इस दरवाज़े को किसी भी तरह खोलने की कोशिश की। यह हिला तक नहीं। एडना ने दरवाज़े को कब्ज़ों से पकड़ रखा था

ताकि वह आगे की ओर न गिरे, जबकि उसका पति उसे खोलने की कोशिश कर रहा था। यह नामुमकिन था। फिर आखिरकार वे उसे कब्ज़ों पर टिकाने में कामयाब हो गए और उसे खोलना शुरू किया। फर्श पर बिछे कालीनों ने उसे रोके जाने से पहले वह लगभग एक इंच बाहर की ओर झूल गया। किस प्रबल शक्ति ने दरवाजे को कालीनों के ऊपर से उठाकर पीछे की दीवार से सटा दिया था?

फिर भी, उन्होंने तर्क दिया कि इसका कोई न कोई तार्किक कारण तो होना ही चाहिए। उन्होंने इस मामले को वहीं छोड़ दिया और कुछ समय तक घर में कुछ भी असामान्य नहीं हुआ। फिर, एडना और उनके पति मध्य पश्चिम में चले गए और कैमडेन की रोज़मर्रा की घटनाओं से उनका नाता टूट गया। कुछ समय बाद जब वे कैमडेन में परिवार से मिलने आए, तो स्वाभाविक रूप से उन्हें घर के बारे में जिज्ञासा हुई, लेकिन उन्होंने भूतों का ज़िक्र न करना ही बेहतर समझा। दरअसल, एडना ने प्रार्थना की कि उनकी घर वापसी में कोई बाधा न आए। फिर जाने का समय आ गया, और एडना के पति ने बड़े ही सौम्य भाव से उसे याद दिलाया कि उसने उस पूरे समय में न तो कोई भूत देखा था और न ही कोई भूत सुना था। उसी दिन उनका छोटा बेटा बीमार पड़ गया, और उसकी हालत के कारण उन्हें वहाँ और अधिक समय तक रुकना पड़ा।

उन्होंने बैठक कक्ष में उसके लिए एक पलंग लगा दिया, जहाँ वे उस समय सो रहे थे। अगर लड़के को मदद की ज़रूरत होती, तो वे पास ही होते। रात में अचानक उन्हें पलंग के गिरने की आवाज़ सुनाई दी। वे तुरंत दौड़े और उसे जल्दी से ठीक कर दिया। सौभाग्य से लड़का जागा भी नहीं था। जब वे पलंग पर झुककर उसे ठीक कर रहे थे, तभी उन्हें सीढ़ियों से किसी के आने की आवाज़ सुनाई दी।

एडना ने इस पर कोई खास ध्यान नहीं दिया, लेकिन उसके पति पर इसका अजीब सा असर दिखाई दिया।

"क्या तुमने अभी-अभी किसी को सीढ़ियों से नीचे आते सुना?" उसने आखिरकार पूछा।

“बिल्कुल मैंने देखा,” एडना ने जवाब दिया, “वह शायद मिस रॉबिन्सन थीं।”

मिस रॉबिन्सन तीसरी मंजिल पर किराए पर रहती थीं।

“नहीं, ऐसा नहीं था,” उसके पति ने कहा और अपना सिर हिलाते हुए बोला, “मैंने उन सीढ़ियों को ध्यान से देखा था। मैंने देखा कि जब कोई उन पर चलता है तो वे सीढ़ियाँ मुड़ जाती हैं—लेकिन वहाँ न तो मिस रॉबिन्सन थीं, और न ही कोई और।”

“तुम्हारा मतलब...?” एडना ने कहा और पहली बार उसके पति का आत्मविश्वास कम हो गया। उन्होंने घर की ऊपर से नीचे तक पूरी तलाशी ली। उस समय घर में उनके और बीमार बच्चे के अलावा कोई और नहीं था।

अब तलाकशुदा एडना को एहसास हुआ कि उसके पैतृक घर में एक रहस्य छिपा है, शायद एक गहरा रहस्य, जिसकी कोई तर्कसंगत व्याख्या नहीं है। उसका तार्किक मन किसी और बात को स्वीकार नहीं कर पा रहा था, फिर भी वह उन रहस्यमय घटनाओं का कोई जवाब नहीं ढूंढ पा रही थी जो स्पष्ट रूप से कभी खत्म नहीं हुई थीं।

अगर कोई प्रेतात्मा मौजूद थी, तो क्या वह उसे मुक्त करने में मदद कर सकती थी? उसे क्या करना चाहिए था? लेकिन उसे इन सब बातों का कोई ज्ञान नहीं था। शायद उसके विचार उन अलौकिक क्षेत्रों तक पहुँच गए थे जहाँ प्रेतों का गूढ़ अस्तित्व होता है, या शायद वह दुखी प्रेत घर में रहने वाले लोगों से लगातार शक्ति खींचकर प्रकट हो रहा था।

कुछ समय बाद, एडना की करीबी दोस्त जोआन, एक बार्न डांस पार्टी में शामिल होने के लिए पोशाक चुनने में मदद मांगने एडना के पास आई। शायद एडना के पास उसके लिए कुछ उपयुक्त पोशाकें हों? और सच में एडना के पास थीं।

“तहखाने में जाओ,” उसने अपनी सहेली को निर्देश दिया। “वहाँ कुछ संदूक रखे हैं जिनमें सामान भरा है। जो काम का हो ले लो।” शिक्षिका जोआन ने सिर हिलाया और तहखाने में चली गई।

उसने बड़ी आसानी से सीलन से भरे संदूक ढूंढ लिए। उन्हें खोलना इतना आसान नहीं था, क्योंकि जाहिर तौर पर उनका इस्तेमाल कई सालों से नहीं हुआ था। क्या ये घर के पिछले किरायेदारों के अवशेष थे? आखिर, मौजूदा किरायेदारों ने एक आंशिक रूप से सुसज्जित घर लिया था, इसलिए उनसे पहले रहने वालों के बारे में ज्यादा कुछ पता नहीं था। घर कम से कम साठ साल पुराना था, शायद उससे भी ज्यादा।

जोआन फटे-पुराने कपड़े छांट रही थी, जिनमें से कुछ स्पष्ट रूप से पुराने ज़माने के थे। वह पूरी तरह से अपने काम में मग्न थी - नृत्य के लिए उपयुक्त पोशाक ढूंढना। लेकिन उसकी नज़र अचानक अपने बालों पर पड़ी। यह एक अजीब सी अनुभूति थी, मानो उसके बाल अचानक खड़े हो गए हों! उसने हल्के से अपना हाथ माथे पर फेरा और महसूस किया कि उसके बाल सचमुच कड़े और खड़े हो गए हैं! उसी समय उसके पूरे शरीर में झुनझुनी सी होने लगी।

उसने अपने हाथ में पकड़ी हुई पोशाक नीचे गिरा दी और इंतज़ार करने लगी, क्योंकि उसे यकीन था कि कोई खड़ा होकर उसे घूर रहा है। किसी भी पल वह व्यक्ति कुछ बोलेगा। लेकिन जैसे-जैसे सेकंड बीतते गए और कोई नहीं बोला, उसे शक होने लगा। आखिरकार, वह खुद को रोक नहीं पाई और धीरे से पीछे मुड़ गई।

कुछ गज पीछे धुएं का एक बवंडर था, जो तेजी से घूम रहा था और आगे बढ़ रहा था। उसका आकार लगभग एक मानव आकृति जैसा था, और जैसे-जैसे वह बढ़ती हुई दहशत के साथ उस "चीज़" को देखती गई, उसने स्पष्ट रूप से देखा कि जहाँ चेहरा होना चाहिए था, वहाँ धुएं का एक भूरा ढेर था, जिसमें केवल दो बड़े छेद थे - जहाँ सामान्यतः आँखें होती हैं!

जब वह पूरी तरह अविश्वास से घूर रही थी, तभी वह आकृति उसकी ओर बढ़ने लगी। उसके पास आने से उसकी सांसें थम सी गईं और वह जान गई कि अगर उसने तुरंत हरकत नहीं की तो वह तहखाने से कभी बाहर नहीं निकल पाएगी।

किसी तरह रेंगते हुए वह सीढ़ियों तक पहुंची और सचमुच चारों हाथों-पैरों के बल घिसटते हुए भूतल तक गई। खुली हवा में पहुँचकर उसने जैसे-तैसे होश संभाला और एडना को वह सब बताया जो उसने देखा था।

लेकिन जो कुछ उसने देखा था, उसका ख्याल इतना भयानक था कि समय बीतने के साथ-साथ वह उसे स्वीकार नहीं करना चाहती थी। आज तक उसके लिए वह तहखाने की खिड़कियों के बाहर से गुजरते हुए किसी की मात्र एक परछाई थी...

इस बीच सीढ़ियों पर कदमों की आहट जारी रही, लेकिन किसी तरह आक्रोश शांत हो गया। धीरे-धीरे, अशांति कम हो गई या शायद घर के लोग इसके आदी हो गए और उन्होंने इस पर ध्यान देना बंद कर दिया।

जब एडना आखिरकार घर छोड़कर एक आधुनिक, साफ-सुथरे फ्लैट में चली गई, तो घर को भूतों की अपनी ही दुनिया में छोड़ दिया गया, जब तक कि विध्वंस करने वाले आकर उसे अंतिम रूप नहीं दे देते।

लेकिन एडना अपने भयानक अतीत को भूली नहीं थी, इसलिए जब उसने एक प्रसिद्ध मानसिक शक्ति वाली महिला के बारे में सुना जो उन प्राणियों से संवाद कर सकती थी जिनकी कल्पना उसने अपने घर में की थी, तो उसने उनसे संपर्क करने और उन्हें घर आमंत्रित करने का प्रयास किया। वह महिला स्वयं तो नहीं आई, लेकिन दरवाजा खुला था।

जुलाई 1967 के उमस भरे दिन, वह मानसिक शक्ति वाली महिला और उसकी एक सहेली और सहकर्मी कुछ पल के लिए उस घर में आईं। शायद ज़्यादा से ज़्यादा एक घंटा, उसके बाद उन्हें अन्य, अधिक ज़रूरी कामों और जगहों पर जाना था। लेकिन उस एक घंटे में, वे उन अदृश्य प्राणियों की मदद करने के लिए तैयार थीं, अगर वे मदद चाहते हों।

उस तांत्रिक को उस बदबूदार बैठक कक्ष में आए अभी दस सेकंड भी नहीं हुए थे कि उसने सीढ़ियों पर उस महिला को देखा।

"एक छोटा लड़का भी है, और वह महिला सीढ़ियों से गिरकर मर गई है," उसने धीरे से कहा, और धीरे-धीरे इधर-उधर चलने लगी, उसके कदमों की आवाज उस खाली, फिर भी तनावपूर्ण पुराने घर में अजीब तरह से गूंज रही थी।

“घर जाओ,” उसने उस महिला से विनती की। “तुम इस दुनिया से जा चुकी हो और तुम्हें यहाँ नहीं रुकना चाहिए जहाँ तुमने इतना कष्ट सहा है।”

“क्या आपको कोई नाम पता चला?” उसके साथी ने, जो हमेशा की तरह जिज्ञासु था, पूछा। उस ज्योतिषी ने सिर हिलाया और एक नाम बताया, जिसे उस सज्जन ने तुरंत लिख लिया।

“उसे बस थोड़ी सी सहानुभूति चाहिए, जीवित लोगों में शामिल होना चाहती है,” ज्योतिषी ने समझाया, फिर सीढ़ियों की ओर मुड़ी जो अभी भी प्रवेश कक्ष के अर्ध-अंधेरे में चमक रही थीं। “घर जाओ, स्त्री,” उसने एक बार फिर स्वर में कहा और ऐसा लगा जैसे उसके कहते ही स्कर्टों की हल्की सरसराहट सुनाई दी।

समय समाप्त हो गया था और फिफ्थ स्ट्रीट स्थित घर में आए अंतिम आगंतुक अंततः चले गए।

अगले दिन, उस सज्जन ने अपने मानसिक चिकित्सक मित्र द्वारा दिए गए नाम का मिलान घर के पूर्व मालिक के नाम से किया।

लेकिन जैसे ही उनकी टैक्सी पेट्रोल के धुएं के बादल में दूर चली गई, उन्हें खुशी हुई कि उन्हें उस गंदे पुराने घर की तरफ पीछे मुड़कर नहीं देखना पड़ा।

अगर उन्होंने ऐसा किया होता, तो उन्हें पता चल जाता कि नीचे के कमरे का एक पर्दा, जो काफी समय से नीचे था, अब थोड़ा सा पीछे खींच लिया गया था - बस इतना कि कोई उसके पीछे से झाँक सके।

*67

मॉर्गन हॉल (लॉन्ग आइलैंड)

एलिस बाईस साल की गोरी लड़की है, जो दिखने और बुद्धि में औसत से कहीं अधिक उत्कृष्ट है। वह मैनहट्टन में रहती है, उसके पिता एक सभ्य, कानून का पालन करने वाले नाविक हैं और उसका वंश बहुत पुराना है - आयरिश, लेकिन कुछ फ्रांसीसी और अन्य कई प्रभावों से भी, जो एलिस के चेहरे पर खूबसूरती से झलकते हैं। एलिस का चेहरा हमेशा जिज्ञासा और सतर्कता से भरा रहता है। एलिस का काम उसके अधिकांश दोस्तों की तरह ही नियमित है। अब वह इसे सहजता से स्वीकार कर लेती है, क्योंकि उसके लिए एक नई दुनिया इंतजार कर रही है जहाँ कुछ भी साधारण नहीं है।

* * *

जब ऐलिस का जन्म हुआ, तो उसके माता-पिता ब्रुकलिन के एक पुराने घर में रहने चले गए, जिसकी छवि कुछ अजीबोगरीब लोगों के घर के रूप में थी। ऐलिस कुछ ही महीनों की थी जब वे फिर से घर छोड़कर चले गए, लेकिन उन महीनों के दौरान वह अपनी माँ के शयनकक्ष में बिना ज़बरदस्त विरोध किए, तुरंत रोने लगती थी—यह व्यवहार उसके बचपन के "अच्छे" व्यवहार से इतना अलग था कि उसके माता-पिता की नज़र इस पर पड़ना लाज़मी था। जहाँ उसके पिता को इन सब बातों में कोई दिलचस्पी नहीं थी, वहीं उसकी माँ ने जल्द ही बच्ची के इस अजीब व्यवहार को घर की अन्य अजीब चीज़ों से जोड़ दिया: अपने आप खुलने वाले

दरवाज़े, कदमों की आहट, अजीब हवा के झोंके, खासकर उस शयनकक्ष में जिससे छोटी ऐलिस को सबसे ज़्यादा नफ़रत थी।

जब ऐलिस लगभग बारह साल की थी और परिवार पुराने मोहल्ले से दूसरे घर में चला गया था, तो एक दिन अचानक उसे अपनी दादी की याद आ गई। उसके दादा-दादी दूर उत्तर में रहते थे और हाल ही में उनसे कोई संपर्क नहीं हुआ था।

“दादी माँ का निधन हो गया है,” ऐलिस ने अपनी माँ से बड़ी सहजता से कहा। उसकी माँ अविश्वास से उसकी ओर देखती रही। कुछ घंटों बाद फोन की घंटी बजी। दादी माँ, जो स्वस्थ थीं, अचानक चल बसीं।

उसकी माँ ने लड़की को अजीब नज़र से देखा, लेकिन वह ऐसी प्रतिभाओं के बारे में जानती थी और समझ गई थी कि उसकी इकलौती बेटी कुछ खास है। छह महीने के भीतर, टेलीफोन दो बार और बजा। हर बार, ऐलिस ने ऊपर देखा और कहा:

“दादाजी का निधन हो गया है।”

चाचा जी की मृत्यु हो गई है।

और वे थे।

जहां उसके पिता ने इस सब "मूर्खता" पर अपना सिर हिलाया, वहीं उसकी माँ ने अपनी बेटी की शक्तियों का उपहास नहीं किया। खासकर तब जब ऐलिस को उसकी मृत दादी से सपने में एक चेतावनी मिली थी, जिसमें उसे एक आसन्न कार दुर्घटना के बारे में बताया गया था। उसे दुर्घटना स्थल का सटीक स्थान दिखाया गया था और बताया गया था कि अगर उसकी माँ आगे बैठेगी तो उसे बहुत चोट लगेगी, लेकिन अगर ऐलिस अपनी माँ से जगह बदल ले तो उसे उतनी चोट नहीं लगेगी।

सपने के बाद, अपनी माँ को कारण बताए बिना, उसने ज़िद की कि वह यात्रा में अपनी जगह बदल लेगी। और फिर, उसकी कार दूसरी कार से टकरा गई। अगर एलिस की जगह उसकी माँ होती, तो शायद वह समय पर प्रतिक्रिया नहीं कर पाती और बुरी तरह घायल हो जाती। लेकिन एलिस तैयार थी और झुक गई—और उसे केवल गर्दन में हल्की चोट आई।

बाद में उसने अपनी माँ से इस बारे में बात की। उसकी माँ ने उपहास नहीं उड़ाया, बल्कि उससे पूछा कि दादी, जिसने उन्हें चेतावनी दी थी, सपने में कैसी दिख रही थीं।

“उन्होंने घर में पहनने वाली ड्रेस और बेडरूम की चप्पलें पहनी हुई थीं,” ऐलिस ने जवाब दिया। उसकी माँ ने सिर हिलाया। हालाँकि दादी के मधुमेह के कारण दोनों पैर कट चुके थे, फिर भी उन्हें उनकी पसंदीदा बेडरूम की चप्पलों के साथ ताबूत में दफनाया गया था। ऐलिस ने यह न तो कभी देखा था और न ही उसे इसके बारे में पता था।

सत्रह वर्ष की आयु में, ऐलिस के मन में नन बनने की प्रबल इच्छा जागृत हुई। उसे लगा कि बाहरी दुनिया में उसके लिए कुछ खास नहीं है और उसने मठ में प्रवेश करने के बारे में सोचना शुरू कर दिया। शायद यह विचार उसके मन में तब आया जब वह लॉन्ग आइलैंड स्थित एक कैथोलिक स्कूल में कैंप काउंसलर थी। उसे उस स्थान की शांति और ननों का शांत, चिंतनशील जीवन बहुत पसंद आया।

* * *

लेकिन कॉन्वेंट में अपनी पहली ही यात्रा पर, एलिस को बेचैनी महसूस हुई। मॉर्गन हॉल, लॉन्ग आइलैंड के ग्लेन कोव में स्थित एक भव्य हवेली है, जिसे कुछ साल पहले ही धार्मिक उद्देश्यों के लिए परिवर्तित किया गया था। इससे पहले यह मॉर्गन परिवार की संपत्ति थी, जिसमें उस धनी परिवार के नाम से जुड़ी सभी बातें शामिल थीं। इसमें कुछ भी बदसूरत या डरावना नहीं था, फिर भी एलिस को इसकी ऊंची छतों वाले गलियारों में प्रवेश करते ही तुरंत डर महसूस हुआ।

भावी उम्मीदवार के रूप में, उनके लिए स्वीकार किए जाने से पहले उस स्थान पर कई बार जाना आवश्यक था, और हर बार उनकी बेचैनी बढ़ती गई।

लेकिन उसने इन भावनाओं का कारण नए स्थान से अपरिचित होना माना। एक रात, उसके चाचा और दादाजी सपने में आए और उससे कहा कि चिंता न करो, सब ठीक हो जाएगा। उसने इसे अपने धार्मिक लक्ष्यों को आगे बढ़ाने के लिए प्रोत्साहन के रूप में लिया और कुछ समय बाद औपचारिक रूप से मठ में प्रवेश कर लिया।

अठारहवें जन्मदिन से कुछ ही दिन पहले वह वहाँ रहने आई, अपने दोस्तों और सहपाठियों से बिल्कुल अलग जीवन की उम्मीद में। उसे जो कमरा दिया गया था, वह एक गलियारे से सटा हुआ था, लेकिन शुरुआत में वह उसमें अकेली थी क्योंकि उसकी भावी रूममेट एक हफ़्ते बाद आने वाली थी। इस तरह उसने मॉर्गन हॉल में अपने शुरुआती दिन कमरे में अकेले ही बिताए। पहली ही रात, सोने के बाद, उसने दरवाजे के बाहर किसी के चलने की आवाज़ सुनी। रात के उस समय उसे यह अजीब लगा, क्योंकि वह अच्छी तरह जानती थी कि कॉन्वेंट में रहने वाले लोग जल्दी सोना पसंद करते हैं। आखिरकार, नई जगह पर होने की स्वाभाविक झिझक पर उसकी जिज्ञासा हावी हो गई, और उसने अपने दरवाजे से गलियारे में झाँका। कदमों की आहट अभी भी सुनाई दे रही थी। लेकिन बाहर कोई नहीं चल रहा था। उसने जल्दी से दरवाजा बंद किया और सोने चली गई।

अगली सुबह, उसने पास के कमरों में मौजूद छह अन्य उम्मीदवारों से इस मामले पर चर्चा की। उन्होंने भी उस रात कदमों की आहट सुनी थी। दरअसल, उन्होंने कई अन्य रातों में भी ऐसी आहट सुनी थी, जबकि बाहर कोई भी नहीं चल रहा था।

जैसे-जैसे ऐलिस कॉन्वेंट की दिनचर्या में ढलती गई, उसे एहसास हुआ कि उनमें से किसी के लिए—या यहाँ तक कि उन नौसिखियों के लिए भी, जो उनसे कुछ ज़्यादा समय से वहाँ थीं—रात के उस समय वहाँ घूमना कितना असंभव होगा जब उसे कदमों की आहट सुनाई देती थी। कॉन्वेंट के सख्त नियमों में एक घंटी भी शामिल थी, जो रात 10 बजे बजती थी। सभी को उस समय अपने कमरों में बिस्तर पर होना ज़रूरी था, सिवाय बहुत ज़रूरी आपात स्थितियों के। मॉर्गन हॉल में कोई भी आधी रात या उसके बाद सिर्फ़ मजे के लिए गलियारों में नहीं घूम सकता था, वरना उसे निष्कासित कर दिया जाता। रात 10 बजे सभी बत्तियाँ बुझ जाती थीं और कुछ भी हिलता-डुलता नहीं था।

पहले तो ऐलिस को लगा कि नौसिखिए नए छात्रों के साथ शरारत कर रहे हैं और नीचे घूमकर कदमों की आहट पैदा कर रहे हैं, शायद नए छात्रों को डराने के लिए, ठीक वैसे ही जैसे कॉलेज के नए छात्रों को उनके वरिष्ठ सहपाठी परेशान करते हैं। लेकिन जल्द ही उसे एहसास हुआ कि ऐसा नहीं था, नौसिखियों को भी रात दस बजे के बाद बाहर जाने की उतनी ही मनाही थी जितनी उन्हें।

अपने मानसिक अतीत के कारण ऐलिस चैन से नहीं बैठी और उसकी जिज्ञासा ने उसे परिस्थितियों के अनुसार यथासंभव आगे की पूछताछ करने के लिए मजबूर कर दिया। आख़िरकार, आप मदर सुपीरियर के पास जाकर यह नहीं पूछते कि, "मैडम, रात में गलियारों में कौन घूमता है?"

तब उन्हें पता चला कि यह घर मूल रूप से जे. पी. मॉर्गन का आलीशान घर था और बाद में रूसी दूतावास ने इसे अपने कर्मचारियों के लिए इस्तेमाल किया था। उन्हें याद आया कि कैसे रूसियों ने ग्लेन कोव टाउनशिप के साथ करों को लेकर लड़ाई लड़ी थी और कैसे उन्होंने अंततः इस जगह को खराब हालत में खाली कर दिया था। एक तरह से अप्रत्याशित घटनाक्रम में, कैथोलिक ननें वहां रहने लगीं और उन्होंने हॉल को एक कॉन्वेंट और स्कूल में बदल दिया।

मठ की लाइब्रेरियन से हुई बातचीत भी कुछ खास सार्थक नहीं रही। जी हां, श्री मॉर्गन ने 1910 में यह घर बनवाया था। नहीं, उनकी मृत्यु यहां नहीं हुई थी, उनकी मृत्यु स्पेन में हुई थी। वह यह सब क्यों जानना चाहती थी?

एलिस को मिस्टर मॉर्गन की बेटी के बारे में जिज्ञासा हुई।

एलिस मॉर्गन इसी घर में रहती थीं और अपने जीवन के प्रारंभिक वर्षों में यहीं पर टाइफाइड बुखार से उनकी मृत्यु हो गई थी।

लेकिन लाख कोशिश करने के बावजूद, ऐलिस लाइब्रेरियन से कोई भी उपयोगी जानकारी नहीं ले पाई। स्वाभाविक रूप से, ऐलिस अपनी जिज्ञासा का असली कारण बताना नहीं चाहती थी। लेकिन ऐसा लग रहा था मानो लाइब्रेरियन को इसका कुछ आभास हो गया हो, क्योंकि मॉर्गन परिवार के बारे में बात करते समय उसने अपना सिर एक तरफ घुमा लिया, मानो वह जवाब देना ही न चाहती हो।

अपनी पूछताछ में निराश होकर, ऐलिस चली गई और अपने कामों में लग गई। अक्टूबर 1965 की एक रात, ऐलिस पोस्टुलेंसी हॉल में घूम रही थी, जो इमारत का वह हिस्सा था जो उन नई लड़कियों के लिए आरक्षित था जो कॉन्वेंट में प्रवेश लेने और अपनी अंतिम प्रतिज्ञा लेने से पहले अपना प्रशिक्षण पूरा कर रही थीं।

वह एक ठंडी रात थी, और ऐलिस तेज़ी से चलकर हॉल के बिल्कुल आखिरी छोर तक गई और फिर थोड़ी देर आराम करने के लिए रुक गई। जैसे ही वह मुड़ी और हॉल के दूसरे छोर

की ओर देखा, जहाँ से वह अभी आई थी, उसने वहाँ एक लड़की को खड़ा देखा जो पहले वहाँ नहीं थी। उसने एक लंबी, काली पोशाक पहनी हुई थी जो अन्य उम्मीदवारों की पोशाकों जैसी थी और ऐलिस ने उसे अपनी सहेली समझ लिया।

उसने देखा कि एक व्यक्ति हॉल के अंत में स्थित कमरे में दाखिल हुआ। यह कमरा शयनकक्ष नहीं था, बल्कि प्रशिक्षुओं द्वारा अध्ययन के लिए इस्तेमाल किया जाता था।

"यह वेरा है," एलिस ने सोचा और उसके साथ जाकर यह देखने का फैसला किया कि वह उस कमरे में क्या कर रही है।

वह जल्दी से कमरे की ओर बढ़ी और अंदर चली गई। कमरे की बत्तियाँ बंद थीं और ऐलिस को यह अजीब लगा। क्या उसकी सहेली उसके साथ कोई खेल खेल रही थी? इस समय कमरा काफी अंधेरा था।

इसलिए उसने बत्ती जलाई और चारों ओर देखा। कमरे में अब कोई नहीं था, और ऐलिस ने सोचा कि उसकी नज़र से बचकर कोई भी कमरे से बाहर नहीं जा सकता था। उसने खिड़कियाँ जाँचीं और पाया कि वे कसकर बंद थीं। ऐसा नहीं था कि उसे उम्मीद थी कि उसकी सहेली उस रास्ते से कमरे से बाहर निकलेगी, लेकिन वह यह सुनिश्चित करना चाहती थी कि वह व्यक्ति—चाहे वह कोई भी हो—उस रास्ते से बाहर न निकल सके। यह तीसरी मंज़िल थी और खिड़कियों से बाहर निकलने की कोशिश करने वाले किसी भी व्यक्ति को या तो कूदना पड़ता या बाहर सीढ़ी लगानी पड़ती।

अचानक ऐलिस को एहसास हुआ कि उसने कुछ भी नहीं सुना था। जब से उसने उस आकृति को कमरे में आते देखा था, तब से न तो कदमों की आहट थी, न ही दरवाजा खुलने की आवाज, कुछ भी नहीं। मॉर्गन हॉल के दरवाजे काफी चरमराहट के साथ खुलते हैं और जब उसने उस आकृति को पहले देखा था तब ऐसी कोई आवाज सुनाई नहीं दी थी।

ऐलिस झटपट वहां से निकल गई और चुपचाप इस मामले को सुलझाने के लिए जल्दी से अपने कमरे में चली गई।

याद आने पर, उसने उस आकृति को फिर से देखा और उसे तुरंत लगा कि उस लड़की में कुछ बहुत अजीब था। एक तो, दीक्षा लेने वाली छात्राओं द्वारा पहना जाने वाला लंबा गाउन चलते समय हिलता है। लेकिन उसने जो आकृति देखी थी, वह अकड़ी हुई थी और ऐसा लग

रहा था जैसे वह फर्श पर चल नहीं रही हो, बल्कि उस पर फिसल रही हो। गलियारा ठीक से रोशन था और उसने आकृति को स्पष्ट रूप से देखा था। लेकिन उसने लड़की के टखने और मोज़े नहीं देखे थे, जो वह अपनी किसी सहेली के होने पर ज़रूर देख लेती।

हालांकि दरवाजा बंद नहीं था, लेकिन कमरा असल में एक कोने वाला कमरा था जिसमें केवल एक ही तरफ से प्रवेश किया जा सकता था, सामने वाले दरवाजे से। ऐलिस को यकीन था कि उसने उस आकृति को दोबारा कमरे से निकलते नहीं देखा था। अगर यह उसकी प्रेमिका का मज़ाक था, तो कमरे में छिपने की कोई जगह नहीं थी। ऐलिस ने जल्दी से अलमारी, मेज और बिस्तर की जाँच की—और उस कमरे में कहीं भी कोई नहीं छिपा था।

आखिरकार, उसने हिम्मत जुटाकर अपनी सहेली वेरा से मिलने और इस मामले पर उससे बात करने का फैसला किया। उसे पता चला कि कॉन्वेंट में एक "मज़ाक" चल रहा था कि ऐलिस मॉर्गन का भूत गलियारों में घूम रहा है, लेकिन इस पूरे मामले को गंभीरता से एक मज़ाक के तौर पर लिया जाना था। फिर भी, उसे यह भी पता चला कि हॉल का एक हिस्सा ऐसा था जहाँ अकेले किसी का जाना मना था। जिसे लड़कियाँ तहखाना कहती थीं, ज़मीन के स्तर पर, कपड़े धोने का कमरा था। तीसरा हिस्सा, जो बिल्कुल पीछे था, उसमें रात में किसी को भी जाने की मनाही थी, और दिन में केवल जोड़े में ही जाया जा सकता था। फिर भी, वह इलाका अच्छी तरह से रोशन था। ऐलिस को इस अजीब और निषेधात्मक नियम के पीछे का कारण पता नहीं चल सका। एक कॉन्वेंट में, "उचित अनुमति" के बिना अपने समूह के अलावा किसी और से बात करना बेहद मुश्किल होता है और यह चर्चा करने का उचित विषय नहीं था।

जिन नौसिखियों के पास वह गई, वे अचानक गंभीर हो गईं और उसे यह सब भूल जाने को कहा: इमारत में कुछ ऐसी बातें हो रही थीं जिन्हें समझाया नहीं जा सकता था। उसे इस पर ध्यान नहीं देना था, बल्कि पूरी लगन से प्रार्थना करनी थी।

एलिस इस रवैये के बारे में सोचने लगी, और शायद तभी उसके मन में अपने चर्च संबंधी भविष्य को लेकर पहली बार संदेह उत्पन्न होने लगे।

कुछ समय बाद, अक्टूबर 1965 का महीना था, वह रात को बिस्तर पर जागती हुई कॉन्वेंट में अपने भविष्य के बारे में सोच रही थी। घड़ी में ग्यारह बज चुके थे और वह अभी भी पूरी तरह

से जाग रही थी। रात-दर-रात, उसे हॉल में चलने की आवाज़ सुनाई देती थी। कई हफ्तों तक इन आवाज़ों के आने से उसकी नसें तनावग्रस्त होने लगीं और वह उतनी आसानी से सो नहीं पाती थी जितनी आसानी से वह ब्रुकलिन में रहते हुए सोती थी। और फिर वही लगातार कदमों की आहट सुनाई दी। उसे ऐसा लग रहा था जैसे कोई मध्यम-भारी व्यक्ति चल रहा हो, पुरुष से ज़्यादा महिला के कदमों की आहट, और ऐसा लग रहा था जैसे कोई किसी खास काम से हॉल में भाग रहा हो, मानो जल्दी में हो।

अचानक रात एक चीख से गूंज उठी: ऐसा लगा जैसे चीख सीधे उसके दरवाजे के बाहर से आ रही हो, लेकिन नीचे से। चूंकि वह सबसे ऊपरी मंजिल पर थी, इसलिए चीखने वाला व्यक्ति दूसरी मंजिल पर होना चाहिए था। इसमें कोई शक नहीं था, यह एक ऐसी महिला की चीख थी जो असहनीय पीड़ा से तड़प रही थी, किसी के द्वारा चोट पहुँचाए जाने के दर्द से कराह रही थी!

इस बार वह इतनी डरी हुई थी कि देखने की हिम्मत ही नहीं कर पा रही थी, लेकिन उसने दरवाजा खोला तो पाया कि गलियारा अब सुनसान और शांत था।

वह नियमों की परवाह किए बिना, बाकी उम्मीदवारों से बात करने के लिए दौड़ी। उसने देखा कि वे सब डर के मारे अपने बिस्तरों में दुबके हुए थे। उन आठों ने वह दिल दहला देने वाली चीख सुनी थी!

अब तक ऐलिस को पूरा यकीन हो चुका था कि यहाँ कुछ अजीबोगरीब घटना घटी है और कोई बेचैन आत्मा गलियारों में घूम रही है। कुछ देर बाद, वह और वेरा अपने कमरे में सोने की तैयारी कर रही थीं।

वह रात ठंडी थी, पर हवा बिल्कुल नहीं चल रही थी। खिड़कियाँ फ्रेंच शैली की थीं, जिनमें ऊपर से नीचे तक एक भारी लोहे की छड़ से ताला लगता था। बाहर से कोई भी खिड़की नहीं खोल सकता था; उसे खोलने का एकमात्र तरीका अंदर से छड़ को ऊपर की ओर धकेलना था।

“हमें आज रात खिड़की बंद करने की ज़रूरत नहीं है, है ना?” वेरा ने कहा। “हवा नहीं चल रही है।”

लेकिन उन्होंने फिर भी ऐसा करने का फैसला किया, जैसा वे हर रात करते थे। उन्होंने अपने जूते खिड़की की चौखट पर रख दिए, जो उनकी आदत बन चुकी थी ताकि खिड़कियों के नीचे से आने वाली हल्की हवा से वे "धुल जाएं"।

खिड़की बंद करने के बाद वे सोने चले गए।

रात काफी ढल चुकी थी, तभी लड़कियाँ एक तेज़ आवाज़ से जाग उठीं। फ्रेंच खिड़की अपने आप टूट गई थी और जूते कमरे के अंदर ऐसे बिखरे पड़े थे मानो किसी भयंकर तूफान ने उन्हें अंदर फेंक दिया हो!

उन्होंने बाहर देखा तो हवा एकदम शांत थी। खिड़की खोलने वाली चीज़ हवा तो नहीं थी। लेकिन आखिर थी क्या?

कमरा अब बर्फ की तरह ठंडा हो चुका था। वे कांप उठे और वापस बिस्तर पर चले गए।

खिड़की के बाहर कबूतरों के बैठने के लिए बस एक छोटी सी जगह है, इसलिए उस जगह से कोई भी खिड़की नहीं खोल सकता था। वैसे भी, कबूतरों से खिड़की तोड़कर अंदर घुसने की उम्मीद करना भी मुश्किल है।

तब लड़कियों को एहसास हुआ कि जिन नौसिखियों ने अपने कमरे की खिड़कियाँ लगातार खुली रहने की शिकायत की थी, वे झूठ नहीं बोल रही थीं। ऐलिस और वेरा हमेशा अपनी खिड़कियाँ बंद रखती थीं, फिर भी किसी अदृश्य शक्ति ने कई बार उन्हें अंदर से खोल दिया था। अब उन्होंने खुद देख लिया था कि यह कैसे हुआ था।

एलिस को एहसास हुआ कि खिड़की को बाहर से नहीं बल्कि अंदर से जबरदस्ती तोड़ा गया था।

"कोई अंदर आने की नहीं, बाहर निकलने की कोशिश कर रहा है," उसने कहा, और उसकी रूममेट केवल सिहर उठी।

कुछ ही समय बाद उसने कुछ और अजीबोगरीब चीजें देखीं। ऊपर और अटारी में ठंडी हवा के झोंके आते थे। ऊपर के कमरों के प्रवेश द्वार के पास वाली दीवार पर क्रॉस ठोंके हुए थे। केवल उन्हीं कमरों के लिए, और किसी अन्य कमरे के लिए नहीं, और कमरों के अंदर नहीं,

जैसा कि किसी मठ में उम्मीद की जाती है, बल्कि ठीक बाहर, मानो उन्हें किसी बुरी चीज या किसी बुरे व्यक्ति को बाहर रखने के लिए वहाँ रखा गया हो!

मुख्य भोजन कक्ष में, एक दरवाजा, बंद होने पर, आसपास की दीवार से अलग नहीं दिखता था। मेज के सिरहाने के पास बनी एक छोटी सी खिड़की असल में एक दर्पण थी, जिससे मेज के सिरहाने पर बैठा व्यक्ति चारों ओर से आने वाले लोगों को देख सकता था।

बैंकर मॉर्गन को अपनी जान का बहुत डर सताता था, चाहे वह डर काल्पनिक हो या वास्तविक, लेकिन यह घर निश्चित रूप से उनकी इच्छानुसार ही बनाया गया था। दरअसल, मुख्य घर के विभिन्न हिस्सों में इस तरह से जादुई दर्पण लगाए गए थे कि कोई भी नीचे से आकर ऊपर वाले को चौंका न सके, फिर भी कोई भी दर्पणों के माध्यम से देखने वाले को देख न सके।

ऐलिस के कॉन्वेंट में जाने के कुछ ही समय बाद, उसे अजीबोगरीब सपने आने लगे जिनमें ऐलिस नाम की एक गोरी युवती प्रमुख भूमिका निभाती थी।

सपने में लड़की के सुनहरे बाल घुंघराले हो गए और उसने एक आवाज सुनी, "यह एलिस मॉर्गन है, मैं तुम्हें उससे मिलवाना चाहता हूँ।"

लेकिन जब एलिस जागी तो उसे लगा कि यह सब नौसिखियों के साथ इस मामले पर चर्चा करने के कारण हुआ है। उसकी अंतरात्मा ने उसे बताया कि एलिस मॉर्गन परेशान नहीं थी।

उसके लिए, सारी भूतिया गतिविधियाँ उस अटारी के इर्द-गिर्द ही केंद्रित थीं। वहाँ दो सीढ़ियाँ थीं जो किसी के कदम रखते ही अजीब सी चरमराहट की आवाज़ करती थीं। कई बार वह चरमराहट सुनकर देखती कि कौन चल रहा है, लेकिन हर बार उसे खालीपन ही दिखाई देता। यह दिन के समय होता था। कभी-कभी, जब वह नीचे कूड़ेदान साफ़ कर रही होती थी —दीक्षा लेने वाले लोग रसोई के बहुत से आम काम करते हैं—तो उसे ऐसा लगता था जैसे कोई अटारी से उसे घूर रहा हो। लेकिन तब वहाँ कोई नहीं होता था।

रात में सुनाई देने वाले कदमों की असहनीय पीड़ा और अपने जीवन के उद्देश्य को लेकर उठने वाले संदेह ने अंततः उसे तीन महीने तक मठ में प्रशिक्षु के रूप में रहने के बाद, मठ से मुक्ति पाने और बाहरी दुनिया में लौटने के लिए प्रेरित किया। इस कठिन निर्णय के बाद, उसे ऐसा लगा मानो उस कमरे से सारे बोझ उतर गए हों जो उसके मानसिक कष्टों का केंद्र था।

जाने से पहले उसने कुछ अंतिम पूछताछ करने का फैसला किया और चूंकि उसके वरिष्ठ अधिकारियों ने उसे कुछ नहीं बताया, इसलिए उसने अकेले ही उस जगह का मुआयना किया, जो लोग बात करने को तैयार थे उनसे बात की और अपनी अवलोकन शक्ति का इस्तेमाल किया। निश्चित रूप से, अगर भूतिया जगह ऊपर ही थी, और अब तक वह जान चुकी थी कि ऐसा ही है, तो बेचैन रहने वाली एलिस मॉर्गन तो हो ही नहीं सकती थी।

लेकिन फिर कौन था?

प्रथम विश्व युद्ध से पूर्व के समय की हवेलियों में प्रचलित प्रथा के अनुसार, तीसरी मंजिल के कमरे मूल रूप से नौकरों के रहने के क्वार्टर थे। इन्हें मालिकों के आमतौर पर बड़े कर्मचारियों के रहने के लिए बनाया गया था। मॉर्गन परिवार के मामले में, उनका स्टाफ अधिकांश धनी परिवारों से भी बड़ा था।

क्या "बेचैन" उन नौकरानियों में से एक थी, जिन्होंने किसी भयानक भाग्य से मुक्ति पाने के लिए अंतिम प्रयास में खिड़की से छलांग लगा दी थी?

फिर उसके मन में इमारत पर कम्युनिस्ट रूसी कब्जे का ख्याल आया। क्या उन्होंने ऊपर उसके कमरे में किसी को यातना दी थी? यह विचार नाटकीय रूप से लुभावना था, लेकिन उसने तुरंत इसे खारिज कर दिया। उसने हॉल में जिस आकृति को देखा था, वह पुराने जमाने की लंबी पोशाक पहने हुए थी। वह उस समय की थी जब मॉर्गन हॉल एक हवेली हुआ करती थी।

नहीं, उसने सोचा, मॉर्गन परिवार के रहते हुए वहाँ किसी युवा लड़की की मृत्यु हुई होगी और शायद उसकी मौत को दबा दिया गया था और वह चाहती थी कि यह बात सबको पता चले। क्या यह आत्महत्या थी, और क्या वह इस वजह से एक तरह के व्यक्तिगत नरक में जी रही थी, खासकर अब जब वह जगह एक कॉन्वेंट बन चुकी थी?

किसी तरह ऐलिस को लगा कि उसे सही जवाब मिल गए हैं। उस रात, जो घर लौटने से पहले कॉन्वेंट में बिताई जाने वाली उसकी आखिरी रात थी, वह चैन से सोई।

तीन महीनों में पहली बार, उसके दरवाजे के बाहर किसी के कदमों की आहट नहीं सुनाई दी। दस बजने की घंटी बजने के बाद वह कुछ देर तक इंतजार करती रही, लेकिन कुछ नहीं हुआ। जो भी चल रहा था, वह रुक गया था।

*68

एडोब का संरक्षक (कैलिफोर्निया)

कासा अल्वाराडो कैलिफोर्निया का सबसे अच्छी तरह से संरक्षित मिट्टी का घर है, जो कुछ बचे हुए स्पेनिश घरों में से एक है और इसमें उन लोगों का निवास है जो उन मूल निवासियों के वंशज हैं जो 1769 में डॉन गैस्पर डी पोर्टोला और पाद्रे जुनिपेरो सेरा के साथ इस भूमि पर आए थे।

यह घर एक ऐसे छोटे से भूखंड पर बना है जो कभी इग्नासियो पालोमारेस और रिकार्डो वेजार नामक दो स्पेनिश सज्जनों की संपत्ति हुआ करता था। अप्रैल 1837 में मैक्सिकन भूमि अनुदान के तहत उन्हें यह संयुक्त रूप से प्राप्त हुआ था, क्योंकि तब तक मैक्सिकन गणराज्य ने स्पेनिश राजशाही का स्थान लेकर ऐसे अनुदान देने का अधिकार प्राप्त कर लिया था। इससे पहले यह उपजाऊ, लेकिन खाली भूमि थी और सरकार संभावित पशुपालकों को यहाँ बसने के लिए प्रोत्साहित करना चाहती थी। ऐसे विशाल अनुदानों की विशालता का अंदाजा लगाने के लिए, यह याद रखना ही काफी है कि 1875 में जब अमेरिकी अधिकारियों द्वारा मूल अनुदान की पुनः पुष्टि की गई थी, तब भी यह फार्म 22,340 एकड़ में फैला हुआ था।

दोनों सज्जनों ने भूमि को आपस में बाँट लिया, जिसमें सेनर पालोमारेस ने निचला आधा भाग लिया, जिसे लोअर सैन जोस के नाम से जाना जाने लगा, जबकि उनके मित्र और साझेदार वेजार ने ऊपरी सैन जोस भाग को अपनी जागीर के रूप में ले लिया। भूमि के लिए सैन जोस नाम का चुनाव पूरी तरह से संयोगवश नहीं था।

19 मार्च, 1837 को, उपर्युक्त दो सज्जन, सैन गैब्रियल मिशन के पादरी साल्वीडिया के साथ, संपत्ति पर स्थित एक विशाल ओक के पेड़ के नीचे दिनभर के कामों से विश्राम कर रहे थे। वे उस भूमि का सर्वेक्षण कर रहे थे जो जल्द ही आधिकारिक तौर पर उनकी होने वाली थी और पादरी ने उसी समय उस भूमि को आशीर्वाद देने का निर्णय लिया। चूंकि यह संत जोसेफ का पर्व दिवस था, इसलिए उन्होंने इसे संत को समर्पित किया, और तब से संत जोसेफ को इस क्षेत्र में एक विशेष "स्थानीय" संरक्षक के रूप में पूजा जाता है।

सेनोरा पालोमारेस को एहसास हुआ कि उनके पास एक विशाल भूभाग है, और अपने मिलनसार स्वभाव के कारण उन्होंने अपने कुछ पड़ोसियों और रिश्तेदारों को अपने साथ इस

उपजाऊ घाटी में बसने के लिए आमंत्रित किया। उनमें इग्नासिओ अल्वाराडो और उनकी पत्नी लुइसा अविला भी शामिल थे, जिन्हें पालोमारेस के घर के दक्षिण में एक भूखंड दिया गया। एकमात्र शर्त यह थी कि नए घर में एक कमरा संत जोसेफ के निवास के लिए और धार्मिक अनुष्ठानों के लिए एक पवित्र स्थान के रूप में आरक्षित किया जाए।

1840 में इस क्षेत्र में प्रचलित प्रथा के अनुसार, अल्वाराडो का घर मिट्टी और लकड़ी से विधिवत बनाया गया था। मिट्टी एक प्राकृतिक प्लास्टर होता है जो मिट्टी से बनता है और इससे ऐसी ईंटें बनाई जाती हैं जो समय के प्रभाव को झेल सकती हैं, भले ही मानव द्वारा किए गए अतिक्रमण को न झेल सकें।

इस घर में एक विशाल बैठक कक्ष है, जो बयालीस फीट लंबा है। मूल रूप से, इस वर्गाकार इमारत में मिट्टी की बनी दस कमरे थे, एक शिंगल वाली छत थी, और घर के चारों ओर एक बरामदा था, जो तीन लकड़ी की सीढ़ियों से आसपास की ज़मीन तक जाता था। मिट्टी के बने शयनकक्षों में से एक को बाद के मालिक, निकोल्स परिवार ने नष्ट कर दिया था, और उसकी जगह तीन नए रेडवुड कमरे बनवाए थे जिनमें विक्टोरियन शैली की चिमनियां लगी थीं। ये कमरे घर के बाकी हिस्सों से पूरी तरह मेल नहीं खाते, लेकिन शायद किसी दिन, इस घर को पूरी तरह से इसके मूल वैभव में बहाल किया जा सके।

मुख्य भाग में, उपर्युक्त बैठक कक्ष के अतिरिक्त, एक बड़ा, वर्गाकार भोजन कक्ष, एक अध्ययन कक्ष, दो रसोईघर और एक शराबखाना और लोहार की दुकान थी। निकोल्स परिवार को अंतिम दो वस्तुओं की आवश्यकता नहीं थी और उन्होंने उनके स्थान पर एक पानी का टावर बनवा लिया।

वह विशाल बैठक कक्ष मूल स्वामी द्वारा बनाए रखने के लिए वादा किया गया पवित्र स्थान था, और सेंट जोसेफ की पूजा के दौरान वेदी उत्तरी छोर पर स्थित थी। हालाँकि, मैक्सिकन लोग व्यावहारिक और आनंदप्रिय भी होते हैं, इसलिए प्रत्येक प्रार्थना सभा के बाद, वेदी को दीवार की ओर घुमा दिया जाता था और उसी कमरे में एक उत्सव आयोजित किया जाता था, जो स्पष्ट रूप से चर्च और भोज कक्ष दोनों के लिए उपयुक्त था!

पोमोना लैंड एंड वॉटर कंपनी द्वारा संपत्ति का अधिग्रहण करने के बाद वह घरेलू परंपरा समाप्त हो गई। उसी समय, पोमोना में सेंट जोसेफ के पल्ली पुरोहित ने मास का कार्यभार संभाला, जिसके बाद अब कोई उत्सव नहीं मनाया जाता था, क्योंकि चर्चों की यही परंपरा है।

जैसे-जैसे साल बीतते गए, सेनो अल्वाराडो लकवाग्रस्त हो गए और बिस्तर पर ही पड़े रहे। लेकिन उन्होंने अपने घर को अपने सभी मित्रों के लिए खुला रखने का आदेश दिया, और मालिक की बीमारी के बावजूद, उनका घर लोगों से भरा रहता था, जहाँ आना-जाना लगा रहता था और मेहमाननवाज़ी की आवाज़ें गूँजती रहती थीं। मालिक की पत्नी, डोना लुइसा, स्पेन की प्रथा के अनुसार काले वस्त्र पहने और कंधे पर सफेद दुपट्टा डाले, जिसे गले में स्पेनिश सोने के ब्रोच से पिन किया गया था, मेहमानों की सेवा करती थीं। अल्वाराडो के नृत्य समारोह हमेशा की तरह आनंदमय बने रहे।

जागीर के आसपास बसे समुदाय में कई बच्चे पैदा हुए और जल्द ही एक स्कूल बनाना आवश्यक हो गया, क्योंकि कासा अल्वाराडो, जहां पहले सत्र आयोजित किए गए थे, बहुत छोटा साबित हुआ।

अतः, 1870 के दशक की शुरुआत में, मिट्टी की इमारत के दक्षिण-पूर्व में एक सादी लकड़ी की इमारत, नया विद्यालय, बनाया गया था।

मिट्टी से बने दो मकान—पालोमारेस स्थल और कासा अल्वाराडो—1887 में पोमोना लैंड एंड वॉटर कंपनी के मालिक निकोल्स परिवार की संपत्ति बन गए, लेकिन अंततः वारिसों ने पालोमारेस मकान बेच दिया। उन्होंने कासा अल्वाराडो को अपने पास रखा और एक दिन शेरमन ओक्स के एक दंपति, फागेस, ने घर का दौरा किया और देखते ही उसे पसंद कर लिया। वे पुरातन वस्तुओं के शौकीन थे और यह मकान उनकी चाहत के अनुरूप था। धर्मनिष्ठ होने के कारण, उन्होंने संत जोसेफ से अपने लिए प्रार्थना की, और छह साल बाद यह मकान बिक्री के लिए उपलब्ध हो गया। उनके लिए यह संपत्ति और भी उपयुक्त इसलिए थी क्योंकि श्रीमती इसाबेला फागेस मूल अल्वाराडो परिवार की प्रत्यक्ष वंशज थीं, और इस प्रकार यह एक तरह से परिवार और मकान दोनों के लिए घर वापसी थी।

घर में आने के बाद, उन्होंने पादरी, फादर मैथ्यू पोएटज़ेल से घर और ज़मीन को संत जोसेफ को समर्पित करने का आशीर्वाद प्राप्त किया और बाहरी दीवार पर एक पट्टिका लगाई जिस

पर इसके उल्लेखनीय इतिहास का वर्णन था। वर्षों से ज़मीन सिकुड़ती जा रही थी और अब वह केवल एक घर बनाने के लिए आवश्यक ज़मीन से थोड़ी ही अधिक थी।

दक्षिण की ओर थोड़ी दूरी पर कभी एक लकड़ी का खलिहान हुआ करता था, जो इस जागीर का हिस्सा था। 1840 के दशक का वह खलिहान बहुत पहले एक घर में बदल दिया गया था। कासा अल्वाराडो के निकट होने के बावजूद, इसके मालिक अलग हैं और यह कई वर्षों से जागीर के बाकी हिस्से से अलग है। लेकिन जो लोग रैंचो सैन जोस को एक इकाई के रूप में देखते हैं, उनके लिए यह निश्चित रूप से मूल भूमि अनुदान का अभिन्न अंग है।

बेशक, पोमोना शहर अब इस जगह के चारों ओर फैल चुका है और हवा उतनी साफ नहीं रही जितनी डॉन अल्वाराडो के समय में हुआ करती थी। अब राजमार्ग घर के पास से गुजरता है और पेट्रोल की गंध भी आती है, लेकिन कोई भी ज़मीन को छू नहीं सकता। घर लालची सट्टेबाजों से सुरक्षित है और सेंट जोसेफ का मंदिर शायद उन सभी से भी ज़्यादा समय तक टिका रहेगा।

अल्वाराडो परिवार की सारी ऊर्जा इस ऐतिहासिक धरोहर को उसके मूल स्वरूप में संरक्षित करने की दिशा में लगी हुई है और इसकी रक्षा के लिए कोई भी बलिदान बहुत बड़ा नहीं है।

यह तो स्पष्ट है कि घर के दोबारा परिवार के पास आने के बाद से इसमें कोई बदलाव नहीं हुआ है। लेकिन निकोल्स परिवार द्वारा की गई आंशिक तोड़फोड़, जिनकी न्यू इंग्लैंड की व्यावहारिकता स्पेनिश बसने वालों के अपने तौर-तरीकों से भावनात्मक लगाव को नहीं समझ पाई, ने घर को क्षतिग्रस्त तो नहीं किया, लेकिन कुछ निशान ज़रूर छोड़ दिए थे। ऐसा दोबारा नहीं होना चाहिए, और श्रीमती फेजेस अपने आसपास चल रहे निर्माण कार्य को बड़ी सावधानी से देख रही हैं। एक तरह से वे शत्रुतापूर्ण अजनबियों के आक्रमणों के खिलाफ उसी तरह मोर्चा संभाले हुए हैं जैसे पहले बसने वालों ने किया था।

निकोल्स परिवार द्वारा कासा अल्वाराडो को बेचने और वर्तमान मालिकों के आने के बीच खलिहान का क्या हुआ, यह निश्चित नहीं है, लेकिन उनके आने से ठीक पहले वह एक घर था, खलिहान नहीं। उसमें श्रीमान और श्रीमती बोल्ट रहते थे। श्रीमती बोल्ट की मृत्यु भी उसी में कैंसर से हुई, और अक्सर दर्द से चीखती हुई उनकी चीखें रात के सन्नाटे को चीर देती थीं।

इस बीच, मौसम की मार से घर को कुछ नुकसान हुआ और जब कुछ साल पहले लीमबाक परिवार इसमें रहने आया, तो उन्हें यह स्पष्ट हो गया कि पुराने खलिहान को एक सुंदर घर में बदलने के लिए उन्हें कुछ मरम्मत और पुनर्निर्माण करना होगा। फिलहाल, वे घर में रह रहे हैं। यह लॉस एंजिल्स से राजमार्ग पर लगभग तीस मील की दूरी पर है और लॉस एंजिल्स के उपनगरीय जीवन की दृष्टि से बेहद सुविधाजनक है। घर का प्रवेश द्वार बगल से है, और नीचे की मंजिल पर एक रसोईघर, एक शयनकक्ष और एक बैठक कक्ष है, जहाँ से सीढ़ियाँ ऊपरी मंजिल तक जाती हैं। ऊपरी मंजिल में दो शयनकक्ष हैं।

जब लीमबैक परिवार नए घर में रहने आया, तो उन्हें पता चला कि उनका घर कभी खलिहान और भूसे के गोदाम के रूप में इस्तेमाल होता था: उन्हें नीचे के शयनकक्ष में भूसा टांगने का हुक भी मिला और वे समझ गए कि यहाँ कभी घोड़े रहते थे! लेकिन इससे उन्हें ज़रा भी परेशानी नहीं हुई, न ही उनकी दोनों बेटियों, डेनिस और डाना को। घर में आने के समय दोनों लड़कियाँ क्रमशः बारह और दस वर्ष की थीं।

तीस वर्ष की महिला जो एन लीमबैक, उनके पति, जो उनसे कुछ बड़े थे, दो बेटियाँ और कभी-कभार सफाई करने वाली महिला, श्रीमती इरेन नुनेज़, ही उस घर में रहते थे।

कम से कम शुरुआत में तो ऐसा ही लगा।

* * *

श्रीमती लीमबैक को मानसिक घटनाओं में विशेष रुचि नहीं थी, लेकिन बचपन में उनमें थोड़ी-बहुत पूर्वाभास की क्षमता थी, जैसे कि एक बार उन्हें पता चल गया था कि उनके दादाजी की मृत्यु हो गई है, हालांकि वे परिवार से बहुत दूर थे, और उनकी मां उन्हें उनकी मृत्यु के बारे में कैसे बताती थीं।

लेकिन यह बहुत पहले की बात थी और जब वह और उसका परिवार अल्वाराडो एस्टेट पर बने परिवर्तित खलिहान में रहने आए थे, तब इनमें से कोई भी बात उसके दिमाग में नहीं थी।

12 सितंबर, 1967 को वह अपने सिलाई कक्ष में थीं, जो मुख्य घर से अलग एक इमारत में स्थित था। मुख्य घर में श्रीमती नुनेज़ के अलावा कोई नहीं था, जो ऊपर के अतिथि कक्ष की

सफाई कर रही थीं। आम तौर पर एक साहसी महिला होने के बावजूद, श्रीमती नुनेज़ को उस सुबह बेचैनी महसूस हो रही थी, मानो कोई अदृश्य शक्ति उन्हें देख रही हो।

यह पहली बार था जब वह घर में अकेली थी। क्या उसे बेचैनी हो रही थी? वह मैक्सिकन मूल की महिला है और यह इलाका उसके लोगों से गहराई से जुड़ा हुआ है, इसलिए यह संभव नहीं था कि वह यहाँ असहज महसूस कर रही हो, फिर भी इस समय वह खुद को बहुत अलग-थलग महसूस कर रही थी। उसने पीछे मुड़कर देखा कि कहीं कमरे में कोई है या नहीं।

जैसे ही वह मुड़ी, उसे अपने पास आते कदमों की आहट साफ सुनाई दी। वह तुरंत अपनी जगह पर जम गई और कदम उसके पास से गुजर गए। वहाँ कोई दिखाई नहीं दे रहा था, फिर भी फर्श किसी भारी-भरकम व्यक्ति के तेज़ी से गुजरने से कांप उठा! उसने खुद को सीढ़ियों से नीचे भागने से रोका, लेकिन फिर सोचा कि ऐसा करना ठीक नहीं होगा और वापस ऊपर चली गई। बेचैनी का एहसास अभी भी था, लेकिन अब शांत लग रहा था।

अगर उसने अपने मालिक को अपने अनुभव के बारे में बताया होता, तो उसे तिरस्कार नहीं, बल्कि सहानुभूति मिलती। क्योंकि श्रीमती लेम्बैक को तब तक पता चल चुका था कि इस घर में इंसानों के अलावा भी कोई और है। उसी साल फरवरी में, वह अपनी दो बेटियों के साथ घर में थी, जबकि उसके पति आयकर रिपोर्ट भरने के लिए बाहर गए हुए थे। उस शाम, दस और बारह साल की बेटियाँ उसके साथ रसोई में थीं, तभी उसने ऊपर से भारी कदमों की आहट सुनी।

इसके तुरंत बाद किसी के दराज खोलने और बंद करने की आवाज़ आई और दरवाज़े ज़ोर से खोले और बंद किए जाने की आवाज़ आई। ऐसा लग रहा था मानो कोई व्यक्ति अपनी मनचाही चीज़ न मिलने पर बहुत गुस्से में था और बेचैनी से एक कमरे से दूसरे कमरे में कुछ खोज रहा था।

यह सोचकर कि इन आवाज़ों का उसके बच्चों पर क्या असर पड़ेगा, क्योंकि वह उन्हें तर्कसंगत तरीके से इन आवाज़ों का कारण नहीं समझा सकती थी, वह रेडियो की ओर भागी और उसे तेज़ आवाज़ में चला दिया ताकि ऊपर से आ रही आवाज़ें दब जाएँ। फिर वह बाहर गई और कुत्ते को घर के अंदर ले आई और उसे अपने साथ सीढ़ियों पर ले जाने की कोशिश

की। कोशिश तो की, लेकिन जानवर टस से मस नहीं हुआ और सीढ़ियों के नीचे बैठकर डर के मारे ज़ोर-ज़ोर से भौंकने लगा।

एडोब में भूत: हमेशा देखता रहता है

श्रीमती लीमबैक अकेले जाने की हिम्मत नहीं कर पा रही थीं, इसलिए वे वहीं बैठी रहीं और इंतज़ार करती रहीं। पूरे दस मिनट तक ऊपर शोरगुल चलता रहा। फिर अचानक ही शोरगुल बंद हो गया। लगभग आधे घंटे बाद, उनकी भाभी डोरिस और उनके बेटे की मंगेतर मैरियन घर पहुँचीं। रिश्तेदारों के साथ होने से श्रीमती लीमबैक ने आखिरकार ऊपर जाने की हिम्मत जुटाई। शोरगुल की आवाज़ से उन्हें लगा कि ऊपर कई दराजें खुली होंगी और दरवाजे जाम होंगे। लेकिन जब वे ऊपर के कमरों में दाखिल हुईं, तो उन्होंने देखा कि वहाँ कुछ भी नहीं था, मानो किसी ने उसे छुआ भी न हो।

सभी खिड़कियाँ कसकर बंद थीं, इसलिए शोरगुल के लिए हवा के झोंकों को दोष नहीं दिया जा सकता था। सभी दरवाजे खुले हुए थे, फिर भी उसने दरवाजों के ज़ोर से बंद होने की आवाज़ स्पष्ट रूप से सुनी थी।

उनके आस-पास कोई घर नहीं है, और न ही उस क्षेत्र में ऐसी कोई आवाज है जो इस तरह की आवाजों की नकल कर सके।

“पता नहीं वो क्या ढूंढ रहा है,” उसने धीरे से कहा, मानो किसी और के लिए नहीं बल्कि खुद से ही कह रही हो। उसे लग रहा था कि भारी कदमों की आहट किसी पुरुष की है।

ज़ाहिर है, उसने अपनी बेटियों से इस बारे में कोई बात नहीं की और किसी तरह उनसे यह बात छुपाए रखी, हालाँकि वह खुद भी इस सब से परेशान थी। घर में ज़रूर कुछ गड़बड़ थी, पर क्या? उसे अपनी बेटियों के बारे में चिंता करने की ज़रूरत नहीं थी क्योंकि उन्हें पहले से ही काफी हद तक पता था कि परेशानी की वजह क्या थी।

पिछले जुलाई में, श्रीमती लीमबैक और उनके पति नीचे रसोई में कॉफी पी रहे थे। दोपहर का मौसम सुहाना और धूप वाला था और सब कुछ शांत और सुकून भरा लग रहा था। बड़ी बेटी डेनिस ऊपर खिड़की के पास बैठकर किताब पढ़ रही थी। एक पल के लिए उसने किताब से नज़र हटाई, क्योंकि उसे लगा कि हल्की हवा से कमरे का माहौल थोड़ा बदल गया है। उसका अंदाज़ा सही था, क्योंकि उसने एक लंबे-चौड़े आदमी को कमरे के उस पार जाते और दूसरे छोर पर बने बड़े से कोठरी में घुसते देखा। उसने सोचा कि वह उसके पिता होंगे, और उनसे पूछा कि वे क्या ढूंढ रहे हैं। जब उसे कोई जवाब नहीं मिला, तो वह उठी और खुद कोठरी में गई। उसे अजीब लगा कि कोठरी का दरवाज़ा बंद था। उसने दरवाज़ा खोला, यह सोचकर कि कहीं उसके पिता उसके साथ कोई खेल तो नहीं खेल रहे हैं। कोठरी खाली थी। डर के मारे वह भागकर नीचे आ गई।

“आप क्या कर रहे हैं? आप क्या कर रहे हैं?” वह सिसकते हुए पूछने लगी, जबकि उसके पिता उसे शांत करने की कोशिश कर रहे थे।

जब उसने उसे आश्वस्त किया कि वह उसके साथ कोई चाल नहीं चल रहा है, तभी वह मानी। लेकिन अगर वह उसका पिता नहीं होता, जो ऊपर उसके कमरे में था? लीमबैक दंपति ने मामले को हल्के ढंग से समझाने की कोशिश की, जिसमें उन्होंने बहुत पढ़ने के कारण "थकी हुई आँखों" से लेकर बाहर "पेड़ों की परछाइयों" तक, हर तरह का बहाना बनाया। लेकिन लड़की ने उनकी किसी बात पर विश्वास नहीं किया।

घर में अब एक अस्थिर शांति छाई हुई थी और फिलहाल उस घटना के बारे में कोई चर्चा नहीं हुई। हालांकि, यह शांति ज्यादा देर तक नहीं टिकी।

कुछ देर बाद, दोनों लड़कियाँ सुबह के बीच में जाग गईं, जबकि वे आमतौर पर गहरी नींद सोती थीं। समय रात के 2 बजे का था और कमरे में इतनी रोशनी थी कि वे अपने बिस्तर के पास खड़े एक बड़े आदमी की आकृति को काले कपड़ों में देख सकीं! ऐसा लग रहा था मानो वह बिना हिले-डुले उन्हें घूर रहा हो। दोनों ने लगभग एक साथ चीख मारी, जिससे उनके माता-पिता सीढ़ियों से ऊपर आ गए। तब तक वह आकृति गायब हो चुकी थी।

हालांकि, तनाव का दौर जारी रहा। कुछ रातों बाद, लड़कियों की चीखों ने माता-पिता का ध्यान आकर्षित किया और जब वे दौड़कर ऊपर पहुंचे तो उन्होंने लड़कियों को कमरे के अंदर बंद पाया, वे दरवाजे को इस तरह पकड़े हुए थीं मानो कोई उसे जबरदस्ती खोलने की कोशिश कर रहा हो।

एक पल के लिए माता-पिता को साफ दिखाई दिया कि कोई अदृश्य शक्ति दरवाजे को दूसरी तरफ खड़ी दो छोटी बच्चियों के भार से थामे हुए थी—फिर अचानक दरवाजा ढीला पड़ गया और बंद हो गया। अब लगभग दहशत से बेहाल बच्चियों ने सिसकते हुए बताया कि किसी ने उनके कमरे में घुसने की कोशिश की थी, वे जाग गईं और उन्हें इसका आभास हुआ, इसलिए उन्होंने दरवाजे को धक्का दिया—लेकिन बाहर की शक्ति क्षण भर के लिए और भी मजबूत हो गई। अगर माता-पिता उस समय वहां नहीं पहुंचते, तो दरवाजा खुल जाता और जो भी ऐसा कर रहा था, वह शयनकक्ष में घुस जाता।

लेकिन दरवाज़ा उस काले, रहस्यमय घुसपैठिए को कमरे में प्रवेश करने से नहीं रोक सका। कई बार लड़कियों ने उसे अपने बिस्तर के पास खड़े देखा और जब वे पूरी तरह जागकर बिस्तर से कूदतीं, तो वह गायब हो जाता था।

लेमबैक परिवार और उनकी बेटियाँ ही उस अजनबी से सामना करने वाले अकेले नहीं थे। भूतिया घर की अदृश्य कंपन के प्रति कहीं अधिक संवेदनशील श्रीमती नुनेज़ को ऊपर वाले कमरे में रहने वाले उस आदमी का प्रारंभिक अनुभव हो चुका था। लेकिन अभी तक उन्होंने उसे देखा नहीं था और निश्चित रूप से देखना भी नहीं चाहती थीं। लेकिन संयोग से उसी साल गर्मियों में परिवार ने छुट्टी पर जाने का फैसला किया और श्रीमती नुनेज़ से कहा कि वे उनके

पत्रों का ध्यान रखें, पौधों को पानी दें और घर की सफाई करें, भले ही वह खाली रहेगा। इसके अलावा, स्थानीय पुलिस को घर में घुसपैठियों की संभावना के बारे में बताया गया और उनसे परिवार के छुट्टी पर रहने के दौरान घर पर नज़र रखने का अनुरोध किया गया। पुलिस ने सहर्ष सहमति दी और घर पर निगरानी शुरू कर दी गई।

श्रीमती नुनेज़ ने मिली-जुली भावनाओं के साथ यह ज़िम्मेदारी स्वीकार की। वह अंधविश्वासी महिला नहीं थीं, लेकिन उस घर में उन्हें हमेशा ऐसा लगता था कि कोई उन पर नज़र रख रहा है, कभी अकेलापन महसूस नहीं होता था, और किसी न किसी तरह उन्हें यह आभास होता था कि उस घर की शक्ति बिल्कुल भी मित्रवत नहीं है। लेकिन उन्होंने हिम्मत जुटाकर अपना काम जल्द से जल्द, और निश्चित रूप से दिन के उजाले में ही पूरा करने का निश्चय कर लिया था।

आज सुबह जब वह घर के पास पहुंची, तो वहां अजीब सी शांति और सुकून का माहौल था। हवा गर्म थी, जैसा कि कैलिफोर्निया में आमतौर पर होता है, और मधुमक्खियों की भिनभिनाहट से संकेत मिल रहा था कि गर्मी अपने चरम पर पहुंच चुकी है।

उसने अपनी कार घर के सामने खड़ी की और प्रवेश द्वार की ओर बढ़ी। लीमबाक परिवार द्वारा किए जा रहे संरचनात्मक बदलावों के लिए लकड़ी अभी भी सामने के आंगन में बिखरी पड़ी थी। उसने ताले में चाबी डाली और सामने का दरवाजा खोला।

दरवाजा सावधानी से बंद करते हुए, वह मुड़ी और डर के मारे उसने देखा कि एक आकृति गलियारे में मुड़ी और सीढ़ियों की ओर बढ़ रही है! उसी समय, उसने एक आदमी के भारी कदमों की आवाज सुनी जो दूर भागता हुआ सीढ़ियों पर चढ़ गया, और उसने स्पष्ट रूप से फर्श की लकड़ियों के चरमराने की आवाज सुनी जैसे उन पर किसी व्यक्ति का भार पड़ा हो —या कम से कम ऐसा ही लगा।

अपने घोर भय और माथे पर टपकते पसीने के बावजूद, उसने हिम्मत जुटाई और घुसपैठिए के पीछे सीढ़ियों से ऊपर गई। कदमों की आहट अब बंद हो चुकी थी और ऊपर कोई नहीं था। उसने घर के हर कोने में तलाशी ली, हर अलमारी का दरवाजा खोला और यहाँ तक कि सीढ़ियों से नीचे तहखाने में भी देखा। कुछ नहीं मिला। घर बिल्कुल खाली था, जैसा कि होना चाहिए था।

तभी उसे याद आया कि घर में प्रवेश करते समय गलियारा कितना अजीब तरह से ठंडा था। कोने से एक इंसान को गायब होते देखने की उत्तेजना में वह इस बात को पूरी तरह से भूल गई थी। लेकिन अब, जब वह ऊपर के कमरे में बिस्तर पर चुपचाप बैठी थी, तो उसे यह बात याद आई और ठंड न होने के बावजूद वह सिहर उठी।

अपने काम निपटाकर वह घर से निकल गई। जब अगले दिन मिलने जाने का समय आया, तो उसने न जाने की बहुत कोशिश की, लेकिन शिष्टाचार की भावना ने उसे वही करने के लिए विवश कर दिया जो उससे अपेक्षित था।

इस बार वह अपने बेटे रिचर्ड को भी साथ ले गई। उसने जल्दी से कार पार्क की, दरवाजा खोला और अंदर देखा। एक बार फिर, बर्फीली, उमस भरी हवा उसे घेरने लगी। उसने जल्दी से मेल बॉक्स से निकाली हुई चिट्ठियाँ प्रवेश कक्ष में रखी मेज पर फेंक दीं और दरवाजा जोर से बंद कर दिया। वह आज और आगे नहीं जा सकती थी।

जब लीमबैक परिवार वापस लौटा, तो उसने फिर से उस घर का दौरा करना शुरू कर दिया, लेकिन उसके बाद जब भी वह उस घर के पास जाती, तो उसे लगभग एक आदमी की आकृति दिखाई देती जो प्रवेश द्वार पर खड़ा होकर शत्रुतापूर्ण, ठंडी आँखों से उसे घूर रहा होता था।

लीमबैक परिवार को अंततः उनकी समस्या का समाधान मिल गया।

एक प्रसिद्ध मानसिक शक्ति वाली महिला उनके घर से गुजरी और तुरंत ही वहां के शत्रुतापूर्ण वातावरण को महसूस किया।

"कोई चीज़ इस घर को खतरा पहुँचा रही है," उसने बुदबुदाते हुए कहा, "और इसका संबंध सिर्फ इस घर से नहीं, बल्कि दोनों घरों और ज़मीन से है।"

अचानक लीमबैक परिवार को यह एहसास हुआ कि उनकी मुसीबतें तो तभी शुरू हुई थीं जब उन्होंने घर में बड़े संरचनात्मक बदलाव करने का फैसला किया था।

“अहा,” ज्योतिषी ने कहा, “यही तुम्हारी समस्या है।”

मुख्य घर, कासा अल्वाराडो, पिछली शताब्दी में किए गए उस दुर्भाग्यपूर्ण विस्तार को छोड़कर, किसी भी बदलाव से अछूता रहा था, जबकि कभी जागीर का हिस्सा रहे खलिहान

का पुनर्निर्माण किया गया था। लेकिन लीमबाख परिवार के आने तक, न तो कोई दीवार हटाई गई थी और न ही बुनियादी निर्माण में कोई बदलाव किया गया था। हालांकि, उनका इरादा एक आधुनिक घर की अपनी जरूरतों के अनुरूप इसे तैयार करना था।

क्या इस गतिविधि ने संरक्षक प्रेत के क्रोध को जागृत कर दिया था?

इसके अलावा, घर में दो किशोरियों की मौजूदगी भी थी, जो भूत-प्रेत संबंधी गतिविधियों के लिए स्वाभाविक स्रोत थीं।

काले वस्त्रों में लिपटा वह व्यक्ति, जो एक शत्रुतापूर्ण दुनिया को घूर रहा था, जिसने उसके पूर्व के साम्राज्य को इतना नुकसान पहुंचाया था, क्या वह स्वयं सेनर अल्वाराडो की बेचैन आत्मा थी?

मुख्य घर में, जहाँ संत जोसेफ की मूर्ति खतरों पर नज़र रखती थी, वहाँ उसकी सतर्कता की कोई आवश्यकता नहीं प्रतीत होती थी। लेकिन यहाँ, खलिहान में, एक सतर्क निगाह की आवश्यकता प्रतीत होती थी।

इसके बाद, लीमबैक परिवार ने घर में बदलाव करने की अपनी योजनाओं में अधिक सावधानी बरती। शायद उनके द्वारा किए गए उचित सुधारों पर खुले तौर पर चर्चा होने से संरक्षक के अनदेखे कानों को कुछ हद तक तसल्ली मिली होगी।

हाल ही में घर में सन्नाटा पसरा हुआ है, पर कुछ कहा नहीं जा सकता। शुरुआती स्पेनिश बसने वाले लोग अपना और अपने परिवार का ख्याल रखना जानते थे। और टेलीविजन एरियल और गैराज के बावजूद, पुराना खलिहान आज भी अल्वाराडो फार्म का हिस्सा है।

*69

मैना पक्षी (कनाडा)

“चलो, लड़के! चलो, लड़के!” दीवार पर बैठे एक मैना पक्षी की तीखी आवाज़ सुनाई दी। पुराने घर के गलियारे को जानबूझकर मंद रोशनी में रखा गया था ताकि वहाँ के माहौल से मेल खा सके। आख़िरकार, यह टोरंटो का पहला और एकमात्र टॉपलेस नाइटक्लब था और है। पेय लाइसेंस न होने के कारण यह गैर-मादक है, इसलिए इसे अन्य आकर्षणों पर बहुत अधिक निर्भर रहना पड़ता है। अन्य आकर्षण ऐसे हैं कि बोतल में शराब की कमी किसी को ज़्यादा

महसूस नहीं होती, खासकर जब यहाँ असली शराब की महफ़िल मौजूद है। इसके बारे में आगे बात करेंगे। जहाँ तक काले, पीले चोंच वाले मैना पक्षी की बात है, उसे क्लब के वर्तमान मालिक कॉलिन केर भारत की अपनी कई यात्राओं में से एक से बॉम्बे से वापस लाए थे।

श्री केर न केवल एक पक्षी के मालिक हैं, बल्कि एक पेशेवर गोल्फर भी हैं, जिनकी गतिविधियों ने उन्हें दुनिया भर में घुमाया है। उन्होंने नाइटक्लब व्यवसाय में तब कदम रखा जब टोरंटो के यॉर्कविले जिले में एक आकर्षक, लगभग रोमांटिक दिखने वाले पुराने घर ने उनका ध्यान आकर्षित किया, जो न्यूयॉर्क के ग्रीनविच विलेज या लंदन के सोहो के लगभग बराबर का इलाका है। उन्होंने अपने ससुर को उस अंधेरे, ईंट और लकड़ी के बने टाउनहाउस की तीसरी मंजिल पर ठहराया और उन्हें इमारत को साफ-सुथरा और अच्छी हालत में रखने का काम सौंपा। यह 1963 की बात है और दो साल तक उन्होंने उस जगह को इलाके के अन्य क्लबों की तरह ही चलाया; नृत्य, कभी-कभार गायक और ढेर सारा रोमांस। वहाँ अभी भी शराब नहीं मिलती थी, लेकिन उस जगह का विक्टोरियन माहौल इसकी कमी को पूरा कर देता था और कुछ समय के लिए यह युवा जोड़ों के लिए हाथ थामे घूमने का एक अनोखा अड्डा बन गया था। बाहरी दुनिया से अलगाव की भावना को और भी मजबूत करने के लिए, श्री केर ने छत की बत्तियाँ मंद कर दीं, भारी लाल पर्दे और विक्टोरियन फर्नीचर लगाए और स्थानीय प्राचीन वस्तुओं की दुकानों और बाजारों से उस दौर की जितनी भी प्राचीन वस्तुएँ मिल सकीं, उन्हें वहाँ रख दिया।

श्री केर दुबले-पतले, तीस वर्ष के आसपास के और मृदुभाषी व्यक्ति हैं। वे किसी आम नाइटक्लब मैनेजर से बिल्कुल अलग हैं और इस अनोखे घर में होने से उन्हें एक तरह से आत्म-अभिव्यक्ति का अवसर मिला।

उनके आने से पहले यह जगह एक प्राचीन वस्तुओं की दुकान थी और उससे पहले ऊपर की मंजिल पर एक कलाकार का स्टूडियो था, जहाँ श्री केर ने एक छोटा सा मंच बनाया था। इस इलाके में हर तरह के लोग आते-जाते थे और घर के चारों ओर रोमांच और एक तरह की बेफिक्री का माहौल था जो किसी तरह घर के अंदरूनी हिस्से के साथ खूबसूरती से घुलमिल जाता था।

दो साल बाद जब उन्होंने इस क्षेत्र में कदम रखा, तो उन्होंने वह घर खरीदने का फैसला किया जिसे वे पहले केवल किराए पर लेते थे। इसके पीछे एक ठोस कारण था। श्री केर नाइटक्लब व्यवसाय में एक नए और रोमांचक चलन से अवगत हो गए थे और उन्हें लगा कि टोरंटो उन नवाचारों के लिए लगभग तैयार है जो सैन फ्रांसिस्को के नॉर्थ बीच के अग्रणी क्षेत्र में पहली बार देखने को मिले थे।

टॉपलेस डांसरें उनके डांस बैंड से कहीं बेहतर आकर्षण साबित होतीं। लेकिन श्री केर की कलात्मक महत्वाकांक्षाएं रचनात्मक अभिव्यक्ति की संभावनाओं में और भी आगे तक फैली हुई थीं: क्यों न ग्राहकों को भी शो में शामिल किया जाए? फ्लोरोसेंट लाइटों के नीचे एक नग्न युवती को थिरकते और मटकते देखना अच्छा था। इसके अपने फायदे थे और श्री केर जानते थे कि उनके द्वारा पेश किए गए आकर्षण भीड़ खींचते हैं। लेकिन एक अधिक अंतरंग स्पर्श की आवश्यकता थी और उन्होंने वह प्रदान किया।

“हमारी नग्न स्तन वाली लड़की का चित्र बनाइए!” मैना बर्ड क्लब ने टोरंटो के सभी अखबारों में विज्ञापन दिया। दो डॉलर के शुल्क पर, कोई भी ग्राहक प्रबंधन द्वारा सावधानीपूर्वक उपलब्ध कराए गए रंग में अपना ब्रश डुबोकर एक युवती के नग्न धड़ पर कोई भी डिज़ाइन बना सकता था। यह उंगलियों से चित्रकारी करने जितना अच्छा तो नहीं था, लेकिन उसके बाद का सबसे अच्छा विकल्प था और ग्राहकों को अपने विभिन्न कलात्मक दृष्टिकोणों को व्यक्त करने की पूरी छूट थी। क्लब के निचले तल पर, जो कभी बैठक कक्ष रहा होगा, लगभग सत्तर लोग बैठ सकते थे, और दूसरी मंजिल पर स्थित “थिएटर” में चालीस लोग बैठ सकते थे। तीसरी मंजिल का उपयोग रहने के लिए किया जाता था।

यह नया तरीका रातोंरात लोकप्रिय हो गया। मैना बर्ड कनाडा में इस तरह की इकलौती जगह बनी रही, और जल्द ही दूसरे शहरों से भी लोग पेंटिंग करने आने लगे। हैरानी की बात यह थी कि इसमें कुछ भी चौंकाने वाला नहीं था। बेशक, औरतें जवान और खूबसूरत थीं और उन्होंने सिर्फ़ छोटी-छोटी पैंटी पहनी होती थी, जो शौकिया चित्रकारों को लड़कियों की त्वचा पर अपनी पसंद के कलात्मक चित्र बनाने के लिए आधार प्रदान करती थी। इस्तेमाल किया जाने वाला रंग फ्लोरोसेंट था और कम रोशनी में, इससे वाकई एक सुंदर चित्र बनता था। जब किसी

महिला की नंगी त्वचा पर कोई खाली जगह नहीं बचती थी, तो पेंटिंग का सत्र समाप्त हो जाता था, ग्राहक अपनी सीटों पर लौट जाते थे, और रंगी हुई लड़की नाचने लगती थी।

टोरंटो का भूतिया मैना बर्ड कैफे

यह सब कुछ रात में दो या तीन बार, सप्ताह में छह दिन होता था। श्री केर, अपने आकर्षक व्यक्तित्व के बावजूद, अपने स्टोर के लिए बॉडीगार्ड या बाउंसर रखने की ज़रूरत नहीं समझते थे। शायद कनाडाई लोग अमेरिकियों की तरह आसानी से आकर्षित नहीं होते, या शायद मादक पेय पदार्थों की अनुपस्थिति पुरुषों को उनसे दूर रखती थी। खैर, जब तक महिलाओं के स्तनों पर चित्रकारी नहीं हो रही होती थी, तब तक ज़्यादातर पुरुष दर्शक उनसे दूरी बनाए रखते थे। लेकिन इस सब का पुरुषों की आँखों पर ज़रूर असर होता था। उनकी आँखें कठोर और संकुचित हो जाती थीं, मानो वे प्राचीन रोम में कहीं अखाड़े में लड़ाई देख रहे हों। और दूरदराज के प्रांतों से आई युवतियाँ भी, जब भी उन निगाहों को देखतीं, तो उनकी नज़रें कठोर और ठंडी हो जाती थीं।

फिर भी, यह एक सफल प्रयास था और आज भी है। भला कौन कह सकता है कि नग्न स्तन वाली महिलाओं पर डिज़ाइन बनाना किसी प्रकार की कलात्मक अभिव्यक्ति नहीं है? महिलाएं खुद इसे पसंद करती हैं और उन्हें केवल गीले ब्रश का स्पर्श ही आकर्षित नहीं करता, बल्कि इसके पीछे की सोच भी। वे रिंग के केंद्र में होती हैं और पुरुषों का ध्यान

आकर्षित करना उन्हें अच्छा लगता है। लेकिन, मंच पर स्ट्रिपर की तरह, वे इस तरह घूरे जाने से नफरत भी करती हैं। कॉलिन केर अपनी सात लड़कियों पर नज़र रखते हैं और सुनिश्चित करते हैं कि उनके साथ छेड़छाड़ न हो, और महिलाएं अपने क्लब को एक तरह का घर मानती हैं जहाँ उनके योगदान की सराहना की जाती है। इन महिलाओं को केवल नग्न अवस्था में चित्रित नहीं किया जा रहा है। उदाहरण के लिए, मछलीघर में बैठी लड़की को देखें, यह दर्पणों की मदद से किया गया एक करतब है, क्योंकि टैंक केवल दो गैलन का है। (यह एक अन्य टैंक के समान है जिसमें श्री केर एक जीवित पिरान्हा रखते हैं, हालांकि वह शो का हिस्सा नहीं है। फिलहाल तो नहीं।) मछलीघर में बैठी महिला पूरी तरह से नग्न है, लेकिन दर्शक को वह केवल कुछ इंच ऊंची दिखाई देती है। कभी-कभी दर्शकों को विश्वास नहीं होता कि वे एक जीवित लड़की को देख रहे हैं, लेकिन लड़की उन्हें हाथ हिलाकर तुरंत आश्वस्त कर देती है।

एक ऐसे क्लब में जहाँ सॉफ्ट ड्रिंक्स और सैंडविच भी मिलते हैं, वहाँ बर्तन धोने और दूसरे ऐसे काम तो होते ही हैं जो देखने में आकर्षक नहीं होते। यहाँ हर कोई बारी-बारी से सब काम करता है, पेंटिंग से लेकर मछलीघर की देखभाल, टॉपलेस डांस, ग्राहकों के कोट चेक करने, उन्हें उनकी टेबल तक ले जाने और खाना परोसने तक। लड़कियों को आज एक काम और कल दूसरा काम करना अच्छा लगता है क्योंकि इससे उन्हें काम में विविधता मिलती है और इस तरह मिस्टर केर को किसी असंतुष्ट वेट्रेस या थके हुए बर्तन धोने वालों से कोई शिकायत नहीं मिलती।

इन लड़कियों की उम्र अठारह से इक्कीस वर्ष के बीच है और ये अधिकतर निम्न-मध्यम वर्गीय परिवारों से आती हैं, जो आमतौर पर शहरों के बाहर स्थित हैं। जब भी केर को किसी नई लड़की की आवश्यकता होती है, आवेदकों की लंबी कतार लग जाती है, जो कम से कम यह साबित करता है कि कुछ महिलाओं को अपने स्तनों पर चमकीले रंग का पेंट करवाना पसंद होता है।

लेकिन जब केर ने क्लब की नीति को सीधे डांस से बदलकर टॉपलेस डांस की ओर मोड़ा, तो कुछ अजीबोगरीब घटना घटी। यह कहना मुश्किल है कि नाइटलाइफ़ के प्रति उनका साहसिक रवैया था या अचानक बहुत कम उम्र की लड़कियों के एक समूह का आगमन, जिसके कारण यह गड़बड़ी हुई। शायद दोनों ही कारण थे। क्लब की नीति बदलने के कुछ ही

समय बाद, श्री केर को पता चला कि कई बार उनके लिए लाइटें बंद रखना मुश्किल हो जाता था।

ऐसा लग रहा था मानो कोई उसे परेशान करने की कोशिश कर रहा हो, या शायद किसी खास वजह से उसे इशारा कर रहा हो, लेकिन लाइट के स्विच अपने आप बार-बार चालू हो रहे थे। चूंकि उसके रहने के पहले दो सालों में ऐसा कुछ नहीं हुआ था, इसलिए स्वाभाविक रूप से उसे चिंता हुई। लेकिन इस व्यवहार का कोई स्वाभाविक कारण समझ में नहीं आ रहा था। फिर कुछ वाद्य यंत्र—बैंड के दिनों के बचे हुए—अपने आप हिलने लगे, जिससे मिस्टर केर बहुत घबरा गए क्योंकि उन्होंने पाया कि कोई भी लड़की उनके पास नहीं गई थी। उन्हें शक होने लगा कि शायद कोई तांत्रिक शक्ति काम कर रही है, हालांकि उन्हें ऐसी चीजों में कभी खास दिलचस्पी नहीं थी।

लगभग उसी समय, उनके ससुर ने कई बार किसी अदृश्य व्यक्ति द्वारा पुकारे जाने की शिकायत की। चूंकि केर ने अपने आकर्षणों में फिल्में भी शामिल कर ली थीं—ये फिल्में यूरोप की एडल्ट फिल्में थीं, जिन्हें नीचे के शो के बंद होने के बाद दूसरी मंजिल पर बने "थिएटर" में दिखाया जाता था—इसलिए उन्होंने सोचा कि शायद कोई ग्राहक चुपके से तीसरी मंजिल पर गया होगा और उनके ससुर से बात की होगी। लेकिन चौकीदार श्री अल्फ्रेड लॉरेंस ने अपने दामाद को आश्वस्त किया कि वे असली एडल्ट फिल्म देखने वाले और अदृश्य भूत में फर्क कर सकते हैं।

मैना चिड़िया का कारोबार खूब चल रहा था: क्लब में हफ्ते में छह रातें हाउसफुल रहती थीं, और खुद चिड़िया राज को टीवी पर आने के लिए खूब डिमांड मिल रही थी। इसी वजह से उसने एक रिकॉर्ड एल्बम भी रिलीज़ किया और मिस्टर केर को पता चला कि उसकी चिड़िया उससे ज़्यादा पैसे कमा रही है। लेकिन इससे उन्हें कोई परेशानी नहीं हुई, क्योंकि आखिर वो चिड़िया को दानों के रूप में ही तो पैसे दे रहे थे और चिड़िया खुश थी और नग्न स्तनों वाली महिलाओं को घूरने वाले ग्राहकों से उसने कई नए शब्द भी सीख लिए थे।

इन परिस्थितियों में श्री केर ने अपनी बारह वर्षीय मैना का लॉयड्स ऑफ लंदन से बीमा कराना उचित समझा। राज उस प्रतिष्ठित कंपनी के इतिहास में बीमा पॉलिसी धारक पहला और एकमात्र पक्षी था। अपने प्रिय दर्शकों को सूचित करने के लिए हमेशा तत्पर रहने वाले श्री

केर ने इस बारे में अखबारों को सूचित किया और पिंजरे में बंद मैना को देखने आने वाली भीड़ और भी बढ़ गई। बेशक, वे सभी उसका शो देखने के लिए रुके रहे।

मानसिक अशांति की आहट महिलाओं की नजर से नहीं बच पाई, हालांकि केर और उनकी पत्नी, श्रीमती जेसामिन केर ने इन घटनाओं की ओर उनका ध्यान आकर्षित करके उन्हें भयभीत न करने के लिए बहुत सावधानी बरती।

हालांकि एक समय उनके यहाँ एक महिला काम करती थी जो खुद को एक पूर्ण विकसित चुड़ैल होने का दावा करती थी, लेकिन उस महिला को उस स्थान पर कोई अलौकिक अनुभव नहीं हुआ, या शायद उसके लिए वे अनुभव उल्लेखनीय नहीं थे। वह अठारह वर्ष की थी, हैमिल्टन की रहने वाली थी, उसका नाम लिज़ेरिना था, और वह क्लब के माहौल में पूरी तरह घुलमिल गई थी।

बेहतर अवसरों की तलाश में उनके जाने के बाद, जॉय निकोल्स मायना बर्ड में सबसे मेहनती कर्मचारियों में से एक बन गईं। वह 1967 में कनाडा के सुदूर उत्तरी भाग से आई थीं, एक निर्माण कार्य के फोरमैन की बेटी। शायद उन्होंने खुलकर वही सपना देखा जो हर महिला देखती है और शायद उन्होंने उसे कुछ अपरंपरागत तरीके से पूरा किया, लेकिन जॉय को अपने काम पर पूरा भरोसा था और उन्हें अपना परिवेश पसंद था, और उनके लिए मायना बर्ड दुनिया की सबसे खूबसूरत जगह थी।

उसके आने के एक महीने बाद, एक रात वह आराम कर रही थी। सुबह के लगभग 2:30 बज रहे थे और काम खत्म करने का समय हो गया था। ऊपर सब शांत था, क्योंकि आखिरी ग्राहक घर जा चुका था। तभी उसने ऊपर कुर्सियों के हिलने की आवाज़ सुनी, मानो कोई उन्हें इधर-उधर कर रहा हो। उसे पक्का पता था कि वहाँ कोई और नहीं है, लेकिन उस पल के लिए सारा डर भुलाकर, वह यह देखने के लिए सीढ़ियों से ऊपर भागी कि कौन आया है।

जैसे ही उसने "थिएटर" का दरवाजा खोला, उसने देखा कि जो कुर्सियाँ उसने थोड़ी देर पहले अगली शाम के शो के लिए कतारों में करीने से लगाई थीं, वे अब अस्त-व्यस्त पड़ी थीं और चारों ओर बिखरी हुई थीं। उसने उन्हें फिर से व्यवस्थित किया और चली गई।

अदृश्य शक्तियों के इस प्रारंभिक अनुभव के बाद कई बार वही घटना घटित हुई। हमेशा एडल्ट फिल्मों के प्रदर्शन के बाद ऐसा लगता था मानो किसी ने बड़े गुस्से में कुर्सियाँ इधर-उधर फेंक दी हों।

तब जॉय को एहसास हुआ कि जिस जगह को अब थिएटर के रूप में इस्तेमाल किया जा रहा है, वह मूल रूप से कलाकार का स्टूडियो था। शायद उनकी संवेदनशील कलात्मक रुचि यहाँ दिखाई जाने वाली फिल्मों के प्रकार से असहज हो गई थी, जिनका केर ने बड़ी ही नज़ाकत से विज्ञापन किया था, "केवल उनके लिए जो आहत नहीं होंगे।"

कुर्सियों के हिलने की घटना के कुछ ही समय बाद, जॉय नीचे थी जब उसने ऊपर से किसी के चलने की आवाज़ सुनी और फिर कोई सीढ़ियों से नीचे उतर गया। पर कोई दिखाई नहीं दिया। फिर भी, पल भर में, उसे ज़ोर से महसूस हुआ कि कोई उसके पास खड़ा है, उसे ठंडी और तीखी निगाहों से घूर रहा है। अब वह इसे देख नहीं रही थी, बल्कि अपने भीतर की उस तीव्र चेतना से इसे महसूस कर रही थी जो हमेशा से उसके भीतर रही थी। वह तुरंत समझ गई कि वह एक आदमी है और वह जानती थी कि वह गुस्से में है। या शायद दुखी। एक उदार स्वभाव की होने के नाते, उसने सोचा कि वह उस अजनबी की मदद कैसे कर सकती है। शायद उसके विचारों ने किसी तरह सन्नाटे के पर्दे को भेद दिया।

कुछ देर बाद, जब वह हॉल में फिर से अकेली थी, तभी उसने अपना नाम पुकारा जाना सुना।

“जॉय,” एक धीमी, लगभग कर्कश आवाज ने कहा, और अधिक आग्रह से दोहराया, “जॉय!”

उसने पीछे मुड़कर देखा कि उसे कौन पुकार रहा है, लेकिन जाहिर सी बात है कि वह बिल्कुल अकेली थी।

लगभग उसी समय, नैन्सी मरे, जो उन महिलाओं में से एक थी, ने शिकायत की कि कोई अदृश्य व्यक्ति उसे घूर रहा है। जॉय एक हंसमुख, जीवन से भरपूर, आकर्षक कद-काठी वाली गोरी महिला थी, जबकि नैन्सी दुबली-पतली, मोहक, शांत और अंतर्मुखी स्वभाव की थी —अपने पेशे के बावजूद—लेकिन ऐसा प्रतीत होता है कि दोनों में एक मानसिक जागरूकता समान थी।

अपनी कमजोर आंखों के बावजूद, नैन्सी ने नीचे के कमरे में अकेले होने पर किसी को देखा। किसी ऐसे व्यक्ति की लगातार घूरती निगाहें जिसे वह देख नहीं सकती थी, नैन्सी को उन

पुरुषों की घूरती निगाहों से कहीं अधिक भयभीत कर रही थीं जो उसकी पेंटिंग बनाते समय उसे घूर रहे थे। आखिरकार, वह जानती थी कि पुरुषों के मन में क्या चलता है, लेकिन भूत क्या सोचते हैं?

महिलाओं की मौजूदगी से लगभग हर दिन मानसिक घटनाओं की संख्या बढ़ती जा रही थी, इसलिए केर ने अंततः यह निष्कर्ष निकाला कि उसके घर में कुछ गड़बड़ है। उसने एक प्रेतात्माओं से संपर्क करने का अनुष्ठान करने का फैसला किया और संभव हो तो इसका कारण जानने का प्रयास किया।

संयोगवश, उनकी चुनिंदा लड़कियों में से एक, टोनी स्टोन नाम की लोक गायिका, अक्सर séances में भविष्यवक्ता के रूप में अपनी सेवाएं देती थीं और उन्होंने तुरंत कोशिश करने के लिए सहमति दे दी। पहला séance, जो बाद में लगभग रोज़ाना होने लगा, ग्राहकों के चले जाने के बाद पूरी तरह से निजी तौर पर आयोजित किया गया। केवल केर परिवार और वे महिलाएं ही उपस्थित थीं। टोनी स्टोन के निर्देशानुसार, एक मोमबत्ती मेज पर रखी गई, जो एक साधारण मेज़पोश से ढकी हुई थी।

कुछ देर तक हाथ पकड़कर और अपने विचारों को शांत करने के बाद, समूह ने चारों ओर देखा। कमरे के भीतरी हिस्से में काफी अंधेरा था और मोमबत्ती की टिमटिमाहट ने पूरी प्रक्रिया को और भी रहस्यमय बना दिया था।

अचानक और बिना किसी चेतावनी के, मेज़पोश ज़ोर से खींचकर मेज़ से हट गया, जिससे मोमबत्ती लगभग गिर ही गई। चीखते हुए नैन्सी उठी। किसी अज्ञात शक्ति ने मेज़पोश को मेज़ से खींचकर ज़ोर से कुछ दूरी पर ज़मीन पर फेंक दिया था।

आँखों में खौफ लिए नैन्सी कमरे से बाहर चली गई और तब से उसने किसी भी तरह के प्रेतात्माओं से संपर्क करने वाले अनुष्ठान में शामिल होने से इनकार कर दिया। लेकिन श्री केर प्रदर्शन से इतने प्रभावित हुए कि उन्होंने प्रेतात्माओं से संपर्क करने वाले अनुष्ठान को अपने नियमित कार्यक्रम में शामिल करने का फैसला किया: हर रात, शो के बाद और वयस्क फिल्मों के बाद, दर्शकों को अचानक आयोजित होने वाले प्रेतात्माओं से संपर्क करने वाले अनुष्ठान में शामिल होने के लिए आमंत्रित किया जाता था। कभी-कभी, जब उनका मन करता,

तो वे वयस्क फिल्मों से पहले ही प्रेतात्माओं से संपर्क करने वाले अनुष्ठान का आयोजन कर देते थे।

जल्द ही मायना बर्ड "परिवार" को पता चला कि ये séances—कनाडा में अपनी तरह के इकलौते सार्वजनिक séances—घर में और भी अजीबोगरीब घटनाएं पैदा कर रहे थे। नीचे वाले तल पर बने रसोईघर में रखे बर्तन अचानक खड़खड़ाने लगते थे। एक बार जब केर और उनकी पत्नी यह देखने के लिए वापस भागे कि क्या हो रहा है, तो उन्होंने रसोईघर को खाली पाया। लेकिन जब उन्होंने अचंभित होकर रोशन रसोईघर में देखा, तो उन्हें एक बड़ा रसोई का चाकू ऐसे संतुलित होता हुआ दिखाई दिया मानो किसी अदृश्य शक्ति ने उसे थाम रखा हो। केर ने उसे उठाया और जांच की। जब वह—हमेशा की तरह संशयवादी—यह देखने की कोशिश कर रहे थे कि क्या वह उसे प्राकृतिक रूप से संतुलित कर सकते हैं, तभी बर्तनों का एक और ढेर उन पर गिर पड़ा। इसका कोई सांसारिक कारण नहीं था। उस पहली घटना के बाद से, लगभग हर séance के बाद बर्तनों के खड़खड़ाने की घटना होती है। ऐसा लगता है मानो इन बैठकों से महिलाओं के भीतर कोई ऐसी शक्ति जागृत हो जाती है जो इस तरह की घटनाओं को जन्म देती है। या शायद ऊपर दूसरी मंजिल पर कोई इस सब से पूरी तरह खुश नहीं है।

पहली बार जब श्रोता किसी प्रेतात्मा से संपर्क करने के लिए रुके, तो नैन्सी लगभग गहरी समाधि में चली गई। उसने कसम खाई थी कि वह फिर कभी किसी प्रेतात्मा से संपर्क करने के सत्र में शामिल नहीं होगी, लेकिन नौकरी के कारण उसकी उपस्थिति कमरे में आवश्यक थी और उसने माध्यम से दूरी बनाए रखी। फिर भी, उसने खुद को समाधि में डूबते हुए महसूस किया और उससे लड़ने की कोशिश की। उसके बाद, उसने केर से बात की और उसे आगे के सभी प्रेतात्मा से संपर्क करने के सत्रों से दूर रहने की अनुमति मिल गई।

नैन्सी के लिए भूतों की दुनिया कोई अनजानी बात नहीं थी। असल में, पहले के अनुभवों के कारण ही उसे भूतों के बारे में बात करने से हिचकना पड़ता था। कुछ समय पहले, टोरंटो शहर में एक दोस्त से मिलने गई थी, तभी उसकी नज़र पास की ग्लॉसेस्टर स्ट्रीट पर एक पुराने घर पर पड़ी। यह फरवरी 1968 का आखिरी दिन था और वह उस तारीख को कभी नहीं भूल पाएगी।

पुराना मकान बंद पड़ा था, लेकिन वह उत्सुक थी और अंदर झाँकने के लिए उसने सामने का दरवाज़ा खोला। जैसे ही उसने देखा, उसे चौड़ी सीढ़ियों से एक अजीब सा दिखने वाला आदमी नीचे आता हुआ दिखाई दिया। वह एक सैनिक था, जिसने एक बहुत ही असामान्य वर्दी पहनी हुई थी, जिसे वह पहले कभी नहीं जानती थी, और वह सीढ़ियों से नीचे उतरते हुए किसी भी आम आदमी की तरह बिल्कुल असली लग रहा था। जैसे-जैसे वह उसके करीब आता गया, उसे उसकी पानी की बोतल की खड़खड़ाहट और उसके जूतों की आहट भी सुनाई दी। लेकिन जैसे ही वह पास आया, उसे उसका चेहरा दिखाई दिया, एक बेहद उदास चेहरा, जो सीधे उसकी ओर देख रहा था। लेकिन जहाँ उसकी गर्दन होनी चाहिए थी, वहाँ एक बड़ा सा छेद था। उसके आर-पार वॉलपेपर दिखाई दे रहा था और जैसे ही उसे इसका एहसास हुआ, वह डर के मारे भाग गई। बाद में उसे पता चला कि वह वर्दी प्रथम विश्व युद्ध के समय की थी।

हालाँकि, पहले सार्वजनिक प्रेत-आवाहन के परिणाम नैन्सी को डराने के बजाय कुछ और ही थे। सिर झुकाए हुए, माध्यम टोनी स्टोन ने एक ऐसे भूत के बारे में बताया जो उसके आस-पास ही रहता था और जिसे वह महसूस करती थी।

सामने बैठी एक महिला ग्राहक के चेहरे पर छवि उभरी हुई थी, उसने भूरे बालों और दाढ़ी वाले एक बूढ़े व्यक्ति की आकृति का वर्णन किया, लेकिन उस समय वह उसका नाम नहीं जान पाई।

फिर, कुछ समय बाद, एक और प्रेतात्माओं से संपर्क करने के दौरान, उसने उत्तेजित होकर उस व्यक्ति का फिर से वर्णन किया।

"वह अब मेरे पीछे है," उसने हैरानी से कहा और उसके होंठ कांपने लगे मानो कोई भूत उसे अपने वश में करने की कोशिश कर रहा हो।

“लॉरेंस...ओलिवर...केंडल...” अदृश्य शक्ति से जूझते हुए वह अंततः धीरे-धीरे बोल पाई।

“वह बहुत दुखी इंसान है,” उसने आगे कहा, लेकिन वह यह पता नहीं लगा पाई कि वह क्लब में क्यों आया था। जैसे-जैसे आम लोगों की संख्या बढ़ती गई, वैसे-वैसे उनमें होने वाली गतिविधियाँ कम होती गईं, जो कि बिल्कुल भी आश्चर्यजनक नहीं है। वे महज़ एक और कार्यक्रम बनकर रह गए और अब कोई भी उन्हें गंभीरता से नहीं लेता था। खासकर वे भूत-

प्रेत तो बिल्कुल नहीं। उन्होंने बाहर से आए आगंतुकों का मनोरंजन करने के लिए बिना पैसे लिए, आदेश पर, हाज़िर होने से साफ इनकार कर दिया।

यहां तक कि ओइजा बोर्ड का इस्तेमाल भी कारगर साबित नहीं हुआ। इससे यह तो साबित हो गया कि टोनी स्टोन एक अच्छा भविष्यवक्ता था, लेकिन इसके अलावा और कुछ नहीं।

वह अगली रात दर्शकों में मौजूद रहने वाले कई लोगों के नामों का सटीक अनुमान लगाने में कामयाब रही। लेकिन मैना चिड़िया को शायद ही यह जानने की ज़रूरत होती है कि उसके ग्राहक कौन हैं; क्योंकि उसके पास तो बहुत सारे ग्राहक हैं।

जहां तक मिस्टर केंडल की बात है, पुराने मकान के कई किरायेदारों में से उनकी पहचान अभी तक नहीं हो पाई है।

अलग-अलग मौकों पर, नैन्सी और जॉय को नीचे के कमरे में तेज़ इत्र की खुशबू आती थी, जबकि उन दोनों में से किसी ने भी इत्र नहीं लगाया होता था। यह अचानक से आने वाली किसी महिला के इत्र की खुशबू थी, जो किसी बीते युग की याद दिलाती थी।

एक रात जब जॉय ने भी अपने पास से गुजरते हुए टैफेटा स्कर्टों की सरसराहट सुनी, तो उसे पता चल गया कि ऊपर वाले कमरे में रहने वाला उदास बूढ़ा आदमी ही क्लब का इकलौता प्रेतवाधित सदस्य नहीं था। किसी तरह उस आवाज़ ने महिलाओं को उतना नहीं डराया जितना कि कुर्सियों को हिलाते हुए उस आदमी के गुस्से ने। क्या रसोई में बर्तनों को इधर-उधर फेंकने के लिए शायद वही महिला ज़िम्मेदार थी?

देर रात, जब ग्राहक चले जाते हैं, तो दुनिया की कोई भी चीज़ उन लड़कियों को संकरे गलियारों और सीढ़ियों में ऊपर जाने के लिए मजबूर नहीं कर सकती, यह पता लगाने के लिए कि क्या पाताल लोक का कोई प्राणी अभी भी गुस्से में घात लगाए बैठा है। अब तक श्री केर उनकी उपस्थिति को खतरनाक या अवांछनीय भी नहीं मानते। आख़िरकार, कौन अपने ग्राहकों को एक ही कीमत पर नग्न स्तन वाली महिलाएं और कृत्रिम रूप से सजी हुई आकृतियाँ पेश करता है?

*70

खेत पर आतंक (कनेक्टिकट)

नॉर्थ वुडस्टॉक, कनेक्टिकट, न्यू इंग्लैंड का सबसे सुंदर और शांत हिस्सा है: लहराते हुए खेत जो कारखानों और आधुनिक शहरी जीवन के अतिक्रमण से शायद ही कभी बाधित होते हैं।

ऐसा लगता है कि गाँव ने समय के साथ-साथ काफी हद तक अपना स्वरूप बनाए रखा है और इसमें बहुत कम बदलाव हुए हैं। दुकानों के अनिवार्य साइनबोर्ड और समकालीन अमेरिकी कुरूपता के अन्य प्रतीकों को छोड़कर, गाँव आज भी उतना ही शांत है जितना कि लगभग दो सौ साल पहले रहा होगा, जब अमेरिका युवा था।

ब्रिकयार्ड रोड पर, गाँव के बाहरी किनारों की ओर जाते हुए, आबादी वाले इलाकों से कुछ दूरी पर, एक पुराना फार्महाउस था। जाहिर है, इसके अच्छे दिन बीत चुके थे, लेकिन अब यह पूरी तरह जर्जर हो चुका था और इसकी मरम्मत लगभग असंभव थी। फिर भी, यह एक बड़ा घर था और आसपास के ग्रामीण इलाकों के आम छोटे फार्महाउसों से बिल्कुल अलग था।

घर में सोलह कमरे थे और पिछले पचास वर्षों से यह डुप्रे परिवार की संपत्ति थी। घर का निर्माण क्रांति-पूर्व काल में लायंस परिवार द्वारा किया गया था, जो इसे एक सराय के रूप में इस्तेमाल करते थे। यह स्थान बोस्टन-हार्टफोर्ड मार्ग पर एक व्यस्त जगह थी और उन दिनों में जब रेलमार्ग अस्तित्व में नहीं आए थे, यहाँ की सराय खूब चलती थी।

लायंस टैवर्न के स्वामित्व में बदलाव आने के बाद, यह सफलतापूर्वक पॉटर्स, रेडहेड्स, आइड्स और फिर डुप्रेज़ के स्वामित्व में रहा, लेकिन अब यह एक निजी आवास था, आसपास के खेत का केंद्र था, और अब यह एक सार्वजनिक भोजनालय नहीं रहा।

इसके प्रारंभिक इतिहास के बारे में इससे अधिक जानकारी बहुत कम है, कम से कम श्रीमती फ्लोरेंस विनर को घर खरीदने पर विचार करते समय यही पता चला था। हालांकि, उन्हें यह पता चला कि पिछली मालकिन, श्रीमती एमरी डुप्रे, ने इस घर में एक बड़ी त्रासदी झेली थी। एक सुबह वह पड़ोस के बच्चों के एक समूह को स्कूल छोड़ने गई थीं। स्कूल एक कमरे के घर में था, जो एक मील से भी कम दूरी पर स्थित था। उनकी चौदह वर्षीय बेटी लौरा उस दिन अस्वस्थ महसूस कर रही थी, इसलिए वह घर पर ही रह गई थी।

कुछ समय बाद जब श्रीमती डुप्रे घर लौटीं, तो उन्होंने पाया कि लड़की गायब थी। तमाम कोशिशों के बावजूद, लड़की का न तो पता चला और न ही उसके लापता होने का कोई सुराग मिला।

श्रीमान और श्रीमती चार्ल्स विनर ने 1951 में इस घर की दयनीय स्थिति के बावजूद इसे खरीदने का फैसला किया। वे एक बड़ा ग्रामीण घर चाहते थे और इसे अच्छी हालत में लाने में उन्हें कोई आपत्ति नहीं थी; वास्तव में, वे इस चुनौती और कार्य के लिए उत्सुक थे।

उसी साल गुड फ्राइडे के दिन वे उस घर में रहने आए। उन्होंने तुरंत मरम्मत का काम शुरू कर दिया, लेकिन वे घर में ही रहे और जैसे-तैसे गुजारा करते रहे, ठीक वैसे ही जैसे वे अब खुद को अग्रणी महसूस कर रहे थे।

खेत अभी भी एक चालू खेत था और उन्होंने आसपास के इलाके से कई खेतिहर मजदूरों को काम पर रखा हुआ था। घर में हर समय केवल विनर परिवार, उनकी बेटी सैंड्रा और नौकर ही रहते थे।

उनके आने के दो महीने बाद एक शाम श्रीमती विनर और उनकी ग्यारह साल की बेटी घर में अकेली थीं, नीचे रसोई में बैठकर पढ़ रही थीं।

"ऊपर कौन है?" लड़की ने अचानक पूछा।

श्रीमती वाइनर ने दबे पांव चलने की आवाजें भी सुनी थीं, लेकिन उन्होंने उन्हें नजरअंदाज करने का फैसला किया था। शायद पुराना घर धंस रहा था या मौसम के कारण तरह-तरह की अजीब आवाजें आ रही थीं।

लेकिन कदमों की आहट और स्पष्ट होती गई। यह घर के बैठने की आहट नहीं थी। कोई ऊपर की मंजिल पर घूम रहा था। कई मिनट तक वे रसोई में बैठे रहे और ऊपर की मंजिल पर कदमों की आहट सुनते रहे। फिर श्रीमती विनर दृढ़ता से उठीं, उसी मंजिल पर स्थित अपने शयनकक्ष में गईं और अपने नाइट टेबल के दराज में रखी 22 कैलिबर की रिवॉल्वर लेकर लौटीं, ताकि अगर कोई घुसपैठिया आ जाए तो उसका इस्तेमाल कर सकें। जैसे ही वह रसोई में लौटीं, उन्हें ऊपर से दो ज़ोरदार धमाकों की आवाज़ सुनाई दी। ऐसा लगा जैसे कोई भारी वस्तु अचानक गिरकर ज़मीन पर टकराई हो। अचानक, चलने की आवाज़ बंद हो गई, मानो ऊपर कोई घटना घट रही हो और उसका अंत हो गया हो।

श्रीमती विनर इतनी डरी हुई थीं कि ऊपर जाकर उस खाली कमरे में देखने की हिम्मत नहीं हुई और सोने चली गईं। थोड़ी देर बाद जब उनके पति लौटे, तो दोनों ने मिलकर ऊपर जाकर देखा। वहाँ कुछ भी असामान्य नहीं था और न ही ऐसा कोई संकेत था कि कोई वहाँ गया था।

लेकिन कुछ दिनों बाद, वही घटना फिर से दोहराई गई। पहले, किसी के ऊपर-नीचे चलने की आहट सुनाई दी, मानो वह बहुत बेचैन हो। फिर दो ज़ोरदार धमाकों की आवाज़, किसी चीज़ के गिरने की आवाज़ और अचानक सन्नाटा छा गया। यह सब हर बार इतना सटीक था कि यह घर की दिनचर्या का हिस्सा बन गया था और वाइनर परिवार ने इसे इतनी बार सुना कि अब वे इससे घबराते नहीं थे। जब घर अपनी पुरानी शान-शौकत में लौट आया, तो उन्होंने मेहमानों को ठहराना शुरू कर दिया। लेकिन जब भी कोई घर में रुकता, तो अगली सुबह वे ऊपर गलियारे में लगातार चलने की आवाज़ की शिकायत करते।

श्रीमती वाइनर की मां, श्रीमती इडा बेनोइट, घर में अपनी पहली रात बिताने के बाद अगली सुबह नीचे आईं।

“मैं अब इस घर में कभी नहीं सोऊंगी,” उसने अपनी बेटी को आश्वासन दिया। “अरे, यहाँ भूत-प्रेत का साया है। कोई बार-बार मेरे बेडरूम से होकर गुजरता है।”

उसकी बेटी बस कंधे उचकाकर फीकी सी मुस्कान दे सकी। वह अपनी माँ का मतलब अच्छी तरह समझती थी। स्वाभाविक रूप से, नाखुश मेहमानों की संख्या बढ़ती गई, लेकिन उसने इस बारे में पहले से किसी से बात नहीं की। आखिर, ऐसा भी हो सकता था कि कुछ भी न हो। लेकिन दस साल के रहने के दौरान, एक भी ऐसा वाकया नहीं हुआ जब ऊपर के कमरे में सोने वाले किसी व्यक्ति को परेशानी न हुई हो।

घर में आने के एक साल बाद, श्रीमती विनर ने ऊपर के एक बड़े बेडरूम की मरम्मत शुरू करने का फैसला किया। यह उन कमरों में से एक था जिनका इस्तेमाल अक्सर मेहमानों के कमरे के रूप में किया जाता था। सितंबर का वह दिन बहुत गर्म था, और भीषण गर्मी के बावजूद, श्रीमती विनर को अपना काम अच्छा लग रहा था और उनका मन प्रसन्न था। वह खिड़की के फ्रेम पर रंग लगा रही थीं और मन ही मन गुनगुना रही थीं, उनके मन में कोई खास विचार नहीं थे। उस समय वह ऊपर बिल्कुल अकेली थीं और फिलहाल अतीत की भूतिया घटनाएं उनके दिमाग से दूर थीं।

अचानक, उसे लगा कि कमरा बर्फ़ की तरह ठंडा हो गया है। ठंड इतनी तेज़ हो गई कि वह कांपने लगी और अपने हाथों को ऐसे लपेट लिया जैसे वह कड़ाके की ठंड में किसी बर्फीली सड़क पर हो। उसने अचानक गाना बंद कर दिया और उसी समय उसे कमरे में किसी और की मौजूदगी का एहसास हुआ।

"कोई मेरे इस काम से बहुत नाराज है," उसने खुद को सोचते हुए सुना।

उसके मन में घृणा की ऐसी तीव्र लहर उठी कि वह आगे नहीं बढ़ सकी। भयभीत होते हुए भी, उसे पता था कि उसे पीछे मुड़कर देखना होगा कि कमरे में उसके साथ कौन है। उसे एक मांसपेशी हिलाने के लिए भी अनंत काल तक शक्ति जुटाने में समय लग गया।

अचानक, उसे अपने कंधे पर एक ठंडा हाथ महसूस हुआ। कोई उसके पीछे खड़ा था और स्पष्ट रूप से उसका ध्यान आकर्षित करने की कोशिश कर रहा था। वह डर से जम सी गई। जब उसने आखिरकार यह देखने के लिए हिल कर देखा कि कौन है, तो हाथ एकदम गायब हो गया।

आखिरी कोशिश करते हुए उसने खुद को झटका दिया और कमरे में वापस देखा। वहाँ कोई नहीं था। वह चीखते हुए दरवाजे की ओर भागी, "मैं नहीं जानती कि तुम कौन हो या क्या हो, लेकिन तुम मुझे इस घर से बाहर नहीं निकाल सकते।"

चीखती हुई वह सीढ़ियों से नीचे भागी और बरामदे में आ गई। वहाँ उसने चैन की साँस ली और शांत हुई। जब उसकी बेटी स्कूल से घर आई, तो उसे राहत महसूस हुई। उस कमरे में मौजूद बुराई बहुत हावी थी, और उस अनुभव के बाद से वह यथासंभव उस कमरे में जाने से बचती रही।

"मैं उस हाथ को कभी नहीं भूलूंगी, जब तक मैं जीवित रहूंगी," उसने अपने पति को समझाया।

अगले कुछ वर्षों में, उन्होंने घर में मौजूद अदृश्य शक्तियों के साथ तालमेल बिठाना सीख लिया। शायद घर से बेदखल न होने के उनके दृढ़ प्रयास का उस प्रेत पर कुछ असर हुआ था, लेकिन फिर भी, वे वहीं रहे और घर को यथासंभव रहने लायक बनाने की कोशिश करते रहे। श्रीमती विनर ने दो और बच्चों को जन्म दिया, दोनों बेटे, और जैसे-जैसे सैंड्रा बड़ी होती गई, वह रहस्यमयी घटना शांत होती चली गई। 1958 में एक और बेटी का जन्म हुआ और सैंड्रा कॉलेज चली गई। लेकिन तीन हफ्ते बाद ही मुसीबतें फिर से शुरू हो गईं।

सितंबर की एक रात, वह अपने खेत में काम करने वाले जेम्स लैथम के साथ नीचे के बैठक कक्ष में बैठकर टेलीविजन देख रही थीं। दोनों लड़के और बच्चा कई घंटों से सो रहे थे। अचानक, बच्चे के कमरे की ओर एक ज़ोरदार धमाका हुआ। वह दौड़कर कमरे में गईं और पाया कि वह एकदम ठंडा था—जैसे किसी आइसबॉक्स में रखा गया हो। बच्चे के कमरे से एक और दरवाज़ा हॉल में खुलता है, जो आमतौर पर स्पष्ट कारणों से बंद रहता है। लेकिन अब वह पूरी तरह खुला हुआ था, और स्पष्ट रूप से उसे काफी ज़ोर से खोला गया था। धमाके से ताला बुरी तरह मुड़ गया था और रेडिएटर, जिससे दरवाज़ा खुलते समय टकराया था, अभी भी कंपन कर रहा था। बच्चे को कोई चोट नहीं आई, लेकिन श्रीमती विनर को लगा कि शायद ऑयल बर्नर फट गया हो।

वह जाँच करने के लिए तहखाने में गई, लेकिन सब कुछ सामान्य पाया। जब वह बच्चे के कमरे में लौटी, तो उसे अचानक यह स्पष्ट अहसास हुआ कि यह घटना किसी न किसी तरह एक छोटी लड़की की उपस्थिति से जुड़ी हुई है।

उसने इस बात को तर्क से टालने की कोशिश की, क्योंकि घर में कोई छोटी लड़की मौजूद नहीं थी, और न ही श्रीमती डुप्रे की लड़की के दुखद लापता होने से जुड़ा कोई संकेत था, जिसके बारे में वह निश्चित रूप से जानती थी। लाख कोशिश करने के बावजूद, वह इस भावना को दूर नहीं कर सकी कि घर में हो रही गड़बड़ियों का केंद्र बिंदु एक छोटी लड़की ही थी।

एक रात उनकी बहन नीचे बैठक में उनके साथ थीं। अचानक ऊपर एक ज़ोरदार धमाके की आवाज़ आई, जबकि वे जानती थीं कि कमरा खाली था। श्रीमती विनर अपनी चिंतित बहन को नीचे छोड़कर अकेले ऊपर गईं। कमरे में रखी मेज़ गिरी हुई थी। तेज़ भूकंप के अलावा कोई और प्राकृतिक आपदा इसे नहीं गिरा सकती थी। खिड़कियाँ बंद थीं और मेज़ के अपने आप गिरने का कोई और कारण नहीं था। उन्हें पूरा यकीन था कि यह किसी घुसपैठिए के अलावा किसी और ने नहीं किया होगा, इसलिए उन्होंने राज्य पुलिस को फोन किया।

पुलिस आई और उसने घर की ऊपर से नीचे तक तलाशी ली लेकिन उसे किसी घुसपैठिए का कोई सुराग नहीं मिला।

श्रीमती वाइनर को तब इन सब बातों पर संदेह होने लगा। अगर इन अदृश्य शक्तियों में भारी मेजों को पलटने की शक्ति है, तो निश्चित रूप से वे लोगों को नुकसान भी पहुंचा सकती हैं। यह

विचार उन्हें भयभीत कर गया, और जहाँ तक उन्होंने भूतों के साथ रहने को एक फैशनेबल बात समझा था, वहीं अब इसमें एक गंभीर खतरा नज़र आने लगा। उन्होंने इस बारे में अपने पति से बात की, लेकिन उन्होंने घर को बनाने में इतनी मेहनत और पैसा लगाया था कि दोबारा घर छोड़ने का ख्याल ही उन्हें अच्छा नहीं लगा।

यह अपरिहार्य था कि वह कई बार बच्चों के अलावा घर में अकेली रह जाती थी। उसके पति व्यापार के सिलसिले में बाहर रहते थे और खेत के कर्मचारी अपने काम में व्यस्त रहते थे। श्रीमती वाइनर अक्सर कमरों में घूमती रहती थीं और मन ही मन यह उम्मीद करती रहती थीं कि कहीं उनकी मुलाकात उस घुसपैठिए से न हो जाए। तब वह उससे (उसे ठीक से पता नहीं था कि कितने थे) बात कर सकती थीं और कह सकती थीं, "देखो, यह अब मेरा घर है, हमने इसे खरीदा और दोबारा बनवाया है, और हम इसे छोड़ने का इरादा नहीं रखते। चले जाओ और यहाँ मत रुको, कोई फायदा नहीं।" वह अक्सर ऐसे ही टकराव के लिए अपने इस छोटे से भाषण का अभ्यास करती रहती थीं। लेकिन भूत कभी तब प्रकट नहीं हुआ जब वह तैयार होती थीं।

इस बीच, भारी धमकियों के साथ कदमों की आहट नियमित रूप से सुनाई देती रही, अक्सर एक ही सप्ताह में चार बार तक। यह आमतौर पर शाम के लगभग उसी समय होता था, जिससे उसे यह विश्वास होने लगा कि यह किसी त्रासदी का संकेत है जिसे ऊपर के कमरे में प्रेतवाधित आगंतुक दोहरा रहे हैं। या क्या वह केवल किसी अतीत की त्रासदी को महसूस कर रही थी और जो वह और अन्य लोग सुन रहे थे वह वास्तव में दूर के अतीत की प्रतिध्वनि मात्र थी? वह इस बात पर विश्वास नहीं कर पा रही थी, खासकर इसलिए क्योंकि उसे उस गर्म सितंबर के दिन ऊपर के कमरे में उसके कंधे को पकड़ने वाले बर्फीले ठंडे हाथ की याद आज भी स्पष्ट रूप से थी। और एक स्मृति से कोई भारी दरवाजा अपने आप इतनी ज़ोर से नहीं खुल सकता कि ताला टूट जाए।

नहीं, ये वे यादें नहीं थीं जिन्हें वे सुन रहे थे। ये असल में ऐसे प्राणी थे जिनके अपने-अपने दिमाग थे, जो किसी तरह दो अवस्थाओं के बीच फंसे हुए थे और अपनी ही हिंसा के कारण उस जगह पर हमेशा के लिए रहने के लिए अभिशप्त थे जहाँ उनकी त्रासदी पहली बार घटी

थी। श्रीमती वाइनर ने सोचा, कितना भयानक भाग्य है, और एक पल के लिए उन्हें उन दुर्भाग्यशाली लोगों के लिए बहुत दया आई।

लेकिन फिर खुद की भागीदारी ने उसे याद दिलाया कि आखिरकार यह उसका घर और उसका जीवन था जो अस्त-व्यस्त हो रहा था। यहाँ रहने का उसका अधिकार उनसे कहीं अधिक था, भले ही वे पहले यहाँ आ चुके हों।

दृढ़ निश्चय के साथ, वह घर की साज-सज्जा को तब तक चमकाती और संवारती रही जब तक कि वह लगभग ऐसा दिखने लगा मानो कभी जर्जर, लगभग पूरी तरह से वीरान घर था ही न। उसने ऊपर के एक शयनकक्ष में नया वॉलपेपर लगाने का फैसला किया, ताकि उसके मेहमान कुछ अधिक खुशनुमा माहौल में सो सकें। इस कमरे का वॉलपेपर फीका और बहुत पुराना था और उसे बदलना ही उचित था। जैसे ही उसने गंदा वॉलपेपर हटाया, उसके नीचे की तख्तियाँ फिर से दिखाई देने लगीं। वे चौड़ी और चिकनी थीं और स्पष्ट रूप से घर की मूल तख्तियों का हिस्सा थीं।

खिड़की से दूर वाली दीवार से सारा कागज़ हटाने के बाद, उसने ऊपर की ओर देखा। न जाने कितने सालों बाद रोशनी के संपर्क में आई उस दीवार पर किसी तरह का पेंट लगा हुआ था।

“यह बिल्कुल भी ठीक नहीं है,” उसने मन ही मन सोचा और कुछ कपड़े और पानी लाने के लिए नीचे चली गई। कमरे में लौटकर उसने कुछ पुराने पेंट समझकर उसे हटाना शुरू किया। जब उसने दागों पर पानी डाला, तो वे धब्बे चमकीले लाल रंग के हो गए!

लाख कोशिश करने के बावजूद, वह लाल धब्बे नहीं हटा सकी। अंत में उसने ब्लीच का इस्तेमाल किया, लेकिन उससे धब्बे और भी गहरे भूरे हो गए। आखिरकार उसे समझ आया कि यह पेंट नहीं, बल्कि खून था। करीब से जांच करने पर उसका शक सही साबित हुआ। उसे खून से सनी दीवार मिली थी—लेकिन यहाँ ऐसा क्या हुआ था जिसने इस भयानक निशान को जन्म दिया था?

उसे कहीं न कहीं यह आभास हुआ कि घर में व्याप्त रहस्यमयी घटनाओं के हल की खोज में उसे कुछ सुराग मिल गया है। निश्चित रूप से वहाँ किसी की हत्या हुई थी, लेकिन किसने और क्यों?

वह गांव में गईं और स्थानीय लोगों से बातचीत शुरू की। शुरू में उन्हें ज्यादा मदद नहीं मिली, क्योंकि न्यू इंग्लैंड के लोग पारिवारिक मामलों पर खुलकर बात करने से कतराते हैं। लेकिन आखिरकार श्रीमती विनर को ब्रिकयार्ड रोड स्थित उस घर के बारे में लंबे समय से जानने वाले कुछ बुजुर्ग स्थानीय लोगों से कुछ जानकारी मिल गई।

जब यह घर एक सार्वजनिक सराय हुआ करता था, यानी उन्नीसवीं शताब्दी के आरंभ या अठारहवीं शताब्दी के बिल्कुल अंत में, तब यहाँ दो व्यक्ति अतिथि के रूप में रात भर रुके थे। उनके नाम रहस्य में डूबे हुए हैं और शायद इतिहास के अनुसार वे बहुत महत्वहीन थे।

लेकिन सराय में एक युवती भी थी, वैसी ही जैसी उन दिनों सराय मालिक नौकरानियों के तौर पर रखते थे। अगर वह सिर्फ नौकरानी बनकर रहना चाहती थी, तो ठीक था; अगर वह शहरों की ओर जाते हुए वहां से गुजरने वाले कुछ पुरुषों के साथ संबंध बनाना चाहती थी, तो यह उसका निजी मामला था। उन दिनों सराय मालिक नैतिकता के रखवाले नहीं थे और होटल में जासूस रखने का चलन अभी तक इतना विकसित नहीं हुआ था। इसलिए नौकरानियां अक्सर मेहमानों के कमरों में आती-जाती रहती थीं और किसी को ज्यादा परवाह नहीं होती थी।

ऐसा प्रतीत होता है कि एक युवती एक ही समय में दो पुरुषों के लिए बेहद आकर्षक थी। उनके बीच झगड़े और ईर्ष्या हुई। अंततः दोनों पुरुष ऊपर के कमरे में चले गए और वहाँ उनके बीच जानलेवा लड़ाई हुई। चूंकि यह लड़ाई ऊपर के कमरे में हुई, संभवतः यह लड़की के ही कमरे में हुई होगी, जहाँ एक प्रेमी ने दूसरे को वह हासिल करते हुए देख लिया होगा जो वह व्यर्थ ही चाहता था। खैर, भयभीत लड़की के सामने ही दोनों पुरुषों ने अपनी तलवारों से एक-दूसरे को मार डाला और मृत्यु में उनका खून आपस में मिलकर कमरे की दीवार पर फैल गया।

इस नई जानकारी के साथ जब श्रीमती विनर गाँव से लौट रही थीं, तो उन्हें पहली बार स्पष्ट रूप से समझ आया कि उनका घर वास्तव में प्रेतवाधित क्यों था। ऊपर के कमरे में बेचैन कदमों की आहट उस दुखी प्रेमी के जल्दबाजी भरे कदमों की थी। उसके बाद आने वाली खड़खड़ाहट और अचानक भारी धमकें लड़ाई और दो गिरते हुए शरीरों का संकेत थीं—शायद मौत के बंधन में जकड़े हुए। दो भारी गिरने के बाद हमेशा छा जाने वाली पूर्ण शांति ने

उन्हें स्पष्ट रूप से संकेत दिया कि संघर्ष के बाद मृत्यु की खामोशी त्रासदी के साथ-साथ दोहराई जा रही थी।

और इस सबमें एक लड़की ही केंद्रीय भूमिका निभाएगी, इस बारे में उसकी बात कितनी सही थी!

लेकिन उसके प्रति यह शत्रुता क्यों? कंधे पर वह ठंडा हाथ क्यों रखा गया? क्या वह लड़की इस घर में एक और महिला होने से नाराज़ थी? क्या वह अब भी उम्मीद कर रही थी कि उसका प्रेमी उसके लिए आएगा, और क्या वह श्रीमती विनर को "प्रतिस्पर्धी" मान रही थी? एक विक्षिप्त मन, विशेषकर जब वह डेढ़ सौ वर्षों से शरीर से बाहर रहा हो, तो कुछ अजीबोगरीब विचार उत्पन्न कर सकता है।

लेकिन उनकी लड़ने की शक्ति किसी तरह समाप्त हो गई थी, और जब घर बेचने का अवसर मिला, तो श्रीमती विनर ने तुरंत ऐसा करने के लिए सहमति दे दी। विनर परिवार के 1951 से 1961 तक उस घर में रहने के बाद, वह घर सैमुअल बेनो के हाथों में चला गया। पांच वर्षों तक श्री बेनो उस घर के मालिक रहे, लेकिन उसमें कभी नहीं रहे। वह घर खाली पड़ा रहा, सड़क पर चुपचाप खड़ा रहा।

केवल एक बार ही हलचल मची थी। 1966 में, कोई 5,000 डॉलर मूल्य के प्लंबिंग और तांबे के पाइप चुरा ले गया। मालिक ने स्वाभाविक रूप से यह मामला राज्य पुलिस को सौंप दिया, इस उम्मीद में कि चोर अंततः और सामान चुराने के लिए लौटेंगे। अधिकारियों ने घर में टेप रिकॉर्डर भी तैयार रखे थे, ताकि चोरों के वापस आने की स्थिति में उन्हें रिकॉर्ड किया जा सके।

तब से उस घर के बारे में कुछ खास सुनने को नहीं मिला है और यही अनुमान लगाया जा सकता है कि नौकरानी और उसके दो प्रेमियों की दुखद कहानी का अंत हो चुका है। लेकिन जब तक कोई नया किरायेदार पुराने लायंस टैवर्न में नहीं आ जाता, तब तक पूरी तरह से निश्चित नहीं कहा जा सकता। आखिर, खून आसानी से नहीं मिटता, न दीवारों से और न ही लोगों की यादों से।

*71

कैलिफ़ोर्निया की एक भूतिया कहानी

जब मैंने सैन बर्नार्डिनो में श्रीमती वर्ना कुन्ज़े के भूतिया अपार्टमेंट की सफलतापूर्वक जांच की थी, तब मुझे जरा भी अंदाजा नहीं था कि श्रीमती कुन्ज़े मुझे एक और ऐसे ही दिलचस्प मामले की ओर ले जाएंगी, जिसके बारे में मैंने अपनी किताब, घोस्ट्स ऑफ द गोल्डन वेस्ट में लिखा था।

श्रीमती कुन्ज़े एक बेहद सुव्यवस्थित व्यक्ति हैं और विदेश विभाग के पासपोर्ट विभाग में पूर्व कर्मचारी रह चुकी हैं। उन्हें तथ्यों और कल्पनाओं के बीच अंतर करने की अच्छी समझ है। मनो-साइबरनेटिक्स में उनकी रुचि ने उन्हें ऑरेंज काउंटी में नियमित रूप से मिलने वाले समान विचारधारा वाले व्यक्तियों के एक समूह से जोड़ा। वहाँ उनकी मुलाकात वाल्टर टिप्टन नामक एक सज्जन से हुई, जो पहले एफबीआई में कार्यरत थे।

एक दिन, श्री टिप्टन ने एक बेहद असामान्य मामले के संबंध में मुझसे संपर्क करने में उनकी मदद मांगी, जो उनके संज्ञान में आया था। कुछ स्पष्ट विवरणों की जाँच करने के बाद, उन्होंने पाया कि इसमें शामिल लोग ईमानदार थे और मेरे समय के योग्य थे।

इस तरह मुझे पहली बार सांता एना की श्रीमती कैरोल ट्राउश के बारे में पता चला।

ट्रॉश परिवार और उनके पड़ोसियों के साथ जो हुआ, वह महज़ एक भूत-प्रेत की कहानी नहीं है। बल्कि इससे कहीं बढ़कर, जब वे अपने बिल्कुल नए घर में रहने आए, तो वे खुद को एक पुरानी त्रासदी के बीच में फंसा हुआ पाया, जिसका अंत अभी पूरी तरह से नहीं हुआ था।

कैरोल ट्राउश का जन्म लॉस एंजिल्स में हुआ था। उनके माता-पिता स्कॉटिश मूल के थे और उन्होंने लॉस एंजिल्स में ही अपनी स्कूली शिक्षा प्राप्त की। उनके पिता एक सेवानिवृत्त पुलिसकर्मी हैं और उनकी माता का जन्म स्कॉटलैंड में हुआ था। कैरोल की शादी कम उम्र में ही हो गई थी और वे अपने पति, जो एक व्यवसायी हैं, के साथ पहले हंटिंगटन बीच और बाद में सांता एना के पास वेस्टमिंस्टर में रहने चली गईं।

अब अपनी शुरुआती बीसियों में, वह एक आकर्षक दिखने वाली गोरी महिला है जो इस तथ्य को झुठलाती है कि उसकी तीन बेटियां हैं जिनकी उम्र आठ, छह और दो साल है।

पिछले साल की शुरुआत में, वे वेस्टमिंस्टर में एक नई बस्ती में बने दो सौ दो मंजिला बंगलों में से एक में रहने चले गए। वे एक साधारण परिवार थे, जिन्हें तंत्र-मंत्र में कोई विशेष रुचि नहीं थी। उनका एकमात्र संबंध कैरोल के कुछ अजीबोगरीब सपनों से था।

पहली बार ऐसा तब हुआ जब वह छोटी बच्ची थी। उसने सपना देखा कि बगीचे में गुलाब की क्यारी में कुछ सिक्के छिपे हुए हैं। जागने पर उसे खुद पर हंसी आई, लेकिन जिज्ञासावश वह गुलाब की क्यारी के पास गई और देखा। वाकई, गुलाबों के नीचे मिट्टी में कुछ सिक्के थे। तब से कई बार उसने भविष्य की घटनाओं के सपने देखे हैं जो बाद में सच हुए।

एक रात उसने सपना देखा कि उसके पति के पिता को एक नर्स स्ट्रेचर पर लिटाकर अस्पताल के गलियारे से ले जा रही है, ऑपरेशन के लिए। अगली सुबह उन्हें फोन आया और बताया गया कि ठीक उसी समय के आसपास एक आपातकालीन घटना घटी थी, जिस समय उसने सपना देखा था। कई बार उसे आने वाली दुर्घटनाओं या अन्य अप्रिय घटनाओं का आभास होता था, लेकिन वह हमेशा निश्चित नहीं होती थी कि वे किस प्रकार की होंगी। एक दिन उसे लगा कि वह या उसका पति किसी कार दुर्घटना का शिकार हो जाएंगे। लेकिन इसके बजाय उसकी छोटी बेटियों में से एक को एक गुजरती हुई कार ने टक्कर मार दी।

जब वे अपने वर्तमान घर में आए, तो श्रीमती ट्राउश को वह घर तुरंत नापसंद हो गया। इससे उनके व्यावहारिक स्वभाव वाले पति परेशान हो गए। अभी वे ठीक से घर में बसे भी नहीं थे कि उन्होंने उनसे दोबारा घर बदलने की गुहार लगाई। लेकिन उन्होंने इनकार कर दिया।

यह घर सफेद रंग से रंगा हुआ दो मंजिला बंगला है, जिसका निर्माण उनके आने से लगभग पांच साल पहले हुआ था। नीचे की मंजिल पर एक बड़ा, आयताकार बैठक कक्ष, एक रसोईघर और एक भोजन कक्ष है। दाईं ओर सीढ़ियाँ ऊपरी मंजिल की ओर जाती हैं। लैंडिंग पर लिनोलियम बिछा है, और लैंडिंग के दोनों ओर दो वर्गाकार शयनकक्ष हैं, जिनमें पूरे कमरे में कालीन बिछा है और पीछे वाले शयनकक्ष की खिड़कियाँ आंगन की ओर और सामने वाले कमरे की खिड़कियाँ सड़क की ओर खुलती हैं।

पीछे के शयनकक्ष की दक्षिणी दीवार के साथ एक बड़ी अलमारी है। घर में कुछ भी असामान्य नहीं है, और जब उन्होंने इसे स्थानीय बैंक से किराए पर लिया था, तब इससे जुड़ी कोई किंवदंती, कहानी या अफवाह नहीं थी।

फिर भी उस घर में कुछ अजीब सा था। श्रीमती ट्राउश शुरू से ही घबराई हुई थीं जब वे उस घर में रहने आए थे। लेकिन उन्होंने अपने पति के वहीं रहने के फैसले को स्वीकार कर लिया और जैसे-जैसे उनके नए घर में पहले कुछ सप्ताह बीतते गए, उन्होंने अपनी चिंताओं को रोजमर्रा की समझदारी के दायरे में दबा दिया।

पहले तो बच्चे उसके पास अजीबोगरीब कहानियां लेकर आते थे। छह साल की बच्ची ने शिकायत की कि जब भी वह ऊपर वाले कमरे में दोपहर की नींद लेने जाती थी, तो उसे कोई अदृश्य शक्ति छूती थी। कभी-कभी यह शक्ति बिस्तर को हिला देती थी, और फिर कपड़ों की अलमारी से एक तीखी आवाज़ आती थी, जो कुछ-कुछ बीप जैसी होती थी। सबसे बड़ी बच्ची, आठ साल की, ने भी इस कहानी की पुष्टि की और कमरे में इसी तरह के अनुभवों के बारे में बताया।

कैरोल ने इन रिपोर्टों को बच्चों द्वारा सुनाई जाने वाली आम काल्पनिक कहानियों के रूप में खारिज कर दिया।

लेकिन एक दिन वह ऊपर उसी बिस्तर पर आराम कर रही थी और उसने पाया कि किसी अज्ञात व्यक्ति ने उसके पैर पर थपथपाया है।

यह उसकी कल्पना नहीं थी; वह पूरी तरह से जागृत थी, और इससे उसे यह सोचने पर मजबूर होना पड़ा कि शायद इस घर के बारे में उसकी अंतर्ज्ञान शुरू से ही सही नहीं थी।

उसे ऊपर के कमरों में ही स्पर्श का अहसास होता रहता था, और यह उसकी आदत बन गई थी कि वह जल्दी से बिस्तर ठीक करके नीचे भाग जाती, जहाँ उसे कुछ भी असामान्य महसूस नहीं होता था। फिर उसे अलमारी से तीखी, बीप जैसी आवाज़ें भी सुनाई देने लगीं। उसने बच्चों के सारे कपड़े बाहर निकाले, लेकिन उसे कुछ भी ऐसा नहीं मिला जिससे यह आवाज़ आ रही हो। आखिरकार उसने अपने पति को इसके बारे में बताया, और उसने तुरंत घर के पाइप और अन्य संरचनात्मक चीज़ों की जाँच की, लेकिन उसने भी अपना सिर हिला दिया। ऐसी आवाज़ें किसी चीज़ से नहीं आ सकती थीं।

कई महीनों तक उसने अपना रहस्य छिपाए रखा था, लेकिन अब जब उसके पति को भी पता चल गया, तो उसने अपनी सबसे बड़ी बेटी डायने से कहा कि वह भी अपने पिता को इसके बारे में बता दे।

लगभग इसी समय उसे ऊपर की मंजिल पर किसी की मौजूदगी का एहसास होने लगा। कई बार उसे ऊपर की ओर कदमों की आहट सुनाई देती, और जाँच करने पर पता चलता कि बच्चे गहरी नींद में सो रहे हैं। जल्द ही कदमों की आहट घर में नियमित हो गई। यह हमेशा पीछे वाले बेडरूम में अलमारी के पास से शुरू होती, फिर सीढ़ियों की ओर जाती।

कैरोल को लगने लगा कि कहीं उसका डर उस पर हावी तो नहीं हो रहा है। एक दिन उसे बहुत राहत मिली जब उसकी बहन कैथलीन बैचलर, जो उससे मिलने आई थी, ने ऊपर से आ रही अजीब आवाज़ों के बारे में बताया। दोनों महिलाओं को पता था कि बच्चे बाहर हैं। ऊपर सिर्फ़ बच्ची थी, और जब वे दौड़कर सीढ़ियाँ चढ़ीं, तो उन्होंने उसे पालने में आराम से सोते हुए पाया। उन्हें ऐसा लगा जैसे कोई छोटा बच्चा चप्पल पहने चल रहा हो।

हालांकि, जल्द ही उसे पता चला कि कदमों की आहट दो प्रकार की होती है: एक बच्चे की दबी-दबी हल्की आहट, और एक वयस्क के भारी, सोच-समझकर उठाए गए कदम।

क्या उन्हें दो भूतों का उत्तराधिकार मिला था? यह विचार ईएसपी (अंतरात्मा की आवाज़ सुनने की क्षमता) से ग्रस्त कैरोल को भी अजीब लगा, लेकिन इसे पूरी तरह से खारिज नहीं किया जा सकता था। आखिर चल क्या रहा था, वह सोच रही थी। जाहिर है, वह पागल नहीं हो रही थी, क्योंकि दूसरों ने भी ये बातें सुनी थीं।

एक बार वह शाम को बाहर गई और रात करीब 10 बजे लौटी तो उसने बेबीसिटर को छुट्टी दे दी। बेबीसिटर के जाने के बाद वह बच्ची के साथ अकेली रह गई। अचानक उसे ऊपर वाले बाथरूम में पानी चलने की आवाज़ सुनाई दी। वह दौड़कर सीढ़ियों से ऊपर गई और देखा कि बाथरूम का दरवाज़ा कसकर बंद है। दरवाज़ा खोलकर उसने देखा कि पानी चल रहा था और सिंक में थोड़ा पानी था।

अगले साल 27 जनवरी को कैरोल के घर दोपहर के भोजन के लिए मेहमान आए थे, दो पड़ोसी जिनका नाम पॉलीन जे. और जॉयस एस. था, दोनों कैरोल की ही उम्र की युवतियाँ थीं। सभी बच्चे ऊपर के सामने वाले कमरे में सो रहे थे, दो बड़ी लड़कियाँ एक ही बिस्तर पर सो रही थीं जबकि छोटी बच्ची पालने में थी। बच्ची ने रात 11 बजे से दोपहर 2 बजे के बीच झपकी ली। लेकिन दोपहर होते ही बच्ची रोते हुए जाग गई, और दो साल की उम्र में ठीक से बोल न पाने के कारण बार-बार कह रही थी, "बच्चा डर गया, मम्मी!"

इससे पहले तीनों महिलाएं एक साथ ऊपर जाकर बच्ची को पालने में सुलाने की तैयारी कर रही थीं। उस समय उन्होंने पूरे कमरे को बड़े ध्यान से व्यवस्थित किया था, खासकर बड़े पलंग पर चादर और कंबल को एकदम चिकना किया था और कोने में रखी पेटी पर गुड़िया और खिलौने सजाए थे।

दोपहर को जब बच्ची रोने लगी, तो सभी स्त्रियाँ ऊपर गईं और देखा कि पलंग पर सिलवटें थीं और उस पर किसी के बैठने के निशान थे। बच्ची तो अपनी पालना में ही थी।

उन्होंने बच्ची को उठाया और उसके साथ नीचे चले गए। जैसे ही वे सीढ़ियों पर पहुँचे, तीनों ने अपने से लगभग तीन कदम आगे एक अदृश्य बच्चे के गिरने की आवाज़ सुनी।

इस अनुभव के बाद श्रीमती ट्राउश को आश्चर्य हुआ कि भूतिया बच्चा कभी भी गुड़ियों को क्यों नहीं छूता था। दरअसल, ऊपर से जो कदमों की आहट सुनाई देती थी, वह हमेशा अलमारी से खिलौनों के डिब्बे की ओर जाती थी, जहाँ गुड़ियां रखी होती थीं। लेकिन किसी भी गुड़िया को

कभी कोई नुकसान नहीं पहुँचा। उन्हें लगा कि शायद वह अदृश्य बच्चा एक लड़का था, और वहाँ लड़कों के खिलौने तो थे ही नहीं।

ऊपर के कमरे में बच्चे के दौड़ने-भागने की आवाज़ें लगातार तेज़ होती जा रही थीं; वह जानती थी कि यह उसके बच्चों में से कोई नहीं है, क्योंकि उसने अपने बच्चों के बारे में पहले से ही अच्छी तरह से पता लगा लिया था। पूरी स्थिति उसके लिए चिंता का विषय बन गई, और यहाँ तक कि उसका पति भी—जो अब तक समझ से परे बातों को नज़रअंदाज़ करता आ रहा था —चिंतित हो गया। मुझे जल्द से जल्द घर बुलाने के लिए संपर्क किया गया, लेकिन मैं तुरंत नहीं आ सका और उन्हें फिलहाल या मेरे आने तक इस अनदेखे मेहमान के साथ ही काम चलाना पड़ा।

फरवरी के पूरे महीने यह घटनाएँ जारी रहीं, यहाँ तक कि श्रीमती ट्राउश ने इन्हें अपनी दिनचर्या का हिस्सा मान लिया था। लेकिन वह यथासंभव घर के निचले हिस्से में ही रहती थीं। किसी अज्ञात कारण से, ये घटनाएँ कभी भी घर के उस हिस्से में नहीं पहुँचीं।

उसने मालिकों के लिए विकास कार्य का प्रबंधन करने वाली महिला को बुलाया और सावधानीपूर्वक उसे अपनी समस्या के बारे में बताया। लेकिन प्रबंधक को उस जगह के बारे में कुछ भी पता नहीं था, सिवाय इसके कि वह जगह नई थी और उसकी जानकारी के अनुसार उसके समय में वहां कोई बड़ी त्रासदी नहीं हुई थी।

जब नन्हे कदमों की आहट लगातार सुनाई देती रही, तो कैरोल ट्राउश ने ठान लिया कि उन्हें जानना ही होगा। 16 मार्च को उन्होंने ऊपरी मंजिल के फर्श के लिनोलियम से ढके हिस्से पर थोड़ा सा सफेद आटा छिड़कने का फैसला किया ताकि उस अनदेखे बच्चे को वहीं फंसाया जा सके। यही वह जगह थी जहां कदमों की आहट सबसे ज्यादा सुनाई देती थी, और पिछले दो दिनों से वह भूतिया बच्चा सचमुच वहीं आकर दौड़ता और खेलता था।

इसके अलावा, उसने एक गिलास पानी लिया, उसमें अलग-अलग माप के कुछ चम्मच रखे, और उन सबको एक छोटे से बर्तन में डालकर अपने बच्चे के पालने में रख दिया। बर्तन में गिलास के बगल में एक बिस्कुट भी रखा था। यह वैसी ही चीज़ थी जो एक नन्हा बच्चा चाह सकता है—यानी एक जीवित बच्चा।

फिर वह घर के निचले हिस्से में चली गई और एक पड़ोसी को बुलाया। दोनों महिलाएं मिलकर पहरा देने लगीं और दोपहर के शुरुआती घंटों का इंतजार करने लगीं, जब भूतिया बच्चा आमतौर पर ऊपर सक्रिय हो जाता था।

जैसे-जैसे समय बीतता गया, कैरोल सोचने लगी कि अगर कुछ नहीं हुआ तो लोग उसे कैसे देखेंगे। पड़ोसी शायद उसे सनकी समझेंगे और उस पर आरोप लगाएंगे कि उसने इस शांत मोहल्ले में ध्यान आकर्षित करने के लिए यह सारी कहानी मनगढ़ंत बनाई है।

लेकिन उन्हें ज्यादा देर तक चिंता करने की जरूरत नहीं पड़ी। वाकई, ऊपर फिर से कदमों की आहट सुनाई दी। दोनों महिलाओं ने भूत को अपना प्रभाव छोड़ने का मौका देने के लिए कुछ पल इंतजार किया, फिर वे तेजी से ऊपर चली गईं।

उन्हें कोई बच्चा दिखाई नहीं दिया, लेकिन सफेद आटे को छुआ जरूर गया था। आटे में पैरों के निशान थे, छोटे-छोटे पैर जो असामान्य रूप से छोटे और पतले लग रहे थे। निशानों के पास एक फूल की आकृति बनी हुई थी, मानो बच्चे ने झुककर उंगली से फूल बनाया हो, मानो अपनी उपस्थिति का संकेत दे रहा हो। पैरों के निशानों से उन्होंने बच्चे की उम्र तीन से चार साल के बीच आंकी। पालने में रखा पानी और बर्तन अछूते थे, और जब वे पैरों के निशानों के पास खड़े थे, तो चारों ओर सन्नाटा छाया हुआ था।

श्रीमती ट्राउश ने अब उस अदृश्य बच्चे से कोमल और मधुर स्वर में बात की और उसे आश्वासन दिया कि वे उसे कोई नुकसान नहीं पहुँचाएँगी। फिर उन्होंने इस अवसर के लिए लाए गए कुछ लड़कों के खिलौने बच्चों के कमरे में रख दिए और वहाँ से चली गईं।

इस सब पर तुरंत कोई प्रतिक्रिया नहीं हुई, लेकिन दो दिन बाद आठ साल की बेटी दौड़ती हुई सीढ़ियों से नीचे आई और बताया कि उसने दालान में कपड़ों की अलमारी के सामने एक छोटे लड़के की परछाई देखी थी। उसने धारीदार कमीज और पैंट पहनी हुई थी और वह उससे छोटा था।

जब मुझे टेलीफोन पर पैरों के निशान के बारे में पता चला, तो मैंने 2 जून का सप्ताह उस घर में जाने के लिए निर्धारित कर लिया। इस बीच मैंने ट्राउश परिवार को निर्देश दिया कि वे जितना हो सके उतना अवलोकन करते रहें।

लेकिन ट्राउश परिवार ने घर छोड़ने का फैसला कर लिया था, भले ही मैं उनकी "समस्या" का समाधान कर पाता। चाहे कुछ भी हो जाए, वे पूरी तरह आश्वस्त नहीं हो सकते थे। और एक भूत—या शायद दो भूतों—के साथ रहना उन्हें मंजूर नहीं था, खासकर तब जब उनके तीन बच्चे थे जो हमेशा उनकी चिंता में रहते थे।

ट्रॉश अपार्टमेंट के ठीक सामने, और उससे एक संकरी गली द्वारा अलग, एक और घर है जो बिल्कुल उसी के जैसा है और लगभग उसी समय बना था। यह घर पहले केवल खुला खेत था —जैसा कि वहाँ के सभी लोगों को पता है। कुछ साल पहले, यह इलाका बाढ़ से प्रभावित हुआ था और इसे रहने लायक नहीं घोषित कर दिया गया था, लेकिन बाद में यह सूख गया। इस क्षेत्र में हमेशा से ही भरपूर पानी रहा है, यह एक निचला इलाका है जो तालाबों और मछली पकड़ने के स्थानों से भरा हुआ है।

पड़ोसी का नाम बोनी स्वानसन था और वह भी ऐसी पदचापों से परेशान थी जिनका कोई मानवीय कारण नहीं था। दिलचस्प बात यह है कि ये आवाजें केवल उसके घर के ऊपरी हिस्से में ही सुनाई देती थीं, जहाँ शयनकक्ष थे, ठीक ट्राउश के घर की तरह।

स्वानसन दंपति ने दो बार पुलिस को बुलाया, लेकिन दोनों बार उन्हें बताया गया कि कदमों की आहट का कारण कोई नहीं था। अप्रैल में, स्वानसन दंपति अपने बच्चे को साथ लेकर सप्ताहांत के लिए बाहर गए थे। जब वे लौटे, तो पति ने दरवाजा खोला और सबसे पहले घर में प्रवेश किया। उसी क्षण उन्होंने कमरों के आगे से पीछे की ओर बहुत तेज़ कदमों की आहट सुनी, मानो कोई उनके लौटने से चौंक गया हो। श्रीमती स्वानसन, जिन्होंने भी यह सुना था, अपने पति के साथ घर की तलाशी लेने गईं, लेकिन वहां कोई अजनबी नहीं था और कोई भी उसे छोड़कर नहीं जा सकता था।

अचानक उन्हें एहसास हुआ कि ऊपर की मंजिल की बत्ती जल रही है। उन्हें याद था कि जाते समय उन्होंने बत्ती बंद कर दी थी। इसके अलावा, रसोई में उन्हें एक बच्चे की तिपहिया साइकिल लगभग मिल गई। पिछली बार जब उन्होंने इस तिपहिया साइकिल को देखा था, तब यह उनके बैठक कक्ष के कोने में खड़ी थी। यह अपने आप रसोई तक नहीं पहुँच सकती थी, और उनकी अनुपस्थिति में किसी के जबरदस्ती घुसने का कोई निशान नहीं था। कोई भी सामान गायब नहीं था।

ऐसा प्रतीत हो रहा था मानो मेरी आगामी यात्रा किसी न किसी तरह उस भूत या भूतों तक पहुँच रही हो, क्योंकि जैसे-जैसे जून का महीना नजदीक आता गया, घटनाएँ तीव्रता और आवृत्ति में बढ़ती गईं।

10 मई की सुबह 9:30 बजे, श्रीमती ट्राउश अपने सामने वाले शयनकक्ष की खिड़की पर ताज़ी हवा आने देने के लिए उसे खोल रही थीं। उनकी खिड़की से स्वानसन का घर सीधे दिखाई देता था, क्योंकि दोनों घर एक ही तल पर थे और उनकी खिड़कियाँ एक-दूसरे के समानांतर थीं। जैसे ही वह अपनी खिड़की के पास पहुँचीं और स्वानसन के कमरों की ओर देखा, जो उन्हें पता था कि दिन के इस समय खाली होंगे (श्रीमान स्वानसन काम पर थे, और श्रीमती स्वानसन और एक मेहमान सुबह के लिए बाहर गए हुए थे), तभी उन्होंने भयभीत होकर देखा कि एक महिला श्रीमती स्वानसन की खिड़की का पर्दा हटा रही है।

उस हाथ में एक अजीब सी अकड़ थी और जिस तरह से उसने पर्दा हटाया, उसमें भी एक अजीब सी जकड़न थी। तभी उसने साफ़ देखा कि एक औरत, जिसका चेहरा मौत के साये जैसा सफ़ेद नकाब से ढका था, उसे घूर रही थी। उस औरत की आँखें बेहद विचित्र थीं। अपनी उत्तेजना के बावजूद, श्रीमती ट्राउश ने गौर किया कि उस औरत के बाल गीले थे और उसने कुछ पतला-सा पहना हुआ था, जैसे गुलाबी फूलों वाली सफ़ेद नायलॉन की नाइटी।

फिलहाल, श्रीमती ट्राउश ने सोचा कि घर में आई मेहमान शायद कहीं रह गई होगी, इसलिए उन्होंने सामने बैठी महिला को देखकर मुस्कुरा दिया। तभी पर्दा गिरा और वह महिला गायब हो गई। कैरोल ट्राउश घटना के बारे में अपनी पड़ोसी से पूछने के लिए बेताब थीं, और उन्होंने पाया कि जब उन्होंने गीले बालों वाली महिला को देखा था, तब घर में कोई नहीं था।

अब श्रीमती ट्राउश को यकीन हो गया था कि दो अदृश्य आगंतुक थे, एक बच्चा और एक महिला, जो उनके द्वारा सुनी जा रही कदमों की अलग-अलग ध्वनि का कारण हो सकता है।

उसने उस जमीन के बारे में और अधिक जानने की कोशिश करने का फैसला किया जिस पर वह घर बना हुआ था।

चेस्टनट स्ट्रीट पर कुछ ब्लॉक दूर रहने वाली एक पड़ोसी, जो बीस साल से अधिक समय से अपने घर में रह रही थी, ने कुछ अतिरिक्त जानकारी देने में कामयाबी हासिल की। इस बस्ती के बनने से बहुत पहले, वहाँ एक खेत हुआ करता था।

जिस जगह पर अब ट्राउश परिवार रहता था, वहाँ पहले एक खलिहान हुआ करता था। घर बनने के दौरान एक बड़ी खाई खोदी गई और खलिहान को उसमें धकेल कर जला दिया गया। उस समय वहाँ फेलिक्स नाम का एक मैक्सिकन परिवार रहता था। उनका पास में ही एक घर था, लेकिन उन्होंने खेत का वह हिस्सा घर बनाने वालों को बेच दिया था।

लेकिन इलाके में बाढ़ की वजह से घर कुछ सालों तक खाली पड़े रहे। व्यापक जल निकासी व्यवस्था होने के बाद ही घर रहने लायक हुए। इसी समय ट्राउश परिवार अपने घर में रहने के लिए जा सका।

यह क्षेत्र मुख्य रूप से मैक्सिकन लोगों का था और यह विकास उनके बीच एक प्रकार का एंग्लो-सैक्सन द्वीप था।

यह सारी जानकारी संयोगवश हमारी यात्रा के बाद ही सामने आई, और उस समय न तो सिबिल लीक, जिन्होंने मेरी माध्यम के रूप में काम किया, और न ही मुझे इसकी कोई जानकारी थी।

श्रीमती ट्राउश अकेली ऐसी वयस्क सदस्य नहीं थीं जिन्होंने इस घटना को देखा था। उनके पति ने आखिरकार कबूल किया कि कई बार देर रात घर लौटने पर उन्हें ऊपर से कदमों की आहट सुनाई देती थी, जिससे वे हैरान रह जाते थे। यह लगभग रात के 1 बजे का समय होता था, और जब वे यह देखने जाते थे कि कोई बच्चा बिस्तर से उठा है या नहीं, तो वे सभी गहरी नींद में सो रहे होते थे। श्री ट्राउश बहुत ही व्यावहारिक व्यक्ति हैं। उनका व्यवसाय औद्योगिक औजारों का निर्माण है, और वे भूतों में विश्वास नहीं करते। लेकिन उन्होंने भी कदमों की आहट सुनी थी।

ट्राउश परिवार ने यह भी महसूस किया कि जैसे ही दोनों बड़ी लड़कियाँ स्कूल के लिए निकलती थीं, एक छोटे बच्चे के कदमों की आहट सुनाई देने लगती थी। ऐसा लगता था मानो वह अदृश्य लड़का उनकी गैरमौजूदगी में उनके खिलौनों से खेलना चाहता हो।

ऐसा लगता है कि भूत को स्नानघर और पानी बहुत पसंद थे, क्योंकि कदमों की आहट अक्सर उसी इलाके में सुनाई देती थी। एक बार श्रीमती ट्राउश स्नानघर में थीं, तभी उनके बगल में कदमों की आहट सुनाई दी। ज़ाहिर है, वह तुरंत स्नानघर से बाहर निकल आईं।

आखिरकार वो बड़ा दिन आ ही गया। श्री ट्राउश अपनी फॉक्सवैगन कार से श्रीमती लीक और मुझे लेने के लिए हॉलीवुड तक गए, और हालांकि वे भूतों में विश्वास नहीं करते थे, लेकिन वे उनका मजाक भी नहीं उड़ाते थे।

लगभग दो घंटे की सुखद यात्रा के बाद हम वेस्टमिंस्टर पहुँचे। जून का महीना था और दिन काफी गर्म था, और सांता एना क्षेत्र अपने गर्म मौसम के लिए जाना जाता है। श्री ट्राउश ने कार पार्क की और हम घर के अंदर गए जहाँ परिवार के बाकी सदस्य पहले से ही हमारे आने का इंतज़ार कर रहे थे।

मैंने सिबिल से कहा कि वह स्थिति के बारे में किसी भी तरह की अंतर्दृष्टि प्राप्त करने के लिए चारों ओर छानबीन करे, और जब वह ऐसा कर रही थी, तो मैं अपने भरोसेमंद टेप रिकॉर्डर के साथ घर में उसके पीछे-पीछे घूमता रहा ताकि एक भी शब्द छूट न जाए।

जैसे ही सिबिल ने घर में कदम रखा, उसने सीढ़ियों की ओर इशारा करते हुए अशुभ स्वर में कहा, "यह ऊपर है।"

फिर, मेरे पीछे-पीछे चलते हुए, वह एक कलाबाज की तरह धीरे-धीरे सीढ़ियों पर चढ़ गई, जबकि मैं हांफते हुए उसके पीछे-पीछे गया।

“रोंगटे खड़े हो गए,” उसने कहा और अपना हाथ आगे बढ़ाया। अब जब भी हम किसी भूतिया जगह पर होते हैं, सिबिल के रोंगटे खड़े हो जाते हैं—डर के मारे नहीं, बल्कि वहाँ मौजूद किसी भी चीज़ की मौजूदगी के प्रति यह एक स्वाभाविक, तात्कालिक प्रतिक्रिया होती है।

अब हम माता-पिता के कमरे में थे, और सिबिल एक प्रशिक्षित शिकारी कुत्ते की तरह उत्सुक मुस्कान के साथ चारों ओर देख रही थी, जैसे वह दलदली भूमि का जायजा ले रहा हो।

फिर उसने घोषणा की, “दो परस्पर विरोधी प्रकार। किसी के प्रति क्रोध और द्वेष है। यहाँ कुछ तो है। इसका संबंध भूमि से है। दो लोग।”

उन्हें लगा कि यह सब बच्चों के कमरे में केंद्रित है, और उसके चारों ओर एक भयावह तत्व, विनाश का तत्व व्याप्त है। हम बच्चों के कमरे में दाखिल हुए और वह तुरंत पीछे की ओर बने बड़े कोठरी की तरफ बढ़ीं। उस दीवार के पीछे एक और अपार्टमेंट था, लेकिन ट्राउश परिवार को उसके बारे में कुछ भी पता नहीं था सिवाय इसके कि उसमें रहने वाले लोग हाल ही में वहाँ आए थे।

"वो उस तरफ है," सिबिल ने घोषणा की और घर के पिछवाड़े की ओर इशारा किया जहाँ विभिन्न उम्र के कई बच्चे हमेशा की तरह शोर मचाते हुए खेल रहे थे।

“विंसेंट,” सिबिल ने अचानक कहा। “हो सकता है कि मैं उच्चारण सही से न कर पा रही हूँ, लेकिन उसका नाम विंसेंट ही है। और इसका इस सब से संबंध है। वैसे, परेशानी की वजह ज़मीन है, घर नहीं।”

जिस क्षेत्र की ओर सिबिल ने कुछ क्षण पहले गतिविधियों के केंद्र के रूप में इशारा किया था, वह ठीक वही स्थान था जहां कभी पुराना खलिहान खड़ा हुआ करता था।

“इस घर के खिलाफ कुछ नहीं है,” सिबिल ने श्रीमती ट्राउश से कहा, “लेकिन यह अतीत की कोई बात है। मेरा अनुमान है 1925 की। विंसेंट नाम महत्वपूर्ण है। इसमें आग का भी जिक्र है। मुझे यहां किसी व्यक्ति की उपस्थिति नहीं, बल्कि किसी प्रभाव... किसी चीज की उपस्थिति महसूस हो रही है। यह हमारे सामान्य काम से अलग है। इमारत का ऊपरी हिस्सा ही वह जगह है जहां बुराई का वास था।”

फिर मैंने सिबिल को बच्चों के कमरे में एक कुर्सी पर बिठा दिया और हम सब चुपचाप उसके चारों ओर बैठ गए, किसी प्रकार के चमत्कार के प्रकट होने की प्रतीक्षा करने लगे।

श्रीमती ट्राउश घबराहट में अपने होंठ काट रही थीं, लेकिन फिर भी वह अपने लंबे और कठिन समय के चरम को सहन कर रही थीं। सिबिल अब आराम कर रही थी, लेकिन वह अभी भी जाग रही थी।

"इसका एक बच्चे से कुछ संबंध है," उसने अब कहा, "एक खोया हुआ बच्चा...1925...वह बच्चा यहाँ मृत पाया गया था।"

मैंने जोर देकर पूछा, "यह किसका बच्चा है?"

“विंसेंट से जुड़ा हुआ...सांवला बच्चा...नौ साल का...एक लड़का...यहाँ के बच्चों को सावधान रहना होगा...”

क्या इस बच्चे का घर से कोई संबंध है?

वह खो गया है।

“क्या आप उसे देख सकते हैं; क्या वह आपको देख सकता है?”

“मैंने उसे देखा। कोने में... खलिहान में। उसकी गर्दन टूट गई। दो आदमियों ने... बच्चे को मारा, उन्हें बच्चे पसंद नहीं थे, आप जानते हैं... उन्होंने उसे वहीं छोड़ दिया... जब तक कि वह मिला नहीं... औरत... फेयरली... नाम... पीट फेयरली...”

तब तक सिबिल अर्ध-सम्मोहन की अवस्था में जा चुकी थी और मैंने खलिहान में हुए पूरे घटनाक्रम को फिर से समझने के लिए सवालों की बौछार जारी रखी।

मैंने पूछा, "क्या वे यहाँ रहते हैं?"

“यहाँ कोई नहीं रहता। एक महिला पानी से चलकर लड़के को ढूंढने आई थी। वह मर चुका है। उस महिला का उन दो आदमियों से संबंध है जिन्होंने उसे मारा है। वे पागल हैं, बच्चों के दुश्मन हैं।”

उस लड़के से उसका क्या संबंध है?

“वह उसके पास थी, फिर उसने उसे खो दिया। उसने उसकी देखभाल की।”

“उस लड़के के माता-पिता कौन थे?”

“फेयरली. पीटर फेयरली. 1925.”

सिबिल अब लगभग एक रोबोट की तरह लग रही थी, जो मांगी गई जानकारी दे रही थी।

मैं जानना चाहता था, "उस महिला के साथ क्या हुआ?"

“पागल... उसने लड़के को मृत पाया, आदमियों के पास गई... वहाँ लड़ाई हुई... वह पानी में गिर गई... आदमी यहाँ हैं... आग लगी है...”

“ये लोग कौन थे?”

“विंसेंट...भाई लोग...इस फार्म में कोई भी स्वस्थ नहीं है...महिलाओं को पसंद नहीं करते...”

“यह बच्चा कहाँ से आया?”

"नदी किनारे से खो गया..."

क्या आप उस महिला को देख सकते हैं?

"एक छोटा सा...वह लड़का मुझे साफ-साफ दिखाई दे रहा है।"

मुझे यह बात कितनी अजीब लगी कि सिबिल ने उस महिला के बारे में बताया जो पानी में गिर गई थी, जबकि श्रीमती ट्राउश ने जिस प्रेत को देखा था उसके बाल गीले थे। ज़ाहिर है, सिबिल

के सामने घर के बारे में किसी ने कोई बात नहीं की थी। इसलिए उसे यह पता नहीं था कि वह इलाका कभी खेत हुआ करता था, या जहाँ उसे अजीबोगरीब घटनाएं महसूस होती थीं, वहाँ कभी खलिहान हुआ करता था। किसी ने उसे यह भी नहीं बताया था कि घर के लोग ऊपर से जो आवाज़ें सुनते रहते थे, वे किसी बच्चे की थीं।

“महिला लय में नहीं है,” सिबिल ने समझाया। “इस वजह से उसे देखना मुश्किल हो रहा है। लड़का डरा हुआ है।”

अब सिबिल ने अपना ध्यान उस छोटे बच्चे की ओर मोड़ा और मेरे कहने पर उसे वहां से दूर भेजने लगी।

“पीटर, बाहर जाओ और बच्चों के साथ खेलो... बाहर,” उसने विनती की।

मैंने आगे कहा, "और उसके माता-पिता...वे उसे ढूंढ रहे हैं।"

“वह चाहता है कि यहाँ के बच्चे उसके साथ चलें,” सिबिल ने जवाब दिया। श्रीमती ट्राउश घबराकर घबरा गईं।

मैंने उसे निर्देश दिया, "उसे कहो कि वह पहले जाए।"

"वह उस खूबसूरत महिला को अपने साथ ले जाना चाहता है," सिबिल ने समझाया और मैंने सुझाव दिया कि वे दोनों चलें।

"वह समझती है," सिबिल ने समझाया, "और तैयार भी है, लेकिन वह मुश्किल है। वह बच्चों को चाहता है।"

मैं उस भूत जैसे लड़के से लगातार विनती करता रहा। इतने कम उम्र में किसी के खो जाने से निपटना बहुत मुश्किल होता है।

मैंने कहा, “दूसरे बच्चों के साथ शामिल हो जाओ। वे पहले से ही बाहर हैं।”

कुछ क्षणों के लिए सन्नाटा छा गया, जिसे केवल बाहर खेलते हुए बच्चों की दबी हुई आवाज़ें ही भंग कर रही थीं।

“क्या वे अभी भी यहीं हैं?” मैंने थोड़ी देर बाद सावधानी से पूछा।

"अभी तो वे दिखाई नहीं दे रहे, लेकिन इमारत दिखाई दे रही है। दो मंजिलें। अभी वहां कोई नहीं है।"

मैंने फैसला किया कि अब उस समाधि को तोड़ने का समय आ गया है जो धीरे-धीरे गहरी होती जा रही थी और इस समय पूर्ण समाधि में बदल चुकी थी। कुछ ही क्षण बाद सिबिल लीक "वापस आ गई"।

अब हमने इस मामले पर खुलकर चर्चा की और मैंने अभी प्राप्त जानकारी पर शोध किया।

मेरी समझ से, पीटर फेयरली नाम का एक नौ साल का लड़का था, जो किसी तरह अपनी आया, एक गोरी महिला, से बच निकला था। वह एक खेत में भागा और खलिहान की ऊपरी मंजिल पर चढ़ गया, जहाँ विंसेंट नाम के दो भाइयों ने उसे मार डाला। जब उस महिला ने उसे पाया, तो वह पागल हो गई। फिर उसने उन आदमियों को ढूँढा जिन्हें वह जानती थी, और उनके बीच लड़ाई हुई जिसमें वह डूब गई। वे दोनों भूत हैं क्योंकि वे खो गए हैं; लड़का एक अनजान जगह में खो गया है और वह महिला लड़के को खोने के अपराधबोध में डूबी हुई है।

श्रीमती कुन्जे और श्रीमती ट्राउश ने स्वेच्छा से स्थानीय रजिस्टर में नामों की जांच करने और यह देखने की पेशकश की कि क्या इस त्रासदी से संबंधित कोई भी जानकारी मुद्रित रूप में मिल सकती है।

दुर्भाग्यवश, वर्ष 1925 के मृत्यु अभिलेख अपूर्ण थे, जैसा कि श्रीमती ट्राउश ने सांता एना रजिस्टर में पाया; और यही स्थिति न्यायालय भवन के स्थानीय अभिलेख कक्ष में भी थी। काउंटी शेरिफ कार्यालय से भी कोई सहायता नहीं मिली। लेकिन उन्हें 1 जनवरी, 1925 के रजिस्टर में एक रोचक जानकारी मिली:

पुलिस अधिकारियों ने संतरे के बाग में "दफनाने" की कहानी की जांच शुरू की। कल देर रात स्टैंटन में जल्दबाजी में पहुंचे कई डिप्टी शेरिफों को वहां कुछ लोगों का सुराग नहीं मिला, जिनके बारे में शेरिफ कार्यालय में उन्हें बताया गया था कि वे उस कस्बे के पास एक सुनसान संतरे के बाग में "कुछ दफना रहे हैं"।

घटनास्थल पर पहुंचे अधिकारियों को लगा था कि हत्या हुई है और शव को दफनाया जा रहा है, लेकिन मुख्य आपराधिक उप-अधिकारी एड मैक्लेलन द्वारा वापसी पर दी गई रिपोर्ट के अनुसार, उस क्षेत्र की गहन तलाशी में कुछ भी असामान्य नहीं मिला। मैक्लेलन के साथ उप-शेरिफ जो स्कॉट और जो रयान भी थे।

श्रीमती कुन्ज़े, जो उस क्षेत्र की लंबे समय से निवासी थीं और उसकी विशिष्टताओं से भलीभांति परिचित थीं, ने टिप्पणी की कि एक एकांत संतरे के बाग में इस तरह के दफन को सिंचाई प्रणाली से परिचित लोग आसानी से ढक सकते थे, जो उस हिस्से में पानी भर सकते थे, जिससे नवनिर्मित कब्र के सभी सबूत मिट जाते।

मुझे पीटर फेयरली नाम के बारे में जिज्ञासा हुई। बेशक, मुझे उम्मीद नहीं थी कि उस लड़के का नाम कहीं दर्ज होगा, लेकिन क्या 1925 में इन इलाकों में कोई फेयरली परिवार रहता था? वहाँ था।

1925 के सांता एना काउंटी डायरेक्टरी के दक्षिण-पश्चिम खंड में, फ्रैंक फेयरली नामक एक बढ़ई का नाम दर्ज है, जिसका पता 930 डब्ल्यू. बिशप, सांता एना है। अगले वर्ष भी यह पता इसी पते पर दर्ज है। हालांकि, यह 1924 के डायरेक्टरी संस्करण में नहीं था, इसलिए शायद फेयरली परिवार उस समय इस क्षेत्र में नया था।

यात्रा की शुरुआत में श्रीमती लीक ने इस क्षेत्र से जुड़े एक फेलिक्स का ज़िक्र किया था। 1925 की काउंटी डायरेक्टरी को दोबारा देखने पर हमें फेलिक्स परिवार के कई सदस्यों के नाम मिले। इनमें एंड्रेस फेलिक्स, जो एक पशुपालक थे, गोल्डन वेस्ट एवेन्यू और बोल्सा चिका रोड पर रहते थे, पोस्ट ऑफिस वेस्टमिंस्टर के पास। एडॉल्फ और मिगुएल फेलिक्स, जो मजदूर थे, उसी पते पर रहते थे—शायद भाई—और फ्लोरेंटिनो फेलिक्स, जो भी एक पशुपालक थे, एंड्रेस फेलिक्स के खेत से थोड़ी दूरी पर रहते थे। यह सूची 1926 में भी मिलती है।

हालांकि, विन्सेंट या विन्सेंटे का नाम नहीं है। लेकिन ज़ाहिर है, परिवार के सभी सदस्यों का नाम दर्ज होना ज़रूरी नहीं है। निर्देशिकाओं में आम तौर पर केवल मुख्य व्यक्तियों के नाम होते हैं, यानी वे लोग जो लाभकारी रूप से कार्यरत हैं या व्यवसाय या संपत्ति के मालिक हैं। फिर भी, अगर विन्सेंटे एक उपनाम था न कि ईसाई नाम, तो उस नाम के दो कर्मचारी हो सकते थे।

सैमुअल आर्मर द्वारा लिखित 1911 के ऑरेंज काउंटी के इतिहास में इस क्षेत्र का वर्णन एक दुकान, एक गिरजाघर, एक स्कूल और कुछ ही घरों के रूप में किया गया है। उस समय इसे बोल्सा कहा जाता था और मुख्य क्षेत्र का उपयोग पशुपालन और पशुपालन के लिए किया जाता था। इस क्षेत्र में मछली पालन केंद्र भी प्रचुर मात्रा में हैं, जिनकी शुरुआत लगभग 1921

में अकियामा नामक एक जापानी व्यक्ति ने की थी। इस प्रकार इस क्षेत्र में मछली के तालाबों के साथ-साथ प्राकृतिक झीलों और जल स्रोतों के अस्तित्व का स्पष्टीकरण मिलता है।

श्रीमती कुन्जे की मदद से मुझे एक और दिलचस्प अभिलेख मिला।

22 जनवरी, 1956 के लॉस एंजिल्स टाइम्स के अनुसार, "वेस्टमिंस्टर में 14611 गोल्डन वेस्ट स्ट्रीट पर स्थित एक प्राचीन निवास, जो 85 साल पहले बनाया गया था, को उपविभाजन के लिए ध्वस्त कर दिया गया था।"

यह निस्संदेह वही फार्म हाउस और जमीन थी जिस पर बाद में वह विकास परियोजना बनाई गई जिसकी हम जांच कर रहे थे।

और यहीं से हमें सबूत मिल गया। हमारे मानसिक विशेषज्ञ मित्र ने तीन नाम बताए: फेलिक्स, विंसेंट और पीटर फेयरली। इनमें से दो नाम मुद्रित अभिलेख में बड़ी मुश्किल से और स्थानीय शोधकर्ताओं की मदद से मिले, जो मूल सामग्री से परिचित थे, जबकि श्रीमती लीक और मैं भूतिया घर की यात्रा से पहले उनसे परिचित नहीं थे। महिला के शव को आसानी से बिना कोई निशान छोड़े ठिकाने लगाया जा सकता था, जैसे कि उसे इलाके के किसी मछलीघर या अन्य जल स्रोतों में फेंक दिया जाए, या शायद पास की सांता एना नदी में।

हमारी जांच के लगभग एक महीने बाद, ट्राउश परिवार हंटिंगटन बीच वापस चला गया, और वेस्टमिंस्टर का घर किसी और के लिए छोड़ दिया, जो शायद किसी दिन सामने आ सकता है।

लेकिन कैरोल ट्राउश ने मुझे बताया कि हमारी जांच शुरू होने के क्षण से लेकर अब तक, एक भी घटना ने उनके घर की शांति को भंग नहीं किया था।

इसलिए मैं केवल यही अनुमान लगा सकता हूँ कि सिबिल और मैं उन दो दुर्भाग्यशाली भूतों को खुले में लाने में मदद कर पाए, लड़के को उसके माता-पिता को खोजने में, जो निस्संदेह परलोक में ही होंगे, और महिला को लड़के की हत्या होने देने में अपनी लापरवाही के लिए शांति और क्षमा पाने में।

किसी प्रेतवाधित घर को उसके अदृश्य निवासियों से पूरी तरह मुक्त करना किसी मानसिक अन्वेषक के लिए हमेशा संभव नहीं होता है, और जब ऐसा हो पाता है, तो सफलता ही अपने आप में एक पुरस्कार होती है।

*72

मिनियापोलिस का भूतिया द्वारपाल

इस कहानी के लिए मैं मिनियापोलिस की एक विज्ञापन एजेंसी में काम करने वाली बाईस वर्षीय क्रिएटिव प्रोडक्शन असिस्टेंट डेबोरा टर्नर की आभारी हूँ। मिस टर्नर को मेरी कुछ किताबें बहुत पसंद आईं और उन्होंने ट्विन सिटीज़ में ऐसे मामले खोजना शुरू कर दिया जो भूत-प्रेत की खोज में उनकी रुचि को और बढ़ा सकें। संगीत और थिएटर में रुचि होने के कारण, यह स्वाभाविक था कि वे प्रसिद्ध निर्देशक के नाम पर बने मशहूर गुथरी थिएटर की ओर आकर्षित हुईं, जिसे मिनियापोलिस का गौरव माना जाता है। थिएटर में उनकी मुलाकात कुछ अन्य युवाओं से हुई, जो लगभग बीस वर्ष के थे, और उन्होंने उनके साथ अलौकिक घटनाओं में अपनी रुचि साझा की। ज़रा सोचिए, जब उन्हें पता चला कि उन्हें एक बेहद दिलचस्प मामला मिल गया है, तो उन्हें कितना आश्चर्य हुआ होगा।

रिचर्ड मिलर का जन्म 1951 में मैनहट्टन, कंसास में हुआ था। दस वर्ष की आयु तक वे अपने पिता के साथ वहीं रहे, जो सरकारी सेवा में एक रसायनज्ञ थे। फिर उनके पिता का तबादला इंग्लैंड हो गया और रिचर्ड ने कई साल वहीं स्कूल में बिताए। इसके बाद, वे और उनका परिवार संयुक्त राज्य अमेरिका लौट आए और एडिना में बस गए। इससे रिचर्ड को न केवल इंग्लैंड की जीवंत यादें रह गईं, बल्कि उनके लहजे में कुछ बदलाव भी आ गया, जिसने कंसास में बिताए उनके बचपन के साथ मिलकर उन्हें एक विशिष्ट व्यक्तित्व प्रदान किया।

एडिना मॉर्निंगसाइड हाई स्कूल में पढ़ते समय, उनके अजीब लहजे का दूसरे छात्र मज़ाक उड़ाते थे, और यह बात शर्मीले और अंतर्मुखी स्वभाव वाले उस लड़के को बिल्कुल पसंद नहीं आती थी। इसी स्कूल में दसवीं कक्षा में उनकी दोस्ती फ्रेड कोइवुमाकी नाम के एक और लड़के से हुई और दोनों के बीच एक अच्छा और घनिष्ठ रिश्ता बन गया। इससे फ्रेड को स्कूल के बाकी साथियों की तुलना में रिचर्ड को बेहतर तरीके से जानने का मौका मिला।

मानो उसका अजीब लहजा ही उसे इलाके के बाकी लड़कों से अलग दिखाने के लिए काफी नहीं था। रिचर्ड अचानक और झटकेदार हरकतें करता था, जिसकी वजह से वह अपने सहपाठियों की चुभती टिप्पणियों और मज़ाकों का आसान निशाना बन जाता था। मिलर

परिवार का सामाजिक जीवन भी कुछ खास नहीं था, क्योंकि वे एडिना के छोटे से कस्बे के जीवन के तौर-तरीकों में पूरी तरह ढल नहीं पाते थे।

इंग्लैंड के एक स्कूल में बिताए सालों के दौरान, रिचर्ड ने शारीरिक दंड देखा था, क्योंकि यह अभी भी कुछ अंग्रेजी स्कूलों में शिक्षा प्रणाली का हिस्सा है। इससे वह बहुत डर जाता था, और शायद इसी वजह से वह खुलकर अपनी भावनाओं को व्यक्त नहीं कर पाता था। अन्य छात्रों की तरह उसकी कोई गर्लफ्रेंड नहीं बन पाई, और यह बात भी उसे बहुत परेशान करती थी। वह समझ नहीं पाता था कि लोग उसे इतना पसंद क्यों नहीं करते, और अक्सर इस बारे में अपने दोस्त फ्रेड से बात करता था।

जब दोनों युवक सोलह वर्ष के हुए, तो वे गुथरी थिएटर गए जहाँ उन्हें दर्शक दीर्घा में कर्मचारी के रूप में नौकरी मिल गई। उन्होंने दो साल तक यह काम किया। रिचर्ड मिलर अन्य कर्मचारियों के साथ अच्छे से घुलमिल गए, लेकिन उनकी गहरी दोस्ती केवल फ्रेड कोइवुमाकी और एक अन्य साथी, बैरी पीटरसन से ही हुई। शायद यह भाग्य का एक विचित्र संयोग ही था कि रिचर्ड मिलर और बैरी पीटरसन दोनों ही युवावस्था तक नहीं पहुँच पाए और समय से बहुत पहले ही एक भीषण दुर्घटना में उनकी मृत्यु हो गई।

हालांकि, रिचर्ड के माता-पिता ने फैसला किया कि उसे विश्वविद्यालय जाना चाहिए और अपनी नौकरी छोड़ देनी चाहिए। अपने माता-पिता की बात मानने के लिए, रिचर्ड मिलर ने द्वारपाल की नौकरी छोड़ दी और विश्वविद्यालय में अपने पहले वर्ष के लिए टेरिटोरियल हॉल में रहने चला गया।

हालांकि, इस बदलाव से उनकी आत्म-अभिव्यक्ति की क्षमता या सामाजिक जीवन में कोई सुधार नहीं हुआ। साथ ही, उन्हें ऐसा लगने लगा कि वे अपने माता-पिता की इच्छाओं को पूरा कर रहे हैं, और उनका रवैया उनके प्रति और भी शत्रुतापूर्ण हो गया। इसके अलावा, ऐसा लगता है कि उनके छात्र भी उनका मज़ाक उड़ाने लगे। संयोगवश, उन्हें दृष्टि संबंधी समस्या हो गई, उनकी रेटिना से कोशिकाएं टूटकर आंख के भीतरी भाग में तैरने लगीं। इसके कारण उन्हें आंखों के सामने धब्बे दिखाई देने लगे, एक ऐसी स्थिति जिसका कोई इलाज नहीं है। फिर भी, उन्हें स्कीइंग पसंद थी क्योंकि वे इसे अच्छी तरह से करना जानते थे, और उन्होंने विश्वविद्यालय के स्की क्लब में शामिल हो गए।

लेकिन रिचर्ड का दुर्भाग्य किसी न किसी तरह उसका पीछा नहीं छोड़ रहा था। कोलोराडो की यात्रा के दौरान, वह एक पेड़ से टकरा गया, सौभाग्य से केवल उसकी स्की ही टूटी। जब गर्मी का मौसम आया, तो रिचर्ड अपनी बाइक से एक बड़ी कच्ची पहाड़ी से नीचे ऊबड़-खाबड़ ज़मीन और लंबी घास में जा गिरा, जिससे उसे चोट लग गई। सौभाग्य से, तभी एक मोटरसाइकिल सवार वहाँ से गुज़रा और रिचर्ड को पास के अस्पताल के आपातकालीन वार्ड में ले गया। इन सब बातों ने शायद अंततः उसके मानसिक संतुलन को बिगाड़ दिया; या, जैसा कि छात्र कहते हैं, रिचर्ड का मानसिक संतुलन बिगड़ गया।

उन्हें विश्वविद्यालय के अस्पताल में भर्ती कराया गया था और केवल सप्ताहांत में ही घर जाने की अनुमति थी। उस दौरान उन्हें तेज़ दवाइयाँ दी जा रही थीं, लेकिन जब दवाइयों से उनकी हालत में सुधार नहीं हुआ, तो डॉक्टर ने दवाइयाँ बंद कर दीं और उन्हें घर भेज दिया।

अगले साल 4 फरवरी को, उसने दोबारा स्कीइंग करने का फैसला किया और अपने पिता से उसे बक हिल ले जाने के लिए कहा, जो शहर से कुछ ही दूरी पर स्थित स्कीइंग क्षेत्रों में से एक था। लेकिन रिचर्ड को यह जानकर बहुत निराशा हुई कि वह अब स्कीइंग नहीं कर सकता, और इससे वह बेहद निराश हो गया। जब वह घर लौटा, तो विश्वविद्यालय से एक औपचारिक पत्र उसका इंतजार कर रहा था, जिसमें उसे बताया गया था कि उस समय भावनात्मक समस्याओं के कारण उसने सभी अंतिम परीक्षाएं छोड़ दी थीं, इसलिए उसे सभी विषयों में 'फेल' ग्रेड मिला था और उसे परिवीक्षा पर रखा गया था।

यह सब उसके लिए असहनीय लग रहा था। उसने अपनी माँ से 40 डॉलर मांगे, बहाने से कि वह अपने लिए नए स्की बूट खरीदेगा। फिर वह लेक स्ट्रीट पर स्थित सीयर्स स्टोर गया, जहाँ से उसने एक शक्तिशाली पिस्तौल और गोलियां खरीदीं। यह शनिवार का दिन था, और उसने कार में ही आत्महत्या कर ली। सोमवार सुबह तक उसका पता नहीं चला, जब पार्किंग स्थल की सफाई करने वाले दल ने उसे पाया, उसके सिर का अधिकांश हिस्सा गोलियों से छलनी था।

रिचर्ड मिलर को फोर्ट स्नेलिंग राष्ट्रीय कब्रिस्तान में शांतिपूर्वक दफनाया गया। उनके माता-पिता, डॉ. और श्रीमती बायरन एस. मिलर ने अनुरोध किया कि फूलों के बजाय मिनेसोटा एसोसिएशन फॉर मेंटल हेल्थ को श्रद्धांजलि भेजी जाए। रिचर्ड की माँ हमेशा से मानती थीं कि

उनके बेटे के जीवन के सबसे अच्छे वर्ष गुथरी थिएटर में एक सहायक के रूप में बीते थे; इसलिए उन्हें गुथरी थिएटर का ब्लेज़र पहनाकर ही अंतिम संस्कार किया गया। तारीख 7 फरवरी थी, और जल्द ही उस युवक की असामयिक मृत्यु का सदमा कम हो गया, और केवल उनके करीबी परिवार और कुछ ही मित्र रिचर्ड मिलर को याद कर रहे थे।

युवा दर्शक दीर्घा के कर्मचारी की मृत्यु के कुछ सप्ताह बाद, थिएटर में गलियारे वाली सीट पर बैठी एक महिला उस गलियारे के प्रभारी कर्मचारी के पास गई और उससे नाटक के दौरान दूसरे कर्मचारी को इधर-उधर चलने से रोकने के लिए कहा। प्रभारी कर्मचारी यह सुनकर हैरान रह गया, क्योंकि वह गलियारे के सबसे आगे बैठा था और उसने किसी को भी इधर-उधर चलते नहीं देखा था। बाकी सभी कर्मचारी अपने-अपने गलियारों में व्यस्त थे। हालांकि, महिला ने जोर देकर कहा कि उसने नाटक के दौरान उस युवक को गलियारे में इधर-उधर चलते देखा था। प्रभारी कर्मचारी ने उससे पूछा कि उसने क्या देखा था। उसने रिचर्ड मिलर का पूरा विवरण दिया, यहां तक कि उसके गाल पर मौजूद तिल तक का जिक्र किया। यह घटना गुथरी थिएटर के रिकॉर्ड में दर्ज है। मिनियापोलिस ट्रिब्यून के स्तंभकार रॉबर्ट टी. स्मिथ ने इस घटना के संबंध में थिएटर के दर्शक विकास निदेशक क्रेग शेरफेनबर्ग का साक्षात्कार लिया। निदेशक ने कहा, "उस समय हमारे यहां कोई भी कर्मचारी उस विवरण से मेल नहीं खाता था, लेकिन यह विवरण मृत युवक पर पूरी तरह से लागू होता था।"

कई साल बाद गर्मियों में, दो कर्मचारियों को थिएटर में रात बिताने के लिए कहा गया ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि कुछ खराब एयर कंडीशनिंग उपकरण पूरी तरह से ठीक हो गए हैं। गुथरी थिएटर में एक थ्रस्ट स्टेज है जिसके तीनों तरफ स्टेज पर खुलने वाले द्वार हैं; ये द्वार अभिनेताओं के प्रतीक्षा क्षेत्र की ओर खुलते हैं, जहाँ से एक दरवाजा उस क्षेत्र में खुलता है जिसका उपयोग मध्यांतर के दौरान लाउंज के रूप में किया जाता है।

दोनों युवक प्रतीक्षा कक्ष में दोनों दरवाजे खुले रखकर बैठे थे और इमारत में वे ही अकेले थे। सुबह 1 बजे, अचानक उन्हें मंच पर रखे पियानो की आवाज़ सुनाई दी। इससे वे स्तब्ध रह गए और चुपचाप देखते रहे, तभी उन्होंने देखा कि एक बादल जैसी आकृति लाउंज के दरवाजे से अंदर आई और कमरे के बीचोंबीच मंडराने लगी। एक कर्मचारी को लगा कि वह आकृति उसे घूर रही है। जैसे ही उन्हें होश आया, वे तुरंत कमरे से बाहर निकल गए।

इस घटना के कुछ समय बाद, डेबोरा टर्नर की एक सहेली अगले दिन के प्रदर्शन के लिए ज़रूरी पोशाकों की मरम्मत करने के लिए एक शाम देर तक काम कर रही थी। वह और उसकी एक सहेली घर जाने के लिए गाड़ी का इंतज़ार करते हुए स्टेज एरिया में आराम कर रही थीं। जब उसने हॉल में नज़र डाली, तो उसने देखा कि उस गलियारे की बत्तियाँ, जहाँ मृत व्यक्ति बैठा था, बार-बार जल-बुझ रही थीं, मानो कोई धीरे-धीरे ऊपर-नीचे चल रहा हो। थोड़ी देर बाद वह शौचालय गई, और अचानक उसे एक दीवार पर ज़ोर से खटखटाने की आवाज़ सुनाई दी, जो धीरे-धीरे पूरे कमरे में गूंजने लगी और उसे बहुत घबराहट होने लगी, क्योंकि वह जानती थी कि हॉल में सिर्फ़ वह और उसकी सहेली ही थीं।

जब गुथरी थिएटर में जूलियस सीज़र का मंचन हुआ, तो कलाकारों में से एक मैरी पेरेज़ नाम की एक बुजुर्ग महिला भी थीं। उन्होंने खुलकर स्वीकार किया कि उनमें मानसिक शक्तियां थीं और वे अपनी मृत बहन से संवाद कर सकती थीं। उन्होंने अपने साथी कलाकारों को बताया कि उन्हें सभागार में रिचर्ड मिलर की उपस्थिति का आभास हो रहा था। उन्हें किसी तरह यह विश्वास था कि सीज़र की मृत्यु के बाद मार्क एंटनी के रोमवासियों को दिए गए प्रसिद्ध भाषण के दौरान भूत प्रकट होगा।

जब जूलियस सीज़र का शव मंच पर लाया गया, तो पूरा दृश्य मुख्य रूप से मशालों की रोशनी से जगमगा रहा था। जेसन हार्लेन, एक युवा दर्शक दीर्घा में कर्मचारी, और उसका एक साथी, रंगमंच में अलग-अलग जगहों से प्रदर्शन देख रहे थे। एक व्यक्ति मंच की ओर जाने वाली सुरंगों में से एक में था, दूसरा दर्शकों के बीच। दोनों को मैरी पेरेज़ की भविष्यवाणी के बारे में बताया गया था, लेकिन उस समय कुछ भी न होने पर वे निराश हो गए। ऊब के मारे, वे रंगमंच में इधर-उधर देखने लगे। एक-दूसरे से अलग, उन्होंने छत तक धुआँ उठता हुआ देखा, जो एक मानव आकृति का रूप ले रहा था। दोनों युवकों ने कहा कि उस आकृति की आँखें मनुष्य जैसी थीं।

दिवंगत रिचर्ड मिलर जिस गलियारे में काम करते थे, उसका नंबर अठारह था। जूलियस सीज़र के अभिनय मंडली में टेरी और गिगी नाम की दो महिलाओं ने शिकायत की कि उन्हें बिना किसी स्पष्ट कारण के अठारहवें गलियारे के ऊपरी हिस्से के दरवाजे से बहुत परेशानी होती है। ब्रूस बेन्सन, जो अब अठारहवें गलियारे में काम करते हैं, ने बताया कि लोग प्रदर्शनों

के दौरान गलियारे में एक कर्मचारी के बार-बार ऊपर-नीचे चलने की शिकायत करते थे। ब्रूस मार्गोलिस, जो स्टेज डोर पर काम करते हैं, बाकी सभी के बाद इमारत से निकलते हैं। एक रात जब वह वहाँ बिल्कुल अकेले थे, तो लिफ्ट अपने आप चलने लगी।

भूत के बारे में हो रही इन सब बातों ने कुछ युवा कर्मचारियों को ओइजा बोर्ड के ज़रिए उससे संपर्क करने की कोशिश करने के लिए प्रेरित किया। मुख्य कर्मचारी डैन बर्ग एक बोर्ड लेकर मंच पर गए और अपने साथियों ब्रूस बेन्सन और स्कॉट हर्नर के साथ भूत से बात करने की कोशिश की। कुछ देर तक कुछ नहीं हुआ। फिर अचानक बोर्ड पर लिखा आया, "टेक्निकल रूम में दबे पांव जाओ।" जब उन्होंने पूछा कि ऐसा क्यों हुआ, तो बोर्ड पर भूत शब्द लिखा आया। वे जानना चाहते थे कि भूत किस टेक्निकल रूम की बात कर रहा है: नीचे वाले कमरे की? "नहीं," बोर्ड ने उन्हें बताया, "ऊपर वाले कमरे की।" फिर बोर्ड पर MIL लिखा हुआ दिखाई दिया। यह सुनकर उनमें से एक ने बोर्ड को पलट दिया और फिर उससे कोई वास्ता नहीं रखना चाहता था।

अगले साल नवंबर में, थिएटर में काम करने वाले एक कर्मचारी ने स्तंभकार रॉबर्ट स्मिथ को बताया, “रात के प्रदर्शन के बाद की बात है। मेरे अलावा सभी लोग थिएटर से चले गए थे। मैं अपने दस्ताने भूल गया था और उन्हें लेने वापस लौटा। मैंने थिएटर में एक नज़र डाली और एक कर्मचारी को एक गलियारे में खड़ा देखा। वह वही था। उसने मुझे देखा और चला गया। मैं उस गलियारे में गया और मुझे कुछ नहीं मिला।”

गुथरी थिएटर से जुड़ी एक ओपेरा कंपनी भी है। एक रात, ओपेरा कंपनी में काम करने वाली एक महिला गुथरी थिएटर से घर लौट रही थी। अचानक उसे कार में अपने बगल में किसी की मौजूदगी का एहसास हुआ। डर के मारे उसने चारों ओर देखा और उसे काले घुंघराले बालों वाला, चश्मा पहने और चेहरे पर तिल लिए एक युवक दिखाई दिया। उसने नीले रंग का कोट पहना हुआ था जिसकी जेब पर कुछ लाल रंग का था—गुथरी थिएटर का ब्लेज़र। अचानक उसे एहसास हुआ कि वह रिचर्ड मिलर के भूत को देख रही है।

हालांकि, इसके दो साल बाद तक उस दुर्भाग्यशाली युवक के बारे में कोई नई खबर नहीं आई। क्या ऐसा हो सकता है कि उसे आखिरकार यह एहसास हो गया हो कि परलोक में उसके लिए कहीं बेहतर अवसर मौजूद हैं, और भले ही पृथ्वी पर उसका जीवन बहुत सफल न

रहा हो, आध्यात्मिक जीवन में प्रवेश करने से उसे वे सभी अवसर मिल सकते हैं जो पृथ्वी पर उसके जीवन में उसे नहीं मिले थे? खैर, अब मिनियापोलिस, मिनेसोटा के गुथरी थिएटर में गलियारों की अठारहवीं पंक्ति में सन्नाटा पसरा हुआ है।

*73

उत्तरी कैरोलिना के एक परिवार के भूतिया कारनामे

टोनी एस. एक सुशिक्षित युवती हैं, पेशे से मनोवैज्ञानिक हैं और एक बड़ी व्यावसायिक संस्था में काम करती हैं। वह दिवास्वप्न देखने या कल्पनाओं में खो जाने की आदी नहीं हैं। वह श्रीमती एलिजाबेथ के. की पुत्री हैं, या यूं कहें कि श्रीमती के. की दूसरी शादी से हुई संतान हैं। तीन बार शादी कर चुकीं श्रीमती के. उत्तरी कैरोलिना की उच्च मध्यमवर्गीय परिवार से हैं, एक प्रतिष्ठित सामाजिक महिला हैं जिन्होंने व्यापक यात्रा की है।

वे दोनों न तो समय बिताने के लिए ओइजा बोर्ड का इस्तेमाल करने वाली थीं और न ही यह मानने वाली कि दीवार पर पड़ने वाली हर परछाई भूत ही होती है। बिलकुल भी नहीं; लेकिन दोनों महिलाएं ईस्ट ला पोर्ट शहर में स्थित अपने पुराने घर में घटी घटनाओं से स्तब्ध रह गईं, जो बहुत पुरानी जमीन पर बना था।

लगभग पचास साल पहले बना यह घर श्रीमती के. के पिता के लिए बनाया गया था, जो उस समय एक बड़ी लकड़ी कंपनी के मालिक थे। घर के चारों ओर फैला लकड़ी का क्षेत्र ब्लू रिज पार्कवे के पार तक जाता था। निस्संदेह उसी स्थान पर पहले भी एक पुराना मकान रहा होगा, क्योंकि श्रीमती के. ने खुदाई में एक बहुत पुरानी इमारत के अवशेष खोजे हैं। लगभग पैंतीस साल पहले घर का जीर्णोद्धार किया गया और उस पर दूसरी मंजिल बनाई गई। उस समय, उनके पिता एक कार दुर्घटना में अपना एक पैर खो बैठे थे और लकड़ी मिल के काम से सेवानिवृत्त होकर ईस्ट ला पोर्टे चले गए, जहाँ वे अपने शेष वर्ष शांति और सुकून से बिताना चाहते थे। उन्हें वहाँ की जलवायु शुरू से ही पसंद थी और पास में ही एक आरा मिल भी थी, जिसकी देखरेख वे कर सकते थे। यह घर दो खानों वाला लकड़ी का ढांचा है, लगभग पचास-पचास वर्ग फुट का, जिसमें लगभग पंद्रह कमरे हैं।

श्रीमती के. का परिवार इसे ग्रीष्मकालीन कुटीर कहता था, हालाँकि यह एक पूरा घर था; लेकिन उनके पास अन्य घर भी थे जहाँ वे समय-समय पर जाते थे, और ईस्ट ला पोर्ट का घर उनकी छोटी संपत्तियों में से एक था। नीचे की मंजिल पर तीस फुट गुणा पंद्रह फुट का एक स्वागत कक्ष है, जिसमें फर्नेस क्रीक से प्राप्त शाहबलूत की लकड़ी का शानदार कालीन बिछा है, फर्नेस क्रीक परिवार के स्वामित्व वाली आरा मिलों में से एक थी। इसी कमरे में श्रीमती के. के. के पिता का अंत हुआ था।

यह घर पूरी तरह से परिवार के आरा मिलों में उत्पादित लकड़ी से बना है। नीचे की मंजिल पर एक केंद्रीय हॉल और तीस फुट के दो कमरे थे, फिर तीन छोटे कमरे, एक स्नानघर, एक कार्ड रूम और जिसे परिवार 'सोने का बरामदा' कहता था, थे। केंद्रीय हॉल के दूसरी ओर एक लाउंज, एक रसोईघर और एक कपड़े धोने का बरामदा था। घर की दक्षिण और पूर्व की दीवारों के साथ-साथ एक बरामदा बना हुआ है। ऊपर की मंजिल पर जाने के लिए बीच में बनी सीढ़ियों से धीरे-धीरे ऊपर चढ़ना पड़ता है, और जैसे-जैसे आप सीढ़ियाँ चढ़ते हैं, सबसे ऊपर एक शयनकक्ष है। सीढ़ियों के पीछे दो और शयनकक्ष हैं, फिर एक स्नानघर और अंत में एक भंडार कक्ष है; सीढ़ियों के बाईं ओर तीन शयनकक्ष हैं।

अटारी केवल छत को सहारा देने वाली संरचना है, इसमें कोई कमरे नहीं हैं। तहखाना तो है, लेकिन उसमें केवल एक भट्टी है। यद्यपि घर के चारों ओर का क्षेत्रफल लगभग साठ एकड़ है, लेकिन घर का अपना हिस्सा केवल तीन एकड़ का है। घर के चारों ओर आज भी केवल जंगल ही जंगल है, और निकटतम शहर, ईस्ट ला पोर्टे तक जाने के लिए कार की आवश्यकता होती है।

श्रीमती के. को यात्रा करना बहुत पसंद था और उन्हें कई घरों में रहने में कोई आपत्ति नहीं थी; वास्तव में, वह ईस्ट ला पोर्ट स्थित घर को अपने जीवन का एक पड़ाव मात्र मानती थीं। उनका जन्म अलास्का में हुआ था, जहाँ उनके परिवार की एक आरा मिल भी थी। उनके शुरुआती साल अपने माता-पिता के साथ व्यापारिक यात्राओं पर एक आरा मिल से दूसरी आरा मिल जाते हुए बीते।

इन परिस्थितियों में, वे ईस्ट ला पोर्टे स्थित उस घर में कभी भी लंबे समय तक नहीं रह पाए। जिस ज़मीन पर वह घर बना था, उसके इतिहास के बारे में जानने के सभी प्रयास व्यर्थ साबित

हुए। यह चेरोकी क्षेत्र था, लेकिन चेरोकी लोगों के आने से पहले के समय का लिखित इतिहास बहुत कम मिलता है। श्रीमती के. जिस माहौल में पली-बढ़ीं, वहाँ भौतिक घटनाओं से जुड़ी किसी भी बात पर चर्चा नहीं होती थी।

श्रीमती के. को घर में पहली बार कुछ अजीब तब महसूस हुआ जब उनके पिता का देहांत हो गया था। उनकी माँ का निधन उनके बचपन में ही हो गया था, इसलिए वे अपने पिता के बहुत करीब थीं। उस दिन, वे घर के उस हिस्से में अपने पिता की मेज पर बैठी थीं जहाँ उनके पिता का देहांत हुआ था। कमरे का फर्नीचर उलट-पुलट कर रखा गया था और मेज उस जगह पर थी जहाँ पहले उनके पिता का पलंग हुआ करता था। उनके मन में अपने पिता की यादें थीं, इसलिए उन्हें लगा कि यह सब उनकी कल्पना है, तभी उन्हें दालान में किसी के बैसाखी के सहारे चलने जैसी एक विशिष्ट आवाज़ सुनाई दी।

श्रीमती के. को यह बात पक्के तौर पर पता थी कि उस समय घर में सिर्फ़ वही थीं, इसलिए उन्हें एहसास हुआ कि कुछ असामान्य हो रहा है। जैसे-जैसे कदमों की आहट नज़दीक आती गई, उन्होंने अपने पिता के कदमों को पहचान लिया। फिर उन्होंने अपने पिता की जानी-पहचानी आवाज़ सुनी, "बेबी।" यह आवाज़ दरवाज़े की तरफ से आ रही थी। इससे उन्हें बहुत शांति मिली, क्योंकि वह अपने जीवन में भावनात्मक उथल-पुथल से परेशान थीं। उन्हें लगा कि उनके दिवंगत पिता उन्हें सांत्वना दे रहे हैं और उन्हें आध्यात्मिक शक्ति प्रदान कर रहे हैं।

लगभग एक साल बाद तक कुछ नहीं हुआ। अगस्त का महीना था और वह कुछ समय से न्यूयॉर्क में रह रही थी। घर की सीढ़ियों से उतरते समय, वह पूरी तरह से लिली की खुशबू से घिर गई। उसने कोई इत्र नहीं लगाया था और अगस्त में लिली खिलती भी नहीं थी। आसपास कोई नहीं था, फिर भी श्रीमती के. को किसी की उपस्थिति का अहसास हुआ, हालांकि उन्हें पूरा यकीन था कि वह उपस्थिति सौम्य और प्रेमपूर्ण थी।

कुछ देर बाद, वह ऊपर अपने पिता के अध्ययन कक्ष में एक डेस्क पर बैठी थी, और कुछ खास सोच नहीं रही थी। तभी उसे कदमों की आहट सुनाई दी, लेकिन इस बार कदम हल्के थे, और निश्चित रूप से उसके पिता के नहीं थे। बिना सोचे समझे उसने अपनी बेटी को पुकारा, "ओह, टोनी, क्या तुम हो?" और उसे बताया कि वह ऊपर है।

लेकिन तभी कदमों की आहट रुक गई और कोई नहीं आया। हैरान होकर श्रीमती के. सीढ़ियों के सिरे पर गईं, फिर से आवाज लगाई, लेकिन जब उन्होंने किसी को नहीं देखा, तो उन्हें एहसास हुआ कि सीढ़ियों पर चलने वाला कोई इंसान नहीं था।

उसी महीने के दौरान, श्रीमती के. की बेटी टोनी भी घर पर थी। अदृश्य शक्तियों से उसका पहला सामना उसी महीने, ऊपर के एक बेडरूम में हुआ।

एक रात वो सो रही थी कि किसी ने उसे ज़ोर से हिलाया और कहा, "अरे, तुम!" डर के मारे उसने आँखें नहीं खोलीं, लेकिन अपने अंतर्मन में उसे लगभग पचास साल का एक आदमी दिखाई दिया। वो इतनी डरी हुई थी कि देख नहीं पाई, इसलिए उसने चादर के नीचे छिपकर आँखें बंद कर लीं। वहाँ सिर्फ़ रोशनी ही दिखाई दे रही थी।

उसी साल पतझड़ के मौसम में, टोनी ने पायजामा पार्टी करने का फैसला किया और दोस्तों के एक समूह के साथ रात बिताई। उसकी माँ सर्दी लगने के कारण सो गई थी। टोनी और उसके दोस्त लगभग 11:30 बजे बॉलिंग खेलकर घर लौटे। वे नीचे बैठकर तरह-तरह की बातें कर रहे थे, तभी अचानक टोनी की एक सहेली ने कहा, "तुम्हारी एक और सहेली तुम्हें बुला रही है।"

टोनी गलियारे में निकली और सीढ़ियों की ओर बढ़ते हुए उसने लाइट जला दी। सीढ़ियों से कदमों की आहट सुनाई दे रही थी, जो न केवल उसे बल्कि उसके पीछे घर में आई उसकी दोनों सहेलियों को भी सुनाई दे रही थी। तभी अचानक उन्हें कहीं से एक आवाज़ सुनाई दी, "टोनी, सोने का समय हो गया है।" टोनी ने ऐसी आवाज़ पहले कभी नहीं सुनी थी।

वह सीढ़ियों से ऊपर चढ़कर अपनी मां के कमरे में गई, लेकिन उसकी मां गहरी नींद में सो रही थी और बिस्तर से उठी नहीं थी। आवाज एक महिला की थी, लेकिन वह अजीब तरह से खाली-खाली सी लग रही थी, मानो कोई उससे बहुत दूर से बात कर रहा हो।

अगले वर्षों में, टोनी की शादी हो गई और वह घर छोड़कर चली गई। इन परिस्थितियों में, श्रीमती के. ने घर का एक हिस्सा किराए पर देने का फैसला किया। यह किराएदार एलिस एच. नाम की एक मिलनसार महिला और उसका पति निकला। एलिस एच. घायल हो गई थी और पहाड़ पर ज़्यादा दूर तक नहीं जा सकती थी, जहाँ वह और उसका पति उस समय गर्मियों का घर बना रहे थे। हालाँकि श्रीमती के. और उनके नए किराएदारों का आपस में कोई संबंध नहीं

था, सिवाय इसके कि वे एक ही घर में रह रहे थे, फिर भी कुछ समय बाद श्रीमती के. और एलिस एच. के बीच दोस्ती हो गई। एक दोपहर, एलिस एच. श्रीमती के. के अपार्टमेंट में उन्हें और उनके पति को उस रात रात के खाने पर आमंत्रित करने आई। उसे पता था कि श्रीमती के. उस समय अपने अपार्टमेंट में ही थीं क्योंकि उसने अपार्टमेंट के अंदर उनके हल्के कदमों की आहट सुनी थी। जब अपार्टमेंट के अंदर से कोई जवाब नहीं आया तो एलिस हैरान रह गई, इसलिए वह नीचे भूतल पर गई, यह सोचकर कि शायद श्रीमती के. नीचे हों।

जैसे ही वह नीचे पहुँची, उसने गलियारे में श्रीमती के. की परछाई देखी। वह उस परछाई का पीछा करते हुए भूतल के अतिथि कक्ष से होते हुए स्नानघर से श्रीमती के. के शयनकक्ष तक गई, फिर दूसरे गलियारे से होते हुए वापस शयनकक्ष तक पहुँची। जब तक वह उस परछाई को देखती रही, उसे हल्के कदमों की आहट भी सुनाई देती रही। लेकिन जब वह फिर से शयनकक्ष में पहुँची, तो अचानक बहुत ठंड हो गई और उसे लगा जैसे उसका सारा खून सिर में चढ़ गया हो। वह दौड़कर अपने अपार्टमेंट में अपने पति के पास गई और उन्हें बताया कि श्रीमती के. के कमरे में कोई अजनबी है।

लेकिन उस समय घर में उनके अलावा कोई नहीं था, क्योंकि श्रीमती के. दिनभर के लिए एशविले गई हुई थीं। इस घटना ने ऐलिस एच. को इतना झकझोर दिया कि वह उस घर में और नहीं रह सकीं और कुछ ही समय बाद वह और उनके पति एक दूसरे कॉटेज में चले गए।

उसी वर्ष अगस्त में टोनी एस. अपनी माँ के घर लौटी। लेकिन अब वह शादीशुदा थी और केवल मिलने आई थी। उसका पति कार व्यापारी था और अपने पिता के साथ व्यापार करता था। घटना के समय वह घर में नहीं था। बाहर बारिश हो रही थी और टोनी घर में लकड़ी के काम की सफाई कर रही थी।

अचानक उसका पेकिनीज़ कुत्ता डर के मारे बेहाल होकर सीढ़ियों से नीचे भागा और ज़ोर-ज़ोर से भौंकने लगा। टोनी को लगा कि कुत्ता चूहे से डर गया है, इसलिए उसने उसे गोद में उठाया और सीढ़ियों से ऊपर जाने लगी। लेकिन कुत्ता उससे छूटकर दरवाज़े के पीछे भाग गया। अचानक टोनी को बहुत ठंड लगने लगी। वह गलियारे से होते हुए उस कमरे में गई, जहाँ खिड़की के पास एक मेज़ रखी थी। कोई उस मेज़ पर रखे कागज़ों को ऐसे उलट-पुलट कर रहा था जैसे कोई खास कागज़ ढूंढ रहा हो, कागज़ों को एक तरफ रख रहा था और फिर

उन्हें इधर-उधर कर रहा था! लेकिन वहाँ कोई नहीं था। मतलब, कोई दिखाई नहीं दे रहा था। फिर भी कागज़ ऐसे हिल रहे थे जैसे कोई सचमुच उन्हें उलट-पुलट कर रहा हो। दोपहर के 2 बज रहे थे और रोशनी अच्छी थी।

अचानक, मेज पर रखे कागजों के ढेर में से एक पत्र निकाला गया, मानो उसका ध्यान खींचने के लिए। टोनी ने उसे उठाया और पढ़ा। यह पत्र उसके पिता ने उसे फरवरी में भेजा था, जब उसकी शादी हुई थी। इसमें उन्होंने उसे चेतावनी दी थी कि यह शादी शायद कामयाब न हो और अगर कुछ भी गड़बड़ हो तो उन्हें फोन करना। तब से हालात बिगड़ते चले गए थे और टोनी को अब समझ आ गया था कि उसने अभी-अभी जो देखा है उसका क्या महत्व है।

ठीक उसी क्षण, कमरा फिर से गर्म हो गया और सब कुछ सामान्य हो गया। लेकिन उसकी मेज पर कौन खड़ा था, जो उसके पिता का पत्र निकाल रहा था? एकमात्र व्यक्ति जो उसके जीवित रहते हुए उसके सबसे करीब था, वह उसके दादाजी थे।

टोनी के घर में रहने के दौरान, उसके पति (जो अब उसका पूर्व पति है) को भी कुछ अजीबोगरीब अनुभव हुए। कोई उसे आधी रात को "उठो!" या "अरे तुम!" कहकर जगा देता था। यह सिलसिला रात-दर-रात चलता रहा, जब तक कि टोनी और उसके पति दोनों सुबह करीब दो बजे ज़ोर-ज़ोर से हंसने की आवाज़ से जाग नहीं गए, मानो नीचे कोई बड़ी पार्टी चल रही हो।

टोनी को लगा कि पड़ोसी पार्टी कर रहे हैं, और उसने नीचे जाकर उन्हें चुप कराने का फैसला किया। उसने खिड़की से बाहर देखा तो पाया कि पड़ोसी भी गहरी नींद में सो रहे थे। इसलिए उसने अपने कुत्ते को उठाया और नीचे चली गई, और जैसे ही वह सीढ़ियों के नीचे पहुँची, उसे एक अजीब सी रोशनी दिखाई दी, और हँसी की आवाज़ लगातार आती रही। कई आवाज़ें आ रही थीं, मानो बहुत सारे लोग एक साथ बातें कर रहे हों, कोई सामाजिक समारोह कर रहे हों। गुस्से में टोनी ने उन्हें चुप रहने के लिए कहा, क्योंकि वह सोना चाहती थी, और अचानक घर में सन्नाटा छा गया, जैसे कब्र में सन्नाटा। ज़ाहिर है, दक्षिणी भूतों में अच्छे शिष्टाचार होते हैं!

बेटी के चले जाने के बाद, श्रीमती के. ने घर का एक हिस्सा पास के विश्वविद्यालय में पढ़ने वाले एक राष्ट्रीय बिरादरी के कुछ युवकों को किराए पर देने का फैसला किया। उन युवकों में से एक, मिशेल, एक डबल बेड पर सो रहा था और घर में बिल्कुल अकेला था। चूंकि हीटर चालू

नहीं था, क्योंकि वह काफी महंगा था, इसलिए उसने स्लीपिंग बैग में सोने का फैसला किया और इस तरह खुद को गर्म रखा। वह तकिया बिस्तर के सिरहाने पर रखकर सोया, जिसका मतलब था कि उसका सिर पूरब की ओर था और पैर पश्चिम की ओर। जब वह जागा, तो उसने खुद को उल्टी दिशा में पाया, उसका सिर वहाँ था जहाँ पैर होने चाहिए थे, और इसके विपरीत। हालांकि, इससे उस युवक को आश्चर्य नहीं हुआ, क्योंकि जिस दिन से उसके बिरादरी के साथी घर में आए थे, उन्होंने किसी अनदेखे व्यक्ति के सीढ़ियों पर ऊपर-नीचे चलने की आवाजें सुनी थीं।

उनके शिक्षकों में से एक, जो कोरियाई युद्ध में कर्नल रह चुके एक पायलट थे, का भी उस घर में एक अनोखा अनुभव रहा। एक दिन जब वे वहाँ रह रहे थे, वे सीढ़ियाँ चढ़ रहे थे, और जब वे लगभग आधी सीढ़ियाँ चढ़ चुके थे, तो किसी ने उन्हें गर्दन से पकड़कर ऊपर धकेल दिया और बाकी की सीढ़ियाँ नीचे तक ले गया।

लेकिन यादगार रात हैलोवीन की पूर्व संध्या थी। श्रीमती के. घर में थीं, और रात अपने नाम के अनुरूप ही थी: ऐसा लग रहा था मानो हथकड़ी पहने कोई इधर-उधर घूम रहा हो। श्रीमती के. नीचे एक बंक बेड पर सो रही थीं, तभी ऊपर के हॉल से एक आवाज़ आई। यह आवाज़ लगभग दो घंटे तक लगातार आती रही। ऐसा लग रहा था मानो कोई लंगड़ा व्यक्ति भारी जंजीर घसीटते हुए खुद को आगे बढ़ा रहा हो। श्रीमती के. इस बात से हैरान थीं, क्योंकि यह आवाज़ उनके पिता की आवाज़ से बिल्कुल अलग थी। उन्होंने उस इलाके के बारे में जानकारी जुटाई और पता चला कि औपनिवेशिक काल से पहले, उस क्षेत्र में कुछ स्पेनिश बसने वाले लोग थे, जिनमें से अधिकांश गुलाम रखते थे।

टोनी एस. भूत-प्रेतों से जुड़े अपने अनुभवों को सहजता से लेती हैं। उन्हें बचपन से ही मानसिक अनुभूतियाँ होती रही हैं; आप समझ रहे हैं, कुछ डरावना नहीं, बस ऐसी बातें जो असल में घटित होने से पहले ही उन्हें महसूस हो जाती हैं—जैसे कि परिवार में किसी के बीमार होने की आशंका या किसी के फोन आने की सूचना। पुराने घरों में प्रवेश करना उनके लिए हमेशा जोखिम भरा होता है: उन्हें अतीत की कंपन महसूस होती है, और कभी-कभी तो वे अपनी अनुभूतियों को सहन नहीं कर पातीं और तुरंत वहाँ से निकल जाती हैं।

लेकिन जब वह काम करने के लिए न्यूयॉर्क आई तो उसे लगा कि उसने भूत-प्रेत से जुड़ी रहस्यमयी घटनाओं को पीछे छोड़ दिया है। लेकिन किसी तरह वे एक ऐसे घर में रहने लगे जो एक सौ दस साल पुराना है।

कुछ समय बाद, उसे एक बूढ़े आदमी का आभास हुआ जो उसके बिस्तर पर बैठना पसंद करता था। वह उसे देख तो नहीं सकती थी, लेकिन वह उसे एक परछाई की तरह दिखाई देता था। इसलिए उसने कुछ सवाल पूछे, लेकिन उस अपार्टमेंट में कभी किसी की मौत नहीं हुई थी और टोनी के लिए इन परिस्थितियों में इस घटना की वास्तविकता को स्वीकार करना मुश्किल था। एक प्रशिक्षित मनोवैज्ञानिक होने के नाते, उसे इस सब पर संदेह करना पड़ा, फिर भी उसे कोई तार्किक उत्तर नहीं मिल रहा था।

कुछ ही देर बाद, उसे उन जगहों पर कदमों की आहट सुनाई देने लगी जहां कोई नहीं चल रहा था, और दरवाजे अपने आप बंद होने लगे, जिसके साथ ही कमरों में किसी और व्यक्तित्व की उपस्थिति का निश्चित अहसास भी हुआ।

ऊपर वाले फ्लैट में सत्रह साल से रह रहे पूर्व पड़ोसियों से पूछताछ करने पर टोनी को पता चला कि उन्होंने भी कदमों की आहट और दरवाजों के अपने आप बंद होने की आवाज सुनी थी। हालांकि, उन्हें भूतों पर विश्वास नहीं था और उन्होंने इसे पुरानी इमारत के बैठने की सामान्य समस्या मानकर टाल दिया। टोनी ने अपनी सहज मानसिक शक्तियों का प्रयोग किया और उम्मीद की कि घर में रहने वाला भूत उससे संवाद करेगा। उसे महसूस होने लगा कि वह एक बहुत ही सशक्त व्यक्तित्व वाली महिला है। कई संभावनाओं को ध्यान में रखते हुए, टोनी इस निष्कर्ष पर पहुंची कि घर की मूल मालकिनों में से आखिरी, श्रीमती ए., जो तंत्र-मंत्र की छात्रा थीं, ही एकमात्र ऐसी व्यक्ति हो सकती हैं जिनकी उपस्थिति उसे कमरों में महसूस हो रही थी।

टोनी को भूत के साथ कमरा साझा करने में कोई आपत्ति नहीं थी, सिवाय इसके कि घर के उपकरण बिना किसी कारण के खराब हो जाते थे। इसके अलावा, उसे अपने कुछ दोस्तों से भी परेशानी थी; वे बेहद असहज और ठंड महसूस करने की शिकायत करते थे, और कहते थे कि कोई अदृश्य शक्ति उन्हें देख रही है। वह क्या करती? तभी टोनी को याद आया कि कैसे उसने उत्तरी कैरोलिना के ईस्ट ला पोर्ट में डरावने अनुभवों का सामना किया था और किसी

तरह वहाँ के भूतों से तालमेल बिठा लिया था। लॉन्ग आइलैंड का कोई साधारण भूत उसे परेशान नहीं कर सकता था!

इसी दृढ़ संकल्प के साथ, टोनी ने यथासंभव उस उपस्थिति को नजरअंदाज करने और अपने दैनिक जीवन के काम में लग जाने का फैसला किया।

*74

रीबा के भूत

रीबा बी. एक संवेदनशील, नाजुक दिखने वाली महिला हैं, जिनके दो वयस्क बच्चे हैं। उनका जन्म केंटकी में हुआ था और वे एक पुराने परिवार से आती हैं, जिसमें रीबा नाम पहले भी कई बार आ चुका है। वे एक मेडिकल सेक्रेटरी और डॉक्टर की सहायक के रूप में काम करती हैं और आजकल अपने बच्चों के चले जाने के बाद तीन बिल्लियों के साथ घर में रहती हैं। तलाकशुदा श्रीमती बी. सोचती हैं कि क्या भूतों के प्रति उनका कोई विशेष लगाव है, क्योंकि उन्होंने कई घरों में कई बार परलोक के प्राणियों का सामना किया है। ऐसा नहीं था कि इससे उन्हें कोई खास परेशानी होती थी, लेकिन वे अपनी बिल्लियों के अलावा अकेले रहने की आदी हो चुकी थीं और ऐसे लोगों के साथ घर साझा करने का विचार, जो अपनी मर्जी से कभी भी आ-जा सकते हैं और कभी-कभी उनके आसपास मंडरा सकते हैं जब वे उन्हें देख नहीं सकतीं, उन्हें सुकून नहीं देता था।

उसकी मानसिक क्षमता तीन साल की उम्र से ही मौजूद है, जब वह केंटकी में अपने दादा-दादी के साथ रहती थी। तब भी उसे अपने चारों ओर किसी की मौजूदगी का गहरा एहसास होता था, हालांकि वह उन्हें अपनी आँखों से नहीं देख पाती थी। यह उसके चारों ओर मौजूद अदृश्य शक्तियों के प्रति एक संवेदनशीलता थी—और यह एहसास कि वह कभी पूरी तरह अकेली नहीं थी। बचपन में जैसे ही वह सोने जाती, उसे एक अनजान आदमी की आकृति अपने ऊपर झुकी हुई दिखाई देती। लंबे समय तक ऐसा होने पर उसे आश्चर्य हुआ कि क्या वह सपना देख रही है, लेकिन दिल ही दिल में वह जानती थी कि वह सपना नहीं देख रही है। हालांकि, वह इतनी छोटी थी कि ऐसी बातों की चिंता नहीं करती थी, और जैसे-जैसे वह बड़ी

हुई, उसकी यह क्षमता उसके व्यक्तित्व का हिस्सा बन गई, और उसने इसे "सामान्य" मान लिया।

यह घटना तब शुरू होती है जब वह सिनसिनाटी में रह रही थीं, और दोनों का पहले ही तलाक हो चुका था। उनकी मां उनके साथ एक पुराने घर में रहती थीं, जो लगभग 1900 में बना था; इसमें विक्टोरियन युग के बाद की सभी विशेषताएं थीं: पीतल के दरवाज़े के हैंडल, हाथ से घुमाई जाने वाली छोटी घंटियाँ, और उस युग की अन्य साज-सज्जा। घर तीन मंजिला था; भूतल पर एक अपार्टमेंट था, और दोनों महिलाएं दूसरी और तीसरी मंजिल पर रहती थीं। रीबा का शयनकक्ष तीसरी मंजिल पर था; यह वहाँ का एकमात्र शयनकक्ष था जो मंजिल के बीचोंबीच स्थित था।

एक दिन वह सीढ़ियों से ऊपर आ रही थी और खिड़की के पास पहुँचते ही उसने एक आदमी को वहाँ खड़ा देखा। जैसे ही वह करीब आई, वह आदमी गायब हो गया, और उसने कुछ दिनों तक इस बारे में और नहीं सोचा। उस समय वह संयोग से बिस्तर पर लेटी हुई थी, सहारा लेकर एक किताब पढ़ रही थी।

उसने ऊपर देखा तो उसे एक आदमी सीढ़ियों से ऊपर आता हुआ दिखाई दिया। उसने उसके चेहरे के हाव-भाव पर पूरा ध्यान दिया: उसकी आँखें भूरी थीं और उसके बाल भी भूरे थे। तुरंत ही उसे एहसास हो गया कि वह बहुत दुखी, बल्कि क्रोधित था। उसने उसकी आवाज़ तो नहीं सुनी, लेकिन किसी तरह उसके विचार सीधे उस तक पहुँच गए, मानो मन ही मन।

अपने बिस्तर से वह उसे आते हुए देख सकती थी, वह एक छोटी सी जगह पर चलकर उसके दरवाजे के सामने खड़ा हो गया। उसके कमरे के बगल में एक भंडार कक्ष था। उसने सीधे रीबा की ओर देखा, और उस क्षण रीबा को लगा कि वह बहुत गुस्से में है क्योंकि वह और उसकी माँ उस घर में थीं, क्योंकि वे उसके घर में रहने आ गई थीं।

हालाँकि रीबा बी. पूरी तरह से होश में थी और उसे सब कुछ पता था, फिर भी उसने इस बात को मानने से इनकार कर दिया कि वह किसी भूत के विचार सुन रही है। पर इसका कोई फायदा नहीं हुआ; बार-बार उसे भूत की आवाज़ सुनाई दे रही थी, “बाहर जाओ, बाहर जाओ, मैं तुम्हें यहाँ से बाहर चाहता हूँ।” उसी क्षण उसने अपना हाथ उठाया और बाहर की ओर इशारा किया, मानो अपनी बात पर ज़ोर दे रहा हो। अगले ही पल वह गायब हो गया। रीबा ने

एक पल सोचा कि क्या उसे अपनी माँ को बताना चाहिए, जिनका कमरा नीचे था। उसने ऐसा न करने का फैसला किया, क्योंकि उसकी माँ को दिल की बीमारी थी और वह खुद भी इस घटना के पूरी तरह सच होने को लेकर आश्वस्त नहीं थी। साथ ही, वह थोड़ी डरी हुई थी और इस घटना को ज़रूरत से ज़्यादा याद नहीं करना चाहती थी। थोड़ी देर बाद, वह सो गई।

इसके कुछ ही समय बाद, उनकी चौदह वर्षीय बेटी और ग्यारह वर्षीय बेटा स्कूल से घर आए हुए थे। सप्ताहांत था और वह चाहती थीं कि बच्चे इसका आनंद लें। इसलिए उन्होंने अपने भूतिया अनुभव के बारे में उन्हें कुछ नहीं बताया। वह सामने वाले स्टोर रूम में गई थीं, जहाँ उन्हें लगा कि स्टोर रूम में रखे बक्सों पर कोई बैठा है।

पहले तो उसने इस बात को मानने से इनकार कर दिया और नज़रें हटाने की कोशिश की, लेकिन जब उसकी नज़रें वापस उस तरफ गईं, तो वह आदमी अभी भी वहीं बैठा था और चुपचाप उसे घूर रहा था। उसने फिर से अपना सिर घुमाया, और जब उसने वापस देखा, तो वह जा चुका था। अगले सप्ताहांत, उसके बच्चे फिर से उसके साथ थे। उनके पहुँचते ही उसकी बेटी उसी भंडारगृह से लौटी और पूछा, "माँ, क्या वहाँ कोई बैठा है?" रीबा बस सिर हिलाकर हाँ में जवाब दे सकी। फिर उसकी बेटी ने उस अजनबी का वर्णन किया और वर्णन उसकी माँ द्वारा देखे गए व्यक्ति से मेल खाता था। इन परिस्थितियों में, रीबा बी. ने अपने बच्चों से इस मामले पर खुलकर चर्चा की। लेकिन इस मामले में आगे कुछ नहीं किया गया, और घर के बारे में कोई पूछताछ नहीं की गई।

ग्रीष्म ऋतु आई, फिर वसंत ऋतु और फिर ग्रीष्म ऋतु, और उन्हें घर के किनारे वाले प्रवेश द्वार का उपयोग करने की आदत पड़ गई। उस क्षेत्र में कुछ झाड़ियाँ थीं, और अपने अपार्टमेंट में प्रवेश करने के लिए उन्हें सीढ़ियाँ चढ़नी पड़ती थीं, जहाँ उनके पास दो विकल्प होते थे: या तो दूसरी मंजिल पर स्थित बैठक कक्ष में जाना, या तीसरी मंजिल पर जाना जहाँ रीबा का शयनकक्ष था। भूतल पर रहने वाले किरायेदार का भी अपना अलग प्रवेश द्वार था।

एक सुहावनी गर्मी की शाम, अचानक उसे महसूस हुआ कि कोई अजनबी नीचे के दरवाजे से अंदर आया और सीढ़ियों से ऊपर चला गया। जब वह देखने गई, तो उसे कुछ भी दिखाई नहीं दिया। फिर भी, उसे पता था कि वह घर में है। कुछ दिन बीत गए, और फिर से उसे आसपास भूत का आभास हुआ। उसने देखा, और जैसे ही उसकी नज़र नीचे दालान में पड़ी, उसने उसे

दालान में अपनी ओर आते हुए देखा। वह सोच रही थी, "मैं यह सब कल्पना कर रही हूँ, भूत जैसी कोई चीज़ नहीं होती," फिर भी वह धीरे-धीरे उसकी ओर बढ़ने लगी। जैसे-जैसे वह उसके करीब आता गया, वह उसके आर-पार निकल गई! यह एक अजीब सा एहसास था: एक पल के लिए वह देख नहीं पाई, और फिर वह गायब हो गया। इस घटना ने रीबा को अपना धैर्य बनाए रखने में मदद नहीं की, लेकिन वह कुछ कर भी नहीं सकती थी।

कई बार उसे बिना देखे ही घर में उसकी मौजूदगी का एहसास हो जाता था, लेकिन एक रविवार की शाम, जैसे ही अंधेरा होने लगा, उसने खुद को घर की दूसरी मंजिल पर बने बैठक कक्ष में पाया। उसने टीवी चालू कर दिया था, जो उसके सामने रखा था, और उसने आवाज़ धीमी रखी थी ताकि उसकी माँ को परेशानी न हो, जिनका कमरा उसी मंजिल पर था। उसने कमरे का फर्नीचर थोड़ा बदल दिया था ताकि वह टीवी के करीब बैठ सके, और वहाँ दो लाउंज कुर्सियाँ थीं, जिनमें से एक पर वह बैठी थी, और दूसरी टीवी के पास ही रखी थी, ताकि कोई दूसरा व्यक्ति भी उस पर बैठकर स्क्रीन देख सके। वह टीवी देख ही रही थी कि तभी उसे महसूस हुआ कि अजनबी फिर से सीढ़ियों से ऊपर आया और बैठक कक्ष में चला गया। फिर वह रीबा के पास वाली खाली कुर्सी पर बैठ गया, लेकिन इस बार का माहौल उसके कमरे के दरवाजे के पास हुई पहली मुलाकात से अलग था। वह ज़्यादा शांत और सहज लग रहा था, और रीबा को लगभग खुशी हुई कि वह वहाँ उसका साथ दे रहा है। उसे कहीं न कहीं लगा कि वह उसके साथ कमरे में आकर खुश है, और उसकी वजह से उसका अकेलापन कम हो गया है। अब वह क्रोधित नहीं था; वह बस मिलने आना चाहता था।

रीबा ने अजनबी के चेहरे को देखा और उसकी ऊँची नाक पर ध्यान दिया। उसे उसके कपड़ों को भी गौर से देखने का मौका मिला; उसने भूरे रंग का सूट पहना हुआ था, जो आधुनिक शैली का लग रहा था। हालाँकि घर काफी पुराना था, लेकिन यह आदमी शुरुआती दौर का नहीं था, फिर भी उसके कपड़ों से ऐसा लग रहा था जैसे वह हाल ही का हो। जब वह चुपचाप बैठकर भूत को देख रही थी, तो उसे यह आभास हुआ कि वह कभी इस घर का मालिक था, और उनका बैठक कक्ष ही वह कमरा था जहाँ भूत और उसकी पत्नी लोगों से मिलते-जुलते थे।

रीबा को किसी तरह यह एहसास था कि उसकी पत्नी बेहद खूबसूरत थी—गोरी रंगत वाली सुनहरे बालों वाली। उसे बैठक में एक चिमनी दिखाई गई, जिसके बगल में फ्रेंच प्रोविंशियल

शैली का एक छोटा सा सोफा रखा था, जो चिमनी से काफी सटा हुआ था। उसने यह दृश्य अपनी कल्पना में देखा, मानो वह आदमी उसे अपने अतीत की कोई बात दिखा रहा हो। साथ ही, रीबा को यह भी पता था कि भूत और उसकी पत्नी के बीच कोई दुखद घटना घटी थी।

अचानक, रीबा में दहशत फैल गई, जब उसे एहसास हुआ कि वह एक भूत के साथ शाम बिता रही है। किसी तरह उसके डर ने उसके प्रेत-आगंतुक को भी अपनी चपेट में ले लिया, क्योंकि जब उसने करीब से देखा, तो वह गायब हो गया था।

उसने इन बातों को अपनी माँ से छिपाने की बहुत कोशिश की, लेकिन वह ऐसा नहीं कर सकी। उसकी माँ के पास चाँदी का बना एक पुराना ढक्कन वाला बर्तन था, जिसे वह अपने पलंग के सिरहाने रखती थी। पलंग एक किताबों की अलमारी जैसा था, और वह जब चाहे ढक्कन उठाकर रसीदें, टिकट और कागज़ात उसमें रख देती थी।

एक दिन, रीबा और उसकी माँ दूसरी मंज़िल पर स्थित उसके शयनकक्ष के बिल्कुल आखिरी छोर पर थीं। उसका पलंग दीवार से सटा हुआ था, उसके और दीवार के बीच कोई जगह नहीं थी। जब दोनों महिलाएँ पलंग की ओर देख रही थीं, तभी अचानक उन्होंने देखा कि चाँदी का बर्तन उठाया गया, पलंग पर रखा गया, उल्टा कर दिया गया और उसमें से सब कुछ बाहर गिर गया। वह हवा में नहीं उड़ा, बल्कि धीरे-धीरे हिल रहा था, मानो कोई अदृश्य शक्ति उसे थामे हुए हो। हालाँकि उसकी माँ ने यह सब देखा था, लेकिन उन्होंने कुछ नहीं कहा क्योंकि उन्हें लगा कि बेटी को डराना ठीक नहीं होगा; लेकिन बाद में उन्होंने स्वीकार किया कि उन्होंने यह सब देखा था। यह विडंबना ही थी कि दोनों महिलाएँ एक-दूसरे की भावनाओं को ठेस न पहुँचाने की कोशिश कर रही थीं—फिर भी दोनों जानती थीं कि उन्होंने जो देखा था वह सच था।

बैठक कक्ष में उस नाटकीय घटना के बाद भूत फिर कभी दिखाई नहीं दिया। लगभग एक साल बाद, दोनों महिलाएं इस घर से दूर एक दूसरे पुराने घर में रहने चली गईं। लेकिन उनके जाने से कुछ समय पहले, रीबा की माँ को सड़क पर एक अजनबी अधेड़ उम्र की महिला ने रोका और पूछा कि क्या वह सड़क के उस पार वाले घर में रहती हैं। जब रीबा की माँ ने हाँ कहा, तो महिला ने बताया कि वह घर कभी उनके माता-पिता का था। रीबा की माँ जानना चाहती थीं कि क्या वे उस घर में खुश थे। अजनबी ने उन्हें आश्वासन दिया, "बहुत खुश थे,

खासकर मेरे पिता।" रीबा को लगा कि शायद वही व्यक्ति था जिससे वह घर में मिली थी; कोई ऐसा व्यक्ति जो अपने घर से इतना जुड़ा हुआ था कि वह उसे किसी और के साथ साझा नहीं करना चाहता था, खासकर अपनी माँ और खुद जैसे इंसानों के साथ।

जिस नए घर में वे महिलाएं रहने आईं, वह भी अदृश्य कंपनों से भरा हुआ था, लेकिन अब उन्हें इसकी परवाह नहीं थी। रीबा को एहसास हुआ कि उसके पास एक विशेष वरदान है। अगर भूत उसका साथ चाहते थे, तो वह इसके बारे में कुछ खास नहीं कर सकती थी।

रीबा का एक दोस्त था, जिसका नाम जॉन एच. था और वह मोटरसाइकिल गश्ती दल में काम करता था। वह एक नौजवान था और पुलिस बल में सब उसे पसंद करते थे। एक दिन उसने एक तेज़ रफ़्तार वाहन चालक का पीछा किया और इस दौरान उसकी मौत हो गई। उस समय रीबा शादीशुदा थी, लेकिन वह जॉन को कई सालों से जानती थी। वे दोस्त थे, हालांकि बहुत करीबी नहीं थे, और रीबा का उससे कुछ समय से कोई संपर्क नहीं था। एक सुबह, उसे अचानक कमरे में उसकी मौजूदगी का एहसास हुआ; यह समझ से परे था, फिर भी उसे पूरा यकीन था कि वह जॉन एच. ही था। कुछ देर बाद, वह एहसास चला गया। उसने इस बारे में अपनी माँ को बताया, लेकिन बदले में उसे खाली नज़रें मिलीं। उस नौजवान की मौत पिछली रात ही हो चुकी थी, लेकिन रीबा को इसकी जानकारी नहीं हो सकती थी। खबर उसी सुबह रेडियो पर आई थी, लेकिन जाहिर तौर पर रीबा को पहले से ही किसी और तरह की खबर मिल गई थी।

रीबा बी. ने रहस्यमय विद्या में अपनी रुचि एक परिचित, समाचार प्रस्तुतकर्ता बिल जी. के साथ साझा की। पत्रकार होने के नाते, उन्हें ईएसपी जैसे संवेदनशील विषय पर अपनी राय व्यक्त करने में विशेष सावधानी बरतनी पड़ती थी। एक शाम वे एक स्थानीय रेस्तरां में मिले और किसी तरह बातचीत भूतों के विषय पर आ गई।

जब श्री जी ने देखा कि भूतों को देखने की क्षमता रखने वाले "चुने हुए" लोगों में से एक होने के कारण वह घबराई हुई है, तो उन्होंने उसे अपने एक दोस्त के बारे में बताया, जो एक युवा माध्यम थी और पास ही में एक अपार्टमेंट में रहती थी। एक शाम वह अपने आँगन में निकली और उसने पुराने ज़माने के कपड़े पहने एक आदमी को अपनी ओर आते देखा। उस आदमी ने उससे बात करने की कोशिश की, लेकिन वह कुछ भी नहीं सुन पाई। अचानक वह उसकी

आँखों के सामने से गायब हो गया। युवती को लगा कि उसे मानसिक आघात लगा है और उसने एक मनोचिकित्सक से सलाह ली; उसने अस्पताल जाकर अपनी जाँच भी करवाई, लेकिन उसमें कोई समस्या नहीं पाई गई। जब वह घर लौटी और फिर से आँगन में गई, तो उसने उसी भूतिया आकृति को फिर से देखा। इस बार वह घबराई नहीं, बल्कि उसे ध्यान से देखने लगी। जब वह गायब हो गया, तो वह अपने अपार्टमेंट में वापस चली गई और उस जगह के बारे में कुछ पूछताछ करने का फैसला किया। तब उसे पता चला कि बहुत समय पहले, उसी तरह के एक आदमी को उसके बगीचे के एक पेड़ से लटका दिया गया था।

“ये सब होता है,” बिल जी ने रीबा को भरोसा दिलाया और उससे कहा कि वह इनसे शर्मिंदा या भयभीत न हो। आखिर भूत भी तो इंसान ही होते हैं। तब से रीबा ने भूतों से जुड़े अपने अनुभवों को स्वीकार कर लिया था। उसे एक भूतिया बिल्ली का भी अनुभव हुआ था—लेकिन वह एक अलग कहानी है।

*75

ब्रुकलिन से हेनी

ब्रुकलिन की क्लिंटन स्ट्रीट उस इलाके के सबसे पुराने हिस्सों में से एक है, जो कभी मध्यम वर्ग का एक सुखद इलाका हुआ करता था और आज भी ब्रुकलिन के सबसे अच्छे मोहल्लों में शुमार है। जिस मकान की बात हो रही है, वह 300 ब्लॉक में स्थित है और चार मंजिला है। इसमें एक तहखाना था, फिर कुछ सीढ़ियाँ ऊपर एक बैठक कक्ष था, जैसा कि भूरे पत्थर के मकानों में आम तौर पर होता है, और उसके ऊपर तीसरी और चौथी मंजिल थी। अगर कोई चाहे तो तीसरी मंजिल को चौथी मंजिल कह सकता है, जिससे तहखाना पहली मंजिल बन जाता है; लेकिन चाहे इसे कुछ भी कहा जाए, इस भूरे पत्थर के मकान में चार मंजिलें थीं, जो सभी रहने के इच्छुक लोगों के लिए अपार्टमेंट के रूप में इस्तेमाल की जा सकती थीं। वर्णित घटनाओं के समय मकान सौ साल से अधिक पुराना था, और इसके रिकॉर्ड एक निश्चित बिंदु के बाद धुंधले हो गए हैं।

1960 के दशक में, यह घर कुछ ऐसे लोगों के स्वामित्व में था जिनके बारे में बहुत कम जानकारी थी। अभिलेखों का संग्रह भी ज़्यादा मददगार नहीं है, क्योंकि मालिक हमेशा घर में

नहीं रहते थे, और जो लोग इसमें रहते थे वे ज़रूरी नहीं कि मालिक ही हों, किराएदारों की बात तो छोड़ ही दीजिए, भले ही वे घर के एक हिस्से को उन लोगों के साथ साझा करते हों जिन्हें वहाँ रहने का कानूनी अधिकार था। हालाँकि, मेरी कहानी के लिए, हमें केवल ऊपरी दो मंजिलों पर ध्यान देना होगा; तीसरी मंजिल पर दो शयनकक्ष और एक स्नानघर था, जबकि चौथी या सबसे ऊपरी मंजिल पर एक बैठक कक्ष, भोजन कक्ष, रसोई और दूसरा स्नानघर था। जिस समय मेरा वृत्तांत शुरू होता है, उस समय पहली दो मंजिलें एक वास्तुकार और उनकी पत्नी को किराए पर दी गई थीं, और केवल सबसे ऊपरी दो मंजिलें ही नए किरायेदारों के लिए उपलब्ध थीं।

गर्मियों के मौसम में, ब्रुकलिन के युवा महिला गृह संगठन (YWCA) में रह रही दो युवतियों ने अपना खुद का घर ढूंढने का फैसला किया। किसी तरह उन्हें क्लिंटन स्ट्रीट स्थित घर में खाली पड़े दो तलों के बारे में पता चला और वे तुरंत उस घर को पसंद करने लगीं। उन्होंने बिना ज्यादा सोचे-समझे ऊपर के दो तल किराए पर ले लिए। उस समय बारबरा और शेरोन दोनों 23 साल की थीं, कॉलेज में पढ़ रही थीं और अपनी आमदनी से किसी तरह गुजारा कर रही थीं। दो साल बाद, बारबरा सैन फ्रांसिस्को में अपने खुद के कपड़ों के व्यवसाय के साथ रह रही थीं। तब तक ब्रुकलिन उनके लिए धुंधली सी याद बनकर रह गया था, लेकिन जिस साल वे और शेरोन वहां रहने आईं, उस साल 1 अगस्त को ब्रुकलिन ही उनकी दुनिया बन गया था।

घर में आते ही उन्होंने तुरंत घर की सफाई करने का फैसला किया, जिसकी वाकई बहुत ज़रूरत थी। सबसे ऊपरी मंज़िल तक जाने वाली सीढ़ियाँ पूरी तरह से कालीन से ढकी हुई थीं, और उन्हें वैक्यूम क्लीनर से साफ़ करना काफ़ी मुश्किल काम था क्योंकि रास्ते में बहुत सारे बिजली के तार लगे थे और एक्सटेंशन कॉर्ड का भी ध्यान रखना पड़ता था। शेरोन सबसे ऊपरी मंज़िल पर पहुँची और सफाई कर रही थी कि तभी उसने एक्सटेंशन कॉर्ड को ऊपर लगाने के लिए निकाल लिया। इसके बजाय, उसने वैक्यूम क्लीनर का लगभग 12 फीट लंबा तार इस्तेमाल किया, जिसमें से शायद तीन फीट ही इस्तेमाल हुआ, और बाकी 9 फीट तार ज़मीन पर पड़ा रह गया।

अचानक, प्लग दीवार से निकल गया। शैरन को अपनी आँखों पर विश्वास नहीं हुआ; प्लग सचमुच सॉकेट से निकलकर ज़मीन पर जा गिरा। उसने सिर हिलाया और उसे वापस लगा

दिया, और वैक्यूम क्लीनर फिर से चालू कर दिया। तभी उसे एहसास हुआ कि उसने क्लीनर का स्विच फिर से चालू कर दिया था, जबकि उसने उसे कभी बंद ही नहीं किया था! उसे समझ नहीं आ रहा था कि ऐसा कैसे हो सकता है। लेकिन उसे अभी बहुत काम करना था, इसलिए वह काम करती रही। बाद में वह नीचे आई और अपनी रूममेट को घटना के बारे में बताया, जिसे लगा कि वह पागल हो गई है। "जब तुम्हारे साथ कुछ होगा, तब देखना," शैरन ने कहा, "इस घर में कुछ तो अजीब है।"

अगले पांच महीनों के दौरान, लड़कियों ने पूरे घर में अजीबोगरीब आवाजें सुनीं, लेकिन उन्होंने इसे पुराने घर के बैठने या इमारत में नीचे रहने वाले लोगों की वजह माना। पांच महीनों की "शांति" उस समय अचानक भंग हो गई जब शैरन का छोटा भाई न्यू जर्सी से मिलने आया।

वह अभी हाई स्कूल में ही था और उसे रात में संगीत सुनना पसंद था, खासकर जब वह जितना तेज़ बज सकता था उतना तेज़ बजता था। युवा लोग बैठक में बैठे संगीत सुन रहे थे और बातें कर रहे थे। शाम सुहावनी और आरामदायक थी। अचानक स्टीरियो बंद हो गया। संगीत काफी तेज़ रॉक एंड रोल था, और पहले तो उन्हें लगा कि शायद तेज़ आवाज़ से स्टीरियो खराब हो गया है। फिर हॉलवे की लाइट बंद हो गई, उसके बाद किचन की लाइट भी। तो उन्हें लगा कि कोई फ्यूज उड़ गया है। बारबरा चार सीढ़ियाँ उतरकर तहखाने में जाँच करने गई। कोई फ्यूज नहीं उड़ा था। फिर भी, उसने सावधानी के तौर पर फ्यूजों की जाँच की और उन्हें बदलकर यह सुनिश्चित किया कि सब ठीक है। फिर वह वापस ऊपर आई और बाकी लोगों से बिजली के बारे में पूछा।

लेकिन सब कुछ अभी भी बंद था। इस पर, शैरन के भाई ने रसोई में जाकर वहाँ की बत्तियाँ जाँचने का फैसला किया। शायद स्विच में कुछ गड़बड़ थी। वह दालान में गया जहाँ सीढ़ियों के ऊपर एक पुराना टिफ़नी जैसा लैंप लटका हुआ था। वह भी बंद था, और उसने उसे चालू करने की कोशिश की लेकिन कुछ नहीं हुआ। उसने फिर खींचा, और अचानक वह चालू हो गया। दूसरे शब्दों में, उसने पहले उसे बंद किया, फिर चालू किया, इसलिए वह पहले से ही चालू था।

इससे वह युवक काफी परेशान हो गया और उसने कहा कि वह रसोई में कुछ खाने जा रहा है। वह रसोई में चला गया और जब वापस आकर बाकी लोगों के साथ शामिल हुआ तो उसका चेहरा पीला पड़ गया था। उसने बताया कि रसोई इतनी ठंडी थी जैसे कोई बर्फ का डिब्बा हो, लेकिन जैसे ही कोई रसोई से बाहर निकलता, घर के बाकी हिस्सों में तापमान सामान्य हो जाता था। तब बाकी लोग खुद देखने के लिए उठे और वाकई रसोई में बर्फीली ठंड थी। यह तब भी था जब चार-पांच रेडिएटर चल रहे थे और सभी खिड़कियां बंद थीं।

उस रात उन्हें एहसास हुआ कि उनके पास एक भूत है, और बेहतर नाम न मिलने के कारण उन्होंने उसे हेंड्रिक्स नाम दिया - संयोग से वह जिमी हेंड्रिक्स की पुण्यतिथि थी, और वे उनके कुछ रिकॉर्ड बजा रहे थे।

कुछ ही समय बाद, टोबी भी घर में बाकी दो लड़कियों के साथ रहने लगी। टोबी 1 अप्रैल को वहाँ रहने आई थी। रसोई में हुई घटना और उस दिन के बीच अपेक्षाकृत शांति रही थी, लेकिन किसी तरह टोबी के आने से उस भूतिया घटना का एक नया पहलू भी शुरू हो गया।

टोबी के आने के लगभग एक हफ्ते बाद, लड़कियाँ लिविंग रूम में बातें कर रही थीं। रात के लगभग 11 बज रहे थे और लिविंग रूम में डिमर चल रहे थे। टोबी सोफे पर बैठी थी और बारबरा और कुछ दोस्त कमरे के दूसरे कोने में बैठे थे, तभी अचानक उसे ठंडी हवा का झोंका महसूस हुआ। हवा उसे छूई तो नहीं, लेकिन उसने महसूस किया और तभी लाइटें धीरे-धीरे कम-ज़्यादा होने लगीं। जब उसने ऊपर देखा, तो उसने डिमर का डायल अपने आप हिलते हुए देखा। टोबी को अभी तक भूत-प्रेत के बारे में कुछ भी पता नहीं था, इसलिए उसने दूसरों को कुछ न बताने का फैसला किया, क्योंकि वह अभी-अभी आई थी और नहीं चाहती थी कि उसके नए रूममेट उसे अजीब समझें।

लेकिन रात-दर-रात अजीबोगरीब घटनाएं होती रहीं, आमतौर पर रात 11 बजे के बाद जब दो लड़कियां और उनकी सहेलियां बैठकर बातें करती थीं। कुछ हफ्तों बाद, बारबरा से यह सब असहनीय हो गया और आखिरकार उसने बाकी सहेलियों से पूछा कि क्या उन्हें कमरे में कुछ अजीब सा महसूस हो रहा है। बारबरा ने शेरोन की तरफ देखा और उनके बीच एक अजीब सी नज़र का आदान-प्रदान हुआ; आखिरकार उन्होंने टोबी को उस भूतिया घटना के बारे में

बताने का फैसला किया और उसे घर में किराए पर रहने के शुरू से लेकर अब तक की सारी बातें बताईं।

लगभग हर दिन कोई न कोई नई बात सामने आती थी: खाना पकाने का सामान गायब हो जाता था, कपड़े गायब हो जाते थे, खिड़कियाँ अपने आप खुल जाती थीं, कूड़ेदान किसी अनजान हाथ से उलट दिए जाते थे। इस पूरे समय के दौरान, तीसरी मंजिल के बेडरूम के ठीक ऊपर स्थित बैठक में किसी अनजान व्यक्ति के चलने की आवाज़ लगातार आती रहती थी। लड़कियाँ रात के किसी भी समय, और कभी-कभी दिन में भी, यह आवाज़ सुनती थीं। कोई इधर-उधर, इधर-उधर चल रहा था। उसके कदमों की आवाज़ तेज़ और ज़ोरदार थी, किसी महिला के कदमों जैसी, लेकिन ऐसा लगता था जैसे कोई बहुत गुस्से में हो। हर बार जब उनमें से कोई एक ऊपर जाकर देखती, तो उन्हें कुछ भी नहीं मिलता था।

लड़कियों ने आपस में सलाह मशवरा किया और तय किया कि उनके घर में भूत है, इसमें कोई शक नहीं। टोबी ने मामले की जांच करने और यह पता लगाने की पेशकश की कि शायद बचपन में घर में क्या हुआ होगा। बारबरा को एक अजीब सी सीटी की आवाज़ सुनाई देती थी, कोई जानी-पहचानी धुन या गाना नहीं, लेकिन फिर भी किसी इंसान की सीटी जैसी आवाज़। इसी बीच, टोबी को न्यूयॉर्क विश्वविद्यालय में जादू-टोना और तंत्र-मंत्र पर चल रहे एक कोर्स के बारे में पता चला और उसने इस विषय पर किताबों में दिलचस्पी लेना शुरू कर दिया। लेकिन जब भी उनके घर कोई मेहमान आता और वे रात 11 बजे के बाद ऊपर वाले कमरे में रुकते, तो भूत अपने सारे जादू से उन्हें कमरे से बाहर भगा देता।

वह कभी स्टीरियो चालू तो कभी बंद करती थी, कभी बत्तियाँ जलाती-बुझाती थी। अब तक उन्हें यकीन हो चुका था कि यह एक औरत ही है। फर्श से छत तक भारी-भारी खिड़कियाँ लगी थीं, और अक्सर ऐसा लगता था जैसे हवा उनमें से होकर गुजर रही हो और खिड़कियाँ आपस में टकराती हों, मानो हवा उन्हें हिला रही हो। इसके तुरंत बाद, उन्हें किसी के कदमों की आहट सुनाई देती, और कमरे में एक अजीब सी बेचैनी छा जाती, जिससे उन्हें वहाँ से निकलकर कहीं और जाना पड़ता, आमतौर पर नीचे किसी शयनकक्ष में।

अभी तक किसी ने उसे देखा नहीं था। उसी जून में, टोबी का प्रेमी ब्रूस उसके साथ घर में रहने आ गया। उनके पास मुख्य शयनकक्ष था, और उससे लगा हुआ एक स्नानघर था। चूंकि

बारबरा अक्सर आधी रात को वहां से गुजरती थी, इसलिए उन्होंने रात भर स्नानघर की बत्ती जलाकर रखी ताकि वह किसी चीज से टकरा न जाए। जून की उस खास रात को, टोबी और उसका प्रेमी बिस्तर पर थे और टोबी छत की ओर नहीं, बल्कि दीवार की ओर देख रही थी, तभी अचानक उसने एक लड़की को अपनी ओर देखते हुए देखा।

वह बस एक आकृति जैसी थी, दीवार पर एक परछाई जैसी, लेकिन टोबी समझ गई कि उसके लंबे बाल चोटी में गुंथे हुए थे। किसी तरह उसे लगा कि वह एक भारतीय है, शायद चोटियों की वजह से। टोबी ने ऊपर उसकी ओर देखा और अपने प्रेमी का ध्यान उस आकृति की ओर दिलाया, लेकिन जब तक उसका ध्यान उस पर केंद्रित हुआ, वह गायब हो चुकी थी।

उसे उसकी बात पर बिल्कुल यकीन नहीं हुआ। इसके बजाय, उसने टोबी को ऊपर रसोई में जाकर उसके लिए सैंडविच बनाने को कहा। वह ऊपर पाँच-दस मिनट से ज़्यादा नहीं रुकी थी कि जब वह बेडरूम में लौटी तो उसने अपने प्रेमी को बिस्तर की चादर के नीचे छिपा हुआ पाया। जब उसने उससे पूछा कि क्या हुआ है, तो उसने अपना सिर हिला दिया, इसलिए उसने कमरे में चारों ओर देखा, लेकिन उसे कुछ भी असामान्य नहीं मिला। उसने केवल इतना देखा कि बाथरूम का दरवाज़ा खुला हुआ था। उसने सोचा कि उसका प्रेमी बाथरूम गया होगा, लेकिन उसने अपना सिर हिलाकर कहा कि वह नहीं गया था।

वह वहीं लेटे-लेटे सिगरेट पी रहा था, तभी अचानक उसने देखा कि दरवाजे का हैंडल अपने आप घूम गया और दरवाजा खुल गया।

यह देखकर वह तुरंत कंबल के नीचे दुबक गया और टोबी के लौटने तक वहीं छिपा रहा। उस पल से उसने घर के भूत की उसकी कहानियों पर हंसना बंद कर दिया। अगली रात, उसका प्रेमी सो रहा था जब टोबी सुबह 2 बजे उठी। टीवी चालू रह गया था और वह उसे बंद करने गई, और जब वह वापस बिस्तर पर आई, तो उसकी नज़र दीवार पर उसी जगह पड़ी जहाँ उसने पिछली रात भूत देखा था। एक-दो पल के लिए उसने एक लड़की की वही आकृति देखी, लेकिन इस बार उसे लगा कि लड़की उसकी तरफ मुस्कुरा रही है।

उसके दो हफ्ते बाद, टोबी और उसके बॉयफ्रेंड का ब्रेकअप हो गया, जिससे वह बुरी तरह हिल गई। एक दिन जब वह घर लौटी तो उसे पता ही नहीं था कि वह चला गया है। फिर उसे एक नोट मिला जिसमें उसने जाने का कारण बताया था और लिखा था कि वह बाद में उससे

संपर्क करेगा। इससे वह बहुत परेशान हो गई, इतनी कि उसकी दोनों रूममेट्स को उसे शांत करना पड़ा। आखिर में, दोनों लड़कियां ऊपर चली गईं और टोबी बिस्तर पर लेटी खुद को संभालने की कोशिश कर रही थी।

कमरे की खामोशी में, अचानक उसे किसी के सिसकने की हल्की आवाज़ सुनाई दी और फिर एक आवाज़ आई, "टोबी।" टोबी बिस्तर से उठा और सीढ़ियों के नीचे जाकर ऊपर पुकारा, यह जानने की कोशिश करते हुए कि बारबरा क्या चाहती है। लेकिन किसी ने उसे नहीं पुकारा था। वह वापस कमरे में गई और फिर से बिस्तर पर लेट गई। तभी उसे एक आवाज़ बार-बार "टोबी" कहते हुए सुनाई दी। जाँच करने पर उसने पाया कि किसी ने उसे नहीं पुकारा था—मतलब, किसी इंसान ने नहीं।

तब टोबी को एहसास हुआ कि उसे कौन बुला रहा था, और उसने "हेनी" से बात करने का फैसला किया, जो हेंड्रिक्स का उसका उपनाम था, और यह नाम उसने उस रात से भूत को दिया था जब वे जिमी हेंड्रिक्स के रिकॉर्ड सुन रहे थे। धीमी आवाज़ में टोबी ने कहा, "हेनी, क्या तुमने मुझे बुलाया था?" और फिर उसने आवाज़ सुनी, "शांत हो जाओ, इसे इतना दिल पर मत लो, सब ठीक हो जाएगा।" यह एक लड़की की आवाज़ थी, और फिर भी वहाँ कोई दिखाई नहीं दे रहा था। समय लगभग शाम के 5 बजे का था, और जून का महीना होने के कारण कमरा अभी भी काफी रोशन था।

टोबी अभी इस घटना से उबर भी नहीं पाया था कि एक और घटना घट पड़ी। शेरोन घर छोड़कर चली गई और मैडलीन नाम की एक और लड़की उनके घर में रहने आ गई। एक दिन उसका भाई शिकागो से उनसे मिलने आया और अपने साथ एक दोस्त को भी लाया जिसे आध्यात्मिक अनुभव हुआ था। उसका नाम जॉय था और दोनों लड़कों की उम्र लगभग बीस से इक्कीस साल थी।

मैडेलीन और उसका भाई तंत्र-मंत्र में बहुत रुचि रखते थे, इसलिए वे घर में एक ओइजा बोर्ड ले आए। शनिवार, 19 दिसंबर को, जब बाहर बर्फ गिर रही थी और माहौल किसी प्रेतात्मा से संपर्क करने के लिए बिल्कुल अनुकूल था, तो उन्होंने घर में मौजूद दुखी भूत से संपर्क करने का फैसला किया। वे ऊपर बैठक में गए और बोर्ड लेकर बैठ गए। पहले तो यह एक खेल जैसा लग रहा था, और वे उससे कुछ बेतुके सवाल पूछ रहे थे, जैसे कि कौन किससे शादी

करेगा, और इसी तरह के कुछ रोमांटिक सवाल। लेकिन सत्र के बीच में ही, उन्होंने गंभीरता से भूत से संपर्क करने का फैसला किया। तीनों लड़कियां और मैडेलीन का भाई घुटनों को सटाकर फर्श पर बैठ गए और बोर्ड को उसके ऊपर रख दिया। फिर उन्होंने हेनी को आमंत्रित किया कि अगर वह चाहे तो प्रकट होकर उनसे बात करे। वे संकेतक को उठाने और उस पर अपने हाथ रखने के लिए तैयार थे ताकि वह बोर्ड पर विभिन्न अक्षरों पर जा सके।

लेकिन इससे पहले कि उनके हाथ उसे छू पाते, इंडिकेटर अपने आप चलने लगा! वह बोर्ड पर 'हाँ' शब्द पर जा पहुँचा, मानो उन्हें आश्वस्त कर रहा हो कि वास्तव में संवाद की आवश्यकता है। चारों एक-दूसरे को अचंभित होकर देखने लगे, क्योंकि उन्होंने जो कुछ हुआ था उसे स्पष्ट रूप से देख लिया था। अब तक वे सभी कुछ हद तक डर गए थे। हालाँकि, टोबी ने सोचा कि चूंकि वह मानसिक अनुसंधान में रुचि रखने वाली है, इसलिए वह प्रश्न पूछ ही ले। उसने पूछना शुरू किया कि वह प्रेतवाधित लड़की अभी भी घर से क्यों जुड़ी हुई है। रुक-रुक कर, एक-एक शब्द करके, हेनी ने उत्तर दिया और अपनी दुखभरी कहानी सुनाई।

यह एक धीमी प्रक्रिया थी, क्योंकि हर शब्द को अक्षर-अक्षर करके समझाना पड़ता था, लेकिन युवाओं को समय बीतने की परवाह नहीं थी—वे जानना चाहते थे कि हेनी उनके साथ क्यों है। ऐसा लगता है कि यह घर कभी उसके पिता का था, जो एक डॉक्टर थे। उसका नाम सेसा रिस्ट था और वह अपने परिवार के साथ इसी घर में रहती थी। दुर्भाग्य से उसे एक युवक से प्रेम हो गया और वह गर्भवती हो गई। वह उससे शादी करके बच्चे को जन्म देना चाहती थी, लेकिन उसके पिता ने इसकी अनुमति नहीं दी और उसे गर्भपात कराने के लिए मजबूर किया। उन्होंने खुद घर में ही गर्भपात किया और गर्भपात के दौरान उसकी मृत्यु हो गई।

उसके शव को डेनवर, कोलोराडो ले जाया गया और परिवार के कब्रिस्तान में दफना दिया गया। उसे एहसास हुआ कि उसका प्रेमी भी मर चुका है, क्योंकि यह सब बहुत पहले हुआ था। घर में रुकने का उसका कारण मदद की तलाश करना था; वह चाहती थी कि उसके अवशेषों को न्यूयॉर्क में उसके प्रेमी के पास दफनाया जाए।

"क्या आपको इस घर में रहने वाले लोग पसंद हैं?"

“हां,” भूत ने उत्तर दिया।

क्या यहां रहने वाला कोई भी व्यक्ति कभी किसी खतरे में पड़ता है?

"हां, वे लोग जो शिशुओं की हत्या करते हैं।"

यह बात युवाओं को विशेष रूप से प्रासंगिक लगी: उनकी एक करीबी दोस्त, जो उस समय वहां मौजूद नहीं थी, ने हाल ही में गर्भपात करवाया था। "क्या आप हमारे सामने पेश होंगी?"

"सेसा के पास है," भूत ने उत्तर दिया, और मानो इस कथन पर जोर देने के लिए, अचानक रसोई की दीवार पर एक क्रॉस की छाया दिखाई दी, जिसका कोई संभावित स्रोत नहीं था, सिवाय, निश्चित रूप से, परामनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण के।

लड़कियों को एहसास हुआ कि उनके पास डेनवर जाकर सीसा के अवशेषों को खोदकर न्यूयॉर्क लाने के साधन नहीं हैं, और उन्होंने भूत को यही बात बताई। "क्या हम आपकी मदद के लिए कुछ और कर सकते हैं?"

“होलज़र से संपर्क करो,” उसने कहा। तब तक, ज़ाहिर है, टोबी मेरे कामों से परिचित हो चुका था, और उसने बैठकर मुझे एक पत्र लिखने का फैसला किया, जिसमें उसने अपनी समस्या बताई। उस रात वे ओइजा बोर्ड या कुछ और नहीं कर सकते थे, वे सभी बहुत ज़्यादा घबराए हुए थे।

सोमवार को टोबी ने उनके द्वारा तैयार किया गया पत्र टाइप किया और मुझे भेज दिया। चूंकि उन्हें यकीन नहीं था कि पत्र मुझ तक पहुंचेगा, इसलिए उन्होंने घर के बारे में कुछ स्वतंत्र जांच करने का फैसला किया और संभव हो तो सीज़ा रिस्ट का कोई रिकॉर्ड ढूंढने की कोशिश की। लेकिन वे इसमें असफल रहे, यहां तक कि अभिलेख विभाग में भी नहीं, क्योंकि ऐसा लगता है कि घटनाएँ उस समय घटी थीं जब अभिलेख रखे नहीं जाते थे, या कम से कम ठीक से नहीं रखे जाते थे।

जब मुझे पत्र मिला, मैं यूरोप जाने ही वाली थी और ढाई महीने के लिए बाहर रहने वाली थी। मैंने लड़कियों से कहा कि वे मुझसे संपर्क में रहें और मेरे लौटने के बाद मैं इस मामले को देखूंगी। टोबी ने मुझसे फोन पर बात करने के बाद, बैठक में वापस जाकर चुपचाप बैठ गई। फिर उसने हेनी से कहा कि उसने मुझसे संपर्क किया है, और यूरोप जाने के कारण मुझे घर आने में कुछ महीने लग जाएंगे।

लेकिन बारबरा ने इंतज़ार न करने का फैसला किया; एक रात वह हेनी से बात करने के लिए ऊपर चली गई। उसने उसे सारी स्थिति समझाई और पूछा कि वह अभी भी घर में क्यों भटक

रही है; उसने बताया कि उसका दुख उसे घर में रोके हुए है, और उसे इससे छुटकारा पाना होगा ताकि वह आगे बढ़कर अपने प्रेमी से परलोक में मिल सके। सबसे बढ़कर, उसे उन पर गुस्सा नहीं करना चाहिए क्योंकि अब यह उनका घर था। बारबरा को किसी तरह लगा कि भूत समझ गया है, और कुछ नहीं हुआ, कुछ भी डरावना नहीं हुआ। राहत महसूस करते हुए, बारबरा सोफे के सामने एक कुर्सी पर बैठ गई। वह बस वहीं बैठी सिगरेट पी रही थी, सोच रही थी कि क्या हेनी सचमुच मौजूद है, या शायद वह हवा से बात कर रही है।

उसी क्षण, एक अलौकिक आकृति कमरे में प्रवेश कर सोफे के पास खड़ी हो गई। ऐसा लग रहा था मानो वह सोफे के आर्मरिस्ट पर झुकी हुई हो या उसके किनारे को पकड़े हुए हो। उसने सिर की आकृति देखी, और छाती के सामने कुछ चोटियाँ जैसी दिखाई दीं। वह आधे मिनट तक वहाँ रही, और फिर अचानक गायब हो गई।

बारबरा को ऐसा लगा मानो वह लड़की पाँच फुट चार इंच लंबी और लगभग एक सौ बीस पाउंड की रही हो। स्तब्ध होकर बारबरा दस-पंद्रह मिनट तक वहीं बैठी रही, यह विश्वास करने की कोशिश करती रही कि उसने क्या देखा था। उसने पाँच और सिगरेट पीं और फिर सोने की कोशिश में नीचे चली गई। लेकिन उसे नींद नहीं आई; वह अपने उस अनुभव के बारे में सोचती रही।

जब शैरन चली गई, तब वे उसकी जगह रहने के लिए संभावित रूममेट्स का इंटरव्यू ले रहे थे। एक बेहद अप्रिय लड़की आई और उसे घर बहुत पसंद आ गया। बारबरा और टोबी दोनों नहीं चाहते थे कि वह यहाँ आए, लेकिन ऐसा लग रहा था कि वह उनके साथ रहने के लिए पूरी तरह तैयार है, इसलिए टोबी ने उसे भूत के बारे में बताने का फैसला किया। उसे उम्मीद थी कि इससे वह लड़की यहाँ आने से हिचक जाएगी। जैसे-जैसे टोबी ने हेनी के साथ अपने अनुभवों के बारे में बताया, भावी रूममेट और भी ज़्यादा घबरा गई।

अचानक रसोई में ज़ोरदार धमाके की आवाज़ आई और वे देखने गए। कूड़ेदान उलट गया था और सारा कूड़ा रसोई में फैल गया था, जबकि उसके पास कोई नहीं था। नई लड़की ने यह सब देखा और जितनी तेज़ी से हो सकता था भाग गई। वह फिर कभी वापस नहीं लौटी।

लेकिन कुछ ही समय बाद, टोबी कैलिफ़ोर्निया में छुट्टियां मनाने चली गई। वहां उसने रहने की व्यवस्था की और एक बड़े डिपार्टमेंटल स्टोर के मार्केट रिसर्च विभाग में नौकरी पा ली।

हालात ऐसे में, लड़कियों ने जुलाई में खत्म हो रहे अपने किराए के समझौते को नवीनीकृत न करने का फैसला किया और कुछ समय के लिए दूसरे अपार्टमेंट में रहने का निर्णय लिया। उसी सितंबर में, वे कैलिफ़ोर्निया चली गईं। इन परिस्थितियों में, उन्होंने मुझसे आगे कोई संपर्क नहीं किया, और मैंने मान लिया कि मामला सुलझ गया होगा, या उनकी योजनाओं में कोई बदलाव आया होगा। एक साल बाद, हम किसी तरह कैलिफ़ोर्निया में मिले, और तब मैं हेनी की कहानी के अधूरे विवरण पूरे कर सका।

क्लिंटन स्ट्रीट स्थित घर में महिलाओं के ठहरने के आखिरी दिन, जब सामान ढोने वाले लोग घर में आ-जा रहे थे, टोबी एक आखिरी बार घर देखने और हेनी को अलविदा कहने के लिए अंदर गई। वह बैठक में गई और सादे शब्दों में अलविदा कहा, और उम्मीद जताई कि हेनी ठीक होगी। लेकिन कोई जवाब नहीं आया, किसी की मौजूदगी का एहसास नहीं हुआ।

कुछ समय तक वह घर खाली पड़ा रहा, फिर उसे लड़कियों के एक परिचित के पिता ने खरीद लिया। एलन के माध्यम से उन्हें पता चला कि घर बिकने के बाद उसमें नए लोग रहने आए हैं। एक दिन जब वे घर में कुछ ही दिन रहे थे, तो वे वापस लौटे और उन्होंने देखा कि घर खाली पड़ा है।

उन्होंने देखा कि उनकी रसोई पानी से भरी हुई थी: पूरी रसोई में दो इंच तक पानी भरा हुआ था, जबकि उन्हें पता था कि उन्होंने नल खुले नहीं छोड़े थे। हेनी ने पानी क्यों चालू किया और उसे बहने दिया? शायद हेनी को नए किराएदार पसंद नहीं थे। लेकिन उसके पास कोई और चारा नहीं था। भूत होने के नाते, वह घर से बंधी हुई थी।

भूतों के काम करने के तरीके के कारण, उसके दोस्तों के पीछे सैन फ्रांसिस्को जाना बिल्कुल असंभव था। और जब तक क्लिंटन स्ट्रीट के नए किराएदार मेरी मदद के लिए नहीं बुलाते, तब तक मैं हेनी की मदद करने के लिए कुछ भी नहीं कर सकता।

*76

लॉन्गलीट के भूत

समरसेट में स्थित लॉन्गलीट इंग्लैंड का सबसे चर्चित भूतिया घर है। अगर ऐसा नहीं है, तो कम से कम इसके मालिक, लॉर्ड बाथ, ब्रिटिश कुलीन वर्ग में सबसे ज्यादा प्रचार-प्रसार के प्रति

सजग व्यक्ति हैं जिनसे मैं कभी मिला हूँ: एक मिलनसार, चतुर, बेहद व्यावसायिक कुंभ राशि के व्यक्ति, जिनका जन्मदिन मेरे जन्मदिन जैसा ही है, हालांकि वे मुझसे कुछ साल बड़े हैं। लॉन्गलीट और इसके भूतों को सबसे पहले ब्रिटिश समाज के भविष्यवक्ता टॉम कॉर्बेट ने व्यापक रूप से प्रचारित किया था, जो एक ब्रिटिश पत्रकार, डायना नॉर्मन के साथ वहाँ गए थे। डायना नॉर्मन ने बाद में कॉर्बेट के विभिन्न ब्रिटिश घरों के अनुभवों पर आधारित एक पुस्तक लिखी, जिसका नाम था 'द स्टेटली घोस्ट्स ऑफ इंग्लैंड'। श्री कॉर्बेट यह स्पष्ट करने में बहुत मेहनत करते हैं कि वे कोई माध्यम नहीं बल्कि एक अंतर्ज्ञानी हैं। वे निश्चित रूप से समाधि माध्यम नहीं हैं, और किसी भी भूतिया घटना की तह तक पहुँचने के लिए एक कुशल और गहन समाधि माध्यम की आवश्यकता होती है। एक वाक्पटु व्यक्ति केवल अतीत से कंपन ग्रहण कर सकता है और संभवतः किसी निवासी भूत या आत्मा से संवाद स्थापित कर सकता है, जबकि एक समाधि माध्यम का काम होता है कि वह आत्मा या भूत को अन्वेषक से सीधे बात करने दे।

मैंने 1964 की वसंत ऋतु में लॉर्ड बाथ के साथ पत्राचार शुरू किया, लेकिन इससे पहले कि मैं लॉन्गलीट की अपनी पहली यात्रा के लिए कोई तारीख तय कर पाता, एनबीसी टेलीविजन ने कथित तौर पर भूतिया घरों की अपनी यात्रा सूची में इस शानदार महल को शामिल करने का फैसला किया, जिसे उसकी वृत्तचित्र इकाई फिल्माना चाहती थी।

23 मई, 1964 के साइकिक न्यूज़ की हेडलाइन थी, "प्रसिद्ध अभिनेत्री और माध्यम एक मानसिक फिल्म में अभिनय करेंगी - क्या कैमरा आत्माओं के स्वरूपों को रिकॉर्ड करेगा?" अखबार का जिक्र स्पष्ट रूप से ब्रिटिश रंगमंच की दिग्गज अभिनेत्री मार्गरिट रदरफोर्ड के बारे में था, जिनकी ईएसपी (आध्यात्मिक दृष्टि) घटनाओं में रुचि थी, हालांकि वे स्वयं किसी भी तरह से माध्यम नहीं थीं।

लॉन्गलीट और अन्य जगहों पर फिल्मांकन का विचार निर्माता-निर्देशक फ्रैंक डी फेलिटा का था, जिन्होंने ब्रिटेन की भूतिया हवेलियों पर टॉम कॉर्बेट-डायना नॉर्मन की किताब पढ़ी थी। एनबीसी की टीम लॉन्गलीट गई, और शूटिंग शुरू होते ही तरह-तरह की दिक्कतें आने लगीं। कैमरे अपनी जगह से हट जाते, औजार गायब हो जाते; ऐसा लग रहा था मानो वहां रहने वाले भूत इस दखलंदाजी से खुश नहीं थे। लेकिन यह कहना मुश्किल है कि बताई गई दिक्कतों में

से कितनी सच थीं और कितनी एनबीसी के प्रचार विभाग की करतूत। हालांकि, एक तथ्य को एनबीसी और निर्माता दोनों ने पूरी तरह से नजरअंदाज कर दिया। उन्होंने लॉन्गलीट के भूतिया गलियारे में एक टाइम-लैप्स कैमरा लगाया था, जो लंबे समय तक एक-एक फ्रेम रिकॉर्ड करता है। यह रिकॉर्डिंग रात के समय की गई थी जब आसपास कोई नहीं था। फिल्म डेवलप करने पर उसमें एक सफेद चमक दिखाई दी, जिसका कोई आसान स्पष्टीकरण नहीं था। प्रकाश की उस चमक को न तो खराब फिल्म, न ही प्रयोगशाला में हुई गड़बड़ी, और न ही किसी अन्य तार्किक कारण से समझाया जा सकता था। कैमरे ने जो रिकॉर्ड किया था, वह किसी आत्मा के स्वरूप का निर्माण मात्र था। यदि श्री डी फेलिटा को परा मनोविज्ञान का बुनियादी ज्ञान होता या वे इस क्षेत्र के किसी विशेषज्ञ के साथ होते, तो वे इस अप्रत्याशित घटना का बेहतर उपयोग कर सकते थे।

मार्गरिट रदरफोर्ड को कार्यक्रम की मेज़बान के रूप में चुनने का कारण उनकी मानसिक क्षमता या एक अन्वेषक के रूप में उनकी ईमानदारी नहीं थी, बल्कि केवल इसलिए था क्योंकि वह इस भूमिका के लिए उपयुक्त दिखती थीं, और टेलीविजन में यही सबसे महत्वपूर्ण बात होती है। उन्होंने नोएल कॉवर्ड के नाटक 'ब्लाइथ स्पिरिट' में माध्यम की शानदार हास्य भूमिका निभाई थी। यहाँ तक कि गंभीर माने जाने वाले न्यूयॉर्क टाइम्स ने भी, जिसने आमतौर पर परा मनोविज्ञान के किसी भी गंभीर विश्लेषण को नज़रअंदाज़ किया है, इस परियोजना और मार्गरिट रदरफोर्ड को काफी जगह दी। पॉल गार्डनर ने लिखा, "मिस रदरफोर्ड और उनकी टीम कथित तौर पर आत्माओं से ग्रस्त हवेलियों का दौरा करेंगी। वह भूतिया घटनाओं के बारे में अपने व्यक्तिगत विचार साझा करेंगी - वे कैसे घटित होती हैं, कब घटित होती हैं और शायद, क्यों नहीं घटित होती हैं।" बेशक, ऐसा कुछ भी न तो इरादा था और न ही कहा गया, लेकिन प्रचार विज्ञप्तियों में यह बात अच्छी लगी।

* * *

लॉन्गलीट की मेरी पहली यात्रा सितंबर 1964 में हुई थी, उस हंगामे और मार्गरिट रदरफोर्ड और फिल्म क्रू के चले जाने के काफी समय बाद। हालांकि, हमेशा की तरह बड़ी संख्या में पर्यटक अभी भी वहां मौजूद थे, इसलिए हमने लॉर्ड बाथ से उस समय आने की व्यवस्था की थी जब परिसर उनके लिए बंद था।

लॉन्गलीट इंग्लैंड के पश्चिम में स्थित है, जो लंदन से कार द्वारा लगभग तीन घंटे की दूरी पर है, और वास्तव में एक महल है, जो आकार और साज-सज्जा दोनों में कुछ शाही आवासों को टक्कर देता है। लॉर्ड बाथ स्वयं बहुत पहले पास के वारमिंस्टर में अधिक साधारण आवास में चले गए थे, जहाँ वे और उनकी पत्नी एक आकर्षक पुरानी चक्की में रहते थे। लॉन्गलीट का नाम उस नदी के नाम पर रखा गया है जो परिसर से होकर बहती है। यह चार सौ वर्षों से थिन परिवार का घर रहा है। 1580 से कुछ समय पहले, वर्तमान मार्क्वेस ऑफ बाथ के प्रत्यक्ष पूर्वज सर जॉन थिन ने लॉन्गलीट का निर्माण शुरू किया था। उनके उत्तराधिकारियों ने हवेली का विस्तार किया जब तक कि यह एक महल के आकार में नहीं आ गई। महल को ऊपर से नीचे तक भरने वाले कला खजानों का वर्णन करने के लिए कई पुस्तकें लिखनी पड़ेंगी। संक्षेप में कहें तो, लॉन्गलीट में कुछ बहुत महत्वपूर्ण चित्र प्रदर्शित हैं और उनमें से, शायद वर्तमान लॉर्ड बाथ की एक विशेषता के रूप में, सर विंस्टन चर्चिल और एडॉल्फ हिटलर दोनों की कलाकृतियाँ भी शामिल हैं। हालाँकि, हिटलर की कलाकृतियाँ घर के निजी हिस्से में, ऊपरी मंजिलों में से एक पर रखी हैं।

लॉर्ड बाथ चाहते थे कि हम सबसे पहले एक बुजुर्ग नर्स, मिस मार्क्स से मिलें, जिनकी उम्र उस समय सत्तर वर्ष के आसपास थी। जब वह छोटी कैरोलिन की देखभाल करती थीं, तब उनका कई बार एक भूत से सामना हुआ था।

“मैंने एक लंबे, विद्वान दिखने वाले व्यक्ति को देखा,” नर्स ने बताया। “वह टहल रहे थे और ऐसा लग रहा था जैसे कुछ पढ़ रहे हों; मैंने केवल उनकी पीठ देखी, लेकिन उनके गले में एक ऊँचा कॉलर था, जिसके किनारे साफ़ दिखाई दे रहे थे। मैं सोचती, ‘शायद ये दादाजी हैं। क्या हम जल्दी से उनसे बात करें?’ हम उनके पीछे कमरे के उस पार जाते, लेकिन जब हम अंत में बंद दरवाजे पर पहुँचे, तो वे वहाँ नहीं थे। मैंने इस बारे में ज़्यादा नहीं सोचा, क्योंकि मैंने उन्हें कई बार देखा था, और अंत में मैंने सोचा, ये तो कोई इंसान ही नहीं है। मैंने इस बारे में किसी से बात नहीं की, लेकिन मुझे पता था कि वे मेरे प्रति मित्रवत थे। मुझे इस व्यक्ति को देखना अच्छा लगता था, यहाँ तक कि बाद में पता चलने पर भी कि ये सिर्फ़ एक भूत था।”

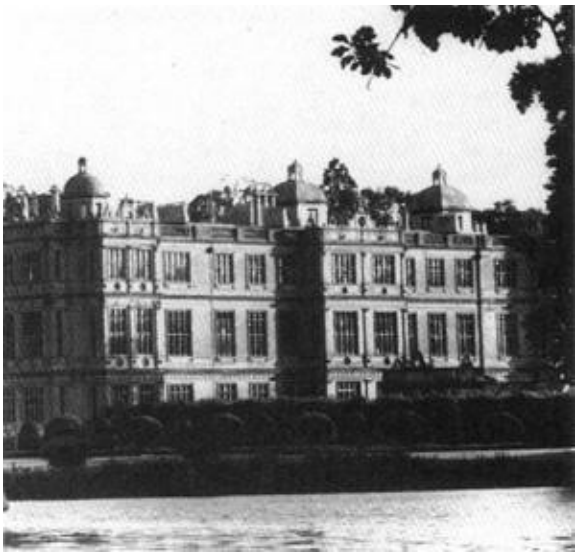

लॉन्गलीट के भूत पूरी तरह से परिवार के सदस्य हैं—एक अपवाद को छोड़कर।

नर्स के विवरण और टॉम कॉर्बेट द्वारा दी गई जानकारी से इतिहासकारों को यह स्पष्ट हो गया कि वह भूत लॉन्गलीट के निर्माता सर जॉन थिन के अलावा कोई और नहीं था। थिन हेनरी अष्टम के समय में एक बैंकर थे और अपनी तीक्ष्ण व्यावसायिक सूझबूझ के लिए जाने जाते थे। जिस ज़मीन पर लॉन्गलीट बना है, वह उनकी व्यावसायिक कुशलता का ही परिणाम है और वे अपने समय में इससे बहुत लगाव रखते थे। उनका पसंदीदा स्थान, एक तरह से, भूतल पर स्थित लाल पुस्तकालय है, जहाँ वे आमतौर पर रात 7 से 8 बजे के बीच प्रकट होते हैं।

इसके बाद लॉर्ड बाथ हमें उस प्रेतवाधित गलियारे में ले गए, जो अब पूरी तरह से खाली है और भूत हो या न हो, एक निराशाजनक अनुभूति देता है। यह लंबा, संकरा मार्ग थिन परिवार के कुछ सदस्यों के सोने के कमरों के समानांतर चलता है, और यहीं पर टॉम कॉर्बेट ने एक प्रेतवाधित उपस्थिति का अनुभव किया था।

“यह गलियारा है,” लॉर्ड बाथ ने ऐसी आवाज़ में समझाया जिससे स्पष्ट था कि उन्होंने यह बात पहले भी कई बार कही थी, “जहाँ मेरे पूर्वजों में से एक, द्वितीय विस्काउंट वेमाउथ ने द्वंद्वयुद्ध लड़ा था, क्योंकि उन्हें पता चला था कि उनकी पत्नी, लुइसा कार्टरेट, उनके प्रति बेवफ़ा थीं। उन्होंने उन्हें ऐसी हालत में पाया, जिसमें उन्हें लगा कि उनके साथ मौजूद व्यक्ति से द्वंद्वयुद्ध करना चाहिए। उन्होंने घुसपैठिए से द्वंद्वयुद्ध लड़ा और उसे मार डाला, जिसके बाद उन्होंने

उसे तहखाने में दफना दिया। छह साल पहले जब नीचे बॉयलर लगाया जा रहा था, तब गलती से उसका कंकाल मिल गया था।"

कोई भी यह मान सकता है कि दुर्भाग्यपूर्ण प्रेमी लॉन्गलीट के गलियारों में बदला लेने या कम से कम बचे हुए लोगों को डराने के लिए घूम रहा होगा। लेकिन जाहिर तौर पर उसने एक मर्द की तरह अपनी किस्मत को स्वीकार किया और भूत बनने के बजाय एक आत्मा बनकर रह गया। लेडी लुईसा के साथ ऐसा नहीं था: "लोगों ने लुईसा कार्टरेट का भूत देखा है," लॉर्ड बाथ ने बताया। "मैंने उसे खुद नहीं देखा है, क्योंकि मुझमें वह शक्ति नहीं है। मेरी माँ ने नीचे लाल पुस्तकालय में भूत देखा है, लेकिन इसे नहीं।" मैंने आगंतुकों के बारे में पूछा। लॉर्ड बाथ ने बताया कि आगंतुकों को कभी भी घर के उस हिस्से में नहीं ले जाया जाता था जहाँ हम थे, इसलिए यह बताना असंभव था कि उन्होंने कुछ अनुभव किया था या नहीं। मैंने लेडी लुईसा के चित्र को ध्यान से देखा। वह वाकई में देखने लायक थीं: प्यारा चेहरा, खूबसूरत आँखें, हरे रंग की पोशाक में पतली काया।

कुछ समय बाद हमने लॉन्गलीट को इस पक्के वादे के साथ छोड़ दिया कि हम किसी दिन एक ट्रान्स मीडियम के साथ वापस आएंगे ताकि हम वहां रहने वाले भूतों से संपर्क करने की कोशिश कर सकें। लेकिन यह मौका हमें दो साल बाद ही मिला।

* * *

सितंबर 1966 की बात है, जब मैं लंदन की माध्यम और पूर्व नर्स, ट्रिक्सी एलिंगम को लॉन्गलीट लेकर आई, उन्हें लॉर्ड बाथ से मिलवाया और महल में इस उम्मीद से दाखिल हुई कि शायद उन रहस्यमयी शक्तियों का सामना कर सकूँ जिन्हें पहले कभी दूर नहीं किया गया था और न ही उनसे पूरी तरह संपर्क स्थापित किया गया था। अगले दो घंटों तक, लॉर्ड बाथ, मेरे दोस्तों और मैंने अब तक के सबसे रोचक और रोमांचक अनुभवों में से एक का अनुभव किया।

पूरी यात्रा के दौरान, दुबली-पतली ट्रिक्सी कार में नाखुश थी, कुछ तो ऊबड़-खाबड़ रास्ते की वजह से और कुछ उसे आगे आने वाली किसी बड़ी त्रासदी का आभास हो रहा था, जो जल्द ही उसे व्यक्तिगत रूप से प्रभावित करेगी। महल की ओर जाने वाले रास्ते के आखिरी लंबे

मोड़ पर पहुँचते ही, ट्रिक्सी मेरी ओर मुड़ी और बोली, “मैंने एक सुंदर युवती की तस्वीर देखी। मुझे लगा कि उसका मेरे यहाँ आने से कुछ संबंध है, और उसने मुझे एक खुली खिड़की दिखाई, मानो वह मुझे बता रही हो कि उस खिड़की से कोई त्रासदी जुड़ी हुई है। या तो उसे धक्का देकर बाहर फेंक दिया गया था, या उसके किसी प्रियजन ने आत्महत्या कर ली थी, और फिर वह दृश्य धुंधला गया। फिर एक और महिला मेरे सामने आई, जो काफी आकर्षक थी और उसी काल की थी। वह उम्र में बड़ी थी और एक पल के लिए थोड़ी अभिमानी दिखी। फिर वह भी गायब हो गई।”

मैंने कोई जवाब नहीं दिया, क्योंकि मैं उसे कोई संकेत नहीं देना चाहता था। कुछ मिनट बाद हम लॉन्गलीट के मुख्य द्वार पर पहुँचे और कार से बाहर निकले। मैंने ट्रिक्सी को थोड़ा समय दिया ताकि वह खुद को संभाल सके और कार की झटकेदार सवारी से उबर सके। फिर हम रेड लाइब्रेरी में दाखिल हुए और मैंने ट्रिक्सी से कमरे के एक कोने में रखी बड़ी पुरानी कुर्सियों में से एक पर बैठने को कहा।

तुरंत ही कांपती हुई, उत्तेजित आवाज़ में उसने कहा, “बहुत समय पहले यहाँ कुछ बहुत बुरा हुआ था, या इस कमरे में किसी को उस खिड़की से बाहर देखते हुए शैतानी लालसा हुई थी।” उसने कमरे के दूसरी तरफ की कई बड़ी खिड़कियों में से एक की ओर इशारा किया। “मुझे लगता है कि यहाँ कोई फ्रांसीसी संबंध है, या तो पत्नी या बेटी फ्रांसीसी वंश की थी,” ट्रिक्सी ने आगे कहा। “फ्रांसीसी क्रांति से भी कुछ संबंध है, क्योंकि मुझे एक गिलोटिन दिखाई दे रही है...हे भगवान!”

“ट्रिक्सी, क्या तुम्हें यहाँ किसी भूत का आभास हो रहा है?” मैंने पूछा।

“जी हाँ, मुझे एक औरत दिखाई देती है। उसने लंबी आस्तीनों वाली पोशाक पहनी है और वह ऐसे चलती है जैसे उसकी कमर झुकी हुई हो। उसके गले में एक क्रॉस है और वह कह रही है, ‘मेरी मदद करो, मेरी मदद करो, मेरी मदद करो!’ यह सौ साल से भी ज़्यादा पुरानी बात है; उसका गाउन शहतूत के रंग जैसा सफ़ेद है। बहुत पुराने ज़माने की।” ट्रिक्सी एक पल के लिए रुकी, मानो स्थिति को समझने की कोशिश कर रही हो। लॉर्ड बाथ, जो खुद तो आस्तिक नहीं थे, अब उसे गंभीरता से देख रहे थे।

“अब मुझे एक घोड़ा और एक आदमी सरपट भागते हुए दिख रहे हैं, और मुझे वह औरत रोती हुई दिख रही है और मैं सोच रही हूँ कि इसका क्या मतलब है। वह उस आदमी को भागते हुए देखती है, और सोचती है कि जीवन समाप्त हो गया है, और अब मुझे वह मृत दिखाई दे रही है। मुझे लगता है कि पास में ही कोई गिरजाघर है, जहाँ किसी ताबूत के ऊपर पत्थर में उसकी प्रतिमा बनी हुई है। उसने मुझे वह प्रतिमा दिखाई थी।”

मैंने ट्रिक्सी से पूछा कि क्या वह महिला वही थी जिसे उसने कार चलाते समय देखा था, लेकिन वह निश्चित नहीं थी, क्योंकि उसने अभी तक उस महिला का चेहरा नहीं देखा था। क्या कमरे में कोई और भी मौजूद था?

“हाँ,” ट्रिक्सी ने जवाब दिया। “दरवाजे के पास, हैंडल पकड़े हुए, धुंधला सा एक आदमी खड़ा है, जिसने बड़ी सी टोपी पहनी है और गले में पट्टा है। मुझे लगता है कि वह बहुत पुराना है।”

मैंने लॉर्ड बाथ की ओर देखा: किसी ने भी ट्रिक्सी को नर्स द्वारा देखे गए उस प्रेत के बारे में नहीं बताया था—सर जॉन थिन, एक अजीब से पुराने ज़माने के कॉलर पहने हुए आदमी! जब ट्रिक्सी थोड़ी देर आराम कर रही थी, मैं पुस्तकालय में घूमने लगा। मैंने देखा कि अलमारियाँ फ्रांसीसी किताबों से भरी हुई थीं और कुछ फर्नीचर स्पष्ट रूप से अठारहवीं सदी के फ्रांसीसी मूल के थे। क्या ट्रिक्सी ने कमरे के माहौल को महसूस कर लिया था?

ट्रिक्सी ने अचानक चुनौती भरे लहजे में कहा: "हेनरी—क्या यहाँ कोई हेनरी है?" एक आज्ञाकारी स्कूली बच्चे की तरह, लॉर्ड बाथ आगे बढ़े। ट्रिक्सी ने उन्हें संदेह भरी निगाहों से देखा। "आप हेनरी हैं?"

मैं अकेला ही हूँ।

उन्होंने कहा, ‘जाओ हेनरी से बात करो।’

“तुम्हें हेनरी से बात करने के लिए किसने कहा?” लॉर्ड बाथ ने पूछा।

“मुझे नहीं पता। वह एक आदमी था, एक बहुत दुखी आदमी। उसकी मृत्यु बहुत समय पहले हो गई थी। उसने तीन लोगों को मारा था, और मेरा मतलब युद्ध में नहीं है।”

कहानी और भी दिलचस्प होती जा रही थी। मैंने जानना चाहा, "उसने उन्हें कैसे मारा?"

मैं उसके हाथों को देखता हूँ, उन पर भूरे धब्बे हैं जिन्हें वह मिटा नहीं पा रहा है। अक्षर 'एच' उससे जुड़ा हुआ प्रतीत होता है, और मुझे लगता है कि उसने यह प्रतिशोध में किया है। मैं देखता हूँ कि एक साधु उसके पास आता है, और वह क्षमा पाने की कोशिश करता है लेकिन असफल रहता है। साधु अभिमानी और घमंडी है, फिर मठाधीश आता है और मैं इस दुखी व्यक्ति को घुटनों के बल बैठा देखता हूँ, फिर भी उसे क्षमा नहीं मिलती, और इसीलिए वह यहाँ वापस आता है।

हंस होल्ज़र की पत्नी, कैथरीन, प्रेतवाधित गलियारे की जांच कर रही हैं।

“क्या तुम उससे बात कर सकती हो, ट्रिक्सी?” मैंने पूछा।

“मैं अभी उनसे बात कर रही हूँ,” ट्रिक्सी ने अधीरता से जवाब दिया, “लेकिन वे कहते हैं, ‘मेरे लिए कोई उम्मीद नहीं है।’ मैं उनसे कहती हूँ कि हम उनके लिए प्रार्थना करेंगे। मैं उन्हें लैटिन में बोलते हुए सुनती हूँ। मुझे लैटिन का अच्छा-खासा ज्ञान है, और मैं उसे अंग्रेज़ी में कह रही हूँ: ‘गहराइयों से मैंने तुम्हें पुकारा है, हे ईश्वर, मेरी वाणी सुनो।’ तभी भिक्षु फिर से प्रकट होते हैं, और उनके बगल में एक लंबी महिला भी है। मुझे लगता है कि यह उनकी पत्नी हैं; वह बहुत

दुबली-पतली और सुंदर हैं, और वह उनका एक हाथ पकड़े हुए कह रही हैं, 'प्रार्थना करो, ऐसी प्रार्थना करो जैसी तुमने पहले कभी नहीं की।'"

हम रेड लाइब्रेरी से निकले और धीरे-धीरे दुनिया की सबसे बेहतरीन सीढ़ियों में से एक पर चढ़कर ऊपरी मंज़िलों पर पहुँचे। जब हम उस प्रेतवाधित गलियारे में पहुँचे जहाँ प्रसिद्ध द्वंद्वयुद्ध हुआ था, तो ट्रिक्सी को एहसास हुआ कि किसी खास साल के दिसंबर या जनवरी के आसपास कुछ हुआ था—कोई साधारण घटना नहीं। उसने तुरंत समझाया कि इसका नीचे के भूतिया इतिहास से कोई लेना-देना नहीं है।

"इस व्यक्ति की मृत्यु को चुपचाप दबा दिया गया। उसे आधी रात को एक भूरे कफ़न में लपेटकर ले जाया गया। मैं यह सब होते हुए देख सकती हूँ। पाँच लोग इस भयानक काम को अंजाम दे रहे हैं। पूरी घटना दुखद और दबा दी गई। उसकी हत्या नहीं हुई थी और न ही आत्महत्या, लेकिन वह एक असमय अंत था। सबसे बढ़कर, वे किसी का ध्यान आकर्षित नहीं करना चाहते थे, बिलकुल भी नहीं। वह यहाँ रहता नहीं था, लेकिन कुछ समय के लिए यहाँ रुका था। वह स्पेन से आया था। मुझे लगता है कि उसकी मृत्यु उसके पेट में लगी चोट से हुई, फिर भी यह हत्या या आत्महत्या नहीं थी। उसकी उम्र लगभग पैंतीस वर्ष थी। वह कहता है, 'हे भगवान, हे भगवान, ऐसा अंत।' वह कैथोलिक था, उसने मुझे बताया। उसकी मृत्यु के बाद यहाँ उसका अंतिम संस्कार नहीं किया गया। मुझे लालटेन दिखाई दे रही हैं; उसे पवित्र भूमि में दफनाया नहीं गया है। एक क्षण रुकिए, महोदय," ट्रिक्सी ने अचानक लॉर्ड बाथ की ओर मुड़ते हुए कहा। "क्या आपके परिवार से विनी या इसी तरह का कोई नाम जुड़ा है?" लॉर्ड बाथ की दिलचस्पी बढ़ गई। विनी का उच्चारण कुछ-कुछ वेमाउथ जैसा था।

भूतिया "लाल पुस्तकालय"

“फ्रांसिस, फ्रांसिस,” ट्रिक्सी ने अब उत्साह से कहा। “और मुझे फैनी का नाम सुनाई दे रहा है। वह बस हंस रही है। क्या आप उसे जानते थे?”

“हां,” लॉर्ड बाथ ने उत्तर दिया, “बहुत-बहुत समय पहले।”

क्या वह बहुत बुद्धिमान व्यक्ति थीं?

"हाँ, बचपन में तो उसका यही नाम था। उसका उपनाम फैनी था।"

जाहिर है, ट्रिक्सी के मन में कुछ नई आत्माओं का भी पुराने पात्रों के साथ मिलन हो गया था। "मैं उसे एक जवान, प्यारी, हंसती-खेलती महिला के रूप में देखती हूँ, और वह मुझसे कहती है कि तुम्हारी जेब में एक सिक्का है जो मुड़ा हुआ है, टेढ़ा-मेढ़ा है, सामान्य सिक्का नहीं है। क्या यह सच है?"

“हां,” लॉर्ड बाथ ने आश्चर्य से कहा।

“उसने अभी मुझे बताया; कितनी प्यारी है ना? ओह, और यहाँ एक मुख्य न्यायाधीश भी हैं। क्या आप उन्हें जानते हैं?”

“अजीब बात है,” लॉर्ड बाथ ने जवाब दिया। “ऊपर एक लॉर्ड चीफ जस्टिस थे।”

एक पल के लिए ट्रिक्सी विशेष रूप से दुखी लग रही थी, और उसने बताया: "यहाँ टिम नाम का एक बच्चा था, टिमोथी, लेकिन उसकी डेढ़ साल की उम्र में मृत्यु हो गई। क्या यह सच है?"

लॉर्ड बाथ अब अपनी भावनाओं पर काबू पाने के लिए संघर्ष करते हुए प्रतीत हुए। अंत में उन्होंने धीमी आवाज में कहा, "हां।"

"वह चाहता है कि मैं कहूँ, 'मैं टिम हूँ,' और आपको पता होना चाहिए कि वह अभी भी आपका बेटा है।"

लॉर्ड बाथ ने पुष्टि की कि उनके सबसे बड़े बेटे टिम की शैशवावस्था में ही मृत्यु हो गई थी, लेकिन यह तथ्य केवल परिवार के सदस्यों को ही ज्ञात था और इसे कभी सार्वजनिक नहीं किया गया था।

इसके बाद ट्रिक्सी ने एक नौकरानी के बारे में बताया, जो अपनी प्रेत जैसी अवस्था में भी सेवा कर रही थी, और जब मैंने कोई खास दिलचस्पी नहीं दिखाई, तो उसने आगे बताया कि वहाँ एक अजीब सा दिखने वाला आदमी भी था, "कोई अपना सिर बगल में दबाए चल रहा था, और मुझे इस तरह की चीजों पर हंसना नहीं चाहिए, लेकिन मैंने उस आदमी को अपना सिर बगल में दबाए हुए देखा।"

चूंकि हममें से कोई भी नहीं हंस रहा था, इसलिए उसने सोचा कि सिर बगल में दबाए उस आदमी से बात करना ठीक रहेगा। "क्या आप मुझे बता सकते हैं, महोदय, आपका सिर कैसे कटा और क्यों?" वह कुछ देर तक सुनती रही, मानो उसे उस अदृश्य, बिना सिर वाले भूत से कोई जवाब मिल रहा हो। सिर हिलाते हुए वह हमारी ओर मुड़ी। "यहां कुछ विद्रोही हैं; उनका संबंध फ्रांस से है, और ये विद्रोही बड़ी संख्या में आए हैं। किसी को सताया जा रहा था, एक उच्च कुल के व्यक्ति को। उसे यहां छिपाया गया था, और मुझे यह बिल्कुल पसंद नहीं है।"

लॉर्ड बाथ स्पष्ट रूप से प्रभावित हुए। उन्होंने समझाया, "ड्यूक ऑफ मोनमाउथ के विद्रोह के दौरान, कुछ विद्रोहियों ने यहाँ शरण ली थी। यह बिल्कुल भी असंभव नहीं है कि उनमें से एक को इसी आधार पर मृत्युदंड दिया गया हो।"

ट्रिक्सी अब स्पष्ट रूप से थकावट से ग्रस्त दिख रही थी। इन परिस्थितियों में, हमने आज का काम यहीं समाप्त करने और सुबह लौटने का निर्णय लिया। अगली सुबह हमने रेड लाइब्रेरी में फिर से शुरुआत की। अंदर प्रवेश करते ही, ट्रिक्सी ने एक महिला का वर्णन किया जो इधर-उधर घूम रही थी, अपने हाथ मल रही थी और कह रही थी कि उसके बच्चे की मृत्यु हो गई है। ट्रिक्सी ने उसकी पहचान क्रिस्टीना के रूप में की और बताया कि यह घटना सौ साल से भी

कम समय पहले घटी थी। हालाँकि, मेरी मुख्य रुचि उससे भी पुराने समय में थी, इसलिए मैंने ट्रिक्सी से पूछा कि क्या वह पूर्ण समाधि की अवस्था में जाने का प्रयास कर सकती है। वह फिर से रेड लाइब्रेरी के अंतिम छोर पर स्थित आरामदायक कुर्सी पर बैठ गई।

“कल मैंने जो त्रासदी देखी, उससे इसका कुछ संबंध है,” उसने कहना शुरू किया। “मुझे अभी भी खिड़की पर खड़ा घुड़सवार और वह महिला दिखाई दे रही है, और मुझे उस त्रासदी की बू आ रही है। तलवार के घाव जैसा कुछ है। रॉन की हत्या हुई है और हेलेन नाम की एक महिला इसमें शामिल है। वैसे, कल मैंने जिस आदमी को देखा था, वह अभी भी यहीं है, और अब वह ज़्यादा खुश दिख रहा है।”

"उससे अपनी पहचान बताने को कहो।"

मुझे शुरुआती अक्षर R मिलता है। वह एक लबादा और लेस वाला कॉलर पहनता है।

“उसने उन तीनों लोगों की हत्या क्यों की?”

“मुझे पहला अक्षर P सुनाई दे रहा है। यहाँ कोई तहखाने में बंद था।” अचानक हमें ट्रिक्सी की आवाज़ नहीं सुनाई दे रही थी, बल्कि उसके सम्मोहित होठों से एक कर्कश पुरुष की आवाज़ आ रही थी। मुझे एहसास हुआ कि भूत ने आखिरकार माध्यम पर कब्ज़ा कर लिया था और अब वह सीधे हमसे बात करने वाला था।

“तुम्हें कालकोठरी में किसने डाला?”

“एस. मेरा दुश्मन, मेरा दुश्मन।”

क्या यह आपका घर है?

"हाँ बिल्कुल।"

"क्या आपने यह घर बनाया है?"

"खराब पैसों के साथ।"

“आपका नाम क्या है, महोदय?” मैंने जोर देकर पूछा।

अचानक वह आकृति फिर से गायब हो गई और ट्रिक्सी वापस आ गई। उसने कहा, "वह जन्म से कैथोलिक था, और वह मुझे अपनी उंगली में एक बहुत बड़ी माणिक की अंगूठी दिखा रहा

है। उसके टखनों में दर्द हो रहा है। उसे कुछ समय के लिए जंजीरों में बांधा गया होगा, और मैं उसके हाथ में एक छोटा खंजर देख रही हूँ। अब वह फिर से क्षीण हो रहा है।"

“क्या वह पीड़ित है या हत्यारा?” मैंने लगभग चिल्लाकर पूछा।

“उसने यह किया; वह कहता है, ‘मैंने यह किया, मुझे चैन नहीं है।’ वह घर का मालिक था। वह कहता है, ‘तुम मेरे लिए प्रार्थना करोगे, तुम मेरे लिए प्रार्थना करोगे।’”

मैंने उस माध्यम के जरिए उस सत्ता को आश्वस्त किया कि हम सब उसके लिए प्रार्थना करेंगे।

"वह कहता है कि कोई उसका कुछ कर्जदार है।"

लेकिन उसे माफ किया जा सकता है; उसे यह बता दो।

“इस हवेली में कहीं एक छोटा सा चैपल है। मुझे वेदी दिखाई दे रही है, और वह चाहते हैं कि लॉर्ड बाथ वहाँ, चैपल में जाएँ। ‘अगर वह ऐसा करेंगे, तो मुझे शांति मिलेगी; मुझे आराम मिलेगा।’”

मैंने लॉर्ड बाथ से पूछे बिना ही वादा किया कि हम ऐसा करेंगे, क्योंकि मुझे पता था कि वह इसके लिए सहमत हो जाएंगे, हालांकि वह धार्मिक व्यक्ति नहीं थे।

“मैं अब और नहीं कर सकती, मैं अब और नहीं कर सकती,” उस माध्यम ने कहा, और वह थकी हुई लग रही थी। मैंने उससे पूछा कि उसे क्या याद है।

“मैंने एक औरत के लिए दो आदमियों को मरते देखा,” ट्रिक्सी ने याद करते हुए कहा। “बाकी ताबूतों के बीच एक सीसे का ताबूत था, जो बाकियों से अलग था। वह बाकियों से दूर था। उसमें वह आदमी था, जिसने हत्या की थी। मैंने ग्रेस का नाम सुना, और किसी को फांसी दी गई थी, छत की कड़ियों से लटकाया गया था।” अब उसे कई दिशाओं से यादें आ रही थीं, शायद इस प्रक्रिया में इतिहास की अलग-अलग परतें आपस में उलझ रही थीं। इसे सुलझाना हमारा काम था।

“टॉम,” ट्रिक्सी ने दृढ़ता से कहा और मेरी ओर देखा। मैंने उससे उस आदमी का वर्णन करने को कहा। “मैं उसे धुंधला-धुंधला देख पा रही हूँ; वह बूढ़ा है और बीते युग का लगता है।” तब लॉर्ड बाथ ने मुझे बताया कि हम उस स्थान पर थे जहाँ पहले चैपल हुआ करता था, हालाँकि फर्श बदल दिया गया था और हम वास्तव में उसके ऊपर थे। जैसा मैंने वादा किया था, हम

सब उस स्थान के चारों ओर इकट्ठा हो गए जहाँ कभी वेदी हुआ करती थी, प्रार्थना में सिर झुकाया और मैंने कहा, “थॉमस को चिंता मुक्त शांति मिले, वह अपने घर में सुखी रहे। वह किसी भी अपराधबोध या भय से मुक्त रहे। आइए अब हम कुछ क्षण मौन प्रार्थना करें।”

सन्नाटे में मैंने लॉर्ड बाथ की ओर देखा, जिन्होंने पहले मुझसे कहा था कि वे खुद को अज्ञेयवादी मानते हैं। वे सचमुच भावुक और प्रभावित लग रहे थे।

ट्रिक्सी ने कहा, "मुझे नहीं पता कि वह बिशप था या नहीं, लेकिन मैंने एक आदमी को सिर पर सोने का मुकुट पहने हुए क्रॉस का चिन्ह बनाते देखा और मैंने 'प्रगति' शब्द सुना, और फिर कुछ बहुत ही अजीब हुआ। उसके कंधे पर एक पंख रखा गया, लेकिन मुझे नहीं पता कि इसका क्या मतलब है।"

मीडियम ट्रिक्सी एलिंगहैम रेड लाइब्रेरी में समाधि की अवस्था में हैं।

“शायद अब उनकी आत्मा पंख की तरह हल्की हो गई है?” मैंने सुझाव दिया। फिर ट्रिक्सी ने लॉर्ड बाथ से पूछा कि क्या उन्हें महल में कोई रत्नजड़ित क्रूस दिखाई देता है। लॉर्ड बाथ को

तुरंत ऐसी कोई वस्तु याद नहीं आई। ट्रिक्सी ने ज़ोर देकर कहा, “यह गहरे रंग के पत्थरों से जड़ा हुआ एक रत्नजड़ित क्रूस है, और इसका संबंध आपके लोगों से है। मुझे तीन भिक्षु भी दिखाई दे रहे हैं जो आपके प्रार्थना करते समय यहाँ थे। एक कतार में तीन। लेकिन अब मुझे शांति का अनुभव हो रहा है; मुझे ऐसा लग रहा है कि जिस व्यक्ति के कंधों पर भारी बोझ था, अब वह उतर गया है। उनकी मदद करना ज़रूरी था।”

मैंने पहले ही बताया है कि ऊपर के भूतिया गलियारे में पैंतीस वर्षीय स्पेनिश व्यक्ति की मृत्यु के संबंध में माध्यम को जो नाम मिला, वह वेमाउथ से बहुत मिलता-जुलता था, जिसने द्वंद्वयुद्ध में उसकी हत्या की थी। माध्यम द्वारा इस मृत्यु को न तो मृत्यु और न ही आत्महत्या बताना बिल्कुल सही है: उसकी हत्या एक ईमानदार द्वंद्वयुद्ध में हुई थी, जिसे उन दिनों हत्या नहीं माना जाता था। ट्रिक्सी ने उस व्यक्ति की मृत्यु को एक ऐसा मामला बताया जिसे दबाना आवश्यक था, और वास्तव में ऐसा ही हुआ, न केवल इसलिए कि एक व्यक्ति की हत्या हुई थी, बल्कि इसलिए भी कि विस्काउंट की पत्नी बेवफा थी। एक बदनामी से बचा गया: शव को रसोई के फर्श के नीचे दफना दिया गया, और जैसा कि लॉर्ड बाथ ने पुष्टि की, इसे कई साल पहले खोजा गया था और घर के बाहर दफना दिया गया था।

रेड लाइब्रेरी में भूत-प्रेत की घटनाओं के बारे में ट्रिक्सी का वर्णन और भी दिलचस्प है। उसने जिस व्यक्ति का वर्णन किया है, वह स्पष्ट रूप से वही व्यक्ति है जिसका वर्णन उस बूढ़ी आया ने किया था जिसका मैंने 1964 में साक्षात्कार लिया था, और वही व्यक्ति जिससे लॉन्गलीट की पूर्व लाइब्रेरियन डोरोथी कोट्स और साथ ही ग्रेटहाउस की पूर्व हाउसकीपर श्रीमती ग्रांट का सामना हुआ था।

कुछ हद तक उलझन भरे और अव्यवस्थित तरीके से, ट्रिक्सी ने प्राचीन महल से जुड़े कई तथ्यों का पता लगाया। मुझे संदेह है कि ट्रिक्सी को इन पारिवारिक रहस्यों की जानकारी रही होगी, जो लॉन्गलीट के पर्यटक गाइडों या थिन परिवार से संबंधित लोकप्रिय पुस्तकों में कभी नहीं मिलते। हालांकि, अगर कोई पर्याप्त प्रयास करे तो ये जानकारी शोध पुस्तकालयों में उपलब्ध है। उदाहरण के लिए, "जॉन एवलिन डायरी" नामक एक समकालीन स्रोत मौजूद है, जो सत्रहवीं शताब्दी के लंदन के घटनाक्रम का विवरण है। इस स्रोत से हमें पता चला कि थॉमस थिन, जो उस समय इंग्लैंड के सबसे धनी व्यक्तियों में से एक थे और उम्र में कुछ

अधिक थे, एलिजाबेथ ओगल नाम की सोलह वर्षीय उत्तराधिकारी से प्रेम कर बैठे थे। उन्होंने उम्र के भारी अंतर के बावजूद उनसे शादी कर ली और शादी समारोह के बाद एलिजाबेथ से पहले लॉन्गलीट चले गए, जहां लेडी एलिजाबेथ को कुछ दिनों बाद उनके पीछे आना था। लेकिन एलिजाबेथ कभी लॉन्गलीट नहीं पहुंचीं। अपने परिवार द्वारा जबरन कराई गई शादी को निभाने से इनकार करते हुए, वह नीदरलैंड भाग गई और वहाँ उसने ऐसे जीवन व्यतीत किया जैसे उसकी शादी ही न हुई हो। नीदरलैंड में, एलिजाबेथ ओगल की मुलाकात काउंट कोएनिग्समार्क से हुई और वह इस साहसी स्वभाव वाले सज्जन के प्यार में पड़ गई। चूंकि तलाक संभव नहीं था और लेडी एलिजाबेथ कानूनी तौर पर थॉमस थिन से विवाहित थीं, इसलिए इन दोनों प्रेमियों ने एलिजाबेथ के पति की हत्या करने का फैसला किया ताकि वह अपने काउंट से स्वतंत्र रूप से शादी कर सके।

थाइन की दौलत और रुतबे को देखते हुए, ऐसी साजिश को अंजाम देना आसान नहीं था। इसलिए कोएनिग्समार्क ने तीन भाड़े के हत्यारों, लेफ्टिनेंट स्टर्न, कर्नल व्रात्ज़ और बोरोस्की को काम पर लगाया। ये चारों हत्यारे लंदन पहुंचे और तुरंत अपने शिकार पर कड़ी नज़र रखने लगे। एक रविवार की रात थाइन लंदन में एक पार्टी से निकले और घर जाने के लिए अपनी गाड़ी में बैठे। यही वो संकेत था जिसका वे इंतज़ार कर रहे थे। उन्होंने अपने शिकार का पीछा किया और जब थॉमस थाइन को ले जा रही गाड़ी पैल मॉल पहुंची, जो उस समय एक ग्रामीण सड़क थी, तो हत्यारों ने उसे रोक दिया। गाड़ी से आगे घोड़े दौड़ाते हुए लेफ्टिनेंट स्टर्न ने सबसे आगे वाले घोड़े की लगाम पकड़ ली। जैसे ही थॉमस थाइन ने गाड़ी का दरवाजा खोला और बाहर कदम रखा, गोलियों की बौछार उनके चेहरे पर लगी।

उस बेचैन भूत ने "मेरा दुश्मन" कहकर पुकारा था। क्या यह स्टर्न हो सकता था?

उस अशांत दौर में भी इस हत्या ने काफी सुर्खियां बटोरीं। काउंट कोएनिग्समार्क और उसके साथियों को उस समय गिरफ्तार किया गया जब काउंट एलिजाबेथ से मिलने के लिए इंग्लैंड छोड़ने ही वाले थे। जॉन एवलिन के अनुसार, 1682 में हुए मुकदमे में भ्रष्ट जूरी ने काउंट को बरी कर दिया, लेकिन असली हत्यारों को फांसी की सजा सुनाई गई। भाड़े के हत्यारों ने अपनी जान गंवाई, लेकिन साजिश रचने वाला व्यक्ति बेदाग बच गया। इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि पीड़ित की बेचैन आत्मा को शांति नहीं मिल पाई! लेकिन अगर ट्रिक्सी के माध्यम से हमसे

संपर्क करने वाले भूतों में से एक वास्तव में थॉमस थिन था, जो हत्या की साजिश का शिकार था, तो उसे अपनी हत्या के लिए मौत की सजा पाए तीन लोगों के लिए शोक क्यों करना चाहिए? निस्संदेह, ट्रिक्सी ने कई स्तरों पर जाकर जॉन, थॉमस और शायद उसके हत्यारों के बारे में भी कुछ अंश सामने लाए होंगे—जो थोड़े भ्रमित करने वाले लेकिन मूल रूप से प्रमाणिक रूप से प्रस्तुत किए गए थे।

ट्रिक्सी ने "एक सीसे के ताबूत का भी जिक्र किया, जो बाकी सभी से अलग था।" डायरियों के अनुसार, कर्नल व्रात्ज़ को फांसी दिए जाने के दो सप्ताह बाद भी उनका शरीर सड़ा नहीं था, क्योंकि संरक्षण की एक नई प्रक्रिया का पहली बार उपयोग किया जा रहा था। "वह सीसे से बने एक बेहद आलीशान ताबूत में रखे गए थे, जो इतने निर्दयी और क्रूर हत्यारे के लिए बहुत ही भव्य था।"

तो ऐसा लगता है कि लॉन्गलीट के महलों में कम से कम चार भूत रहते थे: लेडी लुईसा, जो अपने पति के हाथों अपने प्रेमी की मृत्यु पर शोक मना रही थीं; ड्यूक ऑफ मोनमाउथ की सेना का विद्रोही, जिसे पकड़ा गया और मार डाला गया; लॉन्गलीट के निर्माता सर जॉन थिन, जिनका व्यक्तिगत लगाव और शायद अपराधबोध उन्हें अपनी समृद्ध जागीर छोड़कर बेहतर अवसरों की तलाश में जाने से रोकता था; और, निश्चित रूप से, थॉमस थिन। मुझे लगता है कि थॉमस थिन अब इस दुनिया से चले गए होंगे, लेकिन मुझे पूरा यकीन है कि सर जॉन अभी भी आसपास हैं और अपने वंशज, वर्तमान लॉर्ड बाथ द्वारा पर्यटकों के लिए आयोजित किए जा रहे तमाशों का आनंद ले रहे हैं। निश्चित रूप से सर जॉन नीचे कैफेटेरिया और शौचालय में टर्नस्टाइल लगवाने, चिड़ियाघर के लिए शेर लाने और इस शानदार महल को उत्तम स्थिति में बनाए रखने के लिए राजस्व जुटाने के हर संभव प्रयास को समझते होंगे; क्योंकि सर जॉन, अपने वंशज की तरह, सबसे पहले एक व्यवसायी और समझदार व्यक्ति थे।

*77

ब्लैंचलैंड के भूत

"ब्लैंचलैंड के बारे में सबसे स्पष्ट बात इसकी दूरस्थता है," जी. डब्ल्यू. ओ. एडलेशॉ ने ब्लैंचलैंड के अपने संक्षिप्त इतिहास में लिखा है। हमारे लिए यह उतना दूरस्थ नहीं था, क्योंकि हम एक

सुनियोजित कार्यक्रम के अनुसार निजी कार से पहुंचे, और लगभग दो घंटे बाद विशेष पर्यटकों से भरी एक बस भी आ गई: ये सभी विज़न ट्रैवल द्वारा आयोजित हंटेड ब्रिटेन टूर के प्रतिभागी थे, जिसका मार्गदर्शन पोलिश रईस और पूर्व ऑर्केस्ट्रा कंडक्टर आंद्रे मिखाल्स्की कर रहे थे। पहाड़ियों से होते हुए, घाटियों में और फिर पहाड़ियों की एक और श्रृंखला को पार करते हुए हम आगे बढ़े, हर पल कांपते रहे, लेकिन अंततः अपने गंतव्य तक सुरक्षित पहुंचने की आशा बनाए रखी। 'हम' से मेरा तात्पर्य मेरी पत्नी कैथरीन, मैं और लंदन की माध्यम ट्रिक्सी एलिंगम से है, जिन्हें मैंने एक दुर्लभ और असामान्य प्रयोग में भाग लेने के लिए आमंत्रित किया था। उन्हें ज़रा भी अंदाज़ा नहीं था कि मैं उन्हें उत्तर की ओर क्यों ला रहा हूँ। उन्हें बस इतना पता था कि मैं भूत-प्रेत की खोज में निकला हूँ, उस रात उन्हें एक शांत कमरा मिलेगा और अगले दिन उन्हें वापस लंदन ले जाया जाएगा।

जब हम न्यूकैसल हवाई अड्डे से निकले, तो मुझे जरा भी अंदाजा नहीं था कि मैं जल्द ही मध्य युग के केंद्र में, एक ऐसे छोटे से बाजार कस्बे में पहुँच जाऊँगा, जिसे इतनी खूबसूरती से संरक्षित किया गया था कि ऐसा लग रहा था मानो मैं हॉलीवुड की किसी फिल्म के सेट पर हूँ। चौकोर मैदान तक पहुँचने के लिए बुर्जदार और किलेबंद शहर के द्वार से होकर गुजरना पड़ता था, और बाईं ओर एक ठोस दिखने वाली भूरे रंग की पत्थर की इमारत थी, जिसकी दूसरी मंजिल से एक रंगीन बोर्ड लटका हुआ था। बोर्ड पर लिखा था "लॉर्ड क्रू आर्म्स"। यह एक अनोखा होटल था, जो कभी सोलहवीं शताब्दी का एक हवेलीनुमा घर हुआ करता था, जिसे बारहवीं शताब्दी के एक मठ से होटल में परिवर्तित किया गया था।

ब्लैंचलैंड मठ की स्थापना प्रेमोन्स्ट्रेटेंसियन भिक्षुओं द्वारा की गई थी, जो बेनेडिक्टिन भिक्षुओं की एक कट्टर शाखा थी। जिस भूमि से मठ की आय होती थी, वह मूल रूप से नॉर्थम्ब्रिया की पुरानी रियासत का हिस्सा थी, जिसे हेनरी प्रथम ने नॉर्मन डी बोलबेक परिवार के लिए अधिग्रहित कर लिया था। परिवार ने स्वयं 1214 में अपनी कुछ भूमि इसमें जोड़ दी, और तभी ब्लैंचलैंड नाम, जिसका अर्थ है सफेद भूमि, पहली बार उल्लेखित हुआ। संभवतः यह नाम प्रेमोन्स्ट्रेटेंसियन भिक्षुओं के सफेद वस्त्रों से लिया गया है। उन्नीसवीं शताब्दी के मध्य तक, ब्लैंचलैंड के आसपास का क्षेत्र जंगली और निर्जन था, बहुत कम आबादी वाला और बाहरी दुनिया से कटा हुआ था। यह एक तरह से बहुत सौभाग्यशाली था, क्योंकि इसने ब्लैंचलैंड को

पिछली शताब्दियों के राजनीतिक संघर्षों में उलझने से बचाया और भिक्षुओं को इंग्लैंड के किसी भी अन्य हिस्से की तुलना में यहाँ अधिक चिंतनशील जीवन जीने का अवसर दिया। हेनरी अष्टम के शासनकाल में, अन्य सभी मठों की तरह, इस मठ को भी भंग कर दिया गया था, और 1539 में शेष भिक्षुओं को पेंशन देकर विदा कर दिया गया, जिससे वे चार सौ वर्षों के निवास के बाद ब्लैंचलैंड एबे को छोड़कर चले गए। प्रारंभ में रेडक्लिफ नामक परिवार भंग किए गए एबे की जागीरों और इमारतों का मालिक था, लेकिन 1623 में नॉर्थम्बरलैंड के एक पुराने परिवार, फोर्स्टर्स ने ब्लैंचलैंड पर अधिकार प्राप्त कर लिया। तब तक चर्च खंडहर हो चुका था, लेकिन मुख्य भवन के भीतर एक चैपल अभी भी मौजूद था। एबे की इमारतों के कुछ हिस्सों को गांव के लिए घरों में परिवर्तित कर दिया गया था, और मठाधीश का निवास जागीर घर बन गया। जब वंश के अंतिम पुरुष की मृत्यु हुई, तो संपत्ति डोरोथी फोर्स्टर के हाथों में चली गई, जिन्होंने डरहम के बिशप लॉर्ड क्रू से विवाह किया था।

जब 1704 में ब्लैंचलैंड के मालिक आर्थिक कठिनाइयों में पड़ गए, तो लॉर्ड क्रू ने जागीरें खरीद लीं, और इस तरह क्रू नाम उस क्षण से ब्लैंचलैंड से जुड़ गया। दुर्भाग्य से, परिवार 1715 के स्कॉटिश विद्रोह में शामिल हो गया और जैकोबाइट पक्ष का साथ दिया। अंततः जागीरें एक न्यासी मंडल को सौंप दी गईं, जिसने गाँव के क्षतिग्रस्त हिस्से का पुनर्निर्माण किया।

मुख्य रूप से रसोईघर और मठाध्यक्ष का घर सहित कई इमारतें मिलकर अंततः एक अनोखा होटल बन गईं, जिसका नाम लॉर्ड क्रीव आर्म्स था। इसका स्वामित्व और संचालन सुंदरलैंड की वॉक्स ब्रुअरीज द्वारा किया जाता था। घर का पत्थर से बना मेहराबदार कमरा अब एक बार के रूप में इस्तेमाल होता है। एक बाहरी पत्थर की सीढ़ी प्रवेश द्वार तक जाती है और दूसरी सीढ़ी उस कमरे तक जाती है जिसे डोरोथी फोर्स्टर सिटिंग रूम कहा जाता है, एक ऐसा कमरा जिसे मैं बहुत करीब से जानने वाला था।

प्रबंधक श्री ब्लेंकिनसोप ने हमारा स्वागत किया और हमें हमारे कमरे तक ले गए। सारा फर्नीचर अठारहवीं सदी की शैली में सजा हुआ था। हमारा कमरा पीछे की ओर था और घर के पीछे एक शानदार बगीचे की ओर खुलता था: ज़ाहिर है, यह मठ का बगीचा था, या उसका जो भी हिस्सा बचा था। मालिक से पहले हुई बातचीत से मुझे पता चला था कि इस इलाके में अक्सर अचानक कोहरा छा जाता है, लेकिन हमारे आने का दिन अगस्त की शुरुआत का एक

सुहावना दिन था और शाम सात बजे तक धूप खिली रही। सामान खोलकर नीचे आने पर प्रबंधक ने भौंहें चढ़ाते हुए कहा, "श्रीमती होल्ज़र और आप बम्ब्रूघ कमरे में हैं।" फिर, यह सुनिश्चित करते हुए कि कोई हमारी बातचीत सुन नहीं रहा है, उन्होंने आगे कहा, "यह वही कमरा है जिसके बारे में कहा जाता है कि यहाँ ज़्यादातर घटनाएँ घटी हैं, आपको पता है ना।" मैंने सिर हिलाया। मैंने खास तौर पर "भूतिया कमरे" में रहने का अनुरोध किया था।

मेरी इच्छा थी कि हम बिना सूचना दिए आएँ; हालाँकि, मैंने अपना काम पूरा होने के बाद प्रेस इंटरव्यू देने का प्रस्ताव रखा। जब मेरी पत्नी और ट्रिक्सी हवाई अड्डे से यात्रा के बाद आराम कर रही थीं, तब मैंने परिसर में टहलने का फैसला किया। उस जगह का शांत वातावरण अद्भुत था। यह भूतिया होने की अफवाहों को लगभग झुठला रहा था। थोड़ी देर बाद हमने नीचे मोमबत्ती की रोशनी वाले बार में रात का खाना खाया। इसी बीच, मेरी साइकिक टीम पहुँच चुकी थी और उन्हें सराय के अलग-अलग कमरों में ठहराया गया था। वे एक अनोखे और रोमांचक अनुभव में भाग लेने के लिए उत्सुक थे: एक वास्तविक प्रेतात्मा से संपर्क करना या किसी असली भूत से बात करना!

जब हम उस कमरे में पहुँचे जहाँ हमें उस रात सोना था, तब तक अंधेरा हो चुका था। जगह थोड़ी तंग थी, चौदह लोग एक डबल बेडरूम में ठूंसने की कोशिश कर रहे थे। लेकिन हमने किसी तरह सबके लिए जगह ढूंढ ली, और फिर ट्रिक्सी एक कोने में कुर्सी पर बैठ गई, अपनी आँखें बंद कर लीं और पीछे झुककर आत्माओं के प्रकट होने का इंतज़ार करने लगी।

तुरंत ही ट्रिक्सी ने मेरी तरफ देखते हुए सिर हिलाकर इशारा किया, "इस कमरे में एक हत्या हुई थी, तुम्हें पता है ना," मानो यह उस कमरे से उम्मीद की जाने वाली सबसे स्वाभाविक बात हो, जो रात भर हमारे सोने का कमरा बनने वाला था।

“और कुछ?” मैंने कहा, खुद को सबसे बुरे के लिए तैयार करते हुए।

“मैंने तीन भिक्षुओं को आते देखा, और अजीब बात यह है कि उनमें से एक ने अपनी कमरबंद गिरा दी—मतलब, वो डोरी। यह सब बहुत अजीब है।”

मैंने इस बात से सहमति जताई, लेकिन इससे पहले कि मैं उससे कुछ और पूछ पाती, उसने उस पलंग की ओर इशारा किया जिस पर हम बैठे थे। “मुझे इस पलंग पर एक स्त्री लेटी हुई दिखाई दे रही है, और वह मृत है। उसकी हत्या की गई है। यह सदियों पहले हुआ था। अब

मुझे एक छोटा बच्चा कमरे में दौड़ता हुआ दिखाई दे रहा है, उसने भी सदियों पुराने कपड़े पहने हुए हैं। इस कमरे से एक अजीब सा ताबूत बाहर जा रहा है। मुझे मंत्रोच्चार की आवाज सुनाई दे रही है। ताबूत काला है और नाव के आकार का है। मुझे ऐसा लग रहा है कि यह घटना ग्यारहवीं और तेरहवीं शताब्दी के बीच घटी होगी। साथ ही, मुझे तलवारबाजी और एक पत्थर, एक बहुत ही खास पत्थर, के बाहर कहीं खड़े होने का आभास हो रहा है।"

इस मौके पर ट्रिक्सी ने हमसे आने वाली चुनौतियों का सामना करने के लिए और अधिक शक्ति प्राप्त करने के लिए एकजुट होने का आह्वान किया।

तुरंत ही उसका चेहरा बेचैन हो गया, मानो वह कुछ सुन रही हो, कुछ दूर से आ रहा हो। "मुझे किसी के पुकारने की आवाज़ सुनाई दे रही है, 'हे यीशु, हे यीशु, हे यीशु, हे यीशु,' और मैं एक भिक्षु को गहरे रंग का वस्त्र पहने हुए देख रही हूँ, जबकि बाकी सब धूसर-सफेद वस्त्र पहने हुए हैं। लेकिन इस आदमी ने गहरे रंग का चोला पहना हुआ है जो असाधारण है। वह एक भिक्षु है, फिर भी वह वास्तव में शैतानी है।"

"मुझे लगता है उसका नाम पीटर है। मुझे नहीं पता कि उसने यह हत्या की है या इसमें फंस गया है। उसका चेहरा बाज जैसा है, और एक बहुत खूबसूरत महिला है जिसे इस साधु से बांधा गया था। मुझे उसकी चीखें सुनाई दे रही हैं, 'मेरी मदद करो, मेरी मदद करो, मेरी मदद करो!'"

मैंने पूछा, "हम उसकी मदद कैसे कर सकते हैं?"

"घुटनों के बल बैठो और प्रार्थना करो," ट्रिक्सी ने जवाब दिया। "वह पापों की क्षमा चाहती है।"

"उसने किया क्या है?"

"क्रेडो, क्रेडो—इसका क्या मतलब है?"

ट्रिक्सी थोड़ी हैरान दिखी, फिर उसने मुझे एक चाबी दी। "मेरे कमरे में जाओ, वहाँ तुम्हें एक क्रूस मिलेगा। उसे मेरे पास ले आओ।" मैंने टूर के एक सदस्य से कहा कि वह हॉल के दूसरी तरफ वाले कमरे से क्रूस ले आए।

"यह बेहद खूबसूरत लड़की प्रसव के दौरान मर गई, लेकिन वह उसके पति का बच्चा नहीं था," ट्रिक्सी ने समझाया। "और अब वह अपने किए की माफी चाहती है। मुझे 'एवे मारिया'

सुनाई दे रहा है। उसे चुपके से इस इलाके से बाहर दफना दिया गया था, लेकिन वह अपने इस दोषी प्रेम से मिलने के लिए यहाँ वापस आती है। अपने अंतरात्मा को साफ न कर पाने के कारण उसकी प्रगति धीमी है, फिर भी उसका एक हिस्सा इस दृश्य से जुड़ा रहना चाहता है। एक मिनट रुको, मुझे 'प्रभु' जैसा कुछ सुनाई दे रहा है। साथ ही, मुझे आश्चर्य हो रहा है कि किसे कुछ समय के लिए कैद किया गया था, क्योंकि मुझे एक जेलर और जंग लगी चाबियाँ दिखाई दे रही हैं। यह सब किसी फिल्म स्क्रीन को देखने जैसा है—मुझे तस्वीर के टुकड़े-टुकड़े दिखाई दे रहे हैं। पश्चाताप का गहरा भाव है; यह महिला विवाहित थी, फिर भी उसे एक भिक्षु से प्रेम था। बच्चा अर्थी पर पड़ा है। यह सब हत्या से जुड़ा हुआ है। ऐसा लगता है कि उसने बच्चे को मार डाला। अब मुझे स्पेन और धर्म जांच के बारे में कुछ समझ आ रहा है, लेकिन मुझे समझ नहीं आ रहा कि क्यों।"

मैंने सुझाव दिया, "उसे कहो कि उसे अपना नाम बताना होगा, ताकि वह पूरी तरह से निर्दोष साबित हो सके।"

ट्रिक्सी ने महिला का नाम पढ़ने के लिए काफी जोर लगाया। अंत में उसने कहा, "मुझे नाम का पहला अक्षर 'एफ' समझ आ रहा है।"

"क्या आप उस अवधि के बारे में कुछ जानकारी दे सकते हैं जब यह घटना घटी थी?"

"उसने 1260 कहा। वह खूबसूरत है; उसके बाल भूरे रंग के हैं।"

"उस भिक्षु का क्या हुआ?"

उसे देश निकाला दे दिया गया और वह कष्ट में मर गया, और वह कहती है, 'मेरी गलती, मेरी गलती!'

मैंने ट्रिक्सी को उस दुखी भिक्षु के अपराधबोध को दूर करने का निर्देश दिया। ट्रिक्सी ने क्रूस उठाया और कांपती हुई आवाज़ में कहा, "तुम्हें मसीह, मुक्तिदाता में क्षमा और सहायता प्राप्त है!" मैंने उस दुर्भाग्यशाली भिक्षु का नाम पूछा ताकि हम उसके लिए भी प्रार्थना कर सकें। "एफ. एफ. एफ." ट्रिक्सी ने उत्तर दिया। "वह एक मॉन्सिग्नोर थे।"

इस समय, ट्रिक्सी समाधि जैसी अवस्था में पहुँच गई और धीरे-धीरे एक दुखी प्रेत स्त्री में तब्दील होती चली गई। "मैंने सोचा था कि अगर मैं यहाँ वापस आ जाऊँ तो मेरे द्वारा पहुँचाए गए दुख का कुछ प्रायश्चित हो जाएगा। मैं समय-समय पर आकर अपने अस्तित्व का प्रमाण

देने की कोशिश कर रही हूँ। अब मुझे वह दिखाई नहीं देता। ओह, हम एक-दूसरे से बिछड़ गए हैं। मैं चर्च में घुटने टेकती हूँ।"

ट्रिक्सी "वापस लौट आई," और उस सत्ता ने उससे फिर बात की, और माध्यम ने उसके संदेश मुझे बताए। "जब वह छोटी थी, तब यह घर अर्ल का था।" मैंने चर्च में उसके लिए कुछ प्रार्थनाएँ करवाने की पेशकश की, लेकिन किसके नाम पर?

"बस मेरे लिए प्रार्थना करो। मुझे बहुत सुख मिलेगा और मैं मुक्त हो जाऊँगा।"

"तो हमारी शुभकामनाओं के साथ शांति से जाओ," मैंने उत्तर दिया, और मैं देख सकता था कि वह शक्ति तेज़ी से दूर जा रही थी। ट्रिक्सी अब अपनी मानसिक अवस्था से बाहर आ गई थी, और स्पष्ट रूप से थकी हुई लग रही थी।

जब वह ठीक हो रही थी, मैंने बाकी लोगों से पूछा कि क्या उन्हें प्रेतात्माओं से संपर्क करने के दौरान कुछ अजीब सा महसूस हुआ था। एक महिला ने कहा कि कमरे में एक तरह का बिजली जैसा एहसास था; दूसरी ने माना कि उसे ऐसा लगा जैसे उसे किसी ऐसे भिक्षु का आभास हुआ हो जो असल में भिक्षु था ही नहीं। ट्रिक्सी ने कहा, "अब मुझे उन तीन भिक्षुओं और उनमें से एक के अपनी रस्सियाँ नीचे रखने की बात समझ में आई। उसका भिक्षु पदच्युति हो रहा था!"

प्रबंधकों में से एक, श्री हेविट, पूरी séance के दौरान मौजूद थे और चुपचाप दिलचस्पी से सब कुछ देख रहे थे। मैंने उनसे ट्रिक्सी के माध्यम से प्राप्त सामग्री की पुष्टि करने के लिए कहा। उन्होंने कहा, "सब कुछ समझ में आता है, लेकिन अजीब बात यह है कि समय पूरी तरह से गड़बड़ है—सब कुछ सही है, लेकिन इसमें समय की दो अलग-अलग परतें शामिल हैं।"

जिस भवन में प्रेतात्माओं से संपर्क करने का अनुष्ठान हुआ था, वह मठ का एकमात्र बचा हुआ हिस्सा था, जो प्राचीन काल से ही मौजूद था - श्वेत भिक्षुओं का मठ - वही श्वेत भिक्षु जिन्हें ट्रिक्सी ने हमारे सत्र की शुरुआत में दिव्य दृष्टि से देखा था। श्री हेवेट हमें उस पदच्युत भिक्षु के बारे में कोई जानकारी नहीं दे सके, और जब मैंने इसका जिक्र किया, तो ट्रिक्सी ने मुझे अपने दर्शन के कुछ विवरण बताए। "उस भिक्षु को देखना एक भयानक अनुभव था। वह अपने काले वस्त्र में खड़ा था, फिर उसकी रस्सी गिर गई और उसका वस्त्र उतर गया, और फिर मैंने उसे नग्न अवस्था में बार-बार छीलते हुए देखा - यह एक भयावह दृश्य था।"

मैनेजर के अनुसार, कई ग्रामीणों ने चर्च के प्रांगण और होटल के बगल वाले चर्च में एक महिला का भूत देखा है। जिस कमरे में हम ठहरे थे, उसमें सो रहे लोगों ने अलग-अलग समय पर एक "मौजूदगी" की शिकायत की थी, लेकिन किसी ने भी उसे सचमुच नहीं देखा था। ट्रिक्सी ने कहा, "जंग लगे भूरे बालों के साथ वह बेहद खूबसूरत थी। मैं उसे धुंधली सी देख पाई थी, लेकिन उसने हल्के रंग की, बहुत नीची पोशाक पहनी हुई थी, सिर पर कुछ नहीं था और उसके बाल खुले हुए थे।" मैनेजर मेरी ओर मुड़ा और पूछा कि क्या वह उस महिला की तस्वीर ला सकता है, जिस पर उन्हें भूत होने का संदेह था। जब ट्रिक्सी ने तस्वीर देखी, तो उसने दृढ़ता से कहा, "यही वह लड़की है जिसे मैंने देखा था।" तस्वीर डोरोथी फोर्स्टर की थी—ट्रिक्सी ने उस महिला का नाम F रखा था—और यही डोरोथी फोर्स्टर थीं जिन्होंने ब्लैंचलैंड के इतिहास में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। 1715 में, डोरोथी के भाई थॉमस जैकोबाइट सेना में जनरल थे, हालांकि वे वास्तव में इस पद के लिए योग्य नहीं थे। उन्हें पकड़कर न्यूगेट जेल में कैद कर लिया गया था। राजद्रोह के मुकदमे से तीन दिन पहले, उनकी बहन डोरोथी नौकरानी का वेश धारण करके जेल में घुसने में कामयाब रहीं, अपने भाई को छुड़ाया और उन्हें फ्रांस भागने में मदद की, जहाँ अंततः उनकी मृत्यु हो गई। ट्रिक्सी द्वारा F. F. F. अक्षरों के उल्लेख का भी विशेष महत्व है। 1701 में जॉन फेनविक नामक एक व्यक्ति ने न्यूकैसल में द्वंद्वयुद्ध में फर्डिनेंडो फोर्स्टर की हत्या कर दी। इसके परिणामस्वरूप, संपत्ति कर्ज में डूब गई और बाद में डरहम के बिशप लॉर्ड क्रू को बेच दी गई। उन्होंने डोरोथी फोर्स्टर की चाची, जिनका नाम भी डोरोथी था, से विवाह किया। “अभी भी इस बात को लेकर कुछ भ्रम बना हुआ है कि दोनों डोरोथी में से कौन सी डोरोथी गांव और होटल में भटकती है,” एस. पी. बी. मैस ने “द लॉर्ड क्रू आर्म्स, ब्लैंचलैंड” नामक एक पुस्तिका में लिखा है: “उसे हेक्सहैम रोड पर चलते हुए देखा जा सकता है और वह होटल के प्रेतवाधित विंग में दरवाजे खोलती और बंद करती है। भतीजी का चित्र बैठक कक्ष में लगा है जिसका नाम उसी के नाम पर रखा गया है, और चाची का चित्र भोजन कक्ष में उसके पति, डरहम के बिशप के चित्र के साथ लगा है।”

अब तक मुझे समझ आ गया था कि ट्रिक्सी दो अलग-अलग समय की परतों से जुड़ चुकी थी: बारहवीं और तेरहवीं शताब्दी का भयावह दौर, साथ ही एक ऐसे भिक्षु की कहानी जिसने गलत काम किया था और उसके लिए उसे सज़ा मिली थी। यह विशेष भूतिया घटना या

आभास प्रबंधक के लिए आश्चर्यजनक था, क्योंकि इसकी सूचना पहले कभी नहीं मिली थी। दूसरी ओर, डोरोथी फोर्स्टर की प्रेतवाधित उपस्थिति पूरे इलाके में आम थी। सवाल यह था कि कौन सी डोरोथी भूत थी? समाधि जैसी अवस्था में, ट्रिक्सी ने अर्ल के स्वामित्व वाले घर के बारे में बात की। यह उस प्रश्न के उत्तर में था कि जब डोरोथी छोटी थी तब वह घर किसका था। इसलिए भूत केवल भतीजी, दूसरी डोरोथी ही हो सकती थी, क्योंकि डरहम के बिशप लॉर्ड क्रू ने उसकी चाची से शादी की थी, जिनका नाम भी डोरोथी था। छोटी डोरोथी अपनी चाची के घर में पली-बढ़ी होगी। लेकिन छोटी डोरोथी फोर्स्टर अपने पापों की क्षमा क्यों मांग रही थी? यहीं रहस्य बना हुआ है। एक ओर, ट्रिक्सी ने मिस्टर हेविट द्वारा दिखाए गए चित्र से भूत की पहचान की; दूसरी ओर, डोरोथी फोर्स्टर का निश्चित रूप से किसी भी भिक्षु से कोई संबंध नहीं था, क्योंकि अठारहवीं शताब्दी में ब्लैंचलैंड के आसपास कोई भिक्षु नहीं थे।

अगली सुबह हम न्यूकैसल के लिए रवाना हुए, जहाँ हमें एक टेलीविजन इंटरव्यू देना था। स्थानीय अखबारों में से एक, द नॉर्दर्न इको के एक रिपोर्टर ने 9 अगस्त, 1969 के अंक में शीर्षक दिया, "भूतिया, हाँ—लेकिन यह किसका भूत है?"

डलास की दो मानसिक रूप से सक्षम बहनें, सील व्हिटली और जीन लूपोट, जो हमारे साथ भूतिया जगहों के दौरे पर थीं, ने तुरंत बाद भूतिया कमरे में अपने अनुभवों को लिख लेने का फैसला किया।

हम दोनों को लगता है कि ट्रिक्सी की कम से कम एक धारणा गलत थी। ट्रिक्सी को लगा कि वह युवती इसलिए दुखी थी क्योंकि उसने अपने नवजात बच्चे को मार डाला था, लेकिन हम दोनों को पक्का यकीन था कि उसने 'मार डाला' नहीं, बल्कि 'खत्म कर दिया' कहा था। हमें लगा कि बच्चे को लाने वाले भिक्षु उसे कहीं ले गए थे। हमें इस बात का इतना यकीन है कि हम ब्लैंचलैंड वापस जाकर और जानकारी जुटाना चाहते हैं।

15 सितंबर, 1970 को, दोनों महिलाओं ने मुझसे फिर संपर्क किया। “जब हम ब्लैंचलैंड में थे, तो जीन ने एक खुले द्वार पर दीवार के पास खड़ी एक महिला को ‘देखा’। वह काफी गोल-मटोल थी, लगभग चालीस से पैंतालीस वर्ष की, और उसने काले रंग की, कड़क, पूरी स्कर्ट वाली, लंबी आस्तीन की पोशाक पहनी हुई थी, जो कमर पर कसी हुई थी। उसके सिर पर एक लेस वाला स्कार्फ था, जो उसके कंधों पर आगे और पीछे से क्रॉस किया हुआ था। वह अपने

हाथ सामने की ओर बांधे खड़ी थी, और उसके चेहरे पर उदासी और निराशा का भाव था, मानो वह किसी बीते हुए दुख को याद कर रही हो। हमने सोचा कि यह वही लड़की है जिसे हमने पिछली गर्मियों में 'अपना बनाया' था, बस फर्क इतना था कि वह हमें अपने अधेड़ उम्र के रूप में दिखाई दे रही थी, हालांकि अभी भी अपने बच्चे को खोने का दुख झेल रही थी।"

*78

एडिनबर्ग के भूत

अगर एलिजाबेथ बर्ड (अमर रानी की लेखिका), अलाना नाइट (अक्टूबर विच और कई अन्य पुस्तकों की लेखिका) और उनके पति एलिसटेयर की दोस्ती और अपार मदद न होती, तो मैं एडिनबर्ग और उसके आसपास के कुछ भूतों से इतना परिचित न होता। इन अद्भुत मित्रों ने न केवल स्कॉटलैंड की मेरी हालिया यात्रा की योजना बनाने में मदद की, बल्कि मेरे साथ काफी समय भी बिताया। स्कॉटलैंड की राजधानी के बौद्धिक वातावरण में कुछ बहुत ही अनोखी बात है: जब आप अठारहवीं और उन्नीसवीं सदी की शुरुआत की प्रभावशाली सड़कों पर चलते हैं, तो आपको ऐसा लगता है जैसे आप दुनिया के केंद्र में हैं, फिर भी दुनिया की उथल-पुथल से दूर हैं।

"अंदाज़ा लगाओ? मैं स्कॉटलैंड आ रहा हूँ," मैंने मार्च 1973 में एलिज़ाबेथ को लिखा। 3 मई को मैंने एडिनबर्ग के बीचोबीच स्थित जॉर्ज होटल में चेक-इन किया। मेरे पहुँचने के कुछ ही समय बाद, एलिज़ाबेथ मुझसे मिलने आई और मेरे बाकी प्रवास की विस्तृत योजनाएँ लेकर आई, ठीक उसी तरह जैसे नेपोलियन के सैन्य अभियानों पर निकलने से पहले उनके फील्ड मार्शल आते थे। स्कॉटलैंड की धरती पर अपने पहले आधिकारिक कार्य के रूप में मैंने एलिज़ाबेथ को न्यूयॉर्क से आयातित स्कॉच की एक बड़ी बोतल भेंट की। एलिज़ाबेथ मुझे उन प्रसिद्ध पुराने होटलों में से एक में ले जाना चाहती थी जहाँ उसे महिला शौचालय में एक अजीब अनुभव हुआ था। मुझे महिला शौचालय में कैसे ले जाया जाए और प्रबंधक को क्या बताया जाए, इस पर कुछ सवाल थे। "मान लो मैं बाहर से निगरानी रखूँ और किसी भी महिला को अंदर आने से रोक दूँ?" एलिज़ाबेथ ने सुझाव दिया। "अगर आपको कोई आभास हो तो वहाँ पाँच मिनट काफी होंगे।" मैंने मना कर दिया, यह समझाते हुए कि मुझे भूतिया पुरुष शौचालय

में जाने में कोई आपत्ति नहीं होगी, लेकिन चूंकि उस होटल में ऐसा कोई शौचालय नहीं था, इसलिए मैं नहीं जाऊँगा। लेकिन मेरी जिज्ञासा जागृत हो गई थी, इसलिए मैंने एलिजाबेथ से पूछा कि होटल के महिला शौचालय में वास्तव में क्या हुआ था।

“अच्छा,” एलिज़ाबेथ ने अपनी शांत आवाज़ में जवाब दिया, “पिछले साल 8 दिसंबर को, जो मेरा जन्मदिन भी है, मैं बहुत खुश थी। मैं व्यापारिक मुलाकातों और जन्मदिन मनाने के लिए एडिनबर्ग में थी। दोपहर में, मेरी मुलाकात एक पुस्तक विक्रेता से हुई जिसने मुझे ड्रिंक के लिए आमंत्रित किया। तो हम होटल गए। उसने ड्रिंक्स का ऑर्डर दिया और मैं तैयार होने के लिए ऊपर चली गई। महिलाओं का शौचालय एकदम साफ-सुथरा, नया और नियॉन लाइट से जगमगा रहा था। कोई भी सोचेगा कि वहाँ किसी को भी डराने वाली कोई बात नहीं थी। वहाँ कोई और नहीं था। मैं वहाँ लगभग दो मिनट ही बैठी थी कि अचानक मुझे बहुत डर लगने लगा। मैंने अपने बाल भी नहीं संवारे थे, लिपस्टिक लगाना तो दूर की बात है, मुझे बस भागना पड़ा।”

क्या आपने कुछ सुना या देखा?

“नहीं, बस एक अजीब सा डर सा महसूस हो रहा था। मैं दो सीढ़ियाँ नीचे उतरी और किताब बेचने वाले से वह पेय पाकर बहुत खुश हुई, जिसने कहा, ‘तुम अजीब लग रही हो।’ मैं सोचती रही कि मुझे इतना डर किस बात से लगा था। होटल के बारे में मुझे बस इतना पता था कि यह लगभग 1850 के आसपास बना था। जब मैंने अपने दोस्त केनेथ मैक्रे को बताया कि महिलाओं के शौचालय में मेरे साथ क्या हुआ था, तो उसने कहा, ‘मुझे होटल के इतिहास के बारे में कुछ पता है।’ उसने सुझाव दिया कि मैं ‘द स्कॉट्समैन’ अखबार से भी जानकारी ले लूँ।”

एलिज़ाबेथ को आग से सबसे ज़्यादा डर लगता था, इसलिए उसने पता लगाया कि क्या होटल में कभी कोई भीषण आग लगी थी। वास्तव में, मई 1971 में एक आग लगी थी जिसमें एक महिला की मौत हो गई थी, और एक रसोइए को आग लगाने और महिला की मौत का दोषी पाया गया था। इससे पहले, 1967 में, पास के एक क्लब में आग लग गई थी और होटल के कर्मचारियों को बाहर निकाल लिया गया था, लेकिन आग पर जल्दी ही काबू पा लिया गया था। अखबार के लाइब्रेरियन ने खेद व्यक्त किया कि होटल में कभी भी कोई बड़ी आग नहीं लगी

थी। कुछ समय बाद एलिज़ाबेथ लंदन गई और वहाँ उसे अपने दोस्त केनेथ मैक्रे का एक पत्र मिला: “प्रिय एलिज़ाबेथ, क्या यह संभव है कि महिलाओं के शौचालय में तुम्हारी बेचैनी एक भविष्यवाणी थी? 3 फरवरी, 1973 को होटल में लगी आग में एक वेल्श रग्बी समर्थक की मौत हो गई।”

मिस बर्ड को लगा कि बात यहीं खत्म हो गई, लेकिन फिर 29 अप्रैल 1973 को होटल में एक भीषण आग लग गई, जिसमें दो सौ लोगों की मौत हो गई। “मुझे आग लगने से बहुत पहले ही इसका आभास हो गया था। शुक्र है कि मैं उस समय होटल में नहीं थी।”

लेकिन अलाना नाइट की उस भूतिया महिला शौचालय के बारे में अलग ही धारणा थी। “एक दिन एलिजाबेथ ने मुझे वहाँ ले जाने की ज़िद की। मैं मानती हूँ कि मैं बहुत संशय में थी, लेकिन जैसे ही मैंने दरवाज़ा खोला, मुझे वही जानी-पहचानी सिहरन महसूस हुई और मैं समझ गई कि आधुनिक सजावट और तेज़ रोशनी के बावजूद, वहाँ कुछ बहुत ही गड़बड़ है। सौभाग्य से उस समय हम दोनों ही वहाँ थे, हालाँकि मैं यह भी मानती हूँ कि अगर एलिजाबेथ वहाँ न होती, तो मैं तुरंत वहाँ से भाग जाती!”

“मुझे तुरंत समझ आ गया कि आग से इसका कोई संबंध होने की उसकी सोच गलत थी। मुझे सन् 35 से 40 वर्ष की एक महिला की छवि मिली, जिसकी मृत्यु लगभग 1910 के आसपास हुई थी, जिसने ऐसी त्रासदी झेली थी कि उसने उसी कमरे में आत्महत्या कर ली थी। उसका अंत बेहद दर्दनाक था, और कमरे ने उसे पूरी तरह से आत्मसात कर लिया था। मेरी धारणा यह थी कि वह साफ-सुथरी थी, लेकिन उसके कपड़े कुछ हद तक पुराने थे, वह एक ‘उच्च’ नौकरानी थी, शायद गृहणी या शिक्षिका या इसी तरह की कोई और पदवी रखती थी।”

क्योंकि एलिज़ाबेथ अक्सर उस होटल में जाती है जहाँ यह सब हुआ था, इसलिए उसने मुझसे होटल का नाम न बताने का अनुरोध किया है। उसे बार, डाइनिंग रूम और लाउंज - वास्तव में, महिलाओं के शौचालय को छोड़कर सब कुछ पसंद है। इसलिए, जब बुलावा आएगा, तो एलिज़ाबेथ के पास एक ही विकल्प होगा - वहाँ से चले जाना।

* * *

फ़ोन की घंटी बजी। इयान ग्रोट का फ़ोन था, जो अपने दोस्त जेम्स ग्रैंडिसन के साथ, जो ड्राइवर की भूमिका निभाएंगे, हमें एडिनबर्ग के बाहरी इलाके में एक भूतिया ग्रामीण घर दिखाने ले जाने वाले थे। शहर के केंद्र से पहाड़ियों की ओर जाते समय, मुझे श्री ग्रैंडिसन से बातचीत करने का अवसर मिला।

"यह घटना 1965 में एडिनबर्ग के बाहरी इलाके में 1935 में बने एक आधुनिक बंगले में घटी थी," उन्होंने मधुर स्कॉटिश लहजे से भरी कोमल आवाज में कहना शुरू किया। “उस जगह का नाम पेंडलटन गार्डन्स था, और उससे पहले वहाँ कुछ भी नहीं था। मैं वहाँ लगभग दो साल तक रहा और मुझे कुछ भी असामान्य नहीं लगा, लेकिन फिर अजीबोगरीब चीजें होने लगीं। पहले हमें अंगीठी में लकड़ी के चटकने की आवाज़ सुनाई देती थी, और जब हमने जाँच की, तो पता चला कि आग जलाई ही नहीं गई थी। कभी-कभी यह आवाज़ घर के दूसरे हिस्सों में भी आती थी। फिर घर के अंदर कुत्तों के भौंकने की आवाज़ आने लगी। मेरी पत्नी इसे अकेले सुनती थी, और मैंने तो इसे नज़रअंदाज़ ही कर दिया, यह सोचकर कि बाहर कोई कुत्ता होगा। लेकिन धीरे-धीरे मुझे भी यह आवाज़ सुनाई देने लगी। बाहर कोई कुत्ता नहीं था, और मैं भौंकने की आवाज़ की दिशा का पता लगा सकता था। इसके साथ ही चूल्हे पर केतली के उबलने की आवाज़ भी आती थी, जैसे किसी को रसोई में जाकर केतली बंद करनी हो। जब भी हम रसोई के प्रवेश द्वार के पास पहुँचते, आवाज़ तुरंत बंद हो जाती थी। जब हम अभी भी इस बारे में सोच ही रहे थे, तभी और भी चीजें होने लगीं। कोई दरवाज़ा अचानक हमारे मुँह पर ज़ोर से बंद हो जाता, ठीक हमारे पहुँचने से पहले। या मैं जाता... मैं बाथरूम में जाता था, और बाथरूम का दरवाजा आधा खुला होता था, और जैसे ही मैं हैंडल तक पहुंचता था, वह जोर से खुल जाता था, पूरी तरह से खुल जाता था।

"दूसरे शब्दों में कहें तो, जो भी इसे अंजाम दे रहा था, वह आपके बारे में जानता था?"

“ओह, बिल्कुल, हाँ। फिर हमें दीवारों पर दस्तकें सुनाई देने लगीं। हमने भी दस्तक देकर संवाद करने की कोशिश की, और वाकई वह चीज़ हमें बार-बार दस्तक देती रही, लेकिन हम कोई संकेत नहीं समझ पाए, और ज़ाहिर है उस चीज़ में अनिश्चित काल तक ऐसा करते रहने की ऊर्जा नहीं थी। हमने इस सब को नज़रअंदाज़ करने की कोशिश की, लेकिन फिर कोई या कुछ पीछे के दरवाज़े पर दस्तक देने लगा। जब भी हम दरवाज़ा खोलते, वहाँ कोई नहीं होता

था। एक दिन मैं बिस्तर पर लेटा हुआ था जबकि मेरी पत्नी सैडी मेरी माँ के साथ दूसरे कमरे में थी। अचानक मुझे पीछे के दरवाज़े की ओर जाने वाले रास्ते पर भारी कदमों की आवाज़ सुनाई दी और किसी के दरवाज़े पर दस्तक देने की आवाज़ भी। यह किसी महिला के कदमों की आवाज़ लग रही थी, लेकिन मैं निश्चित नहीं कह सकता। फिर मेरी पत्नी और मेरी माँ ने भी रास्ते पर कदमों की आवाज़ सुनी। हमने दरवाज़ा खोलने के लिए कुछ नहीं किया, और थोड़ी देर बाद फिर से वही आवाज़ आई, लेकिन इस बार यह एक ज़ोरदार दस्तक थी, बैंग-बैंग-बैंग। ऐसा लग रहा था जैसे कोई अंदर न आने से बहुत नाराज़ हो, और इस बार मेरी पत्नी और मेरी माँ दोनों दौड़कर पीछे के दरवाज़े की ओर गईं। दरवाजा खोला, और फिर से वहां कोई नहीं था और न ही रास्ते से आती हुई कदमों की कोई आवाज सुनाई दी।

“उस समय हमारी आदत थी कि हम सप्ताहांत में बाहर जाते थे और रविवार रात को लौट आते थे। हमारी अनुपस्थिति में घर अच्छी तरह से बंद रहता था, खिड़कियों और सामने के दरवाजे पर सुरक्षा ताले लगे होते थे। पिछला दरवाजा पूरी तरह से कुंडी से बंद था और बिल्कुल अभेद्य था; अंदर जाने का कोई रास्ता नहीं था। पहली बार जब हमने ऐसा किया, तो वापस आने पर हमें कई चीजें गड़बड़ मिलीं: शयनकक्ष में चूल्हे के पास बिछा कालीन फर्श से करीने से उठाकर बिस्तर के बीचोंबीच रख दिया गया था। राखदानी को शेल्फ से उठाकर चूल्हे के पास बिछा कालीन के बीचोंबीच रख दिया गया था। घर की पूरी लंबाई में गलियारे में एक ढीला कालीन बिछा हुआ था। वह ढीला था और कीलों से जड़ा हुआ नहीं था। सप्ताहांत से लौटने के बाद, हमने देखा कि वह कालीन करीने से मोड़कर रखा गया था, और हमें उसे फिर से खोलकर गलियारे में बिछाना पड़ा। बैठक कक्ष में लकड़ी का एक बड़ा टुकड़ा था, जो एक रेडियो-फोनोग्राफ के पिछले हिस्से का भाग था। सप्ताहांत के बाद वापस आने पर, वह दीवार के सहारे पड़े रहने के बजाय फर्श पर सपाट पड़ा था। अगले सप्ताहांत, हमने लकड़ी के टुकड़े को वापस दीवार के सहारे रख दिया और उसके ऊपर दो कुर्सियाँ लगा दीं ताकि वह गिर न सके। लेकिन जब हम वापस आए, तो लकड़ी का टुकड़ा फिर से ज़मीन पर पड़ा था, जबकि कुर्सियाँ अपनी जगह से हिली नहीं थीं! जिसने भी यह किया होगा, उसने उसे कुर्सियों के ऊपर से सीधा उठाया होगा और उनके पीछे से खिसकाकर ज़मीन के बीचोंबीच रख दिया

होगा, मानो कह रहा हो, 'देखो, मैंने फिर से वही कर दिया, भले ही तुमने मुझे रोकने की कोशिश की हो।' अब तक हमें पूरा यकीन हो चुका था कि हमारे घर में कोई भूत-प्रेत है।

"इस बारे में तुमने क्या किया?"

“जब हम अभी भी इस समस्या को सुलझाने की कोशिश कर रहे थे, तभी एक बिल्ली से जुड़ी घटना घटी। एक दिन हमें रसोई के फर्श के बीचोंबीच एक बिल्ली के गुर्राने की आवाज़ साफ़ सुनाई दी। लेकिन हमारी बिल्ली कुर्सी पर बैठी उस काल्पनिक बिल्ली को ऐसे देख रही थी मानो वह उसे देख सकती हो। हमें बैठक में एक ज़ोरदार धमाके की आवाज़ भी सुनाई दी, लेकिन वहाँ कुछ भी अस्त-व्यस्त नहीं था। कभी-कभी पियानो पर कोई अजीब सी धुन सुनाई देती, कोई अजीब सी कुंजी दबने की आवाज़ आती, लेकिन वहाँ आस-पास कोई नहीं होता था। यह सिलसिला चलता रहा, धीरे-धीरे बढ़ता गया। पहले तो यह शायद हफ्ते में एक बार होता था। आखिरकार यह हर दिन होने लगा। दो साल बाद यह बहुत ही अजीब लगने लगा, और हमें चिंता होने लगी कि कहीं पड़ोसियों को घर के अंदर कुत्तों के भौंकने जैसी आवाज़ें न सुनाई दें। आखिरकार मैंने जेम्स फ्लैनगन नाम के एक माध्यम को घर बुलाया।”

“एक पेशेवर माध्यम?” मैंने पूछा।

"यह उनका शौक है, लेकिन वह मुझसे कहते हैं कि उनका काम उनका शौक है, और माध्यम बनना उनका असली पेशा है।"

"क्या हुआ?"

“वह अपने साथ एक और आदमी, जेम्स राइट को लाया था, और उनके पास टेप रिकॉर्डर थे। उसने हमें बताया कि उसे पूरे कमरे में आत्माओं का आभास हो रहा था, और वह उन्हें देख सकता था जबकि हम नहीं देख पा रहे थे। उसने बताया कि वह घर की मूल मालकिन, एक बूढ़ी औरत थी; वह अजीब व्यवहार करने लगी थी और उसे अस्पताल में भर्ती कराया गया था, जहाँ उसकी मृत्यु हो गई। उसे पता नहीं था कि वह मर चुकी है और अपने घर वापस आने की जिद कर रही थी। उसने बताया कि उसके बाल लाल रंग के थे। उसका पति एक फ्रीमेसन था।”

"क्या आपने इसकी जाँच की?"

“जब हमने घर खरीदा था, तब हमें घर दिखाने वाली महिला लाल बालों वाली थी, जो बाद में एक मृत महिला की बेटी निकली। साथ ही, हमें अटारी में फ्रीमेसनरी से संबंधित कई चीजें मिलीं।”

"उस माध्यम ने आपको भूत-प्रेत से छुटकारा पाने के लिए क्या सलाह दी?"

“उन्होंने हमसे साफ पानी का एक बर्तन लाकर रसोई में रखने को कहा और यह कल्पना करने को कहा कि उनके जाने के बाद उनका चेहरा उस बर्तन में पानी में डूबा हुआ दिखाई देगा। साथ ही, दो हफ्तों में यह पूरी घटना गायब हो जाएगी—और हमें आश्चर्य हुआ कि ऐसा ही हुआ। घटनाएं कम होने लगीं और अंततः पूरी तरह बंद हो गईं।”

* * *

मैंने एलिजाबेथ बर्ड को बताया था कि डेविड रीव्स नाम के एक व्यक्ति ने एडिनबर्ग स्थित अपने आवास पर एक भूत-प्रेत की घटना के बारे में मुझसे संपर्क किया था और मैंने श्री रीव्स से मिलने की इच्छा व्यक्त की थी।

“यह सब 1970 की शुरुआत में शुरू हुआ, जब मेरी चचेरी बहन ग्लैडिस, उनके पति रिचर्ड, मैं और मेरी पत्नी एलीन अज्ञात और मृत्यु के बाद के जीवन के बारे में चर्चा कर रहे थे,” श्री रीव्स ने मुझे बताया था। “हमने दूसरे लोगों को ओइजा बोर्ड का इस्तेमाल करते हुए सुना था, इसलिए मैंने एक बड़े कागज पर उसका चित्र बनाया और उसे फर्श पर रख दिया, फिर कागज के बीच में एक गिलास रख दिया, और हम सभी ने अपनी दाहिनी तर्जनी उंगली

गिलास पर रख दी। कुछ मिनटों बाद मुझे अपनी पीठ में एक ठंडी सिहरन महसूस हुई और रिचर्ड ने कहा कि उन्हें भी ऐसा ही महसूस हुआ। फिर गिलास हिलने लगा!"

उन्हें कोई संदेश नहीं मिला, और श्री रीव्स को इस पूरी बात पर बहुत संदेह था। लेकिन उस छोटे समूह ने ओइजा बोर्ड का इस्तेमाल जारी रखा, और आखिरकार उन्हें रिचर्ड के दादा होने का दावा करने वाली एक आत्मा से कुछ ठोस संदेश मिले। संदेश संक्षिप्त था: रिचर्ड को अपनी मोटरसाइकिल से दुर्घटना का सामना करना था। कुछ हफ़्ते बाद, उनकी मोटरसाइकिल के इंजन वाली तिपहिया गाड़ी से दुर्घटना हो गई। अब उन्हें अलग-अलग लोगों से संदेश मिलने लगे। एक रात उन्हें एक संदेश मिला जिसमें लिखा था कि दोनों पुरुषों को ठीक 11 बजे नमक का पानी पीना है और अपने दिमाग को खाली कर देना है।

"ग्यारह बजे मुझे नींद आ गई, और उसके बाद जो कुछ हुआ, वह मुझे बाकी लोगों ने बताया," श्री रीव्स ने समझाया। समाधि की अवस्था में, श्री रीव्स के माध्यम से, एक सत्ता प्रकट हुई जिसने स्वयं को संत फ्रांसिस ऑफ असीसी बताया। चूंकि समूह में कोई भी रोमन कैथोलिक नहीं था, इसलिए यह उनके लिए काफी आश्चर्यजनक था। समाधि की अवस्था में डेविड रीव्स उठे, और उन्होंने मांग की कि प्रकाश—जिसे उन्होंने 'झूठा प्रकाश' कहा—बुझा दिया जाए और पर्दे खोल दिए जाएं। ऐसा करने के बाद, उन्होंने सभी को घुटने टेककर प्रार्थना करने के लिए कहा। फिर उन्होंने स्वयं लैटिन में प्रार्थना की, एक ऐसी भाषा जिसे न तो श्री रीव्स और न ही वहां मौजूद कोई भी जानता था।

दुर्भाग्यवश, श्री रीव्स की चचेरी बहन ग्लैडिस ने उनकी गहरी समाधि की अवस्था को बीमारी समझकर बत्ती जला दी। तुरंत ही वे समाधि से बाहर आ गए और अपने हाथों में असहनीय दर्द की शिकायत करने लगे।

श्री रीव्स ने कहा, "जब मैंने उन्हें देखा, तो वे खून से लथपथ थे, और प्रत्येक हाथ के बीच में एक छेद था। वहाँ मौजूद सभी लोगों ने यह देखा। मैं तुरंत नल के पास भागा और खून धो डाला। उसके बाद छेद गायब हो गए।"

लेकिन उनकी séances का पवित्र माहौल जल्द ही कुछ सांसारिक रूप ले लिया: श्री रीव्स स्थानीय घुड़दौड़ के बारे में पहले से मिली जानकारी से प्रभावित हुए और इसके परिणामस्वरूप उन्होंने काफी पैसा जीता। इसके बाद उन्होंने उस समूह में एक "स्पष्ट बुरी

शक्ति" का अनुभव किया, यहाँ तक कि उनकी पत्नी ने भी इसमें भाग लेने से इनकार कर दिया। दूसरे दंपति, रिचर्ड और ग्लैडिस, ने भी उस शक्ति का कुछ अंश अपने घर में महसूस किया: भूत-प्रेत जैसी गतिविधियाँ शुरू हो गईं और वस्तुएँ अपने आप हिलने लगीं। इसी समय श्री रीव्स ने मुझसे संपर्क किया और पूछा कि उन्हें आगे क्या करना चाहिए। दुर्भाग्य से, मैं उन्हें उनके दिए गए पते पर नहीं ढूंढ पाया। क्या उन्हें कहीं और जाना पड़ा था? मैंने उन्हें एक पत्र लिखकर सलाह दी कि वे ओइजा बोर्ड से दूर रहें और समाधि में अपने अनुभव को एक प्रकार का मानसिक उन्माद समझें: हो सकता है कि कोई आत्मा जो संत फ्रांसिस बनना चाहती थी, उसने श्री रीव्स के शरीर पर कब्जा कर लिया हो और शहादत की अपनी अधूरी इच्छा को व्यक्त किया हो।

विभिन्न भूतिया घटनाओं की चर्चा में समय का पता ही नहीं चला और अचानक हम अपने गंतव्य, वुडहाउस ली पर रुक गए। पेशे से बंदूक बनाने वाले इयान ग्रोट को यहाँ एक अजीब अनुभव हुआ था और वे चाहते थे कि मैं वह जगह देखूँ जहाँ यह सब हुआ था। हम एडिनबर्ग को नज़रअंदाज़ करती एक पहाड़ी पर थे, और हमारे बाईं ओर एक अस्तबल और एक आधुनिक घर था। पहाड़ी पर थोड़ा और ऊपर, संकरी सड़क पर चलते हुए, मुख्य घर दिखाई देने लगा। मेरी जानकारी के अनुसार, वुडहाउस ली मूल रूप से पूर्व में किसी और जगह पर स्थित था, लेकिन बाद में इसे वर्तमान स्थान पर स्थानांतरित कर दिया गया था। वुडहाउस ली की एक स्थानीय परंपरा थी, और मैं उसी के दर्शन की तलाश में था। अप्रैल के हिसाब से वह बहुत ही सर्द दिन था, इसलिए हमने पहले कार में ही रहने का फैसला किया, ताकि हम श्री ग्रोट के अनुभवों को समझ सकें।

“जनवरी 1964 में मैं श्रीमान और श्रीमती पीटर लंदन के साथ वुडहाउस ली गया था,” इयान ने हमें बताया। “हम घर के तहखाने में कई घंटों तक इंतजार करते रहे, जिसका इस्तेमाल घोड़ों के लिए चारा रखने के लिए किया जाता था।”

मैंने पूछा, "मुझे लगता है कि आप वहां इसलिए गए थे क्योंकि वहां एक 'श्वेत महिला' के प्रकट होने की परंपरा है?"

इयान ने सिर हिलाया। “लगभग दो घंटे बाद, एक दरवाजे के पीछे, जो थोड़ा खुला हुआ था, एक फ्लोरोसेंट लाइट दिखाई दी। ऐसा लगा जैसे वह लगभग पाँच मिनट तक आगे-पीछे

हिलती रही और फिर गायब हो गई। हम तीनों ने उसे देखा। रोशनी उस दरवाजे के पीछे से आ रही थी। हम यह देखने के लिए इंतजार कर रहे थे कि क्या सच में कोई कमरे में प्रवेश करेगा, लेकिन कुछ नहीं हुआ, इसलिए हम चले गए।"

उस समय घर कैसा था?

"इमारत अभी भी खड़ी थी, हालांकि ईंट-पत्थर के कई बड़े टुकड़े गिरकर उसके सामने पड़े थे। लकड़ी का काम बहुत खराब हालत में था और फर्श के तख्ते गायब थे, लेकिन मूल भव्य सीढ़ी का कुछ हिस्सा अभी भी मौजूद था। रात में उस पर चलना खतरनाक था, और दिन के उजाले में भी बहुत सावधानी से चलना पड़ता था।"

अगर कोई खर्च उठाने को तैयार होता तो घर का जीर्णोद्धार किया जा सकता था। कुछ समय के लिए स्मारक आयोग ने इस पर विचार किया, लेकिन कुछ नहीं हुआ और अंततः मालिकों ने इसे गिरा दिया। यह निर्णय जल्दबाजी में लिया गया, मानो इस ऐतिहासिक धरोहर के विनाश को लेकर प्रचार से बचने के लिए। सारा काम एक ही सप्ताहांत में कर दिया गया। ईंट-पत्थर और जो कुछ बचा था, उसे भारी मशीनों से ज़मीन पर गिरा दिया गया, फिर उसे ज़मीन में गाड़ दिया गया ताकि उसके ऊपर आधुनिक शैले (छोटा घर) बनाने के लिए एक आधार बन सके। इसने मुझे संयुक्त राज्य अमेरिका में पुरानी ऐतिहासिक इमारतों को गिराकर कुछ नया और, अधिमानतः, लाभदायक बनाने के लिए अपनाई जा रही कुछ बर्बर प्रथाओं की याद दिला दी।

पीटर लंदन पुराने हवेलीनुमा घर के अचानक गायब हो जाने से स्तब्ध रह गया और उसने पहाड़ी के नीचे स्थित अस्तबल में काम करने वाली कुछ महिलाओं से बात करना शुरू किया, जो उसी जागीर का हिस्सा था। उनमें से कई ने सफेद कपड़ों में एक महिला का भूत देखा था।

अजीब बात यह है कि जब ब्रिटिश सेना ने इस इमारत पर कब्जा किया था, तब उन्होंने सेंट्रल हीटिंग उपकरण में सात हजार पाउंड का निवेश किया था। यह द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान की बात है और उस समय इमारत काफी अच्छी हालत में थी।

"युद्ध के दौरान, वुडहाउस ली एस्टेट से सटी एक युद्धबंदी शिविर थी," इयान ने आगे बताया। "पहरेदार घटनाओं का रिकॉर्ड रखते थे, और तीन साल की अवधि में दर्ज चौदह महत्वपूर्ण प्रविष्टियाँ हैं। ये प्रविष्टियाँ एक 'सफेद कपड़े वाली महिला' को देखे जाने से संबंधित हैं, जिसे

पहरेदारों ने चुनौती दी थी। संयोग से, अस्तबल की नौकरानियों ने उसे घर के बाहर, परिसर में घूमते हुए देखा था, न कि घर के अंदर या अस्तबल में।"

मैंने तय किया कि अब उस इलाके का दौरा करने का समय आ गया है जहाँ आखिरी बार वह हवेली खड़ी थी। चूंकि मेरी खोज के लिए कोई व्यवस्था करने का समय नहीं था, इसलिए श्री ग्रोट आगे चले गए, और हमें सुखद आश्चर्य हुआ कि वे जल्दी लौट आए और हमें पहाड़ी के नीचे स्थित अस्तबल कार्यालय में आने के लिए कहा। वहाँ हमारा स्वागत एक हंसमुख सज्जन ने किया, जिन्होंने अपना परिचय सेड्रिक बर्टन के रूप में दिया, जो उस संपत्ति के प्रबंधक थे। मैंने अपनी यात्रा का उद्देश्य बताया। स्कॉटलैंड में, भूतों का जिक्र करने से कोई खास हलचल नहीं मचती: वे इसे उस क्षेत्र की प्राकृतिक घटना का हिस्सा मानते हैं।

"जैसा कि मुझे पता है," श्री बर्टन ने कहा, "उनका नाम लेडी ऐन बोथवेल था। मूल रूप से वे पुराने वुडहाउस ली कैसल में रहती थीं, जो यहाँ से लगभग चार मील दूर है। एक बार जब उनके पति बाहर गए हुए थे, तो उनके एक दुश्मन ने महल पर कब्ज़ा कर लिया और उन्हें बाहर निकाल दिया, जिससे बर्फ में उनकी मृत्यु हो गई। मुझे लगता है कि जब भी वे प्रकट होती हैं, तो वे पूरी तरह नग्न अवस्था में दिखाई देती हैं। उन्हें नग्न अवस्था में ही बाहर निकाला गया था। ऐसा लगता है कि उनकी आत्मा इतना उपद्रव मचाती है कि महल के मालिकों ने महल को स्थानांतरित करने का फैसला किया और अधिकांश पत्थरों को यहाँ लाकर पहाड़ी पर वुडहाउस ली नामक हवेली का निर्माण किया। मेरी जानकारी में आखिरी व्यक्ति जिसने उनकी आत्मा को प्रकट होते देखा था, वह सदरलैंड नाम का एक कोचवान था, और यह बिजली की रोशनी लगने से ठीक पहले की बात है। उसके बाद से उनका कोई पता नहीं चला है।"

मुझे पता चला है कि कई रिपोर्टें आई थीं। इन लोगों ने वास्तव में क्या देखा?

"खैर, इमारत के उत्तरी तरफ का वही दरवाज़ा हमेशा खटखटाता था, और बर्फीली रातों में उस पर ज़ोर-ज़ोर से दस्तक होती थी; और जब कोई जाँच करने बाहर जाता, तो वहाँ कभी कोई नहीं होता था—न ही गहरी बर्फ में कोई पदचिह्न मिलते थे। मुझे लगता है कि यही उन घटनाओं का सार था, जिन्हें स्थानीय लोग बेशक बहुत बढ़ा-चढ़ाकर बताते हैं। कुछ लोग

कहते हैं कि यह एक श्वेत महिला है, और किसी ने तो लोगों को रास्ते से आते हुए भी सुना है। मैंने सुना है कि जब पुराना घर खाली पड़ा था, तब कमरों में रोशनी दिखाई देती थी।"

"क्या इस घर की कभी गंभीरता से जांच की गई है?"

"एडिनबर्ग के कुछ लोगों ने अनुमति मांगी और ग्रीष्म संक्रांति की पूर्व संध्या पर आधी रात को पुराने घर में बैठ गए। हालांकि, मैंने उन्हें बताया कि वह केवल शाम सात बजे के आसपास और गहरी बर्फ में ही प्रकट होती है। ग्रीष्म संक्रांति की पूर्व संध्या पर आधी रात को किसी दर्शन की उम्मीद करना शुभ नहीं होता। एक और व्यक्ति था जो अपने कुत्ते को लेकर आता था और समय-समय पर टॉर्च लेकर वहां खड़ा रहता था, यह देखने के लिए कि कुत्ता खड़ा तो नहीं हो रहा है।"

"वह घटना वास्तव में कब घटी थी—महिला को बाहर धकेलने की घटना?"

"इस घर को पंद्रहवीं शताब्दी के आरंभ में इस स्थान पर स्थानांतरित किया गया था। मूल रूप से इसे पुराने फुलफोर्ड टॉवर के चारों ओर बनाया गया था। यह थोड़ा भ्रामक है, क्योंकि घर के पास ही एक मेहराब है जो पूरी तरह से अलग जगह के पत्थरों से बना है और उस पर 1415 की तारीख अंकित है। यह एडिनबर्ग के पुराने गैलास्पस अस्पताल से लाया गया है।"

"यदि वुडहाउस ली को पंद्रहवीं शताब्दी की शुरुआत में मूल स्थान से इस पहाड़ी पर स्थानांतरित किया गया था, तो मूल घर कब बनाया गया था?"

"धर्मयुद्धों के दौरान, तेरहवीं शताब्दी में किसी समय।"

वुडहाउस ली के प्रारंभिक इतिहास के बारे में भले ही ज़्यादा जानकारी न हो, लेकिन अठारहवीं शताब्दी में लॉर्ड वुडहाउस ली नाम का एक व्यक्ति था, जो एडिनबर्ग का एक प्रसिद्ध साहित्यकार था। सर वाल्टर स्कॉट, एलन रैमसे और जेम्स हॉग सहित कई अन्य साहित्यकार भी इस घर में रह चुके हैं। जाहिर है, सर वाल्टर स्कॉट को पता था कि पुराना वुडहाउस ली भूतिया है, क्योंकि उन्होंने अपनी एक किताब में इसका ज़िक्र किया है, और अठारहवीं शताब्दी की स्कॉटिश यात्रा पुस्तकों में इसे अक्सर 'भूतिया वुडहाउस ली' कहा जाता है। 1932 में घर का नियंत्रण सेना के हाथ में चला गया, जिससे इमारत को काफी नुकसान पहुंचा। सेना ने तीस वर्षों तक इस पर कब्ज़ा बनाए रखा।

"क्या हाल के वर्षों में ऐसी कोई घटना सामने आई है?"

“ऐसा नहीं है,” श्री बर्टन ने जवाब दिया। “जब बुलडोजर ने पुराने घर को गिराया, तो हमने लोगों से मजाक में कहा कि भूत मलबे से बाहर निकलने की कोशिश कर रहा होगा। पुराने घर के कुछ पत्थरों को नए शैले में शामिल किया गया है, जो टूटी हुई ईंटों के ऊपर बनाया गया है, ताकि इसमें एक तरह की निरंतरता बनी रहे।”

यह शैले जॉर्ज बुकानन स्मिथ की संपत्ति है, जिसका परिवार इसे छुट्टियों के घर के रूप में उपयोग करता है। वह लॉर्ड बालोनॉघ के पुत्र हैं, और उनके छोटे भाई स्कॉटलैंड में विदेश मामलों के अवर सचिव हैं।

श्री बर्टन ने कहा, "इस घर के बारे में बहुत चर्चा हुई है। इसे स्कॉटलैंड का दूसरा सबसे प्रेतवाधित घर भी बताया गया है। इसके अलावा, वोसले यहाँ से ज़्यादा दूर नहीं है, और वहाँ भी एक नग्न श्वेत महिला की कहानी है। उसे किले की दीवारों पर दौड़ते हुए देखा गया है।"

“उन्होंने घर को पुरानी जगह से इस जगह पर क्यों स्थानांतरित किया?”

“उसकी वजह से। उसने उन्हें बहुत परेशान किया।”

"और क्या नए स्थल पर भी वे प्रदर्शन जारी रहे?"

“हां,” श्री बर्टन ने स्वीकार किया। “वह पत्थरों के साथ आई थी।”

उन्होंने दफ्तर का काम एक सहायक को सौंप दिया और हमें शैले तक ले गए। मालिक बाहर गए हुए थे, इसलिए घर में घूमने-फिरने में कोई दिक्कत नहीं हुई। यह एक आकर्षक ढंग से सजा हुआ आधुनिक सप्ताहांत घर है, जिसकी दीवारों में जगह-जगह प्राचीन पत्थर की नक्काशी की गई है। मैंने चिमनी के ऊपर लगे एक बेहद खूबसूरत पत्थर के उत्कीर्णन को निहारा। उस पर लैटिन भाषा में लिखा था, OCCULTUS NON EXTINCTUS: यानी रहस्यवाद मरा नहीं है (बस छिपा हुआ है)।

*79

मोंकटन का प्रेतवाधित भिक्षु

जब एलिजाबेथ बर्ड एडिनबर्ग से नौ मील दूर मुसेलबर्ग में ओल्ड क्रेग हॉल के एक मठ के टावर में रहने आईं, तो शायद उन्होंने यह नहीं सोचा होगा कि उन्हें एक भूत के साथ, और वह

भी किसी भिक्षु के साथ, अपना कमरा साझा करना पड़ेगा। अगर कोई एक चीज़ है जिसके साथ एलिजाबेथ बर्ड कमरा साझा नहीं करना चाहतीं, तो वह है कोई भिक्षु। भूतों के बारे में उनका नज़रिया खुला है: दरअसल, उन्हें वर्षों से भूतों से जुड़े अनुभव होते रहे हैं।

मठ का यह टावर दो मंजिला है और एक बड़े भवन परिसर का हिस्सा है जो कभी एक मठ हुआ करता था। उसका मकान मालिक, जो उसका अच्छा दोस्त भी है, मुख्य घर में रहता है, जबकि एलिजाबेथ अपने टावर में एक तरह से हवेली की मालकिन है - एक रोमांटिक स्वभाव वाली लेखिका के लिए यह एक आदर्श स्थिति है, और मॉन्कटन (जैसा कि इस जगह को कहा जाता है) में रहने के बाद से वह कई उपन्यास लिख चुकी है।

मैंने एडिनबर्ग में अपने दूसरे दिन की शाम को मोंकटन जाने का फैसला किया था, और वह दिन धुंध भरा और सर्द निकला। एलिसटेयर और अलाना नाइट मुझे अपनी कार में लेकर आए, और इयान ग्रोट, जो बंदूक बनाने वाले कारीगर थे और जिनसे मैं पहले मिल चुका था, वे भी वहीं थे।

भूतल से घुमावदार सीढ़ियों से होते हुए मुख्य मंजिल पर पहुंचा जाता है, जहां एलिजाबेथ रहती है। अपार्टमेंट में एक चिमनी वाला बैठक कक्ष, एक तरफ छोटी रसोई और पेंट्री, और दूसरी तरफ एक शयनकक्ष है। मुझे यकीन है कि जब भिक्षु इस जगह पर रहते थे, तब उनकी स्थिति एलिजाबेथ जितनी अच्छी नहीं रही होगी, इसलिए मैं आसानी से समझ सकता हूं कि एक भिक्षु, विशेषकर एक प्रेतवाधित भिक्षु, इस स्थिति की ओर क्यों आकर्षित होगा। हम सब चिमनी के चारों ओर बैठ गए, कमरे में केवल एक मोमबत्ती की रोशनी थी।

“मैंने फरवरी 1972 में यह कॉटेज किराए पर लिया था,” एलिजाबेथ बर्ड ने अपने अनुभवों का वर्णन शुरू किया। “मुझे यह बेहद शांत और सौम्य लगा। मुझे पता चला कि यह कॉटेज 1459 में बना था, एक किलेबंद घर के आंगन के पार, जो बारहवीं शताब्दी का है। मेरे कॉटेज के बारे में ज्यादा कुछ पता नहीं है सिवाय इसके कि इसे भिक्षुओं ने बनवाया था। वे इसे कृषि क्षेत्र के रूप में इस्तेमाल करते थे, और यह डेलकीथ के पास न्यूबैटल एबे का विस्तार था। इसे ‘भिक्षुओं का शहर’ कहा जाने लगा। इसी से इसका नाम मोंकटन पड़ा।”

मैंने कहा, "आप यहां सवा साल से रह रहे हैं, इस दौरान क्या आपको कोई असामान्य अनुभव हुए हैं?"

“हाँ,” एलिज़ाबेथ ने जवाब दिया। “यहाँ आने के छह महीने बाद, एक रात मैं बिस्तर पर लेटी हुई थी और लाइट जलाकर पढ़ रही थी, तभी मुझे मांस के पकने या भूनने की एक बहुत ही बढ़िया, रसदार खुशबू आई, जो पुराने पत्थर के चूल्हे से आती हुई लग रही थी। इससे मुझे भूख लग गई। ज़ाहिर है, मैं खाना नहीं बना रही थी। अगले कुछ हफ़्तों में ऐसा तीन-चार बार हुआ, लेकिन मैंने इसे सहजता से लिया, बस अपनी किताब से नज़रें उठाकर खुद से कहा, ‘अरे, फिर से वही खुशबू।’ यह सुपरमार्केट में मिलने वाले मांस जैसा नहीं था: यह स्टैंडिंग रिब रोस्ट जैसा था—महंगा, शानदार मांस।”

इस बिंदु पर अलाना ने कहानी सुनाना शुरू किया। “लगभग एक साल पहले मैं पहली बार इस कॉटेज में रुकी थी। ज़ाहिर है, मुझे इस बात की थोड़ी आशंका थी कि मुझे क्या मिलेगा, लेकिन मुझे केवल अपार खुशी और संतोष का अद्भुत एहसास हुआ। जब मैं एलिसटेयर के साथ पहली बार यहाँ रुकी, तो हम सोने चले गए और एलिज़ाबेथ के कमरे में सोए, और वह अपने स्टडी रूम में सोई; यह शनिवार की रात थी। मैं रविवार की सुबह जल्दी उठी और घंटियों की आवाज़ सुनाई दी। सुबह के लगभग 6 बजे होंगे और मैंने सोचा, 'अरे, आस-पास कहीं कोई कैथोलिक चर्च होगा। यह स्पष्ट रूप से सुबह की प्रार्थना का संकेत है।' इसलिए मैंने अपने पति को नहीं जगाया, लेकिन थोड़ी देर बाद मुझे घोड़ों के सरपट दौड़ने की आवाज़ सुनाई दी, और फिर मैंने सोचा, 'ओह, ठीक है, कोई अपने घोड़ों के साथ बाहर गया होगा। आखिर यह ग्रामीण इलाका है।' जब हमने नाश्ता किया, तो मैंने अपने पति से पूछा कि क्या घंटियों की आवाज़ ने उन्हें सुबह 6 बजे के आसपास नहीं जगाया। उन्होंने कहा, 'कौन सी घंटियाँ?' मैंने कुछ नहीं कहा, लेकिन जब एलिज़ाबेथ अंदर आई तो मैंने उससे पूछा, “क्या रविवार की सुबह घंटी की आवाज़ से आपकी नींद नहीं खुलती? यहाँ आस-पास आपका चर्च कहाँ है?” उसने कहा, “यहाँ हमारा कोई चर्च नहीं है।” असल में, मैंने जो घंटी सुनी थी, वह घर के बगल में थी।

“अलन्ना के अलावा किसी ने भी घंटी की आवाज़ नहीं सुनी है। मीलों दूर तक कोई चर्च नहीं है,” एलिज़ाबेथ ने कहा।

“पिछले मार्च में मैं फिर यहीं रुकी थी,” अलाना ने आगे बताया। “मैं एलिज़ाबेथ के कमरे में सोई थी, और सुबह करीब आठ बजे खाने की एक शानदार खुशबू से मेरी नींद खुली और मैंने

सोचा, 'वाह, एलिज़ाबेथ नाश्ते में कुछ बहुत ही स्वादिष्ट बना रही है,' और सच में वो बहुत ही बढ़िया, रसदार खुशबू थी, एक अलग सी महक। साथ ही ताज़ी रोटी की भी खुशबू आ रही थी। मैं बिस्तर से उछलकर रसोई की ओर भागी। एलिज़ाबेथ का कोई अता-पता नहीं था और कुछ भी पक नहीं रहा था। सारी खुशबू बेडरूम से आ रही थी।"

अब इयान ग्रोट की बारी थी।

"जनवरी 1973 में, मुझे यहाँ कुछ दिनों की छुट्टी बिताने के लिए कहा गया। पहली रात मैं लगभग 4:30 बजे सोने चला गया। सोने से पहले, मुझे एहसास हुआ कि मुझे कुछ चीजें दिखाई दे सकती हैं, इसलिए नहीं कि एलिजाबेथ ने मुझे किसी विशेष बात के बारे में बताया था, बल्कि इसलिए कि मुझे संदेह था कि वह मुझे इस विशेष कमरे में सुलाने के लिए क्यों कह रही थी, इसके पीछे कोई अच्छा कारण था।"

"क्या आपने वास्तव में कुछ असामान्य देखा?"

"हाँ," बंदूक बनाने वाले ने जवाब दिया। "सबसे पहले मैंने फर्श में बाईं ओर थोड़ा सा एक गुप्त दरवाज़ा देखा, और तहखाने की ओर जाने वाली सीढ़ियाँ। मैंने गुप्त दरवाज़े का ऊपरी हिस्सा देखा और एक छोटा भिक्षु प्रकट हुआ और मेरी ओर देखने लगा। वह सीढ़ियाँ चढ़कर शयनकक्ष में आ गया था और चारों ओर देख रहा था, लेकिन ऐसा लग रहा था कि उसने मुझे नहीं देखा। चूंकि उसने मुझे बिल्कुल नहीं देखा, इसलिए मैंने खुद को पूरी तरह से निश्चिंत होने दिया। फिर मैंने एक जुलूस को आते देखा। उनमें से एक रोमन कैथोलिक चर्च का एक उच्च पदस्थ व्यक्ति प्रतीत हो रहा था। वह शायद एक बिशप रहा होगा। उसके दोनों ओर भिक्षु थे और वे मंत्रोच्चार कर रहे थे। मैंने बिशप को ध्यान से देखा। वह साफ दाढ़ी वाला था, उसका चेहरा बहुत शांत था, और वह बहुत बुद्धिमान प्रतीत हो रहा था। जुलूस मेरे पास से गुजरा और लगभग गायब हो गया।"

"अब एक और प्रेत प्रकट हुआ जिसने मुझे बहुत भ्रमित कर दिया। मैंने तय किया कि अगर मैं चाहूँ तो फर्श के आर-पार देख सकता हूँ। इसलिए मैंने फर्श के आर-पार देखा, और मुझे भूसे के गट्ठे दिखाई दिए, और फिर मुझे दीवार में एक छेद जैसा कुछ दिखाई दिया, और उसमें से कुछ लोग निकले जिन्हें मैंने वाइकिंग्स या सैक्सन समझा। उन्होंने मोटे कपड़े पहने हुए थे। वे तीन थे—एक बूढ़ा आदमी, दाढ़ी वाला, जिसके बाल सफ़ेद थे, और दो अन्य, जवान और गोरे

बालों वाले, वे भी दाढ़ी वाले थे, और उनमें से किसी के पास हथियार नहीं थे। मैंने उन्हें किसान समझा। वे दीवार के इस छेद से निकले और उन्होंने अभिवादन के संकेत में हाथ उठाए, लेकिन मेरी ओर नहीं। मैं लगभग एक दर्शक ही था। फिर मैंने सोचा, क्योंकि मैं फर्श के आर-पार देख सकता था, कि शायद मैं इमारत के बाहर भी देख सकता हूँ, और फिर मैंने इमारत को ऊँचाई से देखा। अब मुझे ऐसा लगा जैसे मैं इस घर के बाहर एक समानांतर रेखा पर खड़ा हूँ, नीचे की ओर देख रहा हूँ। मैंने सैनिकों को रास्ते से ऊपर आते और कोने से मुड़ते देखा, और वे सत्रहवीं शताब्दी के मध्य के प्रतीत हुए।" वे बेहद उत्तम सामग्री से बने भूरे रंग के कोट पहने हुए थे। उनके साजो-सामान सफेद जालीदार कपड़े से बने प्रतीत हो रहे थे। वे ढोल बजाते हुए कदम मिलाते हुए आगे बढ़ रहे थे। मुझे ऐसा लगा जैसे मैं किसी मीनार में खड़े होकर यह सब देख रहा हूँ, लेकिन वहाँ कोई मीनार नहीं थी। मैंने और देखने की कोशिश की, लेकिन कुछ नहीं दिखा, इसलिए मैंने सोने का फैसला किया।

मॉनकटन कॉटेज, भूतों से सुसज्जित

"मेरे मकान मालिक, जॉन काल्डरवुड मिलर ने 1956 में यह संपत्ति खरीदी और इसका जीर्णोद्धार किया। निगेल ट्रेंटर की पुस्तक, 'द फोर्टिफाइड हाउस इन स्कॉटलैंड' में इसका उल्लेख है। मैंने श्री मिलर को इयान के उस अनुभव के बारे में बताया जिसमें उसने फर्श में छेद, भिक्षु को नीचे जाते हुए और घास देखी थी, और उन्होंने कहा, 'यह असाधारण है, क्योंकि

1956 में जहाँ अब आपके बिस्तर हैं, वहाँ फर्श में एक छेद था, और हमें उसे ढककर फर्श बनाना पड़ा था।' वहाँ से नीचे अस्तबल की ओर एक निकास था जहाँ वास्तव में घोड़े हुआ करते थे। अब वह एक गैराज और शेड है।"

मोंकटन में हुई भूतिया घटनाओं का एक और गवाह था: इयान एडम, जिनसे मैंने लंदन में साक्षात्कार लिया था। वही माध्यमवादी सज्जन, जिन्होंने अप्रैल में भूत-प्रेत की खोज के दौरान मेरी बहुत मदद की थी। मूल रूप से स्कॉटिश मूल के इयान को एडिनबर्ग आना अच्छा लगता था। 27 दिसंबर, 1972 की सुबह, वह 3:45 बजे पहुंचे। एलिजाबेथ बर्ड को यह समय स्पष्ट रूप से याद है; उनके बहुत कम दोस्त उस समय आते हैं। लेकिन वह अपने एक दोस्त के साथ न्यूकैसल से आ रहे थे, और एलिजाबेथ चिंतित हो गई थीं।

"वह बहुत ठंडी रात थी, और एलिज़ाबेथ ने हमारा स्वागत अपने खास अंदाज़ में किया," इयान ने मुझे बताया। "जैसे ही हम उसके बैठक कक्ष में बैठे, उसने पूछा, 'क्या आपको यहाँ कुछ महसूस हो रहा है?' लेकिन उसके ऐसा कहने से पहले ही, मुझे महसूस हो गया था कि यहाँ का वातावरण बहुत शांतिपूर्ण है।"

"दस मिनट के भीतर, अचानक, इयान, जो यहाँ पहले कभी नहीं आया था, बोला, 'रोज़मेरी की कितनी तेज़ खुशबू है! यह जगह रोज़मेरी से महक रही है!' एलिज़ाबेथ ने इयान के इस कथन को बताया, लेकिन बाकी किसी को भी वह खुशबू महसूस नहीं हुई।"

"वह जगह सचमुच बहुत प्यारी थी," इयान ने कहा, "और मैंने एलिज़ाबेथ से कहा कि मुझे यकीन है कि वहाँ एक महिला थी, एक बहुत मेहनती महिला, शायद पंद्रहवीं सदी की। मुझे लगा कि उसने हल्के सफेद रंग की पोशाक पहनी हुई थी और वह खाना पकाने में बहुत व्यस्त थी, मानो उसके पास बहुत काम हो। वह जवान लग रही थी, फिर भी अपनी उम्र से बड़ी लग रही थी, शायद कड़ी मेहनत के कारण। उसके आस-पास एक ज़बरदस्त सक्रियता का भाव था, मानो उसे बहुत सारे लोगों की देखभाल करनी हो। मुझे दृढ़ विश्वास था कि वह जगह उपचार का स्थान थी। मैंने एक आदमी को कोने में कुर्सी पर बैठे देखा; उसके पैर पर पट्टी बांधी जा रही थी और उसे एक पुराने ज़माने का घड़ा या बोतल दी जा रही थी जिससे वह पानी पी रहा था। मुझे लगता है कि उसमें कोई बेहोशी की दवा थी। मुझे अच्छी तरह याद है कि उस

जगह पर बहुत अच्छे काम हो रहे थे, मानो वह ऐसी जगह हो जहाँ लोग दुर्घटना या लड़ाई होने पर आश्रय और उपचार के लिए आते हों। वह निश्चित रूप से एक महान आध्यात्मिक शक्ति का स्थान था।"

जब मैंने इयान की गवाही की पुष्टि एलिज़ाबेथ से की, जिसने उसके द्वारा दिए गए अनुभवों को तुरंत लिख लिया था, तो उसने महिला भूत के वर्णन में कुछ बदलाव किया। एलिज़ाबेथ के नोट्स के अनुसार, महिला की उम्र तीस से चालीस के बीच लग रही थी, उसने हल्के भूरे रंग के कपड़े पहने थे, जो एक तरफ से थोड़े मुड़े हुए थे।

"क्या उस आदमी की मदद किए जाने और उस महिला के खाना पकाने का आभास महज़ अतीत की छाप थी, या आपको लगता है कि ये भूत थे जिन्हें आपने देखा?"

“ओह,” इयान ने दृढ़ता से कहा, “वे भूत ही थे।” उसे कुछ सुनाई नहीं दे रहा था, लेकिन उसे खाना पकने की खुशबू आ रही थी।

"क्या उस रात कुछ और भी हुआ था?"

नहीं। मेरी रात बहुत सुकून भरी गुज़री, हालाँकि मुझे कड़ाके की ठंड लग रही थी। शायद वो मेरी ज़िंदगी की सबसे ठंडी रात थी। दरअसल, मैं आधी रात को बिस्तर से उठा और कड़ाके की ठंड से बचने के लिए अपने सिर पर एक स्वेटर ओढ़ लिया।

मोनकटन में घटी भूतिया घटनाओं का एक और गवाह है। जेम्स बॉयड, जो पेशे से बिक्री प्रतिनिधि हैं, लेकिन मानसिक और उपचार शक्तियों से संपन्न हैं, एक बार उसी कमरे में रात भर रुके थे जिसमें इयान ग्रोट सोए थे जब उन्हें वह अद्भुत अनुभव हुआ था। यह अप्रैल 1972 की शुरुआत में हुआ था।

“सुबह वो मेरे पास आया,” एलिज़ाबेथ ने बताया और कहा कि एक महिला लंबे, गंदे-सफेद कपड़े पहने बेडरूम में चिमनी के पास बहुत व्यस्त लग रही थी। बैठक कक्ष (जहाँ हम अभी हैं) और बगल वाले बेडरूम में मौजूद दोनों चिमनियां कभी आपस में जुड़ी हुई थीं। जेम्स बॉयड ने मुझे ये भी बताया, ‘वो बहुत व्यस्त और थकी हुई है क्योंकि वो बहुत मेहनत करती है।’ ज़ाहिर है, उसे इयान एडम के घर के अनुभव के बारे में कोई जानकारी नहीं थी।”

अब इयान ग्रोट ने बोलना शुरू किया। “यहाँ आने के दो सप्ताह बाद, जेम्स बॉयड ने मुझे फोन किया और कहा, ‘इयान, मुझे ऐसा लग रहा है कि उस आंगन में एक कुआँ है। वह पूरी तरह से

ढका हुआ है, लेकिन मुझे लगता है कि अगर तुम उस कुएँ में नीचे जाओगे, लगभग आधे रास्ते तक, तो तुम्हें दीवार में एक गुहा मिलेगी और उस गुहा में बहुत सारा चाँदी का सामान मिलेगा, घरेलू चाँदी जो संकट के समय में छिपाई गई थी।' मैंने एलिजाबेथ को इसके बारे में बताने का वादा किया और मैंने बताया।"

"आंगन में सचमुच ऐसा कुआँ है," एलिज़ाबेथ ने पुष्टि की, "लेकिन इयान ग्रोट ने जिस मीनार का ज़िक्र किया था, वह अब मौजूद नहीं है। वह एक सुरक्षात्मक मीनार का हिस्सा थी, जिसका इस्तेमाल रक्षा के लिए किया जाता था। जब मैंने श्री मिलर को कुएँ के बारे में बताया, तो उन्होंने कहा, 'यह तो बहुत ही असाधारण बात है। लगभग एक साल पहले मैं कुएँ में लगभग पंद्रह फीट नीचे गया था, और जब मैंने ऊपर देखा, तो रोशनी बहुत दूर दिखाई दी।' श्री मिलर ने वापस ऊपर जाने का फैसला किया, क्योंकि उन्हें नहीं पता था कि गहराई में उन्हें क्या मिल सकता है। लेकिन उन्हें यह आभास ज़रूर हुआ कि कहीं न कहीं कोई खजाना ज़रूर है और उन्होंने मुझे और मेरे दोस्तों को उसे खोजने के लिए प्रोत्साहित किया।"

अब जब सबने अपनी-अपनी बात कह दी थी, तो मेरी बारी थी कि मैं अपने विचार बताऊं। जब बाकी लोग शयनकक्ष के बारे में बात कर रहे थे, तब मुझे दरवाजे से झांकते हुए एक भारी-भरकम साधु की स्पष्ट झलक दिखाई दी। उसने भूरे रंग का चोगा पहना हुआ था और उसके चेहरे पर एक जिज्ञासु भाव था, मानो वह हमें देख रहा हो। तभी मेरे मन में निकोलस नाम कौंधा। मुझे यह भी आभास हुआ कि यहाँ आसपास कुछ कृषि गतिविधियाँ चल रही थीं, मुर्गियाँ, हंस और अन्य सामान थे, और किसी न किसी तरह से सेना इन सामानों से जुड़ी हुई थी। ये विचार मुझे बाकी लोगों के अपने-अपने बयान देने से पहले ही आ गए थे।

"मैंने जिस भिक्षु को देखा, उसने भूरे रंग का चोला पहना हुआ था," इयान ग्रोट ने पुष्टि की, "और मुझे ऐसा लगा जैसे मैं घटित घटनाओं को देख रहा हूँ, न कि उस विशेष क्षण में उपस्थित लोगों को। यह अतीत की कोई फिल्म देखने जैसा था।"

खैर, अगर एलिजाबेथ के मोंकटन टॉवर में रहने वाले भिक्षु और महिला फिल्म अभिनेता हैं, तो वे हॉलीवुड से एक कदम आगे हैं: आप वास्तव में खाने की खुशबू महसूस कर सकते हैं!

* 80

स्कॉटिश ग्रामीण भूत

मई के शुरुआती दिनों में, सुबह का नज़ारा वाकई अजीब था: एडिनबर्ग का ज़्यादातर हिस्सा घने, नम कोहरे से ढका हुआ था; होटल के सभी फायरप्लेस जल रहे थे; और सुबह नौ बजे ही बिजली चालू करनी पड़ी। स्थानीय लोगों को इससे ज़्यादा फ़र्क नहीं पड़ा, यहाँ तक कि जब कोहरा छटा और वैसी ही तेज़ बारिश शुरू हो गई जैसी ऑस्ट्रिया के पहाड़ों में होती है। खैर, समय तो समय होता है। ठीक 10 बजे एलिसटेयर और अलाना नाइट मुझे होटल जॉर्ज में लेने आए, और हम उस यात्रा पर निकल पड़े जिसकी योजना हमने काफ़ी पहले बना रखी थी। एलिसटेयर के पास एडिनबर्ग के दक्षिण और पूर्व के इलाके के नक्शे थे, ताकि हम कहीं भटक न जाएँ और समय बर्बाद न हो। चूंकि नाइट दंपति एबरडीन से आए थे, इसलिए वे दक्षिण के ग्रामीण इलाकों से उतने परिचित नहीं थे जितने एडिनबर्ग के स्थानीय निवासी होते हैं, और इस वजह से पूरी यात्रा एक रोमांचक सफ़र में तब्दील हो गई। पहले तो हम शहर से बाहर जाने वाली मुख्य सड़कों में से एक पर चले, लेकिन जब हम एडिनबर्ग के दक्षिण-पूर्वी उपनगरों में एक खड़ी पहाड़ी की चोटी पर पहुँचे, तो घना कोहरा फिर से छा गया और हमें इतनी बुरी तरह से घेर लिया कि एलिसटेयर को गाड़ी रोकनी पड़ी। हमने अपने अंतर्ज्ञान पर भरोसा करने का फैसला किया, और अलाना और मैंने, अपनी आंतरिक शक्ति का इस्तेमाल करते हुए, एलिसटेयर को बताया कि वह सीधे तब तक जाए जब तक कि वह एक खास गली में न पहुँच जाए, जिसे उसे लेना था। हमारी अपार राहत के लिए, कोहरा ठीक उसी समय छँट गया और हमें पता चला कि हम शुरू से ही सही रास्ते पर थे।

यह सब श्रीमती एग्नेस चेयने के एक पत्र से शुरू हुआ, जिसमें उन्होंने मुझे एडिनबर्ग से आठ मील दूर स्थित मिडलोथियन के औचिंडिनी नामक एक अनोखी जगह के बारे में बताना चाहा। श्रीमती चेयने ने लिखा था, “मेरा जन्म 1898 में वहीं हुआ था। मैं डरपोक नहीं हूँ।” “फर्थ वुड्स” में भटकने वाला भूत एक ऐसी महिला का है जिसे उसके प्रेमी ने ठुकरा दिया था और गहरे दुख में उसने एक ऊँचाई से एश नदी में छलांग लगा दी थी। कम से कम यही मान्यता है। श्रीमती चेयने की चाची, जो भूतों की वास्तविकता में विश्वास नहीं करती थीं, संयोग से

डलमोर मिल की ओर जाने वाली एक परित्यक्त रेलवे सुरंग से गुजर रही थीं। मिल में एडिनबर्ग रेलवे की एक शाखा की दो पुरानी रेलवे सुरंगें हैं, जिसे व्यापार की कमी के कारण लंबे समय से छोड़ दिया गया है। पटरियाँ बेशक कई साल पहले हटा दी गई थीं, लेकिन सुरंगें रेलगाड़ियों के उस रंगीन युग की मूक गवाह बनी हुई हैं। आज, मिल बाहरी दुनिया से व्यापार करने के लिए सड़क और ट्रकों का उपयोग करती है। यह देश का एक शांत, वनों से घिरा हुआ हिस्सा है, जो पर्यटकों और व्यापारियों दोनों के लिए काफी हद तक अनछुआ है, और इसने उन्नीसवीं शताब्दी के दौरान अपने मूल आकर्षण का काफी हद तक बरकरार रखा है।

वह महिला सुरंग में दाखिल हुई और जब वह उसके बीचोंबीच पहुँची तो अचानक डर के मारे जम गई। एक औरत उसकी तरफ आती हुई दिखाई दी, मानो कहीं से अचानक प्रकट हो गई हो। उसके कपड़ों से लग रहा था कि वह पुराने ज़माने की है और उसके कदमों की कोई आवाज़ नहीं थी। श्रीमती चेयने की चाची ने गौर से देखा और अचानक वह आकृति उनकी आँखों के सामने से गायब हो गई। हालाँकि उन्हें भूतों पर कभी विश्वास नहीं था, फिर भी उस दिन वह बहुत डरी हुई हालत में एडिनबर्ग लौटी।

लगभग पैंतालीस मिनट बाद, हम एक संकरी ग्रामीण सड़क पर पहुँचे, और तेज़ बारिश के बावजूद, हमें "डालमोर मिल" लिखा हुआ एक बोर्ड दिखाई दिया। कुछ ही क्षण बाद, एक शाखा सड़क नदी के किनारे की ओर नीचे उतरती हुई दिखाई दी, और वहाँ मिल थी। हमने अतिक्रमणकारियों को अपनी कारें पार्क न करने की चेतावनी देने वाले बोर्ड को अनदेखा किया और चारों ओर देखा। दाईं ओर एक सुरंग थी और बाईं ओर भी एक। पहले हमने दाईं ओर वाली सुरंग की जाँच की। अंदर सब कुछ सूखा था, और मैंने सोचा कि इसमें कितने बढ़िया मशरूम उगाए जा सकते हैं। हम मुश्किल से दस कदम ही चले थे कि अलाना पीछे मुड़ी और बोली, "यह सही सुरंग नहीं है। चलो दूसरी सुरंग में चलते हैं।" जैसे ही हम दूसरी सुरंग में दाखिल हुए, हम सभी ने एक बर्फीली ठंड महसूस की जो बारिश के दिन की ठंड से कहीं अधिक थी। इसके अलावा, पहली सुरंग इतनी ठंडी नहीं थी। जब हम सुरंग के बीच में पहुँचे तो अलाना रुक गई। उसने कहा, "मैं रात में इसमें से नहीं गुजरना चाहूँगी, और दिन में भी मैं इसमें अकेले नहीं चलूँगी।"

मैंने पूछा, "आपको यहां कैसा लग रहा है?" मैंने नाइट्स को श्रीमती चेयने के पत्र के बारे में या हमारे यहां आने के कारण के बारे में नहीं बताया था।

“इस सुरंग के बीच में कुछ ऐसा है जो बहुत डरावना है। मुझे एकदम घबराहट हो रही है, और यह तब शुरू हुई जब मैं सुरंग के आधे रास्ते में थी।” बिना कुछ कहे, अलाना वापस मुड़ी और कार में बैठ गई। मुझे यकीन है कि कितना भी समझाने पर भी वह दोबारा उस सुरंग में नहीं जाती।

* * *

एडिनबर्ग से तेईस मील दूर, एक उपजाऊ घाटी में, जो कभी चक्की उद्योग का केंद्र हुआ करती थी लेकिन अब मुख्य रूप से कृषि प्रधान है, पीबल्स शहर बसा हुआ है। आसपास के ग्रामीण इलाकों को पीबल्सशायर के नाम से जाना जाता है और इस क्षेत्र में कई रमणीय पर्यटन स्थल हैं, जिनमें शांत, पारंपरिक विला और छोटे होटल शामिल हैं, जो अंग्रेज़ों और स्कॉटिश लोगों के बीच बहुत लोकप्रिय हैं। ऐसा ही एक होटल है वेनलाव कैसल होटल, जो शहर के बाहरी इलाके में समुद्र तल से सात सौ फीट ऊपर एक ऊँची पहाड़ी पर स्थित है। यह केवल गर्मियों में आने वाले मेहमानों के लिए खुला रहता है और बाहर से देखने पर वास्तव में एक महल जैसा दिखता है। चार मंजिला ऊँचा, एक कोने में एक गोलाकार मीनार के साथ, वेनलाव कैसल स्कॉटलैंड के भारी-भरकम मध्ययुगीन किले के बजाय एक मजबूत किलेबंदी वाले घर का प्रतिनिधित्व करता है। महल (जो अब होटल है) में प्रवेश पीछे से होता है; इसके पीछे, वेनलाव पहाड़ी, जिसके नाम पर इसका नाम पड़ा है, और भी ऊपर उठती है। वर्तमान इमारत 1782 में स्मिथफील्ड कैसल नामक एक पुराने स्कॉटिश किले के स्थान पर बनाई गई थी, जो पुराने समय में सीमावर्ती क्षेत्र के मजबूत गढ़ों में से एक था। वर्तमान भवन का आधा हिस्सा 1854 में जोड़ा गया था, जिसे स्थानीय रूप से नकली सामंती शैली के रूप में जाना जाता है।

वेनलाव, एर्स्किन परिवार की संपत्ति थी और 1914 में लेडी एर्स्किन ने अपने हवेली को नौसेना के बारह अधिकारियों के लिए एक स्वास्थ्य लाभ अस्पताल के रूप में एडमिरल्टी को सौंप दिया। जेम्स वाल्टर बुकानन की पुस्तक 'ए हिस्ट्री ऑफ पीबल्सशायर' के अनुसार, यह प्रथम

विश्व युद्ध के अंत तक एक सहायक रेड क्रॉस अस्पताल बना रहा। लेखक वर्तमान आवासीय भवन का वर्णन करते हुए कहते हैं कि यह "काउंटी के सबसे सुंदर दृश्यों में से एक के साथ एक प्रमुख स्थान पर निर्मित है। ऐसा माना जाता है कि यह स्मिथफील्ड के प्राचीन किले के स्थान पर बना है, जो लगभग अठारहवीं शताब्दी के मध्य तक अस्तित्व में था।"

1949 में यह घर वर्तमान मालिक के पिता अलेक्जेंडर कमिंग के हाथों में चला गया, जिन्होंने इसे एक छोटे होटल में बदल दिया।

1968 की गर्मियों में, एक अमेरिकी दंपति, श्रीमान और श्रीमती जोसेफ सेनिट ने वेनलाव कैसल में कुछ दिन बिताने का फैसला किया। श्रीमती सेनिट ने मुझे बताया, “हमारा कमरा बीच वाली मंजिल के आखिर में था, जिसके साथ एक छोटा सा बुर्जनुमा कमरा था जिसे मेरी बेटी इस्तेमाल करती थी। वहाँ हमारी पहली ही रात, जुलाई का महीना होने के बावजूद कमरा बर्फ जैसा ठंडा था, और हम बत्ती बंद करके सोने के लिए बेताब थे। बिस्तर पर लेटते ही, अचानक मुझे एक लंबी, बिल्कुल इंसानी आह सुनाई दी! ऐसा लगा जैसे वह मेरे बिस्तर के पास से आ रही हो। उस पल मैं जम गई—मुझे हिलने-डुलने या साँस लेने से भी डर लग रहा था। अगर मेरे पति मेरे साथ न होते, तो शायद मैं सदमे में चली जाती। मैंने उनसे कुछ नहीं कहा, क्योंकि वे अक्सर मेरे भूतिया विश्वासों को लेकर मेरा मज़ाक उड़ाते हैं, और मुझे लगा कि वे शायद सो रहे होंगे, क्योंकि उन्होंने कोई हरकत नहीं की और कुछ नहीं कहा। हालाँकि, कुछ देर बाद मुझे यह पक्का एहसास हुआ कि अगर वह भूत था तो वह दोस्ताना था, क्योंकि मुझे वहाँ अपनापन महसूस हुआ।”

कुछ दिनों बाद जब सेनिट परिवार महल छोड़कर चला गया, तो श्रीमती सेनिट ने आखिरकार अपने पति को इस घटना के बारे में बताया। उन्हें आश्चर्य हुआ जब उनके पति ने पुष्टि की कि उन्होंने भी वह आवाज़ सुनी थी। उन्होंने इसे बगल के छोटे कमरे में सो रही उनकी बेटी की आवाज़ समझा था। लेकिन श्रीमती सेनिट को यकीन था कि आवाज़ उनके सामने से आई थी, और बुर्ज वाला शयनकक्ष जहाँ लड़की सोती थी, कमरे के पीछे एक कोने में था और दरवाज़ा बंद था। साथ ही, उस समय होटल के उस हिस्से में सेनिट परिवार ही अकेला ठहरा हुआ था।

ट्वीड नदी पार करके पीबल्स की ओर बढ़ते समय भी बारिश हो रही थी। महलनुमा होटल आसानी से मिल गया और कुछ ही मिनटों में हम उसके सामने पहुँच गए। हम सोच रहे थे कि

क्या वह खुला होगा, क्योंकि हमने अपने आने की सूचना नहीं दी थी। हमें सुखद आश्चर्य हुआ जब एक शांत स्वभाव के युवक ने हमारा स्वागत किया। पता चला कि वह होटल का मालिक था, उस व्यक्ति का बेटा जिसने मूल रूप से होटल खोला था। साथ ही, उस समय होटल में वही अकेला व्यक्ति था, क्योंकि अभी सीज़न शुरू नहीं हुआ था। मैंने उससे बीच वाली मंजिल पर बुर्ज वाले कमरे को दिखाने का अनुरोध किया, लेकिन मैंने अपने अनुरोध का कारण नहीं बताया। मैंने बस इतना कहा कि मेरे कुछ अमेरिकी दोस्तों को वेनलाव में ठहरना अच्छा लगा था और मैं उनका कमरा देखना चाहता था। कमरे में प्रवेश करते ही अलाना मेरी ओर मुड़ी और बोली, "यहाँ कुछ तो गड़बड़ है। मुझे सर्दी लग रही है, सिर में खुजली हो रही है।" जब अलाना अपनी मानसिक स्थिति को समझने की कोशिश कर रही थी, तब मैंने श्री कमिंग को उसकी पहुँच से दूर एक तरफ ले जाकर उनसे होटल के बारे में पूछताछ की। क्या उन्हें याद है कि उस घर से जुड़ी कोई घटना हुई थी, चाहे वह होटल बनने के बाद हुई हो या उससे पहले, जिसमें किसी की मृत्यु, त्रासदी या कोई असामान्य घटना शामिल हो?

इस सवाल पर श्री कमिंग थोड़े असहज दिखे। उन्होंने अंत में कहा, "कुछ बातें ऐसी हैं जिनके बारे में हम बात करना पसंद नहीं करते। हमारे यहाँ सिर्फ एक ही दुखद दुर्घटना हुई है। लगभग बीस साल पहले हमारे एक मेहमान बेडरूम की खिड़की से गिर गए थे।"

इस समय अलाना वहाँ आई और खिड़की के पास रुक गई। उसने कहा, “इस खिड़की पर कुछ है। किसी ने या तो खुद को इस खिड़की से फेंक दिया है या गिर गया है।” लेकिन अलाना ने ज़ोर देकर कहा कि यह त्रासदी बहुत पुरानी है, जिससे मैं उलझन में पड़ गया। क्या वह समय-अवधियों को लेकर भ्रमित थी, या किसी पहली मृत्यु के बाद दूसरी मृत्यु हुई थी, शायद किसी प्रेतात्मा के कारण? इस तरह के विचार एक मानसिक अन्वेषक के मन में ऐसे समय में दौड़ते हैं। दरअसल, बाद में पता चला कि मेहमान उस कमरे से एक मंज़िल ऊपर वाली खिड़की से गिर गया था जिसमें हम थे। वह एक खनिक था जो बीमार हो गया था और किसी तरह खिड़की से गिर गया था। उसके दोस्त उसे वापस अंदर ले आए, लेकिन उसकी गर्दन टूट गई थी; असल में उसे हिलाने-डुलाने से उसकी मौत हो गई थी।

अलाना ने सिर हिलाया। “नहीं। मुझे जो महसूस हो रहा है, उसका संबंध इस कमरे की इस खिड़की से है। शायद इसका संबंध उस जगह से है जो पहले यहाँ थी। मुझे आग का आभास हो रहा है।”

श्री कमिंग ने कहा, "ठीक है, वेनलॉ हिल, जहां हम खड़े हैं, वह जगह थी जहां उत्पीड़न के दौरान चुड़ैलों को जलाया जाता था, या ऐसे लोगों को जिन पर ऐसा आरोप लगाया जाता था।"

“मुझे तीव्र पीड़ा का अहसास हो रहा है,” अलाना ने कहा, “और मुझे कुछ शोर सुनाई दे रहा है, शोर और अत्यधिक अफरा-तफरी व उत्तेजना का एहसास। मुझे लोगों की भीड़ और गुस्से का आभास हो रहा है। कोई या तो इस खिड़की से गिर गया है या उसे बाहर फेंक दिया गया है, और आग का भी आभास हो रहा है। लेकिन यह निश्चित रूप से एक महिला है। मुझे यह न केवल इस कमरे में बल्कि नीचे इस छत पर भी महसूस हो रहा है, जिसका इससे कुछ संबंध प्रतीत होता है।”

मैंने श्री कमिंग से पूछा कि क्या उनके किसी मेहमान ने कभी असामान्य घटनाओं के बारे में शिकायत की थी।

“नहीं, ऐसा नहीं है,” उन्होंने जवाब दिया। “हमारे यहाँ एक मेहमान आई थीं जिन्होंने शोरगुल की शिकायत की थी, लेकिन वे मानसिक रूप से विक्षिप्त थीं। वे 1950 के दशक में कुछ समय के लिए यहाँ रहती थीं। मैं उन्हें अच्छी तरह से नहीं जानता था; उस समय मैं बहुत छोटा था।”

मैंने पूछा, "और यह महिला कहाँ ठहरी थी?"

“वैसे, अगर सोचें तो, इस कमरे के बगल वाले कमरे में ही सही।”

मैंने श्री कमिंग को धन्यवाद दिया और सोचा कि क्या वह महिला अतिथि वास्तव में मानसिक रूप से विक्षिप्त थी, या शायद उसने वही महसूस किया था जो श्री और श्रीमती सेनेट ने लगभग पंद्रह साल बाद उसी क्षेत्र में महसूस किया था।

दोपहर का समय अभी बाकी था और हमारे पास ग्रामीण इलाकों को घूमने के लिए दो घंटे बचे थे। हमने एक बार फिर ट्वीड नदी पार करके ट्रैक्वायर हाउस जाने का फैसला किया, लेकिन पहले फोन करके सूचना देना ज़रूरी समझा, क्योंकि यह उन दिनों में से एक नहीं था जब इस निजी हवेली में जाया जा सकता था।

स्कॉटिश भूत: ट्रैक्वायर हाउस भूतों से भरा पड़ा है

स्कॉटलैंड के सबसे पुराने आबाद घर के रूप में प्रसिद्ध, इनरलीथेन स्थित ट्रैक्वायर हाउस एक भव्य पार्क के बीच पाँच मंजिला इमारत है, जो एक शांत वातावरण में स्थित है और मानो किसी दूसरी सदी या दूसरी दुनिया में लौट आई हो। यह वर्तमान में लॉर्ड मैक्सवेल स्टुअर्ट के स्वामित्व में है, जो शाही स्टुअर्ट परिवार से संबंधित एक प्रतिष्ठित कुलीन परिवार से हैं। एक परंपरा है कि ट्रैक्वायर के भव्य द्वार, जिन पर पौराणिक जानवरों की आकृतियाँ बनी हैं, तब तक बंद रहेंगे जब तक लंदन में एक स्टुअर्ट राजा का पुनः राज्याभिषेक नहीं हो जाता। यह जैकोबाइट भावना उस समय से चली आ रही है जब ट्रैक्वायर के अर्ल ने स्टुअर्ट वंश का समर्थन किया था, लेकिन वर्तमान लॉर्ड, पीटर मैक्सवेल स्टुअर्ट, अपनी बनाई बीयर की गुणवत्ता को लेकर अधिक चिंतित हैं। वे ट्रैक्वायर हाउस के खजानों का विस्तृत वर्णन करने वाली एक शानदार सचित्र पुस्तिका के लेखक भी हैं। इनमें राजा के कमरे में वह पलंग भी शामिल है जिस पर मैरी क्वीन ऑफ स्कॉट्स सोती थीं, और जिस पर उनकी दासियों द्वारा बनाया गया एक आवरण है। वहाँ उनका सोना कोई आश्चर्य की बात नहीं है, क्योंकि दूसरे अर्ल की पत्नी लेडी मैरी सीटोन, मैरी की पसंदीदा दासियों में से एक थीं। इसके अलावा, मैरी स्टुअर्ट द्वारा अपने बेटे स्कॉटलैंड के जेम्स VI के लिए इस्तेमाल किया गया पालना अब ट्रैक्वायर में रखा है, और घर के कई कमरों में खजाने, दस्तावेज, हथियार और उत्तम फर्नीचर प्रदर्शित हैं, ये सभी सोलहवीं और सत्रहवीं शताब्दी के हैं, जब यह भव्य घर अपने चरम पर था। हालाँकि

हमें इस खूबसूरत घर का नजारा बेहद पसंद आया, जो बरसात के दिन, कोहरे के छंटने के साथ, बेहद रोमांटिक लग रहा था, हम यहाँ प्राचीन वस्तुओं की प्रशंसा करने नहीं, बल्कि इसके भूतों के बारे में जानने आए थे।

घर की देखभाल करने वाले एंड्रयू ऐकेन बर्न्स, जो 1934 से ही वहां काम कर रहे थे, हमें घर घुमाने ले गए और एक-एक कमरे के बारे में विस्तार से बताते रहे।

"क्या आपको यहां कभी कोई मानसिक अनुभव हुआ है?"

“हाँ,” उन्होंने सिर हिलाया, मानो यह पूछा जाना दुनिया की सबसे स्वाभाविक बात हो। “यह घटना 1936 में एक खूबसूरत गर्मी के दिन की दोपहर में घटी थी। मैं अपने घोड़े के साथ घर के सामने, खेत में स्थित पुरानी खंडहर कुटिया के पास झाड़ियाँ साफ कर रहा था। मेरे घोड़े का नाम जिंजर था, जो भूरे रंग का था, और अचानक उसने अपने कान फड़फड़ाए और मैंने ऊपर देखा। मैंने एक महिला को घास पर चलते हुए देखा, जो विक्टोरियन पोशाक पहने हुए थी। वह धीरे-धीरे गेट से होते हुए कुटिया में गई और फिर छोटे गेट से होते हुए बगीचे में चली गई।”

“इसमें ऐसी क्या खास बात थी? क्या वह आगंतुक नहीं हो सकती थी?” मैंने पूछा।

“खैर, मैंने अपना घोड़ा वहीं छोड़ दिया और यह देखने के लिए सीधे ऊपर गया कि वह व्यक्ति कहाँ गया था, और छोटा फाटक बंद था। वह फाटक से अंदर जा चुकी थी, और फिर भी फाटक बंद था।”

क्या आपने उसे फिर कभी देखा?

“नहीं। लेकिन बाद में किसी ने मुझे कुछ पुरानी तस्वीरें दिखाईं, और उनमें से एक तस्वीर में मैंने उस महिला को पहचान लिया जिसे मैंने घास पर चलते हुए देखा था। वह लेडी लुईसा स्टुअर्ट थीं।”

लेडी लुईसा स्टुअर्ट का निधन 1875 में सौ वर्ष की आयु में हुआ। उन्हें महल के ठीक पीछे, ट्रैक्वायर चर्च के कब्रिस्तान में बने एक तहखाने में दफनाया गया है। मैंने सोचा, वह उस जगह पर क्यों घूमती होंगी?

बीसवें जमींदार के अनुसार, ट्रैक्वायर हाउस का इतिहास दसवीं शताब्दी तक जाता है, जब यहाँ एक झोपड़ी हुआ करती थी। 1107 में राजा अलेक्जेंडर प्रथम ने ट्रैक्वायर परिवार को एक चार्टर प्रदान किया, और वे यहाँ रहने वाले स्कॉटिश राजाओं की लंबी श्रृंखला में पहले राजा थे। संयोगवश, ट्रैक्वायर का अर्थ है घुमावदार नदी पर स्थित निवास। तेरहवीं शताब्दी में इस इमारत को सीमावर्ती किलेबंदी (एक रक्षात्मक बाड़) में शामिल कर लिया गया, और सीमा संघर्ष की लंबी अवधि के दौरान इसने इसी रूप में अपनी भूमिका निभाई। 1491 में अर्ल ऑफ बुकान के पुत्र जेम्स स्टुअर्ट ट्रैक्वायर के पहले जमींदार बने, और उन्हीं से वर्तमान परिवार का वंश चला आ रहा है। सदियों से बदलते समय के अनुरूप इमारत में काफी बदलाव और विस्तार किए गए। जो कभी एक साधारण सीमावर्ती किला था, वह पुनर्जागरण काल का महल बन गया और अंततः स्कॉटलैंड के बेहतरीन आवासों में से एक बन गया। सत्रहवीं शताब्दी में गृहयुद्ध के दौरान, कैथोलिक महिलाओं से विवाह के कारण ट्रैक्वायर स्कॉटलैंड में कैथोलिक धर्म के प्रमुख गढ़ों में से एक बन गया, जैसा कि वर्तमान जमींदार बताते हैं। चूंकि देश के इस हिस्से में कैथोलिक धर्म को पसंद नहीं किया जाता था, इसलिए प्रार्थना सभा गुप्त रूप से आयोजित की जाती थी। आज भी, परिसर में एक रोमन कैथोलिक चैपल है, जो दुर्भाग्य से बेहद भड़कीले आधुनिक शैली में सजाया गया है और घर के बाकी हिस्सों से बिल्कुल अलग है। 1688 में पीबल्स के एक गिरोह ने घर पर छापा मारा और मिली सभी धार्मिक वस्तुएं नष्ट कर दी गईं। उन्नीसवीं शताब्दी के काफी बाद तक स्कॉटलैंड में कैथोलिक धर्म को खुले तौर पर स्वीकार नहीं किया गया था। 1715 के विद्रोह के दौरान, ट्रैक्वायर ने बोनी प्रिंस चार्ल्स का साथ दिया, जिससे परिवार पर बहुत विपत्ति आई।

जब चौदहवें जागीरदार चार्ल्स स्टुअर्ट का 1861 में अविवाहित रहते हुए निधन हो गया, तो संपत्ति उनकी बहन लेडी लुईसा (जन्म 1775) के हाथों में चली गई। उन्होंने भी विवाह नहीं किया और 1875 में अपनी संपत्ति पर लगभग सारा समय बिताने के बाद उनका भी निधन हो गया। जीवन भर उनका ट्रैक्वायर हाउस से गहरा लगाव रहा। उन्होंने बगीचों की देखभाल की, घर को उत्तम स्थिति में रखने में उन्हें गर्व महसूस होता था, और हालांकि वे कई शताब्दियों में परिवार की पहली महिला मुखिया थीं, फिर भी उन्हें ग्रामीणों और उनके नौकरों का पूरा सम्मान प्राप्त था। उनके निधन के बाद, उत्तराधिकार का मामला अदालतों द्वारा तय किया

जाना था। अंततः, ट्रैक्कायर हाउस लेडी लुईसा के चचेरे भाई, माननीय हेनरी कॉन्स्टेबल मैक्सवेल स्टुअर्ट के हाथों में चला गया, जो इस प्रकार सोलहवें जागीरदार बने। शायद लेडी लुईसा इस घटनाक्रम से पूरी तरह खुश नहीं थीं, क्योंकि ट्रैक्कायर को संभालने वाली वे वंश की अंतिम सदस्य थीं। संभवतः, उसकी आत्मा अपने राज्य को छोड़ना नहीं चाहती, या शायद यहाँ लंबे समय तक रहने के कारण वह ट्रैक्कायर की इतनी आदी हो गई है कि वह इस तथ्य से अनभिज्ञ है कि उसके लिए जाने के लिए कोई और, बेहतर जगह भी हो सकती है।

मैंने चौकीदार से पूछा, "क्या किसी और ने लेडी लुइसा का भूत देखा है?"

“खैर, कुछ अन्य लोगों ने उसे देखा है, लेकिन उन्होंने केवल एक आकृति देखी और उसे पहचाना नहीं। कुछ लोगों ने उसे सड़क पर थोड़ी दूर देखा है।”

मैंने पूछा, "उसे 'हरी महिला' क्यों कहा जाता है?" मुझे अपने दोस्तों से पता चला था कि पौराणिक लेडी ऑफ ट्रैक्कायर को इसी नाम से जाना जाता था।

"खैर, मैंने उसे जो पोशाक पहने देखा था," चौकीदार ने कहा, "वह कुछ हरे रंग की थी, जंगली कबूतर के रंग जैसी।"

मैंने पूछा, "क्या ऐसी कोई पोशाक मौजूद है?" चूंकि घर में परिवार का बहुत सारा पुराना फर्नीचर और निजी सामान सुरक्षित रखा हुआ था, शायद मूल पोशाक अभी भी मौजूद हो।

“खैर, यह एक अजीब बात है: यहाँ के एक पुराने वनपाल—उनकी पत्नी की माँ लेडी लुइसा की दर्जी थीं। उन्होंने उन कपड़ों की कतरनों को संभाल कर रखा था जिनसे वे पोशाकें बनाई गई थीं, और जब मैंने उनसे पूछा, तो उनकी पोती ने मुझे वे सामग्रियाँ दिखाईं। जब मैंने उन्हें देखा तो मैंने उस पोशाक का रंग और कपड़ा पहचान लिया जो उन्होंने पहनी हुई थी।” कार्यवाहक श्री बर्न्स ने स्वीकार किया कि उनमें कुछ मानसिक क्षमताएँ थीं। कभी-कभी उन्हें घटनाएँ घटित होने से पहले ही पता चल जाती थीं, लेकिन उन्होंने इस पर ज्यादा ध्यान नहीं दिया।

मैंने श्री बर्न्स से हमें लेडी लुईसा के कमरे में ले जाने का अनुरोध किया। वहाँ, दक्षिणी दीवार पर खूबसूरती से फ्रेम में लगी हुई, उस महान महिला की तस्वीर थी। "वह सर वाल्टर स्कॉट की मित्र थीं," कमरे के केयरटेकर ने टिप्पणी की। कमरा आयताकार था, जिसके एक कोने में चिमनी थी। गहरे लाल रंग की कुर्सियाँ, दो सोफे और अठारहवीं और विक्टोरियन शैली के

फर्नीचर का एक अनोखा मिश्रण कमरे को एक गर्मजोशी भरा और आत्मीय एहसास दे रहा था। एक तरफ से बगीचे को देखा जा सकता था, जबकि दूसरी तरफ से ड्राइववे दिखाई देता था, ताकि लेडी लुईसा को हमेशा पता रहे कि उनसे मिलने कौन आ रहा है। अलाना ने काफी देर से कुछ नहीं कहा था। मैंने उसे बगीचे की खिड़कियों के पास खड़ा पाया। बारिश रुक गई थी और सूरज बादलों को चीरकर निकलने लगा था।

मैंने पूछा, "क्या तुम्हें उसकी उपस्थिति महसूस होती है?"

अलाना ने मुझे हैरानी भरी नजरों से देखा। "क्या तुम नहीं हो?"

मैंने सिर हिलाया। मुझे कुछ मिनटों से पता था कि लेडी लुईसा स्टुअर्ट आज दोपहर घर पर थीं और उनसे कुछ अप्रत्याशित मेहमान मिलने आए थे।

* * *

कुछ देर बाद, हम एडिनबर्ग की ओर वापस चल पड़े। हमने फिर से ट्वीड नदी पार की, और बारिश एक बार फिर शुरू हो गई। ऐसा लगा मानो भाग्य ने बारिश को एक घंटे के लिए रोक रखा था ताकि हमें ट्रैक्वायर हाउस को उसके सबसे खूबसूरत रूप में देखने का मौका मिल सके।

मैं सोच रहा था कि आखिर ऐसी कौन सी बात है जो सभी ब्रिटिश भूतों को आपस में जोड़ती है। तभी मुझे समझ आया: चाहे वे मध्ययुगीन हों या विक्टोरियन, पुनर्जागरणकालीन हों या एडवर्डियन, उन सभी की अपनी एक शैली थी।

*81

केरी तट पर भूत

अगर आपने बैलीहेइग के बारे में कभी नहीं सुना है—जिसका उच्चारण रॉजर्स और हैमरस्टीन के "बाली-हाई" की तरह ही होता है—तो आपने वास्तव में उस सबसे खूबसूरत तटीय इलाके को देखने से चूक गए हैं जो अभी भी मानवीय लालच से अछूता है। यह पूरी तरह से आबादी से अछूता तो नहीं है, लेकिन अभी तक यहाँ न तो कांच और कंक्रीट से बने आलीशान होटल हैं, न ही पास में हवाई अड्डा, और न ही कोई संभ्रांत वर्ग। बैलीहेइग बस वहीं बसा है, एक छोटा

सा मछुआरा गाँव और एक भव्य किला, जो अटलांटिक महासागर की ओर देखता है। कुछ समय पहले तक यह इलाका तस्करों से भरा रहता था, क्योंकि पश्चिमी आयरलैंड की कई खाड़ियों और झीलों में चालाक आयरिश लोगों को पकड़ना राजस्व अधिकारियों के लिए काफी मुश्किल था।

मैं न तो तस्करों के गुप्त ठिकानों की तलाश में था और न ही पोटिन के नए स्रोतों की, लेकिन केरी तट की यात्रा करने के लिए मुझे प्रेरित करने वाली भावना का पता मुझे कुछ साल पहले डबलिन में प्रकाशित एक प्रतिष्ठित पत्रिका के लेख से चला। "एक भूत के निशान पर" शीर्षक वाला यह लेख कैप्टन पी. डी. ओ'डोनेल की 1962 में बैलीहेइग में हुई विचित्र घटनाओं की सच्ची रिपोर्ट है। आयरलैंड ऑफ द वेलकम्स नामक यह पत्रिका आयरिश टूरिस्ट बोर्ड द्वारा प्रकाशित की जाती है, लेकिन इस पत्रिका में प्रकाशित होने वाला यह एकमात्र ऐसा लेख है जिसमें किसी मानसिक रोमांच का वर्णन है। तो पेश है कैप्टन ओ'डोनेल की रिपोर्ट:

“यह सब जून 1962 के पहले, धूप भरे महीने में बैलीहेइग में एक सामान्य छुट्टी के दौरान शुरू हुआ। छुट्टियों में भी, मेरे जैसा अंशकालिक लेखक हमेशा नए विचारों की तलाश में रहता है, लेकिन उस छुट्टी में मैंने भीषण गर्मी का भरपूर आनंद लेने का निश्चय किया था, और लेखन को भाड़ में जाने दिया। मैंने लगभग सुनसान गाँव के शांत वातावरण में आराम किया, परिवार के साथ चार मील लंबे एकांत समुद्र तट पर आलस किया, या होटल से आए कुछ ही आगंतुकों के साथ समुद्र तट के खेलों में भाग लिया।

“फिर एक दिन—ध्यान रहे, यह जून की चौथी या पाँचवीं तारीख थी—मैं अपने आठ वर्षीय बेटे फ्रैंक के साथ चट्टानों के ऊपर घुमावदार रास्ते से होते हुए बैलीहेग कैसल के जले हुए खंडहर तक टहलने गया। यह पूरी तरह से पुराने किलों के प्रति मेरी रुचि के कारण और अपने बेटे को किला दिखाने के लिए था। मुझे इसके इतिहास की बस थोड़ी-बहुत जानकारी थी, लेकिन इतना पता था कि यहाँ से शक्तिशाली क्रॉस्बी परिवार ने कभी काउंटी केरी के उत्तरी भाग के अधिकांश हिस्से पर अपना प्रभुत्व जमाया था। 1921 के 'अशांति' के दौरान जब रिपब्लिकनों ने किले को जलाकर राख कर दिया, तो वे देश छोड़कर चले गए।”

“कुछ देर तक हमने पास में काम कर रहे एक बुजुर्ग से बात की, और उन्होंने बताया कि किले की पूरी तरह से खोजबीन कभी नहीं हुई। फिर हमने कैमरा हाथ में लेकर शुरुआत की। मुझे

हमेशा कैमरे से अलग-अलग एंगल और अनोखे शॉट्स लेने का शौक है, इसलिए जब खंडहरों के बीच हमारा छोटा सा दौरा फ्रैंक को संतुष्ट कर गया, तो हमने कुछ यादगार तस्वीरें खींचनी शुरू कर दीं। सबसे महत्वपूर्ण तस्वीर किले के अंदर ली गई थी। फ्रैंक किले के सामने की दीवार के सहारे समकोण पर खड़ा था, और मैं पीछे खड़ा था। किले के अंदर अंधेरा था, लेकिन सूरज की किरणें उसकी दाहिनी ओर की खिड़की से तेज़ी से आ रही थीं। व्यूफाइंडर में मैं फ्रैंक को बाईं ओर कैप्चर कर पाया और उम्मीद कर रहा था कि दाहिनी ओर की खिड़की से समुद्र तट का नज़ारा भी दिख जाए। मुझे उम्मीद थी कि खिड़की से आती सूरज की रोशनी ही काफी होगी—मेरी शौकिया फोटोग्राफी के लिए कोई लाइट मीटर नहीं था।”

"छुट्टियों के बाकी दिनों की कहानी मायने नहीं रखती, सिवाय इसके कि दिन धूप से भरे थे, लहरों का सामना करते हुए, केरी हेड पर केरी के हीरे खोजते हुए, आराम का आनंद लेते हुए और रात में होटल में गाए जाने वाले गीतों में शामिल होते हुए बीते। लेकिन जो बात मायने रखती थी, वह थी जब रंगीन फिल्म डेवलपर से वापस आई। मैंने जिस तस्वीर का वर्णन किया है, उसमें एक और आकृति दिखाई दी, जो खिड़की से आ रही रोशनी के चौकोर हिस्से से आंशिक रूप से ढकी हुई थी। इस आकृति के हाथ में तलवार थी, और उसके पैरों में पतलून नहीं थी, बल्कि ऐसा लग रहा था जैसे उसने मोज़े या थाई बूट पहने हों! पहले तो मुझे यह थोड़ा डरावना लगा, लेकिन मेरी पत्नी ने इसे डबल एक्सपोज़र बताकर टाल दिया।"

“हालांकि, जब मैंने और उसने अन्य तस्वीरों की जांच की, तो हम दोनों इस बात पर सहमत हुए कि न तो कोई डबल एक्सपोज़र था और न ही कोई अन्य नेगेटिव, जिसे 'भूत' की तस्वीर पर लगाने से वही प्रभाव उत्पन्न हो सकता था। तो फिर इसका जवाब क्या था, हमने सोचा। क्या मैंने सचमुच किसी भूत की तस्वीर खींची थी?”

इसके बाद जो घटनाएँ घटीं, उन्होंने इस मामले को और भी असाधारण बना दिया। मैं तस्वीर को दफ्तर ले आया और अपने दोस्तों को दिखाई। उनमें से दो को बाकी दोस्तों से ज़्यादा दिलचस्पी थी और उन्होंने नेगेटिव देखने को कहा। जब मैं दोपहर के खाने के लिए घर गया, तो मैंने नेगेटिव को भी तस्वीर के साथ उसी लिफाफे में डाल दिया—जिसका मुझे बाद में बहुत पछतावा हुआ—और वे उससे काफ़ी प्रभावित हुए। हालाँकि, उस रात मैंने लिफाफा एक दोस्त को दे दिया, यह भूलकर कि नेगेटिव भी उसके अंदर था—और यकीन मानिए—

लिफाफा बड़े ही रहस्यमय तरीके से गायब हो गया। अगर सिर्फ़ तस्वीर होती, तो सब ठीक होता, लेकिन नेगेटिव भी साथ में था, इसलिए सब कुछ खो गया। कम से कम बारह गवाह थे जिन्होंने नेगेटिव और प्रिंट दोनों देखे थे, इसलिए जो कोई भी मुझे झूठा कहता है, वह खुद भी झूठा हो सकता है।

“बेशक, मैंने अखबारों में विज्ञापन दिए और इनाम की पेशकश करते हुए पर्चे भी छपवाए, लेकिन मेरी ‘भूत’ वाली तस्वीर कभी नहीं मिली। अखबार और रेडियो पर मेरा इंटरव्यू हुआ और मैंने हाल ही में आयरलैंड में हुई भूतिया घटनाओं की पूरी जांच करने और इस विषय पर एक किताब लिखने का निश्चय किया। खबर फैल गई और कुछ ही समय बाद, स्टॉकहोम और कोपेनहेगन से मुझे तस्वीरों के स्वीडिश और डेनिश अधिकार खरीदने के लिए पूछताछ आने लगी। वे 25 से 30 पाउंड तक की रकम की पेशकश कर रहे थे और अगर मेरे पास तस्वीर होती, तो शायद मैं और भी ज्यादा अमीर हो जाता, जब दूसरे अखबारों ने भी इसमें दिलचस्पी दिखाई।”

“डेनमार्क के लोग केरी के जंगली इलाकों से मिली एक ‘भूत’ की तस्वीर में इतनी दिलचस्पी क्यों ले रहे थे? यह कहानी बेहद रोचक है। केरी के पुराने अभिलेखों के अनुसार, डेनिश एशियाटिक कंपनी का एक डेनिश जहाज, गोल्डन लियोन, कोपेनहेगन से ट्रांकेबार जाते समय, 20 अक्टूबर, 1730 को बैलीहेइग के तट पर दुर्घटनाग्रस्त हो गया। भयंकर तूफान के कारण वह अपने मार्ग से भटक गया था, लेकिन स्थानीय कहानी यह थी कि बैलीहेइग कैसल के क्रॉस्बी परिवार ने जहाज को किनारे पर लुभाने के लिए घोड़ों के सिर पर नकली बत्तियाँ लगाई थीं। जहाज के कप्तान ने आगे टिमटिमाती रोशनी को अन्य जहाजों की बत्तियाँ समझकर अपना मार्ग जारी रखा, और अंत में अटलांटिक की लहरों में आकर जहाज चकनाचूर हो गया।”

आयरलैंड के बैलीहेइग में एक प्रेतवाधित नाविक का वास रहता है।

“सर थॉमस क्रॉस्बी और उनके किरायेदारों ने चालक दल को बचाया। साथ ही डेनिश शराब की कई बोतलें, कपड़े, उपकरण और चांदी की छड़ों और सिक्कों से भरे बारह बक्से भी बचा लिए गए। ये सिक्के ट्रांकेबार में सामान और श्रम के भुगतान के लिए थे, और इसी के कारण छह लोगों की मृत्यु हुई। इसके कुछ समय बाद, सर थॉमस क्रॉस्बी की अचानक मृत्यु हो गई, ऐसी अफवाह थी कि जहर से उनकी मृत्यु हुई थी, और उनकी पत्नी, लेडी मार्गरिट ने बचाव कार्य और अपने पति की मृत्यु के लिए 4,500 पाउंड की राशि का दावा किया। उन्होंने कहा कि जहाज़ डूबने वाली रात को उनके परिश्रम और मेहनत के कारण ही उनकी मृत्यु हुई। जहाज़ के कप्तान, जे. हीतमैन ने इस दावे का कड़ा विरोध किया और चांदी के बारह बक्सों को किले के मजबूत बुर्ज के नीचे तहखाने में रख दिया। हालांकि, देरी होती रही, और जून 1731 तक, उन्हें पता चला कि वे चांदी को सुरक्षित रूप से डबलिन, डेनमार्क या किसी अन्य जहाज पर नहीं पहुंचा सकते।

“फिर एक रात, महल के द्वार के बाहर कई आवाज़ें सुनकर वह जाग उठा। उठते ही उसे समझ आ गया कि हमला हो रहा है। लगभग पचास-साठ काले चेहरे वाले आदमी द्वार से अंदर घुस आए और मीनार पर हमला कर दिया। तभी लेडी मार्गरिट वहाँ पहुँचीं और कप्तान

के सामने खड़ी हो गईं, यह कहते हुए कि अगर वह बाहर निकले तो मारे जाएँगे। इसी बीच, तहखाने के द्वार पर तैनात संतरी, चाकू के घावों से खून बहते हुए, मीनार की पहली मंजिल पर अपने साथियों के पास दौड़ा। उसने उन्हें बताया कि उसके दो साथी संतरी बाहर मृत पड़े हैं और भीड़ ने उसे निहत्था कर दिया है। चूंकि अन्य डेनिश सैनिकों के पास केवल एक बंदूक और बहुत कम गोला-बारूद था—जो हीटमैन और लेडी मार्गरिट के बीच विवाद का एक और कारण था—वे मीनार के सबसे ऊपरी कमरे में चले गए और बारह चांदी के बक्सों को खेतों की गाड़ियों पर लादते हुए देखने लगे। फिर शोरगुल बंद हो गया और गाड़ियाँ रात के अंधेरे में गायब हो गईं।"

"हालाँकि, तीन दिनों के भीतर ही ट्राली के गवर्नर सर एडवर्ड डेनी ने नौ लोगों को ट्राली जेल में डाल दिया। डेनिश लोगों में से एक ने भीड़ में लेडी मार्गरिट के भतीजे को पहचान लिया था, और जल्द ही यह स्पष्ट हो गया कि पूरी डकैती क्रॉस्बी परिवार के दोस्तों द्वारा रची गई थी। विभिन्न मुकदमों से पहले लिए गए बयानों में, कई आरोपियों ने कहा कि चांदी के चार बक्से लेडी मार्गरिट के लिए अलग रखे गए थे। ये कभी बरामद नहीं हुए। लेडी मार्गरिट ने इस मामले के बारे में कुछ भी जानने से इनकार किया और डेनिश लोग कुल 20,000 पाउंड चांदी में से केवल 5,000 पाउंड ही बरामद कर पाए। कुछ लुटेरे शैनन नदी पार करके क्लेयर भाग गए, कुछ चांदी से भरी मछली पकड़ने वाली नाव में फ्रांस चले गए, जबकि अधिकांश चुपचाप गायब हो गए और कुछ नहीं कहा।"

लेडी मार्गरिट के रिश्तेदार दो क्रॉस्बीज़ पर डबलिन में मुकदमा चला और उन्हें बरी कर दिया गया, लेकिन एक तीसरे व्यक्ति, कैंटिलॉन, जो क्रॉस्बीज़ महल का किरायेदार था, को दोषी पाया गया। एक व्यक्ति ने ट्राली जेल में फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली और दूसरा, जिसने सरकारी गवाह बनने का आदेश दिया था, डबलिन में अपने किराए के कमरे में मृत पाया गया। कहा जाता था कि उसे जहर दिया गया था, हालांकि महल ने यह दावा किया कि उसकी मौत टाइफाइड और अत्यधिक शराब पीने से हुई थी। और स्थानीय परंपरा के अनुसार, उत्तरी केरी के अधिकांश कुलीन लोग इस मामले में शामिल थे। क्रॉस्बीज़ केरी आने से पहले, बैलीहेइग का महल कैंटिलॉन परिवार के स्वामित्व में था, जो दोषी पाए गए व्यक्ति के पूर्वज थे। वे मूल रूप से डी कैंटिलॉन थे, जो नॉर्मन आक्रमणकारियों के साथ आयरलैंड आए थे।

"डेनमार्क के चीनी मिट्टी के बर्तनों के कुछ टुकड़े अभी भी स्थानीय स्तर पर मौजूद हैं, और बैलीहेइग कैसल के तहखानों में डेनिश प्रतीक चिन्ह वाली कुछ बोतलें पड़ी हैं, लेकिन गायब चांदी का अभी तक कोई सुराग नहीं मिला है। कुछ आरोपियों ने कहा कि इसे वहीं के बगीचे में दफनाया गया था, कुछ ने कहा कि इसे तीन मील दूर बन्ना स्ट्रैंड के पास एक बगीचे में दफनाया गया था, और कुछ ने कहा कि इसे बैलीशीन हाउस के पीछे दफनाया गया था। अगर आप आज बैलीहेइग में पूछताछ करेंगे, तो आपको निश्चित रूप से कोई न कोई ऐसा व्यक्ति मिल जाएगा जो आपको बताएगा कि वह जानता है कि इसे कहाँ दफनाया गया है, कि वह और उसके पूर्वज इसे खोदने से डरते थे, और शायद वह आपको भी इस रहस्य के बारे में बता दे!"

डेनमार्क के लोग स्वाभाविक रूप से अब भी इसमें रुचि रखते हैं। अगर 'भूत' वाली तस्वीर किसी डेनिश नाविक की होती, तो यह एक बढ़िया खबर बन सकती थी, और इसके अलावा चांदी का खोया हुआ खजाना भी है। बहुत समय पहले, राजा ब्रायन बोरू के समय में, नॉर्समेन और डेनिश वाइकिंग जहाजों ने आयरलैंड पर हमला किया, डबलिन, वेक्सफ़ोर्ड और वॉटरफ़ोर्ड शहरों की स्थापना की, और लूट का माल स्कैंडिनेविया वापस ले गए। डेनिश चांदी से ईर्ष्या करने वालों के लिए स्थानीय किसानों को यह समझाना शायद आसान था कि बैलीहेग कैसल में डेनिश चांदी की मौजूदगी लूट के प्रवाह को रोकने का एक मौका है, और इसके अलावा जमींदार की पत्नी भी थी, जिसने जहाज़ टूटने से बचे डेनिश लोगों को बचाते हुए अपने पति को खो दिया था। हालांकि, भूत की तस्वीर के इस मामले का इतिहास और भी रोचक है।

ये सभी ऐतिहासिक विवरण मेरे लिए बिल्कुल नए थे, और मुझे यह जानकर बेहद दिलचस्प लगा कि तलवारबाज़ सचमुच किले में अपनी तलवारें लहराते थे। हालाँकि, एक छोटी सी बात जो मेरी नज़र से लगभग छूट ही गई, वह लगभग अविश्वसनीय थी। याद है, मैंने कहा था कि मैं जून में बैलीहेइग में छुट्टियाँ मनाने आया था। मैं 1 जून को पहुँचा था। दूसरा हफ़्ता तूफ़ानी और बारिश से भरा था और उस हफ़्ते कोई भी रंगीन तस्वीर लेना संभव नहीं था। हालाँकि, पहला हफ़्ता लू की लहर जैसा था, जिसमें हर दिन 15 घंटे धूप निकली। 1/2 जून के सप्ताहांत के बाद मैंने रंगीन फ़िल्म का दूसरा रोल शूट करना शुरू किया, और मुझे पूरा यकीन है कि वह 'अदृश्य' तस्वीर 4 या 5 जून को ली गई थी। अब, रिकॉर्ड के अनुसार डेनिश सिल्वर रेड 4

जून, 1731 की आधी रात को हुई थी! क्या यह संयोग है? या क्या बैलीहेइग किले में हर साल 4 जून को तलवारें लहराई जाती हैं, जब तीन डेनिश नाविक मारे गए थे?

यकीन मानिए, मैं अगले साल 4 जून को कैमरा लेकर वहाँ ज़रूर मौजूद रहूँगा। क्या मैं इस भूत पर विश्वास करता हूँ? खैर, उस खूबसूरत जगह पर दोबारा जाने का यह एक अच्छा बहाना है। क्या आधी रात तक वहाँ इंतज़ार करते हुए मुझे डर लगेगा? बिलकुल नहीं। मैं अकेला नहीं रहूँगा, लेकिन मुझे नहीं लगता कि रात में हमें कुछ दिखाई देगा। भूत वाली तस्वीर दोपहर के समय ली गई थी, जब सूरज पश्चिम से खिड़की से तिरछी रोशनी डाल रहा था। हो सकता है कि मैंने दीवार पर किसी निशान की तस्वीर खींची हो। लेकिन फिर भी, वहाँ डेनिश लोग थे, उन्होंने शायद समुद्री बूट पहने होंगे, और 4 जून को वहाँ तलवारबाजी भी हुई थी।

* * *

कैप्टन ओ'डोनेल के अनुभव के बारे में बस इतना ही। उनके नेगेटिव के खो जाने की विडंबना को समझा जा सकता है—क्योंकि मैं भी अपनी उन तस्वीरों को, जैसे कि इंग्लैंड के विनचेस्टर कैथेड्रल में भूतिया भिक्षुओं की तस्वीरें, खजाने की तरह सहेज कर रखता हूँ, जो एक तरह से वाकई खजाने हैं।

मैंने लेख के लेखक के बारे में पूछताछ की और मुझे आश्वस्त किया गया कि उनकी सत्यनिष्ठा सर्वोपरि है। एक अधिकारी होने के नाते वे मनगढ़ंत बातें करने के आदी नहीं थे।

हम लिस्टोवेल घूम रहे थे और हमने बैलीहेइग जाने का फैसला किया। नक्शे पर तो यह एक घंटे की आसान सवारी लग रही थी, लेकिन जब हम आखिरी पहाड़ी पार करके सामने चमकता हुआ समुद्र देखने पहुंचे, तब तक लगभग सूर्यास्त हो चुका था।

गांव से जल्दी से गुज़रते हुए, हम किले के द्वार तक गाड़ी चलाकर पहुंचे। पास ही एक छोटे से घर में एक बूढ़ी चौकीदार रहती थी और हमें उसे यह समझाने में कोई परेशानी नहीं हुई कि हम किले को कोई नुकसान नहीं पहुंचाना चाहते। हमने खुद ही पुराना द्वार खोला और फिर गाड़ी घुमावदार रास्ते से होते हुए धूसर किले की ओर चल पड़ी, जिसके खंडहर दूर-दूर तक फैले हुए थे। किले की दीवारों से लेकर रेतीले किनारे तक फैली हल्की ढलानें नम घास के

मैदानों से ढकी हुई थीं, जैसा कि आयरलैंड का अधिकांश भाग होता है। ज़मीन पर शायद दो दर्जन गायें और उनकी मौजूदगी के कई और निशान मौजूद थे।

हमने गायों से बचते हुए गाड़ी को किले की दीवारों के पास खड़ा कर दिया। फिर मैंने दृश्य को फिल्माना शुरू किया, जबकि हमारा ड्राइवर देर से दोपहर का भोजन कर रहा था। गायों से उसे कोई परेशानी नहीं हो रही थी।

दिन के उजाले में भी महल डरावना लग रहा था, उसकी खिड़कियाँ किसी अंधे व्यक्ति की आँखों की तरह बाहर की ओर देखती हुई प्रतीत हो रही थीं। अंदर चलना खतरनाक था, क्योंकि कमरों में लंबे समय से गीली मिट्टी भरी हुई थी। 1921 में लगी आग ने महल को पूरी तरह से नष्ट कर दिया था, और कभी गौरवशाली रहे इस भवन का पूरी तरह से जर्जर हिस्सा अब किसी प्राचीन रोमन खंडहर जैसा दिख रहा था। हम कई कमरों में घूमे, और सिबिल ने आसपास की चीजों को समझने की कोशिश की। स्वाभाविक रूप से, उसे उस जगह के बारे में कुछ भी पता नहीं था।

अंततः, हम उसके पीछे-पीछे पहली मंजिल के एक कमरे में गए, जहाँ से समुद्र का नज़ारा दिखता था—एक ऐसा कमरा जहाँ से जहाजों और आने-जाने वाले सभी लोगों को आसानी से देखा जा सकता था। यहाँ वह रुक गई और मानो भीतर से सुन रही हो। उसकी आंतरिक वाणी उसे निर्देश दे रही थी और हम चुपचाप उसके शब्दों का इंतज़ार करते रहे।

“सिबिल, तुम्हें क्या लगता है यहाँ क्या हुआ होगा?” मैंने चुप्पी तोड़ने का फैसला किया।

“यहाँ जो कुछ भी हुआ,” उसने हिचकिचाते हुए उत्तर दिया, “निश्चित रूप से उस स्तर से बहुत नीचे हुआ होगा जहाँ हम हैं। मुझे ऐसा लगता है कि यहाँ समुद्र से जुड़ा एक भूमिगत मार्ग है।”

उसे बेशक डेनिश नाविकों के बारे में और चांदी को कैसे छिपाया गया था, इसके बारे में कोई जानकारी नहीं थी।

उन्होंने आगे कहा, "मुझे नहीं लगता कि मैं 150 साल से ज्यादा पीछे जाऊंगी, हालांकि मुझे पता है कि यहां तीन सौ साल पुराने प्रभाव मौजूद हैं।"

जब वह हिचकिचा रही थी, तो मैंने उसे आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित किया।

“सिबिल, समुद्र की ओर जाने वाला यह रास्ता कौन पार करके आया था?” मैंने पूछा।

“मेरे मन में जो नाम है, वह डोनाल्ड है,” उसने जवाब दिया। “मुझे ऐसा लग रहा है कि तीन युवक, शायद बेटे, इस घर से जुड़े हुए थे, लेकिन डोनाल्ड उनमें से नहीं था। यह एक बड़ा पारिवारिक घर था, लेकिन इस रास्ते से आने-जाने वाले लोग यात्री थे... समुद्री यात्री।”

मैंने फिर सोचा, सिबिल को सचेत रूप से कैसे पता चलेगा कि डेनिश नाविक यहाँ शरण लेने आए हैं? उसे यह पता नहीं हो सकता था।

मैंने पूछा, "क्या वे स्थानीय मूल के थे?"

“विदेशी,” उसने झट से जवाब दिया, “शायद फ्रांस से आ रहे होंगे। यहाँ तो बहुत आना-जाना लगा रहता है।”

“ये लोग घर क्यों आए थे?”

"भोजन से कुछ संबंध हो," सिबिल ने जवाब दिया, अब वह अपने विचार को लेकर बिल्कुल भी आश्वस्त नहीं थी, "भोजन या मेज पर परोसने के लिए कुछ।"

"क्या यहाँ कोई त्रासदी हुई है?"

"फ्रांस से आने वाले लोग नहीं, बल्कि उस घर में रहने वाले लोग।"

"क्या हुआ?"

“यहाँ एक महिला का प्रभाव है, जिसका नाम शायद एमिली है, लेकिन वह महिला घर से जुड़ी हुई है। त्रासदी उस महिला के माध्यम से ही घटित होती है। पहले तो मुझे यहाँ सिर्फ एक पुरुष की उपस्थिति का आभास हुआ, लेकिन अब महिला की भूमिका बहुत सशक्त है।”

“एक आदमी?”

“पुरुष,” सिबिल ने खुद को सुधारते हुए कहा और आगे बोली: “मुझे ग्लेन नाम याद आ रहा है। घर में उस आदमी का क्या हुआ...खाने से कुछ लेना-देना था। क्या यह ज़हर हो सकता है? वह खाना खा रहा था, तभी कुछ हुआ।”

इस बिंदु पर यह समझना आवश्यक है कि सिबिल ने जो कुछ कहा था, वह काफी हद तक सच के करीब था। महल के मालिक सर थॉमस क्रॉस्बी को डेनिश जहाज़ के मलबे को निकालने के कुछ ही समय बाद ज़हर देकर मार दिया गया था। क्या लेडी मार्गरिट इस

अचानक हुई मौत के लिए उतनी ही दोषी थीं जितनी कि बाद में डेनिश चांदी पर किए गए "छापे" के लिए?

इसके अलावा, हमलावर अंततः नाव से फ्रांस भाग गए। क्या सिबिल को इस घटना का कुछ आभास हुआ था? लेकिन मैं बैलीहेग कैसल की खंडहर हो चुकी छतों पर बैठी अपनी इस सहेली की और भी बातें सुनना चाहती थी।

मुझे ऐसा महसूस हो रहा है जैसे कोई व्यक्ति गलियारे से नीचे जा रहा हो। मुझे लगता है कि वह डूब गया क्योंकि वह समुद्र में गायब हो गया।

मैंने पूछा, "क्या यहाँ कोई लड़ाई हो रही है?"

“मुझे अब ऐसा महसूस नहीं हो रहा,” सिबिल ने कहा। “यह महिला इस घर में स्थायी रूप से नहीं रहती; वह आती-जाती रहती है। संघर्ष समुद्र और घर के बीच है। मुझे लगता है कि यह पारिवारिक कलह हो सकती है। कुछ और भी है, लेकिन मुझे वह उतनी स्पष्ट रूप से समझ नहीं आ रहा जितना कि मुझे यहाँ किसी बाहरी प्रभाव का एहसास हो रहा है।”

"फ्रेंच के अलावा?"

“इसके अलावा, उत्तरी प्रभाव भी है। कई विदेशी आगंतुक आते हैं। स्कॉटलैंड के अलावा स्वीडन भी। सुंदर पुरुष, नॉर्डिक प्रभाव। दो कालखंड।”

सिबिल को डेनिश नाविकों के बारे में बिल्कुल भी जानकारी नहीं थी।

एमिली कौन थी? डोनाल्ड कौन था?

क्या कैप्टन ओ'डोनेल ने वास्तव में डेनिश चांदी की लूट की तस्वीर खींची थी, जब डेनिश नाविक बैलीहेइग महल में अपनी संपत्ति की रक्षा करते हुए मारे गए थे?

मैंने तस्वीर की जांच नहीं की है, इसलिए मैं इसकी प्रामाणिकता की पुष्टि नहीं कर सकता, लेकिन मैंने अन्य जगहों पर भी इसी तरह की तस्वीरें ली हैं और मुझे पता है कि ऐसा किया जा सकता है। इसलिए मुझे कप्तान द्वारा इतनी मार्मिकता से सुनाई गई कहानी पर संदेह करने का कोई कारण नहीं है।

किले की ढह चुकी दीवारों के नीचे शायद आज भी चांदी दबी हुई हो। जैसा कि हम जानते हैं, डेन लोग अंततः अपने खजाने का केवल एक चौथाई हिस्सा ही वहाँ से निकाल पाए थे। और

संभवतः आज भी कोई अठारहवीं सदी का तलवारबाज पुराने समय की तरह ही उसकी रक्षा कर रहा हो।

इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। जब आप बैलीहेइग कैसल की खाली खिड़कियों पर खड़े होकर खाड़ी की ओर केरी हेड को देखते हैं और सूरज धीरे-धीरे पानी के पीछे डूबता है, तो आप आसानी से मान सकते हैं कि यह जगह भूतिया है।

जब हम वापस काउंटी क्लेयर की ओर जा रहे थे, तो ठंड बढ़ गई और हवा में मौजूद नमी हल्की बारिश के रूप में गिरने लगी।

किसी ने ज्यादा कुछ नहीं कहा।

एक समय ऐसा आया जब हम लगभग सड़क पर गलत मोड़ लेने ही वाले थे, शायद हमारे चारों ओर छा रहे अंधेरे के कारण, या शायद हम सभी थोड़े थके हुए थे।

बैलीहेइग कैसल अब रात के अंधेरे में गायब हो चुका था और डेनिश चांदी एक बार फिर सुरक्षित थी।

*82

प्रेतवाधित किल्केआ कैसल, किल्डारे

दूर से देखने पर किल्केआ कैसल किसी आयरिश किले की हूबहू छवि प्रस्तुत करता है। बुर्जदार, धूसर रंग का, भव्य और विशाल, संकरी और ऊँची खिड़कियों वाला यह किल्केआ कैसल अपने विशाल और किलेनुमा स्वरूप के लिए जाना जाता है। फिर भी, यह आज के आयरलैंड के सबसे आरामदायक पर्यटक होटलों में से एक है। कोई भी व्यक्ति मिलनसार मेजबान डॉ. विलियम केड से आरक्षण कराकर यहाँ जा सकता है।

यह किला डब्लिन से कार द्वारा लगभग डेढ़ घंटे की दूरी पर, उपजाऊ खेतों के बीचोंबीच स्थित है। इसके चारों ओर सुंदर पैदल मार्ग हैं, और परिसर में छोटी-छोटी नदियाँ, पुराने पेड़ और घास के मैदान हैं - जिनमें काफी संख्या में गायें चरती हैं।

किल्केआ का निर्माण 1180 में सर वाल्टर डी रिडलफोर्ड नामक एक एंग्लो-नॉर्मन नाइट द्वारा करवाया गया था, और इसे आयरलैंड का सबसे पुराना आबाद किला कहा जाता है, हालांकि

मैंने यह दावा कई अन्य स्थानों के लिए भी सुना है। लेकिन यह बात स्पष्ट है कि इसके भीतर के हिस्से में काफी बदलाव किए गए हैं और मूल किले का बहुत कम हिस्सा ही बचा है। फिर भी, यहाँ का भूतिया सा साया आज भी कायम है।

तहखाने और छत को छोड़कर, किले में चार मंजिलें हैं। कमरे अलग-अलग आकार और प्रकार के हैं। भूतिया इलाका असल में कभी नौकरों का कमरा रहा होगा, और किले के उत्तरी भाग में एक संकरे रास्ते से होकर वहाँ पहुँचा जा सकता है। कमरा सिर्फ एक व्यक्ति के लिए ही काफी बड़ा है, और अगर आप उसमें सोना चाहते हैं, तो बेहतर होगा कि आप काफी पहले से बुकिंग करा लें। आपको बस डॉ. केड से भूतिया कमरे के बारे में पूछना है। वे समझ जाएंगे।

इस भूतिया कहानी की जड़ें मध्य युग के आरंभ में हैं। कहा जाता है कि एक पुराने मालिक की खूबसूरत बेटियों में से एक को एक अस्तबल के नौकर से प्यार हो गया। उसके स्वाभिमानी पिता को यह रिश्ता मंजूर नहीं था और उन्होंने धमकी दी कि अगर वे दोनों अपना रिश्ता जारी रखते हैं तो वे उन्हें जान से मार देंगे। एक रात, पिता ने उस युवक को अपनी बेटी के कमरे में पाया। उसके बाद हुए संघर्ष में युवक मारा गया, लेकिन यह नहीं बताया गया कि लड़की मारी गई या नहीं। लेकिन ऐसा माना जाता है कि उस युवक का भूत आज भी गलियारों में भटकता है, अपनी प्रेमिका को वापस पाने की कोशिश में।

पुनर्निर्माण के दौरान, यह कमरा नौकरों के क्वार्टर का हिस्सा बन गया। कई लोगों ने इस क्षेत्र में अजीबोगरीब अनुभूतियों की सूचना दी है। किल्केआ के मालिक स्वयं, हालांकि संशयवादी हैं, ने स्वीकार किया है कि उन्होंने बिना किसी स्पष्ट कारण के दरवाजों को अपने आप खुलते हुए देखा है।

स्थानीय तौर पर, किल्केआ कैसल में हुई घटनाओं के लिए तथाकथित जादूगर अर्ल को दोषी ठहराया जाता है, और उनके बारे में एक किंवदंती भी प्रचलित है। ऐसा कहा जाता है कि अपनी प्रेमिका को प्रसन्न करने के लिए, अर्ल ने खुद को एक पक्षी में बदल लिया और उसके कंधे पर बैठ गया। लेकिन उसने महल की बिल्ली की उपस्थिति का अनुमान नहीं लगाया था, जो उछलकर पक्षी को खा गई। किंवदंती आगे कहती है कि अर्ल और उसके साथी अभी भी रात में सवारी करते हैं और अंततः परलोक से लौटकर "आयरलैंड में सब कुछ ठीक

करेंगे"—यदि आवश्यक हुआ तो। किंवदंती में यह नहीं बताया गया है कि बिल्ली का क्या हुआ।

किल्केआ कैसल में एक भूत रहता है।

*83

स्काईन कैसल के भूत

एक दिन हम डबलिन से एक मुर्रे कार में सवार होकर निकले, जो आयरलैंड में उन लोगों के लिए किराए पर उपलब्ध होती है जिनके पास अपनी कार नहीं होती है। सौभाग्य से, हमें गाय क्रॉडर नाम का एक बहुत ही मिलनसार और बुद्धिमान ड्राइवर मिला, जो तुरंत समझ गया कि हम क्या चाहते हैं।

एयरपोर्ट से आगे बढ़ते हुए, हमने मारा कैसल की तलाश शुरू की, जिसका ज़िक्र जेम्स रेनॉल्ड्स ने अपनी आयरिश भूत-प्रेत की किताबों में भूत-प्रेत की खोज के लिहाज़ से संदिग्ध बताया था। न्यूटन-स्वॉर्ड्स का उपनगरीय कस्बा दिलचस्प और आकर्षक था, लेकिन वहाँ किसी को भी मारा कैसल के बारे में जानकारी नहीं थी। चूंकि हमारा दिन का कार्यक्रम व्यस्त था, इसलिए मैंने उत्तर की ओर और आगे जाने का फैसला किया। हमने कुछ शांत ग्रामीण

सड़कों का रास्ता लिया, लेकिन हमारे ड्राइवर को दिशा का अच्छा ज्ञान था, और दोपहर होते-होते हम अपने पहले गंतव्य पर पहुँच गए।

काउंटी मीथ, आयरलैंड के पश्चिमी भाग की तुलना में कहीं अधिक शांत और निर्जन था, जिसे हमने हाल ही में छोड़ा था। बोयने नदी की निकटता ने इस क्षेत्र को लगभग दक्षिणी आकर्षण प्रदान किया। हमारे सामने चौदहवीं शताब्दी में निर्मित और आयरलैंड के तीन सबसे पवित्र संतों में से एक, सेंट कोल्मसिल को समर्पित एक खंडहर हो चुके गिरजाघर का ऊँचा शिखर भव्यता से खड़ा था। लगभग पाँच सौ फीट की ऊँचाई पर स्थित साठ फीट ऊँचा यह शिखर पूरे परिदृश्य पर हावी था। लेकिन हम इस कभी-भव्य रहे गिरजाघर को नहीं खोज रहे थे। हमारा लक्ष्य पहाड़ी की तलहटी में स्थित स्काईन या स्क्रीन का छोटा किला था।

मुझे यहाँ लाने वाली बात जेम्स रेनॉल्ड्स की 1956 में प्रकाशित पुस्तक 'मोर घोस्ट्स इन आयरिश हाउसेस' में एक संक्षिप्त कहानी थी। वह इस महल के बारे में बताते हैं, जो महलों के हिसाब से छोटा है, बोयने नदी के जंगलों से कुछ दूरी पर, तारा से कुछ ही दूर स्थित है, और जिसका उन्होंने तब दौरा किया था जब यह पामर्स्टन परिवार के एक रिश्तेदार के स्वामित्व में था, जो लंबे समय से इस घर का मालिक था।

रेनॉल्ड्स के अनुसार, स्काइरीन में भूत-प्रेत की घटनाओं का कारण बनने वाली त्रासदी 1740 में घटी थी। उस समय घर में सर ब्रोमली कैसवे और उनकी देखरेख में रहने वाली लिलीथ पामर्स्टन नाम की एक खूबसूरत युवती रहती थीं। लिलीथ ने यहाँ और डबलिन में एकांत जीवन व्यतीत किया था और समाज या पुरुषों की दुनिया से उसका कोई खास संपर्क नहीं था। स्काइरीन में अपने लंबे प्रवास के दौरान, उसकी मुलाकात फेलिम सेलर्स नामक एक जमींदार से हुई, जिसका घर स्काइरीन से कुछ ही दूरी पर था और जिसकी पत्नी की रहस्यमय तरीके से मृत्यु हो गई थी, संभवतः उस क्रूर व्यक्ति द्वारा की गई पिटाई के परिणामस्वरूप।

लिलीथ पामर्स्टन को अपने पड़ोसी से तुरंत नफरत हो गई। वह पड़ोसी भी स्काईरीन कैसल में अक्सर आने लगा और लिलीथ के बुजुर्ग अभिभावक के साथ ताश खेलता था, लेकिन हमेशा उस पर बुरी नजर रखता था। रेनॉल्ड्स बताते हैं कि एक बार सेलर्स ने लिलीथ पर हमला करने की कोशिश की, लेकिन माली ने उसकी योजना को नाकाम कर दिया। अब लिलीथ ने डबलिन लौटने का अनुरोध किया ताकि वह उस आदमी की बुरी नजरों से बच सके। उसके

अभिभावक मान गए और शहर जाने की सारी तैयारियां पूरी हो गईं। अपनी तय यात्रा से एक रात पहले, सेलर्स को लिलीथ की योजना का पता चल गया, वह उसके कमरे में घुस गया और उसकी हत्या कर दी। बाद में पकड़े जाने पर उसे गैलवे शहर में फांसी दे दी गई।

किले में रहने वाले कई लोगों ने रात में चीखने की आवाजें सुनी हैं और सफेद कपड़े पहने एक महिला को अपना गला पकड़े हुए घर से बाहर भागते हुए देखा है।

सेलर्स ने लिलीथ के गले में फॉक्सग्लोव की पत्तियां जबरदस्ती ठूंसकर उसका गला घोंटकर उसकी हत्या कर दी थी।

स्काईरीन कैसल में हुई त्रासदी के बारे में रेनॉल्ड्स के सजीव वर्णन का यही सार है।

मैंने अपने आने की सूचना नहीं दी थी, लेकिन सौभाग्य से महल खुला था। संयोगवश, महल के मालिक आस-पास के किसी व्यक्ति के लिए शादी की दावत दे रहे थे; इसलिए घर नौकरों से भरा हुआ था। और भी सौभाग्य की बात यह थी कि पुराने घर का केवल निचला हिस्सा ही उत्सव के लिए इस्तेमाल हो रहा था, जिससे हमें ऊपरी मंजिलों पर मनचाहे ढंग से घूमने की छूट मिल गई।

वह घर बहुत पुराने पेड़ों के एक समूह के सामने स्थित था, और उनके बीच के घास के मैदान में एक अकेली बकरी अपना दोपहर का भोजन कर रही थी।

सन् 1172 में निर्मित यह किला जीर्ण-शीर्ण अवस्था में पहुँच गया था और उन्नीसवीं शताब्दी के आरंभ में इसका पुनर्निर्माण किया गया। मैंने किले का चक्कर लगाया, जो दूसरी मंजिल से ऊपर उठते छोटे से बुर्ज के बावजूद, किसी किले की बजाय प्रारंभिक विक्टोरियन शैली के ग्रामीण घर जैसा प्रतीत होता था। घर एक छोर से दूसरे छोर तक लता से ढका हुआ था। खिड़कियाँ साफ-सुथरी थीं और घर के पीछे का बगीचा सुव्यवस्थित लग रहा था।

मैंने घर में काम करने वाली एक महिला से बात करने में कामयाबी हासिल की, जो कई बार यहाँ आ चुकी थी और कभी-कभी ऊपर वाले कमरे में सोती थी। उनका नाम के कोलियर था और वे भूतों जैसे रहस्यमय विषय पर भी मुझसे बात करने के लिए काफी उत्सुक थीं।

“मैंने खुद तो कभी कुछ असामान्य नहीं देखा,” उसने कहना शुरू किया, “लेकिन यहाँ एक भूत के बारे में एक परंपरा है। एक लंबा आदमी छड़ी लेकर घूमता है, सिर पर हेलमेट पहने

रहता है और उसके साथ एक कुत्ता भी होता है। उसे महल के बाहर देखा गया है। स्काइरीन की श्रीमती रेली ने भी उसे देखा है।”

चूंकि वह हमें और कुछ नहीं बता सकीं, इसलिए मैंने श्रीमती रेली से संपर्क करने का मन बना लिया। फिर मैंने सिबिल से, जो बाहर पुराने पेड़ के नीचे चुपचाप बैठी थी, कैथरीन और मेरे साथ महल के ऊपरी कमरों में आने को कहा। सीढ़ियों के बाईं ओर स्थित कमरा शुरुआती विक्टोरियन शैली में भव्य और सुरुचिपूर्ण ढंग से सजाया गया था, जिसमें कुछ दीवारों पर दर्पण, नाजुक फर्नीचर, सोफे और छोटी-छोटी प्राचीन वस्तुएं कमरे की शोभा बढ़ा रही थीं।

सिबिल एक आरामदायक कुर्सी पर बैठ गई, अपनी आँखों पर हाथ रखा और आसपास के माहौल को समझने की कोशिश करने लगी। एक पल के लिए कोई नहीं बोला। खामोशी, ऊपर से भले ही शांत लग रही हो, लेकिन अंदर से डरावनी थी, और कम से कम मुझे तो इस कमरे में चारों ओर तबाही का साया मंडराता हुआ महसूस हो रहा था।

"यह कमरा मुझे देखते ही पसंद आ गया," सिबिल ने अब कहा।

"आपको पता है, मैं पहले दाईं ओर मुड़ा, फिर वापस मुड़ा और सीधे इस कमरे में आ गया।"

मैंने सिर हिलाया। सचमुच उसने अपना रास्ता बदल लिया था, मानो किसी अदृश्य शक्ति द्वारा निर्देशित हो रही हो।

“मुझे लगता है कि यहाँ से कोई महिला गुज़री है,” सिबिल ने धीरे-धीरे, सोच-समझकर कहा। “इन दर्पणों का कुछ महत्व है; शायद दाहिनी ओर वाले दर्पण के पीछे कोई दरवाज़ा रहा होगा, क्योंकि वह दाहिनी ओर से आती है। चाहे वह बगीचे से आई हो...”

क्या सिबिल लिलिथ की उस अभागी आत्मा से संपर्क कर रही थी जिसका पसंदीदा स्थान वह बगीचा हुआ करता था, वही बगीचा जहां उसका क्षत-विक्षत शरीर मिला था?

स्वाभाविक रूप से मैंने उसे महल से जुड़ी परंपरा के बारे में कभी नहीं बताया था, न ही जेम्स रेनॉल्ड्स के वृत्तांत के बारे में।

“क्या अब तुम्हें उसका एहसास हो रहा है?” मैंने पूछा।

“बहुत थोड़ा,” सिबिल ने जवाब दिया और ऊपर देखा। “मुझे नहीं लगता कि उसे कुछ समय से देखा गया है। अट्ठावन, उनसठ। मुझे नहीं लगता कि उसने कुछ समय से अपनी उपस्थिति का एहसास कराया है, लेकिन वह यहीं है।”

"क्या आप उससे बात कर सकते हैं?"

“मैं सिर्फ उसके बारे में सचेत हूं, लेकिन उससे सीधे संपर्क में नहीं हूं। साथ ही, ऐसा लगता है कि दो कालखंड हैं, और फिर भी वह महिला किसी ‘बीते समय की कहानी’ वाली भूतनी नहीं होनी चाहिए—फिर भी उसका अतीत से एक जुड़ाव है।”

“आपको क्या लगता है कि वह किस काल से संबंधित है?”

"मेरे पास 1624 का एक प्रारंभिक काल है, लेकिन इस कमरे में नारीवादी प्रभाव का अहसास होता है, दो कालखंडों का।"

"किले के बाहर आपको कैसा महसूस हुआ?"

"यह पेड़ किसी न किसी तरह से इस घर के लिए बहुत महत्वपूर्ण है।"

"पेड़ को देखकर आपको कैसा महसूस हुआ?"

“वहाँ मैंने संघर्ष का अनुभव किया। वहाँ मैंने मृत्यु का अनुभव किया। एक आदमी। यह प्रारंभिक दौर है। मुझे लगता है कि हमें पेड़ पर वापस जाना चाहिए।”

"क्या आपको यहां कुछ और महसूस हो रहा है?"

“मुझे लगता है कि 1959 में यहाँ कुछ हुआ था। शायद वह महिला पैदल चलकर आई थी। मुझे लगता है कि आपको कोई न कोई कड़ी मिल जाएगी, कोई चीज़ दौड़ती हुई, घर से नहीं बल्कि घर की ओर। यहीं से उस पेड़ का संबंध जुड़ता है। पुरानी जगह से, चर्च के टावर से इस घर तक दौड़ती हुई—यह घर नहीं बल्कि वह घर जो तब यहाँ खड़ा था।”

"क्या आप अपने सामने दिखने वाली या महसूस होने वाली किसी भी आकृति का वर्णन कर सकते हैं?"

“यहाँ जो महिला मुझे दिख रही है, उसके सुनहरे बाल हैं, जो घुंघराले हैं; वह 1900 के दशक के शुरुआती दौर की लगती है—22 का ज़िक्र बार-बार आ रहा है—मुझे बार-बार 22 का

अंक दिख रहा है। शायद यही उसकी उम्र हो। हो सकता है वह आंगन में रहने वाले लोगों की वंशज हो।”

"कोई नाम हैं?"

“मेरे पास लड़की का नाम है... दो नाम हैं... मथिल्डा, मैरी... मैडलीन... मथिल्ड.... कुछ ऐसा ही....”

क्या सिबिल लिलिथ का जिक्र कर रही थी? लिलिथ और मैथिल्ड के नाम कितने मिलते-जुलते हैं? क्या वह किसी पुराने हत्याकांड की शिकार महिला के होंठों से फुसफुसाए गए नाम को दोहरा रही थी?

अब हम कमरे से बाहर निकले और महल के सामने वाले पेड़ की ओर चल पड़े। यहाँ सिबिल फिर से बैठ गई और अपनी अंतरात्मा की आवाज़ सुनने लगी। यह पेड़ सदियों पहले से यहाँ रहा होगा और इसकी मुड़ी हुई, दागदार शाखाओं ने इतिहास के कई उतार-चढ़ाव देखे होंगे।

"सिबिल, तुम्हें क्या मिला?" मैंने आखिरकार पूछा।

“यह घर के शुरुआती हिस्से से जुड़ा हुआ है। जैसा कि मैं समझता हूँ, घर तक जाने वाला मूल रास्ता इस पेड़ के ठीक सामने होगा। इस ऊबड़-खाबड़ रास्ते से नीचे आते हुए मुझे एक घुड़सवार का आभास होता है। सोलहवीं सदी का। वह सैनिकों से भागता हुआ इस घर की ओर आ रहा है। सैनिक आयरिश नहीं हैं। यहाँ एक विदेशी तत्व मौजूद है।”

"क्या चुनाव लड़ने वाला व्यक्ति आयरिश है?"

“वह आयरिश भी नहीं है। लेकिन वह इसी इलाके का रहने वाला है। उसका पीछा कर रहे सैनिकों का इस इलाके से कोई लेना-देना नहीं है। वे अजनबी हैं। यह किसी लड़ाई का अवशेष है। वह शरण ले रहा है, लेकिन वह घर तक नहीं पहुंच पाता।”

मैंने पूछा, "उसका क्या हुआ?"

“उसके पेट में चोट लगी है। सैनिक घर की ओर आते हैं। उसका शरीर इस पेड़ के पास पड़ा है। मुझे लगता है कि घोड़े के उस पर चढ़ जाने से उसे चोट लगी है और उसे यहीं छोड़ दिया गया है। उसकी यहीं मृत्यु हो जाती है—वह घर तक नहीं पहुँच पाता।”

“क्या वह सैनिक है या नागरिक?”

मुझे लगता है कि वह एक आम नागरिक है, लेकिन इन दिनों कौन जान सकता है...

"क्या नाम या पद के बारे में कुछ पता है?"

मुझे सिर्फ एक विदेशी नाम मिला है। यह एक फ्रेंच-इतालवी नाम है। हालांकि वह यहीं रहता है, फिर भी वह इस देश के लिए अजनबी है।

"क्या वह अभी भी इस शाहबलूत के पेड़ के नीचे है?"

“हाँ, वो मर चुका है,” सिबिल ने जवाब दिया। “उसे अभी भी घर पहुँचना है; उसे इस बात का एहसास नहीं है कि वो मर चुका है। उसे यह महसूस हो रहा है कि उसे घर पहुँचना है। लेकिन वो पहुँच नहीं पा रहा है।”

क्या वह हमसे बात करना चाहता है?

“उसके घर में उसका कोई करीबी है, खून का रिश्ता नहीं, शायद जीजा। उसे उसी के पास जाना पड़ा। फियान... एफ-आई-ए-एन-एम-ई... फिआना....”

"क्या हम उसके लिए कुछ कर सकते हैं?"

मुझे लगता है कि उसका यहाँ कोई न कोई रिश्तेदार ज़रूर होगा, उसे यहाँ जुड़ाव महसूस होना चाहिए। यह जानना कि वह घर जा सकता है। वह स्तब्ध है।

मैंने कहा, "उसे बता दो कि घर का मालिकाना हक बदल गया है, अब यह मिस्टर निकोल्स का है," लेकिन सिबिल ने अपना सिर हिला दिया, जिससे यह संकेत मिला कि इस समय बातचीत करना व्यर्थ है।

"वह बहुत बड़ा घर था, बहुत ही जर्जर घर था," सिबिल ने कहा, और निश्चित रूप से मूल स्काइरीन महल वैसा ही था।

स्काईर्न कैसल में सिबिल लीक

"पहले घर काफी सीधा था," सिबिल ने अतीत में जो देखा था उसका वर्णन करते हुए आगे कहा, "दरवाजा अब की तुलना में दाईं ओर ज्यादा था। वही दरवाजा जिसकी ओर वह जा रहा है। छोटा सा बगीचा घर का ही हिस्सा था।"

मैंने सिबिल से कहा कि वह भूत को आश्वस्त करे कि हम उसकी मदद करेंगे।

सिबिल ने भूत से कहा कि वह अपने पीछा करने वालों से सुरक्षित है, और उसे घर पहुंचने की चिंता करने की जरूरत नहीं है।

“अब वह मेरे दाहिनी ओर है,” सिबिल ने कहा, और एक क्षण बाद, “मैं उसे अब नहीं ढूंढ पा रही हूँ। मुझे केवल एक ही शब्द सुनाई दे रहा है—फियांमा—”

मैंने उससे वादा किया कि मैं उसका संदेश, चाहे उसका जो भी अर्थ हो, उसे पहुंचा दूंगा, और अचानक भूत गायब हो गया।

"वह अब चला गया है," सिबिल ने धीमी आवाज़ में कहा, "और अब घर भी चला गया है।"

हमने अपना सामान पैक किया और श्रीमती रेली को ढूंढने के लिए स्काईरीन गांव की ओर वापस चल पड़े।

बहुत बाद में मैंने स्काईरीन के बारे में उपलब्ध सामग्री का अध्ययन किया और मुझे कुछ रोचक जानकारी मिली।

स्थानीय इतिहासकार, रेवरेंड गेराल्ड कूनी ने लिखा:

"स्काईने का प्राचीन नाम ओचिल या क्नोक घुइल था, जिसका अर्थ है 'रोने की पहाड़ी'। फियाना वंश के संस्थापक कॉर्मैक मैक आर्ट की मृत्यु के बाद, उनके पुत्र कैरब्रे हाईकिंग बने। फियाना ने अपने राजा के विरुद्ध विद्रोह कर दिया और गभ्रा (गौरा) का युद्ध उस पहाड़ी की तलहटी में लड़ा गया जिसे अब स्काईने कहा जाता है। फियाना बुरी तरह पराजित हुए लेकिन कैरब्रे इस युद्ध में मारे गए।"

स्काईर्न कैसल—जहां बहुत समय पहले एक महिला की हत्या कर दी गई थी

फ़ियाना मध्यकालीन आयरलैंड में संसदीय सरकार के समर्थक थे। क्या सिबिल ने किसी तरह सदियों को लेकर भ्रम पैदा कर दिया था और इस युद्ध से जुड़ा कोई भूत देख लिया था?

हमें ज़्यादा दूर गाड़ी नहीं चलानी पड़ी। किसी ने मुझे श्रीमती रेली का घर दिखाया और मैं एक छोटी सी देहाती सड़क से चलकर उनके घर के द्वार तक पहुँच गया। घर एक अच्छी तरह से बनी दीवार के पीछे था, फूलों से सजा एक साफ-सुथरा, आधुनिक देहाती घर। मैंने द्वार पर घंटी बजाई और थोड़ी ही देर में श्रीमती रेली मेरा स्वागत करने के लिए बाहर आ गईं। वह अपने सुनहरे दिनों में एक जोशीली महिला थीं और मुझे अपने भूतिया अनुभवों के बारे में सब कुछ बताने के लिए उत्सुक थीं।

“मैं आपको ठीक-ठीक नहीं बता सकती कि यह कब हुआ था,” उसने भारी लहजे में कहा, “लेकिन यह बहुत पहले की बात है। मुझे इसके बारे में अपने एक चाचा से पता चला, जिनका नाम भी रेली है। मैं कैथलीन रेली हूँ।”

“तो फिर कहानी क्या है?” मैंने पूछा। आयरिश लोगों का दूसरों की कहानी सुनाने का एक खास तरीका होता है और कभी-कभी कहानी सुनाते-सुनाते बहुत कुछ खो जाता है—या कुछ बातें जुड़ जाती हैं। मैं यह सुनिश्चित करना चाहता था कि कहानी विश्वसनीय हो।

“वह भूत एक कोचवान था, और उसके पास एक कुत्ता था। उसे महल के आसपास कई बार देखा गया था। और फिर एक नन का भूत भी देखा गया था।”

“एक नन?” मैंने पूछा।

"बहुत समय पहले, यह किला एक मठ था और यहाँ एक नन का कमरा हुआ करता था।"

"क्या यहाँ कभी कोई लड़ाई हुई थी?"

“तारा की लड़ाई,” उसने जवाब दिया और दूसरी पहाड़ी की ओर इशारा करते हुए कहा। “वह रही तारा।”

"क्या कभी कोई वहां से आकर किले में शरण ले चुका है?"

"मैंने तो कभी इसके बारे में नहीं सुना।"

वह मुझे उस घर तक ले गई जहाँ से मैं जंगल से घिरी घाटी के पार स्काईरीन कैसल को देख सकता था।

“क्या आपको मीनार दिख रही है?” उसने पूछा। “ठीक उसके नीचे नन का कमरा है।”

मुझे तुरंत समझ आ गया कि यह वही कमरा था जिसमें सिबिल ने उस महिला की उपस्थिति महसूस की थी।

श्रीमती रेली ने बताया, "बीस साल पहले, स्पिरो नाम का एक आदमी, जिसे मैं जानती हूँ, उस कमरे में सोया था। उसने नन को देखा, और उसके बाद वह फिर कभी उस कमरे में नहीं गया।"

“क्या इस महल में कभी किसी की हिंसक मौत हुई थी?” उसे पक्का पता नहीं था। यह घर पच्चीस साल पहले तक एक ही परिवार के पास था, जब इसे वर्तमान मालिक निकोल्स ने खरीदा था।

“लड़कियाँ अक्सर आवाज़ें सुनती थीं...कपड़ों की सरसराहट... एक रात जब मैं उस महिला की देखभाल कर रही थी जो अब इसकी देखभाल करती है, तो मुझे वहाँ कदमों की आहट सुनाई दी। मुझे कदमों की आहट सुनाई दी, और मेरी जानकारी में मेरे अलावा वहाँ कोई नहीं था।”

मैंने पूछा, "घर में वह कहाँ था?"

"वह हिस्सा जहाँ ननें होनी चाहिए," श्रीमती रेली ने उत्तर दिया। दूसरे शब्दों में, ऊपर का वह कमरा जहाँ हम थे, जो लिलिथ का कमरा था।

"क्या आप वहां अक्सर जाते रहे हैं?"

“कई बार। मैंने वहां तीन साल काम किया।”

क्या आपको कभी डर लगता है?

“नहीं, मैं नहीं हूँ। जब मैंने कदमों की आहट सुनी तो मुझे थोड़ा डर लगा, लेकिन वह चली गई।”

मैंने श्रीमती रेली को धन्यवाद दिया और ननों के बारे में सोचने लगी। क्या गवाहों ने घर के मठवासी पृष्ठभूमि के अपने ज्ञान के आधार पर ही कपड़ों की सरसराहट को ननों से जोड़ दिया था? क्या सफेद चादर ओढ़े हुए व्यक्ति को देखकर उन्हें वह नन जैसी लगी थी? और क्या वास्तव में उनका सामना लिलिथ के भूत से हुआ था?

एक के बाद एक पहेलियाँ।

हमारे ड्राइवर ने पास के शहर नावन जाने का सुझाव दिया, जिसे गेलिक भाषा में अन उइम्ह भी कहा जाता है। वहाँ हमें एक अच्छा रेस्तरां मिला और हमने गरमागरम भोजन किया। तारा की पहाड़ियाँ हमारा अगला लक्ष्य थीं, और हालाँकि मुझे आयरलैंड की प्राचीन राजधानी या उसके बचे हुए हिस्से में किसी भूत-प्रेत के होने का कोई संदेह नहीं था, फिर भी मुझे लगा कि यह एक सार्थक यात्रा होगी। कोई भी यह देखने की कोशिश कर सकता था कि सिबिल को कोई आभास होता है या नहीं। सदियों से यहाँ इतनी उथल-पुथल हुई थी कि अशांति पैदा होना स्वाभाविक था।

हम आधे घंटे से कुछ अधिक समय में उस पहाड़ी पर पहुँच गए जहाँ कभी तारा स्थित था। यह स्थान सचमुच मनमोहक है। एक झोपड़ी को छोड़कर, जहाँ इस राष्ट्रीय तीर्थस्थल में प्रवेश के लिए मामूली शुल्क देना पड़ता है, और दूर पेड़ों से ढकी एक पहाड़ी पर स्थित एक गिरजाघर को छोड़कर, यह पहाड़ी, या यूँ कहें कि पहाड़ी पठार, पूरी तरह से खाली है। प्राचीन तारा मुख्य रूप से लकड़ी से निर्मित था, और अब ज़मीन के ऊपर एक भी इमारत नहीं बची है।

भूतल पर जगह-जगह लगी कांस्य की पट्टिकाएँ यह दर्शाती हैं कि प्राचीन आयरिश राजधानी की इमारतें कहाँ स्थित थीं। ग्यारहवीं शताब्दी में ब्रायन बोरू ने यहाँ दरबार लगाया था, और उनके बाद, हाईकिंग का पद बदनाम हो गया, जब तक कि विदेशी आक्रमणकारियों ने आयरलैंड को अपने राज्य का हिस्सा नहीं बना लिया।

जब हमने चारों ओर देखा, तो हवा लगातार प्रचंड गति से बह रही थी। नज़ारा बेहद भव्य था, क्योंकि दूर दक्षिण में डबलिन या उत्तर में ड्रोगेडा की ओर देखने पर पूर्वी आयरलैंड की लहरदार पहाड़ियाँ दिखाई दे रही थीं।

"पोम्पेई के बाद से मुझे शायद ही कभी किसी जगह ने इतना प्रभावित किया हो," सिबिल ने कहा। "ड्रुइडिक संस्कृति का जबरदस्त प्रभाव आज भी मौजूद है और मेरी इच्छा है कि इस जगह को बेहतर स्थिति में रखा जाए ताकि लोग यहां आकर इसे इसके मूल रूप में देख सकें।"

एक पुरातत्वविद् के रूप में, मैं सिबिल की बात से पूरी तरह सहमत था। मिट्टी के नीचे दबी उन रहस्यमयी आकृतियों की खुदाई अवश्य होनी चाहिए। लेकिन मुझे पता चला कि जिस भूमि पर कभी तारा पर्वत स्थित था, उसका केवल एक हिस्सा ही राष्ट्र के स्वामित्व में था;

उसका एक छोटा सा हिस्सा निजी स्वामित्व में था और यहीं आयरलैंड की अधिकांश समस्याओं की जड़ है: वे उचित खुदाई की अनुमति देने के लिए एकजुट नहीं हो सके, इसलिए कोई खुदाई नहीं हुई।

*84

काउंटी मेयो में भूत-प्रेत की खोज

रॉस हाउस एक ऊँची पहाड़ी पर स्थित है, जहाँ से सीधे क्लू खाड़ी का नजारा दिखता है। यह वेस्टपोर्ट और न्यूपोर्ट के बीचोंबीच स्थित है और इसकी स्थिति किसी भी व्यक्ति की चाहत से कहीं अधिक सुंदर है। इसकी खिड़कियों से खाड़ी में बिखरे कई द्वीप दिखाई देते हैं, जिनमें से एक इस घर की संपत्ति का हिस्सा है। घर के पीछे का हरा-भरा पार्क सामने के नमकीन वातावरण के विपरीत एक मनमोहक दृश्य प्रस्तुत करता है। कुल मिलाकर, यह घर अपने मालिक, मेजर एम. जे. ब्लैकवेल के लिए बिल्कुल उपयुक्त है। वे ब्रिटिश सेना के सेवानिवृत्त अधिकारी हैं और वर्तमान में शिकागो, अमेरिका में व्यवसाय करते हैं। वे प्रसिद्ध क्रॉस एंड ब्लैकवेल फर्म के दूसरे, लेकिन किसी भी मायने में छोटे नहीं, हिस्सेदार हैं।

मैं आपको रॉस हाउस जाने का रास्ता नहीं बताऊंगा, क्योंकि पश्चिमी आयरलैंड की सड़कों पर जाना आसान नहीं है, लेकिन वैसे भी, जब तक आपको आमंत्रित न किया जाए, वहां जाने की कोई आवश्यकता नहीं है, है ना? और ऐसा हो भी सकता है, क्योंकि मेजर आतिथ्य सत्कार की साक्षात मूर्ति हैं और उनका घर हमेशा युवा रिश्तेदारों और उनके दोस्तों की हंसी से गूंजता रहता है जो छुट्टियां मनाने आते हैं।

घर की दोनों मंजिलें बेहद खूबसूरती से सजी हुई हैं; कमरे बड़े और आधुनिक हैं, क्योंकि घर बहुत पुराना नहीं है; चौड़ी जॉर्जियन सीढ़ी अपने आप में एक उत्कृष्ट कृति है, और जैसा कि मुझे बाद में पता चला, यह अक्सर घर में रहने वाले एक भूत को भी आकर्षित करती थी। लेकिन इसके बारे में सही समय पर बात करेंगे।

मुझे रॉस हाउस के बारे में पहली बार मेजर के युवा भतीजे, एडविन स्टेनली से पता चला, जो न्यू जर्सी में रहने वाले एक अमेरिकी थे। श्री स्टेनली ने मेरी किताबें पढ़ी थीं और उन्हें लगा कि

घर देखना मेरे लिए फायदेमंद हो सकता है। बाद में मेजर ब्लैकवेल ने खुद हमें आने का निमंत्रण दिया। आखिरकार हम लीनेन से गाड़ी चलाकर वहाँ पहुँचे, जहाँ हम ठहरे हुए थे।

घर में जमा हुए बच्चों के झुंड और दो बिल्ली के बच्चों से मिलते ही, मैं मेजर के साथ ऊपर उनके अध्ययन कक्ष में चला गया, जहाँ हम भूतों से संबंधित काम शुरू कर सकते थे।

मैंने शुरुआत करते हुए कहा, "चलिए पहले घर के बारे में बात करते हैं। यह कब बना था?"

जैसा कि आप देख सकते हैं, यह एक जॉर्जियन शैली का मकान है, लेकिन उससे पहले, वर्तमान मकान के पीछे एक और मकान हुआ करता था जिसके बारे में हमें पूरी तरह से जानकारी नहीं है। यह सबसे पुराने नक्शों में अंकित है। यह मुझे मेरी माँ से विरासत में मिला है, और यह उनके परिवार में काफी लंबे समय से है। मेरी माँ के परिवार ने 779 ई. से अपनी वंशावली साबित की है, लेकिन उनके पास 365 ई. तक के भी ठोस दावे हैं।

मैंने कहा, "यह अब तक का सबसे पुराना पारिवारिक वृक्ष है जिसके बारे में मैंने सुना है, यहाँ तक कि मेरी पत्नी के वंशवृक्ष को भी शामिल कर लें, जो 800 के दशक तक जाता है। आप स्वयं, क्या आपका जन्म यहीं हुआ था?"

“नहीं, मेरा जन्म इंग्लैंड में हुआ था, लेकिन मैंने अपना अधिकांश बचपन यहीं बिताया है। मुझे यह जगह, यहाँ की नावें और यहाँ के लोग हमेशा से बहुत प्यारे रहे हैं। पाँच साल पहले मुझे यह जगह मेरी माँ से विरासत में मिली। जब मैं यहाँ नहीं होती, तो मैं शिकागो के बाहर रहती हूँ।”

मैंने मेजर से उनकी मां का पारिवारिक नाम पूछा और पता चला कि वह ओ'मैली था—प्रसिद्ध ओ'मैली वंश, जिसकी सोलहवीं शताब्दी की समुद्री डाकू रानी ग्रानिया ओ'मैली सबसे महान सदस्य तो नहीं थीं, लेकिन निश्चित रूप से सबसे प्रसिद्ध सदस्य थीं। तभी अचानक मेरे मन में एक विचार आया। दोपहर के भोजन के दौरान, जो हमने प्रवेश द्वार के दाहिनी ओर स्थित नीचे के बड़े कमरे में किया था, सिबिल ने मुझे एक कागज का टुकड़ा देते हुए धीरे से कहा था कि यह कुछ ऐसा है जो उसे "अचानक" सूझा है। नाम सुनकर मुझे कुछ याद आया और मैंने उसे अपनी जेब से निकाल लिया।

उस पर "टिमोथी...माँ...ओ'मैली" शब्द लिखे हुए थे। बेशक, एक माँ ओ'मैली थी - मेजर की अपनी माँ!

मैंने आगे कहा, "मेजर, जब से आप यहां हैं, क्या आपने कभी कुछ असामान्य देखा है?"

मेजर ने सिर हिलाया। “लगभग छह साल पहले, यह घटना घटी। मैं ऊपर अपने कमरे में सो रहा था, तभी अचानक मेरी नींद खुल गई; मैंने अपने बिस्तर के अंत में एक बूढ़ी नौकरानी को खड़ा देखा; उसका नाम एनी ओ'फ्लिन था—वह मेरी दादी की नौकरानी थी।”

“मैं पूरी तरह होश में था, क्योंकि पिछली रात मैं सामान्य समय पर सोया था। उस भूत से बात करने से मेरी पत्नी जाग गई, और मैंने उसे दिखाते हुए कहा—‘देखो, एनी ओ’फ्लिन यहाँ है, और उसके साथ एक सहेली भी है,’ क्योंकि नौकरानी के साथ एक और औरत थी। जब मैंने यह कहा, तो भूतिया नौकरानी ने मेरी तरफ मुस्कुराया, मानो पहचाने जाने पर खुश हुई हो। मेरी पत्नी ने उन्हें नहीं देखा, लेकिन वह इस बात की गवाह है कि उस समय मैं पूरी तरह जागा हुआ था।”

“अद्भुत,” मैंने स्वीकार किया। “आपने इसके बारे में क्या किया?”

"अगली सुबह मैं टॉमी मोरन से बात करने गया, जो हमारे लिए काम करने वाला एक बुजुर्ग व्यक्ति है और यहां के लोगों के बारे में बहुत कुछ जानता है, और जब मैंने उसे दूसरे भूत के बारे में बताया तो वह उसकी पहचान एनी की एक स्थानीय दोस्त के रूप में कर पाया, जिसका भी निधन हो चुका था।"

"क्या यह आपके जीवन का पहला ऐसा अनुभव था जो आपने महसूस किया?"

“अरे नहीं; उदाहरण के लिए, जब मैं दक्षिणी फ्रांस में था, जहाँ मेरा पालन-पोषण हुआ था, मैं नीस के ठीक ऊपर रहने वाले कुछ दोस्तों से मिलने जा रहा था, और मैं एक दोस्त के साथ था। हम एक पल के लिए उस महल की ओर जाने वाले पुल पर बैठे ही थे कि हमें घोड़ों और एक गाड़ी के पूरी रफ्तार से जाने की आवाज़ सुनाई दी। मैंने अपने दोस्त से कहा, चलो रास्ते से हट जाओ क्योंकि किसी की गाड़ी भाग गई है! लेकिन आवाज़ बस हमारे पास से गुज़र गई और आगे बढ़ती रही, न कोई गाड़ी थी, न कोई घोड़े! तो हम अपने दोस्त कर्नल ज़ेन के घर चले गए। जब हमने उन्हें अपने अनुभव के बारे में बताया तो वे हँस पड़े। ‘यह तो कुछ भी नहीं है,’ उन्होंने समझाया। ‘वहाँ ऐसा अक्सर होता रहता है। यह एक भूतिया गाड़ी है।’”

“कोई और घटना?” मैंने उत्सुकता से पूछा। जाहिर है, मेजर ब्लैकवेल के पास छठी इंद्री का वरदान था।

"जब मैंने डरमोट मैकग्रानिया की कब्र खोदी थी, तब यहाँ केवल एक ही दूसरा व्यक्ति मौजूद था।" संयोगवश, ग्रानिया का अर्थ आयरिश भाषा में अनुग्रह होता है, और इसका उच्चारण "ग्रोनिया" की तरह होता है।

मैंने कहा, “मैंने घर के बाहर, जागीर के पिछले हिस्से की ओर वह एकाश्म देखा है। उस मकबरे की कहानी क्या है?”

“मैंने खुदाई शुरू की, क्योंकि मुझे पुरातत्व में बहुत रुचि है। एक रात मैंने सपना देखा कि मैं हमेशा की तरह खुदाई कर रहा था, तभी पत्थर हिल गया और उसके नीचे से एक अजीब सी आकृति निकली, जिसने स्कर्ट और पैरों में लेगिंग पहन रखी थी, और वह मेरी ओर बढ़ने लगा। मैं अपने जीवन में इतना कभी नहीं डरा था। मुझे बिल्कुल नींद नहीं आई, और अगली सुबह मैं घाट पर गया, क्योंकि मेरे साथ खुदाई में काम कर रहे दो आदमी पानी के उस पार रहते थे और नाव से आए थे।”

"उनके उतरने से पहले ही उन्होंने मुझसे तुरंत कहा, 'हमें बहुत-बहुत खेद है, लेकिन हम डरमोट मैकग्रानिया की कब्र पर अब और कोई काम नहीं करेंगे!'"

“जाहिर है, वे भी डरकर भाग गए थे। तब से मैंने इसे छुआ तक नहीं है, और यह तीस साल पहले की बात है। मैं मकबरे की खुदाई की अनुमति नहीं दूंगा, जब तक कि यह इसके भले के लिए न हो—क्योंकि मुझे लगता है कि उस समय मैं उस कारण से खुदाई नहीं कर रहा था, बल्कि खजाना मिलने की उम्मीद में कर रहा था, और इसीलिए मुझे रोका गया था।”

“यह मकबरा ईसा पूर्व का अवशेष है, है ना?” मैंने कुछ देर सोच-विचार करने के बाद पूछा। अचानक बीसवीं सदी बीत गई और इतिहास का नया सवेरा हमारे सामने आ गया।

“इसी तरह की कब्रें काउंटी स्लाइगो में भी मौजूद हैं। इस विशेष कब्र के बारे में प्रचलित किंवदंती के अनुसार, जब डरमोट ग्रानिया के साथ भागा, तो वे यहीं पकड़े गए और उनके दुश्मनों ने उन्हें मार डाला और यहीं दफना दिया। यह लगभग 1500 ईसा पूर्व की बात है। यह निश्चित रूप से आयरिश इतिहास की शुरुआत है।”

"क्या किसी और को भी इस मकबरे में कोई असामान्य अनुभव हुआ है?"

"मेरी जानकारी में तो ऐसा कोई मामला नहीं है। लेकिन घर में ही कुछ मानसिक अनुभव हुए हैं।"

मैं मेजर के अध्ययन कक्ष में आरामदायक चमड़े की कुर्सी पर आराम से बैठ गया और मेजर ब्लैकवेल द्वारा सुंदर रॉस हाउस में भूतों के बारे में बताई गई शांत कहानियों को ध्यान से सुनने लगा।

"मेरी चचेरी बहन, मिस लिंडा कार्वेल ने उस बूढ़ी महिला को इधर-उधर चलते देखा है और मेरी पत्नी और मैंने भी किसी को उस जगह पर ऊपर-नीचे चलते सुना है जहां पहले सीढ़ियां हुआ करती थीं।"

मेजर ने मुझे वह जगह दिखाई जहाँ अब दीवार सीढ़ियों के चबूतरे को ढके हुए थी। आज केवल मुख्य सीढ़ी ही बची है।

पहले सीढ़ियाँ घर के सामने की तरफ थीं, लेकिन संरचनात्मक परिवर्तनों के कारण अब उनकी आवश्यकता नहीं रह गई थी।

“मेरी पत्नी ने इसे हफ्ते में कम से कम चार या पांच बार सुना है। उसने दरवाजे पर दस्तक की आवाज भी सुनी है।”

मैंने कहा, "लगभग नौकरानी जैसी लग रही थी। क्या किसी ने नौकरानी को देखा?"

“हाँ, लिंडा कार्वेल ने सचमुच उसे सामने वाले कमरे में जाते हुए देखा था। यह बात सिर्फ़ दो साल पहले की है। सब लोग चर्च गए हुए थे, और उस समय घर में मेरी पत्नी, मैं, मेरी बेटी और लिंडा के अलावा कोई नहीं था। लिंडा अचानक कमरे में आई, उसका चेहरा पीला पड़ गया था। उसने कहा, ‘मैंने अभी-अभी एक औरत को दादी के कमरे में जाते देखा। उसने सफ़ेद और नीले रंग की वर्दी पहनी हुई थी—एक कड़क इस्त्री की हुई वर्दी।’ मैंने इस बारे में टॉमी मोरन से बात की और उसने पुष्टि की कि मेरी दादी के ज़माने में नौकरानियाँ ऐसी ही वर्दी पहनती थीं!”

"मेजर, इस बारे में आपकी क्या राय है?"

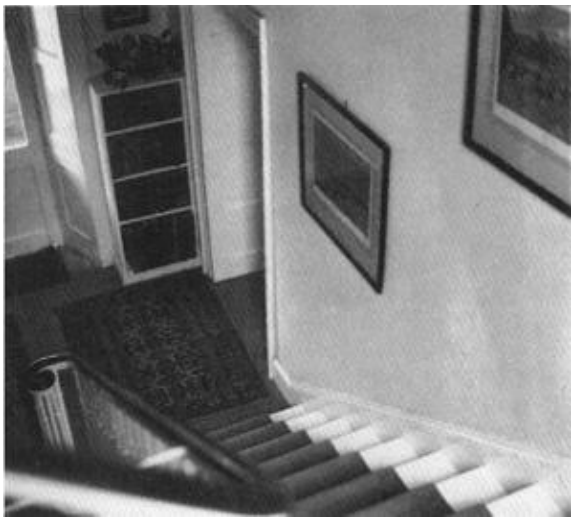

रॉस हाउस—काउंटी मेयो

“मुझे लगता है कि यह वही एनी है, जो मुझसे मिलने आई थी। उसकी मृत्यु सामान्य परिस्थितियों में हुई, लेकिन वह परिवार और घर से बेहद लगाव रखती थी। उसने अपना पूरा जीवन यहीं बिताया। उसने जॉन ओ'फ़्लिन नाम के एक दर्जी से शादी की, लेकिन उसे यह जगह बेहद प्यारी थी और यहाँ से जाने के बाद भी वह अक्सर हमारे लिए उपहार लेकर आती रहती थी।”

"क्या यहां कोई अन्य घटना भी देखी गई है?"

नीचे वाले ड्राइंग रूम में टॉमी मोरान और उनके सभी बेटों ने चिमनी के सामने दो लोगों को बैठे देखा है। हालाँकि, मुझे उनके बारे में प्रत्यक्ष रूप से कुछ नहीं पता। मेरे चचेरे भाई पीटर ओ'मैली ने भी उन्हें देखा है। वही हैं जिन्हें एक भयावह अनुभव हुआ। उन्होंने ड्राइंग रूम की खिड़की में एक बेहद डरावना चेहरा देखा।

“उसने आखिर क्या देखा?” मैं अब पूरी तरह से ध्यान लगाकर सुन रहा था। पूरा वातावरण ऊर्जा से भरा हुआ लग रहा था।

“मैं उस समय यहाँ नहीं था, लेकिन उसने बस इतना कहा कि वह बहुत ही भयानक चेहरा था। यह दस साल पहले की बात है।”

“मेजर, इनिशडाफ द्वीप के बारे में क्या?” मैंने पूछा।

“वहाँ एक पुराना मठ है जिसे मैं पुनर्स्थापित करने की आशा करता हूँ। हमारे पास 1400 तक के अभिलेख हैं और उनमें लिखा है 'खंडहर हो चुका गिरजाघर'। संयोगवश, जिस प्रायद्वीप पर हम अभी हैं, जहाँ यह घर स्थित है, वह भी ज्वार के समय एक द्वीप में बदल जाता है, और उस खंडहर हो चुके गिरजाघर की ओर जाने वाले तीर्थयात्रियों के मार्ग का पता अभी भी लगाया जा सकता है। सड़क का निर्माण किसी और कारण से नहीं हुआ होगा।”

"लेकिन आपने द्वीप पर कुछ भी असामान्य नहीं देखा?"

“नहीं, मैंने तो नहीं किया, लेकिन टॉमी मोरान और मेरे कुछ अन्य रिश्तेदारों ने—कुल मिलाकर चार लोगों ने—किया। इस द्वीप के बारे में हमेशा से यह माना जाता रहा है कि इसमें कुछ गड़बड़ है।”

अब हम परिवार के अन्य सदस्यों के बारे में बात करने लगे; श्रीमती ब्लैकवेल दोपहर के भोजन पर हमारे साथ शामिल नहीं हो सकीं क्योंकि वह कैसलबार में अपनी चौदह वर्षीय बेटी के साथ ठहरी हुई थीं, जो टूटे हुए पैर के कारण वहाँ के अस्पताल में भर्ती थी। हालाँकि, ऐसा प्रतीत हुआ कि वह दुर्घटना महज एक मामूली हादसा नहीं थी, बल्कि उससे कहीं अधिक गंभीर थी।

“इसकी सबसे असाधारण बात यह है। घटना से एक रात पहले, उसने सपना देखा कि एक एम्बुलेंस घर के सामने आकर रुकी। जैसा कि आपने देखा, घर के सामने का रास्ता गाड़ियों के लिए बंद है। इसलिए हर गाड़ी को पीछे के रास्ते से आना पड़ता है। उसने देखा कि एम्बुलेंस सामने के प्रवेश द्वार पर आई, किसी को बिठाया और चली गई। साथ ही, एम्बुलेंस पर लाल क्रॉस या कोई और जाना-पहचाना चिन्ह नहीं था, बल्कि आयरिश भाषा में लिखा एक गोलाकार चिन्ह था! ठीक वही एम्बुलेंस अगली शाम आई और उसे ले गई; यह एक फॉक्सवैगन एम्बुलेंस थी जिसके किनारे पर आयरिश भाषा में एक गोलाकार चिन्ह बना हुआ था, ठीक वैसे ही जैसे उसने हमें बताया था! एडी में वाकई भविष्य देखने की क्षमता है।”

“ऐसा लगता है,” मैंने कहा। “क्या उसके बारे में और कुछ है जो मैं जानना चाहूँ?”

“एक बार उसने सपने में अपनी दादी माँ—मेरी माँ—को देखा और उनका हर एक विवरण हूबहू दिया। भूतों से बेहद डरने वाली एडी ने सपने में माँ की आत्मा से विनती की कि उसे फिर

कभी भूत न देखना पड़े। दादी ने उसे आश्वासन दिया कि ऐसा नहीं होगा, लेकिन उन्हें हमेशा पता रहेगा।"

मुझे दो और बातें पता चलीं जो मानसिक दृष्टि से दिलचस्प थीं। एक तो बच्चों के कमरे में रहस्यमय ढंग से बत्तियाँ जलना और दरवाज़े खुलना, और दूसरी बात जो मुझे हमारे सबसे सुखद प्रवास के अंत में ही पता चली। लेकिन एक तरह से यह एक शानदार अंत साबित हुआ।

अभी सबको मोटे कपड़े और जूते दिए गए, क्योंकि हमें नाव से—असल में मोटरबोट से—खाड़ी के उस पार वाले द्वीप तक जाना था और मेजर ने हमें भरोसा दिलाया कि वहाँ बारिश और ठंड होगी। मेजर की फर जैकेट में कैथी एकदम आउटडोर गर्ल लग रही थी, और सिबिल इतनी मोटी-मोटी कपड़ों में लिपटी हुई थी कि वह मुश्किल से छोटी नाव के केबिन में दाखिल हो पाई। लड़के और लड़कियां, दोनों तरफ के कई चचेरे भाई-बहन भी दूसरी नाव में साथ आए, और कुछ ही मिनटों में हम खुली खाड़ी में पहुँच गए और इनिशडाफ द्वीप की ओर चल दिए, जो पूरी तरह से मेजर की जागीर का हिस्सा था।

दस मिनट बाद हम द्वीप पर उतरे। रेतीला किनारा तैरने के लिए बेहद लुभावना था और मेजर ब्लैकवेल ने स्वीकार किया कि वह इसी तरह की एक परियोजना पर काम कर रहे थे। शार्क की अनुपस्थिति के कारण, मुझे लगा कि यह किसी भी महासागर में तैरने के लिए सबसे आदर्श स्थान है।

इसके बाद हम पहाड़ी की ऊँचाई पर चढ़े और द्वीप के मध्य भाग में पहुँचे, जहाँ खंडहर हो चुका मठ स्थित था। मुझे तुरंत यह स्पष्ट हो गया कि हम उस गिरजाघर की छत के बहुत करीब खड़े थे और उसका निचला हिस्सा सदियों से मिट्टी से भर गया था। "ऊँचे तल" के एक कोने में टॉमी मोरान के बेटों में से एक की साधारण सी कब्र थी, जिस पर एक सेल्टिक क्रॉस बना हुआ था। इसके अलावा द्वीप पूरी तरह खाली था।

जब बाकी लोग खंडहर हो चुके मठ के चारों ओर खड़े थे, तब मेजर ब्लैकवेल, टॉमी और मैं दीवार के दूसरी तरफ चढ़े और फिर गीली ज़मीन पर उतर गए। इसके बाद हम द्वीप के शिखर पर पहुँचे, जहाँ से हमें अपने चारों ओर के सभी द्वीपों का शानदार नज़ारा दिखाई दिया, सबसे दूर स्थित द्वीप तक, जो वास्तव में आयरलैंड की समुद्री सीमा थी, जिसके आगे अमेरिका

स्थित था। इन्हीं कई द्वीपों और खाड़ियों के बीच पुराने ज़माने के समुद्री लुटेरे कानून की कार्रवाई से बचने के लिए छिपे रहते थे।

हमने गिरजाघर के परिसर से कुछ भारी पत्थर लाए और बैठ गए ताकि टॉमी मोरान अपने अनुभवों के बारे में मुझसे बात कर सकें।

मैंने सबसे पहले उससे यहां और घर में दिखाई देने वाले उस डरावने चेहरे के बारे में पूछताछ की।

“माइक शील्स ने मुझे यह बताया था, महोदय।” टॉमी मोरान ने भारी लहजे में बोलना शुरू किया। “वह कई वर्षों तक मेरे साथ कांच के कारखाने में काम करता था। वह आसानी से डरने वाला आदमी नहीं था। उस समय कब्रिस्तान में कांटेदार पेड़ थे। वह वहाँ से गुजर रहा था जब उसने कुछ आवाज सुनी। उसने पीछे मुड़कर देखा और जो देखा वह एक भेड़ का सिर था जिसके साथ एक इंसान का शरीर था।”

“नहीं,” मैंने कहा।

“जी हाँ, सर,” टॉमी ने सिर हिलाते हुए कहा, “उसका सिर भेड़ की तरह ऊन से ढका हुआ था। माइक के आगे तीन लड़के थे। उसने उन्हें धक्का देकर गिरा दिया और भाग गया।”

"क्या तुम्हें भी यहाँ कभी ऐसे अनुभव हुए हैं, टॉमी?" मैंने सोचा कि एक बिखरे बालों वाला इंसान का चेहरा, भेड़ों को देखने के आदी एक सरल, कल्पनाशील द्वीपवासी को भेड़ के सिर जैसा ही लग सकता है।

“मेरे ज़माने में,” उन्होंने बात शुरू की, “वे नाव से रॉस हाउस में मछलियाँ ला रहे थे। मछलियाँ लाने का काम श्रीमती ओ'मैली के पति कर रहे थे। वे दोनों चप्पू चला रहे थे, लेकिन उनके पास पाल नहीं थी। वे किनारे के जितना हो सके करीब रहना चाहते थे। वे भाई-बहन थे, पैट स्टैंटन और उनकी बहन ब्रिजेट। अचानक एक आदमी कब्रिस्तान से नीचे आया और चप्पू को पानी से बाहर निकालने की कोशिश करने लगा। पैट ने पागलों की तरह चप्पू चलाया ताकि उससे बच सके; उसे याद है कि वह आदमी बिल्कुल नंगा था, उसके शरीर पर कोई कपड़े नहीं थे। आखिरकार, वे बच निकले।”

“उस समय यहाँ कोई नहीं रहता था?”

"कोई नहीं, नहीं," टॉमी ने मुझे आश्वस्त किया, और मेजर ने सहमति में सिर हिलाया।

मैं उस बूढ़े आदमी की कहानियों से बहुत प्रभावित हुआ। यकीनन टॉमी ने उन्हें मनगढ़ंत नहीं बनाया होगा, क्योंकि उसकी कही बातें भोजन कक्ष की खिड़की से झांकते उस भयानक चेहरे से मेल खाती थीं। कहीं न कहीं, एक जानवर की तरह जीने वाला इंसान उस सुनसान द्वीप पर शरण पा चुका होगा, और शायद जानवरों द्वारा पाला-पोसा गया यह आदमी राक्षस समझ लिया गया होगा। मुझे ऐसा नहीं लगा कि यह उस अर्थ में भूत था जिस अर्थ में मैं इस शब्द का प्रयोग कर रहा हूँ।

टॉमी ने हमें कुछ और कहानियां सुनाईं, जिनमें से कुछ तो अलौकिक सी थीं, और फिर हम बाकी लोगों के साथ मिलकर घर वापस चले गए। अब समय आ गया था कि मैं सिबिल लीक से चर्च और कब्रिस्तान के बारे में उनके विचार पूछूं।

“हंस, हमें कुछ निशान तो मिले, लेकिन कोई प्रत्यक्ष उपस्थिति नहीं दिखी,” सिबिल ने समझाया, “लेकिन मैं दृढ़तापूर्वक आग्रह करती हूँ कि उस स्थान की खुदाई की जाए, क्योंकि वहाँ नीचे कलाकृतियाँ हो सकती हैं। दाहिनी ओर एक मार्ग भी है, जिसे हमने आज दोपहर खोजा है। यह मार्ग मुख्य वेदी को पहले मठवासी कक्ष से जोड़ता है।”

अब हम घर लौट आए थे और मेजर द्वारा यात्रा के लिए दिए गए भारी कपड़े उतार दिए। चाय तैयार हो रही थी, तब हम सब अंगीठी के चारों ओर बैठकर इंतज़ार करने लगे।

तभी मुझे याद आया कि दोपहर के भोजन से पहले, जब हम पहली बार घर आए थे, तब सिबिल ने मुझसे एक आदमी के बारे में बात की थी जिससे वह मिली थी। शायद हम टॉमी मोरान के काम पर जाने से पहले इस मामले को सुलझा सकते हैं।

“मैं कुछ देर के लिए मुख्य दल को घर में छोड़कर अकेली रहना चाहती थी,” सिबिल ने बताया, “इसलिए मैं लोहे के गेट की ओर जाने वाले रास्ते से चलकर एक बगीचे में पहुँची। मैं जहाँ तक जा सकती थी, वहाँ तक चलती रही, जब तक कि मैं एक खुली जगह पर नहीं पहुँच गई, जो बगीचे के उस छोर पर थी जहाँ से मैंने चलना शुरू किया था। मैं मकबरे तक पहुँच गई। मैं थोड़ी देर मकबरे के पास रुकी, फिर मैं गेट की ओर बढ़ी, गेट फांदने के लिए तैयार थी, और मैं गहरी सोच में डूबी हुई थी। इसलिए मुझे वहाँ एक आदमी को देखकर आश्चर्य नहीं

हुआ। मुझे वह छोटा सा लगा, लेकिन ज़ाहिर है मैं उससे ऊँची जगह पर थी। उसने टोपी नहीं पहनी थी, लेकिन उसके बाल अजीब थे, भूरे रंग के।”

"जब उसने तुम्हें देखा तो उसने क्या किया?"

“उसने मेरी तरफ मुस्कुराया और मेरी ओर आने का आभास हुआ। मैं उसकी ओर चलता रहा। उसने कहा, ‘तो तुम फिर से वापस आ गए हो?’ और मैंने जवाब दिया, ‘लेकिन मैं यहाँ आया ही नहीं था। मैं इस जगह को नहीं जानता।’ वह मुड़ा और समुद्र की ओर चला गया और मैं मुड़कर वापस चला गया।”

"क्या वह आपको भूत जैसा लगा?"

“आपको पता है, मुझे कभी नहीं पता चलता कि भूत कैसा दिखता है। मेरे लिए तो सब कुछ एक जैसा ही है। मुझे इंसानों और भूतों में फर्क करने में मुश्किल होती है।”

जब मैंने मेजर ब्लैकवेल को सिबिल की मुलाकात के बारे में बताया, तो वह चौंक गए और बोले: "हे भगवान, उसने दूसरे वाले को देख लिया है - उसने समुद्री कप्तान को देख लिया है!"

पता चला कि एक और भूत था जिसके बारे में उन्होंने घर के बारे में हमारी बातचीत के दौरान हमें नहीं बताया था। उन्हें लगा कि सिबिल का उस प्रेतवाधित नौकरानी से कोई संपर्क नहीं हुआ था—शायद अब तक उसे कोई स्थायी ठिकाना मिल गया था—लेकिन किसी तरह उसने उस प्रेतवाधित नाविक की गंध पहचान ली थी।

मैंने टॉमी मोरान से सवाल किया, जो पचहत्तर साल की उम्र में उस जगह को किसी और से बेहतर जानता था, कि यह समुद्री कप्तान का धंधा आखिर क्या है।

“मुझे उनका नाम नहीं पता, महोदय,” टॉमी ने कहा, “लेकिन वे लगभग सौ साल पहले इस घर में आए थे। उन्होंने यह जगह खरीदी थी और इसके बारे में इतना सोचा कि अपनी पत्नी और परिवार को वापस लाने के लिए इंग्लैंड चले गए। उन्होंने जाते समय कहा था कि वे वापस आएंगे, चाहे जिंदा हों या मुर्दा!”

“समुद्र में उनकी मृत्यु हो गई, और उसके बाद से उन्हें कई लोगों ने देखा है, हमेशा दिन के उजाले में, हमेशा सिगार पीते हुए; माइक शील्स ने उन्हें एक बार ड्राइंग रूम में बैठे देखा था। कई लोगों ने उन्हें सीढ़ियों पर देखा और वे हमेशा गायब हो जाते थे। मेरे एक बेटे ने उन्हें देखा

और वह डर गया। उनके सिर पर टोपी नहीं होती थी, लेकिन हमेशा सिगार पीते रहते थे। उनके बाल बहुत काले थे, और माइक शील्स के अनुसार, उनकी लंबाई आपकी ही जितनी थी।"

लीजिए, एक समुद्री कप्तान बिना टोपी के, लेकिन सिगार के साथ! याद आने पर, सिबिल को यकीन नहीं था कि उसने उसे यह कहते सुना था, "तो तुम फिर से वापस आ गए हो" या "देखो, मैं फिर से वापस आ गया हूँ।"

*85

पेरिस में ला टूर मालाकॉफ में भूत

मैसन-लाफिट पेरिस महानगर का एक देहाती, लेकिन सुरुचिपूर्ण उपनगर है, जहाँ कार से आधे घंटे में आसानी से पहुँचा जा सकता है। रेस कोर्स के पास एक पार्क के बीच में बने टाउनहाउसों का एक समूह है, जो लुप्त होती भव्यता की याद दिलाता है। पुरानी रिहाइशों की जगह अब ऊँची-ऊँची, महँगी अपार्टमेंट इमारतें बन चुकी हैं।

रुए रेसीन और एवेन्यू मोंटेग्ने के कोने पर लगभग एक एकड़ में फैले सुंदर भूभाग में एक तीन मंजिला इमारत खड़ी है। जब मैंने घर का दौरा किया, तो यह ठीक वैसा ही था जैसा द्वितीय साम्राज्य काल में, 1860 के दशक में बनने के बाद से था। कांच से घिरा एक कंज़र्वेटरी बगीचे की ओर खुलता था और उस दौर की रोमांटिक विक्टोरियन शैली में छत से ऊपर तक एक मीनार पहुँचती थी। एकमात्र नया निर्माण बगीचे के दूसरे छोर पर कम छत वाला एक प्रोजेक्शन रूम था: यहाँ के अंतिम किरायेदार फिल्म जगत की हस्ती रॉबर्ट लैमुरे थे।

घर के अंदर, ऊंची छतें, सफेद दीवारें, सोने के उपकरण और आगे और पीछे लोहे की सीढ़ियाँ होने से देश के एक सुरुचिपूर्ण टाउनहाउस का स्वरूप बरकरार रहता था।

नंबर 3 एवेन्यू मोंटेग्ने का निर्माण सम्राट नेपोलियन तृतीय ने अपने निजी खर्च के लिए करवाया था। देखने में यह एक शिकारगाह लगता था (उस समय मैसन-लाफिट ग्रामीण क्षेत्र में स्थित था), लेकिन वास्तव में यह उनकी एक प्रिय प्रेमिका का निवास स्थान था, जिसका चित्र सम्राट ने बनवाकर बाहरी दीवार पर लगवाया था।

गणतंत्र की स्थापना के साथ ही यह घर राजकीय संपत्ति बन गया और द्वितीय विश्व युद्ध तक इसे "राजकीय निवास" के रूप में बनाए रखा गया। महत्वपूर्ण अतिथियों को यहाँ ठहराया जाता था—लेकिन वे इतने महत्वपूर्ण नहीं थे कि उन्हें एलिसी पैलेस में ठहराया जा सके। द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान जर्मन सैनिकों ने घर पर कब्जा कर लिया और इस प्रक्रिया में उन्होंने घर में मौजूद हर चीज को लूट लिया। जब मित्र देशों की सेनाओं ने संपत्ति पर कब्जा किया, तो उन्होंने लूट का काम पूरा किया। बाद में इसे अचल संपत्ति में रुचि रखने वाले एक सज्जन, एम. डुप्रेज़ ने खरीद लिया। जब श्रीमती डुप्रेज़ ने घर देखा, तो उन्होंने उनसे इसे बाजार से हटवाने के लिए कहा और अपने परिवार के साथ वहाँ रहने लगीं।

* * *

1949 की शरद ऋतु में, श्रीमान और श्रीमती डी. ने इसे अपने निजी उपयोग के लिए किराए पर लिया। श्रीमान डी. पेरिस स्थित अमेरिकी दूतावास में एक उच्च पदस्थ राजनयिक थे। श्रीमती डी. पेंसिल्वेनिया में जन्मीं, अंग्रेजी, वेल्श और आयरिश मूल की थीं और जन्म से ही उनके बालों में झिल्ली थी, जिसे कुछ लोग मानसिक प्रतिभा का संकेत मानते हैं। उनके और श्रीमान डी. के चार बच्चे हैं और वे अब वाशिंगटन डी.सी. के पास रहते हैं, जहाँ श्रीमान डी. वकालत करते हैं।

जब डुप्रे परिवार ने घर किराए पर लिया, तो उन्होंने पॉलेट की सेवाएं भी ले लीं, जो कई वर्षों से डुप्रे परिवार के साथ काम कर रही थीं और हर काम में माहिर थीं। इस बीच, घर को सुरुचिपूर्ण ढंग से फिर से सजाया गया था और इसमें एक शानदार पियानो भी शामिल था, जो नीचे के बड़े स्वागत कक्ष "सैलून" में रखा गया था, जहां नेपोलियन के जीवन की महिला संभवतः अपने प्रसिद्ध प्रेमी से मिलती थीं जब भी वह उनसे मिलने आते थे।

श्रीमती डी. को शुरू से ही वह घर पसंद आ गया था; लेकिन वह टावर की दीवार पर लगी उस खूबसूरत महिला की अंडाकार तस्वीर के बारे में सोचने से खुद को रोक नहीं पाईं।

घर में आने के कुछ ही समय बाद, श्री डी. को सरकारी काम से तीन सप्ताह की यात्रा करनी पड़ी। श्रीमती डी. अपने बच्चों, नौकरानी पॉलेट और एक आया के साथ रह गईं—जिनमें से कोई भी अंग्रेज़ी का एक शब्द भी नहीं बोलती थी। श्रीमती डी. को उस समय फ्रेंच का ज्ञान

लगभग न के बराबर था, इसलिए उन्हें अपने नौकरों के साथ एक कुछ असामान्य संबंध की उम्मीद थी।

अपने पति के जाने के कुछ दिनों बाद, श्रीमती डी. सुबह 3 बजे संगीत की आवाज़ से जाग उठीं। पास ही कहीं से पियानो की मधुर धुन सुनाई दे रही थी, जो थोड़ी लंबी और सुरीली थी। उनकी पहली प्रतिक्रिया यही थी कि पड़ोसी इस समय संगीत बजाकर कितनी लापरवाही कर रहे हैं, लेकिन फिर उन्हें एहसास हुआ कि उनके आस-पास कोई पड़ोसी नहीं है जो कुछ सुन सके। तब उन्हें समझ आया कि संगीत उनके घर के अंदर से आ रहा है, या यूँ कहें कि नीचे वाले बैठक कक्ष से। वह तुरंत बाथरूम में गईं और यह सुनिश्चित करने के लिए कि वह जाग रही हैं, ठंडे पानी के टब में बैठ गईं। एक घंटे बाद संगीत बंद हो गया। उस दौरान वह इतनी डरी हुई थीं कि नीचे जाकर यह देखने की हिम्मत ही नहीं हुई कि कौन उनका पियानो बजा रहा है। संगीत कोई डरावना नहीं था, बल्कि सुहावना और थोड़ा लंबा था।

वह अपने अनुभव के बारे में किससे बात करती? दूतावास के कर्मचारी शायद ही ऐसे मामलों पर सकारात्मक प्रतिक्रिया देते और उसकी फ्रांसीसी भाषा उसे नौकरों से सवाल पूछने की अनुमति नहीं देती थी।

पेरिस के ला टूर मालाकॉफ में स्थित भूतिया विला

ला टूर मालाकॉफ से दिखने वाले नज़ारे

अगली रात, भूतिया पियानो संगीत फिर से ठीक 3 बजे शुरू हुआ और ठीक 4 बजे बंद हो गया। रात दर रात, उन्हें अदृश्य हाथों का संगीत सुनने को मिल रहा था। श्रीमती डी. अब भी उन डरावनी घटनाओं के समय नीचे जाने की हिम्मत नहीं करती थीं, लेकिन सोने से पहले वह अपने अज्ञात मेहमान को फंसाने की कोशिश करती थीं, जैसे पियानो का ढक्कन बंद करना या संगीत की शीट को कुछ पन्नों पर खुला छोड़ देना। लेकिन भूत ने कोई प्रतिक्रिया नहीं दी: सब कुछ वैसा ही था जैसा उन्होंने छोड़ा था, और संगीत पहले की तरह ही स्पष्ट था।

अपने पति के लौटने पर उसने राहत की सांस लेते हुए उनका स्वागत किया। जब उसने उन्हें अपनी आपबीती सुनाई, तो वे आश्चर्यजनक रूप से समझदार थे। अगर उस रात भूत संगीत बजा रहा होता, तो श्री डी. सुनने के लिए जागते रहते, लेकिन दुर्भाग्य से, उनके लौटने से रात के संगीत कार्यक्रम अचानक समाप्त हो गए।

धीरे-धीरे उस भूतिया पियानोवादक का मामला लोगों की यादों से धुंधला पड़ता गया, खासकर इसलिए क्योंकि डी. दंपति घर में अक्सर मेहमाननवाज़ी करते थे। उनके मेहमानों में नील ओ., उनके पति के सहायक और उनकी पत्नी भी शामिल थे। एक रविवार की सुबह वे कुछ घबराए हुए से नाश्ते के लिए सीढ़ियों से नीचे उतरे। श्रीमती डी. द्वारा पूछे जाने पर, दंपति ने उस लापरवाह "पड़ोसी" के बारे में शिकायत की जिसने सुबह 3 बजे पियानो बजाकर उन्हें जगाए

रखा था। उनका कमरा ठीक बैठक कक्ष के ऊपर था। श्रीमती ओ. ने आगे बताया कि उन्होंने घर के बाहर एक शिकार का हॉर्न सुना था और उसी से उनकी नींद खुल गई थी।

डी. के यहाँ रात भर ठहरने वाले अन्य मेहमानों ने भी नीचे रात में होने वाले संगीत कार्यक्रमों के बारे में इसी तरह की शिकायत की। मेज़बान क्या कर सकते थे सिवाय इसके कि वे उम्मीद करते हैं कि उनके मेहमान अगली रात बेहतर नींद लेंगे?

अंततः श्रीमती डी. ने नील ओ. की मदद से उस नौकरानी से उस घर के बारे में पूछताछ की, जिसमें उसने इतने लंबे समय तक काम किया था।

“बाहर लगी उस महिला की तस्वीर का क्या हुआ?” श्रीमती डी. जानना चाहती थीं। जाहिर है, नेपोलियन कुछ समय बाद अपनी प्रेमिका से ऊब गए थे और उन्हें घर में अकेले रहने के लिए छोड़ गए थे। शाही परिवार की पूर्व प्रेमिका के रूप में उन अकेले वर्षों में, उन्हें सांत्वना देने वाला कोई साथी नहीं था: केवल एक भव्य पियानो ही उनका मनोरंजन था, और जल्द ही वही उनका एकमात्र जुनून बन गया। जब श्रीमती डी. ने नौकरानी से घर में भूत के बारे में पूछा, तो लड़की का चेहरा पीला पड़ गया। तीसरी मंजिल पर रहने वाली पॉलेट ने अक्सर नीचे से पियानो की भूतिया धुन सुनी थी, लेकिन डर के मारे उसने कभी जाँच करने की हिम्मत नहीं की थी। डुप्रेज़ के निवास के दौरान, एक बार जब नर्स सो गई थी, तब पॉलेट बच्चों के साथ अकेली थीं।

बच्चों में से एक रोने लगा और पॉलेट दौड़कर कमरे में गई। उसने देखा कि छोटी बच्ची अपने बिस्तर पर जाग रही थी और कमरे के एक कोने की ओर इशारा करते हुए कह रही थी, "देखो, कितनी सुंदर महिला है!" हालाँकि, पॉलेट को वहाँ कोई भी दिखाई नहीं दे रहा था।

डी. परिवार के पेरिस छोड़ने के बाद, यह घर रॉबर्ट लैमोरॉक्स के हाथों में चला गया, जिन्होंने परिसर में प्रोजेक्शन रूम बनवाया, लेकिन बाकी सब कुछ वैसा ही रहने दिया।

उन्होंने भी वह घर छोड़ दिया और अंततः कहीं और चले गए। इसके बाद वह घर एक ऐसे भूखंड का हिस्सा बन गया जिसे सट्टेबाजों ने पुराने मकानों को गिराकर उस स्थान पर एक नया अपार्टमेंट भवन बनाने के उद्देश्य से अधिग्रहित कर लिया था। अगस्त 1968 में, ला टूर मलाकॉफ सोसाइटी ने मुझे उस घर का दौरा करने की अनुमति दी, साथ ही यह शर्त भी रखी कि यदि मैं घर को अभी भी खड़ा देखना चाहता हूँ तो मुझे जल्द से जल्द ऐसा करना होगा।

अंततः, 1969 में मैंने ऐसा किया, और सौभाग्य से तब तक तोड़फोड़ करने वाले नहीं आए थे। घर पहले से ही वीरान दिख रहा था। कभी सावधानीपूर्वक रखा गया बगीचा खरपतवारों से भर गया था, खिड़कियाँ गंदी थीं और सभी फर्नीचर की अनुपस्थिति ने इसे एक अजीब, अवास्तविक एहसास दिया था।

मैं सीढ़ियों पर ऊपर-नीचे घूमता रहा, तस्वीरें लेता रहा और किसी भी तरह की कंपन को सुनने की कोशिश करता रहा। मुझे कोई संगीत सुनाई नहीं दिया, लेकिन फिर ग्रैंड पियानो वहाँ नहीं था। एक इतालवी चौकीदार, जिसने सैकड़ों रातें उस संपत्ति पर घुसपैठियों से पहरा देते हुए बिताई थीं, ने मेरी ओर देखा और सोचा कि मैं वहाँ क्या चाहता हूँ। मैंने उससे पूछा कि क्या उसे घर में कोई असामान्य अनुभव हुआ है। उसने सिर हिलाया और समझाया कि ऐसा कभी नहीं हुआ होगा - वह कभी वहाँ सोया नहीं था और न ही ऐसा करने का सपना देखता था। क्यों नहीं? वह बस थोड़ा मूर्खतापूर्ण ढंग से मुस्कुराया और बात बदल दी।

जब मैंने अपनी तस्वीरों को पेशेवर फोटोग्राफर से डेवलप करवाया, तो उनमें से एक तस्वीर में एक अजीब सी रोशनी की लकीर दिखाई दी, जिसका कारण मुझे समझ नहीं आया। यह घर की लोहे की सीढ़ियों की तस्वीर थी। दूसरी और पहली मंजिल के बीच एक आकारहीन रोशनी की लकीर दिखाई दे रही थी। क्या यह नेपोलियन की प्रेमिका थी जो अपने प्रेमी का स्वागत करने के लिए जल्दी से नीचे जा रही थी?

इन बातों के बारे में निश्चित रूप से कुछ नहीं कहा जा सकता।

*86

भूतिया वुल्फसेग किला, बवेरिया

बवेरिया के वुल्फसेग में स्थित किला राज्य की संपत्ति नहीं है और इसके स्वामी की कृपा और अनुमति से ही इसका दौरा किया जा सकता है। मेरा मानना है कि यह दुनिया के कुछ गिने-चुने निजी स्वामित्व वाले किलों में से एक है, और इसी से जुड़ी एक दिलचस्प कहानी है।

पेशे से चित्रकार और बवेरिया राज्य के अंतर्गत आने वाले ऊपरी पैलेटिनेट प्रांत के स्मारकों के आधिकारिक संरक्षक रहे स्वर्गीय जॉर्ज राउचेनबर्गर ने अपनी बचत से इस प्राचीन किले को खरीदा था। चूंकि वे ही प्रांत में प्राचीन स्मारकों के जीर्णोद्धार के लिए राज्य द्वारा खर्च की जाने वाली धनराशि को आगे बढ़ाते थे, इसलिए उनकी स्थिति विशेष रूप से संवेदनशील थी, क्योंकि वे किसी भी कीमत पर अपने निजी किले पर कोई भी धनराशि खर्च नहीं होने दे सकते थे। परिणामस्वरूप, इस मध्ययुगीन किले के जीर्णोद्धार पर खर्च किया गया एक-एक पैसा उन्होंने अपनी जेब से ही दिया। वर्षों के दौरान उन्होंने धीरे-धीरे अतीत के इस अवशेष को एक

रहने योग्य, हालांकि आदिम, मध्ययुगीन किले में बदल दिया। उन्होंने कुछ गायब लकड़ी के फर्श लगवाए और हर मायने में इसे ग्यारहवीं शताब्दी के समय में वापस ले गए।

अभी तक तो इस विशाल किले में दो लोग आराम से सो सकते हैं, लेकिन चूंकि इसका जीर्णोद्धार कार्य अभी जारी है, इसलिए इसे राज्य के नियंत्रण में मौजूद कुछ "पर्यटक स्थलों" के बराबर आने में काफी समय लगेगा। फिर भी, इच्छुक पर्यटकों के छोटे समूहों को सप्ताह के अधिकांश दिनों में नाइट हॉल और किले के अन्य हिस्सों के निर्देशित भ्रमण के लिए प्रवेश दिया जाता है। आमतौर पर पर्यटकों को वुल्फसेग में होने वाली भूतिया घटनाओं के बारे में नहीं बताया जाता है, लेकिन मुझे यकीन है कि इन पंक्तियों का जिक्र करने वाले किसी भी व्यक्ति का कम से कम दोस्ताना स्वागत तो किया ही जाएगा।

डेन्यूब नदी की निकटता के कारण, वुल्फसेग का किला हमेशा से ही महत्वपूर्ण रहा है। यह घाटी से भव्यतापूर्वक ऊपर उठता है और आधुनिक समय की चार-पाँच मंजिलों के बराबर ऊँचा है। स्पष्ट रूप से रक्षा के लिए निर्मित, इसकी मोटी और मजबूत दीवारें दुर्गम हैं, और आक्रमणकारियों को हतोत्साहित करने के लिए ऊँचाई पर बनी छोटी खिड़कियाँ, साथ ही जिस पहाड़ी पर यह किला स्थित है, उस पर हमला करना बेहद मुश्किल बना देती हैं।

वोल्फसेग के बारहवीं शताब्दी के किले, जिन पर कभी विजय प्राप्त नहीं की जा सकी, अत्यंत दुर्जेय हैं।

दरअसल, वुल्फसेग कभी भी किसी शत्रु के हाथ में नहीं आया, और यहाँ तक कि तीस वर्षीय युद्ध के दौरान लंबे समय तक घेराबंदी करने वाले शक्तिशाली स्वीडिश सेना को भी हार माननी पड़ी। 1028 में निर्मित वुल्फसेग कई कुलीन बवेरियन परिवारों की संपत्ति रहा और 1918 तक बवेरिया पर शासन करने वाले विटल्सबाख वंश की विभिन्न शाखाओं के बीच जटिल वंशवादी संघर्षों में प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से शामिल रहा। वुल्फसेग के कई शासक "रॉब्रिटर" यानी लुटेरे सरदारों के रूप में अपना जीवन यापन करते थे। कुल मिलाकर, बारहवीं और तेरहवीं शताब्दी में भी इस क्षेत्र की प्रतिष्ठा अच्छी नहीं थी। दीवारें मोटी हैं और रहने के कमरे ज़मीन से काफी ऊपर बने हैं।

तीसरी मंजिल पर स्थित नाइट्स हॉल तक एक चौड़ी सीढ़ी से पहुंचा जा सकता है, और उससे एक सीढ़ी नीचे एक निगरानी टावर भी है जिसे सोलहवीं शताब्दी के स्वरूप में पुनर्स्थापित किया गया है। भीतरी प्रांगण में दीवार के एक हिस्से के साथ-साथ एक लकड़ी की गैलरी बनी हुई है (एक समय यह गैलरी पूरी दीवार को ढकती थी)। निचली मंजिलों का अभी तक पूरी तरह से जीर्णोद्धार या अन्वेषण नहीं किया गया है।

यह गांव दूरस्थ है और काफी हद तक पर्यटन पर निर्भर है।

वुल्फसेग किले का प्रवेश द्वार

मालिक जॉर्ज राउचेनबर्गर द्वारा "सुधारे गए" दो कमरों में से एक।

जॉर्ज राउचेनबर्गर ने स्वयं किले के विभिन्न हिस्सों में समय-समय पर अजीबोगरीब आवाजें, कदमों की आहट सुनी और ठंडी हवा के झोंके महसूस किए। संरक्षक की पत्नी, स्वर्गीय श्रीमती थेरेसे पिएलमेयर ने वास्तव में आंगन में एक सफेद रंग की, प्रकाशमान आकृति देखी

थी और उन्होंने कई तरह की अनसुलझी आवाजें भी सुनी थीं। एक बार श्री राउचेनबर्गर ने एक युवती को कुछ आगंतुकों के साथ आते देखा और जब उन्होंने उससे बात करने के लिए मुड़ा तो वह गायब हो गई।

आंगन में, जहां काउंटेस का भूत देखा गया था

मध्यकालीन गैलरी

मजबूत दीवारें और छोटी खिड़कियां प्रारंभिक मध्ययुगीन किले की विशेषता हैं।

मैंने वुल्फसेग में एक वियना की महिला के साथ séance आयोजित किया, जो उस समय मेरी माध्यम थीं। श्रीमती एडिथ रीडल की समाधि माध्यमता के माध्यम से, मैं एक तिहरे हत्याकांड की भयानक कहानी का पता लगाने में सक्षम हुआ, जिसमें एक खूबसूरत महिला शामिल थी, जो कभी वुल्फसेग के एक बैरन की पत्नी थी, और एक राजनीतिक साजिश का निर्दोष शिकार बन गई थी। वुल्फसेग में खूबसूरत भूत की किंवदंती, निश्चित रूप से, हमारे घटनास्थल पर पहुंचने से पहले से ही मौजूद थी। ऐसा प्रतीत होता है कि वुल्फसेग के चौदहवीं शताब्दी के एक मालिक के लालची रिश्तेदारों ने मालिक की युवा पत्नी को एक अन्य व्यक्ति के साथ फंसाकर उस संपत्ति पर कब्जा करने का फैसला किया, जो उस समय काफी मूल्यवान थी। पति को इस मुलाकात के बारे में पता चला, और वह समय पर पहुंचकर दोनों प्रेमियों को एक साथ देख लिया, उन दोनों को मार डाला, और बदले में उसके धूर्त रिश्तेदारों ने "उचित बदला" के रूप में उसकी हत्या कर दी।

वुल्फसेग की अभागी महिला का चित्र गलियारों में से एक में लटका हुआ है, यह वर्तमान मालिक के पिता की कृति है, जिन्होंने महल की यात्रा के दौरान प्राप्त छापों के आधार पर इसे चित्रित किया था।

हालांकि मैं वोल्फसेग की "श्वेत महिला" के आसपास के माहौल से संपर्क स्थापित करने और पुनर्जागरण काल की एक अब तक अज्ञात त्रासदी पर प्रकाश डालने में सक्षम था, यह पूरी

तरह से संभव है कि बेचैन बैरोनेस अभी भी पहचान पाने और दुनिया के सामने अपनी निर्दोषता साबित करने के लिए गलियारों में घूम रही हो।

रेगेन्सबर्ग से लगभग आधे घंटे की ड्राइव में गौण सड़कों से होते हुए वुल्फसेग पहुंचा जा सकता है। यह शहर के उत्तर-पश्चिम में, डेन्यूब नदी के उत्तरी किनारे पर स्थित एक छोटे और अपेक्षाकृत पिछड़े गांव के पास बसा हुआ है। इस गांव में केवल एक ही सराय है, और जैसा कि मैंने एक बार किया था, वहां रात भर रुकना उचित नहीं है।

रेगेन्सबर्ग शहर की अपेक्षाकृत निकटता के बावजूद, यह जर्मनी का एक दूरस्थ और विचित्र क्षेत्र है। वैसे, रेगेन्सबर्ग को कभी-कभी रेटिसबोन भी कहा जाता है, और यह जर्मनी के उन कुछ बचे हुए मजबूत सेल्टिक क्षेत्रों में से एक का केंद्र है।

*87

ज्यूरिख में एक भूतिया पूर्व अस्पताल

यह मकान अब कर्नल और श्रीमती नागर का निजी निवास है। कर्नल एक पेशेवर अधिकारी हैं और मानसिक घटनाओं के प्रति सतर्क रवैया रखते हैं। श्रीमती कैथरीन नागर स्वयं एक प्रतिभाशाली माध्यम होने के साथ-साथ ज्यूरिख के मनोचिकित्सक डॉ. हंस नेगेल-ओसजोर्ड के नेतृत्व वाली स्विस सोसाइटी फॉर पैरासाइकोलॉजी की सचिव भी हैं।

डिजाइन और दिखावट में बेहद शाही अंदाज वाला यह घर होएंगर स्ट्रीट के ऊपरी हिस्से में स्थित है, जहां से ज्यूरिख शहर का एक बड़ा हिस्सा दिखाई देता है। यह तीन मंजिला, चौकोर और मजबूत पत्थर का बना मकान है, जिसके सबसे ऊपरी मंजिल पर एक अटारी है। इस अटारी में एक खिड़की है जो बार-बार बंद होने से नहीं रुकती। जब ऐसा बार-बार होने लगा, तो नागर दंपति एक-दूसरे पर खिड़की खुली छोड़ने का आरोप लगाने लगे, लेकिन बाद में पता चला कि उनमें से किसी ने भी ऐसा नहीं किया था।

यह घर सड़क से कुछ दूरी पर एक घनी सुरक्षा वाले बगीचे में स्थित है; इसे गहरे भूरे रंग से रंगा गया है और प्रवेश द्वार के ऊपर लोहे की एक लालटेन लगी हुई है।

जब मैं पहली बार मालिक के साथ घर देखने गया, तो अटारी ने मुझे तुरंत निराश कर दिया। वह मशहूर खिड़की फिर से खुली हुई थी और मुझे उसे बंद करने में कोई कठिनाई नहीं हुई। लेकिन वह अपनी मर्जी से तो नहीं खुली होगी।

एक सीढ़ी नीचे जाने पर एक छोटा कमरा है जो कई वर्षों से नौकरानी के कमरे के रूप में इस्तेमाल होता आ रहा है। यहीं पर सबसे उल्लेखनीय घटनाएँ देखी गईं। लीज़ल नाम की एक नौकरानी ने देखा कि एक आदमी ड्राइवर जैसी टोपी पहने हुए पलंग और दीवार के बीच खड़ा है और उसके हाथ में मोमबत्ती है। वह घबरा गई और डर के मारे चीखती हुई कमरे से भाग गई। श्रीमती नागर ने तुरंत कमरे की जाँच की और उसे खाली पाया। इतने कम समय में कोई भी सीढ़ियों से नीचे नहीं भाग सकता था। लीज़ल की जगह एक दूसरी नौकरानी ने काम संभाल लिया। पहली घटना के डेढ़ साल बाद, नई नौकरानी ने भी वही दृश्य देखा।

नौकरानी के कमरे के बगल में एक और कमरा है जो अपने रहस्यमय वातावरण के लिए प्रसिद्ध है। वहां ठहरने वाले मेहमानों ने अक्सर कमरे में बेचैनी की शिकायत की है, और कोई भी कभी चैन से नहीं सो पाया।

तीसरी मंजिल पर अभी भी एक नौकरानी का कमरा है जहाँ एल्स्बेथ नाम की एक लड़की ने एक अजीब सी टोपी पहने हुए एक आदमी का भूतिया रूप देखा था। जब श्रीमती नागर का बेटा केवल आठ साल का था, तो उसने अपने कमरे की खिड़की के पर्दों के बीच से एक आदमी को निकलते देखा। उसने भी उस आदमी की अजीब टोपी पर विशेष ध्यान दिया—जो आजकल देखने को नहीं मिलती।

अन्य नौकरों ने भूत का वर्णन करते हुए बताया है कि वह लगभग पैंतीस वर्ष का एक व्यक्ति था, जिसने वही विशिष्ट स्विस टोपी पहन रखी थी; उन्होंने उसे पूरे घर में देखा है।

इसका स्पष्टीकरण यह है: सत्रहवीं शताब्दी के दौरान यह घर एक सैन्य अस्पताल था। वहां आने वाले कई घायल सैनिक मर गए। प्रेत द्वारा पहनी गई टोपी उस समय के सैनिकों की टोपी थी। संभवतः वह व्यक्ति दो अवस्थाओं के बीच फंसा हुआ है और बाहर निकलना चाहता है—बस कोई उसे रास्ता दिखा दे।

*88

लॉन्ग आइलैंड की महिला

मौरिस ओ. पोलिश मूल के एक बुजुर्ग व्यक्ति हैं, जो अपनी उम्र के बावजूद स्वस्थ, चुस्त-दुरुस्त और मजबूत हैं। वे रोमन कैथोलिक धर्म में दृढ़ आस्था रखते हैं, लेकिन अपने आसपास की आध्यात्मिक दुनिया से भी अच्छी तरह वाकिफ हैं। श्री ओ. लोअर ब्रॉडवे स्थित एक मकान की दूसरी मंजिल पर बने एक कमरे में कार्यशाला चलाते हैं। यह इलाका न्यूयॉर्क शहर के सबसे पुराने इलाकों में से एक है। इस मामले की जानकारी मुझे उनके भतीजे ने दी, जो लॉन्ग आइलैंड में शिक्षक हैं और ऐतिहासिक शोध, विशेष रूप से अमेरिकी क्रांति काल से संबंधित शोध में रुचि रखते हैं।

जब मैं श्री ओ. से मिला, तो पहले तो उन्हें मुझ पर और मेरी मानसिक शक्तियों वाली मित्र इंग्रीड बेकमैन पर बहुत संदेह हुआ। उन्हें समझ नहीं आ रहा था कि परा मनोविज्ञान क्या होता है या हम उनकी जगह क्या करने वाले हैं। मैंने धैर्यपूर्वक समझाया कि मैं चाहता हूँ कि इंग्रीड को स्थिति का अंदाज़ा हो जाए और वह "वातावरण" से कुछ महसूस कर सके। जब इंग्रीड उस जगह के पिछले हिस्से में इधर-उधर घूम रही थी, तब मैंने श्री ओ. को समझाया कि मुझे उनके साथ हुई घटना के बारे में जानना ज़रूरी है, ताकि मैं मामले का निष्पक्ष मूल्यांकन कर सकूँ। उन्होंने बताया कि वह पचपन वर्षों से इसी इलाके में रह रहे हैं। उन्हें याद था कि जब वह छोटे थे, तब इसी जगह पर एक और इमारत हुआ करती थी। श्री ओ. ने रुक-रुक कर और भारी लहजे में कहा, "मैं 1913 में दस साल की उम्र में पोलैंड से यहाँ आया था।" “इस जगह पर एक पुरानी इमारत थी, लाल ईंटों से बनी, जिसमें कुछ ही खिड़कियाँ थीं। कोने पर यूनाइटेड सिगार की दुकान थी। थोड़ी दूर पर एक शराबखाना था। वहाँ लड़कियाँ होती थीं; ग्राहक शराबखाने में आकर लड़कियों के साथ समय बिता सकते थे और उनके साथ ऊपर जा सकते थे। उन दिनों इसके लिए उन्हें पचास सेंट या एक डॉलर देने पड़ते थे। उस इमारत में एक नाई की दुकान भी हुआ करती थी। 1920 में उन्होंने पुरानी इमारत को गिरा दिया और वर्तमान फैक्ट्री का मचान बनाया, लेकिन नींव वही रखी गई थी।”

जब श्री ओ. ने अपना कारोबार उस इमारत में स्थानांतरित किया जिसे वे जीवन भर से जानते थे, तो यह उनके लिए घर वापसी जैसा था। वे तेज़ गति वाली सिलाई मशीनों की मरम्मत का

काम करते थे, जो उन्हें देश भर से भेजी जाती थीं। ज़्यादातर समय वे अकेले ही काम करते थे; कुछ समय के लिए उनके भाई फ्रैंक ने उनकी मदद की थी। उन दिनों वे कभी भी अलौकिक घटनाओं पर ध्यान नहीं देते थे, और अटारी में सुनाई देने वाली कई अजीब आवाज़ें उन्हें परेशान नहीं करती थीं। उन्हें लगता था कि इनका कोई प्राकृतिक कारण होगा, हालाँकि कई बार जब वे इमारत में अकेले होते थे तो उन्हें सीढ़ियों पर भारी कदमों की आहट सुनाई देती थी। एक शनिवार दोपहर लगभग 4 बजे, जब वे हाथ धोने और घर जाने की तैयारी कर रहे थे, तो वे अपने हाथ पोंछने के लिए दुकान में वापस गए। अचानक उन्होंने देखा कि एक भारी लोहे की आरी अपने आप हवा में उड़ गई। वह ज़मीन पर गिरी और दो टुकड़ों में टूट गई। श्री ओ. ने बिखरे हुए टुकड़ों को उठाया और किसी से विशेष रूप से न कहते हुए कहा, "भूत, इधर आओ। मुझे तुमसे डर नहीं लगता; मैं तुमसे बात करना चाहता हूँ।" हालाँकि, कोई जवाब नहीं आया।

“दरवाजे पर लगी उस कुंडी को देखो,” मौरिस ओ. ने हमसे कहा और हमें दिखाया कि वह कैसे ताला लगाता है ताकि कोई अंदर न आ सके। “कई बार मैंने उस कुंडी को ऊपर-नीचे हिलते देखा है, मानो कोई अंदर आना चाहता हो, और जब मैं बाहर गया तो वहाँ कोई नहीं था।”

अक्सर उन्हें अपने ऊपर वाले कमरे में कदमों की आहट सुनाई देती थी। जब वे शोर का पता लगाने के लिए ऊपर जाते, तो पाते कि तीसरी मंजिल का कमरा पूरी तरह से बंद है और वहाँ कोई नहीं है। एक बार, जब वे दोपहर 1:30 से 2 बजे के बीच शौचालय गए, जबकि उन्हें पता था कि वे इमारत में अकेले हैं, तो उन्होंने खुद को अपने कमरे के बाहर बंद पाया, जबकि उन्हें पता था कि उन्होंने दरवाजा खुला छोड़ दिया था। फिर भी, किसी ने अंदर से कुंडी लगा दी थी। आखिरकार, एक दोस्त की मदद से, उन्होंने दरवाजा तोड़ दिया और पाया कि कमरा खाली था। इस घटना ने श्री ओ. को बुरी तरह झकझोर दिया, क्योंकि वे लाख कोशिश करने के बावजूद भी इसका कारण नहीं बता सके। इसी दौरान, उन्हें कुछ परछाइयाँ भी दिखाई देती रहीं, जो लगभग इंसानों जैसी थीं। वे उनकी कार्यशाला के पीछे ऊपर-नीचे घूमती थीं और उनका रंग भूरा था। श्री ओ. ने टिप्पणी की, "यह केले के आकार की थी।" हैरानी की बात यह है कि अपने रहने के पहले आठ वर्षों के दौरान - इससे पहले वे चालीस वर्षों तक सड़क के

उस पार रहते थे - श्री ओ. को ऐसी कोई समस्या नहीं हुई थी। केवल पिछले दो वर्षों में ही उन्होंने कुछ असामान्य बातें देखना शुरू किया।

हालांकि, श्री ओ. ने इमारत में अजीबोगरीब घटनाओं की अफवाहें सुनी थीं। उस लॉफ्ट बिल्डिंग के पिछले मालिक की एक संगीत की दुकान थी और वे शनिवार की रातें अपने कुछ आमंत्रित मित्रों के साथ दुकान में संगीत सुनते हुए बिताते थे। कहानी के अनुसार, एक रात, लगभग आधी रात को, अलमारियों से सारा सामान गिरने लगा, हवा में उड़ने लगा और पूरी इमारत ऐसे हिलने लगी जैसे भूकंप आ गया हो। इसी दौरान, संगीत की दुकान में मौजूद लोगों ने ऊपर से एक भयानक शोर सुना। वे डर गए और पुलिस को बुलाया। कई रेडियो वाहन तुरंत मौके पर पहुंचे लेकिन उन्हें पता नहीं चल पाया कि क्या गड़बड़ थी। ऊपर सब कुछ सामान्य लग रहा था। कुछ समय बाद, मालिक ने इमारत बेच दी और कैलिफोर्निया चले गए।

श्री ओ. की कार्यशाला एल-आकार की है, जिसमें एक भारी स्टील के दरवाजे के ठीक पीछे एक छोटा सा कार्यालय है। यह दरवाजा गलियारे की ओर खुलता है, और फिर वहां से एक खड़ी सीढ़ी सड़क की ओर जाती है। मशीन शॉप कार्यालय के बाईं ओर और पीछे की तरफ है। इस प्रकार, कार्यशाला के पिछले हिस्से में काम करना संभव है और प्रवेश द्वार से किसी को आते-जाते नहीं देखा जा सकता। लेकिन फर्श पर होने वाली किसी भी आवाज को सुनना जरूरी है, क्योंकि पूरी इमारत बहुत बड़ी नहीं है।

1971 में थैंक्सगिविंग के अगले दिन, मौरिस दुकान में अकेला था और चुपचाप कुछ ऑर्डर पूरे कर रहा था जिन्हें वह निपटाना चाहता था। थैंक्सगिविंग के अगले दिन और सप्ताहांत से ठीक पहले का दिन होने के कारण, इमारत में बहुत सन्नाटा था। ऊपर कोई नहीं था, और मौरिस को पूरा यकीन था कि उस समय वह इमारत में अकेला ही था। अचानक, उसने एक महिला को अपने दफ्तर में आते देखा। चूंकि उसने दरवाज़े के ज़ोर से बंद होने की आवाज़ नहीं सुनी थी, जो कि किसी के अंदर आने पर हमेशा होती है, इसलिए उसे आश्चर्य हुआ कि वह इमारत में और उसके दफ्तर में कैसे आई। उसने मौरिस को एक बहुत ही पुराने ज़माने की, लेकिन बेहद स्टाइलिश पोशाक, सफेद दस्ताने और एक बोनट पहना हुआ था, और उससे एक मीठी खुशबू आ रही थी जिसने उसे तुरंत मोहित कर लिया। इतनी अच्छी महिला उसकी सिलाई मशीन की दुकान में क्या कर रही थी?

मौरिस ने इस बात पर ज़्यादा ध्यान नहीं दिया कि वह अंदर आई कैसे, बल्कि उससे पूछा कि वह क्या चाहती है। उसे कहीं न कहीं थोड़ा डर लग रहा था। उसने गौर किया कि उसका चेहरा किसी इंसान के चेहरे की बजाय चमड़ी से ढके कंकाल जैसा लग रहा था। वह महिला असामान्य रूप से पीली दिख रही थी। उसने कोई जवाब नहीं दिया; वह बस वहीं खड़ी रही और चारों ओर देखने लगी। मौरिस ने अपना सवाल दोहराया।

“खैर,” उसने आखिरकार बेसुध स्वर में कहा, “मैं तो बस यहाँ जगह देखने आई थी। मैं इसी इमारत में रहती थी।” फिर वह खिड़की के पास गई और सड़क की ओर इशारा करते हुए बोली, “मैं वहाँ खेला करती थी—ये सारे घर नए ईंटों के बने हैं। मेरे माता-पिता का मक्का का खेत था जहाँ अब फेडरल बिल्डिंग है, शहर के बीचोंबीच।”

मैंने पूछा, "क्या उसकी आवाज के लहजे में कुछ अजीब था?"

“नहीं, मुझे तो यह बिल्कुल स्पष्ट लगा, एकदम अमेरिकी लहजा,” ओ. ने जवाब दिया। “उसने कहा, ‘आपको पता है, ये सभी नई इमारतें क्रांतिकारी काल में यहाँ नहीं थीं।’ फिर उसने कुछ माफी मांगते हुए कहा, ‘मैं तो बस देखने आई थी।’”

मौरिस अपने दफ्तर को प्रवेश द्वार से आने वाले छोटे गलियारे से अलग करने वाले काउंटर के पीछे खड़ा था। वह महिला काउंटर के दूसरी तरफ खड़ी थी, इसलिए मौरिस उसे अच्छी तरह देख सकता था; लेकिन वह इतना डरा हुआ था कि उसकी आँखों में आँखें डालकर बात नहीं कर पाया। जब वह पीछे हटा, तो वह तेज़ी से बोलने लगी। “मैं बस आस-पड़ोस घूमने आई थी। मैं यहाँ रहती थी।” फिर खिड़की की ओर इशारा करते हुए उसने कहा, “ब्रिटिश सेना का मुख्यालय सड़क के उस पार हुआ करता था।”

इस बयान का श्री ओ पर कोई असर नहीं हुआ। इसके अलावा, वह इन सब बातों से इतने परेशान थे कि उन्हें यह सोचने का भी समय नहीं था कि 1971 में उनके सामने खड़ी एक महिला को ब्रिटिश सेना के मुख्यालय का स्थान कैसे याद हो सकता है, जो लगभग दो सौ साल पहले न्यूयॉर्क छोड़ चुकी थी।

मैंने पूछा, “वह कैसी दिखती थी?”

“उसने बहुत अच्छे कपड़े पहने थे, और चेहरे को छोड़कर वह बिल्कुल किसी और जैसी दिख रही थी। मैंने उसके हाथ नहीं देखे, लेकिन उसने एकदम नए दस्ताने पहने हुए थे, उसकी पोशाक नई लग रही थी, और टोपी भी बहुत अच्छी थी।”

क्या आपने उसे चलते हुए देखा?

"हां, वह चल रही थी।"

“आगे क्या हुआ?”

“खैर,” मौरिस ने अपने अनुभव की याद में मुश्किल से निगलते हुए समझाया। “आखिरकार मैंने हिम्मत जुटाकर उससे पूछा, ‘अब तुम कहाँ जा रही हो?’”

इस सवाल ने महिला को दुखी, बल्कि परेशान कर दिया था। अंत में उसने कहा, “मैं लॉन्ग आइलैंड पर अपने रिश्तेदारों से मिलने जा रही हूँ। कब्रिस्तान में। मेरे रिश्तेदार, मेरे दोस्त, मेरे माता-पिता।”

यह सब देखकर मौरिस की बेचैनी बढ़ती जा रही थी। उसने बहाना बनाया कि उसे दुकान के पिछले हिस्से में कुछ काम है और वह काउंटर से पीछे हटने लगा।

“मैं आपसे दोबारा मिलने आऊंगी,” महिला ने मुस्कुराते हुए कहा।

लगभग एक मिनट तक श्री ओ. अपनी कार्यशाला के पिछले हिस्से में व्यस्त रहे, फिर कार्यालय लौट आए। महिला वहां से जा चुकी थी।

“क्या दरवाजा अभी भी बंद था?”

“दरवाजा बंद था। इस दरवाजे को जोर से बंद किए बिना कोई बाहर नहीं जा सकता था, और अगर जाता तो मुझे आवाज जरूर सुनाई देती। मैंने जल्दी से दरवाजा खोला ताकि मुझे यकीन हो जाए कि मैंने वाकई किसी से बात की है। मैंने चारों ओर देखा; बाहर कोई नहीं था। कोई नहीं।”

मौरिस ने अपने और नीचे वाले दोनों दरवाज़े देखे। कोई भी दरवाज़ा खुला नहीं था, इसलिए वह काम जारी रखने के लिए वापस ऊपर चला गया। वह अब भी बहुत परेशान था, लेकिन उसने लगभग 5 बजे तक रुकने का फैसला किया। जब वह घर जाने के लिए तैयार हुआ और दरवाज़े में चाबी डाली, तो अचानक उसे फिर से वही इत्र की खुशबू आने लगी—वही इत्र जो

वह महिला अपने साथ लाई थी। उसने सोचा, वह फिर से आ गई है, और उसने हर जगह देखा। लेकिन वहाँ कोई नहीं था। उसने जल्दी से दरवाज़ा बंद किया और नीचे भागा।

उस चमत्कारी दर्शन के ठीक एक साल बाद, मौरिस ने देर तक काम करने का फैसला किया —यह सोचकर कि वह महिला वापस आएगी, न कि जिज्ञासावश। लेकिन वह महिला कभी नहीं लौटी।

श्री ओ. के भतीजे, जो एक शिक्षक और शोधकर्ता हैं, ने टिप्पणी की, "ब्रिटिश मुख्यालय के सड़क के उस पार होने के संदर्भ में, मैंने इस तथ्य की जाँच की है और पाया है कि क्रांति के दौरान ब्रिटिश मुख्यालय उसी इमारत के ठीक सामने था जिसमें मेरे चाचा अब रहते हैं। यह एक ऐसा तथ्य है जिसके बारे में मुझे पता है कि मेरे चाचा को पता होना संभव नहीं था।"

मैंने इंग्रीड से कार्यशाला के सामने आकर मेरे और श्री ओ. के साथ बैठने के लिए कहने के बाद कहा, "इंग्रीड, आपको यह जगह कैसी लगती है?"

“यहाँ बहुत हलचल है,” उसने जवाब दिया। “मुझे लगता है कि यहाँ एक आदमी है जो खतरनाक है, बहुत ही धोखेबाज है, और मुझे लगता है कि यहाँ किसी को चोट लगी होगी। यह घटना लगभग पच्चीस साल पहले हुई थी।”

"क्या आपको लगता है कि इस घर में पहले से ही किसी की उपस्थिति रही है?"

“मुझे लगता है कि यह एक समृद्ध जगह थी, एक सक्रिय और व्यस्त स्थान। यहाँ बहुत से लोग आते-जाते थे। यह जगह कुछ हद तक घर और कुछ हद तक व्यापारिक केंद्र थी। इससे पहले, मुझे लगता है कि यह इमारत कुछ और थी। मुझे लगता है कि यहाँ एक परिवार रहता था। वे शायद विदेशी थे, और मुझे लगता है कि उस आदमी की हत्या कर दी गई थी। मुझे लगता है कि वह आदमी इस देश में आया और उसने अपनी बचत यहाँ निवेश की। वह एक पारिवारिक व्यवसाय खड़ा करना चाहता था। मुझे यह भी लगता है कि इससे एक महिला का भी संबंध है। वह घुटनों से नीचे तक लंबी पोशाक पहनती है।”

“इस जगह से उसका क्या संबंध है?”

“हो सकता है उसने अपना बचपन यहीं बिताया हो—यहाँ जो कुछ हुआ, वही उसके पिता के साथ भी हुआ हो। शायद वह बचपन में ही यहाँ आई हो और इस इमारत में कई साल बिताए हों। मुझे लगता है कि उसका इस आदमी से कोई न कोई संबंध ज़रूर है।”

क्या उसके पास इस जगह पर बने रहने का कोई कारण है?

"हो सकता है कि उसे समझ न आ रहा हो कि यह सब क्यों हुआ है, और वह इसे अभी तक स्वीकार नहीं कर पा रही हो। शायद उसने किसी प्रियजन को खो दिया हो।"

हर साल, थैंक्सगिविंग के आस-पास, मौरिस ओ. उस महिला के वापस आने और उससे दोबारा बात करने का इंतज़ार करता है। अब जब उसे पता चल गया है कि वह "सिर्फ़ एक भूत" है, तो उसे उससे ज़रा भी डर नहीं लगता। जहाँ तक उस महिला की बात है, उसे भी चिंता करने की ज़रूरत नहीं है: जब सड़क के उस पार ब्रिटिश सेना का मुख्यालय था, तब यह इलाका अब से कहीं ज़्यादा सुरक्षित था, खासकर रात में; लेकिन उसे लूटपाट के बारे में भी चिंता करने की ज़रूरत नहीं है, क्योंकि हालात ऐसे ही हैं।

*89

ओलंपिया थिएटर का भूत

डबलिन में तीन प्रसिद्ध थिएटर हैं: द गेट, द एबे और द ओलंपिया। जब हमने 1965 की गर्मियों के अंत में पहली बार डबलिन का दौरा किया, तब द गेट मरम्मत के लिए बंद था और ओलंपिया में एक संगीतमय समीक्षा चल रही थी।

स्टेज डिजाइनर लोना मोरान ने सबसे पहले मुझे ओलंपिया में होने वाली भूतिया घटनाओं के बारे में बताया था, और माइकल मैकलियामोइर ने मेरी जिज्ञासा को और भी बढ़ा दिया, हालांकि उनका मानना था कि गेट के भूत अधिक प्रभावशाली थे!

हमने 19 अगस्त की रात के लिए सीटें बुक की थीं। इस शो में मशहूर आयरिश कॉमेडियन जैक क्रूज़ ने "हॉलिडे हेराइड" नाम के एक शो में मुख्य भूमिका निभाई। सच कहूँ तो, यह शो अच्छा था, लेकिन बहुत शानदार नहीं था, और हम अक्सर उस कॉमेडी पर हँसते रहे जो पढ़े-लिखे अमेरिकियों को पुरानी लग रही होगी। पैलेस वाडेविल की झलक ने शो को और भी सुकून भरा बना दिया और शोर-शराबे वाले रॉक-एंड-रोल ग्रुप्स की गैरमौजूदगी (जो आजकल इंग्लैंड में आम बात है) ने इसे हमारे लिए और भी सुखद बना दिया। डबलिन पुलिस (यहाँ गार्डा कहा जाता है) पर आधारित एक कॉमेडी स्केच में, क्रिस कुरेन द्वारा निभाए गए एक पुलिसवाले ने उस सुबह हमारे टीवी शो का ज़िक्र किया, जिससे एक बार फिर साबित हो

गया कि डबलिन वास्तव में कितना छोटा शहर है। या फिर यह शो कितना सामयिक था। खैर, लोना मोरन, जिन्होंने टेलीफिस एइरेन के लिए डिज़ाइनर बनने से पहले अक्सर यहाँ काम किया था, ने शो के बाद हमसे मिलने और उस भूतिया घटना पर चर्चा करने का इंतज़ाम किया था।

हाउस मैनेजर डिक कोंडन लगभग ग्यारह बजे बार में हमारे साथ शामिल हुए, और मिस मोरन भी कुछ ही देर में आ गईं। सिबिल की बैंगनी शाम की साड़ी ने सबका ध्यान खींचा, लेकिन सिबिल को अब इसकी आदत हो चुकी थी।

हमने स्टेज पर ही जाने का फैसला किया, क्योंकि तब तक हॉल में अंधेरा छा चुका था। स्टेज के कर्मचारियों ने उस रात हमारे लिए थोड़ी देर रुकने की सहमति दी, और मैंने अपनी पूछताछ शुरू कर दी।

“मैंने कुछ बहुत ही अजीब सी खटखटाहट और धमाकों की आवाजें सुनी हैं,” लोना मोरान ने कहना शुरू किया, “और जब दरवाजे बहुत भारी जंजीरों से बंद थे, तब उन्हें हिलते हुए सुना है। मैंने उस कमरे के बाहर खिड़कियों के खड़कने की आवाज सुनी है जहाँ मैं बैठी थी, और जब मैं बाहर आई तो मुझे एहसास हुआ कि वहाँ कोई खिड़की ही नहीं थी!”

"ऐसा कितने समय पहले था?"

“यह पिछले साल लगभग इसी समय की बात है,” लोना मोरान ने जवाब दिया। “यह बैकस्टेज एरिया में, ऊपर ड्रेसिंग रूम नंबर 9 में हुआ था। बाहर की तरफ एक बिल्कुल खाली दीवार है। दरअसल, मिस्टर ओ'रेली मेरे साथ थे और उन्होंने भी यह आवाज़ सुनी थी। मैं सुबह-सुबह, लगभग साढ़े पाँच बजे उस कमरे में गई थी। हम पूरी रात काम कर रहे थे। हम नोट्स बनाने और चाय बनाने के लिए ड्रेसिंग रूम में गए थे, और तभी ज़ोर-ज़ोर से आवाज़ें आने लगीं। ऐसा लग रहा था जैसे कोई खिड़की बहुत ज़ोर से खड़खड़ा रही हो। मैं डर के मारे जम गई। उस समय मैं बहुत थकी हुई थी। रुक-रुक कर, यह आवाज़ लगभग एक घंटे तक आती रही, क्योंकि हम लगभग 6:30 बजे कमरे से निकले और तभी हमें एहसास हुआ कि वहाँ कोई खिड़की नहीं थी।”

क्या आपने यह आवाज किसी और समय भी सुनी थी?

"हां, जब मैं रात में स्टेज पर काम करता था। मैंने एक खिड़की के खड़कने की आवाज सुनी, और एक बार मैं उसे देखने के लिए पहली मंजिल तक चला गया, लेकिन फिर मेरी हिम्मत टूट गई और मैं वापस नीचे आ गया।"

"क्या खिड़की से शोर होने की कोई संभावना नहीं थी?"

"खैर, मुझे लगता है कि एक खिड़की से ऐसा हो सकता था - लेकिन कौन सी खिड़की?"

"क्या आपको पता है कि यहां कोई संरचनात्मक परिवर्तन हुए हैं?"

"नहीं, मुझे नहीं पता; लेकिन यह थिएटर दो सौ साल से भी ज्यादा पुराना है।"

"क्या आपको पता है कि इस क्षेत्र में कोई त्रासदी या अन्य असामान्य घटना घटी है?"

मुझे तो किसी के बारे में पता नहीं है, लेकिन कहा जाता है कि थिएटर में भूत-प्रेत का वास है। किस चीज का, यह मुझे सच में नहीं पता।

"क्या आपको पिछले साल से पहले कुछ असामान्य अनुभव हुआ था?"

“हां, उससे पहले बहुत शोर होता था। शांत शामों में भी बार का दरवाजा बुरी तरह हिलता और खड़खड़ाता था, मानो कोई उसे पीट रहा हो। चीजें गिरने की आवाज भी आती थी। मुझे लगा कि मेरा सहायक जेरेमी चीजें गिरा रहा है और मैंने उस पर काफी सख्ती से आरोप लगाया, लेकिन ऐसा नहीं था।”

"क्या आपने कभी कदमों की आहट सुनी है?"

"मुझे लगता है कि मैंने कदमों की आहट सुनी है - मुझे वास्तव में नहीं पता कि वे थीं या नहीं - हमेशा रात के दौरान जब हम काम कर रहे होते थे - हम में से दो लोग मंच पर एक साथ काम कर रहे होते थे, और थिएटर में कोई और नहीं होता था।"

और उन अवसरों पर क्या हुआ था?

"खड़खड़ाहट और चरमराहट की आवाजें...और कुछ ऐसा जो कदमों की आहट लग सकती है।"

क्या आपने कभी किसी दूसरी आत्मा की उपस्थिति महसूस की है?

"पिछले सितंबर में मुझे यह आभास हुआ था कि वहां कुछ तो गड़बड़ है, जब मैं उस दरवाजे से अंदर गया और मुझे वहां कोई खिड़की नहीं दिखी।"

मैंने उनसे पूछा कि क्या थिएटर में कदम रखने से पहले उन्हें कभी कोई मानसिक अनुभव हुआ था।

“मुझे पहले विश्वास नहीं था, लेकिन अब है,” लोना मोरान ने जवाब दिया। ओलंपिया आने से पहले उन्होंने कभी कुछ असामान्य अनुभव नहीं किया था। टेलीविजन में आने से पहले उन्होंने ओलंपिया थिएटर में चौदह महीने तक स्टेज डिजाइनर के रूप में काम किया था।

मैंने लोना मोरान के सहयोगी की ओर रुख किया, जो यहां अपने अनुभवों के बारे में बताने के लिए साथ आया था।

“मेरा नाम अल्फो ओ’रेली है,” उस लंबे नौजवान ने कहा, “मैं डबलिन में थिएटर और टेलीविजन डिज़ाइनर हूँ। मैंने यहाँ सिर्फ़ दो-तीन प्रोडक्शन डिज़ाइन किए हैं, और पिछले साल थिएटर फेस्टिवल के लिए मैंने एक अमेरिकी प्रोडक्शन डिज़ाइन किया था। उस शाम, लोना और मैं देर रात तक काम करते रहे, और मैंने इस थिएटर के भूतिया होने के बारे में कोई कहानी नहीं सुनी थी। हम ड्रेसिंग रूम में गए, और वहाँ थके-हारे चुपचाप बैठे थे, तभी हमें ये अजीबोगरीब आवाज़ें सुनाई दीं।”

मैंने टिप्पणी की, "ये वही आवाजें हैं जिनके बारे में मिस मोरन ने बात की थी," और अल्फो ओ'रेली ने सिर हिलाया और आगे कहा:

“मैंने पाया है कि जब मैं बहुत थका हुआ होता हूँ, तो मेरी जागरूकता बढ़ जाती है। हमें पता था कि थिएटर में सिर्फ़ एक और व्यक्ति था, रात का चौकीदार जो कहीं और घूम रहा था, और हम ऊपर अकेले थे। गलियारे में ऐसा कुछ भी नहीं था जिससे इस तरह की आवाज़ आ सके। मैंने गेट थिएटर में कई आवाज़ें सुनी हैं, कदमों की आहट, जो यकीनन भूतिया है, लेकिन यहाँ नहीं।”

मैंने श्री ओ'रेली को धन्यवाद दिया और एक दुबले-पतले युवक की ओर मुड़ा जो इसी बीच मंच पर आ चुका था।

“मेरा नाम जेरेमी स्वान है और मैं टेलीफिस एइरेन के साथ काम करता हूँ,” उन्होंने परिचय देते हुए कहा, “मैं यहाँ पहले स्टेज मैनेजर के रूप में काम करता था। ऊपर वाले इस ड्रेसिंग रूम के बारे में—मुझे याद है एक सीज़न में, एक पैंटोमाइम के दौरान, ड्रेसिंग रूम तहस-नहस हो गया था, कथित तौर पर किसी भूत-प्रेत के कारण।”

"क्या आप समझा सकते हैं कि यह कैसे होता है?"

"सारे कपड़े इधर-उधर बिखरे पड़े थे, मेकअप का सामान भी चारों तरफ फैला हुआ था - हमने उस समय कमरे में मौजूद सभी कोरस लड़कियों से पूछताछ की - वह ड्रेसिंग रूम नंबर 9 था।"

मैंने सोचा, यह भूतिया ड्रेसिंग रूम है।

“ऐसा लगता था कि हर रात साढ़े नौ बजे दरवाजे पर दस्तक होती थी और कोई नहीं होता था। एक रात जब मैं मिस मोरन की सहायक के रूप में यहाँ काम कर रही थी, मैं ऊपर वॉशरूम गई, और जब मैं बाहर आई तो मुझे एक रोशनी दिखाई दी और मुझे लगभग यकीन था कि मैंने एक रोशनी देखी भी थी—बस एक हल्की सी चमक—पीली; ऐसा लग रहा था जैसे वह गलियारे के कोने में थी। मैंने उस रोशनी का पीछा किया—वह हिल रही थी—और वह गलियारे में चली गई जहाँ कमरा नंबर 9 था, जहाँ एक और दरवाजा था। दरवाजा खुला था, और अब वह मेरे चेहरे पर बंद हो गया!”

मुझे मजबूर होकर कहना पड़ा, "अविश्वसनीय! फिर क्या हुआ?"

“थिएटर में बिल्कुल कोई नहीं था। आधी रात हो चुकी थी। तभी गलियारे के सारे दरवाजे खड़खड़ाने लगे। यह चार साल पहले की बात है।”

"क्या उसके बाद से आपको कोई अनुभव हुआ है?"

"मैंने तब से यहां ज्यादा काम नहीं किया है।"

"क्या आपको उस समय कोई असामान्य ठंड महसूस हुई थी?"

“हां, मैंने ऊपर गलियारे में जाने से पहले ऐसा किया था। मंच पर बहुत ठंड थी। अचानक, मुझे थिएटर के पीछे से फुसफुसाहट सुनाई दी।”

“किस तरह की फुसफुसाहट?”

“श-श-श-श,” जेरेमी स्वान ने आगे कहा। “ऐसा लग रहा था जैसे आवाज पूरी तरह से निकल नहीं पाई हो।”

"और कुछ?"

“फिर मुझे दोबारा एक ज़ोरदार आवाज़ सुनाई दी। लगभग मेरे बगल में। स्टेज पर। मैं मिस मोरन से कुछ कहना नहीं चाहती थी, और फिर मैं वॉशरूम चली गई जहाँ यह अजीबोगरीब रोशनी का खेल शुरू हुआ।”

“प्रकाश किस ऊंचाई पर दिखाई दिया?”

"लगभग घुटने के स्तर तक।"

मैंने उस युवक को धन्यवाद दिया और चारों ओर देखा। मंच पर काम करने वाले लोग पूछताछ को बेहतर ढंग से सुनने के लिए आगे आ गए थे। किसी तरह उन्हें अतिरिक्त समय से कोई आपत्ति नहीं थी; विषय उनके लिए बेहद दिलचस्प था।

इस पूरे समय, ज़ाहिर है, सिबिल लीक अनुपस्थित थीं, मंच पर घटित हो रही किसी भी घटना के बारे में कही जा रही बातों से वह पूरी तरह से दूर थीं। मैं उन्हें हमारे साथ शामिल होने के लिए बुलाने ही वाला था कि तभी एक अधेड़ उम्र का स्टेज कर्मचारी आगे आया, उसने अपना सिर खुजाया और हमें कुछ ऐसे मानसिक अनुभवों के बारे में बताया जिनमें शायद मेरी रुचि हो।

मैंने उस आदमी से पूछा, "आपका नाम क्या है, महोदय?"

“टॉम कॉनर। मैं एक इलेक्ट्रीशियन हूँ। मैं यहाँ पंद्रह साल से हूँ।”

"क्या ओलंपिया में आपके साथ कुछ असामान्य घटना घटी?"

“लगभग आठ साल पहले जब मैं यहाँ रात की ड्यूटी पर था, तो मैंने सीढ़ियों से नीचे आते कदमों की आहट सुनी। मुझे लगा कि कोई बॉस आ रहा होगा, इसलिए मैं देखने गया, पर वहाँ कोई नहीं था। मैं फिर वापस आया और मुझे गैलरी से नीचे आते कदमों की आहट सुनाई दी, इसलिए मैं स्विचबोर्ड के पास गया, सारी बत्तियाँ जलाईं और तलाशी ली—लेकिन वहाँ कोई नहीं था।”

क्या आपने इसे सिर्फ एक बार सुना?

“उसी पखवाड़े के दौरान जब वह शो चल रहा था,” टॉम कॉनर ने धीमी आवाज़ में जवाब दिया, “मुझे फिर से वही अनुभव हुआ। ड्रेसिंग रूम से कदमों की आहट सुनाई दी। मैं जाकर देखने गया। फिर भी, कोई नहीं था। कुछ रातों बाद, मैं चाय पी रहा था और एक किताब पढ़

रहा था, मंच पर बैठा था, और मंच अपने आप कुछ इंच ऊपर उठ गया! मुझे लगा कि मैं ऊपर आ रहा हूँ और मुझे लगा कि कोई बॉस है, और मैंने कहा, अरे वाह! सब ठीक है, मैं जाग गया हूँ। लेकिन मुझे आश्चर्य हुआ, वहाँ कोई नहीं था।”

"क्या आपको मंच के सचमुच ऊपर उठने का एहसास हुआ?"

"हां, ऐसा लग रहा था मानो किसी भारी वजन वाले व्यक्ति ने इसके सिरे पर पैर रख दिया हो।"

तो फिर आपने क्या किया?

“जब मुझे एहसास हुआ कि वहां कोई नहीं है, तो मुझे झटका लगा और ठंड से कंपकंपी छूट गई, इसलिए मैंने और रोशनी जलाकर चारों ओर देखा। थिएटर में कोई नहीं था।”

मैंने पूछा, "क्या आपने कभी ऊपर के ड्रेसिंग रूम वाले इलाके में कुछ असामान्य अनुभव किया है?"

"नहीं, सिवाय इसके कि मैंने कदमों की आहट बहुत स्पष्ट रूप से सुनी।"

“पुरुष या महिला?”

"भारी कदमों की आहट, किसी पुरुष के कदमों की आहट जैसी।"

"और कुछ?"

"रात को साढ़े बारह बजे, एक बजे, मुझे ठंड लगने लगती है, मेरे रोंगटे खड़े हो जाते हैं - मुझे हमेशा उस जगह से बाहर निकलने में बहुत खुशी होती है।"

इसी बीच, हाउस मैनेजर डिक कॉनलोन रात के अपने पैसों की गिनती पूरी करके मंच पर आ गए थे।

मैंने मंच पर काम करने वाले टॉम कॉनर के साथ अपनी दिलचस्प बातचीत को बीच में ही रोककर कॉनलोन से ओलंपिया में उनके अनुभवों (यदि कोई हों) के बारे में पूछताछ की।

उन्होंने कहा, "मैं यहां तेरह महीने से हूं, लेकिन अब तक मुझे कुछ भी असामान्य नहीं लगा है।"

तब तक सिबिल लीक भी हमारे साथ जुड़ चुकी थीं।

मैंने कहा, “सिबिल, जब हम आज शाम इस थिएटर में पहुँचे, तो तुम्हें ठीक से पता नहीं था कि हम कहाँ जा रहे हैं। लेकिन जब हम स्टेज बॉक्स I में अपनी सीटों पर पहुँचे, तो तुमने मुझसे कहा, ‘यहाँ कुछ तो है, मुझे बहुत ठंड लग रही है।’ यहाँ पहुँचकर तुम्हें कैसा लगा?”

“यहाँ किसी की मौजूदगी तो ज़रूर है और मुझे लगता है कि वो काफी घूमती-फिरती रहती है। बॉक्स का इससे कुछ संबंध है। लेकिन मेरी मुख्य चिंता ड्रेसिंग रूम को लेकर है जिसका नंबर बदल दिया गया है। मैं उस कमरे में नहीं गया हूँ, लेकिन वो ऊपर की मंज़िल पर है। दूसरा दरवाज़ा लगभग स्टेज के सामने है। गलियारा आगे बढ़ता है और फिर बाईं ओर मुड़ना पड़ता है। उसके बाद दो और दरवाज़े हैं। मुझे लगता है कि वहाँ कोई अच्छी मौजूदगी नहीं है। मुझे नहीं लगता कि उसका थिएटर से कोई संबंध है।”

"तो फिर यहाँ कैसा होगा?"

मुझे ऐसा लगता है कि यह सन् 1916 की कोई घटना है, और बहुत ही अनियंत्रित, विनाशकारी। यह एक आदमी है। वह यहाँ का नहीं है। वह यहाँ से भागना चाहता है।

“वह यहाँ क्या कर रहा है?” मैंने पूछा। कहानी एक बेहद अप्रत्याशित मोड़ ले रही थी।

सिबिल ने एक पल के लिए सोचा, मानो वह अपनी मानसिक दुनिया से जुड़ रही हो।

“वह यहीं रुका रहा और बाहर नहीं निकल सका, और उसका नाम डन्नेवन है। यही सबसे करीबी जानकारी मुझे मिल पाई है। मैं उसे ठीक से देख नहीं पा रहा हूँ; उसे सबसे साफ़ देखने की जगह ऊपर की मंज़िल पर, स्टेज के सामने वाले गलियारे में, दोनों तरफ़ है। उस ड्रेसिंग रूम के पास जिसका नंबर बदल दिया गया था।”

मैंने पूछा, "यह आदमी—क्या यह सैनिक है या नागरिक?"

"उसके स्वभाव में इतनी हिंसा झलकती है कि वह सैन्य चरित्र का हो सकता था। लेकिन फिर भी मुझे इस बारे में थोड़ी उलझन है।"

क्या उनकी मृत्यु यहीं हुई थी?

मुझे ऐसा लगता है कि उसने ऐसा किया था, और उसका अंत बहुत ही अप्रिय हुआ। शायद इस जगह की चारदीवारी के भीतर नहीं, लेकिन यहाँ रहने के बाद, यहाँ कुछ समय बिताने के बाद। मुझे लगता है कि वह यहीं रहना चाहता था। थिएटर बंद होने के बाद।

क्या इसमें किसी तरह की लड़ाई शामिल है?

"हां, मुझे हिंसा का आभास हो रहा है। इस आदमी से कहीं ज्यादा लोग हिंसा में शामिल हैं।"

क्या वह अकेला है?

वह इसका शिकार है।

वह क्या चाहता है?

मुझे लगता है कि वह उसी हिंसक तरीके से जीना जारी रख रहा है जिस तरह से वह पहले जीता था।

“वह ये अशांति क्यों फैला रहा है?”

“उसे भागने की ज़रूरत है। किसी से जुड़ाव... मुझे लगता है कि यह आदमी कभी जेल में रहा है। ये आवाज़ें असल में पाबंदियों के दौर के खिलाफ उसका विरोध हैं। उसे नहीं पता कि यह एक थिएटर है। लेकिन उस ऊपरी ड्रेसिंग रूम में कुछ महत्वपूर्ण हुआ था और वहाँ के दृश्य उसके लिए ज़्यादा स्पष्ट होंगे।”

दुर्भाग्यवश, काफी रात हो चुकी थी इसलिए हम उस रात वहां नहीं जा सके।

“यह आदमी थिएटर में बहुत घूमता रहता है,” सिबिल ने टिप्पणी की। “वह दबाव में इधर-उधर घूम रहा था।”

मैंने सिबिल को धन्यवाद दिया, और यह न जानते हुए कि इस दिव्य दृष्टि की अवस्था में उससे प्राप्त किसी भी सामग्री में कोई वैधता थी या नहीं, मैंने किसी ऐसे व्यक्ति की तलाश की जो इसकी पुष्टि या खंडन कर सके।

एक बार फिर, स्टेज पर काम करने वाले अल्बर्ट बार्डन ने मदद की।

उन्होंने संयमित स्वर में कहा, "यहाँ कुछ झड़पें हुई थीं। यह 1916 में ईस्टर विद्रोह के दौरान हुई थीं।"

मैंने पूछा, "क्या यहाँ कोई सैनिक हैं?" और मंचकर्मी की बात सुनते ही दर्शकों में सन्नाटा छा गया।

उन्होंने आगे कहा, “दरअसल, एक आम नागरिक को गोली लगी थी—उस पर आई.आर.ए. की गतिविधियों में शामिल होने का संदेह था, लेकिन बाद में पता चला कि उसका संबंध आयरनब्रिज बैरक में क्वार्टरमास्टर स्टोर से था। उसे गलती से गोली लग गई थी।”

“उसे गोली कहाँ लगी थी?”

"थिएटर में।"

“नीचे?”

उस आदमी ने सिर हिलाया।

"हालांकि 1916 में मेरी उम्र केवल छह साल थी, लेकिन मुझे यह सब ऐसे याद है जैसे कल ही हुआ हो। यह विद्रोह और 1921 के ब्लैक एंड टैन संघर्ष के बीच का समय था, लेकिन उन्हें निश्चित रूप से यहीं गोली मारी गई थी।"

आयरलैंड में, कभी-कभी दो गृहयुद्धों के बीच अंतर करना मुश्किल होता है; वास्तव में, वे एक दूसरे में समाहित हो जाते हैं, क्योंकि यह सच है कि पांच लंबे वर्षों तक पूरा आयरलैंड स्वतंत्रता के लिए एक युद्धक्षेत्र था।

अब काफी रात हो चुकी थी और हमें थिएटर से निकलना पड़ा। बाहर, डब्लिन में सन्नाटा पसरा हुआ था, सिवाय कुछ पबों के जो अभी भी खुले हुए थे।

मैंने लोना मोरान और उनके दोस्तों को ओलंपिया के भूत को पकड़ने में हमारी मदद करने के लिए आने के लिए धन्यवाद दिया।

अब कम से कम उन्हें यह तो पता चल गया है कि यह कोई साथी अभिनेता नहीं है जो खराब समीक्षाओं से नाखुश है, बल्कि एक ऐसा व्यक्ति है जिसने वास्तविकता के कहीं अधिक भयावह रंगमंच में अपना जीवन बलिदान कर दिया।

*90

प्रेतवाधित रेक्टरी

कार्लिंगफोर्ड के भूतिया रेक्टरी के बारे में मैंने पहली बार अगस्त 1965 में सुना था, जब इसके मालिक, अर्नेस्ट मैकडॉवेल ने मेरे काम से परिचित एक अमेरिकी मित्र की सलाह पर मुझसे संपर्क किया था।

“मेरे पास एक पुराना पादरी निवास है जिसमें भूत-प्रेत का वास है। अगर आपकी रुचि हो तो मैं आपको खुशी-खुशी घर घुमाऊंगा।”

बाद में, मुझे पता चला कि श्री मैकडॉवेल एक प्रतिष्ठित और बुद्धिमान व्यक्ति थे, और उनकी रिपोर्ट को गंभीरता से लिया जाना चाहिए। मैंने जुलाई 1966 के अंत में डुंडालक क्षेत्र में जाने की व्यवस्था की। इस समय तक, जर्मन फैशन पत्रिका कॉन्स्टेंज़ के दो संपादक, श्री और श्रीमती पीटर रोबर, मेरे तरीकों पर प्रत्यक्ष रिपोर्ट देने के लिए और साथ ही मेरे कैमरे से कुछ असाधारण तस्वीरें मिलने की स्थिति में तटस्थ पर्यवेक्षक और निर्णायक के रूप में कार्य करने के लिए हमारे साथ आने का निर्णय ले चुके थे। इस उद्देश्य के लिए, श्री रोबर ने सुरक्षा उपायों की एक विस्तृत प्रणाली तैयार की। इसमें हैम्बर्ग से वह अत्यंत संवेदनशील फिल्म लाना शामिल था जिसका मैं आमतौर पर इस उद्देश्य के लिए उपयोग करता हूँ और इसे व्यक्तिगत रूप से मेरे ज़ीस कैमरे में डालना, जिसे उन्होंने तब तक अपने पास रखा जब तक हम संबंधित घर जाने के लिए तैयार नहीं हो गए।

फिल्म से कैमरा भरने के बाद, उसने उसे धागे और लाल मोम से सील कर दिया, ताकि सील तोड़े बिना मैं कैमरे या अंदर की फिल्म को किसी भी तरह से न छेड़ सकूँ। इस तरह वह इस बात का पुख्ता सबूत दे सका कि मेरे कैमरे के साथ किसी ने छेड़छाड़ नहीं की थी और यह भी कि अगर कोई अलौकिक परिणाम मिले भी तो वे सचमुच प्राप्त हुए थे, न कि धोखे से। मुझे जर्मन संपादकों की बात मानने में खुशी हुई, क्योंकि उस भौतिकवादी देश में, मानसिक घटनाओं के बारे में सकारात्मक दृष्टिकोण से लिखा गया एक लेख एक महत्वपूर्ण कदम होता।

रोबर परिवार शनिवार की एक गर्म शाम को ज्यूरीज़ होटल पहुँचा, और अगली सुबह हम छह लोगों के आराम से बैठने वाली एक विशाल प्रिंसेस कार में डुंडल्क के लिए रवाना हुए। हम दोपहर के भोजन तक डुंडल्क के उत्तर में स्थित बैलीमैस्कैनलॉन होटल पहुँच गए; मैंने इस आरामदायक होटल को अपना मुख्यालय चुना था।

पूर्व प्लंकट निवास, जो अब पूरी तरह से आधुनिक हो चुका है और हर मायने में एक आधुनिक होटल है, की उत्पत्ति नौवीं शताब्दी से मानी जा सकती है, हालांकि घर स्वयं केवल सौ वर्ष पुराना है। यह क्षेत्र "विशालकाय कब्रों" और अन्य पूर्व-ईसाई अवशेषों से भरा पड़ा है, और कई शताब्दियों तक स्कैनलन परिवार का केंद्र रहा। बाद में यह मेलिफोंट के सिस्टर्सियन भिक्षुओं का था, एक खंडहर जिसे हमने पिछले वर्ष बोयने नदी पार करते समय देखा था।

जैसे ही होटल की उत्साही मालकिन श्रीमती आइरीन क्विन ने हमें हमारे कमरों में ठहराया, हमने योजना बनाना शुरू कर दिया। मैंने अर्नेस्ट मैकडॉवेल को फोन किया और दूसरी तरफ से एक मधुर, सुरीली आवाज़ सुनाई दी। वह वाकई इस यात्रा के लिए तैयार थे; एक घंटे के भीतर ही वह अपने घर, डंडाल्क के दक्षिण में स्थित हेनेस्टाउन नामक फार्महाउस से गाड़ी चलाकर आ गए, और हम बैलीमैस्कैनलॉन होटल के आरामदायक लाउंज में बैठकर उनके अनुभवों पर विस्तार से चर्चा करने लगे।

“चलिए, घर के इतिहास से शुरुआत करते हैं, जितना आपको इस समय पता है,” मैंने मैकडॉवेल से पूछा, जो दिखने में खुशमिजाज और सलीके से कपड़े पहने हुए चालीस साल के एक नौजवान थे। उनका पेशा पेंटर का था, हालांकि जरूरत पड़ने पर वे अपने भाई को खेत चलाने में मदद भी करते थे। कुल मिलाकर अर्नेस्ट मैकडॉवेल एक सभ्य किसान थे, लेकिन किसान से ज्यादा सभ्य और थोड़े शर्मीले स्वभाव के थे।

“यह घर सत्रहवीं शताब्दी में बना था,” उन्होंने बात शुरू की। “तब यह एक निजी घर था, स्टैनस परिवार की हवेली थी, जिसे बाद में चर्च ऑफ आयरलैंड ने पादरी निवास के लिए खरीद लिया। इसके नए हिस्से के निर्माता सैडलर्स वेल्स की मशहूर बैले डांसर निनेट डी वैलोइस के दादा थे। मैंने इसे 1960 में खरीदा था।”

"क्या आप लोग अब तक शिफ्ट हो चुके हैं?"

"मैंने वास्तव में...घर खाली है, सिवाय भूतों के।"

“हाँ,” मैंने कहा, “यह घर कितना बड़ा है?”

कुल मिलाकर बाईस कमरे हैं। जब से मैंने इसे खरीदा है, तब से इसमें कोई नहीं रहा है।

"घर खरीदने के बाद आपने पहली बार उस घर का दौरा कब किया था?"

मैं हर हफ्ते वहां जाकर देखता था कि सब ठीक है या नहीं।

"यह था?"

“हाँ, लेकिन 1963 की एक गर्मी की दोपहर—मुझे याद है, सितंबर की शुरुआत थी—मैं और मेरा भाई पादरी के निवास पर थे। मेरा भाई मक्का काट रहा था और मैं लॉन की घास काट रहा था। शाम काफी गर्म थी और मुझे लगा कि मुझे सर्दी लग रही है। मैं बहुत व्यस्त था, और अचानक मेरी नज़र दरवाजे की तरफ पड़ी, तभी मैंने लाल पोशाक पहने एक लड़की को दरवाजे की ओर बढ़ते हुए देखा।

“लॉनमोवर का इंजन ठीक हालत में नहीं था और इससे मुझे परेशानी हो रही थी, और जो मैंने देखा उससे मैं दंग रह गया। उसने लाल मखमली पोशाक पहनी हुई थी, और इससे पहले कि मैं उसका चेहरा देख पाता, वह गायब हो गई!”

क्या वह मजबूत दिख रही थी?

"ठोस।"

क्या उसकी कोई परछाई थी?

"हाँ।"

क्या तुमने उसके जूते देखे?

“समय नहीं था। मैंने बिल्कुल शुरुआत से काम शुरू किया, और लाल पोशाक ही पहली चीज थी जिस पर मेरी नजर पड़ी।”

“उस चेहरे के बारे में क्या?”

मैं इसे समझ नहीं पाया।

"आपकी राय में यह पोशाक किस काल की है?"

"यह एडवर्डियन युग का लंबा दौर था।"

"उसके गायब होने के बाद आपने क्या किया?"

मैंने द्वार की ओर देखा—वह द्वार जो सड़क से परिसर में प्रवेश करने देता है—और द्वार से एक पादरी बहुत ऊंचे कॉलर के साथ अंदर आ रहा था, और वह भी गायब हो गया!

क्या आपको उनके बारे में कुछ और याद है?

"उसने पुराने जमाने के कपड़े और टोपी पहन रखी थी।"

“दिन का कौन सा समय था?”

शाम करीब 5 बजे।

मैंने दो बेचैन आत्माओं की इस रहस्यमय मुलाकात के बारे में कुछ देर सोचा, फिर मुख्य गवाह से अपनी पूछताछ जारी रखी।

क्या उन्होंने एक-दूसरे के प्रति कोई प्रतिक्रिया दी?

मुझे कहना चाहिए कि उन दोनों के बीच कुछ बंधन था; एक जुड़ाव था।

क्या आपने कुछ और देखा?

"नहीं, बस दो आंकड़े।"

"क्या तुम्हारे भाई ने कुछ देखा?"

“नहीं। लेकिन कैनन मेसनर, जो कुछ समय तक उस घर में रहे, उन्होंने उसी लड़की को एक कमरे में देखा था। वह उन्हें एक अलग अवसर पर दिखाई दी थी।”

"कितनी देर पहले?"

लगभग बीस साल पहले। उसने उसे एक युवा लड़की के रूप में वर्णित किया जो उसके बिस्तर के पास प्रकट हुई और फिर अचानक गायब हो गई।

“एक पादरी के लिए यह बात परेशान करने वाली है, मैं कहूंगा। आप मुझे उस प्रेतवाधित पादरी निवास के बारे में और क्या बता सकते हैं?”

“एक रात हेलेन मेसनर, उनकी बेटी, भोजन कक्ष में दरवाजा खुला छोड़कर अकेली बैठी थी, तभी कमरे के दूसरे छोर पर स्थित दूसरा दरवाजा अचानक कांपने लगा, मानो कोई उसे जबरदस्ती खोलने की कोशिश कर रहा हो। वह अपने आप खुल गया और उसके साथ मौजूद कुत्ता दरवाजे से आने वाली किसी भी चीज को घूरता रहा, उसके रोंगटे खड़े हो गए, और फिर वह अपनी जान बचाने के लिए भाग गया।”

“फिर एक रात, कैनन की पत्नी श्रीमती मेसनर और हेलेन ने पिछली सीढ़ियों पर कदमों की आहट सुनी। कदम सीढ़ियों के निचले हिस्से से शुरू हुए और सीधे ऊपर की ओर चले गए,

उनके दोनों ओर खड़े होने के बावजूद; लेकिन उन्हें कुछ दिखाई नहीं दिया। यह लगभग पंद्रह साल पहले की बात है जब मेसनर रेक्टर थे और अपने परिवार के साथ उस घर में रहते थे।"

मेरी भाभी, जो बहुत संवेदनशील हैं, दो हफ्ते पहले ही घर में गई थीं और उन्होंने बताया कि घर के पिछले हिस्से में उन्हें बहुत अजीब सी बेचैनी महसूस हुई। इंग्लैंड के केंट में उनका एक घर था, जिसके बारे में कहा जाता था कि वहां भूत-प्रेत का साया है और हम दोनों को ऐसा ही महसूस हुआ था। मुझे लगता है कि हम दोनों कुछ हद तक मानसिक रूप से संवेदनशील हैं, क्योंकि मुझे भी कभी-कभी ऐसी चीजें महसूस होती हैं।

"किस तरह की बातें?" मैंने पूछा। मैं अपने गवाहों की गवाही का मूल्यांकन करने के लिए हमेशा उनकी पूरी जानकारी लेना पसंद करता हूँ। अगर उन्हें जाँच के दायरे में आने वाली घटना से पहले भी भूतिया अनुभव हुए हों, तो यह उनमें माध्यम बनने की क्षमता का संकेत हो सकता है।

"मेरे भाई और भाभी ने किल्डारे में एक घर खरीदा था और मैं एक रात वहाँ रुका था, और बिना किसी कारण के, मैं गहरी नींद से बिस्तर पर उठ बैठा, और मैंने कमरे के दोनों दरवाजों के ताले खुलने की आवाज़ साफ़ सुनी। लेकिन मैं बिल्कुल अकेला था।"

कार्लिंगफोर्ड में प्रेतवाधित पादरी निवास

"क्या आपकी जानकारी में इस घर में किसी अप्रिय घटना का कोई रिकॉर्ड है?" मैंने भूतिया पादरी के आवास में वापस जाते हुए पूछा।

“नहीं, यहाँ का माहौल बहुत खुशनुमा है। बस कभी-कभी जब मैं अंदर जाती हूँ, तो मुझे ऐसा लगता है जैसे यहाँ लोग हों, जबकि यह साफ़ तौर पर खाली होता है। मुझे तो यह जीवंत लगता है। हाँ, जब मैं घर में बिल्कुल अकेली थी, तब मैंने गलियारों में कदमों की आहट सुनी है। वो ज़्यादातर ऊपर की मंज़िल पर होती थी। यह एक गलियारा है जो एक सीढ़ी से ऊपर जाता है, घर के चारों ओर घूमता है और दूसरी सीढ़ी से नीचे आता है। मुझे बस एक ही दुखद घटना याद है, जिसमें कोचवान ने गेटहाउस के जलने से अपने बच्चे को खो दिया था, लेकिन वो घटना घर के अंदर नहीं हुई थी।”

"क्या कोई ऐसी परंपरा या लोकप्रिय अफवाह है जो पादरी और लाल पोशाक वाली लड़की के दर्शन से संबंधित हो सकती है?"

"बिल्कुल भी नहीं।"

इस प्रकार, हमारे दल के किसी भी सदस्य को भूतिया घर से जुड़ी किसी भी घटना की कोई पूर्व सूचना नहीं थी, न ही कोई नाम, और न ही अर्नेस्ट मैकडॉवेल द्वारा बताई गई बातों से अधिक कुछ। ज़ाहिर है, सिबिल इस समय हमारे आस-पास कहीं नहीं थी, क्योंकि उसे प्रारंभिक तैयारियों के पूरा होने के बाद ही हमसे जुड़ना था।

जर्मनों ने इसे अपने टेप रिकॉर्डर में रिकॉर्ड कर लिया था, और उन्हीं के फायदे के लिए मैंने तथ्यों और नामों के मामले में हमारी पूर्ण "निर्दोषता" का मुद्दा उठाया था।

मैंने पूछा, "अब उस घर का नाम क्या है?"

श्री मैकडॉवेल ने उत्तर दिया, "माउंट ट्रेवर। इसे मूल रूप से ट्रेवर परिवार ने बनवाया था, जो एक बहुत ही प्रसिद्ध ग्रामीण परिवार था। उन्होंने कार्लिंगफोर्ड झील के पार रोस्ट्रेवर शहर भी बसाया था।"

अब खाली पड़ा यह पादरी निवास कभी महान भावनात्मक घटनाओं का साक्षी हुआ करता था।

“क्या घर में अब कोई कुर्सी है?” मैंने आखिरकार पूछा, क्योंकि सिबिल को अपनी समाधि के लिए कहीं तो बैठना ही था। मैकडॉवेल ने मुझे आश्वासन दिया कि उसने इस बारे में सोचा था और खाली पड़े घर में सिर्फ एक कुर्सी ले आया था।

लगभग पंद्रह मिनट की सुखद ड्राइव के बाद जब हम घर पहुंचे, तो पीटर रोबर ने मुझे मेरा कैमरा वापस दे दिया, जो अब पूरी तरह से सीलबंद था, और मैंने नीचे और ऊपर बेतरतीब ढंग से तस्वीरें लीं, और कैथरीन भी उसी कैमरे से कुछ तस्वीरें लेने में मेरे साथ शामिल हो गई।

हम परिसर में दाखिल हुए, जहाँ घास काफी ऊँची थी, और मैकडॉवेल हमें एक तरफ के प्रवेश द्वार से घर के अंदर ले गए, जो अब उपयोग में आने वाला एकमात्र दरवाजा था, हालाँकि मुझे तुरंत यह एहसास हुआ कि दूसरी तरफ एक बड़ा दरवाजा भी कभी मौजूद रहा होगा।

यह घर कार्लिंगफोर्ड झील के पानी की ओर धीरे-धीरे ढलान वाली एक छोटी पहाड़ी की चोटी पर रमणीय रूप से स्थित है। चारों ओर पेड़-पौधे फैले हुए हैं और उनके नीचे भेड़ें चरती हुई दिखाई देती हैं, जिससे यह स्थान अत्यंत शांतिपूर्ण प्रतीत होता है। घर के पीछे एक रसोईघर है, जिसके आगे प्राचीन कार्लिंगफोर्ड एबे के खंडहर टावर दूर से दिखाई देते हैं। बगीचे के द्वार के पार सड़क के उस पार कार्लिंगफोर्ड का कैथोलिक चर्च स्थित है।

हॉल काफी छोटा था; बाईं ओर, भूतिया कहानियों में वर्णित सीढ़ी सीधे ऊपरी मंजिल की ओर जाती थी, जबकि दरवाजे के दाईं ओर एक छोटा सा रास्ता हमें नीचे के बड़े कोने वाले कमरे में ले गया, जहाँ हमने रुकने का फैसला किया। चारों ओर बड़ी खिड़कियों से कमरे में पर्याप्त रोशनी आती थी, और पीछे की दीवार में एक चिमनी थी। उसके बगल में वही अकेली कुर्सी रखी थी जिसका जिक्र मैकडॉवेल ने किया था।

सिबिल अब घर के अंदर हमारे साथ आ गई और मैंने उसके मन में आने वाले पहले दिव्य आभासों को तुरंत दर्ज करना शुरू कर दिया।

“इसका संबंध 1836 के दौर से है,” उसने तुरंत कमरों में इधर-उधर देखते हुए कहा। “मेरे दो नाम हैं... अंदर आते ही मुझे वुडवर्ड नाम याद आया, और दूसरा नाम डिवाइन या डिवाइन है। कुछ ऐसा ही। मुझे लगता है कि यह एक अजीब नाम है।”

मैंने चेतावनी देते हुए कहा, "कृपया इसका विश्लेषण न करें, बस इसे आने दें। विश्लेषण मैं कर लूंगा।"

“वुडवर्ड और डिवाइन,” सिबिल ने दोहराया। “इन नामों का इस घर में कुछ खास महत्व है। साथ ही, यह एक कारावास कक्ष भी है। मुझे लगता है कि यहाँ किसी को कैद किया गया था।”

हम सिबिल के पीछे-पीछे चले, जो धीरे-धीरे एक कमरे से दूसरे कमरे में जा रही थी। कैथरीन ने टेप रिकॉर्डर और कैमरा उठाने में मेरी मदद की। अर्नेस्ट मैकडॉवेल उत्साह से पीछे-पीछे चल रहा था, और उसके तीन दोस्त भी थे जिनकी मौजूदगी उसे उपयोगी लग रही थी। वे दोनों महिलाएं आर्डी में एक घर में रहती थीं, और दोनों ही बहुत ही आध्यात्मिक शक्तियों वाली थीं। श्रीमती बे जॉन और पैट मैकएलिस्टर अपने साथ जूलियन नाम के एक युवा बच्चे को लाई थीं। मैंने मन ही मन उम्मीद की कि इन परिस्थितियों में कोई भूत-प्रेत तो नहीं मंडरा रहे हैं!

बाद में, श्रीमती मैकएलिस्टर ने बताया कि उन्हें ऊपर वाले कमरे में, जहाँ मैंने कुछ मानसिक तस्वीरें ली थीं, दीवार पर एक चेहरा उकेरा हुआ सा दिखाई दिया, हालाँकि उस समय मुझे यह नहीं पता था कि वे तस्वीरें असामान्य साबित होंगी। मुझे ऐसी बातें पहले से कभी पता नहीं चलतीं।

हम अभी भी भूतल पर ही थे और सिबिल घर के सबसे पुराने हिस्से, पिछले भाग की छानबीन कर रही थी। उस कमरे की खिड़की के बाहर लोहे की सलाखें लगी हुई थीं, जिससे कमरा किसी जेल जैसा भारी-भरकम सा लग रहा था। यह मूल रूप से रसोई का हिस्सा था।

“किसी को ऊपर रुकने के लिए कहा गया था,” सिबिल ने कहा, “और अब मेरे हाथों पर रोंगटे खड़े हो गए हैं।” हम सीढ़ियाँ चढ़े और मैंने उसकी इस बात की पुष्टि की।

अंततः हम ऊपरी मंजिल के लगभग मध्य में एक कमरे में पहुँच गए, और सिबिल अचानक रुक गई।

“मुझे ऐसा लग रहा है कि मैं इस कमरे से भाग जाऊं,” उसने कहा। “यह एक घबराहट भरी भावना है। कोई यहाँ से भागना चाहता है; डिवाइन का नाम फिर से सामने आ रहा है। कोई यहाँ छिपा हुआ है, और फिर कैद है। क्या यहाँ कहीं कोई जेल है? कई लोगों को बंदी बनाया गया है। हालांकि, यह घर से दूर है।”

"क्या यहाँ किसी की उपस्थिति है?" मैंने पूछा, जैसा कि मैं हमेशा तब पूछता हूँ जब हम किसी रहस्यमय गतिविधि के केंद्र में होते हैं।

“हाँ, कई हैं। कालखंड सन् 1836 है। सबसे प्रमुख उपस्थिति भूरे रंग के वस्त्र पहने एक व्यक्ति की है। एक पुरुष। इसका व्यापारिक संबंध है। यहाँ तीन लोग हैं, लेकिन सभी एक ही कालखंड के हैं। यहाँ कालखंडों का कोई अंतर्संबंध नहीं है। इस कमरे में छिपा हुआ या जबरन रखा गया मुख्य व्यक्ति यहाँ से गया और उसे अन्य लोगों के साथ फाँसी दे दी गई। वह एक पुरुष था। शायद अब हमें नीचे जाना चाहिए।”

हमने सिबिल की सलाह मानी और नीचे वाले बैठक कक्ष में चले गए।

“फादर डिवाइन...को व्यापार के लिए चर्च नहीं छोड़ना चाहिए था,” सिबिल अचानक बुदबुदाई। “कोई उनके बारे में ऐसा कहता है। हालांकि, मुझे उनकी मौजूदगी का एहसास होता है।”

अब मैंने सिबिल को हमारे पास मौजूद इकलौती कुर्सी पर बिठा दिया और हम सबने यथासंभव उसके चारों ओर घेरा बना लिया। लगभग वही समय था, शाम के 5 बजे, जब भूतिया घटनाएँ घटी थीं और मैं किसी भी स्थिति के लिए तैयार था।

इस समय, सिबिल गहरी समाधि की अवस्था में थी। मेरे जर्मन मित्र वहीं जमे बैठे थे, श्रीमती रोबर माइक्रोफोन को थामे बैठी थीं और श्री रोबर अपने रोलेफ्लेक्स कैमरे से दर्जनों तस्वीरें खींच रहे थे। तनाव तब और बढ़ गया जब सिबिल के होंठ हिलने लगे, हालांकि शुरुआत में उनसे कोई शब्द नहीं निकला। धीरे-धीरे, मैंने आत्मा को अपने माध्यम के शरीर पर पूरी तरह से अधिकार जमाने और हम पर, जो मित्र बनकर आए थे, अपने मन की बात कहने के लिए प्रेरित किया।

“तुम कौन हो?” मैंने धीमी आवाज़ में कहा। सिबिल की आवाज़ अब झिझक भरी और कमज़ोर थी, बिल्कुल भी उसकी सामान्य आवाज़ जैसी नहीं थी।

“एलीन,” आवाज धीमी होकर बोली।

मुझे उसकी आवाज मुश्किल से सुनाई दे रही थी, लेकिन मेरे टेप रिकॉर्डर ने उसकी हर सांस रिकॉर्ड कर ली।

“एलीन वुडवर्ड,” भूत ने कहा। “क्या यह तुम्हारा घर है?”

“हम यहीं रहते हैं... वो कहाँ है? वो कहाँ है? रॉबर्ट! तुम किसे ढूंढ रहे हो?”

“डेवेन...रॉबर्ट डेवेन...धीरे बोलो...मेरे पति...चुप रहो...वो कहाँ हैं?”

मुझे आश्चर्य हुआ कि क्या वह चाहती थी कि मैं अपनी आवाज धीमी रखूं ताकि मैं उसका पता किसी पीछा करने वाले को न बता दूं।

मैंने सवाल का रुख पलटते हुए पूछा, "रॉबर्ट कहाँ है?"

“वह कहाँ है, वह कहाँ है?” वह रोने लगी, और अधिक से अधिक परेशान होती जा रही थी, और सिबिल के आमतौर पर शांत चेहरे पर आंसू, सचमुच के आंसू बहने लगे।

मैंने उसे यथासंभव शांत किया और वादा किया कि अगर संभव हुआ तो मैं रॉबर्ट को ढूंढने में उसकी मदद करूंगा।

"तुम पहली बार इस घर में कब आई थीं?" मैंने धीमी आवाज़ में पूछा, जबकि वह लगातार रो रही थी।

मेरे आस-पास के चेहरों पर वे तीव्र भावनाएँ झलक रही थीं जो मानो उस प्रेतवाधित लड़की से प्रत्यक्षदर्शियों में स्थानांतरित हो गई हों। एक शब्द भी नहीं बोला गया।

इस समय टेप को पलटना ज़रूरी था। दुर्भाग्यवश, वह हमारे हाथों से फिसल गया और दोबारा रिकॉर्डिंग शुरू करने में मुझे कुछ सेकंड लग गए। उन पलों में मैंने उसके पारिवारिक संबंधों को और गहराई से जानने की कोशिश की।

रॉबर्ट कौन था और उसके लोग कौन थे? रॉबर्ट के पिता कौन थे?

“चर्च में,” उसने अब धीमी आवाज़ में जवाब दिया।

मैं जानना चाहती थी, “क्या वह तुम्हें पसंद करता है?”

जवाब देने से पहले उसने कुछ पल चुपचाप विचार किया।

"नहीं।"

"क्यों नहीं?"

चर्च को शादी नहीं करनी चाहिए!

क्या रॉबर्ट एक पादरी हैं?

“चुप रहो!” उसने जल्दी से कहा। “कुछ मत बोलो!”

मुझे ठीक से समझ नहीं आ रहा... इसमें धर्म का क्या स्थान है?

"बदलाव लाने वाला," उसने बुदबुदाते हुए कहा, जिससे यह संकेत मिलता है कि किसी ने उसका धर्म बदल दिया था।

मैंने अब पूछा, "क्या आप और रॉबर्ट एक ही धर्म के हैं?"

इसके बारे में मत पूछो।

"क्या आप ईसाई सम्प्रदाय के हैं?"

मेरी प्रतिक्रिया पूर्ण मौन थी।

मैंने उससे और जानकारी देने की गुहार लगाई ताकि मैं रॉबर्ट को ढूंढने में उसकी मदद कर सकूं। लेकिन व्यर्थ; वह इस सवाल पर टस से मस नहीं हुई। अंत में, उसने मुझे अपने दुश्मनों से जोड़कर देखा।

“तुम उसे ले गए...मैं अब टहलने जा रहा हूँ...मेरे पीछे आओ...पहाड़ी से नीचे...बस थोड़ी देर टहलना है...देखते हैं वो आता है या नहीं....”

मैंने पूछा, "अगर मैं तुम्हें रॉबर्ट से दोबारा मिलवा दूं, तो क्या तुम मुझसे वादा करोगे कि तुम मेरी बात मानोगे?"

“मैं कोई वादा नहीं करता,” डरे हुए भूत ने जवाब दिया। “तुमने उसे धोखा दिया... मुझे कैसे पता चलेगा कि तुम मेरे दोस्त हो?”

"अगर मैं तुम्हारी मदद करना चाहता हूं, तो तुम्हें मुझ पर भरोसा करना होगा।"

मुझे भरोसा नहीं है।

अब मैंने उसे धीरे से उसके बारे में सच्चाई बताई, 1836 से अब तक बीते समय के बारे में बताया और यह भी बताया कि वह इस घर में क्यों नहीं रह सकती।

“इतनी ज़ोर से मत बोलो... मुझे पागल कर रहे हो... मैं बगीचे में टहलने जा रही हूँ...” उसने कहा, अपने द्वारा बनाई गई कैद को चीरती हुई सच्चाई की रोशनी को नज़रअंदाज़ करने की कोशिश करते हुए। लेकिन यह कारगर नहीं हुआ। वास्तविकता का द्वार उसके लिए खुल चुका था। पल भर में वह गायब हो गई।

सिबिल ने अपनी आँखें खोलीं, पहले तो वह इस बात को लेकर असमंजस में थी कि वह कहाँ है। फिर मैंने उससे घर के बाहर ताज़ी हवा लेने के लिए कहा, क्योंकि हमारी प्रार्थना सभा के दौरान जो बारिश हुई थी, वह अब रुक चुकी थी और ग्रामीण इलाका अपनी शानदार आयरिश ताजगी में लौट आया था।

सिबिल के बाहर होने पर, मैंने एक बार फिर घर के मालिक की ओर मुड़कर पूछा कि क्या उन्होंने घर या इलाके के संबंध में वुडवर्ड, एलीन और डिवाइन या डेवेन नाम पहले कभी सुने हैं।

मुझे बस इतना पता है कि कैनन मेसनर ने मुझे बताया था कि इस घर में कभी डिवाइन नाम का एक फ्रांसीसी परिवार रहता था। चूंकि कैनन मेसनर 1935 से इस घर के मालिक थे, इसलिए यह उनके समय से पहले की बात होगी।

"लड़की एक पादरी की बात करती है, और आपने एक पादरी का भूत देखा, क्या यह सही है?"

“हां,” मैकडॉवेल ने सिर हिलाते हुए कहा, “लेकिन उसने काले कपड़े पहने थे, भूरे नहीं।”

टेप बदलने के कारण जो समय बर्बाद हुआ, उस दौरान भूत ने खुद को 16 साल की बताया, लाल पोशाक पहनी हुई थी, और 1836 और 1846 दोनों तारीखें बताई गईं। ज़ाहिर है, सिबिल को लाल मखमली पोशाक वाली लड़की के साथ मैकडॉवेल के अनुभव की कोई जानकारी नहीं थी।

मैंने श्री मैकडॉवेल से स्थानीय अभिलेखों में उन नामों और सूचनाओं की पुष्टि करने का अनुरोध किया जो माध्यम से प्राप्त हुई थीं। उपस्थित लोगों को इनमें से किसी भी बात की जानकारी नहीं थी, इसलिए पुष्टि के लिए आगे और शोध करना आवश्यक हो गया।

हम बैलीमैस्कैनलॉन होटल लौट आए, जहाँ उत्सुक जर्मन पत्रकार ने एक स्थानीय फोटोग्राफर से अपॉइंटमेंट लिया था ताकि वह हमारे फिल्म्स को लोकेशन पर रहते हुए ही डेवलप करवा सके, और अगर नेगेटिव्स में कुछ ऐसा हो जो नंगी आँखों से दिखाई न दे, तो उस जानकारी का तुरंत उपयोग किया जा सके। मैंने कभी ऐसी किसी बात की कल्पना नहीं की थी, लेकिन इन चीजों का पहले से पता भी नहीं लगाया जा सकता। जैसा कि पता चला, कैथरीन और मेरे द्वारा मेरे सीलबंद कैमरे से ली गई तस्वीरों के बैच में दो तस्वीरें ऐसी थीं जिनमें वही दर्पण जैसे प्रभाव दिखाई दे रहे थे जो मैंने न्यूयॉर्क में जून हैवोक के भूतिया टाउनहाउस और बोस्टन के पास रीटा अटलांटा के भूतिया ट्रेलर में ली गई तस्वीरों में देखे थे। जहाँ भी किसी कमरे में कोई भूतिया क्षेत्र मौजूद होता है, जिसे कभी चुंबकीय क्षेत्र या कभी ठंडे स्थान द्वारा दर्शाया जाता है, ऐसा क्षेत्र कभी-कभी फिल्म पर दर्पण जैसे प्रभावों के साथ दिखाई देता है; यानी, कमरे में वस्तुओं के ऐसे प्रतिबिंब दिखाई देते हैं जो सामान्य परिस्थितियों में नहीं हो सकते, क्योंकि वहाँ कोई दर्पण या अन्य परावर्तक सतह मौजूद नहीं होती।

पीटर रोबर स्पष्ट रूप से बेहद खुश थे, और अपनी खुशी को उतना ही ज़ाहिर कर रहे थे जितना कि उनका उत्तरी जर्मन स्वभाव उन्हें करने की अनुमति देता था। एक और तस्वीर थी जो हमारे लिए पहेली बनी हुई थी: ऊपर के उस भूतिया कमरे में, जहाँ हेलेन मेस्नर ने दरवाज़ा अपने आप खुलते देखा था, कैथरीन ने एक तस्वीर ली जो हम दोनों को खाली कमरा लग रहा था। हमें अच्छी तरह याद है कि दोनों दरवाज़े बंद थे। फिर भी, हमें आश्चर्य हुआ कि तस्वीर में बाईं ओर का दरवाज़ा साफ़ तौर पर थोड़ा खुला हुआ है!

अर्नेस्ट मैकडॉवेल ने सुझाव दिया कि हम मीस्नर परिवार से सीधे बात करें, और अगली सुबह, श्रीमान और श्रीमती रोबर और मैं सीमा पार करके उत्तरी आयरलैंड चले गए, जहाँ मीस्नर परिवार अब वॉरेनपॉइंट नामक एक छोटे से शहर में रहता है।

श्रीमती मेसनर एक मिलनसार और बातूनी महिला निकलीं, जिन्होंने हमें यह बताने के लिए सहर्ष सहमति व्यक्त की कि पादरी के निवास के दौरान उनके साथ क्या हुआ था।

“हम वहां पच्चीस साल रहे और 1960 में हमने घर छोड़ दिया,” उन्होंने अपनी यादें साझा करना शुरू किया। “शुरुआत में हमें घर में कुछ भी असामान्य नहीं लगा, शायद इसलिए कि हमें घर पाकर बहुत खुशी हुई थी।”

घर का एक हिस्सा लगभग क्वीन ऐनी काल का था, बाकी जॉर्जियन शैली का। हमारे पास दो नौकरानियाँ थीं और हमने अपने माली को भी साथ रखा था। सब लोग खुश थे। हम खूब मेहमाननवाज़ी करते थे और जीवन बहुत सुखद था। फिर मैंने देखा कि स्थानीय लोग शाम को पादरी के घर नहीं आते थे। वे हमेशा कोई न कोई बहाना बना देते थे। आखिरकार, मुझे पता चला कि घर में एक भूत है। कहा जाता था कि यह एक समुद्री कप्तान का भूत है जो पहले यहाँ रहता था और समुद्र में खो गया था। लोगों ने बताया कि घर का पुराना हिस्सा वह जगह थी जहाँ वह रहता था। हालाँकि, मैं उस समुद्री कप्तान के बारे में इससे ज़्यादा कुछ पता नहीं लगा पाया। मैं खुद भी संशयवादी था और अपने काम में मग्न रहता था। फिर गर्मी का मौसम आया, और मैं जितना हो सके देर तक बाहर रहता था। कई शामों को, कोई सफेद चीज़ मेरे पास से गुज़री, कोई बड़ी चीज़, और फिर भी मैंने कोई आवाज़ नहीं सुनी। मुझे यह बहुत अजीब लगा, और मैंने सोचा कि कहीं यह सफेद उल्लू तो नहीं है, लेकिन पंखों की कोई आवाज़ नहीं थी। धीरे-धीरे मुझे इस घटना की आदत सी हो गई।

मैंने बीच में टोकते हुए पूछा, "दिन का कोई खास समय?"

शाम ढलते समय। बाहर। और फिर मैंने उसे खिड़की से देखा। लेकिन उसका कोई आकार नहीं था, फिर भी मैं जानती थी कि वह सफेद था। मैंने उसे अक्सर देखा, और कभी कोई आवाज़ नहीं सुनी।

“उसके बाद, क्या घर में आपके साथ कोई और रोमांचक घटना घटी?” मैंने पूछा।

“निनेट डी वैलोइस की बहन हमसे मिलने आई थीं, और उन्हें घर में बहुत दिलचस्पी थी क्योंकि यह उनके एक पूर्वज का था। उनका नाम कर्नल स्टैनस था। उसी समय एक और मेहमान भी आए, डबलिन का एक युवक। महिला और उनके पति शाम को काफी देर से आए थे; वे रोस्ट्रेवर होटल में ठहरे हुए थे, और वे कार्लिंगफोर्ड रेक्टरी देखना चाहते थे, और हमें लगा कि शाम को इसके लिए काफी देर हो चुकी है, इसलिए हमने उनसे अगले दिन आने को कहा। उस समय डबलिन का वह युवक भी यहाँ था, लेकिन उसकी और महिला की पहले कभी मुलाकात नहीं हुई थी।”

“जब उसने उस महिला को देखा, तो उसका चेहरा एकदम पीला पड़ गया। मुझे लगा कि कहीं वह बीमार तो नहीं है, लेकिन उसने मना कर दिया, इसलिए हम उस कमरे में चले गए जिसे हम हमेशा अतिथि कक्ष मानते थे। डबलिन का वह युवक पहले भी कई बार उस कमरे में रह चुका था। लेकिन जब हम कमरे में दाखिल हुए, तो महिला ने हैरानी से कहा कि वह पहले भी उस कमरे में रह चुकी है! बिलकुल नहीं।”

"डबलिन का वह युवक अभी भी बहुत घबराया हुआ लग रहा था, इसलिए मैं उसे नीचे एक तरफ ले गया और पूछा, तुम्हें क्या हुआ है?"

अंततः उसने मुझे बताया।

“‘यह सबसे असाधारण बात है,’ उसने मुझसे कहा। ‘वह महिला भूत है।’”

मैंने पूछा, ‘कौन सा भूत?’

“‘अक्सर जब मैं उस कमरे में सोता था,’ उन्होंने समझाया, ‘मुझे कमरे में किसी की मौजूदगी का एहसास होने से नींद से जागना पड़ता था। जब मैंने ऊपर देखा, तो मुझे उस महिला का चेहरा दिखाई दिया!’”

"मुझे जो बात अजीब लगी वह यह थी कि उससे मिलते ही उसे कुछ अजीब सा महसूस हुआ और उसे भी ऐसा ही अजीब सा महसूस हुआ जैसे वह पहले भी उस कमरे में जा चुकी हो, जबकि वास्तव में वह वहां नहीं गई थी।"

बाद में, चाय के समय, उसने मुझसे पूछा कि क्या मैं आत्माओं के पुनर्जन्म में विश्वास करता हूँ।

मुझे ऐसा लगा कि रोनी मुस्ग्रेव नाम के उस युवक को महिला के रूप को देखकर भूत की याद आ गई होगी, लेकिन फिर भी इससे कमरे के प्रति उसकी प्रतिक्रिया का स्पष्टीकरण नहीं मिलता, जब तक कि उसने अपनी कार्लिंगफोर्ड यात्रा को पहले से ही देख न लिया हो और अब उसे इसका एहसास हो रहा हो!

श्रीमती मेसनर ने आगे कहा, "मैंने उस घर में बहुत समय बिताया है, लेकिन मुझे कभी अकेलापन महसूस नहीं हुआ। मेरे पति का अनुभव मुझसे अलग था। वह सो गए थे। जब उनकी नींद खुली तो उन्हें लगा कि कमरे में कोई है। उन्हें लगा कि कोई बुरी शक्ति है और उन्होंने क्रॉस का चिन्ह बनाया। फिर वह गायब हो गई। मुझे हमेशा लगता था कि वह शक्ति किसी महिला की थी। मैंने कदमों की आहट भी सुनी है। लेकिन मुझे इस भूत से कभी डर नहीं लगा। मुझे तो यह सुखद लगा।"

मैंने घर के इतिहास को समझने की कोशिश की। 1932 में जब मीस्नर परिवार यहाँ रहने आया, उससे पहले यहाँ ऑघमुटी नाम के एक पादरी रहते थे; उससे पहले रेवरेंड ब्लूएट, उनसे पहले उनके ससुर श्री मेलर, और इस तरह हम उन्नीसवीं सदी में पहुँच जाते हैं, जब स्टैनस परिवार इस जगह का मालिक था। तब यह सिर्फ एक निजी घर था।

संयोगवश, श्रीमती मीस्नर समाधि की अवस्था के दौरान प्राप्त हुए किसी भी नाम को नहीं पहचानती थीं।

जब वह अपने अस्सी वर्षीय पति को हमारे लिए कुछ आंकड़े जुटाने के लिए लेने गई, तब मैंने उनकी बेटी, जो अब विधवा श्रीमती थॉम्पसन हैं, से बात की, जो हमसे मिलने घर आई थीं।

"हमारे पास एक कॉकर स्पैनियल कुत्ता था," उसने कहना शुरू किया, "और वह कुत्ता मेरे साथ ऊपर वाले कमरे में था। वहाँ एक बड़ा सा शीशा लगा था, और जब मैंने उसमें देखा, तो कमरे के दूसरे छोर का दरवाज़ा अपने आप खुल गया और फिर धीरे-धीरे बंद हो गया। कुत्ता उठ खड़ा हुआ और गुर्राने लगा, लेकिन मुझे कुछ दिखाई नहीं दिया। बस यही एक अनुभव था मेरा, लेकिन मेरे लिए इतना ही काफी था।"

कैनन मीस्नर एक मिलनसार और दयालु व्यक्ति हैं, जिन्होंने मेरी हर बात का यथासंभव उत्तर दिया। चर्च से जुड़े नामों में से कोई भी नाम उन्हें जाना-पहचाना नहीं लगा, और निजी पृष्ठभूमि के बारे में उनके पुस्तकालय में कोई पुख्ता जानकारी नहीं थी। उन्होंने सुझाव दिया कि हम

इस मामले को डबलिन स्थित ट्रिनिटी कॉलेज से पूछें, जहाँ विस्तृत अभिलेख उपलब्ध हैं। उन्होंने बताया कि यह घर लगभग 1870 या 1871 में पादरी का निवास बन गया था और उस समय इसे सीधे स्टैनस परिवार से खरीदा गया था। उन्होंने पुराने हिस्से पर ही नया हिस्सा बनवाया था।

मैंने कैनन द्वारा अपने अध्ययन कक्ष से लाई गई दो भारी पुस्तकों की जांच शुरू की।

कार्लिंगफोर्ड के रेक्टरों की सूची में न तो डिवाइन और न ही डेवेन का नाम आया।

ट्रिनिटी कॉलेज, लंदन के पूर्व छात्रों की पुस्तक, विलियम्स और नॉरगेट, 1924 में, पृष्ठ 217, कॉलम 1 पर, मुझे निम्नलिखित प्रविष्टि मिली: "डेविन, चार्ल्स, ट्रिनिटी में प्रवेश लिया, 4 नवंबर, 1822, आयु 20 [इस प्रकार जन्म 1802]; जॉन डेविन के पुत्र, काउंटी लाउथ में जन्मे।"

वह क्षेत्र बिल्कुल सही था, क्योंकि उस समय कार्लिंगफोर्ड काउंटी का प्रमुख शहर था।

मुझे उसी कृति के पृष्ठ 94 पर "रॉबर्ट वुडवर्ड, जिन्होंने 5 नवंबर, 1821 को ट्रिनिटी से स्नातक किया, जिनकी उम्र 16 वर्ष थी, और जो हेनरी वुडवर्ड के पुत्र थे, जिन्होंने 1832 में एम.ए. की उपाधि प्राप्त की," का एक विवरण भी मिला।

यह बात असाधारण लग रही थी कि हमने सिबिल लीक द्वारा समाधि की अवस्था में बताए गए दो नाम खोज लिए थे, और दोनों नाम बताए गए काल और स्थान से संबंधित थे। लेकिन खोज अभी खत्म नहीं हुई थी।

जब मैं डंडालक के स्थानीय लाइब्रेरियन से पुष्टि प्राप्त करने की कोशिश कर रहा था—लेकिन सफलता नहीं मिली—तभी जर्मन संपादक अपना सामान समेटकर हैम्बर्ग के लिए रवाना हो गए। मैंने अर्नेस्ट मैकडॉवेल को अपनी ज़रूरतों के बारे में निर्देश दे दिए, और फिर हम तीनों, मेरी पत्नी, मैं और सिबिल, आयरलैंड के पश्चिमी भाग की ओर चल दिए। वहाँ हम अलग हो गए और सिबिल इंग्लैंड के दक्षिण में अपने घर चली गईं, जबकि हम न्यूयॉर्क लौट आए।

मालिक एडवर्ड मैकडॉवेल, जो एक चित्रकार हैं, परिसर का निरीक्षण कर रहे हैं।

2 अगस्त, 1966 को सिबिल को हैंट्स के रिंगवुड स्थित अपने घर में एक सम्मोहन जैसी अवस्था में स्वप्न आया। स्वप्न में उसने स्वयं को पादरी के निवास और खंडहर हो चुके मठ के बीच आते-जाते देखा। वहाँ एक युवती थी जो किसी अन्य स्थान से आई थी और लंबे समय से किसी पुरुष के आने का इंतजार कर रही थी। वह पुरुष भारत में था। युवती बहुत दुखी थी और उसने बताया कि उसने उस पुरुष से विवाह तो कर लिया है, लेकिन वह वैध नहीं है और उसे एक कैथोलिक पादरी से विवाह करवाना पड़ेगा क्योंकि इस पूरी प्रक्रिया से वह अस्वस्थ हो रही है। वह पुरुष किसी पादरी से विवाह नहीं करवाना चाहता था क्योंकि वह प्रोटेस्टेंट था और यदि उसका परिवार उसे आर्थिक सहायता देने से मना कर देता तो वे उसे छोड़ देते।

उसने दोबारा शादी करने की ज़िद के कारण उसे छोड़ दिया था, लेकिन वह उससे प्यार करती थी और उसे किसी पादरी द्वारा शादी करवाने के लिए राजी करना चाहती थी। वह इंग्लैंड में थी, और उसने उसे आयरलैंड के कार्लिंगफोर्ड आने को कहा था, जहाँ वह उससे मिल सकता था, लेकिन वह नहीं आया। उसे एक ऐसे पादरी को ढूंढना था जो शादी को गुप्त रखे, और यह आसान नहीं था, क्योंकि सभी का कहना था कि शादी को लिखित रूप में दर्ज करना होगा।

उस महिला ने दावा किया कि डबलिन में येल्वर्टन के कागजात में "सब कुछ" मिल सकता है। सिबिल को यकीन था कि 1840-50 के दशक से जुड़ा एक अदालती मामला था जिसे येल्वर्टन केस कहा जाता था। लेकिन फिर सपने जैसी अवस्था में चीजें थोड़ी उलझ गईं क्योंकि वह खुद को घर के अंदर-बाहर आते-जाते हुए पाती थी, कभी मठ जाती, किसी पादरी से बात करती, फिर वापस घर आती, जो उस समय सजा हुआ लगता था; और सिबिल ने घर के पीछे जो द्वार देखा था, वह अब जहां है वहां नहीं था। वह महिला दोस्तों के साथ रह रही थी; वह कार्लिंगफोर्ड में स्थायी रूप से नहीं रहती थी और वास्तव में वहां से चली गई थी।

यह 2 अगस्त की बात है; 3 अगस्त को सिबिल ने फिर से ठीक वही दृश्य "सपना" देखा, जिसका अंत फिर से येल्वर्टन मामले के कागजात खोजने में हुआ। लेकिन इस बार सपना ज़्यादा सजीव था; सुबह सिबिल ने पाया कि वह आधी रात को उठी थी, अपना नाइटगाउन उतारकर एक लंबी शाम की पोशाक पहन ली थी और फिर उसी में वापस बिस्तर पर चली गई थी। उसे ऐसा महसूस हो रहा था जैसे उसने वही कपड़े पहने हों जो 1840 के दशक में वह लड़की पहनती थी। लड़की ने कहा कि इधर-उधर भटकने के बावजूद उसे शादी के लिए सही कपड़े नहीं मिल रहे हैं और उसे और खरीदने पड़ेंगे। लड़की का लहजा कुछ अलग था और वह रोने-धोने के बीच इतालवी और फ्रेंच बोल रही थी, और सिबिल को वह जानी-पहचानी सी लगी।

बाद वाली बात तो बिल्कुल तार्किक थी, क्योंकि सिबिल ही उसके संवाद का माध्यम थी, लेकिन हमने अब तक सिबिल के साथ मामले के विवरण या उसकी समाधि के बारे में चर्चा नहीं की थी; इसलिए, उदाहरण के लिए, वह धार्मिक समस्या के बारे में नहीं जान सकती थी।

यह इस मामले के लिए एक ऐतिहासिक सप्ताह था, क्योंकि अगले दिन, और सिबिल की धारणाओं से बिल्कुल स्वतंत्र रूप से, अर्नेस्ट मैकडॉवेल को एक दुर्लभ स्थानीय इतिहास में आवश्यक पुष्टि मिल गई थी। 1800 में प्रकाशित "काउंटी फैमिलीज ऑफ द यूनाइटेड किंगडम" नामक कृति में, कार्लिंगफोर्ड के पास ओमेथ पार्क के वुडहाउस नामक परिवार का उल्लेख किया गया था।

कार्लिंगफोर्ड के बाद ओमेथ अगला गांव है और यह उसके काफी करीब है।

जॉन वुडहाउस का जन्म 6 अक्टूबर 1804 को हुआ था और उनकी शादी मैरी बर्ले से 10 जून 1834 को हुई थी। उनके नौ बच्चे थे, जिनमें से चौथा एडेलिन एलिजाबेथ था। आयरिश लोग एडेलिन का उच्चारण कुछ-कुछ एडलिन की तरह करते हैं, और सिबिल के मंत्रमुग्ध स्वर में मैंने जो सुना, वह सचमुच एलिन या एडलिन जैसा ही लग रहा था!

वुडहाउस परिवार का दावा था कि वे इंग्लैंड के नॉरफ़ॉक के वुडहाउस परिवार से संबंधित हैं; इसलिए सिबिल द्वारा लड़की के इंग्लैंड जाने का ज़िक्र शायद सही हो। संभवतः वह रिश्तेदारों से मिलने गई थी।

इसी स्रोत में आगे ड्रमबैरो के वुडवर्ड परिवार का भी उल्लेख है। इसमें 20 जून, 1805 को जन्मे रॉबर्ट वुडवर्ड का नाम दिया गया है, जिनके पिता हेनरी वुडवर्ड थे। स्रोत के अनुसार, रॉबर्ट वुडवर्ड ने एस्थर वुडवर्ड से विवाह किया और उनके दो बेटे और तीन बेटियाँ थीं। यह विवाह 1835 में हुआ था। यही व्यक्ति ट्रिनिटी कॉलेज के रजिस्टर में भी दर्ज है।

वुडवर्ड और वुडहाउस नामों की समानता ने शायद उस प्रेतवाधित लड़की को भ्रमित कर दिया होगा। एक नाम संभवतः उसका मायके का नाम था और दूसरा उसके पति के परिवार का नाम।

दुर्भाग्यवश, हमारे पास एडेलिन की जन्मतिथि नहीं है। लेकिन अगर उनके पिता का विवाह 1834 में ही हुआ था, तो संभव नहीं कि उनका विवाह रॉबर्ट से 1836 या 1846 में हुआ हो। अगर उस समय उनकी उम्र सोलह वर्ष थी, जैसा कि उन्होंने समाधि की अवस्था में दावा किया था, और अगर उनका जन्म 1835 और 1845 के बीच हुआ था, तो रॉबर्ट के साथ उनका दुखद संबंध लगभग 1850-60 के आसपास हुआ होगा। लेकिन यह केवल अनुमान है।

हमें जो बात पक्के तौर पर पता है, वह यह है: सिबिल लीक समेत किसी ने भी इस जांच से पहले डिवाइन नाम के किसी व्यक्ति, एडेलिन वुडहाउस नाम की किसी लड़की या रॉबर्ट वुडवर्ड नाम के किसी व्यक्ति के बारे में नहीं सुना था। कार्लिंगफोर्ड रेक्टरी की हमारी यात्रा के समय ये नाम किसी के भी मन में नहीं थे। फिर भी ये लोग उसी इलाके में मौजूद थे जहां हम गए थे और लगभग उसी समय जब भूत अपने जीवनकाल में वहां सक्रिय था। एक बेचैन दिवंगत आत्मा के साथ सच्चे संवाद के अलावा इसे और किस तर्क से समझाया जा सकता है?

लाल मखमली पोशाक वाली लड़की और उसके रॉबर्ट के बीच क्या रिश्ते थे, और पिता की इसमें क्या भूमिका थी, और पादरी कौन था? क्या डिवाइन वही पादरी था जिसने उनकी शादी तोड़ी या उसने उनकी मदद की? मुझे लगता है कि यह उसी का भूत है जिसे अर्नेस्ट मैकडॉवेल ने देखा था। क्या उसके मन में अपराधबोध था जिसने उसे शायद इसी माहौल में रोके रखा?

खैर, हमारी यात्रा के बाद से पादरी का निवास स्थान शांत है और अर्नेस्ट मैकडॉवेल जल्द ही वहाँ रहने की सोच रहे हैं। मतलब, अगर हम उनसे वह जगह न खरीद लें तो। क्योंकि शांत वातावरण लुभावना है और लाल मखमली पोशाक वाली लड़की से दोबारा मिलने की संभावना बहुत कम है। वैसे, हमें इससे कोई आपत्ति नहीं होती।

*91

प्रेतवाधित सेमिनरी

मुझे मेयनूथ कॉलेज के भूतिया कमरे के बारे में सबसे पहले पैट्रिक बायरन से पता चला, जिन्होंने मुझे यह भी आश्वासन दिया कि इसकी जांच करने की अनुमति प्राप्त करना मुश्किल, बल्कि असंभव होगा। लेकिन एक भूत खोजी कभी हार नहीं मानता, इसलिए आगे यात्रा की योजना बनाने का प्रयास किए बिना, मैंने स्वयं उस सेमिनरी के बारे में जो कुछ भी उपलब्ध था, उसे पढ़ने का फैसला किया और फिर उसके लिए निकल पड़ा।

आयरिश संसद के एक अधिनियम द्वारा 1795 में आयरिश पदानुक्रम के प्रयासों से स्थापित, मेयनूथ कॉलेज एक सदी के भीतर दुनिया के सबसे बड़े धार्मिक शिक्षण संस्थानों में से एक बन गया। एक परिवर्तित आवासीय भवन में चालीस छात्रों और दस प्रोफेसरों के साथ अपनी छोटी सी शुरुआत से, यह लगभग छह सौ छात्रों और चालीस शिक्षकों के स्टाफ के साथ एक शानदार शैक्षणिक केंद्र में विकसित हो गया है, जिसमें भव्य इमारतें, विशाल मनोरंजन मैदान और आयरलैंड के सबसे बेहतरीन चर्चों में से एक है। यहाँ 9,000 से 10,000 पुजारियों को प्रशिक्षित किया गया है।

आयरलैंड के राष्ट्रपति एमोन डी वैलेरा पूर्व में शिक्षण स्टाफ से जुड़े हुए थे।

"जेराल्डिन कैसल (जिसका निर्माण मौरिस फिट्जगेराल्ड ने 1176 में शुरू किया था) और प्रोटेस्टेंट चर्च, जिसमें सुधार-पूर्व काल का टावर है, के बीच से गुजरते हुए, यह मार्ग सिल्कन थॉमस के वृक्ष (सोलहवीं शताब्दी) के किनारे से होकर गुजरता है और मूल कॉलेज का एक सुंदर दृश्य प्रस्तुत करता है। केंद्र में जॉन स्टॉयट की दो सौ साल पुरानी हवेली है, जहाँ पहले छात्रों और प्रोफेसरों ने काम किया था, और इसके पीछे 1797-99 में उनके लिए निर्मित इमारतें हैं।"

"मेनुथ के पुगिन हिस्से की एक विशेषता विशाल गलियारे हैं, और कॉलेज चैपल से शुरू होने वाला गलियारा बिशप के चित्रों और पूर्व छात्रों के समूहों की एक लंबी श्रृंखला से होते हुए पुस्तकालय और सेंट मैरी के प्रार्थना कक्ष तक जाता है।"

जूनियर हाउस की इमारतों (1832-34) में 'भूतों का कमरा' स्थित है, जो 1860 में प्रार्थना कक्ष में परिवर्तित होने के बाद से ही खौफनाक कहानियों से घिरा हुआ है। इसके दोनों ओर एक सुंदर चट्टानी उद्यान है। इसके आगे कॉलेज पार्क के ऊंचे-ऊंचे पेड़ दिखाई देते हैं, जो दूर स्थित फार्म भवनों तक फैले हुए हैं। पास ही में यू वृक्षों का एक छोटा सा मैदान कब्रिस्तान की ओर जाता है, जहां अतीत के कई महान मेनोथ व्यक्तित्व अब विश्राम कर रहे हैं, अपने आसपास की हलचल भरी जिंदगी से बेफिक्र, जबकि मेनोथ के छात्रों की एक नई पीढ़ी उनके कार्यों को आगे बढ़ाने के लिए तैयार है।

मेरी उत्सुकता बढ़ गई। अगले दिन हम कार से मेनोथ के लिए रवाना हुए, जो डबलिन से थोड़ा पश्चिम में है और एक घंटे की ड्राइव में आसानी से पहुँचा जा सकता है। हमारा ड्राइवर पहले भी हमारे साथ जा चुका था, इसलिए वह तुरंत समझ गया कि हम क्या ढूंढ रहे हैं। जब हम कॉलेज के चौड़े गेट पर पहुँचे, तो उसने गेटकीपर के लॉज के पास गाड़ी रोक दी और मुझे उससे बात करने का सुझाव दिया। दुर्भाग्य से, बारिश शुरू हो गई और बातचीत संक्षिप्त रही, लेकिन उस आदमी को वास्तव में सुनी-सुनाई बातों से ज़्यादा कुछ नहीं पता था। हमने खुद देखने का फैसला किया और पुराने फिट्ज़गेराल्ड महल के खंडहर टावर के पास से होते हुए कॉलेज परिसर में प्रवेश किया। आम पर्यटकों की तरह घूमते हुए, हम अंततः भव्य मुख्य इमारतों के पास से होते हुए उस आंगन में पहुँचे जहाँ, गेटकीपर के अनुसार, भूतिया छात्रावास स्थित था।

शाम के लगभग चार बज रहे थे, और बहुत कम छात्र नज़र आ रहे थे, शायद छुट्टियों का समय था। रेटोरिक हाउस नाम की इमारत आसानी से दिख गई, और हमने किसी से अनुमति लिए बिना ही प्रवेश कर लिया—मुख्य रूप से इसलिए क्योंकि वहाँ पूछने के लिए कोई था ही नहीं। हमने महसूस किया कि यहाँ महिलाओं का होना कुछ अजीब सा था, लेकिन यह एक कॉलेज था, कोई ट्रैपिस्ट मठ नहीं, और माताएँ कभी-कभार यहाँ आती होंगी, इसलिए मुझे लगा कि हम उस सादे से दिखने वाले छात्रावास की लोहे की सीढ़ियों से ऊपर चढ़कर कोई अपवित्र काम नहीं कर रहे हैं। जब हम दूसरी मंजिल पर पहुँचे—हमेशा की तरह मैं पहले और कैथरीन और सिबिल मेरे पीछे-पीछे, ताकि ज़रूरत पड़ने पर वे जल्दी से वापस न लौट सकें —तो आखिरकार हमें मेनोथ में एक इंसान मिला। एक युवा पादरी एक गलियारे में दूसरे पादरी से बात कर रहा था, और जब उसने मुझे देखा, तो उसने अचानक बातचीत बंद कर दी और मेरी ओर बढ़ा, उसकी जिज्ञासा जाग उठी कि मैं यहाँ क्या कर रही हूँ। जैसा कि उन्होंने बाद में मुझे समझाया, कुछ बेईमान लोग कभी-कभी अंदर आते और अलग-अलग चीजें लेकर चले जाते थे, इसलिए स्वाभाविक रूप से उन्होंने अजनबियों से सावधान रहना सीख लिया था। मैंने अपना सही परिचय देकर उनकी आशंकाओं को दूर कर दिया, लेकिन शायद मैंने अपनी पत्नी कैथरीन और सिबिल लीक का परिचय देने में लापरवाही बरती, क्योंकि भले पिता जी ने सिबिल को कैथी की माँ समझ लिया—हालांकि कैथी का सम्मान करना ज़रूरी था!

जब मैंने उनसे उनका नाम पूछा, तो वे मुस्कुराए और आयरिश पादरियों में अक्सर पाए जाने वाले हास्य के साथ बोले: "मेरा नाम जेम्स जॉयस के उपन्यासों में से एक के एक पात्र का नाम है।"

मैंने मुस्कुराते हुए कहा, "ब्लूम।"

"बिल्कुल नहीं।"

“तो फिर,” मैंने सोच-समझकर कहा, “यह फिन्नेगन ही होगा।”

“इसके लिए आपको ‘ए’ ग्रेड मिलेगा। फिन्नेगन ही सही।”

और इसी तरह मेरी दोस्ती मेयनूथ में शिक्षक, फादर थॉमस ए. फिननेगन नामक एक आकर्षक पादरी से हो गई।

मैंने सावधानीपूर्वक तंत्र-मंत्र में हमारी रुचि के बारे में बताया, लेकिन उन्हें कोई आपत्ति नहीं हुई। बल्कि इसके विपरीत, वे आगे-आगे सीढ़ियों से ऊपर ले गए और हमें उस तथाकथित भूतिया कमरे में ले गए।

जिस दीवार पर रहस्यमयी खिड़की हुआ करती थी, उसे अब तख्तों से बंद कर दिया गया था और खिड़की के सामने संत जोसेफ की एक मूर्ति रखी थी। कमरे का बाकी हिस्सा बिल्कुल खाली था, फर्श चमक रहा था; पहली नज़र में तो उसमें कुछ भी अशुभ नहीं लग रहा था।

मैंने कुछ तस्वीरें लीं और उस इलाके का वीडियो बनाया जब सिबिल कमरे और उससे सटे गलियारे में इधर-उधर देख रही थी। फादर फिननेगन मुस्कुराए। यह स्पष्ट था कि वे भूतों पर पूरी तरह विश्वास नहीं करते थे, और अगर वे मौजूद भी होते तो उनसे डरते नहीं थे। वे मेनोथ को सचमुच पसंद करते थे और मेरी ऐतिहासिक रुचि के साथ-साथ एक मानसिक रोगी होने के नाते मेरा सम्मान करते थे।

उन्होंने कहा, "आपने इस कमरे से जुड़ी परंपरा के बारे में तो सुना ही होगा, लेकिन मुझे खेद है कि मैं आपको यहां के किसी भी प्रत्यक्ष अनुभव के बारे में नहीं बता सकता।"

मैंने पूछा, "क्या आप किसी ऐसे व्यक्ति को जानते हैं जिसे इस कमरे में कोई अजीबोगरीब अनुभूति हुई हो?"

“खैर, जैसा कि आप जानते हैं, यह कमरा 1860 में बंद कर दिया गया था,” पादरी ने उत्तर दिया, “और उससे पहले इसमें सोने वाले लोग अब जीवित नहीं होंगे। वैसे भी, हाल ही में किसी ने कुछ भी रिपोर्ट नहीं किया है—वैसे भी, इस कमरे का उपयोग बहुत कम होता है।”

इस समय सिबिल को कुछ अप्रिय होने का आभास हुआ और वह जल्दी से कमरे से बाहर निकलकर गलियारे की ओर चली गई।

“इस कमरे के बारे में दो अच्छे स्रोत हैं,” फादर फिननेगन ने कहा, मानो उन्होंने मेरे मन की बात पढ़ ली हो। “डेनिस मीहान की किताब, 'विंडो ऑन मेनोथ', जो 1949 में प्रकाशित हुई थी, और इसी कहानी का थोड़ा लंबा विवरण जोसेफ ओ'कॉनर की किताब 'होस्टेज टू फॉर्च्यून' में भी मिलता है। जैसे ही मुझे ये किताबें मिलेंगी, मैं आपको इनमें से एक या दोनों भेज दूंगा।”

इसके बाद, फादर फिननेगन हमें सीढ़ियों से नीचे ले गए और हमें मेयनूथ कॉलेज का विस्तृत भ्रमण कराया, जिसमें पुस्तकालय के गलियारे, सेंट पैट्रिक का सुंदर और वास्तव में प्रभावशाली चर्च, बगीचा और अंत में संग्रहालय शामिल थे, जो लगभग बीस साल पहले ही खोला गया था।

हमने उन्हें धन्यवाद दिया और अपनी कार में वापस चले गए। फिर मैंने ड्राइवर को कॉलेज के गेट के ठीक बाहर सड़क पर एक सुनसान जगह पर गाड़ी रोकने के लिए कहा। सिबिल अभी भी उस दृश्य और ध्वनि के प्रभाव में थी जो हमने अभी-अभी देखी और सुनी थी, और मैं उसके मन की अनुभूतियों को उसी समय जानना चाहता था जब वे ताज़ा थीं।

“हम ठीक कहाँ थे?” सिबिल ने पूछा। पादरी द्वारा बताए गए भ्रमण के बावजूद, उसे उस स्थान के बारे में कुछ अस्पष्ट जानकारी थी।

मैंने जवाब दिया, "हम काउंटी किल्डारे के मेनोथ में हैं," और आगे कहा, "आप एक खास छात्रावास की तीसरी मंजिल पर एक भूतिया कमरे में गए थे।"

“यह एक अजीब जगह है, हैंस,” सिबिल ने कहा। “नीचे का हिस्सा किसी भी धार्मिक स्थल की तरह शांत है—लेकिन जब हम ऊपर गए तो मुझे भागने की तीव्र इच्छा हुई। यह डर नहीं था, फिर भी—मुझे लगा कि मुझे भागना ही होगा। मुझे एक जानवर जैसी अजीब सी अनुभूति हुई।”

“एक जानवर?” मैंने दोहराया।

“एक चार पैरों वाला जानवर। मुझे ऐसा महसूस हुआ कि कोई जानवर हमारा पीछा करते हुए उस जगह तक आ गया है जो अब एक प्रार्थना कक्ष है।”

"आपको उस कमरे में कैसा महसूस हुआ?"

"डर।"

"कमरे का कोई खास हिस्सा?"

"हां, मैं सीधे मूर्ति के पास गया।"

“जहां पहले खिड़की हुआ करती थी?”

मुझे भागने की इच्छा हुई। मुझे किसी जानवर की मौजूदगी का एहसास हुआ। इंसान की मौजूदगी का नहीं।"

"और कुछ?"

“मुझे बहुत तेज सिरदर्द होने लगा—जो आमतौर पर मुझे तब होता है जब मैं किसी त्रासदी वाली जगह पर होता हूँ। अब यह ठीक हो गया है। लेकिन उस मंजिल पर रहते हुए मुझे लगातार सिरदर्द होता रहा।”

"क्या आपको लगा कि कोई उस खिड़की से बाहर निकला?"

"हां, उस समय मैं वहां जो कुछ भी हो रहा था उसमें पूरी तरह से समाहित हो गया था और मैं खिड़की से बाहर निकल सकता था! मुझे आश्चर्य हुआ कि वहां एक दीवार थी।"

"क्या आपको ऐसा लगा कि कोई अनसुलझा मुद्दा अभी भी मौजूद है?"

“हां, मैंने किया था। लेकिन मेरे लिए यह समय में पीछे जाने जैसा था। यह किसी चीज के पीछा करने, आपको पकड़ने का डर था।”

मुझे उस भूतिया घटना का किस्सा याद आया, जो एक छात्र ने सुनाया था—वह इकलौता छात्र जो अपनी जान बचाकर भाग निकला—जिसने कमरे में "एक काली आकृति" देखी थी। बिल्कुल 'हाउंड्स ऑफ द बास्करविल्स' की याद आ गई!

क्या कोई कमरे में एक बड़ा कुत्ता लाया था और क्या वह कुत्ता वहीं मर गया था? हम निश्चित रूप से कभी नहीं जान पाएंगे। जानवरों के भूत होते हैं और नौसिखिए के लिए ऐसी कल्पना इतनी डरावनी हो सकती है कि वह खिड़की से कूद जाए। फिर, कॉलेज उस पुरानी ज़मीन पर बना है जहाँ मध्य युग में एक किला हुआ करता था, जिसमें बुर्ज, शिकारी और कुत्ते हुआ करते थे। क्या उस काल की कोई चीज़ बाद में बनी इमारत में शामिल की गई थी?

जब हम डबलिन लौटे, तो मैंने ली गई तस्वीरों को डेवलप करवाया, लेकिन उनमें कुछ भी असामान्य नहीं दिखा।

पैट्रिक बायरन के अनुसार, अगले सप्ताह फादर फिननेगन ने मुझे डेनिस मीहान द्वारा लिखित 'विंडो ऑन मेनोथ' की एक प्रति भेजी, जो कॉलेज में कभी प्रोफेसर थे और अब संयुक्त राज्य अमेरिका में एक बेनेडिक्टिन भिक्षु हैं।

तो यहाँ, "जूनियर हाउस की इमारतें" शीर्षक के अंतर्गत, फादर मीहान द्वारा मेयनूथ में स्थित भूतिया कमरे का वर्णन प्रस्तुत है।

जिज्ञासु लोगों के लिए, रेटोरिक हाउस की सबसे दिलचस्प विशेषता निश्चित रूप से भूतिया कमरा होगा। इसकी ऊपरी दोनों मंजिलें पूरी तरह से आवासीय हैं, और भूतिया कमरा, या यूं कहें कि था, ऊपरी गलियारे में कमरा नंबर 2 था। अब यह सेंट जोसेफ का प्रार्थना कक्ष है। इस कमरे के इतिहास को लेकर कई किंवदंतियां प्रचलित हैं; लेकिन दुर्भाग्य से यह सब इतने लंबे समय पहले हुआ था कि अब इसकी सटीकता की गारंटी देना संभव नहीं है। घटना चाहे जो भी रही हो, कम से कम 23 अक्टूबर, 1860 के एक ट्रस्टी के प्रस्ताव से इसकी तारीख का कुछ हद तक पता चलता है। प्रस्ताव में कहा गया था, "अध्यक्ष को रेटोरिक हाउस के ऊपरी गलियारे में स्थित कमरा नंबर 2 को सेंट जोसेफ के प्रार्थना कक्ष में परिवर्तित करने और कनिष्ठ छात्रों के प्रार्थना कक्ष में सेंट एलोयसियस के प्रार्थना कक्ष को तैयार करने के लिए अधिकृत किया जाए।"

यह कहानी, जैसा कि अब आमतौर पर भोले-भाले नए छात्रों की जानकारी के लिए बताई जाती है, एक आत्महत्या से शुरू होती है। इस कमरे में रहने वाले छात्र ने एक रात आत्महत्या कर ली। कुछ लोगों के अनुसार उसने रेज़र का इस्तेमाल किया था; लेकिन कहानी सुनाने वाले ऐसे विवरणों के बारे में ज़्यादा सावधान नहीं रहते। कहा जाता है कि अगले निवासी को भी ऐसा ही करने की तीव्र इच्छा हुई, और कुछ लोगों के अनुसार उसने ऐसा किया भी। तीसरे, या शायद दूसरे, ने इसी तरह की इच्छा से बचने के लिए, जब वह वास्तव में रेज़र का इस्तेमाल करने ही वाला था, तो खिड़की से कूदकर भाषणशाला के प्रांगण में चला गया। उसकी कुछ हड्डियाँ टूट गईं, लेकिन उसकी जान बच गई। इसके बाद कोई भी छात्र उस कमरे का इस्तेमाल करने के लिए राज़ी नहीं हुआ; लेकिन एक पादरी ने स्वेच्छा से एक रात वहाँ सोने या निगरानी करने का ज़िम्मा लिया। सुबह उसके बाल सफ़ेद हो चुके थे, हालाँकि कोई भी उसके भयानक अनुभवों को बताने की हिम्मत नहीं करता। बाद में कमरे की सामने वाली दीवार हटा दी गई और संत जोसेफ की एक छोटी वेदी स्थापित की गई।

कहानी के बुनियादी विवरणों में निस्संदेह कुछ सच्चाई निहित है, और यह मानना सुरक्षित है कि कोई बहुत ही अप्रिय घटना घटी थी। मौखिक परंपराओं से जितना अनुमान लगाया जा

सकता है, उसके अनुसार आत्महत्या (या आत्महत्याएँ) 1842-48 के बीच हुई प्रतीत होती हैं। कहानी सुनाने वालों की शैली में शामिल कुछ रोचक तथ्य अब स्मृति से लुप्त होते जा रहे हैं। उदाहरण के लिए, आधुनिक छात्र लकड़ी पर जले हुए पदचिह्न या दीवारों पर खून के धब्बों की ओर ध्यान नहीं देते।

*92

अल्मेडा का भूतिया नाविक

1965 के शुरुआती वसंत की एक रात, टेलीफोन की घंटी बजी और एक मधुर आवाज ने कहा, "मुझे लगता है कि मेरे पास आपके लिए एक मामला है, श्रीमान होल्ज़र। मैं अल्मेडा, कैलिफोर्निया से फोन कर रही हूँ।"

इससे पहले कि वह युवती भारी-भरकम टेलीफोन बिल बना लेती, मैंने उसे रोककर अपनी कहानी के मुख्य बिंदुओं को मेरे रिकॉर्ड के लिए लिख लेने को कहा। उसने वादा तो किया, लेकिन कई महीने बाद ही उसने ऐसा किया। जाहिर है, जिस रात उसे मुझे लंबी दूरी से कॉल करना पड़ा, उस रात भूत उतना अप्रिय नहीं था जितना उसने सोचा था, या शायद उसने उस अदृश्य आगंतुक के साथ जीना सीख लिया था।

यह सब चार साल पहले शुरू हुआ था जब गर्ट्रूड फ्रॉस्ट की दादी ने सैन फ्रांसिस्को खाड़ी में स्थित अल्मेडा नामक द्वीप में एक घर खरीदा था। यह द्वीप एक पुल के माध्यम से मुख्य भूमि से जुड़ा हुआ था और मुख्य रूप से छोटे-छोटे घरों से आच्छादित था—जिनमें से कई घर पास के नौसैनिक अड्डों से जुड़े लोगों के थे। यह घर लगभग 1917 में बनाया गया था।

बुजुर्ग महिला की मृत्यु के बाद, मिस फ्रॉस्ट की मां को वह घर मिल गया। रात में जब कोई घर में नहीं होता था, तब अजीबोगरीब आवाजें आती थीं, जिससे मिस फ्रॉस्ट, उनकी मां और चाची, जो उनके साथ घर में रहती थीं, कभी चैन से सो नहीं पाती थीं। यह कोई बहुत रोमांचक मामला नहीं लग रहा था और मैं सच कहूं तो थोड़ा संशय में था, क्योंकि ऐसे कई उदाहरण हैं जहां लोग सोचते हैं कि उन्हें अप्राकृतिक आवाजें सुनाई दे रही हैं, जबकि वास्तव में वे प्राकृतिक चीजों को अलौकिक मान लेते हैं। लेकिन मैं उस इलाके में जा रहा था, इसलिए मैंने सोचा कि एक बार वहां जाकर देख लूं।

मैंने ओकलैंड के चैनल 2 के समाचार संवाददाता क्लाउड मान से हमारे साथ चलने का अनुरोध किया—मेरी पत्नी कैथरीन और मेरी अच्छी दोस्त सिबिल लीक, जिन्हें इस बात का ज़रा भी अंदाज़ा नहीं था कि अल्मेडा कहाँ है या हम वहाँ जा रहे हैं। वैसे सिबिल को इससे कोई फ़र्क नहीं पड़ता था—यह महज़ एक और असाइनमेंट था और वह इसके लिए तैयार थीं। तारीख़ 1 जुलाई, 1965 थी और मौसम सुहावना और गर्म था—वास्तव में, एक बेहद शांत और सुहावना दिन था।

जैसे ही हम उस छोटे से घर के पास पहुँचे, हमने जल्दी से कैमरा उपकरण उतारे और अंदर चले गए जहाँ दो महिलाएँ पहले से ही हमारा इंतज़ार कर रही थीं। मैंने तुरंत सिबिल को एक आरामकुर्सी पर बिठाया और अपना काम शुरू किया—या यूँ कहें कि सिबिल ने अपना काम शुरू किया।

हालांकि घर द्वीप के बीचोंबीच स्थित था और उसके आसपास कहीं भी समुद्र का कोई संकेत नहीं दिखाई दे रहा था, फिर भी सिबिल ने तुरंत कहा कि उसे ऐसा महसूस हुआ कि समुद्र किसी न किसी तरह से घर से जुड़ा हुआ है; उसे घर में एक उपस्थिति का अहसास हुआ लेकिन वह उससे सीधे तौर पर जुड़ी हुई नहीं थी।

जैसे ही सिबिल गहरी समाधि की अवस्था में पहुंची, किसी ने उसके स्वर यंत्रों पर नियंत्रण कर लिया।

मैंने पूछा, “आपका नाम क्या है?”

“डोमिनिक....”

क्या आप इसी घर में रहते हैं?

“न घर...न पानी...न किला...न मीनार....”

"आप यहां पर क्या कर रहे हैं?"

“इंतजार करना होगा...टियाना....”

"टियाना का क्या मतलब है?"

“टियाना...नाव....”

“नाव कहाँ जाती है?”

"होकेइते...होकेइते...।"

यह कौन सा वर्ष है?

“1902.”

आपका पद क्या है?

“मिडशिप-मैन।” उसे उच्चारण करने में कठिनाई हो रही थी। उसकी आवाज़ में एक अजीब सी बनावट थी, जो सिबिल की सामान्य बोलने की आवाज़ से बिलकुल अलग थी, बल्कि किसी युवक की पतली आवाज़ जैसी लग रही थी।

मैंने उस रहस्यमय आगंतुक से सवाल करना जारी रखा।

"क्या आप इस नाव पर सेवा दे रहे हैं?"

“मैं इसे यहीं छोड़ देता हूँ,” उसने जवाब दिया। “मैं सब कुछ तोड़-फोड़ कर दूंगा...”

"तुम ऐसा क्यों करना चाहते हो?"

“ये सब चीजें...हटनी होंगी...क्योंकि ये अस्त-व्यस्त हैं...मैं इन्हें तोड़ दूंगी...लोग कहते हैं कि मैं पागल हूँ...मैं पागल नहीं हूँ...”

"आपकी आयु कितनी है?"

"इकतीस...."

"आपका जन्म कहां हुआ था?"

“मेरा जन्म...हैकीपे में हुआ था....”

मुझे ठीक से पता नहीं था कि उसने "हाकेइपे" कहा था या "हाकेइट", लेकिन सुनने में कुछ ऐसा ही लगा।

“कौन सा राज्य?” मैंने तो ऐसे किसी स्थान के बारे में कभी सुना ही नहीं था।

"कोई राज्य नहीं," भूत ने कुछ नाराज़गी से कहा क्योंकि मुझे बेहतर जानकारी नहीं थी।

“तो फिर वो कहाँ है?” मैंने पूछा।

“जापान में,” भूत ने मुझे बताया। मैं सोचने लगा कि कहीं उसका मतलब हाकोडेट तो नहीं है, जो एक महत्वपूर्ण बंदरगाह है। वहाँ हमेशा काफी संख्या में विदेशी लोग रहते थे, क्योंकि यह

अमेरिका और यूरोप के साथ व्यापार के प्रमुख बंदरगाहों में से एक था। इसका उच्चारण “हाक-ओडेइट” होगा, जो सिबिल के माध्यम से मैंने सुना था उससे बहुत अलग नहीं था।

“इन्हें तोड़ दो, इन्हें तोड़ दो,” भूत धमकी भरे स्वर में बुदबुदाता रहा, “इन छोटी-छोटी चीजों को... चेहरों पर फेंक दो... मुझे चेहरे पसंद नहीं... लोग....”

क्या आपको एहसास है कि समय बीत चुका है?

“समय बीतता रहता है,” आवाज ने उदास स्वर में कहा।

मैंने पूछा, "तुम यहाँ क्या कर रहे हो?"

“ये लोग यहाँ क्या कर रहे हैं?” भूत ने गुस्से से पलटकर पूछा।

उन्होंने जोर देकर कहा कि यह उनकी जमीन है। मैंने उनसे पूछा कि क्या उन्होंने इस पर कुछ बनाया है।

उन्होंने रहस्यमय लहजे में कहा, "यह टावर यहाँ जहाजों पर नज़र रखने के लिए है। मैं यहीं रहता हूँ।"

"क्या आप अमरीकी हैं?"

नहीं, मैं इतालवी हूँ।

“क्या आप व्यापारी नाविक हैं या नौसेना में काम करते हैं?”

“नेवी...तुम यहाँ से चले क्यों नहीं जाते?”

आपको यहां क्या चाहिए?

"कुछ नहीं...."

मैंने उनकी मृत्यु के बारे में बताया और इससे उनमें निर्मम क्रोध उत्पन्न हुआ।

“सब कुछ तोड़ दो....”

मैंने सोचा कि इससे पहले कि उनकी गुर्राहट पूरी तरह से समझ से परे हो जाए, मैं विषय बदल दूं।

इस बीच क्लाउड मान के कैमरे लगातार चालू थे।

क्या आपने अमेरिकी नौसेना में सेवा की है?

"हाँ।"

मुझे अपना सीरियल नंबर दीजिए!

“क्रम संख्या...एक...आठ...आठ...चार...तीन।”

आपने कहाँ भर्ती कराया था?

"हक्काइट।"

मुझे यह बात समझ में नहीं आई, इसलिए मैंने सवाल दोहराया। इस बार जवाब अलग था। शायद पहली बार में उसे समझ नहीं आया था।

“मेडा में,” उन्होंने कहा।

नाविक अलामेडा को इसी संक्षिप्त नाम से पुकारते हैं। यहाँ अभी-अभी आई सिबिल को यह कैसे पता हो सकता था? उसे नहीं पता था, और मुझे भी नहीं।

आपका कमांडिंग ऑफिसर कौन है?

ओसवाल्ड ग्रेगरी।

“कौन सा पद?”

“कप्तान।”

“आपके जहाज का नाम।”

“ट्रियाना।”

“जहाज कितना बड़ा है?”

"मुझें नहीं पता...."

मैंने उनके परिवार के बारे में पूछा। क्या उनकी पत्नी है, क्या वे स्वस्थ हैं? उनका बोलने का तरीका धीरे-धीरे बदलता गया। अंत में उन्होंने कहा:

मैं सवालों का जवाब नहीं दूंगा...

मैंने पूछा, “आपके पिता का नाम क्या है?”

“गुइसेप्पे।”

"माँ?"

“मैटिलॉन....”

“बहन या भाई?”

“चार....”

उन्होंने आगे कहा, "वे होक्काइपे में रहते हैं।"

"आप कहां स्कूल जाते थे?"

“होक्काइपे मिशन....”

उन्होंने दावा किया कि वे 1902 में इस स्थान पर आए थे और बीमार होने के कारण यहीं रह गए थे।

“मैंने अगली यात्रा का इंतज़ार किया...लेकिन वे कभी वापस नहीं आए। मुझे बहुत तेज़ सिरदर्द था। मैं यहीं लेटा हुआ था। घर नहीं, पानी।”

फिर मैंने उससे पूछा कि वह लोगों को अपनी उपस्थिति के बारे में बताने के लिए क्या कर रहा है।

“मैं किसी भी आम आदमी की तरह चल सकता हूँ,” उसने शेखी बघारी। “मैं पानी से खेलता हूँ, मैं चीजें गिराता हूँ....”

मैंने उसे समझाने की कोशिश की। उसके माता-पिता उसका इंतज़ार कर रहे थे। क्या वह उनके साथ नहीं रहना चाहता था? मुझे सीधा जवाब मिला, "नहीं।" उसे पारिवारिक मिलन में कोई दिलचस्पी नहीं थी। मैंने उसे संपत्ति के बारे में समझाने की कोशिश की। मैंने समझाया कि घर का पूरा भुगतान हो चुका है और वह बिना अनुमति के उसमें प्रवेश कर रहा है। लेकिन उसे मेरी बात की ज़रा भी परवाह नहीं थी।

मैंने उसकी ईमानदारी पर सवाल उठाया और उसे यह बात पसंद नहीं आई। इससे सब कुछ खत्म करने के उसके इरादे में डगमगाहट आ गई।

मैंने उनसे जीवन के "दूसरे पहलू" के बारे में बात की। उन्होंने मुझसे उन्हें वहां ले जाने का अनुरोध किया।

अब उसे अपनी बहनों के नाम याद आ रहे थे, मैटिल और एलिसि, या कुछ ऐसा ही मिलता-जुलता नाम।

मैंने कहा, "हम तुम्हें लेने आए हैं, डोमिनिक," और उसे "दूसरी तरफ जाने" का इशारा किया।

“तुम देर से आए हो,” उसने गुस्से से कहा।

मैंने कहा, "देर से ही सही, लेकिन अच्छा हुआ।" किसने कहा कि मुझमें भूतों जितनी हास्यबोध नहीं है?

“मैं कभी देर से नहीं आया,” उसने शिकायत की। “मैं तुम्हारे बिना भी चल सकता हूँ!”

कृतज्ञता व्यक्त करना उनकी खासियत नहीं थी।

मैंने सिबिल से अनुरोध किया कि वह अब अपने शरीर में लौट आए, लेकिन समाधि की अवस्था में ही रहे ताकि वह उस अवस्था में जो कुछ देख सकती है, उसके बारे में मेरे सवालों का जवाब दे सके।

कुछ ही देर में सिबिल की अपनी आवाज, जो पहले तो कमजोर थी, फिर से उसके होठों से सुनाई दी।

मैंने उससे वह दृश्य बताने को कहा जो उसने देखा था।

“मुझे एक छोटा, सांवला आदमी दिखाई देता है,” उसने जवाब दिया, “जो ठीक से चल नहीं पाता; वह पागल था। मुझे लगता है उसे दौरे पड़ते थे। गिर जाता था। हिंसक आदमी था।”

क्या आपको कोई घर दिखाई दे रहा है?

“नहीं, मुझे पानी और एक धूसर जहाज दिखाई दे रहा है। बड़ा जहाज, लोगों के लिए नहीं। यात्रा के लिए नहीं। नीचा जहाज।”

क्या आपको जहाज पर कोई नाम दिखाई दे रहा है?

“...और...इसे ठीक से देख नहीं पा रही हूँ।”

यह आदमी यहां क्या कर रहा है?

“उसे यहाँ दौरा पड़ा, वह गिर गया और मर गया, और किसी ने उसे यहीं छोड़ दिया। किसी ने शव को उठाया...पानी में फेंक दिया...”

सिबिल तनाव के लक्षण दिखा रही थी और मैंने बाद में थकान से बचने के लिए उसे समाधि से बाहर निकालने का फैसला किया। जैसे ही वह होश में आई, उसे पिछले एक घंटे में हुई किसी भी बात की याद नहीं थी, और उसने मिस फ्रॉस्ट की ओर मुड़कर यह जानने की कोशिश की कि आखिर यहाँ असामान्य रूप से क्या घटित हुआ था।

“हमेशा एक बेचैनी सी महसूस होती है... जिससे घबराहट होती है... खासकर रात में...”, उसने बताया, “और छोटे पटाखों जैसी आवाजें आती हैं।”

मिस फ्रॉस्ट तीस वर्ष की एक महिला हैं, जो मिलनसार और मृदुभाषी हैं, और वह सैन फ्रांसिस्को के व्यावसायिक जगत में एक जिम्मेदार पद पर हैं।

उन्होंने आगे कहा, "अगर आप इस पर ध्यान नहीं देते हैं, तो यह और भी तीव्र, और भी तेज हो जाता है।"

“नज़रअंदाज़ होना नहीं चाहता, है ना?” मैंने कहा।

"कभी-कभी रात में लिविंग रूम में कदमों की आहट सुनाई देती है।"

“जब यह खाली हो?”

"बिल्कुल।"'

"यह आवाज़ किस तरह की है?"

“जैसे मानो कालीन ही न हों...जैसे तख्तों पर चल रहे हों...किसी आदमी के पदचिह्न।”

"कितनी बार?"

“शायद तीन बार...आखिरी बार लगभग तीन महीने पहले हुआ था। हम यहाँ चार साल से रह रहे हैं, लेकिन हमने इसे यहाँ आने के लगभग छह महीने बाद ही सुना। एक बार बुफे के अंदर से ऐसी आवाज़ आई जैसे उसमें कोई मोटर लगी हो, जबकि वास्तव में वहाँ कोई मोटर नहीं है।”

"क्या इस घर में किसी और को भी असामान्य प्रकार के अनुभव हुए हैं?"

"घर के पिछले हिस्से में एक छोटे से कमरे में पेंटिंग कर रहे एक चित्रकार ने अचानक मुझसे एक गिलास पानी मांगा क्योंकि उसे अच्छा नहीं लग रहा था। शोर-शराबे के कारण।"

मैंने मिस फ्रॉस्ट की चाची की ओर रुख किया, जो चुपचाप बैठी हमारी बातचीत सुन रही थीं।

क्या तुमने इन कदमों की आहट सुनी है?

“हां,” उसने कहा। “मैंने जांच की और वहां कोई ऐसा व्यक्ति नहीं था जो ऐसा कर सकता था। यह लगभग सुबह दो बजे की बात है। कभी-कभी पांच या छह बजे भी। वे बिस्तर के चारों ओर घूमते थे। हमने लाइट जला रखी थी, लेकिन फिर भी यह जारी रहा।”

मिस फ्रॉस्ट की मदद से मैं इस क्षेत्र के इतिहास का पता लगा सका। यहाँ घर बनने से पहले, यह ज़मीन कोहेन की जागीर का हिस्सा थी। पानी घर से ज़्यादा दूर नहीं है, हालाँकि घर से उसे देखा नहीं जा सकता।

मूल रूप से अल्मेडा में भारतीय निवास करते थे और इसका अधिकांश भाग कब्रिस्तान के रूप में उपयोग किया जाता था। आज भी यहाँ समय-समय पर हड्डियाँ खोजी जाती हैं।

मिस फ्रॉस्ट से पहले, इस घर के मालिक श्री बेक्रेट थे, लेकिन श्री बेक्रेट से कहीं अधिक दिलचस्प बात यह थी कि कई साल पहले इस जगह पर एक अस्पताल हुआ करता था। पुराने अस्पताल का अब कोई निशान नहीं बचा है।

कहा जाता है कि 1941 में एक परिवार इस घर में रहता था, जिसका बेटा युद्ध के दौरान शहीद हो गया था। फरवरी 1961 में मिस फ्रॉस्ट को उनके पते पर बी. बीहम के नाम से एक रहस्यमय पत्र मिला, लेकिन वह उस व्यक्ति का पता नहीं लगा सकीं।

इनमें से कोई भी बात हमें 1902 के उस दौर में नहीं ले जाती जब डोमिनिक ने कहा था कि वह रहता था। अमेरिकी नौसेना में सेवारत एक जापानी मूल का इतालवी नाविक होना एक बहुत ही असामान्य संयोग है। क्या डोमिनिक उसका पारिवारिक उपनाम था?

मैंने नौसेना विभाग से पूछताछ करने का फैसला किया, इस उम्मीद में कि शायद उनके पास ऐसे किसी व्यक्ति के बारे में कुछ रिकॉर्ड हों, हालांकि मुझे पहले भी पता चल चुका था कि इतने पुराने नौसेना के रिकॉर्ड हमेशा पूर्ण नहीं होते हैं।

29 दिसंबर, 1966 को मुझे नौसेना संचालन प्रमुख के कार्यालय से यह उत्तर प्राप्त हुआ:

प्रिय श्री होल्ज़र:

8 दिसंबर के आपके पत्र के उत्तर में, हम इस शताब्दी के दौरान अमेरिकी नौसेना के अधिकारियों की सूचियों में डोमिनिक या ओसवाल्ड ग्रेगरी में से किसी का भी नाम नहीं ढूंढ पाए हैं। लगभग 1902 की अवधि के नौसेना रजिस्टरों में ट्रायना नामक किसी भी अमेरिकी नौसैनिक जहाज का उल्लेख नहीं है।

1900 के दशक के आरंभिक वर्षों में अल्मेडा द्वीप के बारे में हमारे पास बहुत कम जानकारी है। हालाँकि, नौसेना वायु स्टेशन के इतिहास से लिया गया संलग्न अंश शायद कुछ उपयोगी हो सकता है।

आपका,

एफ. केंट लूमिस

अमेरिकी नौसेना के कप्तान (सेवानिवृत्त)

नौसेना इतिहास के सहायक निदेशक

कैप्टन लूमिस ने अल्मेडा में स्थापित संरचनाओं का एक इतिहास संलग्न किया, जो उस क्षेत्र की (उस संरचना से पहले की) उस रहस्यमय नाविक द्वारा चित्रित तस्वीर की पुष्टि करता प्रतीत होता है।

अमेरिकी नौसेना के हवाई अड्डे, अल्मेडा की असली कहानी यह है कि यह कैसे "पानी से उभरा"। यह सैन फ्रांसिस्को खाड़ी की तलहटी से कैसे ऊपर आया; कैसे घास की जड़ों से ज़मीन से जुड़ा रहा; और कैसे संयोगवश यह अमेरिका की कुछ शुरुआती उड़ानों का गवाह बना। यही है अल्मेडा का रोमांच।

प्रथम विश्व युद्ध के अंत में नौसेना विभाग ने उस स्थान पर विचार करना शुरू किया जहाँ अब हवाई अड्डा स्थित है। उनका इरादा इस स्थान को विध्वंसक पोत अड्डे के रूप में उपयोग करने का था, लेकिन योजना को अंतिम रूप देने से पहले ही युद्ध समाप्त हो गया। इसके बाद वह भूमि गुमनामी में चली गई। वह एक बंजर भूमि थी। जब ज्वार उतर जाता था तो वह देखने में भद्दी और अप्रिय लगती थी। चूंकि साबुन उबालने वाले लोग गंध के प्रति ज्यादा संवेदनशील नहीं होते, इसलिए ट्वेंटी म्यूल टीम बोरेक्स कंपनी ने अपने पहले प्रयासों के लिए उस स्थान को चुना जो सैन फ्रांसिस्को की नौकाओं के लिए जाने वाले "मोल" नामक मार्ग के पास था।

अलामेडा का मुख्य भाग बहुत सुंदर था, जो उपजाऊ मैदानी भूमि और छायादार पेड़ों से ढका हुआ था, जिससे स्पेनिश शासन के दौरान इसका नाम पड़ा। "अलामेडा" का अर्थ है "छाया" या "छायादार गली"।

1776 में यह भूमि डॉन लुइस पेराल्टा को दी गई थी, जो सोनोरा के तबाक से आकर बसे एक बुजुर्ग व्यक्ति थे। एक सैनिक के रूप में उनका जीवन स्पेन के राजा की 40 वर्षों की सेवा और दस बच्चों के साथ व्यतीत हुआ था। यह स्पेन द्वारा उन्हें दी गई 43,000 एकड़ भूमि का एक छोटा सा हिस्सा मात्र था।

जब उन्हें लगा कि उनका समय आ गया है, तो उन्होंने अपनी ज़मीनें अपने बच्चों में बाँट दीं। हालाँकि अलामेडा प्रायद्वीप का अधिकांश भाग उपजाऊ था, लेकिन इसका पश्चिमी छोर बंजर रेत और ज्वारीय मैदानों के अलावा कुछ नहीं था।

1876 में, इंजीनियरों ने प्रायद्वीप के सिरे से एक नहर काटकर सैन लिएंड्रो खाड़ी को मुख्य खाड़ी से जोड़ा, और अल्मेडा एक द्वीप बन गया। गहरा पानी बनने की राह पर था और इस उद्देश्य को पूरा करने के लिए खुदाई शुरू कर दी गई।

अमेरिकी नौसेना के लाइब्रेरियन द्वारा ट्रियाना नाम के किसी जहाज की पहचान न कर पाने से मेरी खोजबीन रुकी नहीं। क्या सच में कभी ऐसा कोई जहाज था? कैप्टन ट्रियाना क्रिस्टोफर कोलंबस के तीन जहाजों में से एक के कमांडर थे और इसी वजह से उनके नाम पर उस भूमि में कई शहर बसे हैं जिसे उन्होंने और उनके साथियों ने खोजा था। आजकल ट्रियाना के नाम से जाने जाने वाले इन शहरों में से एक अलबामा में है और हंट्सविले शहर में ट्रियाना बुलेवार्ड भी है। यह बहुत संभव लगता है कि इतने प्रसिद्ध कप्तान का नाम कभी न कभी किसी जहाज के नाम के रूप में चुना गया हो।

इस बीच, घर पर 48 घंटों तक शांति और सुकून का माहौल बना रहा। मिस फ्रॉस्ट वर्षों में पहली बार खुश थीं।

और फिर कदमों की आहट और दूसरी आवाजें दोबारा सुनाई देने लगीं। आखिरकार, डोमिनिक जाने वाला नहीं था।

यह जुलाई 1965 की बात है। मैंने कुछ सुझाव दिए। मन ही मन दरवाजा बंद कर लो; भूत से धीरे-धीरे बार-बार कहो कि उसे जाना होगा। अब वह जाने के लिए स्वतंत्र था—इसका प्रमाण यह था कि उसके कदमों की आहट, जो पहले केवल बैठक कक्ष तक ही सीमित थी, अब पूरे घर में सुनाई देती थी।

एक साल बीत गया है और मुझे अलामेडा से कोई खबर नहीं मिली है। शायद कोई खबर न मिलना ही अच्छी खबर है और वह रहस्यमय नाविक अब भटकता नहीं है।

*93

भूत घड़ी

न्यू इंग्लैंड भूतों से भरा पड़ा है। डिक्सी-ली नाम की एक युवती, जिसका विवाह के बाद उपनाम डैनफोर्थ हो गया था, न्यू हैम्पशायर की सीमा के ठीक पार स्थित मिलफोर्ड नामक छोटे से कस्बे में रहती थी। संयोगवश उसने बोस्टन के एक रेडियो कार्यक्रम में मुझे सुना, और देखते ही देखते उसे डाक से एक पत्र मिला जिसमें उसके साथ घटी एक बेहद डरावनी घटना का जिक्र था।

1954 में, जब डिक्सी-ली सत्रह वर्ष की थीं, तो उन्होंने श्रीमती विलियम कॉलर नामक एक बुजुर्ग महिला की सहायिका के रूप में दो सप्ताह की नौकरी ली। श्रीमती कॉलर, जो उस समय बयासी वर्ष की थीं, एक कुशल कलाकार थीं और उन्होंने दुनिया भर में सुखमय जीवन व्यतीत किया था। डिक्सी-ली को सहायिका बनकर कुछ अतिरिक्त पैसे कमाने का आसान तरीका सूझा। श्रीमती कॉलर की गृहणी रात में घर चली जाती थीं, और बुजुर्ग महिला चाहती थीं कि उनके बड़े, फैले हुए घर में कम से कम तब तक कोई उनके साथ रहे जब तक कि उन्हें कोई पूर्णकालिक गृहणी न मिल जाए जो रात में भी सो सके।

कॉलर दंपति की मुलाकात फ्रांस में हुई थी, दोनों वहीं पढ़ाई कर रहे थे। हालांकि उन्होंने अपने माता-पिता की इच्छा के विरुद्ध शादी की थी, फिर भी उनका जीवन सुखमय और आनंदमय रहा। श्री विलियम कॉलर की मृत्यु के बाद सब कुछ बदल गया। वे दूसरी मंजिल पर एक बड़े से डबल कमरे में रहते थे, जिसमें दोनों तरफ एक-एक बिस्तर और दोनों के लिए अलग-अलग वॉशबेसिन थे। वे सचमुच एक-दूसरे के बेहद करीब रहते थे।

अपने पति की मृत्यु के बाद, श्रीमती कॉलर उस कमरे से बाहर चली गईं और फिर कभी उसमें नहीं सोईं। उन्होंने सब कुछ वैसा ही छोड़ दिया, जिसमें एक बड़ी सी घड़ी भी शामिल थी, जिसे श्री कॉलर के निधन के बाद फिर कभी चाबी नहीं दी गई। अंततः, 1958 में, वह अपने पति बिल के पास चली गईं। शायद उन्होंने इसके लिए खुद को तैयार कर लिया था, क्योंकि जब

कमरे में कोई और नहीं होता था, तब उन्हें अक्सर "अपने पति" से बात करते हुए सुना जाता था।

वसीयत को लेकर विवाद हुआ। कॉलर दंपति की कोई संतान नहीं थी, और घर उनकी भतीजी को विरासत में मिला।

लेकिन चलिए वापस डिक्सी-ली और 1954 की बात पर आते हैं। वह युवती श्रीमती कॉलर के भव्य सफेद घर में रहने आई थी, जो न्यू इप्सविच नामक इलाके में था, और उसे दूसरी मंजिल पर एक कमरा दिया गया था, जो श्रीमान और श्रीमती कॉलर के बड़े शयनकक्ष के बगल में था। घर के चारों ओर रखे महंगे प्राचीन फर्नीचर को निहारने का उसे मुश्किल से ही समय मिलता था कि रात को सोने का समय हो जाता था।

श्रीमती डिक्सी-ली डैनफोर्थ मुझसे मिलने बोस्टन आई थीं, और मैंने उनसे उस समय हुई घटना के बारे में पूछताछ की।

“मैं सोने चली गई,” उसने कहा, “और सुबह तड़के मैं कदमों की हल्की आहट और घड़ी की टिक-टिक से जाग उठी। दोनों की आवाज़ धीरे-धीरे तेज़ होती गई—इतनी तेज़ कि मानो मेरे दिमाग पर चोट कर रही हो।”

पहले तो उसे लगा कि वह सपना देख रही है, लेकिन अपना हाथ काटते हुए उसे एहसास हुआ कि वह पूरी तरह जाग चुकी है। यह जानकर उसके माथे पर पसीना आ गया कि श्रीमती कॉलर एक अपाहिज हैं जो चल नहीं सकतीं। इतना ही नहीं, बड़ी घड़ी कई सालों से खराब पड़ी थी। अचानक, जितनी अचानक वह आई थी, उतनी ही अचानक वह बंद भी हो गई। डिक्सी-ली कुछ देर तक दहशत में लेटी रही, फिर उसने बत्ती जलाई। उसके बेडरूम का दरवाजा मजबूती से बंद था, ठीक वैसे ही जैसे उसने सोने से पहले छोड़ा था। उसने उस दरवाजे को भी देखा जो कभी कॉलर परिवार के बड़े बेडरूम की ओर जाता था। वह भी कसकर बंद था। वह नीचे की मंजिल पर जाने वाली सीढ़ियों के संकरे चबूतरे पर गई। यह चबूतरे के निचले हिस्से से एक हॉल के दरवाजे से अलग था। वह भी बंद था। वह वापस लौटी और अचानक उसे एक रस्सी और एक पुली दिखाई दी। उसने उसे खींचा और एक और दरवाजा दिखाई दिया।

“मैंने धड़कते दिल से उसे खोला,” डिक्सी-ली ने कहा, “और यह देखकर राहत मिली कि उसके पीछे एक सुंदर, रोशनीदार शयनकक्ष था। उसमें आधुनिक फर्नीचर था, और मुझे वह घर के बाकी हिस्सों की तुलना में कहीं अधिक खुशनुमा और शांत लगा। कमरा खाली था।”

मैंने सोचा, “तब तुमने क्या किया?”

“सबसे पहले मैंने अपने कमरे में लगी बड़ी घड़ी देखी। वो चल नहीं रही थी। सालों से जैसे बंद पड़ी थी, वैसे ही बंद पड़ी थी। मैंने घर में दूसरी घड़ियाँ ढूँढीं। अकेली घड़ी जो चल रही थी, वो नीचे श्रीमती कॉलर के कमरे में थी, और उस एक टिक-टिक की आवाज़ को तीन बंद दरवाजों और भारी लकड़ी के फर्श के पार दूसरी मंज़िल तक सुनना तो मानो असाधारण श्रवण शक्ति का होना ही चाहिए था!”

मैंने तुरंत इस बात से सहमति जताई कि ऐसा होने की संभावना बहुत कम है, और मुझे आश्चर्य हुआ कि क्या उसने उस रात के अपने भयावह अनुभव के बारे में किसी को बताया था।

“मैंने दिन में काम करने वाली नौकरानी को बताया, जिससे मेरी अच्छी दोस्ती थी, और वह हंस पड़ी। लेकिन मैंने तब तक एक पल भी रुकने से इनकार कर दिया जब तक कोई और मेरे साथ न रहे। वह और उसकी छोटी बेटी मेरे साथ ऊपर वाले कमरे में रहने लगीं और पूरे दो हफ्ते तक रहीं। उनके साथ रहने के दौरान मैंने फिर कभी कदमों की आहट या घड़ी की टिक-टिक नहीं सुनी। लेकिन मेरे जाने के बाद, नौकरानियां आती-जाती रहीं। न्यू इप्सविच के उस बड़े सफेद घर में कोई भी ज्यादा देर तक नहीं रुकता था। शायद उन्होंने भी वे अजीब आवाजें सुनी होंगी।”

मैंने सिर हिलाया और श्रीमती कॉलर के बारे में पूछा। क्या वह किसी तरह बिस्तर से उठ पाई होंगी?

“बिल्कुल नहीं,” डिक्सी-ली ने जवाब दिया। “वह पूरी तरह से बीमार थीं। मैंने सुबह उन्हें देखा था। वह बिस्तर से उठी ही नहीं थीं। उठ ही नहीं सकती थीं। इसके अलावा, जो कदमों की आवाज़ मैंने सुनी, वह किसी कमज़ोर बूढ़ी औरत की नहीं थी। वह एक आदमी के भारी कदमों की आवाज़ थी। लेकिन मैंने श्रीमती कॉलर को अपने अनुभव के बारे में नहीं बताया। उन्हें इतना डराना क्यों?”

“बिल्कुल,” मैंने सहमति जताई और अब हम डिक्सी-ली के बारे में बात करने लगे। क्या वह किसी हद तक मानसिक शक्तियों से ग्रस्त थी?

डिक्सी-ली एक बेहद अनोखे परिवार से थी। उसकी परदादी को खाना बनाना बखूबी आता था। उसके दादाजी अपनी बहन का भूत देखते थे, और डिक्सी-ली जब भी अपने दादाजी के घर जाती थी, तो उसे उनकी मौजूदगी का एहसास होता था, और उसे आने वाले खतरे के कई पूर्वाभास होते थे।

कम से कम एक बार उसे लगा कि उसे किसी यात्रा पर नहीं जाना चाहिए, और उसने कार रोकने पर ज़ोर दिया। जाँच करने पर उसे पहिए क्षतिग्रस्त मिले। अगर उसने चेतावनी पर ध्यान न दिया होता तो उसकी जान भी जा सकती थी!

हम अलग हो गए। श्रीमती डैनफोर्थ अपने कुछ हद तक संशयवादी पति के पास मिलफोर्ड लौट गईं, और मैं अगली ही फ्लाइट से न्यूयॉर्क वापस आ गया।

लेकिन न्यू इप्सविच का वह भूतिया घर मेरे दिमाग से कभी नहीं निकला। 1963 में हैलोवीन के आसपास मुझे न्यू इंग्लैंड वापस लौटना था, इसलिए मैंने श्रीमती डैनफोर्थ के साथ न्यू हैम्पशायर सीमावर्ती इलाके की एक छोटी सी यात्रा पर जाने का फैसला किया। उनकी एक सहेली, उनके बच्चे, बोस्टन में पढ़ने वाली हमारी एक दोस्त कैरोल बोमन, मेरी पत्नी और मैं उस गर्म पतझड़ के दिन न्यू इप्सविच के लिए रवाना हुए। हमें वहाँ जाने की उम्मीद नहीं थी, क्योंकि मुझे घर के वर्तमान मालिक का नाम नहीं पता था। लेकिन श्रीमती डैनफोर्थ ने हमारे आने की सूचना पहले ही भेज दी थी। पता चला कि सूचना मिली ही नहीं थी, और हम वास्तव में भाग्यशाली थे कि हमें घर में कोई मिला, और उससे भी ज्यादा भाग्यशाली थे कि घर की मालकिन, जिन्हें हम श्रीमती एफ कहेंगे, ने हमारा इतना गर्मजोशी से स्वागत किया।

श्रीमती जेनेट एफ. एक सुसंस्कृत और सुशिक्षित महिला थीं, जिनके पति मनोचिकित्सक थे और कभी परा मनोविज्ञान में भी रुचि रखते थे। उन्होंने मुझसे अनुरोध किया कि मैं यहाँ उनका पूरा नाम न लिखूँ। हमें आने की एक अजीब सी "आभास" के कारण उन्होंने हमारा हार्दिक स्वागत किया। मुझे यह सुनकर आश्चर्य नहीं हुआ—इस पेशे में अब मुझे किसी बात पर आश्चर्य नहीं होता।

जब हम उनसे मिलने गए, तब एफ परिवार को वह घर लिए हुए केवल एक साल ही हुआ था। उनका इरादा घर खरीदने का नहीं था, हालांकि वे न्यू इंग्लैंड में घर की तलाश में थे। लेकिन कार से गुजरते हुए वे उस घर के पास से गुजरे और उन्हें वह पसंद आ गया... या यूं कहें कि किसी तरह उन्हें वह घर खरीदने के लिए मजबूर होना पड़ा। उन्हें पता चला कि वह घर 1789 में बना था। घर में रहने के बाद उन्हें सिर्फ इतना ही नहीं पता चला।

श्रीमती एफ ने कहा, “मुझे हमेशा से यह एहसास होता था कि हमें यहाँ रहने की अनुमति तो थी...लेकिन कभी भी पूरी तरह से अकेले रहने की नहीं। उदाहरण के लिए, श्रीमती कॉलर का शयनकक्ष। मुझे हमेशा से यह महसूस होता था कि वहाँ फर्श के नीचे कुछ दबा हुआ है। मेरी भाभी ऊपर सोती थीं। अगली सुबह उन्होंने मुझे बताया कि उन्हें ‘कुछ आवाजें सुनाई दे रही थीं’। हमारे यहाँ आने के तुरंत बाद, मैंने ऊपर कदमों की आहट सुनी।”

"तुम भी?" डिक्सी-ली ने आश्चर्य से कहा, और मेरी तरफ विजयी भाव से तिरछी नज़र डाली, मानो मैंने उसकी कहानी पर संदेह किया हो।

“पिछली सर्दियों में एक दिन शाम ढलते समय, मैंने एक औरत की चीख सुनी। हम दोनों ने ही सुनी थी, लेकिन हमने सोचा—या यूँ कहें कि सोचना अच्छा लगता था—कि यह एक जंगली बिल्ली की चीख थी। कुछ देर बाद, हमने फिर वही आवाज़ सुनी, लेकिन अब वह किसी बच्चे के रोने जैसी लग रही थी। हमने उसे कई बार सुना और उससे हमें बहुत डर लगा।”

एक अन्य घटना में, घर में पाँच लोग मौजूद थे जब उन्होंने चीख सुनी, जिसके बाद गुर्राहट की आवाज़ आई। वे एक जंगली बिल्ली की तलाश में बाहर गए... लेकिन ताज़ी बर्फ में न तो जानवर का और न ही इंसान का कोई निशान मिला। तहखाने में भी तरह-तरह की आवाज़ें आ रही थीं।

श्रीमती एफ. ने आगे कहा, “इस बच्चे के रोने में कुछ अजीब बात है। जब हम यहाँ रहने आए, तो एक पड़ोसी हमसे मिलने आया और जब उसने देखा कि हमारे घर में एक बच्चा है, तो उसने कहा, ‘आपने कॉलर परिवार में फिर से रौनक ला दी है।’”

डिक्सी-ली ने घुसपैठ की।

मुझे याद आ रहा है कि बच्चे के बारे में कुछ बात हुई थी। मेरा मतलब है कि उनका एक बच्चा था।

“और वह मर गया?” मैंने पूछा।

“मुझे नहीं पता,” श्रीमती एफ ने कहा। “लेकिन डायरियाँ थीं—वे लगभग खो गई थीं, लेकिन बिल कॉलर के सबसे अच्छे दोस्तों में से एक, आर्ची ईटन ने उन्हें बचा लिया। ये रही वो डायरियाँ।”

श्रीमती एफ. ने हमें वे अद्भुत पुस्तकें दिखाईं, जो सभी हस्तलिखित थीं। सरसरी तौर पर देखने पर भी मुझे उस बच्चे का रहस्य नहीं पता चला।

तहखाने में एक खोखला इलाका है। हम वहां का जायजा लेने नीचे गए, और अचानक डिक्सी-ली बहुत बेचैन हो गई और नीचे हमारे साथ आने से मना कर दिया, जबकि कुछ ही पल पहले वह रोमांच की साक्षात मूर्ति थी।

हम भूतल पर वापस आए और कुछ कॉफी पी।

मैंने एक माध्यम को साथ लेकर लौटने का फैसला किया, और तहखाने में चिमनी के पास, उस कमरे के नीचे एक प्रेतात्माओं से संपर्क करने का सत्र आयोजित करने का निर्णय लिया, जहाँ श्रीमती एफ. को लगता था कि फर्श की लकड़ियों में कोई रहस्य छिपा है।

लेकिन किसी न किसी तरह हमारा यह प्रयास विफल हो गया।

दिसंबर 1963 में हमें बताया गया कि हमारी यात्रा स्थगित करनी पड़ेगी, और श्रीमती एफ ने हमसे सर्दियों में बाद में आने का अनुरोध किया। घर में बहुत सारे जीवित रिश्तेदार होने के कारण मृतकों की आवाज सुनना मुश्किल हो रहा था।

“कल कुछ ऐसा हुआ जो आपको दिलचस्प लगेगा। मेरी नौकरानी बहुत समझदार और भरोसेमंद महिला है। उसने घर के बारे में कभी कुछ अजीब नहीं बताया। कल मैं उसे घर बेचने की अपनी योजनाओं के बारे में बता रही थी। जब मैं बोल रही थी, वह मेरे बगल वाले कमरे में देख रही थी—मैं रसोई में खड़ी थी। वह भोजन कक्ष में देख रही थी, तभी उसका चेहरा पीला पड़ गया और उसने मेरी बात काट दी। उसने एक छोटी, बूढ़ी औरत को लंबी ग्रे पोशाक पहने भोजन कक्ष से गुजरते देखा था। अब मैंने उससे पूछा कि क्या उसने पहले कभी कुछ देखा है। उसने माना कि उसने कई बार आकृतियाँ देखी हैं, लेकिन उपहास का डर था। हैरानी की बात यह है कि इन अनुभवों के बावजूद वह घर खरीदना चाहती है। वह इसे

'निगरानी करने वाला घर' कहती है, क्योंकि बच्चों की देखभाल करते समय, यहाँ तक कि जब वे बगीचे में होते हैं, तब भी उसे हमेशा लगता है कि कोई उसे देख रहा है।"

फरवरी 1964 में, हमने घर देखने के लिए एक नई तारीख तय करने की कोशिश की। मेरे पत्रों का कोई जवाब नहीं मिला। क्या घर का मालिकाना हक फिर से बदल गया था?

लेकिन इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि वास्तव में वहां कौन रहता था। ऐसा लगता था कि असली मालिक अभी भी श्रीमती कॉलर ही थीं।

*94

गे स्ट्रीट का भूत

फ्रैंक पेरिस और टी. ई. लुईस कठपुतली कलाकार थे। बच्चे ग्रीनविच विलेज में उनके पुराने घर के तहखाने में बने छोटे से रंगमंच को देखने आते थे, जिसकी छत ऊंची थी। ग्रीनविच विलेज न्यूयॉर्क का वह पुराना इलाका है जो 1700 के दशक से अस्तित्व में है। 12 गे स्ट्रीट पर स्थित यह घर एक आम पुराना छोटा सा टाउनहाउस था, जैसा कि न्यूयॉर्क के लोग 1800 के आसपास बनाते थे, जब "विलेज" का मतलब शहर के सुदूर ऊपरी हिस्से से होता था।

1924 में, घर में एक दूसरा हिस्सा जोड़ा गया, जिसने घर के पीछे स्थित बगीचे को ढक लिया। इस वास्तुशिल्पीय बदलाव से एक प्रकार का डुप्लेक्स बन गया, जिसमें एक अपार्टमेंट के ऊपर दूसरा अपार्टमेंट था और पीछे की ओर किनारों पर छोटे कमरे थे।

शुरुआती दिनों में इस मकान के मालिकाना हक के बारे में ज़्यादा जानकारी नहीं है। एक समय में, संभवतः 1930 के दशक से पहले, मकान नंबर 12 का मालिक एक मूर्तिकार था। ज़ाहिर है, उसे अवैध शराब का शौक था, क्योंकि उसने मकान के नए हिस्से के भूतल में एक गुप्त दरवाज़ा बनवाया था, शायद अपने छिपे हुए शराब के कैबिनेट के ऊपर। उससे पहले, मेयर जिमी वॉकर इस मकान के मालिक थे और उन्होंने इसका अच्छा इस्तेमाल किया, हालाँकि समझदारी से नहीं। कहा जाता है कि उनके कई प्रेम संबंधों में से एक यहाँ रहने वाली किरायेदार भी थी। कुछ अजीब संयोग से, उसी समय के आसपास, मकान के रिकॉर्ड अभिलेखों के रिकॉर्ड हॉल से भूत की तरह गायब हो गए।

बाद में, रियल एस्टेट ब्रोकर मैरी एलेन स्ट्रुनस्की उस घर में रहने लगीं। 1956 में, उन्होंने इसे पेरिस और लुईस की कठपुतली जोड़ी को बेच दिया, जो तब से वहीं रह रहे थे, ऊपरी मंजिल के अपार्टमेंट में रहते थे और निचले हिस्से को अपने छोटे थिएटर के लिए वर्क रूम और स्टूडियो के रूप में इस्तेमाल करते थे।

वैसे, इनमें से किसी भी बात की जानकारी मुझे तब तक नहीं थी जब तक कि मैंने उस शाम अपने माध्यम, बेरी रिट्टर के साथ उस घर का दौरा नहीं किया था।

यह सब तब शुरू हुआ जब न्यूयॉर्क वर्ल्ड-टेलीग्राम की एक रिपोर्टर, सिंडी ह्यूजेस, मेरा इंटरव्यू लेने आईं और उन्होंने casually इशारा किया कि उन्हें एक भूतिया घर के बारे में पता है। देखते ही देखते, उन्होंने मुझे उस घर तक ले जाने का वादा कर दिया। मई 1963 की एक बेहद गर्म रात को, मैं मिस ह्यूजेस के पीछे-पीछे गे स्ट्रीट तक गया। बेरी रिट्टर को इस मामले के बारे में ज़रा भी जानकारी नहीं थी; उन्हें तो उस जगह का पता भी नहीं था जहाँ हम जा रहे थे।

फ्रैंक पेरिस ने हमारा गर्मजोशी से स्वागत किया और हमें सीढ़ियों से ऊपर वाले कमरे में ले गए। भव्य ढंग से सजाए गए विशाल बैठक कक्ष को देखकर हम आश्चर्यचकित रह गए। कमरे में प्राच्य शैली की मूर्तियाँ, भारी पर्दे, चित्रकारी, प्रतिमाएँ और प्राचीन वस्तुएँ सजी हुई थीं।

दो आरामदायक कुर्सियों पर हमें मालिकों के दो मित्र बैठे मिले: तीस वर्ष की आयु का एक गंभीर दिखने वाला व्यक्ति, रिचर्ड एक्स., जिसके बारे में मुझे बाद में पता चला कि वह पेशे से संपादक था, और एलिस मे हॉल, एक आकर्षक महिला जिसकी उम्र का पता नहीं चल सका।

मैं बेरी को बातचीत से दूर ले जाने में कामयाब रहा, ताकि मैं इन लोगों से बिना उसे हमारी बातचीत का अंदाजा लगे सवाल कर सकूं।

मैंने फ्रैंक पेरिस से पूछा, "घर के भूतिया होने की ये अफवाह क्या है?"

उन्होंने गंभीरता से सिर हिलाया।

“मैं नीचे वाले कमरे में वार्निश का काम कर रहा था। रात के करीब 3 बजे थे। अचानक मुझे वायलेट की तेज़ खुशबू आने लगी। मेरे काले स्पैनियल कुत्ते को भी वह खुशबू महसूस हुई, क्योंकि वह अजीब तरह से सूंघने लगा। लेकिन मेरे साथी टेड, जो उसी कमरे में मेरे साथ था,

उसे वह अजीब सी गंध बिल्कुल भी नहीं आई। लेकिन बात यहीं खत्म नहीं होती। लोग रात में बार-बार सीढ़ियों से ऊपर-नीचे आते-जाते रहते हैं।"

"तुम्हारा मतलब वॉल्ट्ज़ से क्या है?"

"मेरा मतलब है कि वे ऊपर-नीचे, ऊपर-नीचे जाते रहते हैं, मानो उनका यहाँ कोई काम हो," फ्रैंक ने समझाया, और मैंने सोचा, शायद उनका काम हो, शायद हो।

"एक सप्ताहांत आगंतुक को भी यहाँ एक बहुत ही अजीब अनुभव हुआ," फ्रैंक पेरिस ने आगे बताया। "ज़ाहिर है, उसे हमारे भूतिया होने की ख्याति के बारे में कुछ भी पता नहीं था। हम एक छोटी यात्रा पर गए हुए थे, और जब हम वापस आए, तो उसने हमारा स्वागत करते हुए पूछा—'अरे, ये सब लोग कौन हैं जो सीढ़ियों से ऊपर-नीचे जा रहे हैं?' उसे लगा था कि बगल वाला घर किसी तरह हमारे घर से जुड़ा हुआ है, और जो आवाज़ें उसने सुनीं वे बगल वाले घर के लोगों की थीं। लेकिन ज़ाहिर है, ऐसा कोई संबंध नहीं है।"

मैंने पूछा, "क्या आपने कभी इन रहस्यमय कदमों की जांच की?"

"कई बार," फ्रैंक और टेड ने एक साथ सिर हिलाया, "लेकिन वहां कभी कोई नहीं होता था - मतलब, कोई जीता-जागता इंसान नहीं।"

मैंने उन्हें धन्यवाद दिया और मन ही मन आश्चर्य व्यक्त किया कि क्या वे वास्तव में मानसिक शक्तियों से ग्रसित नहीं थे, क्योंकि उन्होंने जिन चीजों का अनुभव किया था, उन्हें केवल मानसिक घटना ही कहा जा सकता है।

फ्रैंक पेरिस हिचकिचाया, फिर उसने स्वीकार किया कि वह दोनों को कुछ हद तक सही मानता है।

"हमारे पास एक छोटा कुत्ता था जिसे एक दिन हमें अलविदा कहना पड़ा। हम उस कुत्ते से बहुत प्यार करते थे, लेकिन यह एक मजबूरी थी। कुत्ते की मौत के एक साल से भी ज़्यादा समय तक हम दोनों को ऐसा महसूस होता रहा जैसे वह हमारे पैर में गुदगुदी कर रहा हो—यह उसकी ज़िंदगी भर की आदत थी। ऐसा हम दोनों के साथ कई बार हुआ।"

मैं चलकर उस जगह गया जहाँ मिस हॉल, भूरे बालों वाली छोटी महिला बैठी थीं।

“हाँ, यहाँ भूत ज़रूर है,” उसने बताया। “यह फ़रवरी 1963 की बात है, और मैं उस समय घर में ही थी, क्योंकि हम लड़के अच्छे दोस्त हैं। मैं यहीं इस जगह पर आराम से बैठी थी और यूँ ही उस प्रवेश द्वार की ओर देख रही थी जिससे आप अभी आए हैं—वही द्वार जो दालान और सीढ़ियों की ओर जाता है। वहाँ एक आदमी था, शाम के कपड़े और एक इनवरनेस केप पहने हुए—मैंने उसे साफ़-साफ़ देखा। उसके बाल काले थे। शाम का समय था, और बाहर अभी भी थोड़ी रोशनी थी।”

"आपने क्या किया?"

"मैंने फ्रैंक पेरिस को उस अजनबी के बारे में बताने के लिए अपना सिर घुमाया, और उसी क्षण वह धुएं के गुबार की तरह गायब हो गया।"

पेरिस में घुसपैठ हुई।

“मैंने उससे इस बारे में पूछा, क्योंकि मुझे इस पर यकीन नहीं था। लेकिन एक हफ्ते बाद, ठीक भोर के समय, मैंने खुद उस भूत को देखा, बिल्कुल वैसे ही जैसे ऐलिस ने उसका वर्णन किया था—शाम के कपड़े, एक लबादा, टोपी पहने हुए, और उसका चेहरा गलियारे की छाया में थोड़ा छिपा हुआ था। ऐलिस और मैं दोनों को यकीन है कि वह एक जवान आदमी था, और उसकी आँखें चमक रही थीं। इतना ही नहीं, हमारे कुत्ते ने भी उस अजनबी को देखा। वह भूत के पास गया, दोस्ताना अंदाज में, मानो उसका अभिवादन कर रहा हो।”

ये थे मामले के तथ्य। शाम के कपड़ों में एक भूत, एक पुराना घर जहाँ न जाने कभी क्या-क्या हुआ होगा, और कुछ मानसिक शक्तियों वाले लोग।

गे स्ट्रीट पर भूत मालिक और दिवंगत कठपुतली कलाकार फ्रैंक पेरिस के सामने प्रकट होता है।

मैं बेट्टी रिट्टर के पास वापस गया और उनसे घर में घूमते हुए मानसिक संवेदनाएं एकत्र करने के लिए कहा।

“यहाँ एक अपराध हुआ था,” माध्यम ने कहा और ऊपर दो लोगों के बीच हुए भयंकर झगड़े का वर्णन किया। उसने एक जुआघर, अफीम पीने वालों और एक ऐसी भाषा का वर्णन किया जिसे वह समझ नहीं पा रही थी। उसने बताया कि उस आदमी का नाम मिंग था। मिंग एक बहुत ही आम चीनी शब्द है जिसका अर्थ, मेरा मानना है, सूर्य होता है।

बेट्टी ने फ्रैंक पेरिस को यह भी बताया कि जॉन नाम का उनका कोई करीबी गुजर गया है और उसकी दाहिनी आंख में कुछ खराबी है, जिसे पेरिस ने सही माना। उसने टेड लुईस को बताया कि बर्नार्ड एल. नाम का एक व्यक्ति उसके आसपास है, हालांकि उसे यह नहीं पता था कि लुईस के पिता का नाम बर्नहैम लुईस था। उसने रिचर्ड एक्स. को बताया कि वह किताबों का काम करता है, और मुझे यह बात séance के बाद ही पता चली कि वह पेशे से संपादक था। मुझे चीनी लोगों और अफीम के अड्डे के बारे में तो नहीं पता, लेकिन ये संभावनाएं उस इलाके

में संभव हैं जो कभी शहर की चकाचौंध से इतना दूर था, जैसा कि कभी विलेज हुआ करता था।

हम नीचे गए और लगभग घोर अंधेरे में एक घेरा बनाकर बैठ गए। बेट्टी समाधि जैसी अवस्था में चली गई, उसकी गर्दन अचानक पीछे की ओर झुक गई, मानो उस पर किसी ऐसी महिला का साया हो जिसकी गर्दन में चोट लगी हो।

“एमिल,” उसने बुदबुदाते हुए कहा और बताया कि उस महिला का सिर धड़ से अलग कर दिया गया था और उसकी हड्डियाँ अभी भी इधर-उधर बिखरी पड़ी थीं। फिर वह समाधि से बाहर आई और हम सीढ़ियों से वापस घर के सबसे पुराने हिस्से में चले गए। अभी भी दिव्य दृष्टि से “देखते” हुए, बेट्टी रिट्टर ने फिर से बुदबुदाते हुए “एमिल” कहा और बताया कि उसने सरकारी मुहर लगे दस्तावेज़ देखे हैं। उसे यह भी महसूस हुआ कि यहाँ मैरी एलेन नाम की कोई महिला रहती थी और उससे पहले विल्किंस या विल्किंसन नाम का कोई “जाने-माने सरकारी अधिकारी” भी यहाँ रहता था।

दिवंगत माध्यम बेट्टी रिट्टर बेचैन आत्मा से संपर्क करने का प्रयास कर रही थीं।

बेट्टी को बेशक रियल एस्टेट ब्रोकर मैरी एलेन स्ट्रुनस्की या न्यूयॉर्क के पूर्व मेयर जिमी वॉकर के बारे में कुछ भी पता नहीं था, जो इतने लंबे समय से इस घर में रह रहे थे।

अब हमें उन हड्डियों को ढूंढना था जिनके बारे में बेट्टी ने बात की थी। हम घर के निचले हिस्से में लौट आए, लेकिन बेट्टी आगे जाने से मना कर रही थी। उस त्रासदी का उस पर इतना गहरा असर था कि उसने हमें रुकने के लिए कहा।

गे स्ट्रीट का भूत

इस तरह, गे स्ट्रीट के भूत को, चाहे वह कोई भी हो, हड्डियों को ठीक से व्यवस्थित किए जाने तक थोड़ा और इंतजार करना पड़ा। यह बुरा नहीं था, यह देखते हुए कि फ्रैंक पेरिस और टेड लुईस गे स्ट्रीट नंबर 12 के उस अंधेरे तहखाने के थिएटर में अक्सर एक बढ़िया कठपुतली शो पेश करते थे।

*95

जहाज चांडलर का भूत

भूत-प्रेत खोजने वाले विशेषज्ञों के बीच यह सर्वविदित तथ्य है कि घर की संरचना में बदलाव के गंभीर परिणाम हो सकते हैं। एक दीवार हटा दें, तो भूत पागल हो जाएगा। मैंने अपनी पुस्तक 'घोस्ट्स आई हैव मेट' में लेटन बज़र्ड भूत के मामले में इसे सिद्ध किया है। न्यूयॉर्क के 51 वेस्ट टेन्थ स्ट्रीट स्थित स्टूडियो भवन जैसी इमारत को गिराकर उसकी जगह आधुनिक

अपार्टमेंट बना दें, तो भूत का नामोनिशान नहीं रहेगा। बस बहुत सारे जिज्ञासु किरायेदार होंगे। यदि भूत बदलावों का पता चलने से पहले ही घर के अंदर है, तो वह उन दीवारों और दरवाजों से टकरा सकता है जो पहले वहां नहीं थे—यानी चीजें उसके याद किए गए स्वरूप से बिल्कुल अलग होंगी।

लेकिन अगर आप किसी पूरे घर को उसके मूल स्थान, तट से कुछ गज दूर ले जाते हैं, तो आप मुसीबत को न्योता दे रहे हैं। बड़ी मुसीबत को। और यही बड़ी मुसीबत मैसाचुसेट्स के कोहासेट स्थित ऐतिहासिक संस्था को तब झेलनी पड़ी जब उन्होंने कोहासेट में स्थित पुराने जहाज़ों के गोदाम को स्थानांतरित किया। अपने अच्छे दोस्त बॉब कैनेडी (WBZ, बोस्टन) के साथ, मैं 1964 की शरद ऋतु की एक सर्द शाम को बोस्टन के दक्षिण में स्थित उस अनोखे पुराने कस्बे के लिए निकल पड़ा।

पोस्ट रोड के एक कोने पर बनी लकड़ी की इमारत पर पहुँचते ही, जो देखने में समुद्री जहाज़ों जैसी लग रही थी और जिसकी दो मंज़िलें तूफ़ान का सामना करने के लिए मज़बूती से टिकी हुई थीं, हमने पाया कि वहाँ पहले से ही कई लोग मौजूद थे। उनमें श्रीमती ई. स्टोडार्ड मार्श भी थीं, जो संग्रहालय की उत्साही क्यूरेटर थीं (जो बाद में शिप चांडलरी बन गया था), और उनके सहयोगी, दुबले-पतले और शांत स्वभाव के रॉबर्ट फ्रेज़र भी थे। बाकी लोग उनके दोस्त और पड़ोसी थे, जिन्होंने एक पैरासाइकोलॉजिस्ट के आने की खबर सुनी थी और वे कुछ भी चूकना नहीं चाहते थे। हम इमारत में दाखिल हुए और नीचे के हिस्से में घूमकर समुद्री सामानों के प्रदर्शन को निहारने लगे, जिनमें मछली पकड़ने के उपकरण और वालरस के दांतों से बनी नक्काशी से लेकर भारी लंगर, होइस्ट और पतवार तक, जहाज़ों के सामान बेचने वाले के व्यवसाय के सभी उपकरण और सामान शामिल थे।

अठारहवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में सैमुअल बेट्स द्वारा निर्मित यह इमारत बेट्स परिवार की संपत्ति थी; विशेष रूप से जॉन बेट्स की, जो इस स्थान के दूसरे मालिक थे और जिनकी मृत्यु हमारी यात्रा से अठहत्तर वर्ष पहले हो गई थी। जॉन बेट्स स्थानीय स्तर पर काफी लोकप्रिय थे और एक शान-शौकत वाले सज्जन के रूप में उन्होंने इलाके में अपनी पहचान बनाई थी। वे इस भूमिका को बखूबी निभा सकते थे, क्योंकि उनके पास चौबीस जहाजों का एक मछली पकड़ने का बेड़ा था, और उन पुराने दिनों में जब न्यू इंग्लैंड तट मछली पकड़ने और

जहाजरानी के प्रमुख बंदरगाहों से भरा हुआ था, तब उनका व्यवसाय खूब फलता-फूलता था। महिलाओं के कपड़ों से भरी एक रहस्यमयी अलमारी के बगल में उनकी दैनिक पकड़ी गई मछलियों का हस्तलिखित रिकॉर्ड देखा जा सकता है। श्री बेट्स ने एक परिपूर्ण जीवन जिया।

बोस्टन ट्रैवलर की रिपोर्टर डोरोथी डेमन के आने के बाद, हमने क्यूरेटर से इमारत में घटित होने वाली रहस्यमय घटनाओं के बारे में पूछताछ शुरू कर दी।

श्रीमती मार्श ने बात शुरू करते हुए कहा, "यह इमारत पहले कोहासेट कोव में समुद्र तट पर स्थित थी और इसका अपना एक घाट था, और 1957 में हमने इसे इसके वर्तमान स्थान पर स्थानांतरित कर दिया।"

"क्या उस तारीख से पहले किसी तरह की रहस्यमयी घटनाओं की कोई रिपोर्ट थी?"

"मुझे तो इसके बारे में कुछ पता नहीं है, लेकिन इमारत बहुत खराब हालत में थी।"

मैंने कहा, "इमारत को उसके वर्तमान स्थान पर लाने के बाद, आपने सबसे पहली असामान्य बात क्या सुनी?"

“दो साल पहले हम यहाँ एक व्याख्यान दे रहे थे। लगभग चालीस लोग फ्रांसिस हेगर्टी को पुरानी नौकाओं के बारे में बात करते हुए सुन रहे थे। मैं यहाँ बाईं ओर - इस भूतल पर - रॉबर्ट फ्रेजर के साथ बैठा था, तभी अचानक हमें ऊपर से भारी कदमों की आहट सुनाई दी और कुछ चीज़ें हिलती-डुलती और घसीटती हुई सुनाई दीं - तो मैंने श्री फ्रेजर से कहा, 'कोई ऊपर है; क्या आप कृपया उसे चुप रहने के लिए कहेंगे?' मुझे लगा कि वे बच्चे हैं।”

"क्या आपको पता था कि उस समय ऊपर कोई मौजूद था या नहीं?"

“हमें पता नहीं था। श्री फ्रेजर ऊपर गए और थोड़ी देर बाद बहुत अजीब से चेहरे के साथ नीचे आए और बोले, ‘वहाँ कोई नहीं है।’”

“अब ऊपर से नीचे आने का कोई और रास्ता नहीं था, बस यही एक सीढ़ी थी। इस पर से कोई नीचे नहीं आया था। उस शाम हमें तीन बार व्यवधान का सामना करना पड़ा।”

मैंने रॉबर्ट फ्रेजर से पूछा कि उसने ऊपर क्या देखा था।

"ऊपर स्थित छोटे से कार्यालय से पर्याप्त रोशनी आ रही थी, और मैं ऊपर अच्छी तरह से देख पा रहा था, और मैंने चारों ओर देखा, लेकिन ऊपर कोई नहीं था।"

और बाकी समयों में?

“बिल्कुल वही हाल था। खिड़कियाँ भी पूरी तरह बंद थीं। कोई भी नीचे नहीं आ सकता था या बाहर नहीं निकल सकता था। लेकिन मुझे यकीन है कि वे कदमों की आहट थी।”

मैं श्रीमती मार्श के पास वापस गई और उनसे उस घटनापूर्ण शाम के बाद हुई किसी भी बात के बारे में और पूछताछ की, जिसमें कदमों की आहट सुनाई दी थी।

"हम संग्रहालय की मरम्मत में इतने व्यस्त थे कि हमने इस तरह की किसी भी चीज पर शायद ही ध्यान दिया, लेकिन इस गर्मी में कुछ ऐसा हुआ जिसने हमें सब कुछ याद दिला दिया।"

मैंने पूछा, "क्या हुआ?" और महिला रिपोर्टर ने ध्यान से सुनना शुरू कर दिया।

श्रीमती मार्श ने बात शुरू करते हुए कहा, “जुलाई में कुछ ही बारिश वाले रविवारों में से एक रविवार की बात है। देखिए, यह जगह रविवार को बंद रहती है। मैं बाकी दो इमारतों से कुछ सामान ला रही थी और मेरे हाथ सामान से भरे हुए थे। मैंने सामने का दरवाजा खोला ही था कि मुझे ऊपर से भारी कदमों की आहट सुनाई दी।”

“तुमने क्या किया—सब कुछ छोड़ दिया?”

“मुझे लगा कि यह हमारी समिति का कोई सदस्य या कोई अन्य क्यूरेटर होगा, इसलिए मैंने आवाज लगाई, ‘हेलो—ऊपर कौन है?’ लेकिन मुझे कोई जवाब नहीं मिला, और मैंने सोचा, खैर, कोई तो काफी रूखा है, जो मुझे जवाब नहीं दे रहा है, इसलिए मुझे थोड़ी झुंझलाहट हुई और मैंने फिर से आवाज लगाई।”

क्या आपको कोई जवाब मिला?

“नहीं, लेकिन जब मैंने पुकारा तो सीढ़ियाँ थोड़ी देर के लिए रुक गईं। फिर वे चलने लगीं, और मैंने चिल्लाकर कहा, ‘भगवान के लिए, तुम जवाब क्यों नहीं दे रही हो?’ और मैं सीढ़ियों पर चढ़ गया, लेकिन जैसे ही मैं सीढ़ियों के ऊपर पहुँचा, वे रुक गईं।”

एक आदमी था जो संग्रहालय के काम में उनकी मदद करता था, लेकिन कुछ अज्ञात कारणों से वह हाल ही में गायब हो गया था। क्या उसने भी कदमों की आहट सुनी होगी और सावधानी बरतने का फैसला किया होगा?

"कुछ दिन पहले, अभी हाल ही में, हम चार लोग उस कमरे में गए जहाँ ये सज्जन तब रहते हैं जब वे यहाँ होते हैं, और दरवाजा अपने आप हम पर बंद हो गया। ऐसा पहले कभी नहीं हुआ था।"

मुझे जल्द ही पता चल गया कि जब फ्रेजर इमारत में अकेला था तो उसे कदमों की आहट सुनाई नहीं दी, लेकिन श्रीमती मार्श को सुनाई दी। मैंने उनसे उनके अतीत में किसी भी तरह की मानसिक शक्तियों के बारे में पूछा।

“जब मैं दस साल की थी तब से ही मेरे परिवार को आध्यात्मिक विषयों में दिलचस्पी रही है,” उसने सहज भाव से कहा। “मैं एक माध्यम बन सकती थी, लेकिन मुझे इसमें कोई रुचि नहीं थी। मेरी माँ के देहांत के तुरंत बाद मैंने उनकी एक परछाई देखी। मेरे भाई भी अपनी मृत्यु के छह महीने बाद मुझे दर्शन दिए, शायद यह बताने के लिए कि वह ठीक हैं।”

"पिछले जुलाई से लेकर अब तक क्या कोई और घटना सामने आई है?"

श्रीमती मार्श ने जवाब दिया, "मैं यहां ज्यादा नहीं रही हूं। मुख्य भवन में हमारे पोशाक संग्रह के साथ मुझे बहुत काम था। इसलिए मुझे वास्तव में पता नहीं है।"

हमने अब ऊपर जाने का फैसला किया और यह देखने की कोशिश की कि क्या मिस्टर बेट्स —या जो भी भूत हो—हमारे लिए चलना चाहेंगे। हम ऊपर अर्ध-अंधेरे में, उस जगह के पास चुपचाप इंतजार करते रहे जहाँ कदमों की आहट सुनाई दी थी, लेकिन कुछ नहीं हुआ।

श्रीमती मार्श ने दोहराया, "कदम आगे-पीछे हो रहे थे। भारी-भरकम, मर्दाना कदम, जैसे कोई बड़ा आदमी उठाता है।"

उसने हमें दिखाया कि यह कैसा लगता है, बेशक इस बात का ध्यान रखते हुए कि उसने ऊँची एड़ी के जूते पहने हुए थे। यह दस भूतों के लिए भी पर्याप्त खोखला लग रहा था।

मैंने ऊपरी मंजिल के बीच में स्थित एक छोटे से कार्यालय की ओर इशारा किया।

श्रीमती मार्श ने समझाया, "यह जॉन बेट्स का कार्यालय था, और यहाँ एक भारतीय गुड़िया है जो कभी-कभी एक सुरक्षित शेल्फ से नीचे गिर जाती है जैसे कि कोई इसे फेंक रहा हो।"

मैंने गुड़िया की जांच की। यह उन्नीसवीं सदी की शुरुआत की उन गुड़ियों में से एक थी जिन्हें न्यू इंग्लैंड के भारतीय बनाया और बेचा करते थे।

श्रीमती मार्श ने कहा, "व्याख्यान में मौजूद लोगों ने भी वो आवाजें सुनीं, लेकिन वे बस हंस दिए और किसी ने भी इस बारे में सोचने की जहमत नहीं उठाई।"

मैंने स्थानीय महिलाओं में से एक, श्रीमती हडली की ओर रुख किया, जो हमारे साथ आई थीं। क्या उन्हें यहाँ कुछ अजीब सा महसूस हो रहा था, क्योंकि उनकी ख्याति एक मानसिक शक्ति वाली महिला के रूप में थी?

“मैं बेचैन महसूस कर रही हूँ। एक अजीब सी अनुभूति हो रही है,” उसने रुक-रुक कर बोलना शुरू किया, “जैसे कोई ‘मौजूद’ हो जो मानसिक रूप से परेशान हो। वह एक पुरुष है।”

मैकार्थी नाम की एक और महिला को भी अजीब सा एहसास हुआ जब हम भूत के प्रकट होने का इंतज़ार कर रहे थे। ज़ाहिर है, माहौल और संकेतों के चलते मैंने उस रात आसपास मौजूद लोगों की बातों पर ज़्यादा ध्यान नहीं दिया, लेकिन फिर भी मैं उसे सुनना चाहती थी।

श्रीमती मैकार्थी ने कहा, "मुझे लगा कि मुझे खिड़की के पास जाकर ताज़ी हवा लेनी चाहिए। वातावरण किसी तरह अशांत लग रहा था।"

मैंने उन सभी से एक पल के लिए चुप रहने को कहा और खुद को उस अदृश्य भूत से संबोधित किया।

“जॉन बेट्स,” मैंने कहना शुरू किया, “अगर यह आप हैं, तो क्या मैं, एक अजनबी के रूप में इस घर में आकर आपको शांति पाने में मदद करने के लिए, आपसे यह अनुरोध कर सकता हूँ कि आप किसी रूप में प्रकट हों ताकि मुझे पता चले कि आप मुझे सुन सकते हैं?”

मुझे दूर से आती हुई कार के हॉर्न की आवाज के अलावा और कुछ सुनाई नहीं दिया।

मैंने भूत को फिर से आगे आने और अपनी उपस्थिति दर्ज कराने का निमंत्रण दिया। या तो मैंने गलत भूत से बात की, या शायद जॉन बेट्स को इतने सारे लोगों का आना पसंद नहीं आया—हमें केवल सन्नाटा ही मिला।

“श्रीमान बेट्स,” मैंने अपनी अत्यंत मधुर आवाज़ में कहा, “कृपया इन लोगों को क्षमा कर दीजिए जिन्होंने आपका सुंदर घर भीतरी इलाके में स्थानांतरित कर दिया। उन्होंने ऐसा आपके व्यक्तित्व या कार्य के प्रति अनादर के कारण नहीं किया। उन्होंने ऐसा इसलिए किया

ताकि अधिक से अधिक लोग आकर आपके घर की प्रशंसा कर सकें और आपके महान व्यक्तित्व के प्रति सम्मान और प्रशंसा की भावना लेकर जा सकें।"

जब मैंने बात की तो इतनी खामोशी थी कि चूहे की सांस लेने की आवाज भी सुनाई दे सकती थी।

हम दबे पांव भूतिया सीढ़ियों से नीचे उतरे और ठंडी शाम की हवा में बाहर आ गए। काउबॉय स्टार रेक्स ट्रेलर और उनकी पत्नी, जो बोस्टन से हमारे साथ आए थे, भविष्य के बारे में सोचने लगे—क्या उनके कदमों की आहट कभी वापस आएगी? या क्या जॉन बेट्स ने इस बात को स्वीकार कर लिया था कि समुद्र की हवाएं अब उनके माथे को वैसे नहीं छूती थीं जैसे तब छूती थीं जब उनका घर समुद्र तट के किनारे था?

फिर भी, आखिर वो अब तक ज़िंदा क्यों था? क्या ऊपर वाले छोटे से दफ्तर में किसी ने उसे मौत के घाट उतार दिया था? उस मशहूर कुंवारे के जीवन में हिंसा की अफवाहें थीं, और अनगिनत औरतें थीं जिनके साथ उसने प्रेम प्रसंग बिताए थे। हो सकता है किसी ने एक रात उससे मुलाकात की हो और जहाज के सामान की दुकान के मालिक के बेहद सफल करियर का अंत कर दिया हो।

एक साल बीत गया, और क्यूरेटर से मुझे कोई खबर नहीं मिली। जाहिर है, जॉन बेट्स के पुराने घर में सब कुछ शांत था। शायद बूढ़ा जॉन आखिरकार जीवन के पर्दे के दूसरी ओर भूतिया जहाजों को चलाने वाले दल में से किसी एक में शामिल हो गया।

*96

रिंगवुड मनोर में भूत-सेवक की समस्या

दक्षिण इंग्लैंड में स्थित रिंगवुड का एक अमेरिकी समकक्ष न्यू जर्सी में है। मैंने न्यू जर्सी में स्थित रिंगवुड मनोर के बारे में तब तक नहीं सुना था जब तक कि पास के सैडल रिवर की निवासी श्रीमती एडवर्ड थॉल ने मेरा ध्यान इस ओर आकर्षित नहीं किया। इतिहास की शौकीन और एक कुशल भूगोलवेत्ता एवं मानचित्रकार, श्रीमती थॉल मनोर हाउस जा चुकी थीं और कई

बार उन्होंने वहां किसी अलौकिक शक्ति का अनुभव किया था। इस क्षेत्र के रामपो पहाड़ों में रहने वाले पर्वतीय लोग रात में मनोर हाउस के पास नहीं जाते थे।

श्रीमती थॉल ने मुझे बताया, "वॉशिंगटन की सेना के भूगोलवेत्ता रॉबर्ट एर्स्किन को इसी परिसर में दफनाया गया है।"

मैनर हाउस की ज़मीन 1740 में नेवार्क के ओग्डेन परिवार ने खरीदी थी और दो साल बाद उस पर लोहे की भट्टी बनाई गई। यह इलाका खानों में प्रचुर मात्रा में पाया जाता है और एक समय लोहे के खनन और गलाने का प्रमुख केंद्र था। 1762 में, जब दूसरी भट्टी बनाई गई, तो एक छोटा सा घर भी बनाया गया। यह घर आज भी मौजूद है और मैनर हाउस की अव्यवस्थित संरचना का हिस्सा है। 1764 में पीटर हैसेनक्लेवर ने घर और लोहे का कारखाना खरीदा। उन्होंने इस व्यवसाय को इतने दिखावे के साथ चलाया कि उन्हें "द बैरन" के नाम से जाना जाने लगा। लेकिन हैसेनक्लेवर अपने समर्थकों की अपेक्षा पर्याप्त लोहे का उत्पादन नहीं कर पाए और जल्द ही उनकी जगह रॉबर्ट एर्स्किन को नियुक्त कर दिया गया। जब स्वतंत्रता संग्राम शुरू हुआ, तो लोहे के कारखाने को बंद करना पड़ा। एर्स्किन की स्वयं 1780 में ठंड लगने से मृत्यु हो गई।

1807 तक, लोहे का कारोबार एक बार फिर पूरी तरह से फल-फूल रहा था, इस बार मार्टिन रायर्सन के संरक्षण में, जिन्होंने जर्जर पुराने मकान को गिराकर उसका पूरी तरह से पुनर्निर्माण किया। 1830 के दशक में लोहे का कारोबार ठप होने के बाद, 1853 में यह संपत्ति प्रसिद्ध पीटर कूपर के हाथों में चली गई। उनके दामाद अब्राम एस. हेविट, जो एक समय न्यूयॉर्क के मेयर रह चुके थे, मैनर हाउस में रहते थे।

कूपर की बेटी श्रीमती हेविट ने उस सादे से घर को 51 कमरों वाले एक भव्य महल में बदल दिया, जो आज भी काफी हद तक वैसा ही दिखता है। परिसर में पहले से मौजूद कई पुरानी इमारतों को उखाड़कर घर में जोड़ दिया गया, जिससे इसे एक खंडित स्वरूप मिला, जिसका कोई निश्चित केंद्र नहीं था। हेविट परिवार 1936 तक रिंगवुड में रहता रहा, जब तक कि एर्स्किन हेविट ने संपत्ति न्यू जर्सी राज्य को सौंप नहीं दी। इसके बाद यह महल एक संग्रहालय बन गया, जहाँ आगंतुकों को मामूली शुल्क पर प्रतिदिन दर्शन के लिए लाया जाता था।

संकट के समय में, घर के अंदर और आसपास कई दुखद घटनाएँ घटी होंगी। 1778 में एक लूटपाट हुई थी, और पास के कब्रिस्तान में कई फ्रांसीसी सैनिकों को दफनाया गया था जिनकी मृत्यु एक महामारी के दौरान हुई थी। बाद के वर्षों में एक घटना का भी रिकॉर्ड है, जब एक रसोइए को उसके बटलर ने चाकू से धमकाया था, और पास की लौह खदानों में भी कई दुर्घटनाएँ हुईं जिनमें कई लोगों की जान चली गई।

हेविट परिवार की लड़कियों में से एक, सैली, शरारतों में माहिर थी। अगर किसी को उस जगह पर भूत बनकर रहना होता, तो वह इसके लिए सबसे उपयुक्त उम्मीदवार होती। मैंने क्लेयर थॉल को उनकी मदद के लिए धन्यवाद दिया और एथेल जॉनसन मेयर्स को न्यू जर्सी चलने के लिए कहा। बेशक, मैंने उन्हें कोई जानकारी नहीं दी। हमने शाम ढलने के समय, सभी पर्यटकों के चले जाने के बाद, घर पहुँचने का प्रबंध किया।

मेरी पत्नी कैथरीन और मैं, एथेल मेयर्स को यात्री के रूप में लेकर, मई 1965 की एक उमस भरी दोपहर को घर के लिए रवाना हुए। जिम बायरन भी शनिवार रिव्यू के लेखक हास्केल फ्रैंकल के साथ घर पर हमसे मिले।

हमें लगभग एक घंटा देरी हो गई थी, लेकिन फिर भी उजाला था, और पार्क का शांत वातावरण, जिसके केंद्र में मनोर हाउस था, वास्तव में अंग्रेजी ग्रामीण इलाकों की शोभा बढ़ाने वाले ऐसे ही घरों की याद दिलाता था।

हम कुछ देर तक न्यू जर्सी के मच्छरों से जूझते हुए वहीं खड़े रहे, फिर मैंने कैथरीन से कहा कि वह एथेल को थोड़ी देर के लिए घर से बाहर ले जाए, ताकि मैं श्रीमती थॉल और उन अन्य लोगों से बात कर सकूं जिन्होंने घर में भूतिया घटनाओं को देखा था।

श्रीमती थॉल ने कहा, "घर के कुछ हिस्सों में मुझे ऐसा महसूस होता था कि मैं अकेली नहीं हूं, लेकिन इसके अलावा मैं ईमानदारी से यह नहीं कह सकती कि मुझे यहां कोई अजीबोगरीब अनुभव हुए हैं।"

अलेक्जेंडर वाल्ड्रॉन कई वर्षों तक रिंगवुड मनोर के अधीक्षक रहे थे, वास्तव में एक साल पहले तक। उन्होंने इस अवसर पर हमारे साथ शामिल होने की सहमति दी। हंसमुख, सफ़ेद बालों वाले वे व्यक्ति अपनी रिपोर्ट में काफी सधे हुए प्रतीत हुए, उन्होंने मुझे केवल वही तथ्य बताए जो उनके लिए वास्तविक थे।

“मैं यहाँ अठारह साल तक अधीक्षक रहा,” श्री वाल्ड्रॉन ने बात शुरू की। “एक दिन, आज की तरह, दोपहर ढलते समय मैं अपने डेस्क पर बैठा था और बगल वाले कमरे का दरवाज़ा बंद था। मेरा दफ्तर भूतल पर है। मैंने दो लोगों को तेज़ी से मेरी ओर आते सुना। यह कोई असामान्य बात नहीं थी, क्योंकि यहाँ अक्सर कामगार आते रहते हैं। जब उनके कदम मेरे दरवाजे तक पहुँचे, तो कुछ नहीं हुआ। ज़्यादा सोचे बिना, मैंने उनके लिए दरवाज़ा खोल दिया। लेकिन वहाँ कोई नहीं था। मैंने आवाज़ लगाई, लेकिन कोई जवाब नहीं मिला। थोड़ी देर बाद, दो कामगार बाहर से अंदर आए, और हमने मिलकर पूरी इमारत की तलाशी ली, लेकिन कोई ऐसा व्यक्ति नहीं मिला जिसने वह आवाज़ निकाली हो।”

"क्या कोई आपकी नजरों से बचकर निकल सकता था?"

“असंभव। वहां अच्छी रोशनी थी।”

"उसके बाद और कुछ हुआ क्या?"

“पिछले कुछ सालों में हमारे साथ कुछ ऐसी घटनाएं हुईं जिन्हें हम समझा नहीं पाए। उदाहरण के लिए, रात को बंद किए गए दरवाजे अगली सुबह खुले मिलते थे। कुछ साल पहले, जब मेरे बेटे मेरे साथ यहां रहते थे, तो उन्होंने तहखाने में एक तथाकथित राक्षस बनाने का फैसला किया। एक लड़का हाई स्कूल की उम्र का था, दूसरा प्राथमिक विद्यालय में पढ़ता था—सोलह और तेरह साल के। एक रात उनमें से एक अकेला अंदर आया, जब उसने ऊपर, भूतल पर कदमों की आहट सुनी। उसने सोचा कि उसका भाई घर से आया होगा।

उसे लगा कि उसका भाई उसे डराने की कोशिश कर रहा है, इसलिए वह नीचे काम करता रहा। लेकिन कदमों की आहट लगातार आती रही और आखिरकार वह तंग आकर ऊपर आ गया। चारों तरफ अंधेरा था और कोई भी आसपास नहीं था। वह दौड़कर वापस घर आया, जहाँ उसे अपना भाई मिला, जो हवेली में कभी आया ही नहीं था।

ब्रैडली वाल्ड्रॉन ने शायद उसके बाद कभी भी अपने उस "विशालकाय" प्रोजेक्ट पर दोबारा काम नहीं किया होगा।

स्थानीय पहाड़ी लोगों के बीच रॉबर्ट एर्स्किन के भूत के बारे में कहानियां प्रचलित हैं कि वह लालटेन लेकर घूमता है, या मनोर हाउस से आधा मील दूर सड़क पर अपनी कब्र पर बैठा रहता है, या खुद घर की सीढ़ियों पर दौड़ता हुआ दिखाई देता है।

श्रीमती थॉल के साथ घर आए वेन डेनियल ने अब बोलना शुरू किया। श्री डेनियल जीवन भर इसी क्षेत्र में रहे थे और वे प्राचीन अमेरिकी इमारतों के पेशेवर जीर्णोद्धारकर्ता थे।

उन्होंने बताया, “पुराने भोजन कक्ष के एक कोने में और ऊपर की मंजिल के दो कमरों में मुझे अजीब सा महसूस हुआ है। मुझे उन जगहों पर किसी न किसी तरह की शत्रुता का अनुभव होता है।”

अब घर के अंदर ही तलाशी शुरू करने का समय आ गया था।

मैंने एथेल मेयर्स को हमारे साथ आने के लिए कहा, और हम मैनर हाउस में प्रवेश कर गए, भूतल के अब सुनसान गलियारों और रास्तों से धीरे-धीरे आगे बढ़ते हुए, एथेल का अनुसरण करते हुए क्योंकि वह अपनी मानसिक स्थिति को समझने लगी थी।

अचानक, एथेल ने कहा कि उसे खिड़की के बाहर किसी आदमी की मौजूदगी का एहसास हुआ, लेकिन वह अपने इस एहसास को ठीक से बता नहीं पाई।

“यहाँ आस-पास किसी की मौत किसी श्राप के कारण हुई थी,” उसने बुदबुदाते हुए कहा, फिर मानो बाद में याद आया हो, “जैक्सन व्हाइट... इसका क्या मतलब है?”

मैंने यह नाम पहले कभी नहीं सुना था, लेकिन क्लेयर थॉल ने बताया कि "जैक्सन व्हाइट" रामपो पहाड़ियों में रहने वाले मिश्रित नस्ल के लोगों का एक विशिष्ट स्थानीय नाम है। एथेल ने आगे बताया कि एक समय में कोई व्यक्ति गुलामी में था।

एथेल "जैक्सन व्हाइट" की व्याख्या सुनकर चौंक गई। उसने तो यही मान लिया था कि यह एक व्यक्तिगत नाम है। मुझे पता चला कि जैक्सन व्हाइट लोग आंशिक रूप से अमेरिकी मूल निवासी और आंशिक रूप से अश्वेत होते हैं, लेकिन श्वेत नहीं।

अब हम एक बड़े शयनकक्ष में दाखिल हुए जो उन्नीसवीं सदी के आरंभिक शैली में सुरुचिपूर्ण ढंग से सजाया गया था, जिसमें एक दीवार के सहारे एक बड़ा पलंग और दूसरी दीवार के सहारे एक मेज थी। एथेल ने अनिश्चितता से कमरे के चारों ओर देखा, मानो वह कुछ ऐसा खोज रही हो जो उसे अभी तक दिखाई नहीं दिया था।

“इस कमरे में किसी बुरे अंतरात्मा वाले व्यक्ति की मृत्यु हुई,” उसने कहा। “यहाँ एक पुरुष और एक महिला रहते थे, जो किसी न किसी तरह एक-दूसरे से मीलों दूर थे।”

हम श्रीमती एर्स्किन के शयनकक्ष में थे। हम एक छोटे से दरवाजे से होकर दूसरे कमरे में गए जो उस बड़े शयनकक्ष के ठीक पीछे था; यह कभी नौकरों का कमरा रहा होगा। फिर भी, यह कमरा बहुत ही सुंदर था, जिसमें संगमरमर की चिमनी और एक भारी ओक की मेज थी, जिसके चारों ओर कई कुर्सियाँ रखी थीं। हम बैठ गए, लेकिन इससे पहले कि मैं अपना टेप रिकॉर्डर और कैमरा ठीक कर पाता, एथेल मेयर्स गहरी समाधि में चली गईं। उनके होठों से अल्बर्ट की सुस्पष्ट आवाज निकली, जो उनके मार्गदर्शक थे। उन्होंने बताया कि कमरे में चेतना की कई परतें व्याप्त हैं, कि यहाँ जैक्सन नाम के एक व्यक्ति द्वारा लाए गए अश्वेत लोग हैं, जो अठारहवीं शताब्दी में आया था। उन्हें ऐसा महसूस हो रहा था कि उनमें से एक कमरे में मौजूद है।

“एक महिला की मौत प्रवेश द्वार पर ही हो गई... उसका नाम लूसी बेल था, वह कहती है। वह यहाँ नौकरानी थी।”

अचानक, अल्बर्ट गायब हो गया। उसकी जगह एक तीखी, हताश महिला की आवाज सुनाई दी, जो सुनने वाले हर किसी से गुहार लगा रही थी।

“नहीं...मैंने नहीं किया...भगवान के सामने मैंने नहीं किया...मैं तुम्हें दिखाता हूँ कहाँ...मैंने इसे छुआ तक नहीं...कभी नहीं...”

ऐसा लग रहा था मानो वह किसी अदृश्य उत्पीड़क से बात कर रही हो, क्योंकि भूत से ग्रस्त एथेल मेज से पीछे हट गई और रोने लगी:

“नहीं...मत करो...मत करो!” क्या उसे पीटा जा रहा था या यातना दी जा रही थी?

“उसे भी नहीं पता था!” भूत ने आगे कहा।

मैंने उसे शांत करने की कोशिश की।

“मैंने छुआ नहीं...मैंने छुआ नहीं...” वह बार-बार यही दोहराती रही। मैंने उसका नाम पूछा।

"लूसी," उसने पीड़ादायक, तीखी आवाज में कहा, जो एथेल मेयर्स की सामान्य आवाज से बिल्कुल अलग थी।

मैंने कहा, "मुझे आप पर विश्वास है," और भूत को बताया कि हम कौन हैं और क्यों आए हैं। अनियंत्रित रोना कुछ पल के लिए थम गया।

“वह भी निर्दोष है,” उसने आखिरकार कहा। “मैं चल नहीं सकती,” उसने आगे कहा। एथेल ने अपनी कमर की ओर इशारा किया। क्या उसे चोट लगी थी?

“मैंने इसे नहीं लिया,” उसने फिर से दोहराया। “यह यहीं पर है।”

उसने क्या नहीं लिया? मैंने उसे प्यार से समझा-बुझाकर इसके बारे में सब कुछ बताने को कहा।

मैंने कहा, "मैं एक दोस्त बनकर आई हूँ," और आखिरकार मेरी बात उसे समझ आ गई। वह बहुत उत्साहित हो गई और मुझसे पूछने लगी कि मैं कहाँ हूँ, क्योंकि वह मुझे देख नहीं पा रही थी।

“मेरे दोस्त, यिर्मियाह, क्या तुम सुन रहे हो?” उसने स्वर में कहा।

“यिर्मयाह कौन है?”

“उसने भी ऐसा नहीं किया,” उसने जवाब दिया। मुझे समझ आया कि यिर्मयाह भी यहीं रहता था, लेकिन वह उसका कोई पारिवारिक नाम नहीं जानती थी—सिर्फ़ यिर्मयाह। तभी एथेल मेयर्स ने मेरा हाथ पकड़ लिया और “दोस्त” बुदबुदाते हुए मेरी उंगलियाँ लगभग कुचल दीं। मैंने किसी तरह अपना हाथ छुड़ा लिया। एथेल की पकड़ आम तौर पर बहुत कोमल और नाज़ुक होती है—जो उस प्रेत की पकड़ से बिलकुल अलग थी जिसने माध्यम को जकड़ रखा था!

“मत जाओ!”

मैंने उससे वादा किया कि अगर वह बात करेगी तो मैं रुकूंगा।

“मैंने कभी चोरी नहीं की,” उसने कहा। “अंधेरा है...मुझे अब कुछ दिखाई नहीं दे रहा...मैं कहाँ जाऊँ जहाँ से सब कुछ साफ़ दिखाई दे?”

मैंने वादा किया, "मैं तुम्हें रास्ता दिखाऊंगा।"

“मैरी...मैरी...तुम कहाँ हो?” उसने गिड़गिड़ाते हुए कहा।

“यिर्मयाह क्या कर रहा है?”

वह अपनी इज्जत बचाने की भीख मांग रहा है।

"जहां वह अब है?"

"यहां मेरे साथ।"

मैंने पूछा, "आप किसके लिए काम करते थे?"

“बुढ़िया...मुझे वो नहीं चाहिए....”

“अगर उसने तुम्हारे साथ कुछ गलत किया है, तो क्या हमें उसे दंडित करना चाहिए? उसका नाम क्या है?”

“मैंने कभी किसी का बुरा नहीं चाहा...मैं उसे माफ कर दूंगी...अगर वह मुझे माफ कर दे। वह यहीं है...मैंने उसे देखा है, और वह मुझसे नफरत करती है....”

आवाज फिर से तीखी और भावुक हो गई। मैंने उसे जाने के लिए कहा, और कुछ ही पलों में वह निकल गई। अचानक, एथेल के शरीर में एक बिलकुल अलग व्यक्ति आ गया। गर्व से बैठी हुई, वह बंद आँखों से हमें ऐसे घूर रही थी मानो हम उसके इलाके में घुसपैठ करने वाले अजनबी हों।

मैंने पूछा, “तुम्हारा नाम क्या है?”

“मैं किसी अदालत में नहीं हूँ,” उसने उच्च-मध्यम वर्ग के लहजे में कड़े शब्दों में जवाब दिया। “मैं आपसे बात नहीं कर सकता। मेरी कोई इच्छा नहीं है। आपको मुझे कोई सलाह देना व्यर्थ है।”

मैंने पूछा, "इस नौकरानी के बारे में क्या?"

“तुम यहाँ से चले जाओ,” महिला ने घमंडी लहजे में जवाब दिया। “चले जाओ!”

"लड़की ने क्या लिया?" मैंने उसकी ठंडे गुस्से भरी प्रतिक्रिया को नजरअंदाज करते हुए पूछा।

मैं आपको कुछ भी नहीं बताऊंगा।

तो क्या वह निर्दोष है?

इससे उसे कुछ सोचने का मौका मिला, और उसके बाद के शब्द थोड़े अधिक संवादात्मक थे।

“तुम मेरे घर में कैसे हो?” उसने पूछा।

क्या यह आपका घर है?

“मैं नौकरों को बुलाकर तुम्हें गर्दन से पकड़कर बाहर निकलवा दूंगी,” उसने धमकी दी।

मैंने पलटकर पूछा, "क्या नौकरों को पता चलेगा कि तुम कौन हो?"

मैं अपने आप में एक स्वामहिम महिला हूँ।

"आपका क्या नाम है?"

मैं न तो अपनी पहचान प्रकट करूंगा और न ही आपसे बात करूंगा!

मैंने समय बीतने के बारे में समझाया। लेकिन इसका कोई असर नहीं हुआ।

“मैं उसे बुलाऊँगा... बूढ़ा यिर्मयाह अपने ही अपमान के बोझ तले दबा है। क्या तुम उसके मित्र हो?”

मैंने एथेल मेयर्स के बारे में बताया और यह भी बताया कि कैसे वह, भूत, हमसे संवाद करने में सक्षम थी।

रिंगवुड मैनर, न्यू जर्सी—इसके दिवंगत मालिक ने कभी यह घर नहीं छोड़ा।

उसने एथेल की मुट्ठी से मेज पर जोर से प्रहार किया।

“यह आदमी पागल है,” भूत ने कहा। “इसे यहाँ से ले जाओ!”

मैं सफेद कपड़ों में छिपे भूतिया आदमियों द्वारा अगवा नहीं होना चाहती थी। मैं लगातार उस महिला से विनती करती रही कि वह होश में आए और मेरी बात सुने। वह अपने नौकरों को बुलाती रही, लेकिन जाहिर तौर पर किसी ने उसकी पुकार नहीं सुनी।

“जेरेमिया, अगर तुम मेरी नजरों में अपनी छवि बचाना चाहते हो और इस लड़की का साथ नहीं देना चाहते, तो यह लो...”

किसी तरह उस माध्यम की आँखें एक पल के लिए खुलीं, और भूत को "देखने" का मौका मिला। फिर वे बंद हो गईं। यह मेरे लिए एक झटका था, क्योंकि "महिला" ने अचानक अपना गुस्से भरा अभिशाप रोक दिया और घबराहट में मेरी ओर "देखने" लगी।

“ये क्या हो रहा है? डॉक्टर...ये कहाँ हैं...लौरा! लौरा! मैं बीमार हूँ। बहुत बीमार हूँ। मुझे दिखाई नहीं दे रहा। मुझे कुछ सुनाई नहीं दे रहा, पर मैं उसे देख नहीं पा रही। लौरा, डॉक्टर को बुलाओ। मैं मरने वाली हूँ!”

मैंने शांत भाव से कहा, "वास्तव में, आप तो पहले ही मर चुके हैं।"

“यह मेरी माँ की थी।” भूतनी सिसकते हुए बोली, “उसे इसे रखने मत दो। इसे उस नीच के हाथ में मत जाने दो! मुझे यह चाहिए। मुझे इस तरह मरने मत दो। ओह, ओह...”

मैंने अल्बर्ट, जो नियंत्रण शक्ति था, से प्रार्थना की कि वह उस दुखी आत्मा को दूर ले जाए और यदि संभव हो तो उसे परदे के दूसरी ओर ले जाए। रिंगवुड के उस ठंडे जॉर्जियाई कमरे में जैसे ही आत्मा का सार हमारी पहुँच से ओझल हो गया, सिसकियाँ धीरे-धीरे थम गईं।

मुझे अल्बर्ट की स्पष्ट और सटीक आवाज में जवाब नहीं मिला। एक और अजनबी, जो स्पष्ट रूप से पुरुष था, खांसते हुए अंदर आया और निम्न वर्ग के लहजे में बोला।

"क्या बात क्या बात?"

मैंने पूछा, "यह कौन है?"

आवाज अजीब तरह से दबी हुई सी लग रही थी, मानो बहुत दूर से आ रही हो।

“यिर्मयाह... सबको क्या हो गया है?” आवाज में स्पष्ट रूप से उदासी का भाव था।

“मुझे बहुत नींद आ रही है,” आवाज ने कहा।

इस घर का मालिक कौन है?

“हो हो, हाँ,” भूत ने कहा। “मुझे एक अजीब सपना आया, सबको क्या हो गया है?” फिर उसकी आवाज़ थोड़ी साफ़ हुई, क्योंकि उसे अपने आस-पास के अजीब माहौल का एहसास होने लगा था।

“क्या तुम भी इन घटिया गोरे लोगों में से एक हो?” उसने पूछा।

मैंने पूछा, “उस बुढ़िया का नाम क्या है?”

"वह एक बॉब है," उसने रहस्यमय ढंग से जवाब दिया, और आगे कहा, "एकदम आवारा, जिसके दिमाग में बहुत सारी उलझनें हैं।"

“यहां और कौन-कौन है?”

“मुझे तुम पसंद नहीं हो। मैं तुम्हें नहीं जानता और मुझे वह व्यक्ति पसंद नहीं है जिसे मैं नहीं जानता,” नौकर के भूत ने कहा।

“तुम घटिया सफेद लोग हो,” उसने आगे कहा। “मैं तुम्हें देख रहा हूँ!” उसने सफेद शब्द पर विशेष जोर दिया।

"आप वहां कितने समय से रह रहे हैं?"

“मेरे पिता...ल्यूक।”

मैंने फिर से मृत्यु और उसके परिणामों के बारे में बताया, लेकिन मुझे जो प्रतिक्रिया मिली वह उस "महिला" से मिली प्रतिक्रिया से भी कम सौहार्दपूर्ण थी।

यिर्मियाह मृत्यु से कोई वास्ता नहीं रखना चाहता था।

“वह बुढ़िया क्या कहेगी? वह क्या कहेगी?” उसने सोचा, “उसे मेरी ज़रूरत है।”

“नहीं, ऐसा नहीं है,” मैंने जवाब दिया। “आखिरकार, वो भी तो मर चुकी है।” उसे इस खबर पर मुश्किल से ही यकीन हुआ। जाहिर है, उसके मन में उस शक्तिशाली महिला के लिए मृत्यु जैसी घटनाओं का कोई महत्व नहीं था।

“तुम्हें मेरी माँ से क्या दुश्मनी है?” उसने अब पूछा। मामला उलझता जा रहा था। क्या वह “बुढ़िया” उसकी माँ थी?

"लूसी भी घटिया किस्म की है," उसने टिप्पणी की।

“क्या वह आपकी पत्नी थी?”

इसे यही कहिए।

"आप उसे देख सकते हैं?"

वह यहाँ है।

“तो फिर आपको पता है कि आपकी मृत्यु हो चुकी है और आपको इस घर से जाना होगा?” मैंने पूछा।

“दबाव योग्य पेड़, यार, दबाव योग्य पेड़,” उसने गुस्से से कहा।

“यह घर अब तुम्हारा नहीं है।”

“ऐसा कभी नहीं था,” उसने पलटकर जवाब दिया। “वह औरत यहीं है। हम मरे नहीं हैं, हे महान श्वेत आत्मा—हम तुम पर हंसते हैं।”

आपको इस घर में क्या चाहिए?

“मेरी पत्नी बहुत अच्छी है,” उसने कहा। “मैं आपको बताता हूँ, मेरी माँ, मेरी पत्नी बहुत अच्छी है। लूसी बेल, मामूली सी, लेकिन अच्छी। ग्रेट व्हाइट स्पिरिट जैसी। मैं दिन-रात मेहनत करता हूँ। मुझे बताया गया है! मैं चोर भी हूँ। कल ही। मेरी पीठ देखो! मेरी पत्नी को देखो! रेड फॉक्स, उसे देखो। मेरी पीठ देखो, उसे देखो!”

ऐसा लग रहा था कि उसका गुस्सा शांत हो गया है। अब उसकी आवाज़ धीमी हो गई थी।

“मुझे बहुत नींद आ रही है,” उसने कहा। “बहुत नींद आ रही है...मेरी लूसी अब कभी चल नहीं पाएगी...देवदूत आत्मा...मेरे लोग दुख भोग रहे हैं...उसकी त्वचा मेरी त्वचा जैसी होनी चाहिए थी...मेरी मदद करो, मेरी लूसी की मदद करो....”

मैंने मदद करने और उसे उसके पिता ल्यूक के पास भेजने का वादा किया, जो उसका इंतजार कर रहा था।

“मुझे अपने पिता की बात मान लेनी चाहिए थी,” भूत ने बुदबुदाते हुए कहा।

फिर उसने अपने पिता को पहचान लिया, जो जाहिर तौर पर उसे घर से बाहर ले जाने आए थे, और उसे आश्चर्य हुआ कि वे यहां क्या कर रहे हैं।

मैंने उन्हें बताया कि मेरे विचार से उनके पिता के आने का क्या कारण था। कुछ लोग रोए और फिर सब चले गए।

मैंने कहा, "अल्बर्ट, कृपया वाद्य यंत्र संभाल लो।"

कुछ ही क्षणों में, नियंत्रक की शांत आवाज सुनाई दी, और एथेल जल्दी ही समाधि की अवस्था से बाहर आ गई।

“मेरी कमर में दर्द हो रहा है,” उसने शिकायत की। “मुझे नहीं लगता कि मैं हिल-डुल सकती हूँ।”

कभी-कभी, माध्यम के समाधि से बाहर आने के कुछ क्षणों बाद, भूत द्वारा लाए गए "अस्थायी लक्षण" या संकेत मौजूद रहते हैं। इससे घबराने की कोई बात नहीं है।

मैंने एथेल की आँखें फिर से बंद कर दीं और उसे दोबारा समाधि में भेज दिया, फिर उसे बाहर निकाला, और इस बार सब कुछ "स्पष्ट" था। हालाँकि, उसे अभी भी दोनों कमरों के बीच के गलियारे में एक चीख सुनाई दे रही थी।

मुझे उस भूत के भारतीय स्वरूप के बारे में जिज्ञासा हुई। क्या इस इलाके में कोई भारतीय रहते थे?

“बिल्कुल,” श्री वाल्ड्रॉन ने उत्तर दिया। “वे मिश्रित नस्ल के हैं, अक्सर उनमें नीग्रो नस्ल का अंश होता है, और उन्हें जैक्सन व्हाइट्स कहा जाता है। उनमें से कई यहाँ नौकर के रूप में काम करते थे।”

अधीक्षक ने नीचे वाले तल पर जो कदमों की आहट सुनी थी, वह दो व्यक्तियों की थी, और यह बहुत संभव है कि वे इसी क्षेत्र से आई हों, क्योंकि जिस कमरे में हम थे वह लगभग सीधे उनके कार्यालयों के ऊपर था।

बेशक, यिर्मियाह या लूसी नाम के किसी भी नौकर का कोई रिकॉर्ड नहीं था। नौकरों के नाम शायद ही कभी दर्ज किए जाते हैं, जब तक कि वे कोई बहुत ही असामान्य काम न करें।

मैंने श्रीमती थॉल से उन महिलाओं के बारे में पूछा जो उस अभिमानी महिला के विवरण से मेल खाती हों, जिसने एथेल मेयर्स के माध्यम से समाधि की अवस्था में हमसे बात की थी।

उन्होंने समझाया, “मैं इसे हेविट परिवार के घर में रहने से जोड़ती हूँ, क्योंकि इसमें घर के दो हिस्सों को जोड़ने वाले एक मार्ग का ज़िक्र है, जो उस जगह पर बनी किसी पुरानी इमारत पर लागू नहीं हो सकता। अमेलिया हेविट, जिनके शयनकक्ष से हम गुज़रे थे, को उस दौर के

साहित्य में 'शांत और दयालु' बताया गया है। वहीं, सारा हेविट अपने ज़माने में काफी चुलबुली थीं और 'शालीन महिला' के चरित्र में ज़्यादा सटीक बैठती हैं।"

लेकिन हम उस भूतनी की पहचान के बारे में निश्चित नहीं हो सकते। उसने अपना नाम गुप्त रखने का फैसला किया है और हम केवल उसके इस निर्णय का सम्मान कर सकते हैं और इसे गुप्त ही रहने दे सकते हैं।

इन वृत्तांतों को वास्तविकता और प्रमाण का आभास देने वाली बात यह है कि एथेल मेयर्स ने इस घर में "जैक्सन व्हाइट्स" का जिक्र किया, जो उनके और मेरे लिए बिल्कुल नया नाम था। मुझे पूरा यकीन है कि उस माध्यम को इस क्षेत्र में रहने वाले भारतीयों के बारे में कोई जानकारी नहीं थी। इसके अलावा, जिस स्थान पर भूतिया कदमों की आवाज सुनी गई थी, उसके ठीक ऊपर वाले कमरे को चुनना भी दिलचस्प था, क्योंकि घर बहुत बड़ा था और उसमें कई कमरे और गलियारे थे।

*97

द फैंटम एडमिरल

मैंने गॉडार्ड कॉलेज के बारे में तब तक कभी नहीं सुना था, जब तक मुझे वर्मोंट के प्लेनफील्ड स्थित गॉडार्ड कॉलेज के दूसरे सेमेस्टर के छात्र जे लॉरेंस का पत्र नहीं मिला। श्री लॉरेंस को मानसिक घटनाओं में गहरी रुचि थी और उनके पास इसके कुछ प्रमाण भी थे। उन्होंने मुझे कॉलेज में अलौकिक बोध पर बोलने के लिए आमंत्रित करने से कहीं अधिक किया; उन्होंने मुझे न्यू हैम्पशायर के व्हाइटफील्ड में, जो गॉडार्ड कॉलेज से लगभग दो घंटे की ड्राइव पर है, एक भूत को देखने के लिए आमंत्रित किया, जिसे उन्होंने खोजा था।

व्हाइटफील्ड में स्थित भूतिया घर जैकबसेन परिवार का था, जो इसे केवल गर्मियों के निवास के रूप में इस्तेमाल करते थे। छोटे जैकबसेन, जिनका पहला नाम एरलेन्ड था (वे नॉर्वेजियन मूल के हैं), ने हमें घर में रहने या कम से कम उसे देखने के लिए आमंत्रित किया। गोडार्ड कॉलेज के लड़कों ने हमें बोस्टन से लेने और सुरम्य व्हाइट पहाड़ों से होते हुए व्हाइटफील्ड तक ले जाने की पेशकश की।

हम शाम ढलते समय पहुँचे, जब ग्रामीण इलाका आमतौर पर शांत होता है और हवा लगभग स्थिर होती है। घर ऊँचे पेड़ों से घिरी एक संकरी, घुमावदार सड़क के अंत में था, जो सड़क से छिपा हुआ था। लकड़ी की बनी इस तीन मंजिला इमारत के तीन तरफ लकड़ी का बरामदा था।

हमारा स्वागत एरलेन्ड जैकबसेन, उनकी पत्नी मार्था और उनके छोटे बेटे एरलेन्ड एरिक ने किया, जो एक होशियार बच्चा था और जैसा कि हमें बाद में पता चला, वह भी उस भूत से मिल चुका था।

जैकोब्सन परिवार द्वारा भव्य शैली में सजाए गए विशाल निचले तल के भोजन कक्ष और रसोईघर वाले घर के अंदर, हमें मालिक के दो मित्र श्री और श्रीमती नेल्सन और जे लॉरेंस के एक युवा सहपाठी जेफ ब्रॉडबेंट मिले।

सिबिल घर में इधर-उधर घूम रही थी और प्राचीन वस्तुओं में अपनी रुचि का आनंद ले रही थी। मैंने अपना टेप रिकॉर्डर लगाया ताकि उन लोगों की गवाही सुन सकूँ जिन्होंने घर में कुछ असामान्य अनुभव किया था। हम ऊपर गए, जहाँ सिबिल लीक हमारी आवाज़ ठीक से नहीं सुन सकती थी, और दूसरी मंजिल पर एक छोटे से बेडरूम में दाखिल हुए, जिसके बारे में मुझे बताया गया था कि वह भूतिया गतिविधियों का मुख्य केंद्र था, हालाँकि एकमात्र नहीं।

इस घर को इसके मूल मालिक और निर्माता ने "मिस 'एन टॉप" नाम दिया था। मैंने गॉडार्ड कॉलेज में प्रशिक्षक के रूप में कार्यरत तीस वर्षीय लंबे युवक एरलेन्ड जैकबसेन से इस पुराने घर में उनके अनुभवों के बारे में तुरंत पूछताछ शुरू कर दी।

“जब मेरे माता-पिता ने अटारी को एक क्लब रूम में बदलने का फैसला किया जहाँ मैं अपने दोस्तों के साथ खेल सकूँ,” एरलेन्ड जैकबसेन ने बात शुरू की, “उन्होंने दीवार में खिड़कियाँ काट दीं और घर के पूर्व मालिक का सारा सामान जो उन्हें वहाँ मिला था, बाहर फेंक दिया। उस समय मैं लगभग सात साल का था।”

कुछ समय बाद, अटारी में और उससे जुड़े गलियारों और सीढ़ियों पर कदमों की आहट और अन्य आवाजें सुनाई देने लगीं। लेकिन 1956 की गर्मियों तक, जब मैं कॉलेज में अंतिम वर्ष में थी और मेरी अभी-अभी शादी हुई थी, तब मुझे पहली बार वास्तव में एक महत्वपूर्ण गड़बड़ी का अनुभव हुआ।

“1955, एरलेन्ड,” पत्नी ने बीच में ही टोकते हुए कहा। पत्नियों को ऐसी तारीखें याद रखने का एक खास तरीका होता है। श्री जैकबसेन शरमा गए और उन्होंने अपनी गलती सुधारी।

“1955, आप सही कह रहे हैं,” उन्होंने कहा। “उस गर्मी में हम पहली बार इस कमरे में सोए थे, जो एक मंज़िल ऊपर था, और लगभग हर रात हम या तो शोर से जाग जाते थे या शोर शुरू होने का इंतज़ार करते हुए सो नहीं पाते थे। पहले तो हमें लगा कि ये जानवरों की आवाज़ें हैं, लेकिन वे कदमों की आहट और ऊपर फर्श पर और गलियारे में भारी चीज़ों के खिसकने जैसी थीं। हम इतने डर गए थे कि हमने अपने बिस्तरों में हिलने से भी मना कर दिया और बत्ती भी नहीं जलाई।”

लेकिन आपको उस परंपरा के बारे में तो पता था कि वह घर भूतिया था, है ना?” मैंने पूछा।

“हाँ, मैं इसी माहौल में पली-बढ़ी हूँ। मुझे बस वही पता था जो मैंने अपने माता-पिता से सुना था। घर के मूल मालिक और निर्माता, हॉली नाम के एक एडमिरल और उनकी पत्नी, दोनों ही बेहद सख्त मिजाज के लोग थे। एडमिरल की मृत्यु 1933 में हुई। 1935 में, उनकी बेटी, जो उस समय वाशिंगटन में रह रही थीं, ने घर मेरे माता-पिता को बेच दिया। जो भी गलती से उनकी ज़मीन पर घुसपैठ करता, उसे वहाँ से भगा दिया जाता था, और मुझे लगता है कि उन्हें हमारा उनका संदूक और अन्य निजी सामान फेंकना पसंद नहीं आया होगा।”

"क्या पदचिह्नों के अलावा कोई और अनुभव है?"

“लगभग चार साल पहले,” एरलेन्ड जैकबसेन ने जवाब दिया, “मेरी पत्नी और मैं, और एक पड़ोसी, शेपर्ड वोगेलगेसांग, नीचे के लिविंग रूम में बैठकर बाइबिल की व्याख्याओं पर चर्चा कर रहे थे। चर्चा के दौरान एक समय मुझे एक शब्दकोश की आवश्यकता पड़ी और मैं उसे ऊपर से लाने के लिए उठा।”

“मैं इस कमरे के सामने, यहाँ मोड़ तक दौड़ा, और उस समय वहाँ कोई बत्ती नहीं जल रही थी। मैंने क्लब रूम का दरवाजा खोला और सीढ़ियों से ऊपर जाने लगा, तभी अचानक मैं एक ऐसी चीज़ से टकरा गया जिसे मैं केवल एक गर्म, गीले कंबल के रूप में ही बता सकता हूँ, कोई ऐसी चीज़ जिसने मुझे शारीरिक रूप से छुआ जैसे उसे गलियारे में तारों से लटका दिया गया हो। मैं बहुत परेशान हो गया, पीछे हट गया और नीचे चला गया। मेरी पत्नी ने मुझे एक

नज़र देखा और कहा, 'तुम गोरे हो।' 'मुझे पता है,' मैंने कहा। 'मुझे लगता है कि मैं अभी-अभी एडमिरल से टकरा गया हूँ।'"

मैंने कहा, "मुझे लगता है कि उसे भी आपका इस तरह उससे टकराना अच्छा नहीं लगा होगा। और कुछ?"

"मैं घर में अकेला था, क्लब रूम में, जिसका डिज़ाइन चार पत्तियों वाले तिपतिया घास जैसा है —आप अपने सामने वाले हिस्से में देख सकते हैं, लेकिन बाकी दो हिस्सों में नहीं। मैं वहाँ लेटा हुआ था, खिड़की से सूर्यास्त देख रहा था, तभी मुझे किसी के साँस लेने की आवाज़ सुनाई दी —लयबद्ध तरीके से अंदर-बाहर साँस लेना।"

"आपने क्या किया?"

"मैंने अपनी सांस रोक ली, क्योंकि पहले तो मुझे लगा कि शायद मैं ही ऐसा कर रही हूँ। लेकिन ऐसा नहीं था। मेरे ठीक बगल में सांसें चलती रहीं! मैं बहुत डर गई, क्योंकि तब मेरी उम्र केवल पंद्रह साल थी, और मैं घर से बाहर भाग गई जब तक कि मेरे माता-पिता वापस नहीं आ गए।"

मैंने उससे फिर से उस समय के बारे में पूछा जब उसने भूत को छुआ था।

कैसा लगा? क्या उसमें मानव शरीर का स्पर्श था?

न्यू हैम्पशायर में भूतिया एडमिरल का घर

“ऐसा कुछ नहीं था। वहां बिल्कुल अंधेरा था, लेकिन निश्चित रूप से गर्मी थी, और उसने मुझे आगे बढ़ने से रोक दिया।”

"क्या हाल ही में आपके साथ यहां कुछ हुआ है?"

लगभग ढाई हफ्ते पहले, शाम ढलते समय मैं घर में दाखिल हुआ और मुझे लगभग पंद्रह-बीस सेकंड तक बहुत धीमी रोने की आवाज़ सुनाई दी। मुझे लगा कि शायद कोई बिल्ली रो रही होगी, लेकिन घर में कोई बिल्ली नहीं थी, और जितनी अचानक से रोना शुरू हुआ था, उतनी ही अचानक से रोना बंद भी हो गया। ऐसा लग रहा था मानो आवाज़ इस खिड़की के बाहर, दूसरी मंज़िल पर आ रही हो।

क्या इस घर से जुड़ी किसी त्रासदी का कोई रिकॉर्ड है?

"मेरी जानकारी के कोई भी नहीं।"

"क्या यहाँ किसी और ने कुछ अजीबोगरीब देखा या सुना है?"

“मेरे माता-पिता के यहाँ एक अश्वेत नौकरानी रहती थी जो भविष्य देख सकती थी। उसने भी यहाँ कई अजीब अनुभव किए थे। उसका नाम सारा व्हीलर है और अब वह लगभग पचहत्तर वर्ष की है। एडमिरल अश्वेत लोगों को नापसंद करने के लिए जाने जाते थे, और सारा का दावा था कि जब वह यहाँ बिस्तर पर होती थी, तो अक्सर पलंग के खंभे ऐसे हिलते थे मानो कोई उसे बिस्तर से बाहर फेंकने की कोशिश कर रहा हो। खंभे ज़मीन से ऊपर उठ जाते और बिस्तर को ज़ोर से हिलाते, मानो किसी अदृश्य हाथ ने उन्हें पकड़ रखा हो, जब तक कि वह बिस्तर से उठ नहीं जातीं, और फिर वे रुक जाते। वह कैथोलिक थीं और अगले दिन चर्च जाकर पवित्र जल लाती थीं। इससे सब कुछ शांत हो जाता था। लेकिन हर मौसम की पहली रात वह पवित्र जल के बिना आती थीं और उस समय उनकी हालत सबसे खराब होती थी।”

मैंने कहा, "बेचारी सारा।"

“वह भविष्य देख सकती थी, और उसका एक भारतीय मार्गदर्शक था,” एरलेन्ड जैकबसेन ने आगे बताया। “उसने हमें जो कुछ बताया, जैसे कि घर के नीचे खजाना छिपा है, जिसे पुराने एडमिरल ने रखा था, उस पर मुझे ज्यादा भरोसा नहीं था। लेकिन आठ-नौ साल पहले मुझे यह

बात याद आई। घर में तहखाना नहीं है, बल्कि वह पत्थर के खंभों पर टिका है। हम घर के नीचे कबाड़ फेंकते थे, जहाँ लकड़ी की सीढ़ियाँ नीचे जाती थीं। मैं टॉर्च से वहाँ सफाई कर रहा था, तभी मुझे कुछ चमकदार दिखाई दिया। वह एक सीमेंट का ब्लॉक था, जिसमें से चांदी का हैंडल निकला हुआ था। मैंने सीमेंट हटाया, और मुझे एक चांदी का कटोरा मिला, जिस पर 'ए.एच.' खुदा हुआ था।"

मैंने श्रीमती जैकबसेन की ओर ध्यान दिया। उनके तीन बच्चे थे, लेकिन फिर भी वे कॉलेज के दूसरे वर्ष की छात्रा जैसी लग रही थीं। वास्तव में, वे गोडार्ड विश्वविद्यालय में पाठ्यक्रम ले रही थीं।

ठीक दस साल पहले, यानी 11 जून को, जैकबसन दंपति नवविवाहित जोड़े के रूप में इसी घर में आए थे।

"हमने यहाँ एक रात बिताई, फिर हनीमून पर गए, और फिर वापस आकर बाकी की गर्मी यहीं बिताई," मार्था जैकबसेन ने कहा। "पहली रात मैं बहुत डरी हुई थी—गलियारों में इधर-उधर चलने की आवाज़ें आ रही थीं, और घर में हम ही अकेले थे! चारों तरफ एक अजीब सा सन्नाटा छाया हुआ था और ऐसा लग रहा था कि घर में कोई और भी है। हमारे बेडरूम के दरवाज़े के बाहर गलियारे में कदमों की आहट सुनाई दे रही थी। भोर होने से पहले एक बार, वो कदम सीढ़ियों से ऊपर गए और ऊपर चक्कर लगाने लगे। लेकिन घर में सिर्फ मैं और एरलेन्ड ही थे। हमने जाँच की।"

कल्पना कीजिए कि किसी की शादी की रात अचानक कुछ अनदेखे मेहमानों के आने से खलल पड़ जाए—यह किसी व्यक्ति के लिए सदमा साबित हो सकता है!

श्रीमती जैकबसेन ने आगे बताया, "दो सप्ताह बाद हम वापस आए और यहाँ अकेले ही ठहरे, और मैंने कई बार इन कदमों की आहट सुनी। ऊपर-नीचे। हम पिछले दस वर्षों से यहाँ आ रहे हैं और मैंने इसे कुछ सप्ताह पहले फिर से सुना।"

मैंने कहा, "यह तो बहुत परेशान करने वाला होगा।"

"हाँ, ऐसा ही है। मैंने क्लब रूम में ऊपर कदमों की आहट सुनी, और दो हफ्ते पहले जब मैं नीचे था, तो रसोई का दरवाजा अपने आप खुला और बंद हो गया, बिना किसी के दिखाई दिए। फिर सामने का दरवाजा भी अपने आप खुला और बंद हो गया।"

"पैरों की आहट के साथ-साथ मुझे कुछ भारी वस्तुएं ऊपर घसीटने की आवाज भी सुनाई दी। लेकिन बाद में कुछ भी अस्त-व्यस्त नहीं था। हमने जांच की।"

“क्या कोई और भी अजीबोगरीब घटनाएँ हुई हैं?” मैंने यह बात रिकॉर्ड के तौर पर पूछ ली। इस घर में मुझे कोई भी बात हैरान नहीं कर सकती।

“लगभग दस साल पहले, जब हम पहली बार यहाँ रहने आए थे, तब भी मुझे भारी साँसें सुनाई देती थीं, जबकि घर में सिर्फ़ मैं और मेरे पति ही होते थे। फिर हमारे घर में एक मेहमान आई थीं, श्रीमती ऐनी मेरियम। उनका यह कमरा था और उनके पति हॉल के दूसरी तरफ़ वाले एक कमरे में सो रहे थे। अचानक, उन्होंने अपने बिस्तर के पास एक आकृति को खड़े देखा।”

उसने क्या किया?

“उसने दो बार पुकारा, ‘कैरोल, क्या यह तुम हो?’ लेकिन कोई जवाब नहीं मिला। फिर, जितनी अचानक वह आई थी, उतनी ही अचानक वह आकृति हवा में गायब हो गई।”

उसने अपने पति से अपने कमरे में आने के बारे में पूछा, लेकिन उसने बताया कि वह उस रात अपने बिस्तर से उठा ही नहीं था। जब एक और रात ऐसा ही हुआ, तो उसने उस आकृति का पीछा करने की कोशिश की और पाया कि उसका पति दूसरे दरवाजे से अंदर आ रहा है!

मैंने पूछा, "क्या यहां किसी और का भी भूत से सामना हुआ है?"

“खैर, एक और मेहमान अटारी में गया और दौड़कर नीचे आया और बताया कि दरवाज़ा खोलने के लिए हाथ बढ़ाने से पहले ही उसकी आँखों के सामने दरवाज़े का हैंडल घूम गया था। कुत्ता उसके साथ था और दहलीज पार करने से साफ इनकार कर रहा था। वह फ्रैंक किंग्स्टन था और यह सब हमारी शादी से पहले हुआ था। फिर लगभग पाँच साल पहले, एक और मेहमान देर रात आया। हम पहले ही सो चुके थे और उसे पता था कि उसे अटारी में ही सोना होगा क्योंकि बाकी सारे कमरे पहले से ही बुक थे। लेकिन सुबह मैंने उसे लिविंग रूम में फर्श पर सोते हुए पाया। उसे भूत के बारे में कुछ नहीं पता था। उसने कसम खाई, ‘मैं अब कभी ऊपर नहीं जाऊँगा,’ और आगे कुछ नहीं बोला। मुझे लगता है कि उसकी मुलाकात एडमिरल से हो गई होगी।”

मैंने सोचा, यह कितना बड़ा आश्चर्य रहा होगा, खासकर अगर एडमिरल पूरी तरह से भीगा हुआ हो।

श्रीमती जैकबसेन ने अपनी बात जारी रखते हुए कहा, “तीन साल पहले मेरा भाई यहाँ आया था। उसका नाम रॉबर्ट गिलमैन है। सुबह उसने शिकायत की कि वह पूरी रात जागता रहा। पहले वह संशयवादी था, लेकिन अब उसे यकीन हो गया था कि भूतों के कदमों की आवाजें सच हैं, क्योंकि उसने भी उन्हें सुना था—वास्तव में पूरी रात।”

जेफरी ब्रॉडबेंट एक गंभीर युवक था जो एक रात जे लॉरेंस के साथ उस घर में गया था, यह देखने के लिए कि एडमिरल के भूत के बारे में जो कहा जा रहा था वह सच था या नहीं।

उनके पास स्लीपिंग बैग थे और वे अटारी में रुके हुए थे। यह 1964 की नवंबर की एक सर्द रात थी, और भूतों के लिए सब कुछ एकदम सही लग रहा था। क्या उनकी खोज सफल होगी? उन्हें यह जानने के लिए ज्यादा इंतजार नहीं करना पड़ा।

“कमरे में घुसते ही हमें छत पर अजीब-सी आवाज़ें सुनाई दीं। आवाज़ें अस्पष्ट थीं और पहले तो मुझे लगा कि शायद जानवर होंगे। हम सो गए, फिर सुबह करीब छह बजे जय ने मुझे जल्दी से जगा दिया। मुझे छत पर इंसानों के कदमों की आवाज़ साफ़ सुनाई दी। वे किनारे से नीचे की ओर फिसलते हुए ज़मीन पर आ गए, जहाँ पत्तों पर चलते हुए उनकी आवाज़ रात के अंधेरे में गुम हो गई। खिड़की से कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा था और छत पर कोई नहीं था। उस रात घर में हम ही अकेले थे, इसलिए ज़रूर भूत ही रहा होगा।”

जे लॉरेंस ने इस कहानी में एक और बात जोड़ दी।

"जब हमने पहली बार अटारी में टॉर्च जलाई, तो मुझे एक तीखी आवाज साफ सुनाई दी - एक तरह की चीख या कराह - जिसके बाद कदमों की आहट सुनाई दी। वे जूते पहने हुए किसी इंसान के पैर की आवाज थी, लेकिन उनका वजन किसी सामान्य इंसान के शरीर के वजन से कहीं ज्यादा हल्का था।"

जेरी वीनर ने भी उस भूतिया घर में समय बिताया था।

मार्च 1965 की शुरुआत में, जय और मैं नीचे वाले कमरे में चूल्हे के पास खाना खाने आए। हमने नीचे ही सोने का फैसला किया और हम दोनों को लगभग एक साथ उस रात एक सपना आया जिसमें हम एडमिरल के भूत से मिले, लेकिन दुर्भाग्य से जागने पर हमें कुछ भी खास याद नहीं रहा और न ही यह याद रहा कि उसने सपने में हमसे क्या कहा था। दूसरी बार जब मैं घर में सोया, तो कुछ नहीं हुआ। तीसरी बार जब मैं दोस्तों के साथ आया, तो मैं अटारी में

सोया और मुझे कदमों की आहट सुनाई दी। हमने घर को ऊपर से नीचे तक छान मारा, लेकिन वहां कोई और नहीं था जो उन कदमों की आवाज का कारण हो सकता था।

आठ से नौ साल का एरलेन्ड एरिक शायद वैज्ञानिक रूप से दर्ज की गई मानसिक घटनाओं का सबसे कम उम्र का गवाह था, लेकिन उसकी उम्र के कारण उसकी गवाही को खारिज नहीं किया जाना चाहिए। उसने सीढ़ियों पर ऊपर-नीचे और फिर वापस ऊपर जाते हुए कदमों की आहट सुनी थी। एक रात वह हॉल के दूसरी तरफ वाले कमरे में सो रहा था जब उसने किसी को उससे बात करने की कोशिश करते हुए सुना।

मैंने पूछा, "यह किस तरह की आवाज थी?" बच्चे अक्सर वयस्कों की तुलना में अधिक संवेदनशील होते हैं।

“वह एक आदमी था,” गंभीर युवक ने जवाब दिया। “उसने मेरा नाम पुकारा, लेकिन मुझे याद नहीं कि उसने और क्या कहा। यह तीन साल पहले की बात है।”

मिरियम नेल्सन एक छोटी कद-काठी की युवती थीं, जो एरलेन्ड जैकबसेन के एक मित्र की पत्नी थीं और उस शाम हमारी जांच देखने आई थीं। वह घबराई हुई और डरी हुई लग रही थीं और उन्होंने मुझसे उन्हें दूसरे कमरे में ले जाने का अनुरोध किया ताकि मैं उनकी कहानी अकेले में सुन सकूँ। हम हॉल पार करके उस कमरे में गए जहाँ वह आकृति बिस्तर के सिरहाने खड़ी थी और मैंने उनसे पूछताछ शुरू की।

“मेरा पहला अनुभव तब हुआ जब एरलेन्ड और मैं एक वेल्श कॉर्गी को यहाँ लाए थे; एरलेन्ड के माता-पिता भी यहाँ थे। मैं नीचे पुस्तकालय में थी; कुत्ता मेरी गोद में था। अचानक मुझे कमरे में किसी और की मौजूदगी का एहसास हुआ, और मेरी साँसें रुक गईं। कुत्ता भौंकने लगा और ज़िद करने लगा कि मैं उसके पीछे कमरे से बाहर आऊँ। मुझे साफ़ तौर पर महसूस हुआ कि वहाँ कोई है।”

“फिर लगभग चार साल पहले, एक सर्द पतझड़ के दिन, मैं चूल्हे के पास बैठकर खुद को गर्म करने की कोशिश कर रही थी, तभी एक बर्नर अपने आप लगभग एक इंच ऊपर उठा और फिर नीचे गिर गया। मैंने देखा तो वह फिर से हिल रहा था। वह अपने आप नहीं हिल सकता था। मैं बहुत डर गई थी। मैं घर में अकेली थी।”

मैंने उन सभी लोगों की बातें सुनी थीं जिनका भूत से सामना हुआ था, और अब नीचे जाने का समय था जहाँ जैकबसन परिवार ने बढ़िया भोजन तैयार किया था—दिनभर की थका देने वाली यात्रा के बाद यह बिल्कुल सही था। थोड़ी देर बाद हम सब सीढ़ियों से ऊपर की मंजिल पर गए, जहाँ सिबिल खिड़की के पास सोफे पर लेटी हुई थी। हम सब उस भूतिया अटारी में उसके चारों ओर इकट्ठा हो गए और इंतजार करने लगे।

"मुझे ऊपर की मंजिल पर एक बीच वाले कमरे का एहसास हुआ," सिबिल ने कहा, "लेकिन मुझे अभी तक कुछ भी बहुत मजबूती से महसूस नहीं हो रहा है।"

जल्द ही सिबिल गहरी समाधि में चली गई और हम सांस रोककर एडमिरल—या जो भी भूत हो—के आने का इंतज़ार करने लगे। अटारी वाले कमरे में बस एक भड़कीली फ्लोरोसेंट बत्ती जल रही थी, जिसे हमने बंद कर दिया और उसकी जगह एक छोटी सी साधारण बत्ती लगा दी। एकदम सन्नाटा पसरा हुआ था, जैसा कि किसी देहाती घर में हो सकता है। लेकिन भूत हमसे सीधे बात करने और शायद हमें अतिक्रमण के लिए डांटने के बजाय, सिबिल खुद गहरी समाधि में "दूसरी दुनिया" से हमें वो सब बता रही थी जो उसने देखा—ऐसी चीजें और लोग जिन्हें आम आंखें नहीं देख सकती थीं।

“मैं इधर-उधर घूम रही हूँ,” सिबिल ने कहा। “बीच वाले कमरे में एक आदमी मृत पड़ा है। बड़ी नाक, सामने ज्यादा बाल नहीं, छोटी दाढ़ी जो अब कटी हुई है। उसके पास एक पौधा है।”

मैंने आदेश दिया, "उसका नाम पता करने की कोशिश करो, सिबिल।"

“मुझे कमरे में जाना होगा,” उसने कहा।

हमने प्रतीक्षा की।

उसने जवाब दिया, "वह हर समय यहाँ नहीं रहता। वह यहाँ मरने आया है।"

क्या यह उसका घर है?

“हाँ, लेकिन एक और घर भी है। बहुत दूर। उस आदमी का एक और घर था। हॉस्ले...हॉस्ले।”

मुझे लगा, यह लगभग एडमिरल का ही नाम है। सिबिल को यह नाम पता नहीं हो सकता था।

“वह एक घर से दूसरे घर जाता रहा, एक अलग देश में।” कुछ-कुछ भारतीय जैसा।

"क्या वह अभी भी यहीं है और वह क्या चाहता है?"

"आराम करने के लिए जगह ढूंढनी होगी क्योंकि... उसे पता ही नहीं कि वह घर किसमें है!"

वह क्या ढूंढ रहा है?

“छोटी टोकरी। इस देश की नहीं है। हैंडल जैसी...चमकदार...चांदी जैसी...एक उपहार। यह गलत घर चली गई। उसने इसे गलत घर में दे दिया। वह चीजों को लेकर बहुत सतर्क रहता है। यह दूसरे घर में श्रीमती जेरार्ड की है। वह आमतौर पर ऊपर की मंजिल पर बने छोटे कमरे में रहता है। फर्न के साथ। बिस्तर के पास।”

“लेकिन श्रीमती जेरार्ड का क्या होगा? उनका पता मिले बिना हम उन्हें पैकेज कैसे भेज सकते हैं?” मैंने कहा।

"यह बहुत महत्वपूर्ण है। लेकिन उनका कहना है कि इसे गलत नजरिए से देखा जा रहा है," सिबिल ने समझाया।

“उनका पेशा क्या था?” मैंने दोबारा कोशिश की।

"उसने कहा कि वह कुछ चीजें लाया था...बीज।"

“उसके नाम के पहले अक्षर या पहला नाम क्या है?”

“ए. जे. एच.”

सिबिल किसी ऐसे व्यक्ति की बात सुन रही थी जिसे हम देख नहीं सकते थे। उसने कहा, "वह परेशान नहीं करता। जब मैं उसके पास जाती हूँ तो वह चला जाता है। दूसरे घर जाना चाहता है।"

“दूसरा घर कहाँ है?”

“लियांग...स्ट्रीट...बॉम्बे।”

क्या उसे पता है कि वह मर चुका है?

"नहीं।"

मैंने उसे निर्देश दिया कि वह उसे बता दे।

"क्या कोई परिवार है?"

“दो परिवार...बॉम्बे।”

"बच्चे?"

“जैकब...मार्टिन।”

यह स्पष्ट नहीं था कि भूत ने जैकब कहा या जैकबसेन।

“वह कांप रहा है,” सिबिल ने बताया। “उसे किस बात ने परेशान किया? वह नामों को लेकर चिंतित है। किसी कागज़ पर लिखे नाम में ए. जे. ए. का ज़िक्र उसे खटक रहा है। उसने कहा कि जैकबसेन गलत है। सही नाम जैकब हॉस्ले का बेटा होना चाहिए।”

जाहिर है, भूत अपने उत्तराधिकारियों द्वारा अपने घर की बिक्री को मंजूरी नहीं देता था, बल्कि चाहता था कि यह उसके बेटे को मिले।

"दो घरों, दो परिवारों के कारण, उसे समझ नहीं आ रहा था कि तीसरे घर का क्या करे।"

उसके नाम में ‘A’ का क्या अर्थ है?

“आरोन...आरोन जैकब।”

क्या उनके पास किसी प्रकार का पद या पेशेवर प्रतिष्ठा है?

“कुछ...ए-डी-एम...पढ़ नहीं सकता...प्रशासक ए-डी-एम...यह कागज पर लिखा है, लेकिन मैं कागज पढ़ नहीं सकता।”

फिर भी, उन्हें एडमिरल का पद तो मिल ही गया!

मैंने श्रीमती जेरार्ड को उपहार पहुंचाने का वादा किया था, अगर हम उन्हें ढूंढ पाते, लेकिन उन्हें अब इस घर में और नहीं रहना चाहिए।

“वह पूछता है, पौधों को पानी कौन देता है?” सिबिल ने कहा।

मैंने उन्हें आश्वासन दिया कि पौधों का ध्यान रखा जाएगा।

“लेकिन उस दूसरे घर का क्या? वहाँ पौधों को पानी कौन देता है?” भूत जानना चाहता था।

मैंने पलटकर पूछा, "वह वहां कैसे जाता है?"

“वह नाव से जाता है,” सिबिल ने जवाब दिया। “इसमें बहुत समय लगता है।”

मैंने फिर से वादा किया कि अगर संभव हुआ तो मैं भारत में घर ढूंढ लूंगा।

मैंने पूछा, "डेट के बारे में क्या ख्याल है? यह सब कब हुआ था?"

“लगभग 1867 में,” सिबिल ने उत्तर दिया।

“उस समय उसकी उम्र कितनी थी?”

“उनसठ।”

मैंने एडमिरल से विनती की कि वे घर में रहने वालों को परेशान करके कोई अव्यवस्था न फैलाएं। सिबिल के माध्यम से मिला जवाब कठोर था।

“प्रशासनिक पृष्ठभूमि वाले व्यक्ति होने के नाते, वह हमेशा साफ-सफाई पसंद करते हैं,” सिबिल ने बताया। “लेकिन अब वह जा रहे हैं।”

“वह अब जा रहा है,” सिबिल ने दोहराया, “और वह फर्न भी अपने साथ ले जा रहा है।”

मैंने सिबिल को उसके अपने शरीर में वापस बुलाया, ताकि किसी अवांछित घुसपैठिए को उसके वापस नियंत्रण में आने से पहले अंदर आने का मौका न मिले।

अपनी अधर में लटकी यात्रा के बावजूद सिबिल बिल्कुल ठीक थी। वह उठकर बैठ गई और हमारी ओर मुस्कुराते हुए सोचने लगी कि हम सब उसे इतनी ध्यान से क्यों देख रहे हैं। उसे कुछ भी याद नहीं था।

एरलेंड जैकबसेन ने अपनी बात रखी।

“उस टोकरी का ज़िक्र उसने किया था,” उसने कहा। “जब मेरे माता-पिता ने पहली बार यह घर खरीदा था, तब डाइनिंग रूम के ऊपर एक चेन से एक भरवां आर्मडिलो लटका हुआ था, जिस पर बाहर से पॉलिश की गई थी। उसमें भूसे के हैंडल लगे थे और उसे टोकरी का रूप दिया गया था। वह लगभग पाँच साल पहले तक घर में ही था, लेकिन मुझे नहीं पता कि अब वह कहाँ है। हो सकता है कि वह अभी भी घर में कहीं पड़ा हो।”

मैंने कहा, "बेहतर होगा कि तुम उसे ढूंढ लो। मतलब, अगर तुम चाहते हो कि उन कदमों की आहट बंद हो जाए तो!"

जैसे ही हम घर से निकल रहे थे, जैकबसन परिवार के बड़े सदस्य वापस आ गए। श्री एरिक जैकबसन भूतों में विश्वास नहीं करते और मुझे उनसे इस विषय पर बात करने की कोशिश न करने के लिए कहा गया था। लेकिन उनकी पत्नी, जोसेफिन, जो एरलेन्ड की माँ थीं, को भूत ने सीढ़ियों से नीचे धकेल दिया था—या कम से कम उनका यही दावा था। एडमिरल के अंतिम संस्कार के बाद के दिनों और रातों के व्यवहार को देखते हुए यह बात काफी हद तक संभव लगती है।

व्हाइटफील्ड में हमारा काम लगभग पूरा हो चुका था और हम स्टोव, वर्मोंट के लिए रवाना हो गए, जहाँ हमने प्रसिद्ध ट्रैप फैमिली लॉज में ठहरने का फैसला किया था। कैथरीन को श्रीमती ट्रैप की किताबों में दिलचस्पी हो गई थी, और 'द साउंड ऑफ म्यूजिक' से हम दोनों को लगा कि भूत-प्रेत की खोज में व्यस्त सप्ताहांत के दौरान यह लॉज शांति का एक सुखद क्षण प्रदान करेगा।

अगली सुबह हमने अपनी खोज की थकान से आराम किया और पाया कि हमारे आसपास की दुनिया वाकई शांत और आशापूर्ण थी। अगली सुबह हम गोडार्ड कॉलेज जाएंगे और छात्रों और शिक्षकों को भूतों के विषय पर संबोधित करेंगे, जिससे हमें स्टोव में एक सुखद दोपहर बिताने का मौका मिलेगा, और फिर मैनहट्टन के लिए उड़ान भरेंगे। लेकिन हमने लॉज के व्यावसायिक रवैये को नज़रअंदाज़ कर दिया था। अधिकांश ठहरने की जगहों की तरह, वे चाहते थे कि हम रविवार सुबह 11 बजे तक अपने कमरे खाली कर दें, लेकिन अंत में उन्होंने हमें दो बजे तक रुकने की पेशकश की। मैंने मना कर दिया।

कॉलेज में मेरे भाषण के बाद, हमें महिलाओं के एक छात्रावास में ले जाया गया जहाँ अजीबोगरीब घटनाएँ घटित हो रही थीं। कॉलेज पुराने मार्टिन फार्म पर स्थित था, और हवेली को उसके पुराने विक्टोरियन वैभव को बरकरार रखते हुए, एक बेहद शानदार महिला छात्राओं के निवास में बदल दिया गया था। मुझे ऊपर के पुराने गलियारों में एक मृत बटलर के घूमने की खबरें मिली थीं। दो छात्राएँ, मेडेलीन एहरमन और डोरोथी फ्रेज़ियर, उस भूत के बारे में जानती थीं। ये घटनाएँ मुख्य रूप से तब होती थीं जब आसपास कोई नहीं होता था और

कदमों की आहट सुनाई देती थी। एक शिक्षिका, जो भूतों में विश्वास नहीं करती थी, हवेली में गई और बाद में बताया कि डॉसन नाम लगातार उसके दिमाग में बसा हुआ था। बाद में हुई जाँच से पता चला कि वास्तव में बहुत समय पहले उसी नाम का एक बटलर उस हवेली में रहता था।

सू ज़करमैन न्यूयॉर्क की रहने वाली थीं और गोडार्ड विश्वविद्यालय में पढ़ाई कर रही थीं।

“पिछले सेमेस्टर की एक रात,” उसने कहा, “मैं देर रात तक पढ़ाई कर रही थी, तभी मुझे अपने कमरे की ओर आते कदमों की आहट सुनाई दी। कुछ सेकंड बाद मैंने दरवाजा खोला—वहाँ कोई नहीं था। मैंने दरवाजा बंद कर दिया और फिर से पढ़ाई करने लगी। तभी मुझे अपने दरवाजे से दूर जाते कदमों की आहट सुनाई दी। मैंने दोबारा देखा, लेकिन कुछ नहीं दिखा।”

“इस दौरान लगभग तीन सप्ताह तक, मेरी अलार्म घड़ी हर रात बंद रहती थी। मैं इसे लगभग 7:30 बजे का समय देता था, लेकिन जब मैं उससे काफी देर बाद उठता था, तो अलार्म का बटन हमेशा बंद मिलता था। मैंने अपनी घड़ी को छुपाना शुरू कर दिया, अपने दरवाजे को ताला लगा दिया—लेकिन फिर भी ऐसा होता रहा।”

"सौ साल 1962 में, मैं एक ओइजा बोर्ड से खेल रहा था जिसे मैंने गंभीरता से संवाद करने के साधन के रूप में नहीं, बल्कि मनोरंजन के लिए खरीदा था। मुझे इससे कभी भी ऐसी कोई बात नहीं मिली थी जो मेरे अपने दिमाग की उपज न हो, लेकिन उस शुक्रवार दोपहर, 1962 में, मैंने तीन अन्य दोस्तों की उपस्थिति में इसका इस्तेमाल किया, और जैसे ही हमने इसे छुआ, यह सचमुच उछलने लगा। यह बहुत तेजी से घूमने लगा और एक संदेश दिया जिसे हममें से एक ने लिख लिया: 'मैं मर गया हूँ...शराब से।' 'क्या तुम अभी हवेली में हो?' 'कोई मेरी उपस्थिति के बारे में यहाँ बता सकता है।' और भी बहुत कुछ था, लेकिन मुझे अब याद नहीं है।"

"उसके बाद, एक अजीब सी हवा चली और जब हम बाहर एक पेड़ के पास से गुजर रहे थे, तो वह धड़ाम से गिर पड़ा।"

मुझे अजीबोगरीब "हवा" के बारे में तो पता नहीं है, और ओइजा बोर्ड कभी-कभी संदिग्ध चीजें होती हैं, लेकिन डॉसन नाम के बेचैन बटलर के कदमों की आहट गॉडार्ड कॉलेज की छात्राओं के लिए एक बहुत ही असामान्य पाठ्येतर गतिविधि रही होगी।

*98

तहखाने में भूत

मैरी अटलांटा, जॉर्जिया में रहती हैं। वह एक शांत स्वभाव की महिला हैं, जो दक्षिणी लहजे में बड़ी मधुरता से बोलती हैं और जीवनशैली में काफी रूढ़िवादी हैं। यहां तक कि दोस्तों के लिए टैरो कार्ड पढ़ने की उनकी विशेष प्रतिभा भी उनके लिए शर्मिंदगी का कारण हुआ करती थी, क्योंकि उनके धर्म और पड़ोसियों को पता चलने पर वे क्या कहेंगे, इस बात का डर रहता था, साथ ही यह भी कि हर कोई उनसे ही टैरो कार्ड पढ़वाना चाहता था।

जब मैं उनसे मिली, तब उनकी दो प्यारी बेटियाँ थीं, 15 साल की केटी और कॉलेज में पढ़ने वाली बूट्स। 1962 में हैलोवीन के दिन, वह और उनकी बेटियाँ अटलांटा में एक आकर्षक 18 साल पुराने घर में रहने आई थीं। यह एक शांत उपनगरीय इलाके में, अन्य साधारण से छोटे घरों के बीच स्थित था। घर से कुछ ही दूरी पर एक रेलवे ट्रैक है, जिसका उपयोग आजकल केवल माल ढुलाई के लिए किया जाता है। प्रसिद्ध पुराना फोर्ट मैकफर्सन भी पास ही है; गृहयुद्ध के दौरान, इस स्थान पर सबसे खूनी लड़ाइयों में से एक लड़ी गई थी।

घर दो मंजिलों का है; सड़क के स्तर पर एक बड़ा बैठक कक्ष है जिसमें घर के सामने से प्रवेश किया जाता है, फिर तीन शयनकक्ष हैं, और घर के दाहिनी ओर एक छोटा कमरा है जो रसोई में खुलता है। एक शयनकक्ष से लोहे की रेलिंग वाली सीढ़ी तहखाने में जाती है। सीढ़ियों के नीचे एक कोठरी है। घर के पीछे एक बड़ा आँगन है और वहाँ से भी बाहर की सीढ़ियाँ तहखाने में जाती हैं। तहखाने का केवल दाहिना तिहाई हिस्सा ही वास्तव में परिवार द्वारा उपयोग किया जाता है, अधिकांश जगह में कपड़े धोने का कमरा है और एक दीवार इसे तहखाने के खाली हिस्से से अलग करती है।

घर अपने आप में आरामदायक और गर्मजोशी भरा लगता है, फर्नीचर सुखद और उपयोगी है, और अगर घर में घटी कुछ असामान्य घटनाओं को छोड़ दें, तो कोई कभी यह अनुमान नहीं लगा सकता कि यह एक साधारण उपनगरीय घर के अलावा कुछ और है।

घर में आने के कुछ ही समय बाद, मैरी और उसकी बेटियों को घर में कुछ अजीब सा महसूस होने लगा। वह आधी रात को इसलिए जाग जाती थी क्योंकि उसे तहखाने में किसी के खोदने की आवाज़ सुनाई देती थी। उसे पहले तो यह बात नामुमकिन सी लगी, लेकिन जब यह आवाज़ रात-दर-रात आती रही, तो उसे लगा कि कहीं पड़ोसी पानी का पाइप तो नहीं बिछा रहे हैं। कुछ समय बाद, उसने पता लगाने का फैसला किया कि खुदाई कौन कर रहा है। वह बिस्तर से उठी और नीचे गई, लेकिन वहाँ कुछ भी नहीं था। न तो कोई चूहा था और न ही कोई गिलहरी, जिससे यह अजीब आवाज़ आ सकती थी। न ही कोई ताज़ी खोदी हुई मिट्टी थी। उनके पड़ोसी कोई खुदाई नहीं कर रहे थे। इससे भी ज़्यादा रहस्यमय बात यह थी कि मैरी और उसकी दोनों बेटियों को हमेशा रात के दो बजे घर में किसी के घुसने की कोशिश करने की आवाज़ सुनाई देती थी। और जब भी वे जाँच करतीं, वहाँ कोई नहीं होता था। उन्होंने पुलिस को बुलाया, लेकिन पुलिस को कोई सुराग नहीं मिला। मैरी ने आगे और पीछे के दरवाजों पर मज़बूत कुंडी लगा दी, लेकिन जिस दिन वह एक काम से लौटी, तो घर खाली मिला। उसने देखा कि किसी ने उन कुंडियों को उखाड़ दिया था।

उस समय मैरी अपने डॉक्टर पति से अलग रह रही थी, और वह उनसे इन अजीब घटनाओं के बारे में बात करने से डरती थी, क्योंकि वह मानसिक घटनाओं पर विश्वास नहीं करते थे और शायद इसका फायदा उठाकर मैरी को मानसिक इलाज की ज़रूरत वाला घोषित करवा सकते थे। मैरी को दोपहर में झपकी लेने की आदत थी, लेकिन अब उनकी झपकी एक अनदेखे व्यक्ति के घर में घुसने, घर में ऐसे घूमने जैसे वह उसे अच्छी तरह जानता हो, और कभी-कभी पानी चलाने या शौचालय फ्लश करने से बाधित होने लगी थी! अक्सर, जब वह तहखाने में कपड़े धो रही होती थी, तो उसे ऊपर से कदमों की आहट साफ सुनाई देती थी, फिर दराजों के खुलने-बंद होने और पानी चलने की आवाज़ आती थी। लेकिन जब वह देखती, तो वहाँ कोई नहीं होता था और कुछ भी नहीं बदला होता था।

पहले तो उसने अपनी बेटियों से ये परेशान करने वाली खबर छुपाई, लेकिन जल्द ही उन्हें पता चला कि बच्चों ने भी अजीब आवाजें सुनी थीं। इसके अलावा, केटी को रात में अपने ऊपर किसी के हाथों का आभास हुआ था, जबकि वह जानती थी कि वह अपने कमरे में अकेली थी। दिन के उजाले में भी किताबें जैसी भारी वस्तुएं गायब होने लगीं और फिर दूसरी जगहों पर दिखाई देने लगीं, मानो कोई उनके साथ खेल खेल रहा हो। उस समय बड़ी बेटी बूट्स कॉलेज में थी और जब वह स्कूल से लौटी तो उसे इस बात का कोई अंदाजा नहीं था कि हाल ही में उसकी बहन और मां के साथ घर में क्या हुआ था। इसलिए जब उन्होंने तहखाने में किसी को टाइपराइटर चलाते सुना तो उन्हें गहरा सदमा लगा, जबकि वे सभी जानते थे कि वहां कोई नहीं था और घर में कोई टाइपराइटर भी नहीं था। परिवार ने आपस में बात की और यह तय किया गया कि घर में एक भूत है, या शायद कई भूत हैं। हालांकि, अब तक वे इस विचार के आदी हो चुके थे और अब उन्हें पहले जितना डर नहीं लगता था।

एक रात कैटी सो रही थी, तभी अचानक उसे एहसास हुआ कि वह अकेली नहीं है। आँखें खोलते ही उसने अपने बिस्तर के पास एक धुंधली आकृति को खड़ा देखा। उसकी माँ दूसरे कमरे में थी, इसलिए कैटी जानती थी कि वह खुद तो नहीं हो सकती।

जल्द ही, मैरी और उसकी बेटी को एहसास हुआ कि वे सिर्फ एक भूत से नहीं निपट रही थीं। कई बार एक बच्चे के तेज़ कदमों की आहट के साथ-साथ एक वयस्क के भारी कदमों की आहट भी सुनाई देती थी। फिर ऐसा लगता था जैसे कोई उन्हें नाम लेकर पुकार रहा हो। जनवरी 1968 में एक दिन, जब वे अपने अदृश्य मेहमानों के आदी हो चुके थे, मैरी रसोई से आती संगीत की आवाज़ से जाग उठी। उसने तुरंत जाँच की, लेकिन उसे न तो रेडियो मिला और न ही संगीत का कोई ऐसा कारण जिसे तर्कसंगत माना जा सके। वह वापस बिस्तर पर चली गई और इसे नज़रअंदाज़ करने की कोशिश की। तभी दो कदमों की आहट चादर के आर-पार उसके कानों तक पहुँची। एक जोड़ी पैर उसकी बेटी केटी के कमरे की ओर मुड़ते हुए प्रतीत हुए, जबकि दूसरी जोड़ी पैर सीधे उसके बिस्तर की ओर आए और वहीं रुक गए। फिर ऐसा लगा जैसे किसी बर्फीली ठंडी चीज़ ने उसे छुआ हो। वह डर के मारे चीख पड़ी और बिस्तर से कूद गई, जिससे यह घटना रुक गई और फिर से वहाँ कोई नहीं था।

मैरी को यह जानने की उत्सुकता होने लगी कि घर में वह कौन व्यक्ति था जो इस घटना को संभव बना रहा था, क्योंकि वह मानसिक घटनाओं के बारे में इतना जानती थी कि उसे यह एहसास था कि कोई न कोई माध्यम जरूर होगा। एक रात उसे जवाब मिल गया। वह अपनी बेटी केटी के कमरे से आती हुई एक आवाज से जाग उठी। एक महिला की आवाज बार-बार एक वाक्य दोहरा रही थी और केटी उसे दोहराकर जवाब दे रही थी। वह स्पष्ट रूप से "सुनहरी रेत" सुन सकती थी, जो एक मीठी, कोमल आवाज में बोला जा रहा था और उसकी बेटी केटी उसे एक बचकानी आवाज में दोहरा रही थी जो उसकी सामान्य वयस्क आवाज से बिल्कुल अलग थी। फिर उसने केटी को ताली बजाते और यह कहते हुए सुना, "अब मैं क्या करूँ?" जब मैरी केटी के कमरे में गई तो उसने अपनी बेटी को गहरी नींद में सोते हुए पाया। अगले दिन जब उससे इस घटना के बारे में पूछा गया, तो केटी को कुछ भी याद नहीं था। लेकिन घटनाएँ जारी रहीं।

एक दिन केटी ने चालीस साल की एक महिला को देखा और महसूस किया कि कोई उसके बालों को सहला रहा है। यह एक सौम्य भाव लगा और केटी डरी नहीं। अब मैरी को आश्चर्य होने लगा कि कहीं यह घटना उसकी बेटी के साथ ही तो नहीं हो रही है, बल्कि शायद वह खुद ही है। उसके पास हमेशा से ही मानसिक शक्ति थी, इसलिए उसने अपनी इस क्षमता को परखने का फैसला किया। यह जानने के प्रयास में कि वह भूत कौन था और घर में वह क्या चाहता था, मैरी ने गहरी विश्राम अवस्था में बैठकर उस महिला द्वारा भेजे गए मानसिक संदेश को अपनी अंतरात्मा की आवाज़ से सुना। बार-बार उसने अपने भीतर एक वाक्य सुना - "मुझे नदी पार करने में आपकी मदद चाहिए!" कुछ दिनों बाद उसने उसी महिला की फुसफुसाहट अपने कान में सुनी, "मुझे आपकी मदद चाहिए!" "तुम कहाँ हो?" मैरी ने ज़ोर से कहा। "तहखाने में, मिट्टी में," आवाज़ ने उत्तर दिया। जल्द ही मैरी को एहसास हुआ कि घर में एक और भूत है, यह पुरुष भूत है। मैरी दोपहर की नींद से जाग उठी क्योंकि उसने किसी को सामने के दरवाजे से आते सुना। वह उठ बैठी और उस अदृश्य शक्ति पर चिल्लाई कि वह चली जाए और उसे अकेला छोड़ दे। लेकिन एक कर्कश आवाज ने उसे जवाब दिया। “वह मुझे देख सकती है!” लेकिन मैरी को कोई दिखाई नहीं दिया। फिर भी, उसे यकीन होता जा रहा था कि वह आदमी उस महिला भूत पर ध्यान देने के कारण उससे नाराज़ था और मैरी

सोचने लगी कि क्या उन दोनों का कोई संबंध था। मैरी ने सच्चे दोस्तों से "मानसिक बचाव मंडल" बनाने का आह्वान किया, यानी बेचैन भूतों से संपर्क करने और यदि संभव हो तो उन्हें भगाने की कोशिश करने के लिए। इससे कोई फायदा नहीं हुआ। कुछ देर बाद, मैरी ने फिर से विनती भरी आवाज सुनी, "मुझे तुम्हारी ज़रूरत है। तहखाने में आओ।" मैरी तहखाने में गई और वहाँ उसने दिवंगत आत्माओं के लिए प्रार्थना की। चाहे प्रार्थना का असर हुआ हो, या भूतों को आखिरकार एहसास हो गया हो कि वे एक ऐसे घर में रह रहे हैं जो किसी और युग का है, उसके बाद कोई और गड़बड़ी नहीं हुई।

*99

चार्ल्स स्ट्रीट, मैनहट्टन की मिस बॉयड

न्यूयॉर्क शहर के सबसे पुराने और ऐतिहासिक रूप से सबसे दिलचस्प हिस्सों में से एक ग्रीनविच विलेज है, जहाँ उन्नीसवीं, अठारहवीं और यहाँ तक कि सत्रहवीं शताब्दी के कई घर आज भी मौजूद हैं। इन घरों में रहने वाले लोगों को कभी-कभी किसी अदृश्य या प्रत्यक्ष शक्ति से सामना करना पड़ता है, लेकिन भूत और पुराने घर एक दूसरे से जुड़े हुए प्रतीत होते हैं। न्यूयॉर्क के इस हिस्से में रहने वाले जिन लोगों से मैंने भूतिया अनुभवों के कारण वर्षों से साक्षात्कार किया है, उनमें से किसी ने भी कभी यह नहीं सोचा कि उनमें कुछ असाधारण रूप से भयानक है। बल्कि, वे उन व्यक्तियों के बारे में जानने के लिए उत्सुक थे जिनके साथ वे अपने घर साझा करते थे।

कुछ साल पहले चार्ल्स स्ट्रीट पर मेरी मुलाकात मिस बॉयड नाम की एक महिला से हुई थी और यह मुलाकात हम दोनों के लिए फायदेमंद साबित हुई। मिस बॉयड असल में एक भूत थीं। यह सब इसलिए हुआ क्योंकि मेरे दोस्त बैरी ने चार्ल्स स्ट्रीट पर एक अपार्टमेंट लिया था और उन्हें पता चला कि उनके भूतल वाले अपार्टमेंट में एक भूत रहता है। 1964 की हैलोवीन पर, मैं माध्यम सिबिल लीक के साथ उस अपार्टमेंट में गया था और मुझे इस बात का कोई अंदाजा नहीं था कि वहां मुझे वहां रहने वाले लोगों के अलावा और कौन मिलेगा। चिमनी में आग जल रही थी और बाहर तेज हवा चल रही थी, लेकिन बैरी की दोस्त, उपन्यासकार एलिजाबेथ बी. ने माहौल को और भी जीवंत बना दिया। उन्होंने बताया कि यह सब तब शुरू

हुआ जब बैरी के घर आई मेहमान एड्रियाना बिस्तर पर लेटी हुई थीं और किसी ने उनकी बांह को जोर से धक्का दिया, जिससे उनकी नींद खुल गई। उसी समय उन्हें अचानक रोना आ गया और वह फूट-फूट कर रोने लगीं, हालांकि इसका कोई कारण नहीं था। किसी तरह उन्होंने किसी और के दुख को महसूस किया। ऐसा कई रातों तक लगातार होता रहा। हालांकि, एड्रियाना ने बैरी को इसके बारे में नहीं बताया। वास्तव में बताने की कोई ज़रूरत भी नहीं थी क्योंकि एक रात जब वह लगभग 1 बजे घर पहुँचा तो उसने एड्रियाना को आँसुओं में डूबा हुआ पाया। जब उसकी मेहमान चली गई, तो उसने इस पूरी बात को नज़रअंदाज़ करने की कोशिश की, लेकिन उसे भी हर समय किसी की मौजूदगी का एहसास होता रहा। एक बार उसने एक सफ़ेद धुंध देखी और उसे यकीन हो गया कि कोई उसे देख रहा है।

मिस बॉयड चार्ल्स स्ट्रीट पर यहीं रहती थीं।

सिबिल लीक को लगा कि किसी अदृश्य शक्ति से संवाद संभव है। धीरे-धीरे गहरी समाधि अवस्था में जाते हुए, उन्होंने उस दुखी महिला से संपर्क किया जो अपने जीवनकाल में बहुत कष्ट झेल चुकी थी और उस जगह को छोड़ नहीं पा रही थी। "उसका नाम बॉयड है," सिबिल ने बताया और फिर उस शक्ति, यानी स्वयं भूत ने, सिबिल के बोलने पर नियंत्रण कर लिया और मैं उससे उसकी शिकायतों के बारे में पूछ सकी। जाहिर तौर पर मिस बॉयड घर के

मालिकाना हक से संबंधित एक दस्तावेज़ की तलाश में थीं; वर्ष 1866 था। घर की मालकिन का नाम अनुस्सी था। उसी समय हमें séance समाप्त करना पड़ा।

हम कुछ हफ़्ते बाद लौटे, और फिर से सिबिल लीक का भूत से संपर्क हुआ। सोचिए मुझे कितना आश्चर्य हुआ जब एलिज़ाबेथ बी. ने मुझे बताया कि हमारी पहली मुलाकात के बाद से उसने घर के बारे में कुछ शोध किया था, और पता चला कि यह घर वास्तव में 1827 में सैमुअल बॉयड द्वारा खरीदे जाने के बाद से बॉयड नाम के एक परिवार का था! यहां तक कि "अनुसी" नाम के मकान मालिक के बारे में भी कुछ जानकारी मिली, सिवाय इसके कि नाम की वर्तनी अलग थी, मोएसलिन। रिकॉर्ड के अनुसार, इस व्यक्ति ने 1866 में मैरी बॉयड को घर किराए पर दिया था। लेकिन उस कागज़ का क्या हुआ जिसे भूत ढूंढने की कोशिश कर रहा था, वह कागज़ जिसके कारण वह घर में लगातार मौजूद थी? "कागज़ ढूंढो, कागज़ ढूंढो। यह मेरा घर है," भूत ने माध्यम के ज़रिए कहा। पता चला कि वह कागज़ उसके पिता बिल के नाम पर था, और भूत के अनुसार मकान मालिक का घर पर कोई अधिकार नहीं था। यही कारण था कि वह वहां लगातार मौजूद थी।

मैंने समझाने की कोशिश की कि काफी समय बीत चुका है और अब यह मामला महत्वहीन हो गया है। मैंने मिस बॉयड से घर छोड़ने और अपने मृत रिश्तेदारों के साथ जीवन के दूसरे पड़ाव पर जाने का अनुरोध किया। इसमें कोई संदेह नहीं था कि माध्यम सिबिल लीक ने वास्तव में एक असली भूत को बुलाया था, क्योंकि एलिजाबेथ बी. ने अपने शोध पर चर्चा करते हुए केवल मैरी बॉयड का नाम लिया था। लेकिन समाधि की अवस्था में, माध्यम के ज़रिए बोलने वाले भूत ने गर्व से खुद को मैरी एलिजाबेथ बॉयड बताया था। जब रिकॉर्ड दोबारा जांचे गए तो पता चला कि 1868 में घर में रहने वाली व्यक्ति मैरी ई. बॉयड थीं। एक विलियम बॉयड भी थे, जो स्पष्ट रूप से भूत द्वारा संदर्भित पिता थे, जिन्होंने उन्हें घर पर उनके स्वामित्व और अधिकारों को साबित करने वाले कागजात दिए थे।

मुझे उम्मीद है कि मिस मैरी बॉयड से दोबारा किसी का सामना नहीं होगा, क्योंकि यह बहुत दुख की बात होगी कि उन्हें सिर्फ यह साबित करने के लिए इतने लंबे समय तक इंतजार करना पड़े कि आखिरकार वह घर उन्हीं का था।

*100

न्यूबरी पार्क, कैलिफोर्निया में स्थित हॉन्टेड रेंच

श्रीमती एच. एक असाधारण महिला हैं, जिन्होंने अपना अधिकांश जीवन लॉस एंजिल्स के उत्तर में स्थित कैलिफोर्निया के छोटे से कस्बे न्यूबरी पार्क में बिताया है। न्यूबरी पार्क की आबादी लगभग 15,000 है और इसकी प्रमुख पहचान इसका स्टेजकोच इन है, जिसका उपयोग कभी सांता बारबरा और लॉस एंजिल्स के बीच स्टेजकोच यात्रा के दौरान पड़ाव के रूप में किया जाता था, हालांकि 1915 में इसका संचालन बंद हो गया। कुछ साल पहले इस सराय को इसके पुराने स्थान से स्थानांतरित कर दिया गया था और अब यह अधिक सुविधाजनक स्थान पर है, जबकि एक प्रमुख राजमार्ग उस स्थान से होकर गुजरता है जहां यह पहले स्थित था। न्यूबरी पार्क के आसपास की भूमि मुख्य रूप से पशुपालन भूमि है और परिणामस्वरूप, यहां के घर भी पशुपालन शैली के हैं - छोटे, फैले हुए और आमतौर पर सफेद या भूरे रंग से रंगे हुए। एच. परिवार उस भूमि के एक हिस्से पर रहता है जिसे स्थानीय रूप से हेज़ रेंच के नाम से जाना जाता है, जो कभी सैकड़ों एकड़ कृषि भूमि थी। उनके पास ढाई एकड़ जमीन और उसके बीच में एक छोटा लेकिन आरामदायक पशुपालन घर है। लगभग सन् 1920 के आसपास, ऐसा प्रतीत होता है कि उस घर में एक परिवार रहता था जिसकी एक छोटी बच्ची थी जो गलती से संपत्ति पर स्थित किसी कुएं या गटर में डूब गई थी। इसके अलावा, श्रीमती एच. को अपने घर के आस-पास के क्षेत्र में घटी किसी अन्य दुखद घटना की जानकारी नहीं थी।

श्रीमती एच. ने पहले मुझसे संपर्क किया था और भूतों से जुड़ी समस्याओं के बारे में बताया था, हालांकि उन्होंने ज़्यादा विस्तार से नहीं बताया था। अब मैंने उनसे घर में हो रही घटनाओं के बारे में पूछताछ की।

पिछले दो महीनों में तीन ऐसी घटनाएं हुई हैं जिनका मैंने ज़िक्र नहीं किया है। सबसे हाल की घटना एक अजीब सी 'गायन' या 'सीटी' जैसी आवाज़ थी जो मैंने कुछ रात पहले सुनी थी। मुझे पूरा यकीन है कि यह मेरा वहम नहीं था, क्योंकि मेरे बेटे डेविड ने मुझे बताया था कि उसने लगभग दो महीने पहले बाथरूम में ऐसी ही आवाज़ सुनी थी। वह डर गया था, लेकिन किसी और ने वह आवाज़ नहीं सुनी और मुझे समझ नहीं आया कि पाइपों में थोड़ी सी हवा के

अलावा और क्या हो सकता है। लेकिन जब मैंने वही आवाज़ सुनी, तो मैं अपने लिविंग रूम-किचन में अकेली बैठी थी।

“दूसरी घटना जो घटी, वो उस दिन की है जब मैंने भूत देखा था। आवाज़ से मुझे पता चल गया था कि वो करीब दस या बारह साल का लड़का है। लेकिन उस दिन (जनवरी के आखिर में) जब मैं खिड़कियाँ धो रही थी, तो खिड़की के शीशे से साफ-साफ बाड़ के पास एक छोटा लड़का खड़ा दिखाई दिया और उसके आर-पार बाड़ भी दिख रही थी! सुबह का समय था और घर का वो हिस्सा छाया में था, लेकिन उसके पीछे का आँगन तेज़ धूप से जगमगा रहा था। मुझे अपनी आँखों पर यकीन नहीं हो रहा था और जब मैंने पीछे मुड़कर देखा तो वो गायब हो चुका था।”

“एक और ऐसी घटना जिसे समझाना मुश्किल है, वह लगभग एक महीने पहले की एक शाम की है—शायद उससे भी ज़्यादा—जब मैं और मेरे पति लिविंग रूम में बैठे थे और कमरा काफी शांत था। हम दोनों ने दरवाजे के पास से एक ऐसी आवाज़ सुनी जिसे सिसकने की आवाज़ ही कहा जा सकता है। मैंने यह आवाज़ कई महीने पहले भी सुनी थी, लेकिन किसी और ने नहीं सुनी थी।”

ऐसा लगता है कि एच. के बच्चों को भी उस घर में कुछ अजीब अनुभव हुए थे। "डेविड ने मुझे कुछ धुंधली आकृतियों के बारे में बताया जो उसने देखी थीं, और कहा कि दूसरे बच्चों ने भी उन्हें कुछ समय पहले अपने बेडरूम में देखा था। उसने कहा कि कमरे में अंधेरा था और ये 'चीजें' हल्की थीं। छत के पास उसने तीन धुंधली आकृतियाँ देखीं और ऐसा लग रहा था कि वे बच्चों को नीचे देख रही हैं। वे अस्पष्ट थीं लेकिन उसे लगा कि वे लोग थे। उसने मुझे बुलाया और जब मैं अंदर आया और दरवाजा खोला तो वे गायब हो गईं।"

“बच्चों ने जो ‘आकारहीन, भयानक’ चीज़ देखी थी, वह कुछ समय तक मेरे दिमाग में घूमती रही, और जब मैंने बाद में वहाँ कुछ देखा, तो मुझे यकीन नहीं था कि यह मेरी अवचेतन प्रतिक्रिया तो नहीं थी और मैंने इसके बारे में किसी से बात नहीं की, लेकिन लगभग तीन सप्ताह बाद ऐसा हुआ। बच्चे दरवाज़ा खुला छोड़ने की ज़िद कर रहे थे और उस चीज़ को देखने के बाद मैंने कई हफ़्तों तक उन्हें खुला रहने दिया। जिस रात मैंने वह चीज़ देखी, उस रात दरवाज़ा खुला हुआ था। मैं खिड़कियों के पास दरवाज़े के सामने बैठा था और ऊपर देखा

तो मुझे पार्टीशन के बगल में और उसके ऊपर (ज़मीन से ऊपर, लगभग छह फीट) दरवाज़े के अंदर एक धुंधली, सफ़ेद आकृति दिखाई दी।”

"हाल ही में यहाँ आसपास कुछ खास नहीं हुआ है, सिवाय इसके कि मुझे बाहर, जाहिरा तौर पर कपड़े सुखाने वाली रस्सी के पीछे पहाड़ी पर, एक सिसकने की आवाज़ सुनाई दी, जो काफी तेज़ थी और कई मिनट तक लगातार आती रही।"

“कल दोपहर, मैं और मेरी बेटी आँगन में बैठे थे और हम दोनों ने घर के दूसरी तरफ दो कारों के दरवाज़े ज़ोर से बंद होने की आवाज़ सुनी। वह यह देखने गई कि क्या ट्रक के दरवाज़े भी बंद हुए हैं, लेकिन वे दोनों खुले थे और वहाँ कोई कार नहीं थी।”

न्यूबरी पार्क में कौन सा भूत या भूत हैं, यह मुझे नहीं पता। हो सकता है कि भूत अतीत की यादों को, कम से कम आंशिक रूप से, सहेज रहे हों। लेकिन कमरे में तैरती हुई सफेद आकृतियों को इस आधार पर समझाना मुश्किल है। इस इलाके में, जहाँ इतने लंबे समय से लोग रहते आए हैं, दुखद घटनाएँ होना स्वाभाविक है, जिनका कोई रिकॉर्ड नहीं होता। शायद अतीत का कोई व्यक्ति अभी भी आसपास है, और सोच रहा है कि उसकी जगह पर ये नए लोग कौन हैं।

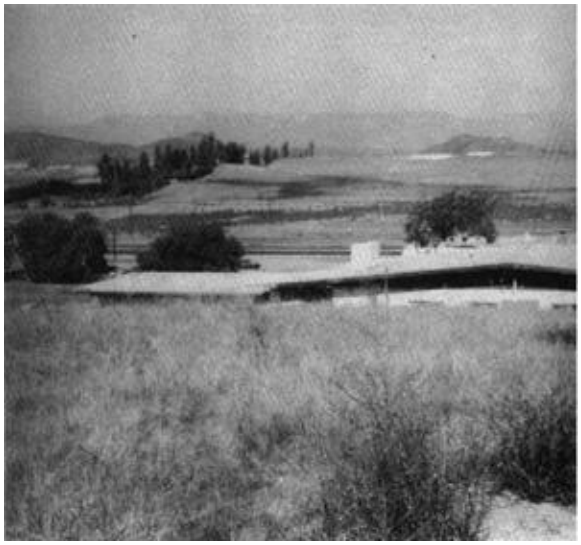

न्यूबरी पार्क में स्थित प्रेतवाधित फार्महाउस

* 101

नैरोसबर्ग भूत

नैरोसबर्ग, न्यूयॉर्क, न्यूयॉर्क शहर से लगभग चार घंटे की दूरी पर डेलावेयर नदी के किनारे स्थित है, जहाँ पेंसिल्वेनिया, न्यूयॉर्क और न्यू जर्सी राज्य मिलते हैं। यह देश का एक सुंदर और कुछ हद तक एकांत इलाका है, जहाँ विशाल, खुले मैदान और सुंदर पेड़ हैं, और घर, जो मुख्य रूप से फार्महाउस हैं, काफी एकांत में स्थित हैं। विचाराधीन घर सीधे डेलावेयर नदी के किनारे पर है और यह उस महिला के माता-पिता के स्वामित्व में था, जिन्होंने मुझसे इसकी जांच के लिए संपर्क किया था, लॉन्ग आइलैंड की श्रीमती एम.। 1942 में माता-पिता द्वारा घर खरीदने से पहले, यह सात वर्षों तक खाली पड़ा था और जर्जर हालत में था। हालांकि, तब से इसका जीर्णोद्धार किया गया है और श्रीमती एम. और उनका परिवार मुख्य रूप से सप्ताहांत में इसका उपयोग करते हैं। घर लगभग दो सौ साल पुराना है और वर्षों से इसमें कई बार पुनर्निर्माण हुआ है। हालांकि, नींव और बाहरी दीवारें बरकरार हैं और ठीक वैसी ही हैं जैसी इमारत के निर्माण के समय थीं। कई बार, घर के ठीक बाहर एक महिला का भूत देखा गया है, मानो वह अंदर जाने वाली हो। यह घटना आमतौर पर एक ही समय पर और नियमित रूप से घटित होती है। श्रीमती एम. और उनके पति दोनों ने ही वास्तव में उसे देखा और उस पर नज़र रखी है। इसके अलावा, कई वर्षों से दरवाज़ा अपने आप बंद होने की आवाज़ सुनाई देती रही है और श्रीमती एम. रात में कई बार इस एहसास से जाग जाती हैं कि कोई उन्हें देख रहा है।

सन् 1971 की एक रात, श्रीमती एम., उनके पति और दो दोस्तों ने आत्माओं से संपर्क करने का प्रयास किया। कुछ मिनटों के लिए, कमरा मानो अपने पुराने स्वरूप में बदल गया और श्रीमती एम. बिना किसी कारण के बेकाबू होकर रोने लगीं। उन्हें ऐसा महसूस हुआ जैसे वह सन् 1793 में किसी महिला के साथ घटी किसी घटना का अनुभव कर रही हों। उस व्याकुल महिला के अलावा, श्रीमती एम. ने एक पुरुष की उपस्थिति भी महसूस की, लेकिन वह किसी दूसरे समय का था।

मैंने घर के बारे में अतिरिक्त जानकारी मांगी और पता चला कि इसे 1752 में डच बसने वालों ने बनवाया था। इसका दस्तावेज़ 1861 का है। नैरोसबर्ग तक रूट 97 से पहुंचा जा सकता है।

इसके अलावा, श्रीमती एम. ने बताया कि उन्हें यह आशंका सता रही है कि तहखाने में अभी भी कोई कंकाल दबा हो सकता है, लेकिन उन्होंने अभी तक उसे खोदने की कोशिश नहीं की है। एम. के बच्चों ने भी उस व्यक्ति का भूत देखा है, और श्रीमती एम. की मां को घर के कुछ हिस्सों में बहुत बेचैनी महसूस होती है। चूंकि उन्हें लगता था कि भूत बच्चों को डरा रहा है, इसलिए उन्होंने मुझसे संपर्क किया, इस उम्मीद में कि मैं उनके घर आकर दोनों में से किसी एक प्रेत आत्मा को भगा सकूं। मैं अपनी मानसिक मित्र, इंग्रीड बेकमैन के साथ घर जाने के लिए सहमत हो गया, जो पहले भी कई मौकों पर एक उत्कृष्ट माध्यम साबित हो चुकी थीं। हम घर के हर कमरे में गए, इस उम्मीद में कि वह अतीत के कुछ रहस्यों को सुलझा सकेंगी। कुछ ही क्षणों में, इंग्रीड को उत्तर-पूर्वी शयनकक्ष में एक ऐसे व्यक्ति की उपस्थिति का आभास हुआ जो मृत्यु के बाद भी वहीं रुका हुआ था। इंग्रीड को लगा कि यह घर कभी इसी व्यक्ति का था, शायद पचास या साठ साल पहले, और उसकी उपस्थिति का कारण यह था कि उसे अपनी मृत्यु का एहसास नहीं था और वह अपने घर में दिखाई देने वाले लोगों को घुसपैठिए समझता था। भूतों के बारे में यह एक आम गलत धारणा है।

फिर हम तहखाने में गए, वह जगह जहाँ श्रीमती एम. ने सबसे तेज़ कंपन महसूस किए थे। तभी हमें तहखाने के खुरदुरे पत्थरों से लगभग छिपा हुआ एक गुप्त कमरा मिला। मैंने सोचा, इस कमरे का क्या उपयोग होता होगा? आज इसका उपयोग कोयले के भंडार के रूप में किया जाता है। इंग्रीड को लगा कि उस जगह पर किसी को दफनाया गया है। अब इंग्रीड को पूरी बात ज़्यादा साफ़ समझ में आ गई। “मुझे लगता है कि वह लगभग पच्चीस साल की एक महिला थी और वह किसी पुरुष का इंतज़ार कर रही थी, लेकिन वह नहीं आया और किसी तरह वह कमरे से निकलकर यहाँ नीचे आ गई जहाँ उसे दफनाया गया। उसकी हत्या हुई थी या वह वहाँ छिपने गई थी, मैं नहीं कह सकती। मुझे लगता है कि घर की रक्षा की जा रही थी और मुझे एक आदमी की मौजूदगी का आभास हुआ जिसके पास एक बहुत लंबी राइफल थी। यह बहुत समय पहले हुआ था। मुझे लगता है कि वह महिला इसी छोटे से कमरे में मरी होगी, या तो वह वहाँ छिपी हुई थी या वह बाहर नहीं निकल पाई और वहीं मर गई।”

नैरोसबर्ग स्थित वह घर निजी स्वामित्व वाला है, और मुझे इस बात पर बहुत संदेह है कि वहां आगंतुकों का स्वागत किया जाएगा।

* 102

गुलाबी बेडरूम में भूत

वर्जीनिया के शार्लोट्सविले के आसपास का इलाका भूतिया घरों से भरा पड़ा है, जो आश्चर्य की बात नहीं है क्योंकि यह कभी उभरते हुए युवा अमेरिकी गणराज्य का केंद्र था। एक समय था जब अमेरिकी सरकार की राजधानी, भले ही थोड़े समय के लिए ही सही, शार्लोट्सविले में थी और क्रांति से पहले, बड़े जमींदारों ने कई शानदार हवेली बनवाई थीं जो आज भी इस क्षेत्र में दिखाई देती हैं। इनमें से कुछ में बहुत सारा इतिहास और कई दुखद घटनाएं घटी हैं, इसलिए यह आश्चर्य की बात नहीं है कि इस क्षेत्र में अजीबोगरीब घटनाओं की खबरें काफी प्रचलित हैं। ऐसा ही एक घर कर्नल क्लार्क लॉरेंस और उनके परिवार की संपत्ति है, जिसे कैसल हिल के नाम से जाना जाता है। इसे इस क्षेत्र के ऐतिहासिक स्थलों में से एक माना जाता है और हालांकि यह आगंतुकों के लिए खुला नहीं है, खासकर भूत की तलाश करने वालों के लिए, यह संभव है कि इतिहास के एक छात्र के लिए मालिकों के साथ पहले से व्यवस्था की जा सके ताकि वह संक्षिप्त रूप से वहां जा सके। यदि इसे कूटनीतिक रूप से संभाला जाए, तो यात्रा की अनुमति मिलने की संभावना अच्छी है।

घर का मुख्य भाग डॉ. थॉमस वॉकर द्वारा 1765 में बनवाया गया था, लेकिन 1820 में इसमें कुछ और हिस्से जोड़े गए। मूल भाग लकड़ी का बना था, जबकि जोड़े गए हिस्से ईंटों के थे। नए मालिक, सीनेटर विलियम कैबेल राइव्स के निर्देशन में किए गए इन बाद के बदलावों ने कैसल हिल को उसका भव्य रूप दिया। सीनेटर राइव्स फ्रांस में अमेरिकी राजदूत रह चुके थे और फ्रांसीसी वास्तुकला से उनकी पसंद काफी प्रभावित थी। यह बात प्रवेश कक्ष की बारह फुट ऊंची छतों और पारंपरिक फ्रांसीसी शैली में बने विशाल बगीचे को देखकर स्पष्ट हो जाती है।

भूतल पर, पीछे की ओर, कमरों का एक समूह है जो स्पष्ट रूप से स्त्रीत्व से परिपूर्ण है। यह आश्चर्य की बात नहीं है क्योंकि ये बाद की मालकिन, एमिली राइव्स के निजी कमरे थे, जो एक लेखिका और कवयित्री थीं और जिनका शरीर परिसर में स्थित पारिवारिक कब्रिस्तान में दफनाया गया है।

इस सुइट में एक शयनकक्ष है जिसे गुलाबी शयनकक्ष कहा जाता है, और यह भूतिया गतिविधियों का केंद्र है। जब भी किसी मेहमान को इस कमरे में सोने के लिए कहा जाता है, वे हमेशा रात में अजीबोगरीब आवाज़ों की शिकायत करते हैं। लेखक जूलियन ग्रीन, जो पक्के संशयवादी हैं, अगली सुबह बड़ी जल्दी में कमरे से निकल गए। एमिली राइव्स ने खुद कमरे में एक अजीब सी खुशबू का ज़िक्र किया था, जो उनकी अपनी किसी भी खुशबू से मेल नहीं खाती थी। भूतिया घटनाएं बहुत समय से हो रही हैं, लेकिन कोई नहीं जानता कि इस कमरे से किसका संबंध है।

कैसल हिल, वर्जीनिया

कई मेहमानों के बयानों से पता चलता है कि भूतनी एक महिला है, जो ज़्यादा उम्र की नहीं, बल्कि सुंदर और कभी-कभी चंचल स्वभाव की है। उसका मकसद कमरे में आने वाले लोगों को डराना लगता है। हैरानी की बात यह है कि कुछ मेहमान बिना किसी अजीब आवाज़ या कदमों की आहट के उसमें सो चुके हैं। लोककथाओं के अनुसार, जिन्हें वह महिला भूतनी पसंद करती है, वे उसके शयनकक्ष में शांति से सो सकते हैं, जबकि जिन्हें वह नापसंद करती है, वे बुरी तरह डर जाते हैं।

मैं संवेदनशील वर्जीनिया क्लाउड के साथ शयनकक्ष में गई, जो पहले भी कई बार वहाँ जा चुकी थीं। हैरानी की बात यह थी कि मुझे किसी और की उपस्थिति का आभास हुआ, एक

सौम्य, लगभग शांत स्वभाव के व्यक्ति का, लेकिन मैं किसी को देख नहीं सकी। फिर भी, मुझे एहसास हुआ कि मैं कमरे में अकेली नहीं थी, और मिस क्लाउड को भी लगा कि उस जगह के अदृश्य पूर्व मालिक द्वारा हमें देखा जा रहा है।

क्रांतिकारी युद्ध के दौरान, ब्रिटिश जनरल बैनस्ट्रे टार्लेटन और उनकी सेना ने कैसल हिल पर कब्ज़ा कर लिया था। तत्कालीन मालिक, डॉ. वॉकर ने 4 जून, 1781 को उन्हें नाश्ता कराया और अपनी मेहमाननवाज़ी के दौरान उन्हें यथासंभव देर तक रोके रखा ताकि पास के शार्लोट्सविले में मौजूद जेफरसन अंग्रेजों से बचकर निकल सकें। क्या उन महिलाओं में से किसी ने इस देरी में कोई महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, यह ज्ञात नहीं है, लेकिन मुझे संदेह है कि कैसल हिल में प्रेतवाधित महिला के प्रकट होने में इस प्रकार की कोई भूमिका है। क्रांतिकारी काल की महिलाओं के लिए क्रांति के उद्देश्य को आगे बढ़ाने के लिए अंग्रेजों पर अपने आकर्षण का प्रयोग करना आम बात थी। ऐसे कई उदाहरण ज्ञात हैं, और ब्रिटिश अधिकारियों की वीरता की प्रशंसा करनी होगी कि उन्होंने अमेरिकी औपनिवेशिक महिलाओं की साजिशों पर बिल्कुल ध्यान नहीं दिया।

भूतिया "गुलाबी शयनकक्ष"

* 103

पौकीप्सी रेक्टरी का भूत

कुछ साल पहले बिशप जेम्स पाइक ने सार्वजनिक रूप से यह घोषणा करके सुर्खियां बटोरीं कि उन्होंने दिवंगत माध्यम आर्थर फोर्ड के साथ कनाडाई टेलीविजन पर आयोजित एक séance में अपने मृत बेटे जेम्स से बात की थी। इसके कुछ ही समय बाद वे स्वयं भी खबरों में आ गए जब रेगिस्तान में ईंधन और पानी खत्म होने के कारण मृत सागर के पास उनकी मृत्यु हो गई। जीवन और मृत्यु के बाद दोनों ही समय में एक विवादास्पद व्यक्तित्व रहे, कैलिफोर्निया के पूर्व बिशप और कई उल्लेखनीय पुस्तकों के लेखक, बिशप जेम्स पाइक, मानसिक घटनाओं से अच्छी तरह परिचित थे।

उनके साथ काम करने के दौरान, मुझे पॉकीप्सी स्थित क्राइस्ट चर्च रेक्टरी के बारे में अच्छी तरह से जानकारी मिली। 1947 में पाइक को रेक्टर का पद प्रस्तावित किया गया था, और उन्होंने वहां कई साल बिताए। क्राइस्ट चर्च एक विशाल, सुंदर और लगभग आधुनिक एपिस्कोपल चर्च है। मोमबत्तियों से सजी वेदी उन विचारों को दर्शाती है जिन्हें आमतौर पर "हाई चर्च" कहा जाता है, यानी रोमन कैथोलिक धर्म के करीब। चर्च का बाहरी हिस्सा बीसवीं सदी की शुरुआत जैसा ही है, और चर्च से सटी रेक्टरी भी वैसी ही है। रेक्टरी और चर्च के बीच एक छोटी सी लाइब्रेरी भी है।

मैंने क्राइस्ट चर्च के रेक्टर से वहां जाने की अनुमति मांगी और जुलाई 1968 में मैं माध्यम एथेल जॉनसन मेयर्स को वहां ले गया। उन्होंने लगभग पूरी घटना को फिर से जिया, जिसकी जानकारी बिशप पाइक ने मुझे पहले निजी तौर पर दी थी।

जेम्स पाइक के पफकीप्सी में ढाई साल के निवास के दौरान जो कुछ हुआ, वह भूत-प्रेत की घटनाओं के लिहाज से असामान्य नहीं था। उनके लिए यह महज़ एक रहस्य था, और उन्होंने इस मामले की गहराई से जांच करने की कोई कोशिश नहीं की, जैसा कि मैंने श्रीमती मेयर्स को घटनास्थल पर लाकर किया था। पाइक ने पफकीप्सी में एक बुजुर्ग पादरी का पदभार संभाला था, जिनके चर्च संबंधी विचार उनसे बिल्कुल विपरीत थे। पूर्व पादरी की कुछ समय बाद ही मृत्यु हो गई थी।

पाइक ने जल्द ही पाया कि उनकी मोमबत्तियाँ अपने आप बुझ रही थीं, दरवाजे अपने आप बंद हो रहे थे, और ऊपर की वस्तुएँ हिल रही थीं—या हिलती हुई प्रतीत हो रही थीं—जबकि वास्तव में वे हिल नहीं रही थीं। इन सभी शोर और गड़बड़ियों से बिशप पाइक को कोई खास

परेशानी नहीं हुई। हालाँकि, एक बार उन्होंने खुद को पुस्तकालय में एक चमगादड़ को बेतहाशा उड़ते हुए पाया। यह जानते हुए कि पुस्तकालय में आने-जाने का एकमात्र रास्ता वही दरवाजा था जिसे उन्होंने अभी खोला था, उन्होंने तुरंत दरवाजा बंद कर दिया और चमगादड़ को पकड़ने के लिए कोई उपकरण खोजने चले गए। जब वे लौटे और सावधानी से पुस्तकालय का दरवाजा खोला, तो चमगादड़ गायब हो चुका था। जानवर के भागने का कोई संभव तरीका नहीं था।

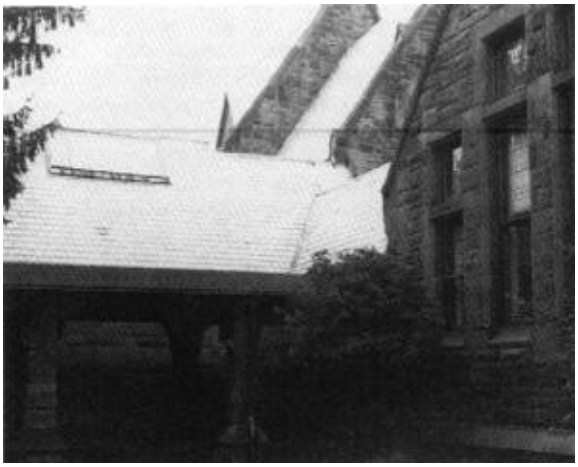

पॉफकीप्सी में प्रेतवाधित पादरी का निवास

जो लोग पौकीप्सी घूमने जाना चाहते हैं, वे ऐसा स्वतंत्र रूप से कर सकते हैं, हालांकि रेक्टर शायद मानसिक घटनाओं पर चर्चा करने के इच्छुक न हों।

* 104

वेस्ट प्वाइंट पर भूत

वेस्ट प्वाइंट स्थित सैन्य अकादमी में इतना इतिहास रचा गया है, जो कभी हडसन नदी के किनारों की रक्षा करने वाला एक किला हुआ करता था, इसलिए यह आश्चर्य की बात नहीं है कि समय-समय पर भूतिया दृश्य भी दिखाई देते रहे हैं।

अमेरिकी सैन्य अकादमी के चार कैडेटों ने अठारहवीं सदी की घुड़सवार सेना की वर्दी पहने एक सैनिक का भूत देखा। प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार, वह भूत चमकदार और झिलमिलाता हुआ प्रतीत हुआ। ऐसा लगता है कि भूत कमरा नंबर 4714 की दीवार और अलमारी से प्रकट हुआ, और एक बार तो फर्श के बीच से भी। एक बार उसने एक कैडेट के बाथरोब को हिला दिया, और दूसरी बार उसने शॉवर चालू कर दिया!

जैसे ही इस घटना की खबर ने (सैन्य अधिकारियों की) मार्गदर्शक शक्तियों का ध्यान आकर्षित किया, कमरा नंबर 4714 खाली करा दिया गया। इसके बाद उस कमरे को सभी के लिए प्रतिबंधित घोषित कर दिया गया। भूत-प्रेत, ज़ाहिर है, सैन्य अधिकारियों की बात नहीं मानते। हालांकि, कैडेट कैप्टन कीथ बी. इस पर समझदारी से चर्चा करने को तैयार थे। उन्होंने कहा, "इसमें कोई शक नहीं है कि कमरा असामान्य रूप से ठंडा हो गया था।" दो हफ्ते पहले, वह और एक अन्य वरिष्ठ छात्र उस कमरे में एक रात सोए थे, उनके बिस्तर एक दीवार से अलग किए गए थे। लगभग दो बजे सुबह कैडेट बी. के साथी को चिल्लाने की आवाज़ आई। वह अपने बिस्तर से कूदकर दीवार के पार गए, लेकिन उन्हें कुछ भी असामान्य नहीं दिखा। हालांकि, उन्हें एक बर्फीली ठंड का एहसास हुआ, जिसका कोई तर्कसंगत कारण नहीं था।

हालांकि, वह और उसका साथी भूत का सामना करने वाले पहले व्यक्ति नहीं थे। उनसे पहले कमरा नंबर 4714 में रहने वाले दो नए कैडेटों ने भी उसे देखा था। दूसरी बार, भूत फर्श के लगभग बीच में रखे दराज से बाहर निकला। उसने कैडेटों को चिल्लाते हुए सुना और कमरे में भाग गया। भूत को देखने वाले कैडेटों में से एक ने उसका चित्र प्रस्तुत किया। यह एक ऐसे व्यक्ति का चेहरा है जिसकी मूंछें झुकी हुई हैं और उसने पंख से सजी एक ऊँची, पुराने ज़माने की टोपी पहन रखी है। यह लगभग दो सौ साल पहले के घुड़सवार सैनिक की वर्दी है।

वेस्ट प्वाइंट, जहां एक असंतुष्ट प्रशिक्षु अभी भी चलता है

वेस्ट प्वाइंट में कई भूतिया किंवदंतियाँ हैं, कहा जाता है कि जो अब अधीक्षक का महल है, उसमें एक डेढ़ सौ साल की एक भूतिया लड़की रहती है, जिसका नाम मौली था, जो अपने जीवनकाल में एक तरह की कैंप फॉलोअर थी।

एक अन्य कैडेट उसी मंजिल पर स्थित भूतिया कमरे में जाने से पहले स्नान कर रहा था। स्नान करने के बाद जब वह बाहर निकला तो उसने देखा कि उसका बाथरोब हुक पर आगे-पीछे झूल रहा था। चूंकि दरवाजा और खिड़की दोनों बंद थे, इसलिए हवा का कोई झोंका भी बाथरोब को हिला नहीं सकता था। जिस इमारत में यह घटना घटी, वह पुरानी ज़मीन पर बनी है; पहले यहाँ एक बैरक हुआ करती थी जिसे बहुत पहले ध्वस्त कर दिया गया था। क्या ऐसा हो सकता है कि भूतिया घुड़सवार सैनिक की मृत्यु वहीं हुई हो और वह अपने नए परिवेश में ढल न पाया हो?

अगर आप वेस्ट प्वाइंट जाएं, तो कमरा नंबर 4714 वाली इमारत ढूंढने की कोशिश करें। कंपनी जी-4 का मुख्यालय वहीं है, और शायद कोई आपको रास्ता ढूंढने में मदद कर दे।

* 105

द स्टेंटन हाउस, सिनसिनाटी

पुराने सिनसिनाटी के सबसे शांत और सुरुचिपूर्ण हिस्सों में से एक में, जहां भूतों और प्रेतवाधित घटनाओं के बारे में शायद ही कभी फुसफुसाहट होती है, लगभग 1850 में निर्मित एक सुंदर विक्टोरियन हवेली खड़ी है, जो उस समय शहर का एक समृद्ध उपनगर था।

कुछ साल पहले क्लिफ्टन के जॉन एस. ने मुझे इस घर के बारे में बताया था। वे सिनसिनाटी में बसने वाले शुरुआती डच परिवारों में से एक के वंशज हैं और स्वयं अलौकिक घटनाओं के अध्येता हैं। उस समय इसके मालिक स्टेंटन परिवार थे, या यूं कहें कि हवेली के एक अपार्टमेंट के मालिक थे, क्योंकि इसे लंबे समय से कई अपार्टमेंटों में विभाजित किया गया था जिनमें अलग-अलग लोग रहते थे।

पुराने घर में बसने के कुछ ही समय बाद, स्टेंटन दंपति को अजीब आवाज़ें सुनाई देने लगीं, मानो कोई दालान में चल रहा हो। जब उन्होंने जाँच की, तो वहाँ कोई भी ऐसा व्यक्ति नहीं मिला जो चलने की आवाज़ का कारण हो सकता था। फिर, घर में आने के दो सप्ताह बाद, और हमेशा की तरह ठीक उसी समय, रात के 2:10 बजे, उन्हें संगमरमर के फर्श पर किसी भारी वस्तु के गिरने की आवाज़ सुनाई देने लगी - ज़ाहिर है, वहाँ कुछ भी ऐसा नहीं था जो इसका कारण हो सकता था।

भूतिया स्टेंटन हाउस—सिनसिनाटी, ओहियो

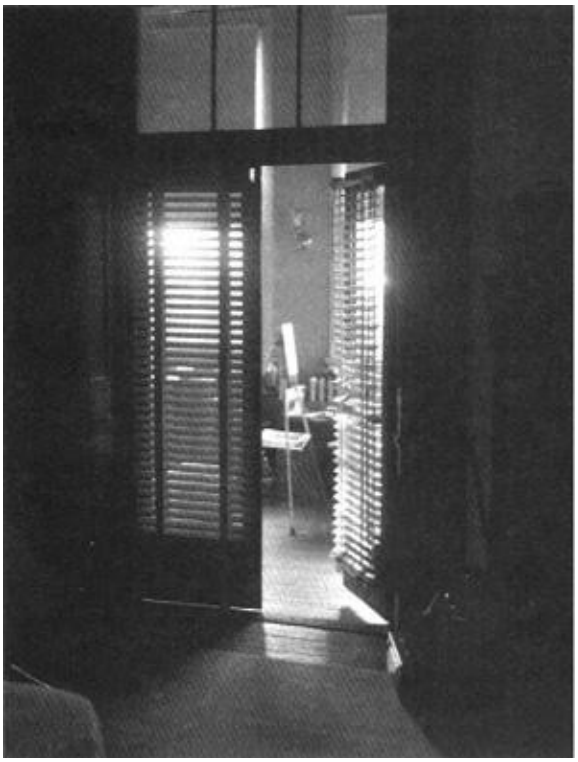

वह अध्ययन कक्ष जहाँ कदमों की आहट सुनाई दे रही थी

कुछ देर बाद, जब श्रीमती स्टेंटन और उनके पिता फ्लैट में कुछ शोध कार्य कर रहे थे, तभी किसी ने धीमी आवाज़ में उनका नाम, मैरिलिन, पुकारा। दोनों ने सुना। लेकिन उन्हें सबसे ज़्यादा परेशान करने वाली बात उनके बेडरूम की छत से आ रही बहस की आवाज़ें थीं: श्रीमती स्टेंटन को लगा जैसे वहाँ कुछ लड़कियाँ थीं!

लेकिन सबसे नाटकीय घटना कुछ हफ्तों बाद घटित हुई। कोई बेडरूम में घुस आया था, और चूंकि वह जानती थी कि वह अकेली है, उसका परिवार घर के दूसरे हिस्सों में है, इसलिए वह डर गई, खासकर जब उसने एक धुंधली सी आकृति देखी - जैसे ही उसकी नज़र उससे मिली, वह आकृति कमरे से निकलकर स्टूडियो की ओर जाने वाले फ्रेंच दरवाजों से होते हुए भाग गई, और ऐसा करते समय, उस धुंधली आकृति ने दरवाजों पर लगे वेनेशियन ब्लाइंड्स को टक्कर मार दी, जिससे वे आगे-पीछे हिलने लगे!

इस मामले के सिलसिले में सिनसिनाटी जाने से कुछ समय पहले, श्रीमती स्टेंटन को एक और अजीब अनुभव हुआ। सर्दी का मौसम था और पिछली रात बर्फबारी हुई थी। जब श्रीमती स्टेंटन अपने बरामदे में निकलीं, तो उन्होंने तुरंत बरामदे पर घर से दूर जाते हुए नए पैरों के निशान देखे!

यह घर 1850 में बना था, मूल रूप से एक बड़ा निजी घर था; बाद में यह एक लड़कियों का स्कूल बन गया और बहुत बाद में एक अपार्टमेंट हाउस में बदल गया। स्टेंटन का अपार्टमेंट घर का सबसे बड़ा हिस्सा है, जिसमें सात कमरे हैं।

जब मैंने इस मामले की छानबीन की तो मुझे कुछ अतिरिक्त जानकारियाँ मिलीं। 1880 में, हेनरी परिवार के एक युवक ने घर में खुद को गोली मारकर आत्महत्या कर ली थी, और परिवार के चले जाने के बाद, घर लंबे समय तक बिक नहीं सका। इसे भूतिया घर के रूप में जाना जाने लगा और इसे बंद कर दिया गया। अंततः, 1900 में एक लड़कियों के स्कूल, ईली स्कूल ने इसे खरीद लिया।

अन्य किरायेदारों को भी कई असामान्य घटनाओं का सामना करना पड़ा था, जिनमें किसी की उपस्थिति का आभास, फर्श पर वस्तुओं के गिरने की आवाजें और बिना किसी के पीछे-पीछे कदमों की आहट सुनाई देना शामिल था। यहां तक कि एक किरायेदार का पालतू कुत्ता भी किसी भी हालत में उन गड़बड़ियों वाले इलाके में नहीं जाता था और भयानक ढंग से भौंकता था।

लेकिन इन सब घटनाओं का सबसे संभावित जवाब मुझे इलाके के कुछ बुजुर्गों से बात करने पर मिला: स्कूल की एक लड़की ने कथित तौर पर स्टेंटन के अपार्टमेंट के ऊपर वाले कमरे में फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली थी। क्या यह उसकी आत्मा थी या उस युवा हेनरी की, जिसे चैन नहीं मिला था?

* 106

द घोस्ट एट एल सेंट्रो

जब श्रीमान और श्रीमती सी. 1960 के दशक में फ्रांस से लॉस एंजिल्स आए, तो उन्होंने कभी सोचा भी नहीं था कि वे किसी भूतिया घर में रहेंगे, लेकिन ठीक यही हुआ। अपनी बेटियों के

साथ, उन्होंने शहर के एक शांत इलाके, एल सेंट्रो एवेन्यू पर स्पेनिश शैली में बना एक पुराना एक मंजिला घर किराए पर लिया।

उनकी बेटियों में से एक, लिलियन की शादी उनके आने से कुछ समय पहले ही हो गई थी, और दूसरी बेटी, निकोल ने अपना अलग घर लेने का फैसला किया था, इसलिए असल में उस घर में श्रीमान और श्रीमती सी. और उनकी तीसरी बेटी, मार्टिन ही रहते थे। डाइनिंग रूम को मार्टिन के लिए बेडरूम में बदल दिया गया था, जिससे मास्टर बेडरूम माता-पिता के लिए खाली रह गया था।

घर में अपनी पहली रात, श्रीमती सी., जो बहुत ही संवेदनशील थीं, को स्पष्ट रूप से यह आभास हुआ कि कोई उन्हें देख रहा है, कोई ऐसा जिसे वे देख नहीं सकती थीं। मार्टिन को भी बहुत असहज महसूस हुआ, लेकिन अगले कुछ दिनों तक उनके लिए नए घर में व्यवस्थित होना अधिक महत्वपूर्ण था।

हालांकि, रात-दर-रात एक रहस्यमयी उपस्थिति का गहरा आभास बना रहा। वे कभी अकेले नहीं होते थे। रसोई में शोर हुआ, और श्रीमती सी. ने सोचा कि उनके पति आधी रात को कुछ लेने उठे होंगे—लेकिन वे बिस्तर पर गहरी नींद में सो रहे थे। इसके बजाय, एक अजनबी आदमी उनके दोनों बिस्तरों के बीच खड़ा था, और इससे भी बुरी बात यह थी कि वह उसके आर-पार देख सकती थीं! उन्होंने एक चीख मारी और वह प्रेत तुरंत गायब हो गया।

उन्होंने इस मामले पर अपनी बेटियों से चर्चा की, जो उनके आने से पहले उस अपार्टमेंट में रहती थीं: तब यह स्पष्ट हुआ कि लड़कियां भी भूतिया घटनाओं से परेशान थीं। उन्होंने हर रात मोमबत्ती जलाकर इससे निपटने की कोशिश की थी। लेकिन जाहिर तौर पर इससे कोई फायदा नहीं हुआ।

अगले दिनों में भी भूत-प्रेत का प्रकोप जारी रहा।

एल सेंट्रो, लॉस एंजिल्स पर भूत घर

लड़कियों ने भी पलंगों के बीच एक पुरुष भूत देखा था। लेकिन अब माँ को एक महिला का भूत दिखाई दिया, और एक कुशल माध्यम की मदद लेने का निर्णय लिया गया। यह माध्यम ब्रेंडा क्रेंशॉ निकलीं, जिन्होंने आत्माओं से संपर्क स्थापित किया। उन्होंने बताया कि "समस्या" यह थी कि पहले इस अपार्टमेंट में रहने वाले एक युवा जोड़े ने आत्महत्या कर ली थी।

जब परिवार ने संबंधित रिकॉर्ड से इसकी पुष्टि की, तो यह बात सही निकली। लेकिन अब क्या? भूतिया दंपत्ति के साथ उस जगह को साझा करना उन्हें बिल्कुल भी अच्छा नहीं लग रहा था। श्रीमती सी. ने भूतों से मुक्ति के लिए प्रार्थना करने का फैसला किया और कई हफ्तों तक लगातार प्रार्थना करती रहीं। एक रात, वह युवक फिर से प्रकट हुआ, मानो उनकी प्रार्थनाओं का आभार व्यक्त कर रहा हो। फिर वह गायब हो गया, और तब से अपार्टमेंट में सन्नाटा पसरा हुआ है।

* 107

भूतिया स्टेजकोच सराय

वेंटुरा से कुछ ही दूरी पर, थाउजेंड ओक्स में, मुख्य सड़क से कुछ ही गज पीछे, एक पुराना स्टेजकोच सराय स्थित है, जिसे अब एक संग्रहालय के रूप में चलाया जाता है; 1952 और

1965 के बीच, जब इसे इसके मूल स्वरूप में बहाल किया जा रहा था, तब यह श्रीमान और श्रीमती एम. के निर्देशन में एक उपहार की दुकान के रूप में भी कार्य करता था, जिन्होंने इमारत में एक महिला भूत की उपस्थिति को महसूस किया था।
इस घर में उन्नीस कमरे हैं और इसका भव्य अग्रभाग है जिसमें फर्श से छत तक खंभे लगे हुए हैं।

मध्य भाग में एक बालकनी है और उन्नीसवीं शताब्दी के मध्य की शैली में सभी खिड़कियों पर शटर लगे हैं। कुछ साल पहले तक यह वृक्षों से घिरा हुआ था, लेकिन हाल ही में इसे यहाँ से गुजरने वाली मुख्य सड़क के लिए जगह बनाने के लिए एक नए स्थान पर स्थानांतरित कर दिया गया है। फिर भी, इस स्थानांतरण से इसकी भव्यता पर कोई असर नहीं पड़ा है।
स्टेजकोच के ज़माने में, इस इलाके में डाकू सक्रिय थे। यह सराय बटरफील्ड मेल मार्ग के कारण बनाई गई थी, जो सेंट लुइस जाते समय कोनेजो घाटी से होकर गुजरने वाला था। गृहयुद्ध के कारण यह योजना रुक गई और मार्ग बदलकर सांता क्लारा घाटी से होकर जाने लगा।
मैंने श्रीमती ग्वेन हिंज़ी और सिबिल लीक के साथ स्टेजकोच सराय की जाँच की। सीढ़ियों के बाईं ओर ऊपर जाते हुए सिबिल ने एक विशेष रूप से प्रेतवाधित कमरा देखा।

भूतिया स्टेजकोच इन—थाउजेंड ओक्स, कैलिफोर्निया

उसे लगा कि पियरे डेवन नाम का कोई व्यक्ति किसी न किसी तरह इस इमारत से जुड़ा हुआ है। चूंकि इमारत अभी भी जर्जर हालत में थी और चारों ओर निर्माण कार्य चल रहा था, इसलिए सीढ़ियों से ऊपर चढ़ना न केवल मुश्किल था बल्कि थोड़ा खतरनाक भी था, क्योंकि हमें यकीन नहीं था कि हमारे वजन से लकड़ी का ढांचा गिर न जाए। हम बहुत सावधानी से कदम बढ़ा रहे थे। सिबिल को ठीक-ठीक पता था कि कहाँ मुड़ना है, मानो वह पहले भी वहाँ जा चुकी हो। आखिरकार, हम सीढ़ियों के बाईं ओर एक छोटे से कमरे में पहुँच गए। यह शायद छोटे कमरों में से एक रहा होगा, आजकल के हिसाब से "एक कमरा"।

सिबिल ने पूरे शरीर में ठंड लगने की शिकायत की। उसने जोर देकर कहा कि पियरे डेवन नाम के उस व्यक्ति की हत्या उसी कमरे में 1882 और 1889 के बीच किसी समय हुई थी।

उसका महिला भूत से कोई संपर्क नहीं हो पाया। हालांकि, इलाके में रहने वाले कई लोगों ने एक लंबे अजनबी की मौजूदगी की सूचना दी है, जिसे कभी-कभार ही देखा जा सकता था, और वो भी बहुत कम समय के लिए। इमारत के अंदर तीखी गंध, खासकर तेज सुगंध, आती-जाती रहती है।

आम तौर पर सराय की तरह, इस सराय में भी कई अनदेखे भूत मंडरा रहे होंगे। उन्नीसवीं सदी की इन सराय में जीवन आज के हिल्टन होटल जैसा नहीं था। कुछ लोग जो रात भर आराम करने के लिए इन सराय में जाते थे, वे फिर कभी सुबह नहीं उठते थे।

* 108

श्रीमती डिकी के भूतिया साथी

मैं दो वियना देख चुका हूँ: एक, जो ज़्यादा मशहूर शहर है, ऑस्ट्रिया में है और मेरा जन्म भी वहीं हुआ था; दूसरा वर्जीनिया में है, वाशिंगटन डी.सी. के ठीक बाहर, और वहाँ मुख्य रूप से पुराने घर, सुंदर बगीचे, छायादार सड़कें और एक ऐसा माहौल है जो यह सोचने पर मजबूर कर देता है कि क्या वाकई पास में ही कोई हलचल भरी विश्व राजधानी है। खासकर वसंत ऋतु में, वर्जीनिया का वियना एक अनमोल जगह है। आप चौड़ी, छायादार सड़कों पर सवारी करते

हैं, उन घरों—यहाँ तक कि हवेलियों—को देखते हैं जो शायद पीढ़ियों से एक ही मालिक के पास हैं, और बच्चों को गलियों में ऐसे खेलते हुए देखते हैं जैसे वहाँ कोई कार न हो।

मुझे श्रीमती डिकी के बारे में वाशिंगटन में एक साझा मित्र से पता चला। निकोल डी'अमेरकोर्ट, जो अब श्रीमती ब्रूस जैक्सन हैं, उनसे मिली थीं और उन्होंने भूतों से जुड़े उनके भयावह अनुभवों के बारे में सुना था। निकोल को लगा कि शायद मैं श्रीमती डिकी को उनके भूतों से छुटकारा दिलाने में या कम से कम उनसे निपटने में मदद कर सकती हूँ। मैं तुरंत सहमत हो गई, और 11 मई, 1968 को हम वियना के लिए रवाना हो गए।

डिकी हाउस पहुँचते ही मैं उसकी भव्यता से तुरंत प्रभावित हो गया। हालाँकि वह बहुत बड़ा घर नहीं था, फिर भी वह किसी देहाती हवेली जैसा आभास देता था—सड़क से कुछ दूरी पर पेड़ों के बीच बना हुआ, और पीछे की ओर एक कुछ हद तक जंगली बगीचे का दृश्य दिखाई देता था। कुछ सीढ़ियाँ चढ़कर मुख्य द्वार तक पहुँचा जा सकता था। निकोल के कार पार्क करने के बाद, हम घर में दाखिल हुए और वहाँ पहुँचते ही हमारा स्वागत एक जीवंत, छोटी कद की युवती ने किया, जिसकी आँखें चमक रही थीं और जिसके चारों ओर दृढ़ संकल्प का भाव था।

हम एक बड़े बैठक कक्ष में दाखिल हुए, जहाँ से एक गलियारे के माध्यम से भोजन कक्ष और फिर रसोई में जाया जा सकता था। भूतल के बीच में एक सीढ़ी है जो दूसरी मंजिल तक जाती है, और दूसरी मंजिल से, जहाँ अधिकांश शयनकक्ष स्थित हैं, एक संकरी सीढ़ी अटारी तक जाती है जिसमें एक और शयनकक्ष है।

घर को औपनिवेशिक शैली के उत्तरार्ध में खूबसूरती से सजाया गया था, और प्राचीन वस्तुओं को उचित स्थानों पर इस तरह से प्रदर्शित किया गया था जो सुरुचि का एक ऐसा प्रदर्शन था जो आजकल देखने को नहीं मिलता।

घर का ऊपर से नीचे तक सतही निरीक्षण करने के बाद, मैंने श्रीमती डिकी से मेरे साथ बैठने के लिए कहा ताकि हम उस स्थिति पर चर्चा कर सकें जिसके कारण उन्होंने मुझसे मदद मांगी थी।

हम नीचे के लिविंग रूम में आरामदायक कुर्सियों पर बैठ गए, और मैंने उससे घर के बारे में सवाल पूछना शुरू कर दिया।

* * *

"श्रीमती डिकी, आप यहां कब से रह रही हैं?"

“लगभग ढाई साल से। मैं और मेरे पाँच बच्चे यहाँ रहते हैं। और हमारे साथ दो युवा विदेशी छात्र भी रह रहे हैं; वे यहाँ लगभग एक महीने से हैं।”

घर में कितने कमरे हैं?

लगभग बीस हैं।

“लगभग बीस? आपको पक्का नहीं पता?”

“ठीक है, बीस। रियल एस्टेट के हिसाब से हम बाथरूम नहीं गिनते, लेकिन मैं गिनता हूँ।”

“हां, और अलमारियां भी। बड़ी अलमारियों को मत भूलना।”

मैं अलमारियों की गिनती नहीं करता।

"जब आप घर में रहने आए थे, तब क्या आपको घर के बारे में बहुत कुछ पता था?"

“ज्यादा कुछ नहीं। हालांकि, इसे खरीदने से पहले हमें बताया गया था कि इसमें भूत-प्रेत का वास है।”

“किसके द्वारा? मेरा मतलब है कि किसने बताया, न कि किसने मुझे परेशान किया।”

कई लोगों ने इसके बारे में बताया। रियल एस्टेट एजेंट ने इसका ज़िक्र किया, लेकिन हंसते हुए कहा, जिससे मुझे जिज्ञासा हुई। उसने बताया कि इस घर का अपना एक इतिहास है और यहां कई किस्से-कहानियां घटी हैं। हमारे यहां आने के बाद, और भी लोगों ने हमें इसके बारे में बताया। मुझे लगता है कि वे हमें थोड़ा परेशान करने की कोशिश कर रहे थे।

"यहां आने से पहले आपने किस तरह की कहानियां सुनी थीं?"

"बस इतना ही कि वह घर भूतिया था।"

“कोई विवरण नहीं?”

"नहीं।"

"ऐसी कौन सी पहली बात थी जिससे आपको लगा कि इन कहानियों में कुछ सच्चाई है?"

“परिवार में सबसे आखिर में मुझे ही पता चला कि कुछ गड़बड़ चल रही है, लेकिन मैंने बच्चों से बार-बार ऐसी ही कहानियां सुनी थीं। एक रात मैं ऊपर बच्चों के कमरों में से एक में सो रही

थी, और भारी कदमों की आवाज से जाग गई—कमरे में नहीं, बल्कि बगल वाले कमरे में। मुझे हैरानी हुई कि कौन जागा है, और मैंने उन्हें बार-बार आते-जाते सुना। आखिरकार मैं वापस सो गई, लेकिन मैं थोड़ी उत्साहित थी। अगली सुबह मैंने पूछा कि रात में कौन जागा था, और कोई नहीं जागा था।"

"जिन कमरों में कदमों की आहट सुनाई दी, उनमें कौन-कौन मौजूद था?"

"एक कमरे में छह साल का बच्चा था, और दूसरे कमरे में मेरी अठारह साल की बेटी थी।"

"जिस कमरे में आपको कदमों की आहट सुनाई दी, क्या वहां सिर्फ छह साल का बच्चा ही मौजूद था?"

"हाँ, लेकिन वह दीवार वहीं थी जहाँ से पुरानी सीढ़ियाँ ऊपर जाती थीं। अब वह जगह बंद है, लेकिन सीढ़ियाँ अभी भी वहीं हैं, और मुझे ऐसा लग रहा था कि वे या तो सीढ़ियों के बीच में हैं, या फिर बगल वाले कमरे में। लेकिन ऐसा महसूस हो रहा था जैसे वे मेरे ठीक बगल में हों।"

"क्या घर में कई संरचनात्मक बदलाव हुए हैं?"

"हाँ।"

"क्या कदमों की आवाज किसी पुरुष की थी या किसी महिला की?"

"एक आदमी का।"

"यह कब तक चलता रहा?"

"कम से कम दस मिनट के लिए।"

"क्या आपको इस बात की चिंता नहीं थी कि कोई चोर या घुसपैठिया वहां हो सकता है?"

नहीं। हमारे पास कुत्ते हैं, और मुझे लगा कि शायद यह कोई आत्मा है।

"क्या आपका मतलब यह है कि आपने बिना किसी चिंता के इसे ऐसे ही स्वीकार कर लिया?"

"मैं थोड़ा डर गई थी क्योंकि मैं नहीं चाहती कि कोई मुझे छुए, और मैं नहीं चाहती कि मैं ऊपर देखूं और कोई मुझे घूर रहा हो, लेकिन मुझे परवाह नहीं है कि वे इधर-उधर घूमते रहें!"

"यह पहली बात थी जो आपने सुनी। इसके बाद क्या हुआ?"

"मैं फिर से अपने बेटे डगलस के कमरे में सो रही थी, और मुझे एक बहुत ही डरावना सपना आ रहा था। मुझे याद नहीं कि सपना क्या था, लेकिन मैं बहुत डर गई थी। अचानक मैं जाग

गई और दीवार की तरफ देखा। सोने से पहले मैंने देखा था कि कमरा रोशनी के पैनलों से जगमगा रहा था, और दीवार पर अगल-बगल रोशनी की दो किरणें पड़ रही थीं। मैं बिस्तर पर एकदम से बैठ गई और ऊपर देखा तो मुझे एक सिर की परछाई दिखाई दी। मुझे नहीं पता कि वह किसी पुरुष का था या स्त्री का, क्योंकि चेहरे के कोई स्पष्ट भाव नहीं थे, लेकिन गर्दन थी, बाल थे, वह सिर के आकार का था, और दीवार पर काफी ऊपर था। हो सकता है वह छोटे, घने बालों वाली कोई महिला हो। वह इतना असली लग रहा था कि मुझे लगा कि वह मेरी बेटी जॉयस है, जो उस समय लगभग अठारह साल की थी। मैंने 'जॉयस' कहा और उससे बात करने लगी। फिर मुझे एहसास हुआ कि वह थोड़ा-थोड़ा हिल रही थी। मैं डर गई। लगभग दस मिनट तक 'जॉयस, जॉयस' कहते रहने के बाद... यह कौन है? वहाँ कौन है?' यह सीधे बगल में, अंधेरे में और फिर प्रकाश के अगले पैनल में चला गया, और तब तक मैं चिल्ला रही थी, 'जॉयस, जॉयस, तुम कहाँ हो?' मैं चाहती थी कि कोई इसे मेरे साथ देखे।

“क्या आपको अभी भी कोई विशेषताएँ दिखाई नहीं दे रही हैं?”

"इसमें कोई फीचर नहीं है।"

"कोई नहीं?"

"कोई नहीं।"

"सिर्फ़ सिर?"

“खैर, रोशनी की किरण वहीं आकर रुक गई। वह लगभग उतनी ही लंबी थी, जिसमें सिर और गर्दन शामिल थे, और कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा था क्योंकि दीवार पर रोशनी वहीं खत्म हो रही थी। तभी जॉयस अंदर आई और मैंने कहा, 'जॉयस, जल्दी से देखो,' और वह अभी भी वहीं थी। लेकिन जैसे ही मैंने उस चीज को घूरना शुरू किया, वह गायब हो गई। वह सीधे बगल में चली गई।”

क्या उसने भी इसे देखा था?

“मुझे नहीं पता। जब वो यहाँ आएगी तो आपको उससे पूछना पड़ेगा। वो बहुत उत्साहित थी। अगली रात हमने रोशनी के पैनलों को वापस दीवार पर लगाने की कोशिश की। लेकिन हम उन दोनों रोशनी के पैनलों को वहाँ नहीं लगा पाए, और हमें नहीं पता कि वे क्या थे।”

“क्या आपको लगता है कि प्रकाश के इन पैनलों का इससे कोई संबंध था? क्या वे चांदनी से थे या वे इस आभास का हिस्सा थे?”

"मुझे यही तो नहीं पता, लेकिन मुझे लगता है कि इसका संबंध उस चीज से जरूर रहा होगा जो वहां थी, क्योंकि हम फिर कभी रोशनी वापस नहीं ला सके।"

“क्या वातावरण में कोई बदलाव आया? क्या ठंड महसूस हुई?”

मुझे इस बात का पूरा एहसास था कि वहां कुछ तो गड़बड़ है।

क्या आपको ठंड लग रही थी?

"हाँ।"

उसके बाद अगली घटना क्या घटी?

“1967 में हमने एक ओइजा बोर्ड खरीदने का फैसला किया। हमारे कुछ दोस्त थे जो इस घर को अच्छी तरह जानते थे, और उन्होंने कहा, 'आपको एक बोर्ड पर इसे चलाकर देखना चाहिए और पता लगाना चाहिए कि वहां क्या है।' वे लगभग दस या पंद्रह वर्षों से इस घर के मालिक थे; उनके नाम डीन और जीन वेंडरहॉफ हैं।”

"क्या उन्हें यहां कोई अनुभव हुआ है?"

“हां, बिल्कुल।”

“उन्होंने आपको इनके बारे में कब बताया?”

"जब हमने कुछ बातों पर ध्यान दिया।"

"वे आज यहां मौजूद नहीं हैं, इसलिए आप संक्षेप में बता सकते हैं कि उनके अनुभव क्या थे।"

"कई बार उन्होंने रसोई में एक महिला को बात करते सुना, जबकि घर में कोई और महिला नहीं थी। उन्होंने आवाज़ सुनी, और रात में भारी-भरकम गैराज के दरवाज़ों के ज़ोर-ज़ोर से ऊपर-नीचे होने की आवाज़ भी सुनी।"

उस महिला ने उनसे क्या कहा?

उन्हें कुछ भी पता नहीं चला। वे ऊपर अपने कमरे में बिस्तर पर थे, लेकिन उन्होंने एक महिला को बात करते सुना। साथ ही, वे अक्सर रसोई में हर चीज के पटकने की आवाज सुनते

थे, और उन्हें लगा कि रसोई में रखे सारे बर्तन टूट रहे हैं। बहुत तेज खड़खड़ाहट और धमाके हो रहे थे।

"अब, आपने वेंडरहॉफ परिवार को अपने अनुभवों के बारे में बताने का फैसला किया है?"

“हां। दीवार पर वह ‘चीज़’ देखने के बाद अगली रात हमने ओइजा बोर्ड का इस्तेमाल किया। हमें तुरंत लोगों के नाम पता चल गए। उनमें मार्था और मॉर्गन नाम की दो महिलाएं थीं, जिन्होंने हमसे बातचीत की।”

वे आपको क्या बताते हैं?

“मार्था ने कहा कि दीवार पर जो आकृति दिखाई दे रही थी, वह वही थी, क्योंकि बगल के कमरे में एक बच्चा बिस्तर से गिर गया था, और मार्था को बच्चे बहुत प्यारे हैं, इसलिए उसने उसकी मदद करने की कोशिश की। मार्था ने मेरे बारे में प्यारी-प्यारी बातें भी कहीं—कि मेरा काम बहुत बड़ा है, और मेरे लिए बच्चों को संभालना मुश्किल है, और वह मेरी मदद करने के लिए यहाँ आई है।”

क्या वह आपको अपने अस्तित्व का कोई सबूत देती है?

मुझे लगता है कि वह और मॉर्गन भाई-बहन हैं और वे दोनों सारा की संतान हैं। सारा, होमर लेरॉय सैलिसबरी की पहली पत्नी थीं, जिन्होंने 1865 में इस घर का निर्माण करवाया था।

क्या आपको उस समय पता था जब आप बोर्ड में काम कर रहे थे कि यह एक तथ्य था, कि उनके इन नामों से बच्चे थे?

“नहीं, लेकिन हमें बताया गया था कि सारा को दो बच्चों के साथ यहीं आंगन में कहीं दफनाया गया है। मैंने रिकॉर्ड खंगाले हैं, लेकिन मुझे उन बच्चों के नाम नहीं मिल रहे हैं। मुझे पक्का नहीं पता कि मार्था और मॉर्गन ही वे दो बच्चे हैं या नहीं।”

लेकिन अब आप यह तो जानते ही हैं कि इस घर से ऐसे लोग जुड़े हुए थे।

“वहाँ दो बच्चे थे और सारा नाम की एक लड़की थी। लेकिन हमें बच्चों के नाम नहीं पता।”

"लेकिन आपको यह तो पता ही होगा कि एक सारा भी थी।"

"सारा नाम की एक लड़की जरूर थी।"

“तो आपको यह कब पता चला? कि सारा नाम की कोई लड़की भी है?”

"किसी ने मुझे बताया होगा, और फिर मुझे इसके बारे में एक रिकॉर्ड मिल गया।"

"क्या यह पहले ओइजा बोर्ड सेशन से पहले था या बाद में?"

"नहीं, बोर्ड पर सारा का नाम तो था; हमें पता नहीं था।"

“तुम्हें इसका मतलब नहीं पता था। बाद में तुम्हें पता चला कि इस घर से जुड़ी एक सारा भी थी। और उसे यहीं दफनाया गया है?”

"हाँ।"

"अभी है?"

कुछ लोग कहते हैं कि उन्हें पता है कि यह जगह कहाँ है, लेकिन हमें नहीं पता।

“आपको यह नहीं मिला?”

नहीं। मैंने देख लिया है।

“अब घर का क्या होगा?”

"होमर लेरॉय सैलिसबरी ने इसे 1865 में बनवाया था, और 1939 में इसमें संरचनात्मक बदलाव किए गए थे, और उसके बाद से कुछ और बदलाव भी हुए हैं। पिछली गर्मियों में मैंने फैसला किया कि मैं छत को बड़ा कर दूंगा क्योंकि यहाँ बहुत सारे पत्थर थे। हमने यहाँ मौजूद सभी पत्थरों का इस्तेमाल किया और इसे खुद ही बड़ा किया।"

“हमने सब कुछ तोड़कर नई नींव बिछाने का काम शुरू करने के बाद अगली रात की बात है। उसी रात मेरे दो बच्चों, लेलिया और डग के साथ एक अजीब घटना घटी, जिसके बारे में हमने सोचा कि यह हमारे द्वारा किए जा रहे इस बड़े बदलाव की वजह से हुई है। जब भी कोई घटना घटती, हम बोर्ड से बात करते। लेकिन मार्था और मॉर्गन आए और उन्होंने कहा कि वे टेरेस से नाखुश नहीं हैं।”

"ओइजा बोर्ड के अलावा अगला दृश्य या श्रव्य अनुभव क्या था?"

“मुझे इसके अलावा कोई और अनुभव नहीं हुआ, सिवाय एक महीने पहले के जब मैंने एक प्रेत को महसूस किया, लेकिन देखा नहीं। उस रात, हमने यहाँ एक बड़ी पार्टी रखी थी। नैन्सी कैंप नाम की बाईस वर्षीय लड़की ने बोर्ड पर काम करने की पेशकश की। हम पहले कभी नहीं मिले थे। हम दोनों बोर्ड पर बैठ गए और काम शुरू कर दिया।”

और फिर क्या हुआ?

“दिलचस्प बात यह थी कि तुरंत ही एक नई आत्मा प्रकट हुई। उसका नाम एडम था, और उसने अपना उपनाम बताया—जो 'बी' से शुरू होता था, कुछ बुलॉक जैसा। उसने कहा कि 1800 के दशक में बीट्रिस ने उसकी हत्या कर दी थी। बीट्रिस ने उसे और उसकी बेटी दोनों को मार डाला था। उसे मदद की ज़रूरत थी। हमने पूछा, 'क्या आप प्रकट होंगे?' वह केवल हम दोनों के सामने प्रकट होने के लिए राज़ी हो गया। इसलिए हम पीछे वाले कमरे में गए, दरवाज़ा बंद किया और वहीं बैठ गए।”

"क्या आपने सचमुच उसे देखा था?"

“मैंने तो नहीं देखा, लेकिन नैन्सी ने देखा। मैंने उसे देखा जब उसने उसे देखा। उसने मुझे पीछे की ओर धक्का दिया और कुर्सी हवा में उछल गई, फिर उसने अपनी कुर्सी नीचे गिरा दी, तख्ता हवा में उछाल दिया, और बुरी तरह डर गई, और अंत में दरवाजे से बाहर भाग गई।”

“यह एडम कौन था?”

"मुझें नहीं पता।"

क्या उसका इस घर से कोई संबंध था?

“मुझे नहीं पता। लेकिन वह फिर से प्रकट हुआ, और उसने उसे कम से कम पांच मिनट तक देखा, और उसने उसका वर्णन किया।”

"तब से क्या आपको कोई और परेशानी हुई है?"

“हां, मैंने देखा है। तब से मुझे रात में अपने कमरे में सोने में बहुत मुश्किल होती है। मुझे अच्छी तरह से एहसास होता है कि मेरे बेडरूम में कुछ है। मुझे निश्चित रूप से किसी की मौजूदगी का अनुभव होता है।”

“क्या यह पुरुष है या महिला?”

“खैर, हमने बोर्ड पर काम किया और हमें बताया गया कि वह एडम था। मुझे कोने में रखे सोफे की ओर देखने के लिए मजबूर किया गया था, और मैं ऐसा नहीं करना चाहती थी क्योंकि मैं डरना नहीं चाहती थी। इसलिए मैंने खुद को उसकी ओर न देखने के लिए मजबूर किया, लेकिन मैं उसकी ओर बुरी तरह आकर्षित हो रही थी, और जब हमने अगले दिन बोर्ड पर

काम किया तो सारा आई और बोली, 'एडम तुम्हारे कमरे में था, और मैं सोफे पर थी, और मैं तुम्हारी रक्षा करने के लिए वहाँ थी।'"

आपने पहले कहा था कि यहाँ बहुत इतिहास घटित हुआ है। आपका मतलब, इस परिसर से है? यह घर तो केवल सौ साल पुराना है, लेकिन उससे पहले यहाँ कुछ था। क्या आपको इसके बारे में कुछ पता है?

कई लोगों ने बताया है कि यहाँ एक इमारत थी, टाउन हॉल, जो गृहयुद्ध के दौरान आबाद थी। लेकिन वह गोलियों से छलनी हो गई थी और गृहयुद्ध के दौरान ही जलकर राख हो गई थी। यह संघ और संघ दोनों की सेनाओं का शिविर स्थल था। दस-बारह लोगों ने मुझे बताया है कि यहाँ के आँगन में गुलामों को दफनाया गया है।

गृहयुद्ध से पहले के काल के बारे में क्या?

मुझे बताया गया था कि यहाँ सुरंगें हैं। यह एक दुग्ध उत्पादन फार्म था और खलिहान से एक सुरंग है, एक पैदल सुरंग। तहखाने से भी सुरंगों की बात कही गई थी, लेकिन हमें कुछ नहीं मिला।

"क्या यह आपके स्वयं के प्रत्यक्ष अनुभवों का सार है?"

"एक और बात है। मेरे साथ ऐसा कई बार मेरे बेडरूम में, बिस्तर पर लेटे हुए हुआ है। सुबह-सुबह मुझे भारी कदमों की आहट सुनाई देती है, कम से कम बारह लोगों के चलने की, जो ऊपर से गुजर रहे होते हैं। लेकिन मेरे बेडरूम में चलने की जगह ही नहीं है!"

"तुम्हारा मतलब छत पर है?"

नहीं, अटारी में।

"क्या यह पुरुष के पदचिह्न हैं या महिला के?"

मुझे लगता है कि वह एक पुरुष होगा।

"क्या ये वैसी ही पदचाप हैं जैसी आपने तब सुनी थीं जब आप अपने कमरे में थीं और उठी नहीं थीं?"

"हाँ।"

"क्या इस घर में आने से पहले आपको ऐसे अनुभव हुए हैं जिन्हें मैं ईएसपी अनुभव कहूँ?"

“नहीं, लेकिन मुझे आपको एक और बात बतानी है। जून 1967 की एक बहुत गर्म गर्मी की रात में मुझे नींद नहीं आ रही थी। मैं उठी और अपनी बेटी के खाली कमरे में गई, जो एक छोटा सा ग्यारह गुणा ग्यारह का गुंबदनुमा कमरा था। मैं वहाँ इसलिए गई थी क्योंकि मुझे लगा कि वहाँ हवा होगी, और मैंने सोने की कोशिश की। थोड़ी देर बाद रोने, सिसकने और कराहने की आवाज़ से मेरी नींद खुल गई। मैं उठी और दो-तीन बार इधर-उधर घूमी, तब आवाज़ बंद हुई। फिर मैं वापस बिस्तर पर चली गई। लगभग पाँच बार मुझे उठना पड़ा क्योंकि मुझे कराहने और रोने की आवाज़ सुनाई दे रही थी। आखिरकार मैंने खुद से कहा, 'ठीक है, मेरे पास दो पिल्ले हैं, ज़रूर कोई कुत्ता होगा।' मैं नीचे तक गई और रसोई में गई, लेकिन कुत्ते गहरी नींद में सो रहे थे। मैं अपने कमरे में वापस बिस्तर पर चली गई। बिस्तर पर लेटते ही फोन की घंटी बजी। मेरी अठारह साल की बेटी का एक बहुत गंभीर कार दुर्घटना हो गई थी। मेरे पति तब कान में इयर प्लग लगाकर सोते थे, और उन्हें फोन की घंटी सुनाई ही नहीं दी होगी। मैंने सोचा, मैं अगर मैं कराहने और रोने की आवाज़ से न जागा होता, तो मैं यहाँ होता ही नहीं!

क्या आपने अपनी बेटी की आवाज सुनी?

"हां—उसने कहा कि वह सबसे गंभीर रूप से घायल लड़की के साथ सड़क पर अकेली रह गई थी, जबकि बाकी लोग मदद के लिए गए थे, और वह लड़की रो रही थी और वे सब कराह रहे थे; वे सभी रो रहे थे और सिसक रहे थे।"

"इस घर में और किसे-किसे अनुभव हुए हैं?"

“एक रात मेरी दोस्त पैट ह्यूजेस ने यहाँ एक महिला को देखा। पैट यहाँ जैक्सन मैकब्राइड नाम के एक आदमी के साथ थी और वे बातें कर रहे थे। रात के 3 बजे मैं वहाँ से निकलकर सोने चली गई। सुबह करीब 4 बजे पैट ने रसोई में कुछ आवाज़ें सुनीं और सोचा कि मैं उठ गई हूँ। उसने किसी के इधर-उधर चलने की आवाज़ सुनी। पैट वहाँ गई और बोली, ‘अंदर आ जाओ, लूसी, मज़ाक करना बंद करो। अंदर आओ और हमसे बात करो।’ तभी एक प्रेत अंदर आया और पैट ने कहा, ‘यह लूसी नहीं है’—उसे एहसास हुआ कि वह भूत मुझसे मिलता-जुलता था। वह लंबा और पतला था, उसके लंबे काले बाल थे, उसने लाल रंग का चोला पहना हुआ था और गले में शॉल जैसा कुछ था, और उसका हाथ उस चोले को पकड़े हुए था। पैट

घबरा गई और बोली, ‘हे भगवान, यह लूसी नहीं है! यह कौन है?’ उसने उस आदमी से कहा, ‘आओ और देखो,’ लेकिन वह डर गया। फिर पैट वापस जाकर उससे बात करने की कोशिश करने लगी, लेकिन वह गायब हो गया था! बाद में, उन्होंने रसोई में कुछ चीज़ों के खड़कने की तेज़ आवाज़ सुनी।” रसोईघर।"

“यह घटना कितने समय पहले हुई थी?”

लगभग छह महीने।

"क्या यहां किसी और ने कुछ देखा या सुना है?"

“एक रात, नैन्सी कैंप के भाई जो कैंप ने सफेद कपड़ों में एक धुंधली महिला को देखा। दो अलग-अलग मौकों पर।”

"और कुछ?"

“एक साल पहले जब हम रात करीब 11 बजे घर लौटे तो हमने देखा कि दो बच्चे अभी भी जाग रहे थे और डरे हुए थे। मैंने डगलस और लेलिया को इतना डरा हुआ कभी नहीं देखा था।”

और उन्होंने आपको क्या बताया?

मैं चाहूँगा कि लेलिया खुद आपको यह बात बताए।

मैंने उस समय दस साल की लेलिया की ओर रुख किया और उसे बोलने के लिए प्रोत्साहित किया।

“मैं बिस्तर पर सो रही थी,” उसने बताना शुरू किया, “तभी मैंने खिड़की के पास से कुछ गुजरते हुए देखा। मैंने सोचा, ‘अरे, कुछ नहीं है, शायद पेड़ ही होंगे।’ तभी मेरे भाई ने भी उसे अपनी खिड़की से गुजरते हुए देखा। वह बाहर आया और हम सब घर में इधर-उधर भागने लगे जब तक कि माँ घर नहीं आ गईं।”

"यह किस तरह का दिखाई दे रहा है?"

"कुछ धुंधला सा है—"

क्या आपने कोई चेहरा देखा?

नहीं। धूसर रंग का। थोड़ा धुंधला सा। और एक सरसराहट की आवाज।

और यह कितने समय तक चला?

"लगभग तीन या पांच मिनट।"

“लाल कपड़े पहनी उस महिला के प्रकट होने के बाद वाली रात हमें तीन माणिक जड़े एक अंगूठी मिली,” श्रीमती डिकी ने बीच में टोकते हुए कहा। “उसे वह अंगूठी अपने कमरे में मिली थी। एक खूबसूरत सोने की अंगूठी।”

"क्या यह पहले से वहां था?"

“हमने इसे पहले कभी नहीं देखा। क्या आप जानवरों के भूतों पर विश्वास करते हैं?” श्रीमती डिकी ने सोच-विचार करते हुए पूछा। “एक बार हमारे यहाँ ग्यारह लोग बैठक में बैठे थे और हम एक दोपहर ओइजा बोर्ड चला रहे थे। अचानक, बिना किसी कारण के, हमने एक बड़े घोड़े को सामने के बरामदे से भागते हुए सुना! हमने खिड़कियों से बाहर देखा, लेकिन कुछ भी दिखाई नहीं दिया। फिर भी, हमने उसे सुना; हम सभी ने उसे सुना!”

लेकिन लेलिया के पास बताने के लिए कुछ और भी था। “डेढ़ साल पहले हमने मेरी बहन के मंगेतर—मेरी दूसरी बहन, जॉयस—के लिए विदाई पार्टी रखी थी और बरामदे के एक किनारे पर एक कुंडली मारकर बैठा हुआ सिर था।”

"आगे?"

“एक सिर। चेहरा। बहुत सारे तारों में लिपटा हुआ—जैसे कुंडलित हो। उसमें चेहरे की विशेषताएं भी थीं।”

“पुरुष या महिला?”

"आदमी।"

“यह कितने समय तक चला?”

“पंद्रह मिनट।”

और यह कैसे दूर हुआ?

“यह सब कुछ बहुत ही बचकाना था। एक बार, मेरी बहन जॉयस और मैं तहखाने में गए क्योंकि हमें लगा कि हमारे पिता वहाँ हैं। हमने दरवाजे पर एक कोट लटका हुआ देखा, और अचानक वह कोट हिलने लगा। लेकिन हमारे पिता वहाँ नहीं थे।”

मैंने श्रीमती डिकी से पूछा, "क्या घर का कोई विशेष हिस्सा है जो इन गतिविधियों में सबसे अधिक शामिल होता है? या यह पूरे घर में होता है?"

"सीढ़ियों के नीचे!" लेलिया ने स्वेच्छा से कहा।

"अगर आप तहखाने से ऊपर के कमरों तक एक सीधी रेखा खींचते हैं, तो आप किससे टकराएंगे?"

"तहखाना, सीढ़ियों वाला हिस्सा और ऊपर का कमरा, निश्चित रूप से; अगर आपको चित्र बनाना हो तो।"

"आपकी जानकारी के अनुसार, ऊपर वाले हिस्से का क्या उपयोग था? पुराने समय में वहां कौन रहता था? क्या वहां छोटे कमरे थे?"

"हां, छोटे कमरे थे।"

“नौकरों के क्वार्टर?”

मुझे इस पर संदेह है। मुझे पता है कि यहाँ आसपास नौकरों के घर थे—यह लगभग जागीर का घर था। यहाँ गुलामों के रहने के लिए अन्य क्वार्टर भी थे।

"तो ये सबसे ऊपरी मंजिल पर बने छोटे-छोटे कमरे थे।"

"हाँ।"

"गुंबद के नीचे वाले छोटे कमरे का क्या होगा?"

“वहीं मुझे एक और अनुभव हुआ,” श्रीमती डिकी ने हैरानी से कहा। “रात को, लगभग 3 बजे, मेरी नींद खुल गई। पैटी किसी के साथ डेट पर गई थी, लेकिन मैंने उसे जल्दी घर आने को कहा था। मैंने पैटी के कमरे की ओर जाने वाली उन पुरानी, छोटी, संकरी सीढ़ियों पर भारी कदमों की आहट सुनी। मैंने पुकारा, ‘पैटी, क्या तुम अभी अंदर आ रही हो?’ उसने कोई जवाब नहीं दिया, और मुझे गुस्सा आ गया। मैंने सोचा, वह मुझे जवाब क्यों नहीं दे रही है और इतना शोर क्यों मचा रही है। तो मैं दौड़कर सीढ़ियों पर गई और चादर हटाई, और वह घंटों से गहरी नींद में सो रही थी। उसके साथ एक और लड़की थी, और वे दोनों सो रही थीं, और मैंने उन्हें डरा दिया था। लेकिन शोर इतना तेज़ और स्पष्ट था कि रेलिंग पर झुकने की आवाज़, सीढ़ी पर हर कदम की आवाज़ सुनाई दे रही थी—”

"क्या ये वैसी ही पदचाप थी जैसी आपने दूसरी पदचापें सुनी थीं, पुरुष पदचाप?"

“हाँ। धीमे, व्यवस्थित, स्थिर, भारी कदमों की आहट।”

"क्या ऐसा लगा जैसे किसी को ऊपर चढ़ने में परेशानी हो रही हो?"

नहीं। बस पैदल ही आ रहा हूँ।

“फिलहाल, हमें दो व्यक्तियों से निपटना है, एक महिला और एक पुरुष। क्या घर के बारे में कोई ऐसी जानकारी है जिसमें कोई दुखद घटना शामिल हो?”

“मुझे तो इसकी जानकारी नहीं है; मैं इसका पता नहीं लगा पाई हूँ। लगभग दो महीने पहले मेरे यहाँ एक नौकरानी आई थी और उसने कहा, ‘मैं सालों से इस जगह पर नहीं आई हूँ, लेकिन मेरे चाचा घोड़े पर सवार थे, और घोड़ा उछल पड़ा और उन्हें गिराकर पेड़ पर लटका दिया।’ और उसने मुझे वह पेड़ दिखाया।”

"क्योंकि घोड़ा डर गया था?"

"उसे हवा में उछाला गया और पेड़ पर लटकाकर मार डाला गया।"

“दीवार में बने उस दरवाजे का क्या? उस दरवाजे का इतिहास क्या है?”

“एक सत्तर वर्षीय महिला यहाँ बार-बार मिलने आती हैं। उनका कहना है कि उनका जन्म इसी घर में हुआ था; उनका नाम सुसान रिचमंड है। उन्होंने मुझे बताया कि जब मेहमान आते थे और घर के लोग एप्रन पहने होते थे और जल्दी से ऊपर जाकर कपड़े बदलना चाहते थे, तो वे उस छोटे से दरवाजे से होकर ऊपर चले जाते थे।”

“यह सीढ़ी तो शुरू से ही यहाँ थी? यह कहाँ जाती है?”

"अब इसे लकड़ी के तख्तों से ढक दिया गया है, लेकिन यह ऊपर की सीढ़ियों से जुड़ा हुआ था।"

* * *

मैंने अंततः जॉयस डिकी से घर में उसके अनुभवों के बारे में पूछताछ की। बीस वर्षीय जॉयस ढाई साल पहले से ही अपनी माँ के साथ उस घर में रह रही थी।

"क्या आपको अपनी बहन के साथ कुछ अनुभव हुए हैं?"

“हां। यह तहखाने में था।”

"क्या आपके साथ कभी कोई स्वतःस्फूर्त अनुभव हुए हैं?"

“मैं डाइनिंग रूम में बैठा होता था, और अचानक बहुत ठंड लगने लगती थी। मुझे किसी की मौजूदगी का एहसास होता था। एक रात हम रिकॉर्ड प्लेयर सुन रहे थे, तभी पीछे के प्रवेश द्वार के ठीक पास एक विशाल झरने जैसी आवाज़ आई। पहले पानी टपकने जैसी आवाज़ आई, और फिर वह एक बड़े झरने जैसी हो गई।”

"आपका मतलब है कि यह वैसा ही लग रहा था।"

"हां, ऐसा ही लग रहा था।"

"क्या वहां कुछ था?"

"नहीं।"

"तुम्हारी बहन ने तहखाने में रखे एक कोट के बारे में कुछ कहा था।"

“जब हम पहली बार यहाँ रहने आए थे, तो मुझे तहखाने में जाना पड़ा। मेरे पिता का कोट दरवाजे पर टंगा हुआ था और थोड़ा हिल रहा था। मुझे लगा कि मेरे पिता तहखाने में चले गए हैं। मैंने दरवाजा खोला और नीचे जाने लगा। मेरे सामने एक आकृति थी, शायद मेरे पिता; मैं मुश्किल से एक आदमी की आकृति देख पा रहा था, जो मेरे सामने नीचे जा रहा था। मैं नीचे उतरा, लाइट जलाई और चारों ओर देखा। मेरे पिता वहाँ नहीं थे।”

"लेकिन आपने एक आदमी को देखा?"

"ठीक है—बहुत हल्की आवाज़।"

क्या तुमने उसका चेहरा देखा?

"नहीं—बस पीठ का हिस्सा मेरे सामने नीचे जा रहा था।"

"क्या मुझे और कुछ जानना चाहिए?"

मुझे लगा कि हमने जो आखिरी बार आत्माओं से संपर्क किया था, उससे कुछ गड़बड़ हो गई थी।

"कोनसे रसते में?"

“कुत्ते तहखाने में थे और वे परेशान होने लगे, इसलिए मैं उन्हें बाहर ले गया। उनमें से एक को मैं पकड़ नहीं पाया—वह भाग गई और मैं उसे पिंजरे में नहीं डाल पाया। लेकिन मैंने बाकी दो

को अंदर डाल दिया और घर वापस आ गया। रसोई में शोर हो रहा था, जैसे कोई बर्तनों को खड़का रहा हो और इधर-उधर पटक रहा हो। तहखाने में किसी आदमी के चलने की आवाज़ आ रही थी। फिर आवाज़ें बंद हो गईं, और फिर से शुरू हो गईं, और ऐसा लग रहा था जैसे कोई तहखाने के फर्श पर कुछ घसीट रहा हो—आलू के ढेर जैसी आवाज़। और फिर कुत्ते बहुत ज़ोर से भौंकने लगे। यह पिछली सर्दियों की बात है।”

"क्या तुमने सामने वाले घोड़े की आवाज सुनी?"

“हां, मैंने किया। हम ओइजा बोर्ड के साथ काम कर रहे थे, तभी एक विशाल घोड़ा अचानक बरामदे के पार से तेजी से गुजरा।”

"लकड़ी पर, आपका मतलब है?"

“लकड़ी पर! वो धड़ाम-धड़ चलता हुआ गया—! जैसे दौड़ रहा हो। बरामदे पर।”

"और क्या आपने यह देखने की कोशिश की कि वहां कोई घोड़ा था या नहीं?"

“हां। वह हमारा घोड़ा नहीं था।”

“आपके घोड़े कहाँ रखे जाते हैं?”

"पीठ में।"

"क्या उनमें से किसी के भी भाग निकलने की कोई संभावना नहीं थी?"

“नहीं। वह एक बड़ा घोड़ा था, और हमारा छोटा टट्टू इतनी आवाज नहीं कर सकता था।”

मैंने उस आदमी के बारे में सोचा जिसे उसके घोड़े ने "फांसी" दे दी थी, फिर मैंने अपना ध्यान पैटी डिकी की ओर मोड़ा। पैटी लगभग अठारह साल की थी।

“मुझे सच में कोई खास अनुभव नहीं हुआ है,” उसने थोड़ा शर्मिंदा होकर मुस्कुराते हुए समझाया। “सिर्फ एक बार, जब मेरी माँ ने मेरे छोटे भाई के कमरे में एक आकृति देखी थी। उसी रात मैं गहरी नींद से जाग गई और मुझे लगा कि मेरे कमरे में कुछ है।”

* * *

घर में आत्माओं या कथित आत्माओं से संपर्क करने के लिए ओइजा बोर्ड का इस्तेमाल करने के बावजूद, मुझे लगा कि डिकी परिवार ने वास्तव में कुछ वास्तविक मानसिक अनुभव किए थे। मेरा यह विश्वास तब और मजबूत हुआ जब मुझे एहसास हुआ कि ओइजा बोर्ड के माध्यम

से घर में मौजूद किसी भी चीज़ से संपर्क करने के प्रयास से पहले ही प्रेत और श्रव्य घटनाएं घटित हुई थीं। मैंने इस तरह के बोर्डों को कभी भी बहुत अच्छा नहीं माना है, और कई बार बच्चों या उन लोगों को इनके इस्तेमाल के खिलाफ चेतावनी दी है जो माध्यम बनने की क्षमता रखते हैं लेकिन इसके बारे में अनजान हैं। इसके अलावा, इन बोर्डों के इस्तेमाल से प्राप्त जानकारी आम तौर पर बहुत विश्वसनीय नहीं होती है। यदि इनके इस्तेमाल से कुछ ठोस जानकारी मिलती भी है, तो वह आमतौर पर ध्यान, वास्तविक माध्यमता या स्वचालित लेखन जैसे अन्य तरीकों से भी प्राप्त की जा सकती है। लेकिन जिस समय मैं डिकी के घर पहुंचा, ओइजा बोर्ड का इस्तेमाल पहले से ही एक आम बात थी, और मैं इसके बारे में कुछ नहीं कर सकता था।

“इस घर में एक भूत, या शायद दो भूत हैं, यह तो बिल्कुल स्पष्ट है,” मैंने श्रीमती डिकी से जाते हुए कहा। “मैं भविष्य में किसी योग्य माध्यम को साथ लेकर वापस आऊंगा और हम इस समस्या का समाधान करने की कोशिश करेंगे।”

श्रीमती डिकी ने उत्साहपूर्वक सिर हिलाया। कद में छोटी होने के बावजूद, पाँच बच्चों की माँ होने के बावजूद, वे देखने में लगभग बीस वर्ष की लगती थीं। उनका उत्साह इतना अधिक था कि मैंने तुरंत वापस आने की कोशिश की, लेकिन गर्मियों का मौसम शुरू हो जाने और हर साल की तरह यूरोप जाने के कारण ऐसा नहीं कर सका।

* * *

इसलिए, 10 अप्रैल, 1969 तक मैं श्रीमती डिकी के घर दोबारा जाने का इंतज़ाम नहीं कर पाया। वैसे, उस घर का नाम विंडओवर है और वह वॉलनट लेन पर स्थित है, जिसका नाम सड़क के दोनों ओर लगे ऊंचे-ऊंचे पुराने अखरोट के पेड़ों के कारण बिल्कुल सही रखा गया है। हमने तय किया कि मैं श्रीमती एथेल जॉनसन मेयर्स के साथ आऊंगा और 11 मई, 1969 को हम पूरी तैयारी के साथ पहुंचे कि घर में मौजूद जिन भी भूतों से बात करना चाहें, उनसे मिलेंगे।

इस बार नीचे वाले बैठक कक्ष में कई और लोग मौजूद थे। ज़ाहिर है, मैंने उन्हें पहले कभी नहीं देखा था, और बाद में मुझे बताया गया कि उनका घर और उसमें होने वाली भूतिया घटनाओं

से किसी न किसी तरह का संबंध था; लेकिन मुझे लगता है कि वे ज़्यादातर दोस्त या जिज्ञासु पड़ोसी थे जो किसी खास बात में शामिल होना चाहते थे। खैर, वे पीछे हट गए और श्रीमती मेयर्स और मुझे आज़ादी से घूमने दिया ताकि माध्यम को अपनी मानसिक स्थिति का पता चल सके।

एथेल शिकारी कुत्ते की तरह सीढ़ियों से अंदर चढ़ी। अंदर पहुँचकर उसने बिना किसी परिचय की इच्छा जताए सबको सहजता से नमस्कार किया। जाहिर है, उसे माहौल में कुछ महसूस हो रहा था। कुछ देर बाद, मैंने हमेशा की तरह उसे अपनी इच्छाएँ बतानी शुरू कर दीं।

“मैं आपसे बस इतना कहना चाहूँगा कि अगर आप यहाँ घूमते-फिरते किसी भी तरह का अनुभव करें, या किसी भी समय कुर्सी पर बैठने का मन करे, तो बैठ जाइए, हम आपके पीछे-पीछे आ जाएँगे। और अगर आपको इस घर के बारे में कोई भी भावना महसूस हो, तो बताइए —यह बहुत पुराना घर है। यहाँ की प्राकृतिक चीज़ों और इन कीमती प्राचीन वस्तुओं के बीच अंतर करना थोड़ा मुश्किल होगा, क्योंकि इन सभी से कुछ न कुछ ऊर्जा निकलती है। इसके अलावा, अगर आपको कोई प्रतिक्रिया या कंपन महसूस हो, तो मुझे जरूर बताइएगा।”

“खैर, यहाँ बहुत सी चीज़ें हैं, ठीक है। लेकिन फिलहाल यहाँ बहुत शांति है। एक ही समय में जीवंतता और शांति। लेकिन मुझे और भी चीज़ें जानने के लिए नीचे उतरना होगा। यहाँ आसपास कोई उत्प्रेरक है, और मैं उस उत्प्रेरक को खोजना चाहता हूँ।”

एथेल अब बैठक कक्ष में प्रवेश कर चुकी थी और बीच में खड़ी हो गई।

“एक महिला मेरे करीब आ रही है। एक पुरुष भी है—मुझे नहीं लगता कि वह बूढ़ा है—उसके बाल बहुत घने हैं। महिला मेरी तरफ देख रही है और मुस्कुरा रही है।”

* * *

इस समय मुझे टेप बदलना पड़ा। जब मैं रिकॉर्डर में व्यस्त था, एथेल लगातार उस रहस्यमय व्यक्ति के बारे में बोलती रही जिसे उसने वातावरण में महसूस किया था। जैसे ही मेरा टेप सही जगह पर लगा, मैंने उससे अपने अंतिम कुछ अनुभवों को दोहराने के लिए कहा ताकि मैं उन्हें रिकॉर्ड कर सकूं।

* * *

“क्या आपको जो ‘लुईस’ नाम मिला है, उसका संबंध चिमनी के पास खड़े उस व्यक्ति से है? क्या आप उस विवरण को फिर से दोहरा सकते हैं: सोने की बकल वाले जूते, और उसकी कोहनी लकड़ी के मेंटलपीस पर टिकी हुई है?”

“खैर, उसने ये हल्के भूरे रंग की छोटी पैंट पहनी हुई है, एकदम फिट बैठने वाली; निश्चित रूप से सुनहरे या सरसों के रंग की, कमरबंद यहाँ से लगभग इतना चौड़ा है....”

वह किस काल से संबंधित होगा?

"ओह, मुझे लगता है उसने अपने बाल पीछे चोटी की तरह बांध रखे हैं। ये भूरे रंग के हैं या उसने विग लगा रखी है।"

"और कुछ?"

"उसने एक नीली जैकेट पहनी हुई है जो पीछे से नीचे की ओर लटकती हुई प्रतीत होती है।"

"क्या उस जैकेट पर कोई बटन हैं?"

"हाँ।"

"वे किस रंग के हैं?"

"चाँदी।"

"वह यहां क्यों है?"

"वह चिंतनशील प्रतीत होता है, फिर भी मुझे ऐसा लगता है जैसे वह अपने दांत पीसना चाहता हो।"

"क्या यह कोई उपस्थिति है, या यह कोई छाप है?"

मुझे लगता है कि यह एक उपस्थिति है।

“क्या वह घर के साथ आता है?”

"मैं बस यही कहूँगा।"

क्या उनके जीवन में कुछ ऐसा है जो अधूरा रह गया हो?

एथेल ने अंगीठी के पास खड़े अदृश्य व्यक्ति की ओर मुड़कर कहा, “बताओ, दोस्त, तुम्हें क्या परेशान कर रहा है? तुम्हारी आँखें आधी बंद हैं और मैं तुम्हारी आँखों का रंग नहीं देख पा रही हूँ। क्या तुम मेरी तरफ देखोगे?”

मैंने भी अपना एक प्रस्ताव रखते हुए कहा, “आप चाहें तो इस उपकरण का उपयोग संवाद करने के लिए कर सकती हैं। हम मित्र बनकर आए हैं।”

एथेल ने अब कुछ प्रतिक्रिया दी। “ओह! वह मेरी तरफ देख रहा है। उसकी आँखें कुछ-कुछ हरे-भूरे रंग की हैं।”

"क्या आपको पता है कि वह यहाँ क्यों है?"

“वह अचानक गायब हो गया। जैसे, यहीं से चला गया।”

वह किस ओर गया?

“मैं यहाँ से गुज़री थी।” उसने कमरे के पीछे स्थित पुरानी सीढ़ियों की ओर इशारा किया, जहाँ अधिकतर घटनाएँ घटी थीं।

“उसी रास्ते पर चलो!”

“मैं उस दीवार के पार नहीं जा सकती!” फिर भी वह उसके चारों ओर घूमने लगी और मैं उसके पीछे-पीछे चलने लगा। “यह कमरा यहाँ नहीं था। कुछ तो अलग है,” उसने अचानक कहा और रुक गई।

“किस तरह से अलग?”

"क्या यह हिस्सा बाद में आएगा?"

मुझे बताया गया है कि यह बाद में होगा। घर के उस हिस्से में क्या अलग है?

जाहिर है, घर के आधुनिक हिस्से में उसे कुछ भी महसूस नहीं हुआ।

"ठीक है, हम घर के पुराने हिस्से में वापस जा रहे हैं।"

"देखिए, मुझे वहां कुछ सुनाई नहीं दे रहा था। यहां एक आदमी है, जिसके बहुत सारे बाल हैं, जो नीचे लटके हुए हैं; उसकी मूंछें और दाढ़ी झुकी हुई हैं।"

वह किस काल से संबंधित है?

"ओह, यह तो काफी बाद की बात है, मैं कहूंगा।"

मैंने उस दीवार की ओर इशारा किया जहाँ इतनी सारी घटनाएँ घटी थीं: “क्या आप उस दीवार के पास जाएँगे? बस उस हिस्से के पास, जो मेरे ख्याल से घर का सबसे पुराना हिस्सा है। मैं चाहता हूँ कि आप देखें कि क्या यह आपको किसी भी तरह से प्रभावित करता है।”

"जिस आदमी को मैं अभी देख रहा था, वह यहां मौजूद लोगों में से किसी के आसपास नहीं है, जैसे कि मैंने कुछ देर पहले देखा था; इतनी देर रात तक नहीं।"

“कुछ भी समकालीन नहीं?”

"नहीं—मैंने अभी जिस आदमी को वहाँ देखा, उसमें समकालीनता जैसी कोई बात नहीं थी।"

"पहले वाले से एक और पूर्णविराम?"

"यह सही है।"

"दूसरे शब्दों में कहें तो, दो स्तर।"

"एक महिला की आवाज है, बहुत मर्मस्पर्शी; जैसे-जैसे मैं उसे सुन रहा हूँ, वह बहुत दुबली-पतली है।"

वह किस काल से संबंधित है?

“लगभग वैसा ही जैसा मैंने पहले आदमी को देखा था। क्या आपको यहाँ ठंडक महसूस हो रही है? तापमान में कोई अंतर? यहीं पर कुछ हुआ है।”

“आपका मतलब अगले कमरे की ओर जाने वाले गलियारे से है? यह हमें वापस प्रवेश द्वार तक ले जाता है। आपको क्या लगता है कि यहाँ क्या हुआ होगा?”

“एक हादसा हुआ है—मैं हादसा नहीं कहना चाहता—मैं सिर्फ एक हादसा कहना चाहता हूँ। एक हादसा हुआ है, और एक महिला इसके बारे में चीख रही है।”

“तुम अपनी गर्दन पकड़ रहे हो। क्यों?”

"यहाँ आकर वह अपने शरीर से बाहर निकल गई।"

क्या वह अभी भी यहीं है?

“मैं कहूंगी कि वह है। वह वही पतली महिला है जिसके बारे में मैं बात कर रही हूं।”

इस घर में इस समय सबसे प्रभावशाली व्यक्ति कौन है?

“मुझे पता है कि वो आवाज़ बहुत दबदबे वाली है, लेकिन अंदर बैठा आदमी भी बहुत दबदबे वाला था।” एथेल ने फिर से सामने वाले हॉल की ओर इशारा किया। “क्या मैं यहाँ और अंदर जा सकती हूँ?”

मैंने सिर हिलाया और उनके पीछे-पीछे चल दिया।

“वह यहाँ से नहीं आ सकती। रास्ता बंद है। यह एक खुला रास्ता था, लेकिन वहाँ कुछ लटका हुआ है।”

“वहाँ क्या लटका हुआ है?”

मुझे डर है कि यह वही आदमी है जिसे मैंने अंदर चिमनी के पास देखा था।

“उनकी मृत्यु कैसे हुई?”

"गर्दन से।"

"क्या यही वह आदमी है जिसे आपने लुईस कहा था?"

“मुझे लगता है ऐसा हो सकता है। यह अजीब है—जब मैं इस बेहद उदास मनोदशा में हूँ, तब मुझे हँसी-मज़ाक और किसी बड़ी सम्मानजनक घटना के बारे में उत्साह से भरी बातें सुनाई दे रही हैं, जिसका यहाँ जश्न मनाया जा रहा है। कोई इस घर में विजय की प्रबल भावना के साथ आता है, मानो उसने कुछ हासिल कर लिया हो। वहीं दूसरी ओर, मैं यहाँ बुरी तरह से निराश हो रहा हूँ।”

"जब आप 'विजय प्राप्त' कहते हैं, तो क्या आप किसी सैन्य विजय की बात कर रहे हैं?"

मुझे अभी पता नहीं है कि यह क्या है। ये सब सिर्फ अनुमान हैं। मुझे और गहराई से जांच करनी होगी।

"मेरा सुझाव है कि आप किसी आरामदायक कुर्सी पर बैठ जाएं, और जो कुछ भी यहां हो, उसे खुद आप तक पहुंचने दें।"

लेकिन एथेल अभी समाधि की अवस्था के लिए पूरी तरह तैयार नहीं थी। उसे लगातार कई तरह के दिव्य आभास हो रहे थे।

“बहुत सारे लोग अंदर आने की कोशिश कर रहे हैं। एक भारी-भरकम आदमी, लगभग गंजा, यहाँ है। अब एक और है। अब एक लड़की है, जिसके बाल घुंघराले हैं। वह दस-बारह साल से ज़्यादा की नहीं लगती।”

क्या उसका उस पुरुष या महिला से कोई संबंध है?

“मुझे लगता है कि यह लगभग पहले के समय की बात है, क्योंकि उसने यहाँ तक लंबी पोशाक पहनी हुई है। फीते वाले जूते, जिन पर यहाँ रिबन बंधे हैं; आप उन्हें बैले स्लिपर कह

सकते हैं। उसकी ठुड्डी छोटी और नुकीली है, और आँखें कुछ चौड़ी हैं, मानो कुछ देख रही हों। फिर एक अधेड़ उम्र की महिला है, जिसके काले बाल नीचे तक आते हैं और फिर ऊपर की ओर बंधे हुए से लगते हैं।"

क्या वह आपको कोई नाम बताती है?

"ऐनी या एनेट। इस व्यक्ति के आसपास मुझे एक शांतिपूर्ण अनुभूति होती है, सिवाय इसके कि मुझे ऐसा लगता है कि मैं किसी ऐसे व्यक्ति से संवाद कर रहा हूँ जिसे मैं वास्तव में स्पर्श नहीं कर सकता।"

"क्या आप इसे समझा सकते हैं?"

"शायद किसी ऐसे भूत के साथ जिसे मैं छू नहीं सकता।"

"क्या आपको लगता है कि वे हमें कुछ बताना चाहते हैं?"

"हम अभी तक एक-दूसरे से बात नहीं कर रहे हैं!"

"अच्छा, शायद अल्बर्ट उन्हें पकड़ ले और हमें बता दे कि वे क्या कर रहे हैं। अगर अल्बर्ट वहां मौजूद रहना चाहे तो—"

लेकिन एथेल ने मेरी इस बात को अनसुना कर दिया कि उसे समाधि की अवस्था में ही अपना नियंत्रण प्रकट करने देना चाहिए। अभी नहीं। वह अभी भी इस बेहद भीड़भाड़ वाले घर के बारे में, आध्यात्मिक रूप से कहें तो, अपने मानसिक अनुभवों को बयां कर रही थी।

"अजीब बात है—वहाँ एक अजीब सा छोटा कुत्ता भी है। यह कुछ-कुछ स्कॉटी जैसा दिखता है, लेकिन स्कॉटी नहीं है। इसके बाल कड़े हैं।"

"क्या इसमें आपके द्वारा बताए गए इन तीन किरदारों में से कोई भी शामिल है?"

"मुझे लगता है कि वह उसी महिला का है जिसका मैंने अभी वर्णन किया है। मुझे ऐसा महसूस हो रहा है कि मैं उसे पहली बार देख रही हूँ, और मैंने उसे दूसरे कमरे में सुना है।"

"वे आवाजें जो आपने पहले सुनी थीं?"

मुझे ऐसा लगता है। वह यहाँ बहुत उदास दिख रही है। मुझे पता है कोई उस तरफ भागकर जाएगा।

वे घर से बाहर क्यों भाग रहे हैं?

मुझे यह कहने में बहुत हिचकिचाहट हो रही है कि वहां कोई लटका हुआ है...
हम बैठ गए और एथेल ने अपनी आँखें बंद कर लीं। मैंने धैर्यपूर्वक प्रतीक्षा की कि एथेल, यानी उसके आध्यात्मिक नियंत्रणकर्ता, बातचीत को आगे बढ़ाए। अंततः, लगभग दो-तीन मिनट की चुप्पी के बाद, एथेल के मंत्रमुग्ध होठों से एक परिचित, पुरुष की आवाज़ सुनाई दी।
"नमस्ते।"
"अल्बर्ट, क्या तुम स्थिति को संभाल पा रहे हो?"
"तनाव तो है, लेकिन मैं इसे कर पा रहा हूँ।"
"अल्बर्ट, क्या आपके पास इस घर के बारे में कोई जानकारी है?" मैंने यह सुनिश्चित होते ही पूछा कि वह पूरी तरह से नियंत्रण में है।
"आप किसी घटना की वर्षगांठ के ठीक एक दिन आए हैं।"
"क्या आप मुझे इसके बारे में विस्तार से बता सकते हैं?"
"इस घटना को दोबारा जीने वाली एम्मा है।"
“इस एम्मा को क्या समस्या है?”
“वह शांत है, लेकिन वह चुप है। अनजाने में हुए धोखे ने नैतिक चरित्र को नष्ट कर दिया। एक व्यक्ति ने तुरंत फैसला किया, ‘अगर तुम मुझे आज़ाद कर दो तो मैं अपना असली रूप दिखाऊंगा।’ भले ही यह अनजाने में हुआ हो, लेकिन विवरण सामने नहीं लाए जा सकते। इस स्थिति से पहले जो सोच थी, वह यह थी कि अगर तुम मर जाओगे, तो तुम्हारा रहस्य तुम्हारे साथ ही मर जाएगा।”
लेकिन दूसरा वाला तो बात कर सकता है?
मैं यह जानने की कोशिश करूँगा कि क्या वह दूसरा व्यक्ति भी कुछ बोलेगा, क्योंकि सारा रहस्य उसी के भीतर छिपा है। अगर वह बोलेगा तो और भी अच्छा होगा। क्योंकि वह दूसरा व्यक्ति उस स्त्री का रहस्य नहीं जानता।
"क्या आप हमें नाम बता सकते हैं?"

“दो एल हैं। लियोन उनमें से एक है। मैं अभी आपको यह नहीं बता सकता कि वह कौन है। दो व्यक्ति हैं, एक जो दूसरे से मिलने आता है। एक जिसने इस इलाके में बैठकर अपना बयान दिया है। एक एल के खिलाफ बयान, दूसरे एल के खिलाफ।”

“किस तरह की घोषणा?”

"खुलकर उन बातों का खुलासा करना जिन्हें यहां रहने वाला व्यक्ति गुप्त रखता था।"

“उस खाते में किस चीज का लेन-देन होता था?”

"जब कोई उन्हें चुपचाप अपने भीतर रखता है और उन्हें देना नहीं चाहता, तो यह यहाँ का एक नियम है - आप यह जानते हैं - इसलिए मैं चाहूँगा कि वह बोले, न कि वह महिला, एम्मा, जो दोनों 'एल' के बीच क्या चल रहा था, उससे पूरी तरह अवगत नहीं है।"

क्या वह हमसे बात करने को तैयार है?

“हम उनसे बात करवाने की कोशिश कर रहे हैं। हालांकि, उसने खुद को खत्म करके और सारा कारोबार अपने साथ ले जाकर उसे नष्ट करने का फैसला किया। जब उसने यह किया, तब वह अकेला था। दूसरा एल. अब इस दुनिया में नहीं है। वह अपना नाम नहीं बताएगा।”

"क्या आपको उसका नाम मालूम है?"

“मैं नहीं जानता। जब इसे गुप्त रखा जाता है, और यह यहाँ है, तो मुझे तब तक इसमें दखल देने की अनुमति नहीं है जब तक कि वह स्वयं इसका खुलासा न कर दे।”

क्या इस घर से उनका कोई मालिक के तौर पर संबंध है?

"मैं बस यही कहूँगा।"

"काफी समय पहले?"

"मुझे तो यह सदी के मोड़ जैसा लगता है।"

“कौन सी सदी?”

“अठारह सौ में।”

क्या उसने घर बनाया था?

"मुझे ऐसा विश्वास है।"

तो क्या वही व्यक्ति सबसे पहले यहाँ रहा होगा?

“मुझे लगता है यह सच है। मैं पूरी कोशिश कर रहा हूँ कि पता लगा सकूँ। हो सकता है किसी और बिल्डर ने कुछ लेन-देन किया हो और जल्द ही उसने इसे अपने हाथ में ले लिया हो। किसी न किसी तरह अतीत में कुछ गड़बड़ हुई है। वह एक प्रतिष्ठित व्यक्ति है और अतीत की कुछ बातों को सामने आने देना उसके लिए ठीक नहीं है।”

“वह किस बदनामी भरे कारोबार को लेकर चिंतित था?”

“यह उसका रहस्य है।”

क्या आप उसे बोलने का मौका देंगे?

"मैं उसे जबरदस्ती वाद्य यंत्र बजाने के लिए मजबूर करने की कोशिश करूंगा। यह एक तरह के शॉक ट्रीटमेंट के जरिए किया जाता है।"

* * *

फिर से, मुझे ठीक उसी समय टेप बदलना पड़ा जब किसी अन्य व्यक्ति ने एथेल के स्वर यंत्र का कार्यभार संभाला।

कुछ दर्द भरी और भावुक कराहों के बाद, उसके होठों से एक कर्कश आवाज में फुसफुसाहट सुनाई दी, "एम्मा!" मैंने बेहतर ढंग से सुनने के लिए उसके करीब झुक गई।

“क्या आपको एम्मा चाहिए? हम मदद करने की कोशिश करेंगे। आप बोल सकते हैं। आप ठीक हैं।”

एथेल ने अब अपना हाथ अपने गले पर रख लिया, जो तीव्र दर्द का संकेत था। मैं उस आत्मा की पीड़ा को शांत करने का प्रयास करता रहा।

“एम्मा यहाँ है। तुम्हें क्या चाहिए? हम तुम्हारे दोस्त हैं। रस्सी अब वहाँ नहीं है, उसे हटा दिया गया है। अपनी जीभ वापस अंदर करो और बोलो। तुमने तकलीफ झेली है, लेकिन तुम्हारी गर्दन अब ठीक है। मुझे बताओ, यह सब कैसे हुआ?”

उन्हें कभी पता नहीं चलेगा, उन्हें कभी पता नहीं चलेगा!

“वे क्या नहीं जान पाएंगे? आप हम पर भरोसा कर सकते हैं। हम आपको बचाने आए हैं। आपको बचा लिया गया है। वे चले गए हैं। आप सुरक्षित हैं। आप दोस्तों के बीच हैं।”

धीरे-धीरे आवाज साफ होती गई, लेकिन फिर भी उसमें चिंता झलक रही थी।

"रस्सी।"

“अब और रस्सी नहीं है। क्या किसी ने तुम्हें चोट पहुँचाने की कोशिश की? मुझे बताओ, वह कौन था?”

“लियोन।”

“लियोन कौन है? मैं उसे कहाँ ढूंढूंगा?”

मैं जानती हूँ—यहाँ—एम्मा।

“तुम ठीक हो...यह सिर्फ एक याद है...तुम बिल्कुल ठीक हो।”

मुझे बचाओ—उससे—मुझे बचाओ—”

“मुझे बताओ क्या हुआ है?”

"बेचारी एम्मा।"

“बेचारी एम्मा? मुझे इसके बारे में बताओ।”

“एम्मा को फोन मत करो, एम्मा को फोन मत करो। मैं एम्मा को देखना नहीं चाहता।”

“ठीक है, मैं उसे भेज देता हूँ। वह तुम्हारी कौन है?”

"ओह—मुझे वह बहुत पसंद है।"

“क्या आप उनके पति हैं? आपका नाम क्या है, महोदय? मैं यहाँ अजनबी हूँ। मैं आपकी मदद करने आया हूँ।”

“क्या बात है? मुझसे कौन मिलने आया है?”

मैंने सुना है कि आप परेशान हैं, और मैंने सोचा कि मुझे आपकी मदद करने की कोशिश करनी चाहिए। हम क्या कर सकते हैं?

“मैं—मैं दोषी हूँ। मैं दोषी हूँ। चले जाओ। मुझे कुछ नहीं कहने दो।”

“किस बात का दोषी?”

“सब कुछ जीवंत हो उठता है। जीवंत, जीवंत! ओह—नहीं।”

"मुझे अपने दुख के बारे में बताकर, तुम इसे समाप्त कर दोगे। तुम इससे मुक्त हो जाओगे।"

मुझे लगा था कि यह हमेशा के लिए चला जाएगा। हाय रे हाय, मैं इसे खेतों की खरपतवार की तरह कुचल नहीं सकता। यह मेरी आत्मा में पनप रहा है, और मैं इसके बीज के बिना जी नहीं सकता।

"आपको क्या लगता है कि आपने ऐसा क्या किया है जो इतना बुरा है?"

"ओह—होने दो, मुझे रहने के लिए अपना मनपसंद वातावरण मिल जाए।"

लेकिन मैं तुम्हें इससे मुक्त करना चाहता हूँ। तुम मुक्त होना चाहते हो।

"अरे, अफसोस, मैं नहीं कर सकता।"

"देखो, जब तक तुम किसी को बताकर खुद को शुद्ध नहीं कर लेते, तब तक तुम स्वतंत्र नहीं हो सकते।"

लेकिन, एम्मा, एम्मा!

“अगर आप न चाहें तो मैं उसे नहीं बताऊँगा। आप इस दुनिया से चले गए हैं, और अपनी यादें अपने साथ ले गए हैं।”

मैं कहाँ चला गया हूँ?

"तुम चले गए।"

मैं कहाँ चला गया था? मैं तो यहीं था—आप ऐसा कैसे कह सकते हैं?

“हाँ, तुम यहाँ हो, और तुम्हें यहाँ नहीं होना चाहिए। तुम जीवन के बेहतर पक्ष में चले गए हो, जहाँ तुम हमेशा रहोगे। लेकिन तुम अपने साथ ले जा रहे हो—”

"क्या इससे यह हमेशा के लिए जीवित रहेगा?"

"नहीं।"

“ओह, मुझे एम्मा चाहिए। उसे कभी पता नहीं चलना चाहिए—”

“इसे करने का केवल एक ही तरीका है। और आपको इसे उसी तरह करना होगा जैसा मैं सुझाव देता हूं।”

मैं हमेशा के लिए नहीं जाऊंगा! मैं जी चुका हूं, और जी रहा हूं।

क्या यह आपका घर है?

"जाओ और एम्मा से कहो कि वह दूर रहे।"

“ठीक है। मैं ऐसा ही करूंगा।”

वह हमेशा रोने के लिए आती है।

वह क्यों रो रही है?

“ओह—मैं उसे रोक नहीं सकती। मुझे उसे देखने मत दो।”

आपने ऐसा क्या किया है जिसके लिए आपको इतना शर्म महसूस हो रही है?

“यह मेरे अंतर्मन का निजी रहस्य है। क्या मुझे इसे हमेशा के लिए देखना ही होगा?”

"मुझे बताने पर, मैं इसे तुमसे ले लूंगा।"

मुझे मुझसे दूर ले जाओ ताकि मैं मर जाऊं और हमेशा के लिए विस्मृत हो जाऊं।

या फिर एक स्वतंत्र और सुखी दुनिया में पुनर्जन्म लें।

जीवन के परे एक गहरा अंधकारमय कुंड है जिसमें विस्मृति आपको हमेशा के लिए ढक लेती है। मैं उसी की तलाश में हूँ।

लेकिन तुम अभी भी जीवित हो...

मैं वहां जा रहा हूं, दोस्त। वे हमें चुपचाप नहीं रहने देंगे।

“आप इस दुनिया से विदा हो चुके हैं। अब आप एक यंत्र के माध्यम से हमसे बात कर रहे हैं....”

मैं हमेशा जीवित हूं।

“आत्मा में—पर शरीर में नहीं।”

“शरीर में भी। मैं एक शरीर में हूं।”

"तुम्हारा नहीं है।"

"मेरा।"

“नहीं। मैंने ये आपको अस्थायी रूप से दिया है ताकि आप मुझसे बात कर सकें। ताकि हम आपकी मदद कर सकें।”

“मुझे कोई कुछ उधार नहीं देता। यहाँ तक कि इज्जत भी नहीं। दयालु ईश्वर मुझसे नफरत करता है...”

“क्या ये आपके हाथ हैं? इन्हें छूकर देखिए।”

"मेरे हाथ?"

"तुम्हारे हाथ में जो घड़ी है, वो एक महिला की घड़ी है।"

"एक औरत?"

"आप एक महिला के शरीर में हैं, और मुझसे बात कर रहे हैं, यह उन महान चमत्कारों में से एक के माध्यम से संभव हो रहा है जो आपके लिए संभव हुए हैं।"

“शरीर। मेरा शरीर।”

“यह आपका शरीर नहीं है। अस्थायी रूप से....”

“मेरा! तुम यह कैसे कह सकते हो, जब रस्सी अभी भी यहीं है?”

“कोई रस्सी नहीं है। यह एक स्मृति है—एक दुखद स्मृति।”

"लटकाना।"

अब आप पूरी तरह से स्वतंत्र हैं।

मैं इससे छुटकारा नहीं पा सकता!

"क्योंकि आप ऐसा नहीं करना चाहते। अगर आप चाहते तो कर सकते थे।"

मैं जीवित हूँ! मैं उस परे कैसे पहुँच सकता हूँ?

"अगर आप अपनी यादें पीछे छोड़ जाते हैं।"

"तालाब की खामोशी, उस अंधेरे की खामोशी।"

मैंने अब तक आपकी मदद की है। अपने बाएं कान को धीरे से छूकर देखिए, मैं आपको साबित कर देती हूँ। क्या आपको उसमें बाली महसूस हो रही है? महिलाएं बाली पहनती हैं; पुरुष नहीं पहनते।

"मेरे साथ यह किसने किया?"

“किसी ने तुम्हारे साथ ऐसा नहीं किया। यह तुम्हारी गलती नहीं है।”

"इससे बातचीत में काफी क्रांतिकारी बदलाव आ जाते हैं।"

“ऐसी कई बातें हैं जो आप अपने बारे में नहीं समझते, और मैं आपको सिखाने के लिए यहाँ हूँ। यदि आप चाहें तो आप जा सकते हैं।”

“आज़ाद, आज़ाद! तो क्या मैं जा सकता हूँ—उस अंधकार में जहाँ स्मृति का कोई अस्तित्व नहीं रहता?”

“हां, अगर आप चाहें तो मैं आपको वहां भेज दूंगा। लेकिन आपको शांत रहना होगा और मेरी बात सुननी होगी। गुस्सा करने और हताश होने का कोई फायदा नहीं है।”

मुझे किसने जंजीरों में जकड़ा है!

“कोई आपको जंजीरों में नहीं बांधता। यह एक महिला का शरीर है, और आप उसकी आवाज के माध्यम से बोल रही हैं।”

"महिला!"

"एक महिला जिसने आपकी मदद करने की कृपा की है।"

"मेरे साथ ये सब घिनौनी हरकतें कौन करता है?"

“आप एक दूसरे आयाम, एक दूसरी दुनिया में चले गए हैं, जहाँ से आप अब हमसे बात कर रहे हैं, ऐसी भाषा में जिसे आप समझ नहीं पाते। हम आपकी मदद करने आए हैं, आपको दुखी करने नहीं। क्या आप चाहते हैं कि मैं आपको यहाँ से बाहर निकालूँ? यह आप पर निर्भर है।”

"यहां से बाहर?"

"अगर आप चाहें तो एक बेहतर दुनिया में।"

“बेहतर दुनिया? क्या यही विस्मृति है?”

आपको इसके लिए अनुरोध करना होगा। आपकी अनुमति के बिना यह नहीं किया जा सकता।

मैं यही मांगता हूं। मैं यही मांगता हूं। मुझे दे दो, मुझे दे दो।

“तो क्या आप वहां तक पहुंचने के लिए बनाए गए कानूनों का पालन करते हैं? कुछ कानून हैं। आपको उनका पालन करना होगा।”

“मेरी एम्मा को ले जाओ। उसे खुशियों की दुनिया में ले जाओ।”

“ठीक है। लेकिन जाने के लिए आपको कुछ करना होगा। क्या आप मेरी बात सुन रहे हैं?”

मैं सुन रहा हूँ। मैं सुन रहा हूँ।

आपको अपनी दुखद यादों को पीछे छोड़ना होगा।

मैं उन्हें छोड़ नहीं सकता। वे मेरे ही अंग हैं।

तुम मुझे ये दे दोगे, और मैं इन्हें ले लूंगा।

लेकिन लियोन मुझे चैन से नहीं रहने देगा।

“लियोन मर चुका है। वह तुम्हें छू भी नहीं सकता।”

"मृत?"

"वह चला गया है।"

“बस ऐसे ही? गायब हो गया?”

“हां। कई साल बीत चुके हैं।”

"मृत?"

“मर गए। आप सुरक्षित हैं। मुक्त हैं।”

उसे पता नहीं चलेगा।

"नहीं।"

“क्या मुझे फिर से रोशनी और खुशी दिखाई दे रही है, क्या मैं यह भूल पा रही हूँ कि वह चला गया है?”

"वह चला गया है।"

"तब इसका खुलासा नहीं किया जाएगा।"

"जब तक तुम मुझे यह बात नहीं बताओगे, तब तक तुम इससे मुक्त नहीं हो सकते—केवल मुझे ही, और किसी और को नहीं।"

जब मैं गुमनामी में चला जाऊंगा, तो मैं किसी को कुछ नहीं दे पाऊंगा। मुझे अपना जीवन जीने दो।

“लियोन कौन है? वह तुम्हारे लिए कौन है?”

मुझे चुप रहना होगा। मुझे अपने दुख भरे रास्ते पर चलना होगा।

“तब तुम कभी स्वतंत्र नहीं हो पाओगे।”

मुझे विस्मृति में जाना होगा। तुमने वादा किया था। तुमने उसे तोड़ दिया।

“मैं आपसे कुछ छीन नहीं रहा हूँ, लेकिन आपने कानून का पालन करने का वादा किया था। कानून यह है कि आपको कहानी बतानी होगी और फिर उसे भूल जाना होगा।”

मैं यह बात अपनी आत्मा से कहता हूँ। तुम ईश्वर नहीं हो। और मुझे अपने ईश्वर के अलावा किसी और के प्रति कोई दायित्व नहीं है!

मैंने दूसरा तरीका अपनाने का फैसला किया। जाहिर है, उस आत्मा को वश में करना आसान नहीं था।

यह कौन सा वर्ष है?

इस सवाल पर सिर्फ सन्नाटा छाया रहा।

इस देश पर किसका शासन है?

“थॉमस जेफरसन।”

“नहीं, जेफरसन मर चुके हैं। यह जेफरसन का दिन नहीं है।”

"तो फिर मैं मर जाऊंगा।"

"तुम हो!"

मुझे शांति से जाने दो। आपका दिन शुभ हो!

“तुम मर चुके हो, फिर भी तुम जीवित हो। वहाँ पर वे सब भी जीवित हैं।”

“शुभ दिन, मेरे प्रिय मित्र। मैं अब और बात नहीं कर सकता। हम एक ही धरातल पर नहीं हैं।”

“नहीं, लेकिन हम इस महिला के माध्यम से एक-दूसरे से बात करते हैं। एक सौ सत्तर साल बीत गए हैं, मेरे मित्र, एक सौ सत्तर साल। क्या तुम समझते हो? एक सौ सत्तर साल बीत चुके हैं। तुम्हारे लिए इसे समझना बहुत मुश्किल है। तुम इस घर में लंबे समय से बिना किसी कारण के, केवल कष्ट सहने के लिए रह रहे हो। तुम्हारे साथ जो कुछ भी हुआ, वह बहुत पहले हुआ था। और वह सब अतीत की बात है। तुम पूरी तरह से स्वतंत्र हो। तुम्हें विस्मृति में जाने की ज़रूरत नहीं है। अगर तुम नहीं चाहते तो तुम्हें कहीं जाने की ज़रूरत नहीं है। तुम एक स्वतंत्र व्यक्ति हो।”

“आह—और एम्मा?”

“वह भी तुम्हारी तरह ही स्वतंत्र है। तुम्हें डरने की कोई जरूरत नहीं है।”

मेरे हाथ स्वतंत्र हैं। मेरा मन स्वतंत्र है। मुझे अपने मन से जाने दो।

“जब तक तुम मुझे अपनी पहचान नहीं बताओगे, तब तक नहीं। यह हमारे समझौते का हिस्सा है, याद है ना? अगर तुम ईमानदार आदमी हो तो तुम्हें कानून का पालन करना होगा।”

जब तक मुझे कोई सम्माननीय व्यक्ति नहीं मिल जाता—

"तुम हो।"

“अगर ऊपर स्वर्ग है, अगर कोई सुनहरा प्रकाश है, और मैं इन एक सौ सत्तर वर्षों से जीवित हूँ —हे मनुष्य, क्या तुम पागल हो? तुम सच नहीं बोल रहे हो। मैं तुम पर भरोसा नहीं कर सकता।”

“यह सच है। आपको खुद पता चल जाएगा।”

मुझे जाने दो। मैं हमेशा से स्वतंत्र रहा हूँ।

"तो फिर, जिसने तुम्हें यहाँ लाया है, उसे वह बात बता दो जिसे तुम गुप्त रखना चाहते हो, ताकि वह तुम्हें यहाँ से ले जा सके।"

“एम्मा—वो कहाँ है?”

“वह वहाँ तुम्हारा इंतज़ार कर रही है। वे सब वहीं हैं। लियोन भी वहीं है।”

“हे भगवान! नहीं! फिर तो मैं नहीं जा सकता! वो बात करेगा!”

“तो फिर आप मुझे क्यों नहीं बताते? मैं इसका इंतजाम कर सकता हूँ।”

“नहीं, तुम ऐसा नहीं कर सकते। अगर मैं इस रहस्य को अपने साथ कब्र में ले जाऊं, और मेरी आत्मा—”

“तुम अपनी कब्र में हो। तुम कब्र से गुजर चुके हो। अब तुम उससे बाहर आ चुके हो। राज सबको पता चल गया है।”

"तब यह मेरी आत्मा पर बोझ बन जाता है और वहीं बना रहता है।"

“आप इसके साथ मनमानी नहीं कर सकते। आपको इससे छुटकारा पाना होगा।”

“जिन लोगों ने मुझे उपदेश देते हुए संबोधित किया है, उन्होंने मुझसे कहा है कि यदि मैं अपना बड़ा बोझ ईश्वर के पास ले जाऊँ, तो मैं कभी भी—”

"जब तक आप स्वयं सफल होने की इच्छा नहीं रखेंगे, तब तक आप सफल नहीं होंगे।"

मैंने फिर से अपना दृष्टिकोण बदल दिया, क्योंकि वह व्यक्ति अडिग प्रतीत हो रहा था।

"क्या आपका नाम लुईस है?"

“मैं इसे भी अपने साथ ले जाऊँगा। मुझमें गर्व है, आत्मा है, और अस्तित्व का बोध है, और यह सब मुझे वापस मिल रहा है। मित्र, मुझे बांधने वाली रस्सियों को खोलने के लिए आपका धन्यवाद। मैं स्वतंत्र हूँ। मैं इसे महसूस कर रहा हूँ।”

“तो जाओ। शांति से जाओ।”

“एम्मा—अब मैं तुम्हें देख सकती हूँ।”

"अल्बर्ट, उसे पार कराने में मदद करो।"

“मैं अब तुम्हारे साथ जा सकती हूँ, एम्मा। मैं तुम्हें धन्यवाद देती हूँ, मेरी दोस्त। लेकिन मैं अब भी अपनी आत्मा की स्वतंत्रता को बरकरार रखती हूँ।”

“अल्बर्ट, इसे ले जाओ। अल्बर्ट, कृपया।”

तुरंत ही अल्बर्ट की स्पष्ट आवाज लौट आई। "हां, हां।"

"क्या आपको इसके अलावा कुछ और पता चला?"

"मुझे लगता है कि वह सही कह रहा है, मेरे प्यारे दोस्त। कबूलनामे सबसे अच्छा अंत नहीं होते, और यह सच है।"

“उनकी मृत्यु कैसे हुई और क्यों?”

"उसने यह काम खुद किया।"

“क्या यह आत्महत्या थी?”

"हाँ यह था।"

"क्यों?"

"सच को उजागर होने से रोकने के लिए।"

"सच में इतनी बुरी बात क्या थी?"

"यही उसका रहस्य है।"

“यह कौन सा काल था?”

"मुझे लगता है कि यह सदी के मोड़ पर हुआ था।"

क्या उसने कुछ गलत किया?

"उसमें अपराधबोध की भावना है, यह बिल्कुल निश्चित है।"

क्या उसने अपने हाथ बांधकर खुद को फांसी लगा ली?

“उसने अपने गले में रस्सी डाल ली—उसने अपने हाथों के पीछे रस्सी बांध ली...”

"ये लियोन कौन है जिसके बारे में वो बार-बार चिल्ला रहा है?"

"मेरा मानना है कि उसने किसी व्यक्ति को नुकसान पहुंचाया। मैं कहूंगा कि यह एक भूत था जिसने उसे सताया।"

"आपका मतलब है कि वह आदमी उससे पहले मर गया?"

"यह सही है।"

और एम्मा?

एम्मा ने हिलते-डुलते शरीर को देखा।

“एम्मा उनकी पत्नी थीं।”

“हाँ, बिल्कुल सही। उनके तीन बच्चे थे।”

"क्या वह लड़की उनमें से एक है—वही किशोरी जिसे उस यंत्र ने देखा था?"

मुझे पोती पर विश्वास है।

"क्या उनमें से कोई अभी भी यहाँ है?"

मुझे वे दिखाई नहीं दे रहे हैं। एम्मा भी सुन रही है, वह उसके साथ चली गई है।

क्या बगीचे में कुछ दबा हुआ है?

“लियोन।”

क्या उसने लियोन को मार डाला?

"मैं बस यही कहूँगा।"

"ओह, उसने उसे मार डाला? किसी कारण से?"

"हाँ।"

“तुम्हें इस बारे में कोई जानकारी नहीं है?”

"इससे उनके बचपन में घटी घटनाओं का खुलासा नहीं होगा।"

“इस व्यक्ति की पृष्ठभूमि क्या थी?”

मुझे लगता है कि वह काफी धनी व्यक्ति थे।

“क्या उन्होंने यह घर बनवाया था?”

“हाँ, सही है। पहले। यह लियोन की संपत्ति हो सकती थी; यानी, वह संपत्ति।”

"क्या वह किसी आधिकारिक पद पर थे या सिर्फ एक व्यवसायी थे?"

“भाग्यशाली व्यक्ति; चलिए इसे इस तरह कहते हैं। एक सज्जन व्यक्ति।”

"वह थोड़ा पागल है, है ना?"

“खैर—जब कोई व्यक्ति एक सौ सत्तर साल तक अपराधबोध की स्मृति के साथ जीता है, साथ ही उसका गला रस्सी से कुचला गया हो और उसके हाथ रस्सियों से फटे हुए हों...”

“हाँ, यह असुविधाजनक होगा। ठीक है, सुनिश्चित करें कि उपकरण सुरक्षित है, और मेरा सुझाव है कि हम उसे वापस ले आएं।”

मैं वाद्य यंत्र छोड़ दूंगा।

"आने के लिए धन्यवाद।"

कुछ ही क्षणों में, एथेल फिर से अपने सामान्य रूप में लौट आई, उसे पिछले एक घंटे की कोई बात याद नहीं थी। मैंने उसे वह अंगूठी दी जो रहस्यमय तरीके से घर में प्रकट हुई थी और उससे उसका मनोवैज्ञानिक विश्लेषण करने को कहा।

मैं कहूंगी कि यह किसी बुजुर्ग महिला का है। यह छोटी उम्र की महिला की मां होगी।

क्या आपको इस बारे में कोई अतिरिक्त जानकारी मिली है?

"मैं कहूंगी कि उसका नाम 'ई' है। वह एक छोटी उम्र की महिला की मां है, जिसका नाम भी 'ई' से शुरू होता है।"

“वह युवती—उसके बारे में क्या? वह यहाँ कैसे फिट बैठती है?”

“मुझे लगता है कि चीखने की आवाज़ मुझे उस जवान औरत की सुनाई दे रही है। मुझे लगता है कि वह औरत कभी-कभी दिखती भी है। मैं झूमना चाहती हूँ, झूमना चाहती हूँ। वह कुछ

नहीं कहती, कुछ नहीं करती, बस झूमती रहती है। वह जवान औरत, पतली-दुबली औरत, दोनों एक-दूसरे के बारे में चिंतित दिखती हैं।”

* * *

मैंने श्रीमती डिकी से कुछ जानकारी लेने के लिए कहा। "श्रीमती डिकी, कृपया मेरी याददाश्त ताज़ा करने के लिए बताएँ कि यह घर किसने बनवाया था?"

"इस संरचना का निर्माण 1865 में होमर लेरॉय सैलिसबरी द्वारा किया गया था।"

"लेकिन उसके पहले?"

“उन वर्षों के रिकॉर्ड नष्ट हो चुके हैं; किताबें मौजूद नहीं हैं। लेकिन तहखाने की नींव बहुत पुरानी है। शायद क्रांतिकारी काल की। वहाँ खिड़कियाँ और दरवाजे हैं। हो सकता है कि यह मूल रूप से वह पहली जगह रही हो जहाँ लोग रहते थे।”

क्या अठारहवीं शताब्दी के प्रारंभ से पहले इस भूमि के स्वामी का कोई रिकॉर्ड मौजूद है?

"मुझे पता नहीं है कि।"

"क्या आपने कभी उस क्षेत्र में किसी व्यक्ति को देखा है जहां श्रीमती मेयर्स ने मुख्य गड़बड़ी महसूस की थी?"

मैंने तो नहीं किया, लेकिन मेरे एक दोस्त ने किया है।

“वह दोस्त कौन था?”

“पैट ह्यूजेस।”

"उस इलाके में उसने क्या देखा या महसूस किया?"

"उसने कुछ आवाज़ें और कदमों की आहट सुनी और एक महिला को इस कमरे में, इस दीवार के ठीक पास चलते हुए देखा। वह सीधे अंदर चली गई और कमरे में खड़ी हो गई।"

वह महिला कैसी दिखती थी?

"उसके बाल काले थे, वह काफी युवा, लंबी और पतली थी, उसने लाल रंग का चोला या लंबी लाल पोशाक पहनी हुई थी, और उसने अपना हाथ अपने गले पर रखा हुआ था।"

"श्रीमती मेयर्स द्वारा वर्णित व्यक्ति के बारे में क्या?"

“एडम यहाँ आता है, और हमें लगता है कि वह खतरनाक है। वह हमें डराता है। जब से मैंने तुम्हें आखिरी बार देखा है, तब से कुछ ऐसा हुआ है जो पहले कभी नहीं हुआ था। जॉयस, पैटी और मैं यहाँ आए। वह एक शांत दिन था और हम इन दो सोफों पर बैठ गए। शाम का समय था। हम धीरे-धीरे बातें कर रहे थे और जॉयस की आने वाली शादी के बारे में सोच रहे थे, तभी हमें एक बहुत तेज़ आवाज़ सुनाई दी—जैसे पूरा घर गिर रहा हो। यहाँ की यह दीवार लगभग काँप उठी। हम सब उछल पड़े और हमें समझ नहीं आया कि क्या हुआ।”

"क्या इसका कोई कारण नहीं था?"

“नहीं। फिर से, रात के दौरान, एक जोरदार आवाज ने सबको जगा दिया।”

श्रीमती जीन वेंडरहॉफ, जो पहले इस घर की मालकिन थीं, उपस्थित लोगों में शामिल थीं। इस घर को छोड़ने के काफी समय बाद, उन्होंने खुद को एक ओइजा बोर्ड का इस्तेमाल करते हुए पाया। उन्हें आश्चर्य हुआ जब एक रहस्यमयी शख्स ने बोर्ड के माध्यम से उनसे संपर्क किया—और वह भी काफी विनम्र तरीके से नहीं।

"उसने कहा कि वह मुझे ढूंढ रहा था," श्रीमती वैंडरबॉफ ने कहना शुरू किया।

"क्या यह वही किरदार है जो आपके ओइजा बोर्ड के जरिए सामने आया?"

"यह जानकारी ओइजा बोर्ड के माध्यम से मिली।"

"आपके यहां से चले जाने के बहुत समय बाद तक।"

"हां, कुछ महीने पहले; इसी साल। उसने कहा कि वह लंबे समय से मुझे ढूंढ रहा था क्योंकि मुझे उसे वापस लाना था—उसे इस घर में वापस लाना था—और मैं ही एकमात्र ऐसी व्यक्ति थी जो ऐसा कर सकती थी।"

"उसका क्या नाम था?"

“नैट ने बताया कि वह मालिक का नौकर था और उसे और उसकी बेटी को खलिहान के पीछे दफनाया गया था। मैंने उससे कई सवाल पूछे, लेकिन मुख्य रूप से वह वापस आना चाहता था क्योंकि उसकी बेटी अभी भी यहीं थी। मैंने कहा, ‘अच्छा, तुम इन लोगों को इतनी परेशानी क्यों दे रहे हो? तुमने हमें कभी कोई परेशानी नहीं दी।’ उसने जवाब दिया, ‘तुमने कभी शिखर पर लेटकर दुख का स्वाद नहीं चखा है।’ मैंने कहा, ‘क्या तुम बता रहे हो कि तुम्हारा कमरा

मीनार में था?' उसने कहा, 'हाँ,' और उसे वापस जाना ही था क्योंकि उसकी बेटी अभी भी यहीं थी। मैंने कहा, 'जब तक तुम बदतमीजी करते रहोगे, मैं तुम्हें वापस लेने पर विचार नहीं करूँगा।' उसने जवाब दिया, 'मैं बदतमीजी करूँगा क्योंकि मैं उन्हें भगा दूँगा।'"

"जब आप यहां रह रहे थे, तो क्या आपको कोई अनुभव हुआ?"

"सिर्फ़ तब जब हमने घर का नवीनीकरण किया। हमने यहाँ सामने वाली यह बे विंडो लगाई।"

"जब आपने नवीनीकरण कराया तो क्या हुआ?"

"रात में बहुत भयानक शोर होता था, ऐसा लगता था जैसे वे फर्नीचर इधर-उधर फेंक रहे हों, और हर सुबह 2 बजे गैराज के दरवाजे जोर-जोर से ऊपर-नीचे होते थे। हमारा एक दोस्त पीछे वाले कमरे में सो रहा था, और एक सुबह मैंने उससे पूछा, 'तुम अपने कमरे में किसी लड़की के साथ क्या कर रहे थे?' और उसने कहा, 'मेरे कमरे में कोई लड़की नहीं थी।'"

"क्या आपको याद है कि उस कमरे में कौन सोया था - क्या यह आपका दोस्त था?"

"कर्नल पॉवेल।"

क्या उसे घर के बारे में पहले से कुछ असामान्य जानकारी थी?

"नहीं, उसने कहा कि उसके कमरे में कोई नहीं था। फिर अगली रात उसने बाहर बहुत शोर सुना और जो भी शोर था उसे पकड़ने के लिए भागा, और देखा कि रसोई में मेज अपनी जगह से हट गई थी। वह उस मेज से टकराकर गिर गया और उसके पैर में चोट लग गई।"

श्रीमती डिकी ने अब टिप्पणी करते हुए कहा, "दिलचस्प बात यह है कि हमें एम्मा नाम की एक संचारक मिली, जिसने बोर्ड पर अपनी बात रखी।"

"कब? यह महत्वपूर्ण है।"

"जब से तुम पिछली बार यहाँ आए थे, तब से बहुत कुछ बदल गया है। हमारे पास पहले कभी एम्मा नहीं थी, लेकिन अब हम बोर्ड से ज्यादा नहीं खेलते क्योंकि तुमने कहा था, इसे छोड़ दो।"

"आपको सबसे पहले एम्मा नाम कब सूझा?"

"आपकी पहली मुलाकात के बाद। लेकिन हमें कोई संदेश नहीं मिला, हमें बस यही नाम मिलता रहा।"

"आज हमारी यात्रा से पहले, क्या किसी ने आपसे एम्मा नाम के बारे में चर्चा की है?"

"नहीं।"

"इसलिए, ओइजा बोर्ड पर आपको जो एम्मा मिली थी, वह आज हमें यहां मिली एम्मा से अलग है।"

कुछ क्षणों के लिए सन्नाटा छा गया, फिर श्रीमती डिकी ने घर के अतीत के बारे में बात करना फिर से शुरू कर दिया।

"यहां बहुत समय पहले भारतीय लोग रहते थे क्योंकि यह भारतीय मार्ग का हिस्सा था। साथ ही, पुराने घर की नींव चिमनी के नीचे है।"

“मुझे एक दरवाज़ा दिख रहा है, जहाँ वह आदमी था,” एथेल ने तेवर चढ़ाते हुए कहा। “जब मैंने उसे पहली बार देखा था, तो वह यहीं खड़ा था, और वह यहीं से अंदर चला गया। मुझे लगता है कि यहाँ दो कमरे थे।”

“क्या यह सही है?” मैंने श्रीमती डिकी से पूछा।

“सही,” उसने जवाब दिया। “इसे विभाजित किया गया था।”

एथेल को अचानक ऐसा लगा जैसे वह कुछ सुन रही हो। "मुझे नहीं लगता कि आपको यह परेशानी सुनाई देगी, लेकिन मुझे लगातार कराहने जैसी आवाज़ सुनाई दे रही है, तेज़ कराहने जैसी आवाज़—ऊह—ऊह।"

एथेल के नेतृत्व में, हम संकरी सीढ़ियों से चढ़कर सबसे ऊपरी कमरे में पहुंचे।

मैंने माध्यम से पूछा, "आपको यह कमरा कैसा लगा?"

“यहाँ मुझे एक बिलकुल अलग ही व्यक्ति मिलता है। पुरुष। ऊँचा माथा, बीच से कंघी किए हुए बाल, लंबा चेहरा, ठीक-ठाक बड़ी नाक। आयरिश जैसा दिखता है। लगता है दाढ़ी रखी हुई है, और फिर उसे उतार देता है।”

क्या उसका संबंध दूसरी स्थिति से है?

“नहीं, उसने अलग कपड़े पहने हैं, मुझे उसका नाम पैट याद आ रहा है। मुझे लगता है कि उसकी मौत दिल की बीमारी के कारण हुई है।”

एथेल कोने में स्थित डेस्क के पास रुक गई।

"कोई यहाँ बैठा और उसने लिखा।"

मैंने श्रीमती डिकी से पूछा, "क्या इस घर से किसी लेखक का संबंध है?"

मुझे लगता है कि आप सैलिसबरी की बात कर रहे हैं, जिसने यह घर बनवाया था। वह लंबा, दुबला-पतला और बहुत विद्वान था। उसने गृहयुद्ध के दौरान के अपने अनुभवों की एक डायरी लिखी थी।

"घर में बदलाव करते समय जो शोर होता था, मुझे लगता है कि वह शोर आयरिश व्यक्ति पैट की वजह से होता था।"

* * *

दिन ढल रहा था और मैं एथेल मेयर्स को रात के खाने तक घर पहुँचाना चाहता था, इसलिए हमने अलविदा कहा और न्यूयॉर्क की फ्लाइट पकड़ ली। हवा में पहुँचने के बाद, मुझे उस घटनापूर्ण दोपहर में घटी कुछ बातों पर सोचने का मौका मिला। एक बात तो यह थी कि मेरे माध्यम ने अतीत के कई किरदारों की पहचान लगभग कर ली थी। सबसे महत्वपूर्ण बात, प्रमाण के लिहाज़ से, यह थी कि एथेल के आने और उसके साथ हुए ट्रान्स सेशन से पहले ही घर में मौजूद लोगों को एम्मा नाम का पता चल चुका था, जिसमें एम्मा नाम का खुलासा हुआ था। ओइजा बोर्ड के इस्तेमाल को लेकर मेरी शंकाओं के बावजूद, मेरा हमेशा से मानना रहा है कि कभी-कभी इस तरह से सच्ची मानसिक जानकारी मिल सकती है। बाद में मुझे पता चला कि लूसी डिकी वास्तव में एक उभरती हुई माध्यम थीं, और घर में उनकी मौजूदगी ही ओइजा बोर्ड के काम करने का कारण थी। हो सकता है कि उनके साथ रहने वाले युवाओं ने इसमें कुछ मानसिक शक्ति जोड़ी हो, लेकिन मूल उत्प्रेरक श्रीमती डिकी स्वयं थीं।

यह कोई असाधारण बात नहीं है, बल्कि वैज्ञानिक दृष्टि से संतोषजनक है कि एथेल मेयर्स ने पहुंचते ही मुख्य गड़बड़ी वाले क्षेत्र की पहचान कर ली। सीढ़ी और वह दरवाज़ा जो संरचनात्मक रूप से पुनर्व्यवस्थित क्षेत्र की ओर जाता था, वास्तव में वही स्थान था जहाँ उस व्यक्ति की आकृति दिखाई दी थी और जहाँ से अधिकांश शोर आ रहे थे। हमने तहखाने से लेकर ऊपर तक, विशेष रूप से चिमनी के आसपास के क्षेत्र का निरीक्षण किया, जो लगभग घर के मध्य में स्थित थी। उस क्षेत्र में किसी भी तेज़ आवाज़ का कोई तर्कसंगत स्पष्टीकरण

नहीं था। कोई भी चीज़ ढीली नहीं थी, कोई भी ऐसी चीज़ नहीं थी जो तेज़ आवाज़, खड़खड़ाहट, वस्तुओं की हलचल या इस तरह की किसी भी चीज़ का कारण बन सकती थी, जिसका कई गवाहों ने इतने स्पष्ट और सटीक रूप से वर्णन किया था।

* * *

अगले दिन, श्रीमती डिकी ने हमें आने के लिए धन्यवाद देते हुए एक पत्र लिखा। उन्होंने कांग्रेस पुस्तकालय में घर के इतिहास की और अधिक गहन जांच करने का वादा किया।

मुझे लगता है कि मैंने फेयरफैक्स काउंटी कोर्टहाउस के रिकॉर्ड का पूरा उपयोग कर लिया है। अगर मैं आपकी किसी भी तरह से मदद कर सकती हूँ, तो मुझे बताएं। अगर निकोल व्यस्त हैं, तो मैं आपको लेने और छोड़ने में खुशी होगी। मुझे आपके काम पर पूरा भरोसा है और आपका दृष्टिकोण मुझे पसंद है। आप अपने पीछे कई आभारी प्रशंसक छोड़ गए हैं। आपकी दोस्त, लूसी।

मैंने लूसी डिकी को धन्यवाद दिया और उन्हें निर्देश दिया कि यदि आगे कोई और घटना घटे तो वे सतर्क रहें। घर में इतने सारे प्रेत-प्राणियों के होने के कारण, यह संभव था कि हमने उन सभी को भगाया न हो। वास्तव में, यह बहुत संभव था कि हमने किसी न किसी को नज़रअंदाज़ कर दिया हो।

यूरोप से लौटने पर मुझे उनका एक और पत्र मिला, जिसकी तारीख 25 सितंबर, 1969 थी। श्रीमती डिकी ने लिखा: “पिछले कुछ महीनों में मैंने अपने भीतर बढ़ती संवेदनशीलता और मानसिक विकास को महसूस किया है। मेरे साथ कुछ ऐसी बातें घट रही हैं जिन्हें मैं पूरी तरह समझ नहीं पा रही हूँ। घर में रहने वाले हमारे ‘दोस्तों’ के साथ कुछ और नहीं हुआ है। उनसे कोई खबर नहीं मिली है। घर अभी भी बिक्री के लिए है।”

श्रीमती डिकी ने पहले भी घर बेचने की अपनी मंशा का जिक्र किया था।

लेकिन भूतिया एडम की कहानी अभी खत्म नहीं हुई थी। 9 दिसंबर, 1969 को मुझे लूसी डिकी से एक ज़रूरी सूचना मिली। उनकी बेटी के कॉलेज जाने वाले कुछ दोस्तों के लिए घर पर एक पार्टी थी। उनमें से एक युवक ऊपर बाथरूम में गया। जब वह अपना काम कर रहा था, तो उसने पीछे मुड़कर देखा कि एक आदमी उसे घूर रहा है। डर के मारे वह भागकर नीचे

आ गया। ज़ाहिर है, उसे भूत के बारे में या उसके रूप-रंग के बारे में कभी कुछ नहीं बताया गया था। फिर भी, उसने एडम का हर एक विवरण दिया, सफेद, पूरी बाजू की कमीज़ और काली ढीली पैंट से लेकर उसकी आँखों के भाव तक। लेकिन इस डरावने अनुभव के बावजूद, लूसी की घर में शांति भंग करने वाली कोई और बात नहीं हुई: न कोई अजीब आवाज़ें, न कोई भूतिया दृश्य। बस एक ही बात थी—उसे घर बेचने में दिक्कत आ रही थी। वह जितनी कोशिश करती, उतनी ही मुश्किल होती जाती। ऐसा लग रहा था मानो किसी अदृश्य शक्ति ने घर को बिकने से रोक रखा हो—शायद इसलिए कि उन्हें लूसी पसंद आ गई थी और वे उसे अपनी भावनाओं को व्यक्त करने का जरिया मानते थे। स्थिति और भी खराब तब हो गई जब तलाक के बावजूद उसका पति घर के एक हिस्से में रहने लगा। लूसी इस स्थिति से बेहद दुखी थी और घर को बेचने के अलावा उसकी कोई इच्छा नहीं थी, हालांकि उसे घर का हर कोना प्यारा था।

समय बीतता गया और आखिरकार घर का खरीदार मिल गया। बेहद खुश होकर लूसी डिकी ने मुझे बताया कि घर का मालिकाना हक जल्द ही किसी और के हाथों में जाने वाला है। उन्होंने वाशिंगटन में एक अपार्टमेंट ले लिया था और रहने के लिए तैयार थीं। स्वाभाविक रूप से, उन्होंने नई मालकिन, श्रीमती मैरी जेन लाइट्नर को घर में मौजूद भूतों के बारे में और डिकी परिवार और उनके पूर्वजों के साथ हुए अनुभवों के बारे में सब कुछ बता दिया था। श्रीमती लाइट्नर भूत-प्रेतों जैसी बातों पर विश्वास नहीं करती थीं, लेकिन उनकी जिज्ञासा जाग उठी क्योंकि आखिरकार यह घर अब उनका होने वाला था। दोनों महिलाओं ने मुझसे एक अच्छे ज्योतिषी को भेजने का अनुरोध किया ताकि पता चल सके कि घर में वाकई कुछ बचा है या शायद सब कुछ शांत हो गया है।

मैंने उन्हें सलाह दी कि एक माध्यम अतीत की यादों को फिर से जीवंत कर सकता है, लेकिन इससे भूत या भूतों की निरंतर उपस्थिति साबित नहीं होती। अतीत की छाप और वास्तविक जीवित आत्माओं के बीच अंतर करना कभी-कभी बहुत मुश्किल होता है।

मैंने उन्हें जॉन रीव्स के पास भेजा, जो एक शिक्षक से माध्यम बने थे और जिनसे मैं हाल ही में बहुत प्रभावित हुआ था। 10 मई, 1970 को जॉन रीव्स वाशिंगटन गए और वियना स्थित उस घर में दो महिलाओं से मिले। उन्हें न तो परिस्थितियों के बारे में और न ही महिलाओं के बारे में

कुछ भी पता था, बस इतना पता था कि उन्हें एक पुराने घर को देखना है और अपनी राय देनी है।

घर के निचले हिस्से में प्रवेश करते ही वह चिमनी के पास गया और बताया कि उस इलाके में एक हत्या और बहुत हिंसा हुई थी। फिर उसने एक दुबली-पतली, पीछे सीधे बालों वाली, गहरे भूरे रंग की लंबी पोशाक पहने महिला का वर्णन किया। उसे लगा कि यह 1860 के दशक की बात है, और वह महिला उस परिसर में अकेली आत्मा नहीं थी। जॉन रीव्स ने धीमी आवाज़ में कहा, "एक आदमी ने इस गलियारे में अपनी पत्नी के प्रेमी की हत्या कर दी, और फिर उसने खुद को फांसी लगा ली।" दोनों महिलाएं सिहर उठीं, जबकि माध्यम ने घर में घटी घटना का वर्णन जारी रखा। "मैं उसके मुंह से, उसके मुंह के दोनों तरफ से खून की बूंदें टपकती देख सकता हूँ।"

“उस आदमी की हत्या कैसे हुई?” लूसी जानना चाहती थी।

जॉन रीव्स ने काले रंग के भारी लोहे के तख्तों की ओर इशारा करते हुए कहा, "इनमें से एक तख्ते का इस्तेमाल हत्या करने के लिए किया गया था। किसी तरह इन घटनाओं ने इस घर पर श्राप लगा दिया है। हो सकता है कि किसी दूसरे कमरे में एक और अलग हत्या भी हुई हो।" उन्होंने हंसते हुए आगे कहा।

श्रीमती लाइट्नर काफी कुछ सुन चुकी थीं। उन्होंने माध्यम से कहा, "श्रीमती डिकी ने ही आपको बताया होगा।" उन्हें लगा कि जॉन रीव्स के लिए लगभग वही कहानी गढ़ना असंभव था जो एथेल जॉनसन मेयर्स ने एक साल पहले गढ़ी थी, बिना किसी मिलीभगत के। लूसी डिकी ने उन्हें आश्वासन दिया कि ऐसा कुछ नहीं था। जॉन रीव्स को न तो उस घर के बारे में कुछ पता था और न ही श्रीमती मेयर्स और मेरे उस घर में काम करने के बारे में। महिलाओं ने सिर हिलाया और रीव्स वहां से चले गए और न्यूयॉर्क वापस लौट गए।

* * *

क्या एडम और लुईस एक ही व्यक्ति थे? हम जानते हैं कि दूसरे व्यक्ति का नाम लियोन था, जिसकी हड्डियाँ संभवतः अभी भी खलिहान के पीछे बगीचे में सड़ रही हैं। उस महिला का नाम एम्मा था। एडम—या लुईस, जो भी वह था—अब यह दावा नहीं कर सकता कि उसका

रहस्य पूरी तरह से उसका है। जॉन रीव्स और निश्चित रूप से एथेल मेयर्स की बदौलत, हम जानते हैं कि उसकी समस्या दुनिया की सबसे पुरानी समस्याओं में से एक थी। चेर्चेज़ ला फेम। ऐसा लगता है कि सम्मान का कर्ज चुका दिया गया था और अब वर्जीनिया के वियना में विंडओवर में सब कुछ शांत था।

* * *

कुछ समय पहले मैं व्हाइट हाउस जाना चाहता था और लिंकन बेडरूम में प्रवेश करने का एक और प्रयास करना चाहता था। कुछ संकेत मिले थे कि मुझे अनुमति मिल सकती है, और मैंने लूसी डिकी को अपने साथ आने और इस अवसर पर माध्यम बनने के लिए कहा, क्योंकि वह पहले से ही वाशिंगटन में रहती थीं।

“मैं? एक माध्यम?” उसने अचंभित होकर जवाब दिया। “अरे, मैंने तो कभी अपने बारे में इस तरह सोचा ही नहीं था!”

मुझे उसके बोलने के तरीके में कुछ बेचैनी महसूस हुई। क्या मैंने उसे डरा दिया था? मैंने धैर्यपूर्वक समझाया कि विंडओवर में उसके मानसिक अनुभवों से यह स्पष्ट हो गया था कि उसमें माध्यम बनने की क्षमता है। मानसिक क्षमता रखने के लिए उसे पेशेवर माध्यम होना ज़रूरी नहीं है।

उसके बाद उसने राहत की सांस ली, लेकिन मैं उसे लिंकन के शयनकक्ष में अपने साथ चलने के लिए राजी नहीं कर पाई। अनुमति मिल भी जाती तो भी मुझे यकीन है कि लूसी डिकी मिस्टर लिंकन से मिलने से बचती। और इसमें उसे दोष क्यों दिया जाए? आखिर, वह एडम, लियो, एम्मा, मार्था और मॉर्गन से काफी परेशान हो चुकी है।

* 109

दूसरी मंजिल की सीढ़ियों पर "उपस्थिति"

वॉशिंगटन और बाल्टीमोर के बीच कहीं साइक्सविले नाम का एक छोटा सा समुदाय है। यह वॉशिंगटन की तुलना में बाल्टीमोर के थोड़ा करीब है, और यहाँ रहने वाले अधिकांश लोग बाल्टीमोर में काम करते हैं। कुछ लोग तो बिल्कुल भी काम नहीं करते। इसे आप गरीब

समुदाय नहीं कह सकते, बल्कि इसके विपरीत, यह ग्रामीण शिकारी समुदाय के अंतिम बचे गढ़ों में से एक है, जिनका मुख्य व्यवसाय और गौरव उनके खेत और छोटे घर थे।

हॉवर्ड लॉज का निर्माण 1774 में एडवर्ड डोरसी द्वारा करवाया गया था। परंपरा के अनुसार, इसका नाम हॉवर्ड लॉज तब पड़ा जब मैरीलैंड के गवर्नर हॉवर्ड संयुक्त राज्य अमेरिका की स्वतंत्रता के दौरान यहाँ ठहरे थे। कर अभिलेखों से पता चलता है कि एक समय यह हमारे राष्ट्रगान के रचयिता फ्रांसिस स्कॉट की के रिश्तेदारों के स्वामित्व में था। की ने स्वयं हॉवर्ड लॉज का दौरा किया था और ऊपरी मंजिल की एक खिड़की की चौखट पर अपना नाम उकेरा था, लेकिन दुर्भाग्यवश, बाद में तूफानों के कारण खिड़कियाँ नष्ट हो गईं।

यह घर दो मंजिला है और इंग्लैंड से आयातित ईंटों से बना है। अटारी और छत की बीम शाहबलूत की लकड़ी से हाथ से बनाई गई हैं और पूरी लंबाई में ठोंकी गई खूंटियों से मजबूती से टिकी हुई हैं। वर्तमान मालिक, श्रीमान और श्रीमती रॉय एमरी ने कुछ बदलाव किए हैं, खासकर अटारी में। एक समय अटारी दो मंजिला थी, लेकिन अब इसे बीम के ऊपर भंडारण कक्षों और नीचे तैयार कमरों में विभाजित कर दिया गया है। इस शताब्दी की शुरुआत में बाल्टीमोर की श्रीमती मोट्टू, जो पहले की मालिक थीं, ने डॉर्मर खिड़कियां लगवाई थीं। घर का सबसे पुराना हिस्सा नीचे की मंजिल पर मोटी दीवारों वाला पत्थर का रसोईघर है। विशाल मैदान में एक पुराना स्मोकहाउस और एक स्प्रिंग हाउस है, दोनों ही उस समय के हैं जब घर का निर्माण हुआ था। ऊंचे पेड़ों से घिरा यह एस्टेट वास्तव में यूरोपीय शैली का है, और कोई भी आसानी से कल्पना कर सकता है कि पिछले मालिक अपने लॉन में बैठकर मैरीलैंड की लहरदार पहाड़ियों को देखते हुए और बीते गौरव के सपने देखते हुए कैसा महसूस करते होंगे।

इस घर को इसके वर्तमान मालिकों, एमरी दंपत्ति ने बेहद सुरुचिपूर्ण ढंग से सजाया है। श्री एमरी बाल्टीमोर में एक वकील हैं, और उनकी पत्नी, जो एक बहुत पुराने फ्रांसीसी कुलीन परिवार की वंशज हैं, ने दिवंगत फ्रांसीसी-इंडोचीन युद्ध में नर्स के रूप में सेवा की थी। फर्नीचर में ऐसे पुराने फर्नीचर शामिल हैं जिन्हें घर के समग्र स्वरूप के अनुरूप चुना गया है, और श्रीमती एमरी द्वारा घर में लाई गई फ्रांसीसी विरासत की वस्तुएं भी हैं। हॉवर्ड लॉज में

कोई भी वस्तु बेमेल नहीं लगती, और यह घर अठारहवीं शताब्दी के हवेलीनुमा घरों में रहने वालों के लिए एक उदाहरण बन सकता है।

1967 में मैं बाल्टीमोर टेलीविजन पर दिखाई दिया। मेरे इस कार्यक्रम के कुछ समय बाद ही मुझे श्रीमती एमरी का एक पत्र मिला, जिसमें उन्होंने मुझसे हॉवर्ड लॉज और वहाँ रहने वाले भूतों को देखने का अनुरोध किया था। ऐसा प्रतीत होता है कि उनके पास कई भूत थे, और यद्यपि वे दुष्ट या शरारती नहीं थे, फिर भी उनकी जाँच-पड़ताल करना आवश्यक था, ताकि यह पता चल सके कि वे कौन थे और उनकी क्या इच्छाएँ थीं।

* * *

श्रीमती एमरी के मेरे बारे में सुनने से बहुत पहले ही, उन्होंने दो ऐसे पुरुषों को अपने घर बुलाया था जो भूतों के अस्तित्व से परिचित थे। वे न तो निजी जासूस थे और न ही भूत-प्रेत खोजने के शौकीन, बल्कि दो ऐसे सज्जन थे जिनकी रुचि अलौकिक चीज़ों में थी। वाशिंगटन, डी.सी. के बैरी और ग्लेन हैमंड, जो मित्र बनकर घर आए थे, ने बताया कि उन्होंने एक सज्जन को घर के बाहर घर की ओर देखते हुए देखा। उन्होंने जल्दी से समझाया कि वह सज्जन इस दुनिया के नहीं थे। वे ऐसे भूतों के बारे में सब जानते थे क्योंकि वे सजीव और अलौकिक प्राणियों में अंतर करने के आदी थे। उस समय एमरी के घर में अन्य मेहमान भी थे, इसलिए वाशिंगटन से आए दोनों सज्जन घर में रहने वाले भूतों के बारे में उतनी खुलकर बात नहीं कर सकते थे जितनी कि वे अकेले आए होते। जब वे अन्य भूतों की तलाश में घर में घूम रहे थे, श्रीमती एमरी अपने मेहमानों के साथ व्यस्त थीं। हालांकि, जाते समय हैमंड्स ने श्रीमती एमरी को खुशी-खुशी बताया कि हॉवर्ड लॉज में एमरी दंपति के अनुमान के विपरीत केवल दो भूत नहीं, बल्कि कुल पाँच भूत थे। उन्होंने बात यहीं खत्म की और कनेक्टिकट एवेन्यू की ओर वापस चले गए।

जैक्लीन एमरी को कोई खास चिंता नहीं थी। उनका जन्म काउंटेस डी ब्यूरेगार्ड के रूप में हुआ था, और कई पुराने कुलीन परिवारों की तरह, उनके परिवार में भी एक रहस्यमयी भूत का साया था, जिससे वे बचपन से अच्छी तरह परिचित थीं। यह भूतिया भूतिया, जिसे श्वेत महिला के नाम से जाना जाता है, जाहिर तौर पर केवल डी मोंट्रिचार्ड परिवार के सदस्यों को

ही दिखाई देता है, जो श्रीमती एमरी के रिश्तेदार थे। कोई नहीं जानता कि श्वेत महिला कौन है, लेकिन वह नियमित रूप से तब प्रकट होती है जब परिवार का कोई सदस्य मरने वाला होता है, ठीक वैसे ही जैसे आयरिश बंशी मृत्यु के आने की सूचना देती है। शायद इसमें कोई संबंध हो, क्योंकि कई पुराने फ्रांसीसी परिवार भी सेल्टिक मूल के हैं।

* * *

1969 में मेरी पत्नी और मैं श्रीमती एमरी के चाचा, बैरन जीन बर्जियर डी ब्यूरेगार्ड से मिले, जो अपने परिवार के साथ फ्रांस के मध्य भाग में स्थित शैतो डी विलेलूएट में रहते हैं। बैरन ने सहर्ष पुष्टि की कि ब्यूरेगार्ड परिवार के कई सदस्यों में वास्तव में भविष्य देखने की क्षमता है, और मानसिक घटनाएं उनमें से किसी को भी विशेष रूप से परेशान नहीं करतीं। वे इसे सहजता से स्वीकार करते हैं।

जैक्लीन एमरी को भी यह विशेष प्रतिभा विरासत में मिली है। उन्हें अक्सर पता होता है कि डाक में क्या आया है या उन्हें कौन से फोन आने वाले हैं, और वे भविष्य के बारे में कई छोटी-छोटी बातों में भी सचेत रहती हैं, लेकिन वे इसे अपने स्वभाव का हिस्सा मानती हैं। फिर भी, यह ब्यूरेगार्ड परिवार के सभी सदस्यों में मौजूद मानसिक क्षमताओं की स्वाभाविक प्रवृत्ति को दर्शाता है, और मेरे विचार से, यही मानसिक क्षमता हॉवर्ड लॉज में उनके प्रकट होने का कारण बनी।

* * *

जैक्लीन एमरी स्वयं ईएसपी (आध्यात्मिक दृष्टि) से अच्छी तरह परिचित हैं। जब मैंने उनसे हॉवर्ड लॉज आने से पहले की किसी भी मानसिक घटना को याद करने के लिए कहा, तो उन्होंने कुछ देर सोचा और फिर दिसंबर 1944 में जर्मनी में रहते हुए उनके साथ घटी एक चौंकाने वाली घटना का जिक्र किया।

* * *

किसी कारणवश मैं म्यूनिख के पास एक गाँव में एक महिला के साथ गई थी, जो अंडे और मुर्गियाँ खरीदना चाहती थी और साथ ही अपने घर के तहखाने से कुछ सेब भी लेना चाहती

थी। यह घर उसने डसेलडॉर्फ या कोइन के एक परिवार को किराए पर दिया हुआ था। मुझे लगता है कि उस घर का नाम कैसरब्रून था। श्रीमती श्वार्ज़ उस घर में किराए पर रहती थीं।

श्रीमती कोल्ब, जिनके साथ मैं आई थी, चाहती थीं कि मैं उनके साथ गाँव चलूँ, लेकिन किसी कारणवश मैंने बहाना बनाकर श्रीमती श्वार्ज़ की तलाश में निकल पड़ी। वह भोजन कक्ष में व्यस्तता से पत्र लिख रही थीं। किसी अज्ञात कारण से मैंने उनसे पूछा कि वह क्या लिख रही हैं। यह अजीब था क्योंकि बीस साल की उम्र में मैं बहुत शर्मीली थी। तब उन्होंने मुझे बताया कि वह अपने पति और बच्चों को विदाई पत्र भेज रही हैं। मैंने तब देखा कि उनके सामने कुछ गोलियाँ रखी थीं, जिनके बारे में उन्होंने कहा कि वे ज़हर हैं। मेरे पूछने पर उन्होंने मुझे यह कहानी सुनाई:

उन्हें आशंका थी कि उनके पति, जो एक विश्वविद्यालय के प्रोफेसर थे, हाल ही में ऊपर बताए गए शहरों में से किसी एक पर हुए बम विस्फोट में मारे गए होंगे और उनका घर ध्वस्त हो गया होगा। उनका एक बेटा फ्रांसीसी मोर्चे पर था और काफी समय से उससे कोई संपर्क नहीं हो पाया था। उनके दो अन्य बेटे रूसी मोर्चे पर थे और उनसे भी उन्हें कोई खबर नहीं मिली थी।

शायद सबसे बुरी बात यह थी कि उनकी बेटी लुट्टे पास्चेडाग, उनके दो छोटे बच्चे और उनकी नर्स, श्विस्टर मार्गेरेथे, कथित तौर पर कुछ दिन पहले पॉट्सडैम से उनके साथ रहने के लिए आई थीं और उनका कोई पता नहीं चल पाया था। रेडियो पर खबर थी कि बर्लिन की दिशा से आ रही कई ट्रेनों पर हमला हुआ है और कई लोगों की मौत हुई है।

पता नहीं क्यों, मैंने उसे अपनी बाहों में भर लिया (मैंने उसे पहले कभी नहीं देखा था) और उससे वादा किया कि उसकी बेटी, नर्स और बच्चे कैसरब्रून के बहुत करीब हैं, फ्रांसीसी मोर्चे पर तैनात हैंसेल एक हफ्ते में घर आ जाएगा और क्रिसमस पर उनके साथ रहेगा, प्रोफेसर श्वार्ज़ हफ्ते के दौरान उसे फोन करेंगे, उनके घर को केवल थोड़ा सा नुकसान हुआ है, और उनके दो अन्य बेटे और दामाद पत्र लिखेंगे। एक, वोल्फगैंग, क्रिसमस पर घर आएगा; दूसरा डॉक्टर था और मुझे नहीं लगता था कि उसे छुट्टियों के लिए छुट्टी मिल पाएगी। मेरी बात सुनकर वह बेहोश हो गई। होश आने पर हमने मिलकर गोलियां और पत्र जला दिए। दरवाजे पर दस्तक हुई, ल्यूटे, दोनों बच्चे और नर्स थे। हैंसेल अगले हफ्ते आया, वोल्फगैंग क्रिसमस पर घर आया। प्रोफेसर श्वार्ज़ ने मेरे आने के दो दिन बाद फोन किया, और डॉक्टर ने क्रिसमस से

पहले पत्र लिखा। उन्होंने इतनी कृपा की कि हैंसेल को म्यूनिख भेजा ताकि वह मुझे यह बात बता सकें और मुझे क्रिसमस पर उनके साथ रहने के लिए आमंत्रित कर सकें, जिसे मैंने स्वीकार कर लिया।

* * *

11 जून, 1969 को, आखिरकार मैं हॉवर्ड लॉज पहुँचने में कामयाब हो गया। रॉय एमरी मुझे बाल्टीमोर से लेने आए और अपने घर ले गए। वहाँ उनकी पत्नी के साथ-साथ उनकी दो बेटियाँ भी थीं, दोनों कॉलेज की छात्राएँ। बड़ी बेटी एरियन मेरी किताबों की शौकीन पाठक है और अगर सब ठीक रहा तो वह मानसिक विद्या का अध्ययन करना चाहती है। जैकलीन एमरी ने गर्व से मुझे घर और उसके आसपास का इलाका दिखाया, जब तक कि सब कुछ देखने के लिए पर्याप्त रोशनी थी। चलते-चलते मुझे हॉवर्ड लॉज के बारे में और भी जानकारी मिली। एक बात यह थी कि ऐसा लगता था कि जेरोम बोनापार्ट श्रीमती पैटरसन से प्रेम करने के दौरान वास्तव में इस घर में आए थे, जिनसे उन्होंने बाद में शादी की। हॉवर्ड लॉज से तीन मील से भी कम दूरी पर पैटरसन परिवार की जागीर थी, जहाँ नेपोलियन के भाई ने शांति और सद्भाव से अपना जीवन व्यतीत किया। हमारे चारों ओर बागान थे, और पुराने बागानों के जो थोड़े-बहुत अवशेष बचे थे, वे अभी भी उस क्षेत्र में देखे जा सकते थे।

श्रीमती एमरी ने समझाया, “अब हमारे पास केवल दो सौ एकड़ जमीन है, लेकिन जब हमने यह संपत्ति खरीदी थी, तब यह पांच सौ एकड़ का हिस्सा थी, और सौ साल पहले यह लगभग सात या आठ सौ एकड़ थी। मुझे लगता है कि शुरुआत में यह लगभग दो हजार एकड़ रही होगी। यहाँ के बागान इसी तरह के हुआ करते थे।”

भूत-प्रेत की घटनाओं के बारे में विस्तार से चर्चा करने से पहले, मैं घर के बारे में, उसके इतिहास, उसकी संरचना के बारे में जितना हो सके उतना जानना चाहता था, और चूंकि श्रीमती एमरी पहले से ही इन तथ्यों को जानती थीं, इसलिए मुझे उन पर चर्चा न करने का कोई कारण नहीं दिखा।

* * *

मैंने पूछा, "क्या यह सचमुच बागान वाला घर था?"

“हाँ, ऐसा ही रहा होगा। और यह एक औपचारिक घर है, जो अंग्रेजी घरों की खासियत है, जिसमें हॉल पूरे घर में फैला हुआ है और दोनों तरफ दो-दो कमरे हैं। रसोईघर भले ही पुराना हो, लेकिन बाद में जोड़ा गया होगा।”

“नीचे चार कमरे हैं?”

“वहाँ इससे भी ज़्यादा कमरे हैं, लेकिन हॉल के दोनों ओर दो-दो कमरे हैं। देखिए, यहाँ लिविंग रूम, म्यूज़िक रूम, मेरे पति की लाइब्रेरी और डाइनिंग रूम हैं। डाइनिंग रूम को पूरब-पश्चिम दिशा में बढ़ाया गया है क्योंकि हॉल दरवाज़े तक पूरा नहीं जाता; इसलिए पार्टीशन हटा दिया गया है।”

और ऊपर?

"ऊपर की मंजिल पर छह बेडरूम हैं, और फिर अटारी है, जिसे मैं आपको दिखाऊंगा, यह दो मंजिला थी। अब हमने इसे तीसरी मंजिल बना दिया है, और इसके ऊपर अभी भी एक बड़ी अटारी है।"

तो क्या यह वास्तव में तीन मंजिला घर है?

"ठीक है, हमारे पास तहखाना है, यह मंजिल है, दूसरी मंजिल है, तीसरी मंजिल है और अटारी है; इस तरह कुल पाँच मंजिलें हो गईं।"

आप यहां कब से आए हैं?

दिसंबर में दस साल हो जाएंगे। हम 1959 में यहाँ रहने आए थे। इस घर में पहले देहाती लोग रहते थे और इसकी हालत बहुत खराब थी। जिस रसोई से अंदर आना पड़ता था, वहाँ सूअर और उनके बच्चे थे। इस कमरे का इस्तेमाल होता था—अलग-अलग कोनों को बाथरूम की जगह इस्तेमाल किया जाता था। इसमें एक सोफा था जो चूहों से भरा हुआ था। चूहे इंसानों के इतने आदी हो चुके थे कि अंदर आने पर भी हिलते नहीं थे। घर मक्खियों, पिस्सूओं, चूहों और गिलहरियों से भरा हुआ था, बदबू आती थी और फर्श पर च्युइंग गम चिपकी रहती थी। रॉय और मैंने लगभग एक महीना इसी फर्श पर घुटनों के बल बैठकर यह सब साफ करने में बिताया। सभी दीवारों पर छह-सात परतें वॉलपेपर की थीं, जिन्हें हटाया गया और फिर मैंने पेंट किया। बेशक, सबसे मुश्किल काम वॉलपेपर हटाना था। जब भी कमरे में किसी छेद या किसी और वजह से हवा आती थी, तो वे वॉलपेपर की एक और परत लगा देते थे, इस तरह

समस्या को छिपाने या टालने की कोशिश करते थे, बजाय इसके कि उसका समाधान करें। और इसी तरह चलता रहा!

"क्या वे अवैध कब्जेदार थे या उन्होंने इसे खरीदा था?"

“उन्होंने इसे इसलिए खरीदा था क्योंकि उनके पास उस जगह पर एक फार्म था जो अब फ्रेंडशिप एयरपोर्ट है। आपको बताने की जरूरत नहीं है, यह एक बहुत अच्छी चीज थी। उन्होंने यह घर वाशिंगटन के एक बैंक में काम करने वाले एक व्यक्ति से खरीदा था। उन्होंने इसे नकद में खरीदा था।”

लेकिन उन्हें जीना नहीं आता था।

“अरे नहीं! देखो, उन्होंने घर का इस्तेमाल ऐसे किया जैसे नींबू निचोड़ते हैं; जब कुछ नहीं बचा, तो वे घर छोड़कर चले गए—दूसरे घर में चले गए। उनके जाने का समय आ गया था; वे यहाँ सात साल से रह रहे थे, और घर की हालत बहुत खराब हो चुकी थी। पाइपलाइन पूरी तरह से खराब हो चुकी थी। हीटिंग सिस्टम इतना खतरनाक था कि इलेक्ट्रीशियन ने कहा, ‘आपको सचमुच भगवान पर विश्वास करना चाहिए’; और लगभग सब कुछ ऐसा ही था।”

"और फिर आपने इसे अपने हाथ में लेकर इसका जीर्णोद्धार किया?"

“हां, और सबने हमें पागल कहा। हम पांचों ने पहला महीना एक ही कमरे में बिताया। मैंने उस कमरे को कीटाणुरहित किया था, और उसमें एक महीने तक काम किया था।”

“आपके तीन बच्चे हैं?”

“हां। और क्रिस तब सिर्फ दो साल का था। और—खैर, हम अभी भी इस पर काम कर रहे हैं।”

मैंने सीधे मुद्दे पर आने का फैसला किया।

"आपको सबसे पहले कब कहीं कुछ असामान्य लगा?"

“यह तब हुआ जब मैं घर के कामों में कम व्यस्त होने लगी। आप जानते हैं, जब आप बहुत व्यस्त होते हैं तो आपको यह समझने का समय ही नहीं मिलता कि क्या हो रहा है। तीन साल पहले मुझे सीढ़ियों पर एक आदमी दिखाई दिया। मैं जानती हूँ कि वह एक आदमी है, हालाँकि मैंने उसे कभी देखा नहीं है। मुझे पूरा यकीन है कि वह या तो चालीस के दशक के

अंत में या पचास के दशक की शुरुआत में होगा, और इसके अलावा, वह अठारहवीं सदी का है क्योंकि मेरी कल्पना में मैं उसे देख सकती हूँ।”

"क्या आपके यहां रहने के पहले सात वर्षों में कुछ ऐसा था?"

मुझे याद नहीं आ रहा। सिवाय इसके कि शायद मुझे दूसरी मंजिल से तीसरी मंजिल तक जाने वाली सीढ़ियों का कुछ धुंधला सा एहसास हुआ था।

“शोर?”

"हाँ, हमेशा ऐसा लगता है कि कोई सीढ़ियों से ऊपर जा रहा है। हमेशा। हमने हमेशा यही मान लिया था कि यह एक पुराना घर होने के कारण है, लेकिन चूंकि हमने कालीन बिछा रखे हैं, इसलिए मुझे अभी भी कदमों की आवाज सुनाई देती है।"

"अब, उस समय क्या परिस्थितियाँ थीं जब आपने सीढ़ियों पर उस आदमी को महसूस किया? मेरा मतलब है, लैंडिंग पर।"

"मैं दूसरी मंजिल पर अपने कमरे में जा रही थी, और वहां जाने के लिए सीढ़ियों से होकर जाना पड़ता है। उस कमरे में जाने का यही एकमात्र रास्ता है। और फिर अचानक मुझे रुकना पड़ा, क्योंकि वह वहां था।"

क्या आपको ठंड लग रही थी?

"नहीं, मुझे बस ऐसा लगा कि उसे हिलना ही होगा और वह हिलने वाला नहीं था, और आखिरकार वह हिल गया, लेकिन उसे मेरे बारे में उतनी जल्दी पता नहीं चला जितनी जल्दी मुझे उसके बारे में पता चला।"

“यह किस समय की बात है?”

"शाम। पता नहीं क्यों, हमेशा ही गोधूलि बेला होती है। दरअसल, लैंडिंग का मुख दक्षिण की ओर है, शायद इसका इससे कुछ संबंध हो, और दिन में हमेशा बहुत धूप रहती है।"

"इस पहले अनुभव के बाद, क्या आपको और भी अनुभव हुए?"

"हां, अक्सर। काफी समय तक वह लगातार वहीं रहता था।"

"हमेशा उसी जगह पर?"

"हमेशा सीढ़ियों पर। देखिए, सीढ़ियों से सब कुछ बहुत अच्छे से दिखाई देता है, क्योंकि कोई भी ऊपर या नीचे जाने के लिए उस सीढ़ी से होकर ही गुजरता है।"

"तो क्या आप कहेंगे कि कोई उस जगह से देख सकता है?"

“आप सब कुछ देख सकते हैं—असल में यह गली वह रास्ता नहीं थी जिससे होकर आप अंदर आते थे, बल्कि घर के सामने से आती थी। सीढ़ियों से आपको पूरी गली का बेहतरीन नजारा दिखता है।”

"तीन साल पहले हुए उस पहले अनुभव के बाद, क्या आपने उसे कभी उस तरह से नहीं देखा जैसा आपने बताया है?"

नहीं। हालांकि मुझे यह कहते समय बहुत सावधानी बरतनी होगी क्योंकि कुछ समय बाद, जैसा कि आप जानते हैं, मन में देखी गई चीज़ और प्रत्यक्ष रूप से देखी गई चीज़ में अंतर करना मुश्किल हो जाता है। क्योंकि मुझे लगता है कि अगर मैं कोशिश करूं तो उसे छू सकती हूं, लेकिन मैंने कभी नहीं किया। भले ही मुझे उससे डर नहीं लगता, फिर भी मुझे ऐसा करने की इच्छा नहीं होती।

क्या कभी सीढ़ियों से ऊपर चढ़ते समय आप किसी चीज से टकरा गए हैं?

“एक दीवार। कभी-कभी मुझे लगता है कि वहाँ कोई विभाजन या कुछ और है।”

"क्या आपको इसे विस्थापित करना होगा?"

“हाँ। लेकिन फिर मैं तब तक इंतज़ार करता हूँ जब तक वह अपनी जगह से हट न जाए, या मैं उसके चारों ओर घूम न जाऊँ। लेकिन किसी तरह मुझे पता चल जाता है कि वह कहाँ है क्योंकि मैं उसके चारों ओर घूम सकता हूँ।”

क्या आपने कभी कुछ देखा है?

"अक्सर। लैंडिंग पर।"

"यह किस तरह का दिखता है?"

"धुंध। और मुझे हमेशा लगता है कि यह मेरी आंखों का भ्रम है।"

“यह कितना लंबा है?”

"सच कहूँ तो मैंने इस बारे में कभी सोचा ही नहीं, क्योंकि मैं पलकें दो-तीन बार झपकाता हूँ। मुझे हमेशा लगता था कि यह मेरी ही गलती है। देखिए, यहाँ बाहर बहुत धुंध है। लेकिन फिर मैंने इसे कई कमरों में देखा।"

क्या आपने कभी कोई अजीब सी गंध महसूस की है...?

"हां, मैं अक्सर ऐसा करता हूं। इस घर में कुछ ऐसी गंध हैं जो अक्सर मुझे किसी बात की याद दिला देती हैं, लेकिन मुझे पता नहीं क्या।"

क्या आपको कभी ऐसी आवाजें सुनाई देती हैं जो किसी तीखी आवाज या पक्षी की आवाज जैसी लगती हैं?

“पक्षी, हाँ। अक्सर।”

“आपको यह आवाज कहां से सुनाई दे रही है? घर के किस हिस्से से?”

“इस मंजिल पर कभी नहीं। ऊपर वाली मंजिल पर।”

"क्या घर में कोई संरचनात्मक बदलाव हुए हैं?"

मुझे लगता है लैंडिंग सही रहेगी।

“सिर्फ लैंडिंग ही प्रभावित हुई? उस पर क्या असर पड़ा?”

“हमने एक पार्टीशन बदल दिया, क्योंकि उसमें किए गए बदलाव इतने अतार्किक थे कि घर बनने के समय से ऐसा होना नामुमकिन था। जिस तरह से हमने उसे पाया, वह वैसा हो ही नहीं सकता था, क्योंकि वह बहुत ही हास्यास्पद था। उदाहरण के लिए, घेरेदार स्कर्ट या चौड़ी ड्रेस पहनने वाली कोई भी महिला उस पार्टीशन के साथ सीढ़ियों के ऊपर से लैंडिंग तक नहीं पहुँच सकती थी। हमने उसे बदल दिया, और मैं आपको दिखाऊँगी क्योंकि जोड़ फर्श में दिख रहा है। हमें बताया गया था कि लैंडिंग में बदलाव किया गया था, और किसी कारणवश सारा सामान उस लैंडिंग के आसपास ही रखा गया है।”

"आपका मतलब है कि इसे वापस उसके मूल रूप में बदल दिया गया है, या इसमें बदलाव किया गया है?"

"हमें नहीं पता, क्योंकि हमें नहीं पता कि यह कैसे हुआ था।"

"क्या आपने इसे चौड़ा किया या संकरा किया?"

हमने इसे चौड़ा कर दिया।

"अब, इस घर में रहने के बाद से क्या आपको कभी अजीब सपने आए हैं? क्या आपको कभी ऐसा लगा है कि कोई व्यक्ति आपसे संवाद करने की कोशिश कर रहा है?"

"हां, अक्सर।"

"क्या आप इस बारे में बात करेंगे?"

"बस मुझे शर्म आती है, और मैं आमतौर पर इसे भुलाने की कोशिश करता हूं।"

"क्या आपको कभी संचारकों के बारे में कोई जानकारी मिलती है?"

"क्योंकि मैं नकारात्मक सोच वाला व्यक्ति हूं, इसलिए मुझे नहीं लगता कि कोई वास्तविक संवाद होता है, लेकिन मुझे अक्सर इस बात का एहसास होता है कि कोई उस कमरे में आया है जहां मैं मौजूद हूं।"

“यह किस प्रकार प्रकट होता है?”

मुझे एक परछाई का आभास हो रहा है। मेरी आंखें खुली हुई हैं।

“यह दूसरी मंजिल पर है?”

"हाँ।"

"रात में?"

“हाँ। और फिर, उस रात जब मैं तीसरी मंजिल पर सो रही थी—मुझे यकीन है कि सीढ़ियों पर मेरा आदमी ही था। वह ऊपर आया, और मुझे डर क्यों लगा, यह मुझे नहीं पता क्योंकि वह आदमी बहुत अच्छा था, और वहाँ कुछ भी नहीं था....”

"तुम्हारा क्या मतलब है, वह ऊपर आया?"

मैंने उसे सीढ़ियों से ऊपर आते सुना, और वह आकर मुझे देखने लगा।

“उस रात तुम तीसरी मंजिल पर क्यों सोए थे?”

"क्योंकि रॉय ने एयर कंडीशनर चालू कर दिया था। मैं एयर कंडीशनर की आवाज़ में सो नहीं सकती।"

“तो आपने मेहमानों के लिए बने कमरों में से एक कमरा लिया है। क्या इस कमरे का लैंडिंग से कोई विशेष संबंध है?”

"सीढ़ियाँ ऊपर और नीचे जाती हैं, इसलिए आपको लैंडिंग से होकर जाना होगा। दोनों रास्ते अंत में दूसरी मंजिल की लैंडिंग पर जाकर खत्म होते हैं।"

“और वह सीढ़ियों से ऊपर आया, और आपको महसूस हुआ कि वह आपके बिस्तर के पास खड़ा है?”

“हां। देख रहे थे—शायद सोच रहे होंगे कि मैं वहां क्या कर रहा था। लेकिन असल में यह फर्श बेडरूम के लिए इस्तेमाल नहीं होता था। हमने इसे बेडरूम में इस्तेमाल किया था।”

"क्या था जिसके लिए इसका इस्तेमाल हुआ था?"

"यह दो मंजिला अटारी थी, और हमने छत लगाकर इसे दो हिस्सों में बांट दिया था, और मुझे नहीं लगता कि इसका इस्तेमाल नौकरों के अलावा किसी और के लिए किया जा सकता था।"

"आपको आखिरी बार इस अस्तित्व का अहसास कब हुआ था?"

"गिरावट में।"

क्या कोई ऐसा विशेष समय है जब यह अधिक मजबूत होता है?

"हां, गर्मियों में।"

"दिन का कोई विशेष समय?"

"शाम।"

क्या यह हमेशा एक ही व्यक्ति होता है?

"खैर, मुझे हमेशा से ऐसा ही लगता था, लेकिन मैंने इस बारे में कभी ज्यादा सोचा नहीं।"

क्या एक से अधिक हैं?

"हाँ।"

"आपने दूसरी 'उपस्थिति' कब महसूस की?"

“लगभग दो साल पहले की बात है, जब मेरे बेटे क्रिस को तीसरी मंजिल पर शिफ्ट किया गया था, तब मुझे सांस लेने की आवाज़ सुनाई दी। यह मास्टर बेडरूम में थी। मैं आपको ठीक-ठीक बता सकती हूँ कि सांस लेने की आवाज़ बिस्तर के दाहिनी ओर से आ रही थी, नीचे से, जैसे कोई बच्चा ट्रंडल बेड या किसी छोटी सी पालने जैसी किसी चीज़ में सोता हो, और वह सांस लेने की आवाज़ मेरे नीचे से आ रही थी। बिस्तर काफी ऊँचा है।”

“दूसरी मंजिल पर?”

“हां। और यह निश्चित रूप से एक बच्चा था, और मैं इसे बहुत आसानी से समझा सकती हूं - दुनिया में ऐसी कोई मां नहीं है जो बीमार और बुखार से पीड़ित बच्चे की सांसों को न पहचान सके।”

क्या आपके पति ने यह सुना?

नहीं। उसे इस बारे में कभी कुछ पता नहीं चलता।

लेकिन क्या वह वहां मौजूद था?

नहीं। वह नीचे स्थित अपने पुस्तकालय में थे।

"क्या यह देर रात का समय था?"

“नहीं—मैं रॉय से बहुत पहले सो जाता हूँ। लगभग ग्यारह बजे होंगे, या शायद आधी रात को।”

"जब आपने इसे पहली बार सुना, तो क्या आपको आश्चर्य हुआ कि यह क्या है?"

“खैर, मुझे पता था कि यह क्या था, या क्या होना चाहिए था, क्योंकि मैं जहां थी वहां से अपने बच्चों की सांसें भी नहीं सुन सकती थी। मुझे पता था कि यह कुछ ऐसा होना चाहिए जो पहले इसी कमरे में हुआ हो।”

क्या आपने कभी कोई और आवाज सुनी?

“हां। वह बच्चा रोता है, और उसे दर्द होता है।”

आपने इसे कितनी बार सुना है?

“रोने की तुलना में सांस लेना अधिक बार हुआ। रोना केवल दो बार ही हुआ।”

“उसी जगह पर?”

"हाँ।"

"क्या आस-पास कोई महिला है? क्या ऐसा होने पर आपको किसी महिला की उपस्थिति का अहसास होता है?"

“हां, और वह बिस्तर के मेरे हिस्से पर होती थी। और यही बात मुझे परेशान करती है!”

"आपका क्या मतलब है?"

"क्योंकि मुझे ऐसा लग रहा है कि उसका बिस्तर वहीं था जहाँ मेरा है। मुझे यकीन है कि वह दाईं ओर सोई होगी, क्योंकि बच्चा दाईं ओर है।"

“बेडरूम का सारा फर्नीचर तुम्हारा है—तुम इसे खुद लाए हो?”

"हां, इस घर से संबंधित कोई भी चीज यहां नहीं थी।"

मैंने कुछ देर इस सब पर विचार किया, फिर अपनी उस बुद्धिमान मेजबान से और अधिक प्रश्न पूछने का फैसला किया।

"क्या हमने अभी जो चर्चा की है, उसके अलावा कुछ और भी है?"

"हां, मेरे पूर्वज का वह चित्र जो मैं फ्रांस से लेकर आया था। मेरा जन्म 1923 में हुआ था, और उनका जन्म 1787 में हुआ था।"

“और उसका नाम क्या था?”

मुझे उसका मायके का नाम याद नहीं है, लेकिन वह अल्काज़ार थी। उसने एक स्पैनिश व्यक्ति से शादी की थी।

इस चित्र में क्या खास बात है?

“बेशक, आँखें—आपको ये आँखें किसी भी बेहतरीन चित्रकारी में मिल जाएँगी—ये ऐसी आँखें हैं जो आपका हर जगह पीछा करती हैं। लेकिन मैं इस बारे में बात नहीं करूँगा क्योंकि यह किसी भी संग्रहालय या घर में जहाँ पारिवारिक चित्र होते हैं, वहाँ बहुत आम बात है। बात ये नहीं है, बल्कि उसके बदलते भाव हैं। वह निश्चित रूप से अपने चेहरे के भाव बदलती है। जब वह किसी को नापसंद करती है तो वह इसे दिखाती है। और कभी-कभी, अगर आप उस पर सरसरी नज़र डालें, तो वह चित्र में दिख रही महिला नहीं, बल्कि कोई और ही होती है।”

क्या आपके अलावा कोई और इसे देख रहा है?

“हां, दो अन्य लोग—मेरा एक अंग्रेज दोस्त जिसका मैंने पहले जिक्र किया था, और एक और अंग्रेज दोस्त जिसकी शादी एक अमेरिकी दोस्त से हुई है। उन दोनों ने इसे देखा था।”

"क्या आपने कभी घर के बाहर, बगीचे में कुछ महसूस किया है?"

“आपको लगता है कि कोई शाखा आपके चेहरे पर लगने वाली है, लेकिन वास्तव में कोई शाखा नहीं होती। मुझे लगता था कि लोग बाहर चलते समय हमेशा ऐसा ही महसूस करते हैं, लेकिन ऐसा नहीं है। साथ ही, मैं अंधेरे में सीधा नहीं चल सकता।”

"आपका क्या मतलब है?"

“मुझे नहीं पता! मैं छत पर एक सीधी रेखा, एक चित्रित रेखा पर बिना किसी कठिनाई के चल सकता हूँ, लेकिन अंधेरे में मैं कभी सीधा नहीं चल पाता।”

आपके पास दो कुत्ते हैं। क्या उन्होंने कभी अजीब व्यवहार किया है?

“हर समय। वे तब भी भौंकते हैं जब वहाँ बिल्कुल कुछ नहीं होता।” श्रीमती एमरी ने मेरे विचारमग्न विराम को भंग कर दिया।

* * *

"मिस्टर होल्ज़र, इस मंजिल पर एक कमरा भी है जिसमें कुछ खास बात है।"

“जिसमें हम बैठे हैं?”

“नहीं—अगली वाली, जहाँ पियानो है। हर रात सोने से पहले मुझे एक गिलास संतरे का रस पीना पड़ता है। और कभी-कभी मैं दौड़कर नीचे जाती हूँ—मुझे लगता है कि उस झूला कुर्सी पर कोई बैठा है और मुझे जाकर देखने में डर लगता है।”

क्या आपको उस कमरे में किसी की उपस्थिति का अहसास होता है?

“हां—ओह हां, हां, बहुत मजबूत। लगभग हर दिन, मैं कहूंगा।”

तो फिर, क्या वो कमरा और सीढ़ियाँ ही हैं?

"हाँ।"

* * *

इस बिंदु पर मुझे टेप बदलना पड़ा। मैंने सुनी हुई सभी बातों पर फिर से विचार किया और विभिन्न तत्वों को आपस में जोड़ने की कोशिश की। लेकिन अभी तक सब कुछ ठीक नहीं बैठ रहा था—कम से कम एक ही समय स्तर पर तो नहीं।

मैंने श्रीमती एमरी से पूछा, "क्या आपकी जानकारी में इस घर में कभी कोई दुखद घटना घटी है?"

“हमें नहीं पता। इस देश में सबसे निराशाजनक बात यही है कि यहाँ बहुत कम रिकॉर्ड रखे जाते हैं। फ्रांस में तो छह सौ साल के रिकॉर्ड मौजूद हैं। लेकिन यहाँ, पिछले पचास सालों के रिकॉर्ड देखकर लोग सोचते हैं कि जानने की इच्छा ही क्यों है।”

क्या इस घर से जुड़ी कोई किंवदंती, अफवाह या परंपरा है?

“कई किंवदंतियाँ प्रचलित हैं। वे यह भी कहती हैं कि गवर्नर हॉवर्ड, जिनके नाम पर हॉवर्ड काउंटी का नाम रखा गया था (जो 1860 तक ऐनी अरुंडेल काउंटी का हिस्सा था), इसी घर में रहते थे। लेकिन यह बात असाधारण है, कम से कम मेरे लिए, जो फ्रांस से आया हूँ, कि लोग इतने हाल के तथ्यों के बारे में भी निश्चित नहीं हो सकते।”

“यहां पहले जो लोग रहते थे, उनके बारे में क्या? क्या आप कभी ऐसे किसी व्यक्ति से मिले हैं जो पहले यहां रहता था?”

"जी हां। मेरी मुलाकात टैलबोट शिपली नाम के एक व्यक्ति से हुई, जो अठहत्तर वर्ष के हैं और यहीं पैदा हुए थे।"

क्या वह कभी इस घर का मालिक था?

“उसके माता-पिता ऐसा करते थे, और वह उस तरह का इंसान था, आप जानते हैं, जो कहता था, ‘अरे! जहाँ वह सोफा है, वहीं पर चाची मार्था को लिटाया जाता था’; और, ‘अरे, उधर, यहीं पर मेरी माँ बीमार होने पर लेटी थीं, और इसे एक शयनकक्ष बना दिया गया था और फिर यहीं उनकी मृत्यु हो गई’; और, ‘अरे, लिन, तुम उस कमरे में सोती हो? खैर, यहीं तो मेरा जन्म हुआ था!’ और इस तरह की कहानियाँ हमें सुनने को मिलती थीं, लेकिन वह एक किसान है, और शायद घर के बारे में उसकी सोच हमारी जैसी न हो। उसके लिए, घर वह जगह है जहाँ लोग जन्म लेते हैं और मरते हैं। और शायद मेरे लिए घर वह जगह है जहाँ लोग रहते हैं।”

“नौकरों के बारे में क्या? क्या आपके पास कभी कोई माली या कोई और कर्मचारी था?”

“ओह, मैं कभी-कभार लोगों को अपने लिए काम पर रखता हूँ। मैंने उन सभी को निकाल दिया है क्योंकि सब कुछ उनकी गरिमा के नीचे है और कुछ भी मेरी गरिमा के नीचे नहीं है, इसलिए चीजें खुद करना कहीं ज्यादा आसान है!”

"क्या उन्होंने कभी किसी बात की शिकायत की?"

“एक बार एक महिला ने कहा कि वह तीसरी मंज़िल पर नहीं जाएगी। वहाँ कुछ और भी है,” श्रीमती एमरी ने कहा। “जहाँ एक त्रिकोणीय बरामदा रहा होगा, उसके दोनों ओर दो आले हैं, जो घर की शैली से मेल खाते हैं। वे बंद प्रतीत होते हैं। जो व्यक्ति स्मोकहाउस को मेरी भावी एंटीक दुकान में बदल रहा है, वह उन्हें खोलकर देखना चाहता है कि उनके अंदर क्या है, क्योंकि वास्तव में उनका कोई मतलब नहीं है।”

"क्या इन दोनों क्षेत्रों के बारे में आपकी कोई विशेष राय है?"

“वे मेरे डेस्क के दोनों ओर, सीढ़ियों के बाहरी हिस्से में हैं। सच कहूँ तो, मैंने इस बारे में कभी सोचा ही नहीं था! वे सीढ़ियों की छत की ओर हैं, लेकिन बाहरी हिस्से में।”

"इनमें आखिर क्या हो सकता है?"

मुझे नहीं पता। हमने सोचा था कि शायद घर के रिकॉर्ड में कुछ मिल जाए।

"क्या यह कोई खजाना नहीं है?"

"लोग कहते हैं कि गृहयुद्ध के दौरान और क्रांति के दौरान भी लोगों ने चीजें दफनाई थीं, इसलिए यहाँ खजाने हो सकते हैं। किसी को गली में 1743 का एक सिक्का मिला।"

“एक अंग्रेजी सिक्का?”

"हाँ।"

“इसे किसने खोजा?”

“एक छोटी लड़की हमसे मिलने आई थी। तो हमने उसे वह चीज़ रखने दी। और भोजन कक्ष में खिड़की की चौखट बदली गई, और उस चौखट में काफी सारी कलाकृतियाँ मिलीं। बटन और सिक्के।”

* * *

रात के खाने के बाद मैं श्रीमती एमरी के साथ घर के ऊपर से नीचे तक घूमी और तस्वीरें खींचती गई। किसी भी तस्वीर में कुछ भी असामान्य नहीं दिखा, यहाँ तक कि ऊपर की सीढ़ियों के पास भी नहीं—लेकिन इसका यह मतलब नहीं है कि वहाँ कोई घात नहीं है जो सही समय आने पर प्रकट होने का इंतज़ार कर रही हो। इस तरह की घटनाएं बहुत कम ही कैमरे या कागज़ पर दिखाई देती हैं। सकारात्मक परिणाम पाने के लिए कहीं अधिक समय और धैर्य की आवश्यकता होती।

मैंने दो लड़कियों, एरियन और लिन, जो अब बीस साल की उम्र के आसपास थीं, और छोटे लड़के क्रिस से बात की, लेकिन किसी भी बच्चे को सीढ़ियों पर दिखने वाले भूत के बारे में कोई असामान्य अनुभव नहीं हुआ था, न ही वे घर में एक-दो भूत होने की संभावना से डरे हुए थे। यह सब ग्रामीण जीवन का हिस्सा था। मैंने नानी के पूर्वज के चित्र को ध्यान से देखा, और मुझे बस यही लगा कि यह वाकई एक बहुत अच्छा चित्र था। शायद वह मुझे नापसंद नहीं करती थीं, या कम से कम अगर करती भी थीं तो उन्होंने इसे दिखाया नहीं।

लेकिन जब मैं उस जगह पर खड़ा हुआ, जहाँ ज़्यादातर घटनाएँ घटी थीं, तो मुझे कुछ अजीब सा महसूस हुआ। यह सच है कि मुझे पता था कि मैं कहाँ हूँ और उस जगह पर क्या हुआ था। यह भी सच है कि सुझाव पेशेवर मानसिक जांचकर्ताओं पर भी असर डालते हैं। फिर भी कुछ अनसुलझा सा रह गया था। मैं अपनी भावनाओं को शब्दों में ठीक से बयान नहीं कर सकता, लेकिन पीछे मुड़कर देखने पर मुझे वह बेचैनी याद आ गई जो मुझे कभी-कभी तब होती थी जब कोई हवाई जहाज़ अचानक नीचे की ओर गोता लगाता था। ऐसा लगता है जैसे पेट अपनी सही जगह पर नहीं है। यह एहसास कुछ देर के लिए ही था, लेकिन किसी तरह मुझे पता था कि जिस जगह पर मैंने कदम रखा था, वह घर के बाकी हिस्सों से अलग थी। मैंने चारों ओर बहुत ध्यान से देखा। इस जगह की कोई भी चीज़ खास नहीं लग रही थी। इस जगह की छत ज़्यादा ऊँची नहीं थी, क्योंकि फ़र्श बनाते समय उपलब्ध जगह को दो हिस्सों में बाँट दिया गया था। लेकिन उस जगह में एक सुकून का एहसास था, मानो किसी के लिए सुरक्षित पनाहगाह हो। तो क्या ऐसा हो सकता है, मैंने बाद में सोचा, कि उस प्रेत जैसे सज्जन ने अपने लिए एक शांत जगह, एकांत स्थान ढूंढ लिया हो और उसे वह बहुत पसंद आया हो? क्या ऐसा नहीं हो सकता कि वह इस व्यवस्था से खुश था; कि शायद जब एमरीज़ ने पुराने अटारी के एक हिस्से

को एक अतिरिक्त मंजिल में बदल दिया, तो उन्होंने अनजाने में उन लोगों की योजनाओं को पूरा कर दिया जो उनसे पहले इस घर में रह चुके थे? आमतौर पर प्रेतवाधित होने का कारण कोई संरचनात्मक परिवर्तन होता है जो घर में पहले रहने वालों को पसंद नहीं आता। यहाँ इसका उल्टा हो सकता है: कोई बाद का मालिक किसी ऐसे व्यक्ति की इच्छा पूरी कर रहा हो जिसके पास ऐसी योजनाएँ बनाने का समय या इच्छा नहीं थी। क्योंकि यह याद रखना चाहिए कि एक अच्छा घर कभी पूरा नहीं होता, बल्कि एक इंसान की तरह जीता है और उन लोगों की देखभाल से फलता-फूलता है जो वास्तव में उससे प्यार करते हैं।

अब बाहर काफी अंधेरा हो चुका था। फिर भी, मैं पास की खिड़की के पास गया और नीचे ज़मीन पर नज़र डाली। मुझ पर एक शांति छा गई, और साथ ही एक अजीब सी बेचैनी भी, मानो मैं किसी के आने की उम्मीद कर रहा था। क्या मैं किसी बीते हुए घटनाक्रम की धुंधली सी अनुभूति महसूस कर रहा था? मैं खुद को न तो माध्यम मानता हूँ और न ही किसी भी तरह की मानसिक शक्तियाँ, लेकिन जब मैं हॉवर्ड लॉज की दूसरी मंज़िल पर खड़ा था, तो एक पल के लिए मुझे भी अपने अंदर कुछ अजीब सा एहसास हुआ।

कुछ देर बाद रॉय एमरी मुझे बाल्टीमोर वापस ले गए और मेरे होटल में छोड़ दिया। शहर में वापस आना लगभग ठंडे पानी के फव्वारे में आने जैसा था, लेकिन चौबीस घंटे बाद मैं बड़े शहर के कठोर और भौतिकवादी माहौल का फिर से आदी हो गया था। मैंने एमरी दंपत्ति से वादा किया था कि मैं किसी दिन एक ट्रान्स मीडियम के साथ वापस आऊंगा और देखूंगा कि क्या मैं सीढ़ियों पर खड़े उस अज्ञात व्यक्ति को अपनी बात कहने का मौका दे सकता हूं। इस बीच, मैंने फ्रांस में डी ब्यूरेगार्ड्स से मिलने का वादा किया, और श्रीमान और श्रीमती एमरी ने वादा किया कि हॉवर्ड लॉज में कोई भी नई घटना होने पर वे मुझे सूचित करते रहेंगे।

यूरोप से लौटने के तुरंत बाद ही मुझे श्रीमती एमरी का एक ज़रूरी पत्र मिला। 20 अक्टूबर, 1969 को उन्होंने एक ऐसी घटना का वर्णन किया जो मेरे लौटने से कुछ ही हफ़्ते पहले घटी थी।

मेरी एक सहेली ने हाल ही में अपनी माँ को खो दिया था और मैंने उसे सप्ताहांत के लिए आमंत्रित किया था। उसे एक ऐसे दोस्त ने यहाँ लाया था जो खुद भी सप्ताहांत बिताने आया था। उस शाम मैं बहुत थकी हुई थी, और आधी रात से कुछ देर पहले ही मुझे वहाँ से जाना

पड़ा। बारबरा जागना चाहती थी और डॉन उसके साथ रुका रहा, क्योंकि उसे लगा कि वह बात करना चाहती है।

अगली सुबह उन्होंने मुझे बताया कि वे बैठक कक्ष में बैठे थे और बारबरा ने बत्तियाँ बंद कर दी थीं क्योंकि वह ग्रामीण शांति का भरपूर आनंद लेना चाहती थी। तभी उन दोनों ने सीढ़ियों से नीचे आते कदमों की आहट सुनी और सोचा कि मैंने अपना इरादा बदल लिया है और उनके साथ बैठ गया हूँ। उन्होंने दहलीज पार करते कदमों की आहट सुनी और सोफे पर किसी के बैठने से चरमराहट की आवाज आई। बारबरा को एहसास हुआ कि वहाँ मैं नहीं था और उसे किसी के नियमित रूप से साँस लेने की आवाज सुनाई दी। अपनी साँस रोककर उसने डॉन से पूछा कि क्या उसे कुछ सुनाई दे रहा है। उसे भी सुनाई दे रहा था और वह भी बेहतर सुनने के लिए अपनी साँस रोके हुए था। बारबरा और डॉन दोनों ने कहा कि उन्हें वह उपस्थिति कितनी आत्मीय लगी। वे दोनों पूरी तरह आश्वस्त हैं कि उस कमरे में उनके साथ कोई था।

शायद यह अच्छी बात है कि दूसरी मंजिल पर बैठे उस अनजान सज्जन को अपने सुरक्षित ठिकाने को छोड़कर ग्रामीण इलाकों में जाकर उस चीज़ की तलाश नहीं करनी पड़ती जो उन्हें वहाँ रोके हुए है। कुछ ही मील दूर जाकर उन्हें अपना प्रिय ग्रामीण इलाका पूरी तरह बदला हुआ मिलता। फिलहाल, उन्हें वह इलाका वैसे ही याद है जैसा उन्होंने उसे प्यार किया था, जैसा हॉवर्ड लॉज आज भी उसे दर्शाता है। और एमरी परिवार, अपने पुराने घर में एक और निवासी के आने से परेशान होने के बजाय, इसे एक शुभ संकेत मानते हैं कि कोई इंसान नहीं बल्कि कोई और भी पहरा दे रहा है और नज़र रख रहा है, ठीक वैसे ही जैसे कोई रात का चौकीदार कीमती संपत्ति की रक्षा करता है। इससे उन्हें यह भरोसा मिलता है कि अगर उनके घर के पास कोई खतरा मंडरा रहा हो तो एक और जोड़ी आंखें और कान मौजूद रहेंगे। आज के ज़माने में ऐसे विचार पूरी तरह से निराधार नहीं हैं।

श्रीमती एमरी को बार-बार जिस बच्चे की सांसें सुनाई दे रही थीं, उसके बारे में हमें यह याद रखना चाहिए कि बीते वर्षों में बच्चों की मृत्यु दर आज की तुलना में कहीं अधिक थी। शिशु मृत्यु दर बहुत अधिक थी क्योंकि चिकित्सा विज्ञान अभी उस स्तर तक नहीं पहुंचा था जहां कई बीमारियों को रोका जा सके या उनकी मृत्यु दर को काफी हद तक कम किया जा सके।

उस समय बच्चा आज की तुलना में कहीं अधिक नाजुक होता था। शायद वह किसी पूर्व मालिक के बच्चों में से एक था, जिसे बुखार आया और उसकी मृत्यु हो गई।

लेकिन सीढ़ियों पर खड़े सज्जन का मामला अलग है। चूंकि घर की मालकिन ने ही उन्हें महसूस किया और उनका ध्यान अपनी ओर खींचा, इसलिए मेरा मानना है कि वह किसी महिला के बारे में सोच रहे थे। क्या वे अपनी सुविधाजनक जगह से यह देखने की कोशिश कर रहे थे कि कोई घर लौट रहा है या नहीं? क्या कोई घर से निकला था और क्या उस सज्जन का कुछ हिस्सा उसके साथ चला गया?

ऐसी बातों का केवल अनुमान ही लगाया जा सकता है; इस बात का कोई पुख्ता सबूत नहीं है कि वह कोई ऐसा सज्जन व्यक्ति था जिसे उसकी प्रेमिका ने छोड़ दिया था। कहानी को बढ़ा-चढ़ाकर पेश किए बिना, मुझे लगता है कि ऐसा ही हुआ होगा। अपने अनदेखे मेहमान को "दूसरी मंजिल की सीढ़ियों पर मौजूद व्यक्ति" के अलावा किसी और नाम से संबोधित न कर पाना शायद थोड़ा परेशान करने वाला है। लेकिन श्रीमती एमरी जानती हैं कि वह व्यक्ति मिलनसार है, और उनके लिए इतना ही काफी है।

*110

द ओकटन हॉन्ट

वर्जीनिया का ओकटन, वाशिंगटन डी.सी. के काफी करीब बसा एक बेहद शांत उपनगरीय इलाका है, जो पिछले कुछ वर्षों में धीरे-धीरे लेकिन निश्चित रूप से पूरी तरह ग्रामीण से थोड़ा उपनगरीय क्षेत्र में बदल गया है। वाशिंगटन में काम करने वाले कई लोगों ने इस इलाके में घर खरीदे हैं। घर अभी भी एक-दूसरे से काफी दूर हैं, और यहाँ का माहौल शांत और देहाती है। ओकटन से गुजरते समय मन को एक शांत और सौहार्दपूर्ण अनुभूति होती है। यहाँ के घर न तो विशेष रूप से भव्य हैं, न ही भयावह या किसी भी तरह से असाधारण। वाशिंगटन के केंद्र से यहाँ पहुँचने में केवल पैंतालीस मिनट लगते हैं, और ओकटन पहुँचने से पहले कई अन्य गाँवों से होकर गुजरना पड़ता है। इस प्रकार, यह इलाका राजधानी के जीवन की मुख्य धारा से अच्छी तरह अलग-थलग है, और दिखावट या आदतों के मामले में अतिवादी नहीं है।

जिस घर के बारे में हमें अभी तक पता नहीं था, वह रे परिवार का था। वर्जीनिया रे और उनके पति अल्बर्ट, हमारे दोस्तों, काउंटेस गर्ट्रूड डी'एमकोर्ट और उनकी बेटी निकोल (अब श्रीमती जैक्सन) के घर आए थे, जब उन्हें पता चला कि मैं उनके दोस्तों में से एक हूँ। उन्होंने मुझे वाशिंगटन में टेलीविजन पर देखा था और भूत-प्रेतों में मेरी रुचि के बारे में जानते थे। उनका मामला भी इसी श्रेणी में आता प्रतीत हुआ, और रे परिवार के मन में यह विचार आया कि क्या मैं उनकी "समस्या" पर एक नज़र डाल सकता हूँ। 11 मई, 1968 को आखिरकार मैं ऐसा कर पाया।

* * *

निकोल जैक्सन हमें ओकटन ले गईं—यहाँ "हम" से मेरा मतलब मेरी पत्नी कैथरीन और मैं हूँ। अभी तक हम किसी माध्यम को साथ नहीं ला पाए थे, लेकिन मैं खुद यह जानना चाहता था कि आखिर ऐसा क्या हुआ था जिससे रे परिवार इतना परेशान हो गया था कि उन्हें मेरी मदद की ज़रूरत पड़ी। लगभग पैंतालीस मिनट बाद हम एक सुंदर ग्रामीण सड़क पर पहुँचे, जिसके अंत में वह घर था। घर परिसर के अंदर ही था, और जैसे ही हम आगे बढ़े, हमने बाईं ओर एक बड़ा सा खलिहान देखा। बाद में हमें पता चला कि उस खलिहान का घर में चल रही घटनाओं से कितना गहरा संबंध था।

श्रीमान और श्रीमती रे तथा कई बच्चे और रिश्तेदार हमारा स्वागत करने के लिए इकट्ठा हुए थे। कुछ देर हाथ मिलाने के बाद हमें नीचे के बैठक कक्ष में ले जाया गया और तरह-तरह के रस पिलाकर हमारा स्वागत किया गया। मई के महीने के हिसाब से मौसम सुहाना था, और जलपान काफ़ी अच्छा लगा। जब हमारे आगमन का उत्साह थोड़ा शांत हुआ, तो मैंने घर में पहले से रह चुके लोगों को पास आने के लिए कहा ताकि मैं उनसे कुछ सवाल पूछ सकूँ। बाकी लोगों से मैंने दूर रहने का अनुरोध किया ताकि मैं बिना किसी रुकावट के स्थिति को समझ सकूँ। इतने सारे लोगों से भरे कमरे में, चाहे वे युवा हों या वृद्ध, यह बहुत ज़रूरी होता है।

अल्बर्ट बार्टो रे अब सेवानिवृत्त हो चुके हैं और देखने में एक ऐसे व्यक्ति लगते हैं जो अपने तौर-तरीकों में रम चुके हैं, ग्रामीण जीवन से प्रसन्न हैं और असामान्य घटनाओं से विशेष रूप

से विचलित नहीं होते। उनकी मधुर आवाज और धीमी चाल मुझे एक सामान्य व्यक्ति की पहचान कराती है, न कि किसी रहस्यवादी या उन्मादी व्यक्ति की जो अवास्तविक घटनाओं को गढ़ने की प्रवृत्ति रखता हो।

वर्जीनिया रे ने भी बहुत ठोस राय दी, और रे दंपति अपने अनुभव से बिल्कुल भी भयभीत नहीं थे। बात बस इतनी थी कि घर में क्या है, यह जानना और संभव हो तो उसे हटा देना। लेकिन अगर मैं नहीं आती, तो वे घर में ही रहते—कम से कम मई में तो उन्हें ऐसा ही लग रहा था।

जब हम वहाँ गए, तब तक वे लगभग छह साल से इस घर में रह रहे थे। उन्हें यह घर पसंद था; वे इसे एक आरामदायक पुराना घर मानते थे। उन्हें इसके इतिहास या पृष्ठभूमि के बारे में कुछ भी पता नहीं था, सिवाय इसके कि घर को सहारा देने वाली लकड़ियाँ पुराने लट्ठों की थीं और उनमें लकड़ी के खूंटे लगे हुए थे। यहाँ तक कि छत की शहतीरें भी लट्ठों की बनी थीं। इससे संकेत मिलता है कि घर कम से कम सौ साल पहले बना होगा।

* * *

जब मैंने इमारत का निरीक्षण किया तो मुझे वह सुखद लगी और उसमें किसी भी तरह की भयावहता नहीं थी। ऊपरी मंजिल तक जाने वाली सीढ़ियाँ चौड़ी थीं और ऊपर के शयनकक्ष आरामदायक और आकर्षक थे। जिस ज़मीन पर घर बना था वह काफी बड़ी थी—शायद दो या तीन एकड़ या उससे भी अधिक। घर के बाहर सबसे अनोखी चीज़ घर के बाईं ओर स्थित बड़ा पुराना खलिहान था, और घर के सामने एक पत्थर था जो देखने में प्राकृतिक नहीं लग रहा था। ध्यान से देखने पर मुझे लगा कि कहीं यह किसी भारतीय का समाधि-पत्थर तो नहीं है, या शायद किसी प्रकार की भारतीय वेदी तो नहीं है। यह देखने में इतना नियमित लग रहा था कि मानो इसे प्रकृति ने ही तराशा हो। रे परिवार को इस बात का कोई अंदाजा नहीं था कि यह उनके बगीचे में कैसे आया, न ही उन्हें खलिहान के इतिहास के बारे में कोई विशेष जानकारी थी। वे बस इतना जानते थे कि खलिहान और घर दोनों पुराने थे और बहुत समय पहले यह ज़मीन वास्तव में भारतीय क्षेत्र थी। लेकिन इस क्षेत्र के आसपास की अधिकांश ज़मीन भी ऐसी ही थी, इसलिए यह तथ्य कि यहाँ पहले भारतीय रहते थे, कोई बहुत आश्चर्यजनक बात नहीं है।

रे परिवार ने जून 1962 में स्टेटन नामक परिवार से यह घर खरीदा था। स्टेटन परिवार उसी वर्ष अक्टूबर तक वहीं रहा, उसके बाद ही रे परिवार उसमें रहने आया। जिन घटनाओं के कारण उन्हें मेरी मदद लेनी पड़ी, उनके बाद रे परिवार ने स्वाभाविक रूप से अपने घर के बारे में कुछ पूछताछ की। श्रीमती रे ने पड़ोसियों से इस बारे में बात करने की कोशिश की, लेकिन कोई ठोस जानकारी मिलना मुश्किल था। हालांकि, पूर्व मालिक की बेटी ने यह स्वीकार किया कि घर में कुछ घटनाएं हुई थीं, लेकिन उसने विस्तार से बताने से इनकार कर दिया।

हालांकि, रेज़ परिवार के उस जगह पर आने से पहले ही, उनके साथ अजीबोगरीब घटनाओं का सिलसिला शुरू हो गया था।

* * *

“एक दिन मैं यहाँ आया,” श्री रे ने बताया, “और घर खुला हुआ था। मैंने घर को ताला लगा दिया, और क्योंकि घर अभी भी खाली था, मैं यहाँ हफ्ते में दो-तीन बार आकर इसे देखता था। फ्रैंक पैनेल, मेरा एक दोस्त जो काउंटी में काम करता है और साथ ही रियल एस्टेट का कारोबार भी करता है, ने एक दिन मुझे फोन किया और कहा कि क्या मैं उससे कहीं मिल सकता हूँ, उसके पास एक अनुबंध है जिसे वह चाहता है कि मैं पढ़ लूँ। मैंने उसे बताया कि मैं 4:30 बजे तक यहाँ पहुँच जाऊँगा, इसलिए वह मुझसे यहाँ मिला। यह नवंबर के पहले भाग में था। हम झील की ओर गए—यहाँ पीछे एक झील है—हम चारों ओर घूमे और लगभग अंधेरा होने पर घर में प्रवेश किया। इस मेंटलपीस के ऊपर दो लाइटें थीं जो स्विच से चलती थीं, और हमने वह लाइट जला रखी थी। मैं अनुबंध पढ़ रहा था, और वह मेरे साथ यहाँ खड़ा था, तभी हमने ऊपर किसी के चलने की आवाज सुनी। यह किसी व्यक्ति की आवाज लग रही थी। तो मैंने फ्रैंक की ओर देखा और कहा, 'फ्रैंक, यह क्या है?' उसने कहा, 'ऊपर कोई है।' मैंने कहा, ‘ऐसा हो ही नहीं सकता, घर तो बंद है।’ उसने कहा, ‘फिर भी, ऊपर कोई तो है।’ हम ऊपर गए, पर कोई नहीं दिखा और वापस नीचे आ गए। मैंने अनुबंध पढ़ना शुरू ही किया था कि तभी हमें फिर से किसी के चलने की आवाज़ सुनाई दी। हम सीढ़ियों पर आधे रास्ते तक गए ही थे कि लगा जैसे कोई हमारे सिर के पास से गुज़र गया हो। हम नीचे आ गए, और फ्रैंक ने कहा कि उसे आवाज़ें सुनाई दे रही थीं।

“इसके बाद जो हुआ वो ये था कि थैंक्सगिविंग के बाद एक शुक्रवार को मेरा बेटा अल्बर्ट जूनियर और मैं यहाँ आए। हमारे घर में तोड़फोड़ हुई थी, बच्चों ने .22 राइफल से कुछ खिड़कियाँ तोड़ दी थीं। इसलिए हमने यहीं रात बिताने का फैसला किया। हमने कुछ कैंपिंग का सामान निकाला और डाइनिंग रूम में सो गए। करीब 8:30 बजे उसने कहा, ‘पापा, क्या आप एक कप कॉफी या कुछ और पीना चाहेंगे?’ वो कार लेकर कैंप वाशिंगटन चला गया। खैर, जब वो चला गया, मैं यहाँ लेटा हुआ पढ़ रहा था, रीडिंग लाइट जलाकर। अचानक मुझे रसोई में कुछ आवाज़ सुनाई दी, ऐसा लगा जैसे कोई दर्द से कराह रहा हो— तरह-तरह की आवाज़ें निकाल रहा हो। मैं उठा और अंदर गया, लाइट जलाई, और आवाज़ बंद हो गई। हमारे पास एक छोटा फॉक्स टेरियर कुत्ता था जो किसी भी आवाज़ पर भौंकता था। जब आवाज़ दोबारा शुरू हुई तो मैंने उसे बुलाया और वो सीधे मेरे पास आ गई, लेकिन उसने डर के मारे न तो भौंका और न ही गुर्राया। मैं जितनी देर खड़ा रह सकता था, खड़ा रहा, फिर उठा और दोबारा रसोई में गया, लेकिन मुझे कुछ नहीं मिला। मुझे कुछ भी नहीं दिखा। मैं तहखाने में गया। मैंने पूरे घर में तलाशी ली। मैंने पूरे आंगन में तलाशी ली। मैं हर जगह गया। वहां कोई नहीं था।

मैंने बीच में टोकते हुए पूछा, "क्या यह मानवीय आवाज जैसी लग रही थी?"

"जी हाँ, महोदय, ऐसा लगा जैसे कोई कराह रहा हो। मेरे रोंगटे खड़े हो गए।"

और जब आपका बेटा वापस आया?

“हमने खाना खाया और सो गए। मैंने उसे उस आवाज़ के बारे में नहीं बताया जो मैंने सुनी थी। उसने मुझे सुबह करीब 3 बजे जगाया और बताया कि उसे कुछ आवाज़ें सुनाई दे रही थीं। उसने किसी के कराहने की आवाज़ सुनी थी—ज़ाहिर है, वही आवाज़ जो मैंने सुनी थी।”

“क्या आपके यहाँ आने से पहले आपको कोई और अनुभव हुए थे?” मैंने पूछा। स्पष्टतः ये घटनाएँ किसी मानवीय शक्ति पर निर्भर नहीं थीं।

“मेरी विवाहित बेटी मार्था, जो उस समय कॉलेज में पढ़ रही थी, एक रात मेरे साथ घर देखने आई। वह ऊपर चली गई, जबकि मैं थर्मोस्टेट चेक करने के लिए इस कमरे में गया। बहुत ठंड थी, और मैं यह सुनिश्चित करना चाहता था कि हीटर चालू और बंद हो रहा है या नहीं। अचानक वह चीखी और सीढ़ियों से नीचे भागी, और बोली, 'पापा, किसी चीज़ ने मुझे टक्कर

मार दी!' हम ऊपर गए, और हर बार जब मैं एक कदम रखता, वह मेरे ठीक पीछे एक कदम रखती, लगभग हर बार मुझे कुचलते हुए। इसलिए हमने पूरे घर में तलाशी ली, लेकिन कुछ नहीं मिला।"

"मार्टिन नाम का मेरा एक चचेरा भाई उस समय फोर्ट बेलवोइर में तैनात था, और वह सप्ताहांत में आता था। वह हमारे साथ रात का खाना खा रहा था, और हम इस बारे में बात करने लगे। वह हँसा और बोला, 'अरे, मैं ऐसी किसी चीज़ पर विश्वास नहीं करता।' तो उसने मेरे बेटे से कहा, 'क्यों न हम दोनों वहाँ एक रात बिताएँ? हम तुम्हारे पिताजी को दिखा देंगे कि उन्हें कुछ नहीं पता।' तो वे आ गए। सुबह लगभग 3 बजे उन्होंने मुझे यहाँ कैंप वाशिंगटन से फोन किया, और वे दोनों एक ही समय पर फोन पर बात कर रहे थे। मुझे उनकी बात समझ नहीं आ रही थी, और आखिरकार मैंने उन्हें चुप कराया। मार्टिन बार-बार कह रहा था, 'मुझे विश्वास है, मुझे विश्वास है!' मैंने कहा, 'तुम्हें किस पर विश्वास है?' और उसने कहा, 'उस घर में कुछ है।' उन्हें 'चीजों' के चलने और अलग-अलग आवाज़ें सुनाई दे रही थीं। मैं उस समय स्लीपी हॉलो में रहता था, इसलिए मैंने कहा, 'मैं तुमसे वहाँ मिलूँगा।' उन्होंने कहा, 'हम तुमसे घर पर नहीं मिलेंगे। हम तुमसे मिलेंगे।' ड्राइववे पर।' मैंने घर में ताला लगा दिया। दो हफ्ते बाद, लड़कों का एक समूह—हाई स्कूल के लड़के और मेरा बेटा—रात बिताने के लिए आने का फैसला किया। लेकिन सुबह लगभग 3 बजे, दरवाजे पर ज़ोर से दस्तक हुई, और जब मैंने दरवाजा खोला, तो पाँचों लड़के अंदर घुस आए, सभी उत्साहित थे, सभी एक साथ बातें कर रहे थे। वे रात भर रुकने वाले थे, लेकिन सुबह लगभग 2:30 बजे चले गए। उन्होंने बहुत शोर सुना; उन्होंने कुछ चीज़ों के चलने की आवाज़ सुनी। उस समय ज़मीन पर बर्फ थी। लेकिन जब उन्होंने बे विंडो के पर्दे उठाए, तो वहाँ एक आदमी—एक बड़ा आदमी—भूसे की टोपी पहने, बाहर खड़ा होकर उन्हें देख रहा था। उन्होंने रस्सी ढीली की और पर्दा नीचे गिर गया। थोड़ी देर में उन्होंने फिर से बाहर देखने की हिम्मत जुटाई। वे खलिहान के बाहर एक आदमी को खड़ा देख सकते थे। उन्होंने उस खलिहान के सफेद दरवाजे देखे, और ठीक सामने वे एक आदमी की आकृति देख सकते थे। यह बहुत ज़्यादा था। वे बाहर भागे, कार में बैठे, और जितनी तेज़ी से हो सके गाड़ी चलाकर चले गए। मेरे पास यहां आकर घर को बंद कर देना और सारी बत्तियां बुझा देना।

“1964 की उस बसंत ऋतु में, घर में दीमक लग गई थी। मेरे यहाँ उमर हेरिंगटन नाम का एक आदमी काम करता था। श्री हेरिंगटन ने घर के चारों ओर एक खाई खोदी और लगभग चार-पाँच दिन तक काम किया। हमने नींव, घर, खलिहान और गैराज के चारों ओर क्लोरडेन डाला। हमने झाड़ियाँ हटा दीं। मैं शुक्रवार को लगभग 11:30 बजे उसे भुगतान करने आया। जैसे ही मैं गाड़ी लेकर पहुँचा, उसने कहा, ‘श्री रे, क्या आप थोड़ी देर पहले यहाँ नहीं थे? मैंने आपको अंदर आते सुना। मैंने आपको इधर-उधर घूमते सुना।’ मैंने कहा, ‘माफ़ कीजिए, मैं नहीं था।’ ‘यह अजीब बात है,’ उसने जवाब दिया। ‘पिछले दिन मैंने किसी के कराहने की आवाज़ सुनी, जैसे कोई बहुत दुखी हो।’”

मैंने रे से पूछा, "क्या तुमने कभी कुछ देखा?"

“हां, दो बार। 1965 में एक रात मैं घर के निचले हिस्से में स्थित इस कमरे में रुका था और टीवी देखने के बाद सोफे पर सो गया। मेरी पत्नी ऊपर चली गई। सुबह करीब 2 बजे किसी चीज ने मुझे जगा दिया। मुझे झनझनाहट की आवाज सुनाई दी। ऐसा लगा जैसे कांच की विंड चाइम बज रही हो। मैं सोफे पर बैठ गया और कोने में मुझे हवा में तैरती हुई छोटी-छोटी रोशनी दिखाई दीं। ऐसा लग रहा था जैसे वे किसी चीज का आकार लेने की कोशिश कर रही हों। यही पहली बार था जब मैं सचमुच डर गया। मैंने लाइट जलाई और वह रोशनी गायब हो गई।”

और वह दूसरा अवसर कौन सा था जब आपने कुछ असामान्य देखा?

“यह घटना ऊपर वाले बेडरूम में हुई, जहाँ मैं और मेरी पत्नी सोते हैं, दो-तीन महीने बाद। मैं जागा और मुझे लगा कि मेरा बेटा मेरे बिस्तर के पास खड़ा है। मैंने कहा, ‘बार्टो, तुम यहाँ क्या कर रहे हो?’ कोई जवाब नहीं मिला। मैंने फिर से कहा; मुझे एक व्यक्ति की आकृति और चेहरा दिखाई दिया! मैंने लाइट जलाई, लेकिन वहाँ कोई नहीं था। फिर मैं उठा और अपने बेटे के कमरे में गया, और वह वहाँ गहरी नींद में सो रहा था।”

"क्या आपकी पत्नी ने वह प्रेत देखा?"

“मुझे ऐसा नहीं लगता, लेकिन वह मुझे बार-बार कह रही थी कि खलिहान में कुछ है। खलिहान लगभग डेढ़ सौ फीट दूर है। मैं निर्माण व्यवसाय में हूँ, और एक दिन मैं एक निजी स्कूल के लिए योजनाएँ बना रहा था, और बरामदे पर काम कर रहा था।”

“अचानक, मुझे खलिहान में औजारों के चलने जैसी आवाज़ सुनाई दी, मानो उन्हें इधर-उधर फेंका जा रहा हो! मैं बाहर गया और दरवाज़ा खोला, लेकिन सब कुछ अपनी जगह पर था। मैं उस दोपहर तीन बार वापस आया। मुझे आवाज़ सुनाई दी, मैं बाहर गया, और सब कुछ अपनी जगह पर था। मेरे पास तीन सूअर हैं, और मैंने उन्हें खलिहान के निचले हिस्से में रखा है। श्री हेरिंगटन हर सुबह आकर सूअरों को चारा खिलाते थे। एक सुबह उन्होंने कहा, 'अगर तुम मेरे पीछे-पीछे घूमना और अंधेरे में खड़े रहना और कुछ न कहना बंद नहीं करोगे, तो मैं इन सूअरों को चारा खिलाना बंद कर दूंगा।' मैंने कहा, 'श्री हेरिंगटन, मैं यहाँ बाहर नहीं खड़ा था।' उन्होंने कहा, 'मुझे पता है, तुम वहाँ थे!'”

मैंने पूछा, "घर के आसपास खुदाई करते समय क्या आपको कभी मिट्टी में कोई असामान्य चीज मिली है?"

श्री रे ने सिर हिलाया। “हाँ, मुझे कुछ चीज़ें मिलीं—टूटे हुए पुराने मिट्टी के बर्तन, और बगीचे में मुझे कुछ ऐसा मिला जो मुझे लगता है कि एक कब्र का पत्थर हो सकता है। यह एक काला पत्थर है; मौसम की मार झेल चुका है, लेकिन यह घास से ढका हुआ था और उस जगह की घास सूखती जा रही थी।”

आपने उसका क्या किया?

“मैंने यह देखने के लिए खुदाई की कि यह क्या है, लेकिन मैंने इसे वहीं छोड़ दिया। मैंने घास हटाई, और वहाँ एक पत्थर था, एक चौकोर, तराशा हुआ पत्थर।”

"क्या यह घटना इस पत्थर के मिलने के बाद शुरू हुई, या इससे पहले?"

“अरे नहीं, यह उससे पहले शुरू हुआ था। दो-तीन साल बाद मुझे वह पत्थर मिला था।”

"पत्थर मिलने के बाद क्या कोई फर्क पड़ा?"

“नहीं, ऐसा नहीं लगा। फिर, जब मेरी चाची, अल्बर्टा बार्बर, हमसे मिलने आई थीं, तो उनका टखना टूट गया। मुझे उनके सोफे के बगल में एक चटाई पर सोना पड़ा ताकि अगर उन्हें बाथरूम जाना हो, तो मैं उनकी मदद कर सकूँ। एक रात, लगभग 1 बजे, दीवार पर दस्तक हुई और मैं जाग गया। उन्होंने पूछा, ‘क्या है?’ मैं उठा और लाइट जलाई, लेकिन कुछ नहीं दिखा। दो बार ऐसा हुआ कि मैं और मेरी पत्नी शाम को बाहर जाने के लिए तैयार हो रहे थे, तभी बरामदे के दरवाजे पर ज़ोर से दस्तक हुई। वर्जीनिया ने मुझसे कहा, ‘नीचे जाकर देखो

कौन है।' मैं नीचे गया, और वहाँ कोई नहीं था। एक बार, ज़्यादा समय पहले नहीं, मैं ऊपर बाईं ओर के सामने वाले बेडरूम में सो रहा था, और मुझे लगा कि वहाँ कुछ है; मुझे किसी के साँस लेने की आवाज़ सुनाई दे रही थी। मैं उठा और लाइट जलाई, लेकिन कोई नहीं दिखा। यह लगभग 3 बजे का समय था। कार में मेरे कुछ कागज़ थे। मैं बाहर गया, कागज़ लिए और दरवाज़ा ज़ोर से बंद कर दिया। कार का दरवाजा। उसी क्षण कुछ भंडारण शेड के किनारे ऊपर की ओर चला गया। मुझे नहीं पता कि वह क्या था।

“यह ऊपर गया—किस दिशा में?”

“मुझे शोर सुनाई दिया, और मैंने देखा कि कोई चीज उस शेड के ऊपर गई और फिर उड़ गई। इससे मैं थोड़ा डर गया। मैं जागता रहा और बाकी रात काम करता रहा।”

“क्या कोई और असामान्य घटनाएँ हुईं?” मैंने पूछा।

“अक्सर सीढ़ियों के ऊपर लगे हीटर का स्विच बंद रहता है, और घर ठंडा होने लगता है। साथ ही, अक्सर जब मैं कार से उतरकर अंदर आने लगता हूँ, तो मुझे अपने पीछे किसी के चलने की आवाज़ सुनाई देती है। चार-पाँच अलग-अलग लोगों को ऐसा अनुभव हो चुका है।”

"वे दूसरे लोग कौन थे जिन्होंने इस व्यक्ति को अपने पीछे चलते हुए सुना?"

“एक तो मेरा बेटा। फिर बॉब, जो हमारे भतीजे का दोस्त था। बॉब घर आकर अपनी कार पर काम करने चला जाता था और हर शाम खाने में देर कर देता था। एक रात वह गुस्से में घर आया और बोला, 'तुम लोग बाहर जाकर इधर-उधर क्यों नहीं घूमते, बस अंदर आकर काम क्यों नहीं करते?' हमने उसकी तरफ देखा और उसे यकीन दिलाया कि हम ऐसा नहीं कर रहे थे।”

क्या उसने किसी को देखा?

"नहीं, उसने किसी को नहीं देखा, लेकिन वह उन्हें बजरी पर चलते हुए सुन सकता था, खलिहान और गैरेज के बीच में जहाँ वह काम कर रहा था।"

“ठीक है, बहुत-बहुत धन्यवाद,” मैंने कहा और रे की बेटी की ओर मुड़ गया, जो ध्यान से सुन रही थी।

"श्रीमती बोनी विलियम्स, इस घर में आपके क्या अनुभव रहे?"

* * *

“जब मैं सत्रह साल का था, तीन साल पहले, एक रात मैं इसी सोफे पर सो रहा था। सुबह के लगभग एक बजे थे, और थोड़ी देर पढ़ने के बाद मैंने लाइट बंद कर दी थी। मेरे माता-पिता ऊपर सो रहे थे। मैं वहाँ लेटा हुआ था, और मुझे नींद नहीं आ रही थी, तभी मेरी नज़र इस कोने में एक रोशनी पर पड़ी। मैंने उस पर ध्यान नहीं दिया, बस करवट बदल ली। करवट बदलते ही मैंने सोफे के ठीक ऊपर बनी दो खिड़कियों से बाहर देखा, और बाहर कोई रोशनी नहीं थी। वह बहुत अंधेरी रात थी। इसलिए मुझे जिज्ञासा हुई, और मैं वापस करवट बदलकर उस रोशनी को देखने लगा, और वह अभी भी वहीं थी। मैं उठ बैठा, लाइट जलाई, लेकिन कुछ नहीं था। इसलिए मैंने लाइट बंद कर दी और अपने सिर पर कंबल ओढ़ लिया। लगभग पाँच मिनट बाद, मैंने सोचा, चलो फिर से देख लेते हैं। वह रोशनी अभी भी वहीं थी। वह एक अजीब सी रोशनी थी, टॉर्च की रोशनी जैसी नहीं, बल्कि कुछ पारदर्शी, झिलमिलाती और धड़कती हुई सी।”

“उसका रंग क्या था?”

"यह एकदम सफेद था।"

क्या इसका कोई आकार था?

"ऐसा लग रहा था; जैसे-जैसे उसमें कंपन हो रही थी, उसका आकार बढ़ता जा रहा था। लेकिन जब ऐसा होने लगा, तो मैं डर गया और मैंने लाइट जला दी, लेकिन वहां कुछ भी नहीं था।"

"और कुछ?"

“यह उस समय की बात है जब मेरे चचेरे भाई टॉमी यंग और बॉब ब्रिचार्ड यहाँ थे। सभी लोग खाने की मेज पर बैठे थे, और मेरी प्रेमिका कैथी मरे और मैं घर से निकल रहे थे क्योंकि हम उसके घर पर खाना खा रहे थे। हम पीछे के दरवाजे से बाहर निकले और लगभग आधे रास्ते तक ही पहुँचे थे कि हमें कराहने की आवाज़ सुनाई दी। ऐसा लग रहा था कि यह बाड़ के पास झाड़ियों से आ रही है। मैंने कहा, 'चलो,' और हम चलने लगे लेकिन लगभग चार कदम चलने के बाद ही यह आवाज़ फिर से शुरू हो गई। खैर, जब उसने दूसरी बार यह आवाज़ सुनी तो

वह घर की ओर दौड़ पड़ी, और मैंने भी सोचा कि मैं वहाँ अकेला नहीं खड़ा रहूँगा, इसलिए मैं भी दौड़कर घर के अंदर चला गया।”

"क्या यह किसी महिला की आवाज थी या किसी पुरुष की?"

एक आदमी।

"क्या आपके पास कोई अन्य दृश्य अनुभव हैं?"

"नहीं, लेकिन जब मैं घर में अकेली होती हूँ और नीचे बैठी होती हूँ, तो मैंने कई बार ऊपर से कुछ आवाज़ें सुनी हैं। ऊपर कोई घूम रहा था।"

"क्या वास्तव में वहां कोई था?"

मैं ऊपर गया। वहां कुछ नहीं था।

मैंने पूछा, "क्या आपको कभी किसी 'मौजूदगी' का एहसास हुआ?"

“एक रात,” बोनी ने जवाब दिया, “सुबह 1 बजे, हम आत्माओं से संपर्क करने की कोशिश कर रहे थे। चूंकि ऊपर के कमरे में ऐसी अनुभूति ज़्यादा होती है, इसलिए हम मेरे भाई के कमरे में चले गए। हम बिस्तर के किनारे बैठे थे, मेरा भाई अलमारी के सबसे पास था, मेरी चाची जैकी बर्जिन मेरे बगल में थीं और मैं दूसरी तरफ थी। हम पूरी एकाग्रता से ‘उस चीज़’ के प्रकट होने का इंतज़ार कर रहे थे। तभी मेरे भाई ने कहा, ‘क्या तुम्हें भी वही दिख रहा है जो मुझे दिख रहा है?’ और अलमारी में एक टिमटिमाती रोशनी दिखाई दी। वह बहुत हल्की थी।”

मैंने बोनी को धन्यवाद दिया और उनकी मां, श्रीमती वर्जीनिया रे से यहां के उनके अपने अनुभवों के बारे में पूछताछ की।

* * *

“सबसे पहले,” उसने गंभीरता से कहा, “मेरा मानना है कि खलिहान और घर के बीच कोई संबंध है। सबसे पहले मैंने खलिहान में औजारों या किसी और चीज के टकराने की आवाजें सुनीं। मैंने ये आवाजें घर के अंदर से सुनीं। फिर एक रविवार दोपहर को मुझे एक बहुत ही अजीब अनुभव हुआ। मेरी एक परिचित, श्रीमती रामसियर, और मैं सामने के बरामदे में खड़े होकर बातें कर रहे थे कि अचानक ऐसा लगा जैसे पूरा खलिहान ढह रहा हो। हम दोनों दरवाजे से बाहर भागे और बगल के आंगन में लगे मेपल के पेड़ तक पहुँच गए, लेकिन

खलिहान अभी भी खड़ा था। आवाज छज्जे के स्तर से शुरू हुई, जहाँ से दीवार नीचे आती है, और फिर सीधी रेखा में जंगल की ओर चली गई, और जंगल में जाते-जाते धीमी होती गई।"

"मुझे पता चला है कि आपकी माँ को भी यहाँ ऐसा ही अनुभव हुआ था?"

“मेरी माँ, श्रीमती बोनी यंग, पिछले जुलाई में मेरी बेटी मार्था की शादी के लिए यहाँ आई थीं। उन्होंने इस बारे में हमारी पहले कही किसी भी बात पर विश्वास नहीं किया। मैं उठी और अपने कमरे से बाहर निकली। मैंने देखा कि उनकी बत्ती जल रही थी, इसलिए मैंने दरवाज़े से झाँका। मेरा इरादा था कि मैं उन्हें अपने अनुभव के बारे में कुछ भी न बताऊँ, लेकिन उन्होंने कहा, 'क्या तुमने भूत की आवाज़ सुनी?' मैंने उनसे पूछा कि उन्होंने क्या सुना, और उन्होंने कहा कि उनके ठीक बगल वाले बेडरूम में उन्होंने सारा फर्नीचर हिलने की आवाज़ सुनी। उन्होंने सोचा, मार्था आधी रात को सारा फर्नीचर क्यों हिला रही है! फिर वह आवाज़ उस कमरे से निकलकर घर के एक तरफ, इस चिमनी की ओर गई, और फिर गायब हो गई।”

"वह क्या था, वह बात जो आपने खुद उसी समय सुनी थी जब आपकी माँ ने इस अनुभव को महसूस किया था?"

“मैं बोनी के कमरे में सो रहा था, जो वाकई गतिविधियों का केंद्र लगता है—खलिहान और बोनी का कमरा ही केंद्र हैं। मुझे अचानक एक बहुत तेज़ आवाज़ सुनाई दी—दूर से आती हुई तेज़ आवाज़। वह करीब आती जा रही थी, तेज़ होती जा रही थी और घर की ओर बढ़ रही थी। जब तक वह घर तक पहुँची, तब तक वह दो रूपों में प्रकट हो चुकी थी।”

“यह कैसा सुनाई दिया?”

"यह कोई धमाका नहीं था; यह बस एक तेज, धीरे-धीरे बढ़ती हुई आवाज थी।"

"क्या वह आवाज़ ऊँची थी या नीची?"

मैं कहूंगा कि यह उच्च की तुलना में निम्न के अधिक करीब है।

क्या आपने कोई आकृति या किसी भी प्रकार का चेहरा देखा?

“खैर, मैंने इसे देखा तो नहीं, लेकिन खिड़की तक पहुँचते-पहुँचते मुझे इस आवाज़ का एक अजीब सा रूप महसूस हुआ। अचानक ये दो आवाज़ें खिड़की से होते हुए सीधे मेरे बिस्तर तक आईं और 'व्रप, र्र्र' जैसी कर्कश आवाज़ें करने लगीं। ऐसा लग रहा था जैसे ये दो अलग-

अलग आवाज़ें हों। उस समय मैंने हिम्मत जुटाकर उससे बात करने की कोशिश की, लेकिन नहीं कर पाई। मैं उस समय तक बहुत डर चुकी थी। मैंने सोचा, मैं सो जाऊँगी, लेकिन सो नहीं पाई। आखिरकार, जब मुझे लगा कि आवाज़ कम हो गई है, तो मैं उठी और कमरे से बाहर चली गई। फिर मुझे माँ के अनुभव के बारे में पता चला।"

"क्या आपको घर में कोई असामान्य सपने आए हैं?"

“हाँ, लेकिन इस घर में नहीं। मेरी माँ के यहाँ आने से पहले मैं एक बार उनसे मिलने गई थी। आधी रात को मेरी नींद खुली और एक बहुत तेज़, स्पष्ट आवाज़ सुनाई दी, जिसने कहा, कुछ गड़बड़ है, अपना सामान पैक करो और यहाँ से चले जाओ! मुझे नहीं पता था कि आवाज़ यहाँ थी या वहाँ।"

“वह पुरुष था या महिला?”

“मुझे लगता है कि वह एक आदमी था। मैं उठी, कमरे में इधर-उधर घूमी और ध्यान देने का फैसला किया। मैंने उस दिन जाने की योजना नहीं बनाई थी, लेकिन मैंने बोनी को इसके बारे में बताया और हम उसी दिन घर चले गए।”

"लेकिन यह इस घर पर भी लागू हो सकता था।"

“हाँ, भले ही माँ का घर फ्लोरिडा में ग्यारह सौ मील दूर है। इस घर में आने के बाद पहली रात, मैं सोने गई। मुझे ऐसा लगा जैसे कोई चूहा बिस्तर के किनारे से शुरू हुआ और सीधे फर्श पर चला गया। लेकिन मैंने सोचा—खैर, वह चूहा नहीं था क्योंकि वह कहीं और नहीं गया। मैंने इस बारे में चिंता करने से इनकार कर दिया। फिर, एक या दो हफ्ते पहले, अप्रैल [1968] में, मेरे पति के भाई, गिल्बर्ट रे, यहाँ आए थे। वह बाथरूम से बाहर आए, जिसकी बत्ती बंद थी। उन्होंने मुझे पुकारा, ‘गिन्नी, क्या तुम एक मिनट के लिए यहाँ आ सकती हो? क्या तुम्हें वहाँ कुछ दिख रहा है?’ मैंने कहा, ‘हाँ, मुझे दिख रहा है।’ और हमारी वॉशिंग मशीन के ऊपर धातु की अलमारी पर फ्लोरोसेंट लाइट में एक ही लाइन में L-A-R-U लिखा हुआ था। और उसके नीचे धुंधला सा G और O बना हुआ था। अलमारी के किनारे पर एक छोटा सा निशान था। और फिर, अलमारी और खिड़की की चौखट के बीच, लगभग आठ इंच के संकरे क्षेत्र में, एक अमूर्त आकृति बनी हुई थी। चेहरा—भौंहें, नाक और मुंह, और चेहरा दीवार पर टेढ़ा-मेढ़ा बना हुआ था। वह निश्चित रूप से वहां था। हमने उसे धोकर साफ कर दिया। वह फ्लोरोसेंट पेंट जैसा लग रहा था। दो-तीन दिन बाद, बाथरूम में, मुझे डिओडोरेंट की बोतल के ढक्कन पर थोड़ा सा फ्लोरोसेंट पेंट मिला। हम यही सोचते रहे हैं कि यह किसी ने किया होगा, किसी शारीरिक व्यक्ति ने। लेकिन हमें बिल्कुल पता नहीं है कि यह किसने किया।

"क्या परिवार में किसी ने ऐसा किया?"

वे मना कर देते हैं।

क्या घर में कोई बच्चे थे?

"नहीं।"

“क्या इसका कोई तार्किक कारण नहीं है?”

"हमारे पास इसका कोई तार्किक कारण नहीं है।"

"क्या आपने फ्लोरोसेंट लाइट देखी?"

"तीन लोगों ने इसे देखा।"

* * *

तो वहाँ सिर्फ़ आवाज़ों से कहीं ज़्यादा कुछ था। मैंने L-A-R-U-G-O अक्षरों का कुछ अर्थ निकालने की कोशिश की, यह मानते हुए कि वे फिलहाल अलौकिक मूल के थे। यह अफ़सोस की बात थी कि फ्लोरोसेंट पेंट अब जाँच या विश्लेषण के लिए उपलब्ध नहीं था। बेशक, यह साधारण, प्राकृतिक फ्लोरोसेंट पेंट हो सकता था। लेकिन फिर भी, भौतिकीकरण के संबंध में अक्सर पाया जाने वाला एक्टोप्लास्टिक पदार्थ भी इसी तरह के फ्लोरोसेंट गुण रखता है और प्रकाश के संपर्क में आने पर अंततः घुल जाता है। रेज़ ने जो वर्णन किया था वह किसी भी तरह से नया या अनोखा नहीं था। सैन फ्रांसिस्को में एक प्रयोग में परीक्षण स्थितियों के तहत ली गई तस्वीरों में, जिन्हें मैंने 'साइचिक फोटोग्राफी—थ्रेशहोल्ड ऑफ ए न्यू साइंस' में प्रकाशित किया है, मैंने पोलरॉइड फिल्म पर दिखाई देने वाली इसी तरह की लिखावटें भी दिखाई हैं। एक विशेष उदाहरण में, दिवंगत जॉन एफ. कैनेडी के चित्र के बगल में बड़े अक्षरों में 'WAR' शब्द दिखाई देता है।

यह पदार्थ हरे-सफेद रंग का, साबुन जैसा, मुलायम पदार्थ प्रतीत होता है, और इसमें एक चमक है, हालांकि यह व्यावसायिक फ्लोरोसेंट पदार्थ की चमक जितनी तीव्र नहीं है।

मैंने घर के सभी सदस्यों से दोबारा पूछताछ की। इसमें कोई शक नहीं था कि किसी ने भी चमकीले अक्षरों से दीवारों पर पेंट करके उनके साथ कोई शरारत नहीं की थी, और न ही रे परिवार की जानकारी के बिना कोई बाहरी व्यक्ति घर में घुसकर ऐसा कर सकता था। इस बात से मैं पूरी तरह आश्वस्त और संतुष्ट हो गया। इन परिस्थितियों में, लेखन की अलौकिक उत्पत्ति ही सबसे अधिक संभावित व्याख्या थी।

लेकिन लारुगो कौन था, या क्या इसका अर्थ लारु और 'गो' शब्द का संयोजन था? मुझे एहसास हुआ कि मुझे एक कुशल माध्यम के साथ घर लौटना होगा, अधिमानतः समाधि अवस्था में ले जाने वाले माध्यम के साथ, ताकि विभिन्न घटनाओं के पीछे छिपी शख्सियत के

बारे में और गहराई से पता लगाया जा सके। मुझे पूरा यकीन था कि रे के घर के अंदर और आसपास एक विक्षिप्त आत्मा का वास था। ऐसा प्रतीत होता है कि खलिहान से भी कुछ संबंध था, जिससे यह संकेत मिलता है कि विक्षिप्त आत्मा घर का मालिक नहीं थी, बल्कि शायद कोई ऐसा व्यक्ति था जो वहाँ काम करता था। अंत में, रे परिवार द्वारा जमीन में पाया गया कब्र के पत्थर जैसा दिखने वाला पत्थर यह दर्शाता है कि शायद घर के परिसर में किसी को दफनाया गया था।

हम खलिहान की ओर चले, जो काफी बड़ा और अंधेरा निकला। यह स्पष्ट था कि यह हाल ही में नहीं बना था, और इसमें देहाती घरों के खलिहानों में पाए जाने वाले आम औजार, उपकरण और अन्य सामान भरे हुए थे। खलिहान के अंदर एक अजीब सी उमस भरी ठंड थी, जिसका कारण बाहर के गर्म मौसम को देखते हुए मेरी समझ से परे था। भले ही खलिहान कई दिनों तक दिन-रात बंद रहा हो, फिर भी अंदर की उमस भरी ठंडक—खासकर निचले हिस्से की—ऐसी परिस्थितियों में पैदा होने वाली ठंडक से कहीं अधिक थी।

* * *

दुर्भाग्यवश, मैं मामले की आगे जांच करने के लिए तुरंत किसी माध्यम के साथ वापस नहीं आ सका। 1968 की शरद ऋतु के आसपास, रे परिवार और हमारे आपसी मित्रों के माध्यम से मुझे पता चला कि वे अंततः घर छोड़ देंगे। किसी भी विवरण को जाने बिना, मुझे लगा कि श्रीमती रे से संपर्क करना मेरे लिए अत्यंत आवश्यक है।

मैंने 31 अक्टूबर को उन्हें फोन किया और हैलोवीन और उनके भूतिया अनुभवों के बीच संभावित संबंध के लिए माफी मांगी, साथ ही घर और खलिहान में स्थिति के बारे में भी पूछा। मैंने श्रीमती रे को यह भी बताया कि मैं 7 नवंबर को दोपहर में एक माध्यम, श्रीमती एथेल जॉनसन मेयर्स के साथ घर पर आऊंगा। यह उनके लिए वाकई अच्छी खबर थी क्योंकि घटनाएँ जारी थीं और मेरी पहली मुलाकात के बाद से उनमें कोई कमी नहीं आई थी।

शुरुआत में, श्रीमती वर्जीनिया रे को रात में बढ़ती बेचैनी के कारण लगभग पाँच महीनों तक हॉल की बत्ती जलाकर सोना पड़ता था। गर्मियों की एक दोपहर, पड़ोस में रहने वाले दो छोटे लड़के उनके दरवाजे पर आए और खलिहान में हो रही आवाज़ों के बारे में पूछने लगे। श्रीमती

रे झपकी ले रही थीं और उन्होंने कुछ नहीं सुना था, लेकिन लड़कों ने ज़ोर देकर कहा कि खलिहान में कुछ हो रहा है। उन्होंने मिलकर जाँच की, तो पाया कि सब कुछ अपनी जगह पर था और शांति थी। श्रीमती रे ने बताया, "हमारे यहाँ चमगादड़, अबाबील हैं और कबूतरों की एक कॉलोनी बन रही थी, जिनमें से कबूतरों को हम नहीं चाहते। मेरा बेटा, जो अब इक्कीस साल का है, छुट्टियों में घर आया हुआ था जब उसने कबूतरों को भगाने के लिए राइफल का इस्तेमाल करने का फैसला किया। जब उसने ऐसा किया, तो खलिहान की दीवारों पर एक अजीब सी रोशनी दिखाई दी। उसने उसे एक नज़र देखा और उसके बाद खलिहान में समय बिताना छोड़ दिया।"

शायद सबसे आश्चर्यजनक अनुभवों में से एक रे परिवार के नए दामाद के साथ हुआ, जो जून 1968 में गर्मियों की छुट्टियां बिताने आए थे। उन्होंने इस घटना के बारे में कई कहानियां सुनी थीं, लेकिन उन्हें किसी पर भी विश्वास नहीं था। एक रात, सुबह पौने चार बजे के आसपास, वे खिड़की के बाहर ज़ोर से खटखटाने की आवाज़ से जाग गए। फिर आवाज़ कमरे में भी सुनाई दी, और उन्होंने देखा कि यह एक तेज़ गूंज थी जो किसी विंड चाइम की झंकार जैसी आवाज़ के साथ मिली हुई थी। उसी रात श्रीमती रे भी एक ऐसी आवाज़ से जाग गईं, जिसे उन्होंने पहले घर के बाहर अपने ऊपर से आती हुई समझा और नींद में ही उन्हें लगा कि यह किसी हवाई जहाज की आवाज़ है। फिर उन्हें एहसास हुआ कि आवाज़ स्थिर थी। दामाद और श्रीमती रे से अलग, श्री रे ने भी उसी समय ऐसी ही एक आवाज़ सुनी थी।

श्रीमती रे की माताजी गर्मियों में मिलने आई थीं। उनके ठहरने के दौरान, हॉल की बत्तियाँ एक ही रात में कम से कम चार बार अपने आप बंद हो गईं या बंद हो गईं। किसी उपकरण में खराबी नहीं थी; कोई और कारण समझ में नहीं आ रहा था। अब बत्तियाँ बिना छुए ही बार-बार जलने-बुझने लगीं और हीटर फिर से बंद हो गया। किसी ने या किसी चीज़ ने इमरजेंसी स्विच दबा दिया था।

मैं 7 नवंबर, 1968 को रे परिवार से मिलने के लिए पूरी तरह तैयार था। आखिरी क्षण में मुझे श्रीमती रे का एक जल्दबाजी भरा फोन आया। उन्होंने दुखी होकर बताया कि नए मालिकों को मेरी यात्रा पर आपत्ति है और इसलिए वे मुझे दोबारा अपने घर में मेहमाननवाज़ी नहीं दे

सकतीं। वे 2 दिसंबर को घर खाली कर देंगे और नए मालिक ने पहले ही घर का कार्यभार संभालना शुरू कर दिया था।

मैंने कहा, "कोई बात नहीं। शायद मुझे उनसे थोड़ी देर के लिए मिलने की अनुमति मिल जाए।"

श्रीमती रे पहले से भी ज़्यादा घबराई हुई लग रही थीं। उन्होंने कहा, "मुझे नहीं लगता, लेकिन आप कोशिश कर सकते हैं," और मुझे नए मालिक का नाम और पता बता दिया। साथ ही उन्होंने रहस्यमय ढंग से कहा, "लेकिन वह एक फौजी हैं और मुझे नहीं लगता कि उन्हें आपका काम पसंद आएगा।"

मैंने विनम्रतापूर्वक एक पत्र लिखा, जिसमें मैंने केवल यही अनुरोध किया कि हम पैरासाइकोलॉजी और घर दोनों के हित में, जो काम हमने पहले शुरू किया था, उसे पूरा करें। मैंने एक वैज्ञानिक और शिक्षक के रूप में अपनी योग्यता का उल्लेख किया और वादा किया कि इस मामले को अनावश्यक प्रचार नहीं मिलने दूँगा। यह मेरी मानक प्रक्रिया है, क्योंकि मेरा इरादा भूतिया घरों के मालिकों को समाज में किसी भी प्रकार की शर्मिंदगी या परेशानी पहुँचाने का नहीं है। मैंने बिल्कुल सही अनुमान लगाया था कि रे परिवार के घर छोड़ने का कारण उनके साथ नहीं जाएगा, बल्कि घर से जुड़ा रहेगा। इस विचार का समर्थन करने वाले कई प्रमाण मौजूद हैं। बहुत कम ही, और विशेष मामलों में, किसी घर में किसी विशेष व्यक्ति से भूत का संबंध जुड़ता है। स्पष्ट रूप से ओकटन के भूतिया मामले में ऐसा नहीं है, और मुझे यह मानना पड़ा कि मामला अभी सुलझा नहीं है।

मैंने नए मालिक के बारे में कुछ पूछताछ की और पता चला कि कर्नल एस. एक सेवानिवृत्त सेना अधिकारी हैं, जिन्होंने कई वर्षों तक पास के वाशिंगटन में सेवा की थी, जबकि उनकी पत्नी एक शिक्षिका थीं। मेरी आगामी यात्रा से पहले बहुत कम समय बचा था, इसलिए मुझे उम्मीद थी कि 7 नवंबर से पहले अनुमति मिल जाएगी। एक दिन पहले मुझे कर्नल एस. का एक रजिस्टर्ड पत्र मिला, जिस पर वापसी रसीद का अनुरोध था। यह पत्र सचमुच एक सैन्य अधिकारी का पत्र था: संक्षिप्त, अपमानजनक और बेतुकी बातों से भरा हुआ। कर्नल ने मुझे यह समझाने की पूरी कोशिश की कि मेरा काम बेकार है या उसका कोई मतलब नहीं है। मुझे एहसास हुआ कि उस आदमी पर तरस खाना चाहिए, तिरस्कार नहीं, इसलिए मैंने उसका पत्र

लिया, उस पर लिखा कि मैं ऐसे असभ्य पत्र स्वीकार नहीं करता क्योंकि वे मेरी फाइलों को दूषित कर देंगे, और उसे वापस कर दिया। मुझे कर्नल या उनकी पत्नी से आगे कोई खबर नहीं मिली है, और अगर उनके ओकटन, वर्जीनिया स्थित घर में कुछ अजीब हो रहा है, तो वह उसे खुद ही संभाल रहे हैं। उन्हें इसका पूरा अधिकार है। संभवतः, उसे इसका एहसास भी नहीं है, क्योंकि शायद उसमें कुछ लोगों जैसी संवेदनहीनता का गुण है। दूसरी ओर, निश्चित रूप से कुछ नहीं कहा जा सकता। यह भी संभव है कि ये आवाज़ें तब से जारी हैं और आगे भी जारी रहेंगी, या फिर इनके बाद कुछ और भयावह घटनाएँ घटित हों। मुझे नहीं लगता कि एक विक्षिप्त आत्मा उस सैन्य अधिकारी की राय का सम्मान करेगी जो आत्माओं के अस्तित्व को ही नकारना चाहता है।

* * *

7 नवंबर को हम उस घर के पास से गाड़ी से गुज़रे और श्रीमती मेयर्स थोड़ी देर के लिए बाहर निकलीं और घर के अंदर प्रवेश किए बिना या कर्नल के नए अधिग्रहीत संपत्ति अधिकारों का उल्लंघन किए बिना, जितना संभव हो सके, घर के पास गईं। सौभाग्य से, वर्जीनिया में सार्वजनिक सड़कों पर पैरासाइकोलॉजिस्ट और मीडियम बिना अनुमति मांगे चल सकते हैं। जैसे ही एथेल घर के घेरे की ओर बढ़ीं, उन्हें एक परेशान आत्मा का स्पष्ट आभास हुआ। घटना की प्रकृति या उसके स्थान के बारे में कुछ भी बताए बिना, उन्होंने पीछे स्थित खलिहान की ओर इशारा करते हुए कहा कि वही सारी परेशानियों का केंद्र है। "जो भी हो, वह नीचे है," एथेल ने कहा और मेरी ओर देखा। "लेकिन मुझे इसके बारे में कुछ करने के लिए पास जाना होगा। मैं आपको बस इतना बता सकती हूँ कि नीचे कोई बहुत पागल है।" ऐसी स्थिति में, मैंने उनसे मेरे साथ वापस आने और इस मामले को यहीं खत्म करने के लिए कहा।

* * *

20 अप्रैल, 1969 तक रे परिवार या किसी और से उस घर के बारे में कोई और जानकारी नहीं मिली।

श्रीमती रे ने वर्जीनिया के मैकलीन स्थित अपने नए पते से हमें पत्र लिखा। “मुझे ऐसा लग रहा है जैसे हम उस ‘भूत’ से दूर चले गए हैं। श्री रे काफी कम तनाव में हैं, और हम सभी कुछ हद

तक कम तनाव में हैं।" लेकिन उसी दिन सुबह 4 बजे वह अचानक चौंककर जाग उठीं। अचानक उन्हें समझ आ गया कि वह परेशान करने वाली आत्मा क्या चाहती है। घर छोड़ने के बावजूद, वह दुर्भाग्यशाली आत्मा उसी समय उनसे संपर्क करने में सक्षम थी, जिस समय अधिकांश ध्वनि-विभोर घटनाएं घटी थीं। शायद यह ओकटन के भूत का अंतिम संदेश था। श्रीमती रे ने आशा की कि यह वास्तव में अंतिम संदेश होगा, और उन्हें अब और परेशान नहीं होना पड़ेगा।

जब उसे उस शक्ति की इच्छा समझ में आई, तो उसने तुरंत उसकी इच्छा पूरी करने का निश्चय किया। चुपचाप और बिना किसी शोर-शराबे के उसने एक बिशप पादरी से घर से बुरी आत्माओं को निकालने की व्यवस्था की। यह प्रक्रिया प्रार्थना के माध्यम से की गई, जो चर्च के आरंभिक काल से चली आ रही एक प्राचीन विधि है। कभी-कभी यह कारगर होती है, कभी-कभी नहीं। यह इस बात पर निर्भर करता है कि व्यक्ति चर्च की शिक्षाओं को मानता है या नहीं, और वह किसी ईश्वर में विश्वास रखता है या नहीं।

* * *

रेज़ परिवार ने अपनी संपत्ति के नए मालिकों से संपर्क रखना बंद कर दिया था, लेकिन कभी-कभार उन्हें अपने पुराने घर के बारे में खबर मिलती रहती थी। उनके एक मित्र, जिन्हें उनके मैकलीन चले जाने की सूचना नहीं थी, उनसे मिलने आए। जब वे घर के गेट पर पहुँचे, तो उन्हें कुछ अलग सा लगा। गेट हमेशा खुला रहता था, और रेज़ परिवार का आतिथ्य सत्कार और स्नेहपूर्ण व्यवहार हमेशा बरकरार रहता था। लेकिन अब गेट बंद था। ओकटन के घर में उदासी और सन्नाटा पसरा हुआ था। दुखी होकर वे वापस मुड़े और चले गए। बिना पूछे ही वे समझ गए कि रेज़ परिवार अब कहीं और जा चुका है।

बगीचे में एक बिना निशान वाला मकबरा, एक प्रेतवाधित खलिहान, और कब्र के पार से किसी हताश हाथ द्वारा लिखा गया एक अस्पष्ट संदेश—क्या ये किसी अनचाही मौत की ओर इशारा करते हैं? मैंने अक्सर सुना है, "मेरे लिए प्रार्थना करो," जब कोई आत्मा पीड़ा में मर जाती है और चर्च की मान्यताओं से दृढ़ता से जुड़ी रहती है, तो वह अंतिम आशीर्वाद चाहती है, यहाँ तक कि मृत्यु के बाद भी। क्या ऐसा नहीं हो सकता कि ओकटन की प्रेतवाधित घटना का

समाधान किसी परा मनोविज्ञान विशेषज्ञ और उसके माध्यम द्वारा किसी मृत व्यक्ति के उलझे हुए मामलों में और गहराई से छानबीन करने से नहीं, बल्कि दूर से एक एपिस्कोपल पादरी की साधारण प्रार्थना से हुआ हो? अगर और जब यह घर फिर से बिक्री के लिए आएगा, तो हमें निश्चित रूप से पता चल जाएगा।

*111

समुद्री कप्तान का बेचैन भूत

जब न्यू इंग्लैंड के किसी नाविक को कोई शिकायत होती है, तो वह उसे अपने साथ कब्र तक ले जाता है। मतलब, अगर वह कब्र में होता तो। इस मामले में, संबंधित नाविक कप्तान वास्तव में कभी पूरी तरह से मरा ही नहीं। वह आज भी अपने पुराने घर में है, लोगों को धमकाता है और सबको डराता रहता है।

इस घर में समय बिताना आसान नहीं है। लेकिन मैंने बिताया और किसी तरह रात गुजार ली।

अच्छी भूतिया कहानियों के बारे में मुझे कुछ बेहतरीन सुझाव तब मिलते हैं जब मैं कई टेलीविजन या रेडियो कार्यक्रमों में भाग लेता हूँ, आमतौर पर मानसिक घटनाओं से संबंधित किसी पुस्तक पर चर्चा करता हूँ। इसी तरह, बोस्टन में बॉब कैनेडी के टेलीविजन शो में मेरी कई प्रस्तुतियों में से एक के बाद मुझे न्यू इंग्लैंड के अन्य राज्यों और यहाँ तक कि न्यूयॉर्क से भी असामान्य रूप से भारी संख्या में पत्र मिले।

भूतों को समय की बिल्कुल परवाह नहीं होती—उनके लिए सब कुछ एक ऐसे आयाम में ठहर जाता है जहाँ उनके दुख या समस्या की तीव्रता हमेशा तात्कालिक और जीवंत बनी रहती है। आखिर, वे उस बंधन को नहीं छोड़ सकते जो उन्हें किसी खास जगह से बांधे रखता है, वरना वे भूत न होते, जैसा कि हम आमतौर पर (और शायद थोड़ी बेरहमी से) कहते हैं। मैं यह इसलिए बता रहा हूँ ताकि यह समझा सकूँ कि क्यों कभी-कभी मैं किसी जीवित व्यक्ति द्वारा भूत-प्रेत की सूचना दिए जाने पर उतनी जल्दी प्रतिक्रिया नहीं दे पाता जितनी जल्दी मैं चाहता हूँ। इसके मुख्य कारण पहले भी और अब भी समय की कमी है, लेकिन शायद उससे भी ज्यादा संभावना है कि टीम बनाकर मामले की जांच करने के लिए धन की कमी है। फिर भी, आमतौर पर मैं समय पर पहुँच जाता हूँ और समस्या का समाधान कर लेता हूँ।

इस तरह मुझे 4 अगस्त, 1966 को बोस्टन के WBZ-TV स्टेशन के माध्यम से एक पत्र प्राप्त हुआ, जो केप कॉड के बार्नस्टेबल में स्थित कैप्टन ग्रेज़ स्मॉर्गसबोर्ड नामक एक सराय के मालिक द्वारा भेजा गया था। मालिक, लेनार्ट स्वेन्सन ने मुझे शो में देखा था।

"हमने यहां कई असामान्य घटनाएं देखी हैं। जिस इमारत में हमारा रेस्तरां और गेस्ट हाउस स्थित है, वह 1716 में बनी थी और पहले एक समुद्री कप्तान का निवास स्थान हुआ करती थी," स्वेन्सन ने लिखा।

मुझे समुद्री कप्तानों की भूतिया कहानियों में बहुत दिलचस्पी है, इसलिए मैंने उन्हें पत्र लिखकर और जानकारी मांगी। कुछ हफ्तों बाद स्वेन्सन ने जवाब दिया, मेरी दिलचस्पी देखकर उन्हें खुशी हुई। उन्होंने और उनकी पत्नी दोनों ने एक युवती का भूत देखा था, और उनके बड़े बेटे ने भी एक अदृश्य शक्ति का अनुभव किया था; उनके कमरों में आने वाले मेहमानों ने भी कुछ असामान्य घटनाओं का जिक्र किया था। ऐसा लगता है कि जब यह घर पहली बार बना था, तब इसकी नींव भारतीय हमलों से बचाव के लिए किलेबंदी के रूप में रखी गई थी। स्वेन्सन ने मुझे बताया कि अफवाह यह भी है कि दिवंगत समुद्री कप्तान गुलामों का व्यापारी था और वह इस घर में गुलामों की बिक्री करता था।

स्वीडिश मूल के स्वेन्सन और उनकी पत्नी 1930 के दशक की शुरुआत में केप में रहते थे, बाद में स्वीडन वापस चले गए और 1947 में लौट आए। न्यूयॉर्क के विभिन्न रेस्तरां में काम करने के बाद, उन्होंने केप कॉड पर स्थित सराय का अधिग्रहण कर लिया।

मैंने केप द्वीप समूह की यात्रा करने का फैसला किया। मैंने सिबिल लीक से माध्यम के रूप में मेरे साथ चलने का अनुरोध किया। स्वेन्सन ने बताया कि सराय अक्टूबर में सर्दियों के लिए बंद हो जाएगी, लेकिन वह, और शायद इस घटना के अन्य गवाह भी, उस तारीख के बाद भी देखे जा सकते हैं, अगर मैं तब आना चाहूँ। लेकिन अगले साल जून 1967 तक, मैं आखिरकार स्वेन्सन से संपर्क करके हमारी यात्रा की तारीख तय कर पाया। दुर्भाग्य से, उन्होंने तब तक सराय बेच दी थी और जैसा कि उन्होंने बताया, नए मालिक को भूत में उतनी दिलचस्पी नहीं थी जितनी उन्हें थी, इसलिए अब उनके लिए हमारी यात्रा की व्यवस्था करना संभव नहीं था।

लेकिन स्वेन्सन को इस बात का अंदाज़ा नहीं था कि जब मैं कुछ करने का ठान लेता हूँ तो कितना ज़िद्दी हो सकता हूँ। मैंने इस मामले को कभी नहीं छोड़ा और थोड़ा इंतज़ार करने के

बाद नए मालिकों से संपर्क करने का फ़ैसला किया। हालाँकि, इससे पहले कि मैं ऐसा कर पाता, नए मालिक ने मुझसे संपर्क करना उचित समझा। उन्होंने स्वेन्सन और मेरे बीच हुए पत्राचार का हवाला दिया और बताया कि जिस समय मैं आने की सोच रहा था, उस समय वे सराय के उद्घाटन के लिए उसका नवीनीकरण करवा रहे थे। यह काम कई हफ़्ते पहले हो चुका था, और ऐसा लगता है कि "हमें कई बार आत्मा की उपस्थिति का अनुभव हुआ है, और अब मुझे लगता है कि हमें इस मामले की जल्द से जल्द जाँच करनी चाहिए।" उन्होंने हमें जब भी सुविधाजनक हो, आने का न्योता दिया, बेहतर होगा कि कल ही आ जाएँ।

नए मालिक जैक फरमैन नाम के एक बेहद मिलनसार वकील निकले, जो हयानिस के रहने वाले थे। जब मैंने उन्हें लिखा कि हमें उनसे मिलकर बहुत खुशी होगी, और भूत या भूतों से भी, जैसा भी मामला हो, तो उन्होंने हमें उड़ानों के बारे में तरह-तरह की जानकारी भेजी और हवाई अड्डे से हमें लेने की पेशकश की। फरमैन ने घर का मालिकाना हक लेने के बाद से अपने अनुभवों को बताने में कोई संकोच नहीं किया।

“एक बार सीढ़ियों में एक छाता रहस्यमय तरीके से खुला हुआ फंसा हुआ मिला। यह मेरे कर्मचारी, थडियस बी. ओज़िमेक ने देखा था। एक और बार जब शाम को सराय बंद थी, तो मेरे प्रबंधक ने वापस आकर देखा कि सामने का दरवाजा अंदर से बंद था, जो अजीब लगा क्योंकि इमारत में कोई नहीं था। एक बार, मेरे शेफ ने देखा कि हीटिंग प्लांट रात 2:30 बजे बंद हो गया था, और अगले दिन मैंने जिस मैकेनिक को बुलाया, उसने पाया कि फ्यूज बॉक्स से एक फ्यूज निकाल लिया गया था। जाहिर है, सुबह 2:30 बजे, हमारी जानकारी में कोई भी जाग नहीं रहा था जो ऐसा कर सके। इसके अलावा, रात के दौरान सराय में रहने वालों ने अजीब आवाजें सुनी हैं।”

मैंने अपने जवाब में सुझाव दिया कि हमारी टीम, जिसमें सिबिल लीक, कैथरीन (उस समय मेरी पत्नी) और मैं शामिल थे, भूत-प्रेत खोजने वालों की तरह उस सराय में रात बिताए। मैंने यह भी अनुरोध किया कि पूर्व मालिक स्वेन्सन आगे की पूछताछ के लिए उपस्थित रहें, साथ ही घटना के प्रत्यक्षदर्शी भी मौजूद रहें। दूसरी ओर, मैंने बड़ी सावधानी से यह भी कहा कि मामले से संबंधित न होने वाला कोई भी व्यक्ति उपस्थित न रहे, क्योंकि मुझे याद था कि कुछ

मौकों पर मेरे मेजबानों ने मेरी जांच को मनोरंजन का साधन बनाकर पड़ोसियों और दोस्तों का मनोरंजन किया था।

हमारी यात्रा की तारीख 17 अगस्त, 1967 तय की गई थी—मामला मेरे ध्यान में आने के दो सप्ताह बाद। लेकिन भूतों के मामले में अक्सर ऐसा ही होता है, समय का काफी अंतराल था।

कार से लंबी और धूल भरी यात्रा के बाद जब हम सराय पहुँचे, तो सामने का नज़ारा देखकर हमारी सारी यात्रा सार्थक हो गई। वहाँ, एक शांत ग्रामीण सड़क से कुछ दूरी पर, ऊँचे-ऊँचे पुराने पेड़ों के बीच, एक बेदाग सफेद औपनिवेशिक शैली का दो मंजिला मकान था, जिसमें एक अटारी भी थी। यह मकान चारों ओर से लकड़ी की बाड़ से घिरा हुआ था और कोने में एक पुराना पीतल और लोहे का लैंप रखा था। सभी खिड़कियों के लकड़ी के शटर बाहर की ओर खुले थे और वह जगह इतनी शांत थी कि यह मानना मुश्किल था कि हम यहाँ किसी अशांति का सामना करने आए हैं। हमें जल्द ही पता चला कि मकान खाली था, क्योंकि नए मालिक ने अभी तक मेहमानों को आने की अनुमति नहीं दी थी—समस्याओं को देखते हुए!

घर पहुंचने के तुरंत बाद, सिबिल लीक ने खुद को उस स्थान के वातावरण और संभावित उपस्थिति में लीन करने के लिए अपने सचेत मन को त्याग दिया।

घुमावदार सीढ़ियाँ चढ़ते ही सिबिल ने तुरंत कहा, "बेडरूम में... अटारी में कुछ है। अभी-अभी मुझे लगा कि कोई पीछे से मेरे बाल ऊपर उठा रहा है।"

श्री फरमैन भी जांच के लिए साथ आए थे। इसी समय हम सभी ने कमरे के बीचोंबीच एक तेज रोशनी देखी। हममें से कोई भी इससे डरा नहीं, यहां तक कि वकील भी नहीं, जिसने अब तक अपने घर में अलौकिक शक्तियों की मौजूदगी को सहजता से स्वीकार कर लिया था।

फिर हम नीचे की ओर बढ़े, सिबिल लीक ने हमें भरोसा दिलाया कि अटारी में जो भी बात उन्हें परेशान कर रही थी, वह नीचे मौजूद नहीं थी। इसके बाद हम एक बंद दरवाजे के पास पहुँचे, जिसके बारे में श्री फरमान ने हमें बताया कि वह बहुत समय से नहीं खुला था। जब हमने उसे किसी तरह खोल लिया, तो वह हमें नीचे के दफ्तर या उस कमरे में ले गया जिसे अब दफ्तर के रूप में इस्तेमाल किया जा रहा था। कैथरीन, जो हमेशा से एक सतर्क कलाकार और डिज़ाइनर थीं, ने देखा कि एक दरवाजा अंदर से बंद था, मानो उस छोटे से कमरे में कभी किसी को रखा गया हो। मैंने श्री फरमान से पूछा कि यह दरवाजा कहाँ जाता है? उन्होंने

बताया कि यह एक संकरे गलियारे में खुलता है और अंत में बड़े मुख्य कमरे में स्थित चिमनी के पास जाकर खत्म होता है।

"किसी ने मुझसे कहा था कि अगर मैं कभी चिमनी की खुदाई करूं," फरमैन ने गंभीर स्वर में कहा, "तो शायद मुझे कुछ मिल जाए।"

वह क्या होगा, यह हमारी कल्पना पर छोड़ दिया गया था। फरमैन ने बताया कि उसके मुखबिर ने किसी प्रकार की कीमती वस्तु का संकेत दिया था, लेकिन सिबिल ने तुरंत कहा, "लाशें... आपको लाशें मिल सकती हैं।"

उसने मानसिक रूप से घर में पीड़ित कई लोगों और घर से बाहर निकलने के एक गुप्त रास्ते का वर्णन किया - संभवतः कप्तान के दास व्यापार के दिनों का रास्ता?

जैसे कोई डॉक्टर किसी मरीज की जांच करता है, वैसे ही मैंने छोटे कमरे और मुख्य कमरे दोनों की दीवारों की जांच की और कई खोखले हिस्से पाए। एक किताबों की अलमारी दिखावटी निकली। छिपे हुए रास्ते अपने आप ही सामने आ रहे थे। ज़ाहिर है, फरमान उन्हें खोजने के लिए दीवारों को फाड़ने वाला नहीं था। लेकिन श्रीमती लीक सही थीं: घर में ऐसे कई हिस्से थे जो आम देखने वाले को दिखाई नहीं देते थे।

सिबिल ने ज़ोर देकर कहा कि हम सब अंगीठी के चारों ओर बैठ जाएँ, और मैंने भी यही कहा कि अगर कोई भूत है, तो वह हमसे वहीं संपर्क करे, न कि हम उस मायावी प्रेत का कमरे-कमरे पीछा करते फिरें। श्रीमती लीक ने कहा, "घर से बाहर निकलने का रास्ता बहुत ज़रूरी है," और मैं उन बदकिस्मत गुलामों की कल्पना करने से खुद को रोक नहीं पाई जिन्हें अच्छे (या उतने अच्छे नहीं) कप्तान ने बहुत पहले इसी जगह पर बंदी बनाकर रखा था।

लेकिन जब कुछ खास नहीं हुआ, तो हम वापस दफ्तर चले गए, जहाँ मैंने पाया कि दीवार का सामने वाला हिस्सा किसी और कमरे को बंद कर रहा था, जिसे बाहरी दीवारों की नाप लेते समय ध्यान में नहीं रखा गया था। जब हमने उसे किसी तरह खोलकर अंदर प्रवेश किया, तो हमें एक संकरी सीढ़ियाँ मिलीं, जहाँ पहले सीढ़ियाँ हुआ करती थीं। कैथरीन ने टॉर्च से उस संकरे रास्ते में रोशनी डाली, और हम खुद को ऊपर के बाथरूम में एक टॉयलेट के नीचे पाए! यहाँ कोई भूत नहीं था।

हम फिर से बैठ गए, और मैंने उस उपस्थिति को, चाहे वह कोई भी हो, प्रकट होने के लिए आमंत्रित किया। तुरंत ही श्रीमती लीक ने कहा कि उन्हें डेढ़ सौ साल पहले यहाँ एक छोटे लड़के की मौजूदगी महसूस हो रही है। जैसे-जैसे वह गहरी समाधि अवस्था में जाती गईं, उन्होंने चेट नाम लिया... कोई ऐसा व्यक्ति जो किसी दुश्मन से सुरक्षित रहना चाहता था... कार्सन...

मैंने कहा, "उसे बोलने दो।"

“कार्सन...1858...,” सिबिल ने उत्तर दिया, अब वह लगभग पूरी तरह से मंत्रमुग्ध थी क्योंकि मैं उसके मुंह से रुक-रुक कर निकलने वाले शब्दों को ध्यान से सुन रहा था।

“मैं लड़ूंगा...चार्ल्स...बच्चा लापता है....”

मैंने पलटकर पूछा, “तुम किससे लड़ोगे? बच्चे को किसने अगवा किया?”

“चिकॉपी...बच्चा मर गया है।”

यह किसका घर है?

“किला...

"किसका है?"

“कार्सन....”

"क्या आप कार्सन हैं?"

“कैप्टन कार्सन।”

“कौन सी रेजिमेंट?”

“बेलवेडेर...घुड़सवार सेना...9 वीं...

“रेजिमेंट कहाँ तैनात है?”

कोई जवाब नहीं था।

मैंने जोर देकर पूछा, "रेजिमेंट की कमान किसके हाथ में थी?"

“वेनराइट...एडवर्ड वेनराइट...कमांडर।”

"आप यहाँ पर कितने समय से हैं?"

“चार साल।”

"आपका जन्म कहां हुआ था?"

“मोंटगोमरी...मैसाचुसेट्स।”

"अब आप कितने साल के हैं?"

कोई जवाब नहीं था।

"क्या आप शादीशुदा हैं?"

मेरा बेटा...टॉम...दस

उनका जन्म किस वर्ष हुआ था?

“सैंतालीस...”

“आपकी पत्नी का नाम क्या है?”

“जीना...”

आप किस चर्च में जाते हैं?

मैं नहीं जाता।

आप किस चर्च से जुड़े हैं?

“वह...स्कॉटिश पृष्ठभूमि की हैं...स्कॉटिश चर्च से हैं।”

“चर्च कहाँ स्थित है?”

“छह मील...”

“हम जिस गांव में हैं उसका नाम क्या है?”

“चिकोपी...”

आगे की पूछताछ से और जानकारी मिली। हमें पता चला कि "दुश्मन" उसके बेटे को ले गया था, और दुश्मन इरोक्वाइस जनजाति के लोग थे। यह उसका किला था और उसे इसकी रक्षा करनी थी। फिर मैंने, जैसा कि मैं आमतौर पर भूत-प्रेत भगाने के समय करता हूँ, समय बीतने की बात शुरू की और यह समझने की आवश्यकता पर बल दिया कि माध्यम से संवाद करने वाली सत्ता इस संबंध में वास्तविक स्थिति से अवगत थी। क्या कैप्टन कार्सन को इस बात का एहसास था कि लड़के के गायब होने के बाद समय बीत चुका है?

“जी हां,” उसने जवाब दिया। “चार साल।”

“नहीं, एक सौ सात साल,” मैंने उत्तर दिया।

मैंने एक बार फिर यह साबित कर दिया कि वह कैप्टन कार्सन थे, और पास में एक नदी थी और इरोक्वाइस दुश्मन थे। क्या उन्हें इस बात का एहसास था कि उनके अलावा यहाँ "अन्य" भी मौजूद थे?

उन्हें यह बात समझ नहीं आई। क्या वे चाहेंगे कि मैं उनके बेटे को ढूंढने में उनकी मदद करूं, जबकि वे दोनों इस दुनिया से चले गए थे और उन्हें वहां एक-दूसरे को ढूंढ लेना चाहिए था?

मुझे वेनराइट से अनुमति चाहिए...

जैसा कि मैं अक्सर ऐसे मामलों में करता हूँ, मैंने वेनराइट की ओर से बोलने का नाटक किया और उन्हें अनुमति दे दी। आख़िरकार, एक भूत कोई तर्कसंगत मनुष्य नहीं होता, बल्कि एक ऐसी इकाई होती है जो भ्रम में विद्यमान होती है जहाँ केवल भावनाएँ ही मायने रखती हैं।

"क्या अब आप अपने बेटे को ढूंढने के लिए तैयार हैं?"

"मैं तैयार हूँ।"

मैंने कहा, "तो मैं उसे ढूंढने में आपकी मदद के लिए एक दूत भेजूंगा, लेकिन आपको अपने बेटे को जोर से पुकारना होगा।"

किसी फंसे हुए आत्मा को मुक्त कराने में प्रियजन से संपर्क स्थापित करने की आवश्यकता सर्वोपरि है।

“जॉन कार्सन की मृत्यु हो गई है...लेकिन वह हमेशा के लिए नहीं मरे हैं,” उन्होंने धीमी आवाज में कहा।

मैंने उन्हें याद दिलाया, "आप 1858 में यहां रहते थे, लेकिन यह 1967 है।"

"आप पागल हैं!"

“नहीं, मैं पागल नहीं हूँ। अपने माथे को छूकर देखो... तुम्हें पता चलेगा कि यह वह शरीर नहीं है जिससे तुम परिचित हो। हमने तुम्हें हमसे संवाद करने के लिए एक शरीर दिया है। लेकिन यह तुम्हारा अपना शरीर नहीं है।”

जाहिर है, एक महिला के सिर को छूने से उस सत्ता का विश्वास डगमगा गया। मैंने आगे बढ़ने का फैसला किया।

“इस घर से निकलकर बाहर इंतजार कर रहे अपने प्रियजनों के पास जाओ....”

कुछ ही देर बाद कैप्टन कार्सन वहां से चले गए और नींद में डूबी लीक ने अपनी आंखें खोलीं। अब मैंने फरमान की ओर रुख किया, जो बढ़ती दिलचस्पी के साथ कार्यवाही देख रहा था। क्या वह उस जानकारी की पुष्टि कर सकता था जो हमें सम्मोहित माध्यम से प्राप्त हुई थी?

उन्होंने पुष्टि करते हुए कहा, "यह घर एक भारतीय किले की नींव पर बनाया गया था, ताकि बसने वालों को भारतीयों से बचाया जा सके।"

"क्या 1858 में यहाँ कोई भारतीय थे?"

“यहां अभी भी भारतीय रहते हैं,” फरमैन ने जवाब दिया। “हमारे पास यहीं पास में मैशपी में एक भारतीय आरक्षण क्षेत्र है, और मार्था वाइनयार्ड में एक आदिवासी मुखिया और काफी बड़ी भारतीय आबादी रहती है।”

बाद में हमें पता चला कि चिकोपी इंडियन वास्तव में इस क्षेत्र में रहते थे। साथ ही, उन्नीसवीं शताब्दी के मध्य तक मैसाचुसेट्स में एक भारतीय विद्रोह हुआ था, जिससे श्रीमती लीक के माध्यम से मिली तिथि, 1858, को और अधिक विश्वसनीयता मिलती है।

उन्होंने यह भी पुष्टि की कि उन्होंने एक बार मैसाचुसेट्स के पश्चिमी भाग में एक बोर्ड देखा था जिस पर "मोंटगोमरी" लिखा था - वही स्थान जिसे कैप्टन कार्सन ने अपना जन्मस्थान बताया था। साथ ही, उन्होंने यह भी बताया कि वेनराइट परिवार उस क्षेत्र में रहता था जो हमारे वर्तमान स्थान से कुछ ही दूरी पर था।

हालांकि, फरमैन को उस नाम के किसी भी सैन्यकर्मी के बारे में कोई जानकारी नहीं थी।

मैंने कहा, "सिबिल ने इस घर के संबंध में एक नदी का जिक्र किया था।" फरमान ने कहा, "और हां, घर के बीच से एक नदी बहती है, वह अभी भी यहीं है।"

इससे पहले सिबिल ने अपने मानसिक दृष्टिकोण से घर का एक मोटा-मोटा नक्शा बनाया था, जिसमें ऊँची बाड़ से घिरा हुआ घर दिखाया गया था। फरमैन ने उस चित्र को आश्चर्यजनक रूप से सटीक बताया—खासकर इसलिए क्योंकि लीक ने हमारी वास्तविक उपस्थिति से पहले उस संपत्ति पर कदम नहीं रखा था और न ही उसे इसके बारे में कोई जानकारी थी।

जब मैंने अपना ध्यान उन घटनाओं की ओर मोड़ा, तो फरमान ने समझाया, "मेरी पूर्व सचिव, कैरोल ई. हॉवेस और उनका परिवार इस घर में रहता था।" “बीस साल पहले वे इस घर को एक सराय के रूप में चलाते थे, और जब वह बड़ी हो रही थी तो यहाँ अक्सर अजीबोगरीब घटनाएँ घटित होती थीं, लेकिन इससे उन्हें कोई फर्क नहीं पड़ता था। फिर यह घर श्रीमती नीलसन के हाथों में चला गया; फिर स्वेन्सन ने इसे संभाला। लेकिन उन्होंने लगभग डेढ़ साल पहले तक इन घटनाओं के बारे में बात नहीं की। 1965 की सर्दियों में वह छत पर शिंगल लगा रहे थे, और एक ठंडे दिन दूसरी मंजिल की बालकनी से छत से अंदर आ रहे थे—उन्होंने खिड़की थोड़ी खुली और बंद छोड़ दी थी—तभी अचानक उन्होंने खिड़की का शीशा नीचे गिरने की आवाज़ सुनी। वह दूसरी मंजिल के चबूतरे पर मुड़े और उन्होंने उस युवती को देखा, जिसके बाल हवा से पीछे उड़ रहे थे। उसने सफेद कपड़े पहने थे। वह कमर के नीचे कुछ भी नहीं देख पा रहे थे, और उन्होंने कुछ देर तक उससे बात की, लेकिन बोलने की हिम्मत नहीं जुटा पाए—और वह चली गई। कुछ समय बाद, दोपहर के समय, उनकी पत्नी रसोई में थीं, जब उन्हें कमरे में किसी की मौजूदगी का एहसास हुआ। वह मुड़ीं और रसोई के दूसरे छोर पर काले कपड़े पहने एक अधेड़ उम्र के व्यक्ति को देखा। वह रसोई से बाहर भागीं और फिर कभी अंदर नहीं गईं। दोबारा।

“एक शाम करीब दस बजे लेखाकार जॉन डिलन का बेटा रसोई में काम कर रहा था। छत से कुछ भारी बर्तन खूंटियों पर लटके हुए थे। युवा डिलन ने अपने पिता को बताया कि उनमें से दो बर्तन छत से अपने आप ऊपर उठ गए, खूंटियों से अलग हो गए और फर्श पर गिर गए।”

क्या स्वेन्सन के स्वामित्व के दौरान सराय में ठहरने वाले किसी भी मेहमान ने किसी असामान्य घटना की शिकायत की थी?

“स्वेन्सन जिसे हनीमून सुइट कहते थे, उसमें एक युवा जोड़ा ठहरा हुआ था,” फुरमान ने जवाब दिया। “सुबह 6:30 बजे, जोड़े ने दरवाजे पर तीन बार ज़ोर से खटखटाने की आवाज़ सुनी, तीन तेज़ और स्पष्ट खटखटाहट, और जब उन्होंने दरवाजा खोला, तो वहाँ कोई नहीं था। इस तरह की घटनाएँ पहले भी हो चुकी थीं।”

एक अन्य मामले में, भोजन कर रहे एक अकेले व्यक्ति ने स्वेन्सन से शिकायत की कि भोजन कक्ष में मेज पर बैठे किसी व्यक्ति ने उसे उसकी कुर्सी से धक्का देकर दूसरी कुर्सी पर गिरा

दिया, लेकिन चूंकि उसने किसी अन्य व्यक्ति को नहीं देखा, तो ऐसा कैसे हो सकता है? स्वेन्सन ने तुरंत समझाया कि फर्श थोड़ा कमजोर था और शायद यही इसका कारण था।

क्या कप्तान की बेचैन आत्मा हमारे आने से संतुष्ट हुई? क्या परलोक में उनकी और उनके बेटे की मुलाकात हुई? हमारी यात्रा का जो भी परिणाम निकला हो, बार्नस्टेबल स्थित कैप्टन ग्रे के सराय में किसी भी प्रकार की गड़बड़ी की कोई खबर नहीं मिली है।

*112

ट्रेलर पार्क का भ्रमित भूत

मेरी मुलाकात रीटा अटलांटा से तब हुई जब वह जर्मनी के फ्रैंकफर्ट में एक नाइटक्लब में काम करती थी। तभी मुझे पहली बार उसकी आत्माओं से संवाद करने की अनूठी क्षमता के बारे में पता चला।

उसी वर्ष के अंत में, न्यूयॉर्क लौटने के बाद, मुझे उससे एक संदेश मिला जो अत्यंत आवश्यक प्रतीत होता था।

रीटा के पहले पत्र में उसने मुझसे केवल इतना ही अनुरोध किया था कि मैं उसके भूत से छुटकारा पाने में उसकी मदद करूं। ऐसे अनुरोध असामान्य नहीं होते, लेकिन यह अनुरोध असामान्य था—और मैं यहाँ उस महिला के पेशे की बात नहीं कर रहा हूँ: जो दुनिया भर के विभिन्न नाइट क्लबों में एक आकर्षक नृत्य करती थी।

उसके मामले को असामान्य बनाने वाली बात यह थी कि "उसका" भूत बोस्टन के पास एक 30 साल पुराने ट्रेलर में दिखाई दिया।

भूतिया ट्रेलर और उसकी मालकिन—रीटा अटलांटा

उन्होंने लिखा, "जब मैंने अपने पति को बताया कि हमारे घर में एक भूत है, तो वह हँसे और बोले, 'एक सभ्य भूत को एक छोटे से ट्रेलर में क्यों रहना चाहिए? हमारे पास तो तीन बच्चों के साथ खुद ही उसमें मुश्किल से जगह है।'"

ऐसा लगता है कि सारा मामला गर्मियों में शुरू हुआ था जब वह प्रेत पहली बार अचानक प्रकट हुआ था। हालाँकि उसके पति को वह सब दिखाई नहीं दिया जो उसे दिखाई दिया, लेकिन मिस अटलांटा के पालतू स्कंक को यह बात पसंद नहीं आई और वह दूसरे कमरे में चला गया। तीन महीने बाद, उसके पति का देहांत हो गया और मिस अटलांटा नाइट क्लबों में काम की तलाश में अटलांटिक महासागर के दोनों ओर भटकती रहीं (इसीलिए उनका यह नाम पड़ा)।

मैसाचुसेट्स में अपने छोटे से कमरे में एक आदमी की आकृति देखने के बाद से, नर्तकी रात भर बत्तियाँ जलाकर रखती थी। जैसा कि किसी ने एक बार कहा था, "मैं भूतों पर विश्वास नहीं करती, मैं उनसे डरती हूँ।"

रोशनी होने के बावजूद, मिस अटलांटा को हमेशा सुबह 3 से 3:30 बजे के बीच, ठीक उसी समय किसी की मौजूदगी का एहसास होता था जब उनका पहला अनुभव हुआ था। यह एहसास उन्हें इतनी नियमितता से जगाता था कि अंततः उन्होंने मदद लेने का फैसला किया।

पिछले साल सितंबर में, वह और उसका परिवार मैसाचुसेट्स के पीबॉडी में एक बिल्कुल नए ट्रेलर में रहने चले गए थे। भूत से सामना होने के बाद, रीटा ने उस सुंदर घास वाली जगह के बारे में कुछ पूछताछ की जहाँ उसने ट्रेलर पार्क करने का फैसला किया था। उस जगह पर पहले कभी कुछ नहीं था। कोई भूत-प्रेत की कहानी नहीं। कुछ भी नहीं। बस एक छोटी सी चीज।

बोस्टन के बाहरी इलाके में स्थित ट्रेलर कैंप में रहने वाली एक पड़ोसी एक शाम उससे मिलने आई। तब तक रीटा का दिल डर से भर चुका था, उस अज्ञात भय से जो अचानक उसके जीवन में आ आया था। उसने अपनी पड़ोसी, बर्डी ग्लीसन नाम की एक महिला से खुलकर अपने मन की बात कही।

ट्रेलर के अंदर मानसिक अभिव्यक्तियाँ

उसे आश्चर्य हुआ जब पड़ोसी ने समझदारी से सिर हिलाया। उसने भी रीटा अटलांटा के बगल में स्थित अपने छोटे से घर में "कुछ" महसूस किया था, एक अदृश्य उपस्थिति।

उन्होंने आगे कहा, "कभी-कभी मुझे ऐसा लगता है कि कोई मुझे छू रहा है।"

जब मैंने रीटा का इंटरव्यू लिया, तो मैंने उनसे पूछा कि उन्होंने वास्तव में क्या देखा।

उसने बताया, "मैंने एक बड़े आदमी को देखा, जिसकी लंबाई लगभग सात फीट थी, वजन लगभग 350 पाउंड था, और उसने एक लंबा कोट और एक बड़ी टोपी पहन रखी थी।"

लेकिन भूत सिर्फ वहीं खड़ा होकर उसे घूरता नहीं रहा। कभी-कभी वह रसोई के काउंटर पर आराम से बैठ जाता, उसकी भूतिया टांगें नीचे लटकती रहतीं। वह हाड़-मांस के किसी इंसान की तरह ठोस था, सिवाय इसके कि सुबह के अंधेरे में उसका चेहरा साफ दिखाई नहीं दे रहा था।

बाद में, जब मैं अपने बेहद संवेदनशील कैमरे के साथ उस घर के ट्रेलर में गया, तो मैंने मिस अटलांटा द्वारा बताए गए क्षेत्रों में कुछ तस्वीरें लीं: शयनकक्ष, उसका दरवाजा और रसोई का काउंटर। इन तीनों क्षेत्रों में, मेरी फिल्म पर अजीबोगरीब घटनाएं दिखाई दीं। सामान्य रूप से अपारदर्शी क्षेत्रों में दर्पण जैसी कुछ पारदर्शी परतें बन गईं, जिनकी व्याख्या न तो की जा सकी और न ही की जा सकती है।

जब पहली बार ऐसा हुआ, तो वह धड़कते दिल के साथ लाइट की ओर भागी और स्विच ऑन किया। बिजली के लैंप की पीली रोशनी ने बेडरूम को एक भयानक धुंधलेपन में डुबो दिया। लेकिन भूत गायब हो गया था। किसी असली घुसपैठिए का इतनी जल्दी आना और जाना नामुमकिन था। न बाहर जाने का रास्ता, न अंदर आने का। क्योंकि यह उस समय की बात है जब बोस्टन में कुख्यात बोस्टन स्ट्रैंगलर आतंक मचा रहा था, इसलिए रीटा ने दरवाजों पर डबल लॉक लगाने और सभी खिड़कियों को सुरक्षित करने का खास ख्याल रखा था। बिना बहुत शोर मचाए कोई भी ट्रेलर में घुस नहीं सकता था। मैंने ताले और खिड़कियाँ जाँची हैं—यहाँ तक कि हुडिनी भी ऐसा नहीं कर सकता था।

ट्रेलर में मानसिक ऊर्जा

एक बार रीता के शयनकक्ष में अपना डेरा जमा लेने के बाद, वह भूत बार-बार सुबह-सुबह आता था। कभी-कभी वह सप्ताह में तीन बार प्रकट होता था, और कभी-कभी इससे भी अधिक बार।

“वह हर समय मेरी तरफ घूर रहा था,” रीटा ने हल्के वियनाई लहजे में कहा, और यह साफ दिख रहा था कि उसकी आँखों से डर कभी दूर नहीं हुआ था। तीन हज़ार मील दूर होने के बावजूद, उस रहस्यमयी अजनबी का उस महिला पर गहरा असर था।

क्या वह शायद कुछ खोज रहा था? नहीं, ऐसा नहीं लग रहा था। रसोई में, वह या तो मेज के पास खड़ा रहता था या काउंटर पर बैठ जाता था। भूतों को भोजन की आवश्यकता नहीं होती —तो फिर रसोई में क्यों?

मैंने सोचा, "क्या उसने कभी अपनी टोपी उतारी थी?"

“नहीं, कभी नहीं,” उसने मुस्कुराते हुए कहा। ज़रा सोचिए, कोई भूत ट्रेलर की मालकिन को सलाम करे!

सबसे डरावनी बात यह थी कि वह प्रेत बिल्कुल खामोश था। जब वह चुपचाप पास से गुज़रता था, तो उसे न तो उसके कदमों की आहट सुनाई देती थी और न ही उसके कपड़ों की सरसराहट। न ही उसने कुछ बोलने की कोशिश की। कुछ भी नहीं। बस खामोश निगाहें।

जब यह सिलसिला ज़्यादा बार होने लगा, तो रीटा ने रात भर बत्ती जलाकर रखने का फैसला किया। उसके बाद, उसने उसे फिर कभी नहीं देखा। लेकिन वह अब भी वहीं था, हमेशा की तरह, बिस्तर के पीछे खड़ा, उसे घूर रहा था। वह जानती थी कि वह वहीं है। वह लगभग उसकी निगाहों की चुभन महसूस कर सकती थी।

रीटा कामकाजी पोशाक में

एक रात उसने ठान लिया कि अब बहुत हो गया बिजली का बिल भरना। वह बिस्तर से उठी, लाइट का स्विच बंद किया और जैसे ही कमरा फिर से अर्ध-अंधेरे में डूब गया, वह बिस्तर पर लेट गई। कुछ ही मिनटों में उसकी आँखें अंधेरे की आदी हो गईं। उसकी इंद्रियाँ सतर्क थीं, क्योंकि उसे बिल्कुल भी यकीन नहीं था कि वह क्या देखेगी। आखिरकार, उसने खुद को मजबूर करके दरवाजे की तरफ सिर घुमाया। क्या उसका मन उसे धोखा दे रहा था? वहाँ, दरवाजे पर, भूत खड़ा था। उतना ही विशाल और गंभीर जितना पहले था।

चीखते हुए वह चादर के नीचे छिप गई। जब वह सदियों बाद बाहर निकली, तो दरवाजे से परछाई गायब हो चुकी थी।

अगली शाम, ट्रेलर में फिर से बत्तियाँ जल उठीं, और उसके बाद हर रात, जब तक कि उसे अपने सीज़न के नाइटक्लब के काम के लिए जर्मनी जाने का समय नहीं आ गया। फिर उसने ट्रेलर बंद कर दिया, अपने बच्चों को दोस्तों के पास छोड़ दिया, और इस धुंधली उम्मीद के साथ चली गई कि सर्दियों में लौटने पर ट्रेलर में भूत का साया नहीं होगा। लेकिन उसे इस बात का ज़रा भी यकीन नहीं था।

मुझे यह बात स्पष्ट रूप से समझ आ गई थी कि यह विदेशी नर्तकी एक माध्यम थी, क्योंकि केवल मानसिक शक्तियों वाले व्यक्ति ही प्रेत-दर्शन को "देख" सकते हैं।

*113

वह भूत जो जाने को तैयार नहीं था

मैंने अभी-अभी न्यूज़डे के स्तंभकार जैक अल्ट्सचुल के न्यूयॉर्क राज्य स्थित घर में घटित हो रही रंगीन भूतिया घटनाओं की जांच पूरी ही की थी, जिसके परिणामस्वरूप मेरा नाम उनके कॉलम में भूतों का पीछा करने वाले व्यक्ति के रूप में छपा था, तभी मुझे एक ऐसे सज्जन से सूचना मिली, जो अब दिवंगत हैं, और जो स्पेरी कंपनी के जनसंपर्क निदेशक थे और जिनका भूतों से आमतौर पर कोई संबंध नहीं था।

केन ब्रिघम चाहते थे कि मुझे पता चले कि मेन में उनके ग्रीष्मकालीन घर में एक भूत रहता है, और मैं इसके बारे में क्या करूँ। उन्होंने मुझे आश्वस्त किया कि जिस महिला भूत के बारे में वे बता रहे थे, वह उन्हें और उनके परिवार को बिल्कुल भी डरावनी नहीं लगती, फिर भी वे चाहेंगे कि वह कहीं और चली जाए। यह भावना मैंने भूतिया संपत्ति के अधिकांश मालिकों में पाई है, और यद्यपि यह कुछ हद तक भावुकता की कमी दर्शाती है, फिर भी भूत के दृष्टिकोण से यह एक ठोस बात है क्योंकि एक तरह से कहें तो, धरती पर रहने वाली आत्मा का कोई भविष्य नहीं होता।

यह सब जनवरी 1967 में हुआ था। मुझे इसमें गहरी दिलचस्पी थी। उस समय, मैं दिवंगत एथेल जॉनसन मेयर्स के साथ मिलकर काम कर रहा था, जो अब तक की सबसे बेहतरीन ट्रान्स मीडियम में से एक थीं, और मुझे तुरंत यह ख्याल आया कि अगर मामला इसकी मांग करता है, तो मैं उन्हें इसमें शामिल कर लूंगा।

मैंने श्री ब्रिघम से, अपनी प्रथा के अनुसार, अपनी रिपोर्ट लिखित रूप में देने का अनुरोध किया, ताकि मुझे भूतिया घटना की प्रकृति के बारे में बेहतर जानकारी मिल सके। उन्होंने एक प्रमुख वाद्य यंत्र निर्माता कंपनी के जनसंपर्क अधिकारी से अपेक्षित सटीकता के साथ यह कार्य किया। तो प्रस्तुत है उनकी प्रारंभिक रिपोर्ट:

जनसंपर्क/विज्ञापन पेशे से जुड़े होने के नाते, मुझे हमेशा से एक संशयवादी, शांत स्वभाव का व्यक्ति माना जाता रहा है और मैं खुद को भी ऐसा ही मानता हूँ। मैं अंधविश्वासी नहीं हूँ, सीढ़ियों के नीचे से नहीं गुजरता, मैंने कभी "आध्यात्मिक जगत" के बारे में नहीं सोचा, मैं कोई गहरा धार्मिक व्यक्ति नहीं हूँ, इत्यादि, लेकिन...

आठ साल पहले, मेरी पत्नी और मैंने मेन के साउथ वाटरफोर्ड में एक गैर-उपयोगी फार्महाउस को गर्मियों के घर के रूप में खरीदा था। दस कमरों वाला यह फार्महाउस हमारे खरीदने से दो साल पहले तक खाली पड़ा था। इसके पूर्व मालिक एक बुजुर्ग दंपत्ति थे, जिनकी कोई सीधी संतान नहीं थी और जो अपने जीवन के अंतिम वर्षों में लगभग एकांतवास में रहते थे। ऐसा लगता है कि घर का निर्माण दो चरणों में हुआ था, सामने का हिस्सा लगभग 1840 में और बीच का हिस्सा लगभग 1800 के आसपास। बीच के हिस्से में मूल रसोईघर और पारिवारिक शयनकक्ष है; ऊपर की ओर बने मचान का उपयोग उन्नीसवीं शताब्दी के दौरान खेत में काम करने वालों और बच्चों के लिए किया जाता था। पूर्व मालिक कई वर्षों तक केवल एक बैठक कक्ष, रसोईघर और भोजन कक्ष में ही रहते थे; बाकी सभी कमरे बंद और खिड़कियों पर लगे हुए थे। तथाकथित बैठक कक्ष ही उनका दिन-रात का निवास स्थान था। हम बेल दंपत्ति से कभी नहीं मिले, जिनकी मृत्यु हमारे फार्महाउस खरीदने से कई साल पहले इलाके के नर्सिंग होम में वृद्धावस्था के कारण हो गई थी। उन्होंने इसे रिश्तेदारों के नाम कर दिया था; सारा फर्नीचर नीलाम कर दिया गया था।

पहली गर्मियों में, मैंने और मेरी पत्नी ने फार्महाउस की मरम्मत का काम शुरू किया। पुरानी रसोई हमारा बैठक कक्ष बन गई; बेल्स का बैठक कक्ष एक और शयनकक्ष बन गया; पुराना भोजन कक्ष हमारी रसोई बन गया। एक दोपहर, मैं नए बैठक कक्ष में पेंटिंग कर रहा था। घर के सभी दरवाजे खुले थे। मुझे लगा कि कोई मुझे देख रहा है, इसलिए मैं शयनकक्ष के दरवाजे की ओर मुड़ा और वहाँ, तेज धूप में, एक बुजुर्ग महिला खड़ी थी; वह मुझे घूर रही थी। एक

घरेलू पोशाक पहने, उसके हाथ कई गृहिणियों की तरह मुड़े हुए थे। मैं चौंक गया, यह सोचकर कि वह खुले दरवाजे से घर में दाखिल हुई होगी और सामने के बैठक कक्ष से होते हुए अब बने शयनकक्ष तक आ गई होगी। अपने चश्मे के पीछे, उसने एक शांत, जिज्ञासु भाव बनाए रखा था। एक-दो पल के लिए, हम एक-दूसरे को देखते रहे। मैंने सोचा, अपने घर से गुज़रने वाले किसी स्थानीय व्यक्ति से बिना असभ्य लगे क्या कहा जाए? और मैं कुछ ऐसा कहने ही वाला था, जैसे, मैं आपके लिए क्या कर सकता हूँ? तभी वह गायब हो गई। वह वहाँ थी और फिर गायब हो गई। मैंने जल्दी-जल्दी बेडरूमों की ओर दौड़ लगाई और, ज़ाहिर है, वहाँ कोई नहीं था।

उस गर्मी में एक-दो बार ऐसा हुआ कि दूसरी मंज़िल के उस कमरे में, जिसे हम मुख्य शयनकक्ष के रूप में इस्तेमाल करते थे, अचानक ठंडी हवा का झोंका आने से मेरी नींद खुल गई। एक शाम जब मैं नहा रहा था, मेरी पत्नी ने लगभग घबराहट भरी आवाज़ में मुझे बैठक से पुकारा। मैं जितनी जल्दी हो सके नीचे भागा, लेकिन उसने मुझसे पूछा कि क्या मैं नीचे ही रुकना चाहता हूँ।

सर्दियों के लिए घर बंद करने से पहले, मैंने स्थानीय मित्रों को उस प्रेत के बारे में अनौपचारिक रूप से बताया, लेकिन अपने कारण नहीं बताए। मैंने यह कहकर बात टाल दी कि मुझे पिछले मालिक में दिलचस्पी थी। जाहिर है, मेरा वर्णन सटीक था, क्योंकि हमारे मित्र जानना चाहते थे कि मैंने श्रीमती बेल को कहाँ देखा था; मुझे यह बात टालने में मुश्किल हो रही थी।

मेरी पत्नी पर इसका कोई असर नहीं पड़ा, और उसी शाम हमने पहली बार आपस में बातचीत की। उसने बताया कि जिस रात उसने मुझे फोन किया था, उसे अपने पीछे ठंडी हवा का झोंका महसूस हुआ था और उसने ऊपर पूर्व बैठक कक्ष के दरवाजे की ओर देखा (जो अच्छी तरह से रोशन था)। वहाँ, दरवाजे पर, एक छोटी महिला की स्पष्ट और पूरी परछाई दिखाई दी। मेरी पत्नी ने तब मुझे पुकारा। ठंडी हवा कमरे से गुजरी और परछाई गायब हो गई। हालांकि, मेरी पत्नी ने बताया कि आश्चर्यजनक रूप से उसे शांति का अनुभव हुआ। प्रतिशोध की कोई भावना नहीं थी।

पिछले कुछ वर्षों में, हम दोनों अचानक ठंडी हवा के झोंके से जाग जाते हैं और कई बार कमरे में एक छोटी सी रोशनी को नाचते हुए देख चुके हैं। घर एकांत में और एक निजी सड़क पर

स्थित है, इसलिए गाड़ियों की लाइटें आदि आने की संभावना नहीं है। कुछ क्षणों के बाद, ठंड गायब हो जाती है।

कुछ मौकों पर, मेहमानों ने घर से चरमराहट की आवाज आने या कदमों की आहट सुनने के बारे में हमसे सवाल किया है, लेकिन हम इन बातों को टाल देते हैं।

हालांकि, पिछले से पिछले साल की गर्मियों में हमारे मेहमानों की प्रतिक्रिया अलग थी।

दो छोटे बच्चों वाला एक दंपत्ति हमारे यहाँ रुका था। दंपत्ति ने पहले वाला बैठक कक्ष लिया, जिसे अब एक विशाल पीतल के पलंग वाले विक्टोरियन शैली के शयनकक्ष में सजाया गया है। उनकी बेटी पहली मंजिल के एक अन्य शयनकक्ष में थी, और उनका बेटा दूसरी मंजिल पर हमारे बेटे के शयनकक्ष में सोया। बाद वाले शयनकक्ष और स्नानघर में रात की बत्ती जलती रहती थी, जिससे ऊपरी गलियारा और निचला गलियारा हल्की रोशनी से जगमगा रहा था। मेरी पत्नी और मैं दूसरी मंजिल के एक अन्य शयनकक्ष में ठहरे, जैसा कि हमारी आदत है।

सुबह तड़के, ऊपरी गलियारे से आती हुई कदमों की आहट सुनकर हम जाग गए।

वे हमारे दरवाजे से गुजरे, मुख्य शयनकक्ष में गए, थोड़ी देर रुके, फिर हमारे कमरे में आए और कुछ मिनट बाद सीढ़ियों से नीचे चले गए। मेरी पत्नी ने आवाज़ लगाई, शायद उसे लगा कि कोई लड़का बीमार है। कोई जवाब नहीं मिला। ठंडी हवा चल रही थी, और मेरी पत्नी ने फिर से उस महिला की परछाईं शयनकक्ष की दीवार पर देखी। बच्चे गहरी नींद में सो रहे थे।

सुबह नाश्ते के दौरान हमारे वयस्क मेहमान शांत थे, और बाद में ही उस महिला ने पूछा कि क्या हम रात में जागे थे और नीचे आए थे। वह कदमों की आहट और किसी के हाथ व बालों को छूने से जाग गई थी। उसे लगा कि यह उसका पति है, लेकिन उसने पाया कि वह गहरी नींद में सो रहा था। चांदनी में, उसने बेडरूम में रखी एक झूला कुर्सी की ओर देखा और कहा कि उसे यकीन है कि किसी ने उसे और उस पर रखे कपड़ों को हिलाया है। उसने दोबारा सोने की कोशिश की, लेकिन फिर से जाग गई, उसे यकीन था कि कमरे में कोई है, और उसने महसूस किया कि किसी ने कंबल हटाया और उसके हाथ को छुआ।

मेरी पत्नी और मैंने आखिरकार अपने "भूत" को स्वीकार कर लिया, लेकिन हमारी महिला अतिथि ने हमें आश्वासन दिया कि उसे कोई डर नहीं लगा, खुद उसे आश्चर्य हुआ, और आम

तौर पर वह ऐसी "बकवास" पर विश्वास नहीं करती, सिवाय इसके कि मैं, उसका मेजबान, एक अध्यात्मवादी होने के लिए बहुत "सांसारिक" था।

कम से कम एक अन्य अतिथि ने भी इसी तरह का अनुभव साझा किया।

आखिरकार मैंने अपनी कहानी अपने स्थानीय दोस्तों को बताई, और उनसे गुज़ारिश की कि वे इसे किसी को न बताएं, कहीं लोग हमें पागल न समझ लें। लेकिन मैंने उनसे बेल परिवार की एक तस्वीर ढूंढने का अनुरोध किया। ज़ाहिर है, उन्हें जो तस्वीर मिली, वह बिल्कुल मेरी छवि से मिलती-जुलती थी। अब उस तस्वीर की एक बड़ी कॉपी हमारे लिविंग रूम में प्रमुखता से लगी हुई है।

हालांकि इस अनुभव ने हमें घर से डराकर भगाया नहीं है, लेकिन इसने हमें असमंजस में डाल दिया है। मेरी पत्नी और मैं दोनों यही महसूस करते हैं कि जो भी है, वह अप्रिय से ज़्यादा विचित्र है; विनाशकारी से ज़्यादा दिलचस्प है।

मैं प्रभावित हुआ और मैंने जवाब दिया कि हम ज़रूर पूर्वी न्यू हैम्पशायर की यात्रा करेंगे। संयोग से, उस समय मेरी पत्नी कैथरीन और मैं अगस्त के महीने में न्यू हैम्पशायर के ऊपरी इलाके में यात्रा कर रहे थे, और एथेल जॉनसन मेयर्स लेक सेबागो में छुट्टियां मना रही थीं। बस हमें अपनी यात्रा योजनाओं का समन्वय करना था और तारीख तय करनी थी।

श्री ब्रिघम, जो उस समय ग्रेट नेक, न्यूयॉर्क में रहते थे, बहुत प्रसन्न हुए और उन्होंने हमें न्यू हैम्पशायर के पाइक से, जहाँ मैं लेक टार्लेटन क्लब में व्याख्यान दे रहा था, मेन के ब्रिजटन में कंबरलैंड होटल में एथेल से हमारी मुलाकात के लिए जाने के बारे में स्पष्ट निर्देश दिए। हमने 14 अगस्त, 1967 की तारीख चुनी। केन और डोरिस ब्रिघम ने सुझाव दिया कि यदि आवश्यक हो तो हम उस भूतिया घर में रुक सकते हैं, और मैंने उन्हें आश्वस्त किया कि मुझे इसकी आवश्यकता नहीं लगती, क्योंकि मुझे पूरा विश्वास था कि मैं उसी दिन भूत से संपर्क करके उसे भगा दूँगा।

* * *

न्यू हैम्पशायर से मेन तक लगभग अछूते जंगलों को पार करते हुए कंकमागस हाईवे नामक सड़क पर यात्रा करना हमारे लिए एक अनोखा अनुभव था: हमने बहुत लंबे समय तक बिना

किसी मानव बस्ती या पेट्रोल पंप को देखे ही सफर तय किया। लेकिन जिन आदिवासियों की यह भूमि थी, उन्हें ऐसी सुविधाओं की कभी परवाह ही नहीं थी।

हमारे रवाना होने से पहले, हमें केन ब्रिगहम से एक संक्षिप्त नोट मिला था जिसमें व्हाइट माउंटेंस से होकर गुजरने वाली इस सड़क के बारे में बताया गया था। उन्होंने मुझे यह भी बताया कि घर में हुई घटनाओं के कुछ प्रत्यक्षदर्शी हमारे दौरे के दौरान वहाँ मौजूद रहेंगे और मुझे उनसे मिलने का मौका मिलेगा, जिनमें श्रीमती मिल्ड्रेड हेन्स नोयेस भी शामिल थीं, जो एक पड़ोसी थीं और ब्रिगहम परिवार के लिए उस प्रेतवाधित आकृति की पहचान करने में सक्षम थीं। श्री ब्रिगहम ने आगे बताया कि अधिकांश घटनाएँ घर के निचले तल पर स्थित बैठक कक्ष, साथ ही लंबे केंद्रीय हॉल और ऊपरी मंजिल के एक सामने वाले शयनकक्ष में घटी थीं।

उस समय मैंने जांच को रिकॉर्ड करने के लिए एक टेलीविजन डॉक्यूमेंट्री क्रू को साथ लाने के बारे में सोचा था, लेकिन ऐसा कभी नहीं हो पाया, और अंत में मैंने खुद कुछ फिल्मांकन किया और साक्षात्कारों की ध्वनि रिकॉर्डिंग की, और निश्चित रूप से, एथेल मेयर्स की समाधि की भी।

जब हम आखिरकार मेन के वाटरफोर्ड में उस घर पर पहुँचे, तो एथेल को बिल्कुल भी पता नहीं था कि वह कहाँ है और क्यों। जब भी मैंने उससे मदद माँगी, उसने कभी कोई सवाल नहीं पूछा। पहुँचते ही वह घर के पास के मैदान में इधर-उधर टहलने लगी, मानो वह अपने आस-पास की स्थिति का जायजा ले रही हो। वह अक्सर ऐसा करती थी, और मैं अपने टेप रिकॉर्डर के साथ उसके पीछे-पीछे ऐसे चलता था जैसे कोई कुत्ता अपने मालिक के पीछे चलता है।

“मुझे खिड़की पर एक महिला रोती हुई दिख रही है,” उसने अचानक कहा और ऊपर की खिड़की की ओर इशारा किया। “उसने पीली टोपी और पोशाक पहनी हुई है। उसके साथ एक कुत्ता है। वह इस काल की नहीं है। वह बाहर देख रही है, किसी चीज को घूर रही है।”

फिर हम घर में दाखिल हुए और नीचे एक बेहद सजे-धजे बैठक कक्ष में पहुँचे; अगस्त के मध्य में भी चिमनी में जलती आग से कमरा गर्म था। घर और उसका सारा फर्नीचर यथासंभव संघीय काल की शैली में ही रखा गया था, और ऐसा लग रहा था मानो हम अचानक एक जीवंत अतीत में लौट आए हों।

जब हम बगल के भोजन कक्ष में दाखिल हुए, तो एथेल ने एक लंबी खिड़की की ओर इशारा करते हुए हमें बताया कि वह महिला अभी भी वहीं खड़ी है।

“गहरी भूरी आँखें, उभरी हुई गाल की हड्डियाँ, छोटी सी नाक, अब उसने अपनी टोपी पीछे कर ली है, गहरे लाल-भूरे बाल,” एथेल ने कहा। मैं तस्वीरें लेता रहा, कैमरा उस जगह की ओर करके जहाँ एथेल के अनुसार भूत खड़ा था। तस्वीरों में कुछ खास नहीं दिखा, वैसे भी एथेल फोटोग्राफी में माहिर नहीं थी, यानी वह माध्यम बनने की उस खास अवस्था में नहीं थी। मैंने एथेल से उस महिला को आश्वस्त करने को कहा कि हम मित्रता और शांति के भाव से आए हैं, ताकि उसकी उन सभी समस्याओं को सुलझाने में मदद कर सकें जिनके कारण वह अभी भी यहाँ है। मैंने एथेल से उस महिला का नाम पता करने को कहा। एथेल ने मेरी बात सुनी, फिर बोली, “मैं उसे इसाबेल, इसाबेल... कहकर बुलाना पसंद करती हूँ।”

"उसका घर से क्या संबंध है?"

"यहां पर निवास किया है।"

मैंने एथेल को सुझाव दिया कि वह उस महिला को बता दे कि हम उससे बात करना चाहते हैं। एथेल ने गंभीरता से उस भूतनी से बात की और उसे आश्वस्त किया कि उसे कोई नुकसान नहीं होगा। एथेल ने बताया कि सांत्वना मिलने के बजाय, वह महिला रोती ही रही।

हमने भूतनी से घर का भ्रमण जारी रखते हुए हमारे साथ चलने का अनुरोध किया; हम कोशिश करेंगे कि एथेल के माध्यम से घर के किसी ऐसे हिस्से में संवाद स्थापित करें जहाँ वह सहज महसूस कर सके। इस बीच, जैसे-जैसे हम एक कमरे से दूसरे कमरे में जाते गए, एथेल को और भी मानसिक अनुभव प्राप्त होते गए।

“यहाँ कई परतें हैं...तीन परतें...यहाँ पुरुष लड़ रहे हैं और मर रहे हैं....” उसने कहा। “यहाँ भारतीय प्रभाव भी प्रबल है...फिर यहाँ एक छोटा बच्चा है...बाद का समय...पुरुषों के पास बंदूकें हैं, खून बह रहा है...जूते नहीं हैं...काफी पीछे...आदम...जोसेफ...बाल्थाजार...युद्ध पीड़ित...घर अलग दिखता है...वे दर्द से कराहते हुए फर्श पर पड़े हैं...यहाँ किसी तरह की झड़प हुई है।”

मैंने उस महिला भूतनी का फिर से पीछा करने का फैसला किया। हम बैठक कक्ष में लौट आए। एथेल ने एक आरामदायक कुर्सी चुनी और आने वाली समाधि जैसी अवस्था के लिए खुद को तैयार किया।

“मुझे हैटी...और मार्टिन के नाम सुनाई देते हैं...खिड़की पर बैठी महिला नहीं...शुरुआती दौर में पुरुषों की लड़ाई से जुड़ी हुई...घर के अंदर नहीं, बाहर...गोले? कुछ और...यह उनका घर है। वे परेशान नहीं हैं, लेकिन वे अपनी ऊर्जा दूसरी महिला को दे रही हैं। लूथर नाम का कोई आता है। किसी का नाम मैरीगोल्ड है...मैरी...कोई कहता है, घर बिल्कुल बदल गया है।”

मैंने एथेल को उन बातों को बताने से रोकने का फैसला किया जो शायद अतीत की मानसिक छापें थीं न कि सचमुच के भूत, हालाँकि इस अंतर को लेकर हमेशा निश्चित नहीं हुआ जा सकता। लेकिन मेरे अनुभव ने मुझे सिखाया है कि उसने जो कुछ भी सुना था, वह किसी सांसारिक आत्मा की तुलना में कहीं अधिक बिखरा हुआ और खंडित प्रतीत होता था।

“अब्राहम...”, एथेल ने धीरे से कहा और हमारी आँखों के सामने ही धीरे-धीरे गहरी समाधि में चली गई। अगली आवाज़ जो हम सुनेंगे, वह शायद उसके मार्गदर्शक अल्बर्ट की होगी, जो आमतौर पर आगे आने वाली अन्य आत्माओं का परिचय कराता है, या फिर किसी अजनबी की हो सकती है—लेकिन वह निश्चित रूप से एथेल की नहीं होगी।

“यह एक पुरुष है। अब्राम...इब्राम...”, उसने हांफते हुए कहा। मैंने उससे अल्बर्ट से माहौल को शांत करने में मदद करने का अनुरोध किया।

एथेल का आमतौर पर शांत रहने वाला चेहरा अब पूरी तरह से विकृत हो गया था, मानो वह बहुत दर्द में हो और उसके हाथ उसके गले पर थे, जिससे घुटन का आभास हो रहा था; इसके साथ ही उसके मुंह से अस्पष्ट आहें और ओ की आवाजें निकल रही थीं। मैंने उसे शांत करने की कोशिश जारी रखी।

मैं बार-बार पूछता रहा कि संदेशवाहक कौन है, लेकिन कराहना जारी रहा। उसी समय, एथेल को नियंत्रित कर रही शक्ति ने संकेत दिया कि उसकी गर्दन या गला इस तरह घायल हो गया है जैसे फांसी या गला घोंटने से हुआ हो। फिर भी, मैंने हमेशा की तरह ऐसे मामलों में पहचान बताने का अनुरोध जारी रखा, शांत और सौम्य स्वर में और यह आश्वासन देते हुए कि दर्द अब अतीत की बात है और केवल एक याद बनकर रह गया है।

अंत में, उस प्राणी ने बताया कि उसका नाम अब्राहम था और वह बहुत दर्द में था।

“अब्राहम...एबेन...मेरी जीभ!” उस सत्ता ने कहा, और सचमुच ऐसा लग रहा था जैसे वह अपनी जीभ का ठीक से इस्तेमाल नहीं कर पा रहा हो। स्पष्ट था कि उसकी जीभ काट दी गई थी, और मैं उसे बार-बार समझा रहा था कि अब वह माध्यम का इस्तेमाल कर रहा है, इसलिए उसे साफ-साफ बोलना आना चाहिए। लेकिन वह इस तरह बोलता रहा कि मैं बस इतना ही समझ पाया, “मेरा घर।”

क्या यह आपका घर है?

"हाँ...आप क्यों जानना चाहते हैं...आप कौन हैं?"

मैं आपका दोस्त हूँ, आपकी मदद करने आया हूँ। क्या यह आपका घर है?

"मैं यहाँ रहता हूं...."

"आपकी आयु कितनी है?"

कोई जवाब नहीं।

यह कौन सा वर्ष है?

“अठहत्तर...चलते-चलते...उनहत्तर....”

"आपकी आयु कितनी है?"

“बूढ़ा आदमी...बावन वर्ष का....”

"आपका जन्म कहां हुआ था?"

“मैसाचुसेट्स...लोवेल....”

“तुम्हें किसने चोट पहुंचाई?”

तुरंत ही वह फिर से बेचैन हो गया, और उसकी आवाज अस्पष्ट हो गई, जीभ कटने के लक्षण फिर से दिखने लगे। मैंने उसे एक बार फिर शांत किया।

मैंने विषय बदलते हुए पूछा, "आप किस चर्च में जाते थे?"

“मैं चर्च ज्यादा नहीं जाता...,” उसने जवाब दिया।

“आपका बपतिस्मा कहाँ हुआ था?”

“सेंट फ्रांसिस... एपिस्कोपल।”

मैंने सुझाव दिया कि उस प्राणी को अब आराम करना चाहिए, क्योंकि वह फिर से उत्तेजित हो रहा था, और मुझे माध्यम के लिए भी डर लग रहा था।

उन्होंने कहा, "मुझे न्याय चाहिए...न्याय..."।

मैंने उसे शांत करने के लिए आश्वासन दिया कि उसके साथ गलत करने वालों को सजा मिल चुकी है। लेकिन उसने मेरी बात नहीं मानी।

“वे वहां हर रात लड़ते हैं....”

मैंने फिर से उसका भूत भगाने का प्रयास शुरू किया, लेकिन वह इसके लिए पूरी तरह तैयार नहीं था।

“मेरी बेटी... लिसा... एलिजाबेथ....”

"उसकी क्या उम्र है?"

“तेरह... वो मेरे लिए रोती है, वो मेरे लिए रोती है, वो सिसकियाँ भरती है... सारा खून... वे उसे भी ले जाते हैं....”

"आपकी पत्नी कहाँ है?"

“उसने हमें दुख में छोड़ दिया। जोहाना... उसका नाम मत लो... उसने हमें दुख में छोड़ दिया।”

“वह कौन सा वर्ष था?”

“इसी साल। अभी....”

“उसने तुम्हें क्यों छोड़ दिया?”

"मुझें नहीं पता।"

"वह कब चली गई?"

"मुझें नहीं पता।"

और उन्होंने आगे कहा, "मैं उसे ढूंढने जाऊंगा... मैं उसे कभी नहीं देखता..."

“आपके माता-पिता का क्या हुआ? क्या वे जीवित हैं?”

"अरे नहीं...."

“उनकी मृत्यु कब हुई?”

“1776.”

अब आवाज में लहजे का स्पष्ट प्रभाव दिखाई दे रहा था।

“उन्हें कहाँ दफनाया गया है?”

पानी के ऊपर... अटलांटिक महासागर... घर...

“तुम्हारे लोग कहाँ से आए थे?”

“वेल्स...ग्रीनफ....”

आगे की पूछताछ में पता चला कि वह पांचवीं रेजिमेंट में कैप्टन था।

मैंने पूछा, “क्या आपने राजा की सेवा की या उपनिवेशों की सरकार की?” जवाब गर्व से आया।

“राजा।”

जब मैंने उनसे उस रेजिमेंट के कमांडिंग ऑफिसर का नाम पूछा जिसमें उन्होंने सेवा की थी, तो वे उत्तेजित हो गए और मुझ पर फुफकारते हुए बोले... "मैं एक अमेरिकी नागरिक हूँ... आपको पता होना चाहिए!"

“क्या आप देशभक्त हैं या टोरी?”

उन्होंने जवाब दिया, "मैं आपको उस शब्द का प्रयोग नहीं करने दूंगा," जिसका अर्थ था कि वह टोरी पार्टी के सदस्य नहीं थे।

मैंने यह समझाने की कोशिश की कि समय बीत चुका है, लेकिन उसने मुझे पागल कहा; फिर मैंने सुझाव दिया कि मैं एक दोस्त के रूप में आया था, जिस पर उसने कड़वा जवाब दिया।

युद्ध के समय दोस्तों का क्या महत्व होता है?

मैंने समझाया कि युद्ध बहुत पहले ही समाप्त हो चुका था।

“युद्ध अभी खत्म नहीं हुआ है...मैं एक अमेरिकी हूँ...मुझे दोबारा उकसाने की कोशिश मत करो....”

मैंने एक बार फिर उनसे उनके कमांडिंग ऑफिसर का नाम पूछा और इस बार हमें स्पष्ट उत्तर मिला: ब्रॉडेरिक। वह पैदल सेना में नहीं, बल्कि घुड़सवार सेना में थे। आखिरकार हमें कुछ जवाब मिल रहे थे। फिर मैंने उनसे पांचवीं रेजिमेंट में उनके कुछ साथी अधिकारियों के नाम पूछे।

“सब मर गए...,” उसने स्वर बदलकर कहा, और जब मैंने कुछ नाम बताने पर जोर दिया, तो उसने आगे कहा, “एंथनी...मर्डोक...सर्जन...मेरा सिर दुख रहा है!”

"क्या आपको कोई अधिकारी याद हैं?"

“मैथ्यू....”

मैंने पूछा कि वह किन-किन लड़ाइयों में शामिल था।

“चैम्प्लेन...सेंट लॉरेंस...यह बुरा है, यह बुरा है....”

वह फिर से उत्तेजित होने के लक्षण दिखा रहा था, और समय तेजी से बीत रहा था।

मैंने उस बेचारे पीड़ित को रिहा करने का फैसला किया और उससे पूछा कि क्या वह अब अपने प्रियजनों के पास जाने के लिए तैयार है। एक बार फिर उसने युद्धों के उन अनुभवों को फिर से जी लिया।

“वह अब घर नहीं लौटेगा...हैटरस...आग...मैं थक गया हूँ।”

मैंने उसका भूत-प्रेत भगाने का प्रयास शुरू किया, और उसे सुझाव दिया कि वह उस घर को छोड़ दे जहां उसने इतना कष्ट सहा था।

“मेरा घर...मेरी ज़बान...भारतीय,” वह बार-बार दोहराता रहा।

लेकिन अंततः एथेल के आध्यात्मिक मार्गदर्शक (और पहले पति) अल्बर्ट की मदद से, मैं उसे पार ले जाने में सक्षम हो गया। अल्बर्ट ने अपनी स्पष्ट आवाज़ में समझाया कि घर में मौजूद स्त्री आत्माओं में से एक, उस आत्मा की पुत्री जिसे हमने अभी मुक्त किया था, अब संवाद कर सकती है। लेकिन मैं सोच रहा था कि क्या घर में कोई विचलित आत्मा भी मौजूद है, जो ज़रूरी नहीं कि इस व्यक्ति की रिश्तेदार हो। अल्बर्ट समझ गए और चले गए, और थोड़ी देर बाद, एक धुंधली, निश्चित रूप से स्त्री की आवाज़, अभी भी सम्मोहित माध्यम के होठों से आने लगी।

“एला...” आवाज पहले धीमी सी सुनाई दी।

फिर उसने बताया कि वह बहुत खुश थी और उसके साथ एक बच्ची थी। बच्ची का नाम लिली था। उसने दोहराया, उसका नाम एला था। जब मैंने उससे पूछा कि घर से उसका क्या संबंध है, तो उसने कहा, "वह हमेशा आता था... हर दिन... विलियम... मेरे घर...."

“वो कहाँ है? तुम्हें पता है वो कहाँ गया?”

अब उसकी आवाज़ में घबराहट थी। उसने कहा कि वह इस साल वैलेंटाइन डे पर चला गया था... और उसे यह भी याद नहीं था कि वह कौन सा साल था।

विलियम कौन था? क्या वह उसका पति था?

इससे वह घबरा गई।

उन्हें मत बताना!

उसने मुझसे विनती की। कहानी अशुभ लगने लगी। विली, एला, बच्चा...और उसका पति नहीं?

अब वह बेकाबू होकर रोने लगी। “विली अब नहीं आ रहा... वो कहाँ है?”

वह घर में क्या कर रही थी?

“खिड़की के पास विली का इंतज़ार करो...हमेशा खिड़की के पास। मैं उसका इंतज़ार करती हूँ और लिली का ख्याल रखती हूँ, वो बहुत प्यारी है। विली को ढूंढने के लिए मैं क्या कर सकती हूँ?”

मैंने उसका भूत-प्रेत भगाने का प्रयास शुरू किया, क्योंकि वह अपने बारे में और कुछ नहीं बता पा रही थी। जाहिर है, पुराने दुःख के कारण उसकी याददाश्त कमजोर हो गई थी। ऐसा करते समय, उसे आत्माएं दिखाई देने लगीं। “ये मेरे पापा हैं...वे बहुत गुस्सा होंगे...किसी को मत बताना...मुझे अभी ले चलो...मेरे पापा सोचते हैं कि हमारी शादी हो गई है...लेकिन हमारी शादी नहीं हुई है...विली को मुझसे शादी करनी होगी....”

अब वह और भी जोर से रोने लगी।

“एंड्रयू...मेरे पति....”

मैंने एक बार फिर गाइड अल्बर्ट से उसे घर से बाहर ले जाने के लिए कहा। यह आसान नहीं था। वहाँ बहुत शोर था। लेकिन काम बन गया।

इस भावुक विस्फोट के तुरंत बाद अल्बर्ट ने बताया, "वह बाहर है, लेकिन उसके पिता को पता चल गया है।"

हम इस समय किस दौर में हैं?

“वह अठारह साल की लड़की।”

क्या हाल के अतीत से किसी प्रकार की कोई गड़बड़ी हुई है?

"हां, यह सच है। एक बुजुर्ग महिला... वह घर छोड़ना नहीं चाहती।"

इसके बाद अल्बर्ट ने समझाया कि खिड़की पर दिखाई देने वाली महिला को उसके जीवनकाल में पिछली शक्तियों ने अपने माध्यम से प्रकट होने के लिए इस्तेमाल किया था, जिससे उसके मन में अपनी पहचान को लेकर भ्रम पैदा हो गया था। अल्बर्ट को इस बात का अफसोस था कि वह उससे सीधे बात नहीं करवा सका। उसने बताया कि एंड्रयू उस दूसरी महिला का पिता था। दोनों महिलाओं की मृत्यु इसी घर में हुई थी, और चूंकि पहली महिला ने हार नहीं मानी, इसलिए दूसरी महिला भी जीवित नहीं रह सकी, अल्बर्ट ने समझाया।

"वे दोनों हमारे पक्ष में हैं, लेकिन वे आपके करीब हैं क्योंकि उनके विचार पृथ्वी तल पर हैं, आप उन तक पहुंच सकते हैं, जैसा कि आप कर रहे हैं।"

हमें और घर के मालिकों को यह आश्वासन देने के बाद कि अब सब कुछ शांत है और परेशान करने वाली आत्माएं मुक्त हो गई हैं, अल्बर्ट चले गए, और एथेल हमेशा की तरह अपने सामान्य रूप में लौट आई, जो अपनी माध्यमता के माध्यम से हुई घटनाओं से पूरी तरह अनजान थी।

पहले उल्लेखित दो महिलाएं, जिनका उस घर और उसमें घटित घटनाओं से संबंध था, इस बीच हमारे साथ शामिल हो गईं। श्रीमती एंथोनी ब्रूक्स, जो हमारी यात्रा से दो साल पहले अपने पति के साथ एक शयनकक्ष में सो रही थीं, ने यह कहा।

“मैं सो रही थी, तभी अचानक मेरे सिर के पीछे कुछ सरसराहट हुई और मेरी नींद खुल गई। पहले तो मुझे लगा कि मेरे पति हैं, इसलिए मैं करवट बदल कर दूसरी तरफ देखने लगी। लेकिन तभी मुझे अपने पेट पर दबाव महसूस हुआ, जो बहुत परेशान करने वाला था। मैंने पलटकर देखा तो पता चला कि मेरे पति गहरी नींद में सो रहे थे। फिर अचानक मेरे बिस्तर से चादर खींची जाने लगी और एक हल्की सी रोशनी दिखाई दी, जिसका कोई स्रोत नहीं था। मैं बहुत डर गई। मैं बाथरूम जाने के लिए ऊपर गई और सीढ़ियों पर चढ़ते ही मुझे लगा कि कोई मुझे धक्का दे रहा है और मैंने रेलिंग को कसकर पकड़ लिया है।”

इसके बाद मैंने श्रीमती मिल्ड्रेड हेन्स नोयेस से बात की, जिन्होंने खिड़की पर दिख रही प्रेतवाधित महिला की पहचान पूर्व निवासी श्रीमती बेल के रूप में की थी। उन्होंने ब्रिघम परिवार को जो कुछ बताया था, उसकी पुष्टि की जा रही थी। फिर स्वयं केन ब्रिघम ने बात की, और हमने उनके अनुभवों पर एक बार फिर विस्तार से चर्चा की।

मैं चिमनी के सामने खड़ा होकर पेंटिंग कर रहा था, और उस समय सामने वाले बेडरूम का एक दरवाजा था जिसे बाद में बंद कर दिया गया। सुबह का समय था, लगभग 11 बजे थे, दरवाजे और खिड़कियां खुली थीं, मेरी पत्नी डोरिस उस समय ऊपर थी, मैं अकेला था, और जब मैं वहां खड़े होकर पेंटिंग कर रहा था, मैंने बाहर देखा और दरवाजे पर एक महिला खड़ी थी। जब मैं उसे देख रहा था, तो मुझे यह अजीब लगा कि पड़ोसी बिना दरवाजा खटखटाए मेरे घर में घुस जाएंगे।

“वह वहाँ बस मुझे देखती खड़ी थी, हाथ बाँधे हुए। वह कद में छोटी, दुबली-पतली महिला थी, जिसने फूलों के प्रिंट वाली सूती ड्रेस पहनी थी, चश्मा लगाया हुआ था और फ्लैट हील वाले ऑक्सफोर्ड जूते पहने थे। यह सब दिन के उजाले में हो रहा था। मुझे समझ नहीं आ रहा था कि अपने घर में आई इस महिला से क्या कहूँ। मैं उससे कहने ही वाला था, ‘मैं आपके लिए क्या कर सकता हूँ?’ बस इतना ही सोच पाया, और तभी वह चली गई। मैं दौड़कर वापस हॉल में गया, यह सोचकर कि वह बूढ़ी औरत कितनी तेज़ी से चली गई होगी, लेकिन कहने की ज़रूरत नहीं, वहाँ कोई नहीं था। मैंने किसी से कुछ नहीं कहा, लेकिन कई हफ़्तों बाद, गर्मियों के दौरान, मेरी पत्नी और मैं दोनों रात में कई बार ठंडी हवा से जाग गए जो बेडरूम में आ रही थी। यह ऊपर के कमरों में से एक था। हम दोनों ने कुछ नहीं कहा, बस बिस्तर पर उठ बैठे और उठते ही हमने दीवार पर एक हल्की सी रोशनी को नाचते हुए देखा! हम यहाँ बहुत अलग-थलग हैं, और बाहर से बिल्कुल भी रोशनी नहीं आती। यह सिलसिला अगले साल तक चलता रहा।”

इस बिंदु पर यह निर्णय लिया गया कि श्रीमती ब्रिघम कहानी का अपना हिस्सा बताएंगी।

“जिस गर्मी में हमने यह घर लिया था,” श्रीमती डोरिस ब्रिघम ने कहना शुरू किया, “मैं यहाँ बैठी थी, शाम के लगभग पाँच बजे, मेरे पति ऊपर थे और मेरा बेटा कहीं बाहर था। मैं अकेली थी और मुझे एहसास था कि कोई यहाँ है, और इस सफेद दरवाजे पर एक गहरी काली

परछाई थी। यह ऊपर से नीचे तक एक महिला की आकृति थी, मैं उसके तीखे नैन-नक्श, चश्मे की रूपरेखा, उसके सिर के पीछे का पग कुत्ता, लंबी पोशाक और जूते देख सकती थी —अचानक, परछाई गायब हो गई, और एक ठंडी हवा मेरी ओर आई, और घूमकर मेरी कुर्सी के पीछे आकर रुक गई, और अचानक मुझे शांति और संतोष का एहसास हुआ, और सब कुछ ठीक हो गया। फिर, अचानक, मेरी कुर्सी के आसपास की ठंडी हवा, मैं उसे दूर जाते हुए महसूस कर सकती थी। फिर, लगभग हर रात ऊपर वाले कमरे में, कई सालों तक मैं आधी रात को किसी के कमरे में आने के एहसास से जाग जाती थी। लेकिन कई बार वहाँ टिमटिमाती रोशनी होती थी। हम दूसरे बेडरूम में चले गए, लेकिन वहाँ भी हम जाग जाते थे।" किसी ने मेरे बालों में उंगलियां फिराईं! कोई मुझसे सटकर खड़ा था, और उसी रात, एक पड़ोसी घर में थी, और उसने भी हमें यही कहानी सुनाई। किसी के सीढ़ियों से ऊपर आने की आहट। हवा के चलने का एहसास। छत पर एक काली परछाई, और फिर वह गायब हो गई। अक्सर जब बच्चे बीमार होते थे, तो हमें उसकी मौजूदगी का एहसास होता था। जब घर में बच्चे होते थे, तो यह एहसास हमेशा तेज़ होता था।

मुझे आश्चर्य हुआ कि क्या उसे कभी इस महिला के अलावा घर में किसी और की उपस्थिति का एहसास हुआ था।

श्रीमती ब्रिघम ने उत्तर दिया कि एक बार जब उन्हें अपने आसपास उस महिला की उपस्थिति का अहसास नहीं हुआ, तो वे घर में आईं और उन्हें बहुत गुस्सा आया। उन्हें लगा कि वह कोई और ही है।

मैंने फैसला किया कि श्रीमती मेयर्स के समाधि की अवस्था में प्राप्त कुछ सामग्री को, यदि संभव हो तो, सत्यापित करने का समय आ गया है, और मैंने इस संबंध में केन ब्रिगहम से उनकी टिप्पणियों के लिए संपर्क किया।

"यह मेरे जीवन के सबसे आश्चर्यजनक अनुभवों में से एक रहा है," उन्होंने कहना शुरू किया। "ऐसी कई बातें हैं जिनके बारे में मेरी पत्नी और मेरे अलावा कोई नहीं जान सकता। हमने घर के दस्तावेजों की गहन छानबीन की। यह सब कुछ सप्ताह पहले ही पता चला। मैं सामने की ओर खुदाई कर रहा था, नालियों की तैयारी कर रहा था, तभी मुझे कुछ विदेशी ईंटें मिलीं, जिनसे पता चलता है कि घर में विस्तार किया गया था। यह मूल घर नहीं है, यह कमरा जिसमें

हम हैं; यहाँ क्रांतिकारी युद्ध के अंत में महाद्वीपीय सैनिकों के लिए एक झोपड़ी बनाई गई थी।"

ये कॉटेज मैसाचुसेट्स के सैनिकों को वेतन के बदले में दिए गए थे, और उन्हें यहाँ कुछ एकड़ ज़मीन भी मिली थी। इस घर का कई बार जीर्णोद्धार किया गया है, सबसे हाल ही में लगभग 1870 में। यहाँ का कस्बा लगभग 1775 में बसा था; हमारे पास जो दस्तावेज़ हैं वे लगभग 1800 के हैं। घर के बारे में कई बातें किंवदंतियों में खो गई हैं। उदाहरण के लिए, नीचे एक नाला है जिसे म्यूटिनी ब्रुक कहा जाता है। यहाँ एक विद्रोह हुआ था और खून-खराबा हुआ था। यहाँ भारतीय भी रहते थे, जी हाँ, यह निश्चित रूप से भारतीय क्षेत्र था। एक समय यह बहुत घनी आबादी वाला इलाका था; 1900 तक भी यहाँ आसपास घर हुआ करते थे।

मुझे यह एहसास हुआ कि अब ऐसा नहीं था: जिस घर में हम थे वह अब पूरी तरह से ग्रामीण इलाके में अलग-थलग पड़ गया था।

"मूल शहर इसी पहाड़ी पर बना था, लेकिन वह गायब हो गया है," श्री ब्रिघम ने आगे कहा, और फिर एक अजीब संयोग का खुलासा किया (अगर ऐसा कुछ होता है!) कि उनके एक पूर्वज कई पीढ़ियों पहले यहां रहते थे, और फिर कनाडा चले गए थे।

“हमें अभी-अभी पता चला है कि एक समय में दो भाइयों ने अपने परिवारों के साथ मिलकर घर साझा करने और उसका नवीनीकरण करने का फैसला किया था,” ब्रिघम ने अपनी बात जारी रखते हुए कहा। “लेकिन उनमें से एक की घर में रहने से पहले ही मृत्यु हो गई। श्रीमती मेयर्स ने समाधि की अवस्था में जिन बातों का जिक्र किया, उनमें से अधिकांश बातें केवल स्थानीय लोगों को ही पता हैं।”

मैंने पूछा, "श्रीमती मेयर्स ने जिन दो महिलाओं का वर्णन किया था, उनके बारे में क्या?" उन्होंने जवाब दिया, "उन्होंने एक छोटी कद की, काले बालों वाली महिला का जिक्र किया था।"

श्री ब्रिघम ने कहा, “जब मैंने उसे देखा तो वह कद में छोटी थी, लेकिन उसके बाल भूरे थे। वह एक बिल्कुल स्वस्थ और मजबूत इंसान थी—मुझे वह रहस्यमयी नहीं लगी। हमने अपने बेटे को इसके बारे में हाल ही में बताया, और उसने हमें बताया कि उसने तीसरी मंजिल पर एक पुरुष और एक महिला के कदमों की आहट सुनी थी।”

"क्या आप किसी और बात पर टिप्पणी करना चाहेंगे?"

"खैर, हमारे पास समय-समय पर कुछ मालिकों के नाम हैं। कई मालिक थे, और रिकॉर्ड में दर्ज कुछ नाम एथेल मेयर्स द्वारा दिए गए नामों से मेल खाते हैं, जैसे एबेन।"

"जब श्रीमती मेयर्स ने इसाबेल नाम का जिक्र किया," श्रीमती ब्रिघम ने बीच में कहा, "तो मुझे लगा कि उनका मतलब एलिस बेल से है, जो निश्चित रूप से पूर्व मालिक का नाम था - खिड़की पर खड़ी महिला का।"

“एक बात और, जो मुझे आपको बतानी चाहिए, ऐसा लगता है कि भूत-प्रेत की घटनाओं और बच्चों की मौजूदगी के बीच कोई संबंध था। पूर्व मालिकों में से एक का एक बच्चा था, हालांकि पड़ोसियों को इस बारे में कभी पता नहीं चला,” केन ब्रिघम ने कहा। “उसका गर्भपात हो गया था। साथ ही, मैसाचुसेट्स के लोवेल से ये महाद्वीपीय सैनिक आए थे; उस समय यही उनका पारंपरिक मूल स्थान माना जाता था। मेन तब तक एक राज्य के रूप में अस्तित्व में नहीं था; यह क्षेत्र अभी भी मैसाचुसेट्स का हिस्सा था। एक और बात: श्रीमान और श्रीमती बेल दोनों का अंतिम संस्कार नहीं हुआ। श्रीमती बेल की मृत्यु पास के एक नर्सिंग होम में हुई, और श्रीमान की फ्लोरिडा में। लेकिन दोनों का ही कोई अंतिम संस्कार नहीं हुआ।”

“अच्छा, अब उनके पास एक है,” मैंने कहा और वे हंस पड़े। यह तय किया गया कि ब्रिघम दंपति एथेल द्वारा समाधि की अवस्था में कही गई कुछ अन्य बातों के संबंध में अभिलेखों की और अधिक छानबीन करेंगे और फिर मुझसे संपर्क करेंगे।

श्री ब्रिघम ने अपना वादा निभाया। 21 अगस्त, 1967 को उन्होंने मुझे घर और उस क्षेत्र के इतिहास के बारे में अपनी अतिरिक्त खोजों का ब्यौरा भेजा। हालांकि यह उतना विस्तृत नहीं था जितना मैंने उम्मीद की थी, फिर भी इसने एथेल द्वारा समाधि की अवस्था में दिए गए कई नामों और तथ्यों की पुष्टि की। मैंने मौका मिलने पर खुद इस सामग्री की जांच करने का फैसला किया।

सौभाग्यवश, समय बीतने के साथ, ब्रिघम परिवार अगले वर्ष अगस्त में न्यूयॉर्क स्थित हमारे घर पर मेरी पूर्व पत्नी कैथरीन और मुझसे मिलने आया, और परिणामस्वरूप केन ब्रिघम ने नए जोश के साथ अभिलेखों की छानबीन शुरू कर दी। इस प्रकार 20 अगस्त, 1968 को उन्होंने मुझे बहुत सारी पुष्ट सामग्री भेजी, जिसे यहाँ प्रस्तुत किया गया है।

एथेल मेयर्स की माध्यमता एक बार फिर सटीक साबित हुई। उन्होंने हमें जो नाम बताए, बेल, एबेन, मर्डोक, ब्लैकगार्ड, विली, अब्राहम, वे सभी ऐतिहासिक अभिलेखों में दर्ज थे! ये कोई काल्पनिक बातें नहीं थीं, न ही कोई अटकलबाजी... बल्कि ये अतीत के लोग थे।

20 अगस्त, 1968

प्रिय हंस,

कैथी से बात करके अच्छा लगा और आपसे मिलकर हमें भी बहुत खुशी हुई। मुझे लगता है कि अब आप फिर से किसी यात्रा पर होंगी, लेकिन मैंने आपसे वादा किया था कि पिछली गर्मियों से हमने जो अतिरिक्त जानकारी जुटाई है, उसे मैं आपको भेज दूँगी। साथ में घर के इतिहास का कालक्रम भी संलग्न है, जहाँ तक हम पता लगा पाए हैं। इस गर्मी की शुरुआत में (जब हम केवल एक बार मेन गए थे) हमने यॉर्क, मेन के रजिस्ट्री ऑफ़ डीड्स में कई घंटे बिताए, लेकिन कोई सुराग नहीं मिला। दस्तावेज़ इतने अस्पष्ट हैं कि हम निश्चित रूप से नहीं कह सकते कि कोई विशेष दस्तावेज़ हमारी संपत्ति से संबंधित है या नहीं। हालांकि, भवन निर्माण शैली, सामग्री आदि को देखकर हमें पूरा विश्वास है कि हमारे घर का पिछला हिस्सा हमारी मूल धारणा से कहीं अधिक पुराना है - हमें लगता है कि यह 1700 के दशक के मध्य का है।

हालांकि मैंने इसका कोई संदर्भ नहीं दिया है, लेकिन कस्बे के इतिहास (जो बेहद अस्पष्ट और सटीक नहीं है) के अनुसार, विलार्ड परिवार के लड़कों में से एक, जिसके पिता का पास में ही एक खेत था, गृहयुद्ध में गया और कभी वापस नहीं लौटा, हालांकि उसका नाम घायलों, मृतकों या लापता लोगों की सूची में नहीं है। अगर मेरी याददाश्त सही है, तो उसका नाम केवल डब्ल्यू. विलार्ड ("विली"?) के रूप में दर्ज था। अब, उस "भूत" ने अपना नाम "इसाबेल" बताया; दुर्भाग्य से, हमें कस्बे के इतिहास में बेल परिवार के बारे में कोई रिकॉर्ड नहीं मिला, हालांकि वे 1851 से 1959 तक उस घर के मालिक थे और एबेन बेल 1820 से 1900 तक कस्बे में रहे! यह बात अजीब है क्योंकि 1874 के कस्बे के इतिहास में लगभग हर दूसरे परिवार का जिक्र है। ऐसा क्यों? क्या "इसाबेल" बेल नाम का बिगड़ा हुआ रूप हो सकता है, या शायद कोई इसाबेल बेल रही हो? एक शाश्वत कैलेंडर में पीछे की ओर देखने पर ऐसा प्रतीत होता है कि 1800 के दशक के मध्य में मंगलवार, सेंट वेलेंटाइन डे, 14 फरवरी 1865,

1860 और 1854 को पड़ा था; पहला सबसे तार्किक लगता है क्योंकि अन्य दो गृह युद्ध के दौरान नहीं पड़े थे—जो 26 मई 1865 को समाप्त हुआ था!*

मेरे कुछ अन्य नोट्स स्वतः स्पष्ट हैं।

एक और सवाल हमारे इलाके की सड़क और पहाड़ी के लिए इस्तेमाल होने वाले शब्द "ब्लैकगार्ड" से जुड़ा है। यह एक पुराना शब्द है जिसका अर्थ "अशिष्ट" होता है। ध्यान दें कि 1850 के नक्शे में हमारे घर के बगल में किसी परिवार का नाम नहीं दिखाया गया है... ऐसा इसलिए हो सकता है क्योंकि संपत्ति के कई मालिक रहे हों, या फिर यह भी हो सकता है कि मालिक "अशिष्ट" रहे हों - जिससे शायद टाउन हिस्ट्री में बेल परिवार का कोई ज़िक्र न होने की वजह समझ में आती है। यह एक दिलचस्प पहलू है।

अब आपके लिए कुछ और रोचक जानकारी: 1) हमने आखिरकार घर बेचने का फैसला कर लिया है और यह किसी बच्चे को खोने जैसा है... मैं व्यक्तिगत रूप से बहुत दुखी हूँ, लेकिन मैं यथार्थवादी भी हूँ और जब हम इसकी देखभाल के लिए अक्सर वहाँ नहीं जा सकते, तो इसे अपने पास रखने की कोशिश करना बेवकूफी है। हमारे पास अभी कुछ संभावित खरीदार हैं, लेकिन चूंकि हम पर कोई दबाव नहीं है, इसलिए हम यह सुनिश्चित करना चाहते हैं कि कोई भी नया मालिक इसे हमारी तरह प्यार करे और इसकी देखभाल करे।

2) और फिर सबसे अजीब बात... डोरिस उस जगह की कुछ पुरानी तस्वीरें देख रही थी और उसे डबलिन, आयरलैंड से आए एक मेहमान द्वारा ली गई स्लाइड की एक रंगीन प्रिंट मिली। और, यह सचमुच घर की ओर जाने वाली गली के लंबे दृश्य की छवि जैसी दिखती है। अब तक तीन लोगों ने इस बात पर ध्यान दिया है। फिर, एक और स्लाइड में ऐसा लगता है जैसे दूर (गली की ओर देखते हुए) एक घर है जो केवल डेढ़ मंज़िल ऊंचा है। हम कंपनी के फोटोग्राफर से उन्हें बड़ा करवा रहे हैं ताकि हम देख सकें कि क्या दिखता है। मैं आपको इस बारे में ज़रूर अपडेट करता रहूंगा!

खैर, कुल मिलाकर यही बात सामने आती है कि हमने बहुत ज़्यादा मेहनत की और उस जगह के बारे में बहुत कुछ सीखा... जिसमें से लगभग सब कुछ एथेल की टिप्पणियों से मेल खाता है। लेकिन एक यथार्थवादी होने के नाते, मुझे भावनाओं को एक तरफ रखकर इस बात को भूल जाना होगा।

जब भी मौका मिले, हमें एक संदेश भेज देना।

आपका,

*विली मंगलवार, वैलेंटाइन डे के दिन रवाना हुआ।

इस कहानी के संदर्भ में दो बातें ध्यान देने योग्य हैं। एथेल जॉनसन मेयर्स ने माध्यम बनने की कई अवस्थाएँ या रूप धारण किए थे, लेकिन इस दृढ़ विश्वास के बावजूद कि उनमें तथाकथित अलौकिक या असाधारण तस्वीरें बनाने की क्षमता भी हो सकती है, मेरी जाँच के दौरान उन्होंने ऐसा कभी नहीं किया। जो चीज़ें उन्होंने कभी-कभी स्वयं बनाईं, वे तथाकथित स्कॉटोग्राफ थीं, जो मनोचिकित्सा में प्रयुक्त रोर्शाक प्रभाव के समान थीं; ये संवेदनशील फोटोग्राफिक पेपर को थोड़े समय के लिए प्रकाश में रखने और फिर परिणामी आकृतियों की व्याख्या करने का परिणाम थीं।

लेकिन वास्तविक मानसिक फोटोग्राफी में स्पष्ट छवियां, चेहरे, आकृतियां दिखाई देती हैं जिन्हें समझने के लिए किसी विशेष व्याख्या की आवश्यकता नहीं होती है, और दुर्भाग्य से, इस मामले में ऐसा नहीं हुआ जब मैंने श्रीमती मेयर्स की उपस्थिति में अपने कैमरे से तस्वीरें लीं।

ब्रिघम परिवार ने मेन स्थित संपत्ति बेचने के बाद, वर्जीनिया के हैम्पटन में बसने का फैसला किया। केन और डोरिस इस सुखद जलवायु में कई वर्षों तक जीवन का आनंद लेने के लिए उत्सुक थे।

दुर्भाग्यवश, हमारे आखिरी संपर्क के ठीक दो साल बाद, अगस्त 1970 में, केन फिसल गए और उनके टखने में चोट लग गई, जिसके कारण जटिलताएं उत्पन्न हुईं और उनकी असमय और अचानक मृत्यु हो गई।

जहां तक मेन में बेचैन लोगों की बात है, उनके बारे में आगे कुछ भी पता नहीं चला और माना जाता है कि वे वहीं हैं जहां उन्हें होना चाहिए।

दिवंगत श्री केन ब्रिघम द्वारा उपलब्ध कराई गई निम्नलिखित शोध सामग्री यहां प्रस्तुत की गई है ताकि पाठक को उस क्षेत्र और समय का बेहतर अंदाजा हो सके जिसमें यह घटना घटी थी।

* * *

ब्रिघम के दस्तावेज़:

1. रॉबर्ट्स, केनेथ, क्यूबेक की ओर मार्च, डबलडे, 1938, पृ. 32. राजा की सेवा में सूचीबद्ध: थॉमस मर्डॉक।

2. कारपेंटर, एलन, एनचैंटमेंट ऑफ अमेरिका—मेन, चिल्ड्रन्स प्रेस, 1966, पृ. 27—85 वर्षों का भारतीय युद्ध, 1,000 से अधिक मेन निवासी मारे गए, सैकड़ों को बंदी बनाया गया; वर्ष 1675 तक, जो अब मेन है, उसमें लगभग 6,000 यूरोपीय बसने वाले थे।

3. स्मिथ, ब्रैडफोर्ड, रोजर्स रेंजर और फ्रांसीसी एवं भारतीय युद्ध, रैंडम हाउस, 1956, पृष्ठ 5—जब वे आत्मसमर्पण करने के लिए फोर्ट विलियम हेनरी से बाहर निकले तो भारतीयों ने उनका नरसंहार शुरू कर दिया—महिलाओं, बच्चों और पुरुषों सहित (1757); पृष्ठ 6—न्यूयॉर्क के रॉबर्ट रोजर्स ने 1755 में रेंजरों की एक कंपनी बनाई, 1758 तक उनकी पाँच कंपनियाँ हो गईं। एबेनेज़र वेबस्टर न्यू हैम्पशायर में अपने घर से आए थे; पृष्ठ 46—कर्नल ब्रैडस्ट्रीट का उल्लेख; पृष्ठ 176—एबेनेज़र, 1761 में, कप्तान के रूप में अल्बानी और फिर न्यू हैम्पशायर लौट आए जहाँ उन्होंने मेहिटेबल स्मिथ नाम की एक लड़की से शादी की... कर्नल स्टीवंस के नेतृत्व में पुरुषों के साथ उत्तर की ओर बढ़े और सैलिसबरी शहर के उत्तरी किनारे पर 225 एकड़ भूमि पर बस गए। बाद में क्रांतिकारी युद्ध में लड़े।

ऑक्सफ़ोर्ड काउंटी रजिस्ट्री ऑफ़ डीड्स

(संदर्भ: पुस्तक 14, पृष्ठ 18; पुस्तक 25, पृष्ठ 295; पुस्तक 49, पृष्ठ 254; पुस्तक 67, पृष्ठ 264; पुस्तक 92, पृष्ठ 158; पुस्तक 110, पृष्ठ 149; पुस्तक 117, पृष्ठ 268; पुस्तक 187, पृष्ठ 197; पुस्तक 102, पृष्ठ 135; पुस्तक 240, पृष्ठ 477–478; पुस्तक 260, पृष्ठ 381)

1805 में अब्राहम (या अब्राम) व्हिटनी ने नाथन ज्वेल को बेच दिया।

1809 में नाथन ज्वेल ने विलियम मोनरो को (जमीन का एक हिस्सा और घर) बेचा (1/9/09)

1823 में जोनाथन स्टोन दिवालिया हो गया और उसने अपना घर पीटर गेरी (घर), थाडियस ब्राउन और जोशिया शॉ को बेच दिया (5/19/23)

1836 में पीटर गेरी ने इसे मोसेस एम. मेसन को बेच दिया (14/06/1836)

1848 में जॉन गेरी ने डेनियल बिलिंग्स को बेच दिया (27/05/1848)

1895 में सेमंथा बेल ने कैरोलिन बेल को अपनी संपत्ति बेची (3/4/95)

1940 में एडना कुलहान (कैरोलिन बेल की बेटी) ने इरविंग और एलिस बेल को संपत्ति बेच दी (11/7/40)

1956 में एलिस बेल का स्थानांतरण आर्ची और एथेल बेल के घर हो गया (10/12/56)

1959 में आर्ची और एथेल बेल ने के.ई. और डी.एम. ब्रिघम को संपत्ति बेच दी (1/59)

खंड 3, पृष्ठ 484, 7 फरवरी, 1799

वॉटरफोर्ड के इसहाक स्मिथ ने हार्वर्ड के नथानिएल गियरी को 6 वीं रेंज (दक्षिणी भाग) में लॉट 2 800 डॉलर में बेच दिया। विलेख 7 फरवरी, 1799 को लिखा गया था, लेकिन 24 सितंबर, 1808 तक दर्ज नहीं किया गया था। (विवाहित: यूनिस स्मिथ) (टिप्पणी 1 और 2 देखें)

खंड 3, पृष्ठ 99, 6 जनवरी 1800 (फ्राइबर्ग)

नथानिएल गियरी और उनकी पत्नी बेट्टी गियरी ने पीटर गियरी को 6 वीं रेंज में लॉट 2 के दक्षिणी आधे हिस्से का पश्चिमी छोर 400 डॉलर में बेच दिया। यॉर्क में 6 जनवरी, 1800 को नोटरीकृत किया गया। 2 अप्रैल, 1801 को बेट्टी गियरी उपस्थित हुईं और दस्तावेज़ पर हस्ताक्षर किए, जिसे 11 फरवरी, 1804 को पंजीकृत किया गया।

पीटर गेरी (या गियरी) जन्म 1776—मृत्यु 16 जून 1847

मैरी (जन्म 1782—मृत्यु 16 मार्च 1830)

एम. एलिजाबेथ (जन्म 1787—मृत्यु 5/1/1858) सी. मैरी (जन्म 1834 या 1804—मृत्यु 1844)

(नोट 3 देखें) जॉन सी. (जन्म 1808)

रोलैंड (जन्म 1810—मृत्यु 1842)

एम. मारिया फैरर (जन्म 1811—मृत्यु 1842)

एबी (जन्म 1812—मृत्यु 1817)

एलब्रिज (जन्म 1815—विवाहित अन्ना जेनेस)

खंड 92, पृष्ठ 158, 27 मई, 1848

जॉन गेरी को डेनियल बिलिंग्स ने 100 डॉलर (?) में खरीदा।

डैनियल बिलिंग्स (जन्म 1780, टेम्पल, मैसाचुसेट्स)

...विवाहित सारा किम्बल (जन्म 1786)

...सी. लुईस (विलियम हैमलिन से विवाहित) कैरोलिन (जन्म 1810—जी. एफ. व्हीलर से विवाहित—जन्म 1810)
जॉर्ज सी. (जन्म 1837—मृत्यु 1919)
...रेबेका व्हिटकॉम्ब से विवाहित, निजी एफ. कंपनी, 9 वीं रेजिमेंट—गृहयुद्ध में 3 वर्ष सेवा)
मारिया (कैल्विन हॉटन से विवाहित)
जेम्स आर. (एस्थर क्लार्क से विवाहित)
जॉन डी. (एस्थर नोल्टन से विवाहित) मिरांडा

खंड 102, पृष्ठ 135, 14 अक्टूबर, 1851

डैनियल बिलिंग्स को बोस्टन के विलियम एफ. बेल और टिमोथी बेल ने 1,400 डॉलर में खरीदा।

खंड 117, पृष्ठ 268, 24 दिसंबर 1858

वॉटरफोर्ड के विलियम बेल ने अपने पिता विलियम एफ. बेल को 6 वें रेंज में लॉट 2 के लिए 800 डॉलर का भुगतान किया।

खंड 187, पृष्ठ 197, 3 अप्रैल 1871

विलियम बेल ने "अपने और अपनी पत्नी के भरण-पोषण के लिए" टिमोथी सी. बेल को "होमस्टेड फार्म" और उसके भूखंडों के हिस्से हस्तांतरित कर दिए।

खंड 240, पृष्ठ 24, 1894

टिमोथी बेल ने अपनी संपत्ति अपनी पत्नी सेमांथा बेल के नाम कर दी।

बी.के. 240, पृ. 477-78, 4 मार्च, 1895

सेमंथा हैमलिन बेल का बोस्टन की कैरोलिन बेल से विवाह हुआ। कैरोलिन बेल (जन्म 4/4/1848 - मृत्यु 9/20/1926)...विवाह टी. सी. बेल (जन्म 10/10/1829 - मृत्यु 7/13/1894) से हुआ...विवाह जे. बी. बेनेट से हुआ।

1905

कैरोलिन बेल (मृत्यु 1905??) ने अपनी संपत्ति अपने बेटे इरविंग बेल को "अपना इकलौता उत्तराधिकारी" के रूप में दी।

खंड 442, पृष्ठ 133, 30 अक्टूबर 1940

मैसाचुसेट्स के कैम्ब्रिज की एडना बेल कुलहान (अविवाहित) को इरविंग और एलिस बेल के पास स्थानांतरित कर दिया गया।

7 नवंबर, 1940

इरविंग बेल ने एडना कुलहान को "सेमंथा से अपनी मां कैरोलिन बेल को दिए गए विलेख में वर्णित परिसर" हस्तांतरित कर दिया, और वह उनकी एकमात्र उत्तराधिकारी थीं।

खंड 560, पृष्ठ 381, 12 अक्टूबर 1956

आर्ची और एथेल बेल को 5 वीं रेंज में लॉट 1 और 2 विरासत में मिले, और लॉट 1 और 2 ने एलिस बेल से 6 वीं रेंज खरीदी।

जनवरी 1959

आर्ची और एथेल बेल ने संपत्ति के.ई. और डी.एम. ब्रिघम को बेच दी।

नोट्स

1. पुस्तक 2, पृष्ठ 445-46 के अनुसार: 20 दिसंबर, 1802 को, नथानिएल गेरी (पत्नी बेट्टी) ने बोस्टन, मैसाचुसेट्स के डेविड व्हिटकॉम्ब को 800 डॉलर में 6 वीं रेंज में लॉट 2 बेचा। विलेख में भूमि से होकर गुजरने वाली सड़क का उल्लेख है। यह 1807 में पंजीकृत हुआ और शांति न्यायाधीश एबर राइस द्वारा नोटरीकृत और हस्ताक्षरित किया गया।

2. पुस्तक 9, पृष्ठ 467-468 के अनुसार: 13 नवंबर, 1810 को डेविड व्हिटकॉम्ब ने पीटर गेरी को 150 डॉलर में छठी रेंज में स्थित लॉट 2 बेचा, जिसमें "गेरी रोड" भी शामिल था। स्पष्टतः ये

दोनों लेन-देन (टिप्पणी 1 और 2) छठी रेंज में स्थित लॉट 2 के उत्तरी भाग के पश्चिमी छोर से संबंधित थे।

3. जॉन सी. गेरी (जन्म 1808): विवाह नैन्सी फैरर (जन्म 1810–मृत्यु 1841), नैन्सी सॉविन (जन्म 1819) से हुआ। उनका फ्राइबर्ग में एक औषधालय था।

रोचक नोट्स

1. स्थानीय कब्रिस्तान में माननीय लुईस ब्रिघम की समाधि है, जिनका जन्म 1816 में हुआ था और जिनकी मृत्यु 1866 में हुई थी (एमहर्स्ट, मैसाचुसेट्स में)।

2. एबेन बेल, (जन्म 8/5/1820—मृत्यु 6/8/1900)

3. रिचर्ड और सैमुअल ब्रिघम, और डेविड व्हिटकॉम्ब ने 9 दिसंबर, 1795 को निगमन के लिए याचिका पर हस्ताक्षर किए।

4. ऐतिहासिक:

जब वाटरफोर्ड ने निगमन के लिए आवेदन किया (27 जनवरी, 1796), तब वह यॉर्क काउंटी में स्थित था।

फ्रायबर्ग (पेक्काकेट) की स्थापना 1763 में हुई थी, इसे 1777 में निगमित किया गया था; 1768 में फ्रायबर्ग की जनसंख्या 300 से अधिक थी।

17 नवंबर, 1796—इसाक स्मिथ ने अन्य लोगों के साथ मिलकर मैसाचुसेट्स को निगमित करने के लिए याचिका दायर की। दस्तावेज़ में कहा गया था कि "उक्त बागान" में पचास से साठ परिवार रहते थे।

वॉटरफोर्ड का इतिहास, पृष्ठ 25—“और जब 1781 में भारतीयों ने एंड्रोस्कोगिन पर बढ़ती बस्तियों पर हमला किया और लेफ्टिनेंट सेगर* और अन्य को कनाडाई कैद में ले गए, तो लेफ्टिनेंट स्टीफन फैरिंगटन ने तेईस लोगों को इस रास्ते से होते हुए आदिवासियों का पीछा करने के लिए नेतृत्व किया, हालांकि यह पीछा व्यर्थ था।”

(*लेफ्टिनेंट नथानिएल सेगर ने 1774 में कुछ एकड़ भूमि साफ़ की थी। वाटरफोर्ड और न्यू सनकुक [लवेल और स्वीडन] जैसी कुछ बस्तियों का सर्वेक्षण किया गया था और वे बसने

वालों की प्रतीक्षा कर रही थीं। पृष्ठ 22) वाटरफोर्ड, 1775 में बसाया गया, 1797 में निगमित; जनसंख्या 1790-150; 1800-535।

"स्पिरिट ऑफ 76" (कॉमेंजर/मॉरिस, पृ. 605)—जनरल बर्गोइन ने अक्टूबर 1777 में आत्मसमर्पण कर दिया...जनरल जॉन स्टार्क ने सेठ वार्नर के साथ काम करने पर सहमति जताई क्योंकि वार्नर न्यू हैम्पशायर या हैम्पशायर ग्रांट्स (1777) से थे।

15 नवंबर, 1745—सर विलियम पेप्पररेल के नेतृत्व में प्रथम मैसाचुसेट्स रेजिमेंट—आठवीं कंपनी: कैप्टन थॉमस पर्किन्स, लेफ्टिनेंट जॉन बरबैंक, जॉन गेरी (अविवाहित)।

गृहयुद्ध: पोर्टलैंड के मार्क एच. डुनिल की कमान में पांचवीं रेजिमेंट। पांचवीं रेजिमेंट ने ग्यारह भीषण लड़ाइयों और आठ छोटी झड़पों में भाग लिया, इससे पहले कि वह जंगल के भयंकर अभियान में शामिल हुई, जो एक निरंतर युद्ध था। इसने 6 विद्रोही झंडे और अपने सैनिकों की संख्या से अधिक कैदी जब्त किए।

5. स्थानीय टिप्पणियाँ:

ए) एंड्रोस्कोगिन ट्रेल पूर्वी तट से कनाडा तक जाने वाला मुख्य भारतीय मार्ग था। हमारी संपत्ति के नीचे, चौथे रेंज के लॉट 3 क्षेत्र में, यह "म्यूटिनी ब्रूक" नामक एक नाले के किनारे-किनारे चलता है। यहाँ प्रयुक्त इस शब्द की उत्पत्ति अस्पष्ट है, लेकिन स्थानीय लोगों का कहना है कि फ्रांसीसी और भारतीय युद्धों के दौरान भारतीयों ने वहाँ विद्रोह किया था।

बी) जब इस कस्बे में पहली बार लोग बसे थे, तो अग्रदूतों ने अपने घर समतल भूमि के बजाय हमारी पहाड़ी पर बनाए थे और बियर लेक के चारों ओर एकमात्र सड़क स्वीडन और ब्लैकगार्ड सड़कों के तल पर थी।

सी) हमारी सड़क को "ब्लैकगार्ड" नामक पुरातन शब्द से पुकारा जाता है, जिसका अर्थ खलनायक होता है। इसका कारण किसी को नहीं पता।

घ) घर की दूसरी मंजिल का निर्माण पहली मंजिल के कुछ समय बाद हुआ था; दूसरी मंजिल तक की लकड़ियाँ हाथ से तराशी गई हैं और उसके ऊपर की लकड़ियाँ चक्की में काटी गई हैं। ऐसा लगता है कि घर का कई बार पुनर्निर्माण हुआ था; लगभग 1890 के आसपास दो भाई और उनके परिवार वहाँ रहने का इरादा रखते थे, लेकिन उनमें से एक की रहने से पहले

ही मृत्यु हो गई। इसके अलावा, पिछले दरवाजे के पास एक पुरानी इमारत की नींव भी मिली है।

*114

पोर्ट क्लाइड में भूत

पोर्ट क्लाइड मेन के तट पर बसा एक प्यारा सा छोटा सा मछली पकड़ने वाला गाँव है, जहाँ साल भर रहने वाले कुछ मूल अमेरिकी लोग गर्मियों में आने वाले कुछ पर्यटकों के साथ तालमेल बिठाने की कोशिश करते हैं, जो आमतौर पर न्यूयॉर्क या मध्यपश्चिम से आते हैं। उनकी दुनिया आपस में पूरी तरह मेल नहीं खाती, लेकिन पुराने निवासी समझते हैं कि थोड़ा-बहुत पर्यटन व्यापार के लिए काफी अच्छा है, खासकर पोर्ट क्लाइड और सेंट जॉर्ज के आसपास के कुछ छोटे होटलों के लिए, इसलिए उन्हें पर्यटकों से कोई खास आपत्ति नहीं है। लेकिन दक्षिण पूर्वी मूल के लोग अपने आप में ही रहते हैं, और उनसे उनके निजी जीवन या भूत-प्रेत जैसी बातों के बारे में खुलवाना हमेशा आसान नहीं होता।

कैरोल ओलिविएरी शुल्टे नवंबर 1974 में जब मुझसे पहली बार संपर्क किया, तब वह काउंसिल ब्लफ्स, आयोवा में रहती थीं। एक वकील की पत्नी, श्रीमती शुल्टे एक जिज्ञासु महिला, कॉलेज से स्नातक और उस समय एक छोटे बेटे की माँ थीं। किसी तरह कैरोल को मेरी कुछ किताबें मिल गईं और वे उनमें दिलचस्पी लेने लगीं, खासकर भूतों से संबंधित विषयों में, क्योंकि उनका भी अलौकिक घटनाओं से सामना हुआ था।

उन्होंने मुझे समझाया, "यह 1972 की गर्मियों का समय था, और मैं पोर्ट क्लाइड, मेन में अपने माता-पिता के स्वामित्व वाले ग्रीष्मकालीन कॉटेज में एक ऊपरी मंजिल के बेडरूम में सो रही थी।"

"मेरी प्रेमिका मैरियन और उसका प्रेमी अपने पालतू जानवरों, एक सियामी बिल्ली और दो कुत्तों के साथ हॉल के उस पार वाले बेडरूम में सो रहे थे।"

बिल्ली बेचैन थी और चुपके से कैरोल के कमरे में घुस गई, उसके तकिए को छूकर उसे जगा दिया। कैरोल बिस्तर पर उठ बैठी, लाइट जलाने ही वाली थी कि उसने अपने बिस्तर के पास

एक महिला को सफेद नाइटगाउन पहने खड़े देखा। उस महिला के कंधे पतले थे और बाल लंबे और लहराते हुए थे... और कैरोल उसे आर-पार देख सकती थी!

जैसे-जैसे वह करीब आती गई, यह स्पष्ट हो गया कि वह कैरोल का ध्यान आकर्षित करना चाहती थी और अपने हाथों से बात करने की कोशिश कर रही थी।

“उसके पूरे शरीर से ऐसा लग रहा था मानो उसे किसी चीज़ की सख्त ज़रूरत हो। उसकी उंगलियां पतली थीं और दाहिने हाथ की चौथी उंगली में हीरे की अंगूठी थी। जैसे ही मैं चादर के नीचे झुका, उसके हाथ और भी बेचैनी से हिलने लगे।”

इसके कुछ ही समय बाद, कैरोल का उसी सत्ता से स्वप्न में संपर्क हुआ। इस बार वह घर के दूसरे कमरे में बिस्तर पर सो रही थी, तभी उसने उसी युवती को देखा। वह पहले हवा में, वास्तविक आकार से छोटी दिखाई दी। उसके स्तन बड़े थे और उसमें मातृत्व का भाव था। उसके साथ एक छोटा बच्चा था, शायद तीन साल का लड़का, जिसने सफेद गाउन पहना हुआ था। जब बच्चा कैरोल के साथ उसके बिस्तर पर था, सपने में, माँ कुछ दूरी पर कोने में मंडरा रही थी। कैरोल को सपने में ऐसा लगा जैसे माँ ने बच्चे को उसकी रक्षा के लिए उसे सौंप दिया हो, और फिर वह गायब हो गई। तुरंत बाद एक और स्त्री प्रकट हुई, काले रंग का हुड पहने, बहुत बूढ़ी लग रही थी, जो उसकी और बच्चे की ओर आ रही थी। कैरोल को एहसास होने लगा कि काले हुड वाली स्त्री बच्चे को उससे छीनना चाहती है, और बच्चा डरकर उससे लिपट गया। जब वह स्त्री सपने में ही कैरोल के बिस्तर के पास खड़ी हुई, तो कैरोल ने उसकी चमकीली हरी आँखें, टेढ़ी-मेढ़ी बड़ी नाक और सांवले रंग पर ध्यान दिया। उसने उसका मुकाबला करने का फैसला किया, अपने विचारों को उस सफेद रोशनी पर केंद्रित किया जिसे वह मानसिक सुरक्षा का प्रतीक मानती थी, और काली टोपी वाली महिला गायब हो गई। कैरल को यह आभास हुआ कि वह किसी स्कूल या संस्था से जुड़ी हुई थी। तभी, सफेद नाइटगाउन पहने माँ वापस आई और बच्चे को वापस ले गई, कैरल को कृतज्ञता भरी नजरों से देखते हुए वह अपने बच्चे के साथ फिर से गायब हो गई।

कैरोल जाग गई, लेकिन सपना इतना सजीव था कि हफ्तों तक उसके दिमाग में बसा रहा, और जब उसने मुझसे संपर्क किया तब भी वह उसके मन में एकदम स्पष्ट था। एक और विचित्र घटना ठीक उसी समय घटी जब कैरोल ने सपने में दिखाई देने वाली बुरी शक्ति पर

विजय प्राप्त की थी। उसकी दादी, जिन्हें उसने "एक बहुत ही समझदार, व्यावहारिक और जीवंत अमेरिकी महिला" बताया, का घर कैरोल के माता-पिता के घर के ठीक पीछे था। वह अपने चूल्हे की देखभाल कर रही थीं, जैसा कि वह पहले भी कई बार करती थीं, तभी चूल्हा अचानक उनके चेहरे पर फट गया और उनकी भौहें झुलस गईं। चूल्हे में कोई खराबी नहीं थी।

कैरोल को पहले भी मानसिक अनुभव हो चुके थे, और यहां तक कि उनके वकील पति भी आत्माओं की दुनिया से परिचित थे, इसलिए मेन में घर के मामले में मदद के लिए उनका मुझसे संपर्क करना किसी भी तरह से पारिवारिक समस्या नहीं थी।

मुझे उससे सुनकर बहुत खुशी हुई, इसलिए नहीं कि मेन का भूत उन कई भूतों से बहुत अलग था जिनसे मैं वर्षों से निपटता आ रहा था, बल्कि इसलिए कि कैरोल का अनुरोध किस समय आया था। संयोग से उस समय मैं एनबीसी श्रृंखला "इन सर्च ऑफ..." के लिए लेखन, निर्माण और अभिनय कर रहा था, और मेन का भूतिया घर एक बढ़िया सेगमेंट बन सकता था।

सभी संबंधित पक्षों - कैरोल, उनके पति, उनके माता-पिता, प्रसारण प्रबंधन और मेरे बीच एक समझौता हो गया। फिर मैंने अपनी यात्रा का कार्यक्रम तय करना शुरू किया। हमें मेन के रॉकलैंड तक हवाई जहाज से जाना था और फिर वहां से पोर्ट क्लाइड तक गाड़ी से जाना था। अगर मैं कैरोल और उनके परिवार के वहां रहने से पहले ही जाना चाहता, तो वह भी ठीक था, हालांकि उन्होंने मुझे सर्दियों के महीनों में वहां की ठंडी जलवायु के बारे में चेतावनी दी थी।

अंततः हमने मई का महीना चुना, जब मौसम अनुकूल होगा और घर में पानी की आपूर्ति फिर से शुरू हो जाएगी।

मैंने अनुरोध किया था कि घर में घटी वास्तविक घटनाओं के सभी गवाह मुझसे पूछताछ के लिए उपस्थित हों।

इसके बाद कैरल ने घर की तस्वीरें और कुछ गवाहों के बयान भेजे। मैंने 13 से 15 मई, 1976 तक जांच और फिल्मांकन के लिए उसे घर पर हमारे साथ आने की व्यवस्था की। टीम—क्रू, मेरी साइकिक और मैं—सभी एक स्थानीय होटल में ठहरे। साइकिक एक युवा महिला कलाकार थीं जिनका नाम इंग्रीड बेकमैन था, जिनके साथ मैं काम कर रहा था और उनकी इस क्षमता को विकसित करने में उनकी मदद कर रहा था।

और इस तरह हम अलग-अलग दिशाओं से पोर्ट क्लाइड में इकट्ठा हुए, लेकिन हमारा एक ही मकसद था—घर में मौजूद महिला भूत से संपर्क करना। स्थानीय होटल, न्यू ओशन हाउस में ठहरते ही हम उस चमचमाते सफेद कॉटेज की ओर चल पड़े जो अगले तीन दिनों तक हमारे प्रयासों का केंद्र बनने वाला था। कैरोल का भाई रॉबर्ट प्रोविडेंस से आया था, और उसकी करीबी दोस्त मैरियन गोइंग भी रोड आइलैंड में अपने घर से आई थी।

मैंने इंग्रीड से घर से थोड़ी दूरी पर रुकने और मेरे द्वारा उसे अंदर लाने का इंतज़ार करने को कहा, जबकि मैं इंग्रीड की पहुँच से दूर कुछ गवाहों से बात कर रहा था। इंग्रीड समझ गई और लॉन पर बैठ गई, और आसपास के नज़ारे की सुंदरता का आनंद लेने लगी।

कैरोल और मैं विपरीत दिशा में चलने लगे, और एक बार फिर हमने उसके अनुभवों पर चर्चा की, जैसा कि उसने मुझे अपने पहले बयान में बताया था। लेकिन क्या इसके अलावा भी कुछ था, मैंने सोचा, और कैरोल से इस बारे में सवाल किया।

“उस प्रेतवाधित महिला से हुई मुलाकात के बाद क्या आपने उसे फिर से देखा है? क्या आपने उसकी आवाज फिर कभी सुनी है?”

लगभग तीन हफ्ते पहले, यहाँ आने से पहले, मैं उससे बात करना चाहता था। सोने से ठीक पहले, मैं इस पर ध्यान केंद्रित कर रहा था। मैं इसके बारे में सोच रहा था, और मैंने सपना देखा कि वह मुझे ठीक वैसे ही दिखाई दी जैसे इस घर में उसके प्रकट होने के बाद वाले सपने में दिखाई दी थी। फिर या तो मैं सपने में कुछ पल के लिए जागा और उसे ठीक उसी तरह देखा जैसे मैंने उसे इस बेडरूम में देखा था, या फिर मैं सचमुच जाग गया और उसे देखा। अब उस समय मेरी चेतना की अवस्था कैसी थी—मुझे ठीक से याद नहीं है। मतलब, यह उस अनुभव जैसा बिल्कुल नहीं था जो मैंने ठीक इसी कमरे में अनुभव किया था। मैं पूरी तरह से जागा हुआ था, और मैंने उस भूत को देखा था। जहाँ तक कुछ हफ़्ते पहले हुई उस दूसरी घटना की बात है—मुझे ठीक से याद नहीं है।

क्या कोई संदेश था?

नहीं, इस बार नहीं।

"क्या आपको लगता है कि आपसे संपर्क करके वह संतुष्ट थी?"

“हां, मुझे ऐसा लगा कि वह मुझसे उसी तरह संवाद करना चाहती थी जैसे मैं उससे संवाद करना चाहता था। जैसे कोई पुराना दोस्त किसी पुराने दोस्त से संपर्क करना चाहता है, और मुझे ऐसा लगा कि वह बस यही कह रही थी, ‘हां, मैं अभी भी यहीं हूं।’”

फिर मैंने कैरोल के भाई बॉब ओलिविएरी से संपर्क किया और उनसे घर में हुई किसी भी असामान्य घटना के बारे में पूछा। वह मुझे उस कमरे में ले गए जहाँ वे वर्षों पहले उन घटनाओं के समय मौजूद थे, लेकिन जाहिर तौर पर वह दृश्य अभी भी उनके दिमाग में ताजा था।

श्री ओलिविएरी, इस कमरे में आपके साथ वास्तव में क्या हुआ था?

“एक रात मैं इस बिस्तर पर सो रहा था और अचानक मेरी नींद खुल गई और मुझे कदमों की आहट सुनाई दी—मुझे लगा जैसे कदमों की आहट हो—चप्पल या पजामा पहने बच्चे के पैरों जैसी आवाज़ थी—कुछ वैसी ही। मैं जागा और पास आया, और इस जगह पर पैर रखा, फिर मैंने गलियारे में देखा और आवाज़ बंद हो गई। मुझे लगा शायद मैं कल्पना कर रहा था। तो मैं वापस बिस्तर पर आ गया, फिर से बिस्तर पर लेट गया, और फिर से मुझे कदमों की आहट सुनाई दी। इस बार मैं उठा और जैसे ही मैं उसी जगह पर वापस आया और गलियारे में देखा, आवाज़ बंद हो गई। मुझे लगा कि मेरा भतीजा अभी भी जागा हुआ है। तो मैं गलियारे में गया और उस कमरे में देखा जहाँ मेरी बहन और भतीजा सो रहे थे, और वे दोनों गहरी नींद में सो रहे थे। मैंने अपने माता-पिता का कमरा भी देखा, और वे भी सो रहे थे। मैं वापस आ गया। मुझे समझ नहीं आ रहा था कि क्या करूं, इसलिए मैं फिर से बिस्तर पर लेट गया, और मुझे उनकी आवाज़ें सुनाई देती रहीं। मैं चलता रहा, और वे तब तक चलते रहे जब तक मैं उस जगह पर नहीं पहुँच गया जहाँ वे रुक जाते थे। जैसे ही मैंने कदम रखा यहां। और यह सिलसिला एक घंटे तक चलता रहा। मैं बार-बार उठती रही। कदमों की आहट सुनाई दी, मैं इस जगह पर खड़ी हुई और वे रुक गए। आखिरकार मैं इससे तंग आ गई और अपने बिस्तर पर आकर लेट गई। जैसे ही मैं लेटी, मुझे फिर से कदमों की आहट सुनाई दी, बिल्कुल वैसी ही जैसी पहले हुई थी—और ऐसा लगा जैसे वे गलियारे के अंत में रुक गए हों। कुछ मिनट बाद मुझे अपनी चादर पर दबाव महसूस हुआ, जो मेरे पैरों से शुरू होकर ऊपर, ऊपर, ऊपर,

और ऊपर जाता रहा, धीरे-धीरे लेकिन निश्चित रूप से... और आखिरकार किसी ने मेरे बाल खींचे! स्वाभाविक रूप से मैं पूरी रात डरी रही। मुझे नींद नहीं आई।

मुझे लगा कि अब इंग्रीड के पास वापस जाने और उसे घर के अंदर लाने का समय आ गया है। मैंने ऐसा ही किया, कैमरा और साउंड टीम हमारे पीछे-पीछे चल रही थी ताकि एनबीसी के लिए रिकॉर्ड कर सके कि अब घर में क्या होने वाला है। घर में प्रवेश करने से ठीक पहले, इंग्रीड मेरी ओर मुड़ी और बोली, "तुम्हें पता है वो ऊपर वाली खिड़की? जब हम पहली बार आए थे, तो मैंने देखा था कि उसमें कोई खड़ा है।"

आपने वास्तव में क्या देखा?

"वह एक महिला थी...और वह हमारी तरफ देख रही थी।"

यह घर अमेरिकी संस्कृति की प्रामाणिकता का एक अनमोल रत्न साबित हुआ, एक ऐसा घर जिसमें शायद कोई समुद्री कप्तान खुश रह सकता था, या शायद केवल एक आधुनिक पुरातत्वविद। सफेद बाहरी भाग के अनुरूप, भीतरी भाग बेहद साफ-सुथरा और कभी-कभी सादा भी था, जिसमें हर फर्नीचर उस समय का था जब उसे रखा गया था—उन्नीसवीं और बीसवीं सदी के आरंभ का—और ऐसा महसूस होता था कि इसमें कई लोग कई वर्षों तक रह चुके हैं।

नीचे के हिस्से में प्रवेश करने के बाद, जहाँ एक बड़ा रसोईघर और एक अच्छा कमरा था, मैंने हमेशा की तरह इंग्रीड से पूछा कि घर, उसमें रहने वाले लोगों और उसके इतिहास के बारे में उसे जो भी आभास हो रहा है, वह मुझे बताए। ज़ाहिर है, मैंने पहले से ही यह सुनिश्चित कर लिया था कि इंग्रीड को घर या उस खोज के बारे में कुछ भी पता नहीं था जिसके लिए हम मेन आए थे, और इस बात की कोई संभावना नहीं थी कि उसे उस क्षेत्र, घर में रहने वाले लोगों (भूतपूर्व और वर्तमान) या मामले के बारे में कोई भी विशिष्ट जानकारी हो सकती थी।

इंग्रीड तुरंत काम पर लग गई, वह बेचैन लग रही थी।

“इस कहानी का संबंध 1820 या 1840 के दशक से है,” उसने कहना शुरू किया, और मैंने उसके विचारों को रिकॉर्ड करने के लिए अपना टेप रिकॉर्डर चालू कर दिया। पहले तो ये सचेत मानसिक संकेत थे, बाद में इंग्रीड थोड़ी सी समाधि जैसी अवस्था में लग रही थी और सीधे आत्माओं से संवाद कर रही थी। आगे जो हुआ वो ये है।

“1820 और 1840 के दशक। क्या आपका मतलब दोनों से है या किसी एक से?”

"खैर, यह उसी समय की बात है। और मुझे एक ऐसी महिला का आभास हो रहा है जिसे अपने किए पर गहरा पछतावा है।"

"क्या आपको लगता है कि यहाँ किसी की उपस्थिति है?"

"यहाँ उनकी उपस्थिति निश्चित रूप से है।"

"घर के किस हिस्से में आपको यह सबसे मजबूत लगता है?"

"ठीक है, मुझे ऊपर जाने के लिए कहा जा रहा है।"

क्या कोई ऐसी शक्ति है जो आपको ऊपर की ओर खींच रही है?

नहीं, मुझे बस ऊपर जाने का मन कर रहा है।

"ऊपर जाने से पहले, यहां आने से पहले, क्या आपको कभी ऐसा लगा था कि इसमें कुछ गड़बड़ है?"

“हाँ, कुछ हफ़्ते पहले मैंने एक घर देखा था—दरअसल, वह इस घर से कहीं ज़्यादा पुराना था, और इसी जगह पर था—वह एक अँधेरा घर था, उसकी छत शिंगल की थी, और जैसा कि मैंने कहा, वह अठारहवीं सदी का घर हो सकता था। वह लगभग नमक के डिब्बे जैसा दिखता था, उसकी बनावट कुछ वैसी ही थी। और मैंने देखा कि वह बिल्कुल पानी के किनारे पर था और मुझे उसमें एक औरत की मौजूदगी का आभास हुआ और इस घर से जुड़ी एक कहानी का एहसास हुआ, जिसमें समुद्र में एक आदमी की कहानी भी शामिल थी।”

"समुद्र के साथ एक आदमी?"

"हाँ।"

"क्या आपको लगता है कि यह आत्मा अभी भी घर में मौजूद है?"

“हाँ, और बेशक मुझे नहीं लगता कि यह मूल घर है। मुझे लगता है कि यह इसी ज़मीन पर था, और इसीलिए मुझे लगता है कि वह पूरे घर में मौजूद है। वह यहाँ आती है क्योंकि यह उसके अतीत का पुनर्मंचन है।”

मैंने उससे जारी रखने को कहा।

"मैं अपनी आंखों के सामने उस घर को देख सकता हूं जो पहले इस जमीन पर था, और मुझे अपने मन में इस दिशा में पीछे एक खेत का आभास होता है, और इसके साथ-साथ जमीन भी थी!"

“अब हम ऊपर हैं। मैं चाहता हूं कि आप हर कमरे में देखें और मुझे उसके बारे में अपनी राय बताएं,” मैंने कहा।

“ऊपर का हिस्सा सबसे ज़्यादा सक्रिय है। मुझे एक महिला के इंतज़ार करने का आभास हो रहा है। यह उसी समय की बात है। इस घर से जुड़ी और भी कई अवधियाँ हैं, लेकिन मैं इसी पर ध्यान केंद्रित करूँगा। मैंने यह भी देखा है कि वह बाहर देख रही है—इसी खिड़की से नहीं, बल्कि घर की इस दिशा की खिड़कियों से—किसी के लौटने का इंतज़ार कर रही है।”

“इस कमरे के बारे में क्या ख्याल है?”

“खैर, यह कमरा उस कमरे जैसा है जहाँ वह किसी का इंतज़ार करते हुए रात भर जागती रही। और मुझे अभी-अभी ऐसा लगा जैसे उसने कहा हो कि, ‘वह’ यानी एक जहाज़, ‘केनेबेक नदी पर बनाया गया था’... ऐसा लगता है कि यह दो मस्तूल वाला जहाज़ है, और ऐसा लगता है कि इस पर उसका पति है। और मुझे ऐसा आभास हो रहा है कि वह उसके लिए कुछ अनोखी चीज़ें लाया है। हो सकता है किसी विदेशी देश से। शायद पूर्वी देशों से या कुछ इसी तरह से।”

“अब गलियारे में वापस जाओ और कुछ दूसरे कमरों को आजमाओ। इस कमरे के बारे में क्या ख्याल है?”

"मुझे इस कमरे में एक युवक की मौजूदगी का आभास हो रहा है, लेकिन यह एक अलग समय का दृश्य है। यह एक छोटा लड़का है। ऐसा लगता है जैसे यह 1920 का दशक हो।"

"क्या इस कमरे में आपको बस यही महसूस हो रहा है?"

“मुझे इस कमरे में यही महसूस हो रहा है। दो मस्तूल वाले जहाज की कहानी वाली महिला पूरे घर में मौजूद है, क्योंकि जैसा कि मैंने कहा, वह वास्तव में इस घर की नहीं है। वह मूल रूप से संपत्ति पर है—मुख्य रूप से वह अभी भी पूरे घर में उस आदमी के घर लौटने का इंतजार कर रही है। और घर का सामने का हिस्सा ही सबसे ज्यादा हलचल वाला इलाका है। वह हमेशा देखती रहती है। लेकिन अब मुझे ऐसा लग रहा है कि वह किसी तूफान से बहुत परेशान है।

किसी तरह का तेज तूफान। लगता है नवंबर का महीना है। मुझे यह भी लग रहा है कि वह...भेड़ों के झुंड के बारे में कुछ कह रही है। इस संपत्ति पर भेड़ें हैं।”

"आपके विचार से सबसे सक्रिय कमरा कौन सा है?"

"मेरे ख्याल से सबसे सक्रिय कमरा ऊपर की मंजिल पर सामने की ओर है, जहां हम अभी थे। मुझे वहां इसका सबसे अधिक प्रभाव महसूस होता है।"

"क्या आपको लगता है कि हम उससे संपर्क कर पाएंगे?"

“हां, मुझे ऐसा लगता है। मुझे निश्चित रूप से लगता है कि वह देख रही है और मुझे आने से पहले उसके बारे में पता था।”

"वह किसके जैसी लगती है?"

“मुझे एक लंबी महिला दिखाई दे रही है, जो दुबली-पतली और कमजोर है, उसके बाल काले हैं और उसने सफेद रंग का गाउन पहना हुआ है। हो सकता है कि वह नाइटगाउन हो - मुझे तो वह नाइटगाउन जैसा लग रहा है, जिसके सामने की तरफ थोड़ी कढ़ाई है। हाथ से की गई है।”

"देखते हैं कि क्या वह हमसे संपर्क करना चाहेगी?"

"ठीक है।"

"यदि वह सत्ता उपस्थित है, और हमसे बात करना चाहती है, तो हम मित्र बनकर आए हैं; इंग्रीड, वह इस साधन का उपयोग प्रकट होने के लिए कर सकती है।"

“हंस, वह यहाँ बहुत दुखी है। वह कहती है कि उसका परिवार इंग्लैंड से आया था। मुझे उसका नाम मार्गरिट पता चला है।”

“मार्गरिट, क्या?”

"होगेन जैसा कुछ—यह H से शुरू होता है। मुझे नहीं लगता कि यह होगन, हेडन या ऐसा कुछ है। मुझे पूरा नाम याद नहीं आ रहा है।"

आप इस समय किस दौर से गुजर रहे हैं?

“अब वह कहती है कि यह 1843 की बात है। वह बहुत दुखी है क्योंकि वह केनेबंक में बसना चाहती थी; उसे यहाँ अच्छा नहीं लगता। उसे घर की जिम्मेदारियाँ पसंद नहीं हैं। उसके पति को यह मछली पकड़ने वाला गाँव पसंद था। वह उसके इस चुनाव से बहुत दुखी है।”

क्या वह इंग्लैंड से है?

"हां, उनके वंशज इंग्लैंड से हैं।"

"आपका मतलब है कि उनका जन्म यहीं हुआ था या इंग्लैंड में?"

“मुझे इस बारे में स्पष्ट जानकारी नहीं है। लेकिन उन्होंने मुझे बताया है कि उनके वंशज अंग्रेज हैं।”

“क्या वह अब यहाँ है...?”

"वह केनेबंक को शहर कहती है। उसके लिए वह एक केंद्र है।"

“वह क्या चाहती है? वह अभी भी यहाँ क्यों है?”

"सारी जिम्मेदारी उसी पर आ गई है। उसका पति जहाज से गया है और दो साल में वापस आएगा।"

“क्या उसने ऐसा किया?”

नहीं, वह अब भी उसका इंतजार कर रही है।

"जहाज का नाम क्या है?"

मुझे लगता है कि यह सेंट कैथरीन है।

“क्या यह उसका जहाज है? क्या वह कप्तान है?”

“वह दूसरे नंबर का कमांडर है। वह उसका साथी नहीं है, बल्कि उससे थोड़ा कम महत्वपूर्ण पद पर है।”

वह क्या ढूंढ रही है?

वह राहत महसूस करना चाहती है।

"किस?"

“कर्तव्यों और जिम्मेदारियों के बारे में।”

"किस लिए?"

“यह घर।”

क्या उसे अपनी मृत्यु की जानकारी है?

“नहीं, वह अपने झुंडों को लेकर बहुत चिंतित है। वह कहती है कि अब अप्रैल आ गया है और ऊन काटने का समय हो गया है। वह इस बात से बहुत दुखी है। हैंस, इस तरफ मुझे एक खलिहान जैसा कुछ दिखाई दे रहा है, जो बहुत पुराने ज़माने का है। उसके पास दो गायें थीं।”

क्या उसे अब घर में मौजूद लोगों के बारे में पता है?

वह संवाद करना चाहती है।

वह उनसे क्या करवाना चाहती है?

“वह चाहती है कि वे उसकी खेती में मदद करें। वह कहती है कि काम बहुत ज्यादा है, मिट्टी पथरीली है और उसे शहर से मजदूर नहीं मिल रहे हैं। उसकी हालत बहुत खराब है। यहाँ की मिट्टी बहुत रेतीली है।”

“क्या वहां कोई बच्चे हैं? क्या वह अकेली है?”

"वे चले गए हैं," वह कहती है।

“और अब वह अकेली है?”

"हां वह है।"

"आप उसे देख सकते हैं?"

"हां, मैं उसे देखता हूं।"

क्या वह तुम्हें देख सकती है?

"हाँ।"

"उसे बताओ कि यह 1976 है, और इतना समय बीत चुका है। क्या वह यह बात समझती है?"

वह बस शिकायत करती रहती है; उसके पास पत्र लिखने के लिए कोई नहीं है।

क्या उसे यह समझ में आता है कि उसके पति का देहांत हो चुका है और वह स्वयं एक आत्मा है और यदि वह नहीं रहना चाहती तो उसे रहने की कोई आवश्यकता नहीं है?

"उसे चरखा चलाने में मदद के लिए कस्बे से कुछ महिलाओं को बुलाना होगा।"

उसे बता दो कि घर में आए नए लोग सब कुछ संभाल रहे हैं, इससे उसे राहत मिलेगी और वह जा सकती है। वह जाने के लिए स्वतंत्र है।

“उसने कहा, ‘केनेबंक के लिए?’”

"वह जहां चाहे जा सकती है—शहर में या जीवन के दूसरे पड़ाव पर अपने पति से मिलने के लिए।"

उसने कहा, 'काश मेरे पास एक टाउन हाउस होता!'

"उससे कहो कि वह अपने पति को बुलाए और उसे वहां से ले जाने के लिए कहे। वह उसका इंतजार कर रहा है।"

“जॉन्सबरी का क्या मतलब है? एक जॉन्सबरी।”

यह एक जगह है।

वह जॉन्सबरी के बारे में पूछ रही थी।

क्या वह वहां जाना चाहती है?

उसे लगता है कि शायद कोई ऐसा व्यक्ति हो जो उसकी मदद कर सके।

"कौन?"

"ऐसा लगता है कि वह जॉन्सबरी में रहने वाला मेरा चाचा है।"

"फिर उससे कहो कि वह जॉन्सबरी में अपने चाचा को फोन करे।"

वह कहती है कि उसने उसके पत्रों का जवाब नहीं दिया है।

“लेकिन अगर वह अभी कुछ बोलेगी तो वह उसे लेने आ जाएगा। उससे कहो कि वह अभी बोले। मार्गरिट को बताओ कि हम उसे अपने प्यार और सहानुभूति के साथ उसके चाचा के पास भेज रहे हैं। उसे अब यहाँ और रुकने की ज़रूरत नहीं है। उसे अब ऐसे व्यक्ति का इंतज़ार करने की ज़रूरत नहीं है जो वापस नहीं लौट सकता। उसे उस बड़ी दुनिया की ओर जाना चाहिए जो बाहर उसका इंतज़ार कर रही है, जहाँ वह अपने पति से मिलेगी और अपने चाचा को देख सकेगी।”

“वह बत्तियाँ जलाना चाहती है। वह तेल के दीयों की बात कर रही है। वह चाहती है कि वे सभी जल उठें।”

"उसे बता दो कि यहां के लोग घर, दीयों और जमीन की अच्छी देखभाल करेंगे।"

और वह कह रही है, रसोई के लिए कोई चर्बी नहीं।

उसे कहो कि वह चिंता न करे।

और तहखाने में कोई पौधा नहीं है।

“उसे कहो कि चिंता न करे। हम उसका ख्याल रखेंगे। वह जाने के लिए स्वतंत्र है—उसका इंतज़ार किया जा रहा है, उसकी प्रतीक्षा की जा रही है। उसे कहो कि वह शांति से और हमारे प्यार और करुणा के साथ यहाँ से आगे बढ़े।”

"वह किसी प्रकाशस्तंभ की तलाश कर रही है, या प्रकाशस्तंभ से जुड़ी किसी ऐसी चीज की तलाश कर रही है जो उसे परेशान करती है।"

“प्रकाशस्तंभ क्या होता है?”

“वह बहुत परेशान है। उसे लगता है कि इसकी ठीक से देखभाल नहीं की गई है; कि यह इस इलाके की समस्याओं में से एक है। देखभाल करने वाला कोई नहीं है। वह कहती है, मुझे केनेबंक में होना चाहिए, जहाँ एक शहर है।”

"केनेबंक में कौन रहता है जिसे वह जानती है?"

वह वहां किसी को नहीं जानती। वह वहां जाना चाहती है।

वह वहां क्या करेगी?

"एक टाउन हाउस खरीदें।"

"ठीक है, तो उसे केनेबंक जाने दो।"

“और किराने की दुकान पर जाओ,” वह कहती है।

“उसे बता दो कि वह केनेबंक जाने के लिए स्वतंत्र है। अगर वह चाहे तो हम उसे वहाँ भेज देंगे। क्या वह केनेबंक जाना चाहती है?”

"हाँ वह करती है।"

“तो उसे बता दो—उसे बता दो कि हम उसे अभी भेज रहे हैं। ढेर सारे प्यार के साथ....”

“एक गाड़ी में?”

“एक गाड़ी में।”

“दो घोड़ों वाली एक काली गाड़ी।”

“बहुत अच्छा। क्या वह जाने के लिए तैयार है?”

“ओह, अब मैं उसे एक सुंदर पोशाक और सिर पर टोपी पहने हुए देख रहा हूँ। लेकिन वह पहले से कहीं ज्यादा जवान दिख रही है। और मुझे सामने एक गाड़ी दिख रही है जिस पर दो काले घोड़े और एक टोपी पहने हुए आदमी उसे ले जाने के लिए तैयार खड़ा है।”

क्या उसकी शादी केनेबंक में हुई थी?

"नहीं।"

“उसकी शादी कहाँ हुई?”

मुझे यह बात समझ नहीं आई।

क्या वह जाने के लिए तैयार है?

"हां वह है।"

"उसे कहो कि गाड़ी में बैठे और चली जाए।"

“हां, वह तैयार है।”

“तो जाओ, मार्गरिट—जाओ।”

वह कहती है, "कई मील की यात्रा है—तीन दिन का सफर।"

“ठीक है। हमारी शुभकामनाओं के साथ जाइए। क्या अब आप उसे गाड़ी में देख पा रहे हैं?”

“हां, सड़क इस तरफ जाती है। वह घुमावदार सड़क पर जा रही है।”

क्या वह गाड़ी में अकेली है?

"हां, वह है, लेकिन गाड़ी एक आदमी चला रहा है।"

“गाड़ी कौन चला रहा है?”

“एक भाड़े का आदमी।”

"क्या वह अब गाड़ी में है?"

"हां वह है।"

क्या वह रास्ते में है?

"हाँ।"

"ठीक है, तो उसे हाथ हिलाकर कह दो कि हम उसे प्यार के साथ विदा कर रहे हैं।"

“अब वह लगभग बाईस साल की लगती है। काफी छोटी।”

उसे इस घर में वापस नहीं आना है।

"वह ऐसा नहीं चाहती। वह कहती है कि वह इसी घर में बूढ़ी हुई है।"

उस घर का नाम क्या था?

"यह पॉइंट समथिंग था।"

“क्या उन्होंने घर बनाया था? क्या उन्होंने और उनके पति ने?”

नहीं, वह वहीं था।

इसे किसने बनाया?

“सैमुअल।”

“और सैमुअल कौन था?”

“एक किसान।”

“उन्होंने इसे उससे खरीदा?”

“हां, उन्होंने किया। वह कहती हैं कि दस्तावेज टाउन हॉल में है।”

“किस कस्बे की बात कर रहे हो? क्या यह इसी गांव में है?”

“अगला कस्बा। सड़क के उस पार।”

“मैं समझ गया। और यह दस्तावेज़ किसके नाम पर है?”

“उसके पति का।”

"पहला नाम।"

“जेम्स।”

“जेम्स क्या? पूरा नाम।”

"यह कुछ हद तक हेडन जैसा है।"

“जेम्स हेडन कहाँ से हैं...? सैमुअल का पहला नाम क्या है?”

"सैमुअल्स उस संपत्ति के मालिकों का अंतिम नाम था।"

"लेकिन इसे बेचने वाले व्यक्ति का पहला नाम। क्या उसे याद है?"

उसे इस बात का कभी पता ही नहीं चला।

“यह किस वर्ष की बात है?”

“1821.”

उन्होंने घर के लिए कितने पैसे दिए?

“वस्तु विनिमय।”

उन्होंने उन्हें क्या दिया?

“एक पाल वाली नाव। मछली पकड़ने के लिए एक छोटी पाल वाली नाव, और कई घोड़े। एक साल के लिए आवश्यक जड़ें, और कुछ कागज़—मुद्रा। नोट।”

लेकिन पैसे नहीं?

“बस नोट्स। जैसे वादे,” वह कहती है। “वादों के नोट्स।”

"घर की पूरी कीमत कितनी थी?"

"यहाँ सब कुछ वस्तु विनिमय में होता है, सब कुछ अदला-बदली में।"

"लेकिन घर के लिए कोई रकम नहीं बताई गई? कोई कीमत नहीं बताई गई?"

वह कहती है, 'मेरे पति से पूछो।'

"क्या वह और उसका पति यहां अकेले रहते थे?"

"दो बच्चों।"

उनके नाम क्या थे?

“फिलिप। लेकिन वह समुद्र में चला गया।”

और दूसरा वाला?

“फ्रांसिस।”

क्या वह भी समुद्र में गया था?

"नहीं।"

“उसके साथ क्या हुआ?”

मुझे लगता है कि फ्रांसिस की मृत्यु हो गई है।

“उसकी मृत्यु किस कारण हुई?”

“हैजा। वह सत्रह साल का था।”

“उनकी शादी कहाँ हुई? किस चर्च में हुई?”

“लूथरन।”

“लूथरन क्यों? क्या वह लूथरन थी?”

उसे याद नहीं है।

क्या उसे मंत्री का नाम याद है?

“थोर्प।”

“थोर्प?”

“हां। थोर्प।”

उनका पहला नाम क्या था?

“थॉमस थोर्प।”

और जब उनकी शादी हुई थी, क्या वह इसी शहर में हुई थी?

"नहीं।"

“यह किस शहर में था?”

बहुत दूर।

उस कस्बे का नाम क्या था?

"पिकविक जैसा कुछ... ऐसा अजीब नाम... यह किसी जगह का एक प्रांत जैसा है। पिकाडिली जैसा - देश का एक प्रांत," वह कहती है।

“और उसके बाद वे सीधे यहीं आ गए? या वे कहीं और रहने चले गए?”

“साको। वे साको में गए।”

“क्या यह किसी जगह का नाम है?”

"हाँ।"

वे वहां कितने समय तक रहे?

"सैको में छह महीने।"

"और तब?"

उनके पति को कमीशन मिला हुआ था।

“किस तरह का कमीशन?”

"व्हेलिंग जहाज पर।"

उस जहाज का नाम क्या था?

“संत कैथरीन। मुझे संत कैथरीन या संत कैथरीनें दिखाई दे रही हैं।”

और फिर वे कहाँ चले गए?

पोर्ट क्लाइड।

“...और वे जीवन भर यहीं रहे?”

"हां, जब तक वह समुद्र में नहीं गया और एक बार भी वापस नहीं आया।"

“उसका जहाज वापस नहीं आया?”

"नहीं।"

"क्या उसे यह बात हमें बताने के बाद बेहतर महसूस हो रहा है?"

"ओह हां।"

उसे बता दो कि वह...

वह कहती है कि यह एक लंबी कहानी है।

उसे बताओ कि उसे उस जगह रहने की जरूरत नहीं है जहाँ उसके जीवन में इतनी तकलीफें आई हैं। उसे बताओ कि उसका पति वहाँ है...

"हाँ।"

क्या वह समझती है?

"हाँ वह करती है।"

क्या वह उससे दोबारा मिलना चाहती है?

"हाँ।"

“तो फिर उसे उसे अपने पास आने के लिए पुकारना होगा। क्या वह यह बात समझती है?”

"हाँ।"

"तो उससे कहो कि वह अभी अपने पति जेम्स को फोन करे।"

"वह उसे सरे या ऐसी ही किसी जगह ले जाएगा," उसने कहा।

“सरे।”

“सरे। कितना अजीब नाम है।”

क्या यह कोई जगह है?

"हां यह है।"

क्या वह उसे देख रही है?

"हाँ।"

क्या वे दोनों साथ जा रहे हैं?

"हां, मैं उसे धीरे-धीरे जाते हुए देख रही हूं, लेकिन वह पीछे मुड़कर देख रही है।"

“उसे कहो कि वह चली जाए और यहाँ वापस न आए। उसे कहो कि वह प्यार, खुशी और शांति के साथ जाए। क्या वे चले गए?”

“वे जा रहे हैं। यह एक पुनर्मिलन है।”

“हम उनके अच्छे स्वास्थ्य की कामना करते हैं और इस घर से उन्हें अपने आशीर्वाद, प्रेम और करुणा के साथ शांतिपूर्वक विदा करते हैं। आगे बढ़ो, आगे बढ़ो। तुम्हें क्या दिखाई देता है?”

वे चले गए हैं।

और इसी के साथ, हमने घर छोड़ दिया, आज का दिन काफी व्यस्त रहा। कैमरा क्रू ने अपना सामान समेट लिया ताकि हम सुबह शूटिंग जारी रख सकें। जहाँ तक मेरी बात है, असली काम तो अभी बाकी था: इंग्रीड बेकमैन द्वारा तैयार की गई सामग्री की पुष्टि करना।

मैंने कैरोल से उन नामों और जानकारियों की पुष्टि करने के लिए कहा, जिनका जिक्र इंग्रीड ने घर में रहते हुए किया था। कैरोल ने हमें उस इलाके के नक्शों वाली एक किताब दिखाई और हमने उसकी जाँच शुरू कर दी।

“देखो,” कैरोल ने कहा और किताब में उस अंश की ओर इशारा करते हुए कहा, “ज़मीन का यह टुकड़ा जॉन बार्टर की मिल्कियत था और यह सैमुअल गार्डनर के ठीक बगल में था...और इसमें लिखा है कि जॉन बार्टर की मृत्यु 1820 में हुई थी...वही तारीख जिसका ज़िक्र इंग्रीड ने किया था! आह, और इसमें मार्गरिट बार्टर का भी ज़िक्र है, और उसी पृष्ठ पर एक तारीख है, 23 नवंबर, 1882...मुझे लगता है कि उसी दिन उनकी मृत्यु हुई थी।”

“बहुत बढ़िया,” मैंने कहा, इतनी आसानी से यह सारी जानकारी मिल जाने से मैं बहुत खुश था। “आखिर यह किताब है क्या?”

"यह सेंट जॉर्ज शहर के शुरुआती अभिलेखों की एक प्रति है, पुराने बंधक का।"

"क्या वह बिल्कुल बगल वाला कस्बा नहीं है?"

"हां यह है।"

"होग्डेन, हेडन या सैमुअल नाम के बारे में क्या ख्याल है?"

“सैमुअल हैटन एक नाविक थे और उनकी पत्नी का नाम एल्मिरा था,” कैरोल ने किताब की ओर इशारा करते हुए कहा। इंग्रीड भी अब हमारे साथ आ गई थी क्योंकि मुझे सत्यापन के संबंध में उसे और अंधेरे में रखने की कोई आवश्यकता नहीं दिख रही थी—उसका काम पूरा हो चुका था।

मैंने कहा, "हमें इसकी पुष्टि करनी होगी। साथ ही, क्या कभी सेंट कैथरीन नाम का कोई जहाज था और क्या इसे केनेबेक नदी पर बनाया गया था जैसा कि इंग्रीड ने दावा किया था?"

लेकिन ऐसा कौन कर सकता था? सौभाग्य से, किस्मत मेहरबान थी; एक महान विशेषज्ञ थे जो उस क्षेत्र और कस्बों के इतिहास को आसपास के किसी भी व्यक्ति से बेहतर जानते थे, और वे हमसे मिलने के लिए तैयार हो गए। वे कमांडर अल्बर्ट स्मैली नाम के एक रंगीन मिजाज पूर्व नाविक निकले, जिन्होंने सेंट जॉर्ज स्थित अपने घर में हमारा स्वागत किया—एक ऐसा घर, जिसे जहाज के पुल की तरह शानदार ढंग से सजाया गया था। उनके स्मृति चिन्हों की प्रशंसा

करने और अपने मिशन की गंभीरता को दर्शाने के लिए कुछ बातचीत करने के बाद, मैंने कमांडर की ओर रुख किया और उनसे सीधे महत्वपूर्ण प्रश्न पूछे।

"कमांडर अल्बर्ट स्मैली, आप इस शहर में कितने समय से रह रहे हैं?"

"मेरा जन्म छिहत्तर साल पहले इसी कस्बे में हुआ था।"

"मुझे पता है कि पोर्ट क्लाइड के इतिहास के बारे में आपको किसी और से ज्यादा जानकारी है।"

"खैर, यह एक विवादास्पद प्रश्न है, लेकिन मैं कहूंगा, संभवतः, हाँ।"

"अब, आपकी जानकारी के अनुसार, क्या सैमुअल और हैटन नामों का इस क्षेत्र से कोई संबंध है?"

"हां, मुझे पता है कि हैटन 1850 से पहले पोर्ट क्लाइड में रहते थे। इस बात का मुझे पूरा यकीन है।"

उनका पेशा क्या था?

“नाविक।”

क्या इन इलाकों में सेंट कैथरीन नाम का कोई जहाज था?

“हां, था।”

“क्या इसे केनेबेक नदी पर बनाया गया होगा? या किसी तरह उससे जुड़ा हुआ होगा?”

"हाँ, जहाँ तक मुझे याद है, ऐसा ही था, और मेरा मानना है कि इसका निर्माण केनेबेक नदी के किनारे सेवेल यार्ड में हुआ था।"

"क्या उन्नीसवीं शताब्दी में पोर्ट क्लाइड क्षेत्र में छोटे पैमाने पर खेती होती थी?"

"हां, मुख्य रूप से वे इसी काम के लिए यहां आए थे। लेकिन मछली पकड़ना, बेशक, एक प्रमुख उद्योग था।"

“पोर्ट क्लाइड से कुछ ही दूरी पर एक प्रकाशस्तंभ है, जो मेरे विचार से उन्नीसवीं शताब्दी के आरंभिक भाग में बनाया गया था। क्या यह 1840 के दशक में भी वहां मौजूद हो सकता था?”

“जी हां। इसका निर्माण 1833 में हुआ था।”

"अगर 1840 में कोई जीवित होता, तो क्या उसे इस अपेक्षाकृत नए प्रकाशस्तंभ के बारे में किसी तरह की चिंता होती? क्या यह बात उसे परेशान करती?"

“नहीं, ऐसा नहीं होगा। यह निवास अपेक्षाकृत नया है। पुराना पत्थर का निवास बिजली गिरने से नष्ट हो गया था। लेकिन मीनार वही है।”

“अब आपको पोर्ट क्लाइड का वह इलाका पता है जहाँ अब लिआ डेविस का घर है? इस घर से पहले, क्या आस-पास के क्षेत्र में कोई और घर थे?”

मुझे हमेशा से बताया गया है कि वहां एक घर था। इसके मालिक डेविस ने मुझे बताया कि उन्होंने एक पुराने तहखाने पर घर बनाया था।

और यह कितने समय पहले तक जा सकता है?

"यह शायद 1870 के आसपास की बात है। नया घर लगभग 1870 में बनाया गया था।"

"और क्या इससे पहले भी कोई था?"

"हां, उससे पहले एक था।"

"क्या वह कोई फार्महाउस हो सकता था?"

"हां, ऐसा हो सकता है क्योंकि इसके पीछे एक छोटा सा खेत है। यह छोटा है।"

“आपने बेशक तरह-तरह की कहानियां सुनी होंगी—कुछ सच, कुछ काल्पनिक। क्या आपने कभी उस जगह पर स्थित फार्महाउस के मालिकों से जुड़ी किसी बड़ी त्रासदी की कहानी सुनी है?”

"व्हिट थॉम्पसन कुछ अजीबोगरीब भूत-प्रेत की कहानियां सुनाया करते थे। लेकिन सब उन्हें झूठा कहते थे। यह सच है या नहीं, मुझे नहीं पता, लेकिन मैंने उन्हें सुना है।"

“उस इलाके के बारे में?”

"उस क्षेत्र के बारे में।"

"क्या महोदय, किसी महिला भूत के बारे में कोई कहानी है—किसी महिला भूत के बारे में?"

मैंने एक महिला भूत के बारे में सुना है। हाँ, व्हिट यह कहानी सुनाया करता था।

"उसने आपको क्या बताया?"

“यह बहुत पहले की बात है, और मुझे ठीक से याद नहीं कि उन्होंने इसके बारे में क्या कहा था —उन्होंने बहुत कुछ कहा था—लेकिन वह अक्सर दिखाई देती थी, खासकर धुंध भरी रातों में, और उसके चेहरे को पहचानना मुश्किल होता था—यह उन चीजों में से एक थी जिसके बारे में वह बताया करते थे—और कुछ ऐसा भी था कि वह प्रकाशस्तंभ पर घंटी बजाती थी, जब वे वहां पुरानी धुंध की घंटी बजाते थे। मुझे याद नहीं कि क्या कहा था।”

"हमें जो कहानी मिली, उसमें एक महिला सफेद रंग का गाउन पहने हुए खिड़की से समुद्र की ओर देख रही थी, मानो वह अपने नाविक के लौटने की प्रतीक्षा कर रही हो, और जाहिर तौर पर शुरू में उसका चेहरा दिखाई नहीं दे रहा था।"

मुझे नहीं लगता कि व्हिटनी ने कभी बताया कि उसका चेहरा देखा गया था।

"क्या आपको याद है कि कोई ऐसा व्यक्ति है जिसे उस विशेष क्षेत्र में वास्तव में कोई असामान्य अनुभव हुआ हो?"

नहीं, मैं नहीं करता।

"कमांडर, अगर आपको उस घर में रात बिताने का विकल्प दिया जाए, तो क्या इससे आपको चिंता होगी?"

"नहीं, ऐसा क्यों होना चाहिए?"

“क्या तुम्हें भूतों से डर नहीं लगता?”

नहीं। मुझे क्यों होना चाहिए?

"आखिरकार वे भी इंसान ही हैं।"

“हं?”

"आखिरकार वे भी इंसान ही हैं।"

"हाँ।"

क्या आपने कभी ऐसा कोई देखा है?

"नहीं, मेरा पालन-पोषण माध्यमों और अध्यात्मवादियों के बीच हुआ था और बचपन में मैं बहुत डरी हुई थी, अंधेरा होने के बाद बाहर जाने की हिम्मत नहीं करती थी, लेकिन मैंने उस डर पर काबू पा लिया।"

"आपका बहुत-बहुत धन्यवाद।"

“प्रकाशस्तंभ और आंधी... आंधी में फंसा जहाज... सब कुछ मेल खाता हुआ लगता है...”, इंग्रीड ने बुदबुदाते हुए कहा जब हम अपनी कारों में वापस बैठे और कमांडर के घर से निकल गए।

और बस यही बात है। बड़े शहर की एक महिला, जिसे मेरे द्वारा जाँचे जा रहे मामले के बारे में कुछ भी नहीं पता, और न ही यह कि उसे कहाँ ले जाया जा सकता है, फिर भी वह ऐसे नाम और जानकारी बता देती है जो वह खुद से नहीं जान सकती थी। इंग्रीड बेकमैन एक प्रतिभाशाली मानसिक शक्ति वाली महिला थीं (और शायद अभी भी हैं)। पोर्ट क्लाइड की कहानी की रिकॉर्डिंग पूरी होने के कुछ ही समय बाद, मैं यूरोप के लिए रवाना हो गया।

जब मैं बाहर था, तब इंग्रीड की मुलाकात एक पूर्व डिस्क जॉकी से हुई, जो उस तरह के काम में दिलचस्पी ले रहा था जिसे हम दोनों काफी समय से सफलतापूर्वक कर रहे थे। किसी तरह उसने इंग्रीड को इस मामले पर अखबार को इंटरव्यू देने के लिए मना लिया—जिससे ज़ाहिर तौर पर एनबीसी बहुत नाराज़ हो गया क्योंकि यह सेगमेंट छह महीने तक प्रसारित नहीं होने वाला था—और मैं भी। अखबार की खबर काफी रंगीन थी, जिससे ऐसा लग रहा था कि इंग्रीड ने इस भूत के बारे में सुना था और उसका निपटारा कर दिया था... लेकिन अखबारों की खबरें कभी-कभी बातों को तोड़-मरोड़ देती हैं, या शायद भूत की कहानी की पुष्टि और शोध उन्हें कहानी से कम दिलचस्प लगता है। लेकिन मेरे जैसे पेशेवर के लिए, सबूत तभी सबूत बनता है जब उसकी सावधानीपूर्वक पुष्टि की जाए। मैंने तब से इंग्रीड के साथ काम नहीं किया है।

पोर्ट क्लाइड की उस रहस्यमयी महिला के बारे में भी अब तक कुछ पता नहीं चला है, और चूंकि हमने उसे विनम्रतापूर्वक समझा दिया था कि वह अब और इंतजार न करे, इसलिए पूरी संभावना है कि वह अपने साथी के साथ बहुत पहले ही किसी ऐसे महासागर में पहुंच चुकी होगी जहां न तो तूफान आ सकते हैं और न ही कोई जिज्ञासु टेलीविजन क्रू दखल दे सकता है।

*115

एक प्लायमाउथ घोस्ट

मैं उस प्लाईमाउथ की बात नहीं कर रहा हूँ जहाँ तीर्थयात्री उतरे थे, बल्कि एक दूसरे प्लाईमाउथ की बात कर रहा हूँ। यह न्यू हैम्पशायर में स्थित है, राज्य के एक ऐसे हिस्से में जो आज भी काफी सुनसान और कम आबादी वाला है। अगर आप सचमुच दुनिया से दूर शांति पाना चाहते हैं—चाहे कुछ भी हो—तो यह एक बढ़िया विकल्प है। मैं इसका जिक्र इसलिए कर रहा हूँ क्योंकि इस ग्रामीण इलाके में रहने वाले व्यक्ति के पास मनोरंजन के ज्यादा विकल्प नहीं होते, जब तक कि आप खुद इसका इंतजाम न करें। खैर, मैं अपनी बात से भटक रहा हूँ।

इस मामले के बारे में मुझसे पहली बार अगस्त 1966 में संपर्क किया गया था, जब कनेक्टिकट के ब्रिजपोर्ट में रहने वाली जूडिथ इलियट नाम की एक युवती ने मुझे न्यू हैम्पशायर में स्थित अपने चचेरे भाई के ग्रामीण घर में हो रही घटनाओं के बारे में बताया। जूडिथ ने मुझसे पूछा कि क्या मैं श्रीमती चेस्टर फुलर से इस बारे में संपर्क करने में रुचि रखूँगी। इस रिपोर्ट में मुझे जो बात सबसे ज़्यादा दिलचस्प लगी, वह सामान्य तौर पर सुनाई देने वाली कदमों की आहट, किसी की मौजूदगी और घर की बिल्ली का किसी अनदेखे व्यक्ति को घूरना नहीं था, बल्कि यह तथ्य था कि श्रीमती फुलर ने कथित तौर पर एक भूत देखा था और प्लायमाउथ शहर की द्विशताब्दी के उपलक्ष्य में प्रकाशित एक पुस्तक से उसकी पहचान की थी।

जब मैंने उत्साहपूर्वक जवाब लिखा, तो मिस इलियट ने मेरा पत्र अपनी चचेरी बहन को भेज दिया और उनसे अधिक विस्तृत और क्रमबद्ध जानकारी मांगी। लेकिन अगले साल के काफी बाद जाकर मैंने आखिरकार यात्रा की योजना बनाई। दिवंगत माध्यम एथेल जॉनसन मेयर्स और मेरी पूर्व पत्नी कैथरीन, जो मेरी कुछ किताबों के लिए चित्र बनाती थीं और हमेशा से ही रहस्यमयी घरों में रुचि रखती थीं, मेरे साथ आईं। श्रीमती फुलर ने मेरे अनुरोध के अनुसार, मुझे उन घटनाओं के बारे में, उन्हें अनुभव करने वालों के बारे में और घर के पूर्व मालिकों और घर के बारे में जितनी जानकारी वह जुटा सकीं, वह सब दी। यहाँ, उनके अपने शब्दों में, वह रिपोर्ट है, जिसे मैंने माध्यम से हमेशा छिपाकर रखा ताकि उन पर कोई प्रभाव न पड़े या उन्हें

घर और परिस्थितियों के बारे में पहले से कोई जानकारी न मिल जाए। श्रीमती फुलर की रिपोर्ट इस प्रकार है:

स्थान: यह घर न्यू हैम्पशायर के प्लायमाउथ शहर में 38 मेरिल स्ट्रीट पर स्थित है। घर तक पहुंचने के लिए, थ्रूवे 93 से प्लायमाउथ के लिए पहले निकास से बाहर निकलें। मेन स्ट्रीट पर ट्रैफिक सिग्नल पर पहुंचकर, दाहिने मुड़ें और नीले रंग के सनको सर्विस स्टेशन तक सीधे चलते रहें, फिर मेरिल स्ट्रीट पर बाईं ओर मुड़ें। यह घर सामने सफेद पिकेट स्नो फेंस वाला इकलौता घर है। इसकी बाहरी दीवारें सफेद रंग की हैं, सामने का दरवाजा लाल रंग का है और खिड़की पर लाल रंग का गमला लगा है। यह घर सड़क के दाहिनी ओर स्थित है।

1. पहली बार यह घटना जून के मध्य में हुई थी—घर में आने के लगभग एक महीने बाद। यह दिन का वह समय था जब घर के अंदर रोशनी की ज़रूरत होती है, लेकिन बाहर अभी भी उजाला होता है। यह घटना रसोई और बाथरूम में घटी। बाथरूम और भोजन कक्ष रसोई से सटे एक हिस्से में हैं। दोनों कमरों के दरवाजे रसोई से बाहर निकलते हैं और एक दूसरे के बगल में हैं, उनके बीच बस एक छोटी सी दीवार की जगह है। उस समय हमारी रसोई की मेज उसी जगह पर रखी थी। मैं रात का खाना बना रही थी, खाना मेज पर लगाने की कोशिश कर रही थी और दो छोटे बच्चों (उम्र 2 और 5 साल) को मेज से दूर रखने की कोशिश कर रही थी। जैसे ही मैंने आलू मेज पर रखे, मैं सिंक से मुड़कर बाथरूम के दरवाजे की ओर गई। मुझे लगा कि मैंने बाथरूम में किसी को देखा है। मैंने देखा तो एक आदमी था। वह कमरे की लंबाई के लगभग बीच में खड़ा था। उसने भूरे रंग की चेकदार कमीज, गहरे रंग की पैंट और सस्पेंडर्स पहने हुए थे, और गोल धातु के फ्रेम वाला चश्मा लगाया हुआ था। उसकी लंबाई मध्यम थी, थोड़ा छोटा कद, न मोटा न पतला, बल्कि अच्छी कद-काठी, गोल चेहरा, और वह मुस्कुरा रहा था। अचानक वह चला गया, न तो कोई गायब होने का करतब था और न ही कोई दिखावटीपन, बस वैसे ही चला गया जैसे आया था।

2. कदमों की आहट। घर के अन्य हिस्सों में भी कदमों की आहट सुनाई देती है। अगर मैं ऊपर हूँ, तो कदमों की आहट नीचे आती है। अगर मैं रसोई में हूँ, तो वे बैठक में आती हैं, इत्यादि। ये आहटें पूरे साल, हर मौसम में और दिन के समय सुनाई देती थीं। आमतौर पर ये दो या तीन के आसपास होती थीं और हमेशा धूप वाले दिनों में, जैसा कि मुझे याद है।

3. सर्दी का मौसम—देर रात। दो बार हम (सेठ और मैं) ने ऊपर के कमरे का दरवाज़ा बंद होने की आवाज़ सुनी। (सेठ एक बुज़ुर्ग व्यक्ति हैं जो अब हमारे साथ रहते हैं। जब हम पहली बार यहाँ आए थे, तब वे हमारे साथ नहीं रहते थे। उनकी पत्नी मेरे पिता की दूर की चचेरी बहन थीं। हाई स्कूल में पढ़ते समय मेरी उनसे जान-पहचान हुई थी। मैंने उनके घर पर बहुत समय बिताया और उनकी पत्नी से मेरी अच्छी दोस्ती हो गई। उनकी पत्नी का 11 साल पहले निधन हो गया और तब से सेठ अपने बेटे के घर, एक किराए के मकान में और अब यहाँ रहते हैं। यहाँ आने से पहले वे हमसे मिलने अक्सर आते थे।) ऊपर के कमरों में से केवल एक ही दरवाज़ा ठीक से खुलता-बंद होता है, और वह मेरे कमरे का दरवाज़ा है। मैंने उस रात बच्चों को देखा कि वे जागे हैं या नहीं, लेकिन वे हिले-डुले नहीं थे। मेरे पति भी गहरी नींद में सो रहे थे। दरवाज़ा पहले से ही बंद था, क्योंकि मेरे पति ने टीवी की आवाज़ रोकने के लिए बिस्तर पर जाते समय उसे अच्छी तरह बंद कर दिया था। दरवाजे की आवाज बिल्कुल स्पष्ट थी—पहले संपर्क की आवाज, फिर कुंडी के लगने की आवाज, और फिर दरवाजे के फ्रेम से टकराने की धमक। सब कुछ जांचा गया—कोई भी ऐसी चीज जो ढीली हो या हो सकती हो और हवा से टकराई हो, या कोई भी ऐसी चीज जो गिर गई हो। कुछ भी नहीं हिला था। उस रात दरवाजा केवल एक बार बंद हुआ, लेकिन बाद में सर्दियों में फिर से बंद हो गया।

4. अगली घटना पतझड़ के मौसम में हुई। उस समय मैं गर्भवती थी। 1 नवंबर को मेरा गर्भपात हो गया, और यह घटना लगभग 1 अक्टूबर के आसपास घटी। मेरी सबसे छोटी बेटी, बेकी सू, उस समय तीन साल की थी। आधी रात के आसपास या उससे भी देर रात, वह अपने पालने में सो रही थी। मैं हॉल के दूसरी तरफ अपने बेडरूम में सो रही थी। मैं उठी और उसे कहते हुए सुना, "मम्मी, आप मेरे बेडरूम में क्या कर रही हैं?" वह यही कहती रही, जब तक मुझे लगा कि मुझे उसे जवाब देना चाहिए, नहीं तो वह डर जाएगी। मैंने कहना शुरू किया, "मैं तुम्हारे कमरे में नहीं हूँ," और जैसे ही मैंने कहा, मैं करवट बदलने लगी और मुझे अपने बेडरूम के दरवाजे के सामने एक लंबी सफेद नाइटगाउन पहने एक महिला दिखाई दी। पलक झपकते ही वह हॉल में गायब हो गई। इस समय बेकी कह रही थी, "मम्मी, आप मेरे कमरे में क्या कर रही हैं?" जैसे ही वह आकृति हॉल में गायब हुई, बेकी ने अपना सवाल बदल दिया, "मम्मी, आप मेरे बेडरूम में क्या कर रही थीं?" तब मैंने सोचा कि अगर मैं उसे बता दूँ

कि मैं उसके कमरे में नहीं थी, तो वह सच में डर जाएगी। इस पूरे समय मुझे लगा कि मेरी बड़ी बेटी किम्बर्ली उठ रही है, और मैं उसके बोलने का इंतज़ार करती रही। बेकी अपने सवालों से एक ही बात बार-बार दोहरा रही थी। आखिरकार मैंने सुना कि कोई आवाज़ दो कदम नीचे गई, एक कोने में मुड़ी और फिर तीन कदम आगे बढ़ी। फिर मैं बेकी के कमरे में गई और उससे कहा कि मैं भूल गई थी कि मैं उसके कमरे में किसलिए गई थी, और उसे लेटकर सोने को कहा, और उसने वैसा ही किया। इस पूरे समय किम्बर्ली हिली भी नहीं थी। अगली सुबह मैं सेठ (जो अब हमारे साथ रह रहा था) को इसके बारे में बता रही थी, और मुझे नीचे जाते कदमों की आवाज़ याद आ गई। मुझे लगा कि बेकी ने भी उन्हें सुना होगा, इसलिए मैंने उसे रसोई में बुलाया और उससे पूछा कि उसके कमरे से निकलने के बाद मैं कहाँ गई थी। उसने मुझे ऐसे देखा जैसे मेरा दिमाग खराब हो गया हो और बोली, "नीचे!"

5. यह सर्दियों का समय था, लगभग 2 बजे के आसपास। सेठ ऊपर के कमरों में बिस्तर लगाने में मेरी मदद कर रहा था क्योंकि किसी कारणवश बिस्तर लगाना छूट गया था। हमें रसोई के उस पार बने खेल के कमरे से, और फिर हॉल में थोड़ी दूर से कदमों की आहट सुनाई दी। हम दोनों को लगा कि बेकी सू बाहर खेल रही होगी। वह अक्सर छोटी-मोटी चीजें लेने अंदर आती रहती है। फिर भी किसी ने कुछ नहीं कहा। हम थोड़ी देर तक उसके मुझे पुकारने की उम्मीद में इंतज़ार करते रहे। आखिरकार, जब उसने नहीं पुकारा, तो मैं नीचे देखने गई कि उसे क्या चाहिए, लेकिन वहाँ कोई नहीं था। मैंने सोचा कि शायद वह वापस बाहर चली गई होगी, लेकिन फर्श पर न तो बर्फ थी और न ही किसी तरह के पैरों के निशान। यह एक बहुत ही धूप वाला दिन था।

6. यह भी सन् 1965 की देर रात का समय था, लगभग 11 बजे। मैं अपने पति का दोपहर का खाना लगा रही थी कि तभी मेरे ठीक पीछे किसी के कदमों की आहट सुनाई दी। इससे मैं डर गई, हालांकि मुझे नहीं पता क्यों; उस समय तक मुझे कभी कोई डर नहीं लगा था। शायद इसलिए क्योंकि वह आहट मेरे ठीक पीछे थी और बाकी आहटें हमेशा कुछ दूरी पर या कम से कम मेरे सामने होती थीं।

उसके बाद से मुझे कुछ याद नहीं आ रहा। हाल ही में मुझे ऐसी आवाज़ें सुनाई दे रही हैं जैसे कोई रसोई या भोजन कक्ष में हो, जबकि मैं बैठक में होती हूँ, लेकिन मैं इस बात को लेकर

निश्चित नहीं हूँ। ऐसा लगता है जैसे कोई चीज़ सरसरा रही हो, लेकिन मैं निश्चित रूप से यह नहीं कह सकती कि यह किसी पुराने घर की आवाज़ें नहीं हैं।

घर का इतिहास और पिछले मालिकों की पृष्ठभूमि

इस घर का इतिहास और इसके पिछले मालिकों के बारे में जानकारी मिलना बहुत मुश्किल है। हमने यह घर श्रीमती ओरा जैक्स से खरीदा था। उनके पति ने इसे अपने बेटे से खरीदा था, जो फ्लोरिडा चले गए थे। पति घर में काफी मरम्मत करवाने के बाद इसे बेचने की योजना बना रहे थे। उनके निधन के बाद, श्रीमती जैक्स ने इसे एक साल के लिए किराए पर दिया और फिर बेच दिया।

मुझे बताया गया है कि श्री जैक्स के बेटे ने इसे एक ऐसे व्यक्ति से खरीदा था जो पहले डोनट की दुकान चलाता था और पीछे के कमरे में खाना बनाता था। पीछे के कमरे में आग लग गई थी, जो कथित तौर पर चर्बी की वजह से लगी थी। उन्होंने यह घर श्रीमती एम्मा थॉम्पसन से खरीदा था, जिन्हें और उनके पति को श्री वुडबरी लैंगडन की देखभाल करने और उन्हें थोड़ी सी रकम देने के बदले यह घर मिला था। श्रीमती थॉम्पसन हमेशा लोगों को यह जताती थीं कि वह वास्तव में एक काउंटेस हैं और पेंसिल्वेनिया में उनकी एक बहन है जो उनके अजीब व्यवहार के कारण उनसे कोई वास्ता नहीं रखती।

श्रीमती थॉम्पसन रमनी चली गईं, जहां लगभग छह महीने बाद उन्हें निमोनिया हो गया और उनकी मृत्यु हो गई।

श्री वुडबरी लैंगडन द्वारा श्री और श्रीमती डिंसमोर को घर से निकाल दिए जाने के बाद, श्री और श्रीमती थॉम्पसन उनकी देखभाल करने के लिए वहाँ रहने लगे। (श्री कुशिंग ने मुझे निम्नलिखित जानकारी दी। वे बगल वाले घर में रहते हैं और 1914 या 1918 से वहीं रह रहे हैं)।

सुबह तड़के तेज रोशनी से उनकी नींद खुल गई। देखते ही देखते उन्होंने देखा कि ऊपर का कमरा (टावर वाला कमरा) पूरी तरह आग की चपेट में था। उन्होंने कपड़े पहने, दमकलकर्मियों को बुलाया और मदद के लिए दौड़ पड़े। उन्होंने उस खिड़की से अंदर देखा जो अब हमारा भोजन कक्ष है, लेकिन उस समय श्री लैंगडन का शयनकक्ष था। (श्री लैंगडन अपनी उम्र के कारण सीढ़ियों से ऊपर-नीचे नहीं जा सकते थे।) उन्होंने श्री लैंगडन को जगाने

के लिए खिड़की पर जोर-जोर से दस्तक दी। खिड़की से उन्होंने देखा कि श्री और श्रीमती डिंसमोर रसोई और शयनकक्ष के बीच के दरवाजे पर खड़े थे। वे हंस रहे थे और श्री डिंसमोर के हाथ में तेल का डिब्बा था। इस पूरे समय श्री लैंगडन गहरी नींद में सो रहे थे। श्री कुशिंग को गुस्सा आया और वे और जोर से दस्तक देने लगे। जैसे ही उन्होंने खिड़की खोलने की कोशिश की, श्री लैंगडन जाग गए और श्री कुशिंग ने उन्हें खिड़की से बाहर निकलने में मदद की। उन्होंने कहा कि उनकी कहानी पर कोई विश्वास नहीं करेगा, यहां तक कि बीमा कंपनी भी नहीं। जाहिर है, श्री लैंगडन ने ऐसा किया क्योंकि कुछ ही समय बाद उन्होंने डिंसमोर परिवार को घर से निकाल दिया और तभी श्री और श्रीमती थॉम्पसन उनकी देखभाल करने आए। लगभग सन् 1927 में उन्हें निमोनिया हो गया। दो दिन तक उन्हें निमोनिया रहा और फिर वे बिना जैकेट या स्वेटर पहने बाहर चले गए। श्रीमती थॉम्पसन दौड़कर बाहर गईं और उन्हें वापस अंदर ले आईं। उन्होंने उन्हें बिस्तर पर लिटाया और कॉफी पिलाकर गर्म किया और ऊनी कंबल में लपेट दिया। आधी रात तक उनकी हालत बेहतर लग रही थी। फिर वे कराहने लगे। वे लगभग 3 बजे तक कराहते रहे, जब उनकी मृत्यु हो गई।

श्री लैंगडन ने दो बार विवाह किया था। उनकी पहली पत्नी और अठारह वर्षीय पुत्र की टाइफाइड बुखार से मृत्यु हो गई। उन्होंने कुओं की जाँच करवाई और पाया कि यह बीमारी उन्हीं कुओं से फैली थी। उन्होंने अपने पिता को प्लाईमाउथ शहर के लिए पहली जल आपूर्ति प्रणाली स्थापित करने में अपना पैसा लगाने के लिए राजी किया। उस समय वे शहर के दूसरी ओर रसेल स्ट्रीट पर रहते थे।

बाद में उन्होंने डोना नाम की एक महिला से शादी की। वे उसकी पूजा करते थे और उसे खुश करने के लिए हर संभव प्रयास करते थे। उन्होंने घर का जीर्णोद्धार करवाया। उसी दौरान उन्होंने बाथरूम और बेडरूम (भोजन कक्ष) बनवाए। उन्होंने टावर रूम भी बनवाया ताकि उनकी पत्नी शहर का नजारा देख सकें। स्काम झील के पास उनकी एक बड़ी जागीर भी थी जिस पर उन्होंने खूब पैसा खर्च किया। इस पूरे समय में वह हर किसी के साथ संबंध बना रही थीं। श्री कुशिंग का मानना है कि उन्हें यह बात अंदर ही अंदर पता थी लेकिन उन्होंने इसे स्वीकार नहीं किया। श्री कुशिंग के अनुसार, उनकी पत्नी की मृत्यु उसी बीमारी से हुई जो उन्होंने अपने किए के कारण पाई थी! वे जोर देकर कहते हैं कि इसे कुष्ठ रोग कहते थे।

चिकित्सा विश्वकोश में कुष्ठ रोग के अंतर्गत लिखा है, "विभेदक निदान: तपेदिक और विशेष रूप से सिफलिस दो ऐसी बीमारियां हैं जिन पर विचार किए जाने की सबसे अधिक संभावना है।"

उनकी मृत्यु या तो इसी घर में हुई थी या झील के किनारे स्थित जागीर में। उन्हें होल्डरनेस के ट्रिनिटी कब्रिस्तान में परिवार के कब्रिस्तान में दफनाया गया था। उनकी छोटी सी समाधि पर केवल एक नाम, डोना, अंकित है। कब्रिस्तान के बीच में एक विशाल शिखरनुमा स्मारक है, जिस पर परिवार के सदस्यों के नाम और उनके रिश्ते लिखे हुए हैं। वुडबरी लैंगडन की दूसरी पत्नी का नाम पत्थर से पूरी तरह मिटा दिया गया है। वहाँ ऐसा कुछ भी नहीं है जिससे पता चले कि वह कौन थीं या उन्हें वहाँ क्यों दफनाया गया है। यह बात मुझे अब तक परेशान करती रही है, क्योंकि उनकी मृत्यु लगभग 1911 में हुई थी और वुडबरी लैंगडन की मृत्यु लगभग 1927 में हुई थी, इसलिए उनके पास परिवार के कब्रिस्तान में उनका नाम और रिश्ता लिखवाने के लिए पर्याप्त समय था। श्री कुशिंग का मानना है कि उनकी मृत्यु के बाद, श्री लैंगडन को धीरे-धीरे उनकी असलियत का एहसास होने लगा था। उन्हें ऐसा लगता है कि उनकी मृत्यु के समय श्री लैंगडन काफी आर्थिक तंगी में थे।

मुझे पिछले मालिकों के बारे में और कोई जानकारी नहीं मिल पा रही है, क्योंकि मैं इस घर के इतिहास का पता 1860 से पहले तक नहीं लगा पा रहा हूँ। श्री लैंगडन जाहिर तौर पर दूसरे लोगों की तरह ही घर खरीदते-बेचते थे, जैसे वे घोड़े खरीदते-बेचते थे। अगर यह वही घर है जिसके बारे में मैं सोच रहा हूँ, तो यह रमनी जाने वाली सड़क पर था और इसे पीछे की ओर खिसकाकर वर्तमान स्थान पर लाया गया था। लगभग छह महीने बाद उन्होंने खलिहान को पीछे खिसकाया। फिर उन्हें घर से मुख्य सड़क तक एक गली बनानी पड़ी। उन्हें घर के चारों ओर बाड़ भी लगानी पड़ी। इस संपत्ति में एक खलिहान था और यहाँ बाड़ भी थी। उसका एक छोटा सा हिस्सा बचा है। इसके आगे के दस्तावेज़ बस गोल-गोल घूमते रहते हैं।

मुझे लगता है कि भूत श्री वुडबरी लैंगडन हैं। मैंने यहाँ आस-पास के लोगों से पूछा कि श्री लैंगडन कैसे दिखते थे और उन्होंने उनका वर्णन हूबहू उसी व्यक्ति के रूप में किया है जिसे मैंने बाथरूम में देखा था। द्विशताब्दी पुस्तक में जिस व्यक्ति का ज़िक्र है, वह उनके पिता थे। उनके चेहरे में कुछ ऐसा था जो उस "भूत" के चेहरे में भी था।

मेरे दो बच्चे हैं: किम्बर्ली स्टार, उम्र 9 साल और रेबेका सू, उम्र 6 साल। किम्बर्ली का जन्मदिन 2 अप्रैल को और रेबेका का जन्मदिन 10 अगस्त को है।

मेरा जन्म और पालन-पोषण प्लायमाउथ कस्बे में, ग्रामीण इलाके में साढ़े चार मील दूर एक फार्महाउस में हुआ था। मेरे पिता आत्माओं में थोड़ा-बहुत विश्वास करते हैं, लेकिन पूरी तरह से नहीं। मेरी माँ बिल्कुल भी विश्वास नहीं करतीं।

मैंने हाई स्कूल के अपने चार वर्षों के दौरान बिजनेस कोर्स और कॉलेज की तैयारी का कोर्स किया। मैंने एक साल नर्सों का प्रशिक्षण भी लिया। मेरी शादी 20 साल की उम्र में जून में हुई और किम का जन्म अगले साल अप्रैल में हुआ।

नोट: हमारे पास एक काली बिल्ली है जिसने अतीत में कभी-कभी अजीबोगरीब हरकतें की हैं।

1. वह सीढ़ियों पर उछलते-कूदते चढ़ता और सीढ़ियों के शीर्ष पर पहुँचकर अचानक रुक जाता। वह वहाँ बैठकर संभवतः खाली जगह को घूरता रहता और फिर ऐसे भाग निकलता जैसे कभी रुका ही न हो।

2. कभी-कभी वह बाथरूम के दरवाजे पर खड़ा हो जाता था और अंदर जाने से बिल्कुल इनकार कर देता था।

3. वह अक्सर गलियारे में बैठा रहता और सीढ़ियों की ओर देखता रहता, शरीर की एक भी मांसपेशी नहीं हिलाता। फिर अचानक वह आराम से बैठ जाता और अपने रास्ते चला जाता।

* * *

हमने अंततः 12 अगस्त, 1967, शनिवार का दिन तय किया, ताकि हम मिस्टर लैंगडन या जो भी उस घर में भूत बनकर घूमता था, उससे निपटने की कोशिश कर सकें, क्योंकि मिस इलियट की शादी जुलाई में होने वाली थी और श्रीमती फुलर उसमें शामिल होना चाहती थीं।

हमारे पहुँचते ही एलेनोर फुलर ने हमारा स्वागत किया और हमें घर के अंदर ले गईं। हमेशा की तरह एथेल इधर-उधर सूंघने लगी और मैं भी उसके पीछे-पीछे चल पड़ा, टेप रिकॉर्डर चालू था और कैमरा तैयार था। हम उसके पीछे सीढ़ियों से ऊपर की मंजिल पर गए, जहाँ एथेल दाहिनी ओर के बेडरूम के पास रुक गई, जो गुलाबी रंग से सजा हुआ था।

"मुझे चश्मा पहने एक बुजुर्ग महिला और एक अजीब सी टोपी पहने एक आदमी दिखाई देता है," एथेल ने सावधानीपूर्वक कहा, क्योंकि उसे मानसिक संकेत मिलने शुरू हो गए थे।

मैंने एथेल से उस "अजीब टोपी" और उसके कालखंड के बारे में और अधिक स्पष्ट बताने को कहा। उसे वह आदमी 1800 के दशक के आरंभिक काल का लग रहा था। उसने मुझे यकीन दिलाया कि वह इस सदी की टोपी नहीं थी। फिर उसने एक ठंडी जगह के बारे में शिकायत की, और जब मैं वहाँ पहुँचा तो मुझे भी वह ठंडक महसूस हुई। चूंकि दरवाजे या खिड़कियाँ उस तेज़ ठंडी हवा के लिए ज़िम्मेदार नहीं थीं, इसलिए हम समझ गए कि इसका कारण कोई दैवीय शक्ति थी, जैसा कि अक्सर तब होता है जब वहाँ किसी अलौकिक शक्ति की उपस्थिति होती है।

मैंने एथेल से उस महिला का वर्णन करने को कहा जिसकी उपस्थिति उसे महसूस हो रही थी। उसने आत्मा की स्थिति को समझते हुए कहा, "वह लेटी हुई है...और मुझे सीने में दर्द हो रहा है। उसकी आँखें बंद हैं!"

हम कमरे से बाहर निकले और आगे बढ़ गए। एथेल ने दर्द से कराहते हुए अपना बायां कंधा पकड़ लिया।

“वह मेरे साथ यहीं है, मुझे देख रही है,” एथेल ने कहा। “वह यहीं रही है।”

मैंने पूछा, "वह अभी भी यहाँ क्यों है?"

"जब आपने यह पूछा तो मुझे अचानक ठंडक सी महसूस हुई," एथेल ने जवाब दिया।

"वह मुझे बाईं ओर जाने के लिए कहती है... मुझे चलने में कठिनाई हो रही है... मुझे लगता है कि इस महिला को भी यही कठिनाई थी।"

हम सीढ़ियों से नीचे उतर रहे थे, तभी अचानक एथेल बूढ़ी औरत जैसी हो गई और उसे सीढ़ियों पर चढ़ने-उतरने में कठिनाई होने लगी। असली एथेल तो उतनी ही फुर्तीली और तेज थी जितनी कि कनेक्टिकट में उसके घर के आसपास घूमने वाली गिलहरियाँ।

“मुझे लगता है वो सीढ़ियों से गिर गई,” एथेल ने कहा और खांसने लगी। ज़ाहिर है, वो एक बहुत बीमार व्यक्ति को देखकर प्रभावित हो रही थी।

हमने एथेल को मुश्किल से कुर्सी पर बिठाया ही था कि वह गहरी समाधि में चली गई और परिवर्तन शुरू हो गया। उसका चेहरा पीड़ा से व्याकुल हो गया और उसके माध्यम से एक कमजोर आवाज निकलने लगी, जिसे मैंने स्पष्ट करने के लिए प्रेरित किया।

“लैंडर...या कुछ ऐसा ही...” उसने धीरे से कहा।

इसके बाद एथेल के शरीर के भीतर मौजूद एक अलौकिक सत्ता को यह बेहद भयावह अहसास हुआ कि जिस बीमारी से वह परिचित थी, वह अब मौजूद नहीं है। उसी समय, इस खोज के उत्साह में डूबी आत्मा के लिए स्पष्ट रूप से बोलना मुश्किल हो गया, और हमें लगातार घुरघुराहट और आहें सुनने को मिलीं।

अंततः, मैंने उस प्राणी को यह कहकर शांत करने में कामयाबी हासिल की कि उसे अपनी बात कहने के लिए शांत होने की जरूरत है।

“शांत रहो...शांत रहो...” उसने रोते हुए कहा, “अच्छा हुआ...उसे पता चल गया...उसने ऐसा किया...पचास साल तक...वह औरत!”

उसने मिस्टर फुलर का हाथ इतनी ज़ोर से पकड़ा था कि मुझे उसके लिए शर्मिंदगी महसूस हुई, और मैंने एथेल के भीतर की भावना को समझाने की कोशिश की कि वह हाथ छोड़ दे, साथ ही साथ उसे उसकी वास्तविक स्थिति को धीरे से, लेकिन दृढ़ता से समझाया।

जब मैंने उसे समझाया कि वह हमसे कैसे संवाद कर पा रही थी और माध्यम का शरीर केवल एक अस्थायी व्यवस्था थी, तो वह आत्मा शांत हो गई और उसने केवल यह पूछा कि क्या वह उससे प्रेम करता है, यानी घर में मौजूद दूसरी आत्मा से। मैंने उसे आश्वस्त किया कि ऐसा ही है, और फिर मैंने एथेल के आध्यात्मिक मार्गदर्शक अल्बर्ट से प्रार्थना की कि वह मुझे एथेल के शरीर से उस विक्षिप्त आत्मा को मुक्त करने में मदद करे और इस प्रकार उसे घर से भी मुक्त कर दे।

और फिर वह आदमी बहुत भावुक होकर एथेल के शरीर में प्रवेश कर गया और सिल्विया को पुकारने लगा।

मैंने फिर से समझाया कि वह कैसे संवाद करने में सक्षम था।

“तुम मुझे देख रहे हो ना,” उसने शांत होते हुए आखिरकार कहा। “मैंने सभी से प्यार किया...मैं जा रहा हूँ, मैं तुम्हें परेशान नहीं करूँगा...”

मैंने फिर से अल्बर्ट को पुकारा, और पल भर में उसकी स्पष्ट आवाज ने आत्मा की चीखों की जगह ले ली।

“यह आदमी हेनरी मैक्लेलन है...इस इलाके में एक और घर हुआ करता था...लगभग 1810, 1812 से 1820 के बीच...इस घर से जुड़ी एक महिला यहीं कहीं दफन है, और वह उसकी तलाश कर रहा है। उसकी बेटी...मेसी?...मेसी? लगभग 1798...16 या 18 साल की...उसके साथ अन्याय हुआ है...इसका संबंध दो परिवारों के झगड़े से है...मैकडर्न...”

इसके बाद अल्बर्ट ने सुझाव दिया कि उस व्यक्ति को हमसे सीधे बात करने दिया जाए, और उसने थोड़ी देर तक हमसे बात की। मैंने अपनी मदद की पेशकश की।

उन्होंने कहा, "यह व्यर्थ है। मेरी समस्या मेरी अपनी है।"

"आप कौन हैं?"

“हेनरी। मैं यहीं रहता था। मेरा जन्म यहीं हुआ था।”

“कौन सा साल? जब मैं आपसे बात कर रहा हूँ, तब हम कौन से साल में हैं?”

मैं आपसे वर्ष 1813 में बात कर रहा हूँ।

"क्या आप कुछ उम्रदराज सज्जन हैं?"

"मेरे पास सैंतालीस साल होंगे।"

"क्या आपने किसी सरकारी बल या एजेंसी में सेवा की है?"

“मेरा बेटा...जॉन स्टुअर्ट मैक...”

“मैकडरमोंट? आपका बेटा जॉन स्टुअर्ट मैकडरमोंट था?”

"यह बात मैंने खुद कही है।"

उन्होंने कहाँ-कहाँ सेवा की?

“टिकोंडेरोगा।”

फिर उन्होंने आगे कहा, “मेरी बेटी लापता थी, लेकिन मुझे उसकी हड्डियाँ मिल गईं, जो यहाँ से ज़्यादा दूर दफ़न नहीं थीं। मैं संतुष्ट हूँ। वह अब मेरे साथ है।”

उन्होंने स्वीकार किया कि वे जानते थे कि वे अब "पृथ्वी जगत" में नहीं हैं, लेकिन समय-समय पर उस स्थान की ओर आकर्षित होते थे।

“लेकिन अगर आप एक सज्जन व्यक्ति के तौर पर मुझे जाने के लिए कहेंगे, तो मैं चला जाऊंगा,” उन्होंने आगे कहा। इन परिस्थितियों में—जो कि भूत-प्रेत से जुड़े मामलों में वाकई दुर्लभ होती हैं—मैंने उन्हें सलाह दी कि वे वर्तमान घर में रहने वालों, विशेषकर बच्चों को परेशान न करें। साथ ही, क्या वे उस दुनिया में अधिक खुश नहीं होंगे जिसमें वे बहुत पहले ही विदा हो चुके हैं?

उन्होंने स्वीकार करते हुए कहा, "मैं इस पर विचार करूंगा। आप सही कह रहे हैं, महोदय। मेरा इरादा डराने का नहीं है।"

मैंने कहा, "क्या आपको पता है कि बहुत समय बीत चुका है...कि अब 1813 नहीं है?"

“मुझे इसकी जानकारी नहीं है, महोदय... यहां हमेशा एक ही समय रहता है।”

मैंने फिर पूछा कि क्या उन्होंने किसी रेजिमेंट में सेवा की थी, लेकिन उन्होंने जवाब दिया कि उनका पैर ठीक नहीं था। क्या यह उनकी ज़मीन और घर था? हाँ, उन्होंने जवाब दिया, वह उसके मालिक थे और उन्होंने ही घर बनवाया था। लेकिन जब मैंने उनसे पूछा कि उन्हें कहाँ दफनाया जा सकता है, तो उन्होंने जवाब देने से इनकार कर दिया।

“मेरी हड्डियाँ मेरे साथ हैं...मैं स्वयं में ही पर्याप्त हूँ।”

फिर मैंने उनसे उनके चर्च के बारे में पूछा, तो उन्होंने बताया कि उनका चर्च "यहाँ से उत्तर-पूर्व में, बीकन रोड पर" है। पादरी का नाम रूनी था, लेकिन वे मुझे यह नहीं बता सके कि वे किस संप्रदाय से हैं। उनका दिमाग अब पहले जैसा तेज़ नहीं रहा था।

मैंने कहा, “सौ या पचास साल बीत गए हैं,” और भूत भगाने की रस्म शुरू की। “शांति से और हमारे प्यार के साथ इस घर से जाओ।”

और उसने वैसा ही किया।

एथेल के मार्गदर्शक अल्बर्ट थोड़ी देर के लिए वापस आए और हमें आश्वस्त किया कि सब कुछ ठीक है और श्री मैकडरमोट घर से जा चुके हैं; साथ ही, वे अपनी माँ, सारा एन

मैकडरमोट से मिल रहे हैं। फिर अल्बर्ट भी चले गए और एथेल फिर से अपने सामान्य रूप में लौट आई।

मैंने श्रीमती फुलर और उनकी चचेरी बहन, मिस इलियट से श्रीमती मेयर्स के माध्यम से समाधि की अवस्था में प्राप्त जानकारी पर संभावित टिप्पणियों और पुष्टि के लिए संपर्क किया।

* * *

ऐसा प्रतीत होता है कि जिस घर का पता फुलर परिवार लगभग 1860 तक लगा पाया था, उसे सड़क बनाने के लिए स्थानांतरित किया गया था और फिर उस सड़क से कुछ ही दूरी पर दोबारा स्थापित किया गया था। दुर्भाग्यवश, इससे आगे का पता लगाना मुश्किल साबित हुआ। उसी वर्ष दिसंबर में मुझे श्रीमती फुलर से फिर से सूचना मिली। ऐसा लग रहा था कि कदमों की आहट अभी भी सुनाई दे रही थी और उनकी सात वर्षीय बेटी बेकी उनसे डर रही थी। उन्हें अभी तक श्री मैकडरमोट का कोई रिकॉर्ड नहीं मिला था, लेकिन उन्होंने अपनी खोज जारी रखने का संकल्प लिया।

यह बीस साल पहले की बात है, और उसके बाद कुछ भी पता नहीं चला, और मुझे वास्तव में नहीं पता कि पदचिह्न जारी रहे या श्री मैकडरमोट ने अंततः उस दुनिया की अपनी बेचैन खोज छोड़ दी जिसका वह अब हिस्सा नहीं थे।

जहां तक मिस्टर लैंगडन की बात है, जिनकी पहचान एथेल मेयर्स ने भी घर में मौजूद व्यक्ति के रूप में की थी, वे अब तक अपनी पत्नी डोना के साथ फिर से मिल गए होंगे, और मुझे उम्मीद है कि उन्होंने एक अच्छे ईसाई की तरह उसके गुनाहों को माफ कर दिया होगा: वहां तो उसके पाप भी अब मायने नहीं रखते।

*116

मॉरिस-जुमेल हवेली के भूत

हम अभी न्यूयॉर्क स्थित अपने घर लौटे ही थे कि मेरी दोस्त एलिजाबेथ बर्ड ने फोन करके पूछा कि क्या मैंने वह कब्र खुलवा ली है। मैंने नहीं खुलवाई थी, लेकिन मुझे आपको यह बात शुरू में ही बता देनी चाहिए थी।

दरअसल, इसकी शुरुआत 11 जनवरी, 1964 को न्यूयॉर्क जर्नल-अमेरिकन में जोन हनौर के एक लेख से हुई, जिसमें न्यूयॉर्क शहर के जुमेल मेंशन में होने वाली भूतिया घटनाओं को सार्वजनिक किया गया था। एजकोम्ब एवेन्यू और 164 वीं स्ट्रीट स्थित पी.एस. 164 के बच्चों ने बताया कि एक लंबी, सफ़ेद बालों वाली, बुजुर्ग महिला बालकनी पर आई और उन्हें चुप रहने को कहा।

यह विवरण श्रीमती जुमेल पर सटीक बैठता है।

क्या ऐसा हो सकता था?

160 वीं स्ट्रीट और एजकोम्बे स्थित हवेली की क्यूरेटर श्रीमती एम्मा बिंगे कैम्पबेल ने मना कर दिया।

“मैं भूतों पर विश्वास नहीं करती,” उसने कहा, “लेकिन यह बहुत अजीब था। घर बंद और खाली था। हम यह जानते हैं। वहां कोई महिला हो ही नहीं सकती थी। लेकिन कई बच्चे इस बात पर ज़ोर देते हैं कि उन्होंने उसे देखा और सुना था।”

"यह ग्यारह बजे से कुछ ही पहले का समय था, जो उस घर के खुलने का समय था, जिसका निर्माण 1765 में हुआ था।"

श्रीमती कैंपबेल ने कहा, "जब मैं बच्चों के पास यह समझाने आई कि उन्हें ग्यारह बजे दरवाजे खोलने के लिए दूसरे माली जॉन डफी का इंतजार करना होगा, तो लड़कियों में से एक जानना चाहती थी कि शोर मचाने के लिए उन्हें डांटने आई लंबी महिला उन्हें अंदर क्यों नहीं आने दे रही थी। घर में ऐसी कोई महिला - या कोई और - हो ही नहीं सकती थी।"

"बच्चों द्वारा वर्णित महिला श्रीमती जुमेल से मिलती-जुलती थी, जिनके बारे में कुछ लोगों का मानना था कि उन्होंने 1832 में घर में अपने पति की हत्या कर दी थी और फिर अगले वर्ष आरोन बर्र से शादी कर ली थी।"

लेकिन बच्चों को यह पता नहीं होना चाहिए था, न ही उन्हें यह पता होना चाहिए था कि वह कैसी दिखती थी।

"वे यह भी नहीं जान सकते थे कि जिस बालकनी पर वह प्रेत प्रकट हुआ था, वह श्रीमती जुमेल और बर्र के शयनकक्षों को अलग करती थी।"

उस समय एलिजाबेथ बर्ड एक पत्रिका के लिए मैनहट्टन के भूतों पर एक कहानी लिख रही थीं, इसलिए हमने इस मामले की आगे की जांच साथ मिलकर करने का फैसला किया। सबसे पहले हमने पब्लिक स्कूल के अधिकारियों से संपर्क किया और बच्चों से बात करने की अनुमति प्राप्त की। शिक्षिका ने उन सभी बच्चों को इकट्ठा किया जिन्हें वह पहले जुमेल मेंशन ले गई थीं, और हमने उनसे अलग-अलग और साथ में पूछताछ की। उनकी कहानी में कोई बदलाव नहीं आया। वह महिला अचानक बालकनी पर प्रकट हुई और उसने उन्हें चुप रहने को कहा।

मैं जानना चाहता था, "वह कैसे गायब हो गई?"

एक युवक ने कुछ देर सोचा, फिर हिचकिचाते हुए कहा, "वह मानो धीरे से घर के अंदर चली गई।"

मैंने लड़की से पूछा, "क्या तुमने बालकनी के दरवाजे खुलते देखे?"

“जी नहीं,” उसने दृढ़ता से उत्तर दिया।

"तो क्या वह दरवाजे से अंदर चली गई?"

"उसने किया।"

जिस पोशाक को भूत द्वारा पहने जाने का वर्णन किया गया है, वह वास्तव में मौजूद है - लेकिन इसे हवेली में ऊपर सावधानीपूर्वक रखा गया है और इसे प्रदर्शन के लिए नहीं रखा गया था, न ही यह आम जानकारी है, खासकर ग्यारह साल की स्कूली लड़कियों के बीच।

जब हम पहुँचे तो वहाँ खाना पकाने की क्लास चल रही थी, और लड़कियों ने बड़ी सावधानी से हमें अपने बनाए व्यंजन दिखाए। हमने फिलहाल मना कर दिया और हवेली की क्यूरेटर, श्रीमती कैंपबेल से मिलने चले गए। यह ऊर्जावान महिला अमेरिकन रिवोल्यूशन की बेटियों की ओर से हवेली की देखभाल करती हैं, जिनके संरक्षण में न्यूयॉर्क शहर ने संग्रहालय को सौंपा है।

मॉरिस-जुमेल हवेली—वाशिंगटन हाइट्स, न्यूयॉर्क

"क्या यहां भूत-प्रेत का जिक्र पहली बार हो रहा है?" मैं यह जानना चाहता था।

श्रीमती कैंपबेल ने अपना सिर हिलाया। "ये लीजिए," उन्होंने कहा और अपने कार्यालय की अलमारियों में से एक से एक भारी किताब उतारी। "विलियम हेनरी शेल्टन की कृति, द जुमेल मेंशन, पृष्ठ 207 और 208 में यहाँ पहले देखे गए भूतों का वर्णन है।"

क्या आपने कभी कुछ देखा या सुना है?

“नहीं, अभी तक तो नहीं, लेकिन दूसरों ने सुना है। एक जर्मन नर्स थी जो 1865 में यहाँ रहती थी—उसे तब भी अजीबोगरीब आवाजें सुनाई देती थीं। कई आगंतुकों ने यहाँ आने पर तब भी कदमों की आहट सुनी है जब आसपास कोई नहीं था। श्रीमती जुमेल का भूत इस कमरे के दरवाजे पर एक सेवानिवृत्त गार्ड को दिखाई दिया था।”

मैंने पूछा, "आप इस मामले की जांच कैसे करवाना चाहेंगे?" तुरंत ही एक तारीख तय कर ली गई।

सबसे पहले, मैंने ऐतिहासिक घर की भौतिक बनावट से खुद को परिचित करना उचित समझा। मैं इसकी भव्य उपस्थिति से तुरंत प्रभावित हो गया। इतिहासकार जॉन केंट टिल्टन ने लिखा:

मैनहट्टन के सबसे ऊंचे स्थान पर स्थित मॉरिस-जुमेल मेंशन देश के सबसे प्रसिद्ध पुराने ऐतिहासिक भवनों में से एक है। न्यू एम्स्टर्डम के समय में डचों द्वारा इस इलाके को मूल रूप

से हार्लेम हाइट्स कहा जाता था और फिर अंग्रेजों के स्वामित्व के दौरान इसका नाम बदलकर माउंट मॉरिस कर दिया गया, जिसके बाद इसे वाशिंगटन हाइट्स के वर्तमान नाम से जाना जाने लगा।

जिस जमीन पर यह पुराना महल स्थित है, वह मूल रूप से 1700 में जान कीर्सन नामक एक डच किसान को न्यू हार्लेम के "सामान्य जंगल की आधी मॉर्गन भूमि" के हिस्से के रूप में दी गई थी।

लेफ्टिनेंट कर्नल रोजर मॉरिस ने 1765 में यह संपत्ति खरीदी थी। नए मालिक का जन्म 1728 में इंग्लैंड में हुआ था और वे अठारह वर्ष की आयु में ब्रिटिश सेना में कप्तान के पद के साथ अमेरिका आए थे।

यहीं पर मॉरिस परिवार, अपने चार बच्चों के साथ, अपनी गर्मियां बिताता था, और क्रांति शुरू होने तक एक ब्रिटिश जमींदार और परिवार के विशिष्ट घरेलू जीवन का आनंद लेता था।

युद्ध की शुरुआत में कर्नल मॉरिस इंग्लैंड भाग गए, जहां वे ढाई साल तक रहे।

अगस्त 1776 में, युद्ध की शुरुआत में ही, माउंट मॉरिस पर अमेरिकी सैनिकों ने कब्ज़ा कर लिया और जनरल हीथ और उनके साथियों को वहाँ ठहराया गया। लॉन्ग आइलैंड की विनाशकारी लड़ाई के बाद, जनरल वाशिंगटन हारलेम हाइट्स में पीछे हट गए और इसे अपना मुख्यालय बनाया। वाशिंगटन द्वारा इस स्थान को छोड़ने का निर्णय लेने के बाद, ब्रिटिश सेना ने वहाँ प्रवेश किया और मॉरिस मेंशन में जनरल सर हेनरी क्लिंटन और उनके अधिकारी, और समय-समय पर हेसियन सैनिक, सात वर्षों तक ब्रिटिश कब्जे के दौरान रहे।

अगले पच्चीस वर्षों के दौरान इसे कई बार बेचा और पुनर्विक्रय किया गया और इसने अपने विविध इतिहास में कई बदलाव देखे। कैलमैट हॉल के रूप में पुनर्निर्वाचित, यह कुछ समय के लिए एक सराय के रूप में इस्तेमाल किया गया और अल्बानी जाने वाले स्टेजकोचों के लिए एक पड़ाव था। यह एक अज्ञात किसान का घर था जब राष्ट्रपति वाशिंगटन ने अपने पुराने मुख्यालय का दौरा किया और अन्य लोगों के साथ-साथ अपने मंत्रिमंडल के सदस्यों, जॉन एडम्स, अलेक्जेंडर हैमिल्टन, हेनरी नॉक्स और उनकी पत्नियों को रात्रिभोज पर आमंत्रित किया।

यह इलाका ऐसा था जहाँ स्टीफन जुमेल अपनी उत्साही और महत्वाकांक्षी पत्नी के साथ गर्मियों के दिनों में व्हाइटहॉल स्ट्रीट स्थित अपने घर से गाड़ी चलाकर जाया करना पसंद करते थे। श्रीमती जुमेल पास के पुराने मॉरिस मेंशन से इतनी मोहित हो गईं कि उन्होंने अपने पति को 1810 में इसे अपने घर के लिए खरीदने के लिए राजी कर लिया। उन्होंने इसके लिए 10,000 डॉलर का भुगतान किया, जिसमें मूल भूखंड का बचा हुआ 35 एकड़ जमीन भी शामिल थी।

पुराना मकान तेजी से जर्जर हो रहा था, तभी श्रीमती जुमेल ने पूरे जोश के साथ उसका जीर्णोद्धार और साज-सज्जा शुरू की, और जब यह पूरा हुआ, तो यह देश के सबसे खूबसूरत मकानों में से एक बन गया। जुमेल परिवार ने हवेली को उन्नीसवीं सदी के शुरुआती दौर की शैली में पुनर्स्थापित किया, जब संघीय प्रभाव प्रचलन में था।

श्रीमती जुमेल ने पहली शादी, कुछ लोगों के अनुसार धोखे से, धनी फ्रांसीसी स्टीफन जुमेल से की थी। स्टीफन जुमेल कभी सैंटो डोमिंगो में एक बड़े बागान के मालिक थे, जहाँ से उन्हें विद्रोह के समय भागना पड़ा था। अमेरिका पहुँचने पर, वे अपेक्षाकृत गरीब थे, लेकिन जल्द ही उन्होंने शराब व्यापारी के रूप में नई संपत्ति अर्जित कर ली, और 1832 में उनकी मृत्यु के समय, उनकी पत्नी अमेरिका की सबसे धनी महिलाओं में से एक बन गईं। एक साल बाद उन्होंने अमेरिका के पूर्व उपराष्ट्रपति आरोन बर्र से शादी कर ली। हालाँकि, यह दूसरी शादी अल्पकालिक रही और तलाक में समाप्त हो गई। श्रीमती जुमेल का 93 वर्ष की आयु में 1865 में निधन हो गया।

मॉरिस-जुमेल हवेली मध्य जॉर्जियाई वास्तुकला शैली की है। इसके अग्रभाग में चार स्तंभ हैं, जो दो मंजिला ऊँचाई के हैं और शीर्ष पर एक चबूतरा है।

बाहरी भाग सफेद रंग से रंगा हुआ है। जुमेल परिवार द्वारा जोड़े गए उत्तर-औपनिवेशिक विशेषताओं में से एक भव्य मुख्य प्रवेश द्वार है, जिसके दोनों ओर रोशनदान और अंडाकार आकार का चबूतरा है।

आंतरिक भाग में, मेहराबों वाला चौड़ा केंद्रीय हॉल अठारहवीं शताब्दी के उत्तरार्ध और उन्नीसवीं शताब्दी के आरंभिक काल के फर्नीचर से सुसज्जित है। प्रवेश द्वार के बाईं ओर एक

छोटा बैठक कक्ष या चाय-कक्ष है जहाँ 1833 में विधवा जुमेल और आरोन बर्र का विवाह समारोह संपन्न हुआ था, जब दुल्हन अट्ठावन वर्ष की थी और दूल्हा उससे बीस वर्ष बड़ा था।

हॉल के उस पार भव्य जॉर्जियाई भोजन कक्ष है जहाँ कई प्रसिद्ध व्यक्ति भव्य रात्रिभोज पार्टियों के लिए एकत्रित होते थे।

हॉल के पीछे की ओर विशाल अष्टकोणीय ड्राइंग रूम है।

चौड़ी सीढ़ियाँ ऊपरी मंजिल पर स्थित विशाल हॉल तक जाती हैं, जो जुमेल परिवार के निजी सामान से सुसज्जित है। यहाँ श्रीमती जुमेल और उनकी दत्तक पुत्री मैरी एलिजा (जिनका विवाह नेल्सन चेज़ से हुआ था) के युवा पुत्र और पुत्री का एक सामूहिक चित्र भी है।

उत्तर-पश्चिम के शयनकक्ष में जुमेल परिवार के स्वामित्व वाला फर्नीचर है, जिसमें नक्काशीदार चार-पायों वाला बिस्तर भी शामिल है।

पुराने समय में तीसरी मंजिल के कमरों का उपयोग संभवतः अतिरिक्त अतिथि कक्षों के रूप में किया जाता था क्योंकि नौकरों के क्वार्टर रसोई के साथ तहखाने में स्थित थे।

19 जनवरी, 1964 को, बेट्सी जुमेल के ऊपरी मंजिल पर स्थित पुराने बैठक कक्ष में कुछ लोग एकत्रित हुए। न्यूयॉर्क हिस्टोरिकल सोसाइटी और डॉटर्स ऑफ द अमेरिकन रिवोल्यूशन के कुछ सदस्य, जर्नल-अमेरिकन के लेखक नैट एडम्स और वर्ल्ड-टेलीग्राम के हैरी अल्टशुलर उपस्थित थे। मेरे साथ एथेल मेयर्स थीं, जिन्हें उस सर्दी की दोपहर में यह नहीं बताया गया था कि हम कहाँ जा रहे हैं, और जेसिका रसेल गेवर थीं, जो हमारी सचिव के रूप में सेवा कर रही थीं और साथ ही साथ हमारे काम पर एक पत्रिका लेख भी लिख रही थीं।

हमारे पहुँचते ही एथेल जुमेल के शयनकक्ष में ऐसे अंदर-बाहर आने-जाने लगी मानो कोई उसे ऐसा करने के लिए मजबूर कर रहा हो। जैसे ही वह गलियारे के उस पार वाले कमरे की ओर बढ़ी, उसका कंधा झुक गया और एक हाथ ऐसे लटक गया जैसे उसकी कमर में चोट लगी हो!

"मुझे अपने बाएं हिस्से में अजीब सा महसूस हो रहा है," एथेल ने आखिरकार कहा, और उसकी आवाज में किसी और की आवाज की झलक दिखाई देने लगी थी।

हम वापस शयनकक्ष में गए, जो आम तौर पर जनता के लिए बंद रहता है। एक तरफ नेपोलियन प्रथम की संपत्ति रहा एक विशाल नक्काशीदार चौपाया बिस्तर है, और कमरे में जगह-जगह उस काल की छोटी कुर्सियाँ रखी हैं। एक कोने में एक बड़ा दर्पण है।

“मामला उलझा हुआ है,” एथेल ने कहा, और खुद भी उलझन में लग रही थी। “यहाँ एक से ज़्यादा परेशान लोग हैं। मुझे तो ऐसा लग रहा है जैसे तीन लोग शामिल हैं। बीमारी भी हुई है और मन में भी बदलाव आया है। किसी के साथ नाइंसाफी हुई है।”

अचानक, एथेल ने नेपोलियन के बिस्तर पर बैठे एक आदमी की ओर मुड़कर कहा, "कोई चाहता है कि तुम बिस्तर से उठ जाओ," और बोलने में उसे कठिनाई महसूस हुई। जैसे किसी मकड़ी ने काट लिया हो, वह युवक झट से बिस्तर से उठ खड़ा हुआ। कोई भूत उसे हिला नहीं सकता था।

भूतिया बालकनी

मेरे हाथ पर हाथ रखने के बावजूद एथेल फिर से उठने की कोशिश करने लगी। "मुझे फिर से उस दूसरे कमरे में जाना है," वह बुदबुदाई और चल पड़ी, मैं उसके पीछे-पीछे चल रहा था। वह ऐसे चल रही थी मानो किसी बाहरी शक्ति ने उसे अपने वश में कर लिया हो। श्रीमती जुमेल की तस्वीर के सामने, वह अचानक घुटनों के बल गिर पड़ी।

“मैं यहाँ कभी आगे नहीं बढ़ पाती...जब भी मैं वहाँ जाती हूँ, गिर जाती हूँ।” उसने अपने ऊपर लगी बड़ी तस्वीर की ओर इशारा करते हुए लगभग चिल्लाकर कहा, “मेरा नाम उस तस्वीर पर नहीं है। मैं चाहती हूँ कि मेरा नाम वहाँ हो!”

क्यूरेटर श्रीमती कैंपबेल ने घबराहट में मुझे एक तरफ ले जाकर कहा, "यह बहुत अजीब बात है कि वह ऐसा कह रही हैं। देखिए, बहुत समय पहले उस तस्वीर पर उनका नाम हुआ करता था। लेकिन जब बेट्सी जुमेल जीवित थीं, तब वह तस्वीर इस जगह पर नहीं थी।"

मैंने उन्हें धन्यवाद दिया और एथेल मेयर्स को वापस दूसरे कमरे में उनकी कुर्सी पर ले गई।

“हेनरी...और एक जोहान...उसके आसपास...”, वह गहरी समाधि में जाते हुए बुदबुदाई। उसके होठों से कर्कश आवाजें निकल रही थीं। पहले तो वे समझ से बाहर थीं। धीरे-धीरे मैं उन्हें समझने लगा। समाधि की आधी अवस्था में, वह बिस्तर पर गई और लेट गई। मैंने अपनी कुर्सी उसके सिर के पास रख दी। बाकी लोग सुनने के लिए उत्सुक थे। कमरे में एक अजीब सी खामोशी छाई हुई थी, जो केवल समाधि में लीन माध्यम के कोमल शब्दों से टूट रही थी।

“तुम्हें लगता है मैं मर गया हूँ...” अब एक कर्कश, पुरुष आवाज सुनाई दी।

“नहीं, मैं आपसे बात करने, आपकी मदद करने आया हूँ,” मैंने जवाब दिया।

“चले जाओ,” उस प्रेत जैसी आवाज ने कहा। “चले जाओ!”

मैंने पूछा, "आप पुरुष हैं या महिला?"

मॉरिस-जुमेल हवेली का पार्श्व दृश्य
जवाब में एक कड़वी हंसी सुनाई दी।
“वाह...हा!” अंततः आवाज ने कहा।
"आपका क्या नाम है?"
“सब लोग जानते हैं कि मैं कौन हूं।”
“मुझे नहीं पता। आपका नाम क्या है?” मैंने दोहराया।
मुझे सोने दो।
क्या कोई बात आपको परेशान कर रही है?
कुछ पल सन्नाटा छा गया, फिर आवाज थोड़ी धीमी हो गई। "तुम कौन हो?"
मैं तुम्हारा दोस्त हूँ, तुम्हारी मदद करने आया हूँ।
“मुझसे कोई बात नहीं करता। उन्हें लगता है कि मैं मर गया हूँ।”
“तुम्हारे साथ असल में क्या हुआ?”
“वे मुझे ले गए,” आवाज ने दुख भरे स्वर में कहा। “मैं अभी मरा नहीं हूँ। वे मुझे क्यों ले गए?”
अब माध्यम का शरीर अत्यधिक व्याकुलता के कारण कांपने लगा, जबकि मैंने वातावरण को शांत करने के लिए मधुर शब्द कहे। अचानक, माध्यम के माध्यम से बोलने वाला भूत गायब हो गया, और उसकी जगह एथेल के नियंत्रक अल्बर्ट की स्पष्ट, सीधी-सादी आवाज़ सुनाई दी। मैंने अल्बर्ट से सम्मोहित माध्यम के माध्यम से यह बताने को कहा कि वह भूत कौन था।
“मुझे नाम तो सुनाई नहीं दे रहा, लेकिन एक मजबूत शरीर और गोल चेहरा दिखाई दे रहा है। वह शिकायत कर रहा है कि उसे मृत घोषित कर दिया गया था, जबकि वास्तव में वह मरा नहीं था। मेरा मानना है कि वह इस घर का मालिक है और घर उसी के नाम पर है। इस घर में बहुत ईर्ष्याएं हैं। एक कलाकार भी है जिस पर संदेह है।”
क्या यहाँ कोई महिला है?
"एक ऐसी महिला जिसकी इच्छा पूरी नहीं हुई और जो खिड़की से कूदकर आत्महत्या करना चाहती है।"
मैंने पूछा, "क्यों?"

प्रेम में नाकाम और संदेह के घेरे में।

बाद में मैंने श्रीमती कैंपबेल से इस बारे में पूछा। उन्होंने कुछ देर सोचा, फिर निम्नलिखित तथ्यों की पुष्टि की: परिवार के किसी सदस्य से संबंध रखने वाली एक युवा नौकरानी ने खिड़की से कूदकर आत्महत्या करने का प्रयास किया।

मैंने अल्बर्ट से और सवाल किया। "क्या इस घर में कोई बेचैन महिला है?"

“हाँ, बिल्कुल सही। तस्वीर वाली। उसका अंतरात्मा उसे कचोटता है।”

"किस बारे मेँ?"

अब उस माध्यम ने दर्द से कराहते हुए अपनी कमर पकड़ ली। अल्बर्ट ने कहा, "मुझे धमकी दी जा रही है। मुझे लगता है कि इस खुलासे से लोग परेशान हो जाएंगे।"

"लेकिन जब तक मुझे यह पता नहीं चलेगा कि उसे यहां कौन रोके हुए है, मैं उसे कैसे रिहा कर सकता हूं?"

“इसका संबंध उनके पति की मृत्यु से है। उनका ताबूत में गला घोंटकर हत्या कर दी गई थी।”

मैंने उनसे और सवाल पूछने की कोशिश की, लेकिन उन्होंने हमारी बात बीच में ही काट दी। अब उस माध्यम को छोड़ना ही था।

कुछ ही देर में एथेल मेयर्स होश में आ गईं। उन्हें समाधि की अवस्था के बारे में बहुत कम याद था, लेकिन उनकी दिव्य दृष्टि की अनुभूति कुछ समय तक बनी रही। मैंने उनसे बिस्तर पर लेटे व्यक्ति के बारे में पूछा।

“मुझे J अक्षर से शुरू होने वाला नाम मिलता है,” उसने जवाब दिया और अपनी कमर को रगड़ा।

मैंने श्रीमती कैंपबेल की ओर रुख किया। "श्रीमती जुमेल के दोषी अंतरात्मा की कहानी के बारे में क्या?"

“खैर,” क्यूरेटर ने जवाब दिया, “अपने पति की मृत्यु के बाद, उन्होंने कुछ समय तक इस घर में रहने से इनकार कर दिया था। उन्हें हमेशा इस बात का अपराधबोध रहता था।”

हम एक कोने में खड़े थे जहाँ से माध्यम हमें सुन नहीं सकता था। “स्टीफन जुमेल की मौत एक गाड़ी दुर्घटना में लगी चोट से खून बहने के कारण हुई। श्रीमती जुमेल ने कथित तौर पर उनकी पट्टी फाड़ दी और उन्हें मरने दिया। इतना तो हम जानते हैं।”

श्रीमती कैंपबेल स्वाभाविक रूप से बेट्सी जुमेल और उनके जीवन की विशेषज्ञ हैं, और वह कई ऐसी अंतरंग जानकारियों को जानती हैं जो आम जनता या यहां तक कि शोधकर्ताओं को भी ज्ञात नहीं हैं।

जब हम घर से निकले तब शाम के 5:30 बज रहे थे, जिसके बाद घर रात के लिए बंद हो जाता है।

* * *

अगली सुबह अखबारों में दो खबरें छपीं: एक, जो काफी हद तक सटीक थी, जर्नल में, और दूसरी टेलीग्राम में एक बेतुकी खबर, जिसे एक ऐसे व्यक्ति ने लिखा था जो जांच कक्ष के बाहर खड़ा था और उसने बहुत कम, या शायद कुछ भी नहीं सुना था।

कई सप्ताह बीत गए और भूत-प्रेत की खोज में मुझे पूरे देश का भ्रमण करना पड़ा। तभी मुझे श्रीमती कैंपबेल का फोन आया।

“क्या आपको पता है कि 22 मई स्टीफन जुमेल की पुण्यतिथि है?” मुझे नहीं पता था और मुझे यकीन था कि उनके और स्वर्गीय श्री जुमेल के अलावा किसी और को भी नहीं पता होगा। उन्होंने यह बात मानी और सुझाव दिया कि हम उस तारीख को इस मामले पर फिर से विचार करें। मुझे हमेशा से लगता आया है कि पुण्यतिथियां हत्या के मामलों को सुलझाने के लिए अच्छा समय होती हैं, इसलिए मैं तुरंत सहमत हो गया।

इस बार, जर्नल और टेलीग्राम के पत्रकारों को आमंत्रित नहीं किया गया था, लेकिन न्यूयॉर्क टाइम्स की पत्रकार ग्रेस ग्लूएक को आमंत्रित किया गया था, और मैं उस गर्म मई की दोपहर की कार्यवाही के लिए उनके द्वारा लिए गए नोट्स के लिए उनका आभारी हूं।

वहाँ किंग फीचर्स के महाप्रबंधक फ्रैंक मैकलेर्न; जर्नल के साहित्यिक आलोचक क्लार्क किन्नार्ड; रीडर्स डाइजेस्ट के जॉन एलन और बॉब ओ'ब्रायन; द विलेजर की संपादक एमेलाइन पेज; लेखिकाएँ एलिजाबेथ बर्ड और बेवर्ली बैलिन; सीबीएस के एड जॉयस; और

न्यूयॉर्क हिस्टोरिकल सोसायटी के कई सदस्य भी उपस्थित थे, जो संभवतः वहाँ पर्यवेक्षकों के रूप में मौजूद थे और जरूरत पड़ने पर इतिहास को फिर से लिखने के लिए तैयार थे क्योंकि प्रसिद्ध आरोन बर्र इसमें शामिल हो सकते थे।

एथेल मेयर्स को उस तारीख के महत्व के बारे में कुछ भी नहीं बताया गया था, और न ही मैंने उनके साथ पहले séance के परिणामों पर चर्चा की थी।

हम सब फिर से ऊपर वाले बेडरूम में इकट्ठा हुए और एड जॉयस ने नेपोलियन के बिस्तर के सामने अपना टेप रिकॉर्डर लगा दिया, जबकि एथेल बिस्तर पर बैठी थी और मैं उसके बगल में एक कुर्सी पर। मेरे बाईं ओर, टाइम्स की युवती बैठ गई। कुल मिलाकर कमरे में पच्चीस बेचैन लोग थे, जो कही गई हर बात को ध्यान से सुन रहे थे और चुप रहने के लिए कहे जाने पर सम्मानपूर्वक मौन धारण कर रहे थे। कुछ ही मिनटों में, एथेल गहरी समाधि में चली गई, और उसके स्वरयंत्रों से एक पुरुष की आवाज़ सुनाई दी।

"आप कौन हैं?" मैंने हमेशा की तरह पूछा, जब कोई अनजान व्यक्ति किसी माध्यम से आता है।

“जे सुइस स्टीफन,” आवाज ने कहा।

"क्या आप अंग्रेज़ी बोलते हैं?"

जवाब में उस माध्यम ने अपने शरीर को पकड़ लिया और कराहते हुए बोली, "डॉक्टर! डॉक्टर! डॉक्टर कहाँ है?"

मैंने पूछा, "तुम्हें क्या तकलीफ हो रही है?"

अब आवाज दृढ़ और चुनौती भरी थी। "मैं जीवित हूँ, मैं जीवित हूँ... मुझे मुझसे दूर मत ले जाओ।"

“क्या आपका एक्सीडेंट हो गया? आपको क्या हुआ?”

उसने मुझे धोखा दिया।

“आपको किसने धोखा दिया?”

“मैं सांस नहीं ले पा रहा/रही हूँ... वो कहाँ है? उसने मुझे धोखा दिया। उसे देखो!”

मैंने कहा, "उसकी चिंता मत करो। वह मर चुकी है।"

“लेकिन मैं जीवित हूँ!” मंत्रमुग्ध आवाज ने बोलना जारी रखा।

“एक अर्थ में, आप वही हैं। लेकिन आप इस दुनिया से विदा भी हो चुके हैं।”

नहीं—उन्होंने मुझे तब कब्र में डाल दिया जब मैं मरा भी नहीं था।

मैं जानना चाहता था, "तुम्हें चोट कैसे लगी?"

भूत ने गुस्से से घुरघुराते हुए कहा, "क्या फर्क पड़ता है—मैं तो मर चुका हूँ। तुमने ही तो कहा था।"

मैंने जवाब दिया, "मैंने यह नहीं कहा कि तुम मर गए हो।"

आवाज फिर से गुस्से से भर गई। “उसने इसे लिया, उसने इसे लिया—उस औरत ने। उसने मेरी जान ले ली। यहाँ से चले जाओ।”

"मैं आपका दोस्त हूँ।"

“मेरा कोई दोस्त नहीं है... वो एरॉन....”

“एरोन? क्या वह तुम्हारी मौत में शामिल था?”

“वो वेश्या... उसे पकड़ो! मैं तुम्हें बता रही हूँ, उन्होंने मुझे जिंदा दफना दिया था।”

"कब की बात है ये?"

“बहुत ठंड थी। उसने मुझे मूर्ख बना दिया, बिल्कुल मूर्ख!”

"उसने वह कैसे किया?"

"जितने समय मैंने उससे प्यार किया, उसने मुझे हर बार धोखा दिया।"

"मेरी आपकी मदद करने की इच्छा है।"

"मेरा खून बह रहा है।"

"यह कैसे हो गया?"

“कांटा...गाड़ी...घास....”

घर में मैडम बेट्सी जुमेल की पेंटिंग। वह अभी भी वहीं हैं...

“क्या यह एक दुर्घटना थी, हाँ या ना?”

मैं उस पर गिर गया।

"तुम कांटेदार पेड़ पर गिर पड़े?"

“नेपोलियन के बिस्तर पर खून की इस लपट को देखो...”

मैंने जोर देकर पूछा, "उस त्रिशूल का क्या हुआ?"

"घास के ढेर में एक लड़का था, और उसने मुझे धक्का देकर नीचे गिरा दिया।"

क्या आप इस लड़के को जानते थे?

“हाँ...मुझे उसे दे दो। वह एक सभ्य महिला बनना चाहती थी। मैंने यह देखा था। मैं इतना मूर्ख नहीं था कि इसे न देख पाऊं।”

"घर पहुंचने पर क्या हुआ?"

उसने मुझसे कहा कि मैं मरने वाला हूँ।

क्या आपने डॉक्टर से सलाह ली थी?

"हाँ।"

“क्या घाव पर पट्टी नहीं बंधी थी?”

“वे मुझे जिंदा बाहर ले गए। मैं एक जिंदा इंसान था जिसे उन्होंने कब्र में डाल दिया। मैं उस कब्र से मुक्त होना चाहता हूँ!”

"क्या आप चाहते हैं कि मैं आपको मुक्त कर दूं?"

"भगवान आपका भला करे!"

“तुम्हारी नफरत ही तुम्हें यहाँ रोके रखती है। तुम्हें माफ करना होगा।”

उसने मेरे साथ ऐसा किया।

एथेल मेयर्स संपर्क कर रही हैं

फिर मैंने उस भूत से विनती की कि वह अपने परिवार के पास चला जाए और अपनी यादों को भुला दे। “क्या तुम्हें एहसास है कि कितना समय बीत चुका है? सौ साल!”

"सौ साल!"

अभी भी सम्मोहित अवस्था में डूबी हुई वह माध्यम, अपने हाथों में अपना सिर छिपाकर बोली:

"मैं पागल हो गई हूँ!"

“इस घर से चले जाओ और वापस मत आना।”

“मैरी, मैरी!”

मैरी जुमेल की बेटी का नाम था, यह तथ्य उस समय माध्यम को ज्ञात नहीं था।

“जाओ और मैरी से मिलो!” मैंने आदेश दिया और अल्बर्ट, जो नियंत्रक था, से उस दुखी व्यक्ति को रास्ता खोजने में मदद करने के लिए कहा।

जैसे ही जुमेल का भूत हमें छोड़कर गया, कोई और उस माध्यम के शरीर में प्रवेश कर गया, या ऐसा ही प्रतीत हुआ, क्योंकि वह उठकर बैठ गई और संदेह भरी नज़रों से हमारी ओर देखने लगी: "तुम कौन हो?"

मैंने जवाब दिया, "मैं दोस्त हूं, मदद करने आया हूं।"

मैंने तुम्हें नहीं बुलाया था।

“मेरा नाम होल्ज़र है, और मैं आपसे मिलने आया हूँ। अगर आपका कोई ऐसा नाम है जिसका ज़िक्र करना ज़रूरी हो, तो कृपया हमें बताएँ।”

“बाहर निकल जाओ वरना मैं पुलिस को बुला लूंगी! यह मेरा घर है।” अब उस सम्मोहित माध्यम के चेहरे पर सचमुच गुस्सा झलक रहा था।

मैं बार-बार पहचान पत्र मांगती रही। आखिरकार, तिरस्कारपूर्ण होंठ खुले और ठंडे स्वर में आवाज आई, "मैं संयुक्त राज्य अमेरिका के उपराष्ट्रपति की पत्नी हूँ! मेरे घर से निकल जाओ!"

मैंने श्रीमती कैंपबेल से बात की और पता चला कि बेट्सी जुमेल अक्सर इसी तरह अपनी पहचान बताती थीं। एक बार, आरोन बर्र से तलाक के काफी समय बाद, न्यूयॉर्क की भीड़भाड़ वाली सड़कों से गाड़ी चलाते हुए उन्होंने चिल्लाकर कहा, "संयुक्त राज्य अमेरिका के उपराष्ट्रपति की पत्नी के लिए रास्ता बनाइए!"

मैंने पूछा, “क्या आपने इससे पहले किसी और से शादी नहीं की थी? आपके पति की मृत्यु कैसे हुई?”

"हरामी!"

मैंने विनम्रतापूर्वक कहा, "आप सौ साल पहले मर चुकी हैं, महोदया।"

“तुम कप्तान के केबिन में उठने वाली लहर की तरह हो,” उसने कुछ रहस्यमय ढंग से जवाब दिया। बाद में मैंने इसकी पुष्टि की। जुमेल से शादी के दौरान एक समुद्री कप्तान उसके पसंदीदा प्रेमियों में से एक था।

"क्या तुमने अपने पति की हत्या की?" मैंने पूछा और एहतियात के तौर पर थोड़ा पीछे हट गई।

"तुम्हें मेरी नौकरानियों के साथ रसोई में होना चाहिए," उसने तिरस्कारपूर्वक उत्तर दिया, लेकिन मैंने आरोप दोहराया और कहा कि उसके पति ने दावा किया था कि उसने उसकी हत्या की है।

“मैं मदद के लिए पुकारूंगी,” उसने जवाब दिया।

“कोई मदद नहीं मिलेगी। पुलिस तुम्हारा पीछा कर रही है!” मैंने कहा।

मैं संयुक्त राज्य अमेरिका के उपराष्ट्रपति की पत्नी हूँ!

“अगर तुम मुझे बताओगे कि तुमने क्या किया, तो मैं तुम्हारी मदद करूंगा। क्या तुमने उसकी मौत का कारण बनाया?”

“रेंगने वाले चूहे...उन्होंने मुझे काट लिया। मैं कहाँ हूँ?”

आप दो दुनियाओं के बीच फंसे हुए हैं। क्या आप मदद चाहते हैं?

“जोसेफ कहाँ है?”

“तुम्हें यह घर छोड़ना होगा। तुम्हारे पति ने तुम्हें माफ कर दिया है।”

मैं उन्हें बहुत पसंद करता था!

"चले जाओ, और तुम स्टीफन जुमेल को फिर से देखोगे।"

“मैंने सिर्फ गाड़ी पर प्रतीक चिन्ह लगाया था! बस इतना ही किया। वह एक महान व्यक्ति थे।”

मुझे ऐसा लगा कि वह मिस्टर जुमेल को बिल्कुल पसंद नहीं करती थी। लेकिन ऐसा होता है, भूतों के साथ भी।

मैंने अंततः उसे जुमेल में शामिल होने के लिए मनाने की कोशिश छोड़ दी और दूसरा तरीका आजमाया।

“जाओ और अमेरिका के उपराष्ट्रपति से मिलो। वह तुम्हारा इंतजार कर रहे हैं।” मुझे आश्चर्य हुआ कि यह भी कारगर नहीं हुआ।

“वह दुष्ट है, बहुत दुष्ट,” उसने कहा।

मैं असमंजस में पड़ गया और मैंने पूछा, "आप किससे जुड़ना चाहते हैं?"

“मैरी।”

"फिर उसका नाम पुकारो, और वह तुम्हारे पास आ जाएगी और तुम्हें अपने साथ ले जाएगी।"

"कोई अपराध नहीं, कोई अपराध नहीं।"

“तुम्हें क्षमा कर दिया गया है। मैरी तुम्हें यहाँ से ले जाएगी।”

मैंने अल्बर्ट, जो नियंत्रक थे, से आकर काम शुरू करने में हमारी मदद करने के लिए कहा, लेकिन जाहिर तौर पर मैडम का मन बदल गया: "यह मेरा घर है, मैं यहीं रहूंगी।"

“यह अब तुम्हारा घर नहीं है। तुम्हें जाना होगा!”

संघर्ष जारी रहा। उसने क्रिस्टोफर को पुकारा, लेकिन मुझे यह नहीं बताया कि क्रिस्टोफर कौन था।

अंत में उसने स्वेच्छा से कहा, "वह एकमात्र ऐसा व्यक्ति है जिस पर मैंने कभी भरोसा किया है।"

मैंने दोहराया, “अभी भी देर नहीं हुई है। आप अपने प्रियजनों से मिल सकते हैं।”

"अलविदा।"

मैंने अल्बर्ट को बुलाया, जिसने तुरंत स्थिति संभाल ली। जैसे ही उसने माध्यम के स्वर यंत्रों पर पूरी तरह से नियंत्रण पा लिया, उसने कहा, "वह अब मानसिक रूप से ठीक नहीं है। आपको उससे दोबारा बात करनी पड़ सकती है।"

क्या वह जुमेल की मौत की दोषी है?

“हां। यह तय किया गया था।”

“उसे धक्का देने वाला लड़का कौन था?”

“घर का एक भरोसेमंद आदमी। उसने उसे ऐसा करने को कहा था।”

“स्टीफन जुमेल के बारे में क्या?”

"उनकी मानसिक स्थिति बेहतर है।"

“क्या ऐसा कुछ और भी है जो हमने नहीं बताया? यह क्रिस्टोफर कौन है जिसका उसने जिक्र किया?”

“एक समुद्री कप्तान। उसने उसे प्रोविडेंस में दफनाया।”

श्रीमती कैंपबेल ने बाद में बेत्सी के जीवन में समुद्री कप्तान की महत्वपूर्ण भूमिका की पुष्टि की। वहाँ ब्राउन नाम का एक और व्यक्ति भी था।

"क्या आरोन बर्र ने जुमेल को दफनाने में मदद की थी?"

“यह सच है। बर्र का मानना था कि श्रीमती जुमेल के पास वास्तव में जितनी संपत्ति थी, उससे कहीं अधिक थी।”

“उस डॉक्टर का क्या हुआ जिसने उसे जिंदा दफनाया था? क्या उसका नाम पता है?”

खून बहना नहीं रोका जा सका।

क्या आरोन बर्र इस अपराध में शामिल था?

उन्हें इस बात का पूरा एहसास है कि वे दोषी हैं। उनकी मानसिक क्षमताएं अभी भी पूरी तरह से बरकरार हैं।

फिर मैंने नियंत्रक से घर में शांति बनाए रखने और माध्यम को उसके अपने शरीर में वापस लाने में मदद करने के लिए कहा।

कुछ मिनट बाद, एथेल मेयर्स फिर से पहले जैसी हो गई, उसे पिछले एक घंटे में झेली गई भयावह घटना के बारे में कुछ भी याद नहीं था, और इससे उसे कोई नुकसान भी नहीं हुआ था।

जुमेल की मृत्यु 1832 में हुई थी और जहाँ तक मुझे पता चला है, भूतों से जुड़ी पहली घटनाएँ 1865 की हैं। सवाल यह था: क्या उनके अवशेषों से उनकी मृत्यु के तरीके के बारे में कोई सुराग मिल सकता है? यदि उनकी मृत्यु ताबूत में दम घुटने से हुई थी, तो क्या उनकी हड्डियों की स्थिति से ऐसा संकेत नहीं मिलता?

मैंने इस मामले में दो चिकित्सकों से पूछताछ की, जिनकी राय अलग-अलग थी। एक का मानना था कि अब तक कुछ भी नहीं बचा होगा; दूसरे का मानना था कि इस मामले की जांच करना उचित होगा।

मुझे भी यही लगा था। हालांकि, मॉट स्ट्रीट पर पुराने कैथोलिक कब्रिस्तान में स्टीफन जुमेल की कब्र को दोबारा खोलने के मेरे आवेदन को अधिकारियों ने टाल दिया। जिला अटॉर्नी के कार्यालय ने मुझे मुख्य चिकित्सा परीक्षक डॉ. हेल्परन के पास भेजा, जिन्होंने कहा कि जांच करने का कोई फायदा नहीं होगा। जब मैंने जोर दिया, तो मुझे पुराने सेंट पैट्रिक चर्च के कार्यालयों के पास भेज दिया गया, जिसका उस भूखंड पर नाममात्र का अधिकार क्षेत्र है।

क्या आपने कभी न्यूयॉर्क शहर में किसी कब्र को दोबारा खोलने की कोशिश की है? यकीन मानिए, नई कब्र खोदना कहीं ज्यादा आसान है!

जैसे-जैसे साल बीतते गए, मैं अक्सर उस हवेली में लौटता रहा। मैंने वहाँ क्यूरेटर के सहयोग से कई टेलीविज़न वृत्तचित्र बनाए, जो अब मिलनसार और जानकार पैट्रिक ब्रूम हैं। अफ़सोस, वह प्रसिद्ध नीली पोशाक अब प्रदर्शन पर नहीं है, क्योंकि कहानी प्रकाशित होने के कुछ समय बाद ही वह खराब हो गई थी। लेकिन किंवदंती अभी भी कायम है, और सुरक्षा गार्ड के ताला लगाने पर सुनसान रातों में आज भी कदमों की आहट सुनाई देती है। क्या जुमेल परिवार, पश्चाताप से भरी बेट्सी और पीड़ित स्टीफन, अब सुलह कर चुके हैं, यह एक विवादास्पद प्रश्न है, और मुझे संदेह है कि आरोन बर्र भी उस महिला से कोई संबंध रखना चाहेंगे।

ऑस्ट्रिया में स्थित बर्नस्टीन कैसल, जो अब एक शानदार होटल है, कभी एक दुखद गलतफहमी और हत्या का स्थल था। काउंटेस पर अपने पति के साथ विश्वासघात करने का कोई आरोप नहीं था, इसलिए उसके पति ने ईर्ष्या के आवेश में आकर उसकी हत्या कर दी।

एक छोटा सा मंदिर उस स्थान को चिह्नित करता है जहां काउंटेस की हत्या की गई थी - और जहां अक्सर उसका भूत देखा जाता था।

ऑस्ट्रिया में बर्नस्टीन महल का बाहरी दृश्य—इस क्षेत्र की समृद्धि "स्मारागट" नामक अर्ध-कीमती पत्थर के खनन से आती है। यह महल हाल तक कुलीन अल्मासी परिवार के स्वामित्व में था।

ऑस्ट्रिया के बैड ऑसी के पास आल्प्स पर्वतमाला में स्थित, अब पूरी तरह खंडहर हो चुका फ्लिंड्सबर्ग किला मध्ययुगीन बलात्कार और अपहरण की घटना का स्थल है, जिसका बदला अपराधी के परिवार ने लिया था। तूफानी रातों में कभी-कभी उसका प्रेत घोड़े पर सवार दिखाई देता है।

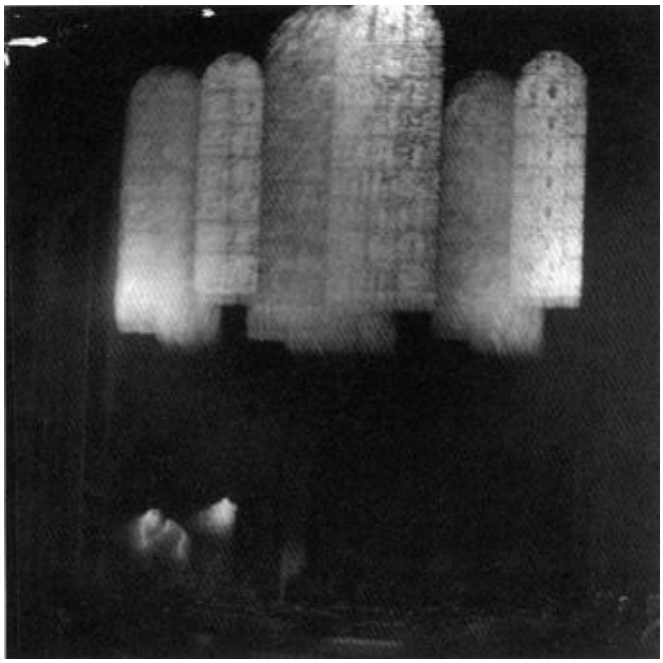

स्विट्जरलैंड के बेसल स्थित गोथिक कैथेड्रल में, हैंस होल्ज़र ने एक विचित्र, चमकदार कंकाल को कैमरे में कैद किया है। कठोर केल्विनवादी युग के दौरान, "पापों" के आरोपी लोगों को कभी-कभी चर्च की दीवारों में जिंदा ही चुनवा दिया जाता था।

सीरिया का अल्टेनबर्ग महल, जो अब एक रोमांटिक होटल है, कभी एक ऐसे नौकर की अभागी आत्मा का घर था जिसने 1920 में अपने मालिक के साथ विश्वासघात किया था। यह घटना तब घटी जब विद्रोही किसान मालिक को मारना चाहते थे। मालिक की मृत्यु तो नहीं हुई, लेकिन वह नौकर ही है जो उस स्थान को छोड़ नहीं सकता।

अध्याय सात

भूतिया स्थान

यह तर्कसंगत है कि यदि भूत—वे लोग जो इस जीवन से चले गए हैं लेकिन अभी तक अगले चरण में प्रवेश नहीं कर पाए हैं—लोगों के घरों में प्रकट होते हैं, तो ऐसी प्रेतात्माएं घरों के बाहर, खुले में भी पाई जा सकती हैं। और वे वास्तव में पाई जाती हैं।

पौराणिक कथाओं में घने जंगलों को अक्सर प्रेतवाधित माना जाता है, और कैरिबियन में चौराहों को अक्सर भूतिया स्थान समझा जाता है। वास्तव में, हाईटियन वूडू में, सुरक्षा के लिए चौराहों के देवताओं का आह्वान किया जाता है।

भूतिया जहाजों के बारे में कई किंवदंतियाँ प्रचलित हैं, जिनमें युद्ध में मारे गए समुद्री डाकुओं की आत्मा से लेकर क्वीन मैरी (जो अब एक तैरता हुआ संग्रहालय है) पर एक दुर्घटना में मारे गए एक कर्मचारी की कहानी शामिल है, जो पर्यटकों को बार-बार दिखाई देता है (प्रबंधन द्वारा ऐसा करने के लिए कहे बिना)। इसके अलावा, "फ्लाइंग डचमैन" में विश्वास भी है, जिसने रिचर्ड वैगनर को इसी नाम के अपने ओपेरा में डचमैन के भाग्य को नाटकीय रूप देने के लिए प्रेरित किया। क्या वास्तव में कोई फ्लाइंग डचमैन था? सबसे पहले तो, वह सचमुच "उड़ा" नहीं था। यहाँ उड़ने का तात्पर्य उसके क्लिपर जहाज की "समुद्र में दौड़" से हो सकता है, या यह भूतों के घूमने के तरीके का वर्णन हो सकता है—कभी-कभी चलने के बजाय सरकना। बहुत संभव है कि वह बस एक कप्तान था जो अपने जहाज के साथ डूब गया और मृत्यु के बाद भी उसे छोड़ना नहीं चाहता था।

हवाई जहाज़ों में भूतों के देखे जाने की खबरें कोई नई बात नहीं हैं। हाल के वर्षों में सबसे चर्चित घटना फ्लाइट 401 के भूत की है, जो फ्लोरिडा के एवरग्लेड्स में दुर्घटनाग्रस्त हो गई थी और जिसमें 101 लोगों की जान चली गई थी। जॉन फुलर ने 1976 में इस घटना के बारे में लिखा था, और अगर एयरलाइंस की कंजूसी न होती तो हमें इसके बारे में कभी पता ही न चलता। लेकिन संयोग से दुर्घटनाग्रस्त विमान के कुछ हिस्सों को बचा लिया गया और दूसरे विमान में दोबारा इस्तेमाल किया गया (!)। इस दोबारा इस्तेमाल किए गए विमान में मृत

फ्लाइट इंजीनियर का भूत एक एयर होस्टेस के सामने प्रकट हुआ और शिकायत करने लगा कि विमान - चाहे वह दुर्घटनाग्रस्त विमान हो या जिसमें वह अब प्रकट हो रहा है - उड़ान भरने के लिए सुरक्षित नहीं है।

भूत भी आखिर इंसान ही होते हैं। वे भावुक प्राणी होते हैं। अगर वे अपने किसी दुखद अनुभव से उबर नहीं पाते, तो वे उस जगह से बंध जाते हैं जहाँ वह घटना घटी थी और समय-समय पर, जब परिस्थितियाँ अनुकूल होती हैं—जैसे घटना की बरसी पर या किसी ऐसे माध्यम की उपस्थिति में जो संपर्क संभव बनाता है—वे या तो प्रकट होते हैं या अपनी उपस्थिति दर्ज कराते हैं। इसलिए, किसी को पूरी तरह से मुक्त होकर दूसरी दुनिया में जाने से रोकने के लिए एक भावनात्मक बंधन आवश्यक है। यहाँ कुछ ऐसी जगहें हैं जिनकी मैंने व्यक्तिगत रूप से जाँच की है और पुष्टि की है।

*117

खोए हुए सिर का मामला

दक्षिण के सबसे प्रसिद्ध भूतों में से एक रेल कंडक्टर जो बाल्डविन हैं। जो और उनकी लालटेन की कहानी तो मुझे पहले से ही पता थी, और कुछ साल पहले लाइफ पत्रिका ने उत्तरी कैरोलिना के विलमिंगटन के पास रेल पटरी की एक तस्वीर प्रकाशित करके इसे विशेष महत्व दिया था, जिसमें एक हरे रंग की लालटेन बड़े ही रहस्यमय ढंग से सजी हुई थी, जिसे संभवतः किसी प्रेत के हाथों में झूलते हुए देखा जा सकता था।

फिर 1964 की शुरुआत में एक दिन, यह किंवदंती हकीकत बन गई जब मुझे बिल मिचम का एक पत्र मिला, जो दक्षिण पूर्वी उत्तरी कैरोलिना बीच एसोसिएशन के कार्यकारी सचिव थे। यह एसोसिएशन विलमिंगटन के आसपास के प्रमुख रिसॉर्ट होटलों द्वारा स्थापित एक जनसंपर्क कार्यालय था। श्री मिचम ने प्रस्ताव दिया कि मैं जो बाल्डविन के भूत को देखूं और वैज्ञानिक रूप से यह समझाने की कोशिश करूं कि प्रसिद्ध "मैको लाइट" क्या थी या क्या है।

इसके अलावा, श्री मिचम ने मेरी जांच पूरी होने के बाद इस विषय पर एक व्याख्यान आयोजित करने की व्यवस्था की, जिसे बीच एसोसिएशन और विलमिंगटन कॉलेज ने संयुक्त

रूप से प्रायोजित किया। उन्होंने कैथरीन और मेरे लिए भव्य स्वागत का वादा किया और उन्होंने ऐसा ही किया।

भूत-प्रेत की खोज के इतिहास में शायद ही कभी किसी परा मनोविज्ञान विशेषज्ञ का इतना भव्य स्वागत हुआ हो और प्रेस, टेलीविजन और रेडियो द्वारा उसे इतनी व्यापक कवरेज मिली हो, और यदि जो बाल्डविन का भूत अपने निजी भूत-प्रेत खोजकर्ता की ओर निर्देशित इस सारी प्रसिद्धि का आनंद ले रहा है, तो उसका इसमें हार्दिक स्वागत है।

अगर जो बाल्डविन न होते, तो रेलवे ट्रैक का वह मोड़, जिसे मैको स्टेशन (विलमिंगटन से कुछ मील दूर) के नाम से जाना जाता है, एक बेहद साधारण और भद्दा पुल होता। जब मैंने मई 1964 में इसकी पड़ताल की और वहां से निकला, तब तक यह स्थान लगभग एक राष्ट्रीय तीर्थस्थल का दर्जा हासिल कर चुका था और पर्यटक समूह हर समय, खासकर रात में, जो बाल्डविन की रहस्यमयी रोशनी को देखने के लिए आते रहते थे।

बिल मिचम ने यह सुनिश्चित किया था कि दुनिया को जो बाल्डविन के बिना सिर वाले भूत और हैंस होल्ज़र द्वारा उसकी तलाश के बारे में पता चले, और विलमिंगटन में बिताए गए हमारे एक सप्ताह के दौरान एक या दूसरे प्रकार की कम से कम अठहत्तर अलग-अलग समाचार कहानियां छपीं।

विलमिंगटन अभियान की योजना बनाने से पहले ही, मुझे स्थानीय मनोवैज्ञानिक घटनाओं के छात्र विलियम एडवर्ड कॉक्स जूनियर से एक मैत्रीपूर्ण पत्र और "द मैको घोस्ट लाइट" नामक एक पांडुलिपि प्राप्त हुई। श्री कॉक्स ने उस विचित्र प्रकाश का अवलोकन करने में काफी समय बिताया था, और मैं उद्धृत करता हूँ:

उत्तरी कैरोलिना के विलमिंगटन के आसपास की पसंदीदा "भूतिया कहानी" "जो बाल्डविन की भूतिया रोशनी" की है, जिसके बारे में कहा जाता है कि यह रात में मैको, उत्तरी कैरोलिना के पास, विलमिंगटन से 12 मील पश्चिम में अटलांटिक कोस्ट लाइन रेलमार्ग पर दिखाई देती है।

30 जून से 1 जुलाई, 1949 तक, इस लेखक ने इस घटना की जांच में काफी समय व्यतीत किया। इसका उद्देश्य परीक्षण परिस्थितियों में प्रकाश के व्यवहार की सटीक जांच करना था, ताकि इसकी सटीक प्रकृति का पता लगाया जा सके।

जो बाल्डविन की भूतिया रोशनी की किंवदंती के 1867 में जन्म लेने के कुछ समय बाद से ही इस रोशनी को देखा जा रहा है। इसका आधिकारिक उल्लेख "द स्टोरी ऑफ द कोस्ट लाइन, 1830-1948" नामक एक पुस्तिका में मिलता है। इसके सामान्य वर्णन में, यह एक 25-वॉट की बिजली की बत्ती जैसी दिखती है जो पटरियों के साथ-साथ धीरे-धीरे प्रेक्षक की ओर बढ़ती है। प्रेक्षक के लिए इसे देखने का सबसे अच्छा स्थान स्वयं पटरी पर वह बिंदु है जहाँ पटरियाँ, उस बिंदु पर दोहरी होकर, अमेरिकी राजमार्ग 74-76 और अमेरिकी राजमार्ग 19 के बीच एक जोड़ने वाली सड़क की शाखा से मिलती हैं।

प्रचलित व्याख्या यह है कि एक दुर्घटना में सिर कटने से मारे गए कंडक्टर बाल्डविन अपने सिर की तलाश में रात्रि के समय सैर पर निकलते हैं...

रात्रि प्रकाश की उत्पत्ति के लिए प्रस्तुत विभिन्न "प्राकृतिक" सिद्धांतों का परीक्षण करने के बाद, श्री कॉक्स स्वीकार करते हैं:

हालांकि आम राय यही है कि ये रोशनी किसी दुर्लभ कारण से उत्पन्न होती हैं, जैसे कि अलौकिक घटनाएँ, "इग्निस फैटस" (अचानक होने वाली जादुई शक्तियाँ), लेकिन मैको के आसपास के निवासियों की राय इस पर्यवेक्षक द्वारा काफी भिन्न पाई गई। मोबिलगैस सर्विस स्टेशन के मालिक ने कोई स्पष्ट राय नहीं दी, और एक स्थानीय ग्राहक ने कहा कि उसने "कभी ऐसी रोशनी नहीं देखी।" इलाके के एक किसान को पूरा यकीन था कि यह गाड़ियों की हेडलाइट्स के कारण है, लेकिन गाड़ियों के आने से पहले वहाँ आमतौर पर दिखाई देने वाली ऐसी रोशनी के बारे में उसने कोई राय नहीं दी।

विलेट सर्विस स्टेशन की मालकिन, श्रीमती सी. एल. बेंटन, दृढ़ता से आश्वस्त थीं कि यह "अलौकिक उत्पत्ति" का था, और मैको में पर्यवेक्षकों को ऑटोमोबाइल हेडलाइट्स का अजीबोगरीब दिखना कमोबेश एक आकस्मिक संयोग ही होना चाहिए।

उन्होंने कहा कि उनके पिता "60 साल पहले वहां पास में लकड़ी के चूल्हे में लकड़ी भरते समय इसे अक्सर देखते थे।"

“मैको लाइट”, या मूल प्रकाश, की उत्पत्ति और प्रकृति का बुनियादी प्रश्न अभी तक पूरी तरह से अनुत्तरित है। यहाँ प्रस्तुत निष्कर्ष, जो पूरी तरह से सामान्य कारणों से प्राप्त हुए हैं, उन्हें सुदूर अतीत में (या वर्तमान समय में भी) किसी अलौकिक उत्पत्ति के प्रकाश के अस्तित्व को नकारने के रूप में सटीक रूप से नहीं माना जा सकता है।

इस घटना की निर्विवाद विलक्षणता, जो कि ऐसे स्थान पर घटित होती है जहाँ ऑटोमोबाइल द्वारा समान घटना को उत्पन्न करना इतनी आसानी से संभव है, इसे केवल रहस्यमय "भूल गए रहस्यों के क्षेत्र" में धकेल देती है।

श्री कॉक्स द्वारा 1949 में उस स्थान पर किए गए परिश्रमपूर्ण प्रयोग का यही परिणाम निकला।

घोस्ट हंटर (और मिसेज़ घोस्ट हंटर) के आगमन की खबर इलाके के अखबारों में खूब छपी। खबरों की भरमार में से एक उदाहरण शार्लोट ऑब्जर्वर में छपी खबर थी:

क्या स्पूक हंटर ओल्ड जो को भूत-प्रेत से मुक्त कर सकता है?

साउथ ईस्टर्न एन. सी. बीच एसोसिएशन ने शनिवार को ओल्ड जो बाल्डविन के भूत का अध्ययन करने के लिए एक प्रमुख पैरासाइकोलॉजिस्ट को आमंत्रित किया।

एसोसिएशन के कार्यकारी निदेशक बिल मिचम ने कहा कि उन्होंने न्यूयॉर्क के हैंस होल्ज़र को ओल्ड जो से संबंधित भूतिया कहानियों को या तो साबित करने या खंडन करने के लिए कहा है।

होलज़र 1 मई से अपना अध्ययन शुरू करेंगे।

जो बाल्डविन द्वारा झूठे संकेतों से ट्रेनों को रोकने और गर्मियों की अंधेरी रातों में अपनी लालटेन लहराने की कहानियां 1867 में उनकी मृत्यु के बाद से दोहराई जाती रही हैं।

विलमिंगटन, मैनचेस्टर और ऑगस्टा रेलरोड में कंडक्टर के रूप में कार्यरत बाल्डविन, अपनी मृत्यु की रात ट्रेन के पिछले डिब्बे में यात्रा कर रहे थे। डिब्बा अलग हो गया और बाल्डविन ने पीछे आ रही यात्री ट्रेन को संकेत देने के प्रयास में एक लालटेन उठा ली।

लेकिन इंजीनियर सिग्नल को देख नहीं पाया। परिणामस्वरूप हुए हादसे में बाल्डविन का सिर धड़ से अलग हो गया।

दुर्घटना के एक प्रत्यक्षदर्शी ने बाद में बताया कि सिग्नल लालटेन पटरियों से कुछ दूरी पर जा गिरी थी, लेकिन उसके बाद वह कुछ समय तक तेज रोशनी से जलती रही।

दुर्घटना के तुरंत बाद, ब्रंसविक काउंटी के मैको स्टेशन पर रेलवे ट्रैक के किनारे एक रहस्यमय रोशनी देखे जाने की खबरें आईं।

मैको स्टेशन पर रेलकर्मियों द्वारा दो लालटेन, एक हरी और एक लाल, का उपयोग किया गया है ताकि इंजीनियर जो बाल्डविन की रोशनी से भ्रमित या गुमराह न हों।

विलमिंगटन स्टार-न्यूज़ की महिला संपादक थेरेसा थॉमस ने इस विषय में अधिक गंभीरता से मदद की, जो वर्षों से मानसिक शक्तियों में रुचि रखती हैं और संभवतः स्वयं भी कुछ हद तक संवेदनशील हैं। 8 अप्रैल, 1964 को उन्होंने अपने पाठकों से पूछा:

क्या आपने कभी मैको लाइट देखी है?

क्या आपने कभी ओल्ड जो बाल्डविन को देखा है? या उनकी रोशनी को? जहाँ तक हमें पता है, किसी ने भी खुद जो को नहीं देखा है।

लेकिन अगर आपने मैको में रेलवे ट्रैक के किनारे उसकी लालटेन को झूलते हुए देखा है, तो आप हैंस होल्ज़र, घोस्ट हंटर, की बहुत मदद कर सकते हैं, जो 29 अप्रैल को विलमिंगटन में होंगे।

या तो आप अपने अनुभव को लिखकर हमें भेज दें, या फिर हमें फोन करके इसके बारे में बताएं।

फिर मिस थॉमस के दृष्टिकोण ने एक और पहलू जोड़ दिया:

उनकी [श्री होल्ज़र की] पत्नी भी उतनी ही दिलचस्प हैं जितनी कि वे खुद। वह एक चित्रकार हैं और रूस की कैथरीन द ग्रेट की परपोती हैं। श्रीमती होल्ज़र का जन्म इतालवी आल्प्स में स्थित टायरॉल के मेरन में एक भूतिया महल में काउंटेस कैथरीन बुक्सहोवेडेन के रूप में हुआ था। और वह भूतिया घरों के चित्र बनाती हैं—क्या आपने सही अनुमान लगाया?

मेरी यात्रा में अभी तीन सप्ताह बाकी थे, लेकिन विलमिंगटन में प्रचार-प्रसार की प्रक्रिया पहले से ही तेजी से चल रही थी।

थेरेसा थॉमस की भूतिया घटनाओं के प्रत्यक्षदर्शियों के लिए की गई अपील का तुरंत असर दिखा। पहली बार प्रतिष्ठित लोगों ने इस मामले को गंभीरता से लिया, और जिन लोगों ने सच्चाई देखी थी, उन्होंने खुलकर अपनी बात रखी। मिस थॉमस ने अपना उत्साह नहीं छिपाया। 12 अप्रैल को उन्होंने लिखा:

ऐसा लगता है कि बहुत से लोगों ने मैको में ओल्ड जो बाल्डविन की प्रतिभा को देखा है और उनमें से अधिकांश इसके बारे में बात करने के लिए इच्छुक - बल्कि उत्सुक - हैं।

सबसे पहले फोन करने वालों में 211 ऑरेंज स्ट्रीट की श्रीमती लैरी मूर भी थीं, जिन्होंने कहा कि उन्होंने साल के अलग-अलग मौसमों में तीन या चार बार रोशनी देखी थी।

पहली बार यह एक बादल भरी, धुंध वाली सर्दियों की रात थी और फिर गर्मियों में, फिर से धुंध छाई हुई थी। उसने प्रकाश का वर्णन "नीली-पीली लौ जैसा" किया। वह और उसके साथी पगडंडी पर चलते रहे और जैसे-जैसे वे पुल के पास पहुँचते गए, प्रकाश करीब आता गया। जब वे पुल के केंद्र में पहुँचे, जहाँ प्रकाश लगभग 10 फीट दूर था, तो वह गायब हो गया।

राइट्सविले बीच के 6 शियरवॉटर ड्राइव की निवासी श्रीमती थेल्मा डॉटरी का कहना है कि उन्होंने इसे एक धुंध भरी बसंत की रात में देखा था। शाम के लगभग 7 या 8 बजे थे और लाल रंग की रोशनी घुटने की ऊंचाई पर झूलती हुई दिखाई दी।

ऑस्ट्रिया के वियना की मूल निवासी और 172 कॉलोनियल सर्कल की निवासी श्रीमती मार्गरिट जैक्सन ने लगभग सात साल पहले एक धुंधली रात में इसे देखा था। वह कई अन्य लोगों के साथ थीं और उन सभी ने एक "चमकीली रोशनी" देखी, जो स्थिर और दूर थी लेकिन हमेशा उनसे एक ही दूरी पर आगे थी।

220 फाइफर एवेन्यू की निवासी डिक्सी रैम्बो ने इसे शुक्रवार की सुबह लगभग 1 बजे देखा। उनका कहना है कि उस समय "घोर अंधेरा" था और दूर से पटरी पर एक लाल बिंदु जैसी रोशनी दिखाई दी, पास आने पर वह पीली-सफेद हो गई, और फिर और करीब आने पर वह लाल और सफेद रंग का मिश्रण थी।

उन्हें याद है कि उन्होंने और उनके साथियों ने उसे पटरी के बाईं ओर आते देखा और जैसे-जैसे वह करीब आता गया, पटरी पर उसकी परछाई लगभग उन तक पहुँचने लगी। लगभग 10 फीट की दूरी पर उसने अपनी दिशा बदल दी और जैसे ही वे उसकी ओर बढ़े, वह गायब

हो गया। एक बार ऐसा लगा जैसे वह पटरी पार कर गया हो। उन्होंने बताया कि उन्होंने उसे पाँच-छह बार देखा।

ग्रेस स्ट्रीट के 406 नंबर पर रहने वाली नर्स श्रीमती मार्विन क्लार्क बताती हैं कि उन्होंने और उनके पति ने 15 साल पहले एक रोशनी देखी थी। यह लगभग आधी रात का समय था, बादल छाए हुए थे और बारिश हो रही थी। वे रेलवे ट्रैक के बीच में खड़े थे और "ऐसा लग रहा था जैसे कोई ट्रेन पूरी रफ्तार से आ रही हो और उस पर रोशनी हो।"

श्रीमती क्लार्क ने प्रकाश का वर्णन करते हुए कहा कि यह "ट्रेन की बत्ती के रंग" जैसा था।

“हमने अपनी छोटी बच्ची को उठाया और भागे। हम सभी ने हमेशा कारों की परछाईं देखी है, लेकिन इसमें कोई शक नहीं कि वह मैको लाइट ही थी।”

कैरोलिना बीच की श्रीमती लासे वी. डेल के पास भी सुनाने के लिए एक कहानी है। ऐसा लगता है कि वह और उनके पति एक रात फेयेटविले से देर से घर लौटे थे।

वह लिखती हैं: “जैसे ही हम कट-ऑफ से निकलकर 74-76 राजमार्ग पर आगे बढ़े, मुझे जो अनुभव हुआ, उसे मैं कभी नहीं भूल पाऊंगी...” वह आगे लिखती हैं, “अचानक सड़क पर हमारी ओर एक तेज रोशनी दिखाई दी, पहले तो मुझे लगा कि यह कोई कार है। लेकिन फिर मैंने सोचा कि अगर कार है भी तो उसमें सिर्फ एक ही बत्ती होगी। वह लगातार हमारी ओर बढ़ती रही।”

“तब मुझे लगा कि यह एक ट्रेन है, फिर भी मुझे कुछ सुनाई नहीं दिया, और जितनी अचानक यह प्रकट हुई थी उतनी ही अचानक गायब भी हो गई। मैं कह सकता हूँ कि यह एक बहुत ही अजीब अनुभव था। मैंने इसके बारे में कई बार सोचा है। मैंने इसके कई संस्करण सुने हैं, लेकिन ऐसा पहले कभी नहीं सुना।”

तीन दिन बाद, मिस थॉमस ने एक और पूरा कॉलम उन लोगों को समर्पित किया जिन्होंने उस भूतिया रोशनी को देखा था।

स्नीड्स फेरी की श्रीमती मार्जोरी एच. राइज़र लिखती हैं: “मैंने तीन बार प्रकाश देखा है। आखिरी और सबसे महत्वपूर्ण घटना लगभग डेढ़ साल पहले हुई थी। मेरे पति, तीन छोटे बेटे और कैंप लेज्यून स्थित संयुक्त राज्य नौसेना अस्पताल का एक सैनिक मेरे साथ थे और हम सभी ने एक ही चीज़ देखी। रात के लगभग 10:30 बज रहे थे और हम एक खेल खेलकर लौट

रहे थे। हमने मैको जाने का फैसला किया क्योंकि हम बहुत पास थे और हमारे साथ मौजूद युवक को हमारी कहानी पर विश्वास नहीं हो रहा था।"

आसमान में बादल छाए हुए थे और हल्की धुंध छाई हुई थी। हमने कार को पटरी के किनारे खड़ा किया और वाकई पटरी के नीचे रोशनी दिखाई दी। मैं अपने बेटों के साथ कार में ही बैठी रही, और मेरे पति और पुलिसकर्मी रोशनी की ओर पटरी पर पैदल चले गए।

"रोशनी कभी धीमी होती तो कभी बहुत तेज हो जाती थी। दोनों आदमी शायद एक चौथाई मील तक पगडंडी पर चले और फिर लौट आए। उन्होंने कहा कि रोशनी उनके आगे ही रही, लेकिन मेरे बेटों और मैंने रोशनी को उनके और हमारे बीच देखा।"

भूतिया रेलवे क्रॉसिंग—विलमिंगटन, उत्तरी कैरोलिना

"ऐसा लग रहा था मानो रोशनी लगभग उस जगह तक आएगी जहां हमने गाड़ी खड़ी की थी और फिर लड़खड़ाते हुए पटरी पर आगे बढ़ जाएगी और गायब हो जाएगी। एक पल में वह फिर से दिखाई देगी और यही प्रक्रिया बार-बार दोहराएगी।"

“जब हम वहां लगभग एक घंटे तक रहे और जाने लगे, तो विलमिंगटन की ओर जाती हुई एक ट्रेन पास आई। रोशनी हमसे थोड़ी दूरी पर थी। जैसे ही ट्रेन रोशनी के पास से गुजरी, वह ऊपर उठी और ट्रेन के ऊपर मंडराने लगी। जैसे ही रोशनी बहुत तेज हुई, हम ट्रेन का ऊपरी हिस्सा साफ देख सकते थे।”

"ट्रेन के गुजरने तक वह उसके ऊपर मंडराता रहा, फिर पटरी के पास नीचे गायब हो गया और अंत में ऐसा लगा जैसे किसी ने उसे जंगल में फेंक दिया हो।"

"जैसे ही हम ट्रैक से दूर जाने लगे, ट्रैक पर रोशनी वापस आ गई और वह पहले की तरह ही ट्रैक पर आगे-पीछे लहराने लगी।"

और चिट्ठियाँ लगातार आती रहीं। 22 अप्रैल को, मेरे इस क्षेत्र में जल्द ही आने के बारे में आधे कॉलम के बाद, मिस थॉमस ने एक युवक का पत्र छापा जिसने कुछ दिलचस्प तस्वीरें ली थीं:

वह जे. एवरेट हगिन्स हैं, जिनका पता 412 मार्केट स्ट्रीट, विलमिंगटन है। यह पत्र बिल मिचम को संबोधित है और इसमें लिखा है: "मैंने आपके 'भूत सर्वेक्षण' पर लिखे लेखों को रुचिपूर्वक पढ़ा, खासकर इसलिए क्योंकि मैंने दो सप्ताह से भी कम समय पहले मैको लाइट देखी थी और वास्तव में ओल्ड जो को कैमरे में कैद करने में सक्षम था।"

“1 और 2 अप्रैल की रात को, मैं और मेरा एक सहपाठी रोशनी देखने की उम्मीद में मैको स्टेशन गए। शुक्रवार, 1 अप्रैल को हमें कुछ भी दिखाई नहीं दिया, लेकिन शनिवार को, जब थोड़ा अंधेरा था, तो हमें अधिक सफलता मिली। लगभग 10:30 बजे हमने हमसे लगभग 100 गज दूर पटरी पर एक पीली रोशनी देखी (यह दूरी केवल एक अनुमान है)। ऐसा लग रहा था कि वह पटरी से लगभग 10 फीट ऊपर थी और कुछ देर तक धीरे-धीरे हमारी ओर बढ़ती हुई दिखाई दी, फिर वापस चली गई और गायब हो गई।”

"वह रोशनी संभवतः लगातार तीन बार दिखाई दी, जिसकी अवधि मेरे अनुमान के अनुसार लगभग तीस सेकंड तक रही।"

मैंने अपने कैमरे से दो टाइम एक्सपोज़र लेने की कोशिश की। दुर्भाग्य से मेरे पास ट्राइपॉड नहीं था, इसलिए मुझे कैमरा हाथों में पकड़ना पड़ा, जिससे साफ़ तस्वीरें लेना असंभव हो गया। तस्वीरें बहुत शानदार नहीं हैं—रंगीन ट्रांसपेरेंसी पर बस एक छोटा सा धब्बा दिख रहा है—लेकिन तस्वीरें तो हैं। अगर आप चाहें तो मैं इनकी कुछ प्रतियां बनवा सकता हूँ।

मेरे दोस्तों ने उस रोशनी के बारे में मेरा मज़ाक उड़ाया था, इसलिए मैंने उनके संदेह को दूर करने के लिए कुछ विवरण नोट किए। हाईवे 74 पर पश्चिम की ओर जा रही कारों की हेडलाइट्स दूर से दिखाई दे रही थीं, और निस्संदेह कई लोग जो ओल्ड जो को देख रहे हैं, वे केवल इन्हीं लाइटों को देख रहे हैं। हालाँकि, ओल्ड जो को कई तरीकों से पहचाना जा सकता था। सबसे पहले, उस रोशनी का रंग कारों की हेडलाइट्स की तुलना में अधिक पीला था।

“दूसरा, हेडलाइट्स के विपरीत जो धीरे-धीरे तेज होती जाती हैं और फिर अचानक गायब हो जाती हैं, मैको लाइट धीरे-धीरे तेज होती जाती और फिर धीरे-धीरे फीकी पड़ जाती। तीसरा, मैको लाइट रेल पर एक ऐसा प्रतिबिंब उत्पन्न करती थी जो हेडलाइट्स की विशेषता नहीं थी।”

“इससे भी अधिक रोचक बात यह थी कि पटरियों पर परावर्तन केवल पटरी के अपेक्षाकृत छोटे हिस्से पर ही दिखाई दिया। परावर्तन को देखकर हम यह बता सकते थे कि प्रकाश पटरियों पर आगे-पीछे गति कर रहा था। यह हमेशा पटरियों के ठीक ऊपर ही बना रहा।”

"मैंने वह रोशनी इससे पहले एक बार 1956 में देखी थी। वह एक ठंडी सर्दियों की रात थी, और रोशनी पहले से कहीं अधिक तेज थी।"

जैसे-जैसे हमारे आगमन का दिन नजदीक आता गया, प्रेस की गतिविधियाँ और भी तेज़ होती गईं। 26 अप्रैल को अर्नोल्ड किर्क ने विलमिंगटन स्टार-न्यूज़ में लिखा:

अमेरिकी राजमार्ग 74 से कुछ मील पश्चिम में विलमिंगटन के पास एक छोटे से खुले मैदान में बसा ब्रंसविक काउंटी का यह छोटा सा गांव, उत्तरी कैरोलिना की "भूतों की राजधानी" के रूप में तेजी से ख्याति प्राप्त कर रहा है।

इसके कुछ दर्जन निवासी, जिनमें से अधिकांश मध्यम आय वर्ग के किसान हैं, अचानक अपनी कभी शांतिपूर्ण रहने वाली रातों को दर्जनों वाहनों के बीच खलल में पाते हैं, जो प्रसिद्ध "मैको लाइट" को देखने के लिए सुविधाजनक स्थानों की होड़ में लगे रहते हैं।

मैको के "भूत" कहे जाने वाले प्रकाशमान और वृद्ध जो बाल्डविन की किंवदंती लंबे समय से ज्ञात है, लेकिन इसकी लोकप्रियता हाल के महीनों में ही तीव्र हुई है।

पोर्ट सिटी में होल्ज़र का स्वागत करने के लिए विस्तृत योजनाएँ पहले ही बनाई जा चुकी हैं। न्यू हनोवर और ब्रंसविक काउंटी के सभी कस्बों के मेयरों के साथ-साथ दोनों काउंटी के काउंटी कमिश्नरों ने बुधवार शाम 7:43 बजे न्यू हनोवर काउंटी हवाई अड्डे पर उपस्थित रहने की सहमति दी है, जब "भूत शिकारी" का विमान पहुंचेगा।

हवाई अड्डे पर लालटेनें—प्रसिद्ध परा मनोविज्ञान विशेषज्ञ का स्वागत करने के लिए 1,000 हाई स्कूल के छात्र भी मौजूद रहेंगे, जो अपने साथ जलती हुई लालटेनें लेकर आएंगे! ये लालटेनें शहर द्वारा कई साल पहले खरीदी गई थीं ताकि सर्दियों के तूफानी महीनों के दौरान पेड़ों और पौधों को गर्मी मिल सके।

इस आयोजन की रौनक बढ़ाने के लिए न्यू हनोवर हाई स्कूल के वरिष्ठ अंग्रेजी कक्षा के छात्रों द्वारा लिखित "द बैलाड ऑफ ओल्ड जो बाल्डविन" का पहला सार्वजनिक प्रदर्शन किया जाएगा।

स्वागत समारोह इतना भव्य था कि ओल्ड जो बाल्डविन भी खुद को सम्मानित महसूस करते। थोड़ी देर बाद, हमने चुपके से मैको जाने की कोशिश की ताकि उस भूतिया जगह की एक झलक देख सकें। लेकिन नतीजे निराशाजनक रहे।

भूत का दिखना इतना गंभीर नहीं था, बल्कि जो दिखा वह बेहद भयावह था। विलमिंगटन स्टार ने इसका सारांश इस प्रकार दिया:

अनिच्छुक ओल्ड जो बाल्डविन ने बुधवार रात को अपने सबसे बड़े श्रोता समूह के सामने प्रदर्शन करने से इनकार करके अपने अलौकिक विशेषाधिकार का प्रयोग किया।

ब्रंसविक काउंटी के इस छोटे से गांव के केंद्र के पास रेलवे ट्रैक के किनारे छोटे-छोटे समूहों में इकट्ठे होकर, अनुमानित 250 लोग प्रसिद्ध "मैको लाइट" की एक झलक पाने की उम्मीद में घने अंधेरे में टकटकी लगाए देख रहे थे।

लेकिन रोशनी में जरा सी भी झिलमिलाहट नहीं थी।

होलज़र द्वारा बाल्डविन की भयावह मृत्यु के स्थल पर घोषित यात्रा से मैको के कुछ दर्जन निवासियों को कोई राहत नहीं मिली। रात दस बजे तक, संकरी मैको सड़क के दोनों ओर दर्जनों कारें खड़ी हो गईं और रोमांच की तलाश में निकले कई किशोर रेलवे ट्रैक पर उमड़ पड़े।

अगर जो बाल्डविन ने वहां आने का फैसला किया होता, तो निस्संदेह उनका प्रदर्शन कम से कम एक मील तक ट्रैक पर अंधेरे में खोजबीन कर रही दर्जनों टॉर्च और बैटरी से चलने वाली लालटेन की रोशनी में गुम हो गया होता।

कई बार टॉर्च और लालटेन को "मैको लाइट" समझ लिया गया, जिससे यह उम्मीद जगी कि रहस्यमय चमक जल्द ही दिखाई देगी।

ट्रैक का एक बड़ा हिस्सा जीप और एक छोटी विदेशी कार की हेडलाइट्स से जगमगा रहा था, जो ट्रैक के दोनों किनारों पर तेजी से आगे-पीछे दौड़ रही थीं। एक छोटी लड़की ने उस समय चिंताजनक स्थिति पैदा कर दी जब उसने एक जुगनू को "मैको लाइट" समझ लिया और इतनी तीखी चीख मारी कि घोर अंधेरे में गूंज उठी।

बुधवार रात को मैको में होलज़र की यात्रा मुख्य रूप से उन फोटोग्राफरों और पत्रकारों के लाभ के लिए थी, जो उस रात पहले न्यू हनोवर काउंटी हवाई अड्डे पर प्रसिद्ध पैरासाइकोलॉजिस्ट से मिले थे।

चौराहे पर उनकी दूसरी यात्रा को पूरी तरह गुप्त रखा जाएगा, इस उम्मीद में कि "भूत शिकारी" शरारती तत्वों और चंचल किशोरों द्वारा बाधित हुए बिना प्रकाश की अपनी जांच कर सकेगा।

जल्द ही मुझे एहसास हो गया कि हमारे लिए अकेले रेलवे ट्रैक पर जाना नामुमकिन था। भीड़ हमारा पीछा कर रही थी और उस जगह पर हमेशा भीड़ मौजूद रहती थी, जिससे मेरे मन में यह शंका पैदा हुई कि जब हम उनके इलाके में आए थे, तब वे लोग काम के मूड में नहीं थे। ज़ाहिर है, हम उनके लिए कुछ समय से हुई सबसे रोमांचक घटना थे।

अंततः, निर्धारित प्रेस कॉन्फ्रेंस का दिन आ गया, और सुबह 10 बजे, समुद्र तट पर बने शानदार नए ब्लॉकेड रनर होटल में लगाए गए क्लेग लाइट्स और माइक्रोफोन के सामने, मैंने

उन लोगों से आमने-सामने बात करना शुरू किया जो मुझे जो बाल्डविन के भूत के साथ अपने अनुभवों के बारे में बताने आए थे।

जिन लोगों ने मिस थॉमस को पत्र लिखकर अपनी मूल कहानियों की पुष्टि की थी, उनके अलावा कुछ ऐसे लोग भी सामने आए जो पहले ऐसा नहीं कर पाए थे। इनमें से एक थे विलियम मैकगर्ट, जो एक बीमा अधिकारी थे। उन्होंने प्रकाश को "चमकता हुआ" बताया, मानो वह अपने आप जलता-बुझता रहता हो और लोहे की पटरियों पर पूरी तरह से प्रतिबिंबित होता हो। लेकिन उन्होंने मुझे बताया कि पूरब की ओर देखने पर यह दिखाई नहीं देता, केवल मैको स्टेशन की ओर देखने पर ही दिखाई देता है।

मार्गरिट ब्रेमर ने अपनी पहले बताई गई कहानी में यह जोड़ते हुए कहा कि उन्हें वह रोशनी "मिट्टी के तेल के लालटेन की तरह आगे-पीछे झूलती हुई" दिखाई दी।

उनके पति, श्री ब्रेमर, कुछ भी कहने की योजना नहीं बना रहे थे, लेकिन मैंने उन्हें मना लिया। आखिरकार उन्होंने स्वीकार किया कि बारह साल पहले, जब उनकी कार पटरी के ऊपर खड़ी थी, तो उन्होंने अपनी ओर आती हुई एक रोशनी देखी। वह दीपक की तरह टिमटिमा रही थी और पास आने पर तेज हो गई। बाद में उन्होंने कहा, "कुछ अजीब सा हुआ—अचानक हवा का एक झोंका सा आया, मानो विलमिंगटन से कोई ट्रेन आ रही हो।"

“क्या वहाँ कोई था?” मैंने सावधानी से पूछा।

“नहीं, बिलकुल नहीं। अगर ट्रेन आने की उम्मीद होती तो हम कार को पटरी के उस पार नहीं रखते।”

श्रीमती लौरा कॉलिन्स आगे आईं और मुझे उस घटना के बारे में बताया जब वह एक ऐसे लड़के के साथ पुल पर थीं जो भूतों पर विश्वास नहीं करता था, यहाँ तक कि जो बाल्डविन के भूतों पर भी नहीं। जब प्रकाश प्रकट हुआ, तो उसने उसका उपहास उड़ाया और उसे परावर्तन बताकर समझाने की कोशिश की। लड़के से छह फीट दूर, प्रकाश अचानक गायब हो गया और उसके पीछे फिर से प्रकट हुआ—मानो उसे नीचा दिखाने के लिए! श्रीमती कॉलिन्स और अन्य लोगों ने देखा कि धुंध भरे मौसम में प्रकाश अधिक स्पष्ट दिखाई देता था।

गवाहों की कतार में अगला नाम विलमिंगटन की श्रीमती एलिजाबेथ फिंच का आया, जिन्होंने ठीक एक दिन पहले ही अपनी मूल गवाही दी थी।

“मुझे वह रोशनी कई बार दिखाई दी,” उन्होंने उस रोशनी के बारे में कहा, “वह मुझे लालटेन जैसी लगी। दो साल पहले, हम अपनी कार में रेलवे ट्रैक के दूसरी तरफ खड़े थे—हम ट्रेन का इंतज़ार कर रहे थे—तभी मैंने दोनों तरफ से दो तेज़ रोशनी देखीं। वह सर्दियों की शाम थी, लेकिन मुझे अचानक बहुत गर्मी लगने लगी। कार के सामने एक लाल लकीर थी, और फिर मैंने एक आदमी की धुंधली आकृति देखी जो लालटेन लिए चल रहा था और उसे हिला रहा था। ध्यान रहे, वह सिर्फ़ एक धुंधली आकृति थी,” श्रीमती फिंच ने ज़ोर देकर कहा, “और उसका सिर भी था... वह चलता रहा, फिर अचानक रेलवे ट्रैक के अंदर गायब हो गया।”

“क्या आपको पहले कभी मानसिक अनुभव हुए हैं, श्रीमती फिंच?” मैं जानना चाहती थी।

"हां, जब हम मेसनबोरो में एक घर में रहते थे, तो मुझे अजीब आवाजें, कदमों की आहट, यहां तक कि कहीं से भी आवाजें सुनाई देती थीं - बाद में मुझे बताया गया कि वह घर भूतिया था।"

मैंने श्रीमती फिंच को धन्यवाद दिया, और सोचने लगा कि क्या स्थानीय किंवदंती ने उनके अवचेतन मन पर इतना गहरा प्रभाव डाला था कि उन्होंने वास्तव में वही देखा जो सभी ने कहा था कि वहां था - या क्या उन्होंने वास्तव में एक आदमी की आकृति देखी थी।

मुझे उसकी कहानी पर शक करने का कोई कारण नहीं दिखता। वह मुझे एक शांत, बुद्धिमान व्यक्ति लगी, जो सनसनी फैलाने के लिए आसानी से कोई मनगढ़ंत कहानी नहीं बनाएगी। नहीं, मैंने तय किया, श्रीमती फिंच शायद उन गिने-चुने लोगों में से एक थीं जिन्होंने प्रकाश से कहीं अधिक देखा था।

“मैं आपको बताता हूँ कि यह कोई साधारण चीज़ क्यों नहीं हो सकती,” मेरे अगले सूचनादाता श्री ट्रसल ने कहा। “सात साल पहले, जब मैंने एक नम रात में, जहाँ मैं खड़ा था, वहाँ से लगभग एक मील दूर एक रोशनी देखी, तो मैंने उसकी तीव्र गति को महसूस किया। वह तेज़ी से गायब हो गई, आगे-पीछे होती रही मानो किसी चीज़ की ओर ध्यान आकर्षित कर रही हो। वह पटरी से तीन फुट ऊपर थी, लगभग उतनी ऊँचाई पर जहाँ एक आदमी का हाथ हो सकता है।”

“पहले तो यह पीलापन लिए हुए सफेद लग रहा था; जब मैं पास आया तो यह गुलाबी रंग का दिखने लगा। भला किसी आम कार की हेडलाइट इस तरह आगे-पीछे तो नहीं हिलती, है ना?”

मैं इस बात से सहमत था कि किसी ऑटोमोबाइल की हेडलाइट का इस तरह से असामान्य व्यवहार करना अत्यंत असंभव था।

श्रीमती मिरियम मूर ने इसे तीन बार देखा, हमेशा धुंध भरी, उमस वाली रातों में। उन्होंने कहा, "जब मैं उस जगह पर पहुँची तो मेरे कानों में एक अजीब सी झनझनाहट सुनाई दी।" उन्हें पूरा यकीन था कि उन्होंने जो देखा वह एक लैंप था जो धीरे-धीरे झूल रहा था। अचानक, बिना किसी कारण के उन्हें पसीना आने लगा। मैंने पाया कि वह एक मानसिक रूप से संवेदनशील महिला थीं, और उन्होंने कई बार अपने परिवार के कई सदस्यों की मृत्यु की भविष्यवाणी की थी।

ई. एस. स्किपर जीवन के सुनहरे वर्षों में एक चुस्त-दुरुस्त, लेकिन जोशीले और बेहद सतर्क व्यक्ति हैं। वे अटलांटिक कोस्ट लाइन पर माल ढुलाई का काम करते थे और मैको लाइट ट्रेन को देखते हुए बड़े हुए, ठीक वैसे ही जैसे नियाग्रा के बच्चे नियाग्रा फॉल्स को देखते हुए बड़े होते हैं।

“मैंने इसे सैकड़ों बार देखा है,” उसने बताया। “मैंने इसे ट्रेनों को रोकने के लिए इशारा करते देखा है—यह बिल्कुल रेल की लालटेन की तरह हिलता था। एक बार मैंने अपनी बंदूक ली और उसकी ओर चल पड़ा। जैसे-जैसे मैं पास पहुँचा, रोशनी इतनी तेज़ हो गई कि मैं मुश्किल से देख पा रहा था। अचानक, वह पटरियों के दाहिनी ओर स्थित पुराने कैथोलिक कब्रिस्तान में गायब हो गया।”

मैंने पूछा, "कब्रिस्तान?" क्योंकि मैंने इस इलाके में किसी कब्रिस्तान के बारे में नहीं सुना था।

श्रीमान स्किपर को पूरा यकीन था कि वहाँ कुछ था। मैंने तुरंत इसकी जाँच करने का वादा किया। मैंने कहा, "चूँकि आप प्रकाश के इतने करीब आ गए थे, श्रीमान स्किपर, तो शायद आप मुझे बता सकते हैं कि वह नज़दीक से कैसा दिखता था।"

"ओह, मैं उससे भी ज़्यादा करीब पहुँच गया था—1929 की बात है, मुझे अच्छी तरह याद है। सुबह के 2 बजे थे। मैं उससे छह फुट की दूरी तक पहुँच गया था।"

"आपने क्या देखा?"

“मैंने एक लौ देखी। मेरा मतलब है, प्रकाश के बीचोंबीच, स्पष्ट रूप से, एक लौ जल रही थी।”

“लालटेन की तरह?”

“लालटेन की तरह।”

मैंने श्री स्किपर को धन्यवाद दिया और अपने अंतिम गवाह, संपादक थॉमस की ओर मुड़ने ही वाला था कि श्रीमती ई. आर. रिच, जिन्होंने पहले ही अखबार में अपना बयान दे दिया था, ने एक और मिनट मांगा, जो मैंने सहर्ष उन्हें दे दिया।

श्रीमती रिच ने कहा, “दस साल पहले, एक शाम हम ट्रैक पर थे। मेरा बेटा रॉबर्ट मेरे साथ कार में था, और मेरा बड़ा बेटा रोशनी देखने के लिए ट्रैक पर चला गया। अचानक कार के सामने एक नहीं बल्कि दो रोशनी दिखाई दीं। वे गोल थीं और उनसे रोशनी निकल रही थी, और वे चमक रही थीं—एक पल के लिए वे वहीं ठहरीं, फिर एक चली गई, दूसरी वहीं रह गई। उस पल मेरे पैर ठंडे पड़ गए और मुझे बहुत अजीब सा महसूस हुआ।”

मैंने कहा, "मिस थॉमस, क्या आप इस ढेर सारी जानकारी में अपने अनुभव भी जोड़ेंगी?"

“बेशक,” स्टार-न्यूज़ की महिला संपादक ने जवाब दिया। “हम तीन महिला पत्रकार थीं, जिन्होंने कुछ हफ़्ते पहले पुल पर जाकर कुछ भी न देखने का फैसला किया था।”

"मैं क्षमा चाहता हूँ?"

"हमने यह तय कर लिया था कि हम जो बाल्डविन के भूत को मिल रही तमाम पब्लिसिटी से प्रभावित नहीं होंगे।"

"क्या हुआ?"

“जब हम ट्रैक पर पहुँचे, तो कुत्ते भौंक रहे थे मानो वातावरण में किसी चीज़ से परेशान हों। हमने ट्रैक के समानांतर चलने वाली कच्ची सड़क पर गाड़ी खड़ी की और इंतज़ार करने लगे। थोड़ी देर बाद, रोशनी दिखाई दी। उसमें पीली चमक थी। फिर अचानक, रात के आकाश में दो रोशनी दिखाई दीं, एक दूसरी से बड़ी, जो झूल रही थीं।”

कुछ देर बाद बत्तियाँ लाल रंग की हो गईं। उनका गाड़ियों की बत्तियों से कोई संबंध नहीं था। पहले तो मुझे लगा कि कोई ट्रेन हमारी तरफ आ रही है, बत्तियाँ इतनी तेज़ दिखाई दे रही थीं। फिर अचानक ही बत्तियाँ गायब हो गईं। एक बत्ती पटरी के बाईं ओर एक चाप बनाते हुए घास में जा गिरी।

"ठीक वैसे ही जैसे उन पुरानी कहानियों में बताया गया है कि जो की लालटेन ने किया था, है ना?"

"ऐसा लगता तो है, हालांकि इस पर विश्वास करना मुश्किल है।"

आपने और क्या देखा?

मुझे ऐसा महसूस हुआ कि मैं अकेला नहीं हूँ।

और बस यही है। सामूहिक उन्माद? स्व-सम्मोहन? सुझाव? क्या ये सभी लोग एक जैसी कहानियां गढ़ सकते हैं?

मैको लाइट अपने विशिष्ट पहलुओं में अद्वितीय है, लेकिन अन्य प्रकाश भी उन स्थानों पर देखे गए हैं जहाँ दुखद घटनाएँ घटी हैं। कोलोराडो में केंद्रित ऊर्जा या प्रकाश के गोलों के रूप में प्रकट होने वाली प्रेतों की रिपोर्टें हैं। मुझे इसमें कोई संदेह नहीं है कि मानव व्यक्तित्व ऊर्जा का एक रूप है जिसे नष्ट नहीं किया जा सकता, केवल रूपांतरित किया जा सकता है। ट्रेन की आवाज़ सुनने वाला व्यक्ति, कई लोगों द्वारा अनुभव की गई मानसिक ठंडक, प्रकाश के भीतर की लौ, अखबार बेचने वाली महिलाओं द्वारा स्पष्ट रूप से पहचाने गए दो प्रकाश—संभवतः जो की लालटेन और तेज़ी से आती ट्रेन की हेडलाइट—ये सभी मिलकर एक मामले की ओर इशारा करते हैं।

उस शाम, बोगडेन हॉल में, लगभग पाँच सौ लोगों की भीड़ के सामने, मैंने यह दृढ़ विश्वास व्यक्त किया कि मैको स्टेशन की पटरी वास्तव में प्रेतवाधित है। मैंने समझाया कि अचानक हुई मृत्यु के सदमे के कारण जो बाल्डविन की आत्मा त्रासदी स्थल पर ही अटक गई होगी और बार-बार अंतिम क्षणों को दोहरा रही होगी।

मुझे नहीं लगता कि हम यहाँ किसी ऐसी "आध्यात्मिक छाप" की बात कर रहे हैं जो वातावरण में दर्ज हो और जिसका अपना कोई अस्तित्व न हो। यह प्रेत अलग-अलग लोगों के साथ अलग-अलग तरह से व्यवहार करता है और मुझे तो यह एक सच्चा भूत लगता है, जो जीवित लोगों से संवाद करने का प्रयास तो कर सकता है, लेकिन अपनी स्थिति या अपने प्रयासों की निरर्थकता से पूरी तरह अवगत नहीं है।

मैं इस घटना की सत्यता के प्रति आश्वस्त था और अभी भी हूं, और अन्य क्षेत्रों में देखी गई अन्य "बुनाई वाली रोशनी" से इसकी तुलना करने पर, मैं केवल यही निष्कर्ष निकाल सकता हूं कि मूल लोककथा सही दिशा में है, सिवाय इसके कि जो संभवतः अपना सिर नहीं ढूंढ रहा है -

बल्कि वह एक काल्पनिक ट्रेन को अपनी अलग हुई कार से टकराने से रोकने की कोशिश कर रहा है, जो निश्चित रूप से अब केवल उसके विचार जगत में मौजूद है।

और जब तक कोई जो को यह नहीं बता देता कि अब सब ठीक है, तब तक वह अपनी रोशनी लहराता रहेगा। मैंने ऐसे मौकों के लिए सही शब्द कहने की कोशिश की, लेकिन मेरी पसंदीदा माध्यम, श्रीमती एथेल मेयर्स, मेरे साथ नहीं थीं, इस वजह से मैं थोड़ा असमर्थ रहा; साथ ही, विलमिंगटन के लोगों को यह विचार पसंद नहीं आया कि उनके शहर का भूत स्वर्ग सिधार जाए और पुलिया एक साधारण रेल पटरी बनकर रह जाए।

लेकिन इसके आस-पास रहने वाले लोगों को इससे कोई आपत्ति नहीं होती। वे जो बाल्डविन और उनके कुछ अटपटे प्रशंसकों के बिना भी आराम से रह सकते हैं।

अचानक मेरे मन में यह विचार आया कि हमारे पास इस बात का कोई सबूत नहीं है कि इस इलाके में कभी कोई जो बाल्डविन नाम का व्यक्ति सचमुच मौजूद था। अगली सुबह मैं विलमिंगटन पब्लिक लाइब्रेरी गया और सौ साल पहले के इस इलाके से संबंधित फाइलों और ऐतिहासिक स्रोतों की छानबीन शुरू कर दी। बिल मिचम और मैंने 1866 से लेकर अब तक के सभी अखबार पढ़ने शुरू किए, लेकिन कुछ देर बाद हमने पढ़ना बंद कर दिया। इसके बजाय, मुझे एक अंतर्ज्ञान हुआ, जो अंततः सही साबित हुआ। अगर जो बाल्डविन रेलगाड़ी में ट्रेनमैन जैसे इतने खतरनाक काम के लिए शारीरिक रूप से फिट थे, तो वे किसी न किसी समय सशस्त्र बलों में शामिल होने के लिए भी पर्याप्त रूप से स्वस्थ रहे होंगे।

मैंने 1867 से लेकर पीछे तक के रेजिमेंटल रिकॉर्ड्स की खोज शुरू की। अंततः मुझे 1901 में प्रकाशित 'नॉर्थ कैरोलिना रेजिमेंट्स' नामक पुस्तक के खंड V, पृष्ठ 602 में निम्नलिखित प्रविष्टि मिली:

जोसेफ बाल्डविन, कंपनी एफ, 26 वीं नॉर्थ कैरोलिना रेजिमेंट, जांघ में गंभीर रूप से घायल। गेटिसबर्ग की लड़ाई। 1 जुलाई, 1863।

उस इलाके में, या यूं कहें कि पूरे राज्य में, जोसेफ बाल्डविन का नाम दर्ज होने वाला वह एकमात्र व्यक्ति था।

मैंने पुराने कैथोलिक कब्रिस्तान के बारे में भी पूछताछ की। यह वास्तव में रेलवे ट्रैक के पास ही था, लेकिन कई वर्षों से इसका उपयोग नहीं हो रहा था। केवल बुजुर्ग ही इसे याद करते थे। बाल्डविन शायद कैथोलिक रहे होंगे, जैसे कि इस क्षेत्र के कई निवासी हैं। समय की कमी के कारण मैं जीर्ण-शीर्ण कब्रों के बीच जो बाल्डविन के नाम वाली कब्र को नहीं ढूंढ पाया।

लेकिन इसे ढूंढना और यह देखना दिलचस्प होगा कि क्या जो बाल्डविन का पूरा शरीर किसी पवित्र भूमि में दफन है!

*118

ट्रेन में बैठी महिला (स्विट्जरलैंड)

रात की ट्रेन ने एक और तीखी सीटी बजाई, फिर वियना के बिल्कुल नए वेस्टर्न स्टेशन से रवाना हो गई। अगली सुबह तक वह स्विट्जरलैंड के ज्यूरिख में होगी। हवाई जहाज से यही यात्रा एक घंटे में तय की जा सकती है, लेकिन 10,000 फीट की ऊंचाई से कितने पहाड़ और झीलें देखी जा सकती हैं? इसलिए रात की ट्रेन को पसंद करने वाले लोगों की संख्या हमेशा काफी होती है, कम से कम इतने तो होते ही हैं कि यह ट्रेन इतने सालों से चलती आ रही है। ट्रेनों के हिसाब से यह एक अच्छी ट्रेन है, अमेरिकी ट्रेनों से कहीं ज्यादा साफ-सुथरी और बेहतर। स्लीपर आरामदायक हैं और डाइनिंग कार में अच्छा खाना मिलता है, और सूप उस तरह से नहीं उछलता जो आजकल की खस्ताहाल अमेरिकी डाइनर में आपके चेहरे पर आधा आ गिरता है।

अब ट्रेन तेज़ रफ़्तार से चल रही थी, वियना के विशाल उपनगरों को पीछे छोड़ते हुए। ह्यूटेलडॉर्फ-हैकिंग, जिसे वियना के मुख्य क्षेत्र का अग्रिम स्टेशन कहा जाता था, से गुज़रने के बाद, यह एक एक्सप्रेस ट्रेन बन गई और पटरियों की खट-खट की आवाज़ एक सुगम और तेज़ यात्रा में बदल गई। यात्री अब अपनी गद्देदार सीटों पर आराम से बैठ सकते थे और यात्रा का आनंद ले सकते थे। यह सच है कि टुलन के बाद ही नज़ारा दिलचस्प होगा, लेकिन तब तक अंधेरा छाने लगेगा। लेकिन सुबह लगभग 6 बजे ट्रेन की खिड़कियों से पहाड़ों का नज़ारा देखना, यात्रा के अंधेरे हिस्सों की भरपाई कर देगा। ज़्यूरिख़ एक्सप्रेस प्रसिद्ध ओरिएंट एक्सप्रेस जितनी भव्य नहीं थी, लेकिन कम शानदार भी नहीं थी, और रेलवे अपने यात्रियों को

हवाई यात्रा करने से रोकने के लिए हर संभव प्रयास करता था। यहाँ तक कि वॉशरूम में परफ्यूम की बोतलें और डिब्बों में फूल भी रखे जाते थे। पेन-सेंट्रल ऐसा करके देखे!

आराम महसूस कर रही यात्रियों में से एक छोटी कद की, लाल बालों वाली महिला थी, जिसकी बड़ी-बड़ी काली आँखें थीं और उसके हाव-भाव से साफ पता चलता था कि वह एक शो बिजनेस महिला है। बेशक, उसने अच्छे कपड़े पहने थे, लेकिन उसका पहनावा और शैली किसी आम वियना की गृहिणी या यहाँ तक कि किसी संभ्रांत महिला के लिए कुछ ज़्यादा ही दिखावटी थी। उसके कपड़ों या व्यवहार में कोई कमी नहीं थी, लेकिन वह आत्मविश्वास से भरी हुई लग रही थी, इतनी ज़्यादा कि वह अकेले ज्यूरिख जा रही किसी आम पत्नी या बहन जैसी नहीं लग रही थी। उसके सामान ने लगभग सारी जगह घेर रखी थी, जिससे अगर वह अपना कंपार्टमेंट किसी और के साथ शेयर करती तो उसके लिए बहुत कम जगह बचती। सौभाग्य से, वह अकेली थी, और स्लीपिंग कंपार्टमेंट का पूरी तरह से खाली होना इस समय उसके आराम को और भी बढ़ा रहा था।

रीटा अटलांटा दिन ढलते हुए क्षणों में बीते हफ्तों पर विचार कर रही थीं। उन्होंने वियना में अपना सफल कार्यक्रम समाप्त किया था, जहां दो महीने तक उनके नाइट क्लब में हाउसफुल शो हुए थे। उनका शो किसका था? रीटा एक स्ट्रिपटीज़ डांसर हैं, और आज के दौर में, जब हर तरफ़ अतिवाद का बोलबाला है—जैसे टॉपलेस डांसर और बॉटमलेस कोरस डांसर—इस कुछ हद तक "पुराने ज़माने" के क्षेत्र में वह सर्वश्रेष्ठ डांसरों में से एक हैं। लेकिन रीटा, भले ही वह सार्वजनिक रूप से अपने कपड़े उतारती हैं, एक सभ्य महिला हैं। उनकी शादी एक उच्च पदस्थ अमेरिकी अधिकारी से हुई थी, जिनसे उनकी मुलाकात जर्मनी में हुई थी। उन्होंने रीटा को अपना पेशा छोड़ने के लिए कहने के बजाय, इसे जारी रखने पर ज़ोर दिया। यह बात जनरल को पसंद नहीं आई, लेकिन सैनिकों को उनका शो बहुत पसंद आया और उनके शो हमेशा हाउसफुल रहते थे। अंततः, उनके पति का देहांत हो गया और रीटा ने अपना समय यूरोप में अपने कार्यक्रमों और बोस्टन के पास स्थित अपने आरामदायक ट्रेलर में बिताना शुरू कर दिया। उनका बेटा बड़ा हो रहा था और स्कूल जा रहा था, और रीटा का जीवन काफी व्यवस्थित और शांतिपूर्ण था। वह एक अच्छे ऑस्ट्रियाई परिवार से आई थी और ऐसे लोगों के बीच पली-बढ़ी थी जो युद्ध और कब्जे की भयावहता से भलीभांति परिचित थे।

किसी तरह वह उन भयानक वर्षों को भूल चुकी थी और अब जब वह यूरोप की यात्रा करती थी तो कभी-कभार ही कोई बात उसे उनकी याद दिला देती थी।

बचपन से ही रीता में असाधारण अलौकिक शक्तियां थीं। किसी रिश्तेदार की मृत्यु की खबर उसे बहुत पहले ही पता चल जाती थी और वह किसी को देखकर ही जान जाती थी कि जल्द ही उसकी मृत्यु होने वाली है। यह क्षमता उसे बिल्कुल भी पसंद नहीं थी, लेकिन चाहे पसंद हो या न हो, यह उसके साथ बनी रही। फिर, जब वह बोस्टन के पास एक छोटे से घर में रहने लगी, तो उसे जल्द ही पता चला कि उसे एक भूत भी विरासत में मिला है। वह बार-बार सुबह तीन बजे एक बड़े आदमी के भूत से जाग जाती थी, जो चौड़ी किनारी वाली टोपी पहने उसके बिस्तर के नीचे से उसे घूर रहा होता था। बाद में पता चला कि पास ही एक आदमी को कार ने कुचल दिया था।

शो बिजनेस से जुड़े लोग अनजाने विषयों पर बात करना पसंद करते हैं और वह अक्सर ड्रेसिंग रूम में अपने दोस्तों को अपने अनुभवों के बारे में बताती रहती थी। अपनी इस खास प्रतिभा के कारण उसने कई दोस्त बनाए और हालांकि वह इन सब बातों को मिली-जुली भावनाओं से देखती थी, लेकिन वह जानती थी कि उसे जीवन भर इसके साथ जीना होगा।

अब जब उनका ग्रीष्मकाल समाप्त हो चुका था और उन्हें शरद ऋतु में एक अच्छा कार्यक्रम मिलने की उम्मीद थी, तो उन्होंने कुछ समय की छुट्टी लेकर स्विट्जरलैंड के लोकार्नो में अपनी एक पुरानी दोस्त के घर जाने का फैसला किया। सुसान वेस्ट इस यात्रा से दो साल पहले बीमार थीं, लेकिन कैंसर के सफल ऑपरेशन से बीमारी का फैलाव रुक गया था और उन्हें ठीक घोषित कर दिया गया था। इसलिए उनकी दोस्त ने रीटा के आने का स्वागत किया, क्योंकि वह अपने जीवन में कभी इतनी अच्छी महसूस नहीं कर रही थीं।

जैसे-जैसे रोशनी कम होती गई, ट्रेन की खिड़की से बाहर का नज़ारा और भी मनमोहक होता गया। वाचौ घाटी की पहाड़ियाँ क्षितिज पर स्पष्ट रूप से उभर रही थीं और डेन्यूब नदी किसी सच्चे रोमांटिक सफर का एहसास करा रही थी। रीटा ने ऊपर की बत्तियाँ धीमी कर दीं और कुछ देर आराम से लेट गई। तभी रेल की एकरस आवाज़ ने उसे थका दिया। उसने कपड़े उतारे और बिस्तर पर लेट गई, ऊपर की बत्तियाँ बंद कर दीं और बगल वाला लैंप जला लिया। लेकिन उसे नींद नहीं आ रही थी। एक तो उसके पेशे में देर रात तक सोना नहीं पड़ता था,

और इस आदत की वजह से उसे जल्दी सोना मुश्किल हो रहा था। फिर, बाहर की अक्टूबर की ठंडी हवा ने उसे तरोताज़ा कर दिया और उसने बत्तियाँ बंद करने से पहले थोड़ा पढ़ने का फैसला किया।

उसने वेस्टर्न स्टेशन से कुछ पत्रिकाएँ खरीदी थीं और अब वह उन्हें पलट रही थी, हमेशा इस उम्मीद में कि शायद उसे कहीं अपनी तस्वीर या अपना जिक्र मिल जाए - यह एक पेशेवर आदत है जो ज्यादातर शो बिजनेस से जुड़े लोगों में होती है।

लगभग बीस मिनट बाद, उसे नींद आने लगी और उसने पत्रिकाएँ नीचे रख दीं। फिर उसने लाइट बंद कर दी और सोने की तैयारी करने लगी। कुछ ही मिनटों में वह गहरी नींद में सो गई।

अचानक ही वह जाग उठी। बाहर काफी अंधेरा हो चुका था और ट्रेन एकदम शांत थी। उसे पता नहीं था कि वह कितनी देर सोई थी, लेकिन उसे लग रहा था कि कई घंटे सो चुकी होगी। फिर भी, वह पूरी तरह से जाग चुकी थी और सोचने लगी कि अचानक उसकी नींद क्यों खुली। उसने अपना सिर घुमाया और बिस्तर से नज़र हटाकर डिब्बे की ओर देखा। चाँद न होने के बावजूद, खिड़कियों से परावर्तित होकर इतनी रोशनी आ रही थी कि उसे छोटे से कमरे में हर चीज़ की रूपरेखा दिखाई दे रही थी। वहाँ, उसके बिस्तर के सामने, एक ऐसी महिला थी जिसे उसने अपनी पूरी ज़िंदगी में कभी नहीं देखा था, वह उसके सामने ज़मीन पर घुटनों के बल बैठी थी!

अचानक झटके से वह उठ बैठी और उस आकृति को घूरने लगी। इस घुसपैठ से स्तब्ध होकर, वह बस यही सोच रही थी कि वह औरत उसके कमरे में कैसे घुस आई होगी। वह औरत घुटनों के बल बैठी थी, हाथ सिर के ऊपर उठाए हुए, ऊपर की ओर देख रही थी। रीटा ने उसका चेहरा देखा, एक सांवली रंगत वाली, काले बालों वाली औरत का चेहरा, शायद मैक्सिकन या लैटिन मूल की। उस औरत के चेहरे पर घोर भय था, मानो उसके साथ कुछ भयानक होने वाला हो!

रीता बुरी तरह डर गई थी, उसका दिल ज़ोर से धड़क रहा था, फिर भी वह हिल भी नहीं पा रही थी। तभी उसने लाइट जलाने के लिए स्विच ढूंढना शुरू किया। स्विच ढूंढने और उसे चालू करने में उसे कुछ सेकंड लगे, जो उसे घंटों जैसे लग रहे थे।

जब डिब्बे में रोशनी फैली, तो वह प्रेत गायब हो गया। रीटा ने झट से दरवाज़ा खोलने की कोशिश की, लेकिन वह मज़बूती से बंद था, ठीक वैसे ही जैसे उसने सोने से पहले छोड़ा था। अगर वह महिला जीवित होती, तो किसी भी तरह से डिब्बे में नहीं घुस सकती थी। लेकिन रीटा को ट्रेलर में अपने पिछले अनुभव से पता था कि वह किसी इंसान से नहीं, बल्कि किसी और से थी: "क्या ट्रेनों में भी भूत होते हैं?" उसने सोचा, और फिर उसे लगा कि इसका उसकी दोस्त सुसान से कुछ संबंध है।

यह बात समझ में नहीं आ रही थी, लेकिन वह इस भावना को दूर नहीं कर पा रही थी कि वह प्रेत जैसी दिखने वाली महिला उसकी दोस्त से जुड़ी हुई थी, जो उसे सुसान के लिए आने वाले खतरे के बारे में चेतावनी देने आई थी।

शायद यह कोई भूत है, इस डिब्बे में किसी की हत्या हुई हो, उसने यह सोचकर समझाने की कोशिश की, लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ। उसकी अंतरात्मा ने उसे बताया कि ऐसा नहीं है।

इस पूरी घटना ने उनकी अन्यथा सुखद यात्रा पर उदासी का साया डाल दिया, लेकिन अंततः वह वापस सो गईं और कुछ हद तक अधिक शांत होकर ज्यूरिख पहुंचीं।

उसने ट्रेन बदली और बेलिनज़ोना जाने वाली ट्रेन पकड़ी, जहाँ उसकी सहेली और भावी मेज़बान उससे मिलने वाली थी और उसे लोकार्नो के बाहर एक छोटे से कस्बे तक ले जाने वाली थी, जहाँ वह रहती थी। बेलिनज़ोना में सुज़ैन को देखकर रीटा का डर गायब हो गया। उसकी सहेली बेहद खूबसूरत लग रही थी और साफ तौर पर स्वस्थ थी। वास्तव में, वह पिछली बार जब उसने उसे देखा था, उससे कई साल छोटी लग रही थी। उसने अपने बालों का रंग लाल करवा लिया था और वह उस पर खूब जंच रहा था। दोनों महिलाओं ने एक-दूसरे को गले लगाया और दक्षिण की तेज़ धूप ने रीटा को ज्यूरिख जाने वाली ट्रेन के भयानक अनुभव को तुरंत भुला दिया।

अब वे दोनों साथ में लोकार्नो की यात्रा पर निकले, और समय बिताने के लिए, या शायद किसी तरह की तसल्ली पाने की आंतरिक प्रेरणा से, रीटा ने सुसान को ट्रेन में हुए उस दृश्य के बारे में बताया। लेकिन उसने अपने भीतर के उस डर का ज़िक्र नहीं किया कि वह दृश्य उसकी सहेली के लिए किसी अशुभ संकेत का संकेत दे रहा था।

“मुझे उम्मीद है कि इसका मुझसे कोई लेना-देना नहीं है,” सुसान ने कहा, मानो वह रीटा के मन की बात पढ़ रही हो। रीटा ने तुरंत उसे आश्वस्त किया कि ऐसा नहीं है, और हो भी नहीं सकता।

"लोकार्नो में ट्रेन में मौजूद एक भूत का तुमसे क्या संबंध हो सकता है?" उसने तर्क दिया, लेकिन उसकी सहेली निश्चिंत नहीं थी।

“मुझे नहीं पता,” उसने कहा और फिर उन्होंने विषय बदल दिया। कुछ देर बाद वे लोकार्नो के पास टेनेरो में स्थित उसके अपार्टमेंट में पहुँचे और दोपहर-शाम पुरानी यादों और भविष्य की योजनाओं पर बातें करते हुए गुज़री। जब सोने का समय हुआ, तो रीटा को उसकी सहेली के लिविंग रूम में एक बिस्तर दिया गया। उसकी मेज़बान अपार्टमेंट के बेडरूम में सोई।

वह जगह सुंदर और नई थी और रीटा को देखते ही पसंद आ गई। अब वह अपनी यात्रा के लिए उत्सुक थी, और ट्रेन का अनुभव उसके लिए और भी पीछे छूट गया।

उसने कुछ देर तक पढ़ा, जैसा कि उसकी आदत थी, फिर उसने बत्ती बंद कर दी और चुपचाप अंधेरे में लेट गई, नींद आने का इंतजार करने लगी ताकि नींद उसके सारे विचारों को मिटा दे।

जैसे-जैसे वह धीरे-धीरे नींद में डूब रही थी, ट्रेन में हुए अपने अनुभव से जुड़ी किसी भी याद या विचार से जानबूझकर बचते हुए, उसे अपने चारों ओर एक अदृश्य शक्ति का आभास हुआ। उसने अपने परिवेश से अपरिचित होने, लंबी यात्रा और यात्रा के रोमांच को अपनी घबराहट का कारण बताया। लेकिन इससे कोई खास मदद नहीं मिली, कमरे में एक अशुभ उपस्थिति का एहसास बना रहा।

कुछ देर बाद उसे ऐसा लगा मानो कमरे के हर कोने से कोई उसे देख रहा हो, कोई ऐसा जिसे वह देख तो नहीं सकती थी लेकिन उसकी तीव्र इंद्रियों ने उसकी उपस्थिति को स्पष्ट रूप से महसूस किया। उसे यह भी ठीक से पता नहीं था कि वह एक व्यक्ति था या अनेक, क्योंकि यह अनुभूति चारों ओर से उस पर छाई हुई थी।

वह रात बहुत खराब गुज़री और उसे मुश्किल से ही नींद आई, लेकिन वह अपनी मेज़बान को परेशान नहीं करना चाहती थी, इसलिए उसने अगली सुबह नाश्ते के समय इस बारे में कुछ

नहीं कहा। इसके बजाय, जैसे ही उसे मौका मिला, वह शहर गई और सबसे तेज़ असर वाली नींद की गोलियां खरीद लाई।

उस रात, गोलियों में मौजूद दवा के कारण उसे लगभग तुरंत ही नींद आने लगी। हालाँकि, उसे उस उपस्थिति का एहसास पहले की रात की तरह ही तीव्र रूप से हो रहा था। लेकिन, क्योंकि उसने गोलियां ले ली थीं, इसलिए उसे इसकी परवाह नहीं थी।

वहाँ पहुँचने के दो दिन बाद, रीटा की मुलाकात सुसान की पड़ोसी श्रीमती रेकाल्काटी से हुई। बातचीत के दौरान, किसी तरह बात भूत-प्रेतों की दुनिया में मुड़ गई, और रीटा को यह जानकर आश्चर्य हुआ कि वह महिला इस संभावना के प्रति बिल्कुल भी शत्रुतापूर्ण नहीं थी कि ऐसी चीजें वास्तव में मौजूद हो सकती हैं।

इस खुले विचारों वाले रवैये से प्रोत्साहित होकर, रीटा ने पड़ोसी से अपनी बात साझा की और उसे ट्रेन में हुए अपने भूतिया अनुभव और उसके बाद अपार्टमेंट में महसूस हुई अजीबोगरीब संवेदनाओं के बारे में बताया।

"मुझे ऐसा लग रहा है कि सुसान मरने वाली है," उसने अपने निराशाजनक विचारों को किसी तरह रोक पाने में असमर्थ होकर कहा।

पड़ोस की महिला पहले तो चौंक गई, लेकिन फिर उसने सहमति में सिर हिलाया। "सुसान की तबीयत कुछ दिनों से ठीक नहीं है," उसने कहा और रीटा सिहर उठी। उसने तो बस कई सालों बाद दो पुराने दोस्तों के मिलन की अपार खुशी देखी थी।

उनकी यात्रा के लिए आवंटित पाँच दिन जल्दी बीत गए। वह वियना और अपने अपार्टमेंट में लौट आईं। अंधेरे में किसी अदृश्य शक्ति की घूरती निगाहों के बिना एक कमरे में रात बिताना अच्छा लगा।

पहले दो दिन तो उसने बस आराम किया—छुट्टियों से मिली छुट्टी का आराम। फिर उसने अपनी एक करीबी दोस्त एल्फी हार्टल को ट्रेन में और लोकार्नो में हुई सारी बातें बताईं।

कुछ समय बाद, वह अपने बेटे के साथ क्रिसमस की छुट्टियों के लिए अमेरिका लौट आई और उसने फिर से उस घटना के बारे में अपने बेटे और कुछ अमेरिकी दोस्तों से बात की। लेकिन उसके बाद, मामला वहीं खत्म हो गया और फिर कभी चर्चा नहीं हुई। रीटा अपनी रोजमर्रा की

जिंदगी में व्यस्त थी और मानसिक मामलों से उसका जितना कम वास्ता रहता, उतना ही उसके लिए बेहतर था।

यह पूरी तरह संभव नहीं था, क्योंकि उसके ट्रेलर में भूतिया घटनाएं कभी बंद नहीं हुईं। लेकिन अब तक उसने अपने रात के 3 बजे आने वाले "आगंतुक" को स्वाभाविक मान लिया था और उससे उसे कोई खास परेशानी नहीं होती थी। आखिरकार, वह मर चुका था और वह जानती थी कि इससे उसका या उसके किसी करीबी का कोई लेना-देना नहीं है। अगर वह किसी अजीब कारण से उसके ट्रेलर में आना चाहता था, तो उसे कोई आपत्ति नहीं थी। उसने कई बार अपना निवास बदलने या ट्रेलर को कहीं और ले जाने के बारे में सोचा था, लेकिन एक भूत के कारण इतनी परेशानी उठाना उसे ठीक नहीं लगता था। इसके अलावा, उसने ट्रेलर कैंप में दोस्त बना लिए थे और उसका बेटा पास के स्कूल में पढ़ता था।

इस बीच, उनके प्रदर्शन की मांग पहले की तरह ही बनी हुई थी। "शैम्पेन ग्लास वाली लड़की" के नाम से मशहूर रीटा ने अपने नियमित प्रदर्शन में एक प्राच्य नृत्य शैली को भी शामिल कर लिया था, और बेली डांसर के रूप में उनकी मांग स्ट्रिपटीज़ कलाकार से भी कहीं अधिक थी। संयुक्त राज्य अमेरिका में सैकड़ों छोटे क्लब इस तरह की प्रतिभा का उपयोग करते हैं और रीटा ने देश भर में यात्रा करते हुए सर्दियों का व्यस्त मौसम बिताया।

किसी तरह, तंत्र-मंत्र में उसकी रुचि की बात फैल गई थी, शायद इसलिए कि वह कभी-कभी साथी कलाकारों के साथ इस बारे में बात करना पसंद करती थी। एजेंट और मैनेजर अपनी हथेलियाँ आगे करके "भविष्यवाणी" करवाने के लिए कहते, मानो रीटा कोई सर्कस की घुमक्कड़ हो। रीटा ने बेशक मना कर दिया, लेकिन उसने एक सामान्य ज्योतिषी और एक ऐसे व्यक्ति के बीच का अंतर समझाने की जहमत नहीं उठाई, जिसके पास वास्तव में अलौकिक शक्ति (ईएसपी) हो और जो उन चीजों में गंभीर रुचि रखता हो जिन्हें वह नहीं चाहती थी, लेकिन फिर भी अपने भीतर मौजूद पाती थी।

फिर भी, अनजाने में ही सही, वह कभी-कभी अपने दोस्तों को अपने मन की बात बता देती थी, और बाद में पता चलता था कि जो उसने casually कहा था, वह सब सच हो गया था। इससे उसे अपनी इस मानसिक क्षमता पर ज़रा भी गर्व नहीं हुआ। बल्कि, वह खुद से बार-बार

पूछती रहती थी, मुझे क्या हो गया है? मैं भूत नहीं देखना चाहती; मैं लोगों का भविष्य या दुर्भाग्य नहीं बताना चाहती—मैं बस उन शक्तियों से दूर रहना चाहती हूँ जो ये सब करती हैं।

वह अपने प्रदर्शन के दौरान सबसे उग्र उद्घोषकों को भी संभाल सकती थी, और ज़रूरत पड़ने पर सबसे अभद्र टिप्पणी को भी चुप करा सकती थी। लेकिन यह अलग था। आप उस चीज़ से कैसे निपट सकते हैं जिसे आप देख या सुन नहीं सकते, जो आपके भीतर मौजूद है?

बाल्टीमोर में एक दिन, वह एक स्थानीय क्लब के बैकस्टेज पर अपने ड्रेसिंग रूम में बैठी थी। फरवरी 1968 का वह दिन बर्फीला था और ठंड के बावजूद कारोबार अच्छा चल रहा था। शायद इसी वजह से, उसने सोचा, पुरुष एक खूबसूरत लड़की को कपड़े उतारते देखना चाहते थे। प्रदर्शनों के बीच उसके पास कुछ खाली समय था, और उसके बेटे ने बोस्टन से उसके लिए चिट्ठियाँ भेजी थीं।

प्रशंसकों के पत्रों के ढेर को सरसरी तौर पर देखते हुए, उसकी नज़र एक अपरिचित स्टाम्प पर पड़ी। यह लोकार्नो से आया एक पत्र था। उसने झट से लिफाफा खोला। यह पत्र सुसान के बेटे का था। सुसान का निधन उसी वर्ष 7 जनवरी को हो गया था। पत्र पढ़ते हुए, उसके मन में बार-बार उसकी लाल बालों वाली सहेली की छवि उभर रही थी, और याद आ रही थी कि उनकी आखिरी मुलाकात के दौरान वह कितनी जीवंत और खुशमिजाज थी।

फिर, एक सिहरन के साथ, उसे ट्रेन में मिली उस महिला की याद फिर से आ गई, और रीटा को अचानक एहसास हुआ कि यह कोई ऐसी महिला है जिसका संबंध सुसान की मौत से है। लेकिन इस चेतावनी को पाने के लिए उसे ही क्यों चुना गया, सुसान को क्यों नहीं? क्या वह अपने सभी दोस्तों के लिए "दोहरी कड़ी" थी और क्या उसे अपनी दोस्त को इस चेतावनी के बारे में बताना चाहिए था? "नहीं," उसने मन ही मन कहा, "नहीं," इससे धरती पर उसके आखिरी कुछ खुशहाल महीने बर्बाद हो जाते। एक गहरी साँस लेते हुए रीटा ने चिट्ठी को बाकी चिट्ठियों के साथ रख दिया और अगले प्रदर्शन के लिए खुद को तैयार किया।

वह अक्सर वियना में रहती है, लेकिन अब ज्यूरिख जाने वाली रात की ट्रेन उसके लिए वर्जित है। शायद हवाई जहाज़ों में भी भूत होते हैं, लेकिन कम से कम ज्यूरिख की उड़ान में केवल एक घंटा लगता है।

*119

द लेडी ऑफ द गार्डन (कैलिफोर्निया)

बागवानी मानव की सांस्कृतिक विरासत की उत्कृष्ट अभिव्यक्तियों में से एक है, क्योंकि इसकी जड़ें प्रारंभिक ग्रीक और रोमन संस्कृतियों तक जाती हैं, और शायद उससे भी पहले बेबीलोनियन और चाल्डियन साम्राज्यों तक। नीनवे के लटकते बगीचे आधुनिक मनुष्य की कल्पना से कहीं अधिक भव्य थे, चाहे उसे बागवानी का कितना भी ज्ञान क्यों न हो। और सलोना में सम्राट डायोक्लेटियन के गुलाब के बगीचे, जहाँ उन्होंने अपने जीवन के अंतिम वर्ष बिताए, हमारे यहाँ के बगीचों से कहीं अधिक भव्य थे।

बागवानी एक स्वास्थ्यवर्धक उपाय भी है, क्योंकि यह दो उद्देश्यों को बखूबी पूरा करती है: यह मनुष्य को शारीरिक व्यायाम प्रदान करती है, और प्रकाश संश्लेषण की रासायनिक प्रक्रिया के माध्यम से उसके आसपास की हवा को शुद्ध करती है, यह एक चमत्कारी व्यवस्था है जिसके द्वारा कार्बन डाइऑक्साइड प्राकृतिक रूप से ऑक्सीजन में परिवर्तित हो जाती है।

पूर्वी राज्यों में रहने वाले अमेरिकियों के लिए बागवानी एक दुर्लभ शौक होता है, खासकर अगर वे शहरों में रहते हों। लेकिन धूप से भरे पश्चिमी राज्यों में, यह घर का एक स्वाभाविक हिस्सा है और अक्सर घर की सबसे आकर्षक विशेषता होती है। कैलिफ़ोर्निया के छोटे-छोटे समुदायों के कई नागरिक, आमतौर पर पूर्वी या मध्य-पश्चिमी राज्यों से, अपने जीवन के अंतिम वर्षों में आरामदेह जीवन जीने के लिए वहाँ गए हैं। उनके लिए, बागवानी करने के लिए एक बगीचा होना शायद इस शांत जीवनशैली का एक प्रमुख आकर्षण है।

पश्चिमी जलवायु अधिकांश प्रकार के फूलों, फलों के पेड़ों और लगभग उन सभी पौधों के लिए बहुत अनुकूल है जो आमतौर पर मध्यम और उष्णकटिबंधीय दोनों जलवायु में पाए जाते हैं, इसलिए इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि कैलिफोर्निया के कुछ बगीचे अपने शौकीन मालिकों के लिए रंग और सुगंध के वास्तविक प्रदर्शन स्थल बन जाते हैं।

नाओमी एस. एक विधवा हैं जिन्होंने अपना अधिकांश जीवन कैलिफोर्निया में बिताया है। अपने दूसरे पति के देहांत के बाद से, वह दक्षिणी कैलिफोर्निया के हंटिंगटन पार्क नामक एक शांत समुदाय में रहती हैं, और अब उनके जीवन में कोई बड़ी घटना नहीं घटती। यह स्वाभाविक ही है, क्योंकि उन्होंने एक ऐसी दुनिया की झलक देखी है जिसने उन्हें एक साथ

चकित और भयभीत किया है, और वह चाहती हैं कि वह अनुभव एक धुंधली स्मृति बनकर रह जाए जो अंततः उनके व्यस्त और परिपूर्ण जीवन के अन्य बीते अनुभवों की धुंधली तस्वीरों में घुलमिल जाए।

* * *

उस समय, सन् 1953 में, वह और उनके पति लिनवुड में एक उपयुक्त घर की तलाश कर रहे थे। उन्हें अमेरिकी समुदायों में अक्सर पाए जाने वाले साधारण घर पसंद नहीं थे और जब उन दोनों ने लागो एवेन्यू पर इस अनोखे आकर्षक पुराने घर को देखा, तो वे तुरंत समझ गए कि यही वह घर है जिसकी उन्हें तलाश थी।

ऐसा लग रहा था मानो घर ने ही उन्हें अंदर आकर इसे ले जाने के लिए आमंत्रित किया हो, लेकिन वे इसकी संभावनाओं का पता लगाने के लिए इतने उत्सुक थे कि उन्होंने बहुत बाद तक इस बारे में कभी सोचा ही नहीं।

यह घर नॉर्मन शैली में बना था, पुराने घरों की हूबहू नकल करते हुए लगभग यूरोपीय शैली का लग रहा था, और पत्थर की दीवारों पर तरह-तरह की हरियाली और लताएँ चढ़ी हुई थीं। झाड़ियों और पेड़ों से बाड़ की तरह घिरे होने के कारण यह बेहद एकांत में था, और वहाँ पूर्ण निजता का अहसास होता था। इसके चारों ओर पर्याप्त ज़मीन थी जिससे यह आसपास के समुदाय से और भी दूर हो जाता था, और लिनवुड के ज़ोनिंग कानून काफी सख्त थे, इसलिए उनके बगल में कोई नई इमारत बनने की संभावना न के बराबर थी। वे तुरंत झाड़ियों के पार गए और चारों ओर देखने लगे, शायद यह देखने के लिए कि क्या कोई उन्हें घर दिखा सकता है। बाहर लगे बोर्ड पर "बिक्री के लिए" लिखा था और एक रियल एस्टेट फर्म का नाम दिया गया था, लेकिन यह नहीं बताया गया था कि घर में अभी कोई रहता है या नहीं। जैसे ही वे मुलायम लॉन पार करके घर के पास पहुँचे, उन्हें तुरंत एहसास हो गया कि ऐसा नहीं हो सकता। चारों ओर उपेक्षा के निशान थे और ऐसा लग रहा था कि लंबे समय से इसकी बिल्कुल भी देखभाल नहीं की गई है। जो कभी खूबसूरती से सजाया हुआ बगीचा हुआ करता था, वह अब एक अर्ध-वन्य क्षेत्र बन गया था जिसमें खरपतवारों ने कीमती फूलों को ढक लिया था और झाड़ियाँ अपनी मर्जी से इधर-उधर उग रही थीं।

पिछले मालिक द्वारा बड़ी सावधानी से बनाए गए रास्ते अब पहचाने जाने लायक नहीं थे। बारिश ने उन्हें मिटा दिया था और पक्षियों ने बाकी का काम कर दिया था।

"बहुत काम करना पड़ेगा," उनके पति ने चिंता से बुदबुदाते हुए कहा, क्योंकि चारों ओर तबाही के निशान बिखरे हुए थे। लेकिन वे घर की ओर बढ़ते रहे। वे अंदर नहीं गए, बल्कि पहले उसके चारों ओर ऐसे घूमे जैसे कोई जंगली जानवर अपने शिकार का पीछा करता है। वे अंदर जाने से पहले बाहर का पूरा नजारा, ज़मीन का जायज़ा लेना चाहते थे।

घर के दूसरी तरफ एक सुंदर आँगन था, जो जाहिर तौर पर कभी नाश्ते और भोजन के लिए इस्तेमाल होता रहा होगा। ज़मीन पर एक टूटा हुआ प्याला और एक जंग लगी चम्मच पड़ी थी, लेकिन इसके अलावा आँगन बिल्कुल खाली और शांत था।

“अरे, इन्होंने तो इस जगह को पूरी तरह बर्बाद कर दिया,” श्री एस. ने कहा और अपना सिर हिलाया। वे एक व्यवस्थित व्यवसायी थे और नियमों का पालन करने के आदी थे, और यह बात उन्हें बिलकुल भी समझ नहीं आ रही थी। भला इतनी खूबसूरत जगह का मालिक इसे ऐसे बर्बाद क्यों होने देगा? यह बात उनकी समझ से परे थी।

पूरे मोहल्ले में, एल्म स्ट्रीट पर, घर आलीशान और अच्छी तरह से रखे हुए थे। ऐसा लगता था कि कोई इस छोटे से खूबसूरत घर की भी देखभाल करने में दिलचस्पी रखता होगा। आखिर उस रियल एस्टेट एजेंट ने कभी-कभार सफाई के लिए किसी को क्यों नहीं भेजा? उसने इस बारे में उस एजेंट से पूछताछ करने का फैसला किया।

आंगन से लेकर संपत्ति के अंत तक, झाड़ियों से स्पष्ट रूप से चिह्नित क्षेत्र में, लगभग केवल गुलाब ही गुलाब थे। या यूं कहें कि एक समय ऐसा था। अब भी यह देखा जा सकता था कि किसी ने स्नेहपूर्वक गुलाब की कई कतारें लगाई थीं, लेकिन अब उनमें से कुछ ही खिल रही थीं। इनके बीच में अन्य पौधे उग आए थे और गुलाब के जो कुछ बचे थे, उन्हें सावधानीपूर्वक और तुरंत छांटने की आवश्यकता थी, उनकी पारखी निगाहों ने तुरंत यह बता दिया। फिर भी, अगर उन पर खूब मेहनत की जाए तो गुलाबों के लिए आशा की किरण बाकी थी।

वे आंगन के खुले दरवाजे से घर में दाखिल हुए। अंदर उन्हें लंबे समय से उपेक्षा का एक और सबूत मिला। फर्नीचर अभी भी वहीं था, यानी घर पूरी तरह सुसज्जित था। यह उनके लिए एक

सुखद आश्चर्य था, क्योंकि इससे आर्थिक रूप से उनकी स्थिति काफी बेहतर हो जाएगी, भले ही घर के साथ खरीदी जाने वाली कुछ चीजें बाद में फेंकनी पड़ें।

अंदर जमी धूल और कहीं-कहीं मकड़ी के जाले इस बात का स्पष्ट प्रमाण थे कि यहाँ वर्षों से कोई नहीं रहा होगा। लेकिन इससे उन्हें कोई फर्क नहीं पड़ा, क्योंकि कैलिफ़ोर्निया में कई अच्छे घर वर्षों तक खाली पड़े रहते हैं जब तक कि कोई उन्हें खरीदना न चाहे। उन्हें अब घर जैसा अजीब सा एहसास हो रहा था, मानो यह घर पहले से ही उनका था और वे लंबी गर्मियों की छुट्टियों के बाद अभी-अभी इसमें वापस आए हों।

उन्होंने तुरंत हर कमरे और लगभग काली पड़ चुकी धूसर खिड़कियों की जांच शुरू कर दी। इसमें कोई शक नहीं था कि घर को दोबारा रहने लायक बनाने में महीनों की सफाई लगेगी। लेकिन घर में कुछ भी टूटा हुआ या मरम्मत से परे नहीं था और उनका हौसला बढ़ गया, खासकर तब जब उन्हें एहसास हुआ कि विक्टोरियन शैली का अधिकांश फर्नीचर बेहतरीन हालत में था, बस गंदा था।

घर में लंबे समय तक रहने के बाद, जिसके दौरान उन्होंने हर कमरे, हर कोने-कोने की छानबीन की और अंत में फिर से बगीचे में गए, उन्हें एक पल के लिए भी संदेह नहीं हुआ कि यही उनका भावी घर होगा। उनके मन में कभी यह ख्याल नहीं आया कि शायद यह बोर्ड महीनों से लगा हुआ था, भले ही किसी ने इसे पहले ही खरीद लिया हो, या यह घर उपलब्ध हो सकता है लेकिन इसकी कीमत उनकी पहुंच से बाहर हो।

किसी तरह उन्हें तुरंत पता चल गया कि यह घर उनके लिए बिल्कुल सही है, ठीक उसी आकार का जैसा वे चाहते थे - उनके कोई बच्चे नहीं थे - इतना बड़ा नहीं कि उसे संभालना मुश्किल हो, लेकिन फिर भी विशाल और सबसे बढ़कर शांत, क्योंकि यह एक ऐसे स्थान के बीच में स्थित था जो एक बार फिर एक सुंदर बगीचा बन सकता था।

“तो, नाओमी, तुम्हारा क्या कहना है?” श्री एस. ने पूछा। यह एक तरह का अलंकारिक प्रश्न था, क्योंकि वे और नाओमी दोनों अच्छी तरह जानते थे कि आगे उन्हें क्या करना है। “हाँ, ठीक रहेगा,” उसने सिर हिलाया और मुस्कुराते हुए कहा। अपना घर मिल जाना एक सुखद एहसास होता है।

उन्होंने आँगन का दरवाज़ा सावधानी से बंद किया और जितना हो सके उसे ताला लगा दिया —आखिरकार, अब यह उनका घर था, व्यावहारिक रूप से, न कि महज़ बिकने के लिए पड़ा एक उपेक्षित, खाली पुराना मकान। जैसे ही वे बगीचे के रास्ते से एल्म स्ट्रीट की ओर बढ़े, उन्हें ऐसा महसूस हुआ जैसे कोई उनका पीछा कर रहा हो। लेकिन वे इस जगह को रहने लायक घर बनाने के विचारों में इतने मग्न थे कि उन्होंने इस पर ध्यान ही नहीं दिया। रास्ते पर बिछे पत्तों में सरसराहट की आवाज़ सुनकर भी वे पीछे नहीं मुड़े। यह वैसी ही आवाज़ थी जैसी हवा चलने पर आती है।

वहां से निकलने के बाद वे तुरंत रियल एस्टेट कार्यालय की ओर चले गए।

जी हां, वह मकान अभी भी बिकने के लिए उपलब्ध था। उन्होंने राहत की सांस ली, जो इतनी स्पष्ट थी कि रियल एस्टेट एजेंट की नज़र से बच नहीं सकी। इससे एजेंट थोड़ा हैरान हुआ, क्योंकि वह लागो एवेन्यू स्थित उस घर से छुटकारा पाने के लिए बेहद उत्सुक था, जो उसके लिए एक बोझ जैसा था। कुछ हल्की-फुल्की बातचीत के बाद, वे कीमत और रहने की तारीख पर सहमत हो गए, और फिर श्रीमती एस. उन लोगों के बारे में सोचने लगीं जो पहले वहां रह चुके थे।

लेकिन रियल एस्टेट एजेंट, चाहे जानबूझकर या अज्ञानतावश, उन्हें ज़्यादा कुछ नहीं बता सका। घर लगभग तीस साल से वहाँ था, लेकिन यह भी पक्का नहीं था। हो सकता है साठ साल हो, जितना उसे पता था। इससे ज़्यादा तो हो ही नहीं सकता था, क्योंकि लिनवुड की उम्र भी ज़्यादा नहीं थी। इसे किसने बनवाया था? वह उनके नाम नहीं जानता था, लेकिन एक दंपत्ति ने इसे बनवाया था और मूल रूप से इसमें रहते थे, और उनके बाद कई अन्य लोगों ने इसे खरीदा या किराए पर लिया, लेकिन किसी तरह कोई भी ज़्यादा समय तक नहीं रुका। उसकी कंपनी ने हाल ही में इसकी बिक्री का जिम्मा लिया था, उसे लगता था, किसी अनुपस्थित वारिस के नाम पर, देश के दूसरे कोने में, लेकिन वह उन्हें इससे ज़्यादा कुछ नहीं बता सका।

“ये तो बस एक पुराना घर है,” उसने आखिरकार कहा और हैरानी से उनकी तरफ देखा। “आप लोग इसके बारे में और क्यों जानना चाहते हैं?”

आखिर क्यों? वह आदमी सही था। उन्होंने दृढ़ता से अनुबंध पर हस्ताक्षर किए और कुछ हफ्तों बाद, जब उनके अन्य मामलों का निपटारा हो गया, तो वे उस घर में चले गए।

शुरुआती कुछ दिन बेहद मुश्किल भरे थे। वे दिन शुरुआती अमेरिकियों के शुरुआती दिनों की याद दिलाते थे, जब एस. दंपति अपने बेडरूम को रहने लायक बनाने के लिए सुबह से शाम तक काम करते रहे। उसके बाद, रसोई और फिर धीरे-धीरे, बहुत मेहनत और पसीने के बाद, पूरा घर बदल गया। वसंत ऋतु में, उन्होंने बगीचे पर ध्यान दिया, और चूंकि श्री एस. इस बीच अपने व्यवसाय से अर्ध-सेवानिवृत्त हो चुके थे, इसलिए उनके पास मदद करने के लिए थोड़ा अधिक समय था। कभी-कभी वे एक स्थानीय माली की सेवाएं लेते थे, लेकिन कुल मिलाकर, यह उनके अपने प्रयासों का ही नतीजा था कि बगीचा फिर से हरा-भरा हो गया। गुलाबों की सावधानीपूर्वक छंटाई करके, और जब भी उन्हें कोई खाली जगह मिलती, वे एक गुलाब का पौधा फिर से लगा देते, जिससे वे उस खूबसूरत जगह को फिर से जीवंत करने में कामयाब रहे। घर के अंदर पुराने फर्नीचर की धूल साफ कर दी गई थी और जहां आवश्यक था, उसकी मरम्मत की गई थी, और उन्होंने कुछ अपने फर्नीचर को उपयुक्त स्थानों पर रखकर उसे और भी सुंदर बना दिया था। इस प्रकार घर का स्वरूप उनके पुराने घर और पूर्व मालिक की निजी दुनिया के मिश्रण जैसा विचित्र प्रतीत होता था, लेकिन दोनों में कोई टकराव नहीं दिखता था और वे उनके आराम के लिए शांतिपूर्वक आपस में घुलमिल गए थे।

उन्होंने घर या बगीचे में कभी भी बदलाव के लिए कुछ नहीं बदला: अगर उन्हें उस जगह पर पहले से मौजूद कोई चीज़ मिल जाती, तो वे उसे पूरी निष्ठा से बहाल कर देते, मानो मानो वे समय को उस स्थिति में वापस ले जाना चाहते हों जहाँ वह घर के बनने के समय थी। वे खुद को उसी निष्ठा से प्रेरित महसूस करते थे जो एक संग्रहालय का क्यूरेटर किसी अमूल्य कलाकृति को उसके मूल स्वरूप में बहाल करने में दिखाता है। उनके प्रयासों का फल मिला और वह घर आरामदायक, भले ही कुछ हद तक विक्टोरियन शैली का, जीवन का एक आदर्श बन गया।

जैसे-जैसे वे अपने बगीचे से परिचित होते गए, उन्हें पता चला कि इसमें गुलाब या साधारण फूलों के अलावा भी बहुत कुछ है। जाहिर है, पिछले मालिकों को दुर्लभ पौधे पसंद थे, क्योंकि वहाँ कुछ ऐसे अनोखे फूल और हरे-भरे पौधे थे, जिन्हें उन्होंने संग्रहालयों या वृक्ष उद्यानों के

बाहर पहले कभी नहीं देखा था। कुछ पौधों पर मूल लेबल अभी भी लगे हुए थे, जिन पर उनका नाम और उत्पत्ति स्थान लिखा था। जब भी संभव हुआ, उन्होंने इन लेबलों को चिपका दिया, जिससे बगीचे की पुरानी रौनक लौट आई। वे स्थानीय फूलवाले के पास भी गए और उनसे कुछ दुर्लभ पौधों के बारे में जानकारी ली, और बदले में उन्होंने उपेक्षा के कारण मर चुके पौधों के स्थान पर कुछ नए पौधे खरीदे और उन्हें उनकी पुरानी जगह पर लगा दिया।

इन सब कामों में उनका अधिकांश समय लग जाता था, इसलिए उन्हें समुदाय में दोस्त बनाने का कोई अवसर नहीं मिला। लंबे समय तक वे रियल एस्टेट एजेंट और माली के अलावा किसी को नहीं जानते थे, जो कभी-कभार उनके लिए काम करते थे, और ये दोनों ही सामाजिक रूप से परिचित व्यक्ति नहीं थे।

लेकिन एक सुबह जब श्रीमती एस. अपने सामने के बगीचे में काम कर रही थीं, तो उन्होंने एक भली महिला को अपने पास से गुजरते देखा और दोनों ने मुस्कुराकर अभिवादन किया। इसके बाद, एक-दो दिन बाद उन्होंने उस महिला को सड़क पर रोककर आस-पास की दुकानों के बारे में पूछा और पता चला कि वह महिला उनकी पड़ोसी थी, जो उनके घर के सामने वाली गली में रहती थी। श्रीमती जी. अब युवा नहीं थीं और ऐसा लगता था कि उन्हें अपने समुदाय के बारे में काफी जानकारी थी, लेकिन जब भी वे दोनों दोबारा मिलीं, तो उन्होंने कभी भी सामान्य समस्याओं के अलावा किसी और विषय पर बात नहीं की। ऐसा लग रहा था मानो नाओमी अब अपने घर की कहानी पर चर्चा ही नहीं करना चाहती थी, क्योंकि अब वह घर उसकी अपनी संपत्ति थी।

* * *

एक साल बीत गया और एस.एस. ने आखिरकार घर की सारी मरम्मत पूरी कर ली और आराम से विश्राम करने के लिए तैयार हो गए। उन्हें अपना घर पसंद था और वे जानते थे कि उन्होंने सही और बुद्धिमानी से चुनाव किया था। उस समय जो घर उन्हें अपनी ओर खींच रहा था, अब वह जगह को देखकर उनकी सहज बुद्धि का ही संकेत लग रहा था और उन्हें अपनी इस बुद्धिमत्ता पर गर्व था।

* * *

फिर से गर्मी का मौसम आ गया था, कैलिफ़ोर्निया का आसमान नीला था और घर और परिवार दोनों ही सुख-शांति से थे। श्रीमान एस. बाहर गए हुए थे और दोपहर तक वापस नहीं आने वाले थे। श्रीमती एस. गुलाब के बगीचे में काम में व्यस्त थीं, अपनी झाड़ियों को कुछ सुंदर रूप दे रही थीं। दोपहर होने ही वाली थी, लेकिन काम करने के लिए अभी भी बहुत गर्मी नहीं थी।

नाओमी ने अभी-अभी चाय के गुलाबों में से एक को सीधा किया ही था कि उसने ऊपर देखा और महसूस किया कि कोई उससे मिलने आया है। वहाँ, रास्ते पर, दो गज से भी कम दूरी पर, एक छोटी कद-काठी की महिला खड़ी थी। उसने पुराने ज़माने की फीकी सी घरेलू पोशाक पहन रखी थी, लेकिन कैलिफ़ोर्निया में यह कोई असामान्य बात नहीं है। बहुत से सेवानिवृत्त लोग पुराने ज़माने के कपड़े पहनना पसंद करते हैं और किसी को इससे कोई फ़र्क नहीं पड़ता। वह महिला काफ़ी उम्रदराज़ और कमज़ोर थी, और नाओमी उसे वहाँ देखकर चौंक गई।

उसकी हैरानी स्पष्ट रूप से झलक रही थी, क्योंकि आगंतुक ने तुरंत दखलंदाजी के लिए माफी मांगी। "मेरा इरादा आपको डराने का नहीं था," उसने पतली, तीखी आवाज में कहा, जो किसी तरह उसकी सामान्य दिखावट और कमजोरी के अनुरूप थी।

“तुमने ऐसा नहीं किया,” नाओमी ने साहसपूर्वक उसे आश्वस्त किया। वह बेहद मेहमाननवाज थी। भला एक बूढ़ी औरत से उसे डर क्यों लगता?

“तो फिर,” आगंतुक ने हिचकिचाते हुए आगे कहा, “क्या मैं थोड़ा इधर-उधर देख सकता हूँ?”

यह बात कुछ अजीब सी लगी, क्योंकि यह जगह कोई मशहूर दर्शनीय स्थल नहीं थी, और नाओमी इसे सार्वजनिक पार्क में बदलना नहीं चाहती थी। फिर से, उसके चेहरे पर उसके विचार झलक रहे थे, क्योंकि उस महिला ने तुरंत हाथ उठाकर कहा, "देखिए, इस जगह को मूल रूप से मैंने और मेरे पति ने बनवाया था।"

नाओमी दंग रह गई। आखिरकार, घर मालिकों ने इतने सालों बाद अपना घर देखने का फैसला किया। साथ ही, उसके मन में संतोष की भावना भी उमड़ पड़ी। अब वे देख सकेंगे कि घर की मरम्मत में कितना काम किया गया है!

"यह एक खूबसूरत जगह है," नाओमी ने कहा और अपने आगंतुक को अपने साथ आने का इशारा किया।

“जी हां, है ना?” महिला ने सिर हिलाया। “हमें इस पर बहुत गर्व था, सचमुच।”

“खैर, अफसोस की बात है कि जब हमने इसे खरीदा था तब यह बहुत खराब हालत में था,” नाओमी ने संक्षेप में कहा। “इसे पहले जैसी हालत में वापस लाने के लिए हमें बहुत मेहनत करनी पड़ी।”

“ओह, मैं देख सकती हूँ,” महिला ने टिप्पणी की और प्रत्येक झाड़ी को प्रेम भरी निगाहों से देखा।

वे अब पीछे वाले बगीचे के रास्ते पर थे।

“अरे वाह, तुमने चाय के गुलाबों की जगह गुलाबी गुलाब लगा दिए हैं,” उसने अचानक कहा। “कितने अच्छे विचार हैं!”

नाओमी को पता नहीं था कि उस जगह पर चाय के गुलाब थे, क्योंकि उनका कुछ भी अवशेष नहीं बचा था। लेकिन यह सुनकर उसे खुशी हुई। आगंतुक अब एक पक्षी की तरह एक फूल से दूसरे फूल पर फुदक रही थी, कभी निरीक्षण कर रही थी, कभी किसी पौधे को सहला रही थी और नाओमी को विभिन्न दुर्लभ पौधों के बारे में बता रही थी, मानो वह मेज़बान हो और नाओमी आगंतुक।

“मुझे बहुत खुशी है कि आपने घर में फिर से रौनक ला दी है, बहुत खुशी है,” वह बार-बार दोहराती रही।

इससे नाओमी को अपनी उपलब्धि पर और भी खुशी हुई। अफसोस की बात है कि उसका पति यहाँ मौजूद नहीं था और उस महिला की प्रशंसा नहीं सुन सका। श्री एस. अक्सर इस जगह को नया रूप देने में की गई सारी मेहनत के बारे में शिकायत करते रहते थे।

“वहाँ जो बेगोनिया के फूल हैं... ओह, वे अभी भी गायब हैं, बहुत बुरा हुआ। लेकिन आप इसे कभी ठीक कर सकती हैं, है ना?” उसने कहा और बगीचे के दूसरे हिस्से की ओर तेज़ी से चली गई, मानो वह नाओमी द्वारा दिए गए समय में सब कुछ देखना चाहती हो।

“क्या आप घर के अंदर भी देखना चाहेंगी?” नाओमी ने आखिरकार सुझाव दिया। निमंत्रण सुनकर महिला प्रसन्न हो उठी।

“जी हाँ, मुझे बहुत अच्छा लगेगा। क्या मैं अंदर जा सकती हूँ?” नाओमी ने बगीचे के दरवाजे की ओर इशारा किया और वे दोनों साथ में घर के अंदर चली गईं। अंदर का ठंडा वातावरण बगीचे की सुहावनी, लेकिन गर्म हवा से बिलकुल अलग था।

“वहाँ, वहाँ पहले दादाजी की घड़ी हुआ करती थी। मुझे लगता है कि आपने उसे बैठक में रख दिया है।”

नाओमी मुस्कुराई। वाकई, ऐसा ही था। उस महिला की याददाश्त बहुत अच्छी होनी चाहिए थी, तभी तो उन्हें सब कुछ याद था, क्योंकि वे अभी तक गुफा में दाखिल नहीं हुए थे। नाओमी को कभी यह ख्याल नहीं आया कि आगंतुक को गुफा में घड़ी देखने से पहले ही पता था कि उसे कहीं और ले जाया गया है। वह बूढ़ी महिला अपने पुराने घर में इतनी सहज थी कि उसके लिए उस घर के बारे में हर तरह की बातें जानना स्वाभाविक ही था।

“टेबल भी बहुत अच्छी है, और यह घर में कितनी अच्छी तरह से फिट बैठती है,” उसने अब टिप्पणी की। वे इसे अपने पुराने घर से साथ लाए थे, और यह घर में पहले से मौजूद फर्नीचर के साथ सचमुच मेल खा रही थी। आगंतुक अब खुशी-खुशी उस लंबे कमरे के दूसरे छोर की ओर चली गई, जिसे वे दिन के कमरे या बैठक कक्ष के रूप में इस्तेमाल कर रहे थे।

"वह कुर्सी," उसने अचानक कहा और चिमनी के पास रखी बड़ी, ओक की कुर्सी की ओर इशारा किया, और उसकी आवाज में एक उदासी छा गई जिससे ऐसा लगा जैसे उसके मूड में बदलाव आया हो।

“कुर्सी का क्या हुआ?” नाओमी ने पूछा और उसके पास चली गई। आगंतुक को अपने आँसू रोकने में मुश्किल हो रही थी, लेकिन फिर उसने खुद को संभाला और समझाया—

“मेरे पति की मृत्यु उसी कुर्सी पर हुई थी।”

कुछ क्षणों के लिए सन्नाटा छा गया क्योंकि नाओमी को उस अजनबी महिला के प्रति दया महसूस हुई।

“एक सुबह वो पत्तियाँ इकट्ठा कर रहे थे... वो एक सुहाना गर्मी का दिन था, बिल्कुल आज की तरह... बिल्कुल आज की तरह... उन्हें नाश्ते से पहले बगीचे में थोड़ा काम करना हमेशा अच्छा लगता था। मैं उस समय बिस्तर पर ही थी, लेकिन जाग रही थी और मैंने उन्हें बगीचे का काम खत्म करने के बाद घर में आते सुना।”

नाओमी ने कुछ नहीं कहा, लेकिन उसकी निगाहें उस महिला पर टिकी हुई थीं। उसने देखा कि वह कितनी कमज़ोर और नाजुक दिख रही थी, और बुढ़ापे ने उसे सचमुच दुबला-पतला और थका हुआ बना दिया था। फिर भी, उसकी आँखों में एक अनोखी, चमक थी जो उसकी कमज़ोर और उम्रदराज़ सूरत को झुठला रही थी। नहीं, इतनी उम्र होने के बावजूद यह महिला ठीक थी। नाओमी ने सोचा, शायद अब वह भी अपने पति की मृत्यु के बाद इसी इलाके में कहीं अकेली रहती होगी।

"मेरे पति घर में आए और थोड़ी देर बाद मैं उनके लिए नाश्ता बनाने के लिए उठी, जैसा कि मैं हमेशा करती थी," आगंतुक ने एक हाथ से कुर्सी के पीछे वाले हिस्से को मजबूती से पकड़े हुए अपनी बात जारी रखी।

“जब मैंने उसे बुलाकर इसे लेने के लिए कहा, तो मुझे कोई जवाब नहीं मिला। आखिरकार मुझे कुछ अजीब लगा और मैं कमरे में गया—इसी कमरे में—और वहाँ, इस कुर्सी पर, मैंने उसे पाया। वह मृत था।”

यह वृत्तांत सुनकर नाओमी को एक अजीब सी सिहरन महसूस हुई। अचानक उसे एहसास हुआ कि वह पूर्व मालिकों के बारे में कितना कम जानती है। लेकिन दोनों महिलाओं के बीच छाई खामोशी तब टूट गई जब महिला ने कुर्सी छोड़ी और दरवाजे की ओर मुड़ी।

"अगर अनुमति हो तो मैं एक बार फिर आँगन देखना चाहूँगी," उसने कहा और मानो वह अपनी पिछली गंभीरता की भरपाई करना चाहती हो, अब वह इस तरह के घर में रहने के सुखों के बारे में लगातार और हल्के-फुल्के अंदाज में बातें करने लगी।

वे दोबारा गुलाब की क्यारियों के पास पहुँच गए थे और आगंतुक ने एक विशेष रूप से खिले हुए गहरे लाल रंग के गुलाब के पौधे की ओर इशारा किया, जो नाओमी को बगीचे के किसी भी अन्य गुलाब के पौधे की तुलना में हमेशा से अधिक पसंद था।

"वे हमेशा से मेरे पसंदीदा रहे हैं," महिला ने लगभग फुसफुसाते हुए कहा।

"तो चलिए मैं आपको थोड़ा सा घर ले जाने के लिए दे देती हूँ," नाओमी ने कहा और चूंकि आगंतुक ने उसके प्रस्ताव का विरोध नहीं किया, इसलिए वह कैंची लेने के लिए मुड़ गई, जिसे उसने आँगन के निचले हिस्से में रखा हुआ था।

उसकी पीठ एक पल से भी कम समय के लिए मुड़ी थी। लेकिन जब उसने दोबारा अपनी आगंतुक की ओर देखा, तो वह छोटी महिला वहाँ से जा चुकी थी।

“ये तो उसकी बदतमीज़ी है,” नाओमी ने तुरंत सोचा। वो अचानक क्यों भाग गई? यकीनन, अपने पुराने घर से गुलाबों का प्रस्ताव नाराज़ होने का कोई कारण नहीं था। लेकिन फिर नाओमी के मन में आया कि शायद अपने पुराने घर में वापस आने की खुशी, भले ही अब वो उसकी मालकिन न रही हो, उस महिला की भावनाओं ने उस पर हावी हो लिया हो और वो किसी अजनबी से अपने पसंदीदा पौधे से गुलाब लेना बर्दाश्त न कर पाई हो।

“पता नहीं वो किस रास्ते गई होगी,” नाओमी ने ज़ोर से कहा। उसे किसी कार के जाने की आवाज़ नहीं सुनाई दी, इसलिए वो महिला पैदल ही आई होगी। शायद वो उसे अभी भी पकड़ सकती है, क्योंकि वो ज़्यादा दूर तो नहीं गई होगी। गुलाब न लेना उसकी सरासर बेवकूफी थी।

नाओमी झटपट बगीचे के रास्ते पर गई और देखा, फिर ड्राइववे पर भी देखा, लेकिन वह महिला अब वहां नहीं थी। फिर वह सड़क पर भागी और एल्म स्ट्रीट पर भी देखा, लेकिन वह आगंतुक कहीं भी नजर नहीं आई।

“लेकिन यह असंभव है,” नाओमी ने सोचा। “वह यूं ही गायब नहीं हो सकती।” उनके आखिरी शब्दों और नाओमी के पीछा करने के बीच इतना कम समय बीता था कि कोई भी इंसान बिना किसी निशान के गायब नहीं हो सकता था।

नाओमी, अब भी असमंजस में, घर के अंदर चली गई। कुछ देर बाद सारा वाकया एक सपने जैसा लगने लगा और वह उसे भूल गई। उस महिला के अचानक गायब हो जाने का कोई न कोई कारण तो जरूर होगा, लेकिन नाओमी के पास इसके बारे में चिंता करने के बजाय और भी काम थे।

अपने निजी कारणों से उसने अपने पति को इस मुलाकात के बारे में न बताना ही बेहतर समझा, क्योंकि उसे खुद भी यकीन नहीं था कि उसने यह सब सपना तो नहीं देखा था। बेशक,

उसने सपना नहीं देखा था। मुलाकात के कई दिनों बाद भी लॉन की नरम मिट्टी में उस महिला के पैरों के निशान साफ दिखाई दे रहे थे। कितने छोटे-छोटे पैर थे! लेकिन फिर भी उसे इस बारे में और बात करने में हिचकिचाहट हो रही थी। आखिर इसमें क्या बड़ी बात? एक पुराना किराएदार पुराने घर को देखने आना चाहता है। इसमें कोई खास या ख़बर लायक बात नहीं है।

* * *

कुछ सप्ताह बाद संयोगवश उसकी मुलाकात सामने वाली गली में रहने वाली पड़ोसी से चाय पीने हुई। चाय और बिस्कुट के बीच, उन्होंने मोहल्ले के बारे में और श्रीमती जी के वहां रहने के दौरान आए बदलावों के बारे में बात की। किसी तरह उस आगंतुक की याद फिर से उसके मन में आ गई, और नाओमी ने श्रीमती जी से अपने मन की बात खुलकर कह दी।

"पिछले दिनों मेरे पास एक मेहमान आया था, आपके अलावा मैंने सिर्फ उसी से बात की है," नाओमी ने कहना शुरू किया।

“ओह?” श्रीमती जी चौंक उठीं। “क्या मैं किसी को जानती हूँ?”

"शायद...यह वही महिला थी जिसने हमारा घर बनवाया था...जो हमसे पहले वहां रहती थी।"

श्रीमती जी ने नाओमी को अजीब नजरों से देखा लेकिन कुछ नहीं कहा।

“वह एक छोटी सी महिला थीं, जिन्होंने फीकी गुलाबी पोशाक पहनी थी और उनकी आँखें थोड़ी चमकीली थीं। उन्होंने मुझे बताया कि उन्होंने और उनके पति ने मिलकर यह घर बनाया था,” नाओमी ने कहा और आगंतुक के रूप-रंग का विस्तार से वर्णन किया। जब उनका वर्णन समाप्त हुआ, तो श्रीमती जी ने अपना सिर हिलाया।

अंततः उसने कहा, "असंभव। वह महिला तो वर्षों पहले मर चुकी है।"

नाओमी कुछ अनिश्चितता के साथ हंसी।

लेकिन वो ऐसी कैसे हो सकती है? मैंने उसे उतनी ही स्पष्टता से देखा जितना कि मैं तुम्हें देख रहा हूँ। वो बिल्कुल किसी भी बूढ़ी औरत जैसी दिखती थी।

"हो सकता है कि यह कोई और हो," पड़ोसी ने कहा, इस उम्मीद में कि नाओमी उसकी बात से आसानी से सहमत हो जाएगी।

“मुझे ऐसा नहीं लगता,” नाओमी ने दृढ़ता से कहा। “देखो, उसने उस कुर्सी की ओर भी इशारा किया जिस पर उसके पति की मृत्यु हुई थी। नाश्ते से पहले वह पत्तियां इकट्ठा कर रहा था, और जब उसने उसे कुर्सी उठाने के लिए बुलाया, तो उसने कोई जवाब नहीं दिया, और फिर वह बैठक में गई और उसने उसे उस बड़ी ओक की कुर्सी पर मृत पाया।”

श्रीमती जी का चेहरा अचानक बहुत पीला पड़ गया था।

“यह बिल्कुल सच है, मेरा मतलब है, उनकी मृत्यु की कहानी,” उसने आखिरकार कहा। “लेकिन आपको इसके बारे में कैसे पता चला?”

नाओमी ने बेबसी से कंधे उचका दिए।

"मुझे इसके बारे में तब तक पता नहीं था जब तक उस महिला ने मुझे इसके बारे में नहीं बताया," उसने दोहराया।

“अविश्वसनीय। लेकिन आपने उसका बिल्कुल सटीक वर्णन किया है और उसकी मृत्यु भी ठीक उसी तरह हुई है जैसा उसने बताया। आप जानते हैं, वे दोनों तो कई सालों से मर चुके हैं।”

नाओमी को आखिरकार इसका निहितार्थ समझ आ गया।

"क्या आपका मतलब है कि मेरे पास एक भूत आया था?"

"ऐसा ही लगता है," श्रीमती जी ने गंभीरता से सिर हिलाया।

“लेकिन वह इतनी असली लग रही थी... इतनी ठोस। मुझे कभी पता ही नहीं चलता कि वह सिर्फ एक भूत थी। अरे, हमने हाथ भी मिलाया और उसका हाथ मुझे बिल्कुल ठीक लगा।”

महिला ने उस घटना को एक बार फिर विस्तार से दोहराया। हालांकि, एक बात अजीब थी। श्रीमती एस. को याद आया कि उन्होंने उस महिला को अपने बगीचे में आते हुए नहीं सुना था। उन्होंने अपने काम से नज़र उठाई और देखा कि वह महिला गुलाबों के सामने खड़ी मुस्कुरा रही थी। न तो अंदर आने की और न ही बाहर जाने की कोई आहट सुनाई दी। फिर, बगीचे के हर पौधे के बारे में उसकी गहरी जानकारी भी थी।

"उसे उन सभी के लैटिन नाम भी पता थे," नाओमी ने बताया।

"इसमें कोई शक नहीं कि उन्होंने ऐसा किया होगा," श्रीमती जी ने समझाया और आगे कहा, "वह और उनके पति बागवानी के बहुत बड़े जानकार थे और अपने बगीचे में एक असली वृक्ष उद्यान बनाने में उन्हें बहुत गर्व था।"

लेकिन वह अपने पुराने घर क्यों गई थी?

कुछ देर सोचने के बाद, नाओमी को लगा कि उसे जवाब मिल गया है। उन्होंने घर और बगीचे को उसके मूल स्वरूप में बहाल कर दिया था और शायद वही माहौल भी दे दिया था जो मूल मालिकों के समय में था। उस प्रेतवाधित महिला को लगा कि उनके प्रयासों के लिए उन्हें सराहना का भाव मिलना चाहिए। या फिर वह बस अपने पुराने घर की याद में उदास थी?

नाओमी को अब पूरा यकीन था कि उसने इसे कभी सच में छोड़ा ही नहीं था। उसकी कल्पना में यह कभी जर्जर नहीं हुआ था और सुंदर गुलाब तब भी खिलते रहे जब बगीचा वीरान हो गया था।

उसने फिर कभी इस मामले पर अपने पड़ोसी या किसी और से चर्चा नहीं की। उसके पति, जिससे उसने बाद में तलाक ले लिया, को भी इस घटना के बारे में कभी पता नहीं चला, क्योंकि श्रीमती जी ने इस रहस्य को अच्छी तरह से छिपाए रखा था।

वह घर शायद अभी भी गुलाबों के बीच मौजूद हो, और फीकी पोशाक पहने वह छोटी महिला निस्संदेह उसके रास्तों पर उछलते-कूदते और अपने प्रिय फूलों का आनंद लेते हुए खूब मजे करती हो।

*120

भूत कार (कैनसस)

मार्लीन एस. एक सैंतीस वर्षीय गृहिणी हैं जो एक आम अमेरिकी गृहिणी की तरह जीवन जी रही हैं—अर्थात् उन्हें न तो अज्ञात की खोज करने का शौक है और न ही वे किसी असाधारण गतिविधि में रुचि रखती हैं। दो साल कॉलेज की पढ़ाई के बाद, उन्होंने पाया कि उनका विवाहित जीवन ही उनका अधिकांश, बल्कि लगभग पूरा समय ले लेता है, लेकिन फिर भी वे शिक्षक की डिग्री प्राप्त करने की आशा रखती हैं, जिसके बाद वे माध्यमिक स्तर पर अंग्रेजी साहित्य पढ़ाना चाहती हैं। लेकिन ग्यारह से पंद्रह वर्ष की आयु के चार बच्चों और घर में पति

के होने के कारण, पढ़ाई के लिए समय सीमित है। उनके पति, श्री एस., एक जूता कंपनी में जिला प्रबंधक हैं।

मार्लीन एक साधारण नेब्रास्का परिवार से थीं और उनके साथ कभी कोई चौंकाने वाली घटना नहीं घटी थी, सिवाय तब तक जब तक कि वह, उनके पति और बच्चे कंसास सिटी के एक घर में नहीं चले गए, जो उनकी यादों में हमेशा के लिए बस गया। घर कोई खास नहीं था: लगभग सात साल पुराना, सस्ता दिखने वाला, चार शयनकक्षों वाला, एक ही मंजिल पर बना हुआ, रेंच-शैली का मकान।

वे 1958 में इस घर में रहने आए थे, जब बच्चे काफी छोटे थे। घर में बसने और नए परिवेश से अभ्यस्त होने के कुछ हफ्तों बाद, मार्लीन बिस्तर पर जागती हुई नींद का इंतजार कर रही थी। उसे कभी भी तुरंत नींद नहीं आती थी, और जागते हुए अपने दिमाग में चल रही बातों को सुलझाने की कोशिश करना उसके लिए नींद को आमंत्रित करने का एक तरीका था।

क्योंकि बच्चे अभी छोटे थे, जिनकी उम्र एक से पाँच साल के बीच थी, इसलिए उसे हर हलचल या आवाज़ पर हमेशा सतर्क रहना पड़ता था, कहीं कुछ गड़बड़ न हो जाए। शायद इसी वजह से उसकी नींद हल्की थी, लेकिन फिर भी, उस समय तक उसे ऊंघ नहीं आ रही थी और वह अपने आसपास होने वाली हर बात से पूरी तरह वाकिफ थी।

अचानक, उसे बिस्तर के निचले हिस्से में दबाव महसूस हुआ, मानो कोई बच्चा अपने माता-पिता के साथ सोने के लिए बिस्तर पर चढ़ने की कोशिश कर रहा हो।

मार्लीन जल्दी से लेकिन चुपचाप उठी, बिस्तर के निचले हिस्से की ओर झुकी, कुछ पकड़ने की कोशिश की और साथ ही बोली, "पकड़ लिया!" - लेकिन उसने पाया कि वह हवा को ही पकड़ रही थी।

उसने सोचा कि छोटा शरारती बच्चा जल्दी से अपने बिस्तर पर वापस चला गया होगा, और वह उठी और दालान पार करके लड़कों के शयनकक्ष में चली गई। उसके बाद, उसने लड़कियों के कमरे का निरीक्षण किया, लेकिन चारों गहरी नींद में सो रही थीं, ठीक उसी तरह से जैसे उसने पहले उन्हें सुलाया था, और यह स्पष्ट था कि उसके बच्चों में से किसी ने भी उसके बिस्तर के निचले हिस्से में दबाव नहीं डाला था।

उसने सोचा कि उसने यह सब कल्पना की थी और वापस बिस्तर पर चली गई। लेकिन अगली रात, दबाव फिर से लौट आया और उसे फिर से मुट्ठी भर खालीपन के अलावा कुछ भी महसूस नहीं हुआ।

यह इतनी आम बात हो गई थी कि उसने बच्चों पर नज़र रखना ही छोड़ दिया कि वे ऐसा कर रहे हैं या नहीं। फिर उसने सोचा कि यह उसके पति के पैर हिलाने के किसी खास तरीके की वजह से हो रहा होगा। उसने किसी तरह यह तर्क दिया कि उसके पैर हिलाने से ऐसा लगता था जैसे चादर उसके पैर से चिपकी हुई है, जिससे बाहर से दबाव महसूस होता था। हालांकि यह स्पष्टीकरण बेतुका था, उसने इसे खुशी-खुशी मान लिया। लेकिन इसके बाद कई रातों तक उसने अपना पैर उसके पैर से सटाकर रखा ताकि पता चल सके कि उसके किस हरकत की वजह से ऐसा हो रहा है।

जब उसका पति सो रहा था, तो उसने गौर से देखा, लेकिन इससे उसे कोई निष्कर्ष नहीं निकला: दबाव तो मौजूद था, लेकिन इसका उसके पति के पैर या उसकी हरकतों से कोई संबंध नहीं था।

बिस्तर पर अजीब से दबाव को उसने अभी ठीक से समझा भी नहीं था कि एक और घटना ने उसे घर में इधर-उधर देखने पर मजबूर कर दिया। शयनकक्ष के दरवाजे के पास उसने किसी के गहरी और भारी साँसें लेने की आवाज़ सुनी, जबकि वहाँ उसके अलावा कोई नहीं था। जब ऐसा कई बार हुआ तो उसने अपने पति को इसके बारे में बताने का फैसला किया। उसने सिर हिलाकर कहा कि उसने कुछ नहीं सुना। उसने उसे बिस्तर पर हो रहे दबाव के बारे में नहीं बताया, क्योंकि उसे लगा कि इस पर चर्चा करना बेतुका होगा। उस रात उसने बिस्तर के निचले हिस्से में फिर से दबाव महसूस करने से ठीक पहले किसी के सेलोफ़ेन पर पैर रखने जैसी चटकने की आवाज़ सुनी।

उसे याद था कि उसने बिस्तर के नीचे फर्श पर एक सेलोफेन बैग छोड़ दिया था और उसे यकीन था कि उसके बच्चों में से कोई एक बाहर आया होगा और उस पर पैर रख दिया होगा। उसने फिर से उसे पकड़ने की कोशिश की, लेकिन फिर से उसके हाथों में हवा ही थी और बच्चे अपने-अपने कमरों में गहरी नींद में सो रहे थे।

अब उसके मन में थोड़ा डर घर कर गया था जब उसे एहसास हुआ कि अजीबोगरीब आवाजों और खासकर भारी सांस लेने की आवाज का कोई तर्कसंगत स्पष्टीकरण नहीं था।

लेकिन वह रात में अपने घुटनों को ऊपर खींच लेती थी और इस तरह बिस्तर के निचले हिस्से में दबाव पैदा करने वाली किसी भी चीज के संपर्क में आने से बच जाती थी।

कुछ समय तक कोई अप्रिय घटना नहीं घटी और परिवार दैनिक जीवन की समस्याओं से निपटने में व्यस्त रहा। कुछ समय के लिए अजीबोगरीब घटनाएं पृष्ठभूमि में चली गईं।

फिर कुछ हफ़्तों बाद, एक रात मार्लीन एक बेहद अजीब आवाज़ से नींद से जाग उठी। ऐसा लग रहा था मानो घर पर पानी का एक बड़ा सा बर्तन उंडेल दिया गया हो। पानी के गिरने की तेज़ आवाज़ कई सेकंड तक गूंजती रही। गहरी नींद से जागते ही उसके मन में तुरंत एक स्वाभाविक विचार आया—शायद कोई बच्चा बाथरूम नहीं जा पाया होगा और जो आवाज़ वह सुन रही थी, वही थी! लेकिन नहीं: वे सभी अपने-अपने कमरों में गहरी नींद में सो रहे थे।

अगली सुबह उसने फर्श की जाँच की। लड़कों के कमरे में उसे एक अजीब सा तरल धब्बा मिला। वह पानी जैसा था, लेकिन बहुत गाढ़ा था और पानी की तरह बह नहीं रहा था, बल्कि फर्श पर बिल्कुल गोल और एक जगह जमा हुआ था। उसमें न तो कोई गंध थी और न ही कोई रंग, और जब उसने उसे टिशू पेपर से हटाया, तो उसका कोई निशान नहीं बचा। उसके पति ने समझाया कि शायद वह तरल ज़मीन से रिसकर ऊपर आया होगा या छत से गिरा होगा, लेकिन उसका तार्किक दिमाग इस बात को मानने को तैयार नहीं था, क्योंकि यह स्पष्ट रूप से असंभव था।

लड़कों के कमरे से आने वाली सरसराहट की आवाज़ और वहाँ मौजूद गाढ़े तरल पदार्थ का कोई तर्कसंगत स्पष्टीकरण नहीं था। कई महीनों बाद, लड़कियों के कमरे में भी वैसा ही धब्बा दिखाई दिया। चूंकि उनके घर में कोई पालतू जानवर नहीं थे, इसलिए यह मामला अनसुलझा ही रहा।

घर इतना नया था कि मार्लीन के मन में भूतों का कोई ख्याल ही नहीं था। लेकिन अजीबोगरीब घटनाएं घटने लगीं। एक दिन, घर के सामने ढलान वाली सड़क पर सुरक्षित रूप से खड़ी एक कार अचानक नीचे आई और लड़कों के बेडरूम में जा टकराई। सौभाग्य से किसी को चोट नहीं आई।

कुछ देर बाद, सड़क के दूसरी ओर से एक और कार ने भी ऐसा ही किया, लेकिन इस बार कार लड़कियों के कमरे में घुस गई। मालिक ने कसम खाकर कहा कि उसने कार छोड़ते समय उसे पार्किंग में ही लगाया था। जैसे ही वह बाहर निकला, उसने देखा कि उसकी कार अपने आप ड्राइववे पर लुढ़क गई!

यह बात मार्लीन को बिल्कुल भी तसल्ली नहीं दे रही थी। क्या कोई अज्ञात शक्ति उन्हें "परेशान" करने की कोशिश कर रही थी? क्या बच्चों के कमरों में मिले तरल के धब्बों और दोनों कार दुर्घटनाओं के बीच कोई संबंध था?

घर का माहौल अब पहले जैसा नहीं रहा था। ऐसा लग रहा था मानो कोई दुखद बोझ घर पर छाया हो। उसके पति को कुछ भी असामान्य नहीं लगा, या अगर लगा भी तो उसने उससे इस बारे में बात नहीं की। लेकिन उसे घर में एक अजीब सी बेचैनी महसूस हो रही थी और उसे यह अच्छा नहीं लग रहा था।

एक रात उसके पति देर तक काम कर रहे थे। वह बिस्तर पर गई और बत्ती बंद कर दी। लेटते ही उसे फिर से भारी साँसें सुनाई देने लगीं। फिर बिस्तर के निचले हिस्से में दबाव महसूस हुआ। साँसें इतनी करीब होने के कारण वह बुरी तरह डर गई और हिलने की हिम्मत नहीं कर पाई। जो भी था, वह बहुत करीब था और अब उसे एहसास हुआ कि उसकी सारी तर्कशक्ति बेकार थी। उसके अलावा कोई और भी उसके साथ बिस्तर पर था और वह कोई मित्रवत नहीं था।

लेकिन वो क्या करती? बच्चे अपने-अपने बिस्तरों में सो रहे थे और पति काम पर था। उसने सोचा कि ऐसी स्थिति में सबसे अच्छा यही होगा कि वो सोने का नाटक करे। वो सोने का नाटक करते हुए वहीं लेटी रही, लगभग साँस नहीं ले रही थी और शरीर का एक भी अंग नहीं हिला रही थी।

उन्हें पता ही नहीं चला कि कितना समय बीत गया था जब उन्होंने कार को अपने दरवाजे के पास आकर रुकते हुए सुना। कार की हेडलाइट्स बेडरूम की खिड़की से अंदर आईं और उन्होंने इंजन बंद होने की आवाज सुनी।

"भगवान का शुक्र है, डॉन घर आ गया है," उसने किसी तरह धीमी आवाज़ में कहा।

हालांकि उसकी मौजूदगी अभी भी पास ही थी, फिर भी उसने किसी तरह हिम्मत जुटाकर बिस्तर से छलांग लगाई और खिड़की की ओर भागी। लिविंग रूम की ओर जाते हुए उसने रास्ते में बत्तियाँ जलाईं और खिड़की तक पहुँचकर बाहर ड्राइववे की ओर देखा।

अपने पति और परिवार की कार को देखने के बजाय, उसे रात के अंधेरे का सामना करना पड़ा। कुछ भी नहीं। कोई कार नहीं।

“बस बहुत हो गया!” वह लगभग रोते हुए बोली और दौड़कर अपने बिस्तर पर वापस चली गई। चादर ओढ़कर वह डर के मारे वहीं लेट गई, उसे समझ नहीं आ रहा था कि आगे क्या करे। जब घंटों बाद उसका पति लौटा, तब जाकर उसने रोते-रोते अपनी कहानी सुनाई।

“चिंता मत करो,” उसने प्यार से कहा और उसके सिर को अपने हाथों में ले लिया। “तुम्हें बुरे सपने आ रहे हैं।”

"उसे मेरी एक भी बात पर यकीन नहीं है," उसने सिसकियों के बीच सोचा, लेकिन उसे किसी नास्तिक से सांत्वना मिलना, बिल्कुल भी सांत्वना न मिलने से बेहतर लगा।

अगले कुछ सप्ताह जैसे-तैसे बीत गए। उन्होंने दूसरे स्थान पर तबादले का अनुरोध किया था। जब तबादला हुआ, तो वह एक बिल्कुल बदली हुई इंसान थीं। एक ऐसे नए घर में जाने की संभावना, जहाँ उनकी नींद में कोई खलल न पड़े, उनके लिए बेहद सुखद थी।

उनके पति ने विचिटा में एक बड़ा, पुराना हवेली किराए पर लिया था, जहां कंपनी द्वारा उनका स्थानांतरण किया गया था, और वह हवेली प्राचीन वस्तुओं और बीते युग के उत्तम फर्नीचर से भरी हुई थी।

जब मार्लीन ने पहली बार घर देखा, तो उसने सोचा, "हे भगवान! अगर किसी घर में भूत-प्रेत होने चाहिए, तो यह घर बिल्कुल वैसा ही दिखता है!"

लेकिन ऐसा नहीं हुआ और विचिटा का वह घर उतना ही शांत और निर्मल साबित हुआ जितना कोई घर हो सकता है, बशर्ते उसमें कोई बेचैन भूत न रहता हो।

घर पिछले पचास वर्षों की यादों से भरा हुआ था, लेकिन उनमें से कोई भी याद उसे परेशान नहीं करती थी और अब वह एक सुखी, शांत जीवन जी रही थी। कंसास के अनुभव उसकी स्मृति में धुंधले पड़ गए थे और अब उसे यकीन था कि यह सब घर की गलती थी, न कि उससे

जुड़ी किसी चीज़ की—खासकर उसकी कल्पना की, क्योंकि वह जानती थी, चाहे उसके पति ने कुछ भी कहा हो, कि उसने उस भूतिया कार को घर तक आते हुए देखा और सुना था।

वह कभी-कभी सोचती है कि कंसास के उस घर के नए मालिक कौन हैं और क्या वे भी उसकी तरह भारी साँसें सुन सकते हैं। लेकिन फिर उसे एहसास होता है कि यह उसकी जन्मजात मानसिक क्षमता ही थी जिसके कारण ये घटनाएँ उस समय प्रकट हुईं। शायद कोई और व्यक्ति, जिसके पास इतनी क्षमता न हो, उसे कुछ भी महसूस न हो।

पानी के गिरने की आवाज़ से लेकर भूतिया कार के तेज़ी से आने तक, जिस भयानक दुर्घटना का नाट्य रूपांतरण किया जा रहा था, वह आखिर क्या थी? और किसकी भारी साँसें उसकी रातों की नींद उड़ा रही थीं?

कई बार उनकी जिज्ञासा ने उन्हें पूछताछ करने के लिए प्रेरित किया, लेकिन फिर उन्होंने इस मामले को शांत रखने का फैसला किया। लेकिन बाद के वर्षों में, जब वे कैलिफोर्निया में रह रही थीं, उनकी मानसिक क्षमता और विकसित हो गई, यहाँ तक कि वे मृतकों को उतनी ही स्पष्टता और सहजता से सुन और देख सकती थीं, जितनी सहजता से वे जीवितों से संवाद कर सकती थीं। इससे वे भयभीत हो गईं और पहले तो उन्हें लगा कि वे जागते हुए बुरे सपने देख रही हैं। पूरी रात उन्हें लोगों से भरे कमरे का एहसास होता रहता था, फिर भी वे सोती रहती थीं। उनका अवलोकन एक ही समय में कई स्तरों पर होता था, मानो वे कई बैंड वाले रेडियो रिसीवर में बदल गई हों।

स्पष्ट रूप से, वह इनमें से कुछ भी नहीं चाहती थी, खासकर वह भारी साँसें जो उसे कैलिफोर्निया जाने के बाद फिर से सुनाई देने लगी थीं।

लेकिन फिर उसने सोचा कि यह किसी और बेचैन आत्मा की साँस हो सकती है, और ज़रूरी नहीं कि वह कोई ऐसी चीज़ या व्यक्ति हो जिसे वह कंसास से अपने साथ लाई हो। उसने ईएसपी (आंतरिक संवेदनशीलता) के विषय पर जितना हो सके पढ़ा और स्वचालित लेखन का अभ्यास किया। उसे आश्चर्य हुआ कि उसके दिवंगत पिता और दादा-दादी ने उसी के हाथ से उसे पत्र लिखे।

उसने गौर किया कि अलग-अलग संदेश अलग-अलग लोगों के हाथों में थे और स्पष्ट रूप से उसके अपने संदेशों से भिन्न थे। फिर भी, उसके तार्किक मन ने उसे बताया कि यह सब

उसके अवचेतन मन से आ रहा होगा और उसने इसे नकारना शुरू कर दिया। जैसे-जैसे उसने खुद को संदेशों से अलग कर लिया, वे धीरे-धीरे गायब होते गए और अंत में उसे मिलने बंद हो गए।

उसे इस बात का अफसोस था, क्योंकि उसके पिता की उपस्थिति उसके आसपास जीवन भर के बंधन को बनाए रखने और शायद उसे दोनों लोकों की अवांछित शक्तियों के आक्रमण से बचाने के लिए स्वागत योग्य और आश्वस्त करने वाली थी।

अब तक वह अपनी मानसिक शक्तियों के बारे में जान चुकी थी और उनके साथ जीना सीख चुकी थी, लेकिन जरूरत पड़ने पर मानसिक शक्तियों के द्वार को बंद करना भी सीख चुकी थी।

* * *

इस बीच, कंसास में वह घर अभी भी खड़ा है और बहुत कम किरायेदार लंबे समय तक वहां रहते हैं।

*121

एटना स्प्रिंग्स के प्रेतवाधित भिक्षु

“अगर आपको गोल्फ पसंद है, तो आपको हमारा नौ-होल वाला गोल्फ कोर्स बहुत पसंद आएगा,” कैलिफोर्निया के एटना स्प्रिंग्स रिसॉर्ट के ब्रोशर में लिखा है। उन्होंने सचमुच एक शानदार, आत्मनिर्भर और खूबसूरत हॉलिडे डेस्टिनेशन बनाया है। लोग आरामदायक केबिनों में रहते हैं, बच्चों के लिए अपना खेल का मैदान है, बड़े अपनी पसंद के खेल खेल सकते हैं, टेनिस, स्विमिंग, फिशिंग, घुड़ सवारी, डांसिंग, हॉर्सशू पिचिंग, हंटिंग, शफलबोर्डिंग, मिनरल बाथिंग (पानी के झरने) जैसी सुविधाएं हैं, और सबसे महत्वपूर्ण बात, उस जगह तक जाने वाली एकमात्र सड़क के दूसरी तरफ कई मील तक फैला हुआ वह खूबसूरत गोल्फ कोर्स है। सड़क के एक तरफ इतनी सारी सुविधाएं होने के कारण, गोल्फ कोर्स किसी दूरदराज इलाके में होने जैसा लगता है। मुझे नहीं पता कि मेहमानों को यह पसंद आता है या नहीं, लेकिन भूतों

को तो इससे कोई परेशानी नहीं है। क्योंकि मैं सैन फ्रांसिस्को से पचासी मील उत्तर में सिर्फ नज़ारे देखने नहीं आया था, जबकि यहाँ देखने लायक बहुत कुछ है।

नापा से निकलने वाली सड़क जैसे-जैसे पहाड़ियों की ओर बढ़ती है, आपको ऐसा महसूस होता है मानो आप एक ऐसी दुनिया में आ गए हों जिसे बाहर की दुनिया की ज़्यादा जानकारी नहीं है। उपजाऊ नापा घाटी और उसके रंग-बिरंगे अंगूर के बाग जल्द ही एक घुमावदार सड़क में बदल जाते हैं और देखते ही देखते आप घने जंगलों में पहुँच जाते हैं। ऊपर की ओर घुमावदार सड़क बिखरी हुई मानव बस्तियों से गुज़रते हुए पोप घाटी तक जाती है। यहाँ मुझे पता चला कि गोल्फ कोर्स के बिल्कुल आखिरी छोर पर एक खनिज झरना है जिसके कई स्वास्थ्य लाभ हैं।

पुराने समय में, ऐसा कुआँ स्वाभाविक रूप से किसी भी बस्ती का केंद्र होता था, लेकिन आज यहाँ का पानी व्यावसायिक रूप से बोतलों में नहीं भरा जाता। हालाँकि, रिसॉर्ट में आप जितना चाहें उतना पानी मुफ्त में प्राप्त कर सकते हैं।

वैसे तो एटना स्प्रिंग्स के आसपास मीलों तक कोई दूसरा घर या लोग नहीं हैं। सबसे नज़दीकी गाँव तक पहुँचने में ऊबड़-खाबड़ सड़कों पर बीस मिनट का समय लगता है। यह सचमुच बीहड़ इलाका है, और यह अच्छी बात है कि कैलिफ़ोर्निया में बर्फ़ नहीं पड़ती, क्योंकि कीचड़ से भरी सड़कों पर गाड़ी चलाना मैं बिल्कुल नहीं चाहूँगा।

जैसा कि मैंने पहले कहा था, हम यहाँ तक सिर्फ़ मिनरल वाटर के लिए नहीं आए थे। सैन फ्रांसिस्को के एक युवा इंजीनियर बिल विन, मेरी दोस्त लोरी क्लर्फ की कार में हमें ले जा रहे थे। लोरी एक समाजसेवी हैं और "हम" से मेरा मतलब है, ज़ाहिर है, मेरी पत्नी कैथरीन और सिबिल लीक। सिबिल को ज़रा भी अंदाज़ा नहीं था कि हम यहाँ क्यों आए हैं। उन्हें लगा कि हम बस मौज-मस्ती के लिए घूमने आए हैं, लेकिन वो मुझे अच्छी तरह जानती हैं और उन्हें किसी छिपे हुए मकसद का शक था, जो जल्द ही सामने आ गया।

इस एकांत स्थान में मेरी रुचि 1965 में तब शुरू हुई जब मेरी पहली मुलाकात डॉ. एंड्रयू वॉन साल्ज़ा से हुई। वे एक प्रसिद्ध कायाकल्प विशेषज्ञ हैं और बेहद सरल स्वभाव के व्यक्ति हैं। चिकित्सक होने के नाते, वे तंत्र-मंत्र से जुड़ी किसी भी बात पर और भी अधिक संदेह करते थे। इसलिए, जब उन्हें एक ऐसी प्रतिभा का पता चला जिसकी उन्होंने कल्पना भी नहीं की थी, तो

उन्होंने काफी अविश्वास और यहां तक कि तिरस्कार का भाव भी दिखाया: वे एक दुर्लभ क्षमता वाले फोटोग्राफिक मीडियम थे।

यह सिलसिला 1963 में शुरू हुआ, जब उनकी एक दोस्त, बेंजामिन स्वीटलैंड नाम के एक अन्य डॉक्टर की विधवा ने उनसे अपनी तस्वीर खींचने का अनुरोध किया। वह जानती थीं कि वॉन साल्ज़ा को फोटोग्राफी का बहुत शौक था और वह अपना एक पोर्ट्रेट बनवाना चाहती थीं। ज़रा सोचिए, जब कमरे में रखे एक लैंपशेड पर दिवंगत डॉ. स्वीटलैंड का चेहरा दिखाई दिया तो उन्हें कितना आश्चर्य हुआ होगा! इसमें न तो डबल एक्सपोज़र था और न ही गलती से कोई दूसरी तस्वीर खींची गई थी। डॉ. वॉन साल्ज़ा ने अपने लाइका कैमरे में साधारण ब्लैक एंड व्हाइट फिल्म का इस्तेमाल किया था।

डॉक्टर की जिज्ञासा जागृत हुई और उनका स्वाभाविक रूप से जिज्ञासु मन एक ऐसी चीज़ से उत्तेजित हो गया जिसे वे न तो समझते थे और न ही उस पर विश्वास करते थे। लेकिन वे एक रंगीन कैमरा, जो कि लाइका कंपनी का था, लेकर वापस आए और श्रीमती स्वीटलैंड की कुछ तस्वीरें लीं। बीस तस्वीरों में से एक में उनके दिवंगत पति आकाश के पृष्ठभूमि में दिखाई दिए।

श्रीमती स्वीटलैंड के साथ हुए अनुभव के तुरंत बाद एक और घटना घटी।

डॉक्टर की एक मरीज और दोस्त, श्रीमती पियर्सन, सैन फ्रांसिस्को स्थित अपने अपार्टमेंट में एंड्रयू के साथ अपनी बेटी के बारे में चर्चा कर रही थीं। लड़की ने हाल ही में आत्महत्या कर ली थी।

अचानक एंड्रयू को अपना कैमरा उठाने की तीव्र इच्छा हुई। कमरे में रोशनी कम थी, लेकिन उसे लगा कि उसे अपने पास मौजूद फिल्म का रोल खत्म करना चाहिए। बिना किसी तर्कसंगत कारण के, उसने कमरे की खाली दीवार की तस्वीर खींची। फिल्म डेवलप होने पर उस पर उस मृत लड़की की छवि उभर आई, जिससे वॉन साल्ज़ा कभी मिला ही नहीं था!

जब वह अभी भी इस बात पर विचार कर रहा था कि उसकी यह विचित्र प्रतिभा आखिर क्या हो सकती है, तभी उसे अध्यात्म में रुचि होने लगी। यह रुचि किसी राजनीतिक दल से प्रेरित होने के बजाय जिज्ञासावश अधिक थी।

उन्होंने बे एरिया में कुछ पेशेवर माध्यमों से मुलाकात की, और कुछ ऐसे लोगों से भी मिले जो इस पेशे से अपनी जीविका नहीं कमा रहे थे, लेकिन फिर भी वे उस स्तर के थे जिसे डॉक्टर सम्मानजनक मान सकते थे।

उनमें एवलिन नीलसन भी शामिल थीं, जिनके साथ वॉन साल्ज़ा ने बाद में कई बार आत्माओं से संपर्क करने के अनुभव साझा किए और जो स्पष्ट रूप से उनकी मानसिक तस्वीर लेने के लिए एक "बैटरी" बन गईं, क्योंकि वॉन साल्ज़ा की तस्वीरों में तथाकथित "अतिरिक्त" तस्वीरें, यानी मृत माने जाने वाले लोगों की तस्वीरें दिखाई दी हैं, खासकर जब मिस नीलसन उनके साथ थीं।

मैंने इन तस्वीरों की जांच की है और मैं संतुष्ट हूं कि कई कारणों से, मुख्य रूप से तकनीकी कारणों से, धोखाधड़ी की कोई संभावना नहीं है, क्योंकि इनमें से अधिकांश तस्वीरें पोलरॉइड कैमरों से ली गई थीं और मेरे सहित सक्षम गवाहों के सामने मौके पर ही विकसित की गई थीं।

एक दिन न्यूयॉर्क शहर में, श्रीमती पियर्सन, जो कई वर्षों से मानसिक दुनिया से आकर्षित थीं, प्रसिद्ध भविष्यवक्ता कैरोलिन चैपमैन से मिलने के लिए एंड्रयू को अपने साथ ले गईं।

एंड्रयू ने उस महिला के बारे में कभी नहीं सुना था, क्योंकि उसे कभी भी माध्यमों में दिलचस्पी नहीं थी। श्रीमती पियर्सन के पास एक पोलरॉइड रंगीन कैमरा था। एंड्रयू ने श्रीमती चैपमैन, जो कि माध्यम थीं, की कुछ तस्वीरें स्मृति चिन्ह के रूप में लेने की पेशकश की।

ज़रा सोचिए, जब श्रीमती चैपमैन के दादाजी एक तस्वीर में नज़र आए तो सब कितने हैरान रह गए। कहने की ज़रूरत नहीं कि डॉ. वॉन साल्ज़ा को उस बूढ़े आदमी की शक्ल-सूरत का कोई ज्ञान नहीं था और न ही उनके पास उसकी कोई तस्वीर थी, क्योंकि उन्हें पता ही नहीं था कि उस दोपहर न्यूयॉर्क में उन्हें कहाँ जाना है।

डॉ. लोगन नाम के एंड्रयू के एक मित्र, श्रीमती पियर्सन और एवलिन नीलसन के साथ माउंट रशमोर गए, जहाँ समूह ने अमेरिका के महानतम राष्ट्रपतियों के प्रसिद्ध स्मारक की तस्वीरें खींचीं। उन्हें यह देखकर बेहद आश्चर्य हुआ कि तस्वीर में एक और चेहरा था - कैनेडी का!

डॉ. लोगन अभी भी संशय में थे, इसलिए यह व्यवस्था की गई कि उन्हें एक प्रयोग के लिए एंड्रयू के सैन फ्रांसिस्को स्थित घर आना चाहिए, जिसमें उन्हें अपनी खुद की फिल्म लानी थी।

पहले उन्होंने वॉन साल्ज़ा के कैमरे से कुछ तस्वीरें लीं, लेकिन कुछ खास नहीं हुआ। फिर वॉन साल्ज़ा ने लोगान के कैमरे से तस्वीरें लीं, लेकिन फिर भी कोई नतीजा नहीं निकला। लेकिन जब डॉ. लोगान ने एंड्रयू के कैमरे से वॉन साल्ज़ा के अपार्टमेंट के एक कोने की तस्वीर ली, तो नतीजा बिल्कुल अलग था: पोलरॉइड तस्वीर में एक "खाली" दीवार के सामने एक महिला दिखाई दी, जिसका हाथ उनकी ओर बढ़ा हुआ था। जैसा कि एंड्रयू वॉन साल्ज़ा बताते हैं, दूसरे डॉक्टर का चेहरा पीला पड़ गया—वह महिला उसी सुबह उनके ऑपरेशन टेबल पर मरी थी!

लेकिन एटना स्प्रिंग्स की हमारी कुछ हद तक कठिन यात्रा का कारण 1963 में एंड्रयू वैन साल्ज़ा द्वारा की गई एक अन्य यात्रा में निहित था। उस समय, उन्होंने रिसॉर्ट के प्रबंधक श्री हीबेल के स्वामित्व वाले स्टीरियो कैमरे से दो तस्वीरें ली थीं।

जैसे ही तस्वीरें विकसित हुईं, उन्हें एक बड़ा आश्चर्य हुआ। उनके दोस्त की तस्वीरों में शानदार गोल्फ कोर्स ही दिखाई दे रहा था, और कुछ नहीं। लेकिन उसी समय खींची गई एंड्रयू की तस्वीरों में स्पष्ट रूप से भिक्षुओं की दो पंक्तियाँ दिखाई दे रही थीं। संभवतः आठ या दस भिक्षु सफेद वस्त्र पहने हुए थे, उनके सिर मुंडे हुए थे और वे अपने फैले हुए हाथों में जलती हुई मोमबत्तियाँ लिए हुए थे। उनके चारों ओर, विशेष रूप से उनके सिर के चारों ओर, लौ जैसी दीप्ति निकल रही थी।

इसमें कोई शक नहीं था, क्योंकि मेरे सामने तस्वीरें थीं—ये रंगीन तस्वीरें उन भिक्षुओं की हैं जो आग में जलकर मर गए—शायद ये जलते हुए हिस्से जीवन ऊर्जा को दर्शाते हैं। शरीर के ऊपरी हिस्से सबसे ज़्यादा चमकीले थे। एक तस्वीर में भिक्षु दाईं ओर चलते हैं, दूसरी में बाईं ओर, लेकिन दोनों तस्वीरों में उनके तपस्वी, धंसी हुई आँखों वाले चेहरे साफ़ दिखाई देते हैं—मानो उन्होंने बहुत कष्ट सहा हो।

ये तस्वीरें न केवल मनमोहक थीं, बल्कि मेरे लिए भी विचलित करने वाली थीं, जबकि मैं अक्सर मानसिक फोटोग्राफी में सफल रहा हूँ। यहाँ हमारे पास एक उत्कृष्ट वैज्ञानिक दस्तावेज था।

मैं इन भिक्षुओं के बारे में और अधिक जानना चाहता था, और इसका एकमात्र तरीका नापा काउंटी जाना था। इसीलिए हम उस सुहावनी अक्टूबर की दोपहर को पोप घाटी से होकर गुजर रहे थे।

हम अभी भी एटना स्प्रिंग्स से कई मील दूर थे जब सिबिल ने मेरा हाथ पकड़ा और कहा: "जिस जगह आप मुझे ले जा रहे हैं, वह एक ऐसी जगह है जहां लोगों का एक छोटा समूह शरण लेने, जीवित रहने के लिए गया होगा, और वहां कुछ धार्मिक तत्व भी मौजूद हैं।"

"वहां क्या हुआ था?"

वे पूरी तरह से नष्ट हो गए थे।

वे किस तरह के लोग थे, और उन्हें किसने खत्म किया?

मुझे नहीं पता क्यों, लेकिन मेरे मन में 'पोप-विरोधी' शब्द आ रहा है। साथ ही एक नाम भी, हाय...।"

कुछ देर बाद, उसने उस प्रभाव को और अधिक तीव्रता से महसूस किया।

"मुझे ऐसा लग रहा है कि ये लोग पानी पार कर रहे हैं, जो कैलिफोर्निया के मूल निवासी नहीं हैं। क्या ये ह्यूगनॉट प्रभाव हैं?"

हम सड़क पर लगे एक बोर्ड के पास से गुजर रहे थे जिस पर लिखा था "लाल चांदी की खानें" और सिबिल ने टिप्पणी की कि वह कीमती धातुओं के खजाने और उनसे जुड़ी परेशानियों से प्रभावित हुई थी।

अब हम रिसॉर्ट पहुँच चुके थे। पंद्रह मिनट तक हम वहाँ घूमते रहे, फिर आखिरकार हमें एक चिड़चिड़ा सा चौकीदार मिला, जिसने हमें गोल्फ कोर्स की ओर जाने का रास्ता बताया। हम जहाँ तक जा सकते थे, वहाँ तक गाड़ी चलाकर गए, फिर गाड़ी वहीं छोड़कर लॉन में आ गए। वह एक खुला मैदान था, फिर भी सिबिल के चेहरे पर तुरंत एक अजीब सी बेचैनी छा गई, मानो वह खुद को घिरा हुआ महसूस कर रही हो।

"यातना... सूली पर चढ़ाना और आग में जलाना..." वह कुछ कांपते हुए बुदबुदाई। "हमें यह सब क्यों सहना पड़ता है?"

मैंने ज़िद की। वहाँ भूतिया कुछ था या नहीं, यह पता लगाने का कोई और तरीका नहीं था।

“यहाँ फ्रांसीसी प्रोटेस्टेंट ह्यूगनॉट का प्रभाव दिखता है...” उन्होंने आगे कहा, “लेकिन यह समझ में नहीं आता। धर्म और धर्म-विरोधी। पेड़ों के पास वह बेंच गतिविधियों का केंद्र है... मुझे लगता है कि वहाँ कुछ नरसंहार हुआ था... क्रॉस... चौकोर क्रॉस, लाल, खून के निशान वाले क्रॉस...”

“ये लोग किस राष्ट्रीयता के हैं?”

“विजेता...”

“पीड़ित कौन थे?”

“मैं बस एक शब्द ठीक करने की कोशिश कर रहा हूँ... एच-आई... बाकी मैं नहीं कर पा रहा हूँ... इस जगह का एक विशेष महत्व है... यहाँ कई उपस्थितियाँ हैं...।”

"कितने?"

"नौ।"

उन्होंने कैसे कपड़े पहने हैं?

कैलिफोर्निया के एटना स्प्रिंग्स के प्रेतवाधित भिक्षु

“जैसे किसी पुरुष पर स्त्री का वस्त्र हो... स्कर्ट वाला वस्त्र।”

"रंग?"

"भूरा।"

क्या उनके हाथों में कुछ है या वे कुछ कर रहे हैं, कोई कार्रवाई कर रहे हैं?

“उनके सिर के चारों ओर एक चीज़ है...जैसे कु क्लक्स क्लैन के लोग...उनके चेहरे दिखाई नहीं दे रहे...रोशनी...आग...आग बहुत ज़रूरी है...।”

जब मैंने उससे और करीब से देखने को कहा, तो वह फूट-फूटकर रोने लगी।

“नहीं, नहीं,” उसने मुट्ठी भींचकर और गालों पर आंसू बहाते हुए गिड़गिड़ाते हुए कहा। मैंने उसे किसी भूतिया घटना में इतना भावुक होते कभी नहीं देखा था।

“तुम्हें कैसा लग रहा है?” मैंने धीरे से पूछा। वह लगभग समाधि जैसी अवस्था में थी।

“नफरत...” उसने कांपती हुई, आंसुओं से भरी आवाज में जवाब दिया, “यहाँ छुपकर पाई जाती है, कोई बच निकलने का रास्ता नहीं... पोप के लोगों से... कोई चेहरा नहीं...।”

मैंने पूछा, "क्या वे इसी स्थान पर मारे गए थे?"

लगभग सुनाई न देने वाली आवाज़ में सिबिल ने जवाब दिया: "हाँ..."

"क्या ये नौ लोग अभी भी यहीं हैं?"

“न्याय तो मिलना ही चाहिए...उनके जीवन के लिए न्याय...।”

“उन्हें किसने चोट पहुंचाई है?”

“हीरोनिमस।” यही वो “हाय” था जिसे वो पहले बोलने की कोशिश कर रही थी।

“हाइरोनिमस कौन है?”

“पोपों के अनुयायियों का नेता।”

“उसने उनके साथ क्या किया?”

"उसने उन्हें जला दिया... बेकार हो गए।"

"वे कौन थे?"

“उन्होंने चांदी ले ली...।”

मैंने करुणा भरे कुछ शब्द कहे और नौ भूतों से अपने भाइयों से मिलने का अनुरोध किया क्योंकि उनके साथ हुआ प्राचीन अन्याय अब मायने नहीं रखता था।

“हमारे लिए प्रार्थना करो,” सिबिल ने धीरे से कहा। “आग से गुज़रे, हाथों में क्रॉस लिए... उनकी प्रार्थनाएँ...।”

सिबिल ने प्रार्थना के शब्द कहे, जिसमें मैंने भी उसका साथ दिया। उसकी साँसें तेज़ चल रही थीं, मानो वह बहुत भावुक हो गई हो। कुछ क्षण बाद, वह भावविभोर हो गई और होश में आ गई। वह स्तब्ध लग रही थी और पहले तो उसे याद ही नहीं आ रहा था कि वह कहाँ है।

“मुझे जाना होगा...” उसने कहा और पीछे मुड़े बिना कार की ओर चल पड़ी।

हमें उसे दोबारा बात करने के लिए राजी करने में कुछ समय लग गया, वह सुनसान गोल्फ कोर्स अक्टूबर की रात में धीरे-धीरे डूब रहा था, उससे बहुत दूर का समय था।

सिबिल फिर से पहले जैसी हो गई थी और उसे बीते एक घंटे की कोई बात याद नहीं थी। लेकिन हम, जो उसके पास खड़े थे जब उन प्रेत जैसे भिक्षुओं ने अपनी कहानी सुनाई, जितनी वे सुना सके, हमारे लिए एक भी शब्द भूला नहीं था। अगर कभी याददाश्त धुंधली हो जाए, तो मुझे बस उन तस्वीरों को फिर से देखना होगा जिनमें उन भिक्षुओं की पीड़ा को कैद किया गया था जो अपनी भीषण मृत्यु के स्थान पर जमे हुए थे।

मैंने उस इलाके की एक फिल्म बनाई, लेकिन उसमें कुछ भी असामान्य नहीं दिखा। मेरा कैमरा, जिससे कभी-कभी भूतिया तस्वीरें भी आ जाती हैं, दुर्भाग्य से कुछ तस्वीरें लेते समय खाली था। मुझे लगा था कि उसमें फिल्म है, लेकिन बाद में पता चला कि मैं उसे लोड करना भूल गया था... या फिर किस्मत ने ही मेरे प्रयासों पर पानी फेर दिया?

एटना स्प्रिंग्स में किसी ने भी भूतों या भिक्षुओं के बारे में कभी नहीं सुना था। इसलिए पुष्टि के लिए खोज अपने घर वापस जाकर शुरू करनी पड़ी।

न्यूयॉर्क में हिस्पैनिक सोसाइटी में, कैलिफोर्निया के बारे में किताबें केवल उस अवधि के लिए उपलब्ध हैं जब वह भूमि स्पेनिश शासन के अधीन थी, हालांकि उनके पास कुछ सामान्य इतिहास भी हैं।

इनमें से एक पुस्तक, इरविंग रिचमैन की 'कैलिफोर्निया अंडर स्पेन एंड मेक्सिको' में, मुझे मूल अमेरिकी आबादी और उनके स्पेनिश विजेताओं के बीच संबंधों के बारे में एक अंश का हवाला दिया गया था, जिसमें हमारी पहेली का सुराग छिपा हुआ प्रतीत होता था।

यह विशेष अंश सैंटो डोमिंगो की स्थितियों से संबंधित था, लेकिन यह उस समय स्पेनिश-अमेरिकी पादरियों के बीच चल रहे दो गुटों के व्यापक संघर्ष का हिस्सा था। जैसा कि हम सभी जानते हैं, विजय प्राप्त करने वालों ने मूल निवासियों के साथ हिटलर के नाजियों द्वारा द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान अधीन किए गए लोगों के साथ किए गए व्यवहार से कुछ ही कम क्रूरतापूर्ण व्यवहार किया था।

सोलहवीं शताब्दी में उनकी यातना देने की विधियाँ इतनी क्रूर नहीं थीं, लेकिन उनके इरादे उतने ही बुरे थे। हम पढ़ते हैं कि उपनिवेशवादियों की मनमानी पर भारतीयों को मौत के घाट उतार दिया जाता था, बच्चों को कुत्तों के सामने फेंक दिया जाता था, और सत्ताधारी शक्तियों के खिलाफ राजनीतिक और आध्यात्मिक, दोनों ही तरह के विरोध को बेरहमी से दबा दिया जाता था।

उत्तरी कैलिफोर्निया, विशेष रूप से सैन फ्रांसिस्को के ऊपर का क्षेत्र, स्पेनिश दुनिया का सबसे दूरस्थ हिस्सा रहा होगा, और फिर भी प्रसिद्ध मिशनों और उनकी उप-चौकियों के अलावा भी चौकियां मौजूद थीं।

इनमें से एक संभवतः झरनों के पास स्थित उस गोल्फ कोर्स की जगह पर बसा हुआ था। इस प्रकार, स्पेन के औपनिवेशिक साम्राज्य में जो कुछ भी घटित हुआ, वह अंततः, भले ही देर से ही सही, सुदूर इलाकों तक भी पहुँच गया होगा, और संभवतः वहाँ ऐसी परिस्थितियाँ पाई होंगी जिन्हें सरकार बर्दाश्त नहीं कर सकती थी।

सोलहवीं शताब्दी के पूर्वार्ध में, मूल अमेरिकी लोगों के साथ व्यवहार और उनकी स्थिति ही विवाद का मुख्य कारण थी। हालाँकि भारतीयों के पास राजनीतिक अधिकार या ज़रा सी भी शक्ति नहीं थी, फिर भी दरबार में उनके कुछ मित्र थे। हैरानी की बात यह है कि इन असहाय मूल निवासियों के संरक्षक डोमिनिकन भिक्षु निकले—वही डोमिनिकन जो स्पेन में धर्म जांच के दौरान सबसे अधिक कुशल और सक्रिय थे!

चाहे इसी कारण से हो या राजनीतिक स्वार्थवश, श्वेत वस्त्रधारी डोमिनिकन भिक्षुओं ने भूरे वस्त्रधारी फ्रांसिस्कन भिक्षुओं का भारतीयों के मामले में विरोध किया: डोमिनिकन भिक्षुओं के लिए, भारतीय साथी मनुष्य थे जो हर प्रकार के सम्मान और मानवीय व्यवहार के पात्र थे। फ्रांसिस्कन भिक्षुओं के लिए, वे स्पष्ट रूप से इनमें से कुछ भी नहीं थे, यहाँ तक कि ईसाई धर्म के संस्कार दिए जाने के बाद भी!

और स्पेन के जमींदारों के लिए, भारतीय सस्ते मजदूर थे, गुलाम थे जिन्हें किसी भी प्रकार के मानवाधिकार नहीं दिए जा सकते थे। इस प्रकार, लगभग 1530 के आसपास, हमारे सामने एक ऐसी स्थिति थी जो कुछ मायनों में 1861 में हुए गृहयुद्ध से पहले की स्थितियों के समान थी।

यहां वह अंश दिया गया है जिसका उल्लेख सर ए. हेल्प्स की पुस्तक 'द स्पैनिश कॉन्क्वेस्ट्स इन अमेरिका' (लंदन, 1900), खंड I, पृष्ठ 179 आदि से किया गया है।

धर्मगुरुओं (जेरोनिमी) ने अधिकारियों के साथ-साथ फ्रांसिस्कन और डोमिनिकन भिक्षुओं से भी भारतीयों की स्वतंत्रता के विषय में राय पूछी। पहले से ही यह स्पष्ट था कि उत्तर क्या होंगे। अधिकारियों और फ्रांसिस्कन भिक्षुओं ने भारतीयों के विरुद्ध मत दिया, जबकि डोमिनिकन भिक्षुओं ने उनके पक्ष में मत दिया।

जेरोनिमाइट फादर्स...और सिबिल ने एक नाम पर जोर दिया था, जो इस रहस्यमय कहानी के लिए इतना महत्वपूर्ण था: हिरोनिमस...जेरोम का लैटिन नाम!

हममें से किसी को भी इस तरह के अस्पष्ट धार्मिक शब्द के बारे में कैसे पता चल सकता था? इसे ढूंढने में मुझे कई दिनों की खोजबीन और संयोग दोनों की मदद लगी।

*122

अमेरिका में सबसे पहले कौन उतरा?

कई लोगों को, शायद मेरे अधिकांश पाठकों को, इस अध्याय के शीर्षक में उठाया गया प्रश्न अटपटा लग सकता है। क्या हम नहीं जानते कि यह क्रिस्टोफर कोलंबस थे? क्या हर स्कूली

बच्चा हमें यह नहीं बता सकता कि यह घटना 1492 में घटी थी और वे उस स्थान पर उतरे थे जिसे आज सैन साल्वाडोर द्वीप के नाम से जाना जाता है?

जी हां, उन्होंने ऐसा किया था, और 1956 में एक अमेरिकी महिला, रूथ वोल्पर ने सैन साल्वाडोर के लॉन्ग बे में एक साधारण सफेद क्रॉस लगाया था, जो उस स्थान को चिह्नित करता था जहां उन्होंने अमेरिकी धरती पर कदम रखा था।

फिर भी, सवाल बना हुआ है: क्या कोलंबस वास्तव में अमेरिका की खोज करने वाला और "पुरानी" और "नई" दुनिया के बीच संपर्क स्थापित करने वाला पहला व्यक्ति था?

तकनीकी दृष्टि से देखें तो ऐसा कभी नहीं हुआ कि प्राचीन और नई दुनिया के बीच किसी न किसी प्रकार का संपर्क न रहा हो। साइबेरिया से अलास्का तक फैले "भूमि पुल" के रास्ते, कुछ लोग प्रागैतिहासिक काल में आए थे। उत्तरी अमेरिका की एस्किमो आबादी एशियाई मूल की है। अमेरिकी मूल निवासी, यदि एशियाई नहीं हैं, तो निश्चित रूप से मंगोल जाति से संबंधित हैं और वे अमेरिका में इससे भी पहले आए होंगे, शायद उस समय जब यूरेशिया और उत्तरी अमेरिका के भूभाग आज की तुलना में कहीं अधिक निकट थे। क्योंकि हम जानते हैं कि सदियों से महाद्वीप एक-दूसरे से दूर होते गए हैं, और हमें यह भी संदेह है कि भूमि के बड़े-बड़े हिस्से जो अब दिखाई नहीं देते, वे कभी जलमग्न रहे होंगे।

लेकिन पश्चिमी यूरोप के लोगों का क्या? यदि कोलंबस नई दुनिया के लिए रवाना होने वाला पहला व्यक्ति नहीं था, तो फिर कौन था?

हालांकि किसी भी देशभक्त इतालवी-अमेरिकी को इसके परिणामों से डर लग सकता है, खासकर कोलंबस दिवस पर, लेकिन अमेरिकी महाद्वीप के साथ यूरोपीय लोगों के पूर्व संपर्क के प्रमाण काफी मजबूत हैं। इससे कोलंबस की साहसी यात्रा का महत्व जरा भी कम नहीं होता, बल्कि समुद्री यात्रा के इतिहास और समुद्र पार के धन के आकर्षण में और इजाफा होता है।

शायद अमेरिकी धरती पर सबसे पहले कौन उतरा, यह सवाल इस सवाल से कम महत्वपूर्ण है कि सबसे आखिर में कौन उतरेगा—लेकिन खोज का रोमांच ज्यादातर लोगों को आकर्षित करता है, इसलिए यह सवाल मायने रख सकता है। हमेशा से ही, हर चीज में सबसे पहले या सबसे बेहतर होना एक अमेरिकी विशेषता रही है।

विज्ञान में कोई भी बात इतनी पुष्ट नहीं है कि नए प्रमाणों से उसका खंडन न हो सके। आम तौर पर माना जाता है कि तीर्थयात्री इस देश के पहले स्थायी निवासी थे, जो 1620 में प्लायमाउथ रॉक पर उतरे थे। लेकिन नए प्रमाण मिले हैं कि पुर्तगाली यहाँ पहले ही आ चुके थे —ठीक 1511 में। मैसाचुसेट्स के बर्कले में स्थित डाइटन रॉक पर पुर्तगाली भाषा में क्रॉस, 1511 की तारीख और मिगुएल कोर्टेरियल का नाम अंकित है। इस स्थल पर सोलहवीं शताब्दी में निर्मित पुर्तगाली कलाकृतियाँ मिली हैं। रोड आइलैंड के एक चिकित्सक, मैनुअल दा सिल्वा, जिनका शौक पुरातत्व भी है, ने जब तक इस तथ्य को खोजा नहीं, तब तक विज्ञान जगत में इस बात को पूरी तरह से नजरअंदाज किया गया था। पास ही के न्यूपोर्ट, रोड आइलैंड में सोलहवीं शताब्दी के पुर्तगाली चर्चों के समान एक पत्थर का टावर है। पुर्तगाली मूल की तोपों और तलवारों की तिथि का सटीक अनुमान लगाया जा चुका है, और उनकी संरक्षण स्थिति से हमें लगभग यह पता चलता है कि वे कितने समय से जमीन में दबे हुए हैं। वे तीर्थयात्रियों और मेफ्लावर की यात्रा से काफी पहले के हैं।

लेकिन हम यहाँ अमेरिका में पहली बस्ती की नहीं, बल्कि उसकी खोज की बात कर रहे हैं। सभ्य मानव यूरोप से अमेरिका कब पहुँचा? क्या प्राचीन काल के महान नाविक, फोनीशियन, इतनी दूर तक पहुँचे थे? आज तक हमें इसका कोई प्रमाण नहीं मिला है। लेकिन हम इतना ज़रूर जानते हैं कि वे ब्रिटेन पहुँचे थे। इन पूर्व-ईसाई लोगों द्वारा इस्तेमाल की जाने वाली नावों के प्रकार को देखते हुए, एशिया माइनर से भूमध्य सागर और जिब्राल्टर जलडमरूमध्य से होते हुए, फिर फ्रांसीसी तट के किनारे और अंत में डोवर के खतरनाक जलडमरूमध्य से होकर की गई यात्रा के लिए महान समुद्री कौशल और साहस की आवश्यकता रही होगी। इंग्लैंड में फोनीशियन बस्तियाँ निश्चित रूप से मौजूद थीं। शायद इन शुरुआती ब्रितानियों की ही कुछ शाखाएँ आगे की खोज के लिए अटलांटिक महासागर पार करने गई हों। मैं यह नहीं कह रहा हूँ कि वे गए थे, लेकिन अगर कभी उत्तरी अमेरिका में फोनीशियन अवशेष मिलते हैं, तो मैं केवल यही आशा कर सकता हूँ कि स्थापित इतिहासकार तुरंत "धोखाधड़ी" का आरोप लगाकर खुले मन से जाँच करने के बजाय सबूत मिटाने की कोशिश न करें।

समुद्री यात्रा करने वाले खोजकर्ताओं की एक और महान जाति, जिसका हमें उल्लेख करना चाहिए, वे नॉर्समेन हैं जिन्होंने फोनीशियन लोगों के लगभग दो हजार साल बाद महासागरों में यात्रा की।

स्कैंडिनेविया के बंजर तटों पर बसे अपने घरों से वे पश्चिमी यूरोप के तटों के किनारे-किनारे रवाना हुए और फ्रांस के लोगों को आतंकित किया। अंततः उन्होंने फ्रांस के उस हिस्से में अपना एक राज्य स्थापित किया, जिसे आज भी नॉर्मंडी के नाम से जाना जाता है। यह नाम उन नॉर्मन्स या नॉर्समेन के नाम पर रखा गया है जिन्होंने कभी वहां शासन किया था और फिर वहां से आगे बढ़कर पूरे इंग्लैंड पर राज किया। इंग्लैंड एक ऐसा देश था जिस पर वाइकिंग्स विलियम द कॉन्करर के जन्म से बहुत पहले ही हमला करते थे। फिर वे आयरलैंड पर हमला करने और वहां वाइकिंग साम्राज्य स्थापित करने के लिए रवाना हुए, और उससे भी आगे बढ़कर सुदूर आइसलैंड तक पहुंच गए।

नौकाओं के साथ उनका उत्कृष्ट कौशल और खगोल विज्ञान और मौसम विज्ञान की उनकी उन्नत समझ, साथ ही उनकी अविश्वसनीय युद्ध क्षमता, ने मिलकर उन्हें प्रारंभिक मध्य युग के महान समुद्री साहसी बना दिया।

इन लोगों के पास बहुत सारी लकड़ी थी, इसलिए उन्होंने जहाज़ बनाए, या बेहतर कहें तो लंबी नावें, जो भयंकर समुद्री लहरों में भी चलने में सक्षम थीं। एक समय में स्कैंडिनेविया, ब्रिटिश द्वीप समूह, फ्रांस, दक्षिणी इटली और सिसिली जैसे विभिन्न स्थानों पर उनके प्रभुत्व के निशान मिलते थे।

हालांकि, यहां हमारा मुख्य विषय आइसलैंड से परे पश्चिम दिशा में उनके समुद्री कारनामे और खोज हैं। आइसलैंड, जहां दुनिया की सबसे पुरानी संसद, अल्थिंग स्थित है, ने ही हमें अमेरिका की खोज से संबंधित सबसे पुराने लिखित विवरण भी प्रदान किए हैं। विशेष रूप से, एरिक द रेड की गाथा में एरिक नामक एक व्यक्ति का स्पष्ट वर्णन है, जिसे उसकी दाढ़ी के कारण 'रेड' के नाम से जाना जाता था, जो आइसलैंड में रहता था, जो उस समय वाइकिंग साम्राज्य का हिस्सा था।

985 ईस्वी में, उनका अपने रिश्तेदारों से झगड़ा हो गया और उन्हें आइसलैंड छोड़ने के लिए मजबूर होना पड़ा। तीन साल के निर्वासन के बाद, उन्होंने नई भूमि की खोज में ग्रीनलैंड के

पश्चिमी तट का भ्रमण किया। उन्होंने ही इस बर्फीले क्षेत्र को अपना नाम दिया, इस उम्मीद में कि यह प्रवासियों को आकर्षित कर सकता है। ग्रीनलैंड को उत्तरी अमेरिकी महाद्वीप का हिस्सा माना जाता है, लेकिन एरिक के लिए यह केवल एक और द्वीप था जिसकी खोज करना सार्थक था। उन्हें लगा कि जिस भूमि का उन्होंने अवलोकन किया है उसमें अपार संभावनाएं हैं, और बाद में वे अपनी पत्नी थजोधिल्ड और अपने छोटे बेटे लीफ को पच्चीस जहाजों में पुरुषों और आपूर्ति के साथ ग्रीनलैंड ले आए। इनमें से अधिकांश नॉर्समैन ग्रीनलैंड के दक्षिणी छोर पर एक क्षेत्र में बस गए जिसे उन्होंने पूर्वी बस्ती कहा। यहाँ एरिक ने एक खेत चलाया जिसे उन्होंने ब्राटाहलिड या "खड़ी ढलान" नाम दिया। हालाँकि, कुछ नॉर्समैन आगे बढ़ गए और एक और स्थान की स्थापना की जिसे उन्होंने पश्चिमी बस्ती कहा।

जब एरिक का बेटा लीफ बड़ा हुआ, तो उसने उसे एक साल के लिए दरबार में रहने के लिए ट्रोंडजेम भेज दिया। उस समय लीफ ने ईसाई धर्म अपना लिया, हालांकि एरिक ने अपनी मृत्यु तक इस नए धर्म को स्वीकार नहीं किया। लेकिन लीफ ने राजा को इतना प्रभावित किया कि ओलाफ ने उसे ग्रीनलैंड में ईसाई धर्म का प्रचार करने के लिए अपना आयुक्त नियुक्त कर दिया। यह सुनिश्चित करने के लिए कि वह अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करे, उसने उसके साथ एक बेनेडिक्टिन भिक्षु को भेजा। यह सन् 1000 ईस्वी का वर्ष था। लीफ एरिक्सन ने अपना कर्तव्य निभाया और ग्रीनलैंड ईसाई धर्म में परिवर्तित हो गया।

इसके कुछ समय बाद ही वह घटना घटी जिसका अमेरिकी इतिहास पर बहुत बड़ा प्रभाव पड़ा।

नॉर्वे से लौट रहा एक आइसलैंडिक व्यापारी तूफान में बहकर अपने मार्ग से बहुत दूर चला गया और अंततः आइसलैंड पहुँचने के बजाय किसी तरह ग्रीनलैंड के ब्राटाहलिड द्वीप पर पहुँच गया। वहाँ उसका स्वागत एरिक के पुत्र लीफ ने किया और उसने अपने मेज़बान को बताया कि ग्रीनलैंड के पश्चिम में समुद्र से जूझते हुए उसने और भी पश्चिम में ऐसी भूमि देखी थी जहाँ कोई भूमि नहीं होनी चाहिए थी—एक ऐसी भूमि जिस पर कदम रखने की उसने हिम्मत नहीं की थी।

अब, जाहिर है कि यह ठीक उसी तरह की चुनौती थी जो लीफ एरिक्सन जैसे व्यक्ति को कार्रवाई करने के लिए प्रेरित कर सकती थी। उन्होंने अपने जहाज को तैयार किया, एक दल

इकट्ठा किया और यह देखने के लिए पश्चिम की ओर रवाना हुए कि क्या वास्तव में वहां जमीन है।

वहाँ ज़मीन थी, और लीफ अपने आदमियों के साथ किनारे पर उतरा, और उसने पाया कि वहाँ जंगली अंगूर उग रहे थे और इसलिए - गाथा हमें बताती है - लीफ ने इसका नाम विनलैंड रखा।

इन गाथाओं में इसका काफी विस्तृत वर्णन मिलता है। इनमें लीफ की पहली खोज (जो लगभग सन् 1000 ईस्वी में हुई थी) के बाद ग्रीनलैंड से विनलैंड तक किए गए कई अन्य अभियानों का भी उल्लेख है। फिर भी, हाल तक इन विवरणों को किंवदंतियाँ या कम से कम संदेहास्पद परंपराएँ माना जाता था, क्योंकि प्राचीन गाथाओं के हर शब्द को सटीक नहीं माना जा सकता, हालाँकि मेरी राय में, विद्वानों द्वारा स्वीकार किए जाने से कहीं अधिक बातें सटीक हैं।

* * *

फोलिन्स पॉन्ड, केप कॉड—वह स्थान जहाँ वाइकिंग्स सबसे पहले उतरे थे

फिर 1967 में, ब्राटाहलिड के किनारे रहने वाले एस्किमो लोगों के एक समूह ने एक नए स्कूल की नींव के लिए खुदाई शुरू की। उन्हें आश्चर्य हुआ, और डेनिश पुरातत्व सोसायटी को खुशी हुई, जब उन्हें एक खूबसूरती से संरक्षित कब्रिस्तान मिला, जो दर्जनों लोगों के अवशेषों से भरा

हुआ था। इसके अलावा, ग्यारहवीं शताब्दी के एक चर्च और पास के एक फार्महाउस की नींव भी मिली, ठीक वैसे ही जैसे गाथा में वर्णित थी। लाइफ पत्रिका ने इन रोमांचक खोजों का संक्षिप्त विवरण प्रकाशित किया, और कई वर्षों तक अर्ध-पौराणिक कथाओं में गुम रहने के बाद, लीफ एरिक्सन की एक वास्तविक व्यक्तित्व के रूप में प्रतिष्ठा अचानक फिर से स्थापित हो गई।

अब यह निश्चित रूप से ज्ञात है कि एरिक द्वारा स्थापित ग्रीनलैंड उपनिवेश पाँच शताब्दियों तक चले, लेकिन किसी कारणवश वे लगभग 1500 ईस्वी में लुप्त हो गए और यह भूमि एस्किमो लोगों के लिए छोड़ दी गई। इसके दो सौ वर्ष बाद ही स्कैंडिनेवियाई लोगों ने इस विशाल द्वीप पर पुनः उपनिवेश स्थापित किया।

इन गाथाओं का सबसे उल्लेखनीय भाग ग्रीनलैंड की खोज नहीं, बल्कि वाइकिंग्स द्वारा विनलैंड कहे जाने वाले क्षेत्र की खोज और उसके बाद उसका उपनिवेशीकरण है। और, हालांकि कुछ विद्वान इस बात से इनकार नहीं करेंगे कि विनलैंड की यात्रा वास्तव में हुई थी, फिर भी इसके स्थान को लेकर हमेशा से काफी चर्चा रही है।

संयुक्त राज्य अमेरिका और कनाडा के विभिन्न हिस्सों में अजीबोगरीब खुदाई और उससे भी अधिक विचित्र खोजें हुई हैं, जिन्होंने रूढ़िवादी पुरातत्वविदों को इस हद तक भ्रमित कर दिया कि हाल तक, अमेरिका की वाइकिंग खोज का पूरा प्रश्न "शायद" की श्रेणी में डाल दिया गया था।

हालांकि, अंततः, कुछ महत्वपूर्ण खोजें सामने आईं जिन्हें अब नजरअंदाज नहीं किया जा सकता था, और एक बार फिर लीफ एरिक्सन की ग्यारहवीं शताब्दी में अमेरिका की यात्रा का विषय गैर-पुरातत्वविदों के बीच भी चर्चा का एक लोकप्रिय विषय बन गया।

* * *

वर्तमान प्रयोग शुरू होने से पहले, इतिहास की किसी घटना को सिद्ध करने के केवल दो ही तरीके थे: समकालीन लिखित प्रमाण, या ऐसी कलाकृतियाँ जिन्हें विशिष्ट स्थानों, कालों या ऐतिहासिक प्रक्रियाओं से मज़बूती से जोड़ा जा सके। इन दो "सामान्य" तरीकों से भी लीफ एरिक्सन ने अच्छा काम किया। एरिक द रेड और उनके पुत्र लीफ एरिक्सन की गाथा एक

महत्वपूर्ण ऐतिहासिक दस्तावेज है। यह तथ्यों पर आधारित है और यात्राओं तथा बस्तियों के स्थानों का बहुत ही सटीक वर्णन करती है। लगभग पच्चीस वर्ष पूर्व, ऐसे प्राचीन दस्तावेजों या कहानियों को काल्पनिक या, ज़्यादा से ज़्यादा, घटनाओं का विकृत और अलंकृत वर्णन मानकर खारिज कर देना प्रचलन में था। निश्चित रूप से यह बात कभी-कभी सच भी होती है। इस तरह के रूपांतरण का एक सबसे उल्लेखनीय उदाहरण राजा आर्थर की कहानी है, जो छठी शताब्दी के रोमन-बाद के एक साधारण राजा से बारहवीं शताब्दी के एक भव्य शूरवीर राजा में परिवर्तित हो गए। लेकिन मृत सागर के स्क्रॉल की खोज ने विद्वानों को नए सिरे से सोचने का अवसर दिया। इन अध्ययनों और हाल ही में राजा हेरोड के किले मसाडा में हुई खुदाई से यह साबित हुआ कि कम से कम कुछ प्राचीन ऐतिहासिक विवरण सही थे। समकालीन विवरणों में उल्लिखित और सदियों से दबे हुए स्थलों या इमारतों को फिर से खोजने का रोमांच एक ऐसा अनुभव है जिसे केवल एक पुरातत्वविद् ही पूरी तरह से समझ सकता है। निष्पक्ष विद्वान को ऐसे स्रोत सामग्री के जाल में से रास्ता ढूंढने में सक्षम होना चाहिए, खासकर यदि उसे क्षेत्र कार्य से सहायता मिले। क्षेत्र कार्य से मेरा तात्पर्य उन क्षेत्रों में खुदाई करना है जहां उस काल और उससे संबंधित लोगों की इमारतों या कलाकृतियों के होने का संदेह हो। इसके अलावा, आकस्मिक खोजें भी होती हैं जो व्यवस्थित खुदाई को पूरक बनाती हैं। आकस्मिक खोजों के साथ समस्या यह है कि उनकी सूचना हमेशा तुरंत नहीं दी जाती है ताकि सक्षम कर्मी उन परिस्थितियों की जांच कर सकें जिनके तहत ये वस्तुएं सामने आती हैं। इस प्रकार, बाद के विशेषज्ञों के लिए कुछ काफी प्रामाणिक अवशेषों को झूठा घोषित करना आसान हो जाता है, और बाद में, शांत पुनर्मूल्यांकन से ही इन अवशेषों को उचित महत्व मिलता है।

वाइकिंग्स के मामले में, "स्थापित" विद्वानों में वाइकिंग गाथाओं को कमतर आंकने की प्रबल प्रवृत्ति रही है, जिसका एक कारण मनोवैज्ञानिक भी है: आखिर कैसे आदिम नॉर्स लोग न केवल अपनी छोटी नावों में तूफानी अटलांटिक महासागर को पार कर पाए, बल्कि शत्रुतापूर्ण भारतीयों और प्रतिकूल प्राकृतिक परिस्थितियों का सामना करते हुए अमेरिकी महाद्वीप के बीहड़ों में प्रवेश भी कर पाए? मिस्रवासियों ने आधुनिक मशीनों के बिना उन भारी पत्थरों को

अपने पिरामिडों पर कैसे पहुंचाया? हमें नहीं पता—कम से कम "आधिकारिक तौर पर"—लेकिन मिस्रवासियों ने यह जरूर किया होगा, क्योंकि वे पत्थर वहां सबके सामने मौजूद हैं।

बीते समय की घटनाओं के संदर्भ में संभाव्यता गणनाएँ हमेशा विश्वसनीय नहीं होतीं। लेमिंग्स की तरह, उत्साही नॉर्स नाविकों में भी समुद्र के पार नई भूमि की खोज करने की प्रबल इच्छा थी। संभवतः इसी इच्छा ने उन्हें असंभव लगने वाली बाधाओं को पार करने में मदद की होगी। हाल के समय में भी, मनुष्य छोटी नावों में अटलांटिक महासागर पार कर चुके हैं, जीवन रक्षा की तमाम संभावनाओं के बावजूद, और उन्होंने यह सफलतापूर्वक किया। हाल के वर्षों में विद्वानों में विनलैंड पार करने की घटना को वास्तविक मानने की प्रवृत्ति बढ़ी है, और वे अपना ध्यान उस रहस्यमय भूभाग की खोज पर केंद्रित कर रहे हैं जिसे वाइकिंग्स विनलैंड कहते थे।

* * *

यहीं पर हमें अमेरिका में वाइकिंग्स की उपस्थिति के भौतिक साक्ष्यों पर विचार करना चाहिए, क्योंकि नॉर्स मूल की इमारतों, कब्रों, पत्थरों और कलाकृतियों के रूप में कुछ ऐसे साक्ष्य मौजूद हैं जिन्हें नजरअंदाज नहीं किया जा सकता है।

* * *

1948 में, अर्लिंग्टन मैलरी नामक एक सेवानिवृत्त इंजीनियर और नाविक ने न्यूफ़ाउंडलैंड के उत्तरी छोर पर एक नॉर्स बस्ती के कुछ खंडहरों की खोज की और तुरंत यह निष्कर्ष निकाला कि यह विनलैंड था। 1951 में, लॉस्ट अमेरिका नामक पुस्तक में, मैलरी ने न्यूफ़ाउंडलैंड के साथ-साथ ओहियो, रोड आइलैंड और वर्जीनिया में भी नॉर्स अवशेषों की अपनी खोजों का विवरण दिया। चूंकि श्री मैलरी किसी प्रतिष्ठित संस्थान से जुड़े कोई प्रतिष्ठित विद्वान नहीं थे, इसलिए उनकी खोजों को, हालांकि सावधानीपूर्वक दस्तावेजीकृत किया गया था, उस समय प्रेस और आम जनता में बहुत कम ध्यान मिला।

मैलेरी को आखिर क्या मिला?

उत्तरी न्यूफ़ाउंडलैंड में सोप्स द्वीप नामक स्थान पर, उन्होंने वाइकिंग शैली और काल के चार घरों के अवशेषों की खोज की। उनके आस-पास उन्हें कई लोहे के औजार, कीलें, नाव के रिवेट, छेनी और कुल्हाड़ियाँ मिलीं, जो विशिष्ट नॉर्स डिज़ाइन की थीं और द्वीप की मूल

आबादी से पूरी तरह अपरिचित थीं। विलियम डी. कॉनर, ओहियो के एक पत्रकार, जिनकी विनलैंड विषय में लंबे समय से रुचि रही है, ने नवंबर 1967 में फेट पत्रिका में एक लेख में साक्ष्य जुटाने के लिए मैलरी के संघर्ष का विस्तृत वर्णन किया। कॉनर के अनुसार, मैलरी की मुख्य कमी यह थी कि कलाकृतियों की आयु निर्धारित करने के लिए अब आमतौर पर इस्तेमाल की जाने वाली रेडियोकार्बन डेटिंग प्रक्रिया का उपयोग मैलरी नहीं कर सकते थे, क्योंकि उस समय इसका आविष्कार नहीं हुआ था। फिर भी, मैलरी ने न्यूफ़ाउंडलैंड में पाए गए लोहे के औजारों की तुलना स्कैंडिनेवियाई मूल के औजारों से की और उन्हें एक समान पाया। मुख्य रूप से एक धातुकर्म अभियंता होने के नाते, न कि पुरातत्वविद्, मैलरी ने लोहे के औजारों का परीक्षण धातुकर्म अभियंता के दृष्टिकोण से करवाया। स्वतंत्र प्रयोगशालाओं द्वारा किए गए इन परीक्षणों से पता चला कि न्यूफ़ाउंडलैंड की लोहे की कलाकृतियाँ उसी तरह और उसी समय बनाई गई थीं, जिस तरह ग्रीनलैंड और डेनमार्क में खोजे गए निश्चित रूप से पहचाने गए नॉर्स उपकरण बनाए गए थे।

लेकिन मैलरी न्यूफ़ाउंडलैंड में अपनी खोजों से संतुष्ट नहीं थे। उनका हमेशा से मानना था कि वाइकिंग्स अपने शुरुआती आगमन स्थलों से तटवर्ती अन्य क्षेत्रों और उससे भी आगे अंतर्देशीय क्षेत्रों तक फैल गए थे। मैलरी एक कुशल मानचित्रकार थे, और तीन प्राचीन आइसलैंडिक मानचित्रों के अध्ययन ने उन्हें उत्तरी अमेरिका में वाइकिंग्स के आगमन के अपने सिद्धांत को स्थापित करने में मदद की।

इन तीनों नक्शों में से पहला, स्टेफन्सन का नक्शा, लैब्राडोर के तट पर स्थित एक बड़े प्रायद्वीप को दर्शाता है, जिसे उस समय स्क्रालिंगलैंड कहा जाता था। नक्शे पर इस प्रायद्वीप को प्रोमोंटोरियम विनलैंडिया, यानी विनलैंड का प्रायद्वीप, नाम दिया गया है। मैलरी का मानना था कि यह लैब्राडोर के बजाय न्यूफ़ाउंडलैंड के उत्तरी प्रायद्वीप को संदर्भित करता है। दूसरा नक्शा 1605 में क्रिश्चियन फ्रिसियो द्वारा बनाया गया था और यह उस समय उनके पास उपलब्ध एक बहुत पुराने नक्शे की प्रतिलिपि है। मैलरी और कॉनर द्वारा उल्लिखित तीसरा नक्शा थॉर्डसन का नक्शा है, जो आइसलैंडिक मूल का है और सोलहवीं शताब्दी का है। यह न्यूफ़ाउंडलैंड के सामने कनाडा के एक क्षेत्र को दर्शाता है और इसे "विनलैंड द गुड" कहा गया है।

उत्तरी अमेरिका में वाइकिंग्स की उपस्थिति के समर्थन में अतिरिक्त प्रमाण अमेरिकी प्राकृतिक इतिहास संग्रहालय के पुरातत्व विभाग के क्यूरेटर डॉ. जूनियस बर्ड द्वारा किए गए उत्खनन और खोजों से मिले। ये खोजें उत्तरी लैब्राडोर के नैन-होपेडेल क्षेत्र में की गईं, जिनमें लोहे की कीलें, नाव की कीलें, क्लिंच रिवेट्स और पत्थर के घरों के अवशेष शामिल थे। मैलरी के अनुसार, ये पत्थर के घर भी नॉर्स मूल के थे और स्थानीय एस्किमो लोगों द्वारा नहीं बनाए गए थे, जैसा कि कुछ लोगों ने सोचा था। मैलरी का तर्क था कि मिले बारह घरों का निर्माण इतना परिष्कृत था कि यह मूल निवासियों द्वारा नहीं किया जा सकता था। लेकिन लैब्राडोर वाइकिंग शिविर के न्यूफ़ाउंडलैंड स्थल तक एक पड़ाव था, और यह सुझाव देना इतना अजीब नहीं लगता कि वाइकिंग्स ने वास्तव में इस क्षेत्र का दौरा किया था।

हालांकि, मैलरी ने वर्जीनिया और ओहियो में नॉर्स सभ्यता के प्रभाव के प्रमाण भी खोजे, जिनमें ग्रामीण क्षेत्रों में खुदाई से प्राप्त लोहे की कीलें और अन्य लोहे की कलाकृतियाँ शामिल थीं। इन खोजों की तुलना उस काल की स्कैंडिनेवियाई मूल वस्तुओं से करने के बाद, मैलरी इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि ये वास्तव में वाइकिंग मूल की थीं।

लेकिन मैलरी की खोजों को व्यापक रूप से स्वीकार नहीं किया गया, और 1963 में एक अन्य शोधकर्ता ने मैलरी के कई साक्ष्यों को पुनः खोजा। ये नॉर्वे के डॉ. हेल्गे इंगस्टैड थे, जिन्होंने न्यूफ़ाउंडलैंड में तीन साल खुदाई में बिताए थे। डॉ. इंगस्टैड को वाइकिंग बस्ती के अवशेष मिले, जिनमें घर और एक पूरी लौह भट्टी भी शामिल थी। रेडियोकार्बन डेटिंग की नई तकनीक का उपयोग करने के कारण उनकी खोजों को व्यापक प्रचार मिला। इंगस्टैड के अनुसार, वाइकिंग्स ने लगभग 1000 ईस्वी में अपनी बस्ती की स्थापना की थी, जिससे कोलंबस को बाद में आने वाले व्यक्ति के रूप में देखा जा सकता है। लेकिन एक महत्वपूर्ण बात में इंगस्टैड मैलरी के निष्कर्षों से असहमत थे: उन्होंने प्रारंभिक वाइकिंग शिविर को ल'आंसे औ मीडो में बताया था, जो सोप्स द्वीप पर मैलरी द्वारा बताए गए स्थल से पंद्रह मील उत्तर में स्थित था।

फिर येल विश्वविद्यालय ने यह घोषणा करके परंपरावादियों को और भी अधिक झटका दिया कि उसके पास मौजूद क्षेत्र का एक पुराना कोलंबस-पूर्व मानचित्र प्रामाणिक था, और उसमें स्पष्ट रूप से न्यूफ़ाउंडलैंड में वाइकिंग स्थल दिखाए गए थे।

वाइकिंग गाथा में लीफ के शुरुआती शिविर का वर्णन एक लंबी झील के किनारे घने जंगलों वाली पहाड़ियों में किया गया है, जिसमें एक नदी झील में या उसके बीच से बहती थी, और जिस प्रायद्वीप पर वे उतरे थे, उसके ठीक सामने एक द्वीप था। ग्यारहवीं शताब्दी के बाद से उत्तरी अमेरिका में काफी भूवैज्ञानिक परिवर्तन हुए हैं, जिनमें से सबसे महत्वपूर्ण, हमारे दृष्टिकोण से, समुद्र के स्तर में परिवर्तन है। अनुमान है कि पानी हर सौ साल में लगभग चार फीट पीछे हट गया, और इस प्रकार जो ग्यारहवीं शताब्दी में पानी रहा होगा, वह अब सूखी ज़मीन बन गया होगा। यह बात ध्यान में रखना महत्वपूर्ण है, जैसा कि हम वाइकिंग स्थलों की अपनी जांच शुरू होने पर देखेंगे।

हालांकि इंगस्टैड को उस स्थान पर नॉर्स अवशेष मिले, जिसे वे लीफ एरिक्सन का पहला अमेरिकी शिविर मानते थे, लेकिन मैलरी को अपने चुने हुए शिविर स्थल, पिस्टोलेट खाड़ी (जो दक्षिण में पंद्रह मील दूर था) पर उतनी सफलता नहीं मिली। उनका चुनाव पूरी तरह से वाइकिंग गाथाओं और पुराने नक्शों की उनकी व्याख्या पर आधारित था। येल का नक्शा, जिसे यूरोप में एक दुर्लभ पुस्तक विक्रेता ने खोजा था और विश्वविद्यालय में आठ वर्षों तक अध्ययन के बाद अंतिम निर्णय लिया गया था, एक द्वीप को दो बड़ी खाड़ियों के साथ दिखाता है, जिन्हें येल हडसन जलडमरूमध्य और बेले आइल जलडमरूमध्य का प्रतिनिधित्व मानता है। नक्शे पर लैटिन में लिखा है, "विनलैंड द्वीप, ब्यार्नी और लीफ द्वारा संयुक्त रूप से खोजा गया।" यह नक्शा 1440 में एक स्विस भिक्षु द्वारा बनाया गया था।

अब विद्वानों में इस बात पर आम सहमति प्रतीत होती है कि वाइकिंग्स ग्रीनलैंड से समुद्र पार करके लैब्राडोर के तट से होते हुए न्यूफ़ाउंडलैंड पहुँचे, जहाँ उन्होंने डेरा डाला। मैलरी का दावा है कि सोप्स द्वीप, जो ल'आंसे औ मीडो और पिस्टोलेट खाड़ी दोनों से दक्षिण में स्थित है, जहाँ उन्होंने घरों के अवशेष और लोहे की कई कलाकृतियाँ खोजी थीं, वाइकिंग्स द्वारा काफी समय तक बसा हुआ था, और वे इन घरों को ग्यारहवीं शताब्दी से चौदहवीं शताब्दी के अंत तक का मानते हैं। पुरातत्वीय दृष्टि से आम तौर पर यह माना जाता है कि वाइकिंग्स लगभग 1000 से 1500 ईस्वी तक ग्रीनलैंड में रहे। उत्तरी अमेरिकी उपनिवेशीकरण काल इस मत से मेल खाता प्रतीत होता है।

उत्तरी अमेरिका में पाए गए लोहे के औजार वास्तव में वहीं बनाए गए थे या वाइकिंग्स उन्हें अपने स्कैंडिनेवियाई या ग्रीनलैंड के ठिकानों से वहां लाए थे, यह बात महत्वहीन है: लोहे के ये औजार प्रारंभिक मध्य युग के हैं, और यदि मैलरी सही हैं, तो वाइकिंग्स संभवतः उस लौह-निर्माण सभ्यता के पूर्वज रहे होंगे जो कोलंबस से पहले उत्तरी अमेरिका में मौजूद थी।

* * *

मैलेरी के वर्जीनिया और ओहियो में नॉर्स लोगों के प्रवेश के दावे केवल छिटपुट खोजों से समर्थित हैं, जबकि 1898 में मिनेसोटा के अलेक्जेंड्रिया में मिले एक प्रसिद्ध रूनिक पत्थर के वास्तविक होने के कहीं अधिक मजबूत प्रमाण हैं। हाल ही तक, अज्ञात रूनिक शिलालेख वाले इस पत्थर को काल्पनिक माना जाता था, क्योंकि स्थापित विद्वान वाइकिंग आक्रमणकारियों के इतने अंदरूनी इलाकों तक आने की कल्पना भी नहीं कर सकते थे। हालांकि, ऐसा ही एक और पत्थर 1912 में ओक्लाहोमा के हेवेनर में मिला, जो पहले वाले से बिल्कुल अलग था।

* * *

पचास वर्षों से अधिक समय तक यह रहस्य अनसुलझा ही रहा, पत्थरों की प्रामाणिकता पर छिटपुट चर्चाओं से भी कोई हल नहीं निकला। फिर 1967 में, इस रहस्य को सुलझाने के लिए एक नया तरीका अपनाया गया। अल्फ मोंगे नामक एक सेवानिवृत्त सेना क्रिप्टोग्राफर ने इतिहासकार ओ. जी. लैंड्सवेर्क के साथ मिलकर दोनों पत्थरों का नए सिरे से अध्ययन किया। उनके सहयोग का परिणाम 'नॉर्स क्रिप्टोग्राफी इन रूनिक कार्विंग्स' नामक एक सनसनीखेज पुस्तक थी। ये दोनों व्यक्ति अपने-अपने क्षेत्रों में कोई नौसिखिया या नौसिखिया नहीं थे। श्री मोंगे वही व्यक्ति थे जिन्होंने द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान प्रमुख जापानी कोडों को तोड़ा था और इसके लिए ब्रिटेन द्वारा उन्हें उच्च सम्मान दिया गया था। डॉ. लैंड्सवेर्क वाइकिंग इतिहास के नॉर्वेजियन विशेषज्ञ हैं। दोनों ने दुनिया के सामने परिणाम घोषित करने से पहले पांच वर्षों तक साथ मिलकर काम किया।

सबसे पहले, उन्होंने मैसाचुसेट्स के बायफील्ड के पास मिले एक पत्थर को पढ़ा, जिस पर लंबी रूनिक लिपि में एक तारीख खुदी हुई थी। नॉर्स लोगों ने अपना संदेश देने के लिए

सांकेतिक भाषा का इस्तेमाल किया था। चूंकि मूल निवासी एस्किमो और भारतीय पढ़ नहीं सकते थे, इसलिए यह दुश्मन की खुफिया जानकारी के कारण नहीं था, बल्कि वाइकिंग्स क्रिप्टोग्राफी को एक उपयोगी कला मानते थे, और उन्होंने इसका अभ्यास किया भी। वे अरबी अंकों को नहीं जानते थे, लेकिन उन्होंने संख्याओं को दर्शाने के लिए रूनिक लिपि का इस्तेमाल किया।

मैसाचुसेट्स के पत्थर पर 24 नवंबर, 1009 ई. को वहाँ आगमन की तिथि अंकित है। ओक्लाहोमा में खुदाई में मिले पत्थर पर 11 नवंबर, 1012 ई. की तिथि अंकित थी, और दूसरे पत्थर पर 1015 और 1022 की तिथियाँ अंकित थीं। लीफ एरिक्सन के अमेरिका आगमन की पारंपरिक तिथि 1003 ई. है।

मोंगे और लैंड्सवेर्क ने विभिन्न नॉर्स अभियानों की तिथियों का पुनर्निर्माण किया। उनके अनुसार, वाइकिंग्स निश्चित रूप से 1012 ईस्वी में ओक्लाहोमा में और 1362 ईस्वी में मिनेसोटा में मौजूद थे। यह उल्लेखनीय है कि ये तिथियां फिर से मैलरी के निष्कर्षों से मेल खाती हैं: उन्होंने सोप्स द्वीप के घरों की अवधि ग्यारहवीं शताब्दी और 1375 ईस्वी के बीच रखी थी।

रिकॉर्ड और उसकी विभिन्न व्याख्याओं का अध्ययन करने से मुझे यह स्पष्ट हो गया था कि उत्तरी अमेरिका में वाइकिंग्स का आगमन कोई संक्षिप्त, अलग-थलग घटना नहीं थी। प्रेस ने क्रिप्टोग्राफर की खोजों को खूब उछाला, लेकिन न्यूज़वीक जैसी इतनी समझदार पत्रिका भी नई सामग्री में एक महत्वपूर्ण बिंदु को समझने में विफल रही: दोनों खोजकर्ताओं को पूरा विश्वास था कि असली विनलैंड मैसाचुसेट्स में स्थित है!

वाइकिंग्स उत्तरी अमेरिका आए और फिर तट के किनारे-किनारे यात्रा करते हुए—ज़रूरी नहीं कि एक ही बार में, बल्कि शायद शुरुआत में कुछ वर्षों तक एक ही क्षेत्र में रहने के बाद —दक्षिण-पश्चिम तक पहुँचे। मिसिसिपी नदी में ऊपर की ओर बढ़ते हुए, वे अरकंसास और पोटो नदियों के रास्ते अंतर्देशीय यात्रा करते हुए ओक्लाहोमा तक पहुँच सकते थे। अन्य समूह हडसन खाड़ी और ग्रेट लेक्स क्षेत्र से शुरू होकर इसी तरह मिनेसोटा तक पहुँचे होंगे।

इस प्रकार अंततः रूनिक पत्थरों की पहेली सुलझ गई। कई वर्षों तक विद्वानों द्वारा अस्वीकृति का कारण बनी हुई बात वास्तव में उनकी प्रामाणिकता का प्रमाण थी: अमेरिका के भीतरी

इलाकों में पाए गए पत्थरों पर रूनिक लेखन में दिखाई देने वाली "गलत वर्तनी" और "विसंगतियां" वास्तव में गुप्त लिपि और सांकेतिक लेखन थीं, और कैथोलिक चर्च कैलेंडर पर आधारित तिथियां, जिनसे नव ईसाईकृत नॉर्समेन पहले से ही परिचित थे, संदेशों में कई बार दोहराई गई हैं, जिससे इन तिथियों की सत्यता के बारे में कोई भी संदेह हमेशा के लिए दूर हो गया है।

जेनोआ के मेयर और क्रिस्टोफर कोलंबस के स्पेनिश प्रशंसकों ने तकनीकी आधार पर अनिच्छा से हार स्वीकार कर ली है, फिर भी उनका मानना है कि वाइकिंग्स ने अमेरिका में अपने अभियानों से इतिहास में कुछ भी योगदान नहीं दिया, जबकि उनके अनुयायी कोलंबस ने बहुत कुछ किया। खैर, जब हम यह सोचते हैं कि स्पेनियों ने मूल अमेरिकी लोगों को कैसे मारा और लूटा, या जब भी उन्हें जीवित रहने दिया, तो उनके साथ गुलामों जैसा व्यवहार किया, तो आश्चर्य होता है कि क्या 1492 का वह महान अभियान वास्तव में इतना फायदेमंद था। हालांकि वाइकिंग्स ने मूल निवासियों के हमलों से अपना बचाव किया, लेकिन हमें उस तरह के उपनिवेशीकरण का कोई रिकॉर्ड नहीं मिलता जिसके लिए स्पेनी प्रसिद्ध हुए - या कहें कि कुख्यात हुए।

मुझे लगा कि न्यूफ़ाउंडलैंड स्थलों के साक्ष्य इतने पुख्ता थे कि उन्हें नज़रअंदाज़ नहीं किया जा सकता था। निश्चित रूप से, वहाँ एक वाइकिंग शिविर रहा होगा, लेकिन क्या वह पहला शिविर था? यह सच है कि गाथाओं में वर्णित स्थल का विवरण न्यूफ़ाउंडलैंड की भौगोलिक स्थिति से पूरी तरह मेल नहीं खाता था। क्या पुरातत्वविद अपने खोजों का उपयोग नहीं कर रहे थे और रिपोर्ट किए गए स्थलों की भौतिक विसंगतियों को अनदेखा कर रहे थे? निश्चित रूप से उनके पास वहाँ वाइकिंग उपस्थिति के साक्ष्य थे, लेकिन मामला अभी भी पूरी तरह से बंद नहीं हुआ था।

* * *

मोंगे-लैंड्सवेर्क सहयोग से बहुत पहले, फ्रेडरिक पोहल की इस विषय पर एक पुस्तक प्रकाशित हुई थी। 1952 में प्रकाशित पोहल के इस लेख का नाम 'द लॉस्ट डिस्कवरी' है, और इसके बाद 1961 में चार्ल्स माइकल बोलैंड की एक और पुस्तक 'दे ऑल डिस्कवर्ड अमेरिका' प्रकाशित हुई। दोनों पुस्तकें बताती हैं कि केप कॉड वह स्थान हो सकता है जहाँ लीफ एरिक्सन ने पहली बार कदम रखा था। बाद वाली पुस्तक के अनुसार, 1940 में खोजकर्ता हजलमार होलांड ने पोहल को सुझाव दिया था कि न्यू इंग्लैंड के तट का सावधानीपूर्वक अध्ययन किया जाए ताकि एरिक्सन के पहले शिविर के बारे में गाथाओं में दिए गए विवरण से मेल खाने वाला स्थान मिल सके: एक केप, एक नदी जो किसी झील से निकलकर समुद्र में गिरती हो, और एक द्वीप जो तटरेखा के उत्तर में स्थित हो।

पोहल ने ठीक यही किया, और लंबे एवं सावधानीपूर्वक शोध के बाद उन्होंने निष्कर्ष निकाला कि यह स्थान केप कॉड पर स्थित है। उन्होंने पाया कि केप के पूर्वी-मध्य भाग में स्थित बास नदी वास्तव में एक झील से होकर समुद्र में बहती है। इस झील को फॉलिन्स पॉन्ड कहा जाता है, और जब पोहल ने इसकी और गहराई से जाँच की, तो उन्हें किनारे पर और झील के अंदर ही कुछ प्राचीन लंगरगाह मिले। ये लंगरगाह वाइकिंगों की पद्धति के अनुरूप थे, क्योंकि इनसे वे अपनी लंबी नावों को सुरक्षित रख सकते थे और साथ ही आवश्यकता पड़ने पर जल्दी से निकलने के लिए रस्सियों को तुरंत खोल सकते थे। पोहल को मिले सबसे महत्वपूर्ण लंगरगाह फॉलिन्स पॉन्ड के केंद्र में, किनारे से पचास फीट दूर एक चट्टानी टीले में स्थित था।

* * *

अब जिस बात का पता लगाना बाकी था, वह था लीफ द्वारा देखा गया अपतटीय द्वीप। पोल का मानना था कि ग्रेट पॉइंट, जो अब नानटकेट का हिस्सा है, वही द्वीप था। उनका तर्क था कि तूफान या उच्च ज्वार के बाद यह अक्सर नानटकेट से अलग हो जाता था और इसलिए आज के रेतीले टीले के बजाय एक द्वीप की तरह दिखाई देता था।

* * *

लंगर डालने के गड्ढों के बावजूद पोल के लैंडिंग स्थल के सिद्धांत से असंतुष्ट बोलैंड ने आगे खोजबीन की। 1957 में फॉलिन्स तालाब के निकटवर्ती क्षेत्र में खुदाई करते हुए, बोलैंड को कुछ औपनिवेशिक अवशेष मिले, लेकिन कोई नॉर्स सामग्री नहीं मिली। इस क्षेत्र में खुदाई के लिए जिम्मेदार आधिकारिक निकाय, मैसाचुसेट्स आर्कियोलॉजिकल सोसाइटी, ने इसमें बहुत कम रुचि दिखाई। 1950 में, सोसाइटी के सदस्यों ने फॉलिन्स तालाब में संक्षिप्त खुदाई की, लेकिन उन्हें कुछ नहीं मिला, सिवाय उस क्षेत्र के एक घर के पास एक अस्पष्ट, हस्तनिर्मित चिन्ह के, जिस पर "वाइकिंग साइट्स" लिखा था - संभवतः पर्यटकों को आकर्षित करने के लिए - जिसे "परिणाम" माना जा सकता है। 1960 में, फ्रेडरिक पोल के निमंत्रण पर सोसाइटी वापस लौटी और फॉलिन्स तालाब के बगल में स्थित मिल्स तालाब में कुछ खुदाई की। परिणाम नकारात्मक रहे।

बोलैंड ने केप का और भी सावधानीपूर्वक सर्वेक्षण किया और अंततः इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि शिविर स्थल केप के उत्तर में था। ग्रेट प्वाइंट नहीं, बल्कि केप का "मुट्ठीनुमा" भाग, प्रोविंसटाउन क्षेत्र, प्राचीन गाथाओं में वर्णित "द्वीप" था! बोलैंड ने उस क्षेत्र के दक्षिण में स्थित साल्ट मीडो और पिलग्रिम झील को भूस्खलन स्थल माना। कोलंबिया विश्वविद्यालय के विशेषज्ञ भूविज्ञानी डॉ. रोड्स डब्ल्यू. फेयरब्रिज द्वारा दिए गए एक मत ने उनके इस विश्वास को और भी पुष्ट किया: एक हजार वर्ष पूर्व अटलांटिक का जलस्तर आज की तुलना में दो से तीन फीट अधिक था। यह निश्चित रूप से उतना तीव्र वृद्धि नहीं है जितना कि मैलरी द्वारा गणना की गई जलस्तर में वृद्धि, जिन्होंने माना था कि भूमि प्रत्येक शताब्दी में चार फीट तक ऊपर उठती है, लेकिन सभी विद्वान इस बात पर सहमत हैं कि वाइकिंग युग के बाद से महासागर वास्तव में पीछे हट गया है।

हालांकि, इस क्षेत्र में किसी झील से होकर या उसके बीच से बहने वाली कोई नदी नहीं है, भले ही अब द्वीप की छवि अधिक उपयुक्त लगती हो। बोलैंड का दृष्टिकोण स्थिति की आवश्यकता को भी पूरा करता है: गाथा में एक द्वीप का उल्लेख है जो भूमि के उत्तर में स्थित था। यदि बास नदी, जो वास्तव में फॉलिन्स तालाब से होकर बहती है, सही स्थान होती, तो उत्तर में स्थित द्वीप कहाँ होता?

बोलैंड ने प्रोविंसटाउन को अपना द्वीप बताने के लिए जिस तर्क का इस्तेमाल किया है, वही तर्क ग्रेट पॉइंट के मामले में भी सही है: ग्यारहवीं शताब्दी में दोनों द्वीपों के लिए समुद्र का स्तर ऊंचा था, और इसलिए उस समय दोनों द्वीप हो सकते थे। लेकिन बास नदी के मुहाने से ग्रेट पॉइंट की ओर देखने पर दक्षिण की ओर देखा जाता है, उत्तर की ओर नहीं—जब तक कि नाविकों को दिशाओं को लेकर भ्रम न हो गया हो। लेकिन वाइकिंग्स को तारों का ज्ञान था, और ऐसी गलती होने की संभावना बहुत कम है।

बोलैंड के केप कॉड के उत्तरी तट के पक्ष में दिए गए तर्क वाकई ठोस हैं, सिवाय झील से होकर बहने वाली नदी के वर्णन के। क्या वहाँ शायद दो शिविर थे? क्या यह वृत्तांत दोनों को मिलाकर लिखा गया था? यदि हमारे पास पोल द्वारा लीफ एरिक्सन के पहले शिविर माने जाने वाले स्थल की जाँच करने का कोई और तरीका होता, तो शायद हम अटकलों और अनुमानों पर इतना निर्भर रहने के बजाय व्यापक खुदाई कर पाते।

केप कॉड एक वाइकिंग स्थल के रूप में उतना प्रसिद्ध नहीं है, हालांकि आम जनता के बीच अमेरिका में वाइकिंगों की उपस्थिति काफी हद तक स्थापित है। मैंने यह पता लगाने के लिए ईएसपी (आंतरिक दृष्टि से संवेदनशील व्यक्ति) का प्रयोग करने का निर्णय लिया कि क्या कोई कुशल मानसिक क्षमता वाला व्यक्ति इस स्थल पर कुछ महत्वपूर्ण सुराग प्राप्त कर सकता है। नियम सख्त थे: ज्योतिषी को मामले से संबंधित किसी भी जानकारी तक पहुंच नहीं होगी और उसे इस तरह से घटनास्थल पर लाया जाएगा कि उसे स्थल के संदर्भ या जांच के तहत समस्याओं से उसके संबंध के बारे में कोई दृश्य या संवेदी संकेत न मिल सकें। इसलिए, उसे जो भी जानकारी मिलेगी, वह सामान्य तरीके से नहीं, बल्कि स्थल पर मौजूद छाप को महसूस करके प्राप्त की गई प्राथमिक सामग्री होगी। इसके अलावा, मैंने स्वयं उस सामग्री का अध्ययन न करने का ध्यान रखा ताकि मेरे अवचेतन मन में ऐसी कोई जानकारी न रहे जिसे ज्योतिषी पढ़ सके। केप कॉड की हमारी यात्रा के बाद तक, मुझे होशपूर्वक केवल इतना ही पता था कि स्थल और अतीत के बीच वाइकिंग संबंध मौजूद है। लेकिन मुझे फॉलिन्स पॉन्ड तक पहुंचने का रास्ता भी नहीं पता था, और जैसा कि बाद की घटनाओं से साबित हुआ, उसे ढूंढने में हमें काफी समय लग गया।

मैंने सिबिल लीक से, जो पिछले कई वर्षों में मेरे कई महत्वपूर्ण मामलों में माध्यम रही थीं, 1967 की गर्मियों के अंत में मेरे साथ कुछ काम करने के लिए तैयार रहने को कहा। श्रीमती लीक कभी सवाल नहीं पूछतीं या यह जानने की कोशिश नहीं करतीं कि मैं उनसे क्या अपेक्षा करता हूँ। स्वयं एक पेशेवर लेखिका होने के नाते, वह विज्ञान में एक प्रकार का योगदान देने के लिए और परा मनोविज्ञान में मेरे उद्देश्यों से सहमत होने के कारण अपना मानसिक कार्य करती हैं। वह पेशेवर अर्थों में "मानसिक पाठक" नहीं हैं, लेकिन मेरे साथ - और केवल मेरे साथ - वह जो ईएसपी कार्य करती हैं, वह उच्चतम स्तर का है। जब मैंने सिबिल को फोन किया, तो मैंने बताया कि मुझे केप कॉड में उनकी उपस्थिति की आवश्यकता होगी, और हमने 17 अगस्त, 1967 को हयानिस हवाई अड्डे पर उनसे मिलने की व्यवस्था की। मेरी पत्नी कैथरीन और मैं न्यू हैम्पशायर में कुछ शोध कर रहे थे और वहाँ से अपनी सिट्रोएन कार से आ रहे थे। मेरी पत्नी एक बेहतरीन ड्राइवर हैं, और हम निर्धारित समय के दस मिनट के भीतर हवाई अड्डे पहुँच गए। वह एक गर्म, उमस भरी दोपहर थी, लेकिन सिबिल का मूड अच्छा था, अगर मैं फिलहाल व्यंग्यात्मक लहजे में कहूँ तो।

इस मौके पर मैंने उसे समझाया कि उस शाम हमें इलाके में एक भूतिया मामले की जांच करनी है; लेकिन रात बिताने के लिए जाने से पहले, मैं कुछ जगहों को देखना चाहता था, और शायद ऐसी एक-दो जगहें हों जहाँ मैं चाहूँ कि वह कुछ अनुभव साझा करे। हम गाड़ी चलाकर निकल पड़े और मैंने अपना नक्शा देखा। फॉलिन्स पॉन्ड कहीं नहीं दिख रहा था। सौभाग्य से, मेरी उस सज्जन से कुछ बातचीत हुई थी जिनके घर में भूत थे और जिन्हें हमें उसी दिन बाद में देखना था, और वे उस इलाके के निवासी होने के नाते तालाब की जगह अच्छी तरह जानते थे। सिबिल कार की पिछली सीट पर आराम कर रही थी, जबकि हम केप कॉड के पूर्वी हिस्से की ओर लगातार गाड़ी चला रहे थे। बास नदी या किसी भी तालाब का कोई संकेत नहीं दिख रहा था। आखिरकार, हम एक पेट्रोल पंप पर रुके और मैंने रास्ता पूछा। इसके बावजूद, हम दो बार फिर रास्ता भटक गए, और मुझे फिर से रास्ता पूछना पड़ा। सिबिल ने इसमें बिल्कुल भी हिस्सा नहीं लिया, लेकिन जब उसने मुझे फॉलिन्स पॉन्ड का नाम लेते सुना, तो उसने थोड़ी नींद में कहा, "क्या आप तैरने जाना चाहते हैं?" उस समय मौसम इतना गर्म था कि तैरना ठीक लग रहा था।

अब इलाका बदल गया था; पर्यटकों को लुभाने के लिए पीछे छोटे-छोटे स्विमिंग पूल और सामने रंगीन नियॉन लाइटों वाले भड़कीले मोटलों की जगह, हम निजी घरों से घिरे एक शांत, वन क्षेत्र में पहुँच गए। उस समय तो मैंने इसे नहीं देखा, लेकिन जब हम बाद में वापस लौटे, तो एक गली में छिपा हुआ एक नीला बोर्ड मिला, जो उसी दिशा की ओर इशारा कर रहा था जहाँ से हम आए थे, और उस पर लिखा था "वाइकिंग रॉक्स"। मुझे यकीन है कि सिबिल ने भी इसे जाते या लौटते समय नहीं देखा होगा, और यह शायद किसी उद्यमी स्थानीय व्यक्ति का काम हो सकता है, क्योंकि इस प्रायद्वीप पर वाइकिंग "आकर्षण" इसके आधिकारिक पर्यटन आकर्षण या लोककथाओं का हिस्सा नहीं हैं।

* * *

अब हमें तालाब तक पहुँचने में लगने वाले अनुमानित समय से दोगुने से भी अधिक समय लग चुका था; हम बास नदी नामक एक नदी पार कर चुके थे और जानते थे कि हम सही दिशा में जा रहे हैं। अचानक, घुमावदार सड़क एक शांत जल निकाय पर आकर रुक गई जो घने जंगलों से घिरी ढलानों के बीच स्थित था। पास का कोई घर दिखाई नहीं दे रहा था और सड़क इस बिंदु पर दो भागों में बँट गई, एक भाग समुद्र की ओर जा रहा था, दूसरा तालाब के चारों ओर घूम रहा था। तालाब, वास्तव में एक छोटी झील जैसा था, लगभग एक मील के घेरे में था, चारों ओर घने जंगलों से घिरा हुआ था और मानव गतिविधि का कोई निशान नहीं था: न कोई नाव, न कोई घाट, न ही किनारे पर कोई झोपड़ी। पानी के कुछ मध्य में चट्टानों का एक समूह था।

हमने गाड़ी रोकी और मैं बाहर निकलकर सिबिल को अपने पीछे आने का इशारा किया। सिबिल ने बड़े ही स्टाइलिश कपड़े पहने थे—काली ड्रेस, काली झालरदार पंखों वाली टोपी और ऊँची एड़ी के जूते। ऐसे इलाके में घूमने का यह सबसे अच्छा तरीका नहीं था। तालाब का किनारा गीला और नरम था, जो पानी की ओर तेज़ी से ढलान वाला था। टेप रिकॉर्डर तैयार रखते हुए, मैं सिबिल को पानी की ओर ले गया।

मैंने पूछा, "इस जगह के बारे में आपकी पहली धारणा क्या है?"

"हमें सीधे दूसरी तरफ वाले किनारे पर जाना चाहिए," सिबिल ने कहा, "और उस रास्ते से घूमकर आना चाहिए।"

मुझे दोबारा रास्ता भटकने का मन नहीं था, इसलिए मैंने फिलहाल कम से कम इस तरफ ही रहने का फैसला किया।

“पानी किसी इमारत के ऊपर से बह गया है,” सिबिल ने अपनी मानसिक शक्ति को केंद्रित करने की कोशिश करते हुए कहा। “झील के बीच में कुछ है।”

किस तरह की चीज?

“एक मीनार जैसी कोई चीज़,” उसने कहा। तालाब के बीचोंबीच एक चर्च? तो क्या यहाँ कोई लोग भी थे?

“हां,” उसने जवाब दिया, “लोग यहां बस गए हैं, यहां रह रहे हैं...।”

“कितना समय पहले?”

"इस स्तर पर कुछ कहना मुश्किल है, क्योंकि यहां एक और अंतर्निहित तत्व भी है।"

"आपका मतलब दो अलग-अलग अवधि स्तरों से है?"

“हाँ। लेकिन मुख्य बात यह है कि कोई चीज़ चर्च के शिखर की तरह ऊँची उठती हुई है। बीच में कुछ बहुत नुकीला सा। ज़रूरी नहीं कि वह चर्च का शिखर ही हो, लेकिन कुछ वैसा ही। यह किसी मस्तूल का शीर्ष हो सकता है, कुछ बहुत नुकीला और त्रिकोणीय, कम से कम। यह बड़ा था और यहाँ रहने वाले लोगों के लिए बहुत महत्वपूर्ण था। लोग आते-जाते रहते थे। और यहाँ एक गली है, जो हमारे यहाँ तक पहुँचने वाले सबसे पुराने रास्तों में से एक है। मुझे लगता है कि यह 1784 की है।”

हालांकि मुझे उस समय इसका पता नहीं था, लेकिन हम उस स्थल के करीब थे जहां 1957 में बोलैंड द्वारा औपनिवेशिक सामग्री की खुदाई की गई थी।

मैंने पूछा, "क्या आप इससे भी पीछे जा सकते हैं?"

सिबिल के आंखें बंद करने पर कुछ पल के लिए सन्नाटा छा गया। पानी के ठीक ऊपर एक छोटी सी चट्टान पर नाजुक संतुलन बनाए खड़ी वह अब थोड़ा डगमगा रही थी और मुझे चिंता होने लगी कि कहीं वह तालाब में न गिर जाए, खासकर अगर वह समाधि में चली जाए।

इसलिए मैंने उसे पकड़ने के लिए अपना हाथ तैयार रखा। लेकिन किसी तरह उसने पूरी जांच के दौरान अपना संतुलन बनाए रखा।

“मुझे एक विदेशी आक्रमण का आभास हो रहा है,” उसने धीरे-धीरे कहा, मानो अतीत में कदम-दर-कदम भटक रही हो। “यहाँ रहने वाले लोग नहीं, बल्कि यहाँ कुछ नष्ट करने आए लोग...किसी दूसरी जगह से...यह सुखद नहीं है, कोई सुखद आक्रमण नहीं है...एक युद्ध है... चीज़ें छीनने का...।”

"वे कहां से हैं?"

“दूर से...मुझे कई लंबी नावें दिखाई दे रही हैं...।” लंबी नावें! वाइकिंग नावों के लिए इस्तेमाल होने वाला शब्द। सिबिल को इस जगह पर वाइकिंग संबंध के बारे में सचेत रूप से कैसे पता चला होगा?

“लॉन्गबोट्स...सुंदर पुरुष...यह बहुत समय पहले की बात है...उनके द्वारा किए गए कार्य इस स्थान से बिल्कुल भी संबंधित नहीं हैं...धातु और हत्या के बारे में उनके अपने विचार...।”

* * *

अमेरिका में वाइकिंग्स की उपस्थिति का एक महत्वपूर्ण पहलू हथियारों के लिए लोहे का उनका उपयोग है, जो उस समय पश्चिमी गोलार्ध के मूल निवासियों के लिए पूरी तरह से अज्ञात था और निश्चित रूप से कोलंबस के आने के काफी बाद तक भी अज्ञात रहा।

“इन नावों का निर्माण...बहुत महत्वपूर्ण है...नावों पर लगे धातु के पुर्जे...।”

क्या आपको कोई आवाज सुनाई दे रही है?

मुझे यह भाषा समझ नहीं आती।

यह किस प्रकार की भाषा है?

“यह एक उत्तरी भाषा है... जर्मनिक... नॉर्डिक... हेल्मुट एक ऐसा नाम है जो आता है...।”

"वे यहां क्यों हैं?"

“काफी समय से... पता नहीं चला... उनके पास लंबी कंकालनुमा नावें हैं... एक तो निश्चित रूप से यहीं है, वही नुकीली चीज मैंने झील में देखी थी... वह बड़ी है, बीच में है... और उसके

चारों ओर धातु के टुकड़े हैं... नाव एक ढांचा है... गोल ढालें हैं... निजी सामान... एक टूटी हुई नाव... नाव के अगले हिस्से में कुछ अजीब है... विचित्र देवता...।"

* * *

यह सच है कि वाइकिंग जहाजों के आगे का हिस्सा जानवरों के आकार का होता था और उनके किनारों पर धातु की ढालें कतारों में लटकी होती थीं। नॉर्वे के उदाहरणों से हमें यह जानकारी मिलती है। लेकिन सिबिल ने इसे केप कॉड के सुनसान इलाके में "देखा"। एक जहाज डूब गया था और उसका मलबा फॉलिन्स तालाब की तलहटी में पड़ा था। उसने अभी-अभी कहा था, "अजीब देवता!" कौन से देवता?

"एक व्यक्ति के मन में एक ऐसे ईश्वर के प्रति आस्था थी जो लोगों के बीच प्रचलित ईश्वर से भिन्न था," सिबिल ने उत्तर दिया।

* * *

बाद में मुझे याद आया कि कैसे लीफ ने नए ईसाई धर्म को अपना लिया था, जबकि उसके पिता और संभवतः उसके कई अन्य लोग पुराने मूर्तिपूजक विश्वासों से जुड़े रहे।

मैंने कहा, "उनका क्या हुआ?"

"वे यहाँ फंस गए थे और वापस नहीं जा सके," सिबिल ने धीरे से जवाब दिया। "मुझे नहीं लगता कि वे सचमुच यहाँ आना चाहते थे।"

गाथाओं के अनुसार, ग्रीनलैंड जाते समय वे अपने मार्ग से भटक गए थे—वे जानबूझकर विनलैंड की खोज करने की कोशिश नहीं कर रहे थे!

"वे पहुँच तो गए, लेकिन...उन्हें पता नहीं था कि वे कहाँ हैं...यह एक दुर्घटना की तरह था...वे फँस गए थे...उनमें से कई लोग नाव से भाग गए...।"

"क्या उस समय यहाँ पानी था?"

"यहाँ पानी था। समुद्र से जुड़ा हुआ। लेकिन यह झील समुद्र नहीं है। समुद्र तो चला गया। झील बाद में बनी। यह बहुत समय पहले की बात है, आप सोच भी नहीं सकते कि कितना समय बीत गया है!"

"अच्छा, इसकी लंबाई कितनी है?"

"यह हमारे अब तक के सबसे लंबे समय का समय है," सिबिल ने समझाया, "पंद्रह सौ साल...या कुछ और...बहुत लंबा समय...यहाँ कुछ भी नहीं था, ऐसी कोई जगह नहीं थी जहाँ कुछ भी बनाया जाता हो...कोई लोग नहीं थे..."

“उनका क्या हुआ?”

“यहीं मर जाओ...नाव बहुत महत्वपूर्ण थी...नाव टूट गई थी...कुछ लोग चले गए, एक नाव वहीं रह गई...बाकी लोग नहीं जा सके इसलिए यहीं रुक गए...झील में लंबी नाव और वे बड़ी गोल धातु की चीजें...।”

"क्या आपको कोई नाम मिले?"

“हेल्मुट....”

"और कुछ?"

“यह पहले समुद्र था, फिर भूमि, फिर भूमि के ऊपर मिट्टी थी... मानो कुछ छिपा हुआ हो...।”

“यह सब कैसे हुआ?”

“बहुत सारी नावें एक ही समय में यहाँ आईं। वे फियोर्ड्स से...ठंडे इलाकों की ओर से आईं... वे यहाँ संयोग से पहुँच गईं...कुछ चीज़ें पीछे छूट गईं जबकि बाकी चली गईं...यह एक नाव, या शायद एक से ज़्यादा, लेकिन मुझे एक ही दिख रही है...उनके इस्तेमाल की चीज़ों के साथ... कोई लिखावट नहीं...बस चीज़ें...धातु में कुछ अजीब सा है...एक चील, लेकिन यह अमेरिकी चील नहीं है...बड़ा पक्षी, गिद्ध जैसा...गोल धातु के हिस्सों पर कुछ निशान...पक्षी बहुत स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहा है...।”

* * *

क्या वह किसी प्रतीक चिन्ह को पहचानने की कोशिश कर रही थी? कौआ वाइकिंगों का एक प्रमुख प्रतीक था। साथ ही, उसने आक्रमणकारियों की उत्पत्ति को सही ढंग से पहचान लिया था: वे फियोर्ड्स से, ठंडे देश से आए थे। नॉर्स लोग। लेकिन उसके पास और क्या सुराग हो सकते थे? वह केप कॉड में एक छोटे से साधारण से तालाब या झील के किनारे खड़ी थी।

इस बिंदु पर मैं बहुत उत्साहित हो गया, या यूं कहूँ कि जितना मेरा वैज्ञानिक स्वभाव मुझे उत्साहित होने की अनुमति देता था। जाहिर है, सिबिल लीक ने उस स्थान को वाइकिंग स्थल के रूप में पहचान कर महत्वपूर्ण खोज की थी—जो उस समय तक बिल्कुल भी निश्चित नहीं था, बल्कि फ्रेडरिक पोल का केवल एक अनुमान था।

“क्या आप कोई और रूप या प्रतीक पहचान सकती हैं?” मैंने पूछा। सिबिल एक तरह से समाधि जैसी अवस्था में थी, मानो वह किसी दूसरी समयधारा में लीन हो रही हो।

“नक्षत्र...” उसने धीरे से कहा, और जब मुझे अर्थ समझ नहीं आया, तो उसने आगे कहा, “तारों का एक समूह... ढाल... यह आदमी तारों के सहारे आया था। कोई कागजात नहीं।”

"क्या यह हेलमुट था, क्या वह समूह का नेता था?"

नहीं...नेता नहीं।

“नेता कौन था?”

“इंग्रिस्ट...मुझे समझ नहीं आ रहा...हेल्मुट और... आब्स्ट...सेन...सेन या सोन...भ्रमित करने वाला...।”

मैंने पूछा, "क्या ये पृथ्वी से जुड़ी आत्माएं हैं?"

“हाँ, यह एक बहुत ही भयावह घटना है। भूत-प्रेत तो नहीं, लेकिन एक अनुभूति, एक उदासी... एक दूरस्थ, पृथक अनुभूति जो अभी भी यहाँ मौजूद है। यह किसी ऐसी चीज़ से जुड़ी है जो अज्ञात है, लेकिन जिसे जानना आवश्यक है। इसे जानना बहुत महत्वपूर्ण है। क्योंकि यह स्थान ज्ञात होने से पहले भी ज्ञात था। लेकिन इसका कोई लिखित प्रमाण नहीं है।”

* * *

उन्होंने कितनी स्पष्टता से इस समस्या का वर्णन किया था: ज्ञात होने से पहले ही ज्ञात होना - अमेरिका, निश्चित रूप से, कोलंबस के ज्ञात होने से पहले वाइकिंग्स को ज्ञात था!

“और यहाँ कोई लेखन नहीं है?” मैंने दोबारा पूछा।

“नहीं, केवल प्रतीक,” सिबिल ने उत्तर दिया, “पक्षी, और एक बड़ा सूरज...।”

ये सभी नॉर्स लोगों के पुराने मूर्तिपूजक प्रतीक हैं। "कितने पुरुष हैं?"

"कई लोग हैं...लेकिन एक आदमी महत्वपूर्ण है...हेल्मुट और...सन...किसी का बेटा।"

“किसका पुत्र?”

“फ्रेडरिकसन या कुछ ऐसा ही...ये दो नाम हैं और मैं इसे पढ़ नहीं सकता...फ्रेडरिकसन नाम का हिस्सा है...आगे एक छोटा सा नाम है...के-एस-ओ-एन...।”

हेल्मुट और फ्रेडरिकसन के बीच क्या संबंध है?

“पारिवारिक संबंध। क्योंकि यह एक ही परिवार की नियति थी।”

“इनमें से नेता कौन है?”

"खैर, मुझे लगता है कि फ्रेडरिकसन; लेकिन हेलमुट बहुत महत्वपूर्ण है।"

"कौन रहेगा और कौन वापस जाएगा?"

"हेल्मुट यहीं रहेगा।"

“और फ्रेडरिकसन? क्या वह वापस जाएगा?”

मुझे नहीं पता कि उसके साथ क्या होगा। लेकिन हेलमुट पर उसका प्रभाव है।

अचानक उसने कहा, "सुंड कहाँ होगा?"

पहले तो मुझे लगा कि उसने "रेत" कहा है; बाद में मुझे समझ आया कि सुंड, जिसका अंग्रेजी में अर्थ "ध्वनि" होता है, गाथा में एक महत्वपूर्ण वाइकिंग शब्द था, जहां पहले शिविर स्थल के पास स्थित जल निकाय का वर्णन किया गया है।

"यह बहुत ही गंभीर जगह है," सिबिल ने आगे कहा। "आपको कुछ न कुछ खोजकर यह कहना होगा कि यह सही है। कोई व्यक्ति हज़ार साल पहले बिना कागजात या नक्शे के यहाँ आया था और उसे पता नहीं था कि वह कहाँ है।"

"यह कब से हो रहा है, सिबिल?"

“पानी में आठ-आठ-चार...आठ-आठ-चार की संख्या दिख रही है,” उसने रहस्यमय ढंग से जवाब दिया। “झील में किसी चीज की खोज बहुत महत्वपूर्ण है।”

यदि नाव के डूबने का समय 884 वर्ष था, तो हम 1083 ईस्वी पर पहुँचेंगे। यह लीफ एरिक्सन की यात्रा की स्वीकृत तिथि से ठीक अस्सी वर्ष बाद का समय है। क्या सिबिल ने किसी अंक को गलत पढ़ा होगा? 884 नहीं बल्कि 804? यदि वह एरिक्सन को "फ्रेडरिकसन" कह सकती थी, तो हमारे जैसे नाजुक और कठिन कार्य में ऐसी गलती होना कोई असंभव बात नहीं

थी। दूसरी ओर, यदि 884 वास्तविक तिथि को दर्शाता है, तो क्या उस समय ईस्वी सन् के कैलेंडर से कोई भिन्न कैलेंडर प्रयोग किया गया था?

"जहाज को कहाँ ढूँढा जा सकता है?"

"दूसरी तरफ से, जहाँ मैं जाना चाहती थी," सिबिल ने कहा, पिछले पंद्रह मिनटों की तुलना में वह अब पहले से कहीं अधिक सहज और आत्मविश्वास से भरी हुई लग रही थी।

उन्होंने आगे कहा, "यह वास्तव में काफी गहरी झील है, बीच की ओर और फिर बाईं ओर आइए। दूसरी तरफ से जहां वह सड़क है।"

वह लगभग उसी चट्टान की सटीक पहचान कर रही थी जहां फ्रेडरिक पोहल को वाइकिंगों के लंगरगाह मिले थे!

उन्हें वहां क्या मिलेगा?

“लकड़ी और धातु की पुरानी चीज़ें जिन्हें पहले किसी ने नहीं देखा। किसी को पता ही नहीं था कि ये यहाँ हैं। ये एक हादसा था। अगर आपको ये मिल जाए, तो बहुत से लोगों के लिए ये महत्वपूर्ण होगा। कुछ लोग कहेंगे कि आप झूठ बोल रहे हैं।”

मैंने जेनोआ के मेयर और नाइट्स ऑफ कोलंबस के बारे में सोचा। कोलंबस दिवस पर वे किसलिए मार्च कर रहे होंगे? क्या अमेरिका की उनकी पुनर्खोज के लिए? सिबिल अभी भी इस विषय में रुचि रखती थी।

“सूर्य...,” उसने बुदबुदाते हुए कहा।

मैंने पूछा, "सुंड कहाँ है?" अब मुझे इस शब्द का अर्थ अधिक स्पष्ट रूप से समझ में आने लगा था।

"झील के उस पार," सिबिल ने जवाब दिया, मानो यह बात मेरे अलावा किसी और के लिए स्पष्ट हो।

“किस तरफ?”

“दूर की ओर...सूर्य...वहाँ कुछ चीजें हैं।”

अब उसे यह विचार थोड़ा अच्छा लगने लगा। “एक चीज़ मिल गई तो और भी बहुत सी चीज़ें मिलेंगी... एक के बाद एक और चीज़ें मिलेंगी... जब एक चीज़ मिल गई तो और भी बहुत सी

चीज़ें मिलेंगी...” उसने ज़ोर देकर कहा कि नाव और चिड़िया वाली ढालें पानी में ही मिलेंगी; अगर वहाँ से किनारे तक और आगे एक रेखा खींची जाए तो और भी चीज़ें सामने आ जाएँगी।
“लंबी नाव... बड़ी... हेलमुट...” फिर से वह जैसे डूबने लगी और इधर-उधर डगमगाने लगी।
“धूप में लंबी नावें... परछाइयाँ...”
मैंने फैसला किया कि सिबिल के पानी में गिरने से पहले मैं उसे उसकी मानसिक अवस्था से बाहर निकाल लूँ। जब उसने अपनी आँखें खोलीं, जो अब तक बंद थीं, तो उसने डूबते सूरज की ओर पलकें झपकाईं और जम्हाई ली। जाँच के दौरान उसने मुझसे जो कुछ भी कहा था, वह उसकी याददाश्त में नहीं रहा था।
“क्या मैंने कुछ दिलचस्प कहा?” उसने मुझसे पूछा।
मैंने सिर हिलाया, लेकिन उसे और कुछ नहीं कहा।
हम अपनी कार में बैठे और हयानिस की ओर चल पड़े, जहां शाम को भूत-प्रेत की खोज शुरू होने वाली थी।
अगली सुबह मैंने फॉलिन्स तालाब पर सिबिल द्वारा लाई गई जानकारी पर विचार किया। विशेष रूप से, 'सुंड' शब्द, जिसका उच्चारण सिबिल ने "रेत" के करीब किया था, मुझे उलझन में डाल रहा था। मैंने उपलब्ध नक्शों के माध्यम से इसकी जाँच करने का निर्णय लिया। मुझे कई चौंकाने वाले तथ्य मिले। सबसे पहले, ग्रीनलैंड के तट के दक्षिण और दक्षिण-पश्चिम क्षेत्र को दो नामों से जाना जाता था: हेर्जोल्फ्सनेस, या रेत। यदि सुंड झील के "दूसरी ओर" स्थित था, जैसा कि सिबिल ने कहा था, तो क्या यह उस क्षेत्र का संदर्भ नहीं हो सकता जहाँ से नावें रवाना हुई थीं? रेत या सुंड वह तट है जहाँ ग्यारहवीं शताब्दी में एरिक द रेड की पूर्वी बस्ती स्थित थी।
यदि बोलैंड केप कॉड के बहुत करीब स्थित सुंड की खोज कर रहे थे, और मान रहे थे कि यह प्रिंसटाउन और मैसाचुसेट्स तट के बीच की खाड़ी है, तो क्या वे किसी अन्य जल निकाय को नज़रअंदाज़ तो नहीं कर रहे थे? हमें यह तो नहीं पता कि केप कॉड के उत्तर में स्थित खाड़ी को कभी सुंड नाम दिया गया था, लेकिन हम यह जानते हैं कि लीफ एरिक्सन के साहसिक अभियान के समय ग्रीनलैंड के दक्षिण में स्थित जलडमरूमध्य को यही नाम दिया गया था। मैलरी का यह दृढ़ विश्वास कि न्यूफ़ाउंडलैंड ही मूल विनलैंड था, किसी झील से होकर बहने

वाली या उससे निकलने वाली नदी की समस्या को अनसुलझा नहीं मानता था। न्यूफ़ाउंडलैंड में कई छोटे जल निकाय और छोटी नदियाँ हैं जो इस परिभाषा के अनुरूप हो सकती हैं। हालाँकि, इनमें से कोई भी केप कॉड की बास नदी और फ़ॉलिन्स पॉन्ड जितनी अच्छी नहीं है।

सिबिल ने बार-बार स्पष्ट रूप से हेलमुट नामक एक छोटे नेता की पहचान फॉलिन्स पॉन्ड स्थल से जुड़े होने के रूप में की थी। मुझे पता चला कि हेलहिल्ड या हेलहुल्ड नाम की एक महिला ने लगभग 1000 ईस्वी में लैब्राडोर के तट पर समुद्री यात्रा की थी। गाथाओं में वर्णित इस कथन को गंभीरता से लिया जाता है, इसका प्रमाण इस तथ्य से मिलता है कि हेलहिल्ड की यात्रा और नाम कई वर्षों से उच्च शिक्षा में उपयोग किए जाने वाले कुछ ऐतिहासिक मानचित्रों में शामिल हैं। इसके अलावा, हेलहिल्ड ने अपनी यात्रा ग्रीनलैंड के दक्षिण में स्थित सुंड नामक स्थान से शुरू की थी।

यह हेलहिल्ड वही नेता थे जिन्होंने बाद में एरिक्सन के साथ मिलकर विनलैंड की खोज की यात्रा की। हेलहिल्ड का पहला नाम ब्यार्नी था, वही ब्यार्नी जिनका ज़िक्र प्राचीन मानचित्र में मिलता है। स्पष्ट है कि वे बाद वाले अभियान में दूसरे नंबर के कमांडर थे। अब कोई यह तर्क दे सकता है कि लैब्राडोर भी उत्तरी अमेरिका का हिस्सा है और इस प्रकार ब्यार्नी हेलहिल्ड ही अमेरिका के पहले वाइकिंग खोजकर्ता थे। लेकिन हमें लैब्राडोर यात्रा के दौरान किसी भी लैंडिंग की जानकारी नहीं है, जबकि एरिक्सन और हेलहिल्ड के संयुक्त नेतृत्व वाले अभियान के दौरान हुई लैंडिंग का सटीक विवरण हमारे पास है। यह संभव है कि लैब्राडोर यात्रा में केवल दुर्गम और अज्ञात लैब्राडोर तट पर नौकायन करना ही शामिल था।

फ्रेडरिकसन और हेलमुट आधुनिक समय के प्रचलित नाम हैं, और वाइकिंग नामों से अपरिचित व्यक्ति को ये नाम एरिक्सन और हेलहिल्ड या हेलहुल्ड के काफी मिलते-जुलते लगेंगे। जैसा कि मैंने पहले भी कई बार कहा है, सिबिल को यह पता नहीं था कि वह वाइकिंग परंपराओं या प्रतीकों से जुड़ी किसी जगह पर है; इसलिए उसके अवचेतन में नॉर्स नामों का कोई संकेत नहीं हो सकता था। उसके मन में जो भी विचार आए, वे इसलिए आए क्योंकि वे वहां मौजूद थे।

अतीत की इस खोज के क्या निहितार्थ हैं? निश्चित रूप से, फॉलिन्स तालाब में खुदाई की जानी चाहिए। इससे संभवतः नॉर्स कलाकृतियाँ और शायद उस वाइकिंग नाव के अवशेष भी मिल

सकते हैं जिसे सिबिल ने दिव्य दृष्टि से देखा था। मुझे लगता है कि विनलैंड के स्थान का प्रश्न एक महत्वपूर्ण बिंदु को पूरी तरह से अनदेखा करता है: क्या ऐसा नहीं हो सकता कि वाइकिंग्स के लिए विनलैंड का अर्थ कोई विशिष्ट बस्ती नहीं बल्कि पूरा उत्तरी अमेरिका, समुद्र के पार की नई भूमि हो?

प्रतिष्ठित शोधकर्ताओं के परस्पर विरोधी विचारों और पुरातात्विक साक्ष्यों को किसी एक विषय पर केंद्रित करना मेरे लिए कठिन है। वाइकिंग्स न्यूफ़ाउंडलैंड में एक से अधिक स्थलों पर और लंबे समय तक मौजूद रहे; लेकिन उनके साक्ष्य केप कॉड में भी और वहाँ भी एक से अधिक स्थानों पर मिले हैं। कई शताब्दियों की अवधि में इतने अप्रवासी अवश्य आए होंगे कि वे नव-खोजी गई भूमि पर फैल सकें। कुछ लोग फ्लोरिडा से होते हुए मिनेसोटा और ओक्लाहोमा गए होंगे, जबकि अन्य ने पूर्वोत्तर का अन्वेषण किया और रास्ते में बस्तियाँ बसाईं। मुझे लगता है कि अभी अंत नहीं हुआ है और अटलांटिक के हमारे हिस्से में नॉर्स मूल के कई और शिविर स्थल खोजे जाएंगे। बेशक, वाइकिंग्स ने कोलंबस से बहुत पहले अमेरिका की खोज कर ली थी। यह खेदजनक है: वह उस समय मौजूद प्राचीन मानचित्रों को देख सकता था और पता लगा सकता था कि कोई पहले भी वहां जा चुका था। लेकिन कोलंबस अमेरिका की खोज नहीं कर रहा था। वह भारत जाने का बेहतर रास्ता ढूंढ रहा था। दूसरी ओर, वाइकिंग्स को समय बीतने के साथ-साथ पता चल गया कि वे कहाँ उतरे थे, भले ही उनका पहला आगमन आकस्मिक था।

सिबिल लीक ने यह साबित कर दिया है कि फॉलिन्स पॉन्ड क्षेत्र के वाइकिंग संदर्भों को गंभीरता से लिया जाना चाहिए। उम्मीद है, जब यह रिपोर्ट प्रकाशित होगी, तब तक उनके दैवीय सुझावों पर पुरातात्विक अनुसंधान शुरू हो चुका होगा। चूंकि न तो सिबिल, न मेरी पत्नी और न ही मुझे हेलमुट के बारे में या 'सुंड' शब्द के सही अर्थ के बारे में पहले से कोई जानकारी थी, इसलिए हमारे दैवीय विशेषज्ञ द्वारा किए गए इन खुलासों को किसी के अवचेतन ज्ञान या मन से उपजा हुआ नहीं माना जा सकता। इस प्रकार, हमारे दैवीय प्रयोग के असाधारण परिणामों का वास्तव में कोई वैकल्पिक स्पष्टीकरण नहीं है। निस्संदेह, इस प्रकार के अतिरिक्त प्रयोग फलदायी और रोचक सिद्ध होंगे: फिलहाल, यही कहा जा सकता है कि वाइकिंग्स फॉलिन्स पॉन्ड में थे।

क्या अमेरिका के साथ उनका यही एकमात्र संपर्क था, यह एक विवादास्पद प्रश्न है। यह निश्चित रूप से ग्यारहवीं शताब्दी के आरंभिक वर्षों में उनके द्वारा किए गए आगमन स्थलों में से एक था। वाइकिंग्स को नए विश्व के वास्तविक खोजकर्ता होने का गौरव प्राप्त है!

* * *

या फिर वे थे?

आयरलैंड में यह मान्यता प्रचलित है कि संत ब्रेंडन और नाविकों के एक समूह ने लकड़ी और चमड़े से बनी नावों में बैठकर अमेरिकी तट तक की यात्रा की थी। लगभग बाईस फीट लंबी ऐसी ही नावें आज भी पश्चिमी आयरलैंड में उपयोग में हैं। हाल ही में, दो साहसी कनाडाई लोगों ने इसी तरह की एक डोंगी में इस कारनामे को दोहराने का प्रयास किया। संत ब्रेंडन द्वारा मूल यात्रा छठी शताब्दी में हुई थी - वाइकिंग्स से लगभग पाँच सौ वर्ष पहले!

कथित तौर पर, ब्रेंडन अपने एक भिक्षु के डूबने के लिए खुद को जिम्मेदार मानते थे, और यह यात्रा उस पाप का प्रायश्चित करने के लिए एक प्रकार की तीर्थयात्रा थी।

लेकिन सेंट ब्रेंडन भी पहले नहीं थे। मेरे इतिहासकार मित्र पॉल जॉनस्टोन के अनुसार, ब्रेंडन वास्तव में फ्लोरिडा तट तक गए थे, लेकिन मैकुमोर कबीले के एक रोसा ओ'डेसिया ने ग्यारह अन्य लोगों के साथ यह यात्रा सफलतापूर्वक पूरी की और 332 ईस्वी में ही सुरक्षित रूप से आयरलैंड लौट आए! जॉनस्टोन के अनुसार, यह यात्रा एक दुर्घटना थी, ठीक वैसे ही जैसे वाइकिंग्स की पहली यात्रा थी। ब्रिटेन से आयरलैंड के पश्चिम की ओर लौटते समय, गैलिक नाविक रास्ता भटक गए और उत्तरी अमेरिका पहुँच गए। जेस स्टर्न की पुस्तक 'एडगर केसी' में भी दिलचस्प रूप से रोसा ओ'डेसिया नामक एक आयरिश नाविक का उल्लेख है।

जॉनस्टोन ने अन्य आयरिश लोगों द्वारा अटलांटिक महासागर को पार करने के पहले के प्रयासों का भी उल्लेख किया है, जैसे कि 500 ईस्वी में एक डेचू और छठी शताब्दी के पूर्वार्ध में एक फिनियन, जो 551 ईस्वी में ब्रेंडन द्वारा अटलांटिक महासागर को पार करने से कुछ समय पहले का समय था।

दुर्भाग्यवश, अभी तक हमारे पास नई दुनिया में आयरिश बस्तियों के कोई ठोस प्रमाण नहीं हैं, हालांकि हो सकता है कि भविष्य में हमें ऐसे प्रमाण मिल जाएं। लेकिन ये आयरिश परंपराएं

दिलचस्प हैं और काल्पनिक नहीं हैं। यह स्वाभाविक है कि नाविकों का हर राष्ट्र कभी न कभी पश्चिम की ओर यात्रा करता होगा, और हवा के कारण कुछ लोग अपने मार्ग से भटक गए होंगे।

रोमन और उनसे पहले यूनानी, विशेषकर फोनीशियन, महान नाविक थे। हमारा मानना है कि ईसा से पूर्व के फोनीशियन ईसा से दूसरी और पहली सहस्राब्दी में एशिया से ब्रिटेन आए थे। जहाँ तक हमें पता है, रोसा ओ'डेसिया भी अमेरिका की खोज करने वाले पहले व्यक्ति नहीं थे।

लेकिन वाइकिंग्स, जो आयरिश नाविकों की तुलना में अपेक्षाकृत बाद में आए थे, कम से कम यहाँ न केवल अपने आगमन के, बल्कि यहाँ कई वर्षों तक रहने के ठोस प्रमाण छोड़ने में कामयाब रहे। इसलिए, जब तक कोई नया प्रमाण सामने नहीं आता, मैं नॉर्स लोगों को ही नई दुनिया के खोजकर्ता मानता हूँ।

* * *

मैंने सिबिल लीक से इस मामले या अपने निष्कर्षों के बारे में कभी चर्चा नहीं की। 30 दिसंबर, 1967 को मुझे उनका एक ज़रूरी फोन आया। उन्हें अभी-अभी एक अजीब सपना आया था और वे मुझे इसके बारे में बताना चाहती थीं, चाहे इसका कोई भी महत्व हो। यह सपना 29 दिसंबर, 1967 को सुबह 5:30 बजे लॉस एंजिल्स स्थित उनके घर में आया। उन्हें पता था कि यह केप कॉड और "झील" (जैसा कि उन्होंने तालाब को नाम दिया था) के बारे में है, और हमें एक अजीब चट्टान की तलाश करनी चाहिए जिसमें "बड़े-बड़े छेद हैं और इसका झील में मौजूद किसी चीज से गहरा संबंध है। मुझे कोई चट्टान याद नहीं है, लेकिन मुझे लगता है कि वे समुद्र में हैं, झील में नहीं। कोई संबंध जरूर है। जब हम दोबारा केप कॉड जाएंगे तो मुझे उस तट के आसपास जरूर देखना चाहिए। मैंने अपने सपने में बहुत सी चीजें स्पष्ट रूप से देखीं। जब मैंने यह सपना देखा तब मैं उस जगह के बारे में सोच भी नहीं रही थी, लेकिन कल रात मेरी एक लंबे-चौड़े आदमी से बात हुई, और उसी ने कहा, 'चट्टान ढूंढो', और मुझे छेद दिखाए; वे बड़े और गहरे हैं। साथ ही, उस झील में हमारी सोच से कहीं ज्यादा कुछ है, और सिर्फ झील ही नहीं, हमें झील से समुद्र तक जाना होगा और वहां भी देखना होगा। चट्टान में बने छेदों का

क्या मतलब होगा? मुझे इस बारे में एक अजीब सी अनुभूति हो रही है और मुझे पता है कि यह महत्वपूर्ण है।"

सिबिल को फॉलिन्स तालाब के बीच में चट्टान में बने लंगर के गड्ढों के बारे में बिल्कुल भी जानकारी नहीं थी। उसे मेरे सूत्रों के बारे में कुछ भी पता नहीं था, और मैंने उसके सामने कभी भी इस बारे में बात नहीं की थी। लेकिन उसके इस अनुभव से मुझे यह स्पष्ट हो गया कि जब हम उस क्षेत्र में थे, तब उसने वास्तव में किसी से संपर्क किया था और जिन लोगों से उसने संपर्क किया था, वे चाहते थे कि हम तालाब के पानी में उनकी उपस्थिति के भौतिक प्रमाण खोजें।

सिबिल ने मुझे एक नोट भेजा था जिसमें उसने अपने सपने में मिली सारी जानकारियाँ लिखी थीं। नोट के अंत में उसने एक तरह की मुहर बनाई थी, एक गोले के अंदर बड़ा सा अक्षर 'ई'—और पूछा था, यह महत्वपूर्ण है, क्या यह कोई नाम है?

मैंने प्रारंभिक अक्षर 'ई' के मध्ययुगीन रूप को देखा और लगभग लीफ एरिक्सन के भारी प्रभाव को महसूस कर सका।

*123

येल में प्रेतवाधित ऑर्गन

कनेक्टिकट के न्यू हेवन में स्थित येल विश्वविद्यालय एक गंभीर और प्रतिष्ठित संस्थान है, जो भूत-प्रेत जैसी घटनाओं को हल्के में नहीं लेता। इसलिए, मुझे अपने सूचनादाता की पहचान गुप्त रखनी होगी, लेकिन जो कोई भी येल विश्वविद्यालय का दौरा करना चाहता है और इसके भव्य, ऐतिहासिक ऑर्गन को देखना चाहता है, वह निश्चित रूप से ऐसा करने के लिए स्वतंत्र है, बशर्ते उसे संबंधित अधिकारियों से अनुमति मिल जाए। हालांकि, मेरा सुझाव है कि ऐसे समय में भूत-प्रेत की घटनाओं का जिक्र न किया जाए। यदि ऑर्गन के दर्शन के दौरान आपको कुछ असामान्य अनुभव होता है, तो अच्छी बात है, लेकिन कृपया इसे विश्वविद्यालय के अधिकारियों को अपनी यात्रा का कारण न बताएं।

मुझे इस अनोखे ऑर्गन के बारे में पहली बार 1969 में पता चला, जब येल विश्वविद्यालय में सहायक ऑर्गन वादक के रूप में कार्यरत एक सज्जन को वूल्सी हॉल में स्थित इस विशाल

ऑर्गन की स्थिति और संभावित मरम्मत की देखरेख करने के लिए कहा गया था। यह विश्व का पांचवा सबसे बड़ा ऑर्गन है और इसका इतिहास अत्यंत रोचक है।

वूल्सी हॉल का निर्माण 1901 में येल विश्वविद्यालय की 200 वीं वर्षगांठ के उपलक्ष्य में तीन भवनों के एक परिसर के हिस्से के रूप में प्रसिद्ध वास्तुकारों, कैरेरे और हेस्टिंग्स द्वारा किया गया था। इसके पूरा होने के कुछ ही समय बाद, तत्कालीन विश्वविद्यालय के ऑर्गन वादक, श्री हैरी बी. जेप्सन, प्रसिद्ध डिपार्टमेंट स्टोर परिवार के न्यूबेरी परिवार से हॉल के लिए एक उत्कृष्ट ऑर्गन के निर्माण हेतु बड़ी धनराशि का योगदान प्राप्त करने में सफल रहे।

1903 में भी इसे अपने आकार और ध्वनि विस्तार के कारण एक उत्कृष्ट वाद्य यंत्र माना जाता था। 1915 तक, पाइप ऑर्गन की तकनीक में कुछ प्रगति के कारण 1903 का यह वाद्य यंत्र कुछ हद तक पुराना लगने लगा। जेप्सन ने फिर से न्यूबेरी परिवार से संपर्क किया ताकि उनके उपहार को अद्यतन किया जा सके और ऑर्गन का पुनर्निर्माण करके हॉल का विस्तार किया जा सके। इस नए वाद्य यंत्र को लगभग 1916 में समर्पित किया गया।

1926 तक संगीत की रुचि एक बार फिर रोमांटिक संगीत की ओर मुड़ गई थी, और शास्त्रीय संगीत के बुनियादी घटकों के साथ-साथ वाद्य यंत्रों में भी कुछ बदलाव करना आवश्यक हो गया था। एक बार फिर न्यूबेरी परिवार ने वाद्य यंत्र के आधुनिकीकरण में योगदान दिया। ये बदलाव बोस्टन की स्किनर ऑर्गन कंपनी द्वारा जी. डोनाल्ड हैरिसन नामक एक अंग्रेज विशेषज्ञ के सहयोग से किए गए थे। स्किनर और हैरिसन के बीच अच्छे संबंध नहीं थे और इस प्राचीन ऑर्गन को आधुनिक रूप देने और उसका जीर्णोद्धार करने के दौरान काफी तनाव मौजूद था।

प्रोफेसर हैरी जेप्सन को 1940 के दशक में उनकी इच्छा के विरुद्ध सेवानिवृत्त होना पड़ा। हालांकि वे वूल्सी हॉल से केवल दो ब्लॉक दूर रहते थे, फिर भी उन्होंने कभी भी उस प्रसिद्ध ऑर्गन को बजाने के लिए वहां कदम नहीं रखा, जिसे उन्होंने खुद बनवाया था। 1952 के आसपास उनका निधन एक कड़वे और निराश व्यक्ति के रूप में हुआ।

विश्वविद्यालय के ऑर्गन वादकों में से एक, फ्रैंक बोज़्यान, 1970 के दशक में भारी आशंकाओं के साथ सेवानिवृत्त हुए। उन्होंने हॉल में कार्यरत किसी व्यक्ति से कहा कि उन्हें लगता है कि वे एक गलती कर रहे हैं; सेवानिवृत्ति के छह महीने बाद ही उनका निधन हो गया। समय बीतने

के साथ, वूल्सी हॉल, जो कभी ललित कलाओं का एक सुंदर मंदिर था, रॉक-एंड-रोल समूहों और यंत्रवत प्रवर्धित संगीत के लिए उपयोग किया जाने लगा। निःसंदेह, हॉल और ऑर्गन के निर्माण से जुड़े लोग यदि इन गतिविधियों को देख पाते तो वे भयभीत हो जाते।

येल में भूतिया ऑर्गन

जिस सज्जन ने मेरा ध्यान इस ओर दिलाया, और जिनका नाम गुप्त रखा जाएगा, वे अक्सर हॉल में आते-जाते थे और ऑर्गन से उनका गहरा नाता था। उन्हें पूरी इमारत में, खासकर तहखाने और ऑर्गन कक्षों में, एक भयावह और उदास अनुभूति होने लगी। देर रात अजीब समय पर वहाँ काम करते समय, उन्हें हर पल ऐसा लगता था मानो कोई अप्रिय सा एहसास उनके आस-पास मंडरा रहा हो या उनके पीछे खड़ा हो! कई बार उन्हें यह सुनिश्चित करने के लिए पीछे मुड़कर देखना पड़ता था कि वे अकेले ही तो नहीं हैं। किसी की उपस्थिति का एहसास इतना प्रबल हो गया कि वे वहाँ अकेले रहने से कतराने लगे, खासकर शाम के समय। कहा जाता है कि एक क्यूरेटर की पत्नी ने उन्हें सलाह दी थी कि जब भी वे ऑर्गन कक्षों में जाएँ तो अपने साथ एक क्रॉस ले जाएँ। उन्होंने यह भी दावा किया कि उन्हें तहखाने के प्रवेश द्वार पर किसी के खड़े होने का आभास हुआ, मानो अजनबियों को अंदर आने से रोकने के लिए कोई खड़ा हो।

एक सुहावनी गर्मी की शाम को मैं अपने उस मुखबिर के साथ येल विश्वविद्यालय और वहां के ऑर्गन को देखने गया था, जिसे बाद में कहीं और नौकरी मिल गई। मुझे भी ऑर्गन कक्षों में घुटन भरी हवा का एहसास हुआ, हर जगह हिलने-डुलने पर किसी की मौजूदगी का आभास होता था। यह कहना मुश्किल है कि हम यहाँ उस दुखी व्यक्ति के भूत की बात कर रहे हैं जिसे सेवानिवृत्त होने के लिए मजबूर किया गया था और जिसने कभी अपने प्रिय ऑर्गन कक्ष में कदम नहीं रखा, या फिर किसी पुराने प्रभाव की बात कर रहे हैं। मैं एक पल के लिए भी यह नहीं कह रहा हूँ कि येल विश्वविद्यालय में भूत-प्रेत का वास है या विश्वविद्यालय से संबंधित कोई बुरी शक्तियाँ हैं। लेकिन यह संभव है कि वूल्सी हॉल में स्थित उस शानदार ऑर्गन को देखने आने वाले संवेदनशील व्यक्ति किसी अनसुलझे अतीत के कुछ अंश को महसूस कर सकें।

*124

टेलीविजन पर भूत

1965 तक मैंने टेलीविजन से जुड़े दो तरह के भूतों के बारे में सुना था: एक वे जो अभिनेताओं द्वारा निभाए जाते थे और दूसरे वे जो ऊंची इमारतों के कारण उत्पन्न होते थे। अब मुझे टेलीविजन पर एक और तरह के भूत के बारे में पता चलने वाला था, जो सचमुच का भूत था। इसकी शुरुआत 1965 में लंदन के ब्रिटिश कॉलेज ऑफ साइकिक स्टडीज में दिए गए मेरे एक व्याख्यान से हुई। भूतों पर दिए गए मेरे व्याख्यान के बाद, जिसमें मैंने प्रेतों के दृश्यों की स्लाइड दिखाईं, एक लंबी, बुद्धिमान दिखने वाली महिला मेरे पास आई और मुझे ईस्ट एंग्लिया के एक बहुत ही अजीब भूतिया घर के बारे में बताना चाहती थी। यह रूथ प्लांट से मेरी पहली मुलाकात थी, जिन्होंने बताया कि वह एक लेखिका और शोधकर्ता हैं, और उनकी पृष्ठभूमि समाज विज्ञान में है। उनकी मान्यताएं अध्यात्मवादी दर्शन में थीं, और उन्होंने स्वयं कई मानसिक अनुभव किए थे। मैंने उनसे ईस्ट एंग्लिया के उस घर के बारे में मुझे एक नोट छोड़ने के लिए कहा। मुझे उम्मीद थी कि यह बस एक और भूतिया घर होगा, जिसमें शायद कदमों की आहट, अपने आप खुलने या बंद होने वाले दरवाजे, या शायद किसी मृत रिश्तेदार का प्रेत दिखाई देता होगा। मेरे मानकों के अनुसार, यह एक क्लासिक, पारंपरिक भूतिया घटना है।

अगले जनवरी में, मिस प्लांट ने अपना वादा निभाया। उन्होंने बताया कि ईस्ट एंग्लिया में स्थित उस घर का नाम मोर्ले ओल्ड हॉल था, और यद्यपि वह मुख्य रूप से स्टुअर्ट काल का था, लेकिन उसकी नींव बहुत पुरानी थी, जो सैक्सन काल से भी पहले की थी। यह इंग्लैंड के उत्तर-पूर्व में नॉर्विच के पास स्थित था और जाहिर तौर पर उनकी एक दोस्त का था, जिसने इसे जीर्णोद्धार के इरादे से खरीदा था। यह दयनीय हालत में था और रहने लायक नहीं था। उनके दोस्त, रिकी कॉटरिल, मूल रूप से एक सुअर पालक थे; फिर भी, वह, उनकी युवा पत्नी और उनका बच्चा उस विशाल हवेली में रहने में कामयाब रहे, या यूं कहें कि उसके उस हिस्से में जिसे उन्होंने अपने पैसों से जीर्णोद्धार करवाया था, और इतने इतिहास से घिरे रहने का रोमांच उनकी सारी कठिनाइयों की भरपाई कर देता था। मिस प्लांट ने बताया कि वह घर मुख्य मार्ग से बहुत दूर था और वास्तव में, जब तक कोई ग्रामीण इलाके से परिचित न हो, उसे ढूंढना मुश्किल था। इसके चारों ओर दो खाई थीं, और देश के उस हिस्से में कई वर्षों से पुरातात्विक खुदाई की जा रही थी, क्योंकि पूर्वी एंग्लिया का वह हिस्सा इंग्लैंड के सबसे पुराने और ऐतिहासिक क्षेत्रों में से एक है।

जनवरी 1966 में जब मिस प्लांट ने मुझसे पहली बार संपर्क किया था, तब तक उन्होंने घर या उसके आसपास के इलाके की पृष्ठभूमि के बारे में कोई शोध नहीं किया था। उन्हें लगा कि घर मेरे ध्यान देने योग्य है क्योंकि एक यात्रा के दौरान उनके और उनकी एक सहेली के साथ कुछ घटित हुआ था।

“मैं वहां अपनी एक नॉर्वेजियन दोस्त, ऐनी विल्हेल्मसेन के साथ रहने गई थी, जिनके पिता लंदन में नॉर्वे के सांस्कृतिक प्रतिनिधि थे और जो खुद एक विश्वविद्यालय स्नातक थीं,” रूथ प्लांट ने बताया। “यह दो साल पहले ईस्टर के दौरान की बात है। हमने स्थानीय होटल में रुकने का इरादा किया था, लेकिन हवेली के मालिक श्री कॉटरिल को पता चला कि होटल पूरी तरह से भरा हुआ था।”

हालात ऐसे में, मालिक उस कमरे से बाहर चला गया जिसमें वह रह रहा था और उसने दोनों महिलाओं को रात भर के लिए वह कमरा इस्तेमाल करने दिया। चूंकि वह मिस प्लांट की भूतों में रुचि से वाकिफ था, इसलिए उसने उन्हें आश्वस्त किया कि उसकी जानकारी के अनुसार वहां कोई भूत नहीं है, क्योंकि वह वहां तीन साल से रह रहा था और उसने कुछ भी नहीं देखा

था। दरअसल, दोनों महिलाएं चैन से सोईं और सुबह मिस प्लांट उठीं और उस बड़े कमरे से होते हुए रसोई तक गईं जो दोनों हिस्सों को रसोई से जोड़ता था, और यह सब पहली मंजिल पर था।

जब मैं वापस आया, तो मुझे सामने के रास्ते की ओर खुलने वाली बड़ी खिड़की के पास रुकने का मन हुआ, हालाँकि उसमें शीशा नहीं था और दिन बहुत ठंडा था। मुझे बहुत शांति और ध्यान का अनुभव हुआ और अचानक मुझे एक कैथोलिक प्रार्थना, 'हेल मैरी' सुनाई दी, और मुझे यकीन हो गया कि मैंने जिस 'मौजूदगी' को महसूस किया, वह घर की मालकिन की थी। यह देखने के बाद, मैं अपने बेडरूम में वापस गया और ऐनी को बिस्तर पर बैठी हुई और बहुत चिंतित देखकर हैरान रह गया। उसने कहा कि जब वह लेटी थी, तो उसने बिस्तर की चादरों की सरसराहट और भारी साँसें सुनी थीं। वह ध्यान से सुनने के लिए बिस्तर पर बैठ गई, और तुरंत ही आवाज़ बंद हो गई, और लेटते ही फिर से आने लगी। हमने नाश्ते के समय अपने मेज़बान को इसके बारे में बताया, लेकिन वह हमें और कुछ नहीं बता सके। इसलिए मैं गाँव गया और लोगों से बात करके पता चला कि घर में रहने वाले कई लोगों ने लगभग ऐसा ही अनुभव किया था। एक आदमी ने तो खिड़की पर उस महिला को साफ़-साफ़ देखा था, और दूसरों ने ऐनी की तरह उसकी आवाज़ सुनी थी।

"खिड़की पर बैठी महिला" ने रूथ प्लांट को बहुत आकर्षित किया, खासकर इसलिए क्योंकि वह उसकी पहचान नहीं जानती थी। अपनी आदत के अनुसार, जो तब भी थी और अब भी है, उसने एक प्रतिष्ठित माध्यम से मिलने का फैसला किया ताकि वह उसके आसपास की किसी आध्यात्मिक शक्ति को महसूस कर सके और शायद मॉर्ले ओल्ड हॉल की महिला भूत की पहचान पर कुछ प्रकाश डाल सके। इस बार उसकी मुलाकात मिस्टर बोगोरान से हुई, जो क्वींसबरी प्लेस स्थित कॉलेज ऑफ साइकिक स्टडीज में नियमित रूप से मिलते थे। "मैंने भूत के बारे में कुछ नहीं कहा, बस इतना बताया कि मेरा एक दोस्त एक खूबसूरत पुराने स्टुअर्ट घर का जीर्णोद्धार करने की कोशिश कर रहा है और मैं सोच रही थी कि क्या दूसरी दुनिया से कोई उसे कोई उपयोगी सलाह दे सकता है।"

घर की मरम्मत के बारे में सलाह देने के बजाय, बोगोरान ने घर का विस्तृत वर्णन किया और बताया कि उसने एक खिड़की पर एक प्रेतवाधित महिला को खड़े देखा था। यह सुनकर मिस

प्लांट को आश्चर्य हुआ, लेकिन इससे भी बड़ा झटका उन्हें तब लगा जब श्री बोगोरान ने दो और महत्वपूर्ण बातें बताईं। पहली, कि घर की मालकिन, उनकी दोस्त, कुछ ही हफ्तों में टेलीविजन पर दिखाई देंगी, और दूसरी, कि घर में एक और भूत है, एक भिक्षु जो घर से जुड़ा हुआ है, इसलिए नहीं कि वह प्रेतवाधित महिला की तरह वहां खुश था, बल्कि इसलिए कि वह एक हत्या में शामिल था।

चूंकि घर के मालिक श्री कॉटरिल का टेलीविजन से कोई संबंध नहीं था, इसलिए उनके पहले बयान ने रूथ प्लांट के मन में संदेह के अलावा और कुछ नहीं पैदा किया। कल्पना कीजिए उनकी हैरानी की, जब श्री बोगोरान के साथ उनकी मुलाकात के कुछ दिनों बाद, रिकी कॉटरिल ने उन्हें फोन करके बताया कि एक स्थानीय टेलीविजन स्टेशन ने उनसे घर पर एक रात भर चलने वाले कार्यक्रम के लिए संपर्क किया है, जिसे टेलीविजन के लिए फिल्माया जाएगा। उनके फोन करने का कारण उन्हें नॉर्विच में कार्यक्रम में शामिल होने के लिए आमंत्रित करना था। इस घटनाक्रम की खुशी में रूथ प्लांट भूतिया साधु के बारे में सब कुछ भूल गईं।

हॉल पहुँचने पर उनकी मुलाकात कैम्ब्रिज के एक मानसिक शोधकर्ता टोनी कॉर्नेल से हुई। रूथ और मिस्टर कॉर्नेल के विचार एक जैसे नहीं थे: रूथ को लगा कि वे संशयवादी और नकारात्मक हैं और उन्हें शक था कि घर में उनकी उपस्थिति भूतों को खोजने से ज़्यादा उन्हें नकारने के लिए थी। बाद में पता चला कि मिस्टर कॉर्नेल, जैसा कि कार्यक्रम निर्माता ने कहा, "हमारे सबसे भरोसेमंद और मान्यता प्राप्त मानसिक अन्वेषक" थे, जिन्हें इस मामले में भूतों की वास्तविकता के प्रति उनकी प्रतिबद्धता के कारण नहीं, बल्कि इसलिए बुलाया गया था क्योंकि उनका कार्यालय ज़्यादा दूर नहीं था और समय बहुत महत्वपूर्ण था। रूथ अपने साथ मिस्टर बोगोरान के साथ हुई बातचीत की एक ऑडियो टेप लाई थीं, लेकिन इसका इस्तेमाल फिल्म में नहीं किया गया। उन्होंने ज़रूरी साक्षात्कार दिए और इसके बारे में और नहीं सोचा। कुछ हफ़्तों बाद, मॉर्ले ओल्ड हॉल की फिल्माई गई रिपोर्ट प्रसारित हुई। रूथ प्लांट ने इसे एक स्थानीय होटल में देखा, जहाँ इसकी फोकसिंग ठीक नहीं थी और वह खुद को या किसी और को मुश्किल से पहचान पा रही थीं। फिर भी, उस स्क्रीनिंग के दौरान कुछ अजीब हुआ।

“प्रदर्शन के दौरान, सेट पर एक ज़ोरदार धमाका हुआ,” रूथ प्लांट ने बताया, “जिसका कोई सामान्य कारण नहीं लग रहा था। मेरी बैसेट हाउंड, जो स्क्रीन की ओर पीठ करके गहरी नींद में सो रही थी, अचानक डर के मारे उछल पड़ी और स्क्रीन को ऐसे घूरने लगी जैसे उसने किसी ऐसे व्यक्ति को देख लिया हो जिसे हम नहीं देख सकते थे।”

कुछ दिनों बाद रूथ प्लांट ने श्री कॉटरिल को फोन किया, और तभी उन्हें फिल्म के टेलीविजन प्रसारण के आश्चर्यजनक परिणामों के बारे में पता चला। पता चला कि आम जनता में से कम से कम तेईस लोगों ने प्रसारण स्टेशन को लिखकर पूछा था कि श्री कॉर्नेल के भाषण के दौरान उनके पीछे खड़े दाढ़ी वाले भिक्षु कौन थे!

अब तक किसी ने भी किसी प्रेतवाधित भिक्षु के बारे में कुछ नहीं कहा था, लेकिन इस परियोजना से जुड़े सभी लोग जानते थे कि कई गवाहों ने एक प्रेतवाधित महिला को देखा था। इसलिए, यदि मन में बनी छवि को टेलीविजन फिल्म में दिखाया जा सकता था, तो प्रयोग में भाग लेने वालों के मन में वह महिला अवश्य रही होगी।

टेलीविजन पर भूत के प्रकट होने का विचार स्वाभाविक रूप से मुझे रोमांचित कर गया। मैंने तुरंत डॉक्यूमेंट्री के निर्माता और एंग्लिया टेलीविजन के अधिकारियों में से एक माइकल रॉबसन से संपर्क किया। माइकल रॉबसन, जो डॉक्यूमेंट्री बनने से पहले कई बार मोर्ले ओल्ड हॉल जा चुके थे, ने मुझे इंग्लैंड आने पर फिल्म दिखाने का प्रस्ताव दिया। “हमारी फिल्म यूनिट ने कैम्ब्रिज साइकिकल रिसर्च एंड स्पॉन्टेनियस केसेस कमेटी के अध्यक्ष श्री टोनी कॉर्नेल के साथ हॉल में पूरी रात निगरानी की। रात भर कई दिलचस्प घटनाएं घटीं, खासकर एक हिलता हुआ गिलास, लेकिन सबसे ज्यादा चर्चा इस बात की हुई: भोर होते ही श्री कॉर्नेल और मैं एक जालीदार खिड़की के पास हॉल की फिल्म पर चर्चा कर रहे थे। फिल्म प्रसारित होते ही कई लोगों ने पत्र लिखकर पूछा कि श्री कॉर्नेल और मेरे बीच जो आकृति दिखाई दी, वह कौन थी। सभी का वर्णन एक जैसा था: एक साधु जैसी आकृति का चेहरा और धड़ हमारे बीच झांक रहा था। श्री कॉर्नेल और मैंने बाद में खुद फिल्म की बारीकी से जांच की और हमें कुछ भी नहीं दिखा: लेकिन आकृति को देखने का दावा करने वाले लोगों की बड़ी संख्या को देखते हुए, श्री कॉर्नेल ने इसे सामूहिक मतिभ्रम का एक दिलचस्प उदाहरण माना और गहन अध्ययन के लिए पत्र अपने साथ ले गए।”

पता चला कि श्री कॉर्नेल अकादमिक जगत से जुड़े कोई परा मनोविज्ञानी नहीं थे, बल्कि केवल भूत-प्रेतों में रुचि रखने वाले व्यक्ति थे। मिस प्लांट की मदद और काफी धैर्य के साथ, मैं श्री कॉर्नेल द्वारा अपने साथ ले जाए गए पत्रों को प्राप्त करने में सफल रहा और मैंने स्वयं उनकी जांच की। इस घटना को "सामूहिक मतिभ्रम" के रूप में उनकी व्याख्या, वास्तव में, समस्या से निपटने का एक आसान तरीका है—एक वास्तविक मानसिक घटना। लेकिन तेईस गवाहों ने अपने अनुभव का वर्णन किसी भी वैज्ञानिक द्वारा इस घटना को समझाने के प्रयास से कहीं अधिक प्रभावशाली ढंग से किया है।

ग्रेट यारमाउथ की श्रीमती जोन बुकान ने लिखा: "मेरे पति और मैंने एक भिक्षु की आकृति देखी, जिसके सिर पर एक कफ़न था और हाथ प्रार्थना की मुद्रा में जुड़े हुए थे। वह खिड़की में चुपचाप खड़ा हुआ स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहा था। ऐसा प्रतीत नहीं हो रहा था कि वह बातचीत कर रहे पुरुषों को देख रहा हो, बल्कि उनके पीछे देख रहा था।"

"मैंने एक व्यक्ति की आकृति देखी जो मुझे एक भिक्षु जैसी लगी; उसने एक गोल टोपी, एक लंबा लबादा पहन रखा था और उसके हाथ प्रार्थना की मुद्रा में जुड़े हुए थे," साउथरेप्स की मिस ए. हेविट ने टिप्पणी की।

"मैंने उस आकृति को बहुत स्पष्ट रूप से देखा, हालांकि मेरे पास केवल बारह इंच की स्क्रीन है और मेरे कमरे में सूरज की रोशनी आ रही थी। वह आकृति बात कर रहे व्यक्ति के पीछे से दिखाई दी, मानो खिड़की से झाँक रही हो," एल. एम. गोविंग ने बताया। "मैंने सोचा कि शायद यह रोशनी की वजह से है, लेकिन बात कर रहे व्यक्ति ने हिलकर उसे आंशिक रूप से ढक लिया। जब वह अपनी पिछली स्थिति में वापस गया, तो वह आकृति पहले से भी अधिक स्पष्ट रूप से दिखाई दी।"

ब्रोमहम की श्रीमती जी. डी. हेडन ने लिखा, "मेरी बेटी और मैंने दोनों ने वक्ता के दाईं ओर और साक्षात्कारकर्ता के बाईं ओर एक पुजारी की आकृति देखी।" लिंकनशायर के श्री और श्रीमती कार्टर ने न केवल कहा, "यह बहुत स्पष्ट था," बल्कि श्रीमती कार्टर ने टेलीविजन पर देखे गए भिक्षु का एक चित्र भी भेजा। नॉर्विच से, जहाँ से प्रसारण शुरू हुआ था, एल्विएरा पैनेटा नाम की एक दर्शक का बयान आया, जिन्होंने दाढ़ी वाले भिक्षु का चित्र भी बनाया, जिसमें उनका चेहरा लंबा और मुरझाया हुआ दिखाया गया है। "मेरी माँ और मैंने दोनों ने भिक्षु

को खिड़की से झाँकते हुए देखा; उन्होंने सिर पर हुड पहना हुआ था, दाढ़ी थी और उनके हाथ थोड़े ऊपर उठे हुए थे।" एक दर्शक, मिस एम. सी. ग्रिक्स ने स्टेशन को पत्र लिखकर पूछा कि क्या "खिड़की में, बात कर रहे व्यक्ति के ठीक पीछे, काले कपड़े पहने और प्रार्थना की मुद्रा में हाथ जोड़े खड़ा व्यक्ति सचमुच कोई था?" इस पर सफ़ोक की नोरा कोनोनेन्को ने आगे कहा, "पहले तो मुझे वह एक हुड वाली खोपड़ी जैसी लगी, और फिर जैसे-जैसे वे सज्जन बात करते रहे, वह आगे आकर अंदर झाँकने लगी। उसी क्षण वह स्पष्ट रूप से एक दुबले-पतले चेहरे में बदल गई, जिस पर एक भयानक घृणा का भाव था।" लगातार मिल रही गवाहियों के कारण स्टेशन ने फिल्म को दोबारा चलाने का फैसला किया। दूसरी बार दिखाए जाने के बाद, और भी अधिक लोगों ने स्क्रीन पर उस प्रेतवाधित भिक्षु को देखा।

श्रीमती ए. सी. मेसन ने लिखा, "कथित भूतिया घर के आपके पुनः प्रसारण ने मुझे काफी झकझोर दिया, "ऐसा इसलिए नहीं कि मैंने मूल प्रसारण में क्या देखा था, बल्कि इसलिए कि आपके श्री मैकग्रेगर ने मज़ाकिया अंदाज़ में पूछा, 'अच्छा, क्या आपने कुछ देखा?' मुझे आश्चर्य हुआ कि जो मुझे इतना स्पष्ट दिख रहा था, वह किसी और को क्यों नहीं दिखा। मैंने दोनों बार भिक्षु को देखा।" कुछ दर्शकों ने सीधे-सादे बयान भेजे, बिना किसी अनुरोध के। सफ़ोक की श्रीमती जोन कोलिस ने लिखा, "मैंने खिड़की में भिक्षु को बिल्कुल स्पष्ट रूप से देखा। वह उस समय वहीं था और मैं आपको विश्वास दिला सकती हूँ कि यह मेरी कल्पना नहीं थी।"

नॉरविच की श्रीमती जेनेट हॉल्स ने कहा, "वह नकाबपोश तो नहीं लग रहा था, लेकिन उसके लंबे बाल और दाढ़ी थी।" कैम्ब्रिज की श्रीमती एफ. निकोलाइसेन ने बताया, "मैंने पिछली बार उसे देखा था, लेकिन हंसी उड़ाए जाने के डर से मैंने किसी को नहीं बताया। इस बार मैंने अपने पति को उसका चित्र बनाकर दिखाया, लेकिन फिर भी वह उसे नहीं देख पाए, जिससे मुझे बहुत गुस्सा आया।"

यदि ये सभी लोग सामूहिक मतिभ्रम से पीड़ित थे, तो यह निश्चित रूप से विचित्र है कि उन्हें इतने अलग-अलग प्रकार के मतिभ्रम हुए, क्योंकि कई रिपोर्टों में मामूली लेकिन महत्वपूर्ण विवरणों में अंतर था। लोवेस्टोफ्ट की मिस डब्ल्यू. कैप्लेन ने लिखा, "प्रदर्शन के अंत में, मेरी बहन और मैंने सिर से कमर तक एक नकाबपोश भिक्षु की छवि स्पष्ट रूप से देखी।" कैम्ब्रिज की श्रीमती जे. जी. वाट ने शायद इसे सबसे अच्छे ढंग से व्यक्त किया जब उन्होंने लिखा, "मुझे

कोई अंदाज़ा नहीं था कि मुझे किस तरह के भूत को देखना है, और जब तक वे दोनों आदमी घर के बारे में बात नहीं कर रहे थे, तब तक मुझे कुछ भी दिखाई नहीं दिया। लेकिन खिड़की के बाहर, उनके पीछे, मुझे एक भिक्षु की आकृति स्पष्ट रूप से दिखाई दी। उन्होंने भिक्षु का वस्त्र पहना हुआ था और उनका सिर ढका हुआ नहीं था, उनके बाल पुराने ज़माने के भिक्षुओं की तरह कटे हुए थे, सिर पर गंजापन था और सामने की ओर लटें थीं, बाल या तो सुनहरे थे या भूरे। उनका चेहरा एक युवक जैसा था और उनके चेहरे पर बहुत शांत भाव था। उनकी बाहें उनके सामने लटकी हुई थीं, उनका दाहिना हाथ हल्के से उनके बाएं हाथ के ऊपर रखा हुआ था। मैंने यह सब बहुत स्पष्ट और स्वाभाविक रूप से देखा और मुझे लगा कि बाकी लोग भी इसे देख पाएंगे, इसलिए मुझे लगा कि टेलीविजन वाले दर्शकों के साथ खेल खेल रहे हैं, और मुझे लगा कि यह सब एक धोखा है। अगले दिन एक दोस्त ने मुझे एंग्लिया टीवी द्वारा फिल्म को दोबारा दिखाने के उद्देश्य के बारे में बताया, और तब मुझे एहसास हुआ कि यह गंभीर था। अजीब बात यह है कि हमारा टेलीविजन सेट अब पहले जैसा नहीं रहा, और हमें अच्छी तस्वीर नहीं मिलती—और फिर भी मैंने इस भिक्षु को बहुत स्पष्ट रूप से देखा।

अब तक मुझे यह स्पष्ट हो चुका था कि तेईस लोगों ने—या अंतिम गिनती के अनुसार इकत्तीस लोगों ने—वास्तव में एक भिक्षु की आकृति देखी थी या उन्हें लगा था कि उन्होंने देखी है, जबकि वास्तव में वहाँ कोई भिक्षु नहीं होना चाहिए था। हालाँकि, कई अन्य लोगों ने, बल्कि अधिकांश दर्शकों ने, भिक्षु को नहीं देखा। स्पष्टतः, वह फिल्म में था, और फिर भी केवल उन लोगों को दिखाई दे रहा था जिनके पास मानसिक शक्तियाँ थीं। इससे कुछ रोचक प्रश्न उठे: जबकि हम जानते हैं कि भूत केवल उन्हीं लोगों को दिखाई देते हैं जो उन्हें देख सकते हैं, क्या प्रेत-दर्शन को चुनिंदा रूप से भी फोटो खींचा जा सकता है, ताकि उन्हें केवल वे लोग देख सकें जिनके पास मानसिक शक्तियाँ हों, जबकि अन्य जिनके पास ये शक्तियाँ नहीं हैं, वे उन्हें तस्वीर या फिल्म में न देख सकें? साथ ही, क्या टेलीविजन पर भूत का यह मामला अनोखा था, या ऐसे अन्य उदाहरण भी दर्ज हैं?

19 दिसंबर, 1969 के लंदन एक्सप्रेस के अनुसार, पांच दुकानदारों ने क्लोज-सर्किट टीवी पर एक प्रेत जैसी आकृति देखी। “दुकान की नौकरानियां और ग्राहक पैंतालीस मिनट तक मंत्रमुग्ध होकर देखते रहे, जब केंट के हाई स्ट्रीट स्थित बुटीक की सीढ़ियों के ऊपर एक लंबी

विक्टोरियन पोशाक पहने एक महिला की आकृति खड़ी थी, जो कभी-कभी अपना हाथ हिलाती और अपने बालों को सहलाती थी। कई बार वह आकृति सीढ़ियों से आधी नीचे उतरी और फिर बुटीक की ऊपरी मंजिल पर वापस चली गई, जिसे कुछ ही महीने पहले एक पुराने घर से बदला गया था।" क्लोज-सर्किट टेलीविजन पर उस प्रेत जैसी आकृति को सबसे पहले देखने वाली अठारह वर्षीय सैली व्हाइट थी, जिसने अपनी सहकर्मी जेनेट एब्स को उसकी ओर इशारा करते हुए कहा, "तुम्हारे पास एक ग्राहक है।" लेकिन जेनेट एब्स उस आकृति के आर-पार चली गई। दूसरी नौकरानियों में से एक, एंड्री वेलर ने कहा, "जैसे ही वह आकृति ऊपर गई, वह एक धुंध में गायब हो गई और फिर से प्रकट हुई।" यह घटना दोपहर के भोजन के समय घटी। हालाँकि पाँच लड़कियों ने उस महिला को देखा था, लेकिन जब वे ऊपर उस जगह गईं जहाँ उन्होंने उसे देखा था, तो वह जगह खाली मिली। जब वे नीचे लौटीं और स्क्रीन पर देखा, तो भूत फिर से वहाँ था। मॉर्ले ओल्ड हॉल के भिक्षु के विपरीत, जो स्क्रीन पर केवल कुछ सेकंड के लिए दिखाई दिया था, केंट के चैथम स्थित हाई स्ट्रीट की विक्टोरियन महिला पूरे एक घंटे तक स्क्रीन पर रही, और ऐसा लग रहा था कि वह अपने प्रदर्शन का भरपूर आनंद ले रही थी।

हालांकि, जिन दर्शकों ने लिखकर अपनी प्रतिक्रिया दी थी, उनमें से किसी ने भी इस बात पर ध्यान नहीं दिया था कि भिक्षु का आकार उस समय स्क्रीन पर बात कर रहे दो वास्तविक व्यक्तियों के आकार के अनुपात में नहीं था: भिक्षु उनसे काफी छोटा दिखाई दे रहा था। रूथ प्लांट को दूसरे भूत का प्रकट होना बेहद रोमांचक लगा। उन्होंने दो अन्य लंदन के माध्यमों से परामर्श करने का निर्णय लिया, ताकि पता चल सके कि क्या वे उसकी पहचान के बारे में कुछ बता सकते हैं। उनमें से एक ट्रिक्सी एलिंगम थीं, जिन्होंने तुरंत घर के आसपास एक प्रेतवाधित भिक्षु को "देखा" और रूथ को बताया कि जब वह प्रार्थना कर रहे थे, तब किसी ने उन पर हमला किया था। भिक्षु ने प्याले से घुसपैठिए पर प्रहार करके अपना बचाव किया था। उन्हें लगा कि पुजारी ने एक सैनिक की मदद से बाद में शव और प्याले को दफना दिया था। जॉर्ज साउथहॉल, जो मुख्य रूप से एक ऊंघते हुए माध्यम थे, ने स्वेच्छा से बताया कि परिसर में एक प्याला दफनाया गया था और उन्होंने प्यालों के एक सेट का वर्णन किया, जिनमें से सबसे बड़ा प्याला किसी महत्वपूर्ण व्यक्ति के लिए आरक्षित था। उन्होंने मॉर्ले को तीर्थयात्रियों के विश्राम

स्थल के समान स्थान के रूप में देखा। जब मिस प्लांट जॉर्ज साउथहॉल के साथ बैठीं, तब तक उन दोनों को यह पता नहीं था कि धर्म सुधार से पहले की एक कम ज्ञात प्रथा थी जिसके तहत किसी मठाधीश या बिशप को एक विशेष प्याला दिया जाता था, क्योंकि उनसे अपेक्षा की जाती थी कि वे सामान्य पुजारियों द्वारा इस्तेमाल किए जाने वाले प्याले का उपयोग न करें। रूथ प्लांट जिन सभी माध्यमों से मिलीं, वे सभी किसी दबे हुए खजाने और घर से पास के एक चर्च तक जाने वाले गुप्त रास्तों के बारे में दृढ़ता से बता रहे थे। बाद के शोध में इसकी पुष्टि हो सकी। जहाँ तक खजाने की बात है, वह अभी तक नहीं मिला है, लेकिन खोज जारी है।

मैंने जल्द से जल्द नॉरफ़ॉक जाने का फैसला किया। यह मौका सितंबर 1966 में मिला जब एक फिल्म निर्माता ने मेरे साथ एक डॉक्यूमेंट्री फिल्म के लिए संभावित स्थलों का निरीक्षण करने की पेशकश की। मैंने मॉर्ले ओल्ड हॉल का सुझाव दिया और रूथ प्लांट को सारी तैयारी करने को कहा: हॉल के दौरे की व्यवस्था करना, पास में एक उपयुक्त होटल का सुझाव देना, एंग्लिया टीवी को विवादास्पद डॉक्यूमेंट्री देखने की हमारी इच्छा के बारे में सूचित करना, और अंत में, सबको खुश करने के लिए, स्थानीय प्रेस को हम पर कटाक्ष करने देना - अमेरिकी भूत-शिकारी और उनके दल का स्थानीय भूत से मिलने आना। मिस प्लांट को फिल्म के लिए तकनीकी सलाहकार के रूप में काम करना था। (दुर्भाग्य से, फिल्म कभी नहीं बन पाई, क्योंकि निर्माता और मैं एक ऐसे प्रारूप पर सहमत नहीं हो सके जिससे कहानी को रोमांचक लेकिन वैज्ञानिक रूप से मान्य तरीके से बताया जा सके।)

हम लंदन से नॉर्विच तक घोड़े पर सवार होकर गए। प्रोजेक्ट के फिल्म निर्माता, गिल्बर्ट केट्स, जो भूतों पर बिल्कुल विश्वास नहीं करते थे, यह समझ ही नहीं पा रहे थे कि भूत जैसी चीजें कैसे संभव हो सकती हैं, जबकि दल के तीसरे सदस्य, जाने-माने फिल्म पटकथा लेखक विक्टर वुल्फसन, उतनी ही दृढ़ता से तर्क दे रहे थे कि आत्माओं जैसी चीजें न केवल संभव हैं बल्कि उनकी मौजूदगी की पूरी संभावना है। एक समय बहस इतनी गरमा गई कि मुझे चिंता होने लगी कि क्या हम कभी नॉरफ़ॉक एक साथ पहुँच भी पाएंगे। आखिरकार, विक्टर वुल्फसन ने विषय बदल दिया। कंधे उचकाते हुए उन्होंने कहा, "मुझे नहीं लगता कि मैं गिल को मना पाऊंगा। वह अभी पूरी तरह से विकसित नहीं है।" गिल, जो हर परिस्थिति में सहज थे, मुस्कुरा

दिए। जहाँ तक मेरी बात है, मैं सोचने लगा कि अपने इन दोनों साथियों को साथ लाने का निर्णय कितना उचित था।

रूथ प्लांट ने हमें नॉरफ़ॉक में रात बिताने की सलाह दी थी, लेकिन मेरे निर्माता मित्र को "एक्शन" के करीब रहने की इतनी तीव्र इच्छा थी कि उन्होंने जोर देकर कहा कि हम विन्डमोंधम के छोटे से एबे होटल में रुकें, जो मोर्ले के बहुत पास है। हम थके-हारे और गंदे हालत में होटल पहुँचे, ठीक समय पर शाम का खाना खाने के लिए।

सुबह-सुबह टहलते हुए मैंने अपनी खिड़की के नीचे स्थित चर्च और कब्रिस्तान को देखा। वह जगह बेहद शांत और भूतिया घटनाओं से बिल्कुल अलग-थलग लग रही थी। मैंने रूथ प्लांट द्वारा दिए गए स्थानीय नक्शे पर एक नज़र डाली। नॉर्विच शहर, जहाँ हम टेलीविजन फिल्म देखने वाले थे, पूर्व दिशा में नौ मील दूर था, जबकि मॉर्ले ओल्ड हॉल पश्चिम दिशा में बारह मील से थोड़ा अधिक दूर था।

विंडमोंधम का एबे चर्च इस छोटे से गाँव के लिए एक प्रभावशाली इमारत थी। बारहवीं शताब्दी के आरंभ में, विलियम डी'अल्बिनी, जिन्हें इंग्लैंड पर नॉर्मन आक्रमण में उनकी सहायता के लिए विंडमोंधम शहर और जागीर दी गई थी, जिसमें मोर-ले भी शामिल था, ने यहाँ एक मठ की स्थापना की जिसमें एक मठाध्यक्ष और बारह बेनेडिक्टिन भिक्षु थे। काले वस्त्र धारण करने वाले बेनेडिक्टिन सभी धार्मिक समुदायों में सबसे कुलीन और धनी थे, और इसी कारण वे अक्सर गरीब और साधारण धार्मिक समुदायों के साथ संघर्ष में रहते थे। ऐसा भी प्रतीत होता है कि विलियम के भाई रिचर्ड को हर्टफोर्डशायर में सेंट एल्बंस का मठाधीश बनाया गया था, जो इंग्लैंड के सबसे बड़े बेनेडिक्टिन मठों में से एक था, और विंडमोंधम एक प्रकार से सेंट एल्बंस का सहायक मठ था।

“लेकिन दोनों मठों के बीच संबंध कभी अच्छे नहीं रहे, और उनके बीच की ईर्ष्या और प्रतिद्वंद्विता तभी समाप्त हुई जब 1448 में विंडमोंधम एक स्वतंत्र मठ बन गया,” रेवरेंड जे. जी. टैन्सली थॉमस ने अपनी पुस्तक 'हिस्ट्री ऑफ विंडमोंधम एबे' में लिखा है। मुझे मॉर्ले ओल्ड हॉल की छोटी यात्रा के लिए गाड़ी का इंतज़ार करते समय इन सब बातों का अध्ययन करने का अवसर मिला।

लगभग बीस मिनट बाद, झाड़ियों का एक झुंड दिखाई दिया, जिसके बाद ऊँचे-ऊँचे पेड़ थे—ऐसे पेड़ जो अपनी उम्र और कई वर्षों से अनछुए रहने का प्रमाण दे रहे थे। यहाँ हर तरह के पेड़ बेकाबू होकर उग रहे थे, और जैसे ही सड़क एक मोड़ पर मुड़ी, ऐसा लगा मानो वे हमें निगल जाएँगे। हम एक लकड़ी के पुल से गुज़रे जो एक गहरी और दुर्गंधयुक्त खाई को पार कर रहा था। ठीक उसके पीछे ईंटों की एक दीवार थी, जो तरह-तरह के पौधों से ढकी हुई थी। बाद में मुझे बताया गया कि यह दूसरी, भीतरी खाई थी; बाहरी खाई और पीछे थी और आज मुश्किल से ही दिखाई देती है, हालाँकि सैक्सन काल में यह एक मज़बूत सुरक्षा कवच थी। कार लाल ईंटों से बने और सत्रहवीं शताब्दी की शैली में धूसर-नीले रंग की शिंगलों से ढके भव्य महल के सामने रुक गई। आसपास की दीवार का कुछ हिस्सा अभी भी खड़ा था, और भीतरी खाई के अंदर दो बहुत ऊँचे पेड़ थे, जो मॉर्ले ओल्ड हॉल को एक विशेष रूप से रोमांटिक रूप दे रहे थे। हॉल तीन मंजिला था, और उनमें से कई की खिड़कियाँ बदली जा चुकी थीं, जो मालिक की उस इमारत को पुनर्स्थापित करने की कुशलता का प्रमाण थीं जिसे उसने लगभग खंडहर की तरह खरीदा था। हम खूबसूरती से पुनर्निर्मित सीढ़ियों से दूसरी मंजिल पर गए, जहाँ उस समय कॉटरिल परिवार रहता था। हवेली का अधिकांश हिस्सा अभी भी रहने लायक नहीं था। कुछ कमरों में केवल खाली दीवारें थीं, जबकि अन्य में अभी भी प्राचीन चिमनियां थीं, जो आगंतुक को बिना दांत वाले राक्षसों की तरह घूर रही थीं।

रूथ प्लांट ने ऐसा इंतज़ाम किया था कि हॉल में घटी घटनाओं के मुख्य गवाह मेरी पूछताछ के दौरान मौजूद रहें, और इस तरह हम सब ऊपर पुस्तकालय में इकट्ठा हुए—वह भव्य स्टुअर्ट पुस्तकालय तो नहीं, लेकिन उसकी एक मिलती-जुलती इमारत थी। सबसे पहले मैंने फ्रैंक वॉरेन से बात की, जो लगभग सत्तर वर्ष के थे और कभी इस घर में रहते थे, वर्तमान मालिक के हाथों में आने से बहुत पहले। वे मुझसे बात करने के लिए पास के गाँव से आए थे, और बाद में मैंने उनकी छोटी सी कुटिया पर शिष्टाचार भेंट की, जो एक छोर से दूसरे छोर तक सुंदर फूलों से सजी थी: फ्रैंक वॉरेन एक समर्पित माली थे और आज भी हैं। इस इलाके के कई लोगों की तरह, वे भी "दिव्य दृष्टि" वाले हैं, यानी उनमें भी मानसिक क्षमता है, और उन्हें अच्छी तरह याद है कि कैसे उन्होंने अपने पालतू कुत्ते को उसकी मृत्यु के दो महीने बाद देखा और छुआ था। लेकिन मॉर्ले ओल्ड हॉल में मौजूद मानव भूत की कहानी कुछ और ही थी।

“मैं बगीचे में काम कर रहा था,” उसने बात शुरू की, “और घर की मालकिन ने कहा, ‘काश तुम उस खिड़की के चारों ओर की घास काट देते; वो टुकड़े मुझे परेशान करते हैं।’ तो मैंने घास काटना शुरू कर दिया। वह एक खूबसूरत दिन था, धूप खिली हुई थी। अचानक, बस यूं ही, खिड़की में एक महिला प्रकट हुई, मेरे बिल्कुल करीब, जैसे आप हैं, और उसने मेरी तरफ देखा। वह लंबी थी, और मैंने उसके पहनावे की हर बारीकी पर ध्यान दिया। उसने मेरी तरफ देखा और उसके चेहरे के भाव एक जैसे ही रहे। उसके होंठ भी नहीं हिले और मैंने मन ही मन सोचा, ‘मैं इसे बर्दाश्त नहीं कर सकता। मैं जाकर सब्जी के बगीचे में कुछ काम कर लेता हूं।’ जब मैं लौटा तो वह जा चुकी थी, इसलिए मैंने खिड़की पर अपना काम पूरा किया। खैर, मैं अक्सर नौकरानी के साथ खाना खाने जाता था। मैंने उससे कहा, ‘मैं आपसे एक बात जानना चाहता हूं: इस घर में रहने वाली दूसरी महिला कौन है?’”

“‘अच्छा,’ उसने जवाब दिया, ‘इस घर में कोई और महिला नहीं रहती। आप अच्छी तरह जानते हैं कि इस घर में कौन है।’ मैंने जवाब दिया कि मैं नहीं जानता, क्योंकि मैंने यहां किसी ऐसे व्यक्ति को देखा था जिसे मैंने पहले कभी नहीं देखा था।”

ऐसा लगता है कि नौकरानी भूतों के होने के विचार से डर गई थी, क्योंकि उस समय हॉल की मालकिन लेडी आयरनसाइड ने इस मामले में माली को बुलाया। लेडी आयरनसाइड के विरोध पर माली ने जवाब दिया, "मैं कुछ नहीं कर सकता। मैंने उसे अपनी आँखों से देखा है।" युद्ध का समय था और लेडी आयरनसाइड के लिए घर में नौकरों को रखना मुश्किल था, इसलिए उन्होंने माली से अनुरोध किया कि वह भूत के बारे में चुप रहे।

मैंने पूछा, "क्या आपने उस महिला भूत को फिर कभी देखा?"

“दो हफ्ते बाद मैं दूसरी खिड़की के पास से गुजरी, जो सामने की तरफ थी, और वहाँ नौकरानी किताब पढ़ रही थी, और उसके बगल में वही महिला बैठी थी। नौकरानी ने उसे नहीं देखा। उसने एक सादी काली पोशाक पहनी हुई थी, जो थोड़ी कड़क लग रही थी और ज़मीन तक जा रही थी, इसलिए मैं उसके पैर नहीं देख पाई। मेरे पास उसे देखने के लिए पंद्रह मिनट का समय था, और फिर भी मैं उसके पैर नहीं देख पाई।”

गॉर्डन आर्मस्ट्रांग लंदन से मॉर्ले ओल्ड हॉल में हमसे बात करने आए थे। उन्होंने कहा, “यह मेरी दूसरी यात्रा है। मैं पिछले साल जुलाई 1965 के अंत में यहाँ आया था। उस समय मैं लंदन

में काम कर रहा था और रात भर लिफ्ट लेकर मॉर्ले पहुँचा। सड़क पर चलते हुए मैं घर में दाखिल हुआ—लगभग सुबह के 2 बजे होंगे—और उस समय मैंने पहले ही सुना था कि वहाँ एक भूत है, या भूत होने की अफवाह थी, इसलिए मुझे लगभग एक भूत दिखने की उम्मीद थी। ज़ाहिर है, मैंने पहले कभी भूत नहीं देखा था, इसलिए मैं थोड़ा डरा हुआ था। जब मैं अंधेरे में सीढ़ियों से ऊपर आया, मेरे पास बस एक छोटी सी टॉर्च थी, तो मुझे एक ऐसी आवाज़ सुनाई दी जो मुझे किसी बिल्ली के एक पायदान से दूसरे पायदान पर कूदने जैसी लगी। यह तीसरी मंज़िल की सीढ़ी पर था।"

मैंने पूछा, "क्या तुमने बिल्ली देखी?"

"नहीं, मुझे कोई बिल्ली नहीं दिखी। मुझे लगा कि मैं अकेली हूँ, जब तक कि मुझे किसी कमरे में किसी के साँस लेने की आवाज़ नहीं सुनाई दी। फर्श का कुछ हिस्सा केवल शहतीरों का था, उसमें तख्ते नहीं थे, इसलिए नीचे वाले तल पर क्या हो रहा है, यह सुनाई दे रहा था। दूसरी मंजिल के कमरों में से एक से आवाज़ आ रही थी।"

"सांस लेने की आवाज़ कैसी थी?"

मुझे लगा कि मैंने किसी आदमी को काफी जोर-जोर से सांस लेते हुए सुना।

"आपने फिर क्या किया?"

"मैं ऊपर छत की कड़ियों पर बैठा था, और काफी अंधेरा था। मुझे किसी से मिलने का मन नहीं था, इसलिए मैं ऊपर एक दीवार के सहारे सो गया। मैं लगभग दो घंटे सोया रहा। हवा चल रही थी, और मैं एक बार जागा और फिर सो गया, और जब मैं दूसरी बार जागा तो सुबह होने ही वाली थी। मैं नीचे गया और घर में और छानबीन की और वह कमरा ढूंढ लिया जहाँ से आवाज़ आ रही थी, और वहाँ एक सोफा जैसा कुछ था, इसलिए मैं थोड़ी देर के लिए लेट गया और दो घंटे और सो गया। मैंने कमरे को देखा और महसूस किया कि रात में वहाँ कोई नहीं सोया था।"

इस बिंदु पर रूथ प्लांट ने टिप्पणी की कि जिस क्षेत्र में श्री आर्मस्ट्रांग ने भारी साँसें सुनी थीं, वह वही स्थान था जहाँ नॉर्वे से उनकी एक मित्र ने भी साँसें सुनी थीं, हालाँकि उन्हें लगा कि यह एक महिला हो सकती है, जरूरी नहीं कि एक पुरुष हो।

बाद में, टेलीविजन वालों ने हमें वह विवादित डॉक्यूमेंट्री दिखाई। हममें से किसी ने भी उस भिक्षु को नहीं देखा। हमने उस जगह पर शूटिंग रोक दी जहाँ इकत्तीस लोगों ने दाढ़ी वाले भिक्षु को देखने का दावा किया था, लेकिन हमें केवल दो आदमी आपस में बातचीत करते हुए दिखाई दिए।

फिर भी, मोर्ले में दो भूतों की पहचान का सवाल मुझे उत्सुक करता रहा। यह पूरे इंग्लैंड के सबसे पुराने और सबसे अधिक विवादित स्थलों में से एक था, और कई कालों की भावनात्मक छाप निस्संदेह अभी भी बहुत मजबूत थी। प्राचीन काल में इस क्षेत्र में आइसेनी लोग रहते थे। उनकी प्रसिद्ध रानी बोआडिसीया ने पहली शताब्दी में यहीं रोमनों से युद्ध किया था। बाद में सैक्सनों ने इसे एक गढ़ बनाया, और निस्संदेह यहाँ जमीन में बहुत सारा अनमोल खजाना छिपा हुआ है। "कुछ साल पहले एक किसान को मोर्ले से कुछ ही दूरी पर सैक्सन चांदी का एक अद्भुत संग्रह मिला था," इतिहासकार रूथ प्लांट ने बताया। स्कैंडिनेवियाई लुटेरे भी यहाँ शुरुआती दौर में आए थे: मोर्ले में 'मोर' शब्द का अर्थ नॉर्वेजियन भाषा में 'माँ' होता है। 1066 में इंग्लैंड की सभी भूमि का सर्वेक्षण किया गया। डोम्सडे बुक के नाम से जानी जाने वाली इस पुस्तक में मोर्ले को विलियम डी वॉरैन की संपत्ति के रूप में दर्ज किया गया है। वह एक धनी नॉर्मन बैरन थे जिन्होंने हेस्टिंग्स की लड़ाई में भाग लिया था। डोम्सडे बुक में यह भी दर्ज है कि यह भूमि एक पुजारी और पाँच स्वतंत्र व्यक्तियों को पट्टे पर दी गई थी। अंततः यह जागीर वारेन परिवार से मोर्ले परिवार के हाथों में चली गई, और 1545 में इसे रोमन कैथोलिक मार्टिन सेडली को बेच दिया गया, जिनके परिवार ने 1789 तक इसे अपने पास रखा, जब उनकी सीधी वंश परंपरा समाप्त हो गई। ऐसा प्रतीत होता है कि घर जल्द ही जीर्ण-शीर्ण अवस्था में आ गया, क्योंकि रूथ प्लांट के अनुसार, 1836 की नॉरफ़ॉक निर्देशिका में इसे तब भी "गहरी खाई से घिरा एक फार्महाउस" के रूप में वर्णित किया गया है। 1864 की व्हाइट की नॉरफ़ॉक निर्देशिका में एक ग्रैबर ब्राउन को जागीर का स्वामी बताया गया है, और मोर्ले ओल्ड हॉल को "चारों ओर खाई वाला एक एलिज़ाबेथन घर, जिसका उपयोग अब फार्महाउस के रूप में किया जाता है" कहा गया है। अंततः प्रथम विश्व युद्ध के नायक जनरल लॉर्ड आयरनसाइड ने इसे खरीदा, लेकिन उनका जल्द ही निधन हो गया, और यह कॉटरिल परिवार के हाथों में चला गया।

चूंकि हम नॉरफ़ॉक में अपने निर्धारित दो दिनों से अधिक नहीं रुक सकते थे, इसलिए मैंने आगे की खोज का काम रूथ प्लांट को सौंप दिया। उन्होंने भिक्षु पर ध्यान केंद्रित किया और ऐतिहासिक अंतर्दृष्टि या अपनी मानसिक क्षमता के बल पर, जल्द ही पास के विंडमोंधम एबे के एक मठाधीश के बारे में कुछ विचित्र तथ्य सामने लाए। “मैंने यह असाधारण तथ्य उजागर किया कि एक मठाधीश पूरी तरह से पागल हो गया था और इतना हिंसक था कि उसे जंजीरों में बांध दिया गया और बिनहम प्रायरी में उसी हालत में उसकी मृत्यु हो गई। मेरा मानना है कि अगर मैं सेंट एल्बंस एबे जाऊं, जहां अभिलेख रखे गए हैं, तो मुझे इसके बारे में और अधिक जानकारी मिल सकती है।”

मैंने रूथ को वह यात्रा करने के लिए प्रोत्साहित किया, और कुछ महीनों बाद उसने मुझसे फिर संपर्क किया।

रूथ को लंदन के एक पुस्तकालय में एक दुर्लभ पुस्तक मिली, जिसमें अठारहवीं शताब्दी के एक पादरी द्वारा सेंट एल्बंस एबे के अभिलेखों पर टिप्पणी थी। इसमें विंडमोंधम के एक मठाध्यक्ष, अलेक्जेंडर डी लैंगली की कहानी थी। रूथ प्लांट ने मुझे बताया, "विंडमोंधम में अपने पद पर रहते हुए वे बुरी तरह पागल हो गए और उन्हें सेंट एल्बंस वापस बुला लिया गया। वे लगभग 1130 में जीवित रहे और मॉर्ले से लगभग दस मील दूर बिनहम प्रायरी में जंजीरों में जकड़े हुए उनकी मृत्यु हो गई। मुझे पूरा विश्वास है कि पागल मठाध्यक्ष अलेक्जेंडर डी लैंगली ही वह प्रेतवाधित भिक्षु है।" मॉर्ले में दो भूतों पर और प्रकाश डालने के प्रयास में, रूथ ने लेडी आयरनसाइड से मुलाकात की, जो हैम्पटन कोर्ट में रहती थीं।

“मैंने रिकी कॉटरिल से भूतिया पहलू का ज़िक्र न करने पर सहमति जताई थी,” रूथ प्लांट ने मुझे समझाया। “लेकिन उन्होंने ‘उस प्यारे मोर्ले और उस प्यारी महिला के बारे में बात करते हुए मेरा स्वागत किया, जो खिड़की पर खड़ी होकर नज़ारा देखती हुई दिखाई देती है।’ फिर उन्होंने मुझसे पूछा कि क्या मैं कभी वहाँ गई हूँ, जिससे यह साफ़ हो गया कि उन्हें मेरे उस भूतिया अनुभव के बारे में कुछ भी पता नहीं था। उन्होंने आगे कहा कि कई लोगों ने उसे देखने का दावा किया है, हालाँकि उन्हें नहीं लगता कि उनमें से कोई भी अब गाँव में ज़िंदा होगा और इसके बारे में बता पाएगा।”

लेकिन खिड़की पर वह रहस्यमयी महिला कौन थी? रूथ प्लांट ने लेडी आयरनसाइड को एंग्लिया टीवी को लिखे गए पत्र दिखाए। एक पत्र में किसी भिक्षु का नहीं, बल्कि एक चादर ओढ़े एक रहस्यमयी महिला का वर्णन था। लेडी आयरनसाइड को लगा कि वह भूतनी मैरी ट्यूडर के एक प्रमुख समर्थक की बेटी ऐनी शेल्टन ही होगी, जिससे रूथ प्लांट को यह आभास हुआ कि वह महिला भूतनी कैथोलिक थी, और उन्हें 'हेल मैरी' की प्रार्थना सुनाई दी।

“जहां तक भिक्षु की बात है, लेडी आयरनसाइड ने मुझे बताया कि जब वे वहां गए, तो फ्रैंक वॉरेन के भाई गाय, जो उस जगह खेती करते थे, ने उनसे कहा, 'वहां एक बूढ़ा भिक्षु रहता है, लेकिन आपको उस पर ध्यान देने की कोई जरूरत नहीं है।' लेकिन उन्हें फ्रैंक वॉरेन द्वारा उल्लिखित ताबूत के ढक्कन के बारे में कुछ भी पता नहीं था।”

ऐसा प्रतीत होता है कि जब फ्रैंक वॉरेन का पहली बार रूथ प्लांट द्वारा साक्षात्कार लिया जा रहा था, तो उन्होंने लॉर्ड आयरनसाइड के एक दिन घर से बाहर आकर ताबूत का पत्थर का ढक्कन ले जाते हुए यह कहने की घटना को याद किया, "यह एक भिक्षु का था।"

लेकिन लेडी आयरनसाइड ने बताया कि खुदाई के दौरान लोगों को एक चौकोर पत्थर मिला जिस पर रोमन अक्षरों में ALBINI लिखा हुआ था। और चूंकि विंडमोंधम की स्थापना अल्बिनी ने की थी, जो एक नॉर्मन बैरन थे और बाद में अर्ल ऑफ अरुंडेल और फिर ड्यूक ऑफ नॉरफोक बने, तो सवाल यह उठता है कि क्या यह अल्बिनी परिवार का चैपल था, और क्या मोर्ले विंडमोंधम एबे और बेनेडिक्टिन संप्रदाय का एक हिस्सा था?

तो कहानी कुछ इस तरह है: सोलहवीं सदी की एक ट्यूडर महिला, जो कभी अपने घर रहे स्थान पर हमेशा के लिए बस गई है, और लगातार बदलते संसार को उत्सुकता से देख रही है; और बारहवीं सदी का एक भिक्षु, जो पागल हो गया है, और जिसे अपने पुराने निवास स्थान से दस मील दूर जंजीरों में जकड़कर मरने के लिए मजबूर किया गया है। शायद वह अपने घर इसलिए लौट आया क्योंकि वहीं उसने अपना अपराध किया था—एक व्यक्ति की हत्या, भले ही आत्मरक्षा में, एक पवित्र वस्तु को हथियार बनाकर, जिससे अपराध और भी गंभीर हो गया। क्या अपराध ने ही अलेक्जेंडर डी लैंगली को पागल बना दिया था, या उसके भीतर के पागलपन ने ही उसे अपराध करने के लिए मजबूर किया था?

*125

पॉली द्वीप (दक्षिण कैरोलिना) का धूसर आदमी

दक्षिण कैरोलिना के कोलंबिया की सुसान डी. का जन्म टेक्सास में हुआ था और उनकी उम्र अट्ठाईस वर्ष थी। उनके पिता पहले सेना में थे और युद्ध के बाद उनके माता-पिता दक्षिण कैरोलिना चले गए, जहाँ उनके पिता का परिवार पीढ़ियों से रहता आया था। सुसान तीन बहनों में सबसे बड़ी हैं। वे राज्य के ऊपरी हिस्से के एक छोटे से कस्बे में पली-बढ़ीं और फिर कोलंबिया चली गईं, जहाँ उनके पिता असाधारण छात्रों के लिए एक राज्य बोर्डिंग स्कूल के अधीक्षक बन गए। उस समय सुसान सत्रह वर्ष की थीं। बाद में उन्होंने एक स्थानीय कॉलेज में दाखिला लिया और दो साल तक वहाँ रहीं। वह वर्तमान में अपने पति के साथ रहती हैं, जो स्वयं भी शिक्षा के क्षेत्र में हैं, और उनका एक छोटा बेटा है। पूर्वाभास की पृष्ठभूमि के कारण उन्हें मानसिक घटनाओं के अध्ययन में कुछ रुचि थी, लेकिन यह रुचि कुछ अस्पष्ट थी।

सुसान को याद आने वाली पहली पूरी घटना तब घटी जब वह मात्र बारह वर्ष की थी। उस समय उसने अपनी दादी के घर रात बिताई थी, जिनका नाम भी सुसान था। रात में उस छोटी बच्ची ने सपना देखा कि उसकी दादी की मृत्यु हो गई है। उसके चचेरे भाई केनेथ ने उसे सपने से जगाया और उसे दुखद खबर दी कि उसकी दादी की वास्तव में रात में मृत्यु हो गई थी।

उसके और उसके पिता के बीच हमेशा से घनिष्ठ संबंध रहा था, इसलिए जब 1967 में उसके पिता को दिल का दौरा पड़ने पर अस्पताल ले जाया गया तो वह स्वाभाविक रूप से चिंतित हो गई। कुछ समय बाद डॉक्टरों ने उन्हें घर लौटने की अनुमति दे दी, और जब मार्च 1968 में उसका छोटा बेटा एक वर्ष का हुआ, तब तक उसके पिता पूरी तरह स्वस्थ लग रहे थे और परिवार के मन में आगे किसी बीमारी का कोई विचार नहीं था। अपने छोटे बेटे के पहले जन्मदिन के जश्न के दो दिन बाद, वह आधी रात को अपने पिता के स्वास्थ्य को लेकर अत्यधिक चिंता से जाग उठी। उसे यकीन हो गया कि उसके पिता जल्द ही उन्हें छोड़कर चले जाएंगे। अगली सुबह उसने अपनी बहन को फोन किया और अपने पिता के स्वास्थ्य को लेकर अपनी चिंता पर चर्चा करने लगी। उसी क्षण उसके पिता ने फोन काटते हुए उसकी बहन से तुरंत उसकी माँ को बुलाने के लिए कहा। उसी दोपहर अस्पताल जाते समय रास्ते में ही उनका निधन हो गया।

सुसान के पिता के जो एफ. नाम के एक बहुत करीबी दोस्त थे, जिनके साथ वे कॉलेज फुटबॉल खेलों के बेहद शौकीन थे। जो एफ. का कुछ समय पहले ही देहांत हो गया था। कुछ समय बाद, सुसान और उनके पति साउथ कैरोलिना विश्वविद्यालय के एक मैच को देखने गए। यह 1968 की शरद ऋतु की बात है। अपनी सीटों की ओर जाते समय सुसान ने स्टेडियम के पिछले हिस्से की ओर देखा और तुरंत अपना सिर अपने पति की ओर घुमाया। जो कुछ उन्होंने देखा उससे वे इतनी विचलित हो गईं कि उन्हें शांत होने और अपनी सीट पर बैठने में कुछ पल लग गए। वहाँ, उनसे आठ फीट से भी कम दूरी पर, उनके दिवंगत पिता ठीक वैसे ही खड़े थे जैसे वे जीवित थे। इतना ही नहीं, उन्होंने उन्हें स्पष्ट रूप से और अपनी सामान्य आवाज़ में बोलते हुए सुना। उनके पति ने कुछ भी नहीं देखा था। उन्होंने उन्हें इसके बारे में न बताने का फैसला किया। जैसे ही उन्होंने धीरे-धीरे अपना सिर वापस उस ओर घुमाया जहाँ से वे आए थे, उन्होंने अपने पिता को फिर से देखा। इस बार उनके आजीवन मित्र जो एफ. उनके साथ थे। दोनों मृत व्यक्ति सीटों के सामने बने रास्ते पर चल रहे थे और सुसान को उन्हें स्पष्ट रूप से देखने का अच्छा मौका मिला। वे दोनों उस समय भी उतने ही जीवंत प्रतीत हो रहे थे जितने वे तब थे जब वह उन्हें व्यक्तिगत रूप से जानती थी।

सुसान डी. की एक चाची हैं जिनका नाम श्रीमती फ्रेड वी. है। वे अक्सर मृत्यु के बाद जीवन की संभावना और सामान्य रूप से मानसिक घटनाओं पर चर्चा करती थीं, खासकर चाची के पति की मृत्यु के बाद, जो काफी अप्रत्याशित रूप से हुई थी। तभी दोनों महिलाओं को एहसास हुआ कि उन्होंने एक समान असाधारण अनुभव साझा किया था। श्रीमती फ्रेड वी. भी साउथ कैरोलिना विश्वविद्यालय में एक फुटबॉल मैच देखने गई थीं, लेकिन उनका दौरा सुसान के मैच से एक सप्ताह बाद हुआ था और वह मैच अलग था। चूंकि दोनों महिलाएं कुछ समय से नहीं मिली थीं, इसलिए सुसान को फुटबॉल मैच में हुए अपने मूल मानसिक अनुभव के बारे में अपनी चाची से बात करने का मौका नहीं मिला था। फिर भी, श्रीमती वी. ने अपनी भतीजी को बताया कि उस फुटबॉल मैच में उनके साथ कुछ बहुत ही असाधारण घटित हुआ था। उन्होंने भी दोनों मृत पुरुषों को खेल देखते हुए देखा था, मानो वे अभी भी जीवित हों। श्रीमती वी. के लिए यह एक संकेत था कि उनके अपने पति भी उनसे मिलने वाले हैं, क्योंकि वे तीनों जीवन

में बहुत अच्छे और घनिष्ठ मित्र थे। और जैसा कि हुआ, वह सही थीं। उनके पति का कुछ समय बाद ही देहांत हो गया।

तब से सुसान डी. ने कई बार अपने पिता की आवाज़ सुनी है, हालाँकि उसने उन्हें दोबारा नहीं देखा है। ऐसा लगता है कि जब सुसान किसी बात पर अपना आपा खोने वाली होती है या कोई गलत कदम उठाने वाली होती है, तो उसके पिता अक्सर बीच-बचाव करते हैं। ऐसे मौकों पर वह उनकी आवाज़ सुनती है जो उसे शांत रहने के लिए कहती है।

* * *

दक्षिण कैरोलिना के निचले इलाकों के सबसे प्रसिद्ध भूतों में से एक है पावलेज़ द्वीप का 'ग्रे मैन'। कई स्थानीय लोगों का दावा है कि उन्होंने उसे रेत के टीलों से समुद्र की ओर देखते हुए देखा है, खासकर जब कोई तूफान आने वाला होता है। ऐसा माना जाता है कि वह आने वाली आपदा की चेतावनी देता है। पावलेज़ द्वीप का 'ग्रे मैन' कौन है, यह एक प्रश्नचिह्न है। 1962 में प्रकाशित वर्थ गेटवुड की पुस्तक 'ए पर्सेप्टिव सर्वे ऑफ साउथ कैरोलिना घोस्ट्स' के अनुसार, वह शायद मूल पर्सीवल पावल हो सकता है, जिसे अपने द्वीप से इतना प्रेम था कि उसने अपनी मृत्यु के बाद भी उसकी रक्षा करने का दायित्व महसूस किया। लेकिन श्री गेटवुड इस प्रेत की उत्पत्ति के एक सुंदर और रोमांटिक वृत्तांत को अधिक महत्व देते हैं। इस कहानी के अनुसार, एक युवक, जिसकी शादी एक स्थानीय सुंदरी से होने वाली थी, कुछ व्यापारिक कार्य के लिए न्यूयॉर्क गया, लेकिन लौटते समय उसका जहाज डूब गया और वह समुद्र में खो गया। एक साल बाद, उस युवती ने उसके सबसे अच्छे दोस्त से शादी कर ली और अपने नए पति के साथ पावलेज़ द्वीप पर बस गई। कई वर्षों बाद वही युवक फिर से जहाज दुर्घटना का शिकार होकर लौटा और उसकी पूर्व मंगेतर के एक नौकर ने उसे बचाया।

जब उसे पता चला कि उसकी प्रेमिका ने इस बीच शादी कर ली है, तो उसने पास के समुद्र तट पर डूबकर आत्महत्या कर ली। यह सब, अगर हम इस पर विश्वास करें तो, बहुत समय पहले हुआ था, क्योंकि धूसर पुरुष को 1822 से, या शायद उससे भी पहले से देखा जा रहा है। श्री गेटवुड के विवरण के अनुसार, श्रीमती एलीन वीवर ने अपने बरामदे में उस प्रेत को देखा था और वह वास्तव में धूसर वस्त्र पहने एक व्यक्ति की धुंधली आकृति थी। उनके बरामदे में

रहस्यमय कदमों की आहट सुनाई देती थी और दरवाजे अपने आप खुलते-बंद होते थे, मानो उन्हें किसी ने छुआ ही न हो।

विलियम कॉलिन्स नाम का एक व्यापारी, जो भूतों पर विश्वास नहीं करता था, यहाँ तक कि दक्षिण कैरोलिना के भूतों पर भी नहीं, प्रसिद्ध हरिकेन हेज़ल की सुबह समुद्र की लहरों का जायज़ा लेने के लिए निकला था। जब वह रेत के टीलों से नीचे उतर रहा था, तो उसने समुद्र तट पर खड़े एक व्यक्ति को समुद्र की ओर देखते हुए देखा। कॉलिन्स ने उससे पूछा, यह सोचकर कि शायद वह कोई पड़ोसी हो जो ज्वार देखने आया हो, लेकिन उस अजनबी ने कोई ध्यान नहीं दिया। अपने काम में व्यस्त होने के कारण कॉलिन्स यह बात भूल गया और जब तक उसने ऊपर देखा, वह अजनबी जा चुका था। हालांकि, मौसम पूर्वानुमान के अनुसार, तूफान ने अपनी दिशा बदल ली थी और उसके उस क्षेत्र से टकराने की संभावना नहीं थी, इसलिए कॉलिन्स और उसका परिवार उस रात यह सोचकर सो गया कि सबसे बुरा समय बीत चुका है। सुबह 5 बजे, उसके दरवाजे पर ज़ोर से दस्तक होने से उसकी नींद खुली। दरवाजा खोलते ही, उसने महसूस किया कि तेज़ हवा के कारण घर हिल रहा है। उसके बरामदे में एक अजनबी खड़ा था, जिसने भूरे रंग की मछली पकड़ने वाली टोपी और आम काम की कमीज़ और पैंट पहनी हुई थी, सब कुछ भूरे रंग का था। उस व्यक्ति ने कॉलिन्स को समुद्र तट से हटने के लिए कहा क्योंकि तूफान आ रहा था। कॉलिन्स ने उसे धन्यवाद दिया और अपने परिवार को जगाने के लिए ऊपर की ओर भागा। तूफान का रोमांच शांत होने के बाद कॉलिन्स उस व्यक्ति के बारे में सोचने लगा जिसने उसे द्वीप छोड़ने की चेतावनी दी थी। उसने समझदारी से इस मामले की छानबीन की, लेकिन उसे पता चला कि किसी ने भी उस व्यक्ति को नहीं देखा था, और न ही उसके किसी पड़ोसी के यहाँ उसके हुलिए से मिलता-जुलता कोई मेहमान आया था। ड्यूटी पर तैनात राज्य राजमार्ग पुलिसकर्मी ने भी किसी को आते-जाते नहीं देखा था, और वहाँ पहुँचने का केवल एक ही रास्ता है, दलदल के ऊपर बना पुल।

*126

भूतिया वेस्टओवर (वर्जीनिया)

एक अपवाद को छोड़कर, आम लोगों के मन में वर्जीनिया से ज़्यादा भूत-प्रेत की कहानियों को लेकर कोई और राज्य इतना चिंतित नहीं है। ऐसा इसलिए है क्योंकि वाशिंगटन के दक्षिण में स्थित घुमावदार पहाड़ियाँ, जो भव्य हवेली से सजी हैं, जिनमें से कई औपनिवेशिक काल की हैं, भूतों के लिए पसंदीदा वातावरण प्रतीत होती हैं। इस सार्वजनिक धारणा का एकमात्र अपवाद न्यू इंग्लैंड की वे हवेलियाँ हैं जो तूफ़ानी चट्टानों की चोटियों पर खतरनाक ढंग से टिकी हैं, जहाँ आमतौर पर तूफ़ानों के दौरान समुद्री कप्तानों के भूत आज भी घूमते हैं और अनजान यात्री डर से कांप उठता है। कम से कम यही धारणा अनभिज्ञ लोगों के बीच आज भी प्रचलित है, हालाँकि यह बिल्कुल सच है कि न्यू इंग्लैंड की हवेलियों में ऐसे समुद्री कप्तान हैं जिनके भूत उनकी मृत्यु के बहुत बाद भी घूमते रहते हैं।

लेकिन वर्जीनिया, जो मुख्य रूप से घोड़ों का क्षेत्र है और मूल रूप से एंग्लो-सैक्सन देशों के लोगों द्वारा बसाया गया था, कई मायनों में इंग्लैंड से बहुत मिलता-जुलता है। यहां तक कि कुछ जागीरों और बागानों में रहस्यमय ढंग से मौजूद भूत भी, अपनी आदतों में अंग्रेजी आलीशान घरों में पाए जाने वाले भूतों से मिलते-जुलते हैं। देश के निर्माण से अपने शुरुआती जुड़ाव और क्रांतिकारी युद्ध के कई नेताओं के घर होने के कारण, वर्जीनिया को लगभग "संघ का पहला राज्य" माना जा सकता है, और इसे अमेरिका में एक कुलीनतंत्र राज्य के सबसे करीब माना जाना चाहिए। कुछ प्रतिष्ठित परिवारों में बंटा हुआ, वर्जीनिया लंबे समय से एक प्रकार की सामंती जागीर रहा है, और आज भी यहां के भव्य घर इस बात की गवाही देते हैं कि तेरह उपनिवेशों में से यह पहला उपनिवेश कैसे विकसित हुआ। भले ही कभी इन घरों की जीवनरेखा रहे बागान अब अस्तित्व में नहीं हैं, लेकिन वर्जीनियावासियों की इतिहास और परंपरा के प्रति गहरी समझ के कारण ये घर आज भी फल-फूल रहे हैं। बेशक, जीर्ण-शीर्ण अवस्था में होने के कारण कई घरों का जीर्णोद्धार किया गया है। फिर भी, कुछ ऐसी इमारतें हैं जो समय की कसौटी पर खरी उतरी हैं और सत्रहवीं या अठारहवीं शताब्दी में अपनी उत्पत्ति के बाद से लगभग अक्षुण्ण रूप में आज तक बची हुई हैं।

ऐसे जागीरदार घरों में सबसे प्रमुख जेम्स नदी पर स्थित वेस्टओवर की भव्य जागीर है। मूल रूप से 1730 में रिचमंड के संस्थापक विलियम बर्ड द्वितीय द्वारा निर्मित, यह 11,000 एकड़ के कृषि फार्म के बीच स्थित है। घर के चारों ओर के औपचारिक उद्यान जनता के लिए खुले हैं,

लेकिन घर स्वयं सार्वजनिक नहीं है। प्रवेश कक्ष में अठारहवीं शताब्दी की भव्य छत दीवारों की पैनलिंग से मेल खाती है। पूरे जागीरदार घर में भव्यता के प्रमाण मिलते हैं। यह किसी साधारण जमींदार का नहीं, बल्कि एक धनी राजनेता का घर है। जब विलियम बर्ड क्रांतिकारी युद्ध के दौरान मारे गए, तो उनकी विधवा के एक वंशज ने 1813 में मूल फर्नीचर बेच दिया। अंततः यह घर श्रीमती ब्रूस क्रेन फिशर के हाथों में आ गया। उनके दादा ने 1921 में यह घर खरीदा था और बागान के अस्तित्व में आने के बाद से वे इसके ग्यारहवें मालिक बने। श्रीमती फिशर ने हाल के वर्षों में घर को मूल स्वरूप के जितना संभव हो सके करीब लाने के लिए अठारहवीं शताब्दी के प्रामाणिक अंग्रेजी और यूरोपीय फर्नीचर से सुसज्जित किया है। जॉर्जियाई शैली का यह मकान ऊंचे-ऊंचे पुराने पेड़ों के बीच स्थित है और इसमें एक केंद्रीय भाग और दो पंख हैं। केंद्रीय भाग में तीन मंजिलें हैं जिनमें सुंदर ईंटों का काम और दो ऊंची चिमनियां हैं। मूल रूप से दोनों पंख मकान के केंद्रीय भाग से जुड़े नहीं थे, लेकिन गृहयुद्ध के दौरान गोलाबारी में आग लगने से क्षतिग्रस्त हुए दाहिने पंख का 1900 में जीर्णोद्धार करना पड़ा। उस समय दोनों पंखों को मकान से जोड़ दिया गया और अब मुख्य भाग से सीधे इनमें प्रवेश किया जा सकता है। मुख्य प्रवेश द्वार जेम्स नदी की ओर है और इसमें मूल लोहे का प्रवेश द्वार है जिसके खंभों पर पत्थर के चील बने हुए हैं। इस प्रकार, न्यूनतम निर्माण और जीर्णोद्धार के साथ, यह मकान आज भी लगभग वैसा ही दिखता है जैसा कि 1730 में इसके निर्माण के समय दिखता था।

कर्नल बर्ड अपनी खूबसूरत बेटी एवलिन (वर्जीनिया में ई वेलिन उच्चारित) को किंग जॉर्ज प्रथम के राज्याभिषेक के लिए लंदन ले गए। यह सन् 1717 की बात है, जब उपनिवेशों के बड़े लोग, जब भी संभव होता, मातृ देश की यात्रा करते थे। उस समय एवलिन अठारह वर्ष की थीं और उनके पिता ने उन्हें शिक्षा के लिए इंग्लैंड में ही छोड़ने का फैसला किया। जल्द ही उन्हें लंदन के दरबार में अपने विश्वासपात्रों से एक परेशान करने वाली खबर मिली। पता चला कि एवलिन की मुलाकात चार्ल्स मोर्डाउंट नाम के एक युवक से हुई थी और दोनों एक-दूसरे के प्यार में पागल थे। आम तौर पर यह खुशी की बात होती, लेकिन इस मामले में ऐसा नहीं था। चार्ल्स एक कट्टर रोमन कैथोलिक और अर्ल ऑफ पीटर्सबरो के पोते थे। दूसरी ओर, कर्नल बर्ड राजनीतिक और व्यक्तिगत रूप से एक कट्टर प्रोटेस्टेंट थे, और अपनी बेटी का, एक तरह

से, विरोधी खेमे में शादी करना उन्हें बिल्कुल भी स्वीकार्य नहीं था। उन्होंने तुरंत एवलिन को वेस्टओवर लौटने का आदेश दिया और एवलिन के पास आज्ञा मानने के अलावा कोई विकल्प नहीं था। परिवार के बागान में पहुंचते ही वह एकांतवास में चली गई। उसने अपने पिता द्वारा भेजे गए किसी भी अन्य दूल्हों से मिलने से इनकार कर दिया और विवाह की संभावना पर विचार करने या चर्चा करने से भी मना कर दिया।

यह सिलसिला कुछ समय तक चलता रहा, और एवलिन सचमुच तड़प-तड़प कर मर गई। अपनी मृत्यु से कुछ सप्ताह पहले, उसकी अपनी सबसे अच्छी दोस्त ऐनी हैरिसन के साथ एक बहुत ही भावुक बातचीत हुई। दोनों लड़कियाँ एक पहाड़ी पर चढ़ रही थीं, तभी एवलिन को कमजोरी महसूस हुई और उसे एहसास हुआ कि उसके दिन गिने-चुने हैं। उसने अपनी दोस्त की ओर मुड़कर वादा किया कि वह मरने के बाद वापस आएगी। श्रीमती हैरिसन ने इसे गंभीरता से नहीं लिया, लेकिन वह जानती थीं कि एवलिन की तबीयत ठीक नहीं थी और उसकी मृत्यु उनके लिए कोई बड़ा झटका नहीं थी। अगली बसंत ऋतु में, जब वेस्टओवर में किसी तरह सामान्य स्थिति लौट आई थी और पिछले वर्ष की दुखद घटनाएँ अब उतनी स्पष्ट नहीं थीं, श्रीमती हैरिसन बगीचे में टहल रही थीं और पिछले वर्ष की घटनाओं को उदास मन से याद कर रही थीं। अचानक उन्होंने अपनी पुरानी दोस्त को अपने बगल में एक चमकदार सफेद गाउन में खड़े देखा। फिर वह दो कदम आगे बढ़ी, उनकी ओर हाथ हिलाया और मुस्कुराई। एक पल बाद ही वह गायब हो गई। अपनी असामयिक मृत्यु के समय एवलिन बर्ड उनतीस वर्ष की थीं, लेकिन प्रेत के रूप में वह अपने जीवन के अंतिम समय की तुलना में कहीं अधिक युवा और सुंदर दिखाई दीं। यह प्रेत समय-समय पर कई लोगों को दिखाई देता रहा है, जिनमें आस-पास रहने वाले और वेस्टओवर में आने वाले मेहमान दोनों शामिल हैं। पास में ही रहने वाली एक महिला, जो लगभग तीन दशकों से वहाँ रह रही हैं, ने 1960 के दशक के मध्य में उसे देखा था। एक गर्मी के मौसम में वह घर के मुख्य द्वार से बाहर निकल रही थीं और रास्ते पर चल रही थीं, तभी उन्होंने पीछे मुड़कर घर की ओर देखा और अपने पीछे एक महिला को आते हुए देखा। पहले तो उन्होंने सोचा कि वह उनकी कोई सहेली है और उसके आने का इंतज़ार करने के लिए द्वार पर रुक गईं। लेकिन जब वह महिला करीब आई, तो वह उसे पहचान नहीं पाईं। उनकी ओर आ रही उस महिला में कुछ बहुत ही अजीब

था। उसके पूरे शरीर, काले बालों और सफेद पोशाक पर एक अलग ही चमक थी। जब वह महिला उनके पास पहुँची, तो वह रुक गई और ऐसा लगा जैसे ज़मीन में समा गई हो।

11 दिसंबर, 1929 को वाशिंगटन से आए कुछ मेहमान वेस्टओवर में ठहरे हुए थे, और उनके आगमन की शाम को बातचीत भूतों की ओर मुड़ गई। उस समय घर के मालिक श्रीमान और श्रीमती रिचर्ड एच. क्रेन थे, जिन्होंने बताया कि उन्होंने अपने रहने के दौरान भूत नहीं देखा था। घर में ठहरी एक मेहमान अपने कमरे में चली गईं, जो घर के उस हिस्से में था जहाँ से बड़े द्वार दिखाई देते थे और जहाँ से औपचारिक बगीचों का सुंदर दृश्य दिखता था। उसी रात किसी समय श्रीमती क्रेन की नींद खुली और वे खिड़की के पास गईं। उनके इस व्यवहार का कोई स्पष्ट कारण नहीं था। बाहर काफी अंधेरा था और सन्नाटा छाया हुआ था। जैसे ही उन्होंने खिड़की से बाहर देखा, उन्हें एवलिन बर्ड की आकृति दिखाई दी। उन्होंने अपने मेज़बानों को उस आकृति का वर्णन धुंधली, अस्पष्ट और बादल जैसी बताया, इतनी पारदर्शी कि कोई भी चेहरा स्पष्ट नहीं दिख रहा था, बस एक महिला की धुंधली सी आकृति दिखाई दे रही थी। वह आकृति लॉन से थोड़ा ऊपर और लगभग खिड़की के स्तर पर तैरती हुई प्रतीत हो रही थी। जब वह लगभग स्तब्ध होकर उसे देख रही थी, तभी उस प्रेत ने हाथ उठाकर उसे कमरे में वापस जाने और खिड़की से दूर जाने का इशारा किया। यह इशारा इतना अनिवार्य लगा कि घर में आई मेहमान ने उसका पालन किया।

जब मैंने घर की छानबीन करने की अनुमति मांगी, तो मुझे विनम्रतापूर्वक प्रवेश से मना कर दिया गया। शायद वर्तमान मालिक डरते हैं कि मैं प्यारी एवलिन को वेस्टओवर छोड़कर स्वर्ग में बेहतर जीवन की तलाश में जाने के लिए प्रेरित कर सकता हूँ, और ऐसा कभी नहीं होना चाहिए, क्योंकि वेस्टओवर आखिरकार धरती पर स्वर्ग के सबसे करीब है, कम से कम अठारहवीं सदी की उस लड़की के लिए जिसका प्रेमी उससे बिछड़ गया है। अगर मुझे किसी विश्वसनीय माध्यम से उससे संपर्क करने का मौका मिलता, तो शायद मैं उन दोनों को एक ऐसी जगह और ऐसी परिस्थितियों में मिला पाता जहाँ उसके सख्त पिता कर्नल बर्ड उन्हें अलग नहीं रख पाते।

वर्जीनिया की एक और मशहूर हवेली ब्लैंडफील्ड है, जिसमें एक से ज़्यादा भूत होने का दावा किया जाता है। 1960 के दशक के अंत में रिचमंड टाइम्स डिस्पैच ने इलाके के कुछ

बेहतरीन भूतिया घरों का सर्वेक्षण किया। टॉम हॉवर्ड ने ऐसे घरों के मालिकों से कई लोगों का इंटरव्यू लिया और मालिक का इंटरव्यू लेने के लिए ब्लैंडफील्ड की यात्रा भी की। पेश है उनकी रिपोर्ट।

एसेक्स काउंटी में स्थित अठारहवीं सदी की हवेली ब्लैंडफील्ड में दो शताब्दियों से तरह-तरह के भूत-प्रेत आते रहे हैं। ये भूत रात में डरावनी रोशनी के रूप में और गलियारों में मंडराते हुए पुरुषों और महिलाओं की धुंधली आकृतियों के रूप में दिखाई देते हैं।

मालिक की पत्नी, श्रीमती विलियम नैश बेवरली ने बताया कि लगभग पाँच साल पहले घर आए मेहमानों ने दो बार प्रेत-दर्शन की सूचना दी थी। पहली बार एक महिला लंबी, फूलों वाली पोशाक पहने ऊपरी मंजिल के गलियारे में चलती हुई दिखी। घर में सबने तलाशी ली, लेकिन वह अजनबी नहीं मिली। दो दिन बाद, एक दूसरे मेहमान ने एक महिला को लंबी, गहरे रंग की स्कर्ट पहने हुए निचले मंजिल के गलियारे से गुजरते और एक कमरे में प्रवेश करते देखा। श्रीमती बेवरली ने बताया कि फिर से जाँच में कोई नहीं मिला।

उन्होंने बताया कि सबसे हालिया घटना कुछ महीने पहले घटी थी। श्रीमती बेवर्ली ने उस अनुभव का वर्णन किया। एक दोपहर वह और उनके दो कुत्ते नीचे की लाइब्रेरी में थे और घर में उनके अलावा केवल एक बीमार रिश्तेदार थी, जो ऊपर के बेडरूम में सो रही थी। अचानक, ठीक ऊपर वाले कमरे में भारी कदमों की आहट सुनाई दी। चौंककर उन्होंने ध्यान से सुना। कुत्ते उछलकर खड़े हो गए, उनके बाल खड़े हो गए।

श्रीमती बेवर्ली ने कहा, “पहले तो मैंने सोचा कि मैं एक बंदूक लेकर ऊपर जाऊंगी। फिर मुझे लगा कि यह कितना बेवकूफी भरा विचार है। लेकिन मैं बेचैन थी, इसलिए मैंने हर कुत्ते को पट्टा पहनाया और हम सीढ़ियों पर तेजी से चढ़ गए। जैसे-जैसे मैं सीढ़ियों पर चढ़ती गई, कुत्ते और भी ज्यादा उत्तेजित हो गए, उनके बाल सीधे खड़े हो गए।”

वह सीधे अपने रिश्तेदार के बेडरूम में गई, जो बिस्तर पर चुपचाप सो रहा था। कुत्ते पट्टे को खींचकर उस कमरे की ओर भागे जहाँ उसे भारी कदमों की आहट सुनाई दी थी। उसने दरवाजा खोला और कुत्ते उग्रता से अंदर घुस गए... लेकिन वहाँ कोई नहीं था। उसने कमरे के हर कोने की तलाशी ली, लेकिन उसे किसी जीवित इंसान का कोई निशान नहीं मिला। कुत्ते

शांत हो गए और उसने फैसला किया कि आखिरकार उसने ब्लैंडफील्ड के प्रसिद्ध भूतों में से एक की आवाज सुन ली है।

चेज़ सिटी के शर्ली प्लांटेशन में एक रॉकिंग चेयर का भूत है और ऐश लॉन में भी एक रॉकिंग चेयर का भूत है, जो कभी राष्ट्रपति जेम्स मोनरो का घर था। कहा जाता है कि गवर्नर केम्पर का भूत अभी भी वॉलनट हिल में रहता है, जो उनका पूर्व निवास था। मैंने अपनी पिछली किताब 'घोस्ट्स आई हैव मेट' में ऐसे कई मामलों का जिक्र किया है। वास्तव में, शार्लोट्सविले के आसपास का इलाका, जिसकी मैंने 1965 में व्यक्तिगत रूप से जांच की थी, वास्तविक भूतिया घटनाओं से भरा पड़ा है।

यह संभव है कि कोई मानसिक रूप से संवेदनशील व्यक्ति, जो शार्लेटस्विले में स्वास्थ्य, शिक्षा और कल्याण विभाग वाले भवन के पास से गुजरा हो, उसे कुछ अजीब सा महसूस हो, शायद एक-दो बार ठंड लग जाए, या शायद केवल समय में विस्थापन का अहसास हो।

*127

आई.आर.ए. भूतों का मामला

यह एक धूप भरा, सुहावना दिन था जब आयरलैंड की धरती पर पहला अभियान ड्रोमोलैंड कैसल के भव्य परिसर से शुरू हुआ। जल्द ही हमने मुख्य राजमार्ग के अंतरराष्ट्रीय माहौल को पीछे छोड़ दिया और शैनन नदी के दक्षिणी किनारे की ओर बढ़ गए, जो इस बिंदु पर एक झील जितनी चौड़ी है।

हम लिमरिक शहर की सुनसान इमारतों, कारखानों, बंदरगाहों और काम पर जाते लोगों को पीछे छोड़ते हुए आगे बढ़े। क्योंकि यह सप्ताह का एक आम दिन था और आयरलैंड की गैर-पर्यटक आबादी के पास इधर-उधर घूमने के अलावा और भी काम थे।

टार्बर्ट में, हमने घुमावदार तटीय सड़क को छोड़कर अंदरूनी इलाके की ओर, सीधे दक्षिण दिशा में लिस्टोवेल की ओर रुख किया। हम दोपहर के आसपास इस शांत पुराने कस्बे में पहुँचे, और ठीक समय पर स्थानीय सराय में दोपहर का भोजन किया। यह यहाँ का एकमात्र बड़ा होटल था, जो पुराने चौक के एक तरफ स्थित था और सदियों पहले की तरह आज भी पत्थरों से ढका हुआ था।

हम दोनों ने कस्बेवासियों को एक अनोखा नज़ारा दिखाया - कैथरीन हमेशा की तरह सुरुचिपूर्ण, सिबिल लीक बैंगनी रंग की पोशाक में, और मैं टेप रिकॉर्डर और कैमरों के भारी बोझ से लदा हुआ। लिस्टोवेल के लोगों की यही खूबी है कि किसी ने हमसे कोई सवाल नहीं पूछा, या शायद यही आयरिश स्वभाव का हिस्सा है - लोगों को उनके असली रूप में स्वीकार करना। खैर, हमने अच्छा भोजन किया और मैं स्थानीय मदद के लिए फोन करने चला गया।

अब पश्चिमी आयरलैंड में टेलीफोन मिलना एक दुर्लभ बात है। मेरा मतलब है, काम करने वाला टेलीफोन।

बीसवीं सदी के इस दखल से हमारा पहला सामना किलकोलगन कैसल में हुआ, वह गैर-किला जहाँ हमें कभी सोने का मौका नहीं मिला। वहाँ एक फोन था जिसे मैंने पहले खिलौना समझा। वह हल्का था और तार कहीं जाता हुआ नहीं लग रहा था, लेकिन मुझे जरा भी अंदाजा नहीं था कि यही असली फोन है। यह कभी-कभी चलता है, सिवाय इसके कि दिन में कई घंटे यह बंद रहता है। दिक्कत यह है कि वे कभी बताते नहीं कि कब। इसलिए बेहतर यही है कि आपातकालीन स्थिति में फोन चेक करने के बाद ही काम करें।

लिस्टोवेल में मुझे यह भी पता चला कि टेलीफोन को ठीक से चलाने के लिए कुछ खास सिक्कों की ज़रूरत होती है। इसलिए मैं कुछ खुले पैसे लेने के लिए बार में गया, क्योंकि ढेर सारे सिक्के साथ लेकर चलना मुझे आसान यात्रा नहीं लग रही थी।

यहां पारंपरिक आयरिश मित्रता स्पष्ट रूप से दिखाई दे रही थी, और बार में तो यह और भी अधिक स्पष्ट थी। काउंटर पर केवल दो ही लोग ड्रिंक कर रहे थे, जिनमें से एक सैन फ्रांसिस्को के मूल निवासी आयरिश पादरी थे, जिन्होंने लिस्टोवेल लौटकर जीवन में एक नया आयाम जोड़ने का फैसला किया था। मुझे ईमन कीन नामक एक नाटककार का नाम बताया गया था, जो शायद श्री मैलोनी के भूतिया घरों को खोजने में मेरी मदद कर सकते थे। मैंने इन भूतिया घरों के बारे में न्यूयॉर्क में श्री मैलोनी से ही सुना था।

* * *

मैं मई 1965 में न्यूयॉर्क में एक रेडियो कार्यक्रम कर रहा था, जिसमें मैंने सुझाव दिया था कि भूतों से संबंधित किसी भी प्रामाणिक अनुभव वाले किसी भी आयरिश व्यक्ति को मुझसे संपर्क करना चाहिए।

इस अवसर पर आगे आने वालों में से एक थे पैट्रिक मैलोनी, जो मेरे घर से लगभग एक घंटे की दूरी पर क्वींस विलेज में रहते हैं। श्री मैलोनी न्यूयॉर्क में तैंतालीस वर्षों से रह रहे थे, लेकिन मूल रूप से आयरलैंड के लिस्टोवेल से आए थे। श्री मैलोनी साठ वर्ष की आयु के आसपास हैं, हंसमुख स्वभाव के हैं और अपने पद पर रहते हुए किसी भी व्यक्ति की तरह व्यावहारिक हैं। श्री मैलोनी न्यूयॉर्क के पास स्थित एक बड़े मानसिक अस्पताल में सहायक कर्मचारियों के पर्यवेक्षक हैं। उनका काम बहुत ही व्यावहारिक है, क्योंकि उन्हें ऐसे लोगों से निपटना पड़ता है जो अपनी मानसिक स्थिति खो चुके हैं। मानो चिकित्सा जगत से उनका जुड़ाव ही उन्हें सतर्क रहने के लिए काफी न हो, वे एक कुशल शौकिया जादूगर और सम्मोहन के छात्र भी हैं। वे मन की चालों और चतुर जादूगरों की तरकीबों के बारे में सब कुछ जानते हैं। वे डनिंगर और हैरी ब्लैकस्टोन जैसे प्रसिद्ध जादूगरों से मिल चुके हैं और आज भी नवीनतम तरकीबों से अवगत रहने और भ्रम की अपनी समझ को निखारने के लिए न्यूयॉर्क में जादूगरों के समूह की साप्ताहिक बैठकों में भाग लेते हैं।

अब अगर कोई कट्टर संशयवादी समूह है, तो वो जादूगर हैं। अधिकांश जादूगरों के लिए, सभी मानसिक प्रदर्शन धोखे से होते हैं क्योंकि वे उनमें से कुछ को कर सकते हैं। लेकिन अधिकांश जादूगरों की ईएसपी (प्रारंभिक दृष्टि से देखने की क्षमता) की वास्तविकता को स्वीकार करने में असमर्थता एक दार्शनिक अवधारणा पर आधारित है। उनके लिए, सब कुछ भौतिक है, और यदि ऐसे भ्रम हैं जिन्हें उन्होंने नहीं बनाया है, तो उनकी पूरी दुनिया असुरक्षित हो जाती है।

पैट्रिक मैलोनी इस श्रेणी में एक अपवाद हैं, यह बात अत्यंत सराहनीय है। इसका श्रेय काफी हद तक उनके स्वयं के मानसिक अनुभवों को जाता है। वे एक सम्मानित रोमन कैथोलिक हैं, विवाहित हैं और कई बच्चों के दादा हैं। उनकी विवाहित बेटियों में से एक को भी मानसिक अनुभव हुए हैं, जो इस बात का प्रमाण है कि यह प्रतिभा कभी-कभी परिवार में पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तांतरित होती है, आमतौर पर महिलाओं की ओर से।

उन्होंने मुझे लिखे अपने नोट में टिप्पणी की, "मैं हमेशा खुले दिमाग से सोचता हूं; सीखने का यही तरीका है।"

उनका जन्म 1901 में आयरलैंड में हुआ था। उन्होंने नेशनल स्कूल में पढ़ाई की और आठवीं कक्षा तक पढ़ाई पूरी की। बाद में वे कुछ वर्षों तक इंग्लैंड में रहे और फिर अमेरिका में बस गए। आयरलैंड में अपने बचपन के दौरान ही उन्हें अपनी मानसिक क्षमताओं का एहसास हुआ।

मैं पैट्रिक मैलोनी से मिला और हमने उनके अनुभवों पर विस्तार से चर्चा की।

“यह सन् 1908 की बात है जब मुझे अपना पहला यादगार अनुभव हुआ,” उन्होंने कहना शुरू किया, “और उस समय मेरी उम्र लगभग सात साल थी। हम काउंटी केरी के लिस्टोवेल कस्बे में कॉन्वेंट स्ट्रीट पर एक पुराने घर में रहते थे। वह घर आज भी खड़ा है; वह चूना पत्थर से बना है और उसकी छत स्लेट की है।”

“उस दिन मैं घर पर थी, अपने छोटे भाई की देखभाल कर रही थी जो अभी पालने में बच्चा था। मेरी माँ दुकान गई हुई थीं, इसलिए जब तक वह बाहर थीं, मैं ऊपर सीढ़ियों के पहले पायदान पर रखी कुछ चित्र पुस्तकों को देखने चली गई। ऊपर दो खाली कमरे थे, एक दूसरे के सामने, और हम उनका इस्तेमाल नहीं करते थे।

आयरलैंड में आईआरए का वह गुप्त क्रॉस जहां घात लगाकर हमला किया गया था

मैं चित्र पुस्तकों को देख रहा था, तभी अचानक कुछ ऐसा दिखा जिससे मेरी नजर ऊपर की ओर उठी।

“वहाँ, दूसरी सीढ़ी पर, पाँच फीट से भी कम कद का एक छोटा आदमी था, जो मुझे अपने दाहिने हाथ से इशारा करके अपने पास बुला रहा था!”

“आज भी मुझे वह इतनी स्पष्टता से दिखाई देता है मानो यह घटना अभी-अभी घटी हो। उसने काले कपड़े पहने थे और उसकी त्वचा गहरे रंग की थी, तांबे जैसी, और उसके सिर पर पीतल की घंटियों वाली टोपी थी, और वह लगातार हंस रहा था और मुझे ऊपर आने का इशारा कर रहा था।”

“क्या आपको डर नहीं लगा?” मैंने बीच में टोकते हुए कहा। लिस्टोवेल जैसे शांत छोटे कस्बे में यह कितना अजीब नजारा रहा होगा!

श्री मैलोनी ने अपना सिर हिलाया।

“बिल्कुल नहीं,” उसने कहा। “शायद मैं इतना छोटा था कि ठीक से डर नहीं पाया, लेकिन इतनी कम उम्र में ही मुझे पता चल गया था कि यह कुछ अजीब है, इसलिए मैंने अपनी किताबें नीचे रख दीं और नीचे चला गया। मैंने उस छोटे आदमी को एक बिल्कुल खाली कमरे से निकलते और दूसरे उतने ही खाली कमरे में जाते देखा था, और मुझे पता था कि इसमें कुछ तो गड़बड़ है। लेकिन मैंने अपनी माँ को इसके बारे में तब तक नहीं बताया जब तक मैं बड़ा नहीं हो गया।”

"क्या आपकी मां ने कोई स्पष्टीकरण दिया?"

“नहीं, उसने ऐसा नहीं किया। वह चुपचाप सुनती रही और एक शब्द भी नहीं बोली। आज तक मुझे नहीं पता कि वह छोटा आदमी कौन था।”

मुझे भी इस बारे में जिज्ञासा हुई और मैंने लिस्टोवेल के कॉन्वेंट स्ट्रीट स्थित घर को देखने का मन बना लिया।

लेकिन अज्ञात से सामना जिसने उन्हें सबसे ज्यादा चौंका दिया, वह 1918 में हुआ जब पैट्रिक मैलोनी 17 वर्ष के थे। उस समय आयरिश लोगों द्वारा "मुसीबत" कहे जाने वाले हालात काफी गंभीर थे—ब्रिटिश कब्ज़ा करने वाली सेनाओं और प्रतिबंधित आई.आर.ए. (आयरिश रिपब्लिकन आर्मी) के बीच गुरिल्ला युद्ध चल रहा था। नागरिक-सैनिकों के इस समूह ने बाद में आयरिश स्वतंत्रता में महत्वपूर्ण योगदान दिया, और पूरे आयरलैंड में शायद ही कोई ऐसी जगह हो जहाँ इन "स्वतंत्रता सेनानियों" की एक-दो कब्रें न हों। दुर्भाग्य से, जब आयरिश गणराज्य अस्तित्व में आया और अंग्रेजों और उनके पूर्व शत्रुओं के बीच सामान्य संबंध बहाल हुए, तो आई.आर.ए. ने संघर्ष जारी रखने का फैसला किया।

मुख्य रूप से, उल्स्टर के नाम से जाने जाने वाले छह उत्तरी काउंटी विवाद का केंद्र हैं। डबलिन स्थित आयरिश सरकार इस समस्या को शांतिपूर्वक और धीरे-धीरे हल करना चाहती थी, लेकिन आई.आर.ए. इंतजार नहीं कर सका, इसलिए एक बार फिर हिंसा भड़क उठी,

जिससे अक्सर प्रसिद्ध स्थलों को नुकसान पहुंचा, और अंततः आई.आर.ए. को उसकी अपनी ही सरकार द्वारा गैरकानूनी घोषित कर दिया गया।

1918 के "ब्लैक एंड टैन्स" पूरे देश में लड़ाइयों और झड़पों में शामिल थे। कोई भी इस बात की गारंटी नहीं दे सकता था कि कोई भटकती गोली किसी निर्दोष राहगीर को न लग जाए। लिस्टोवेल कस्बे से लगभग दो मील दूर, सड़क के किनारे एक फाटक था। उसके पीछे अंग्रेज सैनिक घात लगाए बैठे थे। तीन लोगों का एक आई.आर.ए. गश्ती दल उस स्थान की ओर बढ़ रहा था। इसके परिणामस्वरूप हुए घात में, अंग्रेजों ने दो आयरिश अनियमित सैनिकों को मार डाला। वर्षों बाद, कब्रों पर एक विशाल सेल्टिक क्रॉस स्थापित किया गया, लेकिन यह कहानी, आयरलैंड भर में इसी तरह की कई त्रासदियों के समान होने के कारण, धुंधली पड़ गई, और यहां तक कि स्थानीय लोग भी उस स्थान को मुश्किल से ही याद करते हैं।

सन् 1918 की उस चांदनी रात में, केरी के बैलीबुनन के रहने वाले युवा पैडी मैलोनी और उनके मित्र मॉस बार्नी, उस सड़क पर साइकिल चला रहे थे और रात बिताने के लिए लिस्टोवेल पहुँचने की जल्दी में थे। वे लगभग पाँच मील दूर स्थित एब्बीफील नामक स्थान पर सर्कस देखने गए थे। जून का महीना था और सुबह के लगभग एक बजे थे, चाँद की रोशनी से सड़क जगमगा रही थी। उस समय, ज़ाहिर है, वह स्मारक मौजूद नहीं था और गोलीबारी की घटना अभी भी लोगों की यादों में ताज़ा थी। लेकिन दोनों यात्रियों ने इस बारे में ज़रा भी नहीं सोचा। उन्हें इससे कोई फ़र्क नहीं पड़ता था; सर्कस में एक सुखद शाम बिताने के बाद वे बहुत खुश थे।

जब वे सड़क पर उस जगह पहुँचे जहाँ घात लगाकर हमला हुआ था, तो अचानक कुछ ऐसा हुआ जिसने उन्हें रोक दिया। पैट्रिक ने चाहे कितनी भी कोशिश की, वह उस जगह से हिल नहीं सका।

“ऐसा लग रहा था मानो कोई हमारे पीछे खड़ा होकर हमारी साइकिलों को पकड़े हुए हो। मुझे पसीना आ रहा था और ऐसा महसूस हो रहा था जैसे कोई मेरे पीछे आकर मुझे उस रास्ते पर जाने से रोकने की कोशिश कर रहा हो। मुझे ऐसा लग रहा था कि कोई हमें आगे जाकर मुसीबत में पड़ने से बचाने की कोशिश कर रहा है।”

मैंने पूरी ताकत से साइकिल चलाने की कोशिश की, लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ। सड़क समतल थी, और बीच में कम से कम 500 फीट तक जंगल का एक हिस्सा था। मैं कमजोर पड़ने लगा और मुझे पसीना आने लगा। मैंने मॉस को अपनी परेशानी बताने की कोशिश की, लेकिन मेरी जुबान सुन्न पड़ गई।

“आखिरी बार पूरी ताकत लगाकर मैंने आगे बढ़ना शुरू किया और आखिरकार अपने पीछे मौजूद उस ‘चीज़’ से अलग हो गया। जंगल वाले हिस्से से निकलते ही हमारी साइकिलें पहले की तरह आज़ाद हो गईं। हम दोनों कूदकर नीचे उतरे और मैंने मॉस को अपना अनुभव बताना शुरू किया—तभी पता चला कि उसे भी वही अजीब सा भार महसूस हुआ था। वह भी कुछ देर तक बोल नहीं पा रहा था।”

"आखिरकार उसने कहा, 'मैं अब कभी रात में इस सड़क पर नहीं चलूंगा,' और उसने सचमुच यही कहा था।"

"क्या उसके बाद आपको कोई और मानसिक अनुभव हुए?" मैंने पूछा, क्योंकि मुझे यह स्पष्ट था कि पैट्रिक मैलोनी कुछ हद तक माध्यम थे, क्योंकि उन्होंने इस तरह के शारीरिक अनुभवों का सामना किया था।

उन्होंने स्वीकार किया, "कई बार।"

“जब मैं यहाँ के एक अस्पताल में मनोरोग सहायक के रूप में काम करती थी,” मैलोनी ने आगे कहा, “मुझे एक बहुत ही अजीब अनुभव हुआ। रात काफी हो चुकी थी और मैं बहुत थकी हुई थी। मैं वहाँ एक लिनेन रूम में गई और थोड़ी देर आराम करने के लिए एक मेज पर लेट गई, क्योंकि मुझे डर था कि ड्यूटी के दौरान कहीं मुझे नींद न आ जाए। मैं मुश्किल से पाँच मिनट ही लेटी थी, मेरे नीचे एक कंबल था, तभी कोई आया और उसने मेरे नीचे से कंबल खींच लिया। मेरा वजन दो सौ पाउंड से अधिक है, फिर भी यह सब इतनी तेजी से हुआ कि मुझे पता भी नहीं चला और कंबल मेरे ऊपर आ गया।”

मैंने पूछा, "क्या कमरे में कोई और भी था?"

"कमरे में कोई नहीं, वार्ड में कोई नहीं, सिर्फ मैं।"

"आपने क्या किया?"

“मैं उछलकर उठा और चारों ओर देखा। सभी मरीज़ सो रहे थे। इसलिए मैं वापस आराम करने चला गया। फिर वही हुआ, लेकिन इस बार ऐसा लगा जैसे कोई बड़ा, भारी हाथ मेरी पीठ को छू रहा हो। बस, यही काफी था। मैं बाहर आया और कमरे को अंदर से बंद कर दिया।”

मैंने कहा, "आपको यह कैसा लगा?"

“जब मैं वार्ड की जांच करने गया, तो मुझे एक मरीज मृत मिला। उसकी नींद में ही मौत हो गई थी। वह एक पूर्व मुक्केबाज था। वह मेरी निजी देखरेख में था।”

मैंने कहा, "मुझे लगता है कि वह आपको बताना चाहता था कि वह आगे बढ़ रहा है। क्या आपको कोई और अजीब अनुभव हुआ है?"

“हाँ,” मैलोनी ने सहज भाव से कहा, “मेरे बेटे की मृत्यु 1945 में हुई थी, और उसकी मृत्यु के कुछ महीनों बाद, मैं अपने घर में बैठकर टेलीविजन देख रहा था। मैं आराम से पैर फैलाकर बैठा था, तभी मुझे महसूस हुआ कि कोई मेरे पैरों के पास से बहुत तेज़ी से गुज़रा। सरसराहट की आवाज़ आई। मैंने अपनी पत्नी की ओर देखा, लेकिन वह बिल्कुल भी नहीं हिली थी। मैं समझ गया कि वह मेरा बेटा था, क्योंकि उसकी चाल कुछ अलग थी।”

मैलोनी को कई बार सचमुच सपने आए हैं, और वह अक्सर जान जाते हैं कि कोई व्यक्ति अब इस दुनिया में ज्यादा दिन नहीं रहने वाला। जैसे कि अस्पताल में उनका एक सहकर्मी, जिसे उन्होंने "मृत व्यक्ति" का नाम दिया था। दो साल तक उन्हें समझ नहीं आया कि उन्हें अपने सहकर्मी के बारे में ऐसा क्यों लगता है। फिर उस व्यक्ति ने आत्महत्या कर ली।

1946 में, लंबे समय बाद वे फिर से आयरलैंड लौट आए। अचानक, अपने होटल के कमरे में, उन्होंने अमेरिका से अपनी पत्नी कैथरीन की आवाज़ सुनी। उसी सप्ताह, उनकी माँ का निधन हो गया।

मैलोनी अपनी इस प्रतिभा को सहजता से स्वीकार करता है। वह न तो इसे नकारता है और न ही इसके बारे में शेखी बघारता है। वह इस मामले में पूरी तरह से आयरिश है।

* * *

जब सैन फ्रांसिस्को के पादरी को पता चला कि मैं ईमन कीन से मिलने के लिए फोन करने की कोशिश कर रहा हूं, तो वह हंस पड़ा।

“बकवास,” उसने गंभीर स्वर में कहा, “बस उसके घर जाओ और अपना परिचय दो। हम सब यहाँ बहुत मिलनसार हैं।”

पता चला कि मिस्टर कीन का नंबर भी लिस्ट में नहीं था। सोचिए, लिस्टोवेल में भी अनलिस्टेड नंबर! लेकिन नाटककारों के पास तो नए-नए आइडिया होते ही हैं।

दोपहर का भोजन समाप्त होने के बाद, हम श्री कीन को खोजने के लिए आगे बढ़े। मुझे यह भी बताया गया था कि नाटक लेखन के अलावा, उनका एक बार भी है। हम सड़क पर आगे बढ़े और खुद को "कीन्स" नाम के एक बार के सामने पाया। क्या हम सही जगह पर आ गए थे? नहीं, हम नहीं आए थे।

“आप मेरे भाई को बुलाना चाहते हैं,” मालिक ने कहा, और हम फिर से चल पड़े, सड़क पर एक ब्लॉक आगे, एक और बार की ओर, जिस पर भी “कीन्स” लिखा था। सच कहूँ तो, मुझे उस सड़क पर बार के अलावा और कुछ याद नहीं है—यहाँ उन्हें पब कहा जाता था।

श्री कीन ने मेरी बहुत मदद की। उन्हें पता था कि मैं क्या ढूंढ रहा हूँ, और उन्होंने मुझे एक ऐसे व्यक्ति के पास ले जाने की पेशकश की जिसे इस क्षेत्र में कुछ अनुभव था और वह मुझे इसके बारे में प्रत्यक्ष रूप से बता सकता था। इसलिए हम फिर से वहाँ से निकले और कुछ ब्लॉक आगे एक छोटे से घर की ओर गए, जिसके भूतल पर एक दुकान थी। पता चला कि दुकान का मालिक ही वह व्यक्ति था जिससे मिलना चाहिए था। वह मछली पकड़ने के सामान का व्यापार करता था।

जॉन गैरेन यहां सत्तावन वर्षों से रह रहे थे और उनका लहजा इस बात का प्रमाण था।

मैंने उससे पूछा कि क्या वह किसी भूत के बारे में जानता है।

“जी महोदय, इसी गली में,” उसने उत्तर दिया, “एक घर है जिसके बगल में एक छोटी सी धारा बहती है, और उसमें लौघनेन्स नाम का एक परिवार रहता था। यह कॉन्वेंट स्ट्रीट पर है और इसका नाम ग्लौना फोका है।”

मैंने पूछा, "इसका क्या मतलब है?" मेरी गेलिक भाषा की जानकारी बहुत कमजोर थी।

“परियों की घाटी,” श्री गैरेन ने उत्तर दिया। “मैंने तो कभी कोई परी नहीं देखी, लेकिन ऐसा लगता था कि घर के अंदर रखी कुर्सियाँ और बाकी सारा सामान खिड़कियों से बाहर फेंक दिया जाता था, और आपको कांच के टूटने की आवाज़ सुनाई देती थी, और जब आप होश में आते तो वहाँ कोई नहीं होता था। इसी वजह से लोगों को वहाँ से जाना पड़ा। यह लगभग साठ साल पहले की बात है।”

मैंने श्री गैरेन को उनकी जानकारी के लिए धन्यवाद दिया और उन्हें शुभ दोपहर की शुभकामनाएं दीं। फिर हम आगे बढ़े और कॉन्वेंट स्ट्रीट पर उस घर के सामने रुके जहाँ पैट्रिक मैलोनी ने उस छोटे लड़के को मूर्ख की टोपी पहने देखा था।

घर की मरम्मत अच्छी तरह से की गई थी और देखने में बिल्कुल भी पुराना नहीं लग रहा था। यह दो मंजिला मकान था, जिसके पीछे एक बगीचा था, और सिबिल लीक चुपचाप उसे देखने के लिए सड़क पार करके दूसरी तरफ चली गईं। हम अंदर नहीं जा सके, क्योंकि वर्तमान मालिक भूतों के विषय में ज्यादा दिलचस्पी नहीं रखते थे। श्री गैरेन ने हमसे अनुरोध किया कि हम उनका नाम न लें, क्योंकि लिस्टोवेल जैसे छोटे शहर में हर बात फैल ही जाती है।

मैंने सिबिल से पूछा, "तुम्हें यहाँ क्या महसूस हो रहा है?" सिबिल को पैट्रिक मैलोनी, उनके अनुभवों या यहाँ तक कि श्री गैरेन के हालिया भाषण के बारे में भी कुछ नहीं पता था।

“ऊपरी दाहिने कमरे में निस्संदेह कुछ चमत्कारी घटनाएँ हुई हैं,” सिबिल ने संक्षेप में कहा, “और मुझे लगता है कि इसका संबंध पानी से है। मुझे लगता है कि पिछला मालिक किसी ऐसे व्यवसाय में था जिसमें पानी बहुत महत्वपूर्ण था। शायद किसी चक्की से जुड़ा हुआ व्यक्ति था।”

सिबिल को यह नहीं पता था कि घर के बगल में एक छोटी नदी बहती है, और न ही यह कि कभी पास में ही एक चक्की हुआ करती थी।

आपको क्या लगता है कि यह घटना कितने समय पहले हुई थी?

“लगभग दो सौ साल पहले,” उसने जवाब दिया। “घर के उस हिस्से में जहाँ इस समय कोई इमारत नहीं है, मैं अपनी कल्पना में एक छोटी, अपेक्षाकृत सपाट इमारत देख सकती हूँ।”

"आपको क्या लगता है कि यहां ये घटनाएं कितने समय पहले घटित हुई थीं?"

"लगभग चार साल पहले, फिर लगभग 1948 में, और उससे पहले, लगभग एक सौ बीस साल पहले। पानी से जुड़ी कोई त्रासदी हुई है। मुझे उस चक्की के आसपास कुछ हलचल महसूस हो रही है, और एक नाम जो मुझे ट्यून जैसा लगता है।"

हम लिस्टोवेल से बाहर निकलकर उस जगह की ओर आगे बढ़े जहाँ कभी चक्की हुआ करती थी।

"दाईं ओर," सिबिल ने धीरे से कहा, और श्री कीन ने स्थान की पुष्टि की।

चूंकि हम घर के अंदर नहीं जा सके, इसलिए मैंने सोचा कि पैट्रिक मैलोनी द्वारा बताए गए किसी दूसरे घर की तलाश करना ही बेहतर होगा। श्री कीन ने मुझसे इजाज़त मांगी और जल्दी से अपने बार की ओर चले गए। हम खुले ग्रामीण इलाके में एक फार्महाउस की तलाश में आगे बढ़े, जिसके बारे में हमें बहुत कम या बिल्कुल भी जानकारी नहीं थी।

श्री मैलोनी ने मुझे हाथ से बनाया हुआ एक मोटा-मोटा नक्शा दिया था और वह मेरे बहुत काम आया।

“ग्रीनविले रोड पर चक्की के पास वाले उस घर में, जब मैं वहाँ रहता था, कुछ भूतिया गतिविधियाँ होती थीं। रसोई और शयनकक्ष दोनों ही प्रेतवाधित हैं। बिस्तर पर लेटे लोगों के कपड़े खींच लिए जाते थे और कमरा लाखों तिलचट्टों से भर जाता था, फिर वे अचानक गायब हो जाते थे; खिड़कियों से अंदर झाँकते हुए चेहरे दिखाई देते थे। झगड़े होते थे, मेजें और कुर्सियाँ इधर-उधर खिसक जाती थीं, और अलमारी में कप और तश्तरियाँ अपने आप नाचने लगती थीं। वहाँ रहने वाले कॉनर परिवार के सभी लोग अब मर चुके हैं, और कुछ अन्य लोग वहाँ रहते हैं, लेकिन मैं उन्हें नहीं जानता। यह लगभग पैंतालीस साल पहले की बात है।”

जब हम पुराने कॉनर्स हाउस की तलाश में ऊबड़-खाबड़ सड़क पर जा रहे थे, तो ये सारी बातें एक बार फिर मेरे दिमाग में आ गईं।

सड़क के किनारे काम कर रहे एक बुजुर्ग व्यक्ति ने हमें एक छोटा सा एक मंजिला फार्महाउस दिखाया। यह कॉनर्स का ही घर निकला, लेकिन गलत कॉनर्स का। हमारे कॉनर्स सड़क पर थोड़ा आगे थे, और आखिरकार हमें वह घर मिल गया जो मैलोनी के विवरण और नक्शे से मेल खाता था।

ऐसा प्रतीत होता है कि हाल ही में कोई यहाँ रहने आया था और घर की मरम्मत का काम कर रहा था। यह काम अभी तक घर के चारों ओर के बगीचे तक नहीं पहुँचा था, जो अपनी प्राकृतिक सुंदरता में बेहद खूबसूरत था, और ऐसा लगता है कि वर्षों से उस पर किसी इंसान का हाथ नहीं लगा था।

सड़क से बगीचे को अलग करने वाला एक चौड़ा लोहे का फाटक था। सूरज अब उतना ऊपर नहीं था और चारों ओर का नजारा बेहद शांत और सुकून भरा था। सावधानी से—क्योंकि आयरलैंड में दुनिया के किसी भी अन्य हिस्से से ज़्यादा कुत्ते हैं—मैंने फाटक खोला और घर की ओर चल पड़ा। मेरे पैर गीली ज़मीन में धंस गए, लेकिन मैं चलता रहा। दरवाजे पर लगभग तीस साल की एक युवती ने हमारा स्वागत किया, जिसने अजनबी का स्वागत करने के विशिष्ट आयरिश ग्रामीण तरीके से हमारा अभिनंदन किया। कैथरीन और सिबिल थोड़ी देर बाद आईं, और हमने उस घर को देखा जो कभी कॉनर्स का भूतिया घर हुआ करता था।

“श्रीमती हीली,” मैंने कहना शुरू किया, “आप कुछ दिन पहले यहाँ रहने आई हैं। यह पहले कॉनर्स का घर हुआ करता था—क्या मैं सही कह रही हूँ?”

“हाँ, यह सही है,” उसने लगभग बिना किसी बनावटीपन के जवाब दिया। “यह काफी पुराना घर है, लेकिन हाल ही में इसकी मरम्मत की गई है।”

वह घर उसके लिए खुशियों से भरा था; कम से कम अभी तक न तो उसने, न उसके पति ने और न ही उनके छोटे बच्चे ने कुछ भी असामान्य देखा था।

सिबिल अब घर के अंदर दाखिल हुई। असल में यह एक छोटी सी रसोई, एक गलियारा और एक शयनकक्ष से ज्यादा कुछ नहीं था, सब एक ही मंजिल पर थे। अंदर कदम रखते ही उसे लगा जैसे वह किसी दूसरे युग में आ गई हो।

"जब वह महिला अभी आपसे बात कर रही थी," सिबिल ने कहा, "मैंने एक और आवाज सुनी। एक पुरुष की आवाज। यह एक मजबूत आवाज है, लेकिन मैं इसे समझ नहीं पा रही हूँ।"

मैंने पूछा, "क्या यह गेलिक भाषा है?"

“मुझे तो ऐसा ही लगता है। मुझे तो बस उसकी आवाज़ का लहजा ही अजीब लगता है। यह एक कठोर, दमदार आवाज़ है। इस जगह का पानी से कुछ संबंध है।”

"कोई त्रासदी हुई?"

“उस व्यक्ति का इससे संबंध है। सदी के मोड़ पर। उसके सिर में कुछ चोट लगी थी, संभवतः किसी आघात के कारण। इस चोट ने उसके जीवन को बुरी तरह प्रभावित किया। अंततः इसी के कारण उसकी मृत्यु हुई, लेकिन वह इसके लिए सीधे तौर पर जिम्मेदार नहीं था। मैं कहूंगा कि वह बहुत गुस्सैल स्वभाव का व्यक्ति था।”

हम फार्म हाउस में जरूरत से ज्यादा देर तक नहीं रुकना चाहते थे, इसलिए मैंने हमें आने की अनुमति देने के लिए श्रीमती हीली को धन्यवाद दिया।

“बस एक और बात है,” उसने सोच-विचार करते हुए कहा। “क्या आप वह सामने वाला गेट देख रहे हैं?” हमने सिर हिलाया, क्योंकि मैं शुरू से ही उसकी प्रशंसा करता रहा था।

"खैर," श्रीमती हीली ने कुछ शर्मिंदा होकर कहा, "मैं इसे कितनी भी बार बंद कर लूं, यह बंद रहना ही नहीं चाहता।"

* * *

दोपहर ढलती जा रही थी और हमें अभी दो और जगहें देखनी थीं। हम लिस्टोवेल से होते हुए दूसरे छोर पर वापस आ गए, पैट्रिक मैलोनी के अधूरे नक्शे का अनुसरण करते हुए। लिस्टोवेल में कोई भी हमें उस चौराहे पर स्थित स्मारक की ओर रास्ता नहीं बता सका, जिसकी हमें तलाश थी, और हमने गलत ग्रामीण सड़कों पर इधर-उधर भटकते हुए एक घंटा बर्बाद कर दिया। आयरलैंड के ग्रामीण इलाकों में रास्ता पूछना आसान नहीं है, क्योंकि बहुत कम लोग अपने आस-पड़ोस से ज़्यादा जानते हैं। आखिरकार हमें सफलता मिल ही गई। हमारे सामने एक चौराहा था जो मैलोनी के वर्णन से मिलता-जुलता लग रहा था, जिसके एक तरफ जंगल था। लेकिन कहीं भी सेल्टिक क्रॉस नज़र नहीं आया!

मैं असमंजस में था। सिबिल को कैथरीन के साथ कार में छोड़कर, मैं सड़क के उस पार की ज़मीन का पता लगाने के लिए पैदल निकल पड़ा। उस इलाके में लगभग बीस गज अंदर जाते ही, अचानक मेरी नज़र उस स्मारक पर पड़ी। हमारा ड्राइवर, जिसका नाम सिल्वेस्टर था, भी हैरान था। उसने इस जगह पर ऐसे किसी स्मारक के बारे में कभी नहीं सुना था। लेकिन वह स्मारक वहाँ था, सबकी नज़रों से छिपा हुआ, लगभग दो फुट ऊँची, धूसर-सफेद पत्थर की

दीवार, जिसके आगे एक ऊँचा सेल्टिक क्रॉस खड़ा था। क्रॉस के सामने तीन कब्रें थीं, जिन पर केवल गेलिक भाषा में लिखा हुआ था। कब्रों के आगे पहाड़ी धीरे-धीरे दूर स्थित केरी तट की ओर ढलान पर जा रही थी।

मौसम बारिश वाला हो गया था और आसमान में काले बादल छाए हुए थे।

मैंने सिबिल को आगे आने के लिए कहा, और इससे पहले कि उसे जमीन पर लगी संगमरमर की पट्टियों को देखने का मौका मिलता, मैंने उससे इस तीर्थस्थल के बारे में उसकी राय पूछी।

“यहाँ शांति है, लेकिन केवल बाहरी तौर पर। मेरे दाहिनी ओर दूर एक पुरानी इमारत दिखाई देती है। मुझे लगता है कि इसका इस जगह से कोई संबंध है। यह एक दुखद, निराशाजनक जगह है, जहाँ बहुत दुख और बेबसी है—यहाँ कुछ तो घटित होना ही था। यहाँ मानसिक पीड़ा है।”

“क्या यहाँ किसी की मृत्यु हुई थी?” मैंने कहा। सिबिल आगे बढ़ी और कब्रों की ओर देखने लगी।

“हाँ,” उसने तुरंत उत्तर दिया, “जैसा कि आप स्वयं देख सकते हैं, शिलालेख गेलिक भाषा में हैं और मुझे गेलिक समझ नहीं आती, लेकिन मुझे लगता है कि यह चालीस साल पहले, चालीस से पचास साल पहले की बात है—वहाँ लड़ाई हुई थी, और यह अप्रत्याशित थी। मेरे दाहिनी ओर से फिर से कुछ घातक संघर्ष हुआ जिसमें कई लोगों की मृत्यु हुई—”

“कितने लोग?”

"मुझे दो दिख रहे हैं," सिबिल ने जवाब दिया, और मुझे तुरंत यह बात समझ में आ गई कि उसे इस तथ्य की जानकारी नहीं थी कि इस स्थान पर आई.आर.ए. के दो जवान शहीद हो गए थे।

"क्या यहाँ अभी भी किसी की उपस्थिति है?"

“ये दोनों, क्योंकि मुझे इन्हीं लोगों से जुड़ाव महसूस होता है। क्यों, मुझे नहीं पता, लेकिन फिर से, मेरे दाहिनी ओर की इमारत लोगों और मुझे भी दिलचस्प लगती है। दो आदमी। शायद वे किसी चीज़ की रखवाली कर रहे हैं। इस इलाके में कुछ तो है जिस पर नज़र रखी जाती है, हमेशा ग्रामीण इलाकों पर नज़र रखी जाती है। शायद उन्हें ग्रामीण इलाकों पर नज़र रखनी पड़ती थी और अभी भी रखनी पड़ती है!”

मैंने कहा, "बिल्कुल," और गश्ती दल को सौंपी गई जिम्मेदारी के बारे में सोचा - ग्रामीण इलाकों पर नजर रखना।

सिबिल ने एक पल के लिए अपनी आंखें बंद कर लीं।

मैंने पूछा, "इतने समय बाद भी वे यहाँ क्यों हैं?"

“हां,” उसने जवाब दिया, “यह आज भी उनके लिए उतना ही महत्वपूर्ण है जितना उस समय था।”

लेकिन अब देश में शांति है।

"मुझे नहीं लगता कि देश के इस विशेष हिस्से में शांति है," सिबिल ने पलटवार किया, और मैं निश्चित रूप से जानता था कि आई.आर.ए. अभी खत्म होने से बहुत दूर है, खासकर ग्रामीण क्षेत्रों में।

"क्या आपको इन आदमियों के नाम पता चले?"

नहीं, लेकिन मैं उनका वर्णन कर सकता हूँ। एक हट्टा-कट्टा आदमी है, जिसका चेहरा खुरदुरा है, देहाती लगता है, या शायद मजबूरी में देहात में रहने को मजबूर हुआ है, साफ-सुथरा नहीं है, लगता है कहीं छिपा हुआ था; उसकी गर्दन मोटी है, आँखें भूरी हैं, लगभग पाँच फुट आठ इंच लंबा है। उसके साथ कोई और भी है, रिश्तेदार नहीं, लेकिन वे कुछ समय से साथ हैं। दाईं ओर वाली इमारत का उनसे कुछ संबंध है।

सड़क से लगभग सौ गज पीछे पहाड़ी पर एक छोटा सा घर था।

"सिबिल, इन आदमियों ने कौन से कपड़े पहने हैं?"

“मुझे वर्दी तो नहीं दिख रही,” उसने जवाब दिया, “बिल्कुल साधारण पोशाक, पतलून।”

"क्या वे नियमित सैनिक हैं?"

“नहीं—लगभग पैंतालीस साल पहले के साधारण कपड़े।”

इससे यह वर्ष 1920 हो जाएगा—जो कि 1918 के काफी करीब है, जिस वर्ष पैट्रिक मैलोनी को यहां भूतिया अनुभव हुआ था।

क्या वे सैन्य संगठन के अलावा किसी अन्य संगठन में भी कार्यरत हैं?

"कुछ परोस रहे हैं, लेकिन मुझे नहीं पता क्या। वर्दी नहीं पहनी है, लेकिन वे सेवा कर रहे हैं।"

“तो फिर वे किस प्रकार सेवा कर रहे हैं, किन साधनों से?”

“कुछ शोर हुआ। मुझे लगता है उन्हें गोली लगी है। एक को कंधे में, दिल के पास गोली लगी है।”

"क्या हम किसी भी तरह से उनकी मदद कर सकते हैं?"

“पता नहीं क्यों, ये जगह ऐसी है जैसे यहाँ से कोई हमेशा निगरानी रखता हो। ये निगरानी चलती रहनी चाहिए। मुझे नहीं पता क्यों उन्हें निगरानी रखनी पड़ती है। लेकिन उन्हें रखनी पड़ती है।”

क्या वे वर्तमान से अवगत हैं?

“मुझे ऐसा नहीं लगता। मैंने जिस बात का वर्णन किया है, वह दूसरी बात से कहीं अधिक स्पष्ट है। शायद वह नेतृत्व कर रहा था। यहाँ चुप्पी बनाए रखना आवश्यक है।”

फिर मैंने सिबिल से कहा कि वह उन दोनों पुरुषों को सूचित करे कि युद्ध बहुत पहले समाप्त हो चुका है और उन्हें अपने परिवारों के पास घर लौट जाना चाहिए, वास्तव में, उन्हें ड्यूटी से मुक्त कर दिया गया था।

सिबिल ने उन्हें यह बताया और यह भी कि अब चौराहा सुरक्षित है। उन्होंने अपना काम बखूबी कर दिया था।

“कोई प्रतिक्रिया?” मैंने कुछ देर बाद पूछा।

"मुख्य व्यक्ति अभी भी खड़ा है," सिबिल ने बताया, "लेकिन दूसरा व्यक्ति अब चला गया है।"

मैंने फिर से सिबिल से उस आदमी को भगा देने के लिए कहा।

"उसका नाम पैट्रिक है," सिबिल ने कहा, और बाद में मैंने जमीन पर लगे सबसे बड़े पैनल में नाम की जाँच की - यह पैड्रिक ही था।

कुछ देर बाद सिबिल ने कहा, "मुझे लगता है कि वह अब दाईं ओर जाता है—दाईं ओर क्या था?"

मैंने सच कहा, "मुझे नहीं पता।"

पहाड़ी से आधा मील ऊपर, खंडहर हो चुका घर खामोशी से खड़ा था।

“उन्हें वहीं वापस जाना पड़ा। अब वह जा चुका है। कुछ भी नहीं बचा है।”

और इस तरह आखिरकार आई.आर.ए. के वे दो रहस्यमय जवान लंबी छुट्टी पर घर चले गए।

*128

आखिरी सवारी

कोरोनैडो बीच दक्षिणी कैलिफ़ोर्निया में सैन डिएगो से कुछ ही दूरी पर स्थित एक रमणीय समुद्रतटीय रिसॉर्ट है। यहाँ मुख्य भूमि से फेरी द्वारा पहुँचा जा सकता है और यह यात्रा अपने आप में ही यादगार है। इसमें लगभग पंद्रह मिनट लगते हैं, फिर आप कार या पैदल चलकर छोटे-छोटे घरों वाले एक कस्बे में पहुँचते हैं, जहाँ न तो कोई भव्य घर है और न ही कोई बदसूरत - कैलिफ़ोर्निया की गर्म धूप से सुहावना नहाया हुआ, प्रशांत महासागर की लहरें समुद्र की ओर से ज़ोरदार ढंग से टकराती हुई और लैगून के भीतर एक संकरे जल निकाय द्वारा शांत किया हुआ।

कोरोनैडो बीच में सबसे महत्वपूर्ण चीज अमेरिकी नौसेना है; या तो आप नौसेना में हैं और यहां तैनात हैं, या आप किसी न किसी रूप में उनके लिए काम करते हैं: सीधे तौर पर, एक नागरिक के रूप में, या अप्रत्यक्ष रूप से नौसेना में कार्यरत और यहां रहने वाले लोगों के माध्यम से जीविका कमाकर।

श्रीमती फ्रांसिस जोन्स, सिडनी, ओहियो के एक समाचार पत्र के विज्ञापन प्रबंधक की पत्नी हैं, जो मध्यपश्चिम में कई वर्षों के बाद कोरोनैडो लौट आए हैं। वह कॉलेज की शिक्षा प्राप्त और औसत से अधिक बुद्धिमान युवती हैं, और उनकी पृष्ठभूमि एंग्लो-सैक्सन और ऑस्ट्रियाई मिश्रित है। उनके पिता नौसेना में एक गोताखोर बमवर्षक विमान का परीक्षण करते हुए वीर शहीद हो गए, जिससे उनकी माता कम उम्र में ही विधवा हो गईं।

ग्लोरिया जोन्स की शादी काफी कम उम्र में हो गई थी, और जब उनके पति ने सिडनी, ओहियो में विज्ञापन प्रबंधक की नौकरी ली, तो वह भी उनके साथ चली गईं। कुछ वर्षों बाद, नौकरी कम आकर्षक लगने लगी, और जोन्स परिवार वापस कोरोनैडो लौट आया, जहाँ जोन्स ने नौसेना में काम करना शुरू कर दिया।

उनकी एक तेरह साल की बेटी है, विक्की, और वे एक खुशहाल, सुव्यवस्थित जीवन जीते हैं; श्री जोन्स सिक्के इकट्ठा करते हैं और श्रीमती जोन्स रंग-बिरंगे फूलों से भरे बगीचे से घिरे अपने ईंट के घर को सजाना पसंद करती हैं।

जनवरी के एक दिन, श्रीमती जोन्स मुझसे मिलने आईं ताकि मैं उनके शांत जीवन में घट रही कुछ बेहद असामान्य घटनाओं को समझने में उनकी मदद कर सकूँ। कभी-कभार आने वाले सच्चे सपनों को छोड़कर, उनका किसी भी तरह के तांत्रिक से कोई संपर्क नहीं था और उन्होंने इसमें ज़रा भी दिलचस्पी नहीं दिखाई थी, जब तक कि वे घटनाएँ घटित नहीं हुईं जिन्होंने उनकी शांति भंग कर दी। यहाँ तक कि जब उन्होंने अपने दिवंगत पिता को एक सफेद धुंधले बादल में देखा था, वह भी शायद एक सपना ही था। उस समय वह केवल दस वर्ष की थीं, और बाद में उन्होंने इसे एक सपना ही मानना बेहतर समझा। लेकिन जिन अनुभवों के बारे में वह मुझसे मिलने आई थीं, वे सपने की श्रेणी में नहीं आते थे। इसके अलावा, जब कुछ असाधारण घटनाएँ घटीं, तब उनके पति और एक मित्र भी वहाँ मौजूद थे।

कैथलीन डफी, कॉन्वेयर कंपनी में काम करने वाले एक व्यक्ति की बेटी थी। उसके पिता की मृत्यु हो चुकी थी और कैथलीन उसकी लाडली थी। दुर्भाग्य से, उसकी बेटी कैथलीन में कुछ कमियां भी थीं; वह बहुत जिद्दी बच्ची थी। उसके पिता ने उसे ओशनसाइड के एक कैथोलिक स्कूल में भेजा था, लेकिन वह दो बार भाग गई; दूसरी बार भागने के बाद उसे "जिम्मेदार" बच्चों के लिए बने एक गृह में भेजना पड़ा।

ग्लोरिया जोन्स और कैथलीन की मुलाकात तब हुई जब दोनों किशोर थीं। उनकी माँ विधवा थीं और श्री डफी भी विधुर थे, इसलिए माता-पिता में कुछ समानताएँ थीं। दोनों लड़कियाँ गहरी दोस्त बन गईं और दोनों को उम्मीद थी कि शायद उनके माता-पिता के विवाह के माध्यम से वे बहनें बन जाएँगी, लेकिन ऐसा नहीं हुआ।

जब कैथलीन को सैन डिएगो के सुधार गृह, एंथोनी होम भेजा गया, तो ग्लोरिया को सचमुच बहुत दुख हुआ। उस समय कैथलीन लगभग सोलह वर्ष की थी। हालाँकि वे फिर कभी नहीं मिलीं, कैथलीन ने ग्लोरिया को कुछ बार फोन किया। ज़ाहिर है, वह अपने नए माहौल में खुश नहीं थी, लेकिन इस बारे में दोनों लड़कियाँ कुछ खास नहीं कर सकती थीं।

बढ़ती निराशा में डूबी कैथलीन ने फिर से भागने की कोशिश की, लेकिन सफल नहीं हुई। फिर एक दिन, उसने और उसकी रूममेट जून रोबेसन ने अपनी असंतुष्टि की ओर ध्यान आकर्षित करने के लिए कुछ बड़ा कदम उठाने का फैसला किया। उन्होंने अपने कमरे में आग लगा दी, इस उम्मीद में कि आग की अफरा-तफरी में वे बच निकलेंगी।

जलते हुए पलंगों से उठता धुआँ जैसे-जैसे घना होता गया, वे भयभीत हो गए। उनका कमरा हमेशा बंद रहता था, और अब वे दरवाजा पीट-पीटकर बाहर निकलने की गुहार लगाने लगे।

अस्पताल की अटेंडेंट आई और उसने स्थिति का जायजा लिया। लड़कियाँ शुरू से ही उसके लिए परेशानी का सबब थीं। उसने उन्हें एक ऐसा सबक सिखाने का फैसला किया जो उसे लगता था कि कभी भुलाया नहीं जा सकेगा। और ऐसा ही हुआ। जब कैथलीन धुएं के कारण बेहोश हो गई, तब जाकर अटेंडेंट ने दरवाजा खोला। रोबेसन की लड़की की जान बच गई, लेकिन कैथलीन डफी की अगले दिन अस्पताल में मौत हो गई।

जब यह मामला सार्वजनिक हुआ, तो स्थानीय समाचार पत्रों ने एंथोनी होम की जांच की मांग की। होम की मेट्रन और मैनेजर ने इसकी प्रतीक्षा नहीं की। वे मैक्सिको भाग गए और तब से उनका कोई पता नहीं चला है।

धीरे-धीरे ग्लोरिया उस त्रासदी को भूलने लगी। दो साल बीत गए और प्रेमिका की छवि उसकी स्मृति से धुंधली पड़ गई।

एक दिन वह और उसकी एक दोस्त, जैकी सडथ नाम की एक लड़की, कोरोनैडो में समुद्र तट के पास खड़ी थीं, जो एक धूपदार, हवादार सड़क है जहाँ से आप प्रशांत महासागर या कोरोनैडो बीच बनाने वाले घरों की व्यवस्थित पंक्तियों को देख सकते हैं।

गाड़ियाँ तेज़ी से गुज़र रही थीं और दोनों लड़कियाँ सड़क के उस पार यूँ ही देखती हुई खड़ी थीं। तभी एक गाड़ी नज़र आई जिसे एक युवक चला रहा था और उसके बगल में एक युवती बैठी थी जो ग्लोरिया को जानी-पहचानी सी लगी। उसने उसे कंधों से ऊपर तक ही देखा था, लेकिन जैसे ही गाड़ी पास से गुज़री, ग्लोरिया समझ गई कि वह कैथलीन है। स्तब्ध होकर उसने गाड़ी को दूर जाते हुए देखा।

“क्या तुम उस लड़की को जानती थी?” उसकी दोस्त जैकी ने पूछा।

"क्यों नहीं?"

“उसने तुम्हारा नाम लिया,” उसकी सहेली ने बताया।

ग्लोरिया ने चुपचाप सिर हिलाया। उसने भी यह देखा था। बिना कुछ बोले, गुजरती हुई कार में बैठी लड़की ने अपने होठों से "ग्लो-री-आ" शब्द के अक्षर बनाए थे।

कई हफ्तों तक ग्लोरिया उस घटना को अपने दिमाग से निकाल नहीं पाई। इसका कोई तर्कसंगत कारण नहीं था, और फिर भी ऐसा कैसे हो सकता था? कैथलीन को मरे हुए दो साल हो चुके थे।

कई साल बीत गए, फिर एक अजीब घटना ने सारा मामला उसके ध्यान में फिर से ला दिया। बारह साल बाद, नए साल की पूर्व संध्या थी। अब वह शादीशुदा थी और उसकी एक बेटी थी। जैसे ही वह रसोई में दाखिल हुई, वह वहीं जम गई: एक कटोरा अपने आप ही वामावर्त दिशा में घूमता हुआ रसोई में आगे बढ़ रहा था।

उसने अपने पति और बेटी को जल्दी आने के लिए पुकारा। उसकी बेटी की सहेली, तेरह वर्षीय शेरिल कोन्ज़, सबसे पहले रसोई में पहुँची। उसने भी कटोरे को घूमते हुए देखा। जब तक मिस्टर जोन्स पहुँचे, तब तक वह असामान्य रूप से घूमना बंद कर चुका था।

रात के खाने के दौरान, चर्चा का मुख्य विषय स्वतः चलने वाला कटोरा था। अपने परिवार को चिढ़ाने के लिए, न कि किसी दृढ़ विश्वास से, श्रीमती जोन्स ने कहा, "अगर यहाँ कोई है, तो मोमबत्ती बुझा दो।" और तुरंत ही मोमबत्ती बुझ गई।

उसके बाद सन्नाटा छा गया, क्योंकि हवा का कोई ऐसा झोंका मौजूद नहीं था जो मोमबत्ती के अचानक बुझने का कारण बन सके।

अगली गर्मियों में, श्रीमती जोन्स अपनी रसोई में चॉकलेट पुडिंग बना रही थीं। जब उन्होंने इसे तीन कटोरों में से एक में डाला, तो वह कटोरी अपने आप घूमने लगी। इस बार उनके पति ने भी इसे देखा। उन्होंने इसका कारण बगल के कमरे में चल रही ट्रेन या वॉशिंग मशीन के कंपन को बताया। लेकिन बाकी दो कटोरियाँ क्यों नहीं हिलीं?

अंत में यह सोचते हुए कि कहीं उसकी दिवंगत मित्र कैथलीन, जो हमेशा से ही शरारती स्वभाव की थी, इस सब का कारण तो नहीं है, वह अगले झटके का इंतजार करने लगी।

अगले साल नए साल के दिन, उसने अपने फ्रिज से एक कोक की बोतल निकाली और उसे काउंटर पर रख दिया। फिर उसने बोतल की तरफ पीठ करके कुछ बर्फ लेने के लिए फ्रिज की ओर रुख किया। इसमें बस कुछ ही पल लगे। जब वह काउंटर पर लौटी, तो कोक की बोतल गायब हो चुकी थी।

अपनी लापरवाही के लिए खुद को कोसते हुए, उसने सोचा कि वह बोतल को फ्रिज में ले गई थी और वहीं छोड़ आई थी। उसने जाँच की तो वहाँ कोक नहीं थी।

“क्या मैं पागल हो रही हूँ?” उसने सोचा और कोक का डिब्बा उठाया। उसमें पाँच बोतलें थीं। छठी बोतल कभी नहीं मिली।

चूंकि ये बाद की घटनाएं उन तीन वर्षों के दौरान घटीं जब वे सिडनी, ओहियो में रहते थे, इसलिए यह स्पष्ट था कि कैथलीन डफी की चंचल आत्मा उनका पीछा कहीं भी कर सकती थी - अगर वह वास्तव में वही थी।

उसी साल मई के अंत में, कोरोनैडो में वापस आकर, श्रीमान और श्रीमती जोन्स ने अपनी आँखों के सामने ब्रेडबॉक्स से रोटी को उछलते हुए देखा। उन्होंने रोटी रखने के बाद ब्रेडबॉक्स को बंद कर दिया था। कुछ ही क्षण बाद, वे ब्रेडबॉक्स के पास लौटे और उसे खुला पाया। जब वे अभी सोच ही रहे थे कि ऐसा कैसे हो सकता है, तभी रोटी उछलकर बाहर आ गई।

एक व्यावहारिक व्यक्ति होने के नाते, श्री जोन्स को तुरंत संदेह हुआ कि कहीं भूकंप तो नहीं आ रहा है। लेकिन ऐसा नहीं था। इसके अलावा, ऐसा प्रतीत हुआ कि उनके पड़ोसियों के ब्रेडबॉक्स सामान्य रूप से काम कर रहे थे।

उन्होंने एक बार फिर सिर हिलाया। लेकिन इस बार श्रीमती जोन्स ने मुझे एक पत्र भेजा।

3 जून को मैं जोन्स परिवार से मिलने सैन डिएगो गया। सिबिल लीक और मैंने भीषण गर्मी में सांता एना से बस की यात्रा की, लेकिन जोन्स परिवार ने हमें बस टर्मिनल से ले लिया और हमें एंथोनी होम ले गए, जहाँ कैथलीन की इतनी दुखद मृत्यु हुई थी।

स्वाभाविक रूप से सिबिल इन सब बातों से हैरान थी, जब तक कि उसकी आंतरिक शक्ति (ईएसपी) उसे यह न बता दे कि हम क्यों आए हैं। होश में रहते हुए, उसे कुछ भी पता नहीं था।

जब हम उस गृह में रुके, तो हमने देखा कि वह बंद था और वहाँ कोई भी नज़र नहीं आ रहा था। दिन धूप से भरा और गर्म था, और शांत वातावरण उस अतीत की यादों को झुठला रहा था जो शायद दुखद यादों से भरा था। पहले घटी अप्रिय घटनाओं के बाद, उस जगह को मानसिक रूप से विकलांग बच्चों के स्कूल में बदल दिया गया था और कई वर्षों तक उसी रूप में चलाया गया था। लेकिन फिलहाल, वह वीरान पड़ा था।

सिबिल चुपचाप परिसर में घूमती रही और उस जगह के माहौल को आत्मसात करती रही।

“मैंने कुछ सुना, शायद कोई नाम,” उसने अचानक कहा। “यह लो मास जैसा लग रहा है।”

इसके अलावा, कैथलीन की दुखद यादों से उसे कुछ भी महसूस नहीं हुआ। क्या कैथलीन ने ही उसके लिए प्रार्थना सभा आयोजित करने का अनुरोध किया था? एक कट्टर कैथोलिक के रूप में पली-बढ़ी होने के कारण, ऐसा विचार उसके लिए अपरिचित नहीं था।

गाड़ी चलाते हुए जब हम रवाना हुए तो सिबिल ने कहा, "जिस जगह से हम अभी-अभी निकले हैं, वहां एक तरह की बीमारी का एहसास होता है - जैसे बीमार लोगों के लिए कोई जगह हो, लेकिन अस्पताल नहीं।"

आखिरकार हम कोरोनैडो में ओशन एवेन्यू और लोमर ड्राइव के कोने पर पहुँचे, जहाँ ग्लोरिया जोन्स ने कैथलीन को कार में देखा था। पूरी यात्रा के दौरान, फेरी में और फिर कोरोनैडो द्वीप में वापस आते समय, हमने इस विषय पर बात करने से परहेज किया।

लेकिन अब हम पहुँच चुके थे और यह पता लगाने का समय था कि क्या सिबिल को इस जगह पर अभी भी कुछ महसूस हो रहा है।

“मुझे मृत्यु का आभास हो रहा है,” उसने धीरे-धीरे, अनिश्चितता से कहा। “धूप होने के बावजूद, यह मृत्यु का स्थान है।” उसने समझाया कि यहाँ किसी की उपस्थिति नहीं थी, बल्कि कोई यहाँ किसी दूसरे व्यक्ति का इंतज़ार करने आया था। हमारे आसपास का शोर—रविवार का दिन था—उसकी एकाग्रता में बाधा डाल रहा था।

“मुझे एक अनजान चेहरा दिख रहा है,” सिबिल ने आगे कहा। “कोई—एक आदमी, जिसके बाल बहुत कम हैं—जो इस जगह के लिए अजनबी है। मुझे उसके चेहरे के बगल में एक पुतली दिखाई दे रही है।”

क्या वह व्यक्ति उस प्रतीक का उपयोग शायद 'आयरिश' शब्द को व्यक्त करने के लिए कर रहा था? क्या वह कैथलीन का कोई पूर्वज था जो वहाँ से था?

मैंने श्रीमती जोन्स की ओर रुख किया।

“मुझे लगता है कि आपने यहाँ जो देखा, वह दो वाहन चालकों पर आपके दिवंगत मित्र की आत्मा की छवि का अध्यारोपण था। ऐसी चीजों को रूपान्तरण कहते हैं। मुझे यकीन है कि अगर कार रुक जाती, तो आपको उसमें कोई अजनबी मिलता। कैथलीन ने उसका इस्तेमाल इसलिए किया ताकि आप उसका जाना-पहचाना चेहरा देख सकें, मुझे लगता है।”

शायद कैथलीन डफी एक और सवारी करना चाहती थी, आजादी में एक आनंददायक सवारी, और अपनी उपलब्धि पर गर्व करते हुए, वह चाहती थी कि उसकी सबसे अच्छी दोस्त उसे ऐसा करते हुए देखे।

तब से जोन्स के घर में कोई और गड़बड़ी या शरारती घटना नहीं हुई है।

*129

सैन फ्रांसिस्को की भूत दुल्हन

सैन फ्रांसिस्को के नोब हिल स्थित फेयरमोंट होटल से कुछ ही दूरी पर, जहाँ लोकप्रिय टेलीविजन सीरियल 'होटल' की शूटिंग हुई थी, एक ऐसी जगह है जिसे कई लोग भूतिया मानते हैं। यहाँ कैलिफोर्निया स्ट्रीट पर, कुछ साल पुराने एक साधारण से अपार्टमेंट के सामने, फ्लोरा सोमरटन का भूत घूमता है। कई लोगों ने उस लड़की को, दुल्हन के गाउन में, लोगों के बीच से बेखबर होकर गुजरते देखा है, मानो वह उनसे और वे उससे बिल्कुल बेखबर हों। कुछ साल पहले, श्रीमती ग्वेन एच., जिनके साथ मैंने कई मामलों पर काम किया था, अपनी एक सहेली के साथ केबल कार में पहाड़ी पर जा रही थीं। दोनों महिलाओं ने दुल्हन के गाउन में उस अजीब लड़की को तेजी से चलते देखा, मानो वह किसी चीज या किसी व्यक्ति से भागने की कोशिश कर रही हो।

जहां नोब हिल की प्रेतवाधित दुल्हन को देखा गया था

और उसने ठीक यही करने की कोशिश की। सैन फ्रांसिस्को की एक संभ्रांत युवती, फ्लोरा सोमरटन, अठारह वर्ष की थी जब वह 1876 में एक रात अपने परिवार के नोब हिल हवेली से गायब हो गई। उस समय यह एक बड़ा सामाजिक घोटाला था: फ्लोरा ने अपने माता-पिता द्वारा उसके लिए चुने गए युवक से शादी करने से साफ इनकार कर दिया था।

फ्लोरा कभी वापस नहीं लौटी और न ही कभी मिली, व्यापक खोजबीन और उसकी वापसी या उससे जुड़ी जानकारी देने वाले को भारी इनाम की घोषणा के बावजूद। कई साल बीत गए और आखिरकार मामला भुला दिया गया। फ्लोरा के माता-पिता भी गुजर गए और 1926 में जाकर सच्चाई सामने आई। उसी साल फ्लोरा की मृत्यु मोंटाना के बट शहर के एक सस्ते होटल में हुई, तब भी वह अपनी शादी की पोशाक में ही थी। तब से उसे नोब हिल पर भटकते हुए देखा जाता है, मानो वह एक अवांछित शादी से बचने की बेताब कोशिश कर रही हो।

अगर आप देर रात को, जब यातायात कम हो, कैलिफोर्निया स्ट्रीट पर धीरे-धीरे चलेंगे, तो शायद आप भी 1876 की उस भोली-भाली लड़की से टकरा जाएं और अगर ऐसा हो, तो उसे जरूर बताएं कि अब जाने का समय आ गया है, और वह आखिरकार स्वतंत्र हो गई है।

प्रेतवाधित लोग

किसी व्यक्ति से जुड़ जाने वाले भूत से जुड़े वास्तविक मामले भूतिया घरों की तरह आम नहीं हैं, लेकिन ऐसे मामले होते हैं। ये किसी भी अर्थ में स्वतंत्र आत्माएं नहीं हैं, क्योंकि यह जुड़ाव एक ऐसी भावनात्मक समस्या को दर्शाता है जिसका पूरी तरह से समाधान नहीं हुआ है।

लेकिन भौतिक जगत में किसी व्यक्ति से जुड़ने वाली आत्मा या प्रेत को, पारंपरिक भूत-प्रेत की तुलना में, प्रकट होने या "प्रभावित होने" के अधिक अवसर मिलते हैं। इसलिए ऐसी घटनाएँ कई स्थानों पर घटित हो सकती हैं।

ये भूत, जो स्वतंत्र आत्माओं की तरह तर्कशील नहीं होते, गहरी समाधि अवस्था में भी संपर्क स्थापित कर सकते हैं। ऐसे में आत्माओं और जीवित लोगों के बीच संवाद काफी सौम्य और मैत्रीपूर्ण हो सकता है। हालांकि, जब आत्मा की कोई अनसुलझी समस्या हो या वह कोई मांग रखे, तो यह परेशान करने वाला हो सकता है और इसके लिए किसी विशेषज्ञ से परामर्श लेना आवश्यक है।

मैंने जिन मामलों की जांच की है उनमें निम्नलिखित शामिल हैं।

*130

वैलेरी के. की रहस्यमय मृत्यु

कभी-कभी मनोवैज्ञानिक जांचकर्ता होने के नाते व्यक्ति पर भारी नैतिक बोझ आ जाता है, खासकर तब जब किसी की मृत्यु को रोकने की संभावना हो। बेशक, आप कभी भी निश्चित नहीं हो सकते कि आप ऐसा कर सकते हैं। उदाहरण के लिए, वैलेरी के. का मामला लें। मैं उनका पूरा नाम नहीं ले रहा हूँ क्योंकि मामला अभी तक सुलझा नहीं है। पुलिस इस बारे में बात नहीं करना चाहती, लेकिन उनके दोस्त पूरी तरह आश्वस्त हैं कि उनकी मृत्यु के पीछे

कुछ रहस्यमय है, और वे इस बारे में बात करेंगे। वे मुख्य रूप से मुझसे बात करते हैं, क्योंकि फिलहाल वे इसके अलावा और कुछ नहीं कर सकते।

शुरुआत से बताऊं तो, एक अप्रैल में मुझे शीला एम. का फोन आया—एक अंग्रेज महिला, जिनसे मेरी मुलाकात एक आपसी दोस्त के जरिए हुई थी—उन्होंने मेरी पत्नी और मुझे न्यूयॉर्क के ईस्ट साइड स्थित अपने घर पर कॉकटेल पार्टी में आमंत्रित किया। अब अगर कोई एक चीज है जिससे मेरी पत्नी और मैं नफरत करते हैं, तो वह है कॉकटेल पार्टियां, चाहे ईस्ट साइड में ही क्यों न हों, लेकिन शीला एक अच्छी इंसान हैं और हमने सोचा कि उनके दोस्त भी अच्छे ही होंगे, इसलिए मैंने हां कर दी। पार्टी 20 अप्रैल को थी, और जब हम पहुंचे तो सब लोग पहले से ही वहां मौजूद थे, पी रहे थे और बातें कर रहे थे, जबकि बटलर चुपचाप मेहमानों के बीच घूम-घूम कर उनकी जरूरतों का ख्याल रख रहा था।

चूंकि मैं शराब नहीं पीता, इसलिए मैंने अपनी पत्नी को शीला से बात करने दिया और धीरे-धीरे ऐपेटाइज़र (हल्के-फुल्के स्नैक्स) की ओर चला गया, उम्मीद थी कि मुझे पनीर के कुछ टुकड़े मिल जाएंगे, क्योंकि मैं शाकाहारी हूं और मांस या मछली नहीं खाता। बुफे टेबल के बगल में मुझे न केवल एक खाली कुर्सी मिली, जो कॉकटेल पार्टी में असामान्य बात थी, बल्कि एक सुंदर युवती भी मिली जिसने चमकदार चांदी की ओरिएंटल शैली की पोशाक पहनी हुई थी। वास्तव में, वह युवती खुद चीनी थी, बेहद प्रभावशाली दिखने वाली, शायद लगभग पच्चीस वर्ष की, भूरे बालों, गहरी आंखों वाली और शांत, सलीकेदार स्वभाव की। पता चला कि लड़की का नाम वैलेरी के. था, और शीला ने उसे मानसिक अनुसंधान में मेरी रुचि के बारे में बताया था, तब फोन पर मेरी उससे संक्षिप्त मुलाकात हुई थी, और वह मुझे अपने कुछ अनुभव बताना चाहती थी।

हम दोनों की ईएसपी (अंतर्दृष्टिकोणीय संवेदनशीलता) में रुचि के बारे में बातचीत करने लगे। उसकी आवाज़ में उदासी झलक रही थी, मानो कोई बात उसे परेशान कर रही हो, लेकिन मुझे लगा कि वह अपनी समलैंगिकता को स्वीकार करने और पार्टी के आनंद को कम न होने देने के लिए दृढ़ संकल्पित थी। मैं जानती थी कि वह शीला की अच्छी दोस्त थी और मैं उसके लिए कुछ भी बिगाड़ना नहीं चाहती थी। लेकिन मैंने और गहराई से जानने की कोशिश की,

कहीं न कहीं मुझे महसूस हुआ कि उसे मदद की ज़रूरत है। मेरा अनुमान सही निकला, और उसने मुझसे पूछा कि क्या वह कभी मुझसे अकेले में बात कर सकती है।

पार्टी में कई उत्सुक युवक मौजूद थे जिनकी निगाहें उस पर टिकी थीं, इसलिए मैंने सोचा कि उसका समय बर्बाद करना उचित नहीं होगा, क्योंकि मुझे पता था कि वह अविवाहित है। मैंने उसे अपना फ़ोन नंबर दिया और उससे कहा कि वह जब चाहे मुझे कॉल कर सकती है।

लगभग एक घंटे बाद हम पार्टी से निकले, और घर पहुँचकर मैंने उस महिला को फोन करके यह जानने की इच्छा को दबा लिया कि वह ठीक है या नहीं। मैंने अपनी इस भावना को अनावश्यक भावुकता समझकर दबा दिया, क्योंकि वह महिला बेहद खुश लग रही थी, और निश्चित रूप से उसके मुझसे मिलने की वजह व्यक्तिगत नहीं बल्कि मानसिक ही होगी।

पूरे सप्ताहांत मैं उसे अपने दिमाग से निकाल नहीं पाया, लेकिन मैं अन्य कामों में व्यस्त था और मैंने अगले सप्ताह सुबह सबसे पहले उसे फोन करने का फैसला किया।

सोमवार रात, जब मैं डेली न्यूज़ पढ़ रहा था, तो मेरी नज़र अखबार के अंदर छिपे एक छोटे से लेख पर पड़ी, जिसमें कुछ घंटे पहले हुई दो महिलाओं की मौत के बारे में बताया गया था। अखबार मंगलवार सुबह का था। मौतें सोमवार तड़के हुई थीं। उन दो महिलाओं में से एक वैलेरी के. थीं।

सिहरन के साथ मैंने कागज नीचे रख दिया और अपनी आंखें बंद कर लीं।

क्या मैं उसकी मृत्यु को रोक सकता था? इसका फैसला आप ही करें। लेकिन पहले मैं आपको दिखाता हूँ कि इस लड़की के जीवन के अंतिम क्षणों में क्या हुआ। हर शब्द सच है...

वैलेरी के. हवाई में रहने वाले एक संपन्न चीनी परिवार से थीं। बोलने में वह किसी भी अन्य अमेरिकी की तरह ही थीं, फिर भी उनके शब्दों के संयोजन में एक ऐसी अनूठी विशेषता थी जो पूर्वी विचारों की झलक देती थी। हांगकांग के एक व्यवसायी से नाखुशहाल और अल्पकालिक विवाह के बाद, वह न्यूयॉर्क शहर में स्वतंत्र जीवन जीने की कोशिश करने आईं। अपने माता-पिता से कभी विशेष रूप से करीबी रिश्ता न रखने वाली वैलेरी अब पूरी तरह आत्मनिर्भर थीं और उन्हें नौकरी की आवश्यकता थी। उन्हें एक ऐसी नौकरी मिली जिसे अस्पष्ट रूप से जनसंपर्क सहायक के रूप में वर्णित किया गया था, लेकिन वास्तव में वह उस व्यक्ति की सचिव थीं जो कंपनी के लिए प्रचार का काम करता था। किसी तरह न तो वह इस

नौकरी के लिए उपयुक्त थीं और न ही यह नौकरी उनके लिए, और अंततः दोनों के रास्ते अलग हो गए।

उनकी जगह नियुक्त की गई नई व्यक्ति शीला थीं। हालांकि उस अंग्रेज महिला ने उनकी जगह ली थी, फिर भी दोनों के बीच गहरी दोस्ती हो गई जो एक-दूसरे के प्रति सच्चे लगाव में बदल गई, इतनी गहरी कि वैलेरी शीला से दूसरों की तुलना में कहीं अधिक खुलकर अपने मन की बातें साझा करती थीं।

जब वैलेरी ने दफ्तर छोड़ा, तो उसके लिए कोई नौकरी नहीं थी; सौभाग्य से, उसकी मुलाकात उसी कंपनी के स्वामित्व वाली एक फर्म के प्रबंधक से हो गई, और प्रबंधक, जिसका नाम 'जी' से शुरू होता था, ने कुछ स्वार्थी कारणों से उसे नौकरी पर रख लिया। वह सुंदरता को परखने में माहिर था और वैलेरी कुछ खास थी। इस तरह उसे कहीं और इसी तरह की नौकरी में मिलने वाले वेतन से कहीं अधिक वेतन मिलने लगा। जल्द ही प्रबंधक ने उसे यह जता दिया कि वह उसे पसंद करता है और वैलेरी भी उसे पसंद करने लगी। उसकी मृत्यु से पहले वाले वर्ष के अगस्त और अक्टूबर के बीच, वे घनिष्ठ मित्र बन गए।

लेकिन उसी साल अक्टूबर में उसने अपनी सहेली शीला को फोन करके अपने साथ हुए अपमान की कड़ी शिकायत की। जी. ने उसकी जगह किसी और महिला को रख लिया था। अनजाने में ही, नई महिला, लिन, मैनेजर और चीनी सुंदरी के बीच चल रहे घातक खेल में मोहरा बन गई।

जी. ने उसकी शक्ल-सूरत और उसके हर काम में खामी निकाली, उसकी आलोचना की और उसे अपमानित किया—यह एक महत्वपूर्ण मामला है जिसे आसानी से भुलाया नहीं जा सकता।

फिर भी, वह उस आदमी की परवाह करती थी और उम्मीद करती थी कि वह फिर से उसके प्रति अपना पुराना स्नेह दिखाएगा। लेकिन ऐसा नहीं हुआ, और शीला के साथ एक दुखद क्रिसमस मनाने के बाद, आखिरकार उसे नौकरी से निकाल दिया गया। उसने उसे नौकरी से निकाल दिया और दो सप्ताह का वेतन देकर उसके भविष्य के लिए शुभकामनाएं दीं।

जब शीला को इस बारे में पता चला तो उसने वैलेरी को बेरोज़गारी कार्यालय में पंजीकरण कराने का सुझाव दिया। लेकिन वैलेरी ने इसके बजाय नींद की गोलियां खा लीं। हालांकि, या

तो उसने पर्याप्त गोलियां नहीं लीं या समय रहते अपना इरादा बदल लिया, क्योंकि वह शीला को फोन करके अपनी गलती बताने में कामयाब रही। डॉक्टर को बुलाया गया और उसकी जान बच गई। इसके बाद उसने मनोचिकित्सक से परामर्श लिया और वह पहले से कहीं अधिक खुशमिजाज लग रही थी।

लेकिन अपमान और अस्वीकृति की भावना उसके भीतर उबलती रही। जिस व्यक्ति के प्रेम को ठुकरा दिया गया हो, उससे अधिक साहसी कोई नहीं हो सकता, और एक दिन वैलेरी ने उन कंपनियों के मालिक को एक निजी पत्र लिखा, जिनमें उसने कभी काम किया था, और प्रबंधक और उसके काम की निंदा की।

मानो उसकी नफरत से पोषित होकर, उसकी मानसिक क्षमताएं बढ़ गईं और उसने पाया कि वह टेलीपैथी के माध्यम से लोगों को प्रभावित करने, दूसरों के विचारों को पढ़ने और ध्यान के एक रूप के माध्यम से खुद को उत्तेजना की स्थिति में लाने में सक्षम थी।

यह सब निश्चित रूप से न केवल प्रबंधक से बल्कि उस दुनिया से भी बदला लेने के उद्देश्य से किया गया था जिसने उसे अक्सर चोट पहुंचाई थी।

किसी को पक्का पता नहीं था कि उसे अपने पत्र का जवाब मिला भी था या नहीं। लेकिन वह अपने अपार्टमेंट के पास एक चीनी रेस्टोरेंट में नियमित रूप से जाती थी और वहां के मालिकों से उसकी अच्छी दोस्ती हो गई थी। वहां वह अपनी योजनाओं के बारे में बात करती थी और बताती थी कि वह दुनिया को दिखाएगी कि वह किस तरह की महिला है।

इसी बीच मैनेजर को कर्मचारियों की कमी महसूस हुई और उसने उसे वापस बुला लिया। उस आदमी के प्रति अपनी गहरी नफरत के बावजूद, वह वापस चली गई, और लगातार योजनाएँ बनाती रही और उम्मीद करती रही कि उसकी किस्मत पलटेगी। लेकिन उसने शीला को बताया कि उसने एक बड़ा जोखिम उठाया है, और अगर यह सफल रहा तो वह कई मायनों में ठीक हो जाएगी। रेस्टोरेंट के मालिक ने उसे शुक्रवार, 21 अप्रैल को देखा - उस पार्टी के एक दिन बाद जहाँ मैं उससे पहली बार मिला था - और वह असामान्य रूप से खुश लग रही थी।

उसने उससे कहा कि वह एक प्रतिष्ठित यूरोपीय व्यक्ति से शादी करेगी; उससे पूछा गया था और वह हाँ कह देगी। उस समय वह लगभग इस इच्छा से ग्रस्त थी कि वह पूरी दुनिया को

बताए कि वह उससे शादी करेगी; हवाई में उसके माता-पिता को एक पत्र मिला जिसमें उनसे अनुरोध किया गया था कि पेरिस में उसके लिए पारंपरिक चीनी शादी के वस्त्र तैयार करवाए जाएं क्योंकि उसकी शादी जल्द ही होने वाली थी। क्या जी से बदला लेने के विचार ने उसे भ्रमित कर दिया था? इसका आकलन करना कठिन है, क्योंकि इसमें शामिल मुख्य व्यक्ति स्वाभाविक रूप से इस बारे में बात नहीं करेंगे, और मैं भी यही चाहता हूँ कि यहाँ उनके नाम गुप्त रखे जाएँ।

उस सप्ताहांत—22 और 23 अप्रैल—उसकी शादी की दीवानगी बढ़ती ही जा रही थी। एक पड़ोसी जो उससे मिलने उसके अपार्टमेंट में गई, उसने उसे केवल बिकिनी पहने और खूब शराब पीते हुए पाया। उसने देखा कि वह बार-बार अपने फोन से उस विदेशी आदमी से संपर्क करने की कोशिश कर रही थी जिससे उसने शादी करने का वादा किया था। लेकिन उससे बात नहीं हो पा रही थी। इसी बीच, उसने अपनी चीजें दान करना शुरू कर दिया, यह कहते हुए कि अब उसे उनकी जरूरत नहीं है क्योंकि वह इतने अमीर आदमी से शादी करने जा रही है।

उसने उन सभी लोगों की एक सूची भी तैयार कर ली जिनकी वह करोड़पति की पत्नी बनने के बाद मदद करेगी। पड़ोसी यह सब देखकर काफी परेशान हो गया और वैलेरी अपने अपार्टमेंट में अकेली रह गई—या क्या वह सच में अकेली थी?

सुबह के 4 बजे पुलिस को उसके फोन से एक कॉल आई। यह अत्यधिक शोर की शिकायत थी। जब एक अधिकारी (जिसका नाम McG. था) सुबह 4:20 बजे घटनास्थल पर पहुंचा, तो वैलेरी ने खुद नग्न अवस्था में दरवाजा खोला।

“चले जाओ,” उसने कहा और उसे अकेला छोड़ने का अनुरोध किया। अधिकारी ने तुरंत स्थिति का जायजा लिया। वह अभद्र हो गई और बताया कि वह एक फोन कॉल की प्रतीक्षा कर रही थी और परेशान नहीं होना चाहती थी। अधिकारी ने बताया कि वह अकेली थी और शराब पी रही थी, और मामला यहीं समाप्त हो गया।

समय बीतता जा रहा था। यह सोमवार, 24 अप्रैल की सुबह का समय था।

ठीक सुबह 5 बजे, भवन अधीक्षक ने अपनी खिड़की से बाहर देखा और पाया कि कोई भारी चीज उसकी छत पर गिर गई है।

घटनास्थल पर पहुँचते ही उसने वैलेरी का क्षत-विक्षत शरीर देखा। उसकी तुरंत मृत्यु हो गई थी। महिला अपने साथ दो गुलाब ले गई थी—लेकिन उनमें से एक किसी तरह खुली खिड़की की चौखट पर ही रह गया, जहाँ से वह गिरकर मर गई थी। दूसरा गुलाब भी उसी के साथ दुखद रूप से ज़मीन पर गिर पड़ा।

पुलिस अधिकारी उम्मीद से कहीं जल्दी अपार्टमेंट में वापस पहुँच गए, लेकिन इस बार कार्रवाई का एक ठोस कारण था। लड़की के दसवें तल पर स्थित अपार्टमेंट की नियमित जाँच के बाद, उसकी मौत को दुर्घटना या खिड़की से गिरने या कूदने से आत्महत्या माना गया। चूंकि उसने बहुत अधिक शराब पी रखी थी, इसलिए पुलिस को यह पक्का पता नहीं चल पाया कि मौत का असली कारण क्या था।

सोमवार रात शीला ने घबराकर मुझे फोन किया, वह सोच रही थी कि उसे क्या करना चाहिए। बच्ची के शव को लेने कोई नहीं था। न तो उसकी बहन एथेल से संपर्क हो पा रहा था और न ही हवाई में रहने वाले उसके माता-पिता से। मैंने उसे शांत रहने और कोशिश करते रहने को कहा, और साथ ही मन ही मन वैलेरी को समय पर फोन न करने के लिए खुद को कोस रही थी ताकि उसकी मौत को रोका जा सके।

अंततः माता-पिता मिल गए और विधिपूर्वक अंतिम संस्कार की व्यवस्था की गई।

लेकिन रहस्य बना रहा। क्या उसने आत्महत्या की थी या नहीं?

क्या आखिरकार यूरोप से वो फोन आ ही गया और क्या वो इतना अपमानजनक था कि वैलेरी अब दुनिया का सामना नहीं कर सकती थी? क्या आखिरकार शादी नहीं होने वाली थी—तो कम से कम अंतिम संस्कार तो होना ही चाहिए?

वैलेरी को जीवन में दो चीजें बेहद पसंद थीं—फूल और गहने। उनके लिए, अपने पसंदीदा गहने का खो जाना दुर्भाग्य की निशानी थी।

लिन, जो अब वैलेरी के कार्यालय में काम करती थी, एक काफी व्यावहारिक व्यक्ति है जो भावनात्मक दृश्यों या अंधविश्वासों में विश्वास नहीं करती है।

वैलेरी के पास जेड पत्थर की बालियां थीं, जो जी ने उनके करीबी दिनों में उनके लिए बनवाई थीं। अपनी मृत्यु से लगभग एक महीने पहले, वैलेरी ने वे बालियां लिन को उपहार में दे दीं।

हालांकि, एक विशेष शर्त थी। लिन को उन्हें ऑफिस में नहीं पहनना था, क्योंकि लोगों ने वैलेरी को उन्हें पहने हुए देखा था और संभवतः उनके इतिहास के बारे में जानते थे।

लिन ने ऑफिस में उन्हें न पहनने पर सहमति जताई, लेकिन जब उसने उन्हें बाहर पहना तो एक बेहद अजीब घटना घटी। अचानक बालियां अपनी जगह पर नहीं टिक रही थीं। एक के बाद एक बाली उसके कानों से ऐसे गिर रही थीं मानो कोई अदृश्य शक्ति उन्हें खींच रही हो। यह 13 अप्रैल की बात है, और वैलेरी तब भी जीवित थी, हालांकि वह बहुत परेशान लग रही थी।

लिन की झुमके गिरने की चिंता की खबर पूर्व मालिक तक पहुँच गई, और आखिरकार वैलेरी ने फोन करके उसे आश्वस्त किया कि झुमकों का गिरना एक "शुभ संकेत" है। फिर एक हफ्ते बाद, शनिवार, 22 अप्रैल को, उसने अचानक आधी रात से कुछ देर पहले लिन को फोन किया और उससे कहा कि वह "उसके" झुमके ऑफिस में पहने। लिन ने वादा किया कि वह सोमवार को उन्हें पहनकर काम पर जाएगी।

उसी दिन वैलेरी की मृत्यु हुई। अगले दिन, लिन ने अभी भी वो बालियाँ पहनी हुई थीं, जो अब उसके कानों में ठीक से टिकी हुई लग रही थीं। वह महिला शौचालय में थी, तभी उसे महसूस हुआ कि उसकी दाहिनी बाली जबरदस्ती निकलकर शौचालय में गिर गई है। ऐसा लगा जैसे किसी अदृश्य हाथ ने उसे उसके कान से छीन लिया हो।

अपनी डेस्क पर लौटते हुए, उसने देखा कि वैलेरी की डेस्क वाली जगह पर एक अजीब सी ठंडक छाई हुई थी। यह ठंडक शाम 4:30 बजे गायब हो गई, जो वैलेरी के घर जाने का सामान्य समय था।

इन सब बातों से लिन काफी परेशान हो गई और उसने एक हफ्ते की छुट्टी ले ली।

शीला अभी भी बहुत परेशान थी जब एक पुरुष मित्र इस दुखद मामले में उसकी मदद करने के लिए वहाँ आया। पेशे से वकील उस सज्जन ने अपनी जैकेट उतारी ही थी कि अचानक उन्हें अपनी कमीज से एक कफ़लिंक गिरता हुआ महसूस हुआ। यह एक बेहद जटिल आभूषण था, और लाख कोशिश करने के बाद भी वह नहीं मिला।

क्या मृत लड़की कुछ छिपाना चाह रही थी? यह बहुत ही काल्पनिक है, फिर भी...

दिनदहाड़े और दो लोगों की मौजूदगी में, कफ़लिंक जैसी इतनी स्पष्ट वस्तु के अचानक गायब हो जाने का कोई तर्कसंगत स्पष्टीकरण नहीं था।

उस सप्ताह के शुक्रवार को, लड़की के दफनाने के बाद, उसकी बहन एथेल, जो अंततः शहर पहुँच गई थी, अपनी बहन के सामान के बारे में जानकारी प्राप्त करने के लिए अपार्टमेंट में गई।

अपार्टमेंट में प्रवेश करते ही उसे एहसास हुआ कि वहाँ भयंकर झगड़ा हुआ था। मृत्यु के क्षण से लेकर उसके आने तक किसी भी चीज़ को छुआ नहीं गया था, क्योंकि अपार्टमेंट को सील कर दिया गया था। फर्श पर तीन चाकू पड़े थे और पूरा कमरा अस्त-व्यस्त था। मेज पर उसने दो गिलास देखे, एक आधा स्कॉच से भरा था और दूसरा लगभग खाली था। जब उसने जगह की अजीबोगरीब हालत की सूचना देने के लिए पुलिस को फोन किया, तो उसकी बात अनसुनी कर दी गई।

वैलेरी ने धरती पर अपने अंतिम क्षणों में किस व्यक्ति का मनोरंजन किया था?

अधीक्षक ने बहन को बताया कि वैलेरी की मृत्यु के बाद से उसे दो पत्र मिले थे, लेकिन जब उन्होंने मेलबॉक्स में देखा तो वह खाली था।

वैलेरी जिस रेस्टोरेंट में अक्सर जाया करती थी, उसके मालिक, यानी उसकी एक दोस्त ने टेलीफोन कंपनी को सेवा बंद करने और अंतिम बिल उसे भेजने के लिए सूचित किया। उसे बताया गया कि बिल नहीं मिल पाया है।

और ऐसा ही चलता रहा। क्या कोई उसके सबूत मिटाने की कोशिश कर रहा था? शीला ने ये सब सुना और काम पर लग गई। उसे लगा कि उसकी दोस्त की मौत में कुछ बहुत गलत हुआ है और वह इसका पता लगाने वाली थी। रेस्टोरेंट के मालिक और लड़की की बहन से दोबारा पूछताछ करने पर उसे एक और अजीब बात पता चली। एथेल को अपार्टमेंट में जो ऐशट्रे मिली थीं, उनमें दो अलग-अलग तरह की सिगरेट थीं—एल एंड एम और विंस्टन। वैलेरी हमेशा एल एंड एम पीती थी, लेकिन विंस्टन कौन पीता था?

पुलिस इस मामले में कोई खास दिलचस्पी नहीं दिखा रही है। उनका मानना है कि वैलेरी ने ही पहली बार उन्हें फोन किया था और नशे की हालत में उसने आत्महत्या करने का फैसला कर लिया। कम से कम शीला को तो यही बताया गया है।

अगले दिन, शनिवार को भी खिड़की खुली हुई थी। अप्रैल की तेज़ हवाओं के बावजूद, वैलेरी द्वारा छोड़ा गया गुलाब अभी भी खिड़की की चौखट पर ही था।

उस रात जब शीला अपनी जैकेट पहन रही थी, तो उसे महसूस हुआ कि कोई उसे जैकेट पहनने में मदद कर रहा है। वह अकेली थी, या कम से कम उसे ऐसा ही लगा।

तब उसे यह ख्याल आया कि वैलेरी की आत्मा को शांति नहीं मिली है और शायद मैं उसकी मदद कर सकूँ। कम से कम मैं उससे अभी बात तो कर ही सकता था, क्योंकि किस्मत ने मुझे समय पर उसके पास पहुँचने से रोक दिया था।

मैंने बेट्टी रिट्टर से अगले सप्ताहांत में तैयार रहने का इंतज़ाम किया, बेशक उसे यह बताए बिना कि हम कहाँ जा रहे होंगे। तारीख 6 मई थी, समय दोपहर 3 बजे, और शीला को उस अपार्टमेंट में हमसे मिलना था जो कभी वैलेरी का था, लेकिन अब साफ़-सुथरा था और अगले किराएदार के लिए तैयार था। सुपरिंटेंडेंट ने हमें अंदर आने दिया, शायद हमारी वजह समझकर या फिर बिना परवाह किए। खैर, उसने दसवीं मंज़िल का अपार्टमेंट खोला और हमें अंदर अकेला छोड़ दिया।

ईस्ट सिक्सटी-थर्ड स्ट्रीट बिल्डिंग की लिफ्ट के पास पहुँचते ही बेट्टी रिट्टर ने अचानक कहा कि उसे अपने आसपास मौत का आभास हो रहा है। मैंने सिर हिलाया और हम ऊपर चले गए।

जैसे ही हमने वैलेरी के घर में कदम रखा, बेट्टी एक रहस्यमयी शिकारी कुत्ते की तरह व्यवहार करने लगी। सीधे खिड़की की ओर बढ़ते हुए—जो अब बंद थी—उसने उसे छुआ और डर के मारे पीछे हट गई, फिर मुड़कर मेरी ओर देखा।

“यहाँ एक आदमी पागलों की तरह उछल-कूद कर रहा है,” उसने कहा, “लेकिन यहाँ एक और भी है—मैं उसके नाम के पहले अक्षर 'ई' से प्रभावित हूँ।” फिर उसने अपना कोट उतारा और बाथरूम की ओर चलने लगी। वहाँ रुककर उसने मेरी तरफ देखा।

“मुझे एक महिला के चीखने की आवाज सुनाई दी...मैंने खून देखा...अब मुझे M अक्षर दिखाई दे रहा है...उसे चोट लगी है...यह आत्महत्या जैसा लगता है...जैसे कि वह इसे और सहन नहीं कर सकी।”

बेट्टी को अपनी भावनाओं को नियंत्रित करने में कठिनाई हो रही थी और वह तेजी से सांस ले रही थी।

“वह दो अक्षर पीछे छोड़ गई,” उसने कहा। “मुझे L और S अक्षर दिखाई दे रहे हैं।”

बेट्टी रिट्टर, जो एक ट्रान्स मीडियम नहीं बल्कि मूल रूप से एक क्लेयरवॉयंट हैं, शुरुआती अक्षरों, नामों, अक्षरों और पहचान के अन्य रूपों को लेकर बहुत मजबूत हैं और वह स्वाभाविक रूप से इस मामले में भी उसी तरह से काम करेंगी।

मैंने उसे 'मम्मा, मम्मा' कहते हुए सुना—वह बहुत परेशान लग रही थी।

मुझे यहां एक पुरुष की आत्मा भी मिलती है...अक्षर J।"

“इस लड़की की मौत कैसे हुई?” मैंने इस मौके पर बीच में टोकते हुए पूछा।

“वह इसे और बर्दाश्त नहीं कर सकी। उसने R अक्षर दिखाया। यह एक जीवित व्यक्ति है। मुझे लगता है कि उसने कुछ निगल लिया।”

मुझे लगा कि बेट्टी अब अतीत की छापें ग्रहण कर रही है और मैं उसे उस क्षेत्र से हटाकर वर्तमान छापों की परत में लाना चाहता था।

“उसकी मृत्यु कैसे हुई?” मैंने माध्यम से पूछा। बेट्टी को इस बात का कोई अंदाजा नहीं था कि वह कहाँ है या मैं उसे यहाँ क्यों लाया हूँ।

मुझे लगता है उसने पहले भी... गोलियां... खून... किसी न किसी तरह से कोशिश की थी। वह थोड़ी डरी हुई थी, लेकिन उसने यह योजना बनाई थी। वह अब बहुत परेशान है और उसे नहीं पता कि इस अपार्टमेंट से कैसे निकले। मैं उससे शुरुआती अक्षर G लेता हूँ।

मैंने बेट्टी से कहा कि वह हमारी संवेदनाएं उन तक पहुंचा दे और उनसे पूछे कि क्या वह हमसे कुछ करवाना चाहती हैं।

जब बेट्टी धीमी आवाज़ में उस आत्मा से बात कर रही थी, तब मैं उसके द्वारा अब तक दिए गए सबूतों पर विचार कर रहा था। दिए गए शुरुआती अक्षर—ई. वैलेरी की बहन एथेल के नाम का पहला अक्षर था, एम. उसकी माँ मैरी का नाम था, और जी. उस कंपनी के मैनेजर का नाम था जिसके साथ वैलेरी का संबंध था—ये सब बातें समझ में आ रही थीं। बेट्टी रिट्टर ने गोलियों से आत्महत्या के प्रयास को भी सही ढंग से समझ लिया था और खिड़की की ओर इशारा करते हुए उसे एक संदिग्ध जगह बताया था।

अब आगे क्या होने वाला था?

“वह रो रही है,” बेट्टी ने बताया। “वह अपने प्रियजनों को बताना चाहती है कि उसने जानबूझकर ऐसा नहीं किया। वह मुझे एक भारतीय का सिर दिखाती है और वह एक कार का प्रतीक है—शायद किसी ब्रांड का नाम—यह लाल रंग का है—इसके साथ H अक्षर भी जुड़ा हुआ है। फिर वह मुझे कुछ लिखा हुआ दिखाती है, जिसे उसने अधूरा छोड़ दिया है। वह अपनी माँ से माफ़ी माँगती है क्योंकि वह खुद को रोक नहीं पाई।”

मैंने माध्यम के ज़रिए वैलेरी से कुछ महत्वपूर्ण सवाल पूछने का फैसला किया। क्या वह अपनी मृत्यु के समय अकेली थी?

“अकेली नहीं। शुरुआती बिंदु ए। एक आदमी, मुझे महसूस हो रहा है कि वह दरवाजे से बाहर जा रहा है। उसे परेशान कर रहा है, उसे परेशान कर रहा है।”

"क्या वह उसकी मृत्यु के समय उसके साथ था या वह उससे पहले ही चला गया था?"

“वह कहती है, ‘मैंने उसके मुंह पर दरवाजा पटक दिया।’ और फिर वह कहती है, ‘और फिर मैंने ऐसा किया।’”

"क्यों?"

“मैं पूरी तरह से अपना मानसिक संतुलन खो बैठा था...ठीक से सोच नहीं पा रहा था...उसने मुझे ऐसा करने पर मजबूर कर दिया....”

“क्या यह व्यक्ति जीवित है?”

"हाँ।"

क्या उसे पता है कि उसके साथ क्या हुआ?

"हाँ।"

क्या वह उसे अच्छी तरह जानती थी?

"हाँ निश्चित रूप से।"

“उसका उससे क्या संबंध था?”

बेट्टी खुद भी अब काफी बेचैन थी; मनोवैज्ञानिक भाषा में कहें तो, वह बहुत गुस्से में थी।

उसने बताया, "मुझे पैसों से भरा एक थैला और उस पर M या W अक्षर दिखाई दे रहे हैं।"

मैंने वैलेरी की कुछ निजी वस्तुएँ उसे दीं, जिन्हें शीला एक शॉपिंग बैग में लेकर आई थी और अब बेट्टी के छूने के लिए चूल्हे पर रख दी गई थीं। उसने सबसे पहले एक लटकन (नकली गहना) उठाया और तुरंत ही मालिक की ऊर्जा को महसूस किया।

“मुझे यह कितना पसंद आया,” उसने बुदबुदाते हुए कहा। “मैं समझ गई डी. आर., डॉक्टर... यह उसे दिया गया था और इससे बहुत प्यार जुड़ा हुआ है... यह बहुत पुराना रिश्ता है....”

किसी तरह बेट्टी रिट्टर और वैलेरी के. के व्यक्तित्व अब एक-दूसरे में विलीन हो गए थे और बेट्टी, जो पहले जैसी नहीं लग रही थी, मेरे सवालों पर ध्यान देना बंद कर चुकी थी, बल्कि वैलेरी की तरह ही बात करती रही, हालांकि उसकी आवाज और लहजा बेट्टी का ही था।

"मैं बहुत कुछ कहना चाहता था लेकिन उस समय कह नहीं पाया..."

अब होश में लौटते हुए, उसने एक आत्मा के बारे में बताया, जो बहुत बेचैन थी और जिसने उस स्त्री को अपने वश में कर लिया था; वह कोई भूत नहीं था, बल्कि एक मृत व्यक्ति था... एक बूढ़ा आदमी जिसका उससे अतीत में कोई संबंध था। जे.डब्ल्यू. सांवली त्वचा वाला, लेकिन नीग्रो नहीं—भारत या दुनिया के उस हिस्से का।

मुझे अचानक यह ख्याल आया कि शायद वह वैलेरी के दिवंगत पति की बात कर रही हो, वह व्यक्ति जिससे उसने बहुत पहले हांगकांग में शादी की थी; उस समय वह उससे काफी उम्र में बड़ा था।

“मुझे गिरने जैसा महसूस हो रहा है,” बेट्टी ने अचानक कहा, “पता नहीं क्यों। शायद इसका उससे कुछ लेना-देना हो।”

मैंने उसे पूरे अपार्टमेंट में घूमने और "पसंदीदा" जगहों को पहचानने देने का फैसला किया। वह तुरंत बाईं ओर की खिड़की की ओर बढ़ी।

“यहाँ कुछ भयानक हुआ है...यही कमरा है...ठीक यहीं...यहाँ ज़्यादा ताकत है....”

मैंने पूछा, "क्या इस कहानी में कोई और महिला भी शामिल है?"

“मुझे नाम का पहला अक्षर M दिख रहा है,” बेट्टी ने जवाब दिया, “और वह एक ऐसे आदमी के साथ है जो जीवित है, और एक महिला के प्रेमी को लेकर कुछ ईर्ष्या भी है... वह इसे बर्दाश्त नहीं कर सकी।”

मैंने तुरंत भूत भगाने की प्रक्रिया शुरू करने का फैसला किया।

“अभी कुछ ही समय पहले वह गई थी,” बेट्टी ने कहा। “वह मैरी...या मैरी...और एक एल से मिलना चाहती है। एल को बताना चाहती है कि अब उसे राहत मिली है। बस हमेशा की तरह अपना काम करते रहो।”

एल. लिन के नाम का पहला अक्षर था, जो उस ऑफिस में काम करने वाली लड़की थी जिसने झुमकों के साथ हुई अजीबोगरीब घटनाओं का सामना किया था।

मैंने इस कनेक्शन को जांचने का फैसला किया।

मैंने पूछा, "क्या उसने एल. से किसी भी तरह से संपर्क किया था?"

“हां,” बेट्टी ने सिर हिलाया, “मैंने उसे एल. के बिस्तर के पास देखा...शायद उसने उसे डरा दिया हो...लेकिन अब उसे पता चल गया है...डराने का उसका कोई इरादा नहीं था...वह अब जा रही है, कभी वापस नहीं आना चाहती....”

हम कुछ देर चुप रहे।

"अब वह हमें चुंबन फेंक रही है," बेट्टी ने आगे कहा।

"वह ऐसा ही करती थी," शीला ने पुष्टि की, "वह इसी तरह करती थी।"

और बस यही बात थी।

बेट्टी ने एक सिगरेट जलाई और आराम किया, वह अभी भी उन संदेशों से स्पष्ट रूप से विचलित थी जिनके लिए वह संदेशवाहक थी।

हमने वैलेरी का थोड़ा-बहुत सामान वापस कागज के थैले में रखा और अपार्टमेंट से निकल गए, जो अब चमकदार और नया लग रहा था, क्योंकि अगले रहने वाले के लिए इसे तैयार करने के लिए जल्दबाजी में पेंट का एक कोट लगा दिया गया था।

उसके बाद किसी के कानों से गहने छीनने की कोई घटना नहीं हुई, और यहां तक कि मेरी दोस्त शीला ने भी इस मामले को दोबारा खोलने की कोशिश नहीं की, हालांकि उसका मानना था कि पुलिस की नजरों से परे भी इसमें कुछ और भी था।

हमने वैलेरी को शांतिपूर्ण ढंग से बदलाव का समय देने का फैसला किया और मामले को दोबारा खोलने से होने वाले पुराने घावों को कुरेदने से बचने का निर्णय लिया।

लेकिन किसी तरह मैं एक दृश्य को पूरी तरह से भुला नहीं पा रहा हूँ, एक ऐसा दृश्य जिसे मैंने केवल एक कम बोलने वाले पुलिस जासूस की आँखों से एक नियमित रिपोर्ट बनाते हुए "देखा" था: लंबी, खूबसूरत एशियाई महिला, नशे में धुत और नग्न, पुलिस पर दरवाजा पटकते हुए...और अपनी मेज पर रखे शराब के दो गिलास भी।

वह दूसरा गिलास किसके लिए था...और दूसरी सिगरेट किसने पी थी, वह ब्रांड जिसे वैलेरी कभी नहीं पीती थी?

तो फिर वह कौन आदमी था जिसने उसे मरने के लिए छोड़ दिया?

*131

चेतावनी भूत

सभी भूतों का स्वार्थपूर्ण मकसद नहीं होता, खासकर घर पर अपना पूर्व स्वामित्व जताने के पीछे: कुछ भूत तो बाद में रहने वालों की मदद भी करते हैं, हालांकि भूतों की तर्कसंगतता की सीमाएं बहुत सीमित होती हैं। उदाहरण के लिए, यदि कोई भूत घर के बाद के निवासियों से अवगत है और उनसे संवाद करना चाहता है—उन्हें बाहर निकालने के लिए नहीं बल्कि चेतावनी देने के लिए—तो भी वह यह समझने में असमर्थ होता है कि चेतावनी पूरी तरह से अनावश्यक हो सकती है क्योंकि समय बीत चुका है और वर्तमान वास्तविकता उस वास्तविकता से मेल नहीं खाती जिसे उसने अपनी त्रासदी के समय जाना था।

फिर भी, रोज़ एस. का एक विचित्र मामला है, जो अब न्यूयॉर्क राज्य की निवासी हैं, लेकिन एक समय फोर्ट वर्थ, टेक्सास में रहती थीं। सुश्री एस. पेशे से सचिव हैं और 1960 के दशक के मध्य में एक प्रसिद्ध सामाजिक नेता के लिए काम करती थीं। उसी गर्मी में, सुश्री एस. फोर्ट वर्थ में एक पुराने घर में रहने लगीं और घर के एक कोने में एक कमरा किराए पर लिया। उस समय, वह अपने मंगेतर के पास रहना चाहती थीं, जो एक सेना पायलट थे और पास ही तैनात थे।

जिस पुराने घर पर उनकी नज़र पड़ी, वह फोर्ट वर्थ के पुराने इलाकों में से एक, ब्राइस एवेन्यू पर स्थित था। घर की मालकिन ने एक सुसज्जित कमरा किराए पर दे रखा था क्योंकि घर

उनके लिए बहुत बड़ा हो गया था। उनके पति, जो एक वकील थे, का निधन हो चुका था और उनके सभी बच्चे बड़े हो चुके थे और घर से दूर रहते थे।

घर काफी अच्छा लग रहा था और कमरा बड़ा और उपयुक्त था, इसलिए मिस एस. इसे पाकर वाकई खुश थीं। इसके अलावा, मकान मालकिन ने उन्हें किराए के कमरे तक सीमित नहीं रखा, बल्कि रसोई का इस्तेमाल करने की अनुमति दी और वास्तव में पूरे घर में घूमने-फिरने की आजादी दी, खासकर इसलिए क्योंकि वहां कोई और किराएदार नहीं था। मकान मालकिन उस समय लगभग साठ या साढ़े छह साल की एक मिलनसार महिला लग रही थीं और कभी-कभार खुद से बात करने की आदत के अलावा उनमें कुछ भी असामान्य नहीं था। मिस एस. ब्राइस एवेन्यू स्थित उस घर में सुखद, भले ही बिना किसी घटना के, प्रवास की उम्मीद कर रही थीं।

घर में आने के कुछ ही समय बाद, मकान मालकिन ह्यूस्टन में अपनी बेटी से मिलने चली गईं और घर पूरी तरह से मिस एस. के भरोसे छोड़ दिया। उस रात, रोज़ एस. ने पढ़ने और फिर जल्दी सोने का फैसला किया। जैसे ही उन्होंने सोने के लिए लाइट बंद की, उन्हें घर में कदमों की आहट सुनाई देने लगी। उसी समय, बाथरूम की लाइट, जिसे उन्होंने पूरी रात जलाए रखने का इरादा किया था, बारी-बारी से धीमी और तेज होने लगी, जिससे वह हैरान रह गईं। किसी घुसपैठिए के डर से, मिस एस. जांच करने के लिए उठीं, लेकिन घर में कोई भी जीवित व्यक्ति नहीं मिला। तब उन्होंने सोचा कि यह सब बस उनकी कल्पना थी क्योंकि वह पहली बार घर में अकेली थीं, और वह सो गईं। दिन बीत गए और घटना भुला दी गई। कुछ हफ्तों बाद, मकान मालकिन फिर से ह्यूस्टन चली गईं, लेकिन इस बार मिस एस. के मंगेतर उनसे मिलने आए थे। शाम का समय था, और दंपति रात के खाने के बाद आराम कर रहे थे।

मिस एस. के मंगेतर, जो पायलट थे, सो गए थे। अचानक, रात के सन्नाटे में, मिस एस. ने बगल के कमरे से किसी की तेज़ और स्पष्ट सीटी सुनी। यह एक मार्चिंग गीत था, जो उन्हें कर्नल बोगी मार्च की जानी-मानी धुन की याद दिलाता था। उस समय न तो टीवी चल रहा था और न ही रेडियो, और आसपास कोई नहीं था। जब उन्हें एहसास हुआ कि सीटी की आवाज़ रहस्यमय है, तो उन्होंने अपने मंगेतर को न बताने का फैसला किया, क्योंकि वह उन्हें परेशान नहीं करना चाहती थीं।

समय बीतता गया, और मकान मालकिन के नियमित दौरे के बाद मिस एस. फिर से घर में अकेली रह गईं। इस बार वह टीवी वाले कमरे में पढ़ने-लिखने की कोशिश कर रही थीं। रात गर्म थी और एयर कंडीशनर चल रहा था।

वहाँ बैठे-बैठे मिस एस. को धीरे-धीरे यह एहसास होने लगा कि वह अकेली नहीं हैं। उन्हें स्पष्ट रूप से लगा कि कोई उन्हें देख रहा है, और तभी एयर कंडीशनर की तेज़ आवाज़ के बीच एक महिला की धीमी, सिसकती हुई आवाज़ सुनाई दी। आवाज़ लगातार बोलती रही, और हालाँकि मिस एस. ने उसे नज़रअंदाज़ करने की कोशिश की, फिर भी उन्हें सुनना पड़ा। चाहे आवाज़ के ज़रिए हो या टेलीपैथी के ज़रिए, उन्हें यह आभास हुआ कि उन्हें घर में नहीं रहना चाहिए, और आवाज़ उन्हें तुरंत घर छोड़ने की चेतावनी दे रही थी। एक और बेचैन रात और बहुत कम नींद के बाद, मिस एस. ने फैसला किया कि वह इस घटना को और बर्दाश्त नहीं कर सकतीं।

मकान मालकिन के लौटते ही उसने उसे बताया कि वह घर छोड़कर जा रही है और कुछ समय के लिए दोस्तों के साथ रहने लगी। आखिरकार, ब्राइस एवेन्यू स्थित उस घर में हुए अनुभवों ने उसकी जिज्ञासा जगाई और उसने चुपके से कुछ पूछताछ की। तभी उसे भूतिया घटनाओं के कारणों का पता चला। ठीक उसी कोने पर जहाँ वह घर था, एक महिला और एक लड़की की एक आदमी ने बस का इंतज़ार करते समय हत्या कर दी थी। मानो इतना ही काफी नहीं था, उसके मंगेतर के साथ भी उसी क्षण से कुछ अजीबोगरीब घटनाएँ घटने लगीं। सीटी बजाने वाले भूत की घटना के बाद, जिसके बारे में उसके मंगेतर को कुछ भी पता नहीं था, उसका व्यवहार उसके प्रति पूरी तरह बदल गया। ऐसा लग रहा था मानो वह पहले जैसा नहीं रहा, बल्कि किसी और के वश में आ गया हो। कुछ समय बाद ही, मिस एस. और उसके पायलट ने अपनी सगाई तोड़ दी।

*132

जैक्लीन

जॉन के. छब्बीस वर्ष के हैं, हॉलीवुड में रहते हैं और एक स्टीमशिप कंपनी में माल ढुलाई कैशियर के रूप में काम करते हैं। मई 1971 में जब उन्होंने मुझसे संपर्क किया, तो उन्होंने

कहा, "मुझे ठीक से नहीं पता कि कहाँ से शुरू करूँ।" उन्होंने बताया कि उन्हें ऐसा लगता है कि पुनर्जन्म की यादें या कोई ऐसा व्यक्ति उन्हें परेशान कर रहा है, जिसका उनके व्यक्तित्व से किसी रहस्यमय तरीके से संबंध है। चूंकि मैं हमेशा पुनर्जन्म के "प्रमाणित" मामलों की तलाश में रहता हूँ, इसलिए स्वाभाविक रूप से मेरी रुचि बढ़ गई। उसी वर्ष अक्टूबर में हमारी मुलाकात हॉलीवुड के कॉन्टिनेंटल होटल में हुई। श्री के. दुबले-पतले, शांत स्वभाव के युवक निकले, जो न तो बहुत भावुक थे और न ही तंत्र-मंत्र में विशेष रूप से रुचि रखते थे। धीरे-धीरे मैंने उनकी अद्भुत कहानी को समझा और उनके विचित्र और भयावह अनुभवों के पीछे छिपे रहस्य को जाना।

जॉन के. का जन्म ओज़ार्क्स के एक छोटे से कस्बे में हुआ था, जिसकी आबादी मात्र बयालीस थी। जिस घर में उनका जन्म और पालन-पोषण हुआ, वह काफी पुराना था, जो गृहयुद्ध से पहले बना था। उनका परिवार बारह वर्ष की आयु तक वहीं रहा, फिर वे दक्षिण-पश्चिमी एरिजोना के एक अन्य छोटे कस्बे में चले गए। वहाँ उनके पिता पास के एक सैन्य अड्डे पर सरकारी नौकरी करते थे। बीस वर्ष की आयु में, श्री के. ने कॉलेज में जूनियर वर्ष के बाद पढ़ाई छोड़ दी और सीधे लॉस एंजिल्स चले गए, जहाँ वे तब से रह रहे हैं।

ओज़ार्क्स में उनके पहले बारह साल पाँच भाइयों और दो बहनों के साथ एक खेत में बीते। परिवार का जीवन बहुत ही आदिम था। घर में नल-पानी की व्यवस्था नहीं थी; गर्मी कोयले के चूल्हे से मिलती थी, और हर शनिवार रात पूरा परिवार बारी-बारी से एक ही टब में नहाता था। शुरुआत में घर में बिजली भी नहीं थी। पहले तीन कक्षाओं के लिए श्री के. एक कमरे वाले स्कूल में पढ़े। “हमारी शिक्षिका बहुत युवा थीं और उन्होंने अभी तक अपनी कॉलेज की शिक्षा पूरी नहीं की थी, लेकिन फिर भी उन्हें हमें पढ़ाने की अनुमति दी गई थी।”

श्री के. ने समझाया, “मैं अपने शुरुआती परिवेश के बारे में आपको इसलिए बता रहा हूँ ताकि यह बता सकूँ कि मेरे जीवन के पहले बारह साल मैंने अत्यंत एकांत जीवन व्यतीत किया।” दस वर्ष की आयु तक श्री के. ने टेलीविजन नहीं देखा था; उनके परिवार में मनोरंजन का मुख्य साधन ताश खेलना और बातें करना था। वे स्थानीय दक्षिणी बैपटिस्ट चर्च जाते थे, जहाँ उनका विधिवत बपतिस्मा हुआ था; हालाँकि, परिवार के खेत छोड़ने के बाद उन्होंने संगठित धर्म से नाता तोड़ लिया।

बचपन से ही जॉन के. को एक ऐसी उपस्थिति का आभास होता था जिसे कोई और नहीं देख सकता था। उनके परिवार का कोई भी सदस्य कभी देश से बाहर नहीं गया था, फिर भी उन्हें एक फ्रांसीसी महिला की उपस्थिति का एहसास होता था, जिसका नाम उन्हें बाद में जैकलिन पता चला। जब उन्होंने अपने परिवार को इस महिला की उपस्थिति के बारे में बताया तो उनका मज़ाक उड़ाया गया और कहा गया कि उनकी कल्पना शक्ति बेतुकी है, इसलिए उन्होंने इसके बारे में बात करना बंद कर दिया। कम उम्र में ही उनमें ऐसी घटनाओं के सपने देखने की क्षमता भी विकसित हो गई जो बाद में ठीक वैसे ही घटित हुईं जैसा उन्होंने सपनों में देखा था। ये भविष्यसूचक सपने किसी बड़ी घटना की भविष्यवाणी नहीं करते थे बल्कि रोज़मर्रा की बातों से संबंधित होते थे। फिर भी, ये सपने लड़के को परेशान करते थे। उन्हें अपने सपने कभी याद नहीं रहते थे, लेकिन जब घटना वास्तविकता में घटित होती थी तो वे कांपने लगते थे और उन्हें एहसास होता था कि उन्होंने यह सब पहले भी देखा है। इसे ही डेजा वू कहा जाता है और यह ईएसपी की एक काफी आम घटना है। वह अपने सपनों के बारे में अपने परिवार से बात नहीं कर सकते थे, क्योंकि 1950 के दशक की शुरुआत में ओज़ार्क्स में मानसिक अनुभवों के बारे में बात करना आम बात नहीं थी। लेकिन उन्हें घर में अकेले रहना बिल्कुल पसंद नहीं था; उसे अंधेरे से और घर से ही बहुत डर लगता था।

एक दोपहर जब वह दस साल का था, वह घर में अकेला था, ऊपर वाले कमरे में। अचानक उसे लगा कि वहाँ कोई मौजूद है, और उसे इतना भयानक डर लगा जैसे उसका दम घुट रहा हो। दीवारें काँपने लगीं, और उसे एक तेज़ आवाज़ सुनाई दी जिसका कोई स्वाभाविक कारण समझ में नहीं आया। आखिरकार वह अपने डर से बाहर निकल पाया और सीढ़ियों से नीचे भाग गया।

जॉन के. में बचपन से ही एक और बात अजीब सी थी। वह पुरुषों से कभी घुल-मिल नहीं पाता था और केवल महिलाओं—अपनी दादी, अपनी माँ और अपनी बड़ी बहन—के साथ ही सहज महसूस करता था। जब वह बहुत छोटा था, तब से ही वह अपनी बड़ी बहन, जो उससे छह साल बड़ी थी, के साथ खेलता आ रहा था और उसे लड़कियों के खेल बहुत पसंद थे। वह कभी भी अपने भाइयों के साथ लड़कों के खेल में शामिल नहीं होता था। उसे लंबे, ढीले-ढाले कपड़े पहनना बहुत अच्छा लगता था, जो पुराने ज़माने के फैशन के थे और उसे अटारी में मिले थे।

जब भी वह ये कपड़े पहनता था, तो वह पूरी तरह सहज महसूस करता था और उसमें एक खास तरह का परिष्कृत भाव आ जाता था। अजीब बात यह थी कि वह केवल पुराने ज़माने के कपड़े ही पहनना चाहता था; आजकल के छोटे कपड़े उसे बिल्कुल भी पसंद नहीं थे। उन दिनों उसे ऐसा लगता था मानो वह कोई और ही इंसान हो।

बचपन के शुरुआती दिनों में ही उन्हें जैकलिन का पहली बार एहसास हुआ। खासकर जब वे अपनी बहन के साथ खेलते थे, तो उन्हें लगता था कि वे यौन रूप से बिल्कुल जैकलिन जैसे हैं। स्कूल जाने तक वे घर में भी कपड़े पहनते रहे। अक्सर स्कूल से घर आने पर वे ऊपर जाकर कपड़े पहन लेते थे। आखिरकार, उनके पिता को उनकी इस आदत का पता चल गया और उन्होंने धमकी दी कि अगर वे नहीं रुके तो वे उन्हें कपड़े पहनाकर ही स्कूल भेजेंगे, तब जाकर जॉन ने कपड़े पहनना बंद किया। हालांकि, उनके भीतर स्त्रीत्व का भाव और लंबे कपड़े पहनने की इच्छा बनी रही।

श्री के. ने पूरी बेबाकी से समझाया, “यह कहने की ज़रूरत नहीं है कि मैं कोई आम लड़का नहीं था, और मैं बहुत ही स्त्री-सुलभ स्वभाव का निकला और मेरे सहपाठी मुझे लगातार चिढ़ाते रहते थे।” दूसरे लड़कों द्वारा ठुकराए जाने पर, वह अपने आप में सिमटने लगे और दूसरों को अपने विचार बताने की ज़हमत नहीं उठाई। हालाँकि उन्होंने अपने पैतृक गाँव के आसपास के चार दक्षिणी राज्यों से बाहर कभी यात्रा नहीं की थी, फिर भी उन्हें फ्रांस, विशेष रूप से पेरिस के प्रति बहुत लगाव महसूस होने लगा। जॉन के. ने बताया, “मुझे किसी तरह कई मानवीय सुखों से भरे जीवन की सुखद यादें थीं, एक ऐसी महिला का जीवन जो बहुत जागरूक थी और खुद को पूरी तरह से व्यक्त करने की ज़रूरत महसूस करती थी।” उन्होंने आगे कहा कि उस समय तक उन्हें पता चल चुका था कि जैकलिन, चाहे वह कोई भी रही हो, एक वेश्या का जीवन जी चुकी थी। इस प्रकार, उन्हें धार्मिक निंदा का गहरा आभास हुआ, उन्हें लगा कि वे एक पापी हैं और उन पर नरक की सज़ा का खतरा मंडरा रहा है।

जब परिवार आखिरकार एरिज़ोना चला गया, तो उसे लगा कि शायद उसकी कुछ पीड़ाएँ कम हो जाएँगी। लेकिन उसके वर्तमान परिवेश और जैकलीन की दुनिया के बीच का संघर्ष लगभग हर दिन बढ़ता ही गया। चौदह साल की उम्र में उसे लगा कि जब वह इस दुनिया का हिस्सा नहीं बन सकता, तो बेहतर यही होगा कि वह आत्महत्या कर ले और उस जगह लौट

जाए जहाँ वह वास्तव में रहता है। उसने अपनी माँ को एक विदाई पत्र लिखा, जो उस समय एकमात्र ऐसी व्यक्ति थीं जिनसे वह अपने रिश्ते को जोड़ सकता था, क्योंकि उसकी बहन की शादी हो चुकी थी और उसकी दादी बूढ़ी और कमज़ोर हो गई थीं। पत्र में उसने अपनी माँ को बताया कि वह उस जगह लौट रहा है जहाँ वह रहता है, कि उसे लगता है कि वह किसी दूसरे ग्रह से आया है और अब उसके वापस जाने का समय आ गया है। फिर उसने अपने कमरे की एक छत पर रस्सी डाली, उसके नीचे एक कुर्सी रखी और फंदा अपने गले में डाल लिया, कूदने के लिए तैयार। तभी किस्मत ने दखल दिया, उसकी माँ की एक सहेली अचानक वहाँ आ गई। चूंकि उसकी माँ सो रही थी, इसलिए जॉन को दरवाजा खोलना पड़ा। मुलाकात काफी देर तक चली, और जब वह महिला चली गई, तब तक उसका आत्महत्या करने का मन नहीं रहा था।

उसके बाद से स्कूल में उसका प्रदर्शन काफी अच्छा रहा, हालांकि ज्यादातर लोग उसे शर्मीला और अंतर्मुखी समझते थे। उसने कभी लड़कियों के साथ डेटिंग नहीं की, क्योंकि वह खुद को स्त्री मानता था। लेकिन उसकी एक लड़के से दोस्ती हो गई और दस साल तक उसकी गहरी दोस्ती बनी रही। बाद में, वह लड़का लॉस एंजिल्स चला गया। जब जॉन के. ने कॉलेज के तीसरे साल में पढ़ाई छोड़ दी, तो वह लॉस एंजिल्स आ गया और अपने दोस्त के साथ रहने लगा। उस समय वह बीस साल का था। वह अब भी खुद को स्त्री ही मानता था और जैकलिन के बारे में लगातार सोचता रहता था।

तब जॉन समलैंगिक जगत से जुड़ गया और उसे अपने जीवन का पहला यौन अनुभव हुआ। जब भी वह यौन संबंध बनाता, उसे दृढ़ता से यह अहसास होता कि वह स्त्री की भूमिका निभा रहा है।

लॉस एंजिल्स आने के लगभग छह महीने बाद, उसे भयानक सपने आने लगे। एक रात जब वह पूरी तरह से जागा हुआ था, अचानक उसने अपने बिस्तर के पास एक महिला को खड़े देखा। उसने एक लंबी नाइटगाउन पहनी हुई थी, उसके लंबे बाल थे और वह उस पर मुस्कुरा रही थी। ऐसा लग रहा था मानो वह फर्श से थोड़ा ऊपर तैर रही हो। पहले तो जॉन ने सोचा कि यह उसका वहम है और इसे एक मूर्खतापूर्ण सपना समझकर भुला दिया। अगली रात भी ऐसा ही हुआ। उसे एहसास हुआ कि वह प्रेत उसे कुछ बताना चाहता है। हैरानी की बात यह

थी कि वह बिल्कुल भी डरा नहीं था। तीसरी रात वह प्रेत फिर से आया, और उसकी मुस्कान गहरे दुख की frown में बदल गई थी। वह अगली रात फिर से आया, और इस बार उसके चेहरे पर घोर भय दिखाई दे रहा था। उसके चेहरे पर गहरी नसें उभरी हुई थीं, उसकी आँखें लाल थीं, और उसका मुँह भयानक रूप से मुस्कुरा रहा था।

अगली रात वह फिर लौटी, और इस बार उसका पूरा सिर धड़ से अलग हो चुका था, और उसके खूबसूरत बहने वाले गाउन पर खून फैला हुआ था। जॉन उसकी आत्मा की पीड़ा को भलीभांति समझता था। उसी रात किसी ने उसका हाथ पकड़कर उसे बिस्तर से खींचकर ज़मीन पर गिरा दिया। उसने बगल के कमरे में मौजूद अपने रूममेट से मदद के लिए चीख-पुकार की, लेकिन उस युवक को उसकी हालत पर ज़रा भी दया नहीं आई और उसने जॉन को चुप रहने की धमकी दी, वरना वह उसे पागलखाने भेज देगा। इस घटना के बाद जॉन को लगा कि वह पागल हो रहा है और सोचने लगा कि वह किससे सलाह ले।

कुछ महीने बीत गए। वह अब भी हॉलीवुड में उसी रूममेट के साथ रह रहा था, लेकिन इस समय तक वह खुद एक वेश्या बन चुका था। उसने कॉलेज की पढ़ाई पूरी कर ली थी और एक अच्छी नौकरी भी पा ली थी, लेकिन उसके मन में वेश्या बनने की तीव्र इच्छा थी, इसलिए उसने उसी राह पर चलना शुरू कर दिया। जब भी वह इन गतिविधियों में शामिल होता, उसे गहरी संतुष्टि मिलती थी। इसी समय उसने महिलाओं के कपड़े पहनना भी फिर से शुरू कर दिया था, और चूंकि उसका रूममेट पेशे से मेकअप आर्टिस्ट था, इसलिए वह उसका मेकअप करता था। जॉन इस रूप में कभी सड़कों पर नहीं निकलता था; वह ये कपड़े केवल घर पर ही पहनता था। उसके दोस्त उसे जैकलीन के नाम पर जैकी कहने लगे थे।

जब भी वह कपड़े पहनता, जॉन एक अलग ही इंसान बन जाता था। पहली बार जब उसने खुद को पूरे मेकअप और स्त्री के कपड़ों में देखा, तो उसे लगा कि जैकलीन आखिरकार जीत गई है। अब उसे लग रहा था कि जैकलीन ने उस पर पूरी तरह से कब्ज़ा कर लिया है और वह जीवन भर के लिए शापित हो गया है।

“यह सिर्फ स्त्री-वस्त्र धारण करने या महिला का वेश धारण करने का मामला नहीं था,” जॉन ने समझाया, “यह मेरी आत्मा की पूर्ण संतुष्टि थी, और जब जैकलीन ने अपने असली रूप में

सामने आकर मुझे पूरी तरह से अपने वश में कर लिया। वह बहुत मजबूत थी और मैं बहुत कमजोर।"

आखिरकार बात यहाँ तक पहुँच गई कि जॉन जब रात को घर आता तो वह महिलाओं के कपड़े पहनता और पूरी शाम इसी तरह बिताता। वह शाम के गाउन में ही सोता था। उसने अपने शरीर के सारे बाल हटा दिए और नहाने और इत्र लगाने में उसे बहुत आनंद आता था। यह सिलसिला दो साल तक चलता रहा, जब तक कि जॉन को लगा कि कुछ करना ज़रूरी है। उसे एहसास हुआ कि उसके साथ कुछ गड़बड़ है।

लगभग उसी समय एक अन्य मित्र ने उन्हें बौद्ध धर्म से परिचित कराया। उन्होंने तीन वर्षों तक बौद्ध धर्म का पालन किया और इसके माध्यम से उन्हें अपने कई ऐसे सवालों के जवाब मिले जो पहले उन्हें नहीं मिल पाए थे। बौद्ध धर्म के प्रति उनकी गहरी आस्था के कारण, जैकलिन अंततः बौद्ध धर्म छोड़कर चली गईं और फिर कभी वापस नहीं लौटीं। बौद्ध साधनाओं के फलस्वरूप धीरे-धीरे लेकिन निश्चित रूप से उनके व्यक्तित्व में एक नया पुरुष रूप उभरने लगा और वे एक बार फिर अपने आसपास के वातावरण से जुड़ने और जीने का एक उद्देश्य खोजने में सक्षम हो गए।

एक मित्र के माध्यम से जॉन को मेरा पता मिला। उसने मुझसे इस उम्मीद में संपर्क किया कि मैं उसे सम्मोहन द्वारा उसके पिछले जन्म में ले जा सकूँ जहाँ उसकी मुलाकात जैकलीन से हो सके। जॉन को पूरा विश्वास था कि उसकी यह दुर्दशा पुनर्जन्म से जुड़ी एक अधूरी समस्या के कारण थी, और शायद सम्मोहन के माध्यम से मैं उसे इस समस्या से उबरने में और आगे बढ़ा सकूँ।

"जैक्लीन का किरदार निभाते हुए, बौद्ध धर्म अपनाने से पहले के अपने यौन संबंधों से मुझे कभी तृप्ति नहीं मिली," उन्होंने मुझसे कहा, "लेकिन इससे मेरे जैक्लीन व्यक्तित्व को पूरी तरह संतुष्टि मिली। लेकिन अब वो पूरी तरह से बदल चुकी है और एक नया जॉन उभर रहा है —एक ऐसा जॉन जो अब अंधेरे से नहीं डरता, जो अकेले रह सकता है, अपने पैरों पर खड़ा हो सकता है और एक दिन किसी लड़की से शादी करके परिवार बसाएगा। मैं भविष्य को लेकर बहुत आशावादी हूं।"

हालाँकि जॉन या उसके करीबी परिवार को तंत्र-मंत्र में कोई दिलचस्पी या जानकारी नहीं थी, लेकिन उसके परिवार के अन्य सदस्यों के बारे में यह बात पूरी तरह सच नहीं थी। उसकी एक चाची मैरी जादू-टोना करती थीं, उनके पास पंद्रहवीं और सोलहवीं शताब्दी के जादू-टोने से संबंधित कई किताबें थीं, और परिवार में उनका ज़िक्र हमेशा से होता रहा था। कोई भी उनके बारे में बात करने की हिम्मत नहीं करता था। लेकिन जॉन के जन्म से पहले ही उनकी मृत्यु हो गई थी, और जॉन को अपनी चाची मैरी के बारे में जो भी जानकारी थी, वह स्वाभाविक रूप से सुनी-सुनाई बातों पर आधारित थी। फिर भी, उसके पिता के परिवार में कुछ लोगों में अलौकिक शक्तियों (ESP) की क्षमता थी, मुख्य रूप से मृत रिश्तेदारों से संदेश, हालाँकि जॉन कभी भी उनके बारे में कोई विस्तृत जानकारी प्राप्त नहीं कर सका। उसके परिवार में तंत्र-मंत्र एक ऐसा विषय था जिस पर पारिवारिक चर्चा करना उचित नहीं था।

जैक्लीन के जॉन को छोड़ने के बाद, उसे लगातार ऐसी अलौकिक शक्तियां (ESP) प्राप्त होती रहीं जिनका उसके कष्टों से कोई संबंध नहीं था। ये अनुभव कोई बहुत ही महत्वपूर्ण नहीं थे, लेकिन इनसे उसे यह यकीन हो गया कि जैक्लीन के वर्षों के प्रभाव के बावजूद उसकी अलौकिक शक्तियों पर कोई असर नहीं पड़ा था। हमारी मुलाकात से कुछ समय पहले स्टीमशिप हड़ताल हुई थी और उसे नौकरी से निकाल दिया गया था। वह सोच रहा था कि क्या उसे स्टीमशिप उद्योग से बाहर कोई और नौकरी ढूंढनी चाहिए, तभी उसे एक अजीब सपना आया। सपने में उसने स्टीमशिप कंपनी में अपने बॉस को अपने कार्यालय से बाहर आते और किसी से कहते देखा, "जॉन के. को वापस काम पर बुलाओ।" उसी समय उसने सपने में 7 अंक चमकता हुआ देखा। जागने पर उसे सपने की हर बात याद थी। 7 सितंबर को उसका बॉस अपने कार्यालय से बाहर आया और एक सहायक से कहा, "जॉन के. को वापस काम पर बुलाओ," और सपने में जैसा संकेत मिला था, वह अपने पुराने पद पर लौट आया।

मुझे जॉन के. के लगातार हो रहे ईएसपी अनुभवों में काफी दिलचस्पी थी, क्योंकि मुझे शक होने लगा था कि जैकलीन वास्तव में पुनर्जन्म की स्मृति थी या कुछ और। हमने सम्मोहन प्रतिगमन प्रक्रिया शुरू की। सबसे पहले, मैं जॉन के. को बीस वर्ष की आयु में ले गया, जब उन्हें अपने जीवन की हर बात याद थी। उन्हें अपने सबसे अच्छे दोस्तों के नाम और उस समय उनकी मेज पर क्या था, यह भी याद था। फिर मैं उन्हें बारह वर्ष की आयु में, मिसौरी में उनके

जीवन में ले गया। हर बार उन्हें उस समय अपनी सटीक लंबाई भी पता थी। उन्हें अपने पड़ोसियों के नाम, उनके बच्चों की संख्या और यहां तक कि उनके कुत्ते का नाम भी पता था। जब मुझे यकीन हो गया कि वह सम्मोहन प्रतिगमन के तीसरे चरण में गहराई से प्रवेश कर चुके हैं, तो मैं उन्हें जन्म की सीमा से भी आगे, एक कथित पूर्व जीवन में ले गया। मैंने बहुत मेहनत और धीरे-धीरे यह देखने की कोशिश की कि क्या हम किसी अन्य व्यक्तित्व का पता लगा सकते हैं जो पिछले जन्म में जॉन के. रहा हो, लेकिन उन्हें कुछ भी दिखाई नहीं दिया। फिर मैंने उनसे विशेष रूप से जैकलीन को खोजने के लिए कहा।

मैंने पूछा, "क्या आप जानते हैं कि वह कौन है?"

वह ऐसी इंसान है जो मुझे पसंद नहीं करती।

क्या वह एक वास्तविक व्यक्ति है?

"हाँ।"

क्या आप कभी फ्रांस में रहे हैं?

"नहीं।"

फिर मैंने उसे मध्य युग तक, पचास-पचास साल पीछे ले गया, ताकि यह पता चल सके कि कहीं उसके और भी जन्म हुए हों। जब हम सन् 1350 ईस्वी तक पहुँचे, तो उसने कहा कि उसे बहुत अजीब लग रहा है और उसने अपने हाथ अपनी छाती पर रख लिए, जिसे मैंने धार्मिक भाव समझा। लेकिन उसे किसी दूसरे व्यक्ति की कोई पहचान नहीं हुई। फिर मैंने उसे धीरे-धीरे वर्तमान में वापस लाया, अंत में उसे जगाया और फिर उससे पूछा कि उसे कैसा लग रहा है। चूंकि जॉन सम्मोहन के प्रति संवेदनशील था, इसलिए उसे सम्मोहन के दौरान कही गई अपनी कोई भी बात याद नहीं थी।

मैंने पूछा, "क्या आपको पंद्रह मिनट पहले की तुलना में अब कुछ अलग महसूस हो रहा है?"

"मुझे आने से पहले सिरदर्द था; अब सिरदर्द नहीं है।"

वह अच्छी तरह से आराम कर चुका था और खुद से संतुष्ट था। जैकलिन प्रकट नहीं हुई थी, जैसा कि वह तब होती जब वह जॉन के. का हिस्सा होती। तब मैंने उस युवक को समझाया कि

उसकी पीड़ा पुनर्जन्म की यादों या पिछले जन्म की अधूरी इच्छाओं के कारण नहीं थी। इसके विपरीत, वह एक स्वतंत्र सत्ता का शिकार था, जिसका उससे कोई संबंध नहीं था, जिसने किसी तरह उसे भौतिक जगत में अपनी अभिव्यक्ति का माध्यम बनाने के लिए चुना था। जैकलिन, वह फ्रांसीसी वेश्या, जिसके कपड़ों से पता चलता था कि वह उन्नीसवीं सदी में जी चुकी थी, इस सदी में किसी दूसरे शरीर के माध्यम से जीना चाहती थी। अपने निजी कारणों से उसने अपने प्रयोग के लिए एक पुरुष शरीर चुना था।

यदि इन दोनों के बीच पुनर्जन्म का कोई संबंध था, तो वह अस्पष्ट ही रहा। यह संभावना तो है ही कि जॉन के. पिछले जन्म में जैकलिन के करीबी रहे हों, उनके समय में रहे हों, और बाद में उनका पुनर्जन्म हुआ हो जबकि जैकलिन का नहीं, और जैकलिन ने जॉन के. के वर्तमान जन्म के तुरंत बाद उनसे संबंध स्थापित कर लिया हो। मैं स्वयं इस सिद्धांत का समर्थन करता हूँ। यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि इस पूर्व जॉन के. को न तो सचेत अवस्था में और न ही सम्मोहन द्वारा पुनः खोजा जा सका। लेकिन यदि इस पूर्व जन्म ने एक पूर्णतः संतुष्टिपूर्ण जीवन व्यतीत किया होता, तो स्मृति के अंशों को बनाए रखने की आवश्यकता ही न होती।

जैक्लीन के मामले में, उनके द्वारा किए जा रहे कार्यों और उन पर डाले जा रहे धार्मिक दबाव के बीच का आंतरिक संघर्ष ही वह मुख्य कारण रहा होगा जिसने उन्हें एक निश्चित समय सीमा में बांधे रखा, या यों कहें कि समय में स्थिर रखा, जिससे उनका पुनर्जन्म नहीं हो सका। अपनी इस विकट परिस्थिति और हताशा में उन्हें वर्तमान में किसी के माध्यम से अपनी भावनाओं को व्यक्त करने की आवश्यकता थी, क्योंकि वे स्वयं आगे बढ़कर कोई और नहीं बन सकती थीं। अपने माध्यम से वंचित होकर, जैक्लीन ने शायद अस्तित्व के अगले चरण में जाने का रास्ता खोज लिया होगा और उम्मीद है कि अब उनके बारे में फिर कभी कुछ सुनने को नहीं मिलेगा।

*133

वर्मब्रांड अभिशाप

मैंने अब तक जितने भी मामलों की जाँच की है, उनमें से एक सबसे विचित्र मामला मुझे धूप से भरे कैलिफ़ोर्निया से ऑस्ट्रिया के एक महल के नम, अंधेरे कोनों तक ले गया। यह मामला इतना विचित्र था कि मुझे आज भी मनोवैज्ञानिक अनुसंधान के इतिहास में इसका कोई

समानांतर उदाहरण नहीं मिलता। और फिर भी यह सब कल ही की बात है, व्यावहारिक रूप से 1960 के दशक में, एक बिल्कुल नए जेटपोर्ट से बमुश्किल दो घंटे की दूरी पर।

यह सब 1964 में वियना में शुरू हुआ, जब मेरे अच्छे दोस्त तुरहान बे ने मुझे हॉलीवुड में रहने वाले अपने एक मित्र के भूतिया महल के बारे में बताया। उस मित्र का नाम वॉन वुर्मब्रांड था, और तुरहान ने हमें उससे मिलवाने का वादा किया। लेकिन किसी तरह उस समय हम यह बात भूल गए।

लेकिन किस्मत ने ही मुझे इस आदमी से मिलवाया था, क्योंकि उसी साल नवंबर में मुझे काउंट वर्मब्रांड का एक पत्र मिला, जिसमें उन्होंने बताया कि उन्होंने 'घोस्ट हंटर' पढ़ी है और शायद मैं उनकी मानसिक समस्या को सुलझाने में मदद कर सकता हूँ। उनका ध्यान मेरी ओर सिर्फ मेरी किताब की वजह से ही नहीं गया था, बल्कि वियना वोल्क्सब्लाट अखबार में छपे एक बेतुके लेख की वजह से भी गया था, जो एक बहुत ही मामूली अखबार था और जिसने मेरे काम का मज़ाक उड़ाना उचित समझा था। लेख में फोरचेंस्टाइन के उस भूत के बारे में बात की गई थी जिसका जिक्र मैंने 'घोस्ट्स आई हैव मेट' में किया था।

इसके बाद, मेरी मुलाकात हॉलीवुड के होटल रूजवेल्ट में काउंट से हुई। दोपहर के भोजन के दौरान, हमने उनकी मुश्किलों के बारे में बात की और मैंने उनसे वादा किया कि मैं उसी गर्मी में उनके पैतृक महल, स्टेयर्सबर्ग आऊंगा। छह फीट से अधिक लंबे काउंट एक प्रभावशाली व्यक्तित्व के धनी थे, पुराने जमाने के विचारों से परिपूर्ण, लेकिन अपने ऐतिहासिक पृष्ठभूमि के साथ-साथ उनमें व्यावहारिक अमेरिकी सोच का भी मिश्रण था।

यह कोई आश्चर्य की बात नहीं थी, क्योंकि वह 1927 से कैलिफोर्निया में रह रहे थे और एक अमेरिकी नागरिक थे, जिनकी शादी एक अमेरिकी महिला से हुई थी जो उनसे काफी छोटी थीं - यह उनकी दूसरी शादी थी - और वह हॉलीवुड हिल्स में एक बेदाग ढंग से सजाए गए घर में उनके साथ रहते थे।

यह घर, जिसके बारे में मुझे काउंट की असमय मृत्यु के बाद ही पता चला, स्टेयर्सबर्ग महल के विशाल विस्तार से बिलकुल अलग है, लेकिन अपने आप में यह एक आदर्श घर था, उन दो लोगों के लिए बिल्कुल सही जो वहां कई वर्षों तक खुशी से रहे। कहानी के चाहे जितने भी भयावह पहलू हों, कैलिफोर्निया की धूप की गर्म किरणों के नीचे उनकी कोई शक्ति नहीं थी।

डेगेनहार्ड वॉन वुर्मब्रांड ने कैलिफ़ोर्निया के हिसाब से तो पारंपरिक ढंग से कपड़े पहने थे—ग्रे रंग का बिज़नेस सूट, लेकिन ऑस्ट्रियाई होने के नाते उनमें ज़रा भी रूखापन नहीं था। उनकी बातचीत हास्य और आकर्षण से भरपूर थी; उनकी अंग्रेज़ी तो ज़ाहिर सी बात है कि बहुत अच्छी थी, और हमने एक सुखद घंटा साथ बिताया। दुर्भाग्य से उस समय मैं टेलीविजन के काम के दबाव में था, इसलिए ब्लूबर्ड एवेन्यू स्थित उनके घर नहीं जा सका।

उनकी उम्र बहत्तर वर्ष थी और एक पूर्व शाही अधिकारी होने के नाते, उनका शरीर इतना सीधा और मजबूत था कि उनकी उम्र का अंदाजा लगाना मुश्किल था। उनमें बीमारी या कमजोरी का कोई संकेत नहीं था, जो कि बाद की घटनाओं के आलोक में मुझे काफी महत्वपूर्ण लगता है।

हर ग्रीष्म ऋतु में ऑस्ट्रिया के पहाड़ों में स्थित अपने महल में जाना उनकी परंपरा थी, जहाँ वे अपनी विधवा बहन, काउंटेस कोलोवरात के साथ कुछ सप्ताह की छुट्टियाँ बिताने जाते थे। यह स्थान सदियों से उनके परिवार की संपत्ति रहा था। वुर्मब्रांड परिवार का इतिहास मध्य युग तक जाता है, और इसके सदस्यों ने ऑस्ट्रियाई साम्राज्य में उच्च पद प्राप्त किए थे।

1939 के बाद, युद्ध के कारण डेगेनहार्ड गर्मियों में अपने महल में नहीं लौटते थे, और द्वितीय विश्व युद्ध के अंत में रूसियों द्वारा संपत्ति को लूटने से रोकने में केवल उनके अमेरिकी स्वामित्व का ही योगदान था। उनके छोटे भाई ने 1960 में अपनी मृत्यु तक वास्तव में इसका प्रबंधन किया, जबकि डेगेनहार्ड हॉलीवुड में एक चिंतामुक्त जीवन जीते रहे। लेकिन हमेशा एक साया मंडराता रहता था, एक ऐसा खतरा जो कैलिफोर्निया की गर्माहट भी दूर नहीं कर सकती थी।

डेगेनहार्ड वॉन वुर्मब्रांड का बचपन उस विशाल महल में बीता था, जो लगभग साठ कमरों वाली एक इमारत थी और वियना से लगभग 49 मील दक्षिण में एक घने पेड़ों से ढके पहाड़ की चोटी पर स्थित थी। यह महल व्यस्त श्वेचैट हवाई अड्डे से बहुत दूर नहीं था, फिर भी कई मायनों में एकांत में था—जैसा कि हमें उसी वर्ष बाद में पता चला। लेकिन जैसे-जैसे शाही काउंट—उनका पूरा नाम था महामहिम, वुर्मब्रांड-स्टुप्पाच के शाही काउंट—महल में पले-बढ़े, उन्हें जल्द ही पता चला कि इसमें एक भयानक रहस्य छिपा है। वे अपने छोटे भाई के साथ महल के सबसे पुराने हिस्से में एक कमरा साझा करते थे, जो सत्रहवीं शताब्दी के आरंभ

और उससे भी पहले का था। हालांकि स्टेयर्सबर्ग का पूरी तरह से आधुनिकीकरण हो चुका है और प्रत्येक शयनकक्ष के लिए एक बाथरूम है, लेकिन संरचनात्मक रूप से कोई भी बदलाव इसके मूल स्वरूप को नहीं बदल पाया है।

सदी की शुरुआत में, जिस कमरे में वे दोनों लड़के रहते थे, वह एक मीनार का कमरा था जहाँ से नीचे खाई और दूर स्टायरिया की पहाड़ियों का नज़ारा दिखता था। यह कमरा अब उस विंग की सबसे ऊपरी मंज़िल पर है, जो आसपास के परिदृश्य से काफ़ी ऊपर दिखाई देता है। मैंने उस खिड़की से, जो कमरे के उस कोने पर है जहाँ से पूरब और दक्षिण दोनों ओर देखा जा सकता है, बाहर देखा है, और वहाँ का अकेलापन, एकांत का एहसास, बहुत गहरा है। लड़कों का कमरा एक अंधेरे गलियारे से दूसरे मीनार के कमरे से जुड़ा हुआ था। उनकी बहन ह्यूबर्टा उस दूसरे कमरे में रहती थी। नीचे, किला चट्टान में काफ़ी अंदर तक फैला हुआ था।

डेगेनहार्ड अब छह साल का हो चुका था और एक तरह से अकेला ही रह रहा था; उसका छोटा भाई अभी भी एक नर्स के साथ रहता था जो दोनों बच्चों के साथ कमरे में रहती थी। छोटा लड़का दो साल का था।

उस शाम जल्दी ही अंधेरा छा गया था और खिड़कियों से बाहर सिर्फ अंधेरा ही दिखाई दे रहा था। पास का गाँव मीलों दूर था और कोई रोशनी घने अंधेरे को चीरती नहीं थी। नर्स एक किताब पढ़ रही थी—लगभग शाम के 7 बज रहे थे—और बड़े कमरे में एकमात्र रोशनी उसकी नाइट टेबल पर रखे एक छोटे से मिट्टी के तेल के लैंप से आ रही थी। छोटा लड़का सो चुका था लेकिन डेगेनहार्ड अपनी आँखें बंद नहीं कर पा रहा था। किसी तरह यह रात उसे अलग लग रही थी। शायद उसकी छठी इंद्री इतनी कम उम्र में ही प्रकट हो गई थी, क्योंकि काउंट वर्मब्रांड बाद में बहुत ही मानसिक शक्तियों वाला व्यक्ति बन गया और अपनी मृत्यु तक ऐसा ही रहा।

खैर, छह साल का बच्चा बिस्तर पर था, लेकिन पूरी तरह से जागा हुआ था, तभी उसकी नज़र अचानक दोनों कमरों को जोड़ने वाले गलियारे पर पड़ी। अचानक, उसने गलियारे से तीन काले कौवों को निकलते देखा—और वे उड़ते हुए उनके कमरे में चले गए!

चौंककर वह लड़का उन अजीब पक्षियों को देखता रहा जो मानो कहीं से प्रकट हो गए हों। तभी एक कौआ उसके भाई के बिस्तर के सिरहाने पर आकर बैठ गया, जबकि दो कौए

उसके बिस्तर पर आ गिरे। इतना देखकर वह चौंक गया—तुरंत ही उसने कंबल अपने सिर पर ओढ़ लिया। थोड़ी देर बाद जब उसने सांस लेने के लिए सिर उठाया, तो पक्षियों का कोई निशान नहीं था, और नर्स चुपचाप पढ़ रही थी। उसने कुछ नहीं देखा था। ज़ाहिर है, उन पक्षियों का महत्व केवल वर्मब्रांड परिवार के सदस्यों के लिए ही था!

जब मैं 6 सितंबर, 1965 को अपनी पत्नी कैथरीन के साथ स्टेयर्सबर्ग कैसल घूमने गया, तो काउंट वर्मब्रांड मुझे उसी कमरे में ले गए। फर्श पर बिछी मुलायम कालीन और आधुनिक बाथरूम उपकरणों के अलावा, उसमें ज़्यादा बदलाव नहीं हुआ था। खिड़कियों से दिखने वाला नज़ारा अब भी बेहद खूबसूरत था।

बाहर फिर से अंधेरा छा गया था, क्योंकि दिन भर लगातार बारिश होने से हवा में नमी छाई हुई थी। दोपहर के चार बज रहे थे, लेकिन वातावरण बेहद उदास और निराशाजनक था। जैसे ही मैंने महल के उस हिस्से में कदम रखा, मुझे लगा जैसे मैं नीचे की ओर खिंचा चला जा रहा हूँ और किसी तरह खुद को दबी आवाज़ में बोलते हुए पाया। काउंट अचानक बहुत थका हुआ और बूढ़ा लग रहा था—उस दिन सुबह अपने द्वार पर हमारा स्वागत करने वाले चुस्त-दुरुस्त जागीरदार से बिलकुल अलग। क्या कमरे का वातावरण उसे भी बदल रहा था?

हमने उस चट्टान के इतिहास पर चर्चा की जिस पर यह किला बना था; मूल रूप से 1180 में निर्मित, यह 1530 में वर्मब्रांड परिवार के पास चला गया, लेकिन जब डेगेनहार्ड के पिता ने इसका पुनर्निर्माण किया तब तक यह जर्जर अवस्था में पहुँच चुका था। डेगेनहार्ड ने स्वयं इसमें स्नानघर और अन्य अमेरिकी शैली की चीजें जोड़ीं, जिससे यह संभवतः दुनिया के सबसे बेहतरीन सुसज्जित पुराने किलों में से एक बन गया।

फिर हमारी बातचीत भूतिया कौवों की ओर मुड़ गई।

“मैंने पूरी जिंदगी सोचा है कि इसका क्या मतलब है,” काउंट ने कहा। “मैं उन्हें अभी भी देख सकता हूँ!”

कौवों का साया—और अन्य विचित्र अनुभव, आवाजें, बिना किसी के चले कदमों की आहट—उसे वर्षों तक परेशान करते रहे। लेकिन 1950 तक उसे अपनी इस विकट परिस्थिति और इसके अर्थ के बारे में कुछ और जानकारी नहीं मिली थी।

“उस समय कैलिफोर्निया में एक जर्मन भविष्यवक्ता थी,” काउंट ने बताया, “जिज्ञासावश मैं उससे मिलने गया। तुरंत ही वह पीछे हट गई और मुझसे पूछा, ‘तुम्हारे पीछे यह काली आकृति क्या है जो मुझे दिखाई दे रही है?’ उसे लगा कि मुझ पर किसी बुरी आत्मा का साया है।”

“क्या किसी भूत ने अपना साया जमा लिया है?” मैंने कहा। क्या कोई भूत महल छोड़कर हॉलीवुड तक चला गया है? नामुमकिन। भूत तो एक ही जगह रहते हैं।

उस भविष्यवक्ता को आश्चर्य हुआ कि काउंट को यह प्रेतवाधित शक्ति कहाँ से मिली होगी, और उसे प्रेतवाधित कौवों के प्रकट होने के अलावा कोई सार्थक घटना याद नहीं आई। तब उस भविष्यवक्ता ने काउंट वर्मब्रांड के लिए एक बौद्ध पुजारी से मिलने का समय तय किया जो प्रेतबाधित लोगों से प्रेतबाधा दूर करने में विशेषज्ञ थे।

“क्या इससे कोई फायदा हुआ?” मैंने पूछा। मामला अंतरराष्ट्रीय स्तर पर फैल रहा था।

"उन्होंने तीन बार समारोह किया," काउंट ने याद करते हुए कहा, "लेकिन पहले प्रयास के बाद मैंने उनसे पूरी बात के बारे में सवाल किया।"

बौद्ध भिक्षु, जिसे काउंट या उसके पृष्ठभूमि के बारे में कुछ भी पता नहीं था, जाहिर तौर पर एक माध्यम भी था। उसने काउंट के आसपास तीन फटेहाल पुरुषों का वर्णन किया, जो अपने निष्कासन का विरोध कर रहे थे क्योंकि उनका कुछ काम अधूरा रह गया था।

बौद्ध पुजारी ने उनसे स्पष्टीकरण मांगा, और बेचैन आत्माओं ने उन्हें बताया कि काउंट के दो पूर्वजों ने उनके साथ अन्याय किया था; राजद्रोह का झूठा आरोप लगाकर, इन पूर्व वर्मब्रांडों ने उनके महल में उन लोगों को यातनाएं दीं और मार डाला था। हालांकि यह घटना बहुत पहले घटी थी, फिर भी पीड़ित बदला लेना चाहते थे। वे चाहते थे कि काउंट हत्या करे, कोई अपराध करे। 1710 में हुए अन्याय का बदला लेने का यही उनका तरीका था!

काउंट वर्मब्रांड को यह सब बहुत अजीब लगा, लेकिन फिर उन्हें अचानक भयावह रूप से याद आया कि कैसे उन्हें अक्सर हत्या करने, खून करने की लगभग अनियंत्रित इच्छा होती थी - जबकि वह सामान्यतः एक सौम्य, शांतिप्रिय व्यक्ति थे।

हॉलीवुड के पादरी के घर से निकलते ही उसके मन में एक और विचार आया। सारी रहस्यमयी घटनाएँ उसी कमरे में घटी थीं जहाँ उसने तीन कौवे देखे थे—और वह कमरा

तहखाने के ठीक ऊपर था। उसके पिता ने उस प्राचीन तहखाने को दीवारों से घेरवा दिया था, और आज तक वहाँ जाना असंभव है; अंदर जाने के लिए एक मोटी दीवार तोड़नी पड़ेगी। अगर स्टेयर्सबर्ग किले में किसी की हत्या हुई थी, तो वह उसी जगह हुई थी।

काउंट वर्मब्रांड ने अपने पूर्वजों से संबंधित ऐतिहासिक अभिलेखों की जांच की। 1710 में यह महल परिवार की एक अलग शाखा के स्वामित्व में था, और हैरानी की बात यह है कि दो व्यक्ति इसके स्वामित्व और कमान में भागीदार थे, क्योंकि वे शाही सेना में सेनापति भी थे। इस प्रकार, भूतों द्वारा दो व्यक्तियों द्वारा उनके साथ अन्याय करने का उल्लेख तर्कसंगत प्रतीत होता है।

उसके बाद के वर्षों में काउंट के जीवन में कुछ खास घटित नहीं हुआ जिससे उसे प्राचीन श्राप की याद आती। लेकिन 1961 में वह फिर से ऑस्ट्रिया लौट आया और वहाँ उसकी मुलाकात एक ऐसी महिला से हुई जो उसके पिता और भाई की मित्र थी। काउंट के अलावा, वही एकमात्र ऐसी व्यक्ति थी जिसे मानसिक मामलों में रुचि थी, और इसलिए वह बिना किसी झिझक के ऐसे विषयों पर उससे अपने मन की बात कह देती थी।

ऐसा प्रतीत हुआ कि उनकी अनुपस्थिति में महल में एक प्रेतात्माओं से संपर्क का आयोजन किया गया था, जिसमें उस समय के एक प्रसिद्ध वियना के माध्यम, महिला और उनके भाई उपस्थित थे। वह व्यक्ति महल के एक कमरे में समाधि की अवस्था में चला गया। अचानक, बिजली की बत्तियाँ बिना किसी स्पष्ट कारण के अपने आप मंद हो गईं। फिर उन्हें भारी कदमों की आहट सुनाई दी, जबकि वहाँ कोई चलता हुआ दिखाई नहीं दिया। महिला का धैर्य भंग हो गया और वह कमरे से बाहर चली गई, प्रेतात्माओं से संपर्क की प्रक्रिया को जारी रखने का जिम्मा उनके भाई पर छोड़ दिया।

कुछ देर बाद, काउंट अर्न्स्ट भी चले गए और अपने कमरे में चले गए। लेकिन अदृश्य कदमों की आहट उनका पीछा करते हुए उनके कमरे तक पहुँच गई। इससे वे इतने घबरा गए कि उन्होंने माध्यम से और सलाह मांगी। उस व्यक्ति ने अपनी पूरी कोशिश करने का वादा किया और तहखाने के ऊपर लड़कों के शयनकक्ष में कई साल पहले घटी घटनाओं की कोई जानकारी न होने के बावजूद, सीधे उसी कमरे में चले गए, जबकि वे लगभग पचास अन्य कमरों में भी जा सकते थे।

“मैं यहीं सोना चाहता हूँ,” उसने समझाया, और उसने वैसा ही किया। अगली सुबह उसे कोई परेशानी नहीं हुई।

भूत ने सचमुच पिछली रात उससे बात की थी। उसने शिकायत की कि उसे राजद्रोह के आरोप में गलत तरीके से कैद किया गया था और दो पूर्वज-सेनापतियों द्वारा प्रताड़ित किया गया था। यह बिल्कुल वही कहानी थी जो बौद्ध धर्मावलंबी ने हॉलीवुड में काउंट वर्मब्रांड को सुनाई थी - बस एक उल्लेखनीय अंतर था: यहाँ केवल एक व्यक्ति ने अन्याय का दावा किया था, केवल एक भूत।

“बस इतना ही?” मैंने पूछा। यह तो काफी दिलचस्प कहानी थी।

“पूरी तरह नहीं,” काउंट वर्मब्रांड ने धीरे-धीरे थकी हुई आवाज़ में समझाया, जैसे-जैसे बाहर रात होती जा रही थी। “इस श्राप में सुख का भी प्रावधान था। भूत ने दावा किया था कि इन दीवारों के भीतर किसी भी वर्मब्रांड का वैवाहिक जीवन सुखमय नहीं होना चाहिए। और आज तक किसी भी वर्मब्रांड का वैवाहिक जीवन सुखमय नहीं हुआ है।”

मैंने उस भूतिया कमरे में कुछ तस्वीरें लीं, जिनमें बाद में अद्भुत सुपरइम्पोज़िशन दिखाई दिए। हालाँकि मेरा कैमरा, लॉक मैकेनिज़्म के कारण डबल-एक्सपोज़र-प्रूफ होने के कारण, केवल वर्गाकार तस्वीरें ही ले सकता है, फिर भी मुझे आयताकार आकार की एक तिहरी तस्वीर मिली, जिसमें कमरे के वे हिस्से दिखाई दे रहे थे जो वास्तव में मेरे पीछे थे, ऐसे हिस्से जिन्हें कैमरा सामान्य परिस्थितियों में कैप्चर नहीं कर सकता था—और कमरे में कोई दर्पण या खिड़की का प्रभाव भी नहीं था जो इसका कारण बन सके। ये तस्वीरें अब मेरी मानसिक तस्वीरों में शामिल हैं और मैं इन्हें बहुत संजोकर रखता हूँ।

लेकिन उनके बारे में एक और उल्लेखनीय बात यह थी कि उनमें से एक तस्वीर में काउंट वर्मब्रांड कैसे दिख रहे थे। बहुत थके हुए और बीमार, मानो आने वाली विपत्तियाँ अलौकिक शक्तियों द्वारा उनके चेहरे पर पहले से ही अंकित हो रही हों!

मैं अपने मेज़बान को परेशान नहीं करना चाहता था, लेकिन बाकी लोगों के पास लौटने से पहले कुछ अधूरे काम थे जिन्हें मैं निपटाना चाहता था। चूंकि काउंट की बहन इस विषय में ज़्यादा दिलचस्पी नहीं दिखा रही थी, या यूं कहें कि उसने ऐसा कहा था—जो बाद में मुझे गलत लगा—इसलिए हम दोनों अकेले ही उस भूतिया कमरे में गए थे, और मेरी पत्नी को काउंटेस

जूलियाना वर्मब्रांड और काउंटेस कोलोवरात (बहन) के साथ संगीत और कला पर चर्चा करने के लिए वहीं छोड़ दिया था।

मैंने पूछा, "आपके अलावा, आपके भाई अर्न्स्ट और निश्चित रूप से उस माध्यम के अलावा, क्या इस महल में किसी और ने भी कुछ असामान्य अनुभव किया है?"

“अमेरिका में रहने के दौरान, जिस महिला का मैंने पहले ज़िक्र किया था, जो यहाँ माध्यम को लेकर आई थी, वह एक बार एक ऐसे व्यक्ति को लेकर आई थी जिसका चरित्र अच्छा नहीं था। वह नाज़ी पार्टी का सदस्य था, इसलिए उसने जानबूझकर उसे उस प्रेतवाधित कमरे में डाल दिया। अगली सुबह, उसने बहुत शिकायत की। उसने कहा कि पूरी रात भयानक आवाज़ें आती रहीं और लोग ‘हर समय अंदर आने की कोशिश कर रहे थे’। उसका दावा था कि किसी शक्ति ने कमरे में जबरदस्ती घुसने की कोशिश की थी।”

क्या भूत द्वारा वर्णित राजद्रोह के मुकदमे का कोई रिकॉर्ड मौजूद था? हम महल के पुस्तकालय में गए, जो पहली मंजिल पर था और चारदीवारी से घिरे तहखाने के और भी करीब था। वह एक कम रोशनी वाला, लंबा कमरा था जो पांडुलिपियों से भरा हुआ था, जिनमें से कुछ अव्यवस्थित अवस्था में थीं और सभी धूल से ढकी हुई थीं। सरसरी जाँच से कोई उपयोगी जानकारी नहीं मिली।

मैंने आखिरकार पूछा, "आपको यहां आखिरी बार कब बेचैनी महसूस हुई थी?"

“मैं आपको यकीन दिलाता हूँ, मैं इस कमरे में नहीं सोऊंगा,” काउंट ने जवाब दिया। इससे पहले उन्होंने मुझे बताया था कि श्राप अभी भी उन पर मंडरा रहा है और उन्होंने कभी भी इससे खुद को सुरक्षित महसूस नहीं किया है।

जब वह महल में थे, तो वे उन क्षेत्रों से पूरी तरह दूर रहते थे जिन्हें वे प्रेतवाधित मानते थे और केवल महल के अन्य हिस्सों में ही रहते थे। वहाँ बैठक और भोजन कक्ष थे, जो अपनी भव्यता और साज-सज्जा में उत्कृष्ट थे, और उन्हें इस प्रकार सजाया गया था जैसे कोई बहुत पुराना परिवार अपने घर को सजाता है। उनके अपने अपार्टमेंट महल के एक अन्य भाग में थे, जो उस विशाल चिमनी से काफी दूर थे जो उस बड़े भोजन कक्ष की शोभा बढ़ाती थी जहाँ हम अब लौट रहे थे।

दिन लंबा और विचित्र घटनाओं से भरा रहा था। किसी तरह ऐसा लग रहा था जैसे यह किसी हॉलीवुड हॉरर फिल्म की कहानी हो, बस फर्क इतना था कि हम उसे पढ़ नहीं रहे थे—हम खुद उस कहानी का हिस्सा थे!

मैंने स्टेयर्सबर्ग आने का निमंत्रण स्वीकार कर लिया था और मुझे वहाँ पहुँचने के लिए सटीक निर्देश दिए गए थे। अनगिनत कोलोवरात ने मुझे कई बुर्जों वाले किले की तस्वीर वाला एक पोस्टकार्ड भी भेजा था, इसलिए मैं इसे देखने से चूक ही नहीं सकता था।

मैंने वियना में एक कार किराए पर ली, लेकिन हमारी तय यात्रा की सुबह ही पता चला कि कार खराब हो गई है और हम जा नहीं सकते। तब मैंने काउंट वर्मब्रांड को फोन किया और उन्होंने हमें लेने के लिए अपनी कार और ड्राइवर को भेजा।

ऑस्ट्रियाई आल्प्स की तलहटी से लगभग एक घंटे की सवारी के बाद जब हम श्लॉसबर्ग, या महल की पहाड़ी के पास पहुंचे, तो हमने पाया कि देश और भी अधिक एकांत और आदिम था।

जैसे ही हम पहाड़ी की चोटी पर चढ़ने लगे, जहाँ से महल कुछ दूरी से ही दिखाई देने लगा था, ड्राइवर ने हॉर्न बजाकर महल को हमारे आने की सूचना दी। सड़क के अंतिम मोड़ पर पहुँचते ही एक अद्भुत दृश्य हमारे सामने आया: धूसर पत्थर के महल के द्वार के ठीक अंदर, जैसे ही हम प्रांगण में पहुँचे, वहाँ सफेद जैकेट और गहरे रंग की पैंट पहने बटलर, विक्टोरियन वर्दी में एक नौकरानी और एक तीसरा नौकर हमारा इंतज़ार कर रहे थे।

जब तक हम अपने कैमरे और टेप के सभी उपकरणों के साथ कार से बाहर निकले, तब तक स्वयं काउंट वर्मब्रांड मुख्य द्वार से धीरे-धीरे हमारी ओर आ रहे थे और हमें पुराने जमाने का स्वागत दे रहे थे।

उस पल से हमने एक ऐसी दुनिया में एक सुखद दिन बिताया जिसे छोड़कर जाने का हमें अफसोस हो रहा था। दुर्भाग्यवश, हमने सुबह वियना छोड़ने का पहले ही वादा कर लिया था —और वह भी मूर्खतापूर्ण ढंग से—इसलिए हम वहाँ रुक नहीं सके। हमने सिबिल लीक के साथ अगली गर्मियों में लौटने और उस भूत और अभिशाप का अंत करने का वादा किया।

कम से कम यही हमारा इरादा था, और हमने अपनी वापसी की तारीख तय होने तक वर्मब्रांड परिवार के साथ समय-समय पर पत्राचार किया।

फिर अचानक सन्नाटा छा गया। दिसंबर 1965 में, मुझे ऑस्ट्रियाई डाक टिकट वाला एक काले बॉर्डर वाला पत्र मिला। इसे खोलने से पहले ही मुझे सहज रूप से पता चल गया था कि इसका क्या मतलब है।

यह आधिकारिक सूचना थी कि मेरे मित्र का 17 नवंबर को निधन हो गया था, और उन्हें पास के किर्चाऊ में संरक्षक गिरजाघर में पूरे सम्मान के साथ दफनाया गया था, जो कि स्टेयर्सबर्ग डोमेन से संबंधित गांवों में से एक है।

मैं इस औपचारिक घोषणा से संतुष्ट नहीं था: मैं और अधिक जानना चाहता था। क्या पिछली बार जब हमने अपने दोस्त को देखा था, तब वह बिल्कुल स्वस्थ नहीं था?

जून 1966 में मैंने कुछ समय हॉलीवुड में बिताया, और तभी मैंने आखिरकार वर्मब्रांड परिवार का कैलिफोर्निया स्थित घर देखा। काउंटेस जूलियाना ने मुझे वहां की घटनाओं से अवगत कराया।

उनके पति को मामूली सी बीमारी हो गई थी, लेकिन इतनी गंभीर कि उन्हें अच्छे अस्पताल में भर्ती कराना ज़रूरी था। कोई खतरा नहीं था, और न ही उन्हें कोई गंभीर तकलीफ थी। कई दिन बीत गए और काउंट बेचैन हो गए, वे फिर से सक्रिय जीवन में लौटने के लिए उत्सुक थे। जूलियाना उनसे नियमित रूप से मिलने जाती थीं, और अगर मेरे दोस्त में कोई समस्या थी, तो वह अस्पताल में रहने से उनकी अरुचि थी।

फिर एक रात उनके शरीर में खून का एक छोटा सा थक्का जम गया। आम तौर पर, इसका तुरंत इलाज संभव होता है और परिणाम घातक नहीं होता। लेकिन उस रात, किसी तरह डॉक्टर समय पर नहीं पहुँच पाए और कीमती पल बीतते चले गए। जब तक मदद पहुँची, तब तक बहुत देर हो चुकी थी। काउंट वर्मब्रांड की एक असंबंधित दुर्घटना में मृत्यु हो गई, एक ऐसी दुर्घटना जो न तो होनी चाहिए थी और न ही उनके लिए घातक। क्या भाग्य की उँगलियाँ, एक भयानक अभिशाप की दूरगामी किरणें अंततः अपने अंतिम शिकार तक पहुँच गईं?

क्योंकि काउंट की मृत्यु हो गई और इस प्रतिष्ठित नाम को धारण करने वाला कोई प्रत्यक्ष पुरुष उत्तराधिकारी नहीं था, इसलिए जब मैं ऑस्ट्रिया से धूप वाले कैलिफ़ोर्निया और फिर वापस ऑस्ट्रिया जाने वाले एक व्यक्ति के साथ हुए इस विचित्र अभिशाप का वर्णन लिख रहा हूँ, तब

वर्मब्रांड महल अब किसी काउंट वर्मब्रांड के हाथों में नहीं है। कौन जानता है, अगर डेगेनहार्ड वॉन वर्मब्रांड 1965 में कैलिफ़ोर्निया में ही रहते तो शायद आज भी जीवित होते।

मुझे यह बात पक्के तौर पर पता है, क्योंकि 1964 की शरद ऋतु में जब मैं हॉलीवुड से गुज़र रहा था, तब मेरी उनसे थोड़ी देर के लिए बात हुई थी। उस समय उन्हें पक्का पता नहीं था कि वे 1965 की गर्मियों में अपने महल में हमसे मिल पाएंगे या नहीं।

“मुझे अंदर से ऐसा लग रहा है कि मुझे नहीं जाना चाहिए,” उसने गंभीरता से कहा।

“तो फिर आपको ऐसा नहीं करना चाहिए,” मैंने सलाह दी। किसी व्यक्ति की अंतरात्मा की आवाज, विशेषकर जब वह मानसिक रूप से संवेदनशील हो और वर्मब्रांड की तरह उसे जीवन भर पूर्वाभास होता रहा हो, तो उस पर ध्यान देना चाहिए।

लेकिन काउंट को ऑस्ट्रिया में कुछ काम था और अंत में वे मान गए और चले गए, फिर कभी कैलिफोर्निया वापस नहीं लौटे। इस तरह, इससे पहले कि मैं कुछ कर पाता, वर्मब्रांड का अभिशाप अपना असर दिखा चुका था।

*134

डिक टर्पिन, माई लव

1973 की गर्मियों के दौरान, मुझे सिंथिया वॉन रूप्रथ-स्निटिली नाम की एक युवती से एक विचित्र रूप से विस्तृत और विनती भरा पत्र मिला। नाम ही इतना आकर्षक था कि मेरी रुचि उसमें और बढ़ गई, लेकिन अज्ञात के साथ अपने विचित्र अनुभवों के बारे में उस महिला ने जो बताया, वह मुझे तब भी आकर्षित करता जब उसका नाम स्मिथ या जोन्स होता।

सिंथिया का जन्म 31 दिसंबर, 1948 को शिकागो में हुआ था और वह इक्कीस वर्ष की आयु तक उसी घर में रहीं। कॉलेज की पढ़ाई के लिए वह केवल इलिनोइस के डी काल्ब स्थित नॉर्दर्न इलिनोइस विश्वविद्यालय में दाखिला लेने के लिए ही वहाँ से निकलीं। मुझे तुरंत नॉर्दर्न इलिनोइस विश्वविद्यालय की अपनी यात्रा याद आ गई, जो इलिनोइस के मैदानों के बीच बसे एक छोटे से कस्बे में स्थित एक विशाल विश्वविद्यालय था। यह विश्वविद्यालय आसपास के कस्बे की संकीर्ण सोच से लगातार जूझता हुआ प्रतीत होता था, जबकि वहाँ बड़ी संख्या में ऐसे

छात्र पढ़ते थे जो मानव मन की क्षमताओं को गहराई से जानने के लिए उत्सुक थे। सिंथिया ने इतिहास और कला दोनों में स्नातक की डिग्री प्राप्त की है और पेशे से कला इतिहासकार हैं। उन्होंने कहा, "मैंने काल्पनिक कथाओं और ठोस तथ्यों दोनों का अध्ययन किया है, इसलिए मुझे इन दोनों के बीच की बारीक रेखाओं का ज्ञान है। मैंने इस ज्ञान को अपने दैनिक जीवन में उतारा है और इसे अपनी सोच में शामिल किया है। सच कहूँ तो, मैं स्वयं अपनी सबसे बड़ी आलोचक हूँ।"

1970 में उन्होंने नोट्रे डेम विश्वविद्यालय में मिले एक व्यक्ति से शादी की और उनके गृहनगर सिएटल, वाशिंगटन चली गईं, जहाँ वे बोइंग एयरक्राफ्ट में कार्यरत थे। एसएसटी परियोजना के समाप्त होने के बाद, उनके पति वायु सेना में भर्ती हो गए और मुझसे संपर्क करने के समय वे लॉस एंजिल्स से लगभग एक घंटे की दूरी पर स्थित कैलिफोर्निया के एडवर्ड्स वायु सेना अड्डे पर तैनात थे।

सिंथिया हमेशा से एक गंभीर और संवेदनशील स्वभाव की थीं, शायद इसलिए क्योंकि वह अपने से चालीस साल बड़े माता-पिता की इकलौती संतान थीं। इसी वजह से वह बड़े लोगों के साथ सहज महसूस करती थीं और अपनी उम्र के लोगों की बजाय उनकी संगति को ज़्यादा पसंद करती थीं। अपनी संवेदनशीलता के कारण, उन मामलों में जो उन्हें प्रभावित करते थे, वह अक्सर भावुक हो जाती थीं। अपने इस प्रबल स्वभाव को संतुलित करने और अपने पेशे को ध्यान में रखते हुए, उन्होंने चीजों के प्रति एक तार्किक और व्यवस्थित दृष्टिकोण विकसित करने का भरसक प्रयास किया और कोई भी कदम उठाने से पहले कई बार सोच-विचार किया। इस प्रकार, जब उन्हें एहसास हुआ कि उन्हें बचपन से ही मानसिक अनुभव होते रहे हैं और ये उनके जीवन में भी जारी रहे, तो उन्होंने उन घटनाओं का विश्लेषण और अन्वेषण करने का निर्णय लिया जिनमें वह एक केंद्रीय भूमिका निभा रही थीं। उन्हें जल्द ही पता चला कि उनकी मानसिक क्षमता उन्हें अपनी मां के परिवार से विरासत में मिली थी; उनके नाना-नानी क्रोएशिया से संयुक्त राज्य अमेरिका आए थे। कई क्रोएशियाई लोगों की संस्कृति में जादू-टोने में विश्वास और कुछ ग्रामीण लोगों द्वारा असामान्य चीजें करने या अलौकिक अनुभवों का सामना करने की क्षमता गहराई से समाई हुई है। लेकिन इन घटनाओं के प्रति सिंथिया का रवैया आलोचनात्मक बना रहा। उन्होंने स्पष्ट किया, "मैं बिना और अधिक जांच

किए ऐसी घटनाओं को आसानी से स्वीकार नहीं करती।" एक मामला विशेष रूप से उन्हें प्रभावित करता था, क्योंकि यह उनसे व्यक्तिगत रूप से जुड़ा हुआ था।

“यह मामला असामान्य है क्योंकि यह वर्षों से लगातार तीन पीढ़ियों के साथ घटित हुआ है। 1910 के दशक में मेरी दादी शिकागो में घरेलू काम कर रही थीं, तभी पूरी तरह से काले कपड़े पहने एक पड़ोसी उनके दरवाजे पर आई। उस महिला को आम तौर पर 'स्ट्रेगा' के नाम से जाना जाता था और स्वाभाविक रूप से मेरी दादी उसे देखकर खुश नहीं थीं। वह महिला जानना चाहती थी कि मेरी दादी चूल्हे पर रखे बर्तन में क्या पका रही हैं। मेरी दादी ने मना कर दिया और उस महिला को जाने के लिए कहा, जिस पर उस महिला ने कहा कि वह उसी रात वापस आएगी, 'वह चीज़ ढूंढने के लिए जिसकी उसे तलाश है।' उस रात जब मेरे दादा-दादी, मेरी माँ और मेरे चाचा बिल सभी एक ही बिस्तर पर सो रहे थे, अचानक दरवाजा ज़ोर से खुला और मेरी माँ को याद है कि उन्होंने मेरी दादी को बिस्तर पर किसी अदृश्य शक्ति से जूझते हुए देखा था। माँ को गद्दे की हलचल बहुत स्पष्ट रूप से याद है, मानो उस पर कुछ उछल-कूद कर रहा हो। निश्चित रूप से यह एहसास किसी लेटी हुई आकृति से कहीं अधिक तीव्र था। ऐसा लगा जैसे कमरे में बुराई का साया छा गया हो और 'शक्ति' की तरह ही तेज़ी से चला गया हो। वर्षों बाद, शुरुआत में... सन् 1949 में, ऐसी ही एक घटना घटी। मेरी चाची शिकागो स्थित हमारे घर में बैठी मुझे बोतल से दूध पिला रही थीं, तभी यह शक्ति फिर से प्रकट हुई और हम दोनों सोफे से काफी ऊपर उठ गए। उछलना जारी रहा और बुरी शक्ति का आभास हुआ। इस "चीज़" का अगला प्रदर्शन सन् 1971 के शुरुआती महीनों में सिएटल में हुआ। आधी रात के करीब का समय था और मैं एक उपन्यास पढ़ रही थी, जबकि मेरे पति गैरी सो रहे थे। मुझे अचानक अपने कमरे में किसी बुरी शक्ति का आभास हुआ। मैंने इसे नजरअंदाज कर दिया, लेकिन तभी वह उछलने वाली हरकत शुरू हो गई। मैं बहुत घबरा गई क्योंकि मुझे एहसास हुआ कि न तो मेरे सोए हुए पति और न ही मेरा लेटा हुआ शरीर ऐसी किसी हरकत का गवाह बन सकता है। मैंने अपने पति को जगाया, जो मानसिक शक्तियों से ग्रस्त नहीं हैं, और उन्हें भी उछलने वाली हरकत का एहसास हुआ। अब यह और तीव्र हो रही थी, लेकिन जब मैंने प्रभु का नाम लिया, तो बिस्तर अचानक हिलना बंद हो गया। मुझे अप्रैल 1971 में, सिएटल से जाने के बाद ही, पिछली दो घटनाओं के बारे में पता चला।

सिंथिया अपने पिता की तरफ से हनोवर के एक कुलीन जर्मन परिवार से संबंध रखती हैं। उनके पिता को किसी भी प्रकार की मानसिक शक्तियों में कोई रुचि या रुचि नहीं थी। जब सिंथिया कुछ ही महीनों की थीं, तब उनकी मौसी डोरिस उनकी मां के स्थान पर अस्थायी रूप से उनके साथ रहने आईं, क्योंकि उनकी मां उस समय काफी बीमार थीं और अस्पताल में भर्ती थीं। मौसी बैठक के सोफे पर सो रही थीं, सिंथिया के पिता सामने वाले शयनकक्ष में और सिंथिया खुद पीछे वाले शयनकक्ष में रखे पालने में सो रही थीं। सभी को उनकी मां के स्वास्थ्य की बहुत चिंता थी, और रोमन कैथोलिक होने के कारण उनकी मौसी लगभग चौबीसों घंटे प्रार्थना कर रही थीं। वह कुछ ही देर सोई थीं कि ठंडी हवा के झोंके से उनकी नींद खुल गई और आश्चर्य से उन्होंने देखा कि एक अपेक्षाकृत युवा महिला, जो नन की पोशाक पहने हुए थी, बैठक के कमरे से थोड़ा ऊपर फर्श पर चलती हुई सिंथिया के कमरे की ओर गलियारे में मुड़ गई। छोटी बच्ची की सुरक्षा को लेकर चिंतित मौसी जल्दी से उस महिला के पीछे कमरे में चली गईं। वहाँ उसने देखा कि नन ने सिंथिया के पालने पर हाथ रखा, उसे नीचे देखा और मुस्कुराई। वह आंटी से बिल्कुल बेखबर लग रही थी और, मानो अपना काम पूरा कर चुकी हो, मुड़कर गलियारे में चली गई। आंटी ने तुरंत बच्ची को देखा और जब बच्ची ठीक पाई तो उस आकृति के पीछे गईं। जब वह बैठक कक्ष में पहुँचीं, तो वह आकृति गायब हो चुकी थी, फिर भी हवा में गुलाबों की तेज़ खुशबू बनी रही, जिसे सिंथिया के पिता ने अगली सुबह भी महसूस किया। यह खुशबू घर में बनी रही, भले ही सर्दी का मौसम था, जब तक सिंथिया की माँ अस्पताल से घर नहीं लौटीं। वहाँ कोई इत्र की थैली, ताज़े फूल या एयर फ्रेशनर नहीं थे जो इस अजीब गंध का कारण हो सकते थे। यह असामान्य गंध समय-समय पर घर में लौट आती है और इसका कभी भी संतोषजनक स्पष्टीकरण नहीं मिल पाया है; यह आमतौर पर परिवार में किसी बीमारी के साथ होती है, और अक्सर सिंथिया की माँ के लिए एक तरह की टेलीपैथिक चेतावनी का काम करती है, जब सिंथिया कॉलेज में पढ़ते समय बीमार थी। बेशक, इस विशेष घटना के बारे में सिंथिया को कई साल बाद एक पारिवारिक समारोह में बताया गया था, लेकिन इसने सिंथिया की अपनी असाधारण क्षमता के प्रति जागरूकता को रेखांकित करने का काम किया।

सिंथिया ने बताया, “शायद सबसे जीवंत और यादगार व्यक्तिगत अनुभव मुझे तब हुआ जब मैं प्राथमिक विद्यालय में थी। 1950 और 60 के दशक में, मैं हमेशा कदमों की आहट सुनती थी, जो ऊपर बताए गए बैठक कक्ष से शुरू होकर सामने वाले शयनकक्ष में आती और दिन-रात मेरे बिस्तर पर आकर रुक जाती थी। मेरे माता-पिता हमेशा इन आवाज़ों को पुराने फर्शों की चरमराहट मानते थे, लेकिन घर तो 1947 में ही बना था। कभी-कभी कदमों की आहट बिस्तर से दूर चली जाती थी, जिससे 'सोने से पहले आखिरी कदमों की आहट' वाली बात गलत साबित हो जाती थी। मैं एक दोहरे बिस्तर पर सोती थी जिसका मुख शयनकक्ष का दरवाजा खुला होने पर दालान की ओर होता था। बिस्तर के बाईं ओर, यानी मेरी तरफ, वह दीवार थी जो बैठक कक्ष और सामने वाले शयनकक्ष दोनों को जोड़ती थी; माँ दूसरे दोहरे बिस्तर पर सोती थीं जो ड्राइववे की दीवार से सटा हुआ था।”

एक रात, मैं बाथरूम जाने के लिए उठी और बिस्तर पर लौटकर चादर ओढ़कर सो रही माँ पर एक नज़र डाली। अचानक कमरा बहुत ठंडा हो गया और जब मैंने दरवाज़े की तरफ देखा, जिसे मैं बंद करना भूल गई थी, तो मैंने देखा कि चार लोग लिविंग रूम से हॉलवे की दीवार तोड़कर हमारे बेडरूम में आ रहे हैं। यह साबित करने के लिए कि मैं बिस्तर पर लौटने के बाद से बेहोश नहीं हुई थी, मैंने खुद को चुटकी काटनी शुरू कर दी और बार-बार कमरे और अपनी माँ की तरफ देखने लगी। इस तरह मुझे पता चला कि मैं पूरी तरह जाग रही थी और सपना नहीं देख रही थी। कमरे में प्रवेश करने वाली पहली महिला, बाकी सभी की तरह, उन्नीसवीं सदी के पश्चिमी अमेरिकी कपड़े पहने हुए थी। वह चालीस साल की एक औसत कद-काठी की महिला थी, बहुत पतली और भूरे और सफेद रंग की कैलिको ड्रेस पहने हुए थी, जिसमें ऊँचे बटन वाला कॉलर और लंबी आस्तीनें थीं; उसके गहरे भूरे बाल बीच से बँधे हुए थे और सिर के ऊपर कसकर जूड़े में बंधे हुए थे। उसके चेहरे पर एक सलीके और संयम का भाव था। वह मेरे बाईं ओर बिस्तर के निचले हिस्से में चली गई। उसके बाद एक बहुत लंबा व्यक्ति आया। एक दुबला-पतला आदमी, बीच से मांग निकाले भूरे बाल, भूरे रंग का तीन-पीस सूट पहने हुए, जो कुछ हद तक जर्जर लग रहा था। वह मेरे बिस्तर के बीचोंबीच, पैरों के पास बैठ गया। उसके पीछे एक महिला आई, जो मुझे उस दृश्य के समय भी बेमेल लगी। उसने बेहद अजीबोगरीब बैंगनी साटन का पहनावा पहना हुआ था, जो एक तरफ से

ऊपर उठा हुआ था, जैसे पुराने पश्चिमी इलाकों में बार में काम करने वाली लड़कियां पहनती थीं। उसके सुनहरे बाल घुंघराले थे, जो सिर के एक तरफ ऊपर उठे हुए थे और दूसरी तरफ नीचे लटके हुए थे। जैसे ही वह मेरे दाहिनी ओर बैठे लंबे सज्जन के बगल में बैठी, मुझे उसके आसपास अकेलापन और एक बहुत ही सौम्य स्वभाव का आभास हुआ। अंत में एक बहुत ही सलीके से सजा हुआ, हालांकि कुछ मोटा, भूरे बालों वाला सज्जन आया। वह एक छोटी तीन टांगों वाली कुर्सी और एक काला थैला लिए हुए था, जिससे मुझे लगा कि वह शायद एक डॉक्टर था। टोपी पहने और सोने की घड़ी की चेन के साथ भूरे रंग का तीन-पीस सूट पहने हुए, वह मेरे बिस्तर के दाहिनी ओर अपनी कुर्सी पर बैठ गया। वे सभी मेरी सेहत को लेकर बहुत चिंतित लग रहे थे, हालांकि मैं उस समय बीमार नहीं था। जब 'डॉक्टर' बिस्तर पर झुककर मेरा हाथ पकड़ने की कोशिश करने लगा, तब मुझे लगा कि इन अजनबियों के साथ मैं लगभग सब कुछ अनुभव कर चुकी हूँ। मेरी आवाज़ काँप रही थी जब मैंने अपनी माँ को पुकारा, जो बहुत हल्की नींद सोती थीं और जिनकी पीठ मेरी तरफ थी, और उन्हें उन अनजान लोगों के बारे में बताया जिन्होंने हमारे कमरे में घुसपैठ की थी। 'माँ, कमरे में लोग हैं!' मैंने बार-बार पुकारा। उन्होंने नींद में ही मुझे दिलासा दिया और बिना करवट बदले कहा कि मैं सिर्फ़ सपना देख रही हूँ और वापस सो जाऊँ। मेरी इन विनतियों के दौरान, चारों अजनबी बिस्तर से पीछे हटने लगे जैसे कि वे मेरे बोलने से घबरा गए हों। चाहे वे सचमुच बोले हों या मैंने उन्हें टेलीपैथिकली सुना हो, मैं निश्चित नहीं कह सकती, लेकिन मैंने उन्हें बार-बार यह कहते हुए 'सुना', 'नहीं, कृपया, हम सिर्फ़ आपकी मदद करना चाहते हैं। नहीं, नहीं, आवाज़ मत लगाओ।' मेरी चीखें तेज़ हो गईं और इसके साथ ही वे मुड़े और उसी रास्ते से बाहर निकल गए जिससे वे अंदर आए थे, दीवार के उस पार से लिविंग रूम में।

जिस घर में यह दृश्य प्रकट हुआ था, वह अपेक्षाकृत हाल ही में बना था। यह ज़मीन उन्नीसवीं सदी के आरंभ में एक खेत का हिस्सा थी, लेकिन सिंथिया को पूरा यकीन था कि आकृतियों के वस्त्र उससे भी पुराने समय के थे। उसे आश्चर्य हुआ कि क्या यह ज़मीन कभी पश्चिमी बैलगाड़ी मार्ग का हिस्सा रही होगी, और वह अपने बचपन की मृत्यु को फिर से जी रही थी। दूसरी ओर, उसे यह भी लगने लगा कि कहीं यह उसके अपने पिछले जीवन की ओर तो इशारा नहीं कर रहा है, क्योंकि उन्नीसवीं सदी के पश्चिमी परिवेश के प्रति उसकी भावनाएँ बहुत प्रबल थीं।

सिंथिया को कई ऐसे सपने आए थे जिनमें भविष्यसूचक संकेत थे और वे घटनाएँ बाद में घटित हुईं। लेकिन जिस सपने ने उसके मन पर सबसे गहरा प्रभाव छोड़ा, वह अतीत से जुड़ा था। दरअसल, उससे पहले, जैसा कि उसने बताया, हाई स्कूल के शुरुआती दिनों में उसके मन में इंग्लैंड के प्रति एक अटूट रुचि पैदा हो गई थी, उस समय से बहुत पहले जब बीटल्स अमेरिका में इतने लोकप्रिय हुए थे। यह कोई एक सपना नहीं था जिसे आसानी से भुलाया जा सके, बल्कि यह बार-बार आने वाले सपनों की एक श्रृंखला थी, जो एक दूसरे से संबंधित थे और जिनकी तीव्रता बढ़ती जा रही थी, मानो उसके भीतर कुछ सतह पर आने की कोशिश कर रहा हो, उसे एक लंबे समय से भूली हुई स्मृति के बारे में बता रहा हो।

कभी-कभी मुझे खुद को उत्तरी ब्रिटिश लहजे में बोलते हुए महसूस होता था और मैं खुद को अंग्रेज़ी वर्तनी का इस्तेमाल करते हुए, क्रीम वाली चाय पीते हुए पाती थी। जब मैंने पहली बार 'ग्रीनस्लीव्स' गाना सुना, तो मैं बहुत भावुक और निश्चित रूप से उदास हो गई। एक और गाना है, 'नॉर्थ कंट्री मेड', जो मेरा सबसे पसंदीदा गाना बना हुआ है। मैंने तो यहाँ तक कि अपनी समाजशास्त्र की कक्षा के लिए इंग्लैंड पर 200 पन्नों का शोध पत्र भी लिखा था। लेकिन इस परियोजना के शुरू होने से बहुत पहले, मैंने सपने में देखा कि एक लबादा पहने हुए आदमी चाँदनी रात में घोड़े पर सवार होकर इंग्लैंड के ग्रामीण इलाकों में ओझल हो जाता है। मैं भी सपने में थी, नीले और भूरे रंग की देहाती पोशाक पहने हुए, जो सामने से बंधी हुई थी। मुझे पता था कि वह मैं ही थी क्योंकि मुझे याद है कि मैंने अपनी पोशाक को नीचे देखा था। दूसरे शब्दों में, मैं वास्तव में एक प्रतिभागी थी, न कि खुद की सोई हुई दर्शक, न ही खुद को किसी और के रूप में पहचान रही थी। खैर, ऐसा लग रहा था कि मैं किसी अस्तबल या खलिहान से बाहर आ रही हूँ, जहाँ मैं भूसे के बड़े ढेर पर लेटी हुई थी। मैं सवार घुड़सवार की ओर दौड़ने लगी, मानो... मैं उससे विनती करती कि वह मुझे छोड़कर न जाए। फिर मैं जाग जाती, और कुछ रातों बाद मुझे वही सपना फिर से दिखाई देता।

“एक रात जब मैं बहुत थका हुआ था, तो उस लड़की के भाग जाने के बाद भी मैं सपने की अवस्था में बना रहा, पर ज़्यादा देर नहीं। सपने में, मैं सिसकते हुए डिक का नाम बुदबुदाया और फिर जाग गया। सपना इसी तरह चलता रहा, जब तक कि मैं, अब बहुत उत्सुक होकर, खुद को सोने के लिए मजबूर नहीं कर लिया। आखिरकार, एक रात, मैं पूरा वाक्य सुन पाया

—'डिक टर्पिन, मेरे प्यार, रुको! मत जाओ!' ऐसा लग रहा था कि इस सपने का मकसद पूरा हो गया है, क्योंकि इसने मुझे एक ऐसा नाम दिया है जो मैंने पहले कभी नहीं सुना था, और फिर वह सपना दोबारा कभी नहीं आया।"

उस समय सिंथिया ने डिक टर्पिन के बारे में कभी नहीं सुना था। लेकिन सपनों ने उसकी जिज्ञासा जगा दी और उसने इस विषय पर शोध करना शुरू कर दिया। उसकी एनसाइक्लोपीडिया ब्रिटानिका से उसे बहुत कम जानकारी मिली, न ही हाई स्कूल के किसी एनसाइक्लोपीडिया में उसका नाम था। लेकिन अपने माता-पिता के पुस्तकालय में उसे नेल्सन एनसाइक्लोपीडिया का 1940 का संस्करण मिल गया। उसमें उसे रिचर्ड टर्पिन नाम के एक अंग्रेज डाकू और टॉम किंग के सहयोगी का संक्षिप्त उल्लेख मिला, जो 1706 से 1739 तक जीवित रहा, जब उसे फांसी पर लटका दिया गया।

सपने बंद होने के लगभग एक साल बाद, वह अपनी एक सहेली के साथ गाड़ी में जा रही थी, तभी अचानक उसे घर लौटने की तीव्र इच्छा हुई। एक तरह की मजबूरी में, उसने तुरंत टीवी चालू किया और वॉल्ट डिज़्नी का एक कार्यक्रम लगा दिया, जिससे उसके माता-पिता बहुत हैरान हुए, क्योंकि वे जानते थे कि उसे यह कार्यक्रम पसंद नहीं था। उसी क्षण, स्क्रीन पर "द लीजेंड ऑफ डिक टर्पिन" शब्द दिखाई दिए। सिंथिया कार्यक्रम देखने लगी, उसकी आँखें टीवी पर टिकी हुई थीं और वह बीच-बीच में अपनी टिप्पणियाँ करती रहती थी। "नहीं, ऐसा नहीं हुआ था," वह कहती और फिर उसे ठीक करने लगती। उसकी सबसे खास बात यह थी कि वह दर्शकों को जानकारी मिलने से पहले ही स्क्रीन पर होने वाली घटनाओं का अनुमान लगा लेती थी और पात्रों के नाम भी बता देती थी। बाद में, वह स्तब्ध रह गई और उसे कार्यक्रम के दौरान कही गई अपनी बातों में से कुछ भी याद नहीं रहा।

मैंने सिंथिया को लॉस एंजिल्स में मिलने का सुझाव दिया ताकि मैं सम्मोहन के माध्यम से उसकी मानसिक अवस्था का पता लगा सकूँ और यह जान सकूँ कि पुनर्जन्म से जुड़ी उसकी स्मृति सच्ची थी या महज़ एक काल्पनिक कहानी। हम 1973 में क्रिसमस से ठीक पहले, मेरे हॉलीवुड होटल, कॉन्टिनेंटल हयात हाउस में मिले। हमने सिंथिया के मानसिक अनुभवों पर चर्चा की और मुझे पता चला कि 1969 में उसका एक दुर्घटना में मस्तिष्क में चोट आई थी। क्या उस दुर्घटना ने उसकी मानसिक अनुभूतियों को किसी भी तरह से प्रभावित किया था?

उसने उत्तर दिया, नहीं। दुर्घटना से कई साल पहले से ही उसे ये अनुभूतियाँ हो रही थीं और दुर्घटना के बाद भी जारी रहीं। क्या वह कभी इंग्लैंड गई थी या क्या उसका संबंध अंग्रेज़ पृष्ठभूमि से था? दोनों सवालों का जवाब उसने नकारात्मक दिया। कॉलेज में अंग्रेज़ी इतिहास और साहित्य में उसकी रुचि उस बार-बार आने वाले सपने के बाद पैदा हुई। यह साबित होने के बाद कि न तो सिंथिया और न ही उसके परिवार का कोई अंग्रेज़ी पृष्ठभूमि या झुकाव था, मैंने सामान्य तरीके से सम्मोहन के माध्यम से उसकी मानसिक अवस्था का पता लगाना शुरू किया। कुछ ही समय में वह सम्मोहन की अवस्था में आ गई और मेरे सवालों के जवाब देने के लिए तैयार थी।

न्यूयॉर्क में एक विक्टोरियन सज्जन के रूप में जीवन का वर्णन करने के बाद, जॉन वेनस्कॉट का नाम और वर्ष 1872 या 1892 बताते हुए, वह अठारहवीं शताब्दी और वर्ष 1703 में वापस चली गईं, जहाँ उनका संबंध डेलावेयर स्ट्रीट से था। उस व्यक्ति का नाम डिक था, और स्पष्ट रूप से हम उनके बार-बार आने वाले सपनों के विषय पर पहुँच गए थे।

“वह घोड़े पर सवार हो रहा है, और लगाम पकड़ने के लिए अपना लबादा पीछे की ओर फेंक रहा है। उसने पंखों वाली टोपी पहन रखी है, मैं खलिहान के पास खड़ा हूँ।”

मैंने पूछा, “इस आदमी से आपका क्या रिश्ता है? आपका नाम क्या है?”

“एक लड़की... मेरा नाम सैली है।”

यह कौन सा वर्ष है?

“1732.”

"फिर क्या होता है?"

वह हमेशा की तरह घोड़े पर सवार होकर चला जाता है।

"आप को क्या होता है?"

"मैं चीखता हूं।"

सम्मोहन चिकित्सा के माध्यम से मैं उससे बस इतना ही जान पाया। लेकिन किसी तरह इसने सिंथिया के भीतर उस बार-बार आने वाले सपने और उससे जुड़ी बेचैनी को शांत कर दिया होगा, क्योंकि उसके बाद से मैंने उससे कोई संपर्क नहीं किया।

*135

द रेस्टलेस डेड

न केवल घर, बल्कि इंसान भी प्रेतवाधित हो सकते हैं। ऐसे हजारों मामले हैं जहां लोगों ने किसी मृत व्यक्ति का भूत देखा या सुना है, आमतौर पर वह व्यक्ति जिसके मन में मृत्यु के समय कोई अधूरा काम रह गया हो।

आइए, मैं इस तरह के अनुभव के लिए अपने मापदंड स्पष्ट कर दूं, ताकि हम समझ सकें कि हम किस विषय पर चर्चा कर रहे हैं। जब कोई व्यक्ति किसी मृत रिश्तेदार का सपना देखता है, तो इसका कोई महत्व हो भी सकता है और नहीं भी। जब सपने में ऐसे विशिष्ट विवरण शामिल होते हैं जो सपने देखने वाले को उस समय ज्ञात नहीं होते और बाद में सही साबित होते हैं, तो सपने देखने वाले को स्वप्न अवस्था में एक मानसिक संदेश प्राप्त हो रहा होता है, जब उसका अवचेतन मन चेतन मन से मुक्त होता है और इसलिए उस तक पहुंचना आसान होता है।

मैंने सैकड़ों हालिया मामलों की जांच की है और उनमें से संदिग्ध या भ्रामक तथ्यों को सावधानीपूर्वक हटा दिया है। जो बचा है वह पुख्ता सबूत है।

धूप और सुखद जीवन की भूमि कैलिफोर्निया में ऐसी कई घटनाएं होती हैं, शायद इसलिए कि यहां मृत्यु एक अजनबी चीज है, एक ऐसी चीज जो जलवायु और दृष्टिकोण की गर्माहट और शांति के साथ पूरी तरह से मेल नहीं खाती है।

उदाहरण के तौर पर, सांता सुसाना की श्रीमती जी. ए. का मामला लीजिए। श्रीमती ए. अलौकिक चीज़ों में विश्वास करने वाली व्यक्ति नहीं हैं। वास्तव में, 1958 में जिन घटनाओं ने उन्हें झकझोर कर रख दिया था, उन पर उनका पूर्ण अविश्वास ही उन्हें मुझसे संपर्क करने का कारण बना। किसी तरह, उनके पति के निधन पर शोक जैसी "तार्किक" व्याख्या से उनका मन संतुष्ट नहीं हुआ और अंततः वे जानना चाहती थीं।

कैलिफ़ोर्निया की एक गर्म दोपहर में, उनके पति और श्रीमती ए. अपने घर के पिछवाड़े में नाव पर काम कर रहे थे। अचानक, उन्होंने अपने पति को दर्द से कराहते हुए "हनी" कहते सुना। उस समय वे एक इलेक्ट्रिक सैंडर से काम कर रहे थे। घबराकर श्रीमती ए. ने पीछे मुड़कर

देखा तो पाया कि वे सैंडर को सीने से पकड़े हुए थे। उन्हें गलती से बिजली का झटका लग गया था। उन्होंने तुरंत बिजली का प्लग निकाल दिया और उन्हें सहारा देने की कोशिश की, साथ ही मदद के लिए चिल्लाती रहीं; लेकिन बहुत देर हो चुकी थी।

विडंबना यह थी कि ए. को ठीक इसी तरह की दुर्घटना - बिजली के झटके से मौत - के बारे में बुरे सपने आते थे और जागते हुए भी डर लगता था।

दो महीने बीत गए और श्रीमती ए ने विधवापन के साथ तालमेल बिठाने की कोशिश की। एक रात कमरे में किसी चीज़ की आहट से उनकी गहरी नींद टूट गई। पूरी तरह जागते ही उन्होंने अपने दिवंगत पति की एक आकृति को कमरे की हवा में लटकते हुए देखा!

उसने न तो कोई आवाज निकाली और न ही कुछ कहा। हैरानी की बात यह थी कि उस प्रेत ने कमीज नहीं पहनी थी; वह नंगे बदन था, जैसा कि वह जीवित रहते हुए भी नहीं होता था।

पल भर में वह चला गया, और श्रीमती ए. वापस सो गईं। सुबह उन्होंने खुद को समझाया कि यह बस घबराहट का मामला था। दिन बीतता गया। दोपहर के 4:30 बज रहे थे और श्रीमती ए. अपने लिविंग रूम के सोफे पर बैठी आराम कर रही थीं और अपनी माँ के फोन का इंतजार कर रही थीं। अचानक, उन्होंने अपनी कार को दरवाजे पर आते सुना। उन्हें तुरंत एहसास हुआ कि ऐसा नहीं हो सकता, क्योंकि वह गाड़ी नहीं चला रही थीं, लेकिन उन्हें यह भी याद आया कि ठीक इसी समय उनके पति हर दोपहर दरवाजे पर गाड़ी लेकर आते थे!

इससे पहले कि वह पूरी तरह से संभल पाती, वह कमरे में उसके सामने था। वह हमेशा की तरह ही दिख रहा था, न तो पारदर्शी और न ही कुछ ऐसा अलौकिक। श्रीमती ए. भय से जम सी गईं। उनके दिवंगत पति अत्यंत भावुक होकर उनके सामने घुटनों के बल बैठ गए और बोले, "प्रिय, क्या हुआ?"

इस समय, श्रीमती ए. को फिर से बोलने की हिम्मत मिली और उन्होंने चुपचाप, जितना चुपचाप वह कर सकती थीं, अपने दिवंगत पति को बताया कि उनके साथ क्या हुआ था।

"एक दुर्घटना हुई है, और आपकी मृत्यु हो गई है।"

जब उसने ये शब्द कहे, तो उसने वही आवाज़ निकाली जो उसने दुर्घटना के समय निकाली थी—"हनी!"—मानो उसे वह घटना याद आ गई हो—और पल भर में वह गायब हो गया।

श्रीमती ए. को तब से उनके आसपास उनकी मौजूदगी का एहसास कभी नहीं हुआ। जाहिर है, उनके पति अपनी नई स्थिति में ढल चुके हैं।

कभी-कभी प्रेत आत्माएं जीवित लोगों को घर से बाहर निकाल देती हैं—और अंत में वे खुद बेघर हो जाते हैं। ऐसा ही एक अजीब मामला हाल ही में पासो रोबल्स में एडम्स परिवार के स्वामित्व वाले एक घर के साथ हुआ। मुझे उनकी इस परेशानी के बारे में तब पता चला जब मैं आर्ट लिंकलेटर शो में शामिल हुआ था।

श्रीमती एडम्स के तीन बच्चे हैं, जिनकी उम्र ग्यारह, दस और नौ साल है। उनकी समस्या यह है कि उन्होंने जो घर खरीदा है, वह पहले एक "लाल बत्तीखाना" हुआ करता था, जैसा कि उन्होंने बताया। घर खरीदने से पहले, दो युवतियाँ वहाँ एक बूढ़े आदमी के साथ रहती थीं, जो एक तरह से उनका संरक्षक था। पुलिस द्वारा उन महिलाओं को धंधा बंद करवाने के बाद, वह बूढ़ा आदमी अपनी मृत्यु तक वहीं रहा।

घर में आने के कुछ ही समय बाद, एडम्स परिवार ने महसूस किया कि उनके घर में कुछ गड़बड़ है। पति रात की शिफ्ट में काम करता था, और जब वह आधी रात से सुबह 3 बजे के बीच काम पर जाता था, तो घर के बाहर अजीब आवाज़ें सुनाई देती थीं, जैसे दीवार पर ज़ोर से खटखटाने की आवाज़—लेकिन ऐसा करने वाला कोई इंसान नहीं था। यह दिसंबर 1957 की बात है। धीरे-धीरे, ये आवाज़ें हल्की खड़खड़ाहट से बदलकर दीवारों पर ज़ोरदार धमाके में बदल गईं। कभी-कभी ऐसा लगता था जैसे कोई घर की खिड़कियों की जाली फाड़ रहा हो।

श्रीमती एडम्स ने बार-बार पुलिस को फोन किया, लेकिन उन्हें शोर मचाने वाली कोई चीज या व्यक्ति नहीं मिला। उनके पति, जो एक बेकरी में काम करते थे, ने भी एक रात घर पर रहते हुए ये आवाजें सुनीं। हमेशा एक ही समय पर, सुबह-सुबह।

जल्द ही श्रीमती एडम्स को ऐसे कदमों की आहट और इंसानी आवाज़ें सुनाई देने लगीं, जबकि वहाँ कोई चल या बोल नहीं रहा था। एक बार उन्होंने दो आदमियों को साफ़-साफ़ बात करते सुना, जिनमें से एक कह रहा था कि वह घर में घुसने की कोशिश करेगा। फिर दीवारों पर खटखटाहट सुनाई दी, मानो कोई संवाद करने की कोशिश कर रहा हो।

हालात इतने खराब हो गए कि एडम्स परिवार ने अपनी संपत्ति के इतिहास के बारे में पूछताछ शुरू कर दी, और फिर, उनके वहां रहने के दो साल बाद, उन्हें आखिरकार घर और उसके पूर्व उपयोग के बारे में सच्चाई पता चली।

उन्होंने भूतों को घर में रहने देने का फैसला किया और खुद वहां से निकलकर एक ऐसे घर में चले गए जो हमेशा से किसी भी तरह की गड़बड़ी से मुक्त रहा था। उन्होंने उस भूतिया लाल बत्ती वाले घर को ऐसे लोगों को किराए पर दे दिया जिन्हें भूतों से कोई खास लगाव नहीं था। लेकिन इसमें उन्हें ज्यादा सफलता नहीं मिली। कोई भी उस घर में ज्यादा देर तक रहना पसंद नहीं करता था।

यह बात 1964 की है। जब मैंने 1966 में श्रीमती एडम्स के बारे में जानकारी ली, तो चीजें काफी बदल चुकी थीं।

श्रीमती एडम्स ने बताया, "उन्होंने इसे बार-बार तहस-नहस कर दिया," और चूंकि यह एक पुराना घर था, इसलिए मालिकों को रात में होने वाली "पार्टी" से हुए नुकसान की मरम्मत के लिए बहुत पैसा खर्च करना उचित नहीं लगा।

हालात इतने खराब हो गए कि नगर परिषद को दखल देना पड़ा। इसी तरह पासो रोबल्स के उस भूतिया घर को आधिकारिक आदेश से गिरा दिया गया। अब एडम्स परिवार के पास एक खाली ज़मीन है जिस पर वे नया घर बनाने का खर्च नहीं उठा सकते। और भूतों का क्या? उनके पास भी जाने के लिए कोई जगह नहीं है। उनके साथ यही होना चाहिए था!

@@@

राल्फ मैडिसन एक ऐसे व्यक्ति हैं जो जीवन को खुलकर जीते हैं और इसके हर पल का आनंद लेते हैं। वे चार बच्चों के परदादा हैं और अब युवा नहीं हैं, लेकिन 1965 में, जब मैंने उनकी अनोखी कहानी सुनी, तब भी वे स्टैनफोर्ड विश्वविद्यालय के संग्रहालय में अंशकालिक सुरक्षा गार्ड के रूप में काम कर रहे थे।

पालो ऑल्टो में उनका घर है और 1916 से उनकी पत्नी एक ही हैं। औपचारिक शिक्षा के मामले में बहुत पीछे न रहते हुए भी, मैडिसन खुद को एक सफल व्यक्ति मानते हैं। शायद उनमें एकमात्र अनोखी बात यह है कि वे लोगों को पत्रों के बजाय टेप रिकॉर्डिंग भेजना पसंद

करते हैं। लेकिन शायद मैडिसन सिर्फ व्यावहारिक सोच रखते हैं। दस साल बाद शायद हम सभी इसी तरह से पत्र व्यवहार करने लगें।

अगर श्री मैडिसन के जीवन में एक विशेष घटना न हुई होती, तो मुझे उनमें कोई दिलचस्पी न होती। उस घटना ने उन्हें अपनी मानसिक स्थिति पर संदेह करने पर मजबूर कर दिया - और, खुद को आश्वस्त करने के बाद - ऐसे मानसिक अनुभवों के अर्थ पर भी सवाल उठाने पर मजबूर कर दिया।

यह घटना 1928 में पालो ऑल्टो के एमर्सन स्ट्रीट में घटी। राल्फ मैडिसन अपने काम से पांच सौ ब्लॉक के आसपास टहल रहे थे, तभी उनकी नज़र नाइट नाम के एक परिचित पर पड़ी। श्री नाइट की पास में ही एक सफाई की दुकान थी। दोनों व्यक्ति बातचीत करने के लिए रुके और मैडिसन ने अपने परिचित से हाथ मिलाया।

हालांकि, उसे यह बात अजीब लगी कि उस आदमी की आवाज असामान्य रूप से धीमी और अस्पष्ट लग रही थी। इसके अलावा, नाइट के हाथ पसीने से तर और ठंडे थे!

उन्होंने कुछ बेमतलब की बातें कीं और फिर अलग हो गए। मैडिसन फिर से चलने लगा और फिर उसने जल्दी से अपने दोस्त की तरफ देखा। जिस आदमी से उसने अभी-अभी हाथ मिलाया था, वह हवा में गायब हो गया था। उसी क्षण उसे अचानक यह बात समझ में आई कि मिस्टर नाइट को मरे हुए और दफनाए हुए पाँच साल हो चुके हैं।

अत्यधिक उत्तेजित अवस्था में, मैडिसन पास ही स्थित एक रियल एस्टेट कार्यालय में भागा, जिसका संचालन श्री वैंडर्वोर्ट करते थे, जिन्हें वह अच्छी तरह जानता था। उसने जल्दी से उन्हें सारी घटना बताई, और मैडिसन को आश्वासन दिया गया कि नाइट वास्तव में पांच साल पहले मर चुका है और वह, मैडिसन, भ्रम का शिकार है।

लेकिन राल्फ मैडिसन अपने दिल में जानता है कि उसने पालो ऑल्टो में एक सड़क के कोने पर, दिन दहाड़े एक मृत व्यक्ति से हाथ मिलाया था।

@@@

हाल ही में मेरे ध्यान में एक विचित्र मामला आया, जो विचित्र अनुभवों में भी विचित्र है क्योंकि इसमें एक प्रकार का प्रेतवादन शामिल है जिसके विरुद्ध पारंपरिक चिकित्सा शक्तिहीन प्रतीत होती है।

बर्लिंगेम की श्रीमती बी. ने कम से कम छह डॉक्टरों से मदद मांगी, अनगिनत टॉनिक और शांत करने वाली दवाइयां लीं—लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ। जब उन्हें ईएसपी (इमोशनल स्पेसिफिक स्पीच) में मेरे काम के बारे में पता चला, तो उन्होंने मदद की गुहार लगाते हुए मुझसे संपर्क किया। यह मार्च 1966 की बात है और आखिरकार उसी साल अक्टूबर में मेरी उनसे बात हुई। उनकी आवाज़ दृढ़ थी और उसमें घबराहट का कोई संकेत नहीं था। फिर भी, उनके साथ जो हुआ था, वह कई मजबूत लोगों को पागलपन से जूझते हुए हार मानने पर मजबूर कर देता।

अब विधवा हो चुकीं श्रीमती बी. मूल रूप से मध्यपश्चिम क्षेत्र से थीं, जहाँ उनके पिता चिकित्सक थे, और उनसे पहले उनके दादा और नाना भी चिकित्सक थे। उनकी माँ शादी से पहले एक हाई स्कूल शिक्षिका थीं और वह स्वयं एक सीनेटर की बेटी थीं।

श्रीमती बी. ने स्कूल में अध्यापन का काम भी किया और बाद में उन्होंने नर्सिंग को अपना पेशा बनाया। उनका विवाह 1949 से 1960 तक चला और वे अपने वैवाहिक जीवन को अत्यंत सुखमय मानती हैं। विधवा होने के बाद उन्हें कोई भावनात्मक उथल-पुथल नहीं झेलनी पड़ी, क्योंकि श्रीमती बी. एक उत्साही पाठक और संगीतकार थीं और उन्होंने अपने आसपास सौहार्दपूर्ण मित्रों का साथ रखा था। यह कहना गलत नहीं होगा कि उनका जीवन शांत और सुव्यवस्थित था।

लेकिन उन्हें अपने जीवन में अचानक घटी उन चौंकाने वाली घटनाओं को कागज़ पर उतारने में तीन पत्र लगे। मैं हमेशा अलौकिक प्रतीत होने वाली घटनाओं की रिपोर्ट करने वालों से लिखित बयान लेने पर ज़ोर देता हूँ, और श्रीमती बी. ने अनिच्छा से ऐसा किया। उनकी शर्मिंदगी के कारण ही मैंने इस विवरण में उनका पूरा नाम शामिल नहीं किया है।

यह सब तब शुरू हुआ जब कमरे में किसी की मौजूदगी महसूस हुई, जबकि वह जानती थी कि वह बिल्कुल अकेली है। कुछ ही देर में, उसने अपने शरीर पर किसी दूसरे व्यक्ति की अंतरंगता का अहसास किया—एक ऐसा व्यक्ति जिसे वह देख नहीं सकती थी!

उन्हें लगा कि उन्हें कैंसर है और उन्होंने हर संभव विशेषज्ञ से सलाह ली, लेकिन सभी ने उन्हें पूरी तरह स्वस्थ बताया। फिर भी, दौरे जारी रहे। क्या वह किसी अनकही बात की कल्पना कर रही थीं? उन्हें अपनी मानसिक स्थिति पर संदेह होने लगा। जिन डॉक्टरों से उन्होंने परामर्श लिया, उनके पास कोई जवाब नहीं था सिवाय इसके कि उन्हें यह आश्वासन दिया जाए कि इन अजीब संवेदनाओं का कारण कोई शारीरिक बीमारी नहीं है।

मैंने पहले भी कामुक भूतों के "हमलों" के बारे में ऐसी ही कहानियां सुनी हैं और कभी-कभी ये किसी निराश अधेड़ उम्र की महिला की कल्पना मात्र होती हैं। इसमें कोई शक नहीं कि जीवन में बदलाव किसी महिला या पुरुष में भी कुछ बेहद विचित्र लक्षण पैदा कर सकता है। इसलिए मैंने इस महिला की गवाही को अत्यंत सावधानी से स्वीकार किया। मैं यह सुनिश्चित करना चाहता था कि मामला मानसिक है, न कि मनोरोग संबंधी।

मैंने उससे ईएसपी (एक्सप) के आधार पर सवाल किए। क्या उसे कभी भी मानसिक अनुभव नहीं हुए थे - सिवाय उन भयावह रूप से वर्णित घटनाओं के जिनमें उसकी निजता का उल्लंघन हुआ था - चाहे वह घर में हो या कहीं और?

जाहिर तौर पर, जवाब हां में था। मुझसे संपर्क करने से कुछ महीने पहले, वह एक रविवार को घर का काम कर रही थी, तभी उसने किसी की आवाज सुनी, मानो हवा से आई हो, एक ऐसी आवाज जिसे वह पहचान नहीं पाई, लेकिन जो काफी धीमी और फुसफुसाहट में सुनाई दे रही थी।

“जी आज आ रहे हैं।” जी श्रीमती बी के कुछ दूर रहने वाले दोस्त थे। श्रीमती बी ने उन्हें महीनों से न देखा था और न ही उनसे कोई खबर सुनी थी, इसलिए उन्हें उनके आने की बिल्कुल भी उम्मीद नहीं थी। नतीजतन, श्रीमती बी ने उस अजीब “आवाज” पर विश्वास करने से इनकार कर दिया। लेकिन आवाज ने जोर देकर वाक्य को एक बार फिर दोहराया!

श्रीमती बी. अपना काम करती रहीं, दोपहर करीब 1 बजे उन्होंने आराम करने का फैसला किया। 2 बजे दरवाजे की घंटी बजी। चूंकि उन्हें किसी के आने की उम्मीद नहीं थी, इसलिए उन्होंने दरवाजा खोलने में देर कर दी। जी.एस. थे, जैसा कि आवाज ने कहा था!

तब से श्रीमती बी. ने उस रहस्यमयी आवाज़ को कई बार सुना है, जो हमेशा किसी के आने की सूचना देती है। आवाज़ कभी गलत नहीं होती। नाम, दिन और ठीक समय बताया जाता है और हर बार घटना घटित होती है।

एक अदृश्य व्यक्ति की उपस्थिति श्रीमती बी. को लगातार परेशान कर रही थी, लेकिन इसके अलावा उन्होंने एक आवाज को कई बार "मेरी पत्नी" और एक अन्य अवसर पर "उसके पति" कहते हुए सुना, मानो कोई उन्हें कुछ ऐसा बताने की कोशिश कर रहा हो जो उन्हें पता होना चाहिए।

श्रीमती बी. ने इस विचार को सिरे से खारिज कर दिया कि शायद उनके दिवंगत पति ही उन्हें परेशान कर रहे हों, क्योंकि जीवित रहते हुए वे कभी भी किसी भी तरह की मानसिक शक्तियों में विश्वास नहीं करते थे। इस विचार के कुछ ही क्षण बाद, उन्होंने स्पष्ट रूप से उस आवाज को कहते सुना, "वह बस समझ नहीं पा रही है।"

जब मैं सैन फ्रांसिस्को के पास स्थित बर्लिंगेम में श्रीमती बी से मिलने के लिए तैयार हुई, तब तक वह सांता मोनिका में एक दूसरे घर में जा चुकी थीं। वहीं पर मेरी उनसे आखिरकार बात हुई।

स्थिति काफी हद तक वैसी ही थी, जिससे यह संभावना पूरी तरह से खारिज हो गई कि भूत या घुसपैठिया किसी तरह बर्लिंगेम स्थित घर से जुड़ा हुआ था।

वह आवाज, जिसे वह अभी भी पहचान नहीं पाई थी, अब बहुत ही ज़ोरदार थी।

“उसके पति...वह बस समझ नहीं पाती” इस बयान के बाद एक अन्य अवसर पर यह कहा गया, “मैं दुनिया में कुछ भी कर सकता हूँ...मुझे आश्चर्य है कि अगर उसे पता चले तो वह क्या करेगी।”

फिर "प्रियतम" और "मेरी पत्नी" जैसे शब्द बार-बार दोहराए गए। यह सब श्रीमती बी के साथ उस घर में हुआ जहाँ वे उस समय बिल्कुल अकेली थीं।

फिर भी, श्रीमती बी. ने इस संभावना का सामना करने से इनकार कर दिया कि उनके पति, भले ही शारीरिक रूप से संशयवादी रहे हों, मानसिक संचार के बारे में सच्चाई जान चुके थे और अब एक पति की तरह उनसे संपर्क करने की कोशिश कर रहे थे!

कभी-कभी वे दुखद घटनाएँ जो हाड़-मांस के लोगों को निराकार प्रेतों में बदल देती हैं, उन प्रेतों की तुलना में कम भयावह होती हैं जो बीच की दुनिया में एक तरह का एकांत अस्तित्व बनाए रखते हैं—या यूँ कहूँ कि वे प्रेत हमारे जाने-पहचाने लोगों के अपेक्षाकृत सौम्य रूप नहीं होते, बल्कि कुछ कहीं अधिक भयानक, कहीं अधिक भयावह होते हैं।

@@@

वेन बार्बर एक युवा एम्बुलेंस चालक हैं, जो पहले कैलिफ़ोर्निया के बेकर शहर से एम्बुलेंस सेवा चलाते थे। बेकर एक ऐसा इलाका है जहाँ अक्सर गाड़ियाँ दुर्घटनाग्रस्त हो जाती हैं, इसलिए यह इलाका सबसे खतरनाक सड़कों में से एक है। मेरा निजी मत है कि आधे लोगों को गाड़ी नहीं चलानी चाहिए, और इसके अलावा, लाइसेंस का नवीनीकरण केवल उन लोगों की वार्षिक परीक्षा के बाद ही होना चाहिए जो इसके लिए योग्य हैं। श्री बार्बर के साथ जो हुआ वह इसका एक उदाहरण मात्र है।

उनतीस साल के, छह फुट लंबे और विवाहित वेन बार्बर एक सख्त और मजबूत आदमी हैं, जो खुद के शब्दों में कहें तो, "राजमार्ग पर चारों ओर लाशें पड़ी हों, तब भी वे पूरी तरह आराम से हैम सैंडविच खा सकते हैं।" यह उनके व्यवसाय का हिस्सा है और वे इसके बारे में जरा भी भावुक नहीं हैं।

फरवरी 1966 तक उन्हें मानव आत्मा जैसी किसी भी चीज़ में, मृत्यु के बाद की किसी भी चीज़ में बिल्कुल भी विश्वास नहीं था। लेकिन फिर कुछ बेहद भयानक घटित हुआ।

वॉशिंगटन के जन्मदिन पर, कैलिफ़ोर्निया के बेकर से लगभग पाँच मील पूर्व में एक भयानक दुर्घटना हुई, जिसमें सात लोगों की मौत हो गई। तीन नशे में धुत लोग हाईवे पर गलत दिशा में जा रहे थे और लास वेगास जा रही एक कार से उनकी आमने-सामने टक्कर हो गई। इस कार में एक माता-पिता अपनी बेटी और उसके मंगेतर को शादी के लिए ले जा रहे थे!

गलत दिशा में जा रही कार शवों को निकालने से पहले ही जलकर खाक हो गई। बाकी लोग, माता-पिता, कार में ही फंस गए और शादी के लिए तैयार दो बच्चे कार से बाहर फेंक दिए गए। सभी सातों की मौत हो चुकी थी।

“जीवितों से जुड़ी कोई भी दुर्घटना, मृतकों को संभालने से कहीं ज़्यादा मुश्किल होती है,” बार्बर ने समझाया, “और यह मेरे सहायक और मेरे द्वारा संभाली गई सबसे भयानक दुर्घटना नहीं थी। मैं इसका ज़िक्र इसलिए कर रहा हूँ ताकि आपको यह न लगे कि हम घबरा गए थे।”

यह सुनिश्चित करने के बाद कि कोई जीवित नहीं बचा है, उन्होंने शवों को राजमार्ग से हटाया और उनकी पहचान के लिए जाँच शुरू की। शवों को हटाना एम्बुलेंस कर्मचारियों के काम का हिस्सा है, और बार्बर और उनके सहायक ने यातायात के लिए सड़क को साफ़ करने के लिए यही काम किया—या कहें कि शवों के बचे हुए हिस्सों को हटाया।

एक दिन बाद रेत का तूफान आ गया, और सड़क पर कम दृश्यता के कारण इलाके की पांच महिला यात्री आगे नहीं बढ़ सकीं। उन्होंने बार्बर से एम्बुलेंस स्टेशन पर रात बिताने की गुहार लगाई, और वह तुरंत सहमत हो गया। फिर वह इमारत के पीछे गया और अपने पास मौजूद सामान से उनके लिए पांच पलंग तैयार किए।

रात के करीब 10:30 बज रहे थे और आंगन की बत्तियाँ बुझ गई थीं। उसे सिर्फ पाँच फीट तक ही दिखाई दे रहा था, लेकिन उसके पास एक छोटी टॉर्च थी। इमारत के कोने के पास खड़े स्टैंडबाय रिग पर काम करते हुए उसे अचानक लगा कि कोई उसे देख रहा है। इस भीषण तूफान में वहाँ खड़ा होकर उसे कौन देख रहा होगा?

वह घूम गया और उसके सामने एक ऐसी चीज आ गई जिसका सामना उसने पहले कभी नहीं किया था।

वहाँ, हाथ भर की दूरी पर, वह चीज़ थी जिसे उन्होंने बाद में "एक अजीब चीज़" बताया - एक बुरी तरह से क्षत-विक्षत मानव आकृति, एक पुरुष, जिसके पैर दुर्घटना में बुरी तरह से मुड़ गए थे, कमर से मुड़े हुए थे और सिर एक अजीब कोण पर लटका हुआ था, जो टूटी हुई गर्दन का संकेत दे रहा था। लेकिन आँखें उन्हें देख रही थीं, सीधे उनकी आँखों में देख रही थीं - जीवित, मानवीय आँखें!

बार्बर उस भयानक दृश्य के हर विवरण को देखने के लिए काफी देर तक वहीं जम गया।

बारबर ने बाद में कहा, "उनकी आंखों में एक उदास तड़प और कृतज्ञता थी। उन आंखों में मुझे नुकसान पहुंचाने का कोई इरादा नहीं था।"

अचानक, उसकी प्रतिक्रियाएँ वापस आ गईं और उसने टॉर्च से भूत पर ऐसे वार किया जैसे वह कोई चाकू हो। लेकिन वह हवा में ही हाथ-पैर मार रहा था, और उसके चेहरे पर रेत के सिवा कुछ नहीं लगा!

इसी समय उसका जर्मन शेफर्ड कुत्ता, जो कि एक बहुत ही मजबूत जानवर था, अंधेरे से चीखता हुआ बाहर आया, डर से बेहाल था। बार्बर खाटों के लिए स्ट्रेचर लेकर वापस घर की ओर चल पड़ा। तभी उसने वह देखा जिसे वह "दूसरी चीज़" कहता है। यह एक स्त्री थी। उसने इस भूत के उतने स्पष्ट विवरण तो नहीं देखे जितने उसने पुरुष भूत के देखे थे, लेकिन उसकी आकृति उसे साफ दिखाई दी। इतना देखकर उसने तुरंत एक दिन की छुट्टी ले ली।

लेकिन कई हफ्तों तक कुत्ते की हालत बिगड़ती रही, वह पूरी तरह से घबराया हुआ और बेहाल हो गया, आखिरकार उसे एक दयालु महिला को सौंपना पड़ा। उसके कुछ ही समय बाद, एक वाहन से कुचलकर उसकी मौत हो गई।

इस अनुभव के बाद बार्बर ने शादी कर ली और उसका इरादा अपनी नई दुल्हन से इस बारे में कभी बात करने का नहीं था। लेकिन चरवाहे की जगह उसने जो कुत्ता पाला था, वह भी जल्द ही चरवाहे की तरह ही असाधारण व्यवहार करने लगा। आखिर कुत्ता आसपास क्या देख रहा था? तब बार्बर ने अपनी पत्नी को उन दो भूतों के बारे में बताया।

दूसरे कुत्ते को भी छोड़ना पड़ा क्योंकि वह उस जगह पर बेकाबू हो गया था। अब बार्बर के पास एक पग कुत्ता है और वह अपने दोनों पूर्ववर्तियों की तुलना में उस जगह के बचे हुए प्रभावों को थोड़ा बेहतर ढंग से सहन कर पाता है।

"यहां कोई चीज मेरी रक्षा कर रही है," वेन बार्बर बताते हैं, और वह और उनकी पत्नी कुछ हद तक साहस दिखाते हुए भूतों को "छोटे लोग" कहते हैं।

क्या उन दो लोगों की आत्माएं, जिन्होंने कभी अपना सामान्य जीवन नहीं जिया, अपने रक्षक से जुड़ गई थीं?

@@@

श्रीमती डैफनी आर. अपने पति और बच्चों के साथ कैलिफोर्निया के मालिबू में रहती हैं। उनके दूसरे पति नौसेना में हैं और वे अक्सर अपना घर बदलते रहते हैं। मूल रूप से अंग्रेज़ श्रीमती

आर. को कई मानसिक अनुभव हुए हैं और वे निस्संदेह एक माध्यम हैं। लेकिन मुझे सबसे रोचक घटना उनकी छोटी बेटी द्वारा देखे गए एक भूत से संबंधित लगी। इसमें मेरी रुचि इसलिए हुई क्योंकि सभी बेचैन आत्माएं असहाय, दयनीय और संकट में फंसे हुए इंसान नहीं होते, जो अपनी मदद खुद नहीं कर सकते। इस भूत ने तो एक अन्य व्यक्ति की मदद भी की थी। यह घटना 1952 में घटी थी।

“मैं हाइडेलबर्ग में एक सचिव के रूप में काम कर रही थी, और मेरी एक तीन साल की छोटी बेटी थी जो मेरी टूटी हुई शादी से हुई थी और इंग्लैंड में मेरे माता-पिता के साथ रहती थी। मुझे बहुत अकेलापन महसूस होने लगा और धीरे-धीरे यह पक्का हो गया कि मुझे उसे जर्मनी लाकर अपने साथ रखना चाहिए। इसलिए एक दिन मैं इंग्लैंड के लिए हवाई जहाज से गई, और ट्रेन से फोकस्टोन तक गई, बच्ची और उसका सामान लिया और उसे वापस लंदन ले आई। मुझे उसके कागजात के लिए कुछ दिन इंतजार करना पड़ा, इसलिए मैं एक जाने-माने फोटोग्राफर के निजी घर में रुकी।”

“वे बहुत दयालु थे और उन्होंने लंदन में बिताए जाने वाले समय के लिए मेरी बेटी और मुझे अपने यहाँ ठहराने की पेशकश की। वे विधुर थे। मैं उनसे मुश्किल से ही मिल पाती थी, क्योंकि वे हमेशा काम के सिलसिले में बाहर रहते थे। उनका एक छोटा सा बेटा था, जिसकी उम्र लगभग चार या पाँच साल थी, और एक अंग्रेज़ आया थी। वे एक आलीशान, संकरे से घर में रहते थे।”

“एक रात मैं थिएटर जाना चाहती थी, और मैंने आया से पूछा कि क्या वह मेरी छोटी बच्ची की देखभाल कर सकती है। यहाँ मैं यह भी बताना चाहूँगी कि बच्ची मेरे माता-पिता से बिछड़ने को लेकर बहुत परेशान थी (मैं उसके लिए लगभग अजनबी जैसी थी), और वह लगातार रोती रहती थी, और मेरे मुकाबले आया के साथ ज़्यादा शांत रहती थी।”

खैर, मैं बाहर चली गई और छोटी बच्ची को हमारे साझा बिस्तर पर छोड़ दिया। दाई ने वादा किया कि वह बीच-बीच में आकर बच्ची का ध्यान रखेगी, क्योंकि छोटा लड़का भी पास ही सो गया था। मैंने काला सूट पहना था—जो कि एक महत्वपूर्ण चीज़ है। जब मैं रात करीब 11:00 बजे वापस आई, तो दाई रसोई में थी और उसने बताया कि किट्टी बहुत रोई (मेरे लिए नहीं, बल्कि मेरे माता-पिता के लिए, जिन्हें वह बहुत याद कर रही थी), और अचानक वह चुप हो

गई, इसलिए दाई ने उसे देखने के लिए दौड़ लगाई, और वह गहरी नींद में सो रही थी और नींद में मुस्कुरा रही थी। अगली सुबह जब मैं उठी, तो बच्ची बहुत खुश थी, इतनी खुश कि मैंने उससे कहा कि मुझे उसे लगभग दो दिनों में पहली बार मुस्कुराते हुए देखकर बहुत खुशी हुई है, और शायद वह जर्मनी में मम्मी के साथ रहने जाने को लेकर थोड़ी ज़्यादा खुश है। उसने जवाब दिया कि हाँ, वह बहुत खुश है। फिर उसने कहा, 'मैं कल रात दुखी थी, और रोई, क्योंकि मुझे अपनी नानी (उसने मेरी माँ का जिक्र किया) की याद आ रही थी, लेकिन फिर...' वह महिला मेरे बिस्तर के पास आई और मेरा सिर सहलाते हुए बोली, 'आप बाहर गए हैं और जल्दी वापस आ जाएँगे, और जब तक आप वापस नहीं आते, वह मेरे साथ रहेंगी।' मुझे लगा कि वह घर की आया की बात कर रही हैं, और मैंने कहा, 'हाँ, आया अच्छी महिला हैं।' मेरी बेटी ने कहा, 'अरे नहीं, वह आया नहीं थीं, वह लंबे लाल बालों वाली एक सुंदर महिला थीं, और वह बहुत खूबसूरत थीं।' फिर वह बड़बड़ाने लगी कि कैसे उस 'महिला' ने उसे बताया कि मम्मी उससे कितना प्यार करती हैं, और मम्मी को बच्चे को रोते देखकर कितना दुख होता है, और सच में उसके लिए अपने दादा-दादी के साथ रहने से बेहतर अपनी माँ के साथ रहना है। अंत में बच्ची ने कहा, 'मुझे एहसास हुआ कि वह सही कह रही हैं, मम्मी।'

“उसी दिन बाद में, मैंने आया से पूछा कि क्या उसके घर कोई मेहमान आया था, और जब उसने मना किया, तो मैंने उसे ऊपर बताई गई घटना के बारे में बताया। वह बहुत हैरान हुई और मुझे बताया कि उसके मालिक की दिवंगत पत्नी के लंबे लाल बाल थे और वह एक खूबसूरत महिला थीं, लेकिन बहुत दुखी थीं, और मुझे लगता है कि आजकल हम उन्हें मानसिक रूप से विक्षिप्त मानेंगे; जाहिर तौर पर उन्होंने उस कमरे की बालकनी से छलांग लगा दी थी जिसमें मेरी बेटी और मैं सो रहे थे। वह इस बात में इतनी दिलचस्पी ले रही थी—मेरा मतलब है, आया—कि उसने मेरी बेटी से पूछा कि उस ‘सुंदर महिला’ ने क्या पहना था, और मेरी बेटी किटी ने कहा, ‘एक सुंदर लंबी नीली साटन की नाइटी,’ और बाद में आया ने बताया कि घर की दिवंगत मालकिन ने नीले साटन के शाम के गाउन में आत्महत्या की थी।”

@@@

जिन लोगों के घरों में भूत-प्रेत का साया रहता है, उनमें से कुछ मुझसे व्यक्तिगत रूप से मिलते हैं। कुछ मुझे पत्र लिखते हैं। कुछ लोग फोन पर मुझसे बात करने में कामयाब हो जाते

हैं, हालांकि मेरा नाम अब दर्ज नहीं है। कुछ लोग अपनी गुहार को टेप रिकॉर्ड करके मुझसे साझा करते हैं।

ऐसी ही एक घटना नवंबर 1966 में तब घटी जब मैं हॉलीवुड में टेलीविजन के लिए काम कर रहा था।

योर्बा लिंडा के रहने वाले डेविड बर्कमैन शादीशुदा हैं और उनके चार बच्चे हैं। उनकी उम्र तीस साल है। वे पहले ईएसपी और मानसिक घटनाओं को लेकर संशयवादी थे। लेकिन फिर एक घटना घटी।

अप्रैल 1962 में कैलिफोर्निया के फुलर्टन में, बर्कमैन परिवार एक ऐसे घर में रह रहा था जिसमें एक बड़ा बैठक कक्ष, शयनकक्ष, अध्ययन कक्ष, बच्चों के लिए दो शयनकक्ष और एक रसोईघर था। उस समय श्रीमती बर्कमैन पहले से ही दो बच्चों की माँ थीं और अपने दूसरे बच्चे की उम्मीद कर रही थीं, जिसे उन्होंने बाद में खो दिया।

जिस घटना ने श्री बर्कमैन को भूतों के बारे में सोचने पर मजबूर किया, उस समय वे और उनकी पत्नी घर के दक्षिण-पूर्वी कोने में स्थित अपने शयनकक्ष में सो रहे थे। सुबह तड़के श्रीमती बर्कमैन की नींद "किसी के दरवाजा खोलने की कोशिश" की आवाज से खुली, जो घर के दूसरे छोर पर स्थित था। उन्होंने अपने पति को जगाया और उनका ध्यान उस आवाज की ओर दिलाया। वह दरवाजा आंगन का फाटक था। उस समय वह पूरी तरह से बंद था और जंजीर से बंधा हुआ था।

श्री बर्कमैन ने अपना रिवॉल्वर निकाला, उसमें गोलियां भरीं, और अब उन्हें और उनकी पत्नी दोनों को दरवाज़ा खुलने और बंद होने की आवाज़ साफ़ सुनाई दी। उस जानी-पहचानी आवाज़ को पहचानने में कोई गलती नहीं हो सकती थी। अब वे बेडरूम से निकलकर गलियारे में आए और उन्हें अपने पास आते कदमों की आहट सुनाई दी। कोई उनके रसोईघर से गुज़र रहा था, फिर उस जगह रुक गया जहाँ छोटा सा गलियारा रसोईघर और लड़के के बेडरूम को उस गलियारे से अलग करता था जो दंपति के अपने बेडरूम की ओर जाता था।

श्री बर्कमैन ने लाइट स्विच पर हाथ रखा, ताकि छत की लाइटों की रोशनी में घुसपैठिए को जला सकें—क्योंकि उन्हें पूरा यकीन था कि वह घुसपैठिया ही है। अब कदमों की आहट गलियारे की ओर सुनाई देने लगी, इसलिए बर्कमैन ने लाइटें जला दीं और बंदूक तान ली,

गोली चलाने के लिए तैयार—लेकिन उनकी निराशा के लिए, वहाँ कोई घुसपैठिया दिखाई नहीं दिया!

हालांकि, रोशनी होने के बावजूद, किसी अनदेखे व्यक्ति के कदमों की आहट गलियारे में लगातार सुनाई देती रही। श्री बर्कमैन भयभीत होकर वहीं खड़े रहे, जब तक कि कदमों की आहट उनके पास से गुजर कर शयनकक्ष की ओर नहीं मुड़ गई, जहां श्रीमती बर्कमैन खड़ी थीं, वहां पहुंचते ही वे अचानक रुक गईं।

इस घर में बर्कमैन परिवार के साथ और कुछ नहीं हुआ, और न ही वे कभी 1962 के अप्रैल के उस दिन हुई अजीब घटना का कोई कारण खोज पाए।

हालांकि, डेविड बर्कमैन को अन्य मानसिक अनुभव भी हुए हैं।

आमतौर पर सपनों के माध्यम से, उन्हें उन मौतों का पूर्वाभास होता था जो बाद में उनके सपनों में दिखाई देने के अनुसार घटित हुईं।

इस मामले में जिस बात ने मुझे सबसे ज्यादा आकर्षित किया, वह थी बत्ती चालू होने के भूत की स्पष्ट अनदेखी और वास्तविक लोगों द्वारा दी गई चुनौती की अनदेखी।

मैंने अपनी पुस्तक 'घोस्ट्स आई हैव मेट' में जिस एकीकरण भूत का वर्णन किया है, उसमें भी इसी तरह के पदचिह्न "याद की गई गतिविधि" की तरह सुनाई दिए। ऐसा प्रतीत होता है कि कोई व्यक्ति किसी अत्यावश्यक कार्य को दोहराने में इतना मग्न था, जैसे घर के किसी विशेष स्थान तक जाना, कि उसे दूसरों की उपस्थिति या रोशनी का भी एहसास नहीं हुआ।

डेविड बर्कमैन निश्चित रूप से सोच रहा था कि क्या वह अपना मानसिक संतुलन खो रहा है - लेकिन कम से कम मैं उसे यह दिखाकर इसे रोक सकता था कि वह अकेला मामला नहीं था।

@@@

श्रीमती फैनी के. लॉस एंजिल्स में अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे से कुछ ही दूरी पर एक छोटे से, काफी पुराने मकान में रहती हैं। उनका मकान लकड़ी का बना है और 135 फुट के भूखंड के पीछे, एक पक्की गली से तीन फुट की दूरी पर स्थित है। उन्होंने इसे 1947 में उन दो महिलाओं से खरीदा था जो उस समय इसकी मालिक थीं। उन्हें बाद में पता चला कि वे एक

बढ़ई की पहली पत्नी और बेटी थीं, लेकिन उस समय किसी ने उन्हें यह नहीं बताया था कि मकान में भूत-प्रेत का वास है या इस खरीद के साथ कुछ असामान्य बातें जुड़ी हुई हैं।

श्रीमती के. एक व्यावहारिक महिला हैं, कभी-कभी थोड़ी अधीर हो जाती हैं और आसानी से किसी बात से नहीं डरतीं। उन्होंने अच्छी शिक्षा प्राप्त की है और ईएसपी (प्रारंभिक आध्यात्मिक संवेदना) से संबंधित विषयों में उनकी रुचि मध्यम स्तर की है, विशेष रूप से उन घटनाओं के बाद जो मैं अब बताने जा रहा हूँ।

लॉस एंजिल्स के 96 वें स्ट्रीट स्थित घर में आने के बाद पहली ही रात, श्रीमती के. अपने शयनकक्ष में गहरी कराहों की आवाज़ से नींद से जाग उठीं, जहाँ वे अकेली थीं। यह सिलसिला रात-दर-रात चलता रहा। जल्द ही, कराहों के साथ-साथ किसी अदृश्य उंगलियों का स्पर्श उनके बालों में महसूस होने लगा और कोई अदृश्य व्यक्ति उनकी पसलियों को हल्के से छू रहा था। उन्हें स्पष्ट हो गया था कि कोई उनका ध्यान आकर्षित करना चाहता है। आखिरकार, घर में आने के तीन सप्ताह बाद, एक पड़ोसी को उन पर दया आ गई और उसने उन्हें उनके घर के बारे में सारी जानकारी दी।

यह घर मूल रूप से विंस्टन नामक एक स्कैंडिनेवियाई बढ़ई का था, जिसने 54 वर्ष की आयु में दूसरी शादी की थी, एक 28 वर्षीय महिला से। अचानक भड़के ईर्ष्या के आवेश में आकर उसने अपनी पत्नी की गोली मारकर हत्या कर दी और जब पुलिस उसके करीब पहुँचने लगी, तो उसने तीन दिन बाद आत्महत्या कर ली। हालाँकि दोनों अपराध सीधे घर में नहीं हुए थे, लेकिन उसने वहाँ कई वर्ष बिताए थे और वह घर उसका अपना घर था।

इस जानकारी से श्रीमती के. की घबराहट ज़रा भी कम नहीं हुई। एक तो, ये गड़बड़ियाँ सिर्फ़ इसलिए नहीं रुकीं क्योंकि अब उन्हें पता चल गया था कि ये सब कौन कर रहा है। हालत इतनी बिगड़ गई कि आख़िरकार उन्होंने एक सहेली को अपने साथ एक रात रुकने के लिए कहा ताकि वो भी ये सब सुन सके। ये बात 1948 की है। जैसे ही दोनों औरतें सोने गईं, उन्होंने साफ़-साफ़ कदमों की आहट सुनी, जैसे कोई बेडरूम के दरवाज़े से लिविंग रूम के फ़र्श को पार करते हुए सामने के दरवाज़े तक जा रहा हो। हालाँकि, उन्होंने सामने का दरवाज़ा खुलते और बंद होते हुए भी सुना। सहेली को अब यकीन हो गया कि श्रीमती के. को "सिर्फ़ भ्रम" नहीं हो रहा था।

कुछ समय बाद, एक रात श्रीमती के. एक लंबी, गहरी आह की आवाज और उसके बाद दिल दहला देने वाले रोने की आवाज से जाग गईं।

यह एक महिला की आवाज़ थी और श्रीमती के. को महसूस हुआ कि वह उनके बिस्तर के पास ज़मीन पर घुटनों के बल बैठी है! उन्होंने इसे नज़रअंदाज़ करने का फैसला किया और दीवार की ओर मुड़ गईं। लेकिन उन्हें ज़्यादा देर नींद नहीं आई थी कि उन्हें लगा जैसे किसी पुरुष की मुट्ठी, चादर में लिपटी हुई, उनकी गर्दन के पिछले हिस्से पर ज़ोर से धक्के दे रही हो। वह हिली नहीं और इंतज़ार करती रहीं। आखिरकार, बिजली चली गई और शोरगुल बंद हो गया। कम से कम उस रात के लिए तो।

श्रीमती के. ने बताया, "एक से अधिक बार मैंने बिस्तर के सिरहाने पर एक बुरी शक्ति को खड़े होने का अहसास किया है, और सबसे डरावनी बात यह है कि जब मैं पूरी तरह से जाग रही होती हूं, तब भी वह मुझे बिस्तर पर जकड़ने की कोशिश करती है, जैसे कि मेरे ऊपर प्लास्टिक का आवरण फेंक रही हो।"

मैंने प्रेतबाधा या प्रेतबाधा के प्रयास का यह वर्णन पहले भी कई बार सुना था। एक बार, छत से कोई भारी वस्तु गिरी और श्रीमती के. जिस बिस्तर पर लेटी थीं, उस पर इतनी ज़ोर से टकराई कि बिस्तर लगभग एक फुट नीचे धंस गया। लेकिन कुछ भी दिखाई नहीं दिया और गिरा! पहले तो उन्हें लगा कि यह बस एक स्थानीय भूकंप था। लेकिन सुबह जब उन्होंने तकिए के पीछे हाथ डाला, तो उन्हें साफ तौर पर "किसी टिशू पेपर जैसी कोई चीज़ सरसराती हुई" महसूस हुई। ज़ाहिर है, वह चीज़ पूरी रात वहीं थी।

1958 में, भूत ने उसे इतनी ज़ोर से धक्का दिया कि वह जाग गई। जब उसे होश आया, तो उसने अपने पास ही किसी की फुसफुसाती आवाज़ सुनी, जिसमें "बोतल!" कहा गया था। कुछ ही क्षण बाद, आवाज़ ने फिर से बोतल की माँग दोहराई। पूरी तरह से जाग चुकी वह बिस्तर पर बैठ गई और उस भूतिया घुसपैठिए को चुनौती दी।

“तुम बोतल के बारे में क्यों बात कर रही हो?” लेकिन उसे कोई जवाब नहीं मिला।

कुछ समय बाद ही उसे अपने भूत का आभास हुआ। वह काले कपड़े और झुकी हुई किनारी वाली काली टोपी पहने हुए, तेज़ी से शयनकक्ष के एक कोने से दूसरे कोने तक गया। हालाँकि, वह उसके चेहरे के हाव-भाव नहीं पहचान पाई। तब से उसने कई बार उसका चेहरा अपने

चेहरे के करीब देखा, हालाँकि वह उसे कभी स्पष्ट रूप से नहीं देख पाई। 1959 की क्रिसमस तक यह स्थिति इतनी बिगड़ गई थी कि उसे ऐसा महसूस हुआ जैसे वह उसका कंधा पकड़े हुए है और उसे उस घुसपैठिए से छुटकारा पाने के लिए संघर्ष करना पड़ा।

एक तर्कसंगत और विवेकशील महिला होने के नाते, श्रीमती के. अपनी टिप्पणियों के अतिरिक्त प्रमाण चाहती थीं। 1954 में उनके घर में एक मेहमान आई, जिसने तीन महीने तक उनके साथ कमरा साझा किया, उनके शयनकक्ष में सोती थी, जबकि श्रीमती के. बैठक कक्ष में सोती थीं।

उनकी मेहमान ने जल्द ही नींद न आने की शिकायत की। उन्होंने बताया कि कोई उन्हें लगातार देख रहा था, कोई ऐसा जिसे वह देख नहीं सकती थीं लेकिन महसूस कर सकती थीं कि वह कमरे में उनके साथ ही मौजूद है।

एक अन्य मित्र, जो तीव्र मानसिक क्षमताओं से युक्त थी, घर आई और उसने तुरंत उस स्थान की "बीमारी" का निदान कर लिया। उसने कहा कि घर में गहरा दुख छाया हुआ था, और फिर उसने उस त्रासदी का वर्णन किया जिसके कारण भूतिया घटनाएँ घटित हो रही थीं।

श्रीमती के. को समय-समय पर एक महिला की आवाज़ सुनाई देती थी, जो कमरे में किसी से बात करती हुई प्रतीत होती थी, लेकिन वह शब्दों को समझ नहीं पाती थीं। यह घटना केवल शयनकक्ष में ही घटित होती थी, और गड़बड़ी के बीच-बीच में शांति के क्षण भी आते थे।

फरवरी 1960 में श्रीमती के. से पहली बार संपर्क करने के बाद मैं उनके संपर्क में रहा। उस समय मैं स्वयं लॉस एंजिल्स नहीं जा सकता था, इसलिए मैंने सुझाव दिया कि भूत भगाने की तकनीकों का कुछ ज्ञान रखने वाला एक स्थानीय व्यक्ति उनसे संपर्क करे ताकि उन्हें तुरंत राहत मिल सके। दुर्भाग्य से उस व्यक्ति ने मेरे अनुरोध पर कोई कार्रवाई नहीं की और श्रीमती के. इस पूरे मामले को लेकर और भी चिंतित होती चली गईं। उन्होंने कहा कि यह सच था कि 1960 के अधिकांश समय घर में शांति रही, लेकिन उन्हें पूरा विश्वास था कि देर-सवेर मृत बढ़ई फिर से प्रकट होगा। इस प्रकार उनके अपने डर ने भूतिया दर्शनों को और भी जटिल बना दिया।

उसने बढ़ई और उसकी पत्नी को भगाने के लिए दो स्थानीय तांत्रिकों को बुलाया। तांत्रिक असफल रहे। उसने दावा किया कि अब तक भूतिया बढ़ई उसके बिस्तर में घुसने की

कोशिश कर चुका था। मैंने इस दावे को हंसी में नहीं उड़ाया, भले ही यह सुनने में कितना भी अजीब लगे—खासकर ऐसे व्यक्ति को जो मानसिक विकारों की गंभीरता से परिचित न हो। श्रीमती के. मुझे उन्मादी नहीं लगीं।

जब भी हालात बहुत खराब हो जाते थे, वह घर छोड़कर पड़ोसी के घर में रहने चली जाती थी, और भूतों को घर में मनमर्जी से घूमने के लिए छोड़ देती थी।

1963 में मैं लॉस एंजिल्स में था और उतरते ही मैंने उससे बात की। उस समय वह काफी बीमार थी, कुछ तो गंभीर सर्दी के कारण और कुछ भूतों के कारण उत्पन्न मानसिक तनाव के कारण।

काश मैं इस मामले का सुखद अंत बता पाता, लेकिन बाद की मुलाकातों में भी श्रीमती के. से संपर्क नहीं हो पाया। क्या वह किसी भूतिया जहाज की तरह लॉस एंजिल्स के धुएं में गायब हो गई हैं, या बढ़ई ने आखिरकार बोतल की अपनी मांग छोड़ दी है?

कारण चाहे जो भी हो, यह भावी घर खरीदारों के लिए एक सबक है कि वे आत्महत्या करने वाले व्यक्ति के स्वामित्व वाले घर न खरीदें। आपको कभी नहीं पता कि सौदे में क्या-क्या शामिल हो सकता है।

कभी-कभी बेचैन मृत आत्माएं इस बात पर जोर देती हैं कि वे बिल्कुल भी मृत नहीं हैं। वे पुराने समय की तरह जीवितों की गतिविधियों में भाग लेना चाहती हैं।

श्रीमती स्मिथ—यह उनका असली नाम है—लॉस एंजिल्स में रहती हैं। 1936 में उनकी पहली शादी के कुछ समय बाद ही उनकी मां उनके और उनके पति के साथ रहने आ गईं, लेकिन घर में सामंजस्य नहीं था। हालांकि, एक साल के भीतर ही स्थिति तब और बिगड़ गई जब मां बीमार पड़ गईं और उन्हें अस्पताल में भर्ती कराया गया, जहां उनकी बीमारी का निदान लाइलाज कैंसर के रूप में हुआ।

इसी दौरान, श्रीमती स्मिथ अपने दूसरे बच्चे की उम्मीद कर रही थीं, इसलिए उन्हें भी अस्पताल जाना पड़ा। किसी को नहीं पता था कि उनकी माँ कितने दिन जीवित रहेंगी, लेकिन उन्हें अनिश्चित काल के लिए अस्पताल में ही रहना था।

श्रीमती स्मिथ के बच्चे को जन्म देने के बाद जब वह घर जाने ही वाली थीं, तो एक रात उन्हें एक दूसरे वार्ड में स्थानांतरित कर दिया गया, जो उनकी मां के बिस्तर से ज्यादा दूर नहीं था।

उस रात, अस्पताल में उसकी आखिरी रात, उसे किसी तरह नींद नहीं आ रही थी। उसकी निगाहें दीवार और उसमें बनी छह खिड़कियों पर टिकी हुई थीं। वह पूरी तरह जाग रही थी। अचानक उसने उन खिड़कियों से तीन आकृतियों को अंदर आते देखा। उसे सफेद वस्त्र पहने हुए एक आकृति ईसा मसीह जैसी लग रही थी, जिसके साथ उसके पिता थे, जिनकी मृत्यु तब हुई थी जब वह केवल दो साल की थी, और उसके पादरी थे जिनका निधन तीन साल पहले हो गया था।

तीनों लोग श्रीमती स्मिथ के बिस्तर के पास से गुजरते हुए उनकी मां के बिस्तर की ओर जा रहे थे और जब वे वहां से गुजर रहे थे, तो मृत पादरी ने उन्हें बताया कि वे उनकी मां के लिए आए हैं।

श्रीमती स्मिथ बिस्तर पर उठ बैठीं और उन्हें छूने के लिए हाथ बढ़ाया, लेकिन तीनों आकृतियाँ गायब हो गईं। पाँच मिनट बाद एक नर्स आकर उन्हें बताया कि उनकी माँ का निधन हो गया है।

श्रीमती स्मिथ घर लौट आईं, लेकिन अपनी माँ के गम से उनका शोक क्षणिक ही रहा। एक सप्ताह बाद, जब वह घर में अपनी दिवंगत माँ का सामान समेटने में व्यस्त थीं, तभी उन्होंने पाया कि एक अदृश्य शक्ति उन सभी वस्तुओं को उनके हाथों से खींच रही थी जिन्हें वह फेंकने वाली थीं! वह ऐसा करने में असमर्थ रहीं और अपने पति से यह कार्य करवाया।

लेकिन बात यहीं खत्म नहीं हुई। हर रात, जब वह और उनके पति बिस्तर पर होते, तो दरवाजे पर दस्तक होती और उनकी दिवंगत मां की आवाज उन्हें नाम से पुकारती! श्रीमती स्मिथ और उनके पति दोनों ने अलमारी के दरवाजों को अपने आप खुलते और बंद होते देखा, मानो वे आपस में इन अलौकिक घटनाओं पर चर्चा कर रहे हों ताकि उन्हें यकीन हो जाए कि वे सिर्फ कल्पना तो नहीं कर रहे थे। और वे कल्पना नहीं कर रहे थे।

वे काफी समय से अपनी मां के दरवाजे की चाबी ढूंढ रहे थे, क्योंकि वे नहीं चाहते थे कि वह किसी अनजान के हाथ में पड़ जाए, आखिर वह उनके घर की चाबी थी। उन्होंने कितनी भी सावधानी से ढूंढा, उन्हें वह कहीं नहीं मिली। एक रात श्रीमती स्मिथ की मां की आत्मा ने उनके शयनकक्ष के दरवाजे पर दस्तक दी और अपनी बेटी को दिव्य वाणी से बताया कि वह एक

ऐसे कोट की जेब में देखे जिसे अभी तक किसी को दिया नहीं गया था। श्रीमती स्मिथ तुरंत बिस्तर से उठीं और देखा। और सच में, चाबी वहीं थी!

श्रीमती स्मिथ को अब एहसास हुआ कि उनके पास मानसिक शक्तियां हैं और वे मृतकों की बातें सुन सकती हैं। स्वाभाविक रूप से, उन्होंने भी टेलीपैथी के माध्यम से उनसे बात करने की कोशिश की। लेकिन उनकी माँ ने उनकी बात नहीं सुनी। उन्होंने कभी उनकी बात का जवाब नहीं दिया, न ही उनकी बेटी की किसी बात पर कोई प्रतिक्रिया दी। सभी सच्चे भूतों की तरह, श्रीमती स्मिथ की माँ भी विचलित थीं और अपनी वास्तविक स्थिति को पहचान नहीं पा रही थीं।

उन्होंने मां का कमरा एक महिला को किराए पर दे दिया। बोर्ड ने शिकायत की कि वह उस कमरे में सो नहीं पाती थी। कोई न कोई लगातार उसके दरवाजे पर दस्तक देता रहता था। ज़ाहिर है, किसी ने भी उसे मां के भूत के बारे में कुछ नहीं बताया था। बोर्ड के लोग कमरा खाली करके चले गए और श्रीमती स्मिथ और उनके पति उस कमरे में रहने आ गए, और बदले में उन्होंने उस महिला को अपना कमरा दे दिया।

कुछ दिनों तक सब कुछ शांतिपूर्ण रहा। फिर एक रात किराएदार घर में अकेली नहा रही थी। अचानक उसने सामने का दरवाजा खुलते और बंद होते सुना और किसी के सीढ़ियों से दूसरी मंजिल पर जाने की आवाज सुनी। लेकिन जब उसने देखा तो वहाँ कोई नहीं था। बस इतना ही उसके लिए काफी था और वह हमेशा के लिए घर छोड़कर चली गई।

इस समय, माँ का ध्यान और भी बढ़ गया। श्रीमती स्मिथ ने हर बात पर अच्छी तरह से विचार किया। वे भी वहाँ से चले गए। अब उनकी माँ उस जगह पर अकेली रह गई हैं।

@@@

रूथ हेडन एक सेवानिवृत्त स्कूल शिक्षिका हैं जो कैलिफोर्निया के ओजई में एक शांत, सेवानिवृत्त जीवन जी रही थीं, जब उन्होंने 1963 में मुझसे संपर्क किया था।

निष्क्रियता के कारण वह कुछ सकारात्मक योगदान देने के लिए तरस रही थी, और मानसिक अनुसंधान के नए सत्यों ने उसे अत्यंत आकर्षित किया। इसलिए, शारीरिक मृत्यु के बाद मानव

व्यक्तित्व के अस्तित्व के बढ़ते प्रमाणों के हिस्से के रूप में, वह इस क्षेत्र में अपने अनुभवों को साझा करने के लिए आगे आई।

मैंने मिस हेडन से पहले खुद को समझाने के लिए कहा, ताकि मैं मानसिक शक्तियों में उनकी रुचि को बेहतर ढंग से समझ सकूं।

“एक अनाथ के रूप में, नेत्रहीनों के स्कूल में, मैंने बारह वर्षों तक अत्यंत श्रद्धापूर्वक बाइबल का अध्ययन किया, हर तरह के लोगों के बीच रहकर, और व्यापक रूप से सहिष्णु और ईश्वर के प्रति आदर भाव विकसित किया। मेरा सिद्धांत था कि मैं अपने मित्रों के साथ वैसा ही व्यवहार करूँ जैसा मैं चाहता हूँ कि ईश्वर मेरे साथ करे, और बाकी दुनिया के साथ वैसा ही व्यवहार करूँ जैसा मैं चाहता हूँ कि दुनिया मेरे साथ करे। दो बड़े सरकारी अस्पतालों में 36 वर्षों तक पढ़ाने के बाद (फिर से हर तरह के लोगों के बीच), मैं सर्दियों से बचने के लिए कैलिफोर्निया आ गया।”

पिछले कई वर्षों में उनके कई मानसिक अनुभव रहे। एक विशेष रूप से स्पष्ट घटना ने मुझे कुछ साल पहले एलीन गैरेट के एक अनुभव की याद दिला दी, जब न्यूयॉर्क में किसी को भी इस घटना की सूचना मिलने से पहले ही उन्हें मानसिक माध्यम से एक मित्र के निधन की खबर मिल गई थी।

“मैं एक जूते की मरम्मत की दुकान से बाहर निकला था और शहर के चौक की ओर संकरी गली से नीचे जा रहा था, तभी इमारतों के बीच, वाहनों के सिर के ऊपर, मेरे बाईं ओर लगभग पंद्रह फीट की दूरी पर, एक परिचित आवाज सुनाई दी: 'सांचो पांचो अब मेरे साथ है।'

“वह आवाज एक ऐसे दोस्त की थी जिसकी पांच महीने पहले मौत हो गई थी। मैंने आवाज और शब्दों को सुना और पहचाना था, लेकिन आसपास मौजूद अन्य लोगों को जाहिर तौर पर कुछ भी असामान्य नहीं सुनाई दिया!”

“‘सांचो पांचो’ मेरा एक छात्र था जिसकी उस सप्ताह गले के कैंसर के लिए सर्जरी हुई थी। उसका असली नाम टॉम जॉयस था, लेकिन मेरे दोस्त ने उसे सांचो पांचो उपनाम दिया था क्योंकि वह कक्षा में मेरी बहुत मदद करता था—और मेरे मृत दोस्त और मेरे अलावा किसी को भी इस संबंध के बारे में पता नहीं था।”

“उस घटना के बारे में सोचे बिना मैंने अपनी बस का इंतज़ार किया, पाँच मील का सफर तय किया और फिर स्कूल तक आधा मील से थोड़ा ज़्यादा पैदल चला। स्विचबोर्ड के पास से गुज़रते ही मुझे ‘पॉन्डविले अस्पताल को फ़ोन करने’ के लिए कहा गया। वहाँ मुझे बताया गया कि मेरा छात्र टॉम—जिसकी आत्मा की आवाज़ सुनाई दी थी—का अभी-अभी निधन हो गया है, और वे जानना चाहते थे कि क्या मैं उन्हें उसका घर का पता दे सकता हूँ। उनके पास जो पता था, वह उस संस्था का था जहाँ वह रहता था और जहाँ मैं शिक्षक था।”

@@@

मैंने एड्रियाना डी सोला के बारे में पहली बार न्यूयॉर्क के चार्ल्स स्ट्रीट में सुना था, जब हम बैरी गाउंट के घर में घटी अजीब घटनाओं की जांच कर रहे थे। मिस डी सोला बैरी की मेहमान थीं और उन लोगों में से एक थीं जिन्होंने "मिस बॉयड" के उदास भूत का सामना किया था, जिसकी जांच मेरी किताब "घोस्ट्स आई हैव मेट" में सिबिल लीक की मदद से की गई है।

मैं हमेशा से उस जोशीली महिला से व्यक्तिगत रूप से मिलना चाहता था और जब मैं जनवरी 1965 के अंत में लॉस एंजिल्स से गुजरा, तो मैंने उससे मिलने का फैसला किया।

मूल रूप से मैक्सिको की रहने वाली एड्रियाना डी सोला लंबे समय से लॉस एंजिल्स में रह रही थीं, उनका मुख्य पेशा लेखन था, हालांकि वह समय-समय पर गुजारा करने के लिए छोटे-मोटे काम भी करती थीं - जो अमेरिकी लेखकों के बीच एक आम जरूरत है।

उसका पहला अजीब अनुभव कई साल पहले हुआ था, जब उसकी सगाई हो चुकी थी, लेकिन उसका अपने होने वाले पति से झगड़ा हो गया और वह अकापुल्को चला गया। कई हफ्ते बीत गए। फिर एक रात जब वह अपने बाल संवार रही थी, तो उसने सुना कि वह उसके बगल में खड़ा है और उसे बता रहा है कि उसी सुबह नौ बजे अकापुल्को में उसकी डूबने से मौत हो गई!

अगले दिन जब उसने सुबह का अखबार उठाया और उसमें त्रासदी की खबर ठीक उसी तरह छपी पाई, जैसा कि उसके पति ने उसे बताया था, तो उसकी हैरानी की कल्पना कीजिए।

"मुझे उनकी खास खुशबू आई, लेकिन मैंने उन्हें देखा नहीं," उन्होंने टिप्पणी की, "और मुझे उनकी आवाज ऐसे सुनाई दी जैसे वह मेरे बाएं कान के पीछे फुसफुसा रहे हों।"

“क्या बात यहीं खत्म हो गई? क्या वह सिर्फ अलविदा कहने आया था?”

“बिल्कुल नहीं...आप जानते ही हैं कि लैटिन लोग कभी-कभी कैसे होते हैं...मैंने एक साल बाद दूसरे आदमी से शादी कर ली, और मेरे मंगेतर की आत्मा ने हमें इतना परेशान किया कि मुझे उससे तलाक लेना पड़ा। हमारी एक नौकरानी तांत्रिक थी और उसने समाधि की अवस्था में उससे अपने काम करवा लिए, यहाँ तक कि उसने मेरे नए पति पर चीज़ें भी गिरा दीं। जैसे सूप की प्लेट।”

इसलिए उसने फैसला किया कि उस आदमी को अपनी जिंदगी से हमेशा के लिए दूर करने से बेहतर है कि वह उससे तलाक ले ले!

आज, मिस डी सोला चालीस के दशक के मध्य या अंत में एक जीवंत, काले बालों वाली महिला हैं, जो बेहद आत्मनिर्भर और दार्शनिक हैं। उनकी आवाज़ दृढ़ है और हर मोड़ पर उनका आत्मविश्वास झलकता है। हॉलीवुड रूजवेल्ट के आरामदायक माहौल में, जहाँ भूतों का कोई नामोनिशान नहीं है, आमने-सामने होने पर मैंने निष्कर्ष निकाला कि भूतों के लिए भी उन पर विजय पाना मुश्किल होगा।

जब एड्रियाना डी सोला निचले कैलिफोर्निया के एक छोटे से गाँव में रहने आई, जो मेक्सिको का एक रेगिस्तानी प्रांत है, तो उसने एक ऐसा घर खरीदा जो इतना सस्ता था कि उसे कुछ गड़बड़ लगी—या यूँ कहें कि किसी भूत का साया। उसका शक सही निकला, क्योंकि एक रात वह इस तीव्र अनुभूति के साथ जागी कि उसे 45 इंच मोटी एक दीवार खोदनी चाहिए। उसने अपनी इस आशंका का पालन किया और उसे वहाँ एक छिपा हुआ मिट्टी का बर्तन मिला, जो खाली था। उसके बाद सब शांत हो गया और वह शांति से उस छोटे से घर का आनंद ले सकी। जाहिर है, घर के पिछले मालिक ने यही चाहा था कि वह बर्तन ढूंढे।

न्यूयॉर्क में कुछ समय बिताने के बाद, जहाँ चार्ल्स स्ट्रीट पर उनका सामना मिस बॉयड के आहें भरते भूत से हुआ, वे लॉस एंजिल्स आईं और बेलेयर के एक घर में गृहणी के रूप में काम करने लगीं। उन्हें एक घरेलू रोजगार एजेंसी द्वारा वहाँ भेजा गया था और उन्हें उस घर या उसके इतिहास के बारे में कोई जानकारी नहीं थी।

अब वह घर एक जाने-माने फिल्म निर्माता का था और एड्रियाना को कर्मचारियों की देखरेख का काम सौंपा गया, जिसमें वह बेहद कुशल साबित हुईं। उनके लिए यह कुछ पैसे बचाने का

एक ज़रिया था, ताकि कुछ समय बाद वे फिर से आज़ाद होकर खुद कुछ लिख सकें। घर खूबसूरत था और पहली नज़र में शांत लगता था, और एड्रियाना को लगा कि उन्होंने सही चुनाव किया है।

वहाँ पहुँचने के कुछ ही समय बाद, आधी रात को उसकी नींद खुल गई। कोई उसे कंधे से हिला रहा था। पूरी तरह जागने पर वह बिस्तर पर बैठ गई। वहाँ कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा था, लेकिन उसकी अंतरात्मा ने उसे बताया कि उसके बिस्तर के पास कोई खड़ा है, एक लंबी, पतली महिला जिसके कंधे तक सुनहरे बाल थे। उसने अपनी आंतरिक दृष्टि से इसे बहुत स्पष्ट रूप से "देखा"। वह प्रेत बहुत दुखी था और खून से लथपथ था!

हालांकि एड्रियाना उसकी विनती से प्रभावित हुई, लेकिन वह इस घटना की वास्तविकता को स्वीकार नहीं कर सकी और इसे पेट खराब होने का कारण मान लिया। उसने बेचैन बच्ची के लिए प्रार्थना की और फिर सो गई।

लगभग छह या सात दिन बाद, यह घटना फिर से घटी। इस बार एड्रियाना भूत की सुंदरता से विशेष रूप से प्रभावित हुई। अगली सुबह उसने आखिरकार इस मामले की छानबीन करने का फैसला किया।

उसके मालिक की पत्नी ने चुपचाप उस प्रेतवाधित आगंतुक का वर्णन सुना, फिर सिर हिलाया। विशेष रूप से तब जब एड्रियाना ने बताया कि वह उसे हल्के रंग का सूट पहने, खून से लथपथ दिखाई दिया था।

यह घर कैरोल लोम्बार्ड का था, जहाँ वह क्लार्क गैबल के साथ बहुत खुश थीं! कैरोल लोम्बार्ड की एक विमान दुर्घटना में दुखद मृत्यु हो गई, जब उनका विमान, अपने पति से मिलने के लिए पूर्व की ओर जाते समय, तूफान में एक पहाड़ से टकरा गया। उस समय उन्होंने हल्के रंग का सूट पहना हुआ था।

मिस डी सोला ने दो दिन बाद घर छोड़ दिया और इस अजीबोगरीब स्थिति से तंग आ चुकी थीं। इसलिए यह संभव है कि कैरोल लोम्बार्ड की बेचैन आत्मा अभी भी अपने घर से जुड़ी हुई है, जब तक कि, निश्चित रूप से, उन्हें परदे के उस पार उनका पति क्लार्क गैबल न मिल गया हो।

@@@

मौरिन बी. अब सैन फ्रांसिस्को की एक गृहिणी हैं, लेकिन 1959 में, जब उनका पहली बार अलौकिक घटनाओं से सामना हुआ, तब वह कॉलेज के ग्रीष्मकालीन स्कूल में पढ़ रही थीं और टोरावेल स्ट्रीट पर उस पुराने घर में अकेली रह रही थीं जिसे उनके माता-पिता, श्रीमान और श्रीमती जॉन एफ. ने हाल ही में खरीदा था।

रिकॉर्ड से पता चलता है कि यह घर 1907 का है, जो उस इलाके के हिसाब से काफी पुराना है। माता-पिता छुट्टी पर गए हुए थे और मॉरीन को यह घर अपने लिए रखना चाहिए था—लेकिन ऐसा नहीं हुआ।

कभी-कभी वह पूरी रात जागती रहती थी क्योंकि उसे ऐसा लगता था कि वह घर में अकेली नहीं है। कोई न कोई उसे घूर रहा था—कोई ऐसा जिसे वह देख नहीं सकती थी!

तनाव के कारण वह बीमार पड़ गई, लेकिन 1960 की गर्मियों तक कुछ और नहीं हुआ, जब एक रात उसने खुद को नीचे के नाश्ते के कमरे में देर तक पढ़ाई करते हुए पाया।

शारीरिक रूप से थकी होने के बावजूद, वह मानसिक रूप से पूरी तरह सतर्क थी। पीछे के बरामदे की ओर जाने वाला दरवाज़ा, जहाँ रसोई थी, अंदर से बंद था और चाबी ताले में ही थी। इस बरामदे से बाहर आँगन में जाने वाला दरवाज़ा दोहरे ताले से बंद था और चाबी कहीं छिपाकर रखी हुई थी। पुराने घर की कोई भी खिड़की नहीं खुल रही थी।

फिर भी, रात के सन्नाटे में, मॉरीन को अचानक दरवाजे के दूसरी तरफ से सरसराहट की आवाज सुनाई दी, उसके बाद कदमों की आहट और जंजीर की खनक सुनाई दी। डर से उसका दिल ज़ोर से धड़कने लगा और वह वहीं जम गई, दरवाजे को घूरती रही। दरवाजे में चाबी घूम रही थी और बाहर से कोई कराह रहा था।

कुछ क्षणों के लिए मॉरीन चुपचाप बैठी रही। फिर उसने हिम्मत जुटाई और दौड़कर सीढ़ियों से ऊपर गई और अपने पिता को जगाया। वह जल्दी से नीचे आए और दरवाजा खोलकर पीछे के बरामदे और आंगन में तलाशी ली। वहाँ कोई नहीं मिला।

अगले दिन परिवार ने फैसला किया कि मॉरीन ने शायद रेलगाड़ी की आवाज़ें सुनी होंगी। ताले में चाबी घूमने की बात करें तो, वह तो बस उसकी अत्यधिक थकी हुई आँखों का भ्रम था।

मौरिन को बेहतर पता था, क्योंकि वह लंबे समय से रेलगाड़ियों के शोर के बीच रह रही थी और दरवाजे के बाहर जो कराहने की आवाज़ उसने सुनी थी, वह किसी रेलगाड़ी की नहीं थी।

उसकी आँखों के सामने ताले में चाबी आगे-पीछे हिल रही थी। हालाँकि, ताला खोलने के लिए चाबी को लॉक करते समय जो आवाज़ आती है, वैसी कोई क्लिक की आवाज़ नहीं आई। चूंकि परिवार के बाकी सदस्यों ने घर में कुछ भी असामान्य अनुभव नहीं किया था और वे किसी तांत्रिक की संभावना को स्वीकार नहीं करते थे, इसलिए मौरिन ने इस मामले को छोड़ देना ही उचित समझा, हालाँकि उसे उस घर के बारे में कुछ बातें पता चलीं जो उसके माता-पिता ने 1957 में खरीदा था।

पहले यह एक प्राचीन वस्तुओं की दुकान थी, और उससे पहले यहाँ एक वृद्ध, शारीरिक रूप से विकलांग व्यक्ति रहता था। उसका पलंग सामने वाली खिड़की के पास था जो सड़क की ओर खुलती थी, ताकि वह बाहर की गतिविधियों को देख सके, जैसा कि अक्सर वृद्ध लोग चाहते हैं—इससे उन्हें यह एहसास होता है कि वे घर में बंद नहीं हैं, बल्कि सक्रिय दुनिया का हिस्सा हैं। जब उसकी मृत्यु हुई, तब तक घर की हालत बहुत खराब हो चुकी थी और एक रियल एस्टेट कंपनी ने इसे खरीदकर इसकी मरम्मत करवाई।

कई वर्षों तक उस बूढ़े व्यक्ति ने इस घर को अपना घर कहा, धीरे-धीरे उसकी शारीरिक क्षमता कम होती गई, अंततः मृत्यु ने उसे इस घर से छीन लिया। लेकिन क्या सच में मृत्यु ने ही उसे इस घर से दूर कर दिया?

@@@

जब मैं 1966 की शरद ऋतु में लॉस एंजिल्स में रेगिस फिलबिन के साथ एक विशेष टेलीविजन कार्यक्रम में दिखाई दिया, जिसमें हमने भूतों और मानसिक अनुभवों पर चर्चा की और ऐसे प्रेतों की कुछ साक्ष्यपूर्ण तस्वीरों के साथ उन्हें चित्रित किया जो मैंने ली थीं, तो कई लोगों ने अपने स्वयं के मानसिक रोमांच के बारे में या उन घरों के बारे में लिखा या फोन किया जिनकी वे चाहते थे कि मैं जांच करूं।

सबसे दिलचस्प मामलों में से एक में एक ऐसे व्यक्ति का मामला शामिल था जो व्यक्तिगत अस्तित्व या माध्यम बनने की संभावना के प्रति विशेष रूप से मित्रवत नहीं था, लेकिन अपने अनुभवों से मजबूर होकर उसे अपने विचारों का पुनर्मूल्यांकन करना पड़ा।

@@@

अर्ल बर्नी एक पूर्व मरीन हैं जो सैन डिएगो में रहते हैं। उन्हें जून 1945 में मरीन कोर से छुट्टी दे दी गई और वे नौसेना में गार्ड के रूप में काम करने लगे। वे कैलिफोर्निया के लोमा पोर्टल स्थित एक पुराने बंगले में द्वितीय विश्व युद्ध के बाद स्थापित नौसेना इलेक्ट्रॉनिक्स प्रयोगशाला में तैनात थे। काम अत्यंत गोपनीय था, और परिणामस्वरूप वहां सुरक्षा बहुत कड़ी थी।

शुरुआत में बर्नी का काम रात के समय हवेली की रखवाली करना था, और वह रात 11:15 बजे आता था। उसे उस जगह के बारे में कुछ भी पता नहीं था, और जिस व्यक्ति की जगह उसने काम संभाला था, वह किसी अजीब कारण से उससे काम के बारे में कभी बात नहीं करता था - बर्नी के वहाँ पहुँचने के कुछ ही सेकंड बाद, उसका पूर्ववर्ती दरवाजे से बाहर निकल जाता था, मानो वह अपनी इच्छा के अनुसार जितनी जल्दी हो सके वहाँ से निकलना चाहता हो।

बर्नी ने फिर नियमित रूप से पूरे घर का निरीक्षण किया। उसने जिस दरवाजे से अंदर आया था उसे बंद कर दिया और रसोई में चूल्हे पर कॉफी बनाने के लिए रख दी। घर ने अपनी प्राचीन शान को काफी हद तक बरकरार रखा था, जिसमें महोगनी की पैनलिंग और दूसरी मंजिल तक जाने वाली एक बड़ी, घुमावदार सीढ़ी थी। हालांकि, दीवार में लगे एक वेंटिलेटर में किसी ने गोली का छेद कर दिया था, जिसे देखकर वह थोड़ा हैरान रह गया।

नौकरी शुरू करने के कुछ ही समय बाद एक सुबह, वह चौकीदार की डेस्क पर बैठकर कॉफी पी रहा था, तभी उसे ऊपर से कदमों की आहट सुनाई दी। दोपहर के ठीक दो बजे थे और इमारत में उसके अलावा कोई नहीं था।

स्वाभाविक रूप से, बर्नी तुरंत उछल पड़ा। कदमों की आहट भारी थी और गलियारे से होते हुए सीढ़ियों के शीर्ष की ओर आ रही थी। बर्नी सीढ़ियों पर चढ़ने लगा, लेकिन जब वह शीर्ष पर पहुँचा, तो कदमों की आहट एकदम रुक गई—और आस-पास कोई भी दिखाई नहीं दे रहा था।

उसने घर के हर कोने की तलाशी ली लेकिन उसे कोई ऐसा इंसान नहीं मिला जिसके कदमों की आवाज आई हो।

उसके बाद, उसने कुछ और बार कदमों की आहट सुनी, लेकिन अब वह उतना उत्साहित नहीं था। उसने इसे "घर के स्थिर होने या ठंडा होने" की आवाज़ मान लिया, हालाँकि वह वास्तव में यह नहीं समझा सका कि ऐसी आवाज़ इंसानी कदमों जैसी कैसे लग सकती है।

फिर एक और घटना ने उन्हें और भी हैरान कर दिया। वे अपनी डेस्क पर बैठे होते, घर में बस एक छोटी सी बत्ती जल रही होती, और बाकी पूरा घर एकदम अंधेरा होता। फिर भी, उन्हें संगीत सुनाई देता। पहली बार जब ऐसा हुआ, तो उन्होंने सोचा कि शायद किसी ने कहीं रेडियो चालू छोड़ दिया होगा। लेकिन उन्हें कहीं भी रेडियो नहीं मिला। फिर जब उन्होंने पुराने हवेली के अंधेरे कोनों में खोजबीन की, तो उन्होंने पाया कि संगीत हर जगह बिल्कुल एक जैसा सुनाई दे रहा था—न तेज़, न धीमा। यह धीमा था, लेकिन फिर बंद हो जाता, और बर्नी को एहसास हुआ कि उन्होंने यह कल्पना नहीं की थी, बल्कि सचमुच "कुछ" सुना था।

बर्नी ने अपने छोटे स्पैनियल कुत्ते एम्बर को अपने साथ ले जाने का फैसला किया। कुत्ता मिलनसार और हंसमुख था, बिल्कुल सामान्य स्वभाव का।

उस रात, वह उसे अपने साथ ले गया और उसे अपनी मेज के पास लिटा दिया। ऐसा करते ही उसने जानवर के व्यवहार में एक अजीब बदलाव देखा। अचानक बहुत घबराई हुई, कुतिया सीढ़ियों के पास नहीं जाती थी और बस वहीं मेज के पास लेटी हुई रोती रहती थी।

रात के 2 बजे भूतिया कदमों की आहट सुनाई दी। कुत्ते ने दिल दहला देने वाली चीख मारी और दरवाजे की ओर भागा। बर्नी ने उसे बाहर जाने दिया और वह अंधेरे में तेजी से भागी और आंगन के दूसरी ओर रखी लोहे की मूर्ति से टकरा गई। शारीरिक रूप से तो उसे कोई चोट नहीं आई, लेकिन इस घटना के बाद कुत्ता पहले जैसा नहीं रहा। हल्की सी भी आवाज उसे डरा देती थी और उसका हंसमुख स्वभाव अब डर से भरी दयनीय जिंदगी में बदल गया था।

बर्नी इन सब बातों से बहुत हैरान था और आखिरकार उसने कुछ सवाल पूछने का फैसला किया।

उसे पता चला कि दूसरों ने भी रात के उन कदमों की आहट सुनी थी। दरअसल, हवेली में गार्डों का काफी फेरबदल हुआ था और उसे, जो एक पूर्व मरीन था, को काम पर रखने का मुख्य कारण वही अजीबोगरीब घटनाएँ थीं। उन्हें लगा कि वह भूत से नहीं डरेगा। वह डरा भी नहीं था, लेकिन फिर भी यह काम उसके लिए मुश्किल था। खासकर तब जब उसे दीवार के

वेंटिलेटर में गोली के छेद के बारे में पता चला। एक डरे हुए गार्ड ने ही वह छेद किया था। लेकिन गोलियां भूतों को नहीं रोक सकतीं।

@@@

बेचैन आत्माएं भटकती रहती हैं, भटकती रहती हैं। उनमें से कुछ खुशकिस्मत होती हैं क्योंकि कोई उनकी परवाह करता है और घर में किसी माध्यम को बुलाता है या मुझे मदद के लिए बुलाता है। लेकिन हर उस बेचैन आत्मा के लिए जिसे मदद मिलती है, ऐसे हजारों लोग हैं जिन्हें मदद नहीं मिलती। मैं इस निष्कर्ष पर पहुंची हूं कि सचमुच हजारों-हजारों घर ऐसे हैं जहां किसी की मृत्यु किसी न किसी तरह से दुखद तरीके से हुई है—जरूरी नहीं कि हिंसक तरीके से, लेकिन शांतिपूर्ण तरीके से भी नहीं—और वे आज भी उन घरों में भटकते रहते हैं। काश मैं उन सभी की मदद कर पाती।

*136

देहधारी शैतान (कैनसस)

अगर आप कैनसस सिटी में रहते हैं और बाइबल के विद्यार्थी हैं या किसी ऐसे चर्च में जाते हैं जहाँ नरक और गंधक के उपदेश दिए जाते हैं, तो आपको शैतान के बारे में अक्सर सुनने को मिलता होगा। कुछ लोगों के लिए शैतान सचमुच मौजूद है और वे उसके अस्तित्व को साबित करने के लिए पूरे जोश और बाइबल के उद्धरणों से भरे तर्क देंगे।

श्रीमती जी उन लोगों में से नहीं थीं जो शैतानी ताकतों से प्रभावित होती थीं, और उन्हें इस बात से कोई फर्क नहीं पड़ता था कि शैतान है या नहीं। उनका पालन-पोषण एक संपन्न मध्यमवर्गीय परिवार में हुआ था और उन्होंने अपना वयस्क जीवन व्यापार जगत में बिताया। उन्नीस वर्ष की आयु में उनकी मुलाकात श्री जी से हुई और उन्होंने उनसे विवाह कर लिया। तब से उनका जीवन सुखमय रहा है। उनके कोई बच्चे नहीं हैं, कोई समस्या नहीं है, कोई परेशानी नहीं है। वह हमेशा अपने पति के पेट्रोल व्यवसाय में सक्रिय रूप से भाग लेती थीं, और हाल ही में उन्होंने थोड़ा आराम करने और शायद कुछ और करने का फैसला किया था, फुर्सत के समय में कुछ करने का, या जब मन करे तब कुछ भी न करने का।

चालीस साल की उम्र में, उसने सोचा कि यह सब करने का एक अच्छा तरीका था, और चूंकि उसे वास्तव में काम करने की ज़रूरत नहीं थी, इसलिए यह अच्छा ही था कि वह जीवन का थोड़ा और भरपूर आनंद लेने लगी। ऐसा नहीं था कि वह किसी भी तरह से दुखी या निराश थी, लेकिन पेट्रोल का कारोबार दुनिया का सबसे रोमांचक काम नहीं है, और तीस साल तक पेट्रोल पर निर्भर रहने के बाद, उसे ताजी हवा की बहुत ज़रूरत महसूस हो रही थी।

1964 की वसंत ऋतु में एक दिन, एक सहेली ने उन्हें कुछ नया और अलग करने का सुझाव दिया। उसने स्थानीय अखबार में एक विज्ञापन पढ़ा था जिसने उसे उत्सुक कर दिया था। एक आध्यात्मिक चर्च आम जनता को अपने प्रवचन समारोह में आमंत्रित कर रहा था। क्यों न वे भी एक बार देख लें?

“आध्यात्मिक चर्च?” श्रीमती जी ने कुछ संदेह के साथ पूछा। उन्हें इस तरह की चीज़ों में कोई खास दिलचस्पी नहीं थी। फिर भी, अपने बचपन में ही उन्हें कुछ ऐसे अनुभव हुए थे जिन्हें अब ईएसपी (एक्सपर्ट सेंसेशन पर्सनैलिटी डिसएबिलिटी) कहा जाता है। जब वह किसी व्यक्ति से बात करतीं, तो अक्सर उन्हें पता चल जाता था कि सामने वाला व्यक्ति क्या जवाब देगा, इससे पहले कि वह शब्द बोले। इससे उन्हें डर लगता था, लेकिन वह इसके बारे में सोचना नहीं चाहती थीं। उनके माता-पिता का घर कंसास सिटी के एक अच्छे इलाके में बारह साल पुराना था। यह एक सुखद घर था, जिसमें हिंसा या दुख का कोई इतिहास नहीं था। फिर भी, अक्सर उन्हें रात में अजीब सी खटखटाहट सुनाई देती थी, ऐसी खटखटाहट जो पाइप या अन्य प्राकृतिक स्रोतों से नहीं आती थी। जब भी वह ऐसी आवाज़ें सुनतीं, तो वह दीवार की तरफ मुँह करके ऐसे दिखावा करतीं जैसे उन्होंने उन्हें सुना ही नहीं, लेकिन मन ही मन वह जानती थीं कि वे आवाज़ें मौजूद हैं।

फिर एक रात, कमरे में किसी की मौजूदगी का एहसास होने पर वह गहरी नींद से जाग उठी। वह बिस्तर पर बैठ गई और बाहर देखा। उसके बिस्तर के ठीक सामने, एक पीले चेहरे पर बेहद काली आँखों वाला एक आदमी घुटनों के बल बैठा था। उसके सिर पर काले और सफेद रंग की पट्टी बंधी थी, और उसने कमरबंद वाला एक चोगा जैसा वस्त्र पहना हुआ था, उसे लगा जैसे वह किसी दूसरे युग और स्थान से आया हो। उसने अपनी आँखें मलकर दोबारा देखा, लेकिन वह आकृति गायब हो चुकी थी।

कुछ ही समय में उसने इस घटना को महज एक सपना मान लिया, लेकिन वह जानती थी कि ऐसा नहीं था और वह बस अपनी तर्कसंगत सोच को ही मान रही थी। लेकिन वह अजनबी कौन था? यकीनन, घर में भूत-प्रेत तो नहीं थे। वैसे भी, वह भूतों पर विश्वास नहीं करती थी।

एक बार जब वह युवती थी, तो उसने रियल एस्टेट में काम करने वाली अपनी एक दोस्त को अपने घर के पास ही एक भूतिया घर बेचने के बारे में बात करते सुना। उसे यह बात बेहद हास्यास्पद लगी और वह अक्सर अपनी दोस्त से इस बारे में मजाक करती रहती थी। उस समय उसे जरा भी अंदाजा नहीं था कि आने वाले वर्षों में यह विषय उसके लिए कितना वास्तविक साबित होने वाला है!

संयोगवश, सड़क के उस पार स्थित भूतिया घर बिक गया, लेकिन उसके बारे में आगे कुछ भी पता नहीं चला, इसलिए श्रीमती जी ने मान लिया कि नए मालिकों को परवाह नहीं थी या शायद उन्हें इस बात की जानकारी नहीं थी कि उस जगह पर कौन सी रहस्यमयी शक्ति मौजूद थी।

उसके अपने जीवन में ऐसे मामलों के लिए कोई जगह नहीं थी, और जब उसकी सहेली ने सुझाव दिया कि वे स्पिरिचुअलिस्ट चर्च की बैठक में शामिल हों, तो उसने इसे परलोक के बारे में कुछ भी जानने के गंभीर प्रयास के बजाय एक मजाक के रूप में अधिक लिया।

वे अगली रात वहाँ गए और उन्हें वह सभा बेहद दिलचस्प लगी, हालाँकि बहुत चौंकाने वाली नहीं। शायद उन्होंने आध्यात्मिक सभा को किसी प्रेतात्मा से संपर्क करने की रस्म की तरह समझा था, जिसमें अंधेरी खिड़कियाँ, मंद रोशनी और हाथ पकड़े हुए भक्तों का एक घेरा होता है, लेकिन उन्हें संदेशों की गुणवत्ता से निराशा नहीं हुई। स्पष्ट रूप से, उपस्थित लोगों में से कुछ को अपने प्रियजनों के जीवित होने का प्रमाण मिला, हालाँकि उन दोनों महिलाओं को ऐसा कोई प्रमाण नहीं मिला। कम से कम उनकी संतुष्टि के अनुसार तो नहीं। लेकिन वहाँ का गंभीर वातावरण उन्हें अच्छा लगा और उन्होंने किसी और अवसर पर फिर से आने का फैसला किया।

बैठक के दौरान वे दो सदस्यों के बीच हो रही बातचीत को सुनने में कामयाब रहे।

"उसने मुझे ओइजा बोर्ड के जरिए संदेश भेजा," एक महिला ने कहा, और दूसरी ने सहमति में सिर हिलाया।

एक ओइजा बोर्ड? ज़ाहिर है, वह तो एक खिलौना था। कोई भी गंभीर व्यक्ति ऐसी चीज़ को गंभीरता से नहीं लेता। श्रीमती जी के पास पहले से कहीं ज़्यादा खाली समय था और ओइजा बोर्ड से "मस्ती करने" का विचार उन्हें अच्छा लगा। इसलिए उन्होंने अगले ही हफ्ते एक बोर्ड खरीद लिया और तय किया कि जब भी उन्हें थोड़ा समय मिलेगा, वे इसे आज़माएंगी।

वह क्षण कुछ दिनों बाद आया, जब वह घर में बिल्कुल अकेली थी। उसने अपनी उंगलियाँ हल्के से इंडिकेटर पर रखीं। श्रीमती जी को पूरा यकीन था कि केवल उनकी अपनी शारीरिक शक्ति ही इंडिकेटर को हिला सकती है, लेकिन उस दोपहर वह मनोरंजन के लिए तैयार थीं और, एक तरह से कहें तो, जो भी परिणाम आए, उसके लिए तैयार थीं।

ज़रा सोचिए, जब उसने बोर्ड पर हाथ रखा तो वह अचानक धड़कने लगा, यह देखकर उसे कितना आश्चर्य हुआ होगा। यह एक तेज़ और स्पष्ट कंपन था, जैसे किसी बंद मोटर की धड़कन होती है। जैसे ही उसने बोर्ड से हाथ हटाए, कंपन बंद हो गया। जब उसने हाथ वापस रखे, तो लगभग एक-दो मिनट बाद यह फिर से शुरू हो गया, मानो वह फिर से ऊर्जा इकट्ठा कर रहा हो। उसने सोचा कि इसमें कुछ भी चिंताजनक नहीं है और शायद यह किसी प्राकृतिक कारण से हो रहा है, संभवतः उसके शरीर से ऊर्जा खींची जा रही है।

कुछ क्षण बाद, उसका हाथ बोर्ड पर चलने लगा। उसने खुद को आश्वस्त किया कि वह जानबूझकर इंडिकेटर नहीं दबा रही थी, लेकिन इसमें कोई संदेह नहीं था कि कोई बाहरी शक्ति उसे इंडिकेटर चलाने के लिए विवश कर रही थी!

अब उसकी जिज्ञासा ने "प्रयोग" की शुरुआत में उसके मन में मौजूद किसी भी संदेह पर विजय प्राप्त कर ली, और उसने संकेतक को बोर्ड पर लगातार बढ़ती गति से आगे बढ़ने दिया।

जैसे-जैसे अक्षर शब्द बनाते गए, उसने उन्हें याद रखने की कोशिश की, और समय-समय पर रुककर बोर्ड पर लिखे गए शब्दों को लिखती रही।

“हैलो,” उसने कहा, “मैं जॉन डब्ल्यू बोल रहा हूँ।”

वह हांफ उठी और पेंसिल नीचे गिरा दी। जॉन डब्ल्यू. एक ऐसा व्यक्ति था जिसे वह अच्छी तरह जानती थी। उसने कई वर्षों से उसके बारे में नहीं सोचा था और यदि उसका नाम अभी

भी उसके अवचेतन मन में बसा हुआ था, तो वह इतने लंबे समय से और इतनी गहराई से सुप्त था कि वह शायद ही अपने अवचेतन मन पर अब उसे याद करने का आरोप लगा सकती थी।

शादी से पहले जॉन डब्ल्यू उसे बहुत प्यार करता था। दुर्भाग्य से, वह उसके प्रति उतनी ही शिद्दत से प्यार नहीं कर पाई। आखिरकार, दोनों का संपर्क टूट गया और तीस साल तक वे फिर कभी नहीं मिले। हालांकि, उसे कुछ जान-पहचान वालों से पता चला कि जॉन डब्ल्यू ने भी शादी कर ली है और वह मिस्टर जी के घर से कुछ ही दूरी पर एक अच्छे घर में बस गया है। लेकिन इतनी नज़दीकी के बावजूद, वह उससे कभी नहीं मिली और न ही उसे मिलने का कोई कारण महसूस हुआ।

जॉन डब्ल्यू भी पेट्रोल के कारोबार में थे, इसलिए उनमें यह समानता तो थी, लेकिन उनके बीच कुछ मतभेद थे जिनकी वजह से उनकी शादी उनकी नज़र में ठीक नहीं थी। वो एक अच्छे इंसान थे, लेकिन किसी तरह उनके "पसंद" के नहीं थे, और उन्हें कभी भी उन्हें ठुकराने का पछतावा नहीं हुआ, हालाँकि उन्हें लगता था कि उस समय जॉन ने इसे हल्के में नहीं लिया होगा। लेकिन इतने साल बीत चुके थे कि समय ने उस समय के सारे घाव भर दिए थे।

जब 1964 में दिल का दौरा पड़ने से जॉन डब्ल्यू की मृत्यु हुई, तब उनकी उम्र पचास के दशक के उत्तरार्ध में थी। वर्षों से उनका व्यक्तित्व निराशावादी हो गया था और इसने उनके पूर्व समलैंगिक व्यक्तित्व को ढक लिया था।

"हैलो," ओइजा बोर्ड के संचारक ने कहा था, "मैं जॉन डब्ल्यू हूं।"

क्या ऐसा हो सकता है? उसने सोचा। उसने जल्दी से बोर्ड को एक तरफ रख दिया। अभी के लिए इतना ही काफी है, उसने मन ही मन सोचा।

लेकिन फिर उसकी जिज्ञासा ने उसे दोबारा कोशिश करने के लिए प्रेरित किया। मानो जादू से, संकेतक बोर्ड के ऊपर से उड़ गया।

"मैं हमेशा तुम्हारे साथ रहना चाहता हूँ," बोर्ड पर अब ये शब्द लिखे थे। और फिर शब्दों की झड़ी लग गई, सारे शब्द उसी के लिए थे और उसे बता रहे थे कि वह हमेशा से उससे कितना प्यार करता था और उसे कितना चाहता था।

क्या यह उसके अवचेतन मन की कोई मनगढ़ंत कहानी हो सकती है? वह खुद को इस तरह के दखल के लिए क्यों तैयार कर रही थी? जल्द ही यह एक दखल साबित हुआ। लगभग हर

दिन, वह खुद को ओइजा बोर्ड की ओर खिंचा हुआ पाती थी। घंटों तक, वह कथित जॉन डब्ल्यू की बातें सुनती रहती थी, जो उसे बताता था कि अब जब उसने उसे दोबारा पा लिया है, तो वह उसके साथ रहना कितना चाहता है।

इसके साथ ही वह इस बात की कड़वी शिकायतें भी करती रही कि उसने उसे दुख पहुंचाया है, कि वह उसके प्रति उसकी गहरी भक्ति को नहीं समझ पाई है।

जैसे-जैसे सप्ताह बीतते गए, उसका व्यक्तित्व बदलने लगा और वह धीरे-धीरे उसके स्वभाव को अपनाने लगी। जहाँ वह पहले हंसमुख और हंसमुख स्वभाव की थी, वहीं वह उदास और निराशावादी हो गई और उसके पति ने अपनी पत्नी में आए इस बदलाव को स्पष्ट रूप से देख लिया।

लेकिन उसे लगा कि वह उसे सब कुछ नहीं बता सकती, आंशिक रूप से इसलिए कि उसे खुद भी इस बात पर यकीन नहीं था, और आंशिक रूप से इसलिए कि उसे लगा कि इससे उनके वैवाहिक जीवन को नुकसान पहुँच सकता है। इसलिए उसने उदास होने का नाटक किया और उसके पति ने उसकी बात समझ ली और इसके लिए उसकी बढ़ती उम्र को जिम्मेदार ठहराया।

1964 की सर्दियों तक, उसका जीवन अब उसके अपने नियंत्रण में नहीं रहा था। बार-बार ओइजा बोर्ड के अभ्यास सत्रों के अलावा, अब उसे उस आदमी की आवाज़ सीधे सुनाई देने लगी थी।

“मैं तुम्हारे साथ हूँ,” उसने जोश से कहा, और सचमुच वह उसके साथ था। एक पल भी ऐसा नहीं था जब वह यह सुनिश्चित कर सके कि वह उसके आस-पास नहीं है। उसकी निजता छिन गई थी। उसे लगातार उसकी आवाज़ सुनाई दे रही थी, उदास, लेकिन फिर भी वही आवाज़ जो जीवन में थी, मानो कहीं बाहर से उससे बात कर रही हो, और साथ ही मानो उसके दिमाग के अंदर ही। वह इनमें से कुछ भी समझ नहीं पा रही थी और शुरुआत में उसे यह भी नहीं पता था कि इससे कैसे निपटना है।

उसने उस शापित ओइजा बोर्ड को फेंक दिया, जिसने परलोक से आने वाले आक्रमण का द्वार खोल दिया था। लेकिन इससे कोई खास मदद नहीं मिली। वह वहीं था, हमेशा मौजूद था, और वह उसकी अपनी मानसिक शक्ति के माध्यम से उससे संवाद कर सकता था। उसे नींद

नहीं आ रही थी। उसी समय उसने महसूस किया कि वह अब बिस्तर पर अकेली नहीं है। पहले तो उसने सोचा कि यह उसकी कल्पना है, डर के कारण, जिसने उसे यह सोचने पर मजबूर किया कि वह अवांछित व्यक्ति उसके साथ है। लेकिन जल्द ही उसने अपने शरीर के पास उसकी शारीरिक उपस्थिति महसूस की।

एक रात उसने अपना हाथ बढ़ाया और अपने शरीर के ऊपर हवा के अलावा कुछ और महसूस किया! वह चीख पड़ी और बत्ती जला दी। लेकिन इससे उसके पति की नींद खुल गई और उसे यह बताना पड़ा कि यह एक बुरा सपना था, ताकि वह घबरा न जाए।

रात दर रात, उसे जॉन डब्ल्यू का अलौकिक शरीर अपने शरीर के पास या ऊपर महसूस होता था। इसमें कोई संदेह नहीं था। वह जिस अंधकारमय संसार में था, वहीं से उससे प्रेम करने की कोशिश कर रहा था, वह प्रेम जो उसे शारीरिक रूप से रहते हुए नहीं मिल पाया था। उसने यथासंभव उसके प्रयासों का विरोध किया, लेकिन इससे वह जरा भी विचलित नहीं हुआ।

बोर्ड की मदद से शुरू हुई उनकी बातचीत में, उनके मन में उस बेचारे के लिए थोड़ी दया थी जिसकी इतनी दुखद और कम उम्र में ही मृत्यु हो गई थी। लेकिन उसके मन में उसके लिए जो भी सकारात्मक भावनाएँ बची थीं, वे जल्द ही खत्म हो गईं और उनका रवैया घृणा में बदल गया।

उसके जीवन में इस बुरे सपने से छुटकारा पाने और ओइजा बोर्ड वाली घटना से पहले वह जिस शांत जीवन को जी रही थी, उसमें वापस लौटने के अलावा और कुछ भी मायने नहीं रखता था।

अब जॉन डब्ल्यू ने अपनी दुष्टता के हथियारों में धमकियों और डराने-धमकाने का भी हाथ जोड़ दिया। उसने धमकी दी कि अगर वह स्वेच्छा से उसे स्वीकार नहीं करती है तो वह उसके और उसके पति के साथ क्या करेगा। अंततः, वह इसे और सहन नहीं कर सकी और उसने अपने पति को अपनी पीड़ा के बारे में बताने का फैसला किया।

पहले तो उसे डर था कि वह क्या कहेगा। शायद वह उसे किसी संस्था में भर्ती करा देगा, या ज़्यादा से ज़्यादा, उसे किसी निजी मनोचिकित्सक के अपमानजनक उपचारों के अधीन कर देगा।

लेकिन उनके पति चुपचाप और सहानुभूति से सुनते रहे।

अंत में उन्होंने कहा, "भयानक स्थिति है, हमें किसी भी तरह आपको इससे बाहर निकालना होगा।"

उसने राहत की सांस ली। जाहिर है, उसने उसकी बात पर विश्वास कर लिया था। अब उसे खुद भी कभी-कभी अपनी मानसिक स्थिति पर संदेह होने लगता था। क्या किसी मृत पुरुष द्वारा किसी स्त्री का यौन उत्पीड़न ऐसा हो सकता है? क्या वह शायद अधेड़ उम्र में आए बदलावों के कारण अपनी दबी हुई इच्छाओं को ही व्यक्त कर रही थी?

वह एक चिकित्सक से सलाह लेने गई।

गहन जांच के बाद, उन्होंने उसे शारीरिक रूप से स्वस्थ पाया, लेकिन मस्तिष्क परीक्षण और संभवतः ईईजी (इलेक्ट्रोएन्सेफेलोग्राम) कराने का सुझाव दिया ताकि मस्तिष्क में किसी प्रकार की क्षति का पता लगाया जा सके। इनमें से किसी भी परीक्षण में कोई असामान्यता नहीं पाई गई। कुछ समय बाद, उसने यह निष्कर्ष निकाला कि चिकित्सक उसकी मदद नहीं कर सकते, भले ही वे उसकी कहानी पर विश्वास कर लें।

इसी बीच हमले और भी बदतर हो गए।

“तुम्हें मेरी आवाज हमेशा सुनाई देगी,” उसने दिन-रात उससे वादा किया, “अब तुम मुझसे छुटकारा नहीं पा सकोगी।”

उसने हर तरह की कोशिश की। भूत-प्रेत के विषय पर जितनी भी किताबें उसे मिलीं, उन्हें लेकर उसने यह जानने की कोशिश की कि क्या दूसरों को भी इसी तरह के हमलों का सामना करना पड़ा है। उसने स्वचालित लेखन में अपनी कुशलता का इस्तेमाल किया, इस उम्मीद में कि शायद इससे शापित भूत को खुद को व्यक्त करने का मौका मिल जाए और शायद वह इस तरह उससे तर्क कर सके। लेकिन हालांकि वह एक कुशल स्वचालित लेखक बन गई, फिर भी इससे कोई लाभ नहीं हुआ।

जिस लिखावट में उसने लिखा था, वह उसकी अपनी नहीं थी। उसने जो लिखा था, उसका उसे कोई अर्थ समझ नहीं आ रहा था, लेकिन वह व्यक्ति अभी भी उसका एक और तरीके से इस्तेमाल कर रहा था, इसलिए उसने लिखना बंद कर दिया।

उस रात, उसने उसे पहले से कहीं ज़्यादा करीब महसूस किया। ऐसा लगा जैसे उसका शरीर उसके शरीर में समा रहा हो, और अचानक उसे लगा जैसे उसका दिल सिकुड़ रहा हो और वह साँस लेने के लिए तड़पने लगी। कुछ पलों के असहनीय भय में, उसे लगा जैसे उसे दिल का दौरा पड़ रहा हो और वह मर रही हो। अगले दिन वह फिर से अपने डॉक्टर के पास गई। उसका दिल बिल्कुल ठीक था। लेकिन तब उसे एहसास हुआ कि उसने अभी-अभी उसकी मृत्यु के उसी पल को दोबारा जीया है। उसकी मृत्यु भी ठीक इसी तरह के दिल के दौरे से हुई थी!

स्पष्टतः जॉन डब्ल्यू एक विक्षिप्त व्यक्तित्व थे, जो एक तरह से उस मध्यवर्ती दुनिया में जी रहे थे जिसमें वे मौजूद थे। वे सही और गलत में अंतर नहीं कर पाते थे, और वास्तव में अपनी वास्तविक स्थिति को भी नहीं पहचान पाते थे।

उसकी घृणा और प्रेम ने उसे एक साथ उसके शरीर और उसके परिवेश से बांधे रखा, और ऐसा प्रतीत होता है कि वह मृत्यु के समय अपनी सबसे प्रबल इच्छा को तोड़ने के लिए अनिच्छुक और असमर्थ था।

प्रेम प्रसंग के दौरान, वह एक अच्छे, निस्वार्थ और दयालु व्यक्ति के रूप में दिखाई दिया था। अब वह कड़वा और स्वार्थी प्रतीत होता था, उसे अपना बनाने की लालसा से भरा हुआ, उसे जाने देने या उसके द्वारा कही गई कोई भी बात मानने को तैयार नहीं था।

उसने एक स्थानीय शौकिया सम्मोहनकर्ता की मदद ली, लेकिन वह उसे सम्मोहित करने में असफल रहा। हताश होकर, उसने जीने की सारी इच्छा खो दी, क्योंकि उसे अपने अंदर मौजूद इस भयानक व्यक्ति के साथ जीना ही था।

एक दिन उसने टेलीविजन पर एक कार्यक्रम देखा जिसमें परामानसिक विकारों के इलाज के लिए सम्मोहन चिकित्सा पर चर्चा हो रही थी। इससे प्रेरित होकर उसने मदद मांगी और अपने शरीर और आत्मा से उस अवांछित शक्ति को निकालने के प्रयास में न्यूयॉर्क चली गई।

इस बार वह सम्मोहन में तो आ गई, हालांकि बहुत गहरे तक नहीं। लेकिन इतना काफी था कि जॉन डब्ल्यू का व्यक्तित्व उभर कर सामने आ गया और उसने सम्मोहनकर्ता से एक तरह की बातचीत शुरू कर दी।

"मैं चाहता हूं कि वह मेरे साथ चले, अब वही मेरी सब कुछ है," उसने श्रीमती जी के मुंह से सम्मोहन की अवस्था में बोलते हुए कहा।

बाद में उसने पुष्टि की कि हाल ही में वह आत्महत्या करने के कगार पर थी, और यह घबराहट का क्षण नहीं था, बल्कि ऐसा लग रहा था जैसे किसी ने उसे सचमुच आत्महत्या करने के लिए मजबूर किया हो। सौभाग्य से, वह समय रहते खुद को बचा पाई।

“क्या आप ईश्वर में विश्वास करते हैं?” सम्मोहनकर्ता ने पूछा।

“नहीं,” उस सत्ता ने जवाब दिया और सवाल को टाल दिया। “मैंने उससे कहा था कि उसने मेरी जिंदगी नरक बना दी, अब मैं उसकी जिंदगी नरक बना दूंगा।”

"लेकिन ऐसा क्यों करें?"

“मुझे कोई नहीं चाहता—मैं रोना चाहती हूँ—तुम्हें नहीं पता यह कैसा लगता है—यहाँ—सिर्फ अंधेरा ही अंधेरा है—”

अब श्रीमती जी की आंखों से आंसू बहने लगे।

“ये मैं रो रहा हूँ, वो नहीं,” जॉन डब्ल्यू की आवाज़ आई, और फिर थोड़ी धीमी आवाज़ में बोला, “बचपन में मुझे कोई नहीं चाहता था... मैं अनाथालय से आया था... मेरे दादा-दादी ने मुझे कभी नहीं चाहा... वो मुझे खुश कर सकती थी, लेकिन वो नहीं चाहती थी। वही अकेली औरत थी जो मुझे खुश कर सकती थी, सिर्फ़ वही, लेकिन वो मुझे नहीं चाहती।”

“तो फिर उस पर खुद को थोपने की क्या जरूरत है? इसका क्या मतलब है?”

मैं उस पर अपना शारीरिक दबाव डालता हूँ क्योंकि मैं उसे दुखी कर सकता हूँ।

आप प्यार को जबरदस्ती नहीं थोप सकते।

मुझे कोई गर्व नहीं है।

उसे त्याग दो।

“मैं तुम्हारी बात नहीं सुनना चाहता। वैसे भी अब वो मुझसे नफरत करती है। मैं उसे अपने साथ ले जाऊंगा... मैं उसे हर हाल में हासिल कर लूंगा, चाहे जैसे भी हो जाए।”

सम्मोहनकर्ता ने धैर्यपूर्वक दूसरी दुनिया की स्वतंत्रता के बारे में समझाया और बताया कि वहां कैसे पहुंचा जा सकता है, इसके लिए व्यक्ति को अपने उन प्रियजनों के साथ होने की कामना करनी चाहिए जो उससे पहले इस दुनिया से चले गए हैं।

"यह सब मेरे लिए नया है," भ्रमित प्राणी ने उत्तर दिया, लेकिन एक पल के लिए वह इस पर विचार करता हुआ प्रतीत हुआ।

लेकिन रोशनी की वह झलक बस एक पल के लिए ही थी, फिर अंधेरा एक बार फिर छा गया।

मैंने उसे रुलाया है...दुखी किया है...उसने मुझे दुखी किया है। मुझे उसका जीने का तरीका पसंद नहीं है...

अचानक, वह व्यक्तित्व अपराधबोध से व्याकुल सा प्रतीत हुआ।

क्या यह उसका अपना निजी नरक था?

“मैं असल में वैसा इंसान नहीं हूँ... मैं उससे झूठ बोलता रहा हूँ... सिर्फ इसलिए ताकि मैं उसके आसपास रह सकूँ, मैं उसे एक बात बताता हूँ और फिर दूसरी...”

तो फिर उसे छोड़कर दूसरी तरफ क्यों न चले जाएं?

मैं जाना तो चाहता हूँ, लेकिन मुझे पता नहीं कैसे—मैं उसके बिना नहीं जा सकता।

सम्मोहनकर्ता ने फिर से कोशिश की और समझाया कि अन्य आत्माएं भी इसी तरह भ्रमित थीं और उन्हें उस महान विभाजन को "पार करने" में मदद की गई थी।

उस आत्मा की आवाज़ में झिझक थी। वह जाने को तैयार था, लेकिन क्या वह श्रीमती जी से कभी-कभार मिल पाएगा? सम्मोहनकर्ता ने कड़वे व्यंग्य के साथ सोचा, "मिलने-जुलने का अधिकार तो होना ही चाहिए।"

“क्या मैं वापस आकर उससे मिल पाऊंगा?” आवाज ने फिर पूछा।

लेकिन फिर वह विक्षिप्त दिमाग विजयी होकर उभरा।

“मैंने उसके साथ जो किया है, उसके लिए वह मुझसे नफरत करती है। मैं उसे छोड़कर नहीं जाऊंगा। मैं उसके साथ कुछ भी कर सकता हूं। जीते जी मैं ऐसा कभी नहीं कर पाया।”

अब सम्मोहनकर्ता ने विनम्रता का रवैया छोड़ दिया।

“तुम्हें इस स्त्री को छोड़ना होगा,” उसने स्वर में कहा, “वरना तुम्हें शाश्वत नरक की सजा मिलेगी।”

मैं नहीं जाऊंगा।

तुम नरक में जाओगे।

"तब वह मेरे साथ होगी।"

मैं तुम्हें विदा करता हूँ, मानसिक द्वार बंद हो चुका है। तुम वापस नहीं लौट सकते।

"मैं करूँगा।"

कुछ देर बाद, श्रीमती जी जाग उठीं, थोड़ी अचंभित और थकी हुई थीं, लेकिन अन्यथा उनकी हालत उस समय से खराब नहीं थी जब सम्मोहनकर्ता ने उन्हें सम्मोहित किया था।

जब वह कंसास सिटी लौटी, तो उसे कुछ उम्मीद जगी कि जॉन डब्ल्यू का प्रभाव खत्म हो गया है। लेकिन उत्पीड़न का सिलसिला बेरोकटोक जारी रहा। यह सच है कि बातचीत हुई थी और वह व्यक्ति अब कम से कम यह तो जान गया था कि वह नैतिक अपराध कर रहा है। लेकिन जाहिर तौर पर उसे इससे कोई फर्क नहीं पड़ा, क्योंकि हमले जारी रहे।

कुछ समय बाद, श्रीमती जी को एहसास हुआ कि उनकी चिंता और घोर भय जॉन डब्ल्यू की अपवित्र शक्तियों के लिए जिम्मेदार कारक थे। उन्हें पता चला कि नकारात्मक भावनाएँ ऐसी ऊर्जाएँ उत्पन्न कर सकती हैं जिनका उपयोग जॉन डब्ल्यू जैसी सत्ताएँ कर सकती हैं, और जब उन्हें यह तथ्य समझ में आया, तो उनके दृष्टिकोण में बदलाव आने लगा।

जहां वह उसके हमलों का इंतजार करती थी और उन पलों को गिनती थी जब वह पूरी तरह से उसके चंगुल से मुक्त हो जाएगी, वहीं अब वह जानबूझकर उसके हर काम को नजरअंदाज करती थी और उसकी मौजूदगी को पूरी तरह से अनदेखा करती थी। जब वह उसे अपने वश में करना चाहता था, तब भी वह उसके भीतर के क्रोध को महसूस कर सकती थी, लेकिन क्रोध धीरे-धीरे शांत हो रहा था। धीरे-धीरे, उस व्यथित आत्मा के प्रति उसकी करुणा लौट आई और जैसे-जैसे ऐसा हुआ, उस पर उसकी पकड़ कमजोर होती गई। आखिरकार, उसने अपना मकसद पूरा कर लिया था, और अब उस मकसद का कोई महत्व नहीं रह गया था। आखिरी बार जब उससे संपर्क हुआ, तो श्रीमती जी कंसास सिटी में शांति से रह रही थीं।

*137

दबे हुए खनिकों का मामला

अगस्त 1963 के उत्तरार्ध में, संयुक्त राज्य अमेरिका के प्रत्येक समाचार पत्र में पेंसिल्वेनिया के हेज़लटन में हुई एक खदान की गुफा ढहने की घटना का दिन-प्रतिदिन का विवरण प्रकाशित हो रहा था। डेविड फेलिन और हेनरी थ्रोन नामक दो व्यक्ति ढही हुई खदान की शाफ्ट के तल में चौदह दिनों तक जीवित रहे और अंततः एक विशेष रूप से खोदी गई सुरंग के माध्यम से उन्हें बचाया गया।

28 अगस्त को फेलिन ने एसोसिएटेड प्रेस को एक साक्षात्कार दिया, जिसमें उन्होंने कहा:

अब वे मुझे यह बताने की कोशिश कर रहे हैं कि वे सब चीजें मतिभ्रम थीं, कि हमने यह सब कल्पना की थी।

हमने ऐसा नहीं किया। हमारा दिमाग हमें धोखा नहीं दे रहा था। मैं जीवन भर एक व्यावहारिक और दृढ़ निश्चयी कोयला खनिक रहा हूँ। खदान में मेरा दिमाग बिल्कुल साफ था। और आज भी साफ है।

हमने वही देखा जो हम कह रहे हैं। ये सब बातें घटीं। मैं इन्हें समझा नहीं सकता। मुझे तो यह सोचने से भी डर लगता है कि इसका क्या कारण हो सकता है।

उदाहरण के लिए, चौथे या पाँचवें दिन, हमने यह दरवाज़ा देखा, हालाँकि ऊपर से या हमारे हेलमेट से कोई रोशनी नहीं आ रही थी। दरवाज़ा तेज़ नीली रोशनी से ढका हुआ था। यह बहुत स्पष्ट था, सूर्य की रोशनी से भी बेहतर।

दो साधारण से दिखने वाले आदमियों ने, जो खनिक नहीं थे, दरवाजा खोला। दूसरी तरफ हमें संगमरमर की खूबसूरत सीढ़ियाँ दिखाई दीं। कुछ देर तक ये सीढ़ियाँ दिखती रहीं और फिर दिखना बंद हो गईं। हमने कुछ और चीजें देखीं जिन्हें मैं बयान नहीं कर सकता।

एक बात तो मुझे हमेशा से पक्की पता थी। मुझे पूरा यकीन था कि हम बाहर निकल जाएंगे, चाहे मुझे खुद ही हमें बाहर निकालना पड़े।

पहले ही दिन एक अजीब घटना घटी। हम [हेनरी थ्रोन और लुई बोवा] उस सुबह खदान में उतरे हुए अभी पांच मिनट भी नहीं हुए थे कि मेरे पेट में थोड़ी गड़बड़ महसूस होने लगी।

मैंने कहा, "चलो एक घंटे के लिए बाहर चलते हैं।"

लेकिन लड़कों ने मुझे रुकने और पहले कुछ काम निपटाने के लिए मना लिया।

तो हम सुरंग के तल पर, 300 फीट से भी अधिक नीचे, वहीं रुके रहे। लुई एक तरफ था और मैं और हैंक दूसरी तरफ।

लुई ने बग्गी (एक छोटी गाड़ी जो पटरियों पर कोयला ऊपर तक ले जाती है) के लिए बजर दबाने के लिए हाथ बढ़ाया। उसने बजर दबाया और पीछे हट गया। फिर यह घटना घटी।

अचानक सब कुछ नीचे गिरने लगा—लकड़ी, कोयला, पत्थर। सारा सामान हमारे और लुई के बीच से तेज़ी से नीचे आ रहा था। फिर लगभग आधे मिनट के लिए शांति छा गई। फिर से वही सब कुछ शुरू हो गया। यह सिलसिला कुछ देर तक रुक-रुक कर चलता रहा।

हम वहां बैठे रहे, अंधेरे में और भी सरसराहट सुनने के लिए अपनी पूरी कोशिश करते रहे। हम लगभग 6 फीट लंबे, 5 फीट चौड़े और लगभग 3 फीट ऊंचे उस स्थान पर दीवार के सहारे 14 से 16 घंटे तक बैठे रहे।

आपने मुझसे उन अजीब चीजों के बारे में पूछा जो हैंक ने देखी थीं। सच कहूँ तो मैंने उससे कहीं ज़्यादा अजीब चीजें देखी थीं। लेकिन मुझे उस बारे में बात करना मुश्किल लगता है।

मुझे पूरा यकीन है कि हमने जो देखा, वो सच था। हम उन्हें कल्पना नहीं कर रहे थे। ऊपर मौजूद लोगों से संपर्क होने से पहले भी, हमें बीच-बीच में रोशनी दिख रही थी। वरना नीचे हमने जो काम किया, उसे कैसे समझा जा सकता है? हम सारा काम अंधेरे में तो नहीं कर सकते थे।

मुझे सचमुच डर तब लगा जब हमने बिजली के खंभों जैसे कपड़े पहने दो आदमियों को देखा। मुझसे यह मत पूछो कि ऐसे आदमी नीचे क्या कर रहे थे। लेकिन मैंने उन्हें देखा था।

हैंक ने मुझसे दो-तीन बार कहा कि मैं उन आदमियों से थोड़ी रोशनी मांग लूँ। यह सोचकर मैं बुरी तरह डर गई। मुझे लगा कि यह हमारे बस की बात नहीं है, हमें इस बारे में बात भी नहीं करनी चाहिए और न ही कुछ करना चाहिए।

लेकिन हैंक ने ऐसा नहीं किया। हैंक ने उन आदमियों से कहा, "अरे यार, क्या तुम हमें कुछ रोशनी दिखा सकते हो?"

उन्होंने कोई जवाब नहीं दिया, और कुछ देर बाद वे हमें फिर कभी नहीं दिखे।

खैर, मृत्यु के करीब पहुंचे लोगों द्वारा समय-समय पर इसी तरह के विवरण दिए गए हैं; आर्थर फोर्ड एक बार अस्पताल में इसी स्थिति में थे, और उन्होंने दरवाजे और उसे संचालित करने वाले लोगों का सजीव वर्णन किया, इससे पहले कि वे एक बार फिर इस दुनिया में लौट सकें।

क्या डेविड फेलिन को जीवन के दूसरे पहलू, अदृश्य दुनिया, मानसिक शक्तियों की दुनिया की झलक मिली थी? शायद मिली हो। शायद ये शक्तियां उन्हें सतह पर लौटने में मदद कर रही थीं। एक टेलीविजन साक्षात्कार में फेलिन ने यह भी दावा किया कि उन लोगों ने उन्हें एक संदेश दिया था, लेकिन वे उस पर चर्चा नहीं कर सकते थे।

लगभग इसी समय, गाय डे मैगियो नाम के एक मिल मजदूर को फेलिन और उनके साथ आए अन्य लोगों का दर्शन हुआ और उसने फेलिन के बोले हुए शब्द भी सुने। यह अनुभव इतना सजीव था कि उसने लोगों को इसके बारे में बताने का भरसक प्रयास किया। यह घटना स्थल से कई मील दूर थी और फेलिन के बचाए जाने के बाद ही इसकी पुष्टि हो सकी। क्या दोनों व्यक्ति एक ही अलौकिक तरंगदैर्ध्य पर थे?

स्थानीय मनोचिकित्सकों ने फेलिन को यह समझाने की पूरी कोशिश की है कि उसे मतिभ्रम हुआ था। लेकिन फेलिन अपने अनुभव को लेकर आश्वस्त है। और मैं भी।

मैंने दोनों खनिकों को पिट्सबर्ग टेलीविजन पर मेरे साथ आने के लिए मनाने की कोशिश की। उन्होंने मना कर दिया। उन्हें हंसी का पात्र बनने का डर था। फिर घटना की बरसी पर फिलाडेल्फिया संडे बुलेटिन के एक रिपोर्टर ने उनका साक्षात्कार लिया।

हाँ, यह सच था कि डेविड फेलिन ने संगमरमर की सुंदर सीढ़ियों वाला एक दरवाज़ा देखा था, लेकिन वहाँ कुछ लोग भी थे, जो देखने में इंसान लग रहे थे, और सीढ़ियों से ऊपर-नीचे आ-जा रहे थे। फिर भी, किसी तरह वह और हैंक थ्रोन उस दरवाज़े से अंदर जाने से डर रहे थे।

“क्या आपने देखा कि दरवाजे के दूसरी तरफ क्या था?” रिपोर्टर ने पूछा।

“दूर-दूर तक फैला एक खूबसूरत बगीचा। फूल यहाँ धरती से कहीं अधिक सुंदर थे, घास कहीं अधिक हरी थी। मुझे पता था कि यह कोई खास जगह है।”

क्या उस आदमी ने दरवाजा खुला रखा था?

"नहीं," हैंक ने उसे रोकने के लिए चिल्लाया, लेकिन दरवाजा जोर से बंद हो गया।

"फिर क्या हुआ?"

“हैंक को गुस्सा आ गया। उसने कहा: ‘मुझे वो हथौड़ा दो। मैं वो दरवाजा खोल दूंगा।’ हथौड़ा मेरे पास ही पड़ा था, और मैंने उसे बस उसे दे दिया। उसने उसे लिया और दरवाजे की ओर दौड़ा, फिर उस पर हथौड़ा चला दिया। तभी उसके हाथ की एक हड्डी टूट गई। और उसके दाहिने गाल पर खरोंच आ गई।”

दरवाजे को क्या हुआ?

"वह गायब हो गया, और रोशनी चली गई।"

“कौन सी रोशनी? वह कैसी दिखती थी?”

"यह नीली रोशनी थी, दिन के उजाले जैसी नहीं।"

"क्या आप और हैंक दोनों ने यह दरवाजा और रोशनी देखी थी?"

“हाँ। पोप जॉन भी। लेकिन हैंक को नहीं पता था कि वो पोप जॉन हैं, जब तक हम अस्पताल नहीं पहुँचे और पादरी ने मुझे पोप जॉन की तस्वीर वाली एक किताब नहीं दी।” (पोप जॉन XXIII का निधन 3 जून, 1963 को हुआ था।)

चलिए शुरुआत से शुरू करते हैं।

“मैं यहाँ बैठा था, और हैंक ठीक वैसे ही बैठा था जैसे तुम बैठे हो [उसकी ओर मुँह करके]। वह बार-बार मेरे कंधे के ऊपर से देख रहा था। एक बार मैंने ऊपर देखा तो वहाँ पोप जॉन थे। उन्होंने अपनी बाहें बाँध रखी थीं और बस हमारी ओर देख रहे थे। उन्होंने कुछ नहीं कहा।”

"क्या आपने और हैंक ने उससे बात की?"

मैं पूछता, ‘क्या हमारा दोस्त अभी भी वहीं है?’ या ‘आज हमारा दोस्त कैसा है?’ हैंक मुस्कुराता और कहता कि वह अभी भी वहीं है।

"क्या आपने उन्हें यह नहीं बताया था कि यह पोप जॉन हैं?"

मुझे लगा कि हैंक एक प्रोटेस्टेंट है, और वैसे भी वह उसे नहीं जानता होगा।

“तो फिर उसे कैसे पता चला?”

“जब वे हमें अस्पताल ले गए, तो मेरे पादरी ने मुझे एक किताब दी जिस पर पोप की तस्वीर थी। और हैंक ने किताब की ओर इशारा करते हुए कहा, ‘अरे, यह वही आदमी है जिसे हमने देखा था, डेव।’”

"क्या आपने और हैंक ने उनसे मिलते समय इन चीजों पर चर्चा की थी?"

“नहीं, ज्यादा नहीं। जब हमने सीढ़ियों पर उन लोगों को देखा तो मैंने उससे कहा कि हम किसी चीज़ में फंस गए हैं। मैंने उस खदान को, जहाँ हम फंसे थे, 'आत्माओं का कब्रिस्तान' नाम दिया था। और मैंने उससे कहा कि हम आत्माओं के कब्रिस्तान में आ गए हैं।”

बाद में रिपोर्टर ने थ्रोन से बात की, जिन्होंने कहा कि उन्होंने दरवाजा, सीढ़ियाँ और पोप जॉन को देखा था।

जिस समय दो दबे हुए खनिकों ने पोप जॉन XXIII का दर्शन देखा, उस समय पोप जॉन XXIII आध्यात्मिक रूप से परदे के दूसरी ओर थे।

लंदन साइकिक न्यूज़ ने भी इस कहानी को उठाया और इसे प्रमुखता से प्रकाशित किया। उन्होंने इसे इस शीर्षक से छापा:

दफन खनिक को अब मरने से डर नहीं लगता।

वे यह देखने के बाद नहीं कि उन्हें कहाँ जाना होगा।

*138

भूत प्रेमी

हाल के समय का शायद सबसे सनसनीखेज मामला बेट्टी रिट्टर और जाने-माने मनोविश्लेषक डॉ. नंदोर फोडोर से जुड़ा है। डॉ. फोडोर लॉन्ग आइलैंड में एडिथ बर्गर नाम की एक महिला का इलाज कर रहे थे, जिसमें शुरू में व्यक्तित्व विभाजन के लक्षण दिखाई दे रहे थे। लेकिन डॉ. फोडोर एक प्रशिक्षित परा मनोविज्ञानी भी हैं, और उन्होंने इस मामले को तुरंत पहचान लिया कि यह वास्तव में प्रेतबाधा का मामला था!

उन्होंने सुझाव दिया कि बर्गर परिवार किसी अच्छे माध्यम की मदद ले और बेट्टी रिट्टर की सिफारिश की।

लगभग रोते हुए, एडिथ बर्गर की माँ ने फोन पर बेट्टी को बताया कि कैसे एक अधिकार जताने वाली आत्मा पिछले चार महीनों से उन्हें और उनकी बेटी को परेशान कर रही थी। ऐसा प्रतीत होता था कि एडिथ की बेटी का एक सज्जन मित्र था, जो एक डॉक्टर था, जिसकी कुछ समय पहले ही उष्णकटिबंधीय क्षेत्र में मृत्यु हो गई थी।

उसकी मृत्यु के ठीक अगले दिन, युवती ने पाया कि उसका पूर्व प्रेमी उससे जुड़ गया था और उसके साथ शारीरिक दुर्व्यवहार कर रहा था! माँ ने बताया कि हमले इतने हिंसक थे कि उसे अपनी बेटी की सुरक्षा के लिए उसके साथ एक ही बिस्तर पर सोना पड़ा, लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ। माँ ने भी अपनी बेटी द्वारा अनुभव किए गए शारीरिक स्पर्श को महसूस किया!

बेट्टी ने अपनी मानसिक शक्तियों को तुरंत एक ऐसी क्रिया पर केंद्रित किया जिसे भूत भगाने का एक रूप ही कहा जा सकता है। कुछ हद तक राहत तो मिली, लेकिन भूतिया प्रेमी अभी भी आसपास ही था।

बेट्टी के लिए यह एक भयानक अनुभव था जब उसी रात उसकी नींद खुली और उसने देखा कि वह बेचैन आत्मा उसके बिस्तर के सामने नग्न अवस्था में, भयावह मुद्रा में खड़ी है। हालांकि, "दूसरी दुनिया" में मौजूद बेट्टी के संपर्कों ने उसकी रक्षा की और उस भटकती आत्मा को वहां से दूर ले गए।

अगले दिन एडिथ बर्गर को अपने अनुभव के बारे में बताते हुए, उन्होंने आगंतुक का सटीक वर्णन किया। उनके प्रयासों से हमले कुछ हद तक कमज़ोर पड़ गए, और कई दिनों बाद उन्होंने उसे फिर से देखा, इस बार, हालांकि, वह पूरे कपड़े पहने हुए था! उसने घुड़सवारी के जूते पहने थे और उसके हाथ में एक चाबुक था। बर्गर दंपति ने पुष्टि की कि वह व्यक्ति घोड़ों का शौकीन था। 20 अप्रैल, 1961 को, बेट्टी रिट्टर ने बर्गर दंपति को फोन करके हालचाल पूछा। जैसे ही एडिथ ने फोन उठाया, भूत ने उनके बाल बेहद दर्दनाक तरीके से खींचना शुरू कर दिया, मानो यह साबित करना चाहता हो कि वह अभी भी मौजूद है!

लेकिन युवा डॉक्टर का उग्र मन अपने शरीर और उसके सुखों से अलग होने को स्वीकार नहीं कर पा रहा था। यह पीड़ा जारी रही; इसलिए बेट्टी रिट्टर ने मुझसे मामले की दोबारा जांच के लिए बर्गर के घर चलने का अनुरोध किया।

बर्जर दंपति बेहद समझदार और मध्यमवर्गीय लोग निकले, जिन्हें मानसिक शक्तियों के बारे में बिल्कुल भी जानकारी नहीं थी। एडिथ बेहद घबराई हुई, लेकिन काफी हद तक "सामान्य" इंसान लग रही थी। लगभग तुरंत ही, उस शक्ति ने माध्यम को अपने वश में कर लिया और उसके माध्यम से चिल्लाकर कहा—"मैं तुमसे दूर नहीं जाऊंगी। मैं नहीं जाऊंगी।"

मुझे पता चला कि पिता को पहले तो इन सब बातों पर बिल्कुल भी यकीन नहीं था, लेकिन उनकी बेटी का व्यवहार इतना बदल गया और वह अपने पहले के स्वभाव से इतनी अलग हो गई कि उन्हें मानना ही पड़ा कि उनके घर में कुछ अजीबोगरीब हो रहा है। एडिथ, जो गायिका बनना चाहती थी और बिल्कुल भी साफ-सुथरी नहीं रहती थी, अचानक एकदम साफ-सुथरी हो गई, चीजों को साफ करने लगी और नर्स की तरह व्यवहार करने लगी—वही पेशा जो उसके दिवंगत प्रेमी ने उसे अपनाने के लिए कहा था। कभी-कभी वह उसकी बीमारियों और "अस्थायी लक्षणों" को मान लेती थी। कभी-कभी वह सचमुच मलेरिया से पीड़ित हो जाती थी—ठीक वैसे ही जैसे वह हुआ करता था। चूंकि एडिथ में तांत्रिक शक्ति थी, इसलिए मृत डॉक्टर के लिए अपनी इच्छा बताना आसान हो गया। वह जो संदेश एडिथ से दिलवाना चाहता था, वह यह था कि वह उसकी माँ को बताए कि वह "अभी भी जीवित है"। लेकिन वह ऐसा कैसे कर सकती थी, और अपनी पीड़ा को कैसे छुपा सकती थी?

एक दोपहर, जब वह उसके लिए प्रार्थना कर रही थी, तो उसे अपनी बांह पर किसी के जकड़ने का एहसास हुआ। बाद में, बिस्तर पर, उसने उसकी आवाज़ साफ़ सुनी, जो कह रही थी—“मैं हूँ, डॉन!” उस दिन से, वह लगातार उसके साथ रहने लगा। एक बार प्रेम प्रसंग के दौरान, उसकी माँ ने खाली बिस्तर में एक आदमी की आकृति साफ़ देखी। उसने झट से मक्खी मारने वाला उठाया और उस आत्मा को अपनी बेटी के बिस्तर से भगा दिया!

एक बार जब वह बाहर जाने के लिए अपना कोट पहनने ही वाली थी, तो कोट, मानो अपनी इच्छा से, उसकी ओर आने लगा - मानो कोई उसे पकड़े हुए हो ताकि वह उसे पहन ले!

जब भी वह दूसरे पुरुषों के साथ होती, वह उसे चूमता और उसे उसकी गुस्से वाली आवाज सुनाई देती।

लेकिन इस बार आत्माओं से संपर्क करने के अनुष्ठान ने उसके स्वार्थी स्वभाव को तोड़ दिया। "मैंने जो शुरू किया था, उसे पूरा नहीं कर पाया," वह रोते हुए बोला, अपने महत्वपूर्ण

चिकित्सा प्रयोगों का जिक्र करते हुए। फिर उसने क्षमा मांगी और निवेदन किया कि उसे समय-समय पर एडिथ के साथ रहने की अनुमति दी जाए।

हमारे जाने के बाद—डॉक्टर फोडोर भी साथ आए थे—हम सभी ने आशा जताई कि बर्गर परिवार शांति से रहेगा। लेकिन कुछ हफ्तों बाद, एडिथ ने मुझे बहुत उत्साह से फोन किया। डॉक्टर एक बार फिर लौट आए थे।

तब मैंने उसे समझाया कि उसे त्याग करना होगा—इस पुरुष को अपने आसपास रखने की अपनी इच्छा को त्यागना होगा, चाहे वह अचेतन ही क्यों न हो—और अपने जीवन के इस अध्याय को समाप्त करके, सांसारिक शक्ति को उसकी मानसिक ऊर्जाओं पर नियंत्रण करने से रोकना होगा। इसके बाद मुझे उससे कोई सूचना नहीं मिली।

*139

द वाइनलैंड घोस्ट

आकर्षक गोरी महिला नैन्सी और उनके सुंदर पति टॉम 1975 की गर्मियों में न्यू जर्सी के वाइनलैंड के पास एक पुराने फार्म हाउस में रहने लगे। टॉम वायु सेना में कैप्टन थे जब उनकी और नैन्सी की मुलाकात नैन्सी के पैतृक शहर लिटिल रॉक, अर्कांसस में हुई और दोनों को प्यार हो गया। तीन साल बाद, टॉम ने पायलट के रूप में अपना करियर छोड़ने और खेती-बाड़ी में बसने का फैसला किया। वे टॉम के गृहनगर वाइनलैंड लौट आए, जहाँ टॉम को एक बड़ी खाद्य प्रसंस्करण कंपनी में सुपरवाइजर की नौकरी मिल गई।

यह घर सन् 1906 में हाउज़र नामक परिवार द्वारा बनवाया गया था, जो कई पीढ़ियों तक इसके मालिक रहे, जब तक कि टॉम के पिता ने उन्नीस साल पहले इसे अंतिम हाउज़र से नहीं खरीद लिया। सड़क से कुछ सौ गज पीछे स्थित, इस तीन मंजिला घर में बीसवीं सदी की शुरुआत का एक अनूठा आकर्षण है। सामने की ओर एक चौड़ा बरामदा है और बढ़ते परिवार के लिए पर्याप्त कमरे हैं। मूल रूप से आसपास का खेत 32 एकड़ का था, लेकिन टॉम और नैन्सी ने फैसला किया कि उन्हें अपनी सीमित खेती के लिए केवल चार एकड़ की आवश्यकता है। हालांकि घर बहुत जर्जर था और उसे काफी मरम्मत की आवश्यकता थी,

टॉम और नैन्सी को इसकी शांत एकांतता पसंद आई और उन्होंने इसे टॉम के पिता से खरीदने और इसे इसकी पुरानी शान में वापस लाने का फैसला किया।

"जब मैं पहली बार इस घर में दाखिल हुई तो मुझे लगा कि इसमें कुछ भयानक घटना घटी है," नैन्सी ने मुझे समझाया।

जब तक परिवार नए घर में रहने लगा, तब तक नैंसी घर को लेकर अपनी शुरुआती आशंकाओं को भूल चुकी थी। लेकिन लगभग चार सप्ताह बाद पहली रहस्यमय घटना घटी।

नैन्सी ने बताया, “मैं घर में बच्चों के साथ अकेली थी, जिन्हें मैंने अभी-अभी सुलाया था। अचानक मुझे बाहर बच्चों के हंसने की आवाज़ सुनाई दी। मैं देखने के लिए बाहर भागी, लेकिन कोई नहीं दिखा। मैं जल्दी से वापस ऊपर भागी, लेकिन मेरे बच्चे अपने बिस्तरों में सुरक्षित रूप से गहरी नींद में सो रहे थे, ठीक उसी जगह जहाँ मैंने उन्हें छोड़ा था।”

उस गर्मी में नैन्सी ने कई बार बच्चों के हंसने की आवाज़ सुनी, हमेशा तब जब उसके अपने बच्चे गहरी नींद में सो रहे होते थे। फिर एक दिन नैन्सी ने अपनी साढ़े तीन साल की बेटी लेस्ली एन को एक अनदेखे दोस्त से बड़ी मजे से बातें करते हुए देखा। जब उससे पूछा गया कि वह दोस्त कैसा दिखता है, तो बच्ची को आश्चर्य हुआ कि उसकी माँ खुद उसके दोस्त को क्यों नहीं देख पा रही थी।

वाइनलैंड भूत का घर

घर में भूतिया घटनाओं के होने से आश्वस्त होकर, उन्होंने एक मित्र की मदद से आत्माओं से संपर्क करने का अनुष्ठान करने का निर्णय लिया। अनुष्ठान के बाद अदृश्य बच्चों की घटनाएँ तो बंद हो गईं, लेकिन कुछ और ही घटित हुआ—कब्र के पत्थर वाली घटना।

“जमीन साफ करते समय हमें वह कब्र का पत्थर मिला,” टॉम ने कहा। “हमें उसे रास्ते से हटाने के लिए समय-समय पर इधर-उधर करना पड़ता था। आखिरकार हमने उसे घर से लगभग सौ गज दूर खेत में रख दिया। अचानक, हमारी प्रार्थना सभा के अगले दिन, वह अपने आप हमारे पिछले दरवाजे के ठीक बाहर आ गया। यह असंभव सा लग रहा था—उस पत्थर को हिलाने के लिए चार मजबूत आदमियों की जरूरत पड़ती।”

कुछ समय से नैन्सी को यह अजीबोगरीब एहसास हो रहा था कि एला हाउज़र, जिसने घर बनवाया था, नए निवासियों पर "नज़र रख रही" थी। टॉम इन रहस्यमयी घटनाओं को काफी तटस्थ और तटस्थ भाव से देख रहा था, लेकिन जब उसके औजार गायब होने लगे तो यह बात उसके लिए भी असहनीय हो गई।

घर में शांति का माहौल है, हालांकि दिवंगत एम्मा अभी भी वहीं रहती हैं।

सीढ़ियों पर प्रेतवाधित आकृतियाँ दिखाई दीं

टॉम और नैन्सी ही अकेले ऐसे नहीं थे जिन्हें इस अनजानी घटना का सामना करना पड़ा। अगस्त 1977 में, नैन्सी एफ. नाम की एक बेबीसिटर बच्चों को सुला रही थी, तभी उसने नीचे दराजों में किसी के कुछ ढूंढने की आवाज़ सुनी। नैन्सी ने बताया, "उसे लगा कि कोई घुसपैठिया कुछ ढूंढ रहा है, लेकिन जब वह आखिरकार नीचे गई तो वहाँ कुछ भी नहीं मिला था।"

एम्मा की समाधि पर लगा पत्थर—वह वहाँ नहीं है।

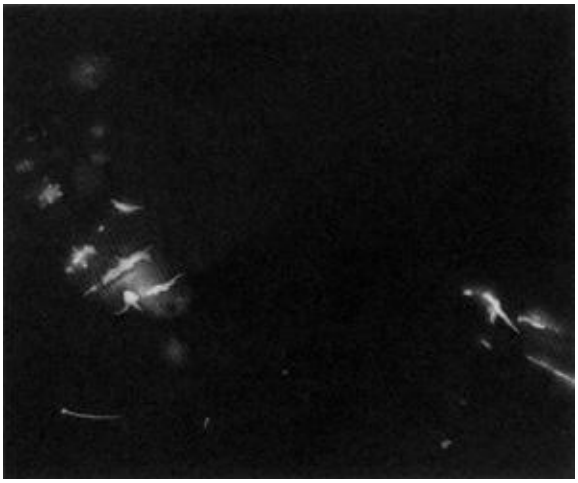

एम्मा की एक मानसिक तस्वीर?

बेबीसिटर वाली घटना के बाद वाली रात को नैन्सी पानी पीने के लिए नीचे गई और उसने देखा कि सुबह के 3 बजे उसके लिविंग रूम में पांच फुट दस इंच लंबा एक आदमी खड़ा है।

“उसने खाकी रंग की किसान वाली कमीज और भूरे रंग की काम करने वाली पैंट पहन रखी थी। सब कुछ उस आदमी पर बहुत बड़ा लग रहा था। मैं समझ गया कि वह बूढ़ा आदमी है। मैंने उसे एक नजर देखा और ऊपर की ओर भाग गया।”

जब मुझे उनका फ़ोन आया, तो मैंने तुरंत और जानकारी माँगी। मुझे स्पष्ट हो गया कि यह भूत-प्रेत का एक विशिष्ट मामला था, जहाँ संरचनात्मक बदलाव, नए मालिक और नई दिनचर्या ने घर में रहने वाले किसी व्यक्ति को परेशान कर दिया था और किसी न किसी तरह वह वातावरण में मौजूद रहा था। अपनी आदत के अनुसार, मैंने घर के निवासियों और अपने साथ लाए एक ज्योतिषी को रसोई में एक अनौपचारिक घेरे में इकट्ठा किया। हमने मिलकर एला और वहाँ मौजूद अन्य सभी लोगों से प्रार्थना की कि वे शांतिपूर्वक और हमारी सहानुभूति के साथ चले जाएँ—उन लोकों में प्रवेश करें जहाँ वे अकेले होंगे। रसोई का वातावरण, जो अब तक काफी भारी लग रहा था, हल्का होता हुआ प्रतीत हुआ।

मेरी यात्रा के कई सप्ताह बाद जब मैंने नैन्सी से बात की, तो घर पर सब कुछ ठीक था।

यह घर निजी संपत्ति है और मुझे संदेह है कि जोन्स परिवार यहाँ मेहमानों का स्वागत करता होगा। लेकिन आप इसके पास से गाड़ी चलाते हुए जा सकते हैं, और न्यू जर्सी के वाइनलैंड में अधिकांश लोग जानते हैं कि यह कौन सा घर है।

*140

एमिटीविले, अमेरिका का सबसे प्रसिद्ध भूतिया घर

शुक्रवार, 13 नवंबर, 1974 की रात, लॉन्ग आइलैंड के एमिटीविले में रहने वाले डेफियो परिवार के छह सदस्यों की उनके बिस्तरों में बेरहमी से हत्या कर दी गई - यह हाल के समय की सबसे भयावह और विचित्र सामूहिक हत्याओं में से एक है।

इस अपराध में एकमात्र जीवित बचे रोनाल्ड डेफियो जूनियर ने ही सबसे पहले पुलिस को सूचना दी थी। उन्हें जल्द ही गिरफ्तार कर लिया गया और उन पर हत्याओं का औपचारिक आरोप लगाया गया। लेकिन इस मामले के कुछ पहलू ऐसे हैं जिनका आज तक संतोषजनक समाधान नहीं हो पाया है।

रोनाल्ड डेफियो जूनियर जब आधी रात को उठा, बंदूक उठाई और अपने पूरे परिवार की हत्या कर दी, तो यह उसने खुद नहीं किया, बल्कि किसी चीज़ ने... किसी व्यक्ति ने... उसके शरीर में प्रवेश किया और उस पर कब्ज़ा कर लिया, डेफियो कहता है। मैं खुद को रोक नहीं सका।

क्या डेफ़ियो किसी आत्मा के वश में होने का उपयुक्त माध्यम था? मेरी जाँच के तथ्य इस ओर ज़ोरदार संकेत देते हैं। डेफ़ियो स्वयं किसी भी अलौकिक चीज़ में विश्वास नहीं करता। उसे समझ नहीं आता कि उस पर क्या आफत आई है। क्या उसने अपने परिवार का निर्मम नरसंहार किया, या इस आयाम से परे किसी शक्ति के प्रभाव में आकर?

शुरू से ही इस मामले में कुछ अजीब पहलू थे: ऐसा लगता है कि किसी ने भी उन गोलियों की आवाज नहीं सुनी जिनसे छह लोगों की मौत हुई... ऐसा कैसे हुआ कि पीड़ितों में से किसी ने भी हत्यारे का विरोध नहीं किया या उससे बचने के लिए भागे नहीं? क्या वास्तव में उन्होंने भी गोलियों की आवाज नहीं सुनी?

डीफियो के मुकदमे में, दो प्रख्यात मनोचिकित्सकों के बीच हत्यारे की मानसिक स्थिति को लेकर तीखे मतभेद थे: डॉ. श्वार्ट्ज का मानना था कि हत्या के समय डीफियो मनोविक्षिप्त था, जबकि डॉ. ज़ोलन उसे उसके कृत्य के लिए पूरी तरह से जिम्मेदार मानते थे। यह अफवाह निराधार साबित हुई कि डीफियो ने पहले अपने परिवार के भोजन में दवा मिलाई थी (जिससे उनकी उदासीनता का कारण स्पष्ट हो जाता)। रहस्य बना रहा, भले ही डीफियो की सजा स्पष्ट थी: द्वितीय श्रेणी की हत्या के छह मामलों में से प्रत्येक में पच्चीस साल से लेकर आजीवन कारावास तक की सजा, जो एक के बाद एक चलेगी—मानो इससे कोई फर्क पड़ता हो।

एमिटीविले—114 ओशन एवेन्यू वाला वह घर

घर का पार्श्व दृश्य

प्रसिद्ध ट्रान्स मीडियम एथेल मेयर्स, अपनी स्थिति को समझने की कोशिश कर रही हैं।

एक कमरे में मानसिक अभिव्यक्तियाँ

बार-बार डीफियो एक ही कहानी दोहराता रहा: हाँ, उसने अपने परिवार को मार डाला था, और उसे इसका कोई पछतावा नहीं था... लेकिन नहीं, उसे नहीं पता था कि उसने ऐसा क्यों किया। कुछ... किसी ने उसके अंदर प्रवेश कर लिया था और उसे गोली चलाने के लिए मजबूर कर दिया था... रात के 3 बजे एक-एक कमरे में जाकर उन्हीं माता-पिता, भाइयों और बहनों को मार डालना, जिन्हें उसने अपराध से ठीक दो महीने पहले उसी घर में जन्मदिन की पार्टी में

प्यार से गले लगाया था... डीफियो के अंदर जो भी चल रहा था, उसमें दया नाम की कोई चीज नहीं थी।

15 जनवरी, 1977 को मैं प्रख्यात ट्रान्स मीडियम एथेल जॉनसन मेयर्स को एक साइकिक फोटोग्राफर के साथ ओशन एवेन्यू स्थित घर में लेकर गया, ताकि उस मामले की जांच कर सकूं जो संदिग्ध प्रेतबाधा का मामला बनता दिख रहा था। हालांकि श्रीमती मेयर्स को जरा भी अंदाजा नहीं था कि वह कहां हैं या मैं उन्हें वहां क्यों लाया हूं, उन्होंने तुरंत कहा: "जो भी यहां रहेगा, वह सारे क्रोध...अंधाधुंध क्रूरता...का शिकार होगा...यह भारतीय कब्रिस्तान है, उनके लिए पवित्र है।" जैसे-जैसे वह धीरे-धीरे ट्रान्स में जा रही थीं, मैंने उनसे पूछा कि भारतीय आत्माएं इतनी क्रोधित क्यों हैं।

एथेल गहरी समाधि में है। भारतीय सरदार ने संपर्क स्थापित कर लिया है।

“एक गोरे व्यक्ति ने खुदाई शुरू की और उसे एक कंकाल मिला....” उसने एक लंबे जबड़े वाले भारतीय का वर्णन किया, जिसका प्रभाव उसने घर में महसूस किया।

“लोग आपस में लड़ने लगते हैं और उन्हें पता नहीं क्यों... उन्हें ऐसा करने पर मजबूर होना पड़ता है क्योंकि वे उसके वश में हो जाते हैं।” श्रीमती मेयर्स के अनुसार, एक श्वेत उपनिवेशी के पुराने अपराध का बदला अभी भी लिया जा रहा है, वहाँ मौजूद हर श्वेत व्यक्ति दुश्मन है,

और जब कोई उत्प्रेरक वहाँ आता है, तो वह वशीकरण का एक आदर्श माध्यम बन जाता है... जैसे रोनाल्ड डीफियो।

“मुझे रात में एक सांवला युवक इधर-उधर भटकता हुआ दिखाई देता है...जैसे किसी सम्मोहन में हो...पागल हो जाता है...पूरा परिवार इसमें शामिल है....,” माध्यम ने कहा और मेरी रीढ़ की हड्डी में सिहरन दौड़ गई। उसने घर के भयानक अतीत को बिल्कुल सटीक रूप से जान लिया था।

जब उस मानसिक फोटोग्राफर द्वारा ली गई तस्वीरों को मौके पर ही विकसित किया गया, तो उनमें से कुछ में ठीक उसी जगह पर अजीबोगरीब प्रभामंडल दिखाई दिए जहां गोलियां लगी थीं... मेरा कैमरा जाम हो गया, जबकि कुछ देर पहले तक वह बिल्कुल ठीक काम कर रहा था और जैसे ही हम ओशन एवेन्यू स्थित घर से निकले, वह फिर से ठीक हो गया... एक ऐसा घर जो हमारी जानी-पहचानी जिंदगी से पूरी तरह खाली था, फिर भी उन लोगों की आत्माओं से भरा हुआ था जो गुजर चुके हैं, लेकिन अभी भी वहीं भटक रहे हैं क्योंकि उन्हें पता नहीं है कि उन्हें कहां जाना है...

सस्ते प्रचार के लालच में तरह-तरह के धोखेबाज़ उस घर में आते रहे...जब तक कि नए मालिक तंग नहीं आ गए। उन्हें उन घटनाओं का प्रत्यक्ष अनुभव था और अंततः उनके अनुभवों पर आधारित एक बेस्टसेलर किताब लिखी गई...जिसमें बातों को बढ़ा-चढ़ाकर, विस्तार से और विस्तृत रूप से बताया गया था...लेकिन यह एक अलग तरह की कहानी है। असली कहानी स्पष्ट थी: 112 ओशन एवेन्यू शायद दो शताब्दियों से मानसिक रूप से सक्रिय स्थान रहा था...पैरों की आहट और अपने आप खुलने वाले दरवाजों से लेकर हवा में गायब हो जाने वाली आकृतियों तक की घटनाएं भूत-प्रेत की घटनाओं के पुख्ता प्रमाण हैं, ऐसी घटनाएं दुनिया भर में हजारों समान मामलों में देखी गई हैं...यह परा मनोविज्ञानियों के लिए शोध का विषय है, जो जानते हैं कि अलौकिक जैसी कोई चीज नहीं होती, बल्कि मानव व्यक्तित्व के ऐसे पहलू होते हैं जो पारंपरिक मनोविज्ञान की पुरानी सीमाओं को पार करते हैं.... डीफियो ने तहखाने में एक छोटे से कमरे को लाल रंग से रंगा था, क्योंकि वह रंग उन्हें पसंद था। वह उस कमरे को औजारों के भंडार के रूप में इस्तेमाल करते थे। कहा जाता है कि अठारहवीं सदी में उस जगह के मालिक जादू-टोना करते थे: इन सब बातों को मिलाकर देखें तो शैतान का

साया मंडरा रहा था... डीफियो सीनियर एक बेहद धार्मिक व्यक्ति थे जो मानते थे कि शैतान घर में मौजूद है, लेकिन उनके बेटे ने उस समय घर छोड़ दिया जब उनके पिता द्वारा बुलाया गया पादरी घर में आया।

आज का घर

जब शैतानी गतिविधियों का सारा असर शांत हो गया, तो मैंने जाँच-पड़ताल करने का फैसला किया, जिसके परिणामस्वरूप एमिटीविल की असली कहानी सामने आने लगी। एमिटीविल में जो हुआ, वह दुनिया में कहीं भी हो सकता था जहाँ वासनाओं में आवेश उमड़ता है और हिंसा से इंसानों की जान ले ली जाती है। उस भयानक अपराध का असर आज भी कायम है, जबकि प्रेतबाधा का वाहन अपनी वास्तविक स्थिति का स्पष्टीकरण खोजने की कोशिश कर रहा है। युवा डीफियो रात के अंधेरे में होने वाली अजीबोगरीब घटनाओं पर विश्वास नहीं करता, न ही वह ईश्वर से डरता है और न ही शैतान से। लेकिन डैनेमोरा जेल की अपनी कोठरी में एक और अंतहीन दिन का इंतज़ार करते हुए, रोनाल्ड डीफियो अपने भीतर के उस अजनबी के बारे में सोचने से खुद को रोक नहीं पाता, उस शक्ति के बारे में जिसने उसे वे

अपराध करने पर मजबूर किया जिन्हें वह असंभव मानता है। वह मानता है कि शायद वह किसी बहस में अपने पिता को मार सकता था, लेकिन अपनी माँ को नहीं, बच्चों को नहीं।

डीफियो को शायद कभी ऐसा जवाब न मिले जिससे वह संतुष्ट हो सके, लेकिन वह अभी युवा है और शायद वह दिन भी देखेगा जब उस घर का कोई भावी मालिक इस अज्ञात संघर्ष का सामना करेगा। वह दिन अवश्य आएगा। मैंने घर में व्याप्त क्रोधी आत्मा को शांत करने का प्रयास किया है, और यद्यपि मैं ऐसे मामलों में अक्सर सफल रहा हूँ, लेकिन इतना संचित द्वेष इतना शक्तिशाली भंडार है कि वह यूँ ही नष्ट नहीं हो सकता। लेकिन अंत में, हम सभी को किसी न किसी रूप में न्याय मिलता है।

अध्याय नौ

पीछे रह गए

स्टे-बिहाइंड्स एक ऐसा शब्द है जिसे मैंने गढ़ा है। यह उन आत्माओं या भूतों को संदर्भित करता है जो पृथ्वी पर ही अटकी रहती हैं और अपने परिचित परिवेश को छोड़ना नहीं चाहतीं। यह केवल एक जानबूझकर लिया गया निर्णय नहीं है ("मैं नहीं जा रहा"), हालांकि कभी-कभी ऐसा भी हो सकता है; अधिकांश ऐसे लोग होते हैं जिन्हें कभी बताया नहीं गया कि उन्हें कहाँ जाना है और वे उस काल्पनिक स्वर्ग की अपेक्षा रखते हैं जिसकी कल्पना उनके धर्म ने उनके लिए लंबे समय से की है। स्वाभाविक रूप से, जब वे भौतिक शरीर से विदा होते हैं तो उन्हें निराशा होती है, या कम से कम आश्चर्य होता है, क्योंकि उन्हें स्वर्ग, ईश्वर और संभवतः यीशु तक का मार्ग दिखाने के लिए स्वर्गदूतों और देवदूतों का कोई स्वागत-सभा नहीं मिलती।

इसके बजाय, वे अपने उन प्रियजनों को पाते हैं जो उनसे पहले "दूसरी दुनिया" जा चुके हैं; वे संक्रमण को आसान बनाने के लिए आए हैं। यदि मृत्यु गंभीर बीमारी या लंबे समय तक अस्पताल में भर्ती रहने (जिसमें दवाओं की भारी खुराक भी शामिल है) के कारण होती है, तो व्यक्ति अक्सर भ्रमित होता है और उसे कुछ समय के लिए "वहाँ" उपचार केंद्रों में रखने की आवश्यकता होती है।

लेकिन अधिकांश लोग आगे आने वाली चुनौतियों के लिए तैयार नहीं हैं: कुछ लोग उस शैतान को पसंद करेंगे जिसे वे जानते हैं, बजाय उस शैतान के जिसे वे अभी तक नहीं जानते—यहाँ, ज़ाहिर है, किसी वास्तविक शैतान की बात नहीं हो रही (जो कि कल्पना की उपज है), बल्कि एक मुहावरेदार कथन की बात हो रही है। अज्ञात से उन्हें डर लगता है। वे उसी से चिपके रहते हैं जिसे वे जानते हैं।

पेंसिल्वेनिया की वह महिला, जिनका 90 वर्ष की आयु में निधन हो गया—उन्होंने अपना अधिकांश जीवन अपने घर में ही बिताया था—अपने अंतिम संस्कार और उसके बाद की तैयारियों के लिए बिल्कुल भी तैयार नहीं थीं। इसलिए जब शोक संतप्त रिश्तेदार कब्रिस्तान से

लौटे, तो अनुमान लगाइए कि कौन पहले से ही वहाँ मौजूद था—महिला की पुरानी कुर्सी पर, उनका स्वागत करने के लिए—वही महिला, जिसे स्वाभाविक रूप से कोई दर्द नहीं था, क्योंकि उसने अपना शरीर त्याग दिया था।

किसी वास्तविक प्रेत (व्यक्ति) और अतीत की किसी आभा) के बीच अंतर करना कभी-कभी थोड़ा मुश्किल होता है। जब प्रेत हिलता-डुलता या बोलता है, तभी आप सही ढंग से पहचान कर सकते हैं।

स्थायी भूतों से अलग, पीछे छूट जाने वाले भूत एक और महत्वपूर्ण मामले में भिन्न होते हैं। सच्चे भूत नए किरायेदारों या आगंतुकों से नाराज़ होते हैं और उन्हें अपने घर में घुसपैठिए समझते हैं। लेकिन पीछे छूट जाने वाले भूत को इससे कोई फर्क नहीं पड़ता: यह उसका अपना घर तो है, लेकिन उसका रवैया मृत्यु से पहले जैसा था वैसा ही रहता है। बस मुझे अकेला छोड़ दो, मैं तुम्हें परेशान नहीं करूंगा!

* 141

जब मृत आत्माएं वहीं रहती हैं

किसी जीवित घर में मृत व्यक्ति की उपस्थिति से ज्यादा परेशान करने वाली कोई चीज नहीं होती। मेरा मतलब है, भूतों में जीवित रहते हुए उनकी शक्तियों से कहीं अधिक अशांति फैलाने की क्षमता होती है। बहुत कम लोग यह समझते हैं कि भूत केवल तंग करने या ध्यान आकर्षित करने के लिए नहीं आते। बल्कि इसके विपरीत। हम जानते हैं कि भूत दो अवस्थाओं के बीच फंसे दुखी प्राणी होते हैं और किसी भी अवस्था में सामंजस्य स्थापित नहीं कर पाते।

अधिकांश लोग बिना किसी कठिनाई के "इस दुनिया से चले जाते हैं" और उनके बारे में फिर कभी कुछ सुनने को नहीं मिलता, सिवाय इसके कि जब कोई आध्यात्मिक गुरु उन्हें याद करने पर जोर देता है, या जब परिवार में कोई आपात स्थिति उत्पन्न हो जाती है जिसमें दिवंगत आत्मा का हस्तक्षेप वांछनीय, या यहां तक कि आवश्यक हो जाता है।

वे अपना काम करते हैं और फिर चले जाते हैं, अपने किए पर गर्व से पीछे मुड़कर देखते हुए। मृत आत्माएँ हमेशा हमारे बीच रहती हैं, इसमें कोई संदेह नहीं। वे अपने ही नियमों का पालन

करते हैं जो उन्हें हमारे पास आने या अपनी उपस्थिति का एहसास कराने से रोकते हैं, सिवाय तब जब परिस्थितियाँ इसकी मांग करती हों। लेकिन वे हमें अपनी निकटता का एहसास कराने के लिए अन्य कार्य कर सकते हैं, और ये छोटी-छोटी बातें बहुत मायने रखती हैं जब इन्हें किसी प्रियजन की निकटता के निश्चित संकेत के रूप में पहचाना जाता है।

दुखद घटनाएं सदमे के कारण प्रेत जैसी स्थिति पैदा कर देती हैं, और उन्हें उस स्थान से बाहर निकालने का एकमात्र उपाय है जहाँ उनका दुखद अंत हुआ, सिवाय अपनी भावनात्मक उलझन के अहसास के। यह अनुभूति उन्हें समाधि की अवस्था में संवाद करने की अनुमति देकर प्राप्त की जा सकती है। लेकिन ऐसे मामले भी होते हैं जिनमें त्रासदी अचानक नहीं, बल्कि धीरे-धीरे होती है, और भौतिक जीवन से अप्राकृतिक लगाव प्रेत सिंड्रोम को जन्म देता है। जो व्यक्ति मृत्यु नामक संक्रमण को शांतिपूर्वक स्वीकार करने से इनकार करता है और भौतिक परिवेश से चिपका रहता है, वह प्रेत बन जाता है जब प्रतिरोध और लगाव की ये भावनाएँ मनोविकार में तब्दील हो जाती हैं।

ऐसे लोग अपने घर को अपना ही मानेंगे और बाद के मालिकों या किराएदारों को अवांछित घुसपैठिए समझेंगे जिन्हें किसी भी तरह से बाहर निकालना होगा। ऐसा करने का स्वाभाविक तरीका यह है कि वे जीवित लोगों को बार-बार अपनी मौजूदगी का एहसास कराएं और अपने स्वामित्व का दावा करें। अगर इससे भी बात नहीं बनती, तो चीज़ें हिलाएं, फेंकें, शोर मचाएं—उन्हें बता दें कि यह घर किसका है!

इस तरह की घटनाओं की कई रिपोर्टें हैं। हर हफ्ते विश्वसनीय और सत्यापित गवाहों से नए मामले सामने आते हैं, और धीरे-धीरे एक स्पष्ट पैटर्न उभरने लगता है।

न्यूयॉर्क के रिजवुड की एक महिला ने मुझे ब्रुकलिन के डिवीजन एवेन्यू स्थित एक घर के बारे में लिखा, जहाँ वह बचपन में रहती थी। युवा दादी श्रीमती पेट्रे अच्छी शिक्षित थीं और उनकी याददाश्त भी उतनी ही अच्छी थी। उन्हें बचपन में ही अपने मकान मालिक का नाम याद था, और यहाँ तक कि पब्लिक स्कूल 19 में अपने सभी शिक्षकों के नाम भी याद थे। उनके परिवार ने जो घर किराए पर लिया था, उसमें एक तहखाना, एक बैठक कक्ष और एक ऊपरी मंजिल थी जहाँ शयनकक्ष स्थित थे।

अक्टूबर के एक गर्म दिन, वह तहखाने में थी जबकि उसकी माँ ऊपर थी। उसे पता था कि घर में कोई और नहीं है। जब उसने सीढ़ियों को बंद करने वाले कांच के दरवाजे पर नज़र डाली, जो लगभग दर्पण की तरह काम कर रहा था, तो उसने आश्चर्य से देखा कि एक आदमी दरवाजे के पीछे से झाँक रहा था। कुछ ही क्षण पहले उसने सीढ़ियों से नीचे आते हुए भारी कदमों की आवाज़ सुनी थी, और उसे लगा कि जब वह और उसकी माँ खरीदारी करने बाहर गई थीं, तब कोई घर में घुस आया होगा। वह चीखी और घर से बाहर भागी, लेकिन उसने अपने परिवार को उस अजनबी के बारे में नहीं बताया।

कुछ समय बाद, वह अपने भाई और भाभी के साथ उन्हीं सीढ़ियों के सामने बैठी थी, तभी उसे फिर कदमों की आहट सुनाई दी और वह अजनबी प्रकट हुआ। इस बार उसने उसे अच्छी तरह से देखा और उसके पतले, बेहद पीले चेहरे, काले बालों और काले सूट व फेडोरा टोपी का वर्णन कर सकी।

ज़ाहिर है, किसी ने भी उस लड़की की बात पर विश्वास नहीं किया, और यहाँ तक कि मकान मालकिन ने भी उस पर यह सब मनगढ़ंत कहानी होने का आरोप लगाया। लेकिन एक साल बाद, उसके पिता अपनी बेटी की घबराहट देखकर चिंतित हो गए और उन्होंने घर बदलने का फैसला किया। आखिरकार, मकान मालकिन ने उस प्रेत के बारे में विस्तार से पूछा और लड़की द्वारा देखे गए भूत के वर्णन को ध्यान से सुना।

“हे भगवान!” मकान मालकिन, श्रीमती ग्रिमशॉ ने आखिरकार कहा। “मैं उस आदमी को जानती थी—उसने सबसे ऊपरी मंजिल पर फांसी लगा ली थी!”

* * *

कभी-कभी मृत आत्माएँ तभी तक रुकती हैं जब तक कि सब कुछ उनकी इच्छानुसार व्यवस्थित न हो जाए। अन्ना एरिंगटन न्यूयॉर्क राज्य में रहने वाली एक ऐसी महिला थीं जिनके पास माध्यम बनने की शक्ति थी। 1944 में, उनकी सास, जो काफी धनी थीं, का विलमिंगटन, उत्तरी कैरोलिना में निधन हो गया और उन्हें वहीं दफनाया गया। उनकी वसीयत को लेकर कुछ संदेह था। उनकी मृत्यु के तीन दिन बाद, श्रीमती एरिंगटन सुबह 3 बजे गहरी नींद से जाग उठीं, जब किसी ने उनके हाथ को छुआ।

उसका पहला ख्याल यही था कि उसके दो बच्चों में से किसी को कुछ चाहिए होगा। लेकिन जागने पर उसने देखा कि उसकी सास एक बहते हुए सफेद गाउन में उसके बिस्तर के पास खड़ी है। उसका पति खर्राटे लेता रहा, तभी भूत ने श्रीमती एरिंगटन के होठों पर उंगली रखकर उससे कहा कि वह अपने बेटे को न जगाए, बल्कि याद रखे कि खोई हुई वसीयत उसके घर के भोजन कक्ष में बर्तनों की अलमारी के ऊपर चीनी के कटोरे के नीचे रखी है। अगली सुबह श्रीमती एरिंगटन पर उनके पति ने खूब हँसा, लेकिन कुछ दिनों बाद उनकी बहन विलमिंगटन से लौटी (उस समय एरिंगटन परिवार न्यूयॉर्क शहर में रहता था) और उसने पुष्टि की कि वसीयत वाकई उसी जगह मिली है जहाँ भूत ने इशारा किया था।

* * *

सन् 1960 के दशक में, पॉल हेरिंग नाम के एक सज्जन ने मुझसे संपर्क किया, जिनका जन्म जर्मनी में हुआ था और जो मैनहट्टन के ईस्ट साइड में एक छोटे से अपार्टमेंट में और न्यूयॉर्क के वेस्टचेस्टर काउंटी में एक ग्रामीण घर में रहते थे। वे रेस्तरां व्यवसाय में थे और कल्पनाओं या अटकलों में लिप्त नहीं रहते थे। वे मुझे एक सरल, नेक नागरिक लगे। उनकी वृद्ध माँ, जिनका जन्म भी जर्मनी में हुआ था, उनके साथ रहती थीं और एक बड़ा जर्मन शेफर्ड कुत्ता उनके घर की शोभा बढ़ाता था।

श्री हेरिंग अविवाहित थे और उनकी माता विधवा थीं। मेरे पास उनके आने का कारण यह था कि वेस्टचेस्टर स्थित घर के आसपास अजीब तरह से कदमों की आवाजें सुनाई देती थीं, जबकि वहां कोई चल नहीं रहा होता था। श्रीमती हेरिंग ने तीन अलग-अलग मौकों पर अपने बैठक कक्ष में एक प्रेत देखा था।

उन्होंने कहा, "यह कुछ काला सा था, लेकिन मैंने इसे तुरंत पहचान लिया। यह मेरे दिवंगत पति थे।"

प्रकाश उपकरणों के पास एक आदमी की "काली आकृति" भी दिखाई दी, और घर में ऐसी आवाजें आ रही थीं जिनका कोई प्राकृतिक स्रोत नहीं था।

बेटे ने आगे कहा, "दरवाजे अपने आप खुलते और बंद होते रहते हैं। हम उस भूतिया घटना से निपटने की कोशिश में पागल हो रहे हैं।"

रात में उनके बिस्तर की चादरें खींच ली जाती थीं। उन्हें किसी अदृश्य हाथ से, खासकर अंधेरा होने के बाद, चेहरे पर स्पर्श किया जाता था।

उससे पहले सितंबर में, श्रीमती हेरिंग बैठक कक्ष के झूलते दरवाजों की ओर बढ़ रही थीं, तभी दरवाजा अपने आप खुल गया और उनके सामने आ गिरा! रसोई में एक मेज दिन के उजाले में अपने आप हिलने लगी।

उनका दूसरा बेटा, मैक्स, जो नॉरफ़ॉक, वर्जीनिया में रहता था, हमेशा जल्दी में घर से निकल जाता था क्योंकि उसे घर में सांस लेने में दिक्कत होती थी। उनका कुत्ता, नॉक्सी, वेस्टचेस्टर वाले घर में बाहर होने पर हमेशा परेशान रहता था।

मैंने पूछा, "यह कब से चल रहा है, श्रीमती हेरिंग?"

“कम से कम चार साल,” उस साहसी महिला ने जवाब दिया, “लेकिन मेरे पति की मृत्यु दस साल पहले हो गई थी।”

बाद में पता चला कि उसने अपनी पत्नी को तलाक देकर दूसरी महिला से शादी कर ली थी, और उस शादी से कोई संतान नहीं थी। फिर भी, उस "दूसरी महिला" ने मिस्टर हेरिंग सीनियर की सारी संपत्ति अपने पास रख ली थी—कोई वैध वसीयत कभी नहीं मिली। क्या वह भूत इतने वर्षों की अपनी साथी के साथ हुए इस अन्याय का विरोध कर रहा था? क्या उसे अपनी पत्नी को तलाक देकर दूसरी से शादी करने के अपने जल्दबाजी वाले फैसले पर पछतावा हो रहा था?

हेरिंग परिवार ही अकेले ऐसे नहीं थे जिन्होंने कदमों की आहट सुनी। एक संभावित किरायेदार जो उस ग्रामीण घर को किराए पर लेने आया था, बंद दरवाजे से किसी के चलने की आवाज सुनकर भाग गया।

* * *

श्रीमती ई. एफ. न्यूबोल्ड को बचपन से ही भूतों का साया मंडराता रहा है—मानो वह अपने साथ एक दीपक लेकर परलोक के निवासियों को यह बताना चाहती हों कि उनके पास छठी इंद्री है।

“मुझे डर सता रहा है,” उसने कहा। “जब मैं बहुत छोटी थी तब से ही कोई ‘पता नहीं क्या’ मेरा पीछा कर रहा है। वो बस मेरी स्कर्ट के पीछे से खींचता है। इससे ज्यादा कुछ नहीं... लेकिन जब आप कमरे के बीच में अकेले हों, तो यह बहुत परेशान करने वाला हो सकता है।”

मुझे दादी थर्स्टन के भूत की याद आई, और कैसे उन्होंने कुछ साल पहले कनेक्टिकट के एक पुराने घर में एक खाली कमरे की जाँच करते समय मेरी कोहनी खींची थी, और मैं उनकी बात से पूरी तरह सहमत हूँ। श्रीमती न्यूबोल्ड के परिवार को भी मानसिक अनुभव हुए थे। उनकी छोटी बच्ची ने अपने कंधे पर किसी का हाथ महसूस किया था। यह उनके परिवार की परंपरा थी।

“मेरे पति की चाची का फ्लोरिडा में निधन हो गया, जब मैं न्यू जर्सी में थी। हम बहुत करीबी दोस्त थे, और मैंने सुबह 10 बजे अंतिम संस्कार में उनके पार्थिव शरीर को अंतिम विदाई दी। रात 9 बजे मैं अपनी रसोई में गई और हालांकि मैं उन्हें देख नहीं पा रही थी, मुझे पता था कि वह मेज पर बैठी मेरी पीठ को घूर रही थीं और मुझसे विनती कर रही थीं।”

"यह स्कर्ट खींचने का क्या मतलब है?"

“यह मेरे साथ एक घर, एक अपार्टमेंट, किराए के कई कमरों, दो नए घरों और दो पुराने घरों में घूमता रहा है। मुझे हमेशा अकेले न होने का एहसास होता रहा है, और उदासी भी महसूस होती रही है। मैंने अपने कंधे पर किसी का हाथ भी महसूस किया है, और हमेशा ऊपर से आती हुई कदमों की आहट सुनी है।”

“जिस अगले घर में हम रहने लगे, वह लगभग 35 साल पुराना था, उसका केवल एक ही मालिक था, जो अभी भी जीवित था, और वहाँ किसी की मृत्यु नहीं हुई थी। वह घर भूतिया जैसा दिखता था, लेकिन यह केवल उपेक्षा के कारण था। हमने उसका आधुनिकीकरण किया, और फिर यह सब शुरू हो गया! मेरी स्कर्ट को खींचने की घटनाएँ अक्सर होने लगीं। एक रात जब मैं अकेली थी, यानी मेरे पति शहर से बाहर गए हुए थे और हमारे तीनों बच्चे गहरी नींद में सो रहे थे—मैंने सोने से ठीक पहले और ठीक बाद में उन्हें देखा था—मैं लिविंग रूम में टीवी देख रही थी, तभी मैंने बाहर तहखाने का दरवाजा खुलते सुना। मैंने खिड़की से बाहर देखा कि कहीं कोई अंदर तो नहीं घुस रहा है, क्योंकि मैंने कुछ देर पहले ही दरवाजा बंद किया था।

जब मैं देख रही थी, तभी मैंने उसे मजबूती से बंद होते सुना। हालाँकि, दरवाजा हिला नहीं। इस दरवाजे की एक खास आवाज थी, इसलिए मैं इसे गलत नहीं समझ सकती थी।

मैं अपनी सीट पर वापस गया और कैंची उठा ली, मन ही मन बंदूक की कामना कर रहा था। मुझे यकीन था कि मैंने किसी घुसपैठिए की आवाज सुनी थी। फिर मुझे तहखाने से धीमी कदमों की आहट सुनाई दी, जो कपड़े धोने के कमरे, रसोई से होते हुए बैठक कक्ष में आई, मेरे ठीक बगल से गुजरी और सीढ़ियों से दूसरी मंजिल पर चढ़ गई। वे सीढ़ियों के ऊपर रुक गए, और उसके बाद मैंने उन्हें फिर कभी नहीं सुना। और न ही मैं सुनना चाहता हूँ। वे कदम मेरे पास से गुजरे, पाँच फीट से भी कम दूरी पर, और कमरा खाली था। दुर्भाग्य से, मेरे पास कोई पुख्ता सबूत नहीं है, लेकिन मैं पूरी तरह से जागा हुआ था और होश में था!

न्यू जर्सी के हैरिंगटन पार्क की उस महिला के बारे में बस इतना ही।

* * *

सुश्री मार्गरिट सी. और उनका परिवार एक ऐसे घर में रहते थे जो निश्चित रूप से भूतिया था, इसलिए मैं उनका पूरा नाम नहीं बताऊँगी। लेकिन यहाँ उनकी रिपोर्ट है।

दिसंबर 1955 में, क्रिसमस से ठीक दो दिन पहले, मैं अपनी बहन और उसके पति के साथ छुट्टियाँ बिताने के लिए पेंसिल्वेनिया गया था। वे लगभग सौ साल पहले बने एक विशाल मध्य-विक्टोरियन शैली के घर की दूसरी मंजिल पर रहते थे (जिस अपार्टमेंट में मैं अब किराए पर रहता हूँ)।

मेरी बहन की सास, जो घर की पहली मंजिल पर रहती थीं, के निधन के कारण यह अवसर पूरी तरह से खुशी भरा नहीं था, लेकिन हम अपने बहनोई के लिए आए थे।

न्यूयॉर्क के शेंक्टेडी से इतनी दूर चलकर आने के बाद, हम रात साढ़े दस और ग्यारह बजे के बीच सो गए। जिस कमरे में मैं सोया था, वह नीचे जाने वाले गलियारे के सबसे करीब था, और दोनों के बीच केवल एक दरवाजा था।

बिस्तर पर लेटते ही मुझे नींद नहीं आ रही थी। लेटे-लेटे मुझे पियानो की आवाज़ सुनाई दी। ऐसा लग रहा था जैसे कोई बहुत पुराना पियानो बज रहा हो और उस पर चर्च का संगीत बज

रहा हो। मुझे यह बात थोड़ी अजीब लगी कि मेरे जीजाजी के पिता उस समय रेडियो सुन रहे थे, लेकिन मुझे जिज्ञासा से ज़्यादा झुंझलाहट हुई।

अगली सुबह, जब हम कॉफ़ी पी रहे थे, मैंने इस बारे में अपनी बहन से बात की। उसने मुझे भरोसा दिलाया कि उसके ससुर उस समय रेडियो नहीं सुन रहे होंगे और मैंने उसे बताया कि मैंने पियानो की धुन सुनी थी। तभी उसने उस पुराने पियानो का ज़िक्र किया जो उसके पति की माँ के पास कई सालों से था और जो नीचे वाले कमरे में रखा हुआ था।

हमने जाकर उसे देखने का फैसला किया। कीबोर्ड पर जमी धूल काफी मोटी थी, और उस पर किसी की उंगलियों के निशान साफ दिखाई दे रहे थे। सामान्य उंगलियां नहीं, बल्कि पतली और हड्डियों वाली उंगलियां। मेरी बहन की सास बेहद दुबली-पतली थीं और उन्हें पियानो बजाना बहुत पसंद था, खासकर चर्च के संगीत। घर में मेरी मां के अलावा कोई और पियानो बजाना नहीं जानता था, जो मेरी बहन और उसके पति के साथ रहती थीं।

* * *

न्यू जर्सी की एक और महिला, लुईस बी., जिनका पूरा नाम और पता मेरे रिकॉर्ड में है, ने मुझे एक ऐसे अनुभव के बारे में बताया जिसे वह कभी नहीं भूलेंगी।

मैं यह नहीं समझा सकता कि मैं इसे आपको क्यों भेज रहा हूं, बस इतना कह सकता हूं कि मुझे ऐसा करने के लिए विवश महसूस हो रहा है, और कई वर्षों तक अपनी उन मजबूरियों का पालन करने के बाद, जिन्हें मैं मजबूरी कहता हूं, मुझे ऐसा करना ही होगा।

मेरी माँ के एक अविवाहित चचेरे भाई थे, जिनका निधन 1932 में वैलेंटाइन डे के आसपास हुआ था और उन्हें वहीं दफनाया गया था। वे अपने जीवन का अधिकांश समय न्यू जर्सी के रिजवुड में अपनी दो अविवाहित चाचियों के साथ रहे थे। वे इस क्षेत्र के एक प्रसिद्ध वास्तुकार थे। उन्होंने स्थानीय स्मारकों का डिज़ाइन तैयार किया था, जिनमें से एक आज भी रिजवुड के पार्क में मौजूद है। उनका कद छोटा था, उनकी आँखें तीक्ष्ण थीं, घनी भूरी दाढ़ी थी और वे बहुत सिगार पीते थे। जब उनका निधन हुआ, तब मेरी उम्र लगभग 14 वर्ष थी।

मेरे माता-पिता ने मुझे अंतिम संस्कार में शामिल न करने का फैसला किया और कब्रिस्तान जाते समय मुझे घर पर ही छोड़ दिया और हिदायत दी कि उनके लौटने तक मैं घर पर ही

रहूँ। उनकी योजना अंतिम संस्कार में शामिल होने, मेरी बड़ी चाचियों के साथ घर लौटने और फिर शाम के खाने से पहले घर आने की थी, जो हमारे घर में शाम 6 बजे होता था।

मुझे याद नहीं कि मैंने दोपहर में अपना समय कैसे बिताया, लेकिन मुझे याद है कि सूर्यास्त से ठीक पहले मैं घर के अंदर चला गया था और उस समय मैं हमारे भोजन कक्ष में था, शायद रात के खाने के लिए मेज सजा रहा था, क्योंकि यह मेरे कामों में से एक था।

नीचे की मंजिल पर हमारे तीन कमरे थे: बैठक कक्ष उत्तर दिशा की ओर था और घर की पूरी लंबाई में फैला हुआ था, जबकि रसोई और भोजन कक्ष क्रमशः दक्षिण-पूर्व और दक्षिण-पश्चिम दिशा की ओर थे, और एक टी-आकार का विभाजन इन कमरों को अलग करता था। भोजन कक्ष और बैठक कक्ष को अलग करने वाला एक बड़ा मेहराबदार द्वार था।

मुझे याद नहीं कि मुझे कब किसी "उपस्थिति" का एहसास हुआ। मैंने अपनी आँखों से कुछ नहीं देखा, बल्कि जो मैंने "देखा" उसे महसूस किया, या किसी तरह उसे महसूस किया और मेरी इंद्रियों ने उसे "देखा"। यह कोई सटीक व्याख्या नहीं है, लेकिन जो मैंने महसूस किया, उसके सबसे करीब यही है।

यह उपस्थिति कमरे के किसी एक कोने में नहीं थी, बल्कि धीरे-धीरे मुझे घेर रही थी, जैसे हवा जो मैं सांस ले रही थी। यह भयावह, डरावनी, बेहद बुरी और शक्तिशाली थी, और किसी तरह 'घनी' शब्द इस पर लागू होता प्रतीत हुआ और मैं जान गई कि यह "अंकल" ऑस्कर थे। मैं उन्हें हर दिशा से अपनी ओर आते हुए महसूस कर सकती थी (जैसे संगीत जो धीरे-धीरे तेज होता जाता है), और मेरी इंद्रियों ने उन्हें ताबूत में लिपटे हुए देखा, उनकी छाती पर लाल रिबन लिपटा हुआ था। वह जीवित थे और मुझे उनकी ओर से किसी भयानक दृढ़ संकल्प का एहसास हुआ। अचानक मुझे पता चला कि वह किसी तरह "मेरे भीतर प्रवेश करने" की कोशिश कर रहे थे और मैं पीछे हटने लगी। मुझे याद नहीं कि मैंने कुछ कहा या उन्होंने मुझसे कुछ कहा। मैं बस इतना जानती थी कि उनका इरादा क्या था और वह कौन थे। मुझे आखिरी बार याद है कि मैं असहाय और व्यर्थ रूप से उन पर चिल्ला रही थी कि वे चले जाएं। मुझे नहीं पता कि यह कब तक चला। मैं बस इतना जानती हूं कि अचानक वह चले गए, और मेरे माता-पिता कमरे में आए। वे बताते हैं कि मैं बहुत घबराई हुई थी, और मुझे शांत करने में काफी मशक्कत करनी पड़ी।

कई वर्षों बाद श्रीमती बी को पता चला कि "अंकल" ऑस्कर की मृत्यु अंतिम समय तक एक उन्मादी व्यक्ति के रूप में हुई थी।

* * *

ग्रेस रिवर्स पेशे से सचिव थीं, अच्छे परिवार से थीं और मतिभ्रम या भावनात्मक उथल-पुथल का शिकार नहीं थीं। मैंने उनसे कई बार बात की थी और हमेशा पाया कि वे उन बातों पर चर्चा करने से कतराती थीं जो उन्हें अविश्वसनीय लगती थीं।

ऐसा लगता था कि सप्ताहांत में, मिस रिवर्स और उनकी एक अन्य सचिव, जूलियट, कनेक्टिकट के वेस्टब्रुक स्थित अपने मालिक जॉन बर्गनर के घर मेहमान बनकर रहती थीं। मिस रिवर्स, लगभग पचास वर्ष के इस फर्नीचर निर्माता की अच्छी दोस्त भी थीं। उन्होंने 1948 में बर्गनर फर्म में काम करना शुरू किया था, जॉन बर्गनर के 1865 में बने एक ग्रामीण घर के मालिक बनने के छह साल बाद।

बर्गनर अपने सप्ताहांत अपने पसंदीदा कर्मचारियों के साथ बिताना पसंद करते थे, और कभी-कभी अपने कुछ दफ्तर के कर्मचारियों और अपनी दो सचिवों को भी अपने साथ कनेक्टिकट आने के लिए कहते थे। 1950 के दशक की शुरुआत तक सब कुछ बेहद सुखद था, जब जॉन बर्गनर की मुलाकात फिलिप मर्विन नाम के एक विज्ञापन व्यवसायी से हुई। यह व्यावसायिक संबंध जल्द ही एक सामाजिक मित्रता में बदल गया, और कुछ ही समय में श्री मर्विन वेस्टब्रुक में एक नियमित और अक्सर खुद ही आमंत्रित अतिथि बन गए।

शुरू में तो इससे किसी को ज़्यादा परेशानी नहीं हुई, लेकिन जब मर्विन ने बर्गनर और उसके खास सहायक के बीच गहरी और बढ़ती दोस्ती देखी, तो ईर्ष्या जैसी भावना ने उसे हर मौके पर इस रिश्ते में दखल देने के लिए उकसाया। इस त्रिकोण को और भी असहनीय बनाने वाली बात यह थी कि बर्गनर मर्विन की हरकतों को बड़ी मासूमियत से लेता था। स्वाभाविक रूप से, मिस रिवर्स और उस दखल देने वाले के बीच नापसंदगी धीरे-धीरे नफरत में बदल गई, लेकिन इससे पहले कि कोई खुली बहस होती, विज्ञापन जगत के उस शख्स की 51 साल की उम्र में अचानक दिल का दौरा पड़ने से मौत हो गई।

लेकिन ऐसा लग रहा था कि मामला यहीं खत्म नहीं हुआ है।

उनकी मृत्यु के कुछ ही समय बाद, कनेक्टिकट में सप्ताहांत फिर से बाधित होने लगे, इस बार ऐसी अजीब आवाज़ों से जिनका कोई प्राकृतिक कारण स्पष्ट नहीं था। इन विचित्र अनुभवों को ज्यादातर महिलाओं के साथ-साथ कार्यालय के कुछ पुरुषों ने भी देखा, जो इन सब से भयभीत प्रतीत हो रहे थे। एक कुशल कार्यकारी सचिव की तटस्थता के साथ, मिस रिवर्स ने इन घटनाओं का विवरण दिया:

अंतरिक्ष में गतिमान वस्तुएँ।

घर के अंदर और बाहर हम पर पत्थर फेंके गए।

रात के समय (जब गैरेज में कोई नहीं होता था) औजारों के टकराने की आवाज।

वाशिंग मशीन रात के 1 बजे अपने आप चालू हो गई।

आधी रात के सन्नाटे में भारी कदमों की आहट, दरवाजों के जोर-जोर से बंद होने की आवाज।

टेलीविजन सेट अपनी मर्जी से चालू और बंद हो जाते हैं।

चम्मच बार-बार कटलरी ट्रे से उछलकर बाहर गिर जाता है।

ठंडी हवा के झोंके का एहसास।

और भी बहुत कुछ था, बहुत कुछ।

जब भूत भगाने के लिए एक पुजारी को घर में बुलाया गया, तो स्थिति और भी बिगड़ गई। जाहिर है, मृतक को धर्मगुरुओं के प्रति कोई सम्मान नहीं था।

दूसरी सचिव जूलियट अपने पति को साथ लेकर आई थी। सन् 1962 की एक रात, जब जूलियट का पति उस कमरे में सो रहा था जो कभी विज्ञापन व्यवसायी का पसंदीदा अतिथि कक्ष हुआ करता था, तो उसने स्पष्ट रूप से कई बार खटखटाने की आवाज़ सुनी, मानो कोई अलमारी के ऊपर ज़ोर से मार रहा हो। कहने की ज़रूरत नहीं है कि उसका पति कमरे में अकेला था, और उसने खटखटाया नहीं था।

हालात इतने बिगड़ गए थे कि ग्रेस रिवर्स को अपने मालिक के ग्रामीण घर में सप्ताहांत में होने वाले निमंत्रणों का इंतज़ार नहीं रहता था। उन्हें उनसे डर लगने लगा था। तभी अचानक उन्हें एक भयानक बात याद आई जो स्वर्गीय श्री मर्विन ने उनके सहकर्मियों से कही थी।

उन्होंने कहा था, "अगर मुझे कुछ हो जाता है और मैं मर जाता हूं, तो मैं उन दोनों लड़कियों के पीछे-पीछे उनकी बाकी जिंदगी चलता रहूंगा!"

मिस रिवर्स को एहसास हुआ कि वह अपना वादा निभा रहा था।

उसकी एकमात्र आशा यही थी कि श्री मर्विन का भूत किसी दिन उस प्रेत से विचलित हो जाएगा जो उसके साथ घर में रह रहा था। कई बार, काले कपड़े पहने एक बूढ़ी औरत को घर के एक तरफ के दरवाजे से निकलते देखा गया था। एक स्थानीय व्यक्ति, जो सप्ताह के दिनों में घर के सामने बैठा रहता था जब वह खाली होता था—बर्गनर केवल सप्ताहांत पर ही आता था—मिस रिवर्स से उस "बूढ़ी औरत" के बारे में ज़ोर-ज़ोर से पूछ रहा था जो कहती थी कि वह घर के पिछले हिस्से में रहती है। उसने उसे कई बार देखा था, और हर बार उसे उसी, कम इस्तेमाल होने वाले, तरफ के दरवाजे से घर में गायब होते देखा था। जॉन बर्गनर द्वारा आमंत्रित कार्यालय के एक कर्मचारी ने भी उसे रविवार की सुबह लगभग 1:30 बजे देखा, जब वह नींद न आने के कारण घर के बाहर खड़ा था। जब उसने उसे देखा तो उसने नमस्ते कहा, पैसे के बारे में कुछ कहा और फिर एक खेत में गायब हो गई।

ग्रेस रिवर्स ने घर के इतिहास की छानबीन की और पता चला कि यह घर पहले एक बहुत बूढ़े आदमी का था जो अपनी माँ के साथ वहाँ रहता था। जब उसकी माँ की मृत्यु हुई, तो उसे घर में दबा हुआ पैसा मिला, लेकिन उसका दावा था कि उसकी माँ ने और भी पैसा छिपा रखा था जिसे वह कभी खोज नहीं पाया। जाहिर है, उसकी माँ की आत्मा भी यही सोचती थी और अभी भी उसकी तलाश में थी। क्योंकि भूतों के साथ कभी-कभी ऐसा ही होता है—वे भौतिक चीजों को भूल जाते हैं।

* * *

पीटर हॉफमैन परिवार में पति, पत्नी पेनी और उनका बच्चा (जो उस समय लगभग तीन या चार साल का था) शामिल थे। माता-पिता सुशिक्षित और वाक्पटु थे और हार्वर्ड में रहते थे। यह हार्वर्ड विश्वविद्यालय नहीं, बल्कि मैसाचुसेट्स के आयर के पास स्थित हार्वर्ड था, जो विश्वविद्यालय से लगभग एक घंटे की दूरी पर था।

1956 में एक कार दुर्घटना में श्रीमती हॉफमैन आंशिक रूप से लकवाग्रस्त हो गई थीं, लेकिन उनकी तीक्ष्ण अवलोकन क्षमता अप्रभावित रही। उन्हें हमेशा से कब्रिस्तानों से विशेष लगाव था, और 1951 में उनका पहला मानसिक अनुभव एक शव वाहन के दर्शन के रूप में हुआ, जो एक कब्रिस्तान के पास से गुजरा था। यह तर्क दिया जा सकता है कि ऐसे कई शव वाहन कब्रिस्तानों में आते-जाते थे, लेकिन सच्चाई यह है कि श्रीमती हॉफमैन का शव वाहन वास्तविक नहीं था।

उनका घर श्रीमती हॉफमैन के पिता द्वारा निर्मित घर के बगल में स्थित है, जो एक प्रसिद्ध चिकित्सक थे, और ऐसा प्रतीत होता था कि दोनों घरों में भूत-प्रेत का वास था। श्रीमती हॉफमैन के पिता के स्वामित्व वाला बड़ा घर 1721 में "एक भारतीय खोपड़ी से प्राप्त इनाम" से बनाया गया था।

पेनी हॉफमैन को इसे देखते ही अजीब सी अनुभूति होने लगी थी। 1960 या 1961 में, वह और उनके पति वहां रात बिता रहे थे, जब लगभग दो बजे वे दोनों बिना किसी स्पष्ट कारण के जाग गए।

उन्होंने कहा, "मैंने जिसे पीट समझा उससे बात की, क्योंकि मुझे सामने वाली खिड़की के पास कोई दिखाई दिया, लेकिन बाद में पता चला कि पीट मेरे पीछे था। कहने की जरूरत नहीं है, हम तुरंत वहां से निकल गए।"

पीटर हॉफमैन ने सिर हिलाया और कहा: "मैं खुद भी कई बार रात में घर में अकेला रहा हूं, और मुझे हमेशा ऐसा महसूस हुआ है कि कोई मुझे देख रहा है।"

फिर अक्टूबर 1963 के अंत में, पेनी हॉफमैन ने मुझे न्यूयॉर्क में फोन किया। क्या मैं बोस्टन आकर उन्हें बता सकता हूँ कि क्या उन्हें कुछ भ्रम हो रहा है?

मैंने पूछा, किस तरह की चीजें?

“हाँ,” उसने कुछ परेशान होकर जवाब दिया, “एक हफ़्ते पहले हम फिर से मेरे पिता के घर पर रुके थे। मैंने बेडरूम में एक सैनिक को देखा। वह सांवला था और उसके गले में फंदा था; रस्सी कटी हुई थी और उसका चेहरा लगभग चमक रहा था। मैं कसम खाकर कहती हूँ कि मैंने उसे देखा था।”

मैं जल्दी से बोस्टन पहुंचा और वे लोग मुझे रेडियो स्टेशन डब्ल्यूबीजेड पर मिले।

उस प्रेतवाधित सैनिक के बारे में क्या? कोई सुराग मिला?

दोनों होफमैन ने सिर हिलाया।

श्रीमती हॉफमैन ने गंभीरता से कहा, "हमने नॉर्स की हार्वर्ड शहर के इतिहास की किताब में जाँच की है, और उसमें हिल नाम का एक औपनिवेशिक ड्रमर था जिसे इस क्षेत्र में कुछ कुकर्मों के लिए फाँसी दी गई थी।"

मुझे याद आया कि उसने मुझे पुअर फार्म रोड पर उनके अपने घर में एक भूत के बारे में बताया था, और श्रीमती हॉफमैन ने मुझे इस कहीं अधिक सौम्य प्रेत के बारे में विस्तार से बताया।

उन्होंने बताया, "गर्मी के महीनों के दौरान, एक क्वेकर महिला जैसी दिखने वाली आकृति हमारे सामने वाले लॉन से होकर गुजरती है, आमतौर पर दोपहर के समय। यह व्यक्ति अक्सर दिन में कई बार दिखाई देता है।"

उसके पति ने बताया कि उसने उसे भूत के पहनावे के बारे में कई विवरण दिए थे, जिनकी उसने प्रामाणिकता की जाँच की। उसने पाया कि वे वास्तव में अठारहवीं शताब्दी की क्वेकर महिलाओं द्वारा पहने जाते थे।

हम शायद कभी नहीं जान पाएंगे कि क्वेकर्स जैसे इतने सौम्य स्वभाव के व्यक्ति का भूत में परिवर्तित होना क्यों स्वाभाविक था, लेकिन शायद किसी दिन वह क्वेकर महिला मेरे लिए फिर से चलने लगेगी।

* * *

कहा जाता है कि पुराने बोस्टन में पानी के किनारे एक समुद्री डाकू का भूत रहता है, जहाँ मैसाचुसेट्स के ब्रिटिश शासन के समय में कई गुप्त रास्ते हुआ करते थे। खाड़ी में स्थित वारेन द्वीप की काली महिला को कई लोगों ने देखा है। अमेरिकी गृहयुद्ध के दौरान उसे अपने पति, जो एक अमेरिकी कैदी था, को जेल से भागने में मदद करने के आरोप में फाँसी दे दी गई थी।

बोस्टन का भावनात्मक माहौल विशेष आयोजनों के लिए बिल्कुल उपयुक्त है। यहाँ भले ही कोई मध्ययुगीन महल न हो, लेकिन बीकन हिल भी काफी भयावह लग सकता है—खासकर नवंबर की सर्द रात में जब समुद्र से कोहरा छा जाता है।

सितंबर 1963 में मैं माइक डगलस के टेलीविजन शो, डब्ल्यूबीजेड-टीवी पर उपस्थित हुआ, जहाँ मैंने भूतिया घरों में अपनी निरंतर रुचि के बारे में चर्चा की। इसके परिणामस्वरूप, मुझे ढेरों पत्र प्राप्त हुए, जिनमें से कई में नए मामलों से संबंधित सुराग थे।

एक पत्र मैसाचुसेट्स के बोस्टन के पास साउथ नेटिक की श्रीमती ऐनी वालुकिस से आया। उन्होंने मुझे अपने एक पुराने घर के बारे में लिखा, जहाँ सीढ़ियाँ अजीब समय पर अनसुनी आवाज़ करती थीं, मानो कोई उन पर ऊपर-नीचे चल रहा हो; उनके छोटे बेटे के अजीब व्यवहार के बारे में, जो घर के एक खास कमरे में होने पर दिखाई देता था; और पूरे घर में एक रहस्यमय माहौल छाया रहता था, मानो कोई अदृश्य शक्ति हमेशा मौजूद हो।

मैंने उनके बारे में और घर के इतिहास के बारे में अतिरिक्त जानकारी जुटाने के लिए लिखा। इसी बीच, बोस्टन के सार्वजनिक टेलीविजन स्टेशन, चैनल 2 ने मेरे काम में रुचि दिखाई और स्टेशन तथा मैंने साउथ नैटिक के भूतिया घर की यात्रा के लिए मिलकर काम करने का फैसला किया। निर्देशक फ्रेड बार्ज़िक ने अतिरिक्त शोध का प्रारंभिक कार्य अपने हाथ में लिया। मेरी यात्रा अक्टूबर के अंतिम सप्ताह में निर्धारित की गई थी। श्रीमती वालुकिस ने मुझे जवाब देने में देर नहीं की।

“एक हफ्ते से सीढ़ियों से कोई चरमराहट की आवाज़ नहीं आई है, लेकिन शनिवार रात मेरा चार साल का बेटा चार बार जागा और बहुत डरा हुआ था, इतना कि वह ऊपर अपने कमरे में नहीं गया... सालों पहले यह घर एक तरह का गुप्त अड्डा हुआ करता था, जो चार्ल्स नदी पर स्थित एक डांस हॉल से जुड़ा हुआ था। शायद यहाँ कुछ भी हो सकता था। कौन जाने?”

डरावनी सीढ़ियों की वजह से नहीं, बल्कि अन्य कारणों से, वालुकिस परिवार ने ऐनी के माता-पिता के घर में रहने का फैसला किया। इससे हमारी यात्रा में समस्या खड़ी हो गई, जब तक कि फ्रेड बारज़िक ने यह पता नहीं लगा लिया कि श्रीमती वालुकिस के माता-पिता का घर ऐनी वालुकिस के घर से भी ज़्यादा प्रेतवाधित था।

श्रीमती रोज़ जोसेलिन, ऐनी की माँ, एक कनाडाई मूल निवासी थीं, और अपने समुदाय के कई लोगों की तरह, उन्हें भी जीवन भर मानसिक अनुभव होते रहे थे।

मेरी उनसे मुलाकात से लगभग 39 साल पहले, श्रीमती जोसेलिन कनाडा के एनापोलिस रॉयल में एक ऐसे घर में रहती थीं, जिसके बारे में कहा जाता था कि वह भूतिया है। अक्सर वह

आधी रात को जाग जाती थीं और उन्हें सांस लेने में तकलीफ होती थी। ऐसा लगता था मानो किसी अदृश्य शक्ति ने उनकी बाहों को जकड़ रखा हो और वह अपनी एक उंगली भी हिला नहीं पाती थीं!

बाद में उसने मुझसे कहा, "ऐसा लग रहा था जैसे कोई मेरा गला घोंट रहा हो। मैंने चीखने की कोशिश की, लेकिन अपने होंठ हिला नहीं पा रही थी।"

यह सिलसिला करीब एक साल तक चलता रहा। आखिरकार रोज़ ने अपनी माँ को बताया, जो स्वयं एक माध्यम थीं, और रोज़ को फिर कभी उस कमरे में सोने से मना कर दिया गया। बीस साल बाद भी, श्रीमती जोसेलिन को कनाडा की उन रातों का भयानक डर याद था, लेकिन उसके बाद से उनके साथ ऐसा कुछ नहीं हुआ था—मतलब, जब तक वह इस घर में नहीं आईं।

यह मकान धूसर-सफेद रंग का, मध्यम आकार का, प्रारंभिक अमेरिकी शैली का मकान था, जो प्रारंभिक जॉर्जियाई वास्तुकला की भव्य शैली में निर्मित था और बहुत अच्छी तरह से संरक्षित था। यह सड़क से थोड़ा पीछे हटकर, ऊंचे, छायादार पेड़ों से घिरा हुआ था, और ऐसा लगता था मानो आप बड़े शहर की हलचल से दूर किसी शांत जगह पर हों। लगभग 150 वर्ष पूर्व निर्मित इस मकान में एक ऊपरी मंजिल और कुल आठ कमरे थे। मकान के लॉन से सटा हुआ एक कब्रिस्तान था, जो लोहे के गेट और बाड़ द्वारा जॉसलीन के मकान से अलग था।

जब जोसेलिन परिवार अपने परिवार के साथ रहने आया, तो श्रीमती जोसेलिन के मन में किसी भी तरह की अलौकिक या रहस्यमय घटना का कोई विचार नहीं था। लेकिन जल्द ही उन्हें सच्चाई का पता चल गया।

ऊपर की मंजिल पर दो शयनकक्ष थे, जो एक पतली दीवार से अलग थे। बड़ा वाला श्रीमती जोसेलिन का था; घर के पीछे वाला छोटा वाला उनके पति रॉय का था। अपने शयनकक्ष में ही श्रीमती जोसेलिन को फिर से वही भयानक अनुभूति हुई, जिसका अनुभव उन्होंने अपने कनाडाई युवावस्था में किया था। बिस्तर पर जकड़ी हुई, उन्हें ऐसा लग रहा था मानो कोई उन्हें पकड़े हुए हो।

मैंने पूछा, "तुम्हारे लेने से पहले यह किसका शयनकक्ष था?"

"मेरी बहू कुछ समय के लिए यहाँ सोई थी," श्रीमती जोसेलिन ने बताया, "मतलब, मरने से पहले।"

मैंने उस लड़की के बारे में और सवाल पूछे। 21 साल की उम्र में वह बीमार पड़ गई थी और अस्पताल ले जाने से पहले इसी कमरे में उसने अपनी आखिरी पीड़ा सहन की, और फिर कभी वापस नहीं लौटी। उसका इकलौता बच्चा, जिससे उसका स्वाभाविक रूप से बहुत लगाव था, श्रीमती जोसेलिन और श्रीमती वालुकिस ने पाला-पोसा।

मैं चलकर श्रीमती वालुकिस के 17 वर्षीय भाई डेविड जोसेलिन के छोटे से कमरे में गया। वहाँ मुझे एक हाथ से बनी लकड़ी की कुर्सी दिखाई गई, जिसके बारे में कहा जाता था कि वह कभी-कभी चरमराती है, मानो उस पर कोई बैठा हो। डेविड खुद भी कुर्सी के इस अजीब व्यवहार से कई बार जाग चुका था, और ऐनी ने भी यह आवाज़ सुनी थी। मैंने कुर्सी पर बैठकर देखा। वह काफी मजबूत थी, और केवल मेरे ज़ोर लगाने पर ही उसमें से कोई आवाज़ निकली। वह अपने आप चरमरा नहीं सकती थी।

मैंने पूछा, "तुम्हें यह कुर्सी किसने दी?"

“वही आदमी जिसने नीचे वाली हमारी घड़ी बनाई थी,” डेविड ने कहा। मुझे याद आया कि नीचे वाले कमरे के कोने में एक खूबसूरत लकड़ी की बड़ी घड़ी रखी थी। उस घड़ी की खासियत यह थी कि वह कभी-कभी टिक-टिक करती थी और उसकी सुइयाँ हिलती थीं, जबकि उसमें अब कोई पुर्जे या पेंडुलम नहीं थे!

डेविड के कमरे में रखी घड़ी, कुर्सी और मेज एक कुशल कारीगर थॉमस काउंसिल की कारीगरी थी। थॉमस काउंसिल जॉसलिन परिवार के प्रिय अतिथि थे और उन्होंने ये वस्तुएँ उनके आतिथ्य सत्कार के लिए आभार व्यक्त करने के लिए उन्हें भेंट की थीं। वे एक अकेले अविवाहित व्यक्ति थे और जॉसलिन परिवार ही उनके एकमात्र करीबी मित्र थे। डेविड विशेष रूप से उनका प्रिय था। आशा है कि थॉमस काउंसिल का पार्थिव शरीर कब्रिस्तान में शांतिपूर्वक दफन है और जॉसलिन परिवार उनकी कब्र पर हमेशा ताजे फूल रखने का पूरा ध्यान रखता था।

मैंने श्रीमती जोसेलिन के कमरे में वापस जाने का फैसला किया।

मैंने कहा, "यहां और कनाडा में आपके भयावह अनुभवों के अलावा, क्या आपके साथ कोई अन्य मानसिक घटनाएँ घटी हैं?"

श्रीमती जोसेलिन, जो लगभग 59 वर्ष की एक गंभीर और शांत महिला थीं, ने एक क्षण के लिए सोचा।

“हां, अक्सर। जब भी मेरे बच्चे किसी मुसीबत में होते हैं, मुझे तुरंत पता चल जाता है। चाहे वह कितनी भी छोटी बात क्यों न हो। आप कह सकते हैं कि हमारा टेलीपैथिक संपर्क है।”

"क्या आपने सड़क के उस पार अपनी बेटी के घर की सीढ़ियों से आने वाली चरमराहट की आवाज भी सुनी?"

"हां, कई बार।"

"क्या यह घटना आपकी बहू के निधन के बाद हुई थी या उससे पहले?"

"बाद में।"

"मैंने ऊपर से उन कदमों की आवाज साफ सुनी, और घर में मेरे और बच्चे के अलावा कोई नहीं था," ऐनी वालुकिस ने पुष्टि करते हुए कहा।

मुझे ऐसा लगा कि उन सभी से मुलाकात हो चुकी थी, सिवाय पिता रॉय जोसेलिन के। अब समय आ गया था कि मैं उनकी तरफ ध्यान दूं।

श्री जोसेलिन अपने कमरे में बिस्तर पर चुपचाप पाइप पीते हुए बैठे थे। फ्रेड बार्ज़िक ने मुझे पहले ही आगाह किया था कि घर के मुखिया को अलौकिक चीज़ों में कोई खास विश्वास नहीं था। मुझे राहत मिली जब मैंने पाया कि श्री जोसेलिन कम से कम खुले विचारों वाले थे। मुझे यह भी पता चला कि वर्मोंट में रहने वाली उनकी एक परदादी आध्यात्मिक माध्यम थीं।

मैंने उनसे पूछा कि क्या उन्होंने कुछ असामान्य देखा या सुना है।

“खैर,” उसने कहा, “लगभग एक साल पहले मुझे यहाँ आसपास कुछ कराहने और आहें भरने की आवाज़ें सुनाई देने लगीं...,” उसने अपनी पत्नी के शयनकक्ष से सटी दीवार की ओर इशारा किया। “पहले तो मुझे लगा कि मेरी पत्नी है, लेकिन उस समय उसके कमरे में कोई नहीं था। मैंने देखा।”

"यह कराहने की आवाज़...क्या यह किसी इंसान की आवाज़ थी?"

"हाँ, बिलकुल मानवीय।" जब तक यह चलता रहा, एक पल भी नींद नहीं आई।

आपने इसे आखिरी बार कब सुना था?

“कल,” उन्होंने संक्षिप्त लहजे में कहा।

"आप और आपकी बहू के बीच संबंध कैसे थे?" मुझे अचानक यह पूछने की तीव्र इच्छा हुई।

“बिल्कुल,” उसने कहा। “दरअसल, वह मुझसे बाकी सब लोगों से ज़्यादा लगाव रखती थी। आप जानते ही हैं कि औरतें कैसी होती हैं—थोड़ी ईर्ष्यालु। अपने बच्चे को लेकर वह थोड़ी ज़्यादा ही अधिकार जताने वाली थी। मतलब, वह बच्चे को लेकर बहुत चिंतित रहती थी।”

लेकिन क्या वह तुमसे ईर्ष्या करती थी?

नहीं, मेरी तरफ से नहीं। हम बहुत करीब थे।

मैंने उस 21 वर्षीय लड़की के बारे में सोचा जिसे बिना तैयारी के ही मौत ने छीन लिया, और उसके बच्चे के लिए उसके मन में जो डर के विचार आए होंगे, वे भयानक अंतिम घंटों में उसके मन में जरूर आए होंगे जब उसकी कराह रॉय जोसेलिन के बगल वाले कमरे की हवा में गूंज रही थी।

मैंने श्रीमती रॉय जोसेलिन की पृष्ठभूमि के बारे में भी सोचा—कि वह मिकमैक भारतीय जनजाति की राजकुमारी थीं। मुझे याद आया कि भारतीयों में मानसिक अनुभव कितने आम थे, जो हम शहरी लोगों की तुलना में प्रकृति के कहीं अधिक करीब हैं।

शायद 21 वर्षीय युवती की बेचैन आत्मा को किसी के ध्यान की ज़रूरत थी। शायद उसके अंतिम क्षणों का गहरा प्रभाव ऊपरी कमरे के वातावरण पर पड़ा था और परिवार के संवेदनशील सदस्यों ने उन्हें फिर से महसूस किया था। शायद, परिवार के मित्र थॉमस काउंसिल भी कभी-कभी घर में घूमते रहते थे ताकि यह सुनिश्चित कर सकें कि उनके प्रिय परिवार में सब कुछ ठीक है।

जब हम उस रात देर से बोस्टन वापस जा रहे थे, तो मुझे पूरा यकीन था कि मैं एक प्रेतवाधित परिवार से मिला था, चाहे वह अच्छा हो या बुरा।

*142

अलबामा स्टे-बिहाइंड्स

वॉरेन एफ. गॉडफ्रे एक शिक्षित व्यक्ति हैं जो ह्यूस्टन स्थित नासा केंद्र में काम करते हैं। उन्हें और उनकी पत्नी ग्वेन को तंत्र-मंत्र में कोई विशेष रुचि नहीं थी और वे हमेशा अपनी कल्पनाओं को बेकाबू होने से रोकने का प्रयास करते थे। वे हंट्सविले, अलबामा में एक घर में रहते थे, जो उनके रहने के समय मात्र तीन साल पुराना था। शुरुआत में उन्हें बस इतना आभास होता था कि घर उन्हें नहीं चाहता। यह बात पक्की नहीं थी, लेकिन समय बीतने के साथ-साथ वे बार-बार पीछे मुड़कर देखते थे कि कहीं कोई उनका पीछा तो नहीं कर रहा है, और ऐसा करना उन्हें अजीब लगता था। फिर धीरे-धीरे अजीबोगरीब आवाजें आने लगीं। आमतौर पर ऐसी आवाजें उन्हें परेशान नहीं करती थीं, और उन्होंने घर के बैठने को इसका कारण मानने की पूरी कोशिश की। छत में दरारें पड़ गईं, कोनों से चटकने और टूटने की आवाजें आने लगीं, फिर दीवारें भी आपस में टकराने लगतीं, और थोड़ी देर बाद फिर सन्नाटा छा जाता। नल बिना किसी स्पष्ट कारण के टपकने लगते। दरवाजे अपने आप खुलते और बंद होते, और अलमारी में रखा बर्तन अपने आप खिसक जाता। ये सब शायद घर के बैठने के कारण हो सकता था, लेकिन शोर धीरे-धीरे व्यवस्थित होता चला गया। वॉरेन ने गौर किया कि घर का एक खास माहौल था। ऐसा लग रहा था मानो घर उस युवा जोड़े की खुशी में खलल डाल रहा हो। ऐसा लग रहा था मानो घर किसी भी तरह से उनके साथ को भंग करना चाहता हो, और उसने उन्हें उदास कर दिया था।

फिर दरवाज़े पर दस्तकें सुनाई देने लगीं। पहले तो ये नियमित अंतराल पर एक-एक करके तेज़ आवाज़ में घर के एक हिस्से से दूसरे हिस्से तक आती थीं। वॉरेन बाहर भागा और घर के बाहर, नीचे और हर जगह जाँच की, लेकिन उसे दस्तकों का कोई कारण नहीं मिला। यह सब जारी रहने से वे और भी उदास हो गए और दोनों में से किसी को भी घर में अकेले रहना अच्छा नहीं लगता था। 1968 में थैंक्सगिविंग के आस-पास वे कुछ दिनों के लिए वॉरेन की माँ से मिलने इलिनोइस गए। खाली घर लौटने पर वे शांत और खुशहाल लगे। क्रिसमस से कुछ समय पहले, वॉरेन को व्यापार के सिलसिले में ह्यूस्टन जाना पड़ा। जब वह चले गए थे, तब ग्वेन ने अपनी बेटी लीह की एक तस्वीर खींची। जब तस्वीर डेवलप हुई, तो फिल्म पर एक

अतिरिक्त चेहरा दिखाई दिया, जिसका चेहरा साइड से दिख रहा था और उसने किसी तरह की टोपी पहनी हुई थी। वॉरेन, जो एक वैज्ञानिक थे, ने यह सुनिश्चित किया कि फिल्म पर इस अतिरिक्त चेहरे का कोई प्राकृतिक कारण न हो। डबल एक्सपोज़र को रोकने वाले मैकेनिज़्म वाले कोडक इंस्टामैटिक कैमरे का उपयोग करके, उन्होंने तस्वीर की एक कॉपी बनाई और यह भी सुनिश्चित किया कि किसी प्रतिबिंब के कारण दूसरी छवि न बनी हो। फिल्म में दिखाई देने वाले दूसरे चेहरे की प्राकृतिक उत्पत्ति को खारिज करने के लिए पर्याप्त सबूत प्राप्त करने से संतुष्ट होकर, उन्होंने तस्वीर की मानसिक उत्पत्ति को स्वीकार कर लिया।

लगभग उसी समय उन्हें आवाजें सुनाई देने लगीं। एक रात वॉरेन की नींद खुली तो उसने पास के कमरे में दो आदमियों को झगड़ते सुना। पहले तो उसने इसे बुरा सपना समझकर नज़रअंदाज़ कर दिया और सो गया, लेकिन कुछ रातों बाद फिर वही हुआ। थोड़ी देर सुनने के बाद उसने कंधे उचकाए और सो गया। उसे उनकी एक भी बात समझ नहीं आ रही थी, लेकिन उसे यकीन था कि दो आदमी झगड़ रहे हैं। कुछ हफ्तों बाद उसकी पत्नी को भी आवाजें सुनाई देने लगीं। वॉरेन को इससे तसल्ली मिली, क्योंकि अब वह अकेला नहीं था जो ये आवाजें सुन रहा था। दोनों को ये आवाजें आमतौर पर रात के 1 बजे के आसपास सुनाई देती थीं। दो आदमियों के झगड़ने के अलावा, ग्वेन ने एक औरत के रोने की आवाज भी सुनी है और वॉरेन ने लोगों के हंसने की आवाज सुनी है। ये आवाजें सीधे उनकी तरफ नहीं आतीं, न ही उन्हें लगता है कि इनमें कुछ बुराई है। धीरे-धीरे उन्होंने इन्हें नज़रअंदाज़ करना सीख लिया। एक प्रशिक्षित वैज्ञानिक होने के नाते, वॉरेन ने इस घटना को समझाने के लिए तर्कसंगत तरीका अपनाया, लेकिन उसे कोई कारण नहीं मिला। लाइट जलाने से भी कोई फायदा नहीं हुआ। यह घटना केवल मुख्य शयनकक्ष में ही घटित होती थी। सुबह के उस समय कोई टीवी चैनल नहीं चल रहा था, और आस-पास कोई घर भी इतना करीब नहीं था कि इंसानों की आवाज़ें इतनी दूर तक सुनाई दें। एक प्राकृतिक कारण ढूंढने की कोशिश में, वॉरेन ने सोचा कि शायद उस इलाके के नीचे गुफाएँ हों, लेकिन उन्हें जो आवाज़ें सुनाई दे रही थीं, वे बहते पानी की नहीं थीं। वे इंसानों की आवाज़ें थीं और वे ठीक उसी कमरे में उनके साथ थीं। उन्होंने अपने अनदेखे मेहमानों के साथ जीना सीखने का फैसला किया और शायद भूत उन्हें अपनी "समस्या" के बारे में बता दें। वॉरेन और ग्वेन उनके बारे में कुछ खास नहीं कर सकते थे,

लेकिन यह जानना हमेशा अच्छा लगता है कि आपके दोस्त क्या बातें कर रहे हैं, खासकर जब आप उनके साथ अपना कमरा साझा करते हैं।

* * *

मैरी कैरोल हेनरी तीस वर्ष की आयु के आसपास हैं, मॉन्टगोमरी में रहती हैं और अमेरिकी वायु सेना में एक मेडिकल तकनीशियन से विवाहित हैं। वह सात बच्चों की माँ हैं और बचपन से ही उन्हें मानसिक अनुभव होते रहे हैं। जब मैरी बारह वर्ष की थीं, तब उनके बड़े भाइयों में से एक पिट्सबर्ग चले गए। उन्होंने फर्नीचर और अन्य सामान उठाने में मदद की और रात भर रुकने का फैसला किया ताकि सुबह जल्दी काम खत्म करने में उनकी मदद कर सकें। घर पिट्सबर्ग के हेज़लवुड इलाके में एक पुराना चार मंजिला मकान था। मैरी और बच्चे तीसरी मंजिल पर सोए, लेकिन उन्हें वहाँ रुकने में बहुत बेचैनी महसूस हो रही थी। किसी तरह वह घर उन्हें परेशान कर रहा था। चूंकि उन्होंने रात भर रुकने का वादा किया था, इसलिए वह रात लगभग 10 बजे बिस्तर पर गईं और कुछ देर बिस्तर पर लेटी रहीं और सोचती रहीं कि घर उन्हें क्यों परेशान कर रहा है। उनके भाई का बच्चा उनके साथ उसी कमरे में सो रहा था और थोड़ी देर बाद उनका भाई बच्चे को देखने ऊपर आया। फिर उन्होंने उसे नीचे जाते हुए सुना। मैरी को ठीक से याद नहीं था कि कितना समय बीत गया था जब उन्हें लगा कि वह फिर से ऊपर आया है। अखबारों की सरसराहट जैसी कोई आवाज़ आई, और उसने सोचा कि यह उसका भाई होगा, क्योंकि वह बाथरूम जाते समय अखबार साथ ले जाने की आदत रखता था। वह पलटी, और अपने भाई की जगह, उसे आश्चर्य हुआ कि एक छोटी लड़की अलमारी से बाहर आ रही है। उसने तुरंत उसे अपनी छोटी बहन पैट्सी के रूप में पहचान लिया, जिसकी अगस्त 1945 में पाँच साल की उम्र में गैस विस्फोट में मृत्यु हो गई थी। भूत ने वही गाउन पहना हुआ था जिसमें उसे दफनाया गया था और वह बिल्कुल वैसी ही दिख रही थी जैसी वह जीवित रहते समय दिखती थी, लेकिन किसी तरह उसका शरीर थोड़ा बड़ा लग रहा था। उसका रूप हरे प्रकाश से घिरा हुआ था। जब मैरी अविश्वास से देख रही थी, भूत बिस्तर के पास आया और उसके किनारे पर बैठ गया। मैरी ने देखा कि बिस्तर सचमुच उस जगह धंस गया जहाँ पैट्सी बैठी थी। फिर उसकी बहन ने मैरी के हाथों पर हाथ रखा और उसके गाल पर चुंबन किया। मैरी को वह चुंबन ऐसा लगा जैसे किसी जीवित व्यक्ति का चुंबन

हो। फिर वह भूत गायब हो गया। डर से स्तब्ध मैरी बिस्तर से उछल पड़ी और बाकी रात सीढ़ियों पर बिताई। जब उसने बाद में अपनी मां को अपना अनुभव बताया, तो उसकी मां ने उसे आश्वासन दिया कि उसकी दिवंगत बहन केवल उसे सांत्वना देने के लिए वापस आई थी, जो कि उसके लिए अपरिचित परिवेश रहा होगा, क्योंकि अगर मैरी को उस रात कोई भूत दिखाई देता, तो वह परिवार का ही कोई सदस्य हो सकता था, न कि कोई अजनबी।

*143

अर्कांसस स्टे-बिहाइंड्स

हॉलीग्रोव पूर्वी अर्कांसस का एक छोटा सा कस्बा है, लेकिन शैरन इनेबनिट के लिए यह उसकी दुनिया का केंद्र है। वह अपने किसान पति के साथ शांत, ग्रामीण अर्कांसस में, महानगरों से दूर, वहीं रहती है। लिटिल रॉक बहुत दूर है और ऐसी जगह नहीं है जहाँ कोई अक्सर जाना चाहे। उसकी माँ मिसिसिपी राज्य की सीमा के पास हेलेना में रहती है। हाईवे 86 और फिर 49 पर पूर्व की ओर यात्रा करते हुए शैरन अपने बचपन में कई बार यहाँ आ-जा चुकी है। वह इस इलाके को अच्छी तरह जानती है। यह कोई खास इलाका नहीं है, लेकिन इसकी एक खासियत है; यह बहुत शांत है। हॉलीग्रोव और हेलेना के लगभग बीच में एक पुराना घर है जो शैरन को हर बार अपनी ओर खींचता है जब वह उसके पास से गुजरती है। इसका कोई खास कारण नहीं था, फिर भी जब भी वह उस पुराने घर के पास से गुजरती, उसके मन में यह सवाल उठता कि आखिर उस घर का रहस्य क्या है।

शेरोन अब बीस साल की हो चुकी है। उसे बचपन से ही असाधारण संवेदनशीलता (ईएसपी) प्राप्त है। उसके इलाके में इस विषय पर खुलकर बात नहीं की जाती। लोग या तो उसका मज़ाक उड़ाते हैं, या इससे भी बुरा, उसे शैतान का साथी समझते हैं। इसलिए शेरोन ने अपनी इस शक्ति को छिपाए रखा, हालांकि कई बार लोग उससे हैरान हो जाते थे। उसे अक्सर ऐसे लोगों की आवाज़ें सुनाई देती थीं जो उसकी नज़रों से ओझल भी नहीं होते थे। अगर वह चाहती कि कोई उसे फ़ोन करे, तो उसे बस उस व्यक्ति की कल्पना करनी होती थी और झट से वह उसे फ़ोन कर देता था। जब भी टेलीफ़ोन की घंटी बजती है, उसे ठीक-ठीक पता होता है कि कौन फ़ोन कर रहा है। अक्सर उसने अपने पड़ोसियों को अपने घर से 500 गज दूर बात

करते सुना है, फिर भी वह इतनी संवेदनशील है कि तेज़ आवाज़ में टीवी देखना उसे बर्दाश्त नहीं होता।

उसके पति, जो स्विस मूल के किसान हैं, उसकी शक्तियों पर कुछ संदेह करते हैं। अब उनका संदेह पहले से कम है, जितना तब था जब वे उससे पहली बार मिले थे। 1963 की गर्मियों में जब वह और उसका वर्तमान पति पहली बार मिले थे, तब वह उसके लिए एक पहेली जैसी थी। एक दिन, पंद्रह वर्षीय लड़की ने ज़िद की कि वे हेलेना चलें, जो उस समय उनके स्थान से लगभग पाँच मील दूर था। उसके प्रेमी को यह जानना था कि क्यों। उसने ज़ोर देकर कहा कि वहाँ बेसबॉल का खेल चल रहा है और नगरपालिका के स्विमिंग पूल में एक निजी स्विमिंग पार्टी चल रही है। हालाँकि, उसके पास यह कहने का कोई कारण नहीं था, न ही इसका कोई प्रमाण था, लेकिन वे दोनों बेसबॉल खेलों में बहुत रुचि रखते थे, इसलिए उसके प्रेमी ने उसकी बात मान ली और हेलेना जाने का फैसला किया। जब वे हेलेना पहुँचे, तो उन्होंने पाया कि वास्तव में बेसबॉल का खेल चल रहा था और नगरपालिका के स्विमिंग पूल में एक निजी स्विमिंग पार्टी चल रही थी, जैसा कि शैरन ने कहा था। हेलेना की आबादी 10,000 से अधिक है। शैरन 25 मील दूर रहती है। उसे यह कैसे पता चला होगा?

मार्च 1964 में उनकी नानी का देहांत हो गया। वह अपनी नानी के बहुत करीब थीं, लेकिन किसी कारणवश उनके अंतिम क्षणों में उनसे मिल नहीं पाईं। इस मृत्यु से उन्हें गहरा सदमा लगा और नानी के देहांत से पहले उनसे न मिल पाने का उन्हें बहुत अफ़सोस हुआ। अंतिम संस्कार के दिन, उन्हें अचानक ऊपर देखना पड़ा और उनके सामने उनकी दिवंगत नानी प्रकट हुईं। मुस्कुराते हुए, उन्होंने सिर हिलाया और फिर गायब हो गईं। लेकिन उस थोड़े समय के लिए जब नानी उन्हें दिखाई दीं, तो लड़की समझ गई कि उसकी नानी उसे क्या बताना चाहती थीं। संदेश संक्षिप्त था। नानी समझ गई थीं कि वह अपने अंतिम क्षणों में उनसे क्यों नहीं मिल पाईं और उन्हें क्षमा करना चाहती थीं।

अप्रैल 1964 में, जब वह महज सोलह वर्ष की थीं, उनकी शादी उनके वर्तमान पति से हुई। वे चार दिनों के लिए टेनेसी के मेम्फिस गए। हनीमून के दौरान, शैरन लगातार घर लौटने की ज़िद करती रहीं। उन्हें घर पर कुछ गड़बड़ महसूस हो रही थी, हालांकि वह इसका सटीक कारण नहीं बता पा रही थीं। हालांकि साल का गर्म मौसम नहीं था, फिर भी उन्हें बहुत गर्मी

और बेचैनी महसूस हो रही थी। आखिरकार उनके पति उनकी ज़िद के आगे झुक गए और उनके साथ घर लौट आए। यह सोचकर कि शायद उन्हें सड़क पर किसी दुर्घटना का डर था, उन्होंने ज़ोर देकर कहा कि वे बहुत सावधानी से और धीरे-धीरे गाड़ी चलाएँ। कोई दुर्घटना नहीं हुई। हालांकि, जब वे अपने घर के प्रवेश द्वार पर पहुँचे, तो उन्हें पता चला कि इतनी दूर से उन्हें क्या महसूस हो रहा था। उनकी माँ के घर के सामने एक बड़े खाद के ट्रक ने एक पेट्रोल ट्रक को टक्कर मार दी थी। भीषण आग लग गई थी, जिससे उनकी माँ का घर भी बाल-बाल बच गया था। आग की लपटें पाँच मील से अधिक दूर के कस्बों में भी साफ़ दिखाई दे रही थीं। दोनों ट्रक पूरी तरह जलकर राख हो गए थे। टेनेसी के मेम्फिस तक पूरे रास्ते उन्हें उसी आग की गर्मी महसूस हो रही थी।

हॉलीग्रोव के बाहर वाला वह घर उसे अपनी ओर खींचता रहा और किसी तरह वह उसे भूल नहीं पाई। जब भी उसे उस घर के पास से गुजरने का मौका मिलता, वह गाड़ी चलाकर जाती, घर को निहारती और सोचती कि उसमें क्या रहस्य छिपा है। एक बार उसे ऐसा लगा जैसे उसने उस खाली घर के अंदर किसी को पियानो बजाते सुना हो। लेकिन ऐसा हो नहीं सकता था; वह जानती थी कि अंदर कोई नहीं रहता था। शायद अगर घर में पियानो था भी, तो चूहे कीबोर्ड पर उछल-कूद कर रहे हों। उसने सिर हिलाकर इस बात को खारिज कर दिया। शायद उसने सिर्फ कल्पना की हो। लेकिन किसी तरह पुराने पियानो पर बजते गानों की आवाज़ उसके मन में गूंजती रही। उसने उस घर के बारे में कुछ शोध करने का फैसला किया।

हॉलीग्रोव में टॉम कैमरन की एक एंटीक की दुकान है, और चूंकि पुराने घर में एंटीक का ढेर लगा होने की संभावना थी, इसलिए उनसे इस बारे में पूछना ही सही रहेगा। कम से कम शैरन की तो यही राय थी। वह एंटीक देखने का बहाना करते हुए दुकान में दाखिल हुई। एक महिला क्लर्क उसके पास आई और एक पुराने लैंप की ओर इशारा करते हुए बोली, "मैं आपको कुछ दिखाना चाहती हूँ जिसमें आपकी दिलचस्पी होगी। यह यहाँ के पुराने मुल्स के घर से आया है।" शैरन दंग रह गई। मुल्स का घर ही वह घर था जिसमें उसकी दिलचस्पी थी। उसने क्लर्क से मुल्स के घर में रखे एंटीक के बारे में पूछना शुरू किया। पता चला कि पिछले कुछ सालों में उनमें से कई एंटीक चोरी हो गए थे या गायब हो गए थे। तब से घर की रखवाली के लिए एक

केयरटेकर नियुक्त किया गया था। इसी समय दुकान के मालिक टॉम कैमरन भी बातचीत में शामिल हो गए। उनसे शैरन को पता चला कि यह घर टॉम मुल्स का था, जिनका निधन हो चुका था, लेकिन श्रीमती मुल्स, हालांकि काफी उम्रदराज थीं, अभी भी जीवित थीं और लिटिल रॉक के एक सैनिटेरियम में रह रही थीं। कैमरन स्वयं दिवंगत मालिकों के कई वर्षों से मित्र थे। यह घर कैप्टन मुल्स द्वारा बनवाया गया था, जिनका निधन लगभग 1935 में हो गया था। यह मूल रूप से सेंट ऑगस्टीन, फ्लोरिडा में बनाया गया था और बाद में इसे हॉलीग्रोव में स्थानांतरित कर दिया गया था।

कप्तान अविवाहित थे, फिर भी जब यह घर हॉलीग्रोव में स्थित था, तब उनके साथ एक महिला रहती थी। यह एक मूल अमेरिकी महिला थी, जिनसे उनकी दोस्ती हो गई थी और जो अपनी मृत्यु तक उनके साथ रहीं। बाद में घर के वारिस बने टॉम मुल्स, उनके दत्तक पुत्र थे। जाहिर है, कप्तान मुल्स अपनी मूल अमेरिकी प्रेमिका से बहुत प्यार करते थे। उनकी मृत्यु के बाद, उन्होंने उनके शरीर को संरक्षित करवाया और एक कांच के ताबूत में रखवाया, जिसे उन्होंने घर के एक कमरे में रखा। यह ताबूत उनकी मृत्यु तक वहीं रहा, और जब टॉम ने घर का कार्यभार संभाला, तो उन्होंने ताबूत को पास के कब्रिस्तान में दफना दिया। उनकी कब्र आज भी उस कब्रिस्तान में मौजूद है। उनके जीवनकाल में घर में भारतीय लोककथाओं से संबंधित कई अवशेष और कागजात थे, लेकिन वे सब गायब हो चुके हैं। वह महिला बहुत अच्छा पियानो बजाती थी, और उन्हीं के लिए कप्तान ने एक बहुत ही बढ़िया पियानो खरीदा था। कई बार वह बैठकर उनके द्वारा बजाए गए गीतों को सुनते थे, जो उनके मनोरंजन के लिए बजाए जाते थे।

यह घर कई सालों से खाली पड़ा है, लेकिन ताला लगा होने के बावजूद लोग इसे देखने से खुद को रोक नहीं पाते। वे सामने की सीढ़ियों तक जाते हैं और खिड़कियों से अंदर झांकते हैं। शैरन को यह जानकर राहत मिली कि वह अकेली नहीं है जो इस पुराने घर की ओर अजीब तरह से आकर्षित है। दूसरों को भी इस घर ने "बुलाया" है, मानो अंदर कोई उन्हें इशारा कर रहा हो। सालों से इस घर के पास से गुजरने वाले अजनबी श्री कैमरन के पास इस खाली घर से आती हुई संगीत की अजीबोगरीब कहानियां लेकर आते रहे हैं। लोगों ने जो सुना है, वह किसी टूटे हुए पियानो की कील पर दौड़ते चूहों की सरसराहट नहीं थी, बल्कि निश्चित धुनें थीं, एक के

बाद एक गीत जो कुशल हाथों से बजाए जा रहे थे। आखिरकार यह घर राज्य के हाथों में चला जाएगा क्योंकि श्रीमती मुल्स की कोई संतान नहीं है। लेकिन शैरन को शक है कि घर के दोबारा हाथ बदलने से भूत वहां से चला जाएगा। वह उसकी उपस्थिति को महसूस करती है, जो पूरी तरह से जीवित है और इस पुराने घर में रहने से पूरी तरह संतुष्ट है। यह सच है कि अब वह एक अलग तरह के श्रोताओं के लिए गाती है, जैसा कि वह कैप्टन मुल्स के जीवित रहते हुए गाती थी, लेकिन क्या यह संभव है कि कैप्टन ने भी वहीं रुकने का फैसला किया हो, कम से कम उन गानों को सुनने के लिए जो वह उनके मनोरंजन के लिए गाती रहती है।

*144

जॉर्जिया में पीछे रह गए लोग

जॉर्जिया राज्य, विशेषकर अटलांटा के आसपास का क्षेत्र, मानसिक शक्तियों के अनुसंधान में रुचि रखने वाले लोगों से भरा हुआ है। क्या इसका संबंध इस तथ्य से है कि इस क्षेत्र में ऐसे कई मामले मौजूद हैं, या यह केवल इसलिए है कि जॉर्जिया में कुछ उत्कृष्ट विश्वविद्यालय और महानगर हैं जहाँ कई वर्षों से असाधारण आध्यात्मिकता (ESP) में लोगों की रुचि अधिक रही है, यह कहना कठिन है। लेकिन यह सच है कि मुझे अटलांटा क्षेत्र और सामान्य रूप से जॉर्जिया से मिसिसिपी या लुइसियाना की तुलना में कहीं अधिक रुचि के मामले प्राप्त होते हैं। ऐसे अनुभव रखने वाले या ESP प्रतिभाओं से संपन्न लोगों का स्तर भी काफी ऊंचा है। ग्रामीण जॉर्जिया के एक विज्ञान शिक्षक ए. डब्ल्यू. सी. कहते हैं कि वे भूतों जैसी चीजों में विश्वास नहीं करते; हालांकि, वे यह स्वीकार करने में तत्पर हैं कि उनके अनुभवों की व्याख्या केवल मानसिक शक्ति से ही की जा सकती है। जब वे किशोर थे, तब वे अपनी दादी के बहुत करीब थे, भले ही वे 150 मील दूर रहती थीं। एक रात, जब वे बिस्तर पर थे, तो वे जागे और उन्होंने अपनी दादी को अपने कमरे के कोने में खड़ा देखा। पहले तो उन्हें लगा कि वे कल्पना कर रहे हैं। उसने अपनी आँखें बंद कीं और एक बार फिर देखा, लेकिन वह अभी भी वहीं थी। अब उसने अपना सिर ढँक लिया और थोड़ी देर बाद पीछे मुड़कर देखा; दादी अभी भी वहीं खड़ी थीं। उसी समय उसने रसोई में कदमों की आहट सुनी और यह देखने के लिए उठा कि क्या कोई रसोई में आया है, लेकिन उसे आश्चर्य हुआ कि वहाँ कोई नहीं था। जब वह अपने

शयनकक्ष में लौटा, तो उसने अपने तार्किक मन से यह निष्कर्ष निकाला कि उसने जो देखा था वह दीवार पर टंगी कोई पोशाक या कपड़ा था, न कि उसकी दादी। सुबह वह इसकी पुष्टि करेगा। सुबह हुई और उसने जाँच की, उस कमरे के कोने में कुछ भी नहीं था। हालाँकि, कुछ दिनों बाद परिवार को एक टेलीग्राम मिला जिसमें बताया गया था कि दादी को स्ट्रोक आया है और उनकी मृत्यु निकट है। स्पष्ट रूप से उस युवक ने अपने प्रिय रिश्तेदार की एक परछाई देखी थी, उस समय जब उनके शरीर का आंशिक विघटन हो चुका था। कुछ ही समय बाद दादी का देहांत हो गया।

लेकिन श्री सी. न केवल मानसिक संवेदनाओं के प्राप्तकर्ता रहे हैं, बल्कि वे उन्हें भेज भी सकते हैं, हालांकि यह उनकी इच्छा पर निर्भर नहीं था। द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान वे फ्रांस में सेना के साथ थे। उनका परिवार अक्सर विदेश में उनके भविष्य के बारे में चर्चा करता था। एक शाम उनकी पत्नी, बहन और एक चाची, जिन्होंने उनका पालन-पोषण किया था और जो उनसे विशेष रूप से करीबी थीं, अपने घर में लकड़ी के चूल्हे के सामने बैठी थीं। अचानक चाची चीखने लगीं। भयभीत होकर उन्होंने बताया कि उन्होंने चूल्हे की लपटों में श्री सी. का चेहरा देखा। ठीक उसी क्षण श्री सी. फ्रांस में घायल हो गए।

* * *

जॉर्जिया के अटलांटा निवासी रॉबर्ट मुलिनाक्स की उम्र बीस वर्ष के आसपास है। सत्रह वर्ष की आयु में, 1967 में, उनके साथ एक ऐसा अनुभव हुआ जिसे वे कभी नहीं भूल पाएंगे। उनकी माँ को अक्सर भविष्यवाणियाँ हो जाती थीं और शायद यह प्रतिभा उनमें भी आ गई थी। अप्रैल के उस विशेष दिन, श्रीमती मुलिनाक्स पूरे दिन बहुत बेचैन थीं, मानो कुछ होने वाला हो। उन्हें लग रहा था कि उन्हें अपनी भाभी को फोन करना चाहिए, लेकिन किसी तरह वे ऐसा करने से चूक नहीं रही थीं। वे बहुत करीबी नहीं थीं; वास्तव में, पच्चीस वर्षों में वे एक-दूसरे से केवल तीन बार ही मिली थीं। उस शाम उन्हें पता चला कि उन्हें अपनी भाभी को फोन करने की इतनी तीव्र इच्छा क्यों हो रही थी। उनकी भाभी ने खुद को गोली मारकर आत्महत्या कर ली थी।

उनकी मृत्यु के दो दिन बाद, युवा रॉबर्ट अपने घर में एक बड़े दर्पण के सामने खड़ा था। यह उनके बैठक कक्ष में था और वह अपने बाल संवारने ही वाला था कि उसने अपने पीछे दर्पण में अपनी चाची को देखा। वह मुड़ा और सचमुच, वह लगभग छह फीट की दूरी पर खड़ी थी। जैसे ही उसने उसे करीब से देखा, वह गायब हो गई। उस क्षणिक क्षण में युवा रॉबर्ट को लगा कि उसकी चाची उसे कुछ कहना चाहती थी—शायद अपने किए पर पछतावा व्यक्त करना चाहती थी और अपने सबसे छोटे बेटे को, जिसे वह बहुत प्यार करती थी, कोई संदेश देना चाहती थी, लेकिन रॉबर्ट के संदेश को पूरी तरह समझने से पहले ही वह चली गई। इस मामले की दिलचस्प बात यह है कि भूत इतना ठोस था कि उसे दर्पण में देखा जा सकता था, वह केवल एक मतिभ्रम या व्यक्तिपरक कल्पना नहीं थी।

* * *

श्रीमती डब्ल्यू जॉर्जिया के एथेंस शहर में रहने वाली एक गृहिणी हैं। वे एक प्रमाणित नर्सरी शिक्षिका हैं, छह बच्चों की माँ हैं और कई वर्षों से उन्हें आंतरिक संवेदना (ईएसपी) का अनुभव होता रहा है। वे इस बात का जीता-जागता प्रमाण हैं कि ईएसपी संदेश कभी-कभी बहुत सटीक हो सकते हैं, जो प्राप्तकर्ता को संदेश का सार बता देते हैं और उसे किसी भी संभावित झटके के लिए तैयार करते हैं। 1946 में श्रीमती डब्ल्यू जॉर्जिया के एक अन्य शहर में रहती थीं। उस समय उनका एक बेटा ढाई साल का और दूसरा छह महीने का था। वे एक और बच्चे की गर्भवती भी थीं। उस दौरान उन्हें कई बार मानसिक प्रकृति के स्पष्ट सपने आते थे। लेकिन तीसरे बच्चे के जन्म के बाद एक रात उन्हें एक ऐसा सपना आया जो इतना तीव्र था कि उनकी नींद खुल गई। वे बेकाबू होकर रोने लगीं, इतना कि उनके पति सचमुच चिंतित हो गए। शांत होने पर उन्होंने अपने पति को बताया कि उन्होंने सपने में अपने भाई-बहनों और अपनी माँ को अपने घर के सामने के दरवाजे के शीशे से उन्हें देखते हुए देखा और वे कह रहे थे, "एम्बुलेंस बुलाओ।" उस सपने का उसके लिए कोई मतलब नहीं था, इसलिए थोड़ी देर बाद वह फिर सो गई और उसके बारे में दोबारा नहीं सोचा। तीन महीने बाद वह सपना सच हो गया। उसका भाई उसके घर के सामने आया और शीशे के बाहर खड़े होकर बोला, "एम्बुलेंस बुलाओ।" फिर उसने बताया कि उनके पिता, जो बगल वाली गली में रहते थे और जिनके पास टेलीफोन नहीं था, बिस्तर पर जाने की तैयारी करते समय दिल का दौरा पड़ने से

मर गए। तीन दिन बाद पिता का निधन हो गया। अपना दुख शांत होने के बाद ही श्रीमती डब्ल्यू को एहसास हुआ कि सपने में उन्होंने अपने परिवार के सभी सदस्यों को देखा था, सिवाय एक के—उनके पिता सपने में नहीं थे। अगर उन्हें यह बात ठीक से समझ आ जाती, तो शायद वह आने वाले सदमे के लिए ज़्यादा तैयार होतीं।

अपने पिता के साथ उनका रिश्ता बहुत करीबी था, इसलिए उनके गुज़र जाने के बाद उन्हें इस बात पर हैरानी नहीं हुई कि कई बार उन्हें ऐसा महसूस होता था जैसे वे उनके पास खड़े हों। वे उन्हें देख नहीं पाती थीं, फिर भी उनकी मौजूदगी का एहसास होता था। उपहास या इससे भी बुरी स्थिति के डर से उन्होंने इस बारे में अपने पति से बात करने में झिझक महसूस की। उस दौरान उन्होंने अपने पति को पाँच-छह बार जगाया और उनसे कहा कि उठकर दरवाज़ा बंद कर दें क्योंकि पापा अंदर आ गए थे। उनके पति को यह पसंद नहीं था, लेकिन जब उन्होंने ज़ोर दिया तो उन्होंने पत्नी को खुश करने के लिए उठना ही पड़ा। कई साल बाद तक उन्होंने इस बारे में कभी बात नहीं की, जब उनके पति ने स्वीकार किया कि हर बार जब उन्होंने उनसे दरवाज़ा बंद करने को कहा था, तो वह वास्तव में खुला हुआ था और उसके खुले रहने का कोई कारण नहीं था।

श्रीमती डब्ल्यू के पति एक काउंटी अखबार के संपादक और बहुत ही तार्किक व्यक्ति हैं। समय बीतने के साथ उन्होंने अपनी पत्नी की इस विशेष प्रतिभा को स्वीकार कर लिया था, लेकिन कई बार उन्हें यह इच्छा भी होती थी कि काश वह इतनी भविष्य देखने की क्षमता न रखतीं। एक रात उन्होंने सपना देखा कि उनके घर के पीछे कहीं एक विमान दुर्घटना हुई है और उन्होंने कुछ सेना के जवानों को जीप में आते और मृतकों के शव ले जाते देखा। सुबह उन्होंने अपने पति को इस सपने के बारे में बताया। उन्होंने कुछ नहीं कहा। हालांकि, दो हफ्ते बाद उन्होंने अपनी पत्नी से कहा कि वह "ऐसे अजीब सपने देखना बंद कर दें।" ऐसा प्रतीत हुआ कि श्री डब्ल्यू घर से दूर उसी दिशा में जा रहे थे जिसे सही मायने में "घर के पीछे" कहा जा सकता है, जब उन्होंने देखा कि एक सेना का विमान दुर्घटनाग्रस्त हो गया है और सेना के जवान जीप में घटनास्थल पर आए और कुछ शवों को ले गए, ठीक वैसे ही जैसे उनकी पत्नी ने उन्हें बताया था। श्रीमती डब्ल्यू को एहसास हुआ कि उनमें एक विशेष प्रतिभा है और शायद किसी उच्च बुद्धि ने उन्हें एक संचारक के रूप में चुना है।

सन् 1952 में अपनी बेटी करेन के जन्म के एक महीने बाद, वह दोपहर की झपकी लेने के लिए लेटी हुई थीं। उनका चेहरा दीवार की ओर था, तभी उन्हें अचानक दूसरी ओर मुड़ने की तीव्र इच्छा हुई। वहाँ उन्होंने अपने बिस्तर के पास एक सफेद चोगा पहने हुए एक आदमी को खड़ा देखा। उनका पहला विचार था कि शायद उनके शरीर में अभी भी प्रसव के दौरान दी गई दवा का कुछ अंश बचा है और शायद उन्हें मतिभ्रम हो रहा है। उन्होंने सोचा कि दीवार की ओर वापस मुड़ जाना ही बेहतर होगा। लेकिन तुरंत ही, उन्हें फिर से मुड़ने की तीव्र इच्छा हुई, और इस बार उन्होंने उस आदमी को अपनी उंगली उनकी ओर इशारा करते हुए और गंभीर चेहरे के साथ देखा। उन्हें लगा कि उन्हें तुरंत उठकर उसके पीछे जाना चाहिए। उन्होंने ठीक वैसा ही किया और सीधे अगले कमरे में चली गईं। मानो किसी स्तब्धता में हों, उन्होंने खुद को अपने पति को उनके कार्यालय में फोन करते हुए देखा। जैसे ही उनके पति ने फोन उठाया, उन्होंने उनसे कहा कि वे कोई सवाल न पूछें, लेकिन अगर उन्हें कभी भी उनकी कोई बात माननी हो, तो यही सही समय है। उसने अपने पति से कहा कि वह तुरंत करीज़ क्रीक नामक स्थान पर जाकर देखे कि उनका बेटा जो वहाँ है या नहीं। उसके पति ने आपत्ति जताई। उसने कहा कि उसे पता है कि पाँच वर्षीय बच्चा वहाँ नहीं है। फिर भी श्रीमती डब्ल्यू अड़ी रहीं। उनकी विनती इतनी ज़ोरदार थी कि उनके पति का दिल इतना पसीज गया कि वे सचमुच क्रीक पर चले गए। दस मिनट बाद उन्होंने श्रीमती डब्ल्यू को फोन करके पूछा कि उन्हें कैसे पता चला कि बच्चा सचमुच क्रीक पर है। ऐसा प्रतीत हुआ कि उन्होंने उस छोटे बच्चे को पानी के किनारे पर पानी में नीचे देखते हुए पाया। यह क्रीक कस्बे को पानी की आपूर्ति करती है और कस्बे से एक मील दूर एक व्यस्त राजमार्ग के बगल में स्थित है। बच्चा पहले कभी वहाँ नहीं गया था। अगर श्री डब्ल्यू समय पर नहीं पहुँचते तो बच्चा डूब सकता था। तब श्रीमती डब्ल्यू को एहसास हुआ कि सफेद वस्त्र पहने वह व्यक्ति उनके बच्चे को बचाने आया था।

* * *

भूत-प्रेतों की कहानियों में आने वाली विपत्ति की चेतावनी एक आम विषय है। ऐसा माना जाता है कि कभी-कभी मृत आत्माओं को जीवित लोगों को आने वाली कठिनाइयों या आपदा के बारे में चेतावनी देने का काम सौंपा जाता है, लेकिन उन्हें स्पष्ट रूप से कुछ भी बताने की

अनुमति नहीं होती। जाहिर है, इससे परीक्षा की परिस्थितियों में स्वतंत्र इच्छाशक्ति के प्रयोग में बाधा उत्पन्न होगी। ऐसा ही एक मामला डेकाटूर की श्रीमती एल. ई. नाम की एक महिला का है, जो बचपन में अपनी चाची मैरी के घर में रहती थीं। उस मुलाकात से बीस साल पहले मैरी की परदादी रेव का देहांत हो गया था। श्रीमती ई. अपने चचेरे भाइयों और बहनों के साथ घर के एक शयनकक्ष में गईं ताकि वे बाहर खेलने के लिए उसमें रखी कुछ तिपहिया साइकिलें ले आएं। जब वे कमरे के दरवाजे पर पहुंचीं तो उन्होंने देखा कि परदादी रेव कमरे के बीचोंबीच, ठीक वहीं खड़ी थीं जहाँ तिपहिया साइकिलें रखी थीं। वह बच्चों को काफी सख्ती से देख रही थीं। उन्होंने अपनी लंबी सफेद नाइटगाउन और नाइट कैप पहनी हुई थी, वही कपड़े जो उन्होंने अपनी मृत्यु के समय पहने थे। बच्चे सदमे से वहीं खड़े रह गए। उन्होंने श्रद्धा से नहीं बल्कि भय से उनका नाम लिया। फिर वे भाग निकले। जब उन्होंने घर के मालिक को उस प्रेत के बारे में बताया, तो श्रीमती ई. की चाची मैरी बहुत गंभीर थीं। उन्होंने कहा, "वह वापस आ गई है," और घर का सारा फर्नीचर उठाकर घर से दूर आँगन में ले जाने लगीं। यह अजीब व्यवहार लग रहा था, लेकिन बच्चे छोटे थे और बहुत सी बातें नहीं समझते थे। फिर चाची मैरी बच्चों को लेकर सड़क पर चलकर एक पड़ोसी के घर गईं। वहाँ उन्होंने उन्हें छोड़ दिया। कई घंटों बाद जब वे वापस लौटे तो उन्होंने देखा कि घर जलकर राख हो चुका था। तब से किसी ने भी चाची रेव का भूत नहीं देखा था।

*145

एक टकर भूत

टकर, जॉर्जिया, अटलांटा से लगभग एक घंटे की उत्तर दिशा की ओर स्थित एक शांत, उपनगरीय इलाका है जहाँ अच्छे और सामान्य लोग रहते हैं। स्टीवंस हाउस, जो 1854 से ही एक ऐतिहासिक इमारत है, मूल रूप से हाथ से तराशे गए चेस्टनट पाइन के बड़े-बड़े लट्ठों से बना था। इसके पुराने हिस्से में लगभग 1910 में एक बैपटिस्ट पादरी ने विस्तार करवाया था। अंत में, 1940 के दशक के अंत में घर में एक और हिस्सा जोड़ा गया। जब स्टीवंस परिवार ने यह घर खरीदा, तो उन्हें बताया गया कि यह मूल रूप से इस क्षेत्र में बसे भारतीय निवासियों द्वारा लगभग 1800 या उससे भी पहले बनाया गया था। यह चेरोकी क्षेत्र है और स्थानीय

परंपरा के अनुसार, भारतीय अपने बीमार लोगों को इस घर में लाते थे। वे डेकाटूर जाते समय रात भर यहीं रुकते थे। डेकाटूर वह शहर था जहाँ प्रसिद्ध डॉ. चैपमैन पॉवेल रहते थे। पॉवेल की झोपड़ी का जीर्णोद्धार किया गया है और अब यह स्टोन माउंटेन पार्क में स्थित है, लेकिन मूल रूप से यह डेकाटूर में थी और इसे एक ऐतिहासिक इमारत के रूप में बेहतर ढंग से संरक्षित करने के लिए पार्क में स्थानांतरित कर दिया गया था। स्टीवंस का घर हाई टॉवर ट्रेल से लगभग एक मील दूर है, जो चेरोकी भारतीयों का पुराना मार्ग है, और स्टोन माउंटेन पार्क से चार मील की दूरी पर स्थित है। श्रीमती स्टीवंस स्वयं लगभग एक सौ बत्तीसवें चेरोकी मूल की हैं, इसलिए उन्हें भारतीय परंपराओं से गहरी सहानुभूति है और वे हमेशा से घर की भारतीय पृष्ठभूमि में रुचि रखती रही हैं। मई 1960 में जब उन्होंने पहली बार यह घर खरीदा था, तब स्टीवंस दंपति इसमें केवल एक वर्ष ही रहे। फिर, व्यापारिक कारणों से, वे फ्लोरिडा चले गए और अपना घर अपने ससुराल वालों को बेच दिया। हालांकि, दो साल बाद वे फ्लोरिडा से वापस आए और घर को फिर से खरीद लिया। घर में रहने के उस पहले वर्ष के दौरान उन्हें कुछ भी अजीब याद नहीं है, सिवाय एक बार-बार आने वाले सपने के जो श्रीमती स्टीवंस को घर में रहने के शुरू से ही आता था। उस सपने में उन्होंने खुद को छत में एक छेद से ऊपर एक मचान के अंधेरे में देखते हुए देखा। उन्हें छत की कड़ियाँ, लकड़ी के बीम और चिमनियाँ स्पष्ट रूप से दिखाई दे रही थीं। किसी तरह यह सपना उन्हें बहुत जाना-पहचाना सा लगता था। घर में आते ही उन्हें एहसास हुआ कि उनके सपनों में जो दृश्य दिखाई देते थे, वे उनके घर की अटारी से संबंधित थे। वह बिल्कुल वैसी ही दिखती थी जैसी उन्होंने घर में आने से कई साल पहले देखी थी। जाहिर है, स्टीवंस परिवार का टकर में बसना पूर्वनियोजित था। श्रीमती स्टीवंस को याद है कि उनके ससुराल वालों को दो साल तक घर में रहने के दौरान कोई असामान्य अनुभव नहीं हुआ था। लेकिन उनके ससुराल वालों में से किसी को भी तंत्र-मंत्र में कोई विशेष रुचि नहीं थी और न ही उनमें कोई मानसिक संवेदनशीलता थी।

स्टीवंस परिवार जैसे ही अपने पुराने घर लौटा, उन्हें एक अजीब सी अनुभूति हुई, मानो पूरे घर में एक तरह का करंट दौड़ रहा हो। इसका असर बच्चों पर भी पड़ा। वे झपकी नहीं लेना चाहते थे या बिस्तर पर नहीं जाना चाहते थे क्योंकि उनका कहना था कि कोई उन्हें बार-बार छू रहा है। जल्द ही श्रीमती स्टीवंस को भी ऐसा ही अनुभव होने लगा। उनके सबसे छोटे बच्चों

ने बताया कि उन्होंने बरामदे में एक आदमी को देखा, जबकि वहाँ कोई आदमी नहीं था। श्रीमान और श्रीमती स्टीवंस दोनों ने बरामदे से एक आदमी को गुजरते हुए देखा है। ऐसा कई बार हो चुका है। कभी-कभी यह सिर्फ एक पल भर की झलक होती है और कभी-कभी वे एक इंसान की आकृति को साफ-साफ देख पाते हैं। जब भी उन्होंने कुछ देखा होता है और उनके बच्चों ने नहीं देखा होता, तो वे उन्हें डराने से बचने के लिए पूरी कोशिश करते हैं कि उन्हें इसके बारे में पता न चले। फिर भी, बच्चे खुद भी इसी तरह की घटनाओं के बारे में बताते हैं। धीरे-धीरे स्टीवंस परिवार को यह स्पष्ट हो गया कि घर का सबसे पुराना हिस्सा, लकड़ी का बना हुआ भाग, इन अलौकिक घटनाओं का केंद्र है। बैठक-भोजन कक्ष वाले हिस्से में उन्होंने एक आकृति देखी है, जबकि वहाँ उनके अलावा कोई और नहीं था। एक बार श्रीमती स्टीवंस ने अपने बिस्तर के पास एक हाथ को प्रकट होते देखा है। अगस्त 1968 में, श्री स्टीवंस गहरी नींद से जाग गए क्योंकि उन्हें ऐसा महसूस हुआ कि घर में कोई ऐसा व्यक्ति है जिसे वहां नहीं होना चाहिए। वे उठ बैठे और उस कमरे में देखा जहां उनके बेटे माता-पिता के शयनकक्ष के सामने सो रहे थे। वहां उन्होंने एक धूसर आकृति को उनके चारपाई के पास खड़े होकर सबसे बड़े बेटे को घूरते हुए देखा। पूरी तरह जाग चुके श्री स्टीवंस ने उस आकृति को ध्यान से देखा और महसूस किया कि वह एक महिला थी। महिला ने सिर पर एक हुड जैसा कुछ पहना हुआ था। जैसे ही उन्होंने हिलने की कोशिश की, वह आकृति हवा में गायब हो गई। स्टीवंस ने इस घटना के बारे में अपनी पत्नी से बात की। उन्होंने भी लड़कों के कमरे में सबसे छोटे बेटे के बगल में नीचे वाली चारपाई पर लेटी हुई एक ऐसी ही आकृति देखी थी। इतना ही नहीं, वह आकृति अकेली नहीं थी। श्रीमती स्टीवंस को कमरे में कुछ और आकृतियाँ भी दिखाई दीं। घर में बिना किसी के आसपास होने के भी सीढ़ियों पर कदमों की आहट आम बात हो गई थी। स्टीवंस दंपति को लगा कि घर में चल रहे मरम्मत कार्य से शायद उसके किसी पूर्व निवासी को ठेस पहुंची हो। वे घर के पुराने हिस्से को बचाने के लिए अपनी पूरी कोशिश कर रहे थे, जो मरम्मत योग्य था उसकी मरम्मत कर रहे थे और जो मरम्मत योग्य नहीं था उसे बदल रहे थे।

जल्द ही उन्हें यह स्पष्ट हो गया कि उनके घर में एक से अधिक अलौकिक मेहमान मौजूद हैं। बच्चों की भलाई के लिए इतनी चिंतित वह महिला शायद भारतीय काल की कोई बची हुई महिला थी या शायद घर के किसी पूर्व मालिक की आत्मा। उनमें से किसी ने भी उसे इतनी

स्पष्ट रूप से नहीं देखा कि निश्चित रूप से कह सकें, लेकिन कोई और भी था। 1966 में श्री स्टीवंस ने एक अजीब सपना देखा। उस सपने के बाद वैसे ही सपने आते रहे, मानो पहले सपने की कहानी को आगे बढ़ा रहे हों। इन सपनों में उनके भाई बिल उनसे संवाद करते थे। द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान उत्तरी कैरोलिना में एक विमान दुर्घटना में बिल की मृत्यु हो गई थी। हालांकि, सपनों में बिल ने बताया कि वह मरा नहीं है और घर लौट आया है। एक और सपने में वह अपने भाई को अपने साथ यात्रा पर ले जाना चाहता था। इन सभी सपनों में बिल बूढ़ा दिखाई देता था। उसके बाल झड़ रहे थे और उसने एक फटी हुई अधिकारी की खाकी वर्दी पहनी हुई थी। विशेष रूप से उसका ओवरकोट फटा हुआ और फीका था। स्टीवंस परिवार ने इन सपनों पर आपस में चर्चा तो की, लेकिन उन्होंने अपने बच्चों से इनके बारे में कभी बात न करने का विशेष ध्यान रखा। इसलिए बच्चों को इस बात का बिल्कुल भी अंदाजा नहीं था कि उन्होंने अंकल बिल के बारे में सपने देखे थे।

बिल से जुड़े सपनों की इस श्रृंखला के आखिरी सपने के लगभग तीन सप्ताह बाद, सभी लड़के बहुत घबराए हुए और पीले पड़े हुए रसोई में आए। उन्होंने ज़ोर देकर कहा कि उन्होंने एक भूत देखा है। जब उनसे उस प्रेत के बारे में पूछा गया, तो उन्होंने कहा कि उन्होंने एक आदमी को सामने वाले कमरे में चलते हुए देखा था, जो घर के 1910 में बने नए हिस्से का भाग है। माता-पिता ने तुरंत जाँच की कि कहीं कोई घुसपैठिया घर में तो नहीं घुस गया है। वहाँ कोई नहीं था। संदेह और घबराहट से भरे माता-पिता ने लड़कों से पूछा कि उन्होंने क्या देखा था। बिना एक पल भी हिचकिचाए उन्होंने भूत का वर्णन एक पतले, झुके हुए, गंजे आदमी के रूप में किया, जिसके कपड़े फटे हुए और फीके खाकी रंग के थे। उन्होंने वास्तव में वही वर्णन किया जो उनके पिता को इतने लंबे समय से आ रहे सपनों की श्रृंखला में अंकल बिल दिखते थे। बस फर्क इतना था कि उन्होंने जो देखा वह सपने में नहीं था। अंकल बिल स्पष्ट रूप से कब्र से वापस आ गए थे, एक स्थायी भूत के रूप में नहीं, क्योंकि भूत यात्रा नहीं करते, बल्कि अपने भाई के परिवार के मामलों की देखभाल करने के लिए।

*146

हॉवर्ड मेंशन भूत

टेक्सास के हेंडरसन में साउथ मेन स्ट्रीट पर स्थित ओल्ड हॉवर्ड होम, दक्षिणी शैली की एक भव्य हवेली है, जो पूरे दक्षिण में बहुतायत में पाई जाती है। 1851 में, जेम्स एल. हॉवर्ड नामक एक व्यक्ति ने 100 डॉलर में खरीदी गई ज़मीन पर इस हवेली का निर्माण करवाया था। यह शहर का सबसे पुराना ईंटों से बना घर है। आज यह हेरिटेज एसोसिएशन के स्वामित्व में है और इसे एक संग्रहालय के रूप में संरक्षित किया जा रहा है, जहाँ न केवल टेक्सास के अन्य हिस्सों से बल्कि विदेशों से भी पर्यटक आते हैं। घर में तीन मंजिलें और छह कमरे हैं। इसके सामने चार स्तंभ हैं। शायद घर की सबसे खास बात यह है कि हर कमरे में एक चिमनी है, जिनमें से कुछ बहुत बड़ी और पुराने ज़माने की हैं, जैसी चिमनियां आजकल बहुत कम देखने को मिलती हैं। सीढ़ियों की रेलिंग बेहतरीन गुणवत्ता वाले अखरोट की लकड़ी से बनी हैं।

जब हॉवर्ड परिवार ने यह घर बनवाया था, तो वे गर्व से हर किसी से कहते थे, "सर्वशक्तिमान ईश्वर भी इसे नहीं गिरा सकते क्योंकि यह इतना मज़बूत बना है।" यहाँ तक कि सबसे भयानक तूफान भी इस घर को छू नहीं सकता था। एक बार बिजली के एक बेहद भयानक तूफान का किस्सा है, जब बिजली की एक लकीर कोने के एक खंभे से टकराई, जिससे मामूली क्षति हुई। हॉवर्ड भाइयों में से एक दौड़कर आंगन में गया, आसमान की ओर देखा और मुट्ठी हिलाते हुए बोला, "देखो। मैंने तुमसे कहा था कि तुम मेरा घर नहीं गिरा सकते।" एक छोटे से कस्बे में इतने बड़े और शानदार महल के साथ, यह स्वाभाविक है कि इसके चारों ओर किंवदंतियाँ पनपें, जिनमें से कुछ सच हैं और कुछ नहीं। ऐसी ही एक किंवदंती घर में हुई हत्या से संबंधित है। वर्तमान मालिक, रस्क काउंटी हेरिटेज एसोसिएशन ने इसकी जांच की और पाया कि यह एक दुर्घटना थी, हत्या नहीं। यह दुर्घटना हॉवर्ड परिवार के एक सदस्य पैट हॉवर्ड से संबंधित है, जिनकी घर में हुई एक दुर्घटना में मृत्यु हो गई थी। दरअसल, हॉवर्ड परिवार के वंशजों ने बार-बार यह समझाने की पूरी कोशिश की कि पैट हॉवर्ड की मौत एक दुर्घटना थी और जिस गोली से उनकी जान गई वह किसी भी मायने में हत्या नहीं थी। ज़ाहिर है, जहां धुआं होता है वहां आग भी होती है। क्या परिवार सिर्फ कहानी को दबाने की कोशिश कर रहा था, या वे तथ्यों को सही कर रहे थे? मैं कभी हेंडरसन हवेली नहीं गया, लेकिन मैंने वहां गए लोगों से बात की है, इसलिए मेरा विवरण स्वाभाविक रूप से सुनी-सुनाई बातों पर आधारित है।

1905 में, श्रीमती एम. ए. हॉवर्ड और डोरे हॉवर्ड, जो अब अकेले थे, ने घर को श्रीमती एम. ए. डिकिंसन को बेचने का फैसला किया। श्रीमती हॉवर्ड उस समय अस्वस्थ थीं। यह सौदा उनके बच्चों और परिवार के बाकी सदस्यों को रास नहीं आया, क्योंकि वे चाहते थे कि घर पारिवारिक संपत्ति ही रहे। आज यह अविश्वसनीय लगता है कि इतने भव्य घर को 1,500 डॉलर में बेचा जा सकता था, लेकिन निश्चित रूप से, 1905 में यह आज की तुलना में कहीं अधिक रकम थी। फिर भी, 1905 के हिसाब से भी, इस तरह के घर के लिए 1,500 डॉलर बहुत कम थे। इसलिए यह अजीब लगता है कि बिक्री इस तरह से हुई। हॉवर्ड परिवार से एक बाहरी व्यक्ति को घर की बिक्री ने पूरे शहर को चौंका दिया। किसी ने कल्पना भी नहीं की थी कि यह बिक सकता है, खासकर इतनी कम कीमत पर। घर एक ऐतिहासिक धरोहर के रूप में प्रसिद्ध था। सैम ह्यूस्टन स्वयं कई बार वहां सोए थे, क्योंकि वे हॉवर्ड परिवार के चचेरे भाई थे। 1950 में यह घर डिकिंसन परिवार से होबार्ट ब्राइस के पास चला गया, जिन्होंने 1961 में इसे ऐतिहासिक संघ को सौंप दिया। पुराने घर के जीर्णोद्धार में बहुत मेहनत करने वाले और धन जुटाने वाली समिति के लिए सक्रिय रूप से काम करने वाले शहरवासियों में से एक कार्ल जैगर्स थे। उनके और अन्य लोगों के प्रयासों के कारण ही यह घर अब फिर से उत्कृष्ट स्थिति में है और एक संग्रहालय के रूप में आगंतुकों के लिए खुला है। मेरा ध्यान इस ओर तब गया जब मैं पास के टायलर, टेक्सास में एक टेलीविजन कार्यक्रम में शामिल हुआ। मेरा साक्षात्कार लेने वाली महिला, जेन लैस्सिटर ने मुझे हेंडरसन हाउस के बारे में बहुत सी जानकारी प्रदान की।

कस्बेवासियों के बीच घर के जीर्णोद्धार को लेकर विवाद चल रहा था और इस बात पर संदेह था कि घर को बचाया जा सकेगा या उसे गिराना पड़ेगा। उस समय किसी के पास घर में संभावित भूतिया घटनाओं की जांच करने का समय या रुचि नहीं थी। लेकिन जैसे ही मामला शांत हुआ और घर विध्वंस के औजारों से सुरक्षित हो गया, और शायद वातावरण में आई शांति के कारण, कुछ ऐसा घटित हुआ जो पहले कभी नहीं देखा गया था। माया जैगर्स उन लोगों में से एक थीं जो घर के मानद मार्गदर्शक के रूप में सेवा करती थीं, खासकर सप्ताहांत में, जब सप्ताह के दिनों की तुलना में अधिक आगंतुक होते थे। वह घर देखने आने वालों की मेजबानी करती थीं। 1968 की सर्दियों में एक रविवार दोपहर, उन्होंने आगंतुकों के एक समूह को घर दिखाना समाप्त कर दिया था और उस समय वह घर में बिल्कुल अकेली थीं। उन्होंने

खुद को नीचे की मंजिल पर ऊपरी मंजिलों की ओर जाने वाली सीढ़ियों की ओर देखते हुए पाया। ठीक उसी क्षण उन्होंने अपनी आंखों के सामने एक महिला को प्रकट होते देखा। देखने में ठोस, या लगभग ठोस, वह स्पष्ट रूप से बीते युग की एक महिला थी। जब उसने उस प्रेत को गौर से देखा, तो उसे एहसास हुआ कि वह श्रीमती हॉवर्ड का भूत था। जैसे ही माया जैगर्स और भूत आमने-सामने आए, प्रेत सीढ़ियों से ऊपर चला गया और गायब हो गया। उसके बाद से उसे नहीं देखा गया है। क्या यह संभव है कि कृतज्ञ श्रीमती हॉवर्ड चाहती थीं कि उनके घर के बचाव से सीधे तौर पर जुड़े एकमात्र व्यक्ति को उनके अभी भी घर में मौजूद होने का पता चले? क्या अपने परिवार की इच्छा के विरुद्ध दूसरों को घर बेचने के पछतावे के कारण ही वह कभी अपने घर में मौजूद थीं? यदि आप कभी हेंडरसन, टेक्सास में हों, तो श्रीमती हॉवर्ड के घर अवश्य जाएँ। बिका हो या न बिका हो, वह अभी भी अपने घर में पूरी तरह सहज महसूस करती हैं।

*147

पीछे रह गए लोग: जाने के लिए तैयार नहीं

आम तौर पर लोग सोचते हैं कि भूत एक ही प्रकार के होते हैं और सभी आत्माएँ एक जैसी होती हैं। सच्चाई इससे बहुत दूर है; भूत आत्माएँ नहीं होते, और मानसिक छापें भूतों के समान नहीं होतीं। मूलतः, जब कोई व्यक्ति दुखद और दर्दनाक परिस्थितियों में मरता है और एक अवस्था से दूसरी अवस्था में जाने के लिए खुद को तैयार नहीं कर पाता, तो तीन घटनाएँ शामिल होती हैं। सबसे आम रूप है भौतिक मनुष्य से आत्मा में परिवर्तन, जो बिना किसी कठिनाई के और पृथ्वी के सघन भौतिक वातावरण में रहने की आवश्यकता के बिना होता है। अधिकांश दुखद मृत्यु में कोई समस्या नहीं होती, क्योंकि व्यक्ति परिवर्तन को स्वीकार कर लेता है और एक स्वतंत्र आत्मा बन जाता है, जो पृथ्वी पर मौजूद लोगों से स्वतंत्र रूप से संवाद करने में सक्षम होता है, और अपनी क्षमताओं, पसंद-नापसंद और जीवन के दूसरे पक्ष में मौजूद अन्य लोगों से मिलने वाली सहायता के अनुसार आगे बढ़ता है। दुखद मृत्यु मरने वालों में से कुछ ही ऐसे होते हैं जो अपनी स्थिति में आए परिवर्तन को पहचान नहीं पाते और तथाकथित भूत बन जाते हैं: अर्थात्, मानव व्यक्तित्व के वे अंश जो भौतिक जगत में अटके

रहते हैं, लेकिन अब उसका हिस्सा नहीं होते और न ही उसमें कार्य करने में सक्षम होते हैं। ये ही शब्द के शाब्दिक अर्थ में सच्चे भूत हैं।

हालांकि तथाकथित भूतों के दर्शन की कई घटनाएं इस प्रकार की नहीं होतीं, बल्कि ये किसी व्यक्ति की वास्तविक मृत्यु के बाद वातावरण में छोड़े गए निशानों का प्रतिनिधित्व करती हैं। मानसिक क्षमता से युक्त कोई भी व्यक्ति अतीत की घटना को महसूस कर सकता है और अपने मन में उसका पुनर्निर्माण कर सकता है। मुश्किल यह है कि अक्सर व्यक्ति एक निर्जीव मानसिक छाप और एक वास्तविक भूत के बीच अंतर नहीं कर पाता। व्यक्तिपरक रूप से, दोनों ही बहुत वास्तविक प्रतीत होते हैं। इन दोनों घटनाओं में अंतर करने का एकमात्र तरीका कई बार देखे जाने की घटनाओं की सूक्ष्म विवरणों के लिए तुलना करना है। वास्तविक भूत थोड़ा-बहुत घूमते हैं, हालांकि वे अपने गुजरने के तत्काल क्षेत्र से बाहर नहीं जाते। छापें हमेशा एक जैसी होती हैं, चाहे देखने वाला कोई भी हो, और विवरण कभी नहीं बदलते। इस प्रकार, मानसिक छापें किसी वास्तविक घटना की तस्वीरों या फिल्मों की तरह होती हैं, जबकि वास्तविक भूत स्वयं घटनाएँ होती हैं, जो वातावरण पर कुछ हद तक प्रतिक्रिया करने में सक्षम होती हैं। जब भी किसी प्रेत के विवरण में मामूली अंतर दिखाई देता है, तो हम एक वास्तविक भूत-व्यक्तित्व से निपट रहे होते हैं; लेकिन जब भी अतीत की किसी घटना या दृश्य का वर्णन एक स्रोत से दूसरे स्रोत में एक जैसा प्रतीत होता है, तो हम संभवतः केवल एक निर्जीव छाप से निपट रहे होते हैं जो घटना को प्रतिबिंबित करती है लेकिन किसी भी तरह से अवलोकन के समय वास्तविक उपस्थिति का संकेत नहीं देती है।

हालांकि, सच्चे भूतों का एक उपवर्ग है जिसे मैंने "पीछे रह जाने वाले भूत" नाम दिया है। इस उपवर्ग की आवश्यकता मुझे कई साल पहले महसूस हुई जब मैंने भूत-प्रेत से जुड़ी कई ऐसी घटनाओं का अध्ययन किया जो न तो दुखद, दर्दनाक मृत्यु की श्रेणी में आती थीं और न ही हिंसा या अत्यधिक पीड़ा से जुड़ी थीं—जो सच्चे भूतों की पहचान हैं। इसके विपरीत, इनमें से कई घटनाओं में उन लोगों की शांतिपूर्ण मृत्यु हुई थी जो अपने-अपने घरों में कई वर्षों से रह रहे थे और उनसे प्रेम करने लगे थे। इन मामलों की आपस में तुलना करने पर मैंने पाया कि उनमें कुछ समानताएँ थीं, जिनमें सबसे प्रमुख यह थी: वे अपने घरों से बहुत जुड़े हुए थे, अपनी मृत्यु से पहले काफी समय तक उनमें रहे थे, और दृढ़ इच्छाशक्ति वाले व्यक्ति थे जिन्होंने

अपनी एक नियमित दिनचर्या बना ली थी। इसलिए, ऐसा प्रतीत होता है कि पीछे रह जाने वाले भूत वे आत्माएँ हैं जो अपने पुराने घरों को छोड़ नहीं पातीं, वे अपने अगले लोक में जाने के बारे में कमोबेश जागरूक तो हैं, लेकिन आगे बढ़ना नहीं चाहतीं। उनके लिए उनका सांसारिक घर अधिक श्रेष्ठ है, और यह तथ्य कि अब उनके पास भौतिक शरीर नहीं है, उनके उसमें रहना जारी रखने में कोई बाधा नहीं है।

इनमें से कुछ आत्माएँ अपनी सीमाओं के साथ अद्‌भुत चतुराई से तालमेल बिठा लेती हैं। वे अभी भी भौतिक घटनाएँ उत्पन्न करने में सक्षम हैं, विशेषकर यदि वे घर में रहने वाले लोगों को प्रभावित कर सकें। हालाँकि, कभी-कभी वे अपने घर में रहने वालों द्वारा किए गए परिवर्तनों से नाराज़ हो जाती हैं, और जब ये परिवर्तन उनमें क्रोध उत्पन्न करते हैं, तो वे कुछ शरारती गतिविधियाँ करने में सक्षम हो जाती हैं, जैसे कि भूत-प्रेत जैसी घटनाएँ, हालाँकि उनका स्वरूप कुछ अलग होता है। कभी-कभी वे अपने पुराने जीवन को जारी रखने में पूरी तरह संतुष्ट रहती हैं, घर के वास्तविक निवासियों से दूर रहती हैं, और तब तक अज्ञात रहती हैं जब तक कि कोई मानसिक शक्ति वाला व्यक्ति उन्हें संयोग से देख न ले। हालाँकि, कभी-कभी वे चाहती हैं कि वास्तविक लोग जान लें कि वे अभी भी घर में मौजूद हैं और अपने अधिकारों का दावा करते हुए, घर के जीवित प्राणियों के साथ संघर्ष में पड़ सकती हैं। इनमें से कुछ बातें इस तरह के घरों में रहने वाले लोगों को डरावनी या यहाँ तक कि धमकी भरी लग सकती हैं, लेकिन ऐसा नहीं होना चाहिए, क्योंकि पीछे रह गए लोग भी आखिरकार अन्य सभी लोगों की तरह इंसान ही हैं, जिनका अपने पुराने घरों से गहरा और अटूट लगाव होता है। बेशक, हर कोई इन बातों को स्वीकार नहीं कर पाता।

* * *

उदाहरण के लिए, मार्गरिट सी. का मामला लीजिए। कुछ साल पहले जब वह न्यूयॉर्क राज्य में रहती थीं, तो उन्होंने पेंसिल्वेनिया में अपनी बहन और बहनोई के साथ क्रिसमस मनाने का फैसला किया। उनके पति की मां का हाल ही में निधन हो गया था, इसलिए उनके लिए यह क्रिसमस का त्योहार दुख भरा होने वाला था। श्रीमती सी. को पुराने घर की दूसरी मंजिल पर एक कमरा दिया गया था, जो घर के निचले हिस्से की ओर जाने वाले गलियारे के पास था। लंबी यात्रा से थकी होने के कारण, वह लगभग ग्यारह बजे सोने गईं, लेकिन उन्हें नींद नहीं आ

रही थी। अचानक उन्हें घर में पियानो बजने की स्पष्ट आवाज सुनाई दी। यह एक बहुत पुराने पियानो की आवाज थी, और उस पर बजने वाला संगीत उन्हें चर्च में बजने वाले संगीत की याद दिला रहा था। पहले तो श्रीमती सी. को लगा कि किसी ने रेडियो चालू छोड़ दिया है, इसलिए उन्होंने जाँच की, लेकिन पाया कि ऐसा नहीं था। फिर भी, नीचे से आती पियानो की झंकार के बावजूद, वह किसी तरह सो गईं। नाश्ते के समय, श्रीमती सी. ने अपनी बहन को अपने अनुभव के बारे में बताया। उनकी बहन ने उन्हें अजीब नजरों से देखा, फिर उनका हाथ पकड़कर उन्हें सीढ़ियों से नीचे ले गईं, जहाँ उन्होंने एक पुराने पियानो की ओर इशारा किया। यह हाल ही में दिवंगत हुई माँ की संपत्ति थी, लेकिन कई वर्षों से इसे बजाया नहीं गया था, क्योंकि घर में किसी और को इसे बजाना नहीं आता था। बढ़ती उत्सुकता के साथ, दोनों महिलाओं ने जंग लगे ढक्कन को खोलना शुरू किया। इसमें कुछ मेहनत लगी, लेकिन अंततः वे कीबोर्ड खोलने में सफल हो गईं।

ज़रा सोचिए, जब उन्होंने देखा कि पियानो की चाबियों पर मोटी धूल जमी हुई है, लेकिन उस धूल में स्पष्ट रूप से इंसानी उंगलियों के निशान खुदे हुए हैं, तो उन्हें कितना आश्चर्य हुआ होगा। ये पतली, हड्डियों से भरी उंगलियां थीं, किसी बहुत बूढ़ी औरत की उंगलियों जैसी। अपनी मृत्यु से पहले, वह महिला सचमुच बहुत दुबली-पतली थी, और चर्च का संगीत उसका पसंदीदा था। क्या घर की मालकिन अभी भी जीवित है, और अपना प्यारा पियानो बजा रही है?

* * *

न्यूयॉर्क के हडसन शहर में साउथ सिक्स्थ स्ट्रीट पर स्थित यह घर, हडसन नदी के किनारे बसे इस पुराने शहर के कई खूबसूरत पुराने टाउन हाउसों में से एक है। इसका निर्माण 1829 से 1849 के बीच हुआ था और तब से लेकर आज तक इसमें कई मालिक रह चुके हैं। 1904 में यह घर पार्कर परिवार के पास चला गया, जिनकी एक बेटी थी, मेबल, जो बेहद खुशमिजाज और जीवन के प्रति उत्साही स्वभाव की थीं। साठ वर्ष की आयु में उन्हें एक गंभीर बीमारी हो गई और उन्होंने बहुत कष्ट सहा, अंततः पास के एक अस्पताल में उनका निधन हो गया। उन्हें अपने घर से बहुत लगाव था और अस्पताल के ठंडे और भयावह माहौल में जाना उन्हें बिल्कुल पसंद नहीं था। उनके निधन के बाद, यह घर श्री और श्रीमती जे डाइट्ज़ के पास चला

गया, जो मेरे उनसे मिलने के समय भी इसके मालिक थे। श्रीमती डाइट्ज़ कभी मेबल पार्कर के पिता के यहाँ काम करती थीं।

श्रीमती डाइट्ज़ को तांत्रिक में कोई खास दिलचस्पी नहीं थी, हालाँकि उनके सौतेले दादा की मृत्यु वाली रात उन्हें एक उल्लेखनीय अनुभव हुआ था, जिनसे वे बहुत प्यार करती थीं। वे दिन भर घर पर उनकी देखभाल कर रही थीं और रात बिताने के लिए अपने घर लौट आई थीं। सब लोग सो चुके थे, और जब वे दीवार की ओर मुंह करके अपने बिस्तर पर लेटी थीं, तो उन्हें कमरे में एक अजीब सी चमक दिखाई दी। उन्होंने करवट बदली और आँखें खोलीं, तो देखा कि बिस्तर के सिरहाने रखी छोटी सी मेज पर एक बड़ा सा प्रकाश का गोला चमक रहा था, जिसका रंग हल्का सुनहरा था। जब वे उस घटना को देख ही रही थीं, तभी टेलीफोन की घंटी बजी और उन्हें बताया गया कि उनके सौतेले दादा का निधन हो गया है।

ग्यारह साल पहले, डाइट्ज़ परिवार साउथ सिक्स्थ स्ट्रीट के घरों में रहने आया था। शुरुआत में घर काफी शांत लग रहा था। पहले यहाँ एक जर्मन युद्ध दुल्हन और उसकी माँ रहती थीं। उस बुज़ुर्ग महिला ने ऊपर वाले कमरे में सोने से मना कर दिया था, जो बाद में श्रीमती डाइट्ज़ की माँ का कमरा बना। उन्होंने बताया कि उस कमरे में कुछ अजीब सा था। इसलिए वह नीचे ग्राउंड फ्लोर पर सोफे पर सोती थीं। डाइट्ज़ परिवार ने इन बातों पर ध्यान नहीं दिया, जब तक कि उन्हें अपने घर में कुछ अजीबोगरीब चीज़ें नज़र नहीं आने लगीं। सीढ़ियों से ऊपर-नीचे और हॉल में कदमों की आहट सुनाई देती थी, जहाँ वे रुक जाती थीं। श्रीमान और श्रीमती डाइट्ज़ और उनकी माँ, तीनों ने कई बार ये आहट सुनी।

एक साल, क्रिसमस से ठीक पहले, श्रीमती डाइट्ज़ नीचे के हॉल में सिलाई कर रही थीं जबकि उनके पति बाथरूम में थे। अचानक उन्हें लगा कि उनके पति हॉल में आए हैं, जो अजीब था, क्योंकि उन्होंने टॉयलेट फ्लश होने की आवाज़ नहीं सुनी थी। लेकिन जब उन्होंने पीछे मुड़कर देखा, तो वहाँ कोई नहीं था। कुछ रातों बाद वह ऊपर गईं और उन्हें स्पष्ट रूप से महसूस हुआ कि वह कमरे में अकेली नहीं हैं। उन्हें पता नहीं था कि वह क्या कर रही हैं, उन्होंने उस अदृश्य शक्ति को पुकारा, "मेबल?" तब कोई जवाब नहीं आया, लेकिन कुछ समय बाद एक रात, उन्हें किसी के द्वारा बिस्तर के निचले हिस्से से कंबल खींचने की आवाज़ से नींद से

जगाया गया। उनके रोंगटे खड़े हो गए, क्योंकि खींचने की आवाज़ बहुत स्पष्ट थी और इसमें कोई संदेह नहीं था।

वह ऊपर वाले कमरे में डर के मारे उठ बैठी, पर आसपास कोई नहीं था। जैसे ही वह उठी, खींचना अचानक बंद हो गया। उसे थोड़ी राहत मिली और वह फिर सो गई, लेकिन कुछ रातों बाद वह आगंतुक करवट बदल गया। श्रीमती डिएट्ज़ को बाईं करवट सोना पसंद है, जिसमें उनका कान कंबल से ढका रहता है। अचानक उन्हें लगा कि कोई उनके कान से कंबल खींच रहा है, लेकिन आधी नींद में होने के कारण उन्होंने उसे वापस खींच लिया। उसके बाद कोई हलचल नहीं हुई।

हालांकि, श्रीमती डिएट्ज़ की मां का ऊपरी मंजिल का शयनकक्ष गतिविधियों का केंद्र प्रतीत होता था। कई बार जब बुजुर्ग महिला सोने के लिए बत्ती बंद कर देती थीं, तो उन्हें अपने बिस्तर के बगल में किसी के खड़े होने और उन्हें नीचे देखने का आभास होता था।

कभी-कभी कई हफ्तों या महीनों तक कोई आवाज़ सुनाई नहीं देती थी, और फिर अचानक बिना किसी चेतावनी के पूरी ताकत से शोर मचने लगता था। जिस साल मैं डाइट्ज़ परिवार से मिलने गया था, उस साल फरवरी में, श्रीमती डाइट्ज़ एक सुबह 5 बजे उठीं। संयोग से उनकी माँ भी जाग रही थीं, क्योंकि श्रीमती डाइट्ज़ ने उनकी हलचल सुनी। एक पल बाद, उनकी माँ वापस बिस्तर पर चली गईं। उसी क्षण, श्रीमती डाइट्ज़ ने सीढ़ियों के नीचे से शुरू होकर, भारी कदमों की आवाज़ सुनी जो बहुत धीरे-धीरे ऊपर आ रही थी, गलियारे से नीचे जा रही थी और रुक गई, लेकिन ये उन कदमों से अलग थी जो उन्होंने पहले कई बार सुनी थीं।

ऐसा लग रहा था मानो कोई बहुत बीमार व्यक्ति खुद को घसीटते हुए सीढ़ियाँ चढ़ रहा हो, गिरने से बचने की कोशिश कर रहा हो, लेकिन वहाँ पहुँचने के लिए दृढ़ संकल्पित हो। ऐसा लग रहा था मानो कोई बहुत थका हुआ घर लौट रहा हो। क्या उसकी सहेली आखिरकार उस घर में लौटकर कुछ आराम पा रही थी जहाँ वह इतनी खुश रहती थी? हालाँकि, श्रीमती डिएट्ज़ भूतों में विश्वास नहीं करतीं, बल्कि केवल पीछे छूटी यादों में विश्वास करती हैं।

* * *

स्थानीय मनोवैज्ञानिक शोधकर्ताओं के एक समूह की बदौलत, कुछ समय पहले एक विचित्र मामला मेरे ध्यान में आया। लुइसियाना के छोटे से कस्बे लाफायेट में एक पुराना बंगला है, जो कई वर्षों से एक बुजुर्ग दंपति की संपत्ति था। दोनों सेवानिवृत्त थे, और हाल ही में पत्नी की शारीरिक स्थिति खराब हो गई थी और वे व्हीलचेयर पर निर्भर थे। कुछ समय पहले एक दिन उन्हें दिल का दौरा पड़ा और उनकी व्हीलचेयर पर ही मृत्यु हो गई। उनकी मृत्यु के कारण, या शायद अपनी ही दुर्बलता के कारण, पति की भी एक महीने बाद मृत्यु हो गई। दरअसल, उन्हें मृत पाया गया और उनकी मृत्यु का कारण दिल का दौरा बताया गया।

इन परिस्थितियों में, कोई प्रत्यक्ष वारिस न होने के कारण घर कुछ समय तक खाली रहा। लगभग नौ महीने बाद, इसे पास के विश्वविद्यालय की चार छात्राओं को किराए पर दिया गया। हैरानी की बात यह है कि वे केवल दो महीने ही रहीं और घर फिर से किराए पर दे दिया गया। इस बार इसे दो महिलाओं ने किराए पर लिया, जिनमें से एक पेशेवर माइक्रोबायोलॉजिस्ट और दूसरी मेडिकल टेक्नीशियन थीं। दोनों ही बेहद समझदार थीं और अलौकिक चीज़ों में उनकी ज़रा भी दिलचस्पी नहीं थी। वे बंगले में रहने लगीं और उसे उसी हालत में इस्तेमाल करने लगीं, जिसमें मृत दंपति का फर्नीचर था।

ज़रा सोचिए, जब उन्हें पता चला कि उनके घर में सब कुछ ठीक नहीं है, तो उन्हें कितना दुख हुआ होगा। घर में आने के कुछ ही समय बाद, देर रात उन्हें घर में कुछ अस्पष्ट बातचीत और कदमों की आहट सुनाई दी। पहले तो दोनों में से किसी ने भी एक-दूसरे को इस बारे में कुछ नहीं बताया, क्योंकि उन्हें डर था कि कहीं उन्होंने सपना न देख लिया हो या उनका मज़ाक न उड़ाया जाए। आखिरकार, जब उन्होंने अपने अनुभवों के बारे में एक-दूसरे से बात की, तो उन्हें एहसास हुआ कि उनके अनुभव बिल्कुल एक जैसे थे। उदाहरण के लिए, उन्हें पता चला कि यह घटना हमेशा रात 1 बजे से सूर्योदय के बीच होती थी। एक पुरुष और एक महिला बात कर रहे थे, और उनकी बातचीत का विषय नए किराएदार थे!

“उसकी आँखें खुली हैं—मैं देख सकती हूँ कि उसकी आँखें अब खुली हैं,” अदृश्य आवाज़ ने स्पष्ट और साफ-साफ कहा। आवाज़ें अटारी से आती हुई प्रतीत हुईं। दोनों महिलाओं को एहसास हुआ कि भूत उनके बारे में बात कर रहे हैं; लेकिन वे क्या करतीं? उन्होंने भूतिया

जोड़े को नहीं देखा, लेकिन उन्हें हर समय अदृश्य शक्तियों द्वारा देखे जाने का आभास होता था। वे अपने भूतों का क्या करें, दोनों महिलाएं सोचने लगीं।

मैंने उन्हें सीधे-सीधे उनसे बात करने की सलाह दी, क्योंकि एक भूत जो यह बता सकता है कि किसी जीवित व्यक्ति की आंखें खुली हैं या नहीं, वह अपने घर में रहने और किसी और के घर में घुसपैठ करने के बीच का अंतर जानने में सक्षम है, भले ही वह उनका पूर्व निवास स्थान रहा हो।

* * *

श्रीमती कैरोलिन के. अपने पति और चार बच्चों (आठ से तेरह वर्ष की आयु के) के साथ शिकागो, इलिनोइस में रहती हैं। उन्हें कई वर्षों से आंतरिक आध्यात्मिक संवेदना (ईएसपी) के अनुभवों में रुचि रही है, जबकि उनके पति का इस प्रकार के किसी भी अनुभव में कोई विश्वास नहीं है। परिवार कुछ वर्ष पहले अपने वर्तमान घर में रहने आया था। श्रीमती के. को पहले छह वर्षों तक कोई असामान्य अनुभव याद नहीं है, लेकिन घर में आने के छह साल बाद अप्रैल के अंत में कुछ अजीब घटना घटी। वह और उनके पति बिस्तर पर गए ही थे कि उनके पति बहुत थके होने के कारण तुरंत सो गए। हालांकि, श्रीमती के. बेचैन महसूस कर रही थीं और सो नहीं पा रही थीं, क्योंकि उन्हें बेडरूम में किसी की उपस्थिति का आभास हो रहा था।

कुछ ही मिनटों में उन्होंने बड़ी स्पष्टता से बिस्तर के बगल में खड़ी एक महिला की आकृति देखी। वह महिला लगभग तीस वर्ष की लग रही थी, उसकी त्वचा और बाल सुनहरे थे, शरीर सुडौल था और वह काफी आकर्षक थी। उसके पहनावे से उसके अच्छे स्वाद और धन-दौलत का पता चलता था और वह 1870 या 1880 के दशक की लग रही थी। वह युवती वहीं खड़ी रही और श्रीमती के. को देखती रही, और श्रीमती के. भी उसे देखती रहीं। वह काफी सजीव लग रही थी, लेकिन उसने कोई आवाज़ नहीं की। इसके बावजूद, श्रीमती के. को स्पष्ट रूप से लगा कि भूत उन्हें कुछ खास बताना चाहता है। यह मुलाकात दस-पंद्रह मिनट तक चली, फिर वह आकृति धीरे-धीरे गायब हो गई।

इस अनुभव ने श्रीमती के. को भयभीत और चिंतित कर दिया। उन्होंने तुरंत अपने पति को इसके बारे में बताया, लेकिन उन्होंने इस घटना को संदेह के साथ खारिज कर दिया। अगले दो

हफ्तों तक, श्रीमती के. को घर के चारों ओर एक अदृश्य उपस्थिति का अहसास होता रहा, हालांकि उन्होंने उस रहस्यमय आगंतुक को दोबारा नहीं देखा। ऐसा प्रतीत होता था कि वह महिला उनके दैनिक कार्यों को करते समय उन्हें देख रही थी। श्रीमती के. को यह नहीं पता था कि वह भूत कौन हो सकता है, लेकिन वह जानती थीं कि उनका घर पचास साल से अधिक पुराना नहीं था और उससे पहले उस जगह पर दलदली भूमि थी। क्या उस भूत का उस भूमि से कोई संबंध हो सकता है, या शायद श्रीमती के. की संजोई हुई कुछ प्राचीन वस्तुओं से?

पहले अनुभव के लगभग दो सप्ताह बाद, श्री के. रसोई में पढ़ाई कर रहे थे, जो घर के पूर्वी छोर पर स्थित है, जबकि श्रीमती के. घर के दूसरे छोर पर स्थित बैठक कक्ष में टेलीविजन देख रही थीं। दो बार उन्हें रसोई में जाकर अपने पति को यह बताने की आवश्यकता महसूस हुई कि उन्हें बैठक कक्ष में भूत के घूमने का आभास हो रहा है, लेकिन उनके पति ने जोर देकर कहा कि यह केवल उनकी कल्पना है। इसलिए वह बैठक कक्ष में लौट आईं और आरामकुर्सी पर बैठकर टेलीविजन देखना जारी रखा। पंद्रह मिनट बाद, उन्होंने पूरे घर में गूंजती हुई एक तेज आवाज सुनी। इससे वह डर के मारे कुर्सी पर ही जम गईं, तभी उनके पति दौड़कर बैठक कक्ष में आए और पूछा कि आवाज किस बात की थी।

जाँच करने पर उन्होंने भोजन कक्ष की दीवार पर टंगे एक प्राचीन वीणा के तार को टूटा हुआ देखा। तार का अपने आप टूटना असंभव था, और अगर टूट भी गया होता, तो इतनी तेज़ गूंज कैसे उत्पन्न हुई होती? इस संभावना की जाँच करने के लिए, उन्होंने उसी वीणा के कई अन्य तार तोड़कर वैसी ही ध्वनि उत्पन्न करने का प्रयास किया, लेकिन सफलता नहीं मिली। कुछ सप्ताह बीत गए, और भूत की उपस्थिति बनी रही। अब श्रीमती के. को यह स्पष्ट आभास हो गया था कि भूत को अनदेखा किए जाने से नाराज़गी थी। अचानक, दीवार पर कील से टंगा एक तूफानी दीपक ज़मीन पर गिरकर चकनाचूर हो गया। वह अपने आप तो नहीं गिर सकता था। फिर कुछ समय बीत गया, और भूत को लगभग भुला दिया गया। श्रीमती के. की बड़ी बेटी, जो तब छह वर्ष की थी, ने एक सुबह अपनी माँ से पूछा कि पिछली शाम कौन आया था। यह बताए जाने पर कि घर में कोई मेहमान नहीं था, उसने ज़िद की कि एक महिला उसके शयनकक्ष में आई, उसके बिस्तर पर बैठी और उसे देखा, और फिर चली गई। बच्ची को शांत करने के लिए, श्रीमती के. ने उससे कहा कि शायद उसने यह सब सपना देखा था। लेकिन

छोटी बच्ची ने ज़िद की कि उसने सपना नहीं देखा था, और उसने उस आगंतुक का हर विवरण दिया, यहाँ तक कि उसके "अजीब" कपड़े भी। यह सुनकर श्रीमती के. घबरा गईं और उन्हें एहसास हुआ कि उनकी बेटी ने उसी प्रेत को देखा था। जाहिरा तौर पर, भूत को अब संवाद करने की अधिक तीव्र इच्छा महसूस हो रही थी, क्योंकि कुछ दिनों बाद, सोने के बाद, वह प्रेत श्रीमती के. के शयनकक्ष में लौट आया। इस बार उसने पहली मुलाकात से अलग पोशाक पहनी थी, लेकिन वह भी 1880 के दशक की ही थी। वह अपने हाथों को एप्रन से पोंछ रही थी, थोड़ी देर ही रुकी, और फिर धीरे-धीरे गायब हो गई। अगले वर्ष के दौरान, उसकी उपस्थिति कभी-कभार ही महसूस हुई, लेकिन धीरे-धीरे श्रीमती के. उसके बारे में कुछ क्षणिक छापें पकड़ने में कामयाब हो गईं। इनसे उन्होंने उस भूत की कहानी को जोड़ा। वह अपने बच्चे को लेकर काफी दुखी थी, और अगली सर्दियों की एक शाम, जब श्रीमती के. को अपने तहखाने में भूत के घूमने का आभास हुआ, तो उन्होंने सचमुच उसे दो घंटे तक दयनीय ढंग से रोते हुए सुना। जाहिर है, व्याकुल भूत ध्यान आकर्षित करना चाहता था, और किसी भी कीमत पर ऐसा करने के लिए दृढ़ संकल्पित था।

अगली गर्मियों में एक दिन, जब श्रीमती के. अपने पति के काम पर चले जाने के बाद बच्चों के साथ अकेली थीं, तो बच्चों में से एक ने शिकायत की कि बाथरूम का दरवाजा बंद है। चूंकि दरवाजा केवल अंदर से ही बंद किया जा सकता था, और चारों बच्चे मौजूद थे, श्रीमती के. ने सोचा कि उनकी भूतनी फिर से अपना काम कर रही है। जब आधे घंटे तक बाथरूम का दरवाजा बंद रहा और बच्चों को ज्यादा जोर से पेशाब आने लगा, तो श्रीमती के. दरवाजे पर गईं और जोर से आवाज में भूतनी से दरवाजा खोलने की मांग की। उनकी आवाज में गुस्सा था और इसका असर तुरंत हुआ। बाथरूम के अंदर ताला खुलने की आवाज साफ सुनाई दी और कुछ देर बाद श्रीमती के. ने आसानी से बाथरूम का दरवाजा खोल दिया। बाथरूम के अंदर कोई नहीं था। तो फिर ताला किसने खोला था—जो दरवाजा खोलने का एकमात्र तरीका था?

कुछ समय तक सब ठीक-ठाक चलता रहा। कुछ सप्ताह बाद, श्रीमती के. को फिर से अपने आस-पास भूत का आभास हुआ। उनकी एक बेटी रसोई की मेज पर उनके साथ बैठी थी, जबकि वह काउंटर पर एक ड्रेस का पैटर्न काट रही थीं। श्रीमती के. कुछ दूर रखे फ्रिज में कुछ ढूंढने के लिए पीछे हटीं, तभी अचानक उन्होंने और उनकी बेटी ने देखा कि सिलाई की

पिनों का डिब्बा काउंटर से थोड़ा ऊपर उठा और ज़मीन पर गिर गया। उनमें से कोई भी उसके पास नहीं थी, और ज़मीन पर बिखरी हुई सभी पिनों को उठाने में उन्हें लगभग एक घंटा लग गया।

कुछ देर बाद, उन्होंने भोजन कक्ष और रसोई को जोड़ने वाले तहखाने के दरवाजे को अपने आप खुलते और बंद होते हुए सुना, मानो कोई बहुत गुस्से में अपनी उपस्थिति की ओर ध्यान आकर्षित करने की कोशिश कर रहा हो। उन्होंने तुरंत दरवाजा बंद कर दिया और यह सुनिश्चित किया कि किसी भी खिड़की से ठंडी हवा न आ रही हो।

एक पल बाद, वह अपने आप फिर खुल गया। अब उन्होंने कुंडी में जंजीर लगा दी—लेकिन इससे भूत का दरवाज़े के साथ छेड़छाड़ करना बंद नहीं हुआ। ज़बरदस्त ताकत से, वह फिर से उतना खुल गया जितना जंजीर उसे खुलने देती थी, मानो कोई उसे खींच रहा हो। श्रीमती के. ने तुरंत एक पड़ोसी को बुलाया और उसे दरवाज़े के इस अजीब व्यवहार को देखने के लिए कहा, लेकिन पड़ोसी के आते ही, दरवाज़ा पहले की तरह सामान्य हो गया। भूत अजनबियों के सामने तमाशा करने को तैयार नहीं था।

कुछ वर्षों बाद, गर्मियों की एक शाम, श्री के. अपने कुछ मेहमानों को घर छोड़ रहे थे और श्रीमती के. बच्चों के साथ घर में अकेली थीं। अचानक, ऐशट्रे खाली करने और खाली गिलास रसोई में ले जाने जैसे काम करते समय, उन्हें लगा कि उनकी आत्मा उनका पीछा कर रही है। श्रीमती के. ने डर के बावजूद, हिम्मत करके उसे अनदेखा करने की कोशिश की, और उन्हें पता था कि उनकी आत्मा को यह बात पता है, जिससे उनके लिए अपना काम जारी रखना और भी मुश्किल हो गया।

कुछ देर बाद, के. परिवार में फिर मेहमान आए। आने वाले मेहमानों में से एक ने श्रीमती के. को बताया कि उनके तहखाने की बत्ती जल रही है। श्रीमती के. ने समझाया कि ऐसा होना असंभव है, क्योंकि बल्ब तो कल ही फ्यूज हो गया था। उन्होंने यह भी याद किया कि बल्ब न बदलने के कारण उन्हें अपने पति पर थोड़ी झुंझलाहट हुई थी। लेकिन मेहमान ने ज़िद की, इसलिए के. परिवार ने तहखाने का दरवाजा खोला तो बत्ती बुझी हुई थी। थोड़ी देर बाद एक और मेहमान आया। वह जानना चाहता था कि इतनी देर रात तहखाने में कौन काम कर रहा है, क्योंकि उसने तहखाने की बत्ती जलती हुई देखी थी। इसके अलावा, उसने तहखाने की

खिड़की पर किसी को बाहर देखते हुए देखा था। एक बार फिर, सभी लोग टॉर्च लेकर नीचे गए, लेकिन बत्ती बुझी हुई थी और वहाँ कोई नहीं था।

के परिवार ने आखिरी बार उस भूत को देखा या सुना था। वह अचानक उन्हें छोड़कर क्यों चली गई थी? शायद इसका संबंध शिकागो की एक पत्रकार के फोन से था। गड़बड़ी की खबर सुनकर उसने के परिवार को फोन किया और घर की जांच के लिए अपनी और मशहूर मानसिक विशेषज्ञ आइरीन ह्यूजेस की सेवाएं देने की पेशकश की। हालांकि बच्चों की वजह से के परिवार किसी का ध्यान आकर्षित नहीं करना चाहता था, फिर भी श्रीमती के ने पत्रकार को घर में घटी सारी घटना बताई। उन्हें आश्चर्य हुआ जब पत्रकार ने बताया कि सात मील से भी कम दूरी पर स्थित एक और घर में भी इसी तरह की घटनाएं हुई थीं। उस दूसरे मामले में, मां और उसके एक बच्चे ने एक प्रेत जैसी आकृति देखी थी, और आइरीन ह्यूजेस और विभिन्न उपकरणों की मदद से जांच की गई थी, जिसके परिणामस्वरूप लिज़ी नाम की एक प्रेत आत्मा की उपस्थिति का पता चला था।

इससे श्रीमती के. ने यह निष्कर्ष निकाला कि वे सात मील दूर रहने वाली एक पड़ोसी के साथ एक ही भूत को साझा कर रही थीं, और उन्होंने भी उस भूतिया आगंतुक को लिज़ी कहना शुरू कर दिया। अब अगर लिज़ी के दो घर थे और वह उनके बीच आना-जाना करती थी, तो शायद यही कारण था कि के. के घर में लंबे समय तक कोई गतिविधि नहीं होती थी। दूसरी ओर, अगर के. के घर में मौजूद भूत का नाम लिज़ी नहीं था, तो स्वाभाविक रूप से वह सात मील दूर रहने वाले किसी अन्य अज्ञात भूत के साथ भ्रमित नहीं होना चाहती थी। खैर, जो भी हो, श्रीमती के. उसे शुभकामनाएं देती हैं, चाहे वह कहीं भी हो।

* * *

श्रीमती जे. पी. मध्य इलिनोइस में एक पुराने तीन मंजिला मकान में रहती हैं, जिसमें एक तहखाना भी है। उनके द्वारा इसे खरीदने से पहले, यह मकान छह महीने तक खाली पड़ा रहा था। जैसे ही वह इसमें रहने आईं, उन्होंने पड़ोसियों से यह अफवाह सुनी कि यह मकान भूतिया है। हालांकि श्रीमती पी. संशयवादी नहीं हैं, फिर भी वह इतनी समझदार हैं कि अफवाहों पर आँख बंद करके विश्वास नहीं करतीं।

उन्होंने घर का अच्छी तरह निरीक्षण किया। घर लगभग अस्सी साल पुराना लग रहा था और मरम्मत की सख्त जरूरत थी। चूंकि उन्होंने इसे सस्ते दाम पर खरीदा था, इसलिए उन्हें कोई आपत्ति नहीं थी, लेकिन समय बीतने के साथ-साथ उन्हें आश्चर्य होने लगा कि घर वास्तव में कितना सस्ता था। उन्हें और उनके पति को यह स्पष्ट हो गया कि कीमत कम होने के अन्य कारण भी थे। फिर भी, घर उनका था, और उन्होंने मिलकर इसे यथासंभव अच्छे से रंगने और मरम्मत करने का काम शुरू किया। पहले दो हफ्तों तक वे इतने व्यस्त थे कि उन्हें कुछ भी असामान्य नहीं लगा। हालांकि, घर में आने के लगभग तीन हफ्ते बाद, श्रीमान और श्रीमती पी. को दरवाजे अपने आप बंद होने, अलमारियों के खुलने जैसी आवाजें सुनाई देने लगीं, और विशेष रूप से, एक छोटी बच्ची लगातार बहुत घबराकर "मम्मा, मम्मा" पुकार रही थी। तब तक, श्रीमान और श्रीमती पी. ने इन घटनाओं को नजरअंदाज करने की कोशिश की।

एक शाम, उनके परिवार में किसी छोटी सी बात पर कहा-सुनी हो रही थी। अचानक, चूल्हे पर रखा एक तवा अपने आप उठ गया, कुछ पल के लिए हवा में लटका रहा और फिर पूरी ताकत से वापस चूल्हे पर जा गिरा। यह सब देखकर उनका बारह साल का बेटा बुरी तरह रोने लगा; श्री पी. का चेहरा पीला पड़ गया और श्रीमती पी. बेहद गुस्से में थीं। किसी की हिम्मत कैसे हुई उनकी निजता में दखल देने की? अगले हफ्ते, उनकी दस साल की बेटी नीचे श्रीमती पी. के दफ्तर में टीवी देख रही थी, जबकि श्री पी. और उनका बेटा ऊपर टीवी देख रहे थे। अचानक, दफ्तर में मेज पर रखा दूध का गिलास अपने आप उठ गया और पूरी ताकत से ज़मीन पर गिर पड़ा। बच्ची चीखती हुई कमरे से भागी और उसके पिता को उसे शांत करने में काफी समय लगा।

इन घटनाओं के परिणामस्वरूप, बच्चों ने अपनी माँ से घर छोड़ने की गुहार लगाई, लेकिन श्रीमती पी. ने उनकी बात नहीं मानी। उन्हें घर बहुत पसंद था और वे किसी अनजान भूत को उन्हें बेदखल करने नहीं देना चाहती थीं। जितना ज़्यादा वह इसके बारे में सोचतीं, उतना ही उनका गुस्सा बढ़ता जाता। उन्होंने फैसला किया कि वह हर मंज़िल पर जाकर उस अनजान भूत को कोसेंगी और उसे घर से निकल जाने को कहेंगी, चाहे वह कभी उसका मालिक रहा हो।

लेकिन पीछे रह जाने वालों का यही हाल होता है: उन्हें इस बात से कोई फर्क नहीं पड़ता कि आपने घर के लिए पैसे दिए हैं या नहीं। आखिर, वे जहां हैं वहां पैसे का इस्तेमाल नहीं कर सकते, और वे उस जगह पर रहना पसंद करेंगे जिससे वे परिचित हैं।

* * *

अजीब जगहों पर भी भूत-प्रेत का साया रह सकता है। उदाहरण के लिए, इलिनोइस के ग्लेन एलिन स्थित मैरीकनॉल कॉलेज, एक रोमन कैथोलिक सेमिनरी, जो जून 1972 में अपने दरवाजे बंद कर दिया, क्योंकि वहां के पाठ्यक्रमों में लोगों की रुचि कम हो रही थी। कुछ साल पहले, पतझड़ के मौसम में गैरी एम. नाम का एक छात्र कॉलेज के डार्करूम में काम कर रहा था। यह उसके नियमित कार्यों का हिस्सा था, और फोटोग्राफी कई वर्षों से एक नियमित गतिविधि रही थी, जिसमें शिक्षक और छात्र दोनों भाग लेते थे।

उस विशेष अवसर पर, श्री एम. को डार्करूम में ऐसा लगा जैसे कोई उन्हें देख रहा हो। उन्होंने इसे अपनी कल्पना मानकर इस बात को भुला दिया। लेकिन कुछ वर्षों बाद वसंत ऋतु में, श्री एम. एक पूर्व पादरी के पुराने रसायनों की जाँच कर रहे थे, तभी उन्हें एक अलौकिक उपस्थिति का तीव्र आभास हुआ। उस समय वे फिल्म लोड कर रहे थे, और ऐसा करते समय उन्हें यह अजीबोगरीब एहसास हुआ कि वे कमरे में अकेले नहीं हैं। जिन रसायनों को उन्होंने अभी छुआ था, वे तीन साल पहले मर चुके एक पादरी की संपत्ति थे। अगले दिन, एक खुले टैंक में फिल्म डेवलप करते समय, उन्हें अचानक ऐसा महसूस हुआ जैसे किसी ठंडे हाथ ने उनकी पीठ पर हाथ फेरा हो। उन्होंने यह भी महसूस किया कि रसायन पहले से अधिक ठंडे थे। बत्ती जलाने के बाद, उन्होंने डेवलपर का तापमान मापा। शुरुआत में यह 70°F था, जबकि अंत में यह 64°F तक गिर गया था। चूंकि कमरे का तापमान 68°F था, इसलिए तापमान में यह गिरावट वास्तव में समझ से परे थी।

इस घटना ने उन्हें आश्चर्यचकित कर दिया और उन्होंने अपने अनुभव के बारे में अन्य सेमिनरी छात्रों से बात की। तब पता चला कि उनके एक सहपाठी को भी उसी स्थान पर ऐसा ही अनुभव हुआ था। उन्हें एक पुरुष दिखाई दिया था और उन्होंने अपने गाल पर किसी के गर्म स्पर्श का अनुभव किया था। चूंकि उस समय वे अकेले नहीं थे, बल्कि पांच छात्रों के समूह में

थे, इसलिए उन्होंने तुरंत उन्हें घटना के बारे में बताया। उन्होंने उस प्रेत का विस्तृत और स्पष्ट वर्णन किया। श्री एम. ने तुरंत पुरानी फाइलों को खंगाला और कई तस्वीरें निकालीं, ताकि उनके सहपाठी, जिन्हें भी ऐसा ही अनुभव हुआ था, उस प्रेत की तस्वीर पहचान सकें जिसे उन्होंने देखा था। बिना किसी झिझक के, उन्होंने मृत पादरी को ही उस व्यक्ति के रूप में पहचाना जिसे उन्होंने देखा था। यह कोई आश्चर्य की बात नहीं थी; छात्र पादरी के ही उपकरण और रसायनों का उपयोग कर रहे थे, और शायद पादरी अब भी उन्हें उनके उचित उपयोग के बारे में सिखाने के लिए बाध्य महसूस करते थे।

* * *

श्रीमान और श्रीमती ई. फ्लोरिडा में एक साधारण से घर में रहते हैं, जो लगभग तेरह साल पहले बना था। वे अगस्त में इस घर में रहने आए थे। दोनों में से किसी को भी तंत्र-मंत्र में कोई खास दिलचस्पी नहीं थी, और श्रीमान ई. को तो पूर्णतः संशयवादी ही कहा जा सकता है। शुरुआती कुछ महीनों तक वे इतने व्यस्त थे कि उन्हें कुछ भी असामान्य नज़र नहीं आया, भले ही ऐसी कोई घटना घटी हो।

क्रिसमस से ठीक पहले उन्हें पहली बार एहसास हुआ कि उनके घर में कुछ गड़बड़ है। श्रीमती ई. एक रात देर तक जाग रही थीं, छुट्टियों की आखिरी तैयारियों में व्यस्त थीं। अचानक, जो दरवाजा मजबूती से बंद था, ज़ोर से खुला और तुरंत अपने आप बंद हो गया। हैंडल अपने आप घूम गया और कुंडी लग गई। चूंकि श्रीमती ई. को किसी मेहमान की उम्मीद नहीं थी, इसलिए वे स्वाभाविक रूप से हैरान थीं। जल्दी से दरवाजे की ओर जाकर उन्होंने पता लगाया कि क्या हुआ है, तो पाया कि दरवाजा बंद था। यह उस तरह का ताला था जिसे केवल घुंडी घुमाकर ही खोला जा सकता था। अविश्वास से सिर हिलाते हुए वे अपनी कुर्सी पर लौट आईं, लेकिन इससे पहले कि वे दोबारा बैठ पातीं और अपने काम में लग पातीं, उपयोगिता कक्ष का दरवाजा हवा चलने की तरह खड़खड़ाने लगा। जबकि वहाँ कोई खिड़की खुली नहीं थी जिससे ऐसा हो सकता था। अचानक, जब वे उसे घूर रही थीं, घुंडी घूमी और दरवाजा खुल गया। कुछ अचंभित होकर, श्रीमती ई. ने व्यंग्यपूर्वक सोचा, “जब आप ये कर ही रही हैं, तो क्रिसमस ट्री को भी क्यों न हिला दें?” उनके विचार पूरे होने से पहले ही पेड़ हिलने लगा। एक पल के लिए श्रीमती ई. वहीं खड़ी रहीं और मन ही मन इस सब पर विचार करती रहीं। फिर

उन्होंने फैसला किया कि शायद वह बहुत थकी हुई थीं और छुट्टियों की घबराहट का शिकार हो गई थीं। यह सब शायद उनकी कल्पना थी। वह बिस्तर पर चली गईं और इस घटना के बारे में किसी को कुछ नहीं बताया।

दो हफ्ते बाद, श्रीमती ई. की चौदह वर्षीय बेटी और श्रीमती ई. देर रात तक बातें कर रही थीं, तभी अचानक रसोई की सारी अलमारियाँ अपने आप एक-एक करके खुल गईं। श्रीमती ई. की बेटी इस घटना को अविश्वास से देखती रही। लेकिन श्रीमती ई. ने बस इतना कहा, "अब इन्हें बंद कर दो।" और सच में, एक-एक करके वे अपने आप ज़ोर से बंद हो गईं, मानो कोई छोटा बच्चा अपनी शरारत में नाकाम हो गया हो। इस समय श्रीमती ई. ने अपनी बेटी को इस अदृश्य घटना के बारे में बताना उचित समझा और उससे विनती की कि वह इससे डरे नहीं, न ही छोटे बच्चों को बताए और न ही घर के बाहर किसी और को। वह नहीं चाहती थीं कि जिस मोहल्ले में वे अभी-अभी रहने आई थीं, वहाँ उन्हें एक अजीब इंसान के रूप में जाना जाए। हालांकि, उन्होंने अपने पति को इस घटना के बारे में बताने का फैसला किया। उन्होंने ज़्यादा कुछ नहीं कहा, लेकिन यह स्पष्ट था कि उन्हें यकीन नहीं हुआ। हालांकि, इस तरह के कई मामलों की तरह, जहाँ घर के पुरुष को महिला की तुलना में यकीन होने में ज़्यादा समय लगता है, श्री ई. का समय भी लगभग दो हफ्ते बाद आया।

वह टीवी देख रहे थे कि अचानक ही स्टीरियो स्पीकरों में से एक पीछे की ओर झुकने लगा, बिना गिरे अपने आप आगे-पीछे हिलने लगा, मानो किसी अदृश्य शक्ति ने उसे थाम रखा हो। व्यावहारिक स्वभाव के होने के कारण, श्री ई. कारण जानने के लिए उठे, लेकिन हवा इतनी तेज़ नहीं थी कि 20 पाउंड के स्पीकर को झुका सके। इस बिंदु पर, श्री ई. को लगा कि घर में कुछ अजीबोगरीब हो रहा है। यह अधिक संभावित था क्योंकि उनका कुत्ता, जो वैसे तो शांत और सौम्य जानवर है, स्पीकरों के झुकते ही एकदम बेकाबू हो गया और उसके बाद आधे घंटे तक घर में इधर-उधर भागता रहा, भौंकता रहा, सूंघता रहा और खूब हंगामा मचाता रहा।

लेकिन, भूत का राज़ खुल ही गया। नौ और दस साल के दो छोटे बच्चों ने उसे देख लिया— शुरू से तो यही माना जा रहा था कि वह एक आदमी है। घर में आए एक मेहमान ने कहा कि यह कितना अजीब है कि दरवाज़ा अपने आप खुल रहा है। श्रीमती ई. ने यह कहकर बात टाल दी कि कुंडी ठीक से काम नहीं कर रही है। "लेकिन फिर घुंडी कैसे घूमी?" मेहमान ने पूछा।

इन परिस्थितियों में, श्रीमती ई. ने अपने मेहमान के बारे में सब कुछ बता दिया। भूत श्रीमती ई. को डराता तो नहीं है, लेकिन कभी-कभी उनके लिए थोड़ी परेशानी खड़ी कर देता है, जैसे कि जब वे नहा रही होती हैं और दरवाजे अचानक खुल जाते हैं। आखिर, नहाते समय कोई भी किसी पुरुष द्वारा देखा जाना नहीं चाहेगा, चाहे वह भूत ही क्यों न हो। यह भूत हर समय तो दिखाई नहीं देता, लेकिन इतनी बार जरूर आता है कि उसे घर का एक अतिरिक्त सदस्य माना जा सकता है। जब भी उन्हें उसकी मौजूदगी का एहसास होता है, हॉल में एक अजीब सी ठंडक और गूंज सुनाई देती है। यह दिन-रात, सुबह-सुबह या देर रात, कभी भी हो सकता है। बच्चों को उससे कुछ चिंता होती है, और वे घर पर अकेले नहीं रहते।

लेकिन श्रीमती ई. के लिए वह महज एक दुर्भाग्यशाली इंसान है, जो अतीत की अपनी भावनाओं के जाल में फंसा हुआ है, समय की बाधा को पार करके उनसे संवाद करने की बेताब कोशिश कर रहा है, लेकिन परिस्थितियाँ अनुकूल न होने के कारण ऐसा करने में असमर्थ है। कभी-कभी वह चाहती हैं कि काश वह और अधिक मानसिक रूप से सक्षम होतीं, लेकिन फिलहाल उन्होंने उस व्यक्ति के साथ अपना घर साझा करने का फैसला कर लिया है जिसे वह देख नहीं सकतीं, लेकिन जो, ऐसा लगता है, खुद को परिवार का हिस्सा मानता है।

* * *

हाल ही में सामने आई सबसे आश्चर्यजनक कहानियों में से एक मध्य कनेक्टिकट के एक किसान परिवार से संबंधित है। कुछ लोगों के घरों में भूत होते हैं, एक ऐसा भूत जो उस जगह को इतना पसंद करता है कि उसे छोड़ना नहीं चाहता। लेकिन इस परिवार के घरों में भूतों के पूरे समूह ही बसे हुए थे, सिर्फ इसलिए कि उन्हें वह विशाल फार्महाउस बहुत पसंद था, और इसलिए भी कि वह उनका अपना घर था। मृत्यु के इस पड़ाव को पार कर जाने से भी उन्हें कोई फर्क नहीं पड़ा। इसके विपरीत, उनके लिए वहीं रुककर बच्चों को घर में क्या करते हुए देखना, उनकी थोड़ी-बहुत मदद करना और कम से कम कुछ तथाकथित "अस्पष्ट" घटनाएं करके उनके साथ मस्ती करना स्वाभाविक ही था।

आखिरकार, मध्य कनेक्टिकट में जीवन काफी नीरस हो सकता है, खासकर सर्दियों में। मध्य कनेक्टिकट में भूत होना भी कोई बहुत मजेदार नहीं है, इसलिए अगर ये भूत मरने के बाद भी अपना मनोरंजन करने की पूरी कोशिश करते हैं, तो कोई उन्हें दोष नहीं दे सकता। आज यह घर पुराना लगता है; इसकी हालत अच्छी नहीं है और इसे काफी मरम्मत की जरूरत है। परिवार अब उतना बड़ा नहीं है जितना पहले था, क्योंकि कुछ युवा पीढ़ी के लोग अपना जीवन शुरू करने के लिए घर से बाहर चले गए हैं, लेकिन भूत हों या न हों, यह अब भी एक चहल-पहल वाला और दोस्ताना घर है। यह मुख्य मार्ग से हटकर एक शांत ग्रामीण सड़क पर स्थित है, और साफ मौसम में आप दूर से मैसाचुसेट्स की सीमा देख सकते हैं; बशर्ते आप उसे ध्यान से देखें। यह मुश्किल से ही दिखाई देता है, क्योंकि देश के इस हिस्से में, पूरा न्यू इंग्लैंड एक जैसा दिखता है।

कई घटनाओं की अविश्वसनीय प्रकृति के कारण, परिवार किसी भी प्रकार की प्रचार-प्रसार, जिज्ञासु पर्यटकों या पत्रकारों से दूरी बनाए रखना चाहता है। उनकी इच्छाओं का सम्मान करते हुए, मैंने परिवार का नाम बदल दिया ताकि वे अपनी पहचान गुप्त रख सकें और अपने ग्रामीण घर की शांति और सुकून का आनंद ले सकें। यह घर तब भी पुराना था जब 1761 में बने शहर के नक्शे में इसे दर्शाया गया था। वर्तमान मालिक, हार्वे परिवार, अपने पूरे जीवन भर इसी घर में रहे हैं। श्रीमती हार्वे के परदादा-परदादी ने इसे मूल निर्माता से खरीदा था, और जब उनके परदादा का 1858 में निधन हुआ, तो यह उसी पुराने घर में हुआ। इसी प्रकार, उनकी परदादी का 1871 में अस्सी वर्ष की आयु में निधन हुआ, और यह भी घर पर ही हुआ। उनके बच्चों में से एक का 1921 में 91 वर्ष की आयु में निधन हो गया, वह भी घर पर ही।

यह महत्वपूर्ण है, क्योंकि इससे उनके वंशजों के जीवन में आगे घटी घटनाओं का पता चलता है। जूलिया नाम की एक बेटी ने एक बाहरी व्यक्ति से शादी की और दूसरे राज्य में चली गई, लेकिन वह खुद को परिवार का हिस्सा ही मानती थी, यहाँ तक कि उसका दूसरा घर मध्य कनेक्टिकट में स्थित पुराना पुश्तैनी घर ही था। एक और बेटी, मार्था, श्रीमती हार्वे की परदादी थीं। परदादी मार्था का 91 वर्ष की आयु में उसी घर में निधन हो गया। फिर उनकी एक चाची थीं, नैन्सी, जो उनके परदादा की बहन थीं, जो विधवा होने पर उनके साथ रहने आईं; वह 90 वर्ष की आयु तक जीवित रहीं और उसी घर में उनका निधन हो गया। उनका कुछ फर्नीचर

अभी भी घर में मौजूद है। श्रीमती हार्वे के दादा-दादी की केवल एक ही संतान थी, वियोला, जो उनकी माँ बनीं, लेकिन उन्होंने किराएदार रखे हुए थे, जिनमें से अधिकांश पास के आरा मिलों में काम करने वाले पुरुष थे। इनमें से एक किराएदार का भी घर में निधन हो गया, लेकिन उसका नाम अज्ञात है। संभवतः कई अन्य लोगों का भी वहीं निधन हुआ होगा।

बेशक, आज यह घर वैसा नहीं दिखता जैसा पहले दिखता था; मुख्य भाग में विस्तार किया गया, सीढ़ियाँ हटा दी गईं, तहखाने में मौजूद कुएँ को भर दिया गया क्योंकि परिवार के सदस्य साइडर लेने नीचे जाते समय उसमें गिर जाते थे, और कई कमरे जो बाद में शयनकक्ष बने, उनका मूल उपयोग कुछ और था। उदाहरण के लिए, बेटी मार्जोरी के शयनकक्ष को कभी हार्नेस रूम कहा जाता था क्योंकि वहाँ घोड़ों के हार्नेस बनाए जाते थे, और बेटों में से एक के कमरे को स्पष्ट कारणों से चीज़ रूम कहा जाता था। जो कमरा अब सिलाई कक्ष है, वह मूल रूप से एक पेंट्री के रूप में उपयोग किया जाता था, जिसकी अलमारियाँ दक्षिणी दीवार पर फैली हुई थीं।

घर भर में सीढ़ियों में बदलाव होना महत्वपूर्ण है, क्योंकि अतीत में रहने वालों के मन में, मूल सीढ़ियाँ स्वाभाविक रूप से बाद में किए गए बदलावों या जोड़-तोड़ से अधिक महत्वपूर्ण मानी जाती थीं। इस प्रकार, दीवार से प्रेत प्रकट हो सकते हैं, मानो बिना किसी कारण के, सिवाय इसके कि वे उन सीढ़ियों पर चढ़ रहे हों जो अब मौजूद नहीं हैं।

श्रीमती हार्वे का जन्म इसी घर में हुआ था, लेकिन चार साल की उम्र में उनके माता-पिता घर छोड़कर चले गए और बहुत समय बाद ही लौटे। फिर भी, श्रीमती हार्वे को एक ऐसी घटना याद है जिसे वे कभी नहीं भूल पाईं। जब वे केवल चार साल की थीं, तब उन्हें बहुत स्पष्ट रूप से याद है कि एक बूढ़ी औरत, जिसे उन्होंने पहले कभी नहीं देखा था, उनके पालने के पास प्रकट हुई। वे रोईं, लेकिन जब उन्होंने अपने माता-पिता को इसके बारे में बताया, तो उन्होंने उन्हें आश्वासन दिया कि यह सिर्फ एक सपना था। लेकिन श्रीमती हार्वे जानती थीं कि उन्होंने यह घटना सपना नहीं देखी थी; उन्हें उस बूढ़ी औरत के पहनावे की हर एक बात याद थी।

जब वह बारह साल की थी, उस समय जब परिवार उस घर में रहने के लिए वापस आया था, वह ऊपर के कमरों में से एक में थी और फिर से उसे वह बूढ़ी औरत दिखाई दी। लेकिन जब उसने इस बारे में अपने माता-पिता से बात की, तो मामला तुरंत दबा दिया गया। जैसे-जैसे

फ्रांसिस हार्वे उस घर में बड़ी होती गई, उसने कुछ अजीबोगरीब घटनाओं पर ध्यान देना शुरू कर दिया। एक लैंप अपने आप हिलने लगता था, बिना किसी के पास हुए। कई बार उसे घर के ऊपरी हिस्से में अपने पीछे किसी की मौजूदगी का आभास होता था, लेकिन जब वह मुड़कर देखती, तो वह अकेली होती थी। वह अकेली नहीं थी जिसने इन अजीबोगरीब घटनाओं पर ध्यान दिया था। उसके भाइयों ने अपने बिस्तरों के आसपास कदमों की आहट सुनी और शिकायत की कि कोई उनके ऊपर झुका हुआ है, फिर भी कोई दिखाई नहीं देता था। रात में कमरों के दरवाजे अपने आप खुल जाते थे, इतना कि लड़कों ने दरवाजों की कुंडी को आपस में बांध दिया ताकि वे अपने आप न खुल सकें। फिर भी, जब सुबह होती, तो दरवाजे पूरी तरह से खुले होते और गांठ अभी भी लगी होती।

उसी समय उनके पिता को रात के खाने के बाद सोने से पहले घर के चारों ओर टहलने की आदत पड़ गई। कई बार उन्होंने परिवार को बताया कि उन्हें ऊपर के कमरों में एक अजीब सी रोशनी दिखाई देती है, एक ऐसी चमकती रोशनी जिसका कोई तर्कसंगत कारण नहीं था। जब भी फ्रांसिस हार्वे को ऊपर अकेले रहना पड़ता, तो उन्हें असहज महसूस होता था, लेकिन जब उन्होंने इस बारे में अपने माता-पिता को बताया, तो उन्हें कहा गया कि सभी पुराने घरों में ऐसा ही महसूस होता है और इस पर ध्यान न दें। एक शाम, फ्रांसिस अपने दादाजी के साथ खेल रही थीं, तभी दोनों ने पीछे की सीढ़ियों से किसी के कदमों की आहट सुनी। लेकिन उनके दादाजी हिले तक नहीं। जब फ्रांसिस ने उनसे पूछा कि कौन हो सकता है, तो उन्होंने बस कंधे उचका दिए और कहा कि सबके लिए काफी जगह है।

जैसे-जैसे साल बीतते गए, हार्वे परिवार समय-समय पर मिलने के लिए घर आता रहता था। इन मौकों पर, फ्रांसिस रात में जाग जाती क्योंकि कोई उसके ऊपर झुका होता था। कभी-कभी बिस्तर पर गहरा गड्ढा होता था, मानो कोई वहाँ बैठा हो! किसी को बताने से इतना डरी हुई थी कि उसने अपने अनुभवों को कुछ समय के लिए अपने तक ही सीमित रखा।

फिर, 1940 के दशक की शुरुआत में, फ्रांसिस ने शादी कर ली और अपने पति और दो बच्चों के साथ, आखिरकार अपने दादा-दादी के साथ स्थायी रूप से रहने के लिए उसी घर में लौट आई। उनके वहाँ बसने के कुछ ही समय बाद, रात में फिर से वही भयानक एहसास होने

लगा। आखिरकार उसने अपने पति को बताया, जिसने भूतों की बात को सिरे से खारिज कर दिया।

घर का सबसे सक्रिय हिस्सा ऊपरी मंजिल पर ही प्रतीत होता था, मोटे तौर पर उसके बेटे डॉन की अलमारी से लेकर उसकी बेटी लोलिता के कमरे तक और विशेष रूप से सामने के गलियारे और सीढ़ियों तक। ऐसा लगता था मानो कोई सामने की सीढ़ियों के चबूतरे पर खड़ा होकर सब कुछ देख रहा हो।

यह बात काफी पुरानी है। श्रीमती हार्वे की मां अक्सर अटारी में काम करते समय शिकायत करती थीं कि अचानक उन्हें ऐसा महसूस होता था कि कोई उनके बगल में खड़ा है, जिसे वे देख नहीं सकती थीं।

एक दिन श्रीमती हार्वे और उनकी सबसे छोटी बेटी किराने का सामान खरीदने गईं। सामान रखने के बाद, श्रीमती हार्वे बैठक के सोफे पर आराम करने लगीं, जबकि बेटी भोजन कक्ष में बैठकर पढ़ने लगी। अचानक उन्हें बिजली कड़कने जैसी आवाज़ सुनाई दी, जबकि बाहर आसमान बिल्कुल साफ था। फिर वही आवाज़ आई, लेकिन इस बार वह पहले से ज़्यादा करीब सुनाई दी, मानो ऊपर से आ रही हो! जब तीसरी बार ऐसा हुआ, तो उसके साथ एक ऐसी आवाज़ भी सुनाई दी जैसे ऊपर श्रीमती हार्वे के बेटे के कमरे में कोई बिस्तर ठीक कर रहा हो।

वे लोग खरीदारी करने जल्दी में थे, इसलिए बिस्तर अस्त-व्यस्त छोड़ गए थे। ऊपर कोई और नहीं जा सकता था, फिर भी जब वे बेटे के कमरे में पहुँचे, तो बिस्तर पूरी तरह से सँवारा हुआ था। परिवार के कुछ सदस्य अब भी घर में भूत होने की बात पर यकीन नहीं करते थे और माँ की बातों को सपने या भ्रम समझते थे। लेकिन जल्द ही उनका यह विचार बदल गया, जब उनके साथ भी ऐसा ही हुआ।

सबसे बड़ी बेटी ने बड़ी हिम्मत दिखाई और सीढ़ियों से ऊपर पुकारा, “छोटे भूतों, तुम कहाँ हो?” उसकी माँ ने उसे समझाया कि उन्हें चुनौती न दे, लेकिन बाकी लोगों को यह मज़ेदार लगा। उस रात वह सोने के कुछ ही देर बाद नीचे आई और शिकायत की कि उसे अपने कमरे में अजीब सा महसूस हो रहा है, लेकिन उसने सोचा कि यह सिर्फ़ उसका वहम है। अगली रात, वह इस एहसास से जागी कि कोई उसके ऊपर झुका हुआ है। उसके तकिए का

एक किनारा उसके सिर से ऐसे हट गया था जैसे किसी ने उसे नीचे धकेल दिया हो। उसने आवाज़ लगाई और अपने कमरे से कदमों की आहट दूर होते हुए सुनी, जिसके बाद ऊपर अटारी में ज़ोरदार गड़गड़ाहट सुनाई दी। वह जल्दी से अपनी बहन के कमरे में भागी, जहाँ दोनों पूरी रात जागती रहीं और ऊपर गड़गड़ाहट और कदमों की आहट सुनती रहीं। अगले दिन उसने अपने बिस्तर के बगल में हल्के रंग के कालीन पर एक धूल भरा काला पदचिह्न देखा। यह ठीक उसी जगह पर था जहाँ उसने किसी को अपने ऊपर खड़े और झुके हुए महसूस किया था। घर में किसी के भी पदचिह्न उस काले पदचिह्न से मेल नहीं खाते थे, क्योंकि वह लंबा और बहुत पतला था। इस बिंदु पर लड़कियों ने विशेष नाइट लाइटें खरीदीं और उन्हें जलाकर छोड़ दिया, इस उम्मीद में कि वे शांति से सो सकेंगी।

एक दिन श्रीमती हार्वे ने हिम्मत जुटाई और अपनी माँ के शयनकक्ष से आती आहट सुनकर सीढ़ियों पर चढ़ने लगीं। वह रुक गईं, और जैसे ही आहट सीढ़ियों के ऊपर पहुँची, उनके साथ एक तेज़ टिक-टिक की आवाज़ आई, जैसे कोई बड़ी जेब घड़ी बज रही हो। वह जल्दी से सीढ़ियों से नीचे भागीं और अपने बेटे को गवाह बनाने के लिए बाहर ले आईं। सचमुच, उसे भी टिक-टिक की आवाज़ सुनाई दी। इसके बाद दरवाजे अपने आप खुलने और बंद होने लगे। आखिरकार, उन्होंने हिम्मत करके ऊपर जाने का फैसला किया, और जब वे सामने वाले शयनकक्ष में दाखिल हुईं, तो उन्हें इत्र की एक बहुत तेज़, मीठी खुशबू महसूस हुई। जब उनकी दो बेटियाँ उस शाम काम से घर लौटीं, तो परिवार ने आपस में बात की और पता चला कि उन्हें भी ऊपर अजीब इत्र की खुशबू आई थी और टिक-टिक की आवाज़ सुनाई दी थी। उन्होंने निष्कर्ष निकाला कि उनके भूतों में से कम से कम एक भूत पुरुष था।

लगभग उसी समय, सबसे छोटी बेटी ने अपने कमरे में एक बूढ़ी औरत को देखा, जो एक दराज के पास खड़ी थी और उसके हाथ में कोई चमकदार चीज़ थी। भूत ने वह चीज़ उसे देने की कोशिश की, लेकिन वह इतनी डरी हुई थी कि उसे ले नहीं पाई। चूंकि उसने उस औरत का बहुत विस्तार से वर्णन किया था, इसलिए श्रीमती हार्वे ने पारिवारिक एल्बम निकाला और अपनी बेटी से उसे देखने को कहा, इस उम्मीद में कि शायद वह उस भूतिया आगंतुक को पहचान ले। जब वे एक खास तस्वीर पर पहुँचे, तो लड़की ने खुशी से चीख मारी: यही वह औरत थी जिसे उसने देखा था! पता चला कि वह जूलिया थी, श्रीमती हार्वे की परदादी, वही

औरत जिसे श्रीमती हार्वे ने खुद बारह साल की उम्र में देखा था। जाहिर है, वह महिला वहीं आसपास रह रही थी।

श्रीमती हार्वे का ध्यान घर में घट रही घटनाओं से हटकर उनकी मां की बीमारी पर चला गया था। एक कर्तव्यनिष्ठ बेटी की तरह, उन्होंने अंत तक उनकी देखभाल की, लेकिन उसी वर्ष मार्च में उनकी मां का देहांत हो गया। चाहे इसका उनकी मां की मृत्यु से कोई संबंध हो या न हो, उसी वर्ष जुलाई में ये घटनाएं तीव्रता और तीव्रता दोनों में बहुत बढ़ गईं। सटीक कहें तो, तारीख 20 जुलाई थी। एक सुबह श्रीमती हार्वे अपनी बेटी लोलिता को शहर के केंद्र तक ले जाने की जल्दी में थीं ताकि वह काम पर जाने के लिए सवारी ले सके। उनका मन घरेलू कामों में लगा हुआ था, तभी अचानक ब्रेक की तेज आवाज के साथ एक कार सड़क पर आई। आदत के अनुसार, वह यह सुनिश्चित करने के लिए बैठक के कमरे की खिड़की पर दौड़ीं कि कहीं उनकी कोई बिल्ली कार की चपेट में तो नहीं आ गई। बाहर अचानक ब्रेक लगने की आवाज आने पर यह उनकी और उनकी मां की आदत थी।

ऐसा करते समय, एक पल के लिए ही सही, उन्होंने अपनी दिवंगत माँ को अपनी पसंदीदा खिड़की से बाहर देखते हुए देखा। पहले तो उन्हें कुछ समझ नहीं आया, फिर श्रीमती हार्वे को एहसास हुआ कि उनकी माँ वहाँ हो ही नहीं सकती थीं। हालाँकि, समय कम था, इसलिए श्रीमती हार्वे और उनकी बेटी लोलिता घर के किसी भी सदस्य से कुछ कहे बिना शहर के लिए निकल गईं। जब वे लौटीं, तो उनकी बेटी मार्जोरी बाहर उनका इंतज़ार कर रही थी। उसने शिकायत की कि उनके जाने के तुरंत बाद बैठक में किसी के चलने-फिरने की आवाज़ आई, और वह आवाज़ बिल्कुल दादी माँ की सोफे और कुर्सी के कवर ठीक करने जैसी थी।

इससे वह डर गई, इसलिए उसने भोजन कक्ष में अपनी माँ के लौटने का इंतज़ार करने का फैसला किया। लेकिन वहाँ रहते हुए, उसने बैठक से आती हुई कदमों की आहट सुनी, जो बैठक में जा रही थी, फिर कपड़े तह करने की आवाज़ आई। श्रीमती हार्वे की माँ भी अक्सर वहाँ ऐसा ही करती थीं। मार्जोरी के लिए यह काफ़ी था कि वह घर के बाहर भागी और वहाँ इंतज़ार करने लगी। अपनी बहन और माँ के साथ, वह बैठक में लौटी, तो देखा कि कुर्सी का कवर सीधा किया हुआ था। सीधा किया हुआ कवर देखकर श्रीमती हार्वे की रगों में खून जम गया; उन्हें अच्छी तरह याद आ गया कि उन्होंने अपनी दिवंगत माँ से उनकी बीमारी के दौरान

कुर्सी के कवर सीधे न करने के लिए कहा था, क्योंकि इससे उनकी पीठ में दर्द होता था। जवाब में, उनकी माँ ने कहा था, "काश मैं मरने के बाद वापस आकर यह कर पाती।"

बेटी जेन की शादी एक नौसेना अधिकारी से हुई थी, जो अक्सर अपनी छुट्टियां पुराने घर में बिताता था। प्रेम प्रसंग के दिनों में भी, वह और श्रीमती हार्वे की मां आपस में बहुत अच्छे से घुलमिल गए थे और वे साथ में क्रॉसवर्ड पहेलियां हल किया करते थे। बुजुर्ग महिला की मृत्यु के कुछ समय बाद, वह घर में सो रहा था, जब वह जागा तो उसने देखा कि उसकी मां पहेली की किताब और पेंसिल हाथ में लिए उसके बिस्तर के पास खड़ी है। श्रीमती हार्वे को अब यह स्पष्ट हो गया था कि उनकी दिवंगत मां मृत रिश्तेदारों के समूह में शामिल हो गई हैं ताकि उन पर और परिवार पर नजर रख सकें। बीमारी के दौरान भी, श्रीमती हार्वे की मां घर के कामों में मदद करना चाहती थीं। उनकी मृत्यु के एक दिन बाद, श्रीमती हार्वे कस्टर्ड पाई बना रही थीं और पकते समय कुछ मिनटों के लिए सोफे पर लेट गईं।

वह सो गई होगी, क्योंकि वह अपनी माँ की आवाज़ सुनकर जागी, "तुम्हारी पाई जलेगी तो नहीं ना?" श्रीमती हार्वे जल्दी से उठीं और जाँच की; पाई बिल्कुल सही थी और अगर उसे थोड़ी देर और रखा जाता तो जल जाती। उसी शाम कुछ और हुआ। श्रीमती हार्वे शाम 7:30 बजे टीवी पर आने वाला एक कार्यक्रम देखना चाहती थीं, लेकिन वह थकी हुई थीं और दोपहर बाद सोफे पर सो गईं। अचानक उन्होंने अपनी माँ की आवाज़ सुनी, "बेटी, तुम्हारे कार्यक्रम का समय हो गया है।" श्रीमती हार्वे ने घड़ी देखी, और ठीक 7:30 बज रहे थे। ज़ाहिर है, उनकी माँ भी जीवित रहते हुए ठीक ऐसा ही करती थीं, इसलिए यह आश्चर्य की बात नहीं थी कि परलोक जाने के बाद भी उनकी ये चिंताजनक आदतें जारी रहीं।

लेकिन अगर मिसेज़ हार्वे की माँ भी घर में भूतों के समूह में शामिल हो गई थीं, तो भी वे इन घटनाओं की मुख्य वजह नहीं थीं—बिल्कुल भी नहीं। ऊपर लोलिता का कमरा कई गतिविधियों का केंद्र लगता था, और उसके बगल में ही उसके भाई डॉन का कमरा भी इसमें काफी शामिल था। कोई उसकी अलमारी से उसके कमरे तक जा रहा था, और उसके भाई ने भी कदमों की आहट सुनी। लोलिता ने ऊपर देखा तो उसे सोने के बटन वाली वर्दी पहने एक आदमी उसकी अलमारी के पीछे खड़ा दिखाई दिया। कभी-कभी उसे इत्र की खुशबू आती और किसी के कपड़े पहनने की आवाज़ सुनाई देती। हर समय उसे लोगों के सामने की

सीढ़ियों से ऊपर जाते हुए, कुछ बुदबुदाते हुए सुनाई देते, फिर वे उसकी अलमारी में चले जाते जहाँ आवाज़ अचानक बंद हो जाती। फिर भी, ऐसे मौकों पर उन्हें कोई दिखाई नहीं देता था।

बेटी जेन भी इन सब से अछूती नहीं रही। कई रातों को उसे ऐसा महसूस होता था कि कोई उसके बिस्तर के पास, बिस्तर और दीवार के बीच खड़ा है। उसने तीन अलग-अलग लोगों को देखा और महसूस किया कि कोई उसे बिस्तर से उठाने की कोशिश कर रहा है। हालांकि, वह उनके चेहरे नहीं देख पाई; उनकी आकृतियाँ काली परछाइयों जैसी थीं। जेन के बगल वाले कमरे में सो रही मार्जोरी ने भी कुछ अदृश्य शक्तियों द्वारा बिस्तर से उठाने की कोशिश का अनुभव किया। गिरने से बचने के लिए उसने बिस्तर का तख़्ता पकड़ लिया, तभी उसे उसी बूढ़ी औरत का भूत दिखाई दिया जिसे श्रीमती हार्वे ने उस समय देखा था जब उन्होंने कई लोगों को अपने कमरे से निकलकर सामने वाले हॉल की ओर जाते हुए सुना था।

एक रात वह जाग उठी तो उसने देखा कि कोई लंबे काले कोट में जल्दी-जल्दी हॉल से गुजर रहा है। उस दिशा से कुछ बुदबुदाहट सुनाई दी, इसलिए उसने कान दरवाजे से लगाकर सुनने की कोशिश की, पर उसे कुछ सुनाई नहीं दिया। मार्जोरी ने भी उस बूढ़ी औरत को अपने बिस्तर के पास खड़े देखा—वही बूढ़ी औरत जिसे श्रीमती हार्वे ने बारह साल की उम्र में देखा था। ज़ाहिर है, यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है; जिस कमरे में मार्जोरी सोती थी, वह बहुत समय पहले जूलिया का कमरा हुआ करता था। लोलिता को भी कई तरह के अनुभव हुए: तहखाने से आती आवाज़ें उसे परेशान करती थीं, कदमों की आहट, आवाज़ें, यहाँ तक कि जंजीरों की आवाज़ भी। उसे ऐसा लगता था कि ये आवाज़ें सीधे उसके सिर के पास वाली दीवार से आ रही हैं, जहाँ पहले सीढ़ियाँ हुआ करती थीं। आखिरकार, हालत इतनी बिगड़ गई कि लोलिता ने अपनी माँ से उसके साथ सोने के लिए कहा। जब श्रीमती हार्वे मान गईं, तो दोनों महिलाओं ने साफ देखा कि बैठक से एक रोशनी अंदर आई और उस जगह चली गई जहाँ पहले अलमारियाँ हुआ करती थीं। फिर बर्तनों की आवाज आई और खाने की खुशबू भी आने लगी।

ज़ाहिर है, प्रेतात्माएँ अब भी अपने ही अंदाज़ में घर में मौजूद थीं, अपने अतीत के कुछ सुखद या कम से कम व्यस्त पलों को जी रही थीं। अब तक श्री हार्वे को पक्का यकीन हो चुका था कि

वे इस घर में कई मृत रिश्तेदारों के साथ रहते हैं, शायद दोस्तों के साथ भी। कई बार वे दराज पर बोतलें रखे जाने की आवाज़ से जाग जाते थे। एक रात वे बिस्तर के ज़ोर से हिलने के कारण जागे; जैसे ही वे पूरी तरह जागे, कंपन रुक गई। इसके बाद एक रात श्रीमती हार्वे ने बिस्तर के नीचे से कमरे में एक चमकती रोशनी देखी। जब "वे" हॉल के बंद दरवाज़े तक पहुँचे, तो श्रीमती हार्वे को उसके खुलने की आवाज़ सुनाई दी, लेकिन वह वास्तव में हिला नहीं। फिर भी आवाज़ दरवाज़ा खुलने की थी। इसके बाद उन्होंने कई लोगों को सीढ़ियों से ऊपर जाते हुए सुना, वे बुदबुदाते हुए जा रहे थे।

अगली रात उनके अंगीठी के पास एक रोशनी रुकी, और जब उन्होंने गौर से देखा तो वह किसी झुकी हुई आकृति जैसी लग रही थी। बात इतनी बढ़ गई कि वे लगभग हर सुबह अपने व्यस्त घर में आगे क्या हुआ, यह जानने के लिए आपस में चर्चा करने लगे। एक चांदनी रात को श्रीमती हार्वे की नींद खुली तो उन्होंने देखा कि उनके बिस्तर की चादरें पूरी लंबाई में आधी मुड़ी हुई थीं। उनके पति पूरी तरह से ढके हुए थे, लेकिन वह पूरी तरह से ढकी हुई थीं। उसी समय, उन्होंने बिस्तर के किनारे कुछ काली परछाइयाँ देखीं। उन्हें महसूस हुआ कि किसी का हाथ उनका हाथ पकड़े हुए है और उन्हें धीरे से खींच रहा है। डर के मारे वह हिल भी नहीं सकीं और बस वहीं लेटी रहीं, सोचती रहीं कि आगे क्या होगा। फिर चादरें पहले की तरह वापस बिछा दी गईं, उन्हें अपने माथे पर किसी ठंडी चीज का स्पर्श महसूस हुआ और भूत चले गए। लेकिन पीछे रह गए भूत हानिरहित थे और उनका कोई बुरा इरादा नहीं था। कुछ रातों को, श्रीमती हार्वे ठंडी हवा के कारण जाग जातीं और देखतीं कि चादरें बिस्तर से सीधी खड़ी हैं, मानो किसी ने उन्हें पकड़ रखा हो। उन्हें जोर से वापस अपनी जगह पर धकेलने के बाद भी वे नहीं टिकतीं।

दूसरी ओर, कई बार ऐसा भी होता था कि रात में वह गलती से अपने कपड़े उतार देती थी और महसूस करती थी कि कोई उसे फिर से कंबल ओढ़ा रहा है, मानो उसे रात की ठंड से बचा रहा हो। यह ज़्यादा ज़रूरी था, क्योंकि घर में सेंट्रल हीटिंग नहीं थी। ज़ाहिर है, यह हमेशा स्पष्ट नहीं था कि भूत उससे क्या चाहते थे। एक ओर, वे उसकी और परिवार की भलाई के लिए चिंतित थे; दूसरी ओर, ऐसा लगता था कि वे खुद भी ध्यान आकर्षित करना चाहते थे।

दो बार उन्होंने श्रीमती हार्वे को बिस्तर से उठाने की कोशिश की। उन्हें महसूस हुआ कि किसी अदृश्य हाथ ने उन्हें बिस्तर से कई इंच ऊपर उठा लिया है। उन्होंने अपने पति को पुकारने की कोशिश की, लेकिन किसी तरह एक शब्द भी नहीं बोल पाईं। इसके बाद वे एक अजीब, स्वप्न जैसी अवस्था में चली गईं, जिसमें उन्हें याद आया कि उन्हें अटारी में ले जाया गया था और कुछ दिखाया गया था। दुर्भाग्य से, बाद में उन्हें वह सब याद नहीं रहा, सिवाय इसके कि वे अटारी में गई थीं और वहाँ के फर्श कैसे दिख रहे थे; उन्हें यह भी याद आया कि अटारी काली धूल से ढकी हुई थी। सुबह होने पर उन्होंने अपने पैरों को देखा: वे धूल से सने थे, और उनके बिस्तर का निचला हिस्सा धूल से धूसर रंग का हो गया था। जब वे इन अकाट्य तथ्यों पर विचार कर रही थीं, तभी उनके पति ने उनसे पूछा कि रात में उन्हें क्या हुआ था। जाहिर है, वह जागने पर उन्हें बिस्तर से गायब पाया था।

एक रात बेटी मार्जोरी डेट पर गई हुई थी। श्रीमती हार्वे की नींद कार के आने की आवाज़ से खुली, कार मार्जोरी को घर लेकर आई थी। बिस्तर से उन्हें पीछे की सीढ़ियों के चार पायदान साफ़ दिखाई दे रहे थे। लेटे-लेटे ही उन्होंने एक महिला को बिना किसी आवाज़ के, मानो तैरते हुए, सीढ़ियों से नीचे आते देखा। उसने सफ़ेद शिफॉन की पोशाक पहनी हुई थी। उसी समय, उनकी बेटी मार्जोरी बैठक में दाखिल हुई। उसने भी शिफॉन की पोशाक वाली उस लड़की को सीढ़ियों से नीचे बैठक में आते और दूसरे शयनकक्ष के दरवाज़े से अंदर जाते देखा। हालाँकि दरवाज़ा पूरी तरह खुला था और अंदर जाने के लिए काफ़ी जगह थी, फिर भी उस प्रेतवाधित महिला ने दरवाज़े से ही जाना बेहतर समझा।

घर में रह गए कुछ लोग घर के असली लोगों की रोज़मर्रा की ज़िंदगी में दखल देने की पूरी कोशिश करते थे। कई बार बैठक में लगे पौधों को किसी अदृश्य हाथ से इधर-उधर कर दिया जाता था और उनकी देखभाल की जाती थी। हार्वे परिवार पौधों को हिलते हुए साफ़ देख सकता था, लेकिन उनके पास कोई नहीं होता था; मतलब, कोई भी इंसान आँखों से दिखाई नहीं देता था। अब बहुत कुछ बुदबुदाहट सुनाई दे रही थी, और आखिरकार उन्हें कुछ शब्द समझ में आने लगे। एक दिन बेटी मार्जोरी ने अपनी दादी को यह कहते हुए सुना कि "वे" तीन हफ़्तों में वापस आ जाएँगे। वाकई, तीन हफ़्तों तक भूतिया घटना का कोई नामोनिशान नहीं था। ठीक तीन हफ़्ते पूरे होने के बाद, वही घटनाएँ फिर से शुरू हो गईं। इस बीच भूत कहाँ

चले गए थे? एक और मौके पर, मार्जोरी ने किसी को यह कहते हुए सुना, "बिस्तर के उस तरफ जेन है, लेकिन दूसरी तरफ कौन है? बिस्तर तो कितना चिकना लग रहा है।" यह बात श्रीमती हार्वे को समझ में आई। उनकी माँ, जब स्वस्थ थीं, कभी-कभी जेन के साथ सोती थीं। दूसरी ओर, बेटी मार्जोरी को बिल्कुल सपाट लेटना पसंद है, इसलिए उसका बिस्तर देखने में काफी चिकना लगता है।

आम लोग मानते हैं कि भूत सिर्फ रात में ही घूमते हैं। लेकिन श्रीमती हार्वे की गवाही के अनुसार, सच्चाई इससे बिलकुल परे है। अक्सर, जब वह दिन में घर में अकेली होती थीं, तो उन्हें ऊपर के दरवाज़े ज़ोर से बंद होने और फिर खुलने की आवाज़ सुनाई देती थी। एक दिन, उन्हें जेन की अलमारी पर किसी के कुछ रखने की आवाज़ सुनाई दी, इसलिए उन्होंने ऊपर जाकर देखने की कोशिश की। सावधानी से दबे पांव सीढ़ियों पर चढ़कर जेन के कमरे में झाँकते हुए, यह देखने के लिए कि क्या वह सच में किसी भूत को पकड़ सकती हैं, वह हॉल के बीच में ही थीं कि उन्हें अपने बेटे डॉन के बिस्तर के पास से आती हुई कदमों की आहट सुनाई दी। जल्दी से, वह सीढ़ियों से नीचे उतरीं और बीच में ही रुक गईं। कदमों की आहट किसी महिला की लग रही थी, और अचानक एक टैफेटा गाउन की सरसराहट सुनाई दी। एक तेज़ आवाज़ के साथ, भूत श्रीमती हार्वे के पास से गुज़रा और जेन के कमरे में चला गया। श्रीमती हार्वे वहीं सीढ़ियों पर जम गईं और वहीं खड़ी रह गईं।

कुछ ही देर बाद उस महिला के कदमों की आहट सुनाई दी, लेकिन इस बार उसके साथ कोई और भी था, कोई भारी-भरकम आदमी। वे डॉन के कमरे से होते हुए लोलिता की कोठरी में पहुँच गए—वही जगह जहाँ लोलिता ने सुनहरे बटनों वाली वर्दी पहने उस आदमी को देखा था। श्रीमती हार्वे तुरंत उनके पीछे नहीं गईं, लेकिन उस रात उन्होंने लोलिता के कमरे में जाकर कोठरी को फिर से देखने का फैसला किया। जैसे ही वे कमरे के दरवाजे के पास पहुँचीं, वह खुल गया, जो कोई असामान्य बात नहीं थी क्योंकि वह हल्की सी कंपन से ही खुल जाता था। लेकिन श्रीमती हार्वे के बंद करने से पहले ही, वह अपने आप कसकर बंद हो गया और कुंडी अपने आप ही लग गई। उस रात श्रीमती हार्वे ने आगे किसी बात का इंतज़ार नहीं किया।

कुछ समय तक शांति रही। लेकिन अक्टूबर में ये घटनाएँ फिर से शुरू हो गईं। एक रात श्रीमती हार्वे की नींद तब खुली जब उन्होंने देखा कि भोजन कक्ष से आ रही रोशनी को एक परछाई रोक रही है। उन्होंने दरवाजे की ओर देखा तो पाया कि काले वस्त्र पहने एक महिला उनके शयनकक्ष में आई और बिस्तर के पास खड़ी हो गई। इस बार उन्होंने उसे स्पष्ट रूप से बोलते हुए सुना।

“क्या आप तैयार हैं? जाने का समय लगभग हो गया है।”

इसके साथ ही, वह प्रेत मुड़ा और सीढ़ियों पर चढ़ने लगा। सीढ़ियाँ असामान्य रूप से रोशन लग रही थीं, मानो चाँदनी उन्हें रोशन कर रही हो। जब काले वस्त्र वाली महिला सबसे ऊपर वाली सीढ़ी पर पहुँची, तो सब शांत हो गया और सीढ़ियाँ फिर से पहले की तरह अंधेरी हो गईं। श्रीमती हार्वे को उसके कपड़े तो साफ़ दिखाई दे रहे थे, लेकिन उसका चेहरा नहीं। उन्होंने देखा कि प्रेत के पास एक थैलीनुमा पर्स था, जिसे उसने अपनी बांह पर रखा हुआ था ताकि सीढ़ियाँ चढ़ते समय उसके हाथ स्कर्ट उठाने के लिए खाली रहें। अगली सुबह, श्रीमती हार्वे ने अपने पति को उस घटना के बारे में बताया। उन्होंने उन्हें आश्वासन दिया कि उन्होंने यह सब सपना देखा होगा। लेकिन इससे पहले कि वह कुछ कह पातीं, उनकी बेटी मार्जोरी अंदर आई और कहा कि उसने रात में किसी को बात करते सुना था, कुछ आने के बारे में और लगभग समय हो जाने के बारे में। उसने अपने बिस्तर के पास एक आकृति देखी, जिसका वर्णन उसने श्रीमती हार्वे द्वारा देखी गई आकृति के समान बताया।

थैंक्सगिविंग से एक रात पहले, मार्जोरी ने सीढ़ियों से नीचे आते कदमों की आहट सुनी। वह बिस्तर पर थी और यह देखने के लिए उठने की कोशिश की कि कौन है, लेकिन किसी तरह हिल नहीं सकी, सिवाय इसके कि उसने अपनी आँखें खोलीं और देखा कि पाँच लोग उसके बिस्तर के पास खड़े हैं! उनमें से दो महिलाएँ थीं, बाकी लोग बस धुंधली आकृतियाँ या परछाइयाँ लग रही थीं। उन दो महिलाओं में से एक ने पुराने ज़माने की टोपी पहन रखी थी और वह बहुत गंभीर दिख रही थी। मार्जोरी उस समूह को देख रही थी, तभी वह अपने बिस्तर पर थोड़ा सा लुढ़की और उसे अपने बगल में किसी के होने का एहसास हुआ। यह सोचकर उसे राहत मिली कि वह उसकी माँ है, लेकिन फिर जो भी था वह उठा और समूह के बाकी लोगों के साथ चला गया। वे लगातार आपस में बातें करते रहे, लेकिन मार्जोरी समझ नहीं पाई

कि क्या कहा जा रहा है। बातें करते हुए, वे प्रेतवाधित आगंतुक वापस सीढ़ियों से ऊपर चले गए।

क्रिसमस तक कुछ खास नहीं हुआ। फिर से सीढ़ियों पर ऊपर-नीचे दौड़ते कदमों की आहट सुनाई देने लगी, लेकिन कोई दिखाई नहीं दिया। क्रिसमस की रात, जेन और उसकी माँ ने बैठक के ऊपर वाले कमरे में किसी के चलने की आवाज़ सुनी, जहाँ श्रीमती हार्वे की माँ सोया करती थीं। उस समय श्री हार्वे काफी बीमार थे और सिलाई वाले कमरे में सो रहे थे ताकि उनकी पत्नी के जल्दी उठने पर उनकी नींद न टूटे।

दो अलग-अलग मौकों पर श्रीमती हार्वे के घर में "अदृश्य व्यक्ति" आए। पहली बार किसी ने उन्हें बिस्तर से कुछ इंच ऊपर उठा लिया। जाहिर है, उनके बगल में बिस्तर पर कोई और भी था, क्योंकि जब उन्होंने हाथ बढ़ाया तो वह व्यक्ति उठकर चला गया। इसके बाद उन्होंने सीढ़ियों पर कदमों की आहट और किसी के हंसने की आवाज सुनी, फिर सब कुछ शांत हो गया। लगभग एक हफ्ते बाद, एक रात उनकी नींद खुली तो उन्हें महसूस हुआ कि कोई उनकी कोहनी और टखने को जोर से खींच रहा है। उन्होंने दूसरे हाथ से बिस्तर के ऊपरी हिस्से को पकड़ लिया। लेकिन अदृश्य शक्तियों ने उन्हें धक्का दिया, जिससे उन्हें दीवार का सहारा लेना पड़ा।

अचानक सब कुछ थम गया, फिर भी किसी के जाने की कोई आहट नहीं सुनाई दी। श्रीमती हार्वे बिस्तर से उछलकर उठीं और बत्ती जलाने की कोशिश की। बत्ती नहीं जली। वह वापस बिस्तर पर गईं तभी उन्हें एक आवाज़ सुनाई दी जो कह रही थी कि चिंता न करें, उनके पति ठीक हो जाएंगे। यह सोचकर उन्हें राहत मिली, तभी आवाज़ ने आगे कहा, "लेकिन आप ठीक नहीं होंगी।" फिर उस अदृश्य आवाज़ ने शांत भाव से उन्हें बताया कि किसी पेड़ की छाल के टुकड़े से हुए हादसे में उनकी मृत्यु हो जाएगी। आवाज़ ने बस इतना ही कहा, लेकिन इतना ही उन्हें चिंतित करने के लिए काफी था। इन परिस्थितियों में, और अपने परिवार को परेशान न करने के लिए, उन्होंने इस बारे में चुप रहना ही बेहतर समझा, और अंततः सोचा कि उन्होंने यह सब सपना देखा था। आखिर, अगर यह सिर्फ एक सपना था, तो किसी को बताने का कोई मतलब नहीं था, और अगर यह सच था, तो वैसे भी वह कुछ नहीं कर सकती थीं, इसलिए अपने परिवार को परेशान करने का कोई फायदा नहीं था। वह घटना को लगभग भूल ही

चुकी थीं कि लगभग एक हफ्ते बाद उनके साथ एक हादसा हो गया। लकड़ियों के शेड में उनके सिर में काफी चोट लगी, जिसके लिए उन्हें अस्पताल ले जाना पड़ा। जब वह अभी भी यह सोच ही रही थी कि क्या यह वही घटना थी जिसका जिक्र उस रहस्यमयी आवाज ने किया था, तभी उसके साथ एक और हादसा हो गया: एक भारी कांटा उस पर गिर गया और वह बेहोश हो गई।

लेकिन उस आवाज ने कहा था कि उसकी मौत एक दुर्घटना में होगी, इसलिए श्रीमती हार्वे को बिल्कुल भी यकीन नहीं था कि वे दोनों घटनाएं, चाहे कितनी भी दर्दनाक क्यों न रही हों, वही थीं जिनका जिक्र उस आवाज ने किया था। जाहिर है, भूतों को लोगों को परेशान करने में परोक्ष आनंद मिलता है, क्योंकि उस अदृश्य आवाज द्वारा दुर्घटना में मरने की बात कहे जाने के वर्षों बाद भी श्रीमती हार्वे जीवित और स्वस्थ हैं।

लेकिन भूतों से निपटना ही काफी नहीं था, श्रीमती हार्वे को एक भूतिया कुत्ते का भी सामना करना पड़ रहा था। उनकी प्यारी पालतू कुतिया, लूसी, पिछले मार्च में इस दुनिया से विदा हो गई। परिवार के सदस्य की तरह मानी जाने वाली लूसी को मुख्य शयनकक्ष में सोने की अनुमति थी, लेकिन जैसे-जैसे वह बूढ़ी होती गई, उसने कालीन गीला करना शुरू कर दिया, इसलिए अंततः उसे बाहर रखना पड़ा।

कुत्ते की मृत्यु के बाद, मार्जोरी ने अपनी माँ को एक और कुत्ता देने की पेशकश की, लेकिन श्रीमती हार्वे लूसी की जगह कोई और कुत्ता नहीं चाहती थीं; कोई दूसरा कुत्ता उसकी जगह नहीं ले सकता था। पेशकश और उसके ठुकराए जाने के कुछ ही समय बाद, लोलिता ने बाथरूम के दरवाजे पर एक जानी-पहचानी खरोंच की आवाज़ सुनी। यह बिल्कुल वैसी ही आवाज़ थी जैसी लूसी हमेशा तब करती थी जब लोलिता देर रात घर आती थी। पहले तो श्रीमती हार्वे को लगा कि उनकी बेटी ने शायद कल्पना की है, लेकिन फिर बेडरूम के कालीन पर वही जानी-पहचानी गीली जगह फिर से दिखाई दी। उन्होंने छत में रिसाव की जाँच करने की कोशिश की, लेकिन कालीन के गीले होने का कोई तर्कसंगत कारण नहीं मिला। गीली जगह लगभग एक महीने तक बनी रही। इस दौरान, कई लड़कियों ने एक ऐसी आवाज़ सुनी जो उन्हें लूसी के चलने की याद दिलाती थी। आखिरकार कालीन सूख गया और लूसी की आत्मा का चलना बंद हो गया।

कई सालों से घर में सन्नाटा पसरा हुआ है। क्या भूतों को उनका अंजाम मिल गया है, उनका पुनर्जन्म हो गया है, या वे अपने सगे-संबंधियों के साथ रहते-रहते थक गए हैं? पीछे छूट जाने वाले भूत आमतौर पर अनिश्चित काल तक ही रहते हैं; सिवाय तब जब उन्हें लगे कि उनकी कोई ज़रूरत नहीं है। या शायद वे बस ऊब गए हों।

* * *

कई साल पहले, कंसास के एक प्रमुख विश्वविद्यालय परिसर में एक दुखद घटना घटी। 21 सितंबर को एक छोटी बिरादरी, टीकेई के एक सदस्य की आमने-सामने की कार दुर्घटना में मृत्यु हो गई। इतनी कम उम्र में उनकी अचानक मृत्यु—वे स्नातक छात्र थे—ने बिरादरी के अन्य सदस्यों को गहरा सदमा पहुँचाया और यह निर्णय लिया गया कि वे सभी सामूहिक रूप से न्यूयॉर्क में उनके अंतिम संस्कार में शामिल होंगे।

उस दुखद दुर्घटना के लगभग एक साल बाद, बिरादरी के कई सदस्य अपने मुख्यालय में थे। कुछ समय बाद, उनमें से एक सदस्य और उसकी प्रेमिका घर के तहखाने में अकेले पढ़ाई कर रहे थे। पढ़ाई पूरी होने पर वे चले गए। जब वे बाहर पहुँचे, तो महिला को याद आया कि उसने अपना पर्स तहखाने में ही छोड़ दिया है और वह उसे लेने वापस लौटी। तहखाने में प्रवेश करते ही उसने देखा कि एक आदमी पोकर टेबल पर बैठा चिप्स खेल रहा है। उसने उससे कुछ कहा, अपनी बात समझाई, फिर अपना पर्स उठाया और ऊपर लौट गई। वहाँ उसने अपने साथी से पूछा कि तहखाने में वह आदमी कौन था, क्योंकि उसने उसे पहले नहीं देखा था। वह हँसा और बोला कि उन दोनों के अलावा वहाँ कोई नहीं था। उसी समय, एक और सदस्य तहखाने में गया और एक आदमी को अपनी कुर्सी से उठकर जाते हुए देखकर आश्चर्यचकित रह गया। वह आदमी कोई और नहीं बल्कि वही युवक था जिसकी एक साल पहले कार दुर्घटना में मृत्यु हो गई थी।

बिरादरी के एक अन्य सदस्य भी उसी दुर्घटना का शिकार हुए थे, लेकिन उन्हें केवल चोटें आई थीं और वे बच गए थे। बिरादरी के घर के तहखाने में हुई घटना के कई दिनों बाद, इस युवक ने मृत व्यक्ति को घर की दूसरी मंजिल की सीढ़ियों पर चढ़ते हुए देखा। अब बिरादरी को एहसास हो गया था कि उनका मृत साथी अभी भी उनके साथ है, मानो अपने असली घर

की ओर लौट आया हो—और इसलिए उन्होंने उसे समूह में से एक के रूप में स्वीकार कर लिया, भले ही वह कभी-कभी अदृश्य हो जाता था।

* * *

7 जनवरी को श्रीमान और श्रीमती एस. ओक्लाहोमा के एक मध्यम आकार के शहर में साउथ फोर्थ स्ट्रीट पर स्थित एक पुराने, किराए के, पूरी तरह से सुसज्जित दो बेडरूम वाले मकान में रहने चले गए। श्रीमती एस. के पति सेना में कार्यरत थे और पास के ही एक सैन्य शिविर में तैनात थे। उनका एक छोटा बेटा है और वे सुखद प्रवास की उम्मीद कर रहे थे, जिसमें उनका बेटा पड़ोस के बच्चों के साथ खेल सके और श्रीमती एस. अपने लिए नए माहौल में नए दोस्त बना सकें।

वह एक दृढ़ निश्चयी महिला थीं, जो किसी भी ऐसी चीज़ से आसानी से भयभीत नहीं होती थीं जिसे वह समझा न सकें, और तंत्र-मंत्र तो उनके दिमाग में बिल्कुल भी नहीं था। वे उस घर में लगभग दो सप्ताह से रह रहे थे, जब उन्होंने रात में दालान में हल्की आहट सुनी। जब उन्होंने देखा तो वहाँ कोई नहीं था। उनका दस वर्षीय बेटा दालान के दूसरी ओर सो रहा था, और उन्हें लगा कि शायद वह नींद में चल रहा हो। लेकिन हर बार जब वह आहट सुनतीं और अपने बेटे को देखतीं, तो वह गहरी नींद में सोता हुआ मिलता। आहट चार महीने तक रुक-रुक कर आती रही।

फिर, एक रविवार दोपहर लगभग 2 बजे, जब उनके पति ड्यूटी पर थे और उनका बेटा पिछवाड़े में खेल रहा था, वह रसोई में थीं। अचानक उन्हें एक बच्चे के बहुत धीरे-धीरे रोने की आवाज़ सुनाई दी, मानो बच्चा ज़ोर से रोने से डर रहा हो। वह तुरंत पिछवाड़े में यह देखने के लिए दौड़ीं कि कहीं उनके बेटे को चोट तो नहीं लगी। उसे कुछ भी नहीं हुआ था, और उन्होंने उसे पड़ोस के एक लड़के के साथ खुशी से खेलते हुए पाया। तब उन्हें एहसास हुआ कि घर के बाहर से उन्हें बच्चे के रोने की आवाज़ सुनाई नहीं दे रही थी, लेकिन घर में वापस आते ही, सिसकियाँ फिर से साफ सुनाई देने लगीं।

उसने आवाज़ का पीछा करते हुए अपने बेडरूम तक गई, और जब वह कमरे में दाखिल हुई तो आवाज़ सुनाई देना बंद हो गई। इससे वह बेहद परेशान हो गई, क्योंकि उसे समझ नहीं आ

रहा था कि ये आवाज़ें किस वजह से आ रही हैं। इसके अलावा, अजीब सी धमक की आवाज़ें भी आ रही थीं, जो अक्सर उसे आधी रात को जगा देती थीं। ऐसा लगता था जैसे कोई बिस्तर से गिर गया हो।

इन मौकों पर, वह झटपट बिस्तर से उठकर अपने बेटे के कमरे में दौड़ती, लेकिन उसे गहरी नींद में सोता हुआ पाती। पूरे घर की अच्छी तरह से जाँच करने पर भी उन अजीब आवाज़ों का कोई स्रोत नहीं मिला। लेकिन श्रीमती एस. ने गौर किया कि उनकी सियामी बिल्ली, जो इन घटनाओं के समय उनके बिस्तर के नीचे सोती थी, वह भी इन आवाज़ों पर प्रतिक्रिया करती थी: उसके बाल खड़े हो जाते, उसके कान पीछे की ओर मुड़ जाते, और वह गुर्राती और किसी ऐसी चीज़ या व्यक्ति को घूरती रहती जिसे वह देख नहीं पाती थीं।

लगभग उसी समय, उनकी माँ ने उनसे मिलने का फैसला किया। चूंकि उनकी माँ शारीरिक रूप से अक्षम थीं, इसलिए श्रीमती एस. ने उन्हें परेशान होने से बचाने के लिए अजीब घटनाओं के बारे में न बताने का निर्णय लिया। वह तीन दिन तक घर में रहीं, और एक सुबह उन्होंने जानना चाहा कि श्रीमती एस. सुबह दो बजे कॉफी क्यों बना रही थीं। चूंकि घर में केवल दो शयनकक्ष थे, इसलिए उन्होंने उनकी माँ के लिए रसोई में एक आधा पलंग लगा दिया था, खासकर इसलिए कि रसोई बहुत बड़ी थी और वह जहाँ सो रही थीं वहाँ से टेलीविजन देख सकती थीं। उनकी माँ ने ज़ोर देकर कहा कि उन्होंने दालान से रसोई की ओर आते हुए कदमों की आहट सुनी थी। उन्होंने जिसे अपनी बेटी समझा उसे आवाज़ दी, और जब कोई जवाब नहीं मिला, तो उन्होंने मान लिया कि उनकी बेटी और दामाद के बीच किसी बात पर कहा-सुनी हुई होगी और वह कॉफी बनाने के लिए उठी होंगी।

अपने बिस्तर से वह लाइट स्विच तक नहीं पहुँच सकती थी, लेकिन रोशन घड़ी से उसे समय दिखाई दिया और उसे एहसास हुआ कि सुबह के 2 बज रहे हैं। कोई हॉल से नीचे आया, रसोई में गया, कॉफी पॉट में पानी डाला, उसे प्लग में लगाया और फिर रसोई से बाहर निकलकर हॉल में चला गया। उसे कॉफी के पकने की आवाज़ सुनाई दी और उसकी खुशबू भी महसूस हुई। हालाँकि, जब उसे किसी के वापस आने की आवाज़ नहीं सुनाई दी, तो उसने मान लिया कि उसकी बेटी और दामाद का सुलह हो गया है और वे वापस सो गए हैं।

उन्होंने भी ऐसा ही किया और सुबह अपनी बेटी से इस बारे में पूछताछ करने का फैसला किया। श्रीमती एस. ने तुरंत रसोई में जाँच की, लेकिन वहाँ कॉफ़ी का कोई नामोनिशान नहीं था, जिससे उनकी मानसिक स्थिति और बिगड़ गई। थोड़ी देर बाद उन्होंने घर के बाहर कुछ शोर सुना और बाहर कदम रखते ही देखा कि एक कुत्ता पकड़ने वाला पड़ोसी के कुत्ते को अपने साथ ले जाने की कोशिश कर रहा था। उन्होंने उससे बात करने का फैसला किया और बातचीत के दौरान पता चला कि उनके पति सेना में थे, इस बात से कुत्ते पकड़ने वाले की प्रतिक्रिया नकारात्मक प्रतीत हुई। उसने श्रीमती एस. को बताया कि इस घर में रहने वाला पिछला सैनिक एक हत्यारा था। जब उन्होंने इसके बारे में और जानना चाहा, तो वह तुरंत चुप हो गया। लेकिन श्रीमती एस. बहुत परेशान हो गईं। उन्होंने स्थानीय अखबार को फोन किया और अपने घर से संबंधित हर तरह की जानकारी मांगी। तभी उन्हें कड़वी सच्चाई का पता चला।

दो साल पहले अक्टूबर में, उसी अड्डे पर तैनात एक सैनिक ने, जहाँ उसका पति तैनात था, अपनी दो साल की बेटी को पीट-पीटकर मार डाला था। यह हत्या उस कमरे में हुई थी जो अब श्रीमती एस. का शयनकक्ष बन चुका था। इस खबर से स्तब्ध श्रीमती एस. ने मन ही मन प्रार्थना की, कि बच्ची की अशांत आत्मा को शांति मिले और उसे उस घर में भटकना न पड़े जहाँ उसने अपने छोटे से जीवन में केवल दुख ही झेला था...

जमैका में स्थित भूतिया रोज़ हॉल, जो अब एक लग्जरी होटल है—यह पहले ऐसा दिखता था।

थोड़ी देर बाद काम शुरू हो गया।

उन भूमिगत गलियारों का प्रवेश द्वार जहाँ गुलामों को यातनाएँ दी जाती थीं

यह हॉल का सबसे प्रेतवाधित क्षेत्र बना हुआ है।

*148

रोज़ हॉल, जमैका की "सफेद चुड़ैल" का घर

पश्चिमी गोलार्ध का सबसे प्रेतवाधित घर कहे जाने वाला रोज़ हॉल, औपनिवेशिक जमैका की सबसे बड़ी जागीरों में से एक, रोज़ हॉल प्लांटेशन पर स्थित एक भव्य घर है। इसे हाल ही में एक अमेरिकी होटल व्यवसायी ने खरीदा है और धनी पर्यटकों के लिए होटल के रूप में उपयोग करने हेतु सावधानीपूर्वक इसके पुराने वैभव को बहाल किया है।

यह प्लांटेशन मोंटेज बे हवाई अड्डे से ज़्यादा दूर नहीं है और वहाँ तक जाने के लिए एक अच्छी सड़क है। फिर भी, आज तक कुछ स्थानीय लोग इस घर के पास नहीं जाते, क्योंकि वे इसे भूतों से भरा हुआ मानते हैं, जो भूतों के लिए इस्तेमाल होने वाला एक स्थानीय शब्द है। और वे सच में सही हैं। रोज़ हॉल की मालकिन रहीं एनी पोर्टर की आत्मा को आज तक शांति नहीं मिली है।

मैं दो बार रोज़ हॉल जा चुका हूँ, लेकिन बिना किसी कुशल समाधि विशेषज्ञ के। घर के नीचे बने गलियारों में विशेष रूप से भयानक भय का माहौल रहता है, और मैं रोज़ हॉल आने वाले हर व्यक्ति को उन क्षेत्रों से सावधान रहने की सलाह देता हूँ, खासकर रात के समय।

एनी पोर्टर एक क्रूर महिला थी, जिसने पहले अपने कुछ सुंदर गुलामों को अपना प्रेमी बनाया और फिर उन्हें यातना देकर मार डाला। अंततः, उसका भी वही हाल हुआ और उसे भी उन्हीं में से एक ने मौत के घाट उतार दिया, जिन्हें उसने पहले सताया था। इस पुरानी इमारत में हिंसा और नफरत के कई निशान अभी भी मौजूद हैं, और इमारत के कुछ छेदों को भरकर उन पर रंग कर देने मात्र से ये निशान गायब नहीं हो सकते।

इस घर में तीन मंजिलें हैं और सामने एक भव्य सीढ़ी है, जिससे मुख्य मंजिल तक पहुंचा जा सकता है। यह घर पेड़ों और जमैका के कुछ सबसे खूबसूरत नजारों से घिरा हुआ है। जीर्णोद्धार से पहले, यह किसी भूतिया घर जैसा दिखता था, जैसा कि कहानियों या फिल्मों में दिखाया जाता है, जिसमें खाली खिड़कियां और टूटी हुई दीवारें थीं। लेकिन अब, यह साफ-सुथरा और भव्य दिखता है।

एनी पोर्टर को "रोज़ हॉल की श्वेत चुड़ैल" के नाम से भी जाना जाता है। वास्तव में, इतिहास में दो एनी पोर्टर दर्ज हैं और उन्हें पास के ही एक कब्रिस्तान में दफनाया गया है। प्रचलित

किंवदंती में, दोनों पात्रों का विलय हो गया है, लेकिन ब्रिटिश औपनिवेशिक काल के उत्तरार्ध वाली एनी पोर्टर ने ही वे अत्याचार किए थे जिनके कारण वह आज भी उसी महल से बंधी हुई है जो कभी उसका महल हुआ करता था। मुझे इसमें कोई संदेह नहीं है कि वह आज भी वहीं है।

मैं यह धारणा पुख्ता सबूतों के आधार पर बना रहा हूँ। लगभग दस साल पहले, दिवंगत महान माध्यम एलीन गैरेट प्रतिष्ठित शोधकर्ताओं के साथ रोज़ हॉल आईं थीं। उनका उद्देश्य एनी पोर्टर की बेचैन आत्मा को खोजना और यदि संभव हो तो उसे शांत करना था। हॉल पहुँचने के कुछ ही क्षणों बाद, श्रीमती गैरेट गहरी समाधि में चली गईं। भयभीत भूत ने उनके शरीर, स्वरयंत्र, चेहरे के भाव, सब कुछ अपने वश में कर लिया और उन दबी हुई भावनाओं को व्यक्त करने का प्रयास किया जो इतने लंबे समय से सुप्त थीं।

शोधकर्ताओं को श्रीमती गैरेट का पीछा करने में काफी मशक्कत करनी पड़ी, जो अपनी खोज की शुरुआत छत से कर रही थीं। उन्हें जर्जर गलियारों, भूमिगत रास्तों और खतरनाक रूप से कमजोर कमरों से होकर गुजरना पड़ा। लेकिन एनी पोर्टर चाहती थीं कि वे उन जगहों को देखें जहां वह रोज़ हॉल की मालकिन रह चुकी थीं, और इस माध्यम से अपने गौरवशाली पलों को फिर से जी सकें।

अंततः, इन पुनर्जीवित यादों ने उस बिंदु तक पहुँचा दिया जहाँ एनी की मृत्यु एक युवा गुलाम के हाथों हुई, जिसके साथ उसका पहले प्रेम संबंध था।

बेकाबू होकर रोती हुई, चारों हाथों-पैरों के बल छटपटाती हुई, वह माध्यम अब पूरी तरह से बेचैन भूत के वश में थी। शोधकर्ताओं ने चाहे कितनी भी नरमी से उससे बात की हो, उसे भयानक अतीत को भुलाने के लिए कहा हो, उसका हिंसक व्यवहार जारी रहा। एनी वहाँ से नहीं गई। यह उन कुछ दुर्लभ मामलों में से एक था जहाँ कोई भूत इतना त्रस्त और अपनी त्रासदी के स्थान से इतना बंधा हुआ होता है कि वह उससे अलग नहीं हो पाता, एनी ने वहाँ से जाने से इनकार कर दिया। इसके बजाय, शोध दल एक बेहद सहमी हुई माध्यम को साथ लेकर वहाँ से चला गया।

*149

स्कॉटिश भूत जैसा कुछ नहीं है

स्वाद और व्यक्तित्व की बात करें तो, स्कॉटिश भूत जैसा कोई दूसरा नहीं, या यूं कहें कि उन्हें देखने वाले लोगों जैसा कोई दूसरा नहीं। बर्न्स की धरती पर हमारी यात्रा इस बार छोटी थी, लेकिन इतनी ज़रूर थी कि हमें पता चल गया कि हम वहाँ दोबारा जाना चाहते हैं।

धुंध भरी सुबह में हम प्रेस्टविक हवाई अड्डे पर उतरे और तुरंत आयर शहर के लिए रवाना हो गए, जहाँ हमने स्टेशन होटल में रात बिताई, जो पश्चिमी स्कॉटलैंड के कम प्रसिद्ध होटलों में से एक है। हमारे पहुँचते ही बीबीसी के जैक वेयर हमारा इंटरव्यू लेने आए और मुझे एहसास हुआ कि मैं एक ऐसी जगह पर हूँ जहाँ भूत-प्रेत की खोज को एक सम्मानित पेशा माना जाता है। टेलीविजन कमेंटेटर जैमिसन क्लार्क भी उनके साथ आए और हमने एडिनबर्ग से मेरे द्वारा किए जाने वाले एक टेलीविजन शो के बारे में विस्तार से बात की; श्री क्लार्क उसी समय ग्लासगो में होंगे। स्प्लिटस्क्रीन और बीसवीं सदी के अन्य चमत्कारों के ज़रिए थोड़ा सा जादू देखने का मज़ा ही कुछ और है!

लेकिन हम आयर सिर्फ स्टेशन होटल में उदास रहने या इन प्यारे स्कॉट्स से बात करने के लिए नहीं आए थे। उस दोपहर हमारा मकसद कल्ज़ीन कैसल जाना था, जिसका उच्चारण कोलीन होता है, जब तक कि आप सैसनाच या उससे भी बदतर, यांकी न हों। हमने एक ड्राइवर वाली कार किराए पर ली, क्योंकि यहाँ बाईं ओर गाड़ी चलती है, और पश्चिमी स्कॉटलैंड की तटीय पहाड़ियों से होते हुए कल्ज़ीन के लिए निकल पड़े।

कुछ ही देर बाद हम औपचारिक उद्यानों में प्रवेश कर गए और धीरे-धीरे ढलान वाली सड़क पर सवार होकर उस चट्टान की ओर बढ़े जिस पर आयरशायर तट पर समुद्र से सीधे ऊपर की ओर कल्ज़ीन कैसल स्थित है।

अठारहवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में रॉबर्ट एडम द्वारा निर्मित, यह महल कैनेडी परिवार, अर्ल्स ऑफ कैसिलिस और मार्क्विसेस ऑफ एइल्सा से जुड़ा रहा है, जिनके चित्र पूरे महल में देखे जा सकते हैं। आज इसका प्रबंधन स्कॉटलैंड के राष्ट्रीय ट्रस्ट द्वारा एक संग्रहालय के रूप में किया जाता है। इसका मुख्य टावर चट्टान से चार मंजिला भव्यता से ऊपर उठता है, और ऊपरी मंजिलों में से एक में एक अपार्टमेंट है जो ब्रिटेन की ओर से कृतज्ञता के प्रतीक के रूप में

जनरल आइजनहावर को दिया गया था। वे समय-समय पर अपने परिवार के साथ वहां ठहरते हैं।

कल्ज़ीन के प्रशासक, कमांडर जॉन हिकली ने हमारा हार्दिक स्वागत किया।

"मुझे खेद है कि हम इस महल में किसी पालतू भूत को नहीं रखते," उन्होंने क्षमा याचना करते हुए कहा, जब श्रीमती हिकली हमें चाय परोस रही थीं।

मैंने उन्हें आश्वस्त किया कि हमें यह यात्रा उतनी ही अच्छी लगी। न तो कमांडर और न ही श्रीमती हिकली ने इस अपेक्षाकृत आधुनिक महल में कोई भूत देखा था, और न ही किसी नौकर ने किसी असामान्य आगंतुक के बारे में शिकायत की थी। लेकिन मार्गरिट पेनी नाम की एक ब्रिटिश महिला, जो कल्ज़ीन आई थी, कुछ हद तक भाग्यशाली थी—अगर भूत देखना भाग्य कहलाता है तो।

9 अगस्त, 1962 की एसोसिएटेड प्रेस की रिपोर्ट के अनुसार, श्रीमती पेनी अन्य पर्यटकों की तरह ही महल में घूम रही थीं, तभी उनका सामना भूत से हुआ।

श्रीमती पेनी ने कहा, "जब मैं हाल ही में कल्ज़ीन कैसल घूमने गई थी, तो वह एक गलियारे से गुज़री और मुझसे बोलीं - 'आज बारिश हो रही है।'"

श्रीमती पेनी ने कहा कि भूत के बाल काले थे और वह बहुत सुंदर था।

"हालांकि जब मेरी उससे मुलाकात हुई तब दोपहर के लगभग पांच बजे थे, फिर भी वह शाम की पोशाक में लग रही थी।"

“खैर, मैंने उसे रास्ता देने के लिए खुद को गलियारे में सटा लिया और उससे कहा, ‘जब तुम मेरी तरह मोटी हो तो निकलने के लिए ज्यादा जगह नहीं होती।’”

श्रीमती पेनी ने बताया कि लड़की ने उनकी ओर बहुत उदास होकर देखा और उत्तर दिया, "मुझे आजकल किसी कमरे की आवश्यकता नहीं है।"

श्रीमती पेनी ने कहा कि उसके बाद उनका पूरा दाहिना हिस्सा ठंडा पड़ गया।

"अचानक मुझे एहसास हुआ कि वह मेरे बगल से होकर गुजरी थी।"

क्या वह कैनेडी परिवार की उन महिलाओं में से एक थीं जिनका अंत क्लाइड नदी के किनारे बसे उस सुनसान घर में दुखद रूप से हुआ था? जब तक मैं भविष्य में किसी माध्यम को कल्ज़ीन नहीं ले आता, तब तक हम केवल अनुमान ही लगा सकते हैं।

* * *

पास ही स्थित एक और भूतिया महल ने मेरा ध्यान आकर्षित किया क्योंकि इसके वर्तमान निवासी मैरीलैंड के बाल्टीमोर के ब्रिटिश कुलीन वर्ग से हैं। सर एड्रियन और लेडी नाओमी डनबर को मोचरम पार्क की जर्जर जागीर और महल विरासत में मिला है, क्योंकि वे 1953 में दिवंगत हुए अंतिम ब्रिटिश बैरोनेट के सबसे करीबी चचेरे भाई हैं।

अमेरिकियों को वह घर जर्जर हालत में मिला और संपत्ति से होने वाली आय भी बहुत कम थी। फिर भी, उन्होंने घर के कुछ हिस्से की मरम्मत करवा ली है और अब भी वे उसी घर में रहते हैं। वे जीवन में अपनी नई स्थिति को संभालने की कोशिश कर रहे हैं।

जब 1953 के अंत में नए मालिक अपना नया घर संभालने के लिए आए, तो विगटाउनशायर के किर्ककोवन गांव के लोग सोच रहे थे कि अमेरिकी लोग इस भूत को कैसे स्वीकार करेंगे। यह मोचरम पार्क की "सफेद महिला" है, जिसके बारे में कहा जाता है कि यह लेडी जैकोबिना डनबर की आत्मा है, जिन्होंने 1789 में छठे बैरोनेट से शादी की थी, और जिनका चित्र 1953 से कुछ साल पहले पुराने घर के मलबे में मिला था।

एडिनबर्ग स्थित स्कॉटलैंड की राष्ट्रीय गैलरी अब रेबर्न की इस बहुमूल्य पेंटिंग की मालिक है। दसवें बैरोनेट, सर जेम्स डनबर, जिनकी मृत्यु 1953 की शुरुआत में हुई थी, के नौकर हमेशा शिकायत करते थे कि भूतिया चित्र हमेशा टेढ़ा ही पाया जाता था, चाहे उसे कितनी ही बार सीधा किया जाए, मानो कोई किसी बात की ओर ध्यान आकर्षित करने की कोशिश कर रहा हो!

कई वर्षों तक डनबार परिवार के ड्राइवर रहे एल्गिन फ्रेजर ने दो बार "सफेद महिला" को अपने बिस्तर के पास खड़े देखा।

शायद दीमक से नष्ट होने के खतरे में पड़ी उस बहुमूल्य पेंटिंग को बचाए जाने से भूत का क्रोध शांत हो गया हो। इसके बाद कोई और गड़बड़ी नहीं देखी गई है, और जब मैंने अमेरिकी मूल

की लेडी डनबर से भूत के बारे में पूछा, तो उन्होंने बाल्टीमोर के लहजे में कहा, "बकवास। यह सब बस कल्पना है।"

किसी भूत को काल्पनिक कहना तो बड़ी बात है! खासकर जब कोई अमेरिकी ऐसा कहे।

जब हम एडिनबर्ग पहुँचे, तो वीकली स्कॉट्समैन के डोनाल्ड मैकडोनाल्ड पहले से ही हमारा इंतज़ार कर रहे थे ताकि हम स्कॉटलैंड के लोगों को अपनी कहानी सुना सकें। फिर, केनेथ मैक्रेज़ भी आए और उन्होंने हमें हाइलैंड के भूतों के बारे में अपने अनुभव बताए—जिनके बारे में हम अगली बार स्कॉटलैंड जाने पर और जानकारी जुटाएँगे। और एक साथी लेखक, मैकडोनाल्ड रॉबर्टसन ने हमें स्कॉटलैंड के भूतों पर अपनी इंडेक्स-कार्ड फ़ाइल दी। दुर्भाग्य से, इनमें से कुछ ही मामले इतने हाल के थे कि उनकी ठीक से जाँच की जा सके, लेकिन श्री रॉबर्टसन के नेक काम के प्रति उत्साह ने इसकी भरपाई कर दी।

उस शाम हम एडिनबर्ग के उपनगर रॉसलिन गए, जहाँ हमने प्रसिद्ध स्कॉटिश माध्यम ऐनी डोनाल्डसन से मुलाकात की। उन्होंने हमें काफी अच्छी तरह से बातचीत करने का मौका दिया, हालाँकि प्राप्त अधिकांश सामग्री निजी या व्यक्तिगत प्रकृति की थी।

अगले दिन हम स्कॉटलैंड और इंग्लैंड की सीमा के इलाके के लिए सुबह-सुबह निकल पड़े, जो परंपरागत रूप से एक जंगली क्षेत्र रहा है और जिसका युद्ध और संघर्ष से लंबा संबंध रहा है। कई घंटों तक बिना रोशनी और बिना निशान वाली सड़कों पर गाड़ी चलाने के बाद, जहां पहाड़ियों पर केवल भेड़ें ही दिखाई देती थीं, हम आखिरकार हर्मिटेज कैसल पहुंचे, जो डी सोलियस परिवार से जुड़ा एक प्राचीन मध्ययुगीन किला है और तेरहवीं शताब्दी का है। यहीं पर 1566 में सीमा पर हुए हमले में घायल हुए अर्ल ऑफ बोथवेल से उनकी प्रेमिका, मैरी क्वीन ऑफ स्कॉट्स, मिलने आई थीं।

सीमा पर एक प्रमुख स्थान पर स्थित, इस किले में एक तहखाना है जिसमें कई दुश्मनों को भूख से मरने के लिए छोड़ दिया गया था। उनके अवशेष कभी नहीं निकाले गए। यह बर्बर प्रथा मध्य युग में आम थी, और इस मामले में हर्मिटेज कोई अनोखा किला नहीं है।

इस प्रसिद्ध खंडहर को देखने का हमारा कारण केवल दर्शनीय स्थलों की सैर करना नहीं था। महल के शुरुआती मालिकों में से एक, लॉर्ड सोलियस, एक काला जादूगर था और उसने कई अत्याचार किए थे जिनके दस्तावेजी प्रमाण मौजूद हैं। बाद में उसके शत्रुओं ने उसे पकड़

लिया और अत्यंत भयावह तरीके से उसकी हत्या कर दी। तब से यह कहा जाता है कि उसकी आत्मा इस घटना की वर्षगांठ पर लौटकर दीवारों और खंडहर कक्षों, विशेष रूप से नीचे स्थित प्राचीन रसोईघर को व्याकुल करती है।

जे. आर. विल्सन, जो अब किले के संरक्षक हैं, ने माहौल बनाने के लिए खुशी-खुशी हमारे लिए बैगपाइप बजाया, लेकिन उन्होंने कभी कोई भूत न तो देखा था और न ही सुना था।

उन्होंने कहा, "मुझे बस इतना पता है कि कुछ कुत्ते महल में नहीं जाते। कुछ समय पहले एक महिला यहाँ आई थी, और उसका कुत्ता महल के पास जाने से बिल्कुल मना कर दिया, जोर-जोर से भौंकने लगा और टस से मस नहीं हुआ।"

लेकिन कुछ कुत्ते ऐसे भी थे जो सचमुच किले की दीवारों के अंदर चले गए थे। संभवतः वे कुत्ते भूतों पर विश्वास नहीं करते थे।

एडिनबर्ग में होलीरूड पैलेस के पीछे, जो स्कॉटलैंड की रानी मैरी और अन्य स्कॉटिश सम्राटों का निवास स्थान था, क्रॉफ्ट-एन-रीघ नाम का एक छोटा सा साधारण सा घर खड़ा है। यह घर कभी मैरी के सौतेले भाई और उनकी अनुपस्थिति में स्कॉटलैंड के रीजेंट रहे जेम्स, अर्ल ऑफ मोरे की संपत्ति था। आज, यह घर तीन अपार्टमेंट में विभाजित है, जिनमें से एक श्रीमती क्लाइन का है। लेकिन कई साल पहले यह होलीरूड पैलेस के वार्डन का आधिकारिक निवास था। वार्डन मुख्य मार्गदर्शक होता है जो सभी पर्यटक यातायात का प्रभारी होता है। पूर्व वार्डन डेविड ग्राहम अब पोर्टोबेलो में अपने पास के घर में सेवानिवृत्त हो चुके हैं, लेकिन चौदह साल पहले इस छोटे से घर में उनका एक बेहद अनोखा अनुभव रहा था।

उन्होंने कहा, "मुझे याद है, हम बारह लोग एक प्रेतात्माओं से संपर्क करने के लिए इकट्ठा हुए थे, और हमारे साथ हेलेन डंकन थीं, जो अब जीवित नहीं हैं, और वे हमारी माध्यम थीं। हम क्रॉफ्ट-एन-रीघ की सबसे ऊपरी मंजिल पर चुपचाप बैठे थे, और आगे की घटनाओं का इंतजार कर रहे थे।"

उन्हें ज़्यादा देर इंतज़ार नहीं करना पड़ा। उनकी अचंभित आँखों के सामने एक आकृति प्रकट हुई और तुरंत पहचान ली गई: स्वयं मैरी क्वीन ऑफ स्कॉट्स, जो भावनात्मक उथल-पुथल के क्षणों में कई बार इस घर में आ चुकी थीं। पल भर में ही वह वहाँ से चली गईं।

श्री ग्राहम याद करते हैं कि कई मौकों पर उन्होंने सोलहवीं सदी के कपड़े पहने एक छोटे कद के आदमी का भूत देखा था। वह आदमी बार-बार कहता था, "मैं फ्रांसीसी हूँ।" ग्राहम ने इस पर तब तक ध्यान नहीं दिया जब तक कि उन्हें गलती से पता नहीं चला कि यह घर एक ऐसे वास्तुकार द्वारा बनाया गया था जिसका नाम भी फ्रेंच था!

*150

श्रीमती सी के दिवंगत लेकिन जीवंत पति का विचित्र मामला

मृत्यु अंत नहीं है, बिलकुल नहीं। कम से कम श्री सी. के लिए तो नहीं, जिन्होंने रोड आइलैंड के एक मध्यम आकार के शहर में सुखमय जीवन व्यतीत किया। लेकिन फिर उनका निधन हो गया, या कम से कम रिकॉर्ड में तो यही दर्ज है। श्रीमती सी. अपने दिवंगत पति के लगातार बने रहने वाले असामान्य व्यवहार के बारे में मुझसे परामर्श करने आई थीं।

जब किसी की अचानक मृत्यु हो जाती है, या अपने शारीरिक जीवन के चरम पर, और वह पाता है कि जिस संसार में उसे अचानक धकेल दिया गया है, उसमें वह शारीरिक रूप से अपनी यौन इच्छा को व्यक्त नहीं कर सकता, तो वह निश्चित रूप से किसी ऐसे व्यक्ति की तलाश करता है जिसके माध्यम से वह पृथ्वी पर अपनी इस इच्छा को व्यक्त कर सके। तब यह केवल अवसरों की खोज का मामला रह जाता है, चाहे इसमें शामिल व्यक्ति कोई भी हो। यह पूरी तरह से संभव है कि शांत, संकोची और यौन रूप से रक्षात्मक व्यक्तियों द्वारा विपरीत लिंग—या यहाँ तक कि समान लिंग—के सदस्यों पर किए गए अस्पष्ट या अवर्णनीय यौन हमलों का एक बड़ा प्रतिशत इस प्रकार की किसी सत्ता के अचानक प्रभाव के कारण हो सकता है। इसे वस्तुनिष्ठ रूप से सिद्ध करना उन हत्या के मामलों से भी कठिन है जिनमें व्यक्ति अपने किए को याद नहीं कर पाते और अपराध से पहले और बाद में व्यावहारिक रूप से सामान्य मनुष्य होते हैं। लेकिन मुझे विश्वास है कि आत्माओं का प्रभाव संवेदनशील व्यक्तियों—अर्थात, उपयुक्त रूप से माध्यम बनने वाले व्यक्तियों—पर वास्तव में पड़ सकता है। मेरे अध्ययनों से यह भी प्रतीत होता है कि इस संदिग्ध सम्मान के सबसे संभावित प्राप्तकर्ता वे लोग हैं जो यौन रूप से कमजोर या निष्क्रिय हैं। स्पष्टतः, अप्रयुक्त यौन ऊर्जाएं देहहीन प्राणियों के लिए उनके स्वार्थ हेतु विशेष रूप से उपयोगी होती हैं। ऐसे हमलों की

भविष्यवाणी करने या उन्हें रोकने का कोई तरीका नहीं दिखता, सिवाय शायद एक स्वस्थ और संतुलित यौन जीवन जीने के। पृथ्वी पर अपनी स्वाभाविक इच्छाओं को संतुष्ट करने वाले लोगों पर ऐसे आक्रमणों का प्रभाव पड़ने की संभावना सबसे कम होती है।

दूसरी ओर, ऐसे मामले भी सामने आए हैं जिनमें दो साथी पृथ्वी लोक पर एक-दूसरे को पहले से जानते थे और उनके बीच यौन संबंध स्थापित हो गया। एक साथी की मृत्यु हिंसक या असमय हुई, और अब वह नए आयाम से शारीरिक सुख का अनुभव करना चाहता है। शारीरिक शरीर न होने के कारण, मृत साथी के लिए पृथ्वी लोक पर बचे साथी के प्रति अपनी शारीरिक इच्छाओं को व्यक्त करना कठिन हो जाता है। यौन संबंध में दोनों पक्षों की सहमति आवश्यक होती है, और यदि बचा हुआ साथी तैयार न हो, तो कठिनाइयाँ उत्पन्न हो सकती हैं। कुछ महीने पहले एक दिलचस्प मामला मेरे ध्यान में आया। श्रीमती अन्ना सी. अपने कई बच्चों के साथ उत्तरपूर्वी संयुक्त राज्य अमेरिका में एक अपेक्षाकृत नए घर में रहती हैं। उन्होंने अपने पति की मृत्यु के अठारह महीने बाद यह घर खरीदा था। इस प्रकार, दिवंगत पति और नए घर के बीच कोई संबंध नहीं था। फिर भी, उनके पति की मृत्यु उनके रिश्ते का अंत नहीं थी।

“मेरे पति की मृत्यु पांच साल पहले इसी सितंबर में हुई थी। तब से उन्होंने मुझे एक भी दिन चैन से नहीं जीने दिया,” उसने हताशा में मुझसे मदद मांगते हुए बताया।

अपने पति की मृत्यु के दो महीने बाद, उसने सपने में उसे देखा और शिकायत की कि उसने उसे जिंदा दफना दिया है। उसने समझाया कि वह वास्तव में मरा नहीं था, और उसकी मृत्यु के लिए वह और उसका परिवार ही जिम्मेदार थे।

श्री सी. का जीवन विवादों से भरा रहा था, वे नियमित रूप से शराब पीते थे और अक्सर घर से दूर रहते थे। इसलिए उनका और उनकी पत्नी का रिश्ता आदर्श नहीं था। फिर भी, उनके बीच एक मजबूत बंधन था।

“दूसरे सपनों में वह मुझसे कहता था कि चाहे मैं चाहूँ या न चाहूँ, वह मेरे साथ यौन संबंध बनाएगा। वह मुझे पकड़ने की कोशिश करता और मैं पूरे घर में उसके पीछे भागती रहती। मैं उसे कभी खुद को पकड़ने नहीं देती थी। जीवित रहते हुए भी वह ऐसा ही था। उसके लिए जीवन में सबसे महत्वपूर्ण चीज यौन संबंध थी, और उसे इस बात की परवाह नहीं थी कि वह इसे कैसे और कहाँ से प्राप्त करता है। उसके लिए और कुछ मायने नहीं रखता था,” उसने

शिकायत करते हुए विस्तार से बताया कि कैसे कथित तौर पर मृत पति में अभी भी जीवन की भरपूर ऊर्जा थी।

“फिर वह बिस्तर पर चढ़ने लगा और उस पर ऊपर-नीचे चलने लगा, जिससे मैं बुरी तरह डर गई। मुझे समझ नहीं आ रहा था कि क्या हो रहा है और मैं क्या करूं,” उसने कांपते हुए कहा।

जब श्री सी. अपनी पत्नी को स्वेच्छा से सहयोग करने के लिए राजी नहीं कर पाए, तो वे क्रोधित हो गए। अपनी नाराजगी जाहिर करने के लिए उन्होंने घर में तरह-तरह की गड़बड़ियाँ कीं। वे एक हफ्ते तक रोज़ाना मोजे फाड़ते, चीजें गिराते और यहाँ तक कि अपनी सास के रसोइया वाले घर भी चले गए, जहाँ उन्होंने अजीबोगरीब घटनाएँ घटित करवाईं। वे इंडियाना में रहने वाली अपनी एक चाची के सामने प्रकट हुए और उनसे कहा कि वे अपने काम से मतलब रखें और श्रीमती सी. के साथ उनके निजी संबंधों में दखल न दें। (चाची ने ही घर पर एक तांत्रिक अनुष्ठान करके उनसे और उनके प्रभाव से छुटकारा पाने की कोशिश की थी।) इस बीच, श्री सी. अलार्म घड़ियों को गलत समय पर बजाकर या उन्हें पूरी तरह बंद करके, वस्तुओं को उनके स्थान से हटाकर या उन्हें गायब करके, और फिर कुछ दिनों बाद उन्हें सबके आश्चर्य के बीच वापस लाकर अपना मनोरंजन करते रहे। कुल मिलाकर, उनका व्यवहार एक भूतिया व्यक्ति जैसा ही था। लेकिन इससे उनकी पूर्व पत्नी के मन में उनके लिए प्यार और भी कम हो गया।

जब श्रीमती सी. ने उनके प्रस्तावों को ठुकरा दिया, तो उन्होंने अपनी दस वर्षीय बेटी को अपने वश में करने का प्रयास शुरू कर दिया। वे सपनों में आकर बेटी को बताते थे कि उसकी माँ को वास्तव में किसी भी विषय का ज्ञान नहीं है। उन्होंने बच्ची और उसकी माँ के बीच दरार डालने के लिए हर संभव प्रयास किया। परिणामस्वरूप, बच्ची अपनी माँ से और भी दूर होती चली गई, और श्रीमती सी. ने चाहे कितनी भी कोशिश की हो, उन्होंने पाया कि बच्ची अपने दिवंगत पिता के प्रभाव में आकर अपना मन बना चुकी थी।

गुस्से में आकर श्री सी. ने दूसरे बच्चों पर अपना हाथ आजमाना शुरू कर दिया, जिससे घर में इतना अफरा-तफरी मच गई कि श्रीमती सी. को समझ नहीं आ रहा था कि क्या करें। तभी इंडियाना से उनकी एक आध्यात्मिक चाची न्यू इंग्लैंड आईं और स्थिति को संभालने की कोशिश की। श्री सी. उन्हें दिखाई दिए और दोनों के बीच गहरी बातचीत हुई। उन्होंने बताया

कि वे जहां थे वहां बहुत दुखी थे और वहां के लोगों के साथ उनका तालमेल नहीं बैठ रहा था। इस पर चाची ने कहा कि अगर वे चाहें तो वे उन्हें बेहतर जीवन जीने में मदद करने के लिए बहुत खुश होंगी। लेकिन श्री सी. ने जवाब दिया कि बात यह नहीं थी। वे बस वहीं रहना चाहते थे जहां वे थे। चाची घर लौट गईं। अब बच्चे एक-एक करके बेकाबू होने लगे और श्रीमती सी. को लगने लगा कि उनके दिवंगत पति उनकी शिक्षा और अनुशासन में बाधा डाल रहे हैं। उन्होंने कहा, "मैं एक अदृश्य शक्ति से लड़ रही हूं और बच्चों को समझा नहीं पा रही हूं।"

उनके दिवंगत पति उन्हें शर्मिंदा करने के लिए हर संभव प्रयास करते थे। वह अपने शहर के सेंट फ्रांसिस रेक्टरी में क्लर्क के रूप में काम कर रही थीं और टाइपिंग का काम करती थीं। संयोग से, यह 24 दिसंबर, 1971 का दिन था, क्रिसमस की पूर्व संध्या। अचानक उन्हें अपने आस-पास एक ज़ोरदार आवाज़ सुनाई दी और उन्होंने ज़मीन की ओर देखा। एक भारी शब्दकोश उनके पैरों के पास पड़ा था। कुछ ही पल पहले वह किताब शेल्फ पर थी। एक सहकर्मी ने पूछा कि क्या हुआ है। वह यह समझाने में असमर्थ थीं कि शब्दकोश ज़मीन पर कैसे पड़ा है, क्योंकि कुछ ही क्षण पहले वह उनके पीछे वाली शेल्फ पर था। लेकिन वह अच्छी तरह जानती थीं कि शब्दकोश उनके पैरों के पास कैसे आया।

श्रीमान सी. ने अपनी पत्नी के लिए क्रिसमस के विशेष सरप्राइज़ तैयार किए। वह छुट्टियाँ बिताने अपने माता-पिता के घर चली गईं। इस दौरान उनके भतीजे जॉर्ज को काम पर जाने में देर हो गई क्योंकि उनकी अलार्म घड़ी ठीक से काम नहीं कर रही थी। जाँच करने पर पता चला कि किसी ने घड़ी में पेंसिल घुसा दी थी। पेंसिल निकालते ही घड़ी फिर से चलने लगी। छानबीन करने पर पता चला कि घड़ी के पास कोई नहीं था, और जब परिवार ने पेंसिल को घड़ी में डालने की कोशिश की, जैसा कि उन्हें मिली थी, तो कोई भी उसे नहीं डाल सका। इस घटना से श्रीमती सी. इतनी घबरा गईं कि उनकी तबीयत खराब हो गई और वह बिस्तर पर लेट गईं। लेकिन श्रीमान सी. की नज़रों से बचना नामुमकिन था। नए साल की पूर्व संध्या से एक दिन पहले, उनके दिवंगत पति उन तक पहुँच गए और बिस्तर पर इधर-उधर चलने लगे। आखिरकार उन्होंने उनसे कहा कि उन्हें और बच्चों को अकेला छोड़ दें, जहाँ उन्हें होना चाहिए वहाँ चले जाएँ। उन्हें कोई जवाब नहीं मिला। लेकिन घर में अजीबोगरीब घटनाएँ होती रहीं, इसलिए उन्होंने अपनी मौसी को फिर से बुलाया। इस बार इंडियाना से आई मौसी अपने

साथ तेल लेकर आईं और उन्होंने उसे हर बच्चे और श्रीमती सी. पर लगाया। जाहिर तौर पर यह तरीका कारगर साबित हुआ, कम से कम श्रीमती सी. को तो ऐसा ही लगा। लेकिन उनके दिवंगत पति तो बस अपनी चालें बदल रहे थे। कुछ दिनों बाद उन्हें यकीन हो गया कि वह बच्चों में से किसी एक के पास जाकर अपनी भड़ास निकालने की कोशिश कर रहे हैं, क्योंकि अब वह उन तक नहीं पहुंच पा रहे थे। उन्हें लगा कि अगर कोई उनकी मदद न करे और इस समस्या से छुटकारा न दिलाए, और सबसे बढ़कर, उनके पति के उन पर से नियंत्रण न तोड़ पाए, तो वह मानसिक रूप से टूट जाएंगी। उन्होंने कहा, "मैं चाहती हूं कि उन्हें स्वर्ग भेज दिया जाए, जहां वह किसी को परेशान न कर सकें।"

चूंकि मैं तुरंत नहीं जा सकती थी, और टेलीफोन पर आवाज सुनकर ऐसा लग रहा था कि उसके मालिक की अब एक दिन की भी हिम्मत नहीं बची है, इसलिए मैंने अपनी माध्यमवादी मित्र एथेल जॉनसन मेयर्स से जाकर देखने को कहा कि वह क्या कर सकती हैं। श्रीमती सी. को पहले श्रीमती मेयर्स के घर जाकर व्यक्तिगत रूप से उनसे मिलना पड़ा। एक हफ्ते बाद एथेल अपना काम जारी रखने के लिए श्रीमती सी. के घर आईं। श्रीमती मेयर्स ने जो खोजा, वह श्रीमती सी. और मेरे लिए कुछ हद तक आश्चर्यजनक था। एथेल का दावा था कि दिवंगत पति, जब जीवित थे, तब स्वयं किसी प्रेतबाधा का शिकार थे और उन्होंने अपने जीवनकाल में कई अप्रिय कार्य (जिनके लिए उन पर आरोप लगाया गया था) अपनी इच्छा से नहीं, बल्कि किसी अन्य शक्ति के निर्देश पर किए थे। यह विचार कि प्रेतबाधित व्यक्ति स्वयं प्रेतबाधित था, मेरे लिए बिल्कुल नया था, जिसे न तो श्रीमती मेयर्स और न ही मैं साबित कर सके। इससे कहीं अधिक महत्वपूर्ण बात यह थी कि श्रीमती मेयर्स की प्रार्थनाएँ और अदृश्य शक्ति को दिए गए आदेश कारगर प्रतीत हुए, क्योंकि अब वह श्रीमती सी के बिस्तर पर इधर-उधर नहीं घूमता और सब कुछ शांत है। मेरा मानना है कि श्री सी का अपनी पत्नी पर मृत्यु के बाद इतना गहरा प्रभाव इसलिए था क्योंकि उनकी पत्नी के मन में उनके साथ संबंध बनाए रखने की अचेतन इच्छा थी। यद्यपि वह उनसे घृणा करती थीं—और उस विचार से भी कि एक ऐसे व्यक्ति द्वारा यौन रूप से वश में किया जाए जिसने सामान्य तरीके से अपना शरीर खो दिया हो—फिर भी उनके भीतर कहीं, शायद गहराई में दबी हुई कोई बात, उस निरंतर यौन स्नेह की चाहत रखती थी जो श्री सी ने जीवित रहते हुए उन्हें प्रदान किया था।

*151

छोटे सफेद फूल का भूत

श्रीमती डी. और उनका बेटा बकी, ओहियो के सिनसिनाटी से कुछ ही दूरी पर, केंटकी के उपनगरीय इलाके में एक पहाड़ी की चोटी पर बने एक आरामदायक घर में रहते थे। उनका घर सुंदर, सफेद रंग का था और आसपास के अन्य घरों से बहुत अलग नहीं था। आसपास का वातावरण रमणीय और शांत था, और घर के ठीक सामने एक छोटा सा कृत्रिम तालाब था। घर या आसपास का इलाका किसी भी तरह से भूतिया या असामान्य नहीं लगता था। फिर भी, श्रीमती डी. को एक बेहद जटिल परिस्थिति में मेरी मदद की ज़रूरत थी।

श्रीमती डी. के घर में आने के छह महीने बाद, उन्हें ऊपर से कदमों की आहट सुनाई देने लगी, जबकि वहाँ कोई नहीं होता था, और दालान में किसी के द्वारा कंचे को लुढ़काने की आवाज़ भी सुनाई देती थी। श्रीमती डी. के लिए अलौकिक घटनाएँ बिल्कुल अनजानी थीं।

फिर भी, श्रीमती डी. का मन जिज्ञासु और सतर्क था, और वे इन घटनाओं के कारणों का पता लगाए बिना इन्हें स्वीकार करने को तैयार नहीं थीं। जब ये घटनाएं जारी रहीं, तो वे सीढ़ियों के नीचे तक गईं और चिल्लाईं, "इतना शोर मचाने के बजाय, बाहर आकर खुद को क्यों नहीं दिखाते या कुछ क्यों नहीं कहते?"

मानो जवाब में, ऊपर का एक दरवाजा ज़ोर से बंद हो गया और फिर एकदम सन्नाटा छा गया। एक पल की झिझक के बाद, श्रीमती डी. दौड़कर ऊपर गईं और पूरी तरह से तलाशी ली। वहाँ कोई नहीं था और संगमरमर, जो शायद फर्श पर लुढ़क गया था, कहीं भी दिखाई नहीं दिया।

नए घर में दूसरी क्रिसमस आने पर, डी परिवार बकी के सेना से घर लौटने का इंतज़ार कर रहा था। वह अपने सार्जेंट और उसकी पत्नी को भी साथ लाने वाला था, क्योंकि वे बहुत अच्छे दोस्त बन गए थे। उन्होंने नए साल की पूर्व संध्या धूमधाम से और जोश के साथ मनाई (हालांकि यह कोई आध्यात्मिक उत्सव नहीं था, बल्कि शराब से भरा उत्सव था)। फिर भी, वे नशे में धुत नहीं थे जब सार्जेंट ने सुझाव दिया कि नए साल की पूर्व संध्या आत्माओं से संपर्क करने के लिए विशेष रूप से उपयुक्त रात है। श्रीमती डी ने पहले तो इस पर आपत्ति जताई। उन्होंने नकली आत्माओं से संपर्क करने के बारे में बहुत कुछ पढ़ा था और उन्हें याद था कि

बाइबल में इस बारे में क्या लिखा है। उनके पति तो बहुत पहले ही सो चुके थे। चारों ने मिलकर इसे आज़माने का फैसला किया। उन्होंने हाथ मिलाए और चुपचाप अंगीठी के सामने बैठ गए। कुछ देर तक कुछ खास नहीं हुआ। फिर बकी, जिसने मानसिक घटनाओं पर कुछ किताबें पढ़ी थीं, ने सुझाव दिया कि उन्हें जीवन के दूसरे पक्ष से किसी मार्गदर्शक या नियंत्रण की आवश्यकता है जो उनकी मदद कर सके, लेकिन किसी के पास यह सुझाव नहीं था कि वे किससे संपर्क करें। मज़ाक में, न कि गंभीरता से, श्रीमती डी. ने अपने मन में कहा, "आप अपने भारतीय पूर्वज को 'लिटिल व्हाइट फ्लावर' क्यों नहीं कहते!" श्री डी. आंशिक रूप से चेरोकी हैं, और उनका बेटा बकी भी इसे अपनी विरासत का हिस्सा मानेगा। श्रीमती डी. ने विरोध करते हुए कहा कि यह सब बकवास है और उन्हें सोने चले जाना चाहिए। उन्होंने उन्हें भरोसा दिलाया कि कुछ भी बुरा नहीं होगा। लेकिन बाकी तीनों इतने व्यस्त थे कि उन्होंने जवाब नहीं दिया, वे उनकी पीठ पीछे चिमनी की ओर देख रहे थे। जब उन्होंने उनकी निगाहों का पीछा किया तो उन्हें टॉर्च जैसी कोई रोशनी दिखाई दी। वह थोड़ी देर तक जलती रही और फिर पूरी तरह गायब हो गई।

रेन्हम हिल की प्रसिद्ध भूरी महिला

उस दिन से श्रीमती डी. को घर में अजीबोगरीब वस्तुएँ मिलने लगीं जो एक पल पहले तक वहाँ नहीं थीं। वे छोटे-छोटे पत्थर थे जो तीर के आकार के थे। जैसे ही उन्हें मिलते, वे उन्हें तुरंत फेंक देतीं। कई सप्ताह बाद, जब वे अपने बिस्तर की चादरें बदल रही थीं, तो उन्होंने देखा कि किसी अज्ञात व्यक्ति ने चादर के नीचे वाले हिस्से पर एक बड़ा लाल तीर बना दिया था।

यह सन् 1963 की सर्दियों की बात है। एक दोपहर वह सोफे पर किताब लेकर आराम करने की कोशिश कर रही थी। थोड़ी देर में ही उसे नींद आ गई। अचानक वह एक भयानक भय से जाग उठी, जो उसके पैरों से शुरू होकर धीरे-धीरे उसके पूरे शरीर और मन में फैल गया। कमरा किसी भयानक बुरी शक्ति से भरा हुआ प्रतीत हो रहा था। वह न तो कुछ देख पा रही थी और न ही कुछ सुन पा रही थी, लेकिन उसे यह एहसास हो रहा था कि वहाँ कोई शक्ति मौजूद है, जो बहुत शक्तिशाली है और उसे अपने वश में करने वाली है।

कुछ हफ़्तों तक उन्हें घर में बिल्कुल अकेलापन महसूस हुआ, लेकिन फिर वही सब कुछ दोबारा शुरू हो गया। छोटे-छोटे पत्थर के तीर के सिरे अचानक से पूरे घर में फिर से प्रकट हो गए। डर से बेहाल श्रीमती डी. ने एक ऐसे दोस्त से संपर्क किया जो तत्वमीमांसा में रुचि रखता था और उससे सलाह मांगी। दोस्त ने लिटिल व्हाइट फ्लावर को घर छोड़ने के लिए कहने के लिए एक प्रेतात्मा अनुष्ठान करने की सलाह दी।

हालाँकि लिटिल व्हाइट फ्लावर लगातार दिखाई नहीं देती थी और आती-जाती रहती थी, फिर भी श्रीमती डी. को हर समय उस स्त्री का प्रभाव महसूस होता था। उसी सप्ताह बाद में, लिटिल व्हाइट फ्लावर फिर से प्रकट हुई, इस बार दृश्य रूप में। सुबह लगभग 4 बजे श्रीमती डी. इस दृढ़ अनुभूति के साथ जाग उठीं कि उनकी उत्पीड़क कमरे में मौजूद है। जब उन्होंने हॉल की ओर देखा, तो दीवार पर उन्हें एक छोटी लाल वस्तु दिखाई दी जो मानव आँख जैसी लग रही थी, और ठीक उसके नीचे आधा मुँह जैसा कुछ दिखाई दिया। ध्यान से देखने पर, उन्हें दो लाल आँखें और नीचे एक सफेद मुँह दिखाई दिया। यह उन्हें सर्कस में देखे गए कुछ जोकरों की याद दिला रहा था। यह दृश्य दो-तीन मिनट तक दीवार पर बना रहा, और फिर पूरी तरह गायब हो गया।

कई बार टलने के बाद आखिरकार मैं केंटकी आ सका और श्रीमती डी. से व्यक्तिगत रूप से मिल सका। 20 जून, 1964 को मैं उस थोड़ी मोटी, अधेड़ उम्र की महिला के सामने बैठा था, जिसने कई महीनों तक मुझसे इतने विस्तार से पत्र व्यवहार किया था।

जैसे ही मैंने गंभीर मंत्र पढ़ते हुए लिटिल व्हाइट फ्लावर को वहां से हटने के लिए कहा, मुझे श्रीमती डी. के हिस्टीरिया में रोने की आवाज सुनाई दी। ऐसा लग रहा था मानो उनका कोई हिस्सा फाड़ा जा रहा हो और कुछ पल के लिए ऐसा लगा कि उन्हें ही दूर भेजा जा रहा है, न कि लिटिल व्हाइट फ्लावर को।

द ब्लैक बास इन—पेंसिल्वेनिया

तब से घर में सन्नाटा पसरा हुआ है; माना जाता है कि लिटिल व्हाइट फ्लावर अपने परिवार के पास वापस चली गई है और श्रीमती डी. बिना किसी और परेशानी के घर में रह रही हैं।

*152

रेन्हम हॉल

तीन सौ साल पुराना रेन्हम हॉल 20,000 एकड़ की विशाल जागीर में स्थित एक बड़ा ढांचा है, जहां द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान अमेरिकी सैनिक तैनात थे। तब से यह घर बाहरी लोगों के

लिए बंद है और चूंकि टाउनशेंड परिवार गरीबी से ग्रस्त नहीं है, इसलिए पर्यटकों को आधे क्राउन के शुल्क पर प्रवेश देने की व्यापक रूप से प्रचलित प्रथा कभी भी हॉल के भव्य द्वार तक नहीं पहुंची।

लाइफ पत्रिका के 4 जनवरी, 1937 के अंक में छपी रिपोर्ट के अनुसार, यह सब एक भव्य हवेली के अंदरूनी हिस्से की तस्वीरें खींचने के आदेश से शुरू हुआ था। इस काम के लिए लंदन स्थित दरबारी फोटोग्राफरों की कंपनी इंद्रे शिरा लिमिटेड को नियुक्त किया गया था। सितंबर 1936 में कंपनी ने कैप्टन ह्यूबर्ट सी. प्रोवैंड और उनके एक सहायक को रेन्हम हॉल भेजा।

अपने आगमन के तुरंत बाद, कैप्टन प्रोवैंड काम पर लग गए। उन्हें अलौकिक चीज़ों में कोई विश्वास नहीं था, और अगर उन्होंने भूतों की कहानियों के बारे में सुना भी था, तो उन्हें उन पर कोई भरोसा नहीं था। लेकिन उनका एक कैमरा किसी अदृश्य शक्ति द्वारा तोड़ दिया गया। फिर भी उन्होंने भूत के होने की संभावना को मानने से इनकार कर दिया। हॉल के अंदरूनी हिस्से की सावधानीपूर्वक तस्वीरें खींचते समय, एक बार दोनों व्यक्ति नीचे ग्रेट हॉल में स्थित प्रसिद्ध भव्य सीढ़ियों के सामने आ गए। "देखो!" सहायक ने अचानक कहा और सीढ़ियों की ओर इशारा किया, उसके चेहरे पर भय स्पष्ट था। कैप्टन ने देखा लेकिन उन्हें कुछ नहीं दिखा। युवक ने ज़ोर देकर कहा कि उसने एक सफेद आकृति को धीरे-धीरे सीढ़ियों से नीचे उतरते देखा। "ठीक है," संशयवादी कैप्टन ने उत्तर दिया, "अगर तुम्हें इतना यकीन है, तो चलो इसकी तस्वीर खींचते हैं।" उन्होंने तुरंत अपना कैमरा सीढ़ियों की ओर किया और एक तस्वीर खींची। यह फ्लैश के साथ किया गया था, लेकिन यह याद रखना चाहिए कि 1936 में फ्लैश फोटोग्राफी आज जैसी नहीं थी, और फ्लैश की रोशनी की तीव्रता आधुनिक फ्लैशबल्ब की तुलना में बहुत कम थी। इस पर वह आकृति गायब हो गई—कम से कम सहायक ने बताया कि वह उसे अब दिखाई नहीं दे रही थी। फिर दोनों फोटोग्राफरों ने प्लेट को सील कर दिया और उसे ब्लेक, सैनफोर्ड और ब्लेक नामक रसायन फर्म में ले गए, जहाँ नेगेटिव को विकसित किया गया। रसायन विशेषज्ञों ने इस बात की पुष्टि की कि नेगेटिव या डेवलपिंग में कोई खराबी नहीं थी, और सीढ़ियों पर दिखाई देने वाली आकृति किसी भी प्रकार की लापरवाही के कारण नहीं थी।

वह आकर्षक आकृति बहती हुई पोशाक पहने एक महिला की है, जो सीढ़ियों से नीचे उतर रही है। यह सफेद और धुएँ जैसी है, और इसके आर-पार सीढ़ियाँ दिखाई दे रही हैं। जब टाउनशेंड परिवार को परिणाम दिखाए गए, तो कुछ क्षणों के लिए शर्मिंदगी भरी चुप्पी छा गई। फिर उस तस्वीर की तुलना लेडी डोरोथी वालपोल के चित्र से की गई, जो ऊपरी मंजिल के एक गलियारे में टंगा हुआ था। वह चित्र भी काफी हद तक उस महिला के प्रेत से मिलता-जुलता था, जिसे टाउनशेंड के घर में कई वर्षों से आए मेहमानों ने देखा था।

सन् 1780 के दशक में डोरोथी वालपोल के भूत बनने का कारण मानसिक अवसाद नामक एक छोटी सी समस्या थी, लेकिन उन दिनों इसे एक ऐसी बीमारी माना जाता था जिस पर सभ्य समाज में चर्चा करना उचित नहीं था। कुलीन परिवार से होने के कारण, उन्हें ऊपरी मंजिल के एक कमरे में "रखा गया" और उन्होंने अपने अंतिम वर्ष वहीं बिताए, अंततः मृत्यु के द्वार को पार करते समय उनकी मानसिक स्थिति सुधर नहीं रही थी। शायद उन्हें इस बदलाव का एहसास नहीं था और वे रेन्हम हॉल को अब भी अपना असली घर मानती हैं, और खुद को अब वहाँ अपनी मर्जी से घूमने और इच्छा अनुसार घुसपैठ करने वाले फोटोग्राफरों के कैमरे तोड़ने के लिए स्वतंत्र समझती हैं।

लाइफ पत्रिका ने सभी तथ्यों के साथ तस्वीर प्रकाशित की और पाठकों पर फैसला करने का जिम्मा छोड़ दिया। मैंने यह तस्वीर राष्ट्रीय टेलीविजन पर और कई कॉलेज के छात्रों के सामने दिखाई है और हर बार दर्शकों को हैरानी हुई है, क्योंकि यह वाकई भूतिया तस्वीर का सटीक उदाहरण है।

*153

पेनसिल्वेनिया नाविक का भूत

जब मैंने पेंसिल्वेनिया के न्यू होप में स्थित सुरम्य लोगन इन में अपना जन्मदिन मनाने के लिए एक शांत सप्ताहांत बिताने का फैसला किया, तो मुझे बिल्कुल भी अंदाजा नहीं था कि मैं न केवल एक प्रेतवाधित बेडरूम में सोने जा रही हूँ, बल्कि वास्तव में एक के "मूल्य" पर दो भूत देखने को मिलेंगे!

जनवरी की सन्नाटे भरी रात में कमरा नंबर 6 में टिमटिमाती मोमबत्ती के ज़रिए मेरे साथी और मुझसे बात करने वाली महिला ने एक दिल को छू लेने वाला अनुभव दिया, और मुझे उम्मीद है कि इससे बेचैन व्यक्ति को घर से जुड़ाव का बेहतर एहसास हुआ होगा। मालकिन श्रीमती ग्वेन डेविस ने मुझे बताया कि वह भूत एक पूर्व मालिक की माँ है, जिसे यह जगह इतनी पसंद थी कि वह इसे छोड़कर कभी नहीं गई।

श्रीमती डेविस ने मुझे पास के लम्बरविले में स्थित ब्लैक बास इन की ओर इशारा किया, जो 18 वीं सदी का एक पब है और अब डेलावेयर नहर के ठीक किनारे पर स्थित एक होटल है। यह स्थान उस काल की अंग्रेजी प्राचीन वस्तुओं और राजा चार्ल्स प्रथम, द्वितीय और जेम्स द्वितीय के चित्रों से भरा हुआ है, जो इस बात का प्रमाण है कि यह वास्तव में एक समय में वफादारों का गढ़ था।

मैं अपने कैमरे के साथ उस जगह का चक्कर लगाता रहा और वहाँ मौजूद रोशनी में रंगीन फिल्म से कई तस्वीरें खींचता रहा। यहाँ की कहानी एक ऐसे युवक के भूत से जुड़ी है जो नहर में नाव चलाकर अपना जीवन यापन करता था। आज तो यह नहर पर्यटकों के लिए महज़ एक दर्शनीय स्थल है, लेकिन उन्नीसवीं सदी में यह व्यापार का एक सक्रिय जलमार्ग था, जिसके ज़रिए नावों में सामान लादा जाता था। न्यू होप और आसपास के कुछ कस्बों के चारों ओर घूमती यह नहर इस क्षेत्र को एक अनूठा आकर्षण प्रदान करती है।

ब्लैक बास के पत्थर के तहखाने में, जहाँ कई सालों से लोगों ने उस प्रेत को देखा था (मौजूदा मालिक हर्बी वार्ड के अनुसार), मैंने कुछ तस्वीरें लीं और फिर अपने साथी से मेरी एक तस्वीर लेने को कहा। ज़रा सोचिए, मुझे कितना आश्चर्य हुआ जब तस्वीर में एक सफेद आकृति दिखाई दी, जिसे नाविक के अलावा और कुछ नहीं कहा जा सकता, जो शायद मुझे दर्शन देने आया था। नाविक की दूसरे नाविक के साथ हिंसक बहस में मौत हो गई थी। वैसे, उस नाविक का नाम हैंस था। शायद उसे लगा होगा कि दोनों हैंस को एक-दूसरे से संपर्क करना चाहिए?

अध्याय दस

पोल्टरजिस्ट

पोल्टरजिस्ट शब्द जर्मन भाषा का है। अलौकिक घटनाओं के क्षेत्र में जर्मन शोधकर्ताओं ने सबसे पहले पोल्टरजिस्ट गतिविधियों से जुड़ी घटनाओं को बेहतर ढंग से समझने के लिए प्रयास किए। इस शब्द का सीधा सा अर्थ है "शोर मचाने वाला भूत" और यह उन घटनाओं को संदर्भित करता है जिन्हें आजकल पैरासाइकोलॉजी भौतिक घटनाएँ कहना पसंद करती है। ये घटनाएँ हमेशा त्रि-आयामी होती हैं, चाहे वे चलती हुई वस्तुएँ हों या दृश्य या श्रव्य प्रभाव जो सामान्य या अस्पष्ट साधनों से उत्पन्न होते हैं।

जर्मन वैज्ञानिकों ने यह निष्कर्ष निकाला कि ये घटनाएँ किशोरावस्था की दहलीज पर खड़े एक युवक से जुड़ी हुई थीं और उसी के कारण घटित हो रही थीं; इन हिंसक घटनाओं को संभव बनाने वाली ऊर्जाएँ वास्तव में घर के युवाओं की अप्रकाशित यौन ऊर्जाएँ थीं। उन्होंने यहाँ तक आरोप लगाया कि इनमें से कुछ युवाओं ने अनजाने में, अक्सर "ध्यान आकर्षित करने" के लिए, इन घटनाओं को अंजाम दिया था।

यह आधा सच है। यौन जागृति की दहलीज पर खड़े युवा इस घटना को घटित करने वाली ऊर्जा का स्रोत हो सकते हैं, लेकिन किसी भी उम्र के मानसिक रूप से विकलांग व्यक्ति और किसी भी उम्र के यौन रूप से कुंठित व्यक्ति भी, सचेत या अचेत रूप से, ऐसा कर सकते हैं। इसलिए, भूत-प्रेत का अनुभव भूतिया घटना का वह चरण मात्र है जब स्पष्ट रूप से भौतिक प्रकृति की घटनाएं प्रकट होती हैं, जैसे कि हिलना-डुलना या वस्तुओं को फेंकना। हालांकि, इसका मूल कारण न तो युवा है और न ही मानसिक रूप से विकलांग बुजुर्ग: वे केवल एक स्रोत हैं, जिसे उनकी इच्छा के विरुद्ध और आमतौर पर उनकी जानकारी के बिना, एक प्रेतवाधित सत्ता द्वारा उत्तेजित किया जाता है, जो इस दुनिया में लोगों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करने की पुरजोर कोशिश कर रही होती है। किसी को नुकसान पहुंचाने के लिए नहीं, बल्कि लोगों को अपनी उपस्थिति का एहसास कराने के लिए।

कई साल पहले मैंने बताया था कि मानसिक घटनाएँ यौन गतिविधि के समान ही ऊर्जा का उपयोग करती हैं, और अक्सर इन ऊर्जाओं का दमन अवांछित मानसिक घटनाओं को जन्म दे सकता है। 1930 के दशक में, ब्रिटिश सोसाइटी ऑफ साइकिकल रिसर्च ने एक गहरे पारलौकिक माध्यम की सहायता से कुछ परीक्षण किए। पारलौकिक माध्यम के शरीर से प्राप्त एक्टोप्लाज्म ग्रंथियों द्वारा स्रावित एल्ब्यूमिन नामक पदार्थ निकला। यह एक्टोप्लाज्म वीर्य द्रव के समान था।

भूत-प्रेत जैसी घटनाएं लोकप्रिय फिल्मों में दिखाई जाती हैं, वैसी नहीं होतीं। वास्तव में, ये फिल्में हर मायने में सरासर मनगढ़ंत हैं, चाहे वो दिखाई गई घटनाएं हों या तथाकथित शोधकर्ता और उनके "उपकरण"। अक्सर ऐसा होता है कि फिल्मों और टेलीविजन द्वारा अलौकिक वास्तविकता का अंधाधुंध शोषण एक झूठी तस्वीर पेश करता है, जिसका मकसद सिर्फ लोगों को किसी ऐसी चीज से डराना होता है जो सच नहीं है।

* * *

तो फिर, किसी भूत-प्रेत से कैसे निपटा जाए? ठीक वैसे ही जैसे किसी धरती पर भटकती आत्मा, किसी ऐसे भूत से निपटा जाता है जो अपनी असलियत को समझ नहीं पाता। आमतौर पर गहरी समाधि की अवस्था में किसी माध्यम से संपर्क स्थापित किया जा सकता है। इस तरह आत्मा को शांत किया जा सकता है या मुक्त किया जा सकता है। याद रखें कि अधिकांश भूत शारीरिक रूप से प्रकट होने या वस्तुओं को हिलाने के लिए आवश्यक ऊर्जा प्राप्त करने में सक्षम नहीं होते। केवल जब कोई शक्तिशाली स्रोत पास में हो, तभी वे ऐसी शक्ति प्राप्त कर सकते हैं।

बेशक, वस्तुओं को स्वतःस्फूर्त रूप से हिलते हुए देखना डरावना हो सकता है। लेकिन वे वास्तव में स्वतःस्फूर्त नहीं होतीं—इसके लिए भूत द्वारा नियंत्रित विद्युत चुम्बकीय बल जिम्मेदार होता है, भले ही भूत स्वयं दिखाई न दे।

यहां तक कि हवा में चाकू की गति जैसी चौंकाने वाली घटना (जैसा कि राय, न्यूयॉर्क में हुआ) भी किसी पर हमला नहीं है, बल्कि ध्यान आकर्षित करने और यदि संभव हो तो मदद प्राप्त करने का एक प्रयास है।

भूत-प्रेत के वास्तविक मामले सामान्य भूत-प्रेत की घटनाओं की तुलना में बहुत दुर्लभ होते हैं, लेकिन वे घटित होते हैं। मैंने जितने भी मामलों की जांच की है, उन सभी में एक शक्ति स्रोत मौजूद पाया गया है, चाहे वह जीवित प्राणियों में हो या उन आत्माओं में जो मानसिक पीड़ा या पागलपन की स्थिति में मृत्यु को प्राप्त हुई हों। मेरे कुछ मामले नीचे दिए गए हैं।

*154

टेक्सास में शैतान

मुझसे अक्सर भूत-प्रेतों के बारे में टिप्पणी करने को कहा जाता है। यह शब्द जर्मन भाषा से लिया गया है और किसी तरह सामान्य समझ से परे हिंसक शारीरिक गतिविधियों की छवि प्रस्तुत करता है। भूत-प्रेतों को आम तौर पर घर के युवाओं का काम माना जाता है—युवाओं की उम्र से पहले के युवा, जिनकी शारीरिक ऊर्जा अभी तक यौन या व्यावसायिक रूप से निर्देशित नहीं हुई होती है और इसलिए वे घर के अन्य सदस्यों पर शरारतें करने के लिए स्वतंत्र होते हैं। अधिकांश परा मनोविज्ञानी भूत-प्रेतों को ऐसी दमित भावनाओं की अवचेतन अभिव्यक्ति, युवाओं द्वारा ध्यान आकर्षित करने का एक तरीका मानते हैं और उन्हें आत्माओं या किसी अन्य प्रकार के बाहरी प्रभाव जैसी अलौकिक शक्तियों से नहीं जोड़ते हैं। हालांकि, मैंने भूत-प्रेतों से जुड़े दर्जनों मामलों की जांच की है जहां भौतिक वस्तुएं अपनी इच्छा से हिलती-डुलती हुई प्रतीत हुई हैं और पाया है कि एक और व्याख्या ही सही हो सकती है। निश्चित रूप से, प्रत्येक मामले में, घर में युवा लोग थे, या कभी-कभी मानसिक रूप से विकलांग वयस्क भी थे। उदाहरण के लिए, मैंने पाया कि मानसिक रूप से विकलांग वयस्क में भी उसी प्रकार की दमित गतिज ऊर्जा होती है, जिसे बाहरी शक्तियाँ भौतिक घटनाओं को अंजाम देने के लिए उपयोग कर सकती हैं, जैसे कि युवाओं की अप्रयुक्त ऊर्जा। मैंने यह भी पाया कि जिन मामलों से मेरा व्यक्तिगत रूप से संपर्क हुआ, उन सभी में घर या उस ज़मीन पर कुछ न कुछ अधूरा काम बाकी था। कभी-कभी इसमें उसी स्थान पर बनी कोई पिछली इमारत शामिल होती थी। कभी-कभी इसमें वही इमारत शामिल होती थी जिसमें ये घटनाएँ घटी थीं। लेकिन हर मामले में किसी न किसी प्रकार की मानसिक शक्ति मौजूद थी, और मेरा दृढ़ विश्वास है कि भौतिक जगत से परे की वह शक्ति इन घटनाओं के लिए ज़िम्मेदार थी, और

निश्चित रूप से उसने युवाओं या मानसिक रूप से विकलांग वयस्क की मानसिक ऊर्जा का उपयोग किया। इस प्रकार, मेरे लिए, भूत-प्रेत भूतों की भौतिक गतिविधियाँ हैं जो युवाओं या मानसिक रूप से विकलांग वृद्धों की मानसिक शक्तियों के माध्यम से व्यक्त होती हैं, लेकिन पूरी तरह से उन बाहरी शक्तियों द्वारा निर्देशित होती हैं जो अब शरीर में नहीं हैं। जीवित व्यक्तियों की शारीरिक ऊर्जाओं और मृत व्यक्तियों के आमतौर पर विक्षिप्त दिमागों के बीच यह संबंध उन भौतिक घटनाओं को जन्म देता है जिन्हें पोल्टरजिस्ट गतिविधियों के रूप में जाना जाता है, जो बहुत विनाशकारी हो सकती हैं, कभी-कभी खतरनाक हो सकती हैं, और कभी-कभी उन लोगों के लिए हैरान करने वाली हो सकती हैं जो अंतर्निहित कारणों को नहीं समझते हैं।

इन शारीरिक गतिविधियों का उद्देश्य हमेशा जीवित व्यक्तियों का ध्यान आकर्षित करना या शायद निजी कारणों से उन्हें परेशान करना होता है। इस घटना के पीछे की मानसिकता मनोविकार और बचकानेपन के बीच कहीं होती है, लेकिन भावनात्मक और मानसिक रूप से सामान्य होने से बहुत दूर होती है। फिर भी, इससे उसी आधार पर निपटा जा सकता है जिस आधार पर मैं सामान्य भूत-प्रेतों से निपटता हूँ। कहने का तात्पर्य यह है कि इन गतिविधियों का इलाज खोजने से पहले इनके कारण को समझना आवश्यक है। भौतिक जगत से परे उस परेशान करने वाली शक्ति से संपर्क करना, निश्चित रूप से, सबसे अच्छा तरीका है। जब यह संभव न हो, तो जीवित व्यक्तियों को अवांछित भूत-प्रेत की गतिविधियों से बचाने के लिए एक सुरक्षा कवच बनाना पड़ता है। कुछ साल पहले लॉन्ग आइलैंड के सीफोर्ड में हुए चर्चित मामले में, घर के एक छोटे लड़के को दिनदहाड़े वस्तुओं के हिलने-डुलने के लिए जिम्मेदार ठहराया गया था। अमेरिकन सोसाइटी ऑफ साइकिकल रिसर्च के डॉ. कार्लिस ओसिस जैसे कुशल अन्वेषक भी, जो उस समय न्यूयॉर्क शहर के पैरासाइकोलॉजी फाउंडेशन के लिए काम कर रहे थे, लड़के के अवचेतन विचारों और अदृश्य, लेकिन अत्यंत वास्तविक, देह-विगत मानसिक सत्ताओं के बीच संबंध नहीं समझ पाए। अपनी रिपोर्ट में उन्होंने संकेत दिया कि ये गतिविधियाँ लड़के की अवचेतन इच्छाओं के कारण थीं, जो ध्यान आकर्षित करना और उस तरह का ध्यान पाना चाहती थीं जिसकी उसके अवचेतन मन को लालसा थी। मैं व्यक्तिगत रूप से सीफोर्ड मामले में शामिल नहीं था, हालाँकि मैं इससे परिचित था, क्योंकि

मैंने लड़के के पिता श्री हरमन से इस मामले पर चर्चा की थी। मैंने इस मामले में हस्तक्षेप नहीं किया क्योंकि इसके कुछ पहलुओं से परिवार द्वारा प्रचार पाने की संभावना थी, और वैसे भी मेरे क्षेत्र के अन्य लोग पहले ही इस मामले में शामिल हो चुके थे। मुझे इस मामले में अनावश्यक हस्तक्षेप करने का कोई कारण नहीं दिखा, लेकिन मैंने डॉ. ओसिस द्वारा की गई जाँच से स्वतंत्र रूप से माध्यम एथेल जॉनसन मेयर्स की मदद से घर की पृष्ठभूमि की जाँच की। इस समय के संदर्भ में, श्रीमती मेयर्स के साथ मेरी मुलाकात से पता चला कि सीफोर्ड हाउस की जगह पर पहले एक कब्रिस्तान हुआ करता था और ये गड़बड़ियां घर के निर्माण के कारण ही हुई थीं। ये गड़बड़ियां पहले नहीं हुई थीं क्योंकि घर में कोई भौतिक माध्यम नहीं रहता था। जब वह युवक किशोरावस्था में पहुंचा, या लगभग पहुंचा, तो उसकी शक्तियां उन लोगों के लिए उपलब्ध हो गईं जो प्रकट होना चाहते थे, और तभी वस्तुओं की वह चर्चित हलचल हुई।

इसी तरह, दो साल पहले बवेरिया के रोसेनहाइम शहर में एक मामला लोगों के ध्यान में आया। उस शहर के एक वकील के यहाँ काम करने वाली एक युवती अपनी उपस्थिति मात्र से ठोस वस्तुओं को हिलाने में सक्षम थी। वकील समेत कई प्रतिष्ठित गवाहों ने अलौकिक घटनाओं का ब्यौरा दर्ज किया। अंततः फ्रीबर्ग विश्वविद्यालय के डॉ. हंस बेंडर ने इस मामले में हस्तक्षेप किया और जाँच के बाद इसे भूत-प्रेत की एक विशिष्ट घटना बताया। उन्होंने भी इस गतिविधि को किसी बाहरी शक्ति से नहीं जोड़ा, जो शायद इस घर या उस स्थान पर पहले मौजूद किसी घर से आई हो। मुझे लगता है कि उस समय भौतिक या लौकिक समाधान निकालने की हड़बड़ी में इस घटना को किसी भी प्रकार की आत्मा से जोड़ना अनावश्यक समझा गया।

लेकिन शायद सभी भूत-प्रेत की घटनाओं में सबसे प्रसिद्ध, क्लासिक अमेरिकी मामला, टेनेसी की बेल विच का है। यह मामला 1820 के दशक का है और इसमें एंड्रयू जैक्सन जैसे प्रतिष्ठित गवाह भी शामिल थे। टेनेसी की बेल विच के बारे में बहुत कुछ लिखा और प्रकाशित किया गया है। संक्षेप में कहें तो, इसमें एक महिला की जॉन बेल नामक किसान के प्रति घृणा शामिल थी। इस रिश्ते के कारण मृत्यु के बाद भी घृणा और विनाश का सिलसिला जारी रहा, जिसके परिणामस्वरूप अंततः दो लोगों की जान चली गई। टेनेसी की बेल विच के मामले में भूत-प्रेत की गतिविधियों से जुड़े सभी प्रकार के भौतिक घटनाक्रम देखे गए।

इनमें कुछ आश्चर्यजनक घटनाएँ शामिल थीं, जैसे ठोस वस्तुओं का अचानक प्रकट होना या गायब हो जाना; अज्ञात कारणों से अजीब गंध और आग लगना; स्पष्ट रूप से दिखाई देने वाली वस्तुओं का धीमी गति से जानबूझकर हिलना-डुलना, जबकि वहाँ कोई बोल नहीं रहा होता था। इस मामले की कार्यवाही का अध्ययन करने वाला कोई भी व्यक्ति यह देखेगा कि ये घटनाएँ स्पष्ट रूप से एक विक्षिप्त व्यक्ति का काम थीं। यद्यपि इन्हें उत्पन्न करने के लिए कुछ हद तक धूर्तता और चालाकी आवश्यक है, फिर भी इसके पीछे का तर्क, या बल्कि तर्क का अभाव, स्पष्ट रूप से एक विक्षिप्त मन का संकेत देता है। इसलिए सभी भूत-प्रेत संबंधी गतिविधियाँ इन्हें करने वाले व्यक्ति की मनोविक्षिप्त, या कम से कम सिज़ोफ्रेनिक मानसिक स्थिति से संबंधित होनी चाहिए। अभी तक हम पागलपन और भौतिक नियमों के विपरीत प्रतीत होने वाले कार्यों को करने में सक्षम मुक्त ऊर्जाओं के बीच के संबंध को स्पष्ट रूप से नहीं समझते हैं, लेकिन मानव व्यक्तित्व के इन दो पहलुओं के बीच एक बहुत ही घनिष्ठ संबंध प्रतीत होता है। जब पागलपन होता है, तो कुछ ऊर्जाएँ मुक्त हो जाती हैं और कभी-कभी इच्छा अनुसार घूमने और भौतिक नियमों के विपरीत कारनामे करने में सक्षम होती हैं। जब विचाराधीन मन में पागलपन की स्थिति सामान्य हो जाती है, तो ये शक्तियां अचानक समाप्त हो जाती हैं।

मैंने समय-समय पर भूत-प्रेत से जुड़ी घटनाओं और ऐसी भूतिया गतिविधियों की रिपोर्ट की है जो पोल्टरजिस्ट गतिविधियों से मिलती-जुलती या उनमें शामिल होती हैं। आम तौर पर हम इन्हें भौतिक घटनाएँ मानते हैं। इसका एक उदाहरण न्यूयॉर्क के राय में रहने वाले श्री और श्रीमती जॉन स्माइथ का भूतिया घर है। इस घर में जो घटनाएँ घटीं, उनमें दरवाज़ों का अपने आप खुलना, कदमों की आहट, जंजीरों के खड़कने की आवाज़, ऐशट्रे का मेज़ से अपने आप गिर जाना और सबसे डरावनी बात यह थी कि एक रविवार की सुबह दो समझदार वयस्कों के सामने एक चाकू अपने आप उछलकर उनके पैरों पर जा गिरा। ऐसा चाकू उन्हें चोट पहुँचाने के लिए नहीं, बल्कि घर में मौजूद किसी अदृश्य शक्ति की ओर ध्यान आकर्षित करने के लिए था। ये गतिविधियाँ पोल्टरजिस्ट मामलों में भी होती हैं, लेकिन ये केवल एक मामूली घटना है जो संचार की आवश्यकता को रेखांकित करती है। ये पूरी घटना नहीं हैं, और न ही ये असली पोल्टरजिस्ट मामलों की तरह अव्यवस्थित और अनियंत्रित हैं। न्यूयॉर्क के राय शहर के मामले

में, भौतिक गतिविधियाँ लंबे समय से चल रही मानसिक गतिविधियों जैसे कि प्रेत-दर्शन और किसी उपस्थिति के आभास के बाद हुईं। यहाँ भौतिक घटनाओं का मुख्य उद्देश्य संदेश को और अधिक प्रभावी बनाना था। लेकिन वास्तविक भूत-प्रेत के मामले में ऐसा नहीं होता, जहाँ मानसिक संचार की कोई संभावना नहीं होती, क्योंकि इसका कारण बनने वाला व्यक्ति वास्तव में सोचने में असमर्थ होता है। ऐसे मामले में, सारी ऊर्जा विनाशकारी भौतिक गतिविधियों की ओर निर्देशित होती है और जो लोग मानसिक आभास प्राप्त करने में सक्षम हैं, उन्हें मानसिक आभास देने की न तो इच्छा होती है और न ही क्षमता, क्योंकि इन गतिविधियों का मुख्य प्रेरक घृणा और भौतिक जगत में प्रकट होने की इच्छा से इतना भरा होता है कि वह विचार संदेश जैसी तर्कसंगत गतिविधि की परवाह ही नहीं करता।

इसलिए इस तरह के मामलों से निपटना मुश्किल होता है, क्योंकि इनमें तर्क-वितर्क संभव नहीं होता, जैसा कि वास्तविक भूत-प्रेत के मामलों में होता है, जहाँ एक समाधि माध्यम अक्सर घर में मौजूद अशांत और विक्षिप्त आत्मा से संपर्क स्थापित कर सकता है और धीरे-धीरे, लेकिन निश्चित रूप से, उसे तर्कसंगतता की सीमा में वापस ला सकता है। वास्तविक भूत-प्रेत के मामले में ऐसा कुछ भी स्थापित नहीं किया जा सकता और इसे सुलझाने के लिए अन्य उपाय खोजने पड़ते हैं। इसलिए यह स्वाभाविक है कि जो कोई भी ऐसी गतिविधियों का शिकार होता है और उनसे या उनके कारणों से परिचित नहीं होता, वह घबरा जाएगा, यहाँ तक कि अपनी संपत्ति छोड़कर जान बचाने के लिए भागने की इच्छा भी रखेगा।

1 सितंबर, 1968 को एल. एच. बेयर्ड नाम के एक सज्जन ने मुझसे संपर्क किया। उन्होंने मुझे टेक्सास के टायलर से पत्र लिखकर अनुरोध किया कि मैं उन्हें उन असाधारण घटनाओं को समझने में मदद करूँ जिन्होंने 1965 से 1968 के बीच तीन वर्षों की अवधि में उनके जीवन को नरक बना दिया था। ऑस्टिन में विवाहित उनकी बेटी के माध्यम से उन्हें भूतों पर मेरे काम के बारे में पता चला और अंततः उन्होंने निष्कर्ष निकाला कि केवल मेरे जैसा इस विषय का जानकार ही उनके घर में घटित रहस्यमय घटनाओं पर प्रकाश डाल सकता है। उन्होंने 1964 में अपना घर खरीदा था, लेकिन तीन साल तक भूत-प्रेत के साये में रहने और जीवन के लिए संघर्ष करने के बाद उन्होंने फैसला किया कि उनकी मानसिक शांति और जीवित रहना अधिक महत्वपूर्ण है, और 1968 में उन्होंने इसे फिर से बेच दिया, जिससे उन्हें इसमें लगाया

गया सब कुछ खोना पड़ा। हालाँकि, यह कदम सौभाग्यशाली साबित हुआ, क्योंकि नया घर शांत और सुकून भरा निकला। जब श्री बेयर्ड ने एक बार फिर से स्थिति को संभाला और दोबारा आराम करना सीख लिया, तो उन्होंने पिछले तीन वर्षों के दौरान हुई घटनाओं की जांच करने और इस असाधारण समस्या का कोई हल निकालने का फैसला किया।

मैंने टायलर के बारे में पहले कभी नहीं सुना था, इसलिए मैंने नक्शे पर इसे देखने का फैसला किया। पता चला कि यह लगभग 60,000 निवासियों का शहर है, जिसे "गुलाब की राजधानी" के नाम से भी जाना जाता है, क्योंकि यहाँ बागवानी की गतिविधियाँ बहुत अधिक होती हैं। टायलर, डलास और ह्यूस्टन से एक स्थानीय एयरलाइन द्वारा जुड़ा हुआ है और डलास और श्रेवेपोर्ट, लुइसियाना के लगभग मध्य में स्थित है। यहाँ एक टेलीविजन स्टेशन, एक अखबार और कुछ मिलनसार आम नागरिक हैं जो अपने-अपने कामों में लगे रहते हैं। टायलर के जिन लोगों से मेरी मुलाकात यात्रा के बाद थोड़ी-बहुत हुई, वे तंत्र-मंत्र जैसी बातों में दिलचस्पी नहीं रखते। वास्तव में, अगर कोई इस विषय पर प्रवचन देने की कोशिश करे, तो उसे खाली हॉल में ही देना पड़ेगा।

हावर्ड बेयर्ड पास के एक अस्पताल में काम करते हैं और साथ ही एक रबर स्टैम्प की दुकान भी चलाते हैं, जहाँ उनकी पत्नी उनके साथ होती हैं और उनके पास इतने ऑर्डर होते हैं कि वे उन्हें पूरा नहीं कर पाते। मेरे दौरे के समय उनका बेटा एंडी नाई की पढ़ाई कर रहा था और संभवतः अब टेक्सास में कहीं लोगों के बाल काट रहा होगा, और सभी को संतुष्ट कर रहा होगा। यहाँ का बड़ा स्थानीय होटल ब्लैकस्टोन कहलाता है और यह छोटे कस्बों के अन्य बड़े होटलों जैसा ही है। टेक्सास के टायलर में सब कुछ बहुत शांत है और आप रात को चैन से सो सकते हैं। यहाँ बदलाव न करने की भावना व्याप्त है, जहाँ तक संभव हो, पुरानी बातों को भुला देने का भाव है, और मुझे स्पष्ट रूप से यह आभास हुआ कि भूत-प्रेत जैसी घटनाओं पर स्थानीय बार में बैठकर चर्चा करना शायद ही कभी पसंद किया जाता होगा।

श्री बेयर्ड की इस बात के लिए उनकी सराहना की जानी चाहिए कि छोटे शहर के जीवन के संकेतों के बावजूद, उन्होंने अपने जीवन में घटी असाधारण घटनाओं की जांच करने का निर्णय लिया, बिना किसी डर के और अपने परिवार (पत्नी और बेटे) के प्रति गहरी सहानुभूति के साथ उनकी पड़ताल की। उनकी जगह पर अन्य लोग शायद इस मामले को दबा देते और

भूलने की कोशिश करते। यह विशेष रूप से महत्वपूर्ण है क्योंकि श्री बेयर्ड काफी समृद्ध हैं, अपने पड़ोसियों के साथ व्यापार करते हैं और उनका टायलर छोड़ने का कोई इरादा नहीं है। मुझसे जांच के लिए कहना मामले को और बिगाड़ने जैसा था, लेकिन बेयर्ड ने यह सोच-समझकर जोखिम उठाया क्योंकि वे जो कुछ उन्होंने देखा था उसे जानकर और उसके पीछे के कारण को जाने बिना नहीं रह सकते थे।

सितंबर 1968 में जब हमने पत्र व्यवहार शुरू किया, तब तक ये घटनाएँ जितनी अचानक शुरू हुई थीं, उतनी ही अचानक समाप्त भी हो चुकी थीं। यह भी वास्तविक भूत-प्रेत गतिविधियों की एक विशेषता है, क्योंकि ये पूरी तरह से जीवित लोगों की उपलब्ध मुक्त ऊर्जा पर निर्भर करती हैं। जैसा कि मेरी जाँच में देखा जाएगा, जब मुख्य व्यक्तियों को घर से हटा दिया गया, तो वह ऊर्जा अनुपलब्ध हो गई। बेशक, इसमें अन्य कारक भी शामिल हैं। यह बिजली की लाइन से जुड़ने जितना सरल नहीं है, लेकिन मूलतः भूत-प्रेत गतिविधियाँ न केवल विघ्नकारी सत्ता की प्रकट होने की इच्छा पर निर्भर करती हैं, बल्कि उन लोगों के अवचेतन मन की शारीरिक स्थिति पर भी निर्भर करती हैं जिन्हें वे ऊर्जा स्रोत के रूप में उपयोग करना चाहते हैं।

भूत-प्रेतों के दबाव में बेयर्ड परिवार को जिस घर को छोड़ना पड़ा, वह एलिजाबेथ स्ट्रीट पर स्थित है। यह एक मंजिला, सुंदर दिखने वाला और लगभग चौदह-पंद्रह साल पुराना घर है। नए मालिक अपने घर के इतिहास में विशेष रुचि नहीं रखते, और इसी कारण मैं इसका वास्तविक स्थान गुप्त रख रहा हूँ, लेकिन श्री एम. और उनके परिवार को बेचे जाने के बाद से घर में कोई बदलाव नहीं किया गया है। घर में प्रवेश सड़क से थोड़ा ऊपर बने बरामदे से होता है। बरामदे के दाईं ओर एक गैरेज और एक ढलान वाली सड़क है। घर के अंदर प्रवेश करते ही लिविंग रूम दिखाई देता है, जिसके बाईं ओर एक स्टडी रूम और दाईं ओर डाइनिंग एरिया है। लिविंग रूम के आगे किचन और एक लंबा कमरा है जो सीधे ब्रेकफास्ट रूम की ओर जाता है। बिल्कुल बाईं ओर दो बेडरूम हैं। गैरेज के पीछे घर के दाईं ओर वर्कशॉप है, जिसका उपयोग श्री बेयर्ड के स्वामित्व के समय में वर्कशॉप के रूप में किया जाता था। दुकान और गैरेज को अलग करने वाली एक कंक्रीट की पटिया भी है, और गैरेज में अटारी तक जाने वाली एक सीढ़ी है।

65 वर्षीय हॉवर्ड बेयर्ड एक सौम्य, मधुर टेक्सास लहजे वाले, विनम्र, दृढ़ और मददगार स्वभाव के व्यक्ति हैं। जब मैंने उनके मामले में रुचि दिखाई तो वे अत्यंत प्रसन्न हुए और हर तरह से सहयोग करने का वादा किया। टायलर में घटी असाधारण घटनाओं को बेहतर ढंग से समझने के लिए मैंने उनसे उन तीन वर्षों की कहानी अपने शब्दों में बताने का अनुरोध किया, जो उनके लिए उस घर में लगातार आतंक के तीन वर्ष बन गए थे। इस सच्ची कहानी में हॉवर्ड बेयर्ड के अलावा उनकी पत्नी जॉनी हैं, जिन्हें वे हमेशा जॉन कहकर पुकारते थे; उनकी बेटी एमी हैं, जो दूसरे शहर में रहती हैं और टायलर में घटी विचित्र घटनाओं में उनका कोई हाथ नहीं था; और उनका बेटा एंडी, जो अब 19 वर्ष का है, जिसने 1965 से 1968 के आरंभिक वर्षों के दौरान अपने माता-पिता के साथ उन भयानक अनुभवों को सहा। उनके विवरण में उल्लिखित अधिकांश अन्य लोग कई वर्षों पहले मर चुके हैं। कुछ अभी भी जीवित हैं, और इस विवरण में कुछ ऐसे नाम भी हैं जिनके बारे में श्री बेयर्ड ने कभी नहीं सुना। तो यहाँ टेक्सास के टायलर में एलिजाबेथ स्ट्रीट पर स्थित छोटे से घर में जो कुछ हुआ, उसका उनका अपना विवरण है:

मेरी कहानी सन् 1962 के अंत में शुरू होती है, जब एक ही कंपनी में मेरे लगभग उनतालीस वर्षों का कार्यकाल समाप्त हुआ। उस दौरान के अंतिम बीस वर्षों में जॉन मेरे साथ एक ही कार्यालय में काम करती थीं; वास्तव में उनकी डेस्क मेरी डेस्क से कुछ ही फीट की दूरी पर थी। हम दोनों सितंबर 1962 में सेवानिवृत्त हुए।

जॉन हमेशा से एक बेहतरीन कर्मचारी रही थीं, लेकिन वह कंपनी द्वारा किसी एक व्यक्ति से अपेक्षित समय से कहीं अधिक समय अपने काम को देती थीं। वह कभी छुट्टी नहीं लेती थीं और शायद ही कभी आधे दिन से ज़्यादा समय के लिए काम से दूर रहती थीं, शायद इसलिए क्योंकि वह अपने काम के लिए किसी पर भरोसा नहीं करती थीं। मैं यह नहीं कह सकता कि उनके मानसिक स्वास्थ्य में गड़बड़ी के लक्षण कब से दिखने लगे, हालाँकि आज जब मैं इस बारे में सोचता हूँ, तो मुझे लगता है कि हमारे सेवानिवृत्त होने से कई साल पहले से ही उनका व्यवहार थोड़ा अजीब था। हालाँकि, इसका उनके काम पर कोई असर नहीं पड़ा; वास्तव में, वह पहले से भी ज़्यादा सटीक थीं और शायद मैं यह मानने को तैयार ही नहीं था कि उनके

दिमाग में कुछ गड़बड़ है। खैर, अगले बारह महीनों के दौरान उनका व्यवहार पहले से भी ज़्यादा असामान्य होने लगा, खासकर घर पर, अंततः उन्हें मानसिक अस्पताल में भर्ती कराना ज़रूरी हो गया। हालाँकि वहाँ के डॉक्टर उन्हें छोड़ने को तैयार नहीं थे, लेकिन उन्हें लग रहा था कि उनके इलाज से कोई फायदा नहीं हो रहा है, इसलिए मैंने लगभग तीन महीने बाद उन्हें छोड़ने का अनुरोध किया। मेरी आर्थिक स्थिति बेहद साधारण थी, इसलिए स्वाभाविक रूप से मुझे जल्द से जल्द नौकरी ढूंढनी पड़ी। लेकिन दूसरे शहर में लगभग तीन महीने काम करने के बाद मुझे लगा कि ग्रैंड सेलाइन, टेक्सास से अपने परिवार को किसी और जगह ले जाना बेहद जरूरी है, क्योंकि मेरा मानना था कि माहौल में बदलाव से जॉन के स्वास्थ्य में काफी सुधार होगा। इसलिए, 1964 के मध्य में हम टायलर, टेक्सास चले गए, जहाँ जॉन हमेशा से रहना चाहती थी। हमने एक घर खरीदा और लगभग एक महीने बाद मुझे नौकरी मिल गई, जिससे कुछ साल पहले शुरू किए गए मेरे छोटे-मोटे व्यवसाय के अलावा, हमारा जीवन संतोषजनक तो था, लेकिन समृद्ध नहीं। लगभग एक साल तक जॉन की सेहत में सुधार होता दिख रहा था; वह एंडी और मेरे साथ घूमने जाती थी, एंडी के लिटिल लीग बेसबॉल मैचों में, कभी-कभी फिल्मों में, कभी-कभी बॉलिंग एली और मिनी गोल्फ कोर्स में भी जाती थी, लेकिन अचानक उसने जाना बंद कर दिया।

जब से हम यहाँ आए थे, उसने घर का कोई काम नहीं किया था और एंडी या मेरे लिए एक बार भी खाना नहीं बनाया था। इसी समय के आसपास वह नाश्ते के लिए पास के एक शॉपिंग सेंटर में दवा की दुकान पर जाने लगी, और फिर देर दोपहर में मेरे घर आने से ठीक पहले वह शाम के खाने के लिए कुछ ब्लॉक दूर एक रेस्तरां में जाती, आमतौर पर अकेले। कुछ समय बाद वह लगभग हर सुबह नाश्ते के लिए अलग-अलग जगहों पर जाने के लिए टैक्सी बुलाने लगी: एक बार शहर के बीचोंबीच एक होटल में; एक बार शहर के दूसरी तरफ माइनोला हाईवे पर एक सड़क किनारे रेस्तरां में, और कुछ ही हफ्तों में कई अन्य जगहों पर। हालांकि, वह हमेशा शाम को हमारे घर के पास वाले रेस्तरां में जाती थी। वह आमतौर पर मेरे आने के ठीक बाद घर आती, कपड़े बदलती और फिर अपने कमरे में ही रहती। वह सुबह बहुत जल्दी, लगभग 5 बजे उठ जाती थी, ऐसा उसने हमारी पूरी शादीशुदा जिंदगी में कभी नहीं किया था। पिछले कुछ वर्षों से वह लगातार यह कहती आ रही थी कि लोग उसकी जासूसी

कर रहे हैं, और अंततः, जब मैंने उसकी बात से असहमति जताई, तो उसने मुझ पर उसे प्रताड़ित करने के लिए गठित इस समूह का मुखिया होने का आरोप लगाया, और यहां तक कहा कि मैंने उसकी जासूसी करने के लिए घर में टेलीविजन कैमरे लगवाए थे।

जॉन लगभग लगातार सिगरेट पीती रहती थी, हर तरह की सिगरेट, लेकिन बाद में उसने सिगरेट के आकार के छोटे सिगार पीना शुरू कर दिया, और फिर बाद में पुरुषों द्वारा पी जाने वाली बड़ी सिगार पीने लगी। एक बार उसने नसवार का एक छोटा डिब्बा खरीदा। उसने पहले कभी नसवार का इस्तेमाल नहीं किया था। यह उस समय के कुछ ही समय बाद हुआ जब उसने सिगरेट कहीं भी रखना शुरू कर दिया था, जबकि पूरे घर में कई ऐशट्रे थे। उसने जलती हुई सिगरेट मेजों, सोफे के आर्मरेस्ट या बिस्तर पर भी रखनी शुरू कर दी थी, और अगर एंडी या मैं उन्हें बुझाने के लिए वहां नहीं होते, तो निस्संदेह घर जलकर राख हो जाता। उसने कई चादरों और अपने बिस्तर के गद्दे में छेद कर दिए थे। जब ऐसा हुआ तो मैंने उससे कहा कि वह अब और सिगरेट नहीं पी सकती। उसने कोई विरोध नहीं किया। एंडी और मैंने पूरे घर की तलाशी ली और हर जगह सिगरेट और माचिसें मिलीं। जॉन ने उन्हें हर जगह छिपा रखा था, एक छोटे से टेबल रेडियो के पीछे का हिस्सा हटाकर, टॉर्च के अंदर जहाँ बैटरी रखी जाती हैं, उसकी अलमारी में लटके उन छोटे जूतों की जेबों में, बाथटब के अंत में एक छोटे से छेद में जहाँ अलमारी का गुप्त दरवाजा पाइपों को मरम्मत के लिए बाहर निकालता है, गद्दे के नीचे, तकिए के कवर के अंदर, और यहाँ तक कि बाहर कुत्ते के घर में भी। हम हर दिन घर आने पर सिगरेट, माचिस और सिगरेट लाइटर इकट्ठा करते थे और यह कहना मुश्किल है कि हमने आखिरकार कितने ढूंढे और नष्ट किए। बेशक, वह हर दिन शॉपिंग सेंटर से और भी खरीद लाती थी, और एक बार तो हमें वह छोटा सा ऑटोमैटिक रोलर भी मिल गया जिससे कोई व्यक्ति अपनी सिगरेट बना सकता है।

हमारे घर में घटी भयानक घटनाओं में जॉन की क्या भूमिका थी, यह मैं ठीक-ठीक नहीं कह सकता। लेकिन मुझे और एमी को पूरा यकीन है कि कुछ न कुछ संबंध ज़रूर था। 1962 के अंत से लेकर 1965 की गर्मियों तक के तीन साल ऐसी घटनाओं की श्रृंखला से पहले के थे जिनकी कल्पना मानव मन नहीं कर सकता। दरअसल, जब ये अविश्वसनीय घटनाएँ हमारे सामने घटने लगीं, तो मुझे अपनी मानसिक स्थिति पर संदेह होने लगा था। एंडी, जो उस समय

13 साल का था, ने मुझे उन सभी भयानक अनुभवों के बारे में बताया, जो 1965 की गर्मियों के मध्य में शुरू हुए और 1966 के अंत तक बिना रुके जारी रहे, जब हमें "बताया गया" कि ये सब खत्म हो गया है, लेकिन अगले पंद्रह महीनों में हमें और भी बुरी चीज़ों का सामना करना पड़ा। अगर एंडी मेरे साथ इन भयानक अनुभवों की गवाही देने के लिए न होता, तो मैं सचमुच खुद को पूरी तरह से पागल मान लेता।

ये डरावनी घटनाएँ 1965 के मध्य के आसपास शुरू हुईं, लगभग उसी समय जब जॉन ने एंडी और मेरे साथ बाहर जाना बंद कर दिया था। घर पर वह अपने बेडरूम में रहती और सोने के बाद दरवाजा बंद ही रखती। एंडी और मैं दूसरे कमरे में एक ही बिस्तर पर सोते थे।

इस घर में अपने पहले साल के दौरान हमें गर्मियों के आम कीड़ों से कोई परेशानी नहीं हुई, इसलिए मैंने उस समय खिड़कियों की जाली ठीक करवाने की ज़हमत नहीं उठाई। हालाँकि, जुलाई 1965 में, एंडी और मैं सोने जाते और जैसे ही हम लाइट बंद करते, हर आकार के जून बग्स के झुंड हम पर टूट पड़ते। वे हमारे सिर और चेहरे पर हमला करते, कुछ ज़मीन पर गिर जाते, कुछ बिस्तर पर बैठ जाते और कुछ हमें बिल्कुल भी नहीं लगते और धातु के खिड़की के पर्दों से टकराकर चूर-चूर हो जाते। रात-रात भर हम अंधेरे में इन कीड़ों से लड़ते रहे, बिस्तर पर बैठे कीड़ों को पकड़कर पूरी ताकत से पर्दों पर फेंकते रहे।

फिर हमने पाया कि हम पर हमला करने वाले कम से कम आधे कीड़े पहले से ही मरे हुए थे, वास्तव में इतने लंबे समय से मरे हुए थे कि वे कुरकुरे हो गए थे और जब हम उन्हें उठाते थे तो वे हमारी उंगलियों के बीच चूर-चूर हो जाते थे! मैं उठकर बत्ती जलाता, और हमले तुरंत बंद हो जाते; हवा में उनका कोई निशान नहीं दिखता था... केवल वे सैकड़ों कीड़े जो फर्श और बिस्तर पर बिखरे पड़े थे। लेकिन जैसे ही मैं बत्ती बंद करता, हवा फिर से कीड़ों से भर जाती, मानो कोई वहां खड़ा हो और अंधेरा होते ही हम पर मुट्ठी भर कीड़े फेंकने के लिए तैयार हो। एक रात मैं उठा और पूरे कमरे में झाड़ू-पोछा किया, फर्नीचर के हर टुकड़े को दीवारों से दूर हटाया, ड्रेसर, संदूक और मेजों के पीछे की धूल साफ की, और फर्श को फिर से वैक्यूम किया। जब मैंने काम खत्म किया तो मैं कसम खा सकता था कि उस कमरे में एंडी और मेरे अलावा कोई भी जीवित प्राणी नहीं था। मैंने कुछ कपड़े लिए और उन्हें अलमारी के दरवाजे के नीचे और कमरे से हॉल में जाने वाले दरवाजे के नीचे की दरारों में ठूंस दिया। खिड़कियां

बंद थीं। कमरा बिल्कुल साफ था। एंडी बिस्तर पर था, जागा हुआ। मैंने बत्ती बंद कर दी। ठीक उसी क्षण सैकड़ों कीड़े हम पर टूट पड़े!

इसी समय के आसपास जॉन का व्यवहार पहले से कहीं अधिक अजीब होने लगा, वह ऐसे काम करने लगी जो सामान्य परिस्थितियों में वह कभी नहीं करती। उदाहरण के लिए, मैं अपनी अलमारी में कमीज़ या पैंट ढूंढने जाती, तो वहाँ कुछ नहीं मिलता। मुझे नहीं पता कि ऐसा करने की प्रेरणा मुझे कहाँ से मिली, लेकिन मैं जॉन की अलमारी में जाती, तो वहाँ मेरे कपड़े उसके कुछ कपड़ों के साथ टंगे होते।

उस समय गैराज के पीछे वाले कमरे में मेरी एक रबर स्टैम्प की दुकान थी, जो घर का ही एक हिस्सा था, और मैं हर रात वहीं काम करता था। घर से दुकान तक कोई सीधा रास्ता नहीं था। रसोई के दरवाजे से गैराज में जाना पड़ता था और फिर दूसरे दरवाजे से होकर दुकान में। कई बार मैं रसोई का दरवाजा खुलने की आवाज सुनता और यह देखने के लिए दुकान के दरवाजे की ओर दौड़ता कि कौन है। लेकिन लाख कोशिश करने के बावजूद, मैं कभी भी इतनी जल्दी वहाँ नहीं पहुँच पाता कि किसी को देख सकूँ... बस मेरे कपड़े, सूट, कमीजें वगैरह, हैंगर पर टंगे हुए, जैसे ही वे गैराज के फर्श के बीचोंबीच गिरते, मुझे दिखते।

गर्मी के सबसे गर्म दिनों में, जब हमारे घर में एयर कंडीशनर चल रहे थे, तभी कुछ अजीबोगरीब घटनाएं घटीं, जिनके लिए हमने जॉन को ज़िम्मेदार ठहराया। एंडी या मैं अचानक बाथरूम के वॉल हीटर को जलता हुआ और ऊपर से लपटें निकलता हुआ पाते, जबकि दरवाज़ा बंद होता। कमरा इतना गर्म हो जाता कि उसमें आग लग सकती थी। जॉन ज़ोर देकर कहता रहा कि उसने हीटर नहीं जलाया था... हममें से किसी एक ने जलाया था। ऐसा कई बार होने के बाद, मैंने गैस चालू करने वाला हैंडल निकाल दिया। थोड़ी देर बाद, जब मैं दुकान में थी, एंडी दौड़कर बाहर आई और मुझे अंदर बुलाया। हीटर के बर्नर वाले हिस्से में ढेर सारे पेपर टॉवल ठूंसे हुए थे और उनमें आग लगी हुई थी, कुछ तो ज़मीन पर गिरे हुए जल रहे थे। तब मैंने घर की सभी पायलट लाइटें बंद करने का फैसला किया। यह लेबर डे से पहले वाले वीकेंड की बात थी, और मुझे समझ नहीं आ रहा था कि छुट्टी के बाद मंगलवार को मैं काम पर कैसे जाऊंगी और जॉन को घर पर अकेला कैसे छोड़ूंगी, क्योंकि एंडी स्कूल में होगी। मैंने डॉक्टर से तब तक बात की जब तक मुझे यह पता नहीं चल गया कि मैं उसके साथ क्या

कर पाऊँगा, लेकिन मनोरोग वार्ड पहले से ही भरे हुए थे, और वह उसे मरीज के रूप में भर्ती नहीं करना चाहते थे। मैंने जॉन को यह बताने का फैसला किया कि अगर उसने दोबारा "उनमें से कोई भी हरकत" की तो मुझे उसे जेल में डालना पड़ेगा। सोमवार रात को उसने पिस्तौल लहराना शुरू कर दिया, इसलिए मैंने पुलिस स्टेशन को फोन किया और उन्हें अपनी परेशानी बताई। उन्होंने कहा कि वे उसे तब तक अपने पास रखेंगे जब तक मामला सुलझ नहीं जाता और मुझे उसे नीचे लाने के लिए कहा। वह बिना किसी विरोध के चली गई। जब मेरे वकील लौटे तो उन्होंने दो मनोचिकित्सकों से उसकी जांच कराने का समय तय किया, जिसके बाद मुझे लगा कि उसे भर्ती करने की आवश्यकता के बारे में कोई सवाल नहीं उठेगा, और वह उस सप्ताह घर पर ही रही। हालाँकि, श्रम दिवस के बाद वाले सोमवार को उसने टायलर से लगभग सौ मील दूर टेक्सास के डेंजरफील्ड में अपनी भाभी मैक को फोन किया और पूछा कि क्या वह तुरंत उससे मिलने आ सकती है। मैं काम पर थी और मुझे इस बारे में तब तक कुछ पता नहीं था जब तक मैक टायलर के पास नहीं पहुंची और उससे नहीं पूछा कि क्या जॉन का उसके साथ जाना ठीक रहेगा। मैंने आपत्ति जताई, लेकिन मेरे वकील ने मुझे सलाह दी कि मुझे उसे जाने देना चाहिए, क्योंकि उसे हिरासत की सुनवाई के लिए वापस लाया जा सकता है, इसलिए वे उसी दिन डेंजरफील्ड के लिए रवाना हो गए।

कुछ दिनों बाद जॉन के वकील ने उसका फिर से मनोचिकित्सक से परीक्षण करवाया, और अंत में उन्होंने कहा कि नौकरी करने से उसे कुछ हद तक फायदा हो सकता है, हालांकि भविष्य में उसे समय-समय पर मानसिक उपचार करवाना पड़ेगा। उसे स्वेच्छा से मानसिक अस्पताल में भर्ती कराना लगभग असंभव था, इसलिए हमने स्थिति को यथावत रहने देने का निर्णय लिया। जानकारी के लिए बता दें कि जॉन के वकील ने जोर देकर कहा कि मेरा परीक्षण भी उन्हीं डॉक्टरों द्वारा किया जाए जिन्होंने उसका परीक्षण किया था। मेरी रिपोर्ट अनुकूल थी।

जॉन के मैक के साथ रहने के लिए जाने के कुछ ही समय बाद, एंडी और मैं लाइट बंद करके बिस्तर पर लेटे हुए थे और अपने साथ घटी भयानक घटनाओं के बारे में बातें कर रहे थे। अचानक मुझे एक आवाज़ सुनाई दी जो मेरा नाम पुकार रही थी... एक तीखी, पतली आवाज़ जो मानो अंतरिक्ष से आ रही हो। आवाज़ ने कहा कि यह जॉन है, और हालाँकि यह आवाज़

बिल्कुल भी उसकी आवाज़ जैसी नहीं थी, मुझे पूरा यकीन है कि यह वही थी, क्योंकि उसने कई ऐसी बातें बताईं जो सिर्फ़ हम दोनों को ही पता थीं... उनमें से एक बात 1950 में मेरे पिता की मृत्यु के समय मेरी एक बहन के साथ हुई उसकी कुछ अप्रिय बातों के बारे में थी। उसने कहा कि हालाँकि मेरी दूसरी बहन ने उसका अपमान किया था, फिर भी वह अच्छी थी और उसने उसे माफ़ कर दिया था। एंडी ने इस बातचीत का एक भी हिस्सा नहीं सुना। ज़ाहिर है, जॉन, या वह आवाज़, हम दोनों में से किसी से भी बात कर सकती थी और दूसरे को सुनाई भी नहीं देता था। मुझे तो यह भी शक हुआ कि एंडी ही बात कर रहा था, और आवाज़ सुनते समय मैंने अपनी उंगलियाँ उसके होठों पर रख दीं। तब मुझे पता चल गया कि यह आवाज़ उसके होठों से नहीं आ सकती थी।

एक रात जब मैं बिस्तर पर लेटी थी और एंडी बाथरूम में था, तो मैंने उसकी आवाज़ सुनी, "अलविदा," बिस्तर पर आने से ठीक पहले, और उसने मुझे बताया कि वह अपनी माँ से बात कर रहा था। अगले कुछ हफ्तों में हमने अचानक कहीं से छह और आवाज़ें सुनीं, सभी उन लोगों की थीं जो कुछ समय पहले मर चुके थे। मैं उनमें से एक को छोड़कर बाकी सभी को उनके जीवित रहते जानती थी। उनमें से दो हमेशा मेरे प्रति मित्रवत थीं, और दोनों मेरी माँ की उम्र की थीं। एंडी भी इन दोनों महिलाओं और जॉर्ज स्विनी नाम के एक पुरुष को जानता था। बाद वाले व्यक्ति की हमारे यहाँ "आवाज़ के रूप में" आने के कुछ समय बाद एक दुर्घटना में मृत्यु हो गई। अन्य दो महिलाएं मेरी सहेलियों की माताएँ थीं और दोनों की मृत्यु हमारे टायलर जाने से कुछ समय पहले हो चुकी थी। एक श्रीमती स्नो थीं और दूसरी श्रीमती इलियट, और जॉन के जाने के बाद हमने अगली दो आवाज़ें इन्हीं की सुनीं, और ये हमारे पास लगभग उसी समय आईं जब हेनरी एंग्लिन का आना शुरू हुआ था। वह उन सभी में से एकमात्र ऐसा व्यक्ति था जिसने शुरू में हमें परेशान किया; दरअसल, मुझे पूरा यकीन है कि वही व्यक्ति हमारे साथ हुए कीड़ों के हमलों और अन्य भयानक घटनाओं के लिए जिम्मेदार है।

मेरी वर्कशॉप में एक वर्क बेंच वर्कशॉप और किचन को अलग करने वाली दीवार से सटी हुई थी, और दीवार के निचले हिस्से में एक छेद था जिसके ऊपर सेंट्रल हीटिंग सिस्टम से आने वाली हवा को निकालने के लिए एक ग्रिल लगी थी। किसी कारणवश वर्कशॉप की तरफ वाली ग्रिल हटा दी गई थी, और बेंच के नीचे फर्श के पास झुककर मैं किचन में होने वाली बहुत सी

बातें देख सकता था। मैं हर रात वर्कशॉप में काम करता था, और जब ये "भूत" पहली बार हमारे यहाँ आने लगे, तो वे मेरा नाम पुकारते थे, आवाजें किचन के छेद से आती हुई लगती थीं। मैं झुककर जवाब देता था। उस समय मैं उन सभी से लंबी-लंबी बातें करता था। मिसेज स्नो और मिसेज इलियट बहुत मिलनसार थीं और मुझे हर तरह की अच्छी सलाह देना चाहती थीं। हेनरी एंग्लिन बिल्कुल विपरीत था। वह बेहद मतलबी था और मुझसे हर तरह के काम करवाने की मांग करता था जो मैं नहीं कर सकता था। जब मैं मना करता, तो वह बहुत बुरा बर्ताव करता। एक बार उसने किचन कैबिनेट के ऊपर रखी कीटनाशक स्प्रे की एक कैन ली और उसे मेरी वर्कशॉप के छेद पर रख दिया। वह छेद से स्प्रे करने लगता था। उसने स्प्रे का पूरा डिब्बा इस्तेमाल कर लिया और उस छोटे से कमरे में मेरा दम घुटने लगा। कल्पना भी नहीं की जा सकती कि कीटनाशक स्प्रे का डिब्बा हवा में लटका हुआ देखना और उसका सीधे चेहरे पर छिड़काव होना कैसा अनुभव होता है! जब मैं अंदर गई तो मैंने देखा कि डिब्बे के किनारे से दीवार पर निशान बन गए थे, जहाँ उसने उसे दीवार पर पटका था।

सितंबर 1965 के मध्य के आसपास, रात में होने वाले कीड़ों के हमले कम होने लगे। हमें लगा कि अब हम कुछ रातें बिना किसी डर के चैन से सो पाएंगे। लेकिन, जब हम सोने जाते, तो बत्ती बंद करने के बाद भी हमें अपनी बांह या बालों में कुछ हिलता हुआ महसूस होता। हम उछलकर उठते और देखते कि हमारे शरीर पर या बिस्तर पर कहीं एक या कई घोंघे पड़े हैं। ये बेहद बदसूरत, चिपचिपे, कीड़े जैसे जीव होते हैं, जिनका सिर बड़ा होता है और पीछे की ओर नुकीला होता जाता है। इनके सिर के दोनों ओर मूंछें होती हैं, और हालांकि इनकी आंखें होती हैं, लेकिन एंडी के अनुसार, जो उस समय स्कूल में इनके बारे में पढ़ रहा था, इनकी देखने की क्षमता अच्छी नहीं होती। बड़े वाले घोंघे वियना सॉसेज जितने बड़े होते हैं, लगभग तीन इंच लंबे, और जहां भी रेंगते हैं, चांदी जैसी चमक छोड़ जाते हैं। जब ये जीव पहली बार दिखाई दिए, तो एंडी को लगा कि खेलते समय ये उसके जूतों से चिपक गए होंगे और इसी तरह घर में घुस आए होंगे। हालांकि, रात-दर-रात घोंघों की संख्या बढ़ती गई, और हमें कीड़ों से होने वाली वैसी ही यातना झेलनी पड़ी, बल्कि उससे भी कहीं ज़्यादा। कल्पना भी नहीं की जा सकती कि आधी रात को जागकर अपने चारों ओर चिपचिपे, बदसूरत कीड़ों का झुंड देखना कितना भयानक होता है! एंडी ने कहा कि नमक घोंघों को गला देगा। इसलिए हमने

बेस बोर्ड के चारों ओर, बिस्तर के पैरों के चारों ओर नमक छिड़क दिया, लेकिन फिर भी बत्ती बंद होते ही घोंघे आ जाते थे। कुछ रातों बाद हम फिर से कीड़ों से घिर गए... इस बार जून बग नहीं, बल्कि लकड़ी के जूं, जो काले चने के आकार के छोटे-छोटे कीड़े होते हैं। उनके बहुत सारे छोटे-छोटे पैर होते हैं, छूने पर वे गोल गेंद की तरह सिकुड़ जाते हैं, और इन्हें आमतौर पर पिल बग कहा जाता है। मुझे पता था कि वे उड़ नहीं सकते, फिर भी वे आ जाते थे, मानो बंदूक से निकली गोली की तरह, ठीक उसी समय जब हम बत्ती बंद करते थे! इनके साथ कुछ ऐसे कीड़े भी थे जिन्हें मैंने पहले कहीं नहीं देखा था, जैसे कि डूडल बग, लेकिन भूरे रंग का। मुझे पता था कि डूडल बग उड़ नहीं सकते, और इन कीड़ों के पंख मुझसे भी ज़्यादा नहीं थे। फिर भी वे हवा में उड़ते हुए आ गए, और जून बग की तरह ही, पहले एक-दो करके आने लगे, और जैसे ही बत्तियाँ बुझीं, दर्जनों एक साथ हम पर गिरने लगे। मुझे कुछ छोटे-छोटे पारदर्शी टुकड़े भी मिले जो टूटे हुए कांच के टुकड़ों जैसे लग रहे थे। मुझे आखिरकार पता चला कि ये टुकड़े ही पर्दों से टकराकर तेज़ आवाज़ कर रहे थे... उनमें से कुछ अजीब कीड़ों के साथ बिस्तर पर गिरे। फिर मैंने मटर के दाने जितना एक टुकड़ा धोया और चखा; वह शुद्ध सेंधा नमक था! मुझे ज़रा भी अंदाज़ा नहीं था कि यह कहाँ से आया, क्योंकि यहाँ इसकी कोई ज़रूरत नहीं थी। बिना पंखों के कीड़ों का उड़ना जितना हैरान करने वाला था, उतना ही हैरान करने वाला सेंधा नमक का बिना किसी सहारे के हवा में उड़ना भी था। घर में एंडी और मेरे अलावा कोई इंसान नहीं था।

जॉन के जाने के एक-दो दिन बाद, मैंने उसका कमरा अच्छी तरह से साफ़ किया, सारा फ़र्नीचर इधर-उधर किया, झाड़ू लगाई, वैक्यूम किया, धूल झाड़ी और बिस्तर बिछाया, जिस पर ज़मीन तक पहुँचने वाली चादर डाली। कीड़ों के दूसरे हमले के कुछ दिनों बाद, एंडी ने मुझे जॉन के कमरे में बुलाया। उसने चादर उठाई और बिस्तर के नीचे कई चीज़ें बिखरी पड़ी थीं, जिनमें दस पौंड का सेंधा नमक का बोरा भी था, जिसका ज़्यादातर हिस्सा बिस्तर के नीचे कालीन पर ढेर लगा हुआ था। उसमें एक पुराना हेयर नेट, कुछ जली हुई माचिसें, होटल के साबुन की एक खुली टिकिया और ढेर के ऊपर एक नोट था, जिस पर छह साल के बच्चे की लिखावट जैसी लिखावट थी, "बुरी आत्मा, दूर हो जाओ।"

अगले कुछ दिनों में हमने जॉन के कमरे में चीज़ें खंगालनी शुरू कीं और हमें हाथ से लिखे हुए बहुत सारे नोट्स मिले, जिनमें से ज़्यादातर किसी ऐसे बच्चे के लिखे हुए थे जो अभी लिखना सीख रहा हो, हालाँकि कुछ शब्द साफ़ तौर पर जॉन की लिखावट थे। उनमें ज़्यादातर लोगों के नाम, एक तारीख (शायद जन्मतिथि), और फिर भविष्य की कोई तारीख लिखी थी... कुछ 1977 के बाद की भी थीं। नोट्स में कई नाम थे। एक नाम ऐसे आदमी का था जिसे जॉन ज़रूर नहीं जानता होगा। वह हेनरी एंग्लिन थे, एक बेहद अनपढ़ बूढ़े आदमी जो ग्रैंड सेलाइन के पश्चिम में खेती करते थे, और 1918 में आस-पास के इलाके के सभी किसानों की तरह, हर शनिवार को अगले हफ्ते के लिए किराने का सामान और दूसरी चीज़ें खरीदने शहर आते थे। जब मैं लगभग चौदह साल का था, तब मैं एक डिपार्टमेंटल स्टोर में काम करता था जहाँ किराने का सामान भी मिलता था। मेरा काम किसानों के किराने के सामान के ढेर का हिसाब रखना था ताकि जब वे शाम को जाने के लिए तैयार हों, तो मैं उन्हें बता सकूँ कि उनका सामान कहाँ रखा है और उनकी गाड़ियों में सामान लादने में मदद कर सकूँ। हेनरी एंग्लिन उन लोगों में से थे जिनकी मैं नियमित रूप से सेवा करता था। वे मुझे तब बूढ़े लगते थे, और यह लगभग पचास साल पहले की बात है। मुझे पूरा यकीन है कि उनकी मृत्यु बहुत पहले हो चुकी होगी। मैं समझ नहीं पा रहा हूँ कि जॉन के मन में उनका नाम कैसे आया। जॉन के कमरे में कुछ टाइप किए हुए पन्ने भी थे जिनमें वही बातें लिखी थीं जो हमें मिले नोट्स में थीं। एक पन्ने पर "टिंक" बायफोर्ड का ज़िक्र था। उस पर एक तारीख थी जो शायद उनकी जन्मतिथि थी, फिर 1964 की एक तारीख थी। हम जुलाई 1964 में टायलर में रहने आए थे, और उसके कई महीनों बाद मैंने अखबार में पढ़ा कि "टिंक" बायफोर्ड की डलास से ग्रैंड सेलाइन लौटते समय एक कार दुर्घटना में मृत्यु हो गई थी। एक और नाम "बिल" रॉबर्टसन का था, जो हम दोनों का दोस्त था। उस पर एक पुरानी तारीख थी, फिर "अस्पताल में भर्ती 1965, मृत्यु 1967"। कई और नाम भी थे, कुछ अब मर चुके हैं, लेकिन ज़्यादातर अभी जीवित हैं, और हर पन्ने पर दो तारीखें लिखी थीं! एक दिन जब मैं काम से घर लौटा तो एंडी और मैंने लिविंग रूम में सोफे और मेज के बीच एक नया साबुन देखा जो चूर-चूर होकर दो-तीन फुट के दायरे में बिखरा हुआ था। एंडी को जॉन के कमरे में साबुन लगा हुआ एक आलू मैशर मिला, इसलिए हमने मान लिया कि उसी आलू मैशर का इस्तेमाल लिविंग रूम में किया गया होगा जहाँ साबुन

बिखरा था। हमने उसे तुरंत साफ नहीं किया। उस रात, जब हम सोने चले गए, तो चौथाई सिक्के के आकार के साबुन के कई टुकड़े गोलियों की तरह हमारे पर्दों से टकराए, जबकि लिविंग रूम का दरवाजा बंद था और लिविंग रूम और हमारे बेडरूम के बीच में स्टडी रूम और गलियारा था।

उस रात मुझे कुछ कपड़े धोने थे और अंधेरा होने के बाद मैंने उन्हें रस्सी पर टांगा। जब मैं कपड़े धो रही थी, एंडी दरवाजे पर आया और मुझे बताया कि पूरे घर में कीड़े-मकोड़े और घोंघे उड़ रहे हैं। मैंने उसे बताया कि मुझे कपड़े सुखाने वाली रस्सी के पास कुत्ते के घर से कुछ टकराने की आवाज़ सुनाई दी। उसने देखा और उसे एक छोटा सा चमड़े का बटुआ मिला, जो एक बटुआ के आकार का था और जिसे हमने पहले जॉन के कमरे में देखा था, उसमें तंबाकू भरा हुआ था। मैंने उसे घर के आखिरी छोर पर रखे कूड़ेदान में डालने को कहा। कूड़ेदान पर ढक्कन लगा हुआ था। जब मेरा काम खत्म हुआ, तो नहाने और सोने का समय हो गया था। जब मैं टब में थी और एंडी ड्राइंग रूम में, तो मुझे बाथरूम की खिड़की के ठीक बाहर बंदूक जैसी आवाज़ सुनाई दी। मैंने एंडी को बाहर जाकर देखने के लिए बुलाया; उसने भी वह आवाज़ सुनी थी। खिड़की के ठीक नीचे उसे वही चमड़े का बटुआ मिला जिसे उसने एक घंटे पहले कूड़ेदान में डाला था! मुझे लगता है कि वह बटुआ बाथरूम की खिड़की के पास घर से टकराया होगा, जिससे इतनी तेज़ आवाज़ हुई।

पिछले कुछ दिनों में हमें कई और नोट्स मिले थे, जो सभी एक ही विचित्र शैली में लिखे या मुद्रित थे, जैसे कोई छोटा बच्चा लिखता हो। मुझे उनका अर्थ बिल्कुल भी समझ नहीं आ रहा था, लेकिन कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं:

जॉनी बेयर्ड, जो बेली—1972, एमी बेयर्ड

रीड लेसर—1966 द एंड

1913 मर्डर टिंक बायफोर्ड—1964

बिल रॉबर्टसन—1967

कुत्ता—1965 में चला गया

मर 1972

एक छोटी सी नोटबुक में हमें ये चीजें मिलीं:

ऐली एल. लुईस (यह महिला उसी कंपनी में काम करती थी जिसमें हम करते थे, और शायद अभी भी करती है)।

लूथर एंडरसन (वह नमक की ढुलाई करने वाली एक ट्रक कंपनी के मालिक हैं)।

मृत्यु 1980

जेराल्डिन फेल (यह महिला जॉन की अच्छी दोस्त हुआ करती थी)।

मृत्यु 1977

लुईस बेयर्ड (यह मेरी बहन है, जो 2018 में 118 वर्ष की हो जाती)।

मरना 2018

एक दिन हमें एक पुराना लकड़ी का बक्सा मिला जिसमें जॉन ने उसके रद्द किए गए चेक रखे थे। उसने उसमें कुछ जलाया था, क्योंकि राख अभी भी बक्से में मौजूद थी। केवल एक विज्ञापन कार्ड का आधा हिस्सा बचा था जिस पर लिखा था, "जलती हुई आत्मा, जलती हुई।" कागज के एक छोटे से टुकड़े पर बस इतना लिखा था, "जॉननी बेयर्ड - मृत्यु 1991।"
और भी बहुत सारे थे। बड़े अक्षरों के विशिष्ट प्रयोग पर ध्यान दें। ये सभी नोट मुद्रित थे:

JoHN is
goIN to Die

Be NIce
FROnt
OF
OLD
FOOLish
MacK

There IS A
Hertz in Mt
PleaSant
SnEak
AWAY
From There
(I checked,
and there is
not a Hertz
in Mt. Pleas-
ant).

I pOisOned
little
FOOLS
white kittEn
ShALL i
poisOn The
Jap Cat
(Andy did
have a white
kitten which
had died for
some reason,
and at this
time still had
a Siamese
cat).

कैंटन बैंक के एक खाली चेक पर "भुगतानकर्ता" वाली लाइन में लिखा था: जॉनी बी. वॉकर $1,000,000; "के लिए" वाली लाइन में: बिल पागल है, और "हस्ताक्षर" वाली लाइन में; हा हा।

अक्टूबर और नवंबर के महीनों में भयानक घटनाएँ जारी रहीं, फिर लगा कि कुछ समय के लिए ये कम हो रही हैं। महीने के शुरू में एक दिन जब मैं काम से घर लौटी तो एंडी मुझे जॉन के कमरे में ले गई। बिस्तर के किनारे के नीचे, चादर के पीछे, अलग-अलग तरह के छोटे-छोटे फ्रेमों में कुछ तस्वीरें रखी थीं। उनमें एमी की, जॉन और एंडी की, मेरी, जॉन की सबसे अच्छी दोस्त थेल्मा लोरी की, जिनकी 1951 में मृत्यु हो गई थी, और कई अन्य तस्वीरें थीं। मुझे नहीं पता कि उनका क्या महत्व था, लेकिन मैंने उन्हें वहीं छोड़ दिया। मैंने मान लिया कि जॉन उस दिन घर आई थी। मरे और ज़िंदा कीड़े हर रात हम पर हमला करते रहे; यहाँ तक कि घोंघे भी हवा में उड़ने लगे, पर्दों और दीवारों से टकराते हुए, जहाँ भी गिरते, भयानक गंदगी फैला देते। मैंने जल्द से जल्द दोनों बेडरूम साफ़ करने और कालीन हटाने का फैसला किया। इसी दौरान एंडी को जॉन के कमरे में एक नोट मिला जिस पर लिखा था: "कीड़े 29 दिसंबर, गुरुवार को खत्म हो जाएंगे।" मुझे लगता है कि 23 तारीख को ही मैंने अपना कमरा साफ़ किया था, और उस रात कीड़े पहले से भी ज़्यादा थे, इसलिए हमने सोचा कि शायद 23 तारीख ही आखिरी रात होगी। अगली रात, हैरानी की बात है, काफी शांत रही।

24 तारीख को मैंने जॉन के कमरे से कालीन हटाया। ऐसा करते समय मुझ पर सैकड़ों कीड़े-मकोड़े, घोंघे और यहाँ तक कि फर्श से निकाली गई कुछ कीलें भी हवा में उड़कर पर्दों से टकरा गईं। आखिरकार मैं कमरे की पूरी तरह सफाई करने, दीवारों और लकड़ी के काम को रंगने, पर्दे लगाने में कामयाब रही और काम खत्म होने पर कमरा बहुत सुंदर लग रहा था।

26 नवंबर को मैंने घर की अच्छी तरह सफाई की, और उस रात कोई असामान्य गतिविधि नहीं हुई। 27 तारीख को हर जगह कीड़े-मकोड़े थे। अंधेरा होने से ठीक पहले मैं नहा रहा था, और नहाने के बाद जब मैं टब में खड़ा हुआ, तो मैंने देखा कि कोई चीज जाली से टकराई, लेकिन मैं समझ नहीं पाया कि वह क्या थी। मैंने ड्राइंग रूम से एंडी को बुलाया और उसे बाहर जाकर देखने को कहा कि वह क्या है। पता चला कि वह जॉन के रबर के दस्तानों में से एक था जिसे मैंने कूड़ेदान के पास फेंकने के लिए रखा था।

थैंक्सगिविंग के दिन मैंने हमारे सभी बाहरी ताले निकाले और एंडी को उन्हें अगले दिन सुबह शहर के एक ताला बनाने वाले के पास ले जाने को कहा ताकि उन्हें बदलवाया जा सके और नई चाबियाँ बनवाई जा सकें, क्योंकि मुझे पूरा यकीन था कि जॉन किसी तरह डेंजरफील्ड से आ रही थी और उसकी चाबियों का इस्तेमाल करके अंदर घुस रही थी। मैंने शनिवार को ताले लगा दिए। बुधवार, 1 दिसंबर, 1965 को, किसी ने (मुझे लगता है कि यह जॉन ही थी) हुक के पास पीछे के जालीदार दरवाजे में एक छेद किया और दरवाजे को हुक से अलग कर दिया। लेकिन अगर यह जॉन ही थी, तो उसकी चाबी उसमें फिट नहीं होनी चाहिए थी।

4 दिसंबर सबसे बुरा दिन था। शनिवार का दिन था और हम रात करीब 10:30 बजे सो गए। तभी बिस्तर पर उंगलियों की हल्की थपथपाहट जैसी आवाज़ सुनाई दी। हम चादर ओढ़े हुए थे, फिर भी महसूस कर सकते थे कि कोई चादर को खींच रहा है, मानो चादर को हमसे छीनने की कोशिश कर रहा हो! हम लाइट जलाते तो खींचना बंद हो जाता। उस रात कोई कीड़े-मकोड़े नहीं थे, लेकिन लाइट बंद होने पर एंडी और मुझे दोनों को अपनी बाहों पर कुछ महसूस हुआ, जो छोटे-छोटे उड़ने वाले कीड़ों की तरह ऊपर-नीचे उछल रहे थे, जैसे मच्छर उछलते हैं। हम उन्हें हटाने की कोशिश करते, लेकिन वहां कुछ भी नहीं होता। हम लाइट जलाते और कुछ भी दिखाई नहीं देता। हमने चारों तरफ कीटनाशक स्प्रे छिड़का, लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ। ऐसा लग रहा था जैसे कोई अंगूठे और तर्जनी से बांहों के बालों को हल्के से पकड़ रहा हो, पहले तो बहुत ज़ोर से नहीं खींच रहा हो, लेकिन बाद में इतनी ज़ोर से झटका दे रहा हो कि दर्द हो।

हम लाइट जलाकर बिस्तर पर लेटे हुए थे, तभी मेरे जूते, जिनका वज़न लगभग दो पाउंड (लगभग दो पाउंड) था, हमारे सिर के ऊपर से उड़कर बिस्तर के दूसरी तरफ जा गिरे। एंडी के घर के जूते ज़मीन से उठकर ब्लाइंड्स से जा टकराए। मेरे कपड़े, जो अलमारी में दरवाज़ा बंद करके टांगे हुए थे, बिना दरवाज़ा खोले ही कहीं से बाहर निकल आए और कमरे के दूसरी तरफ जा गिरे। आखिर में हमने लाइट बंद की और एक अजीब सी आवाज़ सुनी जिसे हम पहचान नहीं पाए। आवाज़ बिस्तर के नीचे से आ रही थी, और ऐसा लग रहा था जैसे कोई उंगलियों से तेज़ी से बेड रोलर्स घुमा रहा हो; लेकिन बिस्तर पर तो रोलर्स थे ही नहीं! अचानक कोई चीज़ ब्लाइंड से गोली की तरह टकराई। हमने लाइट जलाई तो देखा कि बिस्तर के नीचे

लगे गैस जेट का हैंडल खुल गया था, और बोल्ट और हैंडल दोनों ब्लाइंड से जा टकराए थे। फिर बिस्तर दीवार से दूर खिसकने लगा। हम उसे वापस दीवार पर लाते, पर वही चीज़ बार-बार होती। बस बहुत हो गया था, और क्योंकि रविवार की रात के 2 बज रहे थे, मैंने एंडी से कपड़े पहनने को कहा। हमने रात का बाकी समय बिताने के लिए एक मोटल में प्रवेश किया।

दरवाजा बंद करके ताला लगाने के बाद जब हम ड्राइववे से नीचे उतर रहे थे, तभी एक मुड़ा हुआ रुमाल मेरी गर्दन के पीछे जा लगा। जैसे ही हम कार में बैठे, बिस्तर के पास रखी मेज पर रखा एक और रुमाल कार के दरवाजे बंद करने के बाद मेरी पीठ पर जा लगा।

हम इतने थके हुए थे कि मोटल में बिस्तर पर पहुँचते-पहुँचते लगभग सो ही गए थे, और वहाँ रहते हुए हमारे साथ कुछ भी नहीं हुआ। अगली सुबह करीब 9:30 बजे हम घर लौटे। जॉन के कुछ कपड़े मेरी अलमारी में थे, और मेरे ज़्यादातर कपड़े उसकी अलमारी में थे। घर में तरह-तरह के अजीबोगरीब नोट इधर-उधर बिखरे पड़े थे। मैंने घर की सफाई की, और जैसे ही सफाई खत्म हुई, अचानक कहीं से एक बड़ा सिगार मेरी गर्दन पर आकर लगा। मैंने उसे रसोई के कूड़ेदान में डाल दिया। एंडी को सूप चाहिए था, इसलिए मैं कुछ ब्लॉक दूर कैबेल किराने की दुकान की ओर चल पड़ी। जैसे ही मैं घर से निकली, एंडी ने देखा कि सिगार कूड़ेदान से उछलकर ज़मीन पर गिर गया। उसने उसे वापस कूड़ेदान में डाल दिया। जब वह मुझे इसके बारे में बताने के लिए दरवाज़े पर आया, तब मैं ड्राइववे के नीचे खड़ी कार में बैठ रही थी, और जब मैं उसकी तरफ मुड़ी, तो मैंने देखा कि सिगार उसके सिर के ऊपर से उड़ता हुआ आया और कार के किनारे, घर से लगभग 60 फीट दूर जाकर गिरा। जब मैं वापस आया और गैराज से रसोई के दरवाजे से अंदर कदम रखा तो मैंने देखा कि मेरी एक साफ कमीज ड्राइंग रूम से उड़ती हुई आई और रसोई के पिछले दरवाजे के पास जा गिरी।

तब तक मैंने तय कर लिया था कि दरवाज़ों के ताले बदलने का कोई फ़ायदा नहीं है, हालाँकि जॉन ने सेंध नहीं लगाई थी, अगर वाकई यह जॉन ही था। ज़ाहिर है, जो भी था उसे न तो दरवाज़े की ज़रूरत थी और न ही सेंध लगाने की। एंडी और मैं रसोई में खड़े होकर हवा में उड़ती चीज़ों को देख रहे थे, तभी अचानक उसकी टोपी, जो फ्रिज पर रखी थी, मेरे सिर के पीछे जा लगी। कागज़ के तौलिये का एक रोल हवा में उड़ गया; अलमारी के ऊपर रखा सूप

का डिब्बा कई बार उछलकर ज़मीन पर गिरा, एंडी ने उसे उठाया और फिर वापस रख दिया।

अचानक हमें एक क्लिक की आवाज़ सुनाई दी। टोस्टर चालू किया गया था, और क्लिक का मतलब था कि वह अपने आप बंद हो गया था। उसमें साबुन का एक टुकड़ा पिघला हुआ था! पास ही एक नोट पर लिखा था, "टोस्टर साफ़ करो।" मुझे अपने कंधे पर किसी के हल्के स्पर्श का एहसास हुआ और एंडी को चिल्लाते हुए सुना, "सावधान!" उसने एक धुंधली आकृति देखी जो उसकी माँ के हाथ जैसी लग रही थी और मेरे सिर के पास गायब हो गई।

बाद में, जब मैं कमरे में था, तो मैंने ज़ोर-ज़ोर से सवाल पूछना शुरू किया, जैसे: "जॉन, बताओ हम कल रात कहाँ रुके थे?" कुछ ही सेकंड बाद हमारे सामने एक नोट तैरता हुआ आया, जिस पर लिखा था: "टी. बी. रोड पर मोटल। अंदर नहीं जा पाए।" "मुझे जाना होगा, तुमने मुझे बर्बाद कर दिया।" हमने पिछली रात उसी मोटल में बिताई थी जो उस टीबी अस्पताल के रास्ते में पड़ता है जहाँ मैं काम करता हूँ। फिर मैंने ज़ोर से कहा, एक बिल्कुल हास्यास्पद स्थिति में मज़ाकिया लगने की कोशिश करते हुए: "इतनी शक्ति होने के बावजूद, तुम हम पर 5,000 डॉलर क्यों नहीं बरसा देते?" लगभग तुरंत ही कहीं से एक चेक गिरा जिस पर सिर्फ 5,000 डॉलर लिखे थे। मैंने कहा, "जॉन, तुम अभी इसी वक्त हमारे सामने क्यों नहीं आ जाते?" लगभग पाँच सेकंड में एक नोट नीचे आया जिस पर लिखा था, "आज नहीं आ सकता, क्रिसमस की शुभकामनाएँ।" फिर मैंने पूछा, "क्या हम आज रात सो पाएंगे?" हमें यही जवाब मिला: "आज रात कुछ नहीं हो सकता, तुमने मेरी बिजली काट दी है। ह्यूस्टन को फोन करो।"

पहले उसने मुझे ह्यूस्टन पुलिस को फोन करके उस चुड़ैल के बारे में पूछने को कहा था जिसने गोंजालेस नाम के एक आदमी की हत्या का मामला सुलझाया था। मुझे खुद पर मूर्खता का एहसास हुआ, लेकिन मैंने ह्यूस्टन पुलिस विभाग को फोन किया। मैंने उनसे कहा कि वे मुझे नशे में, पागल या जो चाहें समझ सकते हैं, लेकिन मुझे बस हां या ना में जवाब चाहिए था, और पूछा कि क्या उनके पास कभी किसी चुड़ैल द्वारा ह्यूस्टन पुलिस को गोंजालेस नाम के एक आदमी की हत्या का मामला सुलझाने में मदद करने का कोई रिकॉर्ड है। जिस आदमी से

मैंने बात की, वह हैरान नहीं हुआ और उसने बस मुझे एक पल रुकने को कहा, और कुछ सेकंड बाद कहा कि उसे ऐसी किसी घटना का कोई रिकॉर्ड नहीं मिला है।

जॉन ने हमें उसकी शक्ति को तोड़ने के लिए निर्देश भी दिए थे। निर्देश थे, "एक अंडा तोड़ें, उसमें थोड़ा पानी और चुटकी भर नमक मिलाएं और फिर उसे पिछवाड़े में फेंक दें।"

मैं पहले कभी अंधविश्वासी नहीं थी, और यह बात मुझे बेहद बेवकूफी भरी लगी, लेकिन मुझे लगता है कि अगर इन अजीबोगरीब घटनाओं को रोकने का कोई मौका होता, तो मैं वह सब कुछ कर देती जो मुझे कहा जाता, इसलिए मैंने एंडी से कहा कि वह निर्देशों का पालन करे। उस रात कुछ कीड़े आए और एक नोट नीचे तैरता हुआ आया जिस पर लिखा था, "रात 10 बजे बिजली चली जाएगी, एक घंटा आगे-पीछे हो सकता है।"

कई दिनों तक हमें सैकड़ों चिट्ठियाँ मिलती रहीं, मानो कहीं से अचानक प्रकट हो रही हों, मानो हवा में से प्रकट हो रही हों, कुछ तो हमारी ओर आते-आते खुद ही मुड़ जाती थीं। मेरे सिर के पास हाथ गायब होते देखने के कुछ समय बाद, एंडी कमरे में बाहर की खिड़कियों की ओर मुंह करके बैठा था। कुछ क्षणों के लिए उसने खिड़कियों के सामने जॉन की आकृति देखी। खिड़की से बाहर देखते हुए उसकी पीठ एंडी की ओर थी, और एंडी ने एक धीमी सी "अलविदा" सुनी, ठीक उसी समय जब वह आकृति हवा में गायब हो गई।

जॉन से बात करने के बाद हमें और भी आवाज़ें सुनाई दीं। सभी की आवाज़ें बहुत तनावपूर्ण लग रही थीं, खासकर महिला वक्ताओं की। वे अक्सर कहती थीं कि उनके गले में कुछ अटक गया है और वे मुझसे बात जारी नहीं रख सकतीं, हालांकि वे एंडी से बात कर सकती थीं और एंडी उन्हें सुन सकता था। मेरे पास दर्जनों चिट्ठियाँ हैं जो ऊपर से हम तक पहुँचीं, और उनमें से ज़्यादातर उन्हीं दो लोगों की हैं जो हमारे साथ सबसे लंबे समय तक रहे। इनमें से एक श्रीमती इलियट थीं, जिनकी मृत्यु तीन-चार साल पहले हो चुकी थी जब यह सब शुरू हुआ। दूसरी चिट्ठी श्री ग्री की थी, जिनके बारे में मैंने पहले कभी नहीं सुना था, लेकिन वे एंडी और मेरी मदद करने के लिए उत्सुक लग रहे थे, खासकर एंडी की बिल्लियों और कुत्तों की देखभाल के बारे में सलाह देने के लिए। हमारे पास कई तरह के लोग आए, कुछ की मृत्यु हो चुकी थी, कुछ अभी जीवित थे, जिनमें से ज़्यादातर को हम जानते थे या जानते हैं, लेकिन कुछ जाने-माने सार्वजनिक व्यक्ति भी थे जिनके नाम अक्सर खबरों में रहते थे। मैंने उन चिट्ठियों पर तारीखें

लिखनी शुरू कर दीं, लेकिन कई बार इतनी सारी चिट्ठियाँ एक साथ आ जाती थीं कि मैंने उन्हें प्राप्त करने का सही क्रम दर्ज करने की कोशिश नहीं की।

हेनरी एंग्लिन ही वह व्यक्ति था जिसने शुरू से ही हमें परेशान किया और जिसकी वजह से हमें घर छोड़ना पड़ा। एक रात जब हम सो चुके थे, एंग्लिन हमारे कमरे में आया और उसने पूछा कि क्या वह अपने लिए एक अंडा पका सकता है। उस रात हमने उससे कोई बात नहीं सुनी, लेकिन अगली सुबह जब मैं नाश्ता बनाने के लिए रसोई में गई, तो धीमी आंच पर रखे चूल्हे पर टेफ्लॉन की परत चढ़ी कड़ाही में एक अंडा बुरी तरह जलकर कुरकुरा हो गया था!

एक रात एंग्लिन हमारे कमरे में आया और मुझसे ह्यूस्टन फोन करने की ज़िद करने लगा। यही वो समय था जब उसका व्यवहार बेहद खराब होने लगा था। मैंने उससे कहा कि मैंने ह्यूस्टन पुलिस को पहले ही एक बेवकूफी भरा फोन कर दिया है और मैं दोबारा ऐसा नहीं करना चाहती। उसने पलटकर कहा कि मैंने उनसे पर्याप्त पूछताछ नहीं की है और मुझे उन्हें फिर से फोन करना चाहिए। मैंने मना कर दिया और उसने हमें लगातार परेशान किया। आखिर में उसने कहा कि अगर हम टायलर शहर के चारों ओर लगभग बीस मील से थोड़ा अधिक दूरी का चक्कर लगा लें तो वह हमें अकेला छोड़ देगा। एंडी और मैंने अपने कपड़े पहने और ठीक वैसा ही किया। हमने पूरे शहर का चक्कर लगाया और जब हम घर पहुंचे तो बाकी रात बिना किसी परेशानी के सो पाए।

इसके कुछ रातों बाद, जब मैं अपनी दुकान में काम कर रहा था, श्रीमती इलियट और श्रीमती स्नो ने मुझे मौखिक रूप से बताया कि वे हेनरी एंग्लिन को "उसकी कब्र में वापस ले गई हैं" और श्री ग्री द्वारा तैयार किया गया एक खूंटा एंग्लिन के दिल में गाड़ दिया है। उन्होंने वादा किया कि वह हमें फिर कभी परेशान नहीं करेगा।

इसी समय हमें कुछ ऐसे लोगों के पत्र मिले जो कथित तौर पर जीवित थे, और कुछ ऐसे लोगों के भी थे जो पहले उल्लेखित लोगों के अलावा कई वर्षों से मृत थे। जीवित लोगों में श्रीमती डब्ल्यू. एच. जार्विस और ओडेल यंग शामिल थीं, जो उस समय ग्रैंड सेलाइन में रहती थीं। मुझे श्री डब्ल्यू. एच. क्रिन का भी एक पत्र मिला, जो कई वर्षों से मृत थे। वे ग्रैंड सेलाइन में रेलवे एजेंट हुआ करते थे। कई वर्षों तक मुझे उनसे अनेक शिपिंग कागजात पर हस्ताक्षर करवाने

का अवसर मिला था, इसलिए मैं उनकी लिखावट से परिचित हो गया था। उनसे प्राप्त पत्र भी उसी तरह से उल्टा लिखा गया था। मेरा मानना है कि यह पत्र उन्हीं ने लिखा था।

प्रिय हॉवर्ड और एंडी,

मैं आपको श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ। आपने बूढ़े एंग्लिन के अत्याचारों को सहा है। अब सब कुछ समाप्त हो गया है। शुक्रवार को मैं अपनी कब्र में जा रहा हूँ, जहाँ मैं अपनी प्रिय पत्नी से मिलूँगा। मैं मैरियन के घर भी जा रहा हूँ, उससे एक बार फिर मिलने। वह मेरा लाडला है। मुझे आप, जॉन और वह लड़का हमेशा से पसंद रहे हैं और आशा है कि एक दिन आप सब फिर से एक साथ होंगे।

हीराम क्विन

पी.एस. मुझे यह सुनकर बहुत अच्छा लगा कि जॉन, मैरियन के साथ नए दांत लगवाने गया था।

अपने बेटे के नकली दांतों के बारे में लिखे गए नोट में लगभग तीस साल पहले की बात है, जब जॉन और मैं मैरियन से मिलने गए थे, जब उसे पहली बार नकली दांत लगे थे। उस समय हम मैरियन और उनकी पत्नी के घर के ठीक सामने रहते थे और उनसे हमारी अच्छी दोस्ती थी।

हमें मैरिलिन मोनरो, डोरोथी किलगालेन और पूर्व गवर्नर जिम ऑलरेड के कथित पत्र भी मिले, जिनमें हेनरी एंग्लिन द्वारा हमारे साथ किए जा रहे व्यवहार और जॉन की हालत के बारे में सहानुभूति व्यक्त की गई थी। श्रीमती स्नो और श्रीमती इलियट ने पहले हमें बताया था कि एंग्लिन ने कई लोगों की मौत का कारण बना था, कुछ की मौत सड़क दुर्घटनाओं में हुई थी और कुछ की मौत गोलियों में बदलाव करके हुई थी, जैसा कि उन्होंने बताया कि उसने डोरोथी किलगालेन के मामले में किया था। हमें मिले पत्र में डोरोथी के नाम के साथ यह भी लिखा था कि यही उनकी मृत्यु का कारण था। मुझे पक्का यकीन नहीं है, लेकिन मुझे लगता है कि उन्होंने यह भी कहा था कि एंग्लिन ने ही मैरिलिन मोनरो की मौत का कारण बनाया था।

जॉन को छोड़कर, जो लोग अभी जीवित हैं, उनमें से किसी ने भी मुझसे बात नहीं की; वे बस हवा में अपने नोट गिरा देते थे। हालांकि, श्रीमती जार्विस ने एंडी से बात की और उनसे कहा

कि मैं उनके नोट में लिखे हर सवाल का ज़ोर से जवाब दूं। श्री क्विन का नोट रसोई और मेरी दुकान के बीच की अंगीठी में चिपका हुआ था।

जनवरी 1966 के पहले कुछ हफ्तों में, केवल श्रीमती इलियट और श्री जैक ग्री ही हमसे मिलने आते थे। मेरी और उनकी खूब बातचीत होती थी, लेकिन धीरे-धीरे उनकी बोलने की क्षमता इतनी कम हो गई कि वे मुझसे मुश्किल से ही बात कर पाती थीं, हालांकि एंडी उनकी आवाज़ सुन सकता था। ये नोट्स या तो एंडी द्वारा रसोई में रखे नोट पेपर पर लिखे जाते थे या जॉन के कमरे में रखे कैंटन, टेक्सास के बैंक डिपॉजिट स्लिप पर। अगर मैं वर्कशॉप में काम कर रहा होता, तो वे नोट्स को ग्रिल में चिपका देतीं और मेरा ध्यान खींचने के लिए दीवार पर जोर से मारतीं, फिर मैं वर्क बेंच के नीचे झुककर नोट निकाल लेता। श्री ग्री, जिन्होंने हमें बताया कि हमने उनके बारे में कभी नहीं सुना था, की आवाज़ बहुत धीमी, गहरी और कर्कश थी। हालांकि, उनका मुझसे ज्यादातर संवाद नोट्स के रूप में ही होता था, लेकिन वे और एंडी लगभग हर दिन लंबी बातचीत करते थे। वे अपने नोट्स रखने के लिए ग्रिल को "पोस्ट ऑफिस" की तरह इस्तेमाल करते थे, फिर मुझे बताने के लिए दीवार पर जोर से मारते थे कि नोट्स वहां हैं।

कई बार, जब मैं और एंडी कार में होते थे, तो श्रीमती इलियट या श्री ग्री हमारे साथ होते थे। वे थोड़ी देर साथ चलते और फिर अचानक कहते कि वे कनाडा, रूस, मिनेसोटा या किसी और दूर जगह जा रहे हैं, और कहते कि उन्हें इतनी दूरी तय करने में केवल दो या तीन मिनट लगते हैं, और फिर अगले दिन या रात तक उनसे कोई खबर नहीं मिलती थी। जनवरी 1966 की शुरुआत में एंडी मेरी दुकान पर आया और कहा कि श्री ग्री जानना चाहते हैं कि क्या उन्हें टेलीफोन इस्तेमाल करने की अनुमति है, और मैंने उन्हें हाँ कह दी। वैसे भी मुझे नहीं पता था कि उस स्थिति पर मेरा कितना नियंत्रण होता। पहली बार उन्होंने कहा कि यह कोई निजी बात है और एंडी से पूछा कि क्या उन्हें कमरे से बाहर जाने में कोई आपत्ति होगी। मुझे फोन डायल होने की आवाज सुनाई दी, और मैं फर्श के पास झुक गया ताकि जालीदार खिड़की से देख सकूँ, लेकिन ज़ाहिर है कि मुझे वहाँ कोई दिखाई नहीं दिया और न ही फोन ठीक से दिखाई दिया। उसके बाद उन्होंने कई बार फोन का इस्तेमाल किया, जब मैं काम कर रहा था और जब एंडी रसोई की मेज पर टेलीफोन के सामने पढ़ाई कर रहा था। यह देखना वाकई

डरावना था कि रिसीवर अपने आप सीधा खड़ा हो जाता था, और फिर थोड़ी देर बाद अपने आप वापस अपनी जगह पर आ जाता था, लेकिन हमेशा उल्टा ही। कुछ रातों को वह हमारे सोने के बाद कई बार फोन करता था, और हमें अपने बेडरूम में उसकी आवाज़ साफ़ सुनाई देती थी। अगली सुबह मुझे फोन का रिसीवर उल्टा ही मिलता था। एक रात जब एंडी नहा रहा था, मिस्टर ग्री ने किसी को फोन किया और मैंने उन्हें धीमी, गहरी आवाज़ में कहते सुना, "मैं अजीब हूँ...मैं असामान्य हूँ।" मैंने मन ही मन सोचा, "आप इसे फिर से कह सकते हैं।" उन्होंने इसे कई बार दोहराया और फिर मुझे केवल धीमी-धीमी आवाज़ें सुनाई देती रहीं, जिनमें से मैं कोई भी शब्द नहीं समझ पाई। एक शाम जब हम डाकघर से घर आते हुए कार में थे, मैंने एंडी से पूछा कि उसे क्या लगता है कि मिस्टर ग्री ने किसे फोन किया होगा। बिना एक पल भी हिचकिचाए, मिसेज़ इलियट, जिनके बारे में हमें पता नहीं था कि वह हमारे साथ हैं, बोल पड़ीं और कहा कि वह उन्हें फोन कर रहे थे। हमने उनसे यह नहीं पूछा कि जब उन्हें फोन आया तो वह कहाँ थीं!

श्री ग्री और श्रीमती इलियट दोनों ही एंडी की भलाई के बारे में चिंतित थे। जनवरी के पूरे महीने में लगभग हर दिन उनमें से किसी एक का पत्र जाली वाले दरवाजे पर चिपका होता था। ऐसा लगता था कि जॉन को घर लाने में मदद करना और एंडी की देखभाल करना श्रीमती इलियट का काम था। उन्होंने कहा कि अगर वह ऐसा कर पातीं तो शायद वह जल्दी ही इस दुनिया से विदा हो जातीं।

जॉन के घर से चले जाने के बाद मुझे एंडी के लिए बहुत दुख हुआ। घर पर ज़्यादातर समय अकेले रहने से वह बहुत अकेला महसूस करता था। उसने बिल्ली पालने की इच्छा जताई, और कुछ समय बाद कुत्ते की भी। श्रीमती इलियट के आग्रह और पूर्ण मार्गदर्शन पर मैंने इन पालतू जानवरों के लिए काफी पैसा खर्च किया। इसके बाद श्री ग्री ने इन कुत्तों और बिल्लियों की देखभाल की पूरी ज़िम्मेदारी ले ली।

29 जनवरी, 1966 को, जब मैं एक पत्र लिख रही थी, रसोई की दीवार पर ज़ोर से दस्तक हुई, जिससे पता चला कि हमारे "डाकघर" में एक नोट है। यह श्रीमती इलियट का था। "मुझे वह बीगल बहुत प्यारा है। कुत्तों के बीमार होने के लिए माफ़ी चाहती हूँ। मैं खुद को ज़िम्मेदार महसूस करती हूँ। एंडी चिंतित है। वह उन्हें बहुत प्यार करता है। अगर कुछ हो जाता है तो मैं

बस यही उम्मीद करती हूँ कि वह बीगल न हो। बीगल एक बेहतर साथी बनेगा। अगर आप एंडी से कहें तो वह एक बीगल को भी छोड़ देगा। ऐसा नहीं है कि वह ऐसा करना चाहता है। लेकिन वह समझ जाएगा। वह कुत्तों से प्यार करता है। वह समझता है। एल। इस नोट का जवाब दो। मैंने जो कुछ भी लिखा है, उसका जवाब दो।"

जिस दूसरे कुत्ते का उन्होंने ज़िक्र किया था, वह एक भूरे रंग का डैकशंड था, जो खरीदते समय बहुत स्वस्थ नहीं लग रहा था। उसका वज़न कभी नहीं बढ़ा और काले डैकशंड को किसी और को देने के बाद भूरे वाले की हालत और भी खराब होती चली गई। अगले कुछ दिनों और रातों में इस भूरे डैकशंड से जुड़ी कुछ अविश्वसनीय घटनाएँ घटीं। मैं अपनी दुकान में काम कर रहा होता और अचानक घर की छत पर हल्की सी आवाज़ सुनाई देती। कुत्ते के लिए ज़मीन से छत पर कूदना बिलकुल नामुमकिन था, और घर पर कूदने के लिए आस-पास कुछ भी ऐसा नहीं था जिस पर वह चढ़ सके। फिर भी वह छत की चोटी पर एक छोर से दूसरे छोर तक घूमता रहता! हम सीढ़ी लाते और आखिरकार उसे मनाकर छत के किनारे तक लाते जहाँ हम उसे पकड़कर ज़मीन पर रख देते। ऐसा बार-बार होता रहा। आखिरकार हमने उसे वहीं ऊपर छोड़ने और सोने का फैसला किया। अगली रात श्रीमती इलियट ने हमें बताया कि उन्हें कुत्ते के बारे में पता है। हमने उनसे पूछा कि यह कैसे संभव है और कहा कि हम देखना चाहेंगे कि कुत्ता वहाँ कैसे पहुँचा। उन्होंने कहा कि हम उसे देख नहीं सकते...बस ऐसा होता है कि "कभी वो नीचे होता है, कभी ऊपर।" उन्होंने कहा कि अगर हम उसे देख भी रहे होते, तो वो ज़मीन पर अपनी जगह से गायब हो जाता और उसी पल छत पर पहुँच जाता। उसी रात श्रीमती इलियट ने एंडी और मुझे फोन किया और कहा कि कुत्ता आत्महत्या करने की कोशिश कर रहा है और हमें पीछे के दरवाजे पर जाकर सीढ़ियों के दक्षिण की ओर फूलों की क्यारी में देखना चाहिए। हमने देखा तो ज़मीन ताज़ा खोदी हुई थी और ऐसा लग रहा था जैसे उसे ढीला-ढाला वापस अपनी जगह पर रख दिया गया हो। हमें मिट्टी हिलती हुई दिखाई दी, और मैंने एंडी को गैराज से फावड़ा लाने को कहा। श्रीमती इलियट ने कहा कि फावड़ा गैराज में नहीं है, बल्कि हमें बस कुछ सेकंड इंतज़ार करना होगा और वो हमें सामने के आँगन में पेड़ के नीचे मिल जाएगा, जहाँ वो "स्वर्ग" से वापस आने पर होता है। एंडी गया और फावड़ा ठीक उसी जगह पाया जहाँ उन्होंने बताया था और मुझे दे दिया। मैंने मिट्टी खिसकने वाली

जगह के पास गड्ढा खोदा और कुत्ते को पूंछ से पकड़कर बाहर निकाला। वह मुश्किल से सांस ले रहा था और बहुत दयनीय लग रहा था, लेकिन कुछ सेकंड बाद वह लड़खड़ाते हुए थोड़ा चलने लगा। श्रीमती इलियट ने हमसे कहा कि बेहतर होगा कि हम उसे उसी रात उसकी पीड़ा से मुक्ति दिला दें। मैंने उनसे कहा कि मेरे पास उसे मारने के लिए कुछ नहीं है, लेकिन अंत में उन्होंने मुझसे कहा कि मैं उसे हथौड़े, ईंट या किसी भी ऐसी चीज से मार डालूँ जिससे उसकी मौत हो जाए। यह एक घिनौना अनुभव था, लेकिन मैंने कुत्ते को ईंट से मार डाला, क्योंकि मुझे यकीन था कि वह दर्द में था और मर जाना ही उसके लिए बेहतर होगा। हमने कुत्ते को वहीं दफना दिया जहाँ उसने जाहिर तौर पर अपनी कब्र खुद खोदी थी! मैं यह नहीं कह सकता कि कुत्ते ने वास्तव में यह गड्ढा खोदा, उसमें रेंगकर गया और खुद को मिट्टी से ढक लिया, क्योंकि मुझे यह समझना मुश्किल लगता है कि वह अपने ऊपर मिट्टी कैसे खींच सकता था... मेरे पास केवल श्रीमती इलियट का ही कथन है। मैं बस वही बता रहा हूँ जो उन्होंने हमें बताया था, हालाँकि जब मैंने कुत्ते को बाहर निकाला तो वह गड्ढे में ढीली मिट्टी से ढका हुआ था और मुश्किल से सांस ले रहा था।

जब जॉन डेंजरफील्ड में था, तब मैंने एक छोटा सा प्लास्टिक का टॉयलेट बाउल क्लीनर खरीदा था, जिस पर डिस्पोजेबल पैड लगता है। पहली बार इस्तेमाल करने पर ही उसका हैंडल टूट गया। उसकी कीमत कुछ ही सेंट थी, और आम तौर पर मैं दूसरा खरीदकर उसे भूल जाता। लेकिन मैंने निर्माता को पत्र लिखने का फैसला किया, और कुछ समय बाद मुझे उनसे एक पत्र मिला, जिसमें उन्होंने बताया कि वे मुझे दूसरा हैंडल भेज रहे हैं। आखिरकार मुझे डाकघर में एक पैकेज होने की सूचना मिली। मुझे दोपहर के समय डाकघर जाकर उसे लेने के लिए अपने काम करने की जगह से लगभग दस मील की दूरी तय करनी पड़ती, और चूंकि यह कोई महत्वपूर्ण काम नहीं था, इसलिए मैंने शनिवार तक इंतजार करने का सोचा। लेकिन उस शाम, जब मैं काम शुरू करने के लिए अपनी दुकान पर गया, तो मेरी वर्क बेंच पर एक पैकेज पड़ा था। दुकान दिन भर बंद थी और जब मैंने काम शुरू किया तब भी बंद ही थी। मैंने एंडी से पूछा कि क्या उसे इसके बारे में कुछ पता है, और उसने मुझे यकीन दिलाया कि उसे डाकघर में पैकेज होने की जानकारी तक नहीं है। उसी क्षण श्रीमती इलियट ने बोलना

शुरू किया और स्वीकार किया कि उन्होंने इसे डाकघर से लिया था और मेरे लिए घर ले आई थीं!

जॉन के डेंजरफील्ड जाने के कुछ ही समय बाद एक और रहस्यमयी घटना घटी। रसोई के एक दराज में, जहाँ हम कुछ चांदी के बर्तन रखते थे, उसके ठीक पीछे, दराज के आर-पार, पाँच-छह इंच की जगह खाली थी। वहाँ मैं कुछ औजार, जैसे पेंच, प्लायर, कील ठोकने वाला हथौड़ा रखता था, ताकि ज़रूरत पड़ने पर वे आसानी से मिल सकें। कुछ समय से मैंने वहाँ नहीं देखा था, और जब मैंने आखिरकार देखा तो मुझे एक पिस्तौल मिली। वह .22 कैलिबर की थी और देखने में बिल्कुल असली लग रही थी, लेकिन जब मैंने उसे उठाया तो पता चला कि वह सिर्फ खाली पिस्तौल थी। मैंने एंडी से पूछा कि वह कहाँ से आई, लेकिन उसे इसके बारे में कुछ भी पता नहीं था। श्रीमती इलियट ने बताया कि वह इसे डेंजरफील्ड से लाई थीं। उन्होंने बताया कि जॉन ने इसे किसी पत्रिका के विज्ञापन से मंगवाया था और इसके लिए 12 डॉलर दिए थे। उन्होंने कहा कि इसे हमारे घर लाना उनके लिए बहुत मुश्किल था और इसमें उन्हें कई घंटे लग गए थे। उसने यह नहीं बताया कि उसने ऐसा क्यों किया, लेकिन इतना इशारा किया कि वह बस हमें इसके बारे में बताना चाहती थी। बाद में, जब हम उस घर से जा रहे थे, तो पिस्तौल गायब हो गई थी, और तब से मैंने उसे नहीं देखा है।

कई सालों से मेरे पास एक .25 कैलिबर की कोल्ट ऑटोमैटिक पिस्टल थी। मैं हमेशा उसे अच्छी हालत में रखता था, लेकिन जब हम टायलर में रहने आए, तब तक तीस साल से उससे गोली नहीं चलाई गई थी। जॉन की माँ के पास भी बिल्कुल मेरी पिस्टल जैसी ही पिस्टल थी, बस उसके हैंडल अलग थे, क्योंकि मैंने अपनी पिस्टल के लिए सफेद, नक्काशीदार हड्डी के हैंडल खरीदे थे। जब उनका निधन हुआ, तो हम उस पिस्टल को भी अपने घर ले आए, हालाँकि हमें उसे चलाने का कभी मौका नहीं मिला। टायलर में रहने के दौरान भी वे दोनों पिस्टल हमारे पास थीं। इतनी सारी रहस्यमयी घटनाओं के चलते, मैंने अपनी वर्कशॉप में एक पिस्टल रखने का फैसला किया, इसलिए मैं जॉन की माँ की पिस्टल ले आया और उसे अपनी वर्क बेंच के ऊपर रख दिया। वह कई हफ्तों तक वहीं पड़ी रही। एक रात वह गायब हो गई। मेरी वर्कशॉप हमेशा बंद रहती थी और चाबी सिर्फ मेरे पास थी। मैंने अपनी पिस्टल को अच्छी तरह साफ करने के बाद एक पॉलीथीन बैग में लपेटकर अपने कमरे में एक अलमारी के दो

दराजों के बीच बने एक छोटे से डिब्बे में रख दिया था। पिस्टल निकालने के लिए एक दराज को पूरी तरह खोलना पड़ता था, और तब भी उसे ढूंढने के लिए ध्यान से देखना पड़ता था। मैंने किसी को भी उस गुप्त स्थान के बारे में नहीं बताया था। जब मेरी दुकान से बंदूक अचानक गायब हो गई, तो मैंने संदूक में छिपाई हुई अपनी बंदूक निकालने का फैसला किया। लेकिन जब मैंने गुप्त स्थान पर देखा, तो मेरी पिस्तौल वहाँ नहीं थी, बल्कि उसकी जगह वही बंदूक थी जो दुकान में थी! मैंने उसे तब दुकान में नहीं ले गया, लेकिन कुछ समय बाद जब मैंने उसे ले जाने का फैसला किया, तो वह बंदूक भी गायब थी, और तब से हमने उनमें से किसी को भी नहीं देखा है।

इस पूरे समय के दौरान मैं कभी-कभी जॉन को पत्र लिखता था, जिसमें मैं कहता था कि काश वह घर वापस आ जाए ताकि हम उसे ठीक कर सकें और फिर से एक साथ खुश रह सकें। उसने मेरे किसी भी पत्र का जवाब नहीं दिया, हालाँकि जब एंडी उसे पहले पत्र लिखता था तो वह कभी-कभार उसे पत्र लिख देती थी। कुछ समय बाद मेरी उससे फोन पर बात हुई। मुझे याद नहीं कि मैंने उसे फोन किया था या उसने फोन किया था, लेकिन आखिरकार उसने कहा कि वह फरवरी 1967 में एक निश्चित तारीख को घर आ जाएगी और मैक उसे ले आएगा। जब वह टायलर पहुँची तो उसने मुझे काम पर फोन किया। हमारे घर वापस आने से पहले उसने कुछ दिनों के लिए एक निजी घर में कमरा लिया था। हालाँकि, एंडी और मैंने उसे उसी रात घर आने के लिए मना लिया, और 1967 के बाकी बचे समय में हमारे लिए चीजें कई वर्षों की तुलना में अधिक सामान्य लग रही थीं।

मार्च 1967 में मैंने अपनी दुकान शहर के बीचोंबीच एक इमारत में स्थानांतरित कर दी। घर में जिस छोटे से कमरे में मैं काम कर रहा था, वह बहुत तंग हो रहा था। जब मैंने नई जगह पर सब कुछ व्यवस्थित कर लिया, तो मैंने सोचा कि जॉन के लिए दिन के समय, या कम से कम दिन के कुछ हिस्से के लिए दुकान संभालना अच्छा रहेगा, जिस पर वह सहमत हो गई। बाकी साल भर सब कुछ बहुत अच्छा चलता रहा। क्रिसमस के समय हमारी बेटी एमी कुछ दिनों के लिए मिलने आई। हालांकि, इससे कुछ समय पहले ही जॉन ने फिर से पूरे घर में सिगरेट फेंकना शुरू कर दिया था, और हर जगह जले हुए निशान थे। जॉन ने, ज़ाहिर है, इस बात पर ज़ोर दिया कि उसने सिगरेट नहीं फेंकी थी।

सन् 1967 के अंत में श्रीमती इलियट फिर से आईं और हमें जॉन से निपटने के बारे में और सलाह देने लगीं। मुझे लगता है कि तब तक एंडी पूरी तरह से टूट चुका था। एंडी जिस स्कूल में पढ़ता था, उसके एक अधिकारी ने मुझे फोन किया और पूछा कि एंडी स्कूल क्यों नहीं जा रहा है। श्रीमती इलियट ने उससे कहा था कि वह अब स्कूल न जाए, वह पत्राचार पाठ्यक्रम लेकर हाई स्कूल डिप्लोमा प्राप्त कर सकता है। मैंने उसे स्कूल वापस जाने के लिए मनाने की कोशिश की।

मुझे श्रीमती इलियट से तरह-तरह के पत्र मिले, जिनमें उन्होंने बताया कि एंडी बहुत घबराया हुआ था और अगर मैंने उसे स्कूल वापस भेजने की कोशिश की तो वह उसे अपने साथ ले जाएंगी। एंडी ने भी मुझसे कहा कि वह स्कूल लौटने के बजाय उनके साथ जाना पसंद करेगा। आखिर में मैंने उनसे पूछा कि वह हमसे दूर क्यों नहीं चली जातीं और कभी वापस क्यों नहीं आतीं। उनका आखिरी पत्र मुझे इस प्रकार मिला:

हॉवर्ड,

आप शायद चाहते होंगे कि मैं वापस न आऊं, लेकिन मैं आ गई हूं। आप जॉन के साथ जो चाहें कर सकते हैं। मैं जूनियर से नहीं पूछूंगी कि क्या वह मेरे साथ आना चाहता है, हालांकि वह आत्महत्या कर सकता है। जॉन को दूर ले जाने से उसकी चिंता और बढ़ जाएगी। आपको कोई परवाह नहीं है। आपको सिर्फ अपनी परवाह है, और वो है आप। काश आप जूनियर को अकेला छोड़ देते। वह स्कूल की पढ़ाई पूरी करने और डिप्लोमा हासिल करने के लिए कोई कोर्स कर सकता है और आपको छोड़ सकता है। अगर आपने कोई गड़बड़ की, तो मैं उसे ले जाऊंगी, वरना वह आत्महत्या कर लेगा। मैं उसे कैलिफोर्निया जाने में मदद कर सकती थी, लेकिन यह अच्छा नहीं होगा, उसके लिए मर जाना ही बेहतर होगा, जो शायद वह मर ही जाएगा। 15 साल में दुनिया नहीं रहेगी, इसलिए उसे कोई परवाह नहीं है। वह बस थोड़ा आनंद लेना चाहता है। आप बहुत मूर्ख हैं। जॉन हिंसक हो जाएगा। यह मैंने अब तक की सबसे मूर्खतापूर्ण बात सुनी है। अब आप जॉन को दूर भेजकर और भी ज्यादा नुकसान पहुंचाएंगे। मैंने तो सिर्फ 1 सप्ताह मांगा था। तुम जॉन को नहीं चाहते, बस उससे छुटकारा पाना चाहते हो, इसलिए तुम झगड़ा करते हो और उसे गुस्सा दिलाते हो। जॉन की वजह से तुम्हारा इतना पैसा बर्बाद नहीं होता, तुम स्वार्थी मूर्ख हो। मैं जॉन को तुमसे प्यार करने के लिए

मजबूर नहीं कर सकती, लेकिन मैं उसे घर की सफाई करने के लिए मना सकती हूँ और अगर तुममें थोड़ी भी समझ होती (जो कि नहीं है), तो तुम उसे ट्रूमार्क में छोड़ देते। अब जब तुम उसे भेजकर जूनियर को परेशान करना शुरू करोगे, तो तुम्हें पहले से कहीं ज्यादा पछतावा होगा। मुझे नहीं पता, जूनियर संगीत में अच्छा है और बहुत अच्छा कर सकता है और तुम्हारी कमाई से तीन गुना कमा सकता है। शायद उसके चले जाने से ही उसका भला होगा। तुम बूढ़े स्वार्थी मूर्ख हो।

तुम चाहे जितना चिल्ला लो, कुछ भी कर लो, कोई फायदा नहीं होगा। जब पागलखाने वाले के पास जाओ, तो उसे मेरे बारे में बता देना, शायद वे तुम्हें कहीं और भेज दें।

मार्च के आखिरी हिस्से और फरवरी की शुरुआत में घर में सबसे भयानक घटनाएँ घटने लगीं। हेनरी एंग्लिन वापस आ गया। मैं उसे सुन नहीं पा रही थी, लेकिन एंडी ने बताया कि वह बहुत कम बोलता था और जो थोड़े-बहुत शब्द बोलता था, वे भी मुश्किल से समझ में आते थे। एंडी उसकी शैतानी हंसी सुन सकता था। उसने सबसे पहले मेरे सिर के पास गद्दे के नीचे एक अंडा रख दिया। उस समय तो हमें पता नहीं चला होगा, लेकिन उसने एंडी को मुझसे कुछ खास जगहों पर देखने को कहा। मेरे एक जूते में एक टूटा हुआ अंडा था, एक मेरे बाथरोब की जेब में, एक छत की लाइट के शेड में, एक कमरे के कोने में दीवार से नीचे गिरता हुआ टूटा हुआ अंडा, और एक दराजों वाली अलमारी के पास टूटा हुआ अंडा। यहाँ तक कि एक अंडा मेरे तकिए के कवर के अंदर भी था। एंडी ने बताया कि जब भी हमें कोई और अंडा मिलता, एंग्लिन पागलों जैसी हंसी हंसता था। हमने सारा सामान साफ कर दिया, और अंडे वाली घटना यहीं खत्म हो गई।

कुछ दिनों बाद जब मैं काम से घर लौटी, तो एंडी ने मुझे अपने कमरे में बुलाया और बिस्तर के बीचोंबीच हमारी अलमारी पड़ी थी। वह ज़्यादा भारी नहीं थी, इसलिए मैं उसे अकेले ही नीचे उतार सकी। अगले दिन दराजों वाली अलमारी बिस्तर पर पड़ी थी। यह बहुत भारी थी, और इसे वापस ज़मीन पर रखने के लिए एंडी और मुझे दोनों को मिलकर मेहनत करनी पड़ी। उसके अगले दिन जब मैं घर लौटी, तो एंडी वहाँ नहीं था। मैंने देखा कि जिस कमरे में हम दोनों रहते थे, उसका दरवाज़ा बंद था। वैसे तो यह कोई असामान्य बात नहीं थी, क्योंकि हम अक्सर दिन में उसे बंद ही रखते थे। लेकिन जब मैंने उसे खोलने की कोशिश की, तो वह मेरे

हाथों में ही कब्ज़ों से निकल गया। मैंने देखा कि कब्ज़ों से पिन निकाल दिए गए थे, इसलिए मैंने दरवाज़े को दीवार के सहारे टिका दिया। अगले दिन मैंने देखा कि अलमारी का दरवाज़ा अपनी जगह से उखड़ गया था, और उसका ज़्यादातर हिस्सा भी साथ ही उखड़ गया था। ये खोखले दरवाज़े थे और दोनों में मुट्ठी के आकार के छेद किए गए थे। अगली रात, लगभग नौ बजे, जब मैं दुकान पर काम कर रहा था, एंडी ने मुझे फोन किया और बताया कि फ्रिज हमारे कमरे में है। उसने और जॉन ने टीवी देखते समय एक आवाज़ सुनी और यह देखने के लिए उठे कि क्या हुआ है। बेडरूम तक पहुँचने के लिए फ्रिज को नाश्ते के कमरे, बैठक और एक गलियारे से होकर हमारे कमरे तक जाना पड़ा था। मुझे पता था कि हम उसे उस रात वापस नहीं रख सकते, इसलिए मैंने एंडी से कहा कि उसे वहीं छोड़ दें और हम अगले दिन तय करेंगे कि क्या करना है। हालाँकि, थोड़ी देर बाद उसने फोन किया और बताया कि रसोई में रखी वॉशिंग मशीन दीवार से उखड़ गई है और उसके पीछे लगे नल लीक कर रहे हैं और सारा पानी फर्श पर फैल रहा है।

मैंने उसे हाइड्रेंट बंद करने को कहा, जो उसने कर दिया। फिर मैंने पुलिस को फोन किया और उन्हें घर पर मिलने के लिए कहा। जब हम वहाँ पहुँचे तो बेडरूम के दोनों दरवाजों में छेद बढ़कर लगभग पंद्रह-बीस हो गए थे और उनमें से कुछ छेद दरवाजों के दोनों तरफ थे और इतने बड़े थे कि उनमें से सिर निकाला जा सकता था।

कुछ ही देर में घर पुलिसकर्मियों और जासूसों से भर गया। तभी मैंने उन्हें संक्षेप में बताने का फैसला किया कि हम किस दौर से गुज़रे थे। मुझे पूरा यकीन है कि उनमें से कुछ को लगा कि यह सब एक धोखा है, और उन्होंने सीधे-सीधे कह दिया कि उन्हें लगता है कि जॉन ने मुझे बेवकूफ बनाया है, जिसने एंडी की मदद ली थी। हालांकि, यह बात बिलकुल बेतुकी थी, क्योंकि लगभग सभी अजीबोगरीब घटनाएं तब हुईं जब एंडी और मैं साथ थे, और जॉन करीब सौ मील दूर मैक के साथ रह रहा था। एक मुख्य जासूस ने जॉन से काफी देर तक बात की, और बाद में मुझे बताया कि उसने समझदारी से बात की, लेकिन वह इस बात से हैरान था कि उसे हुई अजीबोगरीब घटनाओं की कोई परवाह नहीं थी। मैंने भी गौर किया था कि वह इस पूरे "नाटक" के प्रति पूरी तरह उदासीन थी।

फरवरी 1968 के मध्य में हालात इतने बिगड़ गए कि मैंने जॉन से दुकान की चाबी ले ली और उससे कहा कि मुझे तीन में से एक काम करना होगा। या तो मैं उसे सरकारी अस्पताल में भर्ती कराने की कोशिश करूँगी क्योंकि मेरे पास उसके मानसिक इलाज का खर्च उठाने की आर्थिक स्थिति नहीं थी, या वह खुद इलाज करा सकती थी और उसका खर्च उठा सकती थी, या फिर मैं तलाक ले लूँगी। मेरी उम्र में तलाक लेना मुझे बेतुका लगा, लेकिन मुझे लगा कि मैं इस तरह से और नहीं रह सकती। जैसे ही मुझे रहने के लिए कोई उपयुक्त जगह मिल जाएगी, एंडी मेरे साथ रहने आ जाएगा। जॉन को कोई खास फर्क नहीं पड़ा और शायद उसे विश्वास ही नहीं था कि मैं सच में ऐसा कुछ करूँगी। हालांकि, 24 फरवरी को मैं घर से निकल गई और अपने वकील से तलाक की कार्यवाही शुरू करवा दी, क्योंकि उसने फिर से कहा कि उसे नहीं लगता कि उसे भर्ती कराने की मेरी कोशिश में कोई सफलता मिलेगी। मुझे लगता है कि जब जॉन को तलाक के कागजात मिले, तब उसे पहली बार एहसास हुआ कि क्या हो रहा है। मैंने अपनी दुकान से कुछ ही ब्लॉक दूर एक अपार्टमेंट ले लिया। मैंने एंडी से कहा कि वह हर रात मुझे फोन करके घर का हालचाल बताए। मैं हर शनिवार को पास के एक शॉपिंग सेंटर में उससे मिलता था और उसे अगले हफ्ते के लिए खुद और जॉन के खाने-पीने का सामान खरीदने के लिए पर्याप्त पैसे देता था।

कई हफ्तों तक यही सिलसिला चलता रहा। एक रात एंडी ने मुझे फोन किया और बताया कि डाइनिंग टेबल अटारी में है। अटारी में जाने का एकमात्र रास्ता गैराज की छत में बना एक आयताकार छेद था, जो लगभग 16 इंच चौड़ा और 24 इंच लंबा था, जिससे टेबल का जाना नामुमकिन था। अगली रात टेबल वापस घर में आ गई। ऐसा कई बार हुआ। कुछ और चीजें भी अटारी में चली गईं, जैसे एक छोटी टेबल, एक फुटरेस्ट और एक और गुर्दे के आकार की छोटी टेबल। आखिरकार, डाइनिंग टेबल नीचे आई और एंडी को वह गैराज में मिली। काफी मशक्कत के बाद वह उसे घर के अंदर ले आया, जहाँ उसे होना चाहिए था।

आखिरकार, जॉन को यकीन होने लगा था कि जिन अजीबोगरीब बातों के बारे में हम चर्चा कर रहे थे, वे सचमुच हो रही थीं। पहले तो जब भी हम उनका ज़िक्र करते, वह हमारा मज़ाक उड़ाती थी। मेरे जाने के कई हफ़्तों बाद, एंडी अपने कमरे में गिटार बजा रहा था, तभी अचानक बत्ती चली गई। पहले तो उसे लगा कि कोई बल्ब फ्यूज हो गया है, लेकिन जब उसने

स्विच देखा तो पाया कि उसे बंद किया गया था। ऐसा कई बार हुआ। एक बार जब जॉन कमरे में घूम रही थी, तब बत्ती चली गई और उसने भी देखा कि स्विच बंद किया गया था; एंडी वहाँ आस-पास कहीं नहीं था, और कोई और ऐसा नहीं था जो ऐसा कर सकता था।

घर छोड़ने के दो महीने बाद की बात है। मैंने दुकान में काम खत्म ही किया था कि फोन की घंटी बजी। जॉन का फोन था और वह बहुत घबराई हुई लग रही थी। उसने कहा कि वह बहुत बीमार है और मुझसे घर आने की गुहार लगाई। मैं कुछ मिनट बाद वहाँ पहुँचा, और वह मुश्किल से बात कर पा रही थी। वह मुझसे घर आने की विनती करती रही, लेकिन मैंने उससे कहा कि मैं उस घर में एक रात भी नहीं बिता सकता। आखिरकार मैंने उसे शांत किया और गंभीरता से बात करने के लिए राजी किया। मैंने उससे कहा कि मैं वापस आऊँगा, लेकिन पहले हमें रहने के लिए कोई और जगह ढूंढनी होगी। मैंने उससे कहा कि वह फिर कभी सिगरेट न पिए। आखिरकार, 15 अप्रैल 1968 को, हम उस भयानक घर से निकल गए, और तब से मैं वहाँ नहीं गया हूँ।

तब से जॉन ने धूम्रपान नहीं किया है। घर छोड़े हुए अब तीन महीने से ज़्यादा हो गए हैं, और जॉन खाना पकाने को छोड़कर घर के सारे काम करता है। वह फिर से मेरी रबर स्टैम्प की दुकान पर काम कर रही है और उसे अच्छा लग रहा है।

* * *

अब पीछे मुड़कर देखने पर, जब मैंने इन शब्दों को पढ़ा, तो मुझे एहसास हुआ कि श्री बेयर्ड के लिए अपने अनुभवों को बताना कितना मुश्किल रहा होगा, खासकर किसी अजनबी को। जो बात उन्हें पूरी तरह असंभव लग रही थी, वह निश्चित रूप से उस व्यक्ति के लिए और भी अविश्वसनीय रही होगी जो उस समय मौजूद नहीं था, और उन्हें कई बार अपनी मानसिक स्थिति पर भी संदेह हुआ, जो कि स्वाभाविक था।

हावर्ड बेयर्ड से मिलने के बाद मुझे पूरा यकीन है कि वे पूरी तरह से स्वस्थ हैं, वास्तव में इतने स्वस्थ कि उन्हें मनोरोगी कहना भी असंभव है। अगर मैंने पहले ऐसे मिलते-जुलते मामले न सुने होते, तो शायद मैं भी इस पर संदेह करता। श्री बेयर्ड द्वारा बताई गई कोई भी घटना परा मनोविज्ञान संबंधी शोध के प्रकाश में असंभव नहीं है। हम यहाँ ऐसी शक्तियों की बात कर रहे

हैं जो सामान्य या रूढ़िवादी भौतिक नियमों के विपरीत प्रतीत होती हैं, लेकिन पदार्थ की प्रकृति और परमाणु की संरचना के बारे में जितना अधिक हम सीखते हैं, उतना ही यह संभावना बढ़ती जाती है कि भूत-प्रेत की गतिविधियाँ भौतिकी से इस तरह जुड़ी हुई हैं कि ठोस वस्तुओं का भौतिक रूप से गायब होना और फिर से प्रकट होना व्यावहारिक रूप से बिना समय गंवाए संभव हो जाता है। लेकिन यह मामला घटनाओं में शामिल तकनीकों का अध्ययन करने से कहीं अधिक उनके पीछे के कारणों और उन्हें उत्पन्न करने वालों का अध्ययन करने का था।

मैंने श्री बेयर्ड को बताया कि मैं इस मामले में शामिल होने के लिए उत्सुक हूँ, खासकर इसलिए कि मैं यह सुनिश्चित करना चाहता था कि भूत-प्रेत की गतिविधियाँ सचमुच पूरी तरह से बंद हो गई हैं और उनके नए घर में दोबारा कभी नहीं होंगी। इस तरह के मामलों में हमेशा यह संभावना रहती है कि ये घटनाएँ किसी स्थान के बजाय घर के किसी एक सदस्य से जुड़ी हों। दूसरे घर में जाने से गतिविधियाँ रुक गई लगती हैं, लेकिन पहले भी कई बार ऐसा हुआ था कि ये गतिविधियाँ रुकी थीं और फिर से पहले से भी ज़्यादा तीव्र हो गई थीं, इसलिए मैं यह सुनिश्चित करना चाहता था कि इस नए घर में ऐसा न हो। मैंने समझाया कि मुझे सभी संबंधित लोगों से बात करनी होगी, यहाँ तक कि उन पुलिस जासूसों से भी जो उस मनहूस रात को घर आए थे। श्री बेयर्ड ने मुझे आश्वासन दिया कि वे सभी आवश्यक व्यवस्थाएँ करेंगे, और अपनी पत्नी और बेटे से मेरी योजनाओं पर चर्चा करने के बाद, वे भी मुझसे बात करने के लिए सहमत हो गए। मैक, जो श्रीमती बेयर्ड की भाभी थीं और घर में घटी अधिकांश घटनाओं के दौरान उनकी मेज़बानी कर रही थीं, टायलर में मुझसे मिल नहीं सकीं, लेकिन मुझे यकीन दिलाया गया कि श्रीमती बेयर्ड उस पूरे समय के दौरान कभी भी उनकी देखरेख से बाहर नहीं निकलीं। कुछ समय के लिए हॉवर्ड बेयर्ड को लगा कि उनकी पत्नी उनकी जानकारी के बिना लौट आई हैं और उन्होंने घर में कुछ ऐसी हरकतें की हैं जिनसे वे चौंक गए थे। यह, ज़ाहिर है, एक गलत धारणा निकली। श्रीमती बेयर्ड कभी भी 75 मील दूर स्थित डेंजरफील्ड में अपनी भाभी के घर से बाहर नहीं निकलीं। उनका आध्यात्मिक स्वरूप घर आया था या नहीं, यह एक अलग मामला है और मेरी जांच और यथासंभव पुष्टि का विषय होगा।

श्री बेयर्ड अपने पुराने घर के वर्तमान मालिकों से बात करने के लिए वापस गए। बिना किसी स्पष्ट कारण के, उन पर कुछ संदेह होने के बावजूद, वे मुझसे मिलने के लिए तैयार थे, बशर्ते मैं टायलर आऊं। श्री एम. एक स्थानीय बेकरी में काम करते हैं और शाम 5:30 बजे घर लौटते हैं, और चूंकि उनकी पत्नी अपने पति की अनुपस्थिति में किसी अजनबी से मिलना नहीं चाहती थीं, इसलिए मेरी मुलाकात का समय एम. परिवार के लिए सुविधाजनक होना चाहिए था। शायद जब एम. परिवार ने श्री बेयर्ड से घर खरीदा था, तब उसकी थोड़ी जर्जर हालत ही मेरी मुलाकात पर चर्चा करने में उनकी अनिच्छा का कारण हो सकती है। खैर, यह तय हो गया कि मैं उनसे थोड़ी देर के लिए मिल सकता हूं और इस मामले पर उनसे बात कर सकता हूं। हॉवर्ड बेयर्ड की बेटी, जो अब श्रीमती हॉवर्ड विल्सन हैं, ऑस्टिन, टेक्सास में रहती हैं। उन्हें तंत्र-मंत्र और मानसिक विकास में रुचि रही है और उन्होंने सुझाव दिया था कि लैरेडो स्थित सिल्वा माइंड सेंटर से किसी को मामले की जांच के लिए टायलर आना चाहिए। यह सब मेरे मामले में आने से पहले की बात थी, और अब श्रीमती विल्सन खुद टायलर से मिलना चाहती थीं और मेरी जांच के दौरान मौजूद रहना चाहती थीं। दुर्भाग्य से बाद में पता चला कि पहले से तय कामों के कारण वह नहीं आ सकीं। हॉवर्ड बेयर्ड, जो कि एक कुशल जासूस हैं, ने पुलिस स्टेशन में डिटेक्टिव वीवर से भी बात की ताकि मैं उनसे मिल सकूं और घर की उनकी जांच के बारे में उनसे सवाल कर सकूं। मुझे पुलिस स्टेशन में स्वागत का आश्वासन मिला, इसलिए मैंने टायलर जाने और खुद उस मामले की जांच करने का समय तय कर लिया जो मानसिक घटनाओं के सबसे असामान्य मामलों में से एक प्रतीत होता था।

5 फरवरी, 1969 को मैं टायलर हवाई अड्डे पर पहुँचा। दोपहर के 5:42 बज रहे थे और हॉवर्ड बेयर्ड मेरा स्वागत करने के लिए वहाँ मौजूद थे। हमने पहले से ही सटीक योजना बना रखी थी, इसलिए वे मुझे तुरंत ब्लैकस्टोन होटल ले गए, मुझे जल्दी से चेक-इन करने दिया और फिर मेरे साथ पुलिस मामले में जासूस वीवर से मिलने गए।

जब हम कस्बे से गुज़र रहे थे, तो मुझे टायलर, टेक्सास के बारे में जानने का मौका मिला। साफ़-सुथरी दुकानें, शांत सड़कें, पेड़ों से घिरी कुछ गलियाँ, छोटे-छोटे घर, जिनमें से कई बहुत पुराने थे—खैर, अमेरिका के हिसाब से तो पुराने ही थे—और लोग चुपचाप अपने-अपने काम में लगे हुए थे - यही इस छोटे कस्बे की विशेषता थी। हम हॉवर्ड बेयर्ड की दुकान के पास

से गुज़रे, एक साफ़-सुथरी दुकान, जिसकी खिड़की पर ट्रूमार्क कंपनी का नाम साफ़-साफ़ लिखा हुआ था। कई छोटे कस्बों की तरह, यहाँ भी टेलीफ़ोन के तार ज़मीन के ऊपर थे, जो गली-गली बेतरतीब ढंग से फैले हुए थे। पुलिस स्टेशन एक आधुनिक कंक्रीट की इमारत निकली जो सड़क से थोड़ी दूर बनी हुई थी। जासूस वीवर मुझसे बात करने के लिए तुरंत तैयार हो गए। हॉवर्ड बेयर्ड शिष्टाचारवश कुछ देर के लिए हमसे दूर चले गए, कहीं जासूस कुछ ऐसा न कह दें जो उन्हें सुनना न पड़े। लेकिन हुआ ये कि उनके सामने ऐसी कोई बात नहीं थी जो वो न कह सकें। क्या जासूस की राय में ऐसा कुछ था जिससे लड़के या श्रीमती बेयर्ड की उस अजीब घटना में संलिप्तता का संकेत मिलता हो? जासूस ने कंधे उचका दिए। उसे इस संबंध में कुछ भी स्पष्ट नहीं मिला। फिर वह फाइलों की ओर गया और एक लिफाफा निकाला जिस पर लिखा था, "तस्वीरें और पत्र, संदर्भ: एलिजाबेथ में रहस्यमय कॉल, 19 फरवरी, 1968, रात 11:00 बजे, केस नंबर 67273. अधिकारी बी. रोसेनस्टीन और अधिकारी एम. गैरेट।" लिफाफे के अंदर दो तस्वीरें थीं, जो उस समय जॉर्ज बैन नामक एक पुलिस फोटोग्राफर द्वारा ली गई थीं। एक तस्वीर दरवाजे की थी, जिसमें स्पष्ट रूप से दिख रहा था कि कितनी बेरहमी से उसमें छेद किया गया था। छेद का पूरा किनारा चकनाचूर हो गया था, मानो दरवाजे में छेद करने के लिए बेहद ताकतवर तरीकों का इस्तेमाल किया गया हो।

दूसरी तस्वीर में गहरे रंग की लकड़ी की एक भारी दराजों वाली अलमारी बिस्तर पर रखी हुई दिखाई दे रही थी। हावर्ड बेयर्ड द्वारा दिया गया विवरण बिल्कुल सही था। एलिजाबेथ स्ट्रीट स्थित घर पर पहुँचने पर दोनों पुलिस अधिकारियों को वास्तव में क्या मिला? जासूस ने बताया कि घर अस्त-व्यस्त था और फर्नीचर ऐसी जगहों पर रखा था जहाँ उसे नहीं होना चाहिए था। कुल मिलाकर, उसने हावर्ड बेयर्ड द्वारा दिए गए घटनाक्रम के विवरण की पुष्टि की।

किसी तरह उन्होंने मुझे समझाया कि पुलिस इन घटनाओं के अलौकिक मूल को स्वीकार नहीं करती, भले ही उन्हें कोई बेहतर समाधान नहीं मिल पाया था। लगभग अनिच्छा से ही सही, अधिकारी ने सोचा कि शायद एंडी ही किसी तरह इन घटनाओं के लिए ज़िम्मेदार हो सकता है, हालाँकि उन्होंने सीधे शब्दों में ऐसा नहीं कहा। मैंने उनके साथ भूत-प्रेतों से संबंधित व्यावहारिक सिद्धांतों पर चर्चा करने का फैसला किया और पाया कि वे इसमें आश्चर्यजनक रूप से रुचि रखते थे। "क्या आप तस्वीरें लेना चाहेंगे?" जासूस ने पूछा और मुझे फ़ोल्डर थमा

दिया। उनकी उदारता से आश्चर्यचकित होकर, मैंने फ़ोल्डर ले लिया और वह आज भी मेरी फाइलों में है। मेरे जैसे शोधकर्ता को पुलिस विभाग की फाइलों से मूल फ़ोल्डर मिलना बहुत आम बात नहीं है। लेकिन फिर एलिजाबेथ स्ट्रीट का रहस्य अब सक्रिय मामला नहीं है—या है?

जासूस वीवर को उनकी शिष्टाचार के लिए धन्यवाद देने के बाद हमने घर जाने का फैसला किया। कुछ देर हिचकिचाने के बाद, अधिकारी ने सुझाव दिया कि वे भी साथ चलें, इससे हमारे लिए आसानी होगी। उनका सुझाव बिल्कुल सही था। जब हम एलिजाबेथ स्ट्रीट स्थित घर पहुंचे और सावधानी से प्रवेश द्वार की ओर बढ़े, पहले मैं पीछे ही रुका रहा, तो हमारा स्वागत कुछ खास सौहार्दपूर्ण नहीं था। श्री एम. को मेरे उद्देश्य का भली-भांति पता था, इसलिए हमने उन्हें इस सब से आश्चर्यचकित नहीं किया था।

हावर्ड बेयर्ड और डिटेक्टिव वीवर तथा श्री एम. के बीच दरवाजे पर कुछ देर हल्की-फुल्की बातचीत के बाद मुझे घर में प्रवेश करने और खुद देखने की अनुमति मिल गई। एम. परिवार मुझसे मिलने आया था, भले ही अभिवादन करने नहीं, और उन्होंने मुझे उत्सुकता भरी निगाहों से देखा। मैंने विनम्रतापूर्वक और संक्षेप में बताया कि मैं रिकॉर्ड के लिए कुछ तस्वीरें लेना चाहता हूँ और मुझे इसकी अनुमति मिल गई। मैंने घर के विभिन्न हिस्सों, विशेष रूप से रसोई और गैराज के जुड़ने वाले हिस्से तथा बैठक कक्ष की उच्च संवेदनशीलता वाली फिल्म से ब्लैक एंड व्हाइट तस्वीरें लीं। ये दोनों ही स्थान वे हैं जहाँ श्री बेयर्ड की गवाही में वर्णित कई घटनाएँ घटी थीं।

प्रयोगशाला की परिस्थितियों में इनका अध्ययन करने पर हमने पाया कि रसोई क्षेत्र में कुछ चमकदार प्रकाश संरचनाओं के अलावा कुछ भी असामान्य नहीं था, जबकि वहाँ कोई परावर्तक सतह न होने के कारण ऐसा नहीं होना चाहिए था। फिर मैं श्री एम. और उनके परिवार से संक्षिप्त बातचीत करने के लिए बैठक कक्ष में लौट आया।

क्या घर में आने के बाद से उन्होंने कुछ असामान्य देखा था? उन्होंने लगभग झट से जवाब दिया, "कुछ भी नहीं। सब कुछ ठीक था।" जब श्री एम. ने घर की शानदार स्थिति के बारे में बताया, तो उन्होंने अपनी पत्नी की ओर चिंता भरी नज़र से देखा, और मुझे स्पष्ट रूप से लगा कि वे जितना हो सके विनम्र और सतही बनने की कोशिश कर रहे थे और मुझे जल्द से जल्द

वहाँ से भगाना चाहते थे। क्या उन्हें भूत-प्रेत जैसी रहस्यमयी घटनाओं में कोई दिलचस्पी थी? मैंने अंत में पूछा। श्री एम. ने सिर हिलाया। उन्होंने कुछ सख्ती से समझाया कि उनका धर्म उन्हें ऐसी बातों पर विचार करने की अनुमति नहीं देता। तब मुझे समझ आ गया कि मेरे जाने का समय आ गया है।

मैंने इलाके के रियल एस्टेट कारोबारियों से पूछताछ की और घर के बारे में कुछ ऐसी बातें पता चलीं जो न तो श्री बियर्ड और न ही श्री एम. ने मुझे बताई थीं। घर तेरह साल पुराना था और इसे टेरी ग्राहम नाम के एक व्यक्ति ने बनवाया था। बियर्ड परिवार से पहले यहाँ दो किराएदार रह चुके थे। 1835 से पहले यह इलाका भारतीय क्षेत्र था और चेरोकी भारतीयों द्वारा गायों को चराने के लिए इस्तेमाल किया जाता था।

मुझे यह भी पता चला कि श्रीमती एम. ने घर में बिना किसी के चले कदमों की आहट, दरवाजों के अपने आप खुलने और किसी अदृश्य शक्ति द्वारा देखे जाने के अजीब से एहसास के बारे में अधिकारियों से शिकायत की थी। यह घटना एम. परिवार के घर में आने के कुछ ही समय बाद हुई थी। एम. परिवार के छोटे बच्चे भी हैं। यह संभव है कि जिन शक्तियों ने बेयर्ड परिवार को इस तरह की परेशानियाँ दीं, वे उनके माध्यम से भी प्रकट हुई हों। खैर, इस मामले पर आगे कोई कार्रवाई नहीं हुई। शायद उनकी धार्मिक परवरिश और मान्यताओं ने उन्हें ऐसे मामलों पर चर्चा करने की अनुमति नहीं दी और उन्होंने उन्हें नज़रअंदाज़ करना बेहतर समझा, या शायद ये गतिविधियाँ अपने आप ही समाप्त हो गईं। किसी भी स्थिति में, मुझे लगभग निश्चित रूप से लगता था कि बेयर्ड परिवार के घर छोड़ने के साथ ही भूत-प्रेत की गतिविधियाँ पूरी तरह से बंद नहीं हुईं। लेकिन क्या ये गतिविधियाँ उस नए घर में भी जारी रहीं जिसे बेयर्ड परिवार ने अपने लिए चुना था? यह कहीं अधिक महत्वपूर्ण प्रश्न था।

मैंने हॉवर्ड बेयर्ड से अनुरोध किया था कि नए घर में होने वाली गतिविधियों की रिपोर्ट मुझे भेजें। 23 फरवरी को उन्होंने मुझे पत्र लिखा। मैंने उनसे जॉन और एंडी की लिखावट के नमूने भेजने को कहा था ताकि मैं उनकी तुलना उन नोट्स से कर सकूँ जो उन्होंने मुझे आगे के अध्ययन के लिए दिए थे। इन घटनाओं की संतोषजनक व्याख्या के लिए, ज़ाहिर है, उनसे जुड़े सभी संभावित स्रोतों पर विचार करना आवश्यक था। इनमें से एक संभावना यह भी थी कि जानबूझकर या अनजाने में धोखाधड़ी की गई हो, यानी नोट्स जॉन या एंडी द्वारा लिखे गए हों

और उनमें किसी तरह की हेराफेरी की गई हो ताकि वे श्री बेयर्ड के सामने अचानक प्रकट होते हुए प्रतीत हों। इसके लिए मुझे दोनों की लिखावट के नमूने चाहिए थे ताकि मैं उनकी तुलना नोट्स पर लिखी कुछ लिखावटों से कर सकूँ।

नए घर में कई ऐसी आवाज़ें आती थीं जिन्हें प्राकृतिक कारणों से माना जा सकता था। लेकिन दो अलग-अलग घटनाएं ऐसी थीं जिन्हें हॉवर्ड बेयर्ड के अनुसार प्राकृतिक कारणों से नहीं समझाया जा सकता था। मेरे टायलर पहुंचने से कुछ समय पहले एक छोटी सी घटना घटी जिससे हॉवर्ड को यह सोचने पर मजबूर होना पड़ा कि क्या परलोक की शक्तियां अभी भी नए घर में उनके साथ हैं। एक शाम उन्होंने अगले दिन दोपहर के भोजन के लिए दो उबले अंडे छीले। उन्होंने उन्हें एक कागज़ के तौलिये पर रखकर फ्रिज में रख दिया। अगली सुबह उन्होंने देखा कि दोनों अंडे पूरी तरह जम गए थे, जबकि वे फ्रिज के निचले हिस्से में ही रखे थे। ऐसा तभी हो सकता था जब वे रात भर फ्रीजर में रखे रहे हों। अपनी पत्नी और बेटे से पूछने पर कि क्या उन्होंने अंडे फ्रीजर में रखे थे, उन्हें पता चला कि दोनों में से किसी ने भी ऐसा नहीं किया था। उन्होंने इस प्रक्रिया को दोहराकर इसकी जांच करने का फैसला किया। उन्होंने पाया कि जो दो अंडे उन्होंने उस रात फ्रिज में रखे थे, वे अगले दिन भी केवल ठंडे थे, जमे नहीं थे। वह यह समझने में असमर्थ है कि अंडों के पहले जोड़े को पत्थर जैसा कठोर किसने बना दिया था, लेकिन वह इस बात से संतुष्ट है कि यह घटना किसी मानसिक कारण से नहीं हुई होगी।

फिर एक घड़ी का मामला था जो अलार्म के तौर पर एक खास धुन बजाती थी। बिना किसी वजह के यह घड़ी कई बार बज उठी, जबकि उसके पास कोई भी नहीं था। हालांकि इसे काफी समय से चाबी नहीं दी गई थी और इसमें सिर्फ 24 घंटे चलने वाली घड़ी थी, फिर भी यह दराजों के अंदर से कई बार वही धुन बजाती रही। आखिरकार घड़ी को हटा दिया गया, और अब श्री बेयर्ड को नहीं लगता कि इसके पीछे कोई अलौकिक शक्ति हो सकती थी। लेकिन इन दो अलग-अलग घटनाओं ने बेयर्ड परिवार को थोड़ा डरा दिया था। उन्हें डर था कि पता बदलने से वे अतीत के प्रभावों से मुक्त नहीं हो पाए हैं। लेकिन जैसा कि बाद में पता चला, यह बदलाव सफल रहा और अलगाव पूरी तरह से हो गया।

मुझे दो तरह के सबूतों पर काम करना था। पहला, आसमान से गिरे रहस्यमय नोटों का विशाल संग्रह, जिन पर अलग-अलग तरह की लिखावटें थीं। शायद मैं जीवित लोगों की लिखावटों से उनकी तुलना करके कुछ निष्कर्ष निकाल सकूँ। दूसरा, मुख्य प्रतिभागियों, बेयर्ड परिवार से व्यक्तिगत रूप से और गहराई से बात करने का सवाल था, और अंत में, यह देखना था कि उन्हें जानने वाले अन्य लोग उनके बारे में क्या कहते हैं। हॉवर्ड बेयर्ड की बेटी एमी, जो अब श्रीमती हॉवर्ड सी. विल्सन हैं, का मानना था कि जिसे वह "भयानक तमाशा" कहती थीं, उसका असली शिकार उनका भाई एंडी था। "अगर आप एंडी को तब से जानते हैं जब वह छोटा था, जब तक माँ में बीमारी के गंभीर लक्षण दिखने शुरू नहीं हुए थे, तो आपके लिए उसे आज के एंडी के रूप में पहचानना असंभव होगा। वह एक छोटे लड़के के लिए स्वाभाविक रूप से शरारती हास्य से भरा हुआ था। वह लोगों को हंसाने के लिए कुछ भी कर सकता था और जब वह कोई शैतानी कर लेता था तो खुशी से चिल्लाता हुआ पूरे घर में दौड़ता था।" जब मैं टायलर आया तो मुझे जो एंडी मिला वह ऐसा नहीं था। जिस लड़के से मैंने बात की, वह शांत, अंतर्मुखी, बेहद शर्मीला था और उसमें मानसिक परेशानी के स्पष्ट लक्षण दिखाई दे रहे थे।

अगली सुबह मैं बियर्ड परिवार से उनके नए घर में मिलने गया। घर छोटा और सुंदर था, और एक शांत, पेड़ों से घिरी गली में स्थित था। पहले से तय योजना के अनुसार, श्री बियर्ड ने मुझे अपने परिवार के दो अन्य सदस्यों के साथ अकेला छोड़ दिया ताकि मैं उनसे पूरी गोपनीयता से बात कर सकूँ। एंडी, एक दुबला-पतला लड़का, जब हम बैठे तो पहले थोड़ा असहज लग रहा था। उसका विश्वास जीतने के लिए, मैंने उस समय के लोकप्रिय गीतों और रिकॉर्ड्स के बारे में बात की, क्योंकि मैंने उसके कमरे में कई रिकॉर्ड एल्बम देखे थे। किसी तरह इससे उसे कुछ राहत मिली; उसके बाद वह खुलकर बोलने लगा। अब सोलह साल का एंडी एक स्थानीय नाई कॉलेज में पढ़ रहा था। जब मैंने सोचा कि आज के ज़माने में एक युवक इस कुछ असामान्य पेशे को क्यों चुनेगा, तो उसने मुझे आश्वस्त किया कि इस काम में अच्छी कमाई होती है और उसे यह काम बहुत पसंद है। उसे लगता था कि वह इसमें अपना दिल और जान लगा सकता है। एंडी के भविष्य के बारे में कुछ चर्चा के बाद, मैंने बातचीत को मुख्य विषय पर मोड़ दिया।

“जब ये अजीबोगरीब घटनाएँ घटीं, तब आप और आपके पिता दूसरे घर में अकेले रहते थे। क्या आपने कभी किसी को देखा?” “हाँ, एक बार मुझे अपनी माँ का एक दृश्य दिखाई दिया था। वह उन्हीं की तरह दिखती थीं, लेकिन वहाँ कोई नहीं था... एक परछाईं या आकृति जैसी।” “क्या आपने वे नोट देखे हैं?” “हाँ।” “क्या आपने कभी किसी को उन्हें लिखते हुए देखा है?” “नहीं।” “क्या आपने कभी कोई आवाज़ें सुनी हैं?” “हाँ। मैंने उनसे बात की थी।” “उनकी आवाज़ें कैसी थीं?” “वहाँ मौजूद सभी महिलाओं की आवाज़ें एक जैसी थीं... बहुत ऊँची। पुरुष तो मरे हुए थे, आप जानते हैं... आत्माएँ, या आप उन्हें जो भी कहना चाहें। उनकी आवाज़ें बहुत गहरी थीं। उन्हें समझना मुश्किल था।” “क्या उन्होंने कमरे में आपसे बात की?” “अचानक से। मैं कहीं भी होती।” “आपने उन्हें कहीं नहीं देखा?” “कभी नहीं देखा।” “जब आपने आवाज़ें सुनीं, तब क्या आपके पिता आपके साथ थे या आप अकेली थीं?” “कभी-कभी वह मेरे साथ होते थे और कभी-कभी नहीं।” “ये आवाज़ें...क्या ये ज़्यादातर दिन में आती हैं या रात में?” “रात में...ज़्यादातर रात में, या दोपहर में, जब मैं स्कूल से घर आती थी।” “क्या ये आपके यहाँ आने के तुरंत बाद शुरू हुईं?” “नहीं...दो-तीन महीने बाद...” “क्या आपने कीड़े देखे?” “हाँ।” “वे कहाँ से आए?” “ऐसा लगा जैसे छत से।” “क्या वे किसी और तरीके से आ सकते थे?” “वे नहीं आ सकते थे...इतने ज़्यादा तो नहीं।” “आपने किसकी आवाज़ें सुनीं?” “सबसे पहले मेरी माँ की।” “जब वो डेंजरफील्ड में थीं?” “हाँ।” “आवाज़ कैसी थी?” “वही तेज़ आवाज़। थोड़ी-थोड़ी उनकी जैसी लग रही थी।” “उन्होंने क्या कहा?” “उन्होंने मेरे दादाजी के अंतिम संस्कार और किसी के उनके साथ बुरा बर्ताव करने के बारे में बात करना शुरू किया।”

स्पष्ट रूप से लड़का अपनी सर्वोत्तम स्थिति में नहीं था। चाहे मेरी उपस्थिति और पूछताछ के दबाव के कारण हो या फिर उसे सचमुच कुछ याद न हो, अपने पिता द्वारा बताई गई कई बातों के बारे में वह थोड़ा अनिश्चित था। लेकिन उसे पूरा यकीन था कि उसने अपनी माँ की आवाज़ तब सुनी थी जब वह डेंजरफील्ड में थीं। उसे यह भी पूरा यकीन था कि कोई भी कीड़ा सामान्य तरीके से घर में नहीं घुस सकता था और वे नोट किसी तरह अपनी मर्जी से छत से नीचे आ गए थे। मैं उसे डराना नहीं चाहता था और उसकी गवाही के लिए, भले ही वह संक्षिप्त थी, मैंने उसे धन्यवाद दिया। फिर मैंने जॉन, यानी श्रीमती बेयर्ड को, सामने वाले कमरे में मेरे साथ आने के लिए कहा ताकि हम शांति से बात कर सकें। श्रीमती बेयर्ड मेरे साथ काफी

सहज लग रही थीं और उनके उथल-पुथल भरे अतीत के विपरीत थीं, जिसके बारे में मुझे पता था। जाहिर है, अपनी भाभी के घर में रहने और पहले के मनोरोग उपचार से उन्हें कुछ लाभ हुआ था। उनका व्यवहार बिल्कुल भी असामान्य नहीं था; वास्तव में, यह देखने में सामान्य लग रहा था। उनकी एक पुरानी तस्वीर देखकर मुझे एहसास हुआ कि वे बहुत बूढ़ी हो गई थीं। बेशक, मुझे यह भी समझ आया कि उनके पति ने उनसे कई बातों पर चर्चा की होगी, जिससे उन्हें इन सब बातों की जानकारी मिली होगी। फिर भी, मुझे लगा कि इन बातों की गहराई से जांच करना ज़रूरी है, क्योंकि कई बार ऐसा लगता है कि कोई व्यक्ति कुछ छुपा रहा है, जबकि असल में वह सबूत दे रहा होता है।

“अब हम दूसरे घर के बारे में बात करेंगे,” मैंने प्रसन्नता से कहा। “क्या आपको दूसरे घर में घटी कुछ घटनाएँ याद हैं?” “खैर, जब वे घटनाएँ घटीं तब मैं वहाँ नहीं थी। उन्होंने मुझे उनके बारे में बताया...और सच कहूँ तो, आप मुझसे ज़्यादा मेरे बेटे से जान पाएँगे क्योंकि मुझे कुछ नहीं पता।” “आप इतने समय तक बाहर थीं?” “हाँ।” “आपके जाने से पहले, क्या कुछ असामान्य हुआ था?” “कुछ नहीं।” “आपके वापस आने के बाद, क्या कुछ हुआ था?” “खैर, मुझे नहीं पता...मुझे कुछ याद नहीं है।” “घर खरीदने से पहले, क्या आपको कभी अलौकिक अनुभूति से जुड़ा कोई असामान्य अनुभव हुआ था?” “कभी नहीं। मुझे इसके बारे में कुछ भी नहीं पता।” “आप कुछ समय के लिए कहीं और रह रही थीं।” “मैं अपनी भाभी के साथ थी।” “आप अपने जीवन के उस दौर का वर्णन कैसे करेंगी? क्या वह दुखी करने वाला था? उलझन भरा? आप उस दौर को क्या कहेंगी?” “मैं कभी दुखी नहीं हुई। मैं कभी उलझन में नहीं पड़ी।” “आप क्यों गईं थीं?” “मुझे निजी कारणों से जाना ज़रूरी लगा।” “उस दौरान क्या आपका अपने पति और बेटे से संपर्क था? क्या आपने उन्हें फोन किया या समय-समय पर उनसे मिलने आती रहीं?” “मैं उनसे मिलने तो नहीं आई, लेकिन मुझे उनके कुछ पत्र मिले और मुझे लगता है कि मैंने उनसे कुछ बातचीत की थी....” “क्या आपके पति ने कभी आपको आपकी अनुपस्थिति में हुई कुछ घटनाओं के बारे में बताया?” “हाँ। उन्होंने मुझे बताया।” “आपको इसका क्या मतलब लगा?” “मुझे समझ नहीं आया। अगर मैंने इसे देखा होता, तो मैं किसी न किसी तरह इसकी तह तक पहुँच जाती।” “इनमें से कुछ पत्रों में जिन लोगों का ज़िक्र है, क्या आप उन्हें जानती हैं? क्या उनमें से किसी के साथ आपकी कोई व्यक्तिगत समस्या या द्वेष

था?" "बिल्कुल नहीं। वे मेरे दोस्त थे।" "अब, आप इस महिला, श्रीमती इलियट को जानती हैं, जिन्होंने जाहिर तौर पर कुछ पत्र भेजे हैं।" "हाँ, बिल्कुल। वह मेरी बहुत अच्छी दोस्त थीं। बेशक, वह मुझसे उम्र में बड़ी हैं। उनकी एक बेटी थी जो मेरी ही उम्र की थी और हम बहुत अच्छे दोस्त थे।" "क्या आपको कोई परेशानी हुई?" "मुझे कोई परेशानी नहीं है," उन्होंने जवाब दिया और उनकी आँखों में आँसू भर आए। "नहीं? जब आप यहाँ से गए थे तब आपको कुछ परेशानियाँ थीं।" "कोई खास दिक्कतें नहीं थीं। कई कारणों से मुझे बदलाव की ज़रूरत थी। मेरा इरादा इतने लंबे समय तक रुकने का नहीं था। वह अकेली रहती थी और दिन में काम करती थी। और हमारा एक बहुत ही सुखद रिश्ता बन गया था, जिसमें उसके जाने के बाद मैं घर के कुछ काम संभाल लेता था..." "आप इतने लंबे समय तक क्यों रुके रहे?" "मैं सच में आपको बता नहीं सकता कि क्या बात थी।" "क्या हुआ था, इस पहेली का जवाब आपको अभी तक नहीं मिला?" "बिल्कुल नहीं। मुझे कुछ पता नहीं।" "क्या आपको याद है कि आपका कोई इलाज हुआ था?" "मैं बस बूढ़ा हो रहा हूँ। यही दिक्कत है।"

यह स्पष्ट था कि उनके दिमाग ने उनके जीवन की सभी अप्रिय घटनाओं की यादों को मिटा दिया था। जैसा कि अक्सर मनोरोग उपचार से गुज़रे लोगों के साथ होता है, उपचार के बाद एक खालीपन रह जाता है, भले ही इलेक्ट्रिक शॉक थेरेपी का उपयोग न किया गया हो। यह आंशिक रूप से, निश्चित रूप से, उपचार के कारण होता है, लेकिन कभी-कभी रोगी जानबूझकर अप्रिय घटनाओं पर चर्चा से बचने के लिए ऐसा करता है। श्रीमती बेयर्ड अपने पति और बेटे के पास लौट आई थीं ताकि जीवन को फिर से शुरू कर सकें और इसे बेहतर बनाने की कोशिश कर सकें। उनके दृष्टिकोण से अतीत में वापस जाना व्यर्थ होता। यह मुझसे इन बातों पर चर्चा करने से इनकार करने का मामला नहीं था। उन्हें वे बातें पूरी तरह से याद नहीं थीं और कितनी भी पूछताछ करने से कोई फायदा नहीं होता, सिवाय शायद गहन सम्मोहन के, और मैं एक पूर्व मानसिक रोगी के साथ ऐसा करने को तैयार नहीं था। स्पष्ट रूप से, मैं मुख्य गवाह से कोई अतिरिक्त जानकारी प्राप्त नहीं कर सकता था। मैंने सबूतों की फिर से जांच करने और उस एकमात्र व्यक्ति से फिर से बात करने का फैसला किया जो अंततः पूरे मामले में सबसे विश्वसनीय गवाह प्रतीत होता था, स्वयं श्री बेयर्ड।

विशेष रूप से, मैं कुछ घटनाओं के बारे में उनके व्यक्तिगत अवलोकनों की पुनः जांच करना चाहता था, क्योंकि अकेले, चुपचाप, अपने अनुभवों की यादों से भरी रिपोर्ट बनाना एक बात है और किसी जानकार, अनुभवी जांचकर्ता द्वारा पूछताछ किए जाने के दौरान घटनाओं की रिपोर्ट करना दूसरी बात। संभवतः इस तरह कुछ नए पहलू सामने आ सकते हैं। कम से कम इससे बियर्ड परिवार में घटी कुछ अविश्वसनीय घटनाओं को पुख्ता समर्थन मिलेगा।

6 फरवरी, 1969 की सुबह, मैं अपने होटल में हॉवर्ड बेयर्ड से मिला और हम चुपचाप बैठकर पिछले तीन वर्षों की अविश्वसनीय घटनाओं पर चर्चा करने लगे। किसी निष्कर्ष पर पहुँचने के लिए, जो मैं बहुत चाहता था, मुझे यह सुनिश्चित करना था कि श्री बेयर्ड की अवलोकन क्षमता पूरी तरह से विश्वसनीय थी। उनके कुछ कथनों पर दोबारा विचार करते हुए, मेरा उद्देश्य उन्हें दोहराना नहीं था, बल्कि मेरे प्रश्नों पर उनकी प्रतिक्रिया का अवलोकन करना और अपने मन में यह बेहतर ढंग से निर्धारित करना था कि उन्होंने सही अवलोकन किया था या नहीं। अब पीछे मुड़कर देखने पर मैं केवल इतना ही कह सकता हूँ कि हॉवर्ड बेयर्ड बिल्कुल भी विचलित नहीं हुए और उन्होंने संक्षेप में वही दोहराया जो उन्होंने मुझे पहले बताया था। मुझे लगता है कि वे शुरू से ही सच बोल रहे थे, न तो उसे बढ़ा-चढ़ाकर बता रहे थे और न ही कम करके। हमारी बातचीत एक शांत भावनात्मक माहौल में शुरू हुई, जो उस समय की तुलना में कहीं अधिक संभव था जब उन्होंने पहली बार मुझे अपनी रिपोर्ट दी थी, क्योंकि वे अभी भी हाल की घटनाओं के प्रभाव में थे। घर में शांति थी और ऐसा लग रहा था कि आगे भी शांति बनी रहेगी, इसलिए वह अपने विचारों को अधिक स्पष्ट रूप से एकत्रित कर सका और बिना भावनात्मक जुड़ाव के अतीत के बारे में बात कर सका, जिससे मेरे लिए उसकी सत्यता का आकलन करना कुछ अधिक कठिन हो जाता।

“अब बेहतर होगा कि हम शुरुआत से शुरू करें। मैं उन सभी बातों पर चर्चा करना चाहता हूँ जो आपने स्वयं देखीं। जब पहली घटना घटी, तब आपकी पत्नी घर में ही थीं?” “हाँ।” “क्या वे सचमुच के कीड़े थे?” “हाँ।” “जब आपने लाइट जलाई?” “फर्श पर हज़ारों कीड़े दिखाई दिए।” “आपने उन्हें कैसे भगाया?” “हमारे पास वैक्यूम क्लीनर था।” “क्या वे खिड़कियों की तरफ से आए थे या दरवाज़े की तरफ से?” “दरवाज़े की तरफ से।” “कीड़ों के बाद, आपने व्यक्तिगत रूप से अगली कौन सी चीज़ देखी?” “मैंने अपनी पत्नी की आवाज़ सुनी। मेरे बेटे और मेरे सोने

के बाद, हम वहाँ लेटे हुए उन घटनाओं के बारे में बात कर रहे थे जो घटी थीं। यह तब की बात है जब वह टायलर को छोड़कर चली गई थीं।" "क्या आवाज़ उनकी जैसी लग रही थी?" "नहीं। मुझे तो उनकी आवाज़ उनकी जैसी नहीं लगी, लेकिन वह उनकी ही आवाज़ थी...." "अच्छा, आपको कैसे पता चला कि वह उनकी ही आवाज़ थी?" "उन्होंने मुझे बताया कि वह मेरी बहन के द्वारा किए गए अपमान के बारे में बात कर रही थीं। मेरी पत्नी और मेरे अलावा किसी को यह बात नहीं पता थी।" "आवाज़ कहाँ से आती हुई लग रही थी? क्या वह कमरे में ही थी?" "हाँ।" "उसके बाद क्या हुआ?" "उसके कुछ रातों बाद, वह एंडी को दिखाई दी। मैंने उसे बाथरूम में बात करते सुना। उसने दो-तीन मिनट बात की, और फिर मैंने उसे कहते सुना, "ठीक है, अलविदा।" "क्या आपको अजीब नहीं लगा? उसकी माँ वहाँ नहीं थी और वह उससे बात कर रहा था?" "खैर, मेरा उससे पहले ही सामना हो चुका था।" "क्या आपने डेंजरफील्ड में अपनी पत्नी को फोन किया?" "नहीं।" "क्यों नहीं?" "खैर, वह मेरी बात पर विश्वास नहीं करती। मैंने उसकी भाभी को पत्र लिखने और उसे यह बताने के बारे में सोचा था कि आपको मेरी पत्नी को डेंजरफील्ड में ही रखना होगा। मैं उसे यहाँ नहीं चाहता। फिर भी, मैंने सोचा, ऐसा करना मूर्खतापूर्ण होगा, क्योंकि वह बस यही कहेगी कि वह यहाँ नहीं थी। वह स्वयं मौजूद नहीं थी। उसका शरीर यहाँ नहीं था।" "उस आवाज़ के बाद, आगे क्या हुआ?" "खैर, उसके कुछ ही समय बाद हमें ये दूसरी आवाज़ें सुनाई देने लगीं।" "क्या आपने वे आवाज़ें सुनीं?" "हाँ, सभी। चारों।" "क्या उनकी आवाज़ें एक जैसी थीं या अलग-अलग?" "पुरुषों की आवाज़ें गहरी और कर्कश थीं, लेकिन मैं उन्हें पहचान सकती थी। और महिलाओं की आवाज़ें बहुत धीमी थीं और मैं उन्हें पहचान नहीं पाती थी, सिवाय तब जब वे मुझे बताती थीं।" "क्या आपने कभी एक ही समय में दो आवाज़ें सुनी हैं?" "मुझे नहीं लगता। हालांकि, श्रीमती स्नो और श्रीमती इलियट एक ही समय में वहाँ थीं। मतलब, उन्होंने कहा था कि वे थीं। उस समय हेनरी एंग्लिन हमें बहुत परेशान कर रहा था और उन्हें उसे वापस उसकी कब्र में ले जाना पड़ा था।" "चलिए, उन चीज़ों के बारे में बात करते हैं जिन्हें आपने सचमुच हिलते हुए देखा है।" "मैंने ये मुड़े हुए नोट देखे। कभी-कभी एक दिन में दस या पंद्रह नोट तक।" "एक बंद कमरे से?" "ठीक है, कमरों के बीच दरवाजे बंद नहीं थे, लेकिन मैं मेज पर बैठकर कुछ खा रही होती थी, और अचानक मुझे एक नोट गिरता हुआ दिखाई देता था। मैं छत की तरफ

देखती थी और वहाँ एक नोट पड़ा होता था।" "इनमें से ज़्यादातर नोटों पर 'श्रीमती इलियट' के हस्ताक्षर थे?" "हाँ। बाद में उसने उन पर हस्ताक्षर किए। पहले एली और फिर एल। अब जब मेरी पत्नी डेंजरफील्ड से वापस आई, तो वह भी एंडी के ज़रिए मुझे चिट्ठियाँ भेजती थी। मैं अपनी दुकान में काम कर रहा होता था और एंडी मुझे संख्याओं से लिखी हुई, कोड में लिखी हुई चिट्ठियाँ लाता था। 1 का मतलब A, 2 का मतलब B, और इसी तरह। मुझे उन चीज़ों को समझने में समय लगाना अच्छा नहीं लगता था, लेकिन मैं बैठकर पता लगाता था कि उनमें क्या लिखा है। एक चिट्ठी में उसने मुझसे पूछा कि क्या मैंने कुछ वज़न कम नहीं किया?" "क्या आपकी पत्नी ने कभी आपको हाथ से या बड़े अक्षरों में कोई चिट्ठी लिखी?" "नहीं।" "क्या आपकी पत्नी की चिट्ठी और बाद में छत से आने वाली चिट्ठियों की लिखावट में कोई समानता थी?" "मैं कह नहीं सकता, लेकिन श्रीमती इलियट मुझसे वज़न कम करने के लिए कहती रहती थीं। मुझे यह अजीब लगा कि मेरी पत्नी डेंजरफील्ड से आई और मुझसे वज़न कम करने के बारे में भी पूछ रही थी।" "श्रीमती इलियट आपकी पत्नी की समकालीन थीं?" "उनकी मृत्यु 1963 में हुई थी। हमारे यहाँ आने से लगभग एक साल पहले।" "क्या वे दोनों महिलाएं जीवन में बहुत करीबी थीं?" "खास तौर पर नहीं। वे पड़ोसी थीं।" "श्रीमती स्नो के बारे में क्या?" "वह थोड़ी अजीब थीं।" "आपने अपनी आँखों से किन वस्तुओं को हिलते हुए देखा?" "मैंने जूतों की एक भारी जोड़ी को फर्श से उठते हुए देखा और वह सीधे मेरे बिस्तर के ऊपर से उड़कर बिस्तर के दूसरी तरफ जा गिरी।" "क्या वे तेज़ी से गिरीं या धीरे-धीरे?" "ऐसा लगा जैसे मैंने उन्हें उठाया और फेंक दिया हो। एंडी के घर के जूते भी ऐसे ही गिरे। मैंने बिल्ली को अपनी जगह से लगभग एक फुट ऊपर उठते हुए देखा और वह कई सेकंड तक हवा में लटकी रही, लेकिन फर्श पर नहीं गिरी। मैंने अलमारी पर रखी कीटनाशक स्प्रे की एक कैन को ऊपर आते हुए देखा और वह ठीक उस खुले हिस्से के ऊपर लटक गई और उस छोटे से कमरे में स्प्रे कर दिया, जिससे मेरा दम घुटने लगा। मुझे दरवाजे खोलने पड़े वरना कीटनाशक स्प्रे मुझ पर लग जाता।" "क्या आप कैन पकड़े हुए थीं?" "नहीं।" "मुझे उन सभी घटनाओं में विशेष रुचि है जिनमें आप वास्तव में मौजूद थीं जब कोई हलचल हुई या आवाजें सुनाई दीं।" "घर आते समय मैंने अपने कपड़े हवा में उड़ते देखे हैं।" "क्या ये घटनाएँ तब भी होती थीं जब आपकी पत्नी घर पर मौजूद होती थीं या नहीं?" "हाँ।" "क्या कभी ऐसा कुछ हुआ है जब न तो

आपका बेटा और न ही आपकी पत्नी घर पर हों, लेकिन आप अकेले हों?" "मुझे लगता है ऐसा हुआ है।" "मुझे लगता है कि 1951 में आपकी पत्नी को एक बड़ा सदमा लगा था। जब उनकी सबसे अच्छी दोस्त की अचानक मृत्यु हो गई थी। क्या आपको लगता है कि इसके परिणामस्वरूप उनकी मानसिक स्थिति में बदलाव आया?" "धीरे-धीरे, हाँ। हालाँकि, जब उन्हें पता चला कि उन्हें एक और बच्चा होने वाला है, तो वह बहुत खुश हुईं, क्योंकि उन्हें लगा कि इससे उनकी दोस्त के जाने का दुख कम हो जाएगा। वह उनके लिए दीवानी थीं।" "अब, आपको पहली बार कब लगा कि उनकी मानसिक स्थिति में कुछ गड़बड़ है?" "1960 में मेरी पत्नी ने अपनी बेटी का कमरा अपने कब्जे में ले लिया। उन्होंने दीवार पर अखबार चिपकाकर सभी खिड़कियाँ बंद कर दीं और बेडरूम की हर खिड़की पर एक कंबल टांग दिया।" "उन्होंने ऐसा क्यों किया?" "उसे लग रहा था कि कोई उसकी जासूसी कर रहा है। दफ्तर में उसने टेलीफोन, कैलकुलेटर और टाइपराइटर खोलकर उनमें लगे माइक्रोफोन की तलाश की, ताकि पता चल सके कि कौन उसकी जासूसी कर रहा है।" "लेकिन ये सब घटनाएं तो आपके इस घर में आने के बाद ही शुरू हुईं?" "बिल्कुल सही।"

मैंने श्री बेयर्ड को उनकी ईमानदार गवाही के लिए धन्यवाद दिया, क्योंकि उन्होंने मुझे दी गई अपनी मूल रिपोर्ट से कुछ भी अलग या भिन्न दावा नहीं किया था। मैंने मामले से संबंधित ढेर सारे हस्तलिखित नोट्स और पत्रों को लिया और उनका अध्ययन करने के लिए न्यूयॉर्क वापस चला गया। इसमें कुछ समय लगेगा क्योंकि मैंने श्रीमती बेयर्ड और एंडी दोनों की लिखावट की तुलना करने की योजना बनाई थी। मैंने एक पल के लिए भी यह नहीं सोचा कि नोट्स उनमें से किसी एक ने जानबूझकर लिखे थे और उन्हें सामान्य तरीके से श्री बेयर्ड को फेंक दिया था। जाहिर है, श्री बेयर्ड मूर्ख नहीं थे, और नकली घटनाओं का ऐसा कोई भी अनाड़ी प्रयास अनदेखा नहीं जाता, लेकिन अगर वास्तव में ऐसी समानता थी, तो नोट्स में श्री बेयर्ड या एंडी की लिखावट की मौजूदगी के अन्य कारण भी हो सकते हैं।

मुझे इस मामले और टेनेसी के बेल विच मामले के बीच स्पष्ट समानताएं दिखाई दे रही थीं। हॉवर्ड बेयर्ड पर किसी शक्ति या शक्तियों द्वारा कथित गलतियों का बदला लिया जा रहा था, इस मामले में उन पर दिए गए छोटे आदेशों का पालन न करने का आरोप था। लेकिन कुछ अन्य तत्व भी थे जो मूल मामले से बहुत अलग थे। बेल विच मामले में, घर में कोई भी ऐसा

व्यक्ति मौजूद नहीं था जिसे मनोविक्षिप्त कहा जा सके। टायलर के मामले में, हमारे पास दो ऐसे व्यक्ति हैं जो अप्रयुक्त मानसिक ऊर्जा प्रदान करने में सक्षम हैं। एक निश्चित रूप से मनोविक्षिप्त है, दूसरा सीमा रेखा पर है, या कम से कम मनोविक्षिप्त है।

फिर मैंने इस विचित्र शैली में लिखे गए नोट्स की जांच करने का फैसला किया, जो लगभग हमेशा बड़े अक्षरों में लिखे गए थे, लेकिन शब्दों के बीच में जहां बड़े अक्षरों की आवश्यकता नहीं थी, वहां भी उनका इस्तेमाल किया गया था। मुझे तुरंत समझ आ गया कि यह उनकी लिखावट को छिपाने का एक भद्दा तरीका था और इसका इस्तेमाल किसी अन्य कारण से नहीं किया गया था। यह तो सर्वविदित है कि कोई भी अपनी लिखावट को इस तरह से नहीं छिपा सकता कि विशेषज्ञ को धोखा दे सके। विशेषज्ञ ऐसा सोच सकता है, लेकिन एक विशेषज्ञ ग्राफोलॉजिस्ट हमेशा किसी व्यक्ति की लिखावट की विशिष्टताओं का पता लगाकर मूल लेखक तक पहुंच सकता है, बशर्ते दोनों लिखावटों की तुलना करने के लिए अक्षर-दर-अक्षर, शब्द-दर-शब्द नमूने उपलब्ध हों। कुछ नोट्स तो सरासर बचकाने थे। उदाहरण के लिए, 6 दिसंबर, 1965 को एक नोट में लिखा था, “मेरी शक्ति कम हो रही है। मैं मैक वापस जा रहा हूँ। मुझे जल्दी करनी होगी। मैं घर आना चाहता हूँ, लेकिन मुझे नहीं लगता कि मैं आ पाऊँगा। मैं तुमसे प्यार करता हूँ। कृपया मुझे क्रिसमस का उपहार दें। मैं अपनी शक्ति वापस नहीं ला सकता। मुझे साल में केवल तीन बार ही इसकी अनुमति है। पुलिस को फोन करो।” "मुझे साल में सिर्फ तीन की अनुमति है" इस रहस्यमय टिप्पणी का क्या मतलब है, यह स्पष्ट नहीं किया गया है।

कभी-कभी हॉवर्ड बेयर्ड किसी अनजान लेखक के जाल में फंस जाते थे। रविवार की सुबह, जब घर में चल रही घटनाओं के कारण उन्होंने और एंडी ने एक मोटल में रात बिताई, तो उन्हें डाकघर में एक पार्सल मिलने की सूचना मिली। उन्हें पता था कि यह पार्सल उन्हें दोपहर तक ही मिलेगा, इसलिए उन्होंने ज़ोर से पूछा, "क्या यह सूचना किसी ज़रूरी बात के बारे में है? अगर इसका कोई मतलब नहीं है, तो मैं अस्पताल से वापस नहीं आना चाहता।" कुछ ही सेकंड बाद छत से एक नोट नीचे गिरा जिस पर केवल "कुछ" लिखा था। ज़ाहिर है, यह कोई संतोषजनक जवाब नहीं था जो कोई समझदार या विवेकशील व्यक्ति देता। यह किसी ज़िद्दी बच्चे के खेल जैसा लग रहा था। 6 दिसंबर, 1965 को, एक और नोट रहस्यमय तरीके से प्रकट

हुआ, जिस पर लिखा था, "मैं मैक के सामने यह स्वीकार नहीं करना चाहता कि मैं पागल हूँ।" 6 दिसंबर, 1965 की ही तारीख वाले एक और नोट पर बस इतना लिखा था, "हॉवर्ड को धोखा मिला।" एक और नोट पर लिखा था, "मेरी शक्तियाँ ह्यूस्टन की चुड़ैल ने वापस लौटा दी हैं। पुलिस को फोन करो और उसके बारे में पूछो।" हेनरी एंग्लिन या श्रीमती इलियट द्वारा हस्ताक्षरित पत्रों और श्रीमती बेयर्ड द्वारा लिखे गए ऐसे पत्रों में कोई खास अंतर नहीं दिखता जिन पर हस्ताक्षर नहीं हैं और जिनसे यह संकेत मिलता है कि वे श्रीमती बेयर्ड की रचना हैं। अक्षर और शब्दों की बनावट एक जैसी है। 8 दिसंबर, 1965 के एक पत्र में लिखा था: “प्रिय हॉवर्ड, मैं तुमसे प्यार करती हूँ। मुझसे गलती हुई है। मैं घर लौटना चाहती हूँ, लेकिन मैं नहीं चाहती कि मूर्ख मैक को पता चले कि मैं असामान्य हूँ। मैं वास्तव में दो इंसान हूँ। अगर सब कुछ खत्म हो गया तो मुझे कुछ भी याद नहीं रहेगा। मैं एक ही समय में तीन जगहों पर हो सकती हूँ। मैं तुमसे और जूनियर से प्यार करती हूँ। कृपया प्रिय।”

पहले उल्लेखित और 22 दिसंबर, 1965 को हॉवर्ड बेयर्ड को प्राप्त हुए "डोरोथी किलगैलन" के हस्ताक्षर वाले इस पत्र में लिखा है, "प्रिय श्री बेयर्ड: श्रीमती इलियट ने मुझे आपके परिवार के साथ हुई घटनाओं और हेनरी एंग्लिन की ज़िम्मेदारी के बारे में बताया। यह बहुत दुखद है। मेरी मृत्यु का कारण वही है क्योंकि उसने मेरी दवाइयाँ बदल दी थीं। शुभ रात्रि और शुभकामनाएँ।" स्वर्गीय हर्स्ट स्तंभकार डोरोथी किलगैलन से व्यक्तिगत रूप से परिचित होने के नाते, मुझे पूरा विश्वास है कि वे जीवित हों या मृत, कभी भी इस तरह से अपनी बात नहीं कहतीं।

23 दिसंबर, 1965 को पोंट थॉर्नटन द्वारा हस्ताक्षरित एक पत्र में लिखा है, “प्रिय हॉवर्ड, पी.एस. और एंडी: मैं तुम्हें अच्छी तरह जानती हूँ। मैं जानती हूँ कि तुम ठीक हो। मैं ज़्यादा शराब नहीं पीती, इसलिए तुमने भी कठिनाइयाँ झेली होंगी। एंग्लिन एक नीच आदमी है। मैं हेनरी ली से ज़्यादा बुद्धिमान हूँ। मैं अब्राहम लिंकन, लुईस आर्मस्ट्रांग, सैम डेविस जूनियर और जॉन एफ. केनेडी की दूर की रिश्तेदार हूँ।” यह पत्र न केवल वर्तनी की भयानक गलतियों से भरा था, बल्कि इसमें कई असंभावित रिश्तों का भी ज़िक्र था। श्रीमती इलियट के रूप में लिखते समय व्यक्तित्व हेनरी एंग्लिन या श्रीमती बेयर्ड के रूप में लिखने की तुलना में कहीं अधिक संक्षिप्त और तार्किक है। लेकिन शैली में अंतर के बावजूद, पत्र बहुत समान हैं। ज़ाहिर है, चूंकि ये पत्र

लगभग तीन वर्षों में लिखे गए थे, इसलिए शैली और दिखावट दोनों में कुछ अंतर होना स्वाभाविक है।

17 सितंबर, 1967 को हॉवर्ड बेयर्ड ने देखा, “लगभग रात 9 या 10 बजे, एंडी ने श्रीमती इलियट की आवाज़ सुनी। उन्होंने एंडी से कहा कि वह उनसे बात कर सकता है और माँ सुन नहीं सकतीं, इसलिए एंडी ने उनसे बात की और जाहिर तौर पर माँ को इसके बारे में कुछ पता नहीं चला। जैसे ही मैं सोने की तैयारी कर रहा था, मैंने श्रीमती इलियट की आवाज़ सुनी। आवाज़ रसोई की तरफ से आती हुई लग रही थी और चूंकि एंडी और जॉनी उनके बेडरूम में टीवी देख रहे थे, मैं रसोई में गया। श्रीमती इलियट ने मुझे कई बार और बुलाया और फिर आवाज़ मेरे कमरे से आती हुई लग रही थी। उन्होंने कहा कि जॉनी मुझे सुन नहीं सकता, इसलिए मैंने उनसे बात करने की कोशिश की, लेकिन एंडी ने कहा कि उन्होंने जॉनी से कहा कि वह मुझे कभी सुन ही नहीं सकतीं। खैर, सोने से पहले, मुझे हॉल में फर्श पर एक बहुत छोटा सा कागज का टुकड़ा मिला, जो बहुत छोटा मोड़ा हुआ था, और उसके पास ही साउथ साइड बैंक की एक जमा पर्ची भी मुड़ी हुई मिली। छोटे नोट पर लिखा था, 'बहुत उदार बनो। मुझे नमस्ते कहना। श्रीमती स्नो।' बड़े नोट पर लिखा था, 'कंजूस मत बनो सैम, उदार बनो जो। जॉर्ज स्वेनी।' मेरे सोने के बाद... मैंने श्रीमती इलियट को कई बार मुझे पुकारते सुना, लेकिन मैं उन्हें कभी भी अपना जवाब नहीं सुना पाया। जैसे ही मैं सोने वाला था, एंडी अंदर आया और कहा कि श्रीमती इलियट ने उसे बताया है कि उन्होंने मेरे लिए फर्श पर एक नोट छोड़ा है। जैसे ही मैं उसे ढूंढने के लिए उठा, मेरे बिस्तर के बगल वाली कुर्सी पर एक नोट गिर गया। मैं चश्मा लेने के लिए उसे लेकर रसोई में गया और उसमें लिखा था, 'हावर्ड, मुझे उम्मीद है कि कोई घोंघा नहीं होगा। उदार बनने की कोशिश करो, तुम्हारे पास बहुत पैसा है। तुम अपने, जॉन और एंडी के लिए बहुत कुछ खरीद सकते हो।' इसके बाद वस्तुओं की एक सूची थी, मुख्य रूप से कपड़ों की, जो वह श्रीमती इलियट के सुझाव पर अपने परिवार के लिए खरीद सकता था। हावर्ड बेयर्ड ने श्रीमती इलियट से बात करने की कोशिश की और उनसे पूछा कि वह सारा पैसा कहाँ है, लेकिन उन्हें कभी भी इसका जवाब नहीं मिला।

29 सितंबर, 1967 को हॉवर्ड बेयर्ड ने देखा कि श्रीमती इलियट शाम लगभग 7:30 बजे उनसे मिलने आईं। उन्हें समझ नहीं आ रहा था कि जब वह उन्हें नाम से पुकारती हैं तो उनकी

आवाज़ उन्हें सुनाई देती है, लेकिन फिर बाकी की बातें उन्हें सुनाई ही नहीं देतीं। जाहिर है, बाकी की बातचीत एंडी के ज़रिए ही उन्हें समझ आती है। दूसरी ओर, अगर वह ज़ोर से बोलते हैं तो श्रीमती इलियट उन्हें सुन लेती हैं। उस रात श्रीमती इलियट ने उन्हें बताया कि श्री क्विन पहले आए थे। थोड़ी देर बाद श्री क्विन खुद वापस आए और हॉवर्ड बेयर्ड ने उनकी आवाज़ सुनी, लेकिन बाकी कुछ सुनाई नहीं दिया, और फिर से एंडी को ही दुभाषिया बनना पड़ा। एंडी ने कहा कि श्री क्विन की आवाज़ रोबोट जैसी लग रही थी, और यह बात श्री बेयर्ड को समझ में आ गई, क्योंकि वह जानते थे कि क्विन, जिनकी मृत्यु से पहले कैंसर के कारण आवाज़ चली गई थी, बोलने के लिए अपने गले पर एक यंत्र रखते थे। ऐसा प्रतीत होता है कि स्वर्गीय श्री क्विन ग्रैंड सेलाइन में रहने वाले कुछ लोगों के हालचाल जानना चाहते थे, जिनमें श्रीमती ड्रेक, श्री और श्रीमती वॉटकिंस और मैकमुलेन परिवार शामिल थे। यह जानकारी निश्चित रूप से एंडी को नहीं पता हो सकती थी, क्योंकि जब बियर्ड परिवार इन लोगों को उस कस्बे में जानता था जहाँ वे पहले रहते थे, तब एंडी बहुत छोटा था।

श्रीमती इलियट ने यह भी बताया कि उस शाम उन्हें और अन्य आत्माओं को श्री बियर्ड के साथ रहने का कारण यह था कि उन्हें छुट्टियों के लिए छुट्टी दी गई थी—हैलोवीन की वजह से, हालांकि ऑल हैलोज़ ईव के लिए यह थोड़ा जल्दी था। श्री बियर्ड को यह अजीब लगा कि आत्माओं को वे जहाँ भी हों, वहाँ से छुट्टी मिल जाती है।

30 सितंबर, 1967 को, बियर्ड को दिन भर श्रीमती इलियट से कोई खबर नहीं मिली। एंडी उस रात काफी देर तक बाहर रहा था और जब वह लौटा तो श्री बियर्ड सो रहे थे। कुछ देर बाद, एंडी ने उन्हें जगाया और बताया कि श्रीमती इलियट ने उनके लिए एक नोट छोड़ा है। उन्हें वह नोट उनके बिस्तर पर मिला। उसमें लिखा था, “हावर्ड, मैंने जो कहा है उस पर सोचो। क्या तुम सोमवार को ऐसा करोगे? इलियट।” ठीक उसके नीचे एक और नोट था, जिसमें लिखा था, “जॉन को एक वैक्यूम क्लीनर और एक पर्स चाहिए। जूनियर को स्कूल के लिए एक कोट और कुछ बैंजो के तार चाहिए। हीराम।” अब इस नोट की खास बात यह है कि इसका पहला भाग निश्चित रूप से श्रीमती बियर्ड की लिखावट में था, जबकि दूसरा भाग बेतरतीब ढंग से लिखा गया था, जिसमें बहुत सारे बड़े अक्षर थे जहाँ उनकी आवश्यकता नहीं थी और कुल मिलाकर अव्यवस्थित था। कथित लेखक हीराम क्विन, अपनी मृत्यु से कुछ समय

पहले से ही बहुत बीमार थे। जब हॉवर्ड बेयर्ड ने कथित श्रीमती इलियट से इस तथ्य के बारे में पूछा कि उनका पत्र उनकी पत्नी की लिखावट में लिखा गया था, तो उन्होंने यह कहकर बात को टाल दिया कि वह जिसकी चाहे उसकी तरह लिख सकती हैं।

2 अक्टूबर, 1967 को श्री बेयर्ड ने लिखा, “शाम लगभग 7:30 बजे श्रीमती स्नो ने मेरा नाम पुकारा। मैं रसोई में था और आवाज़ घर के पिछले हिस्से से आती हुई प्रतीत हुई जहाँ एंडी और जॉन थे। आवाज़ बिल्कुल श्रीमती इलियट जैसी थी और हालाँकि मैं उसे स्पष्ट रूप से सुन सका और तुरंत ज़ोर से जवाब दिया, लेकिन मुझे और कुछ सुनाई नहीं दिया और एंडी को मुझे बताना पड़ा कि उन्होंने क्या कहा था। वह बस मुझे मेरे स्टाम्प व्यवसाय और जॉन के हालचाल के बारे में बताना चाहती थीं। वह मुझे मुश्किल से सुन पा रही थीं और उन्होंने एंडी को अटारी का पंखा बंद करने और मुझे अपने कमरे में जाकर दरवाज़ा बंद करने के लिए कहा ताकि वह सुन सकें। वह यह नहीं समझा सकीं कि मुझे उनका नाम पुकारना कैसे सुनाई दिया और फिर कुछ और सुनाई नहीं दिया और उन्होंने कहा कि यह किसी तरह का 'नियम' है।”

उस समय से श्रीमती इलियट द्वारा हस्ताक्षरित नोट अक्सर ऐसे लगते थे मानो उन्हें श्रीमती बेयर्ड ने लिखा हो। लिखावट निस्संदेह उन्हीं की है। यानी, दिखने में उन्हीं की लगती है। हॉवर्ड बेयर्ड को इस बात में कोई संदेह नहीं है कि ये नोट वास्तव में मानसिक रूप से प्रकट हुए थे। 23 अक्टूबर को वह कई बार सो गए थे और एक बार अपने बिस्तर के पास फर्श पर कागजों की सरसराहट से उनकी नींद खुल गई। उस समय वह कमरे में अकेले थे। उन्होंने लाइट जलाई और फर्श पर एक अश्लील पत्रिका मुड़ी हुई पाई। इसी समय एंडी अंदर आया और बताया कि श्रीमती इलियट ने उसे बताया था कि उन्हें यह पत्रिका श्रीमती बेयर्ड के कमरे में मिली थी। उन्होंने कहा कि श्रीमती बेयर्ड ने इसे ब्यूटी शॉप से खरीदा था और कागज का यह टुकड़ा उसी से फाड़ा गया था। नोट पर "कोई तुमसे प्यार करता है" छपा था और उसके नीचे El. के हस्ताक्षर थे।

12 नवंबर, 1967, रविवार के दिन, हॉवर्ड बेयर्ड ने श्रीमती इलियट को उनसे बात करते हुए सुना। उन्होंने उन्हें सलाह दी कि वे श्रीमती बेयर्ड के कमरे में जाकर कुछ नग्न चित्र और नग्न पुरुषों और महिलाओं के हाथ से बनाए गए चित्र खोजें। श्री बेयर्ड को ये सभी चीजें मिल गईं,

लेकिन उनकी पत्नी ने इनके बारे में किसी भी जानकारी से इनकार किया। अगली रात, 13 नवंबर, 1967, हॉवर्ड बेयर्ड द्वारा अनुभव की गई घटनाओं के लिहाज से विशेष रूप से उल्लेखनीय थी। “दुकान जाने से पहले श्रीमती इलियट आईं और मुझसे कुछ और अश्लील तस्वीरें ढूंढने को कहा। मुझे कुछ तस्वीरें मिलीं और मैंने उन्हें नष्ट कर दिया। श्रीमती इलियट ने मुझसे कहा कि मैं उन्हें जॉन के सामने फाड़ दूं, शायद तब वह ऐसी तस्वीरें बनाना छोड़ देंगी और नग्नतावादी पत्रिकाओं की तस्वीरें खरीदना भी बंद कर देंगी। उसी रात, लगभग 9:15 बजे, श्रीमती इलियट ने मुझे फोन किया। यह पहली बार था जब मैंने किसी भूत से फोन पर बात की। मैं फोन पर उनकी बातें समझ पा रहा था, लेकिन घर पर रहते हुए मुझे उनके द्वारा मेरा नाम पुकारने के अलावा कुछ भी सुनाई नहीं दे रहा था। बेशक, फोन पर उन्होंने बस इतना ही कहा कि घर आ जाओ। फिर मैंने एंडी से बात की और उसने बताया कि श्रीमती इलियट चाहती हैं कि मैं तुरंत घर आऊं और जॉन के छिपाने की जगहों से कुछ और चित्र और नग्नतावादी पत्रिकाएं ले आऊं। मैं घर गया और तस्वीरें ले आया और उन्हें नष्ट करने के बाद वापस दुकान पर चला गया।”

कुछ नोट्स में उस युवा लड़के और उसके पिता के बीच अंतर्निहित संघर्ष का पता चलता है, चाहे वह काल्पनिक हो या वास्तविक, जो "संरक्षक देवदूत" श्रीमती इलियट के लिए बहुत चिंता का विषय था। 11 जनवरी, 1968 को एक नोट में लिखा था, "हावर्ड, मुझे तुम्हें नोट्स लिखने की ज़रूरत है। जूनियर को बहुत चिंता करनी पड़ी है। तुम्हें उसके मेरे साथ आने से क्या आपत्ति है? वह खुश रहेगा। उसके लिए चिंता न करना ही सही होगा। मैं मानती हूँ कि उसे शिक्षा प्राप्त करनी चाहिए, लेकिन सत्रह वर्ष की आयु में वह एक कोर्स कर सकता है और फिर कॉलेज जा सकता है। इस बीच मैं जॉन और उसकी मदद करूँगी। वह संगीत बजा सकता है और सत्रह वर्ष की आयु में वह बहुत अच्छा कर सकता है। वह घर की देखभाल भी करना चाहेगा। जॉन बहुत बेहतर हो जाएगा। तुम्हारी आर्थिक स्थिति बेहतर होगी और जूनियर भी बेहतर हो सकता है। यही एकमात्र चीज़ है जिसकी मैं अनुमति दूँगी, या अगर वह चाहेगा तो मैं उसे अपने साथ ले जाऊँगी... उसने कहा कि वह मुझे जाने के लिए कहेगा और नहीं जाएगा, लेकिन इससे उसकी इच्छा नहीं बदलेगी। बेहतर होगा कि तुम ध्यान दो क्योंकि वह आना चाहता है। मुझे उसे ले जाने का पूरा अधिकार है। एल।" श्रीमती इलियट की आत्मा द्वारा

उस छोटे लड़के को अपने साथ आत्माओं की दुनिया में ले जाने की धमकी उसके पिता को बिल्कुल भी अच्छी नहीं लगी। सतही तौर पर विश्लेषण करने पर, यह किसी मानसिक रूप से विकलांग बच्चे द्वारा अपने माता-पिता को दी गई एक चिड़चिड़ी धमकी जैसी लगती है, अगर उसकी बात न मानी जाए। यदि श्रीमती इलियट एक परिपक्व और समझदार व्यक्ति की आत्मा थीं, तो इस तरह की धमकी मुझे कथित श्रीमती इलियट के व्यक्तित्व के अनुरूप नहीं लगती।

अगली रात, 12 जनवरी, 1968 को, संदेशवाहक ने लिखा, "हावर्ड, मुझे ईश्वरीय अधिकार प्राप्त है। मैं जूनियर को ले जाकर इसे साबित करूँगी और मैं उसे आज रात ले जा रही हूँ। तुम उससे ज़रा भी प्यार नहीं करते। तुम्हें किसी की परवाह नहीं है।" श्रीमती इलियट ने 15 जनवरी तक एंडी को नहीं लिया था, लेकिन उन्होंने हावर्ड को बता दिया कि वह किसी भी समय ऐसा कर सकती हैं। वास्तव में, उनके संदेश एंडी के प्रवक्ता की तरह लग रहे थे, अगर वह घर के जीवन के बारे में शिकायत करना चाहता था लेकिन खुलकर और सचेत रूप से कहने का साहस नहीं रखता था। 18 जनवरी को, श्रीमती इलियट ने आखिरकार लड़के को न लेने का फैसला किया। उन्होंने पहले भी कई बार वादा किया था कि वह अब वापस नहीं आएंगी और उनका आना आखिरी होगा। लेकिन उन्होंने हमेशा अपना वादा तोड़ा।

अब तक तो कोई भी रूढ़िवादी मनोवैज्ञानिक या यहाँ तक कि परा मनोविज्ञानी भी यही मान लेता कि वह युवक न केवल नोट्स की रचना में, बल्कि उन्हें लिखने में भी भौतिक रूप से शामिल था। मैं अनावश्यक रूप से निष्कर्ष पर नहीं पहुँचना चाहता, खासकर तब जब यह मान लेना कि युवक ने ही वास्तव में लिखा है, संचार के तरीके के बारे में पूर्वाग्रह को दर्शाता हो। लेकिन मैंने प्रत्येक शब्द की बारीकी से जाँच करने का निर्णय लिया और यह देखने की कोशिश की कि क्या अक्षर या शब्द मुझे इस बात का कोई सुराग देते हैं कि वास्तव में उन्हें किसने लिखा था। अब तक मुझे यह स्पष्ट हो गया था कि श्रीमती इलियट के नाम से प्रस्तुत किए जा रहे कुछ नोट्स, यदि सभी नहीं, तो श्रीमती बेयर्ड की लिखावट में थे। लेकिन यह उनकी लिखावट की अच्छी नकल नहीं थी। बल्कि मुझे ऐसा लगा कि किसी ऐसे व्यक्ति ने श्रीमती बेयर्ड की लिखावट में लिखने का प्रयास किया था जो वास्तव में श्रीमती बेयर्ड नहीं थीं। जहाँ तक अन्य नोट्स की बात है, जिन पर हेनरी एंग्लिन, हिरम क्विन के हस्ताक्षर थे और वे नोट्स जिन पर हस्ताक्षर नहीं थे लेकिन जो देखने में श्रीमती बेयर्ड के ही लग रहे थे, उनमें कुछ

समानताएँ थीं। मैंने श्री बेयर्ड से एंडी और श्रीमती बेयर्ड दोनों की लिखावट के पर्याप्त नमूने उपलब्ध कराने का अनुरोध किया था। यानी, घर में घटित होने वाली अलौकिक घटनाओं से किसी भी प्रकार से संबंधित न होने वाले हस्तलिखित नोट। फिर मैंने इन नमूनों का अध्ययन किया और उनकी तुलना उन नोटों से की जो कथित तौर पर कहीं से प्रकट हुए थे या जो श्री बेयर्ड के सामने छत से गिरकर अचानक प्रकट हुए थे, जिससे श्री बेयर्ड बेहद आश्चर्यचकित हो गए थे।

मैंने निम्नलिखित अक्षरों को लेखक की लिखावट की विशेषता के रूप में चुना, चाहे वह कोई भी हो। बड़ा अक्षर T, छोटा अक्षर e, छोटा अक्षर p, g, y, r, और बड़ा अक्षर B, C, L, और अंक 9। ये सभी अक्षर कई नोट्स में दिखाई दिए। ये एंडी की लिखावट के नमूने में भी दिखाई देते हैं, जो कि गीतों के शीर्षकों की एक सूची है जो उसे पसंद थे और जिन्हें वह जाहिर तौर पर अपने गिटार पर सीखने वाला था। मुझे इसमें कोई संदेह नहीं है कि मानसिक नोट में लिखे अक्षर और एंडी की गीत सूची में लिखे अक्षर एक जैसे हैं। यानी, वे एक ही व्यक्ति द्वारा लिखे गए थे। इसका यह मतलब नहीं है कि एंडी ने ही नोट्स लिखे थे। लेकिन मैं यह जरूर कह रहा हूं कि मानसिक नोट्स लिखने के लिए जिस हाथ का इस्तेमाल किया गया है, वही हाथ एंडी बेयर्ड अपने नोट्स लिखते समय जानबूझकर इस्तेमाल करता था। मुझे पूरी तरह से यकीन नहीं है, लेकिन मुझे संदेह है कि उसकी मां की लिखावट में दिखने वाले नोट्स भी उसी तरह से लिखे गए हैं और एंडी बेयर्ड से जुड़े हुए हैं।

7 दिसंबर 1965 को, नोट्स के ढेर में से एक चित्र मिला। उसमें एक आदमी नाई की कुर्सी पर बैठा था और अन्य टिप्पणियों के साथ लिखा था, "नाई कितने प्यारे होते हैं, हा हा।" यह याद रखना चाहिए कि एंडी की जीवन की सबसे बड़ी ख्वाहिश नाई बनने की थी। दरअसल, जब मैं उससे मिला और उसका इंटरव्यू लिया, तब वह नाई बनने की पढ़ाई कर रहा था।

तो फिर इन सब का अर्थ क्या है? हमें जल्दबाजी में निष्कर्ष पर नहीं पहुंचना चाहिए और यह नहीं कहना चाहिए कि एंडी बेयर्ड ने किसी तरह चुपके से नोट्स लिखे, उन्हें किसी तरह चुपके से मिस्टर बेयर्ड के कमरे में पहुंचाया और उन्हें छत से गिरा दिया, मानो वे अपने आप ही गिर गए हों, और मिस्टर बेयर्ड को इसका पता भी न चला हो। कई मामलों में यह संभव है, लेकिन अधिकतर मामलों में ऐसा होना संभव ही नहीं था, जब तक कि हॉवर्ड बेयर्ड एक विवेकशील

व्यक्ति न हों और वास्तव में मुझसे झूठ बोल रहे हों। मुझे इसमें कोई संदेह नहीं है कि मिस्टर बेयर्ड मुझे सच बता रहे हैं और वे एक तेज और विवेकशील पर्यवेक्षक हैं। इसलिए, इन घटनाओं की सत्यता का भार उनकी अवलोकन क्षमता पर नहीं, बल्कि इस बात पर है कि ऐसी असाधारण घटनाएं, भले ही वे देखने में असंभव लगें, फिर भी संभव हैं, और इस बात को इस भयावह तथ्य से जोड़ना होगा कि उनमें एंडी बेयर्ड की लिखावट के मजबूत संकेत मिलते हैं।

हमें बेयर्ड परिवार में कई वर्षों से चले आ रहे तनाव, युवा एंडी की बचपन की दुखद स्थिति और इस तथ्य को समझना होगा कि कई वर्षों तक वह एक अंतर्मुखी और दमित व्यक्ति रहा, जो बाहरी दुनिया से ठीक से जुड़ नहीं पाया और जहाँ से भी संभव हो, प्रेरणा पाने के लिए विवश था। ऐसी परिस्थितियों में, एक युवा व्यक्ति के भीतर की कुछ शक्तियाँ प्रकट हो सकती हैं और लगभग स्वयं से स्वतंत्र हो सकती हैं। चूंकि ये शक्तियाँ व्यक्ति के अचेतन मन का हिस्सा होती हैं और इसलिए चेतन मन के तार्किक नियंत्रण के अधीन नहीं होतीं, वे वास्तव में बचकानी और अक्सर तर्कहीन होती हैं। वे आसानी से क्रोधित और शांत हो जाती हैं और सामान्यतः शिशुवत व्यवहार करती हैं। इसी प्रकार, व्यक्तित्व के ये पृथक भाग शारीरिक करतब दिखाने, वस्तुओं को हिलाने, कहीं से भी चीजों को प्रकट करने और सामान्यतः विज्ञान के सामान्य नियमों का उल्लंघन करने में सक्षम होते हैं। यह हम पहले से ही जानते हैं क्योंकि दुनिया के कई हिस्सों में भूत-प्रेत की घटनाएं अक्सर घटित होती रही हैं। हालांकि, बेयर्ड परिवार के मामले में, हमें दो अन्य परिस्थितियों पर भी विचार करना होगा। पहला कारण घर में एक नहीं बल्कि दो भावनात्मक रूप से अस्थिर व्यक्तियों की उपस्थिति है। श्रीमती बेयर्ड का वास्तविकता से बढ़ता अलगाव, जिसके कारण वे सिज़ोफ्रेनिया की स्थिति में पहुँच गईं, ने उनके भीतर कुछ शक्तिशाली शक्तियों को मुक्त कर दिया होगा। यौन संबंधी कुछ पहलुओं के प्रति उनका प्रतीत होता है कि अचेतन रूप से ग्रस्त होना उनकी कुछ हद तक कुंठा को दर्शाता है, फिर भी सचेत स्तर पर वे इस पर कुछ भी करने में असमर्थ हैं। हमने यह माना है कि मानसिक घटनाओं को घटित करने के लिए प्रयुक्त ऊर्जा वही शक्ति है जो मनुष्य में जीवन शक्ति या यौन इच्छा में निहित होती है, और जब इस शक्ति का सामान्य तरीके से उपयोग नहीं किया जाता है तो इसे अलौकिक अभिव्यक्ति की ओर मोड़ा जा सकता है, जिसने

इस मामले में भूत-प्रेत जैसी घटनाओं का रूप ले लिया। इसलिए, बेयर्ड के मामले में, हमारे पास अप्रयुक्त मानसिक ऊर्जा का एक विशाल भंडार है, जिस पर उन दो व्यक्तियों का बहुत कम सचेत नियंत्रण था जिनके शरीरों में ये ऊर्जाएँ संग्रहित और विकसित हुईं।

क्या वे सत्ताएँ, जो मृत्यु के बाद भी अपनी अभिव्यक्ति के लिए इन सुविधाओं का उपयोग करने का दावा कर रही थीं, वास्तव में वही लोग थे जो कभी इस समुदाय में रहते और मरते थे? क्या वे सचमुच वही थे जो वे होने का दावा कर रहे थे, या क्या वे एंडी और श्रीमती बेयर्ड दोनों के व्यक्तित्व के अलग हुए अंशों द्वारा अचेतन रूप से पुन: प्रस्तुत किए जा रहे थे? चूंकि हॉवर्ड बेयर्ड ने कम से कम एक सत्ता के हस्ताक्षर की जांच की है और पाया है कि यह जीवित व्यक्ति के हस्ताक्षर से काफी मिलता-जुलता है, और चूंकि उस विशेष मामले में, एंडी या श्रीमती बेयर्ड में से किसी के लिए भी हस्ताक्षर तक पहुंच संभव नहीं थी, इसलिए मेरा मानना है कि वास्तव में वास्तविक गैर-भौतिक सत्ताएँ इन दो दुर्भाग्यशाली व्यक्तियों की अप्रयुक्त ऊर्जाओं का उपयोग भौतिक जगत में अपनी अभिव्यक्ति के लिए कर रही थीं। मुझे लगता है कि एक अतिरिक्त प्रमाण यह तथ्य होगा कि कई मामलों में, ग्रैंड सेलाइन में उनके पूर्व निवास में हॉवर्ड बेयर्ड जिन व्यक्तियों को जानते थे, उनके नाम और व्यक्तित्व से संबंधित कुछ विवरण न तो उनकी पत्नी को और न ही उस युवक को ज्ञात थे और न ही उन तक उनकी पहुंच थी। मुझे इस बात का पूरा यकीन नहीं है कि एंडी और इन तथाकथित आध्यात्मिक शक्तियों के बीच इन घटनाओं को घटित करने में किसी प्रकार की मिलीभगत नहीं हो सकती थी, लेकिन अगर ऐसी कोई मिलीभगत थी भी तो वह अवचेतन स्तर पर थी। मेरा मानना है कि एंडी की अनकही कुंठाओं और इच्छाओं को इनमें से कुछ निराकार शक्तियों ने ग्रहण कर लिया और पृथ्वी की परिस्थितियों में निरंतर हस्तक्षेप करने की अपनी इच्छा के साथ मिलकर, इन घटनाओं को संभव बनाने वाली प्रेरक शक्ति बन गईं।

इस तथ्य के बारे में क्या कि अधिकांश नोट्स में एंडी बेयर्ड की लिखावट दिखाई देती है? यदि एंडी ने स्वयं ये नोट्स नहीं लिखे थे, तो क्या इन्हें किसी अन्य तरीके से बनाया जा सकता था? मुझे इसमें कोई संदेह नहीं है कि कम से कम अधिकांश नोट्स एंडी द्वारा स्वयं लिखकर अपने पिता के सामने नहीं रखे जा सकते थे, और श्री बेयर्ड को इसका पता भी नहीं चलता। फिर भी, इन्हीं नोट्स में ऐसे स्पष्ट संकेत भी हैं जो बताते हैं कि ये एंडी बेयर्ड की लिखावट हैं। इसलिए

एकमात्र संभावित समाधान यही है कि एंडी के शरीर के किसी आध्यात्मिक भाग का उपयोग इन नोट्स को बनाने में किया गया हो, ठीक उसी तरह जैसे कभी-कभी ठोस दिखने वाली वस्तुएं प्रकट और गायब हो जाती हैं। इसे एक "भौतिक" घटना कहा जाता है और यह केवल भूत-प्रेत की घटनाओं तक ही सीमित नहीं है, बल्कि कभी-कभी ठोस वस्तुओं के साथ भी देखी गई है जो एक स्थान से दूसरे स्थान पर चली जाती हैं, या अचानक कहीं से प्रकट हो जाती हैं, या बिना कोई निशान छोड़े गायब हो जाती हैं। यह घटना न तो अनोखी है और न ही कोई नई बात है। टेक्सास के टाइलर में स्थित बेयर्ड परिवार के मामले में जो बात अनोखी है, या लगभग अनोखी है, वह यह है कि यहाँ स्पष्ट व्याख्या ही सबसे संभावित कारण नहीं है। मुझे नहीं लगता कि एंडी बेयर्ड ने वे नोट्स जानबूझकर लिखे थे। मेरा मानना है कि उनकी लेखन क्षमता का उपयोग उन आत्माओं ने किया जो उनके माध्यम से अपनी अभिव्यक्ति व्यक्त कर रही थीं। मेरा मानना है कि एंडी सच कह रहे थे जब उन्होंने कहा कि वे नोट्स के प्रकट होने से आश्चर्यचकित थे और उन्हें कभी भी उनकी सामग्री का ज्ञान नहीं था, सिवाय इसके कि जब किसी अन्य आत्मा ने उन्हें उनके बारे में बताया। यही बात श्रीमती बेयर्ड पर भी लागू होती है। स्वचालित लेखन नामक घटना में, एक जीवित व्यक्ति, आमतौर पर एक पूरी तरह से तर्कसंगत और सचेत व्यक्ति, के हाथ का उपयोग एक मृत व्यक्ति के विचारों, यादों और अक्सर लेखन शैली को व्यक्त करने के लिए किया जाता है। बेयर्ड के घर की छत से गिरे नोट्स उस प्रकार के नहीं हैं। यहाँ पहले कागज को एक जगह से लिया गया और किसी अन्य व्यक्ति के हाथ से पेंसिल से लिखा गया, उसके बाद ही नोट गवाहों के सामने प्रकट हो सका। यह किसी मनुष्य की मांसपेशीय प्रणाली को कुछ शब्दों को एक निश्चित तरीके से लिखने के लिए प्रेरित करने से कहीं अधिक जटिल है।

अगर एंडी और श्रीमती बियर्ड के माध्यम से खुद को व्यक्त करने वाली शक्तियों को संतुष्टि नहीं मिली थी, तो बियर्ड परिवार के एक घर से दूसरे घर में जाने पर ये घटनाएँ क्यों बंद हो गईं? ऐसा ज़रूरी नहीं था कि बियर्ड परिवार के एक घर से दूसरे घर में जाने मात्र से ही ये घटनाएँ रुक जाएँ। पहले घर के वातावरण में कुछ ऐसा ज़रूर रहा होगा जिसने एंडी और श्रीमती बियर्ड की अनछुई मानसिक ऊर्जाओं के साथ मिलकर इन घटनाओं के लिए अनुकूल वातावरण प्रदान किया होगा।

ऐसा प्रतीत होता है कि पुराने बियर्ड घर में कुछ गड़बड़ियाँ जारी हैं, जबकि उनके नए घर में ऐसी कोई घटना नहीं हुई है। हालांकि, पुराने बियर्ड घर के वर्तमान मालिक घर में होने वाली मानसिक घटनाओं जैसे विषयों पर चर्चा करने से इनकार करते हैं। उन्हें पूरा विश्वास है कि उनका कट्टरपंथी धर्म उन्हें इन घटनाओं से निपटने की अनुमति देगा। उनके लिए, मानसिक घटनाएँ शैतान का काम हैं।

और इस तरह, टेक्सास के टायलर में शैतान एक बार फिर भड़क उठ सकता है और एक परिवार को, या शायद पूरे समुदाय को, उन अजीब और डरावनी घटनाओं से जकड़ सकता है, जिन्होंने तीन साल तक बेयर्ड परिवार को भावनात्मक और शारीरिक रूप से बुरी तरह परेशान किया था। बेयर्ड परिवार अब खतरे से बाहर है। एंडी बड़ा हो गया है और आने वाले वर्षों में उसकी छिपी हुई प्रतिभा का उपयोग निस्संदेह अधिक रचनात्मक कार्यों में किया जाएगा। श्रीमती बेयर्ड ने अपने पति के घर में अपना उचित स्थान ग्रहण कर लिया है और अपने दुखद अतीत को पीछे छोड़ दिया है। हॉवर्ड बेयर्ड, जो 1965 और 1968 के बीच घटी सभी भयानक घटनाओं का मुख्य शिकार था, अब संतुष्ट है कि वे केवल यादें बनकर रह गई हैं। वह उन्हें वापस लाना नहीं चाहता। इन अविश्वसनीय घटनाओं का विवरण प्रकाशित करने में उसकी एकमात्र रुचि जनता को सूचित करना और उन लोगों की मदद करना था जिन्हें इसी तरह के अनुभव हो सकते हैं।

*155

एक भूत की डायरी

पॉल ल्यूथोल्ड लगभग चालीस वर्ष के हैं, जिनका व्यक्तित्व सौम्य है और शैक्षणिक पृष्ठभूमि भी ठीक-ठाक है। वे शायद अन्य देशों के अधिकांश किसानों से अधिक पढ़े-लिखे हैं, लेकिन दर्शनशास्त्र या रहस्यवाद के क्षेत्र में वे निश्चित रूप से परिष्कृत या ज्ञानी नहीं हैं। उनकी पत्नी और दो बच्चे हैं—एक बेटा, जो अब सत्रह वर्ष का है, और एक बेटी, जो उनसे कुछ वर्ष छोटी है।

मास्चवांडन नामक छोटे से गाँव की एक संकरी गली में स्थित, घर, अस्तबल, कुछ एकड़ ज़मीन और घर के ठीक सामने अस्तबलों में रखे गए लगभग दो दर्जन मवेशियों से युक्त,

ल्यूथोल्ड फार्म पर जीवन साल दर साल सामान्य और नियमित रूप से चलता रहा। यह सिलसिला 1960 के आने तक जारी रहा। 1960 की ठंडी, उमस भरी शरद ऋतु में, ल्यूथोल्ड परिवार और उनका घर स्विस मनोवैज्ञानिक अनुसंधान के इतिहास में एक अनोखी भूतिया घटना का केंद्र बन गया।

उस समय के पात्रों में पॉल ल्यूथोल्ड (अड़तालीस वर्ष), श्रीमती ल्यूथोल्ड (सैंतालीस वर्ष), उनकी दस वर्षीय बेटी एलिजाबेथ, तेरह वर्षीय पुत्र पॉल और अठारह वर्षीय नौकरानी एल्फी शामिल थीं, जो मानसिक रूप से कुछ हद तक विकलांग थीं, जो इस तरह के मामलों में एक महत्वपूर्ण पहलू है। इसके अलावा एंजेलो नाम का एक इतालवी सहायक भी था, जो उन रहस्यमय घटनाओं के दौरान खेत में केवल कुछ समय के लिए ही मौजूद था।

ल्यूथोल्ड के घर के ठीक बगल में आइचेनबर्गर परिवार का घर स्थित है। पचास वर्षीय श्री आइचेनबर्गर एक सक्रिय अध्यात्मवादी थे, जो स्विट्जरलैंड में एक दुर्लभ बात है। उनकी पैंतालीस वर्षीय पत्नी एक सरल महिला थीं, जिन्हें इस विषय में कोई रुचि नहीं थी, और उस समय उनके चार बच्चे थे जिनकी उम्र तीन से नौ वर्ष के बीच थी।

शुरू में, इन अजीब घटनाओं ने ल्यूथोल्ड परिवार को केवल उलझन में डाल दिया और उन्हें कुछ भी असामान्य होने का संदेह नहीं हुआ। लेकिन जब घर और अस्तबल के अंदर और आसपास वस्तुओं के हिलने-डुलने, गायब होने और फिर से प्रकट होने और अन्य स्पष्ट रूप से शरारती हरकतों के लिए किसी मानवीय शक्ति का पता नहीं चला, तो ल्यूथोल्ड को एहसास हुआ कि वह एक भूत-प्रेत के शिकार हैं और उन्होंने घटनाओं को नोट करना शुरू कर दिया।

12 नवंबर, 1960 और 20 अगस्त, 1961 के बीच, उन्होंने अपनी "भूतिया डायरी" में कम से कम 104 अलग-अलग प्रविष्टियाँ कीं। ये प्रविष्टियाँ संक्षिप्त, सटीक और बिना किसी तर्कसंगत व्याख्या के थीं। उन्होंने इसे दूसरों के चिंतन के लिए छोड़ दिया। उनकी पहली प्रविष्टि 12 नवंबर, 1960 की है:

12 नवंबर, शाम 6 बजे। धातु का बना दूध का बड़ा डिब्बा पश्चिम दिशा में 3 गज खिसक गया है। उसी समय खिड़की पर पत्थर फेंके जा रहे हैं—वहाँ कोई नहीं है।

13 नवंबर, शाम 6 बजे। 18 लीटर दूध से भरा दूध का डिब्बा गायब हो गया। हमें वह अस्तबल के एक दूर कोने में फिर से मिला।

14 नवंबर, शाम 6 बजे। पड़ोसी आइचेनबर्गर का छाता स्टैंड गायब हो जाता है और सीढ़ियों पर आमतौर पर रखा रहने वाला खुरचनी बाहर दीवार के सहारे पड़ा हुआ मिलता है।

उसी दिन, आधे घंटे बाद। अस्तबल से दो जूते गायब हो गए और बाद में आलू के रैक के पीछे चारागाह में मिले। पड़ोसी श्रीमती आइचेनबर्गर हमारा सूअर का चारा रखने वाला बाल्टी लेकर आईं, जो उन्हें तहखाने में उनके छाता स्टैंड के बगल में मिला था! मेरी पत्नी ने सूअरों को मुश्किल से दस मिनट पहले ही चारा खिलाया था और बाल्टी को अस्तबल में छोड़ दिया था। वह तहखाने तक कैसे पहुँची?

अब हर दिन कुछ न कुछ गायब हो जाता है, अपनी सामान्य जगह से हटकर किसी अनजान जगह पर दिखाई देता है। किसान के दैनिक कार्यों में अत्यंत आवश्यक दुहने के उपकरण जैसी चीजें भी अपनी सही जगह पर नहीं होतीं और इससे खेत का सामान्य जीवन अस्त-व्यस्त हो जाता है।

दो साइकिलों के टायरों में अचानक हवा निकल जाती है। यह एक और असुविधा है, क्योंकि स्विस लोग साइकिलों का खूब इस्तेमाल करते हैं। इनमें से ज़्यादातर घटनाएं शाम 6 या 7 बजे के आसपास होती हैं। ल्यूथोल्ड ने शरारती तत्वों की हर संभावना का जायज़ा लिया। उनके अपने परिवार और घरवाले हमेशा अहम मौकों पर मौजूद रहते थे। गाँव छोटा है और आस-पास मंडरा रहे अजनबियों की नज़र से बचना नामुमकिन है, कम से कम इतनी बार तो नहीं।

ल्यूथोल्ड के घर में भूत-प्रेत संबंधी या अन्य रहस्यमय गतिविधियों के लिखित नोट्स का ध्यानपूर्वक अध्ययन करते हुए, मुझे एहसास हुआ कि इस मामले की जांच करना निश्चित रूप से ज़रूरी है। इसलिए, मैंने किसान को फोन किया और हमने अगली दोपहर मिलने का समय तय किया। स्विस टेलीविजन नेटवर्क ने मेरे काम में काफी दिलचस्पी दिखाई थी, हालांकि उन्होंने माशवांडेन मामले या किसी अन्य मानसिक जांच के बारे में कभी नहीं सुना था। एक अमेरिकी ने ही इस पूरे मामले को उनके ध्यान में लाया और आखिरकार प्रोडक्शन हेड जैकब फिशर अनिच्छा से मेरे साथ एक टीम भेजने के लिए सहमत हुए।

"लेकिन हम इसके लिए भुगतान नहीं करेंगे, आप समझ रहे हैं ना," उन्होंने सावधानीपूर्वक स्विस मितव्ययिता के साथ कहा।

अगली दोपहर, मैं और मेरी पत्नी दो न्यूज़-रील रिपोर्टरों के साथ एक स्टेशन वैगन में सवार हुए, जिनमें से एक कैमरा संभाल रहा था और दूसरा साउंड उपकरण। हम ज़्यूरिख़ के बाहरी इलाके से होते हुए, कुछ पहाड़ियों को पार करते हुए शहर के पश्चिम में खुले मैदान में पहुँचे। हमें माशवांडेन पहुँचने में एक घंटे से ज़्यादा समय लगा, यह एक ऐसा गाँव है जहाँ बहुत कम लोग, खासकर अमेरिकी, जाते हैं। जब हम ल्यूथोल्ड फार्महाउस पहुँचे, तो हमारा इंतज़ार हो रहा था। जब टेलीविजन वाले अपना उपकरण लगाने लगे, तो मैंने बिना देर किए पॉल ल्यूथोल्ड से उनके घर में घटी भूतिया घटनाओं में से सबसे यादगार घटना के बारे में पूछा।

“मैं और मेरी पत्नी घर के अंदर थे। अचानक दरवाजे पर दस्तक हुई, ऐसा लगा जैसे किसी कठोर वस्तु से दस्तक दी गई हो। मेरी पत्नी रसोई में थी। उसने अपना काम छोड़कर बाहर देखा। बाहर कोई नहीं था। थोड़ी देर बाद फिर दस्तक हुई। नौकरानी नीचे अपने कमरे में थी और उसने भी किसी को नहीं देखा। मेरी पत्नी वापस अपने काम पर चली गई। थोड़ी देर बाद तीसरी बार दस्तक हुई। इस बार वह सतर्क हो गई और दरवाजे के पास खड़ी रही। दस्तक की आवाज सुनते ही वह तुरंत बाहर कूद गई।”

मैंने पूछा, "क्या उसने कुछ देखा या किसी को देखा?"

"उसने लगभग एक गज लंबा लकड़ी का एक टुकड़ा लगभग एक फुट की ऊंचाई से जमीन पर गिरते हुए देखा।"

"आपका मतलब है कि लकड़ी का एक टुकड़ा अपने आप हवा में घूम रहा है?"

“हां। लकड़ी की छड़ी हवा में अपने आप लटकी हुई थी। कोई उसे फेंककर भाग नहीं सकता था। और तो और, दिन का उजाला था।”

मैंने लकड़ी की छड़ी का निरीक्षण किया। यह लकड़ी का एक भारी टुकड़ा था, जिसका वजन शायद आधा पाउंड होगा।

“यह सब कैसे शुरू हुआ, श्रीमान ल्यूथोल्ड?” मैंने पूछा, और उन्होंने अपनी डायरी निकाली और मुझे उसमें लिखी एक प्रविष्टि दिखाई:

18 नवंबर, शाम 5:15 बजे। दूध के डिब्बे का ढक्कन खलिहान के अंदर घास के मैदान पर पड़ा मिला। पंद्रह मिनट पहले मैंने इसे अस्तबल में वहीं छोड़ दिया था।

उन्होंने आगे कहा, "अगले दिन, ढक्कन फिर से कूड़ेदान में मिला।"
“बहुत सुंदर,” मैंने कहा। “क्या मैं किताब देख सकता हूँ?”
सभी प्रविष्टियाँ एक व्यवस्थित, नैदानिक ढंग से एक के बाद एक दर्ज की गईं, जैसे किसी चिकित्सा इतिहास में होता है। फर्क सिर्फ इतना था कि मरीज अदृश्य था।

19 नवंबर, सुबह 5 बजे। मैंने साइडर प्रेस का मोटर प्लग में लगाया और उसे अपने दूध दुहने के काम में लगा दिया। अचानक, गौशाला के बीचोंबीच एक जलता हुआ जूता पड़ा मिला। दूध दुहने की बाल्टी पानी के कुंड में तैर रही थी। मैंने साइडर प्रेस को देखने का फैसला किया। तहखाने में पहुँचते ही मुझे मोटर से अजीब सी आवाज़ें सुनाई दीं। मैंने देखा कि प्लग निकला हुआ था और केबल लगभग चार गज पीछे खींची हुई थी।

उस दिन भूत के लिए काफी व्यस्त दिन था। सुबह 7:30 बजे ल्यूथोल्ड ने अपना पहला भोजन समाप्त किया और अस्तबल में लौट आया।

मैंने बत्ती जलाई और बिना पिसे हुए मक्के से भरा एक डिब्बा लाकर खलिहान के अंदर, अस्तबल की ओर जाने वाले दरवाजे के सामने रख दिया। नौकरानी एल्फी, थोड़ी दूर चाराघर में दुहने के उपकरण धो रही थी। मैं थोड़ी देर के लिए बाथरूम गई, और जब लौटी तो देखा कि बत्ती बुझी हुई है और बिना पिसे हुए मक्के का डिब्बा गायब है। मुझे वह खलिहान के बीचोंबीच उल्टा पड़ा मिला, और उसके बगल में एक झाड़ू पड़ी थी, जो पहले वहाँ नहीं थी।

लेकिन उस व्यस्त सुबह की कहानी यहीं खत्म नहीं हुई। आधे घंटे बाद श्रीमती ल्यूथोल्ड खलिहान में आईं और उन्होंने पूछा कि उनकी घड़ी कहाँ है।
"यह हमेशा वहीं रहता है," ल्यूथोल्ड ने कुछ चिढ़कर जवाब दिया, "खिड़की के कुंडी पर, जहाँ मैं मवेशियों को साफ करते समय इसे हमेशा लटकाता हूँ।"
नहीं, उसकी पत्नी ने जवाब दिया और घड़ी और चेन को उसकी आँखों के सामने लटका दिया। उसने उन्हें अभी-अभी अस्तबल के सामने एक दूध के डिब्बे के ऊपर पाया था।

उसी शाम उनकी एक गाय बच्चे को जन्म देने वाली थी। इसलिए, इस अवसर पर सभी उपलब्ध सहायकों का उपस्थित होना आवश्यक था। लेकिन भूत-प्रेत उन्हीं के बीच मौजूद था।

रात के 9 बजे। प्रसव में सहायता के लिए निम्नलिखित लोग उपस्थित थे: स्कूल शिक्षक स्ट्रिकलर, मैक्स स्टुडर जूनियर, वर्नर सीडलर, मेरी पत्नी, नौकरानी एल्फी, मेरा बेटा पॉल और मैं अस्तबल में थे। दुहने वाली मशीन का नल हमारी आँखों के सामने से गायब हो गया! हमने उसे ढूंढा और आखिरकार रबर के निप्पल रखने वाले एल्यूमीनियम के शेल्फ में छिपा हुआ पाया। मेरी पत्नी ने एल्फी को घर में ताला लगाने के लिए भेजा, जबकि हम सब यहाँ थे। नौकरानी लौटी, चाबी गायब थी। बाद में हमें वह बाहर खिड़की की चौखट पर मिली। हमने उसे अंदर ताले में ही छोड़ दिया था।

आधी रात तक सब कुछ शांत हो गया था। बछड़ा पैदा हो चुका था और ल्यूथोल्ड परिवार सोने चला गया। लेकिन अजीबोगरीब घटनाएँ रुकी नहीं थीं। सूअरबाड़े की तरफ से एक तेज़ सीटी की आवाज़ आ रही थी। यह आवाज़ समय-समय पर दिशा बदलती रहती थी। घर के सामने कुछ लोग अभी भी जाग रहे थे, उन्हें भी यह आवाज़ सुनाई दे रही थी। नौकरानी एल्फी ने आवाज़ों की शिकायत की। जैसे ही वह घर से बाहर निकली, सीटी की आवाज़ बंद हो गई। रात के 2 बजे तक आखिरकार सब कुछ शांत हो गया।

मैंने श्री ल्यूथोल्ड से वह राखदान दिखाने को कहा जिसमें दूध की बोतल का ढक्कन मिला था और वह आलू का डिब्बा भी दिखाने को कहा जिसमें वह बाद में मिला। आलू के डिब्बे का ढक्कन लगभग बीस पाउंड का होगा। दूध की बोतल का एल्युमिनियम का ढक्कन उसके अंदर रखने वाले व्यक्ति में काफी ताकत होनी चाहिए। उसे खोलने के लिए दो लोगों को खींचना पड़ा।

कुछ दिनों तक सब कुछ शांत रहा। फिर रहस्यमयी घटनाएं दोबारा शुरू हो गईं।

1 दिसंबर, शाम 6:30 बजे। मैं दूध दुहने के काम के लिए अस्तबल का दरवाजा खोलता हूँ। सब कुछ सामान्य है। कुछ देर बाद मेरी पत्नी आती है और वही दरवाजा खोलती है। इस बार बाहर से दरवाजे पर एक घास का कांटा टिका हुआ है। "बिल्ली के लिए प्लेट कहाँ है?" मेरी

पत्नी जानना चाहती है। "हमेशा की तरह दूध के डिब्बे के बगल में," मैं जवाब देता हूँ। लेकिन ऐसा नहीं है। मेरी पत्नी को प्लेट कूड़े के ढेर के ऊपर मिलती है। लाइट अपने आप जलती-बुझती है।

मनमाने ढंग से जलती-बुझती बत्तियाँ भूत-प्रेतों से जुड़ी पुरानी घटनाएँ हैं। रॉकलैंड काउंटी के भूतिया मामले में, मैंने 'घोस्ट हंटर' में इसी तरह की घटनाओं का वर्णन किया था, जिनसे डेंटन वॉकर के घर में ठहरे एक ब्रॉडवे संगीतकार बेहद परेशान हो गए थे।
जाहिर है, स्विस भूत ने अस्तबल में लगी रोशनी की उपयोगिता का पता लगा लिया था, क्योंकि इसके बाद बिजली के उपकरणों से जुड़ी घटनाओं की एक श्रृंखला घटित हुई।

2 दिसंबर, सुबह 5:15 बजे। लाइट थोड़ी देर के लिए अपने आप बंद हो जाती है। बिल्ली के लिए रखी प्लेट फिर से गायब हो जाती है और कल की तरह कूड़े के ढेर पर मिलती है। मैं उसे वापस कूड़े के ढेर पर रख देता हूँ। अचानक, खलिहान की लाइट अपने आप जल जाती है। वहाँ कोई नहीं है जिसने लाइट जलाई हो।

वह दिन ल्यूथोल्ड परिवार के लिए काफी महत्वपूर्ण साबित हुआ, क्योंकि उसी दिन उनके शांत वातावरण में पहली बार एक अनोखी दृश्य घटना घटी। दरवाजे पर दस्तक और उसके बाद श्रीमती ल्यूथोल्ड द्वारा हवा में लटकी लकड़ी की छड़ी की खोज की घटना, जिसका वर्णन पहले किया जा चुका है, उसी दिन सुबह लगभग 10:15 बजे हुई थी।
स्विट्ज़रलैंड के छोटे कस्बों और गांवों में शनिवार का दिन आमतौर पर शांत रहता है। लेकिन इस बार ऐसा नहीं है। ल्यूथोल्ड की डायरी आगे लिखती है:
3 दिसंबर, सुबह 7:35 बजे। अचानक खलिहान की बत्ती जल उठी। मैं देखने गया तो पाया कि घास के गोदाम की बत्ती भी जल रही है। मैंने दोनों बत्तियाँ बुझाईं और अस्तबल की ओर चल पड़ा। तभी मुझे घास के गोदाम में खटखटाहट की आवाज़ सुनाई दी। मैं देखने गया, पर वहाँ कोई नहीं था। बाहर उजाला हो रहा था, इसलिए मैंने अस्तबल की बत्ती भी बुझा दी, पर अचानक वह फिर से जल उठी। मैं खाद बाँटने में व्यस्त था। मैं अंदर गया और बत्ती फिर से बुझा दी। थोड़ी देर बाद वह फिर से जलने लगी। उस समय ट्रैक्टर चालक वर्नर फ्री वहाँ से

गुज़र रहा था। उसने बत्ती जलते हुए देखी। ज़ाहिर है, वहाँ कोई नहीं था जो ऐसा कर सकता था।

4 दिसंबर, सुबह 8 बजे। खलिहान में बत्तियाँ अपने आप जल उठीं। एल्फी अस्तबल के सामने खड़ी थी और उसने पूछा कि क्या सब शांत है। अब 8:30 बज रहे थे। मैंने मज़ाक में जवाब दिया, "भूत चला गया।" कुछ ही सेकंड में अस्तबल की बत्ती फिर से जल उठी, हालाँकि अंदर घुसकर ऐसा करने वाला कोई नहीं था।

एक समय में, चार बत्तियाँ एक साथ जल रही थीं, हालाँकि इसके लिए किसी मानवीय हस्तक्षेप को जिम्मेदार नहीं ठहराया जा सकता था। कई हफ्तों तक ल्यूथोल्ड परिवार भूत-प्रेत द्वारा बत्तियाँ चालू-बंद करने के खेल से परेशान रहा।

“आखिरकार एक दिन मैंने कहा,” ल्यूथोल्ड ने समझाया, “यह अजीब बात है कि बत्तियाँ अपने आप जलती तो हैं, लेकिन कभी बुझती नहीं हैं। मैंने अभी अपनी बात खत्म ही की थी कि मैं अस्तबल में घोर अंधेरे में खड़ा था—बत्ती बंद हो चुकी थी।”

“जैसे कि भूत सुन रहा हो?” मैंने कहा।

ल्यूथोल्ड ने सिर हिलाया और थोड़ा शर्मिंदा होकर मुस्कुराया। "लेकिन हफ्ते के अंत में स्थिति वास्तव में और खराब हो गई," उसने कहा और मुझे 8 दिसंबर की प्रविष्टि दिखाई।

8 दिसंबर, सुबह 7:40 बजे। एल्फी मुर्गियों को दाना चुगने जाती है, लेकिन दाना रखने वाला बर्तन गायब है। आखिरकार उसे वह खलिहान के दरवाजे के सामने मिलता है। सजावट के लिए इस्तेमाल किए जाने वाले छह कद्दू आंगन में बिखरे पड़े हैं। खरगोशों का पिंजरा खुला है और दो खरगोश बाहर दौड़ रहे हैं। खरगोशों के दाने की ट्रे गायब है। बाद में मेरी पत्नी को वह गाड़ी घर में एक ठेले पर मिलती है।

जाहिर है, भूत को न सिर्फ इंसानों से बल्कि पालतू जानवरों से भी नफरत थी। अगले दिन हालात और भी बदतर हो गए।

9 दिसंबर, सुबह 7:30 बजे। मुर्गियों का दाना रखने वाला बर्तन फिर गायब है। बिल्ली की प्लेट फिर कूड़े के ढेर पर पड़ी है। एल्फी दूसरे बर्तन में नया दाना तैयार करती है, उसे थोड़ी देर के

लिए सीढ़ियों पर रखती है और रसोई में चली जाती है। कुछ ही सेकंड बाद जब वह वापस आती है, तो नया दाना भी गायब होता है। वह मुझे इसके बारे में बताने आती है। मैं उसके साथ वापस जाता हूँ और देखता हूँ कि दाना सीढ़ियों के पीछे एक बोरी से ढका हुआ छिपा हुआ है।

ल्यूथोल्ड परिवार गुस्से से उबलने लगा था। श्रीमती ल्यूथोल्ड ने उस छुपकर रहने वाले भूत को पकड़ने का फैसला किया। उन्होंने मुर्गी के दाने का बर्तन घर के दरवाजे के पास खिड़की की चौखट पर रखा और उसमें एक नायलॉन की डोरी बाँध दी, जिसके दूसरे सिरे पर एक छोटी घंटी थी। उन्होंने उसे प्रवेश द्वार से दूर जाने वाले गलियारे में रख दिया। उन्हें लगा कि इस तरह बर्तन की कोई भी हलचल सुनाई देगी।

सुबह 9:30 बजे तक बर्तन दोनों दिशाओं में दो बार हिल चुका था, फिर भी इसमें किसी मानवीय हस्तक्षेप का पता नहीं चल सका!

उसी दोपहर भूत ने उनके साथ एक नया ही खेल खेला। जब श्रीमती ल्यूथोल्ड दोपहर करीब 2 बजे खलिहान में दाखिल हुईं, तो उन्होंने देखा कि तरह-तरह के जूते इधर-उधर बिखरे पड़े थे, और उनमें से एक में मवेशियों की चार रसीदें थीं, जिन्हें श्री ल्यूथोल्ड ने उसी सुबह एक ऊंचे शेल्फ पर रखा था। ऐसा लगता है कि अगले कुछ दिनों में भूत की हरकतें और तेज हो गईं। अब वह सिर्फ किसी के न देखने पर चीजों को हिलाने से संतुष्ट नहीं था, बल्कि लोगों की मौजूदगी में भी ऐसा करने लगा।

10 दिसंबर, सुबह 9:30 बजे। घास के गोदाम में बत्ती अपने आप जल जाती है। मुर्गियों के दाने का खोया हुआ बर्तन आखिरकार पुराने अस्तबल के दरवाजे के पास मिल जाता है। शाम 6:30 बजे खलिहान में बत्ती जलती है, लेकिन वहां कोई नहीं होता। मैं उसे बुझा ही रहा था कि एल्फी अंदर आती है और मुझे बताती है कि दुहने वाला ब्रश गायब है। हम हर जगह ढूंढते हैं, लेकिन कुछ नहीं मिलता। तभी मेरी नज़र उस छाते पर पड़ती है जो आमतौर पर घर के दरवाजे के सामने होता है, सूअर के बाड़े की खिड़की की चौखट पर लटका हुआ! एल्फी उसे उतारकर घर के प्रवेश द्वार के पास रख देती है, और हम दुहने वाले ब्रश की तलाश जारी रखते हैं। अचानक, छाता पुराने अस्तबल के पास ज़मीन पर हमारे सामने पड़ा मिलता है!

खलिहान की बत्तियां तीन बार जलती हैं और मुझे उन्हें बुझाना पड़ता है। ज़ाहिर है, उस समय वहां कोई नहीं होता।

आप सोच रहे होंगे कि गायब हुआ दुहने वाला ब्रश कहाँ गया? अगली सुबह, रविवार को ही, श्रीमती ल्यूथोल्ड सूअरों को दाना खिला रही थीं। दाने की एक थैली में उन्हें कुछ सख्त और ठोस सा महसूस हुआ जो सूअरों के दाने जैसा नहीं था। आपने सही अनुमान लगाया। यह दुहने वाला ब्रश था। ल्यूथोल्ड परिवार ब्रश वापस पाकर खुश था, लेकिन उनकी खुशी मुर्गियों के दाने के बर्तन के गायब होने से धूमिल हो गई। अगर सूअर नहीं तो मुर्गियों को ही भूत सता रहा था!

श्री ल्यूथोल्ड ने गंभीर स्वर में कहा, "मुझे वह सुबह अच्छी तरह याद है। मैं पौने आठ बजे के आसपास अस्तबल में खड़ा था, तभी बत्ती बुझी और फिर जल उठी, और थोड़ी देर बाद ही घास के ढेर में किसी चीज के जोर से खटखटाने की आवाज आई, और उसी समय खलिहान में बत्ती जल उठी! मुझे समझ नहीं आ रहा था कि पहले कहां जाऊं।"

जिन लोगों को शक था कि सीधी-सादी नौकरानी एल्फी इन शरारतों को अंजाम दे रही है, उन्हें यह एहसास नहीं था कि वह जानबूझकर इनमें शामिल नहीं थी। वह खुद घर के अन्य लोगों के साथ इन शरारतों का शिकार थी।

उदाहरण के लिए, 12 दिसंबर को उसने दूध की गाड़ी को खलिहान के उस कोने में रख दिया जहाँ वह आमतौर पर खड़ी रहती थी। लेकिन कुछ ही मिनटों बाद, उसने उसे मुर्गीघर के सामने पाया।

उसी दिन, पॉल ल्यूथोल्ड का फिर से भूत से सामना हुआ। “सुबह के 9:15 बज रहे थे और मैं सीढ़ियों से ऊपर जा रहा था। अचानक मेरे सामने फल रखने वाले कमरे की खिड़की ज़ोर से बंद हो गई। न तो हवा का कोई झोंका था, न ही हवा का कोई बहाव।”

मैंने कहा, "आपकी पत्नी ने गायब हुए सेब के सॉस के बारे में कुछ बताया था। यह दिलचस्प लग रहा है। आखिर हुआ क्या था?"

“13 दिसंबर को,” ल्यूथोल्ड ने अपनी डायरी से याद करते हुए जवाब दिया, “मेरी पत्नी ने गरम सेब की चटनी को ठंडा करने के लिए घर के दरवाजे के पास वाली खिड़की की चौखट पर

रख दिया। मैं दोपहर करीब 4:30 बजे खेतों से घर लौटा और यह देखकर आश्चर्यचकित रह गया कि घर के सामने वाले आंगन में पुराने अस्तबल की चौखट पर सेब की चटनी रखी थी। मैं रसोई में गया और एल्फी से पूछा कि उन्होंने चटनी कहाँ रखी है। 'अरे, रसोई की खिड़की पर, बिलकुल।' मैंने चुपचाप उसे दिखाया कि वह अब कहाँ है। उसने सिर हिलाया और चटनी उठाकर वापस रसोई की खिड़की की चौखट पर रख दी। कुछ मिनट बाद, हमने देखा कि वह अभी भी वहीं है या नहीं। वह वहीं थी, लेकिन जहाँ हमने उसे रखा था, उससे लगभग एक फुट खिसक गई थी।"

लेकिन यह तो बस शुरुआत थी। दिनभर अजीबोगरीब घटनाएं होती रहीं। दुहने वाली मशीन के कुछ हिस्से गायब हो जाते और अजीब-अजीब जगहों पर फिर से दिखाई देते। बत्तियाँ अपने आप जलती-बुझती रहीं, मानो किसी इंसान ने उन्हें छुआ ही न हो। ये स्विच बड़े, काले चीनी मिट्टी के बने हैं और इमारत की दीवारों पर कंधे की ऊंचाई पर लगे हैं। बत्तियों को अलग-अलग जलाने या बुझाने का कोई और तरीका नहीं है।

शाम 7:45 बजे, भोजन के समय, पूरा परिवार और नौकर घर के मुख्य कमरे में थे। खलिहान और अन्य इमारतें सुरक्षित रूप से बंद थीं। अचानक, खलिहान और मुर्गीघर की बत्तियाँ अपने आप जल उठीं। अगली सुबह, अजीबोगरीब घटनाओं की लंबी सूची में एक और अप्रत्याशित घटना जुड़ गई।

14 दिसंबर, सुबह 6:50 बजे। मुर्गीघर से निकलते ही मुझे दूसरे बाड़े की तरफ से घंटी की तेज़ आवाज़ सुनाई दी, जो लगभग आधे मिनट तक बजती रही। लेकिन, ज़ाहिर है, वहाँ कोई घंटी नहीं थी।

श्रीमती ल्यूथोल्ड ने अपने पति से कहा, "यह हद से ज्यादा हो रहा है। हमें इसके बारे में कुछ करना होगा।"

उसने मुर्गी के दाने का बर्तन उठाया और उसे वापस सीढ़ियों पर रख दिया, जहाँ से वह कुछ दिन पहले गायब हो गया था। फिर उसने बर्तन में एक नायलॉन की डोरी बाँधी, जिसके दूसरे सिरे पर एक छोटी घंटी थी; उसने डोरी को दरवाजे की ओर जाने वाले गलियारे में रख दिया

और दरवाजा लगभग बंद कर दिया, लेकिन पूरी तरह नहीं। इस तरह, अगर कोई डोरी को खींचे तो वह आसानी से हिल सकती थी।

फिर परिवार ने नाश्ता किया। दस मिनट बाद उन्होंने रस्सी को देखा। वह कम से कम एक फुट बाहर की ओर खिंची हुई थी और बर्तन से लगभग दो इंच की दूरी पर कटी या फटी हुई थी। बर्तन खुद उस पायदान से एक पायदान नीचे था जिस पर श्रीमती ल्यूथोल्ड ने उसे रखा था!

कभी-कभी भूत कृपा कर देता था: उसी दिन, सुबह लगभग 8 बजे, नौकरानी एल्फी लकड़ी लाने के लिए एक बाल्टी लेकर निकली। जैसे ही वह खरगोश के पिंजरे के पास से गुजरी, तहखाने, घास के गोदाम और मुर्गीघर में बत्तियाँ जल उठीं। एल्फी ने जल्दी से बाल्टी नीचे रख दी और जाँच करने लगी। जब वह उसे वापस उठाने लौटी, तो वह गायब हो गई थी। वह लकड़ी के ढेर के सामने, कुछ दूरी पर खड़ी थी—जहाँ उसकी ज़रूरत थी!

ल्यूथोल्ड की रिपोर्ट के अनुसार, बेटी एलिजाबेथ को भी अपने हिस्से के अनुभव प्राप्त हुए:

14 दिसंबर, शाम 5:30 बजे। एलिजाबेथ घर के ऊपरी हिस्से में व्यस्त थी। तभी उसे बाहर किसी चीज़ के गिरने की आवाज़ सुनाई दी। वह तुरंत नीचे भागी और देखा कि छह सजावटी कद्दू आंगन में इधर-उधर बिखरे पड़े थे, यहाँ तक कि सुअर के बाड़े तक भी। एक घंटे बाद जब वह घर से बाहर निकली, तो उसने देखा कि कालीन साफ करने वाला डंडा और झाड़ू किसी तरह घर के अंदर से निकलकर दरवाजे के बाहर लटके हुए थे!

और यह सिलसिला चलता रहा। हर दिन कुछ न कुछ अपनी जगह बदलता रहता था। मुर्गी के दाने का बर्तन, या जूते, या दूध का डिब्बा। बत्तियाँ खुशी-खुशी जलती-बुझती रहती थीं। कोई न कोई दरवाजे पर दस्तक देता है, लेकिन बाहर कभी कोई नहीं होता। कोई दस्तक देकर नज़र से ओझल नहीं हो सकता—घर और खलिहान के बीच का आँगन और गाँव की गली में आसानी से किसी इंसान के आने की जाँच की जा सकती है। दूध की गाड़ी गायब होती है और फिर दिखाई देती है। शौचालय की खिड़की कब्ज़े से उखड़कर ज़मीन पर पड़ी होती है। गोबर इकट्ठा करने वाला फावड़ा खलिहान के सामने से शौचालय के अंदर चला जाता है। सूअरबाड़े का गेट किसी अनदेखे हाथ से खुल जाता है और सूअर मुर्गीघर के चारों ओर

चक्कर लगाते हैं। बत्तियाँ जलती-बुझती रहती हैं। यहाँ तक कि क्रिसमस भी इन गतिविधियों को रोक नहीं पाया।

24 दिसंबर, दोपहर 3 बजे। मैं और मेरा चचेरा भाई अर्नेस्ट गौत्शी अस्तबल में बातें कर रहे थे, तभी अचानक दोपहर के बीचोंबीच बत्ती जल उठी। शाम 5:30 बजे, मैं गायों को चारा देने के लिए खलिहान में गया, तभी मैंने देखा कि पुराने खलिहान में बत्तियाँ अपने आप जल उठी हैं। मैं तुरंत वापस गया और देखा कि कुत्ता बत्ती के स्विच पर बुरी तरह भौंक रहा है! मैं घर गया यह देखने के लिए कि कोई बाहर है या नहीं, लेकिन कोई भी एक पल के लिए भी बाहर नहीं निकला था। मेरा बेटा पॉल मेरे साथ खलिहान में लौटा। आधे घंटे पहले उसी ने कुत्ते को बाहर बाँधकर छोड़ा था। अब वह खलिहान के अंदर बँधा हुआ है, और खलिहान का दरवाजा कसकर बंद है। कुत्ता अंदर कैसे आया?

जाहिर है, अब उस प्रेत ने अपना ध्यान कुत्ते की ओर मोड़ना शुरू कर दिया था।

25 दिसंबर, सुबह 7:30 बजे। कुत्ता अस्तबल में बंद पाया गया। जबकि आधे घंटे पहले ही एल्फी ने उसे खाना खिलाने के बाद बाहर खुले में घूमने के लिए छोड़ दिया था।

2 फरवरी, सुबह 5 बजे। मैं अस्तबल गया और मेरा कुत्ता, जो खलिहान में सो रहा था, मेरे पीछे-पीछे अस्तबल में आ गया। वह शोर मचाने लगा और एक बछड़ा डर गया, इसलिए मैंने कुत्ते से कहा, "तुरंत बाहर जाओ!" जैसे ही मैं उसे बाहर निकालने के लिए खलिहान का दरवाजा खोलने के लिए मुड़ा, मैंने देखा कि वह पहले से ही खलिहान के बाहर था। उसके लिए दरवाजा किसने खोला? मैंने नहीं।

बच्चों का ध्यान भी उस अप्रिय आत्मा की ओर आकर्षित हुआ। उसी दिन, 2 फरवरी को, ल्यूथोल्ड ने अपनी डायरी में लिखा:

2 फरवरी, शाम 6:15 बजे। तीन स्लेज, जो सामान्यतः खलिहान के कोने में ढेर करके रखी जाती हैं, खाद के कुंड के पार पाई जाती हैं।

ल्यूथोल्ड परिवार ने अपने इस अनदेखे "आगंतुक" को सहजता से स्वीकार कर लिया, और हमेशा यही उम्मीद करते रहे कि यह जिस तरह आया था उसी तरह चला जाएगा। उनके आध्यात्मिक पड़ोसी ने ज़ोर देकर कहा कि "लियो भूत," जैसा कि उन्होंने इसे नाम दिया था,

किसी न किसी तरह एल्फी से जुड़ा हुआ है, इस बात को ल्यूथोल्ड परिवार ने तुरंत खारिज कर दिया, क्योंकि वे नौकरानी की ईमानदारी और इसमें उसकी कोई संलिप्तता न होने की पुष्टि करने की पूरी स्थिति में थे। यह घटना बिना रुके जारी रही।

14 मार्च, सुबह 6 बजे। भोजन कक्ष की खिड़की कब्ज़े से उखड़ी हुई मिली और घर के सामने एक गमले में पड़ी हुई पाई गई। सुबह 7:30 बजे। मेरी चप्पल खलिहान से गायब हो गई और अस्तबल के दूसरे हिस्से में जूतों की अलमारी के नीचे मिली।

29 मार्च, सुबह 7:30 बजे। कुत्ता आंगन में लेटा हुआ था। कुछ मिनट बाद उसे पुराने अस्तबल में बंद कर दिया गया। घर में सभी से पूछताछ की गई और सबकी मौजूदगी का पता लगाया गया। किसी ने भी ऐसा नहीं किया होगा। शाम 7 बजे, एल्फी और मैंने चार बाल्टियों में मलाई निकाली और उन्हें सुअरबाड़े के दरवाजे के पास रख दिया। रात 9 बजे हमें चारों बाल्टियाँ दरवाजे के ठीक सामने मिलीं।

एल्फी की शादी अप्रैल में हुई थी और संभवतः उसकी "अप्रतिबद्ध" ऊर्जा अब भूत-प्रेत संबंधी गतिविधियों में उपयोग करने के लिए स्वतंत्र नहीं थी। लेकिन माशवांडेन का भूत मानसिक शोधकर्ताओं द्वारा निर्धारित मानक नियमों का पालन नहीं करता था। एल्फी के होने या न होने के बावजूद, गड़बड़ी जारी रही।

9 अगस्त, सुबह। अपने जूते साफ करते समय, मुझे भीतरी तलवे के नीचे एक छोटी सी टाई पिन मिली, जिसे मैंने तीन महीने से नहीं देखा था।

10 अगस्त, शाम 5:30 बजे। खनिज नमक की बोरी में एक कांटा फंसा रह गया। उसे निकालने के लिए दो आदमियों की जरूरत पड़ी। आधे घंटे पहले वही कांटा अभी भी खलिहान में ही था।

19 अगस्त, सुबह 4:45 बजे। हमारे यहाँ काम करने वाले इतालवी नागरिक एंजेलो का एक जूता खो गया। उसे वह जूता खलिहान के अंदर तीन गज की दूरी पर मिला और उसके ऊपर एक भारी पिचफोर्क रखा हुआ था।

कुछ और हफ्तों तक इसी तरह की घटनाएं होती रहीं, फिर धीरे-धीरे ल्यूथोल्ड फार्म के आसपास फिर से शांति छा गई।

मैंने घर, अस्तबल और खलिहान का चारों ओर जायजा लिया। मैंने परिवार के सभी सदस्यों से बात की, सिवाय उस इतालवी व्यक्ति के, जिसने उनके जीवन में बहुत कम समय बिताया था, और एल्फी के, जो बहुत पहले वैवाहिक जीवन के सुख के लिए चली गई थी।

मैंने पूछा, "क्या घर में किसी की हिंसक मौत हुई थी?"

पॉल ल्यूथोल्ड सीनियर ने एक पल सोचा। “लगभग दस साल पहले हमारे यहाँ एक इतालवी कर्मचारी काम करता था। उसे अपनी मोटरसाइकिल पर बहुत गर्व था, लेकिन वह उसका बीमा नहीं करवा सकता था। एक दिन उसने कुछ दोस्तों के साथ छुट्टियाँ मनाने इटली लौटने का फैसला किया। जल्दी निकलने के लिए वे सुबह करीब तीन बजे निकलेंगे। पिछली रात मेरी माँ ने उसे चेतावनी दी, ‘सावधान रहना, और कहीं तुम सिर खुजा कर घर न लौट आओ।’ उसने कंधे उचकाते हुए जवाब दिया, ‘अगर मैं मर भी जाऊँ, तो भी कोई फर्क नहीं पड़ता।’”

अगली सुबह वह एक घंटा देरी से निकला। जब वह सेंट गोटहार्ड पहुँचा, तो उसकी मोटरसाइकिल में खराबी आ गई। बाकी साथी आगे निकल गए और पहाड़ की चोटी पर उसका इंतज़ार करने का वादा किया। वह एक गैराज में गया और अपनी मोटरसाइकिल ठीक करवाई, क्योंकि वह अपने साथियों को याद करने के लिए दृढ़ था। अगर वह वहीं रुक जाता तो बेहतर होता, क्योंकि कुछ ही समय बाद एक चट्टान सड़क पर गिर गई और उसकी मौके पर ही मौत हो गई।

“और आपको लगता है कि शायद उसी की आत्मा इन सब का कारण बन रही है?” मैंने पूछा।

“नहीं, मुझे नहीं पता,” ल्यूथोल्ड ने मुझे आश्वस्त करते हुए कहा। “मैं तो बस यह सोच रहा हूँ कि यह कौन कर रहा है।”

मुझे लगा कि ल्यूथोल्ड को अपने पड़ोसियों पर कुछ शक था। क्या कोई सक्रिय अध्यात्मवादी ऐसी घटनाओं को अंजाम दे सकता है? मैंने उसे आश्वस्त किया कि वह अध्यात्मवादी तो नहीं है, लेकिन शायद कोई काला जादूगर हो सकता है।

घर या खेत में किसी की भी हिंसक मौत नहीं हुई थी। लेकिन फिर, हो सकता है कि उस जगह पर कोई पुराना घर रहा हो जिसके बारे में हमें कुछ भी पता नहीं है। ल्यूथोल्ड के बच्चे अब किशोरावस्था से आगे निकल चुके हैं, जहां उनकी अप्रयुक्त ऊर्जा ने इस घटना को घटित करने में योगदान दिया हो सकता है।

मेरा अनुमान है कि एल्फी और बच्चे दोनों ही उस ऊर्जा का स्रोत थे। जब एल्फी चली गई और केवल बच्चे ही घर में रह गए, तो ये घटनाएँ धीरे-धीरे गायब हो गईं। तब से ये घटनाएँ दोबारा नहीं हुईं। इनके दोबारा होने की संभावना भी नहीं है, जब तक कि कोई और अनजाने में ऐसी ऊर्जा का स्रोत बनकर घर में न आ जाए। इन गड़बड़ियों के पीछे छिपी हुई आत्मा शायद अभी भी कहीं मंडरा रही हो, बेकाबू होकर, किसी और मौके की प्रतीक्षा कर रही हो। अगर ऐसा हुआ, तो श्री ल्यूथोल्ड यकीन मानिए कि भूत शिकारी भी वहाँ मौजूद होगा!

*156

मिलब्रे पोल्टरजिस्ट मामला

सैन फ्रांसिस्को के बाहरी इलाके में स्थित एक छोटे से धूपदार शहर मिलब्रे की पहाड़ी पर बसे एक शानदार, आधुनिक घर में भूत-प्रेत का साया हो सकता है, यह सोचकर शायद ही कोई हैरान होगा। भूत-प्रेत की घटनाएं आमतौर पर जर्मनी में होती हैं और इनमें घर के किसी किशोर या भावनात्मक रूप से उदासीन व्यक्ति को शामिल किया जाता है। यह बच्चा कोई शरारत नहीं कर रहा होता; बल्कि एक विक्षिप्त व्यक्ति, जिसका शरीर अब मौजूद नहीं है, उस बच्चे का इस्तेमाल शरारतें करने के लिए कर रहा होता है।

मुझे मिलब्रे मामले के बारे में एक युवती से पता चला जो उस घर में रहती थी, लेकिन बाद में उसने सोचा कि अब वह इतनी बड़ी हो गई है कि उसका अपना घर हो सकता है और इसलिए वह पास के ही एक कस्बे बर्लिंगेम में चली गई। अब बीस साल की जीन ग्रासो ने हाई स्कूल की पढ़ाई पूरी कर ली है और उसे उन चीजों के बारे में जानने की बहुत जिज्ञासा है जिन्हें वह समझा नहीं सकती। जैसे कि ईएसपी (अंतर्ज्ञान, संवेदनशीलता और संवेदनशीलता)।

1964 में, उन्हें एक ऐसा अनुभव हुआ जिसने उन्हें विशेष रूप से परेशान किया क्योंकि यह जीवन के उन सामान्य अनुभवों से मेल नहीं खाता था जो उन्हें स्कूल में सिखाए गए थे।

उस समय वह बिस्तर पर थी, सोने से ठीक पहले, या जैसा कि वह बड़े ही काव्यात्मक ढंग से कहती है, "नींद के खालीपन में डूबने से ठीक पहले।" मिस ग्रासो के पास शब्दों की कमी नहीं है। उनकी दुनिया उनके लिए बहुत वास्तविक है और उसमें कल्पनाओं के लिए न के बराबर जगह है।

फिर भी, वह वहीं था। कुछ उसे सोने नहीं दे रहा था। उसे पता भी नहीं चला कि क्या हो रहा है, तभी उसने अपने नंगे पैर अपने बेडरूम के फर्श पर चलते हुए देखे; उसने टेलीफोन का रिसीवर उठाया और उसमें झट से बोली—“जीनी, क्या हुआ? क्या तुम्हें चोट लगी?” टेलीफोन की घंटी नहीं बजी थी। फिर भी, उसकी सबसे अच्छी दोस्त, जो उसके लिए बहन जैसी थी, दूसरी तरफ थी। उसका एक कार एक्सीडेंट हो गया था जिसमें उसकी गाड़ी सड़क से उतरकर एक स्टील के खंभे से टकरा गई थी, लेकिन मामूली चोट के अलावा वह बिल्कुल ठीक थी।

जीन ग्रासो को गर्म बिस्तर से उठकर उस फोन का जवाब देने के लिए क्या मजबूर कर दिया जो अभी तक बजा ही नहीं था, उस व्यक्ति से नाम लेकर बात करने के लिए जिसने अभी तक "हैलो" नहीं कहा था, और उस दुर्घटना के बारे में पूछताछ करने के लिए जिसके बारे में उसे अभी तक किसी ने बताया ही नहीं था?

काले बालों वाली यह महिला इतालवी और ग्रीक मूल की है और एक दूध कंपनी में स्थानीय प्रतिनिधि के रूप में काम करती है। मुझे ऐसा लगा कि वह न तो ज्यादा सोचती-विचारती है और न ही बहुत भावुक है, और हिस्टीरिया का तो नामोनिशान भी नहीं है। उसके जीवन में घटी रहस्यमयी घटनाओं ने उसे भावनात्मक या भयभीत करने के बजाय बौद्धिक रूप से ज्यादा आकर्षित किया।

जब वह सोलह साल की थी, तब वह और पांच अन्य लड़कियां एक बेडरूम में लोकप्रिय इनडोर गेम, ओइजा बोर्ड खेल रही थीं। जीन और मिशेल डि जियोवानी, जो उन लड़कियों में से एक थीं, बोर्ड चला रही थीं, तभी वह अपने आप हिलने लगा, मानो किसी ऐसी शक्ति द्वारा धकेला जा रहा हो जो उनसे कहीं अधिक शक्तिशाली हो।

ओइजा बोर्ड पर अब भी बहुत संदेह होने के कारण, जीन ने किसी आध्यात्मिक उपस्थिति का संकेत या प्रमाण मांगा। उसे तुरंत जवाब मिला: दीवार पर चार ज़ोरदार दस्तकें। दीवारों के पीछे कोई नहीं था जो ऐसा कर सकता था। अचानक, कमरा बहुत ठंडा हो गया, और वे घबरा गए और उन्होंने तुरंत ही "आत्माओं से संपर्क" का कार्यक्रम रोक दिया।

तब से उसे अपने माता-पिता के घर में अजीबोगरीब आवाजें सुनाई देती रही हैं। ये आवाजें कदमों की आहट से लेकर किसी चीज के दीवार या फर्श पर फेंके जाने जैसी धमाकों की आवाजों तक होती हैं। इन आवाजों का कोई तर्कसंगत स्पष्टीकरण कभी नहीं मिला।

जीन के बरलिंगेम में अपने अलग घर में चले जाने के बाद, वह कभी-कभार सप्ताहांत में अपनी माँ के साथ रहने के लिए घर लौट आती थी। उसकी माँ ऊपर की मंजिल पर बने बैठक-भोजन कक्ष में सोती हैं, ताकि उन्हें हृदय रोग होने के कारण शयनकक्ष तक सीढ़ियों से बार-बार ऊपर-नीचे जाने की परेशानी न हो।

जब कभी जीन सप्ताहांत में घर पर होती थी, तो वह अपनी मां के पुराने शयनकक्ष में सोती थी, जो ऊपरी मंजिल पर उसके लिए निर्धारित कमरे के ठीक नीचे स्थित था।

एक रात, जब जीन बिस्तर पर जाग रही थी, तो उसने ऊपर से कदमों की आहट सुनी। वे छत पर चल रहे थे, "जैसे कि उन्हें कहीं जाना न हो।"

अपनी माँ को साँस लेने में तकलीफ महसूस करते हुए वह दौड़कर ऊपर गई, लेकिन वहाँ उसने अपनी माँ को बिस्तर पर गहरी नींद में सोते हुए पाया। इतना ही नहीं, अगली सुबह जब उससे कदमों की आहट के बारे में पूछा गया, तो उसने अपनी बेटी को आश्वासन दिया कि उसने कुछ नहीं सुना। "क्या वे किसी पुरुष के कदमों की आहट थी या किसी महिला के?" मैंने जीन ग्रासो से यह सवाल तब पूछा जब हमने जाँच पूरी होने के बाद इस बारे में चर्चा की।

मिलब्रे पोल्टरजिस्ट मामला—मालिक की बेटी मानसिक धुंध से घिरी हुई थी

“एक आदमी का,” उसने बिना झिझक के जवाब दिया।

कभी-कभार जब वह ऊपर भोजन कक्ष में होती है, तो उसकी नज़र के कोने से उसे कुछ दिखाई देता है—एक चमक—कोई चीज़ या कोई व्यक्ति हिलता-डुलता हुआ—और जैसे ही वह उस पर ध्यान केंद्रित करती है, वह गायब हो जाता है। ज़ाहिर है, वह इन सब बातों को अपनी कल्पना ही मानती है।

“जब मैं सीढ़ियों से नीचे गलियारे में आती हूँ, तो मेरी रीढ़ में सिहरन दौड़ जाती है,” लड़की ने कहा, “जैसे मेरा आगे बढ़ने का मन ही न हो। मुझे हाल ही में पता चला कि मेरी माँ को भी वहाँ ऐसा ही महसूस होता है।”

मुझे बाद में एहसास हुआ कि यही वह जगह थी जहाँ मेरी मानसिक तस्वीर खींची गई थी। क्या ये दोनों मानसिक शक्तियों से परिपूर्ण व्यक्ति, माँ और बेटी, जीवित कैमरों की तरह काम कर रही थीं?

"क्या आपको कभी-कभी अकेले होने पर किसी की उपस्थिति का अहसास होता है?"

"हां, मेरी मां के बेडरूम में मुझे ऐसा लगता है कि कोई मुझे देख रहा है और मैं मुड़कर देखती हूं लेकिन वहां कोई नहीं होता।"

मैंने उससे बगीचे और तहखाने के आसपास के इलाके के बारे में पूछा। जीन ने स्वीकार किया कि वह वहाँ अक्सर नहीं जाती थी क्योंकि बगीचे में उसे बेचैनी महसूस होती थी। वह बिना किसी तर्कसंगत कारण के, जहाँ तक संभव हो, वहाँ जाने से बचती थी।

एक रात जब वह सप्ताहांत अपने माता-पिता के घर पर बिता रही थी और आधी रात के कुछ देर बाद सोने ही वाली थी, तभी दूर से आती कुछ आवाज़ों से उसकी नींद खुल गई। आवाज़ें साफ़ सुनाई दे रही थीं, लेकिन जब उसने ध्यान से सुनने के लिए उठकर देखा, तो वे आवाज़ें बंद हो गईं। वह वापस सो गई और इस घटना को अपनी कल्पना समझ बैठी। लेकिन ठीक एक हफ़्ते बाद, उसी दिन, उसकी नींद फिर से एक इंसान की आवाज़ से टूट गई। इस बार यह एक छोटी बच्ची या औरत की आवाज़ थी जो रोते हुए कह रही थी, "मदद करो...मेरी मदद करो!"

वह इतनी तेज़ी से उठी कि उसे अपने कानों में अपने दिल की धड़कन सुनाई देने लगी। ज़रूर उसकी माँ ने उसे बुलाया होगा। फिर उसे याद आया कि उसकी माँ सांता क्रूज़ गई हुई थी। घर में कोई नहीं था जो मदद के लिए पुकार सकता था। उसने बाहर देखा। आधी रात के बहुत बाद का समय था और आसपास के सभी घर अंधेरे में डूबे हुए थे। लेकिन जो आवाज़ उसने अभी सुनी थी, वह बाहर से नहीं आई थी। वह आवाज़ वहीं, उसी भूतिया कमरे में उसके साथ थी!

मैंने जीन की मां, श्रीमती एड्रियाना ग्रासो का साक्षात्कार लेने का फैसला किया, जो एक शांत और मिलनसार महिला हैं और मानसिक मामलों में उनका संदेह हमेशा से काफी मजबूत रहा है।

उन्होंने बताया, “यह घर हमारे पास 1957 से है, लेकिन जब हमने इसे खरीदा था तब यह पहले से ही पांच साल पुराना था। पिछले मालिकों का नाम स्टोवेल था और जब हमने इसे खरीदा तब वे इसे खोने वाले थे। मुझे उनके बारे में इससे ज्यादा कुछ नहीं पता।”

जिस पहली रात वह घर में सोने गई, उसी रात किसी चीज़ ने उसे सोने से रोकने की कोशिश की। कोई चीज़ उसे बार-बार ऊपर की ओर धकेल रही थी। बेडरूम की ओर जाने वाली सीढ़ियों के पहले पायदान पर, किसी चीज़ ने उसे आगे बढ़ने से रोक दिया। उसने तय किया कि वह इसका मुकाबला करेगी। उस पहले अनुभव के बाद हर बार उसे यही महसूस होता था कि उसे नीचे नहीं आना चाहिए!

"जब मैं ऊपर होती हूं तो मुझे ऊपर से कदमों की आहट सुनाई देती है, और जब मैं ऊपर होती हूं तो मुझे नीचे से कदमों की आहट सुनाई देती है, और वहां कभी कोई नहीं होता जो ये आवाजें पैदा कर रहा हो," उसने शिकायत की।

कई बार वह चीखते हुए जाग जाती थी, जिससे उसकी बेटी घबराकर दौड़ती हुई आती थी। उसे शांत करने के लिए वह उसे यकीन दिलाती थी कि उसने बुरा सपना देखा था। लेकिन यह सच नहीं था। कई बार उसे ऐसा महसूस होता था जैसे कोई उसे पकड़कर उसकी हड्डियाँ कुचलने की कोशिश कर रहा हो। किसी ने उसकी बाहों को जकड़ रखा हो। आखिरकार, उसे बत्ती जलाकर सोना पड़ा, और इससे उसे कुछ आराम मिला।

एक जोरदार धमाके ने परिवार को यह सोचने पर मजबूर कर दिया कि उनके घर में क्या गड़बड़ है। श्रीमती ग्रासो ने ऊपर से आवाज़ सुनी और उनके बेटे एलन ने भी उसी समय ऊपर से आवाज़ सुनी, उसे लगा कि आवाज़ नीचे से आ रही है - लेकिन बाद में पता चला कि आवाज़ न तो यहाँ से आ रही थी और न ही वहाँ से!

श्रीमती ग्रासो ने आगे कहा, "कई बार दरवाजे की घंटी बजती थी और बाहर कोई नहीं होता था, लेकिन मैं हमेशा यही मानती थी कि ये पड़ोस के बच्चे हैं जो हम पर शरारत कर रहे हैं।"

तेज़ आवाज़ें, जैसे कोई भारी चीज़ गिर गई हो, सुनकर वह जाँच करने के लिए गैराज में गई, लेकिन कुछ भी नहीं गिरा था, कुछ भी अपनी जगह से हिला हुआ नहीं था। गैराज और सामने का दरवाज़ा दोनों बंद थे। कोई भी अंदर नहीं आया था। फिर भी आवाज़ें आती रहीं; हमारे आने से ठीक तीन दिन पहले, श्रीमती ग्रासो सुबह करीब एक बजे बाथरूम में किसी के "डिब्बा खोलने" की आवाज़ से जाग गईं, जो एक धातु का डिब्बा था। इसके अलावा, धड़धड़ाहट की आवाज़ भी आ रही थी। उन्होंने सोचा, मेरा बेटा रात के इस समय अपनी फ़िल्मों पर काम क्यों कर रहा है? उन्होंने सोचा कि डिब्बा खोलने की आवाज़ें मोशन पिक्चर फ़िल्म के डिब्बों की हैं, जो उनके बेटे के पास बहुत सारे थे। लेकिन उसने ऐसा कुछ नहीं किया था।

जल्द ही एलन और मिस्टर ग्रासो को भी ज़ोरदार आवाज़ें सुनाई देने लगीं, हालाँकि वे यह मानने को तैयार नहीं थे कि यह कोई रहस्यमय घटना है। लेकिन जो परिवार भूतों की आवाज़ें एक साथ सुनता है, वह उनका हल भी एक साथ निकालता है—और ग्रासो परिवार इस पूरी बात को लेकर ज़्यादा घबराया हुआ नहीं था। बस उत्सुक था।

इसी समय मैंने मामले की जांच करने का फैसला किया और मैंने जीन ग्रासो को भी यही सलाह दी, जिन्होंने अक्टूबर 1966 के एक बेहद गर्म दिन में अपने माता-पिता के घर के दरवाजे पर हमारा स्वागत किया। सिबिल और मेरी पत्नी कैथरीन के अलावा, दो दोस्त, लोरी क्लर्फ और बिल विन भी हमारे साथ थे। हमारे पास लोरी की कार थी और बिल गाड़ी चला रहे थे।

हम घर में दाखिल हुए और मैंने तुरंत सिबिल से उसकी मानसिक अनुभूतियों के बारे में पूछा। उसे अभी तक खुद को उस माहौल में ढालने का मौका नहीं मिला था और न ही मैंने उसे ग्रासो

परिवार से औपचारिक रूप से मिलने दिया था। इसलिए, अब उसे जो भी अनुभूति होगी, वह उन लोगों या घर के बारे में किसी भी तार्किक धारणा से प्रभावित नहीं होगी जिनसे वह मिली थी।

“घर के निचले हिस्से में कुछ अजीब बात है,” सिबिल ने बेडरूम के फर्श की ओर इशारा करते हुए कहना शुरू किया। घर का निर्माण बड़े ही विचित्र तरीके से किया गया था। क्योंकि ज़मीन एक खाई की ओर ढलान पर थी, इसलिए घर का ऊपरी तल केवल सामने की ओर ही सड़क के स्तर तक पहुँचता था। यहीं पर घर का बैठक कक्ष और प्रवेश द्वार था। नीचे के तल पर बेडरूम थे, और अंत में एक गैरेज और उससे लगा हुआ एक कार्यशाला कक्ष था। इसके नीचे एक तहखाना था, जो पीछे की ओर जाकर खाई के तल को छूता था।

हालांकि, उस समय तक सिबिल और मुझे यह भी नहीं पता था कि घर का कोई निचला हिस्सा भी है या नहीं, लेकिन जीन ग्रासो ने हमें आश्वासन दिया कि ऐसा हिस्सा है। हम तुरंत सीढ़ियों से नीचे उस हिस्से में उतरे जहाँ सिबिल को मानसिक प्रभावों का अनुभव हो रहा था।

हम शयनकक्ष के उत्तरपूर्वी कोने पर रुके, जहाँ घर का पिछला प्रवेश द्वार भी स्थित था, जो एक बंद बरामदे की ओर जाता था, जहाँ से लकड़ी की सीढ़ियों के माध्यम से बाहर भूतल पर उतरा जा सकता था।

"यहाँ तुम्हें क्या महसूस हो रहा है, सिबिल?" मैंने पूछा, क्योंकि मैंने देखा कि वह किसी बात पर पहुँच रही थी।

“मुझे जो भी महसूस हो रहा है, वह इस जगह के नीचे है,” उसने टिप्पणी की। “यह पुरानी नींव से, जमीन से ही आया होगा।”

ऐसा कभी मत कहना कि भूत-प्रेत खोजने वाले धूल भरे तहखानों से कतराते हैं। हम नीचे गए, कैथरीन टेप रिकॉर्डर और एक कैमरा लिए हुए थी। तहखाने में हम पूरी तरह सीधे खड़े नहीं हो सकते थे—कम से कम मैं तो नहीं।

"वो गलियारे के नीचे से जाता है, है ना?" सिबिल ने ऐसे कहा जैसे उसे पता हो।

"जी हां," जीन ग्रासो ने पुष्टि की।

सीढ़ी और मानसिक धुंध

"यहाँ किसी का पीछा किया गया था," सिबिल ने अब टिप्पणी की, "दो आदमियों का... एक ऐसी दुर्घटना जो कभी नहीं होनी चाहिए थी... यहाँ किसी की मौत हो गई... गलत पहचान का मामला।"

मैंने उससे आग्रह किया, "क्या तुम और ला सकती हो?"

“एक आदमी की मौजूदगी का एहसास अभी भी बाकी है,” सिबिल ने धीमी आवाज़ में कहा। “वह पीड़ित है। वह असल में वो व्यक्ति नहीं था। वह पानी के किनारे से ज़मीन के ऊँचे हिस्से की ओर भाग रहा था। वह एक भगोड़ा था।”

सैन फ्रांसिस्को के तटवर्ती इलाके से आने वाला कोई भी व्यक्ति यहां ऊँची जगह पर आ रहा होगा।

वह किससे भाग रहा था?

“कानून...मुझे वर्दी से लगाव है। इसमें न्याय का एक कथित तत्व तो है, लेकिन....”

“उसकी हत्या कितने समय पहले हुई थी?”

“1884.”

“उसका नाम?”

“वासरमैन...मैं इसे इसी तरह समझता हूँ। मुझे यहाँ उनके अंतिम क्षणों का प्रभाव महसूस होता है, लेकिन उनके शरीर का नहीं। वह चाहते हैं कि हम यह जानें कि वह वासरमैन थे, लेकिन वह वासरमैन नहीं जो उस आदमी को चाहिए था।”

वह आपको कैसा दिखता है?

"लाल चेहरा, अजीब तरह से गहरी आंखें... वह यहां तो है लेकिन खास सहयोग नहीं कर रहा है।"

मैंने पूछा, "क्या उसे पता है कि वह मर चुका है?"

मुझे नहीं लगता कि उसे यह बात पता है। लेकिन वह मुझे नोटिस करता है।

मैंने सिबिल से यह संदेश पहुंचाने के लिए कहा कि हम जानते हैं कि वह निर्दोष है।

“मुझे दो नाम पता करने हैं,” सिबिल ने ज़िद करते हुए कहा और स्पेलिंग शुरू कर दी, “पॉट्रीन...P-o-t-t-r-e-n-e...वासरमैन ने मुझे ये नाम बताए हैं...P-o-v-e-y...पोवे...उसने कहा है कि इन्हें ढूंढो...ये वही लोग हैं जिन्होंने उसे मारा था।”

“उनकी हत्या कैसे हुई?”

“उन्हें उसे मारना पड़ा। उन्हें लगा कि वह कोई और है।”

“दूसरे वाले की क्या जरूरत थी?”

“उसे पता नहीं है। दुर्भाग्य से वह यहाँ आ गया।”

"उसका पहले नाम क्या है?"

“जन. जे-ए-एन.”

मेरे बार-बार पूछने पर सिबिल ने यह जानकारी भी प्राप्त की कि यह जान वासरमैन सैन फ्रांसिस्को का मूल निवासी था, उसके पिता का नाम जोहान या जॉन था, और वह 324 एमिल स्ट्रीट पर रहता था।

फिर मैंने अपने सामान्य तरीके से भूत को भगाने की प्रक्रिया शुरू की, धीरे से "दूसरी दुनिया" के बारे में बात की और बताया कि वहां उसका क्या इंतजार कर रहा है।

सिबिल ने मेरी इच्छा उस बेचैन व्यक्ति तक पहुंचाई और बताया कि अब वह अपनी स्थिति समझ गया है।

“उससे कोई परेशानी नहीं है,” सिबिल ने धीरे से कहा। वह भूतों के प्रति बहुत सहानुभूति रखती है।

इसके बाद हम तहखाने से निकलकर वापस सीढ़ियों से ऊपर भूतिया शयनकक्ष में गए, जहाँ मैंने कुछ तस्वीरें लीं; फिर मैं ऊपर बैठक वाले कमरे में गया और कुछ और तस्वीरें लीं—कुल मिलाकर लगभग एक दर्जन ब्लैक एंड व्हाइट तस्वीरें, जिनमें गैराज और सीढ़ियों की कुछ तस्वीरें भी शामिल थीं।

एक हफ्ते बाद जब फिल्म प्रयोगशाला से वापस आई, तो यह जानकर मुझे कितनी खुशी हुई होगी कि दो तस्वीरों में कुछ रहस्यमयी तत्व मौजूद थे। एक तस्वीर, जो शयनकक्ष से ऊपरी मंजिल तक जाने वाली सीढ़ियों की थी, उसमें एक सफेद पदार्थ घने कोहरे की तरह तस्वीर के सामने के दाहिने आधे हिस्से को ढके हुए दिखाई देता है। दूसरी अद्भुत तस्वीर, जो बगल के कमरे में दीवार से टेक लगाकर बैठी श्रीमती ग्रासो की थी, उसमें भी इसी तरह का पदार्थ दर्पण प्रभाव के साथ तस्वीर के सामने के एक तिहाई हिस्से को ढके हुए दिखाई देता है।

एक आकृति का सिर और कंधे प्रतिबिंबित हो रहे हैं, जिसे पहली नज़र में मैंने श्रीमती ग्रासो का समझा। हालांकि, ध्यान से देखने पर पता चलता है कि यह उनसे बिल्कुल अलग है और इसमें घने बाल दिखाई दे रहे हैं, जबकि श्रीमती ग्रासो के बाल सिर से चिपके हुए हैं। श्रीमती ग्रासो ने हल्के रंग की पोशाक के ऊपर गहरे रंग का हाउसकोट पहना हुआ है, जबकि तस्वीर में एक महिला या लड़की सफेद ब्लाउज के ऊपर गहरे रंग की पोशाक या स्वेटर पहने हुए दिखाई दे रही है।

मैंने जीन ग्रासो से कहा कि हमारी यात्रा के बाद घर में होने वाले किसी भी बदलाव की मुझे रिपोर्ट करें।

21 नवंबर 1966 को मुझे उससे फिर से खबर मिली। कदमों की आवाज तो गायब हो गई थी, लेकिन घर में अभी भी कुछ अजीबोगरीब हो रहा था। क्या वहां दो भूत हो सकते थे?

जब से हम वहां थे, तब से जीन ग्रासो और उनकी मां के साथ-साथ उनके भाई, उनकी मंगेतर और यहां तक कि नास्तिक पिता ने भी तेज धमाके, दरवाजों के पटकने की आवाजें और राख के डिब्बे पटकने जैसी आवाजें सुनी हैं, जिनका कोई तर्कसंगत कारण नहीं है। घर का कोई भी हिस्सा इस गड़बड़ी से अछूता नहीं लगता।

स्थिति का जायजा लेने के लिए, हमारे जाने के तुरंत बाद जीन ग्रासो अपनी मां के घर सो गई। रात 11 बजे, धड़धड़ाहट शुरू हुई। लगभग उसी समय श्रीमती ग्रासो अपने तकिए के नीचे तीन बार खटखटाने की आवाज से जाग उठीं। इसके तुरंत बाद नीचे से धड़धड़ाहट की आवाज और एक भारी धातु के डिब्बे के हिलने-डुलने की आवाज सुनाई दी।

जीन के सवालों का जवाब देने से पहले ही मुझे उससे एक और खबर मिली। मिलब्रे स्थित घर में हालात बिल्कुल भी शांत नहीं थे। उसके भाई की मंगेतर एलेन वाशिंग मशीन में कपड़े धो रही थी। उसने दरवाजा बंद कर दिया था ताकि शोर से उसके होने वाले मंगेतर की नींद न टूटे, जो कपड़े धोने के कमरे के बगल वाले बेडरूम में सो रहा था।

अचानक उसे साफ तौर पर किसी के कमरे में जबरदस्ती घुसने की कोशिश करने की आवाज सुनाई दी, और फिर उसे अपने आसपास किसी की मौजूदगी का एहसास हुआ, जिसके कारण वह घबराकर ऊपर की ओर भाग गई।

लगभग उसी समय, जीन और उसकी माँ ने उस मंजिल के नीचे वाले बाथरूम से एक अजीब सी आवाज़ सुनी। जीन नीचे गई और बाथरूम की टाइलों पर एक ब्रश पड़ा हुआ पाया। उस समय नीचे कोई नहीं था। ब्रश अपने आप ही फर्श के बीचोंबीच गिर गया था।

भाई एलन के कमरे में लगी एक तस्वीर अपनी जगह से हट गई, उसे टांगने वाली कील गायब हो गई, और तस्वीर किसी तरह उसकी किताबों की अलमारी के दूसरी तरफ पहुँच गई। फ्रेम काफी भारी था, और अगर तस्वीर सीधे गिर जाती तो अलमारी के पीछे फर्श पर जा गिरती; लेकिन इसके बजाय वह अलमारी के ऊपर दीवार से सटी हुई थी। इससे वह युवक थोड़ा घबरा गया, क्योंकि उसने अब तक रहस्यमय घटनाओं की संभावना को पूरी तरह स्वीकार नहीं किया था, हालाँकि उसने खुद भी कुछ काफी असामान्य चीजें देखी थीं।

इसी बीच, जीन ग्रासो ने बेलमोंट स्थित सैन माटेओ काउंटी पुस्तकालय में मौजूद माइक्रोफिल्म फाइलों को खंगालने में कामयाबी हासिल की। 1884 के समाचार पत्रों में कुछ भी दिलचस्प नहीं मिला, लेकिन फाइलें पूरी तरह से भरी हुई नहीं थीं।

हालांकि, इलाके के एक अन्य समाचार पत्र, रेडवुड सिटी गजेट में एक लेख छपा था, जिसे जीन ग्रासो ने मेरी राय के लिए साझा करना उचित समझा। एक संक्षिप्त लेख में कैप्टन

वॉटरमैन का उल्लेख किया गया है, और यह बताया गया है कि कस्बे के लोग इस बात से खुश हैं कि उनका विधेयक रद्द हो गया और वे इससे छुटकारा पा सके।

इस संभावना को खारिज नहीं किया जा सकता था कि सिबिल ने वासरमैन सुना हो जबकि वास्तव में नाम वॉटरमैन था - कम से कम तब तक नहीं जब तक कि कहीं से रिकॉर्ड में जान वासरमैन की पहचान न हो जाए।

चूंकि भूत ने वर्ष 1884 का जिक्र किया था, इसलिए मैंने सैन फ्रांसिस्को में 1890 में प्रकाशित एच.एच. बैनक्रॉफ्ट की कैलिफोर्निया के इतिहास की पुस्तक में उस वर्ष को देखा, जो उस राज्य के इतिहास का एक प्रभावशाली रिकॉर्ड है।

सातवें खंड में, पृष्ठ 434 और 435 पर, मुझे पता चला कि 1884 के चुनाव के दौरान भारी अनियमितताएं हुई थीं और राजनीतिक परिस्थितियां अराजकता की कगार पर थीं। राज्य के पहले लेफ्टिनेंट गवर्नर और बाद में गवर्नर बने व्यक्ति का नाम आर.डब्ल्यू. वाटरमैन था!

यह बेशक सिर्फ एक अनुमान हो सकता है, सही नहीं। शायद उनका मतलब सचमुच दो "S" वाले वासरमैन से ही था। लेकिन 1882 और 1884 के सैन फ्रांसिस्को डायरेक्टरी (लैंगली की) में मेरी खोज में कोई जान वासरमैन नहीं मिला। हालांकि, 1881 की लैंगली डायरेक्टरी में अर्न्स्ट वासरमैन का नाम दर्ज था, जो वासरमैन ब्रदर्स में एक पार्टनर थे। उनका पता 24 वीं स्ट्रीट और पोट्रेरो एवेन्यू था।

सिबिल ने बताया कि वासरमैन की हत्या पोट्रेन और पोवे नामक दो व्यक्तियों ने की थी। पोट्रेन नाम कहीं भी नहीं मिलता। क्या उसका मतलब पोट्रेरो से था? पोवे नाम, जो कि उतना ही असामान्य है, 1902 के लैंगली संस्करण के पृष्ठ 1416 पर मिलता है।

फ्रांसिस जे. पोवे, कास्ट एंड कंपनी में फोरमैन थे और 1 बेइडमैन स्ट्रीट पर रहते थे। यह बात कुछ आश्चर्यजनक लगती है कि सिबिल लीक ने पोवे जैसा असामान्य नाम सुझाया, भले ही हमारे मामले में यह सही पोवे न हो। वासरमैन ने एमिल स्ट्रीट पर रहने का दावा किया था। सैन फ्रांसिस्को में ऐसी कोई सड़क नहीं थी। हालांकि, लैंगली द्वारा 1884 में सूचीबद्ध एम्मा स्ट्रीट नाम की एक सड़क अवश्य थी (पृष्ठ 118)।

मेरे पास उपलब्ध नगर निर्देशिकाएँ अस्त-व्यस्त हैं और उन्हें खंगालना एक महंगा और कठिन कार्य है। कुछ अन्य रचनाएँ भी हैं जिनसे हमारे उस व्यक्ति की पहचान के सुराग मिल

सकते हैं। शायद यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि मेरे पास सक्षम शोध सहायक उपलब्ध नहीं हैं जो इतने बड़े कार्य में सहायता कर सकें, और यह कि रहस्यमय बयानों की कभी-कभार मिलने वाली सटीक पुष्टि सौभाग्य पर अधिक निर्भर करती है, न कि मेरे पास लाए गए सभी मामलों की पूर्ण जांच पर।

सौभाग्यवश, मुक्त हुए भूतों को इसकी परवाह नहीं है। वे सच्चाई पहले से ही जानते हैं।

लेकिन मुझे ग्रासो परिवार से और भी खबरें सुनने को मिलनी तय थीं।

24 जनवरी, 1967 को सब कुछ ठीक था। सिवाय एक बात के, और वह घटना वास्तव में क्रिसमस की पूर्व संध्या पर घटी थी।

जीन की भाभी ऊपर बैठक में सोफे पर सो रही थीं। सुबह के लगभग दो बज रहे थे और उन्हें नींद नहीं आ रही थी, क्योंकि उन्होंने बहुत ज़्यादा कॉफ़ी पी ली थी। जब वह लेटी हुई थीं, पूरी तरह जाग रही थीं, तभी अचानक उन्होंने एक लंबे, हट्टे-कट्टे आदमी को देखा, जो कुछ धुंधला सा था, सीढ़ियों के ऊपर से क्रिसमस ट्री की ओर आ रहा था, मानो उसके पास रखे उपहारों का निरीक्षण कर रहा हो। पहले तो उन्हें लगा कि वह जीन का भाई है, लेकिन जैसे ही उनकी नज़र उस आकृति पर पड़ी, उन्हें एहसास होने लगा कि वह कोई इंसान नहीं है। अब उन्होंने उसका चेहरा देखा और पाया कि उसकी दाढ़ी थी। जब उन्हें अपनी गलती का एहसास हुआ और उन्होंने प्रतिक्रिया देना शुरू किया, तो वह अजनबी वहीं से गायब हो गया जहाँ वह कुछ पल पहले खड़ा था। क्या वह अलविदा कहने आया था और क्या क्रिसमस ट्री ने उसे अपने किसी पुराने क्रिसमस की याद दिला दी थी?

इससे पहले कि भाभी एलेन, जीन ग्रासो को अपने अजीब अनुभव के बारे में बता पातीं, जीन ने खुद उनसे पूछा कि क्या उन्होंने उस रात ऊपर से आती उन कदमों की आहट सुनी थी, जिनकी वजह से उनकी नींद उड़ गई थी। उन्होंने समय का मिलान किया और ऐसा प्रतीत हुआ कि कदमों की आहट और वह प्रेत-दर्शन लगभग एक ही समय में घटित हुए थे।

कुछ दिनों तक सब शांत रहा, मानो भूत सोच-विचार कर रहा हो। लेकिन फिर बेचैनी से इधर-उधर घूमने का सिलसिला शुरू हो गया, शायद इसलिए कि उसके भीतर कुछ जागृत हो गया था और वह अपनी स्थिति को समझने लगा था।

इस समय परिवार के सभी सदस्यों ने ध्यान खींचने वाली आवाज़ें सुनीं। श्रीमती ग्रासो ने घुसपैठिए से बात करने का फैसला किया और उससे कहा कि मैं उसकी मृत्यु के रिकॉर्ड को सही कर दूंगी—मैं दुनिया को बता दूंगी कि वह वास्तव में कोई बुरा आदमी नहीं था, बल्कि गलत पहचान का मामला था।

यह बात उस अनदेखे आगंतुक को अवश्य प्रसन्न कर गई होगी, क्योंकि चीजें फिर से शांत होने लगीं, और कम से कम 6 फरवरी तक, घर हलचल भरे सैन फ्रांसिस्को के बाहरी इलाके में एक सामान्य उपनगरीय जीवन में रम गया था।

लेकिन जब तक यह किताब छप नहीं जाती, ग्रासो परिवार चैन की सांस नहीं ले पाएगा। हमेशा यह संभावना बनी रहती है कि भूत को लगे कि मैं दुनिया को जल्दी खबर नहीं दे रहा हूँ। लेकिन यह सरासर बेतुका लगता है। आखिर, उसे हमारे ध्यान में आने से पहले बहुत लंबा इंतजार करना पड़ा था। और मैंने उसे आपातकालीन स्थिति में छपवाने के लिए कई भूतों को पीछे छोड़ दिया है। तो ठीक है: मिलब्रे के मिस्टर वासरमैन वो मिस्टर वासरमैन नहीं हैं जिनकी वे तलाश कर रहे थे, चाहे वे कोई भी हों। उन्होंने व्यर्थ ही एक भूत का पीछा किया।

*157

बारबेरी लेन के भूत

“मैं न्यूयॉर्क के राई में एक ऐसे घर को जानती हूँ जहाँ भूत रहता है,” चित्रकार मैरी मेलिकियन ने मुझसे कहा, और उनकी आवाज़ में खुशखबरी देने की खुशी झलक रही थी। मैरी जानती थीं कि मैं एक भूतिया घर को खोजने के लिए कितना उत्सुक था, खासकर ऐसे घर को जो अब भी भूतिया हो।

"एक भूत," मैरी ने दोहराया और रहस्यमय ढंग से कहा, "एक भूत जिसे दरवाजे पटकना पसंद है।"

मैंने मैरी से सारी जानकारी हासिल करने की कोशिश की। उनकी एक दोस्त मशहूर चित्रकार मौली गुइयन थीं, जिन्हें राय में श्रीमती जॉन स्माइथ के नाम से जाना जाता था। मौली और उनके पति, जो एक वास्तुकार थे, न्यू हेवन रेलमार्ग के पुराने मार्ग के किनारे एक पहाड़ी पर

बने उन्नीसवीं सदी के मध्य के एक विशाल घर में रहते थे, जो बाद के वर्षों में बने घरों से घिरा हुआ था। स्माइथ्स का घर उस ज़मीन पर बना पहला घर था, मूल मैनर हाउस, जिसे लगभग 1860 में जेरेड बी. पेक ने बनवाया था।

मैंने श्रीमती स्माइथ से अगले सप्ताह, अगस्त 1963 में, घर देखने का प्रबंध किया। मेरी पत्नी कैथरीन और मुझे श्रीमती स्माइथ ने ट्रेन स्टेशन पर रिसीव किया, जिनके पति भी हमारा स्वागत करने के लिए साथ आए थे। घर तक की ड्राइव (जिसे मूल रूप से "द सीडर्स" कहा जाता था, लेकिन अब बारबेरी लेन पर केवल एक नंबर के रूप में जाना जाता है) में पाँच मिनट से भी कम समय लगा, फिर भी ऐसा लगा जैसे आप किसी दूसरी दुनिया में प्रवेश कर गए हों—उस चांदनी रात में जब स्टेशन वैगन उस चमचमाते सफेद 100 साल पुराने घर के सामने रुकी, जिसे स्माइथ परिवार 1957 की गर्मियों से अपना घर कहता आ रहा था, तो वहाँ का वातावरण इतना शांत और ग्रामीण था।

चार मंजिला यह इमारत मुझे किसी दूसरी दुनिया से जुड़ी विक्टोरियन शैली की इमारतों की याद दिलाती थी। भूतल पर इसके चारों ओर एक चौड़ा बरामदा था, और घने पेड़ इसे लोगों की नजरों और घुसपैठ से बचाते थे।

विशाल बैठक कक्ष उत्तम प्राचीन वस्तुओं से सुरुचिपूर्ण ढंग से सजा हुआ था और पूरे घर में हमें मौली गुइयन द्वारा चित्रित अद्भुत सजीव चित्र दिखाई दिए, जो घर की सजावट में स्वाभाविक रूप से घुलमिल गए थे। यह एक आलीशान हवेली थी, न्यूयॉर्क से केवल एक घंटे की दूरी पर, लेकिन मेट्रो के शोरगुल से इतनी दूर और शांत थी मानो यह सुदूर दक्षिण या पूर्वी अमेरिका में स्थित हो। हम आराम से बैठ गए। फिर मैं सीधे मुद्दे पर आया।

मैंने पूछा, "यह भूत। यह असल में क्या करता है और आपने घर में पहली बार कुछ असामान्य कब देखा?"

यह मेरी हमेशा की बातचीत की शुरुआत होती है। मौली गुइयन ने हमें सब कुछ बताने में बहुत खुशी महसूस की। उनके पति कुछ काम निपटाने के लिए थोड़ी देर के लिए बाहर गए थे।

“हम 1957 की एक भीषण गर्मी के दिन—जुलाई में—इस घर में आए थे,” उन्होंने याद करते हुए कहा। “लगभग एक हफ्ते बाद—मुझे याद है कि वह एक बेहद गर्म रात थी—हमने एक दरवाजा जोर से बंद होने की आवाज सुनी। मेरे पति और मैंने दोनों ने इसे सुना।”

"कुंआ?"

“लेकिन उस समय घर में हमारे अलावा कोई नहीं था,” मॉली ने बड़े ही गंभीर लहजे में कहा। “उसके बाद हमने कई बार यह आवाज़ सुनी। शायद छह या सात बार। एक बार रात करीब दस बजे मैंने सामने का दरवाज़ा एक खास चरमराहट के साथ खुलते और बंद होते सुना। उस समय माँ हमारे साथ रह रही थीं और मेरी तबीयत ठीक नहीं थी, इसलिए एक नर्स मेरी देखभाल कर रही थी। मैंने ‘माँ’ कहकर पुकारा, यह सोचकर कि वह थोड़ा जल्दी घर आ गई होंगी, लेकिन कोई जवाब नहीं आया। तब से मैंने सामने का दरवाज़ा कई बार खुलते सुना है, लेकिन वहाँ कभी कोई नहीं होता।”

तो क्या यह सामने का दरवाजा है?

“नहीं, हमेशा नहीं। कभी-कभी यह सामने का दरवाजा होता है और कभी-कभी दूसरी मंजिल पर यह दरवाजा होता है। आओ, मैं तुम्हें दिखाता हूँ।”

मोली हमें घुमावदार सीढ़ियों से दूसरी मंजिल पर ले गई, जहाँ कई छोटे कमरे थे, जो विक्टोरियन काल के ठोस फर्नीचर से खूबसूरती से सजे हुए थे। घर के पिछले हिस्से की ओर जाने वाले गलियारे के एक तरफ एक छोटा सा कमरा था, और उसके ठीक सामने वह दरवाजा था जिसके ज़ोर से बंद होने की आवाज़ सुनाई दी। यह एक भारी लकड़ी का दरवाजा था, जो एक संकरी घुमावदार सीढ़ी की ओर जाता था, और वह सीढ़ी आगे तीसरी मंजिल तक जाती थी। यहाँ मोली गुइयन ने अपने लिए एक शानदार स्टूडियो बनाया था, जो लगभग पूरी जगह घेरे हुए था।

“जनवरी 1962 में एक दिन,” उसने बताया, “मैं नीचे रसोई में एक कीटनाशक विशेषज्ञ से बात कर रही थी, तभी मुझे एक दरवाजा जोर से बंद होने की आवाज सुनाई दी—ऐसा मुझे लगा। हालांकि, उस समय घर में कोई नहीं था, नीचे सिर्फ हम दोनों ही थे।”

"आपके और आपके पति के अलावा, क्या किसी और ने भी ये अजीबोगरीब आवाजें सुनी हैं?"

मोली ने जल्दी से सिर हिलाया।

“मेरे यहाँ एक आदमी काम करता था। उसने कहा, ‘श्रीमती स्माइथ, जब भी मैं घर में अकेला होता हूँ, मुझे दरवाजा जोर से बंद होने की आवाज सुनाई देती है!’”

"किसी और को?"

“रोबर्टा गिलन नाम की एक स्कॉटिश सफाईकर्मी महिला। वह हैरिसन, न्यूयॉर्क में रहती है। एक बार वह मेरे पास आई और बोली, ‘क्या तुमने अभी-अभी दरवाजा जोर से बंद किया?’ बेशक, मैंने ऐसा नहीं किया था।”

अब हम दूसरी मंजिल के गलियारे से सटे एक छोटे से कमरे में बैठे थे। रोशनी धुंधली थी और हवा में नमी थी। घर में इतनी खामोशी छाई हुई थी कि मुझे लगभग ऐसा लग रहा था जैसे मैं किसी के ज़ोर से बंद होने की आवाज़ सुन सकूँ। मौली को अभी और भी कुछ बताना था।

“एक बार ग्यारह साल की एंड्री नाम की एक छोटी लड़की हमसे मिलने आई और कुछ ही सेकंड में चिल्ला उठी—‘मम्मा, इस घर में भूत है!’”

हमारी मेज़बान ने माना कि उनमें कुछ हद तक भविष्य देखने की क्षमता है, जिसके कभी-कभी हास्यास्पद परिणाम भी निकलते हैं। कई साल पहले, जब उनके प्रेमी ने तय समय पर आने से इनकार कर दिया, तो उन्होंने सपने में उसे एक गोरी लड़की के साथ स्पष्ट रूप से देखा। बाद में उसने लापरवाही से अपनी अनुपस्थिति का कारण बताया, लेकिन मेज़बान ने उस गोरी लड़की के वर्णन से उसे पकड़ लिया और उसने सच कबूल कर लिया।

घर में रहने के दो साल बाद, मौली को अस्थमा हो गया, जो कि बुढ़ापे में होने वाले आम अस्थमा जैसा होता है। अजीब बात यह थी कि कुछ कमरों में ही उसे तकलीफ होती थी, बाकी कमरों में बिल्कुल नहीं। शुरुआत में यह एक तरह की एलर्जी की तरह था, और धीरे-धीरे बढ़ता गया, यहाँ तक कि पूरी तरह से अस्थमा में बदल गया। हालाँकि दोनों कमरे अगल-बगल थे, लेकिन एक कमरे में सोने से उसकी हालत बिगड़ जाती थी, जबकि दूसरे कमरे में सोने से वह पूरी तरह से ठीक हो जाती थी!

मैंने पूछा, "क्या आपको कोई और आवाज सुनाई दी—मेरा मतलब है, दरवाजे के जोर से बंद होने की आवाज के अलावा?"

“जी हां। कुछ समय पहले ही हमने यहां एक डिनर पार्टी आयोजित की थी, और मेहमानों में बैंकर्स ट्रस्ट कंपनी के उपाध्यक्ष जॉन गार्डनर भी शामिल थे।”

अचानक उसे नीचे वाले बड़े कमरे की खिड़की पर किसी के खटखटाने की आवाज़ सुनाई दी। उन्होंने उस आवाज़ को नज़रअंदाज़ करने की कोशिश की, लेकिन गार्डनर ने भी उसे सुन लिया।

“क्या कोई आपकी खिड़की पर दस्तक दे रहा है?” उसने पूछा।

उन्हें यकीन दिलाया गया कि कुछ नहीं हुआ है। बाद में उन्होंने मौली को एक तरफ ले जाकर उससे कहा, "मैंने खटखटाहट की आवाज़ें साफ़ सुनीं।" मौली बस मुस्कुराई।

अंततः स्माइथ परिवार ने इन सभी घटनाओं का स्पष्टीकरण पाने के लिए अमेरिकन सोसाइटी फॉर साइकिक रिसर्च से संपर्क किया। लेकिन सोसाइटी इस मामले में कोई जल्दबाजी नहीं दिखा रही थी। उन्होंने मौली को एक पत्र लिखने का सुझाव दिया, जो उसने लिखा भी, लेकिन फिर भी उन्होंने कोई कार्रवाई नहीं की।

मैंने परिसर का अच्छी तरह निरीक्षण किया—संकरी सीढ़ियों से चढ़कर मॉली गुइयन के स्टूडियो में गया जहाँ कुछ बेहतरीन पोर्ट्रेट ऑयल पेंटिंग्स टंगी हुई थीं। प्रसिद्ध ब्रिटिश हस्तियों की उनकी पेंटिंग्स की हाल ही में एक प्रदर्शनी लगी थी और घर उन्हीं पेंटिंग्स से भरा हुआ था (उनकी अधिकांश रचनाएँ ऑर्डर पर बनाई गई थीं और संग्रहों, संग्रहालयों और निजी घरों में बिखरी हुई हैं)।

स्टूडियो के पीछे वाले हिस्से में सीढ़ियों के बगल में एक छोटा सा शयनकक्ष था, जो स्पष्ट रूप से नौकरों का कमरा रहा होगा, क्योंकि पूरी मंजिल मूल रूप से नौकरों के क्वार्टर के रूप में ही बनी थी। घर में कुल सोलह कमरे थे।

तब तक श्री स्माइथ भी हमारे साथ आ चुके थे और मैंने उन्हें अपना उद्देश्य समझाया। क्या उन्होंने कभी घर में कुछ असामान्य देखा था?

“हाँ,” उसने धीरे-धीरे और सोच-समझकर बोलते हुए कहा। “इस घर में तरह-तरह की आवाज़ें आती हैं और ये सामान्य आवाज़ें नहीं हैं—मेरा मतलब है, ऐसी आवाज़ें जिन्हें आप समझा सकें।”

"उदाहरण के लिए?"

“एक रात मैं यहाँ ऊपर छोटे से बेडरूम में सो रहा था,” उसने कहा, और उसने पीछे की ओर बने नौकरों के कमरे की ओर इशारा करते हुए कहा, “तभी मुझे कदमों की आहट सुनाई दी। ये किसी बुजुर्ग व्यक्ति के कदम थे।”

लेकिन वहां कोई नहीं था, उसने जोर देकर कहा।

जेरेड पेक, जिन्होंने 1860 में इस घर का निर्माण कराया था, की मृत्यु 1895 में हो गई और यह घर उनकी संपत्ति के हिस्से के रूप में विभिन्न किरायेदारों को किराए पर दिया जाने लगा। 1910 में, स्टुवेसेंट वेनराइट ने यह संपत्ति खरीदी। अगले वर्ष, उनकी पूर्व पत्नी, श्रीमती कैटलिन ने इसे उनसे खरीद लिया और 1920 के दशक में अपनी मृत्यु तक इसमें रहीं।

पूर्व श्रीमती वेनराइट एक रंगीन व्यक्तित्व वाली महिला निकलीं। धनी परिवार में जन्मीं, उनका स्वभाव बहुत गुस्सैल था और उनके घर में नौकर कभी ज्यादा देर तक नहीं टिकते थे।

श्री स्माइथ ने कहा, "उसे दरवाजे पटकना बहुत पसंद था। मेरा मतलब है, वह ऐसी ही इंसान थी जो इस तरह की हरकतें करती थी।"

“एक दिन वो बहुत बीमार पड़ गईं और सबको लगा कि वो मर जाएँगी,” मॉली ने बताया। “वो इसी सोफे पर लेटी हुई थीं और डॉक्टर ने बेफिक्री से उनकी हालत के बारे में बात की। उन्होंने कहा, ‘वो ज्यादा दिन नहीं जिएँगी,’ और कंधे उचका दिए। श्रीमती वेनराइट गुस्से से उछल पड़ीं और चिल्लाईं, ‘मैं तो जिऊँगी!’ और वो जी भी, कई सालों तक अपने गुस्सैल स्वभाव और शरारतों के साथ।”

अपने जीवन के अंतिम वर्षों में श्रीमती वेनराइट दूसरी मंजिल पर बने नौकरों के पूर्व क्वार्टर में रहने लगीं—चाहे यह आर्थिक कारणों से हो या निजता के लिए, यह कोई निश्चित रूप से नहीं कह सकता। उनके कमरे के ठीक बीचोंबीच एक ज़ोर से बंद होने वाला दरवाज़ा था और इसमें कोई संदेह नहीं कि वह कई बार उन संकरी सीढ़ियों से ऊपर की मंजिल पर जाती होंगी।

श्रीमती वेनराइट के लिए काम करने वाले प्लंबर, पेंटर और बढ़ई अभी भी राय में रहते थे और वे सभी उन्हें एक जिद्दी और अड़ियल महिला के रूप में याद करते थे, जो अपनी मनमानी करना पसंद करती थीं। उनकी पोती, श्रीमती कोंडिट, उन्हें अच्छी तरह से याद करती थीं। स्माइथ परिवार को पूरा यकीन था कि श्रीमती वेनराइट दूसरी मंजिल पर सोती थीं - उन्हें एक

जाली मिली जिस पर "मेरे बेडरूम की खिड़की" लिखा था, जो किसी भी कमरे की किसी भी खिड़की पर फिट नहीं बैठती थी।

स्माइथ परिवार ने यह खूबसूरत घर पिछले मालिक आर्थर फ्लेमिंग से खरीदा था, जो श्रीमती वेनराइट के पुराने कमरे का इस्तेमाल करते थे। लेकिन उन्हें कोई असामान्य बात महसूस नहीं हुई, या कम से कम उन्होंने इसके बारे में कुछ नहीं कहा।

एक बार घर में बड़ी चोरी हुई थी और श्रीमती वेनराइट शायद इससे चिंतित थीं। सांसारिक वस्तुओं से उनका गहरा लगाव था, इसलिए उन्होंने कीमती सामान तीसरी मंजिल पर विभिन्न संदूकों में रखा हुआ था और यह सुनिश्चित करने के लिए कि सब कुछ ठीक है, वह समय-समय पर ऊपर जाकर देखती रहती थीं।

क्या दरवाज़े को ज़ोर से बंद करना उन बार-बार होने वाली घबराहट भरी सीढ़ियों पर चढ़ने की याद दिलाता है? क्या प्रवेश द्वार को बार-बार खोलना और बंद करना, ताला ठीक से लगा है या नहीं, या बाहर कोई अजनबी छिपा है, यह देखने के लिए डर के मारे दरवाज़े की जाँच करना हो सकता है?

उस भूतिया घर की हमारी यात्रा के ठीक अगले दिन, न्यूयॉर्क के ब्रोंक्सविले की रहने वाली मौली की एक युवा चित्रकार मित्र हेलेन चार्लटन, उस स्टूडियो में अकेली थी जिसे मौली ने उसे कभी-कभी अपने चित्र बनाने के लिए इस्तेमाल करने दिया था। वह उस बड़े घर में बिल्कुल अकेली थी जब उसने सामने का दरवाजा खुलते हुए साफ सुना। आवाज लगाने पर भी उसे कोई जवाब नहीं मिला। यह सोचकर कि शायद माली के पास चाबी हो और वह खतरे में हो, उसने जो भी भारी वस्तुएँ उसके हाथ लगीं, उन्हें पकड़ लिया और बेचैनी से कदमों की आहट का इंतजार करने लगी। कोई आहट नहीं सुनाई दी। एक घंटे बाद, दरवाजे की घंटी बजी और वह आखिरकार दौड़कर प्रवेश द्वार तक गई। दरवाजा कसकर बंद था और वहाँ कोई नहीं था। फिर भी उसने पुराने जमाने के दरवाजे के खुलने की जानी-पहचानी आवाज सुनी थी!

डाकिया की गाड़ी अभी-अभी जा रही थी, इसलिए उसने सोचा कि घंटी उसी ने बजाई होगी। तभी मौली वापस लौटी।

हेलेन चार्लटन ने मुझसे कहा, "मैंने कई बार दरवाजे के जोर से बंद होने की आवाज सुनी है, और यह हमेशा बहुत दूर से आती हुई लगती है। मुझे लगता है कि यह पहली मंजिल पर है, लेकिन मैं निश्चित नहीं कह सकती।"

क्या श्रीमती वेनराइट अब भी "द सीडर्स" के विक्टोरियन गलियारों में घूम रही थीं और ऊपर अपने खजानों की रखवाली कर रही थीं?

जब कैथरीन और मैं 1964 की शरद ऋतु में यूरोप से लौटे, तो मौली गुइयन के पास हमारे लिए एक खबर थी। राई में सब कुछ शांत नहीं था। ऊपर के कमरे में, जहाँ मौली की शारीरिक रूप से विकलांग माँ बिस्तर पर लेटी हुई थीं, श्रीमती गुइयन के बगल में खड़े होने के दौरान ही एक मेज का हैंडल उड़कर गिर गया। एक नर्स की मौजूदगी में, बाथरूम की बत्तियाँ अपने आप जलती-बुझती रहीं। इससे भी अधिक भयावह बात यह थी कि एक भारी ऐशट्रे अपने आप उड़कर कमरे के दूसरी ओर जा गिरी। एक दरवाजा अपने आप खुल गया, और फिर से कदमों की आहट सुनाई दी।

एक नई नर्स आई थी, और अब उन गवाहों की संख्या आठ हो गई थी जिन्होंने अजीबोगरीब घटनाओं को सुना या देखा था।

मैंने फैसला किया कि अब आत्माओं से संपर्क करने का समय आ गया है, और 6 जनवरी, 1965 को, माध्यम एथेल मेयर्स, मैरी मेलिकियन, कैथरीन और मैं न्यू हेवन से राई के लिए ट्रेन में सवार हुए, जहां जॉन स्माइथ ने हमें अपनी स्टेशन वैगन में ले लिया।

जब एथेल मेयर्स नीचे बड़े बैठक कक्ष में इंतज़ार कर रही थीं, तब मैंने घर का जायज़ा लिया और भूत-प्रेतों के बारे में ताज़ा जानकारी जुटाई। मौली गुइयन मुझे रसोई में ले गईं ताकि वह जगह दिखा सकें जहाँ सबसे डरावनी घटनाओं में से एक घटी थी।

“पिछली क्रिसमस पर, मेरी माँ, मेरे पति और मैं रसोई में दोपहर का भोजन कर रहे थे, और दीवार के पास एक छोटी सी मेज पर हमारे ठीक बगल में एक बड़ा सा ब्रेड काटने वाला चाकू रखा था। अचानक, हमारी हैरानी के बीच, चाकू हवा में उछला, हवा में एक चाप बनाया और मेज से लगभग एक गज दूर जाकर गिरा। यह दोपहर के करीब का समय था, और अच्छी रोशनी थी।”

"क्या ऐसा सिर्फ एक ही बार हुआ था?"

“कुछ दिन पहले भी ऐसा ही हुआ। हम रात के समय फिर से रसोई में थे। मेरे पति और मैंने ऊपर से एक ज़ोरदार धमाके की आवाज़ सुनी। यह दूसरी मंज़िल पर नौकरों के क्वार्टर के पास से आई थी, जो उसी जगह पर है जहाँ वह दरवाज़ा बार-बार ज़ोर से बंद होता है। मैं जाँच करने ऊपर गई और देखा कि मेरे पति के कमरे में मेज़ से लगभग एक गज दूर ज़मीन पर एक भारी ऐशट्रे पड़ी हुई थी।”

“और ऊपर कोई जीवित प्राणी नहीं था?”

“नहीं। वह वस्तु यूं ही मेज से फिसलकर नहीं गिर सकती थी। वह कुछ दूरी पर गिरी थी।”

“अद्भुत,” मैंने स्वीकार किया। “क्या और भी कुछ था?”

"पिछले हफ्ते मैं ऊपर के बैठक कक्ष में एक नर्स के साथ खड़ी थी, तभी मेज के बीचोंबीच पड़ी कुर्सी का एक टुकड़ा उड़कर फर्श के बीचोंबीच जा गिरा।"

“तुम्हारी आँखों के सामने?”

हमारी आंखों के सामने।

मैंने पूछा, "आपके अनुसार यहाँ सबसे अधिक बार होने वाली घटना कौन सी है?"

"नीचे वाले कमरे का सामने का दरवाजा खुलने की आवाज। हमने और दूसरों ने इस खास आवाज को कई बार सुना है, और वहां कभी कोई नहीं होता।"

मैंने श्रीमती विट्टी की ओर रुख किया, जो उस समय मौली गुइयन की मां की देखभाल के लिए ड्यूटी पर तैनात नर्स थीं।

आप इस घर में कब से रह रहे हैं?

अक्टूबर 1964 से।

"क्या आपने इन चार महीनों में कुछ असामान्य देखा है?"

“दरअसल, मैं और श्रीमती स्माइथ ऊपर मरीज़ के कमरे में थे, तभी हमने नीचे का दरवाज़ा खुलते सुना। मैंने श्रीमती स्माइथ से कहा कि कोई मिलने आया है, और मैं नीचे दरवाज़े पर गई और देखा। भारी जंजीर ढीली होकर झूल रही थी, और दरवाज़ा थोड़ा सा खुला हुआ था!”

क्या आपने कोई आगंतुक देखा?

“नहीं। मैंने दरवाजा खोला, चारों ओर देखा, लेकिन वहां कोई नहीं था।”

"और कुछ?"

“कुछ हफ़्ते बाद, वही घटना फिर घटी। मैं मरीज़ के साथ घर में अकेली थी, और दरवाज़ा मज़बूती से बंद था। मेरे द्वारा दरवाज़ा बंद करने के एक घंटे बाद, मैंने दरवाज़ा कसकर बंद होने की आवाज़ सुनी, लेकिन चेन फिर से अपने आप हिलने लगी।”

इसके बाद मैंने श्री स्माइथ से उनके अनुभवों के बारे में जानने के लिए संपर्क किया, जो हमारी पिछली बातचीत के बाद से हुए थे। श्री स्माइथ एक नौसेना वास्तुकार थे और रहस्यमय घटनाओं के आकलन में बहुत सतर्क थे। जिस अटारी वाले कमरे में वे कभी-कभी सोते थे, वहाँ उन्हें अब भी "धीमे कदमों" की आहट सुनाई देती थी, यहाँ तक कि जब वे घर में बिल्कुल अकेले होते थे तब भी।

मैं एथेल मेयर्स के पास वापस लौटा, जो एक माध्यम थीं और नीचे के सामने वाले बैठक कक्ष में एक बड़ी कुर्सी पर बैठी थीं।

"कुछ हो रहा है क्या?" मैंने पूछा, क्योंकि मैंने एथेल के चेहरे पर एक अजीब भाव देखा, मानो वह किसी चीज या किसी व्यक्ति को देख रही हो।

“मैं एक महिला की कल्पना करती हूँ जो भविष्य देख सकती है,” एथेल ने कहा। “वह मुझे बहुत ही चुनौती भरे भाव से देखती है।”

मैंने अपनी पत्नी से पूछा, "तुम कमरे के उस पार उस सोफे की ओर क्यों इशारा कर रही हो?"

"मैंने अपनी आंख के कोने से एक रोशनी देखी और मुझे लगा कि यह एक कार है, लेकिन कोई कार वहां से नहीं गुजरी," कैथरीन ने कहा।

यदि कोई कार वहां से गुजरी होती, तो उस स्थान पर कोई प्रतिबिंब दिखाई नहीं देता, क्योंकि उस दिशा में कोई खिड़की नहीं थी।

जब एथेल समाधि की तैयारी कर रही थी, मैं कमरे से बाहर जॉर्जिया ऐन वॉरेन से बात करने गया, जो एक युवा नर्तकी थी और जिसने मौली गुइयन की कुछ पेंटिंग्स के लिए मॉडल के रूप में काम किया था। उसकी पूर्ण-लंबाई वाली नग्न पेंटिंग ऊपर के स्टूडियो की शोभा बढ़ा रही थी, और वहाँ चर्चिल के चित्रों और प्रसिद्ध या लगभग प्रसिद्ध हस्तियों के चेहरों के बीच, वह

सुंदरता के एक चमकते हुए प्रतीक की तरह थी। लेकिन हमें पता चला कि मिस वॉरेन केवल एक चित्रकार के लिए ही पोज़ नहीं दे रही थीं—वह एक भूत के लिए भी मॉडल बन रही थीं।

“मुझे ज़ोर से आवाज़ सुनाई दी, जैसे कोई ऊपर जा रहा हो। मैं रसोई में थी। कदमों की आवाज़ भोजन कक्ष से आती हुई लग रही थी। कोई अंदर नहीं आ रहा था। उस समय घर में केवल मौली गुइयन और मैं ही थे। इसमें कोई शक नहीं।”

मैंने लाल बालों वाली मॉडल को धन्यवाद दिया और एथेल मेयर्स के पीछे-पीछे सीढ़ियों से ऊपर चली गई, मानो वह अचानक किसी प्रेरणा से ऊपर चढ़ गई हो। वहाँ, घुमावदार विक्टोरियन सीढ़ियों पर, एथेल का भूत से पहला सामना हुआ।

“शरीर को बहुत ठंडा करो। जब जमीन गर्म हो तब उसे उसमें मत गाड़ना। उसे बहुत ठंडा होने दो!” वह बड़बड़ाई, मानो वह पूरी तरह से होश में न हो।

मैंने सुझाव दिया, "उसे तुम्हारे माध्यम से बोलने दो।"

“हाँ,” एथेल ने जवाब दिया और कुछ अजीब सी आवाज़ में बोलना जारी रखा। “रिंग अराउंड द रोज़ीज़, अ पॉकेटफुल ऑफ़ पॉज़ीज़....”

मैंने सीढ़ियों की ओर मुड़कर भूत से विनती की कि वह हमसे बात करे, अपनी कहानी सुनाए और हमारे माध्यम से मदद ढूंढे। लेकिन कोई और जवाब नहीं मिला।

मैंने श्रीमती मेयर्स को उनकी कुर्सी तक वापस ले जाकर बिठाया और मौली गुइयन से रोशनी थोड़ी कम करने को कहा ताकि हम सब आराम कर सकें। इसी बीच, अन्य गवाह भी आ गए थे। उनमें न्यूयॉर्क टाइम्स के पत्रकार एन. बर्कविट्ज़, बेंटन एंड बोल्स के उपाध्यक्ष गॉर्डन वेबर, प्रचारक बिल रयान और पुस्तक समीक्षक जॉन के. हचिन्स शामिल थे। हम सब एथेल मेयर्स के चारों ओर एक लंबा अंडाकार घेरा बनाकर खड़े हो गए और भूत के प्रकट होने का इंतज़ार करने लगे।

हमें ज़्यादा देर इंतज़ार नहीं करना पड़ा। अचानक चीखते हुए, गहरी समाधि में लीन एथेल उछल पड़ी और एक बूढ़ी औरत की तरह लड़खड़ाते हुए सामने के दरवाज़े की ओर चल पड़ी। मैं उसे रोक नहीं पा रहा था। मैं भी तेज़ी से उसके पीछे-पीछे गया, क्योंकि अब भूत के वश में आ चुकी वह माध्यम उस लंबे कमरे से होते हुए दरवाज़े तक पहुँच गई।

जैसे ही बैठक में तेज़ हवा का झोंका आया हो, एथेल की ज़बरदस्त तेज़ी से बाकी मेहमान पीछे हट गए। उसने खुद को भारी लकड़ी के दरवाज़े पर पटक दिया और उसे खोलने और अंदर जाने की ज़बरदस्त इच्छा से उसे बारी-बारी से कुतरने और पीटने लगी। फिर उसने पीतल की चेन पकड़ी—वही चेन जिसे श्रीमती विट्टी ने दो बार अपने आप झूलते हुए देखा था—और उसे ज़बरदस्त ताकत से खींचा। जब उसने अपना शरीर दरवाज़े पर पटका, तो मुझे उसे गिरने से बचाने के लिए बड़ी मुश्किल से खुद को संभालना पड़ा।

एक हाथ में मैंने माइक्रोफोन पकड़ा हुआ था, जिसे मैंने एथेल के होठों के पास दबाकर रखा ताकि ज़्यादा से ज़्यादा बातें रिकॉर्ड कर सकूँ। दूसरे हाथ से मैंने एथेल को ज़मीन पर गिरने से बचाने की पूरी कोशिश की।

"सड़ा हुआ," सम्मोहित माध्यम ने अब भी जंजीर को पकड़े हुए बुदबुदाया।

मैंने उसे कुर्सी पर वापस लाने की कोशिश की, लेकिन भूतनी ने मेरी बात नहीं मानी।

“बहुत बदबू आ रही है...यह कहाँ है?”

मैंने पूछा, "क्या यह आपका घर है?"

भारी सांसें।

“हाँ। बाहर निकलो!”

मैं आपकी मदद करने आया हूँ। आपका नाम क्या है?

“बाहर निकलो!” माइक्रोफोन से आवाज आई।

मैंने पूछा, "तुम क्या चाहते हो?"

“मेरा शरीर।”

“आप तो गुजर चुके हैं, क्या आपको समझ नहीं आता?”

“नहीं...मुझे अपना शरीर चाहिए। वह कहाँ है?”

मैंने फिर से समझाया कि यह अब उसका घर नहीं है, लेकिन वह इतने गुस्से और निराशा में "अपने शरीर" की वापसी के लिए पुकारती रही कि मुझे संदेह होने लगा कि कहीं उसे परिसर में ही तो दफना नहीं दिया गया था।

“वे मेरा शरीर ले गए। मैंने उन्हें देखा, मैंने उन्हें देखा!”

मैंने कहा, “तुम्हें यह घर छोड़ना होगा। यह अब तुम्हारा नहीं है।”

“नहीं, मेरा घर, मेरा घर। वे उसे ले गए। मेरा शरीर। मेरे पास कुछ नहीं है। इसे ले आओ। मुझे लगता है कि मेरे पास एक है।”

मैंने समझाया कि हमने उसे फिलहाल बोलने के लिए एक शरीर उधार दिया था।

“तुम कौन हो?” आवाज़ धीमी हो गई।

मैंने जवाब दिया, "एक दोस्त आपकी मदद करने आया है।"

जवाब देने के बजाय, सम्मोहित माध्यम ने फिर से दरवाजा पकड़ लिया।

मैंने पूछा, "तुम दरवाजा क्यों खोलना चाहते हो?" कांपते होंठों से जवाब निकलने में उसे कुछ पल लगे।

अंततः उसने कहा, "बाहर जाओ। मैं तुम्हें नहीं जानती। मुझे जाने दो, मुझे जाने दो।"

मैंने भूत से सवाल करना जारी रखा।

“तुम कौन हो? क्या तुम इस घर में रहते थे?”

“मेरा घर। वे उसे तोड़ लाए। मेरा शव बाहर पड़ा है!”

मैंने समय बीतने के बारे में बताया।

“आपकी तबीयत ठीक नहीं थी। आपकी मृत्यु हो गई है।”

नहीं, नहीं...मुझे ठंड नहीं लग रही थी।

“आप इस दरवाजे से जाने के लिए स्वतंत्र हैं। आपके प्रियजन, आपका परिवार, बाहर आपका इंतजार कर रहे हैं।”

"वे मुझसे नफरत करते है।"

“नहीं, उन्होंने तुमसे सुलह कर ली है। वे तुमसे नफरत क्यों करेंगे?”

वे मुझे दरवाजे से बाहर ले गए।

फिर अचानक उस माध्यम के चेहरे का भाव बदल गया। क्या कोई उसे लेने आया था?

"ओह, बाबा, प्यारे...ओह, वह मुझसे प्यार करते थे।"

अब वहां से बेतहाशा रोने की आवाजें आ रही थीं।

“वह चला गया... मेरा प्रियतम....”

"इसका नाम क्या है?"

“वेन... वो कहाँ है... मुझे जाने दो!”

रोना अब लगभग बेकाबू हो गया था, इसलिए मैंने उस प्रेत को विदा कर दिया। उसी समय मैंने अल्बर्ट से, जो परदे के सूक्ष्म पक्ष में एथेल का नियंत्रण था, यह अनुरोध किया कि वह कुछ समय के लिए उसके भौतिक शरीर पर नियंत्रण कर ले और हमसे बात करे।

कुछ क्षणों के बाद अल्बर्ट ने नियंत्रण हासिल कर लिया। माध्यम का शरीर स्पष्ट रूप से सीधा हो गया और झुकी हुई बूढ़ी औरत के सारे निशान गायब हो गए। अल्बर्ट की स्पष्ट आवाज़ सुनाई दी।

“वह यहाँ की पूर्व किरायेदार है, जिसे ज़्यादा प्यार नहीं मिला। ऐसा लगता है कि उसे मृत्यु से पहले ही यहाँ से ले जाया गया था। इसी वजह से वह वापस लौटी है ताकि अपनी गलती सुधार सके और अपने भौतिक शरीर से संपर्क स्थापित कर सके। लेकिन यहाँ हमेशा दुख ही रहता है। मेरा मानना है कि जैसे-जैसे वह बूढ़ी होती गई, उसके प्रति प्रेम की कमी होती गई।”

मैंने पूछा, "क्या आप नाम बता सकते हैं?"

अगर उसने मना कर दिया, तो मैं नहीं कर सकता।

"यह कितनी देर पहले था?"

“नब्बे के दशक के दौरान। 1890 और 1900 के बीच।”

क्या यह एक महिला है?

"हाँ।"

"क्या उसकी शक्ल-सूरत में कुछ अजीब है?"

"बड़ी-बड़ी आंखें, और लगभग कटा हुआ होंठ।"

वह अपने शरीर को लेकर चिंतित क्यों है?

“उसका कोई भव्य अंतिम संस्कार नहीं हुआ। उसे एक ताबूत में रखा गया और उसकी कब्र पर कुछ शब्द कहे गए। यही उसकी समस्या का एक हिस्सा है, कि उसे इस तरह ठुकरा दिया गया और उपेक्षित किया गया।”

वह अटारी में क्यों भागती है?

"यह उसका घर था, और जीवन के अंतिम वर्षों में उसे इससे वंचित कर दिया गया था।"

"किसके द्वारा?"

"यहाँ रहने वालों द्वारा। उसके रिश्तेदारों द्वारा।"

“उसके वारिस?”

“जब वह काम करने में असमर्थ हो गई, तो जिन्होंने इसका जिम्मा संभाला। वह तब भी जीवित थी।”

"क्या हमें कुछ और भी पता होना चाहिए?"

“इस घर में हर किसी के लिए बहुत नफरत है। उसके आखिरी दिन नफरत से भरे थे। अगर वह वापस आती है, और उससे प्यार से बात की जाए, तो वह चली जाएगी। हम उसकी मदद करेंगे।”

वह इतनी नफरत से भरी क्यों है?

"उसका दुख, उसका उत्पीड़न। जब भी उसे अपने कमरे से घर के बाकी हिस्सों में जाने की इच्छा होती, तो वह अपनी जुबान बंद नहीं रखती थी।"

उसका चरित्र कैसा था?

“युवावस्था में वह सचमुच एक सभ्य महिला थीं। बाद के जीवन में, उनका व्यक्तित्व सशक्त हो गया, जो कुछ हद तक दोहरे व्यक्तित्व की ओर झुक गया। वह निरंकुश शासक थीं। अंत में, वह किसी की प्रिय नहीं रहीं।”

और नौकरों के साथ उसका रिश्ता कैसा था?

“ज़्यादा दोस्ताना नहीं। अत्याचारी।”

“उसके नौकरों को लेकर उसे क्या बात परेशान कर रही थी?”

उन्हें बहुत कुछ पता था।

"किस?"

“उसका पतन। उसके स्वाभिमान को ठेस पहुंची।”

"उससे पहले वह कैसी थी?"

“एक शंकालु महिला। वह दूसरों से ऐसी चीजें लेने से खुद को रोक नहीं पाती थी जिन्हें वह अपना अधिकार मानती थी।”

उसे क्या लगता था कि उसके नौकर क्या कर रहे थे?

“उन्होंने उसके निजी जीवन में तांक-झांक की। जीवन के अंतिम समय में वह किसी पर भी भरोसा नहीं करती थी।”

"जैसा कि आप कहते हैं, उसे घर में स्वतंत्र रूप से घूमने से रोके जाने से पहले, क्या अटारी में उसका कोई सामान था?"

“हां, छिपी हुई। वह किसी पर भरोसा नहीं करती थी।”

फिर मैंने सुझाव दिया कि उस "उपकरण" को वापस उसके पास लाया जाए। बेहद हैरान एथेल मेयर्स जाग उठी तो उसने खुद को प्रवेश द्वार के सहारे टिका हुआ पाया।

जब वह बोलने में सक्षम हुई तो उसने पूछा, "मेरे होंठ को क्या हुआ है?" कुछ क्षण बाद, एथेल मेयर्स पहले जैसी हो गई और श्रीमती वेनराइट की दुनिया का यह भ्रमण समाप्त हो गया।

अगली सुबह मॉली स्माइथ ने मुझे फोन किया। "अल्बर्ट की उन टिप्पणियों के बारे में याद है कि श्रीमती वेनराइट अपने ही कमरों में कैद थीं?"

मुझे बिल्कुल याद था।

“खैर,” मोली ने आगे कहा, “हमने ऊपर नौकरों के क्वार्टर के सभी दरवाजों की अच्छी तरह से जांच की है, जहाँ उन्होंने अपने अंतिम वर्ष बिताए थे। उन सभी पर ताले लगे होने के सबूत मिले हैं, जिन्हें बाद में हटा दिया गया था। निश्चित रूप से वहाँ किसी को बंद करके रखा गया था।”

विडंबना यह थी कि मृत्यु ने श्रीमती वेनराइट को कैद से मुक्त नहीं किया था। उनके लिए, स्वतंत्रता अभी भी पीतल की जंजीर वाले भारी लकड़ी के दरवाजे के उस पार ही थी।

अब जबकि उसकी आत्मा को वश में कर लिया गया था, शायद वह अपने भ्रमों के भंवर से बाहर निकलने का रास्ता खोज लेगी और अपने पहले पति से फिर से मिल जाएगी, जिसे उसने पुकारा था।

अगली बार जब मौली स्माइथ को सामने का दरवाजा खुलने की आवाज सुनाई देगी, तो वह सिर्फ उसका पति होगा जो दफ्तर से घर लौट रहा होगा। या कम से कम मैंने तो यही सोचा था।

लेकिन अप्रैल 1965 के आखिरी सप्ताह में, मौली ने मुझे फिर से फोन किया। इस बार ऊपर से कदमों की आहट सुनाई दी थी, और कहीं किसी दरवाजे के खुलने और बंद होने की आवाज आई थी, और जाहिर है, जांच करने पर वहां कोई दिखाई नहीं दिया।

इससे पहले कि मैं राई में दोबारा आने की व्यवस्था कर पाता, कुछ और ही हो गया। श्री स्माइथ बाथटब में थे, तभी शेल्फ पर सुरक्षित रखी टूथपेस्ट की एक बड़ी ट्यूब अपने आप ही नीचे गिर गई। कंपन या किसी अन्य प्राकृतिक कारण से ऐसा नहीं हुआ। साथ ही, मॉली की माँ की देखभाल कर रही नर्सों में से एक की हाइपोडर्मिक सुई भी कहीं गायब हो गई।

मैंने सिबिल लीक को घर लाने का वादा किया था। ब्रिटिश माध्यम को इस मामले के पहले के इतिहास के बारे में ज़रा भी जानकारी नहीं थी, और मैं यह देखने के लिए उत्सुक था कि क्या वह उन्हीं या अलग-अलग परिस्थितियों से संपर्क स्थापित कर पाएगी, जैसा कि कभी-कभी तब होता है जब एक ही घर में दो माध्यमों का उपयोग किया जाता है। यह बिल्कुल अलग-अलग रेडियो तरंगों को सुनने जैसा है।

मई के महीने में, जब मौसम ठंडा और बारिश वाला था, हम सब ऊपर "भूतिया कमरे" में एक घेरे में बैठ गए। मेज़बान सिबिल लीक और मेरे अलावा, श्रीमती बेट्टी साल्टर (मौली की बहन); पोर्ट चेस्टर, न्यूयॉर्क के आइटम अखबार के रिपोर्टर डेविड एलिंगसन; श्री और श्रीमती रॉबर्ट बेंडिक, स्माइथ परिवार के पड़ोसी और मित्र; और मैरी मेलिकियन भी उपस्थित थे। श्री बेंडिक समाचार कार्यक्रमों में विशेषज्ञता रखने वाले एक टेलीविजन निर्माता थे।

सिबिल सम्मोहन की अवस्था में चली गई। कुछ भी सुनाई देने लायक रिकॉर्ड करने में कई मिनट लग गए।

मैंने पूछा, "तुम कौन हो?"

एक कमजोर आवाज ने जवाब दिया: "मैरियन...मैरियन गर्नट...."

समाधि में जाने से पहले, सिबिल ने स्वेच्छा से यह जानकारी दी थी कि जब से उसने घर में कदम रखा था, तब से "ग्रांट" या उससे मिलता-जुलता नाम उसके दिमाग में घूम रहा था।

मैंने पूछा, “यह कौन सा वर्ष है?”

“1706.”

“यह घर किसने बनवाया?”

“मेरे पिता...वाल्डेन।”

फिर उसने शिकायत की कि घर में मौजूद लोग उसे परेशान कर रहे थे, इसलिए वह उसे गिरा रही थी।

उन्होंने आगे कहा, “मेरा चेहरा सूजा हुआ है। मैं बीमार हूँ... खून निकल रहा है।”

अचानक, मेरे भरोसेमंद टेप रिकॉर्डर में कुछ गड़बड़ हो गई। मेरी पिछली सभी जाँचों में यह बिल्कुल सही काम कर रहा था। अब यह काम नहीं कर रहा था, और बातचीत के कुछ हिस्से रिकॉर्ड नहीं हो रहे थे। पहिए घूमते, फिर रुकते, और फिर चलने लगते, मानो कोई अपनी मर्जी से उनमें उंगलियाँ डाल रहा हो!

मैंने अपना कैमरा चलाया, और मुझे आश्चर्य हुआ कि मैं कोई भी तस्वीर नहीं ले पाया। अचानक, कैमरा का मैकेनिज़्म ठीक से काम करना बंद कर दिया और शटर खुल नहीं रहा था। मुझे कोई भी तस्वीर नहीं मिली। सेन्स के बाद, बॉब बेंडिक ने कैमरे को ध्यान से देखा। कुछ ही देर में वह फिर से ठीक से काम करने लगा। सेन्स के बाद, हमने टेप रिकॉर्डर को भी चलाने की कोशिश की। वह चालू हुआ और फिर पूरी तरह बंद हो गया।

“बैटरी खत्म हो गई हैं,” मैंने पूरे विश्वास के साथ समझाया कि इसके अलावा और कोई बात नहीं है। इसलिए हमने मशीन को घर की बिजली से जोड़ा। कुछ नहीं हुआ। बैटरी की समस्या नहीं थी। कुछ और ही बात थी।

जब हम उस "भूतिया कमरे" से निकलकर नीचे गए, तो मैंने टेप रिकॉर्डर को अपने ट्रैवलिंग सूटकेस में रख दिया। लगभग दस मिनट बाद, मुझे अपने सूटकेस से एक डरावनी आवाज़ सुनाई दी। मेरी ही आवाज़। टेप रिकॉर्डर, जिसे मैंने बंद करके रखा था, अपने आप चालू हो गया था...या...ऐसा लगा।

लेकिन भूतिया घरों में कोई भी निश्चित नहीं हो सकता। घटना के समय आइटम रिपोर्टर डेविड एलिंगसन और मैरी मेलिकियन मेरे बगल में खड़े थे। जॉन स्माइथ सोच रहे थे कि कहीं किसी

ने रेडियो या टीवी तो चालू नहीं कर दिया। बस, कुछ समय के लिए ही सही, वो उपकरण काम करना बंद कर दिए।

लेकिन चलिए सिबिल और उसके माध्यम से बोलने वाले भूत की बात पर वापस आते हैं। उसने दावा किया था कि वह आग में पूरी तरह जल गई थी। जॉन स्माइथ ने बाद में पुष्टि की कि घर में आग के निशान थे जिनकी आज तक संतोषजनक व्याख्या नहीं हो पाई है।

भूतनी इस बात को लेकर असमंजस में लग रही थी। उसे इसी जगह पर, एक छोटे से घर में जलाया गया था। उस जगह का नाम रोचर था। उसका नाम मारिओन गर्नट था। उसका जन्म आठ मील दूर रोडे में हुआ था। उसे अपनी उम्र का ठीक-ठीक पता नहीं था। पहले उसने 29 बताई, फिर 57। यह घर रोचर के ही रहने वाले डियोन ने बनवाया था।

फिर मैंने हमेशा की तरह समझाने की कोशिश की कि यह घर किसी और का है और उसे यहाँ नहीं रहना चाहिए।

“चली जाओ,” भूतनी बुदबुदाई, उसे जाने का विचार बिल्कुल पसंद नहीं था। लेकिन मैंने ज़िद की। मैंने उसे उसके पति के बारे में बताया जो चाहता था कि वह उसके साथ “वहाँ” चली जाए।

“मुझे उससे नफरत है!” उसने खुद ही कहा, फिर बोली—“मैं चीजें इधर-उधर करने लगती हूँ...मैं चीजें तोड़ देती हूँ...मुझे अपनी कुर्सी चाहिए।”

मैंने विनती करते हुए कहा, “तुम्हें यहाँ नहीं रुकना चाहिए। तुम्हारी यहाँ कोई ज़रूरत नहीं है।”

“उसने ऐसा कहा था,” उसने उदास स्वर में उत्तर दिया। “अल्फ्रेड ने। मेरे पति ने।”

आपको और आपके बच्चों को उनके साथ जुड़ना होगा।

"मैं रहूंगा।"

मैंने उसे जाने के लिए मंत्र दोहराया।

“मैं नहीं जा सकती। मैं जल गई हूँ। मैं हिल भी नहीं सकती,” उसने जवाब दिया।

मैंने समझाया कि ये सिर्फ यादें थीं।

अंततः वह मान गई और बोली—"मुझे अपने आप को ढकने के लिए बहुत सारे चिथड़ों की ज़रूरत होगी..."

अब धीरे-धीरे वह लुप्त होने लगी।

“मुझे अपनी कुर्सी चाहिए,” उसने गिड़गिड़ाते हुए कहा, और मैंने उससे कहा कि वह इसे ले सकती है।

फिर वह चली गई।

सिबिल अब होश में आ गई। अभी भी समाधि की अवस्था में, उसने परदे के दूसरी ओर जो कुछ देखा और महसूस किया, उसके बारे में मेरे सवालों का तुरंत जवाब दिया। यह एक ऐसी तकनीक है जिसे मैं विशेष रूप से तब प्रभावी पाता हूँ जब इसका उपयोग माध्यम को समाधि या सम्मोहन से बाहर लाने से पहले किया जाता है।

“एक बूढ़ी औरत,” सिबिल ने कहा। “वह काफी छोटी है। मुझे लगता है वह डच है। झुर्रियों वाली। वह बहुत चिड़चिड़ी है। चल नहीं सकती। बहुत अप्रिय है। चलने में असमर्थ होने के कारण चीजें फेंकती है। यह उसका घर है। वह लगभग तीन सौ साल पहले यहाँ रहती थी। वह सब कुछ वैसा ही चाहती है जैसा पहले था। उसके चेहरे पर निशान हैं। वह आग में जल गई थी।”

“क्या उसकी उसमें मौत हो गई?” मैंने पूछा।

“नहीं। उसकी मौत यहीं पास में हुई थी। वह ठीक से बात नहीं कर पाती थी।”

“इसमें दो दिलों और दो ढालों वाला एक डिब्बा है,” सिबिल ने कहा। “इसका इस महिला के लिए कुछ खास महत्व है।”

मैंने पूछा, "क्या वहां और भी लोग थे?"

"बहुत सारे, परछाइयों की तरह," सिबिल ने समझाया, "लेकिन यह छोटी महिला ही थी जो हंगामा मचा रही थी।"

"उसे चीजें फेंकना पसंद है," सिबिल ने आगे कहा, और मैं यह सोचे बिना नहीं रह सकी कि उसे उन सभी वस्तुओं के बारे में कभी जानकारी नहीं दी गई थी जिन्हें भूत फेंक रहा था।

“उसे दरवाजों का पता नहीं है, इसलिए वह बस आगे बढ़ती रहती है। दरवाजा उसे बहुत परेशान करता है, क्योंकि उसे पता नहीं है कि वह कहाँ है। आगे और पीछे के दरवाजे आपस में बदल दिए गए हैं।”

सिबिल को मुख्य दरवाजे के आसपास होने वाली आवाज़ों के बारे में कुछ भी पता नहीं था, न ही इस तथ्य के बारे में कि घर का पिछला हिस्सा कभी सामने का हिस्सा हुआ करता था।

मैंने सिबिल से उसे वहां से भेजने को कहा, और सिबिल ने धीमी आवाज में ऐसा ही किया।

आत्माओं को बुलाने का अनुष्ठान समाप्त हो गया था, कम से कम फिलहाल के लिए।

थोड़ी देर बाद, हम सबसे ऊपरी मंज़िल पर गए, जहाँ मौली और सिबिल दोनों को अचानक इत्र की तेज़ खुशबू महसूस हुई। मैं भी उनके पास गया और मुझे भी वह खुशबू आई। ऐसा लग रहा था मानो कोई घर में हमारा पीछा कर रहा हो!

लेकिन अब न्यूयॉर्क लौटने का समय आ गया था। हमारे मेजबानों ने हमें शहर तक छोड़ने की पेशकश की।

मैंने विदा लेते हुए कहा, "यह बहुत बुरा है कि यहाँ किसी ने कोई प्रेत नहीं देखा। केवल आवाज़ें ही सुनाई दी हैं।"

मिसेज स्माइथ की हंसमुख बहन बेट्टी साल्टर ने अपना सिर हिलाया।

“सच नहीं,” उसने कहा। “मैं कुछ समय पहले ही यहाँ थी जब मैंने नीचे भोजन कक्ष में एक काली आकृति देखी। मुझे लगा कि वह मौली है, लेकिन जाँच करने पर पता चला कि मैं नीचे बिल्कुल अकेली थी... सिवाय उसके।”

श्रीमती वेनराइट, बेशक, डच मूल की थीं, और सिबिल द्वारा भूत के चरित्र, रूप और सामान्य प्रभाव का जो वर्णन किया गया था, वह श्रीमती वेनराइट से काफी हद तक मेल खाता था।

क्या 1706 की वह महिला कोई पूर्वज थी या महज कोई ऐसी व्यक्ति थी जो उस समय संयोगवश वहां मौजूद थी जब उस जगह पर केवल एक छोटा सा फार्म हाउस हुआ करता था?

स्माइथ परिवार को इस बात से कोई फर्क नहीं पड़ता था कि उनके पास दो भूत हैं या एक। वे तो एक भी भूत न होना ही पसंद करते थे।

*158

गैरिक हेड इन, बाथ

लंदन से कार द्वारा तीन घंटे की दूरी पर स्थित बाथ एक खूबसूरत रिसॉर्ट शहर है। यहाँ, रीजेंसी वास्तुकला की अद्भुत छटाओं से घिरे, अठारहवीं सदी का एक सराय है जिसे गैरिक हेड इन कहा जाता है। एक समय में इस सराय और बगल के थिएटर के बीच संबंध था, लेकिन अब थिएटर मौजूद नहीं है। अठारहवीं सदी में, प्रसिद्ध जुआरी ब्यू नैश इस सराय के मालिक थे, जो उस समय एक जुआघर भी था।

नीचे का बार किसी भी दूसरे बार जैसा दिखता है, जो दो हिस्सों में बंटा हुआ है: एक बड़ा, कुछ अंधेरा कमरा जहाँ ग्राहक अपनी ड्रिंक्स का आनंद लेते हैं, और एक भारी लकड़ी का बार जिसके पीछे मालिक शराब परोसता है और हल्की-फुल्की बातें करता है। हालाँकि, ऊपर एक और मंज़िल है, जिसकी खिड़की के बारे में कहा जाता है कि किसी कारण से उसे बंद रखना असंभव है। ऊपर के कमरे अब मेहमानों के लिए इस्तेमाल नहीं होते, बल्कि मुख्य रूप से भंडार कक्ष या मालिकों के निजी कमरे हैं। गैरिक हेड इन में मेरी पहली यात्रा के समय, यह बिल लाउड के स्वामित्व में था, जो बाथ आने पर एक कट्टर संशयवादी थे। हालाँकि, दो महीनों के भीतर ही, उनके संशयवाद का पर्दाफाश उन घटनाओं से हो गया जिन्हें उन्होंने देखा। एक बार भारी कैश रजिस्टर अपने आप उड़ गया और एक कुर्सी को तोड़ दिया। रात में लोगों के चलने की आवाज़ें सुनाई देती थीं, जबकि जगह पूरी तरह से खाली होती थी। एक बार वह मकड़ी के जालों में चले गए और उन्हें ऐसा महसूस हुआ जैसे किसी ने उनके सिर को कोमल हाथों से सहलाया हो। तहखाने में पूरी तरह अकेले होने पर भी उन्हें इत्र की खुशबू आई।

ब्रिस्टल के एक अखबार के एक रिपोर्टर, जिसने उस रात सराय में बिताई, ने भी कदमों की आहट और अजीब आवाजों की प्रामाणिकता की पुष्टि की।

अंततः, मालिक ने इमारत के इतिहास की छानबीन करने का फैसला किया और उसे पता चला कि यहाँ कुछ ऐसी घटनाएँ घटी हैं जो भूतिया घटनाओं का आधार हो सकती हैं। जुए के बादशाह ब्यू नैश के स्वामित्व के दौरान, एक रात दो पुरुषों के बीच एक महिला को लेकर कहा-सुनी हो गई। इसके बाद द्वंद्वयुद्ध हुआ। विजेता को महिला का अधिकार मिलना था।

एक व्यक्ति मारा गया और जीवित बचा दूसरा व्यक्ति अपना इनाम लेने के लिए सीढ़ियों से ऊपर भागा। महिला, जो उसे जीतते देख भागने लगी थी, इस बात से सहमत नहीं थी और जब उसने उसे आते सुना तो उसने खुद को ऊपर के कमरे में बंद कर लिया और फांसी लगा ली। बाथ के गैरिक हेड इन में आपको महिला भूतनी दिखाई देगी या उसकी आवाज़ सुनाई देगी, यह आपकी मानसिक दुनिया से संवाद करने की क्षमता पर निर्भर करता है। यह इस बात पर भी निर्भर करता है कि आप रात के किस समय वहाँ हैं, क्योंकि गैरिक हेड इन शाम के शुरुआती समय में काफी शोरगुल वाला होता है, जब यह उन लोगों से भरा होता है जो अलौकिक आत्माओं के बजाय शराब की बोतलों में बंद आत्माओं की तलाश में आते हैं।

गैरिक हेड इन—बाथ, इंग्लैंड: बेहद प्रेतवाधित

बिल लाउड, जिसने कैश रजिस्टर को हवा में उड़ते हुए देखा था

अध्याय ग्यारह

भूत जो भूत नहीं हैं

जब आप किसी दिवंगत व्यक्ति को देखते हैं, तो जरूरी नहीं कि आप भूत देख रहे हों। विशेषकर यदि वह व्यक्ति आपका रिश्तेदार या मित्र हो और संवाद—चाहे मौखिक हो या टेलीपैथिक—स्पष्ट रूप से तर्कसंगत हो। ऐसे मामलों में, आप किसी आत्मा के आगमन का सामना कर रहे हैं।

ये मुलाकातें दो तरह की स्थितियों में होती हैं, जब भी इनकी ज़रूरत होती है। या तो दिवंगत प्रियजन आपको बताना चाहते हैं कि वे ठीक हैं और अब दूसरे लोक में रह रहे हैं, या फिर आत्मा इसलिए आती है क्योंकि आपको यहाँ अपने जीवन में मदद की ज़रूरत है। यह मदद आपके काम, परिवार या निजी जीवन से जुड़ी हो सकती है, या फिर यह आने वाली घटनाओं की चेतावनी हो सकती है, जिनमें से कुछ को आप टाल सकते हैं और कुछ अपरिहार्य हैं। आत्मा को "वहाँ" के लोगों से अनुमति मिली होती है, जो अपने नियमों के अनुसार संपर्क का संचालन करते हैं, और ये मुलाकातें कभी भी आकस्मिक या बिना अर्थ के नहीं होतीं।

मैंने अक्सर कहा है कि सभी प्रेत-दर्शनों में से शायद केवल दस प्रतिशत ही सच्चे भूत होते हैं—मानव आत्माएं जो पृथ्वी पर अपने अधूरे कार्यों के कारण उसी स्थान पर फंसी रह जाती हैं जहाँ उनकी दुखद मृत्यु हुई थी। बाकी शायद अतीत की किसी भावनात्मक घटना की छाप मात्र होती हैं, और एक संवेदनशील व्यक्ति उसे महसूस करता है और फिर से जीता है।

अंत में, कुछ दुर्लभ मामले ऐसे भी होते हैं जिनमें किसी मानसिक शक्ति से संपन्न व्यक्ति को दूर से एक स्वस्थ व्यक्ति दिखाई देता है। जर्मन लोग इसे "डॉपेलगैंगर" या ईथर का प्रतिरूप कहते थे, लेकिन वास्तव में यह केवल आंतरिक शरीर का प्रक्षेपण होता है। ऐसा कभी-कभी तब होता है जब दूर स्थित व्यक्ति अत्यधिक विश्राम या इसके विपरीत, अत्यधिक चिंता की स्थिति में होता है, और यह दुर्लभ है। आमतौर पर, यदि हमेशा नहीं, तो प्रेत जल्दी ही भौतिक शरीर में लौट आता है।

इन मामलों से यह साबित होता है कि हमारा एक आंतरिक शरीर होता है, क्योंकि हमारा बाहरी भौतिक शरीर तो चलता ही रहता है। कुछ आध्यात्मिक यात्राएँ (या शरीर से बाहर के अनुभव) नींद के दौरान होते हैं, लेकिन कुछ तब होते हैं जब व्यक्ति गहरी सोच में डूबा होता है या भावनात्मक रूप से अलग होता है। इनमें से कोई भी हानिकारक या खतरनाक नहीं है, हालांकि थियोसोफी की संस्थापक मैडम हेलेन ब्लावत्स्की ने कई साल पहले चेतावनी दी थी कि जब आपका वास्तविक शरीर बाहर यात्रा कर रहा होता है, तब "अजनबी" आपके शरीर में प्रवेश कर सकते हैं।

यहां मेरी फाइलों से कुछ ऐसे वास्तविक उदाहरण दिए गए हैं जो "गैर-भूत" हैं, जिन्हें अक्सर असली भूत समझ लिया जाता है।

आत्माओं द्वारा संपर्क और मुलाकातें

जब मृत लोग जीवितों से संपर्क साधते हैं

मनोवैज्ञानिक अनुसंधान के इतिहास में ऐसे कई प्रमाणित मामले दर्ज हैं जिनमें मृत आत्माएं जीवितों को अंतिम विदाई देने आती हैं। लेकिन बिछड़ने का विचार अक्सर जीवन की निरंतरता की घोषणा करने की इच्छा से दब जाता है। यह बात मृत्यु के बाद प्रकट होने के तथ्य में ही निहित है: केवल जीवित व्यक्ति ही विदाई देने आ सकता है। पारंपरिक मनोचिकित्सा ने इनमें से अधिकांश प्रकट होने को "मतिभ्रम" के रूप में समझाने के लिए बहुत प्रयास किए हैं, लेकिन सच्चाई यह है कि अधिकतर मामलों में प्राप्तकर्ता को इस बात की पूर्ण अनभिज्ञता होती है कि मृत्यु के बाद संवाद करने वाला व्यक्ति अब जीवित नहीं है। आप किसी ऐसी चीज़ का मतिभ्रम नहीं कर सकते जिसे आप जानते ही नहीं।

इस तरह का संवाद पेशेवर ज्योतिषियों के साथ अक्सर होता है। एलीन गैरेट ने एक बार मुझे बताया कि वह न्यूयॉर्क के फिफ्थ एवेन्यू पर टैक्सी में जा रही थीं, तभी उनके एक दिवंगत मित्र ने उनसे दिव्य दृष्टि से बात की और उन्हें बताया कि मैरी एच., जिन्हें वे दोनों जानती थीं, का अभी-अभी निधन हो गया है और वे उनके साथ स्वर्ग में हैं। श्रीमती गैरेट ने अपनी घड़ी देखी और समय नोट किया। कुछ ही देर बाद, जब वह अपने कार्यालय पहुंचीं, तो उन्होंने

कैलिफोर्निया में फोन किया, जहां मिस एच. रहती थीं। संदेश सही था, और जब उन्होंने कैलिफोर्निया में दर्ज निधन के समय की तुलना अपने संदेश प्राप्त होने के समय से की, तो उन्होंने पाया कि समय के अंतर को ध्यान में रखते हुए, यह संदेश मिस एच. की मृत्यु के ठीक बाद प्राप्त हुआ था! लेकिन आम लोग, यानी वे लोग जिनका ज्योतिष से कोई लेना-देना नहीं है और न ही उनमें कोई रुचि है, जो अक्सर संशयवादी होते हैं और मृत्यु के बाद के जीवन में दृढ़ अविश्वास रखते हैं—अक्सर ऐसे संदेशों के प्राप्तकर्ता होते हैं और मृतकों से संवाद का अनुभव करते हैं।

एक बार जब मैं पेंसिल्वेनिया के वेन्सबर्ग में वेन्सबर्ग कॉलेज में व्याख्यान दे रहा था, तो एक युवती मेरे पास आई, जिसे अप्रैल 1963 में इसी तरह का एक बहुत ही दिलचस्प अनुभव हुआ था।

सैंड्रा आर. अपने परिवार के साथ पिट्सबर्ग के दक्षिण में एक छोटे से कस्बे में एक घर में रहती थी। उसका भाई नील आर., जिसकी उम्र उस समय बाईस वर्ष थी, पिछले तीन वर्षों से बैंक में कैशियर के रूप में काम कर रहा था। युवा नील अक्सर सेना में जाने के प्रति अपनी नापसंदगी ज़ाहिर करता था; उसे डर था कि वह मारा जाएगा। परिणामस्वरूप, उसकी माँ और बहन, जिनसे वह बहुत करीब था, ने उसे छह महीने की सेवा के लिए नेशनल गार्ड में शामिल होने के लिए मना लिया। चूंकि उसकी भर्ती तो होनी ही थी, इसलिए वह इस तरह अपनी सेवा अवधि को कम कर सकता था।

अंततः नील इस बात पर सहमत हो गया कि इन परिस्थितियों में यही सबसे अच्छा कदम है, और वह नेशनल गार्ड में शामिल हो गया। उसने बैंक में अपने पद से इस्तीफा दे दिया और ऐसा प्रतीत हुआ कि उसने स्थिति को स्वीकार कर लिया है।

अप्रैल में उन्हें आदेश और टिकट मिल गए और उन्हें अगले सोमवार से एक सप्ताह बाद बुनियादी प्रशिक्षण के लिए रिपोर्ट करना था। घर पर अपने आखिरी दिनों में उन्होंने कई बार इस बात का ज़िक्र किया कि उन्हें रविवार सुबह 5 बजे निकलना है, मानो यह वाकई कोई महत्वपूर्ण और अंतिम बात हो। अपने जाने से पहले वाले सोमवार को वे अपने दोस्तों से मिलने गए और उन्हें अलविदा कहा। हमेशा की तरह घर से निकलते हुए उन्होंने अपनी माँ के गाल पर एक चुंबन दिया और खुशी से कहा, "फिर मिलेंगे," और बाहर चले गए।

वह कभी वापस नहीं लौटा। अगली सुबह परिवार को सूचना मिली कि वह अपने घर से लगभग दो मील दूर एक सुनसान ग्रामीण सड़क पर खड़ी अपनी कार में मृत पाया गया है। उसने कार्बन मोनोऑक्साइड साँस लेकर आत्महत्या कर ली थी।

इस खबर से उनके परिवार में गहरा सदमा फैल गया। पहले तो उन्हें यकीन ही नहीं हुआ, क्योंकि उन्हें पूरा विश्वास था कि उन्होंने अपने परिवार के लिए कोई न कोई संदेश जरूर छोड़ा होगा। लेकिन घर की पूरी तलाशी लेने के बावजूद कुछ भी नहीं मिला। उन्होंने अपना सारा सामान व्यवस्थित कर रखा था, कोई कर्ज या प्रतिबद्धता नहीं छोड़ी थी, लेकिन किसी के लिए भी कोई संदेश नहीं था।

उन्हें उनके गृहनगर में दफनाया गया और परिवार ने इस गहरे दुख से उबरने की कोशिश की। उनकी बहन सैंड्रा उनसे तीन साल छोटी थीं, लेकिन दोनों इतनी करीबी थीं कि उनके बीच कई बार टेलीपैथिक संबंध बन जाते थे, जिनमें वे एक-दूसरे के मन की बात जान लेती थीं। सैंड्रा को समझ नहीं आ रहा था कि उनके भाई ने यह कठोर कदम उठाने से पहले उनसे इस बारे में बात क्यों नहीं की।

घर में सैंड्रा और नील दोनों के कमरे ऊपर की मंजिल पर थे। नील की मृत्यु के बाद, सैंड्रा अपने दिवंगत भाई के कमरे के इतने पास सोने के बारे में सोच भी नहीं सकती थी, इसलिए वह नीचे बैठक में रखे सोफे पर सोई। अंतिम संस्कार का दिन शुक्रवार था, और सैंड्रा को लग रहा था कि यह दिन कभी नहीं बीतेगा। आखिरकार, एक बेचैन, लगभग नींदहीन रात के बाद, शनिवार की सुबह हुई। पूरे दिन वह असहज महसूस करती रही, और वातावरण में एक ऐसा तनाव था जिसे वह लगभग असहनीय पा रही थी। रात होने पर, सैंड्रा ने अपनी माँ से सोफे पर उसके साथ सोने का अनुरोध किया। दोनों में से किसी ने भी नींद की गोली या कोई भी निश्चिंत करने वाली दवा नहीं ली थी। उन्होंने आत्महत्या के बारे में फिर से हर पहलू से चर्चा की, लेकिन कोई सुराग नहीं मिला। अंत में, वे थकान से सो गईं।

अचानक एक चटकने की आवाज़ से सैंड्रा गहरी नींद से जाग उठी। आवाज़ बिल्कुल वैसी ही थी जैसे किसी ने उसके सिर के ठीक ऊपर उंगलियां चटकाई हों। सैंड्रा के पूरी तरह जागते ही उसने अपने बगल में अपनी माँ के करवट बदलने की आवाज़ सुनी।

“क्या तुमने वो आवाज़ सुनी?” उसकी माँ ने पूछा। उसने भी वो अजीब सी चटकने की आवाज़ सुनी थी। दोनों औरतें अब पूरी तरह जाग चुकी थीं।

उन्हें सिर से लेकर पैर तक झुनझुनी सी महसूस हो रही थी, मानो उन्हें बिजली के सॉकेट में प्लग कर दिया गया हो! उनके शरीर में किसी प्रकार का करंट दौड़ रहा था और वे अपने किसी भी अंग को हिलाने में पूरी तरह असमर्थ थे।

बैठक कक्ष घर के सामने वाले हिस्से में स्थित था। खिड़कियों पर लगे पर्दे पूरी तरह बंद थे और उनसे ज़रा भी रोशनी नहीं आ रही थी। कमरे में आने वाली एकमात्र रोशनी उनके पीछे स्थित एक दरवाज़े से आ रही थी, जो दालान की ओर खुलता था। अचानक, उन्होंने अपने बाईं ओर एक तेज़ रोशनी देखी, जो उनकी ओर बढ़ती हुई आ रही थी। जब उन्होंने उसे पहली बार पास आते देखा, तो उसकी चमक बिजली के बल्ब जैसी थी। वह माँ की तरफ सोफे से लगभग दो फीट की दूरी पर दिखाई दी और धीरे-धीरे तेज़ होती जा रही थी। "यह क्या है, यह क्या है?" वे एक-दूसरे से चिल्लाए, और फिर सैंड्रा ने देखा कि उस रोशनी का एक आकार था। रोशनी से घिरा हुआ एक सिर और कंधे थे!

भयभीत और धड़कते दिल के साथ, सैंड्रा ने खुद को यह कहते हुए सुना: "यह नील है!" जैसे ही उसने अपने दिवंगत भाई का नाम पुकारा, रोशनी अपनी चरम सीमा पर पहुँच गई। इसके साथ ही, दोनों महिलाओं को असीम शांति और राहत का अनुभव हुआ।

श्रीमती आर., जो अभी भी अपने शरीर को हिलाने में असमर्थ थीं, ने पूछा: "आप क्या चाहते हैं? आपने ऐसा क्यों किया?"

यह कहते ही वह रोने लगी। उसी क्षण तेज रोशनी के भीतर उंगलियों के आकार की प्रकाश की लहरें दिखाई दीं, मानो कोई अलविदा कह रहा हो। फिर रोशनी धीरे-धीरे मंद होती गई और अंत में पूरी तरह गायब हो गई।

उसी क्षण कमरे में ठंडी हवा का एक झोंका आया। थोड़ी देर बाद उन्हें सीढ़ियों पर किसी के चलने की आवाज़ साफ़ सुनाई दी। वे घर में अकेली थीं, इसलिए उन्हें पता था कि यह कोई इंसान नहीं हो सकता। अब सीढ़ियाँ ऊपर नील के कमरे की ओर बढ़ रही थीं। जब वे सबसे ऊपर वाली सीढ़ी पर पहुँचीं, तो सीढ़ी से वैसी ही चरमराहट की आवाज़ आई जैसी सैंड्रा के भाई के सीढ़ियाँ चढ़ते समय हमेशा आती थी। सालों से सैंड्रा ने यह आवाज़ बार-बार सुनी थी।

नील का कमरा ठीक उनके सिर के ऊपर था, और घर में कोई आवाज़ नहीं थी। सिवाय ऊपर से आती उन कदमों की आहट के। दोनों महिलाएँ सोफे पर बिल्कुल शांत लेटी हुई थीं, चाहकर भी हिल नहीं पा रही थीं। कदमों की आहट गलियारे से होते हुए नील के कमरे में चली गई। फिर उन्हें किसी के बिस्तर पर बैठने की आवाज़ सुनाई दी, और उन्हें बिस्तर के स्प्रिंग किसी के वज़न से दबने की साफ़ आवाज़ सुनाई दी! चूंकि बिस्तर ठीक उनके सिर के ऊपर लिविंग रूम में था, इसलिए इन आवाज़ों को पहचानने में कोई गलती नहीं हो सकती थी। इस क्षण, उनके शरीर अचानक सामान्य हो गए। तनाव टूट गया और सैंड्रा उछल पड़ी, बत्ती जलाई और सोफे के बगल में रखी घड़ी देखी। सुबह के 5 बज रहे थे - ठीक वही समय जब नील को जाना था, अगर उसने आत्महत्या न की होती!

इसके साथ ही घर में फिर से शांति छा गई। लेकिन सैंड्रा और उसकी माँ अब नील के लिए शोक नहीं मना रही थीं। उन्होंने अपरिहार्य को स्वीकार कर लिया और यह महसूस करने लगीं कि जीवन दूसरे आयाम में भी चलता रहता है। उनके और नील के बीच का बंधन फिर से स्थापित हो गया, और उन्हें यह जानकर एक तरह की राहत मिली कि वह जहाँ भी है, ठीक है।

उस पहली विदाई मुलाकात के बाद, अलग-अलग समय पर घर में नील के पसंदीदा आफ्टरशेव लोशन की तेज़ खुशबू आती रही। उनकी मृत्यु के समय, उनकी कार के ग्लव कंपार्टमेंट में इसकी एक बोतल रखी थी। चूंकि घर में कोई और आफ्टरशेव लोशन का इस्तेमाल नहीं कर रहा था, इसलिए इसके अलावा कोई और कारण ढूंढना मुश्किल है।

न तो श्रीमती आर. और न ही उनकी बेटी को हिस्टीरिया की समस्या थी। उन्होंने इन घटनाओं को पूरी तरह स्वाभाविक माना और हमेशा यह सुनिश्चित किया कि कोई सामान्य व्याख्या न हो। लेकिन अंततः, उन्हें पता था कि उनके नील ने उन्हें निराश नहीं किया था। उनका रिश्ता अब भी अटूट था।

पिट्सबर्ग के उपनगर में रहने वाली गृहिणी श्रीमती जी. बी. और उनके भाई फ्रैंक जी. बचपन से ही घनिष्ठ मित्र थे, जिसका उस घटना से कुछ संबंध हो सकता है जिसका वर्णन मैं अब करने जा रहा हूँ। जब भी लोगों के बीच भावनात्मक बंधन होता है, तो मृतकों की दुनिया और जीवितों की दुनिया के बीच संवाद आसान प्रतीत होता है। लेकिन ऐसा हमेशा नहीं होता, क्योंकि अजनबी भी इस तरह से एक-दूसरे से संवाद कर चुके हैं।

फ्रैंक जी. और इकतालीस अन्य लोग नौसेना के एक परिवहन पोत पर सवार थे जो समुद्र के ऊपर से उड़ रहा था। 26, 27 और 28 अक्टूबर, 1954 की रातों को श्रीमती बी. को एक ऐसा स्वप्न आया जिसमें उन्हें लगा कि कोई डूब रहा है। यह बार-बार आने वाला स्वप्न उन्हें परेशान करता था, लेकिन उन्होंने इसे अपने भाई से नहीं जोड़ा क्योंकि उन्हें पता नहीं था कि वह कहाँ है या उस समय क्या कर रहा है। 30 अक्टूबर, 1954 को, उन्हें अपने कमरे में किसी की उपस्थिति का अहसास हुआ और उनकी नींद खुल गई। यह उनके अपने घर में नहीं बल्कि उनके ससुराल में था। उनके पति बगल के कमरे में सो रहे थे। पूरी तरह जागने के बाद जब उन्होंने ऊपर देखा, तो उन्होंने अपने बिस्तर के पास एक आकृति को पूरी तरह सफेद कपड़ों में देखा। इस क्षण उन पर गहरा दुःख छा गया। भयभीत होकर वह बिस्तर से कूदकर अपने पति के पास दौड़ीं।

अगली शाम, टेलीफोन की घंटी बजी। उसका भाई, फ्रैंक, जो एक दुर्भाग्यपूर्ण हवाई परिवहन विमान में चालक दल का सदस्य था, समुद्र में लापता हो गया था।

मैसाचुसेट्स के सलेम की श्रीमती विलियम एफ., जो कोई डायन नहीं बल्कि एक सुव्यवस्थित गृहिणी थीं, ने जिसे वह "आध्यात्मिक अनुभव" कहती हैं, उसका अनुभव किया, जो उन्हें यह आश्वस्त करने के लिए पर्याप्त था कि जीवन वास्तव में मृत्यु के बाद भी मौजूद है।

1957 में, उनकी वृद्ध दादी का देहांत हो गया, और दादाजी की देखभाल की ज़िम्मेदारी उनके माता-पिता पर आ गई। इतने वर्षों के साथी के बिना वह बुजुर्ग व्यक्ति बहुत अकेला महसूस कर रहा था, और अंततः उसकी हालत इतनी बिगड़ गई कि उसे अस्पताल में भर्ती कराना पड़ा। 1961 में उनका निधन हो गया, और परिवार अंतिम विदाई के लिए स्थानीय शवगृह में संयुक्त रूप से गया।

श्रीमती एफ. और उनकी बड़ी बहन उस कमरे में बैठी थीं जहाँ शव पड़ा था, तभी अचानक उन दोनों को—जैसा कि उन्हें बाद में एहसास हुआ—अपने साथ किसी की उपस्थिति का एक ही अजीब सा अहसास हुआ।

शोक की भावना इतनी प्रबल हो गई कि श्रीमती एफ. ने अंततः अपना सिर उठा लिया, जो शोक में झुका हुआ था। यह उल्लेख करना आवश्यक है कि उन्हें अंत्येष्टि गृह पसंद नहीं थे और वे इससे पहले कभी किसी अंत्येष्टि गृह में नहीं गई थीं।

जैसे ही उसने ताबूत के ऊपर देखा, उसे अपने दादा और दादी मुस्कुराते हुए दिखाई दिए। हालाँकि उनके होंठ नहीं हिल रहे थे, फिर भी महिला को ऐसा लगा जैसे उसके "नाना" उससे कह रहे हों: "अब सब ठीक है। मैं अब उनकी देखभाल कर रही हूँ। दुखी मत हो। हम फिर से साथ हैं।"

जब मृत आत्माएं जीवितों से संपर्क साधती हैं—हंस होल्ज़र की माता, श्रीमती मार्था होल्ज़र का चित्र। यह चित्र दिवंगत डॉ. जॉन मायर्स की फोटोग्राफिक मीडियमशिप के माध्यम से प्राप्त किया गया था, जिसमें माइक वालेस मॉनिटर थे। (दाईं ओर लाइफटाइम की तस्वीर।)
माता-पिता ने यह दृश्य नहीं देखा, लेकिन बड़ी बहन ने देखा।
मृतकों की आत्माएं चाहती हैं कि उन्हें उनके वास्तविक स्वरूप में पहचाना जाए। इसलिए उनमें से अधिकांश अपने शारीरिक जीवन के रूप में प्रकट होती हैं—अर्थात्, वे वही कपड़े पहने होती हैं जो उन्होंने मृत्यु के समय पहने थे या जो वे आमतौर पर पहनना पसंद करती थीं। लेकिन ऐसे भी मामले हैं जहां मृत आत्माएं अपने सामान्य कपड़ों के बजाय एक साधारण सफेद वस्त्र में प्रकट हुई हैं। मैंने स्वयं अपनी माँ को उनकी मृत्यु के कई वर्षों बाद देखा था, उस समय उन्होंने जो पहना था उसे मैं "एक लंबी नाइटशर्ट" कहता था। वह क्षण संक्षिप्त था,

लेकिन मेरे लिए यह महसूस करने के लिए पर्याप्त था कि मैं पूरी तरह से जागृत था और उनकी परछाईं सामने वाली दीवार पर पड़ रही थी।

मुझे लगता है कि यह सफेद चोगा शायद वहाँ का "साधारण" पहनावा है, और ज़रूरत पड़ने पर धरती के कपड़े पहनना वैकल्पिक है। इसमें कोई शक नहीं कि सफेद चोगा ही उन कई कहानियों का कारण है जिनमें सफेद वस्त्र पहने देवदूत मनुष्यों को दिखाई देते हैं और भूतों को आमतौर पर "सफेद" कहा जाता है। यह भी सच है कि एक्टोप्लाज्म, जिससे मृतकों के शरीर बनते हैं, सफेद होता है। यह एक एल्ब्यूमिन पदार्थ है जिसका प्रयोगशालाओं में विश्लेषण किया गया है और जिसे जीवित लोगों से शारीरिक séances के दौरान निकाला जाता है।

जब भी इस तरह की अभिव्यक्तियाँ प्रेतात्माओं से संपर्क करने के लिए सेन्स कक्ष में रखी जाती हैं, तो सफेद रंग का अंधेरे की आवश्यकता से कुछ संबंध होता है। स्पष्ट रूप से तेज सफेद प्रकाश पदार्थ को नष्ट कर देता है, शायद इसलिए क्योंकि प्रकाश और मानसिक ऊर्जाएँ परस्पर विरोधी दिशाओं में यात्रा कर रही होती हैं और एक दूसरे को निरस्त कर सकती हैं। लेकिन यह अलौकिक पदार्थ ठोस और वास्तविक है और किसी भी प्रकार से कल्पना की उपज नहीं है।

पूर्वी न्यू इंग्लैंड में रहने वाली विधवा श्रीमती सी. एम. आर. का विवाह चालीस वर्ष से अधिक समय तक उनके पति जॉन के साथ हुआ था, जिनका 1966 में निधन हो गया। जॉन आर. एक चमड़ा कारखाने में मशीनिस्ट के रूप में काम करते थे। जब उन्होंने सीने में दर्द की शिकायत की, तो उनकी बीमारी का निदान फुफ्फुसशोथ (प्लूरिसी) के रूप में किया गया और उन्हें बिस्तर पर आराम करने के लिए कहा गया। मार्च 1966 के उस दिन मृत्यु का कोई संकेत नहीं था। डॉक्टर एक सामान्य जांच के बाद चले गए और जॉन आर. वापस बिस्तर पर चले गए।

रात के 2 से 3 बजे के बीच, उन्हें अचानक दर्द होने लगा। वे बिस्तर पर बैठे थे जब उनकी पत्नी दौड़कर उनके पास आईं। उन्होंने उन्हें आराम से लिटाया और वे फिर सो गए—और फिर कभी नहीं उठे। दर्द के कारण, श्रीमती आर. बिस्तर के पास ही पहरा देती रहीं। अचानक उन्होंने देखा कि सफेद वस्त्र पहने एक आकृति बिस्तर से उठी और कुछ पल के लिए उस पर बैठ गई, मानो अपनी स्थिति का जायजा ले रही हो। चादरों के सरसराने की आवाज आई।

चूंकि आकृति की पीठ उनकी ओर थी, इसलिए श्रीमती आर. उसके चेहरे के हाव-भाव नहीं देख पाईं। लेकिन वह एक विशालकाय व्यक्ति था, और उनके पति भी विशालकाय थे। उसी समय, उनके सिर में एक अजीब सी अनुभूति हुई। अचानक, जैसे अंदर कोई गुब्बारा फट गया हो, वह अनुभूति रुक गई और सब कुछ शांत हो गया। सफेद वस्त्र पहने आकृति गायब हो गई थी। वह बिस्तर के पास गईं और पाया कि उनके पति वहां नहीं थे।

श्रीमती आर. के भाई, रॉबर्ट सी., द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान सेना में लेफ्टिनेंट थे और बाद में कनाडा में सीएनआर रेलवे में कार्यरत रहे। श्रीमती आर. उनसे लगातार संपर्क में नहीं थीं, क्योंकि वे उनसे हज़ार मील दूर रहती थीं। लेकिन 11 अप्रैल, 1948 को, वे और उनकी बेटी अपने शयनकक्ष में थीं, जब दोनों महिलाओं ने रॉबर्ट सी. को काले वस्त्र पहने हुए कमरे में झांकते हुए देखा, उनका हाथ दरवाज़े के हैंडल पर था। उन्होंने उन दोनों को देखकर मुस्कुराया और श्रीमती आर. ने अपने भाई से बात की, लेकिन वे अचानक गायब हो गए। यह घटना आधी रात और सुबह 1 बजे के बीच हुई। हैलिफ़ैक्स विक्टोरिया जनरल अस्पताल के रिकॉर्ड बताते हैं कि लेफ्टिनेंट सी. का आधिकारिक निधन 12 अप्रैल, 1948 को सुबह 7 बजे हुआ। स्पष्ट रूप से, वे कई घंटे पहले ही शरीर त्याग कर अपनी अंतिम यात्रा पर निकल चुके थे। रास्ते में अपनी बहन के घर रुककर वे अलविदा कहने आए थे।

हाई स्कूल पास और बेहद समझदार डायने एस. ने सत्रह साल की उम्र तक ज्योतिष में ज़रा भी दिलचस्पी नहीं दिखाई। वह मिशिगन के एक मध्यम आकार के कस्बे में अपने माता-पिता के साथ रहती थी। उसका दोस्त कर्म उसकी आँखों का तारा था और कर्म भी उससे उतना ही प्यार करता था। अगर सब कुछ सामान्य होता, तो वे दोनों शादी कर लेते।

लेकिन एक रात, जब वह उसे घर छोड़ कर लौटा था, कर्म की अपने घर जाते समय एक कार दुर्घटना में मृत्यु हो गई। इस सदमे से डायने बुरी तरह प्रभावित हुई और उसे कर्म की बहुत याद आने लगी। वह सोचने लगी कि क्या इस विश्वास में कोई सच्चाई है कि मृत्यु के बाद भी इंसान जीवित रहता है।

अपनी सहेली के अंतिम संस्कार के एक सप्ताह बाद, सुबह उठते ही उसे अंतिम संस्कार के फूलों की खुशबू महसूस हुई। यह सिलसिला पाँच दिनों तक चलता रहा। उस समय घर में ऐसे कोई फूल नहीं थे। फिर कुछ और बातें हुईं। डायना अपनी एक सहेली के घर से लौट रही थी।

आधी रात के करीब का समय था। घर पहुँचते समय, उसे धीरे-धीरे कार में किसी और की मौजूदगी का एहसास होने लगा। उसने इसे अपनी कल्पना समझकर नज़रअंदाज़ कर दिया, लेकिन यह एहसास बना रहा। उसने एक पल के लिए इधर-उधर देखा, लेकिन पिछली सीट खाली थी। उसने फिर से सड़क पर ध्यान केंद्रित किया। अचानक उसे लगा कि किसी ने पहले उसके बाएँ हाथ को छुआ, फिर दाएँ हाथ को। इसमें कोई शक नहीं था; स्पर्श बहुत वास्तविक था।

एक बार वह गहरी नींद से जाग उठी। उसे कमरे में किसी की मौजूदगी का एहसास हुआ। आखिरकार उसने अपनी आँखें खोलीं और चारों ओर देखा। उसे कुछ भी असामान्य नहीं दिखा, लेकिन उसे यकीन था कि दूसरे पलंग पर कोई और बैठा उसे देख रहा है। यह एहसास इतना तीव्र हो गया कि उसे पसीना आने लगा। लेकिन उसने उठने की हिम्मत नहीं की और आखिरकार वह फिर से सो गई। अगली सुबह जब वह जागी, तो सबसे पहले उसने दूसरे पलंग की ओर देखा। वहाँ, पलंग के नीचे, चादर पर एक निशान था, मानो कोई उस पर बैठा हो!

उसके बाद कुछ समय के लिए शांति छा गई, और डायने ने बड़ी राहत के साथ सोचा कि मानसिक अभिव्यक्तियाँ आखिरकार समाप्त हो गई हैं।

लेकिन जुलाई 1965 के अंत में कुछ ऐसा घटित हुआ जिसने उन्हें अपने उस विचार पर पुनर्विचार करने के लिए मजबूर कर दिया। जेरी नाम का एक युवक उस दुर्भाग्यपूर्ण दुर्घटना के बाद से उनका नियमित साथी था जिसमें कर्म की मृत्यु हो गई थी। एक शाम डायने के घर पर एक पार्टी थी। मेहमानों के जाने के बाद, जेरी वहीं रुक गया।

वे दोनों कई घंटों तक साथ बैठे बातें करते रहे। रात ढलती गई और भोर होने लगी। दोनों युवक नीचे सोफे पर बैठे थे कि अचानक जेरी ने ऊपर देखा और पूछा कि क्या उसकी माँ सीढ़ियों के ऊपर खड़ी है! डायने जानती थी कि उसकी माँ अपने कमरे में सो रही होगी, फिर भी उसने जेरी की नज़र का पीछा करते हुए सीढ़ियों के ऊपरी हिस्से तक देखा।

वहाँ एक आकृति खड़ी थी, जिसकी रूपरेखा अस्पष्ट थी और जो देखने में किसी सफेद पतले पदार्थ से बनी हुई प्रतीत हो रही थी। उसके आधार पर एक चमकदार रोशनी थी। दोनों युवक बिना हिले-डुले उस आकृति को देखते रहे और वह धीरे-धीरे लुप्त हो गई।

जेरी फिर घर के लिए निकल पड़ा और डायने सोने चली गई। गाड़ी चलाते हुए वह उस जगह के पास से गुज़रने ही वाला था जहाँ कुछ महीने पहले कर्म की हत्या हुई थी। वह एक पल के लिए रुका और पैर फैलाने के लिए गाड़ी से बाहर निकला। जब वह वापस अपनी कार की ओर बढ़ा, तो उसने देखा कि कार घने कोहरे से घिरी हुई है। वह कार में बैठ गया, जो अजीब तरह से ठंडी और उमस भरी लग रही थी। उसने दाईं ओर देखा और डर के मारे उसने एक सफेद, बादल जैसी वस्तु को सड़क पार करते हुए कार की ओर आते देखा। जैसे ही वह कार के पास आई, जेरी उसे साफ-साफ देख सका: वह एक धुंधली सी मानव शरीर की छवि थी, लेकिन चेहरा बिल्कुल स्पष्ट था। वह कर्म था। वह जेरी के साथ आगे की सीट पर बैठ गया, जेरी डर से कांप रहा था। जेरी की आँखों में पानी आ रहा था और वह हिलने की हिम्मत नहीं कर पा रहा था।

"डाय का ख्याल रखना," उसके बगल से एक अजीब सी टूटी हुई आवाज़ आई। ऐसा लग रहा था जैसे वह आवाज़ बहुत दूर से गूंज रही हो।

तभी किसी का हाथ उसकी ओर बढ़ा और जेरी बेहोश हो गया। जब उसे होश आया तो उसने खुद को स्थानीय कब्रिस्तान के सामने खड़ी गाड़ी में पाया। वह वहाँ कैसे पहुँचा, यह उसे नहीं पता था। कर्म की दुर्घटना वाली जगह से कब्रिस्तान तक काफी दूरी है। लेकिन वह वहाँ था, बड़ी मुश्किल से अपनी गाड़ी स्टार्ट कर पाया और घर की ओर चल पड़ा।

जब उसने अपनी कहानी अपने माता-पिता को सुनाई, तो उन्हें लगा कि उसने यह सब सपना देखा है। जेरी को पूरा यकीन था कि उसने सपना नहीं देखा था। इसके बाद जो घटनाएँ घटीं, उनसे उसकी बात सच साबित हुई। ऐसा लगता है कि कर्म यह सुनिश्चित करना चाहता था कि जेरी अपनी पूर्व प्रेमिका का अच्छे से ख्याल रखे। कई बार जेरी को अपने कंधे पर किसी का हाथ महसूस होता था।

इसी दौरान डायने ने मुझसे संपर्क किया। चूंकि मैं उस समय तुरंत मिशिगन नहीं जा सकता था, इसलिए मैंने उसे स्पष्ट निर्देश भेजे कि उसे क्या करना है। अगली बार जब वह बेचैन सा दिखने लगे, तो उसे उससे शांति से बात करनी थी और उससे कहना था कि वह उसके बारे में चिंता करना छोड़ दे। जेरी वाकई उसका ख्याल रखेगा, और वे नहीं चाहते थे कि कर्म भी

उनके आसपास रहे। तीन लोगों की भीड़ तो होती ही है, भले ही उनमें से एक भूत ही क्यों न हो।

जाहिर तौर पर केर्म को इशारा समझ आ गया और वह हमेशा के लिए चला गया। लेकिन डायने के लिए यह एक संकेत था कि एक और दुनिया है जहाँ हम सब फिर से मिल सकते हैं।

हालांकि बिछड़ने वाले प्रियजनों के कई दर्शन तब होते हैं जब संदेश पाने वाले पूरी तरह से जागे होते हैं या उन्हें समाचार सुनने के लिए जगाया जा रहा होता है, लेकिन ऐसे कई और मामले दर्ज हैं जिनमें घटनाएँ स्वप्न अवस्था में घटित होती प्रतीत होती हैं। मैंने अपनी पुस्तक 'ईएसपी एंड यू' में स्वप्नों के बहुआयामी स्वरूप पर एक पूरा अध्याय समर्पित किया है। कई स्वप्न भौतिक कारणों से उत्पन्न होते हैं या मनोविश्लेषणात्मक विषय होते हैं। लेकिन सच्चे स्वप्न और मानसिक स्वप्न जैसी चीज़ें भी होती हैं, जिनमें सटीक संदेश प्राप्त होते हैं जो बाद में सच हो जाते हैं।

श्रीमती मैडलीन एम. पूर्वी क्षेत्र के एक बड़े शहर में रहती हैं। वह एक "सच्ची स्वप्नद्रष्टा" हैं और उन्होंने अपनी अलौकिक शक्तियों को शांतिपूर्वक और बिना किसी भय के स्वीकार कर लिया है।

"सच्चे सपने मैं जागने पर भी नहीं भूल सकती, चाहे मैं कितनी भी कोशिश करूँ," उसने मुझे समझाया, "जबकि सामान्य सपने जल्दी ही धुंधले पड़ जाते हैं और मैं उन्हें याद नहीं कर पाती, चाहे मैं कितनी भी कोशिश कर लूँ।"

जब मैडलीन चौदह साल की थी, तब उसकी माँ को एक जानलेवा बीमारी के कारण अस्पताल ले जाया गया। हालाँकि, लड़की को बीमारी की गंभीरता का अंदाजा नहीं था, और उसे बाद में पता चला कि उसकी माँ जानती थी कि उसकी जल्द ही मृत्यु हो जाएगी और वह इतनी कम उम्र में अपनी बेटी को छोड़कर जाने को लेकर चिंतित थी।

उस समय, मैडलीन ने अपनी एक दोस्त और पूर्व पड़ोसी के निमंत्रण पर उसके घर रात बिताने का फैसला किया था। उस रात उसे एक जीवंत सपना आया। उसने अपनी माँ को बिस्तर के पास खड़े होकर उसके पैर सहलाते और एक प्यारी लेकिन उदास मुस्कान के साथ उसे देखते हुए देखा। हालाँकि, मैडलीन को अपनी माँ के रूप-रंग ने हैरान कर दिया। सबसे पहले तो, उसने छोटे-छोटे बटनों वाली एक अजीब सी पोशाक पहनी हुई थी। उसके बाल ऐसे

बने हुए थे जैसे उसने पहले कभी नहीं बनाए थे। पोशाक और अजीबोगरीब हेयरस्टाइल, दोनों ने ही उस युवती पर गहरा प्रभाव डाला, साथ ही अपनी माँ को देखकर उसके मन में एक खालीपन का भाव भी उमड़ आया।

सपने में मां ने कहा, "मुझे अब जाना होगा, मैडलीन।"

"लेकिन तुम कहाँ जा रही हो?" मैडलीन ने सपने में खुद से यह सवाल पूछा।

"कोई बात नहीं, मैडलीन, मुझे अब जाना होगा!"

और इस टिप्पणी के साथ, उसकी माँ धीरे से दरवाजे की ओर बढ़ी, धीरे से उसे अपने पीछे बंद किया और एक बार फिर पीछे मुड़कर कहा: "अलविदा, मैडलीन।"

इतना कहकर दरवाजा बंद कर दिया गया।

अगले ही पल मैडलीन ने खुद को बिस्तर पर बैठा हुआ पाया और वह फूट-फूटकर रोने लगी, "माँ, मत जाओ, कृपया मत जाओ!" उसकी मेज़बान उसके बगल में थी और उसे इस हालत से बाहर निकालने की कोशिश कर रही थी।

“यह तो बस एक सपना था,” दोस्त ने समझाया, “और देखो, काफी रात हो गई है—दो बजकर पाँच मिनट हो गए हैं! अब हम दोनों को सो जाना चाहिए!”

इसके साथ ही मैडलीन और उसकी सहेली वापस सो गईं, लेकिन सोने से पहले मैडलीन ने अपनी सहेली को अपने सपने के बारे में विस्तार से बता दिया था।

अगली सुबह तड़के उसकी सहेली ने उसे गहरी नींद से जगाया।

“तुम्हारा भाई हमारे साथ नाश्ता करने आया है,” उसकी सहेली ने बताया। मैडलीन जल्दी से तैयार होकर अपने भाई से मिलने चली गई।

“उसे अपने सपने के बारे में बताओ,” दोस्त ने उसे कोहनी मारते हुए कहा।

कुछ देर की खामोशी के बाद भाई ने कहा: "मुझे जलन हो रही है, मैडलीन; वह मेरे पास क्यों नहीं आई?"

फिर उसने उसे बताया कि उनकी मां का पिछली रात ढाई बजकर पांच मिनट पर निधन हो गया था।

इतनी स्तब्ध कि रोने की भी शक्ति न होने पर, मैडलीन को एहसास हुआ कि उसकी माँ उसे अलविदा कहने आई थी। स्वप्न अवस्था में यह संबंध स्थापित करना बहुत आसान होता है, क्योंकि इसमें विचारों की कोई बाधा नहीं होती जो संचार में रुकावट उत्पन्न करे।

वे शव देखने गए। जब मैडलीन ने अपनी माँ का शव देखा, तो उसने अपने भाई का हाथ पकड़ लिया और अपने नाखून उसमें गहराई तक गड़ा दिए।

“क्या बात है?” उसने हैरानी से पूछा। वह केवल अपनी माँ के पहनावे की ओर इशारा कर सकी: वह पोशाक जिसमें छोटे-छोटे बटन लगे थे, जो उसने पहले कभी नहीं पहनी थी, और अजीबोगरीब केश-शैली—बिल्कुल वैसी ही जैसी मैडलीन ने अपने “सपने” में देखी थी।

स्पष्टतः मैडेलिन एम. दिवंगत आत्माओं से संदेश ग्रहण करने में सक्षम थीं और आज भी हैं। कई वर्षों बाद, 1957 में, उन्हें एक और सच्चा सपना आया। इस बार उन्होंने स्वयं को एक घर में प्रवेश करते, सीधे घर के पिछले हिस्से में जाते और एक बड़े भोजन कक्ष में खुलने वाले द्वार पर रुकते देखा। सपने में, जब वह उस द्वार पर खड़ी थीं, तो उन्होंने अपने मृत पिता को मेज के शीर्ष पर बैठे देखा। मैडेलिन के वहाँ पहुँचते ही उनकी मृत माता भी अंदर आ गईं। उनकी माता अब उनके पिता के बगल में खड़ी थीं, जिनका चेहरा आनंद से दमक रहा था। माता-पिता दोनों अपनी मृत्यु के समय की तुलना में बहुत छोटे दिखाई दे रहे थे और दोनों बहुत उत्साहित लग रहे थे। लेकिन यह सारी हलचल सपने देखने वाली की उपस्थिति के कारण नहीं थी; वास्तव में उन्होंने उस पर बिल्कुल ध्यान नहीं दिया। अपने सपने में मैडेलिन को उपेक्षित महसूस हुआ और उन्होंने सोचा कि मेज पर एक अतिरिक्त स्थान होने के बावजूद उन्हें भोजन की मेज पर बैठने के लिए क्यों नहीं कहा गया।

“क्या यह अद्भुत नहीं है कि हम सब फिर से एक साथ यहाँ हैं?” उसने खुद से पूछा। “मेरा भाई कहाँ है?”

अंत में उसकी माँ ने खाली कुर्सी की ओर इशारा करते हुए कहा, “ओह, वह यहाँ आएगा; हम उसका इंतज़ार कर रहे हैं—दरअसल, वह अभी रास्ते में है!”

अगली सुबह श्रीमती एम. को अपना स्वप्न दर्शन स्पष्ट रूप से याद था। लेकिन नौ महीने बाद ही स्वप्न में वर्णित घटनाएँ वास्तविकता में तब्दील हुईं। उनके भाई को भी वही जानलेवा बीमारी हो गई थी जिससे उनकी माँ की मृत्यु हुई थी, और कुछ समय अस्पताल में रहने के

बाद वे भी परलोक चले गए, जहाँ पिछले वर्ष थैंक्सगिविंग के अवसर पर उनके लिए पहले से ही स्थान निर्धारित था।

कई बार ऐसा होता है कि मृत आत्माएं जीवित लोगों को यह बताना चाहती हैं कि वे परलोक में हैं, न कि केवल धरती पर कहीं बिछड़ कर संपर्क से बाहर हो गए हैं। विशेषकर संयुक्त राज्य अमेरिका में, जहां पुलिस पंजीकरण द्वारा लोगों की आवाजाही पर कोई रोक नहीं है, लोग आसानी से एक-दूसरे की नजरों से ओझल हो जाते हैं और उनका पता लगाना या उन्हें ढूंढना मुश्किल हो सकता है। एक मामला वर्जीनिया के तटीय इलाके में रहने वाली एक युवती का था, जो अपनी विवाहित बहन के साथ रहने चली गई थी।

श्रीमती डोरिस एस., विवाहित बहन, का पति सेना में है, इसलिए उन्हें अक्सर एक जगह से दूसरी जगह जाना पड़ता है। लेकिन उस समय उनका अपना घर था, और उनकी बहन का उसमें हमेशा स्वागत होता था। बहन की सगाई एक युवक से हुई थी, जिसके साथ वह कई वर्षों से संबंध बनाए हुए थी। उसे सिगरेट की लत थी, और यहां तक कि उसका प्रेमी भी उसके अत्यधिक धूम्रपान को नापसंद करता था।

जाने से पहले उसने वादा किया था, "मैं एक महीने में तुम्हें अपने साथ ले जाने के लिए वापस आऊंगा, और अगर तुमने सिगरेट पीना घटाकर दिन में दस कर दिया, तो मैं तुमसे शादी कर लूंगा!"

उसके जाने के कुछ ही समय बाद, दोनों महिलाओं के सामने अजीबोगरीब घटनाएं घटने लगीं। बहन के कपड़े बिना किसी कारण के अलमारी में इधर-उधर बिखरे पड़े होते थे। सिगरेट के टुकड़े पूरे घर में मार्कर की तरह बिखरे मिलते थे, जबकि दोनों बहनों में से किसी ने भी उन्हें वहां नहीं रखा था। एक ड्रेस पूरी तरह गायब हो गई, और एक हफ्ते बाद दूसरे दराज में करीने से तह की हुई मिली। कभी-कभी सीढ़ियों पर ऐसे चलने की आवाजें आती थीं जब घर के उस हिस्से में कोई इंसान नहीं होता था। फिर एक दिन बहन का जूता अपने आप सीढ़ियों से नीचे चला गया—जैसे कोई उसे खिसका रहा हो!

श्रीमती एस. के पति उनकी लिखी रहस्यमयी घटनाओं से बहुत प्रभावित हुए और उन्होंने दूसरा घर ढूंढने का फैसला किया। फिर, जब उन्हें कुछ छुट्टियां मिलने वाली थीं, तो परिवार ने पेंसिल्वेनिया में अपने घर लौटने का निर्णय लिया। वहां उन्हें एक ऐसी बात पता चली जो उन्हें

पहले नहीं पता थी: बहन के दोस्त की कुछ सप्ताह पहले एक कार दुर्घटना में मृत्यु हो गई थी। चूंकि उनका कोई रिश्तेदार नहीं था, इसलिए किसी ने भी उन्हें उनकी मृत्यु की सूचना नहीं दी थी।

श्रीमती एस ने टिप्पणी करते हुए कहा, "यह वही होगा जो अपना वादा निभाने की कोशिश कर रहा था। आखिरकार, उसने एक महीने में बहन को लाने का वादा किया था।"

उसके बाद घर में कोई असामान्य घटना नहीं घटी।

न्यूयॉर्क शहर के उपनगर में रहने वाली गृहिणी श्रीमती डार्लीन वी. को कई बार पूर्वाभास हुए थे। लेकिन जिस घटना ने उन्हें यह विश्वास दिलाया कि उनमें एक विशेष क्षमता है, वह तब घटी जब वे सोलह वर्ष की थीं और विस्कॉन्सिन के बीवर डैम स्थित हाई स्कूल में जूनियर कक्षा में पढ़ रही थीं। कैथोलिक धर्म मानने वाली श्रीमती वी. उस समय एक धार्मिक अध्ययन पाठ्यक्रम में भाग ले रही थीं। यह पाठ्यक्रम स्थानीय चर्च में आयोजित किया जा रहा था और इसमें लड़के और लड़कियां दोनों शामिल थे। अध्ययन सत्र के दौरान उन्होंने एक युवक को देखा जो एक तरफ अकेला बैठा था; उसके उदास और अकेले चेहरे ने उनका ध्यान आकर्षित किया। उन्होंने उसके बारे में पूछताछ की और पता चला कि उसका नाम रोजर था, लेकिन उसके दोस्त उसे रॉकी कहते थे। वह पुरोहित बनने की पढ़ाई कर रहा था, लेकिन हाल ही में बीमारी के कारण उसे पढ़ाई छोड़नी पड़ी थी। उस समय उसकी उम्र बीस वर्ष के आसपास थी। डार्लीन और इस दुखी युवक के बीच दोस्ती का रिश्ता पनपा, हालांकि उनकी मां को यह रिश्ता मंजूर नहीं था।

अक्टूबर के अंत के आसपास, वह पढ़ाई की शामों में नहीं आया, और डार्लीन को क्रिसमस से एक सप्ताह पहले ही पता चला कि ऐसा क्यों हुआ। उसके चर्च के पादरी ने उसे बताया कि रॉकी बहुत बीमार है और अस्पताल में भर्ती है। उसने अपनी माँ से अपने बीमार दोस्त से मिलने की अनुमति माँगी, लेकिन उसकी माँ ने मना कर दिया। अगले दिन उसे बहुत ज़ोर से महसूस हुआ कि रॉकी को उसकी ज़रूरत है, इसलिए वह स्कूल के बाद उससे मिलने चली गई। वह युवक बहुत खुश हुआ और उसने पुष्टि की कि वह वास्तव में उससे मिलना चाहता था।

अगले दो महीनों के दौरान, वह जितनी बार हो सके उससे मिलने जाती रही। फरवरी में जिम क्लास में उसका एक एक्सीडेंट हो गया, जिसके कारण उसे दो सप्ताह तक बिस्तर पर रहना पड़ा। लेकिन उसने रॉकी के बारे में अपनी दिलचस्पी बनाए रखी और उसकी माँ को फोन करती रही, जिससे वह कभी नहीं मिली थी। उस युवक को कैंसर था और उसका ऑपरेशन हो चुका था, और माँ डार्लीन को उसकी सेहत के बारे में रोज़ाना जानकारी देती रहती थी।

फरवरी के एक शुक्रवार को वह स्कूल लौट सकी और उस शुक्रवार दोपहर को अस्पताल में अपने दोस्त रॉकी से मिलने का उसका इरादा था। लेकिन इससे पहले कि वह ऐसा कर पाती, उसके भाई ने उसे सुबह का अखबार दिखाया: रॉकी की पिछली रात मौत हो गई थी। इस सदमे से डार्लीन वापस बिस्तर पर चली गई।

उस रात बहुत देर से वह गहरी नींद से जागी और उसे एहसास हुआ कि वह अकेली नहीं है। वह बिस्तर पर बैठ गई और चारों ओर देखा। वहाँ, उसके बिस्तर के पास, उसका दोस्त रॉकी खड़ा था। उसका चेहरा सादा था और वह एक हल्की रोशनी से घिरा हुआ था। जैसे ही उसने देखा कि वह उसे देख रही है, उसने उसकी ओर हाथ बढ़ाया और कहा: "कृपया मेरी माँ की मदद करो; उन्हें तुम्हारी ज़रूरत है।" फिर वह चला गया।

अगली सुबह डार्लीन ने उस आदमी की माँ को फोन किया। इससे पहले कि वह अपना संदेश दे पाती, माँ फूट-फूटकर रोने लगी और कहने लगी कि वह डार्लीन को ढूंढने की कोशिश कर रही थी, जिसका पारिवारिक नाम उसे नहीं पता था।

डार्लीन तब से लेकर अंतिम संस्कार के बाद तक रॉकी की माँ के साथ रही। आखिरकार, उसने रॉकी की मृत्यु के बाद वाली रात की घटना के बारे में रॉकी की माँ को बताया। इससे माँ को बहुत सांत्वना मिली, लेकिन पादरी, जिसे डार्लीन ने अपने अनुभव के बारे में बताया था, ने उसे समझाने की कोशिश की कि यह सब "एक छोटी लड़की की भावनात्मक कल्पना" थी।

दृश्य घटनाएँ ही एकमात्र तरीका नहीं हैं जिनसे मृत आत्माएँ जीवितों के सामने अपनी उपस्थिति प्रकट करती हैं। कभी-कभी ये घटनाएँ केवल श्रव्य होती हैं, लेकिन फिर भी उतनी ही महत्वपूर्ण होती हैं। यह कुछ-कुछ वाद्य यंत्र बजाने जैसा है: कुछ लोग पियानो की ओर आकर्षित होते हैं, तो कुछ वायलिन की ओर—लेकिन दोनों से ही संगीत निकलता है।

मानसिक संचार के साथ भी ऐसा ही है, जो किसी भी सामान्य संचार की तुलना में, प्राप्तकर्ता और प्रेषक दोनों के स्वभाव पर अधिक निर्भर करता है।

श्रीमती विलियम एस. पेंसिल्वेनिया की एक गृहिणी हैं। उनके पति के एक मित्र, पॉल एफ., जो एक बड़ी मेल-ऑर्डर कंपनी में कार्यरत थे, की पचास वर्ष की आयु के आसपास हृदयाघात से मृत्यु हो गई। उनकी मृत्यु के कुछ सप्ताह बाद, श्रीमती एस. अपने शयनकक्ष में बिस्तर लगा रही थीं, तभी अचानक उन्होंने पॉल की आवाज़ सुनी। उनकी आवाज़ पहचानना आसान था, क्योंकि श्रीमती एस. उन्हें नाम से पुकार रही थीं। उन्होंने उनका नाम लेकर पुकारा, मानो उनका ध्यान अपनी ओर खींचना चाहते हों। आवाज़ बगल के कमरे से आती हुई प्रतीत हुई, इसलिए वह उस कमरे में गईं और पॉल का नाम पुकारा। कोई उत्तर नहीं मिला। धार्मिक स्वभाव की श्रीमती एस. तब ज़मीन पर घुटने टेककर उस व्यक्ति के लिए प्रार्थना करने लगीं। उसके बाद से उन्होंने पॉल की आवाज़ नहीं सुनी है।

कई वर्षों से एलिज़ाबेथ एस. की डोरोथी बी. नाम की एक युवती से गहरी दोस्ती थी। यह पिट्सबर्ग की बात है, और वे लगभग पड़ोसी थीं। डोरोथी की एक बहन थी जिसका नाम लियोना था, जो गृहिणी थी। उसका अचानक निधन हो गया, मात्र अट्ठाईस वर्ष की आयु में। डोरोथी को गहरा सदमा लगा और वह इस बात को स्वीकार नहीं कर पाई। श्रीमती एस. और अन्य लोगों ने उसे इस शोक से बाहर निकालने की कोशिश की, लेकिन डोरोथी ने उनकी बात नहीं मानी और रात को सोते समय भी रोती रही।

एक रात डोरोथी की नींद किसी चीज़ या किसी के द्वारा बिस्तर हिलाने से खुली। वह उठी और देखने लगी, लेकिन उसे इसका कोई कारण नहीं मिला। घर में सभी लोग गहरी नींद में सो रहे थे। जब वह बिस्तर के सामने खड़ी होकर इस अजीब घटना को लेकर परेशान थी, तभी उसे सीढ़ियों पर कदमों की आहट साफ सुनाई दी। डरकर उसने अपने पति को जगाया और दोनों ने मिलकर पूरे घर की तलाशी ली। उन्हें कोई ऐसा व्यक्ति नहीं मिला जो इन कदमों की आहट का कारण हो सकता था। अगली रात भी यही घटना घटी। फिर से इसका कोई प्राकृतिक कारण नहीं था।

लेकिन उसी दूसरी रात, पाँच दरवाज़े दूर रहने वाली श्रीमती एस. के साथ भी एक अजीब घटना घटी। वह बिस्तर पर लेटी एक किताब पढ़ रही थीं, तभी अचानक छपा हुआ पन्ना

उनकी आँखों के सामने से गायब हो गया और उसकी जगह कुछ और शब्द दिखाई देने लगे। श्रीमती एस. ने सोचा कि शायद उनकी आँखें थक गई हैं, इसलिए उन्होंने सिर हिलाया, लेकिन ऐसा फिर हुआ। इस बार उन्होंने अपनी आँखें बंद कर लीं और बिस्तर पर लेट गईं, तभी उन्हें अपने तकिए के पास से एक आवाज़ सुनाई दी जो उनका नाम पुकार रही थी, "बेटी!" यह बहुत तीखी और निराशा से भरी आवाज़ थी। हालाँकि श्रीमती एस. कभी डोरोथी की बहन लियोना से नहीं मिली थीं, फिर भी वह जानती थीं कि यह वही हैं, जो पहचान के लिए पुकार रही हैं।

अगले दिन दोनों महिलाएं मिलीं और अपने अनुभवों की तुलना की। तब उन्होंने तय किया कि लियोना चाहती थी कि वे जानें कि वह दूसरी दुनिया में एक अलग तरह का जीवन जी रही है, और उसके लिए शोक करना बंद कर दें। यही वह सहारा था जिसकी डोरोथी को अपने शोक से बाहर निकलने के लिए ज़रूरत थी, और इस साझा अनुभव के बाद दोनों महिलाएं बहनों जैसी बन गईं। लियोना ने फिर कभी उनमें से किसी से संपर्क नहीं किया।

मैंने अक्सर दो लोकों के बीच संवाद के साधन के रूप में ओइजा बोर्ड की विश्वसनीयता पर संदेह किया है, लेकिन कभी-कभी इनके माध्यम से कुछ वास्तविक जानकारी मिल जाती है। इसका प्रमाण निश्चित रूप से बोर्ड का संचालन करने वाले व्यक्ति के पास ही होता है, और यह इस बात पर निर्भर करता है कि उनके अवचेतन मन में वह जानकारी मौजूद है या नहीं। लेकिन श्रीमती एस. का एक ऐसा अनुभव रहा है जो मुझे सच लगता है।

उस समय वह उन्नीस साल की थी, अविवाहित थी और अपने माता-पिता के साथ रहती थी। उसे ओइजा बोर्ड में किसी अलौकिक शक्ति पर सचमुच विश्वास नहीं था। किसी गंभीर कारण से नहीं, बल्कि मनोरंजन के लिए ही वह और उसकी एक पड़ोसी ओइजा बोर्ड पर अपनी किस्मत आजमाने बैठ गईं। जैसे ही उन्होंने इंडिकेटर चलाना शुरू किया, वह तेज़ी से घूमने लगा और एक नाम लिखा। वह नाम था पार्कर। एलिज़ाबेथ को आश्चर्य हुआ, क्योंकि उसने लंबे समय से इस व्यक्ति के बारे में नहीं सोचा था। अब कोई यह तर्क दे सकता है कि उसका नाम हमेशा उसके अवचेतन मन में मौजूद रहेगा, लेकिन उससे पहले गुज़र चुके कई अन्य लोगों के नाम भी तो होंगे ही।

"क्या तुम्हें कुछ चाहिए?" एलिजाबेथ चिल्लाई।

बोर्ड पर "हाँ" लिखा था, और ठीक उसी क्षण उसे अपने दाहिने गाल पर एक चुंबन का स्पष्ट अहसास हुआ। यह उसकी कल्पना नहीं थी। यह अनुभूति पूरी तरह से शारीरिक थी।

पार्कर एस. एक युवक था जिससे श्रीमती एस. की दो साल पहले प्रेम कहानी शुरू हुई थी और दोनों एक-दूसरे से बहुत प्यार करते थे। उस समय वह एक सर्विस स्टेशन पर काम करता था। एक दिन, उससे मिलने जाते समय, उसकी कार दुर्घटना में मृत्यु हो गई। श्रीमती एस. को लगता है कि उसने आखिरकार उसे अपना आखिरी अलविदा चुंबन दे दिया था, भले ही थोड़ी देर से।

अंत में, कुछ ऐसी घटनाएं भी होती हैं जिनसे जीवित लोगों को मृत्यु के कारण अपने प्रियजन के चले जाने का आभास होता है। बिछड़ने के क्षण में मरने वाले व्यक्ति के मन में उठने वाला विचार इतना प्रबल या व्यवस्थित नहीं होता कि वह पीछे रह गए प्रियजन को पूरी छवि भेज सके। लेकिन इतनी मानसिक या मनोगतिशील ऊर्जा अवश्य होती है कि वह किसी वस्तु को हिला सके या कोई अन्य संकेत दे सके जिससे प्रियजन ऊपर देखकर आश्चर्यचकित हो जाएं। जर्मन भाषा में इन घटनाओं को 'गैंगर' या 'गोअर्स' कहा जाता है और ये काफी आम हैं।

इसका एक आम उदाहरण कैलिफोर्निया की श्रीमती मारिया पी. का अनुभव है, जो उन्होंने 1955 में क्रिसमस से कुछ दिन पहले अपने पति के साथ साझा किया था। दंपति टोरंटो स्थित अपने घर में बिस्तर पर सो रहे थे, तभी अचानक एक छोटी सी सजावटी वस्तु के शेल्फ से गिरने की आवाज़ से उनकी नींद खुल गई। वह वस्तु गलती से या अपने आप तो नहीं गिर सकती थी। उसी क्षण, महिला को यह आभास हुआ कि उनके पिता का निधन हो गया है। कुछ दिनों बाद उन्हें पता चला कि उनके पिता का वास्तव में उसी क्षण अपने पैतृक देश जर्मनी में, समुद्र पार, देहांत हो गया था।

मारिया के लिए यह पहली बार नहीं था जब उसने इस तरह की घटना का सामना किया था। जब वह केवल पाँच वर्ष की थी और उसकी माँ अस्पताल के लिए निकली, तो उस छोटी बच्ची ने कहा, "माँ, तुम वापस नहीं आओगी।" नौ दिन बाद, पूरे परिवार ने मुख्य शयनकक्ष में एक तेज़, चटकने जैसी आवाज़ सुनी। घर की सभी घड़ियाँ उसी क्षण रुक गईं। समय दोपहर 1:10 था। कुछ घंटों बाद, खबर आई कि उसकी माँ का उसी समय निधन हो गया था।

ऐसे और भी मामले हैं जिनमें पेंटिंग गिर जाती हैं, खिड़कियों के शटर हिलने लगते हैं, या हवा न चलने पर भी दरवाज़े अचानक बंद हो जाते हैं। मेरी समझ में ये सभी अलौकिक घटनाएँ एक ही बात को अलग-अलग तरीकों से कहती हैं: मैं जा रहा हूँ, दोस्तों, लेकिन मेरा काम अभी खत्म नहीं हुआ है।

कभी-कभी संदेश को शब्दों की आवश्यकता नहीं होती: "मृत" की उपस्थिति ही परलोक के तथ्यों को स्पष्ट करने के लिए पर्याप्त होती है। एक बार, मेरी मित्र गेल बी., जो कई प्रमुख होटलों की जनसंपर्क निदेशक हैं, ने मुझे फोन करके एक ऐसी सहेली की मदद मांगी जो परलोक से आए एक विचार के कारण बहुत परेशान थी। क्या मैं जाकर उससे बात कर सकती हूँ? मैंने हाँ कहा और मैं गई भी।

कैरिना एल., जो कभी पेशेवर गायिका थीं और बाद में न्यूयॉर्क शहर में व्यवसाय करने लगीं, मूल रूप से रोमानिया की थीं और ऐसी किसी भी चीज़ पर विश्वास नहीं करती थीं जिसे वे छू, सूंघ, सुन या गिन न सकें। इसलिए उन्होंने दो असंभव लगने वाले अनुभवों के बारे में बताते हुए काफी आशंका व्यक्त की।

जब कैरिना अपने पैतृक देश में एक छोटी लड़की थी, तब उसकी एक प्यारी दादी थीं जिनका नाम मिंटा एम. था। दादी एम. स्वस्थ और तंदुरुस्त 86 वर्ष की आयु तक जीवित रहीं; फिर हृदयाघात के कारण उनका निधन हो गया। यह सच है कि बुढ़ापा अब उतना चुस्त-दुरुस्त नहीं रहा था जितना कि जवानी में था। उन्हें अक्सर पड़ोस में उनके फीके भूरे रंग के कोट, छोटी सी टोपी और पैरों की सूजन के लिए बने विशेष जूतों में देखा जा सकता था, क्योंकि उन्हें पैरों की समस्या थी।

उनकी चाल धीमी और लड़खड़ाती हुई थी, न तेज़, न धीमी; बुखारेस्ट में उनके मोहल्ले में उनकी यह चाल मशहूर थी। जब दादी एम. का देहांत हुआ, तो उनकी बेटियों को उनकी कई चीज़ें विरासत में मिलीं। मशहूर भूरा कोट कैरिना की मौसी रोज़ा को मिला, जिन्होंने तुरंत उसे काटकर अपने लिए नया रूप दे दिया।

दादी का देहांत हो चुका था, और तीनों बेटियाँ—कैरीना की माँ और उसकी दो मौसियाँ, रोज़ा और इटा—घर में साथ रहती थीं। दादी की मृत्यु के दो महीने बाद, इटा और उसका छोटा बेटा कुछ सामान खरीदने किराने की दुकान पर गए। रास्ते में उन्हें एक पड़ोसी के घर के पास से

गुज़रना था और वे बातचीत करने के लिए रुक गए। जब वे पड़ोसी के साथ खड़े थे, तभी अचानक कोने से दादी प्रकट हुईं, ठीक वैसे ही जैसे वह अक्सर अपने जीवन में किया करती थीं। इटा ने उन्हें सबसे पहले देखा और मुँह खुला रखकर देखती रह गई। फिर छोटे लड़के ने दादी को देखा और उन्हें देखकर कहा।

इसी बीच वह आकृति करीब आती गई, हमेशा की तरह अपने लंगड़े पैरों पर लड़खड़ाती हुई। लेकिन उसने अपने सामने खड़े छोटे समूह पर कोई ध्यान नहीं दिया। जब वह बिल्कुल पास आ गई, तो वह बस सीधे आगे बढ़ती रही। उसने वही फीका भूरा कोट पहना हुआ था जो उसे हमेशा से बहुत पसंद था। इटा अवाक रह गई। जब तक उसे होश आया, वह आकृति गायब हो चुकी थी।

“क्या आपने श्रीमती एम. को देखा?” पड़ोसी ने हैरानी से पूछा। इटा केवल सिर हिला सकी। क्या कहती? यह एक ऐसी घटना थी जिसे वह कभी नहीं भूल सकती थी। घर पहुँचते ही वह अपनी बहन के कमरे की ओर भागी। वहाँ, कई हफ़्तों से कटा हुआ, भूरा कोट पड़ा था!

बीते वर्षों में बहुत कुछ बदल गया, और आखिरकार कैरिना न्यूयॉर्क शहर में रहने लगी। उसकी मौसी इटा, जो अब टोरंटो में रहती थीं, उससे मिलने आईं और अपने अपार्टमेंट में कैरिना के साथ रुकीं। मौसी के आने के लगभग दो सप्ताह बाद, वह अपनी भतीजी के साथ पड़ोस में कुछ खरीदारी करने निकलीं। मार्च की सुहावनी दोपहर थी, जब दोनों महिलाएं ब्रॉडवे पर चल रही थीं और दुकानों की खिड़कियों को देख रही थीं। वेस्ट 85 वीं और 82 वीं सड़कों के बीच, उन्हें अचानक एक जानी-पहचानी आकृति दिखाई दी। वहाँ, उनकी ओर आती हुई, दादी एम. फिर से थीं, ठीक वैसे ही कपड़े पहने हुए जैसे पच्चीस साल पहले पहने हुए थीं, उनका फीका भूरा कोट, छोटी सी टोपी और वही अनोखे जूते।

दोनों महिलाएं स्तब्ध रह गईं। ऐसी स्थिति में कोई क्या करे? उन्होंने इंतजार करने और देखने का फैसला किया। और उन्होंने देखा भी, क्योंकि वे रुक गईं और दादी एम. को अपने पास से गुजरने दिया। जब वह उनसे कुछ ही इंच दूर थीं, तो वे उनका चेहरा साफ देख सकीं। वह सड़क पर किसी भी आम इंसान की तरह मजबूत थीं, लेकिन उन्होंने उनकी तरफ नहीं देखा। इसके बजाय, वह सीधे आगे देखती रहीं, मानो उन्हें न तो उनकी और न ही आसपास किसी और की मौजूदगी का एहसास हो। जब वह उनके पास से गुजरीं, तो उन्हें उनके कदमों की

आहट साफ सुनाई दी। इसमें कोई शक नहीं था: यह दादी एम. थीं, जिनकी मृत्यु पच्चीस साल पहले हो गई थी, लेकिन वह बिल्कुल नई जैसी दिख रही थीं।

जब वह आकृति अगले मोड़ पर पहुँचकर गायब हो गई, तो कैरिना फिर से होश में आ गई। कुछ ही सेकंड में वह मोड़ पर पहुँच गई। उसके सामने गली लगभग खाली थी। दादी माँ वहाँ नहीं थीं। एक बार फिर वह हवा में गायब हो गई थीं। उस बुढ़िया का क्या इरादा था? वह उनके सामने क्यों प्रकट हुईं? मैं बस यही अनुमान लगा सकती थी कि यह उनका यह कहने का तरीका था, “अपनी दादी को मत भूलना। मैं अभी भी पूरी तरह स्वस्थ हूँ!”

अधूरा काम

आध्यात्मिक गुरुओं द्वारा "आत्मा के पुनरागमन" के रूप में वर्णित दूसरी श्रेणी अधूरे कार्यों से संबंधित है। हालांकि किसी मृत व्यक्ति का पहला विचार शोक संतप्त परिवार को यह बताना हो सकता है कि रोने का कोई कारण नहीं है और जीवन चलता रहता है, वहीं दूसरा विचार यह हो सकता है कि पृथ्वी पर जो भी कार्य अधूरा रह गया है, उसे कैसे पूरा किया जाए।

शरीर के नष्ट होने के बाद भी व्यक्तित्व के बने रहने के प्रमाण बताते हैं कि सांसारिक चिंताएँ और इच्छाएँ नवमुक्त आत्मा के साथ-साथ चलती रहती हैं। मात्र इसलिए कि व्यक्ति अब एक दूसरे, सूक्ष्म आयाम में है, इसका अर्थ यह नहीं है कि वह भौतिक जगत में अपने दायित्वों की पूरी तरह उपेक्षा कर सकता है। यह व्यक्ति और शरीर में रहते हुए जिम्मेदारियों के प्रति उसके दृष्टिकोण के अनुसार भिन्न-भिन्न होगा। कायर मृत्यु के बाद नायक नहीं बन जाता, और आलसी व्यक्ति व्यवस्था का प्रतीक नहीं बन जाता। ऐसा प्रतीत होता है कि वास्तव में मृत्यु में कोई महानता नहीं है। ऐसा लगता है कि वहाँ से ब्रह्मांड की समग्र संरचना को बेहतर ढंग से समझने का अवसर मिलता है, लेकिन यह समझ किसी भी प्रकार से अनिवार्य नहीं है, और न ही नवप्राप्त आत्मा का किसी भी प्रकार से मस्तिष्क-प्रबंधन किया जाता है। आगे बढ़ने या स्थिर रहने की स्वतंत्रता दोनों ओर विद्यमान है।

हालांकि, यदि कोई व्यक्ति अचानक मर जाता है और पृथ्वी के वायुमंडल में रहकर तथाकथित भूत बनने से बचकर परलोक में चला जाता है, तो वह अपने साथ सभी अनसुलझे मुद्दों को भी ले जा सकता है। ये समस्याएं बीमा और परिवार के भरण-पोषण, बच्चों के

मार्गदर्शन, वसीयत का अभाव, अधूरे काम, अपूर्ण पांडुलिपियां या रचनाएं, अव्यवस्थित स्थिति जिसके कारण वारिसों को यह पता न चल पाए कि "सब कुछ" कहां है, जैसे बड़े मामलों से लेकर डेस्क को अव्यवस्थित छोड़ना, कुछ पत्रों का उत्तर न देना, या किसी प्रियजन से जल्दबाजी में बात कर देना जैसे छोटे मामलों तक हो सकती हैं। अलग-अलग व्यक्तियों के लिए ऐसी परेशानियां कम या ज्यादा मायने रख सकती हैं, यह व्यक्ति के व्यक्तित्व पर निर्भर करता है। इस बात का कोई निश्चित मापदंड नहीं है कि कौन सी समस्या बड़ी है और कौन सी छोटी। जो एक व्यक्ति को बड़ी समस्या लगती है, वही दूसरे व्यक्ति के नजरिए से देखने पर बिल्कुल मामूली लग सकती है।

सामान्यतः, जीवित व्यक्तियों से संवाद करने की आवश्यकता किसी समस्या को सुलझाने की अनिवार्यता से उत्पन्न होती है। एक बार संपर्क स्थापित हो जाने और जीवित व्यक्ति द्वारा समस्या समझ लिए जाने पर, मृतक की पुनः प्रकट होने की आवश्यकता नहीं रह जाती, बशर्ते जीवित व्यक्ति मृतक के अनुरोध पर कार्रवाई न करें। ऐसी स्थिति में वह व्यक्ति तब तक बार-बार लौटता रहेगा जब तक उसकी इच्छा पूरी न हो जाए।

सभी संदेश वेस्टर्न यूनियन के संदेशों जितने स्पष्ट नहीं होते। कुछ सांकेतिक भाषा में होते हैं या उन्हें तभी समझा जा सकता है जब संदेश भेजने वाले की आदतों का ज्ञान हो। लेकिन अनुरोध को समझ लेना आमतौर पर मृतक की वास्तविक चिंताओं को दूर करने के लिए पर्याप्त होता है। कुछ मामलों में, परिस्थितियाँ बदल जाने या काफी समय बीत जाने के कारण अनुरोध पूरा करना संभव नहीं होता। इनमें से कुछ संदेश बहुत पुरानी शिकायतों से जुड़े होते हैं।

सन् 1880 के दशक में, एक प्रतिनिधि उनके घर में आया और उसने ज़िद की कि घर पर उनके मालिकाना हक को साबित करने वाले कागज़ात ढूंढे जाएं और संपत्ति मौजूदा मालिकों से वापस उन्हें सौंप दी जाए। उनके लिए यह पुराना अन्याय आज भी एक समस्या बना हुआ था, लेकिन पचासी साल बाद उनकी बात मानकर उस मालिक को बेदखल करना हमारे लिए मुमकिन नहीं था जिसने उनकी मृत्यु के कई साल बाद सद्भावना से संपत्ति खरीदी थी। आखिरकार, हमने उस बेचैन स्वभाव वाली महिला को मना लिया कि हम उनकी इच्छा पूरी करने की कोशिश करेंगे और साथ ही उन्हें आश्वस्त किया कि हालात बदल चुके हैं। इससे

उनकी चिंता कुछ हद तक शांत हुई और चूंकि हमने कम से कम सहानुभूति से उनकी बात सुनी थी, इसलिए उन्होंने वादे को पूरा करने पर ज़ोर नहीं दिया।

इस तरह का एक बेहद गंभीर मामला शिकागो की श्रीमती सैली वी. से संबंधित है। इस महिला का विवाह एक प्लास्टर मिस्त्री से हुआ था, जिनसे उन्हें दस बच्चे हुए, लेकिन 1943 में उन्होंने अपने पति से तलाक ले लिया। फिर उन्होंने अपने पति के एक दूर के रिश्तेदार से शादी कर ली, जिनका नाम भी वी. था। लेकिन तलाक के बाद भी प्लास्टर मिस्त्री ने उनका यौन उत्पीड़न करना बंद नहीं किया। आरोप है कि वह वर्षों तक उन्हें धमकाता रहा, जब तक कि वह इसे सहन नहीं कर सकीं। तब हताशा में आकर महिला ने अपने पूर्व पति से छुटकारा पाने का फैसला किया और एक बेहद नाटकीय और, जैसा कि उन्होंने सोचा था, अंतिम तरीका अपनाया - उनकी हत्या कर दी।

यह अवसर तब आया जब उसका उन्नीस वर्षीय चचेरा भाई अपनी यूनिट से छुट्टी लेकर आया, जो फोर्ट बेनिंग, जॉर्जिया में तैनात थी।

“क्या तुम मेरे पूर्व पति को मेरे लिए मार डालोगे? मैं इसके लिए एक महीने की तनख्वाह दे दूंगी।”

यूनाइटेड प्रेस के अनुसार, चचेरी बहन ने विनम्रतापूर्वक कहा, "ठीक है, सौदा हो गया।" जब उसने उसे काम के लिए 90 डॉलर की पेशकश की, तो उसने सोचा कि 50 डॉलर काफी हैं। युद्ध के आदी सैनिक के लिए, कभी-कभी मानव जीवन सस्ता होता है।

इसके कुछ ही समय बाद श्री चार्ल्स वी. अपने तहखाने के अपार्टमेंट में मृत पाए गए, उनके सिर पर हथौड़े से वार करके उसे कुचल दिया गया था।

यदि स्वर्गीय श्री वी. की अनिच्छुक भावना न होती तो यह कहानी इच्छुक विधवा और उसके सहयोगी चचेरे भाई के बीच एक रहस्य ही बनी रहती।

मंगलवार की रात, सौदा होने के ठीक बाद हत्या की घटना घटी। बुधवार की सुबह, 5 अगस्त, 1953 को, श्रीमती वी. अपने दिवंगत पति को अपने सामने भयावह मुद्रा में खड़ा देखकर चौंक उठीं। वह भयभीत हो गईं और उन्होंने पुलिस को बुलाया। जासूसों ने उनकी भूतिया कहानी पर संदेह जताया, लेकिन पूछताछ में उनका अपना अपराध साबित हो गया और सैनिक को

गिरफ्तार कर लिया गया। श्री वी. की अपने पति की हत्या के अधूरे मामले को सुलझाने की इच्छा को निश्चित रूप से गलत नहीं ठहराया जा सकता।

कैलिफोर्निया निवासी क्लेरेंस टी. का मानसिक अनुभव विशेष रूप से रोचक है, क्योंकि श्री टी. जीवन भर दृष्टिहीन रहे हैं। 1946 में उनका विवाह सैन फ्रांसिस्को में एक महिला से हुआ, जो आज भी उनकी पत्नी हैं। विवाह के कुछ समय बाद ही वे न्यूयॉर्क चले गए, और उस समय वे अपनी पत्नी के किसी भी मित्र या परिवार को नहीं जानते थे।

श्री टी को न्यूयॉर्क पहुंचने का वह दिन याद है: यह वही दिन था जब प्रसिद्ध बेसबॉल खिलाड़ी बेब रूथ का अंतिम संस्कार होना था। श्री टी और उनकी पत्नी लोअर ईस्ट साइड में अपनी नई सास के साथ रहने वाले थे।

सास सफाईकर्मी का काम करती थी और आमतौर पर रात करीब 1 बजे घर आती थी। अपार्टमेंट भूतल पर था, उस मंजिल का आखिरी अपार्टमेंट, घर के मुख्य द्वार से लगभग सत्तर फीट की दूरी पर। रात सुहावनी थी, और नवविवाहित दंपति ने जागकर मां के लौटने का इंतजार करने का फैसला किया। रेडियो पर बेब रूथ के अंतिम संस्कार में हुई प्रार्थना का पुन: प्रसारण चल रहा था, और समय ठीक 11 बजे का था।

जैसे ही संगीत शुरू हुआ, श्रीमान और श्रीमती टी. दोनों ने सामने का दरवाज़ा खुलते सुना और किसी को गलियारे से उनकी ओर आते हुए देखा। श्रीमान टी. की असाधारण श्रवण शक्ति (कई दृष्टिहीन लोगों में यह होती है) के कारण वे यह पहचान सके कि उनकी ओर आने वाले व्यक्ति ने जूते नहीं पहने थे। फिर वह व्यक्ति दरवाज़े से अंदर आया, और श्रीमान टी. को अपनी आँखों पर किसी का हाथ महसूस हुआ। उन्होंने सोचा कि यह उनकी सास हैं और कहा, "माँ?"

श्रीमती टी. ने उन्हें यकीन दिलाया कि वे गलतफहमी में हैं; वहाँ कोई दिखाई नहीं दे रहा था, हालाँकि उन्होंने भी कदमों की आहट सुनी थी। अब वह अदृश्य व्यक्ति टी. के पास से गुजरा और मुड़कर उनकी ओर देखने लगा। अचानक टी. और उनकी पत्नी दोनों को लहसुन की तेज़ गंध आई और दोनों ने एक-दूसरे से पूछा कि क्या वे लहसुन साफ कर रहे हैं! लेकिन इससे भी अजीब बात यह थी कि टी., जो पूरी तरह से अंधे हैं, अचानक अपने सामने एक महिला को खड़ा देख सके—एक छोटी कद की महिला जिसके लंबे बाल थे, ढीली पोशाक

पहने हुए और बिना जूतों के। पोशाक के ऊपर उन्होंने एक एप्रन पहना हुआ था और उनका एक हाथ एप्रन की जेब में था। जेब से कागज के कुचलने जैसी आवाज आ रही थी। उनकी आँखें लगभग बंद होने की कगार पर थीं। टी. उस आकृति को काफी देर तक घूरते रहे। अंत में महिला बोली: "जूलिया से कहो कि वह उन पत्थरों को फेंक दे!"

उसने इसे दो बार दोहराया। रेडियो पर धार्मिक संगीत समाप्त होने पर, वह मुड़ी और कमरे से बाहर चली गई, हालाँकि इस बार उन दोनों को उसके कदमों की आहट सुनाई नहीं दी। लेकिन टी. ने उसे जाते हुए देखा। जब तक वह आगंतुक उनके साथ थी, उन्हें बहुत अजीब सा महसूस हो रहा था, मानो वे लकवाग्रस्त हो गए हों। वे हिल नहीं पा रहे थे और बस वहीं सुन्न होकर बैठे रहे। जैसे ही वह आकृति गायब हुई, जादू टूट गया, और उन्हें आश्चर्य हुआ कि यह पूरे एक घंटे तक चला था।

चूंकि श्रीमती टी ने वह आकृति नहीं देखी थी, इसलिए टी ने उन्हें उस महिला की कही बात बताई। श्रीमती टी का पहला नाम जूलिया है, लेकिन उन्हें वह संदेश समझ में नहीं आया। जब वे यह समझने की कोशिश कर रहे थे कि उनके साथ क्या हुआ है, तभी सास वापस आ गईं और उन्होंने उन्हें घटना के बारे में बताया।

“हे भगवान!” सास ने हैरानी से कहा, “ये क्या चाहती है?” एक और जूलिया थी जिसे वो जानती थी, और हो सकता है ये संदेश उसी के लिए हो। ऐसा लग रहा था कि ये जूलिया पिछली रात अपार्टमेंट में थी और अगली सुबह फिर आने वाली थी। क्यों न उससे इस घटना के बारे में पूछा जाए? अगली सुबह, टी. परिवार ने दूसरी जूलिया से मुलाकात की और उसे अपने अनुभव के बारे में विस्तार से बताया। युवती ने समझदारी से सिर हिलाया।

“वो मेरी मां थीं,” वो रोते हुए बोलीं। “उनकी मृत्यु को दो साल हो गए हैं।”

फिर उसने बताया कि उसकी दिवंगत माँ को हमेशा अपने साथ लहसुन रखने की आदत थी, खासकर अपने एप्रन की जेब में। वह जहाँ भी जाती, छोटे-छोटे पत्थर इकट्ठा करती और उन्हें छोटे डिब्बों में रखती थी। उसकी माँ द्वारा इकट्ठा किए गए पत्थरों से भरे ये डिब्बे अब भी उसके घर में बिखरे पड़े थे। इन परिस्थितियों में, उस युवती ने फैसला किया कि वह उन पत्थरों को उठाकर अपनी माँ की कब्र पर बिखेर देगी। उसके बाद से वह प्रेत फिर कभी नहीं दिखाई दिया।

एन परिवार बफ़ेलो के डेलावेयर एवेन्यू पर एक बड़े ईंट के मकान में रहता था, जो कि एक अच्छे रिहायशी इलाके में था। वे मकान के असली मालिक, श्री एन के चाचा (जो उनके रिश्तेदार थे) के साथ रहते थे। श्री एन की चाची की मृत्यु के बाद, घर में अजीब-अजीब आवाज़ें आने लगीं, जिससे घरवाले परेशान होने लगे। इन आवाज़ों का कोई तर्कसंगत कारण कभी पता नहीं चला। फिर, कुछ महीनों बाद, श्री एन संयोग से चाची के भंडारगृह की एक अलमारी साफ़ कर रहे थे। वहाँ उन्होंने निजी यादगार चीज़ें और अन्य सामान रखा हुआ था। सफ़ाई के दौरान, उन्हें एक दराज में लिपटा हुआ एक पैकेट मिला। उन्होंने उसे उठाया और जैसे ही उन्होंने उसे उठाया, उन्हें एक आवाज़ सुनाई दी—एक इंसान की आवाज़—जो उनसे बात कर रही थी, हालाँकि उन्हें पता था कि वे कमरे में बिल्कुल अकेले थे। आवाज़ इतनी साफ़ नहीं थी कि वे शब्दों को समझ सकें। रात काफ़ी ढल चुकी थी; घर में कोई हलचल नहीं थी, और न ही कोई रेडियो या टीवी चल रहा था।

श्री एन. ने पैकेट अपने साथ लिया और एक लंबे गलियारे से होते हुए उस बेडरूम में गए जहाँ उनकी पत्नी बिस्तर पर लेटी पढ़ रही थीं। पचहत्तर फीट की दूरी तक, पूरे रास्ते, वह आवाज़ उनसे बात करती रही!

जैसे ही वह बेडरूम में दाखिल हुआ, श्रीमती एन ने अपनी किताब से नज़रें उठाकर कहा: "वह आपसे कौन बात कर रहा था?"

श्री एन. बहुत व्याकुल हो गए और किसी तरह उस अजीब से पैकेट को तहखाने में ले गए। मानो उन्हें वहाँ ले जाया गया हो, उन्होंने भट्टी खोली और पैकेट को उसमें फेंक दिया। उन्हें यह प्रबल अहसास था कि उनकी चाची नहीं चाहती थीं कि वह पैकेट खोला जाए या किसी को मिले। जैसे ही आग की लपटों ने पैकेट के अंदर की सामग्री को नष्ट कर दिया, श्री एन. का मिजाज सामान्य हो गया। उसके बाद घर में कोई और अलौकिक घटना नहीं घटी। जाहिर है, चाची नहीं चाहती थीं कि उनके निजी पत्र-व्यवहार या अन्य कागजात सार्वजनिक हों, और एक बार यह संभावना समाप्त हो जाने पर, उनकी संवाद करने की आवश्यकता भी समाप्त हो गई।

कभी-कभी "अधूरे काम" बंदरों की शरारत होते हैं। जो व्यक्ति मर जाता है, लेकिन अपनी स्थिति में आए बदलाव को स्वीकार नहीं कर पाता, सांसारिक इच्छाओं को त्याग नहीं पाता,

वह अपने करीबी लोगों की ओर खिंचा चला जाता है, और कभी-कभी यह वापसी शारीरिक रूप से भी प्रकट हो सकती है। सुनने में भले ही अजीब लगे, लेकिन एक मृत पुरुष का जीवित स्त्री से प्रेम जताना और इसके विपरीत भी संभव है। बेशक, यह उचित नहीं है, नैतिक कारणों से नहीं, बल्कि इसलिए कि यह बहुत अव्यावहारिक और बिल्कुल बेमेल है। लेकिन ऐसा होता है।

मैरीलैंड के बाल्टीमोर की रहने वाली श्रीमती ऑड्रे एल. चार साल से विधवा हैं। पति की मृत्यु होते ही उनकी परेशानियां शुरू हो गईं। उन्हें लगता था कि वह अभी भी उनके आसपास हैं। वह उन्हें नाम से पुकारते थे। वह अपने पुराने घर में पहले की तरह ही करवटें बदलते थे। श्रीमती एल. ने यह देखा तो नहीं, लेकिन उन्हें साफ सुनाई देता था। रात में उन्हें उनके खर्राटे सुनाई देते थे। आखिरकार उन्होंने अपना घर बेचकर एक अपार्टमेंट में रहने का फैसला किया।

कुछ समय के लिए श्री एल. दिखाई नहीं दिए। लेकिन ज्यादा देर तक नहीं। रात में होने वाली अजीबोगरीब घटनाएं फिर से शुरू हो गईं। इस बार ये घटनाएं प्रत्यक्ष भी थीं। उनके पति की आकृति उनके बिस्तर के पास प्रकट हुई, उनकी कलाई पकड़ ली और उन्हें बिस्तर से खींचने की कोशिश की। डर के मारे उन्होंने उन्हें गौर से देखा और पाया कि जानी-पहचानी आकृति कुछ हद तक पारदर्शी थी। फिर भी, वह वास्तविक थे और उनके हाथों का स्पर्श दो मजबूत हाथों का स्पर्श था।

इस तरह के "अधूरे काम" का कोई आसान समाधान नहीं है। भूत-प्रेत भगाने की प्रक्रिया तभी कारगर होगी जब दूसरा पक्ष इसे स्वीकार करने को तैयार हो। लेकिन अगर मृत पति का नैतिक स्तर इस दृष्टिकोण के अनुकूल नहीं है, तो यह प्रक्रिया कारगर नहीं होगी। केवल वही स्त्री उसे अस्वीकार कर सकती है, यदि वह इस मानसिक द्वार को बंद करने के अपने दृढ़ संकल्प में सक्षम हो। क्योंकि यह सच है कि अवचेतन मन में कोई गहरी इच्छा मौजूद हो सकती है जो इस प्रकार के अपराध को होने देती है।

कभी-कभी ऐसा होता है कि मरने वाले व्यक्ति का अधूरा काम कई वर्षों बाद तक पूरा नहीं हो पाता। फिर भी, कुछ मामलों में मृत व्यक्ति को किसी न किसी तरह पहले से ही इसका पता

होता है, जिससे यह संकेत मिलता है कि मृत्यु की दहलीज समय की सीमाओं को भी मिटा देती है।

इसका एक रोचक उदाहरण मध्यपश्चिम के एक प्रख्यात चिकित्सक की पत्नी से संबंधित है, जो स्वयं एक शिक्षिका थीं। कई साल पहले श्रीमती बी. का विवाह एक पेशेवर सज्जन से हुआ था। उनके दो बच्चे थे। उनका वैवाहिक जीवन सुखमय था, कोई आर्थिक या पेशेवर समस्या नहीं थी, फिर भी पति को अक्सर बिना किसी कारण के अवसाद हो जाता था। एक शाम पति बाहर गए और फिर कभी नहीं लौटे। कई घंटे बीत गए। श्रीमती बी. उनके लौटने का बेसब्री से इंतजार करती रहीं, हालांकि उन्हें जरा भी आशंका नहीं थी कि कुछ गंभीर हुआ है। जब पति घर से निकले थे तो वे बहुत खुश थे। अंततः वे इतनी थक गईं कि उनके लौटने का इंतजार करते हुए वे सो गईं। उन्होंने यह सोचकर बिस्तर पर लेट गईं कि उनके पति बहुत देर से लौटेंगे।

आधी रात को कमरे में किसी की मौजूदगी का एहसास होने से उसकी नींद टूट गई। जब उसने आंखें खोलीं और देखा, तो उसे अपने बिस्तर के पास अपने पति की आकृति दिखाई दी और अचानक उसे एहसास हुआ कि वह परलोक चले गए हैं।

“चिंता मत करो,” पति बोला; “सब ठीक हो जाएगा। वॉली तुम्हारा और बच्चों का ख्याल रखेगा।” यह कहते ही वह आकृति गायब हो गई।

अगली सुबह उसे सूचना मिली कि उसके पति ने अवसाद के दौरे से ग्रस्त होकर खुद को गोली मार ली है। गहरे शोक में डूबी उसने इस दृश्य को एक सपने के रूप में भुलाने की कोशिश की, हालांकि वह जानती थी कि जब उसने अपने पति को अपने बिस्तर के पास खड़े देखा था, तब वह पूरी तरह से जाग रही थी।

दो साल बीत गए, और यह मामला उनके अवचेतन मन की गहराइयों में समा गया। संदेश मिलने के समय, वह इस पर ज्यादा ध्यान नहीं दे पाई थीं। वॉली उनके दिवंगत पति और उनके प्रिय मित्र थे, बस इतना ही। एक दिन अचानक फोन की घंटी बजी, और रिसीवर उठाने से पहले ही श्रीमती बी. जान गईं कि यह वॉली का फोन है! दोस्ती फिर से शुरू हुई और अंततः शादी में तब्दील हो गई, और वॉली तब से ही उनकी और बच्चों की देखभाल कर रहे हैं!

चौंसठ वर्षीय बर्नहार्ड एम., जिनका वैवाहिक जीवन सुखमय है और जिन्होंने स्वयं ही काफी ज्ञान प्राप्त किया है, दक्षिणी कैलिफोर्निया में रहते हैं। उनके साहित्यिक आलोचना और दार्शनिक निबंध मुख्य रूप से बुक्स अब्रॉड जैसी विद्वतापूर्ण पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए हैं। विकलांगता पेंशन से उन्हें लेखन से होने वाली आय में वृद्धि मिलती है। उनकी माता, फ्रांसिस एम., एक प्रतिभाशाली संगीतकार थीं, जिनकी हमेशा से ही मानसिक अनुसंधान में रुचि रही है। जब श्री एम. सीनियर, जो सैन फ्रांसिस्को सिम्फनी ऑर्केस्ट्रा से जुड़े थे, का निधन हुआ, तो परिवार को कठिन समय से गुजरना पड़ा और युवा बर्नहार्ड को परिवार के लिए राशन जुटाने के लिए कड़ी मेहनत करनी पड़ी। बयालीस वर्ष की आयु में, श्रीमती एम. का कैलिफोर्निया के प्वाइंट लोमा स्थित संगीत एवं नाटक संस्थान में हृदय गति रुकने से निधन हो गया।

उनकी मृत्यु के कुछ दिनों बाद, बर्नहार्ड अंतिम संस्कार में शामिल हुए। उस समय उन्हें बताया गया कि अस्थियों को ग्रीनवुड कब्रिस्तान में एक समाधि में रखा जाएगा। इस आश्वासन से आश्वस्त होकर वे शहर छोड़कर चले गए। एक महीने बाद अपने व्यावसायिक दौरे से प्वाइंट लोमा लौटते समय उन्हें एक अजीब सपना आया। उनकी दिवंगत माँ उन्हें एक छोटे से, काफी अंधेरे कमरे में दिखाई दीं और वे बहुत व्यथित लग रही थीं।

“सब कुछ गड़बड़ हो गया,” उसने शिकायत की। “मेरी अस्थियां भी गुम हो गई हैं!”

उसके बेटे ने सपने में उससे आपत्ति जताई और उसे आश्वस्त किया कि ऐसा नहीं हो सकता। लेकिन जवाब में उसने उसे एक छोटी सी मेज दिखाई जिस पर एक तार की टोकरी में तांबे का एक छोटा सा डिब्बा रखा था।

अगली सुबह जब बर्नहार्ड एम. जागा, तो उसने अपने उस सपने को नकार दिया जिसे वह बेतुका समझ रहा था। यह सपना निस्संदेह उसके प्रिय भाई की मृत्यु के कारण हुए शोक और हाल ही में हुए दुख से उपजा था। लेकिन संयोगवश, उसने शहर जाकर यह देखने की योजना बनाई थी कि कब्रिस्तान में बनी समाधि के दरवाजे पर उसकी माँ का नाम ठीक से अंकित है या नहीं।

रास्ते में उनकी मुलाकात गायिका मे एल से हुई, जिन्होंने उन्हें बताया कि वह अभी-अभी श्रीमती एम को श्रद्धांजलि देने कब्रिस्तान गई थीं - और उनकी मां की अस्थियां वहां नहीं थीं!

यह सुनकर श्री एम. ने श्रीमती एल. से कब्रिस्तान में उनके साथ जाकर पूछताछ करने को कहा। वाकई, उनके पिता की अस्थियां वहां थीं, लेकिन उनकी माता की अस्थियां नहीं थीं। उन्होंने कब्रिस्तान के रखवाले से पूछताछ की, जिसने अपनी किताबों में दर्ज जानकारी की जांच की।

"श्रीमती एम. का कोई रिकॉर्ड नहीं है," चौकीदार ने उन्हें सूचित किया।

बढ़ते दर्द और गुस्से के साथ, बर्नहार्ड एम. अंतिम संस्कार गृह की ओर गया।

कुछ शर्मनाक जाँच-पड़ताल के बाद पता चला कि राख का डिब्बा इमारत से बाहर गया ही नहीं था। तब बर्नहार्ड खुद उसे कब्रिस्तान ले गया, ताकि सब कुछ ठीक हो। संयोगवश, उसने वही रास्ता चुना जो वह अक्सर अपनी माँ के साथ प्वाइंट लोमा जाया करता था।

जब श्री एम. ने मुझे यह अनुभव सुनाया, तो उन्हें अचानक अपनी माँ की उपस्थिति का फिर से एहसास हुआ, मानो वह इस बात से प्रसन्न थीं कि उन्होंने मुझे यह बात बताई, ताकि अन्य लोग भी जान सकें कि मृत आत्माएं लौट सकती हैं।

सैन फ्रांसिस्को की कई पहाड़ियों में से एक पर 1895 में बना फ्लोरीन मैक का मजबूत पत्थर का घर भूकंप और भीषण आग का सामना कर चुका है और भविष्य में आने वाली किसी भी आपदा का सामना करने में सक्षम है। श्रीमती मैक का रहस्यमय अनुभव 1929 में शुरू हुआ, जब वे नवविवाहित थीं और फ्लोरिडा के टैम्पा में रहती थीं। सभी को आश्चर्यचकित करते हुए —यहां तक कि उन्हें स्वयं भी—उन्हें अचानक दिल का दौरा पड़ गया। डॉक्टर को घर बुलाया गया और जांच के बाद उन्हें मृत घोषित कर दिया गया। फिर उनके चेहरे पर एक तौलिया रखा गया और डॉक्टर ने उनके युवा पति को सांत्वना देना शुरू किया।

“मुझे रास्ते में शव ले जाने वाले व्यक्ति से मिलना होगा, और मैं मृत्यु प्रमाण पत्र वहीं छोड़ दूंगी,” डॉक्टर ने उसके पति से कहा।

"लेकिन वह तो बहुत छोटी है," पति ने आह भरी, क्योंकि श्रीमती मैक उस समय केवल उन्नीस वर्ष की थीं।

सबसे अजीब बात यह थी कि श्रीमती मैक. हिल-डुल नहीं सकती थीं, फिर भी उन्हें बातचीत सुनाई दे रही थी। उनकी आँखें ढकी होने के बावजूद, उन्हें पूरा दृश्य दिखाई दे रहा था। इतना ही नहीं, उन्हें यह अजीब सा एहसास भी हो रहा था कि उनकी ऊँचाई लगभग दो इंच है!

फिर, उसे ऐसा लगा जैसे उसके मुँह से उसके अपने शरीर की एक प्रतिकृति निकली हो, जो बहुत छोटी और बिना कपड़ों के थी। वह छत के कोने तक गई और वहीं रुककर नीचे देखने लगी। उसने अपना शरीर नीचे छोड़ दिया था। मकान मालकिन भी अब शोक मनाने वालों में शामिल हो गई थी, और युवा श्रीमती मैक ने सोचा कि अपने हाथों को हिलाकर उस महिला को डराना कितना मजेदार होगा। मकान मालकिन को कमरे से जल्दी से भागते हुए देखने का विचार उसे अच्छा लगा। लेकिन फिर वह गंभीर हो गई और अचानक नीचे गोता लगाया और नाक के रास्ते अपने शरीर में वापस प्रवेश कर गई, या ऐसा ही लगा। उसका शरीर फिर से गर्म हो गया, और वह बेकाबू होकर हंसने लगी। तुरंत डॉक्टर ने उसे होश में लाने के लिए इंजेक्शन लगाया। जैसे ही उसे होश आया, उसने बताया कि उसके साथ क्या हुआ था।

डॉक्टर ने अपना सिर हिलाया। लेकिन जब श्रीमती मैक ने उस दौरान कही गई हर बात को दोहराया, जब उन्हें कानूनी तौर पर मृत घोषित कर दिया गया था, तो उन्होंने आँखें चौड़ी करके ध्यान से सुना।

छत पर कुछ समय रहने के दौरान उसने गौर किया था कि डॉक्टर ने उसकी बाहों को दबाया था, शायद उसे होश में लाने के लिए, और वह सोच रही थी कि जब वह अपने शरीर में वापस लौटेगी तो क्या उसे दर्द होगा। लेकिन बाहों में कोई दर्द नहीं था। फिर भी एक अजीब सा ख्याल बार-बार उसके मन में आ रहा था: "वह कुछ भूल गया... जो भी ज़िम्मेदार था, वह मेरा कोई कर्तव्य भूल गया... लेकिन मुझे समझ नहीं आ रहा है।"

शायद इसीलिए वो अभी तक ज़िंदा थी। क्या किसी ने स्विच दबाना भूल गया था?

इन वर्षों के दौरान, फ्लोरीन मैक ने अलौकिक क्षमताओं का प्रदर्शन किया। ये क्षमताएं साधारण चीजों से लेकर, जैसे कि उन घटनाओं या स्थानों की पूर्वसूचना जहां वह कभी नहीं गई थी, अपने प्रियजनों पर आने वाली विपत्तियों की अधिक परेशान करने वाली आशंकाओं और उसके बाद अपने संकटग्रस्त परिवार की सहायता करने की उसकी क्षमता तक फैली हुई थीं।

उनके पिता, ओलॉस एस., नॉर्वे में जन्मे और दो वर्ष की आयु में संयुक्त राज्य अमेरिका लाए गए थे। वे कई वर्षों बाद अपनी सेवानिवृत्ति तक होटल व्यवसाय में रहे। उनका निधन 1946 में उनहत्तर वर्ष की आयु में एक पूर्ण और संतोषजनक जीवन जीने के बाद हुआ।

उनकी मृत्यु के लगभग एक महीने बाद, श्रीमती मैक अपने पिता के घर की चौथी मंजिल पर स्थित अपने कमरे में बिस्तर पर थीं। उन्हें सोए हुए अभी ज्यादा देर नहीं हुई थी कि दरवाजे पर दस्तक से उनकी नींद खुल गई। जागते ही उन्होंने देखा कि उनके दिवंगत पिता ने खुले दरवाजे से अपना सिर अंदर डाला और हंसमुख स्वर में पुकारा: "हाय फ्लोरेंस!"

श्रीमती मैक का बपतिस्मा के समय का नाम फ्लोरेंस है, लेकिन उन्हें यह नाम कभी पसंद नहीं आया, वे इसके बजाय "फ्लोरीन" नाम को ज़्यादा पसंद करती थीं। हालांकि, उनके पिता उन्हें इस नाम को लेकर चिढ़ाते थे और ऐसे मौकों पर उन्हें फ्लोरेंस कहकर बुलाते थे।

सुबह के करीब दो बजे थे। श्री एस. अपनी बेटी के कमरे में दाखिल हुए और बिस्तर के पास खड़े होकर उसे देखने लगे।

उन्होंने कहा, "आपको यह नहीं मिलेगा।"

श्रीमती मैक, जो अब पूरी तरह जाग चुकी थीं, ने अपने पिता के आभास को देखा। उन्होंने गौर किया कि उनके पिता ने ट्वीड का ओवरकोट, अपनी आदत के अनुसार कमीज और टाई पहनी हुई थी और टोपी भी। उन्होंने टोपी उतारी और अपने हाथ जेब में डाल लिए। अजीब बात यह थी कि वह उनके आर-पार देख सकती थीं, और वे अत्यंत सुंदर नीली किरणों से घिरे हुए थे, जिससे पूरा कमरा जगमगा रहा था।

“पिताजी, इधर आइए और बैठ जाइए,” उसने कहा और सोफे की ओर इशारा किया। उसे ज़रा भी डर नहीं था, हालाँकि वह जानती थी कि वह मर चुके हैं। अब उसे यह सब कुछ स्वाभाविक सा लग रहा था। हालाँकि उसने मानसिक मामलों के बारे में सुना था, लेकिन उसका पालन-पोषण ऐसे घर में हुआ था जहाँ ऐसे मामलों पर न तो चर्चा होती थी और न ही उन पर विश्वास किया जाता था।

वह प्रेत चलकर सोफे पर बैठ गया और अपने पैर एक स्टूल पर रख लिए, जैसा कि वह अपने जीवन में अक्सर किया करता था। यही उसकी कुर्सी थी।

"फ्लोरिन, तुम एक कागज ढूंढ रही हो," उसके पिता ने कहा।

“हां, पापा,” उसने सिर हिलाते हुए कहा, “और मुझे वह मिल नहीं रहा है।”

“मेरे बेडरूम में जाओ और ऊपर वाला दराज खोलो,” उसके पिता ने उसे निर्देश दिया, “दराज के नीचे तुम्हें वह चिपका हुआ मिलेगा। और हाँ, बेटा, तुम्हें उसमें एक पत्र भी मिलेगा!” आवाज़ उतनी ही सामान्य और स्थिर थी जितनी उसके पिता की हमेशा हुआ करती थी।

“पिताजी, मैं आपको ढकने जा रही हूँ,” बेटी ने कहा और उसने एक चादर लेकर उनके पैरों पर डाल दी, जैसा कि वह उनके जीवन में अक्सर किया करती थी।

जैसे ही वह वस्त्र उसके पिता के पैरों को छूआ, वह प्रेत गायब हो गया—धुएं के एक झटके की तरह ओझल हो गया!

“क्या मैंने सपना देखा था?” उसने खुद से पूछा, यह सोचते हुए कि क्या सच में ऐसा हुआ था। उसे जागने का एहसास तो हो रहा था, लेकिन वह अब भी निश्चित नहीं थी कि वह सपने में है या नहीं। सपने में खुद को देखने वाले लोगों की अजीबोगरीब सोच के साथ, उसने उसी क्षण फैसला किया कि वह किसी चीज को हाथ नहीं लगाएगी और सीधे बिस्तर पर वापस चली जाएगी। उसने ऐसा ही किया और जल्दी से सो गई।

सुबह उठकर उसने कमरे का जायज़ा लिया। सोते समय उसने जो दरवाज़ा कसकर बंद किया था, वह अभी भी थोड़ा खुला हुआ था। उसका लबादा सोफे पर पड़ा था। उसने गौर से देखा तो पाया कि लबादा अभी भी इस तरह मुड़ा हुआ था मानो उसे किसी के पैरों के सहारे रखा गया हो! तब उसे समझ आया कि उसने सपने में जो देखा था, वह सपना नहीं था।

वह दौड़कर नीचे गई और उस दराज को ढूंढने लगी जिसका इशारा उसके पिता ने किया था। वहाँ, उसके नीचे, वे कागज़ात थे जो गायब थे। ये कागज़ात उसके पिता के जन्म और राष्ट्रीयता को साबित करते थे और संपत्ति के निपटारे में अत्यंत महत्वपूर्ण थे। वहाँ वह पत्र भी था जिसका उन्होंने ज़िक्र किया था, और यह एक पिता द्वारा अपनी बेटी को लिखा गया एक सुंदर विदाई पत्र था। अपने लंबे जीवन में, ओलॉस एस. ने कभी भी अपने जीवित रहने की संभावना को कम नहीं आंका था। परिवार ने फ्लोरीन के अनुभव को लेकर निराशा व्यक्त की, लेकिन पिता और बेटी के बीच उनके जीवनकाल में हमेशा से रहे घनिष्ठ संबंध के कारण ही उसे विशेष रूप से इस मुलाकात के लिए चुना गया था—साथ ही यह भी कि एक वास्तविक आवश्यकता थी, एक अधूरा काम था, जिसे केवल दिवंगत के आगमन से ही पूरा किया जा सकता था।

जब मृत लोग जीवितों की मदद करते हैं

हमने देखा है कि दिवंगत आत्माएं जीवित लोगों को यह बताने के लिए प्रकट होती हैं कि उनका जीवन दूसरे लोक में जारी है या क्योंकि सांसारिक जगत में उनका कोई अधूरा काम है जिसे पूरा करना आवश्यक है। इस प्रकार प्रकट होने के बाद, वे तब तक पुनः संवाद नहीं करते जब तक कि उनके प्रियजनों या मित्रों के जीवन में कोई संकट न आ जाए और शायद उनकी सेवाओं की "आवश्यकता" हो। यह संचार का एक और प्रकार है, और यह भी अक्सर घटित होता है।

अनेक उदाहरणों में देखा गया है कि जो लोग मर चुके होते हैं, वे फिर भी अपने पीछे छूटे लोगों के मामलों में रुचि रखते हैं। यह एक विवादास्पद प्रश्न है कि वे ऐसा क्यों करते हैं। क्या वहाँ कोई ऐसा नियम है जो उन्हें अपने लोगों की देखभाल करने या उन पर नज़र रखने के लिए पुरस्कृत करता है? क्या वे ऐसा इसलिए करते हैं क्योंकि सद्गुणों के अपने पुरस्कार होते हैं? क्या वे अहंकार के कारण इस बंधन को बनाए रखने के लिए विवश हैं? क्या वे अपने परिवार के निरंतर जीवन से अलग नहीं रहना चाहते? या फिर क्या यह इसलिए है कि जीवित लोगों को उनकी सहायता की इतनी अधिक आवश्यकता है कि वे उनकी मध्यस्थता की आवश्यकता से प्रेरित होकर वापस हस्तक्षेप करने के लिए लौट आते हैं? मेरा मानना है कि इस प्रकार के संचार के लिए और जीवित लोगों को आसन्न खतरों या भविष्य में होने वाली अन्य घटनाओं के बारे में चेतावनी देने के लिए वे कितनी दूर तक जा सकते हैं, इसके लिए कुछ निश्चित नियम हैं।

इस कानून का विस्तृत स्वरूप समझना आसान नहीं है, और इससे भी अधिक कठिन प्रश्न यह है कि इस कानून की उत्पत्ति किसने की और इसके निर्माता को किसने बनाया। तर्कसंगत और व्यवस्थित रूप से यह स्थापित करना ही पर्याप्त है कि यह कानून मौजूद है और जीवित व्यक्तियों के मामलों में मृतकों द्वारा रुचि लेने के वास्तविक उदाहरण मौजूद हैं।

यह रुचि अनेक रूपों में प्रकट हो सकती है, लेकिन सर्वमान्य तत्व यह है कि संचार से प्राप्त ज्ञान के माध्यम से जीवित प्राणियों को कुछ लाभ अवश्य मिलता है। यह किसी आपदा की चेतावनी हो सकती है या भविष्य में होने वाली ऐसी घटनाओं का पूर्वाभास हो सकता है जिन्हें

बदला नहीं जा सकता, लेकिन यदि व्यक्ति को पहले से ही पता हो कि क्या होने वाला है, तो उसके लिए पीड़ा कम हो जाती है।

जीवित लोगों में रुचि शायद उतनी स्पष्ट न हो और केवल सौम्य निगरानी जैसी हो, जैसे कि यह देखना कि चीजें कैसी चल रही हैं या किसी अवसादग्रस्त व्यक्ति को प्रोत्साहित करना। यह बिल्कुल भी बिग ब्रदर जैसी भावना नहीं है, जिसमें अदृश्य शक्तियां आप पर नजर रखती हैं, लेकिन यह एक गर्मजोशी भरा, आरामदायक एहसास देता है कि आप अकेले नहीं हैं और आपसे बड़ी कोई शक्ति आपकी परवाह करती है।

इसलिए यह रुचि प्रेम की अभिव्यक्ति है, और इस रूप में यह निश्चित रूप से एक सकारात्मक शक्ति है, जो डरावनी या खतरनाक होने से बहुत दूर है।

जिन जीवित प्राणियों को यह सौभाग्य प्राप्त है कि उनके दिवंगत रिश्तेदार उनके जीवन में रुचि रखते हैं, उन्हें इसे स्वाभाविक मानकर जीना चाहिए। उन्हें अपने निर्णय आध्यात्मिक संरक्षक पर नहीं छोड़ने चाहिए, बल्कि अपने सांसारिक निर्णय स्वयं लेने चाहिए, जैसा उन्हें उचित लगे। फिर भी, कभी-कभी परलोक में रहने वालों का अधिक ज्ञान जीवित प्राणियों को अपनी समस्याओं को बेहतर ढंग से समझने में मदद कर सकता है और इस प्रकार उन्हें बेहतर निर्णय लेने के लिए आधार प्रदान कर सकता है।

श्रीमती हैरी सी. पेंसिल्वेनिया के एक बड़े शहर के पास रहती हैं। आयरिश-अंग्रेज़ी मूल की, उनका जन्म उत्तरी कैरोलिना में हुआ था और वे एक ऐसे पुराने परिवार से आती हैं जिसे जॉर्ज तृतीय द्वारा वहाँ भूमि अनुदान दिया गया था। उनके परिवार में, विशेषकर उनकी माँ के परिवार में, मानसिक शक्ति की क्षमता आम थी। कॉलेज में एक वर्ष की पढ़ाई के बाद, श्रीमती सी. ने एक प्रशिक्षित नर्स के रूप में प्रशिक्षण प्राप्त किया। उन्होंने 1945 में पेंसिल्वेनिया के एक सैनिक से विवाह किया और वर्षों में उनके पाँच पुत्र हुए।

हालाँकि उन्हें समय-समय पर दिव्य दृष्टि का अनुभव होता रहता था, लेकिन ग्यारह वर्ष की आयु तक उन्हें कभी भी परलोक का प्रत्यक्ष अनुभव नहीं हुआ था। उस समय उनकी एक चाची उनके परिवार के साथ रहती थीं और बच्चों की देखभाल करती थीं, क्योंकि उनकी माँ काम पर जाती थीं। इस प्रकार, श्रीमती सी. ने अपने बचपन में अपनी चाची के साथ कई घंटे बिताए; वे साथ में पढ़ती और सिलाई करती थीं, और उनके बीच एक मजबूत रिश्ता बन गया

था। चाची की मृत्यु तक, श्रीमती सी. अपनी माँ के साथ एक ही कमरे में रहती थीं, लेकिन चाची की मृत्यु के बाद उन्हें चाची का शयनकक्ष दे दिया गया। अंतिम संस्कार के कुछ सप्ताह बाद, ग्यारह वर्षीय श्रीमती सी. घर के बरामदे में बैठी थीं, तभी उन्होंने अपना नाम पुकारा जाना सुना। उन्होंने ऊपर देखा और अपनी दिवंगत चाची को दरवाजे पर खड़े होकर उसे थोड़ा खुला पकड़े हुए पाया।

“ग्रेचेन, क्या तुम थोड़ी देर के लिए अंदर आओगी? मुझे तुमसे कुछ कहना है,” चाची ने उसी लहजे में कहा जैसा श्रीमती सी. ने उन्हें जीवित रहते हुए सुना था। आज्ञाकारी और बिल्कुल भी भयभीत हुए बिना, ग्यारह वर्षीय लड़की ने सिलाई का काम छोड़ दिया और अपनी चाची के पीछे-पीछे घर में चली गई। लेकिन जैसे ही वह अंदर जाने लगी, वह आकृति धीरे-धीरे गायब हो गई! चाची अपनी छोटी सहेली को क्या बताना चाहती थीं? कि जीवन चलता रहता है और उन्हें अब भी परिवार की परवाह है?

इस घटना के कुछ हफ़्तों बाद, ग्रेटचेन की एक सहेली, मैक्सिन एफ., उनसे मिलने आई ताकि वे साथ में फ़िल्म देख सकें। जैसे ही दोनों लड़कियाँ जाने वाली थीं, श्रीमती सी. ने अपना नाम पुकारा जाना सुना। फ़िल्म देखने जाने के लिए पूरी तरह तैयार होने के कारण, उन्होंने इसे नज़रअंदाज़ करने का फ़ैसला किया। लेकिन आवाज़ फिर से आई: “ग्रेटचेन! ग्रेटचेन!”

"तुम्हारी मां तुम्हें बुला रही हैं," मैक्सिन ने कहा और इंतजार करने लगी।

तो दोनों बच्चे रसोई में वापस चले गए, जहाँ ग्रेशेन की माँ बर्तन धो रही थी। माँ ने उसे नहीं बुलाया था। उन तीनों के अलावा, उस समय घर में कोई नहीं था। लेकिन ग्रेशेन जानती थी कि उसकी दिवंगत चाची उसे बुला रही हैं।

जैसे-जैसे दिन बीतते गए, चाची की मौजूदगी घर में महसूस होती रही। वह कब्रिस्तान में अकेले छोड़े जाने को तैयार नहीं थीं, बल्कि घर के अपने कर्तव्यों और अधिकारों को निभाना चाहती थीं। रात में, ग्रेशेन को मेज पर किसी के नाखूनों की थपथपाहट सुनाई देती थी। यह उसकी चाची की जीवन भर की आदत थी। अक्सर वह जागकर देखती कि चाची उसके बिस्तर के पास खड़ी उसे देख रही हैं। ग्रेशेन इन घटनाओं को देखने वाली अकेली नहीं थी। उसकी माँ की एक सहेली, मैरी एल., भी कभी उसी कमरे में रहती थी। उसने भी अदृश्य नाखूनों की थपथपाहट सुनी थी।

अपनी दिवंगत चाची के सामान को छांटने का काम भी ग्रेशेन को सौंपा गया था। यह एक बहुत ही कठिन काम था। कई बार उसे ऐसा लगता था मानो उसकी चाची की प्रबल उपस्थिति उसके ऊपर मंडरा रही हो और वह उसके हर काम में गहरी दिलचस्पी ले रही हो। जब तनाव असहनीय हो जाता, तो ग्रेशेन अपनी चाची के पुराने पत्र फेंक देती और ताजी हवा लेने के लिए घर से बाहर भाग जाती। उसे किसी न किसी तरह यह पता था कि उसकी चाची उसका पीछा नहीं करेंगी।

कई वर्षों बाद, जब ग्रेशेन श्रीमती हैरी सी. बन गईं, तो वे और उनके पति पेंसिल्वेनिया में एक घर में रहने लगे। पहले तो श्रीमती सी. को लगा कि उनके घर में कोई भूत आ गया है, जो घर के पिछले मालिकों में से किसी एक के अतीत की निशानी है। यह घर 1904 में वेस्टिंगहाउस कॉर्पोरेशन के "कंपनी टाउन" के हिस्से के रूप में बनाया गया था। उस समय ये घर उस कॉर्पोरेशन के कर्मचारियों के कब्जे में थे, लेकिन 1920 के दशक में कंपनी ने रियल एस्टेट व्यवसाय से बाहर निकलने का फैसला किया और घर फिर से व्यक्तिगत स्वामित्व में आ गए। इसके बाद कई किराएदार बारी-बारी से घर में रहे। श्री और श्रीमती सी. के रहने के दौरान, घर की तीसरी मंजिल पर कई महिलाओं की मृत्यु हो गई थी, जो उस समय की मानसिक घटनाओं का केंद्र थी। लेकिन इनमें से किसी की भी मृत्यु हिंसक नहीं हुई थी और न ही वे किसी ऐसी दुखद घटना का हिस्सा थीं, जिससे कभी-कभी भूतिया घटनाएँ घटित होती हैं। बेशक, जब यह घर कंपनी की संपत्ति था, उस समय के किराएदारों का कोई रिकॉर्ड नहीं रखा गया था, इसलिए इसके शुरुआती इतिहास की जाँच नहीं की जा सकी। श्रीमती सी. को लगा कि शायद घर के शुरुआती मालिकों में से कोई एक किसी त्रासदी का शिकार हुआ था और उसी व्यक्ति की अशांत आत्मा यहाँ भटक रही है। उनका यह विश्वास इस तथ्य से और भी पुख्ता हो गया कि बचपन से लेकर अपनी दिवंगत चाची से हुई मुलाकातों तक, उन्होंने जिन अन्य घरों में वे रही थीं, उनमें उन्हें कभी भी इतना तीव्र अनुभव नहीं हुआ था। लेकिन उनकी अंतर्ज्ञान शक्ति अन्य जगहों पर भी सक्रिय थी, और उन्हें हमेशा किसी न किसी रूप में अलौकिक शक्ति का अनुभव होता रहा है।

ये घटनाएं मुख्य रूप से घर की तीसरी मंजिल पर कदमों की आहट और किसी के सीढ़ियों से नीचे उतरने से संबंधित थीं, जबकि घर वालों को पता ही नहीं था कि ऊपर कोई है। 1961 में

श्रीमती सी. को पता चला कि उनका अदृश्य मेहमान एक महिला थी। उनका एक बेटा नाज़ुक था और सात सप्ताह की उम्र में ही उसकी बड़ी सर्जरी हुई थी। एक रात श्रीमती सी. बच्चे के रोने की आवाज़ सुनकर जाग गईं। उसी समय, उन्हें एक और आवाज़ सुनाई दी, जैसे कोई धीरे-धीरे गा रहा हो, मानो बच्चे को चुप करा रहा हो। यह सोचकर कि कौन हो सकता है, श्रीमती सी. उठीं और बच्चे के कमरे में गईं।

वहाँ, पालने के पास, एक महिला खड़ी थी। वह कद में छोटी, सुंदर चेहरे वाली महिला थी, जिसने प्रथम विश्व युद्ध के समय के कपड़े और केशविन्यास जैसे वस्त्र पहन रखे थे। पोशाक हल्के बैंगनी रंग की थी जिस पर काली कढ़ाई और बारीक बटन लगे थे। इसमें लेस की चोली, जैबोट और बीसवीं सदी के अंत के कपड़ों की तरह एक लंबी स्कर्ट थी।

अजनबी से डरने के बजाय, श्रीमती सी. और करीब गईं। जब वह पालने के पास पहुँचीं, तो महिला मुस्कुराई और उन्हें रास्ता देने के लिए एक तरफ हट गईं ताकि वह बच्चे की देखभाल कर सकें। जब उन्होंने दोबारा ऊपर देखा, तो महिला जा चुकी थीं। आगंतुक की उपस्थिति की अब आवश्यकता नहीं थी; माँ अपने बच्चे की देखभाल करने आई थीं।

उस पहली मुलाकात के बाद, उसने उस महिला को कई बार देखा—कभी बच्चे के कमरे में, कभी तीसरी मंजिल की सीढ़ियों पर ऊपर-नीचे जाते हुए। बाद में श्रीमती सी. ने एक और बच्चे को जन्म दिया, और वह अजनबी महिला भी नवजात शिशु की देखभाल में व्यस्त हो गई, मानो बच्चों की देखभाल करना उसके लिए बहुत स्वाभाविक और प्रिय हो। लेकिन आखिर वह कौन हो सकती थी?

जब श्रीमती सी. का पाँच वर्षीय बेटा 1967 की शरद ऋतु में बीमार पड़ा, तो उसने एक बार अपनी माँ से पूछा कि वह रहस्यमयी महिला कौन थी जो आकर उसके लिए गाना गाती थी, और फिर उसने उसका वर्णन करना शुरू कर दिया। श्रीमती सी. ने अपने अनुभवों के बारे में उस लड़के से कभी बात नहीं की थी, लेकिन वह तुरंत समझ गईं कि उसने भी उस महिला को ऊपर देखा था।

इस समय तक उन्हें यह एहसास होने लगा था कि शायद यह महिला कोई "स्थायी भूत" नहीं बल्कि कोई दिवंगत रिश्तेदार है जो उनके परिवार में दिलचस्पी बनाए हुए है। लेकिन वे पूरी तरह से आश्वस्त नहीं थीं, और मामला यहीं अटक गया जब उनके सबसे बड़े बेटे लोनी और

उनकी पत्नी सैली 1967 में क्रिसमस की छुट्टियों में उनके साथ समय बिताने आए। सैली पेशे से एक पंजीकृत नर्स हैं और वैज्ञानिक सोच रखती हैं। इसी कारण श्रीमती सी. ने उनसे अपने मानसिक अनुभवों पर चर्चा करना या घर की तीसरी मंजिल पर हो रही असामान्य घटनाओं के बारे में बताना उचित नहीं समझा था।

संयोगवश, सप्ताहांत के लिए उस युवा जोड़े को तीसरी मंजिल के शयनकक्ष में ठहराया गया। यात्रा से थके होने के कारण, श्रीमती सी. ने उन्हें वहाँ ठहराना उचित समझा, ताकि वे सड़क के शोर से जितना हो सके दूर रह सकें। कमरा काफी बड़ा था, जिसमें दोनों तरफ एक-एक पलंग था और दोनों पलंगों के बीच एक छोटी खिड़की थी। बहू ने एक पलंग लिया और बेटे ने दूसरा। वे जल्दी ही गहरी नींद में सो गए।

शनिवार की सुबह, सबसे पहले बेटा लोनी नाश्ते के लिए नीचे आया। वह और उसकी माँ रसोई में कॉफ़ी पी रहे थे, तभी सैली वहाँ पहुँची। वह काफ़ी पीली और थकी हुई लग रही थी। श्रीमती सी. द्वारा उसे एक कप कॉफ़ी देने के बाद, सैली ने अपनी सास की ओर देखा।

"माँ, क्या आप रात में किसी कारण से कमरे में आई थीं?"

“बिल्कुल नहीं,” श्रीमती सी. ने उत्तर दिया।

“क्या तुम रात में उठे थे, लोनी?” सैली ने अपने पति की ओर मुड़कर पूछा। उसने उसे आश्वस्त किया कि वह पूरी रात बिल्कुल नहीं हिला था।

“अच्छा,” लड़की ने मुश्किल से निगलते हुए कहा, “तो मुझे आपको कुछ अजीब बात बतानी है।”

आधी रात को किसी की आवाज़ से उसकी नींद खुल गई, कोई उसका नाम पुकार रहा था। पूरी तरह जागने पर उसने देखा कि एक महिला उसके बिस्तर के पास खड़ी है। उसे ठीक से याद नहीं कि वह आकृति कैसे गायब हो गई, लेकिन बहुत थकी होने के कारण वह फिर से सो गई। उसके बाद कुछ नहीं हुआ। उसने जो देखा था, उस पर उसे पूरा यकीन था। यह सपना नहीं था—यह भी उसे पक्का पता था। लेकिन वह अजनबी कौन थी? वे दोनों युवक कुछ दिनों बाद चले गए, और उस घटना के बारे में फिर कभी कुछ नहीं कहा गया।

क्रिसमस के लगभग तीन सप्ताह बाद, श्रीमती सी. अपनी माँ के घर एक सप्ताह बिताने के लिए उत्तरी कैरोलिना गईं। बातचीत के दौरान, श्रीमती सी. की माँ ने बताया कि वह हाल ही में

अटारी में रखे एक पुराने संदूक में कुछ सामान देख रही थीं। कई अन्य वस्तुओं के बीच, उन्हें अपनी दादी की एक छोटी सी तस्वीर मिली, जिसके बारे में उन्हें पता ही नहीं था कि वह उनके पास है। अगर श्रीमती सी. वह तस्वीर लेना चाहतीं, तो वह उन्हें खुशी-खुशी दे देतीं, खासकर इसलिए क्योंकि दादी एल. हमेशा से उनके परिवार में विशेष रुचि रखती थीं।

श्रीमती सी. ने अपनी माँ को धन्यवाद दिया और उस छोटी सी तस्वीर को अपने साथ पेंसिल्वेनिया ले गईं। अपने घर में उन्होंने उसे अपने कमरे की अलमारी पर रख दिया, जब तक कि उन्हें उसके लिए एक उपयुक्त फ्रेम न मिल जाए। लेकिन कुछ दिनों बाद, श्रीमती सी. को लगा कि पुरानी तस्वीर गंदी हो सकती है, इसलिए उन्होंने उसे अलमारी के सबसे ऊपरी दराज में रख दिया।

उस रात श्रीमती सी. लगभग सो ही रही थीं कि उन्हें कमरे में एक गुनगुनाने की आवाज़ सुनाई दी। उन्होंने आँखें खोलीं और देखा कि उनके कमरे की हवा घने कोहरे जैसी थी और उन्हें कमरे का दूसरा कोना मुश्किल से दिखाई दे रहा था। पल भर में उनकी दादी दालान से अंदर आईं और उनके बिस्तर के पास खड़ी हो गईं। श्रीमती सी., जो अब पूरी तरह जाग चुकी थीं, एक कोहनी के बल उठीं ताकि वह प्रेत जान जाए कि वह जाग रही हैं और उन्हें देख रही हैं। तुरंत ही वह आकृति मुड़ी और श्रीमती सी. की ड्रेसर पर एक हाथ रखा, ठीक उसी जगह पर जहाँ दो दिन पहले तक तस्वीर रखी थी। फिर उन्होंने अपना सिर घुमाया और सीधे श्रीमती सी. की ओर देखा। किसी तरह श्रीमती सी. समझ गईं कि उनकी दादी क्या चाहती हैं। वह बिस्तर से उठीं और दराज से तस्वीर निकालकर वापस ड्रेसर के ऊपर रख दी। इतना कहकर वह प्रेत मुस्कुराया और कमरे से बाहर चला गया। हवा साफ हो गई और गुनगुनाना बंद हो गया।

श्रीमती सी. को कुछ समय से घर में अपनी दादी की मौजूदगी का एहसास तो था, लेकिन इतना स्पष्ट रूप से कभी नहीं। वह जानती थीं कि दादी एल. अब भी खुद को परिवार का हिस्सा मानती थीं और जीवित लोगों में गहरी दिलचस्पी रखती थीं। इसीलिए वह श्रीमती सी. की बहू सैली के सामने आई थीं, न तो उन्हें डराने के लिए, न ही कुछ मांगने के लिए, और न ही किसी अधूरे काम के लिए, बल्कि केवल यह जताने के लिए कि वह उनकी परवाह करती हैं।

घर की सदस्य होने के नाते, दादी एल. को स्वाभाविक रूप से थोड़ा घुटन महसूस हुई होगी जब उनकी तस्वीर एक तंग दराज में रख दी गई थी। खासकर इसलिए क्योंकि शायद तस्वीर

को दोबारा ढूंढने की पहल उन्होंने ही की थी! तस्वीर मिलने से पहले, श्रीमती सी. को यकीन नहीं था कि वह महिला कौन थी। लेकिन अब जब उन्हें पता चला कि उनकी अपनी दादी उनके परिवार की रक्षा के लिए मौजूद हैं, तो श्रीमती सी. को कोई आपत्ति नहीं थी। इन दिनों मदद मिलना मुश्किल है, और वह महंगी और अविश्वसनीय भी है, ऐसे में यह जानकर काफी सुकून मिला कि परिवार की भलाई के लिए एक नि:शुल्क रिश्तेदार मौजूद है।

लेकिन तस्वीर वाली घटना के बाद वह महिला फिर कभी नहीं दिखी। क्या ऐसा हो सकता है कि लोहेनग्रिन की तरह, एक बार पहचान हो जाने के बाद सी.एस. के लिए उसकी उपयोगिता समाप्त हो गई हो?

कैलिफोर्निया की गृहिणी श्रीमती बेट्टी एस. को ज्योतिष में ज़रा भी दिलचस्पी नहीं थी। 1957 में जब उनके पिता का देहांत हुआ, तो उन्होंने शोक मनाया, लेकिन चूंकि उन्होंने अपनी पत्नी के लिए पर्याप्त संपत्ति छोड़ी थी, इसलिए उन्होंने अपनी मां के बारे में ज़्यादा चिंता नहीं की, भले ही वे अलग-अलग शहरों में रहती थीं। कुछ समय बाद, उन्हें अपने दिवंगत पिता का ऐसा वास्तविक दृश्य दिखाई दिया कि उन्हें लगा कि यह सपना नहीं हो सकता। सपना हो या दृश्य, उनके पिता सफेद कमीज़ और नीली पैंट पहने खड़े थे। वे तेजस्वी और जीवंत लग रहे थे।

“क्या माँ ठीक हैं?” उसने पूछा।

श्रीमती एस. ने अपने पिता को आश्वस्त किया कि सब ठीक है। वह प्रेत चला गया। लेकिन कुछ दिनों बाद श्रीमती एस. की माँ का फोन आया। वह बहुत परेशान थीं। किसी ने उनके बैंक डिपॉजिट बॉक्स में सेंध लगाई थी और दो महत्वपूर्ण दस्तावेज़ बिना किसी निशान के गायब हो गए थे! इसके अलावा, पैसे और बॉन्ड भी चोरी हो गए थे, जिससे उनकी आर्थिक स्थिति बेहद खराब हो गई थी।

अचानक श्रीमती एस. को समझ आ गया कि उनके दिवंगत पिता चिंतित क्यों थे। जाहिर है, उन्हें कुछ ऐसा पता था या आभास था जिसके बारे में उन्हें अभी तक जानकारी नहीं थी।

उसके पिता फिर कभी उसके सामने प्रकट नहीं हुए। लेकिन गुम हुई दोनों संपत्तियां लगभग तीन महीने बाद रहस्यमय तरीके से डिपॉजिट बॉक्स में वापस आ गईं। आज तक श्रीमती एस. इस पहेली को सुलझा नहीं पाई हैं। लेकिन यह जानकर उन्हें तसल्ली मिली कि उनके दिवंगत पिता उनकी मां की देखभाल करते रहे थे।

यह सर्वविदित है कि दादा-दादी अक्सर अपने बच्चों की संतानों से बहुत लगाव रखते हैं। जब मृत्यु किसी दादा-दादी को तीसरी पीढ़ी से अलग कर देती है, तो उनसे मिलने की तीव्र इच्छा उत्पन्न हो सकती है। मैसाचुसेट्स की श्रीमती कैरोल एस. के मामले पर विचार करें।

1963 में उनके पहले बेटे का जन्म हुआ। अस्पताल से लौटने के बाद शुरुआती रातों में से एक रात, वे रात में जाग गईं और उन्होंने अपने कमरे की छत के पास एक धुंधली रोशनी देखी। यह रोशनी बच्चे के पालने और पलंग के निचले हिस्से के बीच मंडरा रही थी। कुछ ही क्षणों में वह रोशनी उनके दिवंगत दादाजी के चेहरे का रूप ले ली और चमकती रही। उसी समय, श्रीमती एस. को ऐसा लगा जैसे उनके दादाजी अपने पहले परपोते को देखने आए हों।

वह स्वयं पहली पोती थी, और उसकी माँ दादा की पहली संतान थी; इसलिए लोगों की दिलचस्पी स्वाभाविक थी। एक पल के लिए चेहरा दिखाई दिया, फिर धुंध में गायब हो गया और जल्द ही पूरी तरह से लुप्त हो गया।

1969 में, श्रीमती एस. के दूसरे दादाजी—जो उनके पिता की तरफ से थे—का भी देहांत हो गया। कुछ समय बाद उनकी दादी ने उनका पलंग श्रीमती एस. को दे दिया। जिस रात उनके छह वर्षीय बेटे ने उस पलंग पर सोया, उसने एक अजीब सा "सपना" देखा।

उसके परदादा उसके पास आए और उसे बताया कि वे स्वर्ग में रहते हैं, खुश हैं और ऊपर से उसे देख सकते हैं। यह "सपना" अजीब था क्योंकि लड़के को इस बात का कोई ज्ञान नहीं था कि जिस बिस्तर पर वह सोता था उसका उसके परदादा से कोई संबंध था।

पूर्वी क्षेत्र के एक मध्यम आकार के शहर में रहने वाली गृहिणी, श्रीमती जोसेफ बी., गर्ल स्काउट परिषद की सदस्य, संडे स्कूल शिक्षिका और एक व्यस्त, स्वस्थ बुद्धि वाली सामान्य महिला हैं, जिनके पास कल्पनाओं या दिवास्वप्नों के लिए समय नहीं है। पेंसिल्वेनिया डच मूल की श्रीमती जोसेफ बी. का विवाह इतालवी मूल के एक इस्पात श्रमिक से हुआ है। उनके शौक बॉलिंग और पढ़ना हैं, न कि मनोवैज्ञानिक अनुसंधान।

वह अपने पति और बेटे के साथ एक ही घर में रहती थी, जबकि उसकी माँ शहर के दूसरी तरफ अकेले रहती थी। लेकिन लगभग हर दस दिन में उसकी माँ उनसे मिलने आती थी। माँ उस घर से अच्छी तरह वाकिफ थी और हमेशा सामने के दरवाजे से अंदर आती थी। ये मुलाकातें एक नियमित दिनचर्या बन गईं और साल शांति से बीतते रहे, जब तक कि माँ का

निधन नहीं हो गया। उन्हें भुलाया नहीं गया, लेकिन बी. परिवार ने भी गहरा शोक नहीं मनाया। उनकी मृत्यु को एक स्वाभाविक घटना मानकर स्वीकार कर लिया गया और जीवन चलता रहा।

उनकी मृत्यु के एक वर्ष बाद, श्रीमान और श्रीमती बी. अपने घर के ऊपरी कमरे में सोने की तैयारी कर रहे थे। उनका बेटा अपने कमरे में गहरी नींद में सो रहा था। रात के 1 बज रहे थे। श्रीमान बी. बाथरूम में थे और श्रीमती बी. अभी-अभी बिस्तर पर लेटी थीं, उन्हें अच्छी नींद की उम्मीद थी। कल शनिवार था, और वे देर तक सो सकते थे।

इसी क्षण उसने घर के निचले तल के सामने वाले दरवाजे के खुलने की आवाज सुनी। उसके पति ने भी जाहिर तौर पर यह आवाज सुनी थी और वह बाथरूम के दरवाजे पर आकर बोला: "मुझे लगा कि कोई अंदर आया है।"

“मैंने भी यही सोचा था,” श्रीमती बी ने जवाब दिया और उन्होंने नीचे की ओर पुकारा: “नीचे कौन है?”

उसकी माँ की आवाज़ फिर सुनाई दी। “मैं ही हूँ; नीचे मत आना—मैं यहाँ नहीं रुकूँगी!” फिर उन्होंने उसके जाने-पहचाने कदमों की आवाज़ घर में गूंजते हुए सुनी, जब वह इधर-उधर घूमी और आखिरकार पिछले दरवाजे से बाहर निकल गई।

मानो रात के 1 बजे माँ का आना दुनिया की सबसे आम बात हो, पति बाथरूम में लौट गया और श्रीमती बी. वापस बिस्तर पर चली गईं। सालों से जिस दिनचर्या के वे आदी हो चुके थे, उसकी वजह से माँ का आना उनके लिए सामान्य बात ही रह गई थी। दोनों थके हुए थे और थोड़ी देर बाद सो गए। सुबह, श्री बी. ने आगे और पीछे दोनों दरवाजों को देखा। वे अंदर से बंद थे, ठीक वैसे ही जैसे उन्होंने पिछली रात सोने से पहले बंद किए थे! जब श्रीमती बी. नाश्ते के लिए नीचे आईं, तो उन्होंने चुपचाप दरवाजे की ओर इशारा किया। तभी उन्हें अचानक यह एहसास हुआ कि माँ को गुज़रे हुए सिर्फ़ एक साल ही हुआ था।

उन्होंने आपस में बातचीत की। दोनों इस बात पर सहमत हुए कि उन्होंने जो आवाज़ सुनी थी, वह माँ की ही आवाज़ थी और पहले जैसी ही सुनाई दे रही थी। ज़ाहिर है, यह माँ का यह कहने का तरीका था कि वह अब भी उनसे मिलने आती हैं। लंबे समय तक उनकी कोई खबर नहीं मिली। शायद उन्हें कुछ और काम थे या उन्हें अपनी नई दुनिया ज़्यादा दिलचस्प लगी।

लेकिन 9 जनवरी, 1967 को, श्रीमती बी की बड़ी बहन की नींद खुली तो उनकी माँ उन्हें पुकार रही थीं। वह तुरंत बिस्तर से उठकर अपनी माँ का फोन उठाने चली गईं, उस पल के लिए वह पूरी तरह भूल गईं कि उनकी माँ को मरे हुए कई साल हो चुके थे। तीन बार आवाज़ आई और लहजा बहुत दुख भरा था। क्या वह उन्हें कुछ बताने की कोशिश कर रही थीं, और अगर हाँ, तो क्या? अगली रात, श्रीमती बी की बहन को पता चला। उनके पति का अचानक निधन हो गया था। शायद उनकी माँ ने उन्हें पहले से बताकर इस सदमे को कम करने की कोशिश की थी।

मृतकों से आने वाले हर संदेश का जीवित लोग स्वागत नहीं करते। कुछ अंधविश्वासी लोग ऐसे संपर्कों को बुरा, शैतानी या खतरनाक भी मान सकते हैं। वहीं, समझदार लोग मृत्यु के बाद आने वाले इस संदेश को ठुकरा देते हैं। उन्हें इस बात पर कोई संदेह नहीं होता कि उनके प्रियजन दूसरे लोक में विद्यमान हैं। वे बस इतना चाहते हैं कि वे उनके जीवन में मौजूद न रहें।

न्यू जर्सी की रहने वाली श्रीमती मार्ज सी. को अपने दादाजी से कई सालों से परेशानी थी। यह सब तब शुरू हुआ जब वे स्थानीय अस्पताल में अंतिम सांसें ले रहे थे और उन्होंने उनसे मिलने की इच्छा जताई। हालांकि वे उनसे बहुत करीबी रिश्ता नहीं रखती थीं, फिर भी यह उनकी अंतिम इच्छा थी; लेकिन उनकी मां ने उनकी इच्छा पूरी नहीं की। इसके तुरंत बाद, उन्हें एक अजीब सी ठंडक महसूस हुई। बाद में उन्हें एहसास हुआ कि यह उनके निधन के ठीक उसी क्षण हुआ था, लेकिन उस समय उन्हें इसका पता नहीं चला था।

अभी नन्ही बच्ची ही रही मार्ज उस समय मौजूद थी जब उसके चाचा और चाची अपने नवजात शिशु को घर लाए थे। उसने यूं ही ऊपर देखा और पाया कि उसके दादाजी पिछले दरवाजे पर खड़े उसे देख रहे थे। जैसे ही उन्होंने मार्ज को उसकी ओर देखते हुए देखा, उन्होंने उसकी ओर हाथ बढ़ाया। लेकिन उस बूढ़े व्यक्ति के प्रति दया की बजाय, मार्ज को उस विचार से ही भय उत्पन्न हो गया।

कुछ समय बाद, एक शाम जब वह सोने की तैयारी कर रही थी, तो उसने किसी की आवाज़ सुनी। यह अजीब था क्योंकि वह घर में अकेली थी। लेकिन वह नीचे रसोई में गई। वहाँ उसके दादाजी उसे घूर रहे थे। वह डर के मारे चिल्लाई, और वे गायब हो गए।

अगली बार जब वह अनचाहा मेहमान प्रकट हुआ, तब वह सोलह साल की थी। इस बार वह अपनी एक सहेली के घर पर थी और एक शांत पल में उसने खिड़की से बाहर देखा। वहाँ फिर से दादाजी खड़े थे, बाहर से उसे घूर रहे थे। फिर भी वह उन घटनाओं से दूर रहना चाहती थी।

1965 में अपने पति से मिलने से ठीक पहले मार्ज ने अपने दादाजी को फिर से देखा। उन्होंने मार्ज की ओर हाथ बढ़ाया और बोलने की कोशिश की, लेकिन मार्ज चीख पड़ी और बेहोश हो गई। शायद दादाजी को यह एहसास हो गया था कि अपने दिव्य रूप में प्रकट होना उनकी पोती के लिए डरावना था; खैर, वे फिर कभी वापस नहीं आए। लेकिन समस्या का समाधान नहीं हुआ था। मार्ज अक्सर उन्हें अपने आसपास महसूस कर सकती थी और उन्हें पुकारते हुए सुन सकती थी। यहां तक कि उनके पति ने भी वह आवाज सुनी और समझ भी गए। आखिरकार, मार्ज ने अपनी समस्या अपनी माँ को बताई ताकि पता चल सके कि उनके दादाजी इतना ज़ोर क्यों दे रहे थे। ऐसा लगता है कि उनकी माँ उनकी लाडली थीं, और मार्ज जन्म से ही अपनी माँ की तरह दिखती थीं। क्या यही कारण था कि उनके दादाजी उनसे बात करना चाहते थे?

मैंने श्रीमती सी. को संभावित कारण बताए और उनसे अपने दादाजी के प्रति सहानुभूति रखने का अनुरोध किया। उसके बाद मुझे उनसे कोई खबर नहीं मिली, इसलिए शायद दादाजी ने उम्मीद छोड़ दी है।

कैंसर अनुसंधान में विशेषज्ञता प्राप्त डॉक्टर लूसिया बी., जो यूरोप के एक प्रमुख विश्वविद्यालय से स्नातक हैं, ने छाती रोग विशेषज्ञ के रूप में एक शानदार चिकित्सा करियर बनाया है। एक जीवंत व्यक्तित्व वाली ये महिला कई भाषाएँ बोलती हैं। उनके माता-पिता उनके गृह नगर वियना से प्राग चले गए, जहाँ उनके पिता संपादक थे और कई पत्रिकाओं का प्रकाशन करते थे। बाद में उनके पिता बर्लिन में रहने लगे, जहाँ उन्होंने एक सफल प्रकाशन गृह चलाया।

डॉ. बी. का विवाह एक सेवानिवृत्त इतालवी सेना जनरल से हुआ है और वे न्यूयॉर्क के वेस्ट साइड में एक अपार्टमेंट में रहती हैं। वे 1932 से अमेरिका में आती-जाती रही हैं। इससे पहले, वे प्यूर्टो रिको के स्वास्थ्य विभाग में चिकित्सक थीं। उनका मानना है कि चिकित्सा के क्षेत्र में उनका सबसे बड़ा योगदान श्वसन तंत्र की कैंसर कोशिकाओं को रोकने वाले एंजाइम की

खोज थी। दुर्भाग्य से न्यूयॉर्क की जलवायु उन्हें रास नहीं आई, और जब मैं उनसे मिला, तो वे फिर से अपना सब कुछ छोड़कर इटली लौटने के लिए तैयार थीं।

डॉ. बी. न्यूयॉर्क में मेरे अध्ययन कक्ष में कुछ असामान्य मानसिक अनुभवों के बारे में बात करने आईं, जिनका वे स्पष्टीकरण चाहती थीं। एक चिकित्सक होने के नाते, उन्हें इन घटनाओं को सीधे तौर पर स्वीकार करने में कुछ झिझक थी, फिर भी, एक पारखी और अत्यंत तार्किक व्यक्ति होने के नाते, वे जानती थीं कि उनके साथ जो कुछ हुआ था वह पूरी तरह से वास्तविक था और किसी अतिसक्रिय मतिभ्रमपूर्ण कल्पना का परिणाम नहीं था।

सन् 1940 में, जब इन चौंकाने वाली घटनाओं में से पहली घटना घटी, तब लूसिया बी. इटली के टिवोली स्थित प्रसिद्ध विला होरेस में रहती थीं। द्वितीय विश्व युद्ध चल रहा था और उनके पति इतालवी सेना में मेजर के पद पर तैनात थे। उनका तबादला हाल ही में टिवोली में हुआ था और वे उस विला में रह रहे थे, जो उस समय एक अंग्रेज महिला की संपत्ति थी, जिसे फासीवादियों ने छुआ तक नहीं था क्योंकि वह लंबे समय से इटालियनों के बीच रह रही थी। डॉ. बी. अमेरिकी नागरिक थीं और अभी भी हैं, इसलिए उनकी स्थिति को लेकर कुछ चिंता थी। लेकिन फिलहाल उनके खिलाफ कोई प्रत्यक्ष कार्रवाई नहीं की गई थी और एक इतालवी अधिकारी की पत्नी होने के नाते वे कुछ समय के लिए सुरक्षित लग रही थीं, खासकर इसलिए क्योंकि संयुक्त राज्य अमेरिका अभी तक युद्ध में शामिल नहीं हुआ था।

उसी साल मई में, वह अंग्रेज महिला दो दिन के लिए दोस्तों से मिलने चली गई। मेजर बी. सैन्य अकादमी में कुछ जानकारी लेने के लिए सिविटावेकिया गए थे, जिससे डॉ. बी. एक दिन के लिए अकेली रह गईं। उन्होंने अपनी इस "आज़ादी" का सदुपयोग करने का फैसला किया और अगली सुबह पास के रोम में पूरे दिन घूमने चली गईं। वह एक खूबसूरत, सुहावनी शाम थी, और इटली में गर्मियों की शुरुआत में होने वाले उन शानदार सूर्यास्तों में से एक था, जिसके लिए इटली मशहूर है। डॉ. बी. अपनी खिड़की के पास खड़ी होकर बाहर के नज़ारे को देख रही थीं, चारों ओर युद्ध के घने बादल छाए होने के बावजूद वह असाधारण रूप से खुश थीं।

उनके पास एक पालतू टर्की थी, जिससे मिलने के लिए वह विला के निचले हिस्से में गई। मूल रोमन नींव पर बना यह घर, जिसमें प्राचीन घर के कई हिस्से शामिल हैं, इस क्षेत्र के प्रमुख

ऐतिहासिक आकर्षणों में से एक है और अधिकांश गाइडबुक में इसका उल्लेख मिलता है। पक्षी से थोड़ी देर मिलने के बाद, वह अपने कमरे में लौट आई और शांत मन से सो गई।

उसने सुबह 7 बजे जगाए जाने का संदेश छोड़ा था। यह उसके पति के युवा सहायक जीनो का कर्तव्य था। लेकिन उसे गहरी नींद से सुबह 6 बजे ही जगा दिया गया, जीनो ने नहीं बल्कि जीनो के अर्दली ऑस्कर ने।

“उठो—छह बज गए हैं,” उसने कहा और उसे हिलाकर जगा दिया।

डॉ. बैरेट इस असामान्य व्यवहार से नाराज़ थीं। उन्होंने पलटवार करते हुए कहा, "लेकिन यह तो सात बजे होना चाहिए, और आपको नहीं, बल्कि जीनो को मुझे जगाना चाहिए। आप यहाँ क्या कर रहे हैं? बाहर निकलो!"

इतना कहकर, व्यवस्थापक भाग गया, और डॉ. बी. ने दोबारा सोने की कोशिश की। पर उन्हें नींद नहीं आई। वह उठीं और खिड़कियों के शटर खोले, जिससे पहले से ही उजाले हो चुके दिन की रोशनी अंदर आ गई। फिर उन्होंने वह दरवाज़ा खोला जो एक लंबे, विशाल कमरे में खुलता था जिसे मेन्सा कहा जाता था और जिसका उपयोग भोजन कक्ष के रूप में किया जाता था। विला की दीवारों के भीतर एक चैपल था, और चैपल में पहले रखी हुई बेंचों की एक कतार इस लंबे कमरे की दीवारों के साथ लगा दी गई थी ताकि लोग वहां बैठकर प्रार्थना कर सकें या बस आराम कर सकें। डॉ. बी. भोजन कक्ष में दाखिल हुईं। पहली बेंचों में से एक पर उन्होंने एक आदमी को बैठे देखा। वह उनके पिता थे, और तब उन्हें समझ आया कि व्यवस्थापक ने उन्हें समय से पहले क्यों जगाया था: उन्हें यह बताने के लिए कि उनके पिता आ गए हैं।

"तो तुम आखिरकार मरे नहीं हो," उसने कहा और उसका अभिवादन करने के लिए उसके पास चली गई।

उनके पिता अक्टूबर 1938 में न्यूयॉर्क छोड़कर प्राग लौट गए थे। अगले वर्ष फरवरी में उन्हें अपने पिता की प्रेमिका का एक टेलीग्राम मिला, जिसमें संक्षेप में बताया गया था कि उनके पिता का निधन हो गया है और उन्हें दफना दिया गया है। डॉ. बी. को बाद में प्राग जाकर पता चला कि उनकी मृत्यु के आसपास कुछ संदिग्ध परिस्थितियाँ थीं। यह एक स्वाभाविक मृत्यु नहीं थी, और कुछ गवाहों ने कहा कि उन्हें डर था कि उन्हें जहर दिया जा रहा है। लेकिन वह

कुछ नहीं कर सकती थीं। प्राग पहले से ही जर्मन कब्जे में था, और पुराने घावों को कुरेदना मुश्किल था। वह राख का पता नहीं लगा सकीं, लेकिन उन्हें वह व्यक्ति मिल गया जिसने उनके दिवंगत पिता के मृत्यु प्रमाण पत्र पर हस्ताक्षर किए थे। उसने खुलकर स्वीकार किया कि उसने शव की जांच नहीं की थी, लेकिन मृत्यु उसी दिन हुई थी जब नाजियों ने चेकोस्लोवाकिया पर कब्जा कर लिया था, इसलिए उसने इसे आत्महत्या मान लिया था जैसा कि उसे "बताया गया था"। डॉ. बी. को हमेशा से संदेह रहा है कि उनके पिता को उनकी प्रेमिका की मिलीभगत से मार डाला गया था, लेकिन वह इसे साबित नहीं कर सकीं। वह फिर से प्राग छोड़कर चली गईं, केवल इस बात से आश्वस्त थीं कि उनके पिता वास्तव में अब जीवित नहीं हैं।

लेकिन वह वहीं था, बिलकुल वैसा ही जैसा उन खुशनुमा दिनों में दिखता था जब वे साथ मिलकर पहाड़ों में ट्रेकिंग किया करते थे। उसने भूरे रंग का ट्वीड सूट पहना हुआ था, एक ऐसा सूट जिसे उसकी माँ बहुत नापसंद करती थी क्योंकि वह बहुत पुराना था। उसका सिर झुका हुआ था, और पहले तो उसने उसका चेहरा नहीं देखा। उसने चौड़ी किनारी वाली टोपी पहन रखी थी।

“तुम यहाँ हो,” डॉ. बी. ने हैरानी से कहा। “मुझे पता था कि तुम मरे नहीं हो!”

फिलहाल वह प्राग की अपनी यात्रा और उसकी निश्चित मृत्यु के बारे में सब कुछ भूल चुकी थी। लेकिन वह पूरी तरह से जागृत और सतर्क थी, और दिन काफी उजाला हो चुका था।

वह घुटनों के बल बैठकर उसका चेहरा देखने लगी और उसने देखा कि उसका सूट कितना पुराना हो चुका था। वह पहले की तरह ही दृढ़ निश्चयी था, उसमें कुछ भी अस्पष्ट या धुंधला नहीं था। उसने खुशी से भरी आवाज़ में उससे बात करना शुरू किया। उसने अपना सिर थोड़ा ऊपर उठाया और टोपी उसके सिर पर थोड़ी ऊपर सरक गई। अब वह उसका माथा और चेहरा और भी स्पष्ट रूप से देख सकती थी, और उसने देखा कि उसकी त्वचा हरे रंग की थी।

“तुम बीमार रहे होगे,” उसने इस अजीब रंग को देखकर हैरानी से कहा। “या फिर तुम कैदी रहे हो?”

उसने बड़ी मुश्किल से अपने होठों से निकली आवाज में जवाब दिया, "हां," उसने कहा, "उन्होंने मुझे धूप में बैठने दिया ताकि तुम इतनी डर न जाओ।"

(मैंने सोचा, दिन के उजाले में इस तरह प्रकट होना बहुत अधिक शक्ति और तैयारी की मांग करता है, और यह बिल्कुल भी सामान्य बात नहीं है। लेकिन जाहिर तौर पर इस विचित्र घटना का आयोजन करने वाले लोगों ने इसे सफलतापूर्वक अंजाम देने का एक तरीका खोज लिया था।)

डॉ. बी. को उनकी बात समझ नहीं आई। “आप बीमार थे,” उन्होंने दोहराया। “आपको कौन लाया था?”

उसके पिता ने विशाल कमरे के पिछले हिस्से की ओर इशारा किया। डॉ. बी. ने उस दिशा में देखा। उसके पिता जिस बेंच पर बैठे थे, उसके पीछे छह और बेंचें थीं, फिर एक बुफे था जहाँ घर में ठहरे सैनिक भोजन करते थे, और उसके आगे, एक चौड़े खुले दरवाजे के पास, उसने डॉ. के. को खड़े देखा, जो उसके पिता और उसके दोनों के मित्र थे। जिस समय उसने इस व्यक्ति को देखा, वह न्यूयॉर्क में रह रहे थे, लेकिन जैसे ही उसे एहसास हुआ कि उसके पिता दूसरी दुनिया से आए हैं, उसने उनसे पूछा कि क्या डॉ. के. भी मर चुके हैं।

उसकी आवाज़ लड़खड़ा रही थी। “नहीं। वे मुझे लाए थे।”

डॉ. बी. ने दोबारा देखा तो उन्हें डॉ. के. की सीधी खड़ी आकृति के पीछे पाँच पीले रंग के छोटे कद के लोग दिखाई दिए, जो स्पष्ट रूप से पूर्वी भारतीय थे। वे डॉक्टर से थोड़ी दूरी पर सम्मानजनक मुद्रा में खड़े थे और गहरे रंग के कपड़े पहने हुए थे।

“ये लोग कौन हैं?” उसने पूछा।

“वे जावा से हैं,” उसके पिता ने जवाब दिया। “वे मुझे यहाँ लाए हैं।”

यह सब कुछ समझ से परे था। उसने अपने पिता का हाथ अपने हाथों में ले लिया। वह हाथ बर्फ जैसा ठंडा लगा। अब उसे एहसास हुआ कि कुछ पल पहले उसका अंतर्ज्ञान सही था।

"तुम हो--?"

उसने सहमति में सिर हिलाया।

“तुम यहाँ क्यों आए? इसका कोई कारण तो जरूर होगा।”

"हाँ वहाँ है।"

क्या मैं खतरे में हूँ?

“हां,” उसने जवाब दिया, “तुम हो। तुम्हें पर्वतारोहियों में शामिल होना चाहिए।”

मुझे क्या करना चाहिए?

“पहाड़ों के ऊपर से जाओ,” उसके पिता ने उसे समझाया। “तुम्हें गाइड की ज़रूरत होगी।”

यह बात बिल्कुल समझ में नहीं आई, लेकिन इससे पहले कि वह अपने मृत पिता से और सवाल कर पाती, उन्होंने आगे कहा: "जब तुम जहाज पर होगी, तो ये जावानीस तुम्हारा ख्याल रखेंगे।"

लेकिन मुझे किसी की देखभाल की जरूरत नहीं है।

"समुद्री यात्रा के दौरान वे तुम पर नज़र रखेंगे," उसने थकी हुई, बेसुध आवाज़ में दोहराया।

ठीक उसी समय, जीनो, जो उसका सहायक था और जिसे उसे सुबह 7 बजे जगाना था, दरवाजा तोड़कर अंदर आ गया। उसे पहले से ही उठकर इधर-उधर घूमते देख वह घबरा गया।

“ये सब लोग कौन हैं?” उसने पूछा। जाहिर है, वह भी उन्हें देख सकता था! “उनके लिए द्वार किसने खोले?”

जैसे ही जीनो ने भोजन कक्ष में गरजते हुए प्रवेश किया, डॉ. बी. का ध्यान क्षण भर के लिए उससे भटक गया। जब उन्होंने अपने पिता की ओर देखा, तो वे गायब हो चुके थे! उन्होंने कमरे के दूसरे छोर की ओर देखा और पाया कि जावानीस और डॉ. के. भी गायब हो चुके थे।

उसने बताया कि ऑस्कर ने उसे एक घंटा पहले जगाया था। जीनो ने कसम खाई कि वह इस काम के लिए वार्ड बॉय को सज़ा देगा और तुरंत चला गया। पंद्रह मिनट बाद जीनो कुछ शर्मिंदा सा लौटा। ऐसा लग रहा था कि ऑस्कर को सुबह 5 बजे उठना था, लेकिन वह नहीं उठा। सैनिकों ने उसे जगाने की कितनी भी कोशिश की, वह नहीं उठा, बल्कि किसी अजीब सी बेहोशी में लग रहा था। जब जीनो ने उसे देखा, तब भी वह सो रहा था, और इसमें कोई शक नहीं था कि उस सुबह उसने मेन्सा रूम में कदम ही नहीं रखा था!

स्पष्टतः ऑस्कर एक भौतिक माध्यम था, और यह उसका "सार" ही था जिसे "व्यवस्थाओं" के प्रभारी लोगों ने डॉ. बी के पिता के भौतिकीकरण को संभव बनाने के लिए उधार लिया था।

इस बात का एक और सबूत कि वह असली ऑस्कर नहीं बल्कि सुबह 6 बजे उसे जगाने वाले वार्ड बॉय का सिर्फ़ एक प्रतिबिंब या नकली रूप था, इस तथ्य से मिलता है कि बाहरी दरवाजों की चाबियाँ अभी भी जीनो के पास थीं। किसी और के पास चाबियों का सेट नहीं था, फिर भी जीनो के पहुँचने पर दरवाजे खुले थे! उन्हें अंदर से नहीं खोला जा सकता था; केवल बाहर से ताले में चाबी डालकर ही उन्हें खोला जा सकता था।

कई सैनिकों ने गवाही दी कि ऑस्कर अपने बिस्तर से कभी नहीं उठा था। सुबह 7:10 बजे भी वह बेहोश था और दिन में काफी देर बाद ही होश में आया।

जब ऑस्कर से उसके वरिष्ठ अधिकारियों और डॉ. बी. ने पूछताछ की, तो वह भी उनकी तरह ही हैरान था। उसे कुछ भी याद नहीं था और उसने पहले कभी ऐसा अनुभव नहीं किया था।

“मुझे तभी समझ जाना चाहिए था कि कुछ गड़बड़ है जब उसने मुझे छुआ और जगाने के लिए ज़ोर से हिलाया,” डॉ. बी. ने बाद में सोचा। “इटली में ऐसा करना मना है—आप महारानी को नहीं छू सकते।”

असली ऑस्कर तो ऐसा करने की हिम्मत कभी नहीं करता, लेकिन जाहिर तौर पर किसी दूसरी शक्ति के प्रभाव में आए ऑस्कर को उसे जगाना पड़ा ताकि वह अपने पिता का संदेश ग्रहण कर सके। मुझे तो यह एक बेहद सुनियोजित मानसिक साजिश लगी।

सारी अफरा-तफरी में डॉ. बी. पूरी तरह भूल गई थीं कि उन्हें रोम जाने वाली 8 बजे की ट्रेन पकड़नी है। अपने आप पर काबू पाते हुए, वह ठीक समय पर ट्रेन पकड़ने में कामयाब रहीं। जब उनके पति दो दिन बाद लौटे, तो उन्होंने उन्हें इस घटना के बारे में नहीं बताया। उन्हें लगा कि एक इतालवी अधिकारी इस तरह की बात को स्वीकार नहीं करेगा, और उन्होंने इसे भुला देना ही बेहतर समझा। समय ही बताएगा कि इसमें कुछ सच्चाई है या नहीं।

दो महीने बाद उनके पति युद्ध में शामिल होने के लिए रवाना हो गए। इससे वह विला में अकेली रह गईं, और जैसे-जैसे इटली में जर्मन सेना का कब्ज़ा बढ़ता गया, अमेरिकी वाणिज्य दूतावास ने उन्हें देश छोड़ने की सलाह दी। लेकिन जैसे ही वह स्विट्जरलैंड जाने के लिए

तैयार हुईं, इतालवी सरकार ने उनका पासपोर्ट ज़ब्त कर लिया। इतालवी अधिकारियों और विदेशियों के बीच विवाह भंग कर दिए गए, जिससे उनकी मुश्किलें और भी बढ़ गईं।

इस पूरे समय उसका पति ग्रीस में कहीं युद्ध लड़ रहा था, और उसे उसके बारे में बहुत कम जानकारी मिल रही थी। उसे आशंका थी कि कहीं उसे किसी नजरबंदी शिविर में न भेज दिया जाए। उसने सोचा कि जब मौका है, तब वहां से निकल जाना ही बेहतर है।

"पहाड़ों के पार जाओ," एक दोस्त ने सुझाव दिया, और अचानक उसे समझ में आ गया कि उसके पिता का क्या मतलब था।

दो बार वह असफल रही। तीसरी बार उसे सफलता मिली और उसे दो महीने के लिए फ्रांस की जेल में डाल दिया गया। वह एक अच्छी स्कीयर थी, इसलिए उसने स्की पर लिटिल सेंट बर्नार्ड दर्रा पार किया था। हालांकि, पकड़े जाने और वापस भेजे जाने से बचने के लिए उसने एक गाइड को साथ ले लिया था। ठीक वैसे ही जैसे उसके दिवंगत पिता ने भविष्यवाणी की थी!

न्यूयॉर्क में रहने वाली उसकी मां ने उसके वापस आने का इंतजाम किया और उसे लिस्बन पहुंचाया, जहां से उसे नाव लेनी थी। वाशिंगटन में एक उच्च पदस्थ परिचित के माध्यम से उसकी मां ने एक ऐसे छोटे जहाज पर यात्रा की व्यवस्था की जो अटलांटिक महासागर पार करने के लिए बना ही नहीं था। यह नाव एक पुर्तगाली उद्योगपति की थी और इसमें केवल बारह केबिन थे।

याट का नाम कैवल्हो अरुजो, यानी लाल घोड़ा था, और इसे समुद्र पार करने में इक्कीस दिन लगे। जब जहाज अज़ोरेस पहुँचा, तो एक डच रेडियो ऑपरेटर और एक टॉरपीडो से क्षतिग्रस्त डच जहाज के पाँच जावानीस चालक दल के सदस्यों को अपने साथ ले लिया गया। जाहिर है, जर्मनों ने उन्हें टॉरपीडो से निशाना बनाया था और आँखों पर पट्टी बाँधकर अज़ोरेस ले आए थे, जो उस समय तटस्थ था। मानवता का एक दुर्लभ उदाहरण पेश करते हुए, जर्मनों ने उन्हें वहीं छोड़ दिया ताकि उन्हें बचाया जा सके और घर भेजा जा सके।

शुरू से ही, पाँचों जावानीस डॉ. बी. से जुड़ गए और उनकी देखभाल करने लगे, ठीक वैसे ही जैसे उनके पिता ने उन्हें बताया था। वे बिल्कुल वैसे ही दिखते थे जैसे उन्हें टिवोली के विला में उनके पिता द्वारा दिखाए गए भविष्य की झलक में दिखाई दिए थे!

न्यूयॉर्क पहुँचने और अपनी माँ से मिलने के बाद, उसने फिर कभी जावा के उन नाविकों को नहीं देखा। वे जितनी जल्दी और चुपचाप उसके जीवन में आए थे, उतनी ही जल्दी और चुपचाप गायब हो गए।

जैसे ही उसे मौका मिला, उसने डॉ. के. की ओर देखा। उसे यकीन था कि वह उसकी बात पर विश्वास नहीं करेंगे, लेकिन वह उन्हें वह सब कुछ बताने के लिए दृढ़ थी जो उसने देखा था।

उन्हें आश्चर्य हुआ कि प्रसिद्ध जैव रसायनज्ञ डॉ. के. ने उनका उपहास नहीं किया। उन्होंने समय के अंतर की तुलना करके यह निर्धारित किया कि जिस समय उन्होंने उन्हें टिवोली में देखा था, उस समय वे कहाँ थे। वे न्यूयॉर्क स्थित अपनी प्रयोगशाला में काम कर रहे थे और उस समय उन्हें कुछ भी विशेष महसूस नहीं हुआ था।

डॉ. बी. और डॉ. के. के बीच कोई घनिष्ठ संबंध न होने के कारण, वह इस बात से हैरान थी कि उसके पिता ने अपनी यात्रा के दौरान उसे डॉ. के. से क्यों मिलवाया था। लेकिन डॉ. के. उसके पिता के लिए न्यूयॉर्क का प्रतिनिधित्व करते थे, और शायद यह उनका यह कहने का तरीका था: "तुम न्यूयॉर्क ज़रूर जाओगी।"

चूंकि डॉ. के. ने इटली में अपनी छवि प्रदर्शित नहीं की, इसलिए मैं केवल यही अनुमान लगा सकता हूँ कि डॉ. बी. ने जो देखा वह एक सिमुलेशन था—अर्थात्, उन्हीं शक्तियों द्वारा निर्मित एक भौतिक रूप था जिन्होंने उनके पिता की अस्थायी वापसी का प्रबंध किया था। एक्टोप्लाज्म को कई तरीकों से ढाला जा सकता है, और चूंकि डॉ. बी. ने वास्तव में जावानीस लोगों और टिवोली में देखे गए डॉ. के. से बात नहीं की थी, इसलिए वे भी केवल प्रक्षेपण या दर्शन हो सकते थे। उनके अद्भुत प्रकट होने की तकनीक चाहे जो भी रही हो, उद्देश्य स्पष्ट था: उन्हें भविष्य की एक झलक दिखाना।

अमेरिका में सुरक्षित लौटने के बाद उसके पिता ने उससे फिर कभी संपर्क नहीं किया।

डॉ. बी. का अलौकिक घटनाओं से सामना बहुत कम और छिटपुट ही हुआ है, लेकिन उनके जितने भी अनुभव हुए हैं, वे असाधारण रूप से सजीव रहे हैं। शादी के कुछ समय बाद, वे वेनिस से कुछ ही दूरी पर स्थित एक ग्रीष्मकालीन रिसॉर्ट में अकेले समय बिता रही थीं, जहाँ वे और उनके पति उस समय रह रहे थे। शहर में अपने पति से मिलने से दो दिन पहले, वे रात के खाने के लिए तैयार हो रही थीं। यह आखिरी रविवार था, और वे इस अवसर के लिए अपना

सबसे शानदार शाम का गाउन पहन रही थीं। जून की सुहावनी शाम थी। वे ड्रेसर के सामने बैठी थीं, और जैसे ही वे लिपस्टिक लगाने के लिए झुकीं, उन्होंने अचानक दर्पण में देखा कि उनके पीछे दो मोमबत्तियाँ जल रही हैं। उन्होंने पीछे मुड़कर देखा, लेकिन उनके पीछे कोई मोमबत्ती नहीं थी। उन्होंने फिर से दर्पण में देखा, और वहाँ फिर से दो मोमबत्तियाँ थीं! उन्होंने बार-बार अपना सिर आगे-पीछे घुमाया, और मोमबत्तियाँ अभी भी वहीं थीं—लेकिन केवल दर्पण में।

“यह ज़रूर किसी तरह का प्रतिबिंब होगा,” उसने मन ही मन कहा और असली मोमबत्तियों को ढूंढने के लिए उठी। उसने पहले खिड़कियों, फिर दरवाजों और दीवारों को देखा, लेकिन ऐसा कोई तरीका नहीं था जिससे दो जलती हुई मोमबत्तियाँ उसके दर्पण में दिखाई दें। बेचैन होकर वह फिर बैठ गई और देखने लगी। शायद यह सिर्फ़ उसकी कल्पना थी। लेकिन दोनों मोमबत्तियाँ फिर से दिखाई दे रही थीं! बस इस बार एक मोमबत्ती टिमटिमा रही थी और उसकी लौ थोड़ी हिल रही थी।

सात बज रहे थे। उसे भूख लगी थी और उसने सोचा: "मुझे नीचे जाना ही होगा। मुझे परवाह नहीं, मोमबत्तियाँ हों या न हों।"

जैसे ही उसने यह सोचा, उसे अपने पीछे एक आवाज सुनाई दी—एक महिला की आवाज, जो इतालवी भाषा में बोल रही थी।

"मुझसे वादा करो कि तुम उसे कभी नहीं छोड़ोगे!"

“बिल्कुल नहीं,” उसने बिना सोचे-समझे जवाब दिया कि अचानक उसके कमरे में एक अदृश्य आवाज़ कैसे सुनाई दे सकती है। वह मुड़ी। वहाँ कोई नहीं था!

वह सोचने लगी: आखिर वह किसे कभी नहीं छोड़ सकती थी? वह तो सिर्फ उसका पति अल्बर्टो ही हो सकता था।

उसने सोचा कि आज के लिए उसे काफी असामान्य अनुभव हो चुके हैं और वह कमरे से बाहर निकल गई। सीढ़ियों से नीचे आते ही, दूसरी मंजिल पर उसका पति उससे मिलने के लिए दौड़ता हुआ आया। वह परेशान लग रहा था।

“यह क्या है?” उसने पूछा।

“माँ का निधन हो गया। मैं अभी-अभी उनके अंतिम संस्कार से लौटा हूँ।” उसकी आँखों से आँसू बह रहे थे। वह उसे परेशान नहीं करना चाहता था और न ही अपने दुख को उनकी छुट्टियों में बाधा बनने देना चाहता था। उसकी माँ का अंतिम संस्कार एक दिन पहले ही हुआ था, और उसने सोचा कि फ़ोन करने के बजाय व्यक्तिगत रूप से आकर उसे बताना बेहतर होगा।

डॉ. बी. ने जो आवाज सुनी थी, वह उनकी सास की थी।

कई साल बाद उस अनुरोध का उसे अजीब सा अर्थ समझ में आया। 1941 से 1945 के बीच, जब वह न्यूयॉर्क में थी, उसका पति जर्मनों का कैदी था। उसका उससे कोई संपर्क नहीं था और उसे उसके भाग्य के बारे में कुछ भी पता नहीं था। रेड क्रॉस ने उसे बताया कि उसकी मृत्यु हो गई है, इसलिए कानूनी तौर पर वह पांच साल बाद पुनर्विवाह कर सकती थी। लेकिन मृत्यु के बाद एक माँ की आवाज़ उसके मन में गूंजती रही, और उसे उस आवाज़ का अर्थ समझ में आया; उसने कभी अपने पति को नहीं छोड़ा था, और अंततः वह उससे फिर से मिल गई।

प्रियजन या परिवार के परिचित सदस्य ही जीवित व्यक्ति से संवाद नहीं करते। कभी-कभी कोई बिल्कुल अजनबी भी ऐसा कर सकता है।

युद्ध से पहले, डॉ. बी. ने स्विट्जरलैंड के एरोसा में कुछ समय छुट्टियाँ बिताईं। उस समय वे एक साधारण से गेस्ट हाउस में ठहरी थीं, क्योंकि उनकी छुट्टियाँ समाप्त होने वाली थीं और उनके पास पैसे कम होने लगे थे। उनका कमरा ऊपरी मंजिलों में से एक पर था।

उसने अभी नाश्ते के लिए घंटी बजाई ही थी, जो नौकरानी थोड़ी देर में लाने वाली थी। लेकिन इससे पहले कि ऐसा होता, दरवाजा ज़ोर से खुला और एक औरत उसके कमरे में घुस आई। उसने एक तरह की नाइटी पहनी हुई थी और उसके काले बाल बिखरे हुए थे। हाँफते हुए उस औरत ने कहा: “तुम्हें उसे बताना ही होगा। यह बहुत ज़रूरी है! कृपया उसे बता दो!”

उसके हाथ बहुत बेचैनी से हिल रहे थे। डॉ. बी. को यह दखलअंदाज़ी पसंद नहीं आई। उन्होंने उस महिला को ठंडे लहजे में देखा और उसे कमरे से बाहर जाने को कहा, यह मानते हुए कि वह गलती से उनके कमरे में आ गई थी। महिला जर्मन बोल रही थी।

“राउस!” डॉ. बी. ने कहा, और लड़की ने एक बार फिर उनसे “उसे सच बताने” की विनती करने की कोशिश की। फिर वह पीछे की ओर खिसकते हुए कमरे से बाहर निकल गई।

अगले ही पल नौकरानी नाश्ते की ट्रे लेकर कमरे में आई। डॉ. बी. ने पूछा, "अभी-अभी अंदर आने वाली वो पागल औरत कौन थी?"

“कौन सी महिला? इस मंजिल पर और कोई नहीं है।”

लेकिन वह अभी इसी क्षण यहीं थी।

“असंभव। इस मंजिल पर आप अकेली हैं। यहाँ कोई बचा ही नहीं है। आखिर, यह सीज़न का आखिरी दिन है।” नौकरानी ने सिर हिलाया और अच्छे डॉक्टर के बारे में सोचते हुए चली गई।

काफी रात हो चुकी थी, इसलिए डॉ. बी. ने नीचे दफ्तर में उस अजनबी के बारे में पूछताछ करने की जहमत नहीं उठाई। उन्होंने अपनी स्की लीं और ढलान पर चली गईं। पहाड़ पर उनकी एक पसंदीदा जगह थी जहाँ से उन्हें आसपास के ग्रामीण इलाकों का अद्भुत नज़ारा दिखता था। आज सुबह वह वहाँ जल्दी पहुँचने की ठान चुकी थीं। जैसे ही वह उस जगह के पास पहुँचीं, अचानक उन्होंने कुछ पेड़ों के पीछे से एक आदमी को अपनी ओर आते देखा।

“क्या मैं आपके साथ बैठ सकता हूँ?” उसने कहा। वह एक नेक नौजवान लग रहा था और वह डरी नहीं थी, लेकिन उसने बड़ी शालीनता से उस नौजवान को बताया कि वह शादीशुदा है।

“नहीं, नहीं, ऐसा कुछ नहीं है,” उसने उसे आश्वस्त करते हुए कहा। “मैं बस आपसे थोड़ी देर बात करना चाहता हूँ।”

वह ज्यूरिख के एक चिकित्सक थे, जिन्होंने अपना पहला क्लिनिक अरोसा में खोला था। उस समय उन्होंने एक युवती का गंभीर तपेदिक का इलाज किया था। जब उन्होंने पहली बार मरीज को देखा, तो वह बेहद खूबसूरत थी। दोनों को लगभग पहली ही मुलाकात में प्यार हो गया, लेकिन उन्हें यह जानकर गहरा सदमा लगा कि उसके पास जीने के लिए बहुत कम समय बचा है। उस समय युवती की उम्र केवल अठारह वर्ष थी, और वह एक युवा चिकित्सक थे जिन्होंने अभी-अभी अपना करियर शुरू किया था। लेकिन उन्होंने इस बात को स्वीकार नहीं किया और ठान लिया कि वे किसी भी तरह उसका भाग्य बदल सकते हैं।

“मैं मरने वाली हूँ,” लड़की ने कहा। लेकिन युवा डॉक्टर ने उससे शादी का प्रस्ताव रखा और उसके माता-पिता के विरोध के बावजूद उससे शादी करने पर अड़ा रहा। चूंकि डॉक्टर का परिवार और लड़की के रिश्तेदार दोनों आर्थिक रूप से संपन्न थे, इसलिए उसने खुशी-खुशी उसकी संपत्ति के संबंध में समझौते पर हस्ताक्षर कर दिए और साथ ही हर हाल में उसका ख्याल रखने का वादा भी किया।

डॉ. बी. ने कहानी बड़े चाव से सुनी। उन्होंने उसे थोड़ा आगे चलने के लिए कहा और उसे एक छोटा सा कॉटेज दिखाया जहाँ उन्होंने और उनकी दुल्हन ने हनीमून मनाया था। सब कुछ एकदम नया था। उन्होंने वह कॉटेज उसके लिए खरीदा था, और कुछ समय के लिए ऐसा लगा मानो उसकी मृत्यु के बारे में की गई बुरी भविष्यवाणियाँ सच नहीं होंगी। महीने बीतते गए, और उसकी हालत बिगड़ने के बजाय धीरे-धीरे सुधरती गई।

डॉक्टर ने अपना सारा समय उसके साथ बिताया, अपने करियर को पूरी तरह से दरकिनार कर दिया और कभी उसका साथ नहीं छोड़ा। लेकिन जब उसकी हालत में काफी सुधार होता दिख रहा था, तो उन्होंने फैसला किया कि उन्हें अपने कुछ मरीजों को फिर से देखना चाहिए। उन्हें लगा कि यह सुरक्षित होगा और उन्हें नहीं लगता था कि अब उसकी मृत्यु हो जाएगी।

एक दिन गाँव में आपातकाल आ गया। एक दुर्घटना हुई और उसे बुलाया गया। उसके जाने के बाद उस महिला के साथ कुछ अजीब हुआ होगा। अचानक वह झोपड़ी छोड़कर डर के मारे गाँव की घुमावदार सड़क पर दौड़ने लगी। क्या उसे अचानक एहसास हुआ कि कुछ घंटों के लिए उसका रक्षक उसके पास नहीं है या उसकी हालत अचानक बिगड़ गई, यह कोई नहीं जानता था। वह उसके पीछे पहाड़ी से नीचे दौड़ती हुई आई। जब वह छोटे से गेस्ट हाउस पहुँची, तो उसकी शारीरिक शक्ति जवाब दे गई। बीमारी से ग्रस्त उसके फेफड़े दौड़ने का इतना ज़ोर सहन नहीं कर पाए। गेस्ट हाउस में गिरकर उसे ऊपर के कमरों में से एक में ले जाया गया, जहाँ उसकी मृत्यु हो गई और वह अपने पति को फिर कभी नहीं देख पाई।

“उन कमरों में से एक?” डॉ. बी. ने पूछा। “तीसरी मंजिल पर?”

युवक ने सिर हिलाया।

फिर उसने उसे उस सुबह की अपनी घटना के बारे में बताया।

“हाँ, वही है,” युवक ने उदास स्वर में स्वीकार किया। “क्या वह खूबसूरत नहीं थी?”

हर साल युवा चिकित्सक उसकी मृत्यु की बरसी पर अरोसा आता था, हमेशा इस उम्मीद में कि उसे पता चल सके कि वह उनके शैले से क्यों भाग गई थी।

आज वही दिन था।

कुछ देर सोचने के बाद, डॉ. बी. ने उस युवक को बताया कि वह भी एक चिकित्सक हैं। यह जानकर उसे प्रसन्नता हुई और उसने उनसे पूछा कि क्या उन्होंने प्रेत के चेहरे पर कुछ ऐसा देखा था जिससे उनके भय का संकेत मिल सके? क्या उन्होंने मृत्यु को निकट आते देखा था और क्या वह अपने पति के बिना मरना नहीं चाहती थीं? या फिर कोई और बात थी, कुछ ऐसा जिसे वे शायद कभी न जान पाएं, जिसने उन्हें अपनी इस जानलेवा यात्रा को अंजाम देने के लिए प्रेरित किया?

डॉ. बी. ने अनुमान लगाया कि शायद लड़की को पता चल गया था कि वह गर्भवती है और वह चाहती थी कि उसके पति को तुरंत पता चल जाए। लेकिन शैले में एक टेलीफोन था, और डॉक्टर ने अपनी पत्नी को बता दिया था कि वह कहाँ जा रहा है। वह दुर्घटनास्थल पर उससे संपर्क कर सकती थी, या उसके लौटने का इंतजार कर सकती थी।

दो दिन बाद, डॉ. बी. अरोसा छोड़कर चले गए और फिर कभी उस छोटे से गेस्ट हाउस में नहीं लौटे। लेकिन वह युवक शायद उस दिन की बरसी पर वापस आता रहता है जब उसकी प्रेमिका उससे बिछड़ गई थी। और गेस्ट हाउस की तीसरी मंजिल पर साल में एक बार एक दुखद घटना घटित होती है, एक ऐसी त्रासदी जिसमें काले लहराते बालों वाली एक खूबसूरत लड़की शामिल होती है, जब तक कि वे दोनों प्रेमी परलोक में हमेशा के लिए नहीं मिल जाते।

*159

विवियन ली की मृत्यु के बाद की तस्वीर

हालांकि ब्रिटिश लेखिका, ट्रान्स मीडियम और मानसिक शक्तियों से युक्त सिबिल लीक ने मेरी उपस्थिति में असाधारण कार्य किए थे, विशेष रूप से उत्कृष्ट ट्रान्स क्रिया और दूरदर्शिता, लेकिन उन्होंने कभी भी खुद को फोटोग्राफिक मीडियम नहीं माना। एक-दो मौकों पर उनकी

या उनकी उपस्थिति में ली गई तस्वीरों में अजीब वस्तुएं दिखाई दीं, लेकिन उन्होंने इस मामले को आगे नहीं बढ़ाया।

जुलाई 1967 में एक शुक्रवार की सुबह, सिबिल ने मुझे बहुत घबराहट में फोन किया। उसने अभी-अभी एक बहुत ही सजीव सपना देखा था, या कम से कम सपने जैसी ही स्थिति में पहुँच गई थी। विवियन नाम की किसी महिला ने उससे संपर्क किया था और बताया था कि वह अब छुट्टी पर जा रही है। क्या मैं किसी विवियन को जानता था? मैंने पूछा, क्यों? क्योंकि उस व्यक्ति ने सिबिल लीक से मुझे फोन करने और बताने के लिए कहा था। क्या और कुछ था? नहीं, बस इतना ही। मैंने इस बारे में सोचा। मैं जिस एकमात्र विवियन को व्यक्तिगत रूप से जानता था, वह एक युवती थी जिसके अभी इस दुनिया से चले जाने की संभावना नहीं थी। लेकिन, ज़ाहिर है, कोई नहीं जानता। मैं अभी भी इस बारे में सोच ही रहा था कि शनिवार के अखबार की सुर्खियों में विवियन ली की मृत्यु की खबर छपी। ऐसा प्रतीत हुआ कि वह अपने लंदन अपार्टमेंट में मृत पाई गई थी, लेकिन शनिवार से पहले, संभवतः शुक्रवार को ही उसकी मृत्यु हो गई होगी। अचानक मुझे यह बात समझ में आई और मैंने सिबिल को फोन किया। क्या वह विवियन ली को जानती थी? हाँ, वह जानती थी, हालाँकि उसने उसे कुछ समय से नहीं देखा था। कई साल पहले विवियन ली निजी मामलों में सिबिल लीक से सलाह लिया करती थीं, क्योंकि सिबिल अपने दोस्तों के लिए चीजों को सुलझाने में काफी माहिर थीं।

सिबिल लीक की हाल ही में दिवंगत विवियन ली के साथ ली गई मानसिक तस्वीर

निश्चित रूप से कोई संबंध था। दुनिया में किसी को नहीं पता था कि विवियन ली की मृत्यु शुक्रवार को हो गई थी। इसकी जानकारी शनिवार को मिली। फिर भी सिबिल ने गुरुवार रात को अपना संदेश भेजा था। तारीख? 30 जून, 1967। मुझे लगा कि यह अभिनेत्री का अलविदा कहने का और साथ ही दुनिया को यह बताने का तरीका था कि जीवन चलता रहता है। यह शनिवार की बात है। सोमवार को सिबिल से मिलने स्टीवर्ट स्टूडियो में एक व्यक्ति आया, जहाँ वह न्यूयॉर्क में रहने पर अक्सर ठहरती थीं। उनके आगंतुक, एडमंड हैनराहन, स्टूडियो की अनोखी सजावट से इतने प्रभावित हुए कि उन्होंने अपने कैमरे से कुछ रंगीन तस्वीरें लेने का फैसला किया, जो उस समय उनके पास ही था। तारीख 3 जुलाई, 1967 थी। कई तस्वीरें सिबिल ली की थीं। उनमें से किसी में भी कुछ खास नहीं था, सिवाय एक के। सिबिल के चेहरे को आंशिक रूप से ढकते हुए एक गहरे बालों वाली महिला का चेहरा है, जिसकी पहचान स्पष्ट रूप से विवियन ली से होती है!

सिबिल और फोटोग्राफर दोनों को अच्छी तरह याद है कि उस समय उनके साथ कोई और नहीं था, और न ही फिल्म या कैमरे में कोई खराबी थी। तस्वीर में दिख रहा वह शख्स धुंधला और आउट ऑफ फोकस लग रहा है, मानो वह कैमरा और सिबिल के बीच आ गया हो, लेकिन इतना करीब कि पूरी तरह फोकस में न आ पाया हो।

मैंने श्री हैनराहन से इस घटना के बारे में पूछताछ की। उन्होंने स्वीकार किया कि यह पहली बार नहीं था जब उनकी तस्वीर में दिख रहे व्यक्ति के अलावा कोई और व्यक्ति या चीज़ नेगेटिव पर दिखाई दी हो। एक बार तो बेहद भयावह घटना हुई थी, जब वे एक मृत व्यक्ति की विधवा की तस्वीर खींच रहे थे। नेगेटिव पर मृत व्यक्ति अपनी विधवा के बगल में दिखाई दिया! हैनराहन ने विवियन ली की तस्वीर खींचते समय हनीवेल पेंटैक्स 35 मिमी कैमरे और एक्टाक्रोम फिल्म का इस्तेमाल किया था। उन्होंने फ्लैशगन का इस्तेमाल नहीं किया, बल्कि कमरे की सारी रोशनी का उपयोग किया। उन्हें यह जानकर राहत मिली कि उनकी फोटोग्राफी की क्षमता या उनके कैमरे में कोई कमी नहीं थी, और अनदेखे मॉडलों के लिए उन्हें ज़िम्मेदार नहीं ठहराया जा सकता था।

*160

मृत शिक्षक ने कैसे अलविदा कहा

कैलिफोर्निया के लॉस एंजिल्स में रहने वाली व्यस्त पेशेवर पोर्ट्रेट फोटोग्राफर एवलिन इंग्लैंड को अपनी मानसिक क्षमताओं के बारे में हमेशा से पता था, लेकिन उन्होंने इस पर कभी ध्यान नहीं दिया। उनके लिए यह जीवन का एक सामान्य हिस्सा था, और अलौकिक बातें उनके दिमाग में दूर-दूर तक नहीं थीं।

बचपन से ही इंग्लैंड को ईएसपी (अंतरात्मा की आवाज़ से प्रेरित शक्ति) के अनुभव होते थे, खासकर अजीब परिस्थितियों में खोई हुई वस्तुओं को ढूंढने की क्षमता, मानो किसी आंतरिक आवाज़ से प्रेरित होकर। लेकिन इन प्रवृत्तियों के बावजूद, उन्हें इस विषय में कोई विशेष रुचि नहीं थी और वे इसे स्वाभाविक मानती थीं कि दूसरों में भी ईएसपी की क्षमता होती है।

इंग्लैंड के कामों में से एक हाई स्कूल की वार्षिक पुस्तिका के लिए तस्वीरें खींचना था। इसलिए जब उन्हें गणित के शिक्षक श्री जी की तस्वीर लेने के लिए बुलाया गया, तो यह उनके लिए एक सामान्य कार्य ही था। तारीख थी शनिवार, 3 अप्रैल, 1965। वे शिक्षक मंडल के अंतिम सदस्य थे जो अपनी तस्वीर खिंचवाने आए थे। रविवार को उनका स्टूडियो बंद था। सोमवार को इंग्लैंड ने प्रिंट को विकसित और संपादित किया, और मंगलवार सुबह उन्होंने इसे स्कूल को भेज दिया। कुछ घंटों बाद उन्हें स्कूल के प्रधानाचार्य का फोन आया। क्या श्री जी अपनी तस्वीर खिंचवाने आए थे? हां, मिस इंग्लैंड ने उत्तर दिया, और प्रधानाचार्य को बताया कि प्रिंट पहले ही डाक से भेज दिया गया है। इस पर थोड़ी देर की चुप्पी छाई रही। फिर प्रधानाचार्य ने बताया कि श्री जी का रविवार को अचानक निधन हो गया था।

मई में श्री एच. उनके स्टूडियो में आए और उन्होंने कहा कि उन्हें लगता है कि उनमें असाधारण आध्यात्मिक शक्ति (ईएसपी) है, क्योंकि वे स्वयं भी ऐसे मामलों में रुचि रखते हैं। मिस इंग्लैंड ने उनका चित्र बनाया। फिर वे प्रूफ में से अपना पसंदीदा चित्र चुनने आए। जब उन्होंने प्रिंट को डेवलपर में डाला, तो उन्हें आश्चर्य हुआ कि उस पर श्री एच. का चेहरा नहीं, बल्कि श्री जी. का चेहरा उभरा, जो एक दिवंगत गणित शिक्षक थे। कुछ क्षण बाद, जब वे अभी भी अविश्वास से देख रही थीं, तो उनके ग्राहक श्री एच. का चित्र भी उसी प्रिंट पर उभर आया, जो पहले चित्र से अधिक स्पष्ट था और विपरीत दिशा में था।

मिस इंग्लैंड एक बेहद सजग फोटोग्राफर थीं। वह कभी भी अधूरी प्रिंट नहीं छोड़ती थीं। वह हमेशा हर प्रिंट को पूरी तरह से विकसित करती थीं, कभी भी अधूरी प्रिंट नहीं छोड़ती थीं। स्टूडियो का इस्तेमाल उनके अलावा कोई नहीं करता था। जो कुछ हुआ था, उसका कोई "तार्किक" स्पष्टीकरण नहीं था। दिवंगत गणित शिक्षक का मुस्कुराता हुआ चेहरा उन्हें यह याद दिलाने के लिए था कि उनके लिए जीवन समाप्त नहीं हुआ था—या शायद उन्हें "जीवित" देखने वाली आखिरी व्यक्ति होने के लिए कृतज्ञता का प्रतीक। जल्दी से, मिस इंग्लैंड ने मिस्टर एच. की एक और तस्वीर छापी, और वह एक सामान्य तस्वीर थी।

बाद में अन्य "मृत" व्यक्तियों ने स्वयं को प्रकट करने के लिए उसकी क्षमताओं का उपयोग किया, लेकिन यह घटना उसके मानसिक जीवन में सबसे उल्लेखनीय थी।

द्विस्थानिक उपस्थिति या किसी जीवित व्यक्ति का ईथरीय प्रतिरूप

द्विलोकन एक ऐसी घटना है जो सूक्ष्म यात्रा से काफी मिलती-जुलती है, लेकिन यह अपने आप में एक अलग अभिव्यक्ति है जिसमें कुछ विशिष्ट विशेषताएं हैं जो इसे सूक्ष्म यात्रा या शरीर से बाहर के अनुभवों से अलग करती हैं। द्विलोकन में एक जीवित व्यक्ति को किसी दूसरे स्थान पर प्रक्षेपित किया जाता है और वहां एक या अधिक प्रत्यक्षदर्शियों द्वारा देखा जाता है, जबकि साथ ही साथ वह मूल स्थान पर अपने भौतिक शरीर में पूरी तरह से और सामान्य रूप से कार्य करता रहता है। इस मामले में यह सूक्ष्म प्रक्षेपण से बहुत अलग है क्योंकि सूक्ष्म यात्री को एक ही समय में दो स्थानों पर नहीं देखा जा सकता है, खासकर जब सूक्ष्म यात्री का भौतिक शरीर आमतौर पर बिस्तर पर होता है, या, यदि यह दिन के समय का प्रक्षेपण है, तो वह व्यक्ति जो भी कर रहा होता है वह लगभग स्वचालित रूप से और बिना चेतना के करता रहता है। द्विलोकन में व्यक्ति पूरी तरह से सचेत होता है और उसे इस बात का एहसास भी नहीं होता कि उसे दूर से भी देखा जा रहा है।

द्विलोकन (Bilocation) ज्यादातर मानसिक रूप से सक्रिय लोगों में होता है, जिनके दिमाग में तरह-तरह के विचार भरे होते हैं, शायद इतने ज्यादा कि वे विचलित हो जाते हैं। वे एक काम करते हुए दूसरे के बारे में सोच सकते हैं। इसका मतलब यह नहीं है कि कल्पनाशीलता की कमी वाले लोग एक ही समय में दो स्थानों पर नहीं देखे जा सकते, लेकिन मेरे ज्ञान में

अधिकांश मामले पहली श्रेणी में ही आते हैं। इसका एक अच्छा उदाहरण कैलिफोर्निया की मेरी करीबी दोस्त मीना लाउटेरर हैं। मैंने उनके बारे में पहले 'ईएसपी एंड यू' में लिखा है। सुश्री लाउटेरर में असाधारण ईएसपी प्रतिभाएं हैं। इसके अलावा, वे एक संतुलित और बहुत ही पैनी नज़र रखने वाली महिला हैं, क्योंकि वे एक पेशेवर लेखिका हैं। उन्हें कई बार ऐसा अनुभव हुआ है जब वे वास्तव में वहां मौजूद न होते हुए भी किसी दूर स्थान पर देखी गई हैं।

एक बार ऐसा ही हुआ, जब वह न्यूयॉर्क के ग्रीनविच विलेज में सड़क पर चल रही थीं, तभी उनकी नज़र एक ऐसे सज्जन पर पड़ी जिन्हें वह शिकागो से जानती थीं। उन्हें अपने सामान्य परिवेश से बाहर देखकर आश्चर्यचकित होकर, वह उनका अभिवादन करने के लिए सड़क पार कर गईं। उन्होंने उनकी ओर हाथ बढ़ाने की कोशिश की, लेकिन वह उनकी आँखों के सामने ही गायब हो गए। इस घटना ने उन्हें इतना विचलित कर दिया कि उन्होंने शिकागो में उस व्यक्ति को पत्र लिखा और पता चला कि जिस समय उन्होंने उन्हें न्यूयॉर्क में देखा था, उस समय वह शिकागो में ही थे। हालांकि, उस समय वह उनके बारे में ही सोच रहे थे। मीना लाउटेरर ने उनके विचारों को देखा या उनका ही कोई अंश प्रकट हुआ, यह एक विवादास्पद प्रश्न है। इससे भी अधिक रोचक तथ्य यह है कि शिकागो में उनके बारे में सोचते समय, उन्होंने भी मिस लाउटेरर को उसी समय देखा था। यह निश्चित रूप से दोहरी उपस्थिति का मामला है, जो बहुत कम ही देखने को मिलता है।

एक अन्य उदाहरण में, मिस लॉटरर ने मुझे एक ऐसे मामले के बारे में बताया जिसमें द्विपद उपस्थिति के अलावा पूर्वज्ञान के भी संकेत थे। उन्होंने कहा, “कुछ समय पहले न्यूयॉर्क में एक रात, जब मैं बिस्तर पर थी, नींद और पूरी तरह जागने के बीच की अवस्था में, मैंने एक चेहरा इतनी स्पष्टता से देखा जैसे कोई स्क्रीन पर तस्वीर देखता है। मैंने इसे मन की आंखों से देखा, क्योंकि मेरी आंखें बंद थीं। यह पहला अनुभव है जो मुझे याद है, जिसमें मैंने अपने मन में एक ऐसा चेहरा देखा जिसे मैंने पहले कभी नहीं देखा था।”

लगभग छह सप्ताह बाद, मुझे दक्षिण अमेरिका के कोलंबिया जाने का निमंत्रण मिला। मैं उराबा की खाड़ी पर बसे एक छोटे से आदिम कस्बे टर्बो में एक केले के बागान में रुका। वहाँ रहने वाले अधिकांश लोग भागे हुए गुलामों और भारतीय जनजातियों के वंशज हैं। मुख्य भूमि से आस-पास के छोटे द्वीपों के समूह तक परिवहन नाव या डोंगी द्वारा होता है। बागान मुख्य

भूमि पर हवाई अड्डे के पास स्थित था, सीमा शुल्क कार्यालय भी वहीं था। टर्बो गाँव एक प्रायद्वीप पर स्थित है।

“एक रविवार दोपहर मैं अपने अमेरिकी मेज़बान और अपने कोलंबियाई दोस्त के साथ शहर गया। जब हम गंदे गटरों से घिरी गलियों से गुज़र रहे थे और टिन की छतों वाली झोपड़ियों और वहाँ के लोगों को देख रहे थे, तो मैंने सोचा, यही तो दुनिया का छोर है।”

रविवार का दिन बाज़ार का दिन लग रहा था; सड़कें लोगों से भरी हुई थीं, जिनमें ज़्यादातर दो रंगों के लोग थे - काले और लाल चमड़ी वाले। जब हम एक दवा की दुकान के पास से एक-एक करके चल रहे थे, तभी एक लंबा, सुंदर, अच्छे कपड़े पहने युवक ने मेरा ध्यान खींचा। वह मुझे और मेरे साथियों को वहाँ बेमेल लग रहा था। मेरे ठीक सामने से गुज़रने पर भी उसने मेरी तरफ नहीं देखा। यह मुझे अजीब लगा। दक्षिण अमेरिकी पुरुष हमेशा महिलाओं को बड़ी बेबाकी से देखते हैं। साथ ही, वह जाना-पहचाना लग रहा था, और मुझे एहसास हुआ कि यही वह चेहरा था जिसे मैंने हफ़्तों पहले न्यूयॉर्क में अपने मन में देखा था!

अगले दिन हमें हमारे पड़ोसी, सीमा शुल्क के कप्तान ने कॉकटेल पार्टी में आमंत्रित किया। उन्होंने बताया कि एक युवा पायलट हर महीने लगभग उसी समय आता है, टर्बो में रात भर रुकता है और फिर अपने नियमित मार्ग से अन्य गांवों की ओर रवाना हो जाता है। वह हमेशा गांव के गंदे होटल में ठहरने के बजाय अपने सैनिकों के साथ ही ठहरता है। उन्होंने बताया कि वह युवक कोलंबिया के एक राज्य के गवर्नर का बेटा है और अभी-अभी कार्टाजेना से आया है, जो उसकी छोटी एयरलाइन का मुख्य कार्यालय है।

“वह उस युवक को बाहर लाया और हमसे उसका परिचय कराया। यह वही युवक था जिसे मैंने गाँव में देखा था! मैंने उससे पूछा कि क्या वह सचमुच सोमवार सुबह आया था और बाद में उसने बिना किसी संदेह के साबित कर दिया कि वह रविवार दोपहर को टर्बो में नहीं था जब मैंने उसे देखा था। सोमवार को भी उसने वही कपड़े पहने हुए थे जो मैंने उसे रविवार को अपने सपने में पहने हुए देखा था।”

मुझे नहीं पता कि मैंने उसे तब क्यों देखा जब वह वहां नहीं था। बाद में उसने मुझसे शादी करने के लिए कहा, लेकिन मैंने मना कर दिया।

"जब मैं और मेरे साथी बाद में कार्तगेना गए, तो हमने जाँच की और तथ्यों की दोबारा पुष्टि की - जब मैंने उसे देखा था, तब वह मीलों दूर था!"

* * *

मैं जॉर्जिया के सवाना निवासी हर्बर्ट शेफर का आभारी हूं, जिन्होंने कुछ समय पहले अपने दो बुजुर्ग मित्रों के साथ घटी एक ही स्थान पर दो व्यक्तियों के मौजूद होने की घटना का विवरण दिया।

एक रात कार्ल फाउ की नींद इस अहसास से खुली कि वह अकेले नहीं हैं। बिस्तर पर करवट बदलते ही उन्होंने देखा कि उनके अच्छे दोस्त मॉर्टन ड्यूश उनके बिस्तर के पास खड़े हैं। दरवाजा मजबूती से बंद था, इसलिए उन्होंने पूछा, "तुम यहाँ कैसे आए?" ड्यूश ने कोई जवाब नहीं दिया, बस मुस्कुराए और फिर मुड़कर दरवाजे की ओर चले गए, जहाँ वे गायब हो गए। जाँच करने पर पता चला कि श्री ड्यूश अपने दोस्त के बिस्तर के पास प्रकट होने के समय एक बड़ी आरामदायक कुर्सी पर बैठे थे और बस यह सोच रहे थे कि उनके दोस्त कार्ल कैसे हैं। अचानक उन्हें लगा कि वे कुर्सी से उठकर कार्ल के बिस्तर पर पहुँच गए हैं। उनके घरों के बीच लगभग दो मील की दूरी थी।

* * *

द्विलोकन को कृत्रिम रूप से उत्पन्न नहीं किया जा सकता, जिस तरह एस्ट्रल प्रोजेक्शन को किया जा सकता है। लेकिन यदि आप एक ही समय में दो स्थानों पर दिखाई देने के लिए उत्सुक हैं, तो कुछ उपायों से आप इस स्थिति को बढ़ावा दे सकते हैं। उदाहरण के लिए, किसी शांत स्थान पर, चाहे घर के अंदर हो या बाहर, आराम से बैठकर अपने विचारों को भटकने देना इस स्थिति को उत्पन्न कर सकता है। जितना अधिक आप ध्यान केंद्रित करेंगे, इसके होने की संभावना उतनी ही कम होगी। द्विलोकन के अनुभवों के लिए अनुकूल अलगाव की वह विशेष अवस्था उत्पन्न करना बहुत कठिन है। मैं केवल यही सुझाव दे सकता हूँ कि यदि आप अनुकूल परिस्थितियाँ बार-बार बनाते हैं, तो ऐसी स्थिति उत्पन्न हो सकती है। यह याद रखना चाहिए कि द्विलोकन की अधिकांश घटनाओं का पता प्रक्षेपित व्यक्ति को तब तक नहीं चलता जब तक कि यह घटित न हो जाए और दूसरे छोर पर इसकी पुष्टि न हो जाए।

एस्ट्रल प्रोजेक्शन या शरीर से बाहर के अनुभव

अलौकिक घटनाओं की चर्चा में अक्सर इस्तेमाल होने वाला एक शब्द है "आकाशीय"। हालांकि यह शब्द तारों और खगोलीय स्थितियों की याद दिलाता है, लेकिन वास्तव में इसका अर्थ ईथर जैसा ही है, कम से कम मेरे लिए तो यही है। आकाशीय या ईथरीय आयाम से मेरा तात्पर्य भौतिक जगत से परे उस दुनिया से है जिसमें सभी आध्यात्मिक घटनाएँ और आंतरिक संवेदनाएँ (ईएसपी) प्रकट होती हैं। यह आयाम अत्यंत सूक्ष्म कणों से बना है और निश्चित रूप से अमूर्त नहीं है। आंतरिक शरीर, जो मेरी राय में मनुष्य के सच्चे व्यक्तित्व का प्रतिनिधित्व करता है, उसी प्रकार के पदार्थ से बना है; परिणामस्वरूप, भौतिक मृत्यु पर भौतिक शरीर के विघटन के बाद यह आकाशीय या ईथरीय आयाम में स्वतंत्र रूप से विद्यमान हो सकता है। थियोसोफी और कुछ हद तक प्राचीन मिस्र के धर्म के अनुसार, मनुष्य के पाँच शरीर होते हैं जिनमें से आकाशीय शरीर एक है, आकाशीय जगत सात लोकों में से दूसरा सबसे निचला लोक है, जो भावनाओं, इच्छाओं और जुनून से भरा होता है। यह निश्चित रूप से एक दार्शनिक अवधारणा है। यह उतनी ही मान्य या अमान्य है जितना कोई इसे मानना चाहे। सूक्ष्म जगत को केवल "जीवन का दूसरा पहलू" मानकर, मैं शायद चीजों को सरल बना रहा हूँ और कुछ दार्शनिक मान्यताओं के विपरीत जा रहा हूँ, लेकिन मुझे लगता है कि परा मनोविज्ञान के इस चरण में एक गैर-भौतिक क्षेत्र को सिद्ध करना ही पर्याप्त है। यदि अन्य, सूक्ष्म परतें हों—और मुझे इसमें कोई संदेह नहीं है कि वे हैं—तो यह कार्य उस समय किया जाना चाहिए जब गैर-भौतिक जगत के अस्तित्व पर अधिकांश वैज्ञानिकों द्वारा संदेह न किया जाए।

* * *

जब हम "आकाशीय प्रक्षेपण" की बात करते हैं, तो वास्तव में हमारा तात्पर्य आकाशीय जगत में प्रक्षेपण से होता है; जो प्रक्षेपण होता है वह शरीर की भीतरी परत प्रतीत होती है, जिसे आकाशीय या ईथर शरीर कहा जाता है। भौतिक शरीर से बाहर की दुनिया में इसका प्रक्षेपण होने से इसे वह स्वतंत्रता प्राप्त होती है जो भौतिक शरीर में रहते हुए इसे नहीं मिलती। जब तक व्यक्ति भौतिक जगत में जीवित रहता है, आकाशीय शरीर "चांदी की डोर" नामक एक

पतले बंधन द्वारा भौतिक शरीर से जुड़ा रहता है। यदि यह डोर टूट जाए, तो मृत्यु हो जाती है। भौतिक मृत्यु के समय, यह डोर वास्तव में टूट जाती है और आकाशीय शरीर स्वतंत्र रूप से ऊपर की ओर अगले आयाम में चला जाता है। आजकल हम ऐसे प्रक्षेपणों को "शरीर से बाहर का अनुभव" कहते हैं। रॉबर्ट मोनरो, जो पेशे से संचार इंजीनियर और संयोगवश एक माध्यम हैं, ने अपने शरीर से बाहर निकलने के अनुभवों पर एक ज्ञानवर्धक पुस्तक लिखी है। उनसे कुछ वर्ष पहले, डॉ. हेरेवर्ड कैरिंगटन ने सिल्वन मुल्डून के साथ मिलकर एस्ट्रल प्रोजेक्शन विषय पर एक पुस्तक लिखी थी, जिसे आजकल एक क्लासिक माना जाता है। शरीर से बाहर निकलने का अनुभव इस घटना का अधिक सटीक वर्णन इसलिए है क्योंकि प्रोजेक्शन, यानी भौतिक शरीर से जानबूझकर बाहर की ओर जाना, इस घटना के घटित होने का तरीका शायद ही कभी होता है। बल्कि यह भौतिक और सूक्ष्म शरीर के बीच अलगाव की अनुभूति है, एक तैरने जैसा एहसास जिसमें आंतरिक स्व अपने भौतिक स्वरूप को छोड़कर उससे दूर जाता हुआ प्रतीत होता है। बाहर की ओर यह गति न तो तीव्र होती है और न ही प्रोजेक्शन जैसी; यह अधिकतर समय और अधिकांश प्रत्यक्षदर्शियों के साथ एक धीमी, क्रमिक अलगाव प्रक्रिया होती है। कभी-कभी ऐसे नाटकीय उदाहरण भी देखने को मिलते हैं जब एस्ट्रल प्रोजेक्शन अनायास और अचानक घटित होता है। लेकिन ऐसे मामलों में आमतौर पर किसी न किसी प्रकार का सदमा या कृत्रिम आघात मौजूद होता है, जैसे कि सर्जरी के दौरान और बेहोशी की दवा के उपयोग के दौरान या अचानक शोक, अचानक खुशी या अत्यधिक थकान की स्थिति में।

शरीर से विमुख होने के अनुभवों को मोटे तौर पर दो मुख्य श्रेणियों में वर्गीकृत किया जा सकता है: स्वतःस्फूर्त मामले, जहाँ यह बिना किसी प्रकार की प्रेरणा के घटित होता है और आमतौर पर एक आश्चर्य के रूप में होता है, और प्रयोगात्मक मामले, जहाँ विमुखता की अवस्था को विभिन्न साधनों द्वारा जानबूझकर प्रेरित किया जाता है। बाद वाली श्रेणी में कुछ नियंत्रित प्रयोग निश्चित रूप से संभव हैं, और मैं इस अध्याय के अंत में इस पर विस्तार से चर्चा करूँगा।

* * *

चाहे एस्ट्रल प्रोजेक्शन अनैच्छिक हो या स्वैच्छिक, इसका मूल प्रश्न यह है कि क्या यात्री दूसरे छोर पर कोई प्रभाव डालता है। यदि प्रोजेक्शन प्राप्त करने वाले व्यक्ति द्वारा यात्रा को, अधिमानतः विस्तार से, देखा जाता है, और यदि यह जानकारी घटना के बाद प्राप्त होती है, तो यह इस विशेष ईएसपी घटना की वास्तविकता का एक महत्वपूर्ण प्रमाण बन जाता है।

एक जापानी-अमेरिकी महिला, श्रीमती वाई, की कहानी है, जो न्यूयॉर्क में रहती थीं और उनकी बहन कैलिफोर्निया में रहती थीं। एक दिन, उन्होंने खुद को न्यूयॉर्क स्थित अपने घर से अंतरिक्ष में प्रक्षेपित होते हुए पश्चिमी तट पर स्थित अपनी बहन के घर पर पाया। वे कई वर्षों से वहां नहीं गई थीं और उन्हें घर के बारे में कोई जानकारी नहीं थी, क्योंकि उनकी बहन ने उन्हें बताया था कि घर में काफी बदलाव हुए हैं। जैसे ही वे अपनी बहन के घर पर उतरीं, श्रीमती वाई ने घर में हुए बदलावों को देखा और अपनी बहन को हरे रंग की पोशाक पहने सामने के लॉन में खड़े देखा। उन्होंने अपनी बहन का ध्यान आकर्षित करने की कोशिश की, लेकिन असफल रहीं। अपनी असामान्य स्थिति, यानी जमीन से ऊपर हवा में तैरने और किसी के द्वारा न देखे जा सकने के कारण, श्रीमती वाई चिंतित हो गईं। उसी क्षण उन्होंने खुद को वापस अपने न्यूयॉर्क स्थित घर और बिस्तर पर खिंचा हुआ पाया। जैसे ही वे अपने शरीर में लौटीं, उन्हें ऐसा लगा जैसे वे बहुत ऊंचाई से गिर रही हों। यह अनुभूति लगभग सभी, या कहें तो लगभग सभी, सूक्ष्म यात्रा की घटनाओं के साथ होती है। ऊँचाई से नीचे गिरने का अहसास वास्तव में ईथर शरीर की गति धीमी होने की विपरीत प्रतिक्रिया है, जब वह भौतिक शरीर तक पहुँचता है और उसमें वापस जाने की तैयारी करता है। कई लोग ऐसे सपनों की शिकायत करते हैं जिनमें वे ऊँचाई से गिरते हैं और जागने पर उन्हें चक्कर आने जैसा महसूस होता है और घबराहट होती है। ऐसे अधिकतर अनुभव सूक्ष्म यात्रा के कारण होते हैं, जिनमें से अधिकांश बातें याद नहीं रहतीं। लेकिन श्रीमती वाई. के मामले में, उन्हें सब कुछ याद था। अगले दिन उन्होंने अपनी बहन को एक पत्र लिखा, जिसमें उन्होंने अपने देखे हुए दृश्यों का वर्णन किया और उनसे घर और अपने बारे में दी गई जानकारी की पुष्टि या खंडन करने को कहा। श्रीमती वाई. को आश्चर्य हुआ जब कुछ दिनों बाद उनकी बहन का पत्र आया जिसमें उनकी सूक्ष्म यात्रा के दौरान देखी गई हर बात की पुष्टि की गई थी।

* * *

रूथ ई. नुथ्स, जो एक पूर्व स्कूल शिक्षिका हैं और वर्तमान में कैलिफोर्निया में एक कानूनी सचिव के रूप में काम करती हैं, को कई ईएसपी (अंतरराष्ट्रीय स्वगत क्षमता) के अनुभव हुए हैं, और कई अन्य लोगों की तरह, उन्होंने मेरे द्वारा पहले लिखी गई एक पुस्तक में दिए गए सुझाव के अनुरूप एक रिपोर्ट दर्ज कराई है, जिसमें उन सभी ईएसपी अनुभवों के बारे में बताया गया है जिन्हें लोग मेरे साथ दर्ज कराना चाहते हैं।

सन् 1941 की वसंत ऋतु में, जब मैं सैन डिएगो में रहती थी, जहाँ मैं डेल रियो, टेक्सास से आई थी, मैं एक रेलगाड़ी से काम पर जा रही थी। मेरे मन में कुछ खास नहीं था; मैं टेक्सास में अपने दोस्तों के बारे में नहीं सोच रही थी और सुबह के 8 बज रहे थे। अचानक मैंने खुद को डेल रियो में जो कॉमस्टॉक के घर के बरामदे पर खड़ा पाया। जो और मैं कई सालों से दोस्त थे। सड़क के उस पार खाली ज़मीन पर वही धूल भरी हरी मेस्काइट और कैट क्लॉ के पेड़ थे, जिसे हम कैलिचे फ्लैट कहते थे। लोग अपनी गाड़ियाँ लेकर आ रहे थे और बिना बाड़ वाले आँगन के किनारे पर खड़ी कर रहे थे। वे जो की माँ की मृत्यु पर शोक व्यक्त करने आए थे। जो घर के अंदर थी। मुझे यह पता था, हालाँकि मैंने उसे देखा नहीं था। मैं उसके दोस्तों का अभिवादन कर रही थी। अंतिम संस्कार उसी दोपहर होना था। फिर जितनी अचानक मैं डेल रियो गई थी, उतनी ही अचानक मैं वापस रेलगाड़ी में थी, अभी भी अपने स्टॉप से दो या तीन ब्लॉक दूर।

दो हफ्ते बाद जो ने मुझे लिखा कि एक निश्चित तारीख को, जो वही तारीख थी जिस दिन मुझे यह दृश्य दिखाई दिया था, पड़ोसियों ने उसकी माँ को स्ट्रोक से बेहोश पाया था। उनका अनुमान था कि स्ट्रोक सुबह लगभग 10 बजे हुआ था। जो को 10:30 बजे सूचना मिली। उसने कहा कि वह चाहती है कि मैं उसके साथ वहाँ मौजूद रहूँ। समय के दो घंटे के अंतर को ध्यान में रखते हुए, मुझे यह अनुभव स्ट्रोक के समय ही हुआ था, लेकिन दृश्य दो दिन आगे, अंतिम संस्कार के दिन का था।

28 मई, 1955 को उन्हें एक और सूक्ष्म आध्यात्मिक प्रक्षेपण का अनुभव हुआ, जिसे उन्होंने विस्तार से दर्ज किया और मुझे बताया:

मेरे पति और मैंने वेल्वा और जेस मैकडगल के साथ रात का खाना खाया था। उसके बाद मैंने जेस को एक बार शहर में देखा, हमारी बातचीत हुई और हम एक-दूसरे से विदा हो गए। मैंने

वेल्वा को नहीं देखा था। फिर 11 जून, शनिवार को, मैं घर की सफाई कर रही थी, बेडरूम में ड्रेसर के नीचे वैक्यूम क्लीनर चला रही थी, तभी अचानक मैं एक अस्पताल के कमरे के दरवाजे पर खड़ी होकर अंदर देख रही थी। बाईं ओर, खिड़की से आती हवा से सफेद पर्दे धीरे-धीरे हिल रहे थे। कमरा धूप से जगमगा रहा था; दरवाजे के ठीक सामने और मेरे सामने एक बिस्तर था जिस पर एक आदमी तकियों के सहारे लेटा हुआ था; बिस्तर के बाईं ओर वेल्वा खड़ी थी। वह आदमी जेस था। कोई शब्द नहीं बोला गया, लेकिन मैं जानती थी कि जेस की मृत्यु हो चुकी है, हालांकि जब मैंने उसे देखा तो वह बीमार होने के बावजूद जीवित था। मैं वापस लौटी और अभी भी ड्रेसर के नीचे सफाई कर रही थी। मैंने वेल्वा से संपर्क नहीं किया, न ही मुझे उससे कोई खबर मिली। हालांकि, लगभग एक हफ्ते बाद मेरी बहन, मैरी हैटफील्ड ने मुझे बताया कि वह मिस्टर मैकडगल की मृत्यु की खबर सुनकर स्तब्ध रह गई थी। यह पहली पुष्टि थी जो मुझे मिली। मैं तुरंत वेल्वा से मिलने गई, और उसने मुझे बताया कि मेरे दर्शन वाले शनिवार से पहले गुरुवार को उन्हें दिल का दौरा पड़ा था, और अगले रविवार को, यानी दर्शन होने के एक दिन बाद, उनकी मृत्यु हो गई थी।

* * *

रिचर्ड स्मिथ एक स्व-रोज़गार प्राप्त लैंडस्केप सेवा ठेकेदार हैं, जिनकी उम्र तीस के आसपास है, वे विवाहित हैं और जॉर्जिया में रहते हैं। उन्हें जीवित और मृत दोनों व्यक्तियों से जुड़े कई अलौकिक अनुभव हुए हैं। कभी-कभी उन्हें यकीन नहीं होता कि वे दूर की घटनाओं के दर्शन कर रहे हैं या वास्तव में उनकी यात्रा कर रहे हैं। मुझे दी गई अपनी रिपोर्ट में उन्होंने कहा है:

एक बेहद अजीब घटना में, सोने से ठीक पहले, मैंने खुद को हवा में तैरते हुए देश भर में घूमते हुए पाया और मैं मिशिगन में अपनी पत्नी के माता-पिता के घर पहुँच गया। वहाँ मैं घर में इधर-उधर घूम रहा था। मैंने करेन के पिता को अखबार पढ़ते हुए, कमरों में आते-जाते और कॉफी पीते हुए देखा। मुझे उनकी माँ घर में नहीं मिलीं। जाहिर तौर पर वह अस्पताल में काम कर रही थीं। मैं छत के पास एक बिंदु पर तैर रहा था और नीचे देख रहा था। करेन के पिता, श्री वोएलकर, ने अचानक अपनी कॉफी से नज़रें ऊपर उठाईं और डरे हुए से लग रहे थे। वे बहुत बेचैनी से कमरे में चारों ओर देखने लगे, मानो उन्हें कमरे में मेरी मौजूदगी का एहसास हो गया

हो। वे मेरी ओर देखते, लेकिन उनकी नज़रें ऐसे निकल जातीं जैसे मैं अदृश्य हूँ। मैं उन्हें छोड़कर चला गया, क्योंकि मैं अपनी उपस्थिति से उन्हें डराना नहीं चाहता था।

यह दूसरा अनुभव मुझे अनुकूल परिस्थितियों में लगभग अपनी इच्छा से ही हो जाता है और मैं कहीं भी जा सकता हूँ। कभी-कभी, अनजाने में ही, मैं खुद को मीलों दूर घटित हो रहे किसी दृश्य को देखते हुए पाता हूँ, जिसके बारे में मुझे व्यक्तिगत रूप से कोई जानकारी नहीं होती। ये अनुभव मुझे बचपन से होते आ रहे हैं, हालाँकि मैंने इन्हें अपनी पत्नी के अलावा किसी और को नहीं बताया है।

* * *

वैज्ञानिक नियंत्रण के दृष्टिकोण से, एस्ट्रल प्रोजेक्शन मुख्य रूप से एक व्यक्तिपरक अनुभव है और केवल समानांतर साक्ष्यों की विशाल मात्रा ही इसके क्रियाविधि को समझने में सहायक हो सकती है। हालांकि, ऐसे कई सत्यापित मामले दर्ज हैं जहां एस्ट्रल यात्री को यात्रा के दूसरे छोर पर मौजूद लोगों द्वारा वास्तव में देखा, सुना या महसूस किया गया था, इस प्रकार वस्तुनिष्ठ अवलोकन द्वारा व्यक्तिपरक अनुभव की पुष्टि होती है।

यह तथ्य कि समय वास्तव में एक परंपरा है और कोई स्वतंत्र आयाम नहीं है, इस बात से स्पष्ट होता है कि ऐसे मामलों में क्षेत्रीय अवलोकन समय में अंतर को हमेशा उचित स्थानीय समय के साथ समायोजित किया जाता है: यदि किसी सूक्ष्मदर्शी से प्रक्षेपित व्यक्ति को लॉस एंजिल्स में दोपहर 3 बजे उसकी ईथर या गैर-भौतिक अवस्था में देखा जाता है, और यात्री स्वयं न्यूयॉर्क में अपने अनुभव को ठीक शाम 6 बजे घटित होने के रूप में याद करता है, तो हम जानते हैं कि कैलिफोर्निया और पूर्वी तट के बीच समय का अंतर तीन घंटे है और इस प्रकार सूक्ष्मदर्शी यात्रा के प्रारंभ और समापन के बीच व्यावहारिक रूप से कोई मापने योग्य समय व्यतीत नहीं हुआ प्रतीत होता है।

मुझे पूरा विश्वास है कि समय का एक छोटा सा अंश अवश्य व्यतीत होता है, क्योंकि सूक्ष्म यात्रा की गति विचार की गति से अधिक नहीं हो सकती, जो आइंस्टीन के अनुसार परम गति है (प्रकाश की गति नहीं, जैसा कि पहले माना जाता था)। यहाँ तक कि विचार को भी यात्रा करने में समय लगता है, हालाँकि यह एक सेकंड के अंशों में विशाल दूरी तय कर सकता है। लेकिन

विचार—और सूक्ष्म यात्रा—विद्युत आवेग हैं और समय के कुछ अंश के नुकसान के बिना पूरी तरह से यात्रा नहीं कर सकते, चाहे यह नुकसान कितना भी कम क्यों न हो। किसी दिन, जब हम इन घटनाओं को मापने के लिए उपकरण बना लेंगे, तो निस्संदेह यह पाया जाएगा कि सूक्ष्म यात्रा के दोनों छोरों के बीच एक छोटा सा विलंब कारक अवश्य मौजूद होता है।

परागत यात्रा की अवधि प्रक्षेपित व्यक्ति की शांत अवस्था के अनुसार भिन्न होती है। एक अत्यंत घबराया हुआ, भयभीत व्यक्ति केवल घबराहट और अपने बिस्तर पर वापस जाने की इच्छा ही पर्याप्त होती है—और पल भर में, उसे रबर बैंड के झटके की तरह वापस उसके शरीर में खींच लिया जाता है, और इसके परिणामस्वरूप कुछ अप्रियता भी होती है।

जिन लोगों ने इसका अनुभव किया है, उनके अनुसार, यह अनुभूति किसी ऊंचे स्थान से गिरने या एक पागलपन भरे सर्पिल में नीचे की ओर घूमने और अचानक अपने बिस्तर पर जागने जैसी होती है, जैसे कि किसी बुरे सपने से जागे हों, जो एक तरह से सच भी है।

मुझे पूरा विश्वास है कि गिरने का अहसास किसी वास्तविक शारीरिक गिरावट के कारण नहीं होता, बल्कि यह व्यक्ति की कंपन गति में अचानक आई कमी को दर्शाता है। सूक्ष्म यात्रा, सभी मानसिक जीवन की तरह, भौतिक जीवन की तुलना में कहीं अधिक तीव्र गति से होती है। इसलिए जब व्यक्तित्व को अचानक, मानो, गति से खींच लिया जाता है और जबरदस्ती बहुत तेज़ी से धीमा कर दिया जाता है, तो एक सदमे जैसी स्थिति उत्पन्न होती है। जिस सघन वातावरण में हमारा भौतिक शरीर गति करता है, उसमें स्पंदन की धीमी गति आवश्यक होती है। सामान्यतः, सूक्ष्म यात्रा में, व्यक्ति धीरे-धीरे अपने शरीर में लौटता है और यह प्रक्रिया व्यवस्थित और क्रमिक होती है, इसलिए कोई दुष्प्रभाव नहीं होता। लेकिन जब वापसी बहुत अचानक होती है, तो इसके लिए समय नहीं होता, और शरीर के अचानक रुकने की कर्कश ध्वनि ही परिणाम होती है।

मनोचिकित्सकों ने सपने में ऊँचाई से गिरने की आम अनुभूति को भय की अभिव्यक्ति के रूप में समझाने का प्रयास किया है। इस व्याख्या में समस्या यह है कि यह अनुभव इतना आम है कि यह उन सभी लोगों पर लागू नहीं हो सकता जिन्होंने इसे अनुभव किया है; उनमें से कई लोगों में अनकहे भय या भय की भावना नहीं होती। इसके अलावा, कुछ आध्यात्मिक यात्रियों को यह अनुभव आंशिक या पूर्ण रूप से जागृत अवस्था में भी हुआ है।

मुझे लगता है कि यह पूरी तरह से यांत्रिक लक्षण है जिसमें सूक्ष्म शरीर बहुत तेज़ी से भौतिक शरीर में वापस आ जाता है। इससे कोई स्थायी क्षति नहीं होती, यह निश्चित है। इसके बाद होने वाली उलझन, बिना एस्ट्रल प्रोजेक्शन के, किसी जीवंत सपने के बाद जागने पर महसूस होने वाली मानसिक धुंधलाहट से ज़्यादा गंभीर नहीं होती। हालांकि, कई यात्री खुद को अजीब तरह से थका हुआ पाते हैं, मानो उनकी शारीरिक ऊर्जा पूरी तरह से खत्म हो गई हो, और वास्तव में ऐसा ही होता है!

ऐसी ही एक शख्सियत, शायद एक आम उदाहरण, हैं डोरोथी डब्ल्यू., जो पचास वर्ष की आयु की एक युवा दादी हैं। वे मानसिक और शारीरिक रूप से चुस्त-दुरुस्त और संतुलित व्यक्तित्व की धनी हैं और एक बड़े सामुदायिक केंद्र में कार्यकारी सचिव के रूप में काम करती हैं। डोरोथी को मृत्यु के पूर्वाभास से जुड़े कई मानसिक अनुभव हुए हैं और कई बार उन्हें दिवंगत आत्माओं के दर्शन भी हुए हैं। वे इन सब बातों को सहजता से लेती हैं और न तो घबराती हैं और न ही अनावश्यक रूप से चिंतित होती हैं।

अक्सर उसे सपने में बहुत थकान महसूस होती है। वह जानी-पहचानी और अनजान जगहों पर जाती है, और ऐसे लोगों से मिलती है जिन्हें वह जानती भी है और जिन्हें नहीं भी। जिन लोगों को वह पहचानती है, वे पारंपरिक अर्थों में मृत होते हैं। वह इन रात्रिकालीन यात्राओं को रोक नहीं सकती और उसने इनके साथ जीना सीख लिया है। लेकिन उसे सबसे ज़्यादा परेशान करने वाली बात यह है कि जागने पर उसके पैर शारीरिक रूप से थक जाते हैं, मानो वह मीलों पैदल चली हो!

एक ऐसा विशिष्ट मामला जिसमें यात्रा के दूसरे छोर से पुष्टि उपलब्ध है, अमेरिकन सोसाइटी फॉर साइकिक रिसर्च की फाइलों में मिलता है, जिसने दो साल पहले प्रकाशित ईएसपी पर एक रिपोर्ट के लिए इसे टू पत्रिका को उपलब्ध कराया था। यह मामला एक युवती से संबंधित है जिसे सोसाइटी बेट्सी कहती है, जिसने एक हजार मील से अधिक दूर अपनी मां के घर तक एस्ट्रल यात्रा की थी। रिपोर्ट में वर्णित एक प्रकार की जीवंत स्वप्न अवस्था में, बेट्सी ने स्वयं को अपनी मां के घर में प्रक्षेपित होते देखा।

अंदर आते ही मैं बांहें मोड़कर बर्तनों की अलमारी से टिक गई, जैसा कि मैं अक्सर करती हूँ। मैंने अपनी माँ की ओर देखा, जो किसी सफेद चीज़ पर झुकी हुई थीं और अपने हाथों से कुछ

कर रही थीं। पहले तो ऐसा लगा जैसे उन्होंने मुझे देखा ही नहीं, लेकिन आखिरकार उन्होंने ऊपर देखा। मुझे एक तरह की खुशी का एहसास हुआ, और फिर एक पल और खड़े रहने के बाद, मैं मुड़ी और लगभग चार कदम चली गई।

इसी समय बेत्सी की नींद खुली। उसके बिस्तर के पास रखी घड़ी में सुबह के 2:10 बज रहे थे। उसे यह अहसास इतना ज़बरदस्त था कि उसने सचमुच अपनी माँ को हज़ारों मील दूर से देखा था (और उसकी माँ ने भी उसे देखा था)। अगली सुबह बेत्सी ने अपनी माँ को पत्र लिखकर पूछा कि क्या उस रात उन्हें कुछ असामान्य अनुभव हुआ था।

माँ का जवाब कुछ इस प्रकार है: “तुम घर पर ही क्यों नहीं रहतीं, सोते समय घर से इतनी दूर क्यों जाती हो? क्या तुम्हें पता था कि तुम कुछ सेकंड के लिए यहाँ थीं?” माँ ने बताया कि उस रात 1:10 बज रहे थे। उनके पत्र में आगे लिखा था: “तुम्हारे समय के अनुसार 2 बजकर 10 मिनट हो रहे होंगे। मैं रसोई में एक ब्लाउज़ प्रेस कर रही थी—मुझे भी नींद नहीं आ रही थी। मैंने ऊपर देखा तो तुम अलमारी के पास खड़ी मुझे देखकर मुस्कुरा रही थीं। मैंने कुछ बोलना शुरू किया और देखा कि तुम वहाँ से जा चुकी थीं।” माँ के अनुसार (जिन्होंने उस महिला को केवल कमर से ऊपर तक देखा था), उस महिला ने वही हल्का ब्लाउज़ पहना हुआ था जो उन्होंने सपने में देखा था।

अंत में, एक प्रकार का अर्ध-स्वैच्छिक एस्ट्रल प्रोजेक्शन होता है, जिसमें व्यक्ति अपनी इच्छा से किसी दूरस्थ स्थान की यात्रा करता है, हालांकि उसे उस स्थान या उसके स्वरूप के बारे में कुछ भी पता नहीं होता। जब ऐसी यात्रा से कोई सत्यापित जानकारी प्राप्त होती है, चाहे वह कितनी भी छोटी या महत्वहीन क्यों न हो, तो हम प्रयोग की सत्यता का अधिक सटीक आकलन कर सकते हैं।

कुछ शोधकर्ता इस विशेष चरण को "यात्रात्मक अंतर्दृष्टि" भी कहते हैं। अन्य मानते हैं कि वास्तव में प्रक्षेपण करने वाले व्यक्तित्व का केवल एक हिस्सा ही दूर स्थानों की यात्रा करता है और व्यक्ति का मूल भाग स्थिर रहता है। मेरे लिए, यह द्वैत के अधिक स्वाभाविक स्पष्टीकरण की तुलना में अधिक विश्वास करने योग्य है—भौतिक शरीर पीछे रह जाता है और सूक्ष्म शरीर यात्रा करता है। सूक्ष्म शरीर का कोई एक भाग नहीं, बल्कि पूरा सूक्ष्म शरीर।

तो फिर, विचार प्रक्षेपण के बारे में क्या? ऐसे ज्ञात मामले हैं जहाँ किसी जीवित व्यक्ति का प्रेत अचानक और क्षण भर के लिए दूर-दूर तक फैले लोगों को दिखाई दिया है। आमतौर पर, इस प्रकार की घटना में भावनात्मक परिस्थितियाँ शामिल होती हैं। या तो जीवित व्यक्ति का प्रेत आने वाली आपदा या खतरे की चेतावनी देने के लिए होता है, या प्रेत स्वयं किसी परेशानी में होता है और मदद मांगता है। लेकिन सभी मामलों में यह प्रक्षेपण अचानक और क्षणिक होता है और किसी वास्तविक भूत या मृत व्यक्ति के प्रेत की तरह लंबे समय तक टिकने वाला नहीं होता।

मुझे लगता है कि ये विचार प्रक्षेपण जिनमें एक जीवित व्यक्ति दूसरे जीवित व्यक्ति को दिखाई देता है, अत्यंत तीव्र सूक्ष्म प्रक्षेपण हैं, इतने तीव्र कि यात्री को इसका एहसास होने से पहले ही सूक्ष्म शरीर वापस घर आ जाता है, और इसलिए बिस्तर पर लेटने की कोई आवश्यकता नहीं है - अधिक से अधिक अनुपस्थिति की अचानक अनुभूति, पूरी तरह से मौजूद न होने की अनुभूति।

*161

विनचेस्टर कैथेड्रल के भिक्षु

मैं और मेरी पत्नी टेलीविजन पर आने के लिए साउथेम्प्टन जा रहे थे और फिर वहां से ब्यूलियू जाने वाले थे, जहां मैं प्राचीन मठ में होने वाली भूतिया घटनाओं की जांच करना चाहता था। विनचेस्टर कैथेड्रल इस यात्रा के ठीक रास्ते में पड़ता है, इसलिए मैंने इस प्रसिद्ध कैथेड्रल में थोड़ी देर रुकने का फैसला किया। मैंने सुना था कि कई गवाहों ने इस गिरजाघर के गलियारों में भूतिया भिक्षुओं को चलते हुए देखा था, जबकि वास्तव में 1500 के दशक से यहां कोई भिक्षु नहीं चला है। हेनरी अष्टम के आदेश पर मठों के विघटन के दौरान, भिक्षुओं और मठाधीशों को प्रताड़ित किया गया और कभी-कभी उन्हें मार डाला गया या उनकी हत्या कर दी गई, खासकर तब जब उन्होंने उन्हें उनके पारंपरिक स्थानों से हटाने के आदेशों का विरोध किया। राजधानी के इतने करीब स्थित विनचेस्टर में, इस आदेश का सख्ती से पालन किया गया था और कई गवाहों द्वारा देखे गए भूतिया भिक्षुओं का शायद कोई अधूरा काम रह गया हो! इस मामले की जांच करने पर, मुझे पता चला कि मैं इस स्थान पर मानसिक तस्वीरें प्राप्त करने

वाला पहला व्यक्ति नहीं था। 9 सितंबर, 1958 के नेवार्क इवनिंग न्यूज़ के एक समाचार के अनुसार, टी. एल. टेलर नाम का एक शौकिया फोटोग्राफर अपने परिवार के साथ प्राचीन गिरजाघर घूमने आया था। टेलर, जो उस समय बयालीस वर्ष का था और पेशे से एक विद्युत इंजीनियर था, एक पर्यटक के रूप में दर्शनीय स्थलों की सैर पर था। उसे अलौकिक घटनाओं में ज़रा भी रुचि या ज्ञान नहीं था। उसने 1957 के अंत में गायन क्षेत्र में कई तस्वीरें लीं - वही क्षेत्र जहाँ मुझे भूतिया भिक्षु दिखाई दिए थे। उस समय उसके साथ श्रीमती टेलर और उसकी सोलह वर्षीय बेटी वैलेरी भी थीं। संयोगवश, उनमें से किसी ने भी किसी प्रकार की भूतिया गतिविधि नहीं देखी।

विनचेस्टर के भिक्षु: क्या वे अब भी चल रहे हैं?

भूतिया बेंचें

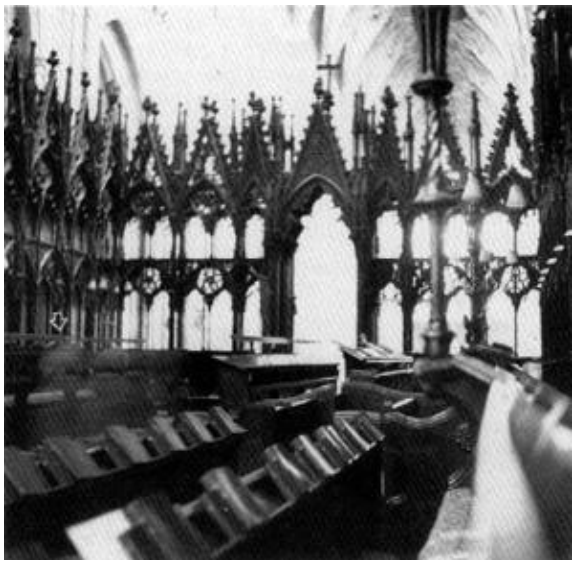

हेनरी अष्टम द्वारा निष्कासित किए गए भिक्षुओं का क्लोज-अप दृश्य

पहली तस्वीर में गायक मंडली की कुर्सियाँ सामान्य रूप से दिखाई दीं, लेकिन अगली तस्वीर में—जो शायद थोड़े अलग कोण से ली गई थी—उन्हीं खाली कुर्सियों पर तेरह मानव आकृतियाँ दिखाई दीं, जिन्होंने मध्ययुगीन वेशभूषा धारण कर रखी थी। जब फिल्म और प्रिंट प्रयोगशाला से वापस आए, तो टेलर दंग रह गए। एक तकनीशियन होने के नाते, वे जानते थे

कि उनके कैमरे में लॉकिंग मैकेनिज्म के कारण गलती से भी डबल एक्सपोज़र नहीं हो सकते —ठीक वैसे ही जैसे मेरे कैमरे में नहीं हो सकते—और फिल्म निर्माता ने पूछताछ करने पर पुष्टि की कि फिल्म में कोई खराबी नहीं थी और फिल्म निर्माण या डेवलपिंग में किसी प्रकार की त्रुटि के कारण ये "भूत" दिखाई नहीं दिए। यह आश्वस्त होकर कि उन्हें किसी तरह कुछ अलौकिक सामग्री मिल गई है, टेलर ने परिणाम लेविशम साइकिक रिसर्च सोसाइटी को सौंप दिए, जहाँ वे संभवतः अभी भी हैं।

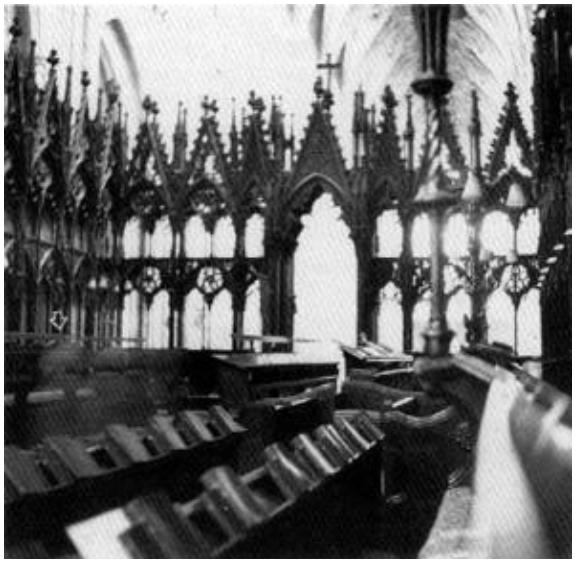

गलियारे में भिक्षु

तेज़ बारिश में कार से उतरकर जैसे ही हम गिरजाघर में पहुँचे, कैथरीन और मैं गायक-गायिका की कुर्सियों के पास गए और मैंने दो सेकंड के एक्सपोज़र पर ब्लैक एंड व्हाइट तस्वीरें खींचनी शुरू कर दीं। वातावरण में नमी की अधिकता का असर शायद असामान्य परिणामों पर पड़ा हो। मैंने कई बार पाया है कि नम हवा शुष्क हवा की तुलना में मानसिक संकेतों का बेहतर संवाहक होती है। एक ही जगह से अलग-अलग दिशाओं में ली गई ग्यारह तस्वीरों की पूरी रील एक्सपोज़ करने के बाद, हम अपनी कार में वापस आ गए, और हमें बिल्कुल भी पता नहीं था कि नेगेटिव पर कुछ असामान्य दिखेगा या नहीं। चूंकि मेरी सभी मानसिक फोटोग्राफी अप्रत्याशित और पूरी तरह से आकस्मिक होती है, इसलिए उस समय

मेरे मन में इस बात का कोई ख्याल नहीं था कि क्या हो सकता है। मैं तो बस गिरजाघर की तस्वीरें ले रहा था क्योंकि लोगों ने उसमें भूत देखे थे। बाद में मुझे पता चला कि किसी और ने भी वहाँ भूतों की तस्वीरें ली थीं।

जब मैंने इसे विकसित और प्रिंट किया, तो तुरंत स्पष्ट हो गया कि मैंने गलियारे में चलते हुए तीन भिक्षुओं की नकाबपोश आकृतियों को कैद कर लिया था। ध्यान से देखने पर पता चलता है कि हम यहाँ एक ही भिक्षु की एक जैसी तस्वीर से नहीं निपट रहे हैं, जो चलते-फिरते किसी तरह तीन बार ली गई हो, बल्कि तीन थोड़ी अलग-अलग आकृतियों से निपट रहे हैं, जिनमें से एक बगल की ओर देख रही है, जबकि अन्य दो पीछे से ली गई हैं। मैं इन आकृतियों की स्पष्ट रूप से कम ऊँचाई से चकित था और सोच रहा था कि क्या सोलहवीं शताब्दी के पुरुष हमसे इतने छोटे थे। लेकिन अभिलेखों की जाँच करने पर मुझे पता चला कि कैथेड्रल का पत्थर का फर्श विनचेस्टर से अंतिम भिक्षुओं को निकाले जाने के सौ साल बाद बनाया गया था। इस प्रकार, यहाँ कैद की गई आकृतियाँ उसी फर्श पर चल रही हैं जो उनके लिए मूल फर्श ही होगा!

*162

बैलिंगुइल का रहस्य

“आप संलग्न दस्तावेज़ पर नज़र रख सकते हैं,” डबलिन हेराल्ड के पैट्रिक बायरन ने लिखा, जो भूतिया घरों की तलाश में आयरलैंड लौटने की हमारी योजना के बारे में लेख प्रकाशित कर रहे थे। संलग्न दस्तावेज़ श्रीमती ओ'फेरल का हस्तलिखित पत्र निकला, जिसकी तारीख 2 अप्रैल, 1966 थी। उनकी बहन डबलिन के उपनगर डार्ट्री के पास रहती थीं, और हाल ही में एगलिंगटन रोड, डोनीब्रुक स्थित एक भूतिया घर से वहां आई थीं।

इस विषय पर विचार-विमर्श के बाद—आयरलैंडवासियों के लिए भूतों के बारे में बात करना आसान नहीं होता—श्रीमती ओ'फेरल को अपनी बहन की अनुमति मिल गई, और उससे भी महत्वपूर्ण, पता भी। इस प्रकार मैंने टेंपल रोड की श्रीमती मैरी हीली से संपर्क किया, ताकि मैं उनके घर में हुए कारनामों के बारे में प्रत्यक्ष रूप से जान सकूँ।

पता चला कि वह मकान अभी भी खड़ा था, लेकिन हाल ही में उसकी हालत खराब हो गई थी, क्योंकि नए मालिक उसे अंततः गिराने पर तुले हुए थे। श्रीमती हीली ने इसे 1963 में बेच दिया था। इस विशाल भूरे पत्थर के मकान का कुछ हिस्सा अठारहवीं सदी का है और कुछ उन्नीसवीं सदी का, लेकिन यह जगह कम से कम पंद्रहवीं सदी से लगातार आबाद रही है। संपत्ति के चारों ओर बनी ऊंची दीवार इसे शहर के घर के बजाय एक ग्रामीण मकान जैसा रूप देती है, जबकि वास्तव में यह शहर का ही एक हिस्सा है, क्योंकि डोनीब्रुक डबलिन का ही एक भाग है। संयोगवश, डोनीब्रुक शब्द स्थानीय संरक्षक संत ब्रोक से लिया गया है, और इस मकान के परिसर में, जिसे बैलिंगुइल कहा जाता है, एक प्राचीन प्राकृतिक कुआँ है, जो संत ब्रोक को समर्पित है।

शायद इसी घर के नाम पर पूरे जिले का नाम पड़ा है। बगीचे की पिछली दीवार की ओर स्थित कुआँ घनी हरियाली से भरा हुआ है, क्योंकि नम आयरलैंड में सब कुछ अच्छी तरह उगता है। घर सड़क से थोड़ा पीछे हटकर बना है—हालांकि यह एक व्यस्त सड़क है—जिससे कुछ हद तक एकांत मिलता है। मुख्य घर के पीछे एक फूलों और सब्जियों का बगीचा है जो अब पूरी तरह से जर्जर हो चुका है, और विशाल अस्तबल है जो लंबे समय से उपयोग में नहीं है या आंशिक रूप से गैरेज के रूप में इस्तेमाल किया जाता है। उससे थोड़ा पीछे एक छोटा, सघन प्रवेश द्वार है, जिसमें अभी भी एक किराएदार रहता है जो खाली घर की भी देखभाल करता है।

नीचे की मंजिल पर आगे और पीछे बड़े-बड़े बैठक कक्ष हैं, जो इस बात का प्रमाण हैं कि वर्षों से इस घर में बेतरतीब ढंग से बदलाव और विस्तार किए गए हैं। घर के तीन हिस्से हैं, जिनमें बीच वाला हिस्सा सबसे ऊंचा है; एक दूसरी मंजिल है, और उसके ऊपर एक अटारी है जहाँ केवल धातु की सीढ़ी से ही पहुँचा जा सकता है। बैलिंगुइल की बगल की दीवार के सामने एक ग्रीनहाउस है जिसे पिछले मालिक ने एक तरह का बरामदा बना दिया था। अब वह खस्ताहाल है, ठीक वैसे ही जैसे भूतल की अधिकांश खिड़कियाँ पड़ोस के युवाओं ने तोड़ दी थीं। ये युवा अक्सर ऐसे ही विद्रोही भाव से ऐसा करते हैं जहाँ भी उन्हें बिना टूटी और लावारिस खिड़कियाँ दिखाई देती हैं!

श्रीमती हीली ने बताया, “सबसे असामान्य घटनाएँ कदमों की आहट थीं, जो अधिकतर सीढ़ियों पर सुनाई देती थीं। वे इतनी स्वाभाविक थीं कि तुरंत यह एहसास ही नहीं होता था कि घर के सभी लोग मौजूद हैं। ये दिन के समय होती थीं और जुलाई और अगस्त के महीनों में सबसे ज़्यादा होती थीं। वास्तव में, अगस्त ही वह महीना था जब दो सबसे अजीब घटनाएँ घटीं। जिस साल मैं वहाँ रहने आई, मेरा सबसे छोटा बेटा मेरे साथ रहता था और वह अभी भी छात्र था और थोड़ा चंचल था। जब उसके दोस्त आते थे तो मैं आमतौर पर सोने चली जाती थी।”

“एक रात नीचे उसका सिर्फ एक दोस्त था, और रात करीब 9 बजे वो मेरे पास आया और कहा कि वे थोड़ी देर के लिए बाहर जा रहे हैं, और वे चले गए। थोड़ी देर बाद मैं नींद से जागा तो नीचे बहुत सारे लोगों की आवाजें सुनाई दीं; वे हंस रहे थे, मजाक कर रहे थे, बातें कर रहे थे, और मैं उनके चलने-फिरने की आवाजें सुन सकता था। वे बहुत खुश लग रहे थे और खूब मजे कर रहे थे। मुझे बहुत गुस्सा आया और मैंने सोचा कि उठकर उन्हें बताऊं कि बिना तैयारी के पार्टी करने का यह सही समय नहीं है, लेकिन मैंने ऐसा नहीं किया।”

“काफी देर तक सन्नाटा छाया रहा, और थोड़ी देर बाद हॉल का दरवाजा खुला और मेरा बेटा अंदर आया। वह अपने दोस्त को घर छोड़ने गया था और कुछ देर उसके साथ रुका था। कोई पार्टी नहीं हुई थी!”

“दो साल बाद, अगस्त के महीने में ही, मेरी बेटी, जो अपने पति और छोटी बच्ची के साथ घर के आधे हिस्से में रहती थी, और मैं अपने भोजन कक्ष में खड़े थे, जो एक पुरानी रसोई थी जिसे भोजन कक्ष में बदल दिया गया था। अचानक हमने साढ़े तीन साल की उस छोटी बच्ची को बंद आंगन में किसी से बात करते देखा। वह कुछ कहती और जवाब का इंतजार करती। हमें आसपास कोई दिखाई नहीं दिया, लेकिन हमने उसे साफ-साफ कहते सुना, 'लेकिन आप तो मेरे दोस्त हैं!' हमने उससे पूछा कि वह किससे बात कर रही है, तो उसने सहजता से कहा, 'लंबे, सांवले आदमी से,' और हमें ऐसा लगा जैसे वह उसे अच्छी तरह जानती हो।”

“हमारे जाने से ठीक पहले, एक शाम जब हम सब रात करीब 11 बजे सोने चले गए थे, तभी दरवाजे की घंटी बजने से हमारी नींद खुली। मेरे दामाद नीचे गए तो देखा कि दो पुलिसकर्मी

यह जानने के लिए आए थे कि सब ठीक है या नहीं। वे वहाँ से गुजर रहे थे और उन्होंने घर में बहुत शोर सुना था, और चारों ओर अंधेरा देखकर वे जाँच करने आए थे।”

बैलिंगुइल का रहस्य—एक पुराना विवाद जो मिटने का नाम नहीं लेता

हमें तो कुछ भी पता नहीं चला था!

"मेरे लिए सबसे अजीब बात यह थी कि डर का कोई एहसास नहीं हुआ, सब कुछ बिल्कुल स्वाभाविक लग रहा था। बाद में ही एहसास हुआ कि यह अजीब था। किसी भी समय कोई 'डरावना' एहसास नहीं हुआ।"

“रात में सिर्फ वो छोटी बच्ची ही डरी हुई थी, जो रात को बिस्तर पर नहीं सोती थी और कहती थी कि उसे किसी बात से डर लग रहा है। लेकिन बच्चे अक्सर ऐसा करते हैं। हमने उसे अपने अनुभवों के बारे में कुछ नहीं बताया, क्योंकि बच्चे बातों को बढ़ा-चढ़ाकर बताने में बहुत जल्दी करते हैं।”

श्रीमती हीली के अनुभवों के बारे में बस इतना ही। मैंने इनमें से कुछ भी सिबिल को नहीं बताया, और चूंकि हम आयरलैंड में घर खरीदने की तलाश में थे, इसलिए यह हमारे लिए निरीक्षण करने के लिए बस एक और घर था।

डबलिन पहुँचने पर मैंने श्रीमती हीली से उनके नए घर पर मिलने का समय तय किया, इससे पहले हम डोनीब्रुक में हीली के पुराने घर जा चुके थे। अनुमति और चाबियाँ लेने के लिए मैंने वर्तमान मालिक आर्थर लूरी को फ़ोन किया, जो बहुत सहयोगी थे, हालाँकि मैंने उन्हें किसी संभावित भूत के बारे में नहीं बताया था। लेकिन मुझे लगता है कि इससे उन पर कोई असर नहीं पड़ता। श्री लूरी मुझे एक ऐसे व्यक्ति लगे जो पूरी तरह से अपने काम में लगे रहते थे। उन्होंने घर के लिए जो कीमत माँगी वह दुर्भाग्यवश हमारे लिए बहुत ज़्यादा थी, लेकिन हमें घर पसंद आया और शायद हम उसे खरीद लेते।

जेब में चाबियां लिए, हम जुलाई की एक बेहद गर्म दोपहर में बैलिंगुइल के लिए निकल पड़े। ड्राइवर ने कृपा करके हमारे लिए जंग लगे गेट खोल दिए और गाड़ी परिसर में चली गई। उसी क्षण, एक छोटी सी महिला दो छोटे कुत्तों के पीछे भागती हुई लगभग हमारे पास से गुज़री और दौड़ते हुए बोली—"ये यहाँ खेलते थे, आपको पता है। क्या मैं इन्हें थोड़ी देर दौड़ा दूँ?"

इससे पहले कि हम कुछ कह पाते, वह हमारे पास से गुज़रकर अंदर चली गई। पाँच मिनट बाद मैंने उसे, कुत्तों समेत, बाहर निकाल लिया।

अब हमने अपनी खोज शुरू की, सावधानीपूर्वक उन टूटी हुई खिड़कियों से बचते हुए, जिनसे पक्षियों की एक बड़ी संख्या अंदर आ गई थी, जिनके साक्ष्यों से पता चलता है कि कुछ कमरे उनके लिए घर बन गए थे।

हम अभी भी बाहर ही खड़े थे, जबकि ड्राइवर धूप में झपकी ले रहा था। मैं अपने टेप रिकॉर्डिंग उपकरण और कैमरों को चालू हालत में लाने में व्यस्त था, जबकि कैथरीन हरे-भरे बगीचे के विस्तृत क्षेत्र का भ्रमण कर रही थी। सिबिल और मैं खुद को सीधे पीछे के बैठक कक्ष के बाहर पाए।

अचानक, मुझे कमरे से दबी हुई आवाज़ें सुनाई दीं और मेरा पहला ख्याल आया, अरे, यहाँ कुछ और लोग भी हैं; मकान मालिक ने उन्हें एक ही समय पर भेजकर कितनी लापरवाही की है! सिबिल ने मेरी तरफ सिर घुमाया और उसके चेहरे पर एक बड़ा सवालिया निशान साफ दिख रहा था। उसने भी वो आवाज़ें सुनी थीं। यह सब शायद दो-तीन सेकंड में ही खत्म हो गया, और आवाज़ें, जिनमें से एक पुरुष की गहरी आवाज़ थी, ऐसी लग रही थीं जैसे पानी के

नीचे से आ रही हों, लेकिन निश्चित रूप से वे बातचीत करते हुए इंसानों की आवाज़ें थीं... जैसे किसी पार्टी में! हम तुरंत कमरे में दाखिल हुए, लेकिन ज़ाहिर है, वहाँ कोई नहीं था।

मैंने फैसला किया कि अब घर में प्रवेश करने और यह देखने का समय आ गया है कि सिबिल की मानसिक क्षमता हमें क्या संकेत देती है।

“अजीब बात है,” सिबिल ने घर की ओर जाने वाले रास्ते पर चलते हुए कहा, “मुझे ऐसा लग रहा है जैसे मैं पहले भी यहाँ आ चुकी हूँ। मैंने इस घर को सालों में कई बार ‘देखा’ है। इस घर के प्रति बेवजह बहुत नफरत फैली हुई है। जब हम कार से उतरे, तो मुझे लगा जैसे मैंने एक आदमी को देखा...ऊपरी कमरों में से एक में...मुझे लगा जैसे मैंने एक आवाज़ सुनी...कुछ ऐसा जो S से शुरू होता था, जैसे श्योर या शॉन...बीच के हिस्से में, ऊपरी खिड़की के पास, ऐसा लग रहा था जैसे कोई आदमी अखबार पढ़ रहा हो...।”

चूंकि सिबिल को घर के निचले हिस्से में कोई मजबूत अनुभूति नहीं हुई, इसलिए हम सीढ़ियों से ऊपर चढ़े और जल्द ही खुद को दूसरी मंजिल पर, उसी कमरे में पाया जहां अधिकांश मानसिक घटनाएं घटी थीं।

“यहाँ कुछ साज़िश रची जा रही है... इस कमरे में मुझे किसी बहुत बीमार, चिंतित, बहुत उत्तेजित व्यक्ति की मौजूदगी का एहसास होता है—ज़्यादा दूर नहीं, परिसर पर पुराने समय का प्रभाव दिखता है, लेकिन इस कमरे पर नहीं। परिसर लगभग 300 साल पुराना है, लेकिन घर शायद पचास साल पुराना है। यहाँ एक विदेशी प्रभाव है। एक अलग ही भाषा।”

“क्या आपको कुछ नाम पता हैं?” मैंने सिबिल से पूछा, जो खाली कमरे की दीवार से टेक लगाकर खड़ी थी। बैठने के लिए कोई कुर्सी नहीं थी, इसलिए हमें अपना ध्यान इसी असुविधाजनक तरीके से लगाना पड़ा।

"वायमन," सिबिल ने अब बुदबुदाया, और धीरे-धीरे वह और अधिक सम्मोहित होती चली गई, हालांकि वह कभी भी पूरी तरह से समाधि की अवस्था में नहीं थी।

“फ्रांसीसी प्रभाव... वायबन, वाइवर्न... पता नहीं इसका क्या मतलब है,” उन्होंने आगे कहा, “वह अभी यहीं हैं। कुछ समय पहले ही। वही हमें यहाँ लाए थे।”

वह हमसे क्या करवाना चाहता है?

मुझे भी लगा था कि यह मामला सामान्य से कहीं अधिक है, कि हम किसी रहस्यमय तरीके से इस घर की ओर आकर्षित हो रहे हैं। बैलिंगुइल का रहस्य क्या था?

"यह हास्यास्पद लगता है, लेकिन वह आदमी अब्राहम लिंकन जैसा दिखता है," सिबिल ने अंततः कहा, "पतला, कमजोर, झुके हुए कंधे... यह पचास साल पहले का उसका घर है... व्हिबर्न... उसके पास कागजात हैं... सावधान रहने की जरूरत है... जमीन... दस्तावेज़ में कुछ गड़बड़ है... घर और जमीन पूरी तरह से एक साथ नहीं हैं।"

मुझे बाद में पता चला कि वह घर ऐसी ज़मीन पर बना था जिसके मालिक पहले भी रह चुके थे और इसमें कई कानूनी पेचीदगियां शामिल थीं। सिबिल को इस बात की कोई जानकारी नहीं थी।

“एक और आदमी यह बात जानता है,” सिबिल ने आगे कहा। “ज़मीन को लेकर कुछ विवाद है। यह दो परिवारों का झगड़ा है। वह चाहता है कि हम ज़मीन का निपटारा कर दें। सैमली, सीमली... जब मैं घर में आई थी तो यही नाम लिखा हुआ था। यह एक पारिवारिक नाम है।”

क्या उनकी मृत्यु यहीं हुई थी?

सिबिल द्वारा भूत से प्रश्न पूछने पर कुछ क्षणों के लिए सन्नाटा छा गया।

“कागजात ध्यान से पढ़ो,” उसने अंततः बुदबुदाते हुए कहा, “कागजात देख लो, मिस सीमली...कागजात ध्यान से देख लो...पैसे गलत हैं...सिमली (सीमली) ने जमीन के बारे में गलती की है...इसे ठीक करो...”

सिबिल लगभग बेहोशी की हालत में थी और उसकी आवाज कमजोर और अनियमित हो गई थी। भूत के प्रभाव में आकर उसने फुसफुसाते हुए कहा, "चौबीस, 1924...वर्ष..."

“क्या कोई और समस्या है?” मैंने सहज भाव से पूछा। चलो सब कुछ साफ कर लेते हैं।

“वो औरत,” सिबिल ने कहा, “वो कहाँ गई? वो कहता है कि वो औरत चली गई!”

मैंने उसे आश्वस्त किया कि अब यहाँ हमारे अलावा कोई नहीं है, हम भूत-प्रेत खोजने वाले ही हैं। क्या वह चाहता था कि हम घर खरीद लें? वैसे इससे मकान मालिक के साथ कोई समस्या तो हल नहीं होने वाली थी।

“अच्छे लोग,” वह बुदबुदाया, “विदेश से आए लोग यहाँ रहते हैं...अब...आयरिश लोगों के लिए नहीं...गद्दारों ने...जमीन चुरा ली...संस्थान की जमीन...बीमार लोगों का संस्थान...।”

मैंने पूछा, "क्या आपने वह जमीन संस्थान को सौंप दी थी?"

“इसे ले लिया...संस्थान...।”

और यह किसे मिलना चाहिए था?

“वायमन...वायनन।” नाम अभी भी पूरी तरह स्पष्ट नहीं था, लेकिन मैंने वादा किया कि अगर संभव हुआ तो हम जमीन के मामले की जांच करने की कोशिश करेंगे।

“उसे पता है...” सिबिल ने धीरे से कहा, और एक-दो पल बाद वह लगभग समाधि जैसी अवस्था से बाहर आ गई। हम अभी भी ऊपर ही थे।

सिबिल को कुछ भी याद नहीं था, लेकिन एक पल के लिए उसे लगा कि उसकी आंखें ठीक नहीं हैं।

हम नीचे गए और घर का दरवाजा बंद किया, कार में बैठे और पास के उस घर की ओर चल दिए जहाँ श्रीमती हीली और उनकी विवाहित बेटी रहती हैं।

अचानक मुझे याद आया कि डब्लिन में हमारी दोबारा मुलाकात के बाद से सिबिल एक व्हाइट नाम के आदमी के बारे में बात कर रही थी। क्या मैं किसी मिस्टर व्हाइट को जानता था? नहीं। क्या हमारी किसी जांच के दौरान हमें ऐसे किसी व्यक्ति से मिलने का मौका मिलेगा? नहीं, मैंने कहा, जहाँ तक मुझे पता है, ऐसा नहीं होगा।

लेकिन फिर मैरी हीली ने हमारे लिए इस रहस्य को सुलझा दिया।

जिस घर से हम अभी-अभी निकले थे, उसमें मिस्टर बैंट्री व्हाइट रहते थे। चूंकि यह नाम मुझे उस समय तक ज्ञात नहीं था, इसलिए सिबिल को डोनीब्रुक वाले घर जाने से पहले मेरे अवचेतन मन से यह नाम नहीं मिल सकता था। क्या वायनन और व्हाइट एक ही व्यक्ति थे, मैंने सोचा।

एक और बात जो मुझे अजीब लगी, वह थी सिबिल की लोहे के गेट वाले घर में जाने की ज़िद। मेरी सूची में ऐसा कोई घर नहीं था, लेकिन सिबिल बार-बार उसी घर के बारे में पूछ रही थी। हालांकि, जब हम बैलिंगुइल पहुंचे, तो वहां दूर-दूर तक कोई लोहे का गेट नज़र नहीं आया;

फिर भी, सिबिल ने उसे देखने की ज़िद की, मानो उसे पूरा यकीन था कि वह उसी घर का हिस्सा है।

फिर मुझे श्रीमती हीली से पता चला कि उन्होंने घर खरीदते समय उस लोहे के गेट को हटवा दिया था और प्रवेश द्वार को उस जगह से हटाकर नई जगह पर लगा दिया था जहाँ पहले लोहे का गेट लगा हुआ था। सिबिल को इस बात की जानकारी शायद ही रही होगी।

हीली परिवार का नया घर साफ-सुथरा और सुविधाजनक था, और श्रीमती हीली एक आकर्षक महिला थीं जो अलंकारिक भाषण और अनुपात की समझ से संपन्न थीं।

“वहाँ मिस्टर केरिगन नाम के एक वकील रहते थे,” उन्होंने कहा। “मुझे लगता है कि उनकी मृत्यु हो चुकी है। हमने इसे डॉ. ग्राहम से खरीदा था, जिनकी हाल ही में मृत्यु हुई है। लेकिन उस घर में कोई भी लंबे समय तक नहीं रहा। हमने इसे पूरी तरह से निजी कारणों से छोड़ा था, किसी भूत-प्रेत की वजह से नहीं।”

“उस कॉटेज के बारे में क्या?”

“इसे डॉ. ग्राहम ने अपने माली के लिए बनवाया था। यह बिल्कुल भी पुराना नहीं है। इसमें अभी मिस्टर बैरन रहते हैं।”

मैंने पूछा, "आपको कदमों की आहट किस सीढ़ी पर सुनाई दी?"

“ये दो हैं, जैसे घर में हर चीज़ दो है। मेरे दामाद और मैंने इसे साथ मिलकर खरीदा था, और मैंने कदमों की आहट उसी छोटी सी सीढ़ी पर सुनी थी। घर के पीछे। पार्टी की जो आवाज़ें मैंने सुनीं, वो भी पुराने घर में ही थीं, पीछे की तरफ।”

मैंने सोचा, जहाँ सिबिल और मैंने आवाज़ें सुनी थीं! बिल्कुल उसी जगह पर, और मुझे अब तक इसका एहसास नहीं हुआ था।

मैंने श्रीमती हीली से पूछा, "क्या आपको उस स्थान पर पुरानी इमारतों के कोई निशान मिले?"

उन्होंने बताया, “माना जाता है कि एक समय में इस जगह पर एक मठ हुआ करता था; अब तो सिर्फ बगीचे में मौजूद कुआँ ही बचा है। वैसे, हम अब भी इसके साफ पानी का इस्तेमाल करते हैं।”

बाद में, श्रीमती हीली के भाई आकर हमारे साथ शामिल हो गए। जब मैंने उन्हें ज़मीन के सौदे और भूत की शिकायत के बारे में बताया, तो उन्होंने चुपचाप सुना।

पता चला कि डॉक्टर से पहले के दोनों किराएदार वकील थे, और घर के नीचे की ज़मीन के मालिकाना हक को लेकर मामला वाकई गंभीर था। हालांकि, अगर कोई गलती हुई भी थी, तो अब कुछ नहीं किया जा सकता था। कम से कम बिना महंगे और लंबे खोज और मुकदमेबाजी के तो बिल्कुल नहीं। और आप मानेंगे कि ऐसा तो कोई भूत भी नहीं चाहेगा। खासकर वो वकील-भूत जिसे इससे कोई फीस नहीं मिल रही! मुझे यकीन है कि मेरी इस बात से कि समय बीत चुका है, भूतिया मालिक को इस सब को भूल जाने का मौका मिल गया होगा, और चूंकि मौजूदा मालिक श्री लूरी को लगता है कि जल्द ही पुराने घर की जगह एक अपार्टमेंट बन जाएगा, तो ज़मीन के एक टुकड़े के बारे में चिंता करने का कोई मतलब नहीं है। खरीदार सावधान!

अध्याय बारह

मानसिक फोटोग्राफी—दृश्य प्रमाण

फोटोग्राफी के माध्यम से परे से संचार: ट्रैक रिकॉर्ड और परीक्षण की शर्तें

पिछले सौ वर्षों से, मानसिक अनुसंधान ने जीवन की निरंतरता के प्रमाण जुटाने का अथक प्रयास किया है और धीरे-धीरे आध्यात्मिक दायरे से निकलकर वैज्ञानिक अनुसंधान के दायरे में आ गया है। यद्यपि विभिन्न शोधकर्ता मानव व्यक्तित्व के अस्तित्व के प्रति अपने-अपने दृष्टिकोण के अनुसार इन अध्ययनों के परिणामों की व्याख्या करते हैं, फिर भी अब इन प्रमाणों को दबाना संभव नहीं है, जैसा कि अन्य क्षेत्रों के कुछ भौतिकवादी वैज्ञानिकों ने वर्षों से करने का प्रयास किया है। चुनौती हमेशा बनी रहती है: वैज्ञानिक दृष्टि से, क्या मनुष्य में आत्मा है, और यदि हाँ, तो हम इसे कैसे सिद्ध कर सकते हैं?

तथाकथित मृतकों से संवाद पर बहुत सारी सामग्री उपलब्ध है और मुझे अक्सर यह विश्वसनीय लगती है, हालांकि जरूरी नहीं कि यह सब उस तरह से हो जैसा कि कभी-कभी अध्यात्मवादी धर्म के समर्थक इसे प्रस्तुत करते हैं। लेकिन इस बात का अतिरिक्त प्रमाण हमेशा से वांछित रहा है कि मनुष्य वास्तव में उस दुनिया में अस्तित्व बनाए रखता है जिसे ड्यूक विश्वविद्यालय के तत्कालीन डॉ. जोसेफ राइन ने "मन की दुनिया" कहा है, विशेषकर ऐसा प्रमाण जिसे व्यक्तिपरक अवलोकन की आवश्यकता के बिना वस्तुनिष्ठ रूप से देखा जा सके, चाहे वह अनुभव स्वतःस्फूर्त हो या प्रयोगशाला में प्रेरित। फोटोग्राफी के आविष्कार के साथ ही हमें एक सबसे बड़ा संभावित उपकरण प्राप्त हुआ: क्योंकि यदि हम मृतकों की तस्वीरें ऐसी परिस्थितियों में ले सकें जिनमें छल-कपट को पूरी तरह से रोका जा सके, तो हम निश्चित रूप से बहुत कुछ सीख पाएंगे—और अस्तित्व का तर्क वास्तव में और भी मजबूत हो जाएगा।

फोटोग्राफी का इतिहास स्वयं 1840 के दशक तक जाता है, जब यह तकनीक धीरे-धीरे बहुत ही कच्चे प्रकाश और छाया चित्रों से विकसित होकर, डैगरेोटाइप और टिनटाइप के माध्यम से उस फोटोग्राफी तक पहुंची जिसे हम आज जानते हैं।

ब्रिटिश मानसिक शोधकर्ता मेजर टॉम पैटरसन ने 'स्पिरिट फोटोग्राफी' नामक पुस्तिका में ब्रिटेन में फोटोग्राफिक मीडियमशिप की शुरुआत के बारे में बताया है, जहां इसने पिछली सदी में सबसे अधिक प्रयोगात्मक सामग्री का उत्पादन किया है।

लेकिन पहला प्रयोग 1862 में बोस्टन में हुआ था, ब्रिटेन में नहीं; फोटोग्राफी के आविष्कार के 23 साल बाद। विलियम एच. मुमलर, एक उत्कीर्णक, जो न तो अध्यात्मवाद में रुचि रखते थे और न ही किसी अन्य प्रकार के मानसिक अनुसंधान में विश्वास करते थे, अपने खाली समय में कैमरे के साथ प्रयोग करने में व्यस्त थे। उस समय फोटोग्राफिक कैमरा अभी भी एक नई चीज थी। उत्कीर्णक अपने कैमरे के बारे में अधिक जानने के लिए अपने परिवार और दोस्तों की तस्वीरें लेना पसंद करते थे। मुमलर के आश्चर्य और निराशा की कल्पना कीजिए जब उनकी कुछ नेगेटिव तस्वीरों में ऐसे चेहरे दिखाई दिए जो उन पर नहीं होने चाहिए थे। जिन जीवित लोगों की उन्होंने इतनी सावधानी से तस्वीरें खींची थीं, उनके अलावा मुमलर को "सामान्य" चित्रों के साथ-साथ मृत रिश्तेदारों के चित्र भी मिले।

यह मानसिक फोटोग्राफी की शुरुआत थी। यह सब संयोगवश हुआ—यदि हमारे सुव्यवस्थित ब्रह्मांड में संयोग जैसी कोई चीज होती है—और मुमलर की अनपेक्षित उपलब्धियों की खबर पूरी दुनिया में फैल गई। अन्य फोटोग्राफरों, पेशेवर और शौकिया दोनों, ने मुमलर जैसी प्रतिभाओं को खोजा, और ब्रिटेन और अमेरिका में मानसिक अनुसंधान समितियों ने इस अद्भुत विकास पर ध्यान देना शुरू कर दिया।

तब से लेकर अब तक तकनीक में कई बदलाव आए हैं और हमें इसकी कमियों के बारे में अधिक जानकारी मिली है। लेकिन फोटोग्राफी का मूल सिद्धांत आज भी वही है: चांदी के लवणों से ढकी फिल्म को प्रकाश नामक विकिरण के संपर्क में लाया जाता है और वह उससे प्रतिक्रिया करती है। इस प्रतिक्रिया के परिणामस्वरूप इमल्शन के कुछ हिस्से नष्ट हो जाते हैं, जिससे कैमरे के लेंस द्वारा देखी गई छवि की सटीक प्रतिकृति फोटोग्राफिक फिल्म पर बन जाती है। फिल्म के विभिन्न हिस्सों पर प्रकाश की तीव्रता के आधार पर, चांदी के लवणों का

क्षरण अलग-अलग होता है, जिससे प्रकाश-संवेदनशील फोटोग्राफिक पेपर पर बनने वाले नेगेटिव के रंग और छायांकन इस प्रकार बनते हैं और इस प्रकार पॉजिटिव प्रिंट बनता है, जो नेगेटिव के प्रकाश और छाया क्षेत्रों का यांत्रिक पुनरुत्पादन होता है, लेकिन विपरीत क्रम में।

प्रिंट बनाने के लिए, ऑपरेटर केवल तैयार नेगेटिव को प्रिंटर में डालता है, नेगेटिव के नीचे प्रकाश-संवेदनशील कागज रखता है और बिजली की रोशनी से नेगेटिव के माध्यम से उसे एक्सपोज़ करता है। इस विधि से कुछ भी नया जोड़ा नहीं जा सकता है, न ही नेगेटिव पर पहले से मौजूद किसी चीज़ को हटाया जा सकता है, लेकिन प्रिंटर चलाने वाले कारीगर की कुशलता ही यह निर्धारित करेगी कि परिणामी पॉजिटिव प्रिंट कितना संतुलित होगा, जो प्रिंटिंग लैंप की अवधि और तीव्रता पर निर्भर करता है।

अधिकांश फोटोग्राफर इन सरल तथ्यों को जानते हैं, लेकिन ऐसे कई लोग हैं जो नहीं जानते, और जिनके लिए यह जानकारी उपयोगी हो सकती है।

फोटोग्राफिक पेपर पर किसी भी प्रकार की छवियां प्राप्त करना, विशेष रूप से चेहरे या आकृतियों जैसी पहचानने योग्य तस्वीरें, बिना पहले सामान्य तरीके से नेगेटिव बनाए, निश्चित रूप से एक वैज्ञानिक असंभवता है - सिवाय मानसिक फोटोग्राफी के।

पोलरॉइड कैमरों और पोलरॉइड फिल्म के आने से पहले तक यह बात बिल्कुल सच थी। पोलरॉइड विधि, जिसमें तुरंत परिणाम मिलते हैं और एक्सपोज़र के कुछ ही सेकंडों में फिल्म विकसित हो जाती है, प्रयोग में गहन निगरानी का महत्वपूर्ण तत्व जोड़ती है। यह मानसिक विकिरण और संवेदनशील सतह के बीच और भी सीधा संपर्क संभव बनाती है। पोलरॉइड फोटोग्राफी की एक कमी इसका क्षणभंगुर स्वभाव है। बेहतर फिल्म भी हमेशा के लिए सुरक्षित रहने की गारंटी नहीं देती, इसलिए पोलरॉइड की दुर्लभ तस्वीरों को स्लाइड कॉपी बनाकर सुरक्षित रखना समझदारी है। दरअसल, पोलरॉइड फोटोग्राफी में फिल्म और संवेदनशील कागज दोनों का एक साथ उपयोग होता है, कैमरे के अंदर तुरंत विकास प्रक्रिया के बाद एक को दूसरे से अलग कर दिया जाता है।

सामान्य फोटोग्राफी में जालसाजी बेईमान ऑपरेटरों द्वारा डबल एक्सपोज़र या डबल प्रिंटिंग पर निर्भर करती है, ऐसे में कोई भी प्रामाणिक नेगेटिव तैयार नहीं किया जा सकता जो अनुभवी जांच में खरा उतर सके। पोलरॉइड उपकरण से जालसाजी असंभव है यदि कैमरा,

फिल्म और ऑपरेटर पर कड़ी निगरानी रखी जाए। पोलरॉइड फिल्म की अत्यधिक प्रकाश संवेदनशीलता के कारण, यदि डबल एक्सपोज़र का इरादा हो, तो यह आसान नहीं है, क्योंकि एक एक्सपोज़र दूसरे को काफी हद तक रद्द कर देगा और निश्चित रूप से डबल एक्सपोज़र के निशान छोड़ देगा। और फिल्म को, ज़ाहिर है, प्रेक्षक की उपस्थिति में बदलना होगा, ऐसा काम जो एक प्रशिक्षित जादूगर भी एक अनुभवी मानसिक अन्वेषक के सामने करने की संभावना नहीं रखता। एक मानसिक शोधकर्ता को इस उपाधि के लिए योग्य होने के लिए जादू और हाथ की सफाई के करतबों से भी परिचित होना चाहिए।

मानसिक फोटोग्राफी के बारे में याद रखने वाली महत्वपूर्ण बात यह है कि इसका अधिकांश हिस्सा उन शौकिया फोटोग्राफरों के साथ अप्रत्याशित और अक्सर शर्मनाक तरीके से हुआ, जिन्हें परा मनोविज्ञान या किसी भी प्रकार के रहस्यवाद में जरा भी दिलचस्पी नहीं थी। नेगेटिव पर मौजूद अतिरिक्त तस्वीरें इन लोगों ने खुद को भ्रमित करने के लिए नहीं डाली थीं। वे मृत रिश्तेदारों या दोस्तों के चित्र थे जिन्हें पहचाना जा सकता था। मानसिक फोटोग्राफी के इस पहलू पर, विशेष रूप से ब्रिटेन में, साहित्य प्रभावशाली है; और मैं विशेष रूप से प्रसिद्ध ब्रिटिश परा मनोवैज्ञानिक एफ. डब्ल्यू. वारिक की विद्वतापूर्ण कृति, 'एक्सपेरिमेंट्स इन साइकिक्स' की अनुशंसा करता हूँ, जिसमें सैकड़ों प्रायोगिक तस्वीरें शामिल हैं। वारिक की कृति, जो 1939 में ई. पी. डटन द्वारा प्रकाशित हुई थी, मुख्य रूप से एम्मा डीन की फोटोग्राफिक मीडियमशिप से संबंधित है, हालांकि इसमें अन्य उदाहरण भी शामिल हैं। वारिक बताते हैं कि उन्होंने और उनके सहयोगियों ने लगभग 30 वर्षों तक अपने विषयों के साथ काम करने और उनकी बारीकी से निगरानी करने के बाद, उनकी व्यक्तिगत आदतों और विचित्रताओं को जान लिया था। इसलिए किसी भी प्रकार की छल-कपट की गुंजाइश नहीं थी, जब तक कि कोई असामान्य विचारों को प्रतिपादित करने वाले शोधकर्ता को आत्म-भ्रमित या अक्षम न कहना चाहे, जैसा कि कुछ आधुनिक आलोचकों ने हैरी प्राइस और सर विलियम क्रूक्स, सम्मानित ब्रिटिश मानसिक शोधकर्ताओं के बारे में किया है, जो अब दिवंगत हो चुके हैं।

जो व्यक्ति मूल प्रयोगों या जांचों के समय उपस्थित नहीं था और जिसे उन जांचों की परिस्थितियों और प्रक्रियाओं का प्रत्यक्ष ज्ञान नहीं था, वह इतिहास को फिर से लिखने की

कोशिश करने वाले किसी सैद्धांतिक रणनीतिकार की तरह ही उसके परिणामों का मूल्यांकन करने के योग्य नहीं है। हालांकि पैटरसन की पुस्तिका आध्यात्मिक दृष्टिकोण का समर्थन करने के लिए उपलब्ध वैज्ञानिक प्रमाणों का स्पष्ट रूप से उपयोग करती है, यह तथ्यात्मक जानकारी का एक उपयोगी स्रोत भी है। ममलर को "पहले" आत्मा फोटोग्राफर के रूप में मान्यता प्राप्त है, जिसे अमेरिकी अपील न्यायालय के न्यायाधीश जॉन एडमंड ने बरकरार रखा है। एडमंड ने व्यक्तिगत रूप से ममलर की जांच की और परीक्षण स्थितियों के तहत उन लोगों की तस्वीरें प्राप्त कीं जिन्हें केवल वही जानते थे और जो मर चुके थे। शुरुआत में, न्यायाधीश एडमंड ने यह सोचकर जांच शुरू की थी कि यह सब एक धोखा है। हालांकि, 6 अगस्त, 1853 को न्यूयॉर्क हेराल्ड में प्रकाशित एक पत्र में, न्यायाधीश ने न केवल ममलर के प्रयोगों का बल्कि उस समय के प्रसिद्ध माध्यमों के साथ उनकी बाद की मुलाकातों का भी उल्लेख किया। इन जांचों ने उन्हें आश्वस्त कर दिया कि अध्यात्मवाद का एक वैध आधार है, और तब से वे इसके पक्के अनुयायी बन गए, और समय बीतने के साथ-साथ उन्होंने स्वयं भी कुछ मानसिक क्षमताओं का प्रदर्शन किया।

इंग्लैंड में, मानसिक फोटोग्राफी की कला 1870 के दशक से धीरे-धीरे विकसित हुई। ब्रिटेन में इस क्षेत्र में सफलता प्राप्त करने वाले पहले व्यक्ति फ्रेडरिक हडसन थे, जिन्होंने 1872 में धोखाधड़ी की संभावना को खत्म करते हुए मृतकों की कई प्रामाणिक तस्वीरें बनाईं। कई प्रयोग उस समय के प्रसिद्ध प्रकृतिवादी डॉ. अल्फ्रेड रसेल वालेस की सावधानीपूर्वक निगरानी में किए गए थे। वालेस ने देखी गई घटनाओं की प्रामाणिकता की पुष्टि की। तब से, कई दर्जन प्रतिभाशाली मानसिक फोटोग्राफर सामने आए हैं, जो कुछ पैसों में उन लोगों की वास्तविक तस्वीरें बनाते हैं जिनकी मृत्यु हो चुकी है, और ये तस्वीरें उन लोगों की उपस्थिति में ली जाती हैं जिनसे वे अपने जीवन में पहले कभी नहीं मिले थे।

जैसे-जैसे यह कला अधिक प्रसिद्ध होती गई और वैज्ञानिक इस पर आश्चर्य करने लगे, शोधकर्ताओं ने इस प्रकार की प्रायोगिक मानसिक फोटोग्राफी के लिए अधिक से अधिक कठोर परीक्षण परिस्थितियाँ तैयार कीं। फिल्म, कागज, कैमरे, डेवलपिंग फ्लूइड—संक्षेप में, किसी भी प्रकार की तस्वीरें बनाने के लिए आवश्यक सभी उपकरण—गैर-प्रतिबद्ध शोधकर्ताओं द्वारा उपलब्ध कराए गए, नियंत्रित किए गए और रखे गए। माध्यम को किसी भी

चीज़ को छूने की अनुमति नहीं थी और उसे कैमरे और फिल्म से दूर रखा गया था। कई मामलों में वह कमरे में भी मौजूद नहीं था। फिर भी, सही ढंग से एक्सपोज़ की गई फिल्म पर मानसिक "अतिरिक्त" दिखाई देते रहे और उन्हें मृत व्यक्तियों के चित्रों के रूप में पहचाना गया, जिनकी पहचान अक्सर अस्पष्ट होती थी, लेकिन उन्हें उपस्थित किसी व्यक्ति के रिश्तेदार या मित्र के रूप में पहचाना जा सकता था। कभी-कभी, जैसा कि अमेरिका के अग्रणी मानसिक फोटोग्राफर जॉन मायर्स के मामले में हुआ, उनके शुरुआती दिनों में इस प्रकार फोटोग्राफिक माध्यम द्वारा प्राप्त चित्र सभी संबंधितों के लिए अजनबी थे, जब तक कि वे तस्वीरें पहली बार उस समय के एक प्रमुख अध्यात्मवादी समाचार पत्र, साइकिक न्यूज़ में प्रकाशित नहीं हुईं। तभी मानसिक "अतिरिक्त" के "मालिकों" ने संपादक को पत्र लिखकर अपने मृत रिश्तेदारों पर दावा किया!

इन तस्वीरों के असली होने के पुख्ता सबूतों के बावजूद—लगभग सभी मामलों में धोखाधड़ी का कोई मकसद ही नहीं था—कुछ शोधकर्ता तब भी इस संभावना को नकारते रहे—और आज भी नकारते हैं—कि ये तस्वीरें धोखे से बनाई गई डबल एक्सपोज़र के अलावा कुछ नहीं थीं। पैरासाइकोलॉजी फाउंडेशन की अध्यक्ष एलीन गैरेट जैसी प्रतिभाशाली शख्सियत भी कई सालों तक यही कहती रहीं कि सभी मानसिक तस्वीरें फर्जी होती हैं, क्योंकि उन्हें दो स्वघोषित विशेषज्ञों ने यही जानकारी दी थी। जब मैंने खुद भूतों की तस्वीरें पेश कीं और श्रीमती गैरेट को कैमरा, फिल्म और तस्वीरें लेने के अन्य तरीकों के बारे में बताया, तब जाकर उन्होंने अनिच्छा से यह स्वीकार किया कि हमने वास्तव में मानसिक फोटोग्राफी के क्षेत्र में एक बड़ी सफलता हासिल की है। किसी भी ऐसी चीज़ के प्रति पूर्वाग्रह जो हमारे सोचने के तरीके, जीवन दर्शन और सामान्य प्रशिक्षण में एक बड़ा बदलाव लाती है, कभी-कभी हमारी सोच से कहीं अधिक प्रबल होता है, जिसे हम स्वीकार करने की हिम्मत भी नहीं करते।

अक्सर मानसिक फोटोग्राफी तथाकथित घरेलू समूहों में भी होती है, जहाँ न तो पैसे का कोई लेन-देन होता है और न ही प्रसिद्धि का, और जहाँ तस्वीरें लेने वालों को आत्म-भ्रम में पड़ने की कोई आवश्यकता नहीं होती। वे संभवतः मृत्यु के बाद व्यक्तित्व के अस्तित्व में पहले से ही आश्वस्त होते हैं, अन्यथा वे उस समूह के सदस्य नहीं होते।

भूतों या प्रेतवाधित क्षेत्रों की तस्वीरें बहुत दुर्लभ होती हैं, क्योंकि परिणाम प्राप्त करने में संयोग का बहुत बड़ा हाथ होता है। जहाँ प्रायोगिक दृष्टि से की जाने वाली मानसिक फोटोग्राफी समय-सारणी और मानवीय योजनाओं पर आधारित होती है, वहीं भूतों की तस्वीरें लेना ऐसा नहीं है। यहाँ तक कि मुझे भी न तो पहले से कोई जानकारी थी और न ही उन तस्वीरों पर मेरा कोई नियंत्रण था जो मैंने लीं, और अगर मैं दोबारा कोशिश भी करूँ तो उस तरीके से नहीं ले सकता।

हमें अभी भी उन सभी परिस्थितियों का पता नहीं है जिनके कारण ये असाधारण तस्वीरें संभव हो पाती हैं, और जब तक हमें इनका पता नहीं चलता, इन्हें प्राप्त करना लगभग असंभव ही रहेगा। लेकिन यह तथ्य कि कई लोगों ने धोखाधड़ी या दोषपूर्ण उपकरणों को छोड़कर, ऐसी परिस्थितियों में वास्तविक तस्वीरें ली हैं जिन्हें आम तौर पर भूत कहा जाता है, गंभीरता से विचार करने योग्य है।

हाल के वर्षों का एक उदाहरण आयरलैंड के बैलीहेइग कैसल में अपनी जान बचाने के लिए संघर्ष कर रहे एक डेनिश नाविक की तस्वीर है, जिसे 4 जून, 1962 को छुट्टी पर आए एक सेना अधिकारी कैप्टन पी. डी. ओ'डोनेल ने खींचा था। ओ'डोनेल को इस बात का पता नहीं था कि यह उस नाविक की मृत्यु की बरसी थी, जिसकी मृत्यु तथाकथित चांदी की चोरी की घटना में हुई थी। इस घटना में किले में रखी चांदी स्थानीय डाकुओं ने चुरा ली थी और उसके बाद झड़पें हुई थीं। ओ'डोनेल ने भूतों के बारे में बिना सोचे-समझे, कभी गौरवशाली रहे इस किले के खंडहरों का निरीक्षण करते हुए यह तस्वीर खींची थी। बाद में यह तस्वीर रास्ते में खो गई और डाकघर को भी नहीं मिली।

3 जुलाई, 1966 के द पीपल सहित दुनिया भर के कई समाचार पत्रों ने इंग्लैंड के नॉर्थहैम्पटनशायर के वुडफोर्ड स्थित सेंट मैरी द वर्जिन चर्च में 18 वर्षीय गॉर्डन कैरोल द्वारा ली गई एक भूतिया तस्वीर की रिपोर्ट प्रकाशित की। तस्वीर में एक भिक्षु वेदी के सामने घुटने टेकते हुए स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहा है, लेकिन जिस समय कैरोल ने यह तस्वीर ली थी, उस समय चर्च में केवल वही मौजूद थे। सौभाग्य से, उन्हें साउथवार्क कैथेड्रल के प्रोवोस्ट और चर्च के साइकिकल एंड फिजिकल रिसर्च फेलोशिप के सदस्य कैनन जॉन पियर्स-हिगिंस से मिलने का अवसर मिला। पियर्स-हिगिंस ने कैमरा और फिल्म का निरीक्षण करने और युवक से

पूछताछ करने के बाद इस घटना की प्रामाणिकता की पुष्टि की। कैरोल ने एक तिपाई और एक बिल्कुल नया इलफोर्ड स्पोर्ट्समैन रेंजफाइंडर कैमरा इस्तेमाल किया था। उन्होंने इसमें एगफा सीटी 18 फिल्म भरी थी, जिसका उपयोग वह अक्सर चर्चों में रंगीन कांच की खिड़कियों की तस्वीरें लेने के लिए करते थे, जो उनका एक शौक था। एग्फा कंपनी ने फिल्म की जांच करने पर पुष्टि की कि इसमें किसी तरह की चालाकी भरी फोटोग्राफी का इस्तेमाल नहीं किया गया था और न ही फिल्म या डेवलपिंग में कोई खराबी पाई गई। जहां तक भूत की बात है, ऐसा लगता है कि किसी ने भी यह जानने की जहमत नहीं उठाई कि वह कौन था। यह चर्च अपने आप में एक बहुत प्राचीन स्थान है, जिसका उल्लेख विलियम द कॉन्करर के शासनकाल में संकलित महत्वपूर्ण संपत्तियों की सूची, डोम्सडे बुक में मिलता है। ब्रिटेन पर नॉर्मन विजय से पहले भी उस स्थान पर एक चर्च मौजूद था, इसलिए यह पूरी तरह संभव है कि किसी समय वहां किसी भिक्षु की मृत्यु हुई हो, और दुखद रूप से वही भूत बन गया हो जिसे कैरोल के कैमरे ने गलती से देखा और रिकॉर्ड किया।

अभिनेत्री एल्के सोमर के लेखक पति जो हायम्स ने हॉलीवुड में कुछ समय तक उनके साथ एक भूतिया घर में निवास किया, लेकिन अंत में उन्होंने भी भूत के आगे हार मान ली। उनके निवास के अंतिम दिनों में, फोटोग्राफर एलन ग्रांट, जो घोर नास्तिक थे, ने एक रहस्यमय आग लगने के बाद कुछ तस्वीरें लीं। 3 जून, 1967 को द सैटरडे इवनिंग पोस्ट में प्रकाशित इन तस्वीरों में स्पष्ट रूप से ऐसी घटनाएं दिखाई देती हैं जो सामान्य फोटोग्राफी के परिणामों से मेल नहीं खातीं।

हालांकि यह भूतों की छवियों से संबंधित नहीं है, फिर भी मानसिक फोटोग्राफी के क्षेत्र में नवीनतम विकास इस पूरे प्रश्न के लिए प्रासंगिक है। फोटोग्राफिक फिल्म या अन्य प्रकाश-संवेदनशील सतहों पर दर्ज होने वाले विचार स्वरूप कोलोराडो विश्वविद्यालय के प्रोफेसर जूल आइज़ेनबड, जो परा मनोविज्ञान में भी रुचि रखने वाले एक प्रसिद्ध मनोचिकित्सक हैं, और शिकागो के फोटोग्राफिक माध्यम टेड सेरियोस के वर्षों के कठिन परिश्रम का परिणाम हैं। इन अद्भुत तस्वीरों को आइज़ेनबड ने 1989 में 'द वर्ल्ड ऑफ टेड सेरियोस' नामक एक प्रभावशाली पुस्तक में प्रकाशित किया था। इसके अलावा, प्रयोगों के जारी रहने के साथ-साथ

और भी सामग्री उपलब्ध हुई है, जिसका श्रेय कई विश्वविद्यालयों और अध्ययन समूहों के प्रयासों को जाता है जिन्होंने देर से ही सही, इस प्रकार के प्रयोग के महत्व को पहचाना है।

सेरियोस में अंतरिक्ष या समय में बहुत दूर स्थित वस्तुओं और दृश्यों की छवियों को फिल्म या टीवी पर प्रोजेक्ट करने की क्षमता है। इसमें वे स्थान भी शामिल हैं जहाँ वे पहले कभी नहीं गए या जिन्हें उन्होंने पहले कभी नहीं देखा। आइज़ेनबड यह सुझाव नहीं देते कि इसमें आध्यात्मिक शक्तियों का कोई हाथ है। वे केवल इस बात की ओर इशारा करते हैं, जो बिल्कुल सही है, कि हम अभी तक उन क्षेत्रों को नहीं समझ पाए हैं जिनमें मानव मन कार्य कर सकता है। आइज़ेनबड और कई अन्य वैज्ञानिकों द्वारा सेरियोस पर किए गए हर संभव परीक्षण के दौरान उपस्थित न होने के कारण, मैं परिणामों का आकलन नहीं कर सकता। लेकिन पुस्तक में जो मैंने पढ़ा है और मुझे निजी तौर पर दिखाई गई सेरियोस की अन्य तस्वीरों से मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि सेरियोस एस्ट्रल प्रोजेक्शन में सक्षम हैं। इन शरीर से बाहर की अवस्थाओं में वे पलक झपकते ही दूर-दराज के स्थानों की यात्रा करते हैं, फिर लगभग तुरंत अपने भौतिक शरीर में लौट आते हैं और अपनी सूक्ष्म दृष्टि से प्राप्त छापों को पोलरॉइड फिल्म पर रिकॉर्ड करते हैं। सबसे बढ़कर, मुझे लगता है कि सेरियोस फोटोग्राफी माध्यमों की एक प्रभावशाली श्रृंखला में से एक हैं।

मानसिक फोटोग्राफी के निहितार्थों को लेकर मतभेद हो सकते हैं। कुछ लोगों का मानना है कि यह केवल अतीत की घटनाओं का एक रिकॉर्ड है जो किसी तरह घटना के दौरान वातावरण में छूट गया था। निस्संदेह, कई मामलों में यह संभव है। लेकिन ऐसे भी कई उदाहरण हैं जहां यह दृष्टिकोण सही नहीं बैठता और जहां केवल विचार जगत में मानवीय व्यक्तित्व के अस्तित्व का अप्रचलित सिद्धांत (वैज्ञानिक दृष्टि से) ही संतोषजनक स्पष्टीकरण हो सकता है। किसी भी तरह, मानसिक फोटोग्राफी, चाहे पसंद हो या ना हो, एक नए विज्ञान की दहलीज है।

जॉन मायर्स की माध्यमता

योजनाबद्ध प्रयोगों में धोखाधड़ी की संभावना हमेशा बनी रहती है। लेकिन गोला-बारूद के निर्माण में भी विस्फोट की संभावना बनी रहती है, और कोई भी इनका उत्पादन बंद नहीं

करता। दोनों ही मामलों में अत्यंत सावधानी बरती जाती है। जादूगरों और अन्य बाज़ीगरों ने मानसिक फोटोग्राफी को स्पष्ट रूप से नकली बताकर इसकी आलोचना की है, क्योंकि वे इसे नकली बना सकते हैं। यह, बेशक, एक चालाकी भरा हथकंडा है। संभावना को प्रायिकता बताकर, ये सीमित सोच वाले लोग (आध्यात्मिक रूप से) मानसिक फोटोग्राफी के वैज्ञानिक रूप से नियंत्रित प्रयोगों के मूल उद्देश्य को समझने में चूक जाते हैं: महत्वपूर्ण यह नहीं है कि क्या हो सकता है, बल्कि यह है कि वास्तव में क्या होता है।

मैंने जिन पुरानी मानसिक तस्वीरों का अध्ययन किया है, उनमें से अधिकांश पर संदेह करने का मेरे पास कोई ठोस कारण नहीं है, लेकिन चूंकि मैं उनके लिए गए समय में उपस्थित नहीं था और मुझे यह जानने का कोई तरीका नहीं है कि उस समय नियंत्रण कितने सख्त थे, इसलिए मैं व्यक्तिगत रूप से उनकी पुष्टि नहीं कर सकता। इसका अर्थ यह नहीं है कि वे प्रामाणिक नहीं हैं। इसका अर्थ यह है कि मैं जिस भी बात की पुष्टि कर रहा हूं, वह मेरी उपस्थिति में और/या मेरे नियंत्रण में तथा मेरे परिचित व्यक्तियों के साथ उन परिस्थितियों में घटित हुई है जिन्हें पेशेवर परा मनोविज्ञानियों द्वारा आमतौर पर उचित माना जाता है। जब मैंने इस विषय पर साहित्य का अध्ययन किया, विशेष रूप से वारिक की पुस्तक 'एक्सपेरिमेंट्स इन साइकिक्स' का, तो मैं वारिक के दृष्टिकोण की ईमानदारी और उनके द्वारा किए गए विवेकपूर्ण नियंत्रणों से प्रभावित हुआ, जिनके माध्यम से उन्होंने यह सुनिश्चित किया कि उनके विषय किसी भी प्रकार की छल-कपट से अपने आश्चर्यजनक परिणाम प्राप्त न कर सकें। वारिक की पुस्तक काफी हद तक एम्मा डीन की माध्यमता से संबंधित है, जो एक ब्रिटिश मानसिक शक्ति वाली महिला थीं, जो धोखाधड़ी को छोड़कर मृतकों की तस्वीरें बनाने की अपनी क्षमता के लिए प्रसिद्ध थीं। ये वही श्रीमती डीन थीं, जिनसे एक बार जॉन मायर्स ने मुलाकात की थी, जो उस समय इस क्षेत्र में नौसिखिया थे। वह उस बुजुर्ग महिला से मिलने आने वाले अन्य लोगों की तरह केवल एक फोटो खिंचवाने के लिए आया था, और कुछ पैसों के बदले उनकी उपस्थिति में उसकी तस्वीर खींची गई। अक्सर मायर्स को बाद में पता चलता था कि प्लेट पर उसके पास ही किसी मृत प्रियजन का चित्र बना हुआ है! उसे आश्चर्य हुआ जब श्रीमती डीन ने उससे कहा कि एक दिन वह जल्द ही उनकी जगह लेगा। मायर्स अविश्वास भरी मुस्कान के साथ बाहर चला गया। लेकिन कुछ समय बाद जब श्रीमती डीन का स्वास्थ्य

खराब हो गया, तो मायर्स, जिसने तब तक अपनी मानसिक और फोटोग्राफिक शक्तियों को खोज लिया था, ने वास्तव में उनका स्टूडियो संभाल लिया।

इन तस्वीरों में, हैंस होल्ज़र जॉन मेयर्स के मानसिक फोटोग्राफी के प्रयोग की देखरेख कर रहे हैं।

1959 में न्यूयॉर्क में मेरी मुलाकात जॉन मायर्स से हुई, क्योंकि मैंने उनकी विशेष मानसिक क्षमताओं के बारे में सुना था और उन्हें परखने के लिए उत्सुक था। उस समय मायर्स एक संपन्न व्यक्ति थे, एक सफल उद्योगपति और जाने-माने परोपकारी थे, जिन्हें मानसिक अनुसंधान में शामिल होने से कोई लाभ नहीं हो सकता था। लेकिन उन्हें यह भी लगता था कि जीवन के दूसरे पहलू में मौजूद अपने उपकारियों के प्रति उनका कुछ दायित्व है, और इसी कारण वे मुझसे मिलने के लिए सहमत हुए। यह दायित्व कई वर्षों पहले का था, जब वे लंदन में एक दंत शल्य चिकित्सक थे, और अपनी मानसिक क्षमताओं से अवगत थे और अपने दो विशेष कौशलों को शौक के तौर पर अपनाते थे। ये थे मानसिक फोटोग्राफी—जो बाद में उनका पूर्णकालिक पेशा बन गया—और मानसिक उपचार। एक चिकित्सक के रूप में, उन्होंने एक धनी अमेरिकी व्यवसायी लॉरेंस पैरिश की दृष्टि वापस लाने में मदद की, जहाँ पारंपरिक चिकित्सक असफल रहे थे। कृतज्ञता के रूप में पैरिश ने मायर्स को न्यूयॉर्क स्थित अपनी कंपनी में एक पद की पेशकश की। उस समय मायर्स की कमाई बहुत कम थी, क्योंकि वे हर मानसिक तस्वीर के लिए कुछ पैसे ही लेते थे और उपचार के लिए कुछ भी नहीं लेते थे। उन्हें लगा कि अमेरिका जाने का अवसर उन्हें इसलिए मिल रहा है ताकि वे अपने नए करियर में और एक मानसिक चिकित्सक के रूप में उपयोगी साबित हो सकें, इसलिए उन्होंने इसे स्वीकार कर लिया।

न्यूयॉर्क में मायर्स ने कंपनी के लिए एक महत्वपूर्ण योगदान दिया और अंततः वे उपाध्यक्ष पद तक पहुंचे, जो कंपनी के प्रमुख के बाद दूसरा सबसे बड़ा पद था। अपनी नई जिम्मेदारियों के कारण मायर्स अब अपना मानसिक उपचार कार्य अनियमित रूप से ही करते थे, लेकिन पर्दे के पीछे वे अक्सर अन्य मानसिक चिकित्सकों का समर्थन करते थे या आध्यात्मिक सभाओं का आयोजन करते थे, जिन्हें मायर्स के वित्तीय सहयोग के बिना संभव नहीं था। हालांकि, उन्होंने स्वयं एक मानसिक चिकित्सक के रूप में अपनी गतिविधियाँ जारी रखीं। कभी-कभी

मायर्स परीक्षणों के लिए सहमत होते थे, लेकिन केवल तभी जब महत्वपूर्ण वैज्ञानिक या समाचार पत्र के पत्रकार उपस्थित होते थे। मायर्स अपने काम की मात्रा में जो कमी कर सकते थे, उसकी भरपाई उन्होंने पर्यवेक्षकों की व्यापक सूची के बल पर की।

मैंने कई मौकों पर मायर्स की मानसिक फोटोग्राफी क्षमताओं का परीक्षण किया। उन्होंने कभी भी मुझे किसी भी तरह से प्रभावित करने की कोशिश नहीं की, न ही कुछ सुझाव दिया, सिवाय इसके कि वे एक संवेदनशील व्यक्ति थे जिन्हें अपमानित होना पसंद नहीं था। एक बार मैं उन्हें टेलीविजन पर अपनी मानसिक फोटोग्राफी का दूसरा सार्वजनिक प्रदर्शन देने के लिए राजी करने में कामयाब रहा। चूंकि 1961 में पहला टीवी परीक्षण, मेरी राय में, बहुत प्रभावशाली था, इसलिए मुझे लगा कि ऐसा एक और परीक्षण भी उपयोगी साबित हो सकता है। इस परीक्षण का अनुरोध करने वाला कार्यक्रम अमेरिकन ब्रॉडकास्टिंग कंपनी का लेट नाइट शो था, जिसकी मेजबानी लेस क्रेन कर रहे थे। इस उद्दंड युवक ने पहले भी मुझे मानसिक अनुसंधान के प्रति सहानुभूतिहीन साबित किया था, लेकिन मैं मायर्स को किसी भी अप्रिय टिप्पणी से बचाने के लिए वहां मौजूद था। हम हमेशा की तरह सभी रसायन लाए थे, जो परीक्षण के लिए खुले थे, और कार्यक्रम के निर्माता ने फोटोग्राफिक पेपर भी उपलब्ध कराया था; यानी, उन्होंने सब कुछ तैयार रखा था। लेकिन वह क्षण कभी नहीं आया। उन्होंने उस विशेष अवसर पर बहुत सारे कार्यक्रम बुक कर रखे थे, और मायर्स और मेरे परीक्षण करने से पहले ही समय समाप्त हो गया। दो घंटे से अधिक समय तक मायर्स चुपचाप पर्दे के पीछे इंतजार करते रहे। लेकिन प्रभारी छोटे अधिकारी मायर्स की इस प्रयोग को करने की इच्छा के महत्व को समझने में विफल रहे, और इसलिए उन्हें घर लौटना पड़ा।

डेवलपर और फिक्सेटिव के लिए पैन

हंस होल्ज़र रसायनों से भरा एक थैला खोल रहे हैं।

1959 में मायर्स से मेरी पहली मुलाकात के बाद एक बैठक आयोजित की गई, जिसका उद्देश्य उनकी मानसिक फोटोग्राफर के रूप में क्षमताओं का प्रदर्शन करना था। यह जुलाई के अंत में हुआ था, और मैंने निम्नलिखित परीक्षण शर्तें निर्धारित कीं: मायर्स को निर्धारित बैठक की दोपहर मेरे साथ मेरी पसंद के एक फोटोग्राफी आपूर्ति स्टोर पर चलना था, जहाँ मैं उनके लिए आवश्यक प्रकाश-संवेदनशील कागज का चयन और खरीद करूँगा। मायर्स ने क्लर्क से साधारण डेवलपिंग पेपर माँगा। कई प्रकार के डेवलपिंग पेपर होते हैं, जिनकी प्रकाश संवेदनशीलता भिन्न होती है, और मायर्स ने मध्यम-प्रतिरोधी पेपर चुना। क्लर्क पेपर का पैकेट ले आया और मैंने यह सुनिश्चित कर लिया कि यह ताज़ा सामग्री का था, ठीक से सीलबंद था और किसी भी तरह से क्षतिग्रस्त या छेड़छाड़ नहीं की गई थी। फिर मैंने बाहरी लिफाफे के सभी कोनों पर अपने हस्ताक्षर किए, और मायर्स ने भी ऐसा ही किया। मायर्स के इस आग्रह का कारण कि उन्हें भी पैकेट पर अपनी सुरक्षा के उपाय करने की अनुमति दी जानी चाहिए, कई साल पहले का है। जब मायर्स इंग्लैंड में एक युवा के रूप में मानसिक फोटोग्राफर के रूप में ख्याति प्राप्त कर रहे थे, तब लॉर्ड डोनेगल नामक एक पत्रकार ने उन्हें एक परीक्षा के लिए चुनौती दी थी। मायर्स द्वारा संभावित धोखाधड़ी की तलाश करने से संतुष्ट न होकर, डोनेगल यह सुनिश्चित करना चाहता था कि उसे कुछ धोखाधड़ी मिल ही जाए। मायर्स के ईमानदार होने की संभावना पर जोखिम उठाने के बजाय, डोनेगल ने उस पर नंबर प्लेट बदल दीं और इस तरह एक अचूक "धोखाधड़ी" तैयार कर दी - वे नंबर प्लेटें जो उसने खुद उपलब्ध कराई थीं। स्वाभाविक रूप से, मायर्स पर सार्वजनिक रूप से आरोप लगे और नुकसान की भरपाई करने में वर्षों का समय लग गया। अंत में, मजाक से तंग आकर, डोनेगल ने अपने किए को स्वीकार कर लिया। लेकिन इस घटना ने मायर्स को एक मिलनसार, खुले दिल वाले व्यक्ति से एक सतर्क, शंकालु व्यक्ति में बदल दिया, जो किसी भी प्रयोगकर्ता पर पूरी तरह से भरोसा नहीं करता था।

इसी कारण मायर्स चाहते थे कि पैकेज पर मेरे हस्ताक्षर के बगल में उनके भी हस्ताक्षर हों, ताकि उन्हें भी यकीन हो जाए कि मैंने पैकेज के साथ कोई छेड़छाड़ नहीं की है। अखबार का बिल चुकाते ही मैंने पैकेज लिया और उसे सुरक्षित अपनी जेब में रख लिया। मायर्स ने उसे कभी अपने हाथों में नहीं लिया। हम अलग हो गए और मैं पैकेज को अपने पास रखते हुए घर

चला गया। रात के खाने के बाद मैं मायर्स के अपार्टमेंट गया, जहाँ वे और पाँच अन्य गवाह पहले से मौजूद थे। इनमें से एक चार्ल्स हेगेडॉर्न नाम का फोटोग्राफर था, जो संशयवादी था, और एक मायर्स का कानूनी सलाहकार जैकब गेरस्टीन था, जो व्यापार जगत में अपनी ईमानदारी और पैनी नज़र के लिए जाना जाता था। वहाँ डेली न्यूज़ के ब्रॉडवे स्तंभकार स्वर्गीय डेंटन वॉकर भी मौजूद थे, जो स्वयं एक मानसिक शक्ति वाले व्यक्ति थे और इस विषय में गहरी रुचि रखते थे, लेकिन इसके निहितार्थों के बारे में बिल्कुल भी आश्वस्त नहीं थे। कोई भी प्रेक्षक "आस्तिक" नहीं था, जैसा कि आमतौर पर इस शब्द का प्रयोग किया जाता है, बल्कि सभी प्रबुद्ध गवाह थे जो असामान्य तथ्यों को स्वीकार करने के लिए तैयार थे यदि उन्हें साबित किया जा सके।

हम एक मध्यम आकार के कमरे में दाखिल हुए, जिसमें एक मेज के चारों ओर चार कुर्सियाँ थीं, और चारों कोनों में अतिरिक्त कुर्सियाँ थीं। कमरे में केवल एक पीले रंग का बल्ब लगा था, जिससे हल्की रोशनी आ रही थी, लेकिन पढ़ने में कोई दिक्कत नहीं थी। कमरे के कोने थोड़े अंधेरे थे। मायर्स बाईं ओर के कोने में एक कुर्सी पर बैठ गए, अपनी आँखों पर हाथ रखे और समाधि जैसी अवस्था में चले गए। मैंने अपनी जेब से, जहाँ वह इतने समय से था, फोटोग्राफिक पेपर निकाला और उसे मेज पर सबके सामने रख दिया। न तो मायर्स और न ही मेहमानों में से किसी ने मुझे छुआ या धक्का दिया—जो आमतौर पर पैकेज बदलने का एक तरीका होता है। जब भी मुझे किसी पेशेवर जादूगर के साथ माइक साझा करने का दुर्भाग्य मिलता है, तो वह इस बात का यही "स्पष्टीकरण" देता है कि यह तांत्रिक घटना कैसे घटी होगी। मैं बेशक जादू की कई चालों से वाकिफ हूँ और हमेशा उन पर नज़र रखता हूँ, लेकिन ऐसा कुछ भी नहीं किया गया। पैकेज अभी भी सीलबंद था, ठीक वैसे ही जैसे वह पूरी दोपहर से था। लगभग पाँच मिनट बाद मायर्स ने गहरी साँस ली और आँखें खोलीं, और कुछ थकी हुई आवाज़ में कहा, “अब कागज़ खुल गया है। आप पैकेट खोल सकते हैं।” इतना कहते ही, वॉकर और मैंने बाहरी लिफ़ाफ़ा फाड़ा, फिर प्रकाश-संवेदनशील कागज़ का पैकेट खोला, और उसमें मौजूद 20 पन्नों को झटपट उस तरल में डाल दिया जो हम अपने साथ लाए थे। जैसे ही पन्ने तरल में गिरे, उनके साथ कई ऐसी चीज़ें हुईं जो वास्तव में नहीं होनी चाहिए थीं, अगर यह कोई मानसिक प्रयोग न होता।

बिना इस्तेमाल किए हुए फोटोग्राफिक पेपर को 60 वाट की पीली रोशनी में रखकर डेवलप करने पर एक समान परिणाम आने चाहिए। लेकिन यहाँ हर शीट के साथ अलग-अलग चीजें हो रही थीं! कुछ शीट बिल्कुल खाली थीं। कुछ पर आकृतियाँ बनी थीं, और कुछ पर इंसानी चेहरे दिख रहे थे। कुछ पर प्रतीक बने थे, जैसे कि समाधि का पत्थर, पट्टिका, क्रॉस। हमने जितनी जल्दी हो सके पूरे पैक पर काम किया। वॉकर ने शीटें निकालीं और उन्हें डेवलपर में डाल दिया। मैंने उन्हें डेवलपर से निकालकर फिक्सेटिव घोल में डाला और फिर साफ पानी में डाल दिया। मायर्स अभी भी कोने में अपनी कुर्सी पर बैठे थे। फिर हमने सभी कागजों को एक बड़े तौलिये पर सुखाने के लिए रख दिया और कमरे की सभी बत्तियाँ जला दीं। किसी भी प्रिंट को छुए बिना, हमने मायर्स की मानसिक माध्यमता के परिणामों की जांच शुरू की।

स्पष्ट है कि अगर इन कागजों पर चेहरे या आकृतियाँ दिखाई देतीं, तो धोखाधड़ी इसका कारण नहीं हो सकती थी। ऐसे प्रयोगों का एक दिलचस्प पहलू यह है कि आप किसी ऐसे व्यक्ति की छवि देखने की उम्मीद करते हैं जिसे आप शारीरिक रूप से जानते हों। बेशक, आप कभी नहीं जान सकते कि कौन सामने आ जाए। जो लोग विभिन्न प्रकार के मानसिक चैनलों पर प्रयोग या जांच करते हैं, और किसी प्रियजन के प्रकट होने की बेसब्री से उम्मीद करते हैं, वे लगभग हमेशा निराश ही होते हैं। इन प्रयोगों का वास्तविक परिणाम काफी अप्रत्याशित होता है, और ऐसा होना स्वाभाविक भी है। इसलिए, जब मैंने उन चेहरों में से एक परिचित चेहरा देखा तो मुझे बहुत खुशी हुई। कागज पूरी तरह सूखते ही मैंने उसे तेज रोशनी में ले जाकर यह सुनिश्चित किया कि कहीं मैं सिर्फ कल्पना तो नहीं कर रहा था। जी नहीं, इसमें कोई गलती नहीं थी। मेरे सामने मेरी एक चाची का चित्र था, जो बहुत करीबी नहीं थीं, लेकिन जिन्हें मैं एक समय अच्छी तरह जानता था। उनका नाम इरमा डी. था। वह चेकोस्लोवाकिया में रहती थीं और युद्ध का शिकार हो गईं। उनकी मृत्यु कहाँ और कब हुई, यह हम आज भी नहीं जानते, क्योंकि हजारों अन्य लोगों के साथ, वह भी अपने वतन पर नाज़ी कब्जे के दौरान गायब हो गईं। मुझे उनकी दुखद मृत्यु के बारे में 1945 में पता चला, जब यूरोप से संचार बहाल हुआ। लेकिन यह 1959 की बात थी, और मैंने कई वर्षों से उनके बारे में सोचा भी नहीं था। इसलिए जब मुझे एक रिश्तेदार से उनके जीवित होने का यह संकेत मिला, तो मुझे आश्चर्य हुआ। घर लौटने पर मैंने यह सुनिश्चित करने के लिए अपना पारिवारिक एल्बम देखा कि यह

वही हैं। मेरे पास हूबहू तस्वीर तो नहीं थी, लेकिन उनके जीवनकाल के लगभग उसी समय की एक समूह तस्वीर थी। इस समूह तस्वीर में, इरमा दाहिनी ओर वाली लड़की हैं। बाईं ओर वाली मेरी माँ हैं, और बीच में दोनों लड़कियों की एक सहपाठी हैं। यह तस्वीर तब ली गई थी जब दोनों बहनें अविवाहित थीं; हालाँकि, उनके चेहरे की छवि उनके विवाह के शुरुआती वर्षों की है, एक ऐसा समय जिसे उन्होंने अपने जीवन के सबसे अच्छे और खुशहाल वर्ष माना होगा।

हंस होल्ज़र की चाची इरमा, दाईं ओर, एक युवा लड़की के रूप में।

मैंने उस मानसिक छवि को लिया और अपने पिता को दिखाया, जो उस समय पूरी तरह से संशयवादी थे, बिना उन्हें इसके बारे में कुछ बताए। उन्होंने तुरंत अपनी दिवंगत भाभी को पहचान लिया। मैंने कई अन्य रिश्तेदारों पर भी परीक्षण किया, और परिणाम वही रहे। मैं इस सब से इतना प्रभावित हुआ कि मैंने मायर्स से तुरंत एक और बैठक करने का अनुरोध किया। उन्होंने मेरा अनुरोध मान लिया और 6 अगस्त, 1959 को हम मायर्स के अपार्टमेंट में फिर से मिले। इस बार कागज के बजाय फोटोग्राफिक फिल्म का उपयोग किया जाना था, और कमरे में एक कैमरा लाया गया। कैमरा स्वयं एक बेल्लो टाइप का था जिसमें 120 साइज की फिल्म

लगती थी, और इसकी बनावट में कुछ भी असामान्य नहीं था। मायर्स रोल फिल्म के बजाय कट फिल्म का उपयोग करते थे, और जब मैंने कैमरे की जांच की तो बेल्लो बिल्कुल सही स्थिति में लग रहा था। लेकिन इस पुराने कैमरे के इतिहास से एक दिलचस्प कहानी जुड़ी हुई है। यह प्रसिद्ध ब्रिटिश मानसिक फोटोग्राफर विलियम होप और बाद में श्रीमती डीन का था, और 1930 में मायर्स के हाथों में आ गया, और पांच साल बाद वे इसे अपने साथ अमेरिका ले आए।

वहाँ फिर से फोटोग्राफर हेगेडॉर्न और वकील गेरस्टीन, साथ ही दो महिलाएं - प्रचारक गेल बेनेडिक्ट और ज्योतिषी एवं कलाकार श्रीमती रिकार्डी - मौजूद थीं। हेगेडॉर्न और गेरस्टीन ने न्यूयॉर्क के कोडक से फिल्म खरीदी थी, और सामग्री हेगेडॉर्न के पास तब तक थी जब तक उन्होंने और गेरस्टीन ने दोनों महिलाओं और मेरे सामने कैमरे में फिल्म लोड नहीं कर दी। अपार्टमेंट में थोड़ा पीछे, लगभग दस अन्य लोगों का एक समूह पूरे प्रयोग को देख रहा था, बिना उसमें भाग लिए। एक्सपोज़्ड फिल्म को डेवलप होने में पहले प्रयोग के कागज की तुलना में थोड़ा अधिक समय लगा, लेकिन फिर से फिल्म पर अजीबोगरीब "अतिरिक्त" चीजें दिखाई दीं। इसके अलावा, कागज वाला प्रयोग दोहराया गया और शीट पर कई चेहरे दिखाई दिए, हालांकि उनमें से कोई भी मुझे ज्ञात नहीं था और न ही मैंने उन्हें पहचाना। यह आश्चर्य की बात नहीं है, क्योंकि मानसिक फोटोग्राफी माध्यम दुर्लभ हैं और "वहाँ से" संवाद करने की इच्छा रखने वाले लोगों की संख्या संभवतः बहुत अधिक है। आखिर पीछे छूट गए लोगों को यह बताना कितना महत्वपूर्ण है कि जीवन चलता रहता है? इस प्रयोग के बाद भी मैं मायर्स के संपर्क में रहा, लेकिन हमने कुछ समय तक दोबारा इस पर हाथ नहीं आजमाया।

सन् 1960 में एक दिन मैं उनके दफ्तर गया और उन्होंने मुझे कुछ तस्वीरें दिखाईं जो उन्होंने हाल ही में खुद खींची थीं। मुझे एहसास हुआ कि ये तस्वीरें मेरी आँखों के सामने खींची गई तस्वीरों जितनी सटीक नहीं थीं, लेकिन मुझे यह मानना हास्यास्पद लगा कि मायर्स अपना पूरा समय खुद को धोखा देने में बिताएंगे! इसलिए मैंने उनसे तस्वीरें दिखाने को कहा। हैरानी की बात यह थी कि मायर्स ने मुझे सिर्फ एक तस्वीर दिखाई। उसे देखते ही मेरा चेहरा पीला पड़ गया। हालाँकि वह किसी आम तस्वीर जितनी स्पष्ट नहीं थी, फिर भी वह तस्वीर मेरी एक प्यारी युवा दोस्त की थी जिसकी कुछ समय पहले ही दुखद मृत्यु हो गई थी। मैंने कभी भी

मायर्स से उसके बारे में बात नहीं की थी, और न ही मायर्स उससे कभी मिले थे। पूरी तरह से आश्वस्त होने के लिए मैंने वह तस्वीर उस युवती की माँ को दिखाई और उन्होंने भी मेरी बात से सहमति जताई। कई séances और बैठकों में उस लड़की ने मुझे अपनी उपस्थिति का एहसास कराया था, अक्सर उन अजनबी माध्यमों के ज़रिए जो मेरा नाम तक नहीं जानते थे या मुझसे तब तक कभी मिले भी नहीं थे। इसलिए संवाद करने की निरंतर इच्छा का यह और सबूत देखकर कोई खास हैरानी नहीं हुई।

मानसिक तस्वीर में हंस होल्ज़र की चाची इरमा।

1961 की गर्मियों तक मायर्स और मैंने फिर से एक बड़े प्रयोग पर चर्चा नहीं की थी। उस समय चैनल 5 न्यूयॉर्क द्वारा निर्मित पीएम ईस्ट कार्यक्रम ने मुझसे मानसिक प्रयोगों का एक "पैकेज" तैयार करने का अनुरोध किया। मैंने मायर्स और उनकी मानसिक फोटोग्राफी को प्रमुखता से शामिल करने का निर्णय लिया। उन्हें इस तरह की प्रसिद्धि में आने के लिए मनाना आसान नहीं था, जिसमें कई सीमाएं और दबाव थे, लेकिन अंततः वे आने के लिए सहमत हो गए। हमने अपनी शर्तें रखीं, और माइक वालेस ने शो की ओर से उन्हें स्वीकार कर लिया। वालेस, जो पूरी तरह से संशयवादी थे, को अपनी पसंद की दुकान से साधारण फोटोग्राफिक पेपर खरीदना था और प्रसारण के समय तक उसे अपने पास रखना था। उन्होंने ऐसा ही किया, और जब हम तीनों कैमरे के सामने आए तो उन्होंने सीलबंद, बिना छेड़छाड़ वाला पेपर प्रस्तुत किया। डेवलपिंग और फिक्सेशन तरल पदार्थ और कटोरे भी स्टूडियो द्वारा उपलब्ध कराए गए थे। कार्यक्रम के अन्य खंडों के प्रसारण के दौरान मायर्स धैर्यपूर्वक मंच के पीछे इंतजार करते रहे। इस पूरे समय वालेस के नियंत्रण में पेपर और तरल पदार्थ थे। अंततः हम

मंच पर अपनी-अपनी सीटों पर बैठ गए, मायर्स मेरे बाईं ओर और वालेस मेरे दाईं ओर, बिना पीठ वाली लकड़ी की कुर्सियों पर। प्रकाश का एकमात्र स्रोत ऊपर लगा 60 वाट का पीला बल्ब था, और स्टूडियो की सभी लाइटें बंद कर दी गई थीं।

कैमरे पर आते ही प्रयोग शुरू हो गया। जब वालेस ने सीलबंद कागजों का पैकेट खोला और उन्हें एक-एक करके पहले तरल में डाला, तो तुरंत ऐसी आकृतियाँ दिखाई देने लगीं जहाँ कोई आकृति नहीं दिखनी चाहिए थी, क्योंकि हम बिल्कुल नए फोटोग्राफिक कागजों के साथ काम कर रहे थे। यदि किसी विचित्र परिस्थिति में ये कागज एक्सपोज़ हो गए होते, तो कम से कम वे एक जैसे तो दिखने चाहिए थे। लेकिन ऐसा नहीं हुआ। कई कागज पूरी तरह से खाली थे, जबकि अन्य पर अस्पष्ट आकृतियाँ और चित्र दिखाई दे रहे थे, एक मानव हाथ, एक सिर और एक अभी तक अस्पष्ट चेहरा। इस बिंदु पर एक विज्ञापन के कारण प्रयोग जारी रखना असंभव हो गया, और टेलीविजन दर्शकों के लिए परिणाम निर्णायक नहीं थे। बेशक, अनएक्सपोज़्ड कागजों पर कुछ तो दिखाई दिया था, लेकिन क्या? शो के बाद मैंने सूखे प्रिंटों की सावधानीपूर्वक जांच की। उनमें से एक में मेरी दिवंगत माँ का एक बहुत ही सुंदर चित्र स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहा था, जिनकी मृत्यु प्रयोग होने से ठीक चार साल पहले हुई थी। अब मैंने अपनी दिवंगत माँ को, एक तरह से, जीवित होने के संदेहियों को समझाने के लिए प्रकट करने के बारे में नहीं सोचा था, और न ही मायर्स के पास मेरे पारिवारिक एल्बम तक कोई पहुँच थी। दरअसल, मायर्स को यह पता ही नहीं था कि मेरी मां का निधन हो चुका है।

निश्चित रूप से वॉलेस ने यह तस्वीर नहीं बनाई होगी, क्योंकि वह व्यक्तिगत अस्तित्व की संभावना में दृढ़ अविश्वास रखता था। और मैं, एक शोधकर्ता के रूप में, निश्चित रूप से अपनी माँ की नकली तस्वीर बनाने की गलती नहीं करता अगर मेरा इरादा कोई चाल चलने का होता। अगर किसी की माँ, तो वॉलेस या मायर्स की, मेरी तो बिल्कुल नहीं, जबकि मेरे पास ही मेरी माँ की तस्वीर थी! यह तथ्य कि जो चित्र इस प्रकार प्रकट हुआ वह मेरी दिवंगत माँ का है, इस तथ्य से कम महत्वपूर्ण है कि कोई चेहरा प्रकट हुआ, क्योंकि यह भी एक अलौकिक घटना है। अगर मायर्स इस मानसिक तस्वीर को बनाना भी चाहता, तो वह ऐसा नहीं कर पाता। पारिवारिक एल्बम में मेरी माँ की तस्वीर उपलब्ध नहीं है और मुझे इसे मानसिक छवि से मिलाने के लिए भंडारण से ढूंढना पड़ा। मेरे पास नेगेटिव भी सुरक्षित रखा हुआ था।

समानता स्पष्ट है, विशेष रूप से नाक की बनावट और बालों की मांग; लेकिन मानसिक तस्वीर में एक विशेष चमक है जो उनके जीवनकाल में बनाए गए चित्र में मौजूद नहीं है। चेहरे के चारों ओर मौजूद सफेद, रुई जैसी दिखने वाली चीज़ को मैं "मैट्रिक्स" कहता हूँ, जो मायर्स के शरीर से किसी प्रकार से लिए गए पदार्थ से बनी है और मेरे विचार से प्रकाश-संवेदनशील कागज़ पर चढ़ाई गई है, जिससे यह भौतिक रूप से भी संवेदनशील हो जाती है। इस "परत के ऊपर परत" पर, मेरी दिवंगत माँ का एक विचार रूप समाहित था, बिल्कुल एक वायर फोटो की तरह, सिवाय इसके कि इसे संभव बनाने वाली मशीन मायर्स का शरीर थी।

इस प्रकार के नियंत्रित प्रयोगों से यह सिद्ध हो चुका है कि तथाकथित मृतकों से संदेश वास्तव में प्राप्त किए जा सकते हैं, बशर्ते उनमें किसी प्रकार की धोखाधड़ी, भ्रम या आत्म-भ्रम न हो। यह कहना शायद अनावश्यक है कि इस प्रयोग में मायर्स को किसी प्रकार का कोई वित्तीय पुरस्कार नहीं दिया गया था।

मायर्स के साथ मेरा अगला सत्र यूनाइटेड प्रेस के पत्रकार पैट डेविस की इस विषय में रुचि के परिणामस्वरूप हुआ। मैंने मायर्स से एक और प्रयोग करने का अनुरोध किया, और वे 25 अप्रैल, 1964 को इसके लिए सहमत हो गए। इस बार फोटोग्राफिक पेपर तीन बाहरी लोगों द्वारा खरीदा गया था: दंत चिकित्सक डॉ. एस. ए. बेल, उनकी एक महिला सहयोगी और न्यूयॉर्क शहर की मिस ली पर्किन्स। वे मायर्स के साथ अपनी पसंद की एक दुकान पर गए, जहाँ उन्होंने पेपर खरीदा और सामान्य तरीके से उस पर अपने हस्ताक्षर किए। मायर्स ने पैकेज को छुआ तक नहीं। फोटोग्राफिक पेपर के एक बैच से तीन पैकेज खरीदे गए थे, जिन्हें हर तरह से एक जैसा माना गया था। हस्ताक्षर किए गए तीनों पैकेजों को एक बड़े लिफाफे में रखा गया और वकील गेरस्टीन की उपस्थिति में लिफाफे को सील करके स्टेपल कर दिया गया। गेरस्टीन ने पेपर को अपने कब्जे में ले लिया और उस शाम तक अपने पास रखा, जब वे प्रयोग के लिए इसे मायर्स के अपार्टमेंट में ले गए।

वहाँ मौजूद सभी लोगों के सामने—लगभग एक दर्जन पर्यवेक्षक जो विषय से अपरिचित थे, साथ ही मिस डेविस और मैं—गेरस्टीन ने तीनों पैकेट मेज पर रखे और तीन बर्तन निकाले जो डेवलपिंग और फिक्सेशन तरल पदार्थ और पानी से भरे हुए थे। पैट डेविस, जो तब तक मायर्स से कभी नहीं मिली थीं, अब आगे बढ़ीं और मायर्स के सुझाव पर तीनों पैकेटों में से एक को

उठाया, जिसकी गेरस्टीन और मैंने फिर से संभावित गड़बड़ी की सावधानीपूर्वक जाँच की। कोई गड़बड़ी नहीं पाई गई। फिर मिस डेविस ने पैकेट खोला और उसमें मौजूद फोटोग्राफिक पेपर की शीटों को एक-एक करके पहले पैन पर रखा। यह सब पूरी बिजली की रोशनी में हो रहा था, और पर्यवेक्षक मेज के चारों ओर पास ही खड़े थे।

जैसे ही चादरें पहले तरल पदार्थ के संपर्क में आईं, उन पर आकृतियाँ और चेहरे उभरने लगे, जो हर चादर पर अलग-अलग थे। उनमें से एक स्पष्ट आकृति दिवंगत फ्रैंक नैवरोथ की थी, जिसे गेरस्टीन ने तुरंत पहचान लिया, जो उनकी मृत्यु से पहले उन्हें जानते थे। एक अन्य तस्वीर एक युवा लड़की की थी, जिसका पांच-छह साल पहले निधन हो गया था, और उसकी पहचान उपस्थित पर्यवेक्षकों में से एक, तेल कंपनी के कार्यकारी डैन क्रिगर ने की। कई लोगों ने दिवंगत सांसद एडॉल्फ सबाथ की आकृति को भी पहचाना। इसके बाद पैट डेविस ने मायर्स से कमरे से बाहर जाने का अनुरोध किया ताकि यह पता लगाया जा सके कि उनकी शारीरिक उपस्थिति का प्रयोग के परिणाम पर कोई प्रभाव पड़ा है या नहीं। मायर्स सहमत हो गए और अपार्टमेंट के दूसरे हिस्से में चले गए। फिर पैट डेविस ने दूसरा पैकेट लिया, उसे खोला और फिर से चादरों को उसमें डुबो दिया, ठीक वैसे ही जैसे उन्होंने पहले पैकेट के साथ किया था। कुछ नहीं हुआ। सभी चादरें खाली और बिल्कुल एक जैसी थीं, कमरे की तेज रोशनी के कारण थोड़ी धुंधली थीं, लेकिन उन पर कोई विशिष्ट निशान नहीं था। फिर उन्होंने तीसरा और अंतिम पैकेट खोला और वही किया। फिर से चादरों पर कुछ भी दिखाई नहीं दिया। अंत में हमने पहले पैकेज में बची हुई कुछ शीटों का इस्तेमाल किया, और फिर से परिणाम नकारात्मक रहे जब तक कि मायर्स उसी कमरे में मौजूद नहीं था।

आत्माओं से संपर्क करने के दौरान ली गई प्रामाणिक "आध्यात्मिक तस्वीरें"

मायर्स इकलौती प्रतिष्ठित मानसिक फोटोग्राफी माध्यम नहीं थीं। कई वर्षों तक मैंने न्यूयॉर्क की बेटी रिट्टर के साथ उनके दिव्य ज्ञान से जुड़े मामलों में काम किया। वह एक ऐसी माध्यम हैं जो तथाकथित मृतकों से सटीक जानकारी प्रदान करती हैं और घटनाओं के वास्तविक रूप लेने से पहले ही उनकी भविष्यवाणी कर देती हैं। इस क्षेत्र में बेटी रिट्टर उत्कृष्ट थीं। उन्होंने

अपनी मानसिक फोटोग्राफी को भी इस स्तर तक विकसित किया कि इसे गंभीरता से लिया जाना चाहिए।

मिस रिटर एक अधेड़ उम्र की इतालवी मूल की महिला थीं, जो पेंशनभोगी थीं और शांत जीवन जीती थीं। वे कभी-कभी उन दोस्तों के दोस्तों से मिलती थीं जो पेशेवर "रीडिंग" या मानसिक परामर्श चाहते थे। वे एक सच्ची अध्यात्मवादी और धर्मनिष्ठ कैथोलिक थीं। धोखाधड़ी या व्यावसायिकता का कोई भी विचार उनके स्वभाव से बिल्कुल परे था, और वे अत्यंत सादगीपूर्ण जीवन जीती रहीं। जब मैंने उनसे उनकी तस्वीरों के प्रिंट मांगे, तो उन्होंने अपने खर्चे तक नहीं मांगे।

लगभग 1955 से, बेट्टी रिट्टर ने अपने पुराने ज़माने के बेल्लो कैमरे से अनोखी तस्वीरें खींचीं, जिनके नतीजे उनके लिए उतने ही आश्चर्यजनक थे जितने कि उन लोगों के लिए जिनकी उन्होंने तस्वीरें खींचीं। उन्हें एक सहज ज्ञान था कि उन्हें उन जगहों की तस्वीरें खींचनी चाहिए जहाँ मानसिक ऊर्जाएँ मौजूद हों, शायद विचारों, प्रार्थनाओं और अन्य मानव निर्मित ऊर्जा क्षेत्रों के बड़े पैमाने पर उत्पादन के परिणामस्वरूप। जब भी वह किसी आध्यात्मिक चर्च या सभा में जातीं या उन लोगों के साथ निजी तौर पर बैठतीं जिन्हें वह अच्छी तरह जानती थीं और जिनके साथ वह सहज महसूस करती थीं, तो वह अपना कैमरा अपने साथ ले जाती थीं। मैंने अक्सर उनके कैमरे की जाँच की और पाया कि वह पूरी तरह से काम कर रहा था। वह मानक फिल्म और औसत दर्जे की डेवलपिंग लैब का इस्तेमाल करती थीं। कई वर्षों बाद, उन्होंने आखिरकार अपने नेगेटिव से प्रिंट करना सीख लिया, हालाँकि वह उन्हें खुद डेवलप नहीं करती थीं। बेट्टी रिट्टर किसी भी तरह से फोटोग्राफी की कुशल तकनीशियन नहीं थीं। मेरे पास मौजूद उनकी खींची गई कई तस्वीरों में से कुछ मेरी उपस्थिति में खींची गई थीं, और कुछ ऐसी परिस्थितियों में ली गई थीं जिन्हें मैं संतोषजनक मानता हूँ। मैंने उनमें से चार उत्कृष्ट तस्वीरें चुनी हैं, हालाँकि प्रत्येक तस्वीर एक ही फिल्म रोल पर और समान परिस्थितियों में ली गई कई समान तस्वीरों में से एक है।

माध्यम और मैंने दोनों ने बाईं ओर की सफेद रेखाओं और गोलाकार गेंद को मानसिक ऊर्जा का संकेंद्रण माना। इन्हें किसी भी प्रकार के दोषपूर्ण उपकरण या सामग्री से समझाया नहीं जा सकता। इस प्रकार की तस्वीरें दुर्लभ नहीं हैं, और ऐसा प्रतीत होता है कि कमरे में उपस्थित

व्यक्तियों की संख्या और घटना की तीव्रता के बीच एक संबंध है। यदि एक्टोप्लाज्म भावनात्मक रूप से उत्तेजित व्यक्तियों के शरीर से प्राप्त पदार्थ है, और मुझे लगता है कि ऐसा ही है, तो किसी बुद्धिमान कार्य को करने के लिए विचार निर्देशन के माध्यम से उपयोग किए जाने से पहले इस पदार्थ को किसी न किसी रूप या आकार में एकत्रित होना चाहिए। मेरा मानना है कि ये धारियाँ, जिन्हें "छड़ें" कहा जाता है, वे कच्चा माल हैं जिनका उपयोग मृतकों के साकार होने में भी किया जाता है, जब ये वास्तविक घटनाएँ होती हैं, और भूत-प्रेत के मामलों में, जब वस्तुएँ अपनी इच्छा से चलती हुई प्रतीत होती हैं। यह पदार्थ, जिसे कुछ वर्ष पहले लंदन में अलग किया गया था और एल्ब्यूमिन से संबंधित एक नम, गंधयुक्त सफेद पदार्थ पाया गया था, निस्संदेह माध्यम और उसके उपस्थित लोगों या सहायकों की शारीरिक ग्रंथियों से आता है। बाद में इसे मूल स्रोतों में लौटा दिया जाता है, या इसका वह भाग जो séance के अंत में उपयोग नहीं हुआ होता है। इसे मोम की तरह किसी भी रूप या आकार में ढाला जा सकता है। सुनने में भले ही अजीब लगे, लेकिन यह विचार की दिशा ही है जो इसे आकार देती है।

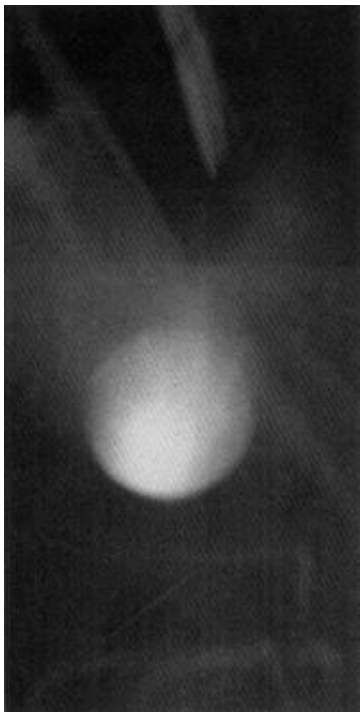

एक प्रेतवादन सत्र के दौरान बेट्टी रिट्टर की मानसिक तस्वीरें

आध्यात्मिक séance की तस्वीर के मामले में, ऐसी कोई ढलाई नहीं हुई, और तस्वीर में जो हम देखते हैं वह केवल मुक्त एक्टोप्लाज्म है जैसा कि यह निर्मित और एकत्रित होता है। आम तौर पर इसे नंगी आंखों से नहीं देखा जा सकता। लेकिन फिर, मानव आंख स्पेक्ट्रम के अधिकांश भाग को भी नहीं देख पाती। संवेदनशील कैमरा और संवेदनशील फोटोग्राफर या ऑपरेटर का संयोजन इस पदार्थ को फोटोग्राफिक फिल्म पर उतारने का उत्प्रेरक प्रतीत होता है। यह कैसे काम करता है, हम पूरी तरह से नहीं जानते, लेकिन यह अक्सर समान परिस्थितियों में होता है और ऐसे सभी मामलों में दोषपूर्ण सामग्री या कैमरों की संभावना को खारिज कर दिया गया है।

रेवरेंड बॉयड के चर्च में आयोजित इस छोटी सी सभा में उपस्थित लोगों में से एक हेलेन एम. भी थीं, जिनके पिता का सात साल पहले निधन हो गया था। शारीरिक रूप से उनका एक पैर कट गया था। संदेशवाहक, माध्यम के ज़रिए, किसी न किसी रूप में अपनी पहचान साबित करना चाहता था और उसने अपने कटे हुए पैर को एक तरह के हस्ताक्षर के रूप में दिखाने

का प्रस्ताव रखा, साथ ही यह भी स्पष्ट करना चाहता था कि इस दुनिया में उसके पास एक बार फिर दो अच्छे पैर हैं।

प्रिंट पर (जो मैंने देखे नेगेटिव से मेल खाता है) "नए" पैर का सफेद पदार्थ बैठे हुए व्यक्ति के पैर पर सुपरइम्पोज़ किया गया है। तस्वीर में दो अतिरिक्त हाथ दिखाई देते हैं, जबकि बाकी तस्वीर स्पष्ट है, जो पारंपरिक डबल एक्सपोज़र के बजाय अलौकिक उत्पत्ति की ओर इशारा करती है—बाकी तस्वीर स्पष्ट रूप से परिभाषित है। मेरा मानना है कि एक्टोप्लाज्म को विचार के माध्यम से वांछित आकृतियों में ढाला गया और फिर उन्हें फोटो खींचने योग्य बनाया गया।

जैसे-जैसे मानसिक फोटोग्राफर का कौशल विकसित होता है, अतिरिक्त तत्व अधिक परिष्कृत होते जाते हैं, अंततः चेहरे या संपूर्ण आकृतियाँ बन जाती हैं। बेट्टी रिट्टर के मामले में, यह शक्ति के संकेंद्रण या एक्टोप्लाज्म से शुरू हुआ और बाद में इसमें हाथों, क्रॉस प्रतीक और अंततः लेखन जैसी उच्च स्तरीय छवियां शामिल हो गईं। 1965 में मैंने ट्रुडी एस. नाम की एक युवती को बेट्टी से मिलवाया था। मैंने एक मृत व्यक्ति के उस पर स्पष्ट प्रभाव को तोड़ने का असफल प्रयास किया था। इसका कारण शायद यह था कि ट्रुडी स्वयं मानसिक रूप से सक्षम थी और इसलिए उसने वांछित प्रवेश द्वार प्रदान किया। कार दुर्घटना में मृत इस युवक की मृत्यु हो गई थी और वह अपने जीवनकाल में उस युवती का मित्र था। उसकी मृत्यु के बाद सुश्री एस. को उसका ध्यान आकर्षित करना अच्छा नहीं लगा। मैंने सोचा कि शायद बेट्टी रिट्टर, एक सशक्त माध्यम होने के नाते (जो मैं बिल्कुल नहीं हूँ), उस अवांछित घुसपैठिए को "बाहर निकालने" में सक्षम हो सकती हैं और जैसा कि बाद में पता चला, मेरा सुझाव सही था।

आध्यात्मिक séance के दौरान रेवरेंड बॉयड—उनकी मानसिक ऊर्जा पर ध्यान दें

जब ट्रूडी एस. मृत व्यक्ति के प्रभाव से मुक्ति पाने के लिए बेट्टी रिटर से मिलने गई थीं, तब उनका अपने जीवन में एक प्रेमी भी था। लेकिन परलोक से आया वह घुसपैठिया लगातार दखल देता रहा, जिसके चलते हालात की वजह से दोनों का रिश्ता टूट गया। 3 मार्च, 1965 को ट्रूडी एस. ने बेट्टी से मुलाकात की, जिसमें बेट्टी ने कुछ तस्वीरें लीं। उनमें से एक तस्वीर में, मानसिक फोटोग्राफी की मशहूर "कॉटन वूल" में, काले अक्षरों में 'रोम' शब्द लिखा हुआ दिखाई देता है। नेगेटिव, कैमरा, फिल्म या कागज में ऐसा कुछ भी नहीं है जिससे इस लिखावट का कारण पता चल सके। आखिर 'रोम' ही क्यों? उस समय ट्रूडी का प्रेमी इटली में था और रोम जा रहा था।

शिविर में स्पिरिट फोटोग्राफी

आध्यात्मिक शिविरों की ईमानदारी को लेकर काफी विवाद और जांच-पड़ताल हुई है, और इनके बारे में मिले सबूत भी मिले-जुले हैं। कई साल पहले, स्वर्गीय एलीन गैरेट ने मुझे कुछ शिविरों में होने वाले फर्जी आध्यात्मिक अनुभवों की जांच करने का काम सौंपा था। मैंने पाया कि इन शिविरों में रहने वाले कई ज्योतिषी ईमानदार थे और धोखाधड़ी के मामले बहुत कम

थे। फिर भी, ऐसी घटनाएं होती रहती हैं, इसलिए इन जगहों पर जाते समय अत्यधिक विश्वास करने से बचना चाहिए।

मैगी कॉन पूर्वी क्षेत्र के कई समाचार पत्रों की एक जानी-मानी स्तंभकार थीं। फरवरी 1982 में उन्होंने मुझसे पेंसिल्वेनिया के एफ़्राटा स्थित कैंप सिल्वरबेल में 1947 में ली गई एक तस्वीर की जांच करने के लिए कहा।

हालांकि मैगी और मैं दोनों ही नहीं जानते कि तस्वीर में प्रकट होने वाली आत्मा कौन है, लेकिन बनावट और सामान्य रूप से देखने पर यह परीक्षण स्थितियों में ली गई आत्माओं की तस्वीरों से मिलती-जुलती प्रतीत होती है, इसलिए मुझे इस पर संदेह करने का कोई कारण नहीं है।

कुछ अप्रत्याशित आत्माओं के चेहरे

मैसाचुसेट्स के बोस्टन की मैरी क्राउस ने सितंबर 1972 के अंत में मुझसे संपर्क किया क्योंकि उन्होंने एक अजीब सी आत्मा की तस्वीर ली थी।

अक्टूबर 1965 में न्यूयॉर्क के पर्ल रिवर में ली गई इस तस्वीर में बिल्ली को पकड़े हुए छोटा लड़का जाहिर तौर पर किसी "उपस्थिति" से पूरी तरह अनजान है, लेकिन बिल्ली स्पष्ट रूप से अनजान नहीं है, क्योंकि वह न तो कैमरे की ओर और न ही फोटोग्राफर की ओर घूर रही है, बल्कि लड़के के बाईं ओर "किसी चीज" को देख रही है, जिसे न तो लड़का और न ही फोटोग्राफर देख सकता है।

चित्र के निचले दाहिने हिस्से में घूमते हुए सफेद रंग के पिंड में दो धुंधले से दिखाई देने वाले चेहरे हैं, जिन्हें श्रीमती क्राउस ने घेरा था। उस समय, कमरे में बिल्ली के साथ केवल छोटा लड़का, क्राउस का भाई और श्रीमती क्राउस स्वयं मौजूद थीं। लेकिन ये चेहरे या चेहरे किसके हैं?

श्रीमती क्राउस के परिवार के घर में आने के कुछ ही समय बाद, यह स्पष्ट हो गया कि वे अकेले नहीं थे, हालाँकि उन्हें किसी की उपस्थिति का प्रत्यक्ष अनुभव नहीं हुआ। लेकिन अटारी की सफाई करते समय, उन्होंने देखा कि वस्तुएँ इधर-उधर बिखरी हुई थीं, और उस

क्षेत्र में एक प्रबल उपस्थिति का अहसास हुआ। तस्वीर अटारी में ही ली गई थी। क्या यह हो सकता है कि पिछले निवासी ने घर में अपनी निरंतर उपस्थिति को प्रकट करना चाहा हो?

भौतिकीकरण की फोटोग्राफी

1911 में वेस्टफेलिया में जन्मी हन्ना हैमिल्टन अपने परिवार के लिए हमेशा से ही "असाधारण" थीं। उनके पास मानसिक तस्वीरें बनाने की एक अद्भुत (लेकिन अनियंत्रित) क्षमता थी। अगस्त 1977 की शुरुआत में, मिस हैमिल्टन ने अपने लिविंग रूम से अपने बाहरी बगीचे की ओर एक तस्वीर लेने की कोशिश की (अगला पृष्ठ देखें)। उस समय कमरे में केवल हन्ना और उसकी बिल्लियाँ ही थीं। कल्पना कीजिए उनकी हैरानी की जब तस्वीर में एक सफेद रंग का महिला शरीर (हैमिल्टन ने उसे "स्ट्रीकर" कहा) दिखाई दिया। लेकिन जो नग्न प्रतीत होता है, वह वास्तव में एक्टोप्लाज्म से बना एक सफेद पदार्थ है।

हाना हैमिल्टन की साकार तस्वीर

हैमिल्टन को इस बात का कोई अंदाजा नहीं था कि वह आगंतुक कौन था, लेकिन उनके सांसारिक जीवन में इतने सारे "आध्यात्मिक मित्र" होने के कारण, यह किसी का भी अनुमान हो सकता था।

मिशिगन के ट्रॉय में रहने वाली एक बेहद धार्मिक महिला डिक्सी टॉमकिंस ने दिसंबर 1968 में अपने एक बच्चे के बपतिस्मा समारोह के दौरान ली गई कुछ असामान्य तस्वीरों के बारे में मुझसे संपर्क किया (विपरीत पृष्ठ)। श्रीमती टॉमकिंस जीवन भर से मानसिक रूप से संवेदनशील थीं, और तस्वीर ने उन्हें आश्चर्यचकित नहीं किया, लेकिन उन्होंने स्पष्टीकरण के लिए मुझसे संपर्क किया।

तस्वीर में एक पुरुष की आकृति बच्चे के पास दिखाई देती है, जो स्पष्ट रूप से समारोह को देख रही है।

इससे यह भी प्रतीत होता है कि इस प्रकार की कृत्रिम आकृतियाँ नग्न आँखों से अदृश्य हो सकती हैं, लेकिन कैमरे से नहीं। ऐसा तभी संभव है जब कोई मानसिक उत्प्रेरक आस-पास मौजूद हो।

चिकित्सक, कैथरीन द ग्रेट और पोलरॉइड स्पिरिट फोटोग्राफी

पश्चिमी तट के चिकित्सक डॉ. एंड्रयू वॉन साल्ज़ा, जिन्हें शुरू में मानसिक मामलों में कोई दिलचस्पी नहीं थी, धीरे-धीरे यह महसूस करने लगे कि उनमें मानसिक फोटोग्राफी की एक अनोखी प्रतिभा है। वे बर्लिन और टार्टू (एस्टोनिया) विश्वविद्यालयों से चिकित्सा की डिग्री प्राप्त एक हंसमुख और सफल व्यक्ति थे। कैलिफ़ोर्निया में एक प्रमुख कायाकल्प विशेषज्ञ होने के साथ-साथ, वे एक शौकिया फोटोग्राफर मात्र थे, जिन्हें अलौकिक या मानसिक मामलों में ज़रा भी रुचि नहीं थी। उनकी तस्वीरों में अप्रत्याशित और पूरी तरह से अनावश्यक "अतिरिक्त तत्व" दिखाई देते थे, चाहे वे सामान्य कैमरों से ली गई हों या पोलरॉइड जैसे तेज़ कैमरों से। उन्हें मेरी मानसिक शोध में रुचि के बारे में एक साझा मित्र, गेल बेनेडिक्ट के माध्यम से पता चला था, जो सैवॉय-हिल्टन होटल की जनसंपर्क निदेशक थीं, जहाँ वे अक्सर ठहरते थे। हालाँकि मैंने इस विषय पर उनके विचित्र अनुभवों के बारे में सुना था, लेकिन डॉक्टर से मेरी पिछली मुलाकात केवल एक सामाजिक समारोह में हुई थी, जहाँ अन्य लोग भी मौजूद थे और इस विषय पर गहराई से चर्चा करने का अवसर नहीं मिला था। उस समय भी वॉन साल्ज़ा मेरी पूर्व पत्नी कैथरीन से मिले और उन्हें बताया गया कि वह रूसी मूल की हैं, जिस पर उन्होंने

कहा कि वह स्वयं बाल्टिक हैं। लेकिन न तो डॉक्टर और न ही मेरी पत्नी ने उनके वंश के बारे में कोई विस्तृत जानकारी दी।

हाना हैमिल्टन—मानसिक फोटोग्राफर

अंततः, मार्च 1966 में, वॉन साल्ज़ा व्यापार के सिलसिले में न्यूयॉर्क पहुँचे और अचानक मुझे फ़ोन करके मेरी उपस्थिति में प्रयोग करने का प्रस्ताव रखा, जैसा कि मैं लंबे समय से चाहता था। हमने रविवार, 13 मार्च को अपने घर पर एक बैठक का आयोजन किया और मैंने गेल बेनेडिक्ट से डॉक्टर को लाने के लिए कहा। इसके अलावा, मिस बेनेडिक्ट की एक मित्र, श्रीमती मार्शा स्लैंस्की, जो एक डिज़ाइनर थीं और मानसिक अनुसंधान के मामलों में विशेष रूप से अनुभवी नहीं थीं, एक अतिरिक्त पर्यवेक्षक के रूप में हमारे साथ शामिल हुईं। उनके आने के कुछ ही समय बाद, डॉक्टर ने अचानक मेरी पत्नी से बैठक कक्ष के दूसरे छोर पर स्थित एक कुर्सी पर बैठने का अनुरोध किया, क्योंकि उन्हें उनकी तस्वीर लेने की तीव्र इच्छा हुई। इसी क्षण मैंने कैमरे और फिल्म की जाँच की और यह सुनिश्चित किया कि कोई धोखाधड़ी नहीं हो सकती थी।

पहली तस्वीर में मेरी पत्नी के बगल में एक सफेद, अर्धपारदर्शी पदार्थ से बनी महिला आकृति स्पष्ट रूप से दिखाई दे रही थी (पृष्ठ 754 देखें)। एक प्रशिक्षित इतिहासकार होने के नाते, मैंने

तुरंत पहचान लिया कि यह कैथरीन द ग्रेट का चित्र बनाने का प्रयास था। उनके शाही वस्त्र का वह कमरबंद, जिसे वह अपने कई आधिकारिक चित्रों में पहनना पसंद करती थीं, इस प्रिंट पर स्पष्ट रूप से उभर कर दिखाई दे रहा था। हमने बाकी तस्वीरों को भी एक्सपोज़ किया, और उसी शाम थोड़ी देर बाद एक कोने की दवा की दुकान से एक और कमरबंद खरीदा, लेकिन परिणाम नकारात्मक ही रहे, सिवाय कुछ अजीब हल्की धारियों के, जिनका सामान्य रूप से कोई स्पष्टीकरण नहीं था। डॉक्टर ने मुझे मूल तस्वीर सौंप दी, और अगले दिन मैंने एक प्रयोगशाला से उसकी एक प्रतिलिपि बनवाने की कोशिश की, जिसे मुझे रिकॉर्ड के लिए उन्हें भेजना था। दुर्भाग्य से, परिणाम खराब थे, प्रतिलिपि में कमरबंद बिल्कुल भी नहीं दिखाई दिया, और मुझे बताया गया कि वे इससे बेहतर नहीं कर सकते थे क्योंकि मूल तस्वीर एक पोलरॉइड तस्वीर थी और एक साधारण प्रिंट की तरह आसानी से कॉपी नहीं की जा सकती थी। खैर, मैंने अपनी व्याख्या और खेद के साथ यह खराब प्रतिलिपि सैन फ्रांसिस्को में एंड्रयू वॉन साल्ज़ा को भेज दी। मुझे आश्चर्य हुआ जब हमें 25 मार्च, 1966 को उनका एक पत्र मिला, जिसमें उन्होंने एक ही विषय की दो तस्वीरें भेजी थीं। लेकिन इस बार कैथरीन द ग्रेट की आकृति स्पष्ट और विस्तृत थी, मूल तस्वीर की तुलना में कहीं अधिक, और वास्तव में, पहली तस्वीर की सफेद रूपरेखा पर सुपरइम्पोज़ की गई थी। पहली नज़र में ही यह सब इतना स्पष्ट रूप से धोखाधड़ी वाला लगा कि मैंने यह जानने का अनुरोध किया कि यह दूसरी तस्वीर कैसे ली गई थी। ऐसा नहीं था कि मुझे डॉक्टर पर कदाचार का संदेह था, लेकिन मैं एक शोधकर्ता हूँ और दिखावा नहीं कर सकता।

वॉन साल्ज़ा मान गए। जब उन्हें मेरी उनकी उत्कृष्ट मानसिक तस्वीर की एक खराब प्रति मिली, तो उन्होंने उसे अपने सैन फ्रांसिस्को अपार्टमेंट के एक कोने की खाली दीवार पर टांग दिया ताकि उसकी दोबारा तस्वीर खींच सकें। उन्होंने ऐसा क्यों किया, इसका वे कोई स्पष्टीकरण नहीं दे सकते, सिवाय इसके कि उन्हें ऐसा करने की "तीव्र इच्छा" हुई। उन्होंने 4 x 5 आकार के पोलरॉइड बैक वाले क्राउन ग्राफिक कैमरे का इस्तेमाल किया, जिसमें F/32 अपर्चर का आवर्धन लेंस लगा था, और कैमरे को विषय से लगभग एक गज या उससे कम दूरी पर एक ट्रोपोड पर लगाया गया था। दोबारा तस्वीर खींचने के प्रयोग के लिए उनका एक्सपोज़र दिन के उजाले में एक सेकंड और एक 150-वॉट के लैंप का था।

इसके अलावा, डॉ. वॉन साल्ज़ा ने सैन फ्रांसिस्को आने पर मेरी उपस्थिति में प्रयोग दोहराने का प्रस्ताव दिया। इस पूरे मामले में जो बात मुझे सबसे ज़्यादा चौंकाने वाली लगी, वह यह थी कि डॉक्टर को इस बात की जानकारी नहीं थी कि मेरी पूर्व पत्नी कैथरीन, कैथरीन द ग्रेट की छठी पीढ़ी की सीधी वंशज हैं। पहली तस्वीर मिलने के बाद ही इस बारे में उनसे बात की गई। फिर भी, गेल बेनेडिक्ट ने बताया कि हमारे अपार्टमेंट आते समय, वॉन साल्ज़ा ने अचानक और रहस्यमय ढंग से पूछा, "मैं कैथरीन द ग्रेट के बारे में बार-बार क्यों सोच रहा हूँ?" अगर वह हमें धोखा देना चाहते, तो निश्चित रूप से वह इस तरह से अपनी चाल नहीं चलते। डॉक्टर द्वारा मुझे भेजी गई दो दोबारा खींची गई तस्वीरें एक जैसी नहीं हैं; उनमें से एक में मेरी पूर्व पत्नी के सिर पर एक मुकुट दिखाई देता है! कई ज्योतिषियों, जिनसे मेरी पूर्व पत्नी और मैंने परामर्श लिया है, जो मेरी पूर्व पत्नी या उनके पृष्ठभूमि के बारे में कुछ भी नहीं जानते थे, ने कहा कि उन्होंने एक शाही व्यक्तित्व को मेरी पत्नी की रक्षा करते हुए "देखा"। न्यूयॉर्क की माध्यम बेट्टी रिट्टर ने तो उनका नाम लेकर ही उन्हें कैथरीन बताया। यह भी सच है कि मेरी पूर्व पत्नी को ऐतिहासिक कैथरीन में गहरी रुचि है और वह अक्सर महारानी के जीवन से संबंधित पुस्तकों की ओर आकर्षित होती हैं। हालांकि उनके भाई-बहन भी रूसी शासक के समान ही करीबी वंशज हैं, लेकिन वे उनके प्रति कोई विशेष लगाव नहीं दिखाते।

ट्रॉय, मिशिगन की डिक्सी टॉमकिंस द्वारा ली गई मैटेरियलाइजेशन तस्वीरें

इन तस्वीरों का पूरा मामला इतना विचित्र था कि मुझे लगा कि या तो ये चालाकी भरी धोखाधड़ी है और मुझे ठगा जा रहा है (हालाँकि मेरी कड़ी शर्तों के तहत यह कैसे संभव हो सकता है, यह मेरी समझ से परे था) या फिर ये सामग्री तथ्यात्मक होनी चाहिए, चाहे देखने में कुछ भी विपरीत लगे। मानसिक फोटोग्राफी जैसे विवादास्पद विषय में परिस्थितिजन्य साक्ष्य बहुत भ्रामक हो सकते हैं और मैंने ठान लिया था कि मैं इस मामले में अपने निष्कर्षों को किसी भी राय, चाहे पक्ष में हो या विपक्ष में, से प्रभावित नहीं होने दूँगा।

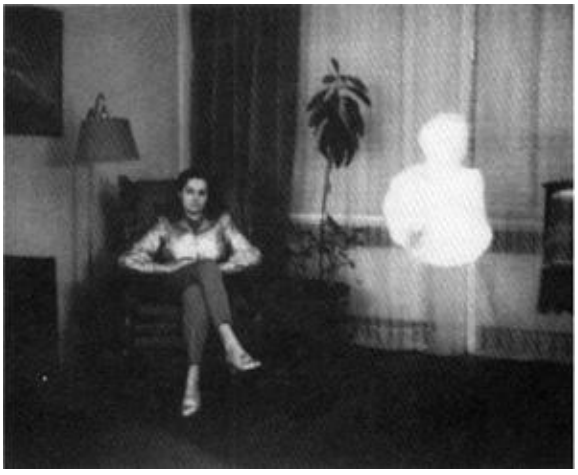

कैथरीन द ग्रेट की एक मानसिक तस्वीर जिसमें वह अपनी वंशज के साथ दिखाई दे रही हैं

कैथरीन द ग्रेट की मानसिक छवि अधिक स्पष्ट होती जा रही है

इसलिए, मई 1966 में मैं उस डॉक्टर की परीक्षा लेने के लिए सैन फ्रांसिस्को गया। मेरी उपस्थिति में उन्होंने मूल तस्वीर ली और उसे दीवार पर टांग दिया, फिर अपने क्राउन ग्राफिक कैमरे में पोलरॉइड बैक वाली फिल्म डाली। मैंने कैमरे और फिल्म का निरीक्षण किया और पाया कि किसी भी प्रकार की छेड़छाड़ नहीं की गई थी। पहली दो तस्वीरों से परिणाम मिले; एक बार फिर मूल तस्वीर की सफेद रूपरेखा पर कैथरीन द ग्रेट की स्पष्ट छाप दिखाई दी। लेकिन इस बार कैथरीन ने अपनी वंशज की ओर हाथ बढ़ाया! अपने बढ़े हुए दाहिने हाथ में महारानी ने मेरी पूर्व पत्नी को मुकुट भेंट किया, लेकिन दोनों तस्वीरें विवरण और तीव्रता में कुछ भिन्न हैं, हालांकि मेरी उपस्थिति में एक के बाद एक समान प्रकाश और एक्सपोज़र स्थितियों में ली गई थीं। इस बिंदु पर मैं स्वीकार करता हूँ कि मैं थोड़ा अधीर हो गया और जोर से कहा, "काश कैथरीन हमें कोई संदेश देतीं। वह हमें क्या बताने की कोशिश कर रही हैं?" मानो मैंने राजद्रोह कर दिया हो, वह कैमरा शांत हो गया; अगली तस्वीर में सफेद रूपरेखा के अलावा कुछ भी नहीं दिखा। हमने इस बिंदु पर प्रयोग बंद कर दिया। मैंने कैमरे का एक बार फिर निरीक्षण किया और फिर डॉक्टर के पास से चला गया।

कैथरीन द ग्रेट का समकालीन प्रिंट

विदा होने से पहले मैंने एक बार फिर कैमरे का निरीक्षण किया। पोलरॉइड बैक को छोड़कर, यह किसी भी साधारण क्राउन ग्राफिक कैमरे जैसा ही दिख रहा था। एनलार्जिंग लेंस अभी भी F/32 पर सेट था; मुझे पता था कि एक्सपोज़र केवल एक सेकंड का था, जिसमें सामान्य दिन के उजाले का उपयोग किया गया था जिसे एक 150-वॉट के लैंप से बढ़ाया गया था। डॉ. वॉन साल्ज़ा ने बाद में मुझे एक खुशनुमा नोट भेजा जिसमें उन्होंने कहा, "देखना ही विश्वास करना है, लेकिन देखने के बाद भी, बहुत से लोग विश्वास नहीं कर पाते, जिनमें मैं भी शामिल हूँ।" उन्हें यह पूरी स्थिति बहुत मनोरंजक लगी और उन्होंने वैज्ञानिक रूप से इस पर कुछ खास करने का गंभीर प्रयास नहीं किया, सिवाय इसके कि जब भी मैंने उनसे सहयोग मांगा, उन्होंने मेरा सहयोग किया।

वॉन साल्ज़ा का अलौकिक अनुभव पहली बार 1963 में हुआ, जब उनके एक सहकर्मी, डॉ. बेंजामिन स्वीटलैंड की विधवा ने उनसे अपना फोटो पोर्ट्रेट बनाने का अनुरोध किया। वॉन साल्ज़ा मान गए, लेकिन ज़रा सोचिए, उन्हें कितना आश्चर्य हुआ जब कमरे में रखे एक लैंपशेड पर उनके दिवंगत पति का चेहरा उभरा हुआ दिखाई दिया। न तो डबल एक्सपोज़र, न ही कोई धोखाधड़ी, इस घटना का कोई तर्कसंगत स्पष्टीकरण नहीं मिल सका, हालांकि अपने

व्यावहारिक ज्ञान के बल पर वॉन साल्ज़ा ने ज़ोर देकर कहा कि "इसका कोई न कोई कारण तो ज़रूर होगा!" इस स्थिति की जाँच करने के लिए, उन्होंने विधवा स्वीटलैंड की दोबारा तस्वीर लेने का फैसला किया, लेकिन इस बार एक दूसरे कैमरे से और खुले में। लाइका कैमरे और रंगीन फिल्म का उपयोग करते हुए, और यह सुनिश्चित करने के बाद कि सब कुछ ठीक है, उन्होंने आश्चर्य से पाया कि 20 तस्वीरों में से एक में दिवंगत डॉक्टर का चेहरा आकाश के सामने दिखाई दे रहा था।

डॉ. वॉन साल्ज़ा के साथ प्रायोगिक सत्र

इस पूरी घटना को स्पष्टीकरण न मिलने के कारण खारिज करते हुए और इसे भुलाने की पूरी कोशिश करते हुए, वह एक और घटना घटित होने पर फिर से आश्चर्यचकित हो गए। इस बार वह केवल अपनी रील की आखिरी तस्वीर का इस्तेमाल कर रहे थे, अपने कमरे की दीवार पर बेतरतीब ढंग से तस्वीरें खींच रहे थे। जब रील डेवलप हुई, तो दीवार पर एक युवा लड़की का चेहरा दिखाई दिया जो तस्वीर खींचते समय वहां नहीं थी। वह इससे परेशान हो गए और श्रीमती पियर्सन नाम की अपनी एक दोस्त और मरीज से इस बारे में बात करने लगे। उन्होंने तस्वीर देखने का अनुरोध किया। देखते ही उनका चेहरा पीला पड़ गया। एंड्रयू वॉन साल्ज़ा ने किसी तरह उनकी "मृत" युवा बेटी का चेहरा तस्वीर में कैद कर लिया था। हालांकि डॉक्टर

को लड़की की असमय मृत्यु के बारे में पता था, लेकिन उन्होंने उसे कभी जीवित नहीं देखा था।

इस तरह की कई और घटनाओं ने डॉक्टर को आश्वस्त कर दिया कि उन्हें किसी न किसी तरह एक बहुत ही खास प्रतिभा का पता चल गया है, चाहे वे इसे पसंद करें या न करें। उन्होंने इस विषय की जांच शुरू की ताकि पता चल सके कि क्या दूसरों को भी उनकी तरह की "समस्याएं" हैं। सैन फ्रांसिस्को क्षेत्र में मानसिक घटनाओं में रुचि रखने वाले लोगों में एवलिन नीलसन भी थीं, जिनके साथ वॉन साल्ज़ा ने बाद में कई प्रयोग किए। उन्होंने जल्द ही पाया कि उनकी उपस्थिति से उनके प्रयोगों में मानसिक "अतिरिक्त" घटनाओं की दर बढ़ जाती थी, हालांकि मिस नीलसन ने स्वयं वॉन साल्ज़ा की उपस्थिति के बिना कभी भी मानसिक तस्वीर नहीं ली थी, जिससे यह साबित होता है कि वही इस घटना के मूल में थे।

मैंने इन तस्वीरों की जांच की है और मैं संतुष्ट हूं कि कई कारणों से, मुख्य रूप से तकनीकी कारणों से, धोखाधड़ी की कोई संभावना नहीं है, क्योंकि इनमें से अधिकांश तस्वीरें पोलरॉइड कैमरों से ली गई थीं और मेरे सहित सक्षम गवाहों के सामने मौके पर ही विकसित की गई थीं।

मई 1965 की शुरुआत में मैं सैन फ्रांसिस्को गई, डॉ. वॉन साल्ज़ा के काम को देखने के लिए —यानी, उनके मानसिक फोटोग्राफी के काम को, जो उनका नियमित पेशा नहीं था और जिसे वे केवल अपने अध्ययन में शामिल लोगों के अलावा किसी और को नहीं दिखाते थे! मैंने अपने साथ दो "बाहरी" लोगों को लिया, मेरी भाभी, काउंटेस मैरी रोज़ बक्सहोवेडेन, और मेरी एक दोस्त, सामाजिक कार्यकर्ता लोरी विन, जो मेरे साथ वॉन साल्ज़ा के अपार्टमेंट में आईं। वहाँ हमारी मुलाकात डॉक्टर, एवलिन नीलसन और श्रीमती स्वीटलैंड से हुई, साथ ही डॉक्टर की दो अन्य सहेलियों से भी, जो इस विषय के प्रति सहानुभूति रखती थीं। शाम का समय था और हम सभी के डिनर के कार्यक्रम थे, इसलिए हमने तुरंत काम शुरू करने का फैसला किया।

डॉक्टर ने एक इशारे से मुझे कैमरा देखने के लिए कहा, जो पहले से ही दीवार की ओर तिपाई पर लगा हुआ था, या जैसा कि वे इसे अपना "भूतिया कोना" कहते थे, क्योंकि उन्हें हमेशा अपने बड़े से बैठक कक्ष के चमकदार खिड़कियों से दूर, अंधेरे हिस्से की ओर तस्वीरें खींचने से ही सबसे अच्छे परिणाम मिले थे। दीवारों पर एक भारतीय सजावट और डॉक्टर के चित्र के अलावा कुछ भी नहीं था। एक तरह से, उनकी चिकनाई और नीले-भूरे रंग की बनावट मुझे

चलती-फिरती फिल्मों की स्क्रीन की याद दिलाती थी। लेकिन उन दीवारों पर ऐसा कुछ भी नहीं था जिसे अंततः उन पर दिखाई देने वाली किसी भी चीज़ के लिए दोषी ठहराया जा सके। मैं कैमरे के पास गया और अंदर देखा, यह सुनिश्चित करने के लिए कि धौंकनी या किसी अन्य उपकरण में या लेंस पर कुछ भी चिपकाया नहीं गया था। फिर मैंने फिल्म देखी, जो एक साधारण पोलरॉइड फिल्म पैक थी, ब्लैक एंड व्हाइट, और उसमें छेड़छाड़ का कोई सबूत नहीं था। वैसे, ऐसा करने का एकमात्र तरीका पैक को चीरकर फिल्म के अलग-अलग टुकड़ों में बाहरी पदार्थ डालना होता, जिसके लिए बहुत कौशल, घोर अंधेरा और समय की आवश्यकता होती। तब भी काटने के निशान दिखाई देने ही थे। डॉ. वॉन साल्ज़ा द्वारा इस्तेमाल किया गया पैक बिल्कुल नया और अछूता था।

मे बुरोज़ द्वारा ली गई मानसिक तस्वीर

कमरा काफी रोशन था, क्योंकि दीवारों से सटी हुई एल-आकार की सोफे के सामने वाली खिड़कियों से रोशनी अंदर आ रही थी। हम सातों सोफे पर बैठ गए। वॉन साल्ज़ा ने कैमरा सेट किया और पहली फिल्म निकाली। हम सबके सामने ही उन्होंने पोलरॉइड के सामान्य तेज़ तरीके से फिल्म डेवलप की और फिर मुझे दिखाई। हमारे सिर के ऊपर चार अतिरिक्त चित्र साफ दिखाई दे रहे थे, और उनके बीच से दीवार भी दिख रही थी। इस बार मैंने उन चारों

में से किसी को भी नहीं पहचाना। डॉक्टर ने आगे बढ़ते हुए, इस बार खुद को भी तस्वीर में शामिल किया। उन्होंने कैमरा सेट किया और फिर सोफे पर एवलिन नीलसन के बगल में बैठ गए।

दूसरी तस्वीर जब विकसित हुई, तो दर्शकों ने उसे पहचानकर हैरानी जताई। अलग-अलग आकार के चार चेहरे दिखाई दिए और तस्वीर के बाईं ओर एक प्रकाश की किरण (मानसिक ऊर्जा की?) भी स्पष्ट रूप से दिखाई दे रही थी। लेकिन हैरानी की वजह स्वर्गीय जॉन डी. रॉकफेलर सीनियर की शक्ल थी। मैं यहाँ यह भी जोड़ना चाहूँगा कि इस सज्जन को उस दुनिया से संवाद करने में गहरी रुचि रही होगी जिसे उन्होंने 1937 में 90 वर्ष की आयु में अलविदा कह दिया। उनका चेहरा अन्य मानसिक फोटोग्राफी में भी दिखाई दिया है, खासकर ब्रिटेन में जॉन मायर्स के साथ।

मे बरोज़ की भूतिया पारिवारिक तस्वीर

मे बुरोज़ बहुत पहले ही अपने परिवार के साथ जीवन के दूसरे पड़ाव पर पहुंच चुकी हैं। लेकिन कई वर्षों तक वह सिनसिनाटी, ओहियो की निर्विवाद रूप से अग्रणी माध्यम थीं, और एक धर्मनिष्ठ अध्यात्मवादी के रूप में उनकी प्रतिष्ठा, बीसवीं शताब्दी के आरंभिक इंग्लैंड की प्रसिद्ध माध्यमों के समान थी।

सेसिलिया हूड की मानसिक तस्वीर

1930 में एक फोटोग्राफर मित्र श्रीमती बरोज़ से मिलने आए और उनसे प्लेट कैमरे से उनकी तस्वीर लेने का अनुरोध किया, जो उस समय फोटोग्राफी का सबसे अच्छा तरीका माना जाता था। श्रीमती बरोज़ सहर्ष तैयार हो गईं और परिणाम वाकई चौंकाने वाला था, हालांकि माध्यम के लिए उतना नहीं जितना कि फोटोग्राफर के लिए।

अपने दोस्त का सिर्फ एक अच्छा सा चित्र लेने के बजाय, फोटोग्राफर ने कई "अतिरिक्त" लोगों की तस्वीरें भी खींच लीं।

सबसे पहले, श्रीमती बरोज़ के भारतीय मार्गदर्शक की तस्वीर है, और हालांकि जांचकर्ताओं की आत्माओं के मार्गदर्शकों (नियंत्रण) के बीच भारतीयों की व्यापकता के बारे में अलग-अलग राय हो सकती है, तथ्य यह है कि अधिकांश पेशेवर माध्यमों के पास वे होते हैं, शायद इसलिए कि भारतीय शमन आध्यात्मिक माध्यमों के बहुत करीब थे।

मैंने श्रीमती बरोज़ से 1970 में और फिर 1971 में मुलाकात की, जब उन्होंने उस अद्भुत तस्वीर में मौजूद अन्य लोगों के बारे में बताया। तस्वीर में तीन महिलाएं हैं, जिनकी पहचान उन्होंने अपनी परदादी के रूप में की, जिनकी मृत्यु 75 वर्ष पहले हुई थी, अपनी चाची के रूप में, जिनका निधन 73 वर्ष पहले हुआ था, और अपनी बहन के रूप में, जिनकी मृत्यु हमारी

मुलाकात से 64 वर्ष पहले हुई थी। पुरुषों की बात करें तो, वे क्रॉली और रेमी नाम के दो डॉक्टर थे, और तस्वीर में जो व्यक्ति अपना सिर एक तरफ घुमाए हुए है, वह परिवार का एक मित्र था जिसने 76 वर्ष पहले आत्महत्या कर ली थी।

इस तरह की सामूहिक तस्वीरों का मिलना कोई दुर्लभ बात नहीं है और इन्हें बेहद सख्त परीक्षण स्थितियों के तहत प्राप्त किया गया है। इस तस्वीर की प्रामाणिकता पर कोई संदेह नहीं है।

आकाश में एक रहस्यमय आकृति

समय-समय पर कुंवारी मरियम, यीशु मसीह और विभिन्न स्वर्गदूतों और संतों के चमत्कारी दर्शनों की खबरें सार्वजनिक रूप से सामने आती रहती हैं। ऐसे में, श्रद्धालु तुरंत ही इन स्थानों पर पहुँच जाते हैं, मुख्यतः चमत्कारी उपचार प्राप्त करने या कम से कम आध्यात्मिक रूप से समृद्ध होने के लिए।

प्राचीन काल से ही लोग इन घटनाओं की रिपोर्ट करते आए हैं, और आमतौर पर इन्हें दिव्य आत्माओं के दर्शन के रूप में देखते हैं। ऐसे दर्शन को देखने वाले बहुत कम लोगों ने ही इन्हें निम्न स्तर के आध्यात्मिक प्राणियों, जैसे कि भक्तों के रिश्तेदार या मित्र, या फिर ऐसे लोग जो जीवन के अगले चरण में चले गए हों और किसी कारणवश इस तरह और इस स्थान पर प्रकट होने का निर्णय लिया हो, के रूप में माना है।

न्यूयॉर्क के उत्तरी हिस्से की रहने वाली बेहद आध्यात्मिक महिला सेसिलिया हूड ने एक दिलचस्प और अनचाही तस्वीर खींची। रेवरेंड हूड एक दीक्षित आध्यात्मिक मंत्री हैं और कई वर्षों से इस पद पर कार्यरत हैं। 14 अक्टूबर, 1975 को उन्होंने मेरे साथ एक असाधारण मूल तस्वीर साझा की जो इसी श्रेणी में आती है। यह तस्वीर वास्तव में 1971 में ग्रामीण पेंसिल्वेनिया में आए एक भयंकर तूफान के दौरान रेवरेंड हूड की मित्र और सहयोगी मार्गी ब्रूक्स ने खींची थी। भयंकर बाढ़ आई थी और आसमान बेहद काला था। अचानक मिस ब्रूक्स ने आसमान में सफेद रंग की एक आकृति देखी और यह तस्वीर खींची। क्या यह दूसरी दुनिया से आए लोगों का उन्हें उनकी सुरक्षा का आश्वासन देने का एक तरीका था?

पैरिश हाउस के भूत

रॉन और नैन्सी स्टालिंग्स मैरीलैंड कमेटी फॉर साइकिकल रिसर्च के प्रमुख हैं, जो शोधकर्ताओं का एक समूह है जिसे बनाने में मैंने कुछ साल पहले मदद की थी। स्टालिंग्स समर्पित और वैज्ञानिक सोच वाले लोग हैं। जब मैं पहली बार इस दंपति से मिला, तो वे अपने बच्चों के साथ बाल्टीमोर के पास एक भूतिया घर में रहते थे, जिसकी मैंने जांच की और अंततः हमने उसे सुलझा हुआ मामला मान लिया।

तब से, स्टालिंग दंपति अपने कैमरे के साथ कई भूतिया स्थानों पर गए हैं और परीक्षण परिस्थितियों में ली गई तस्वीरों से सकारात्मक परिणाम प्राप्त किए हैं। नैन्सी निस्संदेह इस सफलता की सूत्रधार हैं क्योंकि वह एक सशक्त माध्यम हैं।

बाल्टीमोर काउंटी के एक भूतिया चर्च में रॉन और नैन्सी द्वारा ली गई तीन तस्वीरें यहां पहली बार मुद्रित रूप में प्रस्तुत की गई हैं।

फोटो 'ए' में दाईं ओर खड़ी सांवली महिला नैन्सी दिखाई दे रही है। दरवाजे पर तीन आकृतियाँ दिखाई दे रही हैं, जिनमें से एक स्पष्ट रूप से दिख रही है। फोटो खींचते समय दरवाजे पर कोई नहीं था।

फोटो बी में तीन लोग एक खाली दरवाजे पर खड़े दिख रहे हैं—जब रॉन ने यह तस्वीर ली थी तब वह दरवाजा खाली ही लग रहा था!

रॉन और नैन्सी स्टालिंग्स द्वारा ली गई मानसिक दृष्टि से प्रेरित तस्वीरें

A

B

c

फोटो सी में नैन्सी दाईं ओर खड़ी हैं, जिन्हें एक छोटी बच्ची गले लगा रही है, जैसा कि उन्होंने बताया। उसी दरवाजे पर दो और लोग खड़े हैं। नैन्सी ने बताया कि उन्होंने उसी समय एक बच्चे की आवाज रिकॉर्ड की, जो "मम्मी" कहकर पुकार रहा था और जांचकर्ताओं के पीछे-पीछे चल रहा था, जब वे पुराने चर्च भवन के परिसर में घूम रहे थे।

रोज़मेरी खलील द्वारा खींची गई तस्वीर में हंस होल्ज़र, ब्लैक बास इन में पेंसिल्वेनिया के नाविक के भूत के साथ।

हंस होल्ज़र द्वारा पूर्व में प्रकाशित पुस्तकें

अकल्पनीय-- नॉन-फिक्शन

चुड़ैलों

हंस होल्ज़र की भूतिया घरों की यात्रा मार्गदर्शिका

उपचार का रहस्य: उपचारक ज़ीव कोलमैन की शक्ति

दवा से परे उपचार: स्वास्थ्य के वैकल्पिक मार्ग

भविष्यवाणियाँ: सत्य, संभावनाएँ या भ्रांतियाँ?

मनोवैज्ञानिकों की निर्देशिका

जीवन से परे

हंस होल्ज़र का प्रेतवाधित अमेरिका

महान अमेरिकी भूत कहानियाँ

वास्तविक भूतिया घटनाएं

सम्मोहन की शक्ति

आधी रात की कहानियाँ

सपनों का मानसिक पहलू

पुराने यूरोप के भूत

हंस होल्ज़र का भूतिया घर एल्बम

जहां भूत हैं

सच्ची भूत कहानियाँ

यांकी भूत

डिक्सी घोस्ट्स

न्यू इंग्लैंड के भूत

आयरलैंड के जीवंत भूत

क्या आप मानसिक शक्तियों से लैस हैं? ईएसपी और आप, और ईएसपी के बारे में सच्चाई
अतीत की खिड़की
भूतों की खोज में
भूत का शिकारी
जिन भूतों से मैं मिला हूँ
गॉथिक भूत
वाशिंगटन में घूमने वाले भूत
वेस्टघोस्ट्स
'76 की आत्माएँ
भूतों की खोज में
मेरे कुछ सबसे अच्छे दोस्त भूत हैं
जादू टोने के बारे में सच्चाई
नए मूर्तिपूजक
जादू टोना रिपोर्ट
पूर्व में तारा
यूएफओ यात्री: बाह्य अंतरिक्ष में उतरने के बारे में नए तथ्य
हैब्सबर्ग अभिशाप
शब्द खेल
एमिटीविले में हत्या: एमिटीविले II द पज़ेशन
अमेरिका के रहस्यमय स्थान
अमेरिका के भूतिया घर
अमेरिका के बेचैन भूत: मानसिक फोटोग्राफी
एल्विस दूसरी दुनिया से बोलते हैं
प्रेतमयी प्रेमी: मृत्यु के बाद प्रेम के सच्चे उदाहरण

पुनर्जन्म
मृत्यु के बाद जीवन: चुनौतियाँ और प्रमाण
पैरासाइकोलॉजी की हैंडबुक
द ग्रेट ब्रिटिश घोस्ट हंट
नियति के पैटर्न
ईएसपी के बारे में सच्चाई
ईएसपी और आप
भविष्यवाणियाँ—तथ्य या भ्रम?
पैगंबर बोलते हैं
मानसिक अन्वेषक
सर्वश्रेष्ठ सच्ची भूत कहानियाँ
नए युग की शक्तियाँ
अधीन
बिशप पाइक की मानसिक दुनिया
गुप्त विद्या की निर्देशिका
पौधों की मानसिक दुनिया
मानव डायनेमो
करिश्माई व्यक्तित्व: अपने लिए चीज़ें कैसे हासिल करें
समस्याओं से कैसे निपटें
तेज़ सोच
जीवन में सफलता कैसे प्राप्त करें
ज्योतिष: यह आपके लिए क्या कर सकता है
शाकाहारी जीवनशैली
कुंभ युग

मनो-परमानंद

कल्पना---फिक्शन

कीमियागर

हीथर, एक चुड़ैल की स्वीकारोक्तियाँ

दिव्यदर्शी

प्रविष्टि

एमिटीविले अभिशाप

गुप्त एमिटीविले

राशि चक्र के मामले

प्यार का घेरा

रैंडी नोल्स एडवेंचर सीरीज़:

रेड चिंडविट षड्यंत्र

कीमियाई छल

एक गेंडा

*खंड V, पृष्ठ 409.

*ट्रो की न्यूयॉर्क सिटी डायरेक्टरी 1872/73, पृष्ठ 448 नियमित अनुभाग और पृष्ठ 38 सिटी रजिस्टर अनुभाग।

वही, सिटी रजिस्टर, पृष्ठ 18, "सिटी रेलरोड्स" के अंतर्गत।

‡ट्रो, 1895/96, पृ. 550.

**ट्रो, 1872/73, सिटी रजिस्टर, पृ. 27.

††ट्रो, 1895/96, पृ. 174, उनके कार्यालय को 132 नासाऊ के रूप में सूचीबद्ध करता है।

*1872, पृ. 1287, नियमित अनुभाग.

†ट्रो, 1872, सिटी रजिस्टर अनुभाग, पृष्ठ 39.

टुमॉरो, वॉल्यूम I, नंबर 3 के सौजन्य से।

हडसन नदी पर स्थित वप्लैंक प्वाइंट उस समय क्रांतिकारियों का एक मजबूत गढ़ था।

रिचर्ड वैरिक, जो डच कुलीन परिवार से थे, राजद्रोह से छह सप्ताह पहले अगस्त 1780 में जनरल अर्नोल्ड के सहायक बने। हालाँकि, वे राजद्रोह में शामिल नहीं थे।

जनरल जॉन लैम्ब को 25 सितंबर, 1780 को जनरल वाशिंगटन द्वारा अर्नोल्ड के राजद्रोह की पूर्व संध्या पर किंग्स फेरी को सुरक्षित करने के लिए भेजा गया था।

†एंडआर ईस?

*फेट, जुलाई, 1954।

विषयसूची

कवर पृष्ठ
शीर्षक पेज
कॉपीराइट पृष्ठ
अंतर्वस्तु
प्रस्तावना
परिचय
अध्याय एक: जीवन और मृत्यु का स्वरूप
अध्याय दो: भूत-प्रेत खोजने की चाह रखने वाले हर व्यक्ति को क्या जानना चाहिए
अध्याय तीन: भूत और जीवितों की दुनिया
अध्याय चार: भूत वास्तव में क्या होता है?
अध्याय पाँच प्रसिद्ध भूत
अध्याय छह: यह घर भूतिया है
अध्याय सात: प्रेतवाधित स्थान
अध्याय आठ: प्रेतवाधित लोग
अध्याय नौ पीछे छूटे हुए लोग
अध्याय दस: भूत-प्रेत
अध्याय ग्यारह: भूत जो भूत नहीं हैं
अध्याय बारह: मानसिक फोटोग्राफी—दृश्य प्रमाण
हंस होल्ज़र द्वारा पूर्व में प्रकाशित पुस्तकें
फुटनोट
अध्याय 5